वासायवाथिया निवस

बेंबा नाजनिविद्यं नीनमं आक्रिमानं छटा हिम्नान अहिदिक ६५८७में ना । हिम् কাতির উন্নতির পক্তে ইহা একটা মহান্ अखवात्रः। कामना मिश्रा नक्षे रहे শাম রামগতি বিদ্যারত্ব প্রভৃতি ২০া২২ জন পণ্ডিত লোক ইহার সপক্ষে ব্যবস্থা पियाण्य । छांगाप्तत भए हिन्स আচার ব্যবহার রক্ষা করিয়া সমুজু যাজা क्रिया बाखि यहित्व ना ।

ক্রীর কর্মচারিণী—এক গওন দুৰ্ভ গৰু স্বীলোক কুঠাতে কৰি হিন্দ্ৰ সাভাষ ঐ কলিকাতা

महाह-नियानमर त्यन्तितः देश्यद्नेत म्यू (भेरे ज्यात माकू नत द्वार्डव ..) रनः ভবনে ভন্ত লোকদের আহার ও বাসের त्य वर्टमावछ आरष्ट, छोटा शतिमर्नम

क दिसा आर्थेदा सक्छे हेरेगान । देश क्र वश्मक स्थेत मिसिट्य छनिया भाति ভেত্ত। সক্ষণ হৈতে আগত তত্ত जोक अविद्याद्ववह (**अवारम**े महत्त्व) शाकिएक शास्त्रते। धरे मध्यम स्ट्रेटक কয়েক্টা গরিব লোকও জন পাদ। व्यायत्रा असीखः कत्रातः हेर्द्यात जिवछि প্রার্থনা করি। नुमारे विखाए-चन्छा नुमारे

दमत छेभक्षदवन भाषि नारे । छोरादमे Cमटनहा यथा किया गवर्गटमन्छे वास्त्र ক্রিভেছেক বলিয়া তাহারা কেশিয়া क्षितिशद्य धर निक्रिक ठो विशास 80 मन क्लीरक रूजा कतियांटक। देश-त्वक स्थार्थ निन्ठत हरेट**े नम्**डिक ্ৰেনা প্ৰেরণ করিতে হইমাছে। বিনা কর পাতে শান্তি হাপিত হইলেই জাল ই

2302 সতী।

, भटबंब अंबरवंशरक

क्रमात अनुस सहि दा नकन वम्ली हिठ बाबा मध्यण माहिका **छ व्य**न, मंडी उन्तर्था लक्षक्र ।, वाश्य निविक मामा ब्गार्स के वाबीएक मामकर्ग क्षात्र जार क्रिमारिक अब F DE COCHE TRANS. PA BIRES

क्षा भोग्नाक वाव्य विशे मान्दर्ग अधिकायम इस्मायन मानभ

क्ष करिया जामन परवाड

বিশ্বর তিমিত দুগ্লাখের দেছে উল্লেক্তি অতুল দ অপসার পের মানসী সৃত্তিতে সৃত্যুঃদ্বত কোৰে ব্ৰতাৰ পুণাৰ্থিক পাতা ক্ৰম क्षित्राक्षादादक नवन (लाकनीव क AICEA)

'वर्दक्षेत्रा शिखार्गि वान्छेपर्यट्रम्ट्रन ा पर प्रशिक्षितीयाः

क्या नःविद्यारमध्या भारतियम् विकार ं दर शबकाए सकीनार्व । প্রগৃত তক্তপ্রের বছ ফলদাতা ও
ক্ষিতীয় ঐথর্যাশালী হইয়াও যিনি সঙ্গং
ক্ষতিবাদ, পত্নীসহ, মিলিত-দেহ হইয়াও
বিনি ভোগবাসনা বিম্প, যুতিগণের
অপ্রপণ্য সেই অবিতীয় প্রথ এই
রম্ণীর প্রণয়ভাজন।

্ পিব উন্নত মানবত্বের রক্তমাংসময় তাঁহার পত্নীপ্রেম অসা-প্রতিকৃতি। ৰারণ: পত্নীশব ক্ষমে লইয়া গুঁহত্যাগী; যখন সে প্রিয়তম দেহপিওও হইতে ক্ষেত্ৰয় বাতপাপ **জদ**রশিলাপটে रहेर्ज. তিনি তথন छे देवी (मृ (श्रिममृद्धि नहें श्री देवनाम শিখরে গভীর যোগে নিময়: গভীর পদ্মীপ্রেম তাঁহাকে প্রেমের সমীপত্ত করিয়াছিল।

দক্ষযজ্ঞে দেহত্যাগ করিয়া সতী হিমালুর গৃহে জন্মগ্রহণ করেন। পিতৃ-কুই গৌরীর স্লেহের অভাব ছিল না; তিমালয় অনিন্যা পিতৃমেহ স্তস্ত

বর:প্রাপ্ত হইলেন,
রী-সদরের ভ্রপ্রেম
রি-সদরের ভ্রপ্রেম
র রক্ষিত পৃত অগ্নির
র তাঁহার জন্মান্তরীণ প্রেমভাজন
বোগীক্রের জন্ম রক্ষিত ছিল, উহা শমীক্ষান্তে নিভ্ত পাবকের স্থার, ধরণীবক্ষে
বিলুপ্ত সরস্থতী নদীর স্থার, বস্মতীর
ক্ষাকাক্ষার গর্ডে প্রচ্নে অনিন্য-ছাতি
কর্প্রপ্রের ভার উমার জনবন্ধ্য অন্তরকে

পৃত, সিক্ত ও মহার্য করিয়া বিরাজ করিউ।

প্রফুর কুসুমময়ী লতা বেমন প্রভাত-শিশিরসিক্ত-প্রস্থনভার উদ্দেশে অর্পণ করে, পিতৃ অফুজ্ঞামুসারে প্রভাতভারা-সদৃশী কুমারী-সৌন্র্রের মৃহ আভা নিঃস্থানিনী পাৰ্বতীও তদ্ধপ মহেশ্র-করে পুষরবীজমালারূপে প্রতি-मिन कमरत्रत (अमार्था मान যাইতেন। তাঁহার জনান্তরীণ প্রেম তদীয় নবীন-হৃদ্ধে নব্দুর্বাদলে শিশির-শ্রেণীর স্থায় তরলজ্যোতি বিস্তার করিত; পরবর্ত্তী সাধনাবলে ঘনীভূত ও মার্জিত হইরা তাহা তথনও হীরকমালার উজ্জল দীপ্তি ধারণ করে নাই। মহেশ্বর প্রতি-**पिन मरिगांखां जिल्ला कालांग्री** দেবীর হস্ত হইতে তদীয় হৃদয়ের গভীর প্রেম-পূত পরিচর্য্যা অবিচলিত করিতেন; তাহার গ্ৰহণ कमटस রজতগিরিসন্নিভ দিবা তম্ব মান্বত্বের আভায় এমন প্রদীপ্ত, বে কোন নিক্ট ভাব ভাঁহার সমীপত্ত হইতে সাহসী হইত না।

উষা সদৃশী পবিত্ হাতিময়ী উমা দৈনিক নিম্মান্ত্রারে প্রভাত সমরে শিবকরে পদ্মবাজমালা অর্পণ করিতে-ছেন, এমন সমস্কুইক্সপ্রেরিত কন্দর্প যোগীক্রের পবিত্র প্রেম নিম্নতর ভূমিতে আনরন করিবার উদ্দেশে বীক্ষ শক্তি নিয়োগ করিল। আহত হইয়া চক্রো-দরে বিশাল সমুক্ত হদরে প্রথা উচ্ছাস वासायवाथिया निवस

बेंबा नाजनिविद्यं नीनमं आक्रिमानं छटा हिम्नान अहिदिक ६५८७में ना । हिम् কাতির উন্নতির পক্তে ইহা একটা মহান্ अखवात्रः। कामना मिश्रा नक्षे रहे শাম রামগতি বিদ্যারত্ব প্রভৃতি ২০া২২ জন পণ্ডিত লোক ইহার সপক্ষে ব্যবস্থা पियाण्य । छांगाप्तत भए हिन्स আচার ব্যবহার রক্ষা করিয়া সমুজু যাজা क्रिया बाखि यहित्व ना ।

ক্রীর কর্মচারিণী—এক গওন দুৰ্ভ গৰু স্বীলোক কুঠাতে কৰি হিন্দ্ৰ সাভাষ ঐ কলিকাতা

महाह-नियानमर त्यन्तितः देश्यद्नेत म्यू (भेरे ज्यात माकू नत द्वार्डव ..) रनः ভবনে ভন্ত লোকদের আহার ও বাসের त्य वर्टमावछ आरष्ट, छोटा शतिमर्नम

क दिसा आर्थेदा सक्छे हेरेगान । देश क्र वश्मक स्थेत मिसिट्य छनिया भाति ভেত্ত। সক্ষণ হৈতে আগত তত্ত जोक अविद्याद्ववह (**अवारम**े महत्त्व) शाकिएक शास्त्रते। धरे मध्यम स्ट्रेटक কয়েক্টা গরিব লোকও জন পাদ। व्यायत्रा असीखः कत्रातः हेर्द्यात जिवछि প্রার্থনা করি। नुमारे विखाए-चन्छा नुमारे

दमत छेभक्षदवन भाषि नारे । छोरादमे Cमटनहा यथा किया गवर्गटमन्छे वास्त्र ক্রিভেছেক বলিয়া তাহারা কেশিয়া क्षितिशद्य धर निक्रिक ठो विशास 80 मन क्लीरक रूजा कतियांटक। देश-त्वक स्थार्थ निन्ठत हरेट**े नम्**डिक ্ৰেনা প্ৰেরণ করিতে হইমাছে। বিনা কর পাতে শান্তি হাপিত হইলেই জাল ই

2302 সতী।

, भटबंब अंबरवंशरक

क्रमात अनुस सहि दा नकन वम्ली हिठ बाबा मध्यण माहिका **छ व्य**न, मंडी उन्तर्था लक्षक्र ।, वाश्य निविक मामा ब्गार्स के वाबीएक मामकर्ग क्षात्र जार क्रिमारिक अब F DE COCHE TRANS. PA BIRES

क्षा भोग्नाक वाव्य विशे मान्दर्ग अधिकायम इस्मायन मानभ

क्ष करिया जामन परवाड

বিশ্বর তিমিত দুগ্লাখের দেছে উল্লেক্তি অতুল দ অপসার পের মানসী সৃত্তিতে সৃত্যুঃদ্বত কোৰে ব্ৰতাৰ পুণাৰ্থিক পাতা ক্ৰম क्षित्राक्षादादक नवन (लाकनीव क AICEA)

'वर्दक्षेत्रा शिखार्गि वान्छेपर्यट्रम्ट्रन ा पर प्रशिक्षितीयाः

क्या नःविद्यारमध्या भारतियम् विकार ं दर शबकाए सकीनार्व । ব্যাবোদিন

চীয় দ্বীনও পাঠ করি নাই। কাহার অসু গাৰ্ম্মাণ প্রিয়জনের জক্ত এরূপ আত্মত্যাগে সমর্থ হইয়াছে ? কোন প্রেমময় হাদয় এমন অধাবদায় সহকারে আপনাকে বিশুদ্ধ করিয়া প্রেমের পবিত্র যজ্ঞায়িস্থলে আপনাকে আনয়ন করিয়াছে ? এরূপ দৃশ্ব এ পৃথিবীতে নাই; মনশ্চক্ষে এ অপুর্ব মানসী মূর্ত্তি দেখিতেও বিসম্ব-স্তিমিত হান্য ভক্তিভারে আমূল কম্পিত

হইতেছে।

বহুবর্ষব্যাপী কঠোর তপশ্চর্য্যায় व्यप्तर्भाव प्रम्ह-मावना विन्ध ७ अपन বিশুদ্ধ হইয়া অগ্নি পরীক্ষিত স্বর্ণের দীপ্তি ধারণ করিল; নবীন ছদয়ের তরলপ্রেম সংযম ও সম্রম প্রভাবে গাঢ়তা প্রাপ্ত रहेग।

ইক্রিয়নিগ্রহ. আত্মসংযম ও সদাচার-

নিঃ পবিত্রস্বরূপ স্থ

প্রকাশিত হন, তজ্ঞপ 'পার্ক্তী সমী তদীয় প্রেমডাজন উপনীত হইলেন।

তখন দেখানে বড় অপূর্ব শো হইল। যিনি একদিন মোহপাশ ভাবি হত্তে অর্পিত প্রেমমালা সদর্পে ি করিয়াছিলেন, তিনি স্বয়ং এপ্রমার্থী হই অনাবিল প্রেমপূর্ণ 🖏য়ের হইলেন। যিনি ভশাবশেষ পাপিকু উদ্ধারোমুথিনী আকাশবাহিনী তিঃ রাকে স্বকীয় মস্তকে ধারণ ক্রিয়া প্র হইরাভিলেন, সেই যোগীক্র হৃদরের শুক্ষপ্রায় ভাবরাশির পুন জীবন-বিধায়িনী এই প্রেমনন্দাকিনী হৃদরে গ্রহণ করিয়া ধন্ত হইতে অগ্র इहेटनन ।

শ্রীন্সাবণ্য প্রভা বং

वक्राप्तरम खीमिका।

১৮৯০।৯১ সালের শিকা **ৰি**বরণী খাহা প্ৰকাশিত হইয়াছে, তাহাতে দেখা बाग्र अवरुमन रमनीय वालिका विम्हालद्वत मर्था २२७৮ এवः ছाত्री मर्था १৮.৮७৫ #াড়াইয়াছে। বাশক ও ৰালিকাদিগের শিক্ষা-পরিদ্রাণ তুলনা করিলে প্রতীয়-माम इत्र, जिक्कात देशपुक श्वन वालदकत्र মাধ্যে ১ক্সন, বিদ্যালয়ে অধ্যয়ন ক্ররিডেছে, वानिकादिशत ७० जरनत्र মধ্যে क्रांज क्रिडिंग्स क्रिडिंग्स

এথনও শৈতকরা **তইজন** বালি विमागदत्र योत्र ना, ইহাতে जी শিক কত অধিক উপায় বিধানের প্রয়োজ শিক্ষা বিভাগের ডিরেক্টর একটা আন কর সমাচার দিয়াছেন যে গভ বৎসরের মধ্যে শিক্ষার্থী বাল म्प्रिक्षन, किन्छ वानिकात मान ৩৩৭ বাড়িয়াছে। পূর্বা বৎসক্থা ব क्डमान बर्रव ४६ है। कुल छ व्यक्षिक इंदेशास्त्र । वानिव

वासायवाथिया निवस

बेंबा नाजनिविद्यं नीनमं आक्रिमानं छटा हिम्नान अहिदिक ६५८७में ना । हिम् কাতির উন্নতির পক্তে ইহা একটা মহান্ अखवात्रः। कामना मिश्रा नक्षे रहे শাম রামগতি বিদ্যারত্ব প্রভৃতি ২০া২২ জন পণ্ডিত লোক ইহার সপক্ষে ব্যবস্থা पियाण्य । छांगाप्तत भए हिन्स আচার ব্যবহার রক্ষা করিয়া সমুজু যাজা क्रिया बाखि यहित्व ना ।

ক্রীর কর্মচারিণী—এক গওন দুৰ্ভ গৰু স্বীলোক কুঠাতে কৰি হিন্দ্ৰ সাভাষ ঐ কলিকাতা

महाह-नियानमर त्यन्तितः देश्यद्नेत म्यू (भेरे ज्यात माकू नत द्वार्डव ..) रनः ভবনে ভন্ত লোকদের আহার ও বাসের त्य वर्टमावछ आरष्ट, छोटा शतिमर्नम

क दिसा आर्थेदा सक्छे हेरेगान । देश क्र वश्मक स्थेत मिसिट्य छनिया भाति ভেত্ত। সক্ষণ হৈতে আগত তত্ত जोक अविद्याद्ववह (**अवारम**े महत्त्व) शाकिएक शास्त्रते। धरे मध्यम स्ट्रेटक কয়েক্টা গরিব লোকও জন পাদ। व्यायत्रा असीखः कत्रातः हेर्द्यात जिवछि প্রার্থনা করি। नुमारे विखाए-चन्छा नुमारे

दमत छेभक्षदवन भाषि नारे । छोरादमे Cमटनहा यथा किया गवर्गटमन्छे वास्त्र ক্রিভেছেক বলিয়া তাহারা কেশিয়া क्षितिशद्य धर निक्रिक ठो विशास 80 मन क्लीरक रूजा कतियांटक। देश-त्वक स्थार्थ निन्ठत हरेट**े नम्**डिक ্ৰেনা প্ৰেরণ করিতে হইমাছে। বিনা কর পাতে শান্তি হাপিত হইলেই জাল ই

2302 সতী।

, भटबंब अंबरवंशरक

क्रमात अनुस सहि दा नकन वम्ली हिठ बाबा मध्यण माहिका **छ व्य**न, मंडी उन्तर्था लक्षक्र ।, वाश्य निविक मामा ब्गार्स के वाबीएक मामकर्ग क्षात्र जार क्रिमारिक अब F DE COCHE TRANS. PA BIRES

क्षा भोग्नाक वाव्य विशे मान्दर्ग अधिकायम इस्मायन मानभ

क्ष करिया जामन परवाड

বিশ্বর তিমিত দুগ্লাখের দেছে উল্লেক্তি অতুল দ অপসার পের মানসী সৃত্তিতে সৃত্যুঃদ্বত কোৰে ব্ৰতাৰ পুণাৰ্থিক পাতা ক্ৰম क्षित्राक्षादादक नवन (लाकनीव क AICEA)

'वर्दक्षेत्रा शिखार्गि वान्छेपर्यट्रम्ट्रन ा पर प्रशिक्षितीयाः

क्या नःविद्यारमध्या भारतियम् विकार ं दर शबकाए सकीनार्व । দিয়াছেন ভাহাতে বলিয়াছেন জেনানায় বালিকারা পূর্বে তোতাপাথীর পড়িত, এখন তাহাদের শিক্ষা অনেক পরিমাণে সম্ভোষকর।

স্ত্রী ইনম্পেকট শিক্ষাবিভাগের একটী আসবাব স্বরূপ হইয়া আছেন। ইহাঁর भरमुत्र भर्गामा (यमन, हेर्हाचात्र) कार्याउ ভদমুরপ হইতেছে। ইনস্পেকটরের মত हेहाँ विश्वासीन कमा जिल्ला है है। बाजा काधिक कार्या जानाय करा कर्खवा।

ভূমরাওন ও ছোটনাগপুরের মহা-রাজা স্ত্রীশিক্ষার পরিপোষক বলিয়া থাাতিলাভ করিয়াছেন। বঙ্গদেশে অনেক রায়বাহাত্র, রাজা, মহারাজা হইয়াছেন, তাঁহারা এ হিতকর কার্য্যে মনোযোগী হন না কেন ১

চিকিৎসা বিদ্যায় স্ত্রীলোকেরা ক্রমে । অধিক হইতে থাকিবে।

অধিকতর অমুরাগ ও পারদর্শিতা প্রদর্শন মেডিকেল কলেজের করিতেছেন। সার্টিফিকেট শ্রেণী হইতে জেন এবং ইডেন হাসপিটাল হইতে ৭জন (ধাত্ৰী) উত্তীণ হইয়াছেন। ১০টী কারিণী ছাত্রীও ধাত্রী হইয়াছেন। কাম্বেল মেডিকেল স্থলের ত্রৈবার্ষিক শ্রেণীতে ১০টী ছাত্রী পরীক্ষা দেন. मकरलंहे डेखीर्ग इहेग्रास्ट्रन धवः क्र কেহ বিশেষ প্রশংসা লাভ করিয়াছেন। ইহারা ডাকোর হইয়া বেশ ১০টাকা উপার্জন করিতেছেন। ন্ত্রীলোকদের উন্নতির এ একটা নৃতন দার উদ্যাটিত হইয়াছে। স্ত্রীচিকিৎসকের যথেষ্ট অভাব আছে, আমরা আশা করি ক্রমশঃ চিকিৎসা বিদ্যা শিক্ষার্থিনীর সংখ্যাও

সতী ও শান্তি।

চতুর্থ পরিচ্ছেদ।

অল্ল স্মরের মধ্যে সরোজিনীর কথা **চা**রিদিকে ব্যাপ্ত হইরা পড়িল। সরো-किनीत हिकि शांत्र खरण आकि मता মেরে বাঁচিয়াছে, ইহা কি কম যশের কথা ? চারিদিক ইইতে মেয়েরা দলে मत्न छांशांक प्रियोत्र कन्न मभरवज हरेक नागित्व । বহুকাল হইতে সুরোজিনী কলিকাতার রহিয়াছেন। তাঁহার গ্রাম্য বাল্য সহচরীগণ একবারে

তাঁহার কথা ভূলিয়া গিয়াছিলেন. একণে তিনি আসিয়াছেন শুনিয়া পাড়ার যত মেয়ে তাঁহাকে দেখিবার জন্ম উৎস্ক হইয়া আসিতে লাগিলেন। क्न था अप्रा भिष इहेरन मुद्राक्ति नी আসিয়া থুকীর আবার বিছানায় বসিলেন। পালে আশে চারিধারে প্রার ৫০।৬০ জন মেরে তাঁহাকে ঘেরিরা বসিলেন। শাস্তি আসিয়া তাঁহার কাছে

বসিয়া জিজ্ঞাসা করিলেন, "দিদি, বড় দাদার ছেলেটা কেমন আছে ? দিন হ'ল আমরা তাকে দেখি নি ? " সরোজিনী বলিলেন "নিশি ভাল আছে "। (বড় দানার ছেলের নাম निर्मिकां**छ)। भा**छि वनित्नन, "त्मজ-দাদার ত আর ছেলে টেকেনা, তিনটী एहाल इल, इरम्र भरत रंगल। त्वी मिनि श्रुलामात्क (कैंप्न ८कॅरम পাগলের মতন হয়েছেন। রোগে শোকে এরূপ জীর্ণ হ'য়ে প'ডেছেন যে আর দেশবার হাল নাই। তাঁকে দেখ্লে আমাদের কারা আদে। সেজ্দাদার আর সংসার ধর্মেন নাই। এক পুত্রশোকে মামু-ষের বুকে যে আঘাত লাগে, শত বজ্লা-খাতে সেরপ হয় কিনা সন্দেহ। তায় আবার দাদার এক পুত্র-শোক নয়. তিন পুল্রশোক।" সরোজিনী বলি-লেন "ওঁদের দোষে ছেলে ক'টা মারা গেল"। পাশের একটি দ্রীলোক বলি-মা. ওঁদের ১ কপালে ''আর পুত্র শোক আছে, আর তাহাদেরও আয়ুঃশেষ হ'য়ে এসেছিল; তাঁদের দোষ কি মা? তাদের কপালের সোষ।" এই কথা ওনিয়া সরোজিনী বলিলেন ''আয়ু থাক্তে কি মানুষ ना?" खीलाकरी विललन, গুবার যথন আয়ুঃ শেষ হয়, সে তথন ৮'লে যায়, আয়ু: থাক্তে বি আর মরে ?'' সরোজিনী ৰলিলেন, তেল থাক্তেও কি প্রদীপ

कथन अ निर्देश मा ?" (मर्स्की विन-লেন, "হাা, তা যায় বৈকি ? এক পির্দীপ তেল থাক্তেও অনেক সময় ঝড় বাতাদে নিবে যায়।" সরোজিনী বলিলেন, "এক প্রদীপ তেল থাক-তেও যথন ঝড় বাতাদে অনেক সময় প্রদীপ নিবে যায়, তথন পূর্ণ আয়ু থাকতেও যে অনেক সময় রোগে মামু-ষের অকাল মরণ হয়, তাহার আর আশ্চর্যা কি
 তেল থাকতে বেমন প্রদীপ নেবে. আয়ঃ থাক্তেও মামুষ মরে।'' এই শুনিয়া কথা একটি স্ত্রীলোক বলিয়া উঠিলেন, "হা। মা, ঠিক্ কথা। আয়ুঃ থাক্তেও রীতি-মত চিকিৎসা আর্সেবা গুশ্রবার অভাবে অনেকের অকাল মরণ হ'য়ে থাকে। এই সে মাদে আমাদের গ্রামে যেরূপ কলেরা হলো, তাতে প্রায় ৬০া৭০ জন লোক মারা গেল। এতে কি বলা যায় বে সকলের আয়ুঃ এক সময়ে শেষ হয়ে এসেছিল? তাকথনই নয়। ঐ রকম এক এক মহা ঝড়ে কত কত দেশ এক বারে সমভূম্ হ'লে গেছে। 🏞 मरताकिनी वनिरनन, अभीर्थ उन আছে, প্রনীপ জল্ছে, ঝড় এল, প্রদীপ নিবে গেল; কিন্তু এমন কি কোন রকম উপায় করা বেঁতে পারে না, याटा क'रत महा अड़ इटेरना मी नित्व यांत्व ना ?" ज्ञीत्नाक में विन-लन, " खनक अनीभरक विन नर्शनत मर्द्या ताथा वाय, जा इरण महा सम

হলেও যতক্ষণ তেল থাকে. তত ক্ষণ मीले निरव ना।" **उथन म**रताकिनी विलित, " जन उ अभी परमन नर्थ-নের মধ্যে রক্ষিত হ'লে ঝড় বাতাসে নিবে যায় না, সেইরূপ জীবন ধারণ করতে হলে যে সকল নিয়ম পালন করতে হয়, সেই সকল নিয়ম দারা রক্ষিত হ'লে আমাদের জীবন প্রদীপও অকালে নিবে যায় না। পালন করতে হলে যে সকল নিয়ম জানা আবশুক, তাঁহারা হয়ত সে সকল নিয়ম জানতেন না অথবা জেনেও তা পালন করতেন না। তাই তাঁদের আজ পুত্রশোকে কাঁদ্তে হচ্ছে।" भाष्डि विनातन, "अँ एनत एमार्य त्य ছেলে ক'টা মরে গেল, তা ঠিক্। বৌদিদির একে ত বয়স কম, তায় আবার লেখা পড়া জানেন না, হুই পাঁচটা ছেলে মানুষ করে, দেখে, ঠেকে যে খুব পাকা হয়েছেন, তাও ময়। দ্বিতীয়তঃ সেজদাদার এ বিষয়ে দৃষ্টি নাই। তৃতীয়তঃ যে বুড়ীট ছেলে নাড়ে চাড়ে, সেও সেই রকম। না জানে খাওয়াতে দাওয়াতে, না জানে ধোয়াতে পোঁছাতে। এরপ ত্রাহম্পর্শে কি আর ছেলে টে কে !" পাশের একটি মেয়ে বলিলেন, মা কি ইচ্ছে করে ছেলেকে মেরে ফেলে, মার আর মায়া দয়া নেই, তাঁর যতদূর কর্-বার তা তিনি করেন, তাতে যদি ছেলে না_টে কৈ, সে বাবা হরির ইচ্ছে।"

শান্তি বলিলেন, ''মার যেমন মায়াদয়া, এমন মায়া দয়া কার আছে? কিন্ত रयमन मात्रा नया चाट्ह, ঐ मत्त्र यनि একটু জ্ঞান থাকে, কেমন করে ছেলে পালন করতে হয়, এটুকু যদি জানা থাকে, তা'হলে মণি-কাঞ্চন যোগ হয়. দোণায় সোহাগা হয়। মায়ের পক্ষে মায়া যথেষ্ট নয়, তার সঙ্গে জ্ঞান থাকা ভারি দরকার। আর সেই জ্ঞানলাভের জন্ম শিক্ষার প্রয়োজন। আর আপনি যে বল্ছেন মরা বাঁচা হরির ইচ্ছা। হরি যে জীবন মরণের কর্তা তা ঠিক। কিন্তু যে সাঁতার না জেনে জলে নাব্বে, সে ডবে মর্বে। বলুন দেখি একি হরির ইচ্ছা নর ?'' পাশের মেয়েটী वनित्नन, "हाँ जा देविक, य माँजात না জানে, সেত নিশ্চয়ই ভুবে মর্বে।" শাস্তি বলিলেন, "মা জানেন ছেলে সাঁতার জানে না, তাকে যদি জলে ছেড়ে দেন, তা হ'লে কি আর সে হেলে ডুবে মর্বে না? দেখুন मा (इंटलटक इन वटन विष था अप्रोटिइन, বিষ খাওয়ালে মানুষ মরে; তাও তিনি জানেন, কিন্তু তিনি কোন্টা হুধ আর কোনটা বিষ তাঁ ঠাওরাতে পাচ্ছেন না 🎜 এরপ স্থলে মায়ের কি করা উচিত? কোন্টা ছধ, কোন্টা বিষ এ জ্ঞান মায়ের থাকা কি উচিত নয়? আর। সেই জ্ঞান লাভ করিতে হইলে শিক্ষার প্রয়োজন। এই শিক্ষার অভাবে আমাদের দেশে এত অকাল

অস্তান্ত দেশে অকাল মৃত্যুর সংখ্যা এত কম, আর আমাদের দেশে যে এত বেশী, তাহার একমাত্র কারণ শিক্ষা আর শিক্ষার অভাব। শিক্ষাঘারা মাতা । সংসার সোণার সংসার হয়।"

স্থমাতা, গৃহিণী স্থগৃহিণী হ'য়ে থাকেন। সংসারের সমস্ত স্থুও শাস্তি শিক্ষার উপর নির্ভর করে। স্থশিক্ষার গুণে

বলগা হরিণ।

দেশের অবস্থায় উপযুক্ত করিয়া কত স্থানে যে জগৎপাতা প্রমেশ্র কত প্রকার আশ্চর্য্য আশ্চর্য্য প্রাণীর স্ষ্টি করিয়াছেন, তাহা আলোচনা করিলে যুগপৎ মোহিত ও বিশ্বিত হইতে হয়। যে প্রম্পিতা স্থাদূর-বিস্তুত তকু লতা বিবর্জিত মকুসাগরে উপায়স্বরূপ গমনাগমনের একমাত উষ্টের স্থলন করিয়া, আরব, তুরম্ব, মিসর প্রভৃতি দেশের অধিবাসিগণের জীবিকা নির্বাহের পথ স্থগম করিয়া দিয়াছেন, তিনিই আবার তুষার মৃত্তিত মেরুসলিহিত হুর্ম স্থান স্কুল গ্মনা গমনের স্থাবিধার জন্ম বল্গা হরিণ স্জন করিয়া শীতপ্রধান,দেশ-বাসিগণের অশেষ কল্যাণ সাধন করিয়াছেন।

এসিয়ার সর্কোত্রাংশে সাইবিরিয়া এবং ইউরোপের নরওয়ে স্কুইডেন প্রভৃতি দেশে এবং উত্তর আমে-রিকার উত্তরাংশে বল্গা হরিণ সকল मल मल ठित्रा त्व इाग्र। टेंडन्मार्क, লাপলাও ও ম্পিটস্বাজেনের বল্গী

হরিণ সর্বাপেকা স্থ্রী ও কন্টসহিষ্ণ; स्वरेएम ७ मत्र ७ रा হরিণ দেশের আকৃতিতে সর্বাপেকা কৃদ্র, স্বতরাং তত বলশালী নহে। উত্তর সমুদ্রের দ্বীপ সকলের বলগা হরিণ আরুতিতে সর্ব্বাপেক্ষা বৃহৎ--এক একটা হরিণ উর্দ্ধে ৩ হস্তেরও অধিক।

বল্গা হরিণ সকল একস্থানে সমস্ত বংসর বাস করিতে পারে না। ঋতুর পরিবর্ত্তন অন্মুদারে ইহারা কথনও পর্বতোপরি এবং কর্থনও বা কাননা-ভান্তরে বাস করে। শীত বল্গা হরিণ সকল কাননাভান্তরে বাস করে, কিন্তু বসম্ভের প্রারিস্তে কানন পরিত্যাগ করিয়া পর্বতে শ্রেণীর উপর গমন বসম্বকালের প্রারম্ভ হইতেই মশক, গুলুডফাই প্রভৃতি রক্তপায়ী পতক্ষের সংখ্যা এত বার্দ্ধত হয় যে বল্গা হরিণ সকল তাহাদিগের দংশন ভয়ে° কানন পঁরিত্যাগ করিতে বাধ্য হয়। লাপলও প্রভৃতি দেশের গৃহপালিত বল্গা হরিণ সকলও এই

কারণে নিম বাসস্থান পরিত্যাগ করিয়া পার্বত্য প্রদেশে পলায়ন করে। এই হরিণ লাপ্লগুবাসিগণের জীবিকা নির্বাহের একমাত্র উপায়, স্কৃতরাং অধিবাসীরাও বসস্তপ্রারম্ভে পার্বত্য প্রদেশে গমন করে।

আসিয়া মহাদেশে বলগা হরিণের দ্বারা বিশেষ কোন কার্য্য সাধিত হয় না, কেবল অধিবাসিগণ হরিণ শিকার করিয়া অতুল আনন্দ উপভোগ করে। আমেরিকা দেশে বল্গা হরিণ কারিবু অভিহিত। আমেরিকায় কি বর্ত্তমান সভা জাতি, কি বর্কার আদিম জাতি, কেহই কেবল মাত্র আমোদ হেতু কারিবু শিকারে প্রবৃত্ত হয় না। তাহারা ইহার কোন অংশই রুথা নষ্ট করে না. ইহার চর্মে পরিধান বস্ত্র, বিছানার চাদর এবং শৃঙ্গ ও অস্থিতে নানাবিধ প্রয়ো জনীয় দ্রব্য প্রস্তুত করে; ইহার মাংস তাহাদিগের অগ্নি উপাদেয় ভোজা। কারিব শিকার করা নিতান্ত ব্যাপার নহে; ইহার সহিত তুলনায় আমাদিগের দেশের মৃগয়া নিতান্ত অল্লা-भ्राममाध्य कार्या विलया वित्विष्ठ इस। কারিবু শিকার করিতে হইলে শিকারীকে অক্লাস্তভাবে বহুক্ষণ ধরিয়া ইহার অনু-সর্ণ করিতে হয়। প্ৰাণিতস্ববিদ লিবনিজ সাহেব বলেন "শিকারী একবার লক্ষ্যভ্রষ্ট-হইলে কারিব শিকার করা তাহার পকে বড়ই দুরহ ব্যাপার হইরা পড়ে। যদি প্রথমবারেই আহত

না হয়, তাহা হইলে ইহারা ক্রমাগত এক দিকেই ২০৷২৪ ঘণ্টা ধরিয়া দৌড়িতে থাকে, শিকারীও হতাখাস হইয়া ইহা-দিগের পশ্চাৎ পশ্চাৎ ধাবমান হয় এবং অনেককণ পরে হয়ত একটী গুলি করিতে সক্ষম হয়। তুষার-গলিত জলে निमध इटेटल टेटा पिशदक भी घरे ४७ করিতে পারা যায়, কিন্তু পরম পিতার কি আশ্চর্য্য কৌশল, বসস্তকালের প্রারম্ভে যথন মধ্যাক্ত তপনের কির্ণে বনমধ্যস্থ হিমশিলার উপরিভাগ দ্রবীভূত হইতে থাকে, তৎকালে ইহারা কোন ক্রমেই তাহার উপর গমন করে না। যে হদের জল জমিয়া প্রস্তরবং কঠিন হইয়াছে, ইহার। তাহার উপর আনন্দে নৃত্য করিয়া বেড়ায়।"

খ্র গঠনের বিশেষত্ব বশতঃই বল্গা হরিণ কাচবং পিচ্ছিল ৰরফের উপর পদস্থালিত না হইয়া দৌড়িয়া যাইতে সক্ষম হয়। ইহাদিগের খ্র রুষের ন্যায় গোলাফুতি, কিন্তু তাহা অপেক্ষা রুহৎ ও অধিক পরিমাণে (প্রায় গ্রন্থি পর্যান্ত) থণ্ডিত। ইহারা যথন দৌড়িতে থাকে, তথন ধ্র থণ্ডব্যের পরুম্পর ঘাত প্রতি-ঘাতে এক প্রকার শক্ত উৎপন্ন হয়। এই শক্ষ বহুদ্র হইতে শ্রুতিগোচর হইয়া থাকে।

সাইবেরিয়া দেশের বল্গা হরিণ আক্ততিতে লাপলাও দেশের হরিণের ভায়। সাইবেরিয়ার অধিবাসিগণ এই হরিণ চড়িয়া স্থানাস্তরে গমনাগমন করিয়া থাকে। লাপলাণ্ডের অধিবাসিদিগের ভাগ্ন ইহারাও বল্গা হসিনের
দারা অনেক সম্ম শকটাদি টানাইয়া
থাকে। শীত ঋতুর আবির্ভাবে তুষারমণ্ডিত দেশসমূহের জন্তদিগের ভাগ্ন
দাইবেরিয়া দেশের হরিণের গাত্রচর্ম্ম
কেবল যে কপিশ বর্ণ ধারণ করে তাহা
নহে, কোন কোন সময় পরিক্ষত রজত
বর্ণে রঞ্জিত হইতেও দেখিতে পাওয়া
যায়।

লাপলাওবাসিগণ বল্গা হরিণের দ্বারা যেরপ উপকার প্রাপ্ত হয়, সেরপ আরর কেহই নহে। উদ্বের অভাবে আরব দেশবাসিগণের জীবন ধারণ করা যেরপ অসন্তব, বল্গা হরিণের অভাবে লাপলাও বাসিদিগেরও সেইরপ। লাপলাও বাসিদিগের তায় যাহারা ৩০০ শত হইতে ৫০০ শত বল্গা হরিণের অধিকারী, তাহারা এক প্রকার স্থ্য স্বছলে জীবন্যাত্রা নির্ন্ধাহ করিতে পারে; যাহারা ছই শত হরিণের অধিকারী তাহারা মধ্যবিত্ত; এবং ধাহারা শত হরিণের অধিকারী তাহারা মধ্যবিত্ত;

বহা ও গৃহপালিত ভেদে লাপলাও
দেশে বিবিধ বল্গা হরিণ দৃষ্টিগোচর
হইয়া থাকে। বহা হরিগগুলি আকৃতি
ও ক্ষমতাতে গৃহপালিত হরিণ অপেকা শ্রেষ্ঠ বটে, কিন্তু সহক্ষে বহাতা বীকার করে না। গৃহপালিত বল্গা হরিগগুলি শান্ত, কন্তুসহিষ্ণু এবং প্রভুর আজ্ঞাপালনে সহজেই অন্বরাগী। বহা ও গৃহপালিত হরিণের সমবায়ে উৎপন্ন সম্ভতি জ্বন্তগতি ও কার্য্যদক্ষতার জ্বন্ত সকলের নিকট আদরণীয়। কিন্তু বক্ত হরিণের ক্রায় ইহারাও অনেক সমন্ন অবাধ্যতা প্রকাশ করে। কি গৃহপালিত কি বক্ত উভয়বিধ হরিণেরই শাখা-প্রশাখ-বিশিপ্ত শৃঙ্গ দেখিতে পাওয়া যায়। হরিণের শৃঙ্গ দাধারণতঃ হরিণীর অপেক্ষা অনেক বৃহৎ হইয়া থাকে।

ববফেব উপব দিয়া গ্রমনাগ্রমন করিবার জন্ম লাপলাওবাসিগণ খেজ নামক এক প্রকার চক্রহীন শকট বাব-হার করিয়া থাকে। . এক একটা বলগা হরিণ এক একথানি শ্লেজ টানিয়া লইয়া যায়। শ্লেজের আকৃতি কতক পরিমাণে বোটের ভাষ। বিশেষ দক্ষ না হইলে শ্লেজ চডিয়া নিরাপদে যাইতে পারা যায় না। বালকগণ যেমন গাডী হইতে পডিয়া যাইবে না বলিয়া ফিতায়ারা গাড়ীর সহিত সংবদ্ধ থাকে, শ্লেজ আরোহিগণও ঠিক সেইরূপে গাডীর সহিত সংবদ্ধ থাকিয়া পড়িয়া ঘাইবার ভয় নিবারণ করে। আরোহিগণ দীর্ঘা-কৃতি যষ্টিদারা পথিমধ্যস্থ কন্ধর প্রস্তর **পণ্ড প্রভৃতি দুরে অপ**শারিত করিয়া ফেলে, ভাহাতে হরিণের গতির স্থবিধা বল্গা হ্রিণের গলদেশে ও মন্তকে সংবদ্ধ রজ্জুর সহিত বল্গা সংবদ্ধ থাকে। এলাহ থতের পরিবর্তে চর্দ্মধণ্ড ইহাদিগের মুখাভাতরে প্রদত্ত হইয়া বলগা হরিণের বক্ষঃস্থল হইতে

भी भाग करन শোভিছে কানন कि मिनानि उ कुछ विश्व कुछत्न, শভ্ৰমন কেব .. হরিত বরণ ু ভুগু নাহি নেত্র হয় বিলোকনে। chi, त्यव, यश्वि, ক্লফসার, হয়, বিচরে প্রাস্তরে পশু পালে পালে, লাহি হিংসা বেষ ত্বথ স্বাস্থ্যালয় নাহি রোগ, শোক, মরণ অকালে। নাহি পাপ, তাপ চাতুরী ছলনা, ं मा चक्षे चुंचाव मत्रम, পুণ্য কর্ম্মেরত পুজা আরাধনা জাতীর ধরম আর্য্যের কেবল। পুণ্যকীর্ত্তিস্তম্ভ স্থানে স্থানে কত যাগযজ্ঞহোমপুত মঞ্চ বেদী, বেদ শ্রুতি মন্ত্র ধ্বনিছে নিয়ত উঠে সামগান দিগ্দশ ভেদি।

| त्मानात्म हिल्लात्न কুত্ৰ ভবক ধার কলোলিনী কলকল সবে. আর্ঘ্য উপাসক ভগবত ভক্ত প্রচারি ভারতে প্রবেশে সাগরে। পুণ্যে দিব্য কাস্তি পবিত্র উজ্জ্বল স্বাস্থ্য ভোগে দীপ্ত বদন স্থলর, যুদ্ধে মহাবল, বুদ্ধে বৃহস্পতি, ব্যায়াম আয়াসে দৃঢ় কলেবর। মৃত্তা বিরাজে একাধারে তেজ স্থায়পরতায় দয়ার আভাস. কারুণ্যে কাঠিন্য, সত্য প্রীতি মাঝে, গান্তীর্য্যে সারল্য, মায়ার উদাস। মানবে অমর শ্রদ্ধান্পদ পূজ্যপাদ, প্রণমামি আর্যা দেব কর আশীর্কাদ।

শারীরিক উৎকর্ষ বিধান।

শারীর-তব্দ হর্ম বিদ্যা হইলেও
প্রত্যেকের আরত্তাধীন। শরীর ধারণ
করিয়া শারীর-বিধানে অনভিজ্ঞতা
নিতান্ত বিভ্ৰুমা। প্রকৃতির সন্তান পশু
লক্ষী প্রভৃতি ইতর প্রাণী সকল যে
লাক্ষ্য কৌনলৈ শরীর রক্ষা করিয়া
নীক্ষে, তাহা ভাবিলে চমৎকৃত হইতে
হয় সমুদ্রগতি জানিয়া বয়ং প্রকৃতিই
ভারিকির ক্ষা কারী সন্শাদন করিয়া
বিশ্বা প্রার সমর আহার, ভ্রার

নিদ্রাদি পশ্পন্ন করিয়া তাহারা শরীরের উৎকর্ষ সাধন করিয়া থাকে। প্রকৃতিপ্রসাদে তাহারা আজীবন শরীর-ভত্বাধীন,
অথচ তাহারা শারীর শাস্ত্র অবগত নহে।
মানব হিতাহিতবিবেকসম্পন্ন তত্ত্ব-জ্ঞানপরায়ণ স্পষ্টির উৎকৃত্ত জীব হইয়া বে
স্বীয় শরীর রক্ষার্থে অসমর্থ হইবে, ইহা
কথনই যুক্তিসিদ্ধ নহে। সত্য বটে, যে
কর্ত্ববাপরায়ণ নীতিসম্পন্ন মন্থব্যের
সংখ্যা অভি অন্ধ,তথাপি বাহারাধর্ম্ভানহীন বৈরচারী তাহারাও যে নিজ নিজ

শারীর ও বিষয়ে একবারে অনভিজ এরপ কথনই বলা যাইতে পারে না। শরীররকা দহজ ভাব। ছোট ছোট েলেরা ইহার প্রকৃত দৃষ্টাত্তখন। কুধার সময় রোদন, অপরিমিত আহারে গম্পতা এবং নিরুদ্বেগে ক্রিসহকারে অসচালনা षाता दक्यन रिवनिवन भातीतिक छे९कर्ष माधन कतियां थांदक। প্রিমিত পান ভোজন,নিয়মিত পরিশ্রম এবং যথাকালে বিশ্রাম ও নিজা শরীর রক্ষার অমোঘ উপায়। স্বাস্থ্যরকার্থ এইগুলি বিশেষ প্রয়োজনীয় হটলেও শারীরিক বলের ও লাবণোর জনা নিয়মিত অঙ্গচালনা আবিহাক। ব্যায়াম, মলক্রীডা, ধাবন, সম্ভরণ, অখারোহণ প্রভৃতি দারা অঙ্গ-চালনা প্রকৃষ্টরূপেই হইয়া থাকে, কিন্তু সকল সময়ে সকল অবস্থায় পকে ইহা সংঘটন হওয়া সম্ভাবিত নহে। वानवृक्ष, नहनाती मकन अवशास मकन সময় যাহা অনায়ালে সংসাধন করিয়া শরীর রক্ষা করিতে সক্ষম হটতে পারে. তাহাই দর্কোত্রম উপায়। দেই উপায় দারা সর্বাঙ্গ স্থন্যরূপে পরিচালিত হইতে পারে এবং রক্ত সঞ্চালন ক্রিয়ার বিশেষ আমুকুল্যাইয়ে, স্থতরাং তল্লিবন্ধন প্রশাদের সৌকার্যা রুধিরের वित्नाधन, भाष्मरभवीत शृष्टिमाधन, অস্থিপঞ্জের দৃঢ়তা, চর্ম্মের চাক্চিক্য এবং সমস্ত শরীরের লাবণা উদ্ধাসিত हरेबा थाटक। এই মহত্পার সাধনার্থে. किছुमात व्यर्वात्र नारे, दक्वम यः-

সামান্য আয়াস ও অভার সময় বার করিলেই হয়। ত্রী পুরুষ বয়স নির্বিদ त्भारव निमारक >a मिनिष्ठ कान @ह উপায় সাধন করিলেই যথেষ্ট হুইতে পারে। ইহাকে এক প্রকার ব্যারাম বলা বাইতে পারে, কিন্তু ইহা সকল অবস্থায় সমাব্রূপে সুসাধা। ইছার ক্রম সকল প্রতিপালন দ্বারা একদিকে (यमन क्रमकाय इर्जन वास्ति क्षेत्रेष्ठ । দবল হইতে পারে, দেইরূপ অপর দিকে মাংসপিও স্থবিরও গতিশক্তিবিশিষ্ট ও কার্য্যক্ষম হইতে পারে। আমরা প্রচলিত ব্যায়াম বা নবপ্রবর্ত্তিত বিদ্যা-লয়ের মল্লকীডার বিরোধী না হইলেও তাহার নিতান্ত পক্ষপাতী নহি। যত কেন সাবধানতা সহকারে এই সকল বায়ো-মের অমুশীলন হটক না, তদ্যারা বিপৎ-পাত অসম্ভাবিত নহে। পদভ্ৰষ্ট বা রজ্জ ছিল্ল হইয়া পতনে অল লোহক গতাস বাভগ্পঞ্র ইয় নাই। অধা-द्वार्ग मञ्जू वा तोकाठान्ना विभएत দহিত দাকাৎ দংগ্রাম, কোনলপ্রকৃতি মৃত্যভাব বঙ্গীর নর সারীর কুচির বিপরীত, স্বতরাং বাঙ্গালীর স্বভাববিক্ষ ব্যারাম বলিলে অভিশ্রোক্তি দোৱে দ্বিত হইতে হয় না। বিভদ্ধ বায়-সেবিত থানে প্রতি: সন্ধ্যা পাদচরণ প্রশস্ত হইলেও নিভান্ত বিপদ্শুলা নছে। পল্লীপ্রামে 'অত্যন্ত শীতের সময় ব্যতীত **छेरा ও मक्षाद आदकारम आवरे विव** थत मर्ट्यत व्यक्षित स्मित्रिक भावती

বার। নগরে প্রগাঢ় খুলি ও খুমের আবিভাবে বায়ুমণ্ডল চিরবিক্লত। সময় সমন্ত এই দৃষিত বায় খসন সপবিষ-সেবন অপেকা অল অনিষ্টকারী নহে। ইহা ৰারা খাসনালী (ফুসফুস) বিক্বত হইয়া ক্রে খাস রোগের সঞ্চার হওয়া সম্ভব। আমরা প্রস্তাবাস্তরে বায়ুমণ্ডলে ধূলিকণার আবির্ভাব ও তদ্ধেতু জীবনী শক্তির ছাসতা বিষয়ের আলোচনা করিব। অধুনাতন যত প্রকার ব্যায়াম প্রচলিত আছে, প্রায় সমস্তই অল্লাধিক বিপদ-সকল,কেবল প্রস্তাবিত ব্যায়ামেই কোন অনিষ্টাশক্ষা নাই। সকল প্রকার ব্যায়ামই ন্নানের পূর্বে প্রশন্ত। ব্যায়ামাত্তে সমস্ত শরীর হস্ত দারা বিলক্ষণ মর্দন করা উচিত। ইছা দারা শরীর সবল ও রক্ত সঞ্চালন ক্রিয়ার বিশেষ সাহায্য হয়। সকলেই জানেন প্রবাহ্নই শারী-রিক ও মানসিক পরিশ্রমের উপযুক্ত সময়। স্থতরাং ব্যায়ামও এই সময়ে অহুষ্ঠিত হওয়া উচিত। কিন্তু আমরা বে ব্যায়ামের অবতারণা করিতেছি. ইহা নিজার পুর্বে শয়নগৃহে সাধন করিলেও কৃতি নাই, বিশেষতঃ স্ত্রী লোকেরা এসময় নিঃশঙ্কচিত্তে ইহা সম্পাদন **্রিতে পারে**ন। বারামের সময় এরূপ পরিচ্ছদ আবিশুক, যীহাতে শাস ক্রিয়ার कार्बाक मा रहा। ऋक अ शनाम विमान्छ ताबिरमरे जान हत्र, कि ৰেও দৃঢ় বদ্ধ রাখা অনুচিত। महिद्दि मायप्नीत क्रियात अनुसाव

ব্যতিক্রম না হয়, ভাষা **जावधा**टम করিতে হইবে। অনাবভ শরীর ব্যায়ামের উপযোগী. স্থতরাং শর্মদার্ই ইহার প্রশস্ত স্থান। আমরা আর একটা গুরুতর কারণে মন্দিরের পক্ষপাতী। সমক দিবসবাপী শারীবিক ও মানসিক পরি-শ্রমে অবসর হইয়া যথন বিশ্রামার্থে প্রস্তুত হই, মস্তিদ অতিরিক্ত রক্তভারে ভারাক্রান্ত হইয়া কত সময় নিদ্রার ব্যাঘাত করিয়া থাকে, তথ্ন আরামপ্রদ ব্যায়াম দারাই বক্তশ্রেত আকর্ষণ করিয়া মাংসপেষী সকলকে স্বাভাবিক ভাবে সঞ্চালন করা যাইতে অনেকে প্রাতঃকালে শ্যা হইতে উঠিয়াই বাায়ামের বাবস্থা করিয়া থাকেন, কারণ তৎপরে স্নানের স্থবিধা আছে, কিন্তু নিদ্রার পূর্ব্ব ব্যায়ামে স্নান ভিন্ন অন্ত হুবিধা অনেক। হস্তদারা সমস্ত শরীর মর্ভন করিবার যথেষ্ট সময় প্রাপ্ত•হওয়া যায়, এবং দীর্ঘকাল আরাম ও নিদ্রা হেতৃ খায় ও ধমনীর কার্য্য অবাধে স্থ্যসম্পন্ন হইয়া স্বাস্থ্য ও সৌন্দর্য্যে শরীরের শোভা বৃদ্ধি করিয়া থাকে। ইহাকে একপ্রকার অনিদ্রার মহৌষধ বলা যাইতে পারে।

পরিচ্ছদ, পথ্য, স্নান প্রভৃতি স্বাস্থ্য রক্ষার সাধারণ নিয়ম সকলের আলো-চনা এই প্রস্তাবের উদ্দেশ্ত নহে। যাহাতে অবয়ব সকলের পূর্ণ বিকাশ ও অল সৌঠবের সম্বর্জন হয় কেবল তাহাই আলোচ্য। भाजीतिविधान महत् व्यक्तरमेश्वेदवत व्यक्षां এই करण निर्मिष्ठे व्याह्म।—वाह्म मृत, शां जिव (Calf) ও গ্রীবা পরি-মাণে সমান হওয়া উচিত, অসম হইলেই সৌর্গবের ব্যাঘাত হয়। এই অভাব কেবল ব্যায়াম ছারা অল্ল দিনের মধ্যে পূর্ণ হইতে পারে। বাহারা এরূপ ব্যায়ামে অভান্ত, তাঁহাদিগের শরীরের এ সকল ফ্রটা দৃষ্ঠ হয় না।

এই ব্যায়ামের প্রথম পাঠ ঋজুভাবে দতারমান হইতে শিক্ষা করা। জজ্মা (इंग्रि), कृष्टि मकि ও তলপেট (Abdomen) পশ্চাতে হেলাইয়া শ্রী-রের সমস্ত ভার পদগোলকের (ball of the foot) উপর সংস্থা-পন করিবে, অত্যন্ন ভার গুম্ফে আরো-পিত হইবে। বক্ষত্ৰ ফীত ও সমুখ দিকে ঝুঁকিয়া থাকিবে। এরপে দাঁড়াই-বার সময় যদি গুল্ফের উপর ভর দিয়া সজোরে উঠা যায় এবং শরীর হেলিয়া অথভাবে পায়ের গাঁইটের দিকে না বেঁকে কিম্বা কটার পশ্চাতে না হেলে. তাহা হইলেই ঠিক্ ঋজু ভাবে দণ্ডায়মান र अया रहेन। मीर्च यष्टि वा प्त अयादन त **অ**ভিমুবে দ্ভায়মান হইয়া ঘারা যটি বা দেওরাল স্পর্শ এবং নাসাগ্র ও পদাসুষ্ঠ সমদূরে অবস্থাপিত कतिरण विक् मां जान रहेगा धरेक्रप উঠা বসা দিনান্তে বার করেক অভ্যাস করিলেই ক্রমে অভ্যন্ত হইরা পড়িবে। এড়বভাবে কিছুমাত্র স্বারাস স্থাহে 🖟 এক্লপ বোধ হয় না, অথচ এক্লপ অভ্যাস হইলে ফুলক্ক্লপে চলিতে সক্ষম হওৱা যায়।

দিতীয় সাধন খাস প্রস্থাস গ্রহণ ও वर्कन। वक्ष्यन श्रेषं की जना हहेता খাস প্রখাস ক্রিয়া স্থচারুরূপে সম্পাদিত হয় না। ঋজু হইয়া দাঁড়াইবার গুণে এই ক্রিয়া আপনা হইতেই সম্পন্ন হয়। খাদ প্রখাদের সহিত উরদ (বঞ্চ) স্ফীত वा मङ्गिष्ठ ना कतिया (कवन भारत-পেষীর দারা ইহাকে উন্নত করিতে হইবে এবং অল্ল মাত্রায় তলপেটকে পশ্চাতে হেলাইতে হইবে। সম্বধে কটিতটে নাভির উপর (তলপেটে নয়) रुट्छत अञ्चलीत नेषर हिंश निया शीरत धीरत नामातक चाता नीर्घ धाम श्रहन করিবে। শাসগ্রহণ কালে অঙ্গুলী যে অগ্রভাগে ঝুঁ কিতেছে, তাহা স্পষ্টই অমু-ভূত হইবে। খাস ধীরে গ্রহণ করিয়া কণ-মাত্র থামিয়া পুনর্কার "অল্লে আরা প্রখাস ত্যাগ করিবে। যতদিন না এই নাভি-খাস সম্পূর্ণ আয়ন্তাধীন হয়, তত দিন প্রত্যহ অনেক বার করিয়া এইরূপ অভ্যাদ করিতে হইবে। পণ্ড কা (গাঁলরা) খাসের জন্ত অঙ্গুলীর পৃষ্ঠদেশ উভর পার্দ্বের নিমু প্রারের উপর অবস্থাপিত করিয়া नामिका चाता मीर्च • चात्र खहन कतिद्व । পূর্ব মত অরে অরে খাস গ্রহণ করিয়া थानिक थामित्रा शूनक्षीत्र चात्र चात्र প্রাথাস পরিত্যাগ করিরে। এইক্স অভাবের সময় উরসের উপরিং

ক্ষাবিদ্যালিত থাকিবে। পরিশেষে क्रिक्टि ट्रिक्निएखत छेल्य भार्य अकृष्ठ ৰয় ভাপন করিয়া নাসিকারারা পুর্বমত খাৰ গ্ৰহণ ও প্ৰখাস বৰ্জন কাৰ্য্য অজুন ঘারা অত্নত হইলেই ইহাকে পৃষ্ঠশাস কহে। এই সকল খসন ক্রিয়া প্রথমে সাবধানে করিতে হয়,এমে অভ্যন্ত হইলে **েসহজ হইয়া দাঁভার । ঋজুভাবে নিয়মিত**-**রূপে'দভায়মান হ**ইয়া উলিখিত এক একটা খাস জিয়া ক্রমে ক্রমে সম্পন্ন করিতে হয়, ধীরে ধীরে নিশাস গ্রহণ ও পরিত্যাগ এবং খাস ধারণ বা থামিবার ग्रम्य मान मान जिन यक शीरत शीरत

গণনা করিবে, এক একবার এক সেকে: **८७**त नान ना इत्र। य भारमत्मित्री দারা বক্ষত্র ও তলপেট প্রতির হই-য়াছে, এই খাস ক্রিয়া দারা তাহার কার্য্য অবাধে সম্পন্ন হট্য়া সমস্ত শ্রীরের উৎকর্ষ সাধন করিয়া থাকে। কিছ দিন অভ্যাস করিলে কটিদেশের মাংস-পেষী সকল আয়ত্তাধীন হয় ও অনায়াসে যুগপৎ সঞালিত হইয়া যথন ঋজুভাবে দ্ভায়মান হওয়া ও খাদ্ন বিলক্ষণ অভ্যস্ত হইবে, তথন অভাস্ত অঙ্গচালনার প্রয়োজন। ইহাই দ্বিতীয় शर्भ ।

गृश्लक्यी।

(इहे मःथा। य.भण्न इहेर् व)

"সত্য যদি প্রিয়ত'ম। উন্নতির পথে তব. বাধা আমি—কর আজা পথে আর নাহি র'ব।"

্রালা ঘরে মুপাশাপাশি ছই উনান ধরাইরা বধু মুকুলকুমারী বিতীয় অন্ন-পূর্ণাক্সপে কাব্দে লাগিয়া গিয়াছেন। असन नमा अख , नमख रहेशा शांही क्षांक्यानी "अ (वोर्तिति! माना वाय সংস্তেম ! " বণিবা মাত্র হাতা বেড়ী अधिका व्यवभूना उठिया माजाहरनन ; काम गरेव विमन कतिना किकामा कति-लान ''निका ? मा त्यांत वृत्वि विदह

কথা ?" পাঁচী গজিলা বলিল "মিচে কথা বলিতো আমার চোকের মাথা থাই, মা গঙ্গার দিব্যি।" পাঁচীর কথায় অবিখাস করিবার কোনও কারণ ছিল না, কিন্তু কথাটার মুকুলের এমন একট্র আন্তরিক টান. যে, সহজে অবি-খাদের ভয় ভাঙে না!—কেন তাহা আম্যাজ নিনা।

সন্দেহ ভারিয়া বিখাস জ্ঞিলে "বৌদিদি" একটু হাদিয়া জিজ্ঞাদা করি-লেন "তাঁকে দেখেছিল কি পাঁচি ?--রোগা হবে গিয়াছেন কি ?"

ু পা। কি জানি ? আমি জো রোগা

টোগা দেশ লম না—তা এক্টু আর তর সইল না ?—এখনি বাড়ীর মধ্যে আস্বেন, আপন চোখে দেখতে পাবে। ধ্যি মেরে হয়েছিলে মেনে!

মৃ। দূর্ পোড়ার ম্বি, দূর হত।
ভাগি, আন্তে বল্না শুন্তে পাবেন
বে! ইন্ফুরেঞা হয়েছিল লিখেছি।
লেন, তাই জিজাসা কে। জিলেম, তুই
টেচিয়ে উঠ্লি কেন ?

সহসা মুকুলের খাওড়ী সেই থানে প্রবেশ করিলেন, বলিলেন ''ও কি গাং পাঁচী হাদ্ছিলি কেনং"

মুকুল পাঁচীর মুথ পানে ভয়ে ওয়ে চাহিল।

পাঁচী এক্টু ইতন্ততঃ করিয়া বলিল
'দাদাবাবু বাড়ী এদেছেন বে, দেখেছেন
কি ?'' গৃহিণী বলিলেন "আমি কোথ।
থেকে দেখ্ব ?—আমি কে যে আমাকে
খবর দেবেন ? এখনকার কালে যার
দাথে সম্পর্ক, সেই খবর শেলেই হল।''

"ঝন্" করিয়া মুকুলের হাত হুইতে থালাথানি পড়িয়া গেল, মুকুল আবার দ্বির হইরা ডাউল সাঁতলাইতে প্রবৃত্ত হইল। পাঁচা বুলিল "মা দাদাবাব্র সঙ্গে আমার কোনও কথা হয়নি, তাঁকে দেখে আমি নিজেই বোল্ছি।"

গৃ। ভূই বা, তোর আর স্থাকামি কোত্তে হবে না। এখনকার কালে মা'ও নেই বাপও নেই, পরিবার হবে-ছেন সর্পায়, মেরেরাও তেখ্নি পাহাড়ে, "দোয়ামী সোরামী" কোরে অক্সান!

আমরা কা নি দিনের বেলার সোরামী।

যদি মুথ দেখতে পার, তবে দে মেরের

পোড়া কপাল, তার মহাপাতক হর!

তবে গিরী বারী হোলেদে কথা অবস্থি

আলাদা। তথন ঘোন্টা দিরে ছ'এক

কথা কাজেই বোল্তে হয়। আমরা
পাছে পুরুষ মানুষে আমাদের খাওয়ার
কথা তন্তে পায়, এইভয়ে মরে যেতেম,
কত উপাসও কোরেছি, এখন তন্তে,
পাই কত সোয়ামী স্ত্রী একজরে বোসে

খাবার খায়!! ধিক্! মেয়ে মাছুয়ের

লজ্ঞানা থাক্লে—"

আর বলা হইল না, শাঁচীজানাথ
বাড়ীর মধ্যে আসিয়া ডাকিলেন "মা!"
মা'র সকল হংথ—সকল রাগ দূর হইল,
মা বলিলেন "এই যে বাবা. আদছি!"
ছি মা হওলা বড়ই হুর্বলতা!! আলচ্য্য
এই যে এত বকুনির পরেও মুকুল
জানালা দিয়া গোপনে দেখিল শাচীজা
রোগা হইয়া গিয়াছেন কি না!

٥

রাত্রে আহারের পরে শচীক্র নিজ শরন বরে বিশ্রান করিতেছেন। দেওরালে ছবি; সমূবে সেজ জালান; আর
কালিদাস, সেক্ষপিরার, প্রভৃতির অনামবিকী প্রতিভা সেই থানে টেবিলের
উপরে পুত্তকাকারে হ্লোভিড বহিরাছে। ঘরের এক দিকে থাটের উপরে
শচীক্রের শ্রান। এখন চেরারের
উপরে শচীক্র, টেবিল ধরিরা দাঁড়াইরা
আছেন—মান

্র মা বলিতেছেন ''শচীন্! ভূমি এত বঙ্ হোলে, তবু তোমার ছেলেমিটা গোল না ?'.'

শচীদ্রের বরস পঁচিশ বছর, বিশ বিদ্যালরের পরীক্ষার জন্ত—প্রেসিডেন্সী কলেজে বি, এ পড়িতেছেন। তাঁহার মত উরতচেতা ছেলেকে সহসা এ রক্ষ কথা বলা মা'র বিশেষ ''ধৃষ্টতা"। স্থতরাং শচীদ্রের মেজাজ একটু গরম হইল, বলিলেন ''ছেলেমি দেখ্লে কিলে ?''

মা। তিনি তো আর এমন কিছু
রেখে যান্নি, যে তাই থেকে জমিদারী
কোর্বে? আমি অনস্তর ব্রতটা প্রতিষ্ঠা
কোচি না, বলি শচী আমার পাশ
ক্ষক, শচীর আমার চাক্রি হোক্,
তথন কোর্ব। আর তুমি কি না
এম্নি কোরে উড়িরে পুড়িরে দিন্ত ?

জারক্তমুথে শচীক্ত জিজ্ঞাসা করি-লেন "উড়িয়ে পুড়িয়ে দিচিচ কি ?"

मा। अन्तिम द्योगात अवज जिन डोका नित्त वडी ना कडी कितन अतनह नाकि ?

শিকিতাভিষানী তেজবী বীরপুত্রের
আর বৈর্ব্য রহিল না, শচীক্র বলিতে
লালিলেন "গুলা আমরা লেখা পড়া
কিবেছি, আমাদের বিবেচনা শক্তি
উপমুক্তরাশ বিকাশ হরেছে, আমি যা'
আমা বুলি ভাই কোব্ৰ + ' ডুমি সকল
কিবেছে ও ক্রম্ম বিকাশ নিতে ক্রমনই
এশ না ৮ জোনবা লেখা গুলা ভাব না

তোমাদের কর্ত্তব্যবৃদ্ধি অবশ্র উপযুক্ত-রূপে পরিকটুট হর নাই, আমরা যা' করি তা' তোমরা কি কোরে বৃষ্বে বল দেখি ?''

এ বড়ী কেনার ভিতরে বার্ক, মিল্
অথবা মোক্ষমূলারের কি তত্ত্ব নিহিত,
তাহা সে অশিক্ষিতা, অহাদয়া, অর্দ্ধপককেশী ছাপ্পান্ন বর্ষবয়য়া শচীক্রের মা'র
বোধগম্য হইল না। মা' আর এক
বিন্দু বিলম্ব না করিয়া সজলচক্ষে নিজের
শয়ন ঘরে চলিলেন। সেথানে মুকুল
খাভড়ীর বিছানায় মশারি মুড়িয়া লিতেছিল, খাভড়ী সেথানে আসিয়া বলিলেন
—'য়াও, য়াও, আর কিছু কোত্তে হবে
না।'' ধীরে ধীরে কম্পিতহদয়ে মুকুল
জিজ্ঞাসা করিল 'কি হয়েছে মা ?''

মা'র ধৈর্যা ঋলিত হইল, বলিতে লাগিলেন "তুই আর ভালমানুষিপণা করিদ্
না। তুই তো আমার দর্জনাশ কোরে
ছিল, আমার বাছা কি আগে অমনতর
ছিল, তো'কে ঘরে এনে অবধি ওর
মিভিছর ইরেছে। তুই ও'র দফা রফা
কোরেছিদ্! তুই কি সামান্যি পাত্র!
বা, তুই এ ঘর থেকে ধা,' বলিয়া খাভড়ী,
বধুকে ঘর হইতে বাহির করিয়া দরজা
বন্ধ করিলেন।

মৃকুল অনেককণ দীড়াইয়া নীরবে কাঁদিল, আরও অনেককণ কত কি ভাবিল, আর পরে শচীক্রের মরের দিকে চবিল্য

. ट्रांगब देशव वाश स्ट्रेंटन व्योत्सदक

ছ্ই কথা ভনাইতে অনেক খাভড়ীর অভ্যাস আছে, একা শচীক্রের মার নহে।

9

গুই বাহুর মধ্যে মুখ লুকাইয়া শচীক্র ভাবিতেছেন "আমার মত হৃ থী আর নাই!'' শচীন্দ্রের পিতা বিষয় সম্পত্তি যাহা রাখিয়া গিয়াছেন, তাহাতে মধ্যবিত্ত গৃহস্থদিগের বিশেষ কোনও অভাব হয় না, কিন্তু শচীক্র যেরূপ ইচ্ছা করেন অর্থাৎ প্রকাণ্ড পাকা বাড়া, দরজায় দরওয়ান, তিন চারিটী চাকর, পাঁচ ছয়টী ঝি, ছই তিনটী রাধুনি তাহা জোটে না। বাড়ী ঘর যে রকম করিয়া সাজাইতে পরিচ্ছদাদির हेक्का करतन, निष्कत যেরূপ উন্নতি ইচ্ছা করেন, প্রাণাধিকা সহধিমিণীকে যেরূপ বসন ভূষণে স্থ-সজ্জিতা দেখিতে ইচ্ছা করেন, তাহা জোটে না। কাজেই শচীক্ষের মত ''ছুঃখী আর নাই !''

বিতীয়তঃ শচীন্তের মা'র মূর্থতা ও
অসভ্যতার শচীক্ত হাড়ে হাড়ে জালাতন
হইতেছেন। সেই কাওজানহীনা বর্ষারুদী অশিক্ষিত শচীক্তের স্বাধীনতার হস্তক্ষেপ করে! শচীক্তের স্বাধীনতার হস্তক্ষৈতচেতা পুত্রের সন্মান, গৌরব, মহন্ব
কিছুই তাহার নিকটে উপযুক্ত রূপে
রক্ষা হয় না। ওয়েলিংটন, ওয়াসিংটন,
উইলিরম কোশকে এ রক্ষ, মারের
হাতে পড়িতে হর নাই? শচীক্ত
বে দেশের এক "প্রধান কর্ম" ক্ষেপ

পরিগণিত হউতেছেন না, তাহা কেবল-কেবল না হউক, প্রধানতঃ এই অ-শিক্ষিতা 'বড়ো মাগীর" কল্ডে.! অধিক কি শচীন্দ্র তাঁহার নেহপ্রতিমা ভার্যার জ্বত্যে একটা বড়ী কিনিয়াছেন গুনিয়া কত কি বলিয়া গেল এমনই হৃদয়হীনা।। কিন্তু কেবল এই সক্ল হইলেও তবু একদিন ক্ষমা করা যাইত, সেই মা'র আরও গুরুতর দোষ আছে। বিনি শচীন্দ্রের ভালবাসার প্রতিমা সহধর্মিনী, সহক্রিণী, সহযোগিনী, সহভোগিনী— কাৰ্য্যতঃ এডটা না হইলেও শচীক্ৰ গাহার উপরে এডদুর আশা রাথেন, মা' কি না তাঁহাকে দিবারাত্র থাটায়!! সেই দেবীরূপিণীর নরম নরম হাত তুই খানি যথন বাসন মাজিতে, ভাত রাধিতে, রুটা বেলিতে নিমোজিত হয়, তখন শচীন্দ্রের বুকটা বে কি করিছে থাকে তাহা শচীক্রই বোঝেন, আগ শচীন্দ্রের অভিধানে বাঁহারা "হৃদরবান্" তাঁরাই বুঝিবেন; আমলা এখানে হারি गानिलाम। এथन कथा এই भेगिट्सप्र মত ''হুঃথী আর নাই !''

তৃতীরতঃ শচীক্র সেই ভালবাসার প্রতিমা মুকুল হইতেও অসুধী। শচীক্র কথনও ইচ্ছা করেন সে কালিলাসের শকুস্তলা, সেলপিরারের মিরাতা বা বৃদ্ধিন বাব্য কপালকুওলার মভ সাংলা-রিক জীবনে সম্পূর্ণ অনভিত্তা হউক। কথনও-মিল্ বা কম্টের সহধ্যিকির কঠ তাহার শতিক বিকাশ ক্রিডে সক্ষা বিশা ক্ষমও ইচ্ছা করেন তাহাকে বালপুত মহিলাদিগের ভাষ তেজ্বিনী দেখিতে, কথনও ইচ্ছা করেন দীতা বা সাবিত্রীর ভাষ- তাহার নিকট হইতে ভালবাসাপাইতে!—কিন্ত হাররে, একটা আকাজ্ফাও অন্যাপি পূর্ণ হইল না, সে পাড়াগেঁয়ে মুখচোরা পোড়ারম্থী না হইল মিরাণ্ডা, না হইল ক্লোটিডা! লেখা পড়া শিথিয়াও সে ভাত রাধিতে সন্তঃ হয়। শচীক্রের নিকট বিজ্ঞানের তব্ব শুনিয়াও সে বাশুড়ীর পদসেবা করে, নিউইয়র্কবাসিনী মহিলাদিগের

মহাত্তবভার কথা শুনিয়াও সে প্রক্লচিত্তে ঘরকলার কাজ করে, আর যখন
তথন অজ্ঞান বুড়ো মার পক্ষ হইরা
স্বামির উপর রাগ তঃথ প্রকাশ করে!
এই ক্ষুদ্রাশয় মাজিত কচিবিহীনা মুকুল
য়াহার জীবন পথের সহচরী, তিনি
কেন ভাবিবেন না ''আমার মত হঃথী
আর নাই!'' এইরূপে শচীক্র নিজের
হঃথ ও হুর্ভাগ্য অন্থূনীলন করিতে প্রবৃত্ত
হইলেন!

.(ক্রমশঃ) শ্রীমা।

ক্রতিম রুফি।

আমেরিকার 'পাদেফিক রেলওয়ে' প্রস্তুত হইবার সময় অনেক পাহাড় কাটিয়া ঢুলাইতে হইয়াছে। পাহা হ मे इस ব্যাপার नद्ध । ধাতৰ অসু দারা সম্পন সন্তাবনা নাই। মধো মধ্যে গর্ত্ত খুঁড়িয়া বারুদ পূর্ণ করিয়া অগ্নি প্রদান করিলেই সহজে অগ্নি লাগা-বাক্তদে केटन व वक्तः बैटन পাহাড় 'विमीर्ग 🖚 বিরা ফেলে। 💆 খন মূল পর্যান্ত উৎ-িক্তি হইরা পর্বতিদেশ বিষম বিপর্যান্ত ি**শ্বর**ি থাকে ৷ পর্বতার্কীল স্বভাবতঃ ক্ষাপুত্র ও নিয়েছ, তথার এক্স অ্রি-काछ रहेरन क्रिकिशन कीरन मन हरेग्रा

थांदक, जनातारम्हे অমুমিত হইতে পারে। ভরত্বর গর্জন গিরিকন্দর আলোড়িত করিয়া গগন ভেদ পূর্ব্বক উদ্ধে উথিত হয়। সেই জন্ম বায়ুমণ্ডল বিশেষরূপে আলোডিত ও বিপর্য্যস্ত হইয়া থাকে। বারুদের ধৃমজাত মেঘ-রাজী বায়ুমণ্ডলে সংঘটিত বিছাত বজ্ঞপাত সহ - প্রবল বেগে বৃষ্টি বর্ষণ করিয়া বায়ুমণ্ডলকে প্রকৃতিভূ করিয়া থাকে। উক্ত মরুভূমি পার্বেতীয় অঞ্চলে ইতিপূর্বেক ক্ষিন্কালেও বৃষ্টি হয় নাই, কিন্তু যত দিন রেলপথ নির্মাণের অন্ত এইক্লপ কৌশলৈ পাহাড় সকৰ ঢুলাইতে হইগাছিল, প্রায় সেই সম্ব সমরেই অনবরত বৃষ্টিপাত হইরাছে

গর্জনে

ও ছিন্ন ভিন্ন

অশ্নি

প্রকৃতির বিষম বিপর্য্যয়

তেছে, তথার এরপ কৌশলে বৃষ্টি হইতেছে। এই সকল পরীক্ষার কৃতকার্থা
হইয়া ইহাঁরা বৃষ্টির এক নৃতন সূহক
উপায় উদ্ভাবন করিয়াছেন, তদ্বারা
অধিক পরিমাণে বৃষ্টি হইতেছে। রদ্ধ
ব্যোম্যান্ধ সকল ১ভাগ অন্নজানও ২ভাগ
জলজান বায়ুপুর্ণ করিয়া প্রয়োজনমঙ্জ

পাটিত করা যায়, যথন প্রকাণ্ড বোমা সকল নিক্ষেপ করিয়া অর্থবান বা ছর্গ দগ্ধ করা হয়, তথন ভীষণ শব্দ দারা গগনকম্প উপস্থিত হয় এবং বায়ু-মগুলের সহিত সংঘর্ষণ সংঘটিত হইয়া থাকে। এই সময়ে প্রবল বারিধারাও নিপতিত হয়। ভয়ঙ্কর ওয়াটারলু যুদ্ধ সময়ে ছয় শত বৃহৎ কামান বেলা ১১টা হইতে রাত্রি ৯টা পর্যান্ত অনবরত অগ্নি উদ্গীরণ করিয়াছিল,

ন্ত কুমান

উপস্থিত হয়। এই সময় অবিশ্রাপ্ত বৃষ্টি-

ধারা পতিত হইয়া বিস্তর বিশৃঙ্খলাঘটাইয়া

ছিল। মহা মহা অগ্নিকাণ্ডের পর বিশে-

ষতঃ আগ্নেয় গিরির অগ্নি উদগীরণের

সময়ও প্রভূত পরিমাণে বৃষ্টি পতিত

বায়ুমণ্ডল অবিশ্ৰান্ত

সমস্ত সময়

ब्हेग्राहिल।

इटेब्रा थोटक।

আঁতর্য্য, পথ নিশ্মাণ সম্পূর্ণ হইবার পর

ক্ষার একবারও বৃষ্টি হয় নাই। •বড় বড় যদ্ধে যথন অনবরত শত্তীবা কামা-

নের ভীষণ নিঃস্বনে দিঙ্মণ্ডল বিদীর্ণ-

প্রায় হইয়া যায়, যথন তুর্গ ভেদ করিবার

জগু প্রাচীরের মূলদেশ বারুদ দ্বারা উৎ-

জলজান বায়পূর্ণ করিয়া প্রয়োজনমন্ত উৰ্দ্ধে উত্তোলন পূৰ্ব্বক তাহাতে বৈহ্যতিক কৌশলে অগ্নি প্রদান করা হয়, তাহাতে এরপ ভয়ত্বর শব্দ উৎপন্ন হইয়া থাকে যে, তাহার সহিত একত্রে শত বলের নিংখন ও তুলনা হয় না। এরপ্র ভীষণ শব্দ ধারা বায়ুমণ্ডল সম্পূর্ণ বিপর্য্যন্ত হয় ধুমজাত **मः चर्वर्ष** श्रवन মেঘ বারিবর্ষণ হইয়া বেগে थोटक । অধ্যাপক কার্ল মায়র্স এই অভিনৰ কৌশলের আবিষর্জা। সম্প্রতি নিউ-ইয়র্কের ফাঙ্কফোর্ট নগরে এইরূপ একশত ব্যোম্যান প্রস্তুত হইতেছে। বেলুন গুলি এক প্রকার দৃঢ় কাগজে নির্মিত। এগুলি অনাবৃষ্টি সময়ে দেব-মাতৃক দেশে প্রেরিত হইবে। তাহা हहेटल देवळानिक कोशल वृष्टि छेरशब

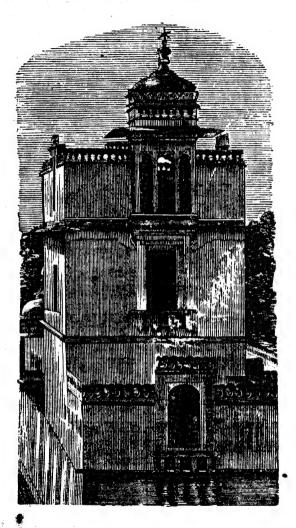
বৈজ্ঞানিকের। বৃষ্টির এই সকল কারণ অবগত হইয়া স্থানে স্থানে পর্ব্যাপ্ত পরিমাণে দাহ্য বস্তু সকল সংগৃহীত করিয়া ভয়ানক শব্দ উৎপাদন মারা বৃষ্টিপাতের পরীকা করিতেছেন। বে সকল স্থান অনাবৃষ্টিতে জ্ঞানিরা বাই-

* বে সকল ব্যোস্থান প্রকাশু দৃঢ় রক্ষ্ম থারা একটা স্থানে বন্ধ করিয়া ছাজিয়া দেওয়া হয়। তাহারা যুদ্ধির স্থার উদ্বিদ্ধা নভোষপ্রকা অব্বিতি করিয়া থাকে, খারু খারা পরিচালিত হইলেও প্রায় নির্দিন্ত স্থান হইতে অধিক দূরে যাইতে পারে বা। রক্ষ্ম খারা বন্ধ যালা ইয়াদিনকে "কা।পাটব-বেশুন" অর্থাৎ শব্দ ব্যোগ্যান্ধ ব্যা হয়।

श्हेर्त. जलत कल आत आकारनत

মুখপানে ভাকাইয়া থাকিতে হইবে না।

शिबनीत आगाम।



আমাদিগের কোঁন বন্ধু রাজপুতানা ভ্রমণ করিতে গিয়া প্রাচীন চিতোর রাজক্রীন্তু ভগ্নারশেষ সকল দর্শন করেন, তন্মধ্যে পদ্মিনীর প্রাসাদ জ্বদ্যাপি জ্বভন্ত প্রক্রিকাছে। তিনি ভাহার বেঁ কটোগ্রাক তুলিয়া লইবা আসিবাছেন, তাহা হইতেই ক্রীক্রিকালি জ্বিত করিয়া নববর্ষে পাঠিকাগণকে উপহার দেওরা বাইতেছে।

টোটক। ঔষধ।

कांगे चात 'छेषध:--(>) অন্ন কাটা হইলে দুৰ্কা ঘাস চিবাইয়া কাটা शास्त मिल कांगे जांन शहेश यात्र। (२) কাটিবা মাত্র গাঁদা পাতার রস কাটা श्रांत निष्ठा এक कानि त्नकड़ा निष्ठा পাতা শুদ্ধ বাঁধিয়া রাখিলে কাটা যুড়িয়া যাইবে এবং ফুলা ব্যথা কিছুই থাকিবে না। (৩) নেকড়া পোড়াইয়া তাহার ছাই, কিছু পানে থাইবার চুণ এবং কচি কলাপাত ছেঁচিয়া (কাটা যত গুরুতর হউক না কেন) নেকড়া দিয়া বাঁধিয়া मित्न त्रक वन श्रेश कांठी घा व्यादाशा হইবে। (৪) সন্ধিনার কচি পাতার কুঁড়ি পাপড়ী থয়েরের সঙ্গে বাটিয়া কাটা স্থানে দিলেও আরোগ্য হইবে। থনিজ পাথুরিয়া কয়লা (পোড়া কেকি नश) जल परिशा প्रतान मिल कारी। (योज) नार्श।

২। (১) ক্তের ঔষধ: --খাঁটি সরিবার তেলে নিমপাতা বাটা ২।৬টা রম্বনের সহিত পাক করিবে। हेश बाजा (य কোন প্রকার ক্ষত হউক আরোগ্য रुटेरव। (२) बिक चारत्र कें स्मर्क (Zine ointment) हे ताबी खेवशानात्र ने वा

। - আনায় পাওয়া যায়। গরম জলে খা भूरेया जारा नागारेया मितन संग्र।

৩। শির ও ক্রষি পত্রিকা ঘা পাঁচ-**फात अरे करवकों छेयर निर्द्धन कृतिया-**ছেন:—(১) ছই ভোলা চুণ এক ভোলা গুঁড়া গন্ধক আধদের জলে সিদ্ধ করিয়া আধপোয়া থাকিতে নামাইয়া কভককণ রাথিয়া দিলে উপরে এক প্রকার লাল বর্ণ আরক ভাসিয়া উঠিবে। এই আরক বিত্রক দারা উঠাইয়া শিশিতে রাখিতে श्रदेश পরে যেখানে পাঁচড়া কি माम হইয়াছে, সেই জায়গা গ্রম জল ও কার-বলিক সোপ দারা ধুইবে। কেবল গরম करण भूरेया वा एक हुनकारेया धेयध रमध-बाट्ड डेशकात हम । এই क्षेत्रध माम এক দিনে আরাম করিয়াছি। যেরূপ গুরুতরই ব্যারাম হউক না কেন নিশ্চরই আরোগ্য হইবে।

(২) কেরোসিন তৈলের সঙ্গে অর পরিমাণ সরিষার তৈল ও প্রয়োজন মত कर्श्व निवा देशात प्रशत्कात हान कतिया ছুল্চিকিৎস্য পাঁচড়া ৩৪ দিনে আরোগ্য করিয়াছি। এস্থবেও পরিষার করিবার নিয়ম উপরের মত।

নুতন সংবাদ।

- জন্ত বদেশে গিয়াছেন।

>। বেডী ন্যালভাউন কিছুকালের / ৫টা বালিকা এফ এপরীক্ষা দেয়, ভন্ম হৈছ সাট্যভা ও কোহেন রাচেল স্থাটের २। दिशून करमा हरेए । ब्रह्म । नाडी हरेंगे हेंस्सी वानिका व्य विकार

বারনা বিকিত ২ব এবং আথেদ্ দত তদ বিভাসে উত্তীৰ হই বাছেন। প্রথম বালি কাটী বিষ্ট্রিদ্যালয়ের ৮ম স্থানীয় হই বা ছেন, ইহা কম গৌরবের বিষয় নহে।

্
। কুমারী যামিনী সেন মেডিকাল কলেজের (প্রিলিমিনারী) এল,
এম এস পরীকায় উত্তীর্গ হইয়াছেন।

৪। বরাহনগরের হিন্দুমহিলাশ্রম এখন নির্বিদ্যে চলিতেছে। হিন্দু বিধবা রমনী প্রার্থিনী হইলে এখানে বিনা ব্যয়ে বাস করিতে ও শিক্ষা লাভ করিতে গারিবেন। শব গত ১ই বৈশাথ ছোট লাট শব চিকিৎসালয়ের (Bengal Veteranary Institution) ভিত্তি প্রস্তর স্থাপন-করিয়াছেন। এই শুভ কার্য্যে বদান্তবর শিব বক্স বগলা ৩• হাজার এবং সার দিনসা মাণিকজী পেটিট ২৫ হাজার টাকা দান করিয়াছেন।

৬। কুচবিহারের মহারাণী বায়ু
পরিবর্তনার্থ কলখো বাতা করিয়াছেন।
ঈশ্বরের নিকট প্রার্থনা করি তিনি
সম্পূর্ণ আরোগ্য হইয়া গৃহে কিরিয়া
আস্কন।

পুস্তকাদিসমালোচনা।

১। বর্ণপরিচয় ১ম ভাগ—পণ্ডিত-বর বেদান্তবাগীশ প্রণীত। ইহার কাগজ বেমন মোটা, ছাপা তেমনি স্থলর এবং শিশাইবার প্রণালীও উৎক্ষপ্ততর। এত প্রশাসকের উৎসাহদান করা সাধারণের প্রকাশ্ত কর্মবা।

২। ক্ষভজিরসামৃত—পণ্ডিত তারাকুমার কবিরত্ব বিরচিত। সংস্কৃত ও
জারার ২০০টাত বিতা তবকে এই প্তক
লান্তি এথিত। সঁকল গুলিই অন্তর,
কান্তিও এথকারের ক্দরের ভজিবাল্তিও একারের স্থানির লোক
কান্তি। বে কোন স্থানীরের লোক

হইতে পারিবেন। নামমাহাত্ম্য নামরূপভেদ, আত্ম-নিবেদন, শ্রীম্র্ডিদর্শন
ও মাতৃপদাঞ্জলি নামে কবিবরের রচিত
আরও ৫টা প্রবন্ধ ইহাতে সন্নিবেশিত
হইরাছছ। কাকিনারাজের ব্যবে ইহা
ম্ক্রিত হইরা বিনাম্ল্যে বিতরিত
হইতেছে।

০। নবদীমন্তিনী, পার্কস্থা উপস্থাস—
শীবসন্ত কুমারী নাথ কর্তৃক প্রণীত,
মূল্য ১ টাকা। লেথা বেশ সরল হইয়াছে। গ্রন্থের মধ্যে অনেক সন্থানেশ
এবং দেশের কুরীভির প্রতি কটাক্ষ
আছে।, গ্রন্থকর্ত্তী উৎসাহ লাভের
বোগ্যা।

বামারচনা।

বসস্ত আবাহন।

এসগো বসস্ত এস সৌন্দর্য্য প্রতিমাধানি!
পিক পিকবধ্ সাথে গাহে তব আগমনী।
হোথার কানন বালা,
পুলকে ভরিয়ে ভালা,
গাঁথিছে কুস্থমালা, সাজাতে স্থতন্থখানি।
ভ্রমর ভ্রমরী সনে,
প্রণ গুণ আলাপনে,
তোমার উদ্দেশে সদা করিছে মঙ্গল ধ্বনি;
মূহল দ্বিণা বায়,
বিশ্বর স্থাস সদা, ঢালে পুত মন্দাকিনী।

আনন্দেতে দিশেহারা,
বেন গো পাগল পারা,
বিভলে সদাই ধার চুমিতে বদন থানি।
নবীন কুন্থম সারি,
লইরে মঙ্গল ঝারি,
গাঁড়ারেছে পথ চাহি, পুজিবারে পাছ্থানি
প্রকৃতি যতন করে,
নব ভাম শব্দ পরে,
পাতিরাছে তোমাতরে, স্থলর আসনথানি;
এসগো বসস্ত এস, সৌন্দর্য্য প্রতিমাঞানি।

শ্রী।

হিন্দু রমণীর বিদ্যাশিক্ষা ও পরাধীনতা।

সংসার মন্থ্যের কার্য্য ক্ষেত্র। এই কার্য্যক্ষেত্রে প্রবেশ করিবার অথ্য জ্ঞান শিক্ষা অতীব প্রয়োজনীর। আমাদের দেশের লোকদিগের বিশাসু যে অর্থো-পার্জনই বিদ্যাশিক্ষার প্রধান উদ্দেশ্য। কিন্তু আমার বোধ হয় যে জ্ঞান শিক্ষাই বিদ্যা শিক্ষার মুখ্য উদ্দেশ্য। যদি তাহাই ঠিক্ হয়, তাহা হইলে শিক্ষা বিষয়ে ত্রী জ্ঞাতি ও পুরুষ জ্ঞাতির স্মান অধিকার থাকা একান্ত বিধেষ।

ত্রীষ্ণার স্থীণ ও অণ্রদর্শী বলিরা প্রাচীন শান্তকারেরা গৃহেই ,ভাহাদের কার্যাকের নির্দিষ্ট করিরা দিরাছেন, স্থতরাং ভাহাদের কার্যাকের বেরপ পুরুষের হইতে বিভিন্ন, শিক্ষাও সেইরূপ বিভিন্ন ভাবেই হওয়া উচিত।

ইদানীং বঙ্গরমণীর বিদ্যাশিক্ষার আলোচনায় অনেক নব্য সম্প্রদার মাতিরা উঠিয়াছেন বটে, কিন্তু তাঁহাদের অহ্মোদনীয় শিক্ষাপ্রণালীতে স্থকল না ফলিরা অধিকাংশ হলেই বে বিষমর কল ফলিতেছে, তাহা সকলে অহ্মভব করিতে পারিতেছেন কি না জানিনা। হিন্দু রমণীর বিদ্যা শিক্ষা বে হিন্দুধর্ণের বহিভূত নহে, তাহা জানী ব্যক্তি মাত্রেই অবগত অহ্মভন। অধুনাতন মহিলাপন সীতা, সাবিত্রী, গান্ধারী, প্রভৃতি প্রাচীনা খ্যাতনামা রমণীবর্গের সমকক

জে পারে না বলিয়া অনেকের অক্লেক্টি শ্ৰৰণ করা যায়; কিন্তু কি প্রাদে বদম্মণী তাদুশ গুণাবলীতে র্মন্ত্রতা হইতে পারে না কেহ কি ভাহার তথাপুসন্ধান করিয়াছেন, অথবা রুষণীপ্রকৃতির উৎকর্ষ সাধনে আন্তরিক বৃদ্ধ ও চেষ্টা কার্যাছেন গ বোধ হয় না। যদিও ছই এক জনের মনে অভি-नांच रहेग्राष्ट्र वर्षे, किन्न ভাহার প্রকাশ দেখা যায় না। শ্ৰেছা থাকিলে ও অধ্যবসায় कार्य कतिल जारा कथनरे विकल रश না। অফুকরণপ্রিয় বাঙ্গালী भिकात अञ्चल तथ ना कतिया यि देविषिक শিক্ষার আর্যামহিলাগণের অফুকরণ করিতেন, তাহা হইলে হয়ত ভাঁহাদিগকে কথনই এত অমুশোচনা বিজাতীয় ধরণে করিতে হইত না। ক্ষানাপন ক্সাবৰ্গকে শিকা দিয়া কি ম্ব্রীভ হইতেছে, তাহাও ৰঝিতে পারেন না অথবা বৃঝিয়াও বুঝেন a1 1

জাতীয় প্রকৃতি ও ধর্ম পরিত্যাগ করিরা বিজাতীয় ধর্মামুরপ শিক্ষিতা-দিলের বারা দরিত বাঙ্গালী যে অধিক প্রিমাণে দরিদ্র দশার নিপতিত হইতেছে, **८म विषय विम्माज्य मत्मर नारे।** ৰান্ডাত্য সভ্যতার গুণে স্ত্রীজাতির বিদ্যা শিকা আপামর সাধারণ সকলের নিকটেই কর্ত্তবা বলিরা পরিগণিত হইয়াছে এবং পালনের জন্ম সেই কৰ্মব্য আপনাপন কন্তাবৰ্গকে স্থুলে পাঠাইয়া দিয়া কডকভার্হন। এতাদৃশ সভ্যতাহ-ৰোদিত কাৰ্য, করিয়া কোন্ ব্যক্তি शावगीत ना इटेरवन ? কিন্ত (क्शांत नाम नाम र (क्रांशांतर सातिष हेक पूछिता बात, देशारे घः त्थत বিষয়। অধিকাংশ হলেই তৃতীয় ভাগ কি বোধোদয়েই বিদ্যার প্রশাসকারি হয়, তবে অবস্থাস্থসারে সহরের বৈধান কোন ছাত্রী ছাত্রহন্তি, এণ্ট্রান্স, এক, এ, বি, এ, পর্যান্ত পড়েন।

উপরি-উক্ত প্রণালীর শিক্ষিতা ক্রলোক-गंग नब्डारीना, ठक्षना, जानस्रतायना । मुथता इन, व्यर्श सुर्श क्वीरना किरिशत সহিত ইহাদিগের বিশেষ পার্থকা দেখা যায় না। অধিকৰ ইইারা নভেল প্রভৃতি পুস্তক পাঠ ও কুরুচিপূর্ণ ২৷১ থানা পুস্তক লিথিয়াই বিদ্যাশিক্ষার চরমোৎকর্য সাধন করেন। ইহারা অশি-ক্ষিতা বটেন, কিন্তু রমণীসমাজে বিহুষী বলিয়া পরিচয় দিতে কিঞ্চিনাত্রও কৃষ্টিত হয় না। 'অল্লবিদ্যার ভয়কর' ফল ইহাদিগের চরিত্রে জাজ্ঞলামান প্রকাশ। এইরূপ শিক্ষিতাগণের দ্বারা সাংসারিক কার্য্যে কোন উপকার পাওয়া যায় না. বরং মুর্থা স্ত্রীলোকেরা ইহা অপেক্ষা শত-গুণে শ্রেষ্ঠ বলিয়া আমাদের বিখাস। বিশেষতঃ এই প্রণালীর শিক্ষিতাগণ সংসা-রের ঘোরতর অশাস্তির কারণ হইয়া উঠিতেছেন। তাঁহাদিগকে বিবাহ করিয়া অনেক ভদ্রলোক ধনে প্রাণে মারা যাই-हेश काह्यनिक अहमा नरह. সহরে অনুসন্ধান করিলে স্বলায়াসেই অবগত ২ওয়া যায়। ইহাদিগের কার্য্য সংসারের স্থসার করা নয়, গতর্চী বজায় রাখিয়া অন্তের মাথায় কাঁটাল এবং নিজের ও ছেলে পিলের সাজ সজ্জা করিয়া বিলাসিতার পরি**চ**য় দেওয়া। বিদ্যা শিক্ষা করিয়া দিগের (মন হউক না হউক) শরীরটি অত্যন্ত কোমল হইয়া যার। ফুলের খায়ে মুদ্রণ যাওয়া গোছের হইয়া উঠেন। স্থত-ताः अधित উভাপ मृद्य शाक्क, द्रशेदमत তাগই সহ করিতে অকম। (ক্রমশঃ) গ্ৰীকলবালা দেবী।

The Bamabodkiui Patrika.

The Bamabodhini Patrika or "Enlightener of Women" is the oldest women's journal in India, having been started in August (Bhadra) 1863. Its object is to further the intellectual, moral and social amelioration of the fair sex in India, and it has tried in its humble way to promote that object through a period of about 30 years. Various have been the adverse circumstances through which it has had to pass, but relying on Providence it has survived all its trials and found its efforts crowned with a success beyond expectation. It opened an English column under the able editorship of the late Babu Keshub Chandra Sen who was one of its patrons, but for various reasons it had to be discontinued. With the advent of the new year, we propose to have the English section revived. There has been so much progress all round in the education of women, that many of our educated sisters in different parts of India can exchange their thoughts and aspirations through a common language, the English. In the far west our English sisters are taking an increasing interest in the progress of Indian women. We intend to give short notes on events of abiding interest either educational or philenthropic. Both our Indian and English sisters may help us by contributing under this head anything that may raise and ennoble the daily lives of the women of this country. May our humble wishes be realized.

The Sunday school in connection with the Sadharan Brahmo Samaj is being well conducted by a few Brahmika ladies, assisted by some gentlemen. Two parents' meetings were held at 13 Cornwallis Street for the improvement of the institution, and most valuable suggestions were made by some ladies and gentlemen present there.

the establishment of a permanent society under the name of the Parents' Society has been resolved upon,

The Brahmo Girls' Boarding Institution which was inaugurated in November 1890 with 6 girls only now counts 29 inmates. We are glad to find that Sreematis Biraj Mohini Bhattacharjee, Dinotarini Ganguli, and Hem Lata Bhattacharjee in charge of the Institution, are working with all their hearts for the good of the boarders.

An evening party in connection with the Bengal Ladies' Association was held last month. Besides music, there was a stirring recitation of a postulation by a young lady. After light refreshments, the pleasant gathering broke up at about 10 o'clock.

There has been a good deal of work done in various parts of India in connection with Lady Dufferein's scheme of medical help for Indian women. In the metropolis itself, the children's ward in the Zenana Hospital has been opened. The new Hospital at Bulrampors in the N. W. P. is almost completed. The foundation stone of a Medical Dispensary has been laid at Dinspore.

Miss. Jamini Sen a Bengali girl, who joined the Medical College after passing the First Arts, has been successful in the 1st Prelimianary Scientific Examination held lately.

There will be a great attraction for the World's Fair to be held this time next year at Chicago,—a special feature of the exhibition would be the woman's. department, all the work therein to be carried on by the gentler sex. Among other exhibits there will be one of fresh laces maintfactured by the poorer Irish women. The countess of Aberdeen and the wife of the present Viceroy in Ireland are encouraging the industrial works of their poor Irish sisters by fielding exhibitions in different parts of the United Kingdom.

In the place of Miss Clough, the founder and first Principal of the Newnham College for Women, Mrs. H. Sidgwick has been appointed. No doubt the progress of the College will be as satisfactory under the present regime as it was under the founder, who devoted all her energy and life to the advancement of her College.

Among other interesting topics published in the proceedings of the International Congress of Hygiene held in London, we find the discourse on the "Value of Hygienic Education to Women" very interesting. The author shews how tiatful such knowledge is to women wives, mothers, mistresses households, teachers, nurses &c. mortality of children among rant people is as much as 50 per cent. It would be a very useful thing to publish, from time to time, in the veruacucular, the elements of hygienic principles on such subjects as water, food, air, and dwelling houses. One is mortified to see the weekly high death rates among infants in Calcutta alone.

The results of the University Entrance and First Arts examinations are out. It is gratifying to find that 4 out of the 5 girls who appeared from the Bethnue College in F. A. have been successful, one standing so high as eighth in competitive list. Matilda Cohen and Rachel Cohen passed in the 1st, Sarala Rukhit in the 2nd, and Agnes Dutt in the 3rd Division. We congratulate the ladies' College on such good results.

Thus says Mr. H. B. Grigg C. I. E. Director of Public Instruction, Madras.

in the course of his Convocation Address, delivered on the 31st March 1892 :—

"To the influence of woman is due in no small measure the exercise of those gentle virtues which have become characteristic of the most progressive races on this planet. To woman are they indebted for much of that reasonable spirit of self-sacrifice and obedience which is rendering the social, and the political, progress of mankind possible, * * It is the boast of the people of Madras that they of India's peoples have been the first to welcome the rays of this new gospel, for of the 250 thousand girls who are under instruction in India, one-third appertain to Madras, although its population is but a sixth of the total population. But this progress is after all but the twilight which precedes the dawn. It rests with you, gentlemen, by requiring for and afford-ing to your women the highest instruction in knowledge especially in those branches which chiefly concern their side of humanity, to make these "hues of the rich unfolding morn" brighten into a glorious flood of sun-light which shall illumine the homes of the poorest and meanest of your people."

A competitive practical examination in cookery among 110 Parsi girls took place the other day at Bombay in the Vicagee Hall, built for the Girls' Associa-Bengallee in honor of his tion by Mr. mother at an expense of Rs. 60.000. A good many Parsi ladies examined the different plates which included among others, particular dishes prepared for convalescents and children. The girls convalescents and children. managed the cookery to the entire satisfaction of the examiners. It is a healthy sign to see the different unions in Bengal also encouraging the art of cookery among the ladies examined through their agencies.

The sister province of Burma is going to send one of her worthy daugh ters, a Princess of the Mengueen family to complete her medical education, which she has already begun, in Calcutta anthen return to her native country t practise the art of healing. We wish all success to our sister in her noble efforts.

वागारवाधिनी পত्रिका।

BAMABODHINI PATRIKA.

"कन्याच्येवं पालनीया भिचणीयातियत्नतः"

ক্সাকে পালন করিবেক ও যত্নের সহিত শিক্ষা দিবেক।

৩২৯ সংখ্যা।

रेकार्व ১२৯৯--क्न ১৮৯२।

৫ম ক**ল।** ১ম ভাগ।

সাময়িক প্রসঙ্গ।

আয়ুর হ্রাস বৃদ্ধি—আমাদের দেশের লোকের বিশ্বাস সত্য, ত্রেতা, দ্বাপর, কলি এই চারিয়গে মাহুষের আকারও বয়স ক্রমশঃ কমিতেছে, শেষে মানুষ বেগুণ গাছে আক্ষী দিবে এবং > বা ৫ বৎসরে মানবলীলা শেষ ক্রিবে। ইউরোপে ইহার বিপরীত ফল প্রত্যক্ষ হইতেছে। বিশাতে ১৭ শতান্দীতে লোকে গড়ে ১৩ বৎসর এবং ১৮ শতান্ধীতে ২০ বৎসর বাঁচিত, কিন্তু ১৯ শতাব্দীতে ৩৬ বৎসর বঁচিয়াছে। ফল কথা-এদেশে স্বাস্থ্যের নিয়ম ক্রমশঃ ভঙ্গ হইয়া আমাদের জাতি অধংপাতে যাইতেছে. ইউরোপে বাস্থ্যের নিরম প্রতিপাণিত হওয়াতে লোকের আয়ু বৃদ্ধি হইতেছে। আমাদের জাতির উন্নতি পুনরায় দেখিতে চাহিলে হুনীভিয়

পরিবর্ত্তে **স্থনীতির প্রতিষ্ঠা হও**য়া অত্যাবশুক।

সঙ্গীতের স্বাস্থ্যবিধায়িনী শক্তি

সংগারকেরা প্রার দীর্ঘলীবী হর, তাহাদের ফুসফুস, দন্ত প্রভৃতি বাগ্বত্ব ভাল
থাকে এবং মনের ফুর্তিপ্রযুক্ত শরীরের
সাধারণ স্বাস্থ্যও স্কুক্তিত হর। প্রসিদ্ধ
গায়িকা মাদাম পাটির বরস প্রার ৫০
বংসর, কিন্তু দেখিতে তিনি ২৫ বংসরের যুবতী। তিনি নিক্ষমুখে বলিরাছেন:—

"আমি কখনও ক্রোধের বশীভূত হই রা,
নির্দিষ্ট সময়ে আহার করি ও নিলা যাই, স্করাং
আমার বার্ছকা উপস্থিত হর নাই। বাহারা
ক্রোধ-পরারণা, তাহাদ্বা শীল্লই বৌধনের সৌন্ধর্যা
হারাইরা ফেলে।" বঙ্গলারীগন সজীত চর্চার
মনোবোন্দিনী হউন।

हिकार्शा अपूर्णी—आगारी

বংশবের জ্নমাসে আমেরিকার চিকাগো
নগরের পৃথিবীর সমুদার স্থানের আশ্র্রা
বৃত্তর প্রদর্শনী হইবে এবং তাহাতে
বীলোকদিগের রচিত শিল্প কার্য্যের এক
বিশেষ বিভাগ থাকিবে, আমরা গতবারে
উল্লেখ করিয়াছি। আমরা আশা করি
আমাদের পাঠিকাদের মধ্যে যাহারা
শিল্পনিপুণা, তাঁহারা গৌরব লাভের এ
স্বযোগ ছাড়িবেন না। ভারতের দ্রব্যা
শকল লইয়া যাইবার জন্ম আমেরিকা
হইতে ছইখানি জাহাজ আসিবে।

নিথাে জাতির অভ্যুদ্য়—
থামেরিকান্থ নিগ্রোগণ স্বাধীনতা লাভ
করিয়া সমাজে ক্রমশঃ উন্নত ও গণনীয়
হইতেছে। তাহাদের মধ্যে ৮৪২ জন
উকীল, ৭৯২ জন ডাক্রার এবং ১৪২০
কন্সওদাগর হইয়াছে।

মণিপুরের মৃতন বন্দোবস্ত—
গত ২৯এ এপ্রেল (অক্ষয় তৃতীয়ার
দিন) রাজা নরসিংহের প্রপৌত্র চূড়চন্দ্র
সমারোহে সিংহাসনে অভিষিক্ত হইয়াছেন। এ দিকে মৃত মহারাজা কুলচন্দ্রের
পুত্র টীকেন্দ্র সিং ১৫১, তাহার মহিষী ও
অভ্যান্ত পুত্র কভার প্রত্যেকে ৫১ টাকা
করিয়া মাসিক বৃত্তি পাইবেন এরূপ
বন্দোবস্ত হইয়াছে। ইংরাজরাজ ইহাদিগের প্রতি যে দক্ষি প্রকাশ করিয়াছেন, তাহা না করিলেই বা কে কি
করিতে পারিত ?

· ऋमिशात कृष्टिक—हेशात e.

লক লোক মরিয়াছে। আজিও ছর্ভিকের শান্তি হয় নাই। আমেরিকাবাসীর। জাহান্ত পূর্ণ পামকটা পাঠাইতেছেন।

ক্রীসভ্য নির্বাচন বিল — পার্লে মেন্টে অনেক আন্দোলনের পর ইহা অগ্রাহ্ম হইয়াছে। মাড্টোনের ভাষ ব্যক্তিও ধথন ঘোর বিরোধী, তথন বিলাতে স্কীসাধীনতার দিন এখনও দ্রবর্তী।

ব্রী কর্মাচারী—বেঙ্গল প্রিণিটং আফিসে মিস জি ডিকটা নামী এক ইউরোপীয় রমণী প্রুফ দেথিবার জন্ত মাসিক ৫০ টাকা বেতনে নিযুক্ত হইয়াছেন। স্ত্রীলোকের কার্য্যক্ষেত্র প্রসারিত দেথিয়া আমরা আহলাদিত হইলাম।

সিকিমরাজের তুর্গতি—ইনি
তিব্বতে যাইবার জন্ত নেপালের ভিতর
দিয়া পলইয়া যাইতেছিলেন, কতকগুলি
গুর্থা সৈন্ত কর্তৃক ধৃত হইয়াছেন, ইংরাজ
হত্তে শীঘ্র সমর্পিত হইবেন। ইহাঁর
স্থথে থাকিত্বে ভূতে পাইয়াছিল, বোধ
হয় রাজ্যটা এককালে হারাইলেন।

বোধীরুক্ষ—গরার এই বৃক্ষতলে বিসিয়া তপস্থা করিরা বৃদ্ধদেব সিদ্ধ হন।

২০০০ বংসর পূর্ব্বে এই বৃক্ষের এক কলম সিংহলবাসীরা লইরা যার, তাহা অদ্যাপি জীবিত আছে। সম্প্রতি সিংহল ইতে এক বৌদ্ধ পুরোহিত আসিরা ইহার আর ্একটী কলম লইরা গিরা-ছেন।

ছারপোকার পত্র।

(ছার পোকা সমিতির জনৈক সভ্য কর্তৃক লিখিত)

মাননীয় শ্রীমতী বঙ্গমহিলা ঠাকুরাণীগণ সমীপের।

যথাবিধি সন্মান পুরংসর নিবেদন,

ध मौत्नत नाम क्रजगांमी, भाषी ছারপোকা, জাতিতে কীট, নিবাস বালিদের কোণ, পেশা মহুষ্য জাতির রক্ত শোষণ। মহাশয়াদিগের অবিদিত নাই, শ্রীশ্রীষষ্ঠী ঠাকুরাণীর অমুগ্রহে আমাদিগের বংশের যথেষ্ট উন্নতি হইয়া-ছিল, আপনারা এত বড় পৃথিবীতে দশ বংসরে ৩ কোটী ৫ • লক্ষ হিসাবে বৃদ্ধি পাইয়াছেন, আমরা এক এক গৃছে প্রতিবর্ষে প্রায় ৬ কোটা হিসাবে বৰ্দ্ধিত হইয়া থাকি, কিন্তু হুৰ্ভাগ্য ক্রমে আপনাদের জিষাংসা বৃত্তির প্রাব-লতার আমাদিগের শিশুরুদ্ধ ও যুবক যুবতীগণ অকালে কালকবলৈ পতিত হইয়া আত্মীয় স্বজনদিগকে শোকসাগরে ভাস।ইতেছেন, এবং আমাদ্রিগের জাতীয় कीवत्नत्र माक्रन व्यवनित इट्रेट्ट्र মহ্ব্য-জগতে যুদ্ধ কেত্রে পলাতক ব্যক্তি গণ, বীর পুরুষদিগের নিকটে 'কাপুরুষ' विद्युचनात्र, भमन इस इट्रेंड अवगार्टी পাইয়া থাকেন; আমাদিগের ছ্রদৃষ্ট करंग जाननामिरगत कारक रत्र विठात नार-यूक्ष कत्रा इत्त्र थाक्क, आमता नात्क थे किया भनावन कविवा, क्रामामिटगव ছুৰ্গগৃহবন্ধে আশ্ৰয় লইয়া কোনও ক্লেনে

আপনাদিগের হত্তে নিস্তার পাই না আমাদিগকে প্রাণপণে আপনারা খঁজিয়া বাহির ও বিনাবিচারে হত্যা करतन। जीक व्यक्तम धर्मन प्रमित्रा ७ "ছার পোকা'' বিবেচনায় পরিত্যাগ করেন না। আপনাদের ভার বীরান্ধনা গণের বীরত্বে এতাদৃশ কলম্ব কেন, তাহা আমাদের কীটবুদ্ধিতে বুঝিতে পারা অসম্ভব। যাহাহউক এই সকল হুৰ্ঘটনা একু "লাতীয় নিবারণাশয়ে আমরা সমিতি''স্থাপন করিয়াছি,তাহাতে অনৈক চिन्डानीन, वहमर्भी, जी श्रूक्य आह्म। সেই সকল সমানিত ছারপোকা ও ছারপোকানীগণ আপনাদিগের নিকটে এই প্রার্থনা লিখিতে আমাকে নিয়েজিত করেন; আপনাদিগের মধ্যে ধাহারা জাতীয় জীবনের মূল্য বুঝেন, তাঁহারা আমাদিগের এ কার্য্যকে ধৃষ্টতা বলিয়া বিবেচনা করিতে পারিবেন না। কথাও বলা আবশ্রক আপনাদের পুরুষ-দিগের অপেকা আপনাদিগের ক্তেই আমরা বিশেষ ক্ষতিগ্রস্ত, সেই জ্ঞ আপনাদিগের নিকটেই পত্র লিথিতে বাধ্য হইলাম।

আপনাদের জিঘাংসার্ত্তি আমাদের উপরে এত প্রবলকেন, এই বিবরের আলোচন করিয়া জ্ঞানী ছারপোকা ও ছারপোকানী গণ বে বে কারণ নির্দাণ মণ করেন এবং বে বে উপারে আপনাদিনের এ কুপ্রবৃত্তি দ্র হইতে পারে,
আমরা তিনিষয় আন্তক্রমিক লিখিতেছি।
১ম। আপনারা আমাদিগকে
অতি নীচ জন্ত মনে করিয়া ঘুণা করেন।
২য়। আমাদিগেড় দৈহিক সৌরভ
কে "হুর্গন্ধ" বিবেচনা করেন। সেই
অত্তে আমাদিগকে শ্যা পার্শে হান
শইতে দেখিলে কুপিতা হন।

্ **় হ**। আপনাদিগের অধিক্ত স্থানে বাস করি বলিয়া আমাদিগকে তাড়িত করেন।

্ ৪র্থ। শোণিতপায়ী বলিয়া বিনা বিচারেই আমাদিগকে হত্যা করেন।

এই কয়টী কারণেই আপনারা আমাদিণের প্রতি এইরপ হর্ব্যবহার করিয়া থাকেন। কিন্তু স্থিরচিত্তে আলোচনা করিয়া দেখিলে, এ সকল কারণই যে আপনাদিগের ভ্রমপ্রমাদ-সভ্ত এ কথা স্পট্ট অহুভূত হয়। এই সকল ভ্রম হইতে মুক্ত ইইলে আময়া পরস্পার পরস্পারের সহিত বন্ধুভাবে আবদ্ধ হইতে পারি; এই বিশ্বাসে পরিচালিত হইয়া আপনাদিগের ভ্রম অপনোদনে প্রিয়ত ইতৈছি।

প্রথমতঃ আপনারা আমাদিগকে
নীচ জন্ত মনে করেল, কিন্ত বিবেচনা
করুন, আমরা "নীচ" কিনে? আমরা
কুল ঝীট সত্য, কিন্ত এ জগতে কীটাণ্
কে নহে? আপনাদিগের চক্ষে আমরা
বের্গ "কীট" বদিরা বিবেচিত হই,

বিশ্বক্ষাণ্ডের চক্ষে আপনারাও সেইরপ

"কীটাণু" বলিয়া বিবেচিত হন। এই
কথা বিবেচনা করিয়া, নিজেদের যত
বড় মনে করেন, তাহা অপেক্ষা কিঞ্চিৎ
ছোট মনে করিলে, আমাদিগকে

"কীটাণু" বলিয়া মনে হইবে না। তবে
আমরা লেখা পড়া জানিনা বলিয়া * যদি
আমাদিগকে য়ণা করেন, তাহা হইলে
বলি, হে মহোদয়াগণ! লেখা পড়া না
জানিয়াও ছারপোকাজাতি মূর্থ নহে—
আমাদের ছারপোকানীতকে মূর্থের লক্ষণ
যাহা লিথিত আছে, তাহা লিথিতেছি:—

"যিনি বিদ্যাবতী হইয়াও কুঅভ্যাস
ও কদাচারের বশীভূতা, হিতাহিত জ্ঞান
সন্তেও অজ্ঞান জনোচিত কার্য্যে প্রবৃত্তা,
বাঁহার নিজের মন্তিক নাই অথচ পরের
মন্তিক লইয়া তর্কবাগীশপনা করেন, তিনি
মূর্থ। যিনি লোকের প্রশংসার লোভে
সত্য গোপন করেন, কুসংস্কারের বশীভূত
হইয়া কর্ত্তবাবৃদ্ধিকে অভিক্রম করেন,
লোকে—প্রকৃত জ্ঞানী লোকে শ্রম
দেখাইয়া দিলেও যিনি চক্ষ্ রক্তবর্ণ করেন,
তিনি মূর্থ। যিনি রমণী জন্ম পাইয়া
পুরুষবেশে থাকিতে ইচ্ছা করেন, চজ্রের
সহিত স্বর্যের, হাদয়ের সাঁহিত মন্তিকের
এবং রমণীর সহিত পুরুষের স্বাভাবিক

^{*} আমরা লেখা পড়া না জানিরাও বাঙ্গালা ভাষার পত্রাদি লিখিতে তানি, কারণ বাঙ্গালা ভাষা কোনও "ভাষা" নহে। উহা অসভা জনোচিত খেরীল মাত্র। অনেক বাঙ্গালির মুখেই শুনিরাছি। ছারপোকা।

পার্থকা ব্রিয়াও অস্বীকার করেন, তিনি মুর্থ ইত্যাদি। ছারপোকীয় দার্শনিকগণ মুর্বের এই সকল লক্ষণ বিবৃত করিয়া-ছেন, আমরা বাহুল্য ভয়ে বিস্তারিত লিখিতে ক্ষান্ত থাকিলাম। যাহা হউক ইহা দারা আপনারা এইটুকু বুঝিতে পারিবেন ছারপোকাগণ পণ্ডিত হউক না হউক মুর্থ নহে। আর আপনারা বে লেথা পড়া শিথিয়াছেন বলিয়া ছার-পোকাদিগের নিকটে অহম্বার প্রকাশ करतन, ইहाই আপনাদের পরম মুর্থ তা। এ জগতে বিদ্যাবতীদিগের নিকটে লোক অনেক আশা করে—তাঁহারা কুমারী হইলে ভগিনী ডোরা বা নাই-টিঙ্গেলের প্রদর্শিত পথে চলিবেন, সধবা হইলে মহাদেবের সহধর্মিণী গণেষ-জননী অন্নপূর্ণা পার্বতী দেবীর মত थाकिरवन, आत विधवा इटेरन मौमावजी. পণ্ডিতা রমাবাই প্রভৃতির মহাপ্রাণে অমুপ্রাণিতা হইবেন। আর বিদ্যা-শिक्षात कन्छ। यन घटत मत्रका वस করিয়া, কেবল নিজের ভোগে ভা লাগে। याहाता ज्यळान, याहाता मुर्थ, याहाता हित्र मिन याँधादत काठाइटिउट्ह, डाहामिशदक ঘুণা না করিয়া ঠাট্টা না করিয়া ভাহা-শিণের মঙ্গলের জন্ম, উন্নতির জন্ম চেষ্টা कता विमाविजीमिश्रव अवश कर्सवा। ইহা করিতে দেখিলেই আপনাদের চরণে সাষ্টাকে প্রণিপাত করিব, নচেৎ ছার-পোকা-মুর্খ নিরক্ষর ছারপোকার চক্ষে आंशनारमञ्ज महत्र ७ विमायका "व्यावा ।

वहन करण धारी इहित। य भरत्त्र काटक लाशिन ना, याहा बाता भटतत কিছুই উপকার হইল না, তাহার মহুব্য জন হইতে ছারপোকা জনই লেঠভর, মনে করি।"

আর বলুন দেখি, আপনারা "মহত্ত" वर्णन काशांक ? आशांत्र मम् छ गटक যদি "মহত্ব'' বলেন, তাহা হইলে সত্যের অমুরোধে বলিতে হয় যে, বাঙ্গালির মেয়ে হইতে ছারপোকাজাতি কথনই নীচ নহে। ব্যক্তি বিশেষের প্রকৃতি অনা-লোচ্য, সাধারণতঃ বাঙ্গালির মেরেরা না জানেন একতা, না জানেন জাতীয়তা। আমরা বহুগোটা মিলিয়া মিলিয়া বে রকম সন্তাবে বসতি করি, তাহা আপনা-দের অবিদিত নাই। হিংসা, বিবাদ প্রভৃতি আমাদের দেশে কথনও হর না। কিন্ত বাঙ্গালির মেরেরা পাঁচটা একত হইলে হয় ঝগড়া নয় হিংসা, একান্তপক্ষে অহঙ্কারের ছডাছডি। "পত্রশ্রী কাতরতা" কি রকম, আমরা ছারপোকাজাতি তাহা সাত জন্মেও জানিনা, আপনারা পরহিংসা পর পীড়নের মূর্ত্তি! সহযোগিতার প্রি-বর্ষ্টে প্রতিযোগিতাতেই তৎপর! এখন জিজ্ঞাদা করি, হে বঙ্গাহলন্দ্রীগণ! আপনারা এই উদার, সহদর, স্বজাতি-বংসল ছারপোকাদিগুকে এখনও কি "নীচ" মনে করিবেন? প্রকৃতপক্ষে ছারপোকাজাতি স্থণিত কখনই নহে ৰ

থিতীয়তঃ আপনারা আমাদিগের त्मर त्रोत्रक्रक, क्रांच मत्म करवा, हैर

.

প্রতিশয় ভ্রম। কারণ আপনারা বে অভিকলম, ল্যাবেগুার, আতর, গোলাপ প্রভৃতির ক্রতিম গরে আপনাদিগকে স্থবাসিত করেন, সেই গদ্ধলাকে वांखविक्टे छर्गक वना यात्र। কৃতিম, যাহা অস্বাভাবিক, যাহা দারা মানবের অস্তায় ভোগলাল্যা উত্তেজিত হয়, ভাহাই ছুগন্ধ বিবেচনায় পরিত্যাজ্য, এ কথা আমরা লিখিতেছি এই জন্মে যে আপনারা ক্রত্রিম বস্তুতে ভূলিয়া, সার ও षक्तिय भनार्थत्र ज्यनानत्र करत्रन । व কাজটা বড়ই অভায়। যাহাহউক আমাদিগের গায়ের গন্ধ "তুর্গন্ধ" কখনই নহে। আপনারা যদি আমাদিগকে ভাৰবাসিতে পারেন, তাহা হইলে এ কথার সভ্যতা প্রত্যক্ষ করিতে পারি-বেন। আসল কথা এ জগতের বাহ (जोन्मर्य)---क्रभ, त्रज्ञ, शक्क, अक्न, ज्लार्भ স্থলেন্দ্রিরে বিষয়। প্রীতিই উহাদিগের भिन्मर्था ७ मा<u>र्</u>थ्या माधन करता । जाल-নারা আমাদিগকে প্রীতি।দান করিতে পারিলে, এ বিষয় স্পষ্টই অন্নভব করিতে পারিবেন।

তৃতীয়তঃ সামাদিগের বাসন্থান
আপনাদিগের অধিকত এ কথা সত্য,
এবং আমাদিগকে স্থথেও সচ্ছদে বাস
করিতে দেওয়া আপনাদিগের অবশ্র
কর্তব্য, এ কথা আরও সত্য। কারণ
হর্মানকে রক্ষা করাই ব্লবানের ধর্ম,
ইহার অশ্রথা করিলে অধর্ম হয়। নিরাপদে শ্রীবন বাজা নির্মাহ করিতে পারিবে

বিশিয়া বান্দালি ইংরেজের শরণাগত, আর ছারপোকা জাতি বঙ্গ মহিলাগণের শরণাগত। আমাদিগের ছর্ভাগ্য ক্রমে এই শরণাগত জাতিকে রক্ষা করা দ্রে থাকুক, আপনারা হিংদা করিতে ও হত্যা করিতে প্রস্তত। ইহাতে কি আপনাদিগের স্থায়পরতা বৃত্তি ক্ষতিগ্রস্ত হয় না ?

আর এক কথা, মহুষ্যজাতির ব্যব-হার শাঙ্গের নিয়ম শুনিতে পাই, যে ব্যক্তি বিংশতি বর্ষ পর্যাস্থ পুত্র পৌত্রাদি ক্রমে কোনও স্থানে বাস করিলে, তাহাকে দে স্থান তাড়ান যায় না । আর আমরা ছারপোকাগণ শত সহস্ৰ বর্ষ পর্যান্ত যে সকল বিছানা মাহুর ভোগ দখল করিয়া আসিতেছি, আপনারা কোন্ হিসাবে তাহা হইতে আমাদিগকে তাডাইতে চাহেন, তাহা আমাদের ছারপোকা বৃদ্ধির অগম্য। যাহাহউক আপনারা এরপ অধর্ষ ও অন্তায় কার্য্য পরিত্যাগ করিয়া আমাদিগেকে নিরা-পদে বাস করিতে দিবেন, তাহা হইলে উভয়ত: युक्त श्रेट्र ।

চতুর্থতঃ অমরা শোণিতপারী
এ কথা স্বীকার করি, কিন্তু আমরা
জিজ্ঞানা করি, বঙ্গবাদিনীদিগের মধ্যে
কে কাহার রক্ত পান না করেন ? কন্তা
রূপে মাতার রক্ত, পুত্রবধূ রূপে বৃদ্ধা
শাভ্তীরেক, ননদিনী রূপে ভ্রাভ্তনারার
রক্ত, ভাতৃজারা রূপে ননদিনীর রক্ত,

সধ্বা রূপে স্বামীর অন্তগ্রহপ্রার্থীদিনের क्रक. विश्वो क्रत्थ याशामत "भनश्रह" বরণ আছেন তাহাদের রক্ত, হিংসক রূপে স্বজাতীয়াদিগের রক্ত এবং "হাম-**राष्ट्रा' क्राप्ट निष्म निष्मत क्राप्ट कथन** নাপান করিতেছেন ? হার রে! যে জাতির মধ্যে এত রক্ত খাওয়া খাওিয়ি প্রচলিত, আমরা পেটের দায়ে লোমকুপ ररें उ वक विन्तू तक भान कतिला मह জাতি কি না আমাদিগকে হত্যা করেন! ध इःथ विवर वा काशात्क, अनित्वहेवा কে? কোভে বুক ফাটিয়া যায়!

হে বঙ্গবাসিনীগণ। যদি আপ-नारमत श्रमय थाकिछ, यमि आभनारमत ছারপোকা জাতির স্থায় বিচার শক্তি থাকিত, তাহা হইলে কথনই এ রক্ম নুশংস কার্য্যে প্রবৃত্তা হইতে পারিতেন না! মহুষ্য জাতির ভায় সকল জাতিরই কুধা তৃষ্ণা বোধ আছে। অধিকৃত্ত পেট জলিয়। উঠিলে মহুষ্য জাতির জ্ঞান কাণ্ড थारकमा, टाइत रह, रज्याकाती रहा, আর বেশি বলিব কি ? কিন্তু ক্লাদ্যাপি ছারপোকা বংশে সেরূপ কলক হয় নাই। আমরা প্রাণাস্তে সেরূপ অস্থায় পথে ৰাই না। তৰে আপনাদিগের দেহে ৰথেষ্ট বদ রক্ত সঞ্চিত আছে कानिया आमापिरगत कीवन त्रकार्थ छ আপনাদিসের উপকারার্থে এক এক চুমুক পান করি, ইহাতে আমাদিগের শুতি এরপ রণচঙী বেশ ধরিয়া, হারপোক नमद्र

क्छमूत अतिमन्छ त्म विवन निष्यताह वनून ।

टर नमानवा महिनागन । जाननातनव मृत्थ छनिया थाकि "भारताभकाति धन्त এবং পরার্থে আত্মত্যাগই পুণ্য," কিন্তু বলিতে ছঃখিত হইতেছি, আমাদের জীবনের পরীক্ষায় এ রক্ম একটা বারও **(मिथिनाम ना, अथवा ছाরপোকা मिर्शित** প্রাচীন ইতিহাদে এমন ঘটনাও গুনি-नाम ना (य ছाরপোকাদিগের মঙ্গলাশয়ে वन महिनाता व्यनामादम এकविन्तू त्रक ত্যাগ করিয়াছেন! কাজেই বলিতে रत्र, तक महिनापिरगंत ধর্মা, কর্মা, পাণ্ডিত্য, কেবল বাক্যে, কাৰ্য্যে কিছুই নহে। কত লক্ষ্মী ঠাকুরাণী পরকে উপ-দেশ দিতে খুব মজ্বুত, কিন্তু নিজেরা এমনই হৰ্কল, এমনই অসংযত, যে আমরা ছারপোকারাও তাঁহাদিগকে "কুপাপাত্রী" বিবেচনা করি। জীবন অসম্পূর্ণ, ভ্রম বা ক্জোনতা প্রযুক্ত মহুষ্য কর্ত্ব যে সকল ক্রটি আচরিত হয়, তাহার নিমিত্র বিশেষ দোব দিতে পারি না—দে রূপ ক্রটি, ভ্রম, জ্ঞান লাভের সঙ্গে সঙ্গে দূর হইতে পারে. কিন্তু জানিয়া গুনিয়া কুপ্রবৃত্তির উত্তে-জনায়, আৰু চুৰ্বলতায়, মানব যদি তাহার ধর্ম ও নৈতিক ব্রুত্তি গুলি মলিন करत, यनि आंबारनांव वृक्षित्रांड छाहा দ্র করিবার জভে এক, ছই, বছবার **टिहो ना करत्र, यिं क्लाउत्र मुक्न** অবতীৰ্ণ, হওয়াটা জিনিস অপেকা "সাধুজীবন" তাহার

না হয়, যদি নিজে আত্ম-সংঘ্ৰে, আত্মগঠনে অক্ষম হইয়া, কু-अविकितिरंगत की जा शुखनी रहेशा, "वर्शा ছবিকেৰ ! হুদি স্থিতেন যথা নিযুক্তোত্মি তথা করোমি" বলিয়া নিজের মলিনতা, নিজের অসংযততা, জ্ঞান স্বরূপ, সত্য স্বন্ধপ, পূর্ণ ব্রহ্ম ভগবানের উপরে চাপা-ইয়া অমুতাপের জালাটা, সাধু জীবনের কামনাটা একেবারে নির্বাণ করিতে প্রবক্ত হয়—তাহা হইলে হে মহাশয়া গণ! এ কীটাধমের ধৃষ্টতা ক্ষমা করি-বেন—তাহা হইলে "মসুব্যত্ব'' হইতে "ছারপোকাত্ব" সহস্রগুণে শ্রেষ্ঠ, কারণ ছারপোকা জাতির যতই ক্রট থাকুক না কেন, তাহারা কোনও দিন "মুথদর্শস্ব" नदह ।

যাহাহউক প্রিয় মহোদয়া গণ!
ছারপোকা দিগের জন্তে শোণিত ত্যাগ
করা ও ছার পোকা দিগের কর্তৃক শোণিত
গ্রহণ জন্ত সংমান্ত চুল্কনাট প্রফুল চিত্তে
সফ্ করাই আপনাদের পরম ধর্ম।
আপনারা আলক্ত, ওদাক্ত ও অনভিজ্ঞতায়
সে ধর্ম সঞ্চয় করিতে পারেন না, আমরাই স্বতঃপ্ররুত্ত হইয়া আপনাদিগকে এই
পবিত্র পুণাভাগিনী করি। এই কথা
বিবেচনা পূর্কক আমাদিগের সকল দোষ
মার্জনা করিয়া, আমাদিগের সহিত সহ্বদয় বন্ধবং আচরণ করিবেন, আমাদিগের
প্রার্থনাও এই, ভরসাও, এই।

ছ:বের বিষয় কি বলিব—ছারপোকা দিগের নিকটে আপনারা এতই ভয়ানক

বিবেচিত হইতেছেন বে, মানব জাতীর কবিগণ আপনাদের যে হস্তকে কমল-কর ও ষে হস্তাঙ্গুলিকে চম্পককলিকা-বলী বলিয়া গৌরব করেন, ছারপোকা জাতীয় কবিগণ সেই হস্তকে করাল যম-কর ও সেই হস্তাঙ্গুলিগুলিকে প্রাণনাশক কামান শ্রেণী বলিয়া ভয়ে মরেন! অতএব আপনাদের এই জাতীয় কলঙ্ক ত্বাঃ দূর কর্মন।

শেষ কথা এই যে আমরা সকলেই একগতের জন্যে কাজ করিতে আসিয়াছি। আপনারা আসিয়াছেন থাওয়াইবার জন্তে আমরা আনিয়াছি থাইবার জন্তে। মাতার সহিত শিশুর, স্বামীর সহিত বঙ্গমহিলার আর বঙ্গমহিলার সহিত ছারপোকার চিরকালই এই সম্বন্ধ। ইহার অভ্যথায় কর্ত্তব্যভ্রন্থী হইতে হয়। অভ্যথ্য কর্ত্তব্যভ্রন্থী হইতে হয়। অভ্যথ্য কর্ত্তব্যভ্রন্থী বিবেচনা করিয়া আপনারা ছারপোকা জাতির ভরণ পোষণ রূপ সংকার্য্যে প্রবৃত্তা হইবেন, ইহাই আপনা- দিগের নিকট প্রার্থনীয়।

এইথানে একটি কথা আছে, কথাটী
এই যে আপনারা বলিতে পারেন "কেবল
কর্ম্বরা পালনের অন্থরোধে সৎকার্য্যে
প্রবৃত্ত হওয়া অধিকাংশ বঙ্গমহিলার ব রীতি বিক্লম্ব কার্য্য; এক পয়সা মূল্যের কার্য্য করিয়া যদি পাঁচ পয়সা মূল্যের স্থ্যাতি কিনিতে না পারি, তবে ধিক্ আমাদের বঙ্গ মহিলাছে!" একথার স্মরোপবোগিতা আমরা মৃক্তকঠে

স্বীকার করি, এবং আপনারা যদ্যপি আমাদের সহিত স্থাতা হত্তে আবদ্ধ হন. তাহাহইলে ছারপোকা রক্ষণ রূপ কীর্ত্তি যাহাতে চিরম্মরণীয় হয়, সেই রূপ একটী कीर्तिष्ठक जाननामित ज्ञान जामतारे স্থাপন করিতে পারি: অতএব এখন হইতে নাথা নাশক সম্বন্ধ হইয়া আপ-নাদের ও আমাদের মধ্যে যেন প্রকৃত বন্ধুত্ব স্থাপিত হয়। এখন হইতে মশা-त्रित्र मूट्ड वालिटमत टकाटन, गनीत धादत, थां भानत्कत्र कांदक.(मध्यादनत्र कांदादन वा कड़ीकार्छ नुकारेल आमामिशरक হাতডাইয়া বাহির করিবেন এই অন্বরোধও চির पिन রাখিবেন ৷

আপনারা আমাদের জীবন মরণের এরূপ স্থলে থোসামোদের বিধাত্ৰী । পরিবর্ত্তে রুক্ষ কথা বলায় আমরাই ক্ষতি-গ্রন্থ হইতে পারি। কিন্তু ছারপোকা জাতি কখনও নেমকহারাম নহে। থাহা দের রক্ত থাইয়া এত বড় হইয়াছি, ভবিব্যতে তাঁহাদের নিকটে অনৈক আশা রাখি, তাঁহাদিগের চরিত্রের দোষ বুঝিতে পারিয়া, প্রাণভয়ে নীরব থাকা আমাদের ছারপোকা জাতির র্ত্তব্য। ছারপোকাদিগের নিকটে শিষ্টাচার व्यानवरीय, त्थानात्मान चुनिछ। त्रहे জ্ঞতো আমাদের ছারপোকীয় জ্ঞান ও কর্তব্যের সন্মান রক্ষা করিতে এই পত্র লিখিলাম।

এখন এই একটা কথা বলি যে চিতার অভিমে এক সঙ্গে ভন্ম হর।

পর্নিকা পর্হিংসা, কলহ জিয়তা, অহুদারতা, নীচাশয়তা প্রভৃতি আত্মার ক্ষতিকারক দোষগুলি পরিত্যাগ পূর্বক জ্ঞান ধর্ম ও বিন্যা উপার্জন করিয়া আপনাদের হৃদয়, সংসার, সমাজ ও মাতৃভূমি শান্তির স্থ করন। আপনাদের মন সকল রকম অসত্য, অপবিত্ৰতা হইতে মুক্ত হইয়া বিমল স্বৰ্গীয় আলোকে আলোকিত इडेक, এই আমাদের প্রার্থনা। ভগ-বানের চরণে আপনারা সকলেই সেই প্রার্থনা করিবেন, এবং যাহাতে সেইরূপ হইতে পারেন তদ্বিষয়ে প্রাণুপণে চেষ্টা করিবেন। জানিবেন "দাধ যাহার ইচ্ছা, ঈশ্বর তাহার সহায়"।—এইরূপ কার্য্যে আপনারা স্থাী হইবেন কাবণে যে ইহা ছারা আপনাদের রম্ণী-জন্ম সফল হইবে; আর আমরা সুখী হইব এই কারণে যে দোবগুলির হস্ত হইতে মুক্তিলাভ করিলে আপুনাদিগের রক্ত অধিকতর স্থমধুর হইবে, ছারপোকাগণ আনন্দে পান করিয়া আপনাদিগকে धन्नवाम मिटव। विलटक कि **धे** समाय-গুলার জন্ম আপনাদিগের রক্ত অনেক সময়ে বিস্থাদ হইয়া থাকে, ক্ষমা कविद्वन।

ছারপোকাগণ আপনাদের চির সহ-চর; বাঙ্গালির মৃত দেহের সহিত বে মাহর কাঁথা দেওয়া হয়, ছারপোঝার্গণ তাহাতেও জড়িত থাকে, এবং অণ্ডু

এ হৈন জীবন মরণের সঙ্গীদিগকে পরিজ্ঞান করিবেন না। তবে আর কি "মুমুয়েণ সমাপরেৎ"। নিবেশন মিতি।

লেখক---

একান্ত ভীত, শরণাগত, বিনীত অথচ চির শুভামুধ্যায়ী

শ্রীক্রতগামী ছারপোক।
সাং আপনাদের শ্যা।
প্রকাশিকা জনৈক বন্ধ মহিলা।*

চিত্র চতুর্দ্দশ।

(পূর্ব্ব প্রকাশিতের পর)।

ভূতীয় চিত্র।

मक्कालय ।

পুর মনোরম, বুণ্যফলে যাঁর স্বধুনী ভটে, দেবতা-বাঞ্চিত সিদ্ধ পীঠ স্থান, বসস্ত-সেবিত শান্ত রসাশ্রম, রাগে ছয় রাগ নিত্য বর্ত্তমান। শোভে উপবন. কুল ফুল ফলে চির-নিনাদিত বিহন্দ কুজনে, সাধু, যতি, যোক্ষ সিদ্ধ তপোধন তপ জ্বপ ঘোগে রত তপোবনে। অপুরে হিমাস্রি তুলিয়া শিখর ভদ্র ধ্বণিত নিয়ত নিহারে, সাজিয়া উঠিছে উত্তর উত্তর ধরিতে অঞ্জণে স্বর্গ পুরোদারে। मर्पा नीम धाता-ত্রিপথগামিনী **আনদ প্রবাহে** মিলিতা হইয়া, ভেটতে সাগরে ধায় তরঙ্গিণী, • सिमिनी श्रमप्र विमीर्ग क्तिया। कृटन श्रुगाशीय শিব স্বাস্থ্যালয় (भौतां शिक मक नुभक्ति-खबन।

প্রাফলে যাঁর শিবানী সদয়, ক্যাভাবে জন্ম করিলা গ্রহণ।

* অত্র পত্রে পাঠিকা ভগিনীদের নিকটে আমি এই পত্র প্রকাশের কৈফিয়ৎ দিতেছি। ছারপোকাদিগের সহিত আমার কোনওরপ সহাত্তুতি নাই অথবা কোনওরপ উৎকোচ গ্রহণ করিবার মত নীচাশয়তাও অদ্যাপি হয় নাই। ছারপোকাদিগের সহিত পাঠিকা ভগিনীদিগের বে সম্বন্ধ, আমারও ভাহাই। তথাপি আমি এই প্রথানি প্রকাশ করিতেছি এই জন্ত যে, আমার অভিভাবকদিগের নিকটে পুন: পুন: উপদিষ্ট হইরাছি 'পরম শক্রবও উপকার করিবে"। কিন্ত এ উপদেশ যে কথনও কাজে আনিয়াছি, তাহা শ্বরণ হয় না ; ভবিষাতে যে পারিব, ততদুর ভর্মা করি না। এরপ ছলে এই নিন্দুক, রক্তথোর, দারণ শত্রু ছারপোকাদিগের পত্রথানি আজি প্রকাশ করিরাই আমি আমাকে সৌভাগ্যবভী মনে করিতৈছি! আমার মনে হইতেছে যেন ইহারা আমার বাম গণ্ডে আঘাত করিয়াছিল,

वामाध्याभनी शक्तिका।

সাধনী ভাগ্যবতী প্রস্তি উদরে

অবতীণা পূর্ণা মহাশক্তি সতী,
সতীত্ব মাহাত্ম্য প্রচারের তরে
শিথাইতে লোকে ভক্তি পতিপ্রতি।
পতিনিন্দা শুনি ত্যজিলেন প্রাণ,
সাক্ষী সতীকুও অদ্যাপি সেন্থানে,

ক্সা হেতু দক্ষ পুন: পান আগ,
দক্ষের শিব পুজার বিধানে।
অদ্যাপিও দক্ষের
শিব বর্ত্তমান,
পার্শ্বে হোমকুও চিহ্ন
যজ্ঞনাশ স্থান।

চতুর্থ চিত্র।

হরদ্বার ।

ছেন।

দক্ষালয় পার্শে মোক হর্বার স্বয়ংভগবান ত্রিপথগামিনী পুত উপকূলে, দিব্য শক্ষধাম শিব পুণ্যাগার. দर्শনে কলুষ বিনাশ সমূলে। ভক্তিভরে করি ব্ৰন্ধকুণ্ডে সান নিষ্পাপী ভকত বিশ্বেখনে পূজি, বিধিমতে করি কুশাবর্ত্তে দান পুণাফলে লভে হরদার কুজি। সাধনার বলে খুলে পুণ্যদার ভবের ভবনে করিলে প্রবেশ, ইহলোকে স্থ ভঞ্জিয়া অপার. পরলোকে মুক্তি লভয়ে অশেষ। বিশেষতঃ চৈত্রস্নানে পুত চিত্ত, কুন্ত যোগনান ফল নাহি ক্রয়.

ভব হবে প্ৰীড চিরদিন দেন ভকতে আশ্রয়। সম্বথে হিমাজি শিথর যথার নীলধারা তটে সুরধুনী পারে, বসিলা চণ্ডিকা তাজি সতী-কায় পাপ দক্ষযজ্ঞ নাশ দেখিবারে। করিয়া প্রবেশ পরে গিরিপুরে মেনকার গর্ভে জনম লভিলা. আচরি বিশেষ গৌৱীকালে ব্ৰত প্রকৃতি পুরুষ ভাব প্রকাশিলা। স্ববাসিনী + গৌরীকুও অদাপি প্রমাণ পার্ঘে বিবেশ্বর শিব' নিতা বর্ত্তমান। ±

আমি দক্ষিণ গণ্ড পাতিয়া দিতেছি।। অতএব প্রির তগিনীগণ, এই চারপোকা-হিতৈবিতার ক্ষপ্ত আমাকে গালাগালির পরিবর্ত্তে আশীকাদ করুন, কারণ এইটা আমার "নিদ্দাম ধর্ম"। আর ছারপোকাদিগের অনেক অসার কথার মধ্যে কিছু কিছু সার কথা আছে, তাহা অমুধাবন পূর্বক গ্রহণ করিয়া আপনারা উপকৃত হইলে আমি কৃতক্তার্য হইব।

व्याननारमञ्ज् "धक्। निका।"

† ব্যাসিনী—চিরপিতৃগৃহবাসিনী বিবাহতা বা অবিবাহিতা কলা। ‡ কবি তীর্থসান সকল অমণ করিয়া তাহাদের মাহাদ্মা সক্ষকে ব্যেক্প জনক্ষতি ভাহাই লিশিয়া-

गृहलक्की।

(শেষ)

বশন শচীক্ত মুথ ত্লিলেন, যথন
সৈই বনীভূত ছঃথরাশি পুনঃ পুনঃ
শোলোচনা করিয়া অপেকাক্ত "লঘু"
বিবেচিত হইল, তথন শচীক্ত মুথ ত্লিয়া
দৈথিলেন সন্মুথে দরজাব নিকটে,
মুকুল দাঁড়াইয়া।

মুক্লের স্বভাব সহজেই প্রাকৃত্নতাপূর্ব, দিরা রাত্রির অধিকাংশ সময়েই মুক্ল
হাসে। আজি সে হাসি লহরে লহরে
উছলিয়া পড়িতেছিল, আজি মুকুলের
কাং মধুমাথা, আনন্দমাথা অন্তব
হুইতেছিল; চাঁদের যেন পৌর্ণমাসী
হুইয়াছিল। কিন্তু খাভড়ীর গালি থাইয়া
শাভড়ীর চকে জল দেথিয়া উচ্চ্ সিত
উল্লাস মনেতেই বিলীন হইল। সে
পূর্ণচন্দ্র মেবে ঢাকিয়া গেল। শচীক্র
যথন মুকুলকে দেথিলেন, সে তথন আর
সহাস্তম্থী বালিকা নহে, সে বিষল্প
গাঙীরা রমণী; মুকুলের মুথ দেখিয়া
বুক কাঁপিল।—আনন্দে নহে, কি এক

স্থানিকত, উন্নতচেতা শচীক্র মুকুলের বোৰ গুলি বিশেষ রূপে দেখিলেও, ভারার মুখখানি বর্ড কুন্দর, তাহার কথাগুলি আরও কুন্দর। এই কারণে শচীক্র—ডেজ্বখী শচীক্র মার্থের নিকটে বর্ডই বীর্জ প্রকাশ করুন, মুকুলের নিকটে অনেকটা সংঘত হইয়া পাকেন। যথন শচীদ্রের वीत-अमरत দেবতার আবির্ভাব হয়, তখন হোন আর বন্ধুরাই হোন, শচীদ্রের নিকটে অগ্রসর হইতে পারেন না.! কিন্তু সেই 'অশিক্ষিতা' মুকুলের মুখে মাথা আছে কে জানে, তাহার মুথ দেখিলেই শচীদ্রের রাগ একেবারে क न হইয়া যায় ! কারণে পাড়ার ভিতর যাহারা "পোড়া याशामित, এकविम्न লোক'' দয়তা'' নাই, তাহারাই আমা-দের শচীক্রের মত উন্নতচেতা পুরুষকে "স্থৈণ'' বলিতে চায়! শুনিতে অতি গোপনে কেহ কেহ একথা বলা-বলি করিয়াও থাকে।।

এখন আর বলা বাহুল্য যে বিষাদাক্লা মুকুলকে দেখিয়া শচীক্র আত্মহঃখ
বিদায় দিয়া তাহাকে বলিলেন "দরজায়
রয়েছ কেন? ঘরে এস মুকুল!"
মুকুল ধীরে ধীরে ঘরে প্রবেশ করিল,
এক্টিও কথা কহিল না।

মুকুল নিকটে আসিলে শচীক্র পকেট হইতে একটা সাটনের বড়ী বাহির করিয়া মুকুলের হাতে দিয়া বলিলেন "এই দেখ ভোমার জক্তে কেমন স্থলার জিনিস এনেছি, পারে দাও দেখি ?" বজী শাঁচীজের হাতে ফিরাইরা দিরা মুকুল চক্ষু মুছিল। দেখিরা শাচীক্র বিশ্বিত ও ছঃখিত হইলেন বলিলেন ''মুকুল। কি হইরাছে ?'' মুকুলের অঞা শাচীক্রের অসহনীয়।

মুকুল কাতর স্বরে বলিল "মা ঘরে শুয়ে কাঁদছেন, আমি কি স্থবে বড়ী গায়ে দিব ?'

শচীক্র গম্ভীর ও বিষয়ভাবে বলিলেন "তা বুঝেছি মুকুল, এখন ঈশ্বর
করেন তো বি,এ টা পাশ কোন্তে
পাল্লে এক্টা চাক্রির যোগাড় করি।
তোমায় বিদেশে নিয়ে যেতে পাল্লেই
বাঁচি; মা' তোমাকে ভারি কই দেয়,
মা'র মনটা হিংসায় ভরা''—মুকুল আর
বলিতে দিল না, হাত ছইখানি যোড়
করিয়া বলিয়া উঠিল "তোমার পায়ে
পড়ি, তুমি অমন কথা বলিও না; মা'কে
নিন্দা করিলে পাপ হয়, মা' জগতের
দেবতা।"

শচীক্র হাসিলেন—সোজা হাসি নহে
মান্টার মহাশয় ছাত্রের ভুল দেখিলে যে
রকম হাসি হাসেন, শচীক্র সেই রকম
হাসি হাসিয়া বলিলেন "মা যদি অস্তায়
কাজ করেন, যদি সত্যের অন্থরোধে
মা'কে নিলা করি, তাহা হইলে পাপ
হইবে কেন ?" মুকুল সকাতরে উত্তর
করিল "তা আমি জানিনা, মা'র উপরে
রাগ করিলে, মা'কে শক্ত কথা বলিলে,
আর মা'র চোথের জল কেলাইলে সন্তানের পাপ হয়, ভোমার পারে পড়ি দে

রক্ম কাজ জুমি কথনই করিও না — আর যদি মা'র কোনও দোষ থাকে, তবে মা'কে বুঝিরে বলাই আমাদের কাজ; আমার কাছে মা'র দোবের কথা বোলে মা'র উপরে যদি আমার অভক্তিহয় ?"

শচীক্র এক্টু লজ্জিত হইলেন;
কিন্তু তবুতো শচীক্র, তবুতো উন্নতচেতা, ভাঙেন তবুদমেন না; শচীক্র
বলিতে লাগিলেন ''কথা কি মুকুল, মা
তোমার ভাল বাসে না, মা'র উপরে
তাই আমার রাগ হয়।'

মু। না, না, তোমার বৃঞ্তে ভূল হয়েছে, মা' আমাকে খুব ভাল বাসেন। তবে রাগ হলে ছ'কথা বলা ওঁর অভ্যাস।

শচীক্র হাসিলেন, তার পরে বলিলেন "থ্বই ভালবাদেন বলেই অত
করে থাটিয়ে নিয়ে বেড়ান ? খুবই ভাল
বাদেন বলেই তোমার জ্বতে ত্রিশ টাকা
দিয়ে বডী কিনেছি শুনে আমার উপরে
রাগ করেন ? এ ন্তন রকমের ভালবাসা বটে!"

মৃ। তুমি তাই মনে কর ? আমি তোমার কাছে দিবিয় কোরে বোলছি আমি ইচ্ছা করেই কাজ কর্ম করি। মা'র এখন পড়স্ত বয়স, আমার উঠন্ত বয়স; মা' কাজ কের্মিবন, আমি তাই দেখ্ব ?—ধিক্ আমাকে! সেই মুক্তেমা' কোন কলি কোতে গেলেও আমি মা'কে তা কোতে দেই না। আর বভীর

ক্ষা কি বোলুচো, আমাদের এমন

শেষতা নুষ বে আমি ত্রিশ টাকা দামের

নতী সা'ম দিব! দেখ গহনায় তবু কতক

লাভ আছে, কাপড় কয় দিন থাকে ?
ভাই মা বলেন ঐ টাকা গুলি যদি
সেতিংস ব্যাকে রেখে দিতে, তবে কত

স্ববিধে হত ? ভ্রুলোকের মত কাপড়
ও ছই চারিখানা গহনা থাক্লেই আমাদের অবস্থায় যথেষ্ট।—দেখ দেখি মা'
কেমন বোঝেন ? মা'র মত ভ্রাকাজ্কিণী আমাদের কে আছেন ?

■চীক্র কোনও কথা বলিলেন না,

এক দৃষ্টে মুকুলের স্থলর মুথ থানি দেখিতেছিলেন, মুকুল ঘোন্টাটী একটু
টানিয়া আবার বলিতে লাগিল "যদি
মা' আমাকে ভাল নাও বাদেন, তাই
বলে মা'র মনে আমরা কি কট দেব ?
দে কাজটা কি আমাদের উচিত ?''

লোকই হউন, তোমার শরীর, মন, প্রাণ সৰ সেই মা'রই ।"

মুকুল শচীন্ত্রের "কে ?" সহধর্মিণীত্বে বাস্তবিক কোনও উচ্চ গৌরব আছে কিনা, তাহা যে মুকুল বোঝে না এ কথা আমাদের কথনই বিশ্বাস হয় না। তবে এরূপ হীনত্ব স্বীকার করিয়া, এরূপ আপনাকে খাটো করিয়া তাহার কি মান বাড়িবে, তাহা সেইই জানে, আমরা জানিব কি করিয়া?

শচীক্র মুকুলের হাত নিজ হাতে লইলেন। অন্ত কেহ শচীক্রের নিকটে এ রকম "জ্যাঠামি" করিলে সে যে আর্ক্র-চক্র পাইষা ফিরিত, তাহার কোনও সন্দেহ নাই। কিন্তু আগে যাহা বলি-য়াছি—মুকুলের মুথখানি বড় স্থলর, অন্ত লোকের চক্ষে যে রকমই হউক, শচীক্রের চক্ষে "এমন স্থলর মুথ আর নাই"! তাই সে মিরাণ্ডা কোটিডা না হইলেও শচীক্র সর্বাদাই তাহাকে দেখিতে ইচ্ছুক, তাই অর্কচক্রের পরিবর্ত্তে হইল "শেক হ্যাণ্ড" ব্যবিষ্ঠা!!

কিন্তু তবু মুকুলের মুখ বন্ধ করা আবশুক, তাই শচীক্র বলিলেন "মুকুল! আমি তালবাসি বলিয়াই তোমার হৃঃখ নয়? আমার ভালবাসা তোমার অবোগা? তাই কেন বল না?"

শচীব্রের একথা বলার উদ্দেশ্য যাহাই হউক, কিন্তু মুকুলের বুকে বড় ব্যথা লাগিল, বোধ হইল কথা গুলার তাহার হৃদ্পিগু পিষিয়া গেল, থানিক- কণ মুকুল কোনও কথা বলিতে পারিল না, তারপরে আপনা সামলিয়া বলিল "তোমার ভালবাসাই আমার সকল কথ, সে স্থথের তুলনায় জগতের সকল স্থই তুচ্ছ।"

শ। তবে এ সকল কথা বলিতেছ কেন ?

মুকুল স্বামীর পদতলে বসিয়া বলিতে লাগিল "আমাকে ভালবাদিয়া কুমি যে मा'त यदन (वनना निर्देत, आमारक जान বাসিয়া ভূমি যে ধর্মজন্ত হইবে, তা' আমার প্রাণ থাকিতে সহিতে পারিব না। সে ভালবাসা আমি কথনই চাহিনা। এ জগতে সকল জিনিসের অপেকা স্বামীই রমণীর প্রিয়, কিন্তু স্বামীর অপেকাও স্বামীর ধর্ম অধিকতর প্রিয়। তোমার ভালবাসার লোভে আমি কি তোমার ধর্মের হানি করিব ? যে তোমার পায়ে একটা কাঁটা ফুটলে আমার বুকটা শতচীর হইতে থাকে, **দেই তোমার অধর্ম হইলে, তোমার** আয়ার ক্তি হইলে, তোমুার মুঁকুল মরিবে না ?"

উষ্ণ অশ্বধারার শচীক্তের পদ-সিক্ত হইতে লাগিল। সে অশ্রুতে শচীক্তের বুক ভিজিল, শচীক্ত তাড়াতাড়ি মুকুলের মুখ চোক মুছাইয়া দিয়া বলিলেন "মুকুল, আমাকে কি করিতে বল ?" এখন বলিলে বোধ হয় দোষ হইবে না, পোড়া পাড়ার লোকে "দ্বৈণ" বলে সে বড় অপরাধ ময়। মুকুল সকাতরে ৰলিতে লাগিল, "আৰার একটা কথা নাথ, অই বডীটা ফিরিনে লাও—ডুমি যার সামী, যে তোমার দাদী, তার আবার এসব ক্রতিম সৌল্য্য কেন ?"

শচীদ্রের মুঁধ লাল হইল, মুকুল বলিতে লাগিল, "আজ তুমি আমার গা' ছুঁরে দিব্য কর, উপরে ঈশর সাকী, মা'র সহিত কথনও বিবাদ করিও না
— তুমি কথা বা কাজে এমন কিছু করিওনা যাতে মা'র চোথের জল পড়ে। তবে কোনও ভাল কাজ করি-লেও মা' যদি ভূল বোঝেন, ভা'তে তোমারি বা হাত কি ? আমারি বা হাত কি ? আমারি বা হাত কি ? আমারি বা হাত কি ? আর এক কথা এই বে তুমি মা'র কাছে গিয়ে করবোড়ে কমা চাও!"

শচীক্ত একটু ভাবিলেন, হুই চারি বার মুকুলের মুখখানি ভাল করিয়া দেখিলেন, লেবে বলিলেন "যা' যা' বলিলে সবই শুনিব মুকুক্র, কিন্তু মা'র কাছে ক্ষমা চাইতে পারিব না!"

সজল নয়নে মুকুল, শচীক্রের মুখ-পানে চাহিল, শচীক্র বলিলেন "ক্রমা চাহিতে আমার—ভারি—বড়—ইরে, হয়।"

म्। कित्र इत्र १

শচীক্র বড় মুরিলে পড়িলেন, কিছ মুক্লের হাতেতো অবাাহতি নাই, কাজেই সকল কথা থুলিরা বলিলেন-"কথা কি মুকুল, আমরা লেখা পড়া শিথেছি, আমাদের মনও অবস্ত উর্গত. हरत्रष्ट्, कमा खार्थना कतिर् आमात्तत्र नेक्यों करत्र।"—

শু। তোমার মন উন্নত বলেই
শামি তোমার পারে ধরে সাধিতেছি,
এ জগতে দোষ করিন্ন। কমা প্রার্থনা
করিতে হীনচেতা কথনই পারে না,
নে উন্নতচেতারই কাজ।

আবে আলা ! উপায়ান্তর না পাইয়া শচীক্র মুকুলের পিঠে মৃত্ মৃত্ আঘাত করিয়া বলিলেন "তবে লক্ষি ! তুমি যাও ৷ তুমি আমার হইয়া ক্ষমা চাহিয়া এস ।

মুকুল পোড়ার মুখী সেই রকম ক্লেদে বলিতে লাগিল ''মা'র কাছে লজ্জা কিনে? আর আমি গেলে মা'র ক্লমা আসিতে বিলম্ব ইইবে, তোমার মুধ দেখিবামাত্রই মা'র ক্লমা আসিবে।"

শচীক্র কথা কহিলেন না, নিকটে কালিদাসের কুমারসম্ভব ছিল আনিয়া বলিলেন <u>"মুকু</u>ল, কুমার পড়িব শুনিবে ?"

বিহ্যৎবেগে মুক্ল শচীন্দ্রের পদতলে
পাড়িল, স্বামীর পদপ্রান্তে মাথা দিয়া
বিলিল "মুক্লের জন্মে মা'কে কাঁদাইয়া
কট বোধ কর না, আর তাহার জন্মে
ধর্ম স্থায় রক্ষা করিতে পারিলে না ?
ভার আমার জীবনে প্রয়োজন কি ?"

भूक्न का मिट्ड नाशिन।

ক্ষার সম্ভব দ্র করিয়া ফেলিয়া দুচীজ মুক্লকে উঠাইলেন। তাহার হাত আসনার হাতে লইরা বসিলেন,

'মুকুল, আমি তোমার কথা রাথিব— আমি নরাধম তাই মা'কেও কাঁদাই, তোমাকেও কাদাই। আর আমি काँमाहेव ना। ७ व डी विक्रम कतिव, তোমার মত হৃদয়খানি যাহার, তাহার হীরা মুক্তায় প্রয়োজন নাই। শত জন্মের সৌভাগ্যে তোমাকে পাই-য়াছি, আমি অন্ধ বলিয়া এমন রত্ন চিনিতে পারি নাই। তুমি যাহা বলিবে আমি তাহাই করিব, আমি মা'র কাছে চলিলাম। আণ্টিপেটরের সহস্র পত্র আলেকজাগুারের মা'র একবিন্দু চক্ষের জলে ভাসিয়া গিয়াছিল, আর আমার মা'র চক্ষের জলে আমার অহসার, অভিমান, স্বার্থপরতা কি ভাসিবে না ?"

মুক্শ একটীও কথা কহিতে পারিল না, কেবলই কাঁদিতেছিল।

a

মা'র কাছে গিয়া শচীক্রকে কমা প্রার্থনা করিতে হইল না। শত সহস্ত্র শচীক্রের এমন ক্ষমতা নাই, জগতে এমন কৈরেও অপরাধ নাই, যে তাহার শক্তিতে মাতৃরেহ পরাস্ত হয়। শচীক্র "মা" বলিয়া ডাকিলেই মা ছেলেয় মাথা বুকে লইয়া তাহাতে হাত বুলাইতে লাগিলেন।—যাহাকে জগৎ সংসার পরিত্যাগ করে, তাহাকে কেবল তুইজন ত্যাগ করে না,—স্বর্গে ঈশ্বর, জগতে মা।

এই দিন হইতে এবাড়ীর সকল অশান্তি দূর হইল। শচীক্র মাতৃভক্ত সন্তান হইয়া দিনে দিনে নিজের ও সংসারের উন্নতি করিতে লাগিলেন।
ইহার অনেকদিন পরে শচীক্র এক দেশহিতৈষী ব্যক্তি বলিয়া পরিচিত হইলেন
এবং তাঁথার সহকারিতায় দেশের অনেক
গুলি মলল কার্য্য সম্পার হইল।

সে দিন মুকুলের খাণ্ডড়ী তাঁহার গুলু ঠাকুরের নিকটে একান্ত গোপনে বলিরাছিলেন "বৌমা আমার ঘরের লক্ষী, আপনার আশীর্কাদে এক বৌমার জন্তেই আমার বাড়ী বৈকুণ্ঠ হইয়াছে"। আমরা বামাবোধিনীর পারিকাদিগের হল্ডে নববর্ধের প্রীতিউপহার স্বরুগ "গৃহলন্দীকে" সমর্পণ করিলাম, আশা-করি নেহময়ী ভগিনীগণ ইহা সেহের চথে দেখিবেন। যদি বঙ্গগৃহের কোথাও শচীক্রের আবির্ভাব হইয়া থাকে, ভবে তাঁহার বাম পার্ষে যেন মুকুল কুমারীকে বিরাজিতা দেখিতে পাই, ইহাই আমা-দিগের প্রার্থনা।

লৈখিকা—

বাঙ্গালা প্রবচন।

১। ন ধলঃ সজ্জনায়তে । ‡

২ ন গাঁ মাগিলে যা, সাত'গাঁ মাগিলেও তা।

৩। ন চ দৈবাৎ পরং বলং।

৪ক । ন দেবঃ স্টিনাশকঃ।

8**थ । न (** जिर्वाय धर्म्याय ।

৫ক। নরম মাটীতে বিড়ালে আঁচড়ার।

৫খ। নরক গুলজার।

৬। নরাণাং নাপিতোধুর্তঃ।

१। নরাণাং মাতুলক্রম:।

৮। নাই মামার চেয়ে কাণা মামা ভাল।

৯। নাই বা দিলে তাইবা কি,

শুড়ে মণ্ডার অভাব কি ?

> । নাই খরে খাঁই বাড়ে।

১১। নাই বল্লে সাপের বিষও থাকে না।

১২। না উঠতে এক কাঁদি।

थेग मध्यम रह ना ।

১৩। না গজাতে ঘ্ণ ধরে, না উঠতে আছাড়। বাসরেতে পতি মরে বাসি বে'তে রাঁড।

১৪। नाट्य भाषाय ना।

১৫। নাচতে জানেনা উঠান বেঁকা।

১৬। নাচ্তে দাঁড়য়ে <u>ঘোমুটা</u> টানা।

১৭। নাচে ভাল, কিন্তু পা্ক দের মৃন্দ্।

১৮। নাতোয়ানের ছনো থরচ।

১৯। নাপডে পণ্ডিত।

২ । নাপিত দেখলে নথ বাড়ে।

২১। নাপিতের আসি, ধোবার বাসি।

२२। नाग्रक्तत्र हेम्हा छेनू वत्न शाफु।

২৩। নান্তি সত্য সমো ধর্ম:।

२८। नाज्यिकत मूर्व धर्म कथा।

২৫। নিমুখো বেড়াল পাঁটা থাৰার রাহ্মণ।

২৬। নিয়তি; কেন বাধ্যতে ?

२१। निद्यनस्य हैद्यत्रं शंका।

২৮। নির্ভূপ সুক্ষের তিন্তুপ কাল 🗺

- হয়। নিৰ্বিৰ মাণের কুলোপানা চক্র। ক্রিঃ নির্ভয় কানুরায়।
- 🎎। निक्रा চুক্লো ঘর,

शांत्रि (न।

- ্র ভা**লালে** গোজালে বর।
- ্ৰং। নিতে পারি, থেতে পারি, দিতে

 পারি নে।

 বলুতে পারি,কইতে পারি,সইতে
- ৩৩। নীচ যদি উচ্চ ভাষে, স্বৃদ্ধি উড়ায় হেসে।
- ৩৪। নেকড়ার আগুণ।
- ৩৫। নেড়া কি আর বেলতলায় যায় ?
- ৩৬। নেড়ার নেই বাট্পড়ের ভয়।
- ৩৭। ন্তন ন্তন নকড়া, পুরাণ হলে ছকড়া।
- ৩৮। ন্তন ন্তন তেঁতুল বিচি,
 পুরাণ হলে বাতায় গুঁজি।

লোপাযুদ্র।

বিদর্ভাধিপতি সভাষাঝে বিচরাসনে উপবিষ্ট আছেন, এমত সময় মুনিপুরুব অগস্ত্য রাজ সভার উপনীত হইয়া "মহারাজের জয় হউক" বলিয়া আশী-র্বাদ করিলে রাজা শশব্যস্তে গাত্রোখান করতঃ স্বহত্তে মধুপর্ক ও কুশাসন লইয়া महाम्निरक क्षर्कन। कतिरलन। म्निवत **অনুসন গ্রহণ করিয়া** রাজাকে উপবেশন করিতে অমুমতি করিলে, রাজা নিজাসনে উপবেশন করিয়া বিনয়নম বচনে মুনি-वत्रदक विलितः;-- "ভগবन्! আপনার আশ্রমের কুশলত ? তথায় মুগগণ ত পশুরাজের সহিত বিশ্বস্ত চিত্তে বিচরণ করিরা থাকে ? যথাচরিত আপনাদের হোমাধি ও বজ্ঞ কার্য্যের কোন বিল্ল উপস্থিত হয় নাই ত ? যে তপঃপ্রভাবে बदेज वर्गानी हरेबा जगवान नारमत नार्थ-কতা সম্পাদন করিতেছেন, সেই তপস্থার

কুশল ত ? মহাত্মন্! সর্বাঙ্গীন কুশল বলিয়া এ অধীনের প্রতি যে আদেশ হয় করুন; যতক্ষণ আপনাকর্ত্বক আদিষ্ট না হইতেছি, ততক্ষণ আপনার আগমনজনিত সোভাগ্যসুথ সম্যক্ ভোগ করিতে পারিতেছি না" এই বলিয়া নরপতি বিরত হইলে মহর্ষি অগস্ত্য স্বাধ হাস্ত করিয়া গজীর স্বরে উত্তর করিলেয়, "রাজন্! আমার আশ্রমের ও তপস্থার সর্বাঙ্গীন কুশল; সম্প্রতি মহারাজের জামাতা হইবার অভিলাবে রাজসভায় আগমন করিয়াছি, এখন আমার অভিলাব পূর্ণ করিতে অন্ত্রমাতি ইউক।

মহর্ষির প্রস্তাব শেষ হইলে বিদর্ভ-রাজের মস্তকে বেন শত বজ্ঞাবাত হইল। সেই অস্থ্যস্পশ্রা ননীর পৃত্নী প্রাণাধিকা নন্দিনীকে কি প্রকারে সেই ভীষণমূর্ত্তি বনবাসী ম্নিকে প্রদান করিবেন তাহাই ভাবিরা অধীর হইরা উঠিলেন; কিন্তু ভরবশতঃ সেই তেজঃপুঞ্জ তাপসের নিকট মনোভাব গোপন রাথিয়া বলিলেন "মহাভাগ! আমি মহিষীকে এবিষর জানাইয়া আপনার বাসনা পূর্ণ করিতে সচেও হইব।" এই বলিয়া সে দিনের মত সভা ভঙ্গ করিলন এবং ম্নির উপযুক্ত বাসস্থান ও পান ভোজনাদির জন্ত মন্ত্রীকে বলিয়া অন্তঃপুরাভিমুথে গেলেন।

মহারাজ অন্তঃপুরে প্রবেশ করিয়া দেখিলেন পত্ৰবেষ্টিভ শ্চটনোন্ম প গোলাপ কলিকার ভার লোপামুদ্রা মাতৃ-পার্শ্বে অবস্থিতি করিয়া মাতার আনন্দ-বর্দ্ধন করিতেছেন। সহচরীগণ মণি, মুক্তা ও হারক খচিত স্থবর্ণময় ভূষণে কুমারীকে ভূষিতা করিতেছে, কেহবা কুস্থমের হার গাঁথিয়া কুমারীর কেশ-পাশ স্থসজ্জিত করিতেছে। নন্দিনীকে দেথিয়া ভূপতির হৃদয় শোকে দিগুণ বেগে উথলিয়া উঠিল। তিনি স্থির নেত্রে সেই আনন্দময়ী হৃহিতার দিকে চহিয়া রহিলেন, কোন কথা বলিতে পারিলেন না-দরদর করিয়া তাঁহার হন্ত্ৰুগ্ৰ হইতে অনুৰ্গল অঞ বহিতে লাগিল। পিতা মাতার কি অফুপম **নেহ.** তাহা কি বাক্যে বর্ণনা করা যায়! আজ সেই স্নেহের বশবর্ত্তী হইয়া ভূপাল, তনয়ার ভাবী কট ভারিয়া আকুল। লোপামূডা জনকের

তাদুশ ভাব অবলোকন ক্লিমানীর্কাদ ক্রিয়া ও ছ: থিত হইলেন। **ভিলেন** শ্ৰী চরণে প্রণিপাত পূর্মক বিষয় ক্রমনবাসী তদীয় পাৰ্মে দাঁড়াইয়া রহিলেন। বাজী কাতরস্বরে বলিলেন, "মহারাজ। কি হইয়াছে ? সত্তর বলুন, আমি জগং অন্ধকার দেখিতেছি। রাজা বলিলেন ''মহিষি! আমার সর্কনাশ উপস্থিত: আজ মহামুনি অগন্তা আসিয়া আমার নিকট প্রার্থনা করিলেন। আমি যদি সেই অমিততেজা তাপদ-বরকে প্রত্যাখ্যান করি, তাহা হইলে সরাজ্য তাঁহার রোষানলে ভক্ষীভূত হইব, আর তাঁহাকে প্রত্যাখ্যান না করিয়াই বা কেমন করিয়া সেই ব্রীয়ান ও বনবাসী মুনিকে আমার লোপামুদ্র। রাজিঃ লোপা আমার দান করিব ৪ বালিকা---আজীবন স্থাব পালিতা, কেমন করিয়া সে বনবাদ ক্লেশ সহ করিবে ? যে কথনও প্রাঙ্গণকুটিম অতিক্রম করে নাই, সে কেমন, করিয়া বনুর প্রান্তর ভূমি-হিংম্র জন্ত-সঙ্কুল ছর্গম অরণ্যে বিচরণ করিবে ? স্বকার্য্য-পারদর্শী স্পকারগণ মাহার থাদ্যাদি প্রস্তুত করিয়া থাকে, সে কেমন করিয়া সচ্ছলজাত বৃক্ষণতার কটুতিক্ত ক্ষায় ফলমূল ভোজন করিয়া জীবন ধারণ ^করিবে ? যে লোপামুড়ী আমার মণিময় বসন ভূষণে স্থসজ্জিতা হইয়া স্থাবাদার তার বাজাতঃপরের শোভাবর্দ্ধন করে-চমরীগণকে লজা দিয়া বাহার কেশরাশি বিরাজিত, তাহার স্কুমার বেহ ভাষ-

ক্ষা কিট্ট স্থকোষণ বসনের পরিবর্ত্তে কিনে আন্ত হইবে, হ্লোভিত विनक्णां अधिव পतिगठ रहेर्द, हेश পাৰি পিতা হইয়া কিপ্ৰকারে স্থ করিব? কুত্মকলিকা প্রকৃটিত হইতেই তাহাতে দারিদ্র্যকীট প্রবেশ করিবে আর আমি নির্মুম হইয়া রাজ্য-হুখ ভোগ করিব, ইহা কথন হইতে পারে না। সেই দীর্ঘকার আবক্ষঃ শ্বেত শ্মশ্র ও জটাক্টধারী, বল্পবিহিত महर्षित्क प्रिथित आमारिए उ उराज সঞ্চার হয়, বালিকা লোপামূদ্রা কেমন করিয়া তাঁহার সহচরী হইবে ? রাণি। অপত্যান্নেহ বশতঃ আমি এই সকল চিস্তার আকুল হইয়াছি। সেই মহর্ষিয় প্রার্থনার অস্তথা করিবার ক্ষমতা আমার নাই, আবার লোপাকে বা কোন প্রাণে তাঁহাকে দান করিব ? এই ছই কার্য্যের কোনও কার্য্য আমার ক্ষমতায়ত্ত নহে, ত্বতরাং আন্সিমহা বিপদে পতিত।" এই বলিয়া মহারাজ কান্ত হইলেন; महिरी किःकर्छवाविम् ह हो नी ब्राव অবিরল অঞাবর্ষণ করিতে লাগিলেন।

লোপামূলা এতক্ষণ পিতার বিলাপ ও পরিতাপের সহিত বর্ণিত সমস্ত ঘটনা ভানিতেছিলেন; এখন তাঁহার বিষণ্ণভাব দূর হইল—এখন ভ্রিনি পিতার বিপদ্টা কি তাহা বুঝিতে পারিলেন। কিন্তু অপতালেহের বে কি মোহিনীশক্তি,তিনি ভারাতে নিতান্ত্রেশনভিজ্ঞা, স্তরাং এই ঘটনাটাকে তিনি পিতার বিপদ্ বিদিয়াই

व्यादि गर्गा कत्रित्मम मा, वत्रः सम्तकत्र যশ ও মহর্ষির সম্মান রক্ষা করিবার জ্বস্ত তিনি অগন্তোর পদ্নী হইতে দৃঢ়প্রতিজ্ঞ হইলেন এবং বিষয় বচনে পিতাকে সম্বোধন করিয়া বলিলেন:-- "পিতঃ ! আপনার সেই মহর্ষিকে প্রত্যাখ্যান করিতে হইবে না: আমি তাঁহার পত্নী হইতে কিছুমাত্র কাতরা নহি, আপনি অনর্থক কেন বিলাপ ও পরিতাপ করিতেছেন ? আপনার বিপদই বা কিসের? আমি দেখিতেছি আপনার সৌভাগ্যোদয় হইয়াছে, তাই ত্রৈলোক্য-পূজিত বিশ্বজনহিতৈষী ধার্শ্মিকপ্রবর মুনিপুলব অগন্তা, আপনার জামাতা হইতে আসিয়াছেন। আমি তাঁহার পত্নী হইলে, আমার যে হইবে আপনি বর্ণনা করিলেন, আমি সেই সকলকে কষ্ট মনে না করিয়া সৌভাগ্যের সোপান বলিয়া মনে করি-পৃথিবীতে যত প্রকার স্থুখ আছে, তন্মধ্যে ধর্মাচরণ-স্থুই শাশ্বত रूप। । अञ्चाच नकल सूर्य वामनात তৃপ্তি আছে, কিন্তু ধৰ্মাকাক্ষা অভূপ্ত। পিতঃ ধর্মজনিত হুখ বিলাস-পূর্ণ রাজ-প্রাসাদ অপেকা বনে অধিক সুলভ। ষথন মহর্ষির পদ্দী হইলে সেই স্থভোগ করিতে পাইব, তখন তাঁহার পদ্দী না হইয়া কোন্ রাজপুত্রের পদ্দী হইয়া হুণী হইব ? আপনি বনবাসীর হুন্তে আমাকে দান করিতে ছ:বিত হইতে-ছেন, কিন্তু শান্ত দান্ত সাধুর সহিত

वनवान व्यत्भक्ता नःनात्रीविरशत निरुष्ठ রাজপ্রাসাদে বাস কি অধিক স্থাধের চ যদি তাহা না হয়, তবে আপনার বিপদ কৈ ? তবে এতক্ষণ আপনি কেন সবি-লাপে অশ্রবর্ষণ করিলেন ? অতএব আমি মহর্ষির পত্নী হইতে ইচ্ছা করি-তেছি, আপনি সকল হু:খ ও পরিতাপ ত্যাগ করিয়া আমায় সেই মহর্ষিকে দান করুন। আমি সেই মহর্ষিকে দেখিরা ভীতা হইব না: ধার্শ্বিক ব্যক্তিগণ কথনও ভীষণদর্শন নহেন, আমি অবশ্রই তাঁহার দর্শনে প্রীতিলাভ করিব।" রাজা তন-য়ার এইরূপ কর্ত্তব্যপরায়ণতা দেখিয়া ও धर्मनिक्षा अर्ग वाक्यावनी अवन कतिहा আশ্বন্ত হইলেন এবং পর্যদিন প্রভাতে গাত্রোখান করিয়া প্রাতঃক্রত্যাদি সমা-পনান্তে সভামধ্যে নিজ হহিতাকে আনিয়া মহর্ষি অগত্যের হত্তে সমর্পণ করিলেন।

यहां पूनि विषर्भं बाबादक जानी सीम कड़ियां সভ্ৰণা লোপামুলাকে বলিলেন "লাজ निमिनि । आमि कन्यनानी वनवानी তপন্নী, বসন ভূবণ ও অক্সান্ত বিলাস-ज्यापि यावशंत्र कता आमारमञ्ज्या নহে, তুমি এখন আমার সহধৰ্মিণী. স্থতরাং তোমাকে রাজকন্তার উপযোগী এই বেশভূষা পরিত্যাগ করিয়া জটা বঙ্জ ধারণানস্তর এখনই পদত্রজে আমার অমুগামিনী হইতে হইবে।" মহর্বির বাকা প্রবণ করিয়া রাজকুমারী অমান-বদনে বসন ভূষণ পরিত্যাগ পূর্বকে জটা বন্ধল ধারণ করিলেন এবং পিতা মাতার পদে প্রণাম ও স্থীদিগকে সম্ভাবণ করিয়া, আত্মীয় স্বজনকে শোক সাগরে ভাসাইয়া--রাজপুরী অন্ধকার করিয়া আশ্রমাভিগামী মহর্ষি অগস্ত্যের পশ্চাদগা-भिनी इटेलन।

ব্ৰাহ্ম-বিবাহ।*

শ্রীমান অভয়াকুমার দেব মন্ত্রমদারের সহিত শ্রীমতী শান্তশীলা দত্তের শুভবিবাহের অমুষ্ঠান পদ্ধতি।

ঈশ্বর-স্মারণ।

কন্তাকর্ত্তা বেদির সমূথে বরকে উপ-

পর্মেশ্রকে শ্রণ করিবেন, यथा, সেই পূর্ণমঙ্গল জগৎপ্রস্বিতা পর্মদেৰভার সত্য সুন্দর মঙ্গলভাব ধ্যান করি, বিনি বেশন করাইরা স্ক্রাগ্রে মঙ্গলবিধাতা অদ্যকার ওভ ° অনুষ্ঠানের অধিষ্ঠাত্তী

২২৮৬ সালের কান্ত্রন মানে ব্রাক্ষবিবাহের একটা নবুনা পদ্ধতি বামাবোধিনীতে প্রকাশিত হয়, তাহা অনেক পাঠকপাটিকার হুদর্থাহী হইরাছিল। এইটা তাহরিই সংশোধিত ও পরিবর্ত্তিত আকার। আশা করি ইহাও তাঁহাদিগের হৃদ্য হইবে এবং ইহা প্রকৃত বিবাহের উচ্চ, বছৎ ও পবিত্র ভাষা প্রচারের সহায়তা করিবে :

বেবভাঁও কল্যাণফলবিধাতা হইয়া উপস্থিত সহিবাছেন।

িসভাস্থগণের অনুমতি গ্রহণ]

িক্সাক্রা দ্ভারমান হইয়া সভাস্থগণকে সম্বোধন পূর্বাক]

ওঁ কর্তব্যেহস্মিন ওভোদাহকর্মণি পুণ্যাহং ভবস্তোধিক্রবস্ত।

ু এই ভভবিবাহ কর্মে আপনারা পুণ্যাহ বলুন্।

ু **সভা**স্থ সকলে—ওঁ পুণ্যাহং।

্ৰ কৰ্ত্তব্যেহস্মিন্ শুভোদাহকৰ্মণি পদিং ভবস্থোধিক্রবন্ধ।

এই শুভবিবাহ কর্মে আপনারা ঋদ্ধি वनून्।

ু সভাস্থ সকলে—ওঁ ঋদ্ধতাং।

ওঁ কর্তব্যেহস্মিন গুভোদাহকর্মণি স্বন্ধি ভবস্তোধিক্রবস্তু।

্ৰ এই শুভবিবাহ কৰ্ম্মে আপনারা স্বস্তি वेगून्।

সভাস্থ সকলে ওঁ স্বস্তি স্বস্তি।

ি 🏥 🌣 [পাত্রের বরণ]

ক্সাকর্তা—ওঁ ইদমর্ঘ্যং প্রতিগৃহতাং। धरे वर्षा शहन कक्रन।

বর--- অর্ব্যং প্রতিগৃহামি।

অর্থ্য গ্রহণ করিলাম।

ক্তাক্রা—ও এব: পরিচ্ন: প্রতিগৃহ-তাম।

্র এই পরিচ্ছদ গ্রহণ করুন।

বর—প্রতিগৃহামি।

গ্ৰহণ করিলাম।

কলাকরা—উ ইদং অকুরীয়ং প্রতিগৃহ-ভাম।

্ এই অন্ধরীর গ্রহণ করুন। বর-প্রতিগৃহামি।

গ্রহণ করিলাম।

ক্যাকর্তা—ওঁ তৎসদদ্য চতুর্দশাধি-কাষ্টাদশশততম শকান্দে জৈটে মাসি একাদশ দিবসে বুষরাশিস্থে ক্লঞ্পক্ষে দ্বাদ্খাং তিথে সোমবাসরে আলম্যান গোত্রস্ত স্বর্গগতস্ত "মজুমদার" উপাধিকশু বলরাম দেবশু প্রপৌত্রং স্বৰ্গগতভা মৃত্যুঞ্জয় দেবভা পৌলং স্বৰ্গ-গতস্ত উমাশকর দেবতা পুত্রং আলম্যান গোত্রং "মজুমদার" উপাধিকং শ্রীঅভয়া-কুমার দেবং—কাশুপ গোত্রস্থা স্বর্গগত্রস্থা ষষ্ঠীচরণ দত্তস্থ প্রপৌদ্র্যাঃ স্বর্গগতস্থ হরমোহন দত্তস্থ পৌজ্যাঃ শ্রীউমেশচক্র দত্তত পুত্র্যা: কাশ্রপগোত্রায়া: শ্রীশান্তশীলা দত্তজায়াঃ ক্সায়াঃ শুভোদাহকর্মণি এভিরুপকরণাদিভিরভার্চ্য বরত্বেন ভবস্ত-মহং বুণে।

অদ্য ১৮১৪ শকাব্দের জ্যৈষ্ঠ মাসের একাদশ দিবসে বুষরাশিস্থ ভাস্করে ক্লয় পক্ষের দ্বাদশী তিথিতে সোমবাসরে আল-ম্যান গোত্র স্বর্গগত বলরাম দেব মজুম-দারের প্রপৌত্র, স্বর্গগত মৃত্যুঞ্জয় দেব মজুমদারের পৌত্র, স্বর্গগত উমাশহর দেব মজুমদারের পুত্র শ্রীঅভয়াকুমার দেব মতুমদারকে, কাশুপ গোত্র স্বর্গগত ষষ্ঠীচরণ দত্তের প্রশোক্তী, স্বর্গগত হর-মোহন দত্তের পৌত্রী, ঐউমেশচক্র দত্তের

পুঞী কাশুপগোত্রা শ্রীমতী শান্তশীলা দত্তের শুভ বিবাহ কর্মে আপনাকে এই উপস্থিত উপকরণাদি ধারা অর্চনা করিয়া বরত্বে বরণ করিতেছি। বর—ওঁ বৃত্তোহশ্মি।

বর—ও বুতোহাম। বুত হইলাম।

[অনস্তর বর অস্তঃপুরে নীত ও কস্তার মাতা কর্তৃক অভ্যর্থিত হইবেন।]

[ব্ৰহ্মোপাদনা]

বর কন্তার সহিত সভাস্থলে প্রত্যাগত হইলে কন্তাকর্তা বেদির অভিমুখীন
হইয়া বদিবেন এবং কন্তা ও বরকে
উভয়ের সমুখীন করিয়া আপনার হুই
পার্মে বসাইবেন। অনস্তর আচার্য্য
কর্তৃক সাধারণ ব্রম্নোপাসনা হুইবে।

কন্সাকর্ত্তা—(কন্সার প্রতি) তব বিবাহার্থং যথাবিধমর্চিতং ইমং সদ্গুণা-বিতং ত্রহ্মনিষ্ঠং বরং সাদরং পতিত্বেন রণুষ।

তোমার বিবাহার্থে যথাবিধি অর্চিত সদ্গুণান্বিত ব্রহ্মনিষ্ঠ এই বরফে তুমি সাদরে পতিতে বরণ কর। *
কন্তা—সাদরং বুণোমি।

मानदत वदन कदिनाम।

কিন্তা সম্প্রদান]

ক্সাকর্ত্তা—(বর ও ক্সার দক্ষিণ হস্ত স্বহস্তোপরি লইরা)—ওঁ তৎসদদ্য জ্যৈঠে মাসি একাদশ-দিবসে ব্যরাশিক্ষে ভাস্করে ক্ষণক্ষে ঘাদখাং তিথে কাশ্রপগোত্রঃ ঐউমেশচন্ত্র দত্ত ঈশর-প্রীতিকামঃ আগ- ম্যান-গোত্রত অর্নগতত মত্মদার উপাধিকত বলরাম দেবত প্রপোত্রার, অর্নগতত উমাশক্র দেবত প্রায় আলম্যান গোত্রার
"মক্মদার" উপাধিকার শুলভরার মথাবিধমর্চিতার কাশুপগোত্রত অর্নগতত হরমোহন
দত্রত পোত্রীং প্রতিমশচক দত্রত প্রীং
কাশুপগোত্রাং অরোগিনীং স্থলীলাং
সালকারাং বাসসাচ্ছাদিতাং শ্রীমতীং শান্তশীলা দত্রজাং ইমাং কন্তাং প্রত্যাহং
সম্প্রদিদ। *

বর—কন্তামিমাং পাদরমহং পবিজো-দাহযোগার্থং গৃহ্নামি।

আমি সাদরে এই ক্স্তাকে পবিত্র উদ্বাহ যোগের জন্ত গ্রহণ করিলাম।

ক্সাক্র্ডা—(বর ও ক্সার হন্ত পুশ-মালা বারা বন্ধন করিয়া দিয়া)

বরের প্রতি—ধর্ম্মে চ অর্থে চ জ্ঞানে চ ভোগে চ নাতিচরিতব্যা স্বয়েয়ং।

ধর্মে, অর্থে, জ্ঞানে ও ভোগে তুমি ইহাকে অতিক্রম করিবে না।

বর—নাতিচরিষ্যামি। অতিক্রম করিব না। কন্সার প্রতি—ধর্ম্মে চ অর্থে চ ক্সানে চ ভোগেচ নাতিচরিতব্যক্ষারং।

* সম্প্রদানের প্রকৃত অর্থ—"সহোজে চরতাং
ধর্ম:" উভরে একত্র হুইয়া ধর্মাচরণ কর এই
কথা বলিয়া জিবাহার্থ কঞ্চাকে বরের হুটে অর্থণ
করা। সামাশ্র ভৈজসণাত্র বা গো অব প্রনের
ভার এ দান বংশছ্রচারিতার অভ মতে।

খৰে, কৰে, ভানে ও ভোগে তুমিও ইংকৈ অভিক্রম করিবে না।

ক্সা--নাতিচরিব্যামি। অতিক্রম করিব না।

ক্রিভাকর্ডা—(বর ও কন্তা উভয়ের 🕰 🕒 "সহোভৌ চরতাং ধর্মং ব্রহ্ম-সাৎক্তমানসে।"

ভোষরা উভয়ে পরত্রন্ধে মন: প্রাণ সমাধান করিয়া এক সঙ্গে অভিন্নভাবে শ্বিচিরণ কর।

ক্রিকাকর্ডা—ও ব্রহ্মার্পণমন্ত। স্বস্তি স্বন্ধি স্বন্ধি।

[উদ্বাহ প্ৰতিজ্ঞা]

वब्र-- जमा ১৮১৪ भकारक टिकार्छ बारमत्र এकामन मिवरम क्रस्थ भक्त चामनी ভিথিতে সোমবাসরে আমি ঐঅভয়া-মজুমদার সর্কসাকী পরমেশ্বর ও সমাগত ধর্মবন্ধুগণকে সাক্ষী ক্রিয়া <u>ষ্ট্রেক্টাপূর্ব</u>ক मष्टन हिएउ তোমাকে আমার বৈধপত্মীরূপে গ্রহণ कविनाम । मन्नारत विश्वास, ऋरथ इः तथ, অস্বভার অস্বভার তোমার মঙ্গলসাধনে ও সংগতির কর্ত্তব্য পালনে আমি যাব-क्वीवन यप्रवान थाकित।

क्छा-अमा ১৮১৪ भकारम रेकार्ड शास्त्रत्र अकामन मित्रम क्रुक्षशत्क बामनी ভিথিতে সোমবাসরে আমি শ্রীশান্ত-দ্বীলা দক্তে সর্বাদা পবিত্র পরমেশ্বর ও প্ৰশাগত ধৰ্মবন্ধুগণকে সাক্ষী করিয়া विष्यार्थक विष्यारिक ভোষাকে | আমার বৈধপতিরূপে গ্রহণ করিলাম। मन्भरम विभरम, ऋरथ धः थः, ऋरुजात्र অস্থতায় তোমার মঙ্গলসাধনে ও সং-পত্নীর কর্ত্তব্য পালনে যাবজ্জীবন যত্নবতী शांकिव।

[অতঃপর গ্রন্থি বন্ধন হইবে]

ভৰ্ত্তা ও বধু---ওঁ বগ্নামি সত্যগ্রন্থিনা মনশ্চ হৃদয়ঞ্চ তে। यरमञ्जू क्षात्रः मम जन्छ क्षात्रः जव। यानजन् इत्रः उव जन्छ इत्रः सम । আবয়োহ্ব দিয়ং যত্তু তদস্ত ব্ৰহ্মণঃ সদা।

স্বামি সত্যগ্রন্থি দারা তোমার মন ও হৃদয় বন্ধন করি। আমার যে হৃদয় তাহা তোমার হউক; তোমার যে হৃদয় তাহা আমার হউক এবং আমাদের উভয়ের হৃদয় সর্ব্বদা ঈশ্বরের হউক।

[মালা ও অঙ্কুরীয় বিনিময়]

ज्हां ७ वध्—"उँ खारेनस्ड खानानं সন্দধামি, অস্থিভিরস্থীনি মাংসৈর্মাংসানি, ত্বচাত্বহং।"

আমার প্রাণের সহিত তোমার প্রাণ সংযুক্ত করিতেছি। অস্থি দ্বারা অস্থি, মাংস ছারা মাংস এবং ছগিব্রিয় ছারা ত্বগিক্সিয় সংযুক্ত করিতেছি।

ভর্ত্তা (বধুর প্রতি)ওঁ অঘোরচক্ষুরপতিম্নোধি শিবা পশুভ্যঃ স্থমনাঃ স্থবর্চাঃ।"

তোমার চকু প্রদন্ন হউক। পতির হিডকারিণী হও, পতির প্রতি-क्नाठातिनी रहेश ना। जीवनात्वत अधि

কুল্যাগদারিনী হও। তোমার মন স্থলর প্রথম পদ নিকেপ করি এবং উভটে হুউক। তুমি তেজবিনী হও।

ভৰ্মা ও বধু উভয়ে—

"ওঁ সমজ্জু বিশ্বদেবঃ সমজে।

क्रमग्रानि (नी।"

विश्वतम् व वामात्मत उज्जात कार्य **मःयुक्त कन्नन** ।

"ওঁ সুগং মু পন্থাং প্রদিশন্ন এহি জ্যোতি-

মধ্যে হাজরর আহ:।"

অপৈতৃ মৃত্যুরমৃতং ম আগান্তগবতো নোহভয়ং কুণোতু ন:।"

হে জ্যোতির জ্যোতি: পরমাত্মন্! धम चामारमत्र अंग रमशेष, रा भर्य আমরা স্থথে গমন করিতে পারি, যে পথে চলিলে আমরা মৃত্যুকে পরিহার করিতে পারি, অমৃত লাভ করিতে পারি, সেই পথ আমাদিগকে দেখাও, আমা-দিগকে অভয় দান কর।

অনন্তর কন্তাকর্তা ও আচার্য্যের উপ-तम ७ जानीकीम।

ষতঃপর উদ্বাহ স্থান হইতে বাসগ্রহে গমনের পথে প্রদত্ত আট্থানি আদনে ক্রমান্বরে পদ নিক্ষেপ করিতে করিতে ভর্তা ও বধু এইরূপে প্রার্থনা করিবেন, যথা---

(>) ঈশর লাভের নিমিত্ত আমরা ব্রত হই।

উভরের অমুত্রত হই।

- (२) সংসার ধর্মপালনে বল লাভের নিমিত্ত আমরা বিতীয় পদ নিকেণ করি এবং উভয়ে উভয়ের অমুব্রত হই।
- (৩) পবিত্র দাম্পত্য-ত্রত সাধ-নের নিমিত্ত আমরা তৃতীয় পদ নিক্ষেপ করি এবং উভয়ে উভয়ের অমুত্রত হই।
- (৪) জনসমাজের হিতসাধনের নিমিত্ত আমরা চতুর্থ পদ নিকেপ করি এবং উভয়ে উভয়ের অমুব্রত হই।
- (৫) সকল জীবের কল্যাণ সাধনের জ্ঞ আমরা পঞ্চম পদ নিক্ষেপ করি এবং উভয়ে উভয়ের অমুব্রত হই।
- (৬) শীত বসস্ত প্রভৃতি ছয় ঋতুতে ধর্ম সাধনের আতুকুল্য কামনায় ষঠ পদ নিক্ষেপ করি এবং উভয়ে উভয়ের অম্ব-ব্ৰত হই।
- (৭) মৃত্যু হইতে অমৃত লাভের জন্ম আমরা সপ্তম পদ নিক্ষেপ করি এবং উভয়ে উভয়ের অম্ব্রত হই।
- (৮) সত্য লাভের নিমিত্ত আমরা অন্তম পদে আরোহণ করি; ব্রহ্ম আমা-দিগকে সর্বোপরি সত্যলোকে লইয়া যাউন। আমরা উভয়ে উভয়ের অফু-

ওঁ শাস্তিঃ শাস্তিঃ।

সাজাহা বেগম।

মনস্থিনী ও যশস্থিনী মৃত সিকান্দার বৈপমের ক্তাসাজাই। বেগম। ইহার বর:ক্রম একণে পঞাশ বংসরের অধিক। ইনি থৰ্ককায়, দেখিতে যেন একটি বালি-কার মত। ক্সা একদিকে মাতার অতুল ঐশর্য্যের উত্তরাধিকারিণী হইয়াছেন, আর একদিকে তেমনি মাতৃ-তেজবিতা ও গুণ কলাপেও বিভূষিত हरेब्राष्ट्रंत। देनि शत्रमा खुलती। आमा দিগের দেশে অনেক রূপবতী আছেন: किन्छ पाँशमित्रत ज्ञल बाट्स, उाँशमि-গের অধিকাংশের কোনও গুণ নাই. विना नार, वृक्षि नारे। এकाशास्त क्रभ খ্রণ,বিদ্যা বৃদ্ধি প্রাপ্ত হওয়া অতি বিরল। কিছ সাজাহাঁ বেগমে তাহা বিদ্যমান। **ঈখর তাঁহাকে কোনও** বিষয়ে কোনও প্রকারে অভাব অতুভব করিতে দেন নাই। ইনি পারভভাষা জানেন; ইহাঁর ইহাতে এতদূর অধিকার चार्ट्स त्य, इंडांट्स विश्वी विलाल মতে অত্যক্তি আজকাল ভারতবর্ষের কোনও রাজ-পরিবারে ইহার সমান বিছয়ী কেহ আছেন কি না সন্দেহ। ইনি যেমন মিষ্টভাষিণী তজপ স্নদালাপিনী; ইনি বেরাপ রসভাবিণী, তদ্রপ হেতুবাদিনী।

্তিইইার সময়ে ভূপানে নানা প্রকার উর্মন্তির নিদর্শন চারিদিকে দৃষ্ট হয়। ভাল ভাল প্রাসাদসদৃশ বাটা বিনির্মিত

হইয়াছে; রাস্তা ঘাট প্রশস্ত হইয়াছে: প্রজাবর্গের অবস্থা উন্নত श्रेपार्छ: আদায়ের জন্ম স্থার-আইন श्हेगाट्ह। বিধিবদ্ধ অত্যস্ত ত্ব:ধের বিষয় এই সব গুণ সত্ত্বেও ইংরাজ কর্ম-চারীর অদুরদর্শিতা দোবে তিনি অনেক দিন স্থথে থাকিতে পান নাই। নীয় নবাব আবহুল লতিফ খাঁ বাহাহুর রাজকর্ম হইতে অবসর গ্রহণ করিয়া ইহার প্রধান মন্ত্রী হন। বেগম আপনি সমস্ত বিষয় দেখিয়া থাকেন এবং রাজকীয় সমস্ত কার্যা আপনি পরিচালনা করিয়া থাকেন। অন্তান্ত প্রাচ্য রাজার মত কর্মচারীর হস্তে সকল বিষয়ের ভার অর্পণ করিয়া ইনি আপনি কখনও নিশ্চিন্ত থাকিয়া অনর্থের হন না।

আফগানিহানের সীমান্ত দেশের এক ভদ্রংশীয় যুবা পুরুষের সহিত বেগঁমের একমাত্র ছহিতার পাণিগ্রহণ হয়। তাঁহার চারিটি সন্তান, সর্কজ্যেষ্ঠা ক্যা কিয়ৎ বংসর পূর্ব্বে কালগ্রামে পতিত হয়। গ্রন্থেন্ট ইহার রাজ-ভক্তি ও মহামুভ্রতার পরিতৃত্ত হইরাণ্ ইহাঁকে জিঃ সিঃ এসং আইঃ প্রভৃতি উপাধিতে বিভৃষিত করিয়া শুণের আদর করিরাছেন।

ইহার মাতাই ইহার প্রধানা ও প্রথমা শিক্ষািত্রী। মাতা ক্রমাশীলা ছিলেন না। কপ্তার কোনও বোষ দেখিলে তিনি শান্তি দিতে কখনই বিরত ছইতেন না। ইনি আর কাহারও নিকট বিদ্যা শিকা করিয়াছিলেন কিনা আমরা অবগত নহি; থাকিলেও আমরা দে কথা এন্থলে ধরিতেছি না, কন্তার বিদ্যাবস্তার বুঝা যাইতেছে যে, মাতা ক্ষিপ স্থানিকতা ও বিচক্ষণা হিলেন,
তাহা না হইলে কি ১৮৫৭ সালের
সিপাহী বিজ্ঞোহের সমর সার হেন্ত্রি
ডিউর্যাও ও তাঁহার অন্তর বর্গ বধন
ইন্দোর হইতে পলারন করেন,তথন তিনি
অতুল সাহসে তাঁহাদিগের রক্ষা বিষরে
বিশেষ সহায়তা করেন ?

চিকাগো।

व्यागामीयर्थ हिकारणा नगरत रा অভতপূর্ব প্রদর্শনী হইবে, তাহার কিঞ্চিৎ বিবরণ পাঠক পাঠিকাগণের গোচর করা যাইতেছে। আমেরিকার যুক্তরাজ্যের হলিনাইস প্রদেশের কুক কাউন্টিতে এই প্রতিষ্ঠিত। নগর উক্ত রাজ্যের মধ্যে এই নগর আকারে চতুর্থ; কিন্তু বাণিজ্য গৌরবে দ্বিতীয় ম্বানীর বলিয়া খ্যাত। ইহা উত্তর मिक्ति । भारेल এवः भूक् भिक्ति ৫ মাইল বিস্তৃত। ইহার ৫০টী উপনগর नकन नमत्वज् धतिरल षाद्ध, ८१ ৫লকের অধিক হইবে। লোকসংখ্যা ২ - বৎসরের মধ্যে ইহার লোকসংখ্যা বেরপ বাড়িয়াছে, তাহার তুলনা পৃথি-ৰীর আবার কুতাপি দৃষ্ট হয় না। ভাতীর বিদেশী ইউরোপীরের সংখ্যা প্রার দেওলক। আমেরিকার আদিম নিবাসীদিগেৰ ভাষায় চাকাকোয়া অৰ্থে वस. जाहा इहेटल हिकादमा ननीत विवर তাহা হইতে আৰাৰ এই নগৰের

নামকরণ হইয়াছে। মিচিখান হদ श्हेर अहे नहीं अक्साहेल आतिहा अहे नगरत প্রবেশ করিরাছে, -এবং হুই শাথা প্রবাহিত করিয়া নগরকে তিনখণ্ডে বিভক্ত করিয়াছে। এই নদীর উপরে ৩৫টা সেতু এবং নিমে হইটা সুভূত আছে। অগ্রে এই নদীর জল মিচিছান হদে গিয়া পডিত, কিন্তু আশ্ৰহীয় শিল্পকৌশলে छेक मिटक ইহা হইয়াছে, তাহাতে মিচিয়ান হদের क्रम आकृष्टे इटेग्रा टेटात मधानिया देनिन-ইস ও মিসিসিপী নদীর সহিত মিলিরা মেক্সিকো উপসাগরে পৃতিত হইতেছে। এই নগর সমুজ্রপৃষ্ঠ হইতে ৬০০ মাইল छेक, किन्क इरमत शर्व इटेट अक्कि याज, ১৮৫৫ गारनत शुर्देश १कि माज देक हिन।

এই নগরে স্বারক্তশাসনপ্রশাসী প্রতিষ্ঠিত আছে। নগরবাসীরা প্রাঞ্চি ছই বৎসরের অন্ত ৩৬জন সভ্য ও ১লন মের বা অধ্যক্ষ সনোনীত করেন, তাহাদিগকৈ দইয়া এক কৌন্দিল সভা গাঁঠত হয়, ইহাঁদিগের হত্তে নগর শাস-দার ভার। নগরটা ১৮ বিভাগে বিভক্ত, প্রত্যেক বিভাগ হইতে ২জন সভা নির্বাচিত হন। ১৮৭৫ সালে টাক্স আদার করিয়া আয় ১ কোটা টাকারও অধিক ছিল, এখন আরও বাড়িয়াছে। যুক্তরাজ্যের জাতীয় কন্গ্রেস মহাসভার চিকাগো হইতে ৩ জন প্রতিনিধি প্রেরিত হন।

ठिकार्णा वाणिका अधान ज्ञान। इत्रे, ছুতা, রাসায়নিক দ্রব্য, চামড়া, ইট, কাঠ, লোহা ও ইম্পাতের জিনিষ. यमा, भूकत ও গোরু, শস্ত্য, ও বাহালুরী কাঠ লইয়া ইহার প্রধান কারবার। ১৮৭৫ সালে ১০ হাজার বড বড জাহাজ বাণিজ্যার্থ এথানে আসিয়া-ছিল এবং এখান হইতে বিদেশে গিয়া-ছিল। ইহাতেই বুঝা যায় কত কোটা (कारी देन्सद राशिका श्हेग्रा थारक। চিকাগোতে বাণিজ্ঞা দ্রব্য বার্ষিক প্রদর্শন হইয়। থাকে। ৮০০ ফিট দীর্ঘ ও ২০০ ফিট প্রশস্ত এক অট্রালিকা নির্মিত হইয়াছে, এক মাস ধরিয়া প্রদর্শন কার্য্য চলে এবং নানা-স্থান হইতে দর্শক সকলের সমাগম হয়।

১৮৭১ সাল্ চিকাগোতে যেরপ আমিকাও হর, বর্ত্তমান যুগে এরপ আর কুকাপি শ্রুত হর নাই। ুচই অক্টোবর রেবিনার রাত্তি প্রায় ৯টার সময় এক-খানি কার্চনির্মিত যরে দৈবক্রমে একটা

বাতী উণ্টাইয়া পড়ে, ভাহাতেই অগ্নি-দেব মূর্ত্তিমান হইয়া সে রাত্তি এবং সমস্ত পরদিন প্রচুর ভোজ্য পাইয়া দীর্ঘে ৪ মাইল ও প্রস্থে ১॥• মাইল স্থানের সমুদার ত্রব্য উদর্বাৎ করেন। অবশেষে কামান ছুড়িয়া কতকগুলি শ্ৰেণীবদ্ধ গৃহ দগ্ধ করিয়া অগ্নিদেবকে পরাস্ত করিতে হয়। ১৭,৪৫০ খানি গৃহ এই অগ্নিতে আছতি রূপে প্রদত্ত হয়। ১৮৮৬০ লোক গৃহ-শৃত্য হইয়াছিল, তন্মধ্যে ২৫০ জন লোক প্রাণ হারায়। প্রায় ৫০ কোটী টাকার সম্পত্তি ধ্বংস হইয়াছিল। লোকদিগের সাহায্যার্থে যথোচিত ফণ্ড স্থাপনের চেষ্টা করা হয় এবং দেশ বিদেশ নানাস্থান হইতে এক কোটী টাকা সংগ্রহ হয়। তদ্রিল নগরবাসী লোক সন্ধিলিত কতকগুলি সদাশয় হইয়া অন্ন, বস্ত্র, প্রভৃতির স্থবিধা করিয়া विभन्न जिल्ला विद्यास मार्था करत्न।

চিকাগো এই মহা অগ্নিকাণ্ডে যেরপ ক্ষতিগ্রস্ত হয়, তাহাতে ১০ বংসরের কমে যে সাম্লাইয়া উঠিতে পারিবে, কেহই এরপ কল্পনা করিতে পারে নাই। কিন্তু আমেরিকাবাসীদিগের আশ্চর্য্য অধ্যবসায়ে ৩ বংসরের মধ্যে ন্তন নগর স্থলরাকারে গঠিত হইল এবং ইহার গৃহসম্পত্তির ম্ল্য পূর্কাপেকা বিশুণ হইল। চিকাগোর অধিকাংশ স্থান লোহ, প্রস্তর ও ইইকনির্দ্মিত গৃহে পূর্ণ। এরপ স্থলর বাণিজ্য নগর আমেরিকার আর নাই। একটা পরঃপ্রণালী বায়া मिवियान द्रम इरेट नमध नगरत क्न যোগান হইয়া থাকে।

চিকারো শিকাবিষয়ে বিশেষ উন্নত। ইহার এক প্রকাণ্ড বিশ্ববিদ্যালয় ও তৎ-সংশ্লিষ্ট কতকগুলি কলেজ আছে। নানাবিধ কুলের সংখ্যা প্রায় একশত হইবে। তদ্ভিন্ন কিণ্ডারগার্ডেন প্রণা-লীতে শিক্ষা দিবারও কতকগুলি স্থান

आरक । किकिश्मा निकात जब ३५तेर সালে ৭টা কলেজ ছিল, সলীভেরও ক্ষতন্ত্র करनक चारह। এখানে পুরকালর, অনাথ-নিবাস, দাতব্য-সভা, হোটেস, ও উদ্যান অনেক গুলি আছে। প্রকাষ্ট ख्खनांगात्रत **मः**शा २०४, उथात्र नाना সম্প্রদারের লোক স্ব স্ব বিখাসমত ধর্ম-ষাজন করিরা থাকেন।

আবিষ্কার ও উদ্ভাবন।

মমুষ্যজাতি প্রথমে অল্ল অল্ল সংখ্যার मनवक ७ कुछ कुछ द्यांत आवक হইয়াছিল, তথন আপনাদিগের প্রতি-তাহাদিগের বাসীদিগের সহিতও পরিচয় ছিল না, প্রত্যুত পরম্পরে পরস্পরকে ঘুণা ও হিংসা করিত। হিন্দু যবন, গ্রীক বর্বর এইরূপ ভেদা-ভেদের সেইজন্ম সৃষ্টি হইয়াছিল এবং পর্বকালের জ্ঞান ও সভ্যতার যে উন্নতি হইয়াছিল, তাহা স্কীর্ণ সীমার অন্তভুত ছিল। বর্ত্তমান সময়ে মানবঞ্জতির পরস্পরের সহিত সন্মিলন কত বুদ্ধি হইয়াছে, একজাতি অপর জাতির জান, সভাতা ও উন্নতির অংশভাগী হইতেছে এবং সকলে মিলিয়া জগতের সাধারণ উন্নতির সহায়তা করিতেছে! ইউ ্রোপীয় জাতিরা গত পাঁচ ছয় শত বংসরের মধ্যে যে সকল অজ্ঞাত খান আবিষার ও আকর্য্য শিরবন্ধ ও বিজ্ঞান-কৌশন • উদ্ভাবন করিরাছেন, তাহার मःकिश विवत्रण अञ्चल अमा हरे-তেছে:--

शृष्टीक

১৪•৫ **হ**ইতে ৩২ পোর্দ্র নাবিক-গণ কর্ত্তক আফ্রিকার নিকটবর্ত্তী কেনারী, মেডিরা, প্রভৃতি বীপ।

১৪৮৬ পোর্তিক নাবিক ভাকে৷ ডি গামা কর্ত্তক উত্তমাশা অন্তরীপ।

১৪৯২ কলম্বস কর্তৃক আমেরিকার পশ্চিম ইতিয়া।*

১৪৯৮ ভাষো ডি গামা কর্ত্তক সমূত্র পথে ভারতবর্ষ।

১৫১০ আমেরিগো ভেদপক্সির্স কর্ত্তক দক্ষিণ আমেরিকা।

১৫২০ মাগেলান কর্জুক ফিলিপাইন दीन भूता

" জামেরিকা প্রাচীনকালে জাসিরাবাসী-দিগের এবং সম্ভবতঃ ভারতবাসীদিগের, প্রিক্ষান্ত হিল, কারণ তথার রাম সীতার উপাসক একলাডি त्वथा निवारक । ১٠٠٠ वृह्यसम् व्याहेनमञ्जूनीया हेहात जाविकात करत ।

day was a second স্ক্রের ক্রীয়পণ কর্ত্তক কামাসকাটকা। अनुभार क्षेत्रानिम कर्जु क छोटिही दीन। ५०३०-१) कारशन कुक कर्डक चार्डु-🐃 निषात निष्ठे माष्ठेथ ওয়েল্স এবং াল সাপত উইচ দীপ সমূহ। ১৯৪১ সার জেম্স রোস কর্তৃক দকিণ সমুদ্রের † বিক্টোরিয়াল্যাও। ৮৭৬ সার জর্জ নেয়াস কর্তৃক উত্তর সমুদ্রের পথ।

শিল্প ও বিজ্ঞান।

২৭৪ ভারত হইতে রেসম আনয়ন। ৪৯৩ ইউরোপে গুটীপোকা আনয়ন। ৬৬৩ ইংৰুত্তে কাচ প্ৰবৰ্ত্তন। >২ 🕶 कन्भान वा निश्तर्यन यञ्ज । ২২৩৯ পোড়াইবার জন্ত পাথরিয়া কয়-লার ব্যবহার। ১২৯৯ চসমার স্থাই। ১৩०७ वाक्स I

১৪৩৬ মুদ্রাষম্ভ উদ্ভাবন।

১৪৭১ ইংলওে মুদ্রাবন্ধ।

১৫৪৯ पृत्रवीक्रण रञ्जा

১৬১৯ ডাক্তার হার্কি কর্তৃক রক্ত সঞ্চালন।

১৬২৩ বাযুমান যন্ত্ৰ।

১৬৮ • वाश्वनिर्याण यञ्ज ।

১৭১০ নিউকোমেনের বাষ্পীয় যন্ত্র।

১৭২০ ইংলতে মমুষ্যের বীজে টীকাদান।

১৭২২ তাড়িতের উন্নতি।

১৭৭৬ সূতা কাটিবার যন্ত্র।

১৭৭৯ জলজান বাম্পের আবিষ্কার।

১৭৮৮ গালভানিসম তাডিত।

১৭৯৮ গোবীজে টাকা দান।

১৮৬৪ গ্যাসলাইট প্রবর্ত্তন।

১৮১২ লিথোগ্রাফী ছাপা।

১৮১৬ বাষ্পীয় মুদ্রাযন্ত্র।

১৮৩১ বেলওয়ে বাষ্পীয় যান।

১৮৩৩ ম্যাথেটিসম ও তাড়িতের ঐক্য-জ্ঞান। টেলিগ্ৰাফ উন্ধাৰন।

নূতন সংবাদ।.

া। পত ২৪এ মে ইংলভেশ্বরীর জন্মদিন-উৎসব তাঁহার সামাজ্যের সর্বত সালার হইরাছে। এই উপলক্ষে দান্রাজ্যের ভাবী উত্তরাধিকারী রাজপৌত্র জর্জ ডिউक, बादन ও रीत्रवं উপाधिनाञ कविद्यादह्म । सहादानीत १० वरमद पूर्व

ু ১৯১০ শুষ্টালে মেক্সিকো হইতে কংগ্ৰহণৰ ইউরোপীর দক্ষিণ সমুক্ত প্রথম দর্শন করেন।

इहेबाइ, जेयत छाशांक वित्रभीविनी কক্সন।

২। বেহারের জমীদার রাজেশরীপ্রসাদ আরা নগরে জলের কলের জ্ঞ লক্ষ টাকা দিয়াছেন, আৰ-शक रहेल जांत ८ रामात होका मिछ প্রস্তুত আছেন। কলির মহাপুণ্যকর এই क्रमान कार्या जञाल धनिन्न उठी ছউন।

ं। शक २२० वाट्यन महिन्तुइटेड ঝড এবং তৎসহ অগ্নিকাও হইয়া প্রায় ৭ হাজার লোক হত ও ১৫ হাজার আহত इहेब्राट्ड, उद्धित कठ य कठि इहेब्राट्ड তাহা বর্ণনাতীত।

৪। আমেরিকার যুক্তরাজ্যের জন-ডি চরকে ফিলিয়ার বর্তুমান সময়ের সর্বা- সংগ্রহ করিয়াছেন !

क्षधान धर्मकृटवड ।. डाहात or (काडी টাকা মূল্যের সম্পত্তি আছে, বার্থিক आत्र ॐ (कांग्रे ४० नक ग्रेका ।

e। নিক্সালোকদিগের সাহাব্যার্থ সথের বাজারে चमः বিজেতী रहेना পট গালের মহারাণী ৮ হাজার টাকা

বামারচন।

হিন্দু রমণীর বিদ্যাশিক্ষা ও পরাধীনতা।

(গতবারের শেষ)

वर्खभान वालिका-विमानित्यत्र अगानी অমুসারে শিক্ষিতাগণের দারা সাংসারিক কোন কার্য্যের প্রত্যাশা করা রুথা। গৃহস্থালি-কর্ম্মের স্থুসার হওয়া দূরে ইহাদিগের থাকুক, অনেক সময় থেয়াল মিটাইতে স্বামীকে প্রাণাস্ত ও मर्खश्रास इटेटल इस्। विनय, लब्बी, प्रा, माक्षिण, সরলতা, শ্রমণীলতা, সহিষ্ঠা প্রভৃতি সদ্গুণের পরিবর্ত্তে অহঙ্কার, নিল জ্বতা, চাঞ্চল্য, বাচালতা, আলস্ত-প্রভৃতি অসদ্গুণাবলীর षाधात इहेग्रा ज्ञान्य क्रूनगृह इहेएउ বহির্গত হন। শিক্ষার সঙ্গে সঙ্গে নারী-জাতি-তুলভ কোমলতা টুকুরও অবসান হয় ৷

কোন কোন স্থলে মিশনরী স্থল ममृद्द (एथा यात्र उथाकात्र निकालागी)

বৎসর বয়স্কা বালিকার মূথে শুনিরা-ছিলাম (অবশুই মিশনরী ফুলের ছাত্রী) যে ''হুর্গার মুখে পদাঘাত করি, বীও-গ্রীষ্টই আমাদের ঈশর।" কথা প্রবণ করিয়া তঃথিত হইয়াছিলাম সন্দেহ नारे, किन्द कुछ वानिकात তত্ত্ব সমালোচনা দেখিয়া হাস্ত সম্বরণে অসমর্থ হইয়াছিলাম। দোষ্টা অবশ্রই শিক্ষিত্রীর, কারণ স্কুমারমতি বালক वालिकाशन टेम्मटव द्यक्रभ मिका भाव, जनश्यात्री कार्याहे कतित्रा श्राटक, र्यूजताः শিক্ষাবিষয়ে দৃষ্টি রাখা পিতা মাতার বালক বালি-সর্বতোভাবে কর্ম্বর। কার পক্ষে পিতা মাতাই সর্বশ্রেষ্ঠ এবং गर्कारकृष्टे भिक्तकृ। किस जामारमञ দেশে আৰু কাল স্থাকিতা ৰাজা পাওরা কটিন হইরা পড়িরাছে। মাতা আরও অতৃত। একবার একটা ৩।৪। যদি স্থানিকতা হন, তাহা হইলৈ

পূৰ্বেই শিক্ষা কাৰ্য্য সপোদিত ্হওয়া কৰ্মা।

শুদ্ধ লেখা পড়া নিথাইছেই যে
গাইস্থা-ধর্ম শিকী দেওরা হইল তাহা নহে,
নিরু, চিত্রবিদ্যা, রন্ধন, সন্তানপালন,
সরল চিকিৎসাঞ্জণালী প্রভৃতি অভাভ অনেক কার্য্য প্রাকালে রমণীগণের শিকণীর বিষর ছিল।

িক্স্তাপ্যেবং পালনীয়া শিক্ষাণীয়াতি যত্নত:। দেয়া বরায় বিহুষে ধনরত্নসমায়িতা।"

ক্সাকে পালন করিবে ও যড়ের সহিত শিক্ষা দিবে ; পরে ধনরত্বে বিভূ-ষিত করিয়া জ্ঞানবান বরকে সম্প্রদান कतिरव। देश हिन्मुभारत्रत्र वानिकामिरगत भरक गृहहे विमानिकात প্রশস্ত কেত্র। মাতা যদি অশিকিতা হন, তাহা হইলে উপযুক্ত শিক্ষয়িত্রী রাখিরা শিক্ষা দেওরা উচিত ও পিতা মাভার সর্বাদা তত্তাবধান করা কর্তবা। বিবাহের পূর্বে স্থান্ডলে গৃহকার্য্য নির্বাহ করিবার প্রণালী শিক্ষা দেওয়া মাতার একান্ত প্রয়োজনীয় কার্যা। প্রাচীন মহিলারা আপনাপন ক্যাদিগকে সর্বাদা নিকটে রাখিরা নিজের म 🛪 করাইতেন। এখন আর बानिकामिंगरक धुना तथना कतिरङ प्रिश बाम ना। এই धूना (धूना इटेटा ভবিষাৎ শীবনে কিরপে গৃহস্থালী করিবে তাহাই भिष्ठि। এই श्वा इटेट কুটুম্ব

ক্ষতি বি দীন হংগীকে ভোজন করাইতে,
বন্ধন করিতে, শাশুড়ী ননদ দেবর
প্রস্থৃতির সহিত কিরূপ ব্যবহার করিতে
হইবে সমৃদর শিক্ষা করিত। এখনও
অনেক প্রিগ্রামে (যেখানে এখনও
সভ্যতা প্রোত প্রবেশ করে নাই) এরূপ
ধূলা খেলা দেখিতে পাওয়া যায়। আমাদের দেশের লোকগুলি এমনই স্বার্থপর
যে কন্সা সস্তান উপার্জন করিয়া দিবে না
বিধায় তাহাদিগের শিক্ষাবিষয়ে আদৌ
যত্মবান্ হয়েন না। কতদিনে যে হিল্পুগ
আপনাপন ভ্রম ব্রিতে পারিবেন তাহা
বিধাতা জানেন।

মার্জ্জিতবৃদ্ধি জ্ঞানবতী স্ত্রীলোকগণ দয়া, দাক্ষিণ্য, সরলতা, প্রমশীলতা, সহিস্কৃতা, লজ্জাশীলতা প্রভৃতি সদ্গুণ-রাজীর আধার স্বরূপা হয়েন, অসদ্গুণ তাঁহাদের নিকট স্থান না পায় ইহাই প্রার্থনীয়।ইলানীং কেবল স্থশিক্ষার অভাবেই আমাদের দেশে এরূপ রমণী বিরল হইয়াছে। হায়! যে দেশের রমণী 'দেবী' পদবাঁচ্যা, এক সময়ে ষাহাদের গর্মের সমস্ত হিল্পুলান গর্মিত ছিল, সেই দেশের রমণীগণ বিদ্যাশিক্ষা করিয়া ও পাশ্চাত্য সভ্যতার গুণে কঠোর প্রকৃতি ও ভীষণ-তরা হইয়া উঠিতেছেন ইহা কি কম পরিতাপের বিষয়!

(ক্রমশঃ)

बीक्नवाना (मरी।

** স্থানাভাবে এবার ইংরাজী স্তম্ভ গেলুনা, পরে এ অভাব পূর্ণ করা যাইবে। বা, বো, স।

वाभारवाधिनी शिक्विका।

BAMABODHINI PATRIKA."

"कन्याष्येवं पालनीया शिचणीयातियत्नतः"

ক্সাকে পালন করিবেক ও যত্নের সহিত শিক্ষা দিবেক।

৩৩*॰* সংখ্যা।

আষাঢ় ১২৯৯—জুলাই ১৮৯২।

ংম কল। ১ম ভাগ।

দাময়িক প্রদঙ্গ।

ফুতন পালে মেণ্ট—আগামী শীত-কালে পুরাতন পার্লেমেণ্ট ভাঙ্গিয়া নৃতন পার্লেমেণ্ট সংগঠিত হইবে।

ভারতের মূর্যতা—ভারতে ৩৮
কোটা ৫০ লক্ষ লোকের বাদ্য, তন্মধ্য
১ কোটা ১০ লক্ষমাত্র পড়িতে পারে।
৩৭ কোটা ৪০ লক্ষ ভারতবাদী এখনও
নিরক্ষর।

মৃত্যু—গত ৩০এ মে বাবু রামচক্র বস্থ লক্ষে নগরে যক্ষাকাশে দেহত্যাগ করিয়াছেন। ইনি একজন দেশহিতৈবী ও উৎসাহী খৃষ্টধর্মপ্রচারক ছিলেন। আমেরিকায় ছইবার গমন করিয়া বক্তৃতা দ্বারা খ্যাতি লাভ করেন এবং চিকাগো বিশ্ববিদ্যালয় হইতে এম্ এ উপাধি প্রাপ্ত হন। ইহাঁর বয়স ৫২ বৎসর মাত্র হইলাছিল। শরীরের তাপ—স্থলায় বয়স মন্তব্যের শরীরে একদিনে এত তাপ জন্ম, যে তাহাতে /৭ সের বরফ গলিয়া উগ্বগ্ করিয়া ফুটতে পারে।

দান—ময়মনসিংহের জমীদার বার বোগেল্রকিশোর আচার্য্য চৌরুরী নমি-রাবাদে ব্রহ্মপুত্র নদের উপর সেতু নির্মাণার্থ ৩০,০০০ টাকা দান করি-য়াছেন।

কলিকাতার পুরাতন কথা—
১৭০০ খৃষ্টান্দের পূর্বে কলিকাতার নাম
"স্তামুটী" ছিল। এখন যেখানে বড়
ডাকঘর প্রভৃতি আছে, তাহার নাম
গোবিন্দপুর ছিল। ১৭১৫ খৃষ্টান্দে
ইহা ব্যাঘ্,•ভন্তপূর্ণ জঙ্গলমন্ন একটা
পল্লী ছিল। ১৬৯০ সালের পূর্কের
কলিকাতার একধানিও পান্ধী ছিল না।

১৭০০ সালের প্রের্ব বিলাজী ছুরি, কাঁচি
ও ঔষধ প্রভৃতি কিছুই পাওয়া যাইত
না। ১৭২০ সালে ডংকান নামক এক
সাহেব হিন্দুদিগের সন্তোবের জন্ম ওলাবিবীর এক মন্দির নির্মাণ করেন, তথন
পাকা ঘর বাড়ী হুই একটা মাত্র ছিল।
২০০ বৎসরের মধ্যে কি যুগান্তর উপস্থিত
হইয়াছে!

দিতেব্য সভা—কলিকাতায় দরিজ
দিগের সাহায্যার্থ ডিব্রাক্ট চারিটেবল
সোসাইটা নামে বে সভা আছে, তাহা
হইতে ১৮৯১ সালে মাসিক গড় ৯৫৭
জনকে সাহায্য করা হইয়াছে, তাহাতে
বার্ষিক ব্যয় ৫২,৪২৭ টাকা হইয়াছে।
আম্স হাউসে ১২০ জন গরীব বিদেশীর
জ্ঞ ২০,২৫৬ টাকা ও কুষ্ঠাশ্রমে ৯০ জন
ক্রম ব্যক্তির জ্ঞ ১১,৪২৩ টাকা পড়িয়াছে। সর্কান্তদ্ধ মাসে ১১৬৭ জন লোক
সাহায্য পাইয়াছে এবং বার্ষিক ব্যয়
১৯৪১৬ হইয়াছে। আয়ের অপেকা ব্যয়

১০০,০০ টাকা অধিক হইরাছে এবং খণের পরিমাণ ১৮২৫১ টাকা দাঁড়াইরাছে সভার অধ্যক্ষের। সাধারণের নিকট দাতব্য প্রার্থনা করিয়াছেন, ২ টাকা দানও ক্বতজ্ঞতার সহিত গ্রহণ করিবেন। এরপ হিতকর কার্য্যে সকলেরই সাহায্য করা উচিত।

মহারাণী স্থনীতি—কুচবিহারের
মহারাণী কলমোতে গিয়া বেশ স্বস্থ
হইয়াছেন। তথাকার দৃশু সকল
দেখিয়া তিনি বড়ই আনন্দ লাভ
করিয়াভেন।

ত্রা-ডাক্তশর—সামন্ত বিষ্ণু কর্মকারের স্ত্রী একটা খুষ্টায় রমণী। তিনি
স্বামীর সহিত আমেরিকা ভ্রমণে গিয়া
ফিলাডেলফিয়া মেডিকাল কলেজ হইতে
এম ডি পরীক্ষায় উত্তীর্ণ হইয়াছেন,
আগামী শীতকালে দেশে ফিরিয়া আসিবেন। আনন্দ যোশী বাই সর্ব্ব প্রথম এই
পথ প্রদর্শন করেন।

অবলা-কুল-হিতৈষণী বিবী বট্লার।

বিবী জোজেফাইন ই: বট্লার
ইংলণ্ডের এক পল্লিগ্রামে জন্মগ্রহণ
করেন। ইহাঁর ি জাঁমাতা অতি সদাশন্ন ছিলেন এবং ইহাঁরা ভাই ভগিনীর্তে অনেকগুলি ছিলেন। ১৮৫২
সালে ইতি অক্সফোর্ড মহানগরীতে
পরিণীতা হন। তথাকার পাদরী-

সম্প্রদায় তথন দারপরিগ্রহ না করিয়া
কিয়ৎপরিমাণে এক্ষচর্য্য অবলম্বন করত
কালাতিপাত করিতেন। স্ত্রী ও পুরুষের
চরিত্রের পার্থক্য ও স্বতস্ত্রতা তিনি তথন
হইতে হৃদরঙ্গম করিতে আরম্ভ করেন।
এই মত তিনি চিরজীবন দৃঢ়তার সহিত
সমর্থন করিয়াছিলেন। বিবীর শারীরিক

অস্ত্রস্তা নিবন্ধন তাঁহারা উক্ত নগরী পরিত্যাগ করিতে বাধ্য হন। তাঁহার স্বামী চেল্টেনহ্যাম কলেজের সহকারী অধ্যক নিযুক্ত হন, স্থতরাং তাঁহারা তথায় গমন করেন। এথানে ১৮৬৪ সালে তাঁহার একমাত্র সস্তানের অকস্মাৎ মৃত্যু হয়। এই ছর্ঘটনার অনতিবিলম্বে বটলার সাহেব লিবরপুল কালেজের অধ্যক্ষের পদে नियुक्त इन। এই विमानारा ১००० এक হাজার ছাত্র ছিল। লিবরপুল এক অতি বৃহৎ বন্দর, এখানে জগতের দুরতম স্থান হইতে ভিন্ন ভিন্ন স্বভাব চরিত্রের ও অব-স্থার লোক সমবেত হইয়া থাকে। দম্পতি প্রশস্ত কার্য্যক্ষেত্র পাইলেন। প্রতিকল অবস্থায় পড়িয়া যাহারা সতীত্তরূপ অমূল্য রত্ন হারাইয়াছে, সেই সকল পতিতা নারীকে ইহারা আপনাদের গৃহে আশ্রয় দিয়া হিতোপদেশ ও হিতামুগ্রান শিকা দারা তাহাদিগকে সৎপথে আনম্বন করিতে চেষ্টা পান। অল্প দিনের মধ্যে তাহা-দিগের সংখ্যা এত বাডিয়া গেল যে তাঁহাদিগের বাটীতে কুলান না •হওয়াতে তাঁহারা প্রথমে একটি তার পর আর একটি বাটী ভাড়া করেন। পরম হিতকার্য্য সাধন করিয়া ইহারা ১৮१৪--१৫ माल भारी, ताम, जिनिवा ও মিলান নগরে ভ্রমণ করেন। শালে জিনিবা নগরে এক মহতী সভা আহুত হয়। ভারতবর্ষ ও ইংলঞীয় উপ-নিবেশ সকলে ইহাঁদিগের সাধু ত্রত वित्ताविक इटेग। ताबारे इटेट

ডাক্তার হৃদ্র পাণ্ডুরাং ১৮৭৩ সালে তাঁহাকে প্রোৎসাহিত করিয়া একথানি ১৮৮২ সালে মহাত্মা পত্র লেখেন। গ্রাডপ্টোন তাঁহার স্বামীকে উইনচেষ্টারের ক্যালেনর পদে নিয়োজিত করেন। তাঁহারা অবলম্বিত হিতরতে দিবা রাত্রি পরিশ্রম করিতে লাগিলেন। ভাগিনীদিগের নিমিত্ত উইনচেষ্টারেও একটি আশ্রয় সংস্থাপন করেন। সালে পতি পীড়িত হন, পর বংসর পীড়া বাড়ে; পীড়া বৃদ্ধি হওয়াতে তাঁহারা বিদেশে থাকিতে বাধ্য হন। পতি পুণ্যায়া বাস্তবিকই তাঁহার ছিলেন। তাঁহার নিকট যিনি আসি-তিনি উপক্ত না যাইতেন না। স্বদেশে প্রত্যাগমনকালে পথিমধো ১৮৯০ সালে তাঁহার মৃত্যু হয়। পত্নীকে এই বলিয়া তিনি জন্মের মত বিদায় হন-"প্রিয়ে ! তুমি কি আমার সঙ্গে ঘাইবে 🦵 যাইবে কি ?" পতিপ্রাণা পত্নী উত্তর करतन "हैं। नाथ। अवश गहित।" खीरक ছাড়িয়া তিনি কথনই দুর দেশ পর্যাটন করিতেন না। আমরা অবগত আছি স্বামীর জীবন চরিত লিখিতে তিনি এখন ব্যস্ত আছেন। যে স্ত্রী ছারার ন্তায় কান্তের অমুগ\$মিনী; তিনি যে তাঁহার সাধু জীবন বৃত্তান্ত প্রকটিত না করিয়া নিশ্চিত্র থাকিবেন, তাহা কবীনই সম্ভবপর নয়।

বিবী বটলারকে এই পতিতা নারী-

দিগের উদ্ধার কার্য্যে হস্তক্ষেপ করিয়া। ষে কত কষ্ট সহা করিতে হইয়া-ছিল, তাহা তিনি ভিন্ন আর কেহই জানেন না। প্রথমতঃ আপনার মনকে এ**ই কার্য্যে অভ্যস্ত ক**রিতে হইয়াছিল,পরে বড় লোকদিগের সহিত দেখা,তাঁহাদিগের তাঁহার কথায় অনাস্থা, এই সমস্ত প্রতি-বন্ধক অতিক্রম করিয়া কার্য্যে অগ্রসর হইতে হইয়াছিল। সাধারণের নিকট प्यांक्तालन ना कतिरल हिलाउ ना ७३ বিবেচনায় তিনি প্রকাশ্র স্থানে বক্তৃতা করেন ও আপনার মত প্রচারের জন্ম অবিশ্রান্ত চেষ্টা করিতে থাকেন। অনেক সময়ে লোকে তাঁহাকে বিরক্ত করিতে ছাড়িত না। অতীব আশ্চর্য্যের বিষয় উাহার ছর্বল শরীরে এতদূর পরি-শ্রম সহ হইত। অনেক সময় মন্দ লোকে-এমন কি তাঁহার জীবন পর্যান্ত নষ্ট করিতে উদ্যত হয়। বলা বাহুল্য তাহাদিকার একে তিনি যমদও স্বরূপ

ছিলেন। তাহারা যে তাঁহাকে অশেষ প্রকারে কণ্ট দিবে ও বিপন্ন করিবে তদ্বিয়ে সন্দেহ কি ? যাহাতে সকলে তাঁহাকে মারে, ধরে ও যন্ত্রণা এই অভিপ্রায়ে তাহারা পরিচ্ছদের আমল বুতান্ত সহিত প্রতি-ক্বতি প্রকাশ করিয়া হাটে, ঘাটে, মাঠে, পথে রাধিয়াছিল। স্বতরাং তাঁহাকে নাম ধাম গোপন করিয়া ও প্রতিদিন পরিচ্চদ কিছু না কিছু পরিবর্ত্তন করিয়া চলিতে হইত।

ইহাঁরই প্রয়ম্মে সভ্য জগং হইতে জ্বন্ত চৌদ্দ আইন উঠিয়া গিয়াছে। জগদীশ্বর ইহাঁকে দীর্ঘায়ু করুন! ইনি নানাপ্রকারে সংসারের মজল সাধন করিতেছেন। এই প্রাতঃস্মরণীয়া রমণী-কুল-হিতৈষিণী মহিলার বিষয় অনেকে বোধ হয় কিছুই জানেন না, তজ্জ্ম এই সামান্ত বিবরণ লিখিত হইল।

মুখমণ্ডল।

^{*}মনোভাব যত তার প্রকাশ বদনে <u>!</u>*

(শান্তিজল-- १ম সগ্।)

আমাদের ুর্থমণ্ডলই মনের ভাব | ফেলে। ছতত্ত্ববিবেকবিদ্ পণ্ডিতেরা প্রকাশ করিয়া থাকে। আত্ম-সংযম বা অভান্তরীণ ছরবন্থা সংগ্লেপন করিবার শতই প্রবাদ পাই না কেন, আমাদের মুখমগুল তৎসমুদয়ই অভিব্যক্ত করিয়া

মুধুমণ্ডল পরীক্ষা করিয়া জীবনের ফলাফল নির্ণয় করিয়া থাকেন। উত্তমাঙ্গের গঠন ও পরিমাণ, তাহার ভিন্ন ভিন্ন অবয়বের ভিন্ন ভিন্ন লক্ষণ এবং তন্মধ্যে ভিন্ন ভিন্ন

রেথার সমাবেশ ইহাই হৃতত্ত বিবেকের (Phrenology) বর্ণমালা। যাহারা এই সকল যথায়থ পাঠ করিয়া পরীক্ষায় সমর্থ, তাহারাই এই শাস্ত্রে প্রকৃত পণ্ডিত। আমাদের এরপ পাণ্ডিত্যাভিমান নাই এবং ইহার আবিদ্ধার সকলের উপর কতদুর নির্ভব্ন করা যায়, তাহাও বলিতে পারি না। আমাদের মতে চিকিৎসাশাস্ত্রের প্রমাণ যেমন বহুদর্শনদাপেক্ষ. ইহারও তদ্রপ। সমধর্মাক্রান্ত সমলক্ষণযক্ত সমা-ময় বেমন সমৌষধে আরোগ্য হয়. সেইরূপ সমরেথাবিশিষ্ট সমশিরাযুক্ত সমলক্ষণা-ক্রান্ত সদৃশ মুখমণ্ডল সকলও প্রায় সম-ভাবের অভিব্যক্তির স্বরূপ। যেরূপ চিকিৎসাশাস্ত্রের ব্যতিরেক স্থল অবিরল নহে, তদ্রপ হতত্ত্ব বিবেকের ব্যতিক্রম স্থলের ও অসন্তাব নাই। মন্থব্যের জন্ম প্রকরণ একরূপ হইলেও কেন তাহাদের মন্তক ও অক্তান্য অবয়ব একবিধ হয় না, তাহা স্ষ্টিকর্ত্তাই चुज वृक्तित আমাদের जारनन: ক্সিবার দারা সে রহস্ততেদ বিভূম্বনামাত্র। তবে ইহা ধ্রুব বিশ্বাস যে, যেমন বাহুজগতে দেহজ ব্যাধির প্রতীকারক ঔষধ সকল নিত্য বর্ত্তমান, কেবল প্রকৃত জ্ঞানাভাবেই আমরা তৎসমস্ত যথোচিত প্রয়োগ করিতে অসমর্থ, তদ্রপ অন্তর্জগতের আধিব্যাধি সকলেরও ঔষধ সকল ঠিক আছে, অভিজ্ঞতা অভাবেই আমরা তাঁহা নির্বা-চনে সক্ষম হই না। এই হেতৃ আমরা

অসাধ্য রোগের উপশম বা মহাপাপীর নবজীবনলাভ দেখিয়াছি এবং স্ফুশরীরের বিনাশ বা সাধুজীবনের পতনও প্রত্যক্ষ করিয়াছি।

পৈত্রিক ব্যাধির স্থার আমরা প্রায়ই পৈত্রিক আকার এবং গুণেরও উত্তরাধি-কারী। কাহার কাহার মুখঞী পিতৃ বা মাতৃ মুখের অমুরূপ। মাতৃণ প্রভৃতি নিকট কুটুম্বের মুথের ভাষ কাহারও মুখন্সীর গঠন দেখিতে পাওয়া যায়। আবার ধাত্রী ও মাতৃদোবে কাহার কাহারও মন্তক কদাকার হইয়া থাকে। স্বীয় স্বীয় কদভ্যাদেও কেহ কৈহ আপন আপন মুথতী কদর্য্য করিয়া থাকে। বসস্তাদি কতকগুলি রোগ দ্বারাও মুধ খ্রী-হীন ও ভিন্ন লক্ষণাক্রান্ত হয়। আজন্ম মরণ পর্য্যন্ত বয়দ ও গঠনাদির ছারা অত্যাত্য অবয়বের সহিত মুখমওলেরও অনেক পরিবর্ত্তন সংঘটিত হইয়া থাকে। मञ्रुषा ८व मूथ लहेगा अन्यस्य कृतिया থাকে, এই প্রকারে সেই মুখমগুলের কত পরিবর্ত্তন সংসাধিত হইয়া ক্রমে ভিন্ন আকার উৎপন্ন হয়। সদ্যোজাত শিশুর কুস্থমকলিকানিভ মুথমণ্ডল পলিত আকুঞ্চিত লোলিত শিরাযুক্ত প্রোঢ় মুধ এইরূপ নানা হইতে কত ভিন্ন! কারণে মুখনীর ু বৈলুকণ্য সংসাধিত হইলেও কতকগুলির সহজ লক্ষণ আমরা অপলাপ ক্রিতে পারি না। এই জ্যাই আমরা দৃষ্টি ও মুখন্তী দেখিয়া অনুনক সময় নরনারীর দোষ গুণের বিচার

করিয়া থাকি। পক্ষদ্ধ যেরপই হউক,
সিদ্ধান্ত অনেক সময় অসঙ্গত বলিয়া
বোধ হয় না। একজন রুতবিদ্য ধর্মনিষ্ঠ পণ্ডিতের প্রশান্ত মুখন্সীর সহিত
একজন অর্কাচীন ইন্দ্রিয়-পরতন্ত্র পাপিঠের কুটিল মুখ ভুলনা করিলেই ইহার
সভ্যতা অনায়াসে উপলব্ধি হইতে
পারিবে।

প্রগাঢ় প্রজ্ঞা সহকারে মানব-প্রকৃতি পর্য্যালোচনা করিলে প্রতিপন্ন হয় যে, স্ষ্টিকর্ত্তা মানবজীবন প্রহেলিকাময় করিয়া স্ক্রন করিয়াছেন। মর্ত্ত্যদেহে অবিনাশী আত্মার সঞ্চার,—একাধারে স্ক্রের সমাবেশ, সাকার ও নিরাকারের যুগপৎ আবির্ভাব—এই সকল চিস্তার আত্মহারা হইতে হয়। তবে সাম্বনার বিষয় এই যে ইহার নিরাকার ভাব সকল ষ্মাকারের অতীত হইলেও কেবল আকার ষারাই প্রকাশিত হইয়া থাকে। মনোবিজ্ঞানের অভিব্যক্তি বলা যাইতে পারে। ভেদে অভিব্যক্তিও ভিন্ন ভিন্ন লকণ-ুসাপেক। যে শাস্ত্র দারা স্থল শরীরের এই সমস্ত লক্ষণ পরীক্ষা করিয়া স্কা তর্ ও ভাবের পরিচয় পাওয়া যায়, তাহাকে সামুদ্রিক শাস্ত্র বলে। হুতত্ত্ববিবেক শামুক্তিক শান্তের শান্তিকমাত্র। ফ্রান্সিস জোসেফ গল পাশ্চাত্য স্বত্তবিবেকের আবিষ্ঠা। তাঁহার স্বলোকসামান্ত মুখ-মণ্ডলই তাহার অধিষ্ঠত শাস্ত্রের সত্যতার প্রত্যক্ষ প্রমাণ। বাঁহারা তাঁহার প্রশান্ত

মুখচিত্র সন্দর্শন করিয়াছেন, তাঁহারা অনায়াসে বলিতে পারেন যে প্রশাস্ত সমায়ত ললাট,উন্নত মস্তক,তীক্ষ নাসিকা ও উজ্জ্বল দৃষ্টি কিরূপ ভাবের অভিব্যক্ত। আলম্বিত হ্যক্তমুখ, শলাকানিভ দীর্ঘ নত নাসিকা (খাঁদা), নিবিড়' বক্র রেখা মুখ ও নাসিকা হইতে অধোভাগে বিস্তৃত, প্রশস্ত স্থুল চিবুক অগ্রভাগে ঝুকিয়া পড়িয়াছে এবং কুটিল ভ্রভঙ্গিযুক্ত ক্ষুদ্র অক্ষিদ্বয় কেবল কদাকার নয়, পাপবৃদ্ধির আধার বলিয়াও গৃহীত হইয়া থাকে। অনেক দস্লা, তঙ্কর ও ইন্দ্রিয়পরায়ণ হরাত্মার এইরূপ মুথ দৃষ্ট হয়। গুধচঞ্নিভ নাসিকা, উন্নত গণ্ড অস্থি. অসম রুক্ষ চিকুর আকর্ণ বিস্তৃত নিবিড়, নতশির এবং সুল চিবুক ও সুল নিয়-চুয়াল বিশিষ্ট ব্যক্তি প্রায় মিত্রলোহী, ক্লতম, লোভী, অস্যাপরতন্ত্র ও নর-ঘাতক হইয়া থাকে। ক্ষুদ্র বর্ত্ত লবৎ গোলাকার মন্তক, অগ্রভাগ বা সন্মুখ অত্যস্ত্ৰ নজ্ৰ জীৰং চেপ্টা এবং বক্ৰ টিবুকের সংক্তি হঠাৎ পৃষ্ঠভাগে মিলিত, চৌর, বিখ্যাত মিথ্যাবাদী ও ধর্মদেষীর মুথচ্ছবি। উন্নত প্রশস্ত পূর্ণ আয়ত ললাট, মধ্যভাগ মূদ্ধা স্পর্শ कतिशाट्य, विभाग नीत्गार्भगनिक वा ঈষৎ শ্বেতনীলাভ নেত্রযুগল, স্থন্দর কেশ ও অক অনিবিড়ভাবে মস্তকের মধ্য দিয়া কর্ণ হইতে কর্ণ পর্যাস্ত বিস্তৃত রহিয়াছে। এরপ মুখঞ্জী বিশিষ্ট ব্যক্তিই সাধু, সরল, मठावांनी, म्लंडेवांनी, खूत्रमिक, विश्वामी,

প্রসন্ন ও স্থন্দর প্রকৃতি বিশিষ্ট, সচ্চরিত্র, আধ্যাত্মিক ও বৈজ্ঞানিক শক্তি সম্পন্ন. মেধাবী ও ধার্মিক হইয়া থাকেন। প্রেত-তত্ত্ববিদ্ ইমান্তএল স্থইডেনবর্গ ও সদা-नन जात्मक नित्नत मूथष्ट्वि এই त्रथ। মহর্ষি দেবেন্দ্রনাথ ঠাকুরের মুখঞীও অনেকটা এই চিত্রের অমুরূপ। গ্রীব, মস্তিকের নিম্ন ও পশ্চাৎভাগ ঘন ও নিবিড় নত নাসিকা,ক্ষুদ্র তীব্র অকিষয় কদাকার মুথ ও চিবুক ছুরাচার কামুক ও মন্যপের লক্ষণ। রোমীয় ইতিহাসে সমাট ভিটেলস ও নিরোর মুখচ্ছবি এইরূপ চিত্রিত আছে। ভিটেলস অত্যাচারী,ইন্দ্রিয় ও উদরপরায়ণ, হরু ত্ত, স্বার্থপর নুপতি ছিলেন। স্বার্থ সাধন ও পশুবৃত্তি পরিতার্থ করাই তাঁহার জীব-নের একমাত্র লক্ষ্য ছিল। কথিত আছে তাঁহার হুরোদরের চরিতার্থতা জন্ম প্রত্যেকবার আহারের সময় ছই সহস্র ভিন্ন ভিন্ন পক্ষী ও মৎস্থা বধ করা হইত। স্থরাও আমুসলিক অমিতাচারের ত क्थारे नारे। रेशत नीवाग्रा अ অপবায়ে রোম সামাজ্য বিপর্যান্ত ও नर्सवास श्हेग्राहिल। ছুরাত্মা নিরো তদপেক্ষা অধিকতর অত্যাচারী ছিল। ক্থিত আছে যে সে রোমদাহ দেখিয়া আহলাদে সারঙ্গ বাজাইতেছিল। তাহার রাজ্যে শ্রেষ্ঠ বা ইতর কোন শ্রেণীর লোকই নির্কিলে দারা স্থত ধন সম্পত্তি উপভোগ করিতে সমর্থ ইইত না। ছবু ভ মাতৃহত্যা ও গুরুহত্যা করিয়া ক্রমে

সীয় পূর্ণগর্ভা বনিতাকেও পদাঘাতে
নিহত করিতে সঙ্কুচিত হয় নাই। অবশেষে ক্বতপাপের প্রায়শ্চিত্ত স্বরূপ
খুষীয় ৬৮ অব্দে আত্মঘাতী হয়।
এই হুর্ত্তরয়ের মুথচ্ছবি এরূপ অবিকল
চিত্রিত আছে যে, শিশুগণও তদ্তে
তাহাদের রীতি ও চরিত্রের বিচার
করিতে সমর্থ।

স্বাস্থ্য ও অবস্থার তারতম্যে সমভাব-সম্পন্ন সমলক্ষণাক্রান্ত মুথমণ্ডলেরও ইতর বিশেষ লক্ষিত হইয়া থাকে। সক্রেটিসের ভায় সমুন্নত বিশাল আয়ত ল্লাট বিশিষ্ট কত ক্লগ্ন শ্ৰমজীবী আমরা নিত্য রাজপথে দেখিতে পাই। স্থইডেনবর্গ, কত জোসেফ নিল দরিদ্র ও আতুরনিবাদের চিরনিবাসী। ও শারীরিক কর্মনীলতা এবং দৈহিক গঠন ও কান্তি অনেকটা আমাদের স্বভাব বা প্রকৃতি-সাপেক্ষ। সুন্দর বা কদাকার যেরপ উপাদানে পরীর বিশিক্ত হউক না কেন, ইহার অন্থি ও মাংস পেবার আকার, ধমনী শিরা ও সায়ুর नकालन कियात मिक्रा ও मुक्कन, भिथिक गर्रान्त्र मामअञ्च ও मोम्पर्ग এবং মানসিক শারীরিক বলাধান-সমস্তই প্রক্ষতি ও অভ্যাস দারা পরিবর্ত্তিত হইতে পারে। সম্ভাবে পশ্লিচালিত উদাম-শীল প্রকৃতি বিশিষ্ট ব্যক্তিদিগ্নের মুখমওল স্দার ও স্থী, মস্ক শুভব্দি ও[®]প্ৰাজা পরিজ্ঞাপক ইহাঁদের ছক্ স্থদর অনিবিড় कामन धवः नामिका, मिवा वःनीवः

ইংদিসের চকু নীলাভ বা ঈষৎ পাঞ্বর্ণ, এবং কেশ ঈষৎ ধ্রর। ইহারা স্থাবস্থার স্থাবন্ধ, আশাযুক্ত, ভাবগ্রাহী, চতুর, মার্জিতবৃদ্ধি ও প্রফুল্লবদন। ইহাদিগের ধারণা-শক্তিও অধ্যরনশীলতা চমৎকার।

ইহা দিগের শরীর বাত শ্লেমাদি তীক্ষ উত্তেজক পীড়া প্রবণ হইলেও শীঘ্র আরোগ্যলাভে সমর্থ। ইহাদের শারীরিক অপচয় সত্তর পরিপূরণ হয়, স্ক্তরাং ইহারা প্রায় দীর্ঘজীবী।

ক্ষমা

শক্ষমা তেজৰিনাং তেজঃ ক্ষমাব্ৰহ্ম তপৰিনাম্ ক্ষমা সত্যং সত্যবতাং ক্ষমা যক্তঃ ক্ষমা শমঃ ।"

ষাজ্ঞদেনী পঞ্চ পুত্র ও ভ্রাভূ শোকে মুচ্ছাগত, অস্তাম্ভ পরিজনবর্গ সকলেই শোকাকুল, পরিচারিকাগণ দ্রোপদীকে লইয়া মহাব্যস্ত—কেহ তাঁহার মুথে শীতল জল দেচন করিতেছে—কেহ নীরবে অশ্রসক্ত বদনে চামর ব্যজন করিতেছে-কেহ মুণাল-দও-ওচ্ছ দারা শোকাগ্রি নির্মাণ করিবার চেষ্টা পাইতেছে, কিন্ত হায়! অতি শীতল বস্তু রাশি প্রচণ্ড লেক্তে গাহিকা শক্তি থর্ম করিতে পারে, কিন্তু শোকানলের কি করিবে? কিদকরিতে পারে ? সাত্তনার বাক্য শোকাথিকে নির্বাণ না করিয়া দিগুণ প্রজ্ঞাতি করিয়া তুলে। শোকের সময় পরিচিত ব্যক্তিকে দেখিলে শোকাগুণ আরও বাড়িয়া উঠে। পালস্কোপরি হগ্ধ-रकन-निक भगात्र म औं कतित्रा, मान मानी গণ ৰারা সেবিত হইলে কি শোকের-তীর বঁরণা প্রশমিত হয় ? ংগৃহে আগুণ লাগিলে শতক্ষণ সে দাহ্য বস্তু পায়,ততক্ষণ অলিতে থাকে, পরে দাহ্ বস্তু সমূহ

নিঃশেষ হইলে ক্রমে অনল শিখা নত হইয়া পড়ে। ক্রমে উত্তপ্ত মৃত্তিকাও ঠাণ্ডা হইয়া যায়, কিছু কাল পরে সেই শূন্ত মৃত্তিকায় হয় ত গৃহাদি মস্তকোশ্নত করিয়া দণ্ডায়মান হয়, নয়, ছু একটা করিয়া উদ্ভিদ দেখা দিয়া দগ্ধ মৃত্তিকার শৃস্থ স্থল পূর্ণ করে; কিন্তু পোড়া মৃত্তিকা কথনও অমনি পড়িয়া থাকে না। ইহা যেমন নিসর্গের অথও নিয়ম, তেমনি শোকানল यथन जीरवत ऋनरत्र व्यर्तिंग करत्, ज्थन স্থথ, আশা, ভরদা, বিলাসবাসনা, উৎ-সাহ ও অধ্যবসায় প্রভৃতি আন্তরিক দাহা বস্তু মুকল দগ্ধ হইয়া কেবল উত্তপ্ত শুক্ত হৃদয়টী পড়িয়া থাকে, ক্রমে শোকের যন্ত্রণা মৃত্র হইতে মৃত্রতর হইতে থাকে, তথন আবার সুথ, আশা প্রভৃতি দেই শৃ্য क्रमस्य (नथा (मग्र।

দোপদী আজ শোকাকুলা, দাসদাসীগণের সেবা শুশ্রুষায় সে শোকানল নির্বাণ হইতেছে না। প্রিয় পরিজন
গণের সাম্বনা বাক্য সে শোকানলে মৃত
নিক্ষেপ করিতেছে। দ্রোপদীর চক্ষে
আজ সংসার বিভীষিকা পূর্ণ ঘোর নরক,

হাদরে যেন দাবানল হছ করিতেছে—দেহ
জীবনের ভার; কি জীবন দেহের ভার
কল্পনা তাহার মীমাংসা করিতে পারিতেছে না—দেহ ও জীবন বন্ধ্রম পরম্পর
বিচ্ছেদপ্রার্থী হইয়াও ক্তকার্য্য হইতে
পারিতেছে না; যেন পরস্পরকে বিচ্ছিন্ন
হইতে দিবে না বলিয়া লোহ দিল্পকে
কোন ভীমকায় পুরুষ তাহা চাপিয়া
বিসয়া আছে।

অমঙ্গলের নাম শুনিলে লোকের क्रमग्र निष्टतिया উঠে. किन्छ स्मान्तत सरधा ভাল আছে। যাহার স্থ সম্পদ আছে, তাহার মনে সর্বাদা ত্রাস, কখন বিপদ আসিয়া পড়িবে, আর যাহার উপর বিপদ আসিয়া পডিয়াছে তাহার বিপদের কট ক্রমে সহিয়া গিয়াছে। একটা প্রবচনে আছে "উচান বাড়ী বড় ভয়, পড়লে বাড়ি সম্বে যার।" তাই যাহার প্রাণে আঘাত লাগে নাই, তাহার ভবিষ্যতে আঘাত লাগিবার আশস্কায় অশান্তি ভোগ করিতে হয়, আর যাহার প্রাণে আঘাত লাগিয়াছে তহাির সেই कि ? সে মন্দের ভাল প্রাণের আঘাত বুঝে, সেই বিজ্ঞতা টুকুই তাহার মন্দের ভাল। হাসি ফাঁকা—অশ্রু গভীর; মন্ততা ও আমোদ প্রমোদ হাল্কা—চিন্তাশীলতাই সার। কি বলিতেছিলাম—বলিতেছিলাম याळारानीत कथा। जोशनी वास त्रवसी লাতা ও শিশু পুদ্রগধ্বের শোচনীয় মৃত্যুতে वशीत्रा । ক্রমে শোকের দারণ বরণা

অপেকারত মৃহ হইরা আসিল-হার্টটা বেন ব্যম্ভিত ও নিমীলিত হইয়া আদিল। এই ভাবে শোকবিধুরা জ্ঞপদ-ছহিতা অবস্থান করিতেছেন, তাঁছার অশ্রধারী-भु छ विश्वक वहन ७ की छ नंत्रन त्यन देशरा. ক্ষমা ও গাড়ীর্যা রাশি প্রকটিত করিয়াছে. তাঁহার স্বভাবসৌন্দর্যা যেন শত বিক্ষারিত হইয়াছে। বিধাতা স্বর্ণ পরী-কার ভাষ শোকানলৈ মন্তব্যের স্বভাব-ধাতৃকে পরীকা করিয়া থাকেন। এদিকে শোকাৰিত, ক্ষোভিত ও রোষান্বিত কৃষ্ণ ভীমাৰ্জ্জুন, দ্রোপদীর ভ্রাতৃ ও পুত্রহন্তা নৃশংস অশ্বথামাকে যুদ্ধে পরাজয় করিয়া বন্ধন পূর্বাক শিবিরে আনয়ন করিয়াছেন তাঁহাকে বধ করিতে উদাত হইয়াছেন। এই কথা ভানিবা মাত্র ক কণহদয়া, শোভনপ্রকৃতি কুঞা অবি-লম্বে ঘটনাত্তলে উপস্থিত হইয়া দ্রোণী-পদে প্রণাম করিলেন, পরে কাতরস্বরে व्यर्कनरक विललन, "८२ महावारि।, এ কি করিয়াছেন, মহাবীর অশ্বত্থামাকে ক্লান্তদেহ, মলিনবদন ও ধরাতলনিক্ষিপ্ত-নয়ন, দর্শন করিয়া কি তোমার কিছু মাত্র দয়ার সঞ্চার হইতেছে না ? কোন্ প্রাণে ইহাঁকে বধ করিতে উদাত হই-রাছ ? ইহার প্রতি নিঠ রাচারে আমাদের অধর্ম সঞ্চর হইবে, অউএব সত্তর ইহার বন্ধন মোচন কক্ষন। ইনি একে ব্ৰাহ্মণ, তাহাতে আবার গুরুপুত্র, ইহার এরপ ছুৰ্গতি করা কখনই তোমার উচিত নহে[®]। প্রবোগ, সংহার, আর মত্র সম্বনিত অক্রাদি

বাঁহার নিকট শিক্ষা করিয়াছ, ইনি তাঁহারই পুত্র, ইহাঁকে এরপ শান্তি দেওয়া ভোমার উপযুক্ত কর্ম হইতেছে না। যতদিন জীবিত থাকিবেন. প্রজারপে তোমার প্রক দোণাচার্যাও ততদিন সংসারে থাকিবেন। বিশেষতঃ ইহার জননী তোমার গুরুপত্নী,তিনি আজ জীবিত রহিয়াছেন, পুল্রশোক যে কি তুর্বিধহ তাহা আমি বিলক্ষণ জানিয়াছি, অতএব তোমার গুরুপত্নীকে আর সে শোকসাগরে নিমগ্ন করিও না। তিনি ৰীর-প্রস্বিনী বলিয়া স্বামিসহ অমুমূতা रुद्धन नार्रे। হে ধর্মজ্ঞ ! গুরুকুল সর্বাদা পূজ্য, বন্দনীয় ও কুপার ভাজন, দে কুলকে ছঃথিত করা তোমার যোগ্য কর্ম নহে, অতএব হে মহামতি! এরপ নিন্দনীয় কার্য্য করিও না, তোমার গুরু-পত্নী যদি আমার ন্তায় পুলুশোকে অজস্র অশ্রপাত করেন, তাহা হইলে তাঁহার এক একটা অশতে আমাদের বহু অধর্ম হইবে। ट्योभनीत वरिका ভীমসেন ক্রোধারক্ত নয়নে বলিলেন. "ক্লেণ্ড ! তুমি কোন্প্রাণে ইহাকে ক্ষমা করিতে বলিতেছ ? এই ছষ্ট, পামর নারকী ত্রাহ্মণ অবশ্রই বধার্ছ, ইহাকে বধ कतिराम, এ ব্যক্তি হুস্তর নরক হইতে নিস্তার পাইবে। তেখাির বিচারে এ কিসে বধের অযোগ্য হইল, বুঝিতে পারিলাম না। এই হুষ্ট চুরি করিয়া যে তোমার সঁর্বজনপ্রিয়, স্থদর্শন, কোমল কোরক তুল্য নিৰ্দোষী হুপ্ত শিশু গণকে বধ

করিল, ইহাতে উহার ও উহার প্রভুর কি লাভ হইল ? ক্লেঞ্ এ কখনই ক্লপার পাত্র নহে, অবশুই ইহাকে বিনাশ করা উচিত।" ভীম এই বলিয়া ক্রোধে অধীর হইয়া উঠিলেন, দ্রৌপদী আকুল-হাদয়ে ভীমদেনের হস্ত যুগল ধারণ করিয়া বলিলেন, "বীর! এই গুরুপুত্র আমাদের অপকারী হইলেও ইহাঁব অপকার উপেক্ষনীয়, আমি জীবিত থাকিতে কথনই তোমাকে এই অধর্ম্য कार्या निश्च श्रेटक पिव ना।" ट्योभपीत এই স্থশীলতা ও ক্ষমা দর্শনে ধনঞ্জয় মহা সম্ভষ্ট হইলেন; স্থশীলা প্রিয়তমা সকল সময়েই রম্যা। দ্রৌপদীর এই আচরণে সাত্যকি, নকুল, সহদেব, শ্রীক্লম্ব্য এবং উপস্থিত অভাভা স্ত্ৰী ও পুৰুষ সকলেই পরম প্রীতি লাভ করিলেন। দ্রৌপদীর এই আচরণে কঠিনহৃদয় ভীমের মনও मूक श्रेषा राज, हरकत रकोमूनी तानि কাহাকে না আনন্দিত করে গ मीत कर्मा. क्या ७ सभीना बांब অশ্বর্থামাকে নিরাপদ করিল. উন্মুক্তবন্ধন ও উদ্ধারপ্রাপ্ত হইয়া লজ্ঞা-বনত মুথে পাওব শিবির হইতে প্রস্থান কবিলেন।

দেবী কৃষ্ণে! ধন্ত তোমার ক্ষমা, তুমি
মাকুষী হইরাও তোমার অতুলনীর গুণ
সমূহে দেবী হইরাছ। দেবি! তুমি আর
একবার এ ভারত ভূমিতে অবতীর্ণা হইরা
আমাদিগকে ধর্ম ও ক্ষমা শিক্ষা দাও।
স্থাল, তুমি যে সকল গুণে ভারতবাসীর

निक्रे (मदी श्रेत्राष्ट्र, তোমার সেই সকল গুণ—দেই ছ:থকষ্ট-সহিষ্ণুতা, সেই नितालच. त्मरे मामाब्बी स्टेगा अ तकतन পারদর্শিতা—সেই গুরুজন সেবা—সেই ভোজন করাইয়া লক্ষ লক্ষ লোকের তৃথি সাধন করা—সেই করুণা, সেই ধর্ম নীতি-জ্ঞতা-সেই রাজনীতিজ্ঞতা-সেই সংসা-বের আয় বায় হিদাব রাখিয়া স্বামীর সাহায্য করা—সেই দানশীলতা আর সর্বো-পরি তোমার সেই ক্ষমা আমাদিগকে শিকা দাও। আজ গাউন বডি-পরিহিতা, দাস দাসী সেবিতা, স্বর্ণভূষণে পুতলীর স্তায় । যাপন করিতে পারি।

সজ্জিতা হইয়া বাস্তবিক আমনা মানীর পুত্লের ভার অকর্মণা ও গৃহ সজারুপে অবস্থিতি করিতেছি, গুণবৃত্তি ! তুমি তোমার গুণ সমূহে আমাদিগকে শিক্ষিতা কর, তাহা হইলে আমরা আর কালি-কলমের নিকট-পুস্তকের পাতার নিকট শিক্ষা করিতে চাহিব না। যদি তোমার সমস্ত গুণগুলির শিক্ষা না দাও, তবে তোমার ক্ষমা অণ্টী আমাদের শিক্ষা দাও, যাহাতে আমরা বছ পরিবার একারভক্ত থাকিয়াও পরম স্থথে কাল

পত্মিনীর প্রাসাদ।

এই কি চিতোর রাজপুরী হায় ? শত শত বীর জনমি যথায় যুঝি প্রাণ পণে স্বদেশের তরে, বিজয় লভিয়ে যবন সমরে. যশস্বী ইহল জগতের মাঝ। সে চিতোর—দশা একি হেরি আজ ? রাজপুরী যেন গভীর বিজন, দিবসেতে সেথা চরে শিবাগ**্**। অশিব আরব শুনি মাঝে মাঝে, চমকি উঠিছে বিজন সমাজে ! বক্ত পাথী বসি শাখীর শাখায়, বিলাপের গান গাইছে সেথায়। নীরবে একাকী বসি নিরজনে-- চিতোরের চিন্তা করি মনে মনে, ঘুমে অচেতন—দেখিত্ব স্থপন:-রম্য হর্ম্মাপরে রমণী রতন পতিত্রতা সতী রূপেতে হাঁহার

আলো করিয়াছে সে পুরী আবার ! এক---

পাপীষ্ঠ যবন-ইন্দ্রিয়েরর দাস দাঁড়ায়ে রয়েছে সে প্রাসাদ পাশ. নির্থিবে কারে १—সেই লাল্যায় চেয়ে আছে বেন চিত্রার্পিড্রাসন জ্বন্য বাসনা—পাশব প্রকৃতি বিনাশিতে আব্ধ অবতীর্ণা সতী। কহিলা ডাকিয়ে শোন নরাধম! রাজপুত নারী যবনের যম ! এই দেখ চেয়ে করে থর অসি নাশিব নিশ্চয় সমব্রেতে পশি। আন্ত-

নিটাইব তোর ইক্সিয়-লাল্যা অসির আঘাতে,—জীবনের আশা°

* গত বৈশাণ সংখ্যার চিত্র দেণ।

विकर्षन (म. जनस्पन जरत : ্নাহি পরিজাণ পত্মিনীর করে, ে দেশে কিরে যাবি কিরে ছরাচার **?** ভূনি সে নিনাদ ভীম গরজন. জ্মাতকে শিহরি উঠিছে যবন ! কাঁপে থর থর—তরাসেতে প্রাণ মেন ওঠাগত! করিছে প্রয়াণ আপন শিবিরে--দিল্লির সমাট. গৰি পরমাদ —বিষম বিভ্রাট। সিংহিনীরে হেরি শুগাল যেমন প্রাণভয়ে দুরে করে পলায়ন, এল বুঝি ওই?—ফিরে ফিরে চায় চাহিয়ে আবার উর্দ্বশাসে ধার— আবাদের পানে, তেমতি যবন আপন শিবিরে করিছে গমন. পঞ্চাত্মা উড়িছে সতীর ডরে।

সতীর কটাকে ভন্ম হয় পাপ,
পাপিছির মনে ভাই অমুতাপ;
নিজ পাপ শ্বরি মরমেতে হত।
জাগিছে হাদয়ে ক্বত পাপ যত।
তুষানলে যেন দহিছে হাদয়
পাপের দংশনে হাই হরাশয়।
ছাড় ছাড় ছাড় কুবাসনা ভার,
সতীর কোপেতে নাহিক নিস্তার!
অম্বর নাশিতে অমরা ছাড়ি,
আসিলা মরতে রাজপুত নারী।
'সতীর জয়' গাও শত মুথে
ভারত সস্তান ফ্লাইয়া বুকে।
সতীত্বের ধনি—ভারত রমণী
জ্বলম্ভ চিতায় পশিলা অমনি!

হয়— পাছে কলুষিতা যবন করে॥

वाहन अंगली।

পিয়ানোফোট এবং হারমোনিয়ম।

বাদ্য যন্ত্রের মধ্যে পিরানো ও হারমোনিরম অত্যুৎক্ষষ্ট। এই ছই প্রকার যন্ত্র বাদন করিতে কিছুমাত্র কষ্ট বোধ হয় না, এই জন্ম সভ্যদেশে স্ত্রীলোকেরা এই যন্ত্র ছইটি ভাল বাসে। এই ছই যন্ত্রের স্পাণা অর্থাৎ চাবী বা পর্দাগুলি একইক্ষপে সজ্জিত থাকে; প্রভেদ এই বে শিরানোর মধ্যে তার থাকে, সেই ভারে আঘাত লাগিয়া হ্রের নির্গত হয়, আর হারমোনির্গে বারুর যোগ লা'গিয়া উহার মধ্যস্থ রীডের চুঙ্গির ঘারা স্থর নির্গত হয়।

वामन व्यवानी।

পিরানো যন্ত্রের চাবীতে আঘাত করিলে বাদিত হয়, আর হারমোনিয়ম যত্রে ছই পদের ঘারা ভক্তা বা জাঁতা সঞ্চালন করিলে বাদিত হয়। জাঁতা সঞ্চালনের সময় প্রথমতঃ ছই পার্ছের ছইটা চাবী স্পর্ণ করিয়া বাম পদের ঘারা

চাপ দিতে হর, পরে দক্ষিণ পদের ছারা দক্ষিণ দিকের.জাঁতা পেষণ করিতে হর, কিন্তু কোন চাবী না ধরিয়া জাঁতা পেষণ করিলে হারমোনিরম এককালে নষ্ট হইয়া যার।

সপ্তস্বরের প্রকরণ।

সংগীত শাস্ত্রে ধ্বনি সপ্ত থণ্ডে বিভক্ত হইরা স্বর বা স্থ্র নামে আখ্যাত হই-রাছে। স্বরের নাম যথা;— বড্জ, ঋষভ, গান্ধার, মধ্যম, পঞ্চম, ধৈবত, নিথাদ। এই সমস্ত স্বর সাধিবার সৌকর্য্যার্থ ইহাদের আদ্য অক্ষরগুলি ব্যঞ্জক স্বরূপ ব্যবহৃত হইরাথাকে, যথা— সা, ঋ, গ, ম, প, ধ, নি।

স্বরগ্রাম।

একটা স্থর হইতে অন্থ স্থরের যে দ্রতা তাহাকে দাঙ্গীতিক অন্তর বলে। দা স্থর হইতে ক্রমে দাত স্থর, অতিক্রম করিয়া উর্চ্চে গমন করাকে অন্থলাম বা আরোহী বলে, আর ঐ প্রণালীতে নিমে আগমন করিলে বিলোম বা অবরোহী কহে। স্থরের পরম্পরাগত আম্লোমিক কিমা বৈলোমিক ক্রম অর্থাৎ শ্রেণীকে স্বর্গাম বা দারগম কহে। যথা সা, ঋ, গ, ম, প, ধ, নি; কিম্বা নি, ধ, প, ম, গ, ঋ, সা।

সপ্তক প্রকরণ।

সা, ঝ, গ, ম, প, ধ, নি এই সাভটী স্থাকে একত্রে সপ্তক্ষ কৰে। কোন স্থান ইইতে ভাহার সপ্তৰ স্থান প্রবাহন যে উচ্চতা বা গন্তীরতা, ভাহাকেও সপ্তক কহে। এক সপ্তকে সদীভের সমস্ত কার্য্য নির্কাহ হয় না, ইহা অপেকা আরও গন্তীর অর্থাৎ চড়া স্কর সর্কা আবশুক হয়। সাত্টীর অধিক স্কর নাই, স্কুতরাং আবশুক মৃত গন্তীরতর স্বর্থাম অর্থাৎ দ্বিতীয় ও তৃতীয় সপ্তক ব্যবহৃত হইয়া থাকে।

শুদ্ধ ও বিকৃত স্বর।

স্বরপ্রামের পরম্পর কোন ছইটা স্বরের মধ্যগত ব্যবধানকে প্রামিক অন্তর কহে যথা, সা হইতে ঋ, ঋ হইতে গ ইত্যাদি। নিম্ন সা হইতে উচ্চ সা প্র্যায় আটটা স্থরের মধ্যগত যে সাতটা অন্তর, তাহারা পরম্পর সমান নহে যথা, সা হইতে ঋ পূর্ণস্বর, ঋ হইতে গ পূর্ণস্বর, গ হইতে ম অর্ধস্বর, ম হইতে প পূর্ণস্বর, প হইতে ধ পূর্ণস্বর, ধ হইতে নি পূর্ণস্বর, এবং নি হইতে উচ্চ সা অর্ধস্বস্থ নেবেস্বা,

উক্ত নিয়মে পাঁচটা পূর্ণ দ্ব; এবং অর্দ্বরের যোগে যে সপ্তক প্রী শক্তি, তাহাকে শুরু বর্রাম বা ক্তিত প্র-কহে। উক্ত পাঁচটা পূর্ণ অছ্ মধ্যে জীর কের মধ্যে এক একটা দ্ব। মানব পাঁচটা পর্দা বসাইলে, তাগেকে পালন পাঁচটা হরের উৎপতি হালেওয়া, তাহাবিছত অর্থাৎ কম্মি ব ভাব সকলকে কহে। বথা, কোমল ব মানব সমান্তের ক্তি ব, কোমল ব প্রালাতির একটা সপ্তকের মধ্যে প্রীলাতির অর্কা সপ্তকের মধ্যে প্রীলাতির অর্কা

भक, भटकी भटनही, वावनायी, भिन्नी, त्याका, রাজা, মন্ত্রী সকলেই গৃহান্তঃপুরে স্ত্রীজাতির নিকট প্রথমে শিক্ষিত श्रेषात्वन । জীর এই কর্ত্তব্য প্র বৃত যদি তিনি পালন করেন. তাহাহইলেই नमछ जीवनवां भी कार्या এवः শেষ করিয়া উঠা কঠিন—তাঁহাকে আর পুরুষের কর্মের অংশ গ্রহণ করিতে रम ना। (य नकन खी चकी म चा जाविक কর্ত্তব্য পালনে পরাত্মখ হইয়া পুরুষের কর্মে হন্তকেপ করিতে যান, আমরা তাহাদিগকে স্ত্রীজাতির মধ্যে গণ্য করিতে ইচ্ছাকরি না।

মাতা যথন শিশুকে পুরুষ করিয়া সমাজে প্রেরণ করেন. পুরুষ মাতার নিকট অন্তঃপুরে শিক্ষিত সমস্ত বিদ্যা, সম্ভাব, সদ্গুণ, ধর্ম, নীতি প্রভৃতি শইয়া সমাজ গঠন কার্য্যে নিযুক্ত হন। মাতৃলৰ সম্পত্তি তথন তাঁহাকে সেই কার্য্যে স্থদক করে। রাজনীতি, ধর্ম-नौिं , अधायन, अधार्यन, कृषि, वानिका সকল কার্য্য তথন তিনি সহজে সুসম্পন্ন করিতে পারেন। মাতা জনসমাজের আদিওক। "গুরুণাক্ষৈব সর্ব্বেষাং মাতা পর্মকে। গুরু:"। সকল গুরুর মধ্যে ৰাতা পরমগুরু। এই কবিবচনের জর্থ এখন আমরা ব্রি ে পারিতেছি।

লোকে যে "ক্রী-সাধীনতা" "ব্রী-সাধীনতা" বলিয়া চীৎকাত্র করে এবং

দ্রীরাও কোন কোন সমাজে যে স্বাধী-নতা প্রার্থনা করিতেছেন, তাহা যদি আমাদের পূর্বের উক্তির সহিত সামঞ্জন্ত করিতে যাই, তাহা হইলে দেখিতে পাই रि खी श्रुक्ष रुउम्रा এवः खीरक श्रुक्ष করাই আজ কাল "স্ত্রী-স্বাধীনতা" নামে . ব্যবহৃত হইতেছে । যাহারা বলেন আমা-দের দেশের স্ত্রীর আদৌ স্বাধীনতা নাই. তাঁহাদের মূলভাব দোষাশ্রিত। পুরুষের কর্ত্তব্যের পার্থক্য তাঁহারা বোধ হয় স্বীকার করেন না। তাঁহারা মনে করেন যে স্ত্রী পুরুষের কর্ত্তব্য ভারগ্রহণ করিলে সমাজের আরও অধিক উন্নতি रहेरत, वर्था ५ मकरनहे श्रुक्ष ना इहेरन সে উন্নতি হইবে না। কিন্তু সেই "উন্নত" মতাবলম্বীদিগকে আমরা জিজ্ঞাসা করি— মানবশিশুর ভার তবে কে গ্রহণ করিবে ? যদি বলেন মাতাই তাহা করিবেন, কিন্তু মাতার এই উভয় কর্ত্তব্য পালনের ক্ষমতা, সময় ও স্বাভাবিক গুণ আছে কি না? আমরা পূর্ব্বে প্রদর্শন করিয়াছি যে মানব-শিশুকে ভীবীপুরুষের সমস্ত গুণে বিভূ-ষিত করা বাল্যক্রীড়ার স্থায় সহজ নহে. এবং তাহা সম্যক্ সমাধা করিয়া আবার সমাজ পালনের ভারগ্রহণ করিতে সক্ষমা স্ত্ৰী আছেন কি না আমরা তাহাজানিনা। তাহা যদি সম্ভব হইত, তবে বিধাতা স্ত্ৰী ও পুরুষের পৃথক্ সৃষ্টি করিতেন না।

মৃত্যুর পূর্ব লক্ষণ।

মৃত্যুর পূর্বে লক্ষণ জানিবার জন্ম অনেকের ইচ্ছা হয়, জানিতে পারিলে কেবল যে কোতৃহল চরিতার্থ হয় তাহা নহে, অনেক উপকার আছে সন্দেহ নাই। মৃত্যুর জন্ম প্রস্তুত হওয়া মমুষ্য-জীবনের একটা প্রধান কার্য্য, 'আমি শীঘ্র মরিব না' এই বিশ্বাদে লোকে অসাবধান হইয়া যথেচ্ছাচার ও পাপাচার করিয়া থাকে। 'মৃত্যুর আর বিলম্ব নাই' জানিলে সংসারেরও স্থব্যবস্থা করিতে মতি হয়, পরকালের সম্বলের জন্মও যত্ন হয়। কিন্তু মৃত্যুর পূর্বে লক্ষণ কিসে জানায়ায় ৫ জ্যোতিষীরা ইহা করিয়া দিতে পারেন বলিয়া গর্ব করেন, অনেক স্থলে তাঁহাদের গণনা সত্যও হইয়াছে। যাঁহাদের ভাল নাড়ীজ্ঞান আছে, তাঁহারা কেবল ২৷০ দিন পূর্বে নয়, ২৷৩ মাস পূর্ব্বেও মৃত্যুর ভবিষ্যদ্বাণী করিয়াছেন বিশ্বস্ত লোকের মুখে এরূপ কথা শুনিতে পাওয়া যায়। আমাদের দেশের প্রাচীন দর্শনে' 'পাতঞ্জ মৃত্যুর পূর্বে লক্ষণ বিষয়ে যে কতকগুলি সঙ্কেত উক্ত হইয়াছে, তাহা বহু চিন্তা ও অভিজ্ঞতার ফল বলিয়া বোধ হয়. এন্থলে তাহাই বিবৃত হইতেছে। এগুলি বর্ত্তমানকালে কতদুর সত্য, তাহা পরীক্ষার বিষয়।

১। বে ব্যক্তি দেববিমান, গ্রুব, শুক তারা, চক্ত্র-প্রতিবিশ্ব ও অক্ত্রজী (সপ্তর্ষিমণ্ডলস্থ নক্ষত্র, কেছ বলেন, ক্র-বিন্দু) দেখিতে পায় না, সে ব্যক্তি এক বংসরের পরে জীবিত থাকিবে না।

২। যে মহুষ্য স্থ্যমণ্ডলকে সহত্রমুথ রশিশৃন্য অর্থাৎ কিরণধারাব্যাপ্ত
না দেখে, এবং বহিমণ্ডলকে স্থ্যভূগল
দেখে, সে ব্যক্তি একাদশ মাসের পর
জীবিত থাকে না।

৩। যে ব্যক্তি মৃত্র বা বিষ্ঠা বমন
করে, অথবা রক্তবর্ণ ও শুত্রবর্ণ রস বমন
করে, কিংবা ঐরপ বমি হওয়ার স্বপ্ন
সন্দর্শন করে, জানিবে যে সে ব্যাক্তির
দশ মাস মাত্র আয়ু অবশিষ্ঠ আছে।

৪। অকস্মাৎ কোন ভয়াবহ ভূত, প্রেত, পিশাচ, যমদ্ত, কি কোন বিকট সত্ত্ব, অথবা গদ্ধর্কনগর, কিংবা স্ত্রবর্ণ বর্ণ বৃক্ষ দৃষ্ট হইলে দ্রষ্টা পুরুষ তদবধি নয় মাস মাত্র জীবিত থাকে।

৫। কোন কারণ নাই, অথচ হঠাৎ যদি চিরস্থল ব্যক্তি ক্ল হয়, চিরক্লশ ব্যক্তি যদি স্থল হয়, অজ্ঞাত কারণে যদি কাহারও প্রকৃতির পরিবর্ত্তন হইয়া যায়, তাহা হইলে জানিবে যে, সেই ব্যক্তির জীবন আর ৮ আট মাস মাত্র অবশিষ্ট আছে।

৬। কপোত, রক্তপাদ পক্ষী, গৃঙ্জ, কাক, উলুক (পোঁচা) কিংবা অনী কোন মাংসাশী পক্ষী বদি অক্সাৎ মন্তকোপরি আপতিত হয়, তাহা হইলে সে ব্যক্তি ছয় মাসের অধিক বাঁচিবে না।

৭। বহু কাক একত্রিত হইয়া

যাহাকে তাড়না করে, বানরেরা যাহাকে

খ্লি বর্ষণ করিয়া ব্যথিত করে, যে

আপনার ছায়া উপযুক্তরূপে দেখিতে পায়
না, সে চারি মাসের অধিক জীবিত

থাকে না।

৮। মেঘ নাই, অগ্নচ দক্ষিণদিকে বিহাৎ চমকিতে কিংবা রামধন্থ উঠিতে দেখিলে, হুই কিংবা তিন মাদ মাত্র বাঁচিবে, এরূপ অমুমান করা কর্ত্তব্য।

৯। ছতে, তৈলে, আদর্শে কিংবা জলে যদি আপনার নির্মান্তক কায়া দৃষ্ঠ হয়, তাহা হইলে বুঝিতে হইবে যে, সে একমাসের অতিরিক্ত বাঁচিবে না।

> । যাহার শরীর হইতে অগ্নিগন্ধ কিংবা শবগন্ধ নির্গত হয়, সে ব্যক্তির আয়ু তথন এক মাদের কিছু অধিক আছে, ইহা অন্তুমান করিতে হইবে।

১>। স্থান করিবা মাত্র যাহার বুকের জল তৎক্ষণাৎ শুকাইয়া যায়, সে ব্যক্তি দশ দিন মাত্র জীবিত থাকিবে, ইহা নির্ণয় করা কর্ত্তব্য।

২২। যে ব্যক্তি কর্ণদন্ম চাপিয়া অভ্যন্তরন্থ প্রীণ নির্মোষ (শব্দ) শুনিতে পায় না, চক্ষ্ চাপিলে চাক্ষ্য জ্যোতি দেখিতে পায় না, দেও অধিক দিন বীচে না।

३०। देकान नाती तुक्वित्व किश्वा

কৃষ্ণবন্ধ পরিধান করিয়া হাসিতে হাসিতে আমাকে দক্ষিণদিকে লইয়া যাইতেছে, এরূপ স্বপ্ন যে দেখে, তাহার মরণ নিক্ট।

১৪। উলঙ্গ সন্ন্যাসী হাসিতেছে, নাচিতেছে, ক্রুবদৃষ্টিতে চাহিতেছে, বিভ্রাপ্ত হইতেছে, এরপ স্বপ্ন দেখিলেও মৃত্যু নিকট হয়।

১৫। গর্ত্তে পড়িলাম আর উঠিতে পারিলাম না, অন্ধাগারে গেলাম আর দার রুদ্ধ হইল, এরূপ ^{*}স্থপ্প দেখিলেও অধিক দিন বাঁচে না।

১৬। অগ্নি মধ্যে প্রবেশ করিলাম, জলে ডুবিলাম, কিন্তু বাহির হইতে কিংবা উঠিতে পারিলাম না, এরূপ স্বপ্ন দেখিলে আয়ু শেষ হইয়াছে ব্রিতে হইবে।

১৭। ভয়ানক কৃষ্ণবর্ণ পুরুষ অস্ত্র উদ্যত করিয়া মারিতে আদিতেছে, কি প্রস্তরাঘাতে বধ করিতে আদিতেছে, এরূপী স্বপ্নু দেথিলে সেই দিনেই মৃত্যু হয়।

১৮। দীপনির্বাণের গন্ধ পায় না, রাত্রে অগ্নি দেখিয়া ভয় পায়, পর-নেত্রে আত্মপ্রতিবিশ্ব দেখিতে পায় না, এরূপ ব্যক্তি শীঘ্রই মৃত্যুগ্রাদে পড়িবে।

১৯। স্বভাবের বৈপরীত্য ও শরী-রের বিপর্যায় দেখিলে বুঝিতে হইবে তাদৃশ ব্যক্তির মৃত্যু নিকট হই-য়াছে।

২০। মুখ রক্তবর্ণ হইয়াছে, কিন্তু

জিহ্বা ক্লঞ্চবর্ণ, এরূপ হইলে তাহার মৃত্যু নিকট, ইহা ব্ঝিতে হইবে।

২)। নাদিকা বাঁকিয়া গিয়াছে, কর্ণদ্বয় নত অর্থাৎ ভাঙ্গিয়া পড়িয়াছে, বাম চক্ষে নিঃসাড়ে জল ঝরিতেছে, এরূপ হইলে দে নিশ্চিত বাঁচিবে না।

২২। এক অহোরাত্র বাম নাদি-কায় অথগুভাবে শ্বাদ বহিলে, তাহার আয়ু তিন বৎসরে শেষ হয়।

২৩। অনবরত ছই দিন রবি-নাড়ীতে খাস বহিলে তাহার জীবনের এক বৎসরেই শেষ হয়।

২৪। দশ দিন পর্য্যস্ত নাসিকার ছই রন্ধু দিয়া সমানরূপে খাস বহিলে দেড় মাসেই তাঁহার আয়ুঃশেষ হয়।

২৫। শ্বাস-বায়ু যদি নাসা পথ পরি-ত্যাগ করিয়া মুখ দিয়া নির্গত হয়, তাহা হইলে তাহার আয়ু শীঘ্রই শেষ হয়।

২৬। যাহার শরীর হইতে এক-কালে স্বেদ, মল, মৃত্র ও কুং অর্থাং হাঁচি নির্গত হয়, সে অধিক পিন বাঁচে না।

২৭। আসমমৃত্যু ব্যক্তি অরুক্ষতি (জিহ্বা), গ্রুব (নাসাগ্র), বিষ্ণুপদ (জমধ্য) এবং মাতৃমণ্ডল (নেত্রজ্যোতি বা চোকের পুতুল) দেখিতে পায় না।

২৮। যে ব্যক্তি এক রঙে অন্ত রঙ দেখে এবং এক রসে অন্ত রস অন্তব করে, সে ছয় মাসের মধ্যে যমপুরী দেখে। ২৯। যাহার কণ্ঠ, ওঠ, দন্ত, জিহবা ও তালু, সর্বাদাই শুক বলিয়া বোধ হন, যাহার করতল ও নেত্রপ্রান্ত নীল বর্ণ হইয়াছে, এরূপ ব্যক্তি ছয় মাস অস্তে প্রোণত্যাগ করিবে। উত্তমরূপ স্নান করিলেও যাহার হৃদয়, হস্ত ও পদ তৎ-ক্ষণাৎ শুক্ত হইয়া যায়, সে তিন মাস মাত্র বাঁচে।

৩ । আসনবদ্ধ করতঃ নিশ্চল হইয়া বদিলেও যাহার শরীর, বিশেষতঃ হৃদয় সবেগে কাঁপিয়া উঠে, যমদ্ত তাহাকে ৪ মাদ পরে আহ্বান করে।

৩১। সর্বাদাই বৃদ্ধি এংশ হয়, সর্বাদাই বাক্য খালিত হয়, সর্বাদ্ধণই রোজ দর্শন হয়, রাত্রে ছই চক্র, দিবসে ছই স্থা, দিবসে নক্ষত্রবাহ ও রাত্রে তারকাবর্জিত আকাশের চতুর্দিকে ইক্রধন্থ, পর্বতোপরি গন্ধর্বনগর এবং দিবসে পিশাচ এই সকল দেখিতে পাইলে বৃদ্ধিতে ইন্থি ব্য

তং। ধূলায় ও সকর্দম মৃত্তিকায় চলিয়া গেলেও যাহার পদচিত্র (পার্ফি বা পদাগ্রভাগের) থণ্ডিত দৃষ্ট হয়, সে শত মাসের অধিক বাঁচেনা।

৩৩। যাহার শরীর-বায়ু স্তম্ভিত হয়, যে মর্শ্মস্থান সকস্ক ছিঁ ব্লিয়া যাইতেছে বোধ করে, জলম্পর্শ অসম্ভ হয়, নিশ্চয়ই তাহার মৃত্যু নিকট।

৩৪। ভোজন করিরা উঠিতে বা উঠিতে যাহার কুলোধ হয়, হুদয় কাতর

হয়, দাঁতে দাঁতে ঘর্ষণ করে, তাহার হিহলে সে ব্যক্তির মরণকাল আগত ইহা निक्तरे व्यायुः त्थव श्रेत्राद्ध।

ं ७०। पृष्टि छ के रहेशार्छ অথচ স্বস্থির নহৈ, রক্তবর্ণ হইয়াছে অথচ বিবর্ত্তিত হইতেছে; মুথের উষ্ণতা নষ্ট হইয়াছে এবং নাড়ীও শীতল; এরপ

স্থির করিবে।

७५। निर्मान ७ जनस्र क रा तक्तर्वर्ग বিবেচনা করে, তাহার জীবন সেই পর্যান্ত।

বর্ষা।

গ্রীমগত, বরষার শুভ আগমন--গগনেতে ঘন ঘটা তায় বিহাতের ছট। হন্দভি আরাব তুল্য ঘন গর্জন, জলদ-নিক্ষে বুঝি ক্রিয়া যতন অনিয়মে আঁকা বেঁকা বিজলী কাঞ্চন বেখা আঁকিয়াছে স্বরগ-নিবাসী কোন জন।

নীরদ ভরসে দেখি দামিনীর শোভা, লজ্জায় মলিন মুখে চক্রম। পলায় ছু'থে. **অভিমানে** মলিনা কৌমুদী মনোলোভা: পতির ছর্দশা হেরি তারকা নিচয় হতাশ অস্তরে চুথে মানবাদে মানমুখে করিতেছে শশাক্ষে। প্রীশ্চাত আশ্রয়।

দারিদ্রা দশায় পতি পড়ের যথন. मानिनी तमगीशन না ৰায় পিতৃভবন—

করে সীতা, বৈদর্ভীর পথান্মসরণ। ঝিঁঝিঁরা হরষ ভরে তামুরা বাদন করে মহানন্দে কলাবৎ গায় ভেকগণ।

ত্বাগমে চাষাকুল আনন্দিত মন, মাতৈঃ মাতৈঃ বলে আশ্বাসি ক্লযকদলে বস্থন্ধরা শস্তে পূর্ণ করহ এখন; ক্ষতিভয়ে চাষ। যদি ব্যাকুলিত হয়, তুমি ধীর বরষণে ত্রাড়ায়ে শলভগণে ক্লমকগণেরে কর নির্ভয়-হৃদয়।

তোমার মধুর মেঘ গর্জন শ্রবণে চঞ্চলা প্রকৃতি বালা গাঁথিয়া কদম মালা পরাইবে তব গলে হর্ষিত মনে: আনন্দেতে শিথিকুল পেথম ধরিবে মেঘনাদ প্রবণাশে সম্ভাষিয়া কেকাভাষে কলাপ কম্পিত করি তোমাবিজনিবে ...

তব মেঘে জলধয়ু উদিবে যথন,
জগৎ দেখিবে রঙ্গে,
শিথিপুচেছ মেঘ সঙ্গে,
কোন্ চিত্র সমধিক নয়নরঞ্জন!
গ্রীশ্বগত-বরষার শুভ আগমন,
বড় সাধ হয় মনে
মিশিয়ে মেঘের সনে
যক্ষের নির্দিষ্ট পথ করি বিচরণ।*

পূত রামগিরি রাম চরণ পরশে;
ক্ষণ তথা বিচরিয়া
পরে মাল ক্ষেত্র দিয়া
দেখিব সে আঞ্চুট মনের হরিষে। (১)
কুশাঙ্গী নর্ম্মদা যথা বিদ্ধ্য পাদদেশে,
দেই স্থানে কিছুক্ষণ
স্থথে করি বিচরণ
উপনীত হব পরে দশার্শ প্রদেশে।
৮

দশার্ণের রাজধানী বিদিশা দেখিব (২)

যদিও সে বাকা পথে

হবে উজ্জয়িনী যেতে

তবুও কবির প্রিয় কাজেই যাইব। (৩)

 * মেঘদুত নামক অংশিছ গ্রেছর নায়ক যক্ষ মেঘকে অলকায় যাইতে যে পথ নির্দেশ করিয়।
 দেয়।

(>) বর্ত্তমান অসমরকটক। (২) বর্ত্তমান ভিল্লসা, বেত্রবতী বা বেতোয়া নদীর তীরবর্ত্তী। (৩) কালিদাস উজ্জ্বিনীবাসী, অলকায় বাইবার পথে উজ্জ্বিনী বাইতে হইলে বেঁকা পথে বাইতে ইয়, প্রিয় উজ্জ্বিনী বর্ণন করিবার অন্য কালিদান (विशृष्ठ थ्राव्य मिना मिन्ननि, व्यवश्रीत तास्त्रानी, विमाना वा उष्क्रिती, (8) (हतिव हत्रत्य उहा व्यर्गथ्य यपि, (4)

S

পদ্মগন্ধা গন্ধবভী (৬) মহাকালালয়, দেবাচলে ষড়ানন, চর্মন্বভী দরশন (করিব), যথা রম্ভিদেব কীর্ত্তি স্রোভোরূপে ব'য়। (৭)

দশপুর দেখি পরে ত্রন্ধাবর্স্তে গিয়া, কৌরবের কুরুক্তেত্রে, হেরিব সভৃষ্ণ নেত্রে, পবিত্র হইব সরস্বতী-বারি পিয়া।

50

কনথল, হিমাচল, গঙ্গাতরঙ্গিনী,
হংসদ্বার, ক্রোঞ্চাচলে,
পাছে রেথে যা'ব চলে,
কৈলাসে—যথায় হর পর্বাত-নন্দিনী
দেখিব কেমন দুশু অলকার মাঝে,

মেঘের পথ বক্ত করিয়া দিয়াছেন। (৪) বিশালা শিপ্সানদীর তীরে অবস্থিত। (৫) কবি "মেম্ম দুডে" উজ্জারনীকে স্বর্গপণ্ড বলিয়া বর্ণন করিয়াছেন।—"পুর্ব্বোদিস্টামমুসর পুরীং শ্রীবিশালাং বিশালাম্। স্বয়ীভূতে স্চুন্নিত মৃত্রুল স্বর্গিনাং গাং গতানাং, শেবৈঃ পুণাক্ত তিমব দিবং কান্তিমৎ পণ্ডমেকম্।" (৬) গক্ষবতী-নদা বিশেষ। (৭) কথিত আছে দেশপুরাধিপতি রম্ভিদেব গোমেধ মজ্জ করেন, সেই সমন্ত গোলার চর্ম হইতে বে শোণিতী আৰ হয়, সেই শোণিতে চর্ম্মক্তী বা বর্ধনান ক্ষল

- ৬। পড়িলে ভেড়ার শৃঙ্গে ভাঙ্গে হীরার ধার।
- १। পড়ে মরে বঙ্গের রাজা।
- ৮। পণ রক্ষায় প্রাণ হারান।
- পণেক থেলে ক্ষণেক গায়,
 কাহনেক থেলে সায়াদিন গায়।
- পণ্ডিতে চ গুণাঃ সর্ব্বে মূর্থে দোষা
 হি কেবলং।
- ১১। পতির পায়ে থাকে মন তারে বলি সতী।
- ১২। পতির মরণে সতীর মরণ।
- ১৩। পতিরেকো গুরুঃ স্ত্রীণাং।
- ১৪। পথি শূদ্রবদাচয়েৎ।
- ১৫। পথে পেলাম টাকা, চৌদ্ধ আনাই লাভ।
- ১৬। পথে পেলাম কামার, দা গড়ে দে আমার।
- ১৭। পথে হাগে চোথ রাঙায়।
- ১৮। প্রসা দিয়ে থাই দই,
 কি কর্বে গয়লানী সই।
- ১৯। পর আর পরমেশ্বর। †
- ২০। পর প্রত্যাশী নর, গাছে উঠে মর।
- ২১। পরভাতী হও ত পর্বরী হইও না।
- २२। পরে দেবে চেয়ে,

্পেট ভর্বে থেয়ে।

- ২৩ পরে তসর ধার ঘি, তার আবার ধরচ কি ?
- ২৪ ু পরিতে হবে শাঁকা, তবে কেন মুথ বাঁকাঁ ?

† অংকিখাসী লোকের কথা। বিখাসী বলেন "বার কেউ নাই, তার তুমি আছে হরি দয়াময়।"

- ২৫। পরের ছেলে থায়, আর বন পানে চায়।
- ২৬। পরের ছেলেটা থায় এতটা বেড়ায় যেন বাঁদরটা; আপনার ছেলেটি থায় একটি বেডায় যেন লাটিমটি।
- ২৭। পরের ধনে পোদারী, লোকে বলে লক্ষীশ্বরী।
- ২৮। পরের কথায় লাথি চড়, আপনার কথায় ভাত কাপড়।
- ২৯। পরের ঘি পেলে, প্রদীপে দেয় ঢেলে।
- ৩০। পরের চাউল পরের ডাউল, নদে করেন বিয়ে।
- ৩১। পরের পিটে, বড় মিটে।
- ৩২। পরের পুতে বরের বাপ।
- ৩৩। পরের জন্মে ফাঁদ পাতে, আপনি পড়ে মরে তাতে।
- ৩৪। পরের মাথায় কাঁটাল রেথে, আপনি কোয়া থায়।
- ৩৫। পরের মন আঁধার কোণ।
- ৩৬। পরের বেদন পর কি জানে ?
- ৩৭। পরের লেজে পা পড়্লে তুলাপানা ঠেকে, আপনার লেজে পা পড়্লে কঁয়াক

আপনার লেজে পা পড়্লে কঁয়াক ক'রে ডাকে।

- ৩৮। পরের হাতেধন, পেতে অনেকক্ষণ।
- ৩৯। পরের সোনা না দিও কানে, কেড়ে নেবে হেঁচ্কা টানে।
- ৪•। পরের মল কর্তে গেলে আগে আপনার মল হয়।

8>। পর্কতের মুষিক:প্রাসব। 8২। পলকে প্রালায়।

৪৩। পক্ষীর মধ্যে ওচাঁ, নাম কালাখোঁচা। (ক্রমশঃ)

দোয সংশোধন।

প্রথম পরিচেছদ।

মনোরমা কলিকাতার মধ্যবিত্ত অব-স্থার একটী ক্ষুদ্র পরিবারের গৃহিণী। সরলা তাঁহার পালিতা ক্যা। নিক্ট-বন্ত্ৰী কোন পল্লীর একটা অসহায়া বিধবা একটা পুত্র ও একটা কলা পরলোক গমন করেন। বালক বালি-কার ছরবস্থার কথা শুনিয়া—তাহাদের ভবিষাৎ বিপদের কথা ভাবিয়া মনোর্মা কাতর হইয়া পড়িলেন। নিজেদের সংসারের অবস্থা তত সচ্ছল নহে, তা'তে আবার ছই তিনটী ছেলে মেয়ের খরচ আছে। এজন্ত মনোরমার স্বামী অমর বাবু কিছুতেই এই অনাথ বালকবালিকা-দিগকে গৃহে আনিতে সম্মত নহেন। व्यत्नक व्यन्त विनम्न कतिमा कामाकारि করিয়া মনোরমা শেষে স্বামীর মত कतिरलन এবং বালকবালিকাকে গুহে थानाहरलन । वालकती वयरम वष्-- वाति বৎসরের, বালিকা ছয় বৎসরের মাত্র।

করেক সপ্তাহ পরে অমর বাব্ বালককে বারাশত বোর্ডিং স্কুলে রাথিয়া আদিলেন। বালক বিনয়কুমার বোর্ডিংএ থাকিয়া বেশ মনোযোগ সহকারে লেথা পড়া করিতে লাগিল। বালিকা গৃহহ

থাকিয়া সংসারের কাজ কর্মা ও সঙ্গে সঙ্গে কিঞিৎ লেখাপড়াও শিখিতে লাগিল। অনেক গুণ থাকিলেও বালিকা অত্যস্ত চঞ্চল। চঞ্চল বলিয়া অনেক সময়ে নানাপ্রকার অন্যায় কাজ কবিয়া বলে। যতই সময় যাইতে লাগিল সরলার দোষগুলির সংখ্যা বৃদ্ধি হইতে লাগিল। কোন প্রকার অনিষ্ট করিয়া গোপন করিতে, মিথ্যা বলিতে, অন্তের দ্রব্যাদি হরণ করিয়া তন্থারা নিজের মানরকা করিতে শিখিতে লাগিল। শাসনে, তাড়নাও তিরস্কারে দিন দিন অসদমূ-ষ্ঠানের তালিকা বাড়িতে লাগিল। স্লেহ মমতা, ভালবাদা, আদর ও যত্নের মধ্যে বাস করিতে পাইয়াও সরলা সংশোধিত হইতেছে না দেখিয়া মনোরমার ভাবনাও বাড়িতে লাগিল।

দ্বিতীয় পরিচেছদ।

অমর বাবু সময়ে সময়ে এ সকল
কথা জানিতে পারিয়া মনোরমাকে
অত্যন্ত তির্থার করিয়া বলিতেন—মা
বাপ-মরা গরিবের ছেলে বাড়িতে আনিরা
এইরূপ অস্থবিধা ভোগ করিতে হইবেঁ
জানিয়াই ত আমি তথ্ন,সম্মত হই নাই।

এখন দেখদেখি সমস্ত পরিবারটা—এমন কি সময়ে সময়ে পাড়ার লোকেরাও বিপন্ন

ক্ষেপ্রথমে সময়ে পাড়ার লোকে ও বিরক্ত হইয়া পড়িতেছে।

মনোরমা অত্যন্ত বিপন্ন হইয়া পড়ি-লেন। মেয়েটাও ক্রমে আপনার অবস্থা বুঝিতে পারিয়া বড়ই বিষণ্ণ, কিন্তু তাহার অভ্যাস দোষ আর কিছুতেই यारेटिट्ह ना। मत्नात माम विनय-কুমার মধ্যে মধ্যে আসিয়া তাহাকে দেথিয়া যায়, হুএকদিন ভগ্নীর নিকট থাকিয়া আবার চলিয়া যায়। ছেলেটী মেয়েটীর চেয়ে ভাল হইতেছে দেখিয়া অমর বাবু ও মনোরমা কিঞ্চিৎ তৃপ্তি অমুভব করিয়া থাকেন, কিন্তু সর্বার জ্ঞ সর্বদাই চিন্তিত থাকেন। এমন সময়ে একবার বিশেষ কার্য্যোপলক্ষে বিনয় কয়েক দিন কলিকাতায় অমর বাবুর বাড়ীতে আসিয়াছে। সরলা যে कहे भाग्न, मत्रनात त्य कि छूटे जान नार्श ना, সম্পার প্রতি কেহ সম্ভুষ্ট নহে, সরলা এ সকল কথা দাদাকে বলিল, কিন্তু কার দোবে এরপ হইতেছে তাহা আর বলিল না, এমনিভাবে বলিল যেন তার একটুও (माय नाई।

বিনয় সমস্ত শুনিয়া শেষে বলিল,
যত কণ্ঠ হউক না কেন, বাবা ও মাকে
বিরক্ত করিও না টুলেক্স তোমার বৃদ্ধির
লোবে তোমার আমার হজনেরই যেন
সর্বানীশ হয় না।

দাদার কথা ভনিয়া সরলা মরমে
 মরিয়া গেল। তাহার সমন্ত শরীয়.

মনে যেন কেহ বিষ ঢালিয়া দিল। সে
দীর্ঘ নিঃশাস ত্যাগ করিয়া মনে মনে
বলিল—"হায়রে পোড়া কপাল, আমি
মরিলেই সকল জালা জুড়ায়।"

তৃতীয় পরিচেছদ।

মনোরমার সরলাকে একটু প্রয়োজন হইয়াছে, অনেকগুলি কাপড় ছিঁড়িয়াছে, হজনে বসিয়া কাপড়গুলি সেলাই করিবেন বলিয়া আহারান্তে তাহাকে থুঁজিতেছেন। কোথাও না পাইয়া শেষে থিড়কির বাগানে গিয়া "সরলা সরলা" বলিয়া হুই তিন বার ডাকিতে ডাকিতে সরলা ছুটিয়া আদিল। তাহার আসার ভাবে বোধ হইল যেন সে কিছু বিশেষ কাজে ব্যস্ত ছিল। মনোরমা তাহাকে বলিলেন এস দেখি আজ একটু কাজ আছে, হজনে সেই কাজটুকু করিগে, দেখ্বে ছজনের মধ্যে কে বেশী সেলাই কর্তে পারে। তথন সরলার সে কাজ করিতে একতিল ইচ্ছা না থাকিলেও অমানমুথে হাসিতে হাসিতে বলিল্— মা ! হাজার সিগ্গীর সেলাই করিতে পারিলেও আমি তোমার সঙ্গে পালা দিয়ে জিত্তে পার্বো না, আর তোমার সেলাই কেমন স্থলর হয়। মনোরমা বলিলেন তুমিও চেষ্টা করিলে হয়ত আমার চেয়ে ভাল পার্বে।

স। হায়রে আমি আরার চেষ্টা কর্বো! ' মা। কেন তুমি কি চেষ্টা কর না? আমার যথনই চেষ্টা কর, তথনই কি ভাল হয় না?

স। হাঁমা, আমি যথন চেষ্টা করি, তথন আমার কাজ খুব ভাল হয়, কিন্তু তাই বলিয়া তোমার মত কি হয় ?

ম। আমার মত তুমি বড় হলে আমার
মত হবে। তুমি এখন ছেলেমান্ত্র,
ছেলেমান্ত্রদের মধ্যে তোমার কাজ
খুব ভাল বলিতে হয়। "যত্ন করিলে
তাহার কাজ বেশ স্থানর হয়, তাহার

বয়দের **८**मदब्रदम् त সকলের অপেকা তাহার তাহার কাজ মারের ভাল লাগে" ভনিয়া সরলা আনন্দে ফুটিরা উঠিয়াছে, উৎসাহে তাহার স্থলার মুখ-থানি টুক্টুকে লাল হইয়া উঠিয়াছে, চকু হটি বড় হইয়াছে,সঙ্গে সঙ্গে চথের পাতার क्लाल जल प्रथा निया है। मत्नात्रमा একটীবার পশ্চাৎদিকে তাকাইলেন-দেখিলেন সরলা একেবারে গলিয়া গিয়াছে।

(ক্রমশঃ)

নুতন সংবাদ।

১। পার্শী সম্প্রদায়ের অগ্রণী মিষ্টার দাদাভাই নৌরজি পার্লেমেণ্টের সভ্য নির্ব্বাচিত হইয়াছেন। ভারতবাসী-দিগের মধ্যে দাদাভাই সর্ব্বপ্রথম পার্লে-মেণ্টে প্রবেশাধিকার লাভ করিলেন।

২। গত ফেব্রুয়ারি মাসে সার্কুলার রোডের ৮২।১নং তবনে উিনটি শিশু লইয়া যে অনাথাশ্রম থোলা হইয়াছিল, তাহার উন্নতির জন্ম অনেকে অর্থদান করিতেছেন। উক্ত আশ্রমটী নারিকেল ডালার জয়শঙ্কর তর্কলঙ্কারের ষ্ট্রীটে ৭নং জমীতে স্থানাস্তরিত হইয়াছে এবং সাধা-রণকে আহ্বান করিয়া উহা থোলা হইয়াছে। এই শুভকার্য্যে যিনি যাহা দিতে ইচ্ছা করেন, ২০নং পটুয়াটোলার শ্রীযুক্ত বাবু প্রাণকৃষ্ণ দত্তের নিকট পাঠাইবেন। . ৩। বিবী ছইলারের স্থানে মিদ ক্রিশ্চিয়ানা বোমওয়েচ কলিকাতার স্ত্রী বিদ্যালয় পরিদর্শিকা নিযুক্ত হইয়াছেন।

৪। ভারত গবর্ণমেণ্ট চিকাগোর বিশ্বপ্রদর্শনীতে ৫০ হাজার টাকা মঞ্জুর করিয়াছেন, তন্মধ্যে ৪০ হাজার চা'র জন্ত এবং ১০ হাজার শিল্প প্রদর্শনে ব্যয় হইবে।

৫। গত সেন্দদে নির্দারিত হইয়াছে যে ভারতবর্ষের ২৮ কোট ৭০ লক্ষ লোকের মধ্যে কুষ্ঠরোগাক্রাপ্ত ব্যক্তির সংখ্যা ১ লক্ষ ২৬ হাজীর ; অস্ত্র ৪ লক্ষ ৫৮ হাজার; বোবা ও কালা ১ লক্ষ্ক ৮৬ হাজার এবং ক্ষিপ্তের সংখ্যা ৭৬ হাজার।

৬। ভারতবর্ষের তিনন্সন ছাত্রী এবারে কেম্ব্রিল বিশ্ববিদ্যালয়ে গণিত লাজের পরীকার অনার প্রাপ্ত হইরাছেন, তন্মধ্যে মিঃ ডি মল্লিক র্যাঙ্গলার হইরা-ছেন। বাঙ্গালীর মধ্যে বাবু আনন্দ মোহন বহু প্রথম র্যাঙ্গলার হন।

৭। কলিকাতা মেডিকেল কলেজ

প্রতিষ্ঠিত হওয়া অবধি তথা হইতে ১২৩৯ জন ডাক্তার হইয়াছেন; তর্মধ্যে সিংহল দেশীয় ৩০ জন, মগ ৯ জন, মিলিটালী শ্রেণীর ছাত্র ৩১৬ জন এবং অবশিষ্ট হিন্দু।

পুত্তক প্রাপ্তি ও সমালোচনা।

 টডের রাজস্থান—ইংরাজিতে ছই থতে সম্পূর্ণ, মূল্য ৪ টাকা। রাজ-স্থানের ইতিবৃত্ত যে কি অমূল্য রত্নথনি, তাহা সকলেই অবগত আছেন। নতা, সতীত্ব, স্বদেশানুরাগ, প্রভুভক্তি প্রভৃতির সমাদর যতকাল জগতে থাকিবে, রাজস্থানের ইতিবৃত্ত ততকাল প্রম যতনের ধন। ইহার প্রথমার্ক আমরা **উপহার স্ব**রূপ পাইয়াছি। ন্যুনাধিক ৯০০ শত পৃষ্ঠার মূল্য একটা টাকা মাত্র নিদ্যারত করিয়া প্রকাশক সকলেরই পক্ষে ইহা অনায়াসলভ্য করিয়াছেন। ইংরাজি ভাষায় গাঁহাদের অধিকার জিম্মাছে তাঁহাদের সকলেরই ইহার এক এক খণ্ড থাকা একান্ত বাঞ্নীয়। দেশে এমন মহামূল্য গ্রন্থ, এত স্বল্ল मुर्ला दोध इश कथन । প्रकाशिक इश नाई।

২। প্যাক্ষ মণ্ডী (Pax Mundi)— এই পুঁক্তক কে পি আর্থন্ডেসন জর্মণ ভাষায় রচনা করেন, বি এফ ডনেম নান্নী এক ইংরাজ রম্পী ইংরাজীতে অনুবাদ করিয়া প্রচার করিয়াছেন। ভিন্ন ভিন্ন, জাতির মধ্যে যুদ্ধ নিবারিত হইয়া শান্তি স্থাপনের যে শুভ চেপ্তা হইতেছে, তাহারই ইতিবৃত্ত ইহাতে বর্ণিত হইয়াছে। আমরা ক্তজ্ঞতার সহিত ইহার প্রাপ্তি স্বীকার করিতেছি, এতৎ সম্বন্ধে বক্তব্য পরে প্রকাশ করিব।

৩। জীবনছায়া—প্রেমের জয় প্রভৃতি
পুস্তকপ্রণেতার রচিত, মূল্য ৺ আনা।
এই ক্ষুদ্র পুস্তকে আনেক গভীর চিন্তা ও
সার সত্য আছে। লেথকের উদ্দেশ্ত
সংসার তাপে তাপিত লোককে ছায়া
দান, তাঁহারে সেই উদ্দেশ্ত সফল হউক।

৪। সংসার পরিচয়—শ্রীপ্রাণনাথ বোষ প্রণীত, মূল্য ১০ আনা। সহজ-কবিতায় বিজ্ঞান, মহাজনী, শরীর-পালন ও নীতি উপদেশ প্রভৃতি লিখিত হইয়াছে। লেখকের সরল পদ্যরচনার বেশ ক্ষমতা আছে। এ পুস্তক বালক-দের পক্ষে শিক্ষা ও আনন্দপ্রদ হইবে।

৫। স্থবোধিনী শ্রীবিপিনচক্র পাল
 প্রণীত, মূল্য। স্থানা। বালক বালিকা-

দিগের পক্ষে যে সকল বিষয় জানা আব-শুক, সেই সকল বিষয় অবলম্বন করিয়া এই পুস্তকথানি লিখিত হইয়াছে। ইহার ভাষা সরল ও বিশুদ্ধ। ইহারাবিষয়-

জ্ঞানের সহিত ছাত্রগণ স্থনীতি ও সদাচারের শিক্ষালাভ করিতে পারিবে।
এরূপ পুস্তক বিদ্যালয়ের পাঠ্য হইবার
সম্পূর্ণ উপযুক্ত।

বামারচনা।

শিব পূজা।

নমঃ দেব মহাদেব, নমঃ রাঙ্গা পায়; পোড়াহাড় ভক্ষ ছাই. ্ও চরণে পায় ঠাই. আকল ধুতুরা ফুল গরবে দাঁড়ায়! ভকত-বৎসল হর. ভকতে দিবেন বর, মরতে "শিবত্ব" মিলে শিব-সাধনায়. এমন দেবতা আর কে আছে কোথায় প খুঁজিয়া ব্রহ্মাণ্ডময় দেখেছি সকল, দেখেছি সে শচীপতি. কনক অমরাবতী, (मरथिक नन्तन वरन अगरेत्त मल: • দেখেছি বৈকুণ্ঠ ধানে, নারায়ণ লক্ষী বামে, দেখেছি কমলাসনে, উজল অনল: গণিয়া একটা ছাট, দেখেছি তেত্রিশ কোটী. দেখেছি গর্ম্ব নাগ—স্বর্গ রদাতল; এমন আপনা ভোলা. এমন পরাণ খোলা. এমন রজত গিরি—শ্বেত শতদল, প্ৰিত্ৰ শঙ্কর কোথা দেখিনি কেবল !

দেখিনি কে স্থা বলি কালকৃট খায়, দেখিনি কে কীৰ্ত্তিবাস, শ্রশানে স্থাের বাস, ভূত পিশাচেরে পালে গ্রীতি মমতায়; দেখিনি মরার হাড়. কে করে গলার হার. কাল বিষধর ক্লেহে হৃদয়ে দোলায়: কার বুকে এত শ্বেহ, প্রণয়িনী-শব-দেহ, হৃদয়ে তুলিয়া মাতে মহা তপস্থায় ? অমৃতার পরিপূর্ণা, কার বরে অন্নপূর্ণা, সতীর গরব তরে কেবা পড়ে পা'য় গ কার প্রেম হেন সাধা, কে দেয় জায়ারে আধা— "অর্দ্ধ নারীশ্বর" কোথা মিলে দেবতায় ? কুবের ভাগুারী তবু, স্থুথ সাধ নাই কভু, বিশ্বপ্রেমে দিশাহারা "পার্গীন" ধরার ! এমন দেবতা আর কে আছে কোথায় ? नमः (पव मर्शीएनव, नमः जिल्लाहन ; ভালে শোভে শশিকলা, গলায় হাড়ের মালা,

কটি তটে বাঘবাস বিভৃতি-ভূষণ;
জ্ঞানময় সদাশয়,
আত্মজিত মৃত্যুঞ্জয়,
পুড়ে মরে রিপুকুল খুলিলে নয়ন;
নিষ্কাম নির্বাণ দাতা,
বিশ্ববন্ধ বিশ্বপাতা,
অগতির গতি নাথ অনাথশরণ,
কাহারে পুজিব আর—বিনা ও চরণ?
৫
সদানন্দ ভোলানাথ আমি ভালবাসি;
নিরাসক্ত অন্থরাগী,
সংসারী সংসারত্যাগী,
শ্মশানে স্থথের বাস নিতা স্বর্গবাসী;

অনাথ অধমপাতা,
সিদ্ধেশ্বর সিদ্ধিদাতা,
রাজরাজেশ্বর তব্ ভিথারী উদাসী !
জ্ঞান কর্ম প্রেম ভক্তি,
মিশামিশি শিব শক্তি,
উন্নতি মঙ্গল তাহে নিত্য পাশাপাশি !
সহস্র প্রণাম পা'য়,
স্মরণে নীচত্ব যায়,
মৃত দেহে নব প্রাণ উঠে পরকাশি !
যদিও বৃঝিনা মর্ম্ম,
জানিনা ভকতি কর্ম্ম,
তব্ও পৃজিব প্রভো সাজিয়া সয়্মাসী,
প্রেমময় মৃত্যুঞ্জয় আমি ভালবাসি।
শ্রীমা—

বৈরাগিণী বালিকা।

সন্ন্যাসিনী বেশ
জটা ভার কেশ
কৈ ভূমি বালা বিজন বনে,
কাতর নয়ান
মলিন বয়ান
কি বেদনা জাগে তোমারি প্রাণে।
বিশাল সংসারে
তোর তরে কিরে
নাহি কি সেথায় একটি গেহ,
দেমনি কি তোরে
নিমেবৈর তুঁর ক্রী
মন্তার ছায়া কর্মণার সেহ ?

কাহার বিধানে
এ নব জীবনে
এ ঘোর তেয়াগী হয়েছ সতী,
কি মন্ত্র জপিছ
' কাহারে ডাকিছ
হয়ে আর্ছ বল কোন্ ব্রতে ব্রতী ?
সাধ প্রাণ খুলে
প্রেম ফুল ভুলে
এসগো দেবী সাজাই তোরে,
হৃদয় ভিতরে
চির দিন তরে
বেঁধে রেথে দি মমতা ডোরে।
শ্রীনিস্তারিণী দেবী
কানপুর।

The Bamabodhini Patrika.

Mr. Dadabhai Nowraji is the first Indian who has been elected a member of the British Parliament. We look upon this event as a dispensation of Providence. May the giver of all good make our Parsee brother a worthy tool in His hand for the regeneration of Iudia!

Very encouraging news of social reform come from the heroic country of the Rajputs. A conference of Rajput Kayasthas was held at Ajmir, at which a good many ladies were present behind the screen. It was resolved at the meeting to raise the marriageable age of girls, as also to cut down the expenses incurred in nuptial ceremonies. These were bold steps and we wish continued success to the noble efforts of the Kayastha community of Rajputana. In this connection, we notice with regret the death of Rao Bahadur Takiat Singha, one of the chief promoters of social reform there. It was he who asked Col. Walter to inaugurate the reform movement.

The Golden Wedding or the fiftieth anniversary of the marriage of the King and Queen of Denmark was celebrated with great rejoicing on the 29th May last at Copenhagen. All the distant members of the family, including the Czar and Czarina of Russia, the King and Queen of Greece the Prince and Princess of Wales were present. The ruling family of Denmark is noted for its kind

and sympathetic treatment of the poor and the needy.

Promoters of the higher education of women have lost a sincere friend and a hard worker in the death of Mrs. Broom Robertson, who was the Secretary and the Bursar of Girton College from 1878 to 1891. She was suffering from a painful disease, but she had courage and resignation enough to bear all the pangs of her last illness without complaint.

The untimely and sudden death of the grandson of our beloved Queen must be fresh in the memory of all our readers. Her Serene Highness Princess May of Teck, to whom the late Prince was betrothed, has presented £500 for the endowment of a cot to the Victoria Hospital for children to be named the "Prince Eddy cot." The sum was originally raised by the London Needlework Guild for Princess May.

That philanthropic and kindhearted lady, Miss Florence Nightingale, the unwearied worker on behalf of the neglected and the suffering, has been lately corresponding with Lord Cross, the Secretary of State for India regarding the working of the Village Sanitation Act in the Bombay Presidency. She has been collecting all information regarding the bad sanitary conditions prevalent in the rural parts

of the Western Presidency, so that she has been able to read a paper on the subject at the International Sanitary Congress held last autumn in London under the presidency of the Prince of Wales. A powerful memorandum supporting her views has been submitted to the Government by a good many distinguished medical men. We earnestly hope that/her suggestions will be taken up and carried into effect by the Government of Bombay.

We are indebted to the Demorest's-Family Magazine for the following valuable collection of news as to what women are doing in different parts of the world:—

There are 58,000 women in England enrolled in Trades Unions.

Nearly 300 women are attending Boston University. Seven are in the law school, forty three in the medical department and eleven in the school of theology.

Miss Philippa Fawcett, who became famous by taking rank above the senior wraugler at Cambridge, has been appointed on the English Woman's Committee of the World's fair, to deliver a lecture at Chicago on "Woman's education in England."

Miss Harriet Monro of Chicago has been appointed to write the ommemoration ods for the dedication of the World's Fair buildings. Queen Victoria has promised for the Columbian Exposition specimens of her own work in spinning and knitting done when she was a girl; also some of her embroidery, free drawing and water colour painting. Princess Louise will contribute some clay modelling, Princess Beatrice several paintings and Princess Christian some embroidery.

Mrs. Ann Walter Thomas, an English lady noted as a linguist, is said to be the best Welsh scholar living.

Miss Susan B. Authony has been immortalized by a souvenir spoon, which bears not only her likeness and name but also the watchword of her cause "Political Equality."

Miss Caroline Phelps Stokes has given Ausonia, Connecticut, a drinking fountain in memory of Anna Swell of England, the author of "Black Beauty."

Mme Schlicmann, whose husband the famous explorer Dr. Schlicmann discovered the ancient site of Troy, is carrying on his work.

The women of Poland, from the princess to the peasant, will wear nothing but black during 1892 in order to commemorate the centennial loss of Poland's independence as a nation.

The Girl's Friendly Society of England is a union of over 170,000 women and girls of all classes which holds religious and secular classes, provides houses of rest and training, lodges, libraries &c.

বামাবোধিনী পত্রিকা।

BAMABODHINI PATRIKA.

"कन्याष्येवं पालनीया भिचणीयातियत्नतः"

কন্তাকে পালন করিবেক ও যত্নের সহিত শিক্ষা দিবেক।

৩৩১ সংখ্যা।

खावन ১२৯৯—बागष्ठे ১৮৯२।

৫ম কল্প। ১ম ভাগ।

সাময়িক প্রদঙ্গ।

দাতব্য চিকিৎ সালয়—১৮৯০ সালে
সমগ্র বঙ্গদেশে ইহার সংখ্যা ২৬৫ ছিল,
১৮৯১ সালে ২৭২ হইয়াছে অর্থাৎ ৭টা
বাড়িয়াছে। ইহার মধ্যে গবর্ণমেণ্টের
নিজস্ব ৬টা মাত্র, অবশিষ্ট গুলি স্থানীয়
ফণ্ড বা অন্ত উপায়ে প্রতিপালিত।
১৮৯০ সালে ১২॥ লক্ষ রোগী চিকিৎসিত
হয়, ১৮৯১ সালে ১৯ লক্ষ হইয়াছে।
তব্কত স্থানে কত অসংখ্য রোগী চিকিৎসার সাহায্যই পাইতেছে না! দাতব্য
চিকিৎসালয়ের সংখ্যা ও কার্য্যকারিতা
যাহাতে বাড়ে, তৎপক্ষে সর্ব্যাধারণের
যত্নশীল হওয়া আবশ্রক।

দান-বরদার মহারাণী স্থি-স্মি-তিতে হুই হাজার টাকা দান ক্রিয়া- ছেন। কুচবিহারের মহারাণী কাম্বেল হাঁসপাতালের প্রায় ৪০০ রোগীকে আম সন্দেশ প্রভৃতি দ্বারা ভৃপ্তিপূর্ব্বক ভোজন করাইয়াছেন এবং রোগীদিগের ব্যবহারার্থ ৫০টী কাঁশার ঘটী দান করিয়াছেন।

বৃহত্তম পুস্তকালয়—পারিসের পুস্তকালয় পৃথিবী মধ্যে সর্বাপেকা বৃহৎ, ইহাতে ২০ লক্ষ মৃদ্রিত এবং দেড় লক্ষের অধিক হস্তলিথিত পুস্তক আছে।

দাদাভাই নোরজী—ফিন্সবরীর লোকেরা ইহাঁকে প্রতিনিধি মনোনীত করিয়া ভারতবাসী সকলেরই ধন্যবাদার্হ হইয়াছেন। নোরজী পার্লেক্টের সভ্য না হন, এজন্ত তাঁহার প্রতিষ্দী কাপ্তেন পেণ্টন এখনও চেষ্টা করিতেছেন।

মার্কিণ ভগিনী-ডোরা।

ডোরথী লেণ্ডে ডিক্স।

ডোর্থী নামী ছইটী রম্ণী-রত্ন প্রতীচ্য প্রদেশে ধর্মা ও চরিত্রবল এবং লোকাতীত প্রতিভার উচ্ছল দুষ্টাস্ত প্রদর্শন করিয়া জনসমাজকে চির ক্বত-জ্ঞতাপাশে বন্ধ করিয়া গিয়াছেন। তুইটী ডোরথী পুষ্প পৃথিবীর ছই মহাদেশে প্রস্ফুটিত হইয়া মনোহর স্থগদ্ধে সমস্ত ভূমগুলকে আমে।দিত করিয়াছে। ১৮৩২ খুষ্টাব্দে ইংলণ্ডের অন্তর্গত ইয়র্ক সায়ার-ভুক্ত হক্ষোয়েল নামক গ্রামে, ডোরথী উইওশে পাটিসনের জন্ম হয়। ইনিই উত্তরকালে "ভগিনী ডোরা" অভিহিত হন এবং ডোরথী লেণ্ডে ডিক্স আমেরিকার যুক্তরাজ্যের অন্তর্গত হেম-ডেন নগরে ১৮০২ খৃষ্টাব্দে জন্মগ্রহণ ক'রিয়াছিলেন। এই ছইটী রমণীর মধ্যে চরিত্রগত এবং কার্য্যগত অপূর্ব মিলন দেখিতে পাওয়া ষায়। উভয়েই ধর্ম-পরায়ণা, উভয়েই পরোপকারব্রতে জীবন উৎসর্গ করিয়াছিলেন, এবং উভ-মেই পরিশ্রম, প্রতিভা ও অধ্যবসায়ের গুণে মহৎ কার্য্য সম্পাদন করিয়া রমণী-কুলের মুখেইচ্ছল কুরিয়াছেন।

কি ধর্ম, কি নীতি, কি চরিত্রগঠন
কি সাংসারিক কার্যানির্ন্ধাহ ডোরখী

 ডিল্ল কোনও বিষয়েই তাঁহার পিতা

 মাতার নিকট ইইতে অণুমাত্রও সাহায্য

প্রাপ্ত হন নাই। বাল্যকালে সম্যক্ শাসনের অভাবে তিনি স্বেচ্ছামত বর্দ্ধিত হইতেছিলেন। কিন্তু স্বর্গীয় প্রতিভা ভস্মাচ্ছাদিত অগ্রির স্থায় তাঁহার হৃদয়ে লুকায়িত ছিল। যে পরম বস্তু লাভ করিলে মামুষ দেবত্ব প্রাপ্ত হয়,সেই ধর্ম্ম-বীজ ডোরথীর হৃদয়ে শৈশবেই অঙ্কুরিত হইতেছিল।

ডোরথী দ্বাদশ বর্ষ বয়সে পদার্পণ করিয়া দেখিতে পাইলেন যে, তাঁহার তঃস্থ পরিবারের ভরণপোষণ করিবার জন্ম তাঁহাকে কার্য্যক্ষেত্রে প্রবেশ করিতে হইবে। অগত্যা তিনি কার্য্য-প্রার্থিনী হইয়া গৃহ হইতে বহিৰ্গত হইলেন। তাঁহার পিতামহী বষ্টন নগরে বাস করি-তেন, তিনি সেখানে উপস্থিত হইলেন। তাঁহার পিতামহী নীতি ও পবিত্রতার কঠোর _{বে}নিয়মের পক্ষপাতিনী ছিলেন। স্বেহের কোমলতা তাঁহার হাদরে বড় অধিক ছিল না। किन्छ ডোরথী বিনীত-ভাবে স্নেহপ্রার্থিনী হইয়া তাঁহার নিকট বাস করিতে এবং প্রাণপণে পিতামহীর সেবা করিতে লাগিলেন। একটা প্রতিভা-সম্পন্ন বালিকার পক্ষে সেই নীরসহদ্যা র্দ্ধার সহবাসে দিন্যাপন করা কিরূপ ক্লেশকর, তাহা সহজেই অমুমিত হইতে পারে। ক্রিন্ত ডোরথী ছর্দ্দশাপর পিতা

মাতার সাহায্যের আশাতে বদ্ধপরিকর श्रेग्रा कर्खवामाध्यत अत्रुख श्रेलन। ক্রমে তিনি একটা শিক্ষয়িত্রীর কার্য্য পাইলেন। তিনি অতান্ত মনোযোগ, পরিশ্রম ও অধ্যবসায় সহকারে ছাত্রা-দিগকে শিক্ষা দান করিতে লাগিলেন। বিদ্যালয়ের কার্য্যে তিনি এরূপ ব্যাপ্ত হইয়াছিলেন যে, দিবসে বিশ্রাম কিম্বা গৃহ-সন্নিহিত উদ্যানে কিয়ৎকলে বিচরণ করিতেও অবসর পাইতেন না! যে বয়দে সন্তানগণ পিতামাতার স্লেহে লালিত পালিত হইয়া বিদ্যাভ্যাস ক্রিয়া থাকে, সেই অপ্রিণ্ত ব্যুদ্ ডোরথী শিক্ষয়িত্রীর কার্য্য করিতে লাগিলেন। পাছে বালিকার পোষাক দেখিয়া ছাত্রীগণ বালিকা বোধে তাঁহার উপদেশের প্রতি উপেক্ষা করে, এজন্ত তিনি সেই স্থকুমার বালিকা-দেহে যৌবনোচিত বেশ ধারণ করিভেন্।

চৌদ্দ বৎসর বয়সের সময় তিনি
স্বয়ং একটা বালিকা বিদ্যালয় থোলেন।
সেথানে নিজে শিক্ষা দান করিতেন।
তাঁহার ছইটা ভাই তাঁহার নিকট থাকিয়া
বিদ্যাশিক্ষা করিত। তাহাদের বিদ্যালয়ের ব্যয়ভার তিনি নিজে বহন করিতেন। এই কারণে তাঁহার অনেক
অর্থের প্রয়োজন হইত। ভাত্ত্বয়ের
বিদ্যাশিক্ষার ব্যয় নির্বাহার্থ সেই কর্তব্যপ্রায়ণা বালিকা শিশু-পাঠ্য ক্ষুদ্র প্রস্তুক ও প্রত্তিকা প্রণয়ন করিতে
লাগিলেন।

তিনি নিজের বিদ্যালয়ে ধর্ম নীতি সম্বন্ধে বিশেষরূপে করিতেন। যাহাতে তাঁহার বিদ্যালয়ের বালিকাগণ ধর্ম-ভূষণে ভূষিত হইয়া ভবিষ্যতে জনসমাজের কল্যাণ পারে, যাহাতে উত্তরকালে তাহাদের জীবন আদর্শ করিয়া অপরাপর নরনারী সাধুপথে পদার্পণ করিতে পারে, এজন্ত ডোরথী তাঁহার স্কুলকে নৈতিক বিদ্যালয়ে পরিণত করিয়াছিলেন। পরি-শেষে তিনি এরূপে শিক্ষাদান করিয়াও পরিতৃপ্ত হইলেন না। যে সকল বালক বালিকা অভিভাবক-বিহীন হইয়া অথবা অভিভাবকদিগকে অগ্ৰাহ অশাসিত অবস্থায় ঘুরিয়া বেড়ায়, তাহা-দিগকে নীতিশিক্ষা দিবার জন্ম ডোর-থীর প্রাণ আকুল হইল। পিতামহীর উদ্যানে অশ্ব-মন্দুরার (আস্তাবল) উপরি-ভাগে একটা গৃহ ছিল। পিতামহীর নিকট হইতে তাহা চাহিয়া লইয়া তথায় অশাসিত বালকবালিকাদিগকে শিক্ষা-দান করিতে লাগিলেন।

এ সময় বিধ্যাত ধর্মাচার্য্য ডাক্তার চেনিং স্বীয় মহীয়দী প্রতিভা বলে ধর্ম রাজ্যে নৃতন চিস্তার স্রোত প্রবাহিত করিতেছিলেন। তদনীস্তন ধর্মসমাজে এইরূপ বিশ্বাস ছিল বে মাহ্যুষ অভিশপ্ত জাতি,—ঈশরের নিকট, খোরতর অপ্রাধে প্রক্ষাস্কুন্মে অপরাধী। ডাক্তার চেনিং জলদ-গন্তীর স্বরে এই অসভাস্চুক্ মতের প্রতিবাদ করেন। কিন্তু শ্রুষ্

No.

প্রত্যেক ধর্ম বিদ্যালয়েই পূর্বতন মত শিক্ষা দেওয়া হইত।

ডোরথীর সহিত শুভ মুহুর্ত্তে ডাক্তার চেনিংএর পরিচয় হইল। ডাক্তার চেনিং ডোরথীর কার্য্যতৎপরতা এবং ধর্মভাবে মুদ্ধ হইয়া তাঁহাকে স্বীয় সন্তানগণের শিক্ষিত্রী পদে বতী হইতে অমুরোধ করিলেন। ডোরথী স্বীক্বত হইলেন। এ সময় ভয়ানক শীতের প্রাহর্ভাবে ডাক্তার চেনিং সপরিবারে ডোরথীকে সঙ্গে করিয়া উষ্ণ স্থান দেণ্টাক্রস দ্বীপে গমন করেন। সেখানে গিয়া তাঁহাদের সকলের শরীরই সবল হয়। ডাক্তার চেনিংএর নিকট ডোরথী ধর্ম্মের যে নবতত্ত্ব শিক্ষা করিয়াছিলেন. প্রচার করিবার জন্ম ব্যগ্র হইলেন। বিদ্যালয়ই তাঁহার প্রচারক্ষেত্র। তিনি সেণ্টাক্রদ হইতে প্রত্যাগত হইয়া স্বীয় বিদ্যালয়ে নৃতন মত শিক্ষা দিতে লাগি-**লেন।** পুরাতন বিশ্বাস বিদুরিত করিয়া বিজ্ঞান-সম্মত নৃতন নৃতন সত্য দারা ছাত্রীদিগের জীবন গঠন করিতে লাগি-**লেন**। প্রত্যেক ছাত্র[®] ছাত্রীকে একটা স্বর্গের দৃত প্রস্তুত করিবেন বলিয়া তিনি অত্যস্ত আগ্রহ ও উৎসাহের সহিত শিক্ষাদানে প্রবৃত্ত হইলেন।

এইরপে পুর্ণাচ বুৎসরের অধিক কাল অপরিসীম পরিশ্রম সহকারে কার্য্য করিয়া ডোরথী ভয়ানক পীড়ায় আক্রাস্ত হুইলেন। ডাব্ডারগণ পরামর্শ দিলেন যে, জলবার্ম্ম পরিবর্ত্তনের জন্ম ইয়ুরোপ গমন

না করিলে আরোগ্য হওয়া ডাক্তার চেনিং বিশেষ আগ্রহের সহিত তাঁহাকে ইয়ুরোপে পাঠাইতে চেষ্টিত হইলেন। অগত্যা তিনি সমুদয় কার্য্য পরিত্যাগ করিয়া ইয়ুরোপ যাত্রা করি-লেন। লিভারপুলে উইলিয়ম cরথবল নামে ডাক্তার চেনিংএর একজন ছিলেন। ডোরথী আট তাঁহার গৃহে অবস্থিতি করেন এবং কিঞ্চিৎ আরোগ্যলাভ করিয়া পুনরায় স্বদেশে গমন করেন। এ সময় তাঁহার পিতামহী পরলোকগত হন. স্তরাং তাঁহার বিষয়সম্পত্তি ডোরথী প্রাপ্ত হই-লেন। এদিকে ভাই তুইটী উপযুক্ত হও-য়াতে তাহাদের থরচপত্রও তাঁহাকে যোগা-ইতে হইত না। দারিদ্রোর কশাঘাত স্থ করিয়া বহুদিনের পর ডোরথী ঈশ্বর-ক্ষপায় সচ্ছল অবস্থায় উপনীত হইলেন।

যে মহীয়দী শক্তি প্রভাবে ডোরথী আশৈশব পরমেশ্বরের প্রিয় কার্য্য সাধনে দীক্ষিত হইয়াছিলেন. সেই শক্তি ক্রমশঃ বৰ্দ্ধিত হইতে লাগিল। সেই শক্তির नाम जेथंद्राञ्चताग। পরমেশ্বরের প্রতি অচলা ভক্তি ছिল। তিনি শাক্ষাৎভাবে আপনাকে ঈশ্বর পরিচালিত বলিয়া অমুভব করিতেন। বিবেক-কর্ণে পর্মেশ্বরের বাণী শ্ৰবণ করিয়া সকল কার্য্য সম্পাদন করিতেন। প্রভূ কি আজা করিতেছেন, তাহা না শুনিয়া কোন কার্য্যে প্রবৃত্ত হইতেন না।

(ক্রমশঃ)

আর্য্য মহিলা।

শৈব্যা।

"ভার্য্যা মূলংত্রিবর্গস্ত ভার্য্যা মূলংতরিষ্যতঃ"| স্থ্যবংশীয় মহাত্মা হরিশ্চক্র রাজার পুণ্যময় চরিত শুনেন নাই. এ রকম লোক আমাদের দেশে অতি অল : আবার সেই অপূর্ব্ব চরিত্র শুনিয়া হৃদয় ভক্তিও প্রীতিরসে আর্দ্র হয় না, সে রকম হৃদয় रेनवा। दावी এই गरा-আরও অল্ল। প্রাণ হরিশ্চন্দ্রের সহধর্মিণী। হরিশ্চন্দ্রের চরিত্র দেবত্বে পরিণত হইয়াছিল, সেই দেবত্বের প্রধান সহায় রাজমহিষী শৈবা। স্বামীকে যিনি এইরূপ অনস্ত উন্নতির পথে লইয়া যাইতে পারেন, তিনি রমণী কুলের অলঙ্কার। এতদ্বিদ্ধ শৈবাার সহিষ্ণুতা, সহদয়তা ও বুদ্ধিমন্তা, ভারত মহিলাগণের গৌরব স্বরূপ।

দানবীর হরিশ্চন্দ্র, ঋষি বিশ্বামিত্রের ছলনায় তাঁহাকে সমগ্র সাম্রাজ্য, দান করিয়াছেন। এখন জিনি পথের ভিথারী। কিন্তু তাহাতে তিনি কাতর নহেন—মহাগ্রা হরিশ্চন্দ্র এমন কাপুরুষ নহেন যে দান-ক্ষত পদার্থের জ্বস্তে কাতর হইবেন! তবে কিনা আজি হরিশ্চন্দ্র কপর্দ্দকশৃত্য, তাই জিনি দানের দক্ষিণাস্বরূপ বিশ্বামিত্রের আকাজ্জিত সপ্তকোটী স্বর্ণ মূজা দিতে পারিতেছেন, না, সেবীর-ছদম্ব এই ক্ষোভেই দারুণ ব্যথিত!

কিন্ত কৃট-বৃদ্ধি বিশ্বামিত্র ছাড়িবার

পাত্র নহেন। বিশ্বামিত্র ব্রাহ্মণ্য লাভের[্] জ্ঞে তপস্থা করিয়া তথনও পর্যান্ত বান্ধ-ণত্ব লাভ করিতে পারেন নাই। সকল গুণে ভারতীয় বান্ধণেরা জগতের পুজিত, "ঈশবের ভাষ পূর্ণ হওয়া" বাঁহা-দিগের সাধনা ও তপস্থার উদ্দেশ্য-সে অমর জীবন ছই দিনে মিলে না; তাই বিশামিত্র তথনও অসিদ্ধ, তথনও তাঁহার কুপ্রবৃত্তিদিগের অসংযতাব**স্থা। ইত্ত**রাং আমাদের দেশে কোনও কোনও লোভান্ধ পুরোহিত ঠাকুর দক্ষিণা প্রভৃতির জন্মে যেমন দরিদ্র যজমানের অস্থিপেষণ করিতে থাকেন, বিশ্বামিত্রও সপ্ত কোটা স্থবর্ণ মুদ্রার জন্মে রাজাকে সেইরূপ নিপীডিত করিতে লাগিলেন। নিরুপার হরিশ্চল্র যেমন করিয়াই হউক এক-মাসের মধ্যে সমস্ত অর্থ প্রদান করিতে প্রতিশ্রত হইলেন। তথন বিশ্বামিত্র কিছুদিনের মত তাঁহাকে ক্ষমা করিলেন।

মহারাজ অস্তঃপুরে গিয়া যথন উপহিত বিপদের কথা জানাইলেন, তথন
রাজমহিনী শৈব্যা আকস্মিক ভাগ্য
পরিবর্ত্তনে কিছুমাত্র অধৈব্য হইলেন না!
এজগতে হথ সম্পত্তি মানবের চিরদিনের
নহে; এই কথা মনে করিয়া অনিবার্য্য
বিপদে ধৈর্য্যাবলম্বন করাই মহত্তের
লক্ষণ। এ মহত্তে শৈব্যার কদক পূর্ণ

ছিল, তাই রাজরাণী, ধন, মান,
সংশ—সম্রাজ্ঞী পদ পরিত্যাগ করিয়া,
স্বামিপুত্রের সহিত দীন বেশে রাজভবন ছাড়িয়া চলিলেন। এত তুঃথ ও
হর্জাগ্যেও সে কোমল হৃদয় ভগ্ন হইল
না! সংসারের তুঃথ বিপদে এই
রকম ধৈর্য্যাবলম্বনেই তো রমণীর বীরন্ধ।
ইহাতেই বুঝিলাম শৈব্যা দেবী বীরঙ্কনা।

যত দ্র হরিশ্চন্দ্রের অধিকার, এথন ততদ্র বিশ্বামিত্রের অধিকত। বিশ্বামিত্রের অধিকত। বিশ্বামিত্রের অধিকত। বিশ্বামিত্রের অধিকারে স্থান পাইবেন না বিলিয়া রাজদম্পতী বালক পুত্র রোহিতাশকে লইয়া বারাণসীতে গমন করিলেন। বারাণসী, রাজা হরিশ্চন্দ্রের সাম্রাজ্যের অন্তর্ভূত নহে। যাহাহউক একমাস পূর্ণ হইতে চলিল, ছর্ভাগ্যক্রমে হরিশ্চন্দ্র কিছু মাত্র অর্থ সংগ্রহ করিতে সমর্থ হইলেন না। এদিকে সময় উপস্থিত দেখিয়া বিশ্বামিত্র রাজসমীপে উপস্থিত হইলেন, এবং তথনও পর্য্যস্ত দক্ষিণার অর্থ সংগ্রহ হয় নাই দেখিয়া রাজাকে "প্রতারক", "মিথ্যাবাদী" প্রভৃতি কটুক্তি করিতে লাগিলেন।

সামীর এতাদৃশ বিপদে পতিপ্রাণা শৈব্যার হৃদয় কি দারুণ ব্যথিত হইল, তাহা সহদয়া ভগিনীগণ অবগুই বৃঝিতে পারিতেছেন। ি ই তথাপি শৈব্যা স্থিয়তা, ধীরতা অথবা কর্ত্তব্যব্দি হইতে বিচলিত হইলেন না! শৈব্যা বীরাঙ্গণা, শৈব্যা ধার্মিকবর হরিশ্চন্দ্রের সহধর্মিণী, তিনি স্থামীকে বলিতে লাগিলেন, "মহা-

রাজ! চিন্তা পরিত্যাগ করিয়া নিজ্প সত্য পালন করুন; মানব সত্য লজ্ঞ্যন করিলে শ্মশানের স্থায় ত্যাজ্য হইয়া থাকে। হে পুরুষশ্রেষ্ঠ! যাহার বাক্যামিথ্যা হয়, তাহার অগ্নিহোত্র, অধ্যয়ন, দানাদি সমস্ত ক্রিয়াই বিফল।" এরকম ধর্মপরায়ণা দেবী না হইলে, সত্যের মহিমা এমন করিয়া না বুঝিলে, শৈব্যাকি ধার্ম্মিকশ্রেষ্ঠ হরিশ্চক্রের সহধর্মিণী হইতে পারিতেন? নিম্নলিখিত কথা হইতে শৈব্যার কি গভীর বুদ্ধিমত্তা, অলোকিক সহিষ্ণুতা ও নিঃস্বার্থ পতি-হিতৈষণার পরিচয়ই পাওয়া যায়!—

রাজমহিনী, পতির বিপদ প্রতী-কারের উপায় উদ্ভাবন করিরা সজলনয়নে গদ গদ কঠে স্বামীকে বলিতে লাগিলেন "রাজন্! আমার পুত্র জন্মিয়াছে; বিবাহের এক প্রধান উদ্দেশু সফল হই-য়াছে; অতএব আমাকে বিক্রয় করিয়া সেই মূল্য বিশ্বামিত্রকে দান করুন।"

ধন্য শৈব্যা! নারীকুলের প্রধান অহকার 'তুমিই! সীতা দেখিয়াছি, সানিব্রী দেখিয়াছি, সামীর সহিত জ্বলম্ভ চিতায় পুড়িয়া মরিতে সহমৃতা হিন্দু মহিলা দেখিয়াছি, কিন্তু তাঁহাদেরও একটা অলোকিক স্থুখ, অপরিসীম পরিত্তি আছে, তাঁহাদের দারুণ হুংখের মধ্যেও একটা প্রাণশূর্ণ সোভাগ্যগর্ম্ম আছে! কিন্তু তোমার মত পতিপুত্র-বিচ্ছেদ সাধিয়া লইতে, তোমার মত আ্মারিক্রয় করিয়া পতিকে অ্থানী

করিতে, তোমার মত স্বামীর আধ্যাথ্রিক মঙ্গলাশরে আত্মবিসর্জন দিতে,
কেরল তোমাকেই দেখিলাম! কেন যে
আর্য্য শ্বিগণ বলিয়াছিলেন "ভার্যা
ত্রিবর্গেরও মূল, ভার্যা মোক্ষেরও মূল"
তাহা তোমাকে দেখিয়াই বৃঝিলাম!
নারীকুলের প্রধান অহকার তুমিই!

রাজা একথা শুনিয়া সহিতে পারিলেন না। ধন, মান, খ্যাতি, সোভাগ্য,
আসমুদ্র সাথ্রাজ্য, মহারাজা হরিশ্চন্দ্রের
সে সবই গিয়াছে, কিন্তু তাহাতে হরিশচন্দ্রের হৃদয় কাতর নহে। তাঁহার
সংসারের লক্ষ্মী, হৃদয়ের বৃদ্ধ, প্রীতির
প্রতিমা, বিপদের মন্ত্রী, সম্পদের আনন্দ,
সহধর্মিণী শৈব্যা দেবীকে যে অর্থ সংগ্রহের জন্তে বিক্রয় করিতে হইবে; রক্ষক,
প্রতিপালক, স্বামী হইয়া রাজরাণীকে—
ভার্যাকে যে পরের দাসীত্বে নিয়োজিত
করিতে হইবে, একথা সে বীরহুদয়েও
সঞ্ছ হইল না! অসহনীয় বেদনায় রাজা
মুর্চ্ছিত হইলেন।

এদিকে বিশ্বামিত্র দ্বিরপ্রতিজ্ঞ।
দক্ষিণালুক বঙ্গীর পুরোহিতের, তব্
এক্টু হুদরের পরিচয় পাওয়া যায়, কিন্তু
ক্ষত্রিয় ঋষিতে তাহাও পাওয়া গেল না।
হরিক্তক্রের আর্দ্রনাদ, লৈব্যার অশ্রুধারা,
বালক রোহিতাশ্বের কাতরতা, বিশ্বামিত্রের "অক্ষেয় হুদয়ের" নিকটে সবই
পরাস্ত হইল। তিনি দক্ষিণার জত্যে
হরিক্তক্রকে বারংবার ভর্মনা ও তাড়না
করিতে লাগিলেন।

শৈব্যা, অধিকতর ব্যথিতা হইয়া অধিকতর উত্তেজিতা হইয়া পতির চরণ-তলে পড়িয়া আশ্ববিক্রয়ের প্রার্থনা कानारेट गांगित्नन। पुष्ट खी भूत्वत মেহ মমতায় আক্রপ্ত হইয়া সতাপ্রাণ र्विकतः मठाज्ञ हे रहेर्यन, वहे स्कार्छ. এই বেদনায় শৈব্যার হৃদয় বিদীর্ণ হইতে লাগিল। জগতের সকল জিনিস হঠতে স্বামী রমণীর প্রিয়, সেই স্বামী হইতে স্বামীর ধর্ম অধিকতর প্রিয়। যে রমণী স্বার্থপরতা প্রণোদিত হইয়া স্বামীকে পাপ পঙ্কে লিগু করে. কুকার্য্যে অভ্যন্ত করে. যে আত্মস্থথের জন্মে স্বামীকে ধর্ম ও কর্ত্তব্য হইতে ভ্রষ্ট করে, সে রমণী-कुनकन्छ। তাহাকে निना कतिवात ভাষা আমরা জানি না।

বিশ্বামিত্রের ভং সনায় ও শৈব্যার পুন:
পুন: উত্তেজনায় রাজা পত্নী-প্রস্তাবিত
শোচনীয় কার্য্যে প্রবৃত্ত হইলেন। রাজার
নিকট হইতে একজন ব্রাহ্মণ শৈব্যাকে
ও রাজকুমার রোহিতাশকে ক্রন্থ করিলেন। অনোধ্যার সম্রাক্তী সপুত্র ব্রাহ্মণ
গৃহে দাসীত্বে নিযুক্ত হইলেন। হায়রে
মানব ভাগ্য! ধিক্ মানবকে, যে সে
ভোমাকে লইয়া অহস্কার করে! মধ্যাক
স্র্যোর আলোক সহসা মেঘে ঢাকিয়া যায়,
মান্থবের সোভাগ্য-প্রুদীপু বড় আশার
সময়েও নিবিয়া যায়! আমরা ইহা
দেখিয়াও দেখিনা, ব্রিয়াও ব্রিম্ব না,
জানিয়া ও জানি না, এই কারণে ধিক্
আমাদিগকে!

ভার্য্যা পুত্র বিক্রেয় করিয়াও রাজা সমস্ত দক্ষিণা সংগ্রহ করিতে পারিলেন না। এই শোকসম্ভপ্ত ভগ্নছদয় হরি-**্টিক্র আবার বিশ্বামিত্রের নিকটে গালি** খাইতে লাগিলেন। তথন নিরুপায় রাজা আত্মবিক্রয় করিতে কুতসঙ্কল্প হৈইলেন। শুশানের অধীশ্বর একজন চণ্ডাল, শব দাহ কার্য্যে নিযুক্ত করিবার **আশরে হরিশ্চন্দ্রকে** ক্রয় করিতে চাহি-লেন। কিন্তু এতাদুশ নীচ ও নুশংস কার্য্যে প্রবৃত্ত হইতে হইবে ভাবিয়া **রাজার** মাথায় বজাঘাত হইল। পুনঃ পুনঃ অমুনয় বিনয় করিতে লাগিলেন, কিন্ত স্বদয়হীন বিশ্বামিত্রের মনে কোনও ক্রমে করুণার সঞ্চার হইল না: বিশ্বামিত সৈই চণ্ডালের নিকটে রাজাকে বিক্রয় কিরিয়া ঈপ্সিত অর্থ লাভে ক্নতক্নতার্থ ্হইলেন।

সংস্কৃতে আছে—

"সহতে ব্যসনক্রেশং ধীর এব ন হীতরঃ।

অশনেঃ পতনক্ষোভং গিরিধর্ত্তে ন পাদপঃ॥" *

ধীর ব্যক্তিরা বিপদের ক্লেশ সহিতে পারেন বলিয়াই বুঝি জগদীখর তাঁহার স্থপ্ত স্কক্তাদিগকে নানা রূপ বিপদে পাতিত করেন। জগতের ইতিহাস স্থালোচনা করিলে দেখা যায়, রাম,

যুধিষ্ঠির, ধ্বন, প্রহলাদ, সীতা, সাবিত্রী, গৌতমী প্রভৃতি অধিকতর হুঃখ ও বিপদ-গ্রন্থ ইইয়াছেন। বিদেশীয় ইতিহা**দে**ও মহাত্মা সক্রেটিস, ঈশা প্রভৃতির জীবনীতে এই কথাই সপ্রমাণ করিতেছে। ঐশিক কার্য্য—আমাদের মত ক্ষুদ্রাদপি ক্ষুদ্র ব্যক্তিদিগের কথা দূরে যাউক, বড় বড় জ্ঞানী মহাত্মাগণও তাহা বুঝিতে পারেন না। তবে সরল বিশ্বাসে জগ-তের ঘটনাবলী পর্যালোচনা করিলে সহজেই প্রতীত হয়, ছঃখ, বিপদ এ জগ-তের শিক্ষক। যিনি- যত হুঃখে পড়ি-য়াছেন. যত বিপদ্গ্ৰস্ত হইয়াছেন. তিনি তত অভিজ্ঞতা লাভ করিয়াছেন। বয়সে বালক হইলেও তাঁহার মানসিক শক্তি অবশুই উচ্চ হইয়াছে, বিপদের কঠোর শিক্ষায় তাঁহার সহিষ্ণুতা. স্থিরতা, ত্যাগস্বীকার, আবশ্য পরি-ফ্ট হইয়াছে। বৃঝি হরিশচক্র ও শৈব্যার মত মহদাশয় দম্পতী এই কারণে এত ক্লেশ পাইলেন।

মহারাজ্ঞ হরিশ্চন্দ্র চণ্ডালদাস;
শবদাহ ও মৃতের বস্ত্র, শ্যা প্রভৃতি
সংগ্রহ করা তাঁহার কার্য্য। মহারাণী
শৈব্যা রাহ্মণের গৃহে দাসীত্বে নিযুক্তা।
কোথায় তাঁহার প্রাণাধিক স্বামী? তাহা
শৈব্যা কিছুই জানেন না। তাঁহার
প্রাণাধিক পুত্রও তাঁহার স্তায় রাহ্মণের
কীতদাস। রাজার ছেলে রোহিতাশ
কোথায় রাজস্ক্রখ ভোগ করিবে, রাজক্মারের মত. আদর সন্মান লাভ

শীর ব্যক্তিই বিপদের ক্লেশ বহন করেন,
 অপ্ত ব্যক্তি নহে। বজ্রপাতের আঘাত পর্বতই
 সহু করে, বৃক্ষ সম্ভ করিতে পারে না।

করিবে, তাহা না হইরা দিবারাজ কতই লাখনা ও অবমাননা সহিতেছে! শৈবলার এ হংধ—এ কোভের তুলনার দীতা, দমরজীদিগের হংধও কতকটা "নামাত্ত" বলিয়া অহুভূত হইতে পারে। বঙ্গগৃহের শিশু-জননী পতিত্যকা কুলীন মহিলারা শৈব্যার এ হংধের অংশভাগিনী হইতে পারেন!

কিন্ত শৈব্যার হুর্ভাগ্যের "শেব দীমা" এই থানে নহে। ধাহাকে অবলবন করিয়া শৈব্যার প্রাণে শেষ শাস্তিটুকু বিরাজিত ছিল, যাহার মুথ চাহিয়া শৈব্যা এত মনস্তাপেও অধীরা হন নাই, শৈব্যার দেই স্নেহের ধন, সেই অঞ্চলের নিধি, সেই সোণার পুতুল রোহিতার সহলা শৈব্যার আঁধার জগৎ আরও আঁধার করিল। রোহিতার দর্পদংশনে গতাম্ম হইল, শৈব্যার সে ধ্বতারা নিবিল।

প্রভ্র আদেশে শোকাকুলা আমবিহ্বলা শৈব্যা মৃত প্রের সংকার করিতে
শাশানে গমন করিলেন। সেধানে ক্লয়া
প্রভৃতি গ্রহণ করিতে হরিশ্চক্ত উপস্থিত
হইলেন। অর সময়ের মধ্যে রাজ দম্পতী
উভরে উভয়কে চিনিতে পারিলেন। এই
নিদারণ সময়ে অযোধ্যার সমাট্ প্রিয়তম
স্বামী হরিশ্চক্রকে চণ্ডালের দাস ও শবদাহকারী দেখিরা শৈব্যার ধৈর্যাচ্যুতি
ঘটিল—যে ধর্মের উপরে নির্ভর করিয়া
শৈব্যা এতদিন অসহনীয় ক্লেশ্ সহিয়া
আসিতেছিলেন, যে ধর্ম শৈব্যার প্রাণের
প্রাণ, সেই ধর্মের উপরেই শৈব্যার অভি-

মান ক্ষিল, মনের আবেঙ্গে, ছবঙ্কের পূর্ণ উচ্ছাসভরে শৈব্যা বলিজে লাগিলেন,

"বদ্যেতদেবং ধর্মজ্ঞ কাস্তি ধর্মে সহায়জা। তথৈব বিপ্রদেবাদি পূজনে পালকে ভূবং॥ নাস্তি ধর্মঃ কুতঃ সত্যমার্জকং চানৃশংস্তা। যত্র তং ধর্মপরমঃ স্বরাজ্যাদবরোপিতঃ॥" ‡

এ কথা গুলি গুনিয়া এমন কেছ বুঝিবেন না, বে শৈব্যার মত সভ্যধর্ম-পরারণা দেবী ধর্মের প্রতি অবিশাসিনী। ভগবানের উপরে ভক্তেরই আবদার চলে. অভব্লের নহে। যাহাকে বড় ভালবাসি. त्म यमि जामात्र जैभन्न निर्कृतन्तर मंज वाब-হার করে, তাহাহইলে আমার বৃক্টা আপনা হইতে ভাঙিয়া গিরা তাহার উপরে রাগ হর। ইহার কাছে তর্কবল, युक्तिवन, किहूरे थांडित्व ना। इत्रत्वत्र ভাষা, इनस्यत ভাব मण्णूर्ग तूबा मश्या-শক্তির অসাধ্য। যতদিন শৈব্যা সহিষ্ণু-তার শেষ সীমায় উপস্থিত না হইয়াছেন, ততদিন যে ভগবানের চরণ অবশ্বন कतिया जकन इःथ वहन कतियादिन, আজি সহিষ্ণুতা চরম দীমায় পৌছিয়াছে; তাই আজি সেই শৈব্যা সেই ভগৰানের উপরে অভিমানিনী ! ভগবান্ ভক্তের প্রাণের সর্বায়। তাই ভক্তের অভিযানও

‡ হে ধর্মজ ! বলি এইরপ হর,ধর্মে — বিশ্রেদেবাদি প্রানে ও পৃথিবীপালনে সহায়তা পাঙ্যা না,খার : তবে বেখানে ধর্ম নাই সত্যা, ধর্ম্মা,গারা, কোধার ? যে হেতু ধর্মাবতার তুনি আপনার রালা হইটে আই হইরাছ ! ! তাঁহার উপর, আবদারও তাঁহার উপর। গভীর ভালবাদা না থাকিলে ভালবাদায় অভিমান জন্মে না, ভালবাসা-ভাজনের थि आवनात्र हत्र ना *! **छाटे** निवात ঐ কয়টী কথা হইতে আমরা তাঁহার গভীর ধর্মামুরাগ অমুভব করিতেছি। শৈব্যার মত সত্যধর্মপরায়ণা দেবী কখনই অবিশাসিনী নহেন।

া **পুরাণে বর্ণিত আছে ভগবানের ক্বপায়** রোহিতার পুনর্জীবন এবং রাজদম্পতি **দাসত্ব** হইতে মুক্তি লাভ করিলেন। বিশামিত, রাজা হরিশ্চন্দ্রের মহত্তে মুগ্ধ হইয়া সামাজ্যও প্রত্যর্পণ করিলেন। ইহার পরে রাজদম্পতির জন্ম স্বর্গদার উন্মোচিত হইল। কিন্তু লোক-বংসল হরিশ্চক্র তাঁহার রাজভক্ত প্রজা ও পৌর বর্গকে ছাড়িয়া স্বর্গ স্থথ গ্রহণ করিতে

স্বীকৃত হইলেন না। তিনি নিজ পুণ্য দান করিয়া সেই সকল ব্যক্তিকে স্বর্গ-বাসী করিতে চাহিলে, দেবতাগণ ছরি-শ্ব্ৰ ও শৈব্যার সহিত তাহাদিগকেও স্বর্গে লইতে বাধ্য হইলেন। হরিশ্চন্দ্রের প্রজাবৎদলতা ও লোক-হিতৈষণা সাধারণকে বুঝাইবার জ্বন্তেই বোধ হয় একথাটীর অবতারণা—কিন্তু এই রাজ-দম্পতির মত ধর্মপ্রাণ ও সং-সারের কঠোর পরীক্ষায় উত্তীর্ণ **দেব** দেবীগণ যে স্বর্গে স্থান পাইয়াছেন, আর ভারতের বন্দনীয়া মহিলাগণের সহিত রমণীরত্ন শৈব্যা দেবীও যে চির-অমরতা লাভ করিয়াছেন, একথা আমরা সকলেই বুঝিতে পারি।

শ্ৰীমা—

ব্রহ্মনারী।

মহারাষ্ট্রীয়া নারীদিগের মত ব্রহ্ম-नातीि पिरगत् अ सर्था अवस्ताध अथा नाह । ইহারা হাটে ঘাটে মাঠে পথে সর্ব্বত্র বিচরণ করিয়। থাকেন। বিবাহ এখানে

🐔 মান্তুৰ যাছাকে ভালবাসে তাহার উপরে রাগ ্ত্রপঞ্জীয়া; তাহার উপভুর যে রাগ হয় সে রাগ सायक लोख। অপয়ের ইতিহাস ব্বিতে মানব অক্সাঃ আমাদের মত মান্ব অব্খ আরও অক্ষা তথাপি এই কথা গুলা আর একদিন পীটিকা ভগিনীদিগের কাছে ভাল করিয়া বলিতে रेष्ट्रक त्रश्लांत्र। त्नथिका।

সেচ্ছাধীন, অর্থাৎ মহিলা ইচ্ছা করিলে উদাহ পাশে আবদ্ধ হইতে পারেন. वयरमञ्ज कान अभाग निकात । नारे. স্থতরাং স্পষ্টই বুঝা যাইতেছে যে, বালিক। বিবাহ যে কি জিনিস তাহা ব্ৰহ্মবাদিগণ জানে না। এস্থলে একটি বিষয় উল্লেখ না করিয়া থাকিতে পারি-লাম না। সেটি এই,--স্ত্ৰীগণ ইচ্ছামত স্বামিত্যাগ করিতে পারেন। সমাজের বন্ধন যে শিথিল, ভদ্বিয়ে मन्मर नारे। रेशाउरे य अपनक भागा-

জিক উৎপাতের উৎপত্তি, তাহা কে না বলিবে ? ত্রন্ধে আমাদের দেশের মত অব্রপ্তর্গনও নাই, অন্তঃপুরও নাই। ইহার कांत्र कि १ (य जंकन (मन वह मिन मुनवभानिं एश्वे अधीरन हिव. গুলিতে এই কুপ্রথা প্রচলিত হই-য়াছে। বন্ধদেশে মুসলমানগণ কথনও পদার্পণ করিতে পারেন নাই, যদিও পারিয়া থাকেন, তথায় তাহাদিগের সমাজবিপ্লব ঘটাইবার ক্ষমতা ছিল না। ব্রহ্মবাদীরা বৌদ্ধ। এথানে বৌদ্ধ আচার ব্যবহার চলিয়া আদিতেছে। বৌদ্ধদিগের সহিত হিন্দুদিগের অনেকাংশে সৌসাদুগু আছে, তাহা এস্থলে বুঝাইবার আবশুকতা দেখিতেছি না। কারণ হিন্দুগণ বুদ্ধদেবকে নারা-য়ণের অবতার বলিয়া স্বীকার ও মান্ত হিন্দুদিগের মধ্যে করিয়া থাকেন। व्यवद्वांध थ्रथा कांनड कारन हिल ना, স্বতরাং বৌদ্ধদিগের যে উহা থাকিবে পুৰ্বেই বুলা তাহা সম্ভবপর নহে। হইয়াছে হিদুসমাজ বহু শতান্ত্ৰী হইতে মুসলমানদিগের অধীন থাকাতে অনেক বিজাতীয় মহমদীয় আচার বাবহার যে আচার উহাতে প্রবর্ত্তিত হয়। ব্যবহার গুলি প্রবর্ত্তিত হয়, তন্মধ্যে বৌদ্ধ কিন্ত প্রথা ৷ এই জেনানা সমাজে তো তাহা হয় নাই। ক্থনও মহম্মদীয় সমাজের ঘাত প্রতি-ঘাতে কোনও ব্লপে পরিবর্ত্তিত হয় নাই। স্তরাং ব্রহ্মদেশে পর্দার স্বষ্টি কথনও হয় নাই।

वक्रमातीश्य क्रम अ ट्रिंग्स दिनीक নারীদিগের মত চরট খাইরা থাকে এইরূপে ধুম পান করা স্ত্রীলোকের পক্ষে অস্বাভাবিক। ইহারা চটি জুভা ও জামা ব্যবহার করিয়া থাকেন। চেপ্টা মুথ, উচ্চ কপোল-অস্থি, সক্ল বৃদ্ধি পরি-চারক নয়নযুগল, মন্তকোপরি বেণী স্ববিগ্ৰন্থ, কুমুমস্থাভিত উজ্জ্ব কেশ, গাত্রে ওড়না, রেশমি বস্ত্র ও রেশমি জামা ইহাই ইহাঁদিগের পরিচ্ছদ রাজবংশীয়া এবং উচ্চবংশীয়াদিগের প্রষ্ঠ দেশে পক্ষীর ডানার মত এক প্রকার শক্ত সোনার তারের পোদাক ও মতকে হীরকথচিত শিরোভূষণ। ব্রহ্মবাদীরা অতিশয় শিষ্টাচারী, রাজসমীপে স্ত্রী কি পুরুষকে কেবল যে সঙ্কৃচিত ভাবে থাকিতে হয়, তাহা নহে, শমুকাদির স্থায় হামাগুড়ি দিয়া যাতারাত করিতে হয়। কি স্ত্রী কি পুরুষ সকলের সন্তানোৎপা-मत्नत्र काल कर्गट्य दात्रा निर्गी उ रत्र। ইহা অতি সমারোহে সম্পন্ন হইয়া থাকে। এই মহাআনন্দের সময় বালকদিগের ইহাদিগের মস্তক বিদ্যারস্ত হয় ৷ মুওন করাইয়া পূজনীয় যাজকদিগের নিকট শিক্ষার্থে প্রেরণ করা হয়। দিগের শিক্ষা-প্রণালী তিব্বতীয়দিশের ন্তায়। তিবৰতীয় শিক্ষার্থ্রিগণও ঐকপ করিয়া থাকে। কিন্তু ভাহাদিগের শিক্ষা উচ্চতর। এখানে নারীদিগের পৃথক্ উৎসব আছে। ফুল ও মুকুলে স্থানে-ভিত বড় বড় সাজি বুদ্ধ দেবের প্রতি

ক্ৰিন চতুৰ্দিকে ও সন্থুথে রাখিয়া বামা-প্ৰথ ভবে ভতি করিয়া থাকেন। একটি িবিষয় উল্লেখ না করিয়া থাকিতে পারি-माम ना । সকলের ্ধর্মভাব। পাগোডার অর্থাৎ বৌদ্ধ म्बर्माम्बरत्रत अञ्चनीय त्रीम्बर्ग विनि ংদিখিয়াছেন, তিনি বিমোহিত সাহেন। চতুর্দিকে তাল বুক্সরাজি, মধ্য স্থলে কাৰ্চনির্মিত দেবমন্দির, শ্ৰুবার ঠুন ঠুন শব্দের সহিত স্থপন্ধ ং**বেমন কর্ণ ও** নাসিকাকে পরিভৃপ্ত **করে, তেমনি নয়নও** পরিতৃপ্ত হয়। खनगरे वा ना श्रेटव (कन १ वनावाहना এ শোভার সহিত হিন্দুর দেব দেবীর

যন্দিরের শোভার অনেক মিল আছে। নাটাশালাদিতে ধর্মবিষয় অবলম্বন ক্রিয়া অভিনয়ের কার্যা অনেকটা সম্পন্ন হইয়া থাকে। ব্রহ্মবাসীরা তামুল চর্মণ করিতে করিতে এই সকল স্থানে বসিয়া স্থথে সময় কাটাইয়া থাকে. কোনও মতে ক্লান্তি অমুভব করে নাঞা দান ও মন্দিরপ্রতিষ্ঠা এই ছটি সদমুষ্ঠান বিত্তশালী লোকমাত্রেই করিয়া থাকেন।

ইংরাজ মহিলাদিগের মত ব্রহ্ম-মহিলারাও নৃত্য অতি যদ্ধে শিক্ষা করিয়া থাকেন। এই শিক্ষা অতি শৈশবাবস্থা হইতে আরম হয়।

মহামুহূর্ত্ত।

(উপস্থাস)

"তোরা না সাধিলে এ মহা সাধনা. এ ভারত আর জাগে না জাগে না"

প্রথম পরিচ্ছেদ।

বেত্ৰৰতী নদী কুল কুল তানে वित्रा गारेए हा ছই ধারে খ্রামল প্রস্ত্র ও প্রাম্ব ভুগাছাদিত মাঠ। क्षांचारणः पानलवती खेवात शनिएछ পুৰিবীশানি আদদদাণা বোধ হইতেছে: दबक्क होकूटन भाग, भाग, भाग,

গীতি ছড়াইতেছে; সেই শোভা দেখিতে দেখিতে আমি আনন্দমনে ভূণাচ্ছাদিত মাঠে আমার কাজ করিতেছি।

আমার কাজ বেশি কিছুই নছে-আমি একটা গরু বাঁধিতেছিলাম। ধবলী গরু মাঠের নৃতন ঘাস দেখিয়া আমার সহিত বড় "ছষ্টামি" করিতেছিল, আমি তাহাকে আয়ত্ত করিতে যত্ন করিতেছি; এমন সময়ে কতকগুলা অস্বাভাবিক হাসি তনিয়া আমি চুমুকিয়া শিসুল গাছের উপরে পাধীরা প্রভাতি ফিরিয়া চহিলাম—দেখিলাম মহারা হাসিতেছিল তাহারা পুরুষ, আমি ক্লী-লোক--বাবা বলেন "वानिका"। আর চারি পাঁচ বছর আগে যাহাদের সহিত ভাই ভগিনীর মত খেলিয়া বেড়াইয়াছি, তাহারাই হাসিতেছিল; তাহাদের হাসি দেখিয়া আমি লজ্জি-তাও হইলাম, সঙ্কৃচিতাও হইলাম। কারণ দে আজি চারি পাঁচ বছরের কথা, আমি এখন বড় হইয়াছি: এখন আমার वयुम होक वहत स्टेग्नारह। এখন वामाकात्वत्र मनीपित्रत्र महिल कथा কহিতেও লজ্জা করে, তাহাদের সঙ্গে আমার আর দেখা ভনাও হয় না।

কিন্ত প্রুষ ছেলের লজ্জা বড় কম,
নচেৎ আমি যাহাদিগের হাসিতে লজ্জিতা
হইতেছিলাম, আমি স্পষ্ট শুনিতে পাইলাম, তাহারা আমাকে লক্ষ্য করিয়াই
হাসি তামাসা আরম্ভ করিয়াছে। একজন বলিতেছে "এখনকার দিনে বামন
কারেতের ঘরেও যে গয়লার ব্যবসা
চোল্ছে ?" আর একজন উত্তর করিতেছে "এভ কালের পরে ত্বে নির্জ্জলা
ছদ পাবার আশা হয়েছে, ভালই হ'ল!"
সকলেই সকলের মুখ চাহিয়া হাসিতেছে।

কেবল একজন হাসিতেছে না। সে
আমার সত্য দাদা। সত্য দাদা বাবার
কাছে পড়িতেন। এখন কলিকাতার
কলেজে পড়েন। বন্ধসে আমার চাইতে
ছর সাত বছরের বড়। ভাঁহার নাম
সত্যপ্রির, আমাকে চিরদিন সহোদরার
মত স্থেহ করিয়া আসিরাছেন, তাই

আমি তাঁহাকে "সত্যদাদা" বলিয়া ডাকি; অধনও সত্য দাদাকে দেখিলে আমার লজ্জা বা সঙ্কোচ হয় না। সত্য দাদা ছুটাতে বাড়ী আসিয়াছেন।

আমাকে ত্রন্ত দেখিয়া ধবলী প্রক বড় অবাধা হইল। সে মাঠের বাদ উপেকা করিয়া ধানের ক্ষেতের দিকে ক্র'কিল: আমি বড় বিপদে পড়িলাম।

সহসা সত্যদাদা আসিরা গরুর দড়ি ধরিলেন। সজোরে গরু টানিরা তাহার খোঁটা পুঁতিলেন। আমি ক্রজ্জজার বিভোর হইলাম, কিন্তু কথা কহিবার অবকাশ পাইলাম না। সত্যদাদা ক্রভ-পদে স্বতন্ত্র পথে চলিয়া গেলেন।

আমি বাড়ী ফিরিতে পথে দেখি,
সত্য দাদা একা দাঁড়াইয়া আছেন।
আমি কিছু না বলিতে তিনি আগে
কথা বলিলেন "কমা! তৃমি গক্ষ বাধিতেছিলে কেন? মাষ্টার মহালম্ম কি
গক্ষ কিনিয়াছেন ?" বাবা আগে প্রামের
ক্ষুলের হেড্মান্টার ছিলেন বলিয়া সত্য
দাদা তাঁহাকে "মান্টার মহালম"
বলেন।

আমি নতমুপে উত্তর করিলাম "না
সত্যদাদা, গক আমাদের নর। আবি
পক্ষ বাঁধিতে প্রতিশ্রুত ছিলাম ব্রিরাই
আজ করদিন পক বাঁধিতেছি। ভাল'
আজ কেবল ভোষার বস্তেই—সত্যদাদা
আর বলিতে দিলেন না, মলিলেন উপরের
পক্ষ বাঁধিতেছ কেন।" উত্তর দিতে
আমাকে অনিজ্বল দেখিরা আবার

বলিলেন "ক্ষা, যদি তোমারই গরু রাথিতে হয়, তবে কা'ল থেকে আমি ও গক্তর ভার গ্রহণ করিব।"

আমার বুকে লাগিল। আমি কি
মাহব ? যিনি আমার জন্মে এত
আরাস স্থীকার করেন, এতটা ক্লেশ
আনন্দে বহন করেন, আমি কিনা
ভাঁহার কাছে আস্মগোপন করিতেছি ?
ধিক্ আমাকে! আমি বলিলাম
"সত্য দাদা! গরু রাখিতেছি কেন,
ভাঁহা সব খুলিয়া বলিব, তুমি আমাদের
বাড়ী চল।"

সত্য দাদা হাসিরা বলিলেন "এখন নয়, সন্ধ্যাকালে যাইব।" অামি বাড়ী ফিরিলাম।

षिতীয় পরিচেছদ।

বৈত্রবতীর তীরে অনতিদ্রে আমাদের কুটার। আমি বাড়ী আসিয়া
বাবার কাছে সকল কথা খুলিয়া বলিলাম।
আমার মা, ভাই ভগিনী কেহই নাই।
আমার সেহের স্থান, স্থের স্থান, শান্তির
হান, কেবল বাবা। আমার সকল
কথা বাবাকেই বলিলে আমার মন পরিহুও হয়। আমি যে সকল ছোট ছোট
কথা বলি, বাবা ভাতাও খুব আগ্রহ
ক্রিয়া শোনেন, সেজভ্যেও আমি সকল
কথা পুঁটিনাট ক্রিয়া বাবাকে বলি।
স্বায়ার আগে আমি বাবার কাছে

ভগবদ্দীতা পঞ্চিতেছিলাম, পড়া হইরা

গেলে আবার সেই গদ্ধর কথা উঠিল।
বাবা বলিলেন "দেখিলে ত ক্ষমা, ভগবানের কি অপূর্ব্ব-লীলা, তথন সত্যক্রির
ওথানে না থাকিলে তোমার কত বিপদ্
হইত ?" আমি হর্ষোৎফুল হইয়া বলিলাম, "বাবা, আমিও তাই ভেবেছি,
জগদীশ্বর আমাকে নিরাপদ কোর্তেই
যেন অমন সময়ে সত্য দাদাকে পাঠিয়ে
দিয়েছিলেন! তা'বাবা, আমাদের সত্য
দাদা যেন স্বর্গের ছেলে! যেমন বিদ্যা,
বৃদ্ধি, তেমনি স্থন্দর চেহারা; আবার
পরের স্থ্থ হঃখও তেম্নি বোঝেন।"

বাবা হাসিলেন—আমার মুখপানে
চাহিয়া স্নেহের হাসি হাসিলেন। ঠিক্
এই সময়ে আর একজন লোক আমাদের
কুটীরে উপস্থিত হইল, সে আমার সত্য
দাদা।

সত্য দাদাকে বসিতে আসন দিয়া আমি এক পালে সরিয়া বসিলাম। বাবা সত্য দাদাকে খুব আদর করিয়া বসাই-লেন। সত্য দাদার সে বিনীত মুখের সৌন্দর্য্য যে দেখিয়াছে, সে জীবনে কথনও ভূলিতে পারিবে না।

অস্থান্ত কথার পরে বাবা বলিলেন,
"ক্ষমা এখন গরু রাখিতে শিখিতেছে,
দেখিয়াছ সত্য ?'' সত্য দাদা নম্রমুখে
হাসিলেন। আমি একটু জড় সড় হইলাম। বাবা বলিতে লাগিলেন "ক্ষমার
এক মন্বরা দিদি আছে, জান কি ?'

সত্য দাদা জানেন না, জানিতে বিশেষ ইচ্ছুক হইলে সত্য দাদাকে বাবা বলিতে লাগিলেন, "গঙ্গা ময়য়াণী বলিয়া একটা হংখিনী স্ত্রীলোক আমাদের প্রতিবাদিনী; ক্ষমা তাঁহাকে "ময়য়া দিদি" বলিয়া ডাকে। আজি কয়দিন তাহার বড় জর হইয়াছে, তথাপি সে জর গায়ে তাহার গরুটীর রক্ষণাবেক্ষণ করিত। সেদিন তাহার কষ্ট দেখিয়া ক্ষমা কাঁদিয়া ফেলিয়াছিল। শেষে আমার অম্বমতি লইয়া, গঙ্গা যতদিন আরাম না হইবে, ততদিন এই গরুটীর তত্বাবধান ক্ষমা নিজে করিবে প্রতিশ্রুত হইয়াছে এবং ময়য়াণীর সেবা শুশ্রমাও করিতেছে। আমাকে বলে "আহা, বাবা! ময়য়া দিদির আপনার জন নাই।"

শুনিয়া সত্য দাদা হর্ষোৎফুল্লমুথে বলিলেন "বটে! তা ক্ষমা, এ কথা আমাকে বোল্লেনা কেন ? আগে জানিলে সেই হুষ্ট ছোঁড়াদের বেশ শিক্ষা দিতাম।" আমি ব্যস্ত হইয়া বলিলাম "না সত্য দাদা, তোমার পা'য় পড়ি, এ কথা ভূমি কাকর কাছে ব'ল না। লোকে হাসিলেই বা কি, গালি দিলেই বা কি, আমরা আমাদের কাজ করিতে পারি-লেই মঙ্গল।" গীতার উপদেশ আমার প্রাণে জাগিতেছিল।

বিশ্বিতভাবে সত্য দাদা আমার মুথ-পানে চাহিয়া বলিলেন "জগদীখর করেন বেন চিরদিন তোমাতে এই স্বর্গীয়ভাব দৈথি।'' আমি লজ্জায় মরিয়া গেলাম। আত্তে আত্তে ঘরের বাহিরে আসিলাম। আকাশে পরিকার জ্যোৎসা।

অনেককণ নদীকৃলে দাঁড়াইয়া নৌকা
দেখিতেছিলাম। যথন ঘরে ফিরিলাম
তথন দেখি সত্য দাদা দাঁড়াইয়া আছেন,
বাবা তাঁহাকে বলিতেছেন "বাপু, ইহাই
আমার শেষ কামনা—আর সবই ফুরাইয়াছে। যদি তোমার মত জানিতে পাই,
তবে তোমার পিতার নিকটে প্রস্তার্য
করিব।" সত্য দাদা ধীরে ধীরে অধোমুধে
অর্দ্ধস্পইভাবে উত্তর করিলেন "আমার
অমত নাই—আমার পক্ষে সে তো
সোভাগ্য।"

উচ্ছ্বিত আনন্দভরে বাবা, সত্য দাদাকে বুকে টানিয়া লইলেন। বলিলেন "এখন জগদীখরের কপায় তোমার পিতা সম্মত হলেই ক্ষমাকে তোমার হাতে দিয়া কতার্থ হইতে পারি।"

আমার বৃক কি এক অজানিতভাবে চমকিয়া উঠিল। তাঁহারা কেহ পাছে আমাকে দেখিতে পান, এই ভয়ে পিছর্নে হটিয়া সরিয়া আদিলাম।

ভবিষাৎ! আমার অদৃষ্টে যাহা হইবে, তাহা তুমিই জান।

(ক্রমশঃ)

বাঙ্গালা প্রবচন।

91

১। পাঁকাল মাছের গার পাঁক লাগে না।

২। পাঁকের গোঁজ।

৩। পাঁচ ফুলের সাজী।

গাঁচৰ জুতা গুলে থায়,
 কুলের গারে মৃচ্ছ ি ধায়।

পাশ পেড়ে কাটি ভূঁয়ে না রক্ত
 পড়ে।

😓। পা মা ভিজলো যার, বড় কৈ তার।

१। शाका शास्त्र रेम।

পাকা আমের রসি,পাই না থাই যায়ে ঘদি।

৯। পাথমারার ঘরে চড়ুরের বাসা।

> । পাপল না ছাগল।

১>। পাগলে আর মজা নাই, গীরিতেও স্থথ নাই।

>২। পাগলে কি না কর, মাতালে কি না খার ?

১৩। পাগলের ছাট, তেলের কাট।

>৪। পাতা চাপা কপাল,
স্থার পাথর চাপা কপাল।

,>৫। পাতের ভাত দে পুষলাম যোগী, উল্টে বলে পরবাস কি।

১৬। পাথরে পাঁচ কিল।

>৭। পাথল পূজনে ইর মিলে তব হাম পুজে পাহাড়,

মালা জপনে হরি মিলেতো হাম জপে কুন্দাল। ' ১৮। পাথুরে বোকা।

১৯। পান পাস্তা ভক্ষণ, ঐ তো পুরুষের লক্ষণ, আমি অভাগী তপ্ত থাই, কোন দিন বা মরে যাই।

২০। পাস্তা ভাতে ঘি নষ্ট, বাপের বাড়ী ঝি নষ্ট।

२>। शांश नुकांग्र ना, शांशत एकांग्र ना।

২২। পাপের ধন প্রায়শ্চিত্তে যায়।

২৩। পাপের লেশ, হঃধের শেষ।

২৪। পাপাত্মনাং পাপ শতেন কিয়া।

२¢। পায় না পচা পুঁটী,

মাঙে শ্ৰী আমলকী।

২৬। পায়পড়ীরে পরিত্রাণ নাই।

২৭। পার জুতা মাথার উঠেছে।

২৮। পার যোগ্য মামুব নয়, গায় হাত দিয়ে কথা।

২৯। পারের কর্তা হরি, দেবেন চরণতরী।

৩ । পালাতে না পেরে পোষ মানা।

৩১। পালাব না ত কি ভয় কর্বো ?

৩২। পালের আগে দৌড়ন্ব ভেড়া, উজনে গোমালার চোধ টেরা।

৩৩। পালের গোদা।

৩৪। পালের গোরু পালে মিশেছে।

৩৫। পাষতের নাই পাপের ভর।

৩৬। পাষাণে মাথা ঠোকা।

त्निय मर्द्याथन।

(পূর্ব্ব প্রকাশিতের পর।)

চতুর্থ পরিচেছদ।

মনোরমা সরলাকে লইয়া কাজে স্থবিধা বুঝিয়া মনোরমা विभटनन । সরলাকে বলিলেন "সরলা, আমি তোমা-কে একটা কথা জিজ্ঞাসা করিতে চাই. ভূমি যদি উত্তর দাও, তাহলে আমি যত ভালবাসি, এর চেয়ে আরও বেশী ভাল-কথাটা যদি অপ্রিয় বাসিব। श्यू. ভাহলেও আমি যে ভালবাসার কথা ৰলিলাম তাহার একতিলও এ দিক্ ও দিক হবে না, আমার কথা থাকবে।" সরলা ভয়ে জড়সড় হইয়া, চিস্তিত ও বিষণ্ণ ভাবে বলিল "মা! তুমি বল, তোমার কথার ঠিক উত্তর দিতে চেষ্টা করব।"

মা। চেষ্টানয়, ঠিক্ কথা বল্তেই হবে।

স। আছা তবে নিশ্চয়ই,বল্'ব।

ম। সে দিন শিশিরের সঙ্গে কি
কি কথা হ'লো, আমার শুন্তে বড়ই
ইচ্ছা হয়েছে—দেখো একটি কথাও যেন
এদিক ওদিক না হয়।

সরলা সমস্ত কথাই বলিল, তাতে
শিশির কি বলিয়াছিল তাহাও বলিল।
মনোরমা সরলাকে বলিলেন "তুমি যে শত্য
বলিলে এজন্ত আমি অত্যম্ভ স্থী হইলাম, আর তোমাকে যে বেশী ভাল

বাদিব বলিয়াছি সে বিষয়ে তুমি আজ
হইতে স্থির জানিব যে আমি তোমাকে
আমার খুকির মত ভাল বাদিব। তুমি
বড় মেয়ে, খুকি ছোট মেয়ে। আর
তোমার সঙ্গে তার নামের মিল রাথিবার
জক্ত তার নাম রাথিব মুরলা।" সরলা
সত্য কথার পুরস্কার পাইয়া আনন্দে
চক্ষের জলে ভাসিতে লাগিল, কিন্তু যেন
কিছু বলা হয় নাই বলিয়া সরলার মনটা
তথনও ভয়ে জড়সড় হ'য়ে ছিল। বিছাৎ
চমকের আয় সরলা কাঁপিয়া উঠিল,
দেথিয়া মনোরমা বলিলেন, "সরলা, তুমি
শিহরিয়া উঠিলে কেন ?" তথন সরলা
কাঁদিতে কাঁদিতে বলিল,—মা একটা
কথা বলিতে ভুলিয়া গিয়াছি।

ম। এখন বল সে টী কি কথা।

স। সে কথাটী একা একা বিশিয়া-ছিলাম।

ম। কি বলিয়াছিলে ?
স। বলিয়াছিলাম "হায়রে পোড়া কপালু! আমি মরিলেইত সকল জালা ভুড়ায়।"

মনোরমা সেলাই ফেলিয়া সরলাকে
কোড়ে বসাইয়া বার বার মুখ চ্বন
করিয়া বলিলেন "সোণার চাদ আমার,
তুমি মর্বে কেন ? ছি অমন কথা কি
বল্তে আছে তুমি আমার কথা শুনিরা
চলিবে, কোন কথা গোপন করিও না,।
পরিণামে তোমার ভাল হবে। আমি

তোমাকে যে পথে চলিতে বলিব, সে পথে চলিয়া তুমি শেষে স্থখান্তি লাভ করিয়া স্থথী হইতে পারিবে। তোমাকে ঘরে আনিয়াছি, তোমাকে লালন পালন করিতেছি, তুমি স্থথী হইলে তাহাতে আমাদের প্রাণে কত স্থথ, তুমি বালিকা এখন হয়ত ব্রিতে পার না, বড় হইয়া যখন তুমি আবার আমার মত মা হবে, তখন ব্রিতে পারিবে, মেয়ে ভাল হইলে মায়ের কত স্থথ হয়।

পঞ্চম পরিচ্ছেদ।

মনোরমা আজ সেলাই করিতে
করিতে সরলার মনটাকে সেলাই করিরা
কেলিয়াছেন। সরলা আজ বৈকালে
এক নৃতন শ্রী ধারণ করিয়া ইতস্ততঃ
বিচরণ করিতেছে। আজ তাহাকে
দেখিয়া বোধ হইতেছে সে যেন পৃথিবী
জয় করিয়াছে, অথচ জয়ের অহয়ার নাই
—জাঁক জমক নাই। শাস্ত মৃত্তি, স্লিগ্ন

ভাব। মিষ্ট কথা আজ তাহার দেহ यत्नत्र नावगा ७ कृष्ठिं तृष्कि कतिशाष्ट्र। আজ তাহাকে দেখিলেই কথা কহিতে —কথা কহিলেই কোলে টানিতে ইচ্ছা হয়। আজ তাহার ভাব ভঙ্গী আচার ব্যবহার সমস্তই যেন মধুমাথা বলিয়া বোধ হইতেছে। গৃহস্বামী অবিনাশের বাবা আজ সরলাকে দেখিয়া একটু প্রীত হইলেন, সঙ্গে সঙ্গে তাঁহার মুখে যেন একটা ঘন বিষাদের ছায়া পড়য়া গেল। অবিনাশের বাবা এথনও জানিতে পারেন নাই যে মনোরমার ভালবাসাপর্ণ কোমল করম্পর্শে, তাঁহার স্নেহ চুম্বনলাভে, তাঁহার শান্তিপূর্ণ ক্রোড়ে বসিয়া, সরলা আজ আপনাকে ও মনোরমাকে জয় করিয়াছে —তিনি এখনও জানিতে পারেন নাই যে প্রীতি ও প্রসন্নতার স্পর্শ পাইয়া সরলা আজ হৃদয়-দার খুলিয়া মনোরমার নিকট আত্মবিক্রয় করিয়াছে—তিনি জানেন না সরলা আজ কি ধন পাইয়া আমুবিক্রয় করিয়াছে। (ক্রমশঃ)

প্রাচীন ভারতে মহাবিদ্যালয়।

থ্রীয় সপ্তম শতাকীতে নালনার বৌদ্ধ বিদ্যালয় ভারতুব**ূর্বে দ্বা**তিশয় প্রদিদ্ধি-কাভ করিয়াছিল। নালনা গয়ার নিকট, কেহুকেহ বর্ত্তমান বড়গাঁওকে প্রাচীন নালনা বলিয়া নির্দেশ করেন। যাহা হউক, নালনা বৌদ্ধদিগের পরম পবিত্র

তীর্থস্থান বলিয়া প্রসিদ্ধ। কথিত আছে

এই স্থানে একটি আত্রকানন ছিল।

কোন ধনাচ্য বণিক্ উহা বৃদ্ধকে দান

করেন। বৃদ্ধ ঐ আত্রকাননে অনেক

দিন অতিবাহিত করিয়াছিলেন। ক্রমে

ঐ স্থানে একটি বিদ্যালয় প্রতিষ্ঠিত হয়।

ভিন্ন ভিন্ন সময়ের ধর্মপরায়ণ বৌদ্ধ ভপতিদিগের দানশীলতায় ক্রমে ঐ বিদ্যামন্দির সম্প্রসারিত ও উন্নত হইয়া সপ্তম শতাকীতে নালনার উঠে। বিদ্যামন্দির সমগ্র ভারতবর্ষে সর্বপ্রধান বৌদ্ধ বিদ্যালয় বলিয়া প্রসিদ্ধ ছিল। বৌদ্ধদিগের আঠারটি ভিন্ন ভিন্ন দলের দশ হাজার শ্রমণ এই বিদ্যালয়ে থাকিয়া ধর্মশাস্ত্রে, ভায়, দর্শন, বিজ্ঞান, গণিত, সাহিত্য ও চিকিৎসা বিদ্যার আলোচনা করিতেন। মনোহর বৃক্ষবাটিকায় এই মহাবিদ্যালয় পরিশোভিত ছিল। ছয়ট চারিতল অট্রালিকায় শিক্ষার্থিগণ বাস করিতেন। ভিন্ন ভিন্ন বিষয়ে উপদেশ গৃহ ছিল। দিবার জন্ম একশতটি এতঘ্যতীত শাস্ত্রজ্ঞদিগের সম্মিলনের জন্ম মধ্যস্থলে অনেক গুলি বড বড ঘর স্বসজ্জিত থাকিত। এই সময়ে কান্ত-कु জ রাজ হর্ষবর্দ্ধন শীলাদিত্য ভাষতবর্ষে সর্ব্বপ্রধান বৌদ্ধভূপতি বলিয়া সম্মানিত তিনি শিক্ষক ও শিক্ষার্থী-निरात आहात, পतिर्देश ও 🕉 विश्वानित সমস্ত ব্যয় নির্কাহ করিতেন। রের কোলাহল পবিত্র বিদ্যামন্দিরের শাস্তিভঙ্গ করিত না। সাংসারিক প্রলো-ভন উহার পবিত্রতা বিনাশে সমর্থ হইত শিক্ষার্থিগণ ঐ পবিত্র শাস্তি-ना । নিকেতনে প্রশাস্ত ভাবে শাস্ত্রচিস্তায় নিবিষ্ট থাকিতেন।

মহাপ্রজ্ঞ শীলভদ্র এই প্রসিদ্ধ বিদ্যা মন্দিরের প্রধান অধ্যাপক' ছিলেন। ইনি কেবল বয়সে বৃদ্ধ ছিলেন না, শাস্ত্রজ্ঞানেও বৃদ্ধ বলিয়া সাধারণের নিকট সম্মানিত ছিলেন। অসাধারণ ধর্মানীলতায়, অসাধারণ দ্রদর্শিতায়, অসাধারণ অভিজ্ঞতায় এই বর্ষীয়ান্ পুরুষ নালনার মহা বিদ্যালয় অলঙ্কুত করিয়াছিলেন।

চীনের চিরপ্রসিদ্ধ পরিব্রাজক হিউ এনথ সঙ্গ এই সময়ে ভারতবর্ষে আসি-য়াছিলেন, তিনি ভারতীয় এই লীলা-ভূমিতে যাইতে নিমন্ত্রিত হয়েন। হিউ-এনথ সঙ্গ বিনয়ের সহিত নিমন্ত্রণ গ্রহণ-পূর্বক নালনায় গমন করেন 🏞 তিনি পাঁচ বৎসর নালনার মহা বিদ্যালয়ে ছিলেন। পাঁচ বংশর মহাপ্রজ্ঞ শীল-ভদ্রের পাদ্রনূলে বসিয়া পাণিনির ব্যাক-রণ, ত্রিপেটক ও ব্রাহ্মণদিগের সমুদয় শাস্ত্র অধায়ন করিয়া অভিজ্ঞতা লাভ করিয়াছিলেন। যিনি চীন সামাজ্যে সর্ব্যপ্রধান তত্ত্বিৎ বলিয়া সম্পূজিত হইয়া-ছিলেন, দেশে দেশে পরিভ্রমণ করিয়া নানাবিষয়ে অভিজ্ঞতা লাভ করিয়া-সাধারণে বাহার ছিলেন, জ্ঞানগরিমার নিকটে অবনতমন্তক হইত, সেই মহা পণ্ডিত হিউয়েন্গ্ সঙ্গ জ্ঞান-সঞ্চার মানদে ভারতার এই পবিত্র নিকেতনে. ভারতের • এই অভিজ্ঞ পুরুবের শিষ্য হইয়াছিলেন। **এব**ন এই मश विमागवात्रुत श्र्वजन त्मीन्नर्ग नारे। কালের কঠোর আক্রমণে এই পবিজ সারস্বত আশ্রম এখন ভগ্ন দশার পতিত রহিয়াছে।

কোন বালিকার জন্মদিনের উপহার।

(>)

অফুটস্ত—অপূরিত
বুকে লয়ে আশা-রাশি,
অজানা হাতের গড়া—অজানা প্রদেশ ফেরা,
(জনম-জীবন-মৃত্যু স্থরহস্থ মর!)
রহস্থে সংসার-গীত—কে জানে ক'দিন তরে
মরম-পরশি
গাইবেরে দিবানিশি!
(২)

ছিল না জনম কালে,

সংসাঁত বি কিছু সাথে !

আবার ঘাইবে শৈোকে—একাকিনী সেই

দেশে;

সংধু ছ'দিনের তরে এই ধূলি খেলা!!

মিটিবেনা সেই আশা,
মিটিতে পারে না হেথা !
অতৃপ্ত-ফুটস্ত এবে—
স্থপুই ফুটিয়া যাবে !
কে জানে হাসিবে কিনা সংসারের পথে !

ত্তি।

চাহিনা—বাসিনা ভাল,
সংসারের কিছু দিতে!

ভতো ছাই স্থপু ছাই,—এই আছে এই নাই,
ভতা স্থপু মরীচিজ্বা থেলা!
ভরা কি মিটাতে পারে,

তামার (ও) জীবন-উষা
ভূটি ফুটি ধীরে ধীরে,
সরায়ে সংসার মায়া—গভীর পাপের ছারা

ৰাজি শুভ-জন্ম-দিনে,

আসিরাছি এই থানে

ব্কভরা-—প্রাণ ভরা
কি দিব—কি আছে প্রাণে!
বস বস এই স্থানে—
গাইব প্রাণের গীতি—
তব শুভ-জন্ম-দিনে।
(জগতের নহে কিছু
জগত শুনিবে কেন ?)
গা'ব মোরা প্রাণে প্রাণে!

(8)

যেমন সাধের মেয়ে,— তেমন ফুটরে ভালো! করিয়া দিগস্তাকুল—ফুটরে একটা ফুল, করিয়া এ গৃহ আলো! ্জুন্মকালে হাসিয়াছ, কত লোক হাসিয়াছে! আবার সংসারে পশি, হাসরে তেমন হাসি, (যেমন বসস্ত বায়, * ফুলটী হাসায়ে যায়) জুড়াব দর্গিধ প্রাণ তোমার পরশে আসি। নিশির তামস-রাশি, সরাইয়া হুই হাতে---স্থদিন সংবাদ দিতে। তোমার (ও) জীবন-উষা कृषि कृषि भीदत्र भीदत्र, সরায়ে সংসার মায়া—গভীর পাপের ছায়া, প্রাণ-সঞ্জীবন'গীতে জাপ্তক এ ধরা' পরে !

(c)

কত লোক আদে ভবে,
কত লোক চলে যায়!
আঁধার এ ধরাধাম—কে করে কাহার নাম
কে চিনে কাহার মুখ,
সকল(ই) আঁধারে রয়!
যদি কার (ও) মুখ-তলে, একটু আলোক

তার(ই) মুথ ও আঁধারে—
জগৎ টানিয়া লয় !
তার(ই) জন্মদিন ভবে,
স্মৃতি-পাতে আঁকা রবে !
তাহার(ই) আশার কথা,
তার(ই) গীত বিশ্বময় !

(७)

তোমার (ও) জনম দিন তাই হোক্—আশা প্রাণে এ মোর প্রার্থনা গীতি,—এই মোর আশা প্রীতি—

এই মোর "উপহার"
তব শুভ জন্ম দিনে।
"ভালবাসা স্বর্গের সোপান,
সাধুতাই স্থথের নিদান"
এই স্বরগের গীতি
গাও তুমি এ জীবনে!

গুভাকা**জী**। শ্রীঅ—

লাঙ্কুলের উপযোগিতা।

মেরদণ্ডী জাঁবদিগের প্রায় দকলেরই লাঙ্গুল আছে। স্তন্যপায়ী শ্রেণীর
মধ্যে নরাক্তি বানর* ও কতকগুলি জীক্ষদস্তের এবং সরীস্থপ শ্রেণীর সংধ্য ভেকগণেরা লেজ নাই। লাঙ্গুল জীবদিগের
সৌন্ধ্য ও কার্য্যকারিতার সহায়তা
করিয়া থাকে। ইহার কার্য্য বহুল ও
বিচিত্র। কোথাও ইহারারা মনের ভাব

ব্যক্ত হয়, কোথাও গতিক্রিয়া সম্পন্ন হয়, কোথাও নৌকার হালের স্থায় বায়ু বা জলের উপর শরীর বাহিয়া যাওয়া যায়, কোথাও ইহা আক্রমণের অন্ত্র, কোথাও ইহা শীতের বস্ত্র, কোথাও ঝড় বৃষ্টি হইতে রক্ষার জন্ম ছত্ত্রের কার্য্য করে। বিশ্বপতির বিচিত্র লীলা, লাঙ্গুলের কার্য্য-কারিতা অনুসারে ইহার আকার ও গঠনও বিচিত্র।

আমেরিকার অনেক জাতীয় বাদ-রের লাঙ্গুল হত্তের স্থার ধারণের উপ-যোগী। ইহাছারা তাহারা রক্ষের ডালী ধরে এবং ঝুলিরা ঝুলিয়া চলিয়া যায়,

† ভেকদিগের সন্তান অর্থাৎ বেঙাচিরা সলাকুল, বড় হইলে লাকুল থসিরা বার।

আফুকাও আমেরিকার কোন কোন বন্য জাতীর মমুষ্য স-লাঙ্গুল দৃষ্ট হইরাছে গুনা যার। লাঙ্গুল বানরজাতির সাধারণ ভূষণ সন্দেহ নাই।

সে সময়ে হস্ত দারা ভক্ষণ বা অতা বিধ कार्षा ७ हिना थारक। এই नामून মাংসল ও স্বল, তদ্তির তাহার অগ্র-ভাগের দিকে কতক স্থান লোমবিহীন থাকাতে তাহার স্পর্শ শক্তি অতি প্রবল। শাথায় শাথায় বেড়াইবার সময় এই জন্ম দৃষ্টিশক্তির আদৌ প্রয়ো-জন হয় না-লাঙ্গুলের অগ্রভাগের স্পর্শ শক্তিমারা কোথায় কি আছে বিল-কণ অহুভূত হয়। এই লাফুল বানর-দিগের শরীর অপেক্ষা অনেক দীর্ঘ, কিন্তু তাহা এমন ছোট ছোট অস্থিও সং-যোগে গঠিত যে ইচ্ছামত সঙ্কৃচিত, প্রসারিত ও সঞ্চালিত করা যায়। লাঙ্গুল দে দেশের বানরদিগের পঞ্চম হস্ত বলিয়া উক্ত হইয়া থাকে। ইহাদারা তাহারা বৃক্ষশাথা এমত দৃঢ়রূপে আঁক-ড়াইয়া ধরে, যে বন্দুকের গুলি করিয়া भातिया (फिलिटल लाकूल अवलब्दन শরীর অনেকক্ষণ ঝুলিয়া থাকে।

বানর ছাড়া আরও কোন কোনও জন্তর ধারণোপযোগী লাঙ্গুল আছে।
ইহাদের মধ্যে কস্থলে ইন্দুর সর্বাপেকা
কুজজাতীয়। লাঙ্গুল অবলখনে বানরেরা ষেমন বৃক্ষশাখার ভ্রমণ করে,
ইহারা তেমনি যব, গোুধ্ম ও ধানগাছ
প্রভৃতিতে আরোহণ করে। ডাঁটায়
লেজ্ জড়াইয়া নামিতে থাকে এবং অতি
স্ক্রগভিতে ভূমির উপর নি:শকে
চলিয়া মান্ন। আমেরিকার অপোদম
প্রভৃতি জন্তর কোজের এক চমৎকার

ব্যবহার দেখা যায়। জননী যথন সস্তানদিগকে পিঠে করিয়া লইয়া যান,
তাঁহার লেজটী বেঁকাইয়া থাড়া করিয়া
রাখেন, আর সস্তানেরা আপনাপন লেজ
দিয়া ক্রমে ক্রমে তাহা জড়াইয়া ধরিয়া
থাকে; ইহাতে কাহারও পতনের সন্তাবনা থাকে না।

অনেক জন্তুর লাঙ্গুল চামর বা ঝোপের স্থায় এবং তাহা লোম বা পশমে আরুত। যাহাদের এরূপ লেজ আছে, তাহারা নিজার সময় লেজটা গুটাইয়া সম্বাথের পদ্ৰয় ও নাসিকা আরুত করে, ইহাতে বেশ গরম হইয়া স্থথে নিজা যায়। কাট-বিড়ালী, থেঁকশিয়ালী প্রভৃতি ইহার উদাহরণস্থল। উড়্যায়মান কাটবিড়ালী যথন বহুদূর লক্ষ প্রদান করে, তথন তাহার দীর্ঘ লোমশ লাঙ্গুল হালের স্থায় বাতাদ কাটিয়া যায়। পক্ষীদিগের পালক-যুক্ত লেজও এই কার্য্য করে, তাহাদারা তাহারা যদৃচ্ছাক্রমে আকাশ পথে চলিয়া বেড়ায়। ময়ুরের পুচ্ছ কি স্থন্দর! আরও অনেক পক্ষীর লাঙ্গুলের অপরূপ भानामा आছে।

লাঙ্গুল ছারা মনের ভাব আশ্চর্য্য রূপে ব্যক্ত হয়। কুকুর তাহার প্রতি-পালক প্রভু বা সঞ্চীকুকুরের নিকট আসিয়া কেমন লেজটী নামাইয়া দিয়া নাড়িতে থাকে, তাহাতে তাহার কত ভক্তি, কুতজ্ঞতা ও আনন্দ প্রকাশ পায়! সেই কুকুর আবার শত্রুবেশে কোন মাহুষ বা অন্ত কুকুরকে দেখিলে বীরভাবে লেজ থাড়া করিয়া তুলে। কুকুরের প্রাণে যথন ভয় হয়, তথন সে লেজটী গুটাইয়া পায়ের মধ্যে রাখিয়া স্থড় স্থড় করিয়া পলাইতে থাকে। সিংহ, ব্যাত্র বিড়াল রাগ হইলে লাঙ্গুল একবার এ পাশ ও একবার ও পাশ আছড়াইতে থাকে, কিন্তু যথন আহার গ্রহণে বা সঙ্গিনীর সহিত সন্তায়ণে দৌড়িয়া যায়, তথন লাঙ্গুল স্থির ও উর্দ্ধদিকে থাড়া হইয়া থাকে।

গোরু, মহিষ, ঘোটক ইত্যাদির
শরীরের চর্ম তত রোমশ নয়, এই জন্ত
কীটেরা দংশনে চর্মান্ডেদ করিয়া রক্ত
পান করিতে পারে। এই বিপদ হইতে
রক্ষা করিবার জন্ত মঙ্গলময় ঈশ্বর ইহাদের কেশযুক্ত লম্বা লম্বা লেজ ঝাড়নের
মত করিয়া দিয়াছেন। চমরী গোরুর
লেজে চামর ইইয়া থাকে।

এক প্রকার ভন্নক আছে, তাহারা বাদস্থানের জন্ত গহরর খনন করে না। লেজটা এরপ প্রকাণ্ড ও মজবুত, বে তাহাদ্বারা বাতাস ও বৃষ্টির উৎপাত নিবারণ করিয়া থাকে। ইহারা অলস ও নির্জনপ্রিয়; অধিকাংশ সময় নিজায় কাটাইয়া দেয়। নিজা মাইবার সময় এক পাশে ভর দিয়া শয়ন করে, বুকের লোমে নাসিকা আহত করে, সয়ৄয় ও পশ্চাতের পদ গুটাইয়া প্র্টুলির মত হয়, তাহাতে উদর ও মস্তক আহত হয়। তৎপরে লম্বা ঝোপের মত লেজটা দিয়া সমস্ত শরীর ঢাকে, লাকুল ছত্তের কার্য্য

করে, রৌদ্র, ঝড়, রৃষ্টি কিছুই গ্রাহ্য করে না।

কেন্দার লাকুল পঞ্চম পদের কার্য্য করে। কেন্দার আহার ও পরিশ্রমে করিবার সময় পশ্চাতের পদম্ম ও কুগুলীকৃত লেজের উপর পরম স্থ্যে উপবেশন করে। জর্কোয়া কেন্দারর লাকুলের কার্য্য বড় আশ্চর্য্য। লম্বা ঘাশ ও থড় দিয়া ইহাদের বাসা নির্দ্মাণ করিতে হয়। ইহারা লাকুলম্বারা মাঠ হইতে রাশি রাশি ঘাশ থড় ছিন্ন করিয়া সংগ্রহ করে এবং পরে তাহা লেজে বাধিয়া থপ্ থপ্ করিয়া লাফাইয়া লাফাইয়া বাসন্থানে আসিতে থাকে। এইরুপে লাফাইতেঁ লাফাইতে যথন আসিতে থাকে, তথনকার দৃশ্য বড় আমোদকর।

যে সকল মেক্রদণ্ডী প্রাণী জলে বাস করে এবং যাহারা উভচর, তাহাদের লেজ নৌকার হাল ও দাঁড়ের কার্য্য করে। হাইল দিয়া নাবিক যেমন নৌকা পশ্চাৎ হইতে ঠেলিয়া সন্মুথ দিকে লইয়া যায়, ইহাদের লেজ সেইরূপ অগ্রগমনের সাহায্য করে, আবার দাঁড়ের মত যে দিকে ইচ্ছা সে দিকে লইয়া যায়। কি আশ্চর্য্য, এক লাঙ্গুলের মধ্যে হাল ও দাঁড় উভয়েরই সমাবেশ আছে! কুন্তীর স্থলে আসিয়া আহার লাঙ্গুল চালনা দ্বারা শিকার আক্রমণ করে, কথনও কথনও টিল ছোড়ে, কথনও কথনও ধূলা তুলিয়া চারিদিক্ অক্কারত করে। ইহার লাঙ্গুলের এক আবাতে শিকার অচেতন হইয়া পড়ে, তথন করিয়া নাচাইতে নাচাইতে লইয়া গিয়া ভাহাকে টানিয়া জলে ডুবায় বা পিঠে গভীর জলে প্রবিষ্ট হয়।

উদ্ভিদ্ তত্ত্ব।

গটাপার্চা ।

ডাক্তারথানায় ঘা প্রভৃতির উপর
পাতলা চামড়ার মত এক প্রকার জিনিষ
ব্যবহৃত হয়, ইহার নাম গটাপার্চা।
ইহার এমন গুণ যে ইহা জলে ভিজে না
এবং প্রুল্ল রক্ত ইহাতে শুষিতে পারে না।
এই জিনিষটা কি, অনেকেই জানেন না।
পটা অর্থ রদ এবং পার্চা এক প্রকার
বৃক্ষের রস হইতে প্রস্তুত হয়। এই
পার্চা বৃক্ষ মলোকা ও পূর্ব্ব উপদীপ
সম্হে পাওয়া যায়, সিঙ্গাপুরে অতি উৎকৃষ্ট জাতীয় বৃক্ষ আছে এবং তাহার
রস হইতে প্রস্তুত গটাপার্চা সর্ব্বাপেক্ষা
মূল্যবান।

পটাপার্চা বৃক্ষ দীর্ঘাক্তি, দেখিতে স্থান্দর ও জমকাল, উচ্চে প্রায় ৭০ ফিট হইবে। হার পালে কার্চ স্পঞ্জের মত নরম ও ছিদ্রযুক্ত। ইহার পত্র দক্তা দুলৈ একটার পর আর একটা উল্টা দিকে সজ্জিত। পত্রের উপীরভাগ হরিৎ, নিম ভাগ স্বর্ণের ভাষ

পটা যেরপে সংগৃহীত হয়, তাহাতে কাটি বাহির করিয়া দেয়।

বৃক্ষের প্রাণনাশ হইয়া থাকে। উৎকৃষ্ট বৃক্ষ সকল মনোনীত করিয়া প্রথমে কাটিয়া ফেলা হয়, পরে ছাল ও কাঠের মধ্যস্থল হইতে ছগ্নের মত এক প্রকার রস অতি সাবধানে চাঁচিয়া চাঁচিয়া সংগ্রহ করা হয়। বাতাস লাগিলেই এই ছগ্ন জমিয়া শক্ত হয়। তথন কটির মত করিয়া ভিন্ন ভিন্ন দেশে রপ্তানি করা হয়। গটাপার্চার কাঠ বড় নরম, তাহা বড় কোন কাজে লাগে না।

যে গটাপার্চা পণ্য জব্যরূপে রপ্তানি
হয়, তাহা শক্ত দৃঢ়, কর্কণ ও অস্বচ্চ,
আগত্তনে শীঘ্র দগ্ধ হয় এবং সহজে গলান
যায়। এই অবস্থায় ইহার বর্ণ মাংসের
ভায়, দেখিতে কর্কের মত, গদ্ধ পণির
বা পচা ঘোলের ভায়। ইহা পরিষ্কৃত
করিয়া ব্যবহারোপযোগী করা হয়।
পাতলা খণ্ড সকল কাটিয়া লইয়া গরম
জলপূর্ণ বাল্লের মধ্যে দস্তবিশিষ্ট এক
প্রকার যদ্রে ফেলা হয়। বাক্স ঘ্রিতে
থাকে এবং যদ্রের দস্ত গটাপার্চাকে খণ্ড
খণ্ড করিয়া কাটিয়া ফেলেও ছাল কুটাকাটি বাহির করিয়া দেয়। ছোট

ছোট থণ্ডগুলি একত করিয়া পুনরায় রুটীর মত করা হয় এবং পাতলা কাগ-জের মত করিবার জন্ম গরম ডলন (রোলার) ঘয়ের মধ্য দিয়া টানিয়া লওয়া হয়। চাপে বাতাস ও জল সব বাহির হইয়া যায়।

গটাপার্চা কেবল ক্ষত স্থান বন্ধনের জন্ত নয়। ইহাদারা ছড়ি, জলের নল, বাগ্যন্ত প্রস্তুত হয় এবং টেলিগ্রাফের তার মোড়া হয়, তাহাতে জলমধ্যস্থ তারের কোন অপকার হইতে পারে না। গরম জলে তপ্ত করিয়া ইহা যে প্রকার ইচ্ছা সেই প্রকার আকারে গড়া যায়। রবার ইহার অপেক্ষা স্থিতিস্থাপক, কিন্তু ইহা অধিক ভারসহ। এক বুরুলের ৮ ভাগের এক ভাগ সক্ষ গটাপার্চায়॥১ একুশ সের ভার ঝুলান যায়, তাহা ছিড়িয়া যায় না।

ইউরোপে ইহার ব্যবহার প্রচলিত হইবার পুর্বেও ইহা জানা ছিল, নাবি-কেরা এতন্নির্শ্বিত বিবিধ বস্তু পূর্ব দেশ হইতে তথায় লইয়া যাইত। ১৮৬৩ খৃষ্টাব্দে ডাক্তার মণ্টগমারী চিকিৎসা বিষয়ে ইহার ব্যবহার প্রদর্শন করাতে শিল্পসভা হইতে স্বর্ণপদক পুরস্কার প্রাপ্ত হন। তদবধি ইহা প্রচুর পরিমাণে আমদানী হয়। ইহার প্রয়োজন দিন দিন বৃদ্ধি হইতেছে। কয়েক বংসর হইল প্রায় ৫৬০০০ মণ গটাপার্চা এক বংসরে আমদানি হয়, ইহার জন্ম আ লক গাছ মারিতে হইয়াছিল। অনেক্ল স্থান বৃক্ষশূত্য হইয়াছে, তথাপি অনেক স্থানে এখনও পার্চা বৃক্ষের বৃহৎ বৃহৎ জঙ্গল রহিয়াছে।

বুদ্ধদেবের উপদেশ।*

হ্ৰথ

১। যে ব্যক্তি জীবনের প্রকৃত উদ্দেশ্য ভূলিয়া গিয়া অসায় বিষয়ে মত হয় এবং ধ্যান পরিত্যাগ করিয়া স্থথ আলিঙ্গন করে, সে পরিণামে ধ্যান-পরায়ণ লোকের স্থথের অবস্থা দেশিয়া ঈর্ধ্যান্বিত হইবে।

হ। কি স্থাকর কি অস্থাকর
 কোনও মহ্ব্য বেন তাহার অবেষণ না
 করে। স্থাকর বস্তু অবেষণ করিলে তাহার

অভাবে হঃখ, অমুথকর বস্তুর প্রতি বিরক্ত হইলে তাহা দেখিলেই হঃখ।

ত। কোনও মহ্বা পার্থিব কোনও বস্তুকে যেন প্রিয় জ্ঞান করে না, বেছেতু প্রিয় বস্তুর নাশেই হঃ । পার্থিব কোনও বস্তু যাহাদের প্রিয়ও নয়, অপ্রিয়ও নয়, তাহারাই সংস্থার পৃত্যল হইতে মুক্তা।

৪। সুথ হইতে ছ:থ হর, স্কুঞ্
 + ধর্মপদ ১৬শ অধ্যায় হইতে সংসৃহীত।

হইছে ভর হয়; যে ব্যক্তি স্থ-বাসনাপ্তা, তাহার হংগও নাই, ভরও নাই।

- ৫। মায়া হইতে শোক ও ভয়ের
 উৎপত্তি হয়, য়ে ব্যক্তি মায়া হইতে মৃক্ত,
 তাহার শোক ও ভয় কি ?
- ৬। ইন্দ্রিয়-লালসা হইতে শোক ও ভয়ের উৎপত্তি, যাহার ইন্দ্রিয়-লালসা নাই, তাহার শোক ও ভয় নাই।
- ৭। আদক্তি হইতে শোক ও
 ভয়ের উৎপত্তি, যাহার আদক্তি নাই,
 তাহার শোক ও ভয় নাই।
- ৮। লোভ হইতে শোক ও ভয়ের উৎপত্তি হয়, যাহার লোভ নাই, সে শোক ও ভয় হইতে বিমুক্ত।
- ম ব্যক্তি ধর্ম ও জ্ঞানসম্পন্ন,
 বে ব্যক্তি স্থায়বান্, সত্যবাদী, এবং
 কর্ত্তব্যপরায়ণ, তিনি জগতের প্রিয়।

- ১০। বাঁহার হৃদয়ে নির্বাণেচ্ছা
 সঞ্চারিত হইয়াছে, যিনি আপনাতে
 আপনি সন্তুষ্ট এবং সংসারাসজি বাঁহার
 চিত্তকে চঞ্চল করিতে পারে না, তাঁহাকে
 উর্ক্তশ্রোতা বলে অর্থাৎ তিনি সংসারের
 অতীত হইয়া থাকেন।
- ১১। কোন ব্যক্তি দ্রদেশে গিয়া যদি নিরাপদে গৃহে প্রত্যাগত হন, তাহাহইলে তাঁহার বন্ধু, কুটুম্ব, আগ্রীয় স্বজন কত আদরে তাঁহাকে গ্রহণ করিয়া থাকে।
- ১২। আত্মীয় কুটুছেরা বিদেশ হইতে প্রত্যাগত বন্ধুকে যেরূপে অভ্য-র্থনা করে, যে ব্যক্তি সাধুকার্য্যের অন্ধ-ষ্ঠান করিয়া এ লোক হইতে লোকাস্তরে গিরাছেন, তাঁহার সাধুকার্য্য সকল তাঁহাকে সেইরূপে অভ্যর্থনা করিয়া থাকে।

নূতন সংবাদ।

- >। বরদার গুইকুমার সস্ত্রীক ইংল-প্রেশ্বরীর সহিত ভোজন করিয়াছেন। মহারাণী তাঁহার সহিত হিন্দীতে কথা-বার্দ্ধা কহিয়াছেন।
- ২। ডাকার মহেঁক্রলাল সরকার তাঁহার স্ত্রী রাজকুমারীর হইরা বৈদ্যনাথ কুষ্ঠান্ত্রের গৃহ নিশ্মাণার্থ ৬০০০ টাকা শিয়াছেন, এই গৃহের নাম "রাজকুমারী কুষ্ঠনিবাস" হইয়াছে। ছোট লাট ইহার
- ভিত্তি স্থাপন করিয়াছেন। এখন আরও অনেক লোকে এখানকার কুঠরোগী-দিগের জন্ম সাছায্য করিতেছেন দেখিয়া আমরা সস্তুষ্ট হইতেছি।
- গেটিট জালি" নামক এক গানি পত্রিকা আছে, তাহার প্রাহক

সংখ্যা সর্বাপেকা অধিক। ইহার এক এক সংখ্যা ১২॥ লক্ষ করিয়া ছাপা হইয়া থাকে।

৫। এটনা পর্বতের পুনরায়
"কায়্যুৎপাত" আরম্ভ হইয়াছে। কেলিরিস দ্বীপপুঞ্জের সঙ্গীর দ্বীপের এক
আন্মের গিরির অয়্যুৎপাতে ১২০০০
লোক মারা পড়িয়াছে। বিস্ক্রিরস্
পর্বতেও পুনরায় অয়্যুৎপাত দেখা
দিয়াছে। পৃথিবীর গর্ভে নৃতন কি
একটা গোলবোগ হইয়াছে।

৬। এক মাদের মধ্যে বড় লাট-পত্নী বিলাভ হইতে ভারতে প্রত্যাগত হইবেন।

१। বাঁকুড়ায় একটী জেনানা হাঁদ-পাতালের ভিত্তি ু স্থাপন হইয়াছে। নগরে নগরে স্ত্রীলোকদিগের জন্ম স্বতম্ব হাঁদপাতাল হইতেছে। দদাশয়া লেডী ডফরিণ এই সদমুষ্ঠানের মূল। ৮। মুক্তিফৌজ পতিতার মন্ত্রী দিপের জন্য যে আশ্রম খুলিবেন বলিয়াছিলেন, তাহা কার্য্যে পরিণত হইয়াছে দেখিয়া আমরা অত্যক্ত সন্তুষ্ট হইলাম। এই আশ্রম লোয়ার সাকুলার রোড ৮১নং ভবনে খোলা হইয়াছে। নিরুপায় অনাথা বালিকাদিগের জন্মও ইহার মধ্যে গৃহ থাকিবে। স্ত্রীলোকেরা সংপথে থাকিয়া জীবিকা নির্বাহ করিতে পারে, তাহাদিগকে এরপ কাজ শিখান হইবে।

৯। আগামী প্রবেশিকা প্রীক্ষা ১৮৯৩ সালের ৬ই ফেব্রুয়ারি এবং এক এ ও বি এ প্রীক্ষা ২০ ফেব্রুয়ারিতে গৃহীত হইবে।

> । ত্রিপুরার মহারাজা স্বরাজ্যে একটা সংস্কৃত কলেজ থুলিবার জন্ত ২০,০০• টাকা দান করিয়াছেন।

পুত্তকপ্রাপ্তি ও সমালোচনা।

১। অক্ষর পরিচয় ১ম ভাগ (সচিত্র সরল)— প্রীউপেন্দ্রনাথ মুখোপাধ্যায় প্রাণীত মূল্য ৫ পরসা। এধানি বালক বালিকাদিগের উপধোগী প্রথম পুত্তক। ইতিমধ্যে ইহার ষষ্ঠ সংস্করণ হইয়াছে, ইহাই পুত্তকের সমাদ্বের প্রমাণু।

২। জন্মনগর রিডিং ক্লবের চতুর্দশ বাৎসরিক কার্য্য বিররণ- এই পুস্তকা-

লয়ে প্রায় ২০০০ পুস্তক আছে এবং
তাহা স্থানীয় সাধারণের পাঠের জন্ত।
চিকিৎসা সম্বন্ধীর পুস্তক পাঠে সর্বাপেকা
অধিক পাঠক পাঠিকার ক্রিচি হইরাছে
ইহা একটী শুভ দক্ষণ।

৩। জন্ধনগর উত্তরপাড়া বালিকা-বিদ্যালয়ের অন্বোদশ বাৎসন্নিক কার্ব্য বিবরণ-বিদ্যালয়টার কার্ব্য স্থনিক্ষম নিশার হইতেছে। আমরা সর্বান্তঃকরণে ইহার উন্নতি প্রার্থনা করি।

৪। শশান ভত্ম—বিতীয় মৃষ্টি। প্রথম মৃষ্টির ভায় ইহার মধ্যেও অনেক ভামৃল্য হীরকচুর্ণ লুকায়িত আছে, হত্ম দৃষ্টি সাধক চিনিয়া লইতে পারিবেন। এই ভক্ষ প্রাণে মাথিতে পারিলে যথার্থ বৈরাগ্য, ভক্তি ও সেবার ভাব লাভ করা যায়। ধর্মামুরাগী নরনারীগণের পক্ষে শ্মশানভক্ষ আদরের সামগ্রী হইবে সন্দেহ নাই।

বামারচনা।

বালিকার প্রেম।

মুগ্ধা বালা এ সংসারে প্রেমের কনক-তারে চায় নাই বাঁধিবারে মানবের প্রাণ: বিজন প্রান্তর মাঝে পবিত্র সোণার সাঁঝে শুনিয়াছি বালিকার প্রাণ্ভরা গান। ভাষাহীন সেই গানে বুঝেছি বালিকা প্রাণে, পায় নাই কোন দিন প্রেম-প্রতিদান; खर विष वृदक खतन, मूथकृ हो नाहि वतन, সোণার প্রতিমা হয় দিনে দিনে মান। লোক-গঞ্জনার ভয়ে থাকে সব জালা সয়ে. অন্তরে ওকায় নাহি জানে কোন জন: অস্থ্য যথন হয় ছাড়ি যায় লোকালয় তটিনীর তীর কিম্বা বিজনকানন। বালিকা হৃদয় পটে কার মুখ জেগে ওঠে यूवक निवनी आज ऋनृत প্রদেশে, নিতি নিতি চাকবালা গাঁথিয়া বকুল-মালা विकन कानत्न (चादा भागानिनी दवत्न। প্রেমমন্ত্রী বালিকার কি আছে সম্বল আর ্নলিনী-রঞ্জন তার হৃদয়রতন্ গাঁথিরে সোহাগে বালা ক্রচির বরণ মালা, यम्नात्र करन श्रनः करत विमर्कन।

একদা নিশীথ কালে বকুল গাছের তলে ধীরে ধীরে চারুবালা করিল গমন. ক্ষণেক চমকি থাকি উর্দ্ধদিকে রেখে আঁখি বলিল কোথায় স্থা দাও দর্শন। শুনেছি বাসনা ভাল নাইবা বাসিলে ভাল চাহেনা তোমার চাক প্রেম প্রতিদান. দেখিব লাবণামাখা স্থচারু বদন, স্থা। এইমাত্র বালিকার শেষ আকিঞ্চন। স্কুছরে দাঁড়ায়ে থেকে, আঁ। খিপরে আঁ। খি রেখে দ্বেথিব ও পূর্ণ জ্যোতি স্থথে একবার, এমোর অপূর্ণ আশা নাহি চাহি ভালবাসা কুপা করে এই আশা করহ পুরণ। বলিতে বলিতে বালা মুরছি পড়িয়া গেল কুম্বন বিছান সেই বকুলের তলে, সেই শুত্র রজনীতে দেখিলাম আচ্দিতে দাঁ ছায়ে যুৰক এক যমুনার কুলে। উদ্ভান্ত প্রেমিক যেন দিতে আজ বিসর্জ্জন यमूनात शृं अला कीवन, रशेवन, সহসা বালিকা স্বরে মরমের প্রতিস্তরে ু ঘুমান পরাণ অই পাইল চেতন।

বকুলেরতলে গিয়া দেখি সে দেবীর কায়া ভূমেতে পড়িয়া গেল নলিনীরঞ্জন, জোছানা,আলোক মাথা বালিকার মুথশোভা এযে আঁথি দেখে খোর,বলাত হলোনা মোর, করিল কৈশোর শ্বতি পুনঃ আনয়ন। যুবকের ভগচিত হ'ল প্রেমে উচ্চু সিত বলিতে লাগিল চুমি গণ্ড বালিকার,; "চাক। মোর প্রাণধন, কেন ঘুমে অচেতন ?বিলিল স্থাগো মোর এত দিন কোথা ছিলে দেখ চেয়ে আদিয়াছে নলিনী তোমার। উঠ বসি ফিরে চাও,আর কেন হৃঃথ দাও, উঠিয়া মুছাও এই আঁথি অশ্রধার, তুমিত আমারি হও একবার কথা কও একবার একবার—ও চারু আমার! দেশে দেশে ভ্রমিয়াছি তব নাম জপিয়াছি ভাবিয়াছি মুখানি কেবল, ভেবেছি বাসনা ভাল,তাই স্থি এত কাল প্রবাদে ঘুরেছি শুধু নিয়ে অশুরূল !" অতীত পুরাণ স্বরে সহসা বালিকা চারু **চমকিয়া মে** निम नयन, कीन मिट आंथिनिया पिथिन नेतरन जित নলিনীর পবিত্র বয়ান।

সোণার সে বিম্বাধরে কৃটিল মধ্র হাসি বলিল "এসগো সথা এস আরও কাছে. মনে মনে কত কথা লুকান রয়েছে। অনন্ত হঃখের ভার মরম পীড়িল তার সজল নয়ন হুটী মুছিল বালিকা. অসময়ে পর গলে বরণ-মালিকা। নীলিম আকাশ তলে স্থধাংশু তারকা জলে তারাই রহিল স্থা সাক্ষী বিবাহের, বলিয়া সোহাগভরে, মালিকা লইল করে, বলে স্থা এমিলন বিধাতার কের। আর যে পারিনা স্থা সংসারে এ শেষ দেখা স্থদর বিস্তৃত পথ নহে মিলনের।" একহাতে প্রেমভরে গলা জড়াইরা ধরে. আর হাতে দেয় গলে বরণের হার. সে হাত তেমনি রয়, আঁথি পরে আঁথিছয়, ফুরাইল জনমের খেলা বালিকার। কুমারী কুন্থমকুমারী দাস।

তিনটী ফুলের মালা।

তিন্টী ফুলের মালা গাঁথিয়াছি আমি, कानिनाक कारत हेश पिव উপहात, উপযুক্ত পাত্র এর সাধু, ভক্ত, স্বামী, তিনটী রতন এই ভারত-মাতার। শুদ্ধ সনাতন ধর্ম্ম প্রত্ন ভারতের প্রথম প্রচার হেতু বার আগমন, নির্যাতন নিপীড়ন সহি মানবের, সত্য ধর্ম্ম-বীজ বিনি করেন ৰূপন। षावात्र तं वीट्य यिनि मनिन तम्हत्न, সত্য ধর্ম সত্য নীতি করেন প্রচার.

হুষ্ট দেশাচার রাশি ছুনীতি নিধনে, দিয়াছেন যিনি পুণ্য জীবন তাঁহার। আর যিনি চিরছ:থী আর্য্যমহিলার, ছঃখ দেখে তাহাদের হতেন কাতর, অক্রবে তাহাদের অক্রব্রুল বার, হতো দুখ্যমান চির সেই পুণ্যধর। এই তিন কনে দিয়া তিন উপহার, মিটাই মনের সাধ—আর দিব কারে? ইহাঁদেরই আছে এতে গুদ্ধ অধিকার, 🐷 আরাস-রচিত এই মাল্য উপহারে। - এরমতি মতুমদার।

বিদ্যাসাগর স্মৃতিচিহ্ন স্থাপনার্থ মহিলা-সমিতি কর্তৃক দানপ্রাপ্তি স্বীকার।

| लि शिखा २००० | ,, নীরদবাসিনী মহলানবীশ 🦫 🦫 |
|---|---|
| 🎒 যুক্তা অচলাবাল। বহু (বিতীয়বার) 👀 | শ্রীযুক্তা বসম্ভকুমারী দাস কর্তৃক সংগৃহীত। |
| ৰীযুক্ত ভ্ৰনমোহন দাসের পত্নী ও) ৩০ ৩০ ৯০ ৯০ ৩০ ৩০ ৯০ ৯০ ৯০ ৯০ ৯০ ৯০ ৯০ ৯০ ৯০ ৯০ ৯০ ৯০ ৯০ | শ্ৰীমতী উল্লাসিনী পালিত |
| ভাকোর এম্ এন্ বন্দ্যোপাধ্যায়ের পত্নী ১٠১ | ,, নীরদমোহিনী বস্থ |
| " প্রতাপচন্দ্র মজুমদারের পত্নী ১০১ | ,, বসস্তকুমারী দাস |
| ্ল আর, এল মলিকের ,, ৬ | ,, স্বৰালা মুখোপাধ্যায় ২, |
| ,, ডি, এন রায়ের ,, | ,, গোলাপকামিনী মতিলাল 🔻 🥎 |
| ,, ইউ, ডি বন্দ্যোপাধ্যারের ,, | " ৰিহাংলতা মিত্ৰ ॥• |
| মিদেস পি, এন মিত্র ৫ | ,, মুক্তালতা বহু |
| ं, छि, धन तात्र | करेनक हिन्सूमहिल। २, |
| ,, পি, এৰ মলিক , ২্ | শ্রীযুক্তা অ, বা, বস্ত কর্তৃক সংগৃহীত। |
| 1, स्पारगमहत्त्व बाब 🔍 | শ্রীমতী বিনোদিনী দে (নরসিংপুর) >• > |
| ্,, সত্যানন্দ্রাস | ,, কৃষ্ণকামিনী দাসী (নন্দনবাগান) ২ |
| ু,, চণ্ডীচরণ ঘোষ ৫, | ,, থাকমণি খোব (নরসিংপুর) ে |
| ৰীযুক্তা দলিনী রায় 🔩 | , ज्ञश्र्राशिनो मांगो २० |
| ্য, গিরিবালা রায় ২ | দুইটী মহিলা (শোভাবাজার রাজবাটী) ৪ |
| ু, কাদখিনী বহু | औ युक्त |
| মিনেস জগন্নাথপ্রসাদ (হোদেকাবাদ) | " कांभिनो नांशी ॥o |
| শ্রীমতী গুণমণি মিত্র ২ | • |
| ,, বিজ্ঞপীপ্রভা সরকার | রাণাঘাট হুইতে এীযুক্তা নগেক্সবালা ঘোষ |
| জীযুকা ক্রিণী মহলানবীশ ২ | কর্ত্ত্ক সংগৃহীত। |
| ,, विकातामिनी टोध्वानी २२० ठीका | শ্রীযুক্তা মনোরমা সিংহ ২ |
| দিতে প্রতিশ্রুত ইইয়াছেন। | ,, অনুপমা ঘোষ ১ |
| প্রীযুক্তা থাকমণি ঘোষ কর্তৃক সংগৃহীত। | কুমারী নিরূপরা মৃত্তফি |
| শীযুক্তা শিবমোহিনী সিংহ (🐉 সর) | ্, ননীবালা মৃত্তফি >_ |
| निरमञ्ज ७ मःगृहीखः ७४५० | শ্ৰীমতী সুশীলা বস্থ |
| 'ৰীবৃক্ত উমাচরণ দানের পদ্মী ২০০ | ,, হেমাকিনী গাকুলী |
| सित्का क्रमोनिनी पर • •, | _{১৯} সংশ্লালিক de |
| ° तः विश्वभवीकां स्वाव >) | " भू वनत्माहिमी मांगी । do |
| | 7 to the TS |

The Bamabodhini Patrica.

The Indian Daily News in its leading article of the 19th ultimo gave a good account of the Baranagur Female Boarding School and Hindu Widow's Home managed by Mr. & Mrs. Sasipada Banneriee. At the last distribution of prizes to the inmates of the institution Mrs. C. Grant, Hony, Secretary of the National Indian Association presided. The first Hindu widow admitted here was on the 2nd February 1888, and in the course of the last 4 or 5 years girls have come to the Home from Calcutta, 24-Pergunnahs, Hoogly, Burdwan, Pubna, Faridpur, Barisal, Mymensing, Sylhet, &c., and every year the number of Hindu widows is increasing. It is cheering to know that married Hindu Zenana ladies of position now and then pay private visits to the Home and encourage it by pecuniary help. being taught for the Entrance Exami-Besides the nation of the University. literary course the boarders are taught cooking, sewing, drawing, music and useful household work. There is a garden, attached to the Home, where they have plenty of healthy exercise. Terms are very cheap Rs. 8 per month, exclusive of,-and Rs. 10 including clothing. Extra fee is charged for drawing and music. The institution by its successful management has secured Government aid. It richly deserves public support too.

Since the death of the Venerable Pandit Vidyasagar, people have been all talking loudly of raising money to perpetuate his memory, but up to this time nothing has been done practically.

Credit is however due to the Bengali ladies who assembled in large numbers at the great educational institution for women, the Bethune College, to celebrate the first anniversary of his death on July 30th last. The ladies have raised about Rs. 1300 and they resolved at the meeting, that from the interest of this sum, a stipend bearing the honored name of Vidyasagar will be awarded to a poor girl prosecuting her studies in the Bethune College. The ladies deserve great praise for having planued and carried out so far this noble proposal in the course of a year for doing honor to the momory of the great reformer who was once the Hon. Secretary of the ladies' College and always took personal interest in the true education of Bengali women.

The foundation stone of a leper asylum was laid last month at Deoghur by the Lieutenant Governor of Bengal. It has been named the Rajkumari Leper. Asylum, after the wife of Dr. Mohendra Lall Sarkar, through whose instrumentality, with the aid of a large sum contributed by the public, this useful institution has been founded. There is nothing so noble like helping the poor maimed members of the population. May this resting place really afford shelter to the people for shem it has been established!

The Gaekwar of Baroda is now staying in England with the members of his family. As one of the enlightened Princes of India, in an interview with a correspondent of an English weekly paper, he dwelt ou all that he was doing to encourage technical and mass education in his own territory. He is the first Indian Prince who has opened a Free Public Library for which alone he has bought English books worth a lac of besides Sanskrit, Maharathi rupees, and Gujrati publications. He is a social reformer too. He said that he won't have his son or daughter married before the age of 20. He has about a dozen of his subjects, studying at the expense of his Government in Great Britain, qualifying themselves in different branches of knowledge. Lately H. H. of Baroda with the Princess lunched with the Queen at Windsor Castle. We wish many of our leading princes would follow the noble example of the Gaekwar in ennobling their people intellectually and socially according to their light.

We are sincerely thankful to the Editor of the Demorest's Family Magazine for kindly exchanging his paper with the Bamabodhini. We call with pleasure the following intersting news from the July number of the paper:—

A new hospital for women, under the management of women. was lately opened at Sheffield, England.

Mme. Novikoff, a Russian of high birth, is endeavouring to interest the people of England in behalf of the slaves of Turkey.

Miss Sarah E. Farro, a colored woman of good educ . on, about twentysix years old, has just published a successful novel.

Elise St. Omer, the French explorer, who has traveled through Europe, Asta, and America, prides herself upon journeying without any lug-

gage, and carrying all needs in her capacious pockets.

Miss Mary Story, youngest daughter of the late Rev. W. Story, of Tyrone County, Ireland, has been appointed assistant examiner in French to the Royal University of Ireland, a post hitherto held only by men.

Miss Alice Harris, M. D., of New Market, Iowa, is medical missionary at Sierra Leone, West Africa, under the auspices of the Wesleyan Methodist Church, and she has for several months conducted the mission entirely alone.

The Girls' Friendly Society. of England, is a union of over 170,000 women and girls of all classes, which holds religious and secular classes, provides homes of rest and training, lodges, libraries, etc.

Miss Marion Evans, a year ago assumed the duties of cashier in the office of the Treasurer of the State of Mississippi, and it is said that "Mississippi has never had a more efficient or attentive cashier than this accomplished young woman."

Miss Malvina M. Bennett has been appointed instructor in elocution in the Leland Stanford, Jr. University. Miss Bennett held this place for ten years at Knox College, Illinois. During her incumbency, Knox College carried off more prize in State and inter-state contests than any other college in the country.

Cecilia Beaux, of Philadelphia, has won for the fourth time the Mary Smith prize of the Pennsylvania Academy. The conditions that accompany the gift provide that the same person shall not receive it more than five times, and that the competitors must be residents of Philadelphia.

বামাবোধিনী পত্রিকা।

BAMABODHINI PATRIKA.

''क्रन्याष्येवं पालनीया शिचणीयातियत्नतः''

কুলাকে পালন করিবেক ও যত্নের সহিত শিক্ষা দিবেক।

৩৩২ সংখ্যা।

ভাদ্র ১২৯৯—নেপ্টেম্বর ১৮৯২।

৫ম কল। ১ম ভাগ।

বামাবোধিনীর ঊনত্রিংশ জন্মোৎসব।

করণাময় পরমেশ্বরের রূপায়
বামাবোধিনী ঊনত্রিশ বংসর
অতিক্রম করিয়া ত্রিশ বর্ষে পদাপণ করিল, ইহা কি সামান্য
উৎসাহের ওআনন্দের সমাচার!
আজি অন্তরের ভক্তি ও আনন্দভরে সেই দেবদেবের চরণে
প্রণত হই। তিনি বামাবোধিনীকে নূতন বংসরের বিদ্ন
বিপদ সকল হইতে রক্ষা করুন্
এবং নব উদ্যমে অবলম্বিত ব্রতপালনে সমর্থ করুন্। যদি
তাঁহার ইক্ষা হয়, ত্রিশ বর্ষ পূর্ণ
ইইলে বামাবোধিনী বন্ধু বাদ্ধব-

দিগকে লইয়া একটা বিশেষ
উৎসব করিবেন এবং বামাগণের
হিতার্থ ইহাঁর অন্তরে যে সঙ্কর
আছে, তাহা কার্য্যে পরিণত
করিবার চেন্টা করিবেন। আজি
বামাবোধিনীর শুভ জন্মদিনে
অনুপ্রাহক প্রাহক ও হিতৈষী
বন্ধুগণ সর্ব্বান্তঃকরণে ইহাকে
আশীর্বাদ করুন্ ওইহার কল্যাণ
প্রার্থনা করুন্।
জয় জগদীশ জীবনের মূলাধার,
চলিছে জীবন-স্রোত রুপার
তামার।
ভূমি সেই মহাসিদ্ধু আদি সন্তর্গ

বড় ছোট সবে হবে তোমাতে বিলীন। জন্ম স্থিতি আর লয় তোমার বিধান, সর্বাময় কর্ত্তা তুমি সর্বাশক্তিমান্। বিন্দু করি স্থজিয়াছ তাহে হুঃখ নাই.

মুহুর্ত্ত স্থিতির সীমা তাহে না ডরাই। এই কর তব পদ ক্ষুদ্রশিরে ধরি, সচেতনে স্থতনে সদা সেবা করি। সত্য সারাৎসার তুমি অমৃত অভয়, তোমার পরশে প্রাণ হয় মৃত্যুঞ্জয়।

সাময়িক প্রসঙ্গ।

দাদাভাই নৌরজী এম পি—

ঈশ্বর-ক্বপায় দাদাভাই নৌরজীর সকল
বিপদ কাটিয়া গিয়াছে, পুনর্গণনায় তিনি
তাঁহার প্রতিশ্বন্দী অপেক্ষা ৫ ভোট
অধিক পাইয়া পার্লেমেণ্টের সভ্য হইয়াছেন। পালেমেণ্টে তিনি বক্তৃতাও
করিয়াছেন। যে প্রধান রাজমন্ত্রী ইহাঁকে
কালা আদমী" বলিয়া ঠাটা করিয়াছিলেন, তাঁহার মন্ত্রিম্বপদের শেষ হইয়াছে। ভারতবাসী ব্রিটিষ সাম্রাজ্যশাসনে প্রথম অধিকার পাইল, এ কি
সামান্ত আনন্দের কথা!

মুতন পালে মেন্ট গঠন—এখন
৭ বংসর অন্তর স্কুলন সভ্য নির্বাচিত
হইয়া ন্তন পালেমেন্টের সভ্য সংখ্যা ৬৭০
জন; ইংলও, স্কটলও ৩ আয়লভের
জনসাধারণ আপনাদিগের প্রতিনিধি
স্বরূপ নির্দিষ্ট সংখ্যক সভ্য পাঠাইয়া

দেন। ইংলপ্তে এখন হুইটা প্রধান দলরক্ষণশীল ও উদারনৈতিক। রক্ষণশীল
দলের নেতা লর্ড সালিসবারী এবং
উদারনৈতিক দলের—প্লাডপ্রোন সাহেব।
এবারকার নির্বাচনে রক্ষণশীল দলের
৩১৪ এবং অপর দলের ৩৫৫ জন সভ্য
মনোনীত হইয়াছেন, স্কৃতরাং উদারনৈতিক দলের জয় হইয়াছে।

নব মস্ত্রিসভা—ন্তন পার্লেমেণ্টে উদারনৈতিক দলের প্রাধান্য লাভ হও-য়াতে তাঁহারা এইরূপে মন্ত্রি-সভা গঠন করিয়াছেন:—

- ১—প্রধান মন্ত্রী, প্রথম কোষা-शक्त ও লর্ভ প্রিবিসিল
- २—वर्ष हात्मनत्र—नर्ष दर्मन ।
- ৩—ভারত দেকেটারি—লর্ড কিম্বার্লী।
- 8—রাজস্ব সচিব (চান্সেলর ব্যন্তকার)

 अন্তর্কার)
- <-- विरमगीय मञ्जी-- नर्छ द्रांखवत्री।
- ৬--সামরিক মন্ত্রী-মে: কাবেল বানার্গন্।

৭--উপনিবেশিক দেকেটারী--লর্ড রিপণ।

৮—হোম (স্বদেশীয়) সেকেটারী—মেঃ আসকুইপ।

২-প্রধান রণপোতাধ্যক-আরল স্পেনার।

১ - পার মাষ্টার জেনারল - মেঃ এ মোরলী।

১১—আয়ল ত্তির প্রধান দেকেটারী—মেঃ জন

মোরলী।

১২—বাণিজ্য সভাপতি—মেঃ মণ্ডেলা।

১৩—স্থানীয় গবর্ণমেন্ট বোর্ডের সভাপতি—মেঃ

এচ, এচ কাউল।

১৪—শিক্ষা-সমিতির সহকারী সভাপতি—মে:

আক্লাড।

১৫—স্কটলণ্ডের দেক্রেটারী—সার জর্জ ট্রিবেলিয়ন। অায়র্লশ্রের লর্ড লেপ্টেনেণ্ট লর্ড

হাউটন। এতদ্বির ইহাঁদিগের কতক-গুলি সহকারী বা অগুার সেক্রেটারী আছেন। জি, ডবলিউ, ই, রসেল ভারতের অগুার সেক্রেটারী হইয়াছেন।

যুদ্ধাশঙ্কা—পামিরে ক্ব ও আফ গানদিগের মধ্যে এক ক্ষুদ্র গৃদ্ধ ঘটে, তাহাতে ৫ জন ক্ষ হত ইইয়াছে। পামিরে ক্ব সৈন্য আসিতেছে, এদিকে ইংরাজ সৈন্যদল্ভ সে দিকে যাত্রা করি- য়াছে শুনা যায়। কি কাণ্ড **ঘটি**কে, কে জানে ?

বেলুনবাজের মৃত্যু—বিধ্যাত বাঙ্গালী বেলুনবাজ বাবু রামচক্র চট্টো-পাধ্যায়ের মৃত্যু সংবাদে আমরা অতিশন্ন হৃঃথিত হইলাম।

সৃষ্পীতশক্তির তারতম্য—কোন বৈজ্ঞানিক অনেক প্রমাণ দিয়া প্রতিপর করিয়াছেন যে যাহারা মাংস বা মংস্ত-ভোজী তাহাদের অপেকা নিরামিষাশীরা সঙ্গীত-পটু। ফলশস্তভোজী পক্ষীরাই উৎকৃষ্ট গায়ক, মাংস মংস্তভোজী পক্ষী-দের গানশক্তি নাই। ইটালী ও নর-ওয়েবানীরা অধিক মৎস্তভোজী, তাহা-দের মধ্যে গায়ক কম, স্কইডেনের লোক শস্তভোজী, তেমনি স্থগায়ক।

বালিকার মাতৃভক্তি।

স্কৃতি থেনর রাজা তৃতীয় গাটাভান্
একদিন অখারোহণে মৃগয়া হইতে রাজধানীতে প্রত্যাগমন করিতেছিলেন।
রাজা তৃষ্ণার্ক হইয়া জলপানের উদ্দেশে
এক নির্মারিশীর তীরে উপনীত হইলেন।
তথায় দেখিলেন, একটা বালিকা জলা-

ধারে জল পূর্ণ করিতেছে। রাজা বালিকাকে কহিলেন, বিশাম তৃষ্ণার্জ, আমাকে একটুকু জল দেও দেখি।" সরলতার প্রতিম্ত্তি গ্রামা-বালিকা নিঃসংস্কাচে জলপূর্ণ কুলা লইয়া রাজার মৃথের নিকট ধরিল। রাজা অলপান

করিয় পিপাসা নিবারণ করিলেন এবং কৃথিলেন,—"বালিকে! তোমার ব্যব-হারে আমি পরম প্রীতি লাভ করিয়াছি। ভূমি আমার সহিত প্রকংলমে যাইবে? তোমাকে আমি ভাল কাজেনিযুক্ত করিব। তোমার অবস্থা উন্নত হইবে।"

বালিকা ব্রীড়াবনতবদনে কহিল,—
"মহাশয়! কমা করিবেন, আপনার
প্রস্তাবে আমি সম্মত হইতে পারিলাম
না। পরমেশ্বর আমাকে যে অবস্থায়
যে ভাবে রাথিয়াছেন, তাহা অতিক্রম
করিয়া নিজের স্থুও সুবিধা অয়েশ্বণ
করিতে আমি প্রস্তুত নহি।"

রাজা বিশ্বিতভাবে কহিলেন,—
"কেন বালিকে, তোমার অবস্থার পরিবর্ত্তন করিতে কি ইচ্ছুক নও ? নিরবচিহ্ন ক্লেশভোগ করাই কি তোমার
জীবনের ব্রত ?"

বালিকা কহিল,—''না মহাশয়! আমার সেরপ উদ্দেশ্য নয়। আমার মাতা অতি দরিদ্রা ও পীড়িতা। বৃদ্ধ বৃদ্ধসে আমিই তাঁহার একমাত্র অবলম্বন। আমি ভিন্ন তাঁহাকে সেবা করিবার লোক আর কেহ নাই। বিশেষতঃ মাতৃয়েহ হইতে বঞ্চিত হইয়া আমি কোন স্থানেই ঘাইতে সং উনিহি। মা আমাকে বৃদ্ধই ভালবার্দেনী।"

ূ রাজা কহিলেন,—"তোমার মাতা কোথার ?"

° শ্রি ঘরে আছেন" এই বলিয়া বালিকা একটা কীর্ণ পর্ণকুটার দেখাইয়া দিল।

রাজা বালিকাকে সঙ্গে লইয়া সেই সামাভ পর্ণকুটারে প্রবেশ করিলেন। কুটীর অতি কুদ্র ও ভগ্ন অবস্থায় ছিল— বায়ুর বেগ একটু প্রবল হইলেই ভূপতিত হইবার সম্ভাবনা। কুটীরের মধ্যস্থলে তণ্শ্যার উপর প্রাচীনা স্ত্রীলোক শ্রন করিয়া আছেন। অনাহারে তাঁহার শরীর অতি শীর্ণ এবং বিবর্ণ। চক্ষু ছটী বসিয়া গিয়াছে। হস্ত পদ নাডিবার সামৰ্থ্য নাই। স্ত্ৰীলোকটী বস্ত্ৰাভাবে শীত ও লজ্জা নিবারণার্থ তৃণের দ্বারা শ্রীর আচ্ছাদ্ন ক্রিয়া রাথিয়াছে। রাজা এই হরবস্থা দেখিয়া বিষণ্ণবদনে কহিলেন,—"আমি আপনার ঈদৃশ অবস্থা দর্শনে অতিশয় ছঃথিত হইয়াছি। পরমে-খর আপনার মঙ্গল করুন।²²

ধীরে ধীরে অতি মৃত্স্বরে প্রাচীনা উত্তর করিলেন,—"মহাশ্য়! পরমেশ্র মুস্লুময়, তিনি আমার প্রতি কুপা করিতেছেন। এই যে বালিকাকে দেখিতেছেন, এই বালিকাই জীবন রঞ্চার একমাত্র অবলম্বন। বালিকা না থাকিলে এতদিন কেহ আমাকে ইহসংসারে দেখিতে পাইত না। এই ক্যাই আমাকে প্রতিপালন করি-তেছে। আমার আহারসংস্থান দেবা শুশ্রবা ভিন্ন ইহার আর কোন মাতার পরিচর্য্যারত. কাজ নাই। মাতার স্থথে সুখী, হৃঃথে হৃঃখী, এমন স্মতি কন্তা কেহ আছে কিনা জানিনা। এই কন্তার ভিতরে দয়া মূর্জিমতী হইয়া অবতীর্ণা।"

রাজা বালিকার সরলতা, বিনয় এবং আতিপেয়তা দর্শনে পুর্বেই মুগ্ধ হইয়াছিলেন, এখন মাতার নিকট তাহার আশ্চর্য্য মাতৃতক্তির কথা শ্রবণ করিয়া অতীব বিশ্বিত হইলেন এবং বালিকার দিকে চাহিয়া কহিলেন,—"তোমার সদ্ভণের কথা শুনিয়া আমি কিরপ আনন্দ লাভ করিয়াছি, তাহা ভাষায় প্রকাশ করিতে পারি না। আমি এ রাজ্যের

রাজা; তোমাদের নিকট প্রতিশ্রুত হৈতেছি যে, তোমাদের এই ক্লেশ্রে অবস্থা শীঘ্রই দ্র করিব। সম্প্রতি এই অর্থ গ্রহণ কর।" এই বলিয়া রাজা বালিকার হস্তে একথলি স্বর্ণমূদ্রা প্রদান করিয়া প্রস্থান করিলেন। এই ঘটনার পরে সেই অনাথা বৃদ্ধা হৃঃখিনী জীলোক রাজদত্ত সাহায্যে বালিকার সহিত স্থাপে জীবন যাপন করিতে লাগিলেন।

মহামুহূর্ত।

(পূর্ব্ব প্রকাশিতের পর)

তৃতীয় পরিচ্ছেদ।

সেই অবধি কি রকম গোলমাল হইয়া গিয়াছে. বলিতে পারি না। আমি আর "স" বাবুকে "দাদা" বলিতে পারি না, বাবার কাছে কি অন্ত কাহারও কাছে তাঁহার নাম ধরিতে অথবা তাঁহার কোনও কথ বলিতে পারি না। তিনি আর আমাদের বাড়ী আসেন না, আমি আর তাঁহাকে দেখিতে চাহি না, আমাদের হজনের मस्यु (यन এक हो मोक्रन वावशीन इहेन। আমরা উভয়ে উভরের বেন দারুণ "পদ্ন" হইয়াছি ৷ কিন্তু ইহাতে—তিনি কি ভাবিতেছেন জানি না, স্থামিতো ৰড় ছঃৰিতা নহি।—কেন? তাহা ভানিব কি করিয়া ?

আজি বিকালে বাবার অহমতি লইয়া গঙ্গাদিদি আমাকে তাহার বাড়ীতে লইয়া আসিয়াছে। গঙ্গা দিনির অমুধ সারিয়াছে, দে আমার জন্মে সিকা বুনিতেছে। তাহার সিকা আমার পছন্দ-সই হইবে কি না, তাহাই দেখাইবার জন্ম সে আমাকে ডাকিয়া আনিয়াছে। मग्रता निनित स्मर ७ यस मूक रहेश তাহার ঘরে বসিলাম। তাঁহার সিকী বেশ স্থন্য হইতেছে, কিন্তু সে আমার জন্ম অত পরিশ্রম করিতেছে কেন? ইহাতে তাহার সঙ্গে ছোটথাটো রক্ষের একটু ঝগড়াও করিলীম। গলাদিনি शानिया विनन, "नन्ती मिनियनि आयात्र, তুই রাজরাণী হ'; মুক্তার মালা পলার पिटम, coलित गांड़ी श'दत श्रंशी *लार्क* দে'র মাতৃষ কর। আমার মাথার বং

চুল, তোর সোয়ামী পুজুর নিয়ে তত দিন ঘর করা কর। তুই এক মেয়ে হ'তে যেন বাবার এক সহস্র ধন হয়।
—ও পাড়ার সত্য বাবু আমাকে মাসে তিন টাকা কোরে দিতে চেয়েছেন। বেঁচে থা'ক্, রাজা হে'াক্, সোণার দোয়াত কলম হোক্, যেমন মন তেম্নিধন হোক্। ভগবান্! ভাল মায়্মের ভাল হো'ক্।—আহা বাছার অম্ব্য দেখে অবধি প্রাণটা যেন কেমন কোচে ?"

গঙ্গাদিদির শেষ কথাটা শুনিয়া আমার মন কেমন হইয়া গেল। আমি ব্যস্ত হইয়া বলিলাম "কার অস্থথ হয়েছে, গঙ্গাদিদি ?"

গঙ্গা। ঐ সত্য বাবুর। আজ
ছদিন বাছা বিছানায় শুয়ে রয়েছে।
এথন শক্রর মুথে ছাই দিয়ে বয়স
ছিয়েছে তো, তা মা' বাপের কেমন
আক্রেল, আজ পর্যান্ত বিয়ে দিলে না,
কাজেই মনে হঃথ হয়।—

আমি। দ্র—িক অন্ন্থ হয়েছে, গান্দাদিদি?

গঙ্গা। তাই তো বোল্ছি—এখন
কথা হোছে, কেজানে কোন্ দেশের
মেরে—অতকি অ' ই জানি—সে মেরে
খুব সেয়ানা,খুব সুন্নরী, নিখতে পোড়তে
খুব ভাল, সত্য বাবু সেই মেরে বিয়ে
কোভে চান্। কর্তা গিনী তাতে অমত
কোছেন। কর্তা বোল্ছেন "মেরের
বাপ গ্রীবা আরু পাওনা থোওনা

কিচ্ছু হবে না, আমি আশা কোরে আছি, আমার ছেলের বিয়ে দিয়ে পাঁচ হাজার টাকা নেব।" গিলী বোল্ছেন, "আমি লেখা পড়া করা মেয়ে চাই না। বৌ আন্ব ঘরের লক্ষ্মী, সে কি আপিসে চাক্রী কোর্বে, না আদালতে গিয়ে মাকর্দমা কোর্বে? লেখা পড়া শিথেই তো এখনকার মেয়েদের এত ঠেকার—সোয়ামী হাত্যোড় কোরে আছেন! আমার সোণার বাছা সত্যকে আমি তেমন মেয়ে কখনই দেব না!" এই সব কথা শুনে সত্য বাবু যেন মরমে মরে গিয়েছেন। আজ ছিন জর হয়েছে, তা' অয়্ধ পত্র কিচছু খান না।

গঙ্গাদিদির কথা শেষ হইলে আমি উঠিয়া দাঁড়াইলাম। গঙ্গাদিদি "আর একটু থানি" বসিবার জন্ত অন্তরোধ করিল, কিন্তু ক্বতন্না আমি, তাহার কথা রাথিলাম না।

চুতুর্থ পরিচ্ছেদ।

বাবা বৃঝি নদীক্লে বেড়াইতে গিয়াছেন। কুটারের ভিডরে আমি একা। একাকিনী দরজায় বিসিয়া অনস্ত বিস্তৃত, নীল সান্ধ্য আকাশের দিকে চাহিয়া আছি। একটা একটা করিয়া হীরার ফ্লের মত তারাগুলি ফুটতেছে, তাহাও.দেখিতেছি।

একটু আগে বাবার একটা বন্ধ আদিয়াছিলেন, বাবা বদিয়া তাঁহার সহিত কথা কহিতেছেন দেখিয়া আমি তফাতে ছিলাম। শুনিলাম বাবার বন্ধু বলিলেন, "আপনার মেয়ে তো বড় হইয়াছে, এখন বিবাহের সম্বন্ধ করা উচিত।" বাবা উত্তর করিলেন, "একটী সম্বন্ধ স্থির করিতেছিলাম, কিন্তু আজি শুনিলাম তাহা হইবে না। আপনার জানিত যদি কোনও স্থপাত্র থাকে, তাহা হইলে অনুগ্রহ করিয়া আমাকে জানাইবেন।"

বাবার বন্ধুর জানিত একটা "স্থপাত্র আছে, তাহার বাড়ী চব্বিশ পরগণার" এই সব কথা বলিতে লাগিলেন শুনিতে শুনিতে আসিলাম। তথন আস্তে আস্তে থানিক দূরে গেলাম, যথন ফিরিয়া আসিলাম, তথন দেখি শৃত্যঘর —বাবা ও তাঁহার বন্ধু চলিয়া গিয়াছেন। আমি ঘরের ছই একটা কাজ সারিয়া দরজায় বসিয়া আছি।

আকাশের তারা কেমন স্থ[ী]! উহাদের বড় হইতে হয় না। উহাদের জন্ম উহাদের বাবাকে "কন্মানাম এত্ত" হইতে হয় নী। আমি তারা হইলে থুব স্থবী হইতে পারিতাম!

লোকের মনের ভাব কি তাহা জানি
না, কিন্তু আমি বেশ বুঝিতেছি—"মামুধের জ্ঞানোরতি প্রতি মৃহর্কেই সাধিত
হয়।" একথার সত্যতা যিনি স্বীকার
করেন,তাঁহার কাছে বলিতেছি, আন এক
মূহর্কে আমি শিথিয়াছি, বিবাহ হওয়া
আমার পক্ষে বড় অস্তায়—বড় পাবা:

(गत काछ । এতদিন ना विश्वा था कि আজি ঠিক্ ব্ৰিয়াছি, বাবার আমাবই আর কেহই নাই। আমার বিবাহ হইলে, আমি খণ্ডরবাড়ী গেলে বাবাকেঃ চারিটা ভাত বাঁধিয়া দিবে, এমন কেহই নাই। বাবার অস্থথের সময়ে বাবার কাছে বসিয়া একটু শুশ্রষা করিবে এমন কেহই নাই। বাবার স্থুথ ছঃথে সহায়-ভৃতি করিবে এমন কেহই নাই। বাবা যে প্রয়োজনে অথবা বিনা প্রয়োজনে প্রতিমূহুর্তে "ক্ষমা ক্ষমা'' শতবার ডাকিতে থাকেন, দেই স্নেহ বুক পাতিয়া লইতে পারে, এমন কৈংই নাই। আমি বেশ বুঝিতেছি, আমা নহিলে বাবার একটা দিনও চলিবে না। তাই ভাবিতেছি, বাবা ঘরে আসিলে যেমন করিয়া হউক, একবার বলিব "বাবা বিবাহে;কাজ নাই।"

কিন্ত বিবাহের কথা বাবার কাছে বলিতে—ছি, বড় লজ্জা করে! পারিব কি ?—পারিব বই কি ? দেখি ভগবান্ কি করেন!

বাবা ডাকিলেন "ক্ষমা!" আমি উঠিয়া দাঁড়াইলাম। বাবা বলিলেন "মা, একা রহিয়াছ, নরেশ বাব্র সঙ্গে কথা কহিতে আমি অনেক দ্র গিয়াছিলাম। ভয় হয় নাই তো মা ?"

আমি ব্যস্ত হইয়া বলিলাম দা বাবা, ভয় কিলের ? আপনি ধারার থেলেন না ?" বাবা ধারার চাহিলে আমি পেঁপে কাট্রা বাবাকে দিলাম। আমাদের গরীবের কূটার, এখানে পুচি, ক্রোহনভোগ, সন্দেশ, রসগোলা অবশুই মিলে না।

ৠঙয়া হইলে বাবার আদেশে ভগব-ক্লীতা লইয়া পড়িতে বিসলাম। বাবা আমার হাত হইতে গীতা লইতে লইতে আপনাআপনি বলিলেন,

"গীতা স্থগীতা কর্ত্তব্যা, কিমন্তৈঃ শাস্ত্র বিস্তব্যেঃ।

বা স্বয়ং পদ্মনাভস্ত মুথপন্নাদ্বিনিঃস্থতা॥"

"ক্ষমা, এতদিন তোমাকে গীতা পড়াইতেছি, আজি বল দেখি পড়িয়া কি শিথিলে?" বাবার মুথ গন্তীর অথচ প্রসন্নতাপূর্ণ।

নীতা পড়িয়া মাহ্বৰ প্ৰক্বত মহ্বাত্ত্ব শিথিতে পারে শুনিয়াছি; আমি ৰালিকা, ভগবলগীতার মর্ম্ম গ্রহণ করিতে পারি, এমন,ক্ষমতা আমার কথনই নাই। ক্ষামি চুপ করিয়া রহিলাম।

বাবা আবার জিজ্ঞাসা করিলেন।
কাব্দে কাজে আমাকে উত্তর করিতে
হইল; আমি আন্তে আত্তে বলিলাম,
"আমি আজিও বিশেষ কিছুই শিথিতে
পারি নাই বাবা, কেবল এইটুকু বুঝিরাছি, ইক্রিয় সংযমই শ্রেষ্ঠ ধর্ম্ম; কর্মে
আনজিশৃস্থ হইলা 'জগদীখরের কাজ
করিতেছি,' ভাবিয়া সংকর্ম করাই
শোক্ত কর্ম্বা। আর জগতে সর্ম্বদাই
নালীকিপ অভাব উপন্থিত হইতেছে,
ভাহাতে আক্লে না হইয়া নিজ নিজ
কর্ম্বা পালন ক্রাই মানব জীবনের

শ্রেষ্ঠ উদ্দেশ্য।—এই রকম কি বাবা ?"

বাবা হাসিয়া আমার মাথায় হাত
দিলেন। তার পরে বলিলেন, "ক্রমা,
উপদেশ বুঝিয়াছ; কিন্তু কাজে করিতে
না পারিলে সে উপদেশ লাভ করা বুথা।
তুমি ষেটুকু শিথিয়াছ, সেটুকু কাজে
করিতে পারিবে কি মা ? একবার
বাবার মুথপানে চাহিলাম। শেষে অবনত
মুথে বলিলাম "বাবা, আপনি যে বলেছেন মান্ত্রেষ্ঠ ভগবানের আশীর্কাদেই
কাজ করে।"

বাবা। বোকা মেয়ে! তুমি কি
জাননা, "দাধু যাহার ইচ্ছা, ঈশ্বর তাহার
দহার ?" তুমি ভাল কাজ করিতে স্থিরপ্রতিজ্ঞ হইলে, ঈশ্বরের চরণে শক্তি যাজ্ঞা
করিলে, ঈশ্বর তোমার কামনা পূর্ণ করিবেন। কিন্তু তোমার প্রাণপণ ইচ্ছা,
যত্ন ও চেষ্টা চাই।

বাবার মেহমাথা গালি থাইয়া আনন্দে আমার প্রাণ গলিয়া গেল। বাবাকে বলিলাম "বাবা, আমাকে যেটুকু শিথাইয়াছেন, কাজে তাহা করিতে আমি প্রাণপণে চেষ্টা করিব।"

বাবা প্রক্রম্থে বলিলেন, "তাই হইলে তোমার বাবার প্রধান কামনা পূর্ণ হয়। স্বসন্তানকে "নরাণাং পুণ্যলক্ষণম্" বলিয়া থাকে। কুসন্তান পাপলক্ষণ মাত্র। আমার পূত্র হইলেও ভূমি, কভা হইলেও ভূমি, তোমার শরীর মন ও সাত্রা প্রকৃত উন্নত করিতে পারিলেই

আমার জীবনের এক প্রধান কর্ত্তব্য পালন হয়।" বাবা নিঃখাদ ফেলিয়া নীরব হইলেন।

আমি একছুটে বাহিরে আসিয়া ফুলের গাছ থেকে একটা গোলাপ ফুল ভুলিলাম, তার পর বাবার কাছে গিয়া বলিলাম "বাবা, আমার সেই নৃতন গাছে এই ফুলটা হয়েছে।" বাবা হাসিয়া সম্লেহে আমার হাত হইতে ফুলটা লইয়া গোলা-পের খুব প্রশংসা করিলেন; আকি কুতার্থ হইয়া গোলাম!

ছি! আমি বিবাহের সম্বন্ধে কোন্ও কথা বাবাকে বলিতে পারিব না—আজি তো পারিবই না—কাল যা হয় চেষ্টা করিব।

(ক্ৰমশঃ)

আদর্শ মাতা।

সম্ভান মূর্থ হউক, অমুপযুক্ত হউক, মাতা নিয়তই সস্তানের উন্নতির জন্য बाक्त। मञ्जान किक्राप्त शंगा माना, বড় লোক হইবে, কিরূপে জনসমাজে প্রতিষ্ঠা লাভ করিবে, জননী সর্বাদাই সেই চিন্তা করিয়া থাকেন। সন্তান **ज्यिष्ठं रहेवायां व जन्मी महारेम** कुछ-কামনা রূপ যে ব্রত গ্রহণ করেন, ইহ-জীবনে আর সেই ব্রত উদ্যাপন হয় না। কিন্তু ইতিহাস যে একটি সন্তানবংসলা রমণীর অপূর্ব্ব নিঃস্বার্থতা ও ন্যায়পরতার বিবরণ স্বর্ণাক্ষরে লিপিবদ্ধ করিয়া রাখি-য়াছে, আজ তাহা আমরা পাঠকগণের গোচর করিতেছি। একাধারে এরূপ मञ्जानवरमन्छा, न्यात्रशत्रेष्ठा, এवर चरमन-হিতৈবশার অপূর্কা সামঞ্জত আর কোথাও দেখা যার না।

১৬১• খৃটাকে ক্ষিয়ার জার টোস্-ক্ষির রাজত্ব শেষ হইল। তথন রাজ্যের

প্রধান প্রধান ব্যক্তিগণ প্রির করিলেন যে জার ফেডারের মাতামহ কুলোম্ভব মিচেল রোমানফ নামক যুবককে তাঁহারা রাজপদে অভিধিক্ত করিবেন। রোমা-নফ তথন মঙ্গৌ নগরে মাতার নিকট বাস করিতেছিলেন। কিন্ত প্রধান প্রধান ব্যক্তিবর্গের এই মনোনয়ন বুড়াস্ত অবগত হইয়া রোমানফের মাতা বলিয়া পাঠাইলেন যে, 'আমার পুত্র সবে মাত্র যৌবনে পদার্পণ করিয়াছে, তাহার একণে শিকার অবস্থা। রাজকার্মা পরিচালনের গুরুতর কর্ত্তব্য ভার বহন করিতে পারে, তাহার এমন শক্তি मामर्था नाहे। अनुहर क्षिया ब्रांट्याब শাসনকর্তৃত্ব তাহার এতি নাল্ড হইলে, তাহার শিক্ষালোভ বন্ধ **रहेर्द, अश्रक्षीत्क द्राव्यागत्न क्नैक** আরোগিত হইবে। অতএব আপনানা অন্ত কোম উপযুক্ত ব্যক্তিকে রাজসিংহা-

সনে প্রতিষ্ঠিত করুন্। আপনারা বর্ত্ত-মান প্রস্তাব প্রত্যাহার করিলে আমি স্বথী হইব।"

ু জননীর সদ্গুণ—হদরের উচ্চতা
এবং মহৎভাব পুত্রও প্রাপ্ত হইয়াছিল।
রোমানফও উপস্থিত রাজপদে প্রলুক
না হইয়া নিজের অবোগ্যতা জ্ঞাপন
করিলেন। কিন্তু রাজ্যের লোকে মাতা
পুত্রের আপত্তি অমুমোদন করিল না।
রোমনফকে সিংহাসন গ্রহণ করিতে সকলেই বিশেষভাবে অমুরোধ করিতে
লাগিল। অগত্যা তাঁহার মাতা শুভ
মারুগানে সন্মত হইলেন।

প্রজা-প্রতিনিধিগণ অভিনন্দন পত্রসহ মক্ষৌ নগরে উপস্থিত হইলে, রোমানফের মাতা তাঁহাদিগকে গোপনে ডাকিয়া
উপাদনা-মন্দিরে সাক্ষাৎ করিলেন। পরমেশরের নিকট প্রার্থনা করিয়া সজল
নেত্রে তাঁহাদিগকে বলিলেন যে,—"আমি
আমার পুত্রকে আপনাদিগের অভি-

ভাবকত্বের অধীনে অর্পণ করিতেছি। আপনারা তাহাকে রাজা করিবার জন্ম বারংবার আগ্রহ করিতেছেন বলিয়াই আমি সন্মত হইয়াছি। কিন্তু আপনারা আমার পুত্রের জন্ম দায়ী থাকিবেন। তাহার শিক্ষা অপূর্ণ, রাজ্যশাসন করি-বার শক্তি জন্মে নাই। আপনারা যদি তাহাকে প্রভৃত সাহায্য না করেন, তবে আপনাদিগকে পরমেশ্বরের নিকট প্রত্য-বায়ভাগী হইতে হইবে। মহান প্রমে-খরের এবং স্বদেশবাসীর নিকট পুত্রের কার্য্য সম্বন্ধে আমার যে গুরুতর দায়িত রহিয়াছে, তাহা শ্বরণ করিয়া আমি প্রকৃত পথে চলিতে চেষ্টা করিয়াছিলাম, আপনারা বাধা প্রদান করিলেন, এখন পরমেশ্বরের নিকট আপনার। मात्री। এই मात्रिक हिन्छ। कतित्र। कार्या করুন এই আমার প্রার্থনা।" পৃথিবীতে এমন সুমাতা কয়জন আছেন ?

মার্কিণ ভগিনী ডোরা।

(১০১ সংখ্যা ১০০ পৃষ্ঠার পর।)

পরমেখরের বাণী দাংসার-ক্ষেত্রে ডোর ধীর পথ-প্রদর্শক ছিল। একদিন তিনি উপাসনালয় হইতে গৃহে প্রতিগমন করিতেছেন, এখন সময় শুনিতে পাই-দেন, হইক্ষন ভল্তলোক বলিভেছেন বে, "পূর্ব্ধ কেবি ক্ষম্থ পাগলনিবাসের বন্দীগণ ভয়ানক কটে কাল্যাপন করিয়া থাকে।"
এই কথা শুনিয়া দয়াপ্রবণ ডোরণী মনে
মনে সংকল্প করিলেন যে, তথার গিয়া
য়চক্ষে পাগলদিগের অবস্থা পর্য্যবেক্ষণ
করিবেন। কিন্তু তথার যাইবেন কি না
তৎসম্বন্ধে পর্মেশ্রের আদেশ কি, তাহা

জানিবার জন্ম প্রার্থনা-পরারণ হৃদয়ে অপেক্ষা করিতে লাগিলেন। অবশেষে ডোরগী অন্তরে ঈশবেচ্ছা বুঝিয়া তথায় গ্রমন করিতে ক্রতসংকর হইলেন।

তিনি পাগল-নিবাদে দেখিতে পাইলেন, ভয়ানক শীত হইতে শরীর রক্ষা
করিবার জন্ত জেলে একটীও অগ্নিকৃণ্ড
নাই। পাগলগণ শীতে কম্পিত হইতেছে,
গাত্রাবরণ যথেষ্ট নহে। তাহাদের ক্লেশ
দেখিলে চক্ষে জল আসে। তিনি এই
হুর্গতির কথা লিখিয়া তথাকার প্রধান
বিচারকের নিকট তৎকাল-প্রচলিত
আইন সংশোধনার্থ এক আবেদন করিলেন। তাঁহার আবেদন সফল হইল।
আশ্রমে অগ্নিকুণ্ড রাথিবার জন্ত একটী
আইন অচিরে বিধিবদ্ধ হইল।

তথায় ডোরথীর মনে এই প্রশ্ন উদয়
হইল যে, পূর্ব্ব কেছি জের পাগল-নিবাসে
যেমন অত্যাচার হইত, এরপ অত্যাচার
দেশের অত্যাত্য সকল নিবাসেই হওয়া
সম্ভব। এই চিস্তা করিয়া তিনি কি
উপায় অবলম্বন করিবেন, তাহা জানিবার জত্ত ঈশ্বরের নিকট প্রার্থনা করিতে
লাগিলেন। শুভকার্য্যের সহায় মঙ্গলময়
পরমেশ্বরের আশীর্বাদ বাণী শ্রবণ করিয়া
তিনি দেশের সমস্ত পাগল-নিবাস পরিদর্শন করিতে আরম্ভ করিলেন। সেই
কীণ হর্বল, রুয় ও ভয় দেহ লইয়া
ডোরথী, সিংহবিক্রমে পায়ল-আশ্রম
সমূহ পরিদর্শন করিতে লাগিলেন। যে
যে স্থানে যে বে স্বভারার দর্শন করিতে

লাগিলেন, তাহা কর্ত্পক্ষের গোচর नाशित्नम । করিতে তুমুল আন্দোলন উপস্থিত रहेल। প্রথম প্রথম অনেকেই ডোরথীর কথা বিশাস করেন নাই। মিথ্যা আবেদন করি-বলিয়া শিক্ষিত লোকেরাও তেছে তাঁহাকে অবজ্ঞা করিতেন, কিন্তু ডোর্থী সতা বলিতেছেন কি মিথাা বলিতেছেন. তাহা অমুসন্ধান করিয়া জানিবার জন্ম যথন একদল লোক আশ্রম পরিদর্শনে প্রবৃত্ত হইলেন, তথন ডোরধীর কার্য্য যে স্ত্যসূলক তাহা জনসমাজে প্রচারিত হইল। তখনই গ্রণ্মেণ্ট পাগ্ল-নিবা-সের আমূল সংস্থারে প্রবৃত্ত হইলেন।

তিনি বন্ধুর ও জঙ্গলপূর্ণ পথে পদত্রজে অনেক সময় গমন করিতেন। জলতের রাস্তায় হিংশ্র জন্তপূর্ণ পথ দিয়া কত সময় যাইতে হইত, ততোধিক ভরাবহ তিনি স্বকার্য্য সিদ্ধির জন্ম কোন বিপদ-কেই বিপদ জ্ঞান করিতেন না। পাগদ-দিগকে স্থপ ও স্থবিধার রাখিবার জন্ত তিনিও পাগলিনী হইয়াছিলেন। আহার নিদ্রা আমোদ প্রমোদ স্থথ স্থবিধা কিছুর দিকেই ভাঁহার দৃষ্টি ছিল না। কিরুপে কুপাপাত্র পাগলগণ আশ্রমে স্থথে বাস করিবে, এই চিস্তাদ তিনি অন্থির। এই আশ্রম পরিদর্শন কার্য্যে ভিন বং-সরে তিনি দশ হাজার মাইণ পথ অমণ করিয়াছিলেন।

ভাহার চরিত্র এমনই বিনম্র এবং

মধুর ছিল বে, তাঁহার সহিত একবার আলাপ করিলে সকলে মোহিত হইয়া ষাইত। তাঁহার স্থমিষ্ট কথা লেহবাঞ্জক আচরণ এবং অসামাত্ত দয়া গুণে চতু-দ্দিকস্থ আশ্রমের সংস্ঠ ব্যক্তিগণ মন্ত্রমুগ্ধ **দর্শের ন্থা**য় বশীভূত হইয়াছিলেন। স্কুতরাং তিনি যে স্থানের আশ্রম সংস্কার সম্বন্ধে যে কোন প্রস্তাব কারতেন, ভাহাই কার্য্যে পরিণত হইত। তাঁহার চব্নিত্রপ্রভাবে জনসমাজে এরপ আধি-পাত্তা স্থাপন করিয়াছিলেন যে, সকল স্থানের আশ্রম সংস্কৃত্ত ব্যক্তিগণ লিথিয়া পাঠাইতেন যে, "আশ্রম শোধন সম্বন্ধে অবাপনি যেরূপ ইচ্ছা করেন তাহাই কার্য্যে পরিণত হইবে, আপনার পরামর্শ ভিন্ন আমরা কোনও কার্য্য করিতে অসমর্থ।"

উৎকৃষ্ট প্রণালীতে আশ্রম স্থাপনের জন্ম এই প্রাক্তশ্বরনীয়া রমণী যুক্তরাজ্যের প্রধান সভায় ১,২২,২৫,০০০ একর অর্থাৎ প্রান্ধ ৩,৬৬,৭৫০০০ বিঘা ভূমি দানের জন্ম প্রার্থনা করেন। কিন্তু নানা কারণে সেই প্রার্থনা তথন পূর্ণ হইল না। এসময় তিনি পৃথিবীর নানা স্থানের পাগলনিবাস পরিদর্শনে বহির্গত হন। তামার দয়া স্থদেশে নি ক্র ছিল না। তিনি স্কটলণ্ড, ফুক্ল, গ্রীস, তুরঙ্ক প্রভৃতি স্থানের বাতুলালয় দেথিতে লাগিলেন। অনন্তর্গ দেশে আসিয়া প্ররায় উৎকৃষ্ট প্রশালীতে পাগলনিবাস স্থাপনের জন্য বৃদ্ধরাজ্যের সন্তাপতির নিক্ট প্রার্থনা

করেন। এবার তাঁহার প্রার্থনা পূর্ণ নৃতন পাগলনিবাস স্থাপনার্থ इहेन। তিনি অনেক অর্থ এবং ভূমি প্রাপ্ত হই-লেন। তিনি বিশেষ মনোযোগের সহিত এই কার্য্য আরম্ভ করিলেন। তথন (অর্থাৎ ১৮৬১ সনে) যুক্তরাজ্যে অন্তর্বি-জোহ। এসময় তিনি ওয়াসিংটন নগরে থাকিয়া আহত সৈনিকদিগের সেবা শুশ্রষায় প্রবৃত্ত হন। তিনি স্বহস্তে আহতদিগের সেবা করিতেন, এবং মূহ সাম্বনা বাক্যে বোগীদিগকে আশ্বস্ত করিতেন, ও মুমুর্ কে ধর্মপুস্তক পাঠ করিয়া শুনাইতেন। তাঁহার কোমল ব্যবহারে আহত মুমুষ্ ব্যক্তিগণ দারুণ ক্লেশের মধ্যেও শান্তিলাভ করিত।

যুদ্ধাবদানে এই কর্মণহাদয়া দেশহিতৈষিণীকে সম্মানিত উপাধি প্রদানের
প্রস্তাব হয়, কিন্তু কোন প্রকারে উপাধি
গ্রহণে তিনি স্বীকৃত হইলেন না। পরস্ত তিনি বন্ধুবর্গ হইতে অর্থ সংগ্রহ করিয়া
যে সকল সৈত্য স্থায় পক্ষে যুদ্ধ করিয়া
ছিল, তাহাদের স্মৃতিচিক্ত স্থাপন করিলেন। এই ভয়ানক গৃহয়ুদ্ধে ডোরথীর আশাস্তম্ভস্বরূপ পাগলনিবাস গুলি
অত্যন্ত কুর্দশাগ্রন্ত হইয়াছিল। তথন
তিনি পুনরায় সকল স্থান পরিদর্শন
করিতে লাগিলেন।

আশি বৎসর বয়সে তিনি ট্রেনটন উন্মাদালয়ে ভয়ানক রোগে আক্রাস্ত হইলেন। ইহাই তাঁহার শেষ পীড়া। পাগলনিবাসের একদিকে তাঁহার শ্বা স্থান নিরূপিত হইল। তিনি শ্যাগত পীড়িত অবস্থাতেও সর্বদা পাগলদিগের সমাচার লইতেন। পাগলগণ যথন নৃত্য করিতে করিতে, হাসিতে হাসিতে, নানা প্রকার অঙ্গভঙ্গি করিয়া তাঁহার নিকট দিয়া যাইত, তথন তিনি কতই আনন্দ প্রকাশ করিতেন। তিনি পাগলদিগকে প্রনির্বিশেষে ক্ষেহ করিতেন। পাগলগণও তাঁহার স্থি ব্যবহারে এমন মুগ্ধ হইয়াছিল যে, তাঁহাকে জননীর স্থায় ভক্তি করিত।

রোগশযায় নানা স্থান হইতে
বন্ধুগণ আসিয়া তাঁহার সহিত সাক্ষাৎ
করিতে লাগিলেন। তিনি সকলের
সহিতই পাগলনিবাস সম্বন্ধে আলাপ
করিতেন। তাঁহার মুখে আর কোনও

কথা ছিল না। তিনি রোগ্ণয়ায় শান্তিত থাকিয়াও নিয়ত কবিতা, ধর্ম বিষয়ক কুদ্ৰ কুদ্ৰ প্ৰবন্ধ এবং বন্ধবান্ধৰ দিগকে আশাজনক চিঠি লিখিতেন। তিনি নিয়ত এই কথা বলিতেন, "এ সময়েও আমার কিছু কাজ করিবার আছে।" ১৮৮৭ সনের ১৭ই জুলাই এই মূর্ত্তিমতী করুণা দেবী মানবদীলা সংবরণ করিলেন। তিনি ইছ সংসার হইতে অনস্তকালের জন্ম বিদায় গ্রহণ করিয়াছেন বটে. কিন্তু তিনি নরনারীর নিকট মানব-চরিত্রের যে উচ্চ আদর্শ প্রদর্শন করিয়া গিয়াছেন, তাহা উন্নতি-শীল জনসমাজের হৃদয়ে চিরদিন উজ্জল বর্ণে অমুরঞ্জিত থাকিবে।

প্রিন্স-অব-ওয়েল্স।

আমাদের ইংলণ্ডেশ্বরীর জ্যেষ্ঠ পুত্রের উপাধি প্রিন্স-অব-ওরেল্স। কিন্ত এই উপাধি যে কেবল একমাত্র ইহার, তাহা নহে। ইংলণ্ডের রাজা বা রাজ্ঞীর প্রথম প্রমাত্রেই এই আখ্যা প্রাপ্ত হইয়া খাকেন। ৬০০ বংসরের অধিক হইল, এই ব্যবস্থা হইয়াছে। এরূপ ব্যবস্থার কারণ কিছু কৌতুকজনক, নিম্নে ভাহা বর্ণিত হইতেছে।

ইংলণ্ডের অধীশ্বর ১ম এডওয়ার্ড ১২৭২ শৃষ্টান্সে সিংহাসনে আরোহণ করেন। তিনি নিজে একজন বীরপুরুষ
ছিলেন এবং যুদ্ধে ফরাসী, ওয়েল্স ও
স্কটদিগকে পরাজয় করিয়া ইংলপ্তের
আধিপত্য বিস্তার করেন। ইংলপ্তের
পশ্চিমে ওয়েল্স তৎকালে একটী
স্বাধীন রাজ্য ছিল, সিংহাসন প্রাপ্তির
অল্লদিন পরেই ইহার উপর এডওয়ার্ডের দৃষ্টি পড়ে এবং ১২৮২ সালে
ইহা সম্পূর্ণ জরু করিয়া লন, সেই অবিধি
ইংলপ্ত ও ওয়েল্স এক রাজ্য হই
য়াছে। এই রাজ্য অধিকার করিতে

তাঁহাকে অনেক কষ্ট পাইতে হইয়াছিল। তিনি বারংবার জয় করিয়া লন, আবার अस्त्रनम-वामीत्रा वित्लाही हहेग्रा चाधी-নতা স্থাপন করে। তাহাদের মধ্যে এক দল কবি ছিল, তাহারা কবিতা ও সঙ্গীত ছারা। দেশবাসীদিগের দেশ-হিতৈষিতা ও বীরভাব উত্তেজিত করিয়া দিত। এডওয়ার্ড তাহাদিগকে সমূলে ধ্বংস করেন, কিন্তু তাহাতেও দেশে শাস্তি স্থাপিত হইল না। রাজা এক সময় সন্ত্রীক ওয়েলসের এক ছর্গে গিয়া কিছুকাল বাস করিতে नाशिदनम् । তিনি স্থশাসনের ব্যবস্থা করিবার জন্ম তত্ত্ত্য প্রধান লোকদিগকে রাজপ্রাসাদে আহ্বান করিলেন। রাজা তাহাদিগকে জিজাসা করিলেন "কি হইলে তোমরা স্ত্রষ্ট হও ?" তাহারা বলিল "আমরা একজন দেশী রাজা চাই. তাহা হইলেই আমরা সম্ভষ্ট হইব এবং ইংরাজদিগের সহিত আর যুদ্ধ করিব না।"

রাজা বলিলেন "তোমাদের যেমন ইচ্ছা, তাহাই হইবে। আমি তোমা-দিগকে এমন একটা রাজা দিব, ওয়েল্সে তাহার জন্ম হইয়াছে এবং তিনি ইংরাজী কথা একটাও বলিতে পারেন না।" পরে তিনি একটা দিন ঠিক ফুরিয়া বলিলেন "অমুক দিন ক্রকলে ছর্গে আসিও, তোমাদের নৃতন ওয়েল্স-রাজকে দেখিতে পাইবৈ।" নির্দিষ্ট দিনে তাহারা সকলে ছর্নে আদিল এবং কৌতৃহলাক্রান্ত হইয়া পরস্পরকে জিজ্ঞাসা করিতে লাগিল, "সে ব্যক্তি কে ? কে আমাদের রাজা হইবেন ?" তাহারা মনে মনে ভাবিতেছিল প্রাচীন রাজবংশের কোন ব্যক্তিকে সিংহাসন দেওয়া হইবে, তাহা হইলে তাহাদের আর কোনও কোভের কারণ থাকিবে না।

এডওয়ার্ডের জ্যেষ্ঠ পুত্র কয়েকদিন হইল সেই হুর্গে জনিয়াছিল। এডওয়ার্ড সেই রাজকুমারকে কোলে তুলিয়া লইয়া প্রজাদিগকে দেখাইলেন এবং বলিলেন "দেখ, এই তোমাদের শিশুরাজা। তোমাদের মধ্যেই ইহার জন্ম হইয়াছে এবং এ একটাও ইংরাজী কথা বলিতে পারে না।"

ওয়েল্মবাসীরা এ কোশলে নিরুত্রর রহিল, কিন্তু মনে মনে সন্তুষ্ট হইল না।
কি করিবে, এডওয়ার্ডের কাছে বলে
আঁটিবার যো নাই, কাজে কাজে সেই
শিশুকেই আপনাদের রাজা বলিয়া
আহলাদ প্রকাশ করিয়া চলিয়া গেল।
সেই অবধি ইংলণ্ডের প্রথম রাজপুত্র
প্রিন্ধ-অব-ওয়েল্স অর্থাৎ ওয়েল্সের
রাজা বলিয়া আখ্যাত হইয়াছেন।

সাবিত্ৰী।

`

ক্লফা চতুর্দলী, নিশীথ গগণে আঁধার জলদ রয়েছে ছেরে, আঁধার ধরেছে জড়ায়ে আঁধার, পলায়ে গিয়েছে বিজলী মেরে।

₹

নিঝুম নিঝুম নিবিড় কানন, জলে না জোনাকী কাঁপেনা পাতা, স্তব্ধ প্রকৃতি-স্তব্ধ আকাশ, তটিনী গাহেনা মধুর গাণা!

9

নীরব নিথর নিচল অবনী
ঘুমায় আঁধারে আনন ঢাকি,
জেগে আছে শুধু সাবিত্রী অভাগী,
মৃতপ্রায় পতি হৃদয়ে রাথি!

8

খুলিয়া গিয়েছে বসন ভূষণ,
এলো থেলো হয়ে পড়েছে চুল;
মরমে জলেছে দারুণ আগুন,
ভুকায়ে উঠিছে কলিকা ফুল!

æ

হুদর গলিয়া যুগল নয়নে
দর দর দর বহিছে ধারা,
অজানা আতকে শিহরে পরাণ,
আজি রাজবালা আপনা হারা!

...

—কভূ তুলি ধীরে স্নেহমাখা কর যুভনে বুলার পতির গা'র, কভু বা আঁচলে করিছে বাতাস, কভু মুখপানে চমকি চায়!

9

ক'মেছে তাহারে দয়িত তাহার বিষাদ ব্যথিত করুণ রবে, "ধর গো আমায় দংশিছে বিছা'ম তোমারি পরশে আরাম হবে!"

ъ

তাই কোলে সতী রাখিয়াছে পতি, (খুচাতে তাহার অসহ ব্যথা), তবু সে চাহে না তবু সে হাসে না, আর তো কহে না একটী কথা !

≥

নীরব ভ্বন আঁধার কানন,
তা'য় তো রমণী করেনি ভয়,
তার বুক ভধু উঠিছে কাঁপিয়া,
"আজি বা সাবিত্রী বিধবা হয়!"

50

খনায়ে আদিছে ব্গান্ত আঁধার,
কাঁকি দেয় ব্ঝি জীবিতনাথ—
সূথ শান্তি আশা জীবন-লাল্যা
সবি কাঁকি দেয় তাঁহারি সাথ!

33 -

না না সে দরিতে দিবেনা যাইতে পরাণে শরাণ রাখিবে চেপে, হৈরিয়া সে দৃষ্ঠ চমকিবে বিষ, মরণেরো প্রাণ উঠিবে কেঁপে!!

52

মাতৈঃ মাতেঃ ডাকিছে দেবতা—
"সাবিত্রী! তোমার কিসের ভয়,"
আকাশ অবনী ভাকে প্রতিধ্বনি,
"সতী কি কথনো বিধবা হয় ?"
১৩

কোন্ তুচ্ছ যম, কি তার বিক্রম, ভাঙ্গিয়া চুরিয়া সাবিত্রী-হৃদি, পরাণে জালায়ে রাবণের চিতা, কেড়ে নেবে তার অমূল নিধি!

জগতে অভয়া অনস্তে বিজয়া, সাবিত্রী সতীত্বে অমৃতময়, তার প্রিয় পতি দেবতা অমর,
তার কি মরণ কথনো হয় ?
১৫
এখানে এসনা, নিঠুর শমন !
সাবিত্রীর নাম দিওনা ঘুচে,
ভবের লালসা প্রাণের ভরসা
সিঁথির সিঁত্র নিওনা মুছে!
১৬

থা'ক্ থা'ক্ থা'ক্ আঁধার ঘামিনী,
ফুটোনা ফুটোনা সোণার রবি,
হৈরি মৃত পতি ম'রে যাবে সতী,
আগে তো মরিবে অভাগা কবি!
শ্রীমা—

বাঙ্গালা প্রচন।

প (শেষ)

- ১। পিড়েয় বদে পেঁড়োর থবর।
- ২। পিটে থায়, পিটের ফোঁড় গণে না।
- ৩। পিতল শরা জাঁকে ভরা।
- ৪। পিতা শক্র মাতা বৈরী যেন বালো

 ন পাঠিত:।
- পেতার বয়েদ কল্মা নাই, পাঁজা
 ভরা দাড়ী।
- ৬। পিতার পুণ্যে পুত্রের উদয়।
- ৭ i পিতৃ-মাতৃ-দায় 🕯
- ৮। পিতৃসত্য পালিবারে রাম যান বন।
- ৯। পিপাসার অন্ত নাই।
- ১০ ৷ শিপীড়ার পাখা উঠে মরিবার
- e ুভরে:।.
- ১১। श्रीनिष्ठ स्थारन निष्कृत त्रथीरन।

- ১২। পীরিতের ঝগড়াই মজা।
- ১৩। পীরিতের নৌকা পাহাড়ে চলে।
- ১৪। পুকুর কেটে নাওয়া।
- ১৫। পুঁজির উপর একটী।
- ১৬। পুঁটী মাছের প্রাণ।
- ১৭। পুতনয় ভূত।
- ১৮। পুতুল যেমন পুতুল কাচে, যেমনি নাচায় তেমনি নাচে।
- ১৯। পুত্রে যশসি তোয়েন নরাণাং পুণ্যলক্ষণং।
- २०। श्रुनम् विदका छव।
- ২১। পুরাণ চাউল ভাতে বাড়ে।
- २२ । श्रुतांग भाभी।
- २०। श्रुक्टरात मन वना।

পূজाর मঙ্গে খোঁজ নাই, २८ । কপাল জোডা ফোঁটা।

পূবে বাশ পশ্চিমে হাস, २ 🕻 । উদ্ধরে কলা দক্ষিণে মেলা।

পূর্ব্বধনং বিনশুতি। २७ ।

পৃথিবী ছ-ফাল হও,ভিতরে সেঁধুই। २१।

২৮। পৃথিবীর মত ধৈর্য্যশীলা হই।

পেতনীর হাতে রাঙা শাঁকা। २२ ।

পেট জলে ভাতে, 00 1 সোণার আংটী হাতে।

পেটটা যেন ঢাকাই জালা। 1 60

পেট ভরলে ভাজা মাছ ঘসি ঘসি ७२ । नार्श ।

পেট ভর্লে মোণ্ডা তেতো। ००।

পেট থেকে পড়িল বাছা লাউরে। 08 1

পেট ভরে তো নজর ভরে না। 90 1

(भए थिए मूर्थ नाम । 99 I

৩৭। পেটে খেলে পিটে সয়।

পেটের ভাত গেঁটের সোণা। ৩৮।

পেটে ভাত নাই ফোঁটায় দড়। ৩৯।

পেয়াদার আবার শশুর বাড়ী। 801

পেজ পয়জার হই। 1 68

পোড়া কপালে স্থুথ নাই, 82 | বিয়ে বাড়ীতে ভাত নাই।

পোর নামে পোয়াতীর বর্ত্ত। 108

881 প্রজাপতির নির্বন্ধ।

প্রতি গ্রাসে মুড়ো। 84 1

८७ । প্রদীপের কোন অন্ধকার।

প্রভাতে মেঘ ডম্বরু। 89 1

প্রাণটী সথের বটে. 85 1

হাতে কিন্তু পয়সা নাই।

প্রাপ্তকালো ন জীবতি। 851

পাণিতত্ত্ব।

কুকুরজাতীয় জন্তু।

(১) কুকুরজাতীয়, (২) বিড়ালজাতীয়,

(৩) নকুলজাতীয়, (৪) ভলুকজাতীয় এবং (৫) শীলজাতীয়। কুরুর, নেকড়ে, শৃগাল, উদামুখী প্রভৃতি কুকুরজাতীয় জন্ত। এই জাতীয় জন্ত পরস্পর এতদূর বিভিন্ন-প্রকৃতি যে কোন্ কোন্ জন্ধ এই জাতির অন্তর্নিবিষ্ট তাহা সহজে ঠিক্ করা কঠিন।

কুকুর।

অবস্থাতেদে কুরুরের আকার বেমন । ভেদে এবং পালনের ভারতম্যাত্রীরে

মাংসাশী জন্ত পাঁচভাগে বিভক্ত ;— । তিন্ন ভিন্ন, এরূপ আর কোন জন্তুরই নহে। আমাদিগের দেশে বছসংখ্যক কুরুর দৃষ্ট হয় বটে, কিন্তু ইউরোপথণ্ডে ইহাদিগের শ্রেণীসংখ্যা আরও অধিক। তথায় প্রকৃতি ও আকৃতি অসুসারে কুরুর স্পেনিয়েল, হাউও গ্রেহাউও, মাদ্টিফ, বুলডগ প্রভৃতি নানা শ্রেণীতে বিভক্ত। প্রাণিতশ্ববিদ্গণের মতে ভির ভিন্ন শ্রেণীর শুকুর একই জননীর সম্ভান সম্ভতি, কেবল অবস্থা-

তাহাদের আকৃতিগত ও সভাবগত কিছু কিছু পরিবর্ত্তন হইয়াছে মাতা।

কুরুরের ভার আর কোন জন্তই এত অধিক পরিমাণে গৃহপালিও হয় না। অম্বচরের স্থায় প্রভুর সঙ্গে সঙ্গে থাকিতে অস্তান্ত হস্ত অপেক্ষা কুরুর অধিক ভাল-বাদে। কি শীতপ্রধান মেরু সন্নিহিত थारान, कि छेकअशान विष्व अरानन, যেখানে মন্ত্রয় বাস করিতে পারে কুরুরও তথায় বাস করিতে সক্ষম। কুরুর যেরূপ প্রভুত্তক, অন্ত কোন জন্তই দেরপ নহে। বিড়াল ও কুকুর এই উভয়ের প্রভুভক্তি তুলনা করিলে বিড়ালকে অনেক নিম্ন স্থান অধিকার করিতে হয়। বিড়াল যেস্থানে বাস করে সেই স্থানের প্রতি অমুরক্ত হয় এবং তথা স্থানান্তরিত হইতে ইচ্ছা করে কিন্তু কুরুরের প্রকৃতি সম্পূর্ণ বিভিন্ন। তাহারা যে প্রভুর আশ্রয়ে বাদ করে, তাঁহার প্রতিই অমুরক্ত হয়, স্নুতরাং প্রভু স্থানাম্ভরিত হইলে তাহারা তাঁহার সহিত স্থানাম্বরিত না হইয়া থাকিতে পারে না।

কুরুরকে ভাল করিয়া পালন করা হয় না বলিয়াই হউক অথবা অন্ত কোন কারণ বশত:ই হউক স্থামাদিগের দেশে বর্ত্তমান সময়ে পুরুরের দারা চোর দস্তা ভাড়ান ভিন্ন অন্ত বিশেষ কোন কাৰ্য্য সামিত হয় না। ইউরোপ ও আমেরিকা-श्राप्त देशमित्रव बाता त्य नकन कार्या

বিশ্বিত ও মোহিত হইতে হয়। কুকুর অম্বকার রাত্তে আলো লইয়া প্রভূকে পথ দেখাইয়া আনে, ছাত্রদিগকে স্কুলে দিয়া আইসে এবং যথাসময়ে আবার তাহাদিগকে বাড়ী লইয়া যায়, বাজার হইতে দ্রব্য ক্রম করিয়া আনে ইত্যাদি ঘটনার কথা শুনিলে আমরা আশ্রেষা না হইয়া থাকিতে পারি না। শিকার করিবার সময় ইউরোপ ও আমেরিকার সভা অধিবাদীগণের এবং প্রায় সমুদয় অসভ্যজাতির কুরুর প্রধান শীতপ্রধান দেশের লোকেরা বরফের উপর দিয়া যাইবার জন্ম যে একপ্রকার শকট তৈয়ার করে, তাহা কুকুরে টানিয়া लहेश यात्र।

আমাদিগের দেশের পণ্ডিতেরা স্বন্ন ভোজনসম্ভষ্টি, অন্ন নিদ্রা এবং প্রভৃত্তি कुकृत्तत निकरे এই कशरी अधान खन শিক্ষা করিতে উপদেশ দেন।

নেক ডে।

কুৰুৰ, নেকড়ে ও শৃগালের চিরশক্ত। কুদ্র শ্রেণীর কুরুর ইহাদিগকে দেখিলে পলায়ন করে, কিন্তু দৃঢ়কায় ও বলবান্ কুরুর ইহাদের অনুসরণ করিয়া বিনাশ করিতে প্রবৃত্ত হয়। কুরুর ও নেকড়ে এই উভয়ের মধ্যে এরূপ বিষদৃশ ভাব সত্ত্বেও প্রাণিতত্ববিদ্দিগের নিক্ট কুরুর নেক-ড়ের বংশোদ্ভূত বলিয়া পরিচিত। নেকড়ে এরপ ভয়ানক জন্ত যে নিতান্ত শৈশবা-मार्थिक रूप, कार्य व्यवश्रक रहेत्व पृथ्य । तथा रहेरक शानन ना कतिरन रेश-

দিপকে কোনও মতে নম্ৰ ও বণীভূত করিতে পারা যায় না। ইহারা দল वाँधिया वाहित इब এवः निकाद्यत नमन অচান্ত ধৃৰ্জতা প্ৰকাশ করে। বন কাটিয়া ফেলাতে যত বৃতন নৃতন দেশের উৎপত্তি হইতেছে, অভাভ বন্ত জ্ঞানিগের স্থায় নেকডে জাতির সংখ্যাও তত হাস হইতেছে। আমেরিকায় যধন প্রথম উপনিবেশ স্থাপিত হয়, তৎকালে আট-লাণ্টিক মহাসাগর-তীরস্থ দেশ সকলে ইহারা দলে দলে বিচরণ করিত। কিন্ত একণে উহাদিগকে উত্তর আমেরিকার কোন স্থানেও দেখিতে পাওয়া যায় কিনা আজিও ইউরোপের কোন কোন দেশে নেকড়ে দেখিতে পাওয়া যায়। আদিয়ার অনেক দেশেই নেক-ড়ের বিলক্ষণ উপদ্রব আছে। ভারত-বর্ষে ইহারা প্রতি বংসর বহুসংখ্যক গৃহপালিত পশুপক্ষী বিনষ্ট করিয়া ভক্ষণ করে।

নেকড়ে স্থলকায় জন্ত না হইলেঁও বিলক্ষণ বলবান্। ইহাদিগের • স্বভাব রুক্ষতা, ধৃৰ্কতা ও ভীরুতার সমবায়ে উৎপন্ন।

শৃগাল।

শৃগাল উত্তর আফ্রিকা, পারস্ত ও ভারতবর্ষে দৃষ্টিগোচর হয়। ইহারা দেখিতে অনেক পরিমাণে কুরুরের মত। নেকড়ের স্বভাব বৈরূপ, ইহাদিপের স্বভাবও ঠিক সেইরূপ। ইহারা দিনের

বেলায় গর্জের মব্যে সুকারিত থাকে
এবং রাত্রিতে দল বাঁথিয়া লিকার্বে
প্রস্তুত্ব হয়। আমাদিগের দেশে অবক্রতি
আছে, যে শৃগাল ধৃত্তায় সকল কর্ত্ত
অপেক্ষা শ্রেষ্ঠ। বস্তুতঃ শুদ্ধ আমাদিগের দেশে কেম যে দেশে শৃগাল
দেখিতে পাওয়া যায় সেই দেশের
অধিবাসীদিগের নিকট ইহারা ধৃত্তার
ক্রম্বের স্থায় শস্তাদি থাইরা জীবন
ধারণ করিতেইপারে।

खेकामूथी।

ইহাদিগের মুথ সরু এবং পুচ্ছ কুরুর অপেকা দীর্ঘ ও সরল দীর্ঘাকৃতি লোমে আজাদিত। অন্ধকার রাত্রে ইহাদিগের মুখ দিয়া আলোক বাহির হয় বলিয়া ইহাদিগকে উন্ধামুখী কতে। শৃগালের ন্থার উন্ধাম্থীও অত্যন্ত ধূর্ত্ত। ইহারা দিনের বেলায় অন্ধকার গর্ভে লুকায়িত থাকিয়া রাত্রিকালে শক্কিতভাবে পক্ষিশশকাদি শিকারে বহির্গত হয়। উন্ধাৰ্থী আকৃতিতে কুশ বটে, কিন্ত বিলক্ষণ বলবান্ ও জ্তগমনপটু। আমাদিগের দেশে সাধারণতঃ যে সকল উন্ধাৰ্থী দেখিতে পাওয়া যায়, তদভিন্ন অন্তান্ত ভিন্ন শ্রেণীর উদামুধী আছে। আকৃতি ও প্রকৃতিতে (त तंकन आमानित्तत्र स्मानं छेकान्यीत्र

इत्म अत्रतः उदाम्बीत जारगद्वत

একপ্রকার জন্ধ দেখিতে পাওয়া যায়। ইহান্না লোমের জন্ম প্রসিদ্ধ। গ্রীমকালে ইহাদিগের লোম পাংওবর্ণ ধারণ-করে. কিন্তু শীতের প্রারম্ভ হইতেই রৌপ্যের स्राप्त माना इटेट आवस हम। এই সকল লোম এ সময় অধিক পরিমাণে উৎপন্ন ও বর্দ্ধিত হইয়া পদতল পর্যান্ত আবৃত করে।

হায়না।

হায়না সচরাচর আসিয়া ও আফ্রিকা ৰতে দেখিতে পাওয়া যায়। राज्ञभ ভग्नानक, সেইज्ञभ वनवान। ইহাদিগের দত্তে ও কপোলে এত অধিক বল বে অনায়াসে ব্যের জংখার হাড় কামডাইরা ভাঙ্গিতে পারে। যে সকল জন্ত মৃতাবস্থায় পড়িয়া থাকে, ইহারা তাহাদের মাংস থাইয়া জীবন ধারণ করে। হায়না মহুষ্য মাংস থাইতে অত্যন্ত ভালবাসে, এই জন্ম যে স্থানে যুদ্ধ বিগ্ৰহ উপস্থিত হয় তথায় দল বাধিয়া গমন করে এবং গুঙা প্রভৃতি পক্ষীর স্থায় মৃতদেহ ভক্ষণ করিয়া রণ-ক্ষেত্র পরিষ্কৃত করে। ইহাদিগের পশ্চাৎ ভাগ সমুধ ভাগ অপেকা অনেক কুদ্ৰ, এই জন্ত চলিবার সময় ভাল দেখায় না।

মার্থার মাতৃদর্শন।



"একটা অপুর্ব ঘটনা হইয়াছে এবং প্রায় বানিবার বস্তু পাঠিকাগণের অবভ

পাত ১৬ই জুলাই শনিবার বিলাতে | বিবরণ প্রকাশিত হইয়াছে। এই ঘটনা ্লংবাদপত্তে তাহার সচিত্র কৌভূহল হইতে পারে। ইহা মহারাণী

বিক্টোরিয়ার সহিত মার্থা নায়ী একটা
দরিজা বিধবা বৃদ্ধা নিপ্রো রমণীর সাক্ষাৎকার। মার্থাকে লোকে (Aunt) ঝুড়ীমা
মার্থা বলে, ইহার বয়স ৭৬ বৎসর, হুতরাং
বয়সে ইনি মহারাণী অপেক্ষাও বড়।
ইহার স্বামীর নাম রিক্ সাহেব, ৬। ৭
বৎসর হইল তাঁহার মৃত্যু হইয়াছে।

থুড়ীমা মার্থার জন্ম দাসবংশে আমেরি-কাতেই হয়। তাহার পিতা প্রচুর ধন উপাৰ্জন করিয়া তাহাকে, তাহার মাতাকে ও ৭টী ভাইকে দাসত হইতে মুক্ত করেন। তৎপরে ইহারা আফ্রি-কান্ন ফিরিয়া যায় এবং লাইবিরিয়া নামক স্বাধীন প্রদেশে বাস করে। ইহাদিগের এই লাইবেরিয়াতে বাসের সময়ে মহা-রাণী বিক্টোরিয়া সিংহাসনে অধিক্রচা হন। তথন মার্থার হত্তে তাঁহার এক-থানি ছবি পড়ে। ইংলভের রাজা রাজ্ঞীরা নিগ্রো দাসদিগের প্রতি বড় সদয় এবং তাহাদিগের উদ্ধারের জন্ম বিশেষ চেষ্টা করিয়াছেন, এই কথা শ্বরণ করিয়া বিক্টোরিয়ার প্রতি মার্থার ভক্তির সঞ্চার হয় এবং তিনি তাঁহাকে মাতা বলিয়া বরণ করেন। **वर्शितवं अधिक मित्नव क्या, उपन** এই মাতাকে একবার দেখিবার জন্ম মার্থার মনে সঙ্কল হয়। কিন্তু কোথায় আফ্রিকার পশ্চিম উপকূল, আর কোথার ইংলগু এবং কোথার এই বর্ষর দরিক্রা স্ত্রীলোক, আর কোথার রাজরাজেশরী বিজ্ঞোরিয়া । মার্থার সক্র সিদ্ধ হওরা

নিতান্ত অসম্ভব। বাহা হউক সর্বা রমণী মনের কথা পুলিয়া ঘাকে ভাকে বলিত "মাতা বিক্টোরিমাকে দেখিবার মান্স করিয়াছি।" সকলে পাগল বলিয়া তাহার কথায় হাস্ত বিদ্রূপ করিত, ভাচার স্বামীও যথন তথন করিয়া বলিত "ভাল মার্থা মহারাণী বিক্টোরিয়াকে দেখিবার ইংলও যাত্রা করিবে ?" ছ:খিনী রমণী ক্ষেত্রে কার্য্য করিত, সেই সময় হইতে ইংলও গমনের পাথেয়স্বরূপ কিছু কিছু টাকা জমাইতে থাকে এবং মহারাণীকে কিছু উপহার দিতে হইবে বলিয়া স্বহত্তে একথানি সাল প্রস্তুত করিতে থাকে। সালের জমী সাদা সাটিন, তহুপরি স**র্জ** রঙের একটা কাফী গাছ বোনা। মার্থা ক্রমে ক্রমে অনেক টাকা জমাইয়া ফেলে এবং একাকিনী অপর লোকের সহিত এক জাহাজে চড়িয়া ইংলতে উপস্থিত পথে তাহার দেশের কয়েকটা লোকের সহিত সাক্ষাৎ হয়, তাহারা अनेटन চलिया बाद ।

মহারাণীর সহিত কিরূপে সাক্ষাৎ
হয়, মার্থা তাহার বৃত্তান্ত স্বমুখে এইরপে
ব্যক্ত করিরাছেন। "শনিবার অপরাক্তে
লাইবিরিরার রাজমন্ত্রী রাইণ্ডেন সাহেব,
তাহার স্ত্রী, কন্তা, একটী ছোট নাতিনী,
বিবী রবার্টও আর করেকটা বছর সুহিত একত্রে রেলগাড়ীতে চলিলাম। উইণ্ডসরে
পৌছিলে হুই খানি গাড়ী আমাদিলকৈ
লইরা সেল এবং ৪টার সমর মহারাণী

স্মাসিয়া দেখা করিলেন। একটা সোণার মরে তিনি দেখা করিলেন: দেখানকার সকল বস্তু এমন স্থলার, পকল রাজা ও রাণীর ছবি দাজান রহিয়াছে, আমি জানি না আর কোথাও এ সকল ছবি এল্লপ একত্র দেখা যায় কিনা। কুইন বিক্টো-রিয়ার আগমনের কোন সাড়া শব্দ পাই मारे. किन श्री अकत्व विन 'ठिनि ঐ থানে, আমাদিগের দিকে আসিতে-ছেন।' কুইন বিক্টোরিয়া আমাকে কি ৰলিলেন, তোমাদিগকে তা বলিতে পারি না। তিনি এত নরম নরম করে কথা কন, কিন্তু তিনি হান্ত করিলেন এবং তাঁর স্বর বড় মধুর এবং তিনি আমার সহিত--কেবল আমার সহিত সেক্তাও করিলেন। আমার সঙ্গীরা ৰণিয়াছিল তিনি সাধারণ লোকের সহিত 'সেক্সাণ্ড' করেন না, কোন রাণীই ভাষা করেম না: তিনি লাইবিরিয়ার মন্ত্রী বুহিত্তেন সাহেবের সহিত 'সেক্হ্যাপ্ত' कत्रित्मन नाः, किन्छ कुद्देन विद्वोतिया সত্য সত্য আমার সহিত 'সেক্ছাণ্ড' করিলেন।"

८७ नमग्र महातानीत नत्क युवताङ, যুবরাজপদ্মী, রাজকভা বিয়েটি স, বিক্টো-রিষা ও ষড ছিলেন . 🕯 কিন্তু মার্থাকে জিজাসা করাতে বিলিল "কুইন বিক্টো-রিয়া ও সম্পার রাজপরিবার আসিয়া আসাকে দেখা বিরাহেন" তৎপরের

"আমি সহারাপীকে বেজপ ভাবিয়া- যোগ্য।

ছিলাম, তাহার অপেকা বৃদ্ধ বোধ হইল। আমি তাঁর চেয়ে বয়দে বড়, কিন্তু তিনি আমার চেরে কুঁজো হইয়া পড়ি-য়াছেন। আহা, তাঁহাকে অনেক কষ্ট —অনেক কণ্ট পাইতে হইয়াছে। তিনি সোণার ঘরে বছক্ষণ রহিলেন না। আমি যথন দেখিলাম তাঁহারা সকলে চলিয়া গিয়াছেন, ভাবিলাম তিনি श्रामारक कि वनित्वन, भव कथा जनिक्री গিয়াছি, কিন্তু তিনি কেমন হাসিলেন এবং আমার সহিত 'সেকছাগু' করি-লেন, ইহা কথনও ভুলিব না। ইহার পর ভূতোরা কুইন বিক্টোরিয়ার বাড়ীতে षामामिशदक लहेशा दशन। कि स्नुन्तत -- অতি স্থানর জিনিয় সকল। একটা স্থন্দর ঘরে আমাদের ভোজ হইল। আমি তাঁহার দেবালয় দেখিলাম। দেবালয় অনন্তকাল থাকিবে, ইহা চির-কাল থাকিবার জন্ত যেন গড়া হইয়াছে। কুইন বিজ্ঞোরিয়ার বাড়ীর ছাদে উঠি-লাম। তিনি আমাদিগকে সব দেখিতে দিলেন। • পরে আমরা গাড়ী করিয়া ষ্টেসনে গেলাম।"

এই ঘটনাতে একদিকে যেমন মার্থার সরল বিশাস, অধ্যবসায়, ক্রতজ্ঞতা ও রাজভক্তির পরিচয় পাওয়া যায়, অক্ত-**मिटक हेश्नरश्यतीत स्मोबन्छ, अखा** বাৎসলা ও হৃদয়ের উদারতা দেখিয়া মোছিত হইতে হয়। এরপ ঘটনা ইভিহাসে স্থাক্ষরে লিখিয়া রাখিবার

শিশু সন্তানের প্রতি মাতার কর্ত্ব্য।

মাতার যত প্রকার কার্য্য আছে তন্মধ্যে সন্তানপালন সর্বপ্রধান ও গুরুতর। সস্তানকে সমাজোপযোগী ও সর্বাগুণভূষিত করিয়া যিনি সংসারে ছাড়িয়া দিয়াছেন. তিনিই ধন্য মাতা। শুধু স্নানাহার করাইয়া বড় করিয়া সংসারে ছাডিয়া দিলে মাতার কর্ত্তবা পালন করা হয় না. তাহাত প্রমাতা প্রিক্সাতাও করিয়া থাকে। আপ্নাকে যত দিন রক্ষা করিতে না পারে, যত দিন খুঁটিয়া থাইতে না পারে. ভত দিন মাতৃক্রোড় হইতে পরিত্যক্ত হয় না। কিন্তু মনুষ্য সর্বাজীবের শ্রেষ্ঠ, দ্স্তানের প্রতি মহুধ্যমাতার অন্যান্য জীবের মাতার অপেক্ষা আরও অনেক গুলি শ্রেষ্ঠ কর্ত্তব্য আছে, তাই মমুষ্য-যাতার সন্তানপালন অতি ওকতর কার্য্য। কেন না যে সকল সম্ভানের উপর ভাবী সমাজোন্নতি নির্ভর করিতেটে— যাহাদের জন্য ভবিষাৎ কর্ম ক্ষেত্রে ভভাভভ আসন বিস্তৃত রহিয়াছে, তাহা-मिश्रात्क खना शान कत्रारेत्रा, तमन ज्यगा-দিতে স্থসজ্জিত করিয়া দিলেই মাতার কর্ত্তব্য যথায়থ পালিত হইল না—ধাত্রীকরে অর্পু করিলেও সে কর্ত্তব্যের শেষ হইল না, থেহেতু স্নান, আহার করান, ক্রোড়ে ধারণ করা, "বাবা, বাত্" বলিয়া সোহাপ করা, বহুমূল্যের বস্তালভার পরাইডে চেষ্টা করা, প্রহার করা, বমের বাড়ী

যাইতে আদেশ দেওয়া ইত্যাদি বাতীত
মাতার সন্তানের প্রতি ছইটা প্রধান
কর্ত্তব্য আছে, দেই ছইটা কর্ত্তব্য পরস্পর
এত ঘনিষ্ঠ যে একটা নহিলে অপরটা
বুখা বা মৃল্যহীন হইয়া থাকে, অর্থাৎ
আসার হইয়া পড়ে। সেই ছইটা কর্ত্তব্য
জানিয়াও যে মাতা সন্তানের প্রতি
তাহা পালন করিতে উপেক্ষা করেন,
সেই মাতা সন্তানের নিকট, সংসারের
নিকট, সমাজের নিকট, ভগবান্ প্রজাপতির নিকট অবশ্রই অপরাধী। ঐ
ছইটা কর্ত্তব্য কি, তাহা আমরা নিয়ে
বলিতেছি।

প্রথমতঃ স্বাস্থা। শিশু আপনাকে আপনি বুক্ষা করিতে জানে না – আপ-নাকে আপনি বুঝে না, এ অবস্থায় মাতার ন্থায় স্নেছণীল ব্যক্তির সাহায়্য ব্যতীত শিশু একদিনও বাঁচিতে পারে না, অত-এব শিশুর স্বাস্থ্য মাতার হাতে। যদি কোন মাতা সংসার কার্যোর বাস্ততা বশতঃ সন্তানকৈ অনিয়মে অর্থাৎ অদ্যা সকালে कना विकारन, शत्र छ-श्रह्द भाना-হার করান, তাহা হইলে অবগ্রই মাতার কর্ত্তব্যের ক্রটা হইল। "বৌটা অভিশন্ন च्छारनाक, प्रथ स्मर्टे मकानः दिना ছেলেটা রেখে যে কার্য্যে লাগিয়াছে, আর এখনও ছেলেটা একৰার কোলেও করে নাই।" প্রাচীনাগণের মূথে এই অচলা প্রশংসা শুনিবার জন্ত ভিনি

नकान थिएक विकान भग्रेष्ठ मञ्जानत्क ভন্তপান না করাইয়া. রাত্রিতে বা সন্ধার পর মৃত্যুত অভপান করান, পাওয়ার ইচ্ছাকে তাঁহার প্রশংসা बिक। যিনি নিজের সন্তানটীকে একজন অসদংশজা, অশিক্ষিতা, অসভ্যা, বেতন পাওয়ার কারণেই যে ছেলেটাকে প্রতিপালন করিতে বাধ্য দেই ধাত্রীর করে অর্পণ করিয়া নিজের বেশ বিস্তাস করিবার ও অতিশয় পরিফার পরিচ্ছন্ন থাকিবার জন্ম ব্যস্ত, তিনি সন্তানের স্বাস্থ্যরক্ষার বিষয়ে এমন কি বন্দোবস্ত করিলেন যে. তাঁহার কর্ত্তবা শেষ हहेन ? मखानटक निटखंद निक्छे मर्खना রাথা অন্ততঃ শিশুর স্নান আহার ও ভাহার শারীরিক অবস্থাদি পর্যাবেক্ষণের कछ य पिन य नमग्रे के लाश. সৈট সময় পর্যান্ত শিশুকে নিজের ভন্তাবধানে রাথা জননীর অবশ্র কর্ত্তবা। যদি নিজের টাকা ও গহনা গুলি অত্যের হত্তে দিয়া সে অপব্যবহার করিবে বা মষ্ট্র করিবে বলিয়া শঙ্কিত হও, তবে প্রাণাধিক সম্ভানের পালন-ভার অন্তের इटड निया कि किছुमां अने इय ना ? রাগভরে সম্ভানকে ভত্তপান করাইলে ইইবার বিশেষ নিমর স্বাস্থ্যভঙ্গ কিরূপে ज्ञायना । শিশুর স্বাস্থ্য কুকা করিতে হয় ও কিসে শিশুর স্বাস্থ্য ভঙ্গ হয়, সে বিষয় ধাত্ৰীশিকা ও মাড়শিকা পাঠ করিলে মাতারা নিক্তরই সাইব্যি পাইতে পারেন। যাহা

হউক শিশুর স্বাস্থ্য রক্ষার বিষয়ে লেধিকা সম্পূর্ণ অনভিজ্ঞ হইলেও প্রস্থতি-গণকে শিশুর স্বাস্থ্য কিসে ভাল থাকে. তাহা জানিবার জন্ম ও শিক্ষা করিবার জন্ম বিশেষ অমুরোধ করিতে লক্ষিতা নহে। শিশুর বাহে, প্রস্রাব, ত্রুধতোলা ও ক্লমিদোষ ইত্যাদির প্রতি মাতার দর্ঝ-ক্ষণ দৃষ্টি রাখা কর্ত্তবা। শিশু-পালন জন্ত "ভারতকামিনী" ও প্রস্থতিদিগের বিশেষ সাহায্য করিতে পারে। বালক বালি-কাদের কোষ্ঠবন্ধ হওয়া স্বাস্থ্যভঙ্গের একটা প্রধান লক্ষণ, কোষ্ঠবন্ধ মলের কাঠিন্ত, দড়কা, প্রস্রাবের অস্বাভাবিক বর্ণ ক্রমিদোষ ইত্যাদি যে শিশুদিগের কি ক্ষতি করে এবং ঐ সব রোগের টোট কা ঔষধ আর উক্ত রোগ সমূহ হইতে প্রস্থতিদের পূর্ব্বেই সাবধান হই-বার উপায় উপরি উক্ত তিন থানি পুস্তকে স্থন্দররূপে লিখিত আছে, তাই প্রস্থতিগণ নভেল, নাটক ও উপক্যাসাদির স্থলেঁ উক্ত রূপ পুস্তকাদি পাঠ করিলে বিশেষ উপকার লাভ করিতে পারেন বলিয়া বোধ হয়। শিশুদের পেট ভরি-রাছে, আর থাইতে চাহিতেছে না. কিছ জননী যে ছধটুকু বা যে ভাতগুলি থাওয়াইবেন সংকল্প করিয়াছেন, শিশুর অনিচ্ছা সম্বেও জুজুর ভর দেখাইয়া বা প্রলোভনে বশীভূত করিয়া উহা শিক্তকে থাওয়ান নিভান্ত অক্লায় বলিয়া বোধ হয়। শিশু যাহা থাইতে পারে তাহা আপ-निहे हेव्हा ७ याश्रह महकारत बाहरत,

অধিকস্ত মিষ্ট দ্রব্যাদি বালকেরা পেটে
না ধরিলেও থাইবার ইচ্ছা ত্যাগ করে
না, কোথায় জননী তাহার ভরাপেটে
কিছু না থাইতে দিবার চেষ্টা করিবেন,
তাহানা করিয়া আরও কিছু বাধ্য করিয়া
ধাওয়ান, ইহা কি নিতান্ত অন্তচিত্
নহে ? শিশুদের হাত পা নাড়িয়া, হামা-

গুড়ি দিয়া, দৌড়াদৌড়ি করিয়া থেলিতে দেওরা উচিত, যতক্ষণ না তাহাদের কোন রকমে আঘাত পাইবার বা পড়িয়া যাইবার আশকা উপস্থিত না হয়, তত-ক্ষণ তাহাদের ঐরপ থেলায় বাধা দেওয়া অমুচিত।

(ক্রমশঃ)

কুমারী জেসী এঃ একারম্যান।

এই আমেরিকা দেশীয়া বিদ্যাবতী গুণসম্পরা মহিলা এক্ষণে অষ্ট্রেলিয়ায়। আগামী শীতঋততে চীন, জাপান বন্ধ-দেশাদি পরিভ্রমণ করিয়া ভারতবর্ষে পদার্পণ করিবেন। এদেশে তিনমাস কাল অবস্থিতি করিবেন, করিয়া ভিন্ন ভিন্ন স্থান পরিদর্শন করতঃ সুরাপানের অবৈধতা ও অপকারিতা সম্বন্ধে ্বক্তৃতা করিয়া বেডাইবেন। ইনি আমেরিকার যুক্তরাজ্যের World's Women's Temperance Union অর্থাৎ বিখ-মহিলার স্থরাপান নিবারণী সভার অন্ততম সভা। পার্লেমেণ্ট মহাসভার সভ্য মাননীয় সামুয়েল শ্বিথ, কেন প্রভৃতি মহোদয়গণ কর্ত্ব প্রতিষ্ঠিত এংলো ইণ্ডিয়ান টেম্পারেন্স সভার সহিত ইহার ঘনিষ্ঠ সম্পর্ক আছে। উক্ত সভাকর্ত্তক প্রকাশিত "আবকারি" নামে मानिक পঞ্জিकात्र हेराँत आगर्मनवाडी

বিঘোষিত হইয়াছে। আমরা ইহাতে 🕏 হার একটি স্থন্দর প্রতিক্বতি দেখিয়া প্রীত হইলাম। আশা করি যে সকল শাথা প্রশাথা ভারতবর্ষে আছে, সকলে যথাবিহিত সন্মান পুরংসর আর অভার্থনা করিবেন, মহিলাগণও সমবেত হইয়া ইহাঁর সভাষণ ও সমাদর করিতে ত্রুটি করিবেন না। মধ্যবাঙ্গালা স্থিলনী প্রভৃতি যে সকল সভাসমিতি আছেন, সকলে স্মিলিত হইয়া পূর্বে যেমন কুমারী কার্পেণ্টার ও কুমারী ম্যানিংএর অভ্যর্থনা করা হইয়াছিল, সেইরূপ উদেযাগপুর্বাক ইহাঁর অভিনন্দন করিয়া আপনাদিগের হৃদয়-বত্তার পরিচয় দিবেন। যদি সম্ভব হয় यथानमाय देशांत मः किश्व कीवनी वामा-ৰোধিনীর পাঠিকাদিগকে উপহার দিবার ইচ্ছারহিল।

আম্রফল।

কি গুণ লভিয়ে তুমি আইলে ধরায়— कर्नाटाई, ८१ जनान वनना आभाग ? বসস্তের আগমনে হও মুকুলিত, भौतरक्ट प्रमामिश द्य आस्मामिल ! গুটী ধর যে সময়—কত আশা হয়, স্থাস রসাল কবে তৃষিবে হৃদয় ? আঁবের আচার সে যে উপাদেয় অতি. খাইতে অকৃচি কাঁক নাহি থাকে রতি। निषाष चौरवत हैक त्यहे करत शान, সব জালা ঘোচে তার ঠাণ্ডা হয় প্রাণ। পাকা আঁব যোগ যবে হয়।রসনায়. স্থারদে মাতোয়ারা যেন গো সবায়। এমন স্থমিষ্ট ফল আছে কি ধরায় গ সার্থক জনম তার যে তোমারে খায়। বিতরিয়ে স্থা রস তুষিছ মানবে, তোমার মতন বন্ধু কেবা আছে ভবে গ मार्थ कि তোমারে পেয়ে প্রন নন্দন. ষাঁঠি গুদ্ধ গিলেছিল করি আসাদন। "মালদহ" ধন্ত তুমি ধন্ত ধরাতলে. দেবের বাঞ্চিত ফল লভিলে কি ফলে ? যাইব তোমার কাছে ঘটে না স্থযোগ, ভুগিতেছি মিছামিছি কর্ম ফল ভোগ। আফিসে "কেরাণী" তাই নাহি অবসর. কেমনে যাইব বল তোমার গোচর প शाबी राम উড़ के शाहे यमि शाथ. ভোমার গুণেতে আমি হয়েছি অবাক! द्वाका नार उनिश्राहि माननारे जात्म, शांकिएन जनम नरत शिरत रमेरे शास, পোকা হরে স্থার্য করিতাম পান, গাইতাম একচিত্তে তবগুণ গান।

তোমার তুলনা দিব আর কার সনে ? কাঁঠাল হইতে তুমি শ্রেষ্ঠ শত শুণে ! কদলী তোমার কাছে তুলনার ছার, নারিকেল কিছুই না নিকটে তোমার। কালোজাম গোলাপজাম পেয়ারা বাদাম আতা লিছু নোনা ফল কত ক্ব নাম— সকলেই এক বাক্যে তোমারে বাথানে: হেঁটমাথা আনারস তব বিদ্যমানে ! ছিলটে-কমলা লেবু এত যে মধুর, তুলনায় তোমা সনে সেও বহুদুর। কিস্মিস্ আকর্ট বেদানা আঙ্কুর, পেঁপেঁ কুল তাল বেল দাড়িম খাজুর। রদেতে রদাল তুমি শ্রেষ্ঠ সবাকার, তোমার চরণে করি কোটি নমস্কার। আমশী ও আমস্বত্ব অতি যত্ন ক'রে, প্রস্তুত করিয়ে রাথে গৃহিণীরা ঘরে। জামাই শুভুর বাড়ী এলে জ্যৈষ্ঠ মাসে. শাওড়ী তোষেন তারে কতই উল্লাসে। বাছা বাছা আঁবগুলি দেন তার পাতে, খা'য়ান উদর পুরি বসিম্বে সাক্ষাতে। পাইয়ে গ্রীখের ছুটি মনের হরষে, প্রবাদ হইতে স্থত আসিলে আবাদে, অমনি জননী তারে থেতে দেন আঁব, (মেহে বিগলিত কিবা মায়ের স্বভাব!) আবাল বৃদ্ধ বনিতা সেবা করে তোরে. তাই তোর স্তৃতি আজ করি করযোড়ে। তুষিস এদাসে দিয়ে তোর স্থা রসে, প্রতিদিন গ্রীমকালে বরবে বরবে। हत्र यक्ति दक्ष्मित्री भूनः এधतात्र, (যেন)মৃত্যুপরে প্রেতআত্মা মালদহে বার।

আত্ম-পরীক্ষা।*

যে ব্যক্তি আপনার কল্যাণ চায়, সে খেন সতর্ক ভাবে আত্মপরীক্ষা করে; ত্রিসন্ধ্যার মধ্যে অন্ততঃ একবার জ্ঞানী ব্যক্তি আত্মামুসন্ধান করিবেক।

যাহা ভাল প্রত্যেক ব্যক্তি প্রথমে অাপনাকে তাহাতে নিয়োগ করুক, পরে অন্তকে তাহার শিক্ষা দিবেক: জ্ঞানী ব্যক্তিকে এই জন্ম কন্ত পাইতে হয় না।

মনুষ্য অন্তকে যাহা শিক্ষা দেয়, নিজে যদি তদমুরূপ আচরণ করে, তাহা इहेल आञ्च अग्नी इहेग्रा त्म अभवत्क সহজে জয় করিতে পারে। আপনাকে আপনি জয় করাই অধিক কঠিন।

আত্মাই আত্মার প্রভু, আর কে প্রভু আছে? আত্মাকে জয় করিলে এমন প্রভু পাওয়া যায়, যে অল্পলৈকের ভাগে সেরূপ ঘটে।

প্রতিপালক নিজেই,ইহাদারা নির্কোধকে পিষিয়া মারে, যেমন হীরা মূলাবান্ প্রস্তরকে বিনষ্ট করে।

লতা ষেমন বুক্ষের, আপাদমন্তক

শত ফেরে বেষ্টন করে, যাহার পাপ অধিক, তাহার দেই অবস্থা। তাহার শক্ররা তাহাকে যে অবস্থায় দেখিতে চায়, সে নিজে সেই অবস্থাপত্র হয়।

মল কার্য্য এবং নিজের পক্ষে অনিষ্টকর কার্য্য সহজেই করা যায়, ইপ্তকর ও সৎকার্য্য করাই কঠিন।

যে নির্কোধ ব্যক্তি পূজ্য ও ঈশবের অমুগৃহীত ধার্মিক লোকদিগের স্থানিয়ম পরিত্যাগ করিয়া কুনিয়মের অহুসরণ করে, সে কটিক তৃণের তায় আপনার মৃত্যুর জন্ম আপনি ফল প্রস্ব করে।

মহুষ্য নিজেই পাপ করে, নিজের त्तारवरे कहे भाग, निर्व्यत य**्वरे मञ्**रा পাপ হইতে নিব্ৰত থাকে এবং পবিত্ৰ হয়। পবিত্র ও অপবিত্র হওয়া নিজ্প কার্য্য, একজন মাতুষ অপরকে পবিত্র করিতে পারে না।

অন্তের কর্ত্তব্য যত বড় হউক না, তাহার জন্ত কোন মন্থ্য থেন নিজের কর্ত্তব্য বিশ্বত না হয়। যে ব্যক্তি **আপনার** कर्त्तु अवधात्रण कतिश्राष्ट्र, तम मर्समा তাহাতেই মনোযোগী হউক।

নূতন সংবাদ।

প্রেধান রাজমন্ত্রী সাহেবের একটা কাঁড়া কাটিয়া গিয়াছে। | আঘাত লাগে নাই। পথে যাইতে বাইতে এক পোক কেপিয়া 🕝 বৌৰ বৰ্ণণ হইতে সংগ্ৰহীত।

গ্লাডটোন ভিতাইয়া তাঁহাঁকে ফেলিয়া দেয়, অধিক

२। आंकि कानि मुक्तिरकोक ও পিওৰফিকাল দমাজেরই খুব জয় জয়-কার। মুক্তিফোজের সেনাধ্যক ১১০০০ হাজারের অধিক, দৈল্য কত না হইবে! পুথিবীর সর্বস্থানেই ইহাদের অধিকার शांभिত हरेगाहि, উত্তরকেন্দ্র মহুযোর **বাসের অযোগ্য স্থানে**ও ইহাদের পতাকা উজ্জীন হইয়াছে। থিওজ্ফিকাল সমা-জের শাখা ইতিমধ্যে ২৫৮টী হইয়াছে: ইহার মধ্যে ভারতবর্ষে ১৩৬,আমেরিকায় ৬০, সিংহল ও ত্রন্মে ২৫, ইংলতে ১৫টা, অবশিষ্ট অক্সান্ত স্থানে। থিওজফী দারা বৌদ্ধ ধর্মের জয় বিস্তার হইভেছে।

৩। বর্ষাগমে পঞ্জাব, বোম্বাই, কটক প্রভৃতি অনেক স্থানে জলপ্লাবন হইয়াছে, তাহাতে অনেক গৃহ ভগ্ন ও অনেক লোক বিপন্ন হইয়া পড়িয়াছে।

৪ ৷ কলিকাতার বক্ষ দিয়া নুতন রাস্তা "হারিসন রোড" আখ্যাত হইয়াছে, গত ৩১এ হইতে তাহা বৈহ্যতিক আলোকে আলো-কিত হইতেছে। আলো জালার সময় রাস্তাময় লোকের অত্যস্ত ভিড় হয় এবং তাহা দেখিতে বড় স্থন্দর।

৫। ইনস্পেক্ট্রেস হুইলার ছুই মাদের পর জাঁহার কার্য্য পুন্র হণ করিয়াছেন।

৬। গত ৩১এ জুলাই অনরেবল বিক্টর কাবেণ্ডিসের সহিত আমাদের বড় লাট সাহেবের কন্তা লেডী এভেলিন ফিট্ল মরিদের ভভবিবাহ মহাস্মারোহে সম্পন্ন হয়, বিলাতের গণ্য মান্ত লোক বিবাহ-সভায় উপস্থিত হন।

পুত্তকপ্রাপ্তি ও সমালোচনা।

১। ক্যাথারাইনের পিতৃভক্তি— শ্রীকেদারনাথ রায় প্রণীত, মৃল্য /• আনা। এই পুস্তকথানি প্রথম নমুনা, এই আদর্শে আরও কতকগুলি পুত্তক প্রকাশ করা গ্রন্থকারের উদ্দেশ্য। ইহা ष्ठि इन्दर नम्ना। शहकारतत क्रमरत्रत ভাষার লিখিবার ক্ষমতা আছে, স্থতরাং তাহার জেখা যে ক্দয়গ্রাহী হইবে वना वाह्ना। वानकवानिकाहिरणव क्षप्र गठन क्या अध्यक्ता निकात

উদেশ্য হওয়া উচিত, এইরূপ পুরুক দারা তাহার সম্পূর্ণ সহায়তা হইতে পারিবে।

২। পঞ্চামৃত-পণ্ডিত তারাকুমার कवित्रञ्ज कर्ड्डक मङ्गिष्ठं ও भगाञ्चताम সহিত প্রকাশিত। ইহাতে বালীকির গলাষ্টক, শঙ্করাচার্য্যের মোহমুদার, যতিপঞ্চক ও সাধনপঞ্চক এবং ভক্তনীতা অর্থাৎ নানা শাস্ত্র হইতে উদ্ধৃত ভক্ত-দিগের প্রাণের কথা আছে। অমৃতে অরুচি কার ৮ প্রধায়ত পানে পাঠক পাঠিক্স

অন্ধরাগ হইবে সন্দেহ নাই। পঞ্চামৃতের মূল ।/• বিফলে যাইবে না। পুস্তকের আয় বৈদ্যনাথের কুঠরোগীদিগের সাহা-যার্থ ব্যয়িত হইবে। যিনি এক এক খানি পৃত্তক লইবেন, তিনি এক একজন কুঠবোগীর অন্ততঃ অন্নবন্তের কিঞ্চিৎ সংস্থান করিবেন। আশা করি দ্যাশীল ধনাত্য নরনারী এ পৃত্তক কিনিয়া কুঠাশ্রমের সাহায্য করিবেন।

বামারচনা।

পুঁটুর হাঁদি।

(ঠাকুর মাতার আনন্দ)

পুঁটুমণি তোমার কি স্থমধুর হাসি রে। হেরিয়া মধুর হাসি, আনন্দ সাগরে ভাসি. এমন স্থলর হাসি কে তোরে শিথাল রে। रेका रग निवानिनि. হেরি তব মুথশশী. সতত দেখিয়া হাসি আশা নাহি মিটে রে। দন্তহীন শক্তিহীন. নাহি কিছু বুদ্ধি জ্ঞান, দশমাস বন্ধ ছিলে গর্ভ-কারাগারে রে। নৃতন এসেছ তুমি, হেরিতে এ ভব-ভূমি, জাননা এ সংসারে রে নাহি স্থ⁴-লৈশ রে। প্রাতঃকালে শুয়ে ঘরে, मार्थ इर्थ (थेमा करत, লোকে বলে শাস্ত মেয়ে কেমন থেলিছেরে। যদি কেহ কাছে আসে. ভাহারে দেখিয়া হাসে, হোঁগোহোঁগো বলে পু'টু হাসে বাবে বাবেরে কুধা পেলে পেট জলে, বুদ্ধাসুলি দিয়া গালে, চুরিয়া চুবিয়া দেখে কুখা নাহি ভাঙ্গেরে।

চুষি ঝুমঝুমি লয়, অমনি পৈড়িয়া যায়, গলার কবচ ধরে চাহে থাইবারে রে। व्यवत्भरम दकंतम कूछि, জননীর কোলে উঠে. ন্তনত্ত্ব মিঠে মিঠে পুঁটু পান করে রে। গাভীছন্দ যদি থেলে, তথনি তুলিয়া ফেলে, নাহি জানি কি কারণে পেটে না ত। সররে। भू हे नाम मक्ताकाल, ছাদের উপরে গেলে. চাহিয়া চাঁদের পানে হাসে খন খন রে। পুঁটু—যেন কত বাস্ত কাৰে, খেলিছে জগৎ মাঝে, জানেনা যে এই লীলা স্বপনের প্রায় রে ! নিদ্রা দেবী এসে ঘরে, नम् भूँ हे कोल करत्र, ঘুমায়ে ঘুমায়ে কত দেখিছে স্বপন রে। व माक्न श्रुष्टात्मात्क, পুটু তোরে লয়ে বুকে, মায়া-মোহে মুগ্ধ করে আমায় ভুলালি রে। সংস্থারে পাঠান বিনি, হাসান কাঁদান তিনি, এ লগতে একমাত্র কর্তা স্লাধ্যে রে। শ্ৰীমতী ক্লমভাবিনী বহু

"মন সাবধান।"

কি হেতু এসেছ মন সংসার বাজারে রে ?

শীবনসর্বস্থ দিয়ে কিনিতে অসারে রে ?

বিপণি যতেক দেখ বাজারের মাঝারেমান্না,প্রবঞ্চনা তায় সাজায়ে রেথেছে রে !

পশ্চাতে তোমার আছে ছজন দালাল রে,
দেখ যেন তাছাদের কথায় ভুলনা রে !

অমৃত কিনিতে যদি এসেছ হেথার রে শ্রদ্ধা ভক্তি হুই বোনে সঙ্গে করে লও রে লয়ে যাবে তারা তোমা দয়ার দোকানে রে প্রাণ বিনিময়ে ক্রম্ম করিও অমৃত রে! শ্রীমতী স্কণীলাবালা দেবী।

আকুল রোদন।

গভীর নিশীথ, নীরব ধরণী नाशि कान कानाशन: এ হেন সময়ে, কোন অভাগিনী ফেলিতেছে অশ্ৰুজল ? স্মীরে ভাসিয়া, আসিতেছে ওই, কাহার গভীর শ্বাস: নীরব ধরণী, ঝিঁ ঝিঁ রবচ্ছলে, গাহে কা'র শোকোচ্ছাস ? করে অশ্রসনে, মিশিয়া শোকেতে, পড়িছে শিশির চয় ? কার ছঃথে আজি, পুর্ণিমার নিশি, হঙ্গেছে আঁধারময়। কার ছঃখ হেরি, গগণের তারা, (थर्म मिछि मिछि करत ; কাহার রোদনে, হর্টে বিষাদিত কুরুম ঝরিয়া পড়ে। दि धेह मिनीएथ, वीना हाटा नाम গাইছে খেদের গান! त्रि मर्चवाथा, शिवा मत्राम, মাকুল করিল প্রাণ!

নিরাশ অন্তরে, বসি আন মনে, কে কাঁদেরে কার তরে। কোন অভাগিনী, জনমের মত ভাদিল শোকের নীরে; কার অত্যাচারে, কোন অভাগীর ছিঁড়িল কুম্বম হার। বাসন্তী নিশীথে, অকন্মাৎ হায়, ভাঙ্গিল হাদয় কার। কার অশ্রু লয়ে, ধীরি ধীরি বহে, স্থদুরেতে তরঙ্গিণী। কার শোকে আজি, হইয়া আকুল, कां फिएउ हि निनी थिनी ? वियान कानिया, याथान मु'थानि হেরিলি কভু নয়নে; তবু যেগো হায়, ভাবিলে সে মুধ বভ ব্যথা পাই মনে। হেন ইচ্ছা হয়, নিকটেতে গিয়া মুছাই নয়ন তার; করেতে ধরিয়া, সাম্বনা বচনে, ঘুচাই শোকের ভার।

The Bamabodhini Patrica.

In our Bengali columns will be found the account of a very interesting interview between a poor eld Negro woman named Aunt Martha and Her Majesty the Queen-Empress Victoria which took place on the 16th ultimo. The following is an extract from the description the poor woman gives of the right royal reception accorded to her:—

"At Windsor two carriages fetched us at the station, and at four o'clock Queen Victoria came and saw me. It was in a golden room; every thing was so beautiful, and there were pictures of all the Kings and Queens, and I did not know where to look to see it all. I never heard Queen Victoria come in. but all at once they told me she was there, and they were all coming towards us. I cannot tell you what Queen Victoria said to me; she speaks so softly, but she smiled, and her voice was sweet, and she shook hands with me, only with me. They had told me she never shook hands with people; no Queens did; she never shook hands with Dr. Blyden, though he is the Liberian Minister: but Queen Victoria really shook hands with me.-After that we were taken all over Queen Victoria's Oh the beautiful, beautiful house. things of which it was full ! And we had dinner in a lovely room, and we eaw her chapel, and the place where she sits when she goes to/meeting. We went right to the top of Queen Victoria's house; she allowed me to see every thing, and then we were driven back to the station."

It is a gratifying news that the Hon'ble Kasinath Trimbuck Telang has been appointed Vice-chancellor of the Bombay University. This is the second instance of such a high office being conferred on a Native of India.

The Maharani of Geowar has been invested with the order of the Crown of India.

The Salvation Army has established in Calcutta a Rescue Home for fallen women. We wish it all success.

We have been greatly pleased to see some earnest young Brahmos engaged in helping the helpless and diseased children, men and women in Calcutta. They have opened a home where about a good many people have found shelter as long as they were ill. They have also started a monthly journal named "Dasi" advocating the cause of the poor. They deserve every encouragement from the public.

Pandit Tarakumar Kaviratna has compiled and published a nice little book, called *Panchamrita*. The profits of the sale will go to the funds of the Baidyanath Leper Asylum.

We look with interest upon the efforts that are being made by the Banga Mahila Samaj to have popular lectures delivered on Nursing and Hygienic matters. We expect much good from spreading such useful knowledge among the members. The other day

certificates of proficiency were granted to some ladies in London under the presidency of the Duchess of Albany and in the presence of good many noted medical men. The ladies passed examinations on such subjects as the phenomena of life," "Food and "diets," "Physical and mental training of children" &c.

It is with much pleasure, we note that Syud Abdus Souban Chaudhury of Bogra intends to establish a Hospital for women in the name of his deceased wife. He has also made an endowment for its maintenance. We wish that such examples may be followed by other Zemindars and well-to-do people in Bengal.

Miss Sorabji B.A., of the Bombay University has passed a law examination with credit in the University of Oxford. It was Mr. Dadabhai Naoroji, the first Indian Member of Parliament, with some other zealous workers laid the foundation of learning among Parsi girls. Their pioneer work has now borne fruits. Under the Parsee Educational Syndicate, more than a thousand girls are being educated in the city of Bombay.

We are indebted to the Demorest's Family Magazine for the following items of news:—

Mrs. John H. R. Bond, of Chicago, numbers among her most valued possessions the Royal Red Cross presented to ber a faw years ago by Queen Victoria, in commemoration of her services as a number during the campaigns in Egypt and Zutaland.

Miss Ormerod, the wellknown English naturalist, won distinction, some years ago, by biting the tail of a crested newt, that she might learn for herself the character of the acrid secretion the reptile gives out when angry. An inflamed mouth and convulsions lasting several hours resulted from her experiment.

A blind girl who lives at Oak Hill, Texas, from a few acres of land, cultivated by herself, has cleared about \$ 200 each season, for several years, by growing vegetables. She began with no capital, on an unfenced piece of uncultivated land. There is now a neat fence about her domain, and a well and pump in the centre. In addition she has paid for a piano, and for a back to take her vegetables to the market, twenty miles from her home. During the dry season she waters the plants herself. Insects she detects by her acute sense of hearing, and grass and weeds are easily distinguished from plants, by her sensitive fingers.

Four women have lately been graduated from the Law School of the Boston University. Two of them gained honors.

There are 37,000 women in the United states earning their living as telegraph operators, and a large number in other branches of the service.

A Firm of women Tea-Marchants have bought an estate in Ceylon, and carry on their business entirely through women blenders, tasters, packers and agents.

Eleven young ladies from St. Louis and Chicago, all members of the King's Daughters, have gone to Russia to distribute money among the starving Russians. Miss Amelia Eustram is the leader of the party.

Miss Margaret L. Knight invented the machine for making square-bottomed paper bags, and has since invented a machine for folding these bags.

Miss Mary Stub has exclusive charge of the money-order department of the post office at Pittsbury Pa. Last year abut \$2,500,000 (more than 50 lacs of rupees) passed through her hands.

বামাবোধিনী পত্রিকা।

BAMABODHINI PATRIKA.

"क्रत्याष्येवं पालनीया शिचणीयातियत्नतः"

কলাকে পালন করিবেক ও যত্নের সহিত শিক্ষা দিবেক।

৩৩৩ সংখ্যা ।

करत्रन ।

আশ্বিন ১২৯৯—অক্টোবর ১৮৯২।

৫ম কল্প। ১ম ভাগ।

সাময়িক প্রসঙ্গ।

প্রাচ্য ভাষাবিদ্দিগের সভা

শগত ৫ই সেপ্টেম্বর লণ্ডন বিশ্ববিদ্যালয় গৃহে "ওরিয়েণ্টাল কনগ্রেস" সভার
নবম অধিবেশন হয়, তাহাতে প্রায়
সকল দেশের প্রতিনিধি উপস্থিত হন।
অধ্যাপক মোক্ষম্লার সভাপতির আসন
গ্রহণ করেন। ইহার পূর্ব্ব সভা প্রকহলমে হইয়াছিল। স্কইজার্লণ্ডের বারন্
নগরে দশম এবং রোমেনিয়ার বুঢ়ারেপ্ট
নগরে একাদশ বার্ষিক সভার আহ্বান
পত্র পাওয়া গিয়াছে। ভারত বিভাগের প্রথম বক্তা সার রেনল্ড ওয়েপ্ট
ভারতে উচ্চ শিক্ষা' বিষয়ে বক্তৃতা

ন্তুতন সিবিলিয়ান—বাবু কিরণ-চন্দ্র দে বিএও বাবু জ্ঞানেজনাথ গুপ্ত এম এ বিলাতের সিবিল সার্থিন পরীক্ষায় উত্তীপ হইয়াছেন। রুসিয়া কি চান १ — নবন্তী নামক ক্ষমীয় পত্র বলেন ক্ষমিয়া পামীর অধিকারের জন্ম তত ব্যস্ত নন, ভারত মহাসাগরের সহিত সাক্ষাৎকার ইহার
উদ্দেশ্য। এ কথাটার মধ্যে অনেক
ভয়ের কথা রহিয়াছে।

রামমেহন রায় উৎসব—
গত ২৭এ সেপ্টেম্বর মঙ্গলবার সিটা
কলেজ গৃহে রাজা রামমোহন রায়ের
শরণার্থ উৎসব হয়। বাবু ছিল্লেজনাঞ্চ
ঠাকুর সভাপতির আসন গ্রহণ করেন
এবং জ্ঞানি গুরুলাস বন্দ্যোপাধ্যার,
বাবু ক্ষিতীক্রনাথ ঠাকুর, বাবু বিপিন
চক্র পাল ও পণ্ডিত, শিবনাথ শাস্ত্রী
বজ্তা করেন।

ভারত সৃহিলার রাজসমান—
ভারতেখরী ভিক্টোরিয়া বরদার রাজমহিনী চিমনা বাই এবং গওলেক প্রাণ

मनक्षत्र वाहेत्क "नि आहे हे" जेशाधि বারা ভূষিত করিয়াছেন। উভর মহি-পাই, বার্মিসহ বিশাত ভ্রমণে গিয়াছেন। মহারাণীর বাল্যথেলা-মহা-রাণীর জন্মসান বকিংহাম প্রাসাদে তাঁহার বালাকালের থেলনার পুত্ল ক্ষতকগুলি পাওয়া গিয়াছে, তাঁহার ইছাত্মসারে এ গুলি অস্বরন প্রাসাদে প্রেরিত হইয়াছে। বাল্যকাল হইতে তিনি নানা দেশীয় লোককে দেখিতে ভাল বাসিতেন, এই জন্ম তাঁহার পুতুল-প্রাক্তির ভিন্ন দেশীয় পরিচ্ছদে শোভিত করিয়াছিলেন, ঈশর তাঁহাকে সেইরূপ নানা জাতির অধীশ্বরী করিয়া-ছেন। এই পুতৃলগুলিকে নৃতন করিয়া माखारेश তাহাদের ছবি তোলা क्षेत्राट्ड ।

্র স্ত্রীলোকদিগের রাজনৈতিক व्यक्षिकात्-निউक्षिनए य प्रभवामी-দিগের প্রতিনিধি সভা আছে, তাহাতে প্রীলোকগণ ভোট বা মত দিতে পারি-दिन अ विषय अक आहेन विधिवक

रहेग्राष्ट्र। देश्मत् आक्रिश्व हेश रहेम না 1

लाटहादत विधवा विवाह-ভারত ভগিনীর সম্পাদিকা হরদেবী লাহোরের একটা বিদ্যাবতী সম্ভ্রাস্ত কায়স্থ কলা, কয়েক বংসর হইল ইনি বিলাভ প্রিদর্শন ক্রিয়া আসেন। একজন স্বজাতীয় বারিষ্টারের সহিত ইহার বিবাহ হইয়াছে. এই সংবাদে আমরা পরম স্থা হইলাম। জগদীশ্বর নবদম্পতীর কল্যাণ করুন।

মঙ্গল গ্রাহের স্থার-এবার আখিন মাদে এত গ্রম হইয়াছে, যে বড় গ্রীম্মের দিনেও তত হয় নাই। ইহার কারণ মঙ্গলগ্রহ আমাদের পৃথি-বীর খুব নিকটে আসিয়াছে। মঙ্গলগ্ৰহ আজি কালি জ্যোতিৰ্বিদ-দিগের আলোচনার একটা প্রধান বিষয় হইয়াছে। আমরা স্থানাস্তরে "হিতবাদী" হইতে ইহার সম্বন্ধে একটা প্রবন্ধ উদ্ধৃত কবিলাম, পাঠিকাগণ তৎপাঠে উপক্ত হইতে পারিবেন।

নাম-যত্ত।

(প্রাপ্ত)

শভাষ্তে ধ্যান, ক্লিণা, সমাধি; **ट्यांडांब वकामि:** धवर दाशदत श्रुक्तिप्रयानि चात्रा माधकशन পাইতের: '-কলো তদ্ধরিকীর্ত্তনাৎ।" क्रिक्टिश क्रियन श्रिताम कीर्जन बाता त्नके अन्य काश्वि स्व ।

"इरत्रनीय इरत्रनीय इरत्नीरेयव दक्वलम । কলো নাস্ভ্যেব নাস্ভ্যেব নাস্ভ্যেব গতিবক্তথা ॥"

हिम्माद्वत वह डिक गांधकशन्तक पृष्ठक्षा बानांदेख्टहन त्य, द्रिनाम ভিন্ন কলিতে ডক্কের অন্ত গতি নাই।

শীমৎ রূপ গোরামী বন্ধত শালত
মাধব" নামক গ্রন্থের মঙ্গলাচরণের
একটী ল্লোকের মধ্যে এই অভিপ্রায় প্রকাশ করিয়াছেন যে, ভগবান্
সত্যাদি যুগত্তয়ের জীবগণকে রূপা
করিয়া যে নাম ধর্ম প্রদান করেন নাই,
কলিযুগের ক্ষীণপ্রাণ, হীনবল জীবগণকে
রূপা করিয়াই সেই নামধর্ম প্রদান
করিয়াছেন।

উপরি উক্ত বাকোর মধ্যে একটা প্রশ্ন হইতে পারে। প্রশ্নটা এই, পূর্ব কালের সাধকগণকে ভগবান নামধর্ম अमान करतन नारे, उथानि उारामिरगत প্রতি কিরপে রূপা করা হইল ? এই প্রশ্নের উত্তর দিবার পূর্বে একটা লৌকিক ঘটনার অবতারণা আবশুক। যদি কোন ঐশ্বর্যাশালী মহৎ ব্যক্তির সস্তানের পীড়া হয়, তিনি প্রচুর অর্থ ব্যয় क्रिया প্रधान श्रधान চिक्दिनकरक আহ্বান করেন,—মূল্যবান ধাতু ঘটিত ঔষধ সংগ্রহ করেন, তথন যদি কোন ব্যক্তি তাঁহার পুত্রের আরোগ্রা জন্ম একটা সামান্ত টোটুকা ঔষধ দেন, তিনি তাহা গ্রহণ করেন না: বরং টোটুক। ঔষধ ও সেই ঔষধদাতাকে অশ্রদ্ধা করেন। কিন্তু হংখীর সন্তান শ্রদ্ধাপূর্বক সেই ঔষধ সেবন করিয়া আরোগ্যলাভ করে। সেইরূপ সত্যাদি যুগত্রয়ের জীব-त्रम कान, शायना, यात्र रख छ एत्रवार्कनाणि-ध्या धनी हिलन, धन थाकिल यमन একটু অহতার থাকে, ভাঁহাসিগের

ভাহাও ছিল। জীব চিরকালই ভব-রোগে পীড়িত। ভবব্যাধি হইতে মুঞ্জি লাভার্থ জীবের চিরকালই ঔষধ সেবনের প্রয়োজন আছে। তখন যদি তাঁহা-দিগকে অতি স্থপত টোটুকা ঔষধ স্বন্ধপ নামধর্ম প্রদান করা হইত: তাঁহারা কথনই তাহা গ্রহণ করিতেন না। তাহা হইলে তাঁহাদিগের নামের নিকট অপ-রাধ হইত। সকল অপরাধের নিষ্কৃতি আছে, নামাপরাধের নিষ্কৃতি নাই ৷ এই উৎকট অপরাধ হইতে রক্ষা করিবার জন্মই ভগবান দয়া করিয়া তথন তাঁহা-मिश्रं नामधर्म खेमान करतन नाहै। क्लित्र कीरवत रकान मध्य नारे, शाम, ধারণা, যাগ যজ্ঞ, ভজন সাধন কিছুই নাই, তাহারা বড় দীন: বিশেষতঃ ভব-রোগ সাংঘাতিক আকার ধারণ করি-য়াছে,এখন অতি স্থলভ টোটকা ঔষধ নাম ভিন্ন তাহাদের আর গতি নাই। তাই ভগবান পর্ম দয়াল ভজাবতার বেশে কলিতে অবতীর্ণ হইয়া জীব-मिश्र क्यां क्तियां नाम मित्रां एवं। অতএব নামই আমাদের সর্বস্থ।

স্থারসের পর্মভক্ত অর্জ্ন কুরু-ক্ষেত্রের রণভূমি দর্শনে মোহাবিট হইলে ভগবান্ প্রীক্লম্ভ বৃদ্ধে উৎসাহিত করিবার জন্ত তাহাকে উপদেশ প্রদান করেন। সেই স্কল উপদেশ প্রদান করিতে করিতে কোন হলে অর্জ্ন মহা-শরের এমন একটা প্রশ্ন করিবার করেনি লন হইরাছিল বে, বিভিন্ন বিভৃতি বালি .

চিত্রনীর তোমাকে কোন্ কোন্ পদার্থে কোন্ কোন্ বিভূতিরূপে চিন্তা করিব ? কার্মাই ব্রিয় বার দিয়া চিন্ত বহিলু বী হইলে তোমাকে কোথায় কিরূপে পাইব ? ক্রিয় অর্জুনের এই প্রশ্নের যে উত্তর দিরাছেন, শ্রীমন্ভগবদগীতার মধ্যে তাহা বিভূতিযোগ নামে 'আখ্যাত। গীতা পাঠক মাত্রেই তাহা জ্ঞাত আছেন। ভগবান্ তাহার এক হলে বলিয়া-ছেন,—

দ্রুমহর্ষীণাং ভৃগুরহং গিরামন্ম্যেক-মক্ষরম্।

বজানাং জপযজোশ্মি স্থাবরাণাং

হিমালয়ঃ ॥

সকল প্রকার যজের মধ্যে আমিই

অপবজ্ঞ। অতএব নাম কীর্ত্তনই শ্রেষ্ঠ

যজ্ঞ। যজ্ঞ করাই যদি একটা বড় ধর্ম

হয়, তাহাও নামকীর্ত্তন।

স্বয়ং মহাপ্রভু চৈতন্তদেবও শিক্ষা দিয়াছেন,—

্রিষ্টে নাম সেই কৃষ্ণ ভজ নিষ্ঠা করি। নামের সহিত ফিরেন আপনি শ্রীহরি॥"

ি নিষ্ঠা করিয়া নাম লইতে পারিলে কুক মিলে। সাধক কবিগণও ভাবের উচ্ছােদে গাহিয়াছেন,—

সারে ডাক্লে অস শীস্কা করে,

্র একবার ভাক্ দেখি মন তারে। বেশ্বে অনাথের নাথ জগরাথ,

্ত্রী আনাথ ডাক্লে রইডে নারে॥"

শিক্ষিত্র জীবের জায় জনাথ আর কে

শাহে শুক্তএর আমরা যদি প্রাণ

ভরিয়া তাঁহাকে ডাকিতে পারি, তিনি অবশ্রই দয়া করিবেন।

শাস্ত্র ও সাধুবাক্যে যে আভাস টুকু পাওয়া গেল, তাহাতে দেখা যাইতেছে যে, নাম ভিন্ন গতি নাই। যুক্তিও তাই वर्तन,--युक्ति व वर्तन, जीरतत नाम वहे আর গতি নাই। কেননা আমরা তাঁহার যদি কিছু পাইয়া থাকি, সে নাম মাত্র। যিনি যতই বলুন, তাঁহাকে বুঝাইবার জন্ম যতই শাস্ত্রাদি প্রণয়ন করুন, তাঁহার রূপ, গুণ, এম্বর্যা, বীর্ঘ্য, যশঃ, শ্রেষঃ, জ্ঞান, বৈরাগ্য, त्नीन्नर्या, गरिया, गाधुर्यापित किङ्करे বলিতে পারেন নাই এবং বলিতে পারি-বেনও না। বস্তু মাত্রেরই একটা নাম আছে, ইহা স্নাত্ন স্ত্যু, ইহাতে বিচার বিতর্ক, বাদ বিত্ঞা সংশয় অবিশাসাদি কিছুই কুই, তেমনি ভগবানেরও একটী নাম আছে, ইহাতে অবিখাদের কোন হেতু নাই। তাঁহার নাম অনম্ভ হইলেও সাধ্বকর পক্ষে একটা। কেননা সাধ-কের সামের একটা নামের মধ্যেই ভগবানের অনন্ত নাম নিহিত আছে। ভগবানের নাম আছে, এ বিশ্বাস যেমন স্বতঃসিদ্ধ, তাঁহার নাম ও তিনি অভিয় সে বিশ্বাসও তেমনি স্বতঃসিদ্ধ। অতএব নাম ধরিলে তাঁহাকে ধরা যায়, এ কথাটা মনে লাগে। মনে লাগা বা यत्न थता व जन्मे हार्वे नत्र।

া শাধু খক শাৱবাক্য,

মনেতে করিয়া ঐক্য, তবে কর শ্রীক্ষণ ভঙ্গন।"

সাধু নাম প্রচার করিতেছেন, গুরু মন্ত্রক্লপে নাম দিতেছেন, শাস্ত্র নাম-মহিমা ঘোষণা করিতেছেন, যদি মনেও তাহা লাগে, তবে আর কি বাকী রহিল?

কোন বস্তর কামনা করিয়া ভগবদ্ভজন করিলে, তাহা প্রক্রত পক্ষে সেই
কাম্য বস্তরই ভজন—ভগবদ্ভজন নহে।
ভগবানের প্রতিজ্ঞা আছে,—

"যে যথা মাং প্রপদ্যস্তে, তাং তথৈব ভজাম্যহং।"

যে ব্যক্তি যে ভাবে তাঁহার ভজনা করে, তিনি সেইভাবেই তাহার বাঞ্চা পূর্ণ করেন। অর্থাৎ যে যাহা চাহে, তাহাকে তাহাই দেন। "যাদৃশী ভাবনা যশু সিদ্ধির্ভবতি তাদৃশী।"

কিন্ত নিকামচিত্তে নাম ধরিয়া ভাষার করিলে তাহাকে অন্ত কিছু বিশা তুলা-ইতে পারেন না, তাঁহাকে নিজে ভাছার হইতে হয়। তাহার ভবরোগ দুর করিয়া তাহাকে আপনার করিয়া লইতে হয়। অতএব ভাই ভগিনীগণ; আইস আমরা কাতর হইয়া প্রাণ ভরিষা তাঁহার জন্ম তাঁহাকে ডাকি-সকল যজ্জের শিরোমণি নাম-যজ্জের অমুষ্ঠান করি। এমন স্থলভ সাধন হেলায় হারা-ইলে এমন জন্ম আর পাইব না,-এমন দিন আর হইবে না। নিতান্ত পক্ষে হরিনামের বলে মানবজন্ম রক্ষা করিতে পারিলেও এ আমাদের পক্ষে যথেষ্ট। সাধনের দেহ পাইলে ভজনের সময়ও পাইব।

মহামুহূর্ত্ত।

(পূর্বপ্রকাশিতের শেষ)

পঞ্চম পরিচ্ছেদ।

আমার নাম শ্রীসত্যপ্রিয় রায়।
এক্সতে আমি লক্ষ্যহীন, উদ্দেশ্রহীন
জীবন বহিয়া বেড়াইতেছি। আমি
এখন ব্ঝিতে পারি বাক্ষালির মেয়েরা
বিধবা হইলে ত্যাগন্ধীকারপরাম্ণা হয়
কেন ? আমি এখন ব্ঝিতে পারি
বিশ্বশারক্ষীদিশের জন্ত বিনি কঠোর

বৃদ্ধান্ত ব্যবস্থা করিয়া গিয়াছেন, তিনি
"নিষ্ঠুর" না হইয়া ছাদ্যবান্ কেন ?
আমি এখন বৃঝিতে পারি নাম্ব,
সকল পার্থিব স্থুখ সাধের মাধার
পদাঘাত করিতে পালে কেন ? বে,
প্রাণের অধিক জিনিস হইতে বৃহ্নিত
হইয়াছে, যাহার সকল আশা ভর্মার
মূলে বজাঘাত হইয়াছে, প্রকার
অভাবে বাহার সারা জীবন ক্রাক্রী

ছবৈছে লৈ সংসারে কখনই টি কিতে

কারে না। সংসারের উপহাস, সংসারের

কির্মতা তাহার কখনই ভাল লাগে

কা। সে আমার মত ত্বথ ঐশর্য্যের

হাক্ত এড়াইয়া পথে পথে সর্যাসী সাজিয়া

বেড়াইতে চাহে।—নয়তো আমি এ

কর্মে সে সোণার সংসার ছাড়িয়া

সন্যাসী হইলাম কেন ?

আমি এজগতে একজনকে ভালবাদিয়াছিলাম—আমার সংগী, সঙ্গিনী,
বন্ধু সেই এক জনই ছিল। বড় আশা
করিয়াছিলাম লে আমার চিরজীবনের
ছইবে! বড় আশা করিয়াছিলাম সে
বিশ্বজ্ঞাও ছাড়িয়া আমাতে তাহার
অভিত্ব মিশাইবে! স্নেহের তারে আমাদের ছটি প্রাণ গাঁথা ছিল, আমি বড়
আশা করিয়াছিলাম সে বাঁধন অনস্ত
জীবনের বাঁধন হইবে! সেই অনির্বাক্তনীর স্থাথের স্বপ্ন দেখিতেছিলাম!—
নিজে উত্তাবন করিয়া নহে, আমাকে
ভাহার অভিভাবক দেখাইয়াছিলেন!

হায় রে, সে অগ এক মুহুর্তে ভালিয়া গেল! আমার সে প্রাণভরা আশার এক মুহুর্তেই ছাই পড়িয়া গেল! বালালির মেয়ে মুম্র্ আমীর দীর্ঘায় প্রোর্থনা করিতে করিছে সহসা বিধবা হালে ভার প্রোণটা বেমনতর হইয়া বাল, এক মুহুর্তে প্রাণটা তেমনি হইয়া বোলা বিভিন্ন সংসার আমার মুখের বিলা ভালিছার সংসার আমার মুখের

ক্ষা আমার হইবে না! যা যেমন তাহার মেহের শিশুর সংবাদ শোনে, আমিও তেমনি কয়িয়া গুনিলাম, ক্ষা আমার হইবে না! কিন্তু মাভূ-শোকের দীমা এইথানে—আমার শোক অসীম; আমার কাণে আরও সংবাদ পৌছিল "ক্ষমা একজন পরের হইবে—"! कमा এकजन পরের সহধর্মিণী, বহ-যোগিনী, দেবিক।, পুজিতা, তিরস্কারের পাত্রী, আদরের জিনিস সবই হইতে চলিল! আমার ক্ষমাতে সেই একজন পরের বোল আনা অধিকার!—ক্ষমা আমারই ক্ষমা, পুরোহিত ঠাকুর যতই মন্ত্র প'ড়ান, পিতা যতই ক্ষমার হাত জামাতার হাতে দিয়া "অহং দদামি" বলুন, হাতে হাতে যতই দৃঢ় রন্ধন হউক, ক্ষমা তবু আমারি ক্ষমা! যেদিন বনে বনে ফুল তুলিয়া তাহার থোঁপায় পরাইয়া দিতাম, সে দিনের স্থৃতি যতদিন রহিবে, ততদিন আমি ঠিক্ জানিব সে ক্ষমা আমারি ক্ষমা! যে দিন বাঝার কাছে মূর্থতার জন্ম গালি খাইয়া দরলা বালিকা আমার কাছে পড়া শিথিতে আসিত, সেদিনের স্মৃতি ষ্তদিন রহিবে ততদিন আমি মনে মনে ৰলিব সে ক্ষমা আমারি ক্ষমা! যেদিন পকা ময়রাণীর পরু বাঁধিতে গিয়া হুষ্ট **ट्ट**लिए निर्मेड उपहास बानिका निष्कृता रहेशा नाफारेशाहिन, तिहै नव्यादनक मूथथानि यक्तिन मदन शक्रित, क्लिम-विष् अध्याव वारा বলে বলুক, আমি আপনা আপনি বলিব সে ক্ষমা আমারই ক্ষমা!— ইউক্লিডের জ্যামিতির প্রতিজ্ঞা যেমন সত্য, নিউটনের মাধ্যাকর্ষণ ষেমন সত্য, ক্ষমা যে আমারই, একথাও তেমনি সত্য, অভ্ৰান্ত সত্য—কিন্তু কেমন করিয়া সত্য, তাহা আমি বলিতে পারি না।

আমার সেই ক্ষমা একজন পরের হইবে। আমার সহিত তাহার এক-বিন্দুও সংস্রব রহিবে না! তাহার স্থ্ হু:খে সে আমার সহাত্মভূতি লইবে না! আমার স্থুখ হঃথে সে অংশভাগিনী इहेरत ना।-रकतन जाहारे नरह, এक জন পর আসিয়া ক্ষমার জীবন বোল অধিকার করিবে।—আমি আনা সামাজিক বন্ধনের মর্য্যাদা অনভিজ্ঞ नहि, नमाज विक्षव घठा है वात्र नी ह अग्रारम প্রয়াসী নহি, ক্ষমার স্বামীর দেব-স্থথের হিংস্কও নহি. কিন্তু আমার ক্ষমা আমার হইল না কেন ? আমার শৈশব-मरुहती आभात जीवन-मरुहती रहेन ना কেন ? এ তাপদগ্ধ জীবন তাহার শীতল ছায়ায় জুড়াইতে পারিলাম না কেন ?

ক্ষমার বিবাহ হইয়াছে কিনা তাহা আমি জানিনা--সে কথা জানিতে আমার অধিকার নাই। আমি জীব-নের লক্ষাত্রই, আমি পথে পথেই বেড়াইতেছি; এই এক বংসর বাড়ী गारे नारे। बावा, मा मतन करवन শামি চাকরির চেষ্টা করিতেছি কিড

गःगात्राञ्चलक काम क्रेट्ड इहेटवः না। আমি বুঝিতে পারি বে আমি স্বার্থপরতায় কর্ত্তব্যস্তই-কিন্ত আন্ধি কি কর্ত্তব্য পালন করিতাম না প আমি লেখা পড়া শিথিয়াছি--চাকরি করিভাষ পিতা মাতার সেবা করিতাম, বেছলি, কি ভেটুস্ম্যানের একজন লেখক হইয়া স্বদেশের উন্নতির জন্ত আন্দোলন করি-তাম, চির্দিনই আয়োরতি, পারি-বারিক উন্নতি এবং সমাজের উন্নতি চেষ্টার যথাসাধা যত্ন করিভাম-যদি ক্ষমা আমার জীবনের অংশভাগিনী হইত, তবে আমার মত একজন শিক্ষিত যুবকের যাহা কর্তব্য আমি বিশুণ উৎসাহে তাহাই করিতাম। স্থের আশরে সারা জীবন থাটিলেও আমার একট্ প্রান্তি হইত না: আমি স্বার্থপর হইয়াছি সত্য, কিন্তু আমার মনে হয়, আমার মত ভগলা ব্যক্তি আমার মত "স্বার্থপর" হইয়া যায় !— এ কথা সত্য কিনা তাহাও জানিনা।

যাহাহউক আমাকে এবার বাডী যাইতে হইল। বাডী হইতে আমার একটী বন্ধ পত্ৰ লিখিয়াছেন, "ভোমার পিতা একজন দরিদ্রের উপরে বড অত্যা-চার করিতেছেন," আমি বাবার স্বভাব कानि: वाका धनी। अधात्रण धनी वाकित्मत्र यक ग्रेकात्र मिटक खाँकग्रे বড় বেশী। টাকা আছার করিবরি नमत्त्र यांचा महिता थाना, महिता व्यथमार्थका তাহা নাক আৰি সন্নাসী ক্ৰাছি। উপন্ন বে ব্যবহার করেন—সামার ভল

त्याक्षमा अकृ भिकृत्यत्र कायरात्र । व्यामि সিভূনিকা করিনা, হয় তো বাবার অব-ক্ষাপড়িলে আমি নিজেই ঐ রকম ক্ষিতাৰ। কিন্তু এখন আমার প্রাণে বাৰার এ রকম কাজ বড়ই থারাপ লাগে। ভাবিমা চিন্তিমা বাড়ী যাওয়াই ্ৰির করিলাম। যদি আমা হইতে কাহারও একবিন্দু উপকার হয়, তাহা কেন করিব না ?

ষষ্ঠ পরিচ্ছেদ।

াড়ী আদিলাম বটে, এক বংসর পরে আমি বাড়ী আসিয়াছি দেখিয়া মা. বাবা. ভাই ভগিনী সকলেই ্রখুর স্তুষ্ট। আমার বিবাহের সম্বন্ধ **িকোথায় হইতেছে, তাহাও শুনিলাম।** শুনিয়া মনে মনে হাসিলাম। সবই ভিনিলাম, কেবল একটা কথা জিজ্ঞাসা করিতে পারিলাম না ক্ষমার ছইয়াছে কি না ?-পনর বছর বয়সে হিন্দুর মেয়ে অবিবাহিতা থাকা অসম্ভব, তাই ক্ষমার বিষয়ে আমি কিছুই दिनिनाम ना ।

্ত এখন আমি যে কাজে আসিয়াছি, **ভাহার অনুস্কান লইলাম।** সে বড ভরানক ঘটনা। আমি হতাশপ্রায় क्रेनाम।

সনাতন জাতিতে গন্ধবেণে। আমা-तीय बोबादा छाहात श्रुकशानि मार्कान ক্রিমা প্রভাব পূর্ববংসর দোকানের

সমস্ত টাকা, এবং আমার পিভার নিকটে নিজের বাড়ী বন্ধক রাখিয়া म्पूर्ण होका नहेंग्रा (नुहन स्वतामि কিনিবার আশয়ে) নৌকাযোগে কলি-কাতায় যাইতেছিল, নৌকা সে মারা যায়। এদিকে সনাতনের পাঁচটী শিশু সস্তান, উপার্জন করিবার *(लाक (कश्हे नाहे—जाहात्र खी (महे* অনাথা বিধবা যে কত ক্লেশে সস্তান-দিগকে পালন করিতেছে, তাহা একমাত্র ভগবান জানেন। যাহাহউক বাবা সনাতনের মহাজন। মহাজন থাতকের অবস্থা বুঝিয়া টাকা চাহে না, —কিন্ত টাকা পাইবার কোনও উপায় নাই দেখিয়া বাবা সনাতনের স্ত্রীর বাড়ী বিক্রম করিয়া তাঁহার টাকা লইবেন. এই রকম স্থির করিয়াছেন। আমার বিবেচনায় এ বিষয় যতই ভয়ানক হউক না কেন, বাবার বিবেচনায় অবগ্র হাযা। একা বাবা কেন, বাঙ্গালার অধিকাংশ মহাজনের অবস্থাই এই রকম—আমি যদি মহাজন হইতাম, তবে হয় তো এই রকম কাজই করিতাম !—আমি বাবাকে নিন্দা করি না।

কিন্তু নিদা করি আর না করি, আমি যাহা অভায় বলিয়া বুঝিয়াছি, আমি যাহা "নিষ্ঠুরাচরণ" ভাবিয়াছি, তাহা क्रविटिं वार्वाटक कथन्ट मिव न।। আমার নিজের মাত্র ক্তি হইলে— क्रमारक विवाह कविवातः मञ्ज किहू দ্বিদের ক্রিলের ক্রমাতে সনাতন, বরের হুইলে বার্বার সভটের ক্রিক্টি ব্যাস্থার

ভাগে করিতাম! কিন্ত যে কাজে পরের সর্বানাশ হইতেছে, যে কাজে একজন আশ্রয়হীন ইইতেছে, সে কাজ বাবাকে কথনও করিতে দিব না।

বাবা যখন আমাকে এ সম্বন্ধে কিছুই বলিলেন না, তথন হঠাৎ কিছু বলিব কি না?—এই কথা ভাবিতেছি, এমন সময়ে শুনিলাম বাবা লোক জন সঙ্গে করিয়া সনাতনের বাড়ী গিয়াছেন। শুনিয়া আমিও চলিলাম। আমার ইচ্ছা একটু অন্তরালে দাঁড়াইয়া আগে ঘটনাটী দেখিব।

मश्रम পরিচ্ছেদ।

গঙ্গাদিদি ডাকিল "দিদিমণি!" আমি উত্তর করিলাম "এই যে!"

গঙ্গা। তুই কুমারী কন্তে, তোর এইরূপ, এই বয়স, তুই আমার সাথে এতটা
পথ চলে এলি, কর্ত্তাবাবু শুন্লে না
জানি কত বোক্বেন। আমার তো ভয়
কচ্ছে, বিশেষ তিনিবাড়ী নাই।"

গঙ্গাদিদির কথা শুনিয়া আমি হাসিয়া ফেলিলাম, বলিলাম, "আমি তো কোনও অস্তায় কাজ করি নাই—এমন হংথী-দিগের এমন বিপদের দিনে যদি যথা-সাধ্য উপকার না করি, তবে বাবা আমার কত মনোবেদনা পাইবেন।—তা যাক্, গ্লাদিদি তুমি সেই কর্তাবাবুকে আমার কথা বলু গিয়া।"

्रवित्र विक्रिय वाष्ट्रिय वाष्ट्रीय विक्रिय व

ক্ষণের মধ্যে একজন বাটি বংসর বর্তনর অর্থচ সবল হুস্থ দেহ ভত্রলোকের সহিত ফিরিয়া আসিল।

যিনি আদিলেন, তাঁহাকে আমি
চিনি। থুব ছেলেবেলায় তাঁহাকে দেখিয়াছি। তিনি প্রামের একজন মাঞ্চ
গণ্য প্রসিদ্ধ ব্যক্তি; আমি তাঁহাকে
দেখিয়া সমন্ত্রমে প্রণাম করিয়া এক পাশে
দাঁড়াইলাম।

তিনি সেহোৎফুল চক্ষে আমার মুধ পানে চাহিয়া বলিলেন, "আমি নীলরতন রার। তুমি কি মাজগদীশ বাবুর মেয়ে? তোমার নাম কি ক্মাশীলা?"

আমি। আজে।

তিনি। তুমি কি এই বাড়ীট কিনিতে চাহিয়াছ, মা ?

আমি। আজে।

তিনি। তুমি কিনিতেছ কেন মা, তোমার পিতা আসেন নাই কেন ?

আমি। বাবা বাড়ী নাই, তাঁহার এক বন্ধুর কভার বিবাহে নিমন্ত্রিভ হইয়া গিরাছেন; আসিতে ছই একদিন বিলম্ব হইবে।

তিনি। এ বাড়ী আমি তিন শত টাকায় বেচিব, তাহা তুমি দিতে পারিবে মা?

আমি। আজে তা পারিব।

কর্তাবাব আমার কথার বিধাস করিতেছেন না দেখিরা আমি আঁচন থেকে মুক্তার মালা পুলিরা ভাষাকে লেখাইরা বলিলান, এ হারের মুক্তাইর শুকু টাকা, এই হার রেচিয়া আপনার টাকা দিতে পারিব," ওনিয়া তিনি বিশ্বিত হইলেন; বলিলেন, "মা, গায়ের প্রহনা বেচিয়া বাড়ী কিনিতেছ, এত প্রয়োজন কেন ? এ বাড়ী লইয়া তোমরা কি করিবে ?"

দায়ে পড়িয়া সত্য কথা—সকল কথা বিলিলাম। "আজে এ বাড়ী কিনিয়া সনাতনের জীকে দিব," শুনিয়া তিনি ধানিকক্ষণ যেন অবাক্ হইলেন; শেষে বালিকেন, "সনাতনের স্ত্রী তোমার কে বে, তাহার জন্মে তিনশ টাকা দিতেছ—

आमि धीरत धीरत উত্তর করিলাম, "আজে এ হার আমার এতদিন ছিল না, আমার বাবার এক মাদী—তিনি নি:সন্তানা, বিধবা, থুব বড় লোকের স্বী ছিলেন। এবার ওলাউঠা রোগে ভিনি মৃতপ্রায়া হইয়াছিলেন, বাবা ও আমি যথাসাধ্য তাঁহার সেবা শুশ্রুষা ক্রিয়াছিলাম। তিনি আরাম হইয়া স্বেশ্হার সরপ এই মুক্তার মালা विद्याद्वन । देश এতদিন ছিল ना, আমুমুরাও ইহার অভাবে কোনও কঠে शक्ति साई। आंकि इहे निन मनाज्यनत ক্লী আশ্রমহীনা হইয়া আ্মাদের বাড়ীতে बरिम्राष्ट्र, आगात रात शहेरा यनि ভাৰার স্থাপ্রয় মিলে, তাহা হইলেই এ হাল সাধক হইবে, আমি সেই জন্মে व उक्ते कार्यना कतिएक है।"

ক্ষিত্রি পালিক্ষাণ পরে ব্রিপ্রের,

"কি বলিলে মা, আবার বল, ভোমার বাবা কি তোমাকে এ ব্যয়ের জন্তে তিরস্বার করিবেন না ?" কুতাঞ্চলি হইয়া বলিতে লাগিলাম. "বাবা, অপব্যয় করিলে তিরস্কার করেন. বাবা বলেন "যে অপব্যয় করিয়া পরের গলগ্রহ হয়, সে পাপের স্রোভ বেশী করে" সেই জন্ম আমি অপব্যয় করি না। তবে এরকম ব্যয়ে বাবা কথনও গালি দিবেন না, কারণ বাবা আমাকে শিখাইয়াছেন, মাসুষের গৃহাশ্রম নিজের জন্ত নহে, সকলের মঙ্গলামুঠানের জন্ম, বাবা আমাকে শিথাইয়াছেন, দ্রিদ্রদিগকে রক্ষা করা ধনীদিগের এক প্রধান কর্ত্তব্য, আর বাবা আমাকে শিখাইয়াছেন, কর্ত্তব্যপালন করাই মনুষ্যত্বের প্রধান উপকরণ। আপনি জানেন, এ ব্যয়ের জন্ম আমরা দরিদ্র হইব না।"

তিনি অনেককণ কথা কহিলেন না;
তার পরে গদগদকণ্ঠে বলিলেন "মা!
এ জগতে তোমার পিতাই ধন্ত! তাঁহার
প্রদত্ত শিক্ষায় তুমি বালিকা হইলেও
এমন মহৎ জীবন লাভ করিয়াছ!
আমাদের ছেলে মেয়েদের আমরা গহনা
দিয়া পোষাক দিয়া সাজাইয়াছি ক্ষার
তোমার পিত্দেব অম্লা জ্ঞান মর্ম
রত্বে তোমার হাদ্য ভ্যিত করিয়াছেন!
মা! আমি বয়সে প্রাটন হুইলেও
এত্তিন অক্ত বিগ্রু ক্ষিয়ার মানি

छंच वृताहिया नियाष्ट ! এই এক मूहार्ख मा, जुमि आमात त्य जिनकात कतिशाह, আমি জন্ম জনান্তরেও সে খণ শোধ मिट পाরিব ना। এই মুহুর্টে বৃথি-याकि मा. "जीनिका जीनिका" विवश বাঙ্গালীর ছেলেরা কেন কেপিয়াছে। এই মুহূর্ত্তে বুঝিয়াছি মা, প্রকৃত স্ত্রীশিক্ষা माधिक इहेरनहे এ দেশ यथार्थ উन्निक লাভ করিবে। এই মুহুর্ত্তে বুঝিয়াছি মা, টাকা কড়ি স্বই তুচ্ছু, মহত্তই মান-বের প্রার্থনীয়! এই মুহুর্তেই বুঝিয়াছি মা, মানবের গুহাশ্রম নিজের জন্মে নহে — नकरनत मक्नार्कात्म करण, प्रतिष-**क्रिशाक तका कता है धनी फिरशत अधान** কর্ত্তব্য, কর্ত্তব্যপালন করাই মহুযাবের প্রধান উপকরণ। যে মুহুর্ত্তে এত শিক্ষা পাইলাম মা, সে মুহূর্ত আমার জীবনের চিরম্মরণীয় মৃহর্ত-সে মুহুর্ত আমার মহামুহূর্ত্ত ! আমি দোণার অক্ষরে এই মহামুহুর্ত্ত লিথিয়া রাখিব, এ জীবনের এই মহামুহূর্ত্ত বাকী কয়েক দিন কুটাইব ! করিয়া আনন্দে মা, আমি বিষয়াসক্ত অর্থপিশাচ, আমি তোমার পিতার মহব বুঝি নাই, তাই ধনলোভে তোমার মত রাজলন্মীকে পুত্রধু করিতে চাহি নাই—মা তোমার কাছে কুতজ্ঞতার চিহুস্বরূপ मनाउद्मन श्रीत्क ववाड़ी मान कतिगाम, ভাহাৰিগকে ৰূপ হইতে মুক্ত করিলাম— তোৰাৰ বাবা কি এ নরাধ্যের প্রাকৃত बरायां क्या क्षित्रत्व वा !'- खायांक

পুত্রবধ্ করিয়া কি আমার জীবন সকল করিতে দিবেন না ?"

লজাতে আমার মাথা কাটিরা পাড়িতেছিল, আনন্দে আমার চল্ফে ধারা বহিতেছিল, আনি সেধানে দাড়াইতে পারিলাম না—সরিয়া আদিলাম। এ মুহুর্জ বাস্তবিক আমারই মহামুহুর্জ, এই মুহুর্জে আমি ঠিক্ বৃঝিতে পারিলাম "যে ব্যক্তি ভগবানের কাজে আমু-সমর্পণ করে, সে যতই কুট হউক না কেন, এক দিন কৃতকার্য্য হইবে।

বাড়ী যাইবার জন্ত আমি আরু গলাদিদি আদিতে ছি, সহসা পথে এক জন দাঁড়াইয়া আছেন দেখিলাম। যিনি দাঁড়াইয়াছিলেন, তিনি বলিলেন, "কমা! ধন্তা তুমি! তোমার সংসাহস, তোমার হির চিত্ততা, তোমার কর্তব্যনিষ্ঠা দেখিয়া আমি আজি নিজের জ্বাটী ব্রিলাম।—আমি রাশি রাশি প্রক পড়িয়া যাহা শিখিতে পারি নাই, আজি এই মুহুর্ত্তে তোমাহইতে তাহাই শিখিলাম; এ মুহুর্ত্ত আমারই মহামুহুর্ত্ত !"

এ মধুর স্বর অনেকদিনের পরে আমার কাণে পৌছিল। আমি কেমন যেন জড় সড় হইরা গেলাম, একটীবার চাহিতেও পারিলাম না, একটী কথা কহিতেও পারিলাম না,

বিনি ঐ কথা কর্টী বলিলেন,
তিনি আর একট্ও দাড়াইলেন না—
অক্ত পথে চলিরা গেলেন। তথ্ন বলাভিতিত্রিলিন, "তোর এ কেবন বার্টি

कांत्रण कि ? अरमरक वरणम, अथाम-कात উद्धिम नामवर्ग এवः मिट कम्र देश নাৰা দেখাৰ, এ অহুমান অন্তায় বলিবার क्लान कांत्रन द्रम्था यात्र मा।

্র মঙ্গলের আর একটু বিশেষক আছে। देशंत्र मर्साक मनास्त्रान माला **রেজা** রেথা দেখিতে পাওয়া যায়। रेशांक मानतामित त्य वर्ग शहे मार्ग **भा**षा (त्र के वर्णत व्यर्था ए मागखनि कनपूर्व थान। शानखनि প্রস্থে প্রায় ৬০ মাইল এবং সাগর হইতে সাগরান্তর বিস্তৃত। দাগ-গুলি এরপ সরলভারে কাটা যে, **ांंश** देनमर्शिक वित्रमा विश्वाम हम्र ना । তাহা উচ্চ শ্রেণীর বৈজ্ঞানিক জীব কর্তৃক পনিত বলিয়া জ্ঞান হয়। আনাদের বিশ্বরহন্ত ভাবিতে গেলে হদয় মন একে-আটলাণ্টিক, পাসিফিক প্রভৃতির ভায় বড় বড় মহাসাগর মঙ্গল গ্রহে। হইতে উদ্ধৃত।

নাই. ইহার সাগরগুলি আয়তনে অপেকারত ছোট।

মঙ্গল বয়সে পৃথিবী অপেক্ষা প্রাচীন। পৃথিবী অপেকা মঙ্গল কোট কোটি বৎসরের বড়। স্বর্গীয় জ্যোতির্বিৎ পণ্ডিত প্রক্টর এজন্ত বলিয়াছিলেন যে, यि भन्नत्म दर्गान जीव थात्क, ज्दर তাহারা বৈজ্ঞানিক উন্নতি দম্বন্ধে আমা-দিগের অপেকা অনেক শ্রেষ্ঠ। যদি তাহাই হয়, তবে উপরে উল্লিখিত থালগুলি যে তদ্রপ জীবের থাত, তাহা অবিখাদ করিবার কোন কারণ নাই। আর মঙ্গলবাসীরা যে, আমাদিগকে বৈহ্য-তিক সঙ্কেত করিতেছে, তাহা বা বিখাস না হইবে কেন? বাস্তবিক বারে অবসন্ন হইয়া পড়ে।" হিতবাদী

ব্ৰত।

ত্রত গ্রহণেতে छेमां भीनी वन करव १ করি প্রাণ পণ পরহিত ব্রত शोलन करत्रह्म मरव। > ष्पणिबिदमवात्र 🙀 ष्यञ्जन ভবে। রোগী শুশ্রবায় প্রাণ **(एट्ट अका**ज्दत जातर्ज जनना : ু ভূলি সার্থ অভিমান। ২ দীন হংশীৰত পাড়া প্ৰতিবেশী ে শেৰেছে সাহায্য কভ,

ভারত রমণী | রমণীর কাছে অভাবে বিপদে দিবানিশি অবিরত। ৩ কোথায় সে ব্ৰত, কোথায় সেদিন. वर्षित क कादा ठाय ! (আজ) ভারতের নারী ব্রত পরিহরি রত ভোগবাসনায়। 8 विश्वरी जातक जाइंग जारीन, किस रम समग्र करे ? शत क्रांथ त्मर्थ কাঁদে কার প্রাণ ?

(ভবে' ভেবে ऋध हरें। ৫

क्षपत्र कातत्व कात्नत्र श्रेष्ट्रन प्राप्तत्र पृष्ण कतिहम् विक्र कृष्टिटल्ट मिन मिन, কিন্তু সেম্বতা সেমহাপ্লাণতা বিশ্বতি দাগরে লীন! ৬ পায় পড়ি বোন, শোন ছটো কথা | (দেখিয়ে তোদের পরহিত ত্রত্ত यमि ভाननार्ग मत्न,

বধির রবি কেমনে ? ৭ আর্য্য নারীগণ যেত্রত পালনে "নব্যা রমণীরা ভোগ বিলাসিনী"

এদেহ করেছে পাত, পাল বোন দিন রাত। ৮

জীবন পরের তরে, সাধ সবে ঘরে ঘরে। ১

প্রেমের প্রতিমা স্নেহের প্রতলি । এ নশ্বর দেহ একদিন নাশ দয়ার আধার তোরা ; তোরা নাকরিলে দীনের কল্যাণ তবে কেন আর দেহের পতনে কোথা যাবে অন্ধ থোঁড়া ? ১০ ' করিতেছ এত ভন্ন ? ১৭

তাই বলি বোন কুদ্র সীমা ছাড়ি গতীর বাহিরে আরু, মাতিয়ে পর্সেবার। ১১

ফিরাও কুপণ হতে, রোগি-সেবা মহাব্রতে ,।১২

· ছভিক্ষেতে কর দান, (দেখুক জগৎ কেমন উদার ভারত নারীর প্রাণ। ১৩ স্থকবি গাঁথিয়ে গাখা তবে দিস্কাণ ভায়ের কথার ভায়াক সরারে দেশে ও বিদেশে তোদের গুণের কথা। ১৪ আহা কি কঠিন প্রাণ। দে ব্রত আবার করিয়ে গ্রহণ পর হু<mark>:খ হেরি নহে দে কাতর</mark> কপৰ্দক নাহি দান।" >¢

ভালবাসা দিতে জন্ম নারীর, এ হুর্নাম আর সহিতে যে নারি রমণীর কুৎসা গান ! পরহিত রূপ মহা শাধনায় বুচা একলক জগতের কাজে मिटग्र सार्थ विमान। ১७

পাইবে নাহি সংশয়,

জ্বস্ত অন্বে যে দেশের নারী পুড়িয়া হইল ছাই, বিশ্বপ্রেমে প্রাণ চেলে দে সবাই বি দেশের নারী মরিতে কাতর কেনরে গুনিতে পাই ? ১৮

বট্লার হয়ে অভাগিনীদের তাই বলি বোন্ একা বলি খবে ভূঞ্জিবে অতুল স্থ, काउँनात स्टब्स् यां अपूर्व (पटन स्टब्स केंपानीनी मा'त आर्थनाटप , ভারত রমণী কোমল হৃদয় তার, कारम शत्र करथ ज्ञि यथ जाननात । २०

नरह त्म ছाँ हित्र, जानित्व त्मिन পর্হিত ব্রত পালন করিবে সবে. হয় খ্রিয়মাণ | আবার তাহারা রুমণী সমাজে जामर्ग इटेरव छरव। २১

বাঙ্গালা প্রবচন।

यः ।

- ১। ফকীরে ফকীরে ভাই ভাই, ककीरतत ताजव मर्ख हैं है।
- ২। ফকীরী করা গোঁসাই বড়ই কঠিন, ফকীর পথের তৃণ হ'তে হীন।
- ত। ফল ঈশবের হাতে।
- ৪। ফল ফল কদলীর ফল. সেবার নারী আর ইন্দুজল।
- । ফলের মধ্যে আম ফল. স্থন্দর নারী আর গঙ্গা জল।
- ৬। ফলেন পরিচীয়তে।
- ৭। ফতোবাবু।
- ৮। ফাঁকা আওয়াজ।
- ৯। ফাঁদ পেতে ফাঁদে পড়া।
- ১০। ফাঁপা টেকীর শব্দ বড।
- ১১। कौश्रद मानानी।
- ১২। ফালে আজ্জায় তুলে বেচে, তার বাড়া কি ফদল আছে ?
- ১৩। का खरन जा खन टेव्ह गांगे.
 - বাশকে রেখে বাঁশের পিতামহকে काति।

- ১৪। ফাল্কনে বিগুণ শীত, ধরতর ধরা।
- ১৫। ফিকীরে ফকীর।
- ১৬। ফি হাত মাছের মডো।
- ১१। कृष्टिना त्करम, कृतात्न वार्ष।
- **১৮। कृ** जे काष्ट्रा।
- ১৯। ফুৎকারে পাহাড় উড়ান।
- २०। क्रॅं निष्य इथ था उमा।
- ২১। ফুরণ কাজ।
- ২২। ফুলে নাই গন্ধ, চোথ থাকৃতে অন্ধ।
- ২৩। ফুলের ঘার মৃচ্ছ। যায়।
- ২৪। ফুলের মধ্যে মালা,
 - বাসনের মধ্যে থালা। कू देखन याद्या भागा।
- ২৫। ফুলের শোভা ভোমরা, গাইয়ের শোভা চোমরা।
- ২৬। ফেন দিয়ে ভাত খায়, গলে माद्र परे. মেটে হঁকায় তামাক থায়, আমার গুড়গুড়িটা কই।
- २१। त्कोञ्जमात्री (श्रमामा।

শিশুর জন্মদিনের উপহার।

২৩শে ভাদ্র, ১২৯৯।

(नथा।

(3)

বে আলোক প্রীতি আশা
হাসি প্রেম ভাল বাসা

মিলনের স্থিতি লয়,—ভুবনে তরঙ্গময়!
তার(ই) বিন্দু বিন্দু মিশি,
কুদ্র ঢেউ পরকাশি
আসে সংসারের পারে—ক্ষণপরে যায় স'রে
ঘাত প্রতিঘাত স্থান
জনম-মরণ-প্রাণ!
উচ্চ কত প্রহেলিকা—প্রাণে তার আছে

অই নৃত্য—অই ধ্বনি জীবনের থেলা গান!

সেই থেলা সেই,হাদি,
সেই গীতে দিবানিশি,
আজি বরষের পরে,—কত প্রাণ মুগ্ধ ক'রে
শারদ জ্যোছনা রূপে
আধারের আলো রূপে

মারের নয়নমণি—সদীম সৌলর্য্য থনি !
আয় কাছে আয় মোর
আজি জন্মদিনে তোর

গাইবরে ভ'রে প্রাণ,—দেই মরমের গান আনন্দে বিরলে বসি আয় কাছে আয় মোর!

> (৩) জনস্তের শিশু তুই, জনস্তেতে তোর আশা:

সংসারের গণ্ডীমাঝে—ধূলি মাটি জন্মসাজে
মিটিবেনা থেলার পিয়াস!
আলোকের শিশু তুই!
আলোকে প্রাণের মেলা!
সংসার তামসে ঢাকা,—অই ক্ষীণ আলো
রেথা!

ভয় হয় পাছে তার আঁধারে ফ্রায় থেলা!

(8)

আয় কাছে আয় আয়! নিশি দিন প্রাণ চায় ও ক্ষ্ত্র চেউটা ধ'রে—প্রাণে প্রাণে রাথি পু'রে,

ও যে মন্দাকিনী জ্বেল
স্থাথে নিতি নিতি থেলে !
পাষাণে যদি বা হায়—একবিন্দু প'নে যায় !
দগধ মক্ষর ভূমে
যদি বা জীবন ফলে !

(()

অসীমের স্ফীপত্ত তোররের সদীম প্রাণ !

হর্জ্জর বাদনা মৃলে,—আজি একপত্ত খুলে
প্রেমশিশু ক্ষুত্রতেই !

হণ্ড—হণ্ড আশুরান!

সংসারের বাসুকার—শুকাবেনা ক্ষুত্রকার

> অনস্ত যোগাবে জন অনস্ত তোমার বল!

চাহি অনস্তের পানে

চ'লে যাও অবিরাম !

(৬)

তোর মত কত ঢেউ—

এ সংসারে উঠে পড়ে !

হই পা না যেতে হায়,—অকালে লুকা'য়ে

আঁধারের গর্ভে কত,

এই জনমের মত,

চুপি চুপি ধীরে ধীরে—

কোথায় মিশিয়া যায় !

যার গতি অব্যাহত—

সংসারের বাধা ঠেলি,

মধুর স্বর্গীয় গানে—শাস্তি শীতলতা দানে

প্রেম প্রীতি পুণ্য ফলে,

সাজা'য়ে ধরণীতলে—

স্থ্যু অনন্তের পানে—ছুটে যায় একমনে

তারই(ই) গান তার(ই) নাম—

সদা গীত বিশ্বতলে;

(৭)

অবসন্ধ মৃত প্রাণে আছে যারা পথে প'ড়ে অপ্রেম ঘুণায় ভূলে,— যেওনা তা'দের ফেলে!

কে আছে ওদের ভবে
ধূলিতে কি প'ড়ে রবে !
ওই শুক্ষ প্রাণে দিও—এক বি দু[‡]জল দিও!
জাগাইও জাগাইও—
সঞ্জীবন আশা-ববে !

(b)

পাপের কর্দমে প'ড়ে—
থেই পথ ভূ'লে গেছে,
ধূইয়া নির্মাল নীরে,—বুকে ল'য়ে যেও
তারে!

সংসারের শৈত্যে হার—
যেই প'ড়ে জড়প্রায়,
হৃদয়ের দাবানলে,—বাঁচাইয়া যেও চ'লে!
স্বরগ উন্মাদ গীতে—
মাতাইও সেই চিতে!
তুইরে;প্রেমের শিশু—
লইও প্রেমের কোড়ে!

(&)

তুইরে স্বর্গের শিশু—
মর্ত্ত্যে ত্ব'দিনের থেলা !
এই মরমের গীতি,—দেব হৃদয়ের প্রীতি
শুভ জন্ম দিনে তোর,
এ অমর "উপহার" !
স্বর্গমর্ত্ত্যে মাধামাথি,—দেবনরে
দেধাদেধি.

নলাকিনী ভাগীরথী—
ও প্রাণে মিলন স্থান!
ঈশা বৃদ্ধ মহম্মদ,—নানক চৈতক্ত যত
নিতি আসি নবভাবে—
রচুক্ হৃদয়-ধামে,
দেবের বাঞ্চিত আহা
এই আশা অবিরাম!!

वी थ।

প্রবন্ধ পুরস্কার।

ভ্ৰাতৃ দ্বিতীয়া।

হে অনাদি ভগবন! আমি তোমাকে | নমস্বার করি; যাঁহার অমোঘ শক্তি দারা এই জগৎ উৎপন্ন হইয়াছে আমি সেই অজ পুরুষকে নমস্বার করি, যিনি বিশ্বের উৎপত্তি স্থান, বিশ্ব ও প্রকৃতি নিয়ত ধাঁহার গুণ গান করিতেছে— যিনি এক হইয়াও ত্রিগুণসম্পন্ন (সম্ত. স্থিতি ও উৎপত্তি) আমি তাঁহাকে নমস্থার করি, থাঁহার আদেশে দিবা. রাত্রি, উষা ও সন্ধ্যা স্ব স্থ নিয়মে কার্য্য করিতেছে—বাঁহার আদেশে স্থ্য আলোক প্রদান করিতেছেন, চন্দ্র কর রাশি বিতরণ করিয়া জগৎ উদ্ভাসিত করিতেছেন এবং গ্রহ উপগ্রহাদি যথা নিয়মে কার্য্য করিতেছে, ষড় ঋতু পর্যায়-ক্রমে থাটিতেছে— বাঁহার ইচ্ছায় ধরণী-পুঠে মমুষ্য, পশু, পক্ষী, কীট, পতঙ্গ, সরীস্থপ ও উদ্ভিদাদি অবস্থিত, সন্ত্র-গর্ভে রত্ন, থনিগর্ভে ধাত্মাদি ও গগন-তলে জ্যোতিক্ষণ্ডল বিরাজিত, আমি সেই মহাশক্তিযুক্ত ভগবানকে নমন্বার করি: যিনি জব (সরিৎ সমুদ্রাদিবৎ), निविष् সংযোগে कठिन (পর্বতাদিবং),

*আত্থিতীয়া সম্বন্ধে যে করেকটা রচনা পাওয়া গিরাছে, তন্মধ্যে শ্রীমতী মানকুমারী বহু ও শ্রীমতী কুম্দিনী রারের লেখা উৎকৃষ্ট ও পারিতোযিক-যোগ্য হইয়াছে। কুম্দিনী রায়ের °লেখাটা অপেকাকৃত ছোট বলিরা অথ্যে প্রকাশ করা গেল। বা, বো, স। ञ्चल (टेलियश्रह्मराग्रा घटोनिवर), স্কু (অতীক্রিয় প্রমাণাদিবৎ), লঘু (উৎপতনযোগ্য जुनानिवर), श्वक (হিমাদ্রিবং অচল), ব্যক্ত (কার্য্যরূপ), (কারণস্বরূপ) বিভত্তি অণিমাদি), আমি সেই পুরুষোত্তমকে নমস্বার করি; যিনি পরম পতি, পরম গতি, পরম প্রভু, পরম শক্তি, চরাচর-বিধাতা, অজর, অশোক, অমর, অরপ, অদেহ, অগেহ, অনাদি, পুর্ণাক্তিপুর্ণ, প্রমাতি-প্রম, শুদ্ধাতি-শুদ্ধ, আমি সেই ভগবান অনন্তকে নমন্ধার করি। হে কার্য্যকারণাত্মন অদিতীয় পরব্রশা! (ङ निष्णाप मनीियगणनत्रण कगमानि-কারণ হরি। তোমাকে নমস্কার। যিনি সুলভূত পৃথিব্যাদি ও স্ক্লতম তন্মাত্রা-দির সমবায়স্তরপ চৈত্তময় পরবৃদ্ধ: যিনি প্রকট অর্থাৎ প্রকাশ, নির্বি-कात मिक्किमाननमञ्जलभ ; यिनि मभूमग्र ভূত হইতে সম্পূর্ণ পৃথক্ হইয়াও স্ক্ভিতময়; যিনি বিশ্ব হইতে নিলিপ্ত হইয়াও সমুদয় বিশের নিদান; यिनि জগৎ-জনক অথচ নিজে অজ, যিনি क्रगट्य यापि. किंद्र-निरम यनापि, यिनि क्रामीन, किन्दु न्यू मिही नात, जानि সেই বিশ্বস্থা পুরুষোত্তম ভগবান্ত্ নমকার করি।

লাত্থিতীয়ার নিরম। কার্ডিক

মানের শুক্লা বিতীয়ায় ভাতৃবিতীয়া হয়; এই দিবস ভগিনীগণ নানাবিধ উপাদেয় খাদ্যাদি প্রস্তুত ও রাশি রাশি তাযুল শজ্জিত করেন, পরে পরিষ্কার কাঠাসনে ভ্রাতাকে বসাইয়া কনিষ্ঠাঙ্গুলি দারা সার চন্দনের কোঁটা লাভার ললাটে পরাইয়া দেন, পরে নৃতন বস্ত্র, উত্তরীয় ও উপা-দের থাদ্যাদি থালায় সাজাইয়া ভাতার হত্তে প্রদান করেন। এই সময় অনুজা ভগিনী ভাতাকে প্রণাম করেন, আর জ্যেষ্ঠা ভগিনী ভ্রাতার নিকট প্রণাম ভ্ৰাত্ৰিতীয়া প্রাপ্ত হইয়া থাকেন। উৎসব যেমন পবিত্র, তেমনি উদার। ইহার নিয়ম এই যে প্রথমে প্রতিবাসী দ্রাতাকে কোঁটা দিয়া পরে মাসত্ত, পিসতুত, খুড়তুত, জেটতুত, ভ্ৰাতাগণকে **(काँडी ८५** ७ मा इस, मर्स्टाम्ट्स मरशानत ভাতাকে ফোঁটা দেওয়া হইয়া থাকে। এই ভ্রাতৃদ্বিতীয়াকে চলিত 'ভাইফোঁটা' বলা হইয়া থাকে। অনন্তর ভরিনীগণ স্নানাদি করিয়া গণ্ডুষ দিয়া থাকেন এবং গভুষ দেওয়ার পূর্বে ভগিনীগণ কিছু আহার করেন ন।। খুতমিশ্রিত অন ল্রাতার সন্মুথে রাখিয়া ভাগিনী একটা পাককরা শাক ভাতার ছত্তে দিয়া তহুপরি কাঁচা হুগ্ধ ঢালিয়া বলেন, "প্ৰাতস্তবাহজাতাহং ভূজ্যু ভক্ত-শিদং ওজা। প্রীতরে যমরাজভ যমুনারা चिट्नरंजः॥" त्वाक्षी । जिननी हरेल **"প্ৰাভম্ভবাগ্ৰন্ধাতাহং" ইত্যাদি বলিতে** হয়। ভাষানী যদি কোন নিঃসম্পর্কীয়কেও

ভ্রাতা বলিয়া সম্বোধন করেন, তবে ভাঁহাকেও এইরূপে ফোঁটা প্রদত্ত হয়।

পল্লীর মধ্যে কোন এক বাড়ীতে এই উৎস্ব হইলে বেশ স্থবিধা হয়, কারণ তাহা হইলে সমস্ত ভ্ৰাতা ভগিনীগণকে এবাড়ী ও বাড়ী দৌড়াদৌড়ি করিতে হয় না, আর ভাতাগণের আহারাদির জন্ম যে বায় হয়, তাহা সকল ভগ্নীগণে সমাংশ দিয়া পল্লীর মধ্যে এক বাডীতে পাডার তথায় ক বিয়া আয়োজন ভগিনীগণ লইয়া সকল ভাতা উৎসব কার্য্য সম্পন্ন করিলে বিশেষ স্থার হয় এবং তাহা হইলে ভগিনীগণ যথাসময়ে সকল ভাতাদিগকে ফোঁটা ও গণ্ডুষ দিতে পারেন। ছঃথের বিষয় আমাদের যে সকল ভগিনীর সংহাদর ভ্রাতা কিম্বা একান্নবর্ত্তী খুড়তুত, জেটতুত ভ্রাতা না থাকেন, তাঁহারা এই পবিত্রোৎ-मत्व त्यांशनांन करत्रन ना, देश छांशात्नत কম ভুলের কথা নয়। যাহাহউক তাঁহা-দের সম্বন্ধে আমরা অধিক কিছ বলিতে চাহিনা।

ভাত্ৰিতীয়ার উদ্দেশ্যে। হিল্পগণের
মধ্যে ভাত্ৰিতীয়ার প্রথা যিনি প্রচলন
করিয়া গিয়াছেন, তাঁহার হৃদয় যে সাধারণ লোক অপেক্ষা অনেক উচ্চ সে
বিষয়ে আর সন্দেহ নাই। তৎপরে
যিনি ভাত্রিতীয়ার যথার্থ প্রচারকর্তা—
এই ভাত্রিতীয়ার মর্মা ঘাঁহার প্রশন্ত
হৃদয় অধিকার করিয়াছিল, আমর্
যথাস্থানে •সেই মহাত্মার আলোচনা

कतिय। आमता यनि धारीन हिन्तु-গণের চিরপ্রচলিত ক্রিয়াকলাপগুলির क्न मञ्जभूर्किक अञ्चलान कतिया पिथि, তাহাহইলে বোধ হয় এই বিশ্বপ্রেম-মিশ্রিত ভাত্দিতীয়ার ন্ত্রায় গুলিই সারগর্ভ দেখিতে পাই। কিন্তু আমরা এমন উদার ও পবিত্র ভাত-দ্বিতীয়ার মর্ম ত জানিই না, অধিকস্ক এখন আর পুর্বের ভায় ভাত্বিতীয়ায় কেহ আদর প্রদর্শন করি না। কি কুক্ষণেই আমাদের দেশে পাশ্চাত্যাম্ব-করণ ঢ্কিয়াছে! যে দেশের কবি গাহিয়াছেন, "দৰ্বদেবময়োহতিথিঃ" দেই দেশের ভাতা আজ তাঁহার গৃহলক্ষীর অসন্তোষ জন্মিলে অনাথা ভগিনীকেও এক মৃষ্টি অন দিতে সম্কৃতিত হইয়া থাকেন। অবশ্রুই ইহা পাশ্চাত্য শিক্ষার দোষ নহে, অফুকরণের দোষ, তাহাও আবার মন্দের অমুকরণ, ভাল'র নহে, কেমনা পাশ্চাত্য দেশে কি বিশ্বপ্রেমিক সহদয় ব্যক্তি কেহ নাই ? কত শুত আছেন, তাঁহাদের অমুকরণে চলা ष्यवश्रहे (मारवंत्र नरह, किन्छ मत्नत्र অমুকরণ অধোগতির লক্ষণ ব্যতীত षात किहूरे नरह। ७निश्राहि रेश्ट्रब-গণ নাকি স্ত্ৰী পুত্ৰ ব্যতীত অন্ত কোন আত্মীয়কে পোষ্য বলিয়া মনে করেন না, কিন্তু হিন্দুশাস্ত্র বলেন-

'পিতৃভিভ্ৰ'াতৃভিদৈতাঃ পতিভিদেৰিবৈতথা। প্ৰয়াভ্ৰয়িতব্যাক বছকল্যাণমীক ুভিঃ॥'

মহ ।

ইহাতে বুঝার যে হিন্দুগণ কল্পা, ভগিনী, স্ত্রী ও লাত্বধ্কেও পোষ্য বলিয়া মনে করেন। কিন্তু আজ লাভার গৃহলক্ষীর অসন্তোষ জনিলে অনাথা ভগিনীও লাত্গৃহে স্থান প্রাপ্ত হইতে পারেন না, একি কম হঃখের বিষর! আমরা এন্থলে একটা পূর্বকালের লাভার ভগিনীর প্রতি ব্যবহার আর একটা আধুনিক লাভার ভগ্নীর প্রতি ব্যবহার উদাহরণ স্বরূপ নিম্নে প্রদান করিলাম, প্রথমটা শুনা, দ্বিভীয়টা প্রতাক্ষীকত।

১ম। কোন বাক্তির ভগিনী খণ্ডরা-লয় হইতে পিতালয়ে আসিয়া **অগ্রজকে** প্রণাম করিতে গেলেন, ভ্রাতা ভগিনীকে প্রণাম করিতে না দিয়াই বাস্তভাবে জিজ্ঞাসা করিলেন, তোর কপালে কি ?" ভগ্নী ঈষদ্ধান্ত সহকারে বলিলেন. "দাদা ! এমন ঘরেও আমার দিয়াছেন, তাহাদের একথানিমাত্র মেটে ঘর, তাহার আবার চৌকাট এত নীচু যে আমি আসিবার সময় যেমন ব্যস্তভাবে বাহিরে আসিতেছি,অমনি সেই চৌকাটা-ঘাতে আমার কপাল কাটিয়া গেল, তাই শাশুড়ী ঠাকুরাণী ক্ষতভানে চুণ হসুদ লেপিয়া দিয়াছেন।" ভগিনীর কথা শুনিয়া ভ্রাতার প্রাণে আঘাত লাগিল. ভ্রাতামনে মনে স্থির করিলেন বে, সে গুহে আর ভগিনীকে যাইতে দিবেন লা। অনস্তর বংসরেক্ক ভগিনীকে নিম গৃঁছে রাখিয়া স্থানান্তরে একটা বাটা প্রস্তুত कतियां त्रहे वां की किंगनी क विनाम

করিলেন। এই ঘটনার আমরা যদিও ভামনীকে তাদৃশ বৃদ্ধিমতী বলিতে পারি লা, কিন্ত ভাতা যে আদর্শ ভাতা, তাহার আর সন্দেহ নাই।

ংয়। কোন ভগিনী বিধবা হইয়া আত্রমলাভার্থে ভ্রাতৃভবনে আসিলেন, অমনি ভ্রাতার গৃহিণী তেলেবেগুণে জ্বলিয়া উঠিলেন। ভ্রাতাও আসিয়া ধীরে ধীরে ভগিনীকে বলিলেন, "তোমার এখানে স্থান হইবে না, কারণ তোমার বৌদিদি ক্তু মুখরা।" ভগিনী ভ্রাতার বাক্যে হাপুদ নয়নে কাঁদিতে লাগিলেন, ভ্রাতা কিন্তু নিজের স্ত্রীকে কিছুই না বলিয়া निष्फरमत्र निक्ठेवर्जी कान कूड्रेट्यत বাড়ীতে ভগিনীকে থাকিতে প্রামর্শ **দিয়া নিজে অ**বসর গ্রহণ করিলেন। বৈ ভাতা নিজের সহোদরার প্রতি এই-ক্ষপ ব্যবহার করিতে পারেন, তিনি কি ক্থনও ভাতৃধিতীয়ার মর্ম ব্ৰেন ? কথনই নহে। যে আপন পুল্ৰকে ভাল বাদে না, সে কি অভ্যের পুলকে পুল বলিয়া গ্রহণ করিতে পারে ? যে আপন সহোদরা সহোদরের প্রতি উক্তরূপ ব্যবহার করিতে পারে, সে কি কখনও ৰগংকে ভাই বোন বলিয়া হৃদয়ে স্থান দ্বান করিতে পারে ? কোনও বঙ্গীয় লৈখক বলিয়াছেন, আপনা হইতে পরি-বাৰ, পরিবার হইতে আক্রীয় সজন, आधीत चलन হইতে ব্যাড়ি, ব্যাস্থ ও স্বজাতি হইতে পূৰিবী ভাষানৰ জাতি, যানবজাতি

হইতে প্রাণিজগৎ ক্রমেই প্রেমের বিষয় হইয়া দাঁড়ায়। क्रमग्र अवस्य হইতে ক্রমেই প্রশস্ততর হইয়া এই ক্রম অবলম্বন করে। এন্থলে আমরাও বলি যিনি স্হোদর স্হোদরাকে ভাল বাসিতে না শিথিয়াছেন-- যিনি সহোদর সহো-দরার হঃথে কথনও অশ্রুজল না ফেলিয়া-ছেন, তিনি অনস্তকাল সাধনা করিলেও ভাত্দিতীয়ার মর্ম হদয়সম করিতে পারিবেন না। আর আমরা—আমরা যে এত যত্নে, এত উৎসাহে ভাই ফোঁট। দিতেছি, আমরাও কি ভ্রাতৃদিতীয়ার মৰ্ম বুঝি ? যদি বুঝিতাম তবে সকল ভ্রাতাগণকে সমান স্নেহ চক্ষে দেখিতাম। প্রতিবেশী ভ্রাতা গোপাল দাদার সহিত তোমার পিতার ও ভাতার বছদিন হইতে যে বৈষয়িক বিবাদ চলিয়া আসি-তেছে এবং সেই জন্ত গোপাল দাদার উপর তোমারও বিলক্ষণ বিদেষ ভাব রহিয়চে, অথচ তুমি সেই দ্বেষ রূপ বুটিচক বুকের ভিতর পুষিয়া—মনের ভাব গো়েপন করিয়া বলিতেছ, "ভ্রাতস্ত-বামুজাতাহং ভূজা ভক্তমিদং শুভং" हेजािन, এकवात ভाविया एनथ एनि এই ব্যবহার কতদূর কাপট্যপূর্ণ! প্রতিবেশিনী কামিনীর পিতা কিম্বা বিপক্তাব সহিত খ্রামের ভাতার চলিয়া আসিতেছে; কামিনীর পিতা ক্সাভারগ্রন্ত হইয়া পড়িয়াছেন, কটে করিলে পাত্র স্থির ऋष्ट्र কোন গুৰাম সেই বর

কামিনীর, কামিনীর পিতার ও লাতার। কুৎসা রটাইয়া সেই সম্বন্ধ ভালিয়া দিতেছেন, আর কামিনী যথন খাম কোঁটা দিয়া বলিতেছেন मामादक "ভ্ৰাতন্তবামুজাতাহং" ইত্যাদি. কি শ্রাম দাদা একবার স্নেহদৃষ্টি বিক্ষেপে কামিনীর মুখপানে চাহিয়া কামিনীদের প্রতি বৈরভাব ভুলিয়া গিয়া থাকেন? যাহা হউক আমাদের মধ্যে ভ্রাতা ভগ্নী গণের সম্ভাবের অভাব হইলেও প্রাত্-দ্বিতীয়া উৎসবকে কথনও অনাদর করা উচিত নহে: কারণ কতকগুলি লোক হরিপ্রেমে মত্ত হইয়াছেন, না এইরূপ ভান করিয়া সংকীর্ত্তন করিতেছেন বাস্তবিক উাহাদের মধ্যে আর তাহা প্রেমিকের বিলক্ষণ অভাব. হইলে কি আমরা হরিসংকীর্ত্তনকে ঘুণা করিব ? না ভক্তগণকে ঘুণা করিব ? অবশ্রই আমরা হরিনাম ত্যাগ না করিয়া কপট ভক্তগণকে ঘুণা করিব। ভাল কার্য্যের আলোচনা করাও ভাল, অত্ঞব আমরা চির্কাল এই ভ্রাতৃদ্বিতীয়া আচরণ করিয়া আদিলে কি আমাদের নিম্নতম শত পুরুষের মধ্যেও ভ্রাতৃদিতীয়ার মর্ম কেহ হৃদয়ঙ্গম করিয়া জগৎকে ভাই বোন বলিতে পারিবে ? যথন এক নিমাইয়ের ভাই "বোন" সঙ্গীতের ঢেউ এক প্রাস্ত হইতে অপর প্রাস্তে লাগিয়া-ছিল, তথন আমরা শত শত বাতা ভগিনীগণ জগৎকে ভালবাসিতে শিথিলে জগৎ কি প্রেমতরঙ্গে নাচিবে না ?

व्यवक्र नाहित्त, त्कन माहित्व मा ? আমরা সকলেই যদি সকলকে ভাই বোন বলিয়া ভালবাসি, ও মনে ভঙ্জি স্বাই আপন, পর কেহই নছে, স্বাই মামুষ, সবাই সবার নিকট উপকার ও ন্নেহ মমতা পাইবার জন্ম স্বষ্ট, কেছ কাহারও নিকট হিংসা (श्रुवांकि পাইবার যোগ্য নহে: স্থ হ:থ, শীতা গ্রীম, বর্ষাদি তোমার পক্ষেও বেমন, তেমনি. আমার পক্ষেত্র শোক. যাতনা ও বেদনাদি তোমারও যেমন অমুভূত হয় আমারও তেমনি, তবে তোমাতে আমাতে প্রভেদ কি 🕈 যদি কেহ বলেন যে জ্ঞান ও বিভবাদিতে প্রভেদ থাকিতে পারে, কিন্তু তাহাতে বক্তব্য এই যে উহাত যত্ন, শ্ৰম, ইচ্ছা ও চেষ্টাসাপেক। কিন্তু এমন কেহ আছেন কি যিনি অনুর্গল বৃষ্টিধারায় নগ গাতে দাঁড়াইয়া থাকিয়াও ভিজেন না, বা জীবস্ত ও সুস্পরীর কাটিয়া দিলেও বাঁহার শোণিতপ্রাব হয় না ? অতএব সবাই সবার ভাইবোন, সবাই এক পিতার দয়ায় জীবিত, এক পিতার আদেশে পালিত, এক পৃথিবীতে সবার বাস, এক স্থ্য সকলকে আলো দেয়, এক চন্দ্ৰ-কিরণে সকলের প্রাণ পুলকিত হয়! তবে কেন হুই প্ৰাণ থাকিব? মকলেই একতান, একপ্রাণ হওয়া উচিত, আমার তোমার হওয়া ও তোমার আমার হওয়া উচিত, স্বার প্রাণে সমস্বরে স্কল্কে ভাইবোক विनद्रा मर्त्याधन कदा উচিত, जारा

हरेल आमारित खोठा छिनिनेगरनत শঙাৰ সন্দৰ্শন করিতে শুন্তে দেবতা. গন্ধর্ম, ও কিন্নর মণ্ডলী সমবেত হইবেন, মর্কো স্বর্গের জ্যোতি বিকীণ হটবে---পৃথিবীতে নন্দনের ছায়া প্রতিবিধিত ছইবে। যথন আমাদের প্রাতঃম্মরণীয় নিমাই, পতিত ও ঘূণিত ভ্ৰাতা ভগিনী-প্ৰকে সংপথে আনিয়া পদন্ত ও শ্ৰদ্ধেয় ত্রাতা ভগিনীগণের সহিত মিলিত **ক্ষরিবার জন্ম পথে পথে হরিসংকীর্ত্তন** ক্রিয়া বেড়াইয়াছিলেন, তথন কত পাষাণহ্বদয়ও ভাসিয়া প্রেমস্রোতে গিয়াছিল, রত্বাকর বান্মীকির এক বীণা তন্ত্রী প্রতিবাৎসলা গাহিয়া জগৎকে প্রেমতরকে নাচাইয়াছিল, অতএব আমা-দের ত্রাতৃষিতীয়ার উদ্দেশ্য কি অনস্তকাল

माधन कतिरमे भिक्ष रहेर्य ना १ लाज-দিতীয়া যথন একা চৈতন্তের সাধনায় জগতে সিদ্ধলাভ করিয়াছিল, তথন কি আমরা শত শত ভাতা ভগিনীগণে সাধনা করিলে সিদ্ধিলাভ করিতে পারিব না ? পারিব, কিন্তু তেমন স্থলর, উচ্চ ও বিশাল হৃদয় কৈ ? যদিও আমি আজ "বিষক্তঃ পয়োম্থম" সাজিয়া এই পবিত্রোৎসব ভাতৃদ্বিতীয়ায় যোগদান করিয়াছি, তথাপি কাতর হৃদয়ে বলি হে চৈতন্ত। একবার তোমার দাসামুদাস-দাসীদিগকে তোমার সেই বিশ্বপ্রেমের কণা মাত্র প্রদান কর, যাহাতে আমরা ভ্রাতৃদ্বিতীয়ার উদ্দেশ্য হৃদয়ঙ্গম করিয়া জগৎকে ভাইবোন বলিয়া হৃদয়ে ধারণ (ক্রমশঃ) করিতে পারি।

বাতিঘরের বালিকা।

রবার্ট ম্যানিঙ নামে এক সাহেব একটা ক্ষুদ্র দ্বীপের বাতীঘর-রক্ষক ছিলেন। এই দ্বীপের চারিদিক্ পাহাড়-মর। সমুদ্রতীর হইতে দ্বীপটা তুই মাইল পুরে ছিল। ম্যানিঙের সঙ্গে আর ক্ষেহ ছিল না, কেবল আইডা নামী ৮ বংসরের ক্ষা পিত্ত, ক সহিত বাস ক্ষরিত।

বালিকাটী এরপ নির্জনহানে একাকী পোকিত, ইহাতে তাহার কট্টবোধ হইত, সংশ্বহ নাই, কিন্তু তাহার একটা ছোট বিড়ালছানা ও একটা কুকুর ছিল, সে
তাহাদিগকে লইয়া থেলা করিত।
আইডা এই দ্বীপে থাকিতে অভ্যন্ত
হইয়াছিল, এবং তাহার পিতা প্রাণের
অপেক্ষা তাহাকে ভালবাসিত, এজন্ত
আইডা ছংথের মধ্যেও বেশ মনের
আনন্দে থাকিত।

একদিন প্রাতঃকালে ম্যানিঙ খাদ্য ও তৈল আনিবার জন্ম একথানি নৌকা করিরা সমুক্তীরে যাইতে রাধ্য হইলেন। কল্তাকে একাকী ফেলিয়া যাইতে তাঁহার ইছা ছিল না, কৈছ সমুদ্র বেশ স্থির ছিল এবং তিনি শীন্ত ফিরিয়া আসিতে পারি-বেন মনে করিয়া চলিয়া গোলেন। ঘাইবার পূর্বের্ক কস্তাকে জিজ্ঞাসা করি-বেন, "বংসে, আমার ফিরিয়া আসিতে যদি অপরাহ্ন হয়, তুমি কি ভয় পাইবে?" কস্তা বলিল, "বাবা ভয় কি ? আমি পাহাড়ে চড়িয়া বেড়াইয়া বেড়াইয়, মেঘের চলাচল দেখিব এবং তুমি যতকণ না আইস, থেলা ও আমোদ করিব।" ইহাতে পিতা বড় সন্তুষ্ট হইয়া কস্তার মুখচুম্বন করিয়া নোকা ছাড়িয়া দিলেন।

বাতীধর-রক্ষক তীরে উত্তীর্ণ হইবামাত্র ছর্যোগের লক্ষণ দেখা গেল।
আকাশ অন্ধকার হইল, বাতাস ক্রমে
প্রবল হইয়া ঝড়ের আকার ধারণ করিল।
প্রবল তরঙ্গ সকল তাল বুক্ষের মত উচ্চ
হইয়া ক্ষুদ্র দ্বীপটীর উপর আসিয়া
পড়িতে লাগিল এবং বাতীঘরকেও
কম্পিত করিতে লাগিল।

এখন পিতা ও কন্তার মনের অবস্থা কি, একবার ভাবিয়া দেখ। আইডা প্রথমে বিপন্ন নাবিকদিগের দশা ভাবিল, তৎপরে পিতার কথা ভাবিতে লাগিল। এরূপ বড়ের সময় পিতা নৌকা খুলিয়া আসিবেন না, এই ভাবিয়া মনকে একটু শান্ত করিল। পিতাও প্রথমে বেচারা নাবিকদের কি হইবে ভাবিলেন, পরে স্কুমারী বালিকা একাকিনী সেই খীপে এই ভারতর ষ্টিকার মধ্যে না জানি কি তাঁহার প্রাধের ইচ্ছা একছুটে বাড়ীয়রে উপস্থিত হন, তিনি প্রাণ দিয়াও তাহার জন্ম চেষ্টা করিতে উৎস্থক হইলেন। কিন্তু তাঁহার বন্ধুগণ এরূপ উন্মন্ততার কার্য্য হইতে তাঁহাকে নিবৃত্ত করিয়া ধরিয়া রাখিলেন।

ঘণ্টার পর ঘণ্টা চলিয়া গেল, দিম
অবসান হইল, ক্রমে বাতীঘরে বাতী
জালিবার সময় উপস্থিত। রবার্ট ম্যানিও
এখন ব্যাকুল হইয়া ছট্ফট্ করিতে
লাগিলেন। তাঁহার মনে কেবল এই ভয়
হইতে লাগিল, বাতীঘরের জালোক
অভাবে কোন্ জাহাজ কথন আসিয়া
পাহাড়ে ঠেকিয়া চূর্ণ হইয়া যাইবে—
কত জীবন নই হইবে! অবশেষে তিনি
আর কোন বাধা মানিলেন না, নৌকায়
আসিয়া পাড়ী দিতে উল্যত হইলেন।
কি আশ্রুগ্য, তথন দেখিলেন বড় লঠনের ভিতর দিয়া আলো বাহির হইয়াছে,
বাতীঘরের বাতী জ্লাল্যাছে।

বাতীযরের মধ্যে সাহসপূর্ণ একটা হলর এবং কর্ম-তৎপর ছুইটা হস্ত ছিল। আইডা পিতাকে প্রতিদিন বাতী জালিতে দেখিয়াছে, এবং প্রতিদিন সন্ধ্যাকালে অন্ধকার হইতে আরম্ভ হই-লেই ইহা জালিতে হয় জানে। বালিকা একাকিনী বাতীঘরের সিঁড়ী বাহিয়া উঠিল। ঝঞ্চাবাত বহিতেছে, তর্মক আসিয়া বাতীঘরের উপর আছড়াইয়া পড়িতেছে, সম্ত্র-পকী সকল চীৎকার করিতেছে, বালিকা সকলই ত্নিল, কিছ

ভার পুটিল না। সে মথান্তলে উঠিয়া দেখে রাতী হাত বাড়াইয়া পাওয়া যায় না, একথানি কেদেরা বসাইল, পরে তাহার উপর কতকগুলি বই স্তরে স্তরে সাজাইল, তৎপরে তাহার উপর খোঁড়াইয়া দাঁড়া-ইয়া একটা দিয়েশেলাই কাটা জালিল এবং তাহা বাতীতে দিবামাত্র তাহা ক্ষালিরা উঠিল। এক মুহুর্ত্তের মধ্যে সালোকের প্রভা ঝড় ও তরকের মধ্য দিয়া সম্জের উপর গিয়া পড়িল, আই-ভার মনে কতই না আনল হইল।

কিন্তু আর একজনের প্রাণে আরও অধিক আনন্দ হইল। রবার্ট ম্যানিঙ এখন বুঝিলেন কন্যা নিরাপদ! কন্যা সমল্লো-ঠিত কার্য্য করিতে জানে এবং এত সাহস অবলম্বন করিয়াছে, ইহাতে আপনাকে মহাগৌরবান্বিত মনে করিতে লাগিলেন।

রাত্রি প্রভাত হইতে না হইতে ঝড় থামিয়া গেল। বাতীঘর-রক্ষক পাড়ী দিয়া বাড়ী আসিল এবং আনন্দাশ্রুতে ভাসিতে ভাসিতে ভাসিতে কল্যাকে বুকে করিয়া লইল। তাহার আনন্দ ও গৌরবের যথেষ্ট কারণ ছিল, কারণ সেরাত্রে এই সাহসী বালিকা বাতী না আলিলে অনেক জাহাজ মারা যাইত এবং অনেক লোক জীবন হারাইত। বালিকার একটী কার্য্য ছারা অনেক প্রাণ রক্ষা পাইয়াছে।

শিশু সন্তানের প্রতি মায়ের কর্ত্তব্য।

(গতবারের পর)

বিত মতঃ অভ্যাদ। অভ্যাদ একবার পাকিয়া দাঁড়াইলে তাহা ত্যাগ করা
বছই কঠিন হইয়া পড়ে। এই অভ্যাদ
পঞ্চদশ বংসর বয়দ হইতেই বোধ হয়
পাকিয়া দাঁড়ায়, কেন না পণ্ডিতেরা
রলেয়, "লালয়েং পঞ্চবর্ষানি দশবর্ষানি
হাড়য়েং। প্রাপ্তেড় বোড়শে বর্ষে
প্রমিত্রবদাচরেং॥" অভ্যাদ পরিণত
হইবেই উহা চরিত্র বলিয়া অভিহিত হয়,
কেননা
Man is a bundle of
habits অথবা, "Habit is second
nature" অভ্যাব সম্বানের অভ্যাবের

দিকে মাতার তীব্রদৃষ্টি সর্বাক্ষণ সঞ্চালিত হঁওয়া নিতান্ত আবশুক। পঞ্চদশ বৎসর পর্যান্ত যে বালক বালিকাগণ মাতার বাধ্য ও অহুগত থাকিবে ইহা অসম্ভব নহে। যদিও কন্তাগণ ঐ বয়সে খণ্ডয়াল্রে থাকেন ও সম্ভান-জননী হইয়া পড়েন, তব্ও তথন মাতার স্নেহ ও মাতৃদত্ত শিক্ষাকে তাঁহারা সমধিক আদর ও যক্ত করিয়া থাকেন। মাতা সর্বাদা সম্ভানের প্রতি মিষ্ট ব্যবহার ক্রিবেন, অধিক, অনাবশ্রক আদর বা সোহাগ তাহাদের প্রতি প্রদর্শন করা উচ্চিত মহেন

কোনও অপরাধ করিলে তুমদাম করিয়া শ্রহার ও ঝড় বৃষ্টির মত গালি বর্যণ করিয়া শিশুদিগকে উত্ত্যক্ত করিয়া ক্রোধ শিক্ষা দেওয়া উচিত নয়, বরং ঐ অপরা-ধের দণ্ডস্বরূপ তাহাদের প্রিয় বস্তু হইতে তাহাদিগকে বিচ্ছিন্ন করিলে ও মিষ্ট कथाय डेशरमभ मिटन বিশেষ লাভ করা যায়। শিশু ছরম্ভ হইলে মাতা সর্বাদা যেন তাহাকে বাথিতে চেষ্টা টেহা না করেন। করিলে শিশুর ছইটী বিষয়ে বড়ই অপ-কার করা হয়, প্রথমতঃ ঐ দৌড়া দৌড়ি. ছুটা ছুটি তাহার ব্যায়াম: দ্বিতীয়তঃ তাহার ব্যক্তিগত স্বাধীনতা, সাহস,উদ্যম-শীৰতা, প্ৰভৃতি বিকাশ প্ৰাপ্ত না হইয়া সংকুচিত হইয়া যায়। শিশু দৌড়াদৌড়ি জীড়াকুর্দন করুক, কিন্তু মাতার চকু যেন পাহারা দেয় যাহাতে তাহার আঘাত না লাগে কিয়া যাহাতে দে অক্তকে আঘাত না করে। এইরূপে ভাহারা যে কোন কার্য্য করুক প্রথমে তাহাদিগকে বাধা না দিয়া উৎসাহ দিবেন. আর মন্দ কার্য্য করিতে দেখিলে বাধা **पिरवन**। वाक्षा पियांचे काख बहेरवन ना **े का**र्याद (नांच (नंधांच्या निया (मजन কার্য্য আর যাহাতে না করে সে বিষয়ে উত্তমরূপে উপদেশ দিবেন, আর জননীও সেরপ কার্যা কখনও সম্ভানগণ সমকে করিবেন না। মাতৃ চরিত্রের প্রতিবিশ্ব শস্তান চরিত্রে প্রায়ই প্রতিফলিত হৈয়া পাকে, অতএব যিনি স্থসন্তান কামনা

করেন, তাঁহার নিজে অগ্রে সর্বাঞ্ ভূষিত হওয়া বাই, কেন না বাহার মাতা পিতা ও শিক্ষক অসচ্চরিত্র হয়েন, সেই সন্তান কথনই সচ্চরিত্র হইতে পারে না। মাতা সর্বাদা মনদ কার্য্য সমূহে শিশুর ঘুণা ও সৎকার্য্যে উৎসাহ ও প্রবৃত্তি জন্মাইয়া দিবেন, সন্তানকে ননীর পুতৃন জ্ঞান না করিয়া তাহাকে মহুষ্য জানিয়া মহুষ্যোচিত কষ্ট সহিষ্ণুতা শিক্ষা দিবেন, সস্তানকে অলস অবস্থায় কথনও থাকিতে দিবেন না। আলম্ভ রোগের ভারে মমু-য্যের সর্বানাশ করে, সন্তানকে সৌথীন হইতে দেওয়াও ভাল বলিয়া বে!ধ হয় না। শিশুগণ মাতা কর্ত্তক যেন বাল্যা-বধিই যথোপযুক্ত পরিষ্কার পরিচ্ছন্নতা শিক্ষা করে অর্থাৎ উহাতে যেন শিশুদের রুচি জন্মে। আমি একটা একাদশ মাদের শিশুকে দেখিয়াছি, সে তাহার ছধ থাইবার সময় হইলে. যেখানে ছধ থাকিত, সেই থানে হামাগুড়ি দিয়া যাইত, এবং মাতা যতক্ষণ আসন না দিতেন, ততক্ষণ বসিত না এবং কাষ্ঠাসন ধরিয়া টানা টানি করিত। মাতা পিঁছী দিলে তাহাতে স্থির হইয়া বদিয়া ছগ্ন পান করিত এবং পানাস্তে ছই থানি হস্ত উঁচু করিয়া মাতার দিকে দৃষ্টি করিছে। মাতা যতকণ গামছা আনিয়া **তাহার** হাত মুখ না মুছাইয়া দিতেন, ততক্ৰণ শিশু ঐ অবস্থার থাকিত। ইহা অবশ্রই माजात ७१ मत्मर नारे। धरे, धर्छित আরও হুইটা সন্তান আছে। তাহারী

সংগ্ৰহাকুত বড়,কিন্ত একটা দিনও তাহা-त्यत्र इदिन शास्त्र धुना काना त्निथ नारे अवः বিকাৰে থেলার পর তাহারা আপনা আপ-নিই গামছা জিজাইয়া গাত্র মুছিত,পা ধুইয়া কুতা পায় দিত। ইহারা ৪ বংসর বয়স অভীত হইলে, মান করা, গা মুছা, জুতা পার দেওয়া, কাপড জামা পরার জন্ম **স্থার মাতার** সাহায্য গ্রহণ করে না। পত্ৰৰ মাতা যাহা অভ্যাস করান, ছাহাই সম্ভানের চরিত। বালকবালিকা-पिश्रांक नमग्र नमग्र (थिन एक वा निर्द्धां व सारमान्थामान कतिए ना निया मर्तना পড়াইবার, লেখাইবার চেষ্টা করিলে তাহারা উত্তাক্ত হইয়া পুস্তক ও কালি কলম যমের তুল্য দেখে, মাতাও তাহা-দের নিকট ভক্তির পাত্রী না হইয়া **दक्रवन** खरम्र हरक मुद्रे इहेग्रा थारकन।

লেখা পড়া শিক্ষার উথকারিতা এবং উश निथित जातक जान जान विवय জানা যায় ইত্যাদি মাতা প্রথমে সম্ভানেছ নিকট সময়মত বলিবেন, শিশুর পাঠ্য-পুস্তকের নির্দ্দিষ্ট পড়া করা হইয়াছে, **दिल्ला काराक केंद्रमार किर्दान, निक** যদি নির্দিষ্ট পাঠ শিক্ষা করিতে অনিচ্ছা প্রকাশ করে, তাহা হইলে মাতা নিজে তাহাকে যথার্থ যাহা দিতে পারেন সেই বস্তুর প্রশোভন দেখাইয়া শিশুকে পাঠে মনোনিবিষ্ট করাইবেন। সমাপ্ত করিনে তাহাকে প্রতিশ্রত বস্ত প্রদান করা কর্ত্তব্য, উহা না দিলে শিশুর কোমলান্ত:করণে অবিশাসের, মিথ্যার, জননীর বাক্যে অনাস্থা প্রদর্শন করার বীজ রোপণ করা হয়।

(ক্রমশঃ)

মূতন সংবাদ।

১। ৬ই অক্টোবর ইংলওের কবি-कुनाधांगगा नर्ड टिनिमत्नत मृजूा इहे-য়াছে। ইনি স্থনীতির প্রতিপোষক এবং জীকাভির বিশেষ বন্ধ ছিলেন। ঈশ্বর ভাঁহার আত্মার শান্তিবিধান করুন।

২। ময়মনসিংহের নেত্রকোণা এবং **ভেলা** ২৪ পরগণায় জয়নগর থানা ও ভাষার নিক্টবর্জী স্থান সকলে দারুণ **ছতিক উপস্থিত, হইরাছে** 🖟 সাধারণের माण्या व्यार्थनीत ।

ं । कत्रांत्री निरंशत् द्वांटका नांशांत्र । **उद् >१३२ मार्लि**व २२७, ट्रिटलेस्त मर्स-विश्वम शानिक रत्र. वह कन्न काशाता व

বংসর ঐ দিনে অনেক স্থানে শত বার্ষিক উৎসব করিয়াছেন।

৪। মুক্তিফোজের পতিতা রমণী-দিগের আশ্রম কলিকাতা লোয়ার সাকু লার রোড ৮১ নং ভবনে স্থাথিত হইয়াছেন।

৫। জর্মণির রাজগৃহে ৮৪ বৎসরের পর এক কন্তা সন্তান জন্মিয়াছে, সে আবার ৬ পুত্রের পরে, এইজন্ত কর্মণ मुखा । जानतमारमव कतिबादमन अवः এই শুভ ঘটনা উপলক্ষে অনেকগুলি স্ত্রী-करमिीरक मुक्तिमान कत्रियाह्न ।

বামারচনা।

ভ্ৰাতৃদ্বিতীয়া।

দেবতা ভ্রাত্দিতীয়ে ! প্রণমি তোমায়,
চরণ পরশে তোর,
অবনী আনন্দে ভোর,'
আকাশে অমর-কণ্ঠ আগমনী গায় !
পারিজাত-পরিমল,
মাথা আজি হুদিতল,
পরাণে অমৃত ধারা ঢেউ থেলে যায় !
বর্ষের একদিন,
ভাই বিতীয়ার দিন !
বিশ্ব মা'র স্নেহদিন্ধ উথলে ধরায় !
দেবতা ভ্রাত্দিতীয়ে, প্রণমি ভোমায় !

দেবতা ভ্রাত্দিতীয়ে ! প্রণমি ভোমায়,

আমরা "ভগিনী ভাই"
চিনিনে বুঝিনে ছাই!
আঁধারে রয়েছি প'ড়ে মরণ-শ্যায়!

চাঁদিমা তপন তার।,

এথানে হাসেনা তা'রা, ক্ষেহ মমভার মুখ নাহি দেখা যায়।

এ ৰহা খাশান-ভূমি,

কেমনে আসিলে তুমি,

डेक्निया म्मिन्ट् नव क्याइनाव,

ও পৃত অলের বাসে,

শ্ব-দেহে প্রাণ আসে,

अपूछ-छेक्।म ट्लाटि गना यम्नाव!

ফিরে আদে মেহ প্রীতি,
ফিরে জাগে স্তথ-স্থৃতি,
ফিরে বহে আর্যারক্ত, ধমনী শিরায়!
দেবতা ভ্রাতৃদ্বিতীয়ে! প্রণমি তোমায়।
ত

দেবতা ভ্রাত্দিতীয়ে ! প্রণমি তোমায়, তোমারি করুণা তরে,

বাঙ্গালির শৃষ্ঠ ঘরে,

আনন্দ-উৎসব পূর্ণ, তৃপ্ত সম্দায় : গাঁথিয়া ফুলের মালা,

ভাকে তোমা বন্ধবালা,

কুসুম অঞ্জলি তারা দিবে রান্ধা পা'র ; গলাগলি কোটী বোন.

কোটা কঠে আবাহন.

"আররে অমৃতময়ি! মৃত বাঙ্গালায়" দেবত। ত্রাতৃধিতীয়ে! প্রণমি তোমায়।

8

দেবতা ভ্রাত্রিতীয়ে ! প্রণমি তোমার,

वत्त्रत क्यांत्री मदव,

व्यक्ति (म "छिनिनै" रूरत,

পাইবে জীবন নব, তব কক্ষণায়! জননী, ছহিতা, নারী,

আজি সবে মানে হারি,

"শমন-দমন" হেন কার ক্ষমতার ়

त्क पिल क्लाल (काँगे),

থাকেনা ব্যেক কোঁটা,—
বিমের ছয়ারে কাঁটা" কেবা বিভে পাঁই

একটু মিটার কার,

মুথে দিলে একবার,
রোগ শোক দরিজতা দ্র হ'রে বার ?
ভগিনীরে এ সম্মান,
তোমারি—তোমারি দান!
হেন ঋণ কেবা কবে ভধিবারে পার!
দেবতা ভ্রাত্রিতীরে! প্রণমি তোমার।

৫

দৈৰতা ভ্ৰাতৃদ্বিতীয়ে ! প্ৰণমি তোমার, নারীগণে মহাপ্রাণ, व्यक्ति (पित, क्र पान, "ভূগিনী" হইবে তা'রা তব করণায়! স্বার্থসূত্র পাপশ্তা, নিকাম, পরার্থপূর্ণ, পরের মঙ্গল চাবে ভুলি আপনায়; জগতে ভগিনী-হিয়ে. स्त्रह मिरा श्रीजि मिरा, এক বিন্দু ফিরে পেতে কভু নাহি চা'য়; কুটিল সংসার দুর, শান্তিময় অন্তঃপুর, ভগিনীর বাস সেথা মমতার ছায়: छेतांत्रीनी सूथ इः १४, তথাপি অতৃপ্ত বুকে, জ্রান্তার কল্যাণ যাচে, বিধাতার পা'র:

এ হেন ভগিনী প্রাণ,

व्याच मिति ! कत्र मान,

হীনতা নীচতা ৰেন লাজে দ'রে যার, দেবতা ভাত্ৰিতীরে। প্রণমি তোমার।

দেবতা ভ্ৰাতৃদ্বিতীয়ে ! প্ৰণমি তোমায়, জগতে পুণ্যের সেতু, অনস্ত স্থাথের হেতু, আশার স্বপন স্থা নিরাশ নিদ্রায় ! চরণ পরশে তোর. অবনী আনন্দে ভোর, বহিছে অমৃত গন্ধ হেমস্তের বায়! আজি কি তোমার বরে, বিশ কোটা সহোদরে. ডাকিবে ভগিনী কুলে স্নেহ মমতায়! তোদের পবিত্র বক্ষ, টোচ আশা উচ্চ লক্ষ্য, মলিনতা কুটিলতা ছুঁইতে না পায়! নহে অন্ত নহে পর, ভগিনীর সহোদম, দেবতার শিশু তারা, দেবরক্ত গা'য়! বিশ্ব মার আশীর্কাদ, পুরিবে প্রাণের সাধ! ভগিনীর নিমন্ত্রণ, ভাতৃষিতীয়ায়, আমি দিব ভাইকোঁটা—কে কেনিবি আর

. প্রিন্ধ-প্রসঙ্গ রচয়িতী।

্তি পুজার বন্দে ছাপাথানা বন্দ থাকাতে, আধিনের বামাবোধিনী প্রকাশের

The Bamabodhini Patrika.

The thirteenth anniversary of the Banga Mahila Samaj, founded for the religious, moral and intellectual culture of Bengali ladies, Was celebrated with great eclut on Monday the 19th September, more than a hundred ladies being present on the occasion. Hall and the rooms were festively decorated with palms, ever-greens and There were as usual music members passing a very and songs, pleasant evening in conversation and in renewing acquaintances. A piece was selected from the great epic poem Mahabharata and some young with ease and fluency. recited it Some beautiful microscopical mens and an experiment mony of vibration were demonstrated. Different structures of the human body with their various functions were described with the help of an anatomical chart. The meeting on the whole was The Ladies' Associaa great success. tion during the last decade has done a great educational work among the members. We wish it a long lease of useful life.

It is with great pleasure that we read in the papers of the good work that Miss Read, the lady member of the Labor Commission, is doing as one of the committee of that body. She had a brilliant educational career—in fact she is the only lady who ever took First Class Honors in two triposes. She was a wrangler and for years gained some prizes open to the Girton graduates. She is a noble example of a highly educated lady devoting her time and energies to the good of her sex.

The small but enlightened state of Travancore has initiated a good work by awarding from the lat of next month 4 scholarships to girls educated in Travancore and then qualifying as Medical Practitioners. These stipends, for the present, will be continued for 9 years.

In Europe, men and women never think their education to have been complete with it travelling abroad. Mr. Thomas — k, who was the pioneer of po-

pular excursions to all parts of the world, died recently at the age of 84. He rose from a humble position to a world-renowned fame. A day will also come to the people of India, when they will take to travelling as a part of liberal education.

We congratulate Pundita Rama Bai on the completion of the new home for widows at Poona at the cost of Rs. 45,000. The Pundita by her self-devotion and with the assistance of her American friends, has made the institution a success. It now behoves the people of the great Maharatta country to foster the Saroda Sadanwith all their earnest and faithful cooperation to make it a true shelter for the helpless widows.

The British Medical Association has at length after a good many years' fighting accepted a resolution at their annual meeting, to admit qualified lady practioners to the membership. This is There are a step in the right direction. now hundreds of such medical women in the United Kingdom. Our sisters on this side of the world are also taking to the Medical profession. We wish that our countrywomen properly qualified in the profession should receive the same emoluments as their European sisters. We were sorry to notice the other day that for a Dispensary at Dinajpore European lady's services were wanted. Public spirited citizens, members of District Boards and Municipalities should encourage female Medical education by giving high and responsible posts to their own ladies when found qualified.

Some years ago the import duty on cotton was taken away in the interests of the Lancashire people, entailing a loss on Indian treasury. Now that India, especially Bombay, is competing with Mill Industry in England, a factory act has been passed, curtailing to working hours of the hands. Lating some 300 women, who were so long maintained by working in the factories and have now been thrown out of the lating and have now been thrown out of the cotton.

ployment under the provision of the new Act, petitioned in Guzrati the Bombay Government to consider their case, but without avail. There has been of late so much struggle for existence in the Western Presidency, that the Government should reconsider the matter and give effect to the prayers of the poor women, who have no other means of earning their subsistence.

Last winter many of us had the pleasure of hearing General Booth of the Salvation Army. We are glad to see that the Army has established a home for the helpless in Calcutta. The other day the 25th Anniversary of the Army was celebrated in London. We all admire the self-sacrificing spirit of the members who are doing a good deal by their devotion and earnestness to raise the status of the degraded in society. Our sisters here ought to learn a good lesson from the practical and useful lives of the lady members of the Army.

Lord Tennyson the Poet Laureate died on the 6th October. He was a great advocate of woman's cause, and so we mourn his loss the more.

The Congress of the United States has contributed £ 250,000 in aid of the Chicago fair.

The French had their first Republic established in 1792. That held in September last centenary meetings in commenceration of the same.

Bai Manockbai the mounger daughtgr of Mr. Dadabhai Nawroji M. P. is out of the M. successful candidates who appeared at the last L. M. S. Examination at Bombay. Dadabhai Nawroll M. P. is expected to preside at the enaning National Congress to be held at Allahabad.

How sad is the news of the birth of a female child in a Hindu house! The German Emperor however has been exceedingly pleased to see his 7th child, who is a daughter, born after 6 male children. It is said eightyfour years have elapsed since a Queen of Prussia gave birth to a daughter! The Emperor telegraphed the good news to his grandmother the Queen-Empress of England and released a good number of female prisoners on the happy occasion.

The French have defeated the Dahomeyans of Africa with great loss and are advancing towards their capital Abomey.

The Bokhara, a P. and O. Steamer has been wrecked on its way from Hungkong to India. No less than one hundred and seventy lives have been lost!

Colonel Olcott, President Founder of the Theosophical Society delivered at the Calcutta Town Hall on the 24th instant an eloquent and impressive lecture on "The kinship between Hinduism and Buddhism." We commend his object, which is to bring about a reconciliation between the Hindus and the Buddhists.

Miss Lucy Booth the youngest daughter of General Booth who has assumed the title of Colonel Ruhini has been enthusiastically received at Bombay and is on her way to Calcutta.

We are glad to hear of a widow marriage having been lately celebrated at Raj Mahendri at the instance of the local Widow Marriage Society.

The Empress of India has invested the Rani of Gondal, who visited Windsor with her husband in September last with the Imperial Order of the Crown of India. Princess Bontrice and the Dutchess of Conneugl, were present on the occasion of the

a water of the transfer of the second of the

বামাবোধিনী পত্রিকা।

BAMABODHINI PATRIKA.

"कत्याष्येवं पालनीया जिचगौयातियत्नतः"

কন্তাকে পালন করিবেক ও যত্নের সহিত শিক্ষা দিবেক।

৩৩৪ সংখ্যা।

কার্ত্তিক ১২৯৯—নবেম্বর ১৮৯২।

৫ম ক্<u>র</u>। ১ম ভাগ।

দাময়িক প্রদঙ্গ।

কলিকাতার বাণিজ্য—গতবর্ষে কলিকাতার ৯৭॥ কোটীর অধিক টাকার বাণিজ্য হইয়াছে, ইহার মধ্যে আমদানী ২৮, ৬৫, ৭২, ৩৪২ এবং রপ্তানী ৩৮, ৯১, ৩৬,০৫৫ টাকার মাল। বিদেশীরেরাই যে এই বাণিজ্যের অধিকাংশ ফলভোগী তাহার সন্দেহ নাই। কলিকাতা হইতে ৫০ লক্ষ মণের অধিক চাউল বিদেশে রপ্তানী হইয়া থাকে।

চিকাগো বিশ্বপ্রদর্শনী—গত ২১এ অক্টোবর এই মহা মেলার জ্বল প্রস্তুত বৃহৎ অট্টালিকাটীর উৎসর্গক্রিয়া সম্পন্ন হইরাছে, শীদ্র মেলা আরম্ভ হইবে। পদ্শীবিরোগ নিবন্ধন যুক্তরাজ্যের প্রেসিডেণ্ট হেরিসন উপস্থিত **হইতে** পারেন নাই।

স্থানি মুন্তোফী পুরক্ষার—

হণলী জেলার প্রীপ্রের বাবু পূর্ণচন্দ্র

মৃন্ডোফী ও অতুলচন্দ্র মৃন্ডোফী নিম
লিথিত ৩টা রচনার প্রস্কার দিবেন্
১৮৯৩ সালের ৭ই ফেব্রুয়ারীর পর ১৫ই
তারিথের মধ্যে রচনা গৃহীত হইবে :—

>। মাতৃভক্তি ও মাতৃ-উপাসনাতে স্তানের মুক্তি (বালালা ভাবার) সক্রে।ওকুট উপ্-হার ২০০,।

২। মাতা অভাবে গাভীতুদ্ধে জীবন রক্ষা ও গোহত্যা অভাব (ইংরাজী বা উর্দ্ধভাবার) ቃ⊄০১

৩। ভাতের কৈণ গালা অকর্ত্তবা, তজ্জত ভারতবাসী হীনবল ও নিধু স হইতেছে। (বাদালা ভাবার) ব০

্যাটিকা—মাজ্রান্ত প্রেসিডেন্সীর **टकाकनम नामक शास्त २ घन्छ।** कान क्षफ इहेग्रा नमछ अल्लभ कलभाविक হইয়াছে, অনেক বৃক্ষ উন্মূলিত এবং শন্তকেত্র বিনষ্ট হইয়াছে।

ত্র জিক্ষ--- ২৪ পরগণা ও ময়মন-দিংহে ছর্ভিকের প্রকোপ আরও বৃদ্ধি

रहेबाइ । আর এক সাহায্যের বিশেষ প্রয়োজন। বোধিনী কার্য্যালয়ে কেছ সাহায্য প্রেরণ করিলে যথাস্থানে প্রেরিত আমরা ২৪ পরগণার কোন কোন স্থানে অতি শোচনীয় ব্যাপার দর্শন করিয়া আসিয়াছি।

জীবনের উদ্দেশ্য।

"বলোনা কাতর স্বরে, রুথা জন্ম এসংসারে এ জীবন নিশার স্বপন।"

কবি যথাৰ্থই বলিয়াছেন এজনা বুথা নহে এবং এ জীবন অর্থশৃন্ত নিশার স্বপ্ন নহে। জিমিয়া অবধি পদে পদে বাধা পাইলেও জন্ম বুথা নহে। স্থ ছ:থ হাসি-কান্নাময় এ সংসারে সকলের সকল আশা পূর্ণ হইতে পারে না। হাসি কালা---আলো ছায়া না থাকিলে নিরবচ্ছিত্র একটেয়ে জীবন বহন করা ক ষ্টকর হইত। তথন স্থুথ তঃখই বলিয়া বোধ হইত। ছঃথের পর স্থ-কারার পর হাঁসি, আঁধারের পর আলো-পরি-শ্রমের পর বিশ্রাম আছে বলিয়া সুথ, হাঁদি, আলোও বিশ্রাম আমাদের এত ভাল লাগে। যে স্থ ভোগ করিবার জ্ঞা যতঅধিক কষ্ট ও শন্ত্রণা সহা করিতে হর, তাহাই তত শান্তিপ্রদ। ৰলিকতছিলাম এসংসাৱে পদে পদে বাধা ও বিপত্তি। এই বাধা বিপত্তির মধ্যে আমরা

এবং সেই সময় বলি এজন্ম বুথা—এজীবন নির্থক। এখন এই জীবনের উদ্দেশ্য বা সার্থকতা কি? বাঁহারা অর্থলিপা, তাঁহারা মনে করেন অর্থ উপার্জ্জনই জীব-নের উদ্দেশ্য এবং তাহাতেই জীবনের সার্থকতা। অর্থ জীবনের অনেক সং-কার্য্যসাধনে সাহায্য করে বটে, কিন্ত তাই বলিয়া অর্থ উপার্জন জীবনের উদ্দেশ্য নহে। আমরা সাধারণতঃ পদ-মর্য্যাদা লাভ অথবা ধনোপার্জন জীবনের উদ্দেশ্য মনে করিয়া তাহারই উপর জীব-নের সফলত। বা বিফলতা স্থির করি। ध गत मः मादत धन, मान, वा शन हित-স্বামী নহে। যাহা চিরস্থায়ী নহে, তাহা জীবনের উদ্দেশ্য মনে করা যুক্তিসঙ্গত नरह। ऋणशांशी कीवन यनि औ ऋणशांशी ধন মান ইত্যাদির সহিত শেষ হইত, তাहा हरेला के मकलाक खीवानत है एक श বলা যাইত। এ জীবন-জনস্ত সাগরের একটা বুদ্বুদ্-সহস্র কিরণের একটা অনুষ্ঠানর হইয়া হতাশ হইয়া পড়ি, | কিরণ,অনম্ভ বায়ুর একটা নিঃখাদ—অনস্ত

প্রাণের একটা কণা। বাহাতে এই ক্ষুদ্র প্রাণ টুকু সেই অনন্ত প্রাণে মিশাইতে পারে, তাহাই জীবনের উদ্দেশ্য।

আমরা অনেক সময় উৎসাহহীন হইয়া জীবনের অনেক কার্য্য সম্পন্ন করিতে অক্ষম হইবার কারণ অদৃষ্টের উপর চাপাই। কিন্তু তাহা কতদূর যুক্তি-সঙ্গত, একটু ভাবিয়া দেখিলে বুঝা याहेदव । এসংসারে এক পরম সতা এই যে কেহ নিজ অবস্থায় সম্ভষ্ট নহেন। **জাকাজ্ঞা মামুষের কিছুতেই প্রশমিত** হয় না বরং দিন দিন বৃদ্ধি পাইতে থাকে। অসম্পূর্ণ মন্থব্যের সম্পূর্ণতার চেষ্টা বুথা। যিনি ধার্মিক, তিনি যতই সেই পথে অগ্রসর হইবেন তত্তই বলিতে চাহিবেন তাঁহার কিছুতে ক্লাস্তি কি তুপ্তি হইবে না: সেই স্বর্গীয় জ্যোতি: যতই তাঁহার নয়ন পথে পতিত হইবে. তিনি ততই অতৃপ্রহদয়ে দেই দিকে ছটিবেন \ বিনি বিদ্বান, তিনি সাধারণ মনুষ্যের নিকট পরম বিদান হইলেও অতৃপ্রহৃদয়ে তবুও বলিবেন আমার কিছুই শিক্ষা হয় নাই। যিনি অর্থলিপা তিনি ধনকুবের হইলেও আরও অর্থের জন্ম ত্রিত। কামী এবং ভোগীর সম্বন্ধেও ঠিক ঐরপ। তাই বলি-তেছি এসংসারে সম্পূর্ণতা প্রাপ্ত হওয়া বার না। তৃষ্ণা উত্তরোত্তর বৃদ্ধি পাইতে থাকে। কিন্তু তাই বলিয়া জীবন বুণা মনে করা নিভান্ত ভূল। অসম্পূর্ণ कीवत्न व्यत्नक मरकार्या मार्विक श्रेटक পারে। যিনি যে অবস্থাতেই থাকুন না

কেন, সেই অবস্থায় থাকিয়া অনেক সংকার্য্য সম্পন্ন করিতে পারেন। জীবন অর্থহীন স্বপ্ন নছে। এক ভীষণ সংগ্রাম, এই সংসার ভাষার রঙ্গভূমি। এ জীবন-সংগ্রামে रहेट रहेट मृज्य रहेश कर्डवा व्यति লইয়া সাহস, উদাম, যত্ন ও পরিশ্রমের সহিত রক্ষয়দে অবতীর্ণ হইতে হয়। क्रशनीयत्र आमानिशत्क निक्रमाम निक्त कतिया शृष्टि करतन नारे। जर অসৎ কর্ত্তব্যাকর্ত্তব্য বুঝিবার ক্ষমতা দিয়াছেন, কিন্তু অনেক সময় অসৎ ও অকর্ত্তব্য কার্য্য বুঝিয়াও আমরা তাহাহইতে বিরত হইতে পারি না। সে কেবল আমাদের ছর্মলতা। ত্বৰ্বতা দূর করিতে হইলে সেই স্বৰ্গীয় বিভার অমুসরণ করিতে হয় এরং তাহা-তেই মনের সমস্ত মলিনতা ও হর্কলতা বিদুরিত হয়। নিশ্চেষ্ট ও অষত্ব অব-স্থায় সে জ্যোতি দৃষ্টিগোচর হয় না।

ক্ষর আমাদিগকে চেন্টা ও বত্ব করিবার ক্ষমতা দিলেও আমরা সে ক্ষমতার ব্যবহার করি না। যে বিধ-তার অপূর্ব স্টেকোশলে চক্র স্বা পৃথিবী নক্ষত্র অবিরামগতিতে চলিতেছে, তাঁহার এ জীবস্ত স্টির মধ্যে মহব্যকে তিনি নিশ্চল করিয়া, স্টি করেন নাই। মহব্যকেও অবিরামগতিতে সেই ক্যোতির দিক্তে অগ্রসর হইতে বলি-তেছেন। কোন্ পথে চলিলে জীব্ন-সংগ্রামে ক্ষরী হইতে পারা বাইকে থকাং জীৰনের সেই গৃঢ় সত্য কিরপে উপলব্ধি
হইবে ? বাহিরের আলোকে চোক ঝল্সিয়া যায়। এ আলোকে দিশে-হারা হইয়া যাই। বাহিক চকুতে সে পথ দেখা যায় না। অন্তশ্চকু উন্মীলিত না হইলে সে পথ দেখা যায় না।

এ জীবনের গৃঢ় রহগু সেই স্বর্গীর
বিমল জ্যোতিই ভেদ করিতে পারে।
বাঁহারা পূর্ব্বগামী জীবন সংগ্রামজয়ী
বীরদিগের পদ অন্তুসরণ করেন, তাঁহারাই
পথ দেখিতে পান, তাঁহারাই
জীবনের সার্থকতা ব্ঝিতে পারেন এবং
তাঁহারাই নিরুদ্যম ও বিপথগামী মন্থাদিগকে বীরদর্পে বলিতে পারেন:
—

"বলো না কাতর স্বরে,
বৃথা জন্ম এ সংসারে,
এ জীবন নিশার স্বপন।"
সংকার্য্য অসুষ্ঠানই জীবনের মহাব্রত। এই ব্রত উদ্যাপন করিতে হইলে
সং ও অসং কার্য্য চিনিয়া লইতে হয়।

मञ्जा व्यानक ममग्र खाँख इन। সময় অসংকে সং মনে করেন। থাঁহারা পরোপকারী এবং কর্ত্তব্যপরায়ণ, তাঁহা-দের ইহা বুঝিতে বিশম্ব হয় না। স্বর্গীয় আলোক প্রভাবে তাঁহাদের ভ্রান্তি দুর হয়। যাঁহার। সময়-সোতে ঢালিয়া দিয়াছেন—গাঁহারা ভাল মন্দ ব্ঝিবার চেষ্টা কবিবেন না, যাহারা নিশ্চেষ্ট ও নিরুদাম, তাঁহাদেরই ভূল र्य, . তांशारात्ररे शमग्र कुळावृद्धि व्यथि-করিয়া অন্ধকারাচ্চন্ন করিয়া ফেলে এবং তাঁহারাই সেই অন্ধকারে অসংকে সং এবং মন্দকে ভাল বলিয়া তাই বলিতেছি আমাদের ভান্ত হন। অগ্ৰগামী ধর্মবীরদিগের পথামুসর্ণ করিলে আমরা জীবনের উদ্দেশ্য ও সার্থ-কতা বুঝিতে সক্ষম হইব এবং বলিব :---"এ জীবন সত্য – কর্ম্মাধন-তৎপর, ইহার চরম গতি নহে ত মরণ; 'মাটীর মামুষ হবে মাটী অতঃপর.' একথা আত্মার পক্ষে থাটে না কথন।"

লুদী লারকম।

আমেরিকার অন্তর্গত বোষ্টন নগরের
দশকোশ দ্রবর্জী বিভারলী নামক স্থানে
১৮২৫ খৃষ্টাবেদ লুদী লারকম জন্ম গ্রহণ
করেন। তাঁহার শিষা মাতা ইংলণ্ডের
শিউরিটান সম্প্রদায়ভূক অতি নিষ্ঠাবান্
খৃষ্টান ছিলেন। যথন ইংলণ্ডীয় গ্রণক্রেন্ট পিউরিটান মুতাবল্যীদিগের প্রতি
মন্ত্যাচার ক্রেরিডেছিল, তথন লুদী

লারকমের পিতা মাতা বিপদের হস্ত হইতে পরিত্রাণ লাভ করিবার জ্ঞ আমেরিকাতে গমন করেন। এই পরিবার ধর্মজাব দ্বারা স্থানীয় অধিবাদি-গণের চিত্ত এরূপ আকর্ষণ করিয়াছিল যে, বালক বালিকা যুবক যুবতী এবং ধর্মপরারণ বৃদ্ধ প্রভৃতি সক্লেই তাঁহা-দের প্রতি শ্রদাসমন্তিত ছিল।

লুসী লারকম তাঁহার পিতা মাতার অষ্ট্রম সন্তান। তাঁহার জ্যেষ্ঠা ভগীর নাম এমেলী। লুসীর পিতা এক দিকে ষেমন প্রম ধার্মিক ছিলেন, তেমনি পরিশ্রমী, মিতব্যয়ী এবং বুদ্ধিমান ছিলেন। তিনি অতি ক্লেশে সাংসারিক ব্যয় নির্বাহ করিতেন ; কিন্ত ধর্মভাবের এমনই মহিমা যে, একদিনও কেহ তাঁহাকে দারিদ্রা অবস্থার জন্ম বিষয় वा हिश्विक इटेटक एमरथ नारे। প्रदम-খরের চরণে আত্মসমর্পণ করিয়া তিনি দরিদ্রতার কট হইতে প্রমুক্ত থাকি-তেন। লুদীর মাতাও স্থগৃহিণী ছিলেন, কর্ত্তব্যনিষ্ঠা, গৃহকার্য্য এবং ধর্মদাধন প্রভৃতি সকল বিষয়ে তিনি স্বামীর অমুসরণ করিতেন। এই দম্পতী মণি-কাঞ্চন সংযোগের জায় প্রস্পুর আধাা-ত্মিক ও নৈতিকভাবে সংযুক্ত হইয়া-ছিলেন। এইরূপ 'আদর্শ দম্পতীর' গৃহে লুদী লারকম জন্ম গ্রহণ করিয়া निक कीवत्न भश्च ७ एवं अपर्मन করিয়া গিয়াছেন।

লুসীর পিতার দোকানের উপরি-ভাগে একজন বৃদ্ধা স্ত্রীলোক বাস করি-তেন। তাঁহার নাম মাণ্টহেনা। তিনি অলবয়ক্ষ শিশুদিগকে শিক্ষা দান করি-তেন। লুসী লারকমের যথন ছই বংসর বয়স, তথন এই শিক্ষয়িত্রীর নিক্ট তিনি বাইবেলের কথা মুখে মুখে ,শিকা ক্রিতে আরম্ভ করেন এবং ক্রমে ধর্ম শংশীত অভ্যাস করেন। তিনি সংগীতে.

नभवत्रक्रितित सर्गा अविजीता हिल्ला। তিনি পাঁচ বৎসর বয়সের সময় মুখ্য একশত ধর্ম সংগীত গাইতে পারিতেন। তিনি এমন ভাবের সহিত গান করিতেন যে, তাহা শ্রবণ করিয়া অনেকেই মুগ্ হইত। তাঁহার মধুময় সংগীতে প্রমে-খরের প্রতি অচলা ভক্তি প্রকাশ পাইত— বোধ হইত যেন বালিকা হৃদয়ের অন্তত্তের নিভূত স্থানে প্রমেশ্বরকে উপলচ্চি করিয়া ভাবাবেশে সংগীত করিতেছে।

পিউরিটান সম্প্রদায়ে তত্ত্তান চর্চার वर्डे थाइडीव हिल। किन्न नुनी त्मरे পথ দিয়া ধর্মরাজ্যে প্রবেশ করেন নাই। হৃদয়ের সরল বিখাসই তাঁহার একমাত্র সম্বল ছিল। লুসীর এই স্বর্গীয় প্রভাব তাঁহার ভগ্নী এমেলীর উপর বিস্তত হইয়াছিল। লুমীর সভ্য ব্যবহার, ঈশ্বর ভক্তি, সাধুভাব এমিলী প্রাপ্ত হইয়া-ছিলেন। বালিকা-সময় হইতে সত্যের প্রতি লুদীর এক্লপ অমুরাগ ছিল যে, কেই মিথ্যা কথা বলিলে তিনি অত্যস্ত বিরক্ত হইতেন। অনেকের এমন প্রকৃতি যে তাঁহারা নিজে মিথ্যা কথা বলেন না; কিন্ত অপরে মিথ্যা কথা বলিলে তাদৃশ বিরক্ত বা ছ:খিত হন না। শ্রেণীর লোক ছিলেন না°। তিনি নিজে বেমন সত্যনিষ্ঠ ছিলেন, মিথ্যাবাদীর প্রতি তেমনি তীত্র বিরাগ প্রদর্শন করি-তেন। একবার একটা বালিকা মিথা। কথা বলায় লুসী ভাহার সহিত কথনও

কথা বলেন নাই। সেই বালিকাটী যৌবনে পদার্পণ করিলে দেখা গেল যে, বালিকা-বয়সে তাঁহার ভিতরে যে বিষ-বীজ প্রবেশ করিয়াছিল, বয়োর্দ্ধির সহিত তাহার ভয়ানক কুফল ফলিতে আরম্ভ করিয়াছে।

वानिका नूनी कृत कन এवः वन উপবন প্রভৃতির প্রাকৃতিক সৌন্দর্য্য দর্শন করিয়া মহান প্রমেশরের জীবস্ত আবির্ভাব উপলদ্ধি করিতেন। তিনি পর্মেশ্বরের অমৃতময় রাজ্যে বাস করি-তেন। ভগবান সর্বতে, সকল সময় বর্ত্তমান এই মহা সত্য তাঁহার প্রাণে উদিত হইয়া তাঁহাকে প্রফুল ও সেহময়ী করিয়াছিল। তিনি বন-বালিকার স্থায প্রকৃতির শোভা নিরীক্ষণ ক বিয়া আনন্দ্রাগরে নিমগ্ন হইতেন। কিন্তু শীঘ্র ভাগ্যবিপর্য্যয় ঘটিয়া তাঁহার শাস্তি ভঙ্গ করিয়া দিল।

বধন শুদীর বয়স ১০ বংসর, তথন তাঁহার পিতার মৃত্যু হয়। একমাত্র উপার্জনক্ষম গৃহকর্তার অভাবে লারকম পরিবারের অতি দৈল্ল দশা উপস্থিত হইল। তাঁহারা বাসস্থান পরিত্যাগ করিয়া স্থানান্তরে যাইয়া বাস করিতে বাধ্য হইলেন। এই নৃতন স্থানে একটা কলে শুদী কাজ কি তেঁত আরম্ভ করেন। পরিশ্রমের আতিশব্য প্রযুক্ত তিনি বিদ্যাশিক্ষা করিতে অবসর পাইকেন না। সারাদিন পরিশ্রম করিয়া ক্ষম একটু বিশ্রমের সময় পাইতেন, তথন নানা

প্রকার গ্রন্থ পাঠ করিতেন।

কলে অনেক শ্রমজীবিনী বালিকা কাজ করিত। বলা বাছলা এই শ্রেণীর বালিকাদিগের মধ্যে সর্বত্তই নৈতিক জীবন হীন দেখা যায়। नूनी श्रीय চরিত্রবলে তাহাদিগের ধর্মজীবন গঠন করিতে প্রবুত হইলেন। তিনি সাধু ব্যবহার ও সদালোচনা দ্বারা পাপের প্রতি সকলের ঘুণা জন্মাইতে লাগিলেন। এই সময় তিনি সেই বালিকাদিগের মধ্যে জ্ঞানালোচনার এক অভিনৰ উপায় আবিষ্কার করেন। বালিকাদিগের জন্ম একখানা সাময়িক পত্র বাহির করি-লেন। কলের সকল বালিকাই তাহার গ্ৰাহক হইল। যাহারা লেখা পড়া জানিত, তাহারা নব-প্রকাশিত কাগজে প্রবন্ধ লিখিতে আরম্ভ করিল। সর্বোপরি কর্তৃত্ব ভার গ্রহণ করিলেন। বালিকাদিগের স্থিলনের নির্দিষ্ট সময় ছিল। সেই সময় সকল বালিকা এক-ত্রিত হইয়া দেই কাগজ পাঠ এবং লিখিত বিষয় সম্বন্ধে আলোচনা করিত। এই পদ্ধতিতে জ্ঞানালোচনা আরম্ভ হওয়ায় বালিকাগণের প্রভৃত মঙ্গল সাধিত হইতে লাগিল। "সাধু যাহার टेक्टा, जेयत छाटाम महाम।" नृमी माधू मकन पाता थारगानिङ इहेगा कार्या আরম্ভ করাতেই পরমেশরের প্রসাদাৎ ভাহার মনোরথ পূর্ণ হইতে লাগিল।

জনিকিত দরিত্র এবং হীনচরিত্র শ্রমজীবিনীবালিকাদিগকে কিরুপে আন

ও ধর্মভাবে উদ্দীপ্ত করিতে হয়, বালিকা লগী তাহা বিশক্ষণ জানিতেন। প্রেম ও ধর্মভাব তাঁহার একমাত্র সম্বল ছিল। এই ছই বস্তু দারাই তিনি সমবয়স্ক वानिकामिरगत कमग्र अधिकात कतिरक সমর্থ হইয়াছিলেন। অবিশ্রান্ত পরিশ্রমের মধ্যে এইরূপ লোকহিতকর কার্য্য করা সামান্ত হৃদয়বভার পরিচায়ক নহে। লুদী ধর্ম-প্রচারকের নাম গ্রহণ করেন নাই; কিম্বা "আমি ধর্ম প্রচার করিব" এই সংকল্প লইয়া কার্য্য ক্ষেত্রে প্রবেশ করেন নাই। তাঁহার হৃদয় এমন উন্নত ও প্রেমময় ছিল যে, মুগনাভির গল্পে যেমন কাননের চতুর্দিক সৌরভাবিত হয়, তেমন তাঁহার সাধুজীবনের স্থগন্ধ विकीर्ग इरेशा निक्षेष्ठ नवनात्रीत जीवन স্থানিময় করিয়াছিল। এ শ্রেণীর নর-নারীগণ মুথে কোন কথাই প্রচার করেন না, ইহাদের চরিত্রই নীতি ও ধর্মের প্রচারক। অগ্নি প্রজ্ঞালত হইলে যেমন দ্বিত বাষ্পরাশি বিলয় প্রাপ্ত হয়, তেমনি ইহাঁরা যে স্থানে বাস করেন, ইহাদের চরিত্র অনলে সে স্থানের পাপ বায়ু বিশুদ্ধ হইয়া থাকে। এ সকল জীবনের ইহাই বিশেষত্ব।

লুনী লারক্ম শ্রমজীবিনী বালিকানিগকে সংপথে আনিয়া বিদ্যানিকা
করাইতেছেন, একথা চতুর্দ্দিকে রাষ্ট্র
হওয়ায় তাঁহার প্রতি তদানীতান শিক্ষিত
সম্প্রদারের দৃষ্টিপাত হইল। এ স্ময়
কোনও নব-প্রতিষ্ঠিত নাগ্রিক বিদ্যা-

गरत्रत्र अध्यक्षां सुनीत्क नामस्त्र शहन করেন। এই বিদ্যালয়ে তিনি শিক্ষা প্রদান করিয়া কিছু কিছু অর্থ প্রাপ্ত হইতেন এবং নিজেও নিয়মিতরূপে শিক্ষা করিতেন। তিনি অক্লান্ত পরিশ্রমে বিদ্যাশিকা कतिया १४६२ थृष्टीत्म ज्याकात छेल्म्स-धाती (आक्रू एवं) इहेग्रा हिल्लन। वानिका कांत्रथानात्र खमजीविनीत्र कार्या করিয়া জীবিকা নির্বাহ করিতেন, যাঁহার শংসারে সাহা**য্য করিবার কেহই** ছিল না, তিনি ধর্ম ও জ্ঞানের অতি উচ্চতর সোপানে আরোহণ করিয়াছিলেন। সংসারে অতি সামাত্র অবঙা হইতে অনেকেই রাজপদে আসীন হইয়াছেন, অজ্ঞানতার অন্ধকার হইতে স্বীয় অধ্য-বসায় ও পরিশ্রমের গুণে বিদ্যালোক প্রাপ্ত হইয়াছেন; কিন্তু ধর্ম ও জ্ঞান উভয়বিধ পদার্থ সমানভাবে লাভ করা অনেকের ভাগ্যেই কম ঘটে। नुभी লারকম এরূপ দেব-চরিত্রের দৃষ্টাস্তস্থল। দ্বিদ্রের সম্ভান, সমশ্রেণীর শত শত হীন-চরিত্র বালিকাকে সংপথে আনয়ন ও শিক্ষা দান করা এবং নিজে বিশেষ ভাবে শিক্ষা করিয়া উচ্চ উপাধি লাভ করা অতি গুরুতর ব্যাপার। লুগী লারকম স্বীয় জীবন দারা ধর্ম ও জ্ঞান উভয়ই প্রচার করিয়াছেন। জ্ঞান ভুক্তি উভয়ের সামঞ্জ হুইলেই মানবজীবনের উচ্চ শক্ষ্য সাধিত হয়। এই মহীয়দী শক্তিদলায়া মহিলাউচ্চ লক্ষ্য সাধনের যে অদুইত্তি প্রদর্শন করিয়া গিয়াছেন, স্বাৎ চির্দিন

ভাহা অমুকরণ করিবে। এই বরবর্ণিনী । সাধারণ লোকদিগের অধ্যাপনা কার্য্যে ধর্ম-সংগীত রচনা, তত্ত্ত্তান শিক্ষা এবং । অবশিষ্ট জীবন অতিবাহিত করেন।

🦯 🦯 আশ্চর্য্য রক্ষ।

🗳 গ্রীম্মণ্ডলের অনেক গাছের মূল ও শুঁড়ি বোতৰ বা বারেলের মত। ব্রেঞ্জিলের বারিগড়ো বুক্ষ দেখিতে এইরপ আশ্রেষ্ট। অষ্ট্রেলিয়াতে মিচেল সাহেব ভেলাবেথিয়া বা বোতলগাছ আবি-ছার করেন। ইহার কাঠ এত নরম যে ভাহার উপর গরম জল ঢালিয়া দিলে গলিয়া আঠার মত হয়। এই গাছের লমা লম্বা শাথা হয়, তাহা সহজে ভাঙ্গিয়া কিস্ত পডিবার সন্তাবনা। কর্ত্তার আক্র্য্য কৌশলে গুঁড়ি হইতে এক বা অৰ্দ্ধ ফুট মোটা স্বাভাবিক অবলম্বন-দণ্ড (ঠেকো) সকল ১০।১২ ফিট উপরে উঠিয়া ঐ শাথা সকল ধারণ করে। এরপ উপায় না ছইলে উপরের ভারে গাছ উন্নিত হইয়া যাইত।

বংশীবট জাতীয় এক বৃক্ষের শিকড় এঁকা বেঁকা হইয়া সর্পের মত দেখায়, ইহাকে দেশীয় লোকে সর্প বৃক্ষ বলে। অফুচ্চ ৩০ ফিট বুকের শিকড় মাপিলে नद्य ১৪० किं इहेरव !

আফ্রিকার বেওয়াব (Monkey bread tree) একটা এরাবত বৃক্ষ। ব্রীদেকার নামক সাহেব গুমার গ্রামে এক গাছ দেখেন ভাহার ব্যাস ৩ ফিট, পরিধি ৯৫ ফিট, ডাল এরপ প্রশন্ত যে নিগোরা তাহার উপর শয়ন করিয়া मञ्हरम निजा यात्र। ১৪৫৪ थः अस्य কাদানটো নামক এক বিনীদীয় প্র্যাটক সেনিগাল নদীর তীরে ১০০ ফিটের অধিক পরিধির এক গাছ দেখেন। বেওবাব গাছের গুঁড়ির মধ্যে ২৫।৩• खन (लाक नष्टरम भग्नान शीरक। সেনিগাম্বিয়ার এক গুঁড়ির মধ্যে গ্রামন্থ লোকে সভা করিয়া থাকে ! বর্ষাকালে ওঁড়ির ভিতর জল জমিয়া পুছরিণীর আকার ধারণ করে। এইরূপ জল থাকাতে সে দেশের প্রথর সূর্যাতাপেও वृक्ष मत्रम शांदक এवः भीख नष्टे इय ना। এই জল কলের জলের মত যথেচ্ছ বাব-ষত হয়:। বেওবাব বৃক্ষ উচ্চে ৬০ ফিটের অধিক হয় না, ৩০ বংসর বয়স পর্যান্ত উর্দ্ধে বাভিয়া তৎপরে ফাঁডে বাড়িতে থাকে। ডাল সকল কড়ীর মত আগাগোড়া প্রায় সমান। ইহার ফল বড় বড় শশার মত, শাঁস সাদা, थारेट अम मधु, भाकित कत्वत्र वर्ग পাটল হয়, ভাহার মধ্যে কাল কাল वीिं शिक्तः। वामरत्रत्रा এই कन शाहरू বড় ভালবাদে বলিয়া বুক্ষের নাম "বানর পিঠে গাছ।" পঞ্চদশ শতাব্দীতে পোর্ডাঞ্জ নাবিকেরা একটা বেওবাব

গাছে দাগ দিয়া গিয়াছিল, তাহার পর
প্রায় ৪০০ বৎসর গত হয়। আডানসন সাহেব এই সময়ের মধ্যে রক্ষের
উন্নতির ক্রম গণনা করিয়া নির্ণয় করিয়াছেন যে ৩০ ফিট পরিধি গাছের
বয়স অস্ততঃ ৫০০০ বৎসর। এ গণনাকে
কেহ কেহ অতিরিক্ত বলেন। এই
রক্ষ আফ্রিকার সানিগাম্বিয়া, স্থদান,
নিউবিয়া ও জায়েজি দেশে দেখিতে
পাওয়া যায়। সিংহল দ্বীপে মায়ার
উপসাগরের নিকট এই রক্ষ আছে,
তাহা পোর্জুগিজ বা ফিনীসীয়দিগের
আনীত।

ভুণ্ডণ বা দৈত্য বৃক্ষ কেপ কলোনী ও বোর্ষন দ্বীপে জন্মে, কিন্তু কানারী ও মেডিরা দ্বীপে ইহা অতি প্রকাপ্ত আকার ধারণ করে! টেনেরিফ দ্বীপের আরা-টোবার বৃহৎ বৃক্ষ গোয়াঞ্চেনামক্ জাতি পূজা করিত। ১৪ • ২ সালে কানারীজিৎ বেথেস কোর্টস তাহাকে যত বড়
দেখেন, ১৭৯৯ সালে স্থপ্রসিদ্ধ পরিব্রাজক হয়োল্ডও তত বড় দেখেন।
হ:থের বিষয় ১৮৭১ সালের ঝড়ে
বৃক্ষটী ভগ্ন হইয়া গিয়াছে। শিকড়ের উপর গুঁড়ির পরিধি ৪৫ ফিট,
১০ ফিট উচ্চেও গুঁড়ির ব্যাস ১২
ফিট। ইহা উচ্চে ৬৫ ফিট ছিল,
শাখাগ্র সকল আনারসের ঝুঁটির মত,
পত্র চির-হরিৎবর্ণ।

দিকানোর আফ্রিকার তৃতীয় **স্থান্তর্যা**বৃক্ষ। ইহা উচ্চে ৪০।৪৫ ফিট, **কিন্তু**ইহার শুঁড়ি বৃহৎ হয় এবং মাথা নিবিড় কুঞ্জবনের শোভা ধারণ করে। **ইহার** সারকাঠে মিশরের সংরক্ষিত শব সকলের (the mummics) আধার নির্দ্<mark>রিত</mark> হইত।

পারিবারিক সঙ্গীত চর্চা।

জীব শক্তির স্বাভাবিকী গতি আনদের পথে। প্রত্যক্ষ চেপ্তার জীবকে
বিবিধ ছঃথ ছর্গতি ভোগ করিতে
দেখিলেও তাহাদিগের পরোক্ষ চেপ্তা
আনন্দের দিকে। স্প্রের ম্লত্ব অম্থসন্ধান করিলেও এই সত্যেরই সমর্থন
দৃষ্ট হইয়া থাকে। নিত্য জ্ঞান ও
নিত্যানন্দই ব্রশ্বরূপ এবং ব্রশ্বের আয়া
শক্তি ধারা নিত্যানন্দের অম্ভৃতিই
স্প্রিষ্কা

আসুশক্তি হারে করে আসুমাসাদন। সুথস্কপ কৃষ্ণ করে সুথ আসাদিন।

শ্রীচৈত্রচরিতাম্ত গছপ্রণেতা
শ্রীকৃষণাদ কবিরাজ গোসামী ঐ ছইটা
বাক্য দারা ব্রহ্মস্বরূপ ও স্কৃষ্টির মৃশ তত্ত্ব
প্রকাশ করিয়াছেন। অভিনিবেশ সহকারে ঐ ছইটা মহা বাক্যের মর্ম্মগুরু
করিলে উপলব্ধি ছয় যে, ভগবান্ আশনিই একদিকে অনস্ত উপভোগ্য প্রার্থি
ইইয়াছেন, অস্ত দিকে আপনিই অনস্ত

উপভোকা হইরা নিত্যানন্দ উপভোগ করিতেছেন। স্থতরাং আনন্দ উপভোগ ভিন্ন জীবের স্বরূপ আর কিছুই হইতে পারে না। অতএব যে কোন কার্য্য দারা জীবের আনন্দ বৃদ্ধি হয়, তাহার চেষ্টা করা অস্বাভাবিক নহে। তবে আনন্দ ভোগের যে সকল চেষ্টা সামাজিক নীতি ও সামাজিক ধর্মের বিরোধী তাহা অবশুই বর্জনীয়।

পারিবারিক সঙ্গীত চর্চা কোনও ধর্ম. কোনও নীতি বা কোনও দেশের আচার-বিরুদ্ধ নহে, বরং বিশুদ্ধ বিমল স্থাপর আম্পাদ। কিন্তু অশিক্ষা বা কুশিক্ষা প্রভাবে একণে এদেশে ঐ প্রথা রহিত এবং নিন্দিতপ্রায় হইয়া উঠিয়াছে। গ্রের রমণীগণ যদি অভাভ শিক্ষার সহিত নৃত্য-গীত বাদ্যাদি শিক্ষা করেন, তাহাতে গৃহ-স্থাের বৃদ্ধি ভিন্ন কোন প্রকার অনিষ্ট দেখা যায় না। পূর্বাকালে ভারতবর্ষে এ প্রথা বিশিষ্টরূপই প্রচলিত ছিল, তাহা পুরাণাদি শাস্ত্র পাঠে জানা অতএৰ এমন বিভন্ন আনন্দ ভোগের পথটা কণ্টকাকীর্ণ করিয়া রাখা **(कान ज्राम्य युक्तियुक्त नरह।** यांहाता স্বদেশের মঙ্গল সাধন ব্ৰতে দীকিত হইয়াছেন, পারিবারিক দলীত চর্চার পুন: প্রচলন 'অন্ততম মংস্কার করিয়া লঙ্য়া তাঁহাদের পক্ষে একান্তই কর্ত্তব্য।

আমরা অতিশয় 'আনন্দের সহিত প্রকাশ করিতেছি বে, ভারতের কোন কোন প্রদেশে উপরিউক্ত বিষয়ের অফু-

ষ্ঠান আরক হইয়াছে। মহিভরের মহা-রাণীর কালেজ এবিষয়ের প্রকৃষ্ট দৃষ্টাস্ত। ঐ কালেজের ছাত্রীগণ বীণা সহযোগে দেশীয় সঙ্গীত শিক্ষা করিতেছে। মান্দ্রা-জের প্রসিদ্ধ পণ্ডিত ও সঙ্গীতরস্কু শ্ৰীযুক্ত টী, এম, ভেনকটু শাস্ত্ৰী এজন্ত বদ্ধপরিকর হইয়াছেন। তিনি বছ-সংখ্যক বালিকা বিদ্যালয় প্রতিষ্ঠিত করিয়া তাহাতে সঙ্গীত শিক্ষার ব্যবস্থা করিয়া দিয়াছেন। তিনি এজন্ম যত্ন ও অর্থ সাহাত্য অকাতরে করিতেছেন 🕨 দেশের কোন কুপ্রথার দূরীকরণ বা নুতন প্রথার প্রচলন করিতে হইলে সংস্কারক দিগকে বে লাঞ্না করিতে হয়, উক্ত শাস্ত্রী মহাশয়কেও তাহা বিলক্ষণরূপে ভোগ করিতে হই-তেছে। কিন্তু তজ্জা তিনি কিছুমাত্র কাতর বা কুর নহেন। তাঁহার অধ্য-বসায় অকুগ্ন। তাঁহার কর্ত্ব্যসাধন-জনিত আত্মপ্রদাদ অপরিমেয়। স্কুতরাং কুসংস্কারাপর দেশীয় লোকদিগের কুংসা বা অপবাদ ঘোষণায় তাঁহার ভ্রক্ষেপ্ত নাই।

স্ত্রী, কন্তা, বধু ইহারা যদি স্থীয় সামী, শশুর, দেবর, ভাতা, পিতা, পুত্র ইত্যাদির সমক্ষে দঙ্গীতাভিনয় করেন, তাহা হইলে কি দোষ হয়
 এবং যদি দোষ না থাকে, তবে বামাবোধিনীর পাঠিকাগণ আপন আপন গৃহে ঐ প্রথার প্রচলন করিতে অভিভাবকগণকে প্রববিত্ত করিতে পারেন কিনা ইত্যাদি

বিষয়ে তাঁহারা আপনাদিগের মতামত | তাহা সাদরে বামাবোধিনীতে প্রকাশ বাক্ত করিয়া পতাদি লিখিলে আমরা

করিব।

প্রবন্ধ পুরস্কার।

ভ্ৰাত্দ্বিতীয়া।

(৩৩০ সংখ্যা ১৮৪ পৃষ্ঠার পর।)

কেহ কেহ বলেন যে জগতের মধ্যে | যদি সকলেই ভাই ভগিনী হইলেন, তবে আমরা বাবা, মা, খুড়ীমা, জেঠাইমা, খুড়া মহাশ্য়, জেঠা মহাশ্য়, শভ্র, শাভড়ী ও স্বামী স্ত্রীকে কি বলিয়া ডাকিব ? এবং এই বিষয় লইয়া তাঁহারা কত ঠাট্টা বিজ্ঞপও করেন, কিন্তু এইবিদ্রপকারীগণ যদি একটু ন্তিরচিত্তে ভাবিয়া দেখেন তাহা হইলে তাঁহারা নিজ নিজ ভ্রম অতি সহজেই বুঝিতে পারেন, কারণ যাঁহাদের সহিত আমাদের সম্পর্ক ও আত্মীয়তা বহি-রাছে, যাঁহাদের আমরা বাল্যাবধি আপন বলিয়া জানি, জগংকে ভালবাসিতে হইলে তাঁহাদের জন্ম অত ব্যস্ত হইবার কারণ नारे, दक्त ना जांशादमत महिल मन्नर्क ও আত্মীয়তাত রহিয়াছেই। আমরা মনে করি যাহাদের সহিত আমাদের কোন সম্পর্ক নাই, যাঁহারা পর, তাঁহাদের সহিত সম্পর্ক করিতে হইলে তাঁহাদিগকে আপ-নার জন বলিতে গেলে, ভাই বোন বাতীত উপযুক্ত সম্পর্ক আর কি আছে গুমার কি বলিয়া আপন বলিলে অত মধুময় হইবে জানি না। অতএব বাঁহারা অকপটে

জগৎকে ভাই বোন বলিয়াছেন, বলিবেন বা বলিতে পারেন, তাঁহারা আমাদের শ্রদার পাত্র, বিজ্ঞপের পাত্র কথনও নহেন। আরও বিজপকারীগণ মনে করুন দেখি যে মনুষ্যোৎপত্তি শক্তি কোথা হইতে আদিল ? ঈশ্বর ও প্রকৃতি সংযোগে উৎপাদিকা শক্তির স্থতরাং ধরিতে গেলে সকলেরি পিতা মাতা ঈশ্বর ও প্রকৃতি, তাই জগংকে ভাই বোন বলায় কথনও দোষ হইতে পারে না। আর হিন্দু ধর্মের দোহাই **जिया जग९ क जो है** त्वांन वनाम तक ह দোষ দিতে পারেন না, কেন না হিন্দুর শাস্ত্র কিম্বা উপদেশ যদিও জগতে সকলে সকলের ভাইবোন, এই কথা স্পষ্টাক্ষরে বলে নাই তথাপি বলিয়াছে যে "অয়ং নিজ: পরোবেতি গণনা লঘুচেতসাম! উদারচরিতানাস্ত বহুধৈব কুটুম্বকম্॥" হিন্গণ আরও বলেন, "ন কশিতং কস্থ-চিনাত্রংন কশ্চিৎ কন্ডচিন্তিপুঃ। ব্যব-হারেণ মিত্রাণি জায়তে রিপবস্তথ≯॥" অতএব ভাই বোন অতি পৰিত্ৰ .সম্বন্ধ, বিশ্বপ্রেমিক জগৎকে ভাই বোন কেন

না বলিবেন ? ভ্রাতৃষিতীয়ার মর্ম বিখ-প্রেমিকগণই সম্যক্রপে অবগত, আমাদের * **মধ্যে ভ্রাভৃদ্বিতীয়ার দিন মা**ত্র (ব্যবহার সর্বত্র আন্তরিকও নহে) বিশ্বপ্রেমের ছায়া ক্ষণপ্রভা বিহাতের ভাষ মুহূর্ত মাত্র জগৎ আলোকিত করিয়া আবার স্বার্থদ্বেষ প্রভৃতি রূপ জলদ ভিতর লুকাইয়া যায়। যে হিন্দুগণ এখন দিন দিন নিজের কর্ত্তব্য ভুলিয়া স্বার্থপর ও সৌথিনতার বণীভূত হইয়া নিজকে ও নিজের পরিবারবর্গকে বিলাতি অফুকরণে সজ্জিত করিয়া, বিলাতি চাল চলন ধরিয়া আপনাদিগকে হিন্দু বলিয়া পরিচয় দিতে লজ্জিত হয়েন, সেই হিন্দু-একদিন বিশ্ব-গণের পূর্ব্বপুক্ষেরা প্রেমিকতার জগতের শীর্ষস্থান অধিকার করিয়াছিলেন, তাঁহাদের প্রেম প্রাণি-জগতেও বিস্তৃত হইয়াছিল, তাঁহাদের সদৃষ্টান্তের অহুসরণ করিয়া আমরাও সেই **জাতীয় ধর্ম-স**ধর্ম পালন করিব।

"শ্রেরান্ স্বধর্ম্মো বিগুণঃ পরধর্ম্মাৎ স্বন্ধৃতিতাং। **স্বধর্ম্মো নিধনং** শ্রেয়ঃ পরধর্ম্মো ভয়াবহঃ॥"

হিন্দুগণের মধ্যে যদিও জাতিভেদের
নিয়ম থাকে, কিন্তু বিশ্বপ্রেমিক হিন্দুগণ সে জাতিভেদ মানিতেন না, ইহা
আমরা পশ্চাতে দেথাইতে চেষ্টা করিব।
আর যথন কি হুদেশীর ও বজাতীয় সহপদেশমাত্র
প্রাহণ করা সাধু ব্যক্তির উচিত, তথন
আমরা বীশু প্রভৃতি বিদেশীর বিশ্বপ্রেমিকগণের সহপদেশ সমূহও গ্রহণ

করিতে পারি, তাহাতে আবার আমা-দের স্বদেশীয় শাস্ত্র উপদেশ দিতেছেন যে ব্যবহারেই শক্রতা ও মিত্রতা জন্ম। মিত্রতাই জগতে সুথকর, স্থবের জন্ম লালায়িত, অতএব স্থধকর মিত্রতাকে পরিত্যাগ করিয়া শান্তিহারী শত্রুতাকে ডাকা কাহারও উচিত নহে। যদি কেহ বলেন যে অৰ্থ না থাকিলে মিত্র যোটে না, তাহা হইলে আমরা সে কথা স্বীকার করিতে পারি না, কারণ কতকগুলি অন জলে ছড়াইয়া আমি তথায় দাঁড়াইয়া থাকিলাম আর কতকণ্ডলি মংস্থ আসিয়া সেই অর থাইতে লাগিল ও আমার গাত্র ঠোক-রাইতে লাগিল। অন্নগুলি ফুরাই**লে মৎস্ত**-শুলিও চলিয়া গেল, এখন কি সেই মৎস্তুলিকে আমরা মিত্র এইরূপ অর্থ দারা যে মিত্রতা জন্মে সে মিত্রতা মিত্রতাই নহে। জগৎকে ভাল-বাসিতে হইলে অর্থাৎ মিত্র করিতে হইলে স্বৰ্গীয় প্ৰেমের যত আবশ্রক, অর্থ বা পার্থিব অন্ত কোন পদার্থের তত অধিক আবশ্যকতা নাই। অর্থ নহিলে যে মিত্র যোটে না বা চরিত্রকে উন্নত করা যায় না এ কথা প্রাচীন হিন্দুগণ এক প্রকার অস্বীকার করিয়া গিয়াছেন. তাঁহারা বলেন,---

তৃণানি ভূমিকদকং বাক্চতুর্থীচ স্থন্তা।
এতান্থপি সতাং গেহে নোচ্ছিদ্যন্তে কদাচন।
অতএব সর্লান্তঃকর্ণে মিই ক্থায়

অতএব সরলান্তঃকরণে মিষ্ট কথায় সন্তাষণ করা, সহ্পদেশ দারা লোক-

দিগকে সংপ্রে চালিত করা ও কায়-হি**ত**ক|মনা সকলের মনোবাকো করায়ত আবার অর্থ বায় হয় না। প্রেম হৃদয়ের উচ্চতম বৃত্তি, উহা একটী সাম্রাজ্য বিনিময়েও ক্রয় করা যায় না, উহা অমৃল্য স্থতরাং উহাতে অর্থের আবশ্যক কি ভালবাসায় জগৎকে যেমন আপন করা যায়. অর্থবলে. সৈতাবলে কিম্বা অন্তান্ত উপায় অব-লম্বনে সেরপে আপন করা যায় না। বিশ্বপ্রেমিক নিমাই যথন গর্ভধারিণী মাতাকে কাঁদাইয়া—পতিব্ৰতা অঞ্জল উপেকা করিয়া মানব সাধা-রণের স্থুথ বৃদ্ধির জন্ম পারিবারিক স্থ পরিহার করিয়া, বিশ্বপ্রেমে জগৎ মাতাইবার জন্মানবজাতিগত অস্তিথা-নলে ব্যক্তিগত অস্তিত আহতি দিবার জন্ম-লক্ষ লক্ষ অনাথ অনাথিনীর চক্ষুর নিবারণ করিবার জ্ঞাতাহির হইয়াছিলেন, তথন তাঁহার সঙ্গে কপর্দক মাত্রও ছিল না, সেই আত্মত্যাগী সন্মানি-বর ডোব-কৌপিন প্রিধান করিয়া দীন-বেশে গৃহ হইতে নির্গত হইয়াছিলেন। ষথন ব্রাহ্মণ্য ধর্মের ভীষণ বৈষম্মে বিশ্ব ছারথার হইতেছিল, ব্রাহ্মণগণ নীচ-জাতির প্রতি অতাস্ত অবজ্ঞা প্রদর্শন করিতে আরম্ভ করিয়াছিলেন, সমাজ-শাসন লোকের যন্ত্রণার কারণ হইয়া দঁড়োইয়াছিল, পতিতা রমণীগণ প্রবল বাত্যাহতা ব্ৰত্তীর স্থায় ভূমিলুঠিত ও পাদদলিত হইতেছিল, সেই সময় ভগবান্

टिज्जारमद्वत (श्रम-वीगा हमन कन्।। एन गारेया छेठैल, "आमता मन ভाই ভाই." আমরা সব ভাই বোনু"। সেই আহ্বানে— সেই প্রেম সংকীর্ত্তনে হিন্দু, মুস্লমান. ব্ৰাহ্মণ, শুদ্ৰ একই. সাম্যক্ষেত্ৰে আসিয়া চৈতত্যের মন্ত্রশিষ্য হইতে লাগিলেন। লাতা ভগিনীগণের জন্ম থাঁহার ফদর काँ मिया एक पिनि जग ९ क जानवा निया-ছেন, থাঁহার বাহু জগংকে প্রেম আলি-ঙ্গন দিবার জন্ম সর্বাদা প্রসারিত, তিনি কি পরিবারগণের সসীম স্লেহে আবদ্ধ হইয়া গ্রহে থাকিতে পারেন ? জগতে मकल जारे जारे. मकल जारेतान, এই মূল যাঁহাব লক্ষা এবং জন্ম যিনি লক্ষ্য-সাধনের দিলেন, সেই মহদাশয় বিশ্বপ্রেমিক চৈতভ্যের পবিত্র চরিত্র অতি মহৎ. চরিত্র আদর্শ চরিত্র. চরিত্র দেবতারও অমুকরণীয়। তাই চৈত্তভার চরিত্রে মোহিত হইয়া গ্র পরিত্যাগ করিয়া দলে দলে লোক আসিয়া তাঁহার পাদমূলে উপস্থিত হইতে লাগিল, তাঁহার প্রেম সংকীর্ত্তন সেই সমস্ত পাপীতাপীদিগের প্রতি যেন গ্রীক্ষের প্রচণ্ড মার্কণ্ড কিরণে উত্তাপিত বাসুকা-রাশির উপর বারিধারা বর্ষণ করিতে লাগিল, তাঁহার সেই 'আমরা সব এক পিতার সন্তান, সব ভাই ভাই, সব ভাই বোন' সঙ্গীতে কত পাষাণ হৃদয়ও দ্রবীভূত হইরা উঠিল, চৈতত্তের প্রেম্রো-চ্ছাবে ভারত প্লাবিত হইয়া গেল। কথিত

আছে দহা জগাই মাধাই প্ৰথম দৰ্শনে हेंहाँ निशत्क था भन्ना क्रू ज़िया मादत, भदत ইহাঁদের প্রেম-সংকীর্ত্তনে মোহিত হইয়া মন্ত্রশিষ্য হয়। চৈতত্তের সাধনা মন্ত্র জাতিভেদ,বৰ্ণভেদ ও মান অপমান বিশ্বত ररेंग्रा मवारे खारे खारे, मवारे खारे বোন হওয়া। সাধনায় সিদ্ধ লাভ, এই প্রবাদ চৈত্ত্য অতি উত্তমরূপে প্রমাণিত করিয়াছেন। তিনি আত্মত্যাগী সন্ন্যাসী হইয়া যে "ভাই ভাই, ভাই বোন" রূপ মন্ত্র সাধনা করিয়াছিলেন, তাঁহার সেই সাধনার ফল দ্যাম্য হরি তাঁহাকে প্রদান করিয়াছিলেন। এই চৈতন্ত-দেবই ভাত্ৰিতীয়ার প্রকৃত প্রচার কর্তা, ইনিই ভাতৃদ্বিতীয়ার মর্ম্ম সমাক্-অবগত ছিলেন। চৈতন্ত্রের শিষ্যগণ প্রচার কার্য্যে ব্রতী হইলে. মহাপ্রভু ভাত্বিতীয়ার আদর্শ ক্ষেত্র শ্রীকেতে গমন করিয়াছিলেন যথায় ভাতা ভগিনী একাধারে মিলিত— यथात्र জाতिভেদ নাই, लिश्रट्डम नाই-**যথায় মান অ**পমান বিশ্বত হইয়া পরস্পর পরস্পরের মুথে অমৃতার প্রদান করেন। শিবের পার্মে ছ্র্গা, নারায়ণের পার্মে লক্ষী, রামের পার্ষে দীতা ইত্যাদি হিন্দু দেব দম্পতীর মৃর্জি মিলিত থাকে, যে কোন তীর্থে যাও দেখিবে দেব দম্পতী मिनिड: कानीयां यां प्राथित कांकिका नकूरनभंत, कांनी यां अ तमिर्देश অনপূর্ণা মহেখন ইত্যাদি। কিন্তু শ্রীক্ষেত্রে বাও দেখিবে বলরাম, জগরাথ ও স্বভদ্রা

একাধারে মিলিত। হিন্দু এমন ভ্রাতা ভগিনীর মিলন শ্রীক্ষেত্র ব্যতীত আর কোন্ তীর্থে দেখিয়াছেন ? এমন জাতিভেদ, বৰ্ণভেদ, মান অপমান বিশ্বত হওয়াই বা কোন তীৰ্থস্থানে আছে ? কঠিন শাসনে সমাজবন্ধন এই সময় যন্ত্রণার কারণ হইয়া উঠিয়াছিল, কিন্তু এই মহা **ौर्ष (महे यद्य**नानाग्रक मभाजवसन हिन ना। এখানে বিধ্বাগণকে একাদণী ও একাহার করিতে হয় না, এথানে পতিত ব্যক্তিগণ্ও পবিত্র লোকের সহিত মিলিত হইয়া নিজের চরিত্রকে উন্নত করিতে পারে, তাই এই ভাতৃদিতীয়ার আদর্শ ক্ষেত্র শ্রীক্ষেত্রে চৈত্ত অবস্থান করিলেন। তাই তিনি গয়া, গঙ্গা, কাশী, প্রয়াগ, প্রীরন্দাবন, চক্রনাথ, কেদারনাথ, ত্রন্ধ-পুত্র ও গঙ্গাসাগরাদি সর্বতীর্থ ছাড়িয়া এই স্থানেই যোগ সাধন করিলেন। চৈত্ত্তই একমাত্র ভাত্বিতীয়ার মর্ম্ম যে ব্ঝিতে পারিয়াছিলেন তাহার প্রমাণ এই যে তিনি বুঝিতে পারিয়াছিলেন যে ভেদজান প্রকৃত জ্ঞান নহে, উহা রুখা অভিমান মাত্র, সংগারে সাম্যই স্থুখ। তাই যে তীর্থের দেববিগ্রহে ভ্রাতা ভগিনীর মধুর সন্মিলন, যেখানে সকলেই জাত্যভিমান ভুলিয়া ভ্রাতা ভগিনী ভাবে সমবেত, সেই তীর্থই তাঁহার প্রিয়তম হইয়াছিল। তৈতন্তদেব ভায় দিতেও অদিতীয় পণ্ডিত ছিলেন. কিন্তু সে পাণ্ডিতা নীরস কিম্বা হৃদবের পরিপুষ্টি-বিরহিত ছিল না,

স্বদেশের অবস্থা দর্শনে তাঁহার প্রাণে বডই আঘাত লাগিয়াছিল। মিথিলার পণ্ডিতগণ, বিদেশী ছাত্রবুন্দের পাঠ সমা-পনান্তে পুস্তক ফিরাইয়া লইতেন, চৈত-ন্থের নিকটও এরপ পুস্তক চাহিলে তিনি ঈষৎ হাস্ত করিয়া সগৌরবে পুস্তক ফিরাইয়া দিয়া বলিলেন. "আমার শ্বরণ তুলটে এই সমস্ত গ্রন্থ উত্তম লেখা আছে, আমি বঙ্গে গিয়া এই সমস্ত মন খুলিয়া প্রচার করিব, তাহা হইলে পাঠার্থে তথাকার কোনও পাঠক আর এখানে আসিবেন না।" পঠদশাতেই বাঁহার প্রাণ স্বদেশের জন্ম কাঁদিয়াছিল, কালে যে জগতের জন্ম—জগতের ভাই বোনের জন্ম তাঁহার প্রাণ কাঁদিবে. ইহাতে আর বিচিত্র কি গ মানব জাতিগত অস্তিখানলে ব্যক্তিগত জীবনের পূর্ণাহুতি দিয়া ঐ ক্ষেত্রে আসিয়া সফল-মনোর্থ হইলেন। চৈত্র-দেব এইস্থানে যোগ সাধনে সিদ্ধ হইয়াছিলেন বলিয়া শ্রীক্ষেত্র তীর্থশ্রেষ্ঠ। যতদিন শ্রীক্ষেত্র থাকিবে. নিমাইয়ের নাম থাকিবে সতা—যতদিন সহদয় গুণগ্রাহী লোক পৃথিবীতে থাকি-বেন, ততদিন চৈতভ্যের নাম ভারত সম্ভানগণের হৃদয়ে স্বর্ণাক্ষরে থোদিত থাকিবে সত্য--যতদিন চৈতত্ত্বের নাম পাকিবে, ততদিন ভ্রাতৃদিতীয়া হিন্দুগণ কর্ত্ব আচরিত হইবে সত্য, কিন্তু তাঁহার মত ভ্রাভূদিতীয়ার প্রেমোচ্ছাদে ভারত প্লাবিত করিবে কে ? দেব।

তুমি আর একবার এই শোক, ভাপ, দেষ, হিংদা, স্বার্থ ও ক্রোধপূর্ণ পৃথিরীতে অবতীর্ণ হও—আর একবার আমাদিগকে ক্ষমা গুণ ও প্রেম শিক্ষা দাও—আব একবার আমাদের "আমরা সব এক পিতার দন্তান, আমরা সব ভাই ভাই. সব ভাই বোন" গান গাইতে শিথাও--আর একবার ভাই বোনের হঃথে আমা-দিগকে কাঁদিতে শিথাও। মহাপ্রভো। আর একবার আসিয়া দেখ, আবার সংসারে ভেদ-বহি প্রজলিত—আবার সংসার শোক, তাপ, পাপ, স্বার্থ, ক্রোধে পরিপুর্ণ—আবার জাতিভেদে মনান্তর— আবার সেই মরগণ অভিমানে পূর্ণ-আবার পরস্পর পরস্পরের অন্নত্যাগ করিয়াছে—আবার লোকের অশান্তিপূর্ণ হৃদয়ের হাহাকার—আবার নৈরাঞ্চের তাড়না—আবার "আপন,পর"—আবার শোকাতুরের, পতিতের হাহাকার শ্রবণে কাহারও প্রাণে আঘাত লাগে না. দকলেই আপনাপুন পরিজন, মান, कां छि, উচ্চপদ ও व्यर्थ नहेंग्रा वास्त्र। যদিও আজও তোমার প্রেম-সঙ্গীত নগরে নগরে,গ্রামে গ্রামে সংকীর্ত্তিত হইতেছে— यिन अध्य देव विकास অভাব নাই--্যদিও এখনও ভ্রাতৃদ্বিতীয়া আচরণ ^{*}ক্রিয়া কিন্তু দেব! তোমার সেই মহৎলুক্যা এই ধরাধাম হইতে অপস্তপ্রায়! মহাত্মন ! তাই আর একবার গোলোক-ধাম পরিত্যাগ করিয়া এই মরকগতে পদা

ৰ্পণ কর, দেথ তোমার সেই সাধনের ধন | শ্রীক্ষেত্র বিরাজ করুক। দেব ! একবার বাতা ভগী মিলন কালসাগরে নিম্গ-আম, অতএব তোমার প্রেমামৃতে যে শলীবনী শক্তি আছে দেই অমৃত পূর্বের স্থায় ধরায় সিঞ্চন কর, অসার, রুগ্ন, ভগ্ন, কম্পিত, জীর্ণ, শীর্ণ ও ক্ষীণাবয়ব প্রাতৃ-বিতীয়াও তোমার প্রেমামৃত দিঞ্নে স্বস্থও পুষ্টকলেবর হউক, তোমার প্রেম-भरखत मक्षीवनी मक्ति घाता मर्वाञ

আমাদিগকে আশীর্কাদ করিয়া তাহা হইলে তোমার মহামন্ত্রে অন্ধ্রপাণিত হইয়া আমরা জাতিভেদ, লিঙ্গভেদ ও মান অপমানাদি বিশ্বত হইয়া ভাতা ভগ্নীগণে সমবেত হইতে পারিব, এবং জগৎও তোমার ভাত্বিতীয়ার মহা-মন্ত্র সাধনা করিয়া সিদ্ধিলাভ কামনা করিবে। (ক্রমশঃ)

বাঙ্গালা প্রবচন।

- >। বউ উঠ্তে স্থান পার না, উঠান । ৮। বগলে কাল্ডে দেশময় বৌজে। যোডা দাসী।
- २। येडे जम भिता ঝি জন কিলে. আর পাড়া পড়্দী জক হয় চোকে আঙ্গল দিলে।
- ৩। বউ ভাঙ্লে সরা, গেল পাড়া পাড়া। शिन्नी खोड त्या नामा, ७ किছू नग्न माना।
- विषय त्रांग विज्ञातन छे अत्र, বিড়ালের রাগ বেড়ার উপর।
- । বকঃ পরমোধার্শ্বিক:।
- বক বিড়ালৈ ব্ৰহ্মতানী।
- বক শাদা বগিনী শাদা, শাদা া রাজহংস,
 - তা হইতে অধিক শাদা তোমার হাতের শব্দ।

- ন। বগাধার্মিক।
- ১•। বচন সর্কস্থ।
- বজাঘাতে রাম নাম।
- ১২। বজু আঁটুনি ফক্ষা গেরো।
- বট গাছ নারায়ণ। 201
- ১৪। বভ থিদে পাটকেলে কামড।
- ১৫। বড় গাছে ঝড় বাঁধে।
- निक्षा ডिঙ্তে মাথা করে हैं।
- ১৭। বড় বাড়ীর বড় কথা।
- ১৮। বড় মাছের কাঁটা, আর ঘন ছধের ফোঁটা।
- ১৯। বড়র বড়, ছোটর ছোট।
- २ । वर्ष्ट्र लादिक कथा कश्र.
 - · नकरणरे वरण रुम्र ।
- ২১। বড় হবে ত ছোট হও।
- २२। वन गाँउ निज्ञान ताका।

- ২৩। বন পোড়ে সবাই দেখে, মন পোড়ে কেউ দেখে না।
- ২৪। বন রক্ষক শিব শিব রক্ষক বন।
- २**৫। বন থেকে বেরুল টে,** সোণার টোপর মাথায় দে।
- ২৬। বনেদি ঘরের আঁস্তাকুড়ও ভাল।
- ২৭। বন্ধানারীর অন্ধপুত্র চক্স দে^{থ্তে} পায়।
- ২৮। বয়দে গাছ পাথর নাই।
- ২৯। বয়সেতে বিজ্ঞ নয় বিজ্ঞ হয় জ্ঞানে।
- ৩০। বরং পণ্ডিত শক্রণা নচ মৃর্থেণ মিত্রতা।
- ৩১। বরের মাসী কন্সার পিদি।
- ৩২। বর্গির হাঙ্গামা।
- ৩৩। বলতে গেলে জাত থাকে না।
- ৩৪। বল্তে পারি কইতে পারি সইতে পারিনে,

নিতে পারি থেতে পারি[।] দিতে পারিনে। ৩৫। বল্বো বল্বো মনে করি বল্তে লাগে ভয়,

নির্ধনী পুরুষের কথা রয় কিনা রয়। ৩৬। বলু মা তারা দাঁড়াই কোথা ?

- ৩৭। বল্লে তোমা মার থার, না বল্লে বাপ বেঙ থায়।
- ৩৮। বলং বলং ব্রহ্মবলং নচ অন্ত বলং বলং।
- ৩৯। বলবস্তং চিকিৎসয়েৎ।
- ৪০। বল বৃদ্ধি ভরসা, তিন তিরিশে ফরসা।
- ४) वलीत घाम, निर्वलीत घूम।
- 8२। বলেছিলাম হলোনা, ঘরে গিরে **খা।**
- ৪৩। বদ্বি তো ছেলে ধর, উঠ্বি তো কাঠ কাট।
- ৪৪। ব'সে থে'লে কুবেরের ভাণ্ডারও ফুরায়।
- ৪৫। বসস্ভে ভ্রমণং পথ্যং।
- ৪৬। বন্ত্রপুতং জলং পিবেৎ।
- ৪৭। বহ্বারম্ভে লঘুক্রিয়া।

'লর্ড টেনিসন্।'

অমূল্য রতন আজ হারালে ব্রিটন !
এরতন যুটা আর খুঁজে পাওয়া ভার,
বহু তপস্থায় হয় অদৃষ্টে মিলন,
সহজে রতন হেন ভাগ্যে ঘটে কার ?
কাল রাছ গ্রাসিল অকলঙ্ক শনী,
কর হানি বুকে মার কাঁদিছেন বিদি! (১).

সমস্ত প্রকৃতি যেন নিস্তক্ষ নীরব।
পশু পক্ষী তরুলতা বিষাদে মলিন,
কিসের অভাবে আজ নর নারী সব—
শান্তিহারা একেবারে—শোকের অধীন;
কে যেন আঁধারি তারে গেছে কোন্ দেশেঃ
অকুলে ব্রিটন আজ বেড়াইছে ভেনে। (২)

আর্তনাদ করে মায়—হায় হায় হায় !

এমন সোণার চাঁদ চলে যায় যার,

কাঁছনা কি মানে মনে প্রবোধিলে তায় ?

মা'র প্রাণ পুল্রশোকে করে হাহাকার!

সম্বরিতে নারি শোক কাঁদিছে জননী—

কোথা গেলি টেনিসন্ আয় যাহ্মণি ? (৩)

বিটনের ঘরে ঘরে কত নর নারী
কেলিছে শোকাশ আজ কবীশের তরে,
মহারাণী ভিক্টোরিয়া—নগনের বারি
কেলিছেন তার লাগি — ব্যথিত অস্তরে।
রাজ-পরিবার আজ শোকেতে মগন
কবীন্দ্রের মৃত্যুকথা করিয়ে শ্রবণ। (৪)

ভারতে ভারতী লয়ে বীণামন্ত্র করে
গাইছেন শোকভরে বিষাদের গান,
ভাবণে বিলাপগীতি যুগ আঁথি ঝরে,
গ'লে যায় দে গাঁথায় হিমাজি পাষাণ!
ভাহবী যমুনা যেন শোকেতে আকুল
তুলিছে বিষাদ্গান—কুল কুল কুল ! (৫)

টেনিসন্ - তিরদিন জাতি নির্থিশেষে
চারি মহাদেশে পূজা করিবে তোমার,
যে নাম রাখিলে তুমি স্বদেশে বিদেশে,
গাইবে তোমার গুণ কোটি রসনায়।
মহাকবি মিল্টন্ সেক্ষণীর পাশে
তব সিংহাসন পাতা আছে স্বর্গবাদে। (৬)

ওই দেথ সুরগণ স্বর্গীয় প্রস্থনে গাঁথিয়ে অপূর্ব হার,—গলে পরাইতে এনেছেন উপহার—গুর তব গুণে তাই এসেছেন তাঁরা আদর করিতে। অতুল কবিত্বশক্তি নির্থি তোমার দিয়েছেন দেবতার। দিব্য উপহার। (৭) হে ব্রিটন —কাঁদিওনা মোছ অঞ্ধার, টেনিসন এতদিনে হ'লেন অমর, মরিলেই পুত্রশোক,—তবে কেন আর অমরের তরে এত হয়েছ কাতর ? গর্ভে ধরি রক্ন হেন রক্নগর্ভা তুমি, পূজিবে তোমায় সবে বলি পুণ্যভূমি।(৮) অবলার উপকারী বান্তর এমন পাইব কি १—কে ফেলিবে এক ফোঁটা জল, (छेनिमन अवलात आश्रीय रामन, সেধেছেন তাহাদের অর্ণের মঙ্গল ? তাই আজ নারীজাতি তোমায় আশীষে. এত ভাগাবান তুমি হ'লে বল কিসে ? (১) যাও দেব স্বৰ্গবামে—ভুঞ্জ শান্তি স্থ্ৰ **ঢালিয়ে** পীযুৰণারা মজাও সকলে, জলন্ত লেখনী সেখা মাতায়ে তুলুক স্থরগণে--পিয়াইয়ে কাব্য-পরিমলে। মহাক্ৰিগণ্সনে—নূলন কাননে

কেলি কর চিরকাল আনন্দিত মনে।(১০)

क्रिहा

প্রেত সম্বন্ধে আনি বেসার্ণ্টের মত।

বিবি আনি বেসাণ্ট সম্প্রতি প্রেত-তত্ত্ব বিষয়ে ইংলণ্ডে একটী কবেন। তিনি বলেন যে বৈজ্ঞানিকের। যাহাকে 'ether' অর্থাৎ নীহারিকা বলে. থিয়সফিষ্ট অর্থাৎ তত্তজ্ঞানিগণ তাহাকে 'astral matter' অৰ্থাৎ নাক্ষতিক পদাৰ্থ বলে। প্রভেদের মধ্যে এই যে, প্রথ-নোক্তটি পরীক্ষিত, শেষোক্তটি অদ্যা-বধি ভালরপ পরীক্ষিত হয় স্থপ্তোথিত ব্যক্তি একটা আকৃতি দেখিতে পাইল। সে এই মাত্র দেখিল যে কোনও ব্যক্তি যেন সম্মুথে দুঙাগ্নমান আছে: সে কোনও কথা কহিল না, वा किছ । क्वांबा ना। प्रमुक देशांक যে দণ্ডে শোকভাবাপর বা শোক-দেখে. তাহার অনতিবিল্যে বিহ্বল আকৃতি অদুগু হয়। ইश े दक्रनरे বা আইল আর কোথাহইতে আইল তদ্বিধয়ে কিছু বুঝা যায় না, এবং কেহই কোনও কাহাকে মতে বুঝাইয়া দিতে পারে ना । ইহা সত্য কি মিথা, দশক নিজে জাগ্রত বা নিজিতাবস্থায় সেই দুগু দেখিল সে তাহা কিছুই বলিতে পারে না। রাত্রিকালে ইহা দেখিয়া ভয় পাইল, ष्मिन पृथि पिष्ण रहेन। থিয়দফিষ্ট-গণ ইহাকে "astral light" নাক্ষত্রিক জ্যোতিও বলেন। তাঁহারা বলেন যে, যথন কোনও লোকের মন গভীর চিস্তার

আকুল থাকে, তথন তাহা বৈচ্যতিক শক্তির অধীন হয়। যেমন বিহ্যাৎ এক প্রকার প্রকৃত পদার্থ সেইরূপ ঐ চিস্তাও এক প্রকার প্রকৃত তেজ,—এক প্রকার প্রকৃত বল। ইহা স্থানব্যাপিনী বৈছাত-শক্তির মত প্রকৃত। চিন্তার কার্যা-কারিতা ঠিক বৈহাতিক কার্য্যকারিতার ন্সায়। এ কথার যে কোনও অৰ্থ নাই তাহা কথনও বলা যায় বিচক্ষণ চিকিৎসকগণ বলেন যে, যথন মন্তিক হইতে চিন্তা পরি-চালিত হইতে থাকে, তথন আবার মন্তিক হইতেই বৈছাতিক কাৰ্য্য হইয়া থাকে। লোক যথন জড়জগতে প্রগাঢ় চিন্তায় অভিভৃত, তথন 'সে নীহারিকা বা আকাশিক পদার্থ ভেদ করিয়া বৈহাত স্রোভ আকাশমণ্ডলে প্রবাহিত করিতে থাকে। তাড়িত যেমন দূরবর্ত্তী স্থানা-ভিমুখে প্রবাহিত হইয়া বাত্যা আনয়ন করে, সেইরূপ লোকে অন্ত কোনও লোকের বিষয় অত্যন্ত ভাবিলে সেই নাক্ষত্রিক বা আকাশ পথ অতিক্রম করিয়া চিস্তা-তাড়িত প্রবাহ যে ব্যক্তির বিষয় চিন্তা করা যায়, তাহার দিকে এই নৈহা-প্রবাহিত হইতে থাকে। রিক প্রকম্পন যে ব্যক্তির বিষয় ভাবা যায়, তাহার নিকট পৌছিয়া যে বাঁ**ক্তি** তাহাকে ভাবে, তাহাকে অভিহৃ**ত করে,** করিয়া শেষোক্ত ব্যক্তির চর্শ্বচক্ষ্র সমীপে

এক অঙ্ আকৃতিতে পরিণত হয়,
তাহাই সচরাচর প্রেতাখ্যায় অভিহিত।
অনেক স্থলে ইহা আবার মানস-ক্ষেত্রে
কাবালের জন্ত অনুভূত মাত্র হইয়া
অনস্তে মিশাইয়া যায়। যথন কোনও
আগ্রীয় স্বজনের মৃত্যুকাল উপস্থিত
হওয়াতে সেই মুমুর্ব্যক্তি কোনও
অন্থপস্থিত বন্ধু পরিজনের সহিত সাক্ষাৎ
লাভে অত্যন্ত অভিলাষী হয়; তথন
এবস্থি চিত্র সচরাচর চিত্রিত হয়।
বিশেষতঃ পরম বন্ধু ওঅতি নিকট সম্প্র্নীয় বার্তিদিগের মধ্যে ইহার আবির্ভাব
সংঘটিত হইয়া থাকে। পরে মৃত্যুর সংবাদ

পাইলে আত্মীয় ব্যক্তি জানিতে পারেন বে, বে সমরে সেই মুর্যুব্যক্তি পরলোক গমন করিয়াছেন, ঠিক্ সেই সময়ে তিনি ঐরপ দৃশু দর্শন করিয়াছিলেন। এইত গেল আত্মীয় স্বজনের প্রেতাত্মা দর্শন সম্বন্ধে ভ্বন বিখ্যাত বেসাণ্টের মত। অহ্য প্রেতাত্মা বিষয়ে তিনি উল্লিখিত বক্তৃতায় কিছু মতামত প্রকাশ করিয়াছিলেন কিনা আমরা জানিনা; বোধ হয় তৎ সম্বন্ধে তাঁহার মত প্রায় তদ্রপ হইবে। প্রাচীন হিন্দু বিখাসের সহিত ইহার মতের অনেক সৌসাদৃশু দেখা যায়।

নিঃস্বার্থ স্বদেশ-প্রেম।

আজ বোমের ঘরে ঘরে আনন্দ!
রোমের সপ্তজন রাজার রাজত্বলালে
রোম কথনও এরপ আনন্দ-সাগরে মগ্র
হর নাই। কি জন্ত রোমান্গণ আজ এত
আনন্দে মগ্ন? ছন্দান্ত লাটনজাতি কি
রোম আক্রমণকালে রোমের বীরসন্তানগণের হন্তে পরাজিত হইয়া পলায়ন
করিয়াছে, কিম্বা রোমান্গণ কোন
বিপ্লবলশালী জাতির উপর আজ
আধিপত্য স্থাপন করিয়াছে, সেইজন্ত
কি ভাহারা আজ এত আনন্দে মগ্ন ?
না, ভাহা নহে। ঐ দেখ রোমের কাপিটল্পে আজি প্রথম সাধারণ-তন্তের চিছ-

শালিচল পর্বত, বাহা রোমের ছুর্গকরণ

সর্প সাধীনতার পতাকা উদ্ভীয়মান হইয়া বোমান প্রজা সাধারণের স্বাধীনতা ঘোষণা করিতেছে। তাই রোমান্গণের হদয় আজ এত আনন্দে পূর্ণ, তাই প্রতি গহে এত আনন্দের হিলোল প্রবাহিত হইতেছে। আজু রোমের বীরসন্তানগণ ছরাচার টারকুইনকে রোমের সিংহাসন হইতে বিদ্রিত করিয়াছে। তাহার সহিত তাহার অত্যাচার ও প্রজাপীতন অন্তর্হিত হইয়াছে এবং তাহার রোম ত্যাগের সহিত রোমানেরা চিরকালের জ্ঞু রাজা ও রাজপদের সমূলোচেছদ করিয়া সাধারণতন্ত্র স্থাপন প্রজা সাধারণের স্বত্ব ও অধিকার সমূহ नितानम कतिप्राष्ट्र ७ डाशामत्र याथी-

নতা দৃঢ়ভিন্তির উপর সংস্থাপিত করি-য়াছে.—এই সকল চিন্তাতে প্রত্যেক রোমানের হৃদয় আজ অপরিসীম আনন্দে পূর্ণ। প্রধানতঃ যে মহাস্থার যদ্ধে রোমে সাধারণতন্ত্র সংস্থাপিত হয়, সেই ধর্মবীর ক্রটদের যশোধ্বনিতে রোমের গগন আজ পরিপূরিত হইতেছে,রোমীয়-গণ তাঁহার গুণের যথোচিত সন্মান করি-বার জন্ম তাঁহাকে রোমের প্রধান কনসল বা সর্বাধ্যক্ষ পদে বরণ করিয়াছে। ত্রুট-দের হৃদয় যেরূপ সাহস ও বীর্য্যে পূর্ণ ছিল. তেমনি অপূর্ক সদেশ-প্রেমে পরিপূর্ণ ছিল। জগতের ইতিহাসে ক্রটস তাঁহার সে অপুর্ব্ব স্বদেশ-প্রেমের যে জলন্ত দৃষ্টান্ত রাথিয়া গিয়াছেন, ইতিহাদে তাহার সদৃশ দৃষ্টাস্ত অতীব বিরল। আমর। ভাহার সেই কাহিনী বর্ণন করিব।

ছুরাচার টারকুইন রোমের সিংহাসন হারাইরাও তাহা পুন:প্রাপ্ত হইবার करत्न मंहि। ভ্যাগ রোমের প্রতিবেশী জাতিগণের সাহায্যে ভাহা পুন:প্রাপ্ত হইবার জন্য তাহা-উত্তেঞ্জিত দিগকে রোমের বিপক্ষে করিবার চেষ্টা করিতে লাগিল, কিন্তু তাহার চেপ্তা সফল হইল না। কেহই এই নব উদীয়মান রোমের বিপক্ষে সহসা উত্থিত হইতে সাহসী হইল না। শেষে টারকুইন রোমের প্রতি-বেশী টরকুইল নামক জাতির অহ-গ্রহ লাভ করিতে সমর্থ হইল। তাহার।

তাঁহার অবস্থা সন্দর্শনে দয়ার্দ্র ভাহার প্রার্থনায় সম্মত হইয়া রোমে দুত প্রেরণ করিল। টারকুইন ভাহাদের প্রেরিত দুতের হস্তে রোমান প্রজা সাধা-রণের নামে এক পত্র প্রেরণ করিলেন. তাহাতে তিনি তাহাদের হস্তচ্যত রা**জ্যে**র জন্ম নহে, কেব**ল** তাহার পৈড়ক নিজম্ব সম্পত্তির জ্ঞ প্রার্থনা করিয়াছিলেন। বোমানগণ তাহার এই স্থায় প্রার্থনায় অসমত হইতে পারিল না। তাহারা তাঁহাকে তাঁহার পৈতৃক সম্পত্তি প্রদান করিতে সম্মত হইল। এদিকে দুতেরা টারকুইনের উপদেশামুদারে কয়েকজন সম্ভান্ত পেট্র-সিয়নের সহিত ষড়্যন্ত করিতে লাগিল। এই ষড়্যয়ে ক্রটদের পুতেরা আসিয়া যোগদান করিল। রোমের সাধারণ তন্ত্র ধ্বংস করিবার জন্ম এই ভয়হর ষড়্যন্ত চলিতেছিল, রোমান্গণ তাহার কিছুই জানিতে পারে নাই। কয়েকজন প্রভূত্বপ্রিয় সম্রাস্ত পেট্রিসিয়নের ‡ নিকট সাধারণতন্ত্রের সামানীতি বড়ই অসহ হইয়াছিল। তাহাদের সহিত প্লিবিয়ানগর্ণ সমান স্বত্ব ও সমান অধিকার ভোগ করিবে, তাহারা আর প্লিবিয়ানগণকে পদদলিত করিতে পারিবে না, রাজ্যের সমুদয় বল সমুদর উচ্চপদ ভাহাদের

‡ রোমানের। পেটি সিরান ও সিবিরান এই ছই জাতিতে বিভক্ত ছিল, ইহাদের মধ্যে বার্জাণ শৃক্তের প্রভেগ। সিবিরান্ বা ইতর শ্রেণীর লোক লত লত লত বংসর চেষ্টার পর পেটি সিরান বা ভক্ত শ্রেণীর সহিত সর্ব্ব বিষরে সমক্ষ হইরাছিল।

আয়ত্তে আর থাকিবে না এই চিস্তা তাহাদের বড়ই कष्टमाग्रक इरेन . এবং সাধারণতন্ত্রের কঠোর শাসনপ্রণালী ও কঠোর রাজনিয়ম সকল তাহাদের বডই অসহ হইয়া উঠিল, স্বতরাং তাহারা যে সাধারণতল্পের বিনাশসাধনে দৃঢ়প্রতিজ্ঞ रहेर्द जाहा किছूहे आर्फ्या नरह। किन्न বিধাতা তাহাদের সে ঘণিত অভিলায সফল হইতে দিলেন না, বিধাতার কপায় অচিরে তাহাদের ষড়্যন্ত্র প্রকা-শিত হইয়া রোমকে আসন ঘোর বিপদ হইতে রকা করিল। প্রতিদিন ষড়্যন্ত্রকারীরা একিউলাই নামক এক-জন সম্রান্ত পেট্রিসিয়নের গৃহে সমবেত হইয়া মন্ত্রণা করিত, কিন্তু একদিন, —বেদিন তাহারা টারকুইনকে পুনরায় সিংহাসনে প্রতিষ্ঠিত ও সাধারণতন্ত্রের ধ্বংস সাধনে আপনাদিগকে দ্বতপ্ৰতিজ্ঞা-পাশে বদ্ধ করিবার জন্ম এক ব্যক্তিকে হত করিয়া এবং সেই হত রক্তপান ও অন্ত স্পর্শ করিয়া শুপুথ করিবে এবং এইরূপ ভয়দ্ধর শপথ করিয়া তাহাদের অভিপ্রায় জ্ঞাপন দতের হতে টারকুইনকে প্রদান জ্য পত্র দান করিবে, সেইদিন তাহাদের গুপু ষড় যন্ত্র আর অপ্রকাশিত রহিল না। সেই দিবসও তাহারা ঐ সকল কার্যা অতি গোপনে সম্পাদন করিবে, কেহই ভানিতে পারিবে না মনে করিয়াছিল. কৈছ 'একিউলাইয়ের একজন ক্রীত দাসের নিকট ভাহা গোপন রহিল না।

একিউলাইয়ের এই দাস প্রভুর প্রতি সন্দিহান হইয়া গোপনে গৃহের একটা ছিদ্র দিয়া তাহাদের কার্য্য সকল দর্শন করিয়াছিল। একিউলাইয়ের দাস এই সকল ব্যাপার দর্শন করিয়া হইল। অদেশের এই ঘোর বিপদ দর্শন করিয়া সে আর স্থির থাকিতে পারিল না। অবিলম্বে ভেলেরিয়াস নামক এক-জন সেনেটারের নিকট গিয়া এই গুপ্ত ব্যাপার প্রকাশ করিয়া দিল। প্রাচীন রোমের ক্রীতদাদেরা স্বদেশকে স্থদেশ বলিয়া ভালবাসিতে জানিত, এই দাসের দ্ধীন্তে তাহা প্রমাণিত হইতেছে। ভেলেরিয়াস দাসের নিকট এই ব্যাপার শ্রবণ করিয়া আর কাল বিলম্ব করিলেন না, অবিলমে তাঁহার ভাতা ও ব্লুগণের সাহায্যে যভ্যন্ত্রকারীদিগকে গৃত করি-লেন। ইহাদের সহিত ক্রটসের পুত্র-দ্বরও গত হইল। তৎপর দিন কমি-টিয়মে* অর্থাৎ দেশস্ত সকল মিলিত হইয়া যে সভার সাধারণতন্ত্রের গুরুতর বিষয় সকলের মীমাংসা করে. সেই সভায় আনয়ন করা হইলে প্রধান কন্সল ক্রট্স তাহাদের বিচার আরম্ভ করিলেন। সমবেত রোমানগণ বিচা-রের শেষ ফল জানিবার জন্ম উৎস্কুক হইলেন। ক্রটস স্ক্রাগ্রেই তাঁহার অপ-রাধী পুত্রন্বরের বিচার আরম্ভ করিলেন। তাঁহার নিক্ট তাহাদের সমস্ত অপরাধ্ই

 লাটিন ভাষার কমিটিয়য়্ শব্দ হইতে ইং-রাজী কমিটি শব্দের উৎপত্তি হইয়াছে ।

প্রমাণিত হইল। তাহারা যে রোমের সাধারণতন্ত্র ধ্বংস সাধনে দুঢ়সংকল্প ও টারকুইনকে সিংহাসনে পুনঃস্থাপিত করিতে প্রতিজ্ঞাবদ্ধ হইয়াছে সকলই প্ৰমাণিত হইল। ক্রটস সম্বোধন করিয়া তাহাদের আপনাদের পক্ষ সমর্থনার্থ যদি কিছু বলিবার থাকে তাহা বলিতে বলিলেন, কিন্তু তাহারা কিছুই উত্তর করিতে পারিল না, শুদ্ধ নীরবে দুভায়মান হট্যা রোদন করিতে লাগিল। তাহাদের এই অবস্থা দুশ্নে দরার্দ্র হইয়া সেনেট সভার অধিকাংশ সভ্য তাহাদিগকে নির্দ্ধানন দণ্ড প্রদান করিতে ত্রুটসকে অন্নরোধ করিলেন। ক্রটনের অন্তত্তর সহযোগী কলেটিয়ানস এইরপ শোচনীয় তাহাদের দৰ্শনে অঞ্সন্ত্রণ করিতে পারি-না। কমিটিয়মের সমবেত জনমণ্ডলী ভীত ও স্তত্তিত হইয়া নীরবে দণ্ডায়মান রহিল। তাহাদের শোক পূর্ণ বদন যেন নীরবে অপ-রাধীদের জন্ম দয়1 ভিকা লাগিল। ক্রটদের পুত্রেরা করুণস্বরে পিতার নিকট দয়া ভিক্ষা করিতে লাগিল। কিন্তু ক্রটস কিছুতেই বিচ-निङ इहेरनम मा। পুতাপেका यहन তাঁহার নিকট অধিকতর প্রেমের বস্তু। স্বদেশের মঙ্গলের জন্ম তিনি তাঁর পুত্র কলত্র জীবন সকলই পরিত্যাগ করিতে পারেন। যে ব্যক্তি এমন প্রিয় স্বদেশের বিদ্রোহী হয়, সে পুত্র হইলেও ক্রটসের

নিকট ক্ষমার যোগ্য নহে। স্বদেশের মঙ্গলার্থ এমন কুলাঙ্গারের মৃত্যুই বাঞ্চ-নীয়। তিনি দৃঢ়স্বরে জল্লাদকে তাঁহার পুরস্বরের মন্তকচ্ছেদ্ন করিতে আজ্ঞা প্রদান করিলেন। তাঁহার এই আজ্ঞা শ্রবণে কমিটিয়মের সমবেত জনমগুলী শোকে অফটস্বরে আর্ত্তনাদ করিয়া উঠিল: কিন্তু এই আজ্ঞা প্রদান সময়ে ক্রটদের স্বর একটুও কম্পিত হইল না। যথন জল্লাদগণ তাঁহার পুত্রন্বয়ের মন্তক-চ্ছেদন করিল, তথন তিনি অবিচলিত-ভাবে সে निष्ठुत मृश मर्गन कतिर्लन, তাঁহার নয়ন হইতে এক বিলু অঞাও পতিত হইল না। অপরাধী পুত-দয়কে সম্চিত দও প্রদান করিয়া ক্রটেশ্ তাঁহার অন্তত্তর সহযোগী কলে-টিয়ানদের উপর অন্য অপরাধীদিগের বিচার ভার প্রদান করিয়া কমিটিয়ম পরিত্যাগ করিয়া গেলেন। করুণসদয় কলেটিয়ান্য অহা অপরাধীদিগকে নির্কা-দন দণ্ড প্রদান করিলেন, কিন্তু রোমা-নেরা তাঁহার বিচারে অসম্ভুষ্ট হইয়া তাহাদের পুনর্বিচারের জন্ম ক্রটসকে পুনরায় কমিটিয়মে আসিতে অমু-রোধ করিল। ক্রটস্ ভাহাদের আহ্বানে ক মিটিয়মে আগমন করিলে সমবেত তাঁহাকে অপরাধীদিগের রোমানগণ বিচার করিতে অমুরোধ করিল, বি্ত্ত ক্রটস তাহাদের অমুরোধ পালন করিতে অস্বীকার করিলেন। তিনি ব**লিবেন** "দস্তানের উপর পিতার যে ক্ষমতা থাকে,

প্রেদিগকে দণ্ড প্রদান করিয়াছি, অবশিষ্ট অপরাধীদের পক্ষে সমবেত রোমান্শণ যে দণ্ড উপযুক্ত ৰলিয়া বিবেচনা
করিবেন দেই দণ্ড প্রদান করা ছিল বলিয়
হইবে। তৎপরে সর্ব্ধ সাধারণের সমাজীপদে
মতে প্রাণদণ্ডই তাহাদের উপযুক্ত দণ্ড ইয়াছিল।

বলিয়া বিবেচিত হইলে অপরাধীদিণের
মন্তকচ্ছেদন করা হইল। এইরূপ
নিংস্বার্থ অদেশপ্রেমিক বহুতর বীরসন্তান রোমের ক্রোড় অলক্কত করিয়াছিল বলিয়া উত্তরকালে রোম জগতের
সমাজ্ঞীপদে আরোহণ করিতে সক্ষম
হইয়াছিল।

গৃহচিকিৎসা।

সর্দ্দি সচরাচর সামান্ত পীড়া। সর্দি ইংলে, হয় টানিয়া গেলে সারে, নয় ঝরিয়া গেলে সারে। সর্দ্দি বুকে বসিয়া যাওয়াই নানাবিধ রোগের মূল এবং ছোট শিশুর পক্ষে অনেক সময়ে সাংঘাতিক হইয়া দাঁড়ায়। সর্দ্দি টানিয়া যাওয়ার অর্থাৎ সর্দ্দির উপক্রমেই আরাম 'ছওয়ার আবশুক হইলে নিয়-লিখিত ঔষধ বাবহার্যা।

 ১। কুমীরিকা গাছের শিকড় *
 ২০তী গোলমরীচ দিয়া বাটিয়া থাইলে সর্দ্দি আরাম হয়।

২। একটু হরিদ্রা গুড় ও একটু আদা বাটিয়া বজি করিয়া সকালে ও সন্ধ্যাকালে থাইলে সর্দ্দি আরাম হয়। ইহার পূর্ণমাত্রা ৪ াতি। শিশুদিগকে সিকি মাত্রা দিতে হইবে। ৩। (১) ছলল ফুলের পাতার রস হাত পায়ের তেলােম ও ছই রগে দিলে দর্দি আরাম হয়।

সর্দ্দি ঝরিয়া পড়াই উত্তম। সর্দ্দি ঝরাইবার আবিশুক হইলে গরম জলে স্থান ও মিছরির জল পান করা বিধেয়।

দর্দ্দি হইলে অত্যাচার করিলে,
(শীতল হুধ পান, শীতল বায়ুতে বেড়ান,
ভিজাবস্ত্রে থাকা প্রভৃতি) দর্দ্দি বুকে
বিদিয়া নানাবিধ কাশির উৎপত্তি ও
ছন্চিকিৎস্থ রোগ উপস্থিত হয়। অতএব দর্দ্ধি হইলে সাবধানে থাকা সর্ব্বতোভাবে কর্ত্তবা।

জল-কাণী হইলে, আদা গোল গোল করিয়া কাটিয়া দৈন্ধব বা লবণ মাথাইয়া জলস্ত সলিতায় পোড়াইয়া থাইবে। ২া০ দিন থাইলে আরাম হইবে।

সর্দিতে গলায় যদি বেদনা হয়, তবে পানে করিয়া সরিয়া তৈল গরম করিয়া

কুমীরিকা লতাবিশেষ। এই লতা পলী-প্রামে স্তিকা গৃহেও দেওরা হইরা থাকে। ইছার পাকা শিক্ত শিলে ঘসিলে চন্দনের মত বাছির ছয়,তাহাই লইবে।

⁽১) এটা কেবল শিশুদিগের জন্ঠ।

গলায় লাগাইবে। ঐ বেদনায় যদি গলার স্থর বসিয়া যায়, তবে আমের পাতায় ঐ তৈল গ্রম করিয়া দিবে।

গলায় যদি এমন বেদনা হয় যে ঢোক গিলিতে কষ্ট হয়,তাহাহইলে একটী বড় পান ঠোঙার মত করিয়া তাহাতে প্রদীপের শিষে জল গ্রম করিয়া ৩।৪ ঢোক থাইলে আরাম হইয়া যায়।

১। কাশী যদি হাঁপানির মত হয়, তবে খেত আকদের পাতায় সরিষার তৈল গরম করিয়া রোগীর গলায় মালিস করিবে।

২। উক্ত রোগীর শ্রেয়া উঠ।ইবার আবশুক হইলে একটা পাত্রে ধুতুরা ছাড়াইরা তাহাতে আগুণ দিরা সে ধ্ম রোগীকে আঘাণ করাইবে, তাহা হইলে শ্রেমা উঠিয়া পভিবে।

 । তিত বেগুণ (বৃহতী) ভাজিয়া রোগীকে আহার করিতে দিবে।

৪। বিছুটী পাতা দতে ভাজিয়া
 থাইলেও এ রোগ উপশন হয় ।

 থানকত তেজপাতা কলিকার রাথিয়া তাহাতে আগুণ দিয়া রোগীকে
 শেই ধুম পান করিতে দিবে।

দিদি ইইলে অনেকের বুকে বেদনা ইইরা থাকে *। এরূপ ইইলে গৃহ-

* সন্দিতে বুকে বেদনা হইলে বুকে আকলের

চিকিৎসার উপর নির্ভর না করিয়া স্থবিজ্ঞ চিকিৎসক আনিয়া দেখান কর্ত্তব্য।

সন্দিবশতঃ কান কামড়ানি বা কট-কটানি হইলে একটা রক্তন ছাড়াইয়া কানের ভিতর রাখিলে আরাম হয়।

বনমরীচ নামক লতার পাতা সরিষা তৈলে দিয়া তৈল গ্রম করিয়া কানের ভিতর ঐ তৈল দিলে আরাম হইবেক।

সর্কি হটলে প্রায়ই জর হইয়া থাকে,
সে জর সন্দির আরামের সঙ্গেই আরাম
হয়। যদি চিকিৎসা আবগুক হয়,
তবে প্রথমে জোলাপ লওয়া বিধেয়।
বিলপত্রের রস একরূপ জোলাপ।
অথবা ২০০টী লবঙ্গের সহিত ৩৪টী
হরীতকী বাটিয়৷ গরম জলে গুলিয়া
থাইলে কোন্ঠ পরিদার হইবে। যদি
কোন্ঠ পরিদার নাহয়, তবে খুব খুানিকটা
গরম জল থাইলে জোলাপ খুলিবে।
জোলাপ খুলিলে সন্ধি টানিবার ঔষধ
সেবন করিলে আরাম হইতে পারিবে।

জরে পণ্য থই, নিছরি, কটী ও সাগুদানা। জর না গাকিলে একবেলা কটী ও এক বেলা ভাত থাইতে পারে।

(ক্ৰমশঃ)

পাতার দেক দেওয়া কর্ত্তন্য। অথবা কালিকাসিন্দা গাছের পাতা ইকুচিনি দিয়া •বাটিয়া প্রবেশ দিলে আরাম হইতে পারে।

রাসায়নিক কৌতুক।

১। সীসকের গাছ প্রস্তুত প্রণালী-একটা কাচপাত্রে কিছু এসিটেট অব লেড জ্বলে গুলিয়া তাহাতে ছই তিনটা দস্তার পাতের লম্বা এবং সরু টুকরা ফেলিয়া রাখিলে ছই তিন ঘণ্টা পরে দেখিবে যে পাত্রের তলায় শেহালার স্থায় স্থন্দর দানা বাঁধিয়া দস্তার পাত হইতে চারি-দিকে বিস্তৃত হইয়া রহিয়াছে। এসি-টেট্ অব্লেড বেনের দোকানে পাওয়া ইহা শুক্লেট্ (Sugar of যায়। Lead) বলিয়া বিক্রীত হয়। ভাল করিয়া ঘরে সাজাইয়া বাথিবার জন্ম প্রস্নত করিলে একটী কুইনাইনের সিসি ব। षश्च कान कामान भनायुक भिनि नहिया তাহার কাকের (cork) নীচে একথও দস্তার চাক্তি দিবে ; পরে হুইটা বা তিনটা তামার সরু তার লইয়া, কাকের ও দক্ষার চাক্তির ভিতর দিয়া সিসির ভিতর প্রবেশ করাইয়া দিবে। এরপ ভাবে দিবে যেন তারগুলি দস্তায় লাগিয়া থাকে। পরে ছই তিন প্রসার শুক-লেটু কিনিয়া তাহা জলে গুলিয়া ঐ সিসি পূর্ণ করিয়া দিবে। দেখিও দস্তার চাক্তি যেন জলে ডুবিয়া থাকে। তিন চারি ঘণ্টা পরে দেখিবে যে এই তামার তারগুলি হইতে চারিদিকে সীদকের <mark>ি দানাগুলি পরস্পর সংলগ্গ হইয়া বিচি</mark>ত্র আকার ধারণ করিয়া অবস্থিত রহিয়াছে। 🕽 ইয়া আসিয়া পড়িবে।

দীসক ভিন্ন অন্ত ধাতু হইতেও এইরূপ স্থলর দানা পাওয়া যায়। নাইটেট অব্ সিল্ভার জলে গুলিয়া তাহাতে পারা ফেলিয়া দিলে] এইরূপ "রূপার গাছ" প্রস্তুত করা যাইতে পারে।

২। বাজী – একটা হাঁসের ডিম লইয়া তাহার এক স্থানে একটা ক্ষুদ্র ছিদ্র করিয়া তাহার ভিতরের যাহা কিছু বাহির করিয়া লও। এই খোলাটী শুকাইয়া টেবিলের উপর রাখ। পরে একটা কাচদণ্ড ও এক টুকরা ফ্রানেল লও। এই ছইটা দ্রব্যকে গরম কর এবং এই কাচদওটা ফু্যানেলে উত্তমরূপে ঘসিতে থাক। কিছুক্ষণ পরে ঐ কাচদগুটী হাঁদের ডিমের খোলাটীর অতি নিকটে লইয়া গেলে খোলাটী কাচদণ্ডের দিকে সরিয়া আসিবে। কাচদগুটী আস্তে আস্তে যত সরাইবে, ডিমের খোলাটীও তত তাহার দিকে সরিয়া যাইতে থাকিবে।

৩। একথানি রবারের চিক্ৰ (যাহা মেয়েরা মাথার দের) বা অবস্ত (कौन त्रवादतत जिनिष कादनल निया থুব ঘদিলে তাহাতে তাড়িত উৎপন্ন হয়। কুচা কাগজ, লোম বা নরম পাল-কের নিকট সেই রবারের জিনিয ধরিলে তাহার টানে তাহার উপর লাফা-

তুরক নারী।

আমাদিগের দেশে যেমন অন্তঃপুর ও বহিবাটী আছে, তুর্জ দেশেও সেই-রূপ আছে। অস্থাস্থ মুসলমান-রাজ্যেও এইরূপ বন্দোবস্ত। অন্তঃপুর প্রথা ভাল কি মন্দ সে বিষয়ের এস্থানে অলোচনা হইতেছে না। ইহা ভালই হউক বা মৃদ্ধ হউক আমরা যে ইহা মুসলমানদিগের নিকট হইতে পাইয়াছি. তাহাতে কিছুমাত্র সন্দেহ নাই ৷ প্রাচীন शिनुत्रभी व्यवताधवामिनी अ हिलन मा, এরপ অবগুঠনবতীও ছিলেন না। তাঁহারা বিদ্যাৰতী, লজাৰতী ও অন্তান্ত সদগুণ-বতী ছিলেন। লজাই নারীর প্রধান खन, लड्डारे नातीत अमृनानिधि, এरे खन যিনি গুণবতী, তিনিই পরম গুণবতী, পরম স্থনর। বর্ত্তমান সময়ের বামাগণ অন্ত কোনও বিষয়ের উত্তরাধিকারিণী হউন বা না হউন,এই এক রত্ন তাঁহাদিগের নিকট হইতে পাইয়াছেন বলিয়াই তাঁহাদিগের অদ্যাপিও এত গৌরব: এখনও ইহারই দারা সংর্কিত হইতে-ছেন, এখনও তাঁহারা ইহা পাইয়াছেন বলিয়াই স্বাস্থ জন্মভূমির মুখোজ্জল করি-তেছেন। তুর্ক নারীদিগেরও বেশ কজা-শীলতা আছে। হিন্দু বালিকার মুখে যথন স্তল্যের গন্ধ, তথন হইতে বৈবাহিক কার্য্যপ্রণালী অমুকরণ করিয়া অবগুঠন-বতী হইয়া সে ভাবী জীবন অভিনয় করিতে শিক্ষা করে। ইংকেই বলে

পুতৃল থেলা, ইহাকেই বলে বো বৌ থেলা. রাদীবাড়ী থেলা অর্থাৎ স্বহস্তে রম্বন করিয়া অর ব্যঞ্জনাদি স্বহস্তে পরিজনকে, জ্ঞাতি বন্ধু বান্ধবকে, আহত বা অনাহূত আগস্তুক অতিথি দেবতাকে পরিবেশন করা। একদিকে যেমন মাত-ত্বের দায়িত্ব, অপরদিকে তেমনি পরিণীত জীবনের পরম স্থুখ, একদিকে বেমন কর্ত্তব্যামুষ্ঠানের দায়িত্ব, অপরদিকে তেমনই আতিথ্য-সংকারজনিত প্রম ধর্মালাভে মেকিফল লাভ কেবে। একজন স্থবিখ্যাত ইংরাজ গ্রন্থকর্ত্তা লিথিয়াছেন যে, নারীর গৌরব শুদ্ধ মাতৃত্ব। একথার মূলে যে অমূল্য সত্য আছে, তাহা চিন্তাশীল ব্যক্তিমাত্তে অবগত আছেন। অম্বদেশীয়া বালিকা-দিগের মত তুরফদেশীয় বালিকারাও ক্রীডাচ্চলে আপনা আপনি ভাবী জীবনের শিক্ষা ও দূরদর্শন লাভ করে। ইংরাজ-বালিক। কি বালিকা নয় ? ইহারাও ত পুত্ল লইয়া থেলা করে, মাতৃত্ব ও ও বৈবাহিকত্বের দায়িত্ব বিষয়ে শিক্ষা লাভ করে ? করে সত্য, প্রভেদ এই অধুনাতন প্রাচ্য মহিলাগণ মনে করেন त्य, विवाहरे एवन नाती-स्वीवत्नत्र अक-মাত্র উদ্দেশ্য, পাশ্চাত্য মহিলাগণ তাহা ভাবেন না। তাঁহারা জানেন যে, ইस অন্তত্ম উদ্দেশ্য, ইহার সহিত অক্সান্ত মহত্দেশ্র সংশিষ্ট আছে, সেওলিও

কার্য্যে পরিণত করিতে হইবে। ভাল বরে বিবাহ হইবে বলিয়া তুরঙ্গ বালি-কাকে লেখা পড়া শিখিতে হয়। পিত্রা-লয় তাহার শিক্ষালয়। বিবাহের পর দে শশুরালয়ে অত্যন্ত অনিচছা ও হুঃথে গমন করে। এই সকল বিষয়েই আমা-দিগের বালিকাগণের সহিত তাহাদিগের মিল আছে। তুরুদ্দ সমাজে নারী সম্মানিত হইয়া থাকেন। স্ত্রীলোক পুরুষকে ঘরে বাহিরে যুগোচিত ভর্ষনা করিতে পারেন, কিন্তু পুরুষ কথনই স্ত্রীলোককে ভর্পনা করিতে পারেন না, করিলে পুলিস কর্তৃক শ্বত হইয়া দণ্ডিত হয়। তুরুদ্ধনারী অলস থাকিতে পায় না। লেথা পড়া, বাদ্য, চিত্র, বুটীতোলা; সেলাই, পোষাক তৈয়ারি করা—রন্ধন, গৃহাদি মার্জনী দারা পরিদ্ধার রাথা, বস্ত্রাদি ইস্ত্রি করা—এইগুলি তাহাকে শিক্ষা করিতে হয়।

শিশু সন্তানের প্রতি মাতার কর্ত্তব্য।

(গতবারের শেষ)

শিশুদের যথন কথা বলিবার শক্তি জন্মে তথন শিশু আধু আধু বোলে জননীর নিকট "মা। এটা কি. ওটা কি ?" ইতাাদি অনেক প্রের্গ করিয়া পাকে। সে সময় মাতা ঐ বস্তুর যথার্থ নাম ও বিষয় গোপন করিয়া শিশুর কৌতুক জন্মা-ইবার জন্ম কোনও কাল্লনিক বিষয়ের উল্লেখ করিবেন না. কিম্বা "কি জানি বাপু। আমি তোমার সহিত আর বকিতে পারি না" বলিয়া বিরক্তি প্রকাশ করিবেন না। শিশু যদি সালা মেঘের লোহিত বর্ণ দর্শন করিয়া মাতার নিকট জিজ্ঞানা করে "মা, 'ও কি ?" মাতার উচিত, "বুড়ি দিন্দুর মেলিয়া शिशाष्ट्" ना विलया অন্তগমনোনাথ স্থাের কিরণ মেঘে প্রতিফলিত হই-बारक, ठारे भिष लाल रहेबारक" वला। শিশুদের নিকট মন্দ বিষয় গোপন করিয়া কেবল ভাল বিষয় সর্ব্বদা বলাও উচিত নহে, কেন না সংসারে যথন ভাল মন্দ তুই আছে, আর শিশুগণ্ও সেই সংসারক্ষেত্রের কর্মচারী, তথন একদিন না একদিন মন্দকে জানিতে পারিবে: তথন সেই মন্দের ফল না জানিয়া হয়ত উহাতে লিপ্ত হইবে, তজ্জন্ত যেটি মন্দ কার্য্য তাহার বিষয় গোপন না করিয়া উহার অপকারিতা বুঝাইয়া দিয়া ঐ কার্য্যের প্রতি শিশুর ঘুণা জনাইয়া দিবেন। এক কথার বাহাতে শারীরিক. মানসিক ও আধ্যাত্মিক উন্নতি লাভ করা যায়, এমন সমস্ত কার্য্যে স্স্তানের প্রবৃত্তি জন্মাইয়া দেওয়া মাতার উচিত। কুসঙ্গ হইতে সন্তানকে দুরে রাখাও মাতার একটা প্রধান

দাও, প্রিয় বস্তু দাও, মিষ্ট বাক্য বল, আর গালি দাও, প্রহার কর, বা অন্তান্ত | আবার ঐ কুসঙ্গ ধরিবে, অমনি উহা প্রকার শাস্তি দাও, কিছুতেই তাহাকে চিলিয়া যাইবে।

বালক কুসংসর্গে থাকে, তাহাকে উপদেশ বিশে আনিতে পারিবে না। শান্তি ও উপদেশের ফল ক্ষণস্থায়ী,

নূতন সংবাদ।

১০ই নবেম্বরের ফরাসী রাজ-কীয় টেলিগ্রাফে প্রকাশ যে ফরাসীরা ডাহোমীয়দিগের রাজধানী কানা অধি-কার করিয়াছে। ঘোরতর যুদ্ধ হয়, দেশীয় স্ত্রীদৈন্ত দলও স্বদেশপ্রেমে মাতিয়া যুদ্ধ করিয়াছিল। কিন্তু প্রবলের হাতে হতভাগ্য আফ্রিকজাতির স্বাধীনতা विनुष इरेन।

২। হাবড়া পঞ্চাননতলা নিবাসী বাব ক্ষীরদচন্দ্র পাল হাবড়া তেলকুল चारि लोह मिँड़ी महिल अक्टी हामनी নির্মাণার্থ পোর্ট কমিসনরদের হত্তে ১৩০০০ টাকা দিয়াছেন।

৩। কাকিনিয়ার রাণী শ্রীমতী मत्नारमाहिनी ट्रोधूतां श्रीत्नाक निरंगत বিদ্যাসাগর স্মৃতিচিহ্ন ফণ্ডে ১০০১ টাকা দান করিয়াছেন।

গ্রণ্র জেনারল ভূপাল দর্শন

করিয়া তথাকার বেগমের প্রতি থুব সৌজন্ম প্রদর্শন করিয়াছেন।

৫। নদিয়ার দানশীল জমীদার বাবু নফরচন্দ্র পাল ক্লফনগর হাঁদপাতালে ज्जीत्नां कित्रांत अकी गृह निर्मागार्थ २०० हे।का निशास्त्र ।

৬। বরদার গুইকুমার **আপনার** রাজা মধ্যে আজা প্রচার করিয়াছেন যে পুত্র কন্তার বিবাহে ২০০_১ টাকার অধিক যৌতুক কেহ প্রদান করিতে পারিবেক না। বঙ্গদেশে কি এরপ কোন বাবভা হইতে পারে না প

৭। সে দিন পিও কোম্পানীর জাহাজ চিনের সমুদ্রে ভগ্ন হইয়াছে, গত ২৭শে অক্টোবর আবার গ্রাহাম কোম্পা-লিসবনের নীর কুমানিয়া জাহাজে অনতিদুরে ভগ্ন ইইয়া ১৭২ জন লোকের मुठा इहेब्राइ।

পুস্তকাদি সমালোচনা।

শ্তুক্থানির লেখা সরল ও বিশুদ্[†] অনেকগুলি দৃষ্টান্তচ্ছলে উপদেশ আছে

১। নবগ্রাম—জনৈক বঙ্গুমহিলা | হইয়াছে এবং গল্পটা স্প্রণালীবীক। মূল্য ১ এক টাকা মাতা। ইহাতে করেকটা স্থশর চিত্র এবঃ একজন বন্ধ মহিলা এরপে মনোজ উপস্তাদ লিখিতে পারেন, ইহা সামাত প্রশংসার বিষয় নহে।

২। মনোরমার গৃহ— শ্রীচণ্ডীচরণ
বন্দ্যোপাধ্যায় প্রণীত, মূল্য ৮০ আনা।
স্বভর্তা ও স্থভার্য্যা মিলিত হইয়া কেমন
করিয়া স্থথের ঘর সংসার করিতে পারেন
এবং তাঁহাদের দৃষ্টান্তে অসৎ পতি ও
পদ্ধীও কেমন করিয়া ভাল হইতে পারে
ইহাতে তাহা স্থল্যরূপে চিত্রিত হইয়াছে। লেখক সাহিত্য সংসারে খ্যাতি

লাভ করিয়াছেন। তাঁহার লেখা বেশ সরস এবং বর্ণনা হৃদয়গ্রাহিণী। পাঠক পাঠিকাগণ বর্ত্তমান গ্রন্থথানি পাঠে পুল-কিত ও উপক্তত হইবেন সন্দেহ নাই।

৩। সাধনা— গ্রীযুক্ত বাবু স্থ্ধীন্দ্রনাথ ঠাকুর সম্পাদিত। ইহার বয়স এক
বৎসর পূর্ণ হইয়াছে। প্রবন্ধের বৈচিত্র,
ভাষার মাধুর্য্য, চিন্তার গান্তীর্য্য ও মুদ্রান্ধগাদির পারিপাট্য সকল বিষয়েই সাধনা
প্রশংসাহ। এরূপ পত্রিকার দীর্ঘ জীবন
আমরা প্রার্থনা করি।

বামারচনা।

অভিনন্দন।

(আলো ও ছায়া-প্রণেত্রীর প্রতি)

আধেক রয়েছে রাতি, আধেক জেগেছে উষা. আংধেকে আঁধার বাস. আধেকে কনক ভূষা। আধু গীতি গা'য় পাথী, আধ ফোটে বেলি ফুল. স্বরুগ মরত আধ. চিনিতে আঁথির ভুল ! আকাশে অমরী-কণ্ঠ আধ আধ শোনা যায়, আধ সে আঁচল থানি লুটিছে স্থমেক গা'য় 😼 **জগত** ভরিয়া গেছে আধ আলো আধ ছায়া. **এক হেন মোহিনী মে**য়ে কার এ মোহিনী মারা ?

কার এ মধুর বীণে मनाकिनी उपनित. কাৰ এ পাপিয়া আসি অকালে ঝকার দিল ?---क्षानितन नाती कि (प्रवी, জানিনে কাছে কি দূরে, তবু ডাকি—একবার এস কাঙ্গালের পুরে! উঠিছে পূরবাকাশে তোষারি পুরবী তান, মর্মে পশিছে মোর শিহরি আসিছে প্রাণ! জাগিয়া স্বপনে শুনি তোমারি মধুর বাঁশি, মনে মনে পুঞ্জি নিতি, প্রাণে প্রাণে ভালবাসি ! প্রিয়-প্রসস-রচয়িত্রী।

The Bamabodhini Batrika.

The Duchess of Teck takes great interest in the cause of the needlework guild, whose object is to benefit the workers and the recipients of the work. Last year alone 250,000 articles were produced. A great many poor people are thus clothed. Patience, perseverance, industry and sympathy were all encouraged by the guild, which was thus a benefit to work. Many a gentle lady, especially, widows not in good circumstances, might be helped to earn a decent livelihood if such a guild were established in our own country. We throw out this suggestion to our readers.

October is the time when all the colleges in England re-open after the long holidays. It is astonishing to find the number of opening and other scholarships in Arts, Literature and Science thrown open to the women in various places of learning in London, Cambridge and Oxford. Private citizens, the Queen herself, and different guilds vie with each other in encouraging higher education among women in England. Thus year by year the scholarships increase, bringing into the field proportionately a greater number of women to compete for them. We may well follow the example of giving such liberal aid towards encouraging the higher education of women.

According to the official French despatches of the 10th instant, the French forces have captured the sacred Dahomyan city of Kana after hard fighting, in which the French lost fifty men in killed and wounded.

The gratest English singer poet Tennyson has 'crossed the bar' in his 83rd

vear. In his journey heavenward, his immortal spirit left the mortal remains at midnight, when there was no artificial light in the room but the moon shining in his face, emphasising in his own words: "Twilight and Evening Bell and after that the dark!

And may there be no sadness of farewell when I embark."

He was buried in the Poets corner, beside Browning in the Westminster Abbey, where religion, science, statesmanship, arts, law, medicine were represented by the leading lights of the respective branches. All English knowing people will always remain under obligation to Tennyson for his highly elevating poetical writings. His spirit will always live with us to teach us toprepare to embark for a better world.

The following words taken from the "Princess" sum up Tennyson's view of woman's position :-

"The woman's cause is man's: they rise or sink

Together, dwarf'd or godlike, bond or free.

If she be small, slight-natured, miser-

How shall men grow?"

Miss Eckermann, a lady missionary, is now on a visit to Calcutta to further the good cause of temperance. a member of the Women's Christian Temperance Union. . We wish her all success in the noble cause for which she has been working.

The people, the sovereign of Spain, and all the representatives of European and American nations were celebrating

the fourhundredth anniversary of Columbus's sailing on Oct. 12 last, from Huelra, to discover America. The Great Western nations, in the course of the last 400 years, have made great progress in all that make, people happy,—in religion, education and in material improvement, and the land where they dwell, was discovered by the genius and single-handed efforts, amidst trials, of one man. Italy where the great discoverer was born, and Spain, whose Queen helped Columbus with ships, may well be proud of Columbus.

We think our education complete when we leave the schools and colleges, and forget that we can improve our minds always by further learning the arts and sciences. In England by the establishment of Polytechnics and by the university extension lectures, people are being more cultured than they were before. It would be worth while to have evening lectures and examinations conducted in connection with them in our country.

The Demorest's Family Magazine for October records the following good news about the work of women:—

There are 56 women medical missionaries in China.

Miss Emily Dickson of Dublin, lately took the highest honours at the Royal University of Ireland, far outstripping all the young men. She is a Dublin girl, the daughter of a member of Parliament.

Miss Phillippa Fameett, who had the honor, two years ago, at Cambridge University, of ranking "Above the Senior Wrangler" has been appointed by the Council of Newnham College a Resident Mathematical Lecturer After her brilliant successes she was awarded the Marian Kennedy studentship, and has been living at Newnham while engaged in research work in the Cavendish Laboratory, and quite recently she has been elected to a Fellowship at University College, London.

Alma Atkinson, a fourteen-year-old girl of Albany N. R. has designed a set of spoons especially intended for birth-day souvenirs. Each spoon-handle indicates the month for which it is named.

Liliokaliani, Queen of the Sandwich Islands, is so ardent a temperance advocate that she will have no wines or spirituous liquors at her dinners or receptions; and she pays the license for a coffee-house opened in her capital city by the Women's Temperance Union.

We are glad to see that the Lucknow Women's College and the High School for girls are making great strides in the advancement of female education under the Principalship of Miss Thoburn. The Lieutenant Governor of N. W. Provinces was much pleased with the visit that he made to the College on the 3rd instant, Some of the pupils have passed creditably the B.A. and the M.B. Examinations. We wish the College all success in its good work.

Lakshmi Bai of the tailor caste, alleged to have been 120 years old, is reported to have died at Darjeepetta in Bangalore. She often recounted incidents connected with the troublesome times of Tippu Sultan.—Indian Union.

A Natural Barometer. - One of the most curious stones in the world is found in Finland, where it occurs in many places. It is a natural barometer, and actually foretells probable changes in the weather. It is called "semakuir." and turns black shortly before approaching rain, while in fine weather it is mottled with spots of white. For a long time this curious phenomenon was a mystery, but an analysis of the stone shows it to be a fossil mixed with clay and containing a portion of rock-salt and nitre. This fact being known, the explanation was easy. The salt, absorbing the moisture, turned black when the conditions were favourable for rain, while the dryness of the atmosphere brought out the salt from the interior of the stone in white spots on the surface. - I bid.

বামাবোধিনী পত্ৰিকা।

BAMABODHINI PATRIKA.

''कत्याष्येवं पालनीया जिचगीयातियत्नतः''

কন্তাকে পালন করিবেক ও যত্নের সহিত শিক্ষা দিবেক।

৩৩৫ সংখ্যা। অগ্রহায়ণ ১২৯৯—ডিদেম্বর ১৮৯২।

ু ধ্য কল্প। ১ম ভাগ।

সাময়িক প্রসঙ্গ।

কন্তোস্—আগামী কন্গেদ্ বা জাতীয় মহাসভা এলাহাবাদে, হইবে, ইহার জভা বিশেষ আয়োজন হইভেছে।

স্থান-রোপ্য-বস্ত্র — স্থমাত্রা দ্বীপ-বাসিনী রমণীরা বাঁটি সোণা ও রূপা গলাইয়া বে হত্ত নির্মিত হয়, তাহাতে কাপড় বুনাইয়া পরিধান করেন। ইহা না কি বড় ঠাণ্ডা, কিন্তু ইহাতে মাথা গ্রম না হইলে ভাল।

নরবলী—মাক্রাজের গাঞ্জাম জেলার কোন ব্যক্তি কালীপূজা করিয়া নরবলী দের। সেসন জজ যোজেফ সাহেবের বিচারে অপরাধীর যাবজ্জীবন বীপাত্তর বাসের আদেশ হইয়াছে।

कृष्टिक मान-बन्ननगरतन इस्टिक

পণ্ডিত গিরিশচন্দ্র বিদ্যারত্ব ১০০১, মহর্ষি
দেবেন্দ্রনাথ ঠাকুর ২০০১, সাধারণ রাক্ষসমাজ ১০০১, ভারতসভা ২০০১, কুমার
দেবেন্দ্র মলিক ১০০১ এবং আরও অনেক
মহান্মা অনেক চাঁদা দিয়াছেন। নি বেথুন
কলেজের ছাত্রীরা প্রায় ৩০১ টাকা
তুলিয়া গিয়াছেন। ময়মনিসিংহের ছর্ভিক্রে
রাজা স্ব্যকান্ত চৌধুরী প্রভৃতি জমিদারগণ অনেক টাকা দিয়াছেন। মেদিনীপুরের ছর্ভিক্রে মহিষাদলের ও নাড়াজোলের রাজা ২০০১ টাঁকা করিয়া দান
করিয়াছেন।

জুরিপ্রথা বিলোপ — ছোটলাট. গেকেটে এক বিজ্ঞাপন দিয়া বালাগীর করেকটা প্রধান বেলা হইতে জুরীপ্রধা রহিত করিরাছেন, ইহাতে দেশব্যাপী | অকার্য্য করিরা সাধারণের আন্দোলন উঠিয়াছে। ছোটলাট এরূপ হইরাছেন।

স্ত্রীশিক্ষা।

আজি কালি কাৰ্য্যতঃ যে রকম ফলই হউক, কিন্তু যে উদ্দেশ্যে বঙ্গদেশে স্ত্ৰীশিকা। প্রবর্ত্তিত হইয়াছিল, সে বড় গুভ উদ্দেশ্য, বড় মহত্বদেশু। প্রাচীন বঙ্গমহিলাগণের অবস্থা আলোচনা করিলে এবিষয় সহজে অহুভূত হইবে।

পঞ্চাশ বৎসর আগোকার কথা বলি-তেছি, তথনকার দিনে গৃহকর্ম শিক্ষার নামই "স্ত্ৰীশিকা" ছিল। তথনকার বালিকারা থেলা ঘরেই গৃহকর্ম্মের অভিনয় করিত, অনেক ব্রত নিয়মাদিতে গাৰ্হস্থা তত্ত্ব শিথিতে পাইত,অভিভাবিকা আত্মীয়ারা যাহাতে বালিকাগণ গৃহকর্মে নিপুণতা লাভ করিতে পারে, সেই বিষয়ে বিশেষ শিক্ষা দিতেন। এই সকল কারণে বঙ্গমহিলাগণ গৃহকর্মে যথেষ্ট **অভিজ্ঞতা লাভ** করিতেন। সে সময়ে বার বছরের মেয়েটা সংসারের ভার গ্রহণ করিলেও সাংসারিক কার্যা অশুখলরপে চলিত। এই গার্হস্য শিক্ষার नहिं डॉहाहिश्तर शहित्यान, मग्रा, সহিষ্ণুতা, সেবাপরায়ণতা, শ্রমণীলতা ও নির্বাসতা প্রভৃতি সদ্তুণ সকলও বিকাশ েপাইত। -বে সময়ের কথা বলিতেছি, তখন বাঙ্গালি জাতি বহু পরিজন সহিত अकातक वाकिएका: अहे अकात-

বর্ত্তির গুণে বঙ্গমহিলাগণ দয়া, সেবা-পরায়ণতা, শ্রমশীলতা প্রভৃতিতে বিশেষ অভ্যন্ত হইতেন। গৃহকর্ম রূপে সম্পন্ন করাই তথন নারীজীবনের প্রধান উদ্দেশ্য ছিল, তাই তথন বন্ধ-বাসীর ঘরে ঘরে অরপূর্ণা বিরাজমানা ছিলেন। আপন পর বিবেচনা নাই. যে কেহ বিপদে পড়িয়া আশ্রয় চাহিত, যে কেহ রোগাদিতে কাতর হইত. বঙ্গগহলন্দ্রীগণের মাতৃত্বেহ তাহারই উপরে শতধারায় পড়িত। অতিথি সেবার জন্মে তাঁহারা "মুখের গ্রাদ" দিয়া সম্ভ্রমনে উপবাস করিতে পারিতেন। বড লোকের স্ত্রী হইলেও সন্তইমনে গ্রের নীচকর্ম সকল স্বহস্তে করিতে লজ্জিতা হইতেন না! তাঁহাদের এই রকম কত মহত্ত্বের পরিচয়ই পাওয়া यात्र ।

আমাদিগের হুর্ভাগ্য, তাই সভ্যের অমুরোধে বলিতে ইইতেছে, এত 🖦 मरवं पर्वे आक्षा महिलामिश्रत कीवन একদিকে বড় অসম্পূর্ণ ছিল।--সে দোষ डांशास्त्र नार्ट, डांशामिरशत माराव বাঁহারা সমাজের নেতা ছিলেন, তাঁহা-দিগের ক্রটি বশতাই এরপ হইরাছিল। कारशेत्रकात्र अधीरन शक्ति गाँतीतिकी.

মান্দিকী এবং নৈতিকী বুভি স্কল উপযুক্তরূপে পরিক্ট করাই মানব कीवरनत थार्थान উদ্দেশ্য। এই তিন শ্রেণীস্থ কোনও বৃত্তি অনুস্ণীলিত থাকিলে সমগ্র জীবনই অপূর্ণ থাকিয়া ষার। শারীরিকী বৃত্তি সকল উপযুক্তরূপে পরিচালনা করিয়া মানব স্বস্থ, বলিষ্ঠ ও अभीन इहेग्रा थारक। मानिमकी दृखि পরিচালনা করিয়া জ্ঞানী, হিতাহিত-বিবেচক এবং বিদ্বান হইয়া থাকে। আর নৈতিকী বুতি পরিচালনার ফলে মানব ধার্ম্মিক, সংযতেক্সিয়, পরোপকারী প্রভৃতি হইয়া থাকে। এই ত্রিবিধ বৃত্তির পরিক্টনই মানব জীবনের প্রধান কর্তব্য। ছরদৃষ্ট ক্রমে বঙ্গীয় প্রাচীন মহিলাদিগের শারীরিকী ও নৈতিকী শিক্ষা যে রকম হইত, মান मिकी निका म दक्म किছूरे रहेउ ना। कान् थथा स्था, किज्ञथ निवरम ठाँगता শরীর স্বস্থ থাকিবে, প্রাচীনা মহিলা-मिशरक व्यत्नक मगरत्र भाखवहन, दम्भाहात প্রভৃতি দারা সে শিক্ষা দেওয়া হইত। শিশু চিকিৎসায় তাঁহারা যে বিশেষ षाख्यि, এ कथा विराध कतिया वना বাহল্য মাত্র। ধর্মনীতিতেও তাঁহা-দিগের ভক্তি বিশাস, দয়া সহিষ্ণুতা, রমণী মাত্রেরই শিক্ষণীয়। কিন্তু মান-मिकी निका अछाटव मानटवत्र वृद्धित्रि সকল পরিক্ট হওয়া ছ:সাধ্য। বৃদ্ধি বৃত্তি অভাবে মানবের মহবাত নিত্তে কর্তব্যক্ষান, হিতাহিডবিচার,

পরিণামদর্শিতা, এ সক্লই বৃদ্ধিবৃত্তি বা জ্ঞানার্জনী শক্তির কার্য্য। লেখা পড়া সেই বৃদ্ধিবৃত্তি বিকাশের প্রধান সহায়। লেখা পড়া শিথিয়া মানব, শরীর মন ও আত্মার উন্নতি সাধন করিতে পারে, লেখা পড়া শিথিয়া মানব সকল প্রকার কুসংস্কার ও সঙ্কীর্ণতা অতিক্রম করিতে পারে. লেখা পড়া শিথিয়া মানব নিজের, নিজ পরিবারের এবং সমাজের অশুভ বিষয় পরিত্যাগ ও শুভকর বিষয় গ্রহণ করিতে পারে। হুর্ভাগ্যক্রমে প্রাচীনা মহিলাগণ সকলেই প্রায় নির-ক্ষুরা ছিলেন। বিদ্যাসাগর মহাশয়ের জননী বা রাণী রাসমণির মত মহা-প্রাণা রমণীগণের পক্ষে না হউক. সাধারণ মহিলাগণের পক্ষে এই নিরকর অশিক্ষিত অবস্থা শোচনীয় অবস্থা। এই জ্বন্তেই তাঁহাদের ধর্মভাবের সহিত কুসংস্কার, সরলতার সহিত নির্কোধতা, সহিষ্ণুতার সহিত কলহপ্রিয়তা, চক্রে কলক রেখাবৎ প্রতীয়মান হয়। এত-দ্তির লেখা পড়া অভাবে বিদেশস্থ আত্মীয়কে একথানি পত্ৰ লিখিবার জন্ম অথবা বিদেশস্থ আত্মীয়দিগের লিখিত পত্র প্ডাইবার জন্ম, সাংসারিক আয় ব্যয়ের হিসাব, ছগ্ধ প্রভৃতির হিসাব, ধোপার কাপড ইত্যাদির বস্তু তাঁহা-দিগকে যে কি দারুণ অস্থবিধা ভোগ করিতে হইত, তাহা একটু ভাবিরা দেখিলেই বুঝিতে পারা বার। নেই व्यवभूगी, वशकाबीय स्वश्रवीषिशतक विष

সরস্থার সহিত ভালরকম পরিচিত করা হইত, তাহা হইলে বঙ্গগৃহে অনেক স্থ শাস্তি পাওয়া যাইত! বঙ্গ মহিলা-গণ অনেক অংশে জীবনের পূর্ণন্ব প্রাপ্ত হইতেন।

এই সকল বিষয় বিবেচনা করিয়াই বঙ্গদেশে স্ত্রীশিক্ষা প্রবর্ত্তিত হইয়াছিল। স্ত্রীশিক্ষা প্রবর্ত্তক মহাত্মাদিগের বিখাস हिल, वनीय तमगीगन लाथा भड़ा निथिया সকল প্রকার কুঅভ্যাস, কুসংস্থার ও কদাচার অতিক্রম করিবেন! বৃদ্ধি-বুত্তি স্নাৰ্জিত ও চিস্তা শক্তি পরিক্ট रहेरन डाँहाता निष्करमत. निक निक গ্রের এবং প্রতিবাসিনীদিগের কল্যাণ-কর কার্য্যে প্রবৃত্তা হইবেন। অন্ধ ভক্তি, অন্ধ বিশ্বাস, পতিবশীকরণ ঔষধ, পরের সর্বনাশ করিয়া মুত্রংসার শিশু রকা. স্বজাতীয়দিগের সহিত একত্র हहेरन পর निका, পরকুৎসা, কলহ, অথধা ভাত তরকারী বিষয়ক গল, মিসি দিয়া উব্ধি দিয়া দেহ চিত্র বিচিত্র করা প্রভৃতি सायश्राम नातीशीवन इटेट (तथा পড়া শিখিলে) একেবারে দুর হইবে। যাহারা (অবরোধবাসিনী হইলেও) সমাজের অর্কাংশ স্বরূপ, তাহারা এরূপ অজ্ঞান ও মূর্থজনোচিত 🛊 কার্যো রত থাকিলে সমাজের উন্নতি অসম্ভব। কুলিকা পাইলে—লেখা পড়া শিখিতে পারিলে বঙ্গ মহিলাগণ প্রকৃত জীবন লাভ করিনে, ভাহাতে কেবল বন্ধ গৃহ ৰুক্তে নম্মাজ্ঞ উন্নতিপথে অগ্ৰসর

হইবে, এই বিশ্বাস কর্ত্ত পরিচালিত হইরা সেই সকল মহাশর ব্যক্তি স্ত্রীশিক্ষা প্রবর্ত্তন করেন। যাহারা আজি কালি স্ত্রীশিক্ষা বিস্তারের ও উন্নতির জন্ত চেষ্টিত, তাঁহাদিগের অনেকের উদ্দেশ্য ও যে অন্তর্মপ নহে একথা বলা বাল্লা মাত্র।

এই গুভ উদ্দেশ্য, মহত্বদেশ্য কাজে
কি রকম হইতেছে, তাহা বুঝিতে হইলে
বর্ত্তমান বঙ্গ মহিলাদিগের অবস্থা আলোচনা করা আবশ্যক। আমরা যথাসাধ্য
তদ্বিষয়ে চেষ্টা করিব।

উচ্চ-শিক্ষাপ্রাপ্তঃ ক্রতবিদ্য মহিলাগণের কথা আমাদিগের অনালোচ্য।
সাধারণ মহিলাগণ লেখা পড়া শিথিয়া
কতক দ্র কদাচার অতিক্রম করিয়াছেন।
বিদেশস্থ আদ্ধীয় স্বজনদিগকে পত্রাদি
লিখন, ও তাঁহাদের প্রেরিত পত্রাদি
পঠনের অস্থবিধাও দ্র হইয়াছে। এতভিন্ন অনেক স্থলে সংসারের আয় ব্যয়ের
দৈনিক হিসাব, ছয় ও ধোপার কাপড়ের
হিসাব বঙ্গ মহিলাদিগের হস্তে রহিয়াছে।
উল্কি, মিদি, পতিবলাকরণ ঔষধ,
মৃতবৎসার পরের সন্তানের অনিষ্ট কামনা
প্রভৃতি অনেক স্থলে বঙ্গ মহিলাপরিত্যাগ
করিয়াছেন। বঙ্গদেশে সাধারণতঃ স্ত্রী
শিক্ষার উৎকৃষ্ট ফল এই পর্যান্ত।

কিন্ত কাজি কালি বঙ্গ মহিলাগণের অনেকগুলি হুর্নাম ও শুনা যায়। অনে-কের—বিশেষতঃ রক্ষণশীল সম্প্রদারের বিবেচনায় সেগুলি জীশিক্ষা-জনিত দোর। দোরগুলি এই রক্ষ—

এখনকার মেয়েরা বড়ই ছর্কিনীতা, স্বার্থ-পরায়ণা ও বিলাস-প্রিয়া হইয়া সে কালের মহিলাগণের উঠিয়াছে। বিদ্যা বুদ্ধির ক্রাট থাকিলেও তাঁহারা বিনীতা, ভোগ বিলাদ-বিরতা ও গৃহ-কার্য্যে স্থদকা ছিলেন। তাঁহাদিগের স্বভাবের মধুরতায় ও গৃহিণীপনার নিপুণতায় বঙ্গ গৃহে অনেক হৃথ শান্তি এথনকার দিনে মেয়েরা মিলিতি। বিদাা বৃদ্ধি উপার্জন করিতেছেন সতা, কিন্তু তাঁহাদের যাহা নিজস্ব সম্পত্তি, সেই বিনয়, দয়া, গৃহকর্মামুরাগ, শ্রম-শীলতা প্রভৃতি হইতে বঞ্চিতা হইতেছেন। ঘরে ঘরে কেবলই অলসতা, বিলাসিতা, স্বার্থপরতার ছডাছডি। *সামীর চাকরি হইবে, স্বামীর সহিত কর্মস্থানে যাইব, শ্বাঞ্জী ননদিনীদিগের হাত এডা-ইয়া রাঁধুনী, চাকরাণী প্রভৃতির উপরে সম্রাজ্ঞী হইব" ইহাই ইহাঁদের চর্ম স্থেচ্ছা। গার্হস্তাধর্মে অমুরাগ নাই विषया এখন वक ग्रंट आयरे दिन्या यात्र, কুধার সময়ে তৃপ্তিজনক আহার্য্য মিলে না, রোগের সময়ে বুকভরা সেহের শুশ্রবা মিলে না, অশান্তির সময়ে কোম-

লতা মাথা মধুর ব্যবহার মিলে না, সকল मिटकरे मारूग अভাব। ক্তী শিক্ষায় লাভের অপেকা ক্তিই বেশি, কারণ বঙ্গবাসীর যে টুকু গার্হস্তা স্থুপ ছিল, জী শিক্ষার জন্ম তাহাও গেল।

আমাদের হুর্ভাগ্য, তাই "এ সকল কথা কখনই সত্য নহে" এমন কথা বলিতে পারিলাম না। সকল দোষ স্তীশিকা इटेरउ উৎপন্ন হইয়াছে, এ বিষয় বলিতে কখনই পারিব না। বর্ত্তমান রমণীগণের অবস্থা বিশেষরূপে অহুসন্ধান করিবেন, তিনি দেখিতে পাইবেন, এ সকল দোষের মূল কারণ ছইটী; একটা বঙ্গবাসীর পাশ্চাত্য"সভ্য-তার" অনুকরণ দিতীয়টী (স্ত্রীশিক্ষা ভ্রমে) অমুপযোগী শিক্ষার অবতারণা। এই ছুইটা কারণেই বঙ্গ মহিলাগণ নিজস্ব সম্পত্তি হারাইতে বসিয়াছেন— क्षी निका कान उपार्य पृथि नरह। আমরা সংক্ষেপে এই কারণ ছইটী দেখাইতেছি, ভরুষা করি ইহাতে অনেক নারী চরিত্র-বিক্বতির হেতু বুঝিতে (ক্রনশঃ) পারিবেন।

कूमाती (जमी এঃ একারম্যান্।

(वाधिनीटङ आमत्रा এই महिनात विवत्र | हेशात कीवनी এवात विवृष्ट हेरिङ । এক একটু উল্লেখ করিরাছি। পূর্বে । জামেরিকার বুক্ত রাজ্যের লক্ত্রেত

পত ভাদ্র ও কার্ত্তিক মাদের বামা- | যেরূপ প্রতিশ্রুত ছিলাম, তদন্ত্রনারে •

বোষ্টন নগরে कूमाরী জেসী এ: একার-मान् ३५७० थृष्टीत्म जन्मश्रहण करतन। তথার প্রথমত: অত্যাবশ্রক বিষয়গুলিতে শিক্ষালাভ করিয়া আইন ও ধর্ম্মশাল বিশেষরূপ অধায়ন করেন। প্রাচ্য দেশ সমূহে বিশেষতঃ ভারতবর্ষে স্ত্রীজাতির আইন শিকার কথা উত্থাপিত হইলে चारनरक चान्ध्या त्वांध कतित्वन त्य. স্ত্রীলোকের আবার আইন শিক্ষা কি. ইহার উপকারিতাই বা কি ? তাঁহারা ইহার উপকারিতা উপলব্ধি করিতে পারেন না, এজন্ম এ কথা এম্বলে একট স্পষ্ট করিয়া বলিতে প্রয়াস পাইলাম। প্রাচ্য দেশের কথা দূরে থাকুক, য়ুরোপ খণ্ডের স্থাভ্য দেশসমূহে, এমন কি ইংলওেও স্ত্রীজাতির মধ্যে আইন অধ্যয়ন করিবার প্রথা নাই, যেহেতু ইহার উপ-কারিতা বিষয়ে স্থসভ্য ইংরাজগণও मिकान আছেন। है : तार्जता याहाहै বলুন না কেন, উহারা অনেক বিষয়ে স্কীলোককে উচ্চ অধিকার দিতে প্রস্তুত নহেন: কিন্তু আমেরিকা তাহা দিয়া থাকেন। আমেরিকীয়গণ যেমন নারীকে আইন অধ্যাপনা করান,সেইরূপ কোনও नाती चारेना जिका रहेरन जेकिन गाति-ষ্টার ও জজের পদ স্ফোন করিতে কোনও মতে কৃষ্ঠিত হন না। কুমারী ध्कात्रमान् उज्ज्ञ यहिनिका करतन। আমাদিগের দেশের শিক্ষিতা মহিলাগণ त धर्ममजावन दिनी, तारे मज श्राजिभागा अस्थिक नकन नमाक्क्री व्यश्चन

করেন না। এটি এক মহাদোষ। পাশ্চাত্য দেশসমূহে তাহা নয়। তথাকার শিক্ষা-थानी चठन। यिनि य मठावनिष्नी, তাঁহাকে সেই মতাবলম্বিগণ-প্রতিষ্ঠিত বিদ্যালয়ে সেই মত প্রতিপাদ্য ধর্মপুস্তক অধ্যয়ন করিতে হয়। ইহার অধিক যিনি করিবেন তাহা বেশির ভাগ। বিবী একারম্যান তাহাই করেন। ইনি খুষ্টীয় ধর্মশাস্ত্র বিশেষ যত্নের সহিত অধ্যয়ন করেন। ইনি একজন পরম ধার্মিকা খুষ্ঠীয়া রমণী, বিশ্বসংসারের হিত্ততে ব্রতিনী, কিরূপে শোক হঃথ ক্লিষ্ট মানব-জাতির ও স্ত্রীজাতির কটের অপনোদন रहेरव, हेरारे हेरांत्र सीवरनत अधान উদ্দেশ্য। নরনারীর হৃঃথ দারিদ্যের কারণ অফুসন্ধানে প্রবুত্ত হইয়া দেখিলেন বিশ্ব-পতি হঃথ দারিদ্রাদারা জগতের মঙ্গল সাধন করিতেছেন। এবম্বিধ হৃঃথ দারিদ্র্য অনিবার্য্য, মঙ্গলের পথ; অনন্ত স্থা ইহার পরিসমাপ্তি। কিন্তু আমরা নিজেই আমাদিগের অধিকাংশ ছঃখ দারিদ্রোর কারণ। কুশিক্ষা, কুসংসর্গের বশবর্ত্তী হইয়া আমরা আপনারাই তাহা আনমন করিয়া থাকি,দোষ আর কাহারও নাই। ইহার মধ্যে আবার বেশির ভাগ হঃখ মদ্যপানজনিত; স্থতরাং ইনি স্থিরপ্রতিজ্ঞ হইলেন যে, স্থরাপান নিবারণ করিতে পারিলে কিম্বা যাহাতে স্থরাস্থরের শক্তি হাস হয়, তুৰিবরে চেষ্টা করিলে সংসারের विनिष्ठेक्रण উপकात्र माथिङ स्टेरत । त्य অতীব ক্লেক্স ঘটনা দর্শন করিয়া

ইছার ও ইহার স্থীগণের সাধুহৃদ্যে এই সাধুসংক্রের উত্তেক হয়,তাহা বলিতেছি। ইহারা একদিন বেড়াইতেছেন এমন সমরে মদের দোকানের সমূথে হৃদয়-বিদারক পাশব আচার অবলোকন করেন। এই দুখ্য অবলোকন করিয়া ইহাঁরা স্থিলিত হইয়া স্থির করেন যে, রাস্তার রাস্তায়, মদের দোকানের मगुर्थ के चरत्र প्रार्थना ও माध्याम দারা মত নর নারীকে উদ্ধার করিতে হুইবে। ইহাঁ হইতেই ১৮৭৩ সালে বিখ-নারীর খুষ্ঠীয় সুরাপাননিবারিণী সভার (The World's Women's Christian Temperance Unionএর) অভ্যাদয় হয়। কেহ স্বপ্নেও জানে নাই যে. কাল-ক্রমে এই সভা এত বলবতী হইবে। इटेटवरे ना वा एकन ? अधित याहात সহায়, ধর্ম যাহার নেতা, সাধু উদ্দেশ্য ও সাধু সংকল্ল যাহার मञ्ज. কি না করিতে পারে? আমেরিকা. यूरतांभ, ष्टाड्रेनिया, हीन, बका, छाम, ভারতবর্ষ প্রভৃতি ৪৭ সাতচন্নিশট ভিন্ন ভিন্ন দেশে ইহার শাখা সংস্থাপিত হই-বাছে। রাজবংশীর উচ্চবংশীর হইতে সামান্ত কুটারবাসী পর্যান্ত প্রায় অর্জ-কোটী ভদ্রলোক ও ভদ্রমহিলা এই অর **সভ্য**শ্ৰেণীভূক কালের মধ্যে সভার ररेबाएकन। किकारिया नगरत हेरात व्यक्षित्वन हरेश्रा थात्क। (व ग्रंह व्यक्ष-বেশন হয়, তাহাকে Temperance Temple अर्था९ अवात्रिमित वरन।

প্রকাণ্ড যুক্ত রাজ্যের মধ্যে ১৩ অয়োদশ তল ও ১০০০ এক সহস্র ঘর বিশিষ্ট ইহাই বৃহত্তম বাটী। প্রায় সভার জন্মের সঙ্গে সভাকৰ্ত্তক "Union Signal" অর্থাৎ মিলন সঙ্কেত নামে একথানি মাসিক পত্রিকা প্রচারিত হইয়া থাকে। ইহাতে সুরাপানের অবৈধতা ও অপ-কারিতা বিষয়ক প্রয়োজনীয় বিষয় সমস্ত আলোচিত হয়। মাননীয় ভামুএল সিধ্ এম: পি: ও মাননীয় ডবলি ট, এস, কেন এম: পি: প্রভৃতি প্রতিষ্ঠিত এংলো-ইণ্ডিয়ান টেম্পারেন্স এসোশিএশুনের সহিত উক্ত সভার সম্পূর্ণ সহামুভৃতি ও সৌসাদুখ্য আছে, যেহেতু উদ্দেশ্য উত্ত-য়েরই এক—স্থরাপান ও অহিফেণ সেবন নিবারণ। এংলো ইণ্ডিয়ান সভায় যেমন "আবকারী" নামে মুথপত্র আছে, ইউনি-যুনের তেমনি "ইউনিয়ন সিগ্রাল" আছে। প্রভেদের মধ্যে এই প্রথমোক সমিতিতে কিছু রাজনীতির গন্ধ আছে, শেষোক্তটিতে তাহা আদৌ নাই।

কুমারী একারম্যান্ একণে সমস্ত পৃথিবী পরিভ্রমণে বহির্গত হইরাছেন। ইনি অষ্ট্রেলিয়া হইরা চীন, এক ও ভামে গমন করেন, তথা হইতে গত এই নবেম্বর শনিবার কলিকাভার আগমন করেন। তৎপর দিন হইতেই কার্য্য আরম্ভ করেন। ৬ই রবিবার পাদরি থোবরণ সাহেবের গির্জার মাভার দায়িত ও কর্তব্য সম্বরেত্র একটা সারগর্ভ নীতিবিষরক বক্তা করিরা উপাসনার কার্য্য শেষ করেন।

৭ই সোমবার অপরাকে ধর্মতলা খ্রীটস্ত रेडिनियन छार्पटल यूटवाशीय यूटवरीय **মহিলাদিগের নিকট বক্তৃতা ক**রিয়া শক্ষ্যা ৭॥ টার সমগ্ন স্থরাপানের বিরুদ্ধে বক্তা করেন। উক্ত উপাসনা গৃহে ৭ই হইতে ৯ই পর্যান্ত প্রতিদিন উক্ত সময়ে উক্ত বিষয়ে বক্তা করেন। ইহার মতে ছোট ছোট বালকদিগের বড় বড় বালক বা যুবকদিগের সঙ্গে বেজান অনেক অনর্থের মূল। সোম-বারের বক্তৃতাকালীন ইহার মুথ হইতে বে একটি বাক্য নিৰ্গত হইয়াছিল, তাহা উল্লেখ না ক্রিয়া থাকিতে পাবিলাম না। তাহা এই ;— "যে দেশ খুষ্টীয় ধর্ম গ্রহণ করে নাই, এমন দেশে স্থরা বা অহি-কেণের আমদানি বন্ধ করিতে তাঁহারা বদ্ধপরিকর হইয়াছেন।" তাঁহার মুখে ফুলচন্দন পড়ক ! ঈশ্বর করুন অচিরে তাঁহার কার্যো পরি-ণত হয়। বুধবার ৪ চারিটার সময় বঙ্গীয় ভদ্রলোক ও যুবকবুন্দকে আহ্বান করিয়া এমারল্ড থিয়েটরে একটী স্থলার বক্ত তা করিয়া মদ্য বিষ পানের বিষময় ফল দৃষ্টান্ত দারা প্রতিপন্ন করিয়া সমবেত **লোকদিগকে** প্রতিজ্ঞাপত্র স্বাক্ষর করিতে জ্বাধ করেন। । 🕏 🕏 ৪৪ চুয়ালিশ স্বাক্ষরিত অভিজ্ঞা পত্র স্থরাপাননিবারণী সভায় প্ৰেন্নিড হইবে। ১০ই বৃহস্পতি ৰার

রাত্রি ৯টার সময় পাদরি থোবরণের গিজায় "এলেফা" অর্থাৎ মধ্যাক্ত মার্ত্ত-ত্তের দেশ ও তৎ নিবাসিগণ এই সম্বন্ধে বক্তা করেন। ১১ এক টাকা করিয়া টিকিট হইয়াছিল। ১১ই শুক্রবার ১০দশ টার সময় দরিদ্র ফিরিঙ্গিদিগকে লইয়া চর্চ মিশনরী সোসাইটীর ১০নং মিশন রোর উপাদনাগৃহে উপাদনা করিয়া রাত্রির ডাকগাড়ীতে উত্তর পশ্চিমাঞ্চলে যাতা করেন। দানাপুর, (वनात्रम, अनाहावाम, मारको, नारहात পেশোয়ার, জয়পুর, বোখাই বাঙ্গেলোর, ও মাদ্রাজ প্রভৃতি স্থানগুলি পরিদর্শন করিবার ইহার ইচ্ছা আছে। নগরীতে ইহাঁদিগের শাখা স্থিলনী আছে, তথায় কিছুদিন অবস্থিতি করিয়া পুনরায় ফেব্রুয়ারি মাদে অষ্ট্রেলিয়ার গ্মন করিবেন। তথাকার মেল্বোরণ নগরেও ইহাঁদিগের শাথা আছে হইতে মাডাগান্ধার ও দক্ষিণ আফ্রিকা ও তৎপরে য়ুরোপের ভিন্ন ভিন্ন স্থান পরিভ্রমণ করিয়া চারি বৎসর আমেরিকায় প্রত্যাগমন ঈশ্বর ইহাঁর একমাত্র সহায় থাকিয়া निर्काष निर्मिष्ठे छान नकल नहेश यान, ইহাঁর সাধুত্রত উদ্যাপন করাইয়া দিন ও इंहां कि नीचांयू कक़न देशहे आंगानित्त्रत প্রার্থনা।

মঙ্গলপ্রহে নৃতন আবিষ্কার।

পিকারিং মঙ্গলগ্ৰহে অধ্যাপক চল্লিশটি কুদ্র কুদ্র হ্রদ আবিষ্কার করিয়া-ছেন এবং অধ্যাপক হোল্ডেন উক্ত গ্রহের দীমা ও উচ্চতা সম্বন্ধে যাহা বলিয়া গিয়াছেন,তাহারও যাথার্থ্য প্রতি-পন্ন করিয়াছেন। যদিও আমেরিকা ও ইউরোপের পর্যাবেক্ষিকা সকল এই গ্রহের উপরিভাগের প্রাকৃতিক য়বাদি সম্বন্ধে আমাদিগের বর্ত্তমান জ্ঞান বিশিষ্টরূপ বর্দ্ধন করিতে সক্ষম হয় নাই, তথাচ স্বীকার করিতে হইবে त्य, ইहात कल वाग्न विवत्य आमता अक তাহাদিগের সাহায্যে অনেক জানিতে পারিয়াছি। সালে 2699 व्यशांशक निशांशितिनि উল্লেখ করেন যে, ইহাতে থাল আছে। কোনও বৈজ্ঞানিকের মতে তাঁহার কথা বিরোধী ভাবাত্মক। দূররীক্ষণ সাহায্যে ক্যালিকোণীয়াস্থ পর্য্যবেক্ষিকা হইতে যে সকল জ্যোতির্বিৎ পণ্ডিত পর্যাবেক্ষণ করেন, তাঁহাদিগের মধ্যে তিন জন বলেন যে, তথায় একটি যুগা উপনদী (थान) আছে। দেখুন পেরুর জনৈক পণ্ডিত বলেন যে, যদিও তথায় অনেক থাল দৃষ্টিগোচর হয়, কিন্তু তাহাদিগের মধ্যে কোনওটা यूगन नम् । এङ्गा এই तूसा याम त्य উপনদীগুলির যুগলছ বা একছ বিষরে পণ্ডিতগণের মধ্যে মতভেদ থাকিতে পারে, কিন্তু ভাহাদিগের অন্তিম্ব সম্বন্ধে

তাঁহারা সন্দিহান নহেন। অধ্যাপক পিকারিং আরও প্রকাশ করেন যে. উক্ত গ্রহের কুমেকর নিকট इहे हि প্রকাও পর্বতশ্রেণী আছে।. ৫ই আগষ্ট हेश अ वर्णन (य. গত নিরক্ষরতের তারিখে মঙ্গল গ্রহের নিক্টস্থ পার্ম্বত্য প্রদেশে বর্ফ পড়িয়া ছটি তুঙ্গতম শৃঙ্গ ঢাকিয়া ফেলে; ছই দিন পরে গ্রহের খেত চিহ্ন অদুখ্ হওয়াতে অমুমিত হইল যে, বরফ দ্রব হইয়া গিয়াছে। পৃথিবীর সহিত ম**ল**ল গ্রহের অনেক বিষয়ে দৌদাদুগু থাকাতে তিনি অনুমান করেন যে, তথায় মুখ্যা-জাতি বা অধিকতর বলবীর্য্যসম্পন্ন বৃদ্ধি-জীবী জাতি আছে। উপরে যাহা বিরত হইল, তাহা বিজ্ঞানমূলক । এক স্থবি-খ্যাত বৈজ্ঞানিকের সিদ্ধান্ত বলিয়া ইহা এন্থলে প্রকটিত হইল।

মঙ্গলগ্রহে বৈজ্ঞানিক দিগের দৃষ্টি বেরূপ আকর্ষণ করিয়াছে এবং ইহার সম্বন্ধে দিন দিন যেরূপ নৃতন তত্ত্ব আবিক্ষত হইতেছে, তাহাতে আশা করা যায় বিজ্ঞান প্রভাবে পৃথিবীর যুগান্তর উপস্থিত হইবে। আমেরিকা আবিকার হারা জ্ঞানের নৃতন রাজ্য প্রকাশিত হইয়াছে এবং পৃথিবীর অবস্থার বােরতর প্রিবর্ত্তন হইয়াছে। মঙ্গলবাসীর সহিত পৃথিবীবাসীর যােগ যদিও এখন কর্মনার বিষয়, ইহা অসম্ভব কে বলিবে?

कन्नृ ९मव।

প্রথম পরিচ্ছেদ।

ফান্ধন মাস এখনও অর্দ্ধেক গত হয়
নাই, কিন্তু শীত আর নাই। স্থ্যকিরণে
প্রথরতা জনিয়াছে। আর রোদের
আভাও সহু হয় না। অনেকেই শীতবস্ত্র
পরিত্যাগ করিয়াছে, কিন্তু পন্চিমবাসীদিগের একটা রীতি যে শ্রামাপুজা হইতে
শীতবস্ত্রের ব্যবহার আর দোল হইতে
গ্রীম্মকালের পরিছেদ ব্যবহার করেন।
দোল আগতপ্রায়। আজ পঞ্চমী তিথি,
কেবল আর দশ দিন মাত্র অবশিষ্ঠ
আছে।

এ দেশের আবাদ রদ্ধ "হোলী"
আস্ছে বলে মহা আনলে আনন্দিত।
বঙ্গবাসীদিগের যেরপে ছর্গোৎসবের
আমোদ আফ্লাদ প্রতিগৃহে বিভাসিত
হয়, পশ্চিমবাসী হিন্দু হানীদিগের
কর্মু ংসবের আনন্দ্রোত সেইরপ ধনী ও
দরিক্র সকলের গৃহে ন্যুনাধিক পরিমাণে
বহিতে থাকে।

আমরা দেখি গিয়া গণ্ডিত রাজনাথের ধনাত্য গৃহে উৎসবের ঘটায়
কিরূপ পূর্ণিত। পণ্ডিত রাজনাথের
একমাত্র কন্তা শ্রামরাণী, ঘরের মেজেতে
গালিচা পাতিয়া স্চীকদ্মে উপবিষ্টা।
অতি উৎসাহ সহকারে স্থীগণকে
উপহার দিবার জন্ত বিবিধ শিরের
আমেজন করিতেছেন। সকল কাজ প্রায়
শেব হইয়াছে, এখন তিনি এক থানি

গোলাবি শাড়ীতে চুমকির কাজ করি-তেছেন। এথানি তাঁহার শৈশব সহচরী রূপরাণীর জ্ঞা। রূপরাণী ভামার মাসতৃতো ভগিনী। রূপরাণী **বস্তুতঃ** রূপেরই রাণী, বিধাতা যত রূপের সৃষ্টি সেইখানেই করিয়াছেন। রূপার জন্ম কাশীর নগরে। তাহার পিতা রাজ-সরকারে সামাভ কর্মচারী ছিলেন, কিন্তু চারি বংসর হইল তিনি রূপা ও তাহার মাতাকে পরিত্যাগ করিয়া ইহ-জগৎ হইতে চলিয়া গিয়া**ছেন। কিন্তু ক্লপা** শৈশব ও বাল্যের সীমা ছাড়াইয়াছেন। রূপার মাতা তাঁহার কনকলতাটি কাহার হাতে জড়াইয়া দিবেন উহাই ভাবেন। অবশেষে তাঁহার একমাত্র অভিভাবক স্থােগ্য ভগ্নীপতির সাহাযাার্থী হওয়াই শ্রেয়ঃ স্থির করিলেন। যদিও ক্সার কুল শীল ও রূপ গুণের অভাব ছিলনা, তথাপি এগনকার বৈবাহিক নির্বাহ করা বিধবার অসাধ্য হইরা পড়িয়াছিল। শ্রামরাণীর আসিয়াছেন শুনিয়া আহলাদের সীমা নাই। ভাষরাণীর সরল প্রাণ প্রেমে পরিপ্রিত। সে আপন পর চেনে না, মিট হাসি দেখলেই ভূলে যায় ৷ আজ তাহার প্রাণে প্রাণ স্বতি জাগিয়া উঠিয়াছে। ছেলেবেলার কত কথাই তিমেনপড়। ছই বোনে পুকুরেরছ

জল তুলিয়া গাছের পাতা কুড়াইয়া রাদাবাড়া করিত। ছেলে মেয়ের বিবাহ দিত। আবার মায়েদের পুজার ফুল তুলিয়া দিত। কথন বকুল তলায় विशा छ दोटन भाना (गँए) जारधत কাকাত্য়া পিঞ্জে ঝুলাইয়া কতই পুলকিত হইত। কিন্তু এখন আর সে আমোদ নাই, কেবল সেই স্থের শ্বতিতে স্থথ আছে। আজ বৈকালে রূপরাণী মায়ের সহিত এ বাডীতে আসিবে।

মদনমোহন নিজেই উহাদিগকে নিমন্ত্রণ করিতে গিয়াছিলেন। কিয়ং-কণ পরে ফিরিয়া আসিলেন। সম্মুথের গ্রে ভামরাণীর মাতা মদনের অপে-কায় বসিয়াছিলেন, স্থতরাং মদন প্রথমেই গৃহিণীর কক্ষে প্রবেশ করিলেন। এদিকে শাম্বাণীর মারের পাশে গিয়া দাঁডাইলেন এবং মদনের বলিবার পূর্বেই সোৎস্থক্যে किछाना कतिरलम, करे मनम ना, निनिता এলেন না ? মদন কহিলেন "না, রূপার শরীর কিছু অমুস্থ, কাল তাঁ'রা নিজেই আসবেন।"

ইতিমধ্যে ছলারী দাসী আসিয়া কহিল "মাজি, সরকার দোলের বাজার করে এনেছেন ?" আপনি একবার দেখবেন ?

গৃহিণী ইহা ভূনিয়া দাসীর পশ্চাদ্-वर्जिनी इट्रेंट्रान ७ त्रांगीटक मृत्राहरनत প্রধাবারের আরোজন করিতে আদেশ

করিলেন। মদন পার্শস্থিত কোচে হেলিয়া বসিলেন, তাঁহার মন যেন অজানিত চাঞ্চলাভাবে ঈ্বৎ আন্দোলিত হইতেছিল।

तानी मननत्क खनशावात निया কহিলেন "মদন দা দেখগে ত আমার क्रिंश किषि (क्रियन स्वन्त्री।" मनन ঈষদহাস্তে কহিলেন তোমার কথাটা সত্য বটে। "তোমার চক্ষে ভাল লাগিল এও চের, আজ পর্যান্ত তুমি কাহাকেও ভাল বল নাই। এখন একটি তাহার উপযুক্ত পাত্র মিলাইয়া দেও, তা তোমার সঙ্গে বেশ মানায় কি বল ?" রাণী একটু পরিহাসছলে এই কথাগুলি वित्रा (किल्ला।

শুনিবামাত্র মদনের মুথে গান্তীর্ঘ্যের ছায়া পড়িল—কহিলেন, "রাণী, আমি ত তোমার ভগীর সৌন্দর্য্যে মুগ্ধ হই নাই। তমি জিজ্ঞাসা করিলে, তাই যা মনে হইল কহিলাম। আমার বিবাহ কোথায় হবে বোধ করি উহা রাণীর অগোচর আরু নাই." এই বলিয়া মদন চলিয়া যাইতে উদ্যত হইলেন।

রাণী যেন কিছু অপ্রতিভ হইয়া कहिलान "तांश करतां ना मनन ना, आमि মণিকাঞ্চনের সমাবেশ দেখাইতে-ছিলাম। যাক্ তুমি ত অবগ্ৰই ফলুৎসব পর্য্যন্ত এথানে আছই।" মদন কহিলেন "নিশ্চয় নাই, এখনি নন্দালের পত্ত পारेनाम, तम धरे छूटिङ निकाद्य यदि, আমাকেও তার সঙ্গে বেতে লিখেছে।"

রাণী কহিলেন "তা হবেনা, আর তাঁকেও ত নিমন্ত্রণ পত্র গেছে, তিনিও বোধ হয় এখানে আসবেন, তা ছাড়া এবারে তোমাকে থাকৃতেই হবে।" মদন कहिटलन "आभात ना थाकांग्र कान বিশেষ ক্ষতি দেণ্ছিনা ত, আর তুমিও নুত্ৰ বন্ধু বান্ধব লইয়া উৎসবে মগ্ন থাকিবে, বরং দে সময় না থাকাই ভাল।" ইহা ভনিয়া রাণীর গওদেশ আর্ক্তিম হইয়া উঠিল, আয়ত লোচন ছটি ছল ছল कतिरा नांशिन, शीरत भीरत कहिरनम, "মদন দা আমি কি কোন মতে তোমার মনে আঘাত দিয়াছি, তুমি ত জান এ জগতে যাহা তোমার সস্তোষদায়ক নহে, তাহাতে কি আমি স্বখী হইতে পারি ?

"রাণী যাক্ এ পরিহাদে আর কাজ নাই, শৈশবে হইতে যে লতাটি স্মত্ত্রে রোপণ করিয়াছি, আজ উহাকে নিষ্ঠর হইয়া কিরুপে ছিড়িতে বল ১" কথোপকথনের মধ্যে বাধা দিয়া বাহির रहेट कर्छ। मननक बाह्यान क्रिल्न । मनन हिना (शतन्। विशास मनन-মোহনের কিছু পরিচয় দেওয়া উচিত। ইনি পণ্ডিতজির একটি নিতান্ত বদুর পুতা। মদনের পিতা এক্সন অতি विषयाभन वाकि हिलन। উহার ভূমিষ্ঠ হইবার এক সপ্তাহ পরেই জননীর মৃত্যু হয়। শিশু মদনকে শ্রামরাণীর माठारे लालनथालन करतन। भरत यथन मम्रानंत्र गांज वश्नव वव्रम, जबन जाहां व পিতার কাল হয়। তিনি আপন অন্তিম

অবস্থা সির্নিকট বুঝিয়া পণ্ডিতজিকে ডাকিয়া কহিলেন "ভাই আজ হইতে মদন তোমার, দেখো ইহার যেন উপযুক্ত রূপে বিদ্যা অর্জন হয়, এ বিষয় সম্পত্তি সকলি তোমার অধীন রহিল। আর আমার আরও একটি অভিলাষ ছিল যে মদনকে ইংলণ্ডে পাঠাইব, অতএব তুমি আমার স্থানীয় হইয়া যাহাতে উহার সর্ব্ধপ্রকারে উন্নতি হয় চেষ্টা করিও।"

পণ্ডিত রাজনাথ বন্ধুত্বের পরাকার্চা **८** पशरेश मननत्माहनत्क श्रीय श्रूच निर्दित-শেষে পালন করিতে नाशित्नम । গৃহিণীও নিরপতা ছিলেন ও ক্রমান্বরে ২৩ টি সম্ভান নষ্ট হওয়াতে নিতাম্ভ শোকাকুলা থাকিতেন। এ জগতে প্রায়ই একের অভাব অন্তের দারা পূর্ণ হয়। মদনকে পাইয়া যেন তাঁহার হারাণ ফিরিয়া ধনগুলি পাই-লেন। ওদিকে পিতৃমাতৃহীন কেও ভগবান নুত্র আশ্রেদাতা মিলা-ইয়া দিলেন। এই ঘটনার কয়েক মাস পরে খ্যামরাণীর জন্ম হয় শীলা বুঝে কে? এবারে আর তিনি উহার মাতার ক্রোড় শুক্ত করিলেন না। ক্যা চটি এক যত্ন ও স্নেহে প্রতিপালিত ও পরিবন্ধিত হইতে লাগিল। বুত্তে ছটি ফুল পণ্ডিতজির গুহে ফুটিরা-ছিল। পরস্পরে পরস্পরকে প্রীতির চক্ষে দেখিত। ক্রমে মদন খীয় প্রতিভা বলে व्यवकारणव मर्याहे हेडेनिडानी है भन्नी

ক্ষার উত্তীর্ণ হইলে পরে তাহার পরলোকগত পিতার অভিলাধ মতে ইংলণ্ডে প্রেরিত হইয়াছিলেন।

শ্রামরাণীর পিতা মাতারও সম্পূর্ণ ইচ্ছা জীবনাধিকা একমাত্র ছহিতাকে মদনের হাতে সমর্পণ করেন, লোকেও পরস্পরে এইরূপ কাণাকাণি করিত. কিন্তু এখন মদন যে পৰ্য্যস্ত বিলাত প্রত্যাগত হইয়াছেন, সকল জাতি কুটুম্বেরা তাহাকে জাতিচ্যত করিবারভয় দেখাইয়াছে, এজস্ত গৃহিণী কিছু দিমিয়া গিয়াছেন। কিন্তু কর্ত্তা এখনও অমন ক্লপে গুণে, ধনে ও মানে উপযুক্ত পাত্রের আশা সহজে ছাড়িতে পারিতেছেন না। কিন্তু মদন কিম্বা রাণী এ সকল প্রসঙ্গের বিন্দু বিদর্গও জানেন না। তাহাদের শৈশবের সরল স্লেহ এখন বর্দ্ধিত ও পুষ্ঠ হইয়া প্রণয়রূপে পরিক্ট হইয়াছে। মদনের আশা পূর্ণ হইবার আরে বিলম্ব নাই। স্থতরাং মদন আজে দেই কথা রাণীর মনে ফুটাইয়া দিবার ইচ্ছা করিয়া আসিয়াছিল। কোণা হইতে অজানিত বাধা আসিয়া দে পথ রোধ করিল। গৃহিণী স্বীয় ভগিনীর অভার্থনার মদনকে প্রেরণ করিলেন।

এখানে রূপা শিরংপীড়ার ছট্ ফট্
করিতেছেন। ঘন ঘন পিপাসার মুখ ওখাইয়া যাইতেছে। গাত্রদাহ ভয়ানক।
রূপরাণীর সাজ্যাতিক জর। ৠামরাণী
ভাহার কচি হাত খানি গারে বুলাইয়া
দিভেছেন। সরল প্রাদে কত ব্যথা
লাগিয়াছে। বিষরতার বদন চাকিয়া

পডিয়াছে। এক এক বার ব্যগ্রভাবে জানালায় মুথ বাড়াইয়া যেন কাহারও প্রতীকা করিতেছেন। রূপার মাতা শিয়রে বসিয়া গালে হাত দিয়া ভাবি-তেছেন। আয়ত লোচন ছটি জলে ভাসিতেছে। প্রাণে কত ভন্ন কতই আশক্ষা। তাহার অন্ধকারের স্তিমিত आलाकि विविध এই वात निर्वाण इस । একবার একবার গভীর খাদে হৃদয়ের গুরুভার লঘু করিয়া বলিতেছেন "হে হরি রক্ষা কর।" ইতিমধ্যে গাড়ীর শক इहेल, मकरलहे बारतत मिरक- खेरळका-পূর্ণ দৃষ্টিতে চাহিয়া দেখিলেন। মোহন ডাক্তর লইয়া গহে প্রবেশ কবিলেন। চিকিৎসক দেখিয়া মায়ের মন যেন কিছু আশ্বন্ত হইল। ভাকার নাডী পরীকা করিয়া গায়ের উন্নাপ পরীক্ষা করিলেন। জর অত্যন্ত প্রাবদ. ঔষ্ধের ব্যবস্থা পত্র দিয়া যাইবার সময় ঘরের বাহিরে গিয়া মদনকে কহিলেন "মশায় ভাল করে 'ওয়াচ' করবেন। আমি আবার এদে দেখ্বো।" রূপার মাতা বাথিত ও ভয়াকুণ চিত্তে বাগ্র হইয়া চিকিৎসকের নিকট অমুকৃল বাক্য শুনিবার আশয়ে শ্রামরাণীকে ভিজ্ঞা-সিলেন "কিরূপ দেখিলেন বুৰিতে পারিলে ? রাণী কহিল "না মাসি মা।" ইহার মধ্যে মণন ডাক্তারকে গড়ীতে আসিলেন। তুলিয়া দিয়া ফিরিয়া তাহারও প্রশন্ত ললাটে চিন্তার গভীর রেখা পঞ্জিলছে। মৃথে বিমর্বতা জাসিরা

জিমিরাছে। কিছু রূপার মাতাকে ভরদা দিয়া কহিলেন "কোন ভাবনার কারণ নাই, রূপরাণী সভাবতই রোগা কিনা তাই অমন হইয়া পড়িয়াছে। আজ রাত্রির মধ্যে জর ছাড়িয়া যাইবে।" মায়ের প্রাণের আতঙ্ক কমিয়া না গেলেও আখাদ বাকের প্রাণ কিছু শাস্ত হইল। আজ রাত্রে কিরূপে এই রুয় বালিকাকে লইয়া ছঃথের গভীরা নিশি কটাইবেন এই ভাবনা প্রবল হইল।

কহিলেন "রাণী মা আজ তুমি রূপার কাছে থাক।" রাণী সম্মত হইলেন, কিন্তু তাহার মাতাও অস্কুস্ত, তাহাকেই বা কে দেখে, অগত্যা রাণী তাহার স্থানে মদন দাকে থাকিতে অন্পরাধ করিলেন, মদন বিনা আপত্তিতে সীকার পাইলেন। রাণীর পান্ধী বেহারা উপস্থিত, স্কুতরাং তিনি কুল্লমনে বিদায় হইলেন।

্রোগিণী অজ্ঞানভাবে জর ভোগ করিতেছেন। মাঝে মাঝে প্রলাপ বিকিতেছেন। কেবল পিপাসা বোধ আছে। মদনকে রাণী জ্ঞানে অসঙ্কৃচিত ভাবে কখনও তাহার কোলে মাণা গড়াইয়া কেলিতেছেন,কখনও হাত ধরিয়া দাহময়গাতো ফেলিতেছেন। এইরূপ য়ল্পা ভোগ করিয়া তাঁহার দীর্ঘ রজনী জাতিবাহিত হইতেছে।

চিকিৎসক প্নরায় আসিয়া নিজার জন্ত স্থিপিং ডোজ ব্যবস্থা করিয়া দিয়া গুগলেন।

রাত্রি বিপ্রহর অতীতপ্রায়। ধরণী

নিস্তর্কতার পরিপূর্ণ। রূপার মাতা উদ্বিগ্ন প্রাণে ক্যাকে ক্রোড়ে লইয়া অনিমেষ চকে মুখথানি দেখিতেছেন, আর হৃদ-য়ের বেগ সম্বরণ হইতেছে না, বর্ষার ধারা নেত্রযুগল হইতে দরদর বহিতেছে। হায়! বুঝি এইবার প্রক্ষ্টিত মল্লিকাটি আজিকার ঘোর তুফানে ছিন্ন হইয়া ভাসিয়া যায়। আর যে হঃথিনীর এ জগতে জুড়াইবার কিছু নাই। কেমন করে এই নিদারণ রাত্রি পোহাইবে? সুর্যাদেবের আগমনে তাঁহার ঘোর কঠেবত অবসান হইবে। একান্তমনে ইষ্টদেবে জ্পিতেছেন, বিপদে আর কাকে প্রাণ চায় ? মদনমোহন পার্শে বিসিয়া সময় নিরূপণ করতঃ ঔষধ দিতেছেন। কে বলে পুরুষ-হৃদয়ে স্নেহ মমতার অভাব, ঐ দেথ আজ মদনের দৃঢ় অন্তঃকরণও পরত্নথে ব্যাকুল হইয়া পড়িয়াছে। করতলে কপোল হাস্ত করিয়া কি ভাবি-তেছেন। তাহার মলিন চিস্তাকুল বদনে কি নি:স্বার্থ কাতরতা প্রকাশ পাইতেছে না? আহা এই কোমণ কলিকা না ফুটতেই ঝরিয়া পড়িবে, ইহাতে কাহার প্রাণ না বিগলিত হয় ?

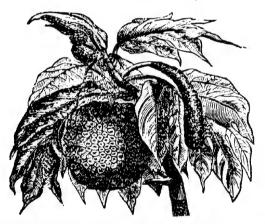
ভোর চারিটা হইতে রূপরাণীর জর ত্যাগ হইতে আরম্ভ হইল। ক্রমে ক্রমে তাহার শরীরের সকল মানি অপসারিত হইয়া গেল।

মারের প্রাণ আশার উজ্জ্বল আলোকে ছাইয়া পড়িল। ভগবানের কুপায় ও মদনের অপরিসীম বত্ন ভ্রমার ক্লপরাণী নবজীবন লাভ করিল। রূপা

এ উপকারের জন্ম প্রাণে প্রাণে ক্লতজ্ঞ
না হইরা থাকিতে পারিল না। মদনের
অকাতর পরিশ্রম ও যত্ন যে সফল হইল,
ইহাতেই তিনি প্রথমতঃ আশাতীত
পুরস্কার পাইলেন। কিন্তু রূপার
জ্যোৎস্লামন্ত্রী বদনথানি আর যেন
তাঁহার চিত্ত হইতে কোন মতে সরাইতে
পারেন না। বাস্তবিক তাঁহার নিকট
যেন জগং এক নৃতন আশ্চর্য্য সৌন্দর্য্যে

পূর্ণ!! রূপার মাতা পূর্ব্বেই মদনের গুণবতার মুগ্ধ ছিলেন। এখন তিনি যে এ উপকারের কিরূপে প্রতিশোধ দিবেন, তাহাই অফুক্ষণ ভাবেন। অবশেষে জীবনধনকে জীবনদাতার হস্তে চিরজীবনের জন্ম দান করিয়া চরিতার্থ হইবেন ইহাই স্থির করিলেন। কিন্তু এ বিষয়ে রাণীর মাতার সহিত প্রামর্শ আবশ্রক জানিয়া কথা প্রসঙ্গে বলিবেন মনে মনে ঠিক করিলেন।

পিঠে গাছ।



রাথালের পিঠে গাছের কথা বোধ হয় সকলেই জানেন। সে কুধা পাইলেই পিঠে গাছে উঠিয়া গরম গরম পিঠে পাড়িয়া থাইত এবং কেহ চাহিলে তাহাকেও দিত। ঈখরের রাজ্যে অসম্ভব কিছুই নাই, সত্য সত্যই পিঠে গাছ আছে। প্রশাস্ত মহাসাগরের অনেক নীপে এই গাছ জ্বে, ইংরেজীতে ইহাকে 'Bread fruit' কটা বৃক্ষ বলে। গাছের ডালে তরমুজ বা কাঁঠালের মত স্থলন ফল হয়, তাহার ছবি উপ্পরে দেখ। ইহা দেখিলেও চক্ষ্ জুড়ায়। ধীপবাসীদিগকে গম বা চাউল প্রভা করিয়া পিঠে তৈয়ারি করিতে হয় না, তাহারা এই • ফল হইতেই তাহা পায়।

পিঠে গাছ সক, ৪০া৫০ ফিট উৰ্ছ

হয়, অর্দ্ধেক দূর পর্য্যস্ত ডাল পালা হয় ेना। ছবিতে যে ফলটী ঝুলিতেছে, তাহা একটা ডাল হইতে বিনিৰ্গত হুইয়াছে। ইহার আরুতি কাঁঠালের ্**ষত হইলেও** ভার তত নয়; তথাপি ছুই বা আডাই দের হইবে। ফলের মধ্যে যে শাঁস অর্দ্ধ পরু অবস্থায় পাওয়া যায় তাহা শাদা এবং ময়দার মত. প্রথমে দেখিলে টাট্কা কটীর মত বোধ হয়।

দক্ষিণ সমুদ্রের দীপবাসীরা ফল হইতে খাদ্য যে প্রণালীতে প্রস্তুত করে তাহা এই:—তাহারা প্রত্যেক ফল ৩।৪ ভাগে কাটিয়া শাঁদ বাহির করিয়া লয়। মাটীতে গর্ত খুঁ ড়িয়া তাহার তলায় তপ্ত পাথর থণ্ড সকল রাথে, প্রস্তর থণ্ড সকলের উপরে সবুজ পাতা বিছাইয়া দেয় এবং তাহার উপর ফলের এক এক ভাগ কাটিয়া রাথে: ইহার উপরে আবার তাহারা পাথর থণ্ড, পাতা ও ফল থাক থাক করিয়া সাজায়। পর্যাস্ত গর্ভটী প্রায় পূর্ণ না হয়, সে পর্যাস্ত এইরূপ করে। তৎপরে পাতা ও মৃত্তিক। ক্ষেক বুরুল পুরু ক্রিয়া তাহার উপরে দেয়। তপ্ত পাথরের তাপে এইরূপ অন্তুত উনানে রুটী সেঁকা হয় অথবা পিঠে গাঁডছর ফল স্থান্সবের খাইবার উপযুক্ত করিয়া লওয়া হয়।

° কথনও কথনও দেশগুদ্ধ লোক ্রাক্তা হইয়া বৃহদাকার উনান প্রস্তুত করে। ইহার পরিধি ১৮/২০ হাত হয়। কার্ছের আগুণে পাথর গরম করিয়া ইহার

মধ্যে নিকেপ করা হয়। এই প্রণা-লীতে শত শত কটীফল এককালে দেঁকা रुरेग्रा योग्र।

উনান হইতে তুলিলে শাদা ফল-গুলির বাহির দিক স্থন্দর পাটল বর্ণ হয়। ভিতর দিক পামকটীর ছিল্কার মত দেখায়। ফলের আসাদ তত মিষ্ট নয়, কিন্তু ইহা বড় পুষ্টিকর।

আমাদের দেশে যে গম হইতে রুটী হয়, তাহার চাষ বংসরে একবার মাত্র হয়। পিঠে গাছের চাষ বৎসরে ছইবার, ক্থনও তিনবার হইয়া থাকে। ফলতঃ প্রশান্ত মহাসাগরের লোকেরা বারো মাসই গাছ হইতে পিঠে ফল পায়। এরপ সহজ উপায়ে আহার পাইলে লোকে পরিশ্রম করিবে কেন? এই সকল দ্বীপবাসী সেই জন্ত বড় অলস।

পিঠে গাছ হইতে কেবল খাদ্য পাওয়া যায়, তাহা নয়। গাছের ছাল হইতে স্থুন্দর স্ত্র হয়, তাহাতে সে দেশের লোক বস্ত্র বয়ন করে। গাছের গুঁডিতে সালতী এলং গৃহনির্মাণের খুটা প্রভৃতি হয়। গাছের গুঁড়িতে অস্ত্র বসাইলে হুগ্নের মত এক প্রকার রুদ বাহির হয়, তাহাতে এক প্রকার শিরিষ হয়। বস্ততঃ দক্ষিণ সমুদ্রবাসী-দিগের পক্ষে পিঠে গাছই প্রধান উপজীব্য।

উদ্ভিদ্ ভৰ্বিদ্দিগের মতে পিষ্টক বৃক্ষ 'Artocurpus incises' ভাতীয়। ইহার পাতা সকল বৃহৎ ও চিৰণ।

हेरात कृत एत, कृतनत मत्था वीजत्काव ও পর্তকেশর আছে। ভিন্ন ভিন্ন স্থানে এই গাছের আফুতি ও ফুল ফল প্রভ-তির তারতম্য আছে। ফল অনেকটা তরমুজের মত, কাঁটালের কাঁটা সকল ফলের গায়ে হয় না, কোথাও কোথাও গাত্র মস্ণ হয়। কোণাও কোণাও फरनत वीिं यर्थष्ठे इत्र, जांश लारक কাঁচা খাইয়া থাকে। কোথাও কোথাও ভাহাতে তরকারী রাঁধিয়া থায়। ফল পাকিবার কিছু পূর্বে পাড়া হয়। ইহার পাকপ্রণালী অনেক প্রকার. উপরে কেবল এক প্রকার প্রথার উল্লেখ করা গিয়াছে। ফল রন্ধন করিলে স্থাসিদ্ধ হয়, মধ্যস্থলে কেবল কিছু ছিব্ড়া থাকে। সিদ্ধ করা হইলে আবু বা ছুগ্রের মত ইহার আস্বাদ। মালয় দ্বীপসমূহ পরিবর্শনকারী ওয়ালেস স্টাহেব এই ফলের বিষয় এইরূপ বর্ণন করিয়া-ছেন।—"মাংদের সহিত থাইলে ইহা যেমন স্থলর তরকারী হয়,আমি সমমণ্ডল বা গ্রীম্মণ্ডলে তাহার মত কোন বস্ত দেখি নাই। ছগ্ধ, চিনি, মাংসের সহিত মিশাইলে স্থলর প্রমান্ন হয়, তাহার আসাদ মধুর, তাহা ধাইয়া কাহারও আশু^{*}মিটে না।''

প্রশান্ত সমুদ্রের দ্বীপ সকলে বড় বড় ধানা করিয়া রুটীফল সকল রক্ষিত হয়। ফল সকল কিছু দিনের মধ্যে রসিয়া কাইরের বা পনিরের মত হইয়া ধায়। তাহা হইতে এক প্রকার হুর্গন বাহির হয়, কিন্তু তপ্ত পাণরে সেঁকিলে তাহা হইতে স্থান্ধ ও পৃষ্টিকর থাদ্য উৎপন্ন হয়। কথনও কথনও ফল সকল চাকা চাকা করিয়া কাটিয়া রৌদ্রে শুকাইয়া লওয়া হয়। ইহা শুঁড়াইয়া ময়দার মত বস্তু পাওয়া যায়, তাহা বায়া রুটী, বিদুট, পরমান্ন প্রভৃতি প্রস্তুত হয়। শুঁড়ানা করিয়াও শুকান ফলথও বেশ আহার করা হয়।

আমেরিকার পশ্চিম ভারত দ্বীপপুঞ ১৭৯৩ সালে লেপ্টনেণ্ট ব্রাই এই বুক্ষ আনয়ন করেন, তদবধি তথায় ইহা বেশ জন্মিতেছে। ইহার আনয়ন উপলক্ষে একটা ছর্ঘটনা হয়। ১৬৮৮ সালে কাপ্তেন ডাম্পিয়ার এই करनत मःवान देश्न खवामी निरंगत निक्छे প্রথম জ্ঞাপন করেন। পরে কাপ্তেন কুকও ইহা দর্শন করিয়া পশ্চিম ভারতে চাষের জন্ম উপদেশ দেন। সালে লেপ্টনেণ্ট বুাই "বাউ**ণ্টি" নামক** জাহাজে টাহিটা দ্বীপে গমন করেন এবং অনেকগুলি পিঠে গাছ লইয়া পশ্চিম ভারত দ্বীপাভিমূথে যাতা করেন। এই সময় জাহাজের লোকেরা বিদোহী হইয়া উঠে এবং একখানি বোটে কয়েকজন লোক স্লুহিত তাঁহাকে সমুদ্রে ভাসাইয়া দিয়া জাহাজধানি লইয়া টাহিটা খীপেই ফিরিয়া আইসে। তথা হইতে এই বিদ্রোহীরা পিটকেরন্ নামক এক কুত্ৰ নিৰ্জন ৰীপে গিৰা

কষ্টেক্রেঠে ইংলওে গিয়া পৌছেন এবং | হইতে পারে। দক্ষিণ ভারতে এই পুনরায় অন্ত জাহাজ আরোহণে আদিয়া | জাতীয় বুক্ক আছে, তাহা হইতে মেহা-পিষ্টকর্কের চারা সকল লইয়া যান। গিনি কাঠের মত স্থন্দর কাঠ পাওয়া **ভারতে** চেষ্ঠা করিলে ইহার চাষ[়] যায়।

বাঙ্গালাপ্রবচন।

- ১। ৰাইশ লাখের থাড়ি, তেইশ লাথের যুডি. ছয় হাজার ঢেঁকি পডে. দেউলে মোষের মডি।
- বাউলের ঘরে গরু।
- বাক সর্বস্ব।
- ৰাক্যেতে পৰ্ব্বত. কিন্ত কার্য্যে তুলাকার।
- বাঘে গোরুতে (ছাগলে) এক ঘাটে জল থাওয়ান।
- বাঘের আডি।
- ৭। বাঘেছ লৈ আঠার ঘ।।
- বাঘের দেখা, সাপের লেখ।।
- বাঘেরে গোবধ।
- ১ । বাথের ঘরে ঘোগের বাসা।
- ১১। বাঘের পিছে ফেউ লাগা।
- ১২। বাঘের বাচল প্রিয়াল,
- (पर्थ ७३ भाग ना।
- ১৩। বাবের বাপের শ্রাদ্ধ।
- ১৪ ৷ বাছার আমার হুধে অরুচি. বাছা আমার বাচলে বাঁচি।

- ১৫। বাছার আমার এত বাডি. ছআনার কাপডে নয়আনার পাডি।
- ১৬। বাছা রূপে গুণে ছির্থ তী. বসে আছেন বডাইচণ্ডী।
- ১৭। বাজাতে বাজাতে বান. গাইতে গাইতে গান।
- ১৮। বাজারে আঞ্গলাগলে शीरतत घत मारन ना।
- ১৯। বাজী ভোর বা বাজী মাত।
- ২•। বাড়া ভাতে ছাই।
- ২১। বাডা ভাতে শত্ৰু বাডে।
- ২২। বাড়ীর ধারে হাট বসাবে. ঘর করে ছাবে না। প্রতি গরাদে মুড়ো থাবে, তিন মাথা যার, বুদ্ধি নেবে তার।
- ২৩। বাড়ীর বুড়ো আর ক্ষেতের হড়ো।
- ২৪। বাড়ীর মধ্যে এক ঘর. তার আবার অন্তর।
- বাণিজ্য করিতে গেল দরিয়ার কূল, રહો 🗀 কেউ কলে ছনো লাভকেউ হারালে भूग।

২৬। বাণিজ্যে বসতে লক্ষীঃ।

২৭। বাতাসে গেরো বাঁধা।

২৮। বাতাদের দঙ্গে ঝগড়া করে।

২৯। বাহুড় চোষা তাল।

৩০। বাধা না মানে গাধা।

৩১। বানরের গলায় মতির মালা।

৩২। বানরের হাতে থস্তা বা স্মাঢ়ি।

৩৩। বাপ্কো বেটা, সিপাহীকো ঘোড়া, কুচ নেই ত থোড়া থোড়া।

৩৪। বাপ গুণে পো, মা গুণে ঝি।

৩৫। বাপ পিতমোর নাম গেল, হেদে জোলার নাতি।

৩৬। বাপ মামরা দায়।

৩৭। বাপের জন্মে নাইক চাষ, ধানকে বলে ছর্কাঘাষ।

৩৮। বাপের বোন্ পিসী, তারে ভাত দিয়ে পুষি।

৩৯। বাপ জানে না, মা জানে না, হোগল বনে বিয়ে।

৪০। বাবা পেটে, মা হাঁটে,আমি তথন বছর আটে।

৪১। বাবার কালে নাইকো গাই,চালুনী দিতে ছইতে যাই।

৪২। বাবু মরেন শীতে আর ভাতে।

৪৩। বাবুই ঘর থাক্তে বাহিরে ভেজে।

৪৪। বামন গেল ঘর তো লাঙল তুলে ধর।

8६। বামনের গরু, থাবে অর, ছধ দেবে অধিক। .

৪৬। বায়্নাং বিচিত্রা গভিঃ।

৪৭। বার হাত পুকুরে তের হাত মাছ।

৪৮। বার মাসে তের পার্বাণ।

৪৯। বারো রাজপুত তেরো হাঁড়ী, কেউ না খায় কারু বাড়ী।

বারোটা ঝাড়লুম তেরোটা মলো,
 তই না মরে মোর অপয়শ হলো।

৫১। বামন হয়ে চাঁদে হাত বাড়ান।

৫२। वालानाः द्वापनः वलः।

৩ে। বালির বাঁধ।

৫৪। বাল্তীর ঘরের আগড়।

৫৫। বাদ কর্বে গাঁয়ের মাঝে।
 জমী কর্বে যার মা বাপে আছে।
 (মা-গ্রাম ধোয়া জল,
 বাপ-পুছরিণী)

৫৬। বাস করবো নগরে,মর্বো গিয়ে সাগরে।

৫৭। বাস্ত গুলু।

৫৮। বাহিরের জামাই মধুস্দন,
 ঘরের জামাই মধো।
 ভাত থাওসে মধুস্দন,
 ভাত থেসেরে মধো।

৫৯। বাঁচামরা ঈশ্বরের হাত।

৬ । বাঁচলে কত দেখ্বো আর,
ছুঁচোর গলার চক্রহার,
বিড়ালের কপালে টীকে,
বাঁদর বেড়াল হলুদু মেথে।

৬১। বাঁজি জানে না প্রস্ব বেদনা।

৬২। বাঁজির পুতকে হাঁচির খা সর न।

৬৩। বাঁশ বাক্স বামণ, জমী নেবার তিন ষম।

७८। वाला तहरत ककी वेन्ता।

৬৫। বঁশে তলার বিউলো গাই, নেই সমধ্যে মাসভূতো ভাই।

৬৬। বাশ যদি পড়ে জলে, কি কর্তে পারে তালে আর শালে।

দাদাভাই নৌরজি।

ওই বে মহাত্মা—দীর্ঘ শাশ্রধারী, প্রশন্তললাট বিশালনয়ান, স্থারির প্রবীণ গন্তীর-প্রকৃতি তেজস্বী পুরুষ—ভারত সস্তান! (>)

উদার নীতির পূর্ণ অবতার,
জীবনেণ ব্রত—জগতের হিত,
বিশ্বপ্রেমে গাঁর বিগলিত মন,
পার্লেমেণ্টে' আজ তিনি মনোনীত !(২)

ভারত মাতার—অমূল্য রতন!
বব্বেতে জনম—নাম 'দাদাভাই,'
বাড়ালেন কত দেশের গৌরব,
এস সবে মিলি তাঁর গুণ গাই। (৩)

এমন স্থাদিন কবে হবে আর ? অর্ণাক্ষরে লিথে রাথ ইতিহাসে, "পার্লেমেণ্ট—মহাসভাতে মেম্বার দাদাভাই আজি" ইংল্ভ প্রবাসে! (৪)

এ আনন্দ হৃদে ধরে না যে আর, আশার অপন হইল সফল, একস্ত্রে বাঁধা ইংলও ভারত, কৈ ছিড়িবে এই প্রণয় শিক্লণ (৫)

মুভ্যতম জাতি বাহার। জগতে, তাঁহাদের সভা কম কথা নয়। সে সভাতে আজ ভারতসন্তান, ভাবিলে কাহার না হয় বিশ্বয় ? (৬) ভারতের ভাগ্যে ঘটে নাই আর,
অঘটন আজ হ'ল সংঘটন,
কোটিকণ্ঠে গাও—'ভারতের জয়'
কাঁপায়ে মেদিনী—কাঁপায়ে গগন! (৭)

যাহার ইপিতে সমগ্র পৃথিবী চালিত হ'তেছে অপূর্ব্ব কৌশলে, সে মহাসভায় প্রজার প্রবেশ একমাত্র গুণ প্রতিভার বলে। (৮)

ধন্ত ধরাতলে ইংরেজসমাজ সাম্য নীতি ধার মূলমন্ত্র সার, উদার মতের জাগ্রত প্রহরী— জীবস্তু ভাবেতে করিছে প্রচার! (৯)

ষাধীনতা রত্ন অঙ্গের ভূষণ,
মানসিক বল—জীবন সম্বল,
স্বার্থ বলিদান আত্মার প্রকৃতি,
বিশ্বদেবা ব্রত জীবনে প্রবল! (১০)

আত্মপর ভেদ নাহি যে জাতির, সে জাতির পদে কোট নমস্বার, তাদের সদ্গুণ করিলে গ্রহণ, পতিত ভারত হইবে উদ্ধার। (১১)

দেখালে যে ভাব উদার ইংরাজ, বরণীয় হ'লে স্থসভ্য সমাজে, চিরস্থরণীয় ভারতে ও নাম একমাত্র এই স্থয়হৎ কাজে। (১২) ধন্তা ভিক্টোরিয়া 'ভারক্ট ঈশরী'
ধন্ত মাডটোন'—'কেইন্' 'রিপণ,'
ধন্তা ধন্তা ধন্তা 'মধ্য ফিন্সবারি'
ধন্ত মোরা করি ও নাম স্মরণ। (১৩)
ধাক্ক 'দাদাভাই' দীর্ঘজীবী হয়ে,
সাধ কারমনে দেশের কল্যাণ,
করি হে আশীবঃ—পার্লেমেন্টে বিদ বাড়াও দেশের গৌরব সম্মান। (১৪)
যতকাল রবে লার্হবী যমুনা,
যতকাল রবে বিদ্যা হিমাচল,
'দাদাভাই'-যশ গাইবে রসনা। (১৫)

মরে মরে হবে মহা মহোৎসব
হিমালয় হ'তে কুমারিকা পার,
আনন্দের প্রোতে ভাসিবে ভারত
যুগ—যুগান্তর সদা-অনিবার। (১৬)
ভাবী বংশধর শ্বরিয়ে ও নাম
সিদ্ধ-মনোরথ হইবে সকলে,
করতালি দিয়ে নাচিবে শিশুরা,
উলু দিবে নারী মাতি কুতৃহলে! (১৭)
এমন স্থানিন কবে হবে আর ?
স্বর্ণাক্ষরে লিথে রাথ ইতিহাসে
পার্লেমেন্ট মহা সভাতে মেম্বার
'দাদাভাই' আজি ইংলও প্রবাসেনা(১৮)

উদাসীনের চিন্তা। সংসাহদের পরিচয়।

এীচৈত≆—নিতাানক ও হরিদাস নবদীপে সংকার্ত্তন প্রথা প্রবর্ত্তিত করি-বার পর একদিন হরিভক্ত বৈষ্ণবগণ নগরের মধা দিয়া থোল করতাল ধ্বনি गर मकीर्खन कतिया गारेर**ि**ছलान। কাজীর আদেশক্রমে তাহার অমুচরবর্গ আসিয়া কীর্ত্তনকারী বৈষ্ণবদিগের প্রতি যার পর নাই অভ্যাচার করিতে তাঁহাদিগের থোল আরম্ভ করে। ভালিয়া দেয়, করতাল বল পূর্বক অপহরণ করে, এবং নানারূপে তাঁহা-দিগকে অপমানিত করিয়া ছাড়িয়া (मय। किउटलंब भियावर्ग धर्मान्हे यवन-निर्गत केषुण वावहारत मर्पाहरू इहेत्रा

গুরুদেবের নিকট যাইয়া সমস্ত ঘটনা বর্ণন করিলেন। ঈশ্ব-প্রেমিক চৈতন্তের বিশ্বাস পূর্ণ হৃদয় ঈদৃশ বিরুদ্ধ শক্তির নিকট পরাস্ত হইবে কেন ? বাহাদিগের ব্রহ্মশক্তির উপর বিশ্বাস নাই, অথবা বাহারা কীণ বিশ্বাস লইয়া সংসারপথে অগ্রসর হইয়া থাকেন, তাহারা বিরুদ্ধ শক্তির নিকট মন্তক অবনত করিতে পারেন। কিন্তু চৈতন্ত জ্বাপনার প্রোণে যে হর্দম বল ও অপরিমের তেজঃ সংগ্রহ করিয়াছিলেন, সে বল ও সে তেজ তাহাকে বিশুণতর প্রোৎসাহিত বিরুদ্ধ ভাবিন নগরসংকীর্তন করিকার করে শিব্যবর্গকে খোল করতানারি

লইয়া প্রস্তুত হইতে আদেশ প্রদান করিলেন। তৎপরে এক দিবস দেখা গেল হরিভক্তের দল রাজপথে সংকী-র্ত্তনে বহির্গত হইয়াছে। তৎকালে নব্বীপে চৈতভের শিষ্য সংখ্যা কম ছিল না। তাঁহাদিগের কীর্ত্তন কোলাহলে নবন্ধীপ পরিপূর্ণ হইল। চতুদ্দিকে এসংবাদ পরিব্যাপ্ত হইল। জনস্রোত রাজপথ দিয়া কাজী সাহেবের গৃহাভিমুথে চলিতে আরম্ভ করিল। দর্শকরুন্দ এতাদৃশ **অস**মসাহসিকতার দেখিয়া ব্যাপার বিশ্বিত হইলেন। যে কাজীর প্রতাপ তৎকালে বর্ত্তমানকালীন জিলার মাঞ্জি-**८**ष्ट्रेडेनिरगंत इटेटिंड क्लान जार नान ছিল না, সে কাজীর বিরুদ্ধাচরণের ভয়ে বিন্দুমাত্র ভীত না হইয়া সংকী-র্ত্তনের দল কাজী সাহেবের বাড়ীর অভিমুখে চলিয়াছে ইহা দেখিয়া ক্ষীণ-বিশাসী ব্যক্তিগণ বিশ্বিত হইবে বিচিত্র কি ? কিন্তু চৈততা ও তাঁহার শিষ্যবর্গের মনে বিন্দুমাত্রও ভীতির সঞ্চার হয় নাই। काकी मार्टिय यथन मःकीर्छन मरलत সংবাদ পাইলেন, তথন তিনি ভীত হইয়া গৃহ পরিত্যাগপুর্বক পলায়ন করিলেন। শিষ্যগণ কীর্ত্তন করিতে চৈতভ্যের করিতে কাজীর বাড়ীস্ক উপস্থিত হই-(लन। नियामिटशत मटशा याहाता कुक-ৰভাব ছিলেন, তাঁহারা কাজীর গৃহ ও ৯ উদ্যান প্রভৃতি শও ভও করিতে লাগি-(गन, (कह वा कांनी नाट्रावत श्रीक ৰীভবং ভাষায় গালি বৰ্ষণ করিতে

লাগিলেন। কিন্তু চৈতজ্ঞের ক্ষমানীল হৃদয় এজন্ম ব্যথিত হইল। শিষাদিগের ঈদৃশ অসন্ব্যবহারে বিরক্ত হইয়া তিরস্বার করিতে লাগিলেন। অবশেষে কাজীকে ডাকাইয়া তাঁহার সহিত মধুর প্রেমালাপ করিয়া প্রত্যা-করিলেন। কাজী হইলেন, আর বৈঞ্বের প্রতি অত্যা-চার হইতে দিবেন না। কি হুর্দম তেজ! ইহাই প্রকৃত সৎসাহস। হর্মলকে উৎপীড়ন করা সৎ সাহসের কার্য্য নহে। কিন্তু বিশ্বাদের অক্ষয় কবচ দারা স্থরক্ষিত হইয়া স্বলের অন্তায় ব্যবহারের প্রতিবাদ ও দমন করা সৎসাহদের পরিচায়ক। চৈত্র জীবনেব ভয় করেন নাই, প্রকৃত পক্ষে তীহার বিশ্বাদের তেজ যেন বৈহ্যতিক প্রবাহের স্থায় হৃদয়ে হৃদয়ে সঞ্চারিত হইয়াছিল। চৈত্ত পাশ্বিক শক্তির ভয়ে বিশাসকে উপেক্ষা করিতে পারিতেন, তিনি ধর্মকে অতল জলে ডুবাইয়া দিয়া স্বগৃহে আরামে অবস্থান করিতে পারিতেন. কিন্ত তাঁহার প্রকৃতি সে উপাদানে গঠিত হয় নাই। তিনি ধর্মের জ্বন্ত প্রাণকে ভুচ্ছ করিলেন। প্রকৃত ধর্ম্মবল হৃদরে সঞ্চারিত হইলে মাতুষ পৃথিবীর আর সমস্ত শক্তিকে উপেক্ষা করিতে পারে। মৃত্যুভয় তথন স্থদ্রে পলায়ন করে। তথন মাত্র্য আপনার দিকে দৃষ্টি করিবার সময় পায় না। নিয়ত সেই প্রব তারার প্রতি অনিমেব দৃষ্টি

হেতু সে মুগ্ধ হইরা যার। তথন মন্ত্রমুগ্ধ সর্পের স্থায় কর্ত্তব্যপথে অগ্রসর হইয়া থাকে। এইরূপ সংসাহসিকতা কাহার না বাঞ্নীয় ? যাঁহারা নানা ভয়ে ভীত হইয়া কর্ত্তব্যপথে অগ্রসর হইতে পরাজ্বখ, তাঁহারা ঈশবের স্থপুত্র কিংবা স্থকতা। হইলে কোন ভয় ভাবনা থাকে না।

নহেন। যাহারা ঈশরের প্রিয়পুত্র প্রিয়ককা হইতে ইচ্ছা করেন, তাঁহারা সকল শক্তিকে উপেক্ষা করিয়া একমাত্র ব্রহ্মশক্তিকে জীবনের চালক করিয়া থাকেন। ব্রহ্মশক্তি জীবনের চালক

পারিবারিক সঙ্গীত।

मा आमात आननमात्री मर्कमन्त्रा, (মা) প্রেমদাত্রী জগদ্ধাত্রী ভক্ত-বৎসলা। স্লেছের প্রতিমাথানি, প্রেমোন্মতা পাগলিনী. অরপী মার কতরূপ নাহি যায় বলা। চাঁদে সূর্য্যে মার আলো. ফুল বনে শোভে ভালো, কোটী চল্ৰ জিনি কান্তি, কুস্থম-কোমলা। মা মোর বিশ্বরূপিণী, किनानम अक्रिशी. হাদাকাশ-বিহারিণী স্থির চপলা। মা মোর ছঃথবারিণী,

পাপ সন্তাপহারিণী, সুথদা মোকদা মাতা চিরশীতলা। মা মোর গর্ভধারিণী. পালয়িত্রী জননী. ববাভয় প্রদায়িনী স্নেহে অচলা। মার থাই মার পরি. মার রাজ্যে বাস করি. অপাব মহিমা মার অনন্ত লীলা। চিনেছি মারে এবার. মা আমার আমি মার. মার কোলে জুড়াইব ত্রিতাপ জালা। (মার সঙ্গেরব রঙ্গে নহি একেলা।)

বাদন-প্রণালী।

পিয়ানোফোর্ট ও হারমোনিয়ম।

(৩০ সংখ্যা—৭৮ পৃষ্ঠার পর)

নারণা অর্থাৎ পর্দ্ধা শ্রেণী থাকে, তন্মধ্যে কোন খেত পর্দার কোন স্বাভাবিস্ক ও কাল পৰ্দাগুলির দারা বিকৃত অর্থাৎ। সহসা হুর বোধ হর না। এই

হারমোনিয়ন যাত্রে ছই প্রকার কড়িও কোমল স্থর বাদিত হয়; 🗣 খেত পৰ্দাগুলির দারা স্বাভাবিক স্থর | স্থর বাদিত হয়, তাহার লাম না জানিলে পাঁচ সপ্তক্বিশিষ্ট একটা হারমোনিরমের প্রত্যেক চাবির নাম পশ্চাৎ প্রদত্ত হইল।

धरे भाँ । मश्चकविश्वि शांत्रसानियम মন্ত্রের সর্ব্ধ প্রথমে যে খেত পদা থানি থাকে, ভাহাকে আমরা ষড়জ ও ইংরা-ভেরা C স্থর কহিয়া থাকে। তৎপরের বৈত পদা গুলিকে ক্রমাররে ঋষভ বা D, शीक्षांत वा E, यशुम वा F, शक्षम বা G, ধৈবত বা A, এবং নিষাদ বা B স্থর কহা যায়। এইরূপে প্রত্যেক অষ্টম পর্দা "সা" (ষড়জ) ধরিয়া স্বর-্গ্রাম (সাধাগম) নির্ণয় করিতে হয়। এই যন্ত্রের সর্ব্ধ প্রথম সাত খানি পর্দা অতি উদারার সপ্তক, দ্বিতীয় সাত্থানি পদা উদারার সপ্তক, তৃতীয় সাত্থানি পদা মুদারার সপ্তক, চতুর্থ সাত থানি পদ্দা তারার দপ্তক, এক পঞ্চম সাত্থানি পদা অতি তারার সপ্তক। এই পাঁচ সপ্তকের মধ্যে প্রতি সপ্তকে পাঁচ থানি করিয়া কোমল পর্দা আছে। সপ্তকের প্রথম কাল পদ্দা কোমল ঋষভ, বিতীয় কাল পদা কোমল গান্ধার. তৃতীয় কাৰ পদাকে কোৰল পঞ্ম বা কড়ি মধ্যম ৰলে, চতুৰ্থ কাল পৰ্দাকে **क्वींमन देवरा जवर शक्षम कान श्रमाटक** কোমল নিষাদ কহে। ইংরাজিতে क्लियगरक "Flat ও কড়িকে Sharp" ক্ষেদে। প্রতি সপ্তকে পাঁচ থানি করিয়া भक्ष मश्रदक शेठिम शामि कामन भर्मा আছে। অথম পদা হইতে চতুদিশ

পদ্দা পর্যান্ত বামহত বারা বাজাইতে হয় এবং পঞ্চদশ পদ্দা হইতে বট্তিংশং পদ্দা পর্যান্ত দক্ষিণ হন্ত বারা বাজাইতে হয়।

হারমোনিয়মে সংগীতের উচ্চ ও থাদ উভয় কুঞ্চিকারই আবশ্রক হয়। উচ্চ কুঞ্চিকাযুক্ত মঞ্চের গত প্রভৃতি দক্ষিণ হত্তে যন্ত্রের দক্ষিণদিককার উচ্চ স্থরের পদা সকলে বাজাইতে হয়। এবং থাদ কুঞ্চিকযুক্ত মঞ্চের স্থার সকল বামহন্ত দারা বামদিককার থাদ পদা সকল বাজাইতে হয়। হারমোনিয়ম মাত্রই অচল পৰ্দাবিশিষ্ট। বাজাইবার সময় দক্ষিণ হত্তের পাঁচটী অঙ্গুলিই ব্যবহার পদা সকলে অঙ্গলি করিতে হয়। विकारभत निग्रम এই,--अञ्चलारम সা-এর পর্দায় বৃদ্ধা, ঋ-তে তর্জনী. গ তে মধ্যমা, ম-তে মধ্যমার ভিতর **निया त्रका**, এবং প. ধ. নি ও সা-তে ক্ৰমান্বয়ে তৰ্জনী, মধ্যমা. অনামিকা ও কনিষ্ঠা। এবং বিলোমে मा. नि. ४, भ ७ म-ए क्रमायरय. কনিষ্ঠা, অনামিকা, মধ্যমা, ও বৃদ্ধা, গ-তে বৃদ্ধার উপর দিয়া মধ্যমা এবং ঋ ও সা-তে তৰ্জনী ও বৃদ্ধা। এইরপ নিয়মে পর্দায় অঙ্গুলী বিক্ষেপ করিতে হইবে। উদাহরণ সকল সাধনার সময় প্রত্যেক স্থরের স্থায়িত্ব পরিমাণ করিয়া বিশাইতে অভ্যাস रहेंद्र ।

পদার উপরিভাগে অর্থাৎ হার-

(यानित्रत्यत जानात कार्छ त्य जिनशानि স্কু কাষ্ঠ ফলক দারা চতুকোণ পদার্থ থাকে, তাহা উপর দিকে টানিয়া তুলিয়া তথায় স্বর্রাপি পুস্তক রাখিতে হয়।

হারমোনিয়ম ফু.ট অর্থাৎ ছোট हात्रानियम वाकारिवात नियम नकनरे शांत्रसानियासत मठ, त्करण विरम्य এই যে, ইহার ভন্তা (বায়ুকোষ) পদমারা नकानन कता इस ना, वाम रखवाता मिरे কার্য্য সমাধা করিতে হয়। ইহার বায়-কোষ নিমে না থাকিয়া, ইহার পশ্চাৎ-দিকে অবস্থিত, সেই জন্ম বাম হত্তের বৃদ্ধান্দুলী ইহার উপরিস্থ কার্চথতে সংলগ করিয়া অপর চারিটি অঙ্গুলী দারা বায়্- कार्यत कार्ष्टभातन शूर्वक शीरत शीरत मक्षानन कतिए इश । कि इ हेरात বায়ুকোষ উপর দিকে উঠাইবার সময় অর্থাৎ ইহাকে বায়ুপূর্ণ করিবার সময় অতি দ্রুত ইহার ভন্তা উপরে উঠাইতে हरेत अवः नामारेवात नमग्र धीरत धीरत नामाहेट इहेटव। এই यञ्ज इहे रुख দারা না বাজাইয়া কেবল দক্ষিণ হস্ত দারা বাজান হইয়া থাকে এবং বাম হস্ত দারা ভস্তা সঞ্চালন করিতে হয়। একটা টানা কীলক ইহাতে কেবল (stop) থাকে।

(ক্ৰমশঃ)

मखगून।

(TOOTH-ACHE.)

হোমিওপ্যাথি মতে চিকিৎসা।

मञ्जन्न অতি कष्टेनाग्रक शोड़ा, এই | ছট্ফট্ করে ইত্যাদি অনেক পীড়া হইলে রোগীকে অস্ফ্রারণা ভোগ করিতে হয়। অনেক কারণে এই বোগ জনায়া পাকে-দক্তক্ষ, দক্তভাঙ্গা, হঠাৎ ঠাণ্ডা অথবা গ্রম লাগা, বাত, পারদদেবন, পেটের পীড়া, স্নায়বিক পীড়া ইত্যাদি প্রধান কারণ। পীড়া হইলে কর্ণমূলে কন্কনানি, बन्बनानि, ऋहविष्व (वषना, पख्र्म् স্ফীত হওয়া, শির:পীড়া মুখমগুল ও বেদনা, বন্ত্রণার রোগী

প্রকাশ পায়।

চিকিৎসা।

ডাক্তার ক্লার্ক বলেন :--

मसन्ब रहेरब अथरम क्षार छैरा वावहादव उपकात हहेट शादा, क्य-প্রাপ্ত দত্ত্বের গোড়াতে প্রদাহ হইলে মার্ক-সল ৩ ক্রম দিবে। যদি দত্তমূল ফুলিয়া প্রদাহ হয়, তবে এপিস ৩ ক্রম মাক্ত-সলের সঙ্গে পর্যায়ক্তবে ব্যব

হার করিবে। আহার কালীন দস্তশ্লে
কেলাই-কার্ব্ব দিবে। ঠাণ্ডা লাগিয়া
পীড়া হইলে ক্যাল-কার্ব্ব ৬ ক্রম
দিবে, গরমে রোগ রৃদ্ধি হইলে
ক্যামোমিলা ৬ ক্রম দিবে। গর্ভাবস্থায়
এই রোগ হইলে ক্যাল-কার্ব্ব ও
সিপিয়া ৬ দিবে। শয়নকালে অসহ
বেদনা হইলে ম্যায়ে-ক্যার্ব্ব ৬ ক্রম ২ঘণ্টা
অস্তর দিবে।

এই ঔষধের অমিশ্র আরক তুলায় ভিজাইয়া ক্ষমপ্রাপ্ত দত্তে দিলে তৎক্ষণাৎ যন্ত্রণা নিবারণ হয়।

ক্যামোমিলা— রাজে অসহ বেদনা, শিরংগীড়া, দস্তম্লে চিড়িক মারিয়া উঠা, গরম ও ঠাওায় বেদনার বৃদ্ধি, দস্ত নড়া, গাল লাল ও গরম বোধ হওয়া। ৬। ১২ ক্রম।

বৈলেডোনা— আহার অত্যে, বৈকালে, দস্তস্পর্শ করিলে ও ঠাওা লাগিলে বেদনার বৃদ্ধি, মাথার বেদনা, অতিশর দস্তশ্ল, মুথে লাল উঠা, দস্ত মাড়ী ফীত, জর, পিপাসা। ৬।৩ ক্রম।

भोक् तिश्रम-मृत्न- ममल मूथमणन

ও মন্তিকে বেদনা, ছিড়েফেলার ক্রায় বেদনা, আহার অস্তে বেদনার র্দ্ধি, মাড়ী ফীত, ঘর্মা, মুখে লাল উঠা ৩।৬ ক্রম।

शिल (मि) ला- म्स्यूर्णत (त्रम्नात म्क्रिंग कर्त, मस्य मस्य, मूर्य, क्रिंग त्रम्मा, स्वाकात्म स्

নক্সভ্মিকা— কোঠবন্ধ, দস্ত-মাড়ীতে টাটানি, থোঁচান ও দপ্দপানি, দস্তমাড়ী ক্ষীত, রোগী থিটথিটে ৬।৩০ ক্রম।

ষ্টেফাই সেগ্রিয়া—ঠাণ্ডার বেদ-নার বৃদ্ধি, ক্ষরপ্রাপ্ত দন্ত, সকল দন্তে চিড়িক মারিয়া উঠা, কনকনানি, বেদনা, মুথ ও হাত পা শীতল, ঘর্মা, স্নারবীর বেদনা। ৬০২ ক্রম।

ব্রাইওনিয়া— থোচানে বেদনা, রাত্রে ও উচ্চে বেদনার বৃদ্ধি, পিপাসা, কোষ্ঠবদ্ধ, রোগী থিটথিটে, নিস্তেজ, নড়িয়া বেড়াইলে বেদনার বৃদ্ধি। ৬৩০ ক্রম।

রোগ শয্যা।

আমি এখন রোগ শব্যার, স্থতরাং বেন বে, শরীর ও মনের বল, দর্প, উৎআমার পাঠিকা ভগিনী বুঝিতে পারি- সাহ, উদ্যম, ফুর্রি, কৌতৃক—আমাদের

"চরস্কপনা" করিবার যে সকল উপ-করণ—তাহাদিগকে বিদায় দিয়া আমি "শান্ত, নির্কিকার (?) ভালমানুষ" রূপে, বিছানায় পড়িয়া থাকিতে বাধ্য হই-য়াছি। আমাদের চতুর্বিধ বুত্তির * পোষণীয় সকল জিনিষ্ট জগতে রহি-য়াছে, কিন্তু আমি এথন তাহার অনেক জিনিষ গ্রহণ করিতে অধোগ্য ও অক্ষম। রোগীর প্রধান ক্লেশ এই যে সাধারণতঃ রোগী মনুষ্যত্ব অনুশীলন স্থথে বঞ্চিত ও অন্ধিকারী। মান্ব জীবনের প্রধান উদ্দেশ্য মনুষাত্ব অনুশীলন। রোগী হইয়া প্রধান স্থথ, প্রধান উদ্দেশ্য হইতে দুরে পড়িয়াছি। এখন আমার প্রয়োজনীয় জিনিষ ঔষধ পথ্য আর স্লেহ আমার বর্তমান মমতা। "জাবন" কেবল এই কয়টীরই মধ্যে। এথানে "ভগবানের কুপার" কথা আর विटमय कतिया উল্লেখ कतिलाम ना. কারণ তাহা সকল অবস্থায় সকলেরই জভো। বোধ হয় সকলেই প্রতিক্ষণে সে জিনিদের আবশ্রকতা অত্নভব করিয়া থাকেন।

এখন আমার প্রয়োজনীয় জিনিষ শুলির ছোট বড় বিচার করিতে গিয়া আমি ঔষধ পথ্য অপেক্ষা স্নেহ মমতা-কেই শ্রেষ্ঠতর মনে করিতেছি। বিচারে পক্ষপাতিতা হইতেছে কিনা (এবং রোগ ভোগে আমার মস্তিক্ষ বিঠিক্

হইয়াছে কি না) তাহা বুঝিতে না পারিলেও দিদ্ধান্তের নিভূলের বিষয়ে আমার একটু বিশেষ রকম ভরসা আছে। কারণ আমি আপনা আপনিই বুঝিতে পারি-ঔষধাদি ব্যবহার সম্বেও "বাস্ত-বিক বাঁচিয়া আছি কি না" আমার মনে এই রকম একটা সন্দেহ সময়ে সময়ে আসিয়া থাকে। যথন জগতের মধুর সৌন্দর্য্য, আমার বিরক্ত ও ক্লান্ত চক্ষের উপরে ভাসিয়া বেড়ায়, তথন পূর্ণ মাত্রায় ঔষধ থাইলেও, আমার মনে হয়, আমি বুঝি ভাল রকম বাঁচিয়া নাই; বাঁচিয়া থাকিলে স্থলর জিনিষ ভাল नार्ग ना रकन ? यथन आभात জীবনের অসম্পন্ন "কর্ত্তব্য" গুলির দিকে চাহি, তথন স্বাস্থ্যকর-বলকর পথ্য গ্রহণ করিলেও আমার মনে হয়. আমার জীবনই যদি আছে, তবে কর্তব্য-পালন করিবার শক্তি যাইবে কেন ? আমি হয়তো প্রকৃত জীবস্ত নহি। যথন, মানবের সজীবতা শক্তি গুলি আমার প্রাণের চারিপাশে ঘুরিতেছে বুঝিতে পারি. অথচ একটিকে ধরিতেও ক্ষমতা হয় না, তথন ঔষধ পথ্যের সহস্র শক্তি অতিক্রম করিয়া আমার মনে হয়, আমি বাঁচিয়া থাকিলে আমাত্র এমন দশা इटेरव रकन ? किन्ह এই রোগ भयाय এই জীবনাতার সন্ধিস্থে, যথন আৰি আমার ভভাকাজ্ঞী ও ভভাকাজ্জিণী मिश्तित त्वर, पत्रा ७ महास्कृष्टि नारे, ব্ধন আমার আরোগ্যাকাকী ব্রুষ কর-

[°] চতুর্বিধ বৃদ্ধি—শারীরিকী, ঝানার্জনী, ক্ষানারিণী ও চিত্তরঞ্জিনী।

খানি অমুভব করিতে পাই, তথনই অমৌর—ঔষধ পথ্য গ্রহণ করি বা না করি. তথনই আমার অন্তিত্ব বিষয়ে (कानं अत्मर थारक ना। তথনই ভাবি, আজিও আকাশে চাঁদ উঠে, আজিও বাগানে ফুল ফুটে, আজিও স্কুমার শিশু মায়ের কোল আলো করে. আজিও শাস্ত রস পূর্ণ সঙ্গীত সন্ধ্যা-কালে জগৎ মাতাইয়া থাকে! তথনই বুঝিতে পারি, আজিও জগতে আছে, মানব হৃদয়ে সাধ আছে, আমি 'কুদ্রাদপি কুদ্র' হইলেও জগতের আমাতে প্রয়োজন আছে ! যাহার স্নেহের বন্ধন আছে. সে জীবিতও আছে; যে জীবিত আছে, তাহার বর্তমান অবস্থা যাহাই হউক. অন্ততঃ আশার আলো মাথা একটা কাল্লনিক ভবিষ্যৎ তো আছে---যাহার ভবিষ্য আছে, তাহার তো স্বই আছে! তাই তথনই এ স্থপ্ত প্রাণের **লুপ্ত সাধ বাদনা** এক একবার বিহাতের মত চমকিয়া উঠে, এক মুহুর্ত্তের জন্মে আমার "রোগশ্যা" ভুলিয়া যাইতে হয়। এমন মহোগধ, এমন অমৃতমাধা পথ্য, কোনও এম্, ডি, কোনও এম, বি. কোনও কবিভূষণ, কোনও কবিকেশরী, ব্যবস্থা করিতে পারেন স্থানি না। তাই আমি বিবেচনা করি, রোগীদিগের জন্মে আঁগে স্নেহ মমতা, তার পর ঔষধ পথ্য • আবশ্রক ৷ূ হয়তো আমি জন্মিবার বহু ঁ শতাকী পূর্বের, বহুলোকে এ কথা বলিয়া পিয়া থাকিবেন, কিন্তু আমার মনে

হইতেছে, এই রোগশ্যার প্রসাদে এ
নৃতন রকম "সত্য" হয় তোঁ আমিই
আবিষ্কার করিয়া বদিলাম! ভরসা
করি, এখন হইতে আমার আবিষ্কৃত
"তত্ত্ব"টা, দেশীয় ও বিদেশীয় চিকিৎসক
মহাশয়েরা চিকিৎসা প্রকরণে বিধিবদ্ধ
করিবেন!—প্রার্থনা করি,তাঁহারা যাহাই
করুন, বঙ্গবাদিনীরা সকলেই ইহা মনে
রাখিবেন; তাহা হইলেই আমার "রোগশ্যা" সার্থক হইবে।

বলিতেছিলাম, আমি এখন রোগ শ্যায়। আমি এখন মানবজগৎ হইতে এক রকম বিদায় লইয়া, একটা বিছা-নায় আত্মসমর্পণ করিয়াছি। আমি যে মানব জগতের একজন, এ কথা সহসা মনে হয় না। আমি কাহারও জন্ম কিছুই করিতে পারি না। মান্তবেরা— আমার ভভাকাজ্জী গুরু ও বন্ধরা আমাকে ক্ষেহ মমতা করেন, আমার क्य थार्टन, आभात क्य वाख इन, আমি কাহারও জন্মে কিছুই করি না। কেবল বিছানায় পড়িয়া দীর্ঘক্ষণ, দীর্ঘ মুহূর্ত্ত, দীর্ঘ দিবারাত্রি কাটিতেছি ! আমি বুঝি এখন মাহুবের কেহ নহি, আমি বুঝি বা বিছানারই "আপনার জন" रुरेग्राहि ।

মন্থ্যশ্রেণীতে জন্মগ্রহণ করিরা মানব
সমাজের এ রকম "পর" হওরা যে কি
ছর্ভাগ্যের কথা, তাহা এই রোগশ্যার
প্রসাদেই আমি ব্রিতেছি। আমাদের
বড় সৌভাগ্য এই যে আমরা একা

नहि-स्तित मधाक इटेट প्रथक निह। আমি এক পরিবারের একজন, এক সমাজেরও একজন-- বাঁহারা তাঁহারা তো বিশ্ব জগতেরই। আমাদের মত লোকের ক্ষুদ্রাশয়তা ও সন্ধীর্ণতা আমাদিগকে যতই ক্ষুত্ৰতম করুক না কেন, আমরা অহং জ্ঞানে পূর্ণ হইয়া মোহান্ধ হইয়া পড়ি না কেন, তথাপি মানব সমাজের সহিত আমাদের গভীর भवक- देनभर्शिक निग्र**म**. সে রাথিতেই হইবে। প্রায় সকল অবস্থাতেই মানব-হৃদয় মানবের জন্ম লালায়িত। अथरे रुषेक चात्र इःथरे रुषेक, धनीतरे रछेक, स्वात्र मतिराज्यत्रे रुछेक, धकी शमग्र आत्र এक ही शमग्रदक हाश्रित्व हे চাহিবে! মামুষের নিজের স্থাথ পরি-তৃপ্তি হয় কখন ? यथन কোনও সহাদয় আত্মীয়, স্থার স্থু নিজ সুথের মত গ্রহণ করেন, ব্ধন একজনের হৃদ্য অত্যের হুথে প্রকৃত হুথাগার হইয়া উঠে, ত্রনই। আবার মানুষের হঃথে শান্তি আদে কখন ? যখন কোনও লেহপূৰ্ণ স্বদ^{্মের} সহামুভূতি তাহার ব্যথিত হৃদ্য षाकर्षन करत. यथन (कान अ स्मरहत হৃদয় গলিয়া ছঃখীর জ্বন্ত ছই ফোঁটা অঞ্মোচন করে, তথনই ব্যথিত হৃদয় ষ্মারাম পাইয়া থাকে। তাই বলিতেছি, মানব পরেরই, যিনি পরার্থপর, তিনিও পরের, যিনি স্বার্থপর তিনিও পরের। রাজার ছেলে শাক্যসিংহ পথের ভিথারী रहेबाहित्यन, व्यक्त পরে জরা मुङ्ग

অভিক্রম করিবে বলিয়া: নরপিশাচ তৈমুরলঙ্ভাগণা নরহতাা করিয়াছিল. দশ জনের কাছে-পরের "সমাটু" হইবে বলিয়া; ভারতীয় ঋষি-গণ জ্ঞানামুশীল করিয়া রক্তনাংস্ভল করিয়াছিলেন, তাঁহাদের অর্জিত রুছে ममख जग९ धनी इटेर विनया: आमा-(मत कूजानव धनिश्रण मीन इःथीत पूथ-গ্রাস বঞ্চিত করিয়াও লৌহসিদ্ধুক বোঝাই করেন, কেবল তাঁহাদের পুত্র পৌত্রগণ "ভোগ" করিবে বালীকি, হোমর, কালিদাস, সেক্সপীয়র, মাইকেল মধুহদন, লভ বায়রণ প্রভৃতি প্রাণময়ী কবিতা-অমান-ষিকী প্রতিভা লিপিবদ্ধ করিয়াছেন, পরে দেখিয়া সংসারবেদনা-কণকালের জন্মও ভুলিয়া থাকিবে, এই আশয়ে; আমাদের সজীত বাবসায়ীরা পঞ্মে স্থুর তুলিয়া গান গাহিতে আসে, পরকে সম্ভূত করিয়া হ পয়সা পাইবে এই আশয়ে: বঙ্গলন্ধী শঙ্করী পিনী এই শীতকালে পানাজলে প্রাতঃমান করিয়া হাসিমুথে রাল্লাঘরে ঢ্কেন, পরকে খাওয়াইয়া পরিতৃপ্ত করিবেন, এই কামনায়; আষাদের বিলাস দিদি নৃতন নুতন গহনা পরিয়া দরির্ভ প্রতিবাদিনী-দের বাড়ীতে উপস্থিত হন, তাহাদিগের निकटि निष्मत्र शोत्रव वृक्ति कतिरवन, এই কামনার: তাই বলিতেছি মানব পরেরই অভ্যে-পরার্থপর পরার্থপরতার অন্ত, সার্থপর বার্থপরভার অক,

পরকেই চাহিবে। মানৰ মানবের সহিতই সম্বন্ধ রাথিবে। এ সম্বন্ধ স্থামাদের জাতীয় সম্বন। এই জাতীয় সম্বন্ধ আমাদের বড় স্থাের জিনিস। কিন্তু যিনি পরার্থের জন্ম মানব জগ-তের সহিত সম্বন্ধ রাথেন, তিনি পুরুষ हुहैरन পরম সৌভাগ্যবান, রমণী হইলে পরম সৌভাগ্যবতী। তিনিই মানব সমাজের প্রকৃত বন্ধু-প্রকৃত আখ্রীয়। আবার যে ব্যক্তি স্বার্থপরতার জন্ম মানব

সমাজের সহিত সম্বন্ধ রাখে, সেইই প্রকৃত ত্রভাগ্য, সেইই সংসারের পর। রোগী এই শেষোক্ত শ্রেণীর লোক। রোগী আত্ম-চিন্তা-কাতর: স্নেহ, মমতা, দয়া, সহামুভূতি, রোগী লইতেই পারে, দান করিতে অক্ষা এই রক্ষ স্কীর্ণ-তার মধ্যে মানব রোগশ্যা পাতিয়া থাকে ৷ এই সন্ধীর্ণতাই বুঝি মৃত্যুর রপান্তর !

(ক্রমশঃ)

মূতন সংবাদ।

দাদাভাই নৌরজীর ও তৎসঙ্গে ভারতবাদীদের মাথার উপর যে তরবারি ঝুলিতেছিল, তাহা সরিয়া গিয়াছে। তাঁহার প্রতিদ্বদী কাপ্তেন পেণ্টন অভি-যোগ করিয়াছিলেন দাদাভাই অসত্পায়ে ভোট সংগ্রহ করিয়া পার্লেমেন্টের সভা হইয়াছেন, বিচার কালে তিনি অভি-যোগ প্রত্যাহার করিয়াছেন।

২। বারিষ্টার বাবু উমেশচক্র ব্ল্যোপাধ্যায় এলাহাবাদ কন্গ্রেসের সভাপতি মনোনীত হইয়াছেন। ২৮এ ডিসেম্বর হইতে কন্গ্রেসের কার্য্যারম্ভ ছইবে।

তারাত্মন্দরী চৌধুরাণী ছর্ভিক্ষপীড়িত-দিগকে প্রাতঃকাল হইতে রাত্রি ১০টা পর্যান্ত অন্নদান করিতেছেন।

в। চিকাগোর প্রকাশ্য বিদ্যালয়ে ৩০০০ শিক্ষক আছেন, তন্মধ্যে ২৮০০র ष्यधिक ज्वीत्नाक। এদেশে বালিকা-বিদ্যালয়েও স্ত্রী-শিক্ষক জুটে না।

ে। লেডী টেনিসন একজন পাকা গুহিণী। কবিবর টেনিসন এক সময় পরিহাদ ছলে বলিয়াছিলেন, "আমার লেখাদারা পয়দা না হইলে শ্রীমতীর त्रक्रन विष्णा चात्रा शतिवादतत्र मातिष्ण টেনিসন চা-বিষ্ট মোচন হইবে। সেরপুরের জমীদার প্রীমতী । বাজারে বিকাইবার জিনিষ।

পুস্তকাদি সমালোচনা।

্রি)। সরদ কবিতা—শ্রীরাজক্বক রার | নীতিশিক্ষা-বিধারক क्षणेफ, मृनाः अ• जाना। नानकनिरशत नरतक**ने** विवत

আমোদকর লইয়া পুস্তক্থানি

হইয়াছে। রাজকৃষ্ণ বাবু একজন প্রসিদ্ধ কবিউটি নেথক। তাঁহার কবিতা গুলি বেশ সরল এবং এ পুস্তক বিদ্যালয়ের পাঠা।

বিষাদলহরী—শ্রীঅঘোরনাথ **>** 1 বহু চৌধুরী প্রণীত, মূল্য । ৮০ আনা। লেখক আপনার হৃদয়ের শোকোচছাস কবিতাকারে প্ৰকাশ করিয়াছেন। কবিতাগুলি সরম ও হৃদয়স্পর্শী হইয়াছে এবং ইহা দারা তাঁহার অন্তরের স্থলর ধর্মজাবেরও পরিচয় পাওয়া যায়।

৩। আশ্রম চতু हेय — শ্রীযুক্ত রজনী কান্ত গুপ্ত প্রণীত, মূলা 🗸 আনা। প্রাচীনকালের ধর্ম জীবন গঠনের প্রধান সহায় হিন্দুর চতুরাশ্রম, ইহা সাধারণের গোচর করিয়া রজনী বাব সর্বসাধারণের ক্বতজ্ঞতা-ভাজন হইয়াছেন। ধর্মার্থী মাত্রেরই পাঠ করা কর্ত্তব্য। ছাত্রদিগের প্রত্যেকের দঙ্গে ইহার এক একখানি থাকিলে তাহাদের চরিত্র গঠনের সাহায্য হইতে পারে।

৪। আর্যালোক অর্থাৎ আত্মজ্ঞানে তত্ত্তান-শ্ৰীউদযুক্ষ দ্ব প্রণীত। এই পুস্তকে জীবতত্ব, জাতিতত্ব, পর-

লোকতত্ব ও যোগতত্ব লিণিত হইয়াছে। এই পুত্তকথানির বিষয়গুলি যেমন উচ্চ. তেমনি চিন্তাশীলতার সহিত সেইগুলি আলোচিত হইয়াছে। লেখক হিন্দর মত ও বিশাসগুলি ভিত্তিভূমি করিয়া वि । क युक्तिवरण रमरे शामि ममर्थरनत रहें। করিয়াছেন। তাঁহার অনেক মতের সহিত আমাদিগের ঐকা না থাকি-লেও তাঁহার আন্তরিক ভাব ও **ভ**ভ উদেশ্যের সহিত আমাদের সম্পূর্ণ সহাত্ব-ভৃতি আছে। নবা সম্প্রদায়ের লোকেরা ধীরভাবে তাঁহার কথাগুলি প্রবণ ও আলোচনা করিলে বর্তমান সমাজ বিপ্র-বের কুফল অনেক পরিমাণে নিবারিত হইতে পারে।

ে। দীপ্তি—বিকাশপ্রণেতা প্রণীত. মূল্য 🗸 • আনা। কবিতাগুলি ধর্মভাব পূর্ণ, কতকগুলিতে প্রকৃতির স্থন্দর বৰ্ণনা এবং কতকগুলিতে আধ্যাত্মিক ভাবের মধুর বিকাশ দেখিয়া আনন্দ লাভ করিলাম। লেখক কবিভাদেবীর সেবা করুন, निक्रमत्नात्रथ इहेट्ड পারিবেন।

বামারচনা।

সঙ্গীত চৰ্চায় কি দোষ ?

व्या ना। किन्न छेरा य नमास्य रहार। कार्य नरह, छेरा निर्मेच्या कूनेंगे बीनर्पन

मनीज नुजानि निकात (व. हिन्सू किम; कांत्रन भामारमत मरश अरनरकेंद्र জীগণের পক্ষে দোব আছে, তাহা আমরা। বিশাস বে নৃত্য গীতাদি কুলস্ত্রীগণের वा नीखरे थां जिल्ल स्टेरव रन जानां अपूर्व कार्या। किन्न छेरा रव रकन क्राजीप

कार्या नट्ट तम विषय औहाराव निकरे কোন যুক্তি তর্ক পাওয়া যায় না. কেবল পাওয়া যায় অন্ধবিখাস মাতা। সমাজে যাহার প্রচলন না থাকে. তাহার আলোচনা অনেকে অনেক धतियां ना कतिरन छेश निक श्य ना। শুনিরাছি এ দেশে প্রথমে বালিকা স্কুল স্থাপন করার প্রস্তাব হইলে নাকি অনেকেই স্ব স্ব কন্তা ও ভ্রাতৃপুত্রীগণকে স্থূনে যাইতে দিতে অপীকার করেন। কিন্তু প্রদের ৬ মদনমোহন তর্কালকার মহাশয় নাকি সাহসে ভর করিয়ানিজ कञ्चानिगरक कृत्त याहेरछ (मन। शृर्ख বাঁহার। ১০।১২ বৎসরের পরে আর স্কুলে ষাইতে পান নাই,এখন তাঁহাদের কনিগ্রা ভগিনী ও ভাতুপুলীগণ ১৩১৪ বংসর বয়সে সূলে গেলেও কোন কথাটা হয় না। অবশ্রই আমি ব্রাহ্ম সম্প্রদায়ের বা বেপুন কলেজের মেয়েদের কথা বলি-তেছি না, বলিতেছি হিলুসম্প্রদায়ের পল্লীগ্রামস্থ বালিকাস্থলের কথা। এইস্থলে বুলা আবশুক যে ব্ৰাহ্ম ও হিন্দুসম্প্ৰদায় বে পৃথক্ ধর্মাবলম্বী এমন বিখাস আমার नम्, আমার বিখাস ব্রাহ্মধর্ম হিন্দুধর্মের পরিণত অবস্থা, তবে কি না হিন্দুধর্ম্মের অপরিণত অবস্থা লইফা অনেকে ব্রাক্ষ-**धर्यावनशै रु**रम्न विन्नारे त्वाध रम ব্রাপ্স হিন্দু ছটা সম্প্রদায় হইয়া দাড়া-ইয়াছে। এ বিষয়ে অত্র প্রবন্ধে অধিক আলোচনা করিতে গেলে মূল প্রবন্ধের

মৌলিকতা থাকিবে না, স্থতরাং ব্লাক্ষ্ণ ও हिन्मु रा এकरे धर्म रेश रमधारे अभिनेत्रा বারান্তরে চেষ্টা করিব। সে যাহা হউক এখন বক্ষবা এই যে যদি বড বড লোকে দাপ্তাহিক ও মাসিক পত্রাদিতে হিন্দু-স্ত্রীগণের নৃত্য গীতাদির বিষর ক্রমাগত व्यात्नाहना करतन, यनि वर् वर् सून কলেব্রের ছাত্রীগণের মধ্যে ঐ প্রথার আরম্ভ হয়, তাহা হইলে সেই ঢেউ পল্লী-গ্রামস্থ বালিকা স্কুলেও আসিয়া লাগিবে এরপ আশা করা যায়, এবং তাহা হইলে অস্ত:পুরস্থ রমণীগণও আপন আপন আত্মীয়গণের নিকট তথন আর নৃত্যগীত শিক্ষা করিতে লজ্জাবোধ করিবেন না। আর পুরুষেরাও সইচ্ছায় অন্তঃপুরবাসিনী ব্মণীগণকে উহা শিকা দিতে যত্ন করিবেন. যেমন এখন বিদ্যা (লেখাপড়া) শিকা দিতে যত্ন করেন। পূর্বে গাঁহার স্ত্রী-লোকের লেখা পড়ার প্রতি বিদেষ ছিল শুনিয়াছি, এখন সেই বৃদ্ধ ঠাকুর দাদা মহাশয়কে কুলে যাওয়ার জন্ম পৌত্রীর প্রতি তাড়না করিতে দেখিতেছি, নৃত-গীতের পদ্ধতি স্ত্রীমহলে প্রচলিত হইলে কালে যে ইহা লেখাপড়ার মত সকলের বেষ, তর্ক, ও অমতাদি কাটিয়া ঠিক্ হইয়া দাঁড়াইবে না কে বলিল ? অতএব একবার প্রচলন হইয়া দাঁড়াইলে কালে যে "নৃত্যগীত কুলটার কার্য্য" এ কথা मकलारे जुलिया यारेरान जाना करा (ক্ৰমশঃ)

्रवाभारवाधिनौ পত्यिका। ^{ति श्रूरहार}

'ৰ্কিবাদ

*†æ_

BAMABODHINI PATRIKA.

'कत्याष्येवं पालनीया जिचगीयातियत्नतः"

ক্সাকে পালন করিবেক ও যত্নের সহিত শিক্ষা দিবেক।

৩৩৬ সংখ্যা।

পৌষ ১২৯৯—জারুয়ারি ১৮৯০।

৫ম কল। ১ম ভাগ।

সাময়িক প্রসঙ্গ।

এলাহাবাদ কন্ত্রেস্— ৮ম
ভাতীয় মহাসভার কার্য্য ২৮এ হইতে
৩১এ ডিসেম্বর পর্যান্ত চলিয়াছিল,
তাহাতে প্রায় ১ সহস্র প্রতিনিধি ও
তিন সহস্র দর্শকের সনাগম হয়। পণ্ডিত
বিশ্বস্তর নাথ অভ্যর্থনাসমিতির এবং
বারিষ্টার বাবু উনেশচক্র বন্দ্যোপাধ্যায়
কন্ত্রেসের সভাপতি হইয়া বক্তৃতা
করেন। কার্য্য সকল স্কলররপে সম্পন্ন
হইয়াছে। আগানী বর্ষে অমৃতসরে এই
মহাসভার অধিবেশন হইবে। জগদীশ্বর
এই শুভাম্প্রানের স্থায়িত ও উয়তিবিধান কর্মন।

পুনা মহিলা বিদ্যালয়— এই বিদ্যালয়ে মহারাষ্ট্রীয় রমণীরা উচ্চশিক্ষা লাভ করেন এবং করেক বংসর বিদ্যালয়ের কার্য্য যেরূপ চলিয়াছে,তাহা অতি সম্ভোহকর। এই বিদ্যালয়ে গবর্ণনেন্ট

সাহায্য যাহা ছিল, তাহার ব্রাস হওয়াতে বিদ্যালয়ের উন্তির ব্যাঘাত হইতেছে। এই জন্ম লর্ডরিপণ ও, ভারতহিতৈষী অনেক লোকের স্বাক্ষরিত আবেদন পত্র नहेशा नात উইनियम रुषात, मामाजी নোরজী প্রভৃতি মহাত্মা ষ্টেট সেক্রে-টারীর স্হিত সাক্ষাৎ করেন এবং বিদ্যা-লয়ের সাহায্য পূর্বমত দিবার প্রার্থনা করেন। ছঃথের বিষয় ষ্টেট সেক্রেটারী অর্থের অস্কুলতা দেখাইয়া তাহাদিগকে নিরাশ করিয়াছেন। দেশের শিকো-ন্নতির জন্ম দেশের লোক প্রস্তুত হউন। গ্রণ্মেণ্ট যাহা করিয়াছেন, তাহার জ্ঞ ধন্যবাদাৰ্হ, শিক্ষাবিভাগে তাঁহাদের নিকট এখন আর অধিক অর্থ সাহায্যের আশা করা রুথা।

দান—কলিকাতা লেডী ডফারিণ ব্রী হাঁসপাতালে প্রত্যেক রোগীর মন্ত স্বতন্ত্র রন্ধনশালা ও স্বানাগার নির্মাণার্ক কার্যা নহে বে কার্যা নহে বে কা দান করিয়াছেন।

रकरन रिमविश्म् वर्गक्य- अदम्दान मधा-সম্পত্ত ও নিয়শ্রেণীর অধিকাংশ লোক "যত্র আয় তত্র ব্যয়" করিয়া তুপয়সার সংস্থান করিতে পারে না. ইহাতে তাহাদের অবস্থা শোচনীয় হইয়া থাকে। গবর্ণমেণ্ট সেবিংস ব্যাক্ষ সংস্থাপন পূর্ব্বক অল পরিমাণ টাকা জমাইবার উপায় করিয়া অনেক লোকের মহোপকার করিয়াছেন। বৎসরের প্র অধিকতর সংখ্যক লোক ব্যাঙ্কে টাকা জমা দিতেছেন এবং টাকার পরিমাণ্ড বাড়িতেছে দেখিয়া আমরা যার প্র নাই আনন্দিত হইতেছি। ১৮৯২ সালে ইংরেজাধিক্বত ভারতবর্ষে ৬৬৪২টা ব্যাক্ষে সর্বাশুদ্ধ ৫,২৮,৭৫২ জন টাকা জমা দেয়, তাহারা ৩০,৪৪০,৬৯ টাকা স্থদ পাইয়াছে, তাহাদের আসল টাকা ৮
কোটা, ৮৮ লক্ষ, ৫৯ হাজার ১১৮ টাকা
ব্যাক্ষে জমা আছে। পূর্ব্ব বংসর অপেকা
এ বংসর ৫৩,৩,২৩ জন অধিক লোক
টাকা জমা দিয়াছে।

শিক্ষাবিভাগ—ডাইরেক্টর সাম
আল্ফ্রেড ক্রন্টের বিদায় কালের জ্বন্ত
পণ্ডিত্বর টনি সাহেব প্রতিনিধি নিযুক্ত
হইয়াছিলেন, এখন টনি সাহেব বিলাতে
চলিয়া ঘাইতেছেন, আর ফিরিবেন না,
তাঁহার স্থানে সি এ মার্টিন্ কার্য্য করিবেন।

ন্ত্রী-পুলিস—ভৃতপূর্ব খামরাজ বজাম্বরপরিহিতা ক্রপাণপাণি কতকগুলি বীরাঙ্গনাকে আপনার দেহরক্ষিণী করিয়া ছিলেন, বর্ত্তনান খামাধিপতি তাহা-দিগকে রাজপ্রাসাদ রক্ষার্থে প্রহরীক্রপে নিযুক্ত করিয়াছেন।

নারীর অলক্ষিত প্রভাব।

নারীজাতির নিজ অধিকত পরিবাররাজ্যে তাঁহাদের যে প্রভৃত প্রভাব
প্রচ্ছের ভাবে কার্য্য করে, যদিও
তাহা সচরাচর চক্ষুর গোচর নহে, কিন্তু
তাহার ফল 'অতি শপ্ত। বাহাদিগকে
'জ্বলা' কহা গিয়া থাকে, তাঁহাদেরই
আবার অপর এক নাম শক্তি। এ
শক্তি শাণিত অসি, কিন্বা আগ্নেয়
আয়ুধ ধারণ করিয়া সমরক্ষেত্রে বিচরণ

করে না, মহাসভা এবং ধর্মমন্দিরের উচ্চ বেদীতে বসিয়া বক্তৃতা উপদেশ দেয় না, ধর্মাধিকরণে বিচার সিংহাসবে বসিয়া বিচারও করে না; কিন্তু অদৃশ্র ভাবে স্থমহং কার্য্যের মূল প্রস্তবণ উন্মুক্ত করিয়া দেয়। যে পাষাণ হৃদয় সহস্র তর্ক মৃক্তিতে ভয় বিভীষিকার তর্ক্তন গর্জনে বিন্দুমাত্র বিচলিত হয় না, তাহা নারীর স্থকোমল চক্ষের এক বিশ্ব অবেশ

विश्व हिंद्या यात्र। य बज्जवाह वीत **দেনাপত্তি লক্ষ্ লক্ষ্ দৈ**গুৰুতহের মধ্যে প্রবেশ করিতে ভীত হয়েন না, তিনি একটা ক্ষীণান্ধী মুহভাষিণী ঈষকান্তে দ্বীভূত হইয়া যান। এ সকল দেখিয়াও কি শক্তিরপিণী নারীকে অৰলা বলিতে সাহস করিবে ? আধুনিক শিক্ষিত মার্জিতবৃদ্ধি স্বাধীনচেতা বঙ্গীয় সমাজের উপর অন্তঃপুরবদ্ধা অশিক্ষিতা মহিলাগণের প্রভাবই কি সামাল? ইহারা যবনিকার অন্তরালে অবগুঠনারত থাকিয়াও লুকায়িত ভাবে অনেকানেক প্রাচীন স্দাচার, ধর্মশাসন ও নৈতিক নিয়ম রক্ষা করিতেছে। দেখিতে যদিও পুরুবের ক্রীড়ামৃগ দদৃশ, কিন্তু অবলা-मकल मुक्तिशीना नरह। यादाता श्राहीन সংস্কারের বশবর্ত্তনী হইয়াও কেবল শ্বীর শ্বভাবের প্রভাবে এতাধিক আধি-পত্য অদাবেধি বিস্তার করিয়া[†]রাথি-য়াছে, স্থশিকিতা হইলে না জানি তাহারা কি না করিতে পারিত ?

আমাদের বঙ্গীরা ভগিনীগণ এখন ও পর্যান্ত মুক্তভাবে বাহিরে যথা তথা বিহার করিতে পারিলেন না. ভাঁহারা পুক্ষের সমকক্ষ হইরা ভাঁহাদের অধিকৃত রাজ্যমধ্যে প্রবেশ করিতে পারিতেছেন না, ইহা ভাবিয়া ছঃথ করিৰার প্রয়োজন নাই। নারী-জাতির বিশেষ চিহ্নিত বিস্তীর্ণ রাজ্য আছে, মন্থ্যা পরিবারের উৎপাদন, প্রতিপাদন এবং সংসারের গুক্তার

তাঁহাদের হত্তে আছে। এখানে পুরুষ্ট্রি কটাক্ষপাতেরও অধিকার নাই, হস্ত-ক্ষেপ ত দূরের কথা। এই নির্বিবাদ একাধিপত্যের সীমামধ্যে নারী রাজ-রাজেশরী। ইহার ভার কাহার হল্তে দিয়া তিনি পুরুষরাজ্যের আধিপত্যের অংশভাগিনী হইতে যাইতেছেন গ নারীই স্ত্রীপুরুষের গর্ভধারিণী, প্রস্থৃতি এবং ধাত্ৰী: পুৰুষ কোনও কালে সে অধি-कात शाय नाहे, शाहे (वंशना। श्रीत-বারের শান্তি, দৌন্দর্য্য, স্থশুজ্ঞলা, প্রথম শিক্ষা, মানসিক শক্তি এবং সদগ্রের বিকাশসাধন কামিনীগণের ক্মনীয় হত্তে হাত্ত রহিয়াছে: পান ভোজন ইত্যাদি গৃহকার্য্যের উন্নতি এবং রক্ষার ভারও নারীজাতির নিজস্ব অধিকার। এই বিস্তৃত বিশাল রাজা পরিতাগ করিয়া কেন পুরুষের বিশেষ অধিকার মধ্যে প্রবেশ করিবার জন্ম তাঁহাদের এত আগ্রহ বঝা যায় না। বে সকল শক্তি ক্ষতা, মান মুর্যালা, বীরত্ব, জ্ঞান প্রতিভায় পুরুষদ্মাজ বিখ্যাত হইয়াছেন তাহার মূলেও কি নারীর এক প্রধান অংশ নাই? অবগ্ৰ আছে, প্ৰচয়ে ভাবে আছে ৷ রাষ্ট্রবিপ্লবের পূর্ব্বে ফরাসী রাজ্যে ফরাসী সমাজে স্ত্রীজাতির এমন প্রভাব ছিল যে বড় বড় রাজকীয় উচ্চ-পদ তাঁহাদের অমুরোধ এবং উত্তেক্ষ্নার পুরুষেরা প্রাপ্ত হইত; সমাজশক্তি সম্পূর্ণরূপে শিক্ষিতা মহিলাগণের খারা পরিচাশিত হইত: ভদ্রতা নভাতা,

ত্র নিয়ম, বিশুদ্ধ কৃচি, সাহিত্য কবিত্ব, লোকিক ব্যবহার এ म गरप्र তাঁহারা উদ্তাবিত ও নিয়মিত কবি-ভদ্র মহিলাগণের মতারুদারে যিনি উপযুক্ত বলিয়া পরিগণিত হইতেন, তিনিই স্বতন্ত্র রাজকার্য্য এবং পদম্য্যাদা পাইতেন—এমন কি মহাবীর নেপো-निमान त्वानाशार्ठ, ज्हीय छी जातन-कांहरनत विरमय ८० छोत्र रमनानात्रक भरम প্রথমে প্রতিষ্ঠিত হন। ফলতঃ এমন এক সময় ছিল, যথন শিক্ষিতা প্রধানা মহিলাগণের প্রশংসাপত্র না পাইলে व्यत्नकारनक श्रुक्य माधातर्गा ८कान মুর্যাদা লাভে সুমুর্থ ইইতেন না। বড় বড় পদের জন্ম সমাজে মান্য গণা হইবাব জন্ম অনেক উপযুক্ত ব্যক্তিকে স্ত্রীলোক বিশেষের শরণাপন **ब्रहे**टन হইত। এখনও কি সে দিন চলিয়া গিয়াছে ? যায় নাই. কিন্তু যাইবার কারণ ঘটি-তেছে। স্ত্রীরা যদি নিজ অধিকার পরিত্যাগ করিয়া পুরুষোচিত কার্য্যের व्यशामी रन, जाश रहेत्न जांशात्त्र স্বভাব কঠোর এবং বিকৃত হইয়া যাইবে, স্তরাং তাঁহাদের কোমল প্রভাবে, মৃত্

হাস্তে, স্নেহকটাকে যে যে মহৎ কার্য্য অতি সহজে পূর্কে স্থসম্পন্ন হইত, এখন আর তাহা হইবে না। নারী তলোয়ার কিম্বা বন্দুক ধরিয়া যুদ্ধ করিতে পারে না, অথবা কঠিন কুটিল তর্কযুক্তি বিজ্ঞান कोगटन রাজনৈতিক আন্দোলনে **জ**য়-লাভ করিতে পারে না বলিয়া কি সে অবলা? সে স্বয়ং রণরঙ্গে অশ্বপৃষ্ঠে চড়িয়া নাচিতে পারে না বটে, কিন্তু নয়নকটাক্ষে এক বিন্দু অশুজলে সহস্ৰ অশারোহী বীরপুরুষকে উন্মত্ত করিয়া একটু মধুর হাসিতে বড় বড় জ্ঞানী পণ্ডিত ও রাজনীতিজ্ঞদিগকে নিজ পক্ষ সমর্থন করাইতে পারে। অতএব নারীর প্রভাব অতি অড়ত। ইহাতে যেমন বড় বড় মহারাজ্য সকল ছারথার **হইয়া** গিয়াছে, তেমনি ইহা দারা এখনও অতি স্ত্রমহৎ বীরোচিত কার্য্য সমস্ত সম্পাদিত হইতে পারে। শিক্ষিতা কোমলাঙ্গী স্বেহশালিনী মধুরভাষিণী <u> মুছহাসিনী</u> সাধুচরিত্রা দয়াবতী পরহিতৈষিণী নারীর অজেয় শক্তি মহা মহাবীরদিগেরও অনতিক্রমণীয়।

আলাক্ষা।

উত্তর আমেরিকার উত্তরে আলাস্কা | ছিল, কিন্তু যুক্তরাজ্য ৭৫০০০০ ডলার এভাবৎকাল

একটা আশ্চর্য্য হিমপ্রধান দেশ। ইহা মুদ্রা ও ২ কোটী পুরাতন বন্দুক দিয়া ফশিয়ার অধিকারভুক্ত । ইহা ক্রয় করিয়া লইয়াছে। বান্কোবারের

দ্বীপ অতিক্রম করিয়া গমন করিলে তিন দিবস কাল সভামসাজের কথা দুরে থাকুক,পণ্ড পক্ষী প্রভৃতি কোনও প্রকার প্রাণীর অন্তিত্বের চিহ্নও পাওয়া যায় না। এই প্রকার পথ পর্যাটন করিয়া অবশেষে আলাস্বায় উপস্থিত হওয়া যায়। অগ্রাগ্ হিমপ্রধান দেশের ঘর বাডীর এখানকারও ঘর বাড়ী, প্রভেদের মধ্যে এই যে, দারদেশের খুঁটির ভিতরে ন্ত্ৰীলোক দিগের বংশাবলীর বিবরণ সংগহীত আছে। এম্বলে জিজ্ঞান্ত হইতে পারে পুরুষদিগের কেন নাই ? তত্ত্তরে আমরা বলি যে, এথানকার সমাজ স্ত্রী-প্রধান সমাজ। এথানকার অনেক প্রথা অতি জঘন্ত। স্ত্রীলোকে এথানে বহু স্বামী গ্রহণ করিয়া থাকে। কুমারী একারম্যান বলেন যে, এমন কি এক নারী ২৮ জন পতিও গ্রহণ করিয়াছে! ভূত প্রেত শয়তানে এথানকার লোক-দিগের খুব বিখাদ। দাঁড়কাক পবিত্র পক্ষী বলিয়া পরিগণিত। গ্রণ্মেণ্ট কর্ত্তক নিয়োজিত অশ্বতর ভদারা লোকে গতায়াত করিয়া থাকে। পর্বতে আরোহণ করিতে হইলে জঙ্গল কাটিয়া যাওয়া ব্যতীত উপারান্তর নাই। পার্বত্য পথ এরপ পিচ্ছিল যে, এক পা অগ্রসর হইলে হুই পা পিছাইয়া श्रांतिरङ इयः। विवी এकात्रभान् वर्णन বে, পর্বতোপরি আরোহণ করিয়া তিনি একপ্রকার অম্ভূত শব্দ শুনিতে পান। ইহা বরকের চাঁই নিঃসরণের শব্দ।

বেয়ারিং প্রণালী অতিক্রম করিলে সভা জগতে আদিবার জাহাজ পাওয়া যায়। স্ত্রীলোককে আরোহিশ্রেণীভুক্ত প্রায়ই করা হয় না. কারণ স্ত্রীলোক অ্যাত্রা বলিয়া বিবেচিত হয়। কি আশ্চর্যা বৈপরীতা। যে দেশে স্ত্রীলোকের এত সন্মান যে তাঁহার বংশাবলীর নাম গৃহের খ'টির মধ্যে লিখিত থাকে. সেই দেশেই আবার স্ত্রীলোক 'অযাত্রা' 'আপদ জঞ্চাল' জ্ঞানে বর্জিতা হন। ষ্টীমার যোগে বিবী একারম্যান খুষ্টীয় ধর্মপ্রচারকদিগের আড্ডায় উপস্থিত হন। প্রচারকগণ এখানে তিন বংসরকাল শ্বেতাঙ্গের মুখাবলোকন করেন নাই। খাদাদ্রবা ও ডাকের চিঠা ইহারা বংসরে একবার মাত্র প্রাপ্ত হন। এমন দেশেও গ্রীষ্টধর্ম প্রচারকগণ ধর্ম প্রচার করিতে গিয়া-ছেন! কি ধর্মনিষ্ঠা। কি ধর্মপিপাসা! ভাষায় যাহাকে বলে 'চণ্ডীপড়া,গোয়াল-কাডা.' এখানকার প্রচারকগণকে তাহাই করিতে হয়। এথানে তাঁহাদিগকে কাঠকাটা প্রভৃতি নীচ গৃহকর্মও করিতে হয়, ধর্ম্মপ্রচারও করিতে হয়। বেয়ারিং সমুদ্রে প্রবেশ করিলে. মার্ত্তদেবকে মন্তকোপরি—তার পর একবারে অদৃগ্র হইতে দেখা যায়। ইহার পর ভয়ানক जक्रकात्। जालाकात्र किमित्रानिमित्रत দারা নির্মিত একশত বৎসরের পুরাত্ন গ্রীকসম্প্রদায়ভুক্তদিগের একটা গির্জা আছে। অন্তান্ত শিক্ষণীয় মধ্যে খোদাই ও চিত্র কার্য্য এখানকার

বিদ্যালয় সমূহে অধ্যাপনা হয়। এখানে ৫০ জন খৃষ্টীয়া মহিলা মিলিয়া "World's Women's Christian Temperance Union" অর্থাৎ বিশ্বব্যাপিনী মিতাচার সভার শাথা সংস্থাপন করিয়াছেন। এথানে ১৭০০ ফিট গভীর একটা স্বর্ণথনি আছে, অনেক পুরুষ ও স্ত্রীলোক এই থনিতে কার্য্য করিয়া জীবিকানির্নাহ করিয়া থাকে।

সৎসাহসের পরিচয়।

२- साधव नाम त्रपूनाथ नाम। মেরবা কেনবা বোম্বে নগরের ছোট আদালতের জজের কার্য্য করেতেন। বোম্বে প্রদেশে তিনিই সর্ব্ব প্রথমে বিধবা-বিবাহ করিয়াছিলেন। ১৮৭০ খৃষ্টাকে তাঁহার বিবাহ হয়। প্রচলিত হিন্দু-রীতির বিরুদ্ধে চলিয়াছিলেন বলিয়া মেরবা কেনবা বোম্বে প্রাদেশের রক্ষণশীল হিন্দু মাত্রেরই বিরাগভাজন হইয়াছিলেন। विश्वा-विवाह मः कादत विद्यांशी मत्नत **নায়কগণ সে**রবার ব্যবহারে নিতান্ত ভীত হইয়াছিলেন। সংস্কারের স্রোত বন্ধ করিবার জন্ম বিবিধ উপায় অবল্যন कतिरान। व्यवस्थिय এक निमान উপায়ে উদ্দেশ্য সাধনে যত্নবান হইলেন। একদা নিশীথকালে মেরবা যথন তাহার পদ্মীসহ নিজিত ছিলেন, তথন সংস্কার-বিরোধী কতিপর নিছুর ব্যক্তি তাঁহা-দিপের শমনগৃহে প্রবেশ করিল। প্রবেশ করিয়া উভয়ের মুখবন্ধ করিল। স্বামী দ্ৰী এই আকম্মিক বিপৎপাতে ভীত হইয়া জাগরিত হইলেন। কিন্তু নিক-

পায়। অতঃপর হুরাস্থাগণ দম্পতীকে দারুণ বন্ধনে আবদ্ধ করিয়া বাহিরে লইয়া চলিল এবং এক গভীর নিকেপ করিল। এইরূপে অসহায় অব-স্থায় দম্পতী কুপোদকে প্রাণ পরিত্যাগ করিলেন। পর দিবস তাঁহাদিগকে গুহে না পাওয়াতে অন্বেষণ আরম্ভ হইল। চুই একদিন তাঁহাদের কোন অনুসন্ধানই পাওয়া গেল না। অবশেষে কুপের মধ্যে তাঁহাদিগের মৃতদেহ পাওয়া তাঁহাদিগের শোচনীয় মৃত্যুসংবাদ চতু-দিকে পরিব্যাপ্ত হইল। সংস্কার-বিরোধী तक्रमगीनगण कानतम छे एक झ इहेरलन। ভাবিলেন এতদিনে তাঁহাদের উদ্দেশ্ত সফল হইল:—প্রচলিত রীতিনীতির বিরোধী সংস্থারকগণ যে সমাজকে অত্স জলে ড্বাইবার জন্ম প্রয়াসী হইয়া-ছিলেন, সে পথে কণ্টক নিক্ষিপ্ত হইল। তাঁহাদের আম্পর্দার আর সীমা রহিল না। প্রকৃত পক্ষে তাঁহাদের ঈদৃশ অমামুধিক আচরণে কোন কোন সংস্কারকের উৎ-সাহ এবং উদাম নির্বাপিত হইয়াছিল।

কিন্তু ঈশ্বর-নির্দিষ্ট সাধু কার্য্যের গতি প্রতিরোধ করে কার সাণ্য ? এক মেরবা, ছই মেরবা—এমন কি শত শত মেরবার জীবন বিনষ্ট হইতে পারে, কিন্তু সত্য, স্থায় ও পবিত্রতার শক্তি অবরুদ্ধ হইতে পারে না। মেরবার স্থলে সংসাহসী মাধ্ব দাদ রঘুনাথ দাদ দণ্ডায়মান হই-লেন। ইনি বোমের একজন বিখ্যাত ধনী বণিক। ইহাঁর হিলুধর্মে আস্থা ছিল না। ইনি রক্ষণণীল সংস্কারবিরোধী-দিগের অবৈধ কলঙ্কিত আচরণে মর্মাহত হটিয়া সংস্কারের পক্ষ অবলম্বন করিলেন। তরবারি তাঁহার মস্তোকপরি লম্মান ছিল, সংস্কারবিরোধী হত্যাকারীদিগের শোণিত-রঞ্জিত হস্ত তাঁহার দৃষ্টি সম্মুথে বর্ত্তমান ছিল। রক্ষণশীলদিগের বিযাক্ত রসনা সংস্কারকদিগের কুৎসা কীর্ত্তনে নিয়োজিত ছিল। তথাপি সংসাহসী মাধ্ব দাসের সক্ষল বিচলিত হইল ন।। তিনি সাহদ পূর্ব্বক ১৮৭১ খৃষ্টাব্দে স্বয়ং বিধবাবিবাহ করিলেন। বিরোধীগণ মাধব দাদের এই অসমসাহসিকতা দেখিয়া বিশ্বিত হইল। নিরাশার অন্ধকার তাঁহা-দিগের প্রাণ আচ্চন্ন করিল। তথন তাহারা সংস্কারের গতিরোধ করা অসম্ভব মনে কবিতে লাগিল। একদিকে সংসা-রকগণ যেমন মাধ্বদাসের সংসাহসে প্রোৎসাহিত হইতে লাগিলেন, অপর-पिटक मः अत्रितिताधीशन छेष्मश्रमाधान **তেমনি অ**कुठकार्या इहेन्रा निक्रमाम 'अ निक्रशारी इहेग्रा পछिलन। এখন

বোম্বাই প্রদেশে অনেকগুলি বালবিধবার বিবাহ হইয়া গিয়াছে।

৩—(হলভিডিয়াস্ প্রিস্কাস্।
ইনি রোমের মন্ত্রি-গভার একজন
সদস্ত ছিলেন। একদা রোমের সম্রাট্
ভেস্পেদিয়ান তাঁহাকে মহাসভায় (দিনেটে)
না যাইবার জন্ত অমুরোধ করিলেন।
কিন্তু তিনি প্রভাতরে বলিলেন,—
"আমি যথন মহাসভার একজন সদস্ত,
তথন আমাকে যাইতেই হইবে।"

সমাট্—তবে আপনি দেখানে নির্বাক্ থাকিবেন।

হেলভিডিয়াস—আমাকে কোন প্রশ্ন করিবেন না। আমি নির্বাক্ থাকিব। স্থাট্—আমি আপনার মত জিজ্ঞাসা করিব।

হেলভিডিয়াস—তবে আমি যাহা উচিত বুঝি, তাহাই বলিব।

সমাট্—তাহা হইলে আমি আপ-নাকে.বধ করিব।

হেলভিডিয়াস—আমি অমর একথা
কি আমি কখনও আপেনাকে বলিয়াছি?
আপনি আপেনার কর্ত্তব্য করিবেন,
আমিও আমার কর্ত্তব্য করিব। আপনি
আমাকে হত্যা করিতে পারেন, কিন্তু
আমি তাহা অক্ষুক্তিত্তে সহ্য করিব।
আপনি আমাকে নির্কাপিত করিতে
পারেন, কিন্তু আমি শোক না করিষা
তাহা শিরোধার্য্য করিব।

ধত্য হেলভিডিয়াস! রাজ তরবারির ভয় তোমার সত্যনিষ্ঠাকে বিচ**লিড** করিতে পারিল না। যে সমাটের জকুঞ্চনে কত বীর পুরুষের হৃদয়ে ভীতির সঞ্চার হইত, তংকর্তৃক মৃত্যুভয় প্রাদর্শনেও তোমার নির্ভীক হৃদয় বিক- ম্পিত হইল না। তুমি জগৎ সম্মুথে যে ভাষপরতা ও কর্ত্তব্যনিষ্ঠার জ্বস্ত দৃষ্ঠান্ত রাখিয়া গিয়াছ, তাহা সকলেরই অমুকরণীয়।

ভন্নক-পালিতা কৰ্যা।

বিধির বিচিত্র লীলা বুঝে উঠা ভার! रयिनटक किताहे आँथि-अवाक् शहेरत थाकि কেবলি নির্থি তাঁর মহিমা অপার! অন্তত ঘটনা কত ঘটিতেছে অবিরত বুদ্ধির অগম্য সব—জ্ঞানের অতীত! সে গৃঢ় রহস্তভেদ কি ক'রে মিটাবে থেদ বিজ্ঞান কল্পনা বৃদ্ধি হ'ল পরাজিত! नम नमी शिति वन পশু পক্ষী অগণন সাগর জঙ্গম যত স্প্রির কৌশল. সকলেই সমসরে ঈশ গুণ গান করে নীরবে ভবেশে ভাবে হইয়ে বিহবল। অসীম গগনতলে অসংখ্য তারকা জলে ঝলমলে চন্দ্রতিপ—অনম্ভ আকাশ, চন্দ্রমার চিতহারী—চারু শোভা,লয় কাড়ি প্রাণ মন মানবের হইয়ে বিকাশ। ভামু উঠি নিতি নিতি—আলোকিত করে **ক্ষিতি**

প্রভাতী-রক্তিম ছটা মরি কি স্থলর !
প্রব গগনভালে কতই সৌন্দর্য্য নেলে
উষার কপালে যেন ফোঁটা মনোহর !
বাুহিরের ভাবে ভাের নাহি পাই অন্ত-ওর
ভিতরের ভাব তাঁর না জানি কেমন ?
ভাবিলে অবাক্ মন বিশ্বরেতে নিমগন
পশুর হৃদরে শ্রেহ মমতা এমন !

ভন্নুক-পালিতা মেয়ে-কিভাবে কিস্থত্তে যেয়ে ভল্লুক-বাৎসল্য ভাব করি আকর্ষণ, নিরাপদে-নিরজনে শাপদ-সঙ্গুল বনে এতকাল কি প্রকারে করিল যাপন ? শীত বৰ্ষা হ'তে তারে কে বাঁচাল কিপ্রকারে কি থেয়ে বালিকা প্রাণ করিল ধারণ। বিষয়টি ভাবি যত বিশায় বাড়িছে তত ভাবিয়ে চিস্তিয়ে কিছু না পাই কারণ। বাঘ ও ভল্লক যত সাধিছে অনিষ্ঠ কত মানবের মহাশক্র রক্তপায়ী তারা, দে হিংস্র জন্তুর মনে—এত দয়া কি কারণে সঞ্চারিল ?—ভেবে ভেবে এবে বুদ্ধিহারা। 'দেবালয়ে' অবলার ক্রটি নাহি শুশ্রবার তবুদে স্ভাব দূর হয় নাই তার, থপ্থপু করি চলে ভলুকের মত, ফলে— মানব প্রকৃতি প্রাপ্ত হবেনাকো আর। রীতিমত থেতে নারে মাঝে মাঝে হকারে কিন্তু কিবা গুণ তার—ছাড়িতে না চায়; যে তাহারে ভালবাসে, পড়ে থাকে তার অনিমেষে তার পানে কেবলি তাকায়। প্রেমে বণীভূত স্ব পশু পক্ষী কি মানব প্রেমের অসাধ্য কিছু নাহি এ ধরায়। প্রেমে শক্র মিত্র হয় প্রেমে বিশ্ব পরাজয়

সাধে কি স্নেহেতে হিংস্ৰ জন্তকে মাতায়?

'দাদাশ্রমে' শত শত এদে লোক অবিরত
দেখিছে অপৃক্ষ ছবি—বিশ্বয়ঞ্জনক!
ভল্লুক-পালিতা কতা! আজ তুই হলি ধতা
জানিলনা শুধু তোর জননী জনক।
হে বিখনিয়স্তা তব অছত কোশল সব!
অসম্ভব কিরপেতে সন্তাবিত হয় ?
এ গুড় রহস্ত-জাল বিস্তারিয়ে কতকাল
সমস্তার মাঝে ফেলি বাড়াবে সংশয় ?

আড়ালে থেকোনা আর ঘুচাও ধাঁধাঁ-আঁথার,
থুলে দেও জ্ঞান-আঁথি দেখি একবার,
সংশয়-দোলায় মন ছলিতেছে অফুকণ,
জীবস্ত ধিখাসে ভর নাহি যে আমার।
দেখেও দেখিনা যেন হয়েছি অধম হেন,
অবিখাসী কি জ্বল্য প্রকৃতি আমার!
অনন্ত দ্যার সিদ্ধ দেও কুপা একবিন্দ্,
দ্যাঘন তোমা হেন কেবা আছে আর ?

অদ্ভুত প্রতিজ্ঞা।

कतानी (नर्न मार्त्रांतिन এक न क्रूप নগ্র। ইহা পার্ক্ত্যস্থান। ইহার ভূমি অনেক স্থলেই কঠিন প্রস্তরময়। স্থানে কোন নদী প্রবাহিত না পাকাতে নগ্রবাদীদের জলকটের পরাকাষ্ঠা হই-গভর্ণমেণ্ট প্রচুর টাকা খ্রচ य्राट्ड। করিয়া যে কয়েকটি কুপ খনন করিয়াছেন, তাহাতে নাগরিকদিগের জল সফুলন হয় না। প্রত্যেক ব্যক্তি প্রতিদিনের জন্ম এক ম্যাদের অধিক জল পাইতেও পারে না। রাজকর্মচারীগণ প্রতিদিন প্রত্যুষে সংখ্যাত্ম্সারে প্রতি পরিবারে के नियरम कन त्यांशाहेया थात्कन। ঐশব্যশালী ব্যক্তিগণ প্রচুর অর্থব্যয় করিয়া নিজ ব্যবহারের জ্ঞ কুপ খনন করিয়া তাহাহইতে এক বিশু লইয়াছেন। জনও অন্তে লইতে পারে না। মধ্যবিত্ত ও দরিদ্র নগরবাসীরা এক গ্লাস মাত্র জ্বল পাইয়াই সম্ভূত থাকিতে বাধা হয়।

আৰু অনেক দিনের কথা। ঐ

পার্কভা মার্সেলিদের একটি কুদ্র দরিত্র পরিবারে গভীর মর্মপোর্শী বিষাদের চিহ্ন লক্ষিত হইতেছে। দরিদ্রা জননী পীডিত দাদশ বৰ্ষীয় বালককে ক্ৰোড়ে লইয়া বসিয়া আছেন। বালক রোগ জনিত দারুণ তৃষ্ণায় "মাজল" বলিয়া কাতরকঠে চীৎকার করিতেছে। মা---স্থেহম্যী মা—ক্রমে ক্রমে পরিবারের সকলের পানীয়াবশিষ্ট জল বালকের শুষ কর্পে ঢালিয়া দিয়াছেন। কিন্তু তাহা-তেও দারুণ পিপাদার নির্ত্তি হইল না। जनक्षात्र मञ्चान हुए कृष्ट कतिरुट्ह, या व्यनत्ञां भाष इरेग्रा कां निग्रा कां निग्रा বলিতেছেন—"বাছা এ হতভাগ্য পাষাণ-ময় প্রদেশে কে তোকে এক বিদ্দু জল **पिरत—यागारमंत्र नकरनः शनीय जन** দিয়াছি—আর জল কোথা পাইব ?" বালক অনেককণ মা'র মুখের পানে তাকাইয়া রহিল-মার সকরুণ কঠবর অনেককণ .যেন অস্তরে ও বাহিরে প্রতিশ্বনিত

হইতে লাগিল। বালকের মুথে এক
স্বর্গীয় দৃঢ়তা ও প্রতিজ্ঞার ভাব অযুত
তরঙ্গ ভঙ্গে খেলিয়া যাইতে লাগিল।
বালক নীরব হইল—প্রবল রোগত্কা
তাহার অন্তর্জগতে প্রবেশ করিয়া কি
এক অপুর্ব নিঃস্বার্থ মহাযজ্ঞের আয়োজন করিতে লাগিল। বিধাতার রূপায়
বালক কিছুদিন মধ্যে রোগমূক্ত হইয়া
এক মহামন্ত্র লইয়া শ্যা হইতে উথিত
হইল।

ক্যেক বংসর পরে তাহার পিতা মাতা ইহলোক পরিত্যাগ গেলেন। নিকটবলী এখন সে একাকী। কোন আত্মীয় নাই যাহার আশ্রের থাকিয়া এখন যৌবনস্থলভ চাঞ্চল্যে এই নবীন যুবক আত্মরকা করিয়া সেই মহাযজের জন্ম সদয়কে ক রিয়া তুলিতে পারে। সে সম্পূর্ণ নিরাশ্রয় ভাবে সংসার সমুদ্রে নিক্ষিপ্ত হইল। কিন্তু যে অগ্নি দাদশ বৰ্ষ বয়:ক্ৰম কালে তাহার প্রধুমিত হইয়াছিল-আজ বিধাতার অলক্য মঙ্গলবিধানে তাহার প্রারম্ভিক **मिथा উमीश र**हेशा छेठिन। পিতা মাতার পরিত্যক্ত সম্পত্তি বিক্রয় করিয়া যাহা কিছু পাইলেন, তাহা মৃলধন করিয়া এক ব্যবসায় আরম্ভ **করিলেন। যাহার ইচ্ছা মঙ্গলম**য়ী— যাহার হৃদয় নিঃস্বার্থ প্রেমমন্ত্রে দীক্ষিত-योशंत जीवरमत लका मःमारतत कुल গণ্ডী অভিক্রম করিয়া উচ্চতম স্বর্গরাজ্যে পঁছছিয়াছে—তাহার সর্ব্যক্তই জয়।

যুবক সভ্যনিষ্ঠার সহিত ব্যবসায় চালাইতে লাগিলেন। দিন দিন তাঁহার
উন্নতি ও বিপুল অর্থাগম হইতে
লাগিল। কয়েক বংসরের মধ্যে মার্শেলিস্নগরে তিনি একজন ধনী ও সম্রাস্ত
লোক বলিয়া পরিচত হইয়া উঠিলেন।

কিন্তু অন্য কারণে তিনি দিন দিন লোকের অপ্রিয় ও ছর্ব্বিষহ ঘুণার পাত্র হইয়া দাঁড়াইলেন। যে প্রেমমন্ত্র তাঁহাকে ক রিয়া **সং**সারাতীত রাজ্যের জীব তুলিয়াছে—দেই প্রেমমন্ত্রই তাঁহার এই অপ্রিয়তার পরোক্ষ কারণ। সম্পত্তির অধিকারী হইলে যেরূপ চাল প্রয়োজন, তাঁহাতে লক্ষিত হইত না। তিনি অমরাবতী সদৃশ সৌধকক্ষে ত্থ্মফেণনিভ শয়ন না করিয়া---নগরের এক নির্জ্জন প্রাস্তে এক কুটীর বাঁধিয়া তাহাতে বাস কবিতে লাগিলেন। অন্ধকার নিশিতেও তাঁহার কুটীরে কেহ আলোক দেখিতে পাইত না। তিনি দিনে একবার মাত্র তাঁহার করিতেন। অর্দ্ধাহারী ভিক্ষুকেরও পক্ষে অমুপাদেয়। তাঁহার জামা ও পেণ্ট্লন ও সহস্র তালিসংযুক্ত। নগরবাসিগণ যে সকল জুতা অব্যবহার্য্য জ্ঞানে পণে পরিত্যাগ করিত—তাহাই তিনি নিজ-হস্তে সেলাই করিয়া ব্যবহার করিতেন। আত্মীয় বন্ধুগণ তাঁহার নিকট সাহায্য প্রার্থনা করিতে আসিয়া বিষ্কৃত হইয়া

প্রত্যাবর্দ্তন করিত। তাঁহাকে কেহ
পাগল বলিত—কেহ রোগগ্রস্ত বলিত—
কেহ কেহ অভ্ত ক্নপণতার অবতার
বলিত। বলা বাহুল্য তিনি আমরণ
বিবাহ করেন নাই।

আত্মীয় বন্ধুগণ একে একে তাঁহাকে পরিত্যাগ করিতে লাগিল। নগরবাসি-গণ তাঁহাকে দেখিলে বিদ্রূপ করিত— বালকগণ পথে দেখিলে তাহার গায় ধূলি দিত। তাঁহার কুটীরের কাছে কেহ যাইত না। তাঁহার পীড়া হইলে কেহ তাঁহাকে ডাকিয়াও একটা কথা জিজ্ঞাসা করিত না। তিনি অতুল ঐশর্য্যের অধিপতি হইয়াও সর্বতি নিন্দিত ও ভর্ৎ সিত হইতে লাগিলেন। কিন্তু তাঁহার অস্তুরে যে মহাযজের অগ্নি জলিতেছিল. তাহা কেহ দেখিতে পাইত না। তিনি স্কল অবস্থাতে অবিচলিত রহিলেন. কেহ এক মুহুর্ত্তের জন্মও তাঁহার মুথে বিষাদের চিহ্ন দেখিতে পায় নাই। বালকেরা যথন তাঁহার গায় ধূলি দিত, তথন তিনি হাসিতেন—লোকে ষথন তাঁহাকে বিজ্ঞপ করিত,তথন তিনি হাসিতেন। যথন তাঁহাকে স্পর্শ করিতে লোকে ঘুণা প্রকাশ করিত-তথনও তিনি হাসিতেন। হাসি আনন্দ যেন তাঁহার প্রাণময় হইয়াছিল।

স্বার্থমর সংসারকর্তৃক এইরপে পরি-ত্যক্ত হইরা একদিন তিনি নিজের স্বথমর কুটারে প্রবেশ করিলেন। ধার ক্রম হইল—তিন দিন আর ধার পুলিল

না—নগরবাসীদের আশকা হইতে
লাগিল। লোকে নানা কথা বলিতে
লাগিল—কিন্ত কেহ যাইয়া তাঁহার
অন্থসন্ধান লইল না। পুলিশ আসিয়া
দার খুলিয়া দেখিল—তাঁহার মৃত শরীর
মলিন শযাায় পড়িয়া আছে। এইরূপে
প্রায় অশীতি বর্ষ বয়দে তাঁহার বালাকালের অবলন্বিত মহা ব্রতের উদ্যাপন
হইল; তিনি অমরধানে চলিয়া গেলেন।

এই বিপুল সম্পত্তির কি হইল, পুলিস তাহার অন্ধনন করিতে লাগিল। উপাধানের নিমদেশ হইতে এক উইল বাহির হইল। উহাতে লেথা আছে "আমার এই বিপুল সম্পত্তি ফরাসী গ্রণমেন্টের হত্তে প্রদত্ত হইল। ইহা দারা যেন গ্রণমেন্ট মার্দেলিদের জলকষ্ট নিবারণ করেন।"

চারিদিকে মহা আনলধ্বনি উঠিল।
মহা হলস্থল পড়িয়া গেল। এথন সকলে
বৃঝিল, যাহাকে তাহারা এতদিন
পাগল বলিয়া আদিয়াছে—যাহাকে
তাহারা কত নিলা ভং সনা করিয়াছে—
দে স্বর্গরাজ্যের জীব। সেই জন্মই—
সংসারাতীত নিরমে সংসারে একটুকু
নিঃস্বার্থ অতুলনীয় প্রেমের ধেলা
থেলিয়া গেল। সকলে ছুটিয়া তাঁহার
সেই কুটীর দ্বারে আদিতে লাগিল।
সেই নির্জন প্রদেশ লোকারণ্য হইল।
নগরের সম্ভান্ত ও ধনিগল সস্থানে
তাঁহার মৃতদেহ আপনাদের মন্তকে লইয়া
সমাণিক্রোভিমুধে ঘাইতে লাগিল।

ৰ্ণোপ্যুক্ত স্মারোহে তাহা স্মাধিস্থ रहेन।

मार्ट्सिन्! मार्ट्सिन्! जूमिरे ४छ! তোমার পুণ্যগর্ভে যে মহাপুরুষের আবিভাব হইয়াছিল—তাঁহার পুণ্যকাহিণী **জগৎ অনন্তকাল কীর্ত্তন করিবে।** আর বৃদ্ধ তোমার আজ কি ছুদ্দা! অলাভাবে ভোমার ঘরে ঘরে ক্রন্দনের রোল—কত আনাহার[ক্রু বালক মাতার ক্রোড়ে পড়িয়া কাতরকঠে আহার্য্য ভিকা করিতেছে—কত মার চকের জল मञ्चात्नत वत्क नियंतिनी

नाषाहेट ए यू ग्रायुगास हिनमा त्रान ; वांगरकत्र कथा पृरत् थाकूक, कहे अकी বুদ্ধের প্রাণেও এমন প্রতিজ্ঞা জাগিল কই! স্বদেশ প্রেমের নিঃস্বার্থ যজ্জমন্ত্রে একটীরও প্রাণ উৎসর্গিত হইল কই। বঙ্গ, তোর গর্ভে কত কুসন্তানের জন হইয়াছে! তোর ঐ পাপদগ্ধ গর্ভে এমন একটা মহাপুরুষের জন্ম না হইলে, তোর দেহ পবিত্র হইবে না। তোর অন্নরেশ যাইবে না। তোর ক্ষৎপিপাসার শাস্তি হইবে না!

পারিবারিক সঙ্গীত চর্চ্চা।

(দ্বিতীয় প্রবন্ধ)

উপরি উক্ত শিরোনামান্ধিত প্রথম প্রবন্ধ আমরা কার্ত্তিক মাদের ৩৩৪ সংখ্যক বামাবোধিনীতে প্রকাশ করিয়াছি। পুনরায় অতীব আহলাদ সহকারে ঐ বিষয়ের দিতীয় প্রবন্ধ লিখিতে উদ্যত इटेलाम। ७५ पाझ्लान नटर; উरात সহিত একটু উৎসাহ ও কৌতৃহলও আছে। স্বহস্ত-উপ্ত বীজের প্রথম ष्यकृत मर्गटन (यज्ञभ ष्याटमार्गा अ তাহার উত্তরোত্তর শ্রীবৃদ্ধি দেখিতে বেরূপ কৌতূহল হয়, এ বিবশ্ব আমা-- দের আনন্দোৎসাহও তজ্ঞপ। কেন না त रव फेल्मरण जामना के श्रवतकत ज्वव-তারণা করিয়াটি. তাহার সফলতা

তাহার আন্দোলন ও আলোচনার লক্ষ্ণ पृष्ठे इटेट्डिए। हेरात मत्याहे आमात्मत अथम अवस वांगारवाधिनीत পাঠক পাঠিকার দৃষ্টিপণে পতিত হইয়াছে এবং কাহার কাহার চিত্ত আকর্ষণ করিয়াছে। তাহার নিদর্শনস্বরূপ "পারিবারিক সঙ্গীত" ও "সঙ্গীত চৰ্চ্চায় কি দোৰ <u>?</u>" এই ছইটী সন্দৰ্ভ পাইয়াছি এবং তাহা অগ্রহায়ণ মাদের ৩০৫ সংখ্য বামা-বোধিনীতে প্রকাশ করিয়াছি। অবশ্র আমাদের পাঠক পাঠিকাগণ ভাষাও পাঠ করিয়াছেন। অধিকতর আহলাদের विषय এই त्य, विजीय श्रीवक्षी कान রমণীর রচিত। রমণীর রচিত শুনিরাই ভবিষ্যমতে নিহিত হইলেও সাধারণ্যে তাহা যেন কেহ অসার না অকিঞিংকর

মনে না করেন। একণকার অনেক
মহিলা অনেক পুরুষাপেকা এভাল
লিখিতে শিখিয়াছেন। বক্ষ্যমাণ প্রব-ক্ষের মধ্যে সার ও ভূয়োদর্শনের নিদর্শন
আছে। আমরা এই প্রবন্ধের পুষ্টি-বর্দ্ধনার্থ স্থলাস্তরে তাহার কিয়দংশ
উদ্বুত করিব।

দিতীয় সন্দর্ভটী একটী পারিবারিক
সঙ্গীত। কোন পুরুষ বা ত্রী পরিবারস্থ
সমস্ত ব্যক্তি সমক্ষে যেরূপ সঙ্গীত
করিতে পারেন, সঙ্গীতটা সেইরূপ।
তাহা ত্রী স্বামীর সমক্ষে,—কত্যা পিতার
সমক্ষে, ভগ্নী ভ্রাতার সমক্ষে গাইতে
পারেন, তাহাতে কোন দোষ হয় না,
বরং ভদ্দারা গাহ স্থারূপ উৎস হইতে
বিমল আনন্দপ্রবাহ উৎসারিত হইতে
থাকিবে।

কার্ত্তিক মাদের বামা-আমরা বোধিনীতে উল্লেখ করিয়াছি যে,মহীশুরের মহারাণীর কলেজে মহিলাদিগকে সঙ্গীত বিদ্যা শিক্ষা দেওয়া হইতেছে এবং মান্ত্রাজের টিঃ এদ্, ভেন্কট্ শান্ত্রী বহু সংখ্যক বালিকা বিদ্যালয়ে সঙ্গীত বিদ্যা শিক্ষা দিবার জন্ত বন্ধপরিকর হইয়াছেন। এখন আমরাও ত বলিতে পারি. আমাদের দেশেও অনেক রাজা মহারাজা, অনেক রাণী, মহারাণী, অনেক ভেন্কট শান্ত্রী আছেন; তাঁহারা কি এ বিষয়ে मतारवाश कतिरवन ना ? अमन माधूर्या-मन, अमन क्रमंत्रमूधकत, ख्यन माधरनत এমন প্রধান উপাদান যে সঙ্গীত, বঙ্গীর

গৃহস্থগণ স্ব স্ব পরিবার মধ্যে তাহা
প্রচলিত করিতে কি মনোযোগী হইবেন
না ? হইবেন বলিয়াই আমাদের বিশাস,
কেন না হওয়া উচিত।

পারিবারিক সঙ্গীত চর্চা উচিত কেন ? এ প্রশ্ন হইতে পারে। তছত্তরে এই বলা যায় যে, সঙ্গীত রদের আসাদন-লালদা মামুষের স্বাভাবিকী; বিশেষতঃ রুমণীগণের। 🔄 লালসাবশে সমাজে কতই জুগুপিত কাণ্ডের অভিনয় হইতেছে। গীতবাদ্য শ্রবণ জন্ম বাই থেমটার নৃত্যাদি দর্শন জ্বন্ত প্রতি-বেশী বা আত্মীয় কুটুম্বের গৃহে, নাট্য-শালায় বা বারএয়ারি তলায় কুলালনা-গণের গতাগতি বড়ই বৃদ্ধি পাইতেছে। কেহ বা গুরুজনের সমতিক্রমে কেহ বা অদমতিক্রমে, কেহবা ছন্মবেশে এই नीनारथना कतिया शास्त्रन। এ ছাড়া বিবাহবাসরে, বা কন্তাগণের পুস্পোৎসবে হিন্দু গৃহত্ত্বে গৃহে গৃহে কুলটাগণকে আনাইয়া নৃত্য গীতাদির অহুষ্ঠান হইয়া থাকে। অন্তঃপুরের প্রভাব এতই প্রবন त्य, সময়ে সময়ে বড় বড় বোদ্ধা, বিচক্ষণ ও সমাজসংস্কারকগণকেও তাহা অভিক্রম করিতে অক্ষম দেখা যায়। তাঁহাদিগের অভিনতি ও অমুমোদন ক্রমেই উপরি-উক্ত ঘটনা কালে ঐ সকল কাথের अञ्कीन इहेग्रा थात्क। এই সকুन অফুটানে যে পারিবারিক সাংঘাতিক অনিষ্ট গুপ্তভাবে সম্পন্ন হইতেছে, ভাৰা বোধ হয়, চিন্তাশীল ও স্কাদশী বাজি

মাত্রেই অম্ভব করিয়া থাকেন। এই জন্মই আমরা বলিতেছি, যদি পরিবারের মধ্যে সঙ্গীত চর্চ্চা প্রবর্ত্তিত হয়, তাহা হইলে ঐ সকল কাণ্ড রহিত হইবার সন্তাবনা। ঘরে বসিয়া আপনা আপনির মধ্যে সঙ্গীত চর্চ্চা করিতে পাইলে বোধ হয়, বাহিরে গতাগতি বা গৃহস্থের পবিত্র গুছে সঙ্গীত বাপদেশে কুলটা সমাগম রহিত হইতে পারে।

আমরা হই একটী গণ্ডগ্রামে দেখি-য়াছি অনেক ভদ্ৰ মহিলা নৃত্য বাদ্যাদি শিক্ষা করিয়াছেন। গৃহত্তের श्रंद्र ८ए 'मकल উৎमव खीमश्रल निवक অর্থাৎ যাহাতে পুরুষগণের যোগ দিবার সম্ভাৰনা নাই, সেই সকল স্থলে তাঁহারা গীত বাদ্যাদি করিয়া থাকেন। কিন্ত ক্রমণীগণের এরপ স্বাধীন আমোদপ্রমোদ আনেকে অনুমোদন করেন না। এরপ অনমুমোদনের বিশিষ্ট কারণ আর কিছুই **८७ था माम ना,** कातरणत मरशा दकवल পারিবারিক সঙ্গীত চর্চার অভাব জন্ম স্ত্রীগণের এরপ আমোদ দর্শনে অনভ্যাস। দ্বীসমাজে সঙ্গীত চৰ্চ্চা প্ৰচলিত হইয়া গেলে আর পুরুষগণের ঐরূপ অনমুমোদন ও অসম্ভোষ থাকিবে না। এই স্থলে আমরা পূর্ব প্রতিশ্রতি অমুসারে অগ্র-श्वादावत वामार्वाधिनीत "मनीत् ठळात्र कि लाव ?" এই প্রাপ্ত প্রবন্ধ হইতে একটু উদ্ভ করিলাম, তত্বারা পুর্বেজি মন্তব্য সমর্থিত হইবে :—

"এখন বক্তব্য এই যে, যদি বড় বড় লোক সাপ্তাহিক ও মাসিক পত্রাদিতে হিন্দু স্ত্রীগণের নৃত্য গীতাদির বিষয় ক্রমাগত আলোচনা করেন, যদি বড় বড় স্কুল কলেজের ছাত্রীগণের মধ্যে ঐ প্রথার আরম্ভ হয়, তাহাহইলে সেই টেউ পল্লীগ্রামে বালিকা স্কুলেও আসিয়া লাগিবে আশা করা যায়।" ২৫৬ পৃষ্ঠা, দ্বিতীয় স্তম্ভ।

বঙ্গদেশের মধ্যে মহামাভ হিন্দুকুণ চূড়ামণি প্রীযুক্ত সার্ রাজা সৌরীক্রমোহন ঠাকুর K. T. মহোদয় সঙ্গীতরসজ্ঞ ও সঙ্গীতবিজ্ঞানবিৎ এবং ধনে মানে ক্ষম-তায় দর্কাংশেই শ্রেষ্ঠ। তাঁহার অভিমত হইলে এ বিষয়ে তিনিই প্রথম পথ-প্রদর্শক হইবার উপযুক্ত পাত্র বলিয়া আমাদের বিশ্বাস। অতএব আশা করি, বঙ্গদেশে পারিবারিক সঙ্গীত চর্চার প্রচলন বিষয়ে তিনি আলোচনা করিবেন এবং ইহা তাঁহার অমুমোদিত হইলে যাহাতে প্রথমে বেথুন কলেজে দেশীয় সঙ্গীতবিজ্ঞান শিক্ষা দেওয়া হয়, তাহার ८ हो कतिरवन। आमारमत विरवहनाम ইহা দারা যেমন সমাজের উপকার, ভেমনি তাঁহার দিগন্তপ্রসারী যশঃ সৌর-ভের অধিকতর গৌরব বৃদ্ধি হইবে।

वामन थ्रशानी।

পিয়ানাফোর্ট ও হারমোনিয়ম।

(৩৩৫ সংখ্যা ২৪৯ পৃষ্ঠার পর)

হারমোনিয়ম ফুটু বাদ্যয় খুলিবার
নিয়ম এই যে, ইহার যে দিকে ভস্তা
আছে, সেই দিকের কার্চথণ্ড পশ্চাৎ
দিকে সরাইয়া দিলে, বায়ুকোষ আয়তনে
বৃদ্ধি হইয়া অনেক পরিমাণে বায়ুধারণে
সক্ষম হয়। যতদ্র পর্যাস্ত পশ্চাৎদিকে
ইহা সরিয়া যায়, তত দ্র পর্যাস্ত লইয়া
গিয়া দেখিবে যে ছই পার্শে ছইটী
পিভলের টোপ উঠিয়া পড়িবে, কারণ
ইহারা স্পুীংযুক্ত এবং এই পিতলের
টোপ ঘারা বায়ুকোষস্থ কাঠফলক
আবদ্ধ থাকে।

বক্দ হারমোনিরমে আড়াই দপ্তক স্থর থাকে,অর্থাৎ পঁচিশটী দাদা ও পঁচিশটী কাল চাবি থাকে। ইহার বামদিক হইতে পঞ্চম চাবিটী ষ ড় জ বা C স্থর, তৎপরটী ঋ থ র বা D স্থর এবং তাহার পর গ, ম, প, ধ, নি বা, E, F, G, A, B, স্থর গুলি বাহির হর।

সা, ঋ, গ, ম, প, ধ, নি এই সাত স্থরের সমষ্টিকে সপ্তক কহে। সা স্থর হইতে ক্রমে সাত স্থর অতিক্রম করিয়া উর্দ্ধে গমন করাকে অস্থলোম বা আরোহী বলা যার; আর ঐ প্রণালীতে নিমে আগমন করিলে বিলোম বা অব-রোহী কহে। স্থরের গরন্পরাগত

আহুলোমিক বৈলোমিক ক্রম অর্থাৎ শ্রেণীকে স্বরগ্রাম বা দারগম কছে।

কণ্ঠ যথেষ্ট মার্জিত হইলে তিন সপ্তক পরিমিত পর পর উচ্চ ২১টী স্থর নির্গত হইতে পারে। হিন্দু সঙ্গীতে তাবৎ কার্য্য ঐ তিন সপ্তকের মধ্যেই হইরা থাকে। ঐ তিন সপ্তককে মন্ত্র, মধ্য ও তার বা উদারা, মুদারা ও তারা বলে।

খরগ্রাম স্বর্গিপিতে তিন সপ্তকের
তিন সা, তিন ঋ, তিন গ ইত্যাদিকে
পৃথক্ করার জন্ম, সাত স্থ্রের নামের
নিমে দক্ষিণ পার্থে ক্সে(১) বা(০) লিখিয়া
উদারা সপ্তকের সংকেত হয়, য়থা সা,
ঋ, গ, হত্যাদি ৷ সাত স্থরের কেবল
আন্য অক্ষর গুলি লিখিয়া মুদারা সপ্তকের সংকেত হয়, য়থা—সা, ঋ, গ, ম,
ইত্যাদি ৷ সাত স্থরের উপর দিকে ক্সে
(১)বা(০) লিখিয়া তারা সপ্তকের সংকেত
হয়, য়েমন সা১ ঋ১ গ১ ইত্যাদি ৷ উক্ত
তিন সপ্তকের সাভাবিক পর্যায়
এইরূপ:—

সা, ঝ, গ, ম, প, ধ, নি, ুসা ঋ গম পধনি সা' ঋ' গ'ম' প' ধ' নি'

বাদ্যবন্ধে তিন সংগ্ৰেম্বাকাও অধিক-

তর ত্বর উৎপন্ন হইয়া থাকে। তিন নপ্তকের অধিক হুর স্বর্লিপিতে লেখা প্রায়েশন হইলে স্বরাক্ষরের উপরে ও नित्म के व्यक्ष मःथा। व। मृना वृक्षि कति-লেই বিভিন্নতা হইবে: যেমন তারা সপ্তকের উপরের সপ্তকে সাং ঋং ইত্যাদি ध्वरः উদারা সপ্তকের নীচের সপ্তকে नि. ४, १, हेजामि।

্সর্থামের কোন ছইটী স্থরের মধ্য-গত ব্যবধানকে গ্রামিক অন্তর কহে. यथा मा इटेटा स. स इटेटा १ हेना नि । নিম সাহইতে উচ্চ সা পর্যান্ত আটটা স্থরের মধ্যগত যে সাতটা অন্তর, তাহারা পরস্পর সমান নহে; কেননা সা হইতে থা, কিস্বা ঋ হইতে গ যে পরিমাণে উচ্চ. গ হইতে ম কিম্বা নি হইতে সা তাহার व्यक्तिक डेक्ट। व्यज्यव, २म, २म, १४. ৫ম ও ষষ্ঠ এই পাঁচটী গ্রামিক অন্তর

পূर्न चत्र: এवः ७३ ७ १मे এই इरेगे অর্দ্ধর। যথা সাহইতে ঋ পূর্ণ স্বর, ঋ হইতে গ পূর্ণ স্বর, গ হইতে ম স্মৰ্ক স্বর, ম হইতে প পূর্ণস্বর, প হইতে ধ পূর্ণ স্বর এবং নি হইতে সা অর্দ্ধ স্বর।

ক্লফ সারণার আশ্রয় ব্যতিরেকে কেবল খেত সারণায় যে স্বরগ্রাম সাধিত হয়, অর্থাৎ পাঁচটি পূর্ণ স্বর ও হুইটী অর্দ্ধ স্বরের যোগে যে সপ্তক সাধিত হয়, তাহাকে প্রকৃত স্বরগ্রাম বা Diatonic Scale কহে। খেত এবং কৃষ্ণ এতহ-ভয়ের মিলনে অর্থাৎ ক্বঞ্চ সারণা অপরি-ত্যালে প্রথম হইতে গণনায় দাদশ সার্ণা পর্য্যস্ত অবিচ্ছেদে যে হুরগ্রাম সাধিত হয়, তাহাকে বিকৃত স্বর্গাম Chromatic Scale करह।

(ক্ৰমশঃ)

রোগশয্যা।

(৩৩৫ সংখ্যা—২৫৪ পৃষ্ঠার পর)

কথা গুনিয়া হয়তো অনেকে হাসিবেন: **"যাহার৷ জ**গতে 'কুদ্রাশরা' বলিয়া পরিচিতা, রোগশ্য্যায় কুদ্রত্বের জক্তে তাহাদের আবার এ নাকে কারা কেন ?" এ রকম একটা প্রশ্নও হয়তো "উদারচেতা" মহাশয়দিগের मटन ষাসিবে। যাঁহারা এরকম কথা বলি-र्वन, डांशांनियत्र वित्वहनांनिक-दक

বাঙ্গালির মেয়ের মুখে "সঙ্কীর্ণতা"র আমরা কিন্তু কথনই "শ্রেষ্ঠ" বলিতে পারিব না। আমরা "কুড়াশয়া, সঙ্কীর্ণ-क्षपत्रा" मजा: आमारमजरे विश्वकार একটা পরিবারের মধ্যে সভ্য, আমরাই শ্রদ্ধের বৃদ্ধিম বাবুর "সীতারামের" রমার মত স্বদেশ বুঝি না, স্বজাতি বুঝি না, বীরত্বিঝি না, মহত্ব বুঝি না, কেবল चामी পুত্রাদির অসঙ্গল ভর্য়ে আড়ষ্ট হইয়া পড়ি সত্য : এ জগতে প্রধানতঃ আমা-

(पत्र "উত্তর সীমা স্বামী, পূর্বে সীমা সন্তানগণ, দক্ষিণ সীমা পিতা, মাতা, পশ্চিম সীমা শ্বন্ধ শ্বাভডী" এ কথাও স্তা: কিন্তু আরও স্তা এই যে, আমি রোগশ্যার প্রসাদে যে রকম সন্ধীর্ণ-জদয়া হইয়া পডিতেছি, সাধারণ বঙ্গ-মহিলারা সে রক্ম স্কীর্ণহৃদ্যা ক্থন্ই নহেন। তাঁহাদিগের বাক্তিগত দোষ ও ক্রটি ঘাঁহার ঘাহাই থাকুক না কেন. সংসারে তাঁহারাই ভক্তিপরায়ণা ক্লা. প্রীতিপরায়ণা ভগিনী. প্রেমপরায়ণা ভার্যা, লেহপরায়ণা মাতা এবং দার্ক-ভৌমিকভার কৃদ্রতম প্রতিকৃতি-ক্রপিণী গৃহিণী! এই সকল জীবন যে ত্যাগ-স্বীকার, প্রসেবা প্রভৃতি প্রার্থপ্রতা-শৃত্য নহে, এ কথা বিশেষ করিয়া বলা राष्ट्रणा भाव। याश किছू উन्नड, याश কিছু মধুর, বঙ্গমহিলার হৃদয়ে খুঁজিয়া দেখ, ফুট অবস্থায় হউক আর অফুট অবস্থায় হউক, সেথানে কিছু না কিছু মিলিবেই! অতএব সাধারণ বঙ্গ-মহিলাতে আর এই রোগশ্যাশায়িনী, আত্মচিস্তা-নিপীডিতা,স্বার্থপরতা-বিজ্ঞিতা আমাতে যে কি দাকণ পার্থক্য, তাহা বোধ হয় সকলেই বুঝিবেন! সেই সঙ্গে আমি আমার অবস্থা দেখিয়া যে কেন হ:খিত হইতেছি, তাহাও বুঝিতে পারি-বেন।

আমি এই ছুরবস্থার রোগশ্যার। এখন আমার মনে হয় যদি ইহার উপরে একটা বিকটাকার যমদ্ত আমার মুখের উপরে ডাকিয়া বলে "নির্বোধ মানব! 'কেমন, এখন জব্দ হও!" তাহা হইলে বৃঝি বা এ রোগশ্যার পূর্ণ "স্থখ" উপ-ভোগ করিতে পারি!!

কিন্ত যমণ্ত ড। কিয়া বলুক আর নাই বলুক, আমি যে আছে। রকম "জক" হইতেছি, সে বিষয়ে আর সন্দেহ করি না। এ রকম অবনতির দিক্কে, পিছাইয়া পড়া, এ রকম জীবস্ত হইয়া থাকা, আর পরমায়ুটুকু অপবায় করা, ইহা আমার বিবেচনার বড়ই ক্ষতিকর— এ বিষয়ে জ্ঞানী ব্যক্তিদিগেরও উপদেশ আছে। তাই বলিতেছি যমণ্ত বলুক আর নাই বলুক এক দিকে আমি কিন্তু ভারি "জক" হইয়াছি।

তা এক দিকে "জব্দ" হইয়াছি সত্য-বলিতে লজা করে, সব দিকে নহে। এজগতে সকল পদার্থেরই ছই দিক আছে। চন্দ্রমণ্ডলে ঘন অন্ধকারও আছে, সূর্য্যকরবিশ্বিত উচ্ছল জ্যোৎস্লাও আছে, গোলাপ গাছে কাঁটাও আছে, ভ্ৰনমোহন ফুলও আছে, মানব্হদুয়ে অবাচ্য পশুরুত্তিও আছে. श्रुग्रमश्री দেববৃত্তিও আছে; মানব জগতে "রঘো ডাকাত"ও আছে, নরদেবতা চৈতক্ত, বুণ্ও আছেন; এই মল ভাল এ আঁধার আলো, এই কু ও হু র সংমিশ্রণই আমাদের মানব জগং। এই স্থথ হঃধই আমাদের জগতের অপূর্ণতা, অপূর্ণতাই আমাদের জগতের সাধারণী নিয়ম (১)। তবে প্রিয় ভগিনি, তোমার

(১) অপূর্ণতা আমাদের সাধারণ নিরম, কিন্তু বিশেষ নিরম নছে। অপূর্ণতা হইতে পূর্ণছ লাভ করাই বিশেষ নিরম। ধাঃ লোঃ। কাছে মনের কথা বলিতে আর দোষ কি বে আমার এই রোগশন্যায় এতগুলা হাড়ভাঙ্গা ছংখও আছে, আবার থানিকটা প্রাণজ্ডান স্থখও আছে। জগতের সাধারণ নিয়মান্ত্সারে আমার এ রোগশ্য্যাও "এক ঘেয়ে" দোষ দ্যিত নহে। ছংখের কথা এতক্ষণ বলিয়াছি, এথন স্থথের কথাও একটুথানি বলিয়া যাইতেছি।

আগে বলিয়াছি আমি জগতের
"আনক জিনিদ গ্রহণ অরিতে অযোগ্য
ও অক্ষম" হইয়াছি; কিন্তু দব জিনিদ
সম্বন্ধে নহে। বাহু জগতে রোগী অনেক
স্থলে মৃত অথবা জড়স্থানীয় হইলেও
অন্তর্জগতে তাহার জীবনের পরিচয়
পাওয়া যায়। দেই জন্ত রোগীর রোগশ্যায় শিধিবার স্থাও মিলে, ভোগ
করিবার স্থাও মিলে। শিকাজনিত
স্থাথর কথা আগে বলি।

এ জগতে আমরা অর্থাৎ সাধারণ মান্থবেরা নাকি বড় সার্থপির, বড় স্বেচ্ছাচারী অপরিণামদর্শী, তাই সকল সময়ে আপনাদের ক্স শক্তিতে আপনাদিগকে সামলাইতে পারি না। এই হর্কলতা আমাদের অসংযমনে এবং অসংযমন আমার প্রকৃত অবনতির মূল কারণ। অতএব যাহাতে আমাদের হথ্য হর্কলতা আসিতে না পারে অথবা আমরা বাহাতে হর্কলতা অতিক্রম করিতে পারি, এই শক্তির জয়ে আমাদের এক এক (কঠোরপ্রকৃতিসম্পন্ন ?) স্তামবান্

শিক্ষাগুরু আবশুক। ক্লেহময়ী বিশ্ব-জননী সন্তানের সকল অভাব বুঝিয়াই তাহা পূর্ণ করিবার উপায় করিয়াছেন, তাই অন্তর্জগতে বিবেক আমাদিগের যেরূপ স্থায়বান শিক্ষাগুরু, বাছজগতে রোগ শোক প্রভৃতি বিপদও সেই রকম "শিক্ষাগুরু" হইয়াছেন। বিপদ আমা-निगरक निष्कत कृषि व्याहेश एम. আমাদিগের অভিমান চুর্ণ করিয়া দেয়, আমাদিগের ধৈর্যা, সহিষ্ণুতা, সংযম ও ত্যাগন্ধীকার শিক্ষা দেয়। বহু দিন বহু চেপ্তা করিয়া আমরা যে সকল শিক্ষায় অকৃতকার্য্য হই, একবার বিপ-দের তীব্র শিক্ষায় অনেক সময়ে তাহাতে ক্লতকার্য্য হইয়া থাকি। এই দেখা যায় এ জগতে যিনি যত বিপদে পড়িয়াছেন, তিনি মহুধ্যত্ব বিষয়ে তত অভিজ্ঞতা লাভ করিয়াছেন। সেই জন্ম মন্নুষ্য-জীবনে বিপদ এক উপকারী বন্ধু। আমার এ রোগশ্যা যদি এক মুহুর্ত্তের জন্ম আমাকে আপনা চিনাইতে পারে, যদি কণকালের জন্ম আমার অসার্থ আমার হীনত্ব বুঝিতে দিয়া জীবনপথে আমাকে সতর্ক করিতে পারে, আর য়দি আমার কুদ্র জীবন গঠনের পক্ষে এক বিন্দু সহায়তা করিতে পারে, ভাহা হইলে প্রিয়ভগিনি ! রোগশয্যাকে "হ্রখ-শ্য্যা" বলিব না কেন দূ

বিতীরতঃ রোগে আমাদের হৃদরের এক দিকে একটু উন্নতিও হয়। স্বস্থ মানব অপরের মেহ মমতার উপেকা

করিতে পারেন—(বালুকারণ্যে জল-ধারার মত) তাঁহাদিগকে ভাল বাসিতে গিয়া মানব তাঁহাদের হৃদয় ভিজাইতে অক্ষম হইতে পারেন, কিন্তু রোগীর পক্ষে দেরপ নহে। পরের স্বেহ মমতা পাই-বার জন্ম রোগীর হৃদয়ই লালায়িত। যে স্বার্থপর, যে কখনই অভ্যের সংস্র্ কামনা করে না, রোগের মা'কে-প্রীতিসয়ী তাহারও স্বেহন্যী ভগিনীকে মনে পড়ে। তুইটি স্নেহমাথা কণা শুনিতে পাইলে তাহার রোগ্যাতনা व्यत्नक द्वांत्र रहा। तस्नीय ७ वित्सनीय মনোবিজ্ঞানবিদ পণ্ডিতেরা কেহ কেহ রোগীকে "স্বার্থপর" বলিয়া থাকেন. কিন্তু এ কার্য্য অর্থাৎ পরের দরার প্রার্থী হওয়া যে স্বার্থপরতামূলক আমার তাহা বিশাস হয় না। "মনুষ্য মাত্রেই আমাকে মেহ মমতা করুক" সাধারণ রোগীরা কথনই এমন কথা ভাবে না। তবে যাঁহারা স্বতঃপ্রবৃত্ত হইয়া স্নেহ করেন, বোগীর হৃদয়ে তাঁহাদের সেহ বড়ই মধুর লাগে। এই জন্ম আমার বোধ হয় রোগভোগে মানব হৃদ্যের কোমলতা অধিকতর পরিকটে হয়, তাই মানব পরের স্থেমমতার মুলা, রোগশ্যাায় পড়িয়া সম্পূর্ণক্লপে বুঝিতে পারে; যে ষাহার তত্ত্ব বোঝে দে তাহার আকাজ্জী হইয়াই থাকে! অতএব রোগ-শ্যা আমাদের হৃদরের কোমলতা সাধনেরও এক সহায়; সেই জন্তও আমি রোগ-শয্যা "স্থুপ্ৰয়া" বলিতে চাহি।

বোগ শ্যায় আমরা আরও হুই একটী ছোটখাট স্থুথ পাই বটে, কিন্তু মর জগতের যে সর্বশ্রেষ্ঠ স্থুথ তাহা আমরা এই রোগ-শ্যাতেই উপভোগ করি। বিপদের সর্কোচ্চ স্থুখ এই যে বিপদের সময়ে বিপদনাশিনী ভগবতীকে প্রাণ ভরিয়া ডাকিতে হয়। সম্পদের সময়ে তাঁহা হইতে দূরে থাকাও সম্ভব, কিন্তু বিপদের সময়েই আমরা তাঁহার অভয় কোলে-স্নেহের কোলে মাথা লুকাইয়া থাকি! বঙ্গবধু-বালিকা বধু যথন শাশুড়ীর কাছে গালি থায়, তথনই মাতৃ-স্নেহ তাহার মনে পড়ে-তথনই মা'র কাছে যাইতে তাহার প্রাণ আকুল হয়। আমরা যথন রোগাদির **আক্রমণে** পার্থিব স্থাের অভাব বুঝিতে পারি, তথনই স্থেম্যী বিশ্বজননীর মধুম্য (कारल याहेवात जत्य भागल इहे। তাই বলিতেছি যাহা ভববলগীতা পড়িয়া নাবুঝিতে পারি, যাহা সাধু ও সিদ্ধ মহাত্মাদিগের পুণ্যময় জীবনচরিত শুনিয়ানা বুঝিতে পারি, যাহা শ্রীযুক্ত মহাশয়ের পবিত্র উপদেশ শুনিরা শিখিতে না পারি, বিপদের আক্রমণে— এই রকম রোগ-শ্যার মাহায়ো এক পলকের জন্ম তাহাও যেন ব্ঝিতে পারি! এই রকম রোগ-শ্যায় ভইতে পারিলেই একবার অনস্ত সমাজীকে এ কুদ্রাদপি কুদ্র ফদরের মধ্যে আয়ত্ত করিতে পারি ! এই রক্ষ বোগ-শ্যাদ্ব পড়িরা থাকিতে পারিলেই

(রোগ-শ্যায়) তাঁহার অভয় কোল
অহতব করিতে পারি! এই রকন
রোগ-শ্যায় থাকিলেই একবার এক
মুহুর্তের জন্মও তাঁহার চরণে আয়বিল দিতে পারি! একবার আপনা
ভূলিয়া আশা হয়—আশায় বিশাস হয়
—বিশেশরী একদিন সন্তানের শরীরের
রোগ দ্র করিবেন—আয়ার কালিমা
মুছিয়া দিবেন—আমি কুলাদিপি কুল
হইলেও, সর্জাংশে অসম্পূর্ণ হইলেও
একদিন—সে যত দিনের পরেই হউক,
যত জীবনের পরেই হউক, এই নগণা
জীবাণুকেও একদিন সম্পূর্ণ করিবেন।
অসম্পূর্ণ হইতে সম্পূর্ণতাই বিশ্বস্থির
এক প্রধান উদ্দেশ্ত। এখন বল পার্চিকা

ভাগিনি ! আমার রোগ-শ্যা কি "স্থ-শ্যা" নহে ?

কিন্তু তথাপি এ রোগ-শ্যা হইতে অব্যাহতি চাহি।—কেন চাহি ? আমরা জগতে আদিয়াছি, কাজ করিবার জন্ম। অণুই হই, পরমাণুই হই, যতটুকু পারি, কাজ করিতেই হইবে। মা'র কোলে পড়িয়া আরাম করিলে বিবেকই আমাদিগকে "কর্ত্তব্যভ্রষ্ট" বলিয়া গালি দিবে!

তবে এখন জগদীশ্বরের ক্লপায়, বামাবোধিনী পাঠিকাদিগের আশীর্বাদে, পাই যেন আব্যোগ্য ও নবজীবন। লেথিকা, শ্রীমা—

উৎকলের ব্রাহ্মণজাতি।

আব্য রাজগণকর্ত্ব উড়িষা। অবিক্বত হইবার পুর্বের, বৌদ্ধ ভিক্ত্রণ
উড়িষ্যায় "বিহার" স্থাপন করিয়াছিলেন। উদয়ণিরি ও থগুনিরির
গুহারাজি, অশোকের অয়ুশাসন-থোদিত
ধউলিপাহাড়, এবং পুরীর "জগয়াথ
ধর্ম আজিও বৌদ্ধ পরিব্রাজকদিগের
মাহাজ্যের সাক্ষ্য প্রদান করিতেছে।
উত্তরসরকার প্রনেশ্বের উত্তরসীমা হইতে
মেদিনীপুরের দক্ষিণসীমা প্রয়ন্ত একটি
সমুজ্ঞ নীরবর্ত্তী অয়পরিসর ভূথগু ফলিঙ্গ
নামে অভিহিত ছিল; উড়িষ্যার অবশিষ্টাংশে উৎ—কলিঙ্গ বা উৎকল নাম

আর্থ্য রাজগণকর্ত্বক উড়িষা। অবি- প্রাপ্ত ইইয়াছিল। কবি কালিদাসের হইবার পুর্বের, বৌদ্ধ ভিক্ষুগণ বর্ণনায়ও ইহার আভাস প্রাপ্ত হওয়া হয়ায় "বিহার" স্থাপন করিয়া- যায়। রঘুর দিখিজয়কালীন পথ বর্ণনায় শন। উদয়গিরি ও থণ্ডগিরির কবি নির্দেশ করিয়াছেন:—

> সতীর'। কপিশাং (স্বর্ণরেখা) সৈজ্ঞৈর্দ্ধিরদ সেতৃভিঃ

উৎকলা দৰ্শিত পথ: কলিঙ্গাভিমুপং বযৌ।

উড়িষা বা ওড়িষা নাম উৎকল

শব্দের অপত্রংশ নহে; ওড় বা ওড়

নামক আদিম অধিবাসীদিগের নাম

ইইতে এই নামের উৎপত্তি হইয়াছে।

নামে অভিহিত ছিল; উড়িঝার অব- যথন কলিকে হিন্দ্রাজা রাজত্ব শিষ্টাংশে উৎ—কলিজ বা উৎকংল নাম করিতেছিলেন, তথন মগধরাজের প্রতি- নিধি শাসনকর্ত্গণ কটকনগরীর উত্তর পারস্থিত চৌচ্যার নামক স্থানে নগরী নির্মাণ করিয়া উৎ-কলিঙ্গের কিয়দংশ শাসন করিতেন। কালক্রমে যথন ধর্ম্মবিপ্লবে কলিঙ্গরাজ বৌদ্ধর্ম্মে দীক্ষিত হইয়া স্বীয় তনরা হেমলতাকে দেশ-পরিত্যাগী বৌদ্ধর্ম্মাবলম্বী ইক্রহায় নামক রাজকুমারের সহিত বিবাহিত করাইলেন, এবং চৌহ্যারের শাসনকর্ত্তাদিগের বংশধরগণ হিন্দ্ধর্ম অবলম্বন করিয়া মগধের অধীনতা পরিহার পূর্বাক স্বাতন্ত্য গ্রহণ করিলেন, সেই সময় হইতেই উৎকলের ব্যাহ্মণ জাতির ইতিহাদ লিপিবদ্ধ হওয়া উচিত।

কলিঙ্গরাজের আশ্রয়ে যে সকল ব্রাহ্মণেরা বাস করিতেন, তাঁহারা যে দাকিণাত্যের ভাষা ও ব্যবহারাদি অব-লম্বন করিয়াছিলেন, তাহা নিঃসন্দেহ। রাজার বৌদ্ধর্ম গ্রহণের পর ই হারা यातिक छे उपनित्र वा छे प्करत प्रित्र **শীমায় হিন্দুরাজগণের আশ্রয় গ্রহণ** করিয়াছিলেন। আধনিক ব্রাহ্মণগণ কি ইহাদের বংশধর ? যদি না হন, তবে তাঁহারা কোথায় ? নিয়ে সে বিধয়ের অমুসন্ধান করা যাইতেছে। व्यार्गावर्छत हिन्दूताक्रगंग এই विदन्शीय এবং অপরিচিত ব্রাহ্মণদিগকে যথোচিত সম্মান করিতে কুষ্ঠিত ছিলেন। হিন্দু রাজার আশ্রে থাকিয়াও ইহারা ত্রাহ্মণ वित्रा वित्भव ज्यानत প্राश्च रन नारे। কেশরী রাজগণ যাজপুর বা যজ্ঞপুরে

আৰ্য্যাবৰ্ত্ত হইতে ব্ৰাহ্মণ আনাইয়া বাস করাইয়াছিলেন এবং ইহাদিগের গ্রাসাচ্ছাদনে স্থবিধা করিয়া গ্রামাদি मान कतियाष्ट्रितन । देशता अमुाशि উডियात (अर्ध जामन। इंड्रानिशतक ব্রক্ষোত্রভোগীবা শাসন ব্রাহ্মণ বলে। শাসন অর্থ উড়িয়া ভাষায় এখন ব্রাহ্মণ-গ্রাম দাঁডাইয়া গিয়াছে। পুরী জেলার অন্তঃপাতী রঘুনাথপুর প্রভৃতি শাসন দেখিলে বুঝিতে পারা যায় যে প্রাচীন রাজগণ ব্রাহ্মণদিগের প্রতিষ্ঠার জন্ম কত স্ববন্দাবন্ত করিয়াছিলেন। কলিকের প্রাচীন ব্রাহ্মণগণের মধ্যে কিয়দংশ উৎ-कल ভाষাবলম্বী দাঞ্চিণাত্যের থেমড়ী, যুমসর, প্রভৃতি স্থানের রাজাদিগের আশ্রয় গ্রহণ করিয়া সস্থানে করিতে লাগিলেন। পরে যথন উডি-ষাার পশ্চিমভাগে পাহাড এবং অরণ্য পরিপূর্ণ কন্দ ও গও প্রভৃতি জাতিভুক্ত দেশ সমূহ (Res nulius) কাহারও অধিকারস্ত নহে এই বিবেচনায় উৎ-কলের রাজবংশীয় লোকেরা বাছবলে জয় করিয়া অধিকার বিস্তার করিলেন. তথন স্থবিধা পাইয়া অর্ণ্যবাদী আনাদৃত কলিঙ্গ ব্রাহ্মণগণ তাঁহাদের আশ্রয়ে গিয়া উপস্থিত হইলেন। এই জন্ম কটক, পুরী প্রভৃতি অঞ্চলে এই° ব্রাহ্মণদিগকে দেখিতে পাওয়া যায় না; এবং এই কারণেই উড়িষ্যার গড়জাত সমূহে, বিশেষতঃ সম্বলপুর অঞ্লে বিস্তৃতি এত অধিক।

সমাগত বলিয়া ইহাদের নাম আরণ্য বাকাণ। প্রচলিত কথার ইহাদিগকে বাজ্ম। থাড় = অরণ্য) বাক্ষণ বলে। লেথক, সোনপুর নামক (ফিউডেটরী) করদ রাজ্যে দেখিয়াছেন যে এই বাক্ষণেরা করেন; কিন্তু উৎকল শ্রেণীর বাক্ষণেরা আমার্কাদ করিয়া প্রণাম আদার করেন। ইহা ছাড়া এই ছইটি বাক্ষণ সম্প্রদারের সামাজিক রীতি নীতির মধ্যেও প্রাচীন ইতিহাস স্কল্য প্রতিভাত হয়। উৎকল বাক্ষণগণ আর্যাবর্ত্তের রীতি নীতি দারা শাসিত; কিন্তু ঝাড়ুয়া বাক্ষণ-দিগের রীতি নীতি সম্পূর্ণ নৃতন ও

স্বর্গীয় ডাক্তার রাজেন্দ্র লাল মিত্র উড়িষ্যার প্রাচীন কীর্তিরই ইতিহাস লিথিয়াছেন, স্থতরাং এ বিষয়ের কোন আভাস ডাঁহার গ্রন্থে প্রাপ্ত হুওয়া যায় না। হণ্টর সাহেব যদিও উড়িষ্যার ইতিহাস লিথিয়াছেন, কিন্তু তাঁহার উড়িষাা নাকি উড়িষ্যার প্রাচীন কীর্ত্তি-ময় অংশ মাত্র, সেই জন্ম তিনিও এ বিষয়ের কোন তবামুসন্ধান করেন নাই। বাবু কৈলাস চক্র সিংহ মহশেয়ের দারু-বৃদ্ধা গ্রন্থে এই ব্রাহ্মণ প্রেণীর অন্তিত্বের কেবল একটুকু আভাস প্রদন্ত হুইয়াছে। আলুশা করা গিয়াছিল যে রীজ্লি সাহে- বের এত বড় ডাক হাঁকের ভারতজ্ঞাতি বিবরণ গ্রন্থে ইহার স্থাপ্ট কথা থাকিবে। কিন্তু তাহা নাই দেখিয়াই আমরা এই শ্রেণীর ব্রাহ্মণদিগের উৎপত্তি নির্দেশ করিলাম।

সম্বলপুর অঞ্চলে আর একশ্রেণী উৎকল ভাষাবলম্বী ব্ৰাহ্মণ আছেন: ইহারা রঘুনাথ পদ্ধী বলিয়া খ্যাত। জिজ्ঞामा कतित्व हेराँता वत्नन, যে সময়ে রাম বনবাসে ছিলেন, তথন তিনি ইহাদিগকে আক্ষণত্বদান করিয়া-ছিলেন! এই প্রবাদ দৃষ্টে অমুমান অযুক্ত নহে যে এদেশীয় রাজ-গণ স্ব স্ব রাজ্যে দেবালয়ের পূজা এবং পাচকের কার্য্য নির্ব্বাহার্থ কোন কোন অনাদৃত অরণ্যবাসী হিন্দুজাতির ব্রাহ্মণত্ব বিধান করিয়া কার্য্য সিদ্ধ করিয়া লইয়া ছিলেন; কারণ উৎকল ব্রাহ্মণেরা দেব-পূজা কিম্বা পাচকের কার্য্য করিলে আপনাদিগকে পতিত বলিয়া বোধ করেন। সম্বর্গী ব্রাহ্মণদিগের দেহ সংগঠন দেখিলেও মনে যেন ইহারা গোরবাবিত আর্য্যবংশোদ্ধব নহেন। আমি কথনও একজন গৌর-কাস্তি রঘুনাথপন্থী ব্রাহ্মণ দেখি নাই। সাধারণত: ইহাদের নাসিকা কুদ্র এবং হমু বিস্তৃত।

বাঙ্গালা প্রবচন। *

वि, वू, वृ।

১। বিকারী রোগীর জলপান।

২। বিক্রমপুর পাঠান (বিক্রয় করা)।

৩। বিচমোলায় গলদ।

৪। বিছের কামড়।

৫। বিড়াল তপস্বী।

৬। বিড়ালের ভাগ্যে সিকা ছেঁড়া।

৭। বিদ্যারত্বং মহাধনং।

৮। विদ্যার সমান নাই শরীর ভূষিকা।

৯। বিদ্যাশৃন্ত ভট্টাচার্য্য।

১ । विश्वादनत ८ हा वृक्तिभान् वरः।

১১। विधित्र निर्वाकः।

১২। বিধাতার বাজী,
কেউ থায় পোলাও ভাত,
কেউ থায় কাঁজী।

১৩। বিধবার একাদশী করিলে পুণ্য নাই, না করিলে পাপ

১৪। বিনা দানে মথুরা পার।

১৫। বিনা বাতাসে গাং (বা গাছ) নড়েনা।

১৬। বিনা মেঘে বক্সাঘাত।

১৭। বিপত্তে মধুস্থদন।

১৮। বিপাকে প'ড়ে রাম নাম।

ইহা নানা স্থান হইতে সংগৃহীত। একই
বচন বলদেশের ভিন্ন ভিন্ন স্থানে ভিন্ন ভিন্ন
কথার চলিত আছে, এ জন্ত সকলের সঙ্গে
বিলিবে না। পাঠক পাটিকারা উহাদের জানা
ব্ল কথা পাঠাইলে আদেরেরর সহিত গ্রহণ করিব।
বা, বো, স।

১৯। বিবাদের টেরা কথা, জ্বরের মাথা ব্যথা।

२०। विद्य कृताल ছालनाग्र लाथि।

२२। विदयत नमय विनिर्मादनत मञ्ज।

२১। विद्य इ'त्न चत्र हत्न ना।

২৩। বিষের সময় কন্তা বলে—কি কর্বো?

২৪। বিল শুকাবে যথন, বকেব আমোদ তথন।

২৫। বিশকর্মায় বেটা বেয়াল্লিশকর্মা।

২৬। বিশ্বাদে মিলিবে কৃষ্ণ তর্কে বছুদুর

২৭। বিষ হারামে চোঁড়া।

२৮: विषकुष्ठः পয়োমুখং।

২৯। বিষদাঁত ভাঙ্গা।

৩ । বিষম সমস্থা।

৩১। বিষয় বাজিলে ব্যবস্থা বাড়ে।

७२। विषय विषयभीषधः।

৩৩। বিষ্ঠায় ঢিল মারা।

৪। বিস্তর বা'ড়ে পতন।

৩৫। বিস্তর সন্ন্যাসীতে গান্ধন নষ্ট।

৩৬। বুকচেরাধন।

৩৭। বুকে ব'দে দাড়ী উপড়ায়।

৩৮। বুচকির তোন, সদাই মন।

৩৯। বুঝতে নারি সেক্রার (তাঁতির) ঠার.

বলে এককথা করে আর।

४०। বুড়ো গাইয়ের বাচ্চা।

৪১। বুড়ো বয়সে ধেড়ে রোগ।

৪২। বুড়ো ম'লে খুনের দায়।

- ৪৩। বুড়ো সালিকের ঘাড়ে রোঁ।
- 88। বুড়ো হলে বায়াতরে পায়।
- ৪৫। বুড়োর কাজ নাই ভাঙ্গে আর বাঁধে, বুড়ীর কাজ নাই চা'লে ধান ফেলে আর বাচে।
- ৪৬। বুড়োর বুড়োর কথা হয়,
 প্রতি কথার কাশি,
 বুবার বুবার কথা হয়
 প্রতি কথার হাসি।

- ৪৭। বুদ্ধিগুণে হা ভাত, বুদ্ধিগুণে থা ভাত।
- ৪৮। বৃদ্ধিয়স বলং তস্তা।
- ৪৯। বুদ্ধে বৃহস্পতি।
- ৫•। বুনলাম ধান হইল তিল,
 ফলো রুদ্রাক *, থেলাম কিল।
- ৫>। वूलव्रलत मांधा कि वर्षे कल राजा ?
- ৫২। বুদ্ধস্থ বচনং গ্রাহং।
- ৩ে। বৃন্দাবনে আগুণ লেগেছে। †

ফল্গূৎসব।

দ্বিতীয় পরিচ্ছেদ।

আজ বসস্ত পূর্ণিনা ! পণ্ডিত রাজনাথের স্থ্রহৎ প্রাঙ্গণে আলোকমালায়
উজ্জ্বলিত। নানাবিধ পত্র পুল্পে প্রাচীর
শোভিতেছে। উপরে চাক্চিকাময়
চক্রাতপ। বিস্তৃত কার্পেটের গালিচার
উপরে "কোকিলা"ও স্কুদরী বাই স্থতান
ধরিয়া নিমন্ত্রিতাণের হর্ষবৃদ্ধি করিতেছে। আতর কুসুম গোলাপজলের
পিচকারী প্রোত বহিতেছে।

উপরে দিতল বারাণ্ডার উপরে
নানা বর্ণের চিকের ভিতর দিয়া পুরনারীগণ উৎসবে যোগ দিতেছেন।
গৃহটি যেন আনন্দে ভরপুর, ভামরাণী কুটমিনীবর্ণের সমাদরে নিযুক্তা। সকলকে
সম্ভাবে অভ্যর্থনা করিতেছেন, তাহার
নিকট বসন ভ্ষণের গোরব নাই।
প্রেম্মণী যেন প্রাণ খ্লিয়া প্রীতিভরে

কিন্তু তাহার রূপাদিদি যে এমন আনদে আসিয়া মিলিতে পারিল না, ইহাই তাহার একটা গভীর ক্ষোভের কারণ। আজ ছই বোনে কত ফাগ থেলিবে, ন্তন বাগানের গোলাপ তুলে খোঁপায় পরাইয়া দিবে, কত থেলা থেলিবে কয়নায় আঁকিয়া রাথিয়াছিল, তাহার একটও সফল হইল না।

অন্তান্ত সথীগণ সকলেই আদিয়াছে, কেবল রাণীর প্রিয়সহচরী কিশোর-মোহিনী এতক্ষণে আদিয়া পৌছিলেন। রাণী তাহার গলাটি জড়াইয়া ধরিয়া কহিলেন "এতক্ষণে বৃঝি তোমার ছুটি হলো, আমি যে সেই অবধি একা থেটে থেটে খুন হকি।"

কিশোরী কহিল "হাঁ ভাই আমার

^{*} ওকড়া।

[†] वैष् कृषा वा (भारतेत्र काला।

একটু দেরি হয়ে গেছে, তবে দেখ আর একজন বেশী এনেছি। যেই আমি বেরুচিচ, দাদা এসে বল্লেন আমিও যাব. মদনকে রূপাদের আর হতে ভূলে নিতে হবে।" এই বলিতে বলিতে মদন ও নন্দলাল উভয়ে বাড়ীর ভিতর আসিয়া উপস্তিত হইলেন ও রাণীর মাতাকে ডাকিয়া যথারীতি অভি-বাদন করিলেন। রাণীর মাতা কুশল বার্ত্তা জিজ্ঞাদিলেন। হু চার কথার পর নন্দলাল কহিলেন তবে রাণীর বিবাহটা এই উৎসবের পরেই কি দিতেছেন? রাণী ও কিশোরী একটু অন্তরালে গেলেন, কিন্তু কথা বার্ত্তায় কান ছিল।

মদন অতি সাবধানে একটি দীর্ঘ-নি:খাস তাাগ করিলেন।

গৃহিণী কহিলেন "হাঁ বাবা, আমার हैका चाष्ट्र यं भीच भाति भिया एक नि, রাণীর ষেটের এই পোনর বছর যাটেচ. আর বাড়স্ত গড়ন দেখতেই পাচচ।

মদন যেন আর তথন বেশী ওকথা ভানতে পারিলেন না, নন্দলালকে বলি-লেন বাহিরে আমাদের জন্ম যে অনেক काक द्रायाह, अम अथन यारे।

मननरमाहन आब कान यन किছू অন্তমনত্ব ভাবে সর্বাদাই থাকেন। विल्मिष्ठः त्रागीत महिङ दिश्य इहेटनहे कि বেন একপ্রকার অপ্রস্তুত ভাব আসিয়া তাঁহার মনকে আক্রেনণ করে। তিনি **मिशास्त्र क्षांक्रि**ड भारतन ना, कार्बार সরিবা পঢ়িতে হর। রাণী তাঁহার এই कি ব্যুতে বাকি আছে ?"

নতন ভাবে কিছু তত্তিত হইয়া পড়িয়া-ছেন। তথাপি নিজের মনকে অবিখাসী। করিতে পারিছেছেন না। এ যে তাহার পক্ষে অসম্ভব ভাবনা। বাল্যের সরন নেহ এখন প্রণয়রূপে কুটিতে না ফুটিতে ভাঙ্গিয়া পড়িবে, এ কথা মনে আনিতে কি রাণীর প্রাণ প্রস্তুত ?

এইবার রাণী ও কিশোরী নির্জন পাইলেন। কিশোরীর বৃদ্ধি বড় তীক। মদনের লুকায়িত দীর্ঘধাস সে ধরিষা-ছিল, কিন্তু এতক্ষণে বলিবার স্থযোগ হয় ন†ই।

রাণীর চিবুক ধরিয়া কহিল "তবে ভাই এইবার তোমার বিয়ের ঘটাটা আছে।"

রাণী—হাঁ তাই দেখছি "যার বিমে তার মনে নাই, পাড়া পড়সির খুম নাই." তোমার নিজের বিয়ে পর্যায় আমার জন্ম ভারি বাস্ত হয়ে পডেছ দেখছি ?

किरगाती करिल दंग डाई ऋशतानी, এখন বেশ দেরেছেন ত, তার বিয়ের কি হলো ভনেছ কিছু?

"তুমি যে বিরেপাগলা হয়ে পড়েছ! না আমি এখনও সে বিষয়ে ভনি নাই ত।"

কিশোরী রাণীয় মুখের দিকে হির দৃষ্টিনিকেপ করিয়া কহিলেন আহা (क्यन गत्रल मनिष्, किड्ड खान नारे।

"কেন ভাই কি বুঝ্বো,সার এপন্ত

কিশোরী আর চাপিরা থাকিতে গাঁরিল না—বলিল আমি গুনেছি রূপার মাতা নাকি মদন দাদাকে ভারি ধরে-ছেন, আর তিনিও কোনমতে অমত করিতে পারিতেছেন না।

রাণীর জনয়ে যেন কোপা হইতে
সহসা তীক্ষ বাণ আসিয়া মর্মান্থলে পশিয়া
গেল। কহিল ভাই কিশোর! আর
ভানিতে চাহি না, আমার মোহ
ভালিও না, আমি যাহাকে জন্মাবধি
চিরসঙ্গী জানিয়াছিলাম, তাহাকে পরের
মনে করিতে আমাকে শিখাইও না।
স্থী! আমাকে সেই মুমঘোরে ডুবিয়া
খাকিতে দেও, দেই স্থেসপ্প আমি
আজীবন দেখিব। এই বলিতে বলিতে
ভাহার ছই চক্ষু দিয়া শত ধারে অঞ্ধারা
বহিতে লাগিল।

"হাঁ ভাই সত্যই কি পুরুষের প্রেম সম্পূর্ণ রূপজ।"

কিশোরী সথীর কাতরতায় বড়ই
বাথিত হইয়া বাম হতে গলা জড়াইয়া
ব্কের কাছে মাথাটি লইয়া আকুলভাবে
বীয় প্রাণের সাস্থনা ঢালিয়া দিতে বাগ্রা
হইলেন। আঁচল দিয়া অঞ্পূর্ণ নেত্র
ম্হাইয়া দিতে দিতে কহিলেন "আমি
তোমায় ব'লেবড় ভুল করে কেলেছি।"

যদিও রাণীর প্রাণে দাঁকণ আঘাত লাসিরাছে, হাদরের প্রশস্তা যায় নাই, গদ পদ বচনে কহিলেন "ভাই কুয়াসায় মেন ক্তকণ ঢাকা থাকে? হউক মদন বাহাতে স্থানী হয় আমিও তাহাই

শিথিতে চেষ্টা করিব, কিন্তু কিশোরী! আমি যেন এখনও নিজেই নিজের কাছে প্রতারিত হইতেছি।

কিশোরমোহিনী রাণীকে অন্তমনস্ক করিবার জন্ত কহিলেন চল না ভাই একবার নৃতন বাগান দেখে আসি।

শিশ্ব চন্দ্রকিরণ উদ্যানের বৃক্ষরাজির উপর ছড়াইয়া পড়িরাছে।
মধ্যস্থিত সরোবার খেত কুমুদ গুলি চাঁদ
পানে চাহিয়া আছে। সৌরভে চতুর্দ্দিক
আমোদিত। সরোবরের তীরে এক
থানি বেঞ্চের উপর মদন মোহন ও
নন্দলাল মুখোমুথি হইয়া বসিয়াছেন।
মদন কহিলেন ভাই আমি কি করিব ?
কর্ত্তব্যের অন্থরোধে নিজের স্থ্য নষ্ট
করিতে পারি, কিন্তু সে সরলাকে
কিরপে নৈরাগ্রের মধ্যে ফেলিয়া দিব ?
আহা! অমন গোলাপ কলিকা পাছে
হস্তিপদ দলিত হয়, ইহা ভাবিলে আমি
স্থির থাকিতে পারি না।

"মদন! কিসে তোমার এমন পরি-বর্ত্তন হইল। আহা! রাণীর চির বিখাস কিরপে ভঙ্গিতে উদাত হইলে! তোমার মন কি কিছু মাত্র বিচলিত হইতেছে নাং"

না ভাই আমি হৃদয় সংগ্রামে একেবাবে পরাস্ত হয়েছি। হয়ত এক দিন
সংসার আমাকে "নিষ্ঠুর প্রভারক"
আখ্যা দিবে, কিন্তু তুমি ভাবিরা
দেখ, রাণী এক জন ধনবানের কভা,
তাহার পিতা জনায়াসে আমা অশৈকা

স্থপাত্তে তাহাকে দিতে পারেন, কিন্তু
ক্লপরাণীর বিধবা মাতার কে আছে ?"
নদ্দণাল মদনের কথার বাধা দিরা
কহিলেন, "মদন! তুমি কর্ত্তরাপরায়ণ
পূক্ষ বট, কিন্তু ভাই তোমার হদরে
প্রেমের বন্ধন নাই।"

"নদলাল ! তুমি আমার স্থানে হইলে আর এ কথা বলিতে পারিতে না। তা ছাড়া আমিও ধর্মত কোন প্রকারেই রাণীর সহিত সম্বন্ধে আবন্ধ এখনও হই নাই।" এই কথা বলিতে বলিতে পার্মস্থ মল্লিকা ঝাড়ের পশ্চাতে কি শব্দ হইল. উভয়েই চমকিয়া উঠিলেন এবং সেই **क्रिक अञ्चनित्र इहेगा (वर्ग गमन** यांश (मथित्नन. করিলেন। গিয়া ভাহাতে একেবারে অত্যস্ত ভয় বিধাদে আশ্চর্যাবিত ! একি ! রাণীর স্থবর্ণময় দেহ ধানি মৃচ্ছিত হইয়া ভূমে পড়িয়াছে, কিশোরমোহিনী মুপে জল সিঞ্চন ও অঞ্চল দিয়া বীজন করিতে-ছেন। পরে মদনের আর কারণ অফু-ভব করিতে চেষ্টিত হইতে হইল না। ভাবিলেন হার ! আমিই বুঝি দকল অন-র্বের মূল হইলাম। প্রাণ অমুতাপে পুড়িতে লাগিল।

নম্বলাল সত্তর বাড়ীর ভিতর গিয়া
মাতাকে সংবাদ দিয়া চিকিৎসকের
নিকট গোলেন। বুড়ো দাসী কাঁদিতে
কাঁদিতে বাহির বাটীতে গিয়া উপস্থিত,
"মুগ্রা মুশার গো রাণী বিবিকে কিসে
ধরিক পো! এত রেতে নৃতন বাগানে

গিরে ছিলো, আইবড় মেরে না জানি কোন্ দেবতার দৃষ্টি পড়িল, শীগগির চল দেথ্বে তারে। '' পণ্ডিত জী সহসা রাণীর পীড়ার সংবাদে ব্যাকুল হইয়া মজলিশ তালিয়া দিলেন ও নৃতন উদ্যানে গেলেন। এই মৃহুর্তে যে রক্ষভূমিতে আনন্দের স্রোত বহিতেছিল, নিমেষের মধ্যে তাহা বিষাদের মেঘে ঢাকিয়া পড়িল, ঐক্রজালময় জগৎ ক্ষণে নৃতন গেলা প্রকাশ করে।

বিতল গৃহে পালকের উপর রাণী শায়িত, মৃহ্বা এখনও অপনোদিত হয় নাই। মাতা পিতা বন্ধ বান্ধব সকলেই চৈতত্যের প্রতীক্ষক। চিকিৎসক কহিলন কেবল মৃহ্বা মাত্র, কোনরূপ মানসিক চাঞ্চল্যবশতঃ ঘটয়া থাকিবে। ঔষধ প্রয়োগে কিছুক্ষণ পরে চৈতত্ত্য লাভ হইল, কিন্তু সম্পূর্ণ নহে। অর্দ্ধ নিমীলিত নেত্রে অতি ক্ষীণস্বরে কহিল "কি শুনি লা ম !!"

করেক দিবস স্থাচিকিৎসার এবং
কিশারীর অবিপ্রান্ত যত্ন শুক্রার
রাণীর মন্তিকের চাঞ্চলা তিরোহিত
হইল, কিন্ত প্রাণের অন্ধকার ঘূচিল না।
জীবনে বৃশ্ধি চির আমাবস্তা বেরিল আর
ক্ষমণ্ড স্থের মধুমুরী জ্যোৎসা
ফুটিবে না!!

রাণীর শরীর দিন দিন ক্লশ হইটেত লাগিল, বর্ণ পাংগু হইল। জদর ঘোর নিরাশার শীড়িত। প্রার শর্মদাই জন্মধেই কাটে। এইরলে দিনের শর বিনা মানের পর মাস সমাগত হইতে

সাগিল। নিদাবের থর তাপ আর রাণার
উত্তপ্ত প্রাণ সহিতে সক্ষম হইল না।

রাণী আবার অত্যন্ত পীড়িত। সেই

নৃতম বাগান গৃহে আজ রাণীকে বায়ু

সেবন করাইতে আনা হইরাছে। রূপাও
ভাহার মাতা দেখিতে আদিয়াছেন।

মদমমোহন নিজে প্রাণপণ করিয়া
রাণীর জীবন রক্ষার জন্ত ব্যথ্র, কিন্তু
আর আশা কই ? অন্তাপের জালায়

মদন মর্মে মর্মে দয় হইতেছেন। এদিকে
বেলা অবসান হইয়াছে, রাণীর রোগের

শকার আগমনে প্রাকৃতিও দ্বির হইলেন রাণীর মন্তক বিঘূর্ণিত হইয়া উঠিল, খন ঘন খাস বহিতে লাগিল। একবার আবার সেই ফ্লীর্ঘ নয়ন ছটী বিক্ষারিত করিয়া দেখিলেন মায়ের বুকের উপর পজিয়া গলা জড়াইয়া যেন কিছু বলিতে উৎস্ক কিন্তু পারিলেন না। চক্ষের ছই পাশে ছটা মুক্তা বিন্দু দেখা দিল। এইবার কাতর দৃষ্টিতে মদনের দিকে চাহিয়া জন্মের মত বিদায় লইলেন। সকলা জালা যস্ত্রণার অবসান হইল, চির শাস্তিময় ভবনে রাণী প্রবেশ করিলেন।

অদ্ভুত বিবরণ।

১—আকাশ বুড়ীর সূতা।

পাঠিকারা অনেকেই আকাশ বৃড়ীর হতার কণা শুরাছেন, কিন্তু কেহ কি
ইহা এ পর্যান্ত দেখিয়াছেন ? কেহ কেহ
হয়তো ইহা আকাশ কুসমের ভাষ
ক্ষনীক পদার্থ বলিয়া উড়াইয়া দিবেন,
কিন্তু বাস্তবিক ইহা অলীক নহে।
ক্ষাকাশ হইতে এরপ হতার গুলি বা
ভাল মাঝে মাঝে পড়িয়া থাকে। কিছু
দিন কুইল আমেরিকার অন্ত:পাতী
গুলোবিশ নগর হইতে এক ব্যক্তি
আমেরিকার প্রসিদ্ধ বিজ্ঞান পত্রে প্রকাশ
করিরাছেন বেগত ২০শে সেপ্টেম্বর (১৮৯২)
বুটির সমন্ত এক লালা হতা পত্তিত

হয়। তিনি তথন কুড়াইয়া লইয়া তত্ততা বৈজ্ঞানিক বিদ্যালয়ে রাসায়নিক বি-শ্লেষণ জন্ম পাঠাইয়া দেন। পরীক্ষক ডাক্রার জর্জ মারক্স সেসম্বন্ধে প্রকাশ এই প্রকার মস্তব্য করিয়াছেন।

এই স্তা উদ্ভিদ পদার্থজাত নহে,
ইহা জান্তব রেশম। বিশ্লেষণ দারা প্রমাণিত হইল যে ইহা এক জাতীয় মাকড়দার লালা-ক্ষরিত জালতন্ত। এই জাতীয়
মাকড়সারা সহস্র সহস্র একত্রিত হইয়া
দলবদ্ধ হয় এবং শৃক্ত পথ দিয়া এক দেশ
হইতে অপর দেশে গমন ক্রিয়া থাকে।
ইহাদিসের ঘাইবার সময় এরপ বৃহদায়তন জাল নির্মাণ করিয়া থাকে ধে

ভুদুরো শৃত্যদেশ আছের হইয়া থাকে। বুটির সময় জলবিন্দু পাত ছারা ইহা ভারী হয় এবং তম্ভ সকল ছিড়িয়া গুড়া-ইয়া তাল পাকাইয়া বৃষ্টির সহিত পতিত इस्र। তिनि वटलन ১৮৯১ शृष्टीटकत ১५ই নবেম্বর দিবদে কালিফর্ণিয়া প্রদেশেও এক্লপ স্তার তাল পাইয়াছিলেন। আশচর্যোর বিষয় যে গত চারি বৎসর ক্রমান্তরে অক্টোবর ও নবেম্বর নাসেই তথায় এইরূপ সূতার ভাল পাওয়া যাইতেছে। এই জাতীয় মাকড্নাকে (Nephila) মাকড্দা বলে। ইহাদিগের তম্বজাল সম্পূর্ণ শুভ্র ও চিকণ। ইহাতে কার্পাদ ও রেখমের অংশ আছে,রেশমের আমাদিগের দেশে ভাগই অধিক। প্রচলিত আকাশ বুড়ীর স্তা এইরূপ মাকড়সার জাল ছেঁড়া সূতার তাল দেখি-য়াই কথিত হইয়াছে বোধ হয়।

২—লাইকোশ জাতীয় মাকড্রা। দক্ষিণ আমেরিকার লাগ্লাটা প্রদেশ ভ্রনকারী প্রাণিত্তবেভা হড্সন সাহেব একদা অখারোহণে ধীরে ধীরে গমন করিতেছেন এমন সময়ে হঠাৎ একটা মাকড়সা আসিয়া তাঁহাকে আক্রমণ করে। মাক্ডসা ঘোড়ার পদবিকেপের সহিত সমবেগে লাকাইয়া লাকাইয়া প্রায় তাঁহার উপর পতিত হয়; এমন সময় ভিনি চাবুক হাঁকাইয়া তাড়া করিলেন। চাবুকের উপর काकफ्ता नाकारेया পঞ্জিল এবং সদপে তাঁহার হস্ত পক্ষা করিরা অগ্রসর হইতে লাগিল। হড় করিরা তীর্বে বা উপরনে তপ্তা বারা

সন ঘোর বিভাট দেখিয়া মাক্ডমা স্হিত চাবুক গাছটা দুরে ছুড়িয়া ফেলিয়া দিলেন এবং ঘোড়াকে জড়ত-বেগে চালাইলেন। এইরপে প্রায়ন করিয়া তিনি মাকড্সার হস্ত হইতে রক্ষা গাইলেন। তিনি বলেন এই জাতীয় মাকড্সা অতান্ত ভয়ানক। ইহাদিগের দংশন ও লালা বিশেষ অপকারক। ইহারা প্রস্প্র জাল বিস্তার করিয়া লুকাইয়া কেন্দ্রবিদার ভাষ ভন্মধ্যে থাকে এবং যথনি কোন আগম্ভক জয় তাহার সংস্পাশে আইসে. অমনি বেগে তাহার উপর পতিত হয়। যখন ইহারা মানুষকে প্র্যান্ত আক্রমণ করিতে ছাড়ে না, তথন যে ইতর জন্তুদিগকে কিরূপ বিপদাপন্ন করে তাহা সহজেই অকুমিত হইতে পারে।

(৩) হুহানাকো জাতীয় উষ্ট্র। এই জাতীয় উষ্ট কেবল দকিণ আমেরিকায় দেখিতে পাওয়া যায়। हेहाता आकारत आमानिरशत रमनीत. উট্ট অপেকা কিছু কুত্ৰ বটে, কিন্ত দেখিতে অতি সুত্রী। অক্তান্ত বিষয়ে लाय এতদেশীय উद्वेतिरशतरे अयुक्तभा কৈন্ত ইহাদিগের একটা চসৎকার স্বাভা-বিক জ্ঞান আছে যাহা অক্ত লাতীর উট্ট বা ইতর জন্তুদিগের মধোঁ দেখা যায় না। মহুব্য (সকল দেশীয় না হউক) কোন কোন দেশে সংস্থার বশতঃ অভিষ্কাৰ উপস্থিত বৃষিতে পানিলে বৈরাগ্যাৰ্লখন

জীবনপাত করিয়া থাকে। কিন্তু ইতর व्यक्तिरात मर्था ७ रव এक्रम मःकात আহৈ তাহা এতদিন কেইই জানিত ন। এই হয়ানাকো উষ্ট্র সাংঘাতিক রোগাক্রান্ত হইলে অথবা আও জীবন নাশের সম্ভাবনা বৃঝিতে পারিলে তৎ-क्रगा९ निर्कत वनतिर गमन करत। তাহার সঙ্গীগুলি • তাহা জানিতে পারিলেও কেহ তাহার অফুগামী হয়

না। মুমুর্ উট্ট অভীট স্থানে উপস্থিত হইয়া কিরূপ তপ্তা বা যোগ সাধন ঘারা দেহ পাত করে তাহা জানা নাই বটে, কিন্তু সে যে মরিবার জন্ত তথায় গমন করে ও প্রাণ ত্যাগ করে, তাহার সত্যতা বিষয়ে সন্দেহ নাই। প্রাণিতত্ত-বেতা ভারউইন, ফিট্জ্রয় ও হড্সন ইহা প্রত্যক্ষ করিয়া লিপিবদ্ধ করিয়াছেন।

মূতন সংবাদ।

आरमितिकांत हिकारशा विश्व अपर्नेनी দৈথিবার জন্ম আগামী ফেব্রুয়ারিতে কোনও কোনও বাঙ্গালী রমণী যাতা **ক্ষরিবেন** এ সংবাদে আমরা অতিশয় জ্মাহলাদিত হইলাম। হিন্দুরা সমুদ্রযাতা ু**ক্রিতে** পারেন,এ সম্বন্ধে অনেক বড় বড় প্রিত মত দিয়াছেন। আমরা আরও দেখিয়া আনন্দিত হইলাম বোমাইয়ের करमठें की त्यातावकी त्वाल्यांनी हिन् व्याकी निगटक विकारगारक लहेशा शहेवात জন্য বিশেষ ব্যবস্থা করিতেছেন। তাঁহা-িদের ঠিকানা বোঘাই ১৫ নং আপলো বাঁহাকা বাইতে ইচ্ছা করেন, >गा स्क्यातित शृद्ध उंशितत निक्छे आदियमा कत्रिर्दन। জ্ঞাংখ্ৰা বিষয় नंक्य जांदारम्य निक्षे निश्रित कानिए भाक्तिरवन ।

े २ । अञ्चलद्वरम अनुकान वस्त्रा-

পিগট বি এ কলিকাতা বিশ্ববিদ্যালয়ের বাইস চাজেশর হইয়াছেন।

৩। আগামী ২৮এ জামুয়ারি বিশ্ব-বিদ্যালয়ের কনভোকেশন মহাসভায় क्यांत्री हेन्निता ठाकूत धवर क्यांत्री প্রিয়ম্বদা বাগচী বি এ উপাধি এবং কুমারী ফুোরেন্স হলতে এম এ উপাধি পাইবেন।

४। क्यांती द्वांम शाविन्नताकृत् নামী এক হিন্দু রমণী মাক্রাজ মেডিকাল কলেজে ডিপ্লোমা পান, এখন তিনি বাষিক ৫০ পাউও ছাত্রবৃত্তি লাভ করিরা अधिनवतात्र विकिৎमानत्त अधात्रन कृति তেছেন। ক্রপার নামে এক সাহেক এই বৃত্তি স্থাপন করিয়াছেন।

এখন মেশ ৩ সপ্তাহে ভারত হইতে লওনে পৌছে। সম্রতি হিমালর নামক এক বাষ্পীয় পোড বোদাই শাধ্যারের স্থানে বিচারপতি জে কিউ ইইতে বাতা করিয়া ১৩। দিনে বিলাভ

পৌছিরাছে। আরও অন্নদিনে যাইবার উপার হইতেছে।

৬। আমেরিকার রমণীগণ স্বাধীন ও স্বপোবণক্ষম, অরের জন্ত আত্মীয়ের কুপাপাত্র হইয়া থাকেন না। তথায় এক টেলিগ্রাফের কাজে ৭০ **হাজার** ন্ত্রীলোক নিযুক্ত আছেন।

৭। বঙ্গদেশীর গবর্ণমেণ্ট অভিপ্রায় প্রকাশ করিয়াছেন, স্ত্রী ডাক্তারনিগকে আনিষ্ঠাণ্ট সার্জন ও হন্পিটাল আসি-ষ্ঠাণ্টের কার্য্যে নিযুক্ত করা হইবে।

বামারচনা।

সন্ধীত চৰ্চায় দোষ কি ?

এখন দেখা যাউক নৃত্যগীত ও বাদ্য-শিক্ষা করিলে হিন্দু স্ত্রীগণ লজ্জাশীল-তার সমাজের,নীতির ও চরিত্রের নিকট দোষী হয়েন কি না ? যশোহরের অন্তর্গত ৪৷৫ থানি গ্রামবাতীত আমার ভাগো পৃথিবীর অন্ত কোন স্থানই দেখা ঘটে নাই,আর দেখিয়াছি যশোহরে আমাদের বাসাবাড়ীর সীমাটুকু; স্তরাং আমি অনেক স্থলের স্ত্রী-আচারের বিন্দ্ বিসর্গও कानि नां, जारे आभारतत व अक्षरतत বরণের কথা তুলিতে লক্ষা করিলেও কর্ত্তবোর অমুরোধে বাধ্য হইয়া তুলিতে হইল। পাঠিকা ভগিনীগণ! আপনাদের मर्त्या यनि এই 'বরণ' কেহ না দেখিয়া থাকেন তবে আমাকে"বশোহরে বাঙ্গাল" বলিয়া হাস্ত সম্বরণ করিতে পারিবেন कि ? आंभारतत अमिरकत्र अस्तरक रम्थिका थाकिएवन एव वानी विवारहत्र ममत्र वा वत्रकत्न वाड़ी चामित्न वडे পরিচয়ের সমর কত কুলবধ্ সধ্বাগণ স্থাক্তিত হইয়া বর কল্পাকে বরণ वानुशायम ক্রিয়া বাহারা

দেখিয়াছেন উাহারা ব্ঝিয়াছেন যে ঐ বরণ আর কিছুই নহে, উহা সানাই ঢোল ও কাঁসী ইত্যাদি বাদ্যের ভালে তালে চুড়ী, বালা, হীরা, পান্না শোভিত হস্ত হ্থানিকে নৃত্য করান মাত্র, এই মুন্দর বরণ দেখিতেও মনে বেশ কৌতুক উপস্থিত হয়, বরণ দেখিবার **জন্ত অপ**রি-চিত বর্ষাত্রিগণ ও অতাত স্ত্রীপুরুষ্গণ বাসীবিবাহের বরণের সময় সমবেত হইয়া থাকেন। হারমোনিয়**ম বাজান**ও আর কিছুই নহে, উহা হক্ত পদ বারা যন্ত্রের সাহায্যে গান করা। আজ কাল আমাদের মধ্যে অনেকে হারমোনিয়মও বাজাইয়া থাকেন, ভা**ল মন্দ বেমন হউক**ি একটু আধটু উহা প্রান্ন সকলেই ভানেন, **এবং বাজাইয়াও খাকেন ও বরণ করি-**য়াও থাকেন, তবে বরণটা ক্ষলণা-ক্ষপিণী সধবাগণেরই একচেটিয়া। অতএব এখন দেখা বাইতেছে যে বদি ছার-মোনিয়ম্ বাজান ও বরণ করায় দেবি না হয়, তবে কঠখনের বারার বা বীশার সাহাব্যে গান করার ও অভাগি সর্কাশন

কি ? অঙ্গন করার কোনও দোব আছে

কি ? অঙ্গনকালন ধারা নৃত্য করিলে

ক্রিম্নাইকের কার্য্য হয় কি না বা অভ্ত কোন উপকার আছে কি না জানি না,

কিন্তু সঙ্গীতে সমধিক উপকার পাইবার

আশা করা যায়।

প্রথমতঃ স্থকণ্ঠ গায়কের তাল, মান, শায় বিশ্বস্থার সঙ্গীত প্রবণ করিলে, মনে এক অনির্বচনীয় আনন্দ উপস্থিত ছেন এবং সেই গানের সহিত নিজের লাণ যেন ভাবনয় হইয়া মিশিয়া যায়। मुह्कार्यानि हरेट अवनत नहेग्रा अव-শ্রেই অলাধিক পরিমাণে বিশ্রাম করা আবশ্বক এবং সকলে উহা করিয়াও বাকেন। কিন্তু এই বিশ্রামটা অন্তঃপুর-वाजिमीनर्गत निष्माक करत्रक श्रकारत इंडेग्रा थाटक:--कुछकर्णत छात्र मिरनत বেলার নিজা যাওয়া, বেশ বিভাস করা, ভাস খেলাও পাঁচজনে বসিয়া দেশের लाटकत ऋथ, खन ও দোষानित সমা-र्लाह्ना कता अथवा शातिवातिक रमाय ও অভাবের বিষয় তুলিয়া ভারী মুখে রাগে গরগর করা। এরূপ বিশ্রাম অপেকা मनीज वामानि निकाय विज्ञान कता कि অধিক সম্ভোষকর নহে ? দঙ্গীতের আমোদ विक्तिर जात्मान नश, এ कथा आमा-द्वित्र विश्वान नम् । येनि दक् र म्बनन द्य, क्रकी कूनजीत कर्शकत 🛇 वास्मात क्रत महनक पूत्र याहेरव, अमे कि वड्डा! किंद्र क्राहारक वक्तवा धरे (स. नब दोकान क कन्नू स्मध्या गांश रेन, भीक

বাদ্যাদি ওকি তাহাই নহে ? তাগাও ত শাঁথে একটানা ফুঁ দেওয়া ও জিভ নাডিয়া উটেচ:यत हनू (पश्यात अश्यक्त कि हुहे অধিক নহে। ইহাতেও যদি কাহারও আর কোন কথা থাকে. তবে তাঁহাকে জিজ্ঞাসা করি যে, বাসর্ঘরে নৃতন পরি-চিত একটা পুরুষের সমক্ষে উচ্চকর্ছে সঙ্গীত করায় যদি লজ্জার গায় আঘাত না লাগে, তবে চিরপরিচিত আগ্রীয়-গণের নিকট বা छांशामित कर्ल याग्र, এমন সঙ্গীতে বেশী লজ্জার বিষয় কি 🕈 আমাদের বিশ্বাস বীণা যোগে হউক বা কণ্ঠবোগে হউক সঙ্গীত নৈতিক, শারীরিক, আধাাত্মিক मामाजिक टकान ट्राट्य जीशन ट्रायी नदश्न.ं বরং সঙ্গীত বিষয়েরই-বিশেষতঃ আধ্যাত্মিক উন্ন-তির বিলক্ষণ সম্ভাবনা। গৃহকার্য্যাদি হইতে অবস্র গ্রহণ করিয়া করিয়া মনে মনে ঈশ্বর চিন্তা করিতে গেলে অতি সম্বর্ট নিদ্রাভিত্ত হইয়া পড়িতে হয়। সদসীতে ঈশবারাধনা করিলে নিজের মন ত ভক্তিরসে গ্রিয়া যাইবেই, অধিকস্ত শ্রোতগণের মনও সেই সঙ্গে নিমগ্ন হইয়া যাইবে, প্রমাণ -- त्रांम श्राप, नात्र महत्त्व, क्रमणांकाञ्च, নানক, মীরাবাই ও তুলসীদাস প্রভৃতির সাধন ও ভজন সঙ্গীতে কাহার মন না বিগলিত হয় ? রামমোহন রায়ের ব্রশ্ন-मकीट भाषांगं भाषा यात्र। अत्राप्त्र, চণ্ডীলাস, বিদ্যাপতি, নিধু ৰাবু ও গিবিশ বার প্রভৃতির প্রেম-সঙ্গীতে কাহার মন না উন্নত হয় ? (ক্ৰমশ)

বামাবোধিনী পত্রিকা।

BAMABODHINI PATRIKA.

''कत्याष्येवं पालनीया भिचगौयातियत्नतः''

কলাকে পালন করিবেক ও যত্নের সহিত শিক্ষা দিবেক।

७७१ जःथा।

মাঘ ১২৯৯—ফেব্রুয়ারি ১৮৯৩।

৫ম কর। ১ম ভাগ।

সাময়িক প্রসঙ্গ।

জীব রহস্য-ভবানীপুর কাঁসারি-পাড়া রান্তায় একটা পুকুরের शादत ছই জন শ্ৰমজীবী একটী বাঁশ চিরিতে-ছিল। এমন সময় একটা পর্ক হইতে ছই সর্প সম্মুধে পতিত হইল। ইহারা বিষধর সর্প। পতিত হইয়াই কুওলী করিয়া ফণা তুলিয়া কামড়াইবার উপক্রম করিল। শ্রমজীবীরা তাহাদিগকে ধরিতে বা মারিতে সাহসী না হওয়াতে তাহারা (वर्ग निक्रेष्ट् वरन थरवन कतिन। ৰংশগ্ৰৈত্মীক্ষা করিয়া দেখা গেল ভাহাতে কিছু মাত্র ছিল হিল না, স্বতরাং দর্প ছইটা যে কিরূপে তর্মধ্যে প্রবেশ করিয়াছিল, তাহার রহস্ত ভেদ করা প্রস্তরের স্তরের महक कार्या नहर। মণ্যে ভেক জীবিত থাকার কথা গুনা ষায়, কিন্তু ৰংশের পর্ব্ব মধ্যে সর্পের অব-স্থান এই নৃতন আবিষার।

দান—সম্প্রতি ম্যাডাম মাটিন
নামক এক জন ধনী বিধবার মৃত্যু
হইয়াছে। ইহার উইল পার্ফ্রে অবগত
হওয়া গেল যে তাঁহার জন্মভূমি টুলো
নগরের উন্নতির জন্ম ছই লক্ষ ফুল্লে
(Frank) দান করিয়া গিয়াছেন এবং
শ্রীয় অন্ত্যেষ্টি ও সমাধির জন্ম ১২০০
ফুলির রাথিয়া গিয়াছেন। কিন্তু উইলে
একটা অভ্ত কথা প্রকাশিত আছে বে
তাঁহার স্বামীর কবর হইতে যত দ্র
সম্ভব তত দ্রে যেন তাঁহার কবর
নির্মিত হয়। স্রীলোকটা বোধ হয় স্বামীর
জীবৎসময় তাঁহার নিকট হইতেও
নিকটে ছিলেন।

প্রকাশু বৌদ্ধমূর্ত্তি— এদা দেৱা প্রোমনগরের অনতিদ্রে ইরাবতী উপকৃলে একটা ক্ষুদ্র পাহাড় আছে। ইহা এক ক্রোশ দীর্ষ ও ০০০ পাদ উচ্চ।

এই নগের সমুখ ভাগে অসংখ্য বৌদ্ধ মূর্ত্তি থোদিত আছে। এমন কি ইহার তলদেশ হইতে চূড়া প্রয়ন্ত সমস্ত স্থানই মূর্ত্তিময়। মূর্ত্তিগুলির মধ্যে অনেকটীই বিংশতি পাদের কম फेक नदर। আবার অনেকগুলি চাক্চিক্যময় ধাতু-ঘারা গিণ্টিকরা, হহাতে স্থ্যালোকে অতি চমৎকার শোভা সম্পাদন করিয়া মূর্ত্তিগুলি শিল্প-নিয়মে থোদিত এবং দেখিতে অতি স্থন্দর। পেগু প্রদেশেও একটা প্রকাণ্ড মূর্ত্তি প্রতিষ্ঠিত व्यक्ति। देश वृक्षत्मदवत्र भग्ननावछा। वकरनव मिक्नि शार्ख छत निया अर्थन कतिया तिशाहिन न में खिंजी मीर्च २१० পাদ এবং তাহার স্বন্ধ দেশের প্রসরতা পাদ। পৃথিবীতে এতবড় দীর্ঘ মৃর্ত্তি বৰ্ত্তমান আছে কি না সন্দেহ। ইহা ইট্রকনিশ্মিত এবং পরিমিতরূপে গঠিত। অনেকে অমুমান করেন যে ইহা পঞ্চদশ খ্রীষ্টীয় শতাকীতে নির্মিত ইইয়াছে। বহদিন জঙ্গলে অদুখ ছিল, ট্রাক্টর বন কাটিতে কাটিতে আবিদার করিয়াছেন।

বিশ্ববিদ্যালয়—বোদাই বিশবিদ্যালয়ের প্রবেশিকা পরীক্ষার একটা
ইউরোপীর বালিকা সর্ব্বাথম হইরাছেন।
পত ২৮এ জামুয়ারি কলিকাতা বিশবিদ্যালয়ের পারিতোধিক দান সভা
হইরা গিরাছে। গ্রণর জেনারল ও
ব্তম বাইকালেলর বিচারপতি প্রিপট

বক্তা করেন। মিদ ফোরেশ নামী একটা বালিকা লাটিন ভাষায় প্রথম শ্রেণীর এম, এ, হইরাছেন, ইহার বিষয় উল্লেখ করিয়া রাজপ্রতিনিধি বিশেষ দস্ভোষ প্রকাশ করেন।

বরাহনগরে হিন্দু-বিধবাশ্রম — এই আশ্রমে হিন্দু-বিধবারা আপনা-দিগের আচার ব্যবহার ও ধর্ম অকুর রাথিয়া অনায়াদে থাকিতে পারেন। বরাহনগরের কয়েকজন হিন্দু-সমাজপতি এই আশ্রমের সহিত সংস্ট আছেন। ভট্টপল্লি-নিবাসী প্রসিদ্ধ গুরুবংশীয় প্রবীণ বান্ধণ পণ্ডিত, শ্রীযুক্ত ক্লফহরি শিরো-মণি মহাশয়, এই আশ্রম দেখিয়া এই মন্তব্য লিখিয়াছেন, "শ্রীযুক্ত শশিপদ वत्नाभाषारयव हिन्तू-विधवाध्यम पर्नन कतिया वड़ ख्रशी रहेलाम, এখানে हिन्दू-বিধবারা আপনাদের আচার ব্যবহার ও স্বধর্ম রক্ষা করিয়া থাকিতে পারে এবং करव्रकृष्टि तश्विवाद्य प्राच्या निष् হইলাম এবং তাহাদিগের আহারাদির স্থপালী ও শুদ্ধ ভাবের পরিপাটী দুষ্ট হইল। এরপ অনাথা স্ত্রীজাতির উপর যাঁহার এরপ সন্থাবহার, তিনিই ধন্ত। একণে আমি আশীর্বাদ করি, এই উপ-যুক্ত আশ্রমের ক্রমশঃ প্রমোন্নতি লাভ হইতে রহক।" প্রেসিডেন্সি বিভাগের স্থা-ইন্স্পেক্টর রায় রাধিকাপ্রসাদ মুখো-পাধ্যার ঘাহাত্বর এই আশ্রম পরিদর্শন করিয়া বিশেষ মানল প্রকাশ করিয়াচেন এবং এখানে যে বিধবারা প্রকৃত হিন্দুধর্ম

ব্লকা করিরা থাকিতে পারেন, এ বিষয়
তিনি স্পষ্টাক্ষরে তাঁহার মস্তব্যে প্রকাশ
করিরাছেন। তাঁহার মস্তব্য হইতে নিম্নলিথিত সংশটুকু উদ্ভ করা হইল।

"And the existing arrangements I can confidently recommend to Hindoos generally."

দেশের অনেক স্থানে অনেক হিন্দু
বিধবা নিরাশ্রয় হইয়া বর্ত্তমান সময়ে অয়

বজের কত কট্ট পাইতেছেন, তাঁহাদের
মধ্যে বাঁহারা এই আশ্রমে থাকিয়া শিক্ষা
লাভ ও কার্য্যের উপযুক্ত হইতে ইচ্ছা
করেন, তাঁহারা অথবা তাঁহাদিগের
অভিভাবকগণ এই আশ্রমে, অথবা
কলিকাতা সিমলা বলরাম দের ট্রীট নং
৩ সাগর ধরের গলিস্থ শ্রীযুক্ত কেদারনাথ
বন্দ্যোপাধ্যায়ের নিকট অমুসন্ধান
করিলে সবিশেষ জানিতে পারিবেন।

বিবিধ প্রবন্ধ।

মেঘের গতি।

সমুদ্র বা পর্বত হইতে শনৈঃ শনৈঃ উখিত হইয়া বায়ুর উর্দ্ধতন স্তরে উপনীত হইলেই মেঘের আকার পরিবর্ত্তিত হইয়া থাকে। যাঁহারা বর্ষাকালে হিমা-শব্বে বা অন্ত কোন অত্যুক্ত গিরিশিথরে আরোহণ করিয়াছেন, তাঁহারা দেখি-য়াছেন মেঘ সকল উৎপন্ন হইয়া কেমন স্থিরভাবে কন্দর বা উপত্যকা দেশে অবস্থাপিত থাকে। বৃষ্টিধারা পুনর্কার পরিষার হইলে শুত্র মেঘ রাশি স্থ্যা-লোকে যে কি এক অনির্বাচনীয় স্কর আকার ধারণ করে, তাহা যিনি না দেখিরাছেন তাঁহাকে বুঝান কঠিন। এই ভুল অলুরাশি স্থদীর্ঘ চক্রাতপের ক্লায় গিরিগাতো সংলগ্ন বোধ •হয়। অনেকক্ষণ এইরূপ ভাবে অবস্থিতি ক্রিয়া বীরে নীরে অবস্ত হইতেছে

বোধ হইতে থাকে। বাস্তবিক ইহার গতি তথন এত মৃহভাবে সক্ষান্ন হয়, যে প্রায় সহজে জানিতে পারা যায় না। কিন্তু যথনি ইহা যথেচ্ছামতে উপরি স্তবে উপনীত হয়, তখনই ইহার ভাৰ ও গতি সম্পূর্ণ পরিবর্ত্তিত হইয়া থাকে। देवक्कानित्कता निर्गय कतियाद्यान শীত ও গ্রীম কালে মেঘের উচ্চতার তারতমা হইয়া থাকে। মেঘ সকল অনেক নিমে অরস্থান করে। কিৰ গ্ৰীমকালে (Cumuls nimbus) স্থিলিত মেঘের নিয়দেশ ভূমি স্পর্ণ করিলে ও তাহার শীর্ষদেশ শীতকালের মেবের অপেকা অনেক উচ্চে উঠিয়া শীতকালে সর্ব্বোচ্চ মেবের গতি গড়ে ঘণ্টার ১০০ মাইল; কিছে অত্যন্ত ক্ৰতি বন্টায় ২৩০ সাইৰ

নির্দারিত হইয়াছে। যুরোপ অপেকা উপরিতন স্তর আমেরিকার বায়র অত্যন্ত ক্রতগামী, স্বতরাং তথার অত্যন্ত अफ रहेग्रा थारक। মেঘের সর্বোচ্চ ন্তর হইতে পৃথিবী সন্নিকট পর্যান্ত বায়ুর গতি প্রায়ই পশ্চিম দিকে প্রবা-হিত, ৪০০০ চারি সহস্র মিটারের উচ্চতর আবে মেঘের গতি প্রায় উত্তর পশ্চিম বাদকিশে পশ্চিম। পৃথিবী সন্নিকটস্থ স্তরের বায়ুর গতি কিঞ্চিৎ উত্তর পশ্চিম এবং এতহভরের মধ্যবর্তী স্তরে বায় দক্ষিণ পশ্চিমে প্রবাহিত হয়। हेहा मिक्शिनिक महा थावन व्यवन र्वा वरह. তথনি ঝড উপস্থিত হয়।

সাবান ব্যবহার।

ইংরাজদিগের অমুকরণে আমরা পরিবর্তের তৈলের সাবান ব্যবহার করিতে আরম্ভ করিয়াছি। কি জ এতদারা যে শারীরিক অনিষ্ঠ **ठ** र তংপ্রতি আমাদিগের দৃষ্টি নাই। ইংরা-জেরা বছকাল ব্যবহার করিরা এক্ষণে ভাহার অপকারিতা বুঝিতে পারিয়াছেন। ভাহাদিগের সংবাদ পত্র সকল তারস্বরে চিৎকার করিয়া তাহাদিগকে সাবধান ক্ষরিয়া দিতেছে এবং বিনা পরীক্ষায় ৰা চিকিৎসকের পরামর্শ বাজীত সাবান ব্যৰহার নিষিদ্ধ বলিতেছে। विकारने को नात जातक ংপ্রাছ মূল্যের সাবান প্রস্তুত হইতেছে। ভাছাতে নানা প্রকার বস্তর সংবোগে রাসায়নিক প্রক্রিয়া বশতঃ এমত দ্রব্য উৎপন্ন হইতেছে যে তদারা শারীরিক অনিষ্ট উৎপাদন করিতেছে। এই সকল ব্যাধি চর্মজ হইলেও বহু ক্ট্রদায়ক ও কথন কথন মারাত্মক হইয়া উঠে। অনেক স্থাসিত বা স্থান্ধি সাবানে এইরূপ বিষাক্ত দ্রব্যেব বাছল্য থাকে. স্ত্রাং তাহা একবারে পরিহার করা যাঁহারা সাবান ব্যবহার না করিয়া থাকিতে পারেন না, তাঁহারা স্বিশেষে প্রীক্ষা না ক্রিয়া ব্যবহার করিবেন না। নিলামে ফিরিওয়ালা ও সামাক্ত দোকানিদিগের নিকট যে কোন সাবান ক্রয় না করিয়া বিখ্যাত ঔষধালয় হইতে পরীকিত সাবান আনাইবেন।

হিমপ্রধান প্রদেশ।

পৃথিবীর মধ্যে সর্ব্বাপেকা হিমপ্রধান হুল সাইবিরিয়ার অতঃপাতী
ওয়ার্থোজাংক (Werkhojansk)
নিকটবর্ত্তী প্রদেশে। সেধানে তাপমান
যন্ত্র স্বান্তর নিম্নে ৮০ ডিগ্রী দেখা
গিয়াছে ও ৪০০ টারিশত পাদ নিম্নে
জমি আবিষ্কৃত ইইয়াছে। বেখানে
বরফ রাশির গভীরতা ৪০০ চারিশত
পাদ, তথার যে কিরপ শীতের প্রাহৃত্তার,
তাহা সহজেই অসুমিত হইতে পারে।
ভূগেংলবেন্ডারা এই স্থানকেই পৃথিবীর
ক্রেদেশ বলিয়া নির্দেশ-করিতেছেন।
এথনকার বরক বা নীহারয়াকী পৃথি-

বীর হিমানীযুগ (Glacial cpoch)
হইতে সঞ্চিত হইয়া আসিতেছে নতুবা
ইহার গভীরতা কখন এত অধিক হইত
না। ইতিপূর্বে য়াকুতক (Yakutsk)
নামক একটা স্থানকে পৃথিবীর কেন্দ্র
দেশ বলিয়া অহমান করা হইত। এ
স্থানটা ওয়াথে জিংক হইতে হই শত
কোশ দ্রবর্তী, কিন্তু এখন শেষোক্ত
স্থানটা হিমপ্রধানতম প্রদেশ বলিয়া
প্রতিপন্ন হইয়াছে।

স্ত্রীলোকদিগের পরিচ্ছদ।

একথানি প্রসিদ্ধ পত্রিকায় প্রদর্শিত হইয়াছে যে মুরোপীয় ও আমেরিকার ত্রীলোকদিগের মধ্যে পীড়ার প্রাবল্যের প্রধান কারণ তাহাদিগের অনাবভাক পরিছেদ। পরিছেদ বা অঙ্গরকার প্রধান উদ্দেশ্য স্বাস্থ্য প্রার রক্ষা করা। ঋতুর পরিবর্ত্তনামুসারে পরিচ্চদের পরিবর্ত্তনও একাস্ত আবহাক। কিন্ত তজ্জ্য শরীরকে পরিচ্ছদে বন্ধ রাখিয়া অকর্মণা হইতে দেওয়া উচিত নতে। স্ব॥স্থাই পরিচ্ছদের মুখ্য भानिया प्राप्त्रमिक। जान प्रथाहेत्व বলিয়াকতকগুলি অনাবভাক বস্তু অকে জড়াইলে তজ্জন্ত স্বাস্থ্য রক্ষা দূরে থাকুক, শীষ স্বাস্থ্য ভঙ্গ হইয়া থাকে। শরীরব্যাপী তাপ সমভাবে রক্ষা করিলে স্বাস্থ্য রক্ষার কার্য্য বাঁহারা দেহা-অভ্যাসবশত: সামান্ত বস্তবারা ৰরণ করেন, তাঁহাদিগের হস্ত ও পদ

অনারত থাকিলে বিশেষ ক্ষতি হয় না। কিন্তু বাঁহারা কটির উদ্ধ হইতে ১৬ বা ২• বার ফের দিয়। পরিচ্ছদের ছার। শরীরকে স্তম্ভিত করিয়াথাকেন, বাহি-রের বিশুদ্ধ বায়ু তাহাদের শরীর মধ্যে দুরে থাকুক, শরীরস্থ প্রবেশ করা রক্তও শরীর মধ্যে সঞ্চালিত হইতে পারে না। তাহার উপর হস্ত ও পদাগ্রভাগ হয় তো একবার মাত্র কেবল দন্তানা ও মোজা দ্বারা আচ্চাদিত থাকে। স্থতরাং শরীরের একদেশ অতাস্ত তাপ-বিশিষ্ট ও অভাদেশ শীতল হওয়াতে শীঘ্রই উৎকট পীড়া উপস্থিত হয়। অনেক বিলাতী রমণী পাঁচ সের সামগ্রী তুলিতে হয় তে! কত কট্টই অমুভব করেন, কিন্তু তাঁহারা আট দশ সের পরিচ্চদের কিছুমাত্র কুন্তিত হন না। কীণাঙ্গ গুরুভারে ব্যথিত হইয়া থাকে. লজা বা সভ্যভাত্মরোধে প্রকাশ করিবার যো নাই, কিন্তু প্রকৃতি তাহা সহ করিতে পারে না। ব্যথা বা পীড়া চাপিরা রাখিলে চাপা থাকে না, বরঞ্চ অত্যাচার নিবন্ধন বিভাগ কোপে আক্রমণ করিয়া शांक। এই कन्नहे के मुक्न सिट्न ली लाक मिराव मर्था छे ९ क छे छ ९ क छ পীড়ার প্রাহর্ভাব দেখা যাঁয়। অনেকের পরিচ্ছদ কেবল কার্পাস, রেসম বা পশম নির্ম্মিত বজের দ্বারা পর্যাপ্ত হর না, তাহার সৌন্ধ্য বৃদ্ধির অন্ত কুৎসিতাল গোপন করিয়া কার্চখণ্ড ও লৌহ নির্মিত

কাচলি • ব্যবহার করিয়া থাকেন।
ক্রীণাক সবল দেখাইবার জন্ম কার্চের
পাঞ্চি ব্যবহার তাহাদিগের মধ্যে
অবিরল নহে। এই সকল অস্বাভাবিক
ভার ও চাপের ছারা মাংসপেনী ও শিরার
ক্রিয়া সকল বন্ধ হইয়া রক্ত সঞ্চালনের
ব্যাঘাত হইয়া থাকে, স্মৃতরাং তাহার
প্রতিফলস্বরূপ পীড়াও অনিবার্য্য হইয়া
উঠে। আমাদের ইতর জন্তদিগের মত
অনু পরিবর্তনের সঙ্গে সঙ্গে গাত্রাবরণ
স্থারিবর্তনের বশবর্তী হইবার কারণ নাই
বটে, কিন্ত প্রেরোজন মত পরিচ্ছদ ব্যবহার করা কর্ত্ব্য। গ্রীম্মকালে শীতবন্ত্র

বা শীতকালে গ্রীম্বাস ব্যবহার করিলে যে শরীর ক্রিট হয়, তাহা সকলেই ব্রিতে পারেন। বুণা সভ্যতার অম্বর্নেধে অনাবশ্রক বা অপ্রচুর পরিচ্ছদ ব্যবহার করিয়া স্বাস্থ্যভঙ্গ করা কোন-রূপেই যুক্তিসঙ্গত নহে। যে সকল এতদেশীয় মরনারী বাহু সভ্যতামুরোধে এবং ইংরাজামুকরণে বেশ ভ্ষা করিতে প্রস্তুত হইয়াছেন, তাঁহারা এই প্রবন্ধ এবং বামাবোধিনীর পূর্বপ্রকাশিত "ক্রিম অঙ্গবিক্তি" প্রস্তাবস্তুলি পাঠ করিয়া সাবধান ইইবেন।

মহাভারত।

মহাভারত মহর্ষি বেদব্যাদ বিরচিত বিদিরা প্রসিদ্ধ আছে, কিন্তু আধুনিক পত্তিতেরা তাহার প্রতি সংশর করেন। কেছু কেছ বলেন ভাগবত, বিষ্ণুপ্রাণ ও মহাভারত যে এক লেখনীর মুখ হুইছে বিনির্গত হইরাছে, এরপ প্রতীতি হর মা,উহা সময়ে সময়ে রচিত ও সহলত হুইরাছে। ফলে মহুও ব্যাস নামে ভারতবর্মে আনক ব্যক্তি প্রাহৃত্ত হন, কেইরূপ ইউরোপের মধ্যে কান কোন মহান্থার নামে অনেকে পরিচিত হইরা বিরাহেন। বেদের বিভাগকর্তা ও মহাভারতের রচরিতার নাম কৃষ্ণ

বৈপায়ন ব্যাস। তিনি ক্লঞ্বর্ণ প্রযুক্ত ক্লঞ্চ এবং দ্বীপে জন্মহেতু বৈপায়ন নামে প্রসিদ্ধ।

মহাভারত অতিবৃহৎ ও অতি অভৃত গ্রন্থ।

এই গ্রন্থ অমৃতময় ফলে পরিপূর্ণ। এ

স্থধার একবার আস্বাদ পাইলে মান্থবের ক্ষ্ধা ভৃষ্ণা থাকে না, রোগ
শোক থাকে না। পূর্ণভাবে ভারত-রসে
মন রসিলে কাম,ক্রোধ,লোভ, মোহ,মদ,
মাৎসর্য্য বাস্তবিকই তিন্ধিতে পারে না।

মহাভারত একলক্ষ লোকে পূর্ণ এবং

অন্তাদশ পর্কে বিস্তক্ত। মনোবোগপূর্কক এই গ্রন্থ আদ্যোপাত্ত পাঠ করিয়া

দেখিলে ভারতবর্বের পূর্ককালীদ আচার

ব্যবহার, নীতি ধর্ম ও বিষর ব্যবহারের

[·] Steel ribbed corect.

অনেক পরিচয় প্রাপ্ত হওরা বার। ইহার অনেক স্থানে স্থাপ্টরূপে অনেক थाकात नीिक উপिषिष्ठ हरेबाएइ, धरः কেবল নীতি উপদেশের উদ্দেশেই श्चरतक উপाधानानि वर्निङ इटेशाहा। উপাখ্যানগুলি অতি মনোহর ও নানা শাল্কের দার দঙ্কন করিয়া রচিত ও বেদ চতুষ্টয়ের অমুগত। ইহাতে আয়-তত্ত্ব বিষয়ক সমাক্ মীমাংসা আছে। वह वह हरेल डे दक्षे डे दक्षे मीजि স্কল সঙ্কলন করিয়া এতদেশীয় অনেক পণ্ডিত প্রশংসনীয় নীতি শাস্ত্রসকল য়চনা দারা জনসদাজে প্রতিষ্ঠালাভ ক্রিয়াছেন এবং ভারতবর্ষের অনেক ক্ৰিও ইহার অনেক মনোহর আখ্যান অবশ্বন করিয়া অমুপম কাব্য নাটকাদি त्रहमा कतिया जनगरगत हिन्छ विस्मानम সাধন করিয়াছেন। বাস্তবিক ভারতের অন্তর্গত অনেক উপদেশ শ্রবণ করিয়া যে ভারতবর্ষীয় লোকে অনেক প্রকার নীতিজ্ঞান লাভ করিয়াছে তাহাতে আর সন্দেহ নাই। এই বিস্তীর্ণ গ্রন্থে প্রায় মহুষ্যের সকল প্রকার অবস্থাই বণিত আছে, স্তরাং ইহা হইতে স্কল ष्पत्रशत ष्रमुक्त्र उंशरम् श्राश्च रहेन्। লোকে সংসার যাত্রা নির্বাহ করিতে পারে। *

মহাভারত পঞ্চয় বেদ বলিরা উক্ত হইয়াছে।
 শ্বা নাই ভারতে তা নাই ভারতে।
 প্রের্ক দেবভায়া একলা সমবেত হইয়া তুলাবরের একথিকে চারিবেদ ও অক্তসিকে এই ভারতসংহিতা

মহাভারতের ছই জন টীকাকার,
নীলকণ্ঠ ও অর্জুন মিশ্র, তথাধ্যে অর্জুন
মিশ্র অপেকা পণ্ডিতেরা নীলকণ্ঠকে
অধিক প্রমাণ্য করিয়া থাকেন, কিন্তু
অর্জুন মিশ্রও একজন উত্তম
টীকাকার।

মহাভারতে কৌরব ও পাওবদিগের

যুদ্ধ সবিস্তর বর্ণিত আছে। বে স্থানে

যুদ্ধ হয়, তাহা অন্যাপি কুরুক্তের বিশির্মা
প্রসিদ্ধ রহিয়াছে, উহা আধুনিক দিলী

হইতে বড় অধিক দ্র নহে। পূর্বকালে
ভারতবর্ষে যে সমস্ত রাজগণ সাম্রাজ্য
করেন, তাঁহারা নানাবিধ বংশে বিভক্ত;

যথা,—হর্যাবংশ, চক্রবংশ, বৃষ্টিবংশ,
ভোজবংশ, গঙ্গাবংশ, ও গজপতিবংশ

ইত্যাদি। যদিও ঐ সকল বংশের

অধিকাংশই ধ্বংস হইয়াছে, তথাপি

হিল্ম্ভানে অনেক লোক হর্যাবংশীয়,
চক্রবংশীয় ইত্যাদি বিশিরা পরিচয় প্রদান
করিয়া থাকেন।

চন্দ্রবংশে কুরু ও পুরু নামে ছ্**ইজন** রাজা জনিয়াছিলেন, একারণ ছুর্ব্যোধন ও যুধিষ্টিরাদি কুরুবংশাবতংশ ভূপালাবলি বলিয়া প্রসিদ্ধ । রাজা ছন্মস্ত পুরুবংশে জন্মগ্রহণ করেন, ভাহার বিবরণ কবি কালিদাস অভিজ্ঞান শুকুত্বলা নাটকে লিথিয়াছেন। কুরুবংশে বিচিত্রবীর্ষ্য ও

রাখিলেন, কিন্ত পরিমাণ কালে ভারতসংক্তি।
সরহত বেদ চতুইর অপেকা মহন্ত ও ভারতকার
অধিক হইল, তদবধি দেবতার। ইহাকে মহাভারত
বলিরা মির্দ্দেশ করিকেন।

क्रियोक्तर नाटम क्टे अन ताअकूमात অকালে কালগ্রাসে পতিত হইলে তাহা-দ্বিণের ছই বিধবা অঙ্গনা রহিল। ভগবান সভাবতীনন্দন মাভূ আজা অহুসারে তাহাদের গর্ভে ধৃতরাষ্ট্র ও পাঞ্ নামে ছই পুত্র উৎপাদন করেন। ধৃতরাষ্ট্রের জনান্ধতাপ্রযুক্ত তাঁহার কনিষ্ঠ ভাতা পাণ্ড রাজা হইলেন। ধৃতরাষ্ট্রের হর্য্যোধনাদি শত পুত্র পাঞ্ পুতা যুধিষ্ঠিরাদির প্রতি বাল্যকালাবধি ক্রতিশয় বিৰেষ করিত। কুনারদিগের মধ্যে মুধিষ্ঠির সর্বজ্যেষ্ঠ, স্নতরাং তিনিই অধীশর রুজা হন। যুধিষ্ঠির ভারত-বর্ষের সমাট ইইয়া মহাসমারোহপুর্বক রাজস্ম যজ্ঞ সম্পন্ন করিলেন। তর্দশনে ছর্ব্যোধন এককালে হিংসায় অবৈর্ঘ্যতা-প্রযুক্ত অন্তমনা ও অন্তক্মা হইয়া বিবিধ অপকারের চেষ্টা করিতে লাগি-লেন। যুধিষ্ঠির অত্যন্ত স্থালি ও ধার্মিক হইলেও দ্যুতক্রীড়ায় অমুরাগী ছিলেন, ছুৰ্ব্যোধন ভাহা অবগত হইয়া তাঁহাকে ভাহাতেই প্রবুত্ত করাইল। যুধিষ্ঠির ভাহাতে হতসৰ্বস্ব হইয়া পঞ্জাতা ও ক্রোপনীর সহিত বনে প্রস্থান করিলেন।

চক্রবংশীয় ভূপালাবলি দ্বাপর্যুগে সামাজ্য করেন, তৎকালের সহিত এই স্মরের তুলনা করিতে ুইলে কি विश्वीम त्वांध इम्र । महर्षि त्वान्यांत्र जन्म-গ্রহণ করিলে শান্তমু রাজা সত্যবতীকে বিবাহ করেন, এবং তাঁহার আজ্ঞামুসারে

পामन कतितन, आवात পाशुताका उन्ध-শাপে স্তীসঙ্গবৰ্জিত, এই হেতৃ ধৰ্ম, বায়ু, रेक, ও অधिनीकूमात दाता পाछन-দিগের উৎপত্তি। যুধিষ্টিরাদি পঞ্চল্রাতা দ্রৌপদীকে বিবাহ ইতিপূর্বে শান্তত্ব রাজার ঔরদে ভগবতী ভাগীরথীর গর্ডে ভীম্মদেবের জন্ম হয়। এই সমস্ত বিষয়ের আলোচনা ও সিদ্ধান্ত অধুনা কৌতৃহলের ব্যাপার হইরাছে।

পাণ্ডবেরা অসাধারণ বলবীর্যাসম্পন্ন ও স্চাক্নিষলকচরিত্র এই জন্ত দেবপুত্র বলিয়া কল্লিত হইয়াছেন। রোমদেশের আদি রাজা রোমুলশও তাঁহার ভাতা রিমদ উভয়েই পাওবাদগের ভায় দেব-পুত্র বলিয়া প্রসিদ্ধ। টুয় দেশের মহা-বীর ইনিএদ্ ভীম্বদেবের তায় মহুষ্যের ওরসে দেবীগর্ভে সম্ভূত বলিয়া বিখ্যাত মহাকবি বৰ্জিল স্থচাক কবি-তায় তাঁহার কীর্ভি বর্ণন করিয়াছেন।

যুধিষ্ঠির স্পরিবারে ছাদশ বৎসর বনে অজ্ঞাতবাদে থাকিয়া পরিশেষে এক বৎসর বিরাট রাজার গৃহে অবস্থিতি করেন। ইতিপূর্বে অর্জ্রনের স্বর্গে গমন ও বাণ শিক্ষাদি সম্পন্ন হয়। ষ্টির নানাবিধ বিপদে পতিত হই য়া অচল ধর্মপ্রভাবে ও শ্রীক্লফের সহায়তায় উদ্ধার পাইয়াছিলেন। শ্রীক্লফ পাণ্ডবদিগের মাতৃল পুত্র ও স্থা বলিয়া সর্বত্র প্রসিদ্ধ। তৃতীয় পাওব অর্জুনের সমবয়ক্ষ বলিয়া তাঁহার সহিত অর্জুনের অতিশয় প্রণয় ছিল। অৰ্জুনও উদ্ধব নামে একজন বাদরায়ণ ভাতৃবধুর গর্ভে প্রদয় উৎ- বছবংশীয় 'ক্ষত্রিরের সহিত প্রীক্তকের

আকারগত সম্পূর্ণ সৌসাদৃশ্য ছিল।
পুরাণে বর্ণিত আছে বে জ্রীক্ষয়ের বক্ষঃস্থলে ভৃগুপদ চিছ্ল থাকাতে লোকে
তাঁহাকে অনায়াদে চিনিতে পারিত।
উদ্ধব যৎকালে বৃন্নাবনে গিয়াছিলেন,
তংকালে গোপীরা তাঁহাকে প্রথমতঃ
জ্রীক্ষম্ব বোধ করে। ইলিএড কাব্যে বর্ণন
আছে, একিলিসের সহিত পেটোক্লসের
আকারগত সৌসাদৃশ্য ছিল। তাঁহারা
উভয়ে পরস্পর পরম বন্ধ ছিলেন, কবিদের এই বিচিত্র বর্ণন পাঠকালে চিত্তে
কি অনির্ব্বচনীয় আনন্দ প্রাপ্ত হওয়া
যায়!

ত্রয়োদশ বংসর অজ্ঞাতবাস করিয়া যুধিষ্ঠির ভাতাদিগের সহিত পুনর্কার স্বরাজ্যে প্রত্যাহ্ হইলেন, তদনস্তর রাজ্য বিভাগের বিষয় আন্দোলন হইতে লাগিল। তুর্য্যোধন পূর্ব্বাবধি মনে করি-ग्राहित्नन (४, किছूरे नित्तन ना, अधूना তদ্বিষয়ে একবারে ক্বতসংকল্ল হইলেন। বছ বিভণ্ডার পর প্রীকৃষ্ণ ছর্য্যোধনকে কহিলেন, মহারাজ! আপনি পাওবকে পঞ্গ্রাম মাত্র প্রদান পুর্বাক অথগু মেদিনী মণ্ডল ভোগ করন। ভাহাতে তিনি উত্তর করিলেন, "যুদ্ধ ব্যতিরেকে স্চ্যগ্র পরিমিত মৃত্তিকাও প্রদান করিব না।" শ্রীকৃষ্ণ স্বভাবত: শান্ত, কর্ম্মক ও অত্যন্ত বৃদ্ধিমান্ লাবণ্যবিশিষ্ট <u>লোকাতীত</u> **অ**প্ ছिলেন। তৎকালে সকল লোকেই তাঁহাকে যথেষ্ট সন্মান করিত, কেবল

রাজা ছর্য্যোধন তাঁহাকে গ্রাছ করিতেন ना। ज्यानक्टे वितालन, महात्राज जाशन এ বিষয়ে কেশবের অমুরোধ রক্ষা করুন, কিন্তু তিনি কাহারও কথা গ্রাহ্থ করি-লেন না। পরিশেষে স্কুতরাং যুদ্ধই স্থির হইল। একদিকে হুর্য্যোধন ও তাঁহার ভ্রাতৃগণ এবং ভীম্ম, দ্রোণ, ুঅর্থ-থামা, কুপাচার্য্য ও কৃতবর্মা প্রভৃতি যোজ্বৰ্গ দেনাপতিরূপে নিযুক্ত হই-লোন, অন্তুদিকে পঞ্চপাত্তৰ ও অভিমন্ত্য প্রভৃতি বীরগণ রণসজ্জা করিতে লাগি-লেন। এই কালে রাজা যুধিষ্ঠির ভীম-দেবকে কহিয়াছিলেন, হে পিতা**মহ** ! আপনার সমীপে হুর্য্যোধন ও আমি উভয়ে নির্বিশেষ। আপনি কি নিমিত্ত আমাকে পরিহার পুর্বাক ছর্ব্যোধনের পক্ষাবলম্বন করিলেন ? তাহাতে ভীম কহিলেন,

> অর্থস্ত পুরুষো দাসো, দাসোহপ্যর্থো ন কস্তচিৎ। ইতি সত্যং মহারাজ, বদ্ধসুর্থেন কোরবৈঃ॥

"পুরুষ অর্থের দাস নিশ্চয় জানিবে,
অর্থ কথন কাহার দাস হয় না, ইহা
অতি যথার্থ বচন মহারাজ, আমি অর্থের
কারণ কৌরবের বাধ্য।" যুধিষ্টির শল্য
ভীম, ভ্রোধেন, অর্জুন ও কর্ণ পরস্পার
দ্বন্যুদ্দে প্রবৃত্ত হন। ভ্রোধন প্রতে
কাতর হইয়া জলস্কত্তবিদ্যা প্রভারে
দ্বৈপায়ন হলে লুকায়িত হইলেম। তীম
জানিতেন ভ্রোধন অভিমানী। বে

তিরস্কার শ্রবণ করিলে কথনই সহ করিতে পারিবে না। অবশুই জল হইতে উঠিয়া আদিবে। ইহা বিবেচনা করিয়া রদের নিকটে উপস্থিত হইয়া তর্জন গর্জন পূর্বক ভৎসনা আরস্ত করিলেন। জীম বাক্য ছর্ব্যোধনের সহ না হওয়াতে তিনি জল হইতে উঠিয়া পুনর্বার সংগ্রাম আরম্ভ করিলেন, এবং সেই বুদ্দেই উর্ক্তক হইয়া গতাম্ম হন। নীতিজ্ঞেরা কহেন, লোকে এরপ স্থলে অপমান সহ করিতে পারিবে কথনই প্রাণ হারাইতিন না।

রাজা হব্যৌধনের উরুদেশ ভিন্ন অন্ত অঙ্গ অভেদ্য ছিল, তিনি সমুদায় যুধিষ্ঠিরের বাক্যে অনাদর পূর্বক শকু-নির পরামর্শে বীরধড়া পরিধান পূর্বক গান্ধারীর সম্মুথে উপস্থিত হইলে উক্দেশ তাঁহার জননীর দৃষ্টিপথে পতিত হয় নাই। ভীমমূর্ত্তি ভীম কুরুপতির সেই উরুভঙ্গ করিয়া শমন সদনে প্রেরণ করিল। ঐ মত এ কিলিদের গুল্ফ ধারণ পূর্বক তাঁহার জননী জলমগ্ন করাতে ঐ অংশ ভিন্ন সমুদায় শরীর অভেদ্য ছিল। 'বিপক্ষ কভূ কি সেই স্থানে শ্রাহত হইয়া তিনিও গতপ্রাণ হন। উরুভঙ্গ হইয়া य९कारण ताला इटर्गाधन भिविदत अव-হাল করিতেছেন, এমন সময়ে করখামা জৌপদীর পঞ্চুমারকে হত্যা করিয়া মৰ্ন মুক্ত পতিত হন, অৰ্জুন তাহাকে নিশ্চর যমানরে প্রেরণ করিতেন, কেবল দ্রোপনীর অসামান্ত কারুণ্য ও সৌজন্ত জন্য জঘন্য ব্রহ্মবন্ধু প্রাণ লইরা স্বস্থানে প্রস্থান করেন।

যুদ্দকালে তৃতীয় পাণ্ডব বীর ধনঞ্জয় আত্মীয় স্বজনগণকে রণস্থলে উপস্থিত দেখিয়া করুণার্দ্রচিত্ত হইয়া পরিহার করিতে উদ্যত হইয়া ছিলেন, তাহাতে প্রীক্লম্ব ভগবান তাঁহাকে গীতাম্বরূপ বন্ধবিদ্যা প্রধান পূর্বক পুনরায় যুদ্ধে প্রবর্ত্তিত করিলেন। ঐ গ্রন্থ ভগাবদগীতা বলিয়া প্রসিদ্ধ হইয়াছে। উহা অষ্টাদশাধ্যায়ে বিভক্ত। উহাতে আত্মতত্ব কথিত আছে. ত্রিমিত্ত উহা অধ্যাত্মতত্ত্ব বলিয়া বর্ণিত হইয়াছে। এই জগতে মত প্রকার বিদ্যা আছে তথাধ্যে আয়তত্ত্ব স্ক্রেণ্ড কারণ ইহাদারা আমাদের ইহপরকালের কল্যাপ লাভ হয়।

কুরুক্ষেত্র যুদ্ধের পর যুধিষ্ঠির সিংহাসন লাভ করিয়া চারি ল্রাতার সহিত বহুদিন রাজত্ব করেন এবং বহু ধর্মান্তর্গান পূর্বক অখনেধ যজ্ঞও সম্পন্ন করেন। পরে তাঁহারা অভিমান্ত্য পুল্র পরীক্ষিতকে রাজ্য ভার দিয়া মহাপ্রস্থান করেন। কথিত আছে হিমালয়ের উত্তর প্রদেশে জৌপদী সহিত পঞ্চল্লাতা পদব্রজ্বে চলিয়া যান। একে একে সকলের মৃত্যু হয়, কেবল যুধিষ্ঠির ধর্মপ্রভাবে সম্বীরে স্বর্গারোহণ করেন।

वाकाला व्यवहरू।

ব (শেষ)

১। বেকারের বেগারও লাভ।

২। বেগম চেনেন না বেগুণ।

৩। বেগারের পুণ্য গঙ্গাসান।

৪। বেঙের আড়াই হাতা।

ে। বেগুণ গাছে আঁকনী।

ও। বেগুণ বাড়ী*।

৭। বেঙের আধুলি।

৮। বেঙের নাকে মিনের নোলক।

৯। বেঙের মাথায় দোনার ছাতি।

১০। বেঁচে থাক্ মোর চূড়া বাঁশী,মিলবে রাধা হেন কত দাসী।

১১। বেটা মদ খায়, মা ডাইন।

১২। বেটী যেন সঞ্জিনার থাড়া, রোদ লেগেছে ছায়ায় দাঁড়া।

১০। বেড়া আশ্রেণ।

১৪। বেডা নেড়ে গেরস্তের মন বুঝা।

১৫। বেঁড়েকে চোমরা বলে লেজ ফুলায়।

১৬। বেঁড়ে গোরুর ওক্ডা বনে ভয় কি ?

১৭। বেদে কি জানে কপূরের গুণ, শুকৈ শুকৈ বলে দৈরব লুণ।

১৮। বেদের বাজী।

১৯। বেঁধে মারে, সয় ভাল।

২০। বেয়ানে বাদল বাদল নয়, মায় ঝিয় কোন্দল কোন্দল নয়।

২১। বেয়ানের পো নিয়ে তিন পো।

নিত্য কিছু কিছু পাওয়া বার।

২২। বেল পাক্লে কাকের कি ?

২৩। বেল্লিকের নিমন্ত্রণ,

ना आँठाटल विश्वाम नाहै।

২৩३। বেহায়ার বালাই নাই।

২৪। বৈদ্যনাথের যাঁড়।

२৫। देवतांशीत तांश हेकू आहि,

স্থ টুকুও আছে।

२७। देवभार्य नत्रवानताः।

২৭। বৈষ্ণব হইতে বড় হয়েছিল সাধ,
ভূণাদপি ভনে মনে লেগেগেছে বাদ্

২৮। বৈষ্ণবের কর**ঙ্গে ভোজন।**

২৯। বোঁচা কান, চুলদে ঢাকা।

৩০। বোঝার উপর শাকের আটি।

৩১। বোড়ায় বিষ।

৩২। বোবার স্বপ্ন দেখা।

৩৩। বোবার শত্রু নাই।

७८। दो ना दावा, दो ना वावा।

৩৫। বংশের তিলক।

৩৬। ব্যথার ব্যথী।

৩৭। ব্রজের ভাব।

৩৮। ব্রণ চুল্কে ঘা করা।

৩৯। বন্ধ জানাতি ব্রাহ্মণঃ।

ও॰। ব্রাহ্মণ আর চণ্ডালে, হাতী আর বিড়ীলে।

৪১। ব্রাহ্মণের গোরু, থাবে আর, হুধ দিবে অধিক।

थ्यम् डार्निः।

স্ত্রীদিগের লজাবতীত্বের यर्थष्ठे প্রতিষ্ঠা আছে। मञ्जा, স্ত্রীদিগের लड्डा, खीनिरगत जुरा। রূপ। নারী লজাহীনা, তাহার অধঃপতন সন্ধিকট। এই প্রতিষ্ঠা নিবন্ধন এ **(मर्गत्र क्वीत्रा के न**ड्डा खन व्यथानकर् ধারণ করেন। কিন্তু উহা স্ত্রী জাতির স্বাভাবিক ও সহজ ধর্ম বিবেচনা ্করিয়া আমি উহার সম্ধিক প্রশংসা তবে যদি তাঁহারা নিমো-লিখিত ডার্লিংএর ক্রা গ্রেসের তায় কীর্ত্তিমতী অথচ লজ্জাবতী হয়েন, ভবে তাঁহাদের লজ্জাবতীত্ব যথার্থ প্রশংসা-যোগ্য হয়।

ইংলত্তের একটা প্রদেশের নর্থমরলও। উহা সমুদ্রের উপকুলবর্তী। নর্থস্বরলভের অনতিদুরে কতকগুলি ৰীপ আছে। তাহাদিগকে জোয়ারের সময় ফারন্ बीপপুঞ্জ বলে। ৰীপ সমূহের মধ্য দিয়া সমুদ্রের জল অতি প্রবল বেগে প্রবাহিত হয়। দীপ গুলি বুক্ষাদি বিবৰ্জিত, কৃক্ষ ও धाखतम्य, त्कान त्कान ज्ञानत्क त्नार-मग विलाख वना याग्र। स्ट्रिकानाविध ঝটিকাদিজনিত 'তরঙ্গাঘাতে ্তাহার সকল অংশ কত বিক্ষত এবং কোন কোন স্থান স্চ্যগ্রবৎ হইরা রহিয়াছে। **এমন স্থলে স**মুদ্রধানের যাতায়াত যে কভ কঠিন ব্যাপার, তাহা সহজেই

অর্ভ্ত হইতে পারে। বস্তত: ঐ
সকল দীপপুঞ্জের মধ্যে পড়িয়া কত
ভাহাজই ভগ্ন ও জল-মগ্ন হইয়াছে!
১৮০৮ সালের সেপ্টেম্বর মাসে এই
স্থানে ফরফারশিয়র নামক এক জাহাজ
মারা পড়িয়াছিল।

ममूजवारी পথिक निगरक পথ প্রদ-র্শন ও সতর্ক করিবার নিমিত্ত উপকৃষ ভাগের কোন উচ্চ ভূমির উপর এক উচ্চ স্তম্ভবিশিষ্ট গৃহ নিৰ্দ্মিত হয়। সেই স্তভোপরি রাত্রি কালে দীপ প্রজ্ঞানত উহাকে আলোক গৃহ বা বাতীঘর বলে। উলিথিত ফারণ দ্বীপ পুঞ্জের মধ্যে লংগ্রোন নামক দ্বীপে ঐ ক্রপ একটা বাতী ঘর ছিল। সেই গৃহে ডালিংনামা এক ব্যক্তি পরিরক্ষক ছিলেন। তিনি তাঁহার পত্নী ও কন্সার সহিত দেই গৃহে অবস্থান করিতেন। যে স্থলে ফরফারশিয়র জাহাজ মারা পড়ে, সেই স্থানে ঐ বাতী ঘর হইতে অৰ্দ্ধ ক্ৰোশ অস্তৱ।

৭ই সেপ্টেম্বর প্রাত্তংকালে ডার্লিং এবং তাঁহার পত্নী ও কন্তা আলোকগৃহের স্তম্ভোপরি উঠিয়া চারি দিক্
নিরীক্ষণ করিতে করিতে অস্পষ্টরূপে
দেখিতে পাইলেন, কিয়ৎ দ্রে একটী
জাহাজ জলময় হইডেছে। জাহাজের
অধিকাংশ ময় হইয়াছে, যে অংশটুকু
জাগিয়া আছে, তথায় কতক গুলি লোক

একত্রিত হইয়া সকাতরে পরিত্রাণের। উপায় অয়েষণ করিতেছে। বায়্-তাড়িত সমুদ্রের তরঙ্গ অতি ভীষণ বেগে উল্লম্ফন করিতেছে। প্রতি মৃহর্তে ঐ বিপন্ন হতাশ ব্যক্তিগণের মনে হইতেছে, এই মরিলাম। জাহাজের আর যে সকল লোক ডুবিয়া বা ভাসিয়া গিয়াছে, তাহা-দের তো কথাই নাই; যাহারা এখনো সমুদ্রের কুক্ষিগত হয় নাই, তাহাদিগকে কিরূপে উদ্ধার করা যায়, এই চিন্তা আলোক গৃহস্থিত ডার্লিং পরিবারের মনে উদিত হইল। কিন্তু সে স্থান পুর্যান্ত গমন করা অতি ছঃসাধ্য ব্যাপার। ইহার কিছু দিন পরে এক সম্রান্ত ব্যক্তি কোন কার্য্যের জন্ম এক ধীবরকে ৫০১ টাকা দিয়াও ঐ স্থানে পাঠাইতে পারেন নাই। কিন্তু তথন সে স্থানে না গেলে ঐ হতভাগ্যদিগের বাঁচাইবার আর কোন প্রকার উপায় নাই। ডার্লিংএর मश्राक्षी कञ्चा উर्शानिशत्क উদ্ধার করি-বার জন্ত পিতাকে অনুরোধ করিলেন এবং পিতার দহিত স্বয়ং যাইতে উদ্যত रहेरनन ।

এই বিপদ্ধনক কার্য্যে প্রথমতঃ ডালিংএর প্রবৃত্তি হয় নাই, পরে তিনি ক্সার অমুরোধে তাহাতে দশ্মত হইয়া নৌকারোহণ করিলেন। তাঁহার কন্সা গ্ৰেম্ভ সঙ্গে চলিলেন। গ্ৰেম্ দাঁড় বাহিতে লাগিলেন। এ পর্যান্ত তিনি षात्र कथन माँ ५ ४ दत्रन नारे। मग्रात অমুরোধে এই দাঁড় বহন কার্ব্যে তিনি ও অভিনন্দন পত্র উপস্থিত হইল।

স্বতঃ প্রবৃত্ত হইলেন। এই সময়ে ভাঁটা হইয়াছিল। অতএব নৌকা স্থবিধা মত চলিল। কিন্তু ভগ্ন জাহাজের নিকট উপনীত হইলে তথাকার উত্তাল তরজোপরি নৌকা রাথা ছকর হইয়া উঠিল। এই সময়ে ডার্লিং বিষম সঙ্কট ভাবিতে লাগিলেন। অতঃপর ফিরিয়া আসাও সঙ্কট, যেহেতু তথন জোয়ার হইতেছে। কিন্তু ইহারা যে কএক জনকে ঐ মগ্নপ্রায় জাহাজ হইতে উদ্ধার করিতে পারিলেন, ভাহারা मकरन माँ ध्वार त्नोका श्वरम রক্ষিত ও আলোক-গৃহাভিমুথে চাৰিত হইতে লাগিল।

এই রূপে ঐ বিপন্ন লোকদিগের উদ্ধার হইল। যে কএক দিন ভাহারা আলোক গৃহে ছিল, সে কএক দিন গ্রেদ্ ডালিং আপনার শ্যা তাহাদিগকে দিয়া নিজে টেবিলের উপর শয়ন করিয়া রাত্রি কাটাইয়াছিলেন এবং স্বহস্তে তাহাদের সেবা ও শুশ্রষা করিতেন।

ত্রেস ডার্লিংএর এই কীর্ত্তি ইউরোপ-ময় প্রচারিত হইল। মহৎ লোকেরাই মহতের মর্যাদা জানে। ইংলভের লোকেরা এই কার্য্য নিবন্ধন গ্রেনের যেরপ সমান ও প্রতিষ্ঠা করিলেন, তাহাও বিশেষ উল্লেখের যোগ্য। ছোট বড় সকল প্রকার লোকমধ্যে ও সভাতে তাঁহার যশ ঘোষিত হইতে লাগিল। নানা স্থান হইতে তাঁহার নিকট ধ্রম্পবাদ

নর্থমরলতের ডিউক ও তাঁহার পত্নী আলনউইক নামক হুৰ্গে গ্ৰেসক নিমন্ত্রণ ক্রিয়া একটি স্থবর্ণ ঘড়ি উপ-টোকন দারা তাহার অভিনন্দন করি-লেন। সাধারণ লোকেরা কতক টাকা চাঁদা তুলিয়া তাঁহার অভুত সাহস ও দ্যার পারিতোষিক স্বরূপ তাঁহার নিকট প্রেরণ করিলেন। কত লোকে তাঁহার ছবি তুলিয়া বিক্রয় লাগিল। কোন কোন নাট্যশালার অধ্যক্ষেরা প্রভৃত অর্থ দিবার অঙ্গীকার করিয়া তাঁহাকে এই প্রার্থনা করিয়াছিল ষে. আপনি কিয়ৎক্ষণের নিমিত্ত আমা-দের এক নাটকের দাঁড়বাহনরূপ **অ**ভিময়াংশ টুকু সম্পাদন গ্রেদ তাহাতে সমত হইলে তাঁহার নামে বোধ হয় সে দিন অসংখ্য লোক অভিনয় দর্শনে সমবেত হইত।

পরস্ত এ কথা বলা বাহুল্য যে গ্রেস এই শেষোক্ত প্রকার অর্থ গ্রহণ করিতে তৎক্ষণাৎ অস্বীকার করিয়াছিলেন। ভাঁহার নামে এত যে প্রশংসা ধ্বনি উৰিত হইন,—এত যে প্ৰতিষ্ঠাপত্ৰ ও অর্থ রাশি তাঁহার উপর বর্ষিত হইতে নাগিল, তাহাতে তিনি কিঞ্চিমাত্র গর্বিত হইলেন না। বরং তিনি এই সকল मधान व्याक्षा छात्व श्रद्ध र दिलन।

তাঁহার অর্থ সম্বনীয় অবস্থা ভাল হইল। কিন্তু তথাপি তিনি ঐ আলোক গৃহ ত্যাগ করিলেন না। তথার তিনি যে সকল সামাত পারিবারিক কার্যা করিতেন, তজ্জনিত বিশুদ্ধ স্থথ তাঁহার সমৃদ্ধিমন্ত লোকপূর্ণ নগর বাসের স্থ অপেকা শ্ৰেষ্ঠ জ্ঞান হইল।

মহামতি গ্রেস আপনাকে সামাক্ত নারী জ্ঞান করিতেন। তাঁহার নারী-জনস্থলভ লজ্জারও কিছু ব্যত্যয় হয় নাই। তিনি যে খ্যাতি লাভ করিয়াছেন. তাহাতে কত'লোক তাঁহাকে দেখিতে চার। কিন্তু তিনি লোক সাধারণের দৃষ্টির অস্তরালেই থাকিতে ভাল বাসি-উইলিয়ম হাউইট সহিত সাক্ষাৎ করিতে গিয়া প্রথমতঃ তাঁহার দর্শন পান নাই। তাঁহার পিতা বলিলেন, গ্রেস সকল লোকের সহিত সাক্ষাৎ করিতে বড় অনিচ্ছুক। শেষে হাউইটের সহিত তাঁহার দাক্ষাৎ হয়। তিনি বলিয়াছেন, গ্রেস ডালিংএর মুখা-বয়বে কিছু অদাধারণতার লক্ষণ ছিল না। কিন্তু তাঁহার অন্তঃকরণ দয়া, সাধুতা ও মহত্তে পরিপূর্ণ ছিল।

১৮১৫ খৃ: অব্দে গ্রেদের জন্ম হয়। ১৮৪২ অব্দের ২০এ অক্টোবর অবিবাহিত অবস্থাতেই তিনি প্রাণত্যাগ করেন।

জ্ঞণ (হাইতোলা)।

একটা লোগ বা কদভ্যাস। দশক্ষা অশিষ্টাচার

অনেচকর সংস্থার বে হাইতোলা | ভদ্রলোকের মাঝে বসিদ্ধা হাই ভূলিকে ৰশিয়া. **कुछ**नकात्रीरक

অপ্রতিভ হইতে হয় এবং চারিদিক্ হইতে হাততুড়ি পড়িয়া যায়। যিনি হাই তোলেন, তিনিও তিনটা তুড়ি দিয়া থাকেন। ছগ্ধপোষা সন্তান হাই তুলিলে মাতা আগ্রহ সহকারে "ধাট বাট" বলিয়া দক্ষিণ হস্তের অঙ্গুষ্ঠ দ্বারা তিনবার তাহার মুখ ও নাদাগ্র স্পর্ণন করেন। বাস্তবিক হাঁচি যেমন অশুভ লকণ---হাই তজপ না হইলেও ভভ বলিয়া গৃহীত হয় না। অলদ, অমনোযোগী ও কোন কোন স্থলে উত্তাক্তকারী বলিয়া জ্মুণকারী অভিযুক্ত হইয়া থাকেন। বাস্তবিকই জুম্ভণকারীর অবস্থা দেখিতে ভাল নহে। সমস্ত শ্রীর বিক্লারিত করিয়া হস্তবয় প্রদারণ ও যতদুর সম্ভব দর্শনে দর্শকের মনে वमन वामिन এক প্রকার বিভৎস ভাবের উদয় হয়। জ্ভণকারী নিজেও শশব্যস্ত হইয়া হস্ত দারা মুথ ঢাকিবার প্রয়াস পাইয়া থাকেন। জুন্তণের এই সকল বাহুদোষ সবেও ইহা আমাদিগের স্বাস্থ্যের পক্ষে পরমোপকারী। এই রহস্ত বোধ হয় অর লোকেই জ্ঞাত আছেন। শরীর ক্লান্ত ও অবসন্ন হইলে জৃন্তণ স্বতঃ উথিত হইয়া আমাদিগের দেহযন্ত্রের সংস্থারের আবশুক্তা প্রতিপন্নতা করে। একমাত্র নিদ্রাই দেহের সংস্থারক ও শ্রান্তিহারক। এই নিদ্রা **সত** উথিত জুম্ভণের অহুগামী। অন্তে জুম্ভণকারীকে বেরপই দেখুন না কেন, তিনি নিজে वृद्धन नमात्र এक चशुर्स यानम व्यष्टर

করেন। এতদ্বারা তাঁহার মৌধিক মাংসপেশী ও হন্দ্র হন্দ্র শিরা সকল সঞ্চালিত হইয়া স্বাস্থ্য ক্লে করিয়া থাকে। যে সকল মাংসপেনী দারা নিম চোয়ালের গতিক্রিয়া সম্পন্ন হয় এবং যে সকল ধমনী ও শিরা খাস-যন্ত্রের কার্য্য সম্পন্ন করে, সেই সকল মাংদপেশী ও শিরা, একমাত্র জ্বন वातारे नशानिङ रहेशा निर्वित्य श्रीम স্বীয় কার্য্য সম্পাদনে সক্ষম হয়। সকল মহোপকারী মাংসপেণী ও শিরা আর কোন ব্যায়ামেই সম্বর্দ্ধিত হয় না। বিস্তুত জ্ঞুণে সমস্ত শরীরই সঞালিত হইয়া থাকে—বাহন্বয় বিশেষরূপে উখিত ও বিস্তৃত হইয়া রক্ত সঞ্চালনের বিশেষ স্থবিধা করে। এই সময়ে দীর্ঘ খাসগ্ৰহণজনিত, বক্ষত্বত বিক্ষারিত হয়, চকুর্ম মিনীলিত কর্ণম্ম ঈষত্থিত, এবং নাসারন্ধু বিস্তারিত হইয়া থাকে। মুথমধ্যন্থিত জিহ্বাবর্ত্ত্রপ্ত অর্দ্ধগোলাকার ধারণ করে এবং ভালু কঠিন ও প্রসারিত হয়, এবং আল-জিহ্বাও প্রদারিত ইইয়া কর্ণ ও নাসি-কার সন্ধিস্থান সম্পূর্ণ রোধ করিয়া থাকে। দীর্ঘবাস গ্রহণের প্রারম্ভেই কর্ণন্দে একপ্রকার লক্ষ শ্রুত হয়; अवरिक्तियत भित्रा मक्न य कुछन बात्री मकानिত इहेटलाइ, हेहाई जारांत्र প্রমাণ। গভীর ভূতণ এক হইছে দেড় নেকেও ব্যাপী। এতশারা প্রত ষাংসপেশী ও শিরা সঞ্চালিত ইর।

বিশেষতঃ বে সকল শিরা ইচ্ছায়ত্ত নহে,
তাহারা কেবল জ্লুণ দারাই পরিচালিত
হইরা থাকে। হাই তুলিবার সময় শরীরের বিক্ষারণ জন্ম বাহিরের অন্ম কোন
শব্দ শ্রুত হয় না। হল্যন্তের ক্রিয়া জ্লুণ
দারা অক্ষররূপে নিম্পার হয়, এই জন্ম
প্রাক্তিকিৎসক নেজেলী(Dr Naegeli)
হারোগীদিগকে পুনঃপুনঃ জ্লুণ করিতে
বাবহা দিয়া থাকেন। তাঁহার মতে
হাজোগ, নাসাবদ্ধ, তালুজালা, ক্রত,
কর্ণমূল ব্যথা প্রভৃতি অনেক উৎকট

রোগ জ্পুণ দারা আরোগ্য হয়। তাঁহার
ব্যবস্থা দিবসের মধ্যে বতবার সম্ভব
হাই তুলিবে। এককালে ছয়বার হইতে
দশবার পর্যান্ত দীর্ঘজ্ঞণ করিয়। ইহার
অব্যবহিত পরেই কিছু থাদ্য গিলিয়া
থাইবে। অন্ন দিন এরপ অভ্যান
করিলে আশাতীত ফল দেখিতে পাওয়া
যায়। ইহা বলা বাহুল্য যে এই ব্যবস্থার
অনুসরণে কিছুমাত্র আয়াস নাই, হয় ত
অনেক পাঠক পাঠিকা এই প্রবন্ধ পড়িতে
পড়িতেই বহুবার হাই তুলিবেন।

পানামার খাল ও রেলওয়ে।

পাঠিকারা ভূগোলে পড়িয়াছেন. পানামা একটা যোজক। ইহা দক্ষিণ আমেরিকাকে উত্তর আমেরিকার সহিত যোগ করিয়াছে। ইহা পৰ্বতিময়. আতিস পর্বত শ্রেণী ইহার মধ্য দিয়া উত্তর আমেরিকা ব্যাপিয়া বিস্তারিত রহিয়াছে। পর্বতের একদিকে প্রশাস্ত মহাসমুদ্র ও অপর দিকে আটুলাল্টিক মহার্থব। গত ৮/১০ বৎসর এই পর্বত-শেণী ভেদ করিয়া খাল খনন ও রেল-পুর্ব নির্মাণ করিয়া উভয় মহাসমুদ্রের মধ্যে যোগ স্থাপন করিবার প্রয়াস হই-ভেছে। এতদর্থে অনেক অর্থ 5 কৌশল बाबिङ हरेशार्छ, उत् अमािश हेश র পূর্ণ হয় নাই। একে পর্বতময় বন্ধুর দেশ, ভাহাতে একদিকের সিদ্তল অপর बिस्क अर्थका जानक উচ্চ। देखि-

নিয়ারগণ পূর্বেই হা জানিতে: পারেন নাই। প্রশাস্ত মহাসমুদ্র হইতে আটু-লাণ্টিক উপকৃশ অনেক উচ্চ। যদি গভীর খাদ কাটিয়া কোন প্রকারে (ইহা কত प्त मञ्जर वला यांग्र ना।) थाल हाता (यांग সাধন হয়, তাহা অকর্মণ্য হইবে। প্রপাতের ভায় একটানে পর্বাতের উপর দিয়া আট্লাণ্টিকের জল প্রশাস্ত মহার্ণবে পড়িবে, তাহাতে কোন বাষ্পপোত বা অর্ণবেপাতে যাতায়াত করা দূরে থাকুক, কালে পর্বত ভিন্ন হইয়া দেশ উৎসন্ন যাইবার সস্তাবনা। এক্ষণে ইহা বিশেষ রূপে বিবেচিত হইয়া অতি আশ্চর্য্য कोनाल थान थनन शहेरज्ञ । भारतजीय নদী-স্রোত সাহায্যে উভয় দিকে সম্ভবতঃ দুরে দুরে বিস্তীর্ণ সকল খনন করা **२२८७**ए । नगर इम्छनि क्लानित क्ल

দারা বন্ধ ও মৃক্ত হইয়া থাকে। পোত
সকল প্রবাহ বেগে উঠিবে ও নামিবে।
থালের উপর দিকেই প্রস্তরের দৃঢ়
প্রাকার, স্কতরাং জলস্রোত স্বতঃ অহ্য
দিকে ঘাইবার সম্ভাবনা নাই। ইহার
গভীরতা ও পরিসর এরূপ যে হইথানি
অর্নপাতে অনায়াসে যুগপং যতায়াত
করিতে পারে। পর্বতের প্রশাস্ত মহাসম্দ্রের ঢালুর দিকে পাঁচটী ও আটলাণ্টিকের
ঢালুতে নয়টী এরূপ হ্রদ ও কপাটীর কল
নির্মিত হইবে। সর্বাপেকা ইহার রেলপথই অতি আশ্রুণা। একে পর্বতের
উপর রেল, তাহাতে আবার এরূপে
থালের প্রতিযোগী। ইহা হুইবার
থালের সহিত সংযুক্ত হইয়াছে। প্রথমে

আটলান্টিক যাইতে একটা স্থল্য প্রসারিত লোহসেত্বারা রেলপথ থাল অতিক্রম.
করিতেছে, পরে প্রশাস্তমহাদাগরের ঢালুতে স্থল্পরারা থালের তলদেশ দিয়ারেলপথ নির্দ্দিত হইতেছে। এখানে অতি আশ্চর্য্য দৃশ্য এবং ইঞ্জিনিয়ারিং কোশলও অত্যাশ্চর্য্য। অত্যুক্ত পর্বতের উপর থাল দিয়া সম্ভূপোত পাইল তুলিয়া প্রধাবিত হইতেছে; এবং থালের নিমে স্থল্প দিয়ারেলের গাড়ী বিহাৎ বেগে নৌজ্তেছে, পাহাড়ের উপর জাহাজ। জাহাজের নীচে রেলের গাড়ী! এরূপ আশ্চর্য্য ব্যাপার পূর্দ্ধে চক্ষে দেখিলেওল বিশ্বাস হইত কিনা বলা যায় না, কিস্ক বিজ্ঞানের কল্যাণে ইহা প্রগাঢ় সত্য।

বীরাঙ্গনা।

लीना वां **निः**शी।

দয়া রমণীয়দয়ের প্রধান অলয়ার।
কিন্তু তথ্যপি যে সকল সদ্ভণ প্রুয়োচিত বলিয়া প্রসিদ্ধ, সেগুলিও বীরাক্লা-সদয়ে নিতান্ত বিরল নহে। দৃঢ়প্রতিজ্ঞতা, অসীম সাহসিকতা, কর্ত্তব্য
সাধনের জন্ত অকুতোভয়তা এসকল
দৃশুণেরও ভূরি ভূরি প্রমাণ প্রদর্শন
দরিয়া বীরাঙ্গনাগণ জগতে অচল কীর্তি
য়াপন করিয়া গিরাছেন। নিমে ইহার
কিটি উদাহরণ দিতেছি।

रेक्टेरबान चटखब मकिन रेक्सिंश्टन

গ্রাস নামে একটি কুদ্র দেশ আছে।
প্রাকালে তথাকার অবিবাসিগণ সভাতার জন্ম বড়ই প্রসিদ্ধ ছিলেন। তীক্ষবৃদ্ধি গ্রীক্গণ বেমন দর্শন, সাহিতা ও
শিল্পনৈপুণ্যে, তেমনই বীরত্ব ও স্থাদেশান্তরাগিতার জন্ম খ্যাতি লাভ করিয়াছিলেন। ইহাদের জন্মভূমি কুদ্রায়তন
হইলেও ইহা এক রাজার শাসনাধীন ছিল,
না। ইহা কতকগুলি অতি কুদ্র কুদ্র রাজ্যে
বিভক্ত ছিল, এবং তন্মধ্যে এথেক স্ক্রি

এথেন্সের অধিবাসিগণ, বড় অৰ্থাৎ স্বাধীনতা-প্রিয় ছিলেন। অতি পুরা-কাল হইতে তাঁহারা কোন রাজার শাসনাধীনে না থাকিয়া আপনাদের শাসন কার্য্য আপনারাই নির্বাহ করি-তেন। কিন্তু কালক্রমে পিজিস্টেটস নামক তাঁহাদের কোন ক্ষমতাশালী স্বদেশাবাসী একাধিপতা লাভ করিয়া রাজার ভায় এথেন্দ শাস্ন করিতে লাগিলেন এবং মৃত্যুকালে হিপিয়াস্ হিপার্কদ নামক তরুণবয়য় পুল **ঘরের হত্তে শাসনভার সমর্পণ করি**য়া শিজিসটেট্য সর্বেস্বা গেলেন। হইলেও অতি বিচক্ষণ ও বুদ্ধিমান পুরুষ ছিলেন, স্থতরাং তাঁহার শাসন এথিনীয়-দিগের পক্ষে নিতান্ত হঃসহ বলিয়া বোধ হয় নাই। কিন্তু তাঁহার পুত্রহয়ে পিতার কোন গুণই ছিল না। ইহাদের অত্যা-চারে স্বাধীনতা-প্রিয় এথেনীয়গণ অল দিনের মধ্যেই বাতিবাস্ত হইয়া উঠিল এবং তাহাদের বিনাশের জন্ম অচিরে অতিগোপনে একটি ষ্ডুযন্ত্ৰ হইতে লাগিল। এই সংস্রবে একটি এথেনীয় त्रभगी य ज्यानी किक मार्शिक छ। ७ पृष्-প্রতিজ্ঞতা দেখাইয়াছিলেন একণে তাহা বর্ণন করিতেছি।

তৎকালে লীনা নান্নী এক সমৃদ্ধিক্ষালিনী রমণী এথেকো বাস করিতেন।
ব্রীক ভাষার "লীনা" শব্দের অর্থ সিংহী।
এই রমণীর নাম ও প্রকৃতি উভরেই সিংহী
ক্ষালিকা। স্বদেশের হুর্গতি দেখিরা

সিংহবিক্রমা শীনার হৃদয় বড়ই ব্যথিত হইল। অত্যাচারী হিপিরাস্ ও হিপার্ক-সের বিনাশের জন্ম গাঁহারা ষড়্যজ করিতেছিলেন, তিনি আহলাদপুর্পক তাঁহাদের সহিত যোগদান করিলেন। শুধু যোগদান করিলেন না—তিনি তাঁহাদিগকে স্বগৃহে আহ্বান করিয়া তথায় নিতা তাঁহাদিগের সহিত মন্ত্রণা কবিতে লাগিলেন। তিনি অবশু বিলক্ষণ জানিতেন যে তিনি যে পথ অবলম্বন করিয়াছেন, তাহাতে তাঁহার ভয়ানক বিপদ হইবার সন্তাবনা। কিন্তু সে ভয়ে বীরাজনার জদয় টলিল না। কেন ? কর্ত্তব্য কার্য্য সাধনের জ্ব্য যাহাদের হৃদয় উন্মন্ত হইয়াছে, তাঁহারা মৃত্যুভয়ে, কি যন্ত্ৰণাভয়ে কথনও কি ভীত হন ? যাঁহারা মৃত্যুকে উপহাস করিয়া বলিতে পারেন:-

"ওহে মৃত্যু তুমি মোরে কি দেখাও ভয় ? ও ভয়ে কম্পিত নহে আমার জদয়।"

তাঁহাদের মনে ভীতি সঞ্চার করিতে পারে, সংসারে এমন কিছু আছে কি ?

সংদেশের উদ্ধারের জন্ত লীনা স্বগৃহে
মন্ত্রণা করিতে লাগিলেন। কিন্তু হুর্ভাগ্যবশতঃ একথা শীঘ্রই প্রকাশ হইরা
পড়িল। হিপিরাস্ ও হিপার্কস্ জানিতে
পারিলেন যে তাঁহাদের বিনাশের জন্ত যড়্যন্ত হইতেছে,এবং লীনা সে বড়্যন্তের
মূল। এই সমাচার পাইবামাত্র তাঁহারা
লীনাকে কারাক্রদ্ধ করিলেন। লীনার
স্বস্থা যথোচিত শান্তি হইবে, কিন্তু ছিপিয়াস্ ও হিপিয়ার্কসেয় বৈরনির্যাত-নাভিলাব ভুধু তাহাতেই কি পরিত্প্ত हहेरव ? नीना এका व्यवताधी हिलन না। তাঁহার সহিত অপরাপর ব্যক্তিগণ স্মালিত ছিলেন, কিন্তু তাঁহারা কে, তাহা অত্যাচারিদ্বয় জানিতেন না. স্থুতরাং লীনার মুথ হইতে তাঁহাদের নাম বহিৰ্গত হওয়া চাই। লীনা কি তাঁহাদের নাম স্বীকার কবিবেন ? যাঁহারা স্বদেশের মঙ্গলের জন্ম তাঁহার গুহে আহুত হইয়া মন্ত্রণা করিতেন, তাঁহা-দিগকে কি তিনি বিপন্ন করিবেন ? তাঁহার ত মরণ নিশ্চয়. কিন্তু যাঁহারা চাই কি রক্ষা পাইতে পারেন তাঁহাদের কি তিনি সর্পনাশ করিবেন ৪ ইহা কি বন্ধুর কার্য্য ? ইহা কি অতি লীনা সংকল্প বিখাস্ঘাত্কতা নহে? করিলেন যে তিনি কথনই উাহাদের নাম প্রকাশ করিবেন না। স্থ তরাং মৃত্যুর পূর্বে দেই অসহায়া রমণীর উপর যৎপরোনাস্তি নির্যাতন হইতে লাগিল। সে শাস্তি এমন ভয়ানক যে তাহার তুল-নায় মৃত্যু সহস্রগুণে শ্রেরঃ। কোমল প্রাণ সে ভীষণ যস্ত্রণা সহা করিতে পারিবে কি ? লীনা যতকণ পারিলেন নীরবে তাহা সহু করিলেন, কিন্তু শেষে দেখিলেন যে আর কিছুতেই সহ হর না। তথন উপায় কি ? সঙ্গীদিগের नाम दनिया निया यज्ञगात रुख श्रेट्ड

মুক্তিলাভ করিলেন কি ? শীনার মনে বড ভয় হইতে লাগিল যে পাছে যন্ত্ৰণা স্থ্য করিতে না পারিয়া তিনি তাহাদের নাম বলিয়া ফেলেন। তংকালে মদে মনে তিনি এই কামনা করিতে লাগিলেন যে কেহ আদিয়া তাঁহার জিহবা বিখণ্ড করিয়া দিক্, কারণ তাহা হইলে তিনি আরু সঙ্গীদিগের নামোচ্চারণ করিতে পারিবেন না। কিন্তু কে এম**ন বন্ধর** কাজ করিবে ? কে তাঁহার জিহবা কাটিরা দিয়া বিশ্বাসঘাতকতারূপ মহাকলক হইতে তাঁহাকে রক্ষা করিবে ? এইবার লীনা আপনার স্দরের প্রকৃত মহন্তের পরিচয় দিলেন। তিনি এমন সজোরে নিজের দত্তের দারা নিজের জিহবা চাপিয়া ধরিলেন যে মৃহুর্ত্ত মধ্যে তাহা দিথও হটয়া শোণিত-প্রবাহে ভাঁহার মুখ প্লাবিত করিল। তথন লীনা নিক্ল-দ্বেগ-চিত্তে যদ্ভণা সহা করিতে লাগিলেন. কারণ পাছে তাঁহার ঘারা তাঁহার সঙ্গীরা বিপদগ্রস্ত হন এভয় তাঁহার আর রহিল বীরাঙ্গনা এই অন্ত উপায়ের দারা অপরের প্রাণ রক্ষা করিয়া নিকে প্রফুরচিত্তে দেহত্যাগ করিলেন। গুণ-গ্রাহী এণেনীয়গণ তাঁহার মৃত্যুর পরে একটা জিহ্বাহীন সিংহীর প্রতিমৃত্তি স্থাপন করিয়া তাঁহার অক্ষয়কীর্ত্তি চির-স্মরণীয় করিলেন।

বাদন প্রণালী।

পিয়ানাফোর্ট ও হারমোনিয়ম।

(৩৩৬ সংখ্যা—২৭২ পৃষ্ঠার পর)

কোন স্থরের অবাবহিত পরবর্তী। স্থারকে তাহার দিতীয় স্থার কহে, যেমন সা ইহতে ঋ দ্বিতীয় স্কর। সংগীতে সচরা-চর ছই প্রকার দিতীয় হুর ব্যবহার হয়; পূর্ণান্তর ব্যবহিত দিতীয়, যেমন मा इटें ए था, किया था इटें एक गं; धवर অদ্ধান্তর ব্যবহিত দ্বিতীয়, যেমন গ হইতে ম। কোন স্থর হইতে এক স্থর ব্যব-হিত যে স্থর তাহাকে উহার তৃতীয় স্থর **কহে,** যেমন সা এর তৃতীয় গ। তৃতীয় স্থারও তুই প্রকার-বৃহৎ তৃতীয় ও কুম ভতীয়। ছইটা পূর্ণান্তর ব্যবহিত যে স্থার, তাহাকে বৃহৎ তৃতীয় কহে, যেমন সা হইতে গ, কিমাম হইতে ধ এবং একটা পূর্ণান্তর ও একটা অদ্ধান্তর ব্যবহিত যে স্থর, তাহাকে ক্ষুদ্র তৃতীয় वना यात्र, त्यमन अ इटेट म, किना श হইতে প।

ষড্জ (খরজ) হইতে তৃতীয় স্থরের বৃহত্ব ও ক্ষুত্র ভেদে প্রাম ভেদ হয়। যে প্রামের গ বৃহৎ তৃতীয়, তাহাকে বৃহৎ বা স্বাভাবিক প্রাম (Major Scale) বলে। এবং যে প্রামেব গ ক্ষুত্র তৃতীয়, ভাহাকে ক্ষুত্র প্রাম (Minor Scale)) বলে। সা দইতে গ্রামের উত্থান হইলে, ভাহাকে স্থাভাবিক বৃহৎ গ্রাম বলে। সংগীতের সকলপ্রকার গ্রামই ঐ ছই গ্রামের অন্তর্গত।

বিক্কত স্বরপ্রামই গ্রাম পরিবর্তনের সম্পূর্ণ উপযোগী, কেন না উহাতে যাব-তীয় বিক্কত স্বরপ্তালির পদ্ম উপস্থিত থাকে। বিক্কত স্বর্গ্রামের কোন্কোন্ স্বরকে থরজ করিয়া শুক্ত স্বর্গ্রামের রীতিতে গ্রাম প্রস্তুত করিতে হয়, ও প্রত্যেক গ্রামে কতগুলি ও কি কি বিক্কত স্বর আবিশ্রক হয়, তাহা পশ্চাৎ প্রদশিত হইতেছে।

সারগ্রামে কড়িবা কোমল পদার আবেশুক হয়না; যথা

मा वा C গ্রামে मा ঋ গ ম প ধ নি বা C D E F G A B

ৰ বা C sharp গ্ৰাম হইলে,

৭ (১) ঋগ ম ম ধ নি সা

। বা D গ্রাম হইলে,

र्ग तो D sharp धाम हहरन,

(১) (১) গুম প ধনি লা খ গ বা E গ্রাম হইলে. • ্(১) গম ধনিয়া ৰ্(২) গ বা F গ্রাম হইলে. (১) (১) (১) প্ধনিসা ঋ গ বা F sharp গ্রাম হইলে ৭ (১) (১) (১) মধনি নিঋ গ ম প বা G গ্রাম হইলে. (১) (১) (১) **৭** প্ধনিসা ঋ গ ম বা G sharp গ্রাম হইলে ্ (১) (১) (১) (১) (১) ধনিসাখ্য গ ম প ধ বা Λ গ্রাম হইলে. ু(১)(১) (১) ৭(১) ু(১) ধ নি ঋ ঋ গ ম ধ নি বা A sharp গ্রাম হইলে ্ (১) (১) (১)(১) (১) (১) নিলা ঋ গ ম প ধ নি বা B গ্রাম হইলে,

শ্বলিপি দেখিয়া গীত বা গত শিক্ষা করিতে হইলে উত্তমরূপে মাত্রা অভ্যাস করা নিতান্ত প্রয়োজন। মাত্রা বোধ না হইলে বেতালা হইবার সন্তাবনা, কারণ মাত্রা দারা সময় ও তালের ব্যব-চ্ছেদ প্রকাশ হইরা থাকে। তালের সহিত বাজাইবার মাত্রাই প্রধান উপায়। মাত্রা স্থরের মন্তকে লিখিত হয়। এই

(১) (১) (১) (১) (১) (১) নিশ্ব গ গ ম ধ নি

মাতা বা কাল।

কপ (।) একটা দণ্ড চিহ্ন থাকিলে ভাহা

এক মাত্রা কাল। যে স্থলে হুইটা দণ্ড
থাকিবে, সেই থানে হুই মাত্রা কাল
লইতে হুইবে, আর তদভিরিক্ত দণ্ড
থাকিলে তদভিরিক্ত কাল গ্রহণ করা
কর্ত্তবা। এক মাত্রার অর্দ্ধ পরিমিত
সময়কে অর্দ্ধ মাত্রা কহে; ভাহার চিহ্ন
(৬) অর্দ্ধচন্দ্র। একটা অর্দ্ধ মাত্রার
অর্দ্ধ সময়কে দিকি বা অণুমাত্রা কহে।
অণু মাত্রার এইরূপ (×) ডমক চিহ্ন।
এইরূপে যে প্রকার মাত্রার প্রয়োজন
হুইবে, এক মাত্রার ভ্রাংশ করিয়া
লইতে হুইবে।

শরনিপি দেখিয়া গান করিতে বা

যন্ত্র বাজাইতে হইলে সমভাবে হস্ত বা
পদ দারা আঘাত করিতে হইবে; ভাহার

একটা আঘাত হইতে অপর আঘাত
পর্যান্ত যে সময় তাহা এক মাত্রা। ছই

তিন চারি কিম্বা তভোধিক মাত্রা
প্রেয়াগ কালে প্রথম মাত্রাটার স্থায়ী
কাল অন্থযায়ী পরবর্ত্তী মাত্রাগুলির কাল

নিরূপণ করিতে হইবে। যাহারা এই
রূপ সমকালান্তর মাত্রা প্রয়োগে অক্ষম

হইবেন, তাঁহাদের ঘড়ীর শব্দের সহিত
ক্রমান্তরে মাত্রা অভ্যাদ করা উচিত।
ঘড়ীর প্রত্যেক শক্তেই এক একটা

মাত্রা বলিয়া ধরিয়া লইতে হয়।

বাবযে স্থলে কোন স্থরের উপর মাত্রা লের চিহ্ন আছে আর তাহার পরস্থিত হই ার। বা ততোধিক স্থরের উপর মাত্রা নাই, এই সে স্থলে পূর্ব স্থরের মাত্রার মধ্যে সমু-

मात्र एक धनि ममजारव প्रकामिक रहेरव, নির্মাত্র স্থরগুলি মাত্রাবিশিষ্ট স্হিত এইরপ--বন্ধনী দারা থাকিবে। যে স্থলে মাতা চিহু কোন স্থবের উপর না থাকিয়া থালি স্থানে থাকে, সেই স্থানে সেই মাত্রার বিশ্রাম - জানিতে হইবে।

যে স্থরের উপর এইরূপ (ু) ত্রিকোণ চিহু থাকিবে, তাহাকে কোমল বলিয়া জানিতে হইবে। আবু যে স্থুরের উপর এইরূপ (৭) পতাকা **हिंद्र** थाकित्व, जाशांक जीख विवास জানিতে হইবে। এবং যে সকল স্থরের नौरा -, এই ज्ञा भारत प्राची वाकि रव ভাহা অবিচ্ছেদে প্রকাশিত হইবে।

নির্দিষ্ট কতকগুলি মাত্রার সমষ্টিকে তাল কহে। তাল চারিপদে বিভক্ত, যথা, বিষম, সম, অতীত ও অনাঘাত। বিষম প্রথম পদ বলিয়া তাহার চিত্র ১ সম স্বিতীয় অতীত তৃতীয়

অনাঘাত ফাঁক বা বিশ্ৰাম 🕌

স্বরলিপিতে পদ বিভাগের নিমিত্ত মধ্যে মধ্যে (।) ছেদ ব্যবস্ত হয়, এবং হুইটী ছেদের অন্তর্গত যে সমস্ত স্থর তাহাতে এক ফেরা হয়। আস্থায়ী এবং অন্তরার শেষে এরূপ গুইটা ছেদ একত্রে ব্যবহৃত হয়, যথা (॥)। কথন কথন ঐ ছেদের পূর্বেক কিম্বা পরে ছইটী করিয়া বিন্দু ব্যবহৃত হয়, যথা,॥::॥ এইরূপ বিন্যুক্ত ছেদের মধ্যস্থ স্থরগুলি পুনরাবৃত্তি করিতে হইবে। যে সকল স্থরের উপর ব। নীচে (১ম বার) এই-রূপ লেখা আছে, সেই সকল আবুত্তিকালে বাজাইতে প্রথমবার আর যে স্থরের উপর বা নীচে(২য়া বার) এইরূপ লেখা আছে, দেই সকল স্থুর দ্বিতীয়বার আবৃত্তিকালে ১ম বার চিহ্নিত স্থাত্তলিকে ত্যাগ করিয়া কেবল ২য়বার চিহ্নিত স্থরগুলিকে বাজাইতে इट्टेंद्र ।

(ক্রমশঃ)

প্রথম আভাস।

मिन मक्तात पूर्व अकि वाव अकि কার্পেটের ব্যাগ হাতে করিয়া একাকী मार्क शांत्र इटेना माज्य हिना आरमत हिएक ছুলিরাছেন। তাঁহার সঙ্গে আর কেইই

শীতের র'গি কিছু কমিয়ুছে। এক | ছিল না। রুচি ও প্রকৃতি ভেদে লোকে একাকী পথে যাইতে যাইতে ভিন্ন ভিন্ন धकादात हिन्दात्र जाभनामिशस्क पूरा-रेश (मद्र। (कर वा अर्थागरमत्र नाना প্রকার উপায় চিন্তনে রত হয়, কেহ বা

বৈরনির্যাতন প্রবৃত্তির উত্তেজনায় তাড়িত হইয়া তৎসাধনের নানা প্রকার উপায় চিন্তা করে, কেহ বা আত্মীয় স্বজন, বন্ধ বান্ধৰ, পুত্ৰ কলা পিতা মাতা, বা পত্নীর স্থুথ ও আরোম বৃদ্ধির পত্না উদ্ভাবনে वास इस. (कह वां कल्लनांस (कान (सह-ভাজন প্রিয়পাত্রের প্রসন্ন মুথ সন্দর্শন করিয়া আপনিই নির্জনে তৃপ্তি অন্নতব ক্রিতে ক্রিতে পথশ্রাস্তি বিশ্বত হইতে প্রয়াস পায়। এতদপেক্ষা অধিকতর চিস্তা-শীল ও সাত্ত্বিক ভাবাপন্ন লোক নিৰ্জ-নতার গান্তীর্য্য প্রান্তরের শোভা ও তাহার নীরব প্রীতিপূর্ণ সম্ভাষণ অত্মূভব করিয়া ও দুরস্থ পল্লীগ্রামের নির্বাণপ্রায় জন কোলাহলের শেষ অণু তাহাতে মিশা-ইয়া দিয়া এক অব্যক্ত মধুর ভাবে আপ-नाटक मध कतिशा (नश--- সংসারের জীবন সংগ্রামের আভাসপূর্ণ স্মৃতি পরলোকের নীরব স্ভায় ঢালিয়া দিয়াংমধুর মিলন **শাধন করিয়া পরম সুথ পরম শাস্তি** অমুভব করে। বাবৃটি এই শেষোক্ত প্রকার স্নিগ্ধ মধুর ভাবের স্রোতে আপ-নাকে ছাডিয়া দিয়াছেন—তাঁহার জীবনের মুথস্থতি মধুরতর হইয়া তাঁহাকে সংসা-রের কল্পনার অতীত স্থথে ডুবাইতেছে। যথন তাঁহার গুমাস্থান নিকটতর হইয়া আসিল, তথন তিনি একবার চারিদিকে নেত্রপাত করিয়া দেখিলেন—চারিদিকের স্জীব ভাব তাঁহাকে সাদ্ধ সম্ভাবণে স্বাহ্বান করিতেছে, শীতের শেব কণা বসত্তের বিমল হিলোলে মিষ্ট

তাঁহার অঙ্গ স্পর্শ করিতেছে এবং দেই मृ हिल्लान नीमां अधिन ताथान-কঠের কোমল গীতধ্বনি বহন করিয়া কর্ণের তৃপ্তি সাধন করিতেছে, বন ও উপবন খণ্ডের বুক্ষ ও লতাকুলের অুঙ্গা-ভরণ সকল স্থরাগরঞ্জিত ও সৌরভপূর্ণ হইয়া তাঁহোর চক্ষে স্থা ঢালিয়া দিতেছে। তিনি আয়ুহারা হইয়া যথন জড় ও জীবপূর্ণ এই ধরার সহিত আপনার সম্বন্ধ স্থাপন করিতেছিলেন, তথন নিজ গ্রহারে আদিয়া উপস্থিত হইলেন। তাঁহার বিলম্ব দেখিয়া উাহার পঞ্চম ব্যীয়া বালিকা আট মাদের একটি > কোমল পুষ্পকারক ক্রোডে লইয়া পিতার আগমন প্রতীক্ষা করিতেছিল। ওাঁহাকে আসিতে দেখিয়া প্রিয়বালা আনন্দে আটথানা হইয়া "বাবা আগিয়াছেন, বাবা আদিয়াছেন" বলিয়া নৃত্য করিয়া সে আনক কোলাহল ধ্বনি উঠিল। প্রবিষ্ট অন্তঃপুরের অন্তরতম স্থানে হইল এবং দে শুভকামনায় তীক্ষ তাড়-নায় আন্দোলিত অন্তঃপুরাঙ্গনায় চিত্ত বিক্ষেপের মধ্যে বিহাৎরেধার ভাষে সে সংবাদ ক্রীড়া করিল—হাসিল-হাসাইল। গৃহিণী যে কাৰ্য্যে বাস্ত ছিলেন, বাস্ততা বশতঃ দে কাজ শীঘ ভালরূপ করিতে গিয়া মন্দ করিয়া ফেলিলেন-প্রদীপ জালিতে একটি শলিতা স্থানে ছট্টি শ্লিতা দিলেন—এক প্লা ভে্লের যারগার হুই পলা তেল ঢালিলেন— कथात्र यात्रशात्र मण्डा कथा এক চ

বলিলেন—এক পা অগ্রসর হওয়ার স্থানে
দশ পা অগ্রসর হইয়া পজিলেন! তাইত
হয়—গৃহে প্রেম থাকিলে—হাদরে হাদরে
নীধা হইলে—তারে তারে মিল থাকিলে
লোক আপনাকে ভূলিয়া যায়। প্রেমে
আপনাকে ভূলাইয়া দেয়—বঙ্গবধূ এমনি

করিয়াই আপনাকে দিয়া স্বামি-সোহাগিনী ও পতিধর্মান্ত্রাগিণী হয়েন বলিয়াইত সীতা সাবিত্রী নিরস্তর তাঁদের
সমক্ষে আদর্শরূপে উপস্থিত রহিয়াছেন।
(ক্রমশঃ)

প্রহেলিকা বা হেঁয়ালী সংগ্রহ। *

বিধাতা নির্দ্মিত ঘর নাহিক ছয়ার।
বোগীক্র পুরুষ তাহে করেন বিহার॥
যথন পুরুষবর হয় বলবান্।
বিধাতার ঘর ভাপি করে থান থান॥
প্রাতে চারি, মাঝে ছই, সাঁজে তিন পায়
চলে।
বল দেখি হেন ভাই জস্ক কারে বলে १॥২
বেগে ধায় রথখান না চলে এক পা।
না চলে সারথি তার পদারিয়া গা॥
হিঁয়ালি প্রবন্ধে পণ্ডিত দেহ মতি।
অস্তরীক্ষে রথ ধায় ভূতলে সারথি॥৩
হাতা আছে মাথানাই,পেট ঝলঝল করে।
বাঘ নয়, ভালুক নয়, আন্ত মায়্ম্ম
গেলে॥৪

ছেলেবেলা আঁটি থেয়ে ঠাণ্ডা হয়ে যাই।
বুড়ো বেলা সেই আঁটি পাথর সমান।
তথন ছোবড়া তার গুড় বলে থাঁই।
এ কেমন ফল বামা করহ সন্ধান।৫।
দিন রাভ চলে যার নাহি তার পা।
টাকা দাও কড়ি দাও তবু থামে না।৬

বোন্ থেকে বেরুলো হুমো।
তার গায়ে ডুমো ডুমো ॥৭
তেঁা ভেঁা করে ভোমরা নয়।
গলায় পৈতা বামন নয়॥৮
নীচে মাটি উপরে মাটি।
মধ্যথানে তামার বাটী॥৯
প্রথম অক্ষর ছেড়ে দিলে পা ভেঙ্গে যায়॥
শেষ অক্ষর ছেড়ে দিলে পা ভেঙ্গে যায়॥
শেষ অক্ষর হেড়ে দিলে ধানের ঘর হয়।
তিন অক্ষর যোগ হলে হুগন্ধ বেরোয়॥১০
থাবার জিনিষ নয় কিন্তু সকলেই থায়।
বুড়ো লোকে থেলে পরে করে হায় হায়॥
য্বা লোকে থেলে পরে কেরে হায়।
বালকে খাইলে পরে কেঁদে ঘরে যায়॥১১

* যে পাঠিকা সংগৃহীত ১০০ প্রহেলিকার
সত্তর দিবেন, সংগ্রহকার বাবু নবীনচক্ত দত্ত
তাহাকে স্বপ্রণীত নিম্নলিখিত পুত্তকগুলির এক
এক থণ্ড পুরস্কার দিবেন:—সংগোল বিষরণ,
ব্যাবহারিক জ্ঞামিতি, সঙ্গীত রত্বাকর, অমিদারী
দর্শন ও সাহিক্টাসগ্লয়ী। বা,বো,স।

त्राकात मूक्षे मारण, পরম স্বলর। সকলেই রাজা ব'লে করে সমাদর॥ এই ছিল রাজা প্রজা হল পরক্ষণে। কে পার উত্তর দাও, বিচারিয়া মনে ॥১২ বল সে কি ঠাকুর হয়। পেলে যারে মৃত্যু হয়॥ ১৩ ইংরাজীতে হয় গালি। বাঙ্গলাতে শোভে ডালি॥ ১৪ নীল রক্তের কাপড়থানি জরির ফুল তায়। পরিমাণে কতু শেষ দেখা নাহি যায়॥১৫ কারা আছে প্রাণ নাই, এ বড় আশ্চর্য্য। হস্ত আছে, পদ আছে, নাহি করে কার্যা ॥ ১৬

সিংহ নয় বাঘ নয় আছে চারি পা। স্বি ঘরে থাকে সে কভু কামড়ায় না॥১৭ কাল কাল পাথীগুলি খুড়ো খুড়ো বলে। বল দেখি হেন জীব কি আছে ভূতলে ॥১৮ দেখিতে দেখিতে তাহা হয় অদর্শন। ষাকে ছোঁয় হয় তার তথনি মরণ ॥১৯ সবুজ রঙ্গের কাপড়থানি মুক্তা দেওয়া প্রাতঃকালে বড় তার শোভা দেখা याग्र ॥२०

প্রথম অক্ষর ছেড়ে দিলে দামী কাপড় হয় । মাঝের অক্ষর ছেড়ে দিলে গন্ধে নাক যায়॥ শেষের অক্ষর ছেড়ে সে বড় কামড়ার।

चर्ग रूट कना शाह मिन मत्रमन। প্রবৃটী কলা মাত্র তাহার ফল্ন 🛭 রাত্রিকালে কলা ফলে একি চমৎকার। ষেমন স্কল্পিয় তার তেমনি বাহার॥২২

হাঙ্গর কুন্ডীয় নয় নদীতে নিবাস। আন্ত আন্ত মানুষেরে করিতেছে গ্রাস॥২০

প্রথম অক্ষর ছেড়ে দিলে টলে পড়ে যায় মাঝের অক্ষর ছেড়ে দিলে কালাংশ বুঝায়॥ শেষের অক্ষর ছেড়ে দিলে ছবি হয় ভাই তিন অক্ষর যোগে তাহা রেঁধে রেধে খাই ॥২৪

নদীর কূলে জন্ম তার কর্ণমূলে বাসা। চাঁচিয়ে চঁ চিয়ে তার গা করেছে হাঁসা॥ কাটিয়ে কাটিয়ে জিহ্বা করেছে থান থান তথাপি তাহার মুথে বাহির হয় ভাগবত পুরাণ ॥২৫

বক্ষ নহে কাঁটা আছে নাহিক জীবন। তথাপি মনের স্থাথে করিছে ভ্রমণ॥ প্রতি পদে শব্দ করি যথন বেড়াই। নব উপকার বহু করি আমি ভাই॥২৬

काना मर्या थाकि वर्षे जामि कन नहे। কল্দীর মধ্যে থাকি কিন্তু আমি জল নই জলাশয়ে থাকি আমি আমি জল নই। পাতাল ভিতরে থাকি আমি জল নই॥ ফল মধ্যে থাকি তবু আমি জল নই। . না থাকি আকাশে কিন্তু আমি জল নই 👢 ना थाकि नतीत मर्था सामि छन नहे। তিন অক্ষর যোগে চারিদিক্ অলুনোময় ॥২১ বল দেখি কোন্ বস্তু তবে আমি হই ॥২৪

আনল সমান ক্ষিতি নাহি তাতে চাষ।
নাহি তাহে কালাপাণি নাহি তাতে ঘাস॥
বীজ কেলিলে পুলা হয়ত প্রচ্র।
আশ্চর্য্য পুলোর কাণ্ড না হয় অঙ্কর॥২৮
সাতজন এক ঠাঁই, যদি হয় ওহে ভাই।
পাই সবে ছুটি, বল কি হয় সেটি॥২৯
প্রথম অক্ষর ছেড়ে দিলে বড়া করে থাই
মাঝের অক্ষর ছেড়ে দিলে গাড়ীতে

শেষের অক্ষর ছেড়ে দিলে কোলে গিয়ে বাঁচি।

তিন অক্ষর যোগে যে হয় তাকে করি ছিছি॥৩০

এক থাল স্থপারি।
শুণিতে নারে ব্যাপারী ॥০১
এক বিন্দু মুখ তার চারিপণ দস্ত।
তাহার ঐরির নাম জগতে বিখ্যাত॥
তাহার কনিষ্ঠ পুত্র যেই মহাশয়।
ত্বরা করি সেই দ্রব্য পাঠাবে নিশ্চয়॥০২

জল মধ্যে জন্ম তার কারীকরে গড়ে।

দেব নহে দানব নহে মাথার উপর চড়ে।৩৩
পাথী নয় পতঙ্গ নয় উড়ে উড়ে যায়।

বিচিত্র বর্ণেতে তার অঙ্গ শোভা পায়।

চাতক পাথীর সঙ্গে বড় ভাব হয়।

বল দেখি তার,নাম করিয়া নিক্চয়।৩৪
উন্টাইলে ধাতু হয় সোজাতে জননী।

কি শক্ষ হয় তাহা বল দেখি শুনি।৩৫

তেল কুচকুচ পাতা তার ফলে ধরে কাটা। পাকলে মধুর রস বীজ গোটা গোটা ॥৩৬

সরল স্থবোধ শিশু বল দেখি ভাই।
সকল গড়েছে বিধি কিবা গড়ে নাই ॥৩৭
সবকাজ করিবার, শক্তি আছে বিধাতার।
এ হেন কি আছে কাজ, কর্ত্তে নারে
বিধিরাজ ।৩৮

এক রত্তি জলে মাছ থিল থিল করে। জেলের সাধ্য নাই যে মাছ ধরিতে পারে ॥৩৯

ছটী মাত্র গাছে কলা একি চমৎকার।
নড়িয়া বেড়ায় গাছ অদ্ভুত ব্যাপার॥
কোন্ দেশে এই গাছ বল ভগ্নীগণ।
দেখে তার ফল করি সার্থক নয়ন॥৪•

কাঁটার টার ফেলে পাঁটার ফেলে পা। লবঙ্গের বঙ্গ ফেলে বেচে বেচে থা॥৪১

বিষম সে জন্ধ তার একমাত্র হাত।
তাহাতেই করে সব শক্তকে নিপাত।
কুঠ রোগী নহে তবু না আছে আঙ্গুল।
না আছে নথর হবে বিধাতার ভূল ॥
তথাপি সে হাতে অতি স্ক্ল স্চ ধরে।
এ কেমন জন্ধ বল পৃথিবী ভিতরে॥৪২

ত্ই পক্ষ আছে তার কিন্তু পক্ষী নয়।
এক পক্ষ কাল আর পক্ষ সাদা হয়॥
অতি ক্ষত উড়ে যার ধর্ত্তে কেহ নারে।
ব্বে লও ওগো বামা তুমি ঠারে ঠারে॥৪৩

হড় গড়ানে দীঘির পাড়।
তাতে একটা মল্লিকা ঝাড়॥
মলিকা ঝাড়টা কুটিল।
ছেলে বুড়/ছুটিল॥ 88

হাত দিয়া ছড়াই। মুখ দিয়া কুড়াই ॥৪৫

এক অক্ষরে নাম তাহা সকলেরি হয়।
মান্ন্ধাদি জীব জস্ক যে আছে যথায়॥
এ বড় আশ্চর্য্য নাম করহ শ্রবন।
বিপদে পড়িলে সবে করে উচ্চারণ॥৪৬

এক গাছি দড়ি। সকল ঘর বেড়ি॥৪৭

কোন কথা হয় কহ বালক বিদ্বান। ইংরাজিতে যার অর্থ হয় 'ডেকে আন।' যন্ত্র বুঝাইবে যদি বাঙ্গালাতে বল।
বল শিশু কোন্ কথা হয় শীঘ্র বল ॥৪৮
মন্তকে করিয়া আনে হয়ে য়য়বান্।
অপরাধ বিনে তার করে অপমান॥
অপমানে গুণ তার দূর নাহি হয়।
অবশেষে করি দেয় সম্বল উপায়॥৪৯
দেখিতে পুরুষ এক মুখ ছই কায়।
এক মুখে উগারয়ে আর মুখে খায়॥
মারিলে জীবন পায় হতাশ পরশে।
বুঝা বুঝা পণ্ডিত দে সভা মধ্যে বৈশে॥৫০
(ক্রমশঃ)

· অদ্ভুত বিবরণ।

আ'ৰ্টিজান ওয়েল। বা পাতাল কুপ।

আরটারী শব্দে ধমনী। পৃথিবীর ধমনী বিদীর্ণ করিয়া কুপদারা জল-প্রবাহ আকর্ষণ করাকেই আর্টিজান ওয়েল যা পাতালকুপ বলে। ইহার এক একটীর গভীরতা ৫০০ পাদ হইতে ৩০০ পাদের অধিক। জন্মণি, ফ্রান্স ও আমেরিকায় এরপ অনেক পাতালকুপ আছে। ভূগর্ভ বিদীর্ণ করিয়া পাতাল হইতে বিভদ্দ পানীয় বারি আকর্ষণ করাই ইহার মুখ্য উদ্দেশ্য। সম্প্রতি গলভিষ্টন নগরে এরপ একটী স্থগভীর কৃপ খনন ৰুরা হইয়াছে। ইহার গভীরতা ৩০৭০ পাদ। ৮২৫ পাদ হইতে১৩০০ পাদ পর্যান্ত গভীর ১৩টা পাতাল কৃপ এ নগরে বিদ্য-মান আছে,কিন্ত ইহাদিগের একটারও জল পানীয়রূপে ব্যবহারে আইদে না। নগর-বাদীরা তজ্জ্য পাঁচ হাজার ডলার বায়ে এই অতি গভীর কুপটী খনন করিয়া-ছেন। ইহার প্রথম ৮৭০ পাদ নিম্নে ১৫ ইঞ্চ ব্যাস নল প্রোথিত আছে, পরে এক পাদ ব্যাসের নল ১২০০ পাদ গভী-রতা পর্যান্ত, তৎপরে ৯ ইঞ্চ ব্যাদের নল ২০৬০ পাদ পর্য্যন্ত, অবশেষে ৫ ইঞ্চ ব্যাদের নল কুপটীর ৩০৭০ পাদ গভীরতা প্র্যান্ত প্রোথিত হইয়াছে। সচরাচর গভীরতা অর্দ্ধ মাইলেরও অধিক। ভগর্ভে পাহাড় বা বিশেষ বন্ধুর জমি ছিল না, স্থতরাং থনন করিতে বিশেষ কট হয় নাই। তবে আশ্চর্য্যের বিষয় এই যে এত অর্থ বায় ও বিপুল পরিশ্রীম করিয়াও আশাহরপ পানীর জণ প্রাপ্ত इख्या यात्र नारे।

হুতন সংবাদ।

 ১ । অষ্ট্রীয় য়বরাজ ফার্দিনান্দ ভারত অমণার্থ কলিকাতায় আসিয়া উপস্থিত হইয়াছেন।

২। চিকাগো প্রদর্শনীতে ডাকার কাদ্বিনী গাঙ্গুলী যাইতেছেন। তথার জীলোকদিগের শিল্লকার্য্য প্রদর্শনার্থ একটা স্বতন্ত্র স্থলর বাটা নির্মিত হই-য়াছে। একটা স্ত্রী-ইঞ্জিনিয়ার ইহার প্ল্যান (মূল নক্সা) করেন, ইহার ভিতরের সজ্জা জীলোক দারা প্রস্তুত এবং ইহার তত্বাবধান ভার একটা মহিলা সমিতির উপর আছে, চিকাগোর বিবী পটার পামার তাহার অধ্যক্ষ।

৩। গ্রীশের সন্নিকটবর্ত্তী সপ্ত আইওনীয় দীপের মধ্যে জাণ্টি বিশেষ প্রাসিদ্ধ। ইহাতে আ্মোয় গিরি আছে। সম্প্রতি এই দীপে ভয়ক্কর ভূমিকম্প হওয়াতে দ্বীপবাদীরা গৃহহীন হইয়া নিতাস্ত বিপন্ন হইয়াছে। কত লোক মারা গিয়াছে, এখনও জানা যায় নাই।

৪। বিচারপতি ট্রিবিলিয়ান আপনার সৌজন্যের বিশেষ পরিচয় দিয়াছেন। কুলকামিনীদিগকে সাক্ষ্য দানার্থ
এজলাসে হাজির হইবার নিয়ম হইতে
অব্যাহতি দিয়া স্বয়ং তাহাদিগের
বাটাতে গিয়া সাক্ষ্য লইবার অভিপ্রায়
প্রকাশ করিয়াছেন।

গোঁয়ালিয়ারের মহারাণী নাবা
 শক মহারাজের সহিত কলিকাতা
দর্শনার্থ আসিয়া লেডী ডফারিণ ফণ্ডে
২০০০ টাকা ও ডিপ্ট্রক্ট দাতব্য ফণ্ডে
২০০০ টাকা দিয়াছেন। জুনাগড়ের
নবাবও লেডী ডফারিণ ফণ্ডে ২০০০
টাকা দান করাইলেন।

পুস্তকাদি সমালোচনা।

>। লুগুরত্মোদ্ধার—৮ প্যারীচাঁদ মিত্রের গ্রন্থাবলী মূল্য ৩ টাকা, ক্যানিং লাইত্রেরীব বাবু যোগেশচক্র বন্দ্যোপা-ধ্যায়ের নিকট প্রাপ্তব্য। স্প্রাসুদ্ধ লেথক বাবু বন্ধিমচক্র চট্টোপাধ্যায় ইহার উপ-ক্রেমণিকা লিথিয়াছেন এবং ভাহাতে দেখাইয়াছেন "বাঙ্গালা গদ্য যে উন্নতির পথে চলিতেছে, প্যারীচাঁদ মিত্র ভাহার

প্রধান ও প্রথম কারণ" এবং তাঁহার প্রণীত আলালের ঘরের হুলাল "আমাদের জাতীয় সাহিত্যের আদি।" আমরাও বিশেষ ক্বতজ্ঞতার সহিত স্বীকার করিতেছি,প্রায় ৩০বংসর মতীত হইল, আমরা যখন বামাবোধিনী প্রচারে প্রবৃত্ত হই, প্যারী বাব্র প্রকাশিত মাসিক প্রিকার লিখনপ্রণালী সাধা- বণের—বিশেষতঃ বামাগণের বিশেষ বলিয়া আদর্শস্থলে উপযোগী গ্ৰহণ कति। भारती वावत लिथा रामन मत्रम, তেমনি সরস ও হৃদয়গ্রাহী এবং তাঁহার প্রণীত পুস্তকগুলি স্থসংস্কার, স্থজান ও ধর্মশিক্ষার ভাণ্ডার। তাঁহার অধিকাংশ লেখায় স্ত্রীলোকদিগের অবস্থোনতির জন্ম বিশেষ চেষ্টার পরিচয় পাওয়া যায়। আমরা আশা করি পাঠিকাগণ বামাকুলের প্রম হিতৈষী প্যারী বাবুর গ্রন্থাবলীর এক এক থণ্ড যত্নের সহিত সংগ্রহ পূর্ব্বক পাঠ করিয়া উপকৃত হইবেন ও তাঁহার প্রতি কৃতজ্ঞতার পরিচয় দিবেন।

 ২। নিত্যকৃতা, প্রথম কয় (শিশু-দিগের জন্তা) মৃল্য <>
 অর্দ্ধ আনা, ষিতীয় কর (সাধারণের জন্ম) মূল্য / । আনা। প্রথম করে প্রাতঃকালে শ্যা। হইতে উঠিয়া অবধি রাত্রিকালে নিজা যাওয়া পর্যান্ত শিশুদিগের ক্বত্য প্রত্যেক কার্য্যে কবিতাকারে ঈশ্বরের আশীর্কাদ-প্রার্থনা আছে। কবিতাগুলি সরল ও স্থথবাধ। ৪ বৎসরের বালক বালিকাগণও সহজে ব্রিতে ও অভ্যাস করিতে পারিবে। আশা করি, প্রত্যেক ধর্ম-প্রায়ণ পিতামাতা সীয় শিশু সন্তানকে অন্যান্ত শিক্ষার সহিত এই ক্ষ্ম পুত্তক-থানিও সমগ্র অভ্যাস করিতে শিক্ষা দিবেন। দ্বিতীয় কল্প বয়ন্ত ব্যক্তিরা আপনাদের জন্ম ব্যবহার করিয়া উপক্রত হইতে পারিবেন।

বামারচনা।

স্বর্গের ফুল।

বাসন্তী পূর্ণিমা শেষে
বালক বালিকা বেশে
দেখেছিল স্বরগের ফুল।
ফোটেনি সংসারে তারা
এমন পবিত্র যারা
ফুটবে কি ? এযে মহাভূল!
স্বরগের পুণ্য দেশে
কচি মুধে আধ হেসে

ব্দর পুনঃ হয় তাহাদের।

চাঁদের অমিয় হাসি,
তরল লাবণ্য রাশি,
বাড়াইল শোক আমাদের।
সরোজ ইন্দ্র কথা
মনে এলে পাই ব্যথা,
তারাতো রয়েছে মহাস্থাে।

জনক জননী গাঁরা, কেঁদে কেঁদে হ'ল সারা, আমরাও অঞ্চ ফেলি ছুথে। সরোজ মধুর বোলে

'মাসিমা §'মাসিমা' ব'লে

করেছিদ কত আবদার।

সোণার কমল মূথে দিছি চুমু কত স্বথে আজ তুই আয়না আবার!

স্থচাক লাবণ্য মাথা, স্থতির কিরণে আঁকা, চাঁদ মুথ দেথিবারে সাধ।

আয়না দোণার ছেলে অভিমানে হেলে হলে ঘুচে যাক্ ঘোর অবসাদ।

চঞ্চল আঁথির কোলে হাসির বিজলী থেলে স্নেহে মাথা করে চল চল।

দেথিব কি আর বার ? প্রাণ-কাড়া হাসি আর, রাঙা হুটী বিমল কপোল।

আধ আধ ভাঙ্গা হুরে বলিবি কি ধীরে ধীরে "মাসিমা দাওনা সাদাকুল !"

উদিলে সোণার শশী, হাসিতিস্চারু হাসি তাদেথে হাসিত ভারাকুল।

উচ্ছ্বাসে হইয়া সারা ডাকিতিস্ "আয় তারা আয়ে চাঁদ আয় শ্লের কাছে।" ডেকে ডেকে শ্রাস্ত হয়ে মোর কোলে মাথা থুয়ে ঘুমাইয়া পড়েছিলি শেষে।

ঘুমন্ত সে চাঁদ মুখে দিয়েছি সোহাগে স্থথে শত শত সেহের চুম্বন।

সরোজ! সোণার ছেলে অতীতের কথা তুলে পাই প্রাণে বিষম বেদন।

'কোথা তুই' 'কোথা তুই' স্বরগের ফুল, কে আমি হেথায় ব'দে হইরে আকুল! থাক স্থথে-মহা স্থেধ জননীর স্নেহ বুকে পাষাণে বাঁধিয়া বুক বলিম্থ আবার থাক স্থথে অতিদ্রে—সরোজ আমার!

সরোজ !

তোরি ছোট বোন্ ইন্দু তোরি সনে আছে
শরতের 'কবি উষা' রেখো কাছে কাছে।
এক বৃস্তে ছটী ফুল
কোথা আর পাব তুল
স্বরগের কুঁড়ি তোরা-স্বরগের ফুল,
কে আমি হেথায় ব'দে হইরে আকুল!

শত মন্দাকিনী ধোরা তোরা ছটী ফুল, কে আমি হেথায় ব'দে হইরে আকুল থাক স্থথে-মহাস্থথে, জননীর স্নেহ-বৃকে পাষাণে বাধিয়া বৃক বলিম্ব আবার, থাক স্থথে অতি দ্রে সরোজ আমার।

কুত্মকুমারী দাস।

The Bamabodhini Patrika.

It is highly gratifying that our learned lady doctor Srimati Kadambini Ganguli will shortly start for Chicago to be present at the great Exhibition and help in making exhibit of the handwork of Indian ladies. She also intends to reside in the United States for sometime and compete for Medical degrees of the American Universities. While we wish her all success, we earnestly hope she will be the means of uniting the sisters of the New World with those of India.

We are glad to see that the Newnham College for ladies in London is helping the cause of female education in India. Miss Vokins, a student of the College, has filled the place of Miss Cough, Principal of Maharanis (School in Mysore, who died a few months ago.)

Miss Govindarajulu, Assistant (Surgeon of Mysore, who has proceeded to Edinburgh to acquire a higher education in the faculty of the Medical profession, has been granted, says the Madras Journal of Education, a scholarship of £50 per annum, on the understanding that at the end of two years she will join the Mysore Medical Service, and continue to serve therein for a period of five years certain.

The total amount of expenditure on the girls' schools in Mysore was in 1891-92 Rs. 1,04,375 against Rs. 67,911 in the previous year. The consequence has been, as might be expected, the marked progress in female education in that province.

We are glad to find that Lala Bungsha Gopal Nande, grandfather of the present Minor Maharajah of Burdwan, has given Rs. 5,000 for the provision of separate kitchens and bathrooms for each ward in the new zenana Hospital in Calcutta. May such beneficent gifts increase!

Many of our readers might remember the honored name of Rao Sahib Rupram, the social reformer in Guzrat. On the 17th ultimo a deserving memorial in the shape of an asylum for the poor and helpless orphans and foundlings was opened in remembrance of his good works at Ahmedabad where he worked so long.

In our country we have got no association where teachers of youth might gather together and take steps to further the cause of education. The ninth annual meeting of the University Association of women teachers took place the other day, when Miss Walsh of Girton College, gave an interesting and appropriate address. The membership now numbers 426.

We are glad to read in the Report of Mr. Tawney, the acting Director of Public Instruction that in Bengal there has been a fair increase of both the girls and girls' schools during the last year. For particular reasons, the Government

cannot belp female education as they have been doing in regard to the education of the boys. So it behaves the District Boards, the Municipalities as also the educated gentry to come forward and help the cause of female education throughout the country. More private efforts will have to be made in this way. We all desire the advancement of our people. This cannot be done if the better half of the population remain ignorant. The other day a powerful deputation attended the Secretary of State for India in London not to allow the Government of Bombay to decrease the aid granted to the Higher Girls' School in Poona. The deputation was assured that Lord Kimberley would see that the grant be not decreased, and that sufficient support be given to the cause of female education in the Western'Presidency.

The success of Miss Jagannatham in having qualified herself in Medical degrees in England has encouraged some philantropic gentlemen in Scotland to come forward to defray the expenses of another Indian lady for Medical education in Great Britain for a term of 4 years. Miss Jagannatham has been appointed a Resident Medical Officer in Cama Hospital in Bombay, as an Assistant to Dr. Peechy.

The Viceroy, during his last visit to Mysore paid a well-merited tribute of praise to the Manager of the Maharani High girls' school. This good Institution has been educating hundreds of girls in English, Vernaculars, needle-work and music. The more the number of such schools, the greater will be the progress all round among the people. The Mysore Government also supports some female Medical pupils in Madras.

Mrs. Harrison, the wife of the President of the United States has died at the age of 58. She married early Mr. Harrison who after fighting a good many battles in life, at last achieved the greatest success, which an American citizen can aspire to, viz. becoming the head of the Executive Government at Washington. Mrs. Harrison presided over all the ceremonies in White House, She was much respected and liked by the American people for her courteous and kindly manners, and so her death has been deeply mourned by the people of the United States as a great loss. The Queen of England sent a sympathetic message to President Harrison on the occasion. In the States, the election for the Presidency comes after every 4 years. The next President is Mr. Cleveland, who is appointed a second time to the honorable post. Mrs Cleveland, although young, had been very popular, when her husband first presided over the Executive Mansion. She will again fitingly fill up the place on 4th March next for another 4 years.

Miss Marsden, who has been doing so much for the poor lepers of Siberia after having been honored by the Queen and the English people has gone over to America to collect money for the noble Mission. She is really a sister of mercy devoting all her life to alleviate the sufferings of the poor lepers in Asiatic Russia. She has been travelling all over that dreadful country, founding homes and Asylums for the suffering people. May all success attend the noble and self-sacrificing efforts of this lady! We would very much like to bave a Miss Marsden among our own cour try-women.

বামাবোধিনী পত্রিকা।

BMABODHINI PATRIKA.

"कत्याच्येवं पालनीया प्रिचणीयातियत्नतः"

কক্তাকে পালন করিবেক ও যত্নের সহিত শিক্ষা দিবেক।

ততদ সংখ্যা।

काञ्चन ১२১১—गार्क ১৮১०।

ু থম ক**ল**। ১ম ভাগ।

সাময়িক প্রসঙ্গ।

মিশরে গোলযোগ—মিশরের অধিপতি থেদিব এতদিন ইংরাজদিগের আশ্রের থাকিয়া শাসনকার্য্য নির্বাহ করিতেছিলেন, এখন তাঁহার স্বাধীন ইবার ইছা প্রকাশ হওয়াতে ইংরাজ ব্যথাত তথার দেখা দিয়াছে এবং থেদিবর চৈতক্ত উৎপাদনের চেটা করা ইউডেছে। শেষ ফল কি হয় বলিতে

সংস্কৃতের প্রতি অমুরাগ—

দর্শবেরা ইউরোপের মন্তক বলিরা

শক্তিহিত। তাহারা অনেকদিন হইতে

ংক্ষতের চর্চার বিশেব অভিনিবিট।

ভদন নামক ভত্রত্য এক দার্শনিক পণ্ডিত

শক্তিহিকাতার আদিরা এধানকার

শক্তিহিদকে চমুৎকৃত করিরাছেন্।

তিনি সংস্কৃতে অনর্গল কথাবার্দ্তা কন,
বেদ বেদান্ত প্রভৃতি অনেক শান্ত অম্শীলন করিমাছেন এবং শক্ষরাচার্য্যের
শিষ্য বলিয়া আপনাকে পরিচয় দেন।
আমরা আবার শুনিয়া আনন্দিত হইলাম
নরওয়ে সুইডেনের রাজা বড় বেদপ্রিয়।
বেদ বিষয়ে যিনি উৎফুট রচনা করিবেন, তিনি তাঁহাকে এক স্থাপদক
উপহার দিবার অভিপ্রায় প্রকাশ
করিয়াছেন।

দান—মহারাজা সিন্ধিরা কলিকাতার ভিন্ন ভিন্ন কলেজ ও দাতব্যালবে প্রায় ৬০০০ টাকা দান করিয়াছেন।
মহারাণী অর্ণময়ী গত ভাজ হইতে মান্দ
এই ৬ মালের মধ্যে অন্যূন ৩০৮৮৫ টাকা
দানাবিধ দেশহিতকরি কার্ব্যে দান

ক্রিয়াছেন। কে বলে মহারাণীর দান-नीनजा थर्क इरेशार्छ ? रेरात হ০০ ও তদ্ধিক দানের উল্লেখ করা যাইতেছে ;— কলিকাতা ডিষ্টাই দাত্ৰা সভা

সংস্কৃত কলেজে ছাত্র ফি বিশ্ববিদ্যালয়ের পরীকা ফি পুরীর মন্দির সংস্থার भरात्राणीत अभीनाती मत्या शुक्रतिणी मःकात १००० দেবীপ্রতিষ্ঠা উপলক্ষে ভিকুকদিগকে দান ৬০০০ ঐ ব্রাহ্মণ পণ্ডিত দিগকে দান স্থিস্মিতি চিকাগো প্রদর্শনে ডাক্তার কাদম্বিনী গাঙ্গলি ১০০১ শ্রান্ধ, বিবাহ ও অক্সান্ত দায়গ্রন্ত লোকদিগকে प्रान

হেওয়াই দ্বীপের বিপ্লব—আমে-রিকা এই দীপের পদচাত রাজীকে পেন্সন দিয়া ইহার স্বতাধিকার গ্রহণ করিতেছেন। তথায় মার্কিণদিগের জাহা-জের আড্ডাহইবে।

কপট সন্নাসিনী-গিরিবালা नाम्री এक ही खीलांक मन्नामिनीत दिश ধ্রিয়া পাণ্ডুয়ার ৩টা ভদ্রমণীকে গলামান कतारेया औत्कत्व वहेया याहेत्व विवया कृतिकां जाय थाता। इंशामिश्टक कृति ডিপোতে লইয়া যাওয়া তাহার অভিপ্রায় ছিল। সন্ন্যাসিনী হাত্ত, মোকদ্মা চলিতেছে।

আশ্চর্য্য বিবাহ—ভৌদগরের

রাজকভা কুমারী রম্বার সহিত পুর-বন্দরের রাজপুত্র কুমার ভারসিংজির বিবাহে বর উপস্থিত হইতে নাঁ পারিয়া তাঁহার তরবারি পাঠাইয়াছিলেন, সেই তরবারি বর স্থানীয় হইয়া কন্সা গ্রহণ করেন। এক রমণী এই তরবারীবাহিকা হইয়াছিলেন। কন্তা ভৌনগরে যাইলে विवाद्यत उमीठा:कार्या.मन्भन्न इटेरव।

চিকাগো মহামেলা—গণ্টুরের मुनलभान द्रभगिनिरशंद शिल्लविनाालय হইতে ২০০০ টাকা মূল্যের শিল্পজাত এই মহামেলায় প্রদর্শনার্থ প্রেরিত হইয়াছে।

কুমারী কর্ণিলিয়া সোরাবজী -এই বোম্বাইবাসিনী রমণী বিলাতে আইন অধ্যয়ন করিতেছেন। অক্সফোর্ডের বি, সি, এল উপাধি পাইয়াছেন।

गानाक नातीवलि- ७४४न আবিষ্কারের আশায় মাল্রাজের উকীল ব্রাহ্মণের কল্লাকে কয়েক ব্যক্তি ধরিয়া আনিয়া বলি দেয়। তন্মধ্যে এক পেন্সনপ্রাপ্ত পেয়াদা ছিল, তাহার দোষ সপ্রমাণ হওয়াতে প্রাণদভাকা रुरेग्राइ।

বিশ্ববিদ্যালয়—প্রবেশিকা পরী ক্ষায় এ বংগর ২৯টা বালিকা পরীক্ষা দিয়াছে, তর্মধ্যে ৯টা বাঙ্গালী, অবশিষ্ঠ ফিরিঙ্গী ও ইউরোপীয়।

পৃথিবীর খুসনক্রিয়া।

এই প্রস্তাবের শিরোনাম দেখিয়াই
অনেকে আশ্চর্য্য হইবেন। বাস্তবিক
ইহাতে আশ্চর্য্য হইবারই কথা। চেতন
পদার্থই (উদ্ভিদও চেতনের অস্তর্গত)
খাদ গ্রহণ ও নিখাদ ত্যাগ করিয়া
খাকে, অচেতন জড় পদার্থ পৃথিবীও
যে খাদ গ্রহণ ও নিখাদ ত্যাগ করিবে
ইহা সহজে বিখাদ হয় না। ত্রিংশৎ
বৎসর অতিবাহিত হইল প্রস্তাবলেথক
একদা কাব্যভাবে মোহিত হইয়া জগৎ
'জীবস্তু' বলিয়া কীর্ত্তন করিয়াছিলেন
যথা:—

পেই মত জানিবে এ অথিল সংসার । প্রত্যক্ষ শরীরধারী সচেতন প্রাণী,— প্রাণী মধ্যে প্রাণী থাকে এ তো সবে

আমাদেরি কুদ্র-দেহে কত দেহী চরে ! তেমতি আমরা চরি অবনী উপরে। অবনীও কোন এক মহাপ্রাণি কায়ে কুদ্রতম অণুমত রহে লুকাইয়ে।"

বিজ্ঞানবিভা—অসীমহ্যলোক।
আজি জগতের অগ্রনী বৈজ্ঞানিক
পত্রে* তাঁহার মতের প্রতিপোষক
প্রভাব পাঠ করিয়া তিনি যে অনির্কাচনীয়
আনন্দ অনুভব করিবেন, তাহাতে
আর বিচিত্র কি ?

বিজ্ঞানবিদ পণ্ডিতেরা পরীকা ছারা সপ্রমাণ করিয়াছেন যে পৃথিবীর শরীরের যে সমস্ত অংশ জলশ্য, সুলতঃ তাহা সছিদ্র। সেই সমস্ত ছিত্রছারা পৃথিৰীর উপরিস্থ নির্মাল বায়ু রাশি নিয়ত ভূগর্চে প্রবিষ্ট এবং তদভাস্তরস্থ দৃষিত বহিৰ্গত হইতেছে। স্বাভাবিক **অত**ল-স্পূর্শী আগ্নের গিরি-গহ্বরে ইহা প্রত্যক অনুভূত হয়। পৃথিবীর ধমনীচেছদ করিয়া গভীর পাতাল কুপ থনন করিবার সময়ও নিয়মিত খদনক্রিয়া বুঝিতে পারা যায় যন্ত্ৰ স্থাপিত এবং তহপরি বায়ুমান করিলে ইহা আরও স্বস্পষ্ট প্রতীত হয়। ष्यारमतिकाम टेलनमिन अ প্রদেশে অনেকগুলি অতলম্পর্দী বাষ্প-কুপ (Gas-well) আছে, এগুলি নিম্ব-মিত সময়ে বাষ্প বা বায়ুত্যাগ ও বায়ু-গ্রহণ করিয়া থাকে। স্থানউডের **নিকট** ওরগণেও একটা খদনশাল কুপ আছে। ইহার ৯০ পাদ গভীরতার নিমে জলীয় স্তর বা জলপ্রবাহ। কুপটী ক্রমশঃ কদিম, বালুকা, প্রস্তর ও মুদকারের স্তর ভেদ করিয়া থনিত হইয়াছে। মুদকারের তরল স্তর ৮০ পাদের নিম্নে। তরিমে ভগ প্রস্তর ও আগ্নেরগিরিপ্রস্থত ধাতৃচুর্ণ। তন্মধ্য দিয়া জলপ্রবাহ শনৈ:শনৈ নিঃস্থত হইতেছে। কুপটা খনন সময়ে মথো মধ্যে প্ৰভৃত বাষ্প নিৰ্গত হইরা অত্যন্ত কটের কারণ হইত; কিছু বর্ণন বন্ন

[•] Scientific American January

কার্য্য সম্পূর্ণ হইল, তথন আর এক প্রকার বিপদ্। প্রথমতঃ অবিপ্রান্ত বাষ্প নির্গত হইতে লাগিল, তদনস্তর যতক্ষণ ধরিকা বাষ্প নির্গত হইয়াছিল, ঠিক্ ততক্ষণ ধরিয়া উপরিস্থ বায়্রাশি সেইরপ বেগে কৃপ মধ্যে প্রবিষ্ট হইয়াছিল। ক্ষল যেমন ৯০ পাদ নিমে প্রবাহিত ছিল, তজ্ঞপই রহিয়া গেল। একণে কেবল নিয়মিতরূপে বায়্ গ্রহণ ও ত্যাগ সম্পন্ন হইতেছে। এই শ্বসন কার্য্য এক হইতে পাঁচ কিবা ছয় দিন ব্যাপিয়া

হইতেছে। ইহা এরপ প্রবশবেশে সম্পন্ন হয় যে, তদ্বারা একটা বাষুযার (উইও মিল) অনায়াসে চালিত হইতে পারে। কেবল যন্ত্রের পক্ষসকল বাপা বা নিশাস ত্যাগেয় সময় একদিকে এবং বায়ু প্রহণ কালে বিপরীত দিকে চালিত হইবে মাত্র। বায়ুমান যন্ত্রের দারা যে কোনও বৃহৎ-থাদ গভীর গহবর মধ্যে এই খসন ক্রিয়া উপলব্ধি হইতে পারে। যিনি ইছা করেন, ইহা পরীক্ষা করিয়া দেখিতে পারেন।

ভেন্তা কুমারী সম্প্রদায়।

প্রাচীন রোমীয় জাতি বর্ত্তমান পারসীদিগের স্থায় অগ্নিপুত্রক ছিলেন কি না তাহা বলা যায় না. কিন্তু তাহা-দিগের আরাধ্যা দেবী ভেস্তার মন্দিরে পুত হতাশন চিরপ্রজনিত থাকিত। ভেন্তা ত্রীক দেবী হেন্ডিয়ার অধির অধিষ্ঠাতী। বোধ হয় আর্ঘা-দিগের দেব হতাশন হেন্ডিয়া দেবীরূপে করিত। ইহার মন্দিরে পবিত্র অগ্নি সং-রকণার্থ ছয়টা কুমারী অগ্নিহোত্রীরূপে নিযুক্তা থাকিতেন। কুমারীগণ সম্ভান্ত বংশোত্তবা স্থলীকণা এবং ছয় ইইতে দশম খৎসন্ন ৰন্ধসে মনোনীতা হইতেন। ইহা-দিশের ত্রত বা পরিচর্য্যার কাল ত্রিশ বংসর নির্দারিত ছিল। তিশ বংসর হত পালন করিয়া উল্বাপনের অহসতি

প্রাপ্ত হইতেন। তথন তাঁহারা বদক বিবাহাদি করিয়া সংসার-ধর্ম করিতে পারিতেন। কিন্তু সচরাচর কুমারীগণ সংসার-ধর্মাবলম্বন না করিয়া চিরকুমারী থাকিয়া ভেন্তা দেবীর পরিচর্য্যাতেই জীবনাতিপাত করিতেন। সংসারের প্রতি এই ওদাসীল যে বৈরাগ্য-জনিত. তাহা সর্বাথা বর্ণিত হয় নাই। তবে বে সকল কারণে আমাদিগের দেশের মোহস্তগণ দায়গ্রহণ না করিয়া দেব-(স্বায় জীবন যাপন করিরা থাকেন, এই কুমারীগণের মধ্যেও সেই সকল কারণের সমগ্র রোমীয় অসভাব ছিল না। দাস্রাভ্যের পূজা গ্রহণ পূর্মক ইহারা बजून मन्भविभानिनी हरेएजन। यहर गुआहि । इंशामिश्य (प्रवीवर शुक्का कदि-

তেন, স্বতরাং ইহারা রাজবিধি ঘারাও শারিতা হইতেন না। রাজসভাও জন-সমাত্রে-প্রকাশ্র বা গুপ্ত স্থানে সর্বাত্র সর্বা সময়ে ইহাদিগকে দেবীবং আমন্ত্রণ করা হইত। ইহাদিগের অনুগ্রহ বা বিরাগ-ভাজন হওয়া মহাভাগ্য বা অভিশাপের বিষয় বলিয়া পরিগণিত হইত। শ্বির সৌভাগ্যপূর্ণ আধিপত্য ও অগীম সম্পত্নির বিনিময়ে কে সাংসারিক অনিশ্চিত স্থথের আকিঞ্চনে প্রয়াস পায় 📍 কাজে কাজে ইহাঁরা চিবকোমার্য্য ব্রতেরই পক্ষপাতিনী থাকিতেন। এগানে ভোগবিলাসিতারও অভাব হইত না। ধর্মের ছল্মবেশে গোপনে গোপনে এমন কুকার্যাই ছিল না যাহা ইহাঁদিগের দারা অমুষ্টিত না হইত, তবে তজ্জ্য ইহাঁ-मिशक नर्समा विश्व मठक इरेग्री চলিতে হইত। যে হতভাগিনী তাদুশ সতর্কতা সহকারে স্বীয় তৃশ্চরিত্র গোপনে সমর্থা না হইত, তাহারই সর্কানাশ হইত। প্রকাশ্র পাপাচরণের শাস্তি জীবদ্দশায় क्वत्रगार क्रा। मञ्जास्य भीग ७ भन-मर्गामानीन विनामी वाक्तियारे मर्समा এर পাপাচরণে সংলিপ্ত থাকিত বলিয়া

অনেকের চরিত্র অপ্রকাশিত থাকিত। তবে ইহাঁদিগের মধ্যে উন্নত জদলা দেব-চরিতা রমণীরও অসম্ভাব ছিল না এবং তাঁহাদিগের প্রার্থনা ও চেষ্টার রোমকজাতির অনেক কল্যাণ সাধিত হইয়াছে। কিন্তু মানব-সংসারে সকল সদম্ভানের যেমন অপব্যবহার হয়, এই অগ্রিতাতীদিগেরও সেইরূপ হইয়াছিল। ভেস্তার অগ্নিরকণ বাতীত ইহাদিগকে আর একটা দেবীর পরিচর্যা করিতে रहेज। वर्षी वरात हेप्टेरमवी भानामिश्रम। থীকেরা ত্রয়ের ধ্বংস সাধন করিলে তত্ত্ব-রাজজামাতা ইনিস এই দেবীমূর্ত্তি রোমে আনয়ন করেন। তদবধি ইনি রোমেরও ইষ্টদেবী বলিয়া পূজিতা। খুষ্টীয় ৩৯৪ অবে যথন এই কুমারী मञ्चलादबब्र চরিত্র-রহস্ত সাধারণের নিকট প্রকা-শিত হইয়া পড়ে এবং তজ্জ্ঞ কুমারী-मिशक (मवानय **इटे**टिंग विश्वित क्रिया দেওয়া হয়, তথন কুমারীরা হড হয় করিয়া ভেস্তা ও পালাদিরম (पवीमुर्डिबरे ध्वःत नाधन कत्रिवाहिन। তদবধি এই কুমারী সম্প্রদারেরও विलाপ इहेग्राह्य।

অপূৰ্ব পণ্য !

ছেন। বর্মার মাতির মধ্যে পুত্র কলা বা পুত্র কলাদিগের ভরণ পোবণার্থে वा भन्नी विकारबद्ध पृष्ठीख व्यविद्रन नटर, मठाबश्रंट आस्त्रिकटात्रत ह्लाक जेता- वद्यत्वत मनन विकास करतन, जाबाता

পাঠিকারা অনেক প্রকার পণ্য- হরণ দেখিতে পাওরা বার; কিন্তু সে জব্যের কথা শুনিরাছেন বা পাঠ করিয়া- । সকল পণ্য মধ্যে ধর্ত্তব্য নহে। স্বোদরপুরণ বে সকল অনাথিনী মন্তকের কেশ বং অমাত্র্যী দেবী। ভিক্তর হিউগো তাঁহার "লেস মিজারেবল" গ্রন্থে দরিলা ফন্-টাইনের চিত্র:এইরূপে অন্ধিত করিয়া-ছেন। হতভাগিনী তাঁহার শিশু সন্তানের ভরণ পোষণার্থে সর্বস্থ বিক্রয় করিয়া মস্তকের স্ক্র অবশেষে আপনার কেশ ও বদনের মুক্তাফলনিভ দস্তগুলি পর্যাস্ত বিক্রম করিয়াছিল! এই হঃখপূর্ণ ঘটনা বাস্তবিক ঘটিয়াছিল কি না আমরা ঠিক্ বলিতে পারি না, কিন্তু আমরা যে ঘটনার উল্লেখ করিয়া এই প্রস্তাবের অবতারণা করিয়াছি, ইহা প্রগাঢ সত্য। একটা রেলওয়ে কর্মচারী রেলওয়ে ছুৰ্টনায় আহত হইয়া সানফ্ৰান্সিদ্কে। হাঁদপাতালে নীত হয়। তাহার দক্ষিণ পদ দথা হইয়া বিষম ক্ষত হইয়াছিল। ভাচার আরোগ্য হইবার সভাবনা ছিল না। চিকিৎসকেরা শেষে যুক্তি করিয়া স্থির কারলেন যদি কোন জীবিত वाक्तित्र भतीत हटेट नग टेक मीर्घ उ পাচ ইঞ্চ প্রস্থাণ একথণ্ড মাংস কাটিয়া ক্ষত স্থানে সংযোগ করিয়া দেওয়া যায়, তাহা হইলে তাহা ক্ষত স্থানে সংযুক্ত হইয়া কত পূৰ্ণ ও পদ আরোগ্য হইতে পারে। কিন্ত কোন্ ত্যাগন্বীকার ব্যক্তি এরূপ তুকর করিয়া আপনার্টক বিপদাপর কৈরিবে? হতভাগ্যের একজন সহচর কর্মচারী প্রথমতঃ আপনকার গাত্র হইতে মাংস কাটিরা দিবার অভিপ্রার প্রকাশ করে. किंद वर्षम भारत्मत्र गतिमार्गत कथा वना - कर्चठातीत्रक शक् शृक्षवक सन्द रहेबाटह ।

হইল, তখন ভয় পাইয়া তাহা হইতে নিবুত্ত হয়। অবশেষে আহত ব্যক্তি নিরাশ হইয়া প্রকাশ করিল যে "যে এইরূপ আপনার শরীর হইতে गाःम नित्रा তাহার প্রাণ রক্ষা করিবে, মাংসের মূল্য স্বরূপ তাহাকে একশত ডলার (প্রায় তিন শত টাকা) প্রদান করিবে।" উক্ত হাঁসপাতালে লুসি প্লাট নামী একটা বিধবা ধাত্রী ছিল। ইহার তিনটা অপগণ্ড শিশুসন্তান হাঁসপাতালে বৃত্তি প্ররূপ যাহা পাইত, তাহাতে সংসার চলিত না। পাইলে অনেক উপকার হইবে, ভাবিয়া দরিদ্রা সন্তান-বংসলা আপন অঙ্গচ্চেদ করিয়া মাংস প্রদান বা বিক্রয় করিবার অভিপ্রায় প্রকাশ করে। তাহাকে নিরস্ত করিতে প্ররাদ পার. কিন্তু সে কাহারও বাক্যে কর্ণপাত করে নাই। অকুতোভরে ও প্রসন্নচিত্তে সে চিকিৎসক সমিতির নিকট উপস্থিত হয় এবং অম্লানবদনে আবশ্যক মাংস্থত দান করে। অন্ত চিকিৎসককে মাংদ্রথও কাটিয়া লইবার সময় কোন কুত্রিম উপায় অবলম্ব করিতে হয় व्यक्तरम् मन्भन्न इहेरन वरः নাই। কভন্তান ঔষধ বারা বাঁধিয়া দিলে বিধবা স্বরং একশত ডলার গণিয়া গ্রহণ পূর্বক थक्तििख शृंदर गमम कंत्रिम। বাহুল্য বে তাহার ক্ষত স্থান অচিরে **चार्र्यांगा हहेत्रार्ट्यः ध्वरं धार्ड द्रिण-**

গুরু গোবিন্দ সিংহ।

বত শাস্ত্র অধ্যয়ন করিয়া মহাত্মা নানক সাহ নৃত্র ধর্ম আবিষ্ঠার করত: শাস্ত, নিরীহ যোগীকুলের ভায় শিখ (শিষা শদের অপত্রংশ) **म**न्छामाग्र প্রতিষ্ঠিত করিয়া গিয়াছিলেন। সেই শিখগণ যত দিন না মুসলমানগণ কর্ত্তক নিরাপরাধে বিনষ্ট হইতে লাগিল-যত দিন না তাহারা মোগলসমাটের ঘোর-তর অত্যাচারে উৎপীডিত হইয়াছিল. ততদিন তাহারা মহদাশয় নানকের জ্ঞান অভিজ্ঞতা ও পাণ্ডিত্যপূর্ণ ধর্মা শাস্ত্রামূ-মোদিত কার্যা করিয়া আসিতেছিল। কিন্তু বাবর ও আকবরের অনুপযুক্ত বংশধর-স্ফ্রাট্ কুলকলক তুর্ত্ত অরঙ্গ-জেবের অত্যাচারে তেমন স্থণীতল স্থির স্বিল রাশির ভাষে শিষ্য সম্প্রদায়ে বিগ্রহবাডবানল প্রজ্ঞলিত হইয়া উঠিল। "ঈশ্বরের কথা ব্যতীত অন্ম অস্ত্রে যুদ্ধ করিও না" বলিয়া নানক ষে উপদেশ দিয়া গিয়াছিলেন, সমাটের অত্যাচার হইতে রক্ষার্থ সেই মহান উপদেশ শিপকুল উল্লন্ডন করিতে বাধ্য হইয়াছিল। এই সময়ে শিখ সম্প্রদায়ের অধিনায়ক হইয়া বে মহাত্মা ভাহাদিগকে চালিত করিতেছিলেন—যিনি ক্কাতির, স্প্রেণীর, মধর্মীর ও স্বদেশের প্রতি অত্যাচার

্দর্শন করিয়া সদয়ে তীত্র বেদনা অফুভব করিয়াছিলেন-যিনি অবিচলিত আধা-বসায়ে ও মহোৎসাহে এই কার্যকেতে অবতীৰ্ণ হট্য়া সাথকে বলি দিয়া-ছিলেন—্যাঁহার তেজ্পিনী অদম্য সাহস ও মহাপ্রাণতা অন্থিতে অস্তিতে প্রবিষ্ট হইয়া শিথ সম্প্রদায়ে নবজীবন স্ঞার করত: জাতীয় জীবনের অঙ্কুর উদ্ভাবন করিয়াছিল, সেই মহাত্মাই এই প্রবন্ধের শীর্ষক 'গুরু গোবিন্দ সিংহ।' গুরু গোবিন্দ সিংহ ১৬৬১ খ্রীষ্টাব্দে পাটনানগরীতে জন্মগ্রহণ করেন। নানক শাহ হইতে গুরু গোবিন্দ পর্য্যস্ত বংশ নির্ণয় করা কঠিন, কারণ নানকের পর যিনি গুরু পদ গ্রহণ করেন, তিনি নানকের পুত্র বা পৌত্র নহেন, তিনি একজন শিষা। নানকের পর তিন জন শিষ্য পরপর গুরু পদ প্রাপ্ত **रहेशा** अत्रताक गठ रहेता अर्ज्जनमन চতুর্থ গুরু হইলেন। এই চতুর্থ গুরু ইইতে গোবিন্দ সিংহ পর্যান্ত একটা বংশ-তালিকা নিমে দেওয়া গেল। ইহাদের वः म्त्र পরিচয় यতদুর পাইয়াছি, এই বংশ তালিকায় বোধ হয় তাহা পরিষ্কার-রূপে প্রকাশিত হইবে।* চতুর্থ গুরু বদি

শ অভিনয়ন হরগোবিশ শুরুবিতা, 'ক্রডসিংহ, ভেগৰাহাত্তর, অট্লরার, অগ্নরার শাহত্তমূল, হররার গোবিশ্বসিংহ नान्तरकत काि हरतन, उरत हैशिनिशरक एर्यावश्मीय महाताक तामहरक्त भूव नर्दत्र वश्मधत वना याहेर्ड भारत। नानक रय नव वश्मीय विनया श्रीख, जोश कामता श्राखास्त्र रमशाहरूड रहिश कतिव।

श्रक्टां ।

(১) নানক, (২) অঙ্গদ, (৩) অমর দাস, (৪) রামদাস, (৫) অর্জুন্মল, (৬) হরগোবিন্দ, (৭) হররার, (৮) হরে ক্লফ, (৯) তেগবাহাছ্র, (১০) গোবিন্দ সিংহ।

কাহারও কাহারও মতে নানককে ছাজিয়া দিয়া অঙ্গদ প্রথম ও গোবিন্দ সিংহ নবম গুরু স্থানীয়।

অর্জ্বন্দল ও হরগোবিল মোগল সমাট্ কর্ত্ক নিষ্ঠ্ররপে নিহত হরেন, এবং তেগ বাহাছরের অবস্থাও স্বায় পিতা ও পিতামহের ভায় ঘটে। তেগ বাহাছরে মৃত্যুর জন্ত যথন দিল্লীতে নীত হরেন তথন গোবিলকে ডাকিয়া বলিলেন "ওন গোবিলক! আমি চির বিদার লইয়া দিল্লীতে চলিলাম, কিন্তু আমার ছটা কথা কি তোমার স্বর্গ ধাকিবে? একটা, আমার মৃত্যুর পর আমার দেহ শৃগাল ক্রুরের ভক্ষ্য হইতে দিও না, বিতীর্টী—তোমার পিতা, পিতামহ ও প্রাপিতামহের লোচনীয় ক্রুরের ভিক্র বিশ্বত হইয়া ভোগবিলাদের অধীন হইও না।" এই সমর

পোবিন্দের বয়স পনর বৎসর মাত্র, গোবিন্দ অশ্রেজনে বদনমণ্ডল প্লাবিভ করিয়া পিতার নিকট "তাহাই হইবে" বলিয়া বিদায় লইলেন। এখন হইতেই গোবিন্দ কার্য্যক্ষেত্রে অবতীর্ণ হইয়া স্বীয় কর্ত্তব্যপালনে দৃঢ়ব্রত হইলেন। বাহুল্য যে দিল্লী হইতে পিতার মৃতদেহ भियामिरगत यात्रा आनत्रन ক বিয়া সৎকার করিলেন। পিতার মৃত্যুর পূর্ব্বে তিনি পিতার নিকট যে অঙ্গীকার করিয়া তাঁহার আনন্দ বর্দ্ধন করিয়াছিলেন. গোবিন্দ সে অঙ্গীকার আজীবন এক মুহুর্ত্ত বিশ্বত হইতে পারেন নাই। इत्रत्शाविन यमिश्र निथ मुख्यमारम व्यक्त শিক্ষার প্রথম প্রচলন করেন, কিন্তু গোবিলসিংহ সেই অস্তের জীবনদাতা অর্থাৎ শিখদিগকে ইনিই যুদ্ধ শিক্ষা প্রদান করেন এবং ইহাঁরই তেজে তাহারা যুদ্ধক্ষেত্রে বিপুল উৎসাহে অবতীর্ণ হয়। গোবिन मिर्श्यमि अवीवटनत (नवारटन মোগলের দেনাপতিত্ব গ্রহণ করিয়া-ছিলেন, কিন্তু তথনত তিনি উচ্ছু খল निथ मच्चेनारमञ्जूष्यमा माधरन नियुक्त हित्यन । शुक्रशाविन निःश यमि कीवन-মধ্যাহ্রে গুপ্ত হত্যা হইতে আপনাকে রকা করিতে পারিতেন, ভাহাহইলে ভারত সম্রাজ্যের ভাগ্যচক্র কোন্দিকে চালিত হইত কে বলিতে পারে ? ইনি এक नेमत्र ज्ञातकस्क्रवरक विनेताहित्नमः "আপনি হিন্দে মুসলমান করিতেছেন, व्यामि मुत्रणमानटक हिन्तू कत्रिव ; जाननि

००४ मर ।

काशनाटक निजालम मत्न कतिरुह्म, শিক্ষাবলে কিন্তু সাবধান! আমার চটক শ্রেনকে ভূপাতিত করিবে।" গুরু-গোবিন্দ সিংহের এই তেজোগর্ব্বিত বাক্য মিথ্যা হয় নাই। ১৬৯৫ গ্রীষ্টাব্দে নাছনের দর্দারের দহিত মোগলদিগের বিপক্ষে তাঁহার প্রথম যুদ্ধ সংঘটন হয়, এই যুদ্ধে গোবিন্দ সিংহ জয়লাভ করেন। নাদন* রাজের সপক্ষে মোগলের বিরুদ্ধে মিয়া খাঁ নামক মোগল সর্দারের সহিত ইহাঁর দিতীয় যুদ্ধ হয়, এ যুদ্ধেও গোবি-**ट**न्नत अत्र रुप्र। ১৭०১ औष्ट्रीटक मिनित খাঁর সহিত ইহাঁর তৃতীয় যুদ্ধ হয়, এই যুদ্ধে গোবিন্দ সিংহ প্রথমে পরা-জিত হয়েন ও তাঁহার হুইটা শিশুসন্তান মুসলমানকভূকি বিনষ্ট হয়। যে স্থলে এই যুদ্ধ হয় তাহা আজও মুক্তসর নামে প্রসিদ্ধ, কারণ এই পরাজয়ের পর ইনি এথান হইতে সপরিবারে চম্পকুমারে প্রস্থান করেন। এই পরাজয়ের পর গোবিন্দসিংহ,আরও একটী যুদ্দে মোগল-**मिशदक शदान्छ कद्यन।** शाविन्मिशः ह নিজে বিদ্বান্ ও স্থপণ্ডিত ছিলেন, স্তরাং ইনি গ্রন্থাদি প্রণয়ন করি-য়াও লোকের ভক্তি আকর্ষণ করিয়া-ছিলেন। গোবিন্দের পূর্ব্বে অন্ত কোনও শুকুর সিংহ উপাধি ছিল না , যুদ্ধ কার্য্য ও বীরত্বের পরিচায়ক দিংহ উপাধি গোবিক নিকে সৃষ্টি করিয়া উহা গ্রহণ

নাদন রাজ্য জীনগরের উত্তর পশ্চিমে ও
 মুদ্র দক্ষিণ পুর্বের অবস্থিত।

कर्द्रन ७ निरामिशतक थामान करतन। গোবিন্দ সিংহ পণ্ডিত, অধ্যবসায়শীল, कडेनहिकू, युक्तरकोननिवित् अस्तिभासूत्रात्री তেজস্বী বীর এবং ধার্মিক সন্ন্যাসী ছিলেন। গোবিন্দ সিংহ যথন তাঁহার শিক্ষিত চটক দারা মোগল দৈত্তকে সম্ভাগিত করিতেছিলেন, সেই সময় যদি তিনি ও শিবজী দীর্ঘজীবন প্রাপ্ত হইয়া একতা-বন্ধনে আবন্ধ হইয়া হতভাগিনী ভারতমাতাকে উদ্ধার করিবার জন্স অসি সঞ্চালন করিতেন, তাহা হইলে ভারতসিংহাসন আর বাহাছর সাহকে ক্রোড়ে স্থান দিত কিনা সন্দেহস্থল। কিন্ত হায়! ভারতের অদৃষ্টে যে বিধি তাহার সম্ভানগণের বুক্চিরা শোণিতা-ফরে লিথিয়াছিলেন, "অধীন**তা—লোহ**-নিগড়ে আবদ্ধ হও" তাহা কে খণ্ডাইবে ? গোবিন্দ হিন্দু মুসলমানকে এক ভূমিতে আনয়ন করিয়া—বামন, বৈখ্য, শুদ্রকে এক স্থত্তে গ্রথিত করিয়া যে গভীর-সাধনা, একপ্রাণতা, স্বাধীনতা, স্থিরতা ও নিস্পৃহতা শিথগণের মজ্জায় অস্থিতে অস্থিতে, শিরায় শিরায় প্রবেশ করাইয়া দিয়াছিলেন,তাহাতে শিথসমাজ নববলে নবজীবনে অভ্যুথিত হইতে পারিয়াছিল, কিন্তু গুরুগোবিন্দের সঙ্গে সঙ্গেই তাহাদের ভাগ্যলন্দী অন্তর্হিত হইলেন বলিতে হইবে। আজও শিথ-সৈত্যগণ যুদ্ধের জন্ত প্রসিদ্ধ। रगाविन निः र ১१०५ औष्टीत्म रगामांवत्री তীরবর্তী নাদর নামক স্থানে কোনও

পাঠানের হত্তে জীবনত্যাগ করেন।
মৃত্যুকালে ইহাঁর একটা সন্তানও জীবিত
ছিল না। ইনি শিষ্যুগণকে কিরুপে
শিক্ষা দিতেন, তাহার একটা উদাহরণ
দিয়া প্রবন্ধ শেষ করিব।

গোবিন্দ সিংহ সময় সময় নির্জ্জন বাস করিয়া শান্তাদি পাঠে নিয়ত রত থাকিতেন। একদা ইনি নির্জ্জনে গিরিগুহায় বাস করিতেছিলেন। গোবিন্দ যথায় নির্জ্জন বাস করিতেন, ইহার শিষ্যগণ তাহা জানিত এবং আবশুক হইলে তথায় গিয়া গুরুর সহিত সাক্ষাৎ করিত। এক সময় রঘুনাথ নামক একজনশিষ্য ঐ গিরিগুহায় আসিয়া গুরুকে বিং, ০০০ টাকার ছ্থানি হস্তাভরণ উপ্নরের দিল। গুরু উহা গ্রহণ করতঃ

শিষাকে আশীর্কাদ করিয়া বলর হটী পার্খে রাখিয়া দিলেন—অমনি তাহার একটী গড়াইয়া নদীস্রোতে পতিত হইল। রঘুনাথ দেখিবামাত্র জলে নামিয়া উহার অবেষণ করিতে লাগিল, কিন্তু না। তথন রঘুনাথ একজন আনিয়া তাহাকে ৩০০ টাকা প্রদান করিবে বলিয়া জলে নামাইয়া দিয়া গুরুর নিকট জিজ্ঞাসা করিল ঐ বালা কোথায় পড়িয়াছে? গুরু দ্বিতীয় বালাটী নদীতে ছুঁড়িয়া ফেলিয়া বলিলেন"ঐথানে পড়িয়াছে।" তদ্দর্শনে ডুবারী সবিশ্বয়-চিত্তে ফিরিয়া গেল। রঘুনাথ গুরুর নিম্পুহতা দর্শনে মোহিত হইয়া সেই অবধি বিষয় বাসনা পরিত্যাগ করিয়া গুরুর দৃষ্টাম্বের অমুসরণে প্রবৃত্ত হইল।

প্রতিমা বিদর্জ্জন।

সাঙ্গ জীবনের দ্বিতীয় অধ্যায়।
মর্ত্ত্য-অভিনয় শেষ হয় প্রায়!
কাল পারাবারে অনস্ত পাথারে
উন পঞ্চাশত
বর্ষ ভেসে যায়। ১

পার্থিব বন্ধন একে একে বল,
ক্ষিতে ক্ষিতে ছি ড়িছে নিয়ত!
উজ্ঞান বহিল, ভাটিতে পড়িল,
ক্ষীণ তমু-তরী
বহে আর কত
ং

সম্পদ বিপদ, সংযোগ বিয়োগ,
স্থুত্ব, হর্ষ শোক ভোগ রোগ,
ঘটনার ঘোরে দিবানিশি ঘোরে,
অদৃষ্ট আবর্ত্তে,
কর্ম-ফল যোগ! ৩

জীবন বৃক্ষের অবশিষ্ট ফুল
ফুটিতে ফুটিতে ছিঁজি বৃস্তম্ল,
সহসা থসিল, সর্কনাশ হৈল,
উন্দৃতি হৈল

। আশালভা মূল! ৪

बीवत्नत्र माथ ममख पृष्ठिन ! জনমের মত ভোগ ফুরাইল ! শ্বশান সংসার. আঁধার আগার. প্রছলিত দীপ महमा निविता । ६ কত সাধ, ফুল, ছিল তব মনে ! শোভাময়ী তুমি, সংসার কাননে! আহ্লাদে হাসিতে, আনন্দে ভাসিতে, সোহাগে দোলিতে স্থ সমীরণে। ৬ সংসারের হিত সাধিতে বিব্রত, কতই আগ্রহে থাটিতে নিয়ত। সদাহাস্ত মুথ, জানিতে না হুথ, পূর্ণ আশা ভরে সুখী ছিলে কত ! ৭ ভাবিতে এমতে যাবে চিরকাল। ভাঙ্গিল স্বপন অসময়ে কাল ! সোণার সংসার হৈল ছার থার ! জ্বলিল আবার माराधि विभाग। ৮ সংসার কাননে মঞ্জরিয়া কণে. আশা-ক্নশা-লতা কালের দংশনে, ফুটস্ত সময়ে. ছিল্মুল হ'য়ে; আছাড়িয়ে যবে ত্যজিল জীবনে। ৯ অমার আঁধারে ঘেরিল ভুবন ! শৃশুমন্ব হৈরি হৈন্ত অচেতন ! रात्रामाम कान, मात्रा देश প्रार्भ, কর্ম-ভোগ হেতু নহিল মরণ ! ১০

কত সাবধানে, কত সম্বৰ্ণ ছিন্ন শূল তম্ভ গুছারে যতনে, वाक्षि श्रुपि मत्त, त्रिकि अञ्चल्लत. কত যে কাঁদিয় श्वमतिया मत्न । ১১ সতী দেহ চক্রে থণ্ড থণ্ড করি দিগ দিগন্তরে নিক্ষেপিলা হরি ! আকুল শঙ্কর যোগে দিলা ভর. माधनां अपूनः লভিলা শঙ্করী। ১২ না জানিত্ব কোন সাধনার বলে ? কোন পুণ্য ফলে? কি গুড় কৌশলে? ছিন্ন মূল হৈতে পুন: আচম্বিতে, গজায়ে অস্কুর श्रुष्ठे देश्ल मत्ल । ১৩ পুনঃ কিশলয় নৃতন নৃতন সোহাগে সতেজে দিল দরশন ! পুনঃ মঞ্জিল, সৌরভ ছুটিল, লাবণা প্রভায় উজ्लिल वन । ১৪ কশ লতা ক্ৰমে বৰ্দ্ধিতা হইয়া ছায়ায় সংসার ফেলিল ছাইয়া! বৃত্তে বৃত্তে ফুল, কলিকা মুকুল, দলে দলে মধু পড়ে চলকিয়া! ১৫ নিয়তির গতি রোধে সাঁধ্য কার ? ফুটস্ত সময়ে লতিকা আবার! गहमा कि देशन, आहा हि পड़िन, কিশলর শীব लाएँ ठाविशाव ! >%

মুকুল কুস্থম, কলিকা শুকার,
কোমল পাবড়ী ঝ'রে প'ড়ে যায়!
বৃস্ত চ্যুত হৈয়া ভূমিতে থদিয়া
কচি কচি ফল
গড়াগড়ি যায়! ১৭

দেখিতে দেখিতে একি চমৎকার !
স্বর্ণ-লতিকার চিহ্ন নাহি আর !
মূল উৎপাটিয়া চিবিয়া চিবিয়া
গরাস করিল
কাল হুরাচার ! ১৮

আর এ সংসারে লতিকা স্থলরী
হাসিবে না পুনঃ বন আলোকরি !
সাজি ফল ফুলে, বাদ্ধি বাহু মূলে,
দোলিবে না আর
হাদি দল ধরি ! ১১

স্নেহে সিক্ত করি প্রেম কিশলয়
আর না শীতল করিবে হৃদয়!
জনমের মত ফুরাল তাবত
পৃথিবীর স্থথ
ভোগ সমুদয়। ২০

সংসারের সাধ মিটিল সকল। নিবিল প্রবল আসক্তি অনল ! ফুরাইল আশা ঘচিল পিপাসা, উশ্বাদিত হৈদ বাসনার দল ! ২১ नीतम जीवन नितार्थ जनिन । হাহাকার রবে ভুবন ভরিল ! এ ঘর সংসার, কার তরে আর গ শৃত্য গৃহ চির भारक भूर्ग देशन ! २२ বিধির বিচার অন্তথা কি হবে ? কোথা জন্মহঃথী ভাগ্যে স্থখ লভে ? না জানি সংসারে তঃথ ভুগিবারে এ পাপ জীবন কত দিন রবে ? ২৩ কেন আর শোক ? তুঃথ কি কারণ ? কিসের বিপদ ? কেন বিলাপন ? পाना फ्**ताहेन.** नीना मात्र देशन. প্রেমের প্রতিমা र'ला विमर्जन। २8 ৩রা ফাল্গন--১২৯৯।

অন্ত্যেষ্টিক্রিয়া।

সভ্যকাতে সচরাচর অস্ত্যেষ্টিক্রিয়া।
বিবিধ পদ্ধতি অনুসারে সম্পাই হইয়া
থাকে—শবদাহ ও শবসমাধি। প্রাচীন
আর্ব্যালাভি বহদর্শন দারা শবদাহ প্রথা
প্রচলন কি করিয়া বিদ্যামন্তার পরিচয়
দিয়াই শিক্ষাছেন! মেছকাতি অনার্য্য

ম্বতরাং তাহারা আর্য্যজাতির বিপরীত আচরণ করিত। শব কবরসাৎ করি-বার প্রথা তাহাদিগেরই দারা প্রচলিত হওরা সম্ভব। কিন্তু অধুনা এই উভন্ন প্রথারই কলাফল বিবেচনা করিয়া সভ্যজগতে ভয়ানক আন্দোলন উপ- ন্থিত হইয়াছে। য়ুরোপীরগণ একণে শ্বদাহের আবশ্রকতা অহন্তব করিয়া স্থানে স্থানে চিতা নিৰ্ম্বাণ কবি-তেছে। এখানে শব সকল বৈজ্ঞানিক (कोमल मार कता रहेग्रा थात्क। ১৮१৪ খুষ্টাব্দে মূরোপে প্রথম চিতা নির্মিত হয়। ইহার কিছুপুর্বেই তালিতে পরী-কার্থে কতিপয় চিতা প্রস্তুত হইয়াছিল। একণে वछन, द्याम, ब्रामन्म, मिनान, ডেসডেন, কোপেনহেগেন, ইত্যাদি অনেক নগরে স্থায়ী চিতা নির্মিত হইয়াছে। আমেরিকার যুক্তরাজ্যে ইতিমধ্যে ৪টী চিতা প্রতিষ্ঠিত হইয়াছে। শবদাহ সমিতির সভাপতি হেনবি ট্যসন। তাঁহার মতে বাইবেল-প্রোক্ত "ভন্ম ভন্মে ও ধুলা ধুলীতে লীন" হইবে ইহা প্রগাঢ় সত্য। তিনি বলেন অস্ত্যেষ্টিক্রিয়ার দারা শরী-রের ভ্রন্ধিসাধন হয়। শারীরিক ব্যাধি ও ব্যাধিবীজ সকল অগ্নিসংস্কারেই বিনষ্ট হয় এবং অবশিষ্ঠ অংশ ধূলি বা মৃত্তিকা-সাৎ হয়। মৃত্যুর পর অক্ত অক্ত ইন্দ্রিয় ও উপাদানাংশ সকল মূল পদার্থে লীন হইয়া থাকে।" আমরাও ভৌতিক শরীর পঞ্চততে বিলীন হয় বলিয়া থাকি এবং অস্ত্যেষ্টিক্রিয়াকে সংকার্য্য বলিয়া অভিহিত করিয়া থাকি। দেহত্যাগের পর আত্মা মানসিক বৃত্তি সকলের সহিত অনস্ত আত্মার অহুগামী হইয়া অনস্তদেশে অনস্ত উন্নতি লাভ করিয়া পরিশেবে মুক্ত হইরা থাকে।

वक्जन पर्नक शांत्रित्रत्र वक्री স্বামী চিতাগৃহ দর্শন করিয়া লিখিয়াছেন যে "চিতাগছের একপার্মে তিনটী ফুকর আছে। এক একটী ফুকরে সাত ফিট লম্বা ও তিন ফিট চৌড়া চুলী আছে। ইহাতে কলে জাল দেওয়া একটা অৱভার কাঠের শ্যায় শ্ব স্থাপিত করিয়া তাহা একটা লোহের পাত্রে রাথা হয়। পাত্রটীও একটা কুল লোহ গাড়ির উপর রাথিয়া রেলের উপর দিয়া গড়াইয়া চুলী বা চিতার উপর চড়াইয়া দেওয়া হয়। ইহা কলে সম্পন্ন হইয়া থাকে। যেমনি পাত্রটি চিতার-উপর উঠে. অমনি একটা দরজা কলে উঠিয়া ফুকরটা বদ্ধ করে, অমনি প্রবল চিতানল প্রজ্ঞলিত হইয়া অলক্ষ্যে শ্ব-দাহ করিতে থাকে। একঘণ্টা কাল অপেকা করিয়া দরজা উদ্বাটনপূর্বক পাত্রটী বাহিরে আনিলে তথন দেখা যায় সমস্ত দগ্ধ হইয়া ভস্মাভূত হইয়াছে, (क्वन (य मकन अन्ति मध्र हरेवांत्र नाह, তাহাই অবশিষ্ট থাকে। সেইগুলি সাবধানে সংগ্রহ করিয়া একটা কুত্রপাত্তে স্থাপনপূর্বাক তহুপরি স্থান্ধি পূজা ও অপরাপর গৰুদ্ৰবা সমাগত হইয়া ন্ত্ৰীলোকেরা এখানে বিলাপ করিতে করিতে অস্ত্যেষ্টিক্রিয়ার অস্তান্ত কার্য্য সম্পূর্ণ করিরা থাকেন। তৎপরে সেই পরিপূর্ণ পাত্র অবস্থায়সারে সমাধিত্ব করা হয়।"

ब्र्तालिक नर्संबर्ध और ध्वेकारिक

শবদাহ হয়। এইরূপ স্থায়ী চিতার অধ্যাপক গরিণি, তক্ষ্মত ইহাকে গরিণি নিশাতা ইটালির লভি নগরের প্রসিদ্ধ চিতা বলে।

বাঙ্গালা প্রবচন।

- ১। ভক্তিহীন ভজন আর শ্বণহীন उक्रन।
- ২। ভক্তের ভগবান্।
- ৩। ভক্তিতে ভগবান তুষ্ট।
- ৪। ভগ্ন তবী।
- ৫। ভগ গৃহে বাস, ছঃথ বারো মাস।
- ভাভগ্নেহেন যা মৈত্রী ন দা কল্যাণদায়িকা।
- १। ভট্টাচার্য্য খুঁটের খুঁট, স্বস্তায়নে সবংশে ভূট।
- ৮। ভবতি বিজ্ঞতমঃ ক্রমশো জনঃ।
- ৯। ভবানী ক্রকটীভঙ্গী ভবো বেতি ন ভবানী।
- ১ । ভবের বান্ধী ভোর।
- ১১। ভবিতব্য কে খণ্ডাবে ?
- ১২। ভবী ভোলবার নয়।
- ১৩। ভয়ও নাই ভর্মাও নাই।
- ১৪। ভরা ডুবী।
- ১৫। ভরা পেটে মোণ্ডা তিতো।
- ১৬। ভরার চেঁরে থালি ভাল য/ ভর্তে यात्र, आरगत तहरत्र शिष्ट जान
 - बि ए एक गाव।
- ১৭। ভক্ষাচ্চাদিত অথি।
 - ১৮। ভব্মে ঘি ঢালা।

- ১৯। ভাই ভাই ঠাঁই ঠাঁই।
- २०। ভাইয়ের ভাই, ডান হাত দিলে বাম হাত পাই।
- ২১। ভাগাড়ে মড়া পড়ে, শকুনির মাথায় টনক নডে।
- ২২। ভাগের কডী সাঙ্গে বয়।
- ২৩। ভাগের ভাগ না থেলেও চিবয়ে ফেলি।
- ২৪। ভাগাং ফলতি সর্বাত্তন বিদ্যান চ পৌরুষং ।
- ২৫। ভাগ্যবানের বোঝা ভগবান্ বয়।
- ২৬। ভাঙ্গা ঘরে জ্যোছনার আলো. (य मिन योग्र (म मिन जोन) খাই না থাই আছি ভাল।
- ২৭। ভাঙ্গা ঘরে ভূতের বাসা।
- ২৭॥। ভাঙ্গা শাঁখা কি যোড়া লাগে ?
- ২৮। ভাঙ্গা ঢাক বা ভাঙ্গা মঙ্গলচণ্ডী।
- ২৯। ভাঙ্গা হাড়ে ভেল্কী থেলে।
- ৩০। ভাঙ্গলে পরে সকল-গড়ে মন গড়ে
- ৩১। ভাঙ্গে ত মচ্কায় না।
- ৩২। ভাজা বলো ভূজো বলো ভাতের স্মান নয়. মাসী বলো পিসী বলো

মার সমান নয়।

- ৩৩। ভালা মাছ উল্টে থেতে জানেন না।
- ৩৪। ভাজে ঝিঞে বলে পটল।
- ৩৫। ভাত উতলালে দিবে কাট, জাল দিবে গুটি গুটি, তবে ভাতের পরিপাটী।
- ৩৬। ভাত কাপড়ের কেউ নয়, নাক কাটবার!গোঁসাই।
- ৩৭। ভাত থাই কাঁসী বাজাই আর কিছুর ধার ধারি না।
- ৩৮। ভাত ঘর দেখে দিলে কাঠ ঘর হয়।
- ৩৯। ভাত ছড়ানে কাকের অভাব কি ?
- ৪•। ভাত রোচে না রোচে মোয়া,চিড়ে রোচে পোয়া পোয়া।
- ৪১। ভাত হাঁড়ীর ভাতএকটী টিপলেই সব বোঝা যায়।
- ৪২। ভাতার পুতের কল্যাণ সকলেই চায়।
- ৪৩। ভাতার যদি না চায়
 হঃথ নাই তাতে,
 মর্তে যেন পারি ভাই
 নোঙা রেথে হাতে।
- ৪৪। ভাতের চাউল চর্বণে যায়।
- ৪৫। ভাদ্র মাদের তাল।
- 🐯। ভাষারও ফলার 🤊
- ৪৭। ভারী নৈলে ভার বয় কে ?
- ৪৮। ভারত ছাড়া কথা নাই।
- ৪৯। ভার্য্যার সমান নাই শরীর তোষিকা।
- । ভাল কর্ত্তে পার্কোনা মন্দ কর্বো,
 কি দিবি তা দে।

- ভাল খোড়াকে এক চাবুক,
 ভাল মান্ত্ৰকে এক কথা।
- থ২। ভালর ভাল সকল ঠাই, মন্দের ভাল কোথাও নাই।
- ে ভালবাসার এম্নি গুণ,
 পানের সঙ্গে যেমন চুণ,
 কম হৈলে লাগে ঝাল,
 বেণী হৈলে পোডে গাল।
- গোল কথা মনে পজ্লো আঁচাতে আঁচাতে,
 ঠাকুরবিংকে নিয়ে গেছে নাচাতে নাচাতে।
- ৫৫। ভালুক জর।
- ৫৬। ভাবগ্রাহী জনার্দনঃ।
- ৫৭। ভাবে ডগমগ তেলাকুচো, হেসে মলো কালো ছুঁচো।
- ৫৮। ভাবিতে উচিত ছিল প্রতিজ্ঞা যথন।
- ৫৯। ভাস্থর ভাদ্রবৌ সম্পর্ক।
- ৬০। ভাঁড়ে ভবানী।
- ৬০॥। ভাঁড়ের নিমন্ত্রণ, না আঁচালে বিশ্বাস নাই।
- ७५। जिक्रमा देनव देनव ह।
- ৬১॥। ভিক্ষার চাউল, তা আবার কাঁড়া না আকাঁড়া।
- ৬২। ভিজে বিড়াল।
- ৬০। ভিটায় ঘৃত্ব চরে।
- ৬৪। ভিতরে গরল, বাহিরে সরল।
- ৬৫। ভিন্ন কচিহি লোকাঃ।
- ७७। ভिমक्रामत চাকে चा पि उगा।
- ৬৭। ভীমের গদা।

৬৮। জীয় দ্রোণ হত হৈল লৈল হৈল রথী,

> চক্র স্থ্য অন্ত গেল জোনাকীর পাছে বাতী।

৬৯। ভীম্মের শরশয্যা।

৭•। ভূত ভোক্য।

৭১। ভূতে পশুস্তি বর্ষরা:।

৭২। ভূতের বোঝা বহা।

৭৩। ভূঁই শৃক্ত রাজা।

१८। जुँरेरकाज़ क्यीनात्र।

৭৫। ভৃত্যাভাবে ভবতি মরণং কিন্ত কিন্তু সম্ভাবিতানাং। १७। एक ना गरेल छिक् मिरन ना।

৭৮। ভেড়াকাস্ত।

৭৯। ভেড়ার পাল।

৮ । ভেড়ার সাধ্য কি যব মাড়া।

৮১। ভেতো বাঙ্গালী।

৮২। ভেবে করা আর ক'রে ভাবা।

৮৩। ভোজনং যত্র তত্র

শয়নং হট মন্দিরে,

মরণং গোমতীতীরে

অপরং বা কিং ভবিষ্যতি।

৮৩। ভ্রাতুষ্পুরেণ পুরতা।

ভাই বোন।

আগে আগে খামা বার পিছুতে তাকার।
পিছু পিছু ভাবী বোন দাদা বলে ধার॥
খামার পড়িয়ে গেল হাত হ'তে বই।
ভাবী এসে বলে দাদা দাঁড়য়ে কেন তুই॥
পোড়ামুখী! তোর জভ্যে বইপ'ড়ে গেল।
মারে বল্বো শেমো পথে গাল দিয়ে
ভিল॥

দ্র হ'তে দেখে তোরে দাঁড়ায় হেথায়।
পড়ে গেল বই ভোর আলায় কাদায়॥
চলে কেন যাস নাই দেখিলি যে পিছু ?
আস্ছিলি দেখে তুই হয় পাছে কিছু॥
ফু'ত হ'ত আমার হ'ত তোর তায় কি ?
তোর সব কথা মারে এখন বলে দি ?
আমর দাঁড়ামেছিয় ভোর জত্তে ভাবী।
মোর কথা মার কাছে তুই কি বলিবি ?

বল্বো পথে দিয়ে ছিল শেমো ফেলে বই। শ্রামা বলে সত্তি বল্লে মা বকে নাতো কৈ॥

আস্ছিলি পিছু পিছু দাঁড়ালাম দেথে। দেখ্তে দেখ্তে গেল পড়ে বই হাত থেকে॥

द्वारा ।

दिन्त ।

কেহ কার কাছ নারে এদিকে ছাড়িতে, প্রদিকে ঝগড়া গুন দোঁহার মুথেতে॥ मात्र वाशा मात्र कार्ष्ट हरण या ७ धन । हुनकत्र याङ्मिन विण कथा रमान्॥

ভাই বোন যে জিনিস্ অত্যে কি জানিবে ? অত্যে নয় শুধু ভাই বোনেই বুঝিবে।

বিজ্ঞান রহস্য।

নূতন কল—কিনেটোগ্রাফ।

(Kinctograph)

পাঠিকারা জানেন ফটোগ্রাফ ছারা কেমন স্বল্ল সময় মধ্যে অবিকল প্রতি-মুর্ত্তি দকল অনায়াদে অঙ্কিত বা তোলা হইয়া থাকে। প্রতিবিম্ব দর্পণে মুকুরিত হইবা মাত্ৰই বিজ্ঞান-কৌশলে অঙ্কিত হয় এবং ষদুজ্যাক্রমে প্রদর্শিত হইয়া থাকে। ফটোগ্রাফে যেরপ রূপের প্রতিভাস চিত্রিত হয়, ফনোগ্রাফে সেইরপ শব্দের প্রতিঘাত মুদ্রিত হইয়া থাকে। গানবাদ্য বক্তা বাদাহ্বাদ হাস্ত ক্ৰন ইত্যাদি যাবতীয় ধ্বনি ফনোগ্রাফে মুদ্রিত হয় **এবং यमुष्टाक्राटम उरममुमारम भूनतावृ**छि করা যাইতে পারে। এই শেষোক্ত ধরের আবিক্তা আমেরিকার স্থপ্রসিদ্ধ विकानवि९ हे जिन्न। বামাবোধিনীর পাঠিকারা ইহাঁর নাম ও ইহাঁর নির্মিত তাড়িত যন্ত্র সকলের বিষয় অ্যনেক বার ওনিয়াছেন। সম্প্রতি ইনি কিনেটো-গ্রাফ নামে আর একটা নুতন যুদ্র নির্ম্বাণ করিয়াছেন। हेश कछीशाक ও ফনোগ্রাফের একত্র সমাবেশ। ইহাতে কটোগ্রাকের ছারা রূপ ও ফনোগ্রাফের

দারা কণ্ঠস্বর সকল মুদ্রিত হইয়া যুগপং প্রদর্শিত হইয়া থাকে। যাত্ৰা, উৎসব, রঙ্গভূমে, নাট্যালয়ে, বিরাট সভায় ও যুদ্ধক্ষেত্রেও ইহার ব্যবহার হইতে। পারে। একদিকে যেমন ফটোগ্রাফের মুকুর দারা প্রতিবিদ্দকল চালিত হইয়া বিজ্ঞান-কৌশলে প্রস্তুত দীর্ঘ পটে অন্ধিত হই-তেছে, অন্তদিকে ফনোগ্রাফের শব্দসকল বিদ্ধ করিয়া রাথিতেছে। বাটা পশু পক্ষী নরনারী অন্ত শস্ত্র বাদ্যযন্ত্র বাদক গায়ক যাবতীয় আকারবিশিষ্ট পদার্থ ভাব ভঙ্গীর সহিত একেবারে অঙ্কিত হইতেছে অর্থাৎ যেমনই দর্পণে পতিত হইতেছে, অমনি প্রতিফলিভ হইতেছে এবং শব্দ ও ধ্বনি সকল অবি-কল উক্ত পটে মুদ্রিত হইয়া যাইতেছে। প্রতি সেকেণ্ডে ৪৬ ষষ্ঠ চত্বারিংশৎবার প্রতিমূর্ত্তি অঙ্কিত বা ছবি তোলা ইইয়া পাঠিকারা অমুধাবন করুন কত স্বল্প সময়ের মধ্যে এই কার্য্য সমাধা হইতেছে। যন্ত্ৰ তাড়িত-কৌশলে চলি-**टिइ. भेरे ज्ञिक्टाइ—था**मिटिइ

প্রতিবিম্ব ধারণ করিতেছে, তাহাতে শব্দ মুদ্রিত হইতেছে ও গুটাইতেছে :আবার পট ত্রলিতেছে—থামিতেছে—গুটাইতেছে ইত্যাদি অবিশ্রাস্ত বিচাৎ বেগে চলি-তেছে এবং প্রতি মিনিটে ২৭৬০ বার শক্ষ সমেত ছবি তুলিতেছে। অর্দ্বণটা চলিয়া ৮২৮৮০ ছবি তুলিতে পারে ৷ এক একটা যন্ত্র সাপাতত: অর্দ্ধঘণ্টা চলিয়া থাকে। ইডিসন একটা রঙ্গালয়ের সম্পূর্ণ নাটকের অভিনয় তাঁহার কিনেটোগ্রাফে মুদ্রিত করিয়া চিকাগোর বিশ্ব মেলায় প্রদর্শন কবি-বেন স্থির করিয়াছেন। তিনি বলেন দর্শকদিগের সন্মুথে শুক্র যবনিকা বিস্তার করিয়া ক্যালসিয়ম (calsiom) বৈজ্ঞা-নিক কোশলে প্রস্তুত আলোক দারা কিনেটোগ্রাফের প্রদর্শিত মূর্ত্তি ও যন্ত্রাদি সকল অবিকল প্রত্যক্ষবৎ প্রতীয়মান

হইবে। কুদ্র কুদ্র ফটোগ্রাফ বিশেষ ভাবে সংস্থাপন করিয়া মুকুরের মধ্য निशा पर्नेन कतिता की वस्त वर **अविकन** আকারে প্রতীয়মান হইয়া ইডিসন এরূপ মুকুর ব্যবহার করেন না। তিনি তৎ পরিবর্ত্তে এই বৈজ্ঞানিক আলোক বাবহার করিয়া থাকেন। এতস্থারা ছবি সকল শুদ্র পটে প্রতি-ফলিত হইয়া জীবস্তাকারে দৃষ্ট হইয়া থাকে। কেবল যে প্রতিমৃত্তি দৃষ্ট হইবে এরপ নহে, কিন্তু অভিনেতৃগণ কে কিপ্রকারে অভিনয়, নৃত্য, গীত, বাদ্য, है जा नि कतिया हिन, जरममुमहै अमर्निज হইবে অর্থাৎ সমগ্র অভিনরের পুনরাবৃত্তি ध्य विद्धात्नत को भन! श्रुटित् । আশ্চর্যা নব যুগে আমর1 করিতেছি, আরও কত নুতন কাও দেখিব।

প্রহেলিকা বা হেঁয়ালী সংগ্রহ।

গতবারের **শে**ষ।

মংশ্র মকর নহে পাণি পাণি বুলে।
কুন্তীর কচ্ছপ নহে, দেখিলে সে গিলে॥
গিলিয়া উগারে যেন দেখে জগজ্জন।
হিঁয়ালি প্রবংদ্ধ পণ্ডিত দেহ মন ॥ ৫১
জীয়ন্তে যেমন হোক মৈলে ভাল ডাকে।
অক্ষেতে নাহিক ছাল বিধির বিপাকে॥
অবশ্র আনহে নর মকল বিধানে।
হিঁয়ালি প্রবিদ্ধ প্রক্রিক জার মনে॥ ৫২

করতলে জন্ম তার বায়ু পথে ধার।
আপনি আহার করে পরে লয়ে থার॥
আহার করিতে গেলে হয়ত মরণ।
বুঝ বুঝ পণ্ডিত হে সেই কোন্জন॥৫৩
অন্তহীন মাজাকীণ যুগল দশন।
ছই দিকে লঘুগুরু দন্তের মিলন ॥
পাণিযুক্ত হইয়া যবে সেকার কাননে।
তরুসনে জীব জন্ত ধরে খরে আনে।

धित्रवा व्यानिया स्मिरे एत्र वध्गरण। ভক্ষ না করে তারা বধয়ে পরাণে॥ কহে কবি মাধব হিয়ালি প্ৰবন্ধ। মূর্থে কি বুঝিবে পণ্ডিতে লাগে ধন্ধ॥৫৪

তিন বর্ণ নাম তার শুন অতঃপর। শেষ বর্ণ ছাড়ি দিলে হবে ক্লেশকর। মধ্য বর্ণ ছাড়ি সবে রোজ তারে থায়। আদ্য বৰ্ণ ছাড়িলে দে আদক্তি বুঝায়॥ আমাদের সকলের প্রিয় অতিশয়। কি যে সেটা বলিতে কি পার বামাচয়॥৫৫

এমন কি আছে দ্রব্য ধরা ধাম মাঝে। **जिन्न** मिन्न किन्नकोल मिन्ने वटल व्दर्भ ॥ যদি হে থাকয়ে কোন পদার্থ সংসারে। ত্ত্বা করি বলিবে বা পাঠাবে আমারে॥৫৬

নাহিক ভাহার দস্ত, নহে কোন প্রাণী। সময় বিশেষে ভাই দন্ত অনুমানি॥ বল হে ইহার তত্ত্ব, যদি জান ভাই। কহিতে পারিলে সাধু বলিয়া স্বধাই ॥৫৭ গুণ গুণ করি তার গুণের নাহি লেশ। বলদ বাহনে যায় নহেক মহেশ। ভোজন করিলে তার মুথ হয় বন্ধ। মূর্যেতে বুঝিবে কি পণ্ডিতে লাগে ধন্ধ ॥৫৮ কহ দেখি হে সত্য কথা। কোন জনের একুশ মাথা॥৫৯ কোন খানে জল নাই গাছের আগায়

এমন প্রকাণ্ড পেট আর দেখি নাই^{*}। उद्योश बाहेश वाल व्याता थाव ভाই ॥७३

कल । ५०

वनवानी हित्रिनिन, अत्राता ना शहे। গুহে নাহি থাকি আমি, ভবনে সদাই॥ বারিতে থাকি হে আমি. নাই যাই জলে। গাছে নাহি উঠি কিন্তু বিটপী বন্ধলে॥ শিব অৰ্দ্ধ অঙ্গ আমি না হই শিবানী। वान्मीकि-वर्तात शाकि, मूथ नाहि हिनि॥ বৈকুঠে নিবাস মম, নহি নারায়ণ। কি হয় আমার নাম, কহ নারীগণ॥৬২ এক রত্তি কানি। শুকাতে না জানি ॥৬৩

হাতে আছে হাতে নেই। হাত বাড়ালে পেতে নেই॥৬৪ এখান থেকে মাল্লাম তীর। ঐ গাছটা চৌচির ॥৬৫

বুড়ি ঠাকুরমাকে আমি জোর করে ধরি। কাটিলাম তাঁর অঙ্গ, হুই থান করি॥ এক ভাগে হল বাবা, অন্সেতে ধরণী। এমন আশ্চর্য্য কথা, আর নাহি শুনি॥৬৬ ভাই ভগ্নী নাহি মোর বিধির বিধান। ওর বাপ হয় মোর বাপের সন্তান ॥৬৭ কিদে উকারটা দিলে, মদ্ধা হয় ভাই। নাচিতে নাচিতে সবে বাড়ী চলে যাই॥৬৮ পিঠেতে করাত তার শিরে হুই কাণ। विन करे वारा ना तम वफ्रे खड़ान ॥५२ আমি থেয়ে ফেলে দিলে, সৈ তাহা ধায়। তাহাতেই সেই জন প্রাণে রক্ষাপায়॥ সে খেলে ফেলিয়া দিলে আমি তাই খঁই। তাহার উচ্ছিষ্ট থেরে আমি বেঁচে হাঁই॥१

ঘরের ভিতর ঘর। নাচে কনে বর ॥৭১

প্রথম অক্ষর ছেড়ে দিলে দ্রব্যের মূল্য হয়। মাঝের অক্ষর ছেড়ে দিলে বাঁ। দিক্ ব্ঝায়। শেষের অক্ষর ছেড়ে দিলে অর্থ হয় বন। তিন অক্ষর যোগে ফল জান নারীগণ॥৭২

দিবা নিশি চলে তাহা দেথে সর্বজন। সে না চলে আমি চলি নিশ্চয় কথন॥৭৩

কুদ্র কুদ্র ডালে, কুফ ঠাকুর দোলে॥१৪

জলেতে নৌকার বোগ করিলাম সত্তর।
তাহে হল স্পষ্ট এক পাররা স্থানর॥
কি আশ্চর্য্য সংঘটন না দেখি কথন।
দেও হে উত্তর যদি পার বামাগণ॥৭৫

লেজহীন, কালামুথ, পেটেতে গরল। কোনু জন্ধ হয় তাহা নারীগণ বল্॥৭৬

মণি নয় মুক্তা নয় মনোহর হার। ভক্ত সাধকের কাছে সমাদর তার॥৭৭

ছটী "ত্র" একত্র করিলে কি হয়। বল দেখি বুদ্ধিমতী পাঠিকা-নিচয় ॥৭৮

প্রথম অক্ষর ছেড়ে বুঝার হরণ।
মাঝের অক্ষর ছেড়ে বুঝার আমার॥
শেষাক্ষর ছেড়ে অর্থ মারার বন্ধন ;
তিন অক্ষর যোগে হর স্বর্ণ মুদ্রা সার॥৭৯

উই পোকার আগে হা করিবে তুমি যাই। আকাশে আগুণ হয়ে উড়ে বাবে ভাই॥৮০

দিন হলে মরে যাই রাত হলে বাঁচি ৷ বাতাস হইলে আমি ছলে ছলে নাচি ॥৮১

থায় তাহা গেলে না।৮২

মাতৃ বিশ্ব ফল ছটি নিয়ে এস ভাই। থেলিব হুজনে ইচ্ছা মনেতে সদাই ॥৮৩

ইংরাজিতে ঠাণ্ডা অর্থ বাঙ্গালাতে ফল । কি হয় সে শব্দে ওগো বল নারীদল ॥৮৪

থাটের উপর খুরথানি।
তার উপরে যাহমণি।
বসে বিরাজ করে।
গা বেয়ে বেলে ঘাম পড়ে ॥৮৫

ছটি রি একত্র করিলে কি হয়। বল দেথি বৃদ্ধিমতী অৰলা নিচয়॥৮৬

এ ঘর যায় ও ঘর যায়। ত্ম ত্ম করে আছাড় থায়॥৮৭

এখান খেকে মারলাম দড়া।
দড়া গেল সেই বামন পাড়া ॥৮৮
অলি, অলি, গলি, গলি পাখী গুলি যার।
(তার) হাড় নাই মাংস নাই সর্ব লোকে

অজ্ঞানে পরেন বন্ধ, সজ্ঞানে উলক।
মাথায় শিবের জটা, ভিতরে স্থরক॥ >

ত্ই পাথা আছে.তার কিন্তু পাথী নয়।
বল দেখি কোন্ বস্তু রমণী নিচয়॥ >>

কি শক্ত হয় তাহা বুঝার সে স্থান।

ৰোগী ঋষি ভাহে বদে হয়ে ভক্তিমান।

ष्ट्रज षर्थ मन्द्रत्र भागन वृक्षात्र। জবায় উত্তর কর ঠেক নাক দায়॥ ১২ ছুই হালি খাটি মুক্তা, অঙ্গে শোভা পার। উজ্জ্ব সে মুক্তা দেখে, নয়ন জুড়ায়॥ গোল গোল নহে মুক্তা, চতুকোণ মত। গণিলে মুক্তার সংখ্যা ব্রিশ স্তত॥ কি ধনী গরিব সবে, করিছে ধারণ। এমন কি মুক্তা আছে, কহ বামাগণ॥ ১৩ পশু হতে জন্ম তার, হয় গোলাকার। কেহ নাহি দেখে কভু এই চমৎকার, হেঁদে হেঁদে লোকে বলে, তুমি ইহা খাবে। কি দ্রবা হয় নারী প্রায় শুনাবে॥ ১৪ পা নাহি আমার কিছ চলি সর্বক্ষণ। ছই হাতে কাজ করি জানে সর্বজন॥ **চ**िलट ठिनट भक्त, क्रित ट्रिंग्सारे। কি জাতীয় পশু আমি, কহ দেখি ভাই ॥৯৫ শ্রীরামের পিতা রাজা দশর্থ নাম। বছদিন গিয়াছেন তিনি স্বৰ্গধাম ॥

এখনও সে দশ্রথে দেখিবারে পাই। বড়ই আশ্চর্য্য কথা, একি শিশু ভাই ॥৯৬ এমন কি গাছ বল আছে এ ধরার। মজ্জা, ফল, ফুল যার সকলেই খায়॥ ৯৭ বহুরূপী আমি. বল দেখি কিবা হই। কথন সম্ভূষ্মনে শৃত্য মার্গে রই॥ কথন বা হই আমি গিরিশুঙ্গবাদী। কখন বা সাগব নদীর সঙ্গে মিশি॥ ভিন্ন ভিন্ন স্থলে মোর ভিন্ন ভিন্ন নাম। বল কেবা আমি ওহে শিশু গুণ্ধাম ॥ ৯৮ দেখায় প্রস্তর থানি স্থন্দর কেমন। যথন উহারে রাথি স্থণীতল ভলে॥ উষ্ণ স্থলে যদি আমি করি হে স্থাপন। তখনি হইবে উহা পরিণত জলে॥ ১৯ এমন কি ফল বল আছে এ ধরায়। তোলে যদি কেহ তার মরণ ব্ঝায়॥

নিন্দুক।

নিশ্ক যে কোন্ স্থানে অবস্থিত,
মানবসমান্ধকে কি চক্ষে দেখিতেছে,
তাহা ভরসা করি অনেকেই জানেন।
মানব সমাজের মূলবন্ধন প্রীতি, নিশ্কের
হাদর সেই প্রীতি হইতে বঞ্চিত। সে
প্রীতিশৃক্ত চক্ষে জগতের দিকে চাহিয়া
কেবল দোহই দেখে, কেবল দোবেরই
সালোচনা করিতে করিতে তাহার মন

এত বিক্বত — এত নীচম্ব প্রাপ্ত হয়, যে কাহারও প্রশংসা শুনা তাহার পক্ষে অসহ হইয়া উঠে। পেচক যেমন স্থ্য বা চন্দ্রের বিমল আলোক সহিতে পারে না, যন অন্ধকারই তাহার বাহ্ণনীয়; নরক-কীট ফ্লের সোরভ সহিতে পারেশ্বনা, পৃতি-গন্ধময় নরকই তাহার বাহ্ণনীয়; আর পরনিস্থায় অভ্যন্ত নিস্কৃক পরেশ্বর

কহে কবি নবীন হিঁয়ালি প্রবন্ধ।

মুর্থে কি বুঝিবে পণ্ডিতে লাগে ধর ॥১০০

স্বখ্যাতি সহিতে পারে না, পরনিন্দাই তাহার বাঞ্চনীয়। আবার এজগতে সক-লের আকাজ্ঞার একটা সীমা আছে— কোনও কার্যা যত বড়ই হউক না কেন ভাহার অবশ্র শেষাংশ আছে. কিন্তু নিদ্দকের আকাজ্জার সীমা নাই, তাহার কার্য্যের "উপসংহার" নাই! সে চির-मिनरे পরনিকা করে, নিকা করিবার স্বযোগ পাইলে সে কাহাকেও ছাড়ে না; তাহার চরিত্র বিশেষ জানিয়াই কবি ৰলিয়াছেন.

"প্রদোষ তোমার নিকটে যেই কয়, বলে সে তোমার দোষ অপরে নিশ্চয়।"

পর্নিদা অভ্যাস হইলে মারুষ এত অসংযত্ত-এত নীচ হয় যে বিনাকারণে সাধুব্যক্তিগণের নিন্দাবাদ করে! পরের কুৎসা, পরের ছিদ্রামুসন্ধান করিতে পারিলেই সে কৃতার্থ হয়! গুণামুরাগ ও পরের যশ:কীর্ত্তনে ক্ষমত পের মানবের পক্ষে ইহা যে কি অবনতিকর. কি শোচনীয়, তাহা বলিতে পারা যায় ना ।

নিশ্কের অর্থ সমালোচক নহে-কঠোর কর্ত্তব্য-পরায়ণ হইলেও সমালোচক निम्दक्त्र "निम्कृक" कथनरे नरहन। উদ্দেশ্য অতি নীচ. সমালোচকের উদ্দেশ্য সমালোচ ঠ মানবের **অ**তি মহৎ। मात्र গ্রহণ করিয়া থাকেন, মানবকে দেখাই রা ক্তটি বা ভাহার **बिट्न** मि मः स्निधिक श्टेटव, এই जानदा ; निकृक मानद्यत्र त्वाच थकान

कदत, मारी माधात्रावत निक्रे प्रनिष्ठ হইবে-জগতে তাঁহার অপ্যশ হইবে এই এই আশয়ে। সমালোচক স্থায়-পরায়ণ: তিনি সংসারকে প্রীতির চক্ষে দেখেন. সংসার যাহাতে স্থথের আগার তাহাই করিতে চাহেন; নিন্দুক অস্তায় কাজে প্রবৃত্ত, সে সংসারের প্রতি শ্লেহ: মমতা-শৃক্ত, মানবকে ঘণার চকে বিদ্বেষের চক্ষে দেথিয়া থাকে। সমা-লোচক স্বার্থশৃত্য, তাঁহার কাজের উদ্দেশ্ত कर्द्धवा-भावन : निक्क कंर्द्धवा-ख्रान-भूग, তাহার কাজের উদ্দেশ্য নিজের হিংসা ধেষ অহন্ধার প্রভৃতি কুপ্রবৃত্তি চরিতার্থ সমালোচক মানব সমাজের কবা ৷ উপকারী বন্ধু, নিন্দুক অপকারী শক্ত। প্রার্থ-প্রতা ও স্বার্থপ্রতায় যে রক্ম প্রভেদ, দেবতা ও পিশাচে যে রকম প্রভেদ, সমালোচক ও নিন্দুকে সেই রকম প্রভেদ। সমালোচককে যে নিন্দুক বলিবে, সে ভ্রাস্ত।

স্মালোচক মানবের অতি প্রয়ো-জনীয়-সমালোচক অভাবে জীবন অসম্পূর্ণ থাকে। নিজে আত্মায়-সন্ধান করিয়া আপনার দোষ চিনিয়া বাহির করিতে অতি অরলোকেই शाद्यन ; आञ्चनर्गटन स्त्रुनर्भी नदनादी ব্যতীত এরপ ক্ষমতা সাধারণের পক্ষে অসম্ভব। এই সকল কারণে আমরা সমালোচকের প্রয়োজনীয়তা বিশেষরূপে অমুভব করি। মানব জীবনের প্রধান উদ্দেশ্য উন্নতি, সমালোচক সেই উন্নতি-

সাধনের পক্ষে প্রধান সহায়। অতএব বিনি আমাদিগের জ্ঞান, চরিত্র পর্য্য-বেক্ষণ করিয়া ভ্রম ক্রটি প্রদর্শন করেন ও তাহা সংশোধনের উপায় বলিয়া দেন, আমাদের প্রকৃত শিক্ষক বা শিক্ষয়িত্রী তিনিই। "বন্ধু" শব্দ প্রয়োগ করিবার সময়ে আগে তার নামই প্রযোগ্য।

কিন্তু সমালোচক হওয়া সাধারণের সাধ্য নহে। উপযুক্তরূপে আত্মগঠন না করিলে কেহ সমালোচক হইতে পারে না। যতদিন হাদয় হিংসা, অহ-স্কার প্রভৃতি কুপ্রবৃত্তির অতীত না হয়, যতদিন বিচার শক্তি উপযুক্তরূপে বিকাস প্রাপ্ত না হয়, যতদিন পক-পাতিতা ও স্বার্থপরতা সম্পূর্ণরূপে দূর না হয়, যতদিন গভীর প্রীতি ও কর্ত্তব্য বৃদ্ধির উত্তেজনায় ব্যক্তিবিশেষের অথবা জনসমাজের মঙ্গলামুষ্ঠানে আত্মোৎ-স্র্য করিতে না পারা যায়, ততদিন মানব অন্ত যাহা হউন—কদাপি সমা-লোচক হইতে পারেন না। সমালোচকীয় কর্ত্তব্য অতি গুরুতর কর্ত্তব্য। অশিক্ষিত, অসংযত ও অনভ্যস্ত মানব সহসা এই ভার গ্রহণ করিলে "নিন্দুক" হইয়া পড়ে। তাহার কার্য্য প্রকৃত প্রস্তাবে "শিব গড়িতে বাঁদর" হইয়া থাকে।

এ জগতে নিশুক সমালোচকের বিক্ষতি। তন্তির হিংদা ও অহ্বার, পক্ষপাতিতা হইতেও নিশুকের উৎপত্তি হয়। নিশুক যে কারণেই আবির্ভূত হউক না কেন, সে যে মানবসমাজের

পরম শক্ত, এ কথা বলা বাছলা। পাপা-ত্মাদিগের শ্রেণী বিভাগ করিবার সময়ে নিন্দুকেরা নরহস্তাদিগের নিম্নস্তরে স্থান পাইয়া থাকে, কিন্তু তাহাদিগের কার্য্য নরহন্তাদিগের কার্য্য হইতে কম ক্ষতি-কর নহে। পতিপ্রাণা দীতা দেবী কাহার জন্ম পরিত্যক্ত হইয়াছিলেন ? क्रेना, मद्धिम कारात क्रम প्राणमण পাইয়াছিলেন ? ধর্মপ্রাণা মীরা বাই কাহার জন্ম গৃহচাতা হইয়াছিলেন ? কেবল নিশুকের জ্লুই। আরও বলি নরহস্তা মানবের প্রাণ বিনাশ করিয়া-থাকে, কিন্তু প্রাণের অপেক্ষা মান অধিক 🤊 আদরেরও গৌরবের জিনিষ। নিন্দ ক মানবের সেই স্থাশে কলঙ্ক নিয়া থাকে। এতাদৃশ অপকারী ব্যক্তিকে নরহত্যা-কারী ব্যক্তির অপেকা অল ক্ষতিকারক বলিব কি করিয়া ?

নিশ্ক মানব জগতের এরপ দারণ ক্ষতি করিলেও তাহার মত হর্জাগ্য অতি অরই আছে। সে পরের ক্ষতি করিতে গিয়া নিজেরই সর্বানাশ সাধন করিয়া থাকে। মহাত্মা এপিক্টিটাস্ বলিয়াছেন "মাহ্যৰ আমার অনিষ্ট করিয়া নিজেরই অপকার করে, তবে আমি তাহার অপকার করিয়া নিজের ক্ষতি করিব কেন?" নিশ্কের সহরেও এই কথা প্রযোজ্ঞা। নিশ্ক পরের নিশা করিয়া, পরের স্থাশে কলঙ্ক দিরা নিজের অধিক ক্ষতিগ্রস্ত হয়; তাহার অবস্থা পর্যালোচনা করিলে কেবল রাগ্

হয় না, হংধও হয়—আহা ! নিন্দুক বড় কুপাপাত্র।

নিশ্ব নিশিতের অধিক ক্তিগ্রস্ত इब किरम ? रम भरतत समरात पृथिक —দ্বণিত পদ।র্থ সকল গ্রহণ করে বলিয়া তাহার হৃদয় অন্ধকুপ হইয়া থাকে। ক্রমাগত পরের দোষ আলোচনা করিতে করিতে তাহার গুণগ্রাহিতা একেবারে বিলুপ্ত হয়। তাহার অসংযত হাদর, অশাসিত রসনা কত সময়ে নির্মাণ-চরিত্র সাধু ব্যক্তির দোষ—মিথ্যাপবাদ ঘোষণা করিয়া আত্মাকে মহা পাপ পক্ষে ডুবাইয়া থাকে ! তাই বলিতেছি নিন্দিত ব্যক্তি যদি প্রকৃত দোষী না হন, তবে নিন্দুকের অত্যাচারে তিনি যতই বাহ্যিক ক্ষতিগ্রস্ত হউন না কেন, নিন্দুকের মান-সিক ও নৈতিক ক্ষতি তাহার অনেক উপরে ।

পরনিকায় মহাপাপ, মহানীচত্ব জন্মে। ভারতীয় আর্যাগণ এ বিষয়ে পুন: পুন: উপদেশ দিয়া গিয়াছেন। আমাদের সহজ বুজিতে নিক্কের বিষয়ে যাহা বুঝিতে পারি, তাহাও সংক্রিপ্তকরেশে লিখিলাম। এখন কথা এই বেখানে ভায়, ধর্ম ও বিশুজ প্রীতির অহুরোধে পর নিকা করিতে হয়, বেখানে পরনিকার উদ্দেশ্ত ব্যক্তিবিশ্বের বা সমাজ্বের হিত্যাধন,

বেখানে পর নিলার উদ্দেশ্য "স্থীল! গোপালের সহিত বেড়াইওনা, গোপাল বড় থারাপ ছেলে" এইরূপে ব্যক্তিবিশেষকে সাবধান হইতে বলা, সেধানে পরনিলা নীচ বা পাপ কার্য্য কথনই নহে। শরীর রক্ষার্থে তিক্ত জিনিবহু আবশ্যক হয়, সমাজ-শরীর রক্ষার্থে দোষ আলোচনারও আবশ্যক হয়।

এখন বলি পাঠিকা ভগিনি। "অনেক বঙ্গবাসিনী পরনিন্দা করিতে ভালবাসে" বলিয়া বাঙ্গালির মেয়েদের এক অখ্যাতি ভুনা যায়। এ কথা সত্য কিনা, এ বিষয় লইয়া বাদামুবাদ করিবার সময় এখন নহে-কারণ পরের সহিত তর্ক বিতর্ক করা অপেক্ষা আপনাদের জীবন ভাল করিয়া গড়িতে পারাই মামুদের শ্রেষ্ঠতর কর্ত্তব্য। বর্ত্তমান বঙ্গবাসিনী-দিগের জীবনে যেন ঐ অখ্যাতির অসত্যতা সম্পূর্ণরূপে প্রমাণিত হয়, আমরা জগদীখরের চরণে ইহাই প্রার্থনা বুঝিতে নিন্দুকের অবস্থা পারিয়া নিদার নীচত্ব জানিয়া মহিলাগণের মধ্যে কেহ যে 'নিকুক" হইবেন—তাঁহাদের জীবনে "অনেক ক্রটি লক্ষিত" হইলেও—আমি তাঁহাদিগকে করিতে ততদুর "অপদার্থ" यटन পারি না।

<u> बिग्।</u>

অস্ত্রচিকিৎসা i

করিলেই অন্তচিকিৎসার নাম ইংরাজী ডাক্তারগণের অস্ত্র চিকিৎসা কিন্তু ভারতবর্ষে পূর্ব্যকালে চিকিৎসকগণের মধ্যে ও চিকিৎসা বিশিষ্ট্রপে প্রচলিত ছিল. তাহার যথেষ্ট প্রমাণ আছে অদ্যাপি কতকগুলি অন্তের চিত্র পর্যান্তর প্রাপ্ত হওয়া যার। অস্ত্র চিকিৎসা ইংরাজীই হউক, আর হিন্দুই হউক, বাহ্য দর্শনে অতীব ভয়ানক। যে কোন ঘটনা ক্লেশকর, হিন্দুর দেশে তাহাই আন্তরী ঘটনা বা আন্তর কার্য্য বলিরা উলিখিত হইয়াথাকে। এই জন্ম অন্ত চিকিৎদাকেও স্বাস্থ্যে চিকিৎসা হয়।

অঙ্গ বিশেষে ক্ষেটিক হইরাছে, বেদনা ও যন্ত্রণার পরিসীমা নাই,—
যন্ত্রণার আহার নিজা রহিত হইরাছে,
অঠ প্রহর রোগীর কাতরধ্বনিতে পার্য্ববর্ত্তীর অক্রপাত হইতেছে, এমন অব
হায়, তাহার উপর মৃত্তম ফুংকার
সহে না,—দেই ক্ষেটিকের উপর অস্ত্রাযাত কি ভয়ানক দৃগু! কেবল অস্ত্রায়াত
নহে, ডাক্রায় মহাশয়ের দেহে যত বল
আছে, তাহার সমাক্ প্রয়োগ সহকারে
দেই কর্ত্তিত ক্ষেটিক নিশ্বীছন করিতেছেন, অর্থাং টিপিয়া দিতেছেন, ইহা
দেখিলে ডাক্রায় মহাশয়কে ভয়ানক
নির্দ্বয় ও নির্ম্বর না বিলয়া থাকা বায় না।

ফলতঃ অস্ত্রচিকিসা যে, কি কাণ্ড. প্রতাক্ষদর্শনকারী ভিন্ন তাহা সম্পূর্ণরূপে অমুভব করিতে পারেন না—লেখনীতে বর্ণনা করা অসম্ভব। যাহাহউক, এই ভয়ানক নিষ্ঠুরতার পরিণাম, জীবের মঙ্গল ভিন্ন আর কিছুই বোধ হয় না। আমরা স্বচকে দেথিয়াছি, বোঝাই গাডীর মাচান চাপা প্রিয়া ব্যক্তির জঙ্গা ভাঙ্গিয়া মচ্কান সাঁড়কের অস্থি হইয়া পড়ি-বাহির রাছিল। যন্ত্রপার মৃত্রপুতি নৃচ্ছ। যাইতেছে. ধ্রুটকার হইয়া আশু প্রাণ বিয়োগের সন্তাবনা। এই অবস্থায় কোন ডাক্তার হাত-করাত দিয়া ভগ্ন জ্জ্যান্তির বহি-র্গত অংশ কাটিয়া দিলেন, কর্ত্তন ও কর্ত্তি মুখ চর্ম্মধ্যে প্রবেশন কালে ভাক্তার বাবুর প্রকাণ্ড দেহ ঘর্মে প্লাবিত হ্ইল,--পাঠক পাঠিকাগণ কল্পনায় অমু-ভব করুন, তখন রোগীর কি অবস্থা। যাহাহউক, এই রোগী ক্রমশঃ আরোগ্য লাভ করিয়া পুনরার কর্মক্ষম হটল। এই প্রকার চিকিৎসার নাম, আবি-ভৌতিক অন্ত্র চিকিৎসা।

আমরা একণে মহাভারত হইতে
একটা আধ্যায়িক অস্ত্র চিকিৎসার প্রকরণ
লিপিবদ্ধ করিব। ইহা স্পর্ণ্য পর্বের
অধ্যায়িকা। সন্ত্রীক পাগুবগণ বন্দী
মধ্যে ভ্রমণ করিতে করিতে একদা
অপরায়ে কোন স্থানে উপনীত হই-

লেন। সমস্ত দিন অনাহারে, কুৎপিপাসায় সকলেই অতি কাতর।
ইক্সপ্রেহের রাজাধিরাজ চক্সবংশাবতংশ
মহারাজ যুধিষ্ঠির মহারাণী দ্রোপদীর
সহিত ভীমার্জ্ল্নসদৃশ ভ্রাত্গণে পরিবৃত
হইয়াও বনমধ্যে আজ জঠরের জালায়
ব্যাকুল। কাল-বশে আজ তাঁহাদের
হর্দিন।

"চিরদিন কথনও সমান না যায়,

অদৃষ্টেরই গুণে, কি হবে তা জেনে, পাণ্ডু পুত্র পাশায় হেরে গেল বনে, অজ্ঞাতে রহিল বিরাট ভবনে, দাসত্বে কাল কাটায়।"

সেই দাসত্বের পূর্কাবস্থায় আজ এই ঘটনা উপস্থিত। চতুর্দিকে আহার অৱেষণ হইতে লাগিল। কোথাও কিছু মিলে না, বহু সন্ধান ও বিস্তর উৎকণ্ঠার পর হঠাৎ দেখা গেল একটা আত্র-বুক্ষের অগ্রভাগে একটা মাতা বৃহৎ আত্রফল পরিপকাবস্থায় দোহল্যমান। যুধিষ্ঠিরের আদেশক্রমে অর্জুন মহাশয় গাণ্ডীবে শর যোজনা করিয়া দেই অপুর্ব্ব ফল সংগ্রহ পূর্বাক জ্যোটের হস্তে অর্পণ যুধিষ্ঠির চিস্তা করিতে করিলেন। नाशिलन, এই অসময়ের অপূর্ব ফল আমরা ছয়জনে ভোজন করি।; কিন্তু এই সময়ে প্রাণস্থা ক্লফ এখানে উপ-খিছত থাকিলে তাঁহাকেও ইহার অংশ দিয়া অতিশয় আনন্দ লাভ করিতাম। देनवहक इटब्ड य ! महमा कृष्ण उथाय

উপস্থিত হইলেন। দ্রোপদীসহ পঞ্চ পাশুবের আনন্দের সীমা নাই। যুধিষ্টির কৃষ্ণসমীপে সমস্ত দিনের বিবরণ বর্ণন করিয়া অবশেষে আদ্র ভোজনের অভি-প্রায় ব্যক্ত করিলেন।

क्रक ममन्ड विवत्र व्यवनार्ख विवध-ভাব প্রকাশ করিয়া কহিলেন, আজ পাণ্ডবকুলের সর্ব্যনাশ উপস্থিত। আপ-নাদের ছব্দিব অতিশয় বলবং। এই আয় ফল সকল অনর্থের মূল। কোন উগ্রতপা ঋষি এই বনে বাস করেন। তিনি স্বকার্যাসাধনে স্থানাস্তরে গমন করিয়াছেন। বোধ হয় আগতপ্রায়। তাঁহার তপঃ প্রভাবে প্রতিদিন এই বনে একটী করিয়া আমরুক জাত হইয়া এই-রূপ একটা মাত্র ফল ধারণ করে। তিনি সমস্ত দিন তপশ্চর্যার পর সায়ংকালে শুধার্ত্ত হইয়া ঐ ফল ভোজন পূর্বাক জীবন যাপন করিয়া থাকেন। এই ফলটা আপনাদিগকর্ত্বক উপভক্ত হইলে অভিসম্পাতে আপনারা সবংশ विनष्ठे इहेरवन।

এই কথা শুনিয়া ভীমাদি পাওবগণ ভয়ব্যাকুলচিত্তে কহিলেন, একণে উপায় ? ক্ষণ কহিলেন, উপায় দেখি তেছি না। যুধিষ্টির কহিলেন, বিপত্তির মধুস্দন ভূমি উপস্থিত থাকিতে আমরা এই বিপদে পতিত হইব, ইহা কেমন কথা ভাই ? ক্ষণ কহিলেন, একমাত্র উপায় আছে; কিন্তু ভাহা অবলম্বন করা বড় কঠিন। যুধিষ্টির বলিলেন,

ষতই কঠিন হউক, তাহা স্বামাদিগকে আপ্রম্ব করিতেই হইবে। একণে অগ্রে বল, কি করিতে হইবে? ক্লফ কহিলেন, যদি আপনারা অকপটে আপন আপন মনের ভাব ব্যক্ত করিতে পারেন, তাহা হইলে ঐ ফল পুনরায় যথাস্থানে সংযো-জিত হইবে।

যৃধিষ্ঠির এই কথা ভূনিবামাত্র, कशिरमन, आभात भरनत जांव এই, অপত্য নির্কিশেষে প্রজাপালন করিয়া নিরস্তর যাগয়জ্ঞ করি, সাধুসজ্জনের সহবাদ করিয়া ধর্মালোচনা করি এবং আহারে বিহারে শয়নে স্বপনে সর্বকার্য্যে তোমারে পাই। এই কথার পর, সেই আম্র ফল ভূমিহইতে কিয়ৎদুর উথিত হইল। অনন্তর মধাম পাওব ভীম কহিলেন, ছর্য্যোধন দ্রৌপদীকে যে উরু প্রদর্শন করিয়াছিল, সেই উক্ন এই গদার আঘাতে ভগ্ন কবিব এবং যে তঃশাসন পাঞ্চালীর কেশাক্র্যণ করিয়া-ছিল, এই নথরে তাহার বক্ষ বিদারিত করিয়া কবোষ্ণ* বক্ষশোণিত পান ও রক্তরঞ্জিত হল্ডে কৃষ্ণার বেণী সংহার† করিব, ইহাই আমার মনের ভাব। আম ফল আরও কিয়ৎদ্র উথিত **ट्टेन। जनस्त्र जर्जन नकुन महामय** আপন আপন মনোভাব ব্যক্ত করিলে ফল প্রায় স্বরুম্ভের নিকটবর্তী হইণ। এখন দ্রৌপদীর গালা। দ্রোপদীও

আপনার মনের কথা বলিলেন; কিন্তু ফলটা আর উর্দ্ধে গমন না করিয়া ভূপ-তিত হইল! কি সর্ব্যনাশ।

এখন পাণ্ডব বংশ রক্ষা করার ভার দ্রোপদীর হস্তে। পঞ্চপাণ্ডব স্তম্ভিত হইলেন। রুঞ্চ মনে মনে হাসিতেছেন। পাওবগণ মনের কথা বলিবার দ্রোপদীকে অমুনয় করিতে লাগিলেন। দ্রোপদী বজ্জায়, কোভে,অভিমানে মন্মা-হত হইয়া ক্লফের দিকে মুথ ফিরা**ইর**। কহিলেন, সথে কৃষ্ণ, এই কি তোমার মনে ছিল ? আমার মনে কি আছে, তুমি কি তাজান না ! তাই সেই কথা বলাইয়া আমাকে মর্মাহত করায় কি তোমার স্থুথ হইতেছে ? ক্লফ্চ কহিলেন, তোমার মনে কি আছে না আছে, আমি তা কিরূপে জানিব ৪ সত্য কথা ব্যক্ত করিয়া ত্রহ্মশাপ হইতে পাণ্ডবকুল রকাকরিতে ইচ্ছা হয়, কর; না হয়, করিও না; আমি কি করিব? কথায় বিস্ফোটকে অস্ত্রাঘাত করিলে भंतीरत (यक्तभ यञ्जभा इय, ट्योभमीत मत्न তদপেক্ষাও অধিক যন্ত্রণা হইতে লাগিল। व्यक्षित्रपत्न नीत्रत इहेग्रा त्रहिलन ।

যুধিষ্ঠির কহিলেন, পাঞ্চালি, মনের প্রাকৃত তাব ব্যক্ত করিয়া নিদারণ ব্রহ্মলাপ হইতে আমাদিগকে রক্ষা করা ভোমার কর্ত্তব্য । অতএব তাহা ব্যক্ত করিতে আর ক্ষণকাল মাত্র বিশ্ব করিও না, সত্বর বল; ঋষির আগমন কাল আসর। তথন ভৌগদী অনভো-

त्रेष९ উषः ।

ব্ৰুল

পায়া হইয়া অগত্যা কহিলেন, ক্লফ, ভোমার স্থায় নির্ভুর আর কেহই নাই। তোমার এই কুটিল চক্রের ঘর্ষণে আজ অৰ্লার প্রাণ ওঠাগত হইল। আমার মনের কথা এই,-এই বলিয়া মনের একটী লুকায়িত গৃঢ় মলিন বাসনা প্রকাশ করিলেন। এই ব্যাপারের কিরূপ উপদংহার হইয়াছিল, তাহার বর্ণন এ প্রবন্ধের উদ্দেশ্য নছে। প্রবন্ধের উদ্দেশ্য যেটুকু, তাহা এই, দ্রোপদীর ঐ কথার পর আত্র ফল বুস্তে গিয়া সংযোজিত হইল। পাণ্ডবদিগের ব্রহাপাপ-শ্রার নির্মন হটল।

একণে দেখা যাউক. দ্রোপদী সম্বন্ধে কৃষ্ণ কিরূপ ব্যবহার করিলেন। বস্ত্র হরণ, হর্কাসার পারণ প্রভৃতি ঘটনায় দৌপদীর প্রতি ক্লম্ভ যেরূপ দয়ার পরি-চয় দিয়াছিলেন, তাহা দেখিয়া সাধারণের এই সংকার আছে যে, রুফা দৌপদীর পরম স্থা.—দ্রোপদীর প্রতি ক্লম্ব-ক্লপার সীমা নাই। সেই দ্রোপদীর প্রতি সেই ক্ষের আজ একি ভাব! আমরা বলি, রোগীর প্রতি অস্ত্র-চিকিৎসকের

ভাব, আৰু প্রিয়স্থী দ্রৌপদীর প্রতি क्रटकात त्मरे जात। त्य मकन शान-िछ। माञ्चल कुनत्त्र नुकाश्चि थाटक, তাহাই অন্তরের বিক্ষোটক। নিষ্ণীডিত ও বহির্গত হওয়া আবশুক। তাহা না হইলে হুদয় স্বস্থ ও বিশুদ্ধ হয় না, হদয় নিৰ্মাণ না হইলে তাহাতে ভক্তির স্থান হয়না। স্বদয়ে ভক্তিনা হইলে জীবের ভগবং-প্রাপ্তি হর না। এই জন্ম ভক্তি শাস্ত্র বলিতেছেন,— "অভাভিলাষিতাশূন্যং জ্ঞানকৰ্মাদ্যনাবৃতং

আমুকুল্যেন কৃষ্ণামুশীলনং ভক্তিকুত্তমা।" অত্যাভিলাষ পরিশৃত্য না হইলে অমুকৃল কৃষ্ণামূশীলন অর্থাৎ সহজ প্রেম সাধন হয় না। অফুকুল অফুশীলনই শুদ্ধ ভক্তি। এই শুদ্ধ ভক্তিই কুঞ্চাকৰ্ষণী শক্তিরপা। ক্রম্ণ দৌপদীকে বড়ই ভাল বাদেন। জৌপদীকে সকল পাপ হইতে মুক্ত করিয়া আপনার করিয়া লইবেন এই জন্মই আভ দ্রোপদীকে অন্ত-চিকিৎসা করিলেন। কুষ্ণ অন্ত্ৰ-চিকিৎ-मकी मन नरहन!

বরাহনগরেব পারিতোষিক বিতরণ।

গত ২৭শে ফেব্রুয়ারি বরাহনগর ফিমেল' বোর্ডিং ও বিধবাশ্রমের পারি-তোষিক বিতরণ সমাধা হইয়া গিয়াছে:

সাহেব, জাতীয় বেঙ্গল সমিতির সেক্রে-টরী মিদেস গ্র্যাণ্ট, মিস জাইপার, জেনানা মিসনের মিস হাইটিন প্রভৃতি ডেলিনিউস সম্পাদক মাননীয় উইলসন | ইয়ুরোপীয় মহিলাগণ এবং কুমার দৌলত

চন্দ্র রার,বাবু কিরণচন্দ্র রার জমীদারগণ, বরাহনগর মিউনিসিপালিটার ভাইস্ চেরারম্যান বাবু বিনোদলাল ঘোষ, বাবু কেদারনাথ গাস্থলী ডাক্তার প্রভৃতি সন্ত্রাস্ত ব্যক্তিগণ উপস্থিত থাকিয়া পারি-ভোষিক বিতরণ করিয়াছেন। নিম্ন-লিখিত মহোদরগণ এই উপলক্ষে নিম্ন-

শীযুক্ত বাবু মাণিকচন্দ্র সেন সভাবাজার সেনবংশীর, ২টা রোপা পদক মূল্য ২০১; বাবু রাজকুমার মুখোপাধাায় জমীদার, বরাহনগর, ১ থান রামপুর চাদর ; বাবু নীমটাদ মৈত্র বারেল্র শ্রেণী ব্রাহ্মণ-সমাজের নেতা ১ থান তসর কাপড়; রায় কেতচন্দ্র বন্দোপাধ্যায় বাহাতর ১ পান র্যাপার: কুমার দৌলতচন্দ্র রায় ইংরাজি পুত্তক মোট মূল্য ৩০১; বাবু কেদারশাথ গাকুলী (ডাক্তার) ২টা টাইমপিশ ; বাবু চারুচন্দ্র মুখো-পাধ্যার, জ্মীদার ১ থান তসর কাপড়; বাবু বিনোদলাল ঘোব, ভাইদচেয়ারম্যান, পুল্কক ও জ্ঞাকেটের কাপড় মূলা ১০১; বাবু: চণ্ডীচরণ বন্দ্যোপাধ্যার, বাবু বিপিনবিহারী পাল, বাবু দেবীপ্রসন্ন রায় চৌধুরী, বাবু ভূবনমোহন গোৰ 🤏 বাবু কানাইলাল ঘোষ বাঙ্গালা পুততক ও ইংলও হইতে আনীত পুতুৰ, বান্ধ ও পুত্তক, মিদেস গ্ৰ্যাণ্ট পুস্তক বাক্স ও নগদ ১০টা টাকা, মিদ ক্ৰাই-পার ৪১ এবং একটা হিন্দু-মহিলা (যাঁহার নিজ নাম বা স্বামীর নাম অপ্রকাশ্ত) নগদ ১٠১ টাকা দয়া সাহায্য করিয়াছেন। এতন্তির কুমার দৌলত-চক্র রায় মহোদয় ১০০০ টাকা এককালীন দান করিকে প্রতিশ্রত হইয়াছেন।

তই বিদ্যালয় ও হিন্দু-বিধবাশ্রনের উপকারিতা সাধারণ হিন্দুগণের ও হিন্দু-সমাজ নত্গণের বিখাস ও সহামুত্তি

আকর্ষণ করিতেছে দেখিয়া আমরা
সাতিশয় আশব্য ও আনন্দিত হইতেছি।
ইহাতে পাশ্চাতা জাতির বিশেষ দৃষ্টি,
সাহায়য় ও সহায়ভূতি আছে। কিন্তু শুদ্দ
তাহাদের ম্থাপেক্ষী হইয়া তৃষিলাভ
হইতে পারে না। স্বদেশীয় লোকের
সাহায়য় একান্ত বাঞ্কনীয়। এক্ষবে আশা
করা মাইতেছে য়ে, মঙ্গলময় জগদীশ্বর
উত্তরোত্তর ইহার উপকারিতা রদ্দি
করিবেন এবং বাহার দেশ-হিতৈষিতা
গুণে এই বিদ্যালয় ভাপিত হইয়াছে ও
পরিপ্র হইতেছে, অচিরে তাঁহার সাধুইচ্চা পূর্ণ করিবেন।

১৮৬৫ धृष्टीतम यथन এই विमानिय প্রথম স্থাপিত হয়, তথন বরাহ নগর মধ্যে স্ত্রী শিক্ষার কোন উপায় ছিল না। এমন কি স্থানীয় অনেকেই ইহার বিরোধী ছিলেন। যাহা হউক এীযুক্ত শশিপদ বাবুর সহিফুতা ও অধ্যবসায় গুণে ইহা ক্রমশঃ পরিবর্দ্ধিত হইয়া ১৮-৭২ শালে এই নগরের দক্ষিণভাগে কুঠীঘাটায় একটা শাথা বিস্তার করে। পরে ১৮৮৭ শালে নিরাশ্রয়া হিন্দু বিধবা-দিগের জন্য একটা আশ্রম ও একটা বোর্ডিং বিভাগ ইহাতে সংযোজিত হয়। ধর্ম ও নীতি শিক্ষা, স্তীজাতির মনোরত্তি ও বুদ্ধিবৃত্তির উৎকর্য সাধন ইহার মূল উদ্দেশ্য। বালিকা বিদ্যালয়ে শিক্ষারি-ত্রীর কার্য্য করিয়া অথবা সম্ভ্রান্ত পরিবার মধ্যে থাকিয়া শিশুদিগকে শিকা দিয়া যাহাতে দীনহীনা বিধবাগণ আপন

আপন জীবিকা নির্মাহ করিতে সক্ষম হয়, বিধবাশ্রমে তাহারই অফুষ্ঠান হইয়া থাকে। সাধারণ বিদ্যালয়ের আলোচ্য বিষয় সকল এই কুলে যথানিয়মে শিকা দেওয়া হয়, এবং ভদ্তির রন্ধন,সীবন, শাক সবজীর চাষ, সাধারণ পীড়ার চিকিৎসা ও গার্হস্থা-শৃঙ্খলা প্রভৃতি যে সকল বিষয় শিকা করিলে বালিকারা বড হইয়া পরিবার প্রতিপালন ও স্থুখ স্বাস্থ্য

বিধান করিতে পারেন, এথানে তৎ-সমুদায় বিষয় সুচাকরপে শিক্ষা দেওয়া হইয়া থাকে। রামায়ণ, মহাভারত ও পুরাণাদি হইতে নানাবিধ উপদেশ দিয়া হিন্দুরমণীদের আচরণীয় ধর্ম শিক্ষা দেওয়া হয় এবং বিজ্ঞান সম্বন্ধে উপদেশ ও ড্ইং রীতিমত শিক্ষা দেওয়া হইয়া থাকে।

(ক্রমশঃ)

হুতন সংবাদ।

১। বর্ড লান্সডাউন আগামী ৩রা । মাজি তাঁহাকে অসহায় ভাবিয়া ধলেশ্বরী **এপ্রেল সন্ত্রীক** সিমলা যাত্রা করিবেন, পথে রেওয়া রাজ্য পরিদর্শন করিয়া याटेटवन ।

২। কটক মেডিকেল কুলে ৫টী ছাত্রী অধ্যয়ন করিতেছে। ঢাকা ও পাটনাতে ছাত্রী গ্রহণের চেষ্টা হইতেছে। বোম্বাই প্রদেশে দিন দিনই (ডাক্রারীতে) স্ত্রী-শিক্ষা বিস্তৃত হইতেছে। একজন কাফ্রী রমণী ময়াদার হাঁদপাতালে চাকুরি गইয়া গিয়াছে।

৩। বিগতৃ কার্ত্তিক বারুণী মেলা হইতে একজন ভদ্রবংশীয় স্ত্রীলোক তাঁহার निक मञ्जानी नहेशा तोकारवारण वाजी **क्टिब्रिट्डिट्ट्नि । तोकांत्र मूमनमान । थानि ছবি পাঠाই**ब्राइन ।

नमीत शत शास्त्रत हुए तोका नहेश যায়। চডের উপরে স্ত্ৰীলোক নিকে ফেলিয়া দা দাবা আঘাত কবিয়া তাঁহাকে মৃতপ্রায় করে। পরে নৌকার জিনিষ পত্ৰ ও শিশুটীকে লইয়া প্ৰস্থান করে। ঘটনাক্রমে একটা ভদ্রবোক এই মৃতপ্রায় দেহ দেখিতে পাইরা হাঁদ-পাতালে পাঠাইয়া দেন। তিনি ক্রমে স্বস্থ হইতেছেন। মাজি ও শিশুটীর আর কোন সন্ধান পাওয়া যাইতেছে না।

৪। মহারানী ভিক্লোরিয়া চিকাগো প্রদর্শনীতে তাঁহার স্বহস্ত রচিত করেক-

সমস্তিপুর বালিকা-বিদ্যালয়।

यात्मवरम्या वित्मारमाहिनी अत्तर्मा ज्ञीन

मभीरभयुः--

শ্রদ্ধেরা প্রিরজ্মীগণ!
বৎসরত্রর অতিবাহিত হইল, অত্রত্য
ভদ্র মহোদর্মিণেরে বিশেষোদ্যমে ভগবানের কুপার এথানে একটা বালিকা
বিদ্যালয় প্রতিষ্ঠিত হইয়াছে। আপনাদের এই দরিদ্রা ভন্নী এই বিদ্যালয়ে
শিক্ষরিত্রীর ভার গ্রহণ করিয়াছে।
রেলওয়ে হইতে এই বিদ্যালয়ে মাসিক

সাহায্যের বন্দোবন্ত আছে। কিন্তু অর্থাভাব বশতঃ বিদ্যালয় সম্বন্ধে অনেক অভাব আছে।

আপনারা ২।৪ আনা করিয়া সাহা-যার্থ প্রেরণ করিলে সে অভাব পূরণ হইবে। আপনাদের দয়ার উপর নির্ভর করিতেছি।

সমস্তিপুর বালিকাবিদ্যালয় ৯ই ফেব্রুয়ারি আপনাদের অম্ব-গ্রহাকাজ্ফিণী ভগ্নী শ্রীমতী স্থমতি মজুমদার

বামারচনা। পতিতোদ্ধারিণী।

"নাটার শরীর মাটাতে মিশিবে বিফলে মিশিবে কেন ?"

ংঘ ডোবে, দে ডুবে যায়, আমাদের ঘরে,
কথনো দে পায় না আশ্রয়,
আমাদের ঘর বাড়ী আমাদেরি তরে,
যে পড়ে তাহার ঠাই নর!
২
অমুতাপে যদি তার হৃদয় ভাঙিবে,
তর্মোরা দ্রেই রহিব,
অভাগা দে যদি কভু উঠিতে চাহিবে,
ছিছি, তার হাত না ধরিব!
ত
মুধের সাধক মোরা—আয়্ম-মুখ-দাস,
দে পতিত পথের কাঙ্গালী— '
তার তরে নাই—ক্ষমা, কর্মণা, আশ্বাস;
আছে তুধু পদাঘাত, গালি!

এই আমাদের নীতি—চিরদিন সবে
পতিতেরে পারে দ'লে যাই—
আমাদের কত পাপ—সীমা নাহি হবে,
তার পানে কভু নাহি চাই!
এথানে সহসাকি এ,—কোন্ দেবী এলে,
মরদেশে স্বরগের বালা—
ভূমি কি কাটিয়া শির, রক্ত-স্রোত ঢেলে
জুড়াইবে পাতকীর আলা!
এই সব পতিতার অশ্রমাথা তাপ,
ডেনে কি গো স্বরগে গিরেছে!

বল্লন্নীর যে ছুহিতা পভিতোশার
নহারত গ্রহণ করিয়াছেন, এই কবিতা সালরে
ভাহাকে উৎস্পীকৃত হইল।—লেথিকা।

পতিতপাবনী, তাই মুছাইতে পাপ তোমারে কি পাঠারে দিরেছে ?

9

তাই কি স্বরগ মেরে দেখা: দিলে আসি
আমাদের নিঠুর ভবনে,
পতিতারে কোলে নাকি নেবে ভালবাসি
মা'র স্বেহে—ভগিনী-যতনে ?

Ь

ওদের কি ক্ষমা আছে, আছে কি মুকতি, আছে উষা, কাল নিশি প'রে ? পতিতপাবনী মা কি অগতির গতি, ওদেরো কি দয়া স্বেহ করে ?

>

মুদ্ধিলে পাপের ধৃলি ওরাও কি কভু মা'র কোলে পারিবে যাইতে ? নরকের কীট হোক্—মা'র প্রাণ তবু "মা" বলিলে পারে না থাকিতে ?

١.

কও দেবি, কও তুমি, কি অমিরা-ধারা

ঢেলে দিলে নীরদ হিয়ার ?—

ফুটিছে অমার রেতে এযে শুকতারা,

তটিনী বহিছে সাহারার !

22

আন্ধ আমি মলমতি কগনো ব্ঝিনে জগতের সুবি ভাই বোন :, আধম পাতকী আমি আপনা খুঁজিনে, পুর-পাপে ফিরাই আনন! 52

ত্মি প্রাণ দিবে যদি পতিতার তরে, আমরা কি দাঁড়ারে রহিব ?— অণ্, রেণ্, কণা হই, তবু মা'র তরে যাহা পারি তাহাই করিব।

25

ও অমৃত মন্ত্র বলে উঠিবে জাগিয়ে
এই মৃত কোটী কোটী প্রাণ,
অহকার অবিচার যাবে পলাইয়ে,
হব সবে সায়ের সম্ভান

. 0

মা'র সে অমৃত ধামে কে কে বাবি আয়—
ছোট বড় ভেদ সেথা নাই,
সবারি পরাণে ব'বে ত্রিদিবের বা'য়,
সবে হ'ব বোন আর ভাই গ

34

চল দেবি ! আগে চল, স্বরগের বালা !
কুজ মোরা, পিছনে রহিব,
ভূমি জুড়াইয়ে দিও পাতকীর জালা,
আমি মা'র নাম শুনাইব !
দেহ মোর যেথানেঃ রহিবে,
ফুদি প্রাণ তোমারি হইবে !
জীবন মরণে নাহি ভর,
জয় বিশ্ব-জননীর জর!

প্রিম্বপ্রসঙ্গ-রচ্মিত্রী।

বামাবোধিনী পত্রিকা।

BAMABODHINI PATRIKA.

"कन्याष्येवं पालनीया जिचगीयातियत्नतः"

ক্সাকে পালন করিবেক ও যত্নের সহিত শিক্ষা দিবেক।

৩৩৯ সংখ্যা।

हिन ५२৯৯—এপ্রেল ১৮৯०।

ংম কল। ১ম ভাগ।

সাময়িক প্রসঙ্গ।

বর্ষ শেষ— এই চৈত্র মাদে ১২৯৯
সাল শেষ হইল, আগামী বৈশাথ হইতে
১৩০০ সাল লিখিতে হইবে। এক এক
শতাকীর আরম্ভ ও শেষ ইংরাজদের
দেশে অতি মহৎ ঘটনা, তত্বপলক্ষে কত
ধুমধাম হয়! নববর্ষের ন্যায় নব শতাকীকে বিশেষ শ্বরণীয় করিবার চেষ্টা
করা আমাদেরও কর্ত্রবা।

জ্রী-উকীল—জাপানের সর্ব্বপ্রথম
আইনজ্ঞ রমণীর নাম শ্রীমতী টেল-সোনা। তিনি ইংলও দর্শন করিতে
গিয়াছেন।

ভারতের আশা—ভারত হিতেবী ওয়েভারবরণ সাহেব পার্লেমের্লের সভ্য মনোনীত হইয়াছেন। দাদাভাই ও তাঁহাতে মিলিত হইয়া কার্য্য করিলে এ দেশের অনেক উপকার করিতে গারিবেন।

হোম-রুল—ইংলণ্ডের বর্তমান
প্রধান রাজমন্ত্রী প্রাডটোন সাহেব
অনেক দিন হইল আয়র্লণ্ড শাসনের
জন্ত হোমরুল নামে অতম্ব শাসনপ্রণালী প্রণয়ন করেন। ইহা বিধিবদ্ধ করিবার জন্ত এখন তিনি বদ্ধপরিকর হইয়াছেন। পার্লেমেন্টে ইহার
আলোচনা হইতেছে। লর্ড সালিসবরীপ্রেম্থ তাঁহার বিপক্ষ দলও ইহা যাহাতে
ব্যর্থ হয়, বিধিমতে তাহার চেটা
করিতেছেন।

দান-মহারাণী স্বর্ণমন্ত্রী প্রধান সেনাপতি লর্ড রবার্টের স্বরণার্থ ফণ্ডে ১০০০ টাকা দিরাছেন। বেথিয়ার মহারাজা ও মূর্লিদাবাদের নবাবও এই ক্ষপ দান করিয়াছেন। গড়ের মাঠে সেনাপতির মূর্ত্তি প্রতিষ্ঠার প্রস্তাব হইতেছে।

মেয়ে ডাক্তার—কুমারী মার্স
এম, ডি, আগ্রার স্ত্রী-হাঁদপালে কার্য্য
করিতেছিলেন, এখন বেথিয়া মহারাজের
স্ত্রী-হাঁদপাতালের তত্ত্বাবধায়িকা নিযুক্ত
হইয়াছেন।

ব্যবস্থাপক সভার সংক্ষার—
ভারতীয় ও স্থানীয় ব্যবস্থাপক সভায়
দেশের প্রতিনিধি সকল যাহাতে প্রবেশ
করিতে পারেন, তাহার ব্যবস্থা হইতেছে। বঙ্গদেশীয় সভা ১০ জন রাজকর্মচারী ও ১০ জন প্রতিনিধি লইয়া
শীঘ্র নৃতন আকারে গঠিত হইবে। বিশ্ববিদ্যালয়, মিউনিদিপালিটা, ভিট্নিউ

বোর্ড, বণিক্সমিতি প্রভৃতি হইতে প্রতিনিধি গৃহীত হইতেছে। ভারতীয় সভা আগামী বর্ষে গঠিত হইবে। এই মহৎ পরিবর্ত্তন যে জাতীয় কন্প্রেসের আন্দোলনের ফল, তাহার সন্দেহ নাই।

বন্য-বালক—ভাগলপুরের জমিদার ভাগলু দিং শিকারে গিয়া জঙ্গল

হইতে এক বন্য বালক ধরিয়া আনিয়াছেন। সে চারি পায়ে চলে, কাঁচা
মাংস ও ভেক প্রভৃতি থায়। ওলাউঠা
রোগ হইয়াছিল, কোনও মতে ঔষধ
থায় নাই, কিন্তু জলাশয়ের জল পেট
পূরিয়া থাইয়া আরোগ্য লাভ করিয়াছে।
ইহার বয়স ১৪।১৫ বৎসর হইবে, কথা
কহিতে পারে না। বালকটা এথন
বাজিতপুরে আছে।

পৃথিবীর বয়ঃক্রম।

বোধ হয় মানবের সৃষ্টি অবধিই
পৃথিবীর বয়:ক্রম সম্বন্ধে অমুসন্ধান চলিতেছে। অনেক জাতির ধর্মপুস্তকে পৃথিবীর বয়:ক্রেমের কথার উল্লেখ আছে।
কিন্তু কাহারও সহিত কাহারও দিশ নাই।
হিন্দু চিন প্রভৃতি জাতি ইহা এক
প্রকার অসংখ্য বৎসর বলিয়া স্থির করিয়াছেন। খৃষ্টিয়ানদিগের ধর্মপুস্তক বাইবেলের মতে ৬০০০ বৎসর মাত্র পৃর্কে
স্থিকীর সৃষ্টি হইয়াছে। যতদিন যুরোপ-

থণ্ডে বিজ্ঞানশান্ত্রের বিশেষ অফুশীলন হয়
নাই, ততদিন তত্রত্য লোকে বাইবেলের
এই মতের পোষকতা করিত। কিন্দু
যতই বৈজ্ঞানিক আলোচনার বৃদ্ধি হইতেছে, ততই লোকের মন হইতে পূর্ম্বসংস্কার তিরোহিত হইতেছে। ভূতন্বশান্ত্র প্রমাণ করিতেছে এক এক স্তর
নির্দ্ধাণের কাল লক্ষ লক্ষ বংসর। পৃথিবীর নিয়ন্তরে যে মহুষ্য কয়াল পাওরা
গিরাছে,তাহাতে মানবজ্ঞাতিরই স্ক্টেকাল

লক্ষ বংসর বলিলে অত্যুক্তি হয় না।
সম্প্রতি ডাক্তার ওয়ালেস নামক একজন
প্রসিদ্ধ বৈজ্ঞানিক স্পষ্টাক্ষরে বলিতেছেন যে পৃথিবীর বয়ঃক্রম অন্যন
(২,৮০,০০,০০০) তুইকোটী আশীলক্ষ
বংসর। তাঁহার মতে পৃথিবীর জমির
কালি৫,৭০,০০,০০০ পাঁচকোটী সত্তর লক্ষ
বর্গ মাইল। উপকূলের পরিমাণ একলক্ষ
মাইল, সঞ্চিত জমীর প্রশন্ততা গড়ে ৩০
মাইল অর্থাৎ তিনকোটী বর্গ মাইল।
গড়ে তিন হাজার বংসরে এক ফুট জমি
সমস্ত পৃথিবীতে প্রস্তুত হুইতেছে।
ধরাময় মেক স্করের গভীরতা ১৭৭২৮০

ফিট, এই হিসাবে তৃইকোটা অশীতি
সহস্র বর্ষে জমি প্রস্তুত হইরাছে।
তিনি আরও প্রমাণ করিয়াছেন বে
এক একটা স্তর প্রস্তুত হইবার সমর
পৃথিবী এক একবার জলমগ্র হয়। হয়
এককালে নতৃবা ক্রমে ক্রমে ধীরে ধীরে
সমস্ত ভূগও জলমগ্র হইয়াছে। এই
নিমক্ষন ও উন্মক্ষনের দেদীপামান
চিহ্র সকল স্থরে স্তরে প্রকটিত রহিয়াছে। বর্ত্তমান ভূপঠে পর্বতের উপর
সাম্জিক জন্তুদিগের এবং সম্ভূপতে
ভূচরদিগের দেহাবশেষ এই জলপ্লাবনের
সাক্যা দিতেছে।

নিদ্রা।

আধুনিক বিজ্ঞানবিৎদিগের মতে
দ্বীরস্থ দৈরিক কন্দরে জলাতিশ্যা
নিবন্ধনই নিজা হইয়া গাকে। দিরা
ও ধমনী সকল বহুক্দগরাপী শ্রমরারা
ক্লাস্ত ও পরিশ্রাস্ত হইলেই ভাহাদিগের
রন্ধে রন্ধে জলপ্রবাহের সঞ্চার হয়।
ইহার কারণ—দ্বীরস্ত বাষ্প ও শ্লাস
যন্ত্রের বিকলতা প্রযুক্ত শ্লাস বায়র
আংশিক রোধ এবং কার্যাকালে দৈরিক
পদার্থ বিশেসের জলরূপে পরিবর্তন।
এই শ্রীরস্থ জল জাগ্রদবস্থার শুসন
ক্রিয়ার সমন্ত্রকটা বাষ্পরপে বহির্গত
হর, কিন্তু অধিকাংশই নিজাকালে
তিরোহিত হইয়া থাকে। শারীরিক

দশ্রসারণ নিষ্কমে রক্তপ্রবাহের মধ্য
দিয়া এই জল বহির্গতি হয়। রক্তের
ক্ষেরপ অবস্থা, তদমুসারে ইহারও গতিক্রিরার স্থবিদা বা অস্থবিদা হয়। নিদ্রাকালে যে পরিমাণে শরীরস্থ জল বাষ্পাকারে বহির্গত হইতে পাকে, ভুক্ত
পদার্থ সকলের সারাংশ সেই পরিমাণ
ভাহার স্থান অনিকার করিয়া কেলে।
জলের তিরোভাব ও তৎুস্থান থাদোর
সারাংশ দারা পূর্ণ হওয়াভেই শারীরিক
সংস্কার কার্যা স্থচাকরূপে সম্পন্ন হইয়া
থাকে। অপচ্যের এইরূপ পূরণ দারাই,
ক্রাস্ত দেহ পুনর্কার স্বল ও উদ্যান্ত্রক
হইয়া উঠে। এই মহোপকারক ব্যাণার

निकाकार्ला विरामवन्तरल मल्यन स्टेम । जल रा भनिमाल मिक स्टेरा अस्तिक थारक । निजाकारण वृद्धितं अनिमान স্থিরীক্বত হইয়া থাকে। পণ্ডিতেরা বলেন

হয়, বৃদ্ধিও সেই পরিমাণে তৎস্থান পূর্ণ করিয়া থাকে।

রাজকবি লর্ড টেনিসন।

গত ৬ই অক্টোবর (১৮৯২) দিবদে है । वा अर्थ के विकास कि वि विकास कि वि কলেবর ত্যাগ করিয়াছেন। ইইার नाम जानास्कुछ (ऐनिमन। ইनि शृष्टीय ১৮০৯ অব্দে ৬ই আগষ্ট দিবদে সমারদ্ বি গ্রামে জন্মগ্রহণ করেন। ইইার পিতা ডাক্তার জি সি টেনিসন এই সময় উক্ত গ্রামস্থ ধর্ম্মনিদরের (রেক্টার) প্রধান্যাজক পদে অধিষ্ঠিত ছিলেন। আলফ্রেড কেমিজ কলেজে অধ্যয়ন করেন এবং শীঘ্রই তথায় কাব্য রচনা জন্ম খ্যাতিলাভ করেন। যতই তাঁহার বয়োর্দ্ধি হইতে লাগিল, ততই তাঁহার কাব্যশক্তির বিকাশ ও রচনামাধুরি প্রকাশ পাইতে লাগিল। বৃদ্ধ বয়সেও তাঁহার কাব্য রচনাশক্তি কিছুমাত্র হ্রাস খষ্টাব্দে তিনি হয় নাই। 3600 কবিশ্রেষ্ঠ ওয়ার্ডসওয়ার্থের উত্তরাধিকারী শ্বরূপ "রাজকবি" (Poet Laureate)

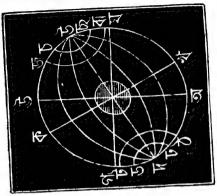
উপাধি প্রাপ্ত হন এবং ১৮৮৪ অব্দে "বাারণ" উপাধি লাভ করেন। তিরাশী ব্যস কিঞ্চিদ্ধিক হইয়াছিল। ইহাঁর রচিত অনেকগুলি সুন্দর স্থূনর কাব্য আছে, তাহার करमकथानि आंगां मिरशत छेक विमानम সকলে পাঠ্য পুস্তক মধ্যে প্রচলিত। ইহার বিষয়ে কথিত আছে যে ইহাঁর অন্তিম পীড়াকালে একজন মহিলা ইহাঁর নেবা শুশ্রাষায় নিযুক্ত হন, তাঁহার পরিশ্রমের পুরস্বারস্বরূপ তুইশত পাউও (প্রায় ৩০০০ টাকা) দেওয়া হয়, তিনি তৎসমুদায় বাজকবির অশীতিত্রয় জন্মদিনের উৎসব জন্ম বায় করিয়াছিলেন। लर्फ (हेनिमन স্ত্রীজাতির পরম বন্ধ ছিলেন এবং তাহাদের উন্নতি ও গৌরব বৃদ্ধির জন্ত বিশেষরূপে লেখনী চালনা করিয়াছেন। নারীগণ যেন তাঁহার প্রতি ক্তজ্ঞ হন।

খগোল চিত্ৰ।

ভক্তলি বৃক্ত কলনা করা হইয়াছে, কিরা যাত্র। ভূপ্তের অনেকভালি বৃত্তের

ভূপুঠের ন্যায় থগোল চিত্রেও তন্ধার। স্থাও নক্ষত্রগণের গতি স্থির

সহিত থগোলের অনেকগুলি বৃত্তের সম্ভ্রু আছে, তাহা প্রদর্শন করিবার



জন্য উপর প্রদর্শিত চিত্রে পৃথিবীকে অঙ্কিত করিয়া বাহিরের মধ্যস্থলে বৃহৎ বৃত্তটীকে থগোল চিত্র স্বরূপ কল্পনা ·করা গেল। এতদ্বারা দৃষ্ট হইবে যে পৃথিবীর মধ্যদেশ দিয়া উত্তর দক্ষিণ ভাবে একটা রেখা অক্কিত করিলে ঐ রেথা যে যে স্থানে বৃহৎ বৃত্তটীকে ঐ স্থানগম খগোলের **र्ल्श कर**त्र, এই তুইটীকে এবং দক্ষিণ। পগোলের হৃমেক ও কুমেক বল। যাইতে পারে। আকাশের মধ্যদেশকে বেষ্টন ক্রিয়া যে রেখা ভূগোলকে দিভাগে বিভক্ত করে, তাহাকে वियुव द्रिशी करह, यथा कथा এই विद्रुव दृखाः न ভূপৃষ্ঠের বিষুর বৃত্তাংশের সহিত মিলিত হইয়াছে। পৃথিবীর বার্ষিক গতির পথে স্ব্য ধ্ৰন এই বুত্তে সমাগত হ্য়, छ९कारन निवाताजि नमान इत्र, भिरे क्ना इहात नाम विवृत तृष्ठ हहेबाएह। বে সকৰ কুজ ৰুত্ত এই বিষুধ বড়ের

উত্তর ও দক্ষিণ দিকে সমাস্করালভাবে
অক্তিত হইরাছে, সে সমস্তকে "অরনবৃত্ত"
কহে, যথা চছ, জঝ, টঠ, ডেচ। এই
সমস্ত বৃত্ত বারা স্থ্য ও নক্ষত্রের অয়ন
অর্থাৎ উত্তর দক্ষিণাভিমুথ গতি নির্দাণিত হয়। উ হইতে দ পর্যান্ত যে
সমস্ত বৃত্ত রহিয়াছে, তাহাদিগকে
"হোরাবৃত্ত" কহা যায়, যেহেতু ইহাদের
ঘারা সময় নিরূপিত হইয়া থাকে।

স্থা যে পণ দিয়া স্বীয় বার্ষিক গতি
সম্পন্ন করে, উহাকে রাশিচক্র কহে।
চিত্রে গঘ নামক বৃত্তাংশ রাশিচক্র
বৃত্ত । রাশিচক্র দ্বাদশ ভাগে বিভক্ত।
প্রত্যেক ভাগে এক একটা রাশি আছে,
স্থ্য প্রতি মানে এক একটা রাশিতে
প্রবেশ করে †। সমস্ত বর্ষের মধ্যে

* পৃথিবী ২৪ ঘন্টায় ৬৬০ অংশ অমণ করে;
অভএব প্রভাক স্থান এক ঘন্টায় ১৫ অংশ পশ্চিম

ইইতে পূর্বাভিমুখে অমণ করিয়া থাকে; সেই জ্লন্ত কোন নির্দিষ্ট স্থান হইতে যে স্থান ১৫ অংশ পশ্চিম,
তথায় ১ ঘন্টা বিলম্পে সুর্যোগিয় ছইবে। যথা,—
ক্রিকাতার যথন মধ্যাক্ত বা ১২টা, তথন বোস্থাই
নগরে ১১টা হইবে। কলিকাতা হইতে বোস্থাই
প্রায় ১৫ অংশ পশ্চিম।

† প্রাবণমানে দক্ষিণায়ন ও মাণনানে উত্তরারণ সংক্রান্তি। আষাচ ও পৌবে কর্কট ও মকর সংক্রান্তি। আমানের দেশে (উত্তর গোলার্কে) ১০ই আবাচ দিবা দীর্ঘ ও বাত্রি আজান্ত অল্প হয় এবং ১০ই পৌব দিবা অভ্যন্ত অল্প ও রাত্রি দীর্ঘ হয়। ১০ই আবিন দিবা অভ্যন্ত অল্প ও রাত্রি দীর্ঘ হয়। এই দিবসকে বিযুব দিবস কছে। ১০ই চৈত্র দিবা ও রাত্রি সমান হয়। ঐদিবসকেও বিযুব দিবস কছে। তৈত্র মাসের শেষ দিনকে মহাবিয়ুব সংক্রান্তি কছে, কারণ এই মাসে দিবা ও রাত্রি সমান হয়। অবেকে মহালি দিবসে পুর্বেষ্ঠি দিন রাত্রি সমান ছল, কাল পারিবর্ত্তনের সক্রে এই ঘটনারও পারিবন্ত ক্রেগ্রের সংক্রেমণ্ডের ব্রুটাতি ক্রেট্ড বলে।

স্থ্যকে কেবল হুই দিবস, ঠিক পূর্বদিকে উদিত হইতে দেখা যার। নতুবা
মাথ হইতে আযাত ছয় মাস কিঞ্চিৎ
উত্তরের দিকে, এবং প্রাবণ হইতে
পৌষ পর্যান্ত ছয় মাস দক্ষিণের দিকে
স্থ্য উদয় হইয়া থাকে। স্থ্যের এই
অবস্থা পরিবর্তনকে অয়ন বলে।

ছাদশ রাশির নাম এবং স্থ্য যে মাদে যে অয়নে ও যে রাশিতে গমন করে, তাহা নিমে প্রদত্ত হইল।

| অয়ন কাল | রাশির নাম | স্থ্য যে মাদে যে রাশিতে প্রবেশ করে। |
|---------------------|---------------|---|
| উত্তর প্র রু | (মেধ | বৈশাখ |
| | द्रव | े ब्लार्छ |
| | मिथ् न | আষাঢ় |
| দ ক্ষিত জয়ন | কৰ্কট | শ্রাবণ |
| | সিং হ | ভাদ্র |
| | কভা1 | আখিন |
| | ু জুলা | কা ৰ্ডিক |
| | বৃশ্চিক | অগ্ৰহা য়ণ |
| উত্তর অঙ্গন | ধহ | পৌষ |
| | (মকর | মাঘ |
| | কুম্ভ | ফাল্কন |
| | भीन | চৈত্ৰ |

আমরা, ক্রমে ক্রমে এই দাদশ রাশির ও তদন্তর্গত নক্ষত্রের বিষয় কিঞ্চিৎ বিশেষরূপ বর্ণনা করিতেছি। প্রথম রাশি:ছয়্টী আকাশের মধ্যন্তিত বিষ্ব রেখার উত্তরাংশে এবং শেষ ছয়্টী দক্ষি লাংশে অবস্থিতি করে। মেব। এই রাশিতে ভিনটী উজ্জ্বল
নক্ষত্র আছে। ইহারা মেবের মন্তকে
হিত। প্লিরাডিস নামক যে নক্ষত্র স্তবক
আছে, ভাহার উত্তর পশ্চিমে দেখিলে
মেবের ঐ তিনটা বড় নক্ষত্র দেখা যাইবে।
প্লিয়াডিস নক্ষত্রকে ক্রন্তিকা নক্ষত্র বলে।
বৈশাধ মাসে স্থায় এই রাশিতে থাকে।

বৃষ। প্লিয়াভিদ অর্থাৎ ক্লজিক।
নক্ষত্র এবং তাহার কিঞ্চিৎ দক্ষিণ পূর্ব্ব
দিকে চারিটী ক্ষুদ্র ক্ষুদ্র নক্ষত্র একত্তে এবং
তাহারই নিকট যে ঈষৎ রক্তবর্ণ একটী
নক্ষত্র দেখা যার, এই করেকটী বৃষের
প্রধান নক্ষত্র। জ্যৈষ্ঠমানে স্থ্য এই
রাশিতে থাকে।

মিথুন।—মিথুন র্ষের পূর্ববিকে স্থিত। মিথুনের মন্তকে ছইটা বিতীর শ্রেণীর নক্ষত্র এবং তাহাদের কিঞ্চিৎ দক্ষিণে চারিটা তৃতীয় শ্রেণীর নক্ষত্র আছে। ঐ উজ্জ্বল নক্ষত্র ছইটা নিকটে নিকটে আছে এবং ক্তত্তিকা নক্ষত্রের পূর্ববিকে। আষাঢ় মাদে পূর্য্য এই রাশিতে আসিয়া পুনর্বার দক্ষিণবাহী হয়; সেই জন্ত শ্রাবণ মাস হইতে দক্ষিণায়ন আরম্ভ হয়।

বৃষ এবং মিথুনের দক্ষিণে একটা
নক্ষত্রমালা আছে, তাহাকে লোকে
কালপুরুষ বলে। ইংরাজিতে ইহাকে
প্রোয়েন কহে। উহাই মৃগশিরা নক্ষত্র।
এই নক্ষত্রমালা দেখিতে নরাক্ষতি।
উহার মন্তকে করেকটা কুল্র কুল্র নক্ষত্র;
দক্ষিণ ও বামস্বাহ্মে গুইটা উক্ষল নক্ষত্র,

বিশেষতঃ দক্ষিণ স্বন্ধের নক্ষত্রটা প্রথম শ্রেণীর নক্ষত্র; কটেদেশে তিনটা দিতীয় শ্রেণীর নক্ষত্র; কয়েকটা অত্যস্ত কুদ্র নক্ষত্র নাভিস্করণ হইয়াছে; বামপদে একটা প্রথম শ্রেণীর নক্ষত্র।

কালপুরুষ অর্থাৎ মৃগলিরার দক্ষিণ পূর্ব্বদিকে একটা অতাস্ত উজ্জল নক্ষত্র আছে, ইহাকে ইংরাজিতে ডগষ্টার কহে। এবং তাহার পূর্ব্বদিকে আর একটা উজ্জল নক্ষত্র আছে, ইহা ইংরাজি লিটিল্-ডগ নক্ষত্রমালার একটা নক্ষত্র। কালপুরুষের দক্ষিণ স্কমের ঈষং রক্তবর্ণ নক্ষত্র এবং এই ছইটা নক্ষত্রকে পরস্পার সরল রেখা-দারা যোগ করিলে একটা ত্রিভুক্ক হয়।

এই সমস্ত উজ্জ্বল নক্ষত্রমালা থাকায় আকাশের এই ভাগটী অত্যন্ত উজ্জ্বল দেখাযায়।

কর্কট। কর্কট রাশিস্থ নক্ষত্রগুলি অত্যন্ত কুদ্র, তাহাদিগকে দেই জন্ত স্পষ্ট দেখা যায় না। কর্কট মিথুনের পূর্বদিকে। স্থ্য প্রাবণ মাসে এই রাশিতে সঞ্চরণ করে।

সিংহ। সিংহ, কর্কটের পূর্ব-উত্তর-দিকে। এই রাশিতে চারিটী প্রথম শ্রেণীর নক্ষত্র আছে। তন্মধ্যে হইটী দক্ষিণভাগে, আর হুইটী উত্তরভাগে।

- * * সিংহের উত্তর পশ্চিম কোণে সাতটী
- * * নক্ষত্র এইরূপে আছে, এই নক্ষত্র-
- মালাকে ইংরাজিতে (গ্রেট বেয়ার)
- বৃহৎ ভরুক কহে। ইহার চারিটা
 - এক চতুর্ককেত্র স্বরূপ; অপর

তিনটী বক্রবেথার স্থাৰ ভন্নকের লাস্কুল স্বরূপ হইরাছে। ইহার মধ্যে ছয়টা নক্ষত্র দিতীয় শ্রেণীর।

কন্তা:—এইরাশি সিংহের পূর্বাদিকে।ইহাতে পাঁচটা ঈষৎ উজ্জ্বল নক্ষত্র
আছে। একটা প্রথম শ্রেণীর অতি উজ্জ্বল
নক্ষত্র পূর্বাসীমার অবস্থিত। ক্র্য্য আখিন
মাসে এই রাশিতে সঞ্চরণ করে। এই
রাশিতে আসিলে দিবা ও রাত্রি সমান
হয়। এই স্থলে রাশিচক্র ও বিষুবরেথার
সম্পাত হয়। এই রাশির পরের রাশিগুলি দক্ষিণ থগোলার্দ্ধে স্থিত, অর্থাৎ
আকাশের দক্ষিণভাগে।

ভূলা। ভূলারাশি কন্সার দক্ষিণদিকে। উহার মধ্যে চারিটী নক্ষত্র আছে; একটা অত্যন্ত কুদ্র এবং অপর তিন্টী বিতায় শ্রেণীর নক্ষত্র। এই চারিটাতে একটা চতুর্জ ক্ষেত্র হইয়াছে।

বৃশ্চিক। বৃশ্চিক, তুলার পশ্চিমে। ইহাতে হুইটী অত্যস্ত উজ্জ্বল নক্ষত্র আছে। একটী প্রথমশ্রেণীর নক্ষত্র বোধ হয়। ধরু এবং বৃশ্চিকের মধ্যে ছায়াপথ, যাহাকে যমের জাঙাল বলে। ইংরাজিতে ইহাকে (Milky way) মিকি ওয়ে কহে।

ধহ। ধহ ছায়াপথের পশ্চিমদিকে।
ইহার চারিটা নক্ষত্র দেখিতে পাওরা

যায়। এই রাশির দক্ষিণে আর হুর্য্য
গনন করে না। এইখান হইতেই

তাহার উত্তরায়ণ আরম্ভ হয়। হুর্য্য
এই রাশিতে আসিলে দিবাভাগ অত্যন্ত

অর ও রাত্রি দীর্য হয়।

মকর। মকর, ধমুর পশ্চিমদিকে।
ইহার উত্তরভাগে তিনটা এবং দক্ষিণে
ছইটা ক্ষুদ্র নক্ষত্র আছে। মকরের
কিঞ্চিৎ দক্ষিণে একটা অত্যস্ত উজ্জ্বল
নক্ষত্র আছে।

কুন্ত। কুন্তরাশি মকরের দক্ষিণ পশ্চিমদিকে। ইহার পাঁচটী নক্ষত্র দেখা যায়; ছইটী স্কল্কে এবং আর তিনটী উহার কিঞ্চিৎ অন্তরে দক্ষিণ পূর্বদিকে।

মীন। এই রাশি কুন্তের উত্তর
পশ্চিমদিকে। এই স্থানেই স্থা্যর
পশ্চিমদিতে শেষ হইয়া পূর্বাভিমুথ গতি
আরস্ত হয়। স্থা্য এই রাশিতে থাকিলে
দিবা রাত্রি সমান হয়। এই স্থানে
বিষ্ববৃত্ত ও রাশিচক্রের পুনর্বার সম্পাত
হয়। এই রাশিতে উজ্জল নক্ষত্র নাই।
কিন্তু ইহার কিঞ্চিৎ দক্ষিণে একটী
অত্যন্ত উজ্জল নক্ষত্র দেখা যায়।

সূচী-নির্মাণ।

এক পয়সায় ২৫টা স্চী বিক্রয় হইয়া থাকে, কিন্তু এগুলি নির্ম্মাণ করিতে যে পরিশ্রম, কৌশল ও সময় ব্যয় হইয়া থাকে তাহা শুনিলে আশ্র্যা হইতে হয়। উৎক্রষ্ট ঢাল৷ ইম্পাতের সক্ষ তার যন্ত্রদারা এক একবারে যোড়া যোড়া श्टाहत व्याकारत काठा इब्र. भरत स्मेहे গুলি এক লোহ টেবেলে উ'থা দারা সমান করা হয়: অপর একটা যন্তের ষারা ঘষিয়া তীক্ষ করিয়া থাকে। কাজটী অত্যন্ত বিপদজনক। ঘর্ষণে হক্ষ হক্ষা ইস্পাত ও শাণ প্রস্তরের ও ড়াখাস হারা গ্রহণ করিলে শরীরের नमृह व्यनिष्ठे इत्र এवः यादाता करे कार्या নিযুক্ত ভাহার অল্লায় হইয়া থাকে। কথিত আছে একজন স্চী-নির্মাণের কর্মকার সর্বাদা একটা চিকিৎসকের নিকট বলিত বক্ষত্তলের ও কণ্ঠদেশের

মধ্যে বর্ত্তার জায় একটা ভারী পদার্থ উঠিয়া ও নামিয়া থাকে, ইহাতে তাহার অত্যন্ত কট হয়---এমন কি খাস প্রশা-সেরও ব্যাঘাত হইয়া থাকে। চিকিৎসক কোনও পীড়ার চিহ্ন না দেখিয়া কেবল উপহাস করিতেন এবং বলিতেন শরীরের মধ্যে বর্ত্তাের আবির্ভাব কেবল মস্তিকের বিকারমাত্র। কর্মকার সম্ভষ্ট হইলেন না। শেষে যথন তাহার পীড়া সাংঘাতিক হইয়া উঠিল, তিনি সেই **इिकि९मकरक अञ्च**रताध कतिरमन रय তাঁহার মৃত্যু হইলে শবচ্ছেদ করিয়া তাহার বক্ষঃস্থল পরীকা তদমুদারে শবচ্ছেদ করিয়া হৃদ্যের মধ্যে একটা ডিম্বের স্থায় পদার্থ দৃষ্ট হইল —ইহা ইম্পাতও প্রস্তরের বর্ত্*ন*া দ্বৎপিণ্ডের উপরেও ইম্পাত প্রস্তরের क्यां वें थिया अमन कर्डिन इरेग्राइ एन,

তাহা ছুরিকা দারাও সহজে বিদ্ধ হয় নাই। ইহাতে অনুমিত হইতে পারে যে, এ ব্যবসায় কিরূপ বিপদজনক। কিন্তু শিল্পযন্ত্রের কৌশলে এক্ষণে আর এই সকল কার্য্যে কোনও আপদের সম্ভাবনা নাই। লোহশলাকার অগ্রভাগ তীক্ষ হইলেই পেষণ যন্ত্রের দ্বারা মূলদেশ প্রশস্ত ও বিদ্ধ করা হয়। সূক্ষ্ম তার বিঁধ করা যে কিরূপ ছরুহ কার্য্য, তাহা সহজে অমুমিত হইবার নহে। অতি সন্তর্পণে হক্ষ যন্ত্রের সাহায্যে ইহা সম্পন হইয়া থাকে। ইহাতে প্রত্যেক স্থচীতে ছইটা করিয়াও বিঁধ হয়। পুনর্কার ঘর্ষণ যত্তের হারা মূলদেশ মস্থা করা হয়। এতকণ ইহা যোড়াবা ডবল সূচ ছিল। পরে সামাত্র নাইএর উপর রাথিয়া অপর একটা যন্তের সাহায্যে চিরিয়া ছইটা পৃথক্, করা হয়, পুনরায় থর্ষণ বন্ধের দারা স্থগোল করিয়া সম্পূর্ণ হটী প্রস্তুত হয়। কিন্তু এখনও ইহা ব্যবহারোপ্যোগী হয় নাই। কাঁচা স্চী অত্যন্ত নমন্শীল, সূত্রাং তাহাকে পাকাইয়া লওয়া আবশুক। এইজ্ঞ ইহার বিঁধ রঞ্জিত করিয়া উত্তপ্ত করিতে হয়, এবং শেষে তৈলে ভুবাইয়া রাখিতে হয়। কিন্তু ইহাতেও সূচী শক্ত হয় না, প্রত্যুতঃ ইহা কাচের ভায়ে দামাত চাপেই ভাঙ্গিয়া যায়; স্থতরাং ইহাকে আবার উত্তপ্ত করিয়া ক্রমে ক্রমে শীতল

করিতে হয়। এই প্রক্রিয়ার সময় অনেক স্চী তেড়। বাঁকা হইয়া থাকে, ভাহা-দিগকে হাতুড়ীর দারা এক একটা করিয়া আন্তে আন্তে পিটিয়া সোজা করিতে হয়। মাথাগুলি পুনর্বার রঞ্জিত করা হয়. স্চীগুলি মাজিয়া চকচকে করা এই প্রক্রিয়া প্রায় এক সপ্তাহে সম্পূর্ণ হইয়া থাকে। একটা শ্লথ কান্ধি-সের থলিয়াতে কোমল সাবানও (emery powder) এমারি চূর্ণ দারা তৈলসিক্ত স্টাগুলি বদ্ধ করিয়া রাখিতে হয়, পরে উঞ্চলে ধৌত করিয়া করাতের গুড়া দিয়া শুকাইতে হয়। এই প্রক্রিয়াকালে অনেক স্চীর বিধি সকল বদ্ধ ও তীক্ষ অগ্রভাগ ভোঁতা হইবার সম্ভাবনা, স্কুতরাং তাহাদিগকে ঘর্ষণ বস্ত্রের মধ্য প্রবেশ করাইতে হয় এবং মাথাগুলি রঞ্জিত করিতে হয়। পরিশেষে প্রস্তুত চর্ম্ম নধ্য দিয়া অপর একটা যন্ত্র দারা পালিদ করিতে হয়। এইবারেই ব্যব-হারোপযোগী সূচী প্রস্তুত হইল। **অ**ব-শেষে স্টোগুলি গণিয়া চীরথণ্ডে আট-কাইয়া কাগজে মুড়িয়া লেবেল বা শিরোনামা লিখিয়া বাজারে বিক্রয়ার্থ প্রেরণ করাহয়। আমেরিকা বা যুরোপে এই প্রকারে প্রস্তুত স্থচী সকল আমা-भित क्रिया श्वामात्र २**० है। क**तिया विक्रम হয়। পাঠিকাগণ দেখুন একটা স্চী নির্মাণের ঝঞ্চাট কত।

বীরাঙ্গনা বর্ধর রমণী।

প্রশাস্ত মহাসাগরের দক্ষিণভাগে একটা দ্বীপপুঞ্জ আছে। এই পুঞ্জের একটা দ্বীপে কিলোইয়া নামে এক ভীষণ দৃশ্র আগ্নেরগিরি আছে। অগ্নাদনীরণ কালে এই পর্বতের ভয়ক্ষর মৃর্ট্টি বর্ণনা-তীত, কিন্তু তাহা ছাড়া সাধারণতঃও ইহার দৃশ্য দেখিলে হৃদয় স্তম্ভিত হয়। ইহার গহার হইতে দিবারাত্রি ধৃমপুঞ্জ উদ্গীরিত হইতেছে। দিবাভাগে এই ধুম শ্বেতাভ ঘনঘটার স্থায় লক্ষিত হয়, কিন্তু রজনীর অন্নকারে ইহার জ্বন্ত শিখা চতুৰ্দ্ধিকে প্ৰতিফলিত ২ইয়া অতি ভীষণ মূর্ত্তি ধারণ করে। বর্কার দ্বীপ-বাদিগণ এই পৰ্বতিকে পিলী নামী ডাকিনীর মত এক দেবীর আবাস স্তল বলিয়া বিশ্বাস করিত। ইহার পার্শ্বদেশস্থ জঙ্গলের উপর এক প্রকার অবি কুল কুল দেখিতে যায়, তাহা পিলীর কেশ এবং দ্রবীভূত অগ্নিবর্ণ ধাতুতে পরিপূর্ণ ইহার গহরর তাঁহার স্নান-কুও। ভাত দাপবাসিগণ কাল্লনিক দেবতার উপাসনা করিত বটে, কিন্তু কিলোইয়ার অধিষ্ঠাত্রী পিনী তাহাদের প্রধান উপাস্থ দেবতা ছিলেন। সেই আথেয়ণিরির ধাতু-নিঃস্রব, ধৃমপুঞ্জ, গভীর গর্জন ও অগ্নি-শিখা দিবানিশি তাহাদের চক্ষুর উপরে পিলীর মাহাত্ম্য বিস্তার করিত। কাল-জ্বে ইউরোপ হইতে এতান মিশনবিগণ তথায় যাইয়া তাহাদিগকে নিরাকার অদ্বিতীয় ঈশ্বরের উপাসনা শিখাইতে লাগিলেন। দ্বীপবাসিগণ মিশনরিদিগের শিক্ষায় আপনাদের কাল্লনিক দেবদেবী পরিত্যাগ করিয়া থীষ্টধর্মোদী**ক্ষিত হইল**। কিন্তু তথাপি তাহারা পিলীর উপাদনা ভলিতে পারিল না। যে পিলীর মাহাত্মা তাহারা দিবানিশি চক্ষর উপরে দেখিত — গাঁহার প্রভাবে পর্বত, অগ্নি ও ধ্ম বমন করে এবং ভূমি কম্পিত ও সাগর উদ্বেলিত হয়—দেই ভয়ন্ধরী পিলীর অব্যান্না তাহারা কেম্ন ক বিয়া ক্রিবে ? নিরাকার ঈশ্বর মানব-চক্ষুর অতীত। দীপবাসিগণ তাঁহার উপাসনা ক্রিতে প্রস্তুহইল বটে, কিন্তু তাহা বলিয়া যে দেবতার অস্তিত্ব তাহারা চর্ম্ম চফে দেখিতে পাইত. তাঁহাকে পরি-ত্যাগ করিবার সাহদ তাহাদের কিছুতেই হইল না। স্কুতরাং গ্রীষ্টধর্মে দীক্ষিত হইয়াও দ্বীপবাদিগণ পূর্ব্বৎ পিলীর উপাসনা করিতে লাগিল। মিশনরিগণ তাহাদিগকে এই কান্ননিক উপাসনা হইতে বিরত করিবার জন্ম অনেক চেষ্টা করিয়াও কিছুতেই কৃতকার্য্য হইতে शातित्वन ना। किन्न उांशात्रत (ठष्टी বিফল হইলেও এক বর্কার রমণীর দারা তাঁহাদের উদ্দেশ্য স্থাসিদ্ধ হইল।

তংকালে সেই দ্বীপে কেপিওলেনী নামী এক রমণী বাদ করিতেন। তিনিও

মিসনরিগণ কর্ত্তক এটিধর্মে দীক্ষিতা रहेशा हिटलन। किन्छ छाहात अलम-বাসিগণ যেমন খুঠবর্মে দীক্ষিত হইয়াও পিণীর নামে কম্পিত হইত. তিনি দেরপে হইতেন না। অনাদি অনুষ অন্বিতীয় ঈশ্বরে তাঁহার গভীর বিশ্বাস ছিল, স্বতরাং স্বদেশবাসীদিগকে পিলীর কাল্লনিক ভয়ে ভীত দেখিয়া তাঁহার হৃদ্য ষ্মতান্ত বাথিত হইল। তিনি মনে মনে প্রতিজ্ঞা করিলেন যে যেমন করিয়া হউক তিনি তাহাদিগকে দেই অমূলক ভय श्रेट पूक कतिरवन। এই महर উদ্দেশ্য সাধনার্থ তিনি যে উপায় অব-লম্বন করিলেন তাহা অতি বিস্ময়কর। পিলী কিলোটয়া গিরির অধিষ্ঠাত্রী দেবতা। অতএব তিনি যদি পিলীব দেবত্ব অস্বীকার পূৰ্বক সর্কজন শমংক্ষ দেই আগ্নের পর্বতে আ্রোহণ করিয়া নিমে প্রত্যাগমন করিতে পারেন, তাহা হইলে অবশ্রই লোকের ভ্রম দূরী-ভূত হইবে। বীরাঙ্গনা সত্যের মাহাত্য বিস্তার করিবার জন্ম এই উপায় অব-লম্বন করিতে ক্রতসংকল হইলেন। সেই ষীপে এক প্রকার ফল জন্মিত। পিলীর উপাসনায় এই ফল ব্যবস্ত হইত বলিয়া দীপবাসিগণ ইহাকে প্ৰিত ৰ লিয়া বিশাস করিত। কিন্তু স্ত্রীলোকের ইহা ম্পূর্ন করিবার অধিকার ছিল না। কেপিওলেনী এই বিভীষিকায় ভীত না रहेग्रा मिट कन कठक छनि इस्छ कतिय। ধীরে ধীরে সেই পর্বতে আরোহণ

করিতে লাগিলেন। দর্শক্মগুলী কেপি-ওলেনীর তঃসাহস দেখিয়া ভয়ে শুন্তিত হইল। পর্বতের উপরে পিলীর উপাসক-গণ বাস করিত। কেপিওলেনী কিয়দর না উঠিতে উঠিতে তাহারা অগ্রসর হইয়া তাঁহার গতিরোধ করিবার চেষ্টা করিতে লাগিল, এবং তাঁহাকে নানাপ্রকারে ভয় দেখাইতে আরম্ভ করিল। কেপি-ওলেনী তাহাতে ভীতা হইলেন তিনি কোন উত্তর না করিয়া পূর্ব্ববৎ করিতে লাগিলেন, আবোহণ অবশেষে অতি কঙ্কে সেই ক্রোশাধিক উচ্চ পর্বতের শিথরে আরোহণ করিয়া তাহার ধুনপুঞ্জময় গহ্বরের স্মুথে দণ্ডায়-মান হইলেন। তথন তিনি হস্ত ছিত সেই ফল গহবরে নিকেপ করিয়া স্থির গন্তীরসরে বলিতে লাগিলেন—"স্বদেশ-বাদীগণ। তোমরা পিলীর ভয়ে ভীত। আনি তোমাদের সম্মাথে তাহাকে অস্থী-কার ও অগ্রাহ্য করিলাম। সে যদি আমাকে ধ্বংদ করিতে পারে, তবেই তোমর। তাহাকে ভয় করিও: আর আমাকে যদি ধবংস ক বিজে পারে, তাহা হইলে আজ হইতে নিরা-কার অগিতীয় ঈশ্বর বাতীত আবোর কাহারও উপাসন। করিও "না'।"— বলিয়া বীরাঙ্গনা ধীরে অবতরণ করিলেন, এবং সেই দিন হইতে দ্বীপ্রাসিগ্ণ মহাভয়ম্বরী পিণীর উপাসনা পরিত্যাগ করিল।

এক্ষণে পাঠিকাবর্গ হয়ত বিজ্ঞাসা

করিবেন—"কেপিওলেনীর চরিত্র প্রশং-সনীয় বটে, কিন্তু তাহাতে বীরত্বের লক্ষণ কোথায় ?" অতএব তাঁহাকে বারাঙ্গনা মধ্যে কেন গণা করিলাম—তাহা বলা আবিশ্রক। মানুষ কুসংক্ষারের দাস। একবার কোন কুসংস্কার হৃদয়ে দৃঢ়ীভূত হইলে তাহা হইতে মুক্ত হওয়া বড়ই কঠিন। আমি মুথে বলিতে পারি "অমুক বিশাদটি নিতান্ত ভ্ৰান্তিমূলক— আমি এ কুসংস্কারের বশীভূত নহি।" কিজ কার্যাকালে দেখা যায় যে আমি মুখে যাহা বলি, কার্য্যে তাহা করিতে অক্ষম। কুসংস্কার জনয়ে পাষাণের মত চাপিয়া আছে, স্কুতরাং তাহা পরিত্যাগ করিয়াও করিতে পারি না। কেপিও-লেনীর অদেশবাসীগণ ইহার একটি উৎকৃষ্ট দৃষ্টান্ত। মিশনবিগণ কর্ত্তক ভাহারা সকলেই অদ্বিতীয় নিরাকার ঈশ্বরোপাসনায় দীক্ষিত হইয়াছিল, কিন্তু তথাপি পূর্বাসংস্থার বশতঃ ভয়স্করী পিলীর নামে তাহাদের হৃদয় কম্পিত হইত। সকলে যে মিথ্যা ভয়ে ভীত,একজন রমণী যদি সে বিভীষিকায় জ্ঞানশৃত্য না হন, তাহা হইলে তুমি তাঁহার সাহদের— তাঁহার বীরত্বের প্রশংসা করিবে না কি ? তথু ইহা নীহে। সেই ক্রোশাধিক উচ্চ পর্বতে আবোহণ করা দকলেরই পক্ষে-

বিশেষতঃ রমণীর পক্ষে—বড কথা নহে। আরোহণ-জনিত ক্লেশেরত কথাই নাই-পর্বত হইতে পদ্খালিত হইয়া প্রাণবিয়োগেরও খুব স্ভাবনা। অতএব ধেরমণী সত্যের গৌরব রক্ষা করিবার জন্ম ক্লেশকে গ্রাহ্ম করিলেন না, মৃত্যুভয়কে গ্রাহ্ম করিলেন না, তাঁহার বারত্বের কি তুমি প্রশংসা করিবে না ৪ শুধু ইহাও নহে। দ্বীপ্রাসিগণ পিলীকে সর্বাদেবতার শ্রেষ্ঠ বলিয়া মাক্ত কবিত। কেপিওলেনী তাহাদের ভ্রম দেখাইবার জন্ম আপনার উপর দেব-কোপের ভার লইতে ক্নতসংকল্ল হই লেন। ইহা কি অল্ল সাহসের কথা? সামাতা নারী বা সামাত পুরুষ হইলে কখনই এ কার্য্যে প্রবৃত্ত হইতে সাহসী হইত না। লোকে কি বলিবে—হয়ত লোকে উত্তেজিত হইয়া তাঁহার প্রাণ-বিনাশ করিতে উদাত হইবে—এই ভয়ে অবশ্রই তাহার হৃদ্য কম্পিত হইত। কিন্তু বর্ষার রমণী কেপিওলেনী কর্ত্তব্যের অন্নরোধে কোনও বিভীষিকায় ভীত না হইয়া সত্যের জন্ম আত্মোৎদর্গ করিতে কুটিতা হইলেন না। পাঠিকাবর্গ তাঁহাকে বীরাঙ্গনা মধ্যে স্থান দান করিতে স্বীকৃত হইবেন কি ?

মহারাণী স্বর্ণময়ী।

দরার প্রতিমা থানি তুমি, তুর ঝণে ধরী বস্তুমি।

•

মুছাইলা কত অশ্রধার অভাগিনী বঙ্গবিধবার,

মাতৃহীন শিশুলয়ে ক্রোড়ে বাধিলা অপত্য-মেহ ডোবে। खकारन ছाইन यत्व (मन, ঘুচাইতে নরনারী ক্লেশ,— অনুছত্র খুলি শত শত বিলাইলা অন্ন অবিরত। অর্থবাসি দিলা দেশহিতে ধন্তা তুমি ধন্তা অবনীতে। তোমার দয়ার তুলনা নাই! 'স্বৰ্ময়ী' গুণ সাধে কি গাই ? দরাতে মারাতে গঠিত হিয়া, সাধিছ মঙ্গল হৃদয় দিয়া। পরের কল্যাণে সঁপিছ প্রাণ, নি:স্বার্থ উদার তোমার দান। কে বলে মা তুমি যশের তরে বাশি রাশি অর্থ দিতেছ পরে ? কে বলে মাতব দয়ার সর ভকাইয়া গেছে ? পাষ্ড নর ना ह'ता कि तक इनीम द्राप्ते, 'নির্দয়তা' নাই তোমার ঘটে। আজিও দে সরে গরিব কত, জুড়াইছে ডুবি জনমের মত। অগাধ সলিল শুকায় কবে ? यङ नु नाहि निः (भव र दे । পাত্রাপাত্র ভেদ নাহিক দানে এত উদারতা কাহার প্রাণে ? এ মহাপ্রাণতা ক'জনে সাজে वित्न वर्गमशी वरकत मार्व ? ধন কুবেরের অভাব নাই, ক'টী প্ৰাণ হেন দেখিতে পাই ? मत्रामश्री जूमि यथार्थ हे मा

ভারতে তোমার নাহি উপমা। না জানি কি উপাদানে (মিলেনা যা এ সংসারে বিধাতা বির্লে বসি গঠিলেন মা তোমারে ? পর ছঃগ নির্ঝিলে কেঁদে উঠে তব প্রাণ. আপন ভাণ্ডার থুলি অকাতরে কর দান। স্বৰ্ণাক্ষরে তব নাম রবে বঙ্গ ইতিহাসে "স্বৰ্ময়ী" দ্যাময়ী-নারী রত্ব বঙ্গদেশে।" রাথিলা অতুল কীর্টি সাধি সদা পরহিত, সকলে আনন্দে মাতি গাবে তব যশোগীত। জীবনের মহাব্রত পালিলে যা এজীবনে পুরস্বার পাবে তার গিয়ে নিত্য নিকেতনে। বঙ্গের গোরব তুনি লভেছ রাজ-সম্মান কিন্তু সে সম্মানে তব বিচলিত নহে প্রাণ। সাধিচ কর্ত্তব্য জানি খ্বদেশের উপকার, কর্তব্যের কাছে সেই রাজোপাধি কোন ছার 1 মহারাণী অর্ণময়ী 'সি. আই. ই' উপাণি তব,

তাহাতে কি বাড়িয়াছে

তোমার এত গৌরব ? 'দয়াময়ী' তুমি তাই

গৃহে গৃহে তব নাম

লইতেছে নরনারী

দিবানিশি অবিরাম !

বৈ ব্রত সাধনে মাগো বঙ্গে অতুলন,

সফল জনম তব সার্থক জীবন।
ভারত ললনা মাঝে ধ্যা দ্যাম্যী—

শভিলা অক্ষয় যশঃ রাণী অর্থময়ী।

যে ঋণেতে ঋণী বন্ধ শোধিবার নয়,
দানেতে করিলা আজ সবে পরাজয়।
আবাল বনিতা রুদ্ধ ঘূষিবে স্থযান,
তোমার (ও) উৎসব হবে বরষ বরষ।
'স্বরণোৎসব'সবে মিলি দিব তার নাম,
পূজিয়ে তোমারে বন্ধ হবে পূর্ণকাম!
হরমে রমণীকুল দিবে উল্প্রনি,
তোমারে উদরে ধরে ধন্তা এ ধরণী।
ধন্তা ধন্তা স্বর্ণময়ী দয়ায় অতুল,
তোমার নামেতে আজ ধন্তা নারীকুল

ছঃখিনী রমণী ও বালিকাদিগের আশ্রম।

লণ্ডন মহানগরীতে ১৮৭৮ সালে **এই আশ্রম** প্রতিষ্ঠিত হয়। ইংল্ডের বে যে স্থানে ইহার বড় আবশুক, সেই **সেই স্থানে** ইহার শাথা আছে। ইহাতে এক্ষণে ৫০২টী যুবতী ও বালিকা আছে। ইহারা এথানে অবস্থিতি করিয়া কল কারথানায় শারীরিক পরিশ্রম করিয়া উদরান্নের উপায় করে। আশ্রম এক স্থাঠিত কার্য্যনির্কাহক সভা কর্ত্তক পরিচালিত হয়। সভার উদ্দেশ্য কেবল সেই সকল নিরাশ্রয়া যুবতী ও বালিকা-निगदक माहाया कता, याहाता माधूत्रुख व्यवस्य कृतिया मङ्शास्य य स सीविका **নির্নাহ** করিতে প্রস্তত। কিন্তু ইংাদের জন্ম নির্দোষ আমোদ উদ্ভাবন করা এবং **क्री**वटनत প্রলোভনের সময় বিষম সংপথে পরিচালনা করিয়া ধর্ম শিক্ষার मश्यातिनी **मक्ति बाता हेशातिशतक** मःचुछ

করা সভার আর একটা মহছদেখা। যাঁহার চরিত্র তত্ত্বাবধায়কের নিকট ভাল বলিয়া বোধ হইবে, সেই রমণী আশ্রমে স্থান পাইবার যোগ্য। পতিতা বা যাহার वयः क्या २० विषे वरमदात अधिक. তাহার ইহাতে কোনও মতে প্রবেশের অধিকার নাই। ভালরূপ বাসা খ্রচ ও থাইথরচের জন্ম প্রতি সপ্তাহে ৫।৭ টাকা লাগে। চা প্রভৃতি পান করিবার অমুমতি নাই। পরিধেয় বস্তাদি স্ব স্ব অর্থে ক্রেয় করিতে হয়। ভাল খাওয়া, ভাল পরা, ভাল স্থানে ও ভাল সংসর্গে वाम कता यांश शतिवित्रित अपूर्ट घटि না. তাহা আশ্রমে আনায়াস-লক; স্থতরাং ইহা অপেক্ষা বেশী স্থবিধা আর কোথায় হইবে? পীডিতাদিগের জন্ত প্রতি সপ্তাহে এক এক পেনি করিয়া আশ্রম-নিবাসিনীদিগের নিকট হইতে

मःश्री **इत्र । यादाता भी**कात्र भयाहि হইয়া থাকে, তাহাদিগকে এক পক্ষ-काल रेमनिक এक मिलिः कतिया, বিনা-দেওয়া হয়। এতন্তির তাহারা একুশ मिन ्रेषध ম্ব্যে २১ পাইয়া থাকে। সদাশয় চিকিৎসকগণ আছেন, তাঁহারা কিছু না লইয়া চিকিৎসা ও ঔষধের ব্যবস্থা করিয়া থাকেন। প্রতি সপ্তাহে আশ্রমের ভিন্ন ধর্মপুস্তক (বাইবেল) ভিন্ন স্থানে আলোচনা হটয়া অবলম্বন করিয়া থাকে। গীতবাদ্য এথানকার নির্দ্ধোষ আমোদের আর একটি অঙ্গ। অনেক ভদ্রবোক ও ভদ্মহিলা দারা এই স্থলর কার্য্য অমুষ্ঠিত হয়। যাহাদিপের দৈহিক ও মানসিক মঙ্গলের জন্ম বায় ও স্থান পরিবর্ত্তন আবশ্রক, তাহাদিগের জন্ম এক সপ্তাহ বা এক পক্ষকাল অবধি সমুদ্র উপকলে যাওয়া হয়। এরপ ব্যবস্থা মারা কত উপকার, তাহা বলা

যায় না। লোকে এইরূপ গতিবিধি এত ভালবাসে যে, পুনর্কার কোন দিন যাইবে বলিয়া উৎস্কুক থাকে। আশ্রমের এক এক স্থানে এক একটি কুদ্র কুদ্র পাঠাগারে ভাল ভাল পুস্তক থাকাতে পাঠেরও স্বাবহা হইয়া

উপরে যে আশ্রমের উল্লেখ করিলাম, অবিকল সেইরূপ না হউক,
তদমূরূপ একটি আশ্রমের অভাব এ
দেশে আছে এবং ক্রমে আরও অধিক
হইবার সন্তাবনা। এ দেশে কল কারখানা
হইয়াছে, অনেক জীলোক পেটের
জালায় তথায় গিয়া কাজ করিয়া থাকে।
কিন্তু নর-পশুর সম্মুখে পতিত হইয়া
ইহারা বিপদ্ধ হয়—জন্মের মত উৎসদ্ধ
যায়। তাহারা আশ্রমের আশ্রমের রক্ষা
পাইতে পারে। কিন্তু সে আশ্রম
করিবে কে, সেইরূপ মহামুভব লোক
কোণায় ?

ছোট ভাইটী আমার।

(४२०० - ४३ टेडव)

হোট ডাইটী আমার !

এ জগতে তুমি যাহা,
ভাষায় আসে না তাহা,
সে দেব-শক্তি নাই প্রাণে ক্বিহার ;
বিধাতার প্রেম ফুল,
মরতে মিলেনা তুল !
নীরবে নীরবে ভুধু বুকে রাথিবার !
হোট ভাইটী আমার !

চোট ভাইটা আমার!

এক ফোঁটা একটুক,
তোর অই কচি মুথ,
হেরিতে উপলে তবু প্রীতি পারাবার!
ও মুথ আনল থনি,
ভূতলে পরশ মণি,
ও'ই চুমি সোণা হয় হুদি স্বাকার!
হোট ভাইটা আমার!

ছোট ভাইটী আমার। বুঝি এ অমূল নিধি. মরতে দে'ছেন বিধি. জানা'তে জগত-জনে স্থ-সমাচার !--कि चाष्ट्र नमन वरन, পারিজাত-সমীরণে. কেমন অমৃত-গন্ধ গা'য় দেবতার! ছোট ভাইটী আমার! ছোট ভাইটা আমার! ভাই অই মুখ চেয়ে. হ্রথে যায় ধরা ছেয়ে, থাকেনা সে রোগ,শোক,পাপ,হাহাকার. মলয় পরশে যথা. হাদে সে ভকানো লতা. তোরে পেলে হাসে, প্রাণে বড় জালা যার: ছোট ভাইটা আমার ! ছোট ভাইটী আমার। তোর ও অমিয় ভাষে. স্থ আসে, সাধ আসে, তুই এক স্বেহ-ছায়া বুক জুড়া'বার ! পাঁচ বছরের ছেলে, এ শক্তি কোথা পেলে. এ ক্ষেহ-বাঁধন যে গো বিশ্ব বাঁধিবার ! ছোট ভাইটী আমার। ছোট ভাইটী আমার। दर्शत कुफ क्षिशानि, আমি শত হারি মানি, ও টুকুনি, অফ্রস্ত সেহের ভাগুার।

বড় সাধ হয় তাই, তোরি মত হ'য়ে ভাই. প্রাণ ভ'রে ভালবাসা ঢালি একবার। ছোট ভাইটী আমার। ছোট ভাইটী আমার। **जिन श**त जिन यात्र. সিত পক্ষ শশী প্রায়. নব জীবনের পথে হও আগুসার: চিরদিন বেঁচে থা'ক. মা' বাপ গৌরব রাখ. স্বরগ মাধুরী থা'ক হিয়ায় তোমার: नीद्याग, निष्णाभ, इ.७. সত্য স্থথ ভোগে রও, বদেশের প্রাণে দিও সম্ভোষ অপার। চিরদিন-অবিরত, জগদীশে হও রত. অনস্ত মঙ্গল হো'ক জীবনে তোমার! আমি তাই ভিক্ষা চাই পা'র বিধাতার। ছোট ভাইটী আমার। আজি দেবতার বরে, পা' দিয়েছ ছ' বছরে, পুলকে গেঁথেছি তাই, এ সাধের হার; जुरे कि जामत करत, मां जावि गनाय प'द्र. জনম দিনের তোর, স্নেহ-উপহার---ছোট ভাইটা আমার! —লেখিকা "দিদি"--

বাঙ্গালা প্রবচন।

ম

১। মগের মূলুক।

২। মঘা, এড়াবিক ঘা?

৩। মড়ার উপর খাঁড়ার ঘা।

৪। মণিহারা ফণী।

৫। মংস্থ চিনে গভীর গমা,
 পক্ষী চিনে ডাল,
 মা জানে পুতের দরদ,
 ছাতি বিদরে যার।

৬। মৎস্থানি সর্বভিক্ষ্যাণি।

৭। মদ খায়, না মদে খায়।

৮। মদ্যমপেয়মদেয়মগ্রাহাং।

৯। মধূনাই মধুর পাত্র আছে।

১•। মধু পান করিতে পারি,মাছির কাপড সইতে নারি।

১১। মধুমাথা কথা বা মধুমাথা পাথর।

১২। মধুরেণ সমাপয়েং।

১৩। মধ্বভাবে গুড়ং দদ্যাৎ।

১৪। মনটী সংখর বটে,
হাতে কিন্তু পয়সা নাই।
জোনাকী পোকার আলোনেথে,
গ্রাস বাতীর সথ মিটাই।

১৫। মন চায় বাদ্দা হ'তে, থোদা না দেয় মেঙ্গে থেতে।

১৬। মনময় রাজ্য।

১৭। মন ভাল নর তীর্থ কর, র্**খা** কাজে ঘ্রে মর।

১৭। মনঃপৃতং সমাচরেং।

১৯। মনের অগোচর পাপ নাই।

২০। মনের কথা খুলে বলে সকলেই পাগল।

২১। মনের মানুষ।

২২। ময়না টিয়া উড়য়ে দিয়ে খাঁচায় পোষেন কাক।

২৩। ময়দা পেষা কর্বো।

২৪। মরকট বৈরাগ্য।

২৫। মরণকালে হরিনাম বা রাম নাম।

২৬। মরণকালে জল সেক।

২৭। মরণ নাই কোনও কালে, মোচ রেথেচে তোবড়া গালে।

২৮। মরণ নাই মর্বি কিলে, আমার কাছে ঔষধ নিদে।

২৯। মরণ বাড় বাড়া।

৩ । মর্তে বদ্লে পীরের দিকে পা।

৩১। মরদ্কো বাত, হাতিকো দাঁত।

৩১॥। মর্বে মেয়ে উড়্বে ছাই, তবে মেয়ের গুণ গাই।

৩২। মরার উপর খাঁড়ার ঘা।

৩২॥। মরার বাড়া গাল নাই।

৩৩। মরা বাঘকে কিল্যে মারা।

৩৪। মরা হাতী লাথ টাকা।___

৩৪॥। মরা কামড় দেওয়া।

৩৫। মরা বিড়ালের দাঁত থামটী।

৩৬। মরেও মরে না রাম এ কেমন শক্ত।

09। म'लে রোগ থাক্বে না।

৩৮। মশা মার্তে গালে চড়। ৩৯। মশা মার্তে কামান পাতা। ৪০। মশালের আগে চেরাকের আলো।

৪১। মহতের আঁস্তাকুড়ও ভাল।

৪২। মহিষের শিং বেঁকা, যোঝবার সময় একা। ৪৩। মহীরাবণের বেটা অহীরাবণ। ৪৪। মহেন্দ্র ক্ষণ।

বঙ্গগৃহ।

(দ্বিতীয় আভাদ।)

(৩১২ পৃষ্ঠা—পূর্ব্বপ্রকাশিতের পর)

পিতা কভাকে মেহচুম্বন দিয়া সক-লের কুশল জিজ্ঞাসা করিলেন। প্রিয়-বালা সকলের সংবাদ দিতেছে, এমন সময়ে ভগ্নীর আনন্দ কোলাহলে উৎফুল হইয়া খোকাবার পিতার মুখের দিকে তাকাইয়াছে। তাহার বিভক্ত অধরওঠে স্থমিষ্ট মৃত্ন হাসির ছোট ছোট ঢেউ উঠিতেছে আর মুখামুতে গায়ের ফ্রকটি ভিজিয়া যাইতেছে। অবিনাশ বাবু থোকা বাবুর নিকট সম্পূর্ণ অপরিচিত নাহইলেও সর্বদা একত্রে না থাকার জন্ম বিশেষ ঘনিষ্টতা জন্মে নাই—এখনও থোকা পর পর ভাব আছে. এজক্ত বাব স্বতঃপ্রব্ত হইয়া তাঁহার কোলে যাইবার জন্ম ব্যস্ত হইল না। কিন্তু তার বাহিকার আনন্দ ও উৎসাহ দেখিয়া তাহার <u>জুত্</u>সড় ভাব তথনই চলিয়া গেল, অবিনাশ বাবু হাতের ব্যাগটি রাণিয়া ঠৌর নবকুমারকে কোলে লইলেন। শিতকে কোড়ে লইয়া সঙ্গেহে বার বার ভার মুখচুম্বন করিয়া তাঁর প্রাণ আনন্দ-পূৰ্ব ইয়া গেল। প্ৰাণে কি যেন এক

অব্যক্ত মধুর তৃপ্তি সম্ভোগ করিতে লাগিলেন। থোকাকে কোলে করিয়া সদর বাটী পার হইয়া অনুরে উপস্থিত হইলেন। প্রিয়বালা বাবার ব্যাগটি লইয়া বহু কন্তে পিতার পশ্চাৎ পশ্চাৎ অগ্রদর হইতে লাগিল। একটু থানি গিয়া বলিল "বাবা ব্যাগটা এত ভারি কেন ? বাবা আমাদের জন্ম কল্কেতা থেকে কি এনেছ ?" বাবা বলিলেন. মা, আমি গরিব লোক কোথায় কি পাব বল ত ? তোমাদের থাবার জন্ত তটা ফুলকপি, একটা বাঁধাকপি আর গোটাকতক লেবু আনিয়াছি। বাবা, কম্লা লেবু এনেছ? বাবা বলিলেন হাঁ মা, কটা কম্লা লেবু এনেছি। লেবুর কথা ভূনিয়া প্রিয়বালা উৎসাহপূর্ণ হইয়া ব্যাগটি কাঁকে করিয়া লইল, তার গায়ের জোর যেন দিগুণ হঠল। সে ব্যাগটি লইয়া পিতার পশ্চাৎ প*চাৎ চলিল, বাড়ীর ভিতর গিয়া হাঁপাইতে হাঁপাইতে ব্যাগ রাথিয়া মাকে কম্লা লেবুর সংবাদ দিতে ছুটিল। অবি-

নাশ বাবুর গৃহে গৃহিণী, একটি কন্থা, একটি পুত্র, এক বিধবা ভগ্নী ও তাঁর এক পুত্র, এক কন্থা। ভগ্নী পুত্রকন্থা দহ নিকটস্থ পুদরিণীতে কাপড় কাচিতে গিয়াছেন। অবিনাশ বাবু বাড়ী আসিয়া সর্বাথো ভগ্নীকে ডাকিলেন। গৃহিণী অবস্থাঠন মধ্যহইতে ঈষৎ দৃষ্টিপাত করিয়া একটু মধুর হাসি হাসিয়া বলিলেন, গাকুরঝি ঘাটে গিয়েছেন, এখনই আস্বেন। তুমি কেমন আছ ?

श्रा। (मृद्य (क्रम्न (वांध ह्य ?

ন্ত্রী। দেখে ত সব সময়ে বোঝা যায়না।

স্থা। সব সময় বোঝা যায় না সত্য, এখনও কি তাই ?

স্ত্রী। কথার ধরণে বোধ হয় ভাল আছে, তবে ভিতরে কি তা কি করে ব'লবো ?

স্বা। থাক্লেও তা তোমার হাসি-ভরা মুথ দেখে, তোমার ছেলে মেয়ের মধুমাথা কথা শুনে ও তাদের মুথ চুম্বন করে সেরে গেছে।

ন্ত্ৰী। বা ওযুদ ত মৰু নয়, বিনা প্ৰসায় বিনাকটে এমন ওযুদ পেলে লোক বেঁচে যায়।

শ্বা। বিনা প্রসায় বিনা কটে কি
ক'রে হল ? আট আনা রেল ভাড়া
দিরা এতটা পথ হাঁটিয়া এত বড় একটা
মোট ব'রে এনেও যদি বিনা প্রসায়
বিনা কটে হর, তা হলে কট কাকে বলে
ভাভ জানি না।

ন্ত্রী। তোমার কথায় কে मरङ কবে পেরেছে? আমি কোন ছার! তোমার পারে নমস্বার এই বলিয়া গলায় কাপড় দিয়া হাসিতে হাসিতে যেমন প্রণাম করিয়া এক প্রণাম। করা আর অমনি ননদিনী থিডকীর দর্জা দিয়া বাডীর মধ্যে প্রবেশ করিলেন। স্থলোচনা গুহের প্রাঙ্গণে আসিয়া বউকে मामात পाएय প্রণাম করিতে দেখিয়া বলিলেন এ কি এ--এযে অতি ভক্তি চোরের লক্ষণ—এ কেন ? এই মাত্র তোমার আসিতে বিলম্ব দেখিয়া চোপ্ চল চল করছিল, মুথ অন্ধকার হয়ে এদেছিল, যেন অমাবস্থার সন্ধ্যার মত মনে হচ্ছিল। তা মাথা থোঁড়া খুঁড়ি কেন ? দাদা, তুমি কি এদেই বোম্বের সঙ্গে ঝগড়া বাঁধিয়েছ নাকি ?

দাদা। নানা, আমার কপি কম্লা লেবু আনার কেরামৎ দেথে তোমার বউ ভক্তি করে আমায় প্রণাম কচ্ছিল। লজা ও ভয় সমানভাবে গৃহিনীর মন প্রাণ অধিকার করিয়াছিল, কিন্তু কর্তার কৈফিয়তের কায়দা দেখিয়া ভয়ম্বরে হাসিতে হাসিতে পাকশালায় প্রবেশ করিলেন। সেহাসিতে অবিনাশ বাব্র মন প্রাণ জুড়াইয়া গেল। সমস্ত পথশ্রম ভূলিয়া গেলেন। হাত মুথ ধুইবার প্রেই ভগিনী ও ভাগিনেয়ীকে ও নিজের কস্থাকে কম্লা লেবু বাহির করিয়া দিতে বসিলেন। স্থলোচনি প্রের

লইয়া ষাইতে উদ্যত হইয়াছেন দেখিয়া দাদা বলিলেন দেখ ওরা ত রোজ রোজ আমাকে পার না। ওদের মুখ দেখেই আমার সমস্ত ক্লান্তি দ্র হইয়াছে, আগে ওদের লেবু দিই—তার পর হাত মুখ ধোবো, তুমি আমার এ স্থখভোগে বাধা দিও না। অগত্যা ভগ্নী বিরত হইলেন।

অবিনাশ বাবু লেবু বাহির করিতে করিতে পাশের বাড়ীর স্থরেশ ও দর-ডাকিতে বলিলেন—কেহই ডাকিতে অগ্রসর হইতেছে না দেথিয়া তিনি প্রিয়বালাকে ডাকিতে বলিলেন। প্রিয়বালার সঙ্গে লীলা ও নলিনও (ভগিনী ও ভাগিনেয়) ছটিল। তিন करन मोि व पिश्रा थोका वात्नत যাইবার কাঁদিতে কোলে জগ্য লাগিল, তথন থোকার পিসি আসিয়া থোকাকে কোলে লইলেন। কিন্তু ইত্য-वमात स्मात समात लाव वाहित हरे-য়াছে দেখিয়া থোকা তার পিসিমার কোল হইতে নামিয়া হামা দিয়া তার বাবার কাছে আসিয়া বসিল। অনেক চেষ্টা করিয়া একটা লেবু হস্তগত করিতে পারিতেছে না দেখিয়া অবিনাশ বাবু তার হাতে একটা লেবু দিলেন। সে লেবুটা ছহাতে ধরিয়া চাটতে ও মুখা-মৃতে সিক্ত করিতে লাগিল-তাহার নিকট জাহাই মিষ্ট। অনেক প্রবীণ লৈকৈও থোকার মত অনেক সময়ে ুধোলা চাটিয়া সম্ভুষ্ট হয়। দেখিতে

দেখিতে প্রিয়বালা, লীলা ও নলিন, স্থরেশ ও সরলাকে ডাকিয়া আনিল। তথন অবিনাশ বাবু প্রিয়বালাকে একটা लियु निया आत निनित्क এकটा लियु দিয়া ছজনকে বলিলেন তোমরা আগে স্থরেশ ও সরলাকে লেবু দেও, তার পর আর নলিন স্থরেশকে লেবু দিল, তথন অবিনাশ বাবু প্রিয়বালাকে আর একটা লেব দিয়া বলিলেন প্রিয় তোমার দিদিকে এই লেবুটা দাও। লীলা লেবুটি লইল। তথন প্রিয়বালার জন্ম একটি রাথিয়া সমস্ত লেবু আর কপি প্রিয়-বালার দারা তার পিসিমার নিকট পাঠাইয়া দিলেন। প্রিয়বালা লেব না পাইয়া একটু বিষয় হইতেছিল, তথন অবিনাশ বাব বলিলেন যাও ওঞ্চলি তোমার পিসিমাকে দিয়ে এস. তোমার লেবু এই রহিল।

প্রিয়বালা আদিয়া যথন লেব্টি
লইল, তথন অবিনাশ বাবু তাহাকে এবং
লীলা ও নলিন্কে বুঝাইয়া দিলেন যে
কোন ভাল দ্রব্য আদিলে আগে অভ্য সকলকে দিয়া তবে নিজে থেতে হয়,
বুঝলে ত ? সকলেই একবারে মাথা
নাড়িয়া সায় দিয়া মহা আনন্দে লেবু
থাইতে লাগিল।

অবিনাশ বাবু হাত মুথ ধুইয়া বিশ্রাম করিতে লাগিলেন। ক্রমে বাহির বাটীতে চুই একজন বন্ধু আসিরা জুটিতে লাগিলেন, অবিনাশ বাবু একটু জল থাইরা বাহিরে গেলেন।

যুনানী দ্বীপ ঝান্তি।

ভূমধ্য দাগরের পূর্বোত্তর ভাগই যুনানী সাগর। ইহা গ্রীশ দেশের দক্ষিণ পশ্চিমে অবস্থিত। ইহার মধ্যে অনেকগুলি কুদ্র কুদ্র দীপ আছে. তন্মধ্যে সাতটী দ্বীপই অপেকাকত किकि९ वृह्९। এগুলিকে मुश्र यूनानी দীপপুঞ্জ বলে। ঝান্তি ইহারই অন্ততম षी**ण। ই**হার পরিমাণ দীর্ঘে ২৫ মাইল এবং প্রস্থে প্রায় ১২ মাইল: কালি প্রায় ২৭৭ বর্গ মাইল এবং জনসংখ্যা ৪৮০০০ সহস্র। এই দ্বীপের পূর্বভাগে বিলক্ষণ শশুশালী উর্বার ক্ষেত্র সকল বিস্তৃত আছে, তাহার পশ্চিমেই চুর্ণ প্রস্তরের বা ঘুটিমের পাহাড়। ইহার উচ্চতা ১০০০ হইতে >२०० शाम। দীপের প্রধান নগর ঝান্তিনগর। এখানকার জনসংখ্যা প্ৰায় 20000 সহস্র। গত ৩১এ জাতুয়ারী প্রাতঃ-কাল হইতে ২০এ ফেব্ৰুয়ারী (যে পর্য্যন্ত সমাচার পাওয়া পিয়াছে) পর্যান্ত উপরি উপরি বছবার ভূকম্প হইয়া দ্বীপ ও নগরটা উৎসন্নপ্রায় হইয়াছে। প্রায় ৬০০,০০০ পাউত্ত বা এক কোটা টাকা মৃল্যের দ্রব্যের ক্ষতি হইয়াছে। অনেকের গৃহশৃক্ত ও ভূসম্পত্তি ভূগর্ভদাৎ रुरेबाट्ड। ইহার নিক্টবর্ত্তী সিফ্-লোনিয়া দ্বীপেও ভূকম্প হইয়াছে। ঝাস্তিদীপে এরূপ ভূমিকম্প প্রায়ই হইয়া থাকে, কথন কথন অত্যন্ত বিপদজনকও

হয়। ইতিপূর্ব্বে ১৮৪০ খৃষ্টাব্দের ৩০এ অক্টোবর দিবদে এক ভয়ানক ভূকপা হইয়াও বিস্তর ক্ষতি হইয়াছিল। ঘটনায় অনেকগুলি গ্রাম উৎসন্ন হয়, প্রায় ৫০ লক্ষ টাকার অধিক মূল্যের দ্রব্য অপচয় হয়। ভয়ানক ভূকম্পের পরও উপরি উপরি অনেকবার ভূমিকম্প হইয়াছিল। অক্টোবর হইতে নবেম্বর পর্যান্তও দিনে অনুান ৯৫ বার ভূমিকম্প হইয়াছিল। একজন গ্রন্থকার এই সময়ে লিপিবদ্ধ করেন যে যুনানী দীপপুঞ্জ আশ্চর্য্য উপাদানে গঠিত, এখানে কেবল এক একটী দ্বীপেই ভূমিকম্প আবদ্ধ থাকে। ঝাস্তিতে ভূমি কম্প হইলে সিফেলোনাতে रम ना। ইহা বাস্তবিকই আশ্রেম কণা বটে. কিন্তু এবারে ২রা ফেব্রুমারী ভূমিকম্প ঝান্তিও সিফেলোনিয়া উভয় দ্বীপেই হইয়াছে। এই উভয় দ্বীপে ১৮১৮ গৃষ্টাব্দে হুই বংদর তিন মাদ ধরিয়া অনেকবার ভূমিকম্প হইয়াছিল. কিন্তু উভয় দীপে যুগপৎ ভূমিকম্প এক-বারওহয় নাই অর্থাৎ যথন ঝাস্তিতে ভূমি-কম্প হইত সিফেলোনিয়াতে হুইত না এবং সিফেলোনিয়াতে হইলে ঝাস্তিতে হইত না। কথন কথন একদীপে, ভূমিকম্প হইলে তাহার অনেকদিন পরে অপর দীপে হইত, কিন্তু কথনই ২০ বন্টার মধ্যে উভর দ্বীপে ভূমিকম্প

হয় আহি। অথচ উভয় দীপের দ্রত্ব এত অল যে একদীপ হইতে গোলা ছুড়িলে অপর দীপে পতিত হয়।

্ >লা ফেব্রুয়ারী দিবদেও ঝাস্তিতে ভূমিকম্প হয়। আশ্চর্য্য—এই দিন ভিনিদের উপদাগরে ভাঁটা হইয়া এত জল কমিয়া যায় যে অনেক নদী ও থাল বিল হঠাৎ শুকাইয়া গিয়াছিল।
কতকগুলি ব্যবসায়ী পোত বিলক্ষণ
ক্ষতিগ্রস্ত হয়, অনেকগুলি ডাঙ্গায়
লাগিয়া ভগ্ন হয়। এদিনে সিফেলোনিয়া দ্বীপেও বিলক্ষণ ভূমিকম্প হইয়াছিল।

অসতৰ্ক মাতা।

নরেশ বাব পলীগ্রামের একজন ক্ষুত্র জমীদার। .তাঁহার 🖔 চারি বৎসরের একটা কল্পা ও হেই বৎসরের একটা পুত্র, গৃহিণী, বিধবা ভগিনী, একজন हिमूरानी ठाकत ও এक छै বুদ্ধ চাকরাণী এই মাত্র পরিবার। তড়িয় গোমন্তা রপ্তান প্রভৃতি আছে, কিন্তু তাহারা পৃথক্ আহার করে। কোন সময় নরেশ বাবুর স্ত্রীর ও অন্তান্ত গ্রাম-বাসী স্ত্রীলোকদিগের পশ্চিম পাড়ায় নিমন্ত্রণ হইয়াছিল। এই সময় নরেশ ৰাবুর কভাটী তিন দিবস সামাভ জ্বের পীড়িত বলিয়া তাহার পীড়ার প্রতি মাতার মন আকৃষ্ট হয় নাই, আর নরেশ বাবুর স্ত্রীর সন্তানের প্রতি মাতৃ-স্থলভ স্থেহ থাকিলেও তাদৃশ যত্ন ও লালনপালন তিনি করিতেন না, বোধ • হয় তাহা তিনি ভালরপ জানিতেন না বা জানিতে চেষ্টা করিতেন না। যাহা হউক গৃহিণী স্থানান্তে বেশ বিস্তাস ক্রিতে ব্রিয়াছেন, নরেশ বাবুর ভগিনী

পূজা আহ্লিক সমাপন করিয়া রস্থই ঘরে ঢ্কিয়াছেন, বাবু ও চাকরটী বহির্ন্বাটীতে এবং কন্সাটী একাই উপরে শয়নাগারে আছে। থোকা নীচের ঘরের বারাঙায়—যেথানে ভাহার মাতা বেশ বিভাগ করিতেছিলেন, তাহারই অন্তিদুরে? বারেণ্ডার মেজের একটী ভগ্ন স্থানে জল ঢালিয়া স্থরকী মর্দন করিতেছিল, তাহাতে তাগাড়ের চুণ স্থরকীর স্থায় স্থরকী উঠিতেছিল, আর থোকাবাবুমহা আনন্দে তদ্বারা নিজের মস্তক, মুখ ও সর্কাব্যুর:দাগ্রাজি বা মেরামত করিতেছিল। কিন্তু হুর্ভাগ্য বশতঃ থোকার সে কার্য্যটুকু অধিককণ থাকিল না, কেননা ঐ ভগ্ন স্থানে জল ঢালায় নিমে ডেয়ো পীপিলীকার আবাস স্থান আর্দ্র হওয়ায় তাহারা বহির্গত হুইতে লাগিল এবং তাহাদের একটা থোকার আঙ্গুলের ফাঁকে দৃঢ়রূপে কাম-ড়াইয়া ধরিল। থোকা কচি হাতে অতিশয় বেদনা পাইয়া চিৎকার স্বরিয়া

कांनिए कांनिए गाजात निक्र त्रोडा-ইয়া আসিয়া মাতাকে জড়াইয়া ধরিল, মাতা বাগ্রভাবে থোকাকে ক্রোডে করিতে গিয়া দেখেন যে তাঁহার তেমন সাধের সেমিজ, বডি ৩ কেপের সাড়ী नमखरे स्वितकी माथा हरेया शियाहि। তথন আর তাঁহার ধৈর্ঘ্য থাকিল না. তিনি থোকাকে ক্রোড় হইতে ছুড়িয়া ফেলিয়া প্রহার করিতে লাগিলেন। হতভাগ্য থোকা ডেয়োর দংশনে ও প্রহার যন্ত্রণায় যতই মাতার ক্রোড় পাইবার জ্ঞু মাতাকে জড়াইয়া ধরে, মাতা ততই তাহাকে ছুড়িয়া ফেলিয়া "ঝি" "ঝি" ও ঠাকুর উপদর্গ পূর্ব্বক ঝিকে ডাকিতে লাগিলেন। ঝি কিন্তু আসিল না. আসিলেন বস্তুই ঘর থেকে উপসর্গাবিত ঝি। তিনি আদিয়াই থোকাকে বুকে লইয়া শাস্ত করিবার চেষ্টা করিতে লাগিলেন। গৃহিণী, থোকা হঠাৎ আসিয়া তাঁহাকে ধরিয়া কাঁদায় তাঁহার সাধের কাপডগুলি কলঙ্কিত হইয়াছে বলিয়া হ: থ করিতে লাগিলেন। তথন ঠাকুরঝি সাহসে বক বাঁধিয়া বলিয়া ফেলিলেন যে "থোকা অপেক্ষা কি কাপডগুলি ष्यिक मृनावान ?" (थाकात माठा বলিলেন "তোমার ঐরূপ অযথা আদ-त्वेर उ উशास्त्र हेरुकान भवकान যাইতেছে।" কিন্তু আমরা জানি যে মাতার অষত্নে, কর্কশ ব্যবহারে ও অস-তর্কভার নরেশ বাবুর পুত্রটী ধূলা কাদা মাধিতে ও অপরিষার থাকিতে অভ্যস্ত

হইয়াছে এবং কস্তাটিও অবাধ্য ও ছরত্ত হইয়াছে। নির্বোধ মাতা মনে করিতেন কেবল প্রহার করিলে ও शानि फिटन উशाम्त्र नकन শুধরাইবে। যাহা হউক থোকার ক্রন্দ্রের মাতা ক্রমেই ক মিয়া আসিতে লাগিল, তথন থোকা ভাহার পিদীমার গলা জড়াইয়া ফুলিয়া ফুলিয়া কাঁদিতে লাগিল। এই সময় তাহার পিদীমা দেখিলেন খোকার একটা হস্ত রক্তমাথা। তথন তিনি "একি।" বলিয়া ভাতৃজায়ার মুথ পানে চাহিলে তিনি হঠাৎ চমকাইয়া বলিলেন যে "এ ভগ্নস্থানে থোকা খেলা করিতেছি**ল,** কিসে কামডাইয়া থাকিবে।" উভয়ের মনে শন্ধা হইল যে থোকাকে সাপে কামড়াইয়াছে। এই আশকার কথা নরেশ বাবুর কর্ণে গেলে তিনি कार्ण शंज मिया ना स्मिथिया हिस्मव পিছে পিছে দৌড়িলেন, অর্থাৎ সর্পবৈদ্য ডাকিতে আদেশ দিয়া নিজে শ্যা আশ্রম করিলেন। বৈদ্য মহাশ্র যথন আসিলেন, তথন ধোকা রোদন-পরায়ণা মাতার ক্রোড়ে ক্লাস্ত দেহে নিদ্রা যাইতেছিল। বৈদ্য মহাশয় দেখিয়া বলিলেন "আহা! ছেলেটা ্ৰ-অজ্ঞান হইয়া গিয়াছে" বলিয়া তিনি মন্ত্রপাঠ করিতে লাগিলেন, অনন্তর থোকার° রক্তাক হস্তটিতে একটা ধূলার বেড় पिया विवादमन 'वावादत ! अटव त्शाश्रुता।' पर्यक्म अनी निकीक निस्न ती साम

স্ত্রী পুরুষ একত্র সমবেত হইয়া আরু নরেশ ষাবুর বাটীতে উপস্থিত। ওদিকে নিমন্ত্রণের বাড়ীতে অন্ধ ব্যঞ্জন পচিতেছে. কেহ থাইতে যাইতেছে না। বাসিগণ অবশ্রই স্বীকার করিবেন যে তাঁহারা কোন বিপদের সময় এত লোকের সহাত্বভৃতি প্রাপ্ত হইতে পারেন না। যাহা হউক বৈদ্যবর মন্ত্র পড়িতে পড়িতে ঘর্মাক্ত হইয়া উঠিলেন, তবুও গোখুরার বিষ আর নামে না। প্রায় বেলা শেষ হইয়া আসিয়াছে। থোকার কুধা পাইয়াছে— মুমও শেষ হইয়াছে, স্থতরাং দে মাতার ক্রোড়ে উঠিয়া বসিয়া থাইবার জন্ম কাঁদিতে লাগিল। তথন বৈদ্যকে আর পায় কে। देवना विनात "वाव दकाशाय १ प्राथन এসে তাঁহার মৃত পুল জীবিত হইল।" বাবু এই সংবাদে উঠিয়া আসিয়া বৈদ্যের হস্তে ৩০১ টাকা ও এক যোড়া শাল দিলেন। বৈদ্যুক্ত ছুই তিন দিনের সর্পদপ্ত মৃতকে বাঁচাইয়াছেন এবং মনসা দেবী স্বয়ং তাঁহার সহিত সাক্ষাৎ ও আলাপ করেন, এই সমস্ত গল্প করিতে করিতে বলিলেন "মা ৷ আপনার পুত্রের ক্ষুধা বোধ হইয়াছে আমি বেশ বুঝিতে পারিতোছ, অতএব উহার কপালে ৫১ টাকা চোঁয়াইয়া উহাকে থাইতে দাও।" গৃহিণী খোকাকে অন্তের ক্রোড়ে দিয়া ভাহাই করিলে বৈদ্য বলিলেন "টাকা পাঁচটী আমার হাতে দাও, আমি ভোগ **पिरमरे मनजारएवी अदिकृश ररेरवन।**"

গৃহিণী তাহাই করিলেন, অনন্তর সকলে আহারাদি করিলেন।

এই গোলমালে নরেশ বাবুর কন্তা-টীর কেছ কোন থোঁজ লয় নাই. সে উপরে শয়ন ঘরেই একা ছিল। সেই শয়নাগারের থাটের নীচে একটা পাতে স্থপক মর্ত্রমান কলা কতকগুলি ছিল. বালিকা উহা দেখিতে পাইয়া ইচ্ছামত যাহা পারিয়াছে তাহা থাইয়াছে, কিন্তু বেলা ৯টার সময় তাহার জব খুব বুদ্ধি হওয়ায় সে চুপ করিয়া শুইয়াছিল এবং সেজন্ম মাতা ও পিদীমাকে আর ডাকা-ভাকি করে নাই, নীচেও আইসে নাই কিম্বা অন্ত দিনের মত ভাত থাইবার জন্ম আবদারও করে নাই স্থতরাং নির্কোধ মাতা নিমন্ত্রণে ঘাইবার জন্ম যথন বেশবিজাসের উপযোগী অলক্ষার বস্তাদি বাহির করিয়া নীচে আইসেন তথনও কলাকে দেখিয়া আইসেন নাই। অনুস্তুর সন্ধ্যার পুর্বেষ যথন থাওয়া দাওয়া ক্রিয়া শ্যুনাগারে গেলেন. তাঁহার কন্তার জরের কথা মারণ হইল এবং সে সমন্ত দিন কিছুই আহার করে নাই মনে করিয়া মাতা মিছুরী ও জল লইয়া ক্যাকে ডাকাডাকি করিতে লাগিলেন, কিন্তু তথন উহা খায় কে? বালিকা বিকারপ্রাপ্ত হইয়া অজ্ঞান অবস্থায় রহিয়াছে; তাহার ললাটে ও হস্ত পদে ঘর্ম দেখা দিয়াছে। তথন চিকিৎসক ডাকা হইল, চিকিৎসক वाजित्नन, श्रेयथ मित्नन, ठोका नहेत्नन,

কিন্তু ঔষধ রোগীর উদরস্থ হইল না।
রাত্রি ভোর হইতে না হইতে সে কুস্ম
কলিকা ঝরিয়া পড়িল। মাতার সে
বোর বিলাদিতা জন্মের মত ফ্রাইল,
পিতার বুকের একথানি অস্থি থদিয়া
পড়িল, স্থেবর সংসার হঃথময় হইল।

এইরূপ গৃহিণীর অসতর্কতা দোষে কত প্রতারকের উদর পূরণ হয়, কত সন্তান সময়ে চিকিৎসাভাবে কালকবলে পতিত হয়, কত সংসার হঃথময় হয়, তাহার সংখ্যা নাই। যে সকল শিশুস্তান ভবিষ্যৎ সংসার ক্ষেত্রের কর্মাচারী, যাহারা সংসার-কাননের প্রফুল কুস্থম, গৃহের ও নয়নের আনন্দ, হদয়ের আরাম, তাহাদের প্রতি অয়ল করিয়া বিলাদের দিকে কোন প্রস্থতির মনো-যোগ দেখিলে সে হঃথ রাথিবার স্থান

কোথায় ? সন্তান পালনের যে গুরুভার ঈশ্বর প্রস্থতির ক্ষমে চাপাইয়াছেন. তাহাতে ত্ৰুটি হইলে অবশ্ৰই প্ৰভাবায়-গ্ৰস্ত হইতে হয়। অনেক প্রস্থৃতি "আমি ছেলেমামুষ, আমার আবার সম্ভান পালনের ভার কি. উহা মাতা কিম্বা শাশুড়ীর কার্য্য, আমার কার্য্য প্রসব করা, তাহা করিয়াছি." ভাবিয়া নিশ্চিত্ত থাকেন। কিন্ত তাঁহাদের মনে রাথা উচিত যে, যথন ঈশ্বর তাঁছা-দিগকে জননী করিয়াছেন, তথন সন্তান পালন করার ভার তাঁহাদেরই উপর চাপাইয়াছেন, অতএব সন্তান পালন, ভার বহন ও শিক্ষা করিবার জন্ম মাতা কিমা খাঙ্ডীর সাহায্য লওয়া উচিত, কিন্ত উহাতে উদাসীন হওয়া কথনও উচিত নয়।

বরাহনগরের পারিতোষিক বিভরণ।

(গতবারের শেষ)

১ম ও ২য় শ্রেণীতে ১৮৯৪, ৯৫
শালের প্রবেশিকা পরীক্ষার পাঠ্য, অপরাপর শ্রেণীতে মধ্যবৃত্তি, উচ্চ ও নিম
প্রাথমিক পরীক্ষার পাঠ্য সকল পাঠিত
হইতেছে। সেনেটহলের ছাত্রবৃত্তি পরীক্ষায়ওটীছাত্রীগত বংসর উত্তীর্ণ হইয়াছে।
কয়েকটী বিধবা বালিকা বিদ্যালয়ের.
শিক্ষাত্রীর কার্য্য করিতেছেন। কেই
কেহবা রীতিমত শিক্ষালাভ করিয়া বাটীতে
গিয়া আত্মীয়গণের বালকবালিকদিগের

শিক্ষা ও সংসারের অন্তান্ত ভার গ্রহণ করিয়া কার্য্যতঃ শিক্ষার স্থান্ত দেখাইয়া দিতেছেন। একটা বালিকা এথান হইতে ক্যাম্বেল স্কুলে ডাক্তারী শিক্ষা করিতে গিয়াছিল, তথা হইতে 'পাশ' হইয়া মফস্বলে ডাক্তারী ব্যবসাঁ আরম্ভ করিয়াছেন। একটা বিধবা এথানে ২ বংসর নিয়মিত শিক্ষার পর ইউেন্ হাঁসপাতালে ধাত্রীবিদ্যা শিক্ষা করিতে-ছেন। পাঁচ বংসর পূর্বে একটাও

হিন্দ্বিধবা এথানে শিক্ষালাভ করিতে সন্মত ছিলেন না। এখানে হিন্দু বিধবা-গণ যে হিন্দুধর্ম রক্ষা করিয়া থাকিতে পারেন, একথা কেহ বিশ্বাস করে নাই। এত কাল পরে আশ্রমটী লোকের বিশাস, অনুমোদন ও সহামভূতি বিশাপ হইতেছে। জমীদার বাবু রাজকুমার মুখোপাধ্যায় মহাশয় অতিশয় নিষ্ঠাবান হিন্দু এবং বৃদ্ধি ও বয়সে স্থপরিণত, নীমটাদ বাবু বারেক্র সমাজের অধি-নেতা; ইহাঁরা এবং ভটু পল্লীনিবাসী প্রক্রংশীয় মহাশয়েরা যথন অমুমোদন ও পোষকতা করিতেছেন. রায় রাধিকা প্রদন্ন মুখোপাধ্যায় বাহা-ছর প্রেদীডেন্দী বিভাগের স্থল ইন্দ্পে-क्केन्न বোর্ডিং স্কুল ও বিধবাশ্রম পরিদর্শন। হইতে দেওয়া হইবে।

করিয়া যথন ইহার পক্ষ সমর্থন করিয়া-ছেন, তথন বোধ হয় এই হিতকারী আশ্রমটীর ভিত্তি স্থদৃঢ় হইয়াছে।

১৮৯১ माल २६ जि. ७ ১৮৯२ माल কুড়ীটা বিধবা;এথানে ছিলেন। আশা করি বর্তমান বর্ষে সংখ্যা আরও বৃদ্ধি হইবে। স্থলের বালিকা ও বোর্ডারের সংখ্যা ক্রমশঃ বৃদ্ধি হইতেছে। স্থলের স্থাশিকা দেখিয়া পরিদর্শকগণ বিশেষ সম্বোষ প্রাকাশ করিয়াছেন। नेश्र করুন যেন বর্ষে বর্ষে এই ফিমেল বোডিং ও বিধবাশ্রমের উন্নতি বিধান হয়।

এই আশ্রমে আরও কতকগুলি হিন্দবিধবা ছাত্রী লইতে প্রস্তত। তাহা-দিগের আহার ও পরিধেয় থরচ আশ্রম

১২৯৯ সালের বামাবোধিনীর বিষয়ারুসারে সূচীপত্র।

| ১। বামাবোধিনী ও স্ত্রী | শিক্ষা। |
|------------------------------------|----------|
| विषय | পৃষ্ঠা |
| न ववर्ष | ٥ |
| বঙ্গদেশে স্ত্ৰীশিক্ষা | ৬ |
| বামাবোধিনীর উনতিংশ জন্মে | াৎসব ১২৯ |
| ন্ত্ৰীশিক্ষা 💚 | २२७ |
| ৰ্ব্যাহনগরের পারিতোধিক | |
| ী বিভরণ | ৩৪৮, ৩৫৭ |
| সমস্তিপু র বালিকা বিদ্যালয় | oe> |

নারীচরিত ও স্ত্রীজাতির সৎকীৰ্ত্তি।

| বিষয় | পৃষ্ঠা |
|---------------------|----------|
| সতী | 9 |
| লোপামূজা | 6.0 |
| সাজাঁহা বেগম | e b |
| ्विवी वर्षेनात | ৬৬ |
| মার্কিন্ ভগিনী ডোরা | निर, १७४ |
| আৰ্য্যমহিলা—শৈব্যা | 202 |
| বালিকার মাতৃভক্তি | 202 |

| ৩০৯ সং] | সামানসাঞ্জি | নী পত্ৰিকা। | |
|-------------------------------|--|-----------------------------|------------|
| | ~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~ | 1 1441 | 460 |
| বিষয় | পৃষ্ঠ | विषय | পৃষ্ঠা |
| আদৰ্শ মাতা | ১৩৭ | হৃঃ থিনী রমণী ও বালিকাদিগের | |
| কুমারী জেসি একারম্যান | ১৫৩,১২৯ | আশ্রম | ৩৬৬ |
| বাতিঘরের বালিকা | 228 | | |
| नूमी नांतकम | > % | ৪। ইতিহাস ও দেশ জ | মণ। |
| গ্রেস ডার্লিং | ٥٠٠ | পদ্মিনীর প্রাদাদ (সচিত্র) | २७ |
| বীরাঙ্গনা-লীনা বা সিংহী | 900 | চিকাগো | ۵۵ |
| বীরাঙ্গনা বর্কর রমণী | ৩৬২ | আবিষার ও উদ্ভাবন | ৬১ |
| - | | বন্ধনারী ' | 206 |
| ৩। নীতি ও ধ | ার্থ । | প্রাচীন ভারতে মহাবিদ্যালয় | 228 |
| ৰান্ধালা প্ৰাৰচন ৪৯, ৮৭, ১ | ১ ২,১৪৪,১৭৬, | প্রিন্স অব ওয়েল্স | 282 |
| ९ ० ৮, २८२, २१৯,२ | | মার্থার মাতৃ দর্শন (সচিত্র) | 784 |
| ৰান্ধ বিবাহ | (0 | जूकक नांत्री | २১৯ |
| ক্ষা | 92 | আলায়া | २७• |
| ন্ত্রী ও পুরুষের অধিকার কি | সমান ? ৭৮ | উৎকলের ব্রাহ্মণ জাতি | २१७ |
| দোষ সংশোধন | ba, 550 | মহাভারত | \$28 |
| वृक्तरमदवत छेश्ररमभ | 525 | পানামার থাল ও রেলওয়ে | •8 |
| শিশু সস্থানের প্রতি মাতার | ক ৰ্ত্ত ব্য | ভেন্তা কুমারী সম্প্রদায় | ७२8 |
| 543 |), ১৮৬, ২২ ০ | অস্টেষ্টিক্রিয়া | ૭૭૨ |
| আ্রপরীকা | > ¢ ¢ | যুনানী দীপ ঝাস্তি | ৩৭৩ |
| নামযক্ত | 5 %2 | | |
| জীবনের উদ্দেশ্য | 8 % \$ | ৫। विख्वान। | |
| প্রবন্ধ পুরস্কার—ভ্রাতৃ দিতীয | वा २१०,२०७ | শারীরিক উৎকর্ষ সাধন | ડ હ |
| নিঃস্বার্থ স্বদেশ প্রেম | ২ 5২ | ক্তিম বৃষ্টি | २8 |
| উদাদীনের চিস্তা-সংসাহদে | নর | মুথমণ্ডল | 46 |
| পরিচয় | २८८,२७२ | म्ज़ात शृंकी लक्कन | * b> |
| রোগ শ্যা | २৫०,२१२ | ় লাঙ্গুলের উপযোগিতা | >>9 |
| নারীর অলক্ষিত প্রভাব | २०४ | উদ্ভিদ্ তত্ব—গটাপার্চা | ×. |
| ष्यभूक् भग्र | ७२৫ | মঙ্গলগ্ৰহ | 290 |
| निम्क | \$85 | মঙ্গতাহে ন্তন আবিছার | २७७ |
| অত্ত্ -চিকিৎসা | 984 | ब् ष्ठग | 9.2 |

and the state of the state of

| // | | | न काम | | | | |
|--|----------------|-----------------------------------|---------------|--|--|--|--|
| विषम् | शृष्टी | ३। शन् । | | | | | |
| পৃথিবীর খসনক্রিয়া | ৩২৩ | विषय | পৃষ্ঠা | | | | |
| বিজ্ঞান রহস্ত | ৩৩৭ | চিত্ৰ চতুৰ্দ্দশ | >0,82 | | | | |
| পৃথিবীর বয়ঃক্রম | ৩৫ ৪ | পদ্মিনীর প্রাসাদ | 90 | | | | |
| থগোল চিত্ৰ | ৩৫৬ | বর্ষা | ₽8 ∶ | | | | |
| নিজা | _ ৩৫৬ | কোন বালিকার জন্মদিনের উপহা | त ১১७ | | | | |
| ৬। আশ্চর্য্য | বিবরণ। | সাবিত্ৰী | 289 | | | | |
| ্বল্গা হরিণ (M) | 35 | আমুফল | 308 | | | | |
| ু পুণ্যা হার্ণ (^ ' পুলাণিতত্ত্ব (^ ' | >8¢ | ব্ৰত | \$98 | | | | |
| আশ্চর্যা বৃক্ষ | 304 | শিশুর জন্মদিনের উপহার | >99 | | | | |
| রাসায়নিক কৌতুক | 2:6 | লৰ্ড টেনিসন | २०२ | | | | |
| পিঠে গাছ (সচিত্র) | ২৩৯ | দাদাভাই নৌরাজী | २88 | | | | |
| আকাশ বুড়ীর স্তা | ₹৮8 | পারিবারিক সঙ্গীত | २89 | | | | |
| লাহিকোশ জাতীয় মাক | | ভল্লুক-পাৰিত কন্তা | ২৬৪ | | | | |
| হুহালাকো জাতীয় উট্ট | 5 | প্রতিমা বিদর্জন | ೨೨۰ | | | | |
| আর্টিজান ওয়েল | 2)6 | ভাই বোন | ৩৩৬ | | | | |
| | | মহারাণী স্বর্ণময়ী | ৩৬৪ | | | | |
| ৭। উপন্য | ाम । | ছোট ভাইটী আমার | ৩৬৭ | | | | |
| সতা ও শাস্তি | ь | | | | | | |
| গৃহলক্ষী | २०,88 | ১०। विविध । | | | | | |
| মহা মুহ্ৰ্ত | ५०४,५७७,५७४ | ছারপোকার পত্র | ૭૯ | | | | |
| क न्नू ९मव | २७८,२৮० | বিদ্যুদাগর স্থৃতিচিহ্ন স্থাপনার্থ | | | | | |
| বঙ্গগৃহ | ৩১০, ৩৭০ | দানপ্রাপ্তি | ১২৬ | | | | |
| অসতক মাতা | ৩৭৪ | প্রেত সম্বন্ধে আনি বেসাণ্টের মত | ٤٢٢ | | | | |
| ৮। গৃহশি | ₹₹ \$ | অডুত প্ৰতিজ্ঞা | ২৬৫ | | | | |
| ्रीकिका खेमध | 29 | বিবিধ প্রবন্ধ | | | | | |
| श्रुक्त किएमा | ৮७, २ऽ७ | `মেঘের গতি | २৯১ | | | | |
| | ७ -, २ ० - | সাবান ব্যবহার | २२२ | | | | |
| পারিবারিক সঙ্গীত চর্চ | • | হিম প্রধান প্রদেশ | ঐ | | | | |
| | | স্ত্রীলোকদিগের পরিচ্ছদ | २৯७ | | | | |

| বষয় | পৃষ্ঠা |
|-----------------------------|---------|
| গুরুগোবিন্দ সিংহ | २२१ |
| প্ৰহেলিকা বা হেয়ালী সংগ্ৰহ | ७५२,८७৮ |
| রাজকবি লর্ড টেনিসন | ૭૯৬ |
| হচী-নিৰ্মাণ | ৩৬০ |
| | |

১১। বামারচনা।

| বসস্ত আবাহন (প | २৯ | |
|---------------------|--------|---------------|
| হিন্দু রমণীর বিদ্যা | | |
| পরাধীনতা | | ২৯, ৬৩ |
| শিবপুজা | (পদ্য) | సం |
| বৈরাগিণী বালিকা | ঐ | ৯৪ |
| বালিকার প্রেম | ঐ | \$ \$8 |
| তিনটী ফুলের মাল | া ঐ | >२ ৫ |
| পুঁটুর হাদি | ঐ | 569 |
| মন সাবধান! | ক্র | 546 |
| আকুল রোদন | ঐ | ক্র |
| ভাতৃ দিতীয়া | ঐ | ১৮৯ |

| বিষয় | | পৃষ্ঠা |
|------------------------|------|---------|
| অভিনন্দন | S) | २२२ |
| সঙ্গীত চৰ্চ্চায় কি দে | াষ ? | २৫६,२৮१ |
| স্বর্গের ফুল | | ৩১৭ |
| পতিতোদ্ধারিণী | | 005 |
| বসস্ত স্বপ্ন | | , ৩৮২ |

১২। সাময়িক প্রদঙ্গ।

,,७७,७४,३१,১७०,১७১,১৯୭,२२४,२**४१,** २৮৯, ७२**১**, ७৫७

১৩। পুস্তকাদি সমালোচনা। ৯২. ১৫৬, ২২১, ২৫৪, ৩১৬, ৩৮২

১৪। নূতন সংবাদ।

,११७२,२८,४८८,३३८,४८८,८६,४५,१८ ४७,७३७,७८,७८५

১৫। (English) **ইংরাজী।** ৩১,৯৫,১২৭,১৫৯,১৯১,২২৩,৩১৯ ও ৩৮৩

নূতন সংবাদ।

- ১। ডাক্তার কাদমিনী গাঙ্গুলি নিরাপদে ইংলওে পৌছিয়াছেন, তিনি তথা হইতে আমেরিকায় যাইবেন।
- ২। চিকাগো বিশ্ব-প্রদর্শনী আগামী জুন হইতে রীতিমত থোলা হইবে এবং ডিসেম্বর মাসের শেষ পর্য্যস্ত থাকিবে।
- ০। বেথুন কলেজের প্রতিনিণি প্রধান শিক্ষয়িত্রী কুমারী কুমুদিনী থাস্ত-গির বি এ মহীশ্রের উচ্চ শ্রেণী রাজ-বালিকাবিদ্যালয়ের অধ্যাপিকা নিযুক্ত হইয়াছেন। তিনি যেরপ স্থাশিক্ষত, দেইরূপ কার্য্যদক্ষ, তাঁহার প্রতি
- বিদেশ হইতে এই সম্মান প্রদর্শিত হইণ দেখিয়া আমরা অতিশয় আনন্দিত হইয়াছি।
- ৪। কুমারী বার্জিনিয়া মেরী অতি
 প্রশংসিতরূপে (M. B.) ডাকারী
 পরীক্ষায় উত্তীর্ণ হইয়া ভাগলপুরে কার্য্য
 করিতেছিলেন। তিনি স্বাধীন চিকিৎসা
 করিবেন বলিয়া কলিকাতায় স্মাসিয়াছেন। তাঁহার আশা সফল হউক।
- ৫। কৃষ্ণানদীর উপর সেতৃ নির্শাণ সম্পন্ন হইরাছে।

পুস্তকাদি সমালোচনা।

১। কবিতা-সোপান—শ্রীমহেন্দ্র চন্দ্র ঘোষ প্রণীত, মূল্য /১০ পয়সা। শিশু শিক্ষার উপযোগী সরল কবিতা লিথিবার ক্ষমতা লেথকের বেশ আছে। পদ্য-মালার স্থায় এথানি বিদ্যালয়ের প্রথম পাঠ্য হইবার যোগ্য।

২। নীতি-কবিতা— শ্রীমহেক্স নাথ ঘোষ প্রণীত, মূল্য ১০ আনা। এথানি অপেকাক্বত উচ্চ শ্রেণীর জন্ম। ইহারও কবিতাগুলি সরল ও নীতি পূর্ণ। "বালিকার রামারণ শ্রবণ" পদ্যটী বামাবোধিনীতে প্রকাশিত হইয়াছিল।

৩। আঁথিজন—"ভগ্নতরী" লেখনী প্রস্তুত, মূল্য । ১০। ইহাতে প্রেমোচ্ছ্যান-পুরিত কতকগুলি কবিতা আছে। লেখকের কবিত্ব শক্তি আছে, ইনি উৎসাহ পাইবার যোগ্য।

৪। উপদেশ কথা, প্রথম থণ্ড—
তাহিরপুরের রাজা শশিশেথরেশ্বর রায়
মহাশরের রচিত। ইহাতে অনেকগুলি।
চিন্তাপূর্ণ সার কথা আছে। লেখা
হিঁয়ালীর মত ভাষায়। ইহা দারা অনেক
বিষয়ে শিক্ষা লাভ হইতে পারে।

৫। নিশীথের অশ্রধারা মূল্য এ^{:৪৩} = আনা। ইহাতে উক্ত রাজাবাছরের প্রণীত ক্তকগুলি স্থন্দর পারমার্থক কবিতা আছে।

৬। বিজপ ও বিকল্প শ্রীবিজয়চন্দ্র
মজুমদার বি এ প্রণীত, মূল্য । ৮০ আনা ।
গ্রন্থকার ইহার প্রবন্ধ গুলিতে আপনার
স্থরসিকতার বেশ পরিচয় দিয়াছেন।
ইহা পাঠ করিয়া খুব আমোদ হইবে,
কিন্তু চিত্ত মলিন হইবে না।

বামারচনা। বসন্ত স্বপ্ন।

ঘুম বোরে ছিন্থ অচেতন।

কিমানী-কম্পিত হিয়া,ঢাকা ছিল আবরণে
অফুটস্ত যুগল নয়ন।

চাহিনি সংসার পানে, ধারিনি কাহার ধার,
আঁথি ভরা ঘুম।

আমি ছিন্থ আমা লয়ে, দেখিনি ভবের ওই,

আনি ছেম্ব আনা গরে, দোবান ওবের ওব, আনন্দের ধুম !

শ্রাস্ত দেহ,—শ্লথপ্রাণ,অবনী-কম্পিত কোলে দিহিত্ব ঢালিয়া,

জানিতাম—গাঢ় তক্সা,ভাসিবেনা ব্ঝিআর হৈয়া জাগাইসা।

—দে হে মহা ভূল ! বিশ্বকেন্দ্রে বুমুই ককৈ, পুরি ফিরি অমুদিন

क्टब्रिक् आकून,—

তারি মহা আবর্ত্তনে, আমারোএ জড় হিয়া ঘুমস্ত জীবন,

অপসারি কুহেলিকা, দেখিল সহসা মরি ! বসস্ত স্বপন !.

ঘুচে গেল মহা তক্তা, শিথিলতা পরাণের, মেলিমু নয়ন!

চেয়ে দেখিবিশ্বমাঝে, আনন্দের ছড়াছাড়ি অপূর্ব ভূবন!

পরাণ ঢালিয়া দিলু প্রকৃতির শান্তি কোলে! তান লয় ধরি

গাহিমু বসস্ত গীতি; খেলিল পরাণে কত স্থুখের লহরী।

প্রিমরদাস্থলরী ঘোষ।

The Bamabodhini Patrika.

In a recent Government resolution on the Report on Public Instruction in Bengal for the year 1891-92 it is found that female schools increased in number from 2.270 to 2.743 and their pupils from 49,638 to 57,801. Of the children of school-going age, it is said that 26.2 per cent of the boys and 1.7 per cent of the girls are at school. The cause of female education demands more active support of the public.

Our readers may remember Sorabji Bengallee whose name we mentioned in connection with the Parsi Girls' School. It is with great regret that we have to announce the death of this benevolent gentleman on April 4th. It was he who, among other rethe first establish to forms, was a Woman's Hospital under the superintendence of an English lady physician. For some time he personally bore the expenses for keeping up the Institution. In Mr. Bengailee, the country has lost a sincere social reformer. this connection we have also to record the death of Mr. Nulkar, a prominent citizen of Poons. While staying in Calcutta as a member of the Imperial Legislative Council, he used to interest himself in all educational and social questions.

In connection with the extension of lectures among women for increasing their knowledge, there are more than thirty lady lecturers, all having university qualifications, working for the cause. Under their auspices the work has been carried on with great success and lately centres have been opened for holding lectures and examinations.

Village Homes, bearing the name of Princess May have been established for the training of children rescued from parents convicted of habitual crime. There are now 200 children educated and trained in this Institution in such a way that when grown up they may lead a happy and useful life.

The bridge over the river Krishna was opened the other day. In a few years we expect to travel through from Madras through the Circars straightway to Calcutta. The railway has been a great civilising factor. There will be a branch line of Railway to Jagannath.

It is with great pleasure that we announce the appointment of Miss Kumudini Khastagir, B.A., to a high and responsible post in the Maharajah of Mysore's High Girls' School. For her liberal education and amiable and cheerful disposition, Miss Khastagir is liked by all her pupils in the Bethune College. She carries the best wishes of her pupils and friends alike to her new place of work, where she may be as useful as she has been in Calcutta. It is again no less a gratification to find a gifted Bengali lady taking a high place in the educational work of the great Mysorean people.

The four Universities in Scotland are doing a good deal in furtherance of the higher education of woman in Arts and Science. The recent admissions in the Winter Session of the University shew an increasing number of ladies going in for the classes with good many scholarships and bursaries.

The Maharani and the Guicowar of Boroda have left England for India. The former was decorated by the Queen herself in Windsor Castle with the order of "Crown of India". Such visits to Europe do a god deal in the enlightenment of the Indian Princes and people. A Guzrati merchant of Bombay, after his return from trave!z 'a Europe founded some two months ago a free Library in his own city.

We cull the following interesting items of news from the Demorest's a Family Magazine:—

Of three thousand teachers employed in the public schools of .Chicago

over two thousand eight hundred are women. *

Lady Tennyson has always been a notable housekeeper. Early in his married life her husband said distinctly, that should literature fail, his wife would keep the family from poverty by her culinary skill, and he added "I am sure the Tennyson tea biscuit would have a success."

Miss Florence Nightingale is seventytwo years of age. Her health is very poor, but she still continues to write for the nursing journals.

Miss Constance Smith is the head of the female staff at the Post Office Savings Bank in London. Subject to the Controller, she has command of seven hundred women and girls.

Miss Katherine Sharp, of Chicago, was awarded the prize of \$100 for the best essay on "The Relation of University Extension to Local Libraries," at the recent Convocation of the University of the State of new york.

Miss Louisa Macdonald, M.A., Principal of the new University College for women in Australia, has been appointed by the Sydney University to be public examiner in Greek. She has also been asked to deliver a course of six lectures on Greek life and art.

Mile. Marguerite Gombert passed the examination for a doctor's degree at Brussels, with marked success. It is the first time that a woman has attained such distinction in Belgium, and she is the first woman on whom the faculty of Brussels have been called to betow the honor.

Miss Mary Day of Londan has been successful in her experiment of taking denf and dumb girls as pupils in type-writing. Miss Day is one of the long established woman-typewriters in England. As so much typewriting is transcribed from manuscript, the girl's affliction is no drawback.

Mrs Kumudini Mukh ji of the Campbell Medical School stands first among the female students of her class in the recent diploma examination of the institution. She has gained a silver medal for her special proficiency in Sur-

gery and another from the Lady Dufferin Fund for her general proficiency.

We are glad to hear that Babu Manilal Mullik of Sinduriapati, Calcutta, has endowed Rs. 32,000, the interest of which will be spent in educating orphan boys. The Trustees to this fund are the Chairman and the Secretary of the Calcutta Muncipality, the Minister of the Adi-Brahmo Samaj and the donor himself or after his death his representative in the family.

Mrs Kadambini Ganguli has reached England and will thence shortly proceed to America to be present at the Chicago Fair.

We learn with great pleasure that the lady doctor Miss. Virginia Mary M.B., has come back from Bhagulpur to settle in Calcutta as an independent practitioner. She has proved herself a distinguished medical scholar and is expected to be equally successful in her profession. We wish her god-speed.

The following are the compliments given to women by some of the greatest men:—

Earth has nothing more tender than a pious woman's heart.—Luther.

All I am or can be, I owe to my augel mother.—Abraham Lincoln.

No man can either live piously or die righteously without a wife--Richter.

Eternal joy and everlasting love there's in you, woman, lovely woman. _Otway.

Even in the darkest hour of earthly ill, woman's foud affection glows.—Sand.

বামাবোধিনী পত্রিকা।

BAMABODHINI PATRIKA. "कन्याप्येवं पालनीया शिक्षणीयातियत्नतः"

কন্তাকে পালন করিবেক ও যত্নের সহিত শিক্ষা দিবেক।

| | | ૭ફ | 0 | | 1 | > | বঙা | + > t_ | < \ | | | T >6 | ~\o | | 5 | | ৫ম | কপ্প | 1 |
|-----|-----------|-------------|---------------|-------|----------|------------|------|--|-----------|-------|------------------------|-------------------|------------|------------|----------|----------|-------------|------|------------|
| | স | ংখ্য | 71 | - | <u> </u> | | 41 | 1 4- | | | | , ,, | ~ - | ' | (| | ২য় | ভা | 1 1 |
| | | * বৈ | टेक् | আ | তা | ভা | ad i | | | | | | | কা | W | পৌ | শ্ব | स् | 55 |
| | | বৃ | র | ৰু | র | ৰু | * |) म | িক | প্ত প | क्रि | 71 | | শ | শ্ব | 4 | 뻑 | সো | ৰু |
| | | ৩১ | ৩১ | ૭૨ | ৩১ | ૭૪ | 45 | | _ | | नोल > % 8 | | • | 22 | 9. | ₹. | ٥. | 9. | •• |
| | | 1 4 | শে | छून | ब्रू | আ | সে | म् भ् | | | | sbsa, | | 4 | 7 | ডি | লা | CH | न |
| | | 뻑 | শো | শ্ব | 4 | ম | 4 | | | - | 8-16 | - | | র | ৰু | 4 | সো | বৃ | ৰূ |
| | | ٠. | ৩১ | ৩• | ৩১ | ৩১ | ٠. | | | | | | . | 95 | ٠. | ৩১ | ৩১ | २४ | (0) |
| | | ‡বৃ | র | বু | র | ৰ্ | -1 | ٥ | ъ | >4 | २२ | २৯ | | ষ | ৰু | 7 | " | সো | 1 |
| | | 4 | সো | বৃ | সো | বৃ | র | 2 | * | 74 | २७ | ٥. | | ৰু | 43 | 4 | র | ম | -3 |
| | | 7 | ম | 4 | ম | 3 | সো | ٥ | 3. | >1 | ₹8 | ઝ | | ৰূ | 7 | র | শো | ৰু | 4 |
| | | শ্ব | ৰ্ | 7 | ৰ্ | 4 | ম | 8 | >> | 22 | ર∉ | ૭૨ | | 4 | র | শে: | म | শ্ব | র |
| | | শো | 3 | র | ব্ব | র | ব | • | ۶२ | >> | ₹७ | | | 4 | শো | म | ৰু | 4 | শো |
| | | ষ | 4 | সো | 46 | সো | শ্ব | • | 20 | ₹• | 29 | | | র | 4 | ৰু | শ্ব | 4 | 7 |
| l . | | ब् | 7 | 4 | 4 | ম | 4 | • | 78 | २५ | 42 | | L | শো | 7 | <u>র</u> | 3 | র | 4 |
| | યુ: | ٧٧ | 39 | >6 | ٠. | 33 | ٠. | | | | | আরম্ভ, বা ওক্ত | ત્રુ: | * | * | | > | > | · |
| | े व: | 2 | ۵. | 9. | ২ ৭ | ૨৬ | ₹8 | ৩রা | শনি ই | ভাাদি | 1 | | | ૨ ૨ | ₹8 | २७ | ₹8 | ₹8 | ₹8 |
| , | 4: | 78 | 340 | . > > | » | v | • | | | | | সোম বা বুধ | 4: | • | • | e | • | • | বাং |
| , | 4: | ٠. | २৮ | 21 | ₹8 | ૨ ૨ | २ऽ | २क्र | ৰুহস্প | তি ইং | ां पि | | a : | >> | ₹• | 3. | ٩. | 4. | ₹• |
| ١, | t | -#12°- | n; • | | rotar | n1 = | • | | | | | erain | | | | e est | 1-v - | | est. |
| | | | गः । मनी १ | | 14144 | ıı, a | - | मिप्त माम । २० २ व्यव्यम भग देवनाव ॥ | | | | | | | | | CONT | | |
| Ł | | | | | | | } | | | | 4, 44 | . 45 | | | | | | 100 | |

नववर्ष।

নব শতাকীর নৃতন বরষ,
উদিলে উজলি ধরা-দিক্দশ!
শতবর্ধ মাঝে তুমি বর্ধবর,
কি ব'লে তোমারে করি সমাদর?
তারাদল মাঝে তুমি স্থাকর,
নদীগণ মাঝে তুমি সে সাগর;
শতগিরি মাঝে তুমি হিমাচল,
শতফুল মাঝে তুমি শতদল,
শতবর্ধ পরে হইলে উদয়,
গাও শত মুখে জগদীশ জয়।

যে শতাব্দী গত—বিধির-বিধান,—
দেখ ভারতেরে দেছে নব প্রাণ।
ধর্ম জ্ঞান শুভ কার্ধ্য সমুদ্য,
"নক্লাবে তাই হরেছে উদয়। উন্নতির পথ অনন্ত বিভার, বাধাবিদ্ধ সব হইবে সংহার। গত শতাব্দীর হয়ে স্থসন্তান, এ পথে তুমি কি হবে আগুয়ান ? সহায় ঈশ্বর কি ভয় কি ভয়, গাও শতমুখে জগদীশ জয়।

তুমি যাবে চলে আমরা যাইব, কালচকে ঘুরে কে কোথা পড়িব! চিরসত্য যিনি মঙ্গল আলয়, তাঁর ইচ্ছা পূর্ণ হবে সমুদয়। তিনি সিদ্ধিদাতা করুণা-নিধান, করুন্ স্বার মঙ্গল বিধান। যতক্ষণ প্রাণ তোমার আমার, প্রাণপণে এস সাধি কাজ তাঁর; অনম্ভ জীবন পাইব নিশ্চয়, গাও শতমুশ্ধে জগদীশ জয়।

১৩০ - সালকে বর্ত্তমান শতাব্দী-রাজ विनिश आमता मानदा वत्र कतिराउ छ। ১২০০ সাল যে শতাব্দী আনয়ন করিয়া-ছিল, তাহা সৌভাগ্যজনক বলিয়া স্বীকার করিতে হইবে। গত ১০০ বৎসরের মধ্যে ছিল্ল বিচ্ছিল ভারত দোর্দণ্ড ইংরাজ প্রতাপের একছত্রতলে আনীত হইয়া শান্তি লাভ করিয়াছে, ভারতবাসী নানা-ভাষী নানা জাতি এক রাজভাষাধারা পরস্পরের সহিত সন্মিলিত ইইয়াছে এবং জাতীয় মহা-সন্মিলন চাক্ষুষপ্রত্যক্ষ ব্যাপার হইয়া দাঁড়াইয়াছে। ভারত যদিওপরা-ধীনতার শৃঙ্গল আরও দৃঢ্রূপে পরিধান করিয়াছে, কিন্তু একটী সভাতম জাতির শাসনাধীন হট্যা অনেক স্থশিক্ষা ও উন্নতি লাভে সমর্থ হইয়াছে । ভারত সভা-দেশোচিত লোহবন্ধ, তাড়িত বার্দ্ধাবহ, বাষ্পীয় পোত, অশেষবিধ কলকারথানা ও শিল্পজাতে সজ্জিত হইয়াছে বলিয়া এই সৌভাগ্য গণনা করিতেছি না, ধর্মস্থা, জ্ঞানম্পৃহা, দেশহিতৈষিতা প্রভৃতি মহৎ-সকল পুনকজ্জীবিত হইয়া পতিত ভারতের উদ্ধারের আশার সঞ্চার করি-য়াছে। যে ব্ৰহ্মসাধন—সত্য সনাতন ধৰ্ম-ভারতবাদীর অক্ষয় পৈতৃক সম্পত্তি ভস্মা-চ্ছাদিত হইয়াছিল, এই শতাম্বীতে তাহা-র ওপুনকদীপন হইয়াছে। প্রটিন শাস্ত্র সকলের সমাদর ও আলোচনা বৃদ্ধি হইয়াছে खदः धर्ष ७ मगाज मःश्वादतत नव प्रा डेल- স্থিত হইয়াছে। বিভাও এখন আর কোন

শ্রেণীবিশেষের একচেটিয়া বস্ত নহে. ইহার দার সকলের জন্য উদঘাটিত। এখন যাহার বৃদ্ধি, গুণ ও ক্ষমতা আছে, তাহারই গৌরব; কাহারও পথ অপরে অবরুদ্ধ করিতে পারে না। তর্বলের উপর প্রবলের অত্যাচার নিবা-রণের অনেক উপায় হইয়াছে এবং সেই স্থুত্রে অবলা স্ত্রীজাতি বছদিনের দামাজিক উৎপীতন হইতে কিয়ৎ পরিমাণে রক্ষা পাইয়াছেন ও অল্লে আলে সাধীন ভাবে উন্নতির পথে অগ্রসর হইতেছেন। সহমরণ, বভদারপরিগ্রহ, বাল্যবিবাহ, বিধ্বা-বিবাহপ্রতিষেধ, জ্ঞানার্জন ওশাস্ত্রাল-শীলনে অন্ধিকার, স্বাধীন ব্যবসায়ে অসা-মর্থ্য ইত্যাদি যে সকল দূষিত দেশাচার পাষাণের মত নারীজাতিকে পেষণ করি-তেছিল, অতীত শতাব্দী তাহার কতক নিরাকরণ করিয়াছে, তাহাতেই আমরা (मगन(४) अद्मक विज्ञी तमनीत अङ्गमः দেখিতেছি, উচ্চশিক্ষার উচ্চতম পরী-ক্ষাতেও রমণীগণ পুরুষদিগের সহিত সম-কক্ষতা প্রদর্শন করিতেছেন, অনেক ছুর্ভাগিনী বালবিধবা পতিস্থথে সৌ-ভাগ্যবতী হইয়া পুনরায় স্থথের সংসার করিতেছে, অনেক রমণী দপত্নীর জালা হইতে রক্ষা পাইয়াছে এবং অনেক গুণ-বতী মহিলা শিক্ষয়িত্রী, গ্রন্থকর্ত্রী ও চিকিৎসক হইয়া জীবিকা অর্জনেও সক্ষম হইতেছেন। স্থানে স্থানে নারীদিগের দেশহিতকর সমাজ প্রতিষ্ঠিত হইয়া কার্য্য সাধ্যমের পথ রমণীদিপের নিক-

টও প্রদারিত করিয়া দিতেছে। ভবিষাৎ এখন আশাপূর্ণ।

গত শতাব্দী যে সকল মহৎকার্য্য লাধন করিয়াছে, তাহাতে মঙ্গলমন্ত বিধাতার লাক্ষাৎ হস্ত দেদীপ্যমান । তিনি যে মঙ্গলাছ্ঠানের স্বত্রপাত করিয়াছেন, তাহার উন্নতি হইবেই হইবে। ১৬০০ শতাব্দী অতীত শতবর্ষের প্রস্তুত ভিত্তির উপরে যেন উপযুক্ত অট্টালিকা নির্দ্মাণ করিয়া ভারতবাসীর সকল আশা পূর্ণ করিতে পারে। সিদ্ধিদাতা প্রমেশ্বর এই কার্য্যের সহায় হউন্।

গত শতাশীতে বিধাতার বিধানে ভারতের হিতৈর জন্য বিদেশী সংদ্শী অনৈক মহাজ্ঞার এদেশে অভ্যাদয় হইয়াছে; তাঁহাদিগের মধ্যে বঙ্গের স্থপরিচিত কয়েক মহাত্মার নামোলেথ করিতেছি-মেটকাফ, ক্যানিং, রিপণ, বেণ্টিক্ক, কেরী, মার্দমান, হেয়ার, বেথুন; রাম-মোহন, রাধাকান্ত, (मरवस, (कशव: मग्रानम, जेश्रवहस्त, इति**क्ट**स. গোপাল, কুঞ্দাস, অক্যুকুমার, দ্বারকা নাথ, প্যারীচাঁদ, রাজেন্দ্রলাল। আরও কতকগুলি নাম অবাক বহিল। ইহাঁদের প্রতি ভারত চিরক্বতক্ষ থাকিবে। নৃতন শতান্দীতে এ প্রকার মহাপুরুষদিগের আবিৰ্ভাব কি দেখিতে পাওয়া যাইবে ?

গত শতান্দীর শেষভাগে ঈশবের ইচ্ছায় ভারতরমনীগণের সেবার জন্য বামাবোধিনীর জন্ম ইইরাছে। ইহা ৩০ বংসর কাল শীবিত থাকিয়া লভা-

कीत व्याप्त छुठीयाःग मर्गन कतिल। | আগামী ভাদ্র মাদে ইহা ৩১ বর্ষে প্রবেশ। করিবে। এই শুভঘটনা উপলক্ষে একটী উৎসব করিবার ইচ্ছা আছে এবং তত্বপলক্ষে "গত শতাধীতে ভারত त्रम्पीनिशत्र छेन्नछित्र" विषव कालाठना | विवत्र विख्वापतन मृहे रहेत्व।

করা যাইবে। বামাবোধিনীর পাঠক পাঠিকাগণকে অবগত করিতেছি উপরি **छेक विवास यिनि छे**० करे ब्रह्म লিখিবেন, তাঁহাকে যথোপযুক্ত পারি-তোষিক প্রদন্ত হইবে। এ সম্বন্ধে বিশেষ

সাময়িক প্রসঙ্গ।

বিশ্ববিদ্যালয়—এ বৎসরের প্রবেশিকা পরীক্ষায় ৩৭২২ জন উত্তীর্ণ হইয়াছে, তমধ্যে ১৪৫ প্রথম, ১৯০১ দ্বিতীয় এবং ৮৭৬ জন ভূতীয় বিভাগে তুরীর্ণ হইয়াছে। এ্রপণ্যুফল যুবিলী বঙ্-সর ব্যতীত আর কথনও দেখং ধায় নাই।

নব রাজপুরুষ—প্রধান সেনা-পুতি লর্ড রবার্ট স অতি মুখ্যাতির সহিত দীর্ঘকাল কার্য্য করিয়া সন্ত্রীক স্বদেশযাত্রা করিয়াছেন। সার জর্জ হোয়াইট তাঁহার স্থানে বাঙ্গালার প্রধান সেনাপতি হইয়া-ছেন। ছোট লাট সার চার্লস ইলিয়ট আপাততঃ ও মাসের ছুটী লইতেছেন, তাঁহার স্থানে সার ম্যাকডোনান্ড কার্য্য করিবেন।

ব্যবস্থাপক সভার প্রতিনিধি —কলিকাতা মিউনিসিপালিটা[ু] সভাগণ বাবু হুরেন্দ্রনাথ বন্দ্যোপাধ্যায়কে বন্ধ-দেশের ব্যবস্থাপক সভার তাঁহাদের প্রতিনিধি মনোনীত করিয়াছেন।

শিক্ষা সমিতি-জীশিকার পরি

मर्गन ও সাহায্যদানাদির বিবেচনার জন্য ছোটলাটের আদেশে শিক্ষাবিভাগের ডিরেক্টর এক শিক্ষা-স্মিতি আহ্বান করিয়াছেন। কলি-কাতার স্ত্রী শিক্ষা সম্বন্ধে কতকগুলি ব্যবস্থার সংশোধন ইহার উদ্দে≁।।

প্রহেলিকা পূরণ--ফান্তন ও চৈত্রের বামাবোধিনীতে যে ১০০ প্রহে-লিকা প্ৰকাশিত হইয়াছে, তাহা পাঠিকা-দিগের বিশেষ আমোদজনক হইয়াছে দেখিয়া আমরা আনন্দিত হইলাম। নিমু-লিখিত পাঠিকাগণ নিম্লিখিত সংখ্যক উত্তর দিয়াছেন, যিনি পুরস্কারযোগ্যা, তাঁহার নাম পশ্চাং প্রকাশিত হইবে:—

- ১---সজলনয়না দাসী, কলিকাতা
- २-- (मोनामिनी (नवी, कृष्टिया
- ৩--ভুবনমোহিনী দেবী, দাঁতুন
- 8:-कुञ्मकुमात्री त्मन, कतिनशूत्र
- <--- নিত্রিনী চটো, বাক্ডা
- •—স্চাক্রবালা দাসী, গাজীপুর,
- ৭---প্রভাতকুমারী দাসী, মর্মনসিং

৮—ভবতারিণী দাসী, চেতলং ... ১০০
৯—সুশীলাবালা বস্থা, কুচবিহার ... ১০০
১০—বসস্তকুমারী দাসী, রাজপুর ... ১০০
১১—মুণালিনী রায়চৌধুরী ... ১০০

বিবী-রাণী—পাতিয়ালার মহারাজা

এক কীর্ত্তি করিয়াছেন। তাঁহার এক ত্রী

বর্ত্তমান, তিনি তাঁহার অধাশালার অধ্যক্ষ

রায়ান নামক সাহেবের ভগ্নী মিদ্

রায়ানকে আবার বিবাহ করিয়াছেন।

এই মুনতী শিখ ধর্মে দীক্ষিত ও "হুরনম

কুর" নাম প্রাপ্ত হুইয়াছেন। এ কার্য্যের
পরিণাম কি হুইবে চিন্তার বিষয়।

সাময়িক পত্রের উপ্রর ট্যাক্স—
কলিকাতা মিউনিসিপালিটা এক দিকে
ট্রাম এয়ের অধ্যক্ষদিগকে দেশছাড়া
করিতে বসিয়াছেন, অন্তদিকে গরিব
সাময়িক পত্র সকল লইয়া পীড়াপীড়ি
আরম্ভ করিয়াছেন। এতদিন ছাপা-

খানারই ট্যাক্স ছিল, এখন দেশহিতরতে কোন কাগজ বাহির হইলেও আগে তাহাকে টাকা দিয়া লাইসেন্স লইতে হইবে। বহুদিন প্রচলিত পত্রিকা সকলও এ দায় এড়াইতে পারিবেন না। নব্যভারত সম্পাদক এই বিষয়ের আম্পোলনে প্রবৃত্ত হইয়া আমাদের কৃতজ্ঞতাভাজন হইয়াছেন। যদি সকল সম্পাদক এক খোগে প্রতিবাদ করেন, শুভফলের আশা করা যায়। "প্রেস আসোসিয়েসান" আর কোন কার্য্যের জন্ম ?

বামাবোধিনীতে ইংরাজী—এ
বংসর হইতে ইংরাজী নিয়মিত দেওয়া

যাইবে নাঃ আবশ্যক মতে সময় সময়
দেওয়া যাইবে! পত্রিকার কুড কলবুরে
ইহার স্থাবেশ স্থান তুর্ঘট ইয় এবং
অধিকাংশ পাঠিকার পক্ষে ইহা তত
আবশ্যক দেথাযায় না।

বিলাতি মহিলাগণের কার্য্য।

১—বিলাতি মহিলাগণের জনহিতৈষণা—স্ত্রীলোকদিগের টেম্পারেন্দ
ইউনিয়ানের প্রতিনিধি কুমারী উইলার্ড
স্নায়বিক তুর্কলতা হেড় কিছুদিন শয্যাগত
ছিলেন। তিনি গত জানুয়ারি মাস হইতে
আরোগ্যলাভ করিয়া পুনরায় জুর্নহতব্রতে নিযুক্ত হইয়াছেন। তিনি সম্প্রতি
লগনের অনেক বড় বড় সভার বক্তৃতা
করিয়াছেন ও সর্বত্তই অভ্যক্ত সমাদর

লাভ করিয়াছেন। তাঁহার বক্তৃতার গুণে মাদকসেবনের বিরোধিগণ সর্ববৃত্তই নব উদ্যম ও উংসাহ লাভ করিয়াছেন। কুমারী উইলার্ড প্রধানতঃ স্থরাপান নিবা-রণকার্য্যে ব্রতী হইলেও তিনি বছদিন হইতেই বুঝিতে পারিয়াছেন বে স্কল-প্রকার সংস্কার কার্য্যেই স্ত্রীলোকদিনের বোগ দেওরা একান্ত কর্ত্ব্য, কার্ম্ব ভাহাদের উপস্থিতিহারা কার্য্যেরপবিত্তভা

e পুরুষদিগের উৎসাহ সমাকৃ বর্দ্ধিত হর। তিনি তদমুসারে সকল প্রকার **मश्का**तकार्या छे । भारी हरेगा हन । কিন্ত কেবল বক্তভায় স্থায়ী কাৰ্য্য হয় না, সংবাদ পত্রের সাহাষ্য এপক্ষে নিতান্ত আৰশ্যক: সেইজন্য "উইমেন্স লিবারেল কেডারেশন" সভার মুখপাত্র "উওমানস হেরা**র্ড্র" নামক প**ত্রি কার কার্য্যক্ষেত্র আরও বর্দ্ধিত করিয়া লেডি হেনরি সমারসেটকে · **ভাহার সম্পা**দিকা করা হইতেছে। চিকাগো নগরের "ইউনিয়ান সিগনাল" নামক সাপ্তাহিক পত্রিকার যথন প্রায় একলক গ্রাহক, তখন "উওমানুস হেরাব্ডের"ও গ্রাহকসংখ্যা দে ভদসুরূপ হুইুক্টে এরপ আশাবরা ﴿সঙ্গত নহে। ২—সাধারণ কার্য্যে শ্রীলোক নিয়োগ—মিঃ আসকুইথ বিলাতী 🦥 প্রর্থমেণ্টের পক্ষ হইতে কারখানার স্ত্রী-পর্যাবেক্ষণের জন্ম লোকদের অবস্থা গ্লাসগো ও লণ্ডনে এক জন করিয়া ন্ত্রীলোক ইনম্পেক্টর নিযুক্ত করিতে প্রতিশ্রুত হইয়াছেন। ই হারা বার্ষিক ২০০ পাউণ্ড হইতে আরম্ভ করিয়া ৩০০ পাউও পর্যান্ত বেতন পাইবেন। রোগের তুলনায় ঔষধ যদিও নিতান্ত হোমিও-

৩—ক্ষেকজন বিখ্যাত রমণী—
"রিচিউ অফ্ দি ওয়াত্র" নামক পত্রিকার

भगाधिक **माजाय इं**रेल वर्त्ते, उथाभि "नारे

মামা অপেকা কাণা মামা ভাংঁ এই

বিব্রেনার ইহাও কতকটা ভাল বলিতে

ष्टेट्य ।

রেভারেণ্ড ডাঃ প্রেসি "আমাদের প্রচারিকা বীরাঙ্গনাগণ" শীর্ষক প্রবন্ধের প্রারস্তে এমন কতকণ্ডলি ক্রীলোকের নাম করিয়াছেন বাঁহাদের দ্বারা মানবজাতির প্রভৃত উপকার সাধিত হইয়াছে। আমরা তাঁহাদিগের নাম ও কার্য্য নিয়ে দিলামঃ—

বার্বরা অট্ম্যান বালিসের লেস্ নির্মাণ প্রণালী উদ্ভাবন করিয়া সাক্সনি-প্রদেশকে ঘোর দারিদ্রোর হস্ত হইতে রক্ষা করেন। বেটসি মেট্কাফ ইউনাই-টেড্ ষ্টেটে প্রথমে খড়ের টুপি নির্মাণ আরম্ভ করেন: তদবধি উক্ত রাজ্যে খড়ের শিল্পকার্য্যের এত বিস্তার হইয়াছে ব্যবসায় হইতে বংসরে কোটা কোটা মুদ্রা লাভ করিয়া থাকে। তুলানির্শ্বিত জিন্ বস্ত্র যাহা লোকে এত প্রচুর পরিমাণে ব্যবহার করিয়া থাকে, তাহা মিসেম্জেনেরাল্ গ্রীন কর্তৃক উদ্ভাবিত হটয়াছিল। আর একজন স্ত্ৰীলোক ঘোডার লাল নির্মাণের একপ্রকার যন্ত্র প্রস্তুত কবেন, যাহাদ্বারা প্রতি মিনিটে ২০ খানা লাল প্রস্তুত হয়, ইহাদারা উক্ত কার্য্যের পরিশ্রম ও ব্যয়ের যথেষ্ট লাঘব হইয়াছে। যখন প্রকাণ্ড ক্রক্লিন সেতুর ইঞ্জিনিয়ার মিঃ রোবলীং অতিরিক্ত পরিশ্রমবশতঃ শধ্যাগত रन, তাঁহার পত্নী তাঁহার পরিবর্ত্তে প্রধান ইঞ্জিনিয়ারের কার্য্য করেন এবং তিনি শিল্পীদিগের সহিত বসিয়া তাহাদিগকে



এমন সকল নৃতন ধরণের জিনিস প্রস্তুত করিতে শিধাইতেন বাহা তর্ধন অন্ত কোপাও প্রস্তুত হইত না; ভ্যাসার কালেজের জ্যোতির্কিদ্যার অধ্যাপিকা কুমারী মেরিয়া মিচেল, ১৮৪৭ খৃষ্টাকে একটা নৃতন ধুমকেতু আবিষ্কার করিয়া ডেনমার্কের রাজার নিকট হইতে একটা মেডাল পুরস্কার পান; এতছিল তিনি আরও সাভটি ধুমকেতুর আবিষ্কার করেন। তিনি ইউরোপের প্রধান জ্যোতির্কিদ্গণের নিকট বিশেষ সমাদর লাভ করিয়াছিলেন।

8 ।—বিলাতী স্ত্রীলোকদের
পোষাক—লেডি জিউন্ "নিউ রিভিউ"
ও "ন্যাশনাল্ রিভিউ" নামক পত্রিকায়
পোষাকে অর্থের অপব্যয়ের বিরুদ্ধে হুইটী
প্রবন্ধ লিধিরাছেন । তিনি বলেন যে
যদি বিলাতি মহিলাগণ পোষাক সঙ্গরে
অন্ধভাবে ফরাসী দরজীদের বশবর্তী
না হইয়া সাধীনভাবে ও আপনাদের
সন্ধিবেচনা অনুসারে চলিতে না পারেন,
তবে তাঁহারেশী স্থানীয় ও বৃটীশ সামাজ্য

সম্বন্ধীয় রাজনৈতিক বি করিবার কডদুর উপযুক্ত তৎসন্মন্তে लाटक मिन्दान दहेरवः "ग्रामनान রিভিউ" পত্রিকায় তিনি যে প্রবন্ধ লিখি-রাছেন ভাহাহইতে বুঝাষায় যে পুর্বে সম্ভ্রান্ত পরিবারে প্রত্যেক কন্সার পোষাকে বার্ষিক ১২০ হইতে ১৫০ পাউও (অর্থাৎ সাবেক হিসাবে ১২০০ হইতে ১৫০০ টাকা) ব্যয় হইত! এখন আর তাহাতে हत्त मा। अर्खामाय जिनि निधियाद्यन. "প্রত্যেক শ্রেণীর লোকে উপরিস্থিত শ্রেণীর সহিত সমান চাল চলন রক্ষা করিতে ও তাহাদের বিলাসিতাব অসু-কবণ করিতে যাওয়াতে সামাজিক শক্তির মূলকার হইতেছে এবং তেরে সামাজিক বিপ্লব সন্নিহিত ও অবশ্যস্তাবী হইয়া উঠিতেছে। পোষাক আমাদের সমাজ এখন পরিবর্ত্তনাধীন। কিন্ধ এখন হইতেই এদিকে একট্ একটু বাড়াবাড়ি আবেত হইয়াছে বলিয়া আমরা দেশীর মহিলাগণের দৃষ্টি এ বিষয়ে আকর্ষণ করা উচিত বোধ করিলাম।

আর্য্যমহিল।—স্থমিত্র।

বেমন বাগানের মধ্যে বেলকুল,তেমনি রামারণের মধ্যে স্থানিতাদেবী। বেলকুল কুত্র হইলেও তাহাতে অনন্ত শোভা— অনন্ত মৌরভ; স্থানিতা—অপূর্ণ হইলেও তাহাতে অনন্ত সৌন্দর্য—জুনত মধুরতা! মহর্ষি বান্মীকির দিগভব্যাশিনী প্রতিভা হমিত্রাদেবীর কুন্ত জীবনী বেরূপ পরিক্ষু ট করিরাছে, সাধারণ প্রতিভা বহন

বিস্তৃত জীবনীরও সেরপে সম্পূর্ণতা সাধন করিতে পারে না। ধিনি স্থমিত্রা-চরিত্র বিশেষ ভাবে আলোচনা করিবেন, ভরদা করি তিনি এ বিষয় অস্বীকার করিবেন না। তবে যে বাগানে গোলাপ, গন্ধ-রাজ প্রভৃতি ফুল ফোটে, সেখানে বেল-ফুল সংসা দর্শকের চন্দু আকর্ষণ করে না।

মুমিতাদেবী অযোধ্যাপতি দশরথের ভূতীয়া ভার্যা। পদ্মের মত স্থলর কুলেও কাটা, ময়ুরের মত স্থলর পাখীরও কঠস্বর কর্কশ, তদধিক চুঃখের বিষয় এই বে সুনীতি ও সভ্যতায় জগতের শীর্ষস্থানীয় ভারতীয় আর্য্যধাতিমধ্যেও "ভহবিবাহ" কুপ্রথা প্রচ√নত ৠ। বিবাহের ফল রাজা দশর্থ/ক কিরূপ ভোগ করিতে হইয়াছিল, তাহা বোধ হয় **अरमर्थ अरनरकरे जारनन। यारा र**ेक, স্থমিত্রাদেবীর ভাগ্যে স্বামি-স্থ মিলে নাই। কারণ রাজা দশরথ দ্বিতীয়া ভার্য্যা কৈকেয়ীতেই একান্ত অনুরক্ত ছিলেন; প্রথমা কৌশল্যা বা তৃতীয়া স্থমিত্রা রাজার বিশেষ প্রণয়ভাগিনী হইতে পারেন নাই। এ হু:খ ষে রমণী-হৃদয়ে কত বড় ত্রঃখ —ভরসা করি তাহা পাঠিকা ভগিনী-দিগকে বুঝাইয়া বলিতে হইবে না। রাম-

* শামরা বছবিবাহকে "কুপ্রথা" বলিয়াছি মে এ দেশে "বিলাতি-সভ্যতার" হাওয়া বহিতেছে বলিরা নহে। যাহা ভাল,তাহা ভারতীর হইলেও ভাল, বিলাতীর ইইলেও ভাল। এই ক্যাওলি পারি ভোশারে পুরিষ্কাশ্বনিব । এঃ লেঃ ব চন্দ্রের বনগমন সময়ে, স্বয়ং কৌশল্যাদেবী এই তুর্ভাগ্যের কথা উল্লেখ করিয়া
আক্ষেপ করিয়াছিলেন, কিন্তু এই দারুণ
তৃঃখে স্থমিত্রাদেবীই ভগ্নস্থার হন নাই।
এইরূপ স্থিরতা ও ধীরতা স্থমিত্রা-চরিত্রের
এক প্রধান উপাদান।

স্বামী সপত্মীর প্রতি অন্তর্মক হইলেও
সাধারণ রমণীর মত স্থমিত্রাদেবী তাঁহাকে
অপ্রীতির চক্ষে দেখেন নাই। স্থমিত্রা পতিপ্রাণা সাধবী। পতিপ্রাণা সাধবী তাঁহার পতিদেবতাকে যে প্রেমভক্তি-পূর্ণ চক্ষে দর্শন করেন, স্থমিত্রাদেবী রাজ্ঞা দশরথকে সেই প্রেমভক্তি-পূর্ণ চক্ষেই দর্শন করিতেন। স্থমিত্রা-চরি-ত্রের আলোচনায় ইহা পশ্চাতে বির্ত

ইহার পরে স্থমিত্রাদেবীর আরও
স্নীলতার পরিচয় পাওয়া যায়। রাম ও
ভরত তাঁহার সপত্নী-পুত্র হইলেও তিনি
তাঁহাদিগকে অপত্যনির্কিশেষে স্নেহ
মমঙা করিতেন। তাঁহারই শিক্ষাক্রমে
লক্ষণ ও শক্রম্ম, রাম ও ভরতের একান্ত
অনুগত হইয়াছিলেন। শেষোক্ত কার্য্যে
স্থমিত্রাদেবীর বৃদ্ধির কি স্লুলর পরিচয়
পাওয়া যায়! কৈকেয়ীর মত নীচাশর্মা ক্রের্ডর ব্যবহার করিতে পারে
কিন্ত, স্থমিত্রার মত ধর্মপ্রাণা, পতিপ্রাণা,
সেহময়ী দেবী সপত্নী-মন্তানের প্রতি
প্রক্রত মনতাময়ী হইতে পারেন।

শূর্তরাত সন্তানের অবেকাও সপত্নী-

সম্ভানের তথ হৃঃধে অধিকতর সহাত্তৃতি করিতে পারেন।—ইহা অস্বাভাবিক ভাব নহে, অবহা ও উপবোগিতা ক্রমে, সন্তাদরতা ও স্ক্রাদর্শি ভার কার্য্য। ইহাই দেবী-শ্রন্থরের কার্য্য।

কিন্ত ইহা অপেকা স্থমিত্রা-চরিত্রে অধিকতর প্রশংসনীয় ওণ আছে— এ জগতে সাধারণতঃ রমণীগণ যে সপন্থীকে মূর্ত্তিমতী প্রতিযোগিতাম্বরপ মনে করেন, ধাঁহারা পরস্পর অহি-নকুল-সম্বন্ধবিশিষ্টা বলিলেও অত্যক্তি হয় না, যে " সাপত্য" ভাব কেবল হিংসা দ্বেৰা-नित পরিচায়ক, মহাপ্রাণা সুমিত্রাদেবী নিজগুণে সেই সপতীর সেহময়ী ভূপিনী ও হিতৈষিণী স্থীস্তরপা ছিলেন-সপত্নী-ভাব ভগ্নীভাবে পরিণত করিতে পারিয়াছিলেন। রামায়ণে দেখা বার कोननारित्री थात्र मकन व्यवहार्ट्स সুমিত্রার সাহচর্ঘ্য গ্রহণ করিতেন ; আরও দেখা ৰায় বে এরপ সাহচর্য্য গ্রহণ প্রধানতঃ সুমিত্রাদেবীরই গুণে; সুমিত্রার সহাদয়তা, সুশীলতা, ধর্মপ্রাণতা প্রভৃতি ममश्रुत्वर को भगारमयी जाराब धकाश वनीकुठा ছिल्लन । त्रम्भीन्रत्भत्र विनग्न, স্ণীলতা, বৃদ্ধিমতা, নিরলসতা প্রভৃতি কয়টী গুণ থাকিলেই তাঁহারা পিতৃকুল ও পতিকুলের প্রায় সকল আত্মীয়গণের প্রিয়পাত্রী হইতে পারেন, কিন্তু সপর্মীর নিকটে সপতীৰ প্ৰীতিপাত্ৰী ও হিতৈবিশী বিৰক্ষা সন্ধিনী হুইতে পারাবে কডকুর উন্নত পৰিক্ৰ চৰিত্ৰের কাৰ্য্য তাহা সক্ৰমা ভগিনীপশ মনে মনে অমুভব কক্ষন, তাহা হইলেই স্মিত্রা-চরিত্র জ্লয়ক্ষ হইবে।

এ সকল ওপের পরে স্থািতার নাড্জীবন আলোচ্য। লক্ষণের জ্যেষ্ঠভক্তি,
নিস্পৃহতা, সভ্য-নিষ্ঠা, জিভেব্রিয়তা,
ত্যাগস্থীকার, দয়া, বীরত্ব, বিনয়, সেবাপরায়ণতা প্রভৃতি সদৃশুণ বে দেবোচিত,
একথা বোধ হয় সর্কবাদিসক্ষত। এই
নরদেবতা লক্ষণ প্রধানত: তাঁহার মাতা
কর্তৃক শিক্ষিত হইয়াছিলেন। স্থামিত্রাদেবী পুত্রদিগকে কি অপুর্ক শিক্ষা
দিতেন, নিয়লিবিত ঘটনায় তাহা বুরিতে
পারা বায়—

হুটা মন্ত্রার কুমন্ত্রণার ক্রেক্সী ষ্থন নৃশংস্তার পরাকাষ্ঠা দেখাইতেছেন. অযোধ্যার তরুণ আশা ভশ্মীভূত ও রাজা দশরথের পরমায় গ্রাস করিতে উদ্যত হইয়াছেন, যখন কৈকেয়ীর হুরাকাজ্যার রাষচন্দ্র পিতৃসত্য পালনার্থে সীতা ও লক্ষণের সহিত বনবাসী হইতেছেন, यथन मभेतरथंत्र विलार्भ शूर्वाभी প্রজাগণের হাহাকারে, কৌশল্যার আর্তনাদে সুখময়ী অযোধ্যাপুরী মহা-শাশান বলিয়া অর্ভুত হইডেছে, তথন স্থমিত্রাদেখী কি করিলেন গ তিনিও কৌশল্যাদেবীর মত স্নেহপরারণা মাতা; কিন্ত তিনি কেবল মেহপরায়ণা মাহা নহেন, তিনি ধর্ম-পরায়ণা মাতা, কর্ত্তব্য-পরারণা মাতা। তাই তাঁহার উপবোদী কাল করিলেন ; গোলপুরু

না হইরা বনগমনোদ্যত প্রকে সময়েচিত স্থানিকা ও সত্পদেশ দিলেন; তিনি প্রাণাধিক লক্ষণকে বলিলেন;

শ্বংস। ছনিও সকলের ভোমার প্রতি

সমুদ্রাণ আছে, তথাচ আমি ভোমাকে

বন্ধানের আদেশ দিতেছি। ভোমার

ক্রেড় অরণ্যে চলিলেন, দেখিও তুমি

মৃতত ইইার সকল বিষয়ে সতর্ক হইবে।

রাম বিপন্নই হউন, আর সম্পন্নই হউন,

ইনিই ভোমার গতি। বাছা। ক্রেডের
বশব্রী হওয়াই ইহলোকের স্বাচার

ক্রানিবে; বিশেষতঃ এইরপ কার্য্য এই
বংশের যোগ্য।—দান, বজ্ঞামুগ্রান

সমরে দেহত্যাগ এই বংশের যোগ্য*।

ভার পরে বলিলেন — ১

"রামং দশরথং বিদ্ধি গৈং বিদ্ধি জনকাত্মজাম । অবোধ্যামটবীং বিদ্ধি গচ্ছ তাত। যথাস্থ্যম ॥"

অর্থাৎ তুমি এফণে রামকে পিতা,
কানকীকে আমি, গহন বনকে অযোধ্যা

মনে করিও। বংস। এখন স্থাধ
গমন কর।

এই কয়টী কথার স্থমিত্রার কওই উন্নত হাদরের পরিচয় দিতেছে! তাদৃশ লাক্লণ বিপৎকালেও বাঁহার এমন স্থিরতা, এমন ধীরতা, এমন সংক্রিত যে দেবীচরিত্র এ কথা বলা বাহুলা মাত্র। এমন

র্ক রামারণ জবোধা কাও—হেমচক্র ভটা-

যারের বস্তান হইয়াছিলেন বলিরাই লক্ষণ তক্ষণ বয়সেই দেবজা। আর আমরা লক্ষণের ভার শক্রেম্বকেও কে কেবোপম চরিত্রবান্ দেখিতে পাই, সেও এই স্থমিতার মাতৃত্ব-ওবে; তাই বলি-তেছি, স্থমিতা-চরিত্র দেবী-চরিত্র।

মানবজীবনের উচ্চ গৌরব স্ত্যধর্মান্তরাগে। স্থমিত্রাদেশী দেই সত্য ধর্মের কেমন অনুরাগিনী ছিলেন, পাঠিকা ভগিনী তাহা দেখুন;—

রাম, লক্ষণ ও সীতা বনে গমন করিলে যখন শোকাকুল দশর্থ, রাম-শোকে জীবন ত হইয়া কৌশল্যার গৃহে পড়িয়া আছেন, যখন শোকাকুলা কৌশ-ল্যা চেত্নাহারা হইয়া গিয়াছেন, সেই দারণ শোকের সময়ে, পুত্র-নির্ব্বাসন-ব্যথিতহাদয়া স্থমিত্রাদেবী বিনীত ভাবে कोमलारक विलिख्डिन,—" बार्या। তোমার রাম সর্বভণাধার; কুত্রাপি তাঁহার বিপদ-সভাবনা নাই: তাঁহার নিমিত্ত দীনভাবে রোদন ও পরিতাপ করিবার প্রয়োজন কি ৭ দেখ তোমার রাম সত্যবাদী, পিতার অঙ্গীকার পালন করি-বার আশরেই রাজ্যপরিত্যাগ পূর্বক বনে গমন করিলেন। সজ্জনাচরিত তাঁহার অনুরাগ আছে, স্বতরাং তাঁহার নিমিত্ত শোক করা কোনও ক্রেমে উচিত হয় না। দ্যানীল নিস্পাপ লক্ষ্ণ নির-তার তাঁহার পুত্রবং পরিচর্ব্যা করিয়া शांदकन, देश ऋरचत्र विवत गरमार मारे ! বিকি নিয়ব্যক্তির ভোগবিলালন কলিবাদন

কি অপূর্বে সভ্যাম্বরাগ ! কি গভার ধর্মভাব ! স্থমিতাদেৰী আবারবলিলেন,---"রাম বনে বা নগরে থাকুন, তাঁহার কোনও দোব কাহারই প্রত্যক্ষ হইবে না। তিনি পৃথিবী, জানকী ও জয়শ্রীর সহিত ष्यविनत्त्रं ष्यंভिषिक इटेरवन। ८१५ ष्यर्या-ধ্যার অধিবাদীরা তাঁথাকে অত্যন্ত শ্লেহ করিয়া থাকে, উহারা তাহাকে বনবাসার্থ নিকান্ত দেখিয়া নিরবচ্ছিল শোকাশ্র বিসর্জন করিতেছে। সাক্ষাৎ লক্ষীর ভার জানকী বাঁহার অনুগমন করিলেন, ভাঁহার আর ভাবনা কি 🕈 ধনুর্দ্ধরাগ্রগণ্য লক্ষণ অসি, শর ও অত্যাত্ত শত্র গ্রহণ করিয়া ঘাঁহার অত্যে অত্যে ঘাই-খেছে, তাঁহার আর অভাব কি ? দেবি ! দেখিৰে সেই উদিত পূৰ্বচন্ত্ৰের ভায় প্রিয়দর্শন পুনরায় আসিয়া ভোমার চরণ বন্দনা করিবে। এফণে আর চু:খ শোক প্রকাশ করিওনা: রামের কোন-রূপ অভ্রন্ত সভাবনা নাই। আর্থ্যে! কোধার তুমি আর আর সকলকে गालुना कतिरव, जा नत्र निष्कर विकन र्टिल र विन, जान वर्षन खानान श्वा তথ্য কি ভোষার শোক করা উচিত 🕈 রাম **অপেকা জগতে কেহ সা**র্ নাই *।

মানব বড় ছু:ধ—জসহনীয় ছু:ধও বে আলার আলোক দেখিলে সহজে সহিতে পারে, ভবিব্যং স্থানর আলা থাকিলে বর্তমান সহজ্র ক্লেণেও মানব বে ভ্যা-জন্ম হয় না, তাহা এই মহাপ্রালা স্মিত্রাদেবী বিশেষরূপে জানিতেন তাই কৌশল্যাকে শেষে বলিলেন;—

অভিবাদয়মানং তং দৃষ্ট্বা সম্প্রদাং হতম্।
মুট্রান্স মোকাসে কিঞা মেঘরেথেব বার্টিকী।
পুরুত্তে বরদঃ কিঞামবোধাং পুনরাগতঃ।
করাভাাং মৃদুপীনাজাং চরপৌ পীড়রিবাভি।
অভিনন্য ন্যুসাতং পুরং সম্প্রদাং হতম্।
মুদ্রান্তঃ পোক্রে পুরু মেঘরাজিরিবাচনম্। পু

এখন সই সময়ে—সেই ব্যথিত হৃদয়ে, সেই শোকোচ্ছাসের মধ্যে এমন কথাসকল থাঁহার মুখে আইসে, তিনি বে একজন দেবী, একথা বলা বাছল্য মাত্র। এই কথাকয়টাতে স্মিত্রার ধর্মবিশ্বাস, সত্যামুরাগ, কর্ত্ব্যনিষ্ঠা, মানবচরিত্রে অভিজ্ঞতা, অথচ হৃদয়-পূর্ণ শ্রীতি মমতা

রাষারণ অবোধা। কাও ৪৪ সর্গ——হেম্ব-চল্র ভটাচার্যের অনুবাদ।

[†] আপনার সেই অভীইদাতা পুত্র অচিরে অবোধার পুনরাগনন করির। কোমল ও বাংসল কর্মুগল ভারা আপনার চরণ বন্দনা করিবে। আপনার সেই বীরপুত্র ব্যবন সীতা লক্ষ্মুগের স্থিত আসিলা আপনার চরণে ন্যকার। করিবে। ভারন ভারতে অভিনন্তন করে আপনি বেক্স্মান্তি বেবন পুরুতে বারিধারার অভিবিক্ত করে, তেবনি সেই পুত্রকে আনন্যান্তারার অভিবিক্ত করিবেন।

मैं वरे छेक्क नक्षा श्रामा वर्ष हरेए हा। বে কবি "রামায়ণ" রূপ অন্বিভীয় মহা-কাষ্য লিখিতে পারেন, তিনিই সহজে এ ৰহাৰহিমন্ত্ৰী স্থমিতাৰ চৰিত্ৰ আঁকিতে প্রবিদ্বাছেন। তিনিই অনায়াসে আমা-দিগকে বুঝিতে দিয়াছেন, হুমিতা-চরিত্রে এমনই মধুরতা—তীব্র মধুরতা নহে— এমনই মৃত্যু মধুরতা,বে সুমিতাদেবী সকল जबरा जकल घरषाय, जकल लारकतंरे সকলস্তাপহারিণী! এমন দেবী বে ভারতবর্ষে জন গ্রহণ করিয়াছেন, সে ভারত মরিয়াও অমর! এমন দেবী-চরিতা যে কবি লেখেন, সে কবির অমরতা প্রতিপন্ন করিতে চেষ্টা করাও व्यामात्रं विरम्य स्ट्रेण। ह

আর এক কথা, রামের র জ্যাচ্যতি ও বনবাস ঘটনায় সকলের অপেকা-সরং (कीमनात चार्यका ७, ममद्रश्य मन-ন্তাপ অবশ্য অধিক। কারণ, প্রথমতঃ রাজা দশর্থই তাঁহার প্রাণাধিক রামচন্দের সকল বিপত্তির মূল; দশরথের প্রতিজ্ঞার জন্মই তো রামের অদৃষ্টে এত ক্লেশ উপস্থিত। মানব-হৃদয়ে অনেক मरह, कि छ याशादक दृशी मिलिटन वड़ স্থ হয়, মানব নিজেই যদি তাহার দু:খের—গুরুতর দু:খের হেতু হইয়া দাঁড়ার, দে হুঃখ মানব-হৃদ্ সহিতে भारत ना। विजीयकः ताङ्गा मभातथ रा क्रिक् शैरक थार्वत अधिक थीजि । ममजा করিতেম, জগতে রাম ব্যতীত অপরের সহিত যাহার ভালবাসার তুলনা করিতে পারিতেন না, সেই প্রিয়তমা ভার্যা, সেই সেহপ্রতিমা সধী, সেই বিশ্বস্তা সহধর্মিণী যে দারুণ ক্রুরহুদয়া, নৃশংসা
বিশাস্থাতিনী, স্বার্থপরতার প্রতিকৃতিরূপা পিশাচী, ইহা সেই রাম-বনবাসের
দিনেই দশরথ বুঝিতে পারিলেন।
মানব-হুদয়ে অনেক সহিয়া থাকে, কিস্কু
যে ব্যক্তি মানবের প্রাণাধিক প্রিয়তম,
সে যে কপটাচারী, যাহাকে মানব
অকপটে মন প্রাণ সমর্পণ করে, সে
যে বিশাস্থাতক, সে যে মহাপাতকী,
এ তৃঃথ মানব-হুদয় কথনই সহিতে পারে
না। এত্টী "তুর্মলতা" হয় তো মানবের
সাভাবিক ত্র্মলতা।

এই হুই অসহনীয় হু:ধে রাজা দশর্থ সকলের অপেক্ষা অধিকতর কাতর। জগতে সকল ব্যথীরাই একটু সগাসুভূতি চাহে, একটা বাথিত হৃদয় আর একটা ব্যথিত জ্বন্ন পাইলেই কতক পরিমাণে পরিতৃপ্তি লাভ করে। মানবহৃদয় সহজেই সহাত্মভূতির প্রার্থী; ব্যথিত জদর আরও প্রার্থী, সহামুভূতির ভিধারী। এই সহামুভূতি ভিক্ষা করিতেই রাজা দশর্থ, রাম-বনবাস-দিনে কৌশল্যার আগ্র কইয়াছিলেন। রাম-নির্কাসনে দশরথের যে মরণাধিক বাতনা হইতেছিল, অভাগিনী কৌশল্যা তাহা অবশ্য বুৰিয়া-ছিলেন।—স্বয়ং দশর্থ কৌশল্যার গুণের উল্লেখ স্করিয়া বলিয়াছেনখে,—"সেই প্রিয়-বাদিনী আমার সেবার সময়ে কিন্ধরীর জায়, বহুজালাপে দ্বীর জায়, ধর্মাচরণে

ভাষ্যার ভাষ, সংপরামর্শ দানে ভরিনীর স্থায় ও ভোজনকালে জনশীর ভার ব্যব-হার করিয়া থাকেন"। এতাদৃশী পতিব্রতা মহিলা যে স্বামীর স্থুখ হৃংখে সহামুভূডি कत्रिए जनका, এরপ বিবেচনা করা অসম্বত। তথাপি রাম-বনবাসের নিনে তিনি শোকের অধীরতায় রাজা দশরথের প্রতি যে দুই একটা কথা বলিয়াছিলেন, ভাছাতে জাঁহার পাতিব্রত্য যে পতি-প্রাণতা নহে, এ কথা বুঝিতে পারা যায়। তরণ্যে একটা কথা আমরা উল্লেখ করি-তেছি: কৌশল্যা বলিতেছেন, "মহারাজ! রাম এতক্ষণ লক্ষণ ও সীতার সহিত বনে প্রবেশ করিতেছে; তাহারা অরণ্যের তৃঃধ কিছুই জানে না, তুমি কৈকেয়ীর কথায় তাহাদিগকে ত্যাগ করিলে ! বল দেখি তা-দের কি চুর্দশা ঘটিবে ? সকলেরই তরুণ-বয়স, ভোগের সময়ে আবার তুমি বনবাস দিলে, জানিনা এখন তাহারা ফল মূল খাইয়া কিরপে দিনপাত করিবে •"

একথা মাড়লেহ-প্রস্ত সন্দেহ নাই।
আর অভাবনীয় পুত্রনির্বাসন-শোকে
কৌশল্যার যে মডিভ্রংশ ঘাটতে পারে,
ইহাও আশ্চর্য্য নহে। তথাপি প্রকৃত
পতিপ্রাণা ভার্য্য সামীর অন্তন্তন পর্যন্ত দেখিতে পান; নিদারুণ শোক হুংথের
সময়েও সামীর অবস্থা, উপযোগিতা—
স্থামীর কৃত কার্য্য কুকার্য্য হইলেও ছাহার
কারণ সবই দেখিতে পান। উটি পতিশ্রাণা সীডাদেখী দির্বাসনকালে বঁড়
লোক্ষের সমরে, বড় অভিমানের সমরেত বুঝিতে পারিয়াছিলেন,— " আর্যপুত্র কেবল প্রজাত্ত্বন জন্মই আমাকে বনবাস দিলেন, অবিধাসিনী ভাবিয়া নহে"! ভাই বলিতেছি, পতিব্রজা কৌলল্যাদেবীও যদি প্রকৃত পতিপ্রাণা হইডেন, তাহা হইলে রাম, লক্ষণ, সীতা, স্থমিত্রা— এমন কি স্বয়ং কৌলল্যা হইডেও রাজার মনস্তাপ অনেক অংশে অধিক এ কথায় কোন সন্দেহ করিতেন না, আর সেই অমুত্ত ভ্যস্তদ্য, হভভাগ্য দশরথেরও "কাটা ঘায়ে লুণের ছিটা" দিতে পারিতেন না! পতিপ্রাণা রমণী ভাষা পারেন না।

"পতিশ্রাণা রমণী ভাছা পারেম মা" **এ** বিষয়ে এক বিশেষ প্রমাণ **প্রামানে**র श्रमिकारमे । গভীর পতিপ্ৰাপভায় স্থমিত্রা-চরিত্র "আনর্শ"-স্থানীর। পাঠিকা-ভগিনী জানেন, কৌশল্যার বে প্রকার শোক, স্থমিত্রারও তাহাই; কিন্ত এই শোকোচ্ছাসে, এই মাতৃভাবের প্রব-স্থমিত্রাদেবীর পতিপ্রাণতা লভায়, স্কৃচিত হইল না-বরং অধিক্তর প্রবল হইল । সেই অবস্থাতেও স্থমিত্রা-দেবী কৌশল্যাকে বলিভেছেন,—"দেখ! ভোষার রাম সভাবাদী পিতার অলীকার সিদ্ধ করিবার আশয়েই রাজ্য পরিভাগ भूर्किक तत्न अयन कत्रिलन!" **এই** একটামাত্র কথাতেই স্থমিতাদেবীর প্ৰদন্ধ-পূৰ্ণ পতি-অনুৱাগ উচ্ছ সিত হই-রাছে ৷ গভীর ভালবাসা-বোলে বিনি খানীর অভতন পর্ব্যন্ত দেবিজে খাল.

তিনি ভিন্ন আর কেছ কি সে অবস্থায় এমন কথা বলিতে পারে ? তাই স্থমিত্রা-দেবী পতিপ্রাণা সাধ্বীগণের শীর্ষসানীয়া. "সহধর্মিণী"র উপবোগিনী। আমাদের বিশাসকদি স্থমিত্রাদেবী রামচন্দ্রের গর্ভ-ধারিকী হইতেম, তাহা হইলে রাজা দশ-वर्ष वाय-वनवारमञ्जलितन शृक्त-त्नाक-জনিত মৃত্যু হইতে বুঝিবা রক্ষা পাইতে পারিতেন। অন্তক্মনির শাপ বুঝিবা বার্থ হইত। সাবিত্রীর মত স্থমিত্রা-চরিত্রও বলমহিলাগণের অন্তম্য়ী গাথা হট্যা রহিত। যে মহিলা নিজ শরীরে নিদা-ক্লণ আখাত পাইয়াও সামীর ফর্ত্ব্য ক্ষান-ভারে আত্মগোপন করিন, তিনি काम में हमी"। अहि सि ने-दर महिलां পর্তকাত পুত্রের, তরুণবর্ম্ম পুরের माक्रण हः थङ्गक निर्काणनगराय স্বাদীক চিত্ত প্রকৃতিস্থ করিবার আখরে আছিলসংবরণ করেন, সে সময়েও কে ক্ষা ভুনিলে স্বামীর প্রাণে একটক

* ইংগতের ভ্তপুর্ক রাজ মন্ত্রী ডিজরেলী পার্লির।
কেট নহালভার পঞ্জীক, বক্তা করিতে বাইতেন।
একদিন উদ্ধংশ শাইবার সমরে, মন্ত্রী গাড়ীর দরজা বক্ত
ক্ষিত্র অঞ্চাডসারে উহার সহধ্মিনীর একটা আঙু ল
পিরিরা দিরাছিলেন। তথন স্বামীকে নিজের অবহা
আনাইলে ভাহার মন খারাপ হইবে, বক্ত্রার ক্তি
ইইবে, এই ভরে ডিজরেলী-পদ্মী বক্তার পূর্বেন নিজের ক্লেশের ক্যা কিছুমাত্র স্থামীকে ব্যিতে
ক্ষেন নাই। অক্তা শেব হইলে পরে স্বিশেব
বিজ্ঞাহিলেন। সৌভাসাক্রের ভারতবর্বেও এ জনার
সুক্তিবিক্রম নাই। আরাম বোধ হয়, সেই প্রকার কথা
কহিতে পারেন, তিনি আদর্শ দেবী।
এই জাত আমাদের স্থমিত্রাদেবীও
আদর্শ দেবী—ভাহার পদ-গুলি মনে মনে
গ্রহণ করিলেও জামাদের অপদার্থ প্রাণ
পবিত্র হইতে পারে!

আমরা পুর্বেব বলিয়াছি,—সত্যধর্মে অসুরক্ত হওয়াই মানবের সর্কোচ্চ উন্নতি—সর্কোচ্চ গৌরব। স্থমিত্রাদেবীর বৰ্মভাব যে কত উন্নত ও বিশুদ্ধ ছিল পাঠিকা ভগিনী তাহার পরিচয় পাইয়া-স্থমিত্রাদেবীর স্থিরতা, শীরতা, বিজ্ঞতা যে এমন দেবোচিত, সে এই বিশুদ্ধ ধর্মপরায়ণতার জন্স। বিশুদ্ধ ধর্ম-ুপরারণতা হইতে তাঁহার দেব-বৃদ্ধি সকল এমন পরিফ ট হইয়াছিল বে তাঁহার ভার্য্যান্থ, মাতৃত্ব, সপত্রীত্ব, বিমাতৃত্ব সবই মধুর-মধুরতর-মধুরতমা এ দেবী কেবল রাজরাণী হইবার উপ-অবোধ্যার যোগিনী নহেন, গৃহলক্ষী সতীকুলের সাম্রাজী সরপা। এ দেবীচরিত মহর্ষি-বান্মীকির অস্ত্রময়ী প্রতিভার জীবন্ধ চিত্র, সাধারণ মানবের ইহা ছুঁ ইবার সাধ্য नारे। उथाह कृष चार्ति, प्रर्थ चार्ति পুনরালোচনার চেষ্টা করিলাম। মহর্ষি-বাশীকির স্থাপিত স্বর্গীয় প্ৰতিষাৰ সৌন্দর্ব্যে मानद्वत श्रमश এउই मुध হয় হয় "পূজা করিতে পারিব কি না" भिविद्याद्रभक्ति शांक ना। उद्देश कदि जर्छ द्यन्दे कक्न, यरमभीक छिनिमा ব্দাসাকে ক্ষমা করিবেন। এই কা-

উদাসীনের চিস্তা।

রাধারাবীর বর্দ প্রায় চল্লিশ বৎসর। তिनि डाकापत कना धवः वान-विधवा । পতি বিয়োগের পর হইতেই যত্যাচারে বিলক্ষণ দায়ীর নিথাই করিতেছেন। শরীর নিগ্রহ বেশ আছে, কিন্তু আত্ম-শাসন মাত্রও নাই। সামান্ত কারণেই অগ্নি অবতার হইয়া উঠেন। প্রতিবেশী এবং বৃদ্ধা জননীর সহিত প্রায়ষ্ট ঝগড়া বিবাদ করিয়া থাকেন। বুদা জননী ভিন্ন রাধারাণীর সংসারে আর কেহই ছিল না। স্বামিদন্ত বেশভূষা বিক্রয় করিয়া রাধারাণী ৪০০০ টাকা পাইয়া-ছিলেন, ডাহারই স্থদ হইতে ভরণ পোষ-ণের কায় নির্কান করিয়া থাকেন। প্রয়ো-জনীয় নিতা নৈমিত্তিক ক্রিয়া কলাণেও কিকিৎ ব্যর হয়। এডন্তির জননী-সহ বছ তীর্থ ভ্রমণ করিয়াছেন। রাধারাণী একরণ নি:সহারা হইলেও তাঁহার অর্থ-बल हिन, •छाहे धन्नाथानिक नता मन করিতেন। বিশেষতঃ তিনি গয়া, কাশী, জীবুন্দাবন, প্রয়াগ প্রভৃতি তীর্থপর্যটন করিয়াছেন, তাঁহার স্পার্কা কত? স্থযোগ পাইনেই প্রতিবেশিনীদিগের नगीरन গয়া, কাৰীর মাহাত্মা বর্ণন করিতে আরক্ত করেন। লোকে ওনিতে ইচ্ছা না করি-দেও, ধরিয়া আনিয়া ছই কথা ওনাইয়া লেক্। প্রচ্চ কাশীর মাহাত্মা কীর্তন বারা ध्याकृत्रकात्र मन ता नकता जीर्शन व्यक्ति

আকুট করা রাধারাণীর উদ্দেশ্র নছে। শ্রোত্গণ তাঁহার ভয়োদশিতার **প্রশং**সা কবেন ইছাই সে বর্ণনার উদ্দেশ্র। রাধারাণী যে পল্লীতে বাস করিতেন, সে পলীতে স্থাময়ী নামী এক ব্ৰতী ছিলেন। স্থাময়ী সুশীলা ও বৃদ্ধিমতী। 'একদিন রাধারাণী ভাঁহাকে পাইয়া তিনি কাশী-ধামে যেরূপ দান ধ্যান করিয়াছেন, ভাছার বর্ণনা করিতে লাগিলেন। বর্ণনা করিতে করিতে বলিলেন "দেথ স্থাময়ী। এবার কাশীতে গিয়ে বিখেবরকে জাম কল দিয়ে এপেছি মা কত বলেনু বলেন রাধা ও কি করিস, যে কল সচরাচর মিলে ना এরপ একটা ফল দান কর, আমি ৰন্নম, না মা! তা হবে, না বিশ্বেশরকে একটা ভাল ফল দিতে হবে"। ভাই অনেক ভেবে চিন্তে আমটাকে দিয়ে এদেছি ?

স্থামথী রাধারাণীর এতাদৃশ ভোগ বিলাসের কথা ভনিয়া মনে মনে একটু হাসিলেন; এবং বলিলেন "কেন আম ভিন্ন কি আর ভাল ফল পেলেন না দু" ভাল, আঁবটাই দিয়ে এলেন না কেন দ

রাধা—ও মা তাকি হয়, বৎসরের মধ্যে একটা কল, তাও দিয়ে আসবু, এ কেমন কথা ?

কুণা—বিশেষরকে দিতে হ'লে, বে কলে আসন্ধি রয়েছে, সে ঋণাই দিতে হয়। বিশ্বেশবের ত কিছুরই অভাব নাই। তবে ফলদানেরও একটা অর্থ আছে। ভোগ্য বস্তুতে আসক্তি পরি-ত্যাগই এ দানের উদ্দেশ্য। তা আপনিত খুব দান করে এয়েছেন। জামেতে কি আর লোকের আসক্তি জন্মে?

রাধা—জন্মে বই কি । আমার পক্ষে
আঁর ছাড়া সহস্প, তবুও জাম ছাড়তে
পান্ধি না।

স্থা—এ নৃতন কথা গুনলেম, কেউ জামকে আবের চেয়ে ভাল বাসে, এত ক্থনও গুনি নাই।

রাধা—স্থানি তোমার দঙ্গে ঝগড়া কর্ত্তে বিদি নাই। আনি ব্লছি কিখেদ কর্ত্তে হয়, কর, না কর্তে হয় নাই কর।

সংগ—ভাল জামটা দিছে; এলেন, রাগটা দিয়ে এলেন না কেন ?

রাধা—কলইত দের জানি, রাগ

জাবার দের কি করে তাত জানি না।
তোমাদের নতুন শিকে। নতুন কথা।

জামরা সেকেলে লোক, তোমাদের
কথা বার্ত্তা বুঝি না।

স্থা—সংকর করিয়া বেমন ফল ছাড়ত হয়, বিশেষরকে সাক্ষী করে সংকর পূর্বক জেমনি রাগ ছাড়তে হয়।

শ্বধানথীর এই কথাতে রাধারাণী বড়ই
মর্শ্লাহত হইলেন, কোধে জ্বীর, হইয়া
বলিলেন "তোমরা দব স্বর্গের দেবী কিনা,
তাই সকল রিপুর হাত এড়ায়েছ, আমরা
নরকের কীট ডাই আমরা রাসী, আমরা
ক্রেজাট্টে আমরাবা

স্থা—আপনি রাগ কর্বেন না। আমি সর্গের দেবী একথা কি আমি বলেছি?

রাধা—বল নাইত কি ? আমার রাগ ছাড়া উচিত আর তোমার ছাড়া উচিত না ?

স্থামথী দেখিলেন রাধারাণীর সহিত বাদাছ্বাদ করা নিক্ল। তাই বিদায় এহনে প্রস্তুত হইলেন, কিন্তু রাধারাণীর এহনে প্রস্তুত হইলেন, কিন্তু রাধারাণীর কোধ উদ্বেলিত হইয়াছে, যে পর্যান্ত তাহার শান্তি না হয় সে পর্যান্ত কোধের কারণ সরপা স্থামথীকে ছাড়িতে পারেন না। স্থামথীর অঞ্চল আকর্ষণ করিয়া তাঁহার গতি নিবৃত্ত করিলেন। স্থামথী দাঁড়াইয়া রহিলেন, তাঁহার মুথে শক্ষী মাত্র নাই। আর রাধারাণী যত ইচ্ছা তাঁহাকে তিরন্ধার করিতে লাগিলেন। প্রবৃত্তির ক্রিয়া শেষ হইলেই তাহার নিবৃত্তির ক্রিয়া থাকে। রাধারাণীর ক্রোধপ্র তক্রপ কির্থকাল পরে নিবৃত্ত হইল। স্থামথী গৃহে ফিরিয়া আদিলেন।

পাঠিকা ভগিনী!— তীর্থাকা কিংবা শরীর নিগ্রহে প্রবৃত্তির দম্দ হয় না।
কুপ্রবৃত্তির প্রবল অস্থর, তাহাদিগের
দহিত তুমুল সংগ্রাম করিতে হয়। বাহিরের
শক্র দমন অপেকাকৃত সহস্ত, কিন্তু
অস্তরের শক্র দমন করা বড়ই কঠিন
ব্যাপার। লক্ষ সৈত্তের অধিপতি বীরকেশরী প্রবল সমরে প্রতিপক্ষীর
সেনানী-চরকে হিল্ল ভিল্ল করিতে পারে,
বৈজ্ঞানিক সমর-নীতির সাহাব্যে মুহুর্ভ
মধ্যে প্রবল প্রাক্রান্ত বিপ্রক্রের সৈত্ত-

দিগকে পরাজয় করিতে পারে, কিন্ত আভান্তরীণ রিপুর তীব্র প্রহারে তাঁহা-কেও বাতিবাস্ত হইতে হয়। এজন্য অতি দাবধানে অন্তর পরীক্ষা করিয়া রিপুকলের গৃঢ় স্থান আবিষ্কার করা কর্ত্তব্য। অনেক দময় তাহারা বন্ধুর বেশে উপস্থিত হইয়া অপ্রস্তুত অবস্থায় আক্রমণ করিতে আরম্ভ করে। কখন বা সীয় স্বীয় বিরাট মৃত্তি ধারণ পূর্বক স্পদ্ধার দহিত দাধৃতার শিবির আক্রমণ করিয়া থাকে। অনুরোধ করি অতি দাবধানে জীবন পথে চলিবে। বাহিরের ধর্ম ঠান, ক্রিয়া কলাপ সমস্তই অন্তঃভদ্ধির অন্তর শুদ্ধ না হইলে ঈশ্বর দর্শন হয় না। লোভ ও মোহের অধীন হইয়া ক্রোধাদির বশীভূত থাকিয়া কেহ কোন দিন ধর্মপথে অগ্রসর হইতে পারে নাই, পারিবে না। যাঁহারা জীবনে ধর্মকে দর্কোপরি আসন দিবার জন্ম প্রস্তুত, যাঁহার। অনিতা সংসারে থাকিয়া নিতা ধন লাভের জন্ম লালায়িত, যাঁহারা বিষয় তাপে দগ্ধ হইয়া শাস্তি স্থধা লাভের জন্ম বাঞা,ভাঁহারা সর্কাণ্ডে প্রবৃত্তি নিঞ্ছের প্রতি মনোনিবেশ করিবেন। তুপ্রবৃত্তি-কুল নিগৃহীত না হইলে,ধৰ্মাৰ্থে লক্ষ কোটী मूजा लान, किःवा नानारमण विरमण अर्घा-টনেও কোন ফলোদয় হয় না। রাধারাণীর উপাধ্যান ভীহাই সপ্রমাণ করিতেছে।

নরহত্যা।

পুরাকালে সভাতম জাতিদের মধ্যে | নরহত্যা যে প্রচলিত ছিল, তাহার ভরি ভূরি প্রমাণ প্রাপ্ত হওয়। যায়। মিদর দেশস্থ লোকে কোন প্রকার জীবহিংসা করিত না, কিন্তু নরবলি দিতে তাহাদের বিন্দুমাত্রও আপত্তি ছিল না। পারদা দেশে সজীব মনুষ্য গর্ত্তমধ্যে প্রোথিত হইত। জরক্সিসের মহিষীকর্ত্তক দাদশ-জন মনুষ্য প্রোথিত হয়। রোম দেশেও ঐ রূপ নরহত্যা প্রচলিত ছিল। এমি-লিয়দ ও টেরেন্টিয়দ ভারোর যুগারাজত্বের সময়ে তুইজন গ্ৰীকৃ ও তুইজন গল প্ৰোথিত হয় । সেরিয়ন্ জয়লাভ করিবার আশয়ে । দালা প্রদেশ নরহত্যার একপ্রকার কালী-

স্বীয় ত্বহিতাকে বলিদান করেন। লস ও ক্রাস্সের যুগারাজ্ঞরে সময় নরবলি প্রতিষিদ্ধ হইবার একটী নিয়ম বিধিবদ্ধ হয়। দিদিরোর দময় ঐ কুপ্রথা প্রচলিত ছিল না; কিন্তু আগষ্টদ সিজার ৩০০ বলি দিয়াছিলেন। ফলতঃ আড্রিয়ান সম্রাটের সময় পর্য্যস্ত রোমরা**জ্যে** ন্বহত্য। প্রচলিত ছিল।

গল ও জর্মাণ জাতিদের মধ্যে অসংখ্য নরহত্যা হইত। নিভূত কাননের মধ্যে দেবীর মন্দির সংস্থাপিত হইত ও তথায় রাশি রাশি নরবলি প্রদত্ত হইত।

ঘাট ছিল। কথন বা অদিদারা মন্তক-চ্ছেদন, কথন বা উদর বিদারণ, কথন যাষ্টি
ছারা মন্তক চ্ণীকরণ ও শিলাঘাত দারা
মন্তিক বহিকরণ ইত্যাদি নানা প্রকারে

হত্যাক্রিয়া নিষ্পন্ন হইত। নয় বৎসর

অন্তর নয় দিন বিশেষ সমারোহ হইত,
তথন আর বলিদানের সংখ্যা থাকিত না।
মেক্রিকো দেশেও বিস্তর নরহত্যা হইত।
ভারতবর্ধেও যে নরহত্যা প্রচলিত ছিল,
ইহা প্রমাণ করা নিতান্ত কঠিন নহে।
কলিকাতা বাগবাজারে দিদ্ধেরী তলার
নরবলীর কথা বোধ করি পাঠিকাগণের
মধ্যে কেহ কেহ অবগত আছেন।

পূর্বতন কালে পুথিবী দে কেবল নর-হতা। পাণে কলুষিত হই \!ছিল এমত ন৻৻, তৎকালে এতদপেক্ষাও অভিতর প্রবাহে দর্কংদহা নিরস্তর প্লাবিত হইত। নরহত্যা অতি ভয়ানক পাপ বটে, কিন্তু স্বহস্তে সম্ভানবধ তদপেক্ষা অধিকতর ভয়া-নক সন্দেহ নাই; কিন্তু বলিতে কি. এই মহাপাপও পূর্কে বিরল ছিল ন।। বীর অধিকাংশ দেশেই শিশুহত্যা প্রচলিত ছিল। কোমলহাদয়া পাঠিকাগণ এই সমস্ত বিষয় আলোচনা করিয়া জিয়মাণা হইবেন দন্দেহ নাই, কিন্তু তাঁহারা এই বলিয়া মনকে দাভুনা করিতে পারিবেন. যে এইক্ষণে ঈশ্বরেচ্ছায় ঐ সকল নৈশাচিক ক্রিয়ার অনেক হাদ হইয়াছে, এবং যত শভ্যতার বৃদ্ধি হইবে, ততই উহার তিরো-ধান হইবে—ততই সংসার পুণ্যধাম হইয়া উঠিবে।

কেনান রাজ্যে শিশুবলি শাধারণ ছিল। কার্থেজ দেশে ঐ প্রথা বিলক্ষণ প্রবল ছিল। হামিলকার একটী যুদ্ধে জয়লাভ করিতে না পারিয়া একটী শিশুকে বলিদান দেন, এবং অনেকগুলি পুরোহিতকে দিরুগর্ভে নিমগ্র করান। তিনি আর একবার, ভদ্রবংশজাত অতি স্থ্রন্ত্রী ২০০ শিশুকে বলিদান দিয়াছিলেন। কার্থেজ প্রদেশে একটা প্রকাণ্ড দেবমূত্তি স্থাপিত ছিল। তুর্ভিক্ষ, অনাবৃ**ষ্টি** প্রভৃতি বিপৎপাত হইলে উহার নিমে একটী বুহৎ অগ্নিকুণ্ড করিয়া সকলে স্বস্থ শিশু সন্তানকে ঐ দেবীর অক্টে অর্পিত করিত এবং সন্তান-গণ যেমন অগ্নিকুণ্ডে নিপতিত হইত, অমনি চতুর্দিক হইতে ঢাক ঢোল বাজিয়া উঠিত। জনক জননীরা ইহা সচক্ষে প্রত্যক্ষ করি-তেন। যদি কেহ ইহার অনাথাচরণ করিতে প্রবন্ত হইতেন, লোকে তাঁহাকে অধা-শ্মিক বলিয়া গণনা করিত। টায়র প্রেদেশে জনকজননীরা সহস্তে সজান বলিদান **मि**ट्नि। **ज**ननी, বলিদান সস্তানকে ক্রোড়ে করিয়া মুখ্ডসনাদি স্লেছ-স্থচক ব্যবহার করিতেন, ও পাছে সন্তান-স্নেহের করুণ ভাবে অধীর হইয়া ক্রন্সনাদি করিলে পাপ স্পর্শ হয়, এই শস্কাক্রমে পরক্ষণেই অমানবদনে তাহার বক্ষঃস্থলে ছুরিকা প্রহার করিতেন, এবং শোণিত-প্রবাহ যেমন বহির্গত হইত, অমনি উষ্ণ উষ্ণ উহা ধারণ করিয়া তন্ধারা দেব দেবীর গাত্র অভিধিক্ত করিতেন। প্লুটার্ক এই দকল দেখিয়া ভনিয়াই বলিয়া গিয়াছেন

ক্রমশঃ

"দেবতাগণ নরশোণিতে পরিভুষ্ট হন, | অস্তিত্ব স্বীকার না করাই শত সহস্র ওবে এরপ বিশ্বাস করা অপেক্ষা, দেবতাগণের । ভাল"।

বাদন প্রণালী।

পিয়ানাফোর্ট ও হারমোনিয়ম।

(२२१ मःथा। २४ - भृष्ठीत भूत)

হারমোনিয়ম যন্ত্রে গীত বাজাইতে। হইলে আরও কতকগুলি সাংকেতিক ডিল্লের প্রয়োজন হয়। যথা,—

≺ বর্দ্ধিত বল। ইহার তাৎপর্যা এই, স্থরকে প্রথমে মৃত্র আরম্ভ করিয়া ক্রমে বলবুদ্ধি। > হুম্ব বল। ইহার তাৎপর্য্য প্রবল হইতে ক্রমশঃ মৃত্ব।

🗘 ক্ষীতি। ইহার অর্থ এই, স্কুরকে প্রথমে মৃত্ আরম্ভ করিয়া ক্রমশঃ বল-বৃদ্ধি করতঃ মধ্যে প্রেবল করিতে হয়, তৎপরে আবার ক্রমে বল হাস করিয়া মোলায়ম করতঃ অতি মৃত্ব ভাবে শেষ করিতে হয়। ●

↑ এই চিহ্ন ছারা প্রখন, অর্থাৎ প্রবল স্বনন (accent) বুঝায়।

স্থারের বল ভাষার অক্ষর ছারা শাংকেতিক করা যায়, যথা, মৃত্র মৃ, প্রবলের ব, হ্রন্সের হ, ইত্যাদি। স্থরের মস্তকে এই (ব) কিম্বা(f) প্রয়োগ মারা স্থরের প্রবলতা; (মু) কিয়া (p) ছারা মৃত্তা; (বু) ছারা বৃদ্ধি; ইবে। ছুইটা (বব) (টু) ছারা ষতীব প্রবল: ছইটী (মৃদু) কিম্বা (pp) ছারা অতীব মৃছ বা ক্ষীণ বুঝাইবে। মধ্য বলের জন্তুই (ম) কিমা (m) সংকেত; (mf) ছারা মধ্য প্রবল; (mp) দক্ষা মধ্য মুছ বুঝাইবে। 🕶

এই সাংকেতিক চিহ্নগুলি স্থরের শিরোদেশেই সচরাচর আদিপ্ত হইয়া থাকে।

এতদাতীত আর এক প্রকার জলংকার হারমোনিয়ম দঙ্গীতে ব্যবস্তু হয়, তাহাকে আশ কহে।

— বা 🍑 আশের চিহ্ন। গানের কথার একটা অক্ষরে ছুই বা ততোধিক স্থর উচ্চারণ করাকে আশ কছে। সর্লিপিতে স্থ্য নমূহের নীচে একটী দরল বা বক্র রেখা প্রয়োগ দারা উহা সাংকেতিক হইয়া থাকে।

তাল।

তালকে তুলা ভাগে বিভাগ করণের • নাম লয়। লয়ের গতি সাম্ভতঃ তিন এবং (হ) দ্বারা ধ্বনির হ্রাস বুকা- । প্রকার, যথা, বিলম্বিত, মধ্যম ও জ্বত।

21 1 1 +1 বিলম্বিত লয় যথা—সা ঋ গ ম 1+1 মধ্যম ক্রত " স

গীত কিম্বা যন্ত্রাদির সহিত বোল সংযোগে তাল দেওয়ার নাম সকত বা ঠেকা কছে। তাল নানা প্রকার। এই স্থলে কেবল কয়েকটী সহজ তালের বর্ণনা করা হইল।

কাওয়ালী।

চারিটী পদে কাওয়ালী হইয়া থাকে। ইহার চারিটী পদ প্রত্যেকে একটী দীর্ঘ **⊂**বা তুইটা হ্রম অথবা[\]:চারিট অতি ইপ মাত্রায় পূর্ণ। ইহার ঠেকা (থা,---

}। । । । । । । । । । । ধা ধিন্ ধিন্ধা। ধা ধিন্ধিন্ধা। এই বোলটা চারি সমান ভাগে বিভক্ত: প্রথম বিভাগের মস্তকের চিহ্নকে সম: দ্বিতীয় বিভাগের উপর ৩ চিত্রকে তৃতীয় তাল বলে। তৃতীয় বিভাগের উপ-রের • চিহ্লকে ফাঁক কছে, ও চতুর্থ বিভা-গের মস্তকের ১ চিহ্নকে প্রথম তাল

এই তালের একটা পদে ফাঁক ও অপের তিনটীতে তিনটী তালি দেওয়া যায় , বলিয়া এই তালকে সাধারণতঃ তিতালী বা তেতালা নামে কহা যায়। ফাঁকের অৰ্থ এই যে, কোন প্ৰস্থনেতে তালি না কৈ তে ধা

কহে।

দিয়া, যে করতলটী উপরে থাকে, তাহা তৎকালে চিৎ করা, ইহাকেই দেওয়া বলে।

মধামান ৷

यश्यात्रात्व याजा नगष्टि १७ जी मीर्घ. অথবা ৩২টী হন্ত মাত্রা; ঠেকা, যথা— ধাগে ধিন ধিন ধা গে ধিন ধিন ৽। ! । |১। । । । | তাকে তিন তিন্ধা গে ধিন্ধিন্ ঠুংরী।

এই তালেও চারিটী হস্ত মাতা অন্তরে প্রস্বন ও তালি পড়ে। ঠেকা যথা— ধা ধা কেটে তাক নে ধা কেটে তাক

একতালা।

ইহার তিন্টী পদ। প্রত্যেক পদ হয় চারিটী হ্রস্থ মাত্রায়, কিস্বা তুইটী দীর্ঘ মাত্রায় পূর্ণ। একতালা কথন কথন চারিপদে বিভক্ত হইয়া থাকে। চারি পদে বিভক্ত হইলে, ইমার প্রতিপদে তিনটী হ্রসমাতা ব্যবস্ত হইয়া থাকে। ঠেকা যথা---

+। । । । । । । । । । ধিন্ধিন্ধা ধা তিভা ক ভো নাগে ধিন ধাগে पिन धिन $| > \times \times \times \times |$

থেমটা।

এই তাল তিন্টী হ্রস মাত্রা বিশিষ্ট ও সমান চারি পদে বিভাজিত। ঠেকা যথা---

৬ | ৩৬ ধি | না তি ন 51 **ન** | না

এই কয়েকটা তাল উত্তম রূপে বোধ-গমা হইলে পাঠিকাগণের অস্তান্ত তাল অতি সহজে অভ্যাস হইবে।

পাঠিকাগণের প্রথমে স্বরজ্ঞান, পরে মাত্রা ও তাল বোধ হইলে, স্বর্যালিপি দেখিয়া বিনা শিক্ষকের সাহায্যে গৎ বাজাইতে পারিবেন।

ঐক্যধ্বনি।

তুই কিস্বা ততোধিক ভিন্ন ভিন্ন স্থ্য একাত্র ধ্বনিত করিলে যে একটী যৌগিক স্থরের উৎপত্তি হয়, তাহাকে স্থরের যোগ কহে। সুশ্রাব্য যোগ সহকারে হুই কিস্বা ততোধিক যৌগিক স্থর একত্রে ধ্বনিত অর্থাৎ বাদিত হওয়াকে ঐক্যধ্বনি বা ঐক- তান কহে।একটা স্থর, তাহার পূর্ণ ভৃতীয় ও পূর্ণ পঞ্চম এই তিনটীর যে যোগ. তাহাতে দর্কোৎকৃষ্ট ঐক্যধ্বনি উৎপন্ন হইয়া থাকে।

প্রথম ও তৃতীয় স্বর সর্বাদা মিলিয়া যেমন ঐক্যান্ত্রনি হয়, তৃতীয় আর পঞ্চম সরও মিলিয়া সেরপ ঐক্যধ্বনি হয়। আর দ্বিতীয় ও চতর্থ স্বর মিলিয়া যেমন ঐক্য ধ্বনি হয়, তদ্ৰূপ চতুৰ্থ ও ষষ্ঠ স্বরও মিলিয়া ঐকাঞ্চনি হয়। পঞ্চম ও সপ্তম श्रव मिलित्स अहेम श्रावत अर्थाए निशासित পরবর্ত্তী সা-কে নির্দেশ ও অপেকা করে বলিয়া, সপ্তম বা নিথাদকে আপেঞ্চিক সুর কহা ধীয়।

বিত্তীয় ও সপ্তম সার এক সংক মিলিলে স্থিত্ব চতুর্থ ও সপ্তম স্বর মিলিলে ঐরপ অষ্টম স্থরকে অপেক্ষা করে।

চুই সর একদঙ্গে মিলিলে তাহাকে দ্বিধ্বনি বলে। তিন স্বর একত্রে মিলিলে ত্রিপ্রনি কহা যায় এবং চারি স্বর এক সঙ্গে মিলিলে তাহাকে চৌধ্বনি বলা যায়।

ক্লযিত্ত্ব।

ভূমির সার।

(৩২৬ সংখ্যা ৩৪৯ প্রচার পর)

দার দেওয়া যাইবে, 👺ই ভাল। যদি । তাহাহইলে, অত্যক্স পরিমাণে দেওয়া জমি উর্বার হয়, এবং সার দেওয়ার উদ্দেশ্ত । উচিত।

ভাগাড় স্কমিতে মৃতু অধিক পরিমাণে তদ্ধ কদলের পৃষ্টতার আধিক্য সাধন হয়,

জমির দোষ কি. তাহা অগ্রে বিবেচনা না করিয়া বৃদ্ধিমান্ কুষক এই সার দিতে ধার্ত হয় না। যদি জমির সম্বর্জন **জাব্যাক হ**য়, তাহা হইলে ধাতুমিশ্রিত মাটির সংযোগ করা উচিত, কিন্তু পরী-**কার্থ জমির পার্থক্য সাধন করা বিধে**য়। **ইহা ভিন্ন আ**রও**অ**নেক বিষয়বিবেচ্য আছে। বদ্যপি ক্ষেত্রে স্থ্যমণি, শেয়ালকাঁটা, কান-চিড়ে প্রভৃতি গাছ জন্মে, তাহা হইলে দুরদর্শী ক্লযক অবশ্য জানিতে বে জমীতে দার দেওয়া আবশ্যক। দাল-গাম যদি গোলাকুতি না হইয়া জড়ান অড়ান শিকড়, অথবা অন্যপ্রকারের হয়, **অথবা এই রূপ অন্যান্য বি**ফুত ফশল উপ্রের হয়, তাহাহইলে ইহা সির করা यात्र, त्य गाँठित काँ हे निथिन दिस्ताह । এইরূপ স্থলে কর্দ্ম-ধাতু-মিশ্রিত মাটির **দংযোগ প্র**য়োজন, তাহাহইলে পূর্বকার দোব সমূহ বিনষ্ট হয়। জমিতে কেশে প্রভৃতি জঙ্গল জিমলে, ইহা প্রতীয়মান হইবে, যে ভূমিতে অন্ন আছে। জালন মাটি মাত্রেই গালিক (gallic) অমুথাকে। অম্প্রযুক্ত কোন কোন ভূমি অতিশয় অহুর্শরা হইয়া পড়ে। স্কট্লণ্ডের এক ক্ষেত্রের মাটি এমন আঁটিয়া গিয়াছিল, বে তাহার ছই সের মাটির মধ্যে আধসের তীত্র তৃঁতেমুক্ত অন্ন (vitrollic acid) **পাওয়া যায়। বেড্ফোর্ড দা**য়ারের এক ভূমি-তে ঐ রূপ অনেক পরিমাণে লৌহগর্ভ বস্ত (sulphate of iron) ছিল, কিন্তু ডিউক অফ্ বেড্ফোর্ড ঐ কেত্র সার প্রয়োগের

2

ষারা অভ্যুর্কর জমি করিয়া ভুলিয়াছিলেন।

এই প্রকার ভূমি মাত্রেরই ধাত্বংশ মৃত্তিকার

যারা উপকার সম্ভবে। কোন কোন

কর্দম জমিও ফস্কা থাকে, তাহাতে সার

দিয়া আবাদ করিলে থড় অধিক ও শদ্য

অব্ধ হয়; কর্দম ধাত্বংশ মৃত্তিকা ইহার ঔষধ

স্বরূপ। আর উক্তপ্রকার ভূমিতে একজাতি কীট অপর্যাপ্ত জন্মে, ধাত্বংশ মৃত্তিকার মারা তাহা নিরাক্বত হয়, এইটা এই
পদার্থের বিশেষ প্রাকৃতিক গুল। ফলতঃ

যাহাতে জমির আঁট হয়, তাহারই এই

ক্ষমতা আছে।

থড়ি। থড়ির গুণ প্রায়ই ধারংশ মৃত্তিকার মত, কিন্তু ইহাতে ধাতৃ-মিশ্রিত মাটির ভাগ অপেক্ষাকৃত অধিক। ইহাতে আটালিয়া মাটি অধিক শুক্ত ও নীরস করে, শুদ্ধ পাথরিয়া ধারংশ মৃত্তিকায় ততদূর ইইতে পারেনা। লোকে ঘাসের জমিতে ধারংশ মৃত্তিকার সার অপেক্ষা থড়ি অধিক ব্যবহার করিয়া থাকে। নীচ ও অপরিকার জমিতে ইহার ছারা বিশেষ উপ্কার জারিতা পাওয়া যায়, এবং ত্যাহাতে ধেফশল জন্মে তাহা অতি মধুর হয়।

থড়ি প্রায়ই থনি হইতে খুঁড়িয়া তুলে,
কিন্তু হার্টকোর্ডসায়রে চোঙ বসাইয়া
উঠায়। থড়ি থনন ব্যবসায়ীরা দলবন্ধ হইয়া ভ্রমণ করে, চোঙের চারিদিক্
বন্ধ করিয়া বসায়, স্তন্তের দারা সামান্য
মাটি অবলম্বনে বাণ্ডিল প্রিয়া উপরে
তুলে। উত্তম কর্দম মৃত্তিকায় থড়ির সারে
বিশেষ উপকার হয়। থড়ির সারে ভ্রমি

দ্ব হ ইতে লক্ষিত হইতে পারে। ইহার দারা আর এক বিশেষ উপকার হয়, যে ভূমিতে থড়ির দার পড়ে, সে ভূমিতে ঘাস জন্মে না। এসেক্স সারারের জনেক ভূমিতে যেখানে পূর্বের ভাগিদ বিস্তর ছিল, সারদেওয়ার পর সে সকল একেবারে সম্লে বিনষ্ট হইতে দেখা গিয়াছে। সেখানে যে থড়ি ব্যবহৃত হইয়া থাকে, তাহা

কোমল নহে, এমন কি অতি তীক্ষ নীহারেও দ্রবীভূত হয় না, সে সকল কুঠার

দারা থণ্ড থণ্ড করিয়া ছড়াইয়া দিতে হয়।
যে সকল থড়ি হস্তের দারা ভাঙ্গা যায়,
তাহা অপেক্ষা শক্ত থড়ি ভাল, এবং এই
থড়িগুলি অতিশয় ভক্র বর্ণ হয়। এ সকলও
ভূমির উপযোগিতা ও অনুপ্যোগিতা
বিবেচনা করিয়া ব্যবহার ক্রিতে হয়।

ক্রমশঃ

তাড়িত বাৰ্ত্তাবহ যন্ত্ৰ।

(টেলিগ্রাফ)

[পিতা ও প্রফুলবানা]

প্রফ্লবালা—বাবা, ও পাড়াতে এত গোলমাল কেন ? কালার শব্দও জনা যাচেটে। বোধ হয়, ঘোষালদের বাড়ীতে এই গোলমাল।

পিতা— তোমার সে কথা ভনে দরকার কি ? বই নিয়ে এথানে এস।

প্রফু—না,বাবা বলনা। স্থাগে ভনি শেষে পড়বো।

পিতা—রামরতন বাবুর মৃত্যুর থবর এসেছে।

প্রফু—দে কি বাবা! (৪ ৷ — ফ্রা্লের কি উপায় হবে!) কবে মরেছেন ? পিতা—কাল।

প্রফু—রামরতন বাবুত অনেক দূর-

দৈশে চ'কুরী করেন। কালকের থকর কেমন কঞে আজে এল ?

পিতা—তারে।

প্রফ্—আহা, ছোট ছেলেপিলেদের এখন কি উপায় হবে ! ওদের থাওয়া পরা কিরূপে চল্বে ! বুড়ো দিদি-মার ত সর্কানাশ ! ওদিগকে কে রক্ষা করবে !

পিতা-পরমেশ্বর।

প্রফ্—শুনেছি, তিনি দয়াময় ! এত ভালমান্তবের উপরে তবে এমন বিপদ হয় কেন ?

পিতা—মা, আমাদের মন কেবল এ

সংসারের ভাবেই ডুবে আছে। • সে

জগুই ঘটনার উপরের দিক্টা দেখেই

তার গুণাগুণের বিচার করে থাকি।

এ ঘটনার পশ্চাতে বে বিধাতার মঙ্গল

ইচ্ছা নাই, কে বলবে ? যাক—এখন বই থোল। আজ কি পড়তে হবে ?

প্রফ্—আজ পড়তে শুনতে আর ইচ্ছা নেই। তবে একটা বিষয় বুশ্তে এক্টু ইচ্ছা হচেচ।

পিতা-কি বিষয় বল না ?

প্রফ্—তারে কিরপে থবর আসে;—

থত শীঘ্র কেমন করে আসে;—এ সম্বন্ধে

যদি খুলে কিছু বল, তবে বুঝ্তে
পারি। সে দিন একটা বই পড়তে
পড়তে এ সম্বন্ধে কিছু কিছু বুঝ্তে
পেরেছি, কিন্তু পরিকার ভাবে বুঝ্তে
পারি নাই।

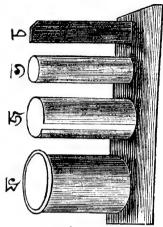
পিতা—তবে তাহাই শুন। আমার হথা আরভের পূর্বে ঠোমাকে, "ব্যা-টারি" বা তাড়িতাধার ভূ তাড়িত-চুম্বকের কথা কিছু বল্ব। তা না হলে, ভূমি "টেলিগ্রাফ,, বা তাড়িত-বার্তাবহ যজের কার্য্যপ্রণালী কিছুই বুঝ্তে পার্বে না।

প্রফু-তবে তাহাই বল।



পিতা — এই
পার্শের ১ম চিত্রটী
দেথ । ইহাকেই
"ব্যাটারি" বা
তাড়িতাধার বলে।
প্রাফু — চিত্রটী
দেথে ভাল বুঝা
গেলনা। কি কি

্ব স্বাধি কিন্তু কৰিছে ইহা তৈ-মারী তাহা পৃথক পৃথক করে দেখাও। ২য় চিত্র।



পিতা—তবে দ্বিতীয় চিত্রটী দেখ।
'ফ' একটী প্রস্তর বা কাচনির্শ্বিত পাত্র।
ইহাতে গন্ধক দ্রাবক আছে। 'জ' একটী
ফাঁকা ও মোটা নল। ইহা পারদ ও
দস্তা এই ছটী ধাতুর মিশ্রনে তৈয়ারী
হয়েছে। 'ভ' একটী অতি-ক্ষুদ্র-ছিদ্রবিশিষ্ট মাটার পাত্র। ইহাতে ঘবক্ষার
দ্রাবক আছে। "চ" একটী অঙ্গারক ধাতুদও। এখন বুর্তে পাল্লে, তাড়িতাধারের ভিতরে কি কি জিনিল্ল আছে?

প্রফু—বেশ বুঝ্তে পেরেছি।

পিতা—এই চার প্রকারের জিনিয় গুলি ক্রমে ক্রমে একটার ভিতরে আন্তটীকে রাখলে একটা পূর্ণ "তাড়িতাধার" হয়। এই দ্রাবক ও ধাতুগুলির পরস্পর ক্রিয়। প্রতিক্রিয়াতে ছই প্রকারের তাড়িত জ্বারে। দন্তার উপরে যে তাড়িত জ্বার্মা, তাহার নাম "নিগেটিভ্" বা বিয়োজক তাড়িত। আর অসারক ধাতুর উপরে

যাহা জন্মে, তাহার নাম "পজিটিভ্' বা দংঘোজক তাড়িত। এখন জাবার প্রথম চিত্রটী দেখ। দস্তা ও অঙ্গারকের দহিত একটী করে রেশমের স্থতা বেষ্টিত তামার তার সংযুক্ত আছে। যদি এই তার ঘটী যোগ ক'রে দেও, তবে "তাড়িতাধার" হ'তে তাড়িত স্রোত এগে এই তারের ভিতর দিয়ে তাড়িত অভ্যন্থানেও নেওয়া যেতে পারে। এই কথা গুলি ভাল ক'রে মনে রেখ; নতুবা টেলিপ্রাফের কিছুই বুন্তে পার্বে না।

প্রফু—এ গুলি এক রকম পরিষার বুন্তে পেরেছি। এখন "তাড়িত-চুম্ব-কের" কথা বল।

পিতা—"চুম্বক কাহাকে বলে, তাহা জানত ?

প্রফু—হাঁ, চুম্বক লোহকে টানিয়া নিজের দিকে আন্তে পারে।

৩য় চিত্র।

পিতা—তৃতীয় চিত্রটী
দেখ। "ক" সহজে বাঁকান
যায়, এরপ একটা লোহ
দণ্ড। ইহা একটা তামার
তারে বেষ্টিত। যদি এই
ভারের "থ" ও "গ" প্রাস্থ
একটা তাড়িতাধারের ছইটা
তারের সহিত যোগ ক'রে
দেও,তবেসহজে বুঝা যাবে,
এই তারের ভিতর দিয়াও
তাড়িত চলতে থাক্বে। আর
এই লোহদণ্ডটাও চুম্বকের
স্থাণ বি। ইহা প্রমাণের
জাস্য, যুদি ইহার নিকটে

পাবে, এই লোহদণ্ড ইহাকে সজোরে নিজের দিকে টান্ছে।

প্রফু—এই লোহদণ্ডটা কি তবে একেবারে চিরদিনের জন্ত চুম্বকের গুণ পাবে ?

পিতা—না। যে মুহুর্জে তাড়িতাধারের তারের গহিত ইহাদের যোগ ছাড়ায়ে দিবে, সেই মুহর্জেই তাড়িতের চলন বন্ধ হওয়াতে ইহার টান্বার শক্তিও চলে যাবে। মোট কথা, যতক্ষণ তাড়িত চলবে, ততক্ষণ ইহার এই গুণ থাক্বে। যদি এক সেকেও এই যোগ রাখ,তবে এক সেকেও এই গুণ থাক্বে। যদি তুই সেকেও রাখ,তবে তুই সেকেও বাখ,তবে তুই সেকেও বাখ,তবে তুই সেকেও বাখ,তবে তুই সেকেও থাক্বে ইত্যাদি। এই কথা গুলি ভাল ক'রে মনে রাঞ্বে।

প্রকৃ—ত∤ভিত চুম্বকের বিষয় বুঝেছি, এখন টেলিগ্রাফের বিষয়টা বুঝাও।

পিতা—কিরূপে উহা তোমাকে ভা**ল** করে বুঝাই, তাই ভাব্ছি^{*}।

প্রকৃ—কেন, তুমি পূর্কেই বলেছ, তাড়িতাধার ও তাড়িতচুম্বকের কথা ভাল ক'রে বুঝতে পালে টেলিগ্রাফ বুঝা সোজা হবে ৪

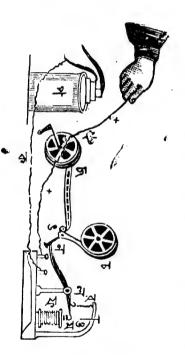
পিতা——আদ্ধ কাল আফিসে যে যক্ত ব্যবহৃত হয়, উহা খুব জটিল। উহার সবটা কাগজে আঁকিয়া বুকাবার চেটা কলে, বোধ হয়, বুক্তে পার্বে না।

এই লোহদ ওটাও চুম্বকের প্রফ্—তবে মোটামুটি বুঝাও।
তথ্য পাবে। ইহা প্রমাণের পিতা—তাই কর্ফো। এই যে চতুর্থ
ক্ষান্ত দেখ্ছ, উহা দারা মোটামুটি
একটা ছোট লোহখন ধর, তবে দেখতে কুম্বাটা বুশ্তে পার্বে।

প্রফু—চিত্রটী দেখে বোধ হচ্ছে, বুঝা খুব সোজা হবে।

পিতা—আমার কথায় মনোযোগ কর। এই টেলিগ্রাফ্বা তাড়িত-বার্তা-বহ মন্ত্রের জন্ম প্রধানতঃ তিন্টী বিষয় আবশ্রক—

৪র্থ চিত্র।



(১) মোটা ও দৃঢ় লোহার তার।

এই তার দন্তার আবরণে ঢাকা। ইহা

নারা ছটী দ্রস্থান সংযুক্ত করা হয়।

ভূমি গতবারে কলিকাতা যাওয়ার সময়ে

রাস্তাতে থামের উপরে যে তার দেখেছ,

উহা এই তার। কলিকাতার টেলিগ্রাফা

আফিস হ'তে এই তার অনেক দূর দূর সহরে চলে গেছে। এই তারের ভিতর দিয়াই তাড়িত যায়। পার্শ্বে চিত্রে "ক'' ও "থ'' চিহ্নিত যে ছটী তার দেখ ছ, উহাই এই তার। (২) তাড়িত তৈয়ারি করবার জন্মে একটী তাড়িতাধার। এই চিত্রে "প" পাত্রটীই এই তাড়িতাধার। (৩) "তাড়িত-চুম্বক"। "ফ" এই তাড়িত-চুম্বক। এই তাড়িত-চুম্বকের উপরে যে তামার তার আছে, তাহার হুই প্রাস্ত "ক''ও "থ'' তারের সহিত ভিন্ন ভিন্ন রূপে সংযুক্ত। এই কথাটা ঠিক করে মনে রেখ। চিত্রের দিকে ভাল করে তাকাও। "ম-ন" একটা লৌহদও। ইহার অগ্রভাগে "ম" এক খণ্ড কাঁচা লোহা সংযুক্ত আছে। এই দণ্ডটী "ল" স্থানে এরূপে বদান যে, সনায়াদে উঠিতে নামিতে পারে। "ন" ছানে একটা ভাল দীদ পেন্সিল বদান আছে। "র" একটা স্প্রিং। ইহাঞ দণ্ডটাকে উপরে টেনে উঠাতে পারে, একেবারে অনেকদূর উঠে না যায় প্রজন্ম "ও'' একটা সু আছে। "চ"ও "ছ" সুইটা চক্র। খুব লম্বা এক খণ্ড পুরু ও শক্ত কাগজ "চ" চক্র হতে এসে "ঙ" স্থানটী বেষ্টন করে, "ছ"চক্রে যুক্ত হয়েছে। "ছ" চক্রটী ঘুরালে কাগজ থানি চলতে থাকে। এ গুলি এমন ভাবে রাথা হয়েছে যে, এই "ম-ন" দণ্ডের "ন" প্রাস্তটা উপর দিকে উঠলে, অনায়াদে "ঙ" স্থানের কাগজে, লেগে দাস বসাতে পারে। এখন এই

তাড়িতবার্ত্তাবহ-যক্ষের নির্মাণ প্রণালীটা ভাল ক'রে বুঝতে পালে ?

প্রফু—বেশ বুঝতে পেরেছি । এত দোজা আগে জান্তেম না।

পিতা—এখন কিরপে ধবর পাঠান যায়, তা তোমাকে বুকাচ্ছি। এ স্থানে স্থার একটী কথা তোমাকে বলে রাথি। ইংরাজী ভিন্ন স্বস্থভাষাতে তারে থবর পাঠান যায় না। যাক্, তুমি যথন ইংরাজী জাননা, তথন তুমি থেমন ক'রে বুঝতে পার, তেমন করেই বুঝাচ্ছি।

প্রফু—আহা, ইংরাজী না শিথে কি থারাপই করেছি! এমন ভাল বিষয়টাও ঠিক ভাবে বুক্তে পালেম না! বাবা, এখন হতে ভূমি আমাকে ইংরাজী পড়াও, ইংরাজী শিথ্লে না জানি আরও কত ভাল বিষয় জানতে পার্তেম।

পিতা—আবার এই চিত্রটীর দিকে বুদ্ধিতে বোধ হয় সহজ বুঝতে পাচ্ছ, কাগজের পেন্সিলের দাগ বসে, তাহা হয় একটা শ্ন্য (•),ুনা হয় একটা ক্ষুদ্র রেখা মাত্র (-)। যদি এক দেকেণ্ড পেন্সিলটা কাগজে লেগে থাকে, তবে শ্ন্য (৽), ছই বা ততোৰিক সেকেণ্ড লেগে থাক্লে একটা রেথা পড়ে। এই শূন্য এবং রেখার সংখ্যা, ও আগে পরে বসানর ক্রম অনুসারে কতকঙলি ভিন্ন ভিন্ন অক্ষর তৈয়ারী কর। যেতে পারে। এই রূপে তৈরারি অক্ষরই টেলিগ্রাফ্ আফিসে ব্যবন্ধত হয়।

এখন মনে কর তোমাকে "মরণ" এই শন্দটা কলিকাতা হইতে ঢাকাতে পাঠা-তে হবে। "মরণ" এই শদ্টীতে তিনটি অক্ষর আছে, যথা "ম" "র" ও "ণ"। এই তিন্টীর স্থলে ক্রমে, (--) (- ---), (--) এই তিনটী চিহ্নিত অক্ষর বসান যেতে পারে। এখন আবার পূর্বের চিত্রটীর দিকে ভাকাও। মনে কর "প" 🖡 চিহ্নিত তাড়িতাধারটী কলিকাতার কোন টেলিগ্রাফ আফিদে আছে। আর এই তাড়িতচমক প্রভৃতি সহ "ট-ঠ" টেবিলটী ঢাকার টেলিগ্রাফ'আফিবে আছে। "ক-খ" তার ছটির "থ"তারটী কলিকাতার আফিদে টেলিগ্রাফ-শুপ্তারবাবু হাতেকরে আছেন। ্রথন থবরটী পাঠাতে,হবে, তথন মাষ্টার্ বাবু তাড়ি¹বাধারের অঙ্গারক দও্ডির সঙ্গে যে তারটী সংযুক্ত আছে, তাহাতে নিজের হাতের তারটা যোগ ক'রে ছই সেকও রাথ লেন। পূর্বের পূর্বের তোমাকে যাহা বুঝায়ৈছি, তাতে বোধ হয়, বুঝুতে পাচ্ছ, তারটী যোগ করা মাত্রই তাড়িত প্রবাহ তাড়িতাধার হতে ঐ তারের ভিতর দিয়া ঢাকার আফিসের তাড়িত-চথকের উপ-রের তারে চল্তে লাগ্লো। তাহাতে উহা চম্বকের গুণ পেয়ে, নিকটবর্তী "ম" লোহথণ্ডকে জোরে টেনে নিজের দিকে আনলো। উহাতে "ম-ন" লোহ দণ্ড-টীর "ন" প্রাস্ত উপরে উঠাতে, পেন্সিলটী কাগজে লাগ্লো। কাগজের গায়ে একটী ক্ষুদ্র রেখা (—) বদে গেল। আবার মাপ্তার বাবু তারের যোগটী ধ্লে এক

সেকেণ্ড অপেক্ষা কল্লেন। ইহাতে তাড়িত প্রবাহ থেমে যাওয়াতে, তাড়িত-চুম্বকের টান্বার শক্তিও চলে গেল। স্ত্রাং "ম" প্রান্থটীকে "র" প্র্যাং উপরে টেনে উঠালো, কাজেই পেলিলটীও নীচে নেবে আদ্লো। আবার মাষ্টার বাবু পূর্ববৎ কাজ কল্লেন,ইহাতে কাগজে আর একটা রেথা (—) বলে গেল। এইরূপ ক্রেমে ক্রমে ছটা রেথা বলে যাওয়াতে, ঢাকার মাষ্টার বাবু "ম" অক্ষরটী বুঝে নিলেন। এই প্রক্রিয়াতে "র" ও "৭" পাঠান গেল। ঢাকার মাষ্টার বাবুও "মরণ" শক্টী বুঝে নিলেন।

প্রফু— (উচ্চহান্তে) । বাহবা !!

ক্রমন আমোলজ্ঞাক ট্র বেশ বুঝ্যা
পেরেছি। বাবা এ বিষয়ে গুনারও কিছু
বল, যত শুনি, ততই শুন্তে ইচ্ছে হচ্ছে।

পিতা—না, মা, আজ আর অধিক বল্তে পার্বো না, আমার দরকার আছে। ঐ ঘোষালদের বাড়ী থেতে হবে। আর ছই একটী প্রয়োজনীয় কথা বলে, শেষ কর্মো।

প্রফু—যত পার, তত বল। এমন স্থন্দর বিষয় আগে কেন আমাকে বুঝাও নাই ? পিতা—এথন মনোথোগ কর। প্রত্যেক অক্ষরটী পাঠান শেষ হলেই,
মান্টার বাবুকে ছই তিন দেকও থেমে
থাক্তে হয়; কারণ কাগজে যে দাগ
বদে, তাহাতে অক্ষরটী পরিষ্কার করে
বুঝাবার জন্মে, প্রতি ছইটী অক্ষরের মধ্যে
কাঁক রাথতে হয়। নতুবা অক্ষরগুলি
কেবল চিহ্নের সমষ্টি ব'লে গোল হোয়ে
যেতে পারে। আর, দাগ বদ্তে আরম্ভ
কল্লে, ঢাকার মান্টার বাবু "ছ" চক্রটীকে
ঘুরাতে থাকেন, ইহাতে কাগজ চলাতে
ক্রমে দাগ বদ্বার স্থবিধা হয়। আজ
এই পর্যান্ত।

প্রফু—যিনি এই যন্ত্রটী করেছেন, তাঁকে ধন্তবাদ। তাঁর অন্তুত ক্ষমতা। তাঁকে কোটি কোটি নমস্কার!

পিতা—মা, মান্ত্য কিছুই নৃতন তৈয়ারি কর্ত্তে পারে না। মান্ত্য বিধাতারই স্থ জিনিষ নিয়ে, মিলায়ে মিশায়ে একটা কিছু করে নেয়। তাহারই শক্তি এই জিনিষ গুলিতে ভিন্ন ভিন্ন ভাবে কার্য্য করে এই অন্তুত ক্রিয়া কচ্ছে। মা, সর্বাপ্তে ভাহাকেই ভক্তিভাৱে নমন্ধার কর। বল,—

"যা দেবী সর্কভূতেরু শব্জিরপেণ সংস্থিতা। নমস্তব্যৈ নমস্তব্যৈ নমসুবৈয়া নমোনমঃ।"

विश्वाला श्रवहन।

মা।

১। মা গুণে ঝি, বাপ গুণে পো। ২। মা নয় যে তাড়ুয়ে দেব,

বাপ নয় যে ভাত দেব না, পরেষ মেয়ে রাখি কোথায়? ও। মা পায় না কাঁথা সেলাই করিবার স্থত, বেটার পায়ে দেথ গিয়ে চৌন্দ সিকার জুত।

৪। মা পোঁটা চুক্ষণী (থার ভাড়া ভেনে)
 ছেলের নাম চক্ষন বিলাদ।

। মা ম'লে বাবা তালুই,
 ছেলে হয় বোনের বাউই।

৬। মাবলেছেন মাথা ধরেছে।

। মা বিউলো না, বিউলো মাদী,
 ঝাল থেয়ে মরে পাড়া পড়দী।

৮। মাকড় মারলে ধোকড় হয়।

२। योकान कन।

১ • । মাগে! ভবানী, আপনায় আপনি।

১১। মাঙ্নার উপর টাক্না।

১২। মাঙুরজের জীতবৃভাত থায় না।

১৩। মাছ ধরতে গেলে গায়ে কাদা লাগে।

১৪। মাছধুইলে মিটে, মাংস ধুইলে সিটে।

১৫। মাছ মরেছে বিজাল কাঁদে,

শাস্ত করে বকে। বেঙের শোকে সাঁতার পাণি হেরি সাপের চোকে।

১৬। মাছের মার পুত্রশোক।

১৭। মাজ ঘদ কর ক্ষয়, কাল কি কথন গোর হয় ?

১৮। माजित्र छन।

२ । मार्क्ट मात्रा यात्र ।

২•। মাঠে ধান, ভাত চড়াও।

২১। মাতঙ্গ পড়িলে দয়ে, পতক্ষে প্রহার করে। ২২। মাতার সমান নাহি শরীর পোষিকা, ভার্যার সমান নাই শরীর ভোষিকা, বিভার সমান নাই শরীর ভূষিকা, চিক্তার সমান নাই শরীর শোষিকা।

২০। মাতা শক্ত পিতা বৈরী যেন বালঃ ন পাঠিতঃ।

২৪। মাতৃ দোষে শিশু নষ্ট।

২৫। মাথা নাই তার মাথা ব্যাথা।

২৬। মাথা মুজিয়ে ঘোল ঢালা।

২৭। মাথার ঘায় কুকুর পাগল।

२৮। माञ्चम वफ शलमात ठीक्त।

২৯। মানুধ বড় মান,

তার ছেঁড়া ছটো কান।

৩০। মানের গোড়ায় ছাই।

ু । মুমার ভীতে বৈগুণ পোজা।

৩২। মা^মার ক্ষেতে বিউলো গাই, সেই সম্পর্কে মামাতো ভাই।

৩৩। মামার শালা পিলের ভাই, তার সঙ্গে সম্পর্ক নাই।

৩৪। মায়ে মারা বাপে থেদান।

৩৪। মায়ের পেটে ভাত নাইকো, বৌয়ের চম্রহার।

৩৬। মার গলায় দিয়ে দড়ী, বৌকে পরায় ঢাকাই দাড়ী।

৩৭। মার চেয়ে দরদী যে, তারে বলি ডাইন।

৩৮। মার পেটের ভাই, কোথায় গেলে পাই ?

৩৯। মা লক্ষী ঘরে এস, আলক্ষী দূর হও।

পণ্যদ্রব্যের মূল্য।

সচরাচর ব্যবহারোপ্যোগী প্রয়োজ-**দ্রব্যেরই আদর হই**য়া থাকে। **আবিশ্রকতা ও উপ**যোগিতার তারতম্য হেতু সামগ্রীর মূল্যেরও তারতম্য হইয়া থাকে। কিন্তু ব্যবহারোপযোগী বসন-ভূষণ ও জীবন-সম্বল শস্যাদির মূল্য যত ক্রিন অধিক হউক না, "স্থের" সামগ্রীর মুল্যের সহিত তাহার তুলনাই হইতে পারে না। বিনিময়ের স্ববিধা না থাকিলে স্থা-রোপ্যের মূল্য কি ? মুক্তা ভক্তি-জাত ত্রণ মাত্র। হীরক মুদঙ্গারের বিকার বা সামান্ত উপল খণ্ড অন্যান্ত মণি ও মৃত্তিকা ও ধাতবিশেষের সংশিষ্ট রাসায়নিক বিকার মাত্র। হীরক স্কাপেকা অপদার্থ, উজ্জনতা ব্যতীত ইহার অপর কোনওত্দর্থর গুণ আছে কি না বলা যায় না; তথাপি ইহার/নূল্য এত অধিক যে ভনিলে বিন্মিত ইইতে হয়। একটা কুকুর ৫ হাজার টাকায়, একটা ঘোটক ১০ হাজার টাকায়, ছবি লক্ষ টাকায় বিক্রম হইবার কথা ভনিয়াছি, তথাপি এগুলি কেবল "সথের" ট্রবা নহে, আংশিক ব্যবহারেও আসিতে পারে। কিন্তু "বিশুদ্ধ সথের" সামগ্রীর জান্য প্রভৃত অর্থব্যয়ের উদ্দেশ্য সহজে বোধগম্য হয় না।

কবিবর দেক্সপিয়ারের বার্টীর বক্ষের কাষ্ঠ টুকরা টুকরা করিয়া অনেক দামে বিক্রীত হয়। তিনি যে কেদেরায় বসি-তেন,তাহা নুতন নুতন রূপ পরিবর্ত্ত করিয়া কত হাজার টাকায় বিক্রয় হইয়াছে। ১৮১৬ থ ষ্টাব্দে সর আইজাক নিউটনের একটী দস্ত ৭৩০সাত শত ত্রিশ পাউণ্ডে(প্রায় দেড় হাজার টাকা) বিক্রয় হইয়াছিল। ক্রেতা একজন সম্ভ্রান্ত ধনী, নত্বা এরপ ''থেয়াল' হইবে কেন ৭ তিনি দভটিকে অঙ্গুরীয়ের উপর বসাইয়া অঙ্গুলিতে ধারণ করিতেন। নেপোলিয়ন ্বোনাপার্ট "আইলা" যুদ্ধে একটী টুপী পরিয়াছিলেন, মেই টুপীটী ১৮৩৫ **থ** ষ্টাব্দে পারিমে ১৯০০ ফাঙ্কে বিক্রয় হইয়াছিল। পরিশেষে ইহা ৫০০ ফাঙ্কে আবার বিক্রয় হয়। শেষোক্ত বিক্রয়ের দিবদে ৩২ জন ক্রেতা একবারে উক্ত মল্য ডাকিয়া উঠে। প্রসিদ্ধ ষ্টার্ণের একটা প্রচলা লণ্ডন নগরে প্রকাশ্য নিলামে ছই শত গিনিতে প্রোয় ৩ হাজার টাকা) বিক্রয় হয়।ইংরাজ-রাজ প্রথম চাল দের প্রাণদণ্ড হয়। তিনি মৃত্যাসময়ে ফাঁসী কাষ্টে উঠিয়া যে প্রার্থনা পুস্তক থানি গ্রহণ করিয়াছিলেন, সে থানি খ্ষ্টাব্দ ১৮২০ সালে এক ণত গিনিতে (প্রায় দেড়হাজার টাকায়)বিক্রয় হইয়াছিল।

নৃতন সংবাদ।

১। হরিদারের স্বাস্থ্যোন্নতির জন্ত বলরামপুরের মহারাণী ২০,০০% টাকা দান করিয়াছেন।

 ২। মহারাণী বিক্টোরিয়ার বয়স
 ২৪ বৎসর হইল। ইহার নিদর্শন-স্বরপ
 তিনি টাকশালে নৃতন টাকা মুদ্রিত করা-ইয়া গত ৩০০০ এপ্রেল ৭৪ জন ভিথারীও ৭৪ জন ভিথারিণীকে বিতরণ করিয়াছেন।
৩। এ বৎসরের বি, এ, পরীক্ষায়
বেখ্ন কলেজ হইতে শশিবালা বন্দ্যো,
এলেন চন্দ্র ও স্থারবালা ঘোষ উত্তীর্ণ
হইয়াছেন। প্রবেশিকা পরীক্ষায় সরলা
সেন ১ম ও প্রমদা দেব ২য় বিভাগে
উত্তীর্ণ হইয়াছেন।

वाया-त्रामा।

বসন্ত-সুহাদ।

জগতে এসেছ যদি দিন কত যাও থেকে, জুড়াব দগধ চিত অই হাসি-মুখ দেখে। ১ পাগল বিভল হিয়া হেরি ও মধুর হাসি, পোরে না মনের আশা যত দেখি স্থথে ভাসি ! ২ মন জানে প্রাণ জানে জানেন অস্তর্যামী-—ভূমি তো জান না ভাই! কত ভাল বাসি আমি ! ৩ দেহের সন্তাপ জালা মরমের "হায় হায়'' অই মুখ চেয়ে চেয়ে ভূলে গেছি সমুদায় ! ৪ তোমারি মলয়া বা'য় পেয়েছি নবীন প্রাণ, গড়িছে ভগন ফদি তোমারি বিহগ-তান ! ৫ তুমিই নবীন ভাবে ভরিছ আমার ধরা, মরম মরম-তলে কি যেন অমিয়া ভরা! ৬ তোমার ত্রিদিব স্লেহে জাগে নিতি স্থ আশা, কেমন দেবৰ তব, বলিতে মিলে না ভাষা ! ৭ মনে দাধ হয় তাই, हित फिन श्रुत दाथि, ও মুখে নয়ন রেখে নিমেষ ভুলিয়া থাকি ! ৮

আমার মাথার কিরে দিন কত থেকে যাও, এমনি নীর্দ হিয়ে সরস করিয়া দাও! ৯ অথবা--মিছে মোর সাধাসাধি মিছে বুঝি ডাকাডাকি, অমরপুরের তুমি মরদেশে রবে নাকি ? ১০ বাতাদে আতর দিতে. **শাজাতে ফুলের মেলা,** তোমারে নন্দনবনে ডাকে বুঝি দিক্বালা ? ১১ নেথাও রেশছে সবে শীতের কুহেলি মেশে, জাগিনা উঠিবে পুনঃ ও অমিয়া হাদি দেখে ? ১২ -তবে কি বলিব মিছে এদ গিয়ে, সুখে থেক; গরিবের ভাল বাসা, ভাল বেলে মনে রেথ।১৩ বাহিরে আদিবে গ্রীম তপনে তাপিবে ভূমি, ভিতরে জাগিও মোর, সোণার বদস্ত! তুমি। ১৪ এমনি মলয়। ব'বে, এমনি ফুটবে ফুল, উথলিবে খ্যাম ছটা, গাহিবে পাপিয়া কুল! ১৫ প্রীতির জগৎ ভরা অনস্ত বদন্ত রবে, অমর এ মর প্রাণ, সে আমার কবে হবে ? ১৬ জীপ্রিয়-প্রসঙ্গ-রচয়িনী।

শোকার্তা অবলার খেদ।

ভূবন হইয়া হারা ভূবনেতে বাস। এ ভুবনে আর কিছু নাহি অভিলাষ। হার হার কোথা গেলে পাইব ভুবন। पूर्न आगात हिल जीवत्नत धन॥ রূপে গুণে ধনে মানে কে আছে তেমন। নিলাকণ বিধি হরে নিল সে রতন। আশীর্কাদ করি আর ফেটে যায় প্রাণ। সৈইরূপ ধ্যান যোগে হয় অধিষ্ঠান॥ প্রাণের ভূবন সে যে প্রাণের ভূবন।* ভূবন বিহনে আমি রেখেছি জীবন। সোনার ভুবন দে যে সোনার ভুবন। ভুবন বিহনে আমি হতেছি দাহন॥১ হালিসহরেতে গেলে দেখিতে পাব না। সত্য নহে এই কথা কানে শুনিব না॥ বিনা মেঘে বজাঘাত হইল পতন। ধরায় পড়িল দেহ হয়ে অচেতন ॥ ৰিলাকণ কথা ভনাইগা ঠেই জন পাষাণে <mark>গীঠি</mark>ত বুঝি তাহার জী*বু*ন ॥ चित्र ভেজে কেন নাহি রাথিল সে দেহ। প্রাণ ভরে দেথিতাম করিতাম স্লেহ॥২ কাঁদি আর ভাবি পাছে অমঙ্গল হয়। চকু নাহি শোনে কথা বারিধার। বয়॥ বুকে পিঠে ছটী বস্তু ছিল সর্বাক্ষণ। পিঠভেকে নিয়ে গেল হুরস্ত শমন॥ সমুদ্রের মাঝে ছিল বিজ্ঞার জাহাজ। পীড়া সুণ ধরে তার নষ্ট করে মাজ। কোন রূপে যোড়া দিয়ে রেখেছিল ঘরে। কাল দৃত গোপনেতে নিল চুরি করে ॥৩ চোরের কে সাজা দেবে ভাবিয়ে না পাই। জগদীশ তব কোটে বিচার কি নাই। প্রাণ মন জলে গেল বলি আমি কারে। ওছে নাথ দেখা দেহ জানাই তোমারে॥ সর্কান্ত উঠিছে পুড়ে কেবা দেবে জল। উঠিতে পারিনে দেহ হইল তুর্বল ॥

 প্রথম তথকের শেব ৪ লাইন প্রত্যেক তথকের শেবে পঞ্জিতে ছইবে।

তুলিবার চেষ্টা করি ভোলে না যে মন। ভুবন যে করিতেছে প্রাণ আকর্ষণ ॥৪ যে যাতনা পাইতেছি কি জানিবে পরে। যথন না জানিলেন সেই পরাৎপরে॥ পিঠি পিঠি হুই জন ছোট সে স্বামার। তবে কেন আগে গেল একি অবিচার॥ যোড় ভেঙ্গে নিয়ে গেল কোন ছুরাচার। শাপ দিলে শাপ কিরে লাগে না তাহার॥ ছয় মাদ দেখি নাই। মরি দেই থেদে। দিবা নিশি প্রাণ মন উঠিতেছে কেঁদে ॥৫ যমেরে পাইলে দেখা জিজ্ঞানি তাহায়। আমার সে ভুবনেরে রেখেছে কোথায়॥ কেবা তার মাথা খোঁটে যুমিবার আগে। বিজন করিতে তার কেবা রাত্রি জ্বাগে॥ কত হিম লাগিতেছে ভুবনের গায়। কত জল লাগিতেছে সে সোনার পায়॥ রাগে ছঃথে থেদে আমি করি হায় হায় :৬ কেন নাহি ভূবনেরে দেখালে আমায়॥ কথন না ছাড়িতাম রাথিতাম ধরে। জোর করিতাম আমি যমের উপরে॥ কে গলালে সেই দেহ ধন্য সেই জন। একে বারে গেল গলে মাথন যেমন॥ এজনমে আর নাহি পাইব ভুবন। ভেবে দেহ ক্ষীণ হল ঝরে তুনয়ন। এক দক্ষে বেড়াতাম মার পিট'কত। করিতাম এক দক্ষে গল্প অবিরত ॥৭ আমার হইলে পীড়া তার পীড়া হ'ত। তার পীড়া তনে কানে আমি শ্যাগত। তবে কেন একা গেল ফেলিয়া আমায়। কখন সে যায় নাই আছে গো কোথায়॥ ভুবন যে ছিল আমার নয়নের তারা। তারী হারা হয়ে আর নাহি দেখি তারা॥ কেমনে ভুলিব আমি সে যে ছোট ভাই। ওরে রে মরণ তোর মরণ কি নাই 🏽৮ (ক্ৰমশঃ)

বামাবোধিনী পত্রিকা।

BAMABODHINI PATRIKA.

''कन्याप्येवं पालनीया शिक्षणौयातियत्नतः"

কন্তাকে পালন করিবেক ও যত্নের সহিত শিক্ষা দিবেক।

085

সংখ্যা।

रेकार्छ-- ५०००-- जून ५৮৯०।

৫ম কল্প।

২য় ভাগ।

সাময়িক প্রসঙ্গ।

যুবরাজের বিবাহ সম্বশ্ধ—
বর্ত্তমান যুবরাজ প্রিক্স জর্জ ডিউক অব
ইয়র্কের টেক রাজকুমারী প্রিক্সেদ মের
সহিত বিবাহ দম্বদ্ধ স্থির হইয়া গিয়াছে।
তভ বিবাহ নির্কিন্নে সম্পন্ন হউক, ঈশ্বরের
নিকট আমাদের এই প্রার্থনা।

লোকসংখ্যা গণনা—১৮৯১

সালের গণনা পুস্তকাকারে প্রকাশিত

ইইয়াছে। ১৮৮১ সালে বঙ্গদেশের অধিবাসীর সংখ্যা ৭ কোটি ৪০ লক্ষ ছিল,
১৮৯১ সালে ৭ কোটি ৯০ লক্ষ ইইয়াছে

অর্থাৎ ১০ বৎসরে ৫০ লক্ষ লোক অথবা
শতকরা ৭.৪ বৃদ্ধি ইইয়াছে। হিন্দু শতকরা
৫, মুসলমান প্রায় ১০, বৌদ্ধ ২৬, এবং
ধুষ্টান ৫০ বৃদ্ধি ইইয়াছে।

বিশ্বিদ্যালয় —এ বৎসর প্রবে- জ্লন্ত একটা শ্রেণী থূলিরাছে এবং বে'
শিকা পরীক্ষার ৩০ জন বালিকা উত্তীর্ণ ছাত্রেরা ভর্ডি হইয়াছে, অর্লিন মধ্যে

হইয়াছে, তন্মধ্যে ১ম বিভাগে ১৬, দিতীরে ৮, ও তৃতীয়ে ৬ জন।

এফ,এ, পরীক্ষায় ভিন্ন ভিন্ন বিভা**গে** উত্তীর্ণাদিগের নাম :— বেখন কলেজ—বার্খা ডি মেলো ২য়

> ফ্রান্সিস্ক ডি সাউজ। ৩র পরোজমালা প্রামাণিক ...

প্রভাবতী রায় প্রেমকুম্বম সেন

লোরেটে:—আলিস কাণ্টওয়েল

আইডা ডিক্স

লামাটিনিয়ার—এমি ই ওয়াইট ২ নাইনিতাল বা, বি—কেট ই সাউদন প্রাইবেট—এমিলি ক্লেয়ার হানা ১ম

মূক ও বধিরদিগের শিক্ষা—

দিটী কলেন্দ্রে এই ত্র্ভাগাদিগের শিক্ষার

দ্বন্ত একটী শ্রেণী থ্লিয়াছে এবং বেং
ভাতেরা ভর্তি হইয়াছে, অ্রদিন মধ্যে

তাহাদের বেশ উন্নতি হইতেছে। তাহা-দিগকে ছবি আঁকা, লেখা পড়া ও কথা কহা শিক্ষা দেওয়া হয়।

স্থী মাতোল—গত বৎসর ডবলিন সহরে ১৫০০০ মাতাল ধত হয়, তম্মধ্যে ৫০০০ জীলোক! ভগবান্ এ বিলাতী রোগ হইতে এদেশকে রক্ষা করুন্।

চিকাগে প্রদর্শনী—গত ১লা মে প্রেলিডেট ক্লিবল্যাও মহাসমারোহে এই বিশ্বপ্রদর্শনী খুলিয়াছেন। প্রার-জিক বক্তৃতার পর যেমন তিনি একটী বোদাম টিপিয়াছেন, অমনি চারিদিকে কল ঘ্রিতে ও ফোয়ারা হইতে জল উঠিতে লাগিল, অমনি চারিদিকে তোপ-ধ্বনি, ঘটানাদ ও সমাগত লোকদিগের মহানন্দরোলে আকাশ প্রতিধ্বনিত হইল।

স্ত্রী দৈত্য ও বামন—অট্রেলিয়ার ক্ইসটাউন হইতে ছইটা অভুত প্রীলোক চিকাগো প্রদর্শনীতে প্রদর্শিত হইতে ঘাইতেছেন—একটা উচ্চে ৫০০ হাত ও তাহার শরীরের ওজন ৩॥ মণ, বয়স ১৬ বৎসর মাত্র; আর একটী উচ্চে ২ হাত, তাহার শরীরের ওজন ১৫ সের, বয়স ২১ বৎসর।

থীকরমণী--কোনও ইংরাজ সম্প্রতি গ্রীশ দেশ দর্শন করিয়া তত্ত্তা রাস্তা ঘাটে খ্রীলোকদিগকে না দেখিয়া তাহা-দিগকে "অসভা" অবহাপন্ন বলিয়াছেন। আর্ বলেন ব্যায়াম ও মুক্ত বায়ুদেবন অভাবে ইহারা সচরাচর স্থলকায় হইয়া থাকে, কিন্তু তুরুকদিগের ভায় গ্রীকেরাও এইরপ খ্রীলোককেই অধিক স্বন্দরী বোধ করে। স্থন্দরী গ্রীক রমণীর চিত্র এই-রূপঃ—"থর্কাকৃতি, স্থল ও বলিষ্ঠা, মুখ-কান্তি কোমল ও পাণ্ডুবর্ণ, কুফ্টকেশ, স্থব্দর চক্ষু, স্থগঠিত মুখনতল।" পল্লীগ্রামস্থ গ্রীকনারীগণ মুক্তভাবে বাহিরে বিচরণ করে ও নানাপ্রকার শ্রমসাধা কার্যা করে। তবে অপরিচিত লোক দেখিলে তাহারা বঙ্গে মুখ আরুত করে।

আদর্শ হিন্দুরমণী।

শ্বীশিক্ষার প্রথমাবস্থায় যে সকল বাধা বিপত্তি ঘটিয়াছিল, ক্রমশঃ তাহার তিরো-ধান হইয়াছে। এখন ক্রমে ক্রমে ইহার প্রফুল ফলিতেছে দেথিয়া আমরা পরমা-নন্দ লাভ করিতেছি। আজি তাহারই একটা দৃঠান্ত লইয়া আমরা উপস্থিত।

প্রায়ুক্ত ভারতচন্দ্র ভট্টাচার্য্য নামক

এক ব্যক্তি ক্ষ্লের পণ্ডিত। মুক্তকেশী
নামে তাহার এক কন্সা জন্মে। বি, এ,
উপাধিধারী বাবু শরচক্র চৌধুরী নামক
এক যুবকের সঙ্গে তাহার পরিণয় হইয়াছিল। সেই মুক্তকেশী দেবীর এক শত
চল্লিশ পৃষ্ঠা পরিমিত এক জীবন-চরিত
প্রকাশিত হইয়াছে। এই পুস্তকথানি

পাঠ করিলে "মৃক্তকেশী" দেবী হইরা মানবকুলে জন্ম গ্রহণ করিয়াছিলেন বোধ হয়। ছঃথের বিষয় মৃকুল সম্পূর্ণরূপে প্রক্টিত হইতে না হইতে কালদশনে চর্কিত হইরাছে, ১৭ বৎসর বয়ঃক্রমে তিনি ইহলীলা সম্বরণ করিয়াছেন।

শ্রীমতী মুক্তকেশী—শিক্ষিতা, বিনীতা, অশেষগুণে গুণবতী, বিল্লাবতী, ও পতিব্ৰতা সতী। থিনি রীতিমত স্থাশিক্ষিতা হই-য়াও,রন্ধনাদি হইতে আরম্ভ করিয়া তাবৎ কার্য্যে—গুরূপদেশ প্রতি-গহস্থানীর পাননে—ভ্রাতৃত্বেহে—পিতৃ-মাতৃ ভক্তিতে --স্বামি-ভশ্রুষা ইত্যাদি বিষয়ে কথনই পরাত্ম্থ হইতেন না; নম্রতা, শিক্ষা-শক্তি, শ্রানুরাগ, নারীর ভূষণ স্বরূপ লজ্জাশীলতা,--বাঁহার স্বভাবসিদ্ধ গুণ;--ধিনি রীতিমত যথার্থ হিন্দুভাবে শিক্ষিতা ও উদরতায় জড়িত; — সেই দেবীর জীবনী ক্ষুদু হইলেও কেনই না বর্ত্তমান কামিনী-কুলের অনুকরণীয় হইবে ? হিন্দু-রমণীগণ তাঁহাকে আদর্শ-স্থলে গ্রহণ করিয়া শিক্ষাপথের পথিকা হইলে সমাজের দর্কাঙ্গীন শ্রীরৃদ্ধি হইতে পারে।

১২৭৮ সালের ২০শে চৈত্র মুক্তকেশী ভূমিষ্ঠা হন। যথন তাঁহার সাত বৎসর বরস, তথন তাঁহার পিতামহীর মৃত্যু হইলে তিনি পিতার স্নেহ-যত্নে প্রতিপালিত হইতে লাগিলেন; কেননা, তথন ছাঁহার মাতার আর একটা সন্তান জ্বানে। এই অবসরে পিতা তাঁহাকে সংস্কৃত শ্রোক ও

বাঙ্গালা কবিতা শিথাইতেন। ইহাতেই শিক্ষার প্রথম স্থযোগ ঘটে। পিতৃদেবের দক্ষে মুক্তকেশী বিত্যালয়ে শিক্ষার্থে গতি-বিধি করিতে আরম্ভ করিলেন। একা-मन वर्ष वश्रम (১२৮२ गाल) **आ**हेमादि পরীক্ষায় উত্তীর্ণ হইয়া ছুই বৎসর তিন টাকা করিয়া মাদিক বৃত্তি পান। আদাম বিভাগের বিছ্যালয় সমূহের তথাবধায়ক উইল্যন ও নক্সওয়াইট সাহেব ঐ বালিকার বিভাবতার ভূয়দী স্থ্যাতি করেন। এই বয়দেই বঙ্গ-সাহিত্যশাস্ত্রে मुक्करकभीत रवाधाधिकात अन्त्रियाष्ट्रिल। এই বয়সেই তিনি সংস্কৃত মুগ্ধবোধ+ ব্যাকরণের ধাতৃ ভিন্ন প্রায় সকল অংশই পাঠ করিয়া ফেলেন। কেবল বিছা-শিক্ষায় কেন-স্বভাব-চরিত্রেও তিনি স্ব-শ্রেণীর গণনীয়া। কেহ কথনও তাঁহাকে কলহ করিতে দেখেন নাই। স্বভাব গুণে তিনি প্রাচীনা পুরস্কীগণেরও সন্মান-ভাজন হইয়াছিলেন। শৈশব হইতেই তিনি মহাভারত ও রামায়ণ পাঠে অমু-রাগিণী ছিলেন। প্রাইনারি পরীক্ষায় প্রাপ্ত বৃত্তির নির্দিষ্ট কাল অতীত হইয়া গেলে, তিনি বাড়ীতে থাকিয়া সংস্কৃত শিক্ষা করিতে লাগিলেন।

দ্বাদশ বর্ধে মুক্তকেশীর বিবাহ হয়। যে বরের সঙ্গে তাঁহার বিবাহের প্রস্তাব হয়, তিনি পুঁটীয়ার মহারাণী শরৎস্পারী দেবীর প্রতিপালিত। স্বতরাং কৃতজ্বতা-পরারণ সেই পাত্র, পালনকর্ত্তীর আন্তেশ অপেকা করিতে লাগিলেন। ুইতিমধ্যে

ক্যাদাতা অধীর ইইয়া পাত্রাস্তরের অমু-শ্বানোদ্যত হন। কন্তা দুমুমুমীর ভাষ মনে মনে সেই পাত্রকেই পতিতে বর্ণ করিয়াছিলেন। বরণ করিবার পূর্কেই তিনি ভাবী স্বামীর বিদ্যা ও ধর্ম বিষয়ে তাঁহার গুণের কথা শুনিতে পাইয়া-ছিলেন। শিলচরের ডিষ্ট্রীক্ট কমিশনর নকৃষ ওয়াইট সাহেব, বিবাহ-সময়ে এই-রূপ পত্র লেখেন. ''আমি বিদ্যালয়ে আপনার তনয়াকে সন্দর্শন করিয়াছি-লাম। বালিক। মৎপ্রদক্ত প্রশ্নের যে মত্ত্তর করিয়াছিল, তাহাতে দে আপন ষ্মপেক্ষা অধিক-বয়ন্ধ বালক হইতেও বুদ্ধি-সংশে যে উৎকৃষ্ট, তাহার পরিচয় পাইয়াছি।

মুক্তকেশীর জীবনচরিতে তাঁহার **"প্রাণেশ্বর"** শরচ্চন্দ্রের বিষয় কিছু না त्रलिल, এই জीवनी अमुल् इहेरव মার স্মামাদেরও কর্ত্তব্য বাকী থাকিবে. ভাই কিছু লিখিতেছি। তিনি প্রথ-মত: বিবাহ করিবেন না, স্থির করিয়া ৱাথিয়াছিলেন। তৎপরে কুত্নিশ্চয় হইবার নিমিত্ত অনেকগুলি এছ অধ্যয়ন করেন। বিবাহের প্রস্তাব উপস্থিত হইলে, তিনি পুস্তক পড়িয়া সিদ্ধান্ত করেন, অপরিনীত পুরুষ অপূর্ণ। তিনি এক জন গৃহী সন্ন্যাসী ছিলেন। তিনি মুক্তকেশীর পাণি এইণের পরুখভরকে লেখেন,—

্ "এখন আনার প্রধান ব্রত শ্রীমতীর শিক্ষা সভাবিঃ। আশানি এ বাবং তাঁহার শিক্ষার জক্ত বে বন্ধ করিয়াছেন, আমার দোবে আপনার সে বন্ধ বিফল না হয়, ইহাই আমার একাস্ত ইচ্ছা। বাঙ্গালার বালিকা অল্প বয়সে বিবাহিত হইয়া গৃহিণী ও সন্তানবতী হয়, এজনা তাহার শিক্ষা হইতে পারে না। আধুনিক সংস্কারকেরা এই যুক্তি দেখাইয়া কন্থাদিগকে ২০।২২ বংসর পর্যান্ত কুমারী রাথিতেছেন।আমার ইচ্ছা, হিন্দু-সমাজের প্রচলিত নিয়মে বিবাহ সম্পন্ন হইলেও, ইচ্ছা থাকিলে জীদিগকে শিক্ষাদেওয়া যাইতে পারে। অথচ সে শিক্ষারমণী-জীবনের একান্ত উপবোগিনী, এই সভাটী খ্রীমতীর জীবনে সপ্রমাণ করা।"

সৌভাগ্যের বিষয়, এই আশা সফল হইয়াছিল। যে বরের সঙ্গে মুক্তকেশীর বিবাহের প্রদক্ষ হয়, তাঁহাকে তাঁহার বন্ধুরা "জ্ঞানপিপাস্থ সন্ন্যাসী"বলিয়া জানিতেন। তিনি অতি উচ্চ ধাতুর লোক। ক্বতজ্ঞতা, কর্ত্তব্যজ্ঞান, ধর্মাত্মবাগ, বিদ্যোৎসাহিতা, বিদ্যাবন্তা, সদিবেচনা এই সকল প্রশংসনীয় ও বাঞ্কনীয় গুণ তাঁহাতে প্রচুর পরিন্যাণে ছিল। মুক্তকেশীর বিয়োগের পর তিনি আর দ্বিতীয়বার বিবাহ না করিয়া এক মহৎকার্য্য করিয়াছেন। জনেকে ভাবিবেন, এ আবার মহৎকার্য্য কিসেহইল ? পত্নীর মৃত্যুর পর হইতে তিনি একাহারী হবিষ্যান্নভোজী হইয়াছেন।

এদেশে কন্যাদের প্রতি পিতামাতার কিরপ যত্ন, আর পুত্রদের প্রতিই বা কিরপ, তাহা কাহারও অবিদিত নাই। কিন্তু এই বালিকা সোভাগ্যক্রমে সেরপ ছিল না। বিবাহের পর মুক্তকেনী, পতিসন্ধিনী হইলে তাঁহার জননী দেবীর কি প্রকার কট্ট হইয়াছিল, তাহার পরি- চয় পাওয়া যায়। মুক্তকেশীর, স্বর্ণপ্রভা নামে এক ভগিনী ছিল। সে দিদী মুক্তকেশীকে মাতার শোকের বিষয় লিথিয়াছিল, তত্ত্ত্বে মুক্তকেশী কি লিথি-তেছেন, দেখুন—

''ক্লেহের স্বর্ণ ! মা যাহাতে না কাদেন, তোমরা সর্বাদা এই চেষ্টা করিও । তোমরা তিন জনে কি মার মন হইতে আমার ছঃখ দূর করিতে পার নাই ?''

কিছু দিন পরে তিনি প্রীহট দশিলনীর দপ্তম বার্ষিক শ্রেণীর পরীক্ষার উত্তীর্ণ হইয়া রচনায় ও হস্তলিপিতে পারিতোষিক প্রাপ্ত হন। পুরস্কার ও বৃত্তিতে দর্শ্বদমেত ৪২ টাকা পাইয়াছিলেন। জতঃপর ভটিকাব্যের ছই দর্গ ও মুগ্ধবোধের অবশিষ্ট পাঠ করেন। এই দময়ে "পুরাণ" শাত্র পরীক্ষার প্রস্তুত করিবার জন্ম মুক্তকেশীর ভর্তা শ্রচ্চন্দ্র বাবু বিশেষ উত্তোগী ইইয়াছিলেন। তদর্থে তিনি কলিকাতান্থ সংস্কৃত কালেজের অধ্যক্ষ পণ্ডিতপ্রবর শ্রীযুক্ত মহেশচন্দ্র ভাররত্ব মহাশয়কে পত্র লিথিলে তত্ব-ভরে ভায়রত্ব মহাশয় লেথেন,—

"मुविनम्र निरुक्त ।---

"মহাশয়ের পত্র পাইলাম। আপনার সহধর্মিণী
পুরাণ পরীক্ষা দিতে উদ্যাতা হইয়াছেন, ইহাতে
বিশেষ সন্তপ্ত হইলাম। তিনি আর্য্য মহিলাগণের
মধ্যে বিণুপ্তপ্রায় শিক্ষা পুনরক্ষীবিত করিতেছেন,
ইহা বড়ই আফ্লাদের বিষয়। বিশেষতঃ এরূপ
শিক্ষা পাশ্চাত্য শিক্ষারও অমুযায়িনী নহে। তবে
পরীক্ষার নিয়ম কলিকাতার আসিয়া পরীক্ষা দিতে
হইবে। তিনি লক্ষানীলা, হতরাং আমি তাঁহার
অক্স যতম্য বশোষত্ত করিতে পারি অর্থাৎ তিনি

আমার বাড়ীতে আমার পরিবারের মধ্যে থাকির। পরীক্ষা দিতে পারিবেন। তাঁহার জভ্ত ত্রী-গার্ড নিযুক্ত করা যাইবে। ইহা আমি ডিরেক্টর সাহেবের সহিত পরামর্শ করিয়াই লিখিলাম। ইতি।

ত্রীমহেশচন্দ্র শর্মা।"

এই পতে ব্যক্ত হইল, সংস্কৃত উপাধি
পরীক্ষা দিবার জন্ম মুক্তকেশীর সামীর
কেমন চেষ্টা ছিল। পুরাণ পরীক্ষার জন্ম
মুক্তকেশী প্রথমে শ্রীমন্তাগবত ও রামায়ণ
পড়িতে থাকেন। এন্থলে ভাঁহার পাঠের
নিয়ম দেখান আবশ্যক মনে করিতেছি।
যথা,—

মঙ্গল ও বৃহস্পতিবার—ভাগবত, রামায়ণ, বিষ্ণুপুরাণ।

বুধ, শুক্র—ভাগবত, মহাভারত, চণ্ডী। শনি—অনুবাদ, সংস্কৃত রচনা ও পরীকা-দান।

ন্ধার এক থানি পত্র উদ্ধৃত করিয়া পেথাইতেছি। তাহাতে ভাঁহার পত্র-রচনার ও স্থাপাত ভাবের পরিচয় পাওয়া যাইবে। সে পত্র থানি এই,—

"হৃদয়েশ্বর। আজ বাবা বলিতেছেন,
তিনি আমাদিগকে বাড়ীতে রাথিয়া একা
কাছাড় যাইবেন। টাকা পয়সা হাতে
কিছুই নাই, লোকের কাছে ধার পাইবারও সন্তাবনা নাই। অথচ এখন আমাদিগকে লইরা যাইতে হইলে ১০৭ টাকার
নিতান্ত প্রয়োজন। এই জন্ত তিুনি
আমাদিগকে বাড়ীতে রাথিয়া যাওয়াই
স্থিরসিদ্ধান্ত করিয়াছেন। এ প্রামর্শ

ভনিয়া আমার মন যে কেমন হইরাছে, তাহা আর কি লিথিব ? আমার মন এদিকে প্রকৃত জ্ঞান লাভের জন্য যেরূপ ব্যাকুল হইয়াছে, তাহাতে পড়া শুনা কথনই ছাড়িব না। কিন্তু পরীক্ষা দেওয়া ঘটিয়া উঠিবে কিনা তাহাই দলেহস্থল হইয়াছে। এই সকল কারণেই আমি একথা লোকের নিকট প্রকাশ করিতে নিষেধ করিয়াছিলাম। সকলেই জানিতে পারিলেন আমি সংস্ত পরীক্ষা দিব,এখন দিতে না পারিলে কেমন লক্ষার কথা!লোকে না জানিলে এত লজ্জার কারণ হইত না। যাহাহউক এবিষয়ের সম্পূর্ণ ভার আমি ঈশ্বের হাতেই অপণ করিলাম। তাঁহার ভভ ইচ্ছা পূর্ণ হউক। এদিকে আমার জ্ঞান-পিপাস্থ মনকে কিছুতেই নিবৃত্ত করিতে পারিতেছি না, আর কিছু দিন বাবার নিকট না থাকিলেও আমার জ্ঞানলাভের আশা নিতান্তই কম। আমি দেখিলাম কোনরূপে এক্ষণে কাছাড যাওয়ার থরচটা যোগাড ক বিয়া লইতে পারিলেও সম্প্রতি চলিতে পারে। আনার চিক্ও চন্দ্রহার গাছি পাঠাইতেছি, ইহা বিক্রয় করিয়া যে ক্ষ্টী টাকা পাওয়া যায় তাহা বাবার নিকট পাঠাইয়া प्रिंदन। **मिरा,** ठिक् ७ ठल्कात रकत्व मिर्देन न।। ইছা বিক্রয় না করিয়া ফেরত দিলে আমি শতান্ত হ:খিত হইব। অবশ্য ইহাতে যে আপনার ধুব কট হইবে, তাহা আমি

বুঝিতেছি। কিন্তু নাথ! বিপত্তির সময়ে কোন কট না করিয়া কর্ত্তব্য পথে অগ্রসর হওয়াই বৃদ্ধিমানের কার্য। আর অন্ত অলঙ্কারের প্রয়োজন কি? আপনিতো আমার অলঙ্কার। ঈশ্বরের নিকট প্রার্থনা করি, তিনি স্বামাকে যে দেব-হুল্লভ স্বানিরত্ন দিয়াছেন, ইহা যেন আমার অনন্ত জীবনের হয়। ** আমি মাথার দিবা দিয়া বলিতেছি, আপুনি এই জন্ম কোন চিন্তা করিবেন না। আমি এই গুলি বিক্রয় করিতে আপনার নিকট দিতাম না *** পিতা মহাশয়ের চিঠি থানাও দেথিলাম, আমার শিক্ষার ব্যাঘাত হইলে তিনিও যে নিতান্ত ছঃখিত হইবেন, তাহার কোন দলেহ নাই। যাহা হউক, আমাদের উভয়ের পত্র পাঠ করিয়া আপনি যাহা ভাল বিবেচনা করেন মন বড় থারাপ হইয়া গিয়াছে, অধিক লিথিতে পারিলাম না। विमाय इरे। औठत्र श्राप्त मक्त मःवारम দাসীকে নিশ্চিস্ত করিবেন। ইতি-

> অপিনার অনস্তঞ্জীবনের দাসী মুক্ত।''

আমরা শত শত পছ্জিতে হাহা
করিতে পারিতাম না, এই একমাত পত্তে
তাহা সাধিত হইল। পত্তে হাদরের কথা
যেমন জানা যায়, তেমন আর কিছুতেই
নয়।

্ এই বার মুক্তকেশী দেবীর ধর্মভাবের আলোচনা করিব। আমাদের নিজের কথার অধিক আড়ম্বর না করিয়া আমরা তাঁহার পত্র হইতে দেখাইব,তিনি ধর্মপথে কতদ্র অগ্রসর হই রাছিলেন। মুক্তকেশী, স্বামীকে যে পত্র লিথিয়াছিলেন, তাহা একস্থানে উদ্ধৃত কবিয়া দিয়াছি। এখানে দেখাইব, তিনি পিতাকে যে সকল পত্র লিথিতেন, তাহার মধ্যে কি বস্তু আছে।

"দেব। আমি এই পবিত্রকুলে জন্ম ধারণ করিয়! কি করিলে সাধারণ হইতে পৃথক্ভূত জীবন গঠন করিতে পারিব, তাহা আমি আপনার নিকট উপ-দেশচ্ছলে শুনিতে ইচ্ছা করি।"

মুক্তকেশীর পিতা প্রথমে শিলচরে
শিক্ষকতা করিতেন। তৎপরে তিনি
গৌহাটীতে বদলি হইয়া থান। কামরূপ
গৌহাটীর অনতিদূরে অবহিত। এই
কামরূপ মুক্তকেশীর পক্ষে বড়ই মনোরম
বোধ হইত। কেবল বৃক্ষ লতা গুল্মাদির
শোভায় তিনি মুগ্ধ হইতেন, এমন নয়।
কিন্তু এথানে বশিষ্ঠাশ্রম, কামাণ্যা-মন্দির
প্রভৃতি যে সকল তীর্থ স্থান আছে, তাহা
দেখিবার জন্ম তিনি লালায়িত হইয়াছিলেন, এবং সে সকল তিনি পুখান্তপুখরূপে পর্যাবেক্ষণণ্ড করিয়াছিলেন।

কি পিতৃমাতৃভক্তি, কি পতি-পরায়ণতা—কিছুতেই তাহাকে আমর। পশ্চাৎপাদ দেখি নাই। হ্রদয় সৌকুমার্য্যে মুক্তকেশী অতুলনা এই দেখুন মাতাকে লিখিতেছেন,—

"মা! আপনাদের কথা মনে হইলে চক্ষে জল রাথিতে পারি না। বোগেলের মধুনাখা ডাক মুনে হইলে কি যে কট হয়, তাহা কত লিখিব? ইহাকে সর্কাদা সাবধানে রাখিবেন। মা! কাছাড়ে থাকিতে আপনার নিকট কত যে অবাধ্যতাচরণ করিয়াছি,

তাহা স্মরণ হইলে এপনও আস্মানি উপস্থিত হয়।
বাবা একদিন ভাগবত হইতে একটা লোক আমাকে
শিখাইয়াছিলেন, তাহার মন্দ্র এই, যে সন্তান,
পিতা মাতার মনের ভাব বৃঝিয়া অগ্রেই কার্যা করে,
সে উত্তম সন্তান; বলিলে যে করে, সে মধাম; আর
বলিলেও বিরক্ত হইয়া যে করে সে অধম। মা!
তবে আমি আপনার সেই অধম সন্তান। আমি কত
সময় আপনার কথা তানি নাই, তাহা মনে হইলে
এখন কত যে কট হয়, ভগবান জানেন। যাহা
হউক, আমি অধম সন্তান বলিয়া সকল অপরাধ
কমা করিবেন।"

এই পত্রথানি আমরা যত্ন পূর্ব্বক উদ্ধৃত করিলাম। মুক্তকেশী এক সময় মাতার নিকট অবাধ্যতাচরণ করিয়া-ছিলেন, এই পত্রে তাহা বাক্ত হইল। এই অবাধ্যতা তরল বয়দে প্রায় সকলেরই ঘটিয়া থাকে। সেই অবাধ্যতা স্মরণ করিয়া ভাহার মনে যেরপ অনুশোচনা উপস্থিত হইয়াছিল, তাহা প্রশংসনীয়।

মুক্তকেশী স্বামীর অভিপ্রায় **অনুসারে** তাঁহার এক মুদলমান বন্ধুর দহিত মধ্যে মধ্যে পত্রালাপ করিতেন। কি উদারতা!

মুক্তকেশী, ক্লুলে ও কালেজে উচ্চ
শিক্ষা না পাইলেও, গৃহে বসিয়া কেমন
উচ্চতম স্থশিক্ষা পাইয়াছিলেন! উপস্থিত
সময়ে এরূপ দৃষ্ঠান্ত শিক্ষাপ্রদ। ইনি
ইংরেজি ভাষা শিক্ষা না করিয়াও, মেমন
বিভাবতী ইইতে পারিয়াছিলেন, তাহা
আলোচনা করিবার বিষয়।

আমরা মৃক্তকেশীর একটা বঙ্গভাষার লিখিত প্রতাব পাঠ করিয়া অত্যন্ত প্রীত হইরাছি, সময়াস্তরে তাহা প্রকাশের ইচ্ছা, রহিল। প্রবন্ধটা তাঁহার জীবনীতে নাই,

"নবন্ধীবনে'' মুদ্রিত হইয়াছিল। সম্পাদক প্রবন্ধের উপর এইরূপ মতামত প্রকাশিত করিয়াছিলেন,—

"লেথিকা ষোড়শ ব্যায়া, ইংরেজী জানেন না, অন্তঃপুরে থাকিয়া রামায়ণ, মহাভারত, ভাগবত প্রভৃতি সংস্তু গ্রন্থ অধ্যয়ন করিতেছেন। বাঙ্গালা প্রবন্ধ লিখনে এই ভাঁহার প্রথম উভাম।"—

নবজীবন-সম্পাদক।"

তাঁহার পুরাণাদিতে কিরূপ ব্যুৎপত্তি হইয়াছিল, চিকিৎদা-ব্যবসায়ী এক জন কবিরাজ তাহার দাক্ষ্য দিতেছেন,—

"পরীকার্থিনী দেবী মুক্তকেশী আমার সংস্কৃত মহাভারতের কয়েক পর্ব গৌহাটী লইয়া গিয়া-**ছিলেন। তাঁহার তত্ম**তাাগের পর ভগ্নাশ শরচ্চ*ন্দ্র* **সেই পুন্তক প্র**তাপ ন করিলে দেখিলাম, তন্মধো যত সার ও সংক্থা আছে, তাহার প্রায় সমস্তই দেবীর **হন্তান্ধি**ত চিহু দারা বেষ্টিত।"

যোল বৎসরে এই শক্তি ও প্রবৃত্তি ধীহার জন্মিয়াছিল, তিনি দীর্ঘ জীবন লাভ করিলে, সংসারের কত উপকার হইত।

মুক্তকেশীর সংস্কৃতে অধিকার জন্মিয়া-ছিল। ভাঁহার কবিত্ব শক্তি ছিল, আমরা তাহার এক উদাহরণ পাইয়াছি। তিনি স্বামীকে এক সময়ে লিথিয়া-ছিলেন-

কথং মু প্রত্যয়ানর্হা ভবস্তি কথয় দ্রিয়:। প্রাণেশ। পাপজন্মাসাং কথমার্ছ মনীবিনঃ 121 ইদং ভাগৰতং শাস্ত্রং পুরাশং ব্রহ্মসম্মতং। ন্ত্রীশুদ্রদ্বিজবন্ধুনাং কথং ন শ্রুতিগোচরং ॥২॥

হে প্রাণেশ। নারীগণ কি জন্ম বিশ্বাস-যোগ্যা নন? বিদ্বানেরা কি কারণে তাঁহাদের জন্ম, পাপময় বলিয়াছেন ? এই ভাগবৎ শান্ত্র, কেন স্ত্রী, শৃদ্র ও পতিত আক্ষণগণের শ্রবণগোচর হইবে A) ?

ইহাতে একদিকে সংস্কৃত রচনার ও অন্য দিকে ভাঁহার যুক্তি তর্কশক্তির প্রমাণ দিতেছে।

১২৯৫ সালের ৩২এ শ্রাবণে শ্রীমতী মুক্তকেশীর স্বর্গারোহণ হয়। স্মৃতিচিহ্ন-রক্ষার্থে কাছাড়ে একটা ধর্মালয় স্থাপিত হইয়াছে। তাহাতে যে তিনটী **নোক লিথিত আছে তন্মধ্যে ছুইটা** এই.--

দাদীৎ পুণাবতী নারী, বিছ্মী ধর্ম্মতৎপরা। পতিপ্রাণা মহাভাগা. পিতৃমাতৃবশান্ত্রা॥ তস্থাঃ পুণাশ্বতেৰ্ত্যনং, ক্ষুরণায় বিনির্শ্বিতঃ। ध्य (मर्गानस्य) यक, कीर्जनीयः नमा हतिः ॥

উদাসীনের চ্নিস্তা।

এক সময়ে বাস্পীয় পোতারোহণে। ভাগে কতিপয় পার্কত্য অসভ্য লোকের

। ঢাকায় আসিতেছিলাম, পোতের উপরি- | সহিত দাকাৎ হইল । তাহারা ঐাক্ষেত্র

হইতে দেশে প্রত্যাগমন করিতেছিল। তাহাদিগের বাসস্থান কুমিলার পুর্বা সীমান্তর্মতী পার্মতা প্রদেশ। তাহার। ত্রিপুরাধিপতি মহারাজ বীর চল্রমাণিক্য বাহাতরের প্রজা। দশ বার পর্বের তিপ্রা বা তিপুরা জাতি অন্যান্ত অসভা পার্বতা জাতিদিগের স্থায় অহিন্দ কুকুর ও বরাহ মাংস ভক্ষণ করিত। কিন্তু ত্রিপুরা মহারাজের অনু-জ্ঞায় তাহারা ক্ষতিয় বংশীয় বলিয়া পরি-চ্য দিতেছে, এবং ক্ষত্রিয়ের বাহিরের করিয়াছে। চিক্ত যজেলপ্রীত ধারণ ইছারা মহারাজের অবলমিত ধর্মা গ্রহণ করিয়া তদন্তরূপ আচরণ করি-তেছে। অনেকে মাংসাহার পরিত্যাগ করিয়া তিলক মালা ধারণ করিয়াছে। কেছ কেছ বৈশুবদিগের তীর্থ ঞ্রীবৃন্দাবন এবং এক্ষিত্র প্রভৃতি হলে গমন করিয়া থাকে। আমার সহধাত্রী ত্রিপুরাগণ যে তীর্থ হইতে প্রত্যাবর্ত্তন করিতেছিল, তাহা ইতিপর্কেই বলিয়াছি। তাহা-দিগের দলে পাঁচ জন রমণী ও পাঁচ জন পুরুষ ছিল। মহিলাগণ বাক্যালাপ করিতে পারে না, তাহাদিগের মাতৃভাষাতেই কথোপকথন থাকে। পুরুষগণ বাঙ্গালা ভাষার অতি কর্ষ্টে মনের ভাব ব্যক্ত করিতে পারে, বান্সালির সমস্ত কথা বুঝিতে না। আমি জিজ্ঞাদা করিয়া জানিলাম তাহাদের দেশে কোন বিদ্যালয় নাই। পুরুষেরা বাঙ্গালিদিগের সহিত আলা- পাদি করিতে করিতে বাঙ্গালাভাষা কিয়ৎপরিমাণে শিক্ষা করিয়াছে। তাহা-দিগের সঙ্গে এক খানি "ভক্তি তত্ত সার" নামক গ্রন্থ দেখিতে পাইলাম। একজন আমাকে সে এত্বের কিছু পাঠ করিয়া ব্যাখ্যা করিতে অভ্নরোধ করিল। व्याधा अनव द्वारा वृक्षित भादिन। "পিল্ডিম্স প্রথেশ" প্রণেতা বেনিয়ানের বাইবল গ্রন্থই প্রধান দম্বল ছিল। ইহাদিগের**ও** এই "ভজিতত্ত সার" প্রধান সমল ইইগাছে। শিক্ষিত বাঙ্গালি কুকচিপূর্ণ উপন্তাস ও নাটক পড়িয়া সময় কর্ত্তন করিতে কুঠিত নহেন, বটতলার অতি কদর্য্য বইও স্থাঠারূপে পরিগণিত তাহাদিগের হইতে পারে। ভক্তিতত্ব প্রভৃতি বিষয়ে व्यश्नि अत्मक वाद्यांनि शुक्रव किःवा মহিলার রুচিসঙ্গত নয়, কিন্তু অশিক্ষিত তিপ্রাদিগের এখনও পর্য্যন্ত তুর্গতি ঘটে নাই, তাই তাহার। ভাক্তিত্ব ও অধ্যাত্মতত্ত্ব বিষয়ক গ্রন্থ পাঠেই আনন্দ বোধ করিয়া থাকে। স্থশিক্ষিত সভাতা-ভিমানী বাঙ্গালিদিগের এতাদৃশ অসভা-পার্বভাদিগের নিকট অনেক শিথিবার আছে। উভয় খ্রী এবং পুরুষদিগকে মৃত্তি-মতী সর্বত। বলিলেও অত্যক্তি হয় না। রাজনীতিবিদের কৃটবুদ্ধি তাহাদিণের সরলঙ্কদয়ে স্থান পায় না। ব্যবহারজীবী-দিগের কপটতা তাহাদিগের অঞ্চাত। ইহাদিগের সহিত বাক্য বলিলে দিঞ্জি **সভ্যতাভিমানী** লোকদিগকে **ধিকার**

দিতে ইচ্ছা হয়, এবং অজ্ঞানতার অন্ধ-কারের মধ্যেও সরলতা ও সত্যবাদিতার আনলোক রেখা দেখিয়া তজ্ঞপ সাধ্ প্রকৃতি লাভের বাসনা জন্ম। যদি কপটতা এবং মিথ্যাবাদিতা শিক্ষা সভ্য-তার নিত্য সঙ্গী হইতে থাকে, তাহা হইলে সে শিক্ষা ও সে সভ্যতায় মানব-সমাজের অধঃপাতের কারণ।

কথা প্রদক্ষে জিজ্ঞাদা করিলাম তাহা-দিগের দেশে চোরের কিরূপ শাস্তি হয়। চুরী কি তাহা বুঝাইতে আমার অনেক **সময় লাগিয়াছিল। প্রভু**াতরে তাহার। বলিল তাহাদের দেশে চরী নাই। একের জিনিশ অপরে বিনান্নমতিতে গ্রহণ করে না। তাহাদিগের দেশে রাত্রিকালে মূল্যবান জিনিস বাহিরে অরক্ষিত অবস্থায় পড়িয়া থাকিলেও তাহা স্থানাস্তরিত হয় না। সভাতা গর্কো গৰ্বিত বঙ্গবাদিগণ এতানুশ সমাজকে কি মনে করিবেন গ সভ্যদেশের কারাগার অবেষণ করিলে দেখিতে পাওয়া যায়. **শেখানে** কত চোর শাস্তি ভোগ করি-তেছে। আর জ্ঞানালোক যে পার্কতা শমাজের অন্ধকার ভেদ করিয়া প্রবেশ করিতে পারিতেছে না; সেথানে চুরীর নাম মাত্র নাই; ইহা পড়িয়া পাঠক পাঠিকা কি আদিম অবস্থার কথা মনে করিবেন না ? খৃষ্টান ধর্মণাস্তে আছে যে মাদি পুরুষ আদম দর্কাগ্রে নিজ্পাপ ছিলেন, সয়তানের প্ররোচনায় পাপে পতিত হন। বর্ত্তমান সময়ে অসভ্য

জাতির অবস্থা দেখিয়া মনে হয় যে মান-বের আদিম সময়ে পাপপ্রবৃত্তি থুব কম থাকে, পরে জ্ঞান ও সভাতার বিস্তারের সহিত পাপের সংখ্যাও বাড়িতে থাকে। যাহাহউক দভ্য জাতি সাধনা করিয়া যে অবস্থা লাভ করিতে পারে না, অসভ্য জাতি স্বভাবতঃই তাহা লাভ করিতেছে। মহিলাদিগের মুথ দেথিলেই বোধ হয় তাহাদের অন্তর যেন পবিত্রতাময়। অপবিত্রতার লেশও যেন তাহাদিগের প্রাণে নাই। তাঁহারা অতি সাধীন ও মুক্তভাবে পুরুষদিগের দহিত মিশিতে-ছেন। যত্নপূর্বক আর তাঁহাদিগের আত্ম-রক্ষা করিতে হয় না। তাঁহারা আভ্যন্ত-রীণ পবিত্রতার বর্মারত হইয়া স্ক্রক্ষিত হইতেছেন। ক্রদ্ধার গৃহবদ্ধ মহিলা-দিগের স্থায় তাহারা পুরুষের পাদচারণের শব্দ শুনিয়া সশঙ্কিত হওয়া দূরে থাক, তাহাদিগের পবিত্রতাব্যঞ্জক নয়ন আভা দেখিয়া পাপাচারীর অন্তরত কম্পিত হইয়া উঠে। তাহাদিগের দেশে বাল্য-বিবাহ কিংবা শিশুবিবাহ প্রচলিত নাই। কথন বর কন্সা স্বস্থ অভিক্রচি অনুসারে একত্রিত হইয়া থাকে, কথনও পিতা মাতা বর কিংবা কন্তা মনোনীত করিয়া থাকেন। ম্বণিত বর কিংবা কল্যাপণ প্রচলিত নাই। পিতা মাতা ইচ্ছা করিলে যৌতুক স্বরূপ কিছু দিতে পারেন, কিন্তু বলপূৰ্ব্বক রক্ত শোষণের প্রথা আদৌ প্রচলিত নাই। অতিথি-দৎকারের প্রবৃত্তি এত-দূর প্রবল যে তাহারা আমাকে তাহাদের

দেশে যাইবার জন্ত অনুরোধ করিল, এবং বলিল যে আমি যত দিন তাহাদিগের দেশে থাকিব আমার কোনও বায় লাগিবে না। ছদিন ইহার বাড়ী ছদিন তাহার বাড়ী, এইরূপে মাদের পর মাদ, বৎদরের পর বৎদর অতিবাহিত করা ঘাইতে পারে। অনেক দল্লাদী এইরূপে জীবিকা ধারণ করিয়া তাহাদিগের দেশে বাদ করিতেছে।

কৃষিজাত বস্তুই তাহাদিগের জীবিক।
নির্দ্ধাহের উপায়। তাহাদিগের দেশে
বহুল পরিমাণে কৃষিজাত বস্তু জন্মিতেছে,
কিন্তু রাস্থার শুবিধা নাই বলিয়া রপ্তানি
হইতে পারিতেছে না। এজন্ম তাহাদিগের আর্থিক অবস্থা সচ্ছল নহে।
অবিকাংশই দরিদ্র, কিন্তু দরিদ্র হইলেও
বঙ্গদেশের ন্থায় উপ্যুপরি ত্র্ভিক্ষের
প্রবল কোপে দেশ নির্মান ইইতেছে না,
কাবণ অর্থাভাব ইইলেও দেশে কথন ও
থাদ্যাভাব হয় না।

এই অসভ্যদিগের সহিত আলাপ করিয়া আমি অত্যস্ত তৃপ্তি লাভ করি-য়াছি। আমার সহযাত্রীদিগের একজন সতাযুগের জন্ম দীর্ঘ নিশাস ফেলিতেছিলেন। আমি তথন তাঁহাকে বলিলাম "মহাশয় সতাযুগ এথনও বিদায় গ্রহণ করে নাই। সভাযুগের লোক দেখিতে হইলে ঐ দিকে যান" এই বলিয়া তাহাদিগের দিকে অঙ্গলি নির্দেশ করিলাম। বাস্তবিক ভাঁহাদিগের স্বাভা-বিক গুণাবলীর পরিচয় পাইয়া মানব প্রকৃতি কতদূর বিকৃত হইয়াছে আমি তাহা বিলক্ষণ হাদয়ঙ্গম করিলাম। মানব-প্রকৃতিকে পুনর্কার এই স্বাভাবিক অব-স্থায় আনিতে হইলে কত শক্তিক্ষয়ের প্রাজন। আমার মনে হয় মারুষ হত ধন পুনঃ প্রাপ্ত হইবার জন্ম যে শক্তি বায় করে দে শক্তি পুণ্য উপার্জ্জনে ব্যয়িত ইইলে, মান্বদ্যাজ স্বৰ্গধামে পরিণত হইত ।

জাপানে কপূর রক্ষ।

দক্ষিণ জাপানে তোসা, হিক্সা ও সাতস্থনা প্রদেশেই প্রচ্ব পরিমাণে কপ্রবৃক্ষ
জন্মিয়া থাকে । সমুদ্র হইতে বহুদ্রে
পার্ব্বহীয় গহন অঞ্চলে এই বৃক্ষ উৎপাদনের প্রশস্ত স্থান। জাপান দেশীয়
গবর্গনেন্ট এই সকল স্থানেই বৃহৎ
বৃহৎ কপ্রি বৃক্ষের আবাদ করিয়া

থাকে। প্রজাদিগের যাহার কপূরি বৃক্ষ আছে, দেশের রাজবিধি অনুসারে সে আর একটী নুতন বৃক্ষ রোপণ না করিয়া পুরাতন বৃক্ষটী কর্ত্তন বা বিক্রেয় করিতে পারে না। কপূরি প্রস্তুত ব্যঙ্গীত কপূরি বৃক্ষের কাঠে জাহান্দ নির্মাণ ও অন্যান্ত ব্যবহারোপযোগী দ্রব্য সকল

প্রস্ত হয়। কপূর কার্চের সিন্দক ও তোরক বন্ধ রক্ষার পক্ষে অত্যন্ত উপ-যোগী। পশমী, রেশমী ও মহার্ঘ কাপাশ বস্ত্র সকল কীটাদির উপদ্রবে ক্ষতিগ্রস্ত হয়, কপুর কাষ্টের শিন্দুক তোরক্ষে তজ্ঞপ হয় না। কপূরি কাঠ একদিকে যেমন কোমল, অপর দিকে তেমনই স্থায়ী: মুতরাং ইহার দারা অনেক প্রকার প্রয়োজনীয় দ্রব্য নির্শ্বিত হইয়া থাকে, কিন্তু কপূরি প্রস্তুত জন্তই ইহা সমধিক ব্যবন্ধত হইয়া থাকে।

কপূরি রুক্ষ লারেল জাতীয় রুক্ষের অন্তর্গত। ইহার পত্র গুলি ক্ষুদ্র ক্ষুদ্র, বাদামে ওধার ঈ্বৎ করাতের মত। পত্র-সকল বৎসরের সমস্ত সময়ই গাত উজ্জ্ঞ হরিছর্ণ থাকে, কেবল বসস্তের প্রাকৃকালে তুই এক সপ্তাহ মাত্র কোমল তরল হরিৎ-বর্ণ দেখিতে পাওরা যায়। এই সময় নৃতন পত্র সকল অঙ্কুরিত হইয়া থাকে। ইহার ফল দকল ক্ষুদ্র ক্ষুদ্র গোল জামের স্থায় শরৎকালে ফলিয়া थांक। সারাংশে নানাদ্রবা গঠন এবং মূল ছারা জাহাজের সন্ধিহল নির্মিত হইয়া থাকে। এক একটী বুক্ষ বুহদাকার হয়। প্রানিদ্ধ নাগাদাকি নগরের নিকট অনেকগুলি কপুর উদ্যান আছে। এথানে প্রকাণ্ড প্রকাণ্ড বৃক্ষ দৃষ্ট**ুহই**য়া থাকে 🖯 এক একটার ওড়ীর ব্যাস ৭৮৮ হাত এবং বেড় ২০।২৫ ছাত। অদ্ওরার প্রাচীন [©]দেবমন্দির কপূর কুঞ্চে প্রতিষ্ঠিত।

পজের ভায় দণ্ডায়মান হইয়া মন্দিরের উপর পর্ণচন্দ্রাতপ ধারণ করিয়া 🕫 হি-রাছে। ইহারা বহুকালের হইলেও অদ্যাপি সতেজ ও স্থলার দেখা যায় : নিউর অভাভ স্থানে আরও বড় বড় বৃদ্ দৃষ্ট হয়। কোন কোনটীর গুঁড়ির ব্যাস বিংশতি পাদেরওঅধিক; বেড় প্রায় ৪• হস্ত উন্নত। গুঁড়ি ২০ বা ৩০ পাদ দর্ল– ভাবে উদ্ধে উঠিয়াছে, মধ্যে একটী শাথা বা পল্লব নাই, কিন্তু তৎপরেই প্রকাণ্ড শাখা প্রশাখা নিবিড় পল্লব ভারে অবনত হইয়া বহুদ্র ব্যাণিয়া ছায়া ত শোভা বিস্তার করিয়াছে। বুক্ষগুলি যেরূপ প্রকাণ্ড, ইহাদিগের শাখা সকলও তজ্ঞপ বিশাল ও আয়ত, স্মৃতরাং দেখিতে অতীব স্থানর।

কপূরি প্রস্তুত করিতে হইলে বুক্ষকে কাটিয়া ক্ষুদ্র ক্ষুদ্র অংশে চেলা করিয়া একটী বৃহৎ লোহ বা ধাতু-পাত্রে থানিকটা জল দিয়া মনদ জ্বালে সিদ্ধ করিতে হয়। তত্বপরি একটা কার্ছের টবের মধ্যে চেলা ওলি টবের উপরিভাগ বিলক্ষণ বন্ধ র থে। থাকে-এমন কি পর্যান্ত নির্গত হইতে পারে না, কিন্তু তলদেশে ক্ষুদ্ৰ ক্ষুদ্ৰ ছিদ্ৰ থাকে, ইহাদ্বারা উফজনস্থিত বাস্প তন্মধো প্রবিষ্ট হইয়া থাকে। একটা বংশনল দিয়া একটা হইতে আর একটী টব সংযোগ করা হয় এবং তাহাও ছতীয় টবের সহিত উক্তরূপে এথানে শত শত বড় বড় কপুর বৃক্ষ । সংযুক্ত থাকে। ভৃতীয় টবটী ছুই অসংশে

বিভক্ত, একটীর উপর আর একটী।
উপরি স্তর বা অংশে একপ্রেস্ত খড় বিস্তৃত
থাকে,বংশনল দিয়া বাষ্পা প্রথম টব হইতে
বিতীয়ে এবং দিতীয় হইতে তৃতীয় টবে
আনিয়া থাকে। দিতীয় টবেই কপূর্ব
ও তৈল প্রস্তুত হইয়া তৃতীয় টবে পতিত
হয়। কপূর্ব অংশ থড়ের মধ্যে সংলগ্ন
ইইয়া থাকেএবং তরল তৈল অংশ নিম্ন
স্তবে পতিত হয়। পরে শীতল করিয়া
কপূ্র সংগ্রহ করিয়া একটী কার্চের টবে ভিসকারে আইনে।

বন্ধ করা হইয়া থাকে এবং অপর পাতে তৈল সংগৃহীত হয়। একটা কপ্রের টবে ১৩০ ঠুপাউও কপ্র থাকে এবং এই. অবস্থায়, বাজারে বিক্রীত হয়। একবার সিদ্ধ হইলেই জল একটা ক্ষুদ্র নলের দারা নির্গত হইয়া তৈল মাত্র টবে অবশিষ্ট থাকে, তথন তাহা গ্রহণ করিয়া জালানি কার্য্যে বাবস্থত হয়। আলোক ভিন্ন কপ্রি তৈল আরও অনেক উপকারে আইদে।

বাদন প্রণালী।

अङ्ग्ति हानना थ्रानी।

হারমোনিয়ম্ শিক্ষা করিতে হইলে পাঠিকাগণের বিশেষ মনোযোগ পূর্কক অঙ্গুলি চালনা প্রণালী শিক্ষা করা প্রয়ো-জনীয়। অঙ্গুলি চালনা শিক্ষা করিয়া যন্ত্র বাজাইলে উহা শ্রুতিমধুর হইয়া থাকে।

পাঠিকাগণ হারমোনিয়ন্ যন্ত্র বাদন কালে এমন ভাবে চাবিগুলির উপর হস্ত রাথিবেন, যে একটা অঙ্গুলিও আড়স্ট ভাবে না থাকে; অর্থাৎ যে কোন অঙ্গুলি সঞ্চালন করিবার ইচ্ছা হইবে, তৎক্ষণাৎ সহজ্ঞেই তাহা করিতে পারা যায়।

অঙ্গুলি সঞ্চালন কালে কোন্ অঞ্গুলি কোন স্বরের উপর অস্ত হইবে, অর্থাৎ কোন পর্দা টিপিয়া বাজাইতে হইবে, তাহা বুঝাইবার নিমিত্ত, যেথানে ১ লেখা থাকিবে, সেই পর্দা অঙ্কুষ্ঠ ছারা, যে ছানে ২ লেখা থাকিবে, সেই পর্দা তর্জনী ছারা, ৩ মধ্যমা ছারা, ৪ অনাদিকা ছারা এবং ৫ কনিষ্ঠা ছারা
টিপিয়া বাজাইতে হইবে। কথন কথন
একথানি পর্দাতে তুই তিন অঙ্কুলি পরিবর্ত্তন করিতে হয়, এবং অপর একটী
অঙ্কুলির পরিবর্ত্তে অপর অঙ্কুলি ব্যবস্থাত
হয়।

अथग माधन।

১২০১২০৪৫ ।।।।।।।।।। । সাঞ্গ ম প ধ নি সা>।

অবরোহণ

৫ ३ ७ २ ১ ७ २ **১.** । । । । । । । । गामाऽ सिंध প म शंका मा।

| ্৪৬ কামাবোধিনী পত্রিকা। [৫ ম ক-২য় ভাগ। | | | | | | | |
|---|--|---|--|--|-----------------------------------|------------------|----------------|
| জথবা | ৩ 8 । ।১ নি সা। ২ ১ । । ঋ সা। | 3 १ १ २ ३ | ऽ | 8 थ भ ऽ भ | 8 च म ३ जा। | ৩ গ | ত গ |
| দিতীয় সাধন। ১ ২ ৩ ৪ ৫ ৪ । । । । । । । । দ। সা ঋ গ ম প ম ১ ১ ২ ২ । । । । । । সা সা ঋ ঋ ৩ ৩ ৪ ৪ ৫ ৫ । । । । । । । । দ।গ গ ম ম প প ৫ ৪ ৩ ২ ১ ২ । । । । । । । । বা। সা১ ঋ১ গ১ ম১ প১ ম১ ৫ ৫ ৪ ৪ । । । । । | ত ২ । । গ ঋ ১ ॥১ मा। ৩ । । গ১ ঋ১ | ১ () () () () () () () () () () () () () (| २ × ३ × ४ ४ × ति ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ | হ্ৰ সাং ২ × ২ ৩ × ৪ × ০ ০ × ৪ × ০ ০ × ৪ × ০ ০ × ৪ × ০ ০ × ৪ × ০ ০ × ৪ × ০ ০ × ৪ ০ ০ × ৪ ০ ০ × ৪ ০ ০ ০ ০ | ৩ | 8 × ম | ऽ ** * |
| সাঠ সাঠ ঋঠ ঋঠ ৩ ৩ ২ ২ ১ । । । । । । বা। গঠ গঠ মঠ মঠ পঠ প দিতীয় সাধন প্রণালী এক হস্তে। | ১ ৫ । ॥ প ১ সা। তে ছই | ऽ । দ। मा | | ম দাধ ং ৪ | | * 9 - 対 | मा । २ भ |
| ~ ~ ~ ~ ~ ~ ~ ~ ~ ~ ~ ~ ~ ~ ~ ~ ~ ~ ~ | 8 8 अ म 8 8 8 8 8 5 8 8 5 8 8 5 8 8 7 1 7 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 | 8 । १ ।•म्†ऽ : ১ । | ১ ও। প নি ২ ৩। । । । । ম ২৮ | , 7 , 4 | 8 । मा) 8 । स १ | । २ । म | 9 기 위 |
| | | | | | | | 一数 |

यर्छ गाधन। একত্রে ছুই হস্তে।

S ত ২ S ২ ৪ ত ২
 I I I I I I I I I I
 FI मा গ ঋ मा ঋ ম গ ঋ
 O ৫ ৪ ত ২ ৪ ত ২
 I I I I I I I I I I
 N প ম গ ঋ ম গ ঋ
 C ত ৪ C ৪ ২ ত ৪
 I I I I I I I I I
 TI সা> গা> ঋ> সা> ঋ> ম> গা> ঋ>
 C ত ৪ ৫ ৪ ২ ত ৪
 I I I I I I I I I I I
 TI সা> গা> ঋ> সা> ঋ> ম> গা> ঋ>
 C ত ৪ ২ ত ৪
 I I I I I I I I I I
 TI সা> প> ম> গা> ঋ> ম> গা> ঋ>
 C ত ৪ ২ ত ৪
 I I I I I I I I I I
 TI সা> প> ম> গা> ঋ>
 TI সা> গা> ঋ>
 TI সা>
 TI স

সপ্তম নাধন।

গ্য ম্য প্র সাথ

অষ্টম সাধন।

নব্য সাধন।

১ ২ ৩ ৪ ৫ । । । । । দা ঋ গ ম প ১ ২ ৩ ৪ ৫

a গ ম প ধ

উলিথিত স্বরগুলির মস্তকে এক মাতার চিহ্ন আছে, এই সাধন অভ্যাস হইলে পর পাঁচটী স্বর এক মাত্রার ভিতর করিয়া অভ্যাস করিতে হইবে। ১ ২ ৩ ৪ ৫ যথা, ————ইত্যাদি। সা ঋ গ ম প

मभग गांधन ।

কথন কথন প্রয়োজনাধীন কোন স্থর বিশেষের উপরে ছই তিন অঙ্গুলি পরি-বর্ত্তন করিতে হয়, এবং অপর একটী অঙ্গুলির পরিবর্ত্তে অপর অঞ্গুলি ব্যবহার হয় যথা—

আলোকতন্ত্র।

আমাদের জ্ঞান ও সুথবৃদ্ধি এবং অক্যান্ত নানাবিধ প্রয়োজন সাধনের জন্ত দরাময় পরমেশ্বর যে সকল উপায় বিধান করিয়াছেন, আমরা সে সকলের বিষয় সর্বাদা চিন্তা করিয়া দেখি না। এই জগতে যে সকল স্থের সামগ্রী ও নিতান্ত প্রয়োজনীয় বস্তু রহিয়াছে, নিত্য সেই সকল ভোগ করা যায় বলিয়া ঐ সকল বন্ধ সমজে আমাদের মন খেন কোমে অসাড় হইয়া পড়ে। মালুষের কাছে সামান্ত একটু উপকার পাইলে আমাদের মন যে কৃতজ্ঞতার উদয়হয়, পরমেশ্বরের

নিকট হইতে তদপেক্ষা সহস্রপ্তণ অধিক উপকার পাইয়াও আমাদের মনে অনেক সময় তাহার শতাংশের একাংশ কুত-জ্ঞতার উদ্রেক হয় না। পরমেশ্বর-প্রদন্ত বিবিধ স্থথ সামগ্রীর প্রয়োজনীয়তা আমরা সাধারণতঃ ভাল করিয়া ভাবিয়া দেখি না। কিন্তু ঐ সকল দ্রব্যের অভাব হইলে আমরা যেরপ অধীর হই, তাহা হইতেই বুঝা যায় উহা আমাদের স্থথের জ্যুকত আবশ্যক। লোকে কথায় বলে, "দাঁত থাকিতে দাঁতের মধ্যাদা বুঝা যায় না।" প্রত্যেক নিত্য প্রয়োজনীয় সামগ্রী

দম্বন্ধে এইরূপ কথা বলা যাইতে পারে। এই যে শারীরিক স্বাস্থ্য যাহার অভাব হইলে লোকের কত কষ্ট, কত ভাবনা উপস্থিত হয়, ইহার জন্ম আমাদের মনে সকল সময় প্রমেশ্বরের প্রতি বিশেষ তেমন কুতজ্ঞতার উদয় হয় কি ? এই যে চক্ষ ঘাহা ছারা আমরা জগতের নানাবিধ স্থানর স্থানর বস্তু দেখিয়া কত জ্ঞান ও আনন লাভ করিতে সমর্থ হইতেছি, যাহার ভিতরে পরমেশবের কত আশ্র্যা জ্ঞান-কৌশলের পরিচয় পাওয়া যায়, ইহার জন্ম যে সেই করুণানয় পিতার নিকট ক্রভক্ত হওয়া উচিত,তাহা কি আমরা সকল সময় চিন্তা করি ? কিন্তু একবার ভাবিয়া দেখ দেখি যদি তোমার চক্ষু না থাকিত, তবে কি হইত ?—তাহা হইলে কতকপ্তে তোমাকে জীবন ধারণ করিতে হইত। এখন যে জগৎ তোমার নিকট দৌন্দর্য্যে বিভাসিত হইয়া আনন্দের হাসি হাসিতেছে, তাহার পরিবর্ত্তে ভূমি কি দেখিতে ?—অম্বকার, অবিচ্ছিন্ন অর্থ-কার। এখন বল দেখি এই চক্ষুর জন্ম আমাদিগের প্রমেশ্বরের নিকট কুত্জ হইবার কারণ আছে কি না ?

কিন্তু সাধারণ লোকের সম্বন্ধে যাহাই ইউক, বাঁহার। জ্ঞানালোচনা ছারা এই জগতের নানাবিধ তত্ত্ব অবগত হইতেছেন, কিরূপ আশ্চর্য্য নিয়মে ও শৃত্খলায় এই জগতের কার্য্য চলিতেছে, তাঁহা বুঝিতে পারিতেছেন, তাঁহারা পরমেশ্বরের প্রতিক্বতজ্ঞ হইবার আরও অধিক কারণ

দেখিতে পান। এই জন্ম বিজ্ঞানের আলোচনা আমাদের হৃদয়ের উৎকর্ম সাধনের পক্ষে বিশেষ প্রয়োজনীয়। পাঠক পাঠিকাগণকে আমরা বৈজ্ঞানিক তত্ত্ব মধ্যে মধ্যে উপহার দিয়া থাকি। অন্থ আমরা আলোক সম্বন্ধে ছই একটী জ্ঞাতব্য বিষয় সহজ কথায় ভাহাদের গোচর করিতে চেষ্টা করিব।

আলোকের সাহায্যেই আমরা জগতবের সকল বস্তু দেখিতে পাই। আলোক
না থাকিলে আমরা কিছুই দেখিতে
পাইতাম না, আমাদিগকে চক্ষু থাকিতেও
অন্ধ হইতে হইত। আলোকের ছুইটী
গুণ থাকাতে আমরা এই জগতের নানাবিধ দৃশ্য দেখিতে পাই—ইংরাজীতে এই
ছুইটী গুণের নাম Reflection ও Refraction; বাঙ্গালাতে আমরা প্রথমটীকে
প্রতিবিধন ও দিতীয়কে বক্রগমন বলিব।

আমরা যে সকল পদার্থের দিকে চক্চ্
ফিরাই, তাহা হইতে আলোকরি ।
আনিয়া আমাদের চক্ষে পতিত হয় বলিযাই আমরা ঐ সকল বস্তু দেখিতে পাই।
ইহার মধ্যে কোন কোন বস্তু নিজেই
আলোক প্রদান করে, এবং দেই আলোকের সাহায্যে আমরা ঐ সকল বস্তু
দেখিয়া থাকি—যেমন হর্ষ্য, অগ্নি, বিছাৎ
ইত্যাদি। চল্লের নিজের আলোক নাই,
হর্ষ্যালোকের প্রতিবিম্বন দারা আমরা
চল্ল দেখিতে পাই। এই পৃথিবীর অধিকাংশ পদার্থই প্রতিবিম্বত আলোকক
দাহায্যে আমাদের দৃষ্টিগোচর হয়। (ক্রমশঃ)

বাঙ্গালা প্রবচন।

(ম শেষ)

- ১। মিছরীর ছুরি।
- ২। মিছা কথা ছেঁটা জল কতক্ষণ রয়?
- ত। মিছে ভুমুর গোমর করে, পাকলে ভুমুর থ'দে পড়ে।
- ৪। মিটমিটে ডাইন, ছেলে খাবার

রাক্ষস !

- ৫। মিড়মিড়ে প্রদীপ, আর বিডবিডে বউ।
- ৬। মিঠে কুল পেলে, আঁটিভদ্ধ গেলে।
- भन्त्यत কোলে ছেলে দিয়ে,
 মাগী যায় লড়ায়ে ধয়ে।
- ৮। মিষ্ট কথায় মন ভেজে।
- ৯। মিষ্ট হাসিতে সৃষ্টি নাশ।
- ১০। মুথথানি ফেন ক্ষুরের ধার।
- ১১। মুথ যেন তলে। হাঁড়ী।
- ১২। মুখ শুক্ষে তুলদী পাতা।
- ১৩। মুখটী যেন ভাজনা খোলা।
- ऽ । मूथ नर्त्रय ।
- ১৫। মুথে রাম রাম বগলে ছুরি।
- ১७। मुहित कुकुत।
- ১৭। মুচির নাই নাক, ভ^{*}ড়ির নাই কাণ।
 - ১৮। मूज़ कानात नीघ काछ।।
 - ১৯। মুড়াগাছার গান।
- ২•। মুজি আমে ভুঁজি, সব বো্গের ভুঁজি।
- ে ২১। মুড়ি রেথে কোপ।
 - २२। मूनित मन ऐला।

- २२॥। मूज़ी भिष्ट्रती এक प्रतः।
- ২৩। মুনীনাঞ্চ মতিভ্ৰমঃ।
- २८। भूषनः कूलनागनः।
- ২৫। মুরদের নাই দীমে, রথ দিয়েছে নিমে।
- २७। मूर्यरेवाना यमनमः।
- २१ । मूर्थम्य नार्द्धाविवः ।
- ২৮। মূর্থের অশেষ দোস।
- २৯। मूनाटादात काँनी।
- ৩০। মূলে গ্রী নাই ফুলশয্যা।
- ৩১। মূলে অশুদ্ধ, তিবড়ীই গোবর।
- ২২। মৃৎপিও একো বহুভাওরপঃ
 স্থবর্ণমেকং বহুভ্ষণাত্মা,
 গোক্ষীরমেকং বহুধেরুজাত
 মেকপর্মাত্মা বহুদেইবর্ত্তী।
- ७७। मृजुार्दि व्यानिनाः अन्तः।
- ৩৪। মেকি টাকায় ঘন নিশান।
- ৩৫। মেঘ না চাহিতে জল।
- ৩৬। মেঘ হয়েছে চাকা চাকা,
 কি কর শ্বন্তর লেখা জোখা,
 ক্ষেত্রে মাঝে বাঁধগে আল,
 বৃষ্টি হবে আজু কাল,
- ৩৬॥। মেঘে মেঘে বেলা যায়, কনে বৌ সাতবার থায়।
- ৩৭। মেড়ার শৃঙ্গে হীরা ভাকে মানীর অপমান।
- ৩৮। মেজে ঘদে রূপ, আমার জোর করে প্রণয়।

৩৯। মেনি মুখো।

৪০। মেয়ে মায়ুষের বাড় কলা-গাছের বাড়।

8)। মোগল পাঠান হন্দ হৈল পারদী পড়েন ভাঁতি, বাঘ পলালো বিড়াল এলো শিকার কর্ত্তে হাতী, ময়ূর গেল ছাতার এলো ফুলয়ে বুকের ছাতি। চন্দ্র স্থ্য অস্ত গেল জোনাকীর পাছে বাতি। ৪২। মোটা ভাত, মোটা কাপড়।

৪৩। মোটে মারাধেনা তাপষ্টি আর পাস্তা।

৪ও। মৌনং সম্বতিলক্ষণং।

৪৫। মোলার দাড়ী ঔষধে লাগে।

৪৬। মোশালজী আপনি কাণা।

৪৭। মৌতাত।

রজকী-সমিতি।

গরিব লোকের অদৃষ্ট সর্ব্বত্র সমান, গরিব রক্ষকদিগের অদৃষ্ট আরও মন্দ। শীত গ্রীম্ম জ্ঞান নাই, ইহারা সমস্ত দিন জলে অৰ্দ্ধ নিমজ্জিত হইয়া বস্ত্ৰাদি ধৌত ক্রিতে থাকে ও মাথায় ক্রিয়া বা স্ম-ত্বৰ্ভাগ্য প্ৰাণীর পূঠে বোঝা চাপাইয়া বস্ত্ৰ বহিয়া অনেক কণ্টে কালাতিপাত করে; তাহাতেও অদ্ধাশনের বেশী হয় কি না সন্দেহ। আমাদিগের দেশে যাহ। দেখিতে পাই, তাহাতে বোধ হয় অবাধে বলা যাই-তে পারে যে, অনেক দোষ ইহাদিগের নিজের। সমস্ত কাপ্ড জড় করিয়া তিন দপ্তাহ-এমন কি এক মাদ দেড়মাদ যাহারা কাপড় দেরও কষ্ট, যাহারা কাচে তাহাদেরও কষ্ট। এরপ অবস্থায় তুঃখ কোনও কালে মুচে না—মুচিবারও নহে । যাহাইউক পৃথিবীর সভ্যতম দেশেও এই শ্রেণীর শ্রম-জীবিগবের ভাগ্য প্রায় তুলারূপ শোচ- নীয়, ইহাই আশ্চর্যা। এই জন্য ইংলওে তিনজন স্থবিখ্যাত তম্বজ্ঞানী মিলিয়া এক রজকী-সমিতি সংগঠন করিয়াছেন। তাঁহাদিগের নাম বিবি আনিবেদাতী. কাউন্টেদ ওএচমিষ্টার ও মিঃ এমঃ धः भूत। हेश्लिश्त কল্পনা বাটী ভাড়া লইয়া কাপড় ধোলাইয়ের কল কেনা হইবে। এতত্বপায়ে পাটায় কাচা ও নিংডানর কাপড কার্য্য আদে করিতে হইবে না অম-ষ্ঠাত্রীগণ অনুমান করেন যে এবস্থিধ উপায় জীবিকা নির্বাহের এক স্থন্দর স্বাস্থ্যকর সহুপায়। বিলাতে রজকী-এক্ষণে গণ যে অর্থোপার্জন করিয়া থাকে, তদ-পেক্ষা কিছু বেশী উপাৰ্জ্জন তাহারা দক্ষম হইবে এই অভিপ্রায়ে কিছু অধিক হারে তাহাদিগকে এতি দেওয়া হইবে সপ্তাহে ছয় মাদ অন্তর লাভ তিন

হইতে অতিরিক্ত পুরস্কার দেওরা হইবে।

এজন্য চাঁদা সংগৃহীত হয় ভাল, না হয়
শতকরা চারি পাউণ্ডের হিদাবে মূলধন
তোলা হইলে লাভ দাঁড়াইবে, লাভ হইতে
ক্রমে ক্রমে ঝণ শোধ হইতে থাকিবে।
লাভের কিয়দংশে কল প্রভৃতি প্রয়োজনীয়
ক্রব্যের মেরামত হইবে; আর যদি লাভ
বেশী দাঁড়ায়, তাহা হইলে অন্যান্য স্থানে
এতক্রপ কার্য্যের অনুষ্ঠান হইবে। এই
কার্য্যের স্থ্রপাত করিবার জন্য ২০০০
পাউণ্ড আবশ্রুক। ইংরাজ জাতি যেরপ
অধ্যাবদায়শীল, তাহাতে আশা করা যায়

যে এই সৎকল্পনা অচিরে কার্য্যে পরিণত হইবে।

পাঠক পাঠিক। বলুন দেখি যে, এববিধ একটি জীত রজক বা রজকী-সমিতি
এদেশে অত্যন্ত আবশ্যক হইয়াছে কি না ?
কয়েক বৎসর পূর্ব্বে এই মহানগরীতে
কতিপয় ভদ্রলোক মিলিয়া এক রজকালয় খুলিয়াছিলেন । কাজ কিছু
দিনবেশ চলিয়াছিল, ছংথের 'বিষয়
কোম্পানী ক্ষতিগ্রস্ত হইয়া কায়্য ভুলিয়া
দেন । পুনরায় এ বিষয়ে চেটা করা
বিধয়।

স্থদূর টেলিফেঁ।

প্রথম টেলিফো নির্দ্মিত হইলে ইহা-ছারা যে দূরদেশ নিকট হইবে এরপ-প্রত্যাশা ছিল না। গৃহ হইতে গৃহান্তরে বা এক নগরের একপ্রান্ত হইতে অন্ত প্রান্তই শব্দ শ্রবণের শেষ দীমা নিরূপিত ছিল। কিন্তু এখন ইহা সে সীমা অতিক্রম করিয়াছে। পাঠিকারা অবগত আছেন যে গত মে মাদ হইতে আমেরিকার চিকাগো নগরে "জগৎ মেলার" কার্য্য আরক হইয়াছে। ইহা অন্যুন ছয় মাস কাল থোলা থাকিবে এবং পৃথিবীস্থ সমস্ত দেশের শিল্পজাত এথানে প্রদর্শিত **হইলে। গত ছু**ই বৎসর ধরিয়া ইহার হইতেছে। আয়োজন আমেরিকার প্রধান নগর নিউইয়র্ক ও বোষ্টন চিকা-

গোর মেলার সহিত যোগ রাথিবার জ্ঞ টেলিফোর বন্দোবস্ত করিয়াছে। ৭ই ফেব্রুয়ারী দিবদে বোষ্টন নগরের সহিত চিকাগো মেলার যোগ স্থাপিত হইয়াছে। নিমেষ মধ্যে বাক্য দকল ১२৫० माहेन পথ विष्राष्ठानिक इहेसा সমুথোপবিষ্ট বন্ধুযুগলের আলাপের স্থায় অবাধে কথোপকথন সম্পাদিত হইতেছে। ইতিপূর্বে নিউইয়র্কের সহিতও উক্ত মেলার যোগ স্থাপন হয়। সম্প্রতি নিউ-ইয়র্কের সহিত ''নিটি অব দি লেকস'' হ্রদ নগরের দহিতও যোগ হইয়াছে। এখানে পরীক্ষার দিবদে দঙ্গীত ও বাদ্যধ্বনি এরপ স্থন্দররূপে তাড়িত দারা চালিত হইয়াছিল যে উভয়

নগরের দূরত্ব সহত্র মাইলেরও অধিক হইলেও শ্রোতা ও দর্শকগণ তাহা স্পষ্টরূপে শুনিয়া প্রীত হইয়াছিলেন।

নিউইয়র্কের সহিত থে দিন চিকা- তার দ্বারা গৃহটী সংযুক্ত হওয়াতে সঙ্গীত গোর যোগ স্থাপন হয়, প্রদর্শক প্রথম স্পষ্টরূপে সকলে শুনিয়াছিলেন কিছুমাত্র কথোপকথন শেষ করিয়া উপস্থিত সভ্য ব্যাঘাত হয় নাই। বিজ্ঞানের আশ্চর্যা শক্তি!

দিগকে আর ৪০টা টেলিফোঁ তারে যোগ
করিয়া প্রদান করেন। এই সময় চিকাগো
নগরের একটা গৃহে সঙ্গীত হইতেছিল।
তার দ্বারা গৃহটী সংযুক্ত হওয়াতে সঙ্গীত
স্পষ্টরূপে সকলে শুনিয়াছিলেন কিছুমাত্র
ব্যাঘাত হয় নাই। বিজ্ঞানের আশ্চর্যা শক্তি

পথভান্ত লোক ঘোরে কেন?

মরুভূমি প্রান্তর বা গহন মধ্যে পথ হারাইয় পথিকগণ কেন সুরিয়া বেড়ায় একথানি বিজ্ঞান পত্রে তাহার কারণ প্রকটিত হইয়াছে। মনুষ্যের পদ ও অঙ্গ দকলের দৈর্ঘ্যের অসমতাই তাহার বতাকারে ভ্রমণের কারণ। যতক্ষণ না দে দর্শনেভিয়ের ছারা গ্যাস্থান নিরূপণে নমর্থ হয়, ততক্ষণ তাহাকে চক্রাকারে ঘুরিতে হয়। মনুষ্যের অবয়ব সকল যে সমভাবাপল্ল নহে, পরীক্ষাধারা তাহা প্রতিপন্ন হইয়াছে। কাহারও বামপদ দক্ষিণ পদ অপেক্ষা দীর্ঘ। কাহারও বা দক্ষিণ হাত বাম হাত অপেক্ষা বুহৎ। কাহার কাহারও অবয়বের উপরিভাগ নিম্ন ভাগাপেকা দীর্ঘ ইত্যাদি। যাহার मिक्का भिष्ठ (म वास्त्रम अ(भक्का मिक्का পদের দ্বারা অধিক স্থান ব্যাপিয়া পদ-বিক্ষেপ করিয়া থাকে। যাহার বাম হস্ত দীর্ঘ সে বামদিকে হেলিয়া চলে, স্থতরাং যতক্ষণ না চকুদার। এই ভ্রম দূর হয়,

ততক্ষণ দে বৃত্ত বা চক্রাকারে খুরিতে নরকন্ধাল পরীকাদারা জ্ঞাত থাকে। হওয়া গিয়াছে যে শতকরা কেবল দশ জনের নিমু অঙ্গ উপরিভাগের দীর্ঘতার সমান; ৩৫ জনের দক্ষিণ অঙ্গ বাম অক্ষের অপেক্ষা দীর্ঘ এবং ৫৫ জনের বামপদ দক্ষিণ পদাপেক্ষা দীর্ঘ। অধিকাংশ লোকের বাম পদ দীর্ঘ বলিয়াতাহারা দক্ষিণে ঝুঁকিয়া খুরিয়া থাকে। তুই চকু वीधिया कान अक याकिक हमारेलरे ইহার সভ্যতা উপনন্ধি হইতে পারিবে। হাজের পরিমাণ ছারাও প্রতিপন্ন হইয়াছে যে শতকরা ৭২ জন লোকের দক্ষিণ হস্ত বাম হস্তাপেক্ষা দীর্ঘতর এবং ২৪জনের বাম হস্ত দক্ষিণাপেক্ষা দীর্ঘতর। স্থতরাং অধিকাংশ লোকেরই বামপদ ও দক্ষিণ হস্তদীর্ঘ। ত্রী পুরুষ নির্ক্ষিশেষে সকলেরই মধ্যে এই অবয়বের অসমতা বর্ত্তমান আছে। এতন্নিবন্ধন "দিশাহারা" ব্যক্তি অন্ধের স্থায় বৃত্তাকারে পরিভ্রমণ করিয়া থাকে।

জীবরহস্থ।

মাকড়সার তম্ভজাত রেশম।

একথানি ফরাসি বিজ্ঞানপত্রে মাকড়-শার তম্ভজাত রেশমের ব্যবসার প্রস্তাবে প্রকটিত হইয়াছে, যে এতদ্বারা অনেক প্রয়োজনীয় সামগ্রী প্রস্তুত হইতে পারে। এই রেশম স্থবর্ণের স্থায় পীত বর্ণ এবং শামান্ত কৌশলেই সংগৃহীত হইতে পারে। মাকড়দা ডিম্ব প্রদাব করিয়াই অধিক তন্ত্র প্রস্তুত করিয়া থাকে। এক একটা मोक्फ्मा २१ मित्न जिन मोहेल मीर्घ রেশম প্রস্তুত করে। গুটিপোকার স্থায় মাকড়সা সকলও রক্ষা করিয়া এব? সংগ্রহ করিয়। বাব-তাহাদের রেশম হারোপযোগী করিবার জন্ম প্রয়াস হইতেছে। এতদর্থে একটা সুদা কলও প্রস্তুত হইয়াছে, তদ্বারা গুটির স্থায় মাকড়সার তস্ত-তার অনায়াদে গুটাইয়া রাথা যাইতে পারে। কিরূপ কৌশলে বয়ন কার্য্য সম্পন্ন হইবে, এক্ষণে ইহাই বিবেচ্য।

সঙ্কর-সিংহ।

১৮২৪ খৃষ্টাব্দে ইংলণ্ডে উইওসর
পশুশালার একটা পিঞ্জরে একটা প্রকাণ্ড
দিংহ ও বৃহৎ ব্যাদ্রী একত্রে আবদ্ধ
থাকিত। প্রায় তিন বৎসর একত্রে
দহবাস করিয়া শেষে দিংহটা গতাস্থ
হয়। ইহাদের পরস্পারের বিলক্ষণ প্রণায়
ছিল এবং দিংহের মৃত্যুর ছয় দপ্তাহ
পূর্ব্বে ব্যাদ্রীর গর্ভে হুইটা শাবক জন্ম-

গ্রহণ করে। শাবকগুলির আকৃতি প্রকৃতি
দিংহেরই অন্থর্নপ—কেবল গাত্র বর্ণ
ব্যাম্রীর স্থায় হইয়াছিল। ইংলণ্ডেশ্বর
ইহাদিগকে "কেশরী-ব্যাম্র" বলিয়া অভিহিত করিতেন।

এই ঘটনার তিন বৎসর পরে অর্থাৎ ১৮২৭ থ ষ্টাব্দে স্টলণ্ডের রাজ-ধানী এডিনবর। নগরের পশালয়েও একটা ব্যান্ত্রীর গর্ভে ও সিংহের ঔরসে তুইটা শাবক জন্মে: কিন্তু শাবকগুলি একবৎসরের মধ্যেই মৃত হয়। পূর্ব্বোক্ত উইওদরস্থ পশালয়ে শাবকগুলিও তিন মাদের হইয়া মরিয়া যায়। এই উভয় ঘটনাই "ইংলিদ দাইক্লোপিডিয়া" নামক বুহৎ শব্দকোষে লিপিবদ্ধ আছে এবং তদানীন্তন প্রাচীন প্রধান সংবাদপত্তে **শর উইলিয়ম জার্ডিনেব প্রাণিবৃত্তান্ত** পুস্তকে বর্ণিত আছে। ' এই দৃষ্টান্তের অনুসরণ করিয়া সম্প্রতি আয়ল ত্তির রাজ-কীয় জুলজিকাল নোসাইটি পশ্বালয়ে সঙ্কর সিংহ প্রস্তুত করিতেছেন। তথায় এক্ষণে প্রায় একশতেরও অধিক সঙ্কর সিংহ-শাবক উপজাত হইয়া প্রতি-পালিত হইতেছে। প্রদর্শন ব্যতীত এই সকল সম্ভর সিংহ শাবকদিগকে অন্ত ক্রোন প্রয়োজনীয় কার্য্যে নিযুক্ত করা যাইতে পারে কি না তাহা এখনও নিশ্চিত হয় নাই।

বিবাহিতা কন্সার প্রতি উপদেশ।

মা * * * *. আজি তোমার জীব-নের বিশেষ দিন ও অতি ওভ দিন। মঙ্গলময় ঈশ্বরের বিধানে আজি তুমি তোমার জীবন-সঙ্গী লাভ করিলে এবং পবিত গৃহধর্ম পালনের জন্ম দংসারের প্রথম সোপানে পদার্পণ করিলে। তোমার উপযুক্ত বয়স হইয়াছে, তুমি জ্ঞান লাভ করিয়াছ, ধর্ম শিক্ষা করিয়াছ, গৃহ কার্য্যে অভ্যন্ত হইয়াছ, পতি-মর্য্যান্য বুঝিয়াছ এবং আপন ইচ্ছায় সচ্ছন্দচিত্তে তোমার মনোনীত পতিকে বরণকরি-য়াছ। তুমি ইহার সহধর্মিণী ও সহ-ক্রিণী হইয়া ঈশ্বরের চরণে মিলিত হও এবং যাবজ্জীবন জ্ঞানে, ধর্মে ও সাধ অন্নষ্ঠানে জীবনকে উন্নত করিয়া শাস্তি ও কল্যাণের পথে অগ্রসর হও এই আ্যা-দিগের আন্তরিক কামনা ও প্রার্থনা। এত দিন তুমি আমাদিগেরই ছিলে, আজি তোমাকে আর এক জনের হস্তে সমর্পণ করিতে—আর এক গৃহে তোমার স্থান নির্দেশ করিতে আমাদিগের প্রাণ কি সহজে চায় ? তুমি আমাদিগের গার্হসাশ্রমের প্রথম ফল, অপত্য-স্লেহ যে কি অপূর্ব পদার্থ তাহা তোমা হইতে আমরা প্রথম অনুভব ওশিক্ষা করিয়াছি; তোমার শৈশব জীবনে আমরা ঈশ্বরের অপরূপ লীলা বিশেষরূপে নিরীক্ষণ করিয়াছি; তুমি আজি অষ্টাদশ বর্ষকাল নানা অবস্থার পরিবর্ত্তনে আমাদিগের

স্থু ছঃথের সমভাগিনী হইয়া আমা-দিগের সঙ্গে সঙ্গে বেড়াইয়াছ, তুমি তোমার দদগুণে, পরিশ্রমে, স্লেছে ও স্থবিবেচনায় আমাদিগের গার্হস্থা কর্ত্তব্য-ভার অনেক সময় আপনার মস্তকে লইয়া নিপুণা গৃহিণী ও স্বেহময়ী জননীর ভায় গৃহকার্য্য দকল সম্পন্ন করিয়াছ এবং গৃহবাসী সকলের সেবা শুশ্রাষায় সকলকে পরিতৃপ্ত করিয়াছ। তুমি আমাদের অতি প্রিয় ও অতি উপকারী স্লেহের ধন, তোমাকে প্রাণ ধরিয়া অন্তের হস্তে দিতে আমাদের কি সহজে ইচ্ছা হয় ? কিন্তু মা জানিও, তোমার চিরজীবনের কল্যা-ণের জন্ম অতি কঠোর কর্ত্তব্যের অমু-রোধে আমরা এই কার্য্যে প্রবৃত্ত ইইয়াছি। তোমাকে অপরের গৃহিণী হইয়া নৃতন গৃহ ঈশবের নামে প্রতিষ্ঠা করিতে হইবে। কিন্তু অপরের জীবন-সঙ্গিনী হইলে বলিয়া আমাদিগের সহিত তোমার সম্বন্ধ আঞ্জি হইতে কি শেষ হইবে ৷ ইহা কথনও ভাবিতে পারি না। আমরা **সামা**স্থ তৈজ্প পাত্রের স্থায় তোমাকে নিঃস্বছে আর এক জনকে দিতেছি না, আমরা অর্থের অন্ধরোধে গৃহপালিত পত বা ক্রীত দাদীর স্থায় তোমাকে আর এক জনের নিকট বিক্রয় করিতেছি না, ধন্ম-কাম হইয়া ধর্মার্থে তোমাকে দৎপাত্রের হস্তে সমর্পণ করিতেছি, এবং তিনিং আদর করিয়া ধর্ম ব্রত পালনার্থ ঈশ্বর ও

ধর্ম বন্ধুগণকে সাক্ষী করিয়া, আজি তোমাকে ধর্মপত্নীরপে গ্রহণ করিলেন, এ কার্য্যে তোমাদের উভয়ের মঙ্গল হইবে, জমঙ্গলের কোন আশঙ্কা নাই; তুমি আমাদদের যে স্নেহের কন্তা, দেই কন্তা চিরকাল থাকিবে। তুমি স্কলভার কর্ত্তব্য সকল জান, আপনার কর্ত্তব্যজ্ঞানে তাহা সাধন করিবে; ঈশ্বর করুন আমরা যেন তোমার প্রতি পিতা মাতার কর্ত্তব্য সাধ্যমত চিরকাল প্রতিপালন করিতে পারি।

মা ! সভীয় ধম নারীকুলের প্রধান গৌরব ও দর্কোৎকৃষ্ট ভূষণ। এই ধর্ম **সম্পূ**র্ণরূপে পালন করিতে যত্নশীলা হইবে, ইহাতেই ভূমি এহিক ও পারত্রিক সকল কল্যাণ লাভ করিবে। তুমি যে বংশে জন্মগ্রহণ করিয়াছ, সে বংশে অনেক ধ্যা-প্রাণা পতিব্রতা রমণীর অভ্যাদয় হইয়াছে, **তুমি আ**বার যে কুলে প্রবেশ করিতেছ, অনেক পবিত্রচরিতা সাধ্বী রমণী জন্ম-এহণ করিয়া সে কুলকেও ধন্য করিয়া-ছেন, ক্রমে ইহার পরিচয় পাইবে। আজি তুমি এই সকল মহিলাকে এবং ভারতের আদর্শ সতী রমণীদিগকে বিশেষ-রূপে তোমার দৃষ্টির সম্মুথে রাথ এবং বিনীতভাবে তাঁহাদিগের চরণতলে ব্দিরা তাঁহাদিগের পদান্ধ অনুসরণ করিতে প্রব্রম্ভ হও। সীতা, সতী, পার্ব্বতী, সাবিত্রী, मगरींडी, शाकाती, अक्कारी, लाभागुमा প্রভৃতি কত রমণী-রত্ন ভারতমাতার মুখ উচ্ছল করিয়াছেন। আজ শ্রনার সহিত

ইহাঁদের স্ফারিত সারণ ও অনুশীলন কর। সীতা দেবী ব্রহ্মজ্ঞ রাজ্যি জনকের কন্তা ছিলেন, রাজ-কন্সা রাজ-বধু রাজ্যেশ্বরী হইতে যাইতেছেন, এমন সময় দৈবঘটনায় পতির বনবাস হইল। সতী রাজ্য সম্পদ পশ্চাতে করিয়া আনন্দচিত্রে পতির সহচারিণী হইলেন, এবং অরণ্যে পর্ণকুটীরে বাদ ও ফল মূল আহার করিয়া স্বর্গ-স্থথ অন্নভব করিতে লাগিলেন। তাঁহার আরও ছবিপাক ঘটিল, একাকিনী রাক্ষস পুরীতে কারার বন্দিনী হইয়া অশেষ অত্যাচারে প্রপীডিত লাগিলেন.—এই অগ্নি পরীক্ষায় হাদয়ে অবিচলিত পতিভক্তি ও আত্মায় দেব-বল ধারণ করিয়া উন্তীৰ্ণ অনায়াদে হইলেন। বনে বনের পশুদিগকে প্রেমে বশীভূত করিয়াছিলেন, গৃহে রাক্ষ্মীদিগকে তাঁহার ভীত ও গুণে মুগ্ধ করিয়াছিলেন। ছর্দিন মুচিয়া যথন পুনরায় স্থদিন হইল, তখন অঘোধাায় প্রত্যাগত হইয়া স্বামীর সহিত রাজ্য ভোগ করিলেন, কিন্তু সম্পদে এক দিনের তরেও উন্মত্ত হন নাই। বিনা দোষে স্বামীকর্ত্তক নির্স্কাসিত হইলে বাল্মীকির তপোবনে তপস্বিনীর বেশে পরম স্থথে কাল্যাপন করিলেন, এবং স্বামীর গুণাত্মগান ও শুভ নিরত রহিলেন। প্রবাদ বাক্য শুনিয়াছ "যাবঁৎ দীতা তাবঁৎ ছঃখ, মর্বে দীতা যাবে ছঃধ" এইরূপ চির ছঃখ্ময় জীবনে অটল প্রেম ও পবিত্রতা রক্ষা করিয়াই

তিনি অলোকিক দেবীত্বের পরিচয় দিয়াছেন। ধন্ত দেবী দীতা, ব্রহ্মনিষ্ঠ গৃহস্থের গৃহে তোমারই জন্ম দার্থক হইয়াছে।

পার্বক গিরিরাজ হিমালয়ের এক মাত্র কলা হইয়াও ঘোরতর তপস্থা করিয়া শাশানবাদী ভিথারী শিবের দহ-ধর্মিনী হইলেন। রাজগৃহে বাদ অপেক্ষা এই ভিথারীর দক্ষে ভিথারিনী হইয়া অধিক স্থথ অন্তভব করিলেন। অন্ন বস্ত্র জুটুক না জুটুক, দেবাত্মা স্বামীর দহিত জ্ঞানালোচনা ও ধর্ম্মদাধনা করিয়া ইন্দ্র পদ ও স্বর্গস্থকেও ভুচ্ছ করিয়াছিলেন। এরূপ মহাপ্রাণা রমনী দেবতাগণেরও পূজনীয়া হইবেন আশ্চর্য্য কি ?

দাবিত্রী রাজার কলা এবং চির্দিন সম্পদে প্রতিপালিতা হইয়াও ফুত্সর্কম <u> বত্যবানকে পতিতে</u> বনবাসী করিলেন, মৃত পতি অল্লায়ু জানিলেও বাঁহাকে একবার হাদয় দিয়াছেন, পার্থিব কোন ছঃথের ভয়ে বা স্থথের লোভে তাঁহাহইতে দে হাদয় প্রতিগ্রহণ করিতে পারিলেন না। প্রভাতঃ তিনি পিতার অতুল রাজ্য সম্পদের দিকে দুক্পাত না করিয়া তঃথিনীর বেশে অরণ্য আশ্রয় করিলেন এবং দ্বিদে স্বামী ওশ্বতর শ্বাত-ড়ীর দেবায় আত্মসমর্পণ করিয়া আপ-नारक धका मान कतिरामन । अक्रम नाती নিজগুণেই সভীর আদর্শ হইয়াছেন। 🐣

স্বামী অন্ধ বলিয়া দেবী গান্ধারী স্পাপনাকে দর্শনস্থাথ বঞ্চিত করিয়া- ছিলেন। লোপামুদ্রা রূপযৌরনসম্পন্না রাজকন্তা, এক জটাবন্ধলধারী ঋষি তাঁহার পাণিগ্রহার্থী হওয়াতে পিতা মাতা আত্মীয় সকলে ভীত ও গভীর শোকে আকুল। কিন্তু সেই রাজকন্তা পরমার্থ লাভের পরম স্থযোগদেথিয়া সেচ্ছাক্রমে প্রফুলমনে ঝিষবর অগস্ত্যের গৃহিণী হইলনে এবং তাঁহার সহিত পরম স্থথে জীবন অতিবাহিত করিলেন। এইরূপ দেথিবে কত স্থবৃদ্ধি আর্য্য রমণী গ্রহিক প্রমায় ও ভোগবিলাস ভুচ্ছ করিয়া অনম্ভ জীবনের কল্যাণোদ্দেশে গুণবান্ পতির সহধর্মিণী হইয়াছেন।

আজি মা * * * তমি রাজা বা ধনাঢ্যেব ঘরে পড়িতে পারিলে না বলিয়া कि क्रुक इटेरव ? छ पवान, সক্ষরিত্র. ব্রন্ধনিষ্ঠ পাত্রের মধ্যাদা বুঝিয়া তুমি যে তাঁহাকে জীবন সাথীরূপে গ্রহণ করিয়াছ ইহাতে তোমার ছঃথের কোন আশকা নাই। এখন পতির সহিত যদি বৃক্ষতলে বাদ করিতে হয় করিবে; শাকার আহার করিয়া দিন কাটাইতে হয় কাটাইবে; স্থানর পট্রস্থের পরিবর্ডে যদি ছিল বস্তা এবং স্বর্ণালক্ষারের পরিবর্জে যদি শাঁথা ও লোহার খাড়ু মাত্র পরিতে হয় পরিবে, তাহাতে হুঃথ কি ? ঐ ত দেখিলে কত রাজরাজেখরের কন্তা তুঃথের ভাবস্থা স্থার বলিয়া আলিকন করিয়াছেন। প্রকৃত স্থথ বাহিরের অবস্থার উপর নির্চ্চর করে না। যিনি স্থথের সাগর ও শান্তির অনস্ত উৎস, সেই প্রেমময় পরমেশরের

প্রেমে স্বামীর সহিত একপ্রাণ হইয়া যদি মগ্ন হইতে পার, তাহা **इ**हेटल है প্রকৃত স্থাধিনী ও সোভাগ্যশালিনী হইতে পারিবে। আর তাহা না হইলে সম্পদও বিপদ ও অশান্তির কারণ হইবে। আজি যে পবিত্র দাম্পত্য ধর্ম গ্রহণ করিলে. ইহা স্বর্গীয় প্রেমের ধর্ম, ইহার প্রাণ পূর্ণ পবিত্র পরমেশ্বর: স্বামী ও স্ত্রীতে একত্র হইয়া অনন্ত কালের জন্য তাঁহাতে মিলিত হইতে হইবে। দাধ্বী ন্ত্ৰী নাস্তিক, ধর্মভ্রষ্ট, পতিত স্বামীকে উদ্ধার করিয়া ঈশ্বর চরণে আনিয়া তাঁহার সহিত চিরকাল জীবনের পবিত্র স্থথভোগ করেন। যে দ্বী ধর্মান্তরাগী পতি পান, ভাঁহার সোভা-গ্যের সীমা কি?

প্রেমত্রত সাধনের কয়েকটা নিগুঢ় সক্ষেত সর্বাদা মনে রাখিবে ও যত্ন-পূর্ব্বক তাহা অবলম্বন করিয়া চলিবে ;— ১ম বিশ্বাস, ২য় সম্ভোষ, ৩য় সহিষ্ণুতা, ৪র্থ আয়ত্যাগ। প্রথমতঃ সামীকে আপনার জন বলিয়া দেখিবে এবং প্রাণ, মন, দর্কান্ত দিয়া বিশ্বাদ করিবে। স্বামী সুথ হুঃথ সকল অবস্থায় জীবনের সহচর ও বন্ধু, অনিষ্ট করা দূরে থাকুক, অনিষ্ট চিস্তা করিতে পারেন, ভ্ৰমক্ৰমেও ইহা কখনও মনে স্থান দিবে না। স্বামীর নিকট হইতে স্বর[্]ব্যব-হারের পরিবর্তে নিষ্ঠুর ব্যবহার পাই-**লেঁও তাঁহাকে হি**তকারী বন্ধু জানিয়া তাঁহার উপস্থ নির্ভর করিবে এবং বিশ্বস্তভাবে ্র জাহার সেব। করিবে।

দিতীয়তঃ:--স্বামীতে দর্কদা তুমি সম্ভষ্ট থাকিবে। পার্থিব চক্ষে দেখিলে সে লক্ষ্য সিদ্ধ হইবে না. ঈশ্বরের করুণার বিশেষ দান বলিয়া যদি দেখিতে পার. দর্বদাই তাঁহাকে স্থানর ও স্বর্গীয় বলিয়া দেখিবে, এবং তাঁহাতে সম্ভোষ লাভ পারিবে-অবস্থার পরিবর্তনে করিগত স্বামীর প্রতি মনের ভাবের পরিবর্ত্তন হইবে না। সন্তোষ যথার্থই স্পর্শমণি. ইহা আপনার অন্তরকে স্থন্দর করিয়া আর সকলকে স্থন্দর করিয়া দেখায়। তৃতীয়তঃ — যদি স্বামীর দোষ বা ক্রটী দেখ ধৈর্য্য ও সহিষ্ণৃত। প্রদর্শন করিবে। এমন লোক নাই যাহার ভ্রম প্রমাদ ও দুৰ্বলতা নাই, কিন্তু স্থাদয়ে প্ৰেম থাকিলে এমন দোষ নাই যাহা মাজ্জনা করা যায় না-এমন অত্যাচার নাই যাহা দহা করা যায় না। এদেশের হিন্দু নারীগণ ব্রত বিশেষে প্রার্থনা করেন যেন "পৃথিবীর মত ধৈর্যাশীলা হই" বস্তুতঃ ভাঁহাদিগের ধৈৰ্ঘ্য ও সহিষ্ণুতা দৃষ্টাম্বস্থল। চতুৰ্থতঃ— প্রেম সাধনের দর্কোৎকুষ্ট উপায় আত্ম-ত্যাগ, যে নারী আত্মস্থথচ্ছু, তাহার মত তুর্ভাগ্য আর কেহ নাই. কথনও স্থা হইতে পারে না। যে পতিবতা রমণী আপনাকে ভলিয়া यामीत ऋथ ऋथिनी ए ष्टः ए ष्टः थिनी, তাঁহারই জীবন ধন্ত। প্রিয়তম স্বামী কিসে স্বথে থাকিবেন এই তাঁহার প্রাণ-গত ডিস্তা ও চেষ্টা। স্বামীর হুঃখ হ্রাস ও স্থ বুদ্ধির জন্মতিনি আপনার মস্তকে

ত্থভার যত লইতে পারেন, ততই আপনাকে কুতার্থ মনে করেন। স্বামিদেবার জন্ম তিনি যদি জীবন বিসজ্জন করিতে পারেন—তাঁহার জীবন ধারণ সার্থক মনে করেন, তদপেক্ষা তাঁহার সোভাগ্য আর কিছুই হইতে পারে না। যে প্রেমে প্রিয়তমের জন্ম মরিলেও স্বথ, বাঁচিলেও স্বথ, নিজের জন্ম কিছু চাই না, সেই ত প্রকৃত প্রেম। দাম্পত্য ধর্ম এই গভীর উন্নত পবিত্র প্রেমের শিক্ষা দেয়; এই

প্রেম ঈশ্বরে উথিত হইলেই জীবের মুক্তিও অনন্ত শান্তি লাভ হয়।

শেষ একটা কথা তোমাকে বলিবার আছে * * * * বিবাহ ছুই এক বৎসরের জন্ম নহে, ইহা অনম্ভ জীবনের ব্রত, সেই ভাবে তুমি ইহাকে গ্রহণ কর এবং কায়-মনোবাক্যে তোমার স্বামীর কল্যাণ সাধনে নিযুক্ত হও। মঙ্গল বিধাতা প্রমেশ্র তোমাদের স্কাঞ্চীন কল্যাণ বিধান করুন।

নরহত্যা।

(৩৪০ সংখ্যা ১৯ পৃষ্ঠার পর)

আরব দেশের মধ্যে অনেক গর্ভবতী প্রদ্রের সময় কোন একটী গর্ভের নিকট শায়িত হইত। যদি কল্যা জ্মিত, তবে তৎক্ষণাৎ সেই সন্থানটী ঐ গর্ভে নিক্ষিপ্ত হইত। কিন্তু মহাত্মা মহম্মদকে অগণ্য ধল্যবাদ, তিনি কোরাণে এই নিষ্ঠুর ব্যবহার নিতান্ত গহিত বলিয়া প্রতিষেধ করিয়াছেন।

আমেরিকা দেশের অসভ্য জাতিদের মধ্যে ত্রীলোকের এমনি তুর্দশা যে, কল্যা বয়ঃপ্রাপ্ত হইলে আমার মত যন্ত্রণা ভোগ করিবে এই ভাবিয়া জননী অনেক সময় বয়ং কন্যা সন্তান বিনাশিত করিয়া কেলিয়াছেন।

নিউ দাউধ্ওয়েল্স দ্বীপে মাতার মৃত্যু হইলে তাহার দক্ষে দক্ষেই শিভ সন্থানেরও সমাধি হয়। ওটাহিটী দ্বীপে ভদ্র বংশীয় স্ত্রী পুরুষে ইচ্ছামত পরস্পারে দাস্পত্য ব্যবহার করিয়া থাকিত, অপত্য জন্মিলে শ্বাসরোধ পূর্বক তাহাকে বিনাশ করিত।

কোন গ্রন্থকর্ত্ত। এরপ বলিয়। গিয়াছেন যে পোলেনিসিয়ায় স্বহস্তে সন্তান বিনাশ করেন নাই এমন গর্ভধারিণী কথনও স্থামার নয়নগোচর হয় নাই।

এই বঙ্গ ভ্মিতেই কিছুকাল পূর্ব্বেজননীর। পূণ্যকার্য্য বলিয়া গঙ্গাসাগরে সম্ভান নিক্ষেপ করিতেন, কিন্তু প্রান্তব্ধ করেক স্থল ব্যতীত পৃথিবীর যে যে অংশে শিশু হত্যা প্রচলিত ছিল, প্রায়ই সেই সেই স্থানে উহার একটা না একটা বিশেষ কারণদৃট হইয়া থাকে। দেশে লোক সংখ্যা

বৃদ্ধি হইলে অবশেষে তুর্ভিক্ক হইবে, আহা-রের কটে প্রাণ বিয়োগ হইবে, প্রায় এই ভয়েই অনেক স্থলে শিশু হত্যার নিয়ম প্রচলিত ছিল। এই জন্যই চীন দেশে ঐ ব্যবহার প্রচলিত আছে। শোলন এই জন্যই আথেন্স নগরে শিশু হত্যা প্রমাদন করিয়া যান। স্পার্টাতেও ঐ প্রথা প্রচলিত হইবার দ্বিতীয় কারণ নাই।

প্লেটোর মতে স্থ্রভী পুরুষের স্থানরী স্ত্রীলোকের সহিত মিলন হউক, প্রথম শ্রেণীর অপত্য রন্ধিত হউক, এবং অধ্য শ্রেণীর অপত্য বিনাশিত হউক। আরি*ই*-টলেরও ঐ মত। তিনি বলেন সস্তানের **সংখ্যা নির্দ্ধা**রিত হওয়া উচিত, নির্দারিত সংখ্যা পূর্ণ হইলে পর যত শস্তান জন্মিবে, তৎসমুদায় নষ্ট করা কৰ্ত্তব্য ।

ঁ যে গ্রীস, যে রোম, যে ভারতবর্ষ পৃথিবীর ভূষণ স্বরূপ হইয়াছিল,তাহারাও অস্লানবদনে স্বহস্তে সস্তান বিনাশেব অমুমতি দিতেছে। যে প্লেটো, যে আরিষ্টটলের নামোচ্চারণ করিলে সরস্বতী প্রসন্নাহন, যাঁহাদের বুদ্ধিমতা দর্শনে জগতীম্ব সমস্ত ব্যক্তি আজি প্র্যান্ত গল-লগ্লীকতবাস হইয়া রহিয়াছে, ঘাঁহারা

জন্মগ্রহণ দ্বারা অবনীমণ্ডলকে পবিত্র করি-য়াছেন, এবং মানবজাতির স্লাঘাস্থল হই-য়াছেন, সেই অলোকসামান্য গুণসম্পন্ন মহাত্মারও দেশাচারের মোহন বিমুগ্ধ হইয়া, অক্ষুন্ধচিত্তে অপত্য বিনা-শের নিয়ম প্রচলিত করিয়াছেন। ধন্তরে দেশাচার, তোর এমনি ক্ষমতা पाँशां नान। প্রকার বিরোধী তর্ক খণ্ড থণ্ড করিয়া আত্মমত সমর্থন করিয়া গিয়া-ছেন, ভাঁহারাও নরহত্যাকে অধর্ম বলিয়া বুঝিতে পারেন নাই।

এই প্রস্তাব দংক্রান্ত আর একটী আশ্চর্যা আছে। যে কথা ফিনি-বিয়াবাদীরা কোনক্রমেই গরুকে আঘাত করিত না. যে কার্থেজবাদিরা বানরকে আঘাত করা মহাপাপ স্থির করিয়াছিল, যে হিন্দুরা পশুদের চিকিৎসালয় স্থাপন করিয়াছে, এবং "অহিংদা পরম ধর্মা' এই বাক্যে याशामित पृष् তাহারাই আবার নরশোণিতপাতে ষ্পত্রসর ইইয়াছে। মানব প্রকৃতির কিছুই হৈর্য্য নাই। এক অস্তঃকরণেই প্রস্পর নিতান্ত বিক্লম্ব গুণ দেখিতে পাওয়া याय ।

(ক্রমশঃ)

নৃতন সংবাদ।

বিভ্ৰিবাহেছ 👣 বন ভুনিলে বিস্ময়াপল বাজের ৬০০ এবং আসাণ্টির রাজার হইতে হর। জুকুকের স্বতানের মহিবী। ৩০০।

আক্রও পৃথিবীর স্থানে স্থান ৩০০, পারস্তের সার ৪০০, শ্রাম-

২। ভামবাদীদিগের দহিত করাদীদিগের বোরতর যুদ্ধ বাঁধিয়াছে। করাদীরা
কতক স্থান দথল করিয়াছে, ভামবাদীরা
একজন করাদী দেনাপতিকে বন্দী
করিয়াছে।

 ৩। পারদী রমণী শোরাবজী বারিপ্তার হইয়াছেন। ভারতীয় রমণী-দিগের মধ্যে ইনিই প্রথম বারিপ্তার। ইহাঁর শক্র আনেক হইবে, ঈশ্বরক্নপার ইনি নিরাপদে উন্নতির পথে অগ্রসর হউন।

৪। আগানী ১৯০০ খৃ ষ্টাব্দে পারিদে

এক মহামেলা হইবে, এখন হইতে তাহার
উল্ফোগ হইতেছে। ফরাদীরা চিকাগো
প্রদর্শনীকে হারাইয়া দিতে ইচ্ছা করিবে
আশ্চর্য্য নহে।

পুস্তকাদি সমালোচনা।

১। কৃষকের ছবি— এইবক্ঠনাথ রায় প্রকাশিত। সহজ কবিতায় কৃষক জীবনের স্থান্দর চিত্র অক্কিত হইয়াছে। কৃষক জীবনের সহিত রাজা শাশিশেগুরে-খরের প্রাণের স্বাভাবিক সহান্থভৃতি তাঁহার লেথার বর্ণে বর্ণে প্রকাশিত।

২। The Chaitanya Library Journal.— চৈতন্ত লাই বেরীর অধ্যক্ষেরা বিবিধ উপায়ে দেশের হিতদাধন করিতে-ছেন। বার্ষিক ১১ টাকা মূল্যে এই বৈমাদিক পত্রিকাথানির প্রকাশেরও দেই উদ্দেশ্য। আমরা ইহার দীর্ঘজীবন প্রার্থনা করি।

৩। তটিনী—- এ "প্রমীল।" রচ্ফিত্রী প্রবীত, মূল্য ৮০ আনা। লে থিকা স্থকবি এবং বামাবোধিনীর পাঠক পাঠিকা-গণের অপরিচিতা নহেন। পুস্তকে ৫৭ টী

স্থন্দর কবিতাস্তবক আছে । লেখা যেমন দরল, তেমনি দরদ ও মধুর। আমরা পাঠীগণকে ইহার মধুরতা আখা-দনে বিশেষ অন্তরোধ করি।

৪। কুন্তলীন—গত চৈত্রের বামাবোধিনীতে এই তৈলের বিজ্ঞাপন বাহির

ইইয়াছে। ইহা কেশ পরিপোষক স্থগদ্ধি
তৈল। ইহা ব্যবহার করিয়া আমরা
উপকার পাইয়াছি। ইহার উত্তাবক

এইচ বস্থ দাধারণের নিকট উৎসাহ

পাইবার যোগ্য।

৫। গো-লন্ধী—ইহা গো-সেবার একথানি স্থন্দর ছবি। ছবিথানি দেখিলো গাভী যে দেবময় নৃত্তি ও সকলের মুহোপ-কারিনী স্থন্দাই উপলব্ধি হয়। এ ছবি বিনা মূল্যে পাওয়া যায়, বরে বরে এক একথানি রাধা কর্ম্বতা।

বামা-রচন।।

মা। (অহ্করণ)

জননি, দয়ার খনি, স্লেহের প্রতিমা খানি, এদ মা, পূজিব আজি কবিতা ফুলে! জালাময়ী ধরাধামে, মা, তব মধুর নামে গলে গো পাষাণ হিয়া প্রেমাশ্র-জলে। नित्रमय এই ভব. অনস্ত করুণা তব, ভাবিতে পরাণ-সিন্ধু উঠে উথলে ! **ट्यरम**शि, त्थ्यममशि, জননি, করুণাময়ি, শাজাব শ্ৰীপাদপদ্ম ভকতি মালে! এ'অদয়-এই দেহ, এতো মা, তোমারি স্নেহ, প্রদীপ্ত প্রকাশ তারি জীবন-মূলে! এমন প্রেমেতে ভরা, এমনি আপনাহারা কে আছে মা, তব সম জগতিতলে ! **স্থ্যোতিম্**রী দেবী তুমি,অধম সম্ভান আমি, তোমারে হেরিলে ঘাই হরষে গ'লে ! ভৰ যোগ্য উপহার, ধরাধামে নাহি আর कूप वं अर्न नव बीकरत जूता! बीषव्यमाञ्चनवी धाव

শোকার্ত্তা অবলার থেদ।

(গত বারের শেষ)

লক্ষ্মীরূপা পতিব্রতা তাহার রমনী।
কোনপ্রাণে তাহারেকে সাজাবে যোগিনী॥
পতির কাছেতে ছিল ছায়ার মতন।
থিক ধিক শত ধিক তাহার জীবন॥

ভীবজে হইয়া মরা রহিল সে নারী।
চিরদিন সার হল নয়নের বারি॥

বাজ্মী ঘর টাক। কড়ি সকলি থাকিবে।
ভূবন ঘ্রিলে কিন্ত ভূবনে না পাবে॥
স্বামী ভিন্ন অবলার নাহি অস্ত গতি।
বিশেষত যে অবলা নহে পুত্রবতী ॥
স্বামি-শোক নিবারণ পুত্র নুথ হেরি।
শোক তাপ দূরে যার পুত্র কোলে করি॥
স্বামীর তেজেতে হয় পুত্রের উৎপত্তি।
মা বলে কাছেতে এলে স্থির হয় মতি॥
ভহে বিধি একি বিধি দেখিহে তোমার।
পতিপুত্র ভিন্ন দেখি অসার সংসার॥
সোনার ভূবন সে যে সোনার ভূবন।
ভূবন বিহনে কত হতেছে দাহন॥ ৯

ভুবনের চারি কন্যা পতিব্রতা দতী। রূপে গুণে তুলনাতে লক্ষ্মী সরস্বতী॥ পিতৃভক্তি কত হায়! কি বলিব আর। কোথা বাবা বলে মৃত্ত্বি যায় বারে বার ॥ মৃত্যুকালে তিন কন্তা নাহি ছিল কাছে। পিতার শোকেতে তারা বাঁচে কিনা বাঁচে॥ ওঁ দেহ কৃষ্ণ কেশ মলিন বদন। তাহাদের দেখে কাঁদে পশুপক্ষীগণ॥ কি বলে বুঝাব আমি সাধ্য কিছু নাই। ভুবনে ভুবন যুরি খুঁজিয়ে না পাই॥ বুকে করে কন্যা গুলি মানুষ করেছি। তাদের দেখিয়ে মুখ কিরূপেতে বাঁচি ॥ রাজকন্যা ছিল তারা কিছু নাহি জানে। षाक्ष्म क ष्यत्न मिल वानिकात्र थात्। মেয়ে গুলি মনে মনে করিত যে সাধ। এত দিনে হল সার হরিষে বিষাদ ॥

প্রাণের ভ্বন সে যে প্রাণের ভ্বন।
ভ্বন বিহনে তারা ত্যাজিবে জীবন॥
সোনার ভ্বন সে যে সোনার ভ্বন।
ভ্বন বিহনে তারা হতেছে দাহন ।
১০

বুদ্ধ ভগ্নী মার বাড়া মানুষ করেছে। জানি নাক অভাগীর কি দশা ঘটেছে। চলে গেলে ভুবন সে ব্যাথা পেত প্রাণে। করিত সে বার ব্রত তাহার কল্যাণে॥ ভূবন না দেখে করে দদা হাহাকার। হাবা কালা হয়ে বুঝি গেল এইবার॥ ভুবনের ঘরেতে সে ছিল যে গৃহিণী। ভুবন হইয়া হারা মণিহারা ফণী॥ প্রাণের ভুবন তার প্রাণের ভুবন। ভুবন বিহনে তাঁর আছে কি জীবন॥ সোনার ভুবন সে যে সোনার ভুবন। ভুবন বিহনে সে যে হতেছে দাহন। ভুবন ভুবন বলে ডাকে অনিবার। ভুবন না দেখে দেখে সব শৃন্যাকার। কত মাথা খুঁড়িত সে দেৰতার স্থান। ভূবনকে ভাবিত সে গর্ভের সম্ভান॥ জননীর তুল্য জ্ঞান করিত ভুবন। পুত্র শােক এত দিনে জানিল কেমন॥ বুকের উপরে তার হল সর্বনাশ। এত দিনে উঠে গেল ভুবনের বাস ॥ প্রাণের ভুবন তার প্রাণের ভুবন। ভুবন বিহনে তার আছে কি জীবন ॥ সোনার ভুবন সে যে সোনার ভুবন। ভুবন বিহনে সে যে হতেছে দাহন 🏎 ১

দাস দাসী প্রতিবাসী করিছে রোদন। হার হার করিতেছে আত্ম বন্ধুগণ।

ধন্য বিধি একি বিধি করিলে স্ঞ্জন। অকালে হরিয়ে নিলে প্রা**ণের ভুবন** । ভুবন বিহনে হল পুরী অন্ধকার। ওরে যম তোর পায় কোটি ন্মস্কার। দিনেতে ডাকাতি করে লুকালি শমন। পলকেতে নিলি হরে অমূল্য রতন ॥ ভাল দেখে লোভ বুঝি হইলরে তোর। দেখিতে না দিলি আর ধন্য তুই চোর। সেই বাড়ী সেই দোর আছে সেই মর। চন্দ্র বিনা নক্ষত্র না হয় শোভাকর॥ ভুবন করিতে আশো ভুবনমোহন। বোধ হয় নাই আর দিতীয় তেমন । রূপের তুলনা দিব কাহার দহিত। শশধর শশ ধ'রে আছে কলঙ্কিত। বদন পদ্মের তুল্য কিরাপে বা হবে। নিশিযোগে শতদল ভ্রিয়মাণ রবে॥ গুণেতে ছিলরে বশ জগৎ সংসার। পরিজন মধ্যে নাহি ছিল অবিচার ॥১২

সাত পুত্র সাত কন্যা মা বাপের ছিল।
পুত্র গুলি ক্রমে ক্রমে একে একে গেল ॥
পাচ ভগ্নী বেঁচে আছি ছঃথের কারণ।
চারি ভগ্নী বিধবার ছোট যে ভুবন ॥
বিধবা চারি জনের না হল মরণ।
যম বুকি ভুলে গেছে নাহিক শারণ ॥
পথে ঘাটে মাঠে পড়ে আছে কত জন।
সে দিকেতে শমনের না যার নয়ন ॥
দিতলতে কত যতে ছিলরে ভুবন।
খুঁজে পেতে নিরে গেল ছুরস্ক শমন।১০

জ্যেষ্ঠ ভাই ইন্দ্ৰ তুল্য বিধ্যাত সে নামু॥ ক্লপে গুণে ধনে মানে গুণে গুণধাম। মধ্যম ভারের গুণ বর্ণিতে না পারি। বর্ণিতে ষাইলে চক্ষে পড়ে শত বারি॥ চক্ষ তুল্য সেজ ভাই বিদ্যার আকর। শুনিলে তাঁহার কথা যুড়াত অন্তর॥ সকলের ছোট ভাই ভুবনমোহন। মা বাপের ছিল রে সে অঙ্গের ভূষণ॥ দিক পাল চারি ভাই দবে কীর্ডিমান।

ক্লপে গুণে ধনে মানে সকলে সমান॥ বাল্যকালে স্বামিহীন। করিল ঈশ্বর । শহোদর গণ দেখে জুড়াত অন্তর॥ অতিশয় শিশুপুত্র আমি কুলনারী। বিষয় ব্যবস্থা কিছু বুঝিতে না পারি॥ **অ**মিদারী বাড়ী গাড়ী ছিল যত ধন। ফাঁকি দিয়া কেড়ে নিলে দস্ম্য জ্ঞাতিগণ। জননী শুনিয়া কাণে আমার তুর্গতি। ছঃথিনীরে ফেলে প্রাণ ত্যজিলেন সতী। দিবা নিশি কাঁদি আমি হয়ে ভ্রিয়মাণ। অভাগীর নাহি ছিল দাঁড়াবার স্থান। ছোট ভাই ভুবন যে ডাব্রুার প্রধান। রাজার ডাক্তার হরে বর্দ্ধনান যান। তাহার কাছেতে থাকি নাহি কিছু তুঃখ। ছঃপের কপালে কোথা হয়ে থাকে স্থুখ। লেখা পড়া করে পুত্র মনে কত আশা। ভাঙ্গিল আশার বাসা আশাতে নিরাশা ॥ সাচ্মিতে মূর্চ্ছারোগ পুত্রের ধরিল। কোথা রাম রাজা হবে কোথা বনে গেল। স্থপন ভাঙ্গিল শেষে ভেঙ্গে গেল বুক। আমার অদৃষ্ট গুণে বিধাতা বৈমুখ। কত মত চিকিৎশা করালে ভুবন। কোন মতে হইল না রোগ নিবারণ ॥ জাব্দার হাকিম বৈদ্য দৈব কর্ম যত। হাতুড়ে ভুতুড়ে দণ্ডী ফকির মহন্ত ॥ দেখে ভনে সকলেতে হার মেনে ণেল। আমার কপাল গুণে নাহি হল ভাল। **পীড়িত সভান আ**র ছিল যে ভূবন। আটুই মাৰেতে উড়ে গেল দে ভুবন।

বাপের বাটীর আশা সব ক্রাইল।
পত্র লেখা যাইবার নাথ মিটে গেল।
আর এক কাল্সাপ রাথিয়াছি বুকে।
দংশ্রিয়া যাইবে চলে ছাই দিয়া মুখে।১৪

হে নাথ, সচ্চিদানন্দ আনন্দ নিধান।
আমাদের পক্ষে ভাল করেছ বিধান।
অগদীশ তব পায় কি দোষ করেছি।
কত ত্বংথ দেবে দেও বুক পেতে আছি।
আমরা মরিলে তব আশা পূরিবে না।
এত কষ্ট এ জগতে কেহ সহিবে না।
পক্ষপাতী হলে নাথ সত্য সনাতন।
ভেবে ভেবে কেঁদে কেঁদে গেল তুনয়ন।
তোমার অনস্ত লীলা বুকে ওঠা ভার।
জীবন রাথিয়ে নিলে জীবনের সার॥১৫

দিদি পাঁচটী ভগিনী, দিদি পাঁচটীভগিনী, জন্মিয়া মাতার গর্ভে জনম ছথিনী। কতকরেছিগো পাপ,কত করেছিগো পাপ, পাপের ফলেতে এত পাই অন্ততাপ। স্থথে থাক দর্ম্ম জন, স্থথে থাক দর্ম্ম জন, চল পাঁচ জনে যাই নিবিড় কানন। দিদি দকলি অসার, দিদি দকলি অসার,

শ্রীগোবিন্দ চিস্তানন্দ এক মাত্র দার।
করি তাঁরে আরাধনা, করি তাঁরে আরাধনা
জঠর যক্ত্রণা আর পাইতে হবে না।
আর দক্ষ নাহি হব, আর দক্ষ নাহি হব,
চারি সহোদর গুণ বনে গিয়া গাব।
নাহি আর সহোদর, নাহি আর সহোদর,
কি বলে দেখাব মুথ শংসার ভিতর।১৬*

* বামাবোধিনীর এক পুরাতন শ্রন্ধেরা লেখিকা বড়শোক পাইয়া উাহার এই শেব লেখা বামা-বোধিনীতে প্রকাশ করিতে একান্ত অফুরোধ করতে ইংম্প্রকাশিত হইল, আশা করি পাঠক পাঠিকাগণ ইহার সহিত সহামুভূতি করিবেন। বা, বো, স।

বামাবোধিনী পত্রিকা।

BAMABODHINI PATRIKA. "कन्याप्येवं पासनीया शिक्षसीयातियत्नतः।"

কন্তাকে পালন করিবেক ও যত্নের সহিত শিক্ষা দিবেক।

৩৪২ সংখ্যা

আষাঢ়--১৩০০--জুলাই ১৮৯৩।

৫ম কল্প। ২য় ভাগ।

সাময়িক প্রসঙ্গ।

মহারাণীর জন্মদিন—গত ২৪এ মে ভারতেশ্বরী মহারাণী বিক্টোরিয়া ৭৩ বৎসর পূর্ণ করিয়া ৭৪ বৎসরে পদার্পণ করিয়াছেন, জগদীশ্বর মহা-রাণীকে দীর্যজীবিনী করুন্।

রাজ-বিবাহ—আগামী ৬ই জুলাই টেকের রাজকুমারী মের সহিত যুবরাদ্ধ-পুত্র প্রিন্স জর্জের শুভবিবাহ হইবে স্থির হইয়াছে, এই সংবাদে ভারতবাদী মাত্রেই বিশেষ আনন্দিত ।

দান—(১) মাণিকজি পেটিটের স্ত্রী ভাঁহার পতির স্মরণার্থ একটি পুস্তকালয় স্থাপনের জন্ত ৫,০০,০০০টাকা দিয়াছেন।

- (২) হরিদ্বারের স্বাস্থ্যোরতির জ্বন্ত বলরামপুরের মহারাণী ২০,০০০ ুঁটাকা দিয়াছেন।
 - (७) मासाम्बद कानाव क्रनाव

বীরাপাপাটেল ও তাঁহার **হই সহোদর** দেশহিতকর কার্য্যে | ১৪,০০০ **টাকা** দিয়াছেন।

বিলাতী যাতুঘর—গত ১০ই মে ইংলতেশ্বরী ইম্পিরিয়াল ইনিষ্টাটউট্
নামক যাত্বরও খুলিয়াছেন। প্রধানতঃ
যুবরাজের উপোগে এই বৃহৎ ব্যাপার
সম্পন্ন হইয়াছে। ইহা মহারাণীর ৫০
বৎসর রাজতের,ম্মরণ-চিক্ত। যুবরাজের
পঠিত অভিনন্দনের প্রভাতেরে মহারাণী
বলিয়াছেন এই শির্গৃহ তাঁহার বিশাল
বিচ্ছিন্ন রাজ্য সমুদ্যের যোগ বৃদ্ধনের
উপায় হইবে।

মান্দ্রাজ-ন্ত্রীশিক্ষা— মান্ত্রাব্দের হিন্দু-সমান্দ-সংশ্বার-সভা তত্ত্রতা দ্রীকোক-দিগের উন্নতির জন্ত একটা স্থন্দর নিক্রম নিশ্বারণ করিয়াছেন। কতকগুলি বিশ্ববী রমণী জীলোকদিগের জ্ঞান শিক্ষা ও আমোদ বিধানের জন্ত মাদে মাদে একটি করিয়া বজ্তা করিবেন। বিজ্ঞানগরের মহারাজার বালিকা বিভালয়ে প্রথম সভা হয়; কুমারী আনি সামাগাম ইংলও ভ্রমণ বিষয়ে বজ্তা করেন এবং ম্যাজিক লঠন দিয়া ইংলওের কতকগুলি দৃশ্য প্রদর্শন করেন।

বানপ্রস্থ যাত্রা—কচ্ছের মহা-রাজা প্রাচীন রাজ্যিদিগের ভায়ে সপত্নীক বনবাস ত্রত অবলম্বন করিয়াছেন, সঙ্গে সুই জন মাত্র ভৃত্য আছে।

আদর্শ পতি দেবা—বিখ্যাত
ইংরাজ ইতিহাদবেতা গ্রীন দাহেবের
পত্নীর সামিভজ্জি ও অধ্যবদায় বিশেষ
দৃষ্টাস্তস্থল। ভাঁহার স্বামীর বহুল গ্রন্থ
প্রচার ভাঁহারই পরিশ্রমের ফল, পুরাভব্বের দংগ্রহে তিনি স্বামীকে যথেষ্ট

দাহায্য করেন। অনেক সময় স্বামীর জন্ম ১১ ঘন্টা করিয়া লিখিতে হইত; এই গুরুতর শ্রমে তাঁহার দক্ষিণ হস্ত বাতে অসাড় হইয়া যায়; সাধ্বী রমণী বামহস্তে লেথা অভ্যাস করিয়া কয়েকথানি পুস্তক লিথিয়াছেন।

দীর্যজীবন—(১) কুর্গ প্রদেশে ভেক্কাটারামিয়া চেটি নামে একজন ভৃতপূর্ব পুলিদ কর্ম চারী ১২০ বৎদর বয়দে তমু-ত্যাগ করিয়াছেন। ৮ আট মাদ পূর্বের্ব তাঁহার শরীর বেশ স্থন্ত ও স্মরণ শক্তি উজ্জ্বল ছিল,তৎপরে জ্বর ও ত্বর্বলতা হেতু ভাঁহার দেহক্ষর হইয়া মৃত্যু উপস্থিত হইল।

শ্রীডাক্তার—শ্রীমতী হেমাঙ্গিনী দেবী ডাক্তারী পরীক্ষায় প্রশংসার সহিত উত্তীর্ণা হইরা অযোধ্যা নগরে চিকিৎসা কার্য্য করিতেছিলেন, সম্প্রতি জেনানা হাঁসপাতালের ভারপ্রাপ্ত হইরাছেন।

স্বার্থে পরার্থ ।

আগুনের ভিতর যেমন জল, বিষের ভিতর যেমন (ঔষধ রূপী) অমৃত, স্বার্থের ভিতর সেইরূপ পরার্থ। কথায় শুনিতে বিভাল না লাগিলেও আসলে সত্যই হর; কেমন করিয়া স^{নু হয়}, বলিতে যথা-সাধ্য চেষ্টা করিব।

্মানব জগতের তথ যতই শালোচনা ক্রা বায়, তড়ই অহুভূত হয় ্য সত্য ধর্মে আন্মোৎসর্গ করিয়া সকল কর্মব্য পালন করাই মানব জ্বন্মের উদ্দেশ্য।
প্রধানত: মানবের কর্ত্তব্য দিবিধ; প্রথম
ব্যক্তিগত কর্ত্তব্য, দ্বিতীয় জ্বাতিগত
কর্ত্তব্য। ব্যক্তিগত কর্ত্তব্য বিশেষ করিয়া
বলা সম্ভব নহে; কারণ মানবের অবস্থা ও
উপযোগিতা বুঝিয়া ব্যক্তিগত কর্ত্তব্য
নির্ণাত হইয়া থাকে । আর নিজের,
নিজ্প পরিজ্বনের, সমাজের ও জ্বগতের
উন্নতি এবং মন্ধ্বনের জন্থ যথাসাধ্য চেষ্টা

করা মানবের জাতিগত কর্ত্তব্য। মানব-বৃদ্ধি যত টুকু বুঝিতে পারে, তাহাতে বোধ হয় যে এই কর্ত্তব্য পালন করাই ভগ-বানের আদেশ । অতএব ধর্ম আত্মো-ন্নতি-ধর্ম পর্ছিতৈষণা। কিন্তু পর-হিত সাধন করিতে হইলে আত্মোন্নতিই প্রথম প্রয়োজনীয়। আপনাকে উপযুক্ত রূপে গঠন করিতে না পারিলে কার্যাক্ষেত্রে অবতরণ কর। কাহারও পক্ষে স্থদাধ্য নহে। যীশুখীর বা চৈত্ত দেব নিজে যদি ধার্মিক চুড়ামণি না হইতেন, তবে তাঁহাদিগের ধর্মে জগৎ প্রিব্যাপ্ত হইত না; আর্যভট্ট, নিউটন, ফ্রাঙ্কলিন প্রভৃতি যদি বিজ্ঞানাত্মশীলনে একাগ্রচিত্ত না হইতেন, তবে জগৎ তাঁহাদিগের সঞ্চিত ধনে ধনী হইত না; রাজা রামমোহন রায় যদি ধর্মবীর না হইতেন, তবে শতাদী পূর্ণ না হইতেই বঙ্গভূমির এ অভাবনীর পরিবর্ত্তন হইত না; পণ্ডিত বিহাাসাগর মহাশ্য় যদি নিজের আর্থিক উন্নতি করিতে না পারিতেন, তবে ভাঁহার দেবোপম দ্য়া বুদ্ধি যথোচিত চরিতার্থ হইত পণ্ডিতা রমা বাই যদি উচ্চাশয়া না হই-তেন, তবে ''শারদা দদন'' স্থাপিত হইত না; মহারাণী স্বর্ণময়ী যদি ধনবতী না হইতেন, তবে ভাঁহার দানশীলতা এত ক্ষ্র্টি পাইত না; আমাদের দরিদ্র বিধবা গঙ্গাজেলেনী যদি গবল স্থস্থ না হইত, তবে শরীর থাটাইয়া একঘর শিশু-বাঁচা-ইতে পারিত না। তাই বলিতেছি, পর ছিত সাধন করিতে হইলে আক্ষেরতি

আগে আবিশ্রক। নিজে কার্যক্ষম না হইলে পরের কাজ করা যায় না।

স্থতরাং যাহাতে নিজের স্বাস্থ্যা, ধন, মান, বিছা৷ বুদ্ধি, চরিত্র প্রভৃতি উন্নতি প্রাপ্ত হয়, সেই রকম কাজ করা ধর্মা-নুমোদিত-ঈশবের অভিপ্রেত। এই সকল কাজকে "স্বার্থ" বলিতে চাও, वल, किन्नु এই तकम सार्थ भूग कता মানবের অবশ্য কর্ত্তব্য; কারণ-বোধ হয় সকলে বুঝিতেছেন, এরূপ সিদ্ধি ব্যতীত মানুষের ''মা**নু**ষ'' হও-য়ার সম্ভাবনা নাই। কিন্তু যে স্বার্থের উদ্দেশ্য পরহিতৈষণা, যে স্বার্থ শাদনে শাদিত, দেই স্বার্থ পূর্ণ করাই যে পুণ্য ইহা মানবের দকল দময়েই স্মরণীয়। আর আসজ্জিনূলক যে স্বার্থ, দেই স্বার্থ পূর্ণ করাকেই পাপ বা **অধর্ম** বলা যায়। যে ব্যক্তি আসজিমূলক সার্থ, পূর্ণ করিতে চাহে, তাহাকে "সার্থ পর" কহে। স্বার্থপর ব্যক্তিকে এ জগতে প্রথম শ্রেণীর অধার্মিক—বলিলেও অত্যু-জিন হয় না। যে ব্যক্তি পরের প্রয়োজন— পরের হাদয়, কিছুমাত্র বুঝে না, অথচ আপনার সবটা বোল আনায় হিসাব করিয়া লয়, তাহাকে লোকে কেবস ''স্বার্থপর'' বলিয়া তৃপ্ত হয় না,''নিশ্বম"ও বলে, ''হাদয়হীন''ও বলে।

কিন্ত এই রকম সার্থপর হওয়া মান•
বের পক্ষে আক্র্র্যা নহে। আক্রম্থকামনা
মানবস্থারে বেমন স্থাভাবিক, তাহাতে
জীবন পথে একটু স্বুতুর্ক হইলেই মানব

স্বার্থপর হুইয়া পড়িতে পারে। मत्रीमयं जगमीश्रंत हैह। निवाद्यत्व क्रम (य উপায় বিধান করিয়াছেন, তাহা ভাবিলে বিশেষ চমৎক্রত হইতে হয়।

काणीयत आमामिरशत भतीत. मन. ও অবদয়ে যে শক্তি ও বৃত্তি গুলি দিয়াছেন, দে দকলই প্রয়োজনীয় । ইহার মধ্যে থে সকল বুত্তির অধিকতর পরিচালনায় নিজের ও অপরের বিশেষ উপকার হয়. সেই গুলিকে উৎকৃষ্ট বুত্তি—আর যে সকল ব্রত্তির অধিকতর পরিচালনায় নিজের ও অপরের অপকার হয়, তাহাদিগকে নিকুষ্ট বুতি বলে। কিন্তু এই সকল শক্তি ও ব্রত্তির মধ্যে বিবেকশক্তি শ্রেষ্ঠতম। প্রজার সহিত রাজার যেমন সম্বন্ধ, শিষ্যের সহিত গুরুর থেমন সম্বন্ধ, আমাদের **ষ্ঠ্যান্ত** বৃত্তি ও শক্তির সহিত বিবেকের সেই রকম সম্বন্ধ। এই বিবেকের শাস-নাধীনে সকল শক্তি ও বৃত্তিকে পরিচালন कत्रां (करें "मःयम" वला यात्र। मानव. শাসনাধীনে যদি তাঁহার বিবেকের আছোন্নতিকামনা পরিচালন করেন, উদ্দেশ্য তাহা হইলে তাহার স্বার্থের "পরার্থ" হইয়া থাকে; কারণ বিবেক হইতেই বুঝিতে পারা যায় যে "জগদীশ্বর" আমাদিগকে যে দকল শক্তি ও বুত্তি দিয়াছেন, তাহা এই বিশ্বজগতের মঙ্গ-

লের জন্ম-ক্রপণের মত নিজের সিন্দক বোঝাই করিবার জন্ম নহে। আমরা এ জগতে হুই দিনের জন্ম আদিলেও আমাদিগের কাজের ফল অন্তকাল-স্থায়ী।'' এইরূপে মানবহাদয় বিশ্ব-হিতৈষণায় প্রণোদিত হইতে পারে। এইরূপে পরার্থপরতার উদ্দেশ্রে নিজের স্বাস্থ্য, ধন, মান, বিছা, বৃদ্ধি, চরিত্র, সকলই উন্নত করিতে প্রবৃত্তি জন্মে। ইহারই পরিণতিতে স্বার্থ পরার্থের সহিত মিশিয়া যায়-মানব-ছাদয় প্র-ময় হইয়া পডে। জলবিম্ব যেমন জলে উদয় হয়. আবার সেই জলে মিশিয়া যায়, স্বার্থত তেমনি পরার্থের জন্ম জন্মিয়া সেই পরার্থে ডুবিয়া থাকে! এমন "স্বার্থ"ই ভগবানের অনুমোদিত।

এখন তুমি আমাকে বল প্রিয় পাঠিকা ভগিনি! তোমার যে আত্মো-ন্নতির ইচ্ছা—তোমার আত্মোন্নতির ইচ্ছা অবশ্য আছে, নহিলে তোমার মনুষ্যত্ব **সঙ্কু চিত হই**য়া পড়ে—তাই বলিতেছি, তোমার যে আন্মোন্নতির ইচ্ছা, ভাহা কি কেবল তোমার আত্মতৃপ্তির জন্ত ? অথবা যে বিশেষরের ইচ্ছায় এ রাজ্যে আসি-য়াছ, তাঁহার জন্য যথাসাধ্য-ক্ষুদ্রাদ্পি কুদ্র কাজটা সম্পূর্ণ করিবার জন্য ?

अया।

মহারাণী সীতীবিলাস।

महिशुरतत महात्राची मीजाविनाम मि, | वीतताब উर्लित अकमाज कला। ছাই, ই, স্বৰ্গীয় মহাক্স। ভক্তিখারী গানা নামক গ্রামে ইহার আদি বাসস্থান ছিল। মহারাণীর পিতা তরুভিথারীতে * আসিয়া বাস করেন। डेबि কর্ম্মোপযোগী উত্তম শিক্ষালাভ করিয়া-মহারাজ ক্লফারাজ উদয়ার ছিলেন। বাহাতুর ইহাঁকে মামলৎদারের নিযুক্ত করেন। ইহার প্রথমা জীর গর্ভে একপুত্র ও এককন্যা হয়। পুত্রের নাম ক্সবরাজ উর্শ। ইনিও স্বর্গলাভ করিয়া-ছেন। কন্যার নাম দেবজন্মনী, ইনিই মহারাণী সীতাবিলাস। আমাদের দেশের অবস্থা এক সময়ে এত স্বচ্ছল ছিল যে, ৩া৪ টাকায় একজন লোকের জীবিকা নির্বাহ হইত। এই উক্তির যাথার্থ্য যেমন বঙ্গদেশে, তেমনি মহা-রাষ্ট্র প্রভৃতি অন্যান্য দেশেও প্রযুক্ত হইত। মহারাণীর পিতামহ 🔍 টাকার কষ্টের জীবনে সম্ভষ্ট না হইয়া, পুত্রকে এমন স্থশিকা দান করিতে প্রবৃত্ত হন, যাহাতে তিনি জনসমাজে গণনীয় ও মান-নীয় হন। ইনি ইহাকে সংস্ত অধ্যা-পনা করান। অগ্রজ পাঠ করিতেন, অন্তজা ভাঁহার পাখে উপবেশন করিয়া শ্রবণ করিতেন। তথু তাহাতে তিনি ক্ষান্ত থাকিতেন না। শিক্ষক যাহা বুঝাইয়া দিতেন, তাহা তাঁহার ভাতাকে কণ্ঠস্ত করিতে হইত। যাহা ভুলিয়া যাইতেন, ভগিনী তাহা বলিয়া দিতেন। , এইরূপে লাতার মত লাভার সহিত শিক্ষালাভ করিতে লাগিলেন; পিতা মাতাকে তাঁহার বিদ্যাশিকার. নিমিন্ত শতত্র বন্দোবস্ত করিতে হয় নাই।. তাহাঁর বয়:ক্রম যথন দশ বৎসরও হয় নাই, তথন হইতেই তাঁহার স্বভাবদিদ্ধ বিদ্যানুরাগ ও শিক্ষোপযোগিতা প্রকাশ পাইতে লাগিল। পিতা তাঁহার অধ্যাপ-নায় কুতসংকল্প হইলেন। মহিশুরের মহারাজ কর্তৃক ইহার অঞ্জ বাসবরাজ উর্শ পেন্ধারের পদে নিয়োজিত হন। স্থতরাং উহার সহিত আর অধ্য-করিতে না পারিয়া দেবজন্মনী পিতাকে আপনার জন্য একজন শিক্ষক নিযুক্ত করিতে বলেন। ইহা ভনিরা তিনি অতিশ্য সম্ভূ হুইয়া একজন উপ-যুক্ত শিক্ষক রাথেন। প্রায় পাঁচ বৎ-দরের মধ্যে কন্যা দংস্কৃত, মহারাষ্ট্রীয় ও কানাবি ভাষায় পারদর্শিতা লাভ করেন। ন্ত্ৰী শিক্ষার অন্যান্য অবশ্রজাতব্য বিষয়ে তিনি যে বীতরাগ ছিলেন, এমন নহে। অবকাশ পাইলে তিনি গীতবাদ্য, চিত্র-বিদ্যা প্রভৃতি কারুকার্য্য শিক্ষ(করিতেন। অন্নকালের মধ্যে ভাঁহার এত বিদ্যোরতি বালিকাগণ দেথিয়া ভাঁহার সমব্যুক্ষা ঈ্ষাম্বিতা হইতে লাগিলেন। ভাঁহার বয়দ ১৬ বৎদর, তথন তিনি প্রাচীন বৈদিক হিন্দু মহিলার স্থলাভিষিক্তা বলিয়া পরিচিতা মহিশুরের মহারাজা এই পারগ হন। সময় ইহাঁর বিদ্যাবতা ও বুদ্ধিমভার বিষয় অবগত হইয়া ইহাঁর পাণিঞ্চুণে রাজস প্রেরণ করিতে हेक्क इन। অত্যম্ভ বিলম্ব হওয়াতে ইহাঁর পিডা দতাৰ্ছ হট্যা মহারাজ সমীপে আনীত

करेंनक मञ्जी र्यालन एर, व्याख उँहाँ तिक है कि बाह्ह दिशा गांछेक, भदत দও দেওয়া হইবে। ইহাঁর নিকট হইতে এক তাড়া কাগজ বাহির হইল; ঐ কাগৰ গুলির মধ্যে উহাঁর কন্যার কোষ্ঠী ছিল। মহিশুররাজ উহা পাঠ করিয়া জানিতে পারিলেন যে উহা মনোনীত পাত্রীর কোণ্ঠী। এই দেখিয়া তিনি পিতার সমস্ত দোষ মার্জনা করেন। भाकीत वयम यथन ১१ मश्रमम वरमत, তথন তিনি মহিশুর মহারাজ-মহিষী হন।

তরুণ বয়দেই মহারাণী দেবজনানী বি**ত্**ষী আখ্যার যাথার্য্য সম্পাদন করেন। ইনি বেদান্তদর্শন অধ্যয়ন করেন; তথু অধ্যয়ন করিয়া ক্ষাস্ত রহিলেন না ; যাব-জ্জীবন ইহার অনুশীলনে ক্ষেপণ করেন। হিন্দু দর্শন শান্তবিৎ অনেক বিদ্যাভিমানী মহা মহোপাধ্যায় পণ্ডিত ইহার সহিত তর্কে প্রব্রত হইয়া পরাস্ত হইতেন। ইহাতে তাহাদিগের অৱবিদ্যাজনিত অসারত প্রতিপন্ন হইত; প্রত্যুত মহা-রাণীর বিদ্যা জলধি যেমন অপরিমেয় তেমনি থাকিত। একদা এক কূট দার্শ-নিক প্রশ্নে, ইহার মন্তক বিচলিত হইয়া উঠে। ইনি তাহার এক প্রকার

मिकां कर्तिला, क्रिलान वरहे. कि দিদাস্তটী তাঁহার মনঃপূত না হওয়াতে তিনি দাক্ষিণাত্যের স্থপ্রসিদ্ধ পণ্ডিতাগ্র-গণ্য মহোদয়কে মীমাংশার জন্য আহ্বান করেন। ইনি আসিয়া মহারাণীর মতের পোষকতা করেন। हेदाँ इस्तिशि অতি স্থন্দর ছিল, দেথিলে বোধ হইত যেন ছাপার জক্ষর। উড়িয়াদিগের মত তাল পত্রে উত্তমরূপ লিথিতে পারিতেন। বাস্তবিকই তিনি আদর্শ রমণী ছিলেন। মণিকাঞ্নের যোগ ইহাতে হইয়াছিল। একদিকে যেমন অতুলঐশ্বর্য্য, প্রবলপ্রতাপ, এক বিস্তৃত হিন্দু রাজ্যের অধীশ্বরী; অপুর দিকে সেই রূপ বিদ্যা বুদ্ধি ও স্থশীলতা। ভারতের অনেক স্থানে অনেক পুণ্যবতী দানশীলা আরাধ্যা নারী ছিলেন ও আছেন; কিন্তু কয়জন দেবজন্মনী ছিলেন বা আছেন ? ইনি যেরূপ সদগুণবতী, সেইরূপ কীর্ভিমতী; যেমন বিপুল অর্থ, তজ্ঞপ বিদ্যা মহানিধিতে বিভূষিতা ইহাঁকে কেবল মহিশুরের গৌরব-স্থ্য নয়, বিশ্ব ভারতের গৌরব-স্থ্য বলিলে, বোধ ইয় কিছুমাত্র অত্যুক্তি হইবে না।

ক্রমশঃ।

স্থজাতার অপুর্ব্ব কথা।

गरावीत भाकासूनि यथकारण यात- | निकट नीमधना नमीउटि निनानि नामक

র তপদ্যার নিরভ, দেই দ্মরে বুছগরার | একজন ধনাচ্য ভ্যাধিকারী বাদ করি-

সিনানী ছঃথীর বন্ধু ধার্ম্মিক জমিদার ছিলেন। তাঁহার প্রচুর অর্থ এবং গোধন ছিল। স্মুজাতা তাঁহারই ধর্মপত্নী। সেই প্রিয়দর্শনা মধুরভাষিণী দয়াবতী সরলহদয়া স্বজাতার সিনানি পরমস্থথে কাল যাপন করিতেন। কোনও বিষয়ে তাঁহাদের ছঃথ কিসা অভাব ছিল না। কিন্তু এত সৌভাগ্যের ভিতরে থাকিয়াও পুত্রমুথ দর্শনে তাঁহারা বঞ্চিত ছিলেন। পুত্রহীনা স্থন্ধাতা সন্তান কামনায় লক্ষ্মীর নিকট অনেক প্রার্থনা করেন, পূজা দেন এবং সেই সঙ্গে এই মানদ করেন, যে যদি একটী পুত্র-সস্তান প্রাপ্ত হন, তাহা হইলে নিকটস্থ বনদেবতাকে বিশেষ ভক্তির সহিত পূজা উপহার প্রদান করিবেন।

কিছুকাল পরে লন্দ্মীদেবীর কুপায় মুজাতার গর্ভে একটী পুত্র সন্তান জিলি। সন্তান যথন তিন মাসের, তথন সুজাতা তাহাকে বক্ষে লইয়া বনদেবতার পূজা দিবার জন্য অরণ্য মধ্যে নীত হইলেন। ভাঁহার श्ख এবং বঙ্কাঞ্চলে আচ্চাদিত সন্তানকে দেবভোগ্য অপর হস্ত মস্তোকপরি উপহার পাত্র ধারণ করিয়াছিল। কেবল একমাত্র দাসী রাধা। রাধা অগ্রে বনমধ্যে দেবতার স্থান পরিকারার্থ গমন করে। তথায় সে হঠাৎ বৃক্ষমূলে শৌমাসুর্ভি নিমীলিত লোচন শাক্যদেবকৈ বিশ্মিতা হইল এবং শঙ্কিত দেখিয়া ভাবে আসিয়া বলিল, "ঠাকুরাণী, দেখ!

দেখ! বনদেবতা কেমন তাঁহার স্থানে বিদিয়া রহিয়াছেন! আহা জানুপরি যোড়কর, কেমন অপরপ দৃশ্য! ললাটের চারিদিকে যেন জ্যোতি বিকীর্ণ ইইতেছে। কি শান্ত, কি বিরাট রূপ! আহা নয়নদ্বয়ে কি স্বর্গীয় প্রতা! দেবদর্শন বড়ই সৌভা-গ্যের বিষয়!"

তাঁহাকে দেবতাজ্ঞানেস্কুজাতাকম্পিত-কলেবরে নিকটে গিয়া দাঁড়াইলেন, এবং ভূমি চম্বন করিয়া আনত বদনে বলিতে লাগিলেন, "হে মঙ্গলদাতা পবিত বন-দেবতা, যদি এই দাদীর প্রতি প্রসন্ন হইয়া দেখা দিলে, তবে আমি এই ভত্ৰ প্রমান্ন সেবার্থ আনিয়াছি, ইহা গ্রহণ কর।" এই বলিয়া শাকোর হতে গন্ধ-দ্রব্য প্রদানান্ত্র স্বর্ণপাত হইতে প্রমার ঢালিখা দিতে লাগিলেন। কঠোর **তপস্য**। প্রভাবে তৎকালে শাক্যের দেহ অতীব ক্ষীণ এবং তুর্বল হইয়াছিল। সময়ে সময়ে অনাহারে তিনি মুক্তিত হইয়া পড়িতেন। সহসা মধুর পরমান লাভ করিয়া নীরবে তাহা ভোজন করিতে লাগিলেন। কি মনোহর সেই দৃশ্য! সন্তানকোলে জননী দেবীনৃতি স্থলাতা পার্ঘে দণ্ডায়মানা হইয়া আন্তে স্বৰ্পাত হইতে শাক্যের হস্তে দিতেছেন আর তিনি তাহা ভোজন করিতেছেন।

এমনি উপাদের বলপ্রদ সে প্রমীর বে ভোজন করিবা মাত্র মহামুনির শীর্ণ হুর্বল দেহে বল এবং জীবনী শক্তি ফিরিয়া আসিল। নিমেবের মধ্যে তাঁছার কইগ্লানি. ক্ষুণাপিপাসা, উপবাসজনিত ক্লেশও চলিয়া গেল। যেন মকভূমি বিচরণকারী ক্লান্ত বিহলের অলে নবীন পক্ষ সকল সহসা **উদ্ভিন্ন হইল। স্মুজা**তা যতই তাঁহাকে পরমান্ন ভোজন করাইতে লাগিলেন. শাক্যের মূর্ত্তি ততই সতেজ এবং মুখঞী তত্ত উজ্জল হইয়া উঠিল। তদনন্তর সেই मरिना मृष्ट् मधुष्टरत जिज्ञाना कतिरलन, **"বাস্তবিকই কি আপনি দেবতা** ? এবং সামার এই উপহার কি আপনি রূপা পুর্বাক গ্রহণ করিলেন ?"

শাক্য উত্তর করিলেন, "ইহা কি দামগ্রী যাহা তুমি আমার জন্ম আনিয়াছ ?"

স্থজাতা। হে পবিত্র পুরুষ! আমাদের গোগৃহে যে দকল ছগ্ধবতী গাভী আছে, তম্মধ্যস্থ একশত গাভী দোহন করিয়া যে হয় পাইয়াছিলাম, তাহা পুনরায় পঞ্চাশটীকে পান করাইয়াছি। পরে সেই প্রঞাশটীর ছগ্ধ পঁচিশটীকে এবং পঁচিশটীর ছম বারটাকে, পরিশেষে বারটার ছম ছয়টা উৎকৃষ্ট গাভীকে পান করাইয়া তাহা হইতে যে ছগ্ধ দোহন করিয়াছিলাম, শেই ছঞ্চের এই পরমার। সেই ছ্ক রজতপাতে চন্দন কার্চের অগ্নিতে উষ্ণ করিয়া তাহাতে নবভূমিজাত উৎক্বন্ত বীজোৎপন্ন পরিওদ তওুল মিশাইয়া खन रत्रत्र महिक भत्रम यर् इहा तकन করিয়াছি। কারণ, ইহা দেবতার ভোগ **এবং পুত্রপ্রাপ্তি** কামনায় আপনার এই वुक्का है हा भूकार्थ किय अहे ब्राग मानग করিয়াছিলাম। এক্ষণে বাঞ্চিত পুত্রধন আমি প্রাপ্ত হইয়াছি, আমার জীবন ধন্ত হইয়াছে। সেইজন্য আনন্দের সহিত আপনার পূজা দিতে আসিয়াছি।

পরে বুদ্ধদেব অঞ্লাচ্ছাদিত মাতৃ-বক্ষস্থিত সেই শিশুর আবরণ উন্মোচন পূর্বক তাহার মন্তকে হস্ত রাথিয়া মৃত্-স্বরে বলিলেন, "তোমার আনন্দ দীর্ঘ-কাল স্থায়ী হউক এবং ইহার জীবন-হউক, লম্ব কেননা, তুমি আমাকে সাহায্য দান করিলে। আমি দেবতা নহি, তোমার একজন ভাই, --পূর্বে ছিলাম রাজপুত্র, এক্ষণে পরি-এই ছয় বৎসর কাল এথানে ক্রমাগত দিবা রাত্রি জ্ঞানালোক অন্বেষণ করিতেছি। সমস্ত মানবকুলের অন্ধ-কারকে আলোকিত করিবার জন্য কোন স্থানে সেই আলোক সমুজ্জনিত আছে। সেই আলোক আমি প্রাপ্ত হইব। হে ভগিনী! তোমার পবিত্র আহার দারা আমার শ্রান্ত ত্কল দেহ পুন-জ্জীবিত হইয়াছে, তথন সেই ভভ উষা নিকটবর্ত্তী। মানুষ যেমন জন্ম জন্মান্তর ক্রমে নিস্পাপ হয়, তেমনি বহু গাভী-প্রস্ত এই হ্র আমাকে জীবন দান করিল। তথাপি আমি জিজ্ঞাস। করি,কেবল জীবন ধারণই কি যথেষ্ট স্থমিষ্ট মনে হয় ? জীবন এবং প্রেম ইহাই কি দর্বস্ব ?

স্থকাতা বলিলেন, "হে পূজ্যপাদ দেব! **শামার মন অতি কুদ্র, অরেতেই ইহা** পূর্ণ হয় এবং আপনার আশীর্কাদ

আমার এই সন্তানের হাসামুথ ইহাই আমার পক্ষে যথেষ্ট। ইহাতে আমার গৃহাশ্রমকে আনন্দময় করিল। গৃহকার্য্যের চিন্তায় পরিপূর্ণ আমার দৈনিক জীবন অতীব স্থুথকর। স্থায়োদয়ে আমি জাগিয়া দেবতাদের মহিমা গান করি, জীবদিগকে षञ्चमान, এবং তুলসীরুক্ষের সেবা করি, পরিচারিকাদিগকে তাহাদের গহের কর্ত্তব্যকার্য্যে নিযুক্ত রাথি। পরে মধ্যাङ्ग সময়ে যথন আমার স্বামীদেব আমার কোলে মাথা রাথিয়া শুইয়া থাকেন, তথন আমি মৃত্ দঙ্গীতের দারা ভাঁহাকে সোহাগ করি এবং বীজন ব্যঙ্গন করি। সন্ধ্যা উপস্থিত হইলে ভোজন জন্য আমি তাঁহার পার্শে দুভায়ুমান থাকিয়া মিষ্টাল্ল দিয়া তাঁহার দেবা করি। তদনস্তর রাত্রিকালে যখন আকাশমণ্ডল নক্ষতালোকে আলোকিত হয়, তথন বৃদ্ধ বাদ্ধবের সহিত গল **সল** করিয়া নিদ্রা হাই। এরূপ যে সৌভাগ্য-শালিনী আমি, স্বামীর স্বর্গভোগের উপায়-স্বরূপ পুত্র সন্তান গর্ভে ধরিয়াছি, এমন ভাগ্যবতী যে আমি, আমি কেন স্থী হইব না ? কারণ, ধর্মণান্ত্রে উক্ত আছে, পথিকদিগকে ছায়াদানের জন্য রোপণ করিলে, জীবের শান্তির জন্য জলাশয় থনন করিয়া দিলে, পুত্র সন্তান উৎপাদন করিলে, মৃত্যুর পর এ সকল দারা নিশ্চয় ওভ ফললাভ হয়। শাত্রে যাহা কথিত আছে, তাই আমি গ্রহণ করি; কেন না, যাঁহারা দেবতাদের সঙ্গে কথা

কহিতেন, যাবতীয় শান্তি এবং পুণ্যের পথ এবং গাথা মন্ত্র যাঁহারা অবগত ছিলেন. দেই প্রাচীন মহাজনদিগের অপেকা আমিত জানী নহি! ত্যাতীত আমি ইহাও জানি যে ভাল করিলে ভাল, মন্দ कतिता सम्म इयः ; निम्हत्रहे मर्ख्य मकतात्रहे পক্ষে এ কথা সঙ্গত। আরো আমি मिथिशाष्ट्रि, উত্তম त्रक श्टेट त्रमान कल, এবং বিষরক্ষ হইতে তিক্ত ফল উৎপন্ন হয় এবং ইং জীবনেই বিদেষ হইতে খুণা, দয়া হইতে বন্ধু, ধৈৰ্ঘ্য হইতে শাস্তি উৎ-পন্ন ইইয়া থাকে। যথন বিধাতার ইচ্ছা-হইবে আমরা মরিব, এবং তখন কি এরপ মঙ্গল ঘটিবে না যেমন এখন ঘটি-তেছে? বরং ইহা অপেক্ষা অধিক হইবে। যেহেত দেখিতে পাই, একটা শদ্য-কণিকা হইতে মুক্তাসদৃশ পঞ্চাশটী শস্য কণিকা উৎপন্ন হয়। হে মহাত্মন, আমি জানি অনেক তঃখত বহন করিতে হইবে, ধুলায় মুখ লুকাইতে হইবে। আমার এই শিশু সন্তানটী আমার আগে প্রাণত্যাগ করে, আমার হাদ্য ভাঙ্গিয়া যাইবে। তাহাইইলে মৃতশিভ বকে ধরিয়া আমাকে সামীর মৃত্যু দিন পর্যান্ত প্রতীকা করিয়া থাকিতে হইবে। কিন্ত যদি আয়ার স্বামীর মৃত্যুকাল উপস্থিত হয়, আমি ভাঁহাকে কোলে লইয়া আনশ-मत्न िकानल अर्वन कत्रिव। काबन, गांख निथिक चाहि, यमि सी अरेक्स्य শহমৃতা হয়, তাহাহইলে তাহায় শ্রেম यामीरक--श्रीत माशास यक हुन आहर

প্রত্যেক চুলের গণনামুসারে কোটা কোটা বৎসর স্বর্গভোগ করাইবে। অত-এব আমি কোন প্রকার ভর করি না এবং সেই জন্ত হে পবিত্র পুরুব! আমার জীবন আনন্দমর। তথাপি আমি কোন প্রকার স্থানী, আর্ছ, হতভাগ্য এবং ছুইমতি লোক-দিগকে ভুলিয়া থাকিনা। দেবতারা তাহাদিগকে কুপা করুন! যাহা কিছু মঙ্গল তাহা আমি বিনম ভাবে সাধন করি, শাত্রবিধির অন্থগত হইয়া চলি; এই বিশাস করি, যে যাহা কিছু ঘটিবে, তাহাতে আমার ভালই হইবে।"

শুজাতার বিশ্বাসপূর্ণ মধুর বচনাবলী
প্রবণ করিয়া শাক্য বলিলেন, "ভদ্রে!
ঘাহারা শিক্ষা দেয়,ভূমি তাহাদিগকে শিক্ষা
দিবে। তোমার এই সরল সহজ জ্ঞান
উচ্চতর জ্ঞান। না জানিয়া এবং এইরূপে আপনার সত্য পথ এবং কর্ত্তব্য
অবগত হইয়া ভূমি শুখী হও! হে কুশুম-কোমলা, ভূমি উন্নত হও! সত্যের তীব্র
মধ্যাক্ত জ্যোতি তোমার স্থায় কোমল
প্রের জ্ঞানহে, তাহার জ্ঞা অঞ্ভবিধ
প্র্যালোক প্রয়োজন। ভূমি আমাকে
প্রজা করিয়াছ,আমি তোমাকে প্রজা করি।

হে অভ্যুৎকৃষ্ট হাদর ! কপোত যেমন প্রেমের টানে আপনার বাদার দিকে উড়িয়া যার, অজ্ঞাতদারে তেমনি ভূমি জ্ঞান শিক্ষা করিয়াছ। মান্থবের কেন যে আশা আছে, তাহা তোমাকে দেখিলে বুঝা যায়। ভূমি চিরস্থ শান্তিতে বাদ কর। ভূমি যেমন স্বকার্য্যে রুতকার্য্য হইয়াছ, আমিও যেন দেইরূপ রুতকার্য্য হইতে পারি। যাহাকে ভূমি দেবতা মনে করিয়াছিলে, তিনি তোমার শুভ ইচ্ছার ভিথারী।"

স্থজাতা বিশ্বিত ব্যাকুল লোচনে বলি-লেন, "কি! আপনি বলিলেন, আমি যেমন কুতকার্য্য হইয়াছি তেমনি আপনি হইতে চাহেন।" দেই সময় স্থজাতার ক্রোড়স্থ শিশু সন্তান্টী বুৰূদেবের পানে হাত বাড়া-ইয়া যেন আপনার দলস্থ জ্ঞানে ভাঁহার প্রতি করিতেছিল। ভক্তি প্রেদর্শন মহামুনি শাক্যদেব স্থজাতা-প্রদন্ত পবিত্র পরমান্ন ভোজনে বল্লাভ করত আন্তে আন্তে গাত্রোখান করিলেন। যে বোধীবৃক্ষমূলে তিনি মহাজ্ঞান অর্থাৎ সিদ্ধিলাভ করেন, প্রশান্ত ভাবে মৃত্ব পদ বিক্ষেপে তাহার দিকে গমন করিতে লাগিলেন।

मार्किलि ।

এমন অপূর্ব্ব শোভা দেখিব কি আর!
কৌদিগে অচলাবলী, উন্নত শিশ্বর ভূলি
অনস্ত মহিমা কার করিছে প্রচার?
ভুকুণ অফণ করে, বুতন মুকুতা করে.

শরি মরি কি সৌন্দর্য্য বলা নাহি যার, বিচিত্র বরণে জাঁকা, যেন গো মন্থ্রপাথা, জাঁকিয়া রেখেছে শৈল চূড়ার চূড়ার! কাশ্ন-ধ্বলা গিরি অবাক বারেক হেরি

ভূষার-মণ্ডিত শিরে সোণার কিরীট, যেনগো শোভিছে তায়, কিরণ পড়িয়ে গায় উচ্চতায় কে বলিবে ক'হাজার ফিট? নিমু উপত্যকা পানে, তাকাইলে একতানে, পরাণে কতই ভাব উপজে তথন; বুঝি সে পাতালপুরী, ভৃধরেতে ভূরি ভূরি নয়ন রঞ্জিতে বিধি করিল। সঞ্জন। 'বার্চহিল' দেথিবারে সাথে লয়ে বাসনারে যাইলু দেথায়—স্থান অতি নিরজন, পার্কতীয় তরুরাজি, অপরপ রূপে সাজি বিরাজিছে থরে থরে যেন কুঞ্জবন। শ্বন্দরী প্রকৃতি দতী, গম্ভীর প্রশান্ত সতি, মৃত্তিমতী দেবী যেন করে বিচরণ, নাজানি ভাবুক জনে,ভুলায় কি প্রলোভনে ? সংগোপনে কেড়ে লয় হৃদি প্রাণমন। 'জলা পাহাড়ের' পর প্রাণমন মুগ্ধকর দেখিল যে দৃষ্ঠ তাহা না যায় বর্ণন, গা' ঘেঁদিয়া মেঘ যায়, বহিছে শীতল বায় ভাবের তরঙ্গ মাঝে ডুবিতেছে মন! 'ভিক্টোরিয়া ফল'হেরি,আনন্দে হাদয় ভরি গেল যে আমার.—কত ভাবের লহরী থেলিছে পরাণ মাঝে, ধন্য দেই বিশ্বরাজে धना छात ऋरकोमन-धना कातिकत्री! বহিছে অজস্র ধারা---রক্ষত স্রোতের পারা. মাতোয়ার। কর্ কর্ শব্দে ত্রিভূবন। ভকতি-রসেতে মন,—ভুবে থাকে অরুদ্ধণ পাষাণ বিদারি বারি হতেছে পতন! 'অজারভেটরি হিল' উরধে অনস্ত নীল

নিমেতে দহর থানি পাহাড়ের গায়, মরি কি অতুল শোভা,দর্শকের মনোলোভা চেয়ে থাকে একতানে চিত্রার্পিত প্রায়। को बाखाय नक्यारवना, अवानी मिनाय सना পুরুষ রমণী কত বদি কাঠাদনে, লভেন বিশ্রামন্ত্রথ, সন্তোষে মাথানো মুখ 'ব্যাণ্ড'বাজে—স্থারদ সিঞ্য শ্রবণে। পাহাড়ী লোকেরা সবে, স্থাইছে কুলী লবে 🏾 প্রফুল আনন অতি প্রশান্ত প্রফৃতি, কাজে ব্যস্ত অনুকণ, বড়ই সরল মন কার্য্যক্ষম সমতুল্য পুরুষ প্রকৃতি। विशे श्रेष्ठ नम्मान, नहनाही म्रामान त्रमणीता वनाकृत छ एक एत्र भितत, দেথিতে স্থন্দর অতি, সরলতা মৃত্তিমতী, কি ছার তাহার কাছে মণি মুক্তাহীরে। সভাবসন্ত জাতি, রয়েছে সভাবে মাতি, দিবা রাতি পরদেবা পালে মহাত্রত, लেপ্চা ভূটীয়া नव, अপরের অগৌরব করিবে না একতিল বাঙ্গালীর মত। অসভ্য বর্কার বটে, জ্ঞানবৃদ্ধি নাহি ঘটে, কিন্তু অকপট ভাব সকলেরি মনে: জানে ভদ্র ব্যবহার, নাহি করে অপকার, করিবে পরের সেবা থাটি প্রাণপথে। 'मार्किनिः' मत्रमात, य ভाव উদিছে মান, শারণেতে স্থ-সিদ্ধ উথলে আমার, হিমাচল নমে যাঁরে, নতলিরে লে ধাতারে, একান্তে ভকতি ভরে করি নমন্বার 👢

ভ্ৰাতৃদ্বিতীয়া।*

"প্রেমরূপং পরংব্রহ্ম প্রেমরূপং চরাচরম্।
নানাদন্ত্যেকমেবান্তি প্রেমপ্রেমিব কেবলম্।"
প্রেম রূপে রয়েছেন দেব ভগবান,
বিশ্ব চরাচর দবি প্রেমে বর্ত্তমান;
নিথিল ব্রহ্মাণ্ড মানে আর কিছু নাই,
একমাত্র "প্রেম প্রেম" রয়েছে দদাই!

আজি শুভুময় দেবতার প্রসাদে আমাদের এক শুভদিন। আজি আমর। আমাদিগের শুভাকাজ্জী মহোদয়গণ-কত্তক এক মহদ্বিষয় আলোচনা করিতে নিয়োজিত হইয়াছি। কিন্তু আমাদের মত অক্ষম, তুর্বল ও অজ্ঞান ব্যক্তিগণ এই পবিত্র গুরুতর কার্য্যের সম্পূর্ণ অন্থপ-যুক্ত। তাই ধিনি সর্কসিদ্ধিদাতা, সর্ক-শক্তিমান, জানময়, সতাস্বরূপ দেবতা, ভাঁহারই চরণে প্রণতা হইয়া ভাঁহার ক্লপা যাচ ঞা করি। আমরা সকলেই বাঁহার কাজ করিতে আদিয়াছি, জগতের অণু, কীটাণু, পরমাণু হইতেও বাঁহার কার্য্য সাধিত হইতেছে, যিনি সকলেরই সদি-চ্ছার সহায়, আমি সেই ইচ্ছাময় দেবতার চরণে প্রণাম করি। যিনি অক্ষয় অনস্ত ও স্কভে, যিনি আদি ও অনাদি, যিনি অচিস্তা ও অজ্ঞেয়, আমি সেই সচিদানন্দ দেবতার চরণে প্রণাম করি। [া] যিনি नास्यवान रहेबा ७ महायह, जल्दायी हरेबा ७ क्रमामस, अभिनेश्वत इरेशा ७ त्थाममस,

আমি সেই মঙ্গলময় দেবতার চরণে প্রণাম করি। যিনি নিরপেক্ষ, নির্বিকার, সর্ব-ভূতের স্ষ্টিকর্তা, বিশ্বজগতের নিয়ামক, আমি সেই ব্রহ্মময় দেবতাকে প্রণাম করি। যিনি নীতিবাদীদিগের নীতি, প্রতাশ-সর্কবাদীদিগের বাদীদিণের প্রকৃতি. সতা আমি সেই স্ক্রিয় দেবতার চরণে ल्याम कति। श्रद्धान, टिन्म, थ्रे, বুদ্ধ, নানক, মহম্মদ, সকলেই যাঁহার চর্ণ বন্দনা করিয়া জগতের কাজ করিতে পারিয়াছেন, আমি কীটাণু, সেই পরম দেবতার চরণে প্রণাম করি। খুষ্টান, বৌদ্ধ, জৈন, মুদলমান, প্রভৃতি সাম্প্রদায়িকের। ভিন্ন ভিন্ন সম্প্রদায় সংস্থা-পন করিয়া ভিন্ন ভিন্ন প্রকারে বাঁহাকে ডাকিতেছেন, সেই সকলের ডাক একত্রে বাঁহার চরণে পৌছিতেছে, আমি সেই দর্কব্যাপী দেবতার চরণে প্রণাম করি। যিনি নিগুণ হইয়াও দর্বাগুণাধার, ইন্দ্রি-য়ের অপ্রাপ্য হইলেও ভক্তের ইন্সিয়ের বাঞ্চিত, অনস্ক ব্রন্ধাণ্ডের সমাট হইয়াও আমারই, আমি আমার দেবতাকে প্রণাম করি। আমি শাক্ত হইলে যিনি আমার শক্তি, বৈঞ্ব হইলে यिनि आयात विकृ, रेगव इहेल यिनि আমার শিব, আর আমার মত শক্তি-হীনা, ভক্তিহীনা, জ্ঞানহীনা, কর্মহীনা

পারিতোধিকবোগ্য বলিয়া বে ছুইটা রচনা বিবেচিত হইয়াছে, ইহা তাহার অন্যতর এবং শ্রীমতী
 রালকুরারী বহু বিরচিত। বা, বো, স।

যিনি আমার সব, "আমি" থাকিলে আমার সেই দর্বস্বধন ইপ্ত দেবতার চরণে আমি কোটী কোটী প্রণাম করি। আমি যেন তাঁহাতে আপনা উৎদর্গ করিয়া, তাঁহার বলে বলবতী হইয়া, সকল প্রকার কামনা পরিত্যাগ করিয়া, ভাঁহার জন্যই আমার এই অনুষ্ঠেয় কর্মে প্রবৃত্ত হইতে পারি। তাঁহার সত্য যেরূপেই হউক তিনিই প্রকাশ করিবেন, তাঁহার নীতি তিনিই প্রচার করিবেন —আমার ভিক্ষা, আমার মত কীটাণুও যেন তাঁহার কার্ষ্যে আত্ম-সমর্পণ করিতে পারে, এক্ষুদ্রতম কীটা-ণুর মনপ্রাণ ও দেহে তিনি যে টুকু ক্ষমতা যেন ভাঁহার নামে দিয়াছেন, তাহাই তাঁহার কার্য্যে ব্যয়িত হয়। এই অকিঞ্চিৎ-কর শক্তি হইতেও যেন সকল কর্ত্তব্য পালিত হয়! আমি তাঁহারই চরণে অসন্থ্য প্রণাম করি; তাঁহার শুভ ইচ্ছা সফল হউক।

ত্তমাদিদেবঃ পুরুষঃ পুরাণ স্ত্রমস্য বিশ্বস্য পরং নিধানম্ । বেক্তাসি বেদ্যংচ পরংচ ধাম তুয়া ততং বিশ্বমনস্তর্মপ !

পিতা সি লোকসা চরাচরস্য ত্বমসা প্রাংশ্চ ভারুগরীরান্। ন তং সমো হস্তাভাধিকঃ কুতে¹ হক্তে লোকত্রয়ে হপাপ্রতিমপ্রভাব। তত্মাং প্রণমা প্রশিধায় কারং

তন্মাৎ প্রণমা প্রণিধার কারং প্রসাদরে বামহমীশমীডাম্। পিতের পুত্রস্য সংধ্ব সধ্যঃ। প্রিয়ঃ প্রিয়ামার্হসি দেব সোচ্মু।

কি আর চাহিব পিত!

তোমার চরণ তলে—

গীতা।

ভূমি যার সে আবার
কি চাহিবে ভ্মণ্ডলে!
এই মাত্র মাগি ভিক্ষা
যে ভাবে যথন থাকি,
ভূমিই আমার তাই
সদা যেন মনে রাথি।
যত টুকু— যত বিন্দু
যা'হয় এ ক্ষমতায়,
সাধিয়া তোমারি কাজ
যেন এ জীবন যায়।
করম করম-ফল
সকলি তোমার হরি!
ভকতি প্রণতি নাথ,
ধর এ মিনতি করি।

একদিন ভারতবর্ষ হিন্দু আর্ষ্যগণের বাসস্থান ছিল। সেই আৰ্ঘ্যজ্ঞাতি জগতে "আদর্শ" জাতিরূপে পরিগণিত **হই**য়া **জন্ম**-ভূমিকে "দেবভূমি" করিয়া**ছিলেন। কেবল** বাছবলে নহে, তাঁহাদিগের জ্ঞান-বল, চরিত্র-বল ও ফ্রদয়ের বল অপরিসীম ছিল। এই সকল বলে বলী-য়ান্ হইয়াই তাঁহারা জনসমা**জে অসম**-কক্ষ হইয়াছিলেন। তাঁহাদিগের ধ**র্মভাব**, গার্হস্য, সাহিত্য, দর্শন, শিল্প, রাজনীতি ও সমাজনীতি হইতে নিয়ন, প্ৰথা, দৈনিক ক্রিয়া পর্যান্ত, প্রায় সকল গুলিই অলো-কিক ধর্ম বিশ্বাস, বুদ্ধিমন্তা ও সন্ধুদয়তার छनिष्टे मानव অধিকাংশ পরিচায়ক। ভাঁহাদিগের লগতের চির-উপযোগী। অবস্থা ও কাৰ্য্য পৰ্য্যালোচনা করিতে গিরা অনেক সময়েই চমৎকৃত হইতে হয়। এরণ অলৌকিক ক্ষমতাপর আতি যে সৌভাগ্য "অপরিদীম" হইয়া থাকে: ভারতেরও তাহাই হইয়াছিল। কিন্ত উথান পতনাদি জগতের স্বাভাবিক নিয়ম विनिशारे रेडेक वा आमारमत क्रुप वृक्तित অপরিজ্ঞের কোনও কারণে হউক, কোনও জাতি বংশপরস্পরায় ক্রমোগ্লতি লাভ করিতে পারেন নাই। त्रामीय, धीक ও ভারতীয় আর্ঘ্য জাতি ইহার প্রকৃষ্ট উদা-যথন ধাৰ্মিক, মনস্বী, তেজস্বী আর্ব্যগণ লোকান্তরিত হইতে লাগিলেন, যথন ধর্মবিপ্লব, রাষ্ট্রবিপ্লব, ও তাহার আত্মক্রিক সমাজবিপ্লবে আর্য্যবংশীয়েরা হতাশ্বাদ ও অন্থির হইয়া উঠিলেন, তথনই দেবালা ঋষিদিগের সনাতন ধর্মশাস্ত্র न्कन विक्रुडक्रप्प गांधांड इट्रेड लांशिन, তথনই তাঁহাদিগের প্রবর্ত্তিত ভভকরী প্রধা সকল স্বার্থপর ব্যবসায়ীদিগের হস্তে পড়িয়া কলঙ্কিত হইতে লাগিল। তথন যাহা "হিন্দুর সারধর্ম, তাহাই জগ-তের ধর্ম কৈই অম্লা সত্য বুঝিতে পারা অসম্ভব হইয়া উঠিল। হিন্দুর পিতৃপুরুষদিগের সঞ্চিত রত্নসমূহে ছাই माणी मिलिक इटेरक नाशिन! अटे नमरा হিন্দুর কি শোচনীয় অবন্ধা হট্য়াছিল, কি দারুণ অবনতি হইয়াছিল, তাহা ভাষায় ध्यकाण कता शत ना। धकिन क्य বলিয়া উপধর্ম, সত্য বলিয়া অসত্য, ন্যান্ विनित्रा अन्यात गृशैक हरेक नाभिन : वर्णन पिरक श्रीकुछ धर्च विध्य विद्यवनात्र, মুহৰ তুৰ্বলতা বিবেচনার ও সদাচার কদা-ছার বিবেচনার পরিতাক্ত হইতে লাগিল।

প্রতারণার বাজারে সকলেই প্রায় ঠকিয়া গেলেন! কিন্তু সত্য কতদিন লুকায়িত থাকে ? আগুন কতদিন কাপড়ে বাঁথিয়া রাখা যায় ? জগতের অণু পরমাণু হইতেও বাঁহার কার্য্য সাধিত হইতেছে,দেই দেবাদি-(मरवत कुलाव ठाडूती, खम व्यमामामि অধিকদিন আধিপত্য করিতে পারিল না। দেশে বিদেশে আর্ঘ্যমন্ত্রার্থানীতি বুঝি-বার মত নরদেবতাগণ করিতে লাগিলেন। তাঁহাদিগের প্রাণ-পণ অধ্যবসায়, অনুসন্ধিৎসা ও প্রচারণা ফলে সত্য যেরূপ উদ্ধার হইতে লাগিল, সেইরপ সাধারণেও কিছু কিছু বুঝিতে ভাঁহাদের প্রদাদে, দেশের আচার ব্যবহারমাত্রেই বীতশ্রদ্ধ ব্যক্তি-গণের অনেকে এখন বুকিতে পারিয়াছেন "কুসংস্কার, ভাবিয়া কত স্থসংস্কারও হারাইয়াছি, ছাই বলিয়া কত রত্নও পরিত্যাগ করিয়াছি !" এই তুর্ঘটনা নিবারণাশয়ে অনেকেই এখন পুরাতন আচার ব্যবহারাদির মূলানুসন্ধান করিতে मत्नारगंशी इहेशास्त्र । এই कार्या रव দেশের এক শুভ লক্ষ্ণ, তাহা আমরা সকলেই বুঝিতে পারি। ভারতের ভবিষ্যৎ অদৃষ্টে কি আছে তাহা আমরা জানিনা-আমরা তো ক্ষুদ্রাদপি ক্ষুদ্র, অনেক জ্ঞানী মহান্দাই এবিষয়ে কুডনিশ্চয় হইতে পারেন নঃ। তবে ভাবিয়া দেখিলে এই টুকু (वाधभग इस, त्य बाहामित्भन कना ভারত "দেবভূমি, কীর্দ্তিমন্দির" প্রভৃতি আখ্যা পাইরাছিল, বর্তমান ভারতবাসী

তাঁহাদিগের সত্য, নীতি, আচার, ব্যবহার প্রভৃতি পর্ব্যালোচনা করিরা তাহা
হইতে গ্রহণীয় বিষয় গুলি গ্রহণ করিলে
কেবল তাহাই নহে, দেশেরই হউক,
বিদেশেরই হউক যাহা সত্য, যাহা ন্যায়সঙ্গত, যাহা জনসমাজের মঙ্গলসাধক,
সেই সকল বিষয় শিক্ষা ও অভ্যাস করিলে,
বলিতে সাহস হয় না বুঝি বা ভারতও
ধীরে ধীরে পূর্ব্ব গোরব লাভ করিতে
পারে! এই কার্য্যে মনোযোগী হওয়া দেশীয়দিগের এক "অবশ্য কর্ত্ব্য" বলা যায়।

আর্ঘা-গণের জাতীয় চরিত্র আলোচনা করিলে অনুভূত হয়, তাঁহাদের হৃদরের শক্তি অপরিসীম ছিল। मया, क्या, সহামুভূতি, গুণামুরাগ, বিনয়, সহিষ্ণুতা, আত্মত্যাগ ও পরার্থপরতায় আর্ব্যগণ भीर्वजानीय. মানবদ্ধগতের অদ্যাপি সম্ভবতঃ চিরকালই রহিবেন। আর্ব্যগণের প্রধান সাধনীয় ছিল প্রেম; প্রেম সাধনা হইতেই আর্য্যগণ দেবত্ব আয়ন্ত করিতে পারিয়াছিলেন। যে হাদরে প্রেম প্রতি-ভাত হয়, সে হাদয় স্বর্গ থাকে। আর্য্যগণেরও তাহাই হইয়াছিল; প্রেমের মহত্তে আর্য্যগণ আত্ম-বিস্মৃত, প্রেমের মহত্তে আর্য্যগণ ত্যাগম্বীকার-পরায়ন, প্রেমের মহত্তে আর্য্যান পরার্থ-পর—ভধু পরার্থপর নহে, পরের ভিতরে

* আর্থাপণ বতাই সহাস্ত্র হউন নাকেন, অখ-ভাবে তাহাদিসের পথাসুসরণ করা কিংবা তাহাদের কোনও অম বা ফটি থাকিলে তাহা ইংল করা অকর্ত্তবা। গৌড়ামী সর্কভোভাবে পরিহার্য। প্রহ্নের । অমুপ্রবিষ্ট। আর্য্যগণের বিশ্বাস ছিল প্রেমই মানবের প্রধান শিক্ষণীর; প্রেমের অনুশীলন ব্যতীত মনুষ্য-হাদয় ওক মক্ল-ভূমিবৎ প্রতীয়মান হয়, তক অব্দয়ে ধর্ম, বিখাস, সরলতা প্রভৃতি মহতী রুদ্ভিসকল উপযক্ত বিকাশ লাভ করিতে পারে না। আর্য্যগণের বিশ্বাস ছিল প্রেমের বলেই জগতে হিংসা, দ্বেষ, বিবাদ, শত্ৰুতা প্রভৃতি নিবারিত হইয়া সমস্ত জগৎ একথানি গৃহ ও সমগ্র মানব মানবী একাত্মপরিবাররূপে পরিগণিত পারে। আর্য্যগণের বিশ্বাস ছিল, জগতের স্হিত জগদীখারের যে অলক্ষ্য মিলন. তাহা কেবল প্রেম হইতেই সম্ভাবিত হয়। এই সকল বিশ্বাদে পরিচালিত আর্য্যগণ প্রকৃত প্রস্তাবে প্রেম-সাধক প্রেম-প্রচারক হইয়াছিলেন। আর্য্যগণ আদর্শস্থানীয় । বর্ত্তমান সময়ে লোকশিক্ষায় (অবশ্র মন্তি-কের শিক্ষায়) বাঙ্গালি হইতে ইংরেজ শ্রেষ্ঠ, ইংরেজ হইতে আমেরিক শ্রেষ্ঠ বিবেচনা হয়। কিন্তু পূর্বভন আর্য্যগণ लाकिशकांग हैशामत अलका त्यां-তর। ভাঁহারা জানিতেন সাধারণ ব্যক্তি-গণ স্থাশিকিত না হইলে মানব সমাজের প্রকৃত উন্নতি বা মঙ্গল সাধিত হইতে পারে ना। किन्त क्वम (वम, डेशनियम श्रेष्ड অথবা মৌথিক উপদেশ হইতে সাধারণের "মসুব্যত্ব" লাভ হওয়া অসম্ভব। দিগকে দাধু কাৰ্ব্যে অভ্যন্ত করিলেই তাহাদিগের শাধুভা শহকণভা

পারে। এই কারণে দর্কদাধারণের জভ দৈনিক সাময়িক প্রভৃতি নিয়মে তাঁহারা ক্তকগুলি নিয়ম ও প্রথা প্রবর্ত্তন करत्रन। त्मरे छनि भानिত इहेल नक-লের ধর্ম ও নৈতিক বৃত্তি গুলি পরিক্ষ ট হইবে, দকলে ই ''প্রেম" আয়ত্ত করিতে কক্ম হইবে. ইহাই তাঁহাদিগের উদ্দেশ্য। পরবর্ত্তী সময়ে প্রতারণাও অজ্ঞানতার **জন্ম অনেক প্রেথা বিক্রত ইই**য়া গিয়াছে. তথাপি কোনও কোনটা আলোচনা করিলে তাহা হইতে মহতী শিক্ষালাভ করিতে পারা যায়। আজি আর্যাগণের প্ৰবৰ্ষ্টিত, "ভ্ৰাত্দ্বিতীয়া" হইতে আমরা **এ বিষয় বুঝিতে** যথাসাধ্য চেষ্টা করিব। ্ৰাত্ৰিতীয়া প্ৰথা বাৰ্ষিক নিয়মে অৰ্থাৎ প্রতিবৎসর কার্ত্তিক মাসে সম্পন্ন হয়। প্রেমের প্রথমাবস্থাকে সন্তাব বলা যায়। পুল একবারেই ফুল হইয়া ফোটে না, **সাগে কলিকা**য় উৎপত্তি, শেষে ফুলে পরি-ণতি; প্রেমও একেবারে "প্রেম" হইয়া **দাদে না, সম্ভাবে প্রে**মের উৎপত্তি, পেমে পরিণতি। তাই প্রেমিক হইলে আগে "শভাব" চাই। আগে হৃদয়কে সন্তাবে পভান্ত করিলে প্রেম আয়ত্ত হয়। দশী আর্য্যগণ সেই জন্ম সন্তাব শিক্ষা দিক্লার আশয়ে প্রাত্দিতীয়া প্রথা প্রবর্তন করেন। ভ্রাতৃ বিতীয়ার আলোচনায় বোধ হয়, আমর। এসকল বিষয় বুঝিতে পারিব। প্রথমে ভাত্বিতীয়া কিরুপে নিৰ্কাহ হয়, ভাহাই আলোচনীয়।

''ভ্ৰাত্ৰিতীয়া" বলে। হিন্দু শান্তে কথিত আছে "এই দিবস যমুনা দেবী, সহোদর যমরাজকে নিজগৃহে আনিয়া অর্চনা পূর্বক আহার করাইয়াছিলেন; জগতের ভ্রাতাভগিনীদিগকেও দিগের অন্থকরণ করিতে হইবে।" এই কারণে ভ্রাত ধিতীয়ার অপর নাম "যম ধিতীয়া"। এই দিবস ভ্রাতা, ভগিনীর নিকটে পঞ্জিত হন; ভগিনীর বাটীতেই আহার করেন। বর্ত্তমান হিন্দু গ্রহে ভ্রাতাকে নৃত্ন বন্ধাদি পরাইয়া ভগিনী ভাঁহার কপালে মৃত বা চন্দনের ফোঁটা দেন; এই ফোঁটাকে "ভাই ফেঁটা" বলে। ভাই ফোঁটার সময়ে ভগিনীকে নিম্লিথিত মন্ত্র বলিতে হয়---

"ভাইয়ের কপালে দিলাম ফোঁটা. যমের ছ্য়ারে পোড়লো কাঁটা; यमूना (मश यमतक दर्गांछ), আমি দেই ভাইকে ফোঁটা।"

"ভাই ফোঁটা" হইয়া গেলে ভগিনী ভাতার হত্তে কতক গুলি মিষ্টার দেন। জ্যেষ্ঠ কনিষ্ঠ সম্বন্ধ ক্রমে ভ্রাতা ভগ্নী-দিগের আশীকাদ প্রণাম প্রভৃতি আদান প্রদান হয়। অলাহারের সময়ে ভগিনী নিম্লিখিত সংস্ত মন্ত্ৰী বলিয়া ভ্ৰাতাকে গণ্ডুষ করিতে দেন—

, ''ব্ৰাতন্তবামুজাতাহং ভুজ্জ ভক্তমিদং গুভং। প্রীভয়ে যমরাজসা ধমুনারা বিশেষভঃ।"

জ্যেষ্ঠা ভগিনী হইলে "স্তবাগ্ৰন্ধাতাহং" 🔗 কার্তিক মাসের শুক্লা দিতীয়া তিথিকে। বলিতে হয়। হিন্দু শাদ্রান্দ্রসারে এই দিবদ ভ্রাতার ও ভগিনীদিগকে বন্ধ, জন্ম ও অলঙ্কারে পূজা করা কর্ত্তব্য । সহো-দরা অভাবে অন্যান্য ভগিনীগণ পূজিত হইবেন (১)।

ভ্রাত্তিতীয়ায় ভ্রাতাকে পর্যায়ক্রমে পৃষ্টিবৰ্দ্ধক ভগিনীগণের **इ**स्स হইতে করিবার বিধি আছে। আহার গ্রহণ ভ্ৰাতা প্ৰথমতঃ জেঠ তৃত খুড় তৃত ভগিনী-দিগের, দিতীয়তঃ ভগিনী-মামাত ততীয়তঃ মাস্তৃত পিস্তৃত দিগের, ভগিনীদিগের, চতুর্থতঃ সংশাদরা ভগিনী-দিগের হস্ত হইতে পুষ্টিবৰ্দ্ধক আহাৰ্য্য গ্রহণ করিবেন। সকল ভগিনী অর্থাৎ যে রকম সম্পর্কের ভগিনীই হউন.সক-লের হস্ত হইতে ভ্রাতাকে আহার গ্রহণ করিতে হইবে। ভ্রাতৃদিতীয়া এইরপে প্রচারিত হ ইয়া লৌকিক ব্যবহারে বর্ত্তনান সময়ে ক্রটি লক্ষিত হইলেও হিন্দু আর্যা-গণ এই-ভ্রাতৃথিতীয়া নির্বাহ করিতে আদেশ দিয়াছেন (২)।

(১) কার্স্তিকে শুক্র পক্ষদা দিতীয়ায়াং যুখিন্তির।

যমো যমুনয়া পূর্বং ভোজিতঃ বগৃহেহজিতঃ ॥

অতোবমোদিতীয়েয়ং তিরু লোকেয় বিশ্রুতা।

অস্যাং নিজগৃহে বিপ্র ন ভোজবাং ততোনরৈঃ ॥

রেহেন ভগিনীহস্তাং ভোজবাং বলবর্জনং।

দানানিচ প্রদেয়ানি ভগিনীভোগ বিধানতঃ ॥

বর্ণালকারবন্তায়পূজাসংকারভোজনৈঃ।

সর্বা ভগিনাঃ সংপুজা অভাবে প্রতিপ্রকাঃ ॥

मन्त्ररक

ভ্ৰাত্ত্বিতীয়া

সাধারণের

(২) পিতৃৰভিগিনী হতাৎ প্ৰথমায়াং বৃঞ্জিয়।মাতৃলয়া হতাহতাৎ বিতীয়ায়াং তথানৃপ।

বিখাদ ইহাতে যমের ছয়ারে কাঁটা পড়ে অর্থাৎ এই কার্য্য হইতে ভ্রাতার যমের ভয় থাকে না। এইরূপ বিশ্বাদে (সর্ব-वृद्धिविभिष्टेरे वन आत सूलवृद्धिविभिष्टेरे বল) সাধারণ ব্যক্তিগণ ভ্রাতৃদিতী-য়ায় প্রবৃত্ত হন। আবার অপেকারত স্থ্রকচিসম্পন্ন ব্যক্তিগণ 'বিমের স্থয়ারে কাঁটা" পড়িবার কথা শুনিয়া কুসংস্কার বিবেচনায় ভ্রাতৃদিতীয়া হইতে বিরত হন। যাঁহার। ভাত্তিতীয়ার তথ বিষয়ে মন: সংযোগ করিয়াছেন, ভাঁহারা এত-ত্বভয়ের কোনও পক্ষকে অত্রাস্ত বলিতে পারেন না। যিনি কুসংস্কারের বন্তী হন, তিনিও ভ্রান্ত; স্থাবার থিনি কুদংস্কার ভাবিয়া নদাচার পরিত্যাপ করেন, তিনিও ভ্রাস্ত। আমরা আর্য্য-গণের দর্বাঙ্গদম্পূর্ণ ইতিহাদ অভাবে ভ্রাত্রিতীয়ার স্থচনা প্রভৃতি বৃঝিতে পারি না, এবং সন্তাব শিথাইবার এরূপ অপুর্ব কৌশল যে কোনু নরদেবতার মস্তিক হইতে উদ্ভাবিত হইয়াছিল,তাহাও জানিতে পারিনা; * তবে ভ্রাত্রিতীয়াত্র শহ-भौनन कतिल देशा उपनग श्रीन राज्ञभ অরুভূত হয়, তাহাতে ভ্রাকৃষিতীয়া যে সংস্থারের অনেক উপরে. <u> নাধারণের</u>

পিতৃ ম হি: ক্স: কনো তৃতীয়ায়াং তয়ো: করা । ১ চতুর্ধাং সহজায়াক ভগিনাা: হস্ততঃ পরং। সর্বাস্থ ভগিনীহস্তাৎ ভোক্তবাং বলবদ্ধনং।

শ্বাত্বিতীয়ার সংস্ত লোকভাল দেবিলে
পোরাশিক বৃগে বাত্বিতীয়ার উৎপত্তি বালিয়া
বোধ হয়।

প্রাকৃষিতীয়া যে মানবের মন্থয়ত্ব লাভের এক প্রধান উপায়, যে ভাব হইতে জগ-তের প্রত্যেক নরনারী ভ্রাতাভগিনীর প্রাণে অন্থপ্রাণিত হইয়া পরস্পরের প্রতি জ্রাতা ভগিনীর ব্যবহার করিতে পারে, জ্রাতৃষিতীয়া যে সেই ''বিশ্বজনীন সন্তাবের

দক্ষেত" এইকথা স্পষ্ট উপলব্ধি হইয়া থাকে। আমাদের সহজ বৃদ্ধিতে এই কথা গুলি আমরা যেরূপ বৃঝিয়াছি, আজি দেশীয় সদাশয় মহাত্মা ও মহিলাদিগের নিকটে তাহা যথাসাধ্য বিবৃত করিতেছি। (ক্রমশঃ)

বঙ্গগৃহ।

(তৃতীয় আভাস)

(৩৭২ পৃষ্ঠার পর)

অবিনাশ বাবু বাহির বাটীতে আসিয়া দৈথিলেন পাড়ার কয়েকটি বন্ধু বেড়াইতে আদিয়াছেন। ক্ষণকাল নানা কথাবার্তা হইতেছে, এমন সময় অবিনাশ বাবুর একটা বন্ধু আর একটা অপরিচিত েলোককে সঙ্গে লইয়া তথায় উপস্থিত **ুহ্টলেন। বন্ধু অ**পরিচিত লোকের পরিচয় দিয়া বলিলেন ইনি অতি মহা-শর লোক, তোমার ভাগিনেয়ী প্রিয়-বালাকে দেথিয়া ইহার ইচ্ছা হইরাছে বৈ ইহার জ্যেষ্ঠ পুত্রের সহিত ঐ কন্সার বিবাহ দেন। আজ কাল পাত্ৰ পাওয়া ষায় না, এমন স্থলে যদি পাত্রের পিতা কভা বিশেষের রূপগুণ ও লক্ষণ দেখিয়া कहें रून अवः विवाद्यत श्रेष्ठांव करतन, ভাহাহইলে পরম সৌভাগ্যের বিসয় বলিয়া মনে করা উচিত-কি বল অবি-নাশ ? অবিনাশ বাবু বলিলেন, ভাই ভূমি যাহা বলিলে তাহা সম্পূর্ণ সত্য, স্থার বিশেষতঃ গোবিন্দপুরের ঘোষ

মহাশয়েরা ধনে মানে কুলে শীলে দর্কাগ্র-গণ্য; আমার সৌভাগ্য রামময় বাবু! আপনি অন্তগ্রহ করিয়া আমার গৃহে পদাপর্ণ করিয়াছেন এবং এই পিতৃহীনা বালিকার দহিত আপনার পুত্রের বিবাহ দিতে আগ্রহ প্রকাশ করিতেছেন। আমি আপনার এ প্রস্তাবে বিশেষরূপে দুখা-নিত হইলাম। কিন্তু মেয়েটি এখন ছোট, তার মারের একমাত্র সম্ভান, এত অল্প বয়দে বিবাহ দিতে আমার তত ইচ্ছা নাই। সে এই দবে এগারোয় পা— দিয়াছে। বিশেষতঃ যথন গ্ৰণ্মেন্ট একটা আইন করিয়াছেন, সেটাও তো মানিয়া চলা আবশ্রক। প্রিয়বালার বয়স বার বৎসর উত্তীর্ণ না হইলে আমি তাহাকে পাত্রস্থ করিব না। পাত্রের পিতা ঘোষ মহাশয় বলিলেন মেয়েটি বয়সে ছোট হইলেও দেণ্তে বেশ বাড়স্ক, দেখতে বার তের বছরের মেয়ে বলিয়া বোধ হয়, আর আমার ছেলেরও

थ्व दिनी वश्रम इस नाहे, तम এই मद বছরে পড়িয়াছে। ছেলেট দেখতেও বেশ সবল, ছাই-পুষ্ট ও শ্রীমান। অবিনাশ বাবু বলিলেন, আপনি যাহা বলিলেন সে সমস্তই সত্য, কিন্তু এত অল্প বয়দে ছেলে মেয়ের বিবাহ না হওয়াই বাল্যবিবাহ হেতু ছেলে মেয়ে ও তাহাদের সম্ভান সম্ভতি বড় অল্লায় হইয়া পড়ে। মহাশয়ের ছেলেটি লেখা পড়া কি করিতেছে? ঘোষ মহাশয় বলিলেন ছেলেট গ্রামের স্কুলে দ্বিতীয় শ্রেণীতে পড়িতেছে। পাস দিবার কিছু বিলম্ব আছে, তবে পাস দিতে না পারি-লেও বিশেষ ক্ষতি নাই, কারণ তার পৈতৃক সম্পত্তি যাহা আছে, তাহাতেই তাহার ও তাহার मञ्जानामित्र यरश्रहे অবিনাশ বাবু বলিলেন আপনি হইবে ৷ মাননীয় ব্যক্তি, আপনার কথায় দোষ ধরা মাদৃশ জনের পক্ষে ধইতা মাত্র, তথাপি অন্নমতি করিলে একটা কথা বলিতাম। আজ কাল যে দিন পড়িয়াছে, লেখা পড়া না শিখিলে শিষ্টাচার ও সহবৎ শिक्षा रह ना। जान महत्य ना रहेल, ভাল সঙ্গ না পাইলে পৈতৃক সম্পত্তি রক্ষা করিয়া চলা বড় কঠিন। আনি আমাদের মত গরিবের ছেলেকেও মেয়ে দেওয়া অন্যায় মনে করি না যদি দেখিতে পাই যে সৎলোক হইবার সমস্ত আয়ো-যে ধনসম্পদ জন তাহাতে আছে। রকা করিবার উপযুক্ত জ্ঞান উপার্জন করেনা, তাহার ধন থাকা না থাকা হুই

দ্যান: তাহার অপেকা দরিদ্র সজ্জন শত-গুণে ভাল। মহাশয়ের পুতা যদি মহা-শয়ের রীতি-চরিত্র অন্থকরণ করিতে শিথিয়া থাকে, তবে তাহার সহিত ভাগী-নেয়ীর বিবাহ দিয়া নিজকে ক্লতার্থ জ্ঞান করিব নন্দেহ নাই। কিন্তু বিবাহ দেওয়া স্থির হইলেও বয়দের অল্পতাতেও বিলম্ব করিতে হইবে. এবং আপনার বালক যাহাতে বিবাহের পূর্বে পরী**ক্ষা**য় **উত্তী**র্ণ হইতে পারে, তাহার চেষ্টা করাও আব-শ্রাক হইবে। ব্রক্জো বলিলেন আমি অত বিলম্ব করিতে পারিব না, কারণ আমার কুল রক্ষা করিতে হইবে; পাত্রীটা দর্কাংশে উৎকৃষ্ট বলিয়াই আমি আপনার নিকট এত অনুরোধ করিতেছি। **অবি-**নাশ বাবু বলিলেন, মহাশয় আমাকে ক্ষমা করুন, আমি এত অল্প বয়সে বিকাহ দিতে কিছুতেই সমত নহি. করিলে বিবেচনা করিয়া দেখিতে পারি। তবে আপনি একটু অপেক্ষা করুন আমি একবার সামার ভগ্নীর সহিত এবিষয়ে পরামর্শ করিয়া দেখি তিনি কি বলেন। এই বলিয়া অবিনাশ বাবু গৃহে প্রবেশ করিলেন। দর্কাথে ভগ্নীকে ডাকিয়া বলি-লেন গোবিন্দপুরের ঘোষেদের বাড়ী হইতে এই প্রকার বিবাহের **প্রেকার** আনিয়াছে। পাত্রের অবস্থা, লেখাপড়া বিষয়ে যাহা যাহা বলিবার তাহা বলিলেন। ভগ্নী সমস্ত ভনিয়া বলিলেন আমি এসমুদ্ধে ভাবিয়া চিস্তিয়া যাহা বলিব তাহা অপেকা তুমি ভাল বুঝিবে, আর তুমি থাকিতে

আমি এবিষয়ে ভাবিতে যাই কেন ? যাহা ভাল হয় করিবে। তবে আমার আর নাই, এত তাড়াতাড়ি মেয়েটকে পরের মরে পাঠাইয়া চিরকাল ছটফট করিব? দিন কতক যাক না। অবিনাশ বলিলেন তবে আমি তাই বলিগে। কিন্তু এককাজ কর, কিছু জলথাবার যোগাড় প্রিয়বালাকে একথানা পরিষার কাপড় পরাইয়া উহাকে দিয়া জলথাবার আয়ো-জন করাইয়া দেও। ভগ্নী ইঙ্গিতে সমস্ত বুঝিয়া সেইরূপ আয়োজন করিতে লাগি-লেন। অবিনাশ বাহিরে গিয়া ভগ্নীর অভিপ্রায় জ্ঞাপন করিয়া বলিলেন আপনি খদি দয়া করিয়া এত কষ্ট স্বীকার করিয়া আমার গ্রহে পদার্পণ করিয়াছেন, তবে কিঞ্চিৎ জলযোগ করিয়া যান। সকলেই ভাহাতে সায় দেওয়ায় বুদ্ধ অগত্যা সমত হুইলেন এবং গৃহাভ্যস্তরে প্রবেশ করিয়। অল্যোগ উপলক্ষে মেয়েটীকে আর এক- বার দেথিয়া আদিলেন। সামান্ত অবস্থার মধ্যেও গৃহের পারিপাট্য, দেবা দির শৃঙ্খলা, গৃহস্থের স্থক্ষচি ও ধর্মতাবের পরিচায়ক পট ও চিত্রসকল দর্শন করিয়া বন্ধ বিশেষ প্রীতি লাভ করিলেন এবং অবিনাশ বাবুকে বলিলেন আজ আপনার গুহে এই কয়েক মুহুর্ত্তে যে তৃপ্তি অন্নভব করিতেছি, নানা প্রকার স্থথ সম্প-দের মধ্যে অল্প সময়ই সেরূপ তৃপ্তি অন্থ-ভব করিতে পাই। কায়মনোবাক্যে এই প্রার্থনা করি এই ক্ষুদ্র গৃহ চিরদিনই যেন স্থুথের আলয় হইয়া থাকে। অবিনাশ বাবু বন্ধের এই আশীর্কাদ লাভ করিয়া ক্লত-হুতা ,সহকারে তাঁহাকে প্রণাম করিলেন এবং ভগ্নী ও ভাগিনেয়ী প্রভৃতি সকলকে ডাকিয়া বুদ্ধ ঘোষ মহাশয়কে করিতে বলিলেন। ঘোষ মহাশয় ভাঁহার অকুরোধ বিশেষভাবে জানাইয়া সকলকে আবার আশীর্কাদ করিয়া বিদায় হইলেন।

वाङ्गाला व्यवहन।

य ।

- ু১। যঃ পলায়তে স জীবতি।
 - ২। যথন আদর জোটে.

তখন ফুটকলাই দিয়ে ফোটে,

- ্যথন আদর টুটে,
 - তখন চেঁকিপেড়ে কুটে।
- ও। যখনকার যা, তথনকার তা।
- ৪। যথন যার, তথন তার।

- । বশন হার পড়্তাহয়,
 ধূলামুঠাধরে, সোণামুঠাহয়।
- ৬। যজ্মেনে বামনের হাজা ওকা নাই।
- ৭। যভ কর পুস্থ পুস্থু, তত হয় ছোলার ছাস্তু।
- ৮। বত কর, তত নয়।

৯। যত ইচ্ছা তত যাও, ক্রোশ অস্তে পা ধোও।

১ । যত গৰ্জে, তত বৰ্ষে না।

১১। যত চতুর, তত ফতুর।

১২। যত হাসি তত কান্না, বলে গেছে রামশর্মা।

১৩। যতক্ষণ খাস, ততক্ষণ আশ।

১৪। যত ছিল নাড়া বুনে, সব হল কীৰ্দ্তুনে, কান্তে ভেক্ষে গড়াল কৰ্ডাল।

১৫। যত দূর মুথ, তত দূর কথা।

১৬। যত দোষ নন্দ ঘোষ।

১৭। যতনের মধু পিপিড়ায় থায়, অযতনের মধু গড়াগড়ি যায়।

১৮। যত দূর পা ছড়াও,

তত দূর কাঁতলা ।

১৯। যতন বিহনে কভু মিলেনা রতন।

২০। যত রজপুত তত হাঁড়ি,

কেউ না যায় কাহার বাড়ী।

২১। যতো ধন্ম স্তিতো জয়:।

২২। যত্র আয়ে তত্র ব্যয়।

২৩। য**়ে** ক্বতে যদি ন সিধ্যতি কেইত**ে** দোৰঃ।

२८। यथा मृष्टेः তथा निश्विजः।

२৫। यथा श्रांत्रम् ज्था श्राः।

২৬। যদি থাকে আগা পাছা,

কি করে তার শাগা মাছা? ২৭। যদি পাও রাজ্য দেশ,

তথাপি না যাবে বৃহস্পতির শেষ'।

২৮। যম জামাই ভাগ্না,

তিন না হয় আপনা।

২৯। যমস্ত করুণানাস্তি **তমাৎ** জাগ্রত জাগ্রত।

৩•। যমের অরুচি।

৩১। যমের বাড়ীর পথ সকলেই চিনে।

৩২। যশোদা কি ভাগ্যবতী,

পরের পুতে পুত্রবতী।

৩৩। যশ্মিন্ দেশে যদাচারঃ পারস্পর্য্যো বিধিয়তে।

৩৪। যক্ষের চোথে খুম নাই।

৩৫। যক্ষের ধন।

या।

৩৬। যা নাই ভারতে,

তা নাই ভারতে।

৩৭। যা নাইকো দেশে পেতে, তাই চায় ছেলেয় থেতে।

৩৮। যা রটে, তাই ঘটে।

৩৯। যা হবার হবে,

ভাবনা কেন তবে ?

৪০। যাক প্রাণ, থাক্ মান।

৪১। যাকে রাথ সেই রাখে।

৪২। যাচলে জামাই কাঁটাল থান না,

না যাচলে ভোঁতাটা পান না।

৪৩। যাচলে জামাই না ধান পিটে,

ना यां हत्न भरत्रन (हंक्नान किटिं।

৪৪। যাচলে সোণা রাং হয়।

৪৫। যা ছিল পান পাস্তা মায়ে কিয়ে থেন্দু,

ঘরজামায়ে কানাইয়ের **জয়**

ধান ওকাতে দিহু।

৪৬। যার লুণ থাই, ভার ৩৩৭ গাই।

89 । योत्र शक तम वत्म वीका. পাড়াপড়দী বলে দাত বিয়েন। ৪৮। যার ধারি, তার মরণ কর। ৪৯। যার জন্ম করলাম চুরি (महे वःन होता। । যার নাম ভাজা চাল তার নাম মুড়ী; যার মাথার ধবচুল,তার নাম বুড়ী। ৫১। যাদৃশী ভাবনা যস্য সিদ্ধির্ভবতি তাদুশী। ৫২। যার বিয়ে তার মনে নাই, পাড়াপড়দীর খুম নাই। ৫৩ ♦ যার লাটী, তার মাটী। e8। যার শিল তার নোড়া, তার ভাঙব দাঁতের গোড়া। था । যার বিয়ে তার দেখতে মানা।

তার নাতি আগে মরে। ৫৭। যারে দেখতে পারিনে তার চলন বাঁকা। ৫৮। যার সঙ্গে ঘর করিনে **সেই বড় ঘরণী.** আর যার হাতে থাইনে সেই বড় র ছনী। ৫৯। যার যেথানে ব্যথা, তার সেথানে হাত। ৬০। যার নিয়ত যেথানে, কে থগুবে দেখানে ? ७)। यात्र वल्ल हि. তার জীবনে কাজ কি ? ৬২। যার দঙ্গে যার মজে মন, কিবা হাড়ি কিবা ডোম। ৬৩। যাবৎ দীতা তাবৎ ছঃখ,

মরবে দীতা যাবে ছঃখ।

কৃষিতত্ত্ব।

ভূমির সার। (৩৪০ সংখ্যা ২০ পৃষ্ঠার পর)

বে সকল ভ্মিতে অধিক পরিমাণ অম রক্ষবিশেষ (Sorrel) জন্মে, তাহাতে ধিজর সার দিলে বিশেষ উন্নতি হয়, এবং বেরূপ ভূমিতে ধারংশ মৃত্তিকা ব্যবহার করে, সেরূপ প্রায় সকল ভূমিতেই খাই খাটে। নর্ফক্ প্রেদেশের অমুর্বার অথবা মৃথ্যবিধ অমিতে কোন কোন বিধ্যাত ক্রক ধড়ি ব্যবহার করিয়া উত্ত্যরূপ ক্ষবল পাইয়াছেন। নামাল ভাগাড়

জমি মাত্রেই ধাতু মিশ্রিত দকল জাতীয় দার ব্যবহার করিতে পারা যায়, এবং তাহাতে বিশেষ উপকারও হইয়া থাকে।

চূণ—ধাতু মিশ্রিত মৃত্তিকা নামার থড়ীসার (Carbonate of lime), স্কুতরাং অঙ্গারক অম (Carbonic acid) এবং জল দার্মর ছারা বিষ্কু করিলেই চুণ পাওয়া যায়, এই অবস্থায় ইহার ক্ষয়কারী গুণ থাকে, এবং পৃথিবী উপরিস্থ আকাশে অনাবৃত থাকিলে রস ও অঙ্গারক অয় পুনঃশোষণ করে। চূণ-পাথরে সামান্তত কর্দম ও বালুকার ভাগ থাকে, সেই হেতু চুণ ধাতুমিশ্রিত মাটির সহিত সংযুক্ত থাকে। ইহাতে উহার পদার্থগত গুণের বিশেষ অন্তথা হইতে পারে না, কেবল ধাতুমিশ্রিত মাটির ভাগ অল্প করিয়া रफल। कथन कथन हेशां जिमक পদার্থ (Megnesia) সংযুক্ত থাকে; কেহ কেহ বলেন যে, তাহা ফশলের চুণপাথরে পক্ষে ব্যাঘাতজনক। যে ভেদক পদার্থ থাকে, তাহা কিঞ্চিৎ ধুষর বর্ণ হয়, কিন্তু কোন কোন পাথর (যাহাতে ভেদক পদার্থ আছে) ভাঙ্গিলে তাহার ভিতরে নীলবর্ণ দৃষ্ট হয় না।

চূণ চারি পাঁচ মাস ফেলিয়া রাথিলে অবস্থান্তরিত হইয়া থড়ি হয়, অতএব থড়ির মত ইহারও ধাড়ুমিশ্রিত মাটি
যোগাইবার ক্ষমতা আছে; কিন্ত ইহার
সংযোগে বালুকা চটচটে (tenacious)
করা যায়না। ক্ষয়কারী অবস্থায় ছড়াইলে ভূমিতে অয়ত্বসম্ভূত তৃণাদির উৎপত্তি নিবারণ করে। যে সব স্থানে
এইরূপ তৃণাদি অধিক হয়, সেই সকল
ভূমির পক্ষে ইহা বিশেষ উপকারী। বিল
ভূমির প্রয়োগ করিলে ইহার গুণ স্পাষ্ট
প্রতীয়মান হইতে পারে।

কেহ কেহ ইহার অত্যন্ত ক্ষমকারী অবস্থাতেই প্রয়োগ করিয়া থাকেন, এবং কেহ কেহ কিছু দিন ফেলিয়া রাথেন, এবং ক্ষয়কারিতা গুণ কিঞ্চিৎ মন্দ হইলেও পরিমিত মাজায় অঙ্গারক অন্ধ পুনঃ শোষণ করিলে প্রয়োগ করেন।

(ক্রমশঃ)

ঘুমপাড়াইবার গান।

রাম লক্ষণ তৃটী ভাই চলে যায় বনে,
অযোধ্যায় হায় হায় করে প্রজাগণে।
কালি রাম রাজা হবে আজি বনবাদ,
কে কোথা দেখেছে বল হেন দর্কনাশ ?
বুড় রাজা দশরথ মরে পুত্রশোকে,
নিদন্তী কেকয়ী ব'লে ডাকে দর্ব্ব লোকে।
ধন্য দীতা পতিরতা ত্যজি রাজ্য ধন,
হুট মনে পতির দনে চলে গহন বন।
পঞ্চবটী বনে বাদ করে তিন জন,
স্থপনিধা আদি তথা করে জালাতন।
বেমন কর্ম তেমন ফল পাইল তঞ্চলী,

নাক কান কাটে তার ঠাকুর লক্ষণ।
বোনের অপমানে রোষে লক্ষার রাবণ,
মারীচ রাক্ষদে পাঠায় ছল্তে দীতার মন।
দোণার হরিণ হয়ে মারীচ আইল,
রাম লক্ষণেরে দূর বনে লয়ে গেল।
বিধির নির্মন্ধ বল কে করে থগুন?
শ্ন্য ঘরে পেয়ে দীতা হরিল রাবণ।
দাগরের পারে লক্ষা তাহে অশোক বন,
বন্দী হয়ে দীতা কত সহে নির্ধাতন।
রাম লক্ষণ বছদিন ফিরি দেশে দেশে,
কাঁদিরা বেড়ান সুধু জানকী উদ্দেশে।

কানর সহায়ে শেষে বাঁধিয়া সাগর, কাকায় পশিয়া করেন যুদ্ধ ঘোরতর। কারিল রাক্ষস কত না হয় গণন, সাবংশে হইল ধ্বংস পাপীষ্ঠ রাবণ। কাকাক্ষ পুত্র তার সত্ত্যা লক্ষ নাতী, একজন না রহিল বংশে দিতে বাতি।
লক্ষার রাজত্ব রাম দিলা বিভীষণে,
উদ্ধারি দীতারে যান অযোধ্যা ভবনে।
রাম লক্ষণ হুটি ভাই ঘরে এল ফিরে,
যাহু মুমাল পাড়া জুড়াল ভাবনা আর কিরে?

নরহত্য।

(গত প্রকাশিতের পর)

ভারতবর্ষের পশ্চিম প্রদেশে যে কন্তা-হত্যার প্রথা প্রচলিত আছে, তাহা এন্থলে উলেথ না করিয়া ক্ষান্ত হওয়া যায় না। লাহোর, সিন্ধু, গুজরাট, রাজপুতানা, অযোধ্যা প্রভৃতি অনেক স্থানে আজও-পর্য্যন্ত কন্যাহত্যা হইয়া থাকে। আমা-দের রাজা ইংরাজেরা ঐ নুশংল ব্যবহার উঠাইয়া দিবার নিমিত্ত বিলক্ষণ যত্ন পাইয়াছেন এবং কিয়ৎ পরিমাণে ক্লত-कार्याख হইয়াছেন। প্রায় পুর্বে সিদ্ধুদেশে এই প্রথা অত্যন্ত সাধা-রণ ছিল, জননীরা স্তনে অহিফেন মাথা-ইয়া সদ্যোজাত কন্যাকে পান করিতে দিতেন এবং সে জীবনবিন্দু দেখিতে **দেখিতে অদৃশ্য হইত। ইংরাজে**র কঠোর শাসনে সে ভীষণ প্রথা রহিত হইয়াছে। চীন, ভারতবর্ষ, পার্দ্য প্রভৃতি অনেক দেশে কন্যা সন্তানের আদর নাই; এমন कि हीनाएण कन्गाश्लात मखरे नारे, কিছ অনাদৃত বলিয়াই তাহাদের হত্যা-করা হয় এমন নয়। পাঠিকাবর্গ জ্ঞাত थाकित्वन त्य, के नमस क्षानित कन्गांक

উপযুক্ত পাত্রে সমর্পণ করা এত কঠিন, এত ব্যয়সাধ্য ও বিশুদ্ধ উচ্চকুলসম্ভূত পাত্রের এত অসম্ভাব, যে নীচ বংশে কন্যা সম্প্রদান করিয়া অপমান স্বীকার করা অপেক্ষা, কন্যা বিনাশ করা, তত্ত্য লোকের শ্রেয়স্কর বোধ হইয়াছে। বিদপ হিবার একজনকে জিজ্ঞাসা করিয়াছিলেন যে তোমরা অমন কঠিনহাদয় কেন প্রেমরা স্বীয় ঔরসজাত কন্যাকে বধ কর কেন প্রতিনি উত্তর করিলেন বিবাহের উপযুক্ত ব্যয় দাও, তাহা হইলে আমরা কন্যা হত্যা করিব না।

বন্ধদেশেও কন্যা সম্প্রদানের ব্যয় ক্রমশঃ বৃদ্ধি ইইতেছে। ইহাতে কন্যাসন্তানের প্রতি পিতা মাতার অনাদর জিমিতেছে। আর কে বলিতে পারে যে রাজপুতানার ন্যায় বঙ্গদেশেও কন্যাহত্যা ইইতেছে না? ১৮১০ খঃ অবদ একজন লিখিয়া গিয়াছেন যে রাজপুতানা প্রদেশে ৮০০০ বিবাহিত লোকের কন্যাসন্তানের মধ্যে ৬০টি মাত্র জীবিত আছে।
রাজ্যতানার ন্যায়, বঙ্গদেশে রাজ-

পুরুষের। কন্যা সম্প্রদানের ব্যব্তের নিরিধ আটিয়া না দিলে, ভবিষ্যতে এথানেও গ্রন্থর হওয়া অসম্ভাবিত নহে।

হে পরমাত্মন্! কবে এই বিষম অনর্থমূল কুলমর্ধ্যাদা একেবারে তিরোহিত হইবে; কবে আমাদের মাভূভূমি কন্যা-

শোণিতস্পর্শরপ মহাপাপ হইতে মুক্তিলাভ করিবে; কবে আমাদের কন্যাসন্তানগণ সমুচিত স্নেহ ও যত্নে প্রতিপালিত হইবে এবং কবেই বা আমাদিগের
নারীগণ স্বাধীনতা ও সমুচিত মর্য্যাদা
প্রাপ্ত হইবে।

প্রহেলিকার উত্তর।

গত মাঘ ও ফাল্কন মাসের পত্রিকায় যে ১০০টী প্রহেলিকা বা হেঁয়ালী প্রকা-শিত হইয়াছিল, ১৫৷১৬টা পাঠিকা অতি যতুপুর্বাক দে গুলির উত্তর লিথিয়া পাঠাইয়াছেন, ইহাতে আমরা যে কতদুর আনন্দিত হইয়াছি লিথিয়া জানাইবার সকলের সকল উত্তর অবশ্রই সন্তোষজনক হয় নাই, কিন্তু সকলেই যে যথাসাধ্য বুদ্ধি চালনা করিয়া সমস্তাপ্র-ণের চেষ্টা করিয়াছেন, তাহাতে আমা-দিগের সংশয় নাই। শ্রীমতী সুশীলাবাল। বস্থ, সজলনয়না দাসী এবং মুণালিনী রায় চৌধুরীর উত্তরগুলি অনেকটা ঠিক হই-য়াছে, তন্মধ্যে আবার শ্রীমতী সুশীলাবালা বস্থুর উত্তর দর্কোৎকৃষ্ট হওয়াতে তিনিই পারিতোষিক যোগ্যা বিবেচিত হইয়াছেন। প্রতিশ্রত পুস্তকগুলি তাঁহাকে প্রদান করা হইবে। আশাকরি অন্যান্য লেঞি কারা নিরাশ হইবেন না। জ্ঞানচর্চার পুরস্কার কোন বাহ্য বস্তু নহে,তাহার 🖣 যে পরিশ্রম তাহাই দর্কোত্র প্রে

প্রেলেকা পূরণে জ্ঞানার্শীলন
ও আমোদ এই উভয়বিধ লাভ। বঙ্গীয়
ভগিনীগণের এ বিষয়ে সেরূপ আগ্রহ ও
অন্তরাগ দেখিতেছি, ভাহাতে মধ্যে মধ্যে
আরও প্রহেলিকা প্রকাশে আমাদের
ইচ্ছা রহিল। কোনও পাঠক পাঠিকা
স্থিচিস্তাপ্রস্থত নূতন প্রহেলিকা পাঠাইলে
ভাহাও পত্রস্থ করা যাইবে।

মাঘ ও ফান্ধনের প্রকাশিত প্রাহেলিকা-গুলির সত্ত্বর নিম্নে প্রদত্ত হইতেছে, পাঠিকারা মিলাইয়। দেখিবেন ঠিক্ হইল কি না।

১ ডিম্বাপেনীকোষ। ২ মনুবা।

৩ কুলালচক অর্থাৎ কুমারের চাক।

৪ পিরাণ। ৫ তাল। ৬ সময়। ৭ আনারস। ৮ চরকা। ৯ ওল। ১ • গোলাপ।

১১১ আছাড়। ১২ বর বা যাকার দলের
রাজা। ১৩ কুফ। ১৪ ফুল। ১৫ আকাশ।
১৬ ছবি বা পুতুল। ১৭ থাট, তজেপোর ইত্যাদি। ১৮ কাক। ১৯ বিস্থাৎ
বা বজ্ব। ২০ শিশিরময় ঘাদ। ২১ মশাল।

২৩ নৌকা। ২৪ পটল। २৫ थाँक एांत्र कनमा। २७ घड़ी। २९ "न" এই অকরটা। ২৮ থৈ। ২৯ তুর্গা ঠাকু-রাণী। ৩০ মাতাল। ৩১ নক্ষত্র। ৩২ কুশ। টোপর। ৩৩ সোলার ৩৪ মেঘ। 🗣 মাতা। ৩৬ কাঁঠাল। ৩৭ বিধি। "**জল স্থল মেঘাকাশে দে**থিবারে পাই। मक्न गएए हि विधि, विभून त्रीनर्गा निधि, বিধির বিধানে বিধি, বিধি গড়ে নাই।" **৩৮ পাপ বা পাপীকে পরিভাগে।** স্বৰ্গ মণ্ড্য পাতালাদি আছে যত স্থান। नकन लाकित ताक विधि महावान ॥ कान इल थाक यनि करहे भाभि। করিতে নারেন তারে অধিকারভ্র**ন্ত** ॥ ৩৯ ভাত কোটা। ৪০ মনুষ্য এবং তাহার হাতের হুইটা বুদ্ধান্দুলি। ৪১ কাঁঠাল। ৪২ হাতী। ৪০ মাদের তুই পক্ষ, 😎 🛪 ও ক্লফ। ৪৪ হড় গড়ানে দীঘির পাড়, অর্থাৎ হড় গড়ানে উনান; তাতে একটা মল্লিকা ঝাড়, অর্থাৎ ভাতের-হাঁড়ি, মলিকা ঝাড়টী ফুটিল, অর্থৎ ভাত ফুটিল, ছেলে বুড় ছুটিল। ৪৫ লেখা পড়া। ৪৬ মা। ৪৭ প্রদীপ। ৪৮ কল। ৪৯ স্থালী বা কুমারের মাটি। ৫০ সনাল গর্মী। ৫১ মুকুর। ৫২ শব্দা। ৫৩ বর্জুল। ৫৪ কছতিকা বা চিক্লি। ৫৫ ভারত। ৫৬ স্থনীতি। ৫৭ শীতকালের কন্কনে অল। ৫৮ থলে। ৫৯ মাত্র্য, অর্থাৎ কুড়ি भाकुला कुछि माथा, এवः माञ्चलत माथा,

मभूमारा अकूम याथा। ७० नाति किन। ७) चाकाम। ७२ "व" এই जकत्री। ৬০ জিহবা। ৬৪ কুনুই। ৬৫ ফৃটি। পিতামহী। তাহার আপনার বাপের সন্তান হয়। এক বাপ আপনার ছেলেকে তাই করিয়া বলিতেছে,—ওর বাপ ইত্যাদি। ৬৮ছ য়ে উটি দিলে ছুটি। ৬৯ কই মৎস্থা। ৭০ মাত্র্য ও বৃক্ষ। আমরা যে যবক্ষার জান পরিত্যাগ করি, তাহা থাইয়া বুক্ষ সকল বাঁচে। ব্ৰক্ষো অন্নজান বায়ু ত্যাগ করে, আমরা নিশ্বাস দারা তাহা গ্রহণ করিয়া বাঁচিয়া থাকি। ৭১ মশারি। १२ वानाम। १७ স্থ্য চলে না, পৃথিবী চলে। ৭৪ বেগুন। ৭৫ ''ক' অর্থ জল এবং "পোত" অর্থ নৌকা; কপোত বা পায়রা। ৭৬ হিংস্রক মন্ত্র্যা। ৭৭ হরি-নামের মালা। ৭৮ ছত। ৭৯ মোহর। ৮• হাউই। ৮১ রাত্রিতে যে দকল ফুল ফুটে এবং ঘাহা দিনে ওকাইয়া যায়, নাল ফুল ইত্যাদি। ৮২ খড়কে, আছাড় অথবা किल। ৮० मात्रत्व। ৮८ कूल। ৮० था छित উপর খুর থানি, জর্থাৎ উননের ঝিক. তাহার উপর হাঁড়িতে ভাত ফুটিতেছে। ৮৬ ছড়ি। ৮৭ বাটা। ৮৮ শছ।। ৮৯বাতাস। ৯০ বাঁশ। ১১ বাত্ত বা মাস। a र कूगामन। ao एक। as चांड़ांत ডিম।৯৫ ঘড়ী।৯৬ কাঁকড়া।৯৭ কলা-शिष्ट् । २४ वन । २२ वर्क । २०० भ्रेम ।

ইয়োরোপে প্রচলিত কয়েকটা কুসংস্কার।

ইয়োরোপের নানা প্রাদেশে অদ্যাবধি
বিবিধ প্রকার কুসংস্কার প্রচলিত আছে।
এবিষয়ে স্থসভ্য ইয়োরোপ অর্দ্ধসভ্য
এসিয়া অপেক্ষা যে উন্নত তাহা বলা যায় না।
ইয়োরোপবাদীদিগের কয়েকটী বর্ত্তমান
কুসংস্কার নিমে বিবৃত হইতেছে:—

স্পেনের অনেকানেক থামের লোক
দিগের এই বিশ্বাস যে মুরগীর ডাক
ভানিলে যদি কেহ চক্রাকারে তিনবার
নৃত্য করিয়া না বেড়ায়, সেই দিন হইতে
এক বৎসরকাল তাহার জীবনে নানা
সুর্ঘটনা ঘটিবে।

ক্রান্সের কোন কোন প্রদেশে এই
বিশাস প্রচলিত আছে যে যদি এক বামন
দ্বিপ্রহর রজনীতে মহিষের মৃত্ত কর্ত্তন
করিয়া সমৃদুজলে নিক্ষেপ করে, তাহা
হইলে ঝড়ের উৎপত্তি হয়। কথিত আছে
যে এইরূপে ঝড় স্ঠি করিয়া ক্রান্সের
কোন ধনী জনীদার তাহার শক্রুর
ভাহাজকে জলমগ্র করাইতে সক্ষম হইয়াছিলেন।

স্কট্লতের অনেক লোকের এই দৃঢ়
সংস্কার যে যদি কোন পক্ষী বাদা
নির্দ্ধানে কাহারও একটা কেশ ব্যবহার
করে, তাহা হইলে ঐ ব্যক্তিকে শীমই
ঘোর বিপদাপর হইতে হইবে, আর যদি
ঐ পক্ষী মেগ্পাই পক্ষী হর তাহা হইবে
একবৎসর একদিনের মধ্যে ঐ ব্যক্তি

ধাকা প্রযুক্ত স্কটলেণ্ডের জনেক লোক কেশকর্ত্তন করিবার পর কর্ত্তিত কেশগুলি জাগ্রিতে ভস্মীভূত করে, কিম্বা এমন স্থানে নিক্ষেপ করে যেথানে পক্ষীর গমনা-গমন অসম্ভব।

নরওয়ে প্রদেশে কোন শিশুর উৎকট
কাশপীড়া হইলে একটা মাকড়সা ধরিয়া
তাহাকে ক্ষুদ্র এক বস্ত্রথণ্ডের মধ্যে
প্রিয়া দেয়ালে লম্বমান করিয়া রাথা
হয়। ঐ প্রেদেশের সাধারণ লোকের
এই বিশ্বাস যে এরপ হলে বস্ত্রবন্ধ মাকড়সাটা মৃত্যুগ্রাসে পতিত হইলেই শিশুটা
রোগমুক্ত হইবে।

ক্ষিয়ার নিয়শ্রেণীর লোকদিগের মধ্যে নিম্নলিথিত কুদংস্কার প্রচলিত আছে। তাহাদিগের মধ্যে কোন ব্যক্তি হত হইলে যদি ত হার প্রাণ বিনাশকারীকে ?' তাহা স্থির করা না যায়, তাহা হইলে সন্দেহার্ছ ব্যক্তিগণকে তাহার নিকটে করা হয়, এবং যে ব্যক্তি মৃত শরীরের নিকটে আসিলে ঐ শরীরের কোন স্থান হইতে রক্ত নির্গত হইতে দেখা ঘাইবে সেই ব্যক্তিই প্রকৃত হত্যাকারী বলিরা স্থিরীকৃত হয়। কখন কথন দেখা যায় বে 'হত ব্যক্তির শরীর অনেকক্ষণ অনাবত অবস্থার রাখিলে, কিমা উহাতে কিছুকাল রোদ্রের উত্তাপ লাগিলে উহা হইতে রক্ষ নির্গত হইয়া থাকে। ডাক্তারেরা এইরূপ घটनात्र रेवळानिक व्याच्या पित्रा थारकन्।

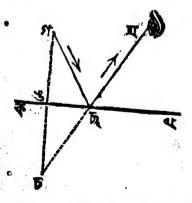
অধীয়ার দাধারণ লোকের মধ্যে চোর ধরা দম্বন্ধে নিয়ণিথিত কুদংস্কার্যুলক উপায় অবলম্বিত হইয়া থাকে। একথণ্ড কটা আনিয়া উহার নিকটে মুথ রাধিয়া প্রীমাতা মেরীর স্তব পাঠ কর। হর: বিলয়াবিবেচিত হয়।

তৎপরে সেই রুটীথত সন্দেহভাজন লোকদিগকে ভক্ষণ করিতে দেওয়া হয়। তাহা ভক্ষণ করিতে করিতে যাহার মুখ বিবর্ণ হয়, সেই ব্যক্তিই প্রকৃত চোর

আলোক তন্ত্ব।

(গত প্রকাশিতের পর।)

যথন কোন অস্বচ্ছ পদার্থের উপর আলোক-রশ্মি পতিত হয়, তথন ঐ রশ্মির কিয়দংশ ঐ পদার্থের শক্তি বিশেষের नाहार्या दिनुश्व रहेशा यात्र, এवः अविश्वे রশ্মি প্রতিবিদিত ইইয়া চতুর্দ্দিকে বিকীর্ণ হইয়া পড়ে। **শ্ৰমতল দৰ্পণে আলোক** পুড়িলে তাহা কি নিয়মে প্রতিবিশ্বিত হয়, আমরা এক্ষণে তাহার আলোচনা कविव ।



একথানি সমতল ুগ একটা আলোকবিন্দু, বাদর্শকের

চকু। গ হইতে ক থ দর্পণের উপর গঙ রেথা ঠিক লম্বভাবে টানিয়া দর্পণের অপর দিকে উহা বাড়াইয়া দাও এবং এ দিক হইতে গঙর সমান করিয়া ও চ অংশ কাটিয়া লও। চ হইতে ঘ প্র্যান্ত একটী সরল রেখা টান। ঐ রেখা ছ বিন্দুতে কথ দর্পণকে ছেদ করুক গছ একটী দরল রেখা বারা দংযুক্ত করিয়া দাও।

. আলোকের গতি সরলরেখা ক্রমে হইয়া থাকে। গ বিন্দু হইতে যে সকল নালোক-রশ্মি দর্পণের ছ চিহ্নিত স্থানে পড়ে, সেই সকল রশ্মি ঐ স্থান হইতে প্রতিবিদিত হইয়া ছ ঘ রেখার দিকে চলিয়া গিয়া দর্শকের চক্ষে পতিত হয়। मर्चक घष्ट दिशांत होत्न मर्भावत व्यवत দিকে চ-চিহ্নিত স্থানে গ-বিন্দুর প্রতিবিশ্ব . দৈথিতে পান। পূর্বে যাহা বলা হইয়াছে বাহা হইতে পাঠক পাঠিকাগণ বুকিতে प्रतम (क क थ मर्भागत पृष्ठी मन ज पदा, पर्नातत अनुत्र मिक

ঠিক্ ততদ্রে গ বিন্দুর প্রতিবিম্ব দৃষ্ট হয়।



দর্শণে পদার্থ সকল বিপরীত দেখায় কেন ? মনে কর ক খ গ ঘ ঙ একটী বক্র রেথা, ইহার ক, খ প্রভৃতি অংশ দর্পণ হইতে যতদ্রে অবস্থিত, দর্পণের বিপরীত দিকে উহার প্রতিবিশ্ব চ, ছ ইত্যাদি ঠিক্ ততদ্রে অবস্থিত হইবে। স্থতরাং সমস্ত রেখাটার প্রতিবিশ্ব চ ছ জ ব ঞ রেখার আয় দেখাইবে। আবার নিমে দেখ রু এই অক্ষরটা প্রতিবিশ্বিত হইয়া কেমন বিপরীত আকার ধারণ করিয়াছে।



নারীচরিত্রের গুণকীর্ত্তন।

ইয়োরোপের কতকগুলি স্থাসিদ্ধ মহাপুরুষ নারীচরিত্রের গুণান্থবাদ করিয়া, যিনি ঘেরপ অভিপ্রায় ব্যক্ত করিয়া গিয়া-ছেন তাহা সঙ্কলন পূর্বক আমরা নিমে প্রকাশ করিতেছি। স্ত্রীচরিত্রের এই সকল প্রশংসাপূর্ণ বাক্যে আমাদিগের বৃদ্ধিমতী পার্টিকাগণ অনেক চিন্তার বিষয় প্রাপ্ত হইবেন এবং ফলপ্রাদ উপদেশ লাভ করিতে পারিবেন, ইহা আমাদিগের দৃঢ় বিশ্বাস।

নারী বিধাতার সর্কোন্তম সৃষ্টি—
জর্মণ গ্রন্থকার লেসিং। লোকে আমাকে
যে সকল গুণে বিভূষিত বলিয়া আমার
প্রশংসা করে, তৎসমস্তই জামি আমার
মাতার নিকট হইতে প্রাপ্ত হইয়াহি সুষ্ট্রমু
রিকার বিখ্যাত রাজনীতিক সংক্রম

নারী স্**টি**র মুক্টস্বরূপা—**জর্মণ** দার্শনিক হার্ডার।

স্ত্রীলোক আমাদিগকে শিষ্টতা ও পবিত্রতা শিক্ষা দেন—ফরাদীস্ দার্শনিক ও নাটককার বল্টেয়ার।

বাইবেলে উক্ত আছে নারীর জন্য আমরা পর্ন হারাইয়াছি; কিন্তু যদি আমরা পুনরায় স্বর্গ পাই, তাহা হইলে নারীর সাহায্যে ও প্রভাবেই পাইব— আমেরিকার কবি হইটিয়ার।

, নারী যথন সম্পূর্ণ নারী জনোচিত গুণ মালায় বিভ্বিতা হয়েন, তথনই তিনি পূর্ণাবয়বা নারী—ইংলণ্ডের বর্তমান রাজ-মনী প্লাডটোন।

ञ्चलती महिना धनकात चत्रभा ; न्य-

শ্বভাবসম্পন্ন। নারী হীরকের থনি-ইংরাজ উপন্যাসকার বৃলুয়ার।

পৃথিবীতে যত মহৎ কার্য্য সম্পন্ন হইয়াছে ভাহার মূল ত্রীলোকের প্রভাবময় কোমল হত দেখিতে পাইবে—ফরাদীদ্ মহাপুরুষ नागार्डिन।

সাধারণত: কোন পুরুষ সহধর্মিণী ব্যতিরেকে চিরজীবন ধর্মপরায়ণ থাকিতে পারে না, কিম্বা ঈশ্বরভক্ত **হইতে পারে না—জশ্মণ গ্রন্থকার বিক্টার।**

ধর্মভাবসম্পন্না স্থন্দরী স্ত্রী স্থগন্ধ-পূর্ণ পুজ্পের ন্যার মধুর ও পবিত্র—জর্মণ वास्कात शैन्।

পুরুষের অসংখ্য যুক্তি ও বিচার ত্রী-লোকের অদয়ের একটা কোমল ভাবের **রমকক্ষ হইতে পারে না—বলটে**য়ার।

পৃথিবীতে স্ত্রীর অপেক্ষা একটীমাত্র মূল্য-বান জিনিস আছে, তাহা মাতা—লিও পোলড় সেফর।

দয়ার আবাসভূমি রমণীক্দয় অপেকা কোমলতর স্থন্দর পদার্থ পৃথিবীতে मारे-धर्मनःकात्रक न्थात्।

রমণী পুরুষের রবিবার, অর্থাৎ ভাঁহার বিশ্রাম, আরাম ও আনন্দ্রায়িনী-मिक्ला ।

মারী ভাল বাসিবার জন্য জন্ম গ্রহণ করিয়াছেন; যে কার্য্যে দয়া, স্লেছ ও প্রেমের উদ্দীপনা হয় না সে কার্য্যে তিনি কথনও স্থ্য ও স্থলিদ্ধিলাভ করিতে পারিবেনা-- ফুলার ওস্লি।

জীলোক কুরূপা, অশিক্ষিতা, মুর্গা বা অসচ্চরিত্রা হইলেও কখন পুক্র-বের ম্বণার উদ্রেক করেনা, ক্লপাই উত্তে-জিত করিয়া থাকে—লুইডেদ_্নায়েরদ।

সংসারে তুইটা স্থেন্দর বস্তু আছে, রমণী ও গোলাপপুস্—মেলহারব্।

নারী সাধারণতঃ শক্তিহীনা ও দীনা, কিন্ত বিপদ ও সক্কটের সময় তিনি দেবীর ন্যায় তেজোমগ্রী ও ক্ষমতাশালিনী -বুলয়ার লিটন।

আইনের যে শক্তি না আছে, দ্বীলো-কের নয়নে সে শক্তি আছে; বড়বড় ब्बानी भूक रेग व पुष्टि ७ विচারের य ক্ষমতা নাই, স্ত্রীলোকের অশ্রুবারির সে ক্ষমতা আছে—দেবিল।

পুরুষ লেথক কবি, কিন্তু জ্রীলোক कार्याकती कवि; जी लाक कर्शात श्रमशतक কোমল, নিরাশ মনকে আশাপূর্ণ, নিষ্কুরকে দয়াবান, এবং অপবিত্রকে পবিত্র করিয়া থাকেন-অমাদ্ন।

त्रुषे विनाति व्यानस्य गान श्रेष्ट । शाहात्र शांत व्यास्त कतिवात सना अस्ति। আছু কসিবার ও লিখিবার সেট্। কিন্তু বিভিন্ন করা জিল ব্যবহার করা জিল ব্যবহার করা জিলের নানা প্রকার ব্যবহার আছে।

অনেক স্থলে সেটই ব্যবস্থত হইয়া থাকে। প্রাচীর,সোপান ও মেজে প্রস্তুত করিতেও অনেকে দেটু ব্যবহার করিয়া থাকেন। रेजेनारेटिए हिहेरा ज्ञानित बना बन!-ধার ও জল নির্গমের প্রণালী সেটু দারা প্রস্থত হইল থাকে। সেুট্ যে একটী অতি প্রয়োজনীয় দামগ্রী তাহা ক্রমে প্রতিপর হইতেছে।

দেট থনিতে পাওয়া যায়। ইয়ো-त्त्राप्तत मर्या (बहेजिएन, हेरानी छ ফান্সে এবং আমেরিকার ইউনাইটেড ষ্টেটদের নানা স্থানে দেটের থনি আছে। আমেরিকার পেন্সেল্ভিনিয়া প্রদেশে যে সেটের খনি আবিষ্ত হইয়াছে, সর্কাপেক পৃথিবীর মধ্যে স্থবিস্তৃত সেটখনি।

যথন স্ক্পথেমে সেট খনির মধ্য হইতে বাহির করা হয়,তথন তাহা প্রস্তর-খণ্ডের ন্যায় প্রতীয়মান হইয়া থাকে। প্রস্তুর অপেক্ষা সূেট অনেক নর্ম, তজ্জন্য উহা ইচ্ছারুরূপ দৈর্ঘ্য ও প্রস্থ বিশিষ্ট ক্ষুদ্র বা বুহৎথণ্ডে বিভাগ করা অপেকারত সহজ। পেন্সেলভিনিয়ার স্থরুহৎ সূেট্ ধনিতে নানা আকারে সূেট বিভাগ করি-

বার करा নানাপ্তকার উপায় অবলম্বিত হইয়া থাকে। কাংশ কাৰ্যাই কলেরছারা সম্পাদিত হয়। আমরা সেট যেরূপ মকুণ দেখিয়া থাকি, যথন খনি হইতে বাহির করা হয়, তথন উহার ঐ প্রকার মস্পতা কিছুমাত দেখা যায় না। একটা বিশেষ প্রক্রিয়া দারা সেটকে মস্থ করা হয়। কাটিবার জন্য হীরকপ্রাস্তবিশিষ্ট যন্ত্র ব্যবহার করা হইয়া থাকে। পেন্সেল্-ভিনিয়ার যে দুেট্থনির কথা উল্লিখিত হইয়াছে, উহা যে ভূমিখণ্ডে অবস্থিত, ত্রিশ বৎসর পূর্ব্বে উহার অধিকারী উহার মৃল্যস্বরূপ কেবল এক পিঁপামাত্র মদ পাইয়াছিলেন। ঐ জমীতে শেটের খনি আছে, তাহা তিনি অনুমান করিলেও ত্রিশ চল্লিশ বৎসর পূর্ব্বে স্রেটের এত অল্ল ব্যবহার ছিল যে তিনি পরিবর্ত্তে এক পিঁপা মদ প্রাপ্ত হইয়া আপনাকে ক্ষতিগ্ৰস্থ मत्न সেট খনির বৰ্ত্তমান নাই। উক্ত অধিকারী উহা হইতে প্রতি একলক মুদ্রার অধিক উপার্জন করিয়া থাকেন!

নৃতন সংবাদ।

मिनान मिलक किছुमिन श्हेन मित्रिक ছাত্রদিপের সহায়ার্থ একটা কণ্ডু সাগুনু করেন। আমরা শুনিয়া আনন্দিত হ তিনি ডিলার জননীর স্মর্কেশ সঙ্গ বিদ্যালয় হইতে ২৩ জন ফীলোক আইন

১। কলিকাতার দিন্দ্রিয়াপটির বাব্, ∕রিশ্বুময়ী অনাথ ভাণ্ডার" ছাপন জ্ঞ প্রণ⊸ মেন্টের হস্তে ২৫০০০, টাকার কোম্পানীর কাগজ দিয়াছেন।

२। निউ देवर्क विश्वविकामाराव आहेन

শরীকার উত্তীর্ণা হইরা উপাধি প্রাপ্ত হইরাছেন।

্ত। মহারাণী স্বর্ণময়ী কলিকাতা "পিঞ্রাপোল" সভায় ১,০০০ টাকা দান করিয়াছেন।

8। পার্লেমেণ্টের সভ্য পল সাহেব | প্রস্তাব করেন ইংলণ্ড ও ভারতবর্ষ উভয়-।

ষানে এক সময়ে ইণ্ডিয়ান্ সিবিলসার্কিস পরীক্ষা হইবে। অধিকাংশ সভ্যের মতে ইহা প্রাহ্য হইরাছে। ভারতগবর্ণমেন্টের অহমোদিত হইলে এদেশের বালকেরা ঘরে বসিয়া বিলাত যাওয়ার উপকার পাইবে, তবে পরীক্ষোত্তীর্ণ হইলে কিছু-কাল বিলাতে গিয়া শিক্ষা করিতে হইবে।

বামা-রচনা।

হতাশে।

(5)

আশারে ছিলাম চেয়ে নীলিমের পানে, উহুঃ! প্রাণে ছাইল হতাশ! সে সাধের কুঞ্জথানি ছিল যেই খানে আজি সেথা পোড়া ছাই পাঁশ! (২)

শংসা তপন তাপে পড়িল শুকিয়ে, বসন্তের কুম্ম-মৃকুল, হায়রে মুথের ঘর পড়িল লুটিয়ে, ভেঙে গেল ম্বপনের ভুল!

আরতো দে ফুল ক'টা সোনালী লতায়, দেথিবনা কখনো ফুটিতে, আরতো দে খ্রামা পাথী বকুল পাতায়, আদিবে না দে গীতি ঢালিতে।

> (৪) থিকে নাককি

আর দেথিবে না বুঝি সেই গুকতারা, আমি তারে কত ভালবাসি, আর থুঁজিবে না বুঝি—নিতি থোঁজে যার। কেন আমি কাঁদি, কেন হাসি ?

(৫)
নৈ সরলা আর বুঝি আসিবে না কাছে,
কছিবে না পরাণের কথা,
এ মরমে সাধ আশা আছে কি না আছে,
তথিবে না সে সব বারতা।

(৬)

ভূবিছে ও রাঙা রবি পশ্চিম দাগরে, কাল পুনঃ আদিবে ঘুরিয়া, আমাদের যাহা যায়—জনমের তরে, আদে না'ক কখনো ফিরিয়া!

পলে পলে ক্ষ'য়ে যায় মানব-জীবন,
সাধিলেও একটু রহে না,
কেন রেথে যায় স্মৃতি—হতাশা-দহন,
কাঁদিলেও 'থুলে তা' কহে না!

অশনি, ভুজক, বাঘ, যত হলাহল, গড়ি বিভো! ভালই করেছ, আমার মনের খেদ একটী কেবল, কেন নাথ "হতাশা" গড়েছ ?

জীবস্ত শরীর দিলে জলস্ত অনলে,

মরে নর যেই যাতনায় !—

অসহ হতাশ জালা তারো চেয়ে জলে,

তারো চেয়ে আরো ব্যথা পায় !

(১০)

(2)

हूँटिहि श्रामाञ्चल तो कलाजाको नमी, प्रकृष উहिन एउँ वह, भामात ७ रजागात भीमा नारे यि, भामात ७ एएए पिएल कि रहा १

न्वीथिवथमक तहित्वी

বামাবোধিনী পত্ৰিকা।

BAMABODHINI PATRIKA. "कन्याप्येवं पालनीया श्रिश्चलीयातियत्नतः।"

কন্তাকে পালন করিবেক ও যত্নের সহিত শিক্ষা দিবেক।

৩৪৩ সংখ্যা

শ্ৰাবণ—১০০০—জুলাই ১৮৯**৩**।

৫ম ক্রা। ২য়ভগ।

সাময়িক প্রসঙ্গ।

গত ৬ই জুলাই বহস্পতিবার ভারতের ভাবী সমাট প্রিল জর্জ্জন রাজকুমারী মের পাণিগ্রহণ করি-য়াছেন। সেন্টজেম্স ধর্মমন্দিরে এই গুভবিবাহ মহাসমারোহে সম্পন্ন হইয়াছে। লগুনে আর কোন ঘটনায় এত জনতা কম্মিন্-কালে কেহ দেখে নাই। জগ-দীশ্বর রাজদম্পতিকে চিরস্থী করুন।

বিধবা-বিবাহ — আমেদাবাদ্
বিধবা বিবাহ সমিতির উদ্যোগে একটী
জাঁকাল রক্মের বিধবা-বিবাহ সম্পন্ন
ইইয়াছে, বর কন্যা উভয়েই প্রাক্ষণ
জাতীয়। অনেক সন্ধান্ত মহোদ্য ও
মহিলাগণ বিবাহস্থলে উপস্থিত ছিলেন
রেলওয়ে বিস্তার—ভা

বেলওয়ে হইয়াছে, তাহার মোট পরিমাণ দীর্ঘে ১৫৬৯৪ মাইল।

ডাক্তারী-পরীক্ষা — **এমতী** নিস্তারিণী চক্রবর্তী কলিকাতার ক্যা**ম্বেন** স্কুলের দিতীয় পরীক্ষায় উত্তীর্ণ হইয়া**ছেন।**

বিশ্বিদ্যালয়ের পারীক্ষা—
আগামী এম এ, বি এল ও টুডেন্টাপি
পরীক্ষা ২০এ নবেম্বর হইবে। প্রবিশিকা
পরীক্ষা ১২ই ফেক্রয়ারি এবং এফ এ,বি এ,
পরীক্ষা ২৬এ ফেক্রয়ারি হইতে হইবে। প্রশ্নদাতা পরীক্ষক সকল নিযুক্ত হইয়াছেন।

টাউনহল সভা—গত ২২এ আষাত বুধবার কলিকাতার টাউন্ হলে এক বিরাট সভা হয়, তাহাতে মহারাজ ঘতীক্ষমোহন ঠাকুর সভাপতির আসন গ্রহণ করেন, এবং মহারাজ ছ্র্গাচর্বী লাহা, রাজা প্যারীমোহন মুখোপাধ্যায়, ধারু কালীচরণ বন্দ্যোপাধ্যায়, ধারু

A CONTRACTOR OF THE PARTY OF TH

ছরেজনাথ বন্দ্যোপাধ্যায়, সার রমেশ চন্দ্র মিত্র প্রভৃতি মহোদয়গণ বক্তৃতা করিয়াছিলেন। ভারতবর্ষে দিবিল দার-বিস পরীক্ষার প্রস্তাব সমর্থন করাই এই দভার উদ্দেশ্য।

শ্রামফরাসী যুদ্ধ - মিনাম मनीत मूर्थ कतानी ७ शामरेनरनात मर्था যে যুদ্ধ হয়, তাহাতে ফরাদীদিগের ৫ জন হত হইয়াছে, শ্রামবাদীদিগের হতাহতের সংখ্যা ৩০ জন। ব্যাক্ষক নগরবাসিগণ **দশস্ত্র হই**য়া নগর রক্ষা করিতেছে।

দান--- নাভার রাজা লাহোরের দ্যানন্দ এংলো বৈদিক কলেজ ফণ্ডে 8১০০ টাকা দিয়াছেন। (২) সহাদয়া কুচবিহারের মহারাণী এ বৎসর্ত্ত

কাষেল হাঁসপাতালের ধ্রাগীর জন্য বোখাই আম, আনারদ, শক্ষেপ ও বাতাসা প্রদান করিয়াছেন।

ছভিক্ষ — কামরূপে ইতিমধ্যে ভয়ানক ছুভিক্ষ উপস্থিত হইয়াছে। নিয়বঙ্গে অতিবৃষ্টিতে এখনও আমন ধান্যের বীজ তৈয়ার হইতেছে না, চাষের বিষম ব্যাঘাত, এবারও যে ঘোর ছভিক হইবে তাহার সম্পূর্ণ আশক্ষা।

তুর্ঘটনা -- বিক্টোরিয়া নামক মহারাণীর জাহাজ জলমগ্র হইয়া ৭১৮ জন আরোহীর মধ্যে ১৩০ জনের মৃত্যু হইয়াছে। এই দর্মনাশস্কুচক দংবাদে লণ্ডনবাদিগণ ও কমন্স দভা শোকাকুল হইয়াছেন।

পুরাণ কথা।

সৌভরি চরিত। *

সৌভরি নামে এক মহর্ষি সলিলে | স্থংই দিন্যাপন করিতেছে ! অবগাহন করিয়া কঠোর তপস্থার অন্ধ-ঠান করিতেন। তিনি যে জলমধ্যে থাকিতেন, তথায় এক বৃহৎ মৎস্ত, পুত্র শৌত্র ও দৌহিত্রাদি বহু পরিবারে বেষ্টিত হুইয়া স্থাথে বিচরণ করিত। এই মৎস্তা-শংসর্গে বাস করায় জিতেন্দ্রিয়, সংসার-ত্যাগী, বিবেকী, মোক্ষকাম মহর্ষির মুন বিচলিত হইল; তিনি একদিন মনে মনে ভাবিতে লাগিলেন, "অহো ! এই মৎশ্ররাজ পরিবারবর্গে বেষ্টিত হইয়া কি/

তিনি দেই বুদ্ধ বয়দে বিবাহ দংশারী হইতে নিতান্ত বাদনা করিলেন, এবং কঠোর তপস্থা পরিহারপর্বাক সহংশজা কন্তার অমুসন্ধানে বহিৰ্গত হইলেন।

স্ব্যবংশোন্তব মহারাজ যুবনাখের পুত্র মান্ধাতার পঞ্চাশটী অবিবাহিতা ক্যা আছেন জানিতে পারিয়া, জরাগ্রস্ত িম্হর্ষি সৌভরি দেই রাজ্সভায় উপনীত ্ৰিহ্ণন, মহামতি মান্ধাতাও ভাঁহাকে

বিকুপুরাণ হইতে এই সৌভরি চরিত লিখিটা

সদশানে পূজা করিয়া অর্ঘ্য ও সাসন প্রদান করিলেন । মহর্ষি আসন গ্রহণ করিয়া মহারাজের কুশলাদি জিজ্ঞাসার পর বলিলেন, "মহারাজ! আপনার পঞাশটী কন্তা অবিবাহিতা আছেন, তন্মধ্যে একটী বিবাহার্থে স্মামাকে প্রদান মহর্ষির বাক্য শ্রবণে মহারাজ মান্ধাতা ক্ষণকাল বজ্ঞাহতের স্থায় হইলেন। পরে আত্মসংযম পূর্বক চিন্তা করিতে লাগিলেন—এই জরাজীণ মহর্ষি যে এমন প্রার্থনা করিবেন তাহাত স্বপ্নেও ভাবি নাই, আর সেই স্বকুমারী রাজ-কন্তাগণের মধ্যে কাহাকেই বা এই রুদ্ধের করে সমর্পণ করিব ? ইত্যাদি অনেক চিস্তার পর মহর্ষিকে বলিলেন, "ভগবন্! কোন সদংশজ পাত্রকে কন্সার ইচ্ছানুসারে প্রদান করাই আমাদের কুলধর্ম, এইরূপ স্থায় ও যুক্তিসঙ্গত কুল-ধর্ম অতিক্রম করিতে আমার ইচ্ছা হইতেছে না।" সৌভরি বলিলেন— "মহারাজ! সামাকে সন্তঃপুরে প্রেরণ করুন, যদি আপনার কোনও কুমারী স্বইচ্ছায় আমাকে পতিতে বরণ করিতে চাহেন, তাহা হইলে আপনি সেই কলা আমাকে সম্প্রদান করিবেন, নতুবা আমি বিবাহের বাসনা পরিত্যাগ করিয়। ষাইব।" রাজা "তাহাই হউক" বলিয়া একজন কঞ্কীকে সঙ্গে দিয়া মুনিবরকে অক্তঃপুরে প্রেরণ করিলেন। কঞ্কী রাজকন্তাগণকে

মধ্যে যদি কেহ এই মহর্ষিকে পতিতে বরণ করিতে ইচ্ছা করেন, তাহা হইলে মহারাজ ভাঁহাকে এই মুনিবরের হস্তে ममर्भे कति (वन।" कक्ष्मकी व वाका भाष হইলে রাজকন্তাগণ সকলেই মুনিবরকে পতিতে বরণ করিবার বাসনা প্রকাশ করিলেন। মান্ধাতা বিষয়মনে সৌভ-রিকে পঞ্চাশৎ কন্তা সম্প্রদান করিলেন।

অনস্তর মহর্বি, দেবশিল্পী বিশ্বকর্মা ঘারা পঞ্চাশটী স্থান্দর অট্রালিকা নির্মাণ করাইয়া পঞ্চাশ ভার্য্যার সহিত তথার বাস করিতে লাগিলেন। এদিকে মান্ধাতা কন্তা-গণকে আপনার মনোমত পাত্রে সম্প্রদান করিতে না পারিয়া ছংখিতচিত্তে দিন-যাপন করিতে লাগিলেন। এক দিন তিনি কন্যাগণের অবস্থা মনে মনে কল্পনা করিয়া নিতান্ত শোকে হুঃথে অধীর হইয়া মহর্ষির আশ্রমে গমন করিলেন। তথায় গিয়া মনোহর সৌধাবলী দর্শনে চমৎক্তত হইলেন। অনস্তর ইতস্ততঃ ভ্রমণ করিতে করিতে ভাঁহার একটী কন্যাকে দেথিতে পাইলেন, অমনি দানন্দে তাহার নিকট করিলেন, "বৎদে ৷ গিয়া জিজ্ঞাসা আমার রাজপ্রাদাদ পরিত্যাগ করিয়া এখানে কেমন আছ? **শেই কন্যা** বলিল ''পিতঃ ! এথানে পরম স্থাপ আছি, কেবল পিতৃমাতৃবিরহ জন্য যাহা কিছু কষ্ট !" 'এইরূপে মান্ধাতা প্রত্যেক কন্যার নিকট জিজ্ঞাদা করায় দকলেই রাজঅন্তঃপুরে মুনিবরকে লইয়া ক্রিনি এ এক কথাই বলিল। পরে রাজা সানক विना, को नेप्रकृष्टि অন্তরে মহর্ষির সহিত সাক্ষাৎ ও সম্ভাবণ

করিয়া প্রীতমনে গৃহে প্রত্যাগমন করি-লেন।

অনস্তর কালক্রমে মহর্ষির পঞাশ ভার্য্যা এক শত পঞ্চাশ পুত্র প্রদব করি-লেন। মুনিবর সন্তানগণের মুখাবলোকন করিয়া আনন্দ্রাগরে নিমগ্ন হইলেন এবং মনে মনে ভাবিতে লাগিলেন, আমার ্**এই পুত্র**গণ যৌবন প্রাপ্ত হইলে ইহাদের বিবাহ দিব, অনন্তর তাহাদের পুতাদি হইলে আমি পুত্র পৌত্র বেষ্টিত হইয়া মৎস্থারাজের ন্যায় স্থাথে কালহরণ করিব।

এইরপে দৌভরি আপন জীবনের ্লক্ষ্য হইতে ভ্ৰষ্ট হইয়া কিছু দিন সংসার **স্মথে অ**তিবাহিত করিবেন। হঠাৎ এক দিন তাঁহার জ্ঞান-চক্ষু প্রশ্বটিত হইল, ভথন তিনি আপন ছৰ্বলতা বুৰিতে ্পারিয়া অতিশয় অনুতাপিত হইলেন এবং ুভাবিতে লাগিলেন, অংহা। আমার ুমোহ কত দূর বিস্তুত হইয়াছে! অনস্ত আশা কিছতেই পূর্ণ ২ইতে চায় না, একটা আশা পূর্ণ হইতে না হইতে আর 🗝 একটী নুত্ন আশা আসিয়া তৎস্থান ু অধিকার করিতেছে। এই আশাই মন্নুষ্যের

मकन पु: (शत काकता हाता कामि कि নির্কোধ! সঙ্গের কি আশ্রেষ্য প্রভাব। থে হেড জলজন্ত মীনের **সহবা**সেই আমার এই দংদার-স্থাভিলাষ অদম। হইয়া উঠিয়াছিল; আমি বিবাহ করিয়া নিজের আর পঞ্চাশটী শরীর বৃদ্ধি করি-লাম, অতএব সংদার-বন্ধন-মমতার আকর পরিজনগণ আরও রৃদ্ধি পাইতেছে! অল্ল-দিদ্ধের কথা দূরে থাকুক যোগদিদ্ধ ব্যক্তি-গণত কুদংদর্গ দোষের হাত এড়াইতে পারেন না। এখন আমার জ্ঞানোদ্য ২ইল, নিঃসঞ্চ মুক্তির মূল, এখন নিঃসঞ্চ হইয়া তপশ্চারণ করাই আমার পক্ষে শ্রেয়ঃ। অনন্তর দৌভরি সমস্ত ভোগ-বাসনা পরিত্যাগ করিয়া ভাষ্যাগণের সহিত বনে প্রবেশ পূর্বক তপ্সসা ছারা পরম গতি লাভ করিলেন।

ধিনি মনোধোগ পূর্বক এই সৌভরি চরিত শ্রবণ, অধ্যয়ন, স্মরণ বা অনুশীলন করেন, ভাষার অসৎ সঙ্গে বাঞ্চা থাকে না, অসৎ কার্য্যে ইচ্ছা হয় না ও প্রমার্থ ত্যাগ করিয়া সামান্য বস্তুতে মুমতা क्ता न। কু, রা।

কয়খানি চিঠি।

্রনং চিঠি—শ্রীমতী জয়মণি দেবী, পাদ্ করিয়াছেন ; যথন জিন বার ফেল্

্র**প্র**ণামানস্তর নিবেদন— অথম পুতা জীমান্ হেমচন্দ্র এবারে এল.এ;া

ঘটকী ঠাকুরাণী, হইয়া এবারে পাদ্ করিয়াছেন, তথন এলীচরণেরু। । বি, এ, পাদ করিবার ভরদা আনামরা বড় করি না; স্থতরাং তাহার বিবাহ ্তি আপনি অবগত আছেন যে আমার তিয়া শীঘ্রই আবশুক। এ দিকে আমরা 🖓 ুবিপদে পড়িরাছি।

থাকিবেন, "ঘরের খেয়ে বনের মহিষ তাড়ায়" এই রকম গোচের কতকগুলি বাবু "বঙ্গ-হিত-দাধিনী" নামে এক দভা করিয়াছেন; পুত্রের বিবাহের সময়ে টাকা কভি লওয়া নিবারণ করাও দে সভার এক উদ্দেশ্য। সম্প্রতি শ্রীশবাব আমাদের বাড়ীর বাবুকে দেই সভায় লইয়া থিয়াছিলেন; আমাদের নিতান্ত ভাল মানুষ, সেথানে অনেক বড় লোকের অনুরোধ এড়াইতে না পারিয়া, চক্ষলভার দায়ে সেই সভার এক "সভা" হুইয়াছেন। এখন হেমচন্দ্রের বিবাহের সময়ে তিনি কলা কর্ছাদিগের কাছে টাকা চাহিতে পারিতেছেন না, আবার চির-দিনের আশা যে "মাটী" ইইয়া ঘাইবে हेहां अधार महित्व ना! मं महो वेतून, স্মিতিই বলুন, আপনার ক্ষতি করা নিতান্তই নির্কোধের কাজ; আমরা তাহা কথনই করিতে পারিব না। তবে পুরকে যথাসাধ্য উপদেশ দিতে বাবু কথনও ক্রটি করিবেন না। যাহাহউক আপনার निकारे आमारमंत्र विभी निर्वापन. যে সকল বাবুর নিকটে বিবাহাথী পুত্রের পিতাকে টাকা চাহিয়া লইতে না হয়-নিজেরা সাধিয়াই কন্তা জামাতাকে দশ হাজার, বা'র হাজার টাকা দান করেন, ভাঁহাদেরই একজনের ক্সার স্**হিত আ**মার হেমচন্দ্রের গুত্রসম্ম হি# আমাদের করিবেন। তাহাহইলেই व रिनामन्देश চুইকুল বজার থাকে। वाशित नेप्रकार পত্ত-খুব সাবধানে

বিদায়ের সময়ে আপনার প্রতি যে বিশেষ বিবেচনা করা যাইবে, একথা বলা বাছল্য মাত্র। নিবেদনমিতি।

> অনুগ্রহাকাজ্জিনী— শ্রীশরৎশশী মিত্র।

২নং চিঠি—গ্রীমতী জয়মণি দেবী, ঘটকী ঠাকুরাণী গ্রদ্ধাম্পদাস্থ।

নমস্বারাস্তে, নিবেদন---

বলি, ঠাকুরাণি ! আপনার আন্তেলটা কি ? আমিতো মেয়ের মা নই, মে লোকে যা' বোলবে, তাই কোরবো। আমার যতীন তিনটে পাশ কোরেছে; তার জন্ত মেয়ে দেখার তাড়াতাড়ি কি ? আপনি লিথেছেন "নরেক্স বাবুর মেরেকে দেখে যতীন পছন্দ করেছে।" আমিতো "গান্ধৰ্ক বিবাহ" দিতে বদি নাই, তবে ছেলে মেয়ের মভামত জানতে এত মাথা-वाश (कन ? यि (मना भारता किन হয়. মেয়ের বাপ যদি যতীনের মতন ছেলের উপযুক্ত ব্যয়ভূষণ পারেন, তাহলে মেয়ে দেখা, পাকাপাকি कता, नवह ठिक हत्व । आनत कथाण আগে. না আলাত পালাত কথাওলো আগে? তাই বোলচি, আপনি দেনা-পাওনা আগে ঠিক করিয়া এধীনে আসিবেন; ঘেমন বিবেচনা হয় তাইা করিব। যতীন বাঁহার সন্তান, ভিনি

প্রপোকে, কিন্তু যতীনের জমিদারি তো আছে। নিবেদন ইতি।

> ওভাকাজ্জিণী— থতীনের মা— শ্রীদরোজিনীদেবী।

ত্রং চিঠি—শ্রীমতী ঘটকিনী ঠাকুরাণী মহোদয়াস্থ।

প্রণাম জানিবেন। এমান শরতের জ্ঞ্ম ''কি রকম কন্সা আবিশ্রক'' জিজ্ঞাসা করিয়াছেন, এজন্ম লিথিতেছি। আমরা নগদ টাকা কড়ি চাহি না; মেয়ের বাপ একজন জজ, হাইকোটের উকিল, আসি-ই্যান্ট বা পুরাতন ডেপুটা ম্যাজিষ্টেট নিদেন কোন খ্যাতনামা ডাক্তার হওয়া চাই; ভাঁহার কেবল একটা মাত্র কলা (অর্থাৎ সম্পত্তির উত্তরাধিকারিণী একটা মাত্র কন্সা) থাকা চাই; মেয়েটী স্থশী-লার মত উঁচু হওয়া চাই; রঙ্ সরলার মত ছধেমালতা ফর্সা হওয়া চাই; চোকৃ হটি আমাদের পুঁটার চোথের মত ্নীলপল্য' হওয়া চাই; মুথথানি সরলা-দৈর বউএর মত "শতদলপদা" হওয়া চাই; হাসিটুকু মূণালের হাসির মধুমাথা চাই; হাত পায়ের তেলো, গোলাপফুলের মত গোলাপী হওয়া চাই: শুন্দী যোগেন কাকার দেজ रमराइद में शाना'न ७ नहम नहम ত্রিকারি স্কেশিনীর চলের মত

ঠিক্ হওয়া চাই; পলার স্বর আর কথার **४३१, आ**यारित हैन्द्र ये विर्क्त विर्क्त হওয়া চাই; হাঁটনটি চাকুবালার "গৰুগমনে" : दित মোটের মেয়েটী পুরাণকথার "তিলোক্তমা" অথবা উপক্ষার পরীরাণী হওয়া : ईश्व মেরের লেখাপড়া জানা চাই: শিক চিত্র, হার্মোনিয়ম ও পিয়ানো বাদনে নিপুণতা চাই; মেয়েটীর দর্কাঙ্গে হীরা, মুক্তা, জড়াও গহনা চাই; এরই উপ-যোগী পোষাক কাপড় চাই; ছেলের বরসজ্জা সব সোণা, রূপা চাই; বরাভ-রণ দব হীরা মুক্তা চাই; আর আর যাহা চাই তাহা "উনি" বাড়ী আদিলে ভবে আমরা এমন ছোট লোক নই, যে "নগদ টাকা চাই" বলিয়া কস্তাকর্ত্তাদিগকে পীড়ন করিব! ছি! সে ভারি লক্ষার কথা। নিবেদনমিতি।

> অনুগতা— শ্রীস্থহাদিনী রায়।

৪নং চিঠি---পূজনীয়া শ্রীমতী ঘটকী ঠাকুরাণী---পূজনীয়াস্থ।

আমাদের বাড়ীর কর্জা, গোপালের বিবাহের জন্ত আপনাকে কি রকম মেরে দৈখিতে বলিয়াছেন তাহা জানি না; কিন্তু আমাদের জ্যেষ্ঠ পুত্র স্থাশীলের বিবাহ কেবল টাকার লোভে দিয়া এখন জন্মী তেছি। এমন বউ হইয়াছে যে-তাহাকে লইয়া ঘর করিতে পারিলাম না, এমন ছেলেটী প্ৰয়ন্ত বিগড়িয়া যাইতেছে! দোহাই ঠাকুরাণি! আপনার পায়ে পড়ি, আমার গোপালের জন্ম একটা স্থঞী, সুশীলা ও স্থলক্ষণা মেয়ে আনিয়া দিবেন। আমার শভর ঠাকুর যে সম্পত্তি রাথিয়া গিয়াছেন, আমার বাছারা তাহাই ভগ-বানের দয়ায় ভোগ করুক; বউ গরিবের মেয়ে হইলেও বা কি ? আমাদের শাস্ত্রে বলে "ব্রীরত্নং ছফুলাদপি"; অভএব আমি ঘরকলায় স্থী হইতে পারি, মেয়ে না হওয়ার ক্ষোভ মিটাইতে পারি. आमारक এই तकम धक्ति स्माय श्रीका দিবেন। কর্জামহাশয় যদি টাকার মম-তায় একটা "শাশুড়ীজালানী" মেয়ে আনিতে বলেন, তাহা আপনি কখনই ভনিবেন না। আমি সুশীলের বিবাহ টাকা পয়সার সহিত দিয়াছি--গোপা-লের বিবাহ দিয়া মনের মত বউ আনিব। আপনি ইহা মনে রাথিবেন, আপনাকে উপযুক্ত পুরস্কার দিব। নিবেদনমিতি।

প্রণতা

बीवितामिनी मद्रकाद ।*

ভ্ৰাতৃ দ্বিতীয়া।

(৩৪২ দংখ্যা ৮২ পূর্চার পর)

প্রতীত হয় যে ভ্রাতৃদ্বিতীয়ার প্রথম উদ্দেশ্য ব্যক্তিগত সম্ভাব অর্থাৎ সংহাদর সহোদরাদিগের স্নেহ মমতা বর্ছন করা। যে ব্যক্তি একাস্ত আস্মীয়গণের প্রতি কর্ত্তব্যপালন করিতে না পারে. সে পারিবারিক, সামাজিক অথবা বিশ্ব-জনীন কর্জবাপালন করিবার অংযোগ্য —যোগ্য হইলেও তাহা—একরূপ নিফ্ল বলা যাইতে পারে। এই কারণে আর্ঘ্য-গণের ভাতৃদিতীয়ার প্রথম উদ্দেশ্য ব্যক্তিগত সম্ভাব; সহোদর সহোদরার স্বেহবর্ত্বন পক্ষে ভ্রাতৃদ্বিতীয়া এক প্রধান असगरक महामद महामदा

মনোনিবেশ পূর্ব্বক আলোচনা করিলে । বিধাতার অপূর্ব কৃষ্টি। উভয়ের জন্ম একই গর্ভে, উভয়ের লালন পালন একই হত্তে, উভয়ের জীবন রক্ষা একই স্লেছে। এরকম স্বাভাবিক সহযোগিতা অগতে আর নাই, স্বাভাবিক এরপ স্নেছ মম-তাও জগতে আর বেশী নাই। ঘটনাক্রমে উভয়ের মধ্যে একাস্ত ব্যবধান হট্যা থাকে। ভগিনীকে অপরের হতে দিয়া জন্মের মত "পর" করিতে হয়;

> * এই চিঠি কয়পানি ঘটকী ঠাকুরাণীয়"ভ্যাক্যা সম্পত্তি" বিবেচনার, প্রকাশ করিতেছি। ছেলের মা'র চিঠিওলি দেখিয়া যদি কোনও মের্বের মা উপকৃতা হন, তাহা হইলেই আমি কুতাৰ্থা হইব 🔭 स्रोतक "धकानिका ।"

ব্রাভার গৃহ, সম্পত্তি, বা গোত্তে ভগিনীর কোনও অধিকার থাকে না। পুরুষের মাথার ঘাম পায়ে ফেলিয়া থাটিতে হয়, ভাষার জ্ঞী সম্ভান প্রভৃতি পোষ্য বর্গের জন্য, ভগিনীর জন্য নহে। ভগিনীরও **সৃহধর্ম** তাঁহার হামী ও খণ্ডর কুলের चना. ভাতার জন্য নহে।* এই কারণে প্রাপ্তবয়দে ভাতাভগিনীর স্নেহ মুমতা কতকদূর শিথিল হইতে পারে। মন সর্বদঃ থাঁহাদিগের বিষয় চিক্তা করে, প্রায় প্রতিকার্য্যেই গাঁহাদিগের সাহায্য অহণ করিতে হয়, বাঁহাদিগের উপরে অংথ, শান্তি, আশা, ভরদা সমস্তই নির্ভর কৈরে, সাধারণতঃ মানব-ফ্রদ্য় ভাঁহাদিগের প্রতিই অধিকতর আক্রপ্ত হয়। ভাতার নিকটে তাঁহার প্রতিপালিত পরিবারবর্গ অধিকতর স্নেহ মমতা প্রাপ্ত হন. আর ভগিনীর নিকটে তাঁহার খণ্ডর কুলু অধিকতর আত্মীয় বলিয়া বিবে-চিত হন। কিন্তু ভ্ৰাতা ভগিনীতে যতই পার্থক্য হউক না কেন, ভ্রাতৃদ্বিতীয়ার দিনে ভগিনী নহিলে ভাতার চলে না. জৈতি। নহিলে ভগিনীর চলে না। শিতীয়ায় মাতার অধিকার নাই, স্ত্রীর 🕅 ধিকার নাই, কন্যার অধিকার নাই, আছু বিতীয়ায় কেবল ভগিনীই অধিকা-তাই এই দিনে ভ্রাতা ভগিনীর त्रिनी।

্র সকল কথা সাধারণের প্রতি প্রযোজ্য। **রিধ্বাবা পতিভাজা** ভগিনীয়া ভাতৃগুহে বাস क्षित्राधः शास्त्रम , तम मकल घटन। व्यवहा ज्याह

ভালবাসা তরসায়িত হইয়া উঠে ! দিনে মনে পড়ে ছুই জনের দেহ একই উপাদানে গঠিত, মুই জনের দেহে একই জীবনী, তুই জন তুয়ে এক একে তুই ! ''ভাত। ভগিনী'' বলিতে ছুইজন ছুই-জনেরই বুঝায়।—বৌদিদীরা ভনিলে কি বলিবেন জানিনা, আমি যেন ঠিক বুঝিতে পারি, দাদা ও আমি এক বোঁটায় ছুইফল, এক শরীরের ছুই ছায়া ! "ভ্রাতা"বলিতে ভগিনীর স্বাদয় কি এক স্বর্গীয় ভাবে—কি জীবস্তভাবে পূর্ণ হইয়া যায়, তাহা বুঝিতে পারি, লিথিতে পারিনা; লিথিয়া সে অব্যক্ত সৌন্দর্য্য রক্ষা করিতে পারি না, তাহা কেবলই অনুভ্বনীয়।

এজগতে ভগিনীর ভালবাসা অমূল্য ভালবাসা। ভালবাদার মধ্যে দম্পূর্ণ নিঃস্বার্থ, দেই ভালবাদা ভগিনীর ক্রদয়ে। ভাতার গৃহে বাদ না করিয়া ভাতার সহিত সাংসারিক কোনও সহ-যোগিতা না রাথিয়া, ভাতার সুথ ছঃথে ভগিনীর হৃদয়ের পূর্ণ সহাত্মভৃতি। এই-থানে ভগিনীজীবনের বিশেষত্ব। এইথানে ভগিনী স্ত্রী, কন্যা প্রভৃতির উপরেও স্থান পাইতে পারেন। সহাদর আর্য্যগণ এ স্বগীয় ভালবাসা বুঝিয়াছিলেন; পাছে দংদারের ঘূর্ণাবর্ত্তে পড়িয়া এই স্বর্গীয় ভালবাসা উপযুক্তরূপে বিক্ষিত না হয়, পাছে ব্রাতা, ভগিনীর ভালবাদার প্রতিদান করিতে বিমুধ হন, সেই আশস্কায় ঋতু-পরিবর্তীন সমরে, হেমন্তের প্রথম মানে পীড়িত ভাতাদিগের (কাভিক্সানে আমা-

দের দেশে পীড়ার কিরূপ প্রান্থভাঁব সকলেই জানেন) ভাহা বোধ হয় দীর্ঘায় প্রার্থনায় নিয়োজিত করিয়াছেন। "জামাই ষষ্ঠী" ভদ্রতার জন্য বলিয়। জৈটি মালে পাকা আমের সময়ে, ভাত-দিলীয়া প্রাণের টানে বলিয়া কার্ত্তিক মাসে. বোগের বাডাবাডি সময়ে। এই সময়ে যে ভগিনী ভাতাকে পজা করিয়াছেন. যে ভ্রাতা ভগিনীর সেই প্রাণ্ভরা ভাল-বাসা গ্রহণ করিয়াছেন, জ্রাতা ভগিনীর জীবনের বিমল স্থু তাঁহারাই উপভোগ ভাই ভগিনী বিধাতার করিয়াছেন ! যে কি অমূল্য দান, তাহা দেই এক মুহর্ডে উভয়েই বুঝিয়াছেন! দে সময়ে পাষাণ্ড গলিয়া যায়। তাই বলিতেছি যতদিন ভ্ৰাভিদ্বিতীয়া রহিবে, ততদিন ভগিনীর হাদয়পূর্ণ মমতাও রহিবে; রহিবে বলিয়াই আর্য্যগণ ভ্রাতৃধিতীয়ার প্রবর্ত্তন করিয়া গিয়াছেন।

ভাত্তিতীয়ার ত্বিতীয় উদ্দেশ্য পারিবারিক সন্তাব। ব্যক্তিগত ভাবের পরেই
পারিবারিক ভাব। সহোদর সহোদরার
কর্ত্বর পালিত হইলে, পারিবারিক কর্ত্বর
পালনের পক্ষেই ভাত্তিতীয়ার সহায়তা।
হিন্দুজাতি জ্যেঠা খুড়া হইতে মেদো
পিসা প্রভৃতি আত্মীয়দিগের সহিতও
একারভোগীরূপে বাস করেন। সকল
মানবের প্রকৃতি কর্থনও একরূপ হয় না,
বিশেষতঃ হিংসা, দ্বের, অহন্ধার প্রভৃতি,
কৃপ্রবৃত্তি ক্রকার সংয্মন শক্তি অর্তা
বেড়াইতেছে, মানবের সংয্মন শক্তি অর্তা

(एथिएन) देशका मानव मन अधिकांक করিয়া বলে। এই কারণে ষেথানে বছ-পরিবার, সেই থানেই প্রায় মত-বৈষম্য : তাহারই ফলে বিবাদ বিদংবাদ বা গ্রহ-বিচ্ছেদ উপস্থিত হইয়া পারিবারিক শান্তিকে একেবারেই দুর করে! অপক্ষপাতিতা, অমায়িকতা ও সমদর্শিতা যে গার্হস্য স্থু শান্তির প্রধান উপায়. এ কথা নীতিজ্ঞ হিন্দু,প্রেমিক হিন্দু বিশেষ-রূপে জানিতেন: তাঁহাদিগের ধর্মণাল্লে छेन हिया भाग हिया এই কথাগুলি বার বার লিথিয়াছেন; এই কথাগুলি ভ্রাত্থিতীয়া হইতেও হাদয়কম হইবার আশয়ে তাঁহারা আদেশ দিয়াছেন, ত্রাত্ত-দ্বিতীয়ার দিনে ভ্রাতাকে আগে জ্যেঠতুত ভগিনী ইত্যাদির হস্ত হইতে দকলের শেষে সহোদরা ভগিনীর হস্ত হইতে আহার্যা গ্রহণ করিতে হইবে। ইহাতে দহোদরার যে গৌরব দে গৌরব তো রহিলই, লাভে অন্যান্য ভগিনীরা পরম সম্ভূট হইলেন। সহোদর সকলের সম্ভব হয় না, কিন্তু ভাগ্যে স্থিবেচনায় কোনও ত্বংখিতা বা ঈর্য্যাপরায়ণা হইতে পারেন না। যতই পর হউন না কেন, যতই দুর সম্পর্কীয় হউন না কেন, ভ্রাতৃদ্বিতীয়ার দ্ৰিনে দকল ভাইভগিনীই সহোদৰ সহো-দরা স্থানীয়। ভালবাসাতেই পর আপন হয়, মিত্র হয়। পরকে আপন করিতে না পারিলে—অন্ত জাতির বাহাই হিন্দু জাতির গার্হয়ধর্ম রক্ষা হর না।

বৈনিক হিন্দু আর্য্যগণ ইহা জানিতেন বিদিয়া আড়্দ্বিতীয়াকেও পারিবারিক স্থাব শিথাইবার উপায় করিয়া গিয়াছেন। বাহাদের এত সৌজন্য, পর তাঁহাদের জাপন হইবে না কেন ?

ভাত্বিতীয়ার তৃতীয় উদ্দেশ সামা
কিক সন্তাব—পরিবারের পরে সমাজই

মানবের অবলম্বনীয়। ভাত্বিতীয়ার

ভাতাভগিনী সম্পর্কীয় সামাজিক নর
নারী মাত্রেই ভাত্বিতীয়া ক্বত্য করিতে
পারেন। মৌধিক সম্পর্কেও ইহা আচ
রিত হয়। আর্য্যগণ বলিয়াছেন —

"সর্বাহ্ন ভগিনীহন্তাৎ ভোক্তব্য: বলবৰ্দ্ধনং" **সম্প**কীয় ভ্ৰাতা ভগিনীগণ শহোদর সহোদরার প্রাণে অন্মপ্রাণিত হইলে মানব সমাজের কি কল্যাণ সাধিত না হয়? ভালবাসার <u>শীমাবিস্তারে</u> मानव-श्रमहात महा । महा, कमा, छेल-চিকীর্বা প্রভৃতি সদাণগুলির ন্যায় ভাল-বাদাও গৃহ হইতে আরম্ভ হইয়া সমস্ত জগতে ব্যাপ্ত হইতে পারে—হইলেই মানবদমাজ দেবদমাজ হইতে পারে। জ্রাতা ভগিনীর ভালবাসার মত পবিত্র সার্থশৃষ্ণ ভালবাদাই প্রকৃত দামাজিক ভালবাসা। এইরকম ভালবাসা বাড়িবে, সমাজেরও তত উরতি হইতে থাকিবে। এই ভ্রাতা ভগিনী ভার বিস্কৃত ভিন্ন আশয়েই আর্য্যগণ ভ্রাতা ভগিনী শশকীয় ব্যক্তি মাত্রের জম্মই প্রাতৃ-षिতীয়া প্রথা প্রবর্তিত করিয়াছেন। ভাই ভগিনীর ভালবাদা যে দামাজিক

ভালবাদার আদর্শ একথা একটু ভাবিয়া দৈথিলে আমরা সহজেই বুঝিতে পারি। মাতা পিতা আমাদের ভালবাসার আদি ও সর্কোচ্চ স্থান, কিন্তু মাতাপিতাকে বাস্তবিক নিঃস্বার্থ ভালবাদা দিয়াছি কি না তাহা বুঝিতে পারি না। বাঁহারা আমাদিগকে প্রোগপণে লালনপালন করিয়াছেন, ধাঁহাদিগের প্রাণপূর্ণ স্নেহ মমতার একবিন্দু অভাব হইলে আনা-দিগের বাঁচিয়া থাকা অসম্ভব, আমরা মস্ক্রফাদয়ে তাঁহাদিগকে ভক্তি না দিয়া থাকিব কি করিয়া? আরও শিক্ষক ছাত্র, উপকারী উপক্বত, প্রভু ভৃত্য প্রভৃ-তির ভায় সম্মাবিশিষ্ট না হইলে অন্য কেহ কাহারও পিতামাতার ন্যায় ভক্তি-ভাজন হইতে পারে না। ভালবাদার মধ্য-বিন্দু দম্পতী। এরপ অলৌকিক আকর্ষণ-বিশিষ্ট ভালবাদা জগতে আর নাই, এরূপ এক জীবনে হুই দেহ আর নাই। ইহাঁদিগের ভালবাদা স্বার্থশূন্য কিনা তাহা বুঝিতে পারা অসম্ভব। করি এই কথায় পবিত্রতম দাম্পত্য সম্ব-ক্ষের অগৌরব করা হইতেছে না, কারণ আমরা বলিতেছি আমাদের দেশে ভার্ষ্যা-সামীর সহধর্মিণী, সহযোগিনী. আখ্রিতা,পালিতা ও সেবিকারূপে থাকেন। वाँशास्त्र भवन्भवत्क महेश - **अ**जिननारु अस्तालन, मकन विषस्त्रहे ্যাঁহাদিগের **সহযোগিতা, তাঁহাদিগের** পরস্পরের ভালবাসার কভটুকু স্বার্থপূর্ব কতটুকু নিঃসার্থ, ভাষা বুকিব কি করিয়া ?

বিশেষতঃ স্বামী ছীর ভালবাসা ব্যক্তিগত ভালবাসা; উহা কেবল স্বামী স্ত্রীর প্রাপ্তর। পারিবারিক ভালবাদার শেষ দীমা দন্তান। কিন্তু বাৎদল্য বা স্নেহ অভ্ৰনীয় হইলেও তাহা <u> সামাজিক</u> বাহিক সাধারণ জিনিস নহে; তবে বিশেষের উপরে ব্যক্তি বিশেষের সন্তান-বৎ স্নেছ জন্মিতে পারে। তাই বলিতেছি ভাই ভগিনীর ভালবাদা দমাজিক ভাল-বাসার আদর্শ। ভ্রাতা ভগিনী হইতেই লোকের নিঃস্বার্থ ভালবাদার আরম্ভ। শিশু ভাই বালিকা ভগিনী, কেহ কাহা-রও বিশেষ কৈছই দাহায্য করে না, তথাপি উভয়ের মধ্যে গভীর ভালবাসা দেখা যায়। এই ভালবাদা চিরকালই স্বার্থশুন্য। ভাই ভগিনীদিগের পর-স্পরকে ভালবাসিয়াই স্থুখ; কোনও দিন ভালবাসা ফিরিয়া চাহিবার আবশুক হয় না—অবকাশ হয় না। প্রাপ্ত বয়সে পুরুষের সুথ হুঃথে ভাঁহার সহযোগিনী সহভোগিনী ভার্য্যার হাদ্য় যেরূপ সুখ ছঃথ অনুভব করে, শতদূরবর্ত্তিনী দর্কাথা অন্ধিকারিণী ভূগিনীর হৃদয়ও সেইরূপ वीमिमियमव অন্তব করে। তবে আবিশ্রক হইলে বিরাশি সিক্তা ওজনের মুখ কাম্টা দিতে পারেন, এক নিমেষে পঞ্চমে উঠিতেও পারেন, বা এ দকলের চেয়ে গুরুতর বিধিও প্রবর্ত্তন করিতে পারেন; বৌদিদিদের অনেক রকম আব-👸কও হয়, অনেক রকম অধিকারও **আছে**; ভগিনী কিন্তু ভাইকে ভাল বাসি-

য়াই পরিভৃপ্ত; ভ্রাতা যতদূরেই ক্রিন তাঁহার মকলেই ভগিনীর মকল। আবার ভগিনী পরের গৃহিণী, পরের পরিচর্যায় নিরতা, লাতা তাহাতেই সম্ভই: ভগিনীর স্থ্যাতি ভ্নিয়া, মঙ্গল জানিয়া ভ্ৰাতা কুতকুতার্থ। এই রক্ম ভালবাদাই তো দামাজিক ভালবাদা. ভাতা ভূপিনীই তো সমাজ গৃহের ভিত্তি। দ্রী পুরুষ লইয়াই মানবসমাজ গঠিত; হিলু সমা-জের রীত্যন্ত্রদারে দামাজিক নরনারীপণ বিশেষ কারণ ব্যতীত পরস্পরের সন্ম-থীন না হইলেও পরস্পরের সম্বন্ধ রাথিবার যথেষ্ট আবশ্যকতা আছে। তাই সামাজিক নরনারী ভ্রাতৃত্ব ভগ্নীতে অভ্যস্ত হইয়াই সামাজিক কর্ত্তব্য অনা-য়াসে পালন করিতে পারেন। নারীর পরস্পরের প্রতি শিষ্টাচার সম্বাব-হার, অবস্থাও উপযোগিতাক্রমে **পর**-স্পারের শ্রীর মন ও আত্মার মঙ্গলের সহায়তা করা, এই সকল কার্<u>য্য সামা-</u> জিক কর্ত্ব্য বলা যায়। দামাজিক কর্ত্ব্য পালিত না হইলে মানবসমাজ প্রসমাজ হইয়া পড়ে। অতএব সামাজিক নর-নারী যদি ভ্রাতৃভাবে ভগ্নীভাবে অভ্যস্ত হইতে পারেন, তাহা হইলে সামাজিক কর্ত্তব্য অভিসহজে পালিত হয়। ভ্রাতা বলিতে আমাদিগের মনককে, আত্মত্যাগী ন্যায়পরায়ণচেতা, পবিত্র এক দেবকুমার আবিভিত হন; ভাতৃমৃত্তির আদর্শ 👯 রকম। আর "ভগিনী" বলিতে **আখ** বিশ্বত ভালবাদা ও পবিত্রতা মূর্ভিমতী

নামাদের মনককে বিরাক্ত করেন,

ত্রীদী মুর্জির জাদর্শ এই রকম। দামাঞ্জিক
বর্ত্তনালারীদিগকে জাড় ভগ্নীর পবিত্ত মুর্জিতে
বালাইবার পক্ষে আড়-দিতীয়া অপূর্ক কৌশল। হিন্দু মহিলাকে যিনিই"ভগিনী"
সামোধন করিতে পারেন, আড়-দিতীয়ায়
ভিনিই সংহাদর স্থানীয়। জাড়-স্লেহো-

ঘেলিতা হইয়া হিন্দুমহিলা তাঁহার দীর্ঘায়ু কামনা করেন, তাঁহার জন্য আহার্য্য সংগ্রহ করেন; এরকম সহজে এমন পরার্থপরতা আর কোণায় শিক্ষা হয় বলতো? সামাজিক নরনারীকে সম্ভাব শিথাইবার এমন কৌশল আর কি দেথিয়াছ বলতো? (ক্রমশঃ)

মহারাণী সীতাবিলাস।

(৩৪২ সংখ্যা ৭০ পৃষ্ঠার পর)

দেবজন্মনীর স্বামী মহারাজ কৃষ্ণজী छेम्यादात भौठ विवाह। ইনি চতুৰ্গ ভার্ব্যা ও বন্ধ্যা ছিলেন। স্ত্রাং মহা-রাজের জীবন্দশায় প্রাচ্য দেশে সপত্নী-**শহবাদে হিন্দু রমণীকে যেরূপ অস্থ্**থের জীবন কাটাইতে হয়. ইহাঁকেও দেইরূপ করিতে হইয়াছিল : ১৮৬৮ গৃঃ অব্দে মহা-রাজের স্বর্গলাভের পর ইহার প্রভৃত প্রভাপ বালার্কের ন্যায় ক্রমশঃ প্রকাশিত रहेर्ड गांशिन। डाँहात आफ्रियत कांक्रिया, কথার গুরুজ, শুধু ভাঁহার পরিবার মধ্যে মর, নগরবাসী সকলে সমভাবে অন্তত্তব করিতে লাগিলেন। পুর্বেই বলা হইয়াছে **মে, ইহাঁর নিজের কোনও সন্থানসন্ত**তি হয় নাই। महाताल ठामताल ऐनतात् ইহাঁর দত্তক পুত্র। দত্তক পুত্রের ছেলে ভালকে ইনি অতিশয় ভাল বাদিতেন। পরিবারত স্কলের হাদরে কিরূপে কর্ড ভ নমস্থাপন করিছে হয়, তাহা তিমি স্থানি-

তেন--যেথানে তীত্র শাসন জাবশ্যক, দেখানে তাহা করিতেন, যেখানে যেখানে মিষ্টকথা, মধুর ভাব, বশুতা স্বীকার একাস্ত আবশ্যক তাহার কোনও মতে অস্তথাচরণ করিতেন না। মহারাজরাণী শাসনকলীর যে যে গুণ অতি প্রয়োজনীয়, তাহা তাঁহাতে যথেষ্ট ছিল। যদিও ইহাঁর স্বভাব কথঞ্চিৎ তীত্ৰ ছিল, তথাপি মুক্তকণ্ঠে স্বীকার করিতে হইবে যে, ইনি মিষ্ট-ममाना भिनी ভাষিণী, છ দয়ালু চিন্তা ছিলেন। উন্নত অবস্থায় লালিতা পালিতা হইয়া রাজপ্রাসাদে বাস করিতেন, কিন্তু ঈশ্বপ্রপ্রাদে ইহার অন্তর এতদ্র স্থা-শস্ত ছিল যে, ইনি পর্ণকৃটীরবাদী নর-নারীর হুঃথ অহভব করিতে পারিতেন। এই ক্ষমতা সকলের—সকলের কেন প্রায়ুই থাকে মা,যদি থাকিত,ভাহা হইলে সংসারের হুঃধ অনেক পরিমাণে ছাস হইত। শ্বতরাং মহিস্থরে হরবস্থাক্লিষ্ট

এমন কোনও লোক ছিল না যে ইহার माहाया ना भाहेग्राष्ट्र । मः एक (भ है हो क्र দানশীলতার এইমাত আভাদ দিয়া কাল রহিলাম যে, উক্ত রাজ্যে ২৫০।৩০০ পরি-বার প্রতিমাদে ইহার নিকট হইতে সাহায়া পাইত। যথন ভাঁহার আদল-কাল উপস্থিত, তথন তিনি একদিন তাঁহার অনুগৃহীত ও আশ্রিত ব্যক্তিগণকে এক একজন করিয়া নিকটে ডাকিয়া বলেন যে, ভাঁছার যেরপ ইচ্ছা ছিল, তদন্মধায়ী তাহাদিগকে দাহাধ্য করিতে না পারায় তিনি ছঃথিতা আছেন। তিনি এক্ষণে তাহাদিগের প্রত্যেককে ফল ও পুষ্প ও এক এক মৃষ্টি টাকা দান করিয়া জন্মের মত বিদায় গ্রহণ করিলেন। রাজধর্মোচিত 166

ঘারা অভুটিত হটল। "সীতাৰিক অএহার" নামে যে অষ্টাদশ বাটী সম্প্রতি বিনিমিত হট্যাছিল, তিনি নিরাশ্র ব্রাহ্মণদিগকে আহ্বান করিয়া ও চাম রাজেল্রকে নিকটে ডাকিয়া তৎসমক্ত তাহাদিগকে দান করিতে আদেশ দেন। তাহাই হইল। আরও অনেক বাটী নির্মিত হট্যা এইরূপে বিতরিত হট্রে. আর এই সকল আন্ধাদিগের জনা একটি একটি বৃদ্ধি নিৰ্দিষ্ট থাকিবে। তক্তিখা-রীতে তিনি যে অধ্যাপকের নিকট অধ্য-য়ন করেন, তিনি বা তাঁহার পুত্রাদি যদি কেহ জীবিত থাকেন, তাঁহাদিগকেও क्षेत्रभ मान कतिवात्र अवत्मावत कतिया গিয়াছেন।

(ক্ৰমশঃ)

তাপমান যন্ত্ৰ।

উষ্ণতার ইতরবিশেষবশতঃ বৃদ্ধ বন্ধদিগের আয়তনের অনেক ইতর বিশেষ
হইয়া থাকে। দকল দ্রবাই উত্তপ্ত হইলে
প্রদারিত ও শীতল হইলে দক্তিত হয়।
অতএব যদি কোন বন্ধর প্রদারণ ও
আকৃষ্ণনের পরিমাণ নির্ণর করিতে পারা
যায়, ভাহাহইলে উহার উষ্ণতা অমুক্ষভারও পরিমাণ অনায়াদে নির্নশিত হইতে
পারে, ভাহার দন্দেহ নাই। ফলতঃ
এই উপার অবলম্বন করিয়াই ভাপমানন্মাছে। কঠিন, ক্রব ও বায়বীয় দকল

প্রকার প্রব্য ঘারাই তাপমান যন্ত নির্দিত হইতে পারে; কিন্ত কঠিন বন্ধদিপের বিভৃতি নিতান্ত অল্ল ও বায়বীয় বন্ধ দকলের বিভৃতি অত্যন্ত অধিক বলিয়া দচরাচর তরসদ্রব্য ঘারাই তাপমান্যন্ত প্রন্ত হইয়া থাকে। তরল বন্ধদিপের মধ্যে পারদ ও স্থরাসার এই স্ইটী তাপ্দান্যন্ত নির্মাণার্থ সচরাচর ব্যবস্থত হয়, কেননা সমধিক উত্তপ্ত না হইলে পারদ বায়বীয় অবস্থা প্রাপ্ত হয় না এবং অত্যন্ত শীতল হইলেও স্থরাসার অনিয়া বায় না

অন্যান্য ভাগমান অপ্রাক্তা পায়দ

বিটি তাপমান সমধিক প্রচলিত। পারদ-ভাপমান নির্মাণ করিতে হইলে একটা বর্জ, স্থন্ধ ও সমছিত্রসম্পন্ন কাচনালী শইয়া ভাহার এক প্রান্তে একটা কল প্রাপ্ত করিতে হয়। স্পনস্থর কন্দ দত্তের কিয়দংশ পারদপূর্ণ করিয়া উভাপ-দিতে হয়। তাপনিবন্ধন যথন পারদ ফুটিয়া উঠে,এবং তাহার বাষ্প্রারা নলের অভ্যম্ভর হইতে বায়ু ও জলীয়-রাশ নিরাক্ত হইয়া যায়, তথন অপর প্রাক্ত প্রবীভূত ও ক্লব্ধ করিয়া উষ্ণতানুষ্ণ-তার পরিমাপক চিহ্ন অঙ্কিত করিতে হয়। পরীকা দারা নিরূপিত হইয়াছে, (Melting ice) ক্ষয়মাণ ভ্যার ও ক্টনশীল জুলের (boiling water) উঞ্তা স্কল शास ७ नकन कालाई नमान, धरे निमिछ ইহাদিগের উঞ্তাত্মঞ্চা অবলম্বন করিয়া তাপমান যন্ত্রের চিহ্ন সকল অক্কিত হইয়া কাচনালীকে জ্ঞামাণ ভুষার-হর্ণ মধ্যে নিমগ্ন করিলে অভ্যন্তরন্থ পারদ क्रमणः मक्षिण श्रेषा शतिरगरा द्य ৰিন্দুতে স্থির হয়, তথায় আর একটা চি**ছ** অন্ধিত করিতে হয়। যেরপ হস্ত প্রাদাদির দৈর্ঘ্যকে একক ধরিয়া যাবতীয় লাব্যের দৈর্ঘ্য মাপা যায়, তত্ত্বপ যে উঞ্জা শ্বনা তাপমান যন্ত্রের পারদ একচিছ হুইভে অপর্চিহ্ন পর্যান্ত বিশ্তৃত্ হয়, ভদ্ধারা সকল স্রব্যের উঞ্চান্থফতা পরি-सिक रहेमा थाका। आत्र एका कृष्टे শিরিমাণক দণ্ডকে ইঞ্চি প্রভৃতি ক্ষুদ্র ক্রি সংশে বিভক্ত করা যায়, তক্তপ

উল্লিথিত বিন্দুৰয়ের মধ্যবন্তী স্থানটাকে ক্ষুদ্র ক্ষুদ্রভাগে বিভক্ত করিয়া উফতার "অংশ" স্থচক চিহু সকল অঙ্কিত করা হয়। কিন্তু তাপমান যন্ত্রের মাপদণ্ডের বিভাগ প্রণালী সর্বত্ত সমান নছে। ভুষার হিম-জলে নিমগ্ন করিলে পারদ যে বিকু পর্য্যস্ত নামিয়া পড়ে এবং ক্ষুটনশীল জলে নিমজ্জিত করিলে উহা যে বিন্দু পর্যাস্ত উথিত হয়, সেই ছুই বিন্দুর অন্তর্গত স্থানকে কোথাও ১০০, কোথাও ১৮০, কোথাও বা ৮০, সমান অংশে বিভাগ করে। ফরাশীদেশে শতাংশিক-मान व्यव्हिन धवः मर्कापनीय नमार्थ বেন্তারাও এই মাপ অনুসারে শীতোঞ্চ-তার পরিমাণ প্রকাশ করেন। खवनविम्म o° मृना ও স্ফোটনবিন্দু ১০০° এবং ইহাদিগের অন্তর্গত স্থান সমশতাংশে বিভক্ষ। দ্বিতীয় প্রকার মাপ ইংলণ্ডে প্রচলিত; আমেরিকা ও ভারতবর্ষেও এই মাপ ব্যবস্থত হইয়া থাকে। ফারেণহীট নামক এক ব্যক্তি ইহার উদ্ভাবন করেন। ফারেণহীটের তাপমানের দ্রবণ বিন্দু ৩২° ও স্ফোটন-विन् २८२° धंवः ইহাদিগের অন্তর্গত २)२ - ७२ = ১৮० मगान अः [म বিভক্ত। দ্রবণ বিন্দুর ৩২ অংশ নিমে ইহার 0° শুন্য। রিভ্মার একজন পণ্ডিত স্থতীয় প্রকার পরিমাপের স্ষ্টি করেন। ক্ষরাজ্যে এই মাপ প্রচলির্ড। রিজমারের তাপমানের দ্রবণ-विम् 0° ७ फू हेन विम् ৮० अवः मान-

দত্তের যে ভাগ এই ছুই বিন্দ্র অন্তর্গত তাহা ৮০ অশীতি সমান অংশে বিভক্ত।

উষ্ণতার অংশ দকল লিথিয়া প্রকাশ করিতে হইলে তাহাদিগের সংখ্যার দক্ষিণে কিঞ্চিৎ উর্দ্ধে এক একটী কুন্ত শুন্য লিথিতে হয়, এবং যে পরিমাপ প্রধানলীর অংশ তাহার আদ্য অক্ষর লিথিতে হয়। যথা—১৫° শ, ৬০° ফা ১২° রি, ইহাদের দ্বারা যথাক্রমে শতাংশিকের ১৫ অংশ, ফারেণহীটের ৬০ অংশ ও রিওন্মারের ১২ অংশ বৃঝায়। শ্ন্যের নিমন্ত কোন অংশ লিথিত হইলে ঋণ চিফ্লা দিতে হয়, যথা—১৫° শ, অর্থাৎ শতাংশিক তাপমানের শ্ন্যের ১৫ অংশ নিয়ে।

জায়মাণ ভূষার মধ্যে নিমজ্জিত হইলে যে তাপমান যন্ত্রের পারদ অনতিবিলম্বেই o° শ প্রয়ন্ত অবনত হইয়া পড়ে এবং কুটনশীল জলোখিত বাস্পমধ্যে নিমগ্ন করিলে যাহার অভ্যন্তরস্থ পারদ ১০^{১০} শ প্ৰয়ন্ত উন্নত হইয়া উঠে, দেই তাপমান যদ্ৰই উৎকৃষ্ট। যে সকল তাপমান হন্ত দোষশুন্য, তাহাদিগের ভিতরে লেশ-মাত্র বাতাস থাকে না। এনিমিক তাহাদিগকে বিপর্ব্যস্ত করিলে অপর প্রান্তের সহিত পারদের অভিঘাত বশতঃ এক প্রকার শব্দ উৎপন্ন হয়। তাপমান পরিমাণ সমান যদ্রের অংশ সকলের হওয়া নিতান্ত আবশ্রক। সমান কিনা ভাহা নিরূপণ করিতে হইলে, क्रेव९ वनश्रदांग बाजा भावमस्र हरेए किंकि॰ भात्रम विक्ति कत्रित्रा जाशांक

এক প্রান্ত হইতে অপর প্রান্ত স্বাধানিত করিতে হয়, যদি সকল অংশের পরিমাণ সমান হয়, তাহা হইলে উক্ত পারদের দৈর্ঘ্য সকল প্রেদেশেই সমান অংশ দ্বারা প্রকাশিত হইবে।

কাল সহকারে উৎকৃষ্ট উৎকৃষ্ট তাপ-মান যন্ত্ৰ সকলও এত মন্দ হয় যে, জায়মান ভূষার মধ্যে নিমজ্জিত হইলে তাহাদের অভ্যন্তরন্থ পারদ o° শ পর্যান্ত নামিয়া পড়ে না। ২° শ কি ১° শ পৰ্যাত নামিয়াই স্থির হয়। উত্তাপ তাপমান যদ্রের পারদ যেরূপ প্রসারিত হয়, কাচনালী ও সেইরূপ হইয়া থাকে। পারদ ও কাচের পরিমাণ সমান হইত, তাহা হইলে শীতোঞ্চতা নিবন্ধন মানের অন্তর্গত পারদের উন্নতি অব-নতি অহুভব করিতে পারিতাম না। কিন্তু কাচ অপেক্ষা পারদ সাতগুণ অধিক প্রসারিত হয়। অতএব, বলিতে হইবে, পারদের প্রকৃত উন্নতির সাত ভাগের ছয় ভাগ মাত্র আমরা দেখিতে পাই। উভাপধারা কাচমাত্রেই বিস্তৃত হয়, কিছ সকল প্রকার কাচের বিস্তৃতির পরিমাণ সমান নহে। এই নিমিন্ত যে সকল তাপমান ভিন্ন ভিন্ন জাতীয় কাচৰানা নির্মিত হয়, তাহাদের অভ্যান্তরত্ব পার-দের উন্নতি সকল সময়ে সমান হর না।

পারদের তুল্য তাপমান নিম্মাণোঁপ-বোগী পদার্থ আর দেখিতে পাওরা যারী না। অন্ন উভাপে ইহা অপেকারত আধিক প্রসারিত এবং—৩৬° শ ও ১০০° শ আংশের মধ্যে সমান সমান উত্তাপে প্রায় সমান সমান দূর বিস্তৃত হয়।

উষ্ণতার পরিমাণার্থ যেরপ পারদপূর্ণ কাচনালী ব্যবস্থত হইরা থাকে, তব্ধপ স্থরালার পূর্ণ কাচনালীদ্বারা শৈত্যের পরিমাণ নির্মণিত হয়। ৭৮°শ উষ্ণ হইলে স্থরালার ফুটিতে থাকে, কিন্তু শীতল করিয়া ইহাকে এপর্যান্ত কেহ কটিন করিতে পারেন নাই।

পूर्विरे উक्क इरेग़ाह् ०००°म छेक হইলে পারদ ফুটিয়া উঠে। এ নিমিত্ত কঠিন পদার্থের বিস্তৃতি অবলম্বন করিয়া **শতীব উত্তপ্ত দ্র**ব্যবমূহের উষণ্তা পরি-মিত হইয়া থাকে। এই দকল তাপ-মানকে সচরাচর "বঙ্গিমান" বলিয়া নির্কেশ করা যায়। শীতাতপ সংক্রান্ত পর্ব্যবন্ধণ করিতে হইলে দিবারাত্রিতে উহাদের কিরূপ হ্লাস রৃদ্ধি হয়, তাহা **নিরূপণ করা আবশ্যক। স**চরাচর যে শকল ভাপমান যন্ত্ৰ ব্যবস্থত হইয়া থাকে, অনবরত তাহাদিগের অন্তর্গত পারদ-ভত্তের উন্নতি ও অবনতি অবলোকন না করিকে উষ্ণতার হ্রাব বৃদ্ধির পরিমাণ ক্তির করিতে পারা रात्रं ना । অস্থ্রবিধা নিরাকরণার্থ পদার্থবেন্ডুগণ करतकथाकात वज निर्माण कतिहास्त्रने, তশাস উফতামুফতায় হ্রাস বৃদ্ধির সীমা অনীয়াদে নির্ণয় করিতে পারা বার। যে বর্ত্তবারা উষ্ণতার বৃদ্ধির চরম সীমা জানিতে नात्रा यात्र, তाहात्र नाम (maximum)

"গরিষ্ঠ তাপমান" আর যদ্বারা উহার হাদের শেষ সীমা জানিতে পারা যায়, তাহার নাম (minimum)"লঘিষ্ঠ তাপ মান।"

তাপমান যক্তবার। দ্রব্যাদির উঞ্চার
পরিমাণ মাত্র জানিতে পারা যায়, কিন্তু
কাহারও তাপের পরিমাণ জানা যায় না।
এক কলস জলমধ্যে কোন তাপমান যন্ত্র
নিমগ্র করিলে তাহার অন্তর্গত পারদ
যে বিন্দু পর্যান্ত উথিত হয়, এক বাটি
জলে নিমজ্জিত হইলেও সেই পর্যান্ত
উঠিতে পারে, কিন্তু এক বাটি জলের
উত্তাপ অপেক্ষা যে এক কলস জলের
উত্তাপ অনেক অধিক ইহা বলা বাহ্নল্য
মাত্র।

ৈ এক বাটী জেবারে উঞ্ভো ১ অংশ বুদা করিতে যে তাপ প্রয়োগ করিতে হর, এক কলস জলের উঞ্চতা ১ অংশ বৃদ্ধি করিতে তদপেক্ষা অনেক অধিক উত্তাপ প্রয়োগ করা আবশ্রক। আরও দেখিতে পাওয়া যায়, সমান তাপ প্রাপ্ত হইলেও, সকল দ্রব্য সমান উষ্ণ হয় না। অল্প উত্তাপে বালুকা অপেক্ষাক্বত অধিক উষ্ণ इस हैरा नकलारे धेलाक कतिसाहित। বে উত্তাপ নিবন্ধন ১ সের পারদের টেম্বাতা ৩০ আশ র্দ্ধি হয়, তদারা ১ সের জলের উষ্ণক্তা ১ অংশ वृष्कि इत । ष्यञ्जव ১ मह ্বের পরিদের উক্তোস্মান হইলেও ১ সের পারা অপেকা ১ সৈর জলের ভেজ ৩০৩ণ অধিক ইহা প্রবস্তা স্বীকার করিতে

দির উষ্ণতার পরিমাণ নিরূপিত হয়. জানিতে পারা যায় না।

হইবে। ফলতঃ তাপমান যক্ত্রছারা ক্সব্যা- | কিন্তু কাহারও অন্তর্গত তেজের পরিমাণ

প্রহেলিকা।

বিধাতার সৃষ্ট কল—আশ্চর্য্য কৌশল, হস্তপদ বিহীন সে চলে অবিরল। পলকের তরে তার নাহিক বিশ্রাম, অবিশ্রান্ত-অবিরাম করিছে সংগ্রাম। না মানে বারণ, করে দকলে সংহার, রাজা প্রজা ধনী তুঃথী নাহিক বিচার। বিচার করিয়া বল-কি পদার্থ হয় ৪ সহজে পাইবে তারে ধ্রুব—স্থানিশ্চয়॥ ১ শুন্যের সমষ্টি বটে—নহে নিরাকার, নয়নে নির্থি কিন্তু নিতান্ত অ্যার । অচেতন—মৃত প্রাণ, ছাড়ে না আমায়, ছুটাছুটি যত করি সাথে সাথে যায়। অন্তত পদার্থ অতি—নহে কিন্তু ভূত, অস্তুত হলেও নহে সৃষ্টি-বহিভূ তি। বৃদ্ধির চালনা কর—ছাড়িয়ে বিজ্ঞান, করিতে পারিবে ঠিক্ উত্তর প্রদান॥ २

তিন বর্ণে নাম তার অতি বলবান, আদ্য বর্ণ ছেড়ে দিলে বাধিবে সংগ্রাম। মধ্যম বরণ তার করিলে হরণ. হানে প্রাণ-থেতে হয় শমন-ভবন। শেষ বৰ্ণ শব্দ হ'তে যদি ছিল্ল হয়, সপ্তাহের কোন দিন জানিবে নিক্র। অভএব চিম্ভা করি দেখ একবার, কি জাতি কোথার বাড়ী কি নাম তাহার্গত

তিন বর্ণে নাম তার অতি নির্মল, আদ্য বর্ণ ছেড়ে দিলে বিপরীত ফল। মধ্য বর্ণ বাদ দিলে বুদ্ধিরে বাথানি, অস্তা বর্ণ লোপ হলে পরিমাণ জানি। জলচর নহে কিন্তু থাকে জল মাঝে. কাড়ে দে কবির মন মনোহর সাজে। শিশুর(ও)মনোজ অতি --মনোজ নারীর, চিন্তা করি বল দেখি স্থবিজ্ঞ সুধীর ? ৪ হন্ত পদ বিহীন সে চলে যথা তথা. মুথে বাক্য নাহি কিন্তু ভাবে কয় কথা। বোবারে বলায় বাক্য-বিধিরে শুনায়, অবীরে সন্দেশ দিয়ে পরাণ জুড়ায়। বিদেশে যথন যায় নিজ দেশ ছাড়ি, পরিচিত লোক যত খুঁজে বাড়ী বাড়ী। পরিচিত লোক যদি না পায় দেখায়, আশায় নিরাশ হ'য়ে দেশে ফিরে যায় ॥৫

मात्न वृक्षि इश किन्छ नट्ट विमा धन, অদানে অধর্ম হয় বৈদের বচন। অতি দানে একেবারে হয় স্বার্থ নাশ, বিশ্ববেষ মহাত্রত পালে বার মাদ। ছ'টী বৰ্ণ নহে কিন্তু দয়া, ধৰ্ম, জ্ঞান, সকলের সার ধর্ম কেড়ে লর প্রাণ। সেধনে বঞ্চিত যেবা অসার জীবন, ৰেব হিংদা তুবানলৈ দহে আজীবন িউ

নর্ডেনা চড়েনা তবু গতি বহুদূর, নয়নের গ্রাহ্ম নহে থাকে অস্তঃপুর। অজর অমর কিন্তু জডের অধীন. ব্দু সংক্র সহবাস করে যত দিন। যে দিন হইবে সেই জড়ত্ব বিনাশ. অমরত সেই দিন পাইবে প্রকাশ। যাইবে অমরাপুরী—ফিরিবে না আর, শোধ করি একেবারে সভাবের ধার॥ १ জলেতে যাতনা বৃদ্ধি—অনলেতে হ্রাস, সকলে বিকালে পায় প্রকোপ প্রকাশ। শৃত্যকায় বিধৈ গায় দেখিতে না পাই, সকলেই জড় সড় তার কাছে ভাই। ভুবন-বিজয়ী বীর--রাজা করযোড় ভার কাছে, হেঁট মাথা দবে যেন চোর ! জারি জুরি থাটে নাকে৷ সে বীরের কাছে, মহারথী শত শত হার মানিয়াছে !! ৮ প্রকাণ্ড উদর তার ভূগহ্বরে বাস,

মুখেতে পাষাণ চাপা থাকে বার মাস। আহার যোগায় দবে বদিয়ে নীরবে, মানব স্থল্ হেন হবে কি এ ভবে ? আপন উদর চিরি অপরে বাঁচায়, যত দিন বস বাস করে এ ধরায়। মুক্তিকার দেহ যবে মাটিতে মিশাবে, তথনি ভুলিবে সেই আপুন সভাবে। গৃহে গৃহে বিরাজেন যেন গো জননী, কি নাম তাহার বল হে ভাই ভগিনী ১৯ উচ্চকুল দমুম্ভব-পর উপকারী, ঘরে ঘরে বর্ত্তমান গৃহস্থের বাড়ী। বিরাজ করেন যবে গৃহিণীর করে, আতক্ষে শিহরে প্রাণ—কে রহিবে ঘরে ১ উপকারী হইলেও দ্বণা করে দবে. . রাগিলে ও নাম শুনি রম্ণীর রবে। বল দেখি কিবা নাম কি পদার্থ তিনি ? প্রশংসা করিব তারে ভাঙ্গিবেন যিনি॥ ১০

বরফমিঞিত জল।

থীম কালে বরফমিশ্রিত জল পান করার রীতি এদেশের বড় বড় দহরে খ্ব প্রচলিত দেখা যাইতেছে। বিলাতেও থীমের সময় বরফ মিশ্রিত করিয়া জল, চা, কাফি বা ছগ্ধ পান করা রীতি আছে। বরফমিশ্রিত জল পান করা কৃতদ্র সাহ্যকর, তাহা পরীকা করিয়া দেখা হইয়াছে। ইংলণ্ডের যে দকল চিকিৎদক ইহা পরীকা করিয়াছেন,

তাঁহারা সকলে একবাক্যেই বলেন যে এই রীতি সাস্থ্যের পক্ষে হিতকর নহে। গ্রীমের সময় বরফ জল উদরে প্রবেশ করিবা মাত্র উদরস্থ স্ক্র শোণিত-পাত্র-শুলি সক্চিত হইয়া য়য়, তৎপরে সেগুলি অসাভাবিক রূপে প্রসারিত হয়। এই সক্ষেত্র ও প্রসারণ জস্তু উদরে রক্ষ্ণ-সঞ্চয় হয় এবং উদরের স্বাভাবিক শক্তি হাস পাইতে থাকে। এইরূপ অধিক-

কাল হইলে ঋতু ও শরীরের অবস্থা অনুসারে ভিন্ন ভিন্ন লোকের ভিন্ন ভিন্ন রোগ হইয়া থাকে। অনেকের বিশ্বাস যে বরফ-মিশ্রিত জল পানে গ্রীমকালে দহজে ভৃষ্ণা নিবারিত হয়, কিন্তু এই বিশ্বাস অতীব ভ্রমাত্মক। বরফ মিশ্রিত অতি শীতল জল অপেকা নাতিশীতল জলেই ভৃষ্ণ শীঘ্র নিবারিত হয়। কোন কোন চিকিৎদকের এই মত যে বরফ মিশ্রিত জল যদি অরক্ষণ মুথে করিয়া তৎপরে গলাধঃকরণ করা যায়, তাহা হইলে তত অপকার হয় না। জল মুথে রাখিলে উহা একটু উফতা প্রাপ্ত হয়, অতএব উদরে পৌছিবার সময় আর ততদুর শীতল থাকে না। আজ কাল কলিকাতা নগরীতে কলের বরফ হওয়াতে উহা অতি স্থলত হইয়াছে, স্মৃতরাং ধনী দরিদ্র সকলেই উহা ব্যবহার করিতে আরম্ভ করিয়াছেন। সতর্কতার সহিত ও স্থবিজ্ঞ চিকিৎসকদিগের প্রতি দৃষ্টি রাখিয়া ইহা ব্যবহার করা কৰ্ত্তবা।

মানবদেহ।

মানবদেহে গড়ে তুইশত চলিশ্টী ভিন্ন ভিন্ন অস্থি দেখা যায়।

মান্লুষের গড়ে একত্রিশটী দস্ত দেখা গিয়া থাকে।

মানবদেহের ককালের ওজন গড়ে সাত সেরের অধিক নহে।

মানবদেহত্ব শোণিতের ওজন গড়ে নয় সের।

প্রুষের স্থন্থ যুবা শরীরের ওজন গড়ে সন্তর সের।

মানুষের মস্তিকের যে ওজন, তাহা ওজনের দ্বিগুণ গড়ে পঞ্জ মস্তিকের অপেক্ষাও কিঞ্চিদ্ধিক।

এক মিনিটের মধ্যে গড়ে কুড়ি বার-মান্ধবের নিঃশাদ প্রখাদ বহিরা থাকে। 📗 দের বায়ু নিঃশাদদারা প্রহণ করিয়াথাকে।

মাত্র নিঃশাদের সহিত যে কার্কন নামক বাষ্প ত্যাগ করিয়া থাকে, তাহা বুক্ষ লতাদির আহারস্কপ। প্রত্যেক মান্ত্র বৎসরের মধ্যে রুক্ষ লতাদিকে ৬২ সের কার্কন বাষ্প প্রদান করিয়া থাকে।

মানবদেহ মানবদেহের কন্ধাল অপেক্ষা এক ইঞ্চি কম লখা।

গড়ে পুরুষের মস্তিকের ওজন সাত পোয়া ও দ্বীলোকের গুজন দেড় দের।

চবিশ ঘণ্টার মধ্যে হৃৎপিণ্ডের মধ্য দিয়া ছয় হাজার সের রক্ত সঞ্চালিত र्मे शा था कि।

এক মিনিটের মধ্যে মাকুষ প্রার নর

ফেলার মা।

বেলা গেল ফেলা এল,কাজ সেরে' ঘরে।
কৈলার মা ভাড়াভাড়ি গিয়ে ভাত বাড়ে ॥
হাত মুথ ধুয়ে ফেলা এক পলা জলে।
কুচ্কি কণ্ঠা পূরে ভাত যত পারে গেলে।
তরকারি দরকারি নাই ক্ষিদে যার।
নারা দিন থেটেছে সে তাহাতে আবার ॥
এক কুলা—আচমন, মুথে নাই বাক্।
উবু হ'য়ে বসে গেল থাইতে তামাক ॥
থালা নিয়ে ফেলার মা ঘাটে গেল ধুতে।
এদিকে লাগিলা ফেলা কেমনি গাইতে ॥
গাইতে গাইতে বোধ করিলা আরাম।
দিনের থাটুনি পর করিলা বিশ্রাম ॥

যেমনি পড়া তেমনি খুম নাই কোন জালা।
এক খুমে কাটে রাত, ভোরে উঠে ফেলা॥
ভাত থেয়ে, ঘাট থেকে এসে ফেলার মা।
ভাড়া ভানি কেতনায় ঢালি দিল গা।
মার ঘুম ছাঁর মত, কে করে বারণ ?
এরা স্থী, যারা কাটে থাটিয়ে জীবন॥
নাহিক ভাবনা কোন, নাহি দস্মাভয়।
নাহি অর্থচিন্তা, নাহি হাদয়ে সংশয়॥
মোটা অয়ে, মোটা বাসে ইহারা য়েমন
স্থী, ধনী ভুমি কভু হ'বে কি তেমন ?
অতএব মজুরের নিকট শিথিতে
যাও, যদি স্বদশায় চাও ভুষ্ট হ'তে॥

গার্হস্থ্য জীবনে নারীর বীরত্ব।

যুদ্ধক্ষেত্রে শোষ্য প্রদর্শনই একমাত্র
বীরবের পরিচায়ক নহে। জীবনের
সর্বপ্রকার কার্যক্ষেত্রেই বীরবের পরিচয়
দেওয়া যাইতে পারে। প্রতিগৃহে কত
কত পুরুষ ও রমনী নিভৃতভাবে জগতের
অক্তাত্যারে স্ব স্ব গার্হস্তা জীবনে
প্রকৃত বীরবের কত অসামান্য নিদর্শন
দেথাইয়াছেন ও দেখাইতেছেন কে
তাহার সংবাদ লইয়া থাকে ? দটনা
কৈমে মধ্যে মধ্যে এরপ বীরবের
পরিচায়ক যে ছই একটা বৃত্তান্ত প্রকাশী
শিক্তাপ্রদ্য গ্রহা থেমন বিশ্বয়কর তেমনি
শিক্তাপ্রদ্য স্প্রতি অব্রেলিয়াদেশীয়

কোন এক মহিলা গার্হত্য জীবনে কির্নুপ অসাধারণ বীরজের পরিচয় দিয়াছিলেন, তাহার সংক্ষিপ্ত বৃত্তান্ত জামরা নিম্নে প্রকটিত করিতেছি।

অষ্ট্রেলিয়া মহাদ্বীপে গুলবরণ নামে একটী ক্ষুদ্র উপনগর আছে। ঐ নগরে একজন চিকিৎদক বাদ করেন। তাঁহার স্ত্রী, একটা পুত্র ও একটী কঞা; এই মাত্র তাঁহার পরিবার। পুত্রটীর বয়দ দ্বাদশ বংশর। দে ক্ষুলে অধ্যয়ন করিতে গিয়া থাকে। একদিন ক্ষুল হইতে প্রভাগন কালে ট্রামগাড়ী হইতে পড়িয়া গিয়া বামপদে সাংঘাতিক আঘাত প্রাপ্ত

হয়। বালকের পিতা চিকিৎসক, স্মৃতরাং তাহাকে হাসপাতালে প্রেরণ না করিয়া স্বীয় বাটীতে লইয়া গিয়া তাহার চিকিৎসা করিতে লাগিলেন। কিন্তু কিছুদিন পরেই প্রতীতি হইল তাহাকে মেলবোরণ নগরের হাসপাতালে না পাঠাইলে তাহার প্রকৃত চিকিৎসা হইবে না। স্থতরাং বালককে দূরবর্ত্তী মেলবোরণ্ নগরে পাঠাইতে হইল। এই ঘটনার কয়েকদিবদ পরেই ভাক্ষারটী নিজে এবং ভাঁহার কলা উভ-য়েই ডিপ্থেরিয়া নামক ভয়ানক সংক্রা-মক পীড়ায় আক্রান্ত হইলেন। স্বামী कन्छ। मह्हिंगभन्न भीषां मधानांशी এবং পুত্রটী দূরস্থ হাসপাতালে আহত পদের যন্ত্রণায় কাতর; এ প্রকার বিপদ-সকুল অবস্থায় ডাক্তারপত্নী কিংকর্ভব্য বিন্তানা হইয়া সামী ও কলার ভ্রা-নিযুক্ত। হইলেন। ডাক্তারের হঠাৎ পীড়া হওয়াতে তিনি যে সকল রোগীর চিকিৎসা করিতেছিলেন,ভাঁহার অতি বিপদে পড়িলেন, কেননা নিকট-বন্তী কোন স্থানে অন্য ডাক্তার ছিল না; স্মৃতরাং বিনা চিকিৎশায় ভাঁহাদিগের প্রাণবিয়োগের উপক্রম হইল। অবস্থায় ডাক্তারপত্নী একটা উপায় উন্ধা-বন করিলেন। স্বামী ও কন্যার ভ্রম্যা করিয়া তিনি যে সময় পাইতেন, তৎকালে তিনি তাঁহার স্বামীর চিকিৎসাধীন রোগী-দিগের বাটীতে গিয়া তাহাদিগের রোগের **লক্ষণ ও অবস্থা সম্যক্রপে অবগত হই**য়া

স্বামীকে জানাইতে লাগিলেন এবং তাঁহার নিকট হইতে ঔষধ ও পথ্যের ব্যবস্থা অবগত হইয়া নিজেই স্থন্দররূপে স্বামীর কার্য্য করিতে লাগিলেন। প্রক দিবস তাঁহার স্বামী শ্যাগত ছিলেন, এই প্রর দিনই ডাক্তারপত্নী তাঁহার স্বামীর প্রা-মর্শ ও আদেশ অনুসারে চিকিৎদা কার্য্য স্থচারুরপে চালাইলেন। যে কয়েকটী রোগীর তিনি চিকিৎসা করিয়াছিলেন, সকলেই সত্তর আরোগালাভ তাহারা করিল। ডাক্তার মহাশয় হুই চারি দিন প্থ্য করিয়াছেন, এথনও কিছু মাত্র বল-লাভ করেন নাই, এমন কি চলৎশক্তি বিহীন। এই সময়ে একটা রোগীর অপ্র চিকিৎসার আবশ্যক হইল। তাঁহার পত্নী নিজে তাহা করিতে অক্ষম ভাবিয়া সামীকে অতি যভের সহিত কলে লইয়া একটী ধীরগামী অশ্বধানে আরোহণ করা-ইয়া ভাঁহাকে রোগীর বাটী লইয়া গেলেন এবং নিজে অস্তান্ত সকল কাজ করিয়। কেবল যে টুকু তাঁহার স্বামীকে না করিলে নয় তাহা তাঁহা ধারা সম্পন্ন করাইয়া পুনরায় তাঁহাকে নিরাপদে বাটাতে আনি-(लन। (त्रांशीत कटेमृत **रहे**(त, **अथ**ह সামীর কোন কট হইবে না, ডাজার-পত্নীর ইহারই প্রতি বিশেষ লক্ষ্য ছিল। ্রিনি এই লফাত্রষ্ট না হইয়া সম্পূর্ণরূপে অভীষ্টসিদ্ধি করিতে কুতকার্য্য ছিলেন। পাঠক মনে করিতে পারেন এদিকে এরূপ ভাক্তারপত্নী থাকিয়া হয়ত হাসপাতালস্থ

শীয় পুত্রের প্রতি অমনোযোগী হইয়া পড়িয়াছিলেন। কিন্ত এই অনুমান সম্পূর্ণ অমূলক। তিনি যথনই স্থবিধা গ্রীইতেন, তথনই মেলবোরণ্ নগরের হাসপাতালে পুত্রকে দেখিতে যাইতেন। একদিন হাসপাতালস্থ প্রধান চিকিৎ-সক ভাঁহাকে বলিলেন:- "তোমার পুত্রের ক্ষতটার চতুঃপাশ্বের মাংদ বিনষ্ট হইয়া গিয়াছে, উহার দহিত সুস্থ সংযোজন না করিলে সারাম হইবে না। আমরা এতদিন মনে করিতেছিলাম যে হাত বা পা কাটি-বার আবশুক হইয়াছে এরূপ একটী রোগী এই হাদপাতালে উপস্থিত হইলে তাহার ছেদিত হাত বাপা হইতে স্বস্থ মাংস লইরা তোমার ছেলের ক্ষতের নিক্ট-বর্ত্তী ভানের বিনষ্ট মাংস পূরণ করিয়া দেওয়া যাইবে। কিন্তু আজও ঐ প্রকার রোগী কেহ আদিল না। আর বিলম্ব করিলে তোমার ছেলের পা রক্ষাকরা **অ**সাধ্য, উহা, কাটিয়া ফেলিতে হইবে।" চিকিৎদকের এই কথা শুনিয়া আহত বালকের মাতা হস্ত প্রসারিত করিয়)

বলিলেন—"ডাক্তার, আমার এই হাত 'থেকে আপনি যতটা ड़े क्या কাটিয়া লউন।" চিকিৎসক দমত হইলেন না, বালকও ভীত হইয়া চিকিৎসককে न्त्रीय মাতার রোধান্তসারে কাৰ্য্য করিতে নিষেধ করিতে লাগিলেন। কিন্ত অসামান্যা সাহসসম্পন্ন অভুলম্বেহশালী পত্নী বারম্বার কাতরভাবে অনুরোধ করাতে চিকিৎসক অবশেষে দশ্মত হই-লেন। ডাব্জারপত্নী ३ स করিয়া রহিলেন, তুই তিনজন চিকিৎসক এক একটা করিয়া ক্ষুব্রায়তন পাচথগু মাংস তাঁহার হস্ত হইতে কাটিয়া লই-লেন। পাছে পুত্র মনঃকষ্ট পায়, তজ্জ্ব কাটিবার সময় অতুল আত্মবল প্রয়োগ খারা এই অলোকদামানা বীর-যম্ভণাপ্ৰকাশক একটাও কাত-রোক্তি করিলেন না। চিকিৎসকগণ এই মাংসথগুগুলি লইয়া বালকের ক্ষত স্থানের চতুঃপার্শস্থ বিনষ্ট মাংদের স্থানে সংযোজন করিয়া দিলেন। কিছুকাল পরেই বালক श्व श्रेश छिन।

মহদ্বকি।

্ৰত্যের যেমন বল তেমন বল আর | তার ভিত্তিভূমি—সত্যেতেই কহিরও নাই। **শত্যের বলে যাহা-**দৈর বিশাস: আছে, তাহারাই সুধী ইইভে পারে। বত্যই মান্নবের

্কুতাৰ্থতা।

মাহ্নের প্রতি প্রেম না থাকিলে ক্ম- স্বিরের প্রতি ভক্তির উত্তেক বা স্থায়িত

সম্ভব নয়। মত ধর্ম নহে। ধর্ম যে
মত ভিন্ন আরও কিছু তাহা যাঁহারা
ভূলিয়া যান, তাঁহাদের ন্যায় ভ্রান্ত লোক
আর দেখা যায় না।

যথন তুমি দরিদ্র ও তুর্দশাপর ব্যক্তির তংগ মোচনার্থ তাহার হন্তে মুদ্রা অর্পণ কর, তথন তোমাকে সেই মুদ্রা কি বলে তাহা কি কথন শুনিয়াছ ? সে বলে;—আমি ক্ষুদ্র ছিলাম, তুমি আজ আমাকে মহৎ করিলে; আমি এক ছিলাম, তুমি আজ আমাকে অনেক করিলে; আমি তোমার শক্র ছিলাম, আজ আমি তোমার বন্ধু হইলাম; আমি ক্ষণস্থায়ী ছিলাম, আজ তুমি আমাকে চিরস্থায়ী করিলে।

মহন্দের সহধর্মিণী আয়েষা অতি ধর্মপরায়ণা রমণী ছিলেন। অনেকানেক মহিলা ভাঁহার নিকট ধর্মোপদেশ গ্রহণ করিবার জন্য দর্বদ। আগমন করিতেন। এক দিন উপদেশপ্রার্থিনী কতকগুলি সমবেত রমণীকে তিনি সংক্ষেপে ধর্ম-জীবন লাভ সম্বন্ধে নিম্নলিথিত উপদেশ প্রদান করিলেন ;- এক ঈশ্বরের উপা-সনা করিবে; ভাঁহারই সত্যে দুঢ় বিশ্বাস স্থাপন করিবে, জ্ঞানোপার্জ্জন করিবে; দৎদক্ষে কাল্যাপন করিবে; ক্রোধ দমন করিবে; আস্মীয় পরিজন বন্ধু ও প্রতিবাসী-দিগের দোষ গোপন করিবে ; দদা সংযত• বাক্য বলিবে; দরিদ্রকে দানদারা স্থী করিবে ; মৃত্যুকে ভয় না করিয়া পরকালে জগৎপিতার আশ্রয় লাভ করিবে এই

আশায় আশাৰিত হইয়া আনন্দেজীবন যাপনকরিবে।

যদি অর্থারা পরের ছঃথ মোচন করিবার সামর্থ্য তোমার না থাকে, তাছা হইলে সদয় বাক্যে লোককে ভূই করিবে, সৎপরামর্শ দারা লোকের উপকার সাধন করিবে।

সমস্ত মানবজাতির যাহাতে কল্যাণ হয়, এরূপ কার্য্যে মনোনিবেশ করা অপেক্ষা মহন্তর,—উচ্চতর কার্য্য আর নাই।

ফলভারাবনত বৃক্ষ প্রস্তরাহত হইলে বেমন আঘাতকারীকে ফল উপহার দেয়, তেমনি তোমার শক্রর তুমি মঙ্গল দাধন করিবে।

নিজের স্থ অপেক্ষা পরিবারের
কল্যান সাধনে অধিক মনোধাগী হইবে।
পরিবারের প্রতি কর্ত্তব্যপালন করিয়া
স্বদেশের মঙ্গল সাধন করিবে। স্বদেশের
প্রতি কর্ত্তব্যপালন করিয়া যদি তোমার
ক্ষমতা ও অবদর থাকে, সমস্ত মানব
জাতির যাহাতে কল্যাণ হয় তাহাতে
মনোনিবেশ করিবে।

শিশিরসিক্ত হইয়া পুশ্প থেমন স্থান্ধরতর হইয়া উঠে, অঞাবারি থারা ধৌত
হইয়া হাদয়ও তেমনি স্থানরতর হয়।
অকপট অঞাবারি উচ্চতর আনম্পের
প্রেম্বণ স্থান্ধা

সত্ৎসাহ ভিন্ন সৎকাজ সম্পন্ন হওয়। স্থকঠিন।

আধ্যান্ত্ৰিক উন্নতিলাভ করা বহু আয়াসদাধ্য। বহু চেটা, বহু যতু, বহু- পরিশ্রম ও বহু চিন্তার ফল আধ্যাত্মিক উন্নতি লাভ।

বুদ্ধির অহস্কারে কত লোক তুর্দ্দশা
এন্তে হইতেছে। বিশ্বাদের নিকট বুদ্ধি

মন্তক নত না করিলে ধর্মজীবনের পথে

অগ্রসর হওয়া অনেকের পক্ষে অসম্ভব

ইইয়া উঠে।

দয়া প্রস্তিকে বিবেচনা পূর্বক চালনা করিবে, যেন মঙ্গল সাধন করিতে গিয়া অমঙ্গলের কারণ বৃদ্ধি করা নাহয়।

সহিষ্ণৃতা ও আত্মবল এই ছুইটী গুণ থাকিলে সংসারপথে নিরাপদে বিচরণ করা যায়।

দয়া ও প্রেম প্রকাশক কার্য্য করিতে আমরা যেটুকু সময় ক্ষেপণ করি, বিবেচনা করিয়া দেখিলে সেই টুকু আমাদের জীবনের উচ্চতম শ্বথের সময়।

ভাল কথা বলিলে—ভাল কাজ করিলেই যে তুমি পবিত্র হইলে তাহা নছে;
তোমার হাদয়কে পরীক্ষা করিয়া দেখ
তাহাতে আর অপবিত্রত। স্পর্শ করে কি
না ? হাদয় সম্পূর্ণরূপে পবিত্র হইলেই
তুমি প্রকৃতরূপে পবিত্র হইলে।

वाङ्गाला श्रवहन।

य ।

- । যুক্তি হীন বিচারেণ,
 ধর্মহানিঃ প্রজায়তে ।
- ২। যুগীর গীতে ভনীতা নাই।
- ৩। যে আন্ত্রণ থাবে সে অঙ্গার বর্ধাবে।
- ৪। যে আছে বাড়ীর শত্ত্ব,
 সেই যাক বর্ষাত্ত্ব।
- ে। যে এল চনে, সে থাক বদে, যে এল মূলে থুঁড়ে তাকে দাও ভাত বেড়ে।
- ৬। যে ঋণ করে, দে ছঃখে ংরে।
- ৭। যে করে আমার আশ,
 তার করি দর্কনাশ,
 তাতেও যে না ছাড়ে আশ,
 তার ইউ হারেকর দাস।

- । य कान यांग्र (म कान ভान।
- মথানে উৎপত্তি,সেই থানে নিবৃত্তি।
- ১০। যেখানে গৃহস্থের বাদা, দেখানে অতিথের আশা।
- ১১। যেথানে ধন, সেথানে মন।
- ১২। যেথানে বাছের ভয়, সেইথানে সন্ধ্যা হয়।
- ১৩। যেখানে যেমন সেধানে তেমন।
- ১৪। যে থেয়েছে তার জন্য ভাত বাড়।
- ১৫। যে থেলে,
 - ্সে কাণা কড়ি নিয়ে খেলে।
 - ১৬। যে গরুতে ভ্ধ দের, তার চাইট্ দহা বার।

১৮। (यटा मान बात किंति नक।

১৯। যে ছাঁ উড়ে,

সে বাদায় ধড় কড় করে।

২০। যে টিপু সেই ফোঁড়।

২১। যেতে ছাগল আস্তে পাগল।

২২! যে দিকে জল পড়ে,

সেই দিকে ছাতা ধরে।

২০। যে দিন যায়, সে দিন আর আসে না।

২৪ : যে দাম টানে, সে কই খায়।

২৫। যে দিল অন্তরে ব্যথা,

তার দক্ষে কিদের কথা ?

২৬। যে দেখালে যো, তাকেই দেখায় ভো!

২৭। যেন তেন প্রকারেণ বর্কারস্য ধনক্ষয়: ।

২৮। যেন সভা সভীনের ঘর।

২৯। যে পাতে বেশী তরকারি, দে পাত আমারি।

৩•। যেমন কন্যা রেবতী,
 ভেমনি পাত্র ফকরে তাঁতী।

৩১। যেমন কর্ম তেমন ফল, মশা মার্তে গালে চড়।

৩২। যেমন বুনো ওল, তেমনি বাগা ভেঁভুল। ৩৩। থেমন কুকুর, তেমনি মুগুর।

৩৪। যেমন গুরু, তেমন শিষ্য।

৩৫। যেমন ঠাকুর, তেমনি বাহন।

৩৬। যেমন দান, তেমনি দক্ষিণা।

৩৭। যেমন মা, তেমনি ছাঁ।

৩৮। যেমন মা তেমন ঝি, তার বাড়া নাতিনটী।

৩৯। যে মেয়ে সতীনে পড়ে,

ভিন্ন বিধি তারে গড়ে।

৪০। যেমন হাঁড়ী, তেমনি সরা।

8)। य ताँ सि, ता हुन नासि ना ?

৪২। যে মাছটা পলায়, সেইটা ভাগর।

৪০। যে যায় লকায়, সেই হয় রাক্ষ**ন।**

৪৪। যে রক্ষক সেই ভক্ষক।

8 c। य दान याहे, मिहे कन था**है**।

৪৬। যে শর্ষেতে ভৃত ছাড়্বে, সেই শর্মের ভিতর ভৃত।

৪৭। যে হয় নির্বংশ, তার পৌত্র আগে মরে

৪৮। যোগ্যং যোগ্যেন যুজ্যতে।

8a। योवनः धनमण्याखाः

প্রভূষমবিবেকতা।

একৈক মপ্যনর্থার

কিমু তত্র চতুষ্টরং।

a । शोवन क्लाग्नादात्र जन।

আয় কোলে আয়।

আর বাছা কোলে আর, কেন দাঁড়ারে হেথার মু'খানি করিরে চুন পারা ? चौथि इंडि इन इन, (कह कि वलाइ वन १ (कैंस (कैंस होनि य त्र मोता)

কেহত বকেনা তোরে, তবে অভিমান কোরে কা'র 'পরে, দাঁড়ায়ে ছ্য়ারে ? (কি বলিলি ?) কেহ কিছু বলে নাই? সাধের বাঁশিটী নাই। ভেক্ষে ফেলে দেছে খুকী তারে।

ওরেরে অবোধ ছেলে বাঁশিটী ভেঙ্গেছে বলে তাই তোর এত অভিমান ? (তাই) সজল ছটি নয়ান, বিষাদে আকুল প্রাণ, (তাই) শুকায়েছে ও চাঁদ বয়ান।

এমন অবোধ ছেলে দেখিনিত কোন কালে.

বাঁশী লাগি এত মুখ ভার; বাঁশীর ভাবনা কিরে, এখনি দিব তা তোরে যাহা চা'বি, বাঁশী কোন ছার।

কাঁদিসনে বাছা আর, মুছে ফেল অশ্রধার, মান মুখ দেখাদ নে আর। হাসি মুখে আয় কোলে, অভিমান যারে ভুলে, চাদমুথে চুমি শতবার।

তোর ও চথের জল. প্রাণ যে করে বিকল, মুথ দেথে বুক ফেটে যায়। বল যাত্র কিবা চাই, এখনি দিবরে তাই, কাঁদিসনে আয় কোলে আয়।

পশুহতা।

ভূতত্ববিৎ পণ্ডিতেরা অনুমান করিয়া-ছেন যে, পৃথিবী আদৌ উষ্ণ তরল পদার্থময় ছিল। তৎকালে ইহাতে কোন প্রকার প্রাণীর বসতি ছিল না, পরে ক্রমশঃ পৃথিবী শীতল ও প্রাণিগণের वामर्यागा श्रेल, व्यथ्य कींहे, भूछक, পণ্ড, পক্ষী প্রভৃতি নানাবিধ নিকৃষ্ট প্রাণি-জাতির উৎপত্তি হয়; অবশেষে উৎকৃষ্ট মন্থ্য জাতির অভ্যুদর হর।

পৃষিবীতে কত সংখ্যক জীবের বসতি,

তাহার নির্বাচন করা বস্তুতঃ মন্নুষ্যের অসাধ্য বটে; কিন্তু সমস্ত সংখ্যা নির্দারিত না হউক, প্রাণিতম্ববিৎ পণ্ডিতেরা নানা-বিধ গবেষণা দারা স্থির করিয়াছেন যে, অতি প্রাচীনকালে পৃথিবীতে প্রায় আড়াই লক্ষ প্রকার জীবের বসতি ছিল, এবং এক্ষণেও যে সকল জাতীয় জীব আছে, তাহারও প্রকার সংখ্যা আড়াই नक्षित्र न्यान नरह।

> জগদীশ্বর বছসংখ্যক জীবজন্তুর

সৃষ্টি করিয়া আমাদিগের অসীম উপকার করিয়াছেন। ফলতঃ যাহাতে আমা-দের উপকার না ঘটে, ঈশ্বরস্থ এরপ কোন বস্তুই নাই। পৃথিবীস্থ অসংখ্য প্রকার পদার্থের মধ্যে যে বস্তকে জ্বামর। স্থুলদৃষ্টিতে আপাততঃ অপকারক, অপ্রয়ো-জনীয় ও সামান্য বলিয়া বোধকরি, পণ্ডিতের স্কাদৰ্শনে তাহাই আবার প্রয়োজনীয় উৎক্রপ্টতর હ অত্যন্ত পদার্থ বলিয়া লক্ষিত হয়। অজ্ঞানতাবশতঃ যে বস্তুর যথার্থ গুণ ও প্রকৃত ব্যবহার অবগত না থাকি, তাহা-রই অনাদর ও অনুপযুক্ত ব্যবহার করিয়া থাকি; কিন্তু যথন সেই দকল বস্তুর প্রকৃতি ও প্রয়েজনীয়তা নির্দারিত হয়, আমরা তথনও যদি পর্কের ভায় অনুচিত বাব-হারে রত থাকি, তবে অবখাই আমা-দিগকে সদস্থিবেচনার্হিত বা হিভাহিত জ্ঞানশূন্য জন্ত বিশেষ বলিয়া পরিগণিত হইতে হয়। পশাদি ইতর জন্ত্রগণ যে যাত্র। নিকাতের মানবজাতির সংসার পক্ষে অশেষ প্রকারে উপকারক, তাহার কোন সন্দেহ নাই। স্ত্রাং তাদশ জন্তর প্রতি আমাদিগের কিরূপ ব্যবহার করা কর্ত্তব্য, বা আমরা বর্ত্তমান অবস্থায় কিরূপ ব্যবহার করিতেছি, তদ্বিয়ের আলোচনা করা বোধ করি পার্ট্রকাগণের নিকট অপ্রয়োজনীয় বলিয়া গণ্য হইবে ना । श्वामि कहुशन कि श्रियात मानव-জাতির উপকার সাধনের উপকরণ হইতে পারে এবং তাহাদিপের প্রকৃত ব্যবহার

কি অথবা তাহাদিগের প্রতি আমাদিগের প্রচলিত ব্যবহার উচিত কি না, আমরা সময়ান্তরে তাহার যথাসাধ্য নির্দ্দেশ করিব; এইক্ষণে পৃথিবীতে পশ্বাদি জন্তর প্রতি কিরূপ নিষ্ঠুর ব্যবহার প্রচলিত আছে, তাহারই আলোচনায় প্রবৃত্ত হওয়া গেল।

প্রথমতঃ পৃথিবীর অনেক প্রাদেশেই
পশু, পক্ষী প্রভৃতি জন্তগণের প্রাণবধরূপ নৃশংসাচরণ ধর্মকার্য্য বলিয়া পরিগণিত হইয়াছে; তদনুসারে অনেক অনেক
জাতি ধর্মবৃদ্ধিতে জন্তগণের প্রতি নিষ্ঠ্র
ব্যবহার করিয়া পাকে।

অতি প্রাচীনকালে ভারতবর্ষে ব্রাহ্মণ প্রভৃতি জাতিরা গো-মেধ, অশ্ব-মেধ প্রভৃতি যজের অনুষ্ঠান করিয়া ধর্মার্থে পশুহনন করিতেন। এক্ষণেও এতক্ষেশে তুর্গোৎসব, খ্যামাপুদা, জগদ্ধাতীপুঞ্জা প্রভৃতি ধর্মাকর্মে প্রতিবর্ষে ছাগ, মেষ, মহিধ প্রভৃতি সহস্র সহস্র জীবের প্রাণ-ছিংসা হইয়া থাকে। কোন কোন স্থানে এরপ প্রথা আছে যে, তথায় হুর্গোৎসব কালে ক্রমাগত পুনর দিবদ বলি প্রদান কিছ দম্পন্ন লোক, বঁ হার তাঁহার। আপনাদিগের ধনবত। দেথাইবার নিমিন্ত, ক্ষুদ্র ছাগ মেষাদি পশুর প্রাণবধ দারা ভৃপ্তি লাভ করিতে না পারিয়া, প্রকাও প্রকাও মহিব সকলকে বলিদান করেন। স্থাবার তৎকালে স্থামোদই বা কোন কোন ব্যক্তি মহিবের **चित्र मुख मछाक कतिया धवः व्याना करें** তরিঃস্ত ক্ষিরধারায় সর্বশরীর প্লাবিত

করিরা জনতা মধ্যে নৃত্য করিতে থাকে। বলির রজে সমস্ত নাটমন্দির কর্দমমন্ত্র ইইয়া যার।

ইহা ভিন্ন বঙ্গদেশের অনেক স্থানে আতি বর্ষে গ্রামের মঙ্গলার্থে শীতলা প্রভৃতি দেবীপূজা উপলক্ষে শত শত ছাগাদি পভর প্রাণ বিনাশ হইয়া থাকে। কোন ব্যক্তির পুত্র বা ক্সা কোন প্রকার রোগগ্রস্ত হইলে, ভাঁহারা সন্তানের রোগ শান্তির নিমিন্ত কোন কোন দেবীর নিকট ছাগ বলি দিয়া থাকেন। তাহাদিগের मःश्रात এই यে, के मकन वनि क्षेत्रक হইলেই দেবীগণ সন্ধট্ট হইয়া পীডিত-বস্থানের রোগ শাস্তি করিবেন। ফলতঃ এই বা কি ? কলিকাতা নগরীতে প্রতি-দিন যে শত শত বা সহস্ৰ সহস্ৰ বলিদান হইয়া থাকে, তাহা স্মরণ করিলে কেনা বিশায়াৰিত হইবেন ?--কালীঘাট একটা **শিদ্ধ** পীঠস্থান, তথায় প্রত্যহই অনেক ছাগ বলি প্রদন্ত হয়। অমাবস্থার দিন আরও অধিক সংখ্যক ছাগ বিনষ্ট হয়,

এবং শ্রামাপূজার দিবস অতি ভয়ানক ব্যাপার উপস্থিত হয়। কলিকাতায় বছ-তর স্থানে ইতর লোকেরা ছাগ বধ করিয়া মাংস বিক্রয় করিয়া থাকে।

পশাদির প্রতি ঈদৃশ ব্যবহার উচিত কিনা, উহাকে প্রকৃতরূপ ধর্ম কর্ম বলা যাইতে পারে কিনা, তাহা এইক্লণে আমাদের বিবেচ্য নহে। কিন্তু এস্থলে পাঠিকাবর্গকে এক কথা না বলিয়া ক্ষান্ত থাকিতে পারি না। কোন একটী প্রাণীর জীবন বলির পরিবর্জে বিবিধ মিষ্টালাদি প্রদান পূর্বাক দেবার্চনা করিলেও তৎ-ममान कल व्याखित विषय गास्त्र न्लाहेह উলিখিত আছে; এমন স্থলে আমরা কেন ঈদৃশ নিষ্ঠুর ও ভয়ানক ব্যাপারের অনুষ্ঠান সর্বাদাই করি, তাহা বিবেচনা করা আমাদিগের অবশ্য কর্ত্তব্য। বৈষ্ণ-বেরা বলিদান করেন না, এবং বলিদান স্থলেও ধান না, এজন্য তাঁহারা কি অধার্মিক ?

(ক্রমশঃ)

সতী ও শান্তি।

(७२৮ मःथा ১১ भृष्ठीत्र भत्र)

পঞ্চম পরিছেদ।

দরোজিনীর পাশে একটি দ্রীলোক বৃদিরাছিলেন। তিনি বলিলেন, "হা, মা, কি ক'লে ছেলে বাঁচ তে পারে? কি ক'লে ছেলের অকাল মরণ হয় না?" দুবরোজিনী বলিলেন, এ সম্বন্ধে চিকিৎসা বিজ্ঞানবিৎ পণ্ডিতের। অনেক উপদেশ দিরাছেন, সেই সকল উপদেশ মত কাজ কর্তে পার্লে অধিকাংশ সন্থানকে অকাল মৃত্যু হ'তে রক্ষা করা যেতে পারে। স্ত্রীলোকটা বলিলেন "হাঁ মা, ভাঁরা কি উপদেশ দিরাছেন আমন্না তু পড়তে ওনতে জানি না, আপনি বলুন আমরা শুনি।" আর একটী মেয়ে বলিয়া উঠিলেন, হ্যা মা, বলুন, বলুন, আমরা ভ্ৰি। ওসব জেনে রাখা ভাল।" স্রোজিনী বলিলেন "আপনাদের যখন ভন্তে এত আগ্ৰহ, তথন আমি বল্ছি, শুনুন,—"অনেকেই ব'লে আপনারা থাকেন "যেম্নি মা, তেম্নি ছাঁ।" অর্থাৎ মা যেমন হন, সন্তান তদত্ত্বপ হইয়। থাকে" মা স্থস্থ থাক্লে সস্তান স্থস্থ থাকে, মা রুগ্ন হইলে সন্তানও রুগ্ন হ'য়ে থাকে। মায়ের স্বাস্থ্যের উপর ছেলের স্বাস্থ্য যথন এতটা করে, তথন মা কিসে श्रुष থাকেন, তাহার উপায় আগে উচিত। মাতাকে স্বস্থ রাখিতে হইলে এই কয়েকটী উপায় অবলম্বন করতে হবে।

প্রথমতঃ। পরিকার বাতাস। এটা ভারি দরকার। আমাদের মেরেরা কিরূপ পরিকার বাতাস পান. তাঁদের "আঁত্ড়" ঘরের অবস্থা দেখলেই সহজে বুক্তে পারা যায়। যে ঘর একবারে জঘন্ত, যাহা আর কোন কাজে আসে না, যাহার দরজা বন্ধ কর্লে একবারে "অন্ধ-কৃপ," না আছে জানালা, না আছে আলো আস্বার পথ, চলিত কথার যাকে "শোর খুঁদী" বলা যায়, এমন একটি ঘর আঁত্ড়ঘরের জন্ত মনোনীত হয়। স্কুকার্ ব্যক্তি একঘন্টা যে ঘরের মধ্যে থাক্রেল বোধ হয় হাঁপ্রে উঠ্বে, সেই ঘরের ভিতর শিশু সন্থানকে কোলে নিয়ে

ছু:খিনী জননী কারাবাসিনী। সন্তানকৈ গর্ভে ধ'রে যেন তিনি কি অপরাধ করে-ছেন, দেইজ্বত আজ এই কঠোর কারা-বাস। সেই কঠোর কারাবাস হ'তে যদি ছেলেকে নিয়ে এক মুহুর্ভের জ্ঞ বাহির হন, ছেলেটিকে কোলে করে যদি বাহিরে কিয়ৎকালের জন্ম বদেন; অমনি শাভড়ী ঠাকুরাণীর কড়া হকুম-"ও মেয়ে, কর কি ? ছেলের গায়ে ভূত শ্রেতের বাতাদ লাগ্বে, বা**হিরে ব'দে** কাজ নাই, ছেলেকে নিয়ে ঘরের ডেভর যাও।" স্বতরাং মাতার পরিকার বাতাস পাওয়ার কেমন স্থবিধা দেখুন! রাত্রে ঘরে হিম আসবে, এই ভয়ে এমন কি একটি ছিদ্র থাকিলেও তাহা বন্ধ করিয়া দেওয়া হয়। আনাতৃড়ঘর গরম রাধ্বার জ্ঞ এবং ঘরের হুর্গন্ধ নষ্ট করিবার জ্ঞ ঘরে আতিণ করা হয়। কিন্ত বাহির হ'বার পথ না থাকাতে **সমস্ত** ধোঁয়া ঘরের মধ্যে থেকে, জাডুড়ঘরকে একবারে "যমপুরী ক'রে তোলে। এই ত অবস্থা। মাতার পরিকার বাতাদ পাবার বন্দোবন্ত না থাকাতে যে কত হাজার হাজার সন্তান মাতার কোল শৃষ্ঠ করে চ'লে যাচ্ছে, কে তাহার থবর রাথে 🖓 পরিষার বাতাস পাবার বন্দোবস্ত করিতে इहेटन व घत्री नक्तालका उँ दुवरे, তাহাই আঁতুড়ের জন্ত মনোনীত করা উচিত। ভূত প্রেতের বাতাদের ভর না ক'রে বা'তে মা অধিকাংশ সময় ছেলেছে নিয়ে কাঁকা পরিষার বাভাস পেয়ে

পারেন, তার বন্দোবস্ত করা উচিত;
কারণ জীবনধারণ কর্তে হলে, পরিজার
বাতাদের দর্কাপেক্ষা অধিক প্রয়োজন।
লশুনা খেয়ে বরং কিয়ৎদিন বাঁচা যায়,
কিন্তু বাতাদ না পেলে এক মুহুর্ত্তও বাঁচা
যায় না। দেই কারণ পরিজার বাতাদ
পাইবার বন্দোবস্ত দর্কাত্রে করা উচিত।

षिতীয়তঃ। পরিকার জল। মা যে জল পান কর্বেন, তাহা পরিষার হওয়া নিতান্ত আবশ্যক। কিন্ত আমাদের দেশে অধিকাংশ পাড়া গাঁয়ে কেমন অপরিকার পানার জলের অবস্থা দেখুন। মধ্যে হরত একটা ভাল পুকুর আছে, থামের সমস্ত লোক সেই পুকুরের জল পান করে। কিন্তু সেই পুকুরের অবস্থা দেশলে গায়ে জর আদে। লোকে সেই পুকুরে স্নান করে, কাপড় কাচে, গয়ের, পুতু ফেলে, জলশৌচ করে; গরু প্রভৃতি সান করায়, পাট, শণ পচায়, ছেলেদের কাঁথা, কানি প্রভৃতি কাচে, থাল ঘটা বাসন-কোসন মাজে, নানাবিধ আবর্জনা কেলে। তাছাড়া এমন অনেক পুকুর আছে, যার পাড়ে লোক মলমূত্র ত্যাগ करत, दृष्टित जल महे ममस मनम्ज ধুয়ে এসে পুকুরে পড়ে এবং জল দৃষিত করে। এইত অত্যাচার। এ ছাড়া আরু-**সঙ্গিক অনেক অত্যাচার আছে। ুত্রতরাং** এরপ অবভায় পরিকার পানীয় জল পা**ও**রা**হ**কর। আর এই পানীয় জলের **পঞাবে অনেক মাতার স্বাস্থ্য ন**ষ্ট হয়। কাৰে কাৰেই সন্থানও কয় হ'য়ে পড়ে,

স্থৃতরাং অকাল মৃত্যু তাহার পরিণাম।
এই পরিন্ধার পানীয় জলের অভাব
হৈতু যে অসংখ্য সস্তান অকালে চলিয়া
যাইতেছে কে তাহার থবর রাথে ? অতএব যাহাতে মাতার পরিন্ধার পানীয়
জলের অভাব না হয়, তাহার উপায়
করা স্কাপ্তে কর্ত্ব্য়।

তৃতীয়তঃ। মাতার থাদ্য থুব পু<mark>ষ্টি</mark>কর হওয়া উচিত। তা ব'লে যেন গুরুপাক না হয়। কারণ লঘুপাক পুষ্টিকর খাদ্যই খাস্থোর অন্তক্ল। বিশেষতঃ মাতার পু**ষ্টি**কর থাদ্যের উপর তাঁহার ছুধের স্থায়িত্ব নির্ভর করে। আমাদের দেশে অনেক দ্রীলোকের স্তনে ছুধ থাকে না, তাহার একমাত্র কারণ এই যে তাঁহারা পুষ্টিকর খাদ্য পান না। যাহাতে পুষ্টি-কর খাদ্য পান, দে বিষয়ে দৃষ্টি রাখা মাতার কোন রকম মাদক-সেবন করা উচিত নয়। আমাদের দেশের জ্রীলোকেরা যদিও কোন রক্তম গুরুতর মাদক দ্রব্য দেবন করেন না, তথাপি দেখিতে পাওয়া যায় অনেক মেয়ে পানের সঙ্গে দোক্তাভামাক থান এবং দোক্তাতামাকের গুলে দাঁত মাজিয়া থাকেন। এ অভ্যাস কিন্তু ভাল নয়! যাহাতে এ কু-অভ্যাদ দূর হয়, দে বিষয়ে চেষ্টা করা উচিত! মাতার কোন রকম কু-অভ্যাদ থাকিলে দম্ভানও দেই কু-বিভাসে প্রাপ্ত হয়। বিশেষতঃ মাতার স্থ-অভ্যাস অপেকা কু-অভ্যাস, ভাৰটা ज्यान मन्द्रीहे रथन जिथक शतिमात

সম্ভানে সংক্রামিত হইতে দেখা যায়, তথন মাতার এবিষয়ে অত্যন্ত সাবধানতা, আবশ্যক।

চতুর্থতঃ। মাতা যে ঘরে থাকেন, তাহা পরিকার পরিচ্ছন্ন হওয়া উচিত। কোন রকম আবর্জনা অথবা জঞ্জাল যেন ঘরের মধ্যে না থাকে। এমন কোন কিছু ঘরের মধ্যে রাখা উচিত, নয় যাহা হইতে হর্গন্ধ উঠিয়া ঘরের বায়ু দৃষিত হয়। এবিষয়ে আমাদের দেশের অনেক মেয়ে ভারি অসাবধান।

রাত্রে ছেলে কাঁথায় মল মৃত্র ত্যাগ করিল, অমনি কাঁথাথানি গুটাইয়া দেই বিছানার পাশে রাথা হইল। এইরপ যতবার মলমৃত্র ত্যাগ করে, তত্ত বার এইরপ করা হয়। ইহাতে যে কিজনিষ্ট হয়, তাহা আমাদের দেশের জনেক মেয়ে বোনেন না। যে কাঁথায় মলমৃত্র ত্যাগ করে, তাহা আর বরের মধ্যে রাখা উচিত নয়, রাখিলে বায়ু দৃষিত হয়। এ বিষয়ে আমাদের দেশের স্ত্রীলোক-দিগের বিশেষ সাবধান হওয়া উচিত। অলসতা বশতঃ সন্তানের স্বাস্থ্য নষ্ট করা মায়ের উচিত নয়।

পঞ্চনতঃ। অলসভাবে সর্বাদা ব'দে থাকা অথবা ভ'রে থাকা মারের উচিত নয়। কারণ আলস্থ নানাপ্রকার রোগের মূল। সেই কারণে মারের শরীর যাতে একটু নাড়াচাড়া পায়, একটু সঞ্চালিত হয়, ভাহার উপায় করা উচিত। এতে শরীরের অনেক গ্লানি কেটে যায়, অথচ শরীর ক্রমশ: বেশ দবল হ'য়ে উঠে।
গৃহের কাজ ছ'চারিথানা দেখে কর্দে
কতক পরিমাণে শরীর দঞ্চালিত হইতে
পারে। ছেলেকে কোলে নিয়ে বাটার
মধ্যে উঠানে বেড়ালে ছ'কাজ দাধিত
হ'তে পারে। প্রথমত: ইহাতে তাঁহার
নিজের শরীর বেশ দঞ্চালিত হয়, বিতীয়তঃ প্রচুর পরিমাণে পরিকার বাতাদ
পাওয়া যাইতে পারে। এই পরিকার বাতাদ
মাতা ও দস্তান উভয়েরই স্বাস্থ্যপ্রদ।"

পাশের একটী মেয়ে বলিলেন হাঁ৷ মা, আপনি ঠিক কথা – বলেচেন, আপনি যে সকল উপদেশের আমাদের দেশের অধিকাংশ মেয়েরা যে তাহা পালন করে না, তা ঠিক। আর ঐ সকল উপদেশ মত কাজ না করাতেই এত কট্ট। স্বার এক কথা বলি, কেই বা ওদব উপদেশ দেবে ? বাঁরা গিন্নী ওর্বিণী, তাঁরা ত অধিকাংশ मूथुर, ना कारनन (लशानका, ना कारनन সন্তান পালনের শুরীতি। আর তাঁদের মধ্যে বাঁরা একট লেখা পড়া জানেন, তাঁদের মুখে ও সকল উপদেশ কথনও শুনি নি। তাঁরা পড়েন গপ্প নবেল। এসব গপ্প পড়ে. ভনে কি ওসব উপদেশ পাওয়া যায় মা ? আপনার উপদেশ বেশ, আরও वनून व्यामदा छिन। महाकिनी वनिरमन, "কি কর্লে মায়ের শরীর ভাল থাকে, তা বলেছি, "कि कब्रल ছেলে দীৰ্ঘলীবী रय, कि कदाल ছেলের অকাল মরণ হ না" তাহা পরে বল্ব। (ক্রমশঃ)

নৃতন সংবাদ।

১। গত ২৮এ জুলাই (১৩ই প্রাবণ)
বর্গীয় ঈশ্বরচক্র বিদ্যাদাগর মহাশয়ের
শ্বরণার্থ মেটুপলিটান ইনষ্টিটিউদন ও
বিজ্ঞান সভাগৃহে উৎসব হয় এবং দিটী
কলেজে বিদ্যাদাগর মহাশয়ের একটী
স্বন্ধর অয়েলপেইণ্টিং প্রতিমূর্ত্তি উৎদর্গীকৃত হয়। শেষোক্ত অনুষ্ঠানে
ভাজার মহেক্রলাল সরকার দি, আই,
ই, সভাপতির কার্য্য করেন।

২। কলিকাতার লোকসংখ্যা প্রায় পৌনে ৯ লক্ষ, বোম্বাইয়ের ৮, এবং মাক্সান্তের ৪॥ লক্ষ মাত্র। বঙ্গদেশে সর্ক-শুদ্ধ ২২৭৫০ ইউরোপীয় বাস করেন। সমুদায় বাঙ্গালার অধিবাসীর সংখ্যা প্রায় ৭॥ কোটী, ভশ্মধ্যে বঙ্গে ৪ কোটী ৩ লক্ষ,

বৈহারে ২ কোটী ১২ লক্ষ, উড়িধ্যায় ৫৭ লক্ষ এবং ছোটনাগপুরে ৭২ লক্ষ।

০। হাজারা জাতি আমীরের বিরুদ্ধে বিদ্রোহী হইয়া স্ত্রীলোকদিগকে দশস্ত্র করিয়াছে। যদি জয়ী হয় ভাল, পরাজিত হইলে স্ত্রীলোকেরা স্বহস্তে দসস্তান আপনাদিগকে বধ করিবে এই তাহাদের প্রতিজ্ঞা।

৪। আমাদের রাজপ্রতিনিধি লর্ড ল্যান্সডাউনের পদত্যাগের সময় ঘনাই-য়াছে। লর্ড কিম্বালি তাঁহার পদে অভি-ধিক্ত হইবেন এইরূপ জনরব।

 ৫। থিলাতের খাঁর ৮০টা পদ্মী,
 প্রোকের জন্য তাঁহার ৬ টাক। মাত্র ব্যয়হয়!

বামা-রচনা।

ভিখারিণী।

ভিথারিণী নারী আমি. ফিরিতেছি খারে দ্বারে; কিছই আমার নাই. সব গেছে পর পারে। আমার বাগানে আর নাই ফুল নাই ফল, লতাটি ওথায়ে গেছে ঢালেনাকো কেহ জল। আমার উঠানে আর কুটেনা জোছানা ভাতি, আঁধারে পড়িয়া থাকি অলেনা একটি বাতি। মৃত্ল মধুর বায় আদে না আমার কাছে, "আমার" "আমার" বলি ধরে রাখি তার পাছে।

উমা কালে পাখীগুলি আর নাহি ডাকে এসে, অরুণ তরুণ রেখা আঁকেনা আমার বাসে। জগতে আছেতো দব. কেবল আমার নাই. তাই আমি ভিথারিণী ভেবে দিশেহারা হই। আমি কি জগত-ছাড়া ? **এই ভূ**লে किন রই, জগতে কেন না আমি আমার করিয়া লই। কেবা পর কে আপন সবে এক হয়ে রই. সবাই আমার হবে ভিথারিণী কভু নই।

বামবোধিনী পত্রিকা।

BAMABODHINI PATRIKA. "कन्याप्येवं पालमीया त्रिश्चसीयातियत्रतः।"

কন্সাকে পালন করিবেক ও যড়ের সহিত শিক্ষা দিবেক।

৩৪৪ সংখ্যা

ভাদ্র ১০০০—নেপ্টেম্বর ১৮৯৩।

৫ম কলা। ২য়ভাগ।

বামাবোধিনীর ত্রিংশ জন্মোৎসব।

বামাবোধিনীর পূর্ণ তিরিশ বছর,
ভাই ভগী মিলি নবে, আজি আনন্দ-উৎনবে,
গাও জয় জগদীশ করুণানাগর।
প্রাণদাতা পিতা তিনি, পালিকা জননী,
তিনি ছঃখভয়ত্রাতা, কল্যাণস্থখ-বিধাতা,
গুরু কল্পতরু, ভব পারের তরণী।
শক্তিরপে নর্বাভূতে বিহার তাঁহার,
জান প্রেম পুণ্যভাব, নব তাঁর আবির্ভাব,
ঐশ্বর্য মাধুর্য শোভা বিচিত্র প্রকার।
লীলাময় লীলা তাঁর পরম অভূত,
ক্ষুত্ত জল কণিকায়, অনন্ত আকাল ভায়,
ক্ষুত্র মেঘখণ্ডে খেলে বিজলী অযুত।
ক্ষুত্র ঘটে হলে তাঁর,শক্তি প্রকটন,
ভূণ হয় বজ্ঞোপম, কাঁটাণ্ড দেহতান্ম,
অনাধ্য সাধন হয় নিবেশে ঘটর্ম।

এ ক্ষুদ্র জীবনে বিভু! মহিমা তোমার, দেখায়েছ চমৎকার, কভুনহে ভুলিবার, তাই সব জুঃখ ভুলি সাধ বাঁচিবার।

সাধ দেখিবারে তব করুণার জয়, সাজি তব কন্যাগণে, জ্ঞান ধর্ম বিভূষণে, করিবে এ ধরাধাম সুখশান্তিময়।

আজি শুভ জন্মদিনে নমি তব পায়, শুভাশীষ কর দান, সঁপি দেহ মন প্রাণ, কাটাই জীবন তব চরণ সেবায়।

করুণাময় প্রমেশ্বরের রুপায় বামা-বোধিনী আজি ৩০ বৎসর পূর্ণ করিয়া ৩১ বৎসরে পদার্পণ করিল। আজি ইহার প্রবর্ত্তকদিগের ও হিতৈষী বন্ধগণের পক্ষে कि जानत्मत मिन। हेशत जन्म नगरा এ দিনের সহিত যে সাক্ষাৎ হইবে, এরূপ আশা করিতেই পারা যায় নাই। যে দেশে বর্ষে বর্ষে কত সহায়সম্পন্ন সাময়িক পত্র দেখা দিয়া অদুখ্য হইতেছে, সে দেশে ছর্ভাগিনী বঙ্গরমণীদিগের দরিদ্র সেবিকা এতদিন জীবনধারণ করিবে ইছা যার পর নাই আশ্চর্য। মঙ্গলময় বিধাতার বিশেষ কুপাই বামাবোধিনীর এ সৌভা-গ্যের মূল। জীবনসংগ্রামে এই পত্রিকা এক এক সময় এরপ বিষম সঙ্কটাপর হইয়াছে যে ইহার জীবনের কিছু-মাত্র আশা ছিল না, কত সময় কত সহায় বন্ধু হারাইয়াছে, কিন্তু ইহা মৃত্যুমুথে√ পতিত হইয়াও পুনন্ধীবিত হইয়া উঠি-য়াছে। বামাবোধিনীর জীবন, উন্নতি

ও কল্যাণের জন্ত আজি আমরা দেই
বিশ্বহারী দিদ্ধিদাতা প্রমদেবতার চরণে
ভক্তি ও কৃতজ্ঞতার দহিত প্রণাম করি
এবং তাঁহার নিকট দর্ব্বান্তঃকরণে প্রার্থনা
করি তিনি ইহাকে আরও দীর্ঘজীবন
দান করিয়া তাঁহার দেবায় নিযুক্ত করিয়া
রাখুন্।

বামাবোধিনীর জীবনের ইতিবৃত্ত ইহার ২৫ বার্ষিক জুবিলী উপলক্ষে আমরা বিবৃত করিয়াছি, তৎপরে ৫ বৎসর মাত্র গত হইয়াছে, এখন আর সে সম্বন্ধে কিছু বলিব না তবে ৩০ বৎসরের কথায় অনেক পবিত্র স্থৃতির উদয় হয়, তাহার কিছু কিছু উল্লেখ করিব। স্বর্গীয় বিদ্যাসাগর মহাশয় তাঁহার দেহত্যাগের কিছু দিন পূর্ব্বে বেপুন কলেজ দেখিয়া আসিয়৷ সমস্ত দিন কাঁদিয়াছিলেন, কোনও বদ্ধু ইহার কারণ জিজ্ঞাসা করাতে বলিয়াছিলেন "মেয়েরা এত উন্নতি, করিয়াছে, যে তাহা স্বপ্লেরও অতীত, কিন্তু যে বেথুন এত পরিশ্রম ও অর্থ ব্যয় করিয়া স্কুল স্থাপন করিল, সে ইহা দেখিতে পাইল না---এই **তঃ**থে হৃদয় ফাটিয়া যাইতেছে।" স্ত্রীশিক্ষা ও ন্ত্রীলোকদিগের সর্বপ্রেকার হিত্সাধনার্থ যে দকল মহাত্মা প্রথম উত্যোগী হইয়া প্রাণান্ত পরিশ্রম ও অশেষ লাম্থনা ভোগ করিয়াছেন, ভাঁহার৷ আজি কোথায় ? বঙ্গনারীগণ এম এ, বি এ হইতেছেন, স্বদেশে ও বিদেশে চিকিৎসাবিস্থায় পার-দশী হইয়া উচ্চ উপাধি ও চিকিৎসাদি ব্যব-সায়ে প্রতিপত্তি লাভ করিতেছেন, অধ্যা-পিকা, শিক্ষয়িত্রী, গ্রন্থকর্ত্রী ও স্থকবি হইয়া উচ্চ মানদিক ক্ষমতার পরিচয় দিতেছেন; এবং জ্ঞান,ধর্ম ৫ দেশহিতকর কার্য্যের উন্নতির জন্ম নানাবিধ অনুষ্ঠান করিতেছেন, গত ৩০ বৎসরের মধ্যে খ্রীজাতির অবস্থার কত শুভকর পরিবর্ত্তন হইয়াছে, এবং আর ৩০ বৎদরের মধ্যে কি হইবে কে বলিতে পারে? কিন্তু ধাঁহাদের বাক্য, চিন্তা, প্রার্থনা ও কার্য্য এই সকল উশ্নতির মূল, তাঁহারা কোথায় ? রাধাকান্ত. রামগোপাল, রামমোহন. মদনমোহন, প্যারীচাদ, প্যারীচরণ, কালী-কৃষ্ণ, শিবচন্দ্র এবং স্বয়ং ঈশ্বরচন্দ্র ও তাহার বন্ধু বেথুন ইহারা এবং ইহাদের কত সহকারী মহাত্মা আজি জীবিত থাকিলে কি আনন্দে ভাগিতেন! তাঁহা-দের রোপিত বুক্ষের উপাদেয় ফল আসা-দন করিয়া কি স্থতোগ করিতেন! কিন্তু কি ছু:খের বিষয় এক একটা করিয়া

ইহাদের প্রায় সকলেই অন্তর্জান হইয়ান ছেন! দ্রীশিক্ষার প্রথম প্রবর্তকদিগের আর কয়জন বর্তমান যুগের সাক্ষী হইয়া আছেন?

Caratage again 200 caras in a comment

ষাহাহউক হঃথের অধিক কারণ নাই, ঈশ্বরের রাজ্যে মহাত্মাগণ ভাঁহাদের মহং কার্য্যে জীবিত থাকেন এবং তাঁহা-দের প্রভাব নিত্যকাল চলিয়া থাকে। এক সময় ছিল যথন পুরুষগণকে স্ত্রী-লোকদিগের জন্য বলিতে, চিস্তা করিতে ও খাটিতে হইত, এখন বঙ্গবালাগণ নিজে বলিতে, চিন্তা কৈরিতে ও খাটিতে শিথিয়াছেন, ইহা কি সামান্য আনন্দের কথাণ কৃতবিদ্য রম্ণীগণ তাঁহাদের হিতৈষীগণের অন্তরের ভাব গ্রহণ করিয়া কেবল আপনাদিগের উন্নতি করিয়া সক্ত নন, ভাঁহারা দেশহিতকর কার্য্যে পুরুষ-দিগের সহায় হইয়া সমাজের মহোত্রতি সাধনে ব্রতী হইতেছেন। ইহার ভবি-ষাৎ কত আশাকর ও আনন্দকর।

বামাবোধিনী ৩০ বৎসরের মধ্যে আশার অতীত অনেক স্থফল দর্শন করিয়াছেন। কিন্তু আরও কিছুদিন ইহাঁর বাঁচিবার সাধ হয়—দে স্ত্রীজাতির আরও উন্নতি ও কল্যাণ দর্শনের জন্ম এবং নিজ ক্ষুদ্রশক্তিতে তাহার কথিনিৎ সহায়তা করিয়া ধন্ম হইবার জন্ম। স্ত্রীলোক কত অন্ধ উপকার পাইয়া কত অধিক কৃতত্ত হইয়া থাকেন এবং কেমন স্থান চিন্তা করিতে ও স্থানররূপে তাহাঁ ব্যক্ত করিতে শিধিরাছেন, তাহার দৃষ্টাক্ত

স্বরূপ কোন হিন্দুনারী প্রেরিত একধানি স্থানান্তরে প্রকাশ করা গেল। বামাবোধিনীর নিজের প্রশংসা নিজের ততে মুদ্রিত করা নিতান্ত অবাঞ্নীয়। কিন্ত লেখিকার বছদিনের প্রার্থনা ও

আগ্রহাতিশয়ে ইহা প্রকাশ করিতে হইল। বামাবোধিনীর এই মাত্র মন্তব্য যে ইহার সামান্ত সাহায্যে যদি এমন একটা সুফলও ফলিয়া থাকে, ইহার জীবনধারণ বিফল रम् नारे।

সাময়িক প্রসঙ্গ।

রমণীদিগের রাজবংশীয় সামান্য কার্য্য-(১) দিল্লীর পুরাতন বাদশাহ পরিবারের কন্যা বেগম আহ-মুদী এখন লওনে গীত বাদ্যের ব্যবসা করিয়া জীবিকা নির্মাহ করিভেছেন।

(২) দেমোয়াদ্বীপের রাজা মানি-টোয়া নিয়মিতরূপে আদায় করিতে না পারায় রাণীগণ ভাঁহার ধোপার কার্থানা করিয়া অর্থোপার্জন করিতেছেন ।

ভারতেশ্বরীর জ্যেষ্ঠা পুত্রবধু— (১) যুবরাজপত্নী মাথন তুলিতে বেশ পারেন এবং তাঁহার কন্যাটীকে ঐ কার্য্যে নিপুণ করিয়াছেন। (২) চিকাগো প্রদর্শ-নীতে প্রিক্সেদ অব ওয়েলদ সহস্ত গোদিত একথানি ওক কার্তের কেদের। প্রেরণ করেন, অনেকে স্মৃতিচিহ্নসরূপ ইহার এক এক টুকরা কাটিয়া লওয়াতে ইহা ফিরাইয়া আনিতে হইয়াছে।

য়দ্ধপ্রদর্শনী-পারিদে কখন বা श्वमहो-त्रभनी এবং কথন বা বালক वानिका श्रिमर्भनी (मना इहेन्ना शांक। এবার একটা শতাবিক বৎসর ব্রদ্ধের প্রদর্শনী হইবে। এরপ অনু-**টানে অ**ধিক ফললাভের সন্তাবন**্**।

ভাষা—পৃথিবীতে ২৭৫৪ প্রকার ভাষা প্রচলিত।

পার্লেমেন্টে স্ত্রী বক্তা—স্থবি-খ্যাত পৰ্য্যটিকা ও লেখিকা বিবী ইসাবেলা | গলোপাধ্যায় এডিনবরা নগরে

বার্ড বিসপ কুর্দিস্থানের খৃষ্টানদিগের অবস্থা বিষয়ে কমন্স সভায় বক্তৃতা করেন। ইতিপূর্ব্বে কোন্ত স্ত্রীলোক এ অধিকার পান নাই ৷

বিবাহচ্ছেদের প্রতিবাদ— ইটালীর ৬০ হাজার মহিলা বিবাহবন্ধন ছেদনকে ধর্মবিরুদ্ধ কার্য্য বলিয়া তাহা রহিত করিবার জন্য তত্রত্য ব্যবস্থাপক সভাগ আবেদন করিতেছেন। রোমের স-স্তান্ত বংশীয় রমণীগণ ইহার নেত্রীস্থানীয়। প্রতিনিধি এীক রমণী— কল-মীয় প্রদর্শনীতে এীকরমণীগণের প্রতি-নিধিত্ব করিবার জন্য গ্রাস রাজ্ঞী মাডাম কালীও পারেনকে মনোনীত করেন। তিনি আমেরিকায় হাতা করিয়াছেন।

বোশ্বাই বিদ্যোহ -- বোশ্বাইয়ে হিন্দু মুদলমানদিগের মধ্যে বিবাদ হইয়া ৫০ জন হতওপ্রায় ৪০০ লোক জ্থম হইয়াছে। কেল্লার অশ্বারোহী সৈন্য আনিয়া বিদ্রোহীদিগকে থামাইতে হই-शोष्टिल । কলিকাভার বিগত বিভাট অপেকা ইছা অনেক গুরুতর।

র্মাবাইয়ের নহকারিণী---কুমারী স্থল্ব বাই পাউয়ার নামী মহা-রাষ্ট্রীয় রমণী লণ্ডন হইতে স্থশিক্ষিত হইয়া পুনায় প্রত্যাগত হইয়াছেন। রমাবাইয়ের কার্য্যের সহকারিতা করিবেন।

দ্রীডাক্তার- প্রীমতী কাদ্দ্রিমী

কালে তিনটা পরীক্ষায় উত্তীপ হইয়া উচ্চ উপাধি পাইয়াছেন, তনিয়া আদরা, পরমানন্দিত হইলাম। তিনি এডিনবরা বিশ্ববিদ্যালয় হইতে এল আর দি পি এবং গ্লাসগো বিশ্ববিদ্যালয় হইতে আর হুইটী উপাধি লাভ করিয়াছেন।

রাণী হাটুলুর সিংহাসন—

গৃষ্টের জন্মের ১৬০০ বৎসর পূর্বের রাজ্ঞী

হাটুলু মিশর দেশে রাজ্ঞত্ব করেন। তাঁহার

সিংহাসন পৃথিবীর মধ্যে সর্ব্বাপেকা
পুরাতন রাজাসন। ইহা আবলুস কাঠে
প্রস্তুত এবং নানাপ্রকার কারুকার্যো
শোভিত, ইহা কালের গতিতে এরপ

কঠিন হইয়াছে যে, দেখিলে কাল

মার্বেলে গঠিত বোধ হয়।

ঘড়ী কথা কয়—জেনিভা নগ্-রের একজন কারীকর এক প্রকার ঘড়ী প্রস্তুত করিয়াছেন, তাহার ঘন্টা ও কোয়ার্টার বাজিবার সময় ঘড়ী হুইতে সমযুজ্ঞাপক বাকা বহির্গত হয়।

রাজপৌত্র ও বধূর প্রতি উপদেশ—যুবরাজ পুত্র প্রিল জজের
বিবাহান্তে প্রধান ধর্মাধ্যক্ষ ভর্তা ও বধুকে
আপনার নিকট বদাইয়া এই উপদেশ
দেন :—"তোমাদের পদ উচ্চ—তোমাদের অধিকারীও উচ্চ, সেইজনা তোমাদের কর্ত্তবা ও কতর।
তোমরা তোমাদের পদের উপযুক্ত হও। যে স্লোতি
তোমাদের মুখে পড়িয়াছে, তাহা যেন তোমাদিগকে
স্থাবিকেনা শিক্ষা দেয়—কিন্তু সেই সকে নিঠা ;
উৎসাহকে বেন প্রথানত করিয়া দেয়। যাহা ভ্রম
ও মঙ্গল ভাহাই যেন উজ্জল হইয়া প্রকাশিত হয়।
ভৌরবপূর্ধ সামাজা প্রবং সুম্বত পরিক্ষাী প্রকাশন

তোমাদের প্রতি চাহিরা আছে এবং জাতীর গৌরব পূর্বপরন্পরাক্রমে যাহা রক্ষিত হইরাছে,তাহা তোমরা আর্কপ রুদ্ধি করিবে এই তাহাদের আলা বিবাহ পারিবারিক ভিত্তি, এবং পরিবারের বন্ধন প্রীতি ও শক্তির উপরে জাতীর গৌরব প্রতিষ্ঠিত।"

লেডী ডফরিণের সৌভাগ্য—
তাহার এক খুড়া মৃত্যুকালে তাহার নামে
৬০০০ পাউও উইল করিয়া গিয়াছেন।
লেডী ডফরিণের অর্থ এ দেশের রমণীগণের
কল্যাণার্থ বায়িত হইবে আশা করা যায়।

সাথী—এই নামে বালকবালিকাদিগের জন্ম একথানি নৃতন মাদিক
পত্রিকা প্রকাশিত হইতেছে। দথা যে
উদ্দেশে কার্য্য করিতেছে, ইহারও সেই
উদ্দেশ্য দেথা যায়। ইহার কাগজ, মৃদ্রাঙ্কণ
ছবি প্রভৃতি যেমন স্থলর, প্রবন্ধ সকলও
সেইরূপ স্থলিথিত এবং বালকদিগের উপথোগী হইতেছে। আমরা ইহার দীর্ঘজীবন প্রার্থনা করি।

নূতন স্ত্রী শিক্ষালয়—(১) ওয়াদাভানের রাজা হিন্দুবিধবাদিগের শিক্ষার জন্ত এক নূতন বিভালয় স্থাপন করিয়াভিন্ন, ইহার কার্য্য বিহুগী রমাবাইয়ের সারদাসদনের আদর্শে পরিচালিত হইতেছে। (২) কলিকাতার সার্কুলার রোজের ১৬৩ নং ভবনে স্ত্রীলোকদের জন্ত এক কালেজ থোলা হইতেছে,ইহাতে প্রবেশিকা হইতে বি এ পাঠ্য পর্যান্ত অধ্যাপনা হইবে। আমেরিকার "ওম্যান্ত্র উজ্জাগী। এস্ এক গার্ডনার সম্পাদক, জীমতী সোম এম এ এবং অন্তান্ত স্থবোপ্য অধ্যাপন বিদ্যান্ত্র স্থান্ত স্থান্ত বি এম এম এ এবং অন্তান্ত স্থবোপ্য অধ্যাপন করিবেন।

অভিনন্দন।

(বামাবোধিনীর প্রতি)

"আমি কি তোমার কাছে শিপিয়া আবার— নব পাঠ, মুক্ত স্বরে, প্রচারিব ঘরে ঘরে, স্মঙ্গল বিশ্বপ্রেম মুক্তির নিদান, বে শুনিবে, সে হেরিবে স্বর্গের সোপান ?"

বামাবোধিনি ! আজি দর্কাদিদ্ধিদাতা কক্ষণাময়ের কুপায় তোমার বয়দ ত্রিশ বৎদর পূর্ণ হইল ! এমন শুভদিনে তোমার দহিত একহৃদয় হইয় আমরা দেই শুভময় দেবতার চরণে প্রণাম করি। এ বিদ্ধ বিপদের দেশে, এ অকালমরণের দেশে, যে দেবতা তোমাকে রক্ষা করিয়া আদিতেছেন, আজি আমরা ভাঁহারই চরণে তোমার দর্কাঙ্গীন উন্নতি প্রার্থনা করি।—এ প্রার্থনা আমাদের নিঃস্বার্থ প্রার্থনা নহে, তোমার উন্নতির সহিত আমাদের জাতীয় উন্নতি একই স্থতায় দ্বীথা, তাই তোমার উন্নতি হইতে আমরাও উন্নত হইতে পারিব।

জিশ বৎসর আগেকার কথা বলিতেছি, তথন বাঙ্গালা দেশে "গ্রী-শিক্ষা''
এমন সহজ-লভ্য ছিল না, ছটা চারিটা
মেরের পক্ষে যেমনই হউক, অনেকে
লেখা পড়া কিছুই জানিত না; যাহারা
এক জাধটু শিথিত, তাহাদিগের পড়িবার
মৃত পুস্তক মিলিত না; যে সকল পুস্তক
পঞ্জিক নারী-জীবনোপযোগী শিক্ষা হয়,
শ্রী ক্রকল পুস্তক কেহই লিথিত না;

ত্রীঞ্চাতির স্থ্য তৃঃথে অনেক পুরুষ উদা-। দীন থাকিতেন; স্থতরাং নারী-জীবনের উদ্দেশ্য কি, সমাজে রমণীর কর্ত্তব্য কি, এ সব কথা অনেকেই ভাবিতেন না: অনেকে ভাবিতেন না বলিয়াই জীজাতির পরমস্থরৎ পণ্ডিতবর বিদ্যাদাগর মহা-শয়, স্থার রাজা রাধাকান্ত দেব, মহাস্থা বেপুন সাহেব প্রভৃতির একান্ত যত্ন, চেষ্টা সংখ্যু স্ত্রীজাতির প্রকৃত উন্নতি সাধিত হইতেছিল না। সাধারণ জীলোকেরা অনেকস্থলে পুরুষের "থেলার পুডুল" সদৃশ ছিল; পুরুষদিগের মধ্যে দিগের জ্ঞানগর্ক ও স্বার্থপরতা প্রবল, তাঁহারা কথনও,"দেবতা" দাজিয়া ত্রীজাতির ভক্তি ও শ্রদ্ধা আকর্যণ করি-তেন, কখনও "বিচারক" সাজিয়া স্ত্রী-জাতির লঘু পাপে গুরু দণ্ড বাবস্থা করিতেন, কখনও "মহাপুরুষ" সাজিনা শাসনের কঠোরতা বৃদ্ধি করিতেন !---জীর উপরে রাগ করিয়া স্বামী দ্বিতীয় 🔰 বিচা এহণ করিতে পারিতেন, তাহাতে তাঁহার অধর্ম হইত না; অবচ স্বামীর হিতকামনাতেও ত্রী গোপনে স্বামীকে

मिरियत कथा जानारेट পातिराजन ना, কারণ স্বামীর দোষের বিষয় আলোচনা कतिलारे महधर्मिणीत व्यथम रहेल! ह्वी, স্বামীর দেবা শুক্রাষা করিত, ঘরকল্লার কাজ করিত, ছেলে মেয়ে মানুষ করিয়া দিত, তার চেয়ে বেশি আর বড় কিছ করিতে পারিত না; জ্ঞানালোচনা, ধর্মা-লোচনা, গার্হস্তা স্থাের অবতারণা—এ সব বিষয় দম্পতীর মধ্যে বড় প্রচলিত ছিল না, কারণ স্বামী অনেক বিষয়ে অভিজ্ঞ হইলেও, "যোগীনের মা কি তরকারি দিয়া ভাত থায়, গোপালের স্তীর কোন গ্রনার দাম কত, মিত্র বাডীর বৌয়ের মুখের গঠনে কি কি দোষ" এই সব কথা ভিন্ন বঙ্গমহিলাদিগের অনেকেই আর কিছু জানিত না!—কাজে কাজে পুরুষ-অনেক পুরুষ, ত্রীলোকের জ্ঞান-কাও, আচার ব্যবহার, উদ্দেশ্য, কার্য্য দেখিয়া "অপৰ্ব্ব জন্তু" বলিয়া হাসিতেন, কিন্ত "মানবকুলে জন্মিয়া বেচারীরা এমন পশুপ্রকৃতি প্রাপ্ত হইল কেন ?" একথা অনেকেই বুঝিতে চাহিতেন না!

ত্রিশ বৎসরের কথা বলিতেছি—এই সব হতভাগিনীদের মঙ্গলের জন্ম বাঁহারা কার্য্য করিয়াছিলেন, তোমাকেও বামা-বােধিনি! তাঁহাদিগের সহিত উচ্চ আসন দিতে হয়। যাহাতে নারীজাতি জীবনােপযােগী শিক্ষা পায়, যাহাতে হিতাহিত জ্ঞান লাভ করিয়া স্বার্থপরতাঃ/ শত্যাচার ইইতে আব্ররক্ষা করিতে পারে, এই সব শুভ উক্ষেপ্ত লইয়া ভূমি কম্ম-

গ্রহণ করিলে! সেই অবধি ভূমি আতঃ-পুর শিক্ষয়িত্রীরূপে বঙ্গবাসিনীদিগকে ধর্ম. নীতি, দতীত্ব, ইতিহাস, বিজ্ঞান, গৃহধৰ্ম শিথাইয়া আসিতেছ; সেই অবধি ভূমি সাহিত্য, সঙ্গীত, স্মুক্তি শিথাইয়া আদি-তেছে; সেই অবধি তুমি ধর্মে অনুরাগ, মহত্বে প্রীতি, জ্ঞানে আদক্তি, গুরুজনে ভক্তি, স্বামীতে প্রেম, সন্তানাদিতে শ্লেছ, শিখাইয়া আসিতেছ; সেই অবধি ব্যক্তি-গত, পারিবারিক, দামাজিক, রমণীর ত্রিবিধ কর্ত্তবা শি**থাই**য়া আসিতে**চ** : যাহাতে রমণী পিড়কুলে স্থ-কন্সা, স্থ-ভগ্নী, পতিকুলে স্থভার্য্যা, স্থ-বধু, (এবং কি পরিবারে কি সমাজে) সর্বতে ধর্ম-প্রাণা, বিদ্যাবতী, বুদ্ধিমতী, সাধ্বী, স্থশীলা ও পবিত্রতার প্রতিক্রতিরূপিণী হইয়া জগতের পুণ্য ও আনন্দবর্জনের সহায়তা করিতে পারেন, তাহার**ই উপ-**যোগী শিক্ষা দিবার জন্ম তুমি আব্মোৎসূর্গ করিয়াছ। আজি যে বঙ্গবাসিনীদিগের মধ্যে কত জনে সতাধর্মের আয়াদ পাইরাছেন, কত জনে "মুক্রচি সভাতা" বুঝিতে পারিয়াছেন, কত জনে শাহিত্য বিজ্ঞানের ক্ষেত্রে বিচরণ করিতেছেন. কত জনে পুক্ষজাতি ত্রীজাতির রক্ষক, শিক্ষক ও প্রতিপালক, ফ্রীঞাতি পুরুষ-জাতির শুশ্রবাকারিনী, কোমলতাবর্জিনী, পৰিত্ৰতা ও উৎসাহ বিকাশিনী; সকলেই এक विश्वनतीत महान, मकलारे छारे, मकलाहे जिल्ली, मकलाहे महे पद्ध-মাতার প্রতি কর্তব্য পালন করিয়া স্থাইৰ

— আজি থে কত জনে এ কথা বুকিতে শারিয়াছেন, এ বিষয়ে বামাবোধিনি। তোমারও প্রাণপণ যত্ন ও শ্রমের শভা দেখিতে পাইতেছি। আজি ত্রিশ বিৎসর ধরিয়া তুমি এই সকল শিক্ষা দিয়া পাসিতেছ, স্মৃত্রাং বঙ্গবাসিনীরা বর্ত্তমান সময়ে বতটুকু উন্নতি লাভ করিয়াছে. ভাহাতে ভোমার যত্ন আছে, চেঠা আছে. **অদ**য়পূর্ণ সহাত্মভৃতি আছে! তাই বলি-তৈছি, মা, কলার মঙ্গলের জন্ম যেমন ্বীপাশনা ঢালিয়া দেন, শিক্ষয়িত্রী ছাত্রীর মঙ্গলের জন্ম বেমন আপনা চালিয়া দেন, ভভাকাজিকণী ভূমি বঙ্গবাসিনী-দিগের মঙ্গলের জন্ম সেই রকম আপনা চালিয়া দিয়াছ । এ স্নেহ মমতার প্রতিদান মরজগতে মিলে না! ভূমিও বঙ্গবাসিনীর কাছে "প্রতিদান" রূপে किछ्टे করিতে চাও বাহণ তাহারাও তোমার এ বর্গীয় ঋণ শোধ দিবার ইচ্ছ। করে না. তবে বামাবোধিনি। দাস্থ-পীড়িত হতভাগা নিগ্ৰো জাতি এবাহাম লিম্বন, জন হাউয়ার্ড প্রভৃতি मश्रामागणक योश नियात्क, त्मवालत्यत्र বেপিগণ ফাদার দামিয়েন ও ভগিনী ভোরাকে ঘাহা দিয়াছে. পথ-এই পতিত नेत्रमातीयन महाचा तुथ्रक घाटा निहारह, ব**ণভূ**মির পাষত নাস্তিকগণ, ভগবান नक्षांडावा व दिल्लामवाक वाश विदारह. লীম অনাধ অধ্যের৷ স্বর্গীর বিদ্যাসাগর মহাশরকৈ বাহা দিয়াছে, ভোষার অভা-পিনী বন্ধবাসিনীপণ, ভোমার চরণে সেই

দীন-স্পায়ের ডক্তি, প্রীতি, কুতজ্ঞতা টালিয়া দিতেছ—প্রার্থনা করি এ টুকু এহণ করিতে ভূমি বিরক্ত হইবে মা। বামাবোধিনি। জানতো (উপকারী উপক্লত সমন্ধ লইলেও) ক্ষুদ্ৰ ব্যক্তি যদি মহৎ ব্যক্তিকে কিছু দিয়া স্থুখী হয়, তবে নিষামধর্মী মহাত্মারা তাহাদিগকে দে স্থুখ হইতে বঞ্চিত করেন না; তাই শ্রীকৃষ্ণ, জীবনদাতা হইয়াও ময়দানবের ইচ্ছা পূর্ণ করিয়াছিলেন, তাই রামচল্র ভক্ত শ্বরীর নিক্ট হইতে সাধিয়া আহার্য্য লইয়াছিলেন, তাই বলিতেছি তোমার বঙ্গবাদিনীগণ তোমাকে ঘতটুকু ভক্তি প্ৰীতি দিবে, (যোগ্যতা অযোগ্যতা বিচার ভূলিয়া) তোমাকে তাহা লইতেই হইবে ৷

ত্রিশ বৎসরে তুমি আমাদের জন্ম কি কি কাজ করিলে তাহা বলিব না-বলিতে পারিব না। মা' শিশুকে মান্তব করেন, এই পর্যান্ত জানি, কেমন করিয়া মানুৰ করেন তাহা আমরা বলিতে পারি না। তা' ছাড়া আরও কারণ षाष्ट्र ; कथा कि, कृमि षामामिशक य त्रकम मन्नुर्व (मिथिएंड हेम्हा करा, रम तकम সম্পূর্ণতা লাভের এখনও বছতর ঘাকি রহিয়াছে। আমরা যে পর্কতের উপরে উঠিব, এ*খনও* তাহার উপত্যকার পৌছিতে পারিয়াছি কি না সন্দেকঃ স্থিতরাং ভোমারও অনেক কাল বাকি-ত্রিশ বৎসর খাটিরাছ, এমন কভ জিশ বংসর খাটিতে হইবে দ

বলিতে পারিলাম কই? আৰ জীবস্ত মানুষের কি জীবনচরিত লেখা যায় ? —লজ্জা করে না? _ততবে একটা কথা না বলিয়া থাকিতে পারিলাম আগেই বলিয়াছি-এখনকার মেয়েদের উন্নতির জন্য—উন্নতির "ধেয়াল" নহে, প্রকৃত উঃতির জন্ম যাহা কিছু কাজ **হইতেছে, তাহার অনেকগুলি কাজে** তোমার যত্ন, শ্রম, চেষ্টা—এবং দকল গুলিতেই হাদয়ের দহারুভৃতি জাগিয়া তাই নারীজাতির উরতি রহিয়াছে। আলোচনা করিতে গিয়া তোমার স্লেহ-ময়ী মৃতি আগে মনে পড়ে!—আবার বলি, বন্ধবাসিনী গত ত্রিশ বৎসরে যত-টুকু উন্নতি লাভ করিয়াছে, প্রত্যক্ষ-রূপেই হউক আর পরোক্ষরূপেই হউক —তোমার সহায়তাও তাহার এক প্রধান উপাদান-এবিষয়ে অধিক আর বলিতে পারিব না—ভূমিও শুনিতে চাহিবেনা। ভার পরে বলি, বামাবোধিনি ! বিধাতার আজ্ঞা পালন করিতেই ভূমি এদংসারে আসিয়াছ, চিরদিনই সেই কাজ করিতেছ, তথাপি এ মরজগতের শোক ছঃখাদি তোমাকে কত সময়ে পীড়ন করিরাছে! আমাদের ক্ষুদ্র জীবনের মৃত তোমার মহৎ জীবনেও কড অব্যির ঘটনা ঘটরাছে; ক্রমণ্ড ভূমি

প্ৰভাকাক্ষী বন্ধ-বিয়োগয়াতনা সহিয়াহ,

ক্ৰমণ্ড নিজ জীবমের আশ্ভা ভোগত

অতীতের অপেক্ষ। ভবিষ্যতের দিকে

বোঝা ভারি ঠেকিতেছে, তথন জার

করিয়াছ, দরিস্ততার দারুণ পাইয়াছ !--এত ক্লেশেও ভূমি ধাঁহার কুপায় এ ত্রিশ বৎসর তোমার জীবনের কর্ত্তব্য পালন করিতে পারিয়াছ, সেই দেবতার চরণে সহস্র ধন্যবাদ! কিন্ত বামাবোধিনি, ইহার অপেকা কোভের কথা আছে--সে কথা এই যে এত সৎ ও মহৎ উদ্দেশ্য লইয়া জগতে স্মাদিয়াছ, ভথাপি সময়ে সময়ে তোমাকে নিষ্ঠুর সমালোচনা সহিতে হয়, তীব্ৰ বিজ্ঞাপে ব্যথিতা হইতে হয়---খ্ৰীজাতিকে"যথেচ্ছা-চারিতা-শিক্ষাদায়িনী" বা"দম্প্রদায় বিশে-বের মুথপাত্রী" এমনতর গালাগালি ধাইতে হয় !--এসব কথা আশ্চর্য্য মনে করি না-কারণ এ জগতে বাঁহারা উচ্চ উদ্দেশ্য লইয়া আপনাকে কর্মকেতে পরিচালিত করেন, তাঁহাদিগের অনেক-কেই এমনতর নিগ্রহ ভুগিতে হয়! বুদ্ধদেব হইতে পণ্ডিতা রমাবাই পর্যাস্ত हेरात हिमार्त्रभञ्जा। যাহা যিনি তোমার মত, বামাবোধিনি! শ্রীজাতিকে নিরপেকভাবে,ধর্মাধর্ম কর্মা-কৰ্ম, অধিকার, সম্বন্ধ, কর্ত্তব্য, উদ্দেশ্ত— नातीकीवत्वत्र छेशयांशी मकल द्रकम স্থশিকা দিতে চেষ্টা করেন,লোকে ভাঁহাকে ছিন্দু,ত্রাক্ষা, প্রীষ্টান, মুসলমান যাহাই কেন বলুক না, ভাঁহার প্রদন্ত শিক্ষাকে "বিকৃত निका, यथक्कानात्रिकात्र निका" याशहि কেন বলুক না, বহুবাসিনীগণ তাঁহাৰ भम्पृति जरेता छोहात निराम आस्त• ক্রিডে পারিলে তাহাদিখের

বার্থক হইবে। এ কথা যে তোমাকে পরিতৃষ্ট করিতে বলিতেছি, তাহা নহে—
এ রকম তৃঃথে তৃমি বিচলিত হইলে, আজি তিশ বৎসর আমাদের জন্ম রক্ত মাংস জল করিতে পারিতে না!—তবে আমাদের নিজেদের সাম্বনার জন্মই এ কথা উল্লেখ করিলাম। তৃমি আমার

শাজিকার এই শুভদিনে যে দব
কথা বলিব ভাবিয়াছিলাম, তাহার অনেক
কথা থুলিয়া বলিতে পারিলাম না—আর
একটা কথা কিছুই বলিতে পারিলাম
না—বামাবোধিনি! তুমি যে একটা
শোক ও নৈরাশ্যপূর্ণ তরুণ জীবন কি
অসীম স্নেহ-ছায়ায় বাঁচাইয়া তুলিয়াছ,
কি করিয়া সেই মৃতপ্রায় শিরাধমনীতে
অমৃতবিন্দু দিঞ্চন করিয়াছ, কি করিয়া
সেই জড় হাদয় প্রাণের আশা, লক্ষ্য,
উদ্দেশ্য, কর্ত্তব্য, একটু একটু করিয়া ফুটাইয়া তুলিয়াছ, সেই মৃতদেহের অন্থি
মক্ষায় কি করিয়া নবজীবন সঞ্চার

করিয়াছ; মা'র মতন স্লেহে, ভগিনীর মতন যতে, শিক্ষয়িত্রীর মতন হিতৈষণায়, দ্থার মত প্রীতিতে একটা অস্থ তঃখ-নিপীড়িত হৃদয়ের সকল অভাব কি করিয়া পূর্ণ করিতেছ, সে কথা বামা-বোধিনি! আমি নিজেও বুঝি না, পরকেও বুঝাইতে পারিব না। লোকে বলে "জগতে ঋণগ্রস্তের মত তুঃথ আর নাই," আমি বলি মা'র কাছে সন্তা-নের, শিক্ষয়িত্রীর কাছে ছাত্রীর আর তোমার কাছে আমার, অনন্ত ঝণে ঝণী থাকা অপেক্ষা স্থুখ আর নাই!--তা' বামাবোধিনি! বামাবোধিনি! আমার উপাদ্যা দেবী বামাবোধিনি! আমি বিধাতার নামে তোমারই হইয়াছি; তুমি এ ক্ষুদ্র প্রাণ—এ ক্ষুদ্রাদপি ক্ষুদ্র প্রাণ তোমার মহাপ্রাণে অন্নপ্রাণিত করিয়া লইবে কি ?

> লেথিক।— তোমারই অামি।

পন্জ্ সাহেব।

ভারতের ধর্ম ও রাজনীতিক্কেত্রে
শিথগুরু নানক একটি অম্ল্য ও অত্যুজ্জ্বল
রত্ন । নানকের শিক্ষা, দীক্ষা, সভাব,
চরিত্রে, আচার, ব্যবহার রীতি, নীতি,
ধর্মপ্রচার প্রভৃতির বিস্তৃত ইতিহাস
স্মানরা সম্যক্রণে প্রাপ্ত হই নাই, কিছ
বাহাকিছু সানিতে পারিয়াছি, তাহাতেই

আমরা তাঁহাকে মহাপুরুষ বলিয়া সম্বোধন করিতে পারি। শিখজাতিও নানককে 'বাবা' স্বর্থাৎ সাধুপুরুষ বলিয়া অভিহিত করেন। যে অসামাত্ত বীরত, শোর্ধ্য, বীর্ধ্য, স্বার্থত্যাগ, স্বদেশবৎসলতা, স্বজাতি-বিয়তা, একপ্রাণতা প্রভৃতি সদ্পূর্ণ সমূহে সিপ্রাতি ভারতবর্ষের গ্রেমারক্ষরকাশ কর্ম

দাঁড়াইয়াছে, বাবা নানক তাহার মূল। অত্যকার প্রস্তাবে বাবা নানক সম্বন্ধে আমরা কতকগুলি প্রয়োজনীয় অথচ নূতন কথার অবতারণা করিব। নানকের জন্মস্থানে এবং পঞ্জাব প্রদেশে আমরা এইগুলি সংগ্রহ করিয়া কোনও সময়ে ইংলণ্ডের একখানি মাদিক পত্রে প্রকাশ জন্ম প্রেরণ করিয়াছিলাম। প্রোক্ত পত্র হইতে আমরা কিছু পরিবর্ত্তন ও পরিবর্ত্তন করিয়া এই প্রস্তাবের অক্সপূর্ণ করিয়াছি।

বাবা নানক, পঞ্জাব প্রেদেশের অন্তঃ-পাতীজনন্দর জিলায় জন্মগ্রহণ করেন। তাঁহার পিতামহ কৃষিকার্য্য করিতেন এবং পিতা মহাশয় নানা সময়ে নানা স্থানে নানা কার্য্যে নিযুক্ত ছিলেন। রাউল--পিণ্ডি জেলায় বাবা নানক বচকাল অতি-বাহিত করেন এবং এই স্থানেই তিনি আপুনার ভবিষ্য জীবনের ভিত্তি সংস্থাপুন করেন। যে পরম রমণীয় স্থানটিতে মহাপুরুষ নানকের আশ্রম ছিল, তাহা আজিও সগৌরবে বর্ত্তমান। অমৃতসহর ভিন্ন ভারতবর্ধে শিখজাতির এতদপেক্ষা অধিকতর পবিত্র তীর্থ আর নাই। এই স্থানের নাম "পন্জ্সাহেব।" পেশো-য়ার এবং কোহাটের দৈনিকবন্দেরি মধ্য দেশে ইহা অবস্থিত এবং কুষ্ণপর্বত হইতে প্রায় স্বাদশ ক্রোশ দূর। ইহার চারিদিকে স্থলর স্লার পর্বতমালা; এই পর্বত-শ্রেণী আফগানিস্থানের সলিমান গিরির স্থিত মিশিয়াছে। পাহাড়ের উপর

হইতে অবিশ্রান্ত ভাবে অতীব স্বৰ্জ্ 📽 সুস্বাত্ব সলিল তীব্রবেগে নিঃস্ভ হইতেছে, তাহা এত স্বাস্থ্যকর ষেবছ দূর দেশ হইতে রোগী সমূহ স্বাস্থ্যের জক্ত ঐ জলপান করিতে আইদে। वरमत लक लक हिन्दू छ गिथ मर्गन উপলক্ষে এস্থানে আগমন করেন এবং প্রম শ্রদাসহকারে পূজাদেন। **শাহে**বের মানেরাও প্ৰজ পক্ষপাতী। এই স্থানটি নানাকারণে দকল জাতির এতাদৃশ শ্রন্ধার আস্পাদ হইয়া উঠিয়াছে যে, অনেক সম্ভ্রান্ত ব্যক্তি ইহার নিকটে আবাসগৃহ নির্মাণ করিতে আর্ভ্র করিয়াছেন। জল বায়ু নিতা**স্ত** স্বাস্থ্যকর, চারিদিকের অতীব দশ্য বমণীয়।

বাবা নানক দর্কপ্রথমে পন্জ্ সাহেব নামক স্থানে মুসলমান জাতির মধ্যে গোহত্যার বিরুদ্ধে উপদেশ দেন এবং শিয়া ও স্থলী এই উভয় সম্প্রদায়ের মধ্যে একতা সম্পাদনের বিহিত চেষ্টা করেন। ঐ সময়ে ক্লফ্ষ পর্কতে এক বলবন্ত পাঠান দক্ষ্য রাজ্ব করিত। ঐ পাঠান দক্ষ্যর

* সম্প্রতি পেশোয়ারের সয়িকটে যে স্থানে বৃটীশ সেনা ও পার্ক্রতীয় জাতির সহিত মহাসময় হইরা পিয়ছে, ঐ স্থানের উপয়িছিত পর্বতের ইংরাজী ভৌগলিক নাম রাক্ মাউন্টেন, দেশী নাম ক্রুফ পর্বত এবং মুসলমানী নাম জাংগী পাহাড়। এই স্থান চিরকালই বৃটীশের ভীতিক্ষেত্র। অসভ্যা এবং তুর্ঘান্ত বন্য ব্রবনজাতি ভিন্ন আর ক্ষেত্র ক্ষমন ইয়াতে অধিবাস ক্ষরিতে পারে নাই।

नोम ननी था। नानक्तत्र छेश्रानरात्र কথা ভাবণ করিয়া, দলী ৰা বাবা মানককে বলপূৰ্বক কৃষ্ণপ্ৰতে লইয়া বান এবং পার্বভীয় দূর্গে আবদ্ধ করেন। ৰলা বাহলা, এই সময়ে শিথজাতির व्यक्रामस्त्रत वीख পर्गाष्ट প্রোথিত হয় নাই। বাবা নানকের সঙ্গে তাঁহার তিনজন শিষ্য ছিল, এই তিনজনই তাঁহার প্রথম শিষ্য। ইহাঁদের একজনের নাম চর্ণি। নানক ব্যতীত আর সকলকেই দলী থাঁ সহস্তে নিহত করেন। ছয়মাস কাল অতিবাহিত হইলে, একদিবস যোগাদনে বদিয়া বাবা নানক ধ্যান করিতেছেন, এমন সময়ে দলী থা তাঁহার সমূথে আসিয়। উপবেশন করিল; কহিল, "অদ্য শুক্রবার, মুসলমানের অতি পবিত্র দিন, স্বতরাং অদ্য আমরা তোমাকে মহম্মদীয় ধর্মে দীক্ষিত করিতে চাই। ভূমি দলতি না দিলে, আমাদের শাল্রমতে বলপূর্বক তোমার দীকা কার্য্য সম্পন্ন বাবা নানক সহাস্যবদনে উন্তর দিলেন "তথাস্ত।" ঐ দিবস বাবা নানকের মুসলমান ধর্মে বাস্তবিক্ই দীকা কার্য্য সম্পন্ন হয়; একপক্ষ কাল অতিবাহিত না হইতে হইতে মুসলমানেরা দেথিল যে, বাবা নানক মহমদীয় এবং হিন্দু এই উভয় ধর্মাই পালন করিতেছেন, অথচ ইহাদের কোনও ধর্মেই ভাঁহার विस्थित आहा नाहे। मनी था विनन "মুসলমান হটয়া ভোমার এরূপ ব্যবহার निजीस अगाजीत धवः अनामानिक।"

गामक कहिलान, "এहेन्नभ वावहादित जनारे जामात जन्म। जामि ना हिन्सू ना মুসলমান, অথচ উভয় ধর্ম কে একটা সাধা-রণ ক্ষেত্রে আনিয়া সংস্কার করতঃ একটি **নুত্র অথচ বিশুদ্ধ পরিচ্ছদে শোভিত** করাই আমার জীবনের উদ্দেশ্য, স্মৃতরাং হিন্দু হওয়া আর মুসলমান হওয়া আমার পক্ষে তুল্য কথা। আমি মুদলমানের গোহত্যা, বলপূৰ্ব্বক ধৰ্মঘাজন, শীয়া স্থনীর বিবাদ এবং হিন্দুজাতির জাতিভেদ প্রভৃতি প্রথা উঠাইয়া এক নবধর্ম স্থাপন করিতে চাই; আমার ধর্মের সম্মুথে যবন ও হিন্দু এই উভয় ধর্ম ই হীনপ্রভ হইয়া পড়িবে।" ক্রমে ক্রমে তিনি আপনার প্রস্তাবিত ধশ্মের নীতিগমূহ স্থান্দররূপে ব্যাখ্যা করিতে লাগিলেন। ভনিতে ভনিতে দলীথার यन छेलिल ; ক্লঞ্পৰ্বতে অসভ্য দস্ম জাতির মধ্যে শিথ ধর্মের বীজ আজ প্রোথিত হইল; দত্ম পাঠানরাজ শিথ ধর্মে দীক্ষিত হই-লেন। প্রকাশাভাবে নানকের এই দর্জ-প্রথম শিষ্য ! ইহার বংশ এখনও বর্জমান. সম্প্রতি এই বংশের সহিত ইংরাজরাজের সন্ধি স্থাপিত হইয়াছে।

নানকের শরীর সবল, স্বস্থ, নীরোগ, স্থুল এবং অতীব স্বন্ধর ছিল। তিনি ত্রীলোকদিগকে শিষ্যশ্রেণী ভূক্ত করিয়া উপদেশ দিয়াছেন, অথচ তাঁহার চরিত্রের বিরুদ্ধে কেহ কখনও কোন অভিযোগ উপ স্থিত করিতে পারে নাই। তিনি দ্রীশিক্ষার সম্পূর্ণ পক্ষণাতী ছিলেন, তাঁহার বর্মণাক্ষে

রুমণীজাতির শিক্ষা সম্বন্ধে তিনি বছবিধ উপদেশ প্রদান করিয়া গিয়াছেন। ज्ञी-লোকের ধর্ম, সভাব চরিত্র, আহার প্রভৃতি বিষয়ে তাঁহার উপ্দেশ সমহ নিতান্ত সারগর্ভ। নারীজাতি বলবতী হয়, ইহাও ভাঁহার মনোগত অভিলাষ ছিল; প্রত্যেক শিণ রমণী কেবল গৃহ-ক্ষেত্রে নহে, সমর ক্ষেত্রেও বৃদ্ধি, কৌশল এবং বীৰ্ষাবন্তা দেখাইতে পারে, ইহা ভাঁহার বাদনা ছিল। ভাঁহার গ্রন্থ-জীতে ইহার আভাস প্রাপ্ত হওয়া যায়। তাঁহার প্রবন্তী শিষাগণ রমণী জাতির শিক্ষার প্রতি অমনোযোগী না ইইলে. বোধ হয় এতদিনে শিখনারীগণ দৈনিক শিক্ষায় ব্যুৎপন্না হইয়া উঠিতেন। শিথ যুদ্ধে শিথ রমণী সহায়তা করি-য়াছে, ইহার প্রমাণ ভারতের ইংরাজ ইতি-হাসেও যথেষ্ট পরিমাণে প্রাপ্ত হওয়া যায়। কথিত আছে, এক সময়ে এক দল অসামালা নাবণাবতী রমণী একটি ক্ষুদ্র পর্ব্যতের উপরিস্থিত তক্তলে আসিয়া আশ্রয় প্রহণ করে। ঐ পর্ব-তের নিম্নদেশে উপবেশন করিয়া বাবা নানক ধ্যানে নিমগ্ন ছিলেন । নানকের উন্নত ললাট, বিশাল বক্ষ, শালপ্রাংক বাহু, স্থন্দর আয়তন, অপরূপ মুখঞ্জী, স্থস্থ দেহ প্রভৃতি দর্শন করিয়া রমণীগণ বিমোহিতা হয় এবং নানকের ধান-ভক্ষের চেষ্টা করে। প্রায় হই ঘটা কাল অভিবাহিত হইয়া (शल, वावा করিলেন। मानक नयुन्द्रम् উন্মীলন

তথন স্ত্রীলোকেরা নানাপ্রকার কুচেপায় তাঁহার হাদয়ে ভাবান্তর উপন্থিত কবি-বার প্রয়াদ পায়। পরিশেষে বিফল-गतातथ रहेल. तमनी मध्यमायत कर्जी विनया উঠिन, "यमि जुमि जामारमञ् নিকটে না আইস, তাহাহইলে আমরা এই পর্বতমালা এই মুহর্ছে তোমার শিরোপরি প্রক্ষেপ করিব, ভূমি চুর্ণ বিচূৰ্ণ হইয়া যাইবে।'' বাবা তাহাতেও টলিলেন না। স্ত্রীলোকগণ ঘণন বাস্ত্ৰিক পৰ্কত ফেলিবার উপক্রম করিতে লাগিল এবং গিরিমালা যথম মুহুর্ত্ত মধ্যে শিরোপরি পতিতপ্রায় হইয়া উঠিল, তথন বজ্ঞগন্তীরসরে বাবা নানক এই বলিয়া চীৎকার করিলেন যে. "ছে পৰ্বত ! যদি আমি যথাৰ্থ নিৰ্দোষী হই. তাহা হইলে এই নিৰ্দোষীকে নিহত করিয়া আপনার শুভ্রদেহে চির্কলভের কালিমা স্থাপন করতঃ জগতে অকীর্ত্তি ঘোষণা করিও না।" এই কথা বলিয়া তিনি আপনার বাম হন্তের পাঁচটি অঙ্গুলি পর্বতের গাতে স্থাপনা করিলেন। আর্ক-পতনোরাধ গিরিমালা পড়িতে পড়িতে আটকাইয়া গেল। প্রবাদ সত্য कि মিথ্যা জানি না, কিন্তু পর্কতের এই অবস্থা স্বচক্ষে দর্শন করিয়াছি। রাওলপিতি জেলায় আজিও বর্তমান। পথাৰী ভাষায় পনজ অৰ্থে পাঁচ এবং माराय व्यर्थ व्यक्ती। धरे व्यक्त धरे হানের নাম পন্জ সাহাব্। এই থাবাদ পঞ্চাৰের সর্ব্বত্র প্রচলিত। শিধের নিকটে

যদি কেই এই প্রবাদ মিথ্যা বলিয়া মোৰণা করে, তাহা হইলে চব্বিশ ঘন্টা কাল মধ্যেই ঘোষণাকারীর প্রাণবায় তাহার নশ্বর দেহ পরিত্যাগ করিতে বাধ্য হইবে। শিথের শাণিত তরবারী ভাহার ধর্মের রক্ষক।

পন্জ্ সাহেব ক্ষেত্রেই বাবা নানক কলেবর পরিত্যাগ করেন। তাঁহার মৃত্যু হইলে, তাঁহার অভ্যেষ্টিক্রিয়া কি প্রকারে সম্পন্ন হইবে, এই প্রস্তাব লইনা হিন্দু ও মুসলমানে ঘোরতর বিবাদ

উপস্থিত হয়। তিনি উভয় নিকট এত প্রিয় ছিলেন যে, মুসলমানেরা তাঁহার মৃতদেহের কবর এবং দাহন সংস্কার করিতে চায়। শেষে মুসলমানেরা জয়লাভ করিয়া মৃত-দেহকে কবরস্থ করেন। প্রবাদবাক্য ভনা ধায়, ভগবান হিন্দু ও মুসলমানের বিবাদ দেখিয়া, যোগবলে নানককে প্রনক্ষীবিত করেন এবং তাঁহাকে দশরীরে স্বর্গে যাইতে অমুমতি দেন। শিথ সমাজে এই প্রবাদ আন্নিও প্রচলিত।

পশুহত্যা।

(৩৪০ সংখ্যা ১২৪ পৃষ্টার পর)

মুসলমানেরা যেরপে জবাই করে,
তাহা অক্স ভয়ানক ও অক্স নিষ্ঠ্রতার পরিচায়ক নহে। তাহারা গোকুকুট প্রভৃতিকে
একবারে বিখণ্ড করে না; অস্ত্রদারা
উহাদিগের কণ্ঠনালীর অর্দ্ধেক ছিল্ল
করিয়া দেয়, জন্তুটী অসম্থ যাতনায় ভূমিবৃ্তিত ইইতে থাকে, তাহারা সচক্ষে
সেই ব্যাপককালে পর্ম কোতৃহলীর স্থায়
ভাষানবদনে এ ব্যপার অবলোকন করে।
হা ধর্ম ডোমার মৃত্তি কি এইরপ ভ্যান

ৰিতীয়ত:। পৃথিবীর প্রায় দর্কতই বার্থকরণনার্থ পণ্ড পক্ষ্যাদির প্রাণহিংদা, একাশ প্রচলিত হইয়াছে যে, তাহা একপ্রকাদ কর্তব্য কর্ম বলিয়াই মছুযোর

শংস্কার জন্মিয়া গিয়াছে। স্বার্থসাধনার্থে অনেক প্রকারে পশুহিংদা হইয়া থাকে। বৈষয়িক আড়ম্বর ও রদনার তৃপ্তি-শাধন পশুহিংশার একটী প্রধান হেতু। এদেশের কেই কেই কুদ্র ছাগ-শাবকগুলি কিছুকাল প্রতিপালন করিয়া কোন একটী ভোজ উপলক্ষে তাহাদিগকে বধ করিয়া থাকেন। আবার ছাগ বধের প্রণালীইবাকত! এরপ ওনাগিয়াছে, একবারে ছাগের মস্তক ছেদন করিয়া রজ্ঞ বহির্গত হইয়া স্থসাত্তার হানি হইতে পারে বলিয়া কেহ কেহ রক্ষ্র-দ্বিলা ছাগটীর মুখবন্ধ কণত তাহাকে মৃত্তিকামধ্যে প্রোধিত করে। নিরুপায় ও নিরীই জীবটী তথায় খাসরোধের অসহ

যাতনায় প্রাণত্যাপ করে। অনস্তর তদীয় মাংস্বারা উহার বধকারীদিগের উদর-পোষণ ও আমোদ নির্কাহিত হইয়া থাকে।

বঙ্গদেশের ময়মনসিংহ ও প্রীহট্টের
নিকটবর্ত্তী পর্ব্বতবাসী অসভ্য গারোজাতিরা কোন কোন মহোৎসব উপলক্ষে
"কুকুর পিষ্টক" ভক্ষণ করে। তাহারা
একটা কুকুরকে বলপূর্ব্বক আকণ্ঠ তণ্ডুল
ভক্ষণ করার; এবং রক্ষ্কুদারা তাহার
মুথবদ্ধ করিয়া প্রদ্ধনিত অগ্নিকুণ্ডে
নিক্ষেপ করে। প্র দগ্ধ কুকুরের শোণিতাদি দ্বারা উহার উদরমধ্যস্থ তণ্ডুল পরিপাক হইয়া পিষ্টকের আকার ধারণ
করে। পরে অন্ধারা উহাকে খণ্ড থণ্ড
করিয়া প্রধানতম আত্মীয় ব্যক্তিদিগকে
প্রদান করে। এইরপে তাহাদিগের
মহোৎসব সম্পান্ন হইয়া থাকে।

এতদেশীর ডোম হাড়ি প্রভৃতি অনেক ইতরজাতিরা আপনাদিগের মহোৎসব-কালে ছই চারিটা শৃকর বধ করে। তাহার প্রণালী অতি নিষ্ঠুর; কর্তুন করিলে রক্ত বাহির হইয়া যাইবে বলিয়। এক স্থানে তিন চারি ব্যক্তি লগুড় হস্তে দণ্ডায়মান হয়; মধ্যস্থলে শৃকর্টীকে ছাড়িয়া দেয়। এক ব্যক্তি উহার গাতে যাই প্রহার করিলে, উহা যাতনায় উচ্চৈঃ-স্বরে চীৎকার করতঃ প্রাণভয়ে অভদিকে পলায়ন করে, দেদিকেও দেইরূপে আঘাত পায়। নিরুপায় স্বন্ধটী প্রহারে বিকল হইয়া অবশেষে প্রাণত্যাগ করে।

ভয়ানক নিষ্ঠরতা প্রদর্শন করে, তাহা অনেকেই অবগত আছেন। এরপ আকত আছে, নিরীহ মৃগযুথ শিকার করিবার সময় পাছে অত্র শত্র দর্শনে আকতগমনে পলাংন করে, এই নিমিত্ত কুরবুদ্ধি, ব্যাধের। মনোহর বংশীধ্বনি সরলস্ভাব মৃগযুথ আহলাদিত অনিমেধনেতে স্থিরভাবে সেই বংশীধানি শ্রবণ করিতে থাকে। এদিকে কুটিলমতি ব্যাধেরা যন্দ**্স**রূপ অস্ত্র সেই স্থবিশ্বস্ত জন্তুগণের প্রতি বিশ্বাদ-ঘাতকতার পরাকাষ্ঠা প্রদর্শন করে!!! **ইউ**রোপীয় জাতিরা এবং কোন কোন মহাশয় মূগ-ধনাচা য়াকে অতি স্বাস্থ্যপ্রদ এবং আনন্দজনক ক্রীড়া মনে করিয়া সংক্র ভয়ত্কর কুকুর এবং বন্দুকাদি লইয়া গ্রগদ শৃগাল, হরিণ প্রভৃতি জন্তকে শিকার করিতে ধান। যখন ঐ সমস্ত ভয়াৰ্ভ জীব উৰ্দ্বশাসে প্লায়ন করিতে থাকে, ও যখন ঐ কুক্কুরেরা উহাদিগকে ধরিয়া থ**ও থও** করিতে থাকে, তথনই শিকারিগণের আনন্দের আধিক্য হয়, এবং তাহারা নান। প্রকার বিকট শব্দ করিয়। क्कूब-দিগকে উৎসাহদান এবং আপনাদের आक्लाम श्रकान करत्र ।

মুসলমানেরা গো, মেষ ও কুৰুট ধারা দর্কদাই সাড়ম্বর ভোজন করিয়া থাকেন। প্রাসিদ্ধ সভ্য ইউরোপীর মহাশরেরা আবার এবিষয়ে দর্কাপেকা শ্রেষ্ঠ। পৃথি-বীস্থ নানা ভাতীর লোক যত প্রকার প্রাণীর মাংস ভক্ষণ করিয়া থাকে, তাহার অধি-কাংশই ইউরোপীয়েরা ভক্ষণ করিয়া থাকেন। কোনও জীবের জিহ্লাটী উপা-দেয় বলিয়া, কেবল তঞ্জন্যই সেই জাতীয়

শত শত জীবের প্রোণবধ হয়, কোন জন্তর মস্তিক উপাদের বিবেচনার তর্জ্জাতীয় বছ-তর জন্ত বধ করা হয়।

(ক্ৰমশঃ)

নীতি কণ্ঠহার।

আছোক: সর্বজ্তের, কল্মণা মনসা গিরা। অক্সাহক দানক, সতাং ধল্ম সনাতন: ॥

कार्या, मन ७ वाका भाव। ममूलाय প্রাণীর অনিষ্ট না করা, প্রত্যুতঃ অনুগ্রহ ও দয়া করা সাধুদিগের সনাতন ধর্ম। ১ বাদৃশং বপতে বীজং ক্ষেত্রমাসাদ্য কর্বকঃ। হকুতেছুহুতেবাঁপি, তাদৃশং দৃশতে ফলং 🛭 कृषक यामृग वीक कतित्व त्वानन, তাদৃশ তাহার ফল হয় সংঘটন। ভাল কর্মে ভোল ফল, মন্দ কর্মে মন্দ। **অকাট্য এ সত্য, ইথে নাহি কোন দ্বন্ধ।**২ বিবাদপামুতং আহং, বালাদপি স্ভাবিতম্। অমিত্রাদপি সমৃত্তমমেধ্যাদপি কাঞ্নম্। গারল হ'তেও কর অামৃত গ্রহণ। বারকেরো মুথে কর স্থকথা প্রবণ। শমিত্রের স্বৃষ্টান্ত করহ গ্রহণ, অপবিত্র স্থান হ'তে লইবে কাঞ্চন। ৩ জ্ঞানপূর্বকৃতং কক্ষ্ম চ্ছ্যুলিয়ত্তে ক্সাধবঃ। ৰ মাং মহুৰা। পশান্তি, ন মাং পশান্তি দেবতা। ।

অসাধ্ লোকেরা জ্ঞাতদারে পাপাচরপু করিয়া গোপন করে, এবং মনে
করের বে, বছবোরা আমাকে বেথিজেছে
মা, কেবভারাও দেখিতেছেন না। ৪

তে বন্দ্যান্তে মহান্ধান স্তএৰ পুৰুষা ভূৰি। বে ক্ৰেন সমৃত্তীৰ্ণাঃ সাধো বৌবন সংকটাৎ ॥

হে সাধাে! বাঁহার। যৌবনরপ্
সক্ষট হইতে অনায়াসে নিক্ষতি লাভ
করিয়াছেন, ভাঁহারাই এ পৃথিবীতে পূজনীয় মহাঝা পুরুষ। ৫

ন চকুষা ন মনসা, ন বাচা দৃষয়েৎ কচিৎ। নৃ প্রত্যক্ষং পরোক্ষং বা, কিঞ্চিদ্টুং সমাচরেৎ ।

চক্ষু ছারা, মন ছারা ও বাক্য ছারা কথন দ্যিত কার্য্য করিবেক না; এবং প্রত্যক্ষে বা পরোক্ষে কোনরূপ অসদা-চরণ করা বিধেয় নহে। ৬

মাতরং পিতরটেখন, শুশ্রমন্তি জিতেক্সিয়া:। আতৃণাঞ্চাপি সম্বেহা স্তেনরা স্বর্গগামিন:।

বাঁহারা জিতেন্দ্রির হইয়া মাতা পিতার সেবা ও শুক্রবা করেন, আতৃগণকে স্নেহ করেন, তাঁহারা স্বর্গামী হয়েন। ৭

জ্ঞানং তত্ত্বার্থসম্বোধঃ শমচিত্তপ্রশাস্ততা। দল্লা সর্ব্বস্থেতিত্বসাজ্জবং সমচিত্ততা।

বিদ্যা, তথজান, বৈরাগ্য, প্রশাস্তভাব দরা, সকলের অ্থাবেবণ, সরলভা, সম-দর্শিতা এই সকল সাধুতার লক্ষণ 1 ৮ অহিংসা সত্যবচনং সর্বাভূতেষ্ চাজ্জ বন্। ক্ষমাটেবাপ্রমাদক ষ্দৈয়তে স স্থী ভবেং।

অহিংদা, দত্যবাক্য, দর্কভূতে দমদৃষ্টি, ক্ষমা, অপ্রমাদ, এই দকল বাঁহাতে
আছে, তিনি সুখী হয়েন। ১

শক্তং মিত্রঞ্চ যে নিজ্যং তুলোন মনসা সিলা। ভজ্জন্তি মৈত্রা। সঙ্গমা তে নরাঃ স্বর্গগামিনঃ ।

যে দকল ব্যক্তি প্রীতিসহকারে মিলিত হইয়া নিতা বাক্য ও মনে সম-ভাবে শত্রু মিত্রের দেবা করেন, তাঁহারা স্বর্গামী হন। ১০

ভ্ৰাতৃদ্বিতীয়া।

(৩৪৩ সংখ্যা ১০৮ পৃষ্ঠার পর)

ভ্রাতৃদ্বিতীয়ার চতুর্থ উদ্দেশ্য বা শেষ উদ্দেশ্য দৰ্বজনীন সম্ভাব। একথা শুনিয়া অনেকে বিস্ময়াপর হইবেন. <u>লাভূদিতীয়ার</u> কাৰণ আৰ্যাগণ এমন কথা বলেন নাই যে "দকল নর-নারীই এইদিনে ভ্রাতাভগিনীবৎ ব্যব-হার করিবে।" অথবা ভ্রাতৃদিতীয়ায়[°] স্ক্রিজনীন স্ভাব রক্ষা করিতে যে হিন্দু মহিলা, ইংরেজ কি ফরাদীকে "ভাই-ইহাও কেহ ফোঁটা" দিতে গিয়াছেন, কখন দেখেন নাই। কিন্তু প্রকৃত পক্ষে এ সকল ঘটনা না হইলেও আর্য্যগণ मर्खक नी न ভ্ৰাতৃদ্বিতীয়ায় যে তাহাতে শিক্ষিত নিহিত রাথিয়াছেন, হইতে পারিলেই মানবের সর্বজনীন **সম্ভাব অভ্যাদ হইতে পারে—দেই মহত্তম** ইক্সিত ভ্রাভৃদিতীয়ায় আছে বলিয়াই "বিশ্বজনীন **ভাত্তি**তীয়া আর্য্যগণের সম্ভাবের সঙ্কেত মাত্র।"

এ জগতে ব্যক্তিগত সম্পর্ক বা পারিবারিক সম্পর্ক ছাড়িয়া দিয়াও নর-নারীয় আতাভগ্নী সম্বন্ধের জনেক

কারণ দেখিতে পাত্যা যায়। প্রথমে সামাজিক নরনারী সকলেই সমা**জের** সস্তান। এই সামাজিক ভ্রাতভাব ভগ্নী-ভাব সকলের মনেই নিহিত আছে — আছে বলিয়াই একজন বাঙ্গালির গৌরবে সমগ্র বন্ধবাসী গৌরবাধিত হন। আ্যার একজন ইংরেজের গৌরবে সমগ্র ইংলও-বাদী গোরবান্তি হন। দিতীয়তঃ, দেশীয় দক্ষ হইতে নরনারীগণের আছভগী ভাবের পরিবর্দ্ধন; যিনি "জননী, জন্ম-ভূমিশ্চ" বুকিয়াছেন, তিনি স্বদেশীয় নর-নারীগণের ভ্রাতভাব ও ভগীভাব অবশ্রই ব্রিবেন। সদেশীয়দিগের সহাত্ত্তি কিরূপ স্বাভাবিক, ভারতবাদী ভারত-বাদীর প্রতি জান্সবাদী ফ্রান্সবাদীর প্রতি অনুরক্ত হওয়া কিরূপ সাভাবিক. তাহা অনেকে অনুভব করিয়া থাকি-কিন্ত এসকল ভ্রান্ত ভগিনী দম্বন্ধ উচ্চ হইলেও দীমাবন্ধ—আমা-দিগের ভাতভগ্নীত্বেও যে উদার মন্ত্রান্ স্বৰ্গীয় তৃতীয় সমন্ধ আছে, তাইটো তুলনায় এ দকলই অকিঞ্ছিৎকর বিৰে

চিত হইতে পারে; সেই সম্বন্ধসারে আমরা অভ্যন্ত হইলে এসিয়া, ইয়োরোপ, আফ্রিকা ও আমেরিকা মিলিত ইইয়া "**এক**প্রামি গৃহ" হইতে পারে! সম্ভান্ধে আমরা দকলেই দেই বিশ্বজননীর সভান: এট বিশাল জগৎ শরীরে আমরা সকলেই এক এক প্রমাণু, আমার মত অস্থ্য অণু প্রমাণু যোগেই এই মান্ব-জগৎ গঠিত। যাহা জগতের মঙ্গলসাধক, সেই কার্য আমাদের প্রধান কর্ত্ব্য। এই কর্ত্তব্য পালনের পক্ষে পরস্পরে পরস্প-রের দহায়তা করা নরনারী জীবনের আমরা সকলেই এক মৃথ্য উদ্দেশ্য। এক মায়ের সন্থান, সকলেই ভ্রাতা—সক-অতএব ভ্রাতৃত্ব সকল লেই ভগিনী। পুরুষেই থাকিবে, ভগিনীর দকল রমণী-ভেই থাকিবে, নচেৎ আমাদের জীবনের ঞ্ক মহতুদেশ্য বিফল হইয়া যায়। জাতাকে দেখিলে আমাদের মনে হয় পুরুষজাতিই রমণীর রক্ষক ও শিক্ষক, ভাঁছারা জগতে আসিয়াছেন-প্রধানতঃ ৰমণীকে ধর্মজ্ঞান ও অভয় দিবার জন্য, ্রমণীর স্মান গৌরব রক্ষা করিবার ভন্য, ইহাই ভাতার ভাত্য। ভগিনীকে দৈথিয়াই আমাদের মনে হয় রমণীজাতি পুরুষের সধী ও সেবিকা, অগতে আসিয়াছেন—প্রধানতঃ পুরুষের ভাপদন্ত অদয়ে শীতলছায়া দিবার জনা; দরা ও পবিত্রতার প্রতিরূপ হইয়া পুরু-বৈর সেবা ও দাহায্যের জন্য; পুরুষের নিতাসলিনী না হইলেও ভাঁহার স্থ

ছংখে হাদরপূর্ব দহান্তভূতি দিবার
'জন্য। ইহাই ভগীর ভগীত। ইহাই
দমগ্র নরনারীগণের পরস্পরের প্রতি
কর্ত্তব্য; দম্দয় নরনারী ভ্রাতভগ্নীভাবে
অভ্যন্ত হইলেই এই কর্ত্তব্য পালিত হয়,
এবং এই কর্ত্তব্য পালিত হইলেই দর্মজনীন দন্তাব রক্ষা হয়।

কিন্ত এ শিক্ষায়, সর্বব সাধারণকে পুস্তক পড়াইয়া অথবা মৌথিক উপদেশ দিয়া শিক্ষিত করা যায় না। নীতিগ্রস্থ মুখস্থ হইলেই কেহ নীতিপরায়ণ হয় না। নৈতিক শিক্ষা স্বতন্ত্র। জ্ঞানার্জনী বুত্তি সকল জ্ঞানামুশীলনে পরিকটে হইতে পারে, স্মৃতি, মেধা, ধারণা প্রভৃতি বিদ্যা-লয়ে পরিমার্জ্জিত হইতে পারে, কিন্তু কার্য্যকারিণী বৃত্তি সকল পরিক্ষুট করিতে হইলে সাধুকার্য্যে অভ্যস্ত হওয়া চাই। সহিষ্ণতা, পরার্থপরতা ত্যাগদীকার, প্রভৃতি শিথিতে হইলে সম্ভাব অভ্যাস করা চাই। বহু শতাব্দী পূর্ব্বে ভারতীয় আর্ব্যগণ একথা বুঝিয়াছিলেন, শুধু বুঝিয়া ছিলেন নহে-সকলেই যাহাতে ভ্ৰাতা ভগিনী জীবনের মর্য্যাদা বুঝিতে পারেন, সকলের হৃদয় ঘাহাতে ভ্রাতা ভগিনীভাবে অভ্যন্ত হইতে পারে এবং দকলেই ষাহাতে ভ্রাতা ভগিনীর কর্মব্য পালন করিতে পারেন, দেই আশয়ে তাঁহারা ভ্রাত্দিতীয়া প্রথা প্রবর্ত্তন করিয়া গিয়া-ছেন। ভ্রাতৃদিতীয়ার উদ্দেশ্য-অভ্যন্ত-রীণ উদ্দেশ্য, জাতাভগিনীর ভালবাসা অমুশীলিত হইয়া লোকের চিত্ত মার্জিত

হইবে, স্বার্থপরতা দ্র হইবে, দকলেই দকলের শুভাকাজ্জী হইবে। প্রাতৃদিত হইরা পুরুবের শুভকামনা ও পরিচর্ঘ্যা করিবেন, পুরুষ প্রাতৃস্থানীয় হইরা রমণীকে "ভগিনী" বিবেচনা করিবেন, তাঁহার দখান গৌরবরক্ষা করিবেন। প্রাতৃদ্বিতীয়ার শিক্ষা, বিশুদ্ধ প্রাতৃদ্বানীয় ভাব, নিশ্বাম ভালবাদা,ভালবাদিয়া ভ্যাগ স্বীকার। সহোদর সহোদরায় ইহার উৎপত্তি, পরিবার মধ্যে ইহার উপ্পত্তি, দমাজে ইহার বিস্তৃতি এবং বিশ্বজগতে ইহার পরিণতি—এই সন্তাবের নাম—এই স্বর্গীয়ভাবের নাম,—বিশ্বজনীন সন্তাব!

বঙ্গমহিলা ইংরেজকে অথবা ইংরেজমহিলা বাঙ্গালিকে "ভাই ফোঁটা" দিলেই
আত্দিতীয়ার উদ্দেশ্য সফল হইল, তাহা
নহে। আত্দিতীয়ার উপদেশামুসারে
আত্মগঠন করিতে পারিলে, প্রকৃতরূপে
সকলে সকলের আতা ভগিনী হইতে
পারিলে আত্দিতীয়ার মহত্দেশ্য সফল
হয়। আর্ধ্যগণ সেই আশ্রেই ইহা প্রবজিত করেন।

বর্তুমান যুগ সভ্যতার যুগ, বর্তুমান
যুগ স্বাধীনতার উন্নতির যুগ। বর্তুমান
যুগ শিল্পবিজ্ঞানের যুগ, বর্তুমান ধুগ
বাণিজ্য অর্থনীতির যুগ; এই সকলই
বর্তুমান যুগের গৌরব; কিন্তু বর্তুমান যুগ
ক্রেমার ধুগ নছে। এমন কথা বলি না
বর্তুমান যুগে প্রেমিক ম্যাট্সিনি, গ্যারিবক্ত্রী, কুমারী নাইটিকেল, বা ফাউলার

জন্ম গ্রহণ করেন নাই, এমন কথা বলি না বর্জ মান বুপে প্রেমিক কেশব চন্দ্র, বিদ্যা-দাগর ভারত-বক্ষ উজ্জ্ঞল করেন নাই— এই কথা বলিতেছি যে, যে নিকাম প্রেম দাধনায় ভারতীয় আর্য্যগন দেবতা হইয়া-ছিলেন, ভারতভ্মি দেবভ্মি হইয়াছিল, দেই প্রেম আর নাই! প্রেম গিয়াছে, দম্ভাবও গিয়াছে, আ্ভভাব ভ্রমীভাব কেবল কথার কথা হইয়াছে! কেন?

নরনারীগণ প্রত্যেকেই যে প্রত্যে-কের ভাতাভগিনী, সকলেই যে বিশ্ব জননীর সন্তান, একথা অনেকেই জানেন দন্দেহ নাই। কিন্তু কাজে করিয়া থাকেন ক্ষজন 2 আমরা প্রমাণ স্বরূপ আমা-দের বন্ধদেশে দেখাইতেছি। ভ্রাতভাব ভগ্নীভাবের তো কত রক্ম ব্যাখ্যা ও কত রক্ম উপদেশ শুনিতে পাওয়া যায়। কিন্তু প্রকৃত পক্ষে যদি সক-লেই ভাই দকলেই ভগিনী হইতেন, তাহা হটলে এদেশের এমন চেহার। ইইত না। যদি দকলেই আতার কর্ত্তব্য ভগিনীর কভুব্য পালন, করিতেন, তাহা হইলে এত বিবাদ, এত পাপ, এত মহাপাপ জ্মিত না--্যদি সকলেই ভাতার হাদ্য ভগিনীর ফুদ্য পাইতেন, তাহা হইলে পুরুষগণ রমণীগণকে পদ-দলিত করিতেই সুখী হইতেন না-রমণীজাতির স্থ-তু:খ, কর্ত্তব্যাকত ব্য, অবস্থা, উপযোগিতা বিষয়ে অন্ধবৎ কার্য্য করিতে পারিতেন না। ভাই হইয়া ভগিনীকে অঞ্চান অম্বকারে রাখিতেন না; ভাই হইয়া

ভাগিনীকে "পুরুষ" সাজাইতেও চাহিতেন
না; ভাই হইয়া ভগিনীকে বিশ্রী
ঠাট্টা তামাসা করিতে পারিতেন না;
ভাই হইয়া ভগিনীর নামে ওঙ্ ওঙ্গু
আঠার গণ্ডা নিন্দা বাহির করিতে পারিভোন না! ভগিনী যাহা জানেন, ভাই
তাহা শিখাইয়া দেন—ভগিনী যাহাতে
শিথিতে পারেন, ভাই প্রাণপনে তাহারই
উপায় বিধান করেন। ভগিনীর অঞ্চমোচন করিতে ভাই দর্মদাই প্রস্তুত
থাকেন। ভগিনীর ধর্মভাব, পবিত্রতা,
সজ্জা ও সম্মান রক্ষা করিতে ভাই প্রাণ-

পণে সহায় হন। ভগিনী ভাতার মঞ্চ-লের জন্য-ভাতার পরিচর্য্যার আত্মোৎদর্গ করেন?। এদেশে দে ভাত-কোথায়, ভগীভাবই (স তাই বলিতেছিলাম ভ্ৰাভ ভগীভাব এদেশে আজি কথার কথা इहेंग्राह्म ! अपू तक्रामाण नाइ, ममळा ভারতবর্ষের এই দশা হইয়াছে! যে পথে ব্যাস অপ্লাবক্র গিয়াছেন, জনক শিবি গিয়াছেন, গোতমী গাগী গিয়াছেন, দীতা শাবিত্রী গিয়াছেন, ভারতে:জাতীয়'ভাল-বাদাও বুঝি দেই পথে গিয়াছে ! (ক্রমশঃ)

চীন কাহিনী।

ভারতবাসী মাত্রেই চীনদেশের নাম অবগত আছেন। জগতের প্রাচীন সভ্য बन्धाः अस्ति मध्य होन अक्री अक्षान विवश পরিগণিত। যথন বর্ত্তমান স্মুসভ্য ইংলও উলক বর্কারের আবাসভূমি ছিল, যথন ইউরোপের অন্যান্য দেশ বিস্ময়াবিষ্ট হইয়া গ্রীশ ও রোমের প্রতি চাহিয়া **থাকিত ;** তাহারও পূর্কে ভারতভূমির ন্যায় চীনদেশও সভ্যজগতের শীর্ষস্থানীয় किल । চীনদেশকে সভা পাশ্চাত্য সাহার্য্যের প্রয়োজন হয় নাই। गिन्द्रामिशन मर्काव्यथम मिश्मर्गन निर्मान 🗣 মুক্তাক্তন প্রচলন ধারা সমস্ত সভ্যজগ-তেক সন্মান ও শ্রদ্ধার ভাজন হইয়াছে। ° চীনবাদিগণ প্ৰকালে প্ৰতিবেশী ভাতারদিগের উৎপাতে বিপদগ্রস্ত চইয়া

সংদশের উত্তর ও পশ্চিম দিক্ এক প্রকাণ্ড প্রাচীর দারা দেরিয়া লই-রাছে। এই প্রাচীর দীর্ঘে ১৫০০ মাইল ও উর্দ্ধে ৩০ ফুট এবং এপ্রকার প্রশস্ত যে ছয়জন অখারোহী নির্দ্ধিন্নে তাহার উপর পরস্পর পাশাপাশি হইয়া গমনাগমন করিতে পারে। চীনদেশের প্রাচীর পৃথিবীর আশ্চর্য্য পদার্থ কয়েকটীর মধ্যে একটী।

একে চীন দেশের ভূমি অভিশয় উর্কারা,তাহার উপর আবার চীনবাদিগণ অবিশ্রাস্ত পরিশ্রম করাতে উহা হইতে নানাবিধ শদা উৎপন্ন হইয়া থাকে। ছরারোহ পর্কাতমধাস্থ ভূধও সমূহ, ইহারা যেরূপে সমতল ও উর্কার ভূমিতে পরিণত করে, তাহা অন্যানা দেশীয় লোকদিগের

অন্ত্রনার। থাল কাটিয়া ইহারা অত্যুচ্চ প্রদেশে জল প্রবাহিত করিয়া সম্পূর্ণ অন্তর্কর স্থান হইতেও শদ্যাদি উৎপন্ন করে। চীনদেশীয় উৎপন্ন করে। চীনদেশীয় উৎপন্ন করের মধ্যে চা ও ধান্য প্রধান। চীনদেশজাত চা প্রায় পৃথিবীর দকল দেশেই রপ্তানি হইয়া থাকে। উত্যানজাত দ্রব্য এবং রেশম ও বংশবিনির্মিত দ্রব্যুদি এথানে প্রকুর পরিমাণে দৃষ্টিগোচর হইয়া থাকে। স্থানর স্থান্দর দ্রব্যু নিশ্বাণের জন্য চীন বাদিগণ ধরাতলে অদ্বিতীয় না হইলেও নিতান্ত অগণ্য নহে।

চীন দেশের অধিবাদীর সংখ্যা পৃথিবীর সকল দেশের অপেক্ষা অধিক। গুনিলে আশ্চর্য্যান্বিত হইতে হয়, এই ক্ষুদ্র চীন দেশে (৫০০০০০ বর্গমাইল স্থানে ৩৫০০০০০ প্রত্রিশ কোটী লোকের বাস; স্থানাভাবে অধিকাংশ অধিবাদী নৌপল্লী নির্মাণ করিয়া সমুদ্র গর্ভে বাস করে।

চীন রমণীদিগের মধ্যে ঘাহার পদতল যত ক্ষুদ্র সে তত স্থান্দরী নামে পরিচিত হয়, এই হেতু অতি শৈশব কাল হইতেই চীন রমণীরা ক্ষুদ্র ক্ষুদ্র লোহ পাত্মকা
ব্যবহার করিয়া থাকে।

পূর্ব্ব পুরুষদিগের পূজা করা চীনবাদীদিগের প্রধান ধর্ম। গুরুজনগণের
প্রতি ইহারা অসাধারণ ভক্তি ও দখান
প্রদর্শন করিয়া থাকে। চীন দেশে
বৌদ্ধর্ম্ম প্রচলিত। সাধারণ লোকে
বৌদ্ধর্ম্মাবলম্বী। সম্বাস্ত বংশীয়দিগের

মধ্যে অনেকেই কন্ফিউসিয়দ প্রবর্জিত
ধর্মাবলম্বী । বুদ্ধ ও কন্ফিউসিয়দ্ প্রবর্জিত
ধর্মাবলম্বী ব্যতীত চীনদেশে টাউ নামক
আর এক ধর্মদম্প্রদায় আছে। চীনবাসিগণ কাগজের মুদ্রা, গৃহ ও ব্যবহার্য্য
দ্রব্যাদি প্রস্তুত করিয়া অগ্নিতে দগ্ধ করে—
তাহাদিগের বিশ্বাস এরূপ করিলে প্র্কিপুরুষগণ প্রকৃত মুদ্রাগৃহাদি প্রাপ্ত হইবেন। অতিথিসৎকার চীনবাসীগণ
একটী মহৎ কর্ত্তব্য বলিয়া জ্ঞান করে,
ইহাদিগের কার্য্যকলাপে বিনয় ও সদাচারের অসদ্ভাব নাই বটে, কিন্তু ইহারা
সত্যের সম্বান রক্ষা করিতে জ্ঞানে না।

চীনবাসীদিগের আহার প্রতি বড়ই জঘন্স। বিড়াল কুরুর ইন্দুর টিকটিকি ভেক এবং তৈলপায়িক (আন্ত লা) প্রভৃতি জঙ ইহাদিগের থাদা। মৃত জন্তুর গলিত মাংদ ইহার। আদরের সহিত ভোজন কবিয়া থাকে। কোনও ভোজবাাপারে: বহুসংখ্যক লোক একত্রিত হয়। **আহা**-রাস্তে নৃত্যগীত ও নাটকাদিঅভিনয় ছারা আগদুকদিগকে আপ্যায়িত করা হইয়া থাকে। স্তীলোকগণ ভোক্ত ব্যাপারে লিপ্ত হইতে পারে না—তাহারা অন্ত-রাল হইতে সমস্ত ব্যাপার দেখিয়া থাকে। চীনবাসীরা যেরূপ অধিক পরিমাণে অহি-ফেন সেবন করে, অন্য কোনও দেশীয় সেরপ করে না। विक्शन नर्काञ्चथयम हीनामा व्यक्तिन ব্যবদা বিস্তার করেন।

ही बराजी हा युद्ध को गरन विमन्त्र

অভান্ত। ইহারা যদিও স্বভাবতঃ উদ্ধৃত, কিন্তু স্বজাতির মধ্যে ইহাদিগের একতার অসম্ভাব নাই।

চীনভাষার সহিত জগতের কোনও ভাষার সাদৃশ্য দেখা যায় না। এইভাষার এক একটী অক্ষর এক একটী শব্দ। অপরাপর ভাষায় যেমন ছত্রগুলি পত্রের বাম বা দক্ষিণ দিক্ হইতে লিখিতে আরম্ভ করিয়া দক্ষিণ বা বামদিকে শেষ করা হয়, চীন ভাষায় সেরপ হয় না। ইহার ছত্র গুলি পত্রের উর্দ্ধ দিক হইতে আরম্ভ হইয়া অধাদেশে সমাপ্ত হয়। অভাভ ভাষার সহিত এ ভাষার কোনও সাদৃশ্য না থাকি-বার কারণ এই, চীন বাসীরা অন্য কোন জাতির সহিত সংমিলিত হইতে ভাল-বাসে না।

চীনদেশে অপরাধীকে দণ্ড দিবার পদ্ধতি অতিশয় ভয়স্কর। অপরাধীকে বন্ধন করিয়া ভূমিতে শয়ন করান হয় এবং বংশথণ্ড দারা তাহার হস্ত পদাদি এরপ ভবে দলিত করা হয় যে ঐ সকল অদ্ধ একেবারে চূর্ণ হইয়া যায়। (ক্রেমশঃ)

পুরুষ ও স্ত্রীলোকের পক্ষে জ্ঞানেন্দ্রিয়ের তারতম্য ।

কিছুকান পূর্ব্বে কতকগুলি ইউরো-পীয় বিজ্ঞানবিৎ পণ্ডিত এই প্রশ্ন উপস্থিত করেন যে পঞ্চ জ্ঞানেন্দ্রিয় উভয় স্ত্রীলোক ও পুরুষে সমান ভাবে দেখা খায় কিনা ? এবিষয়ে মতহৈগধ হওয়াতে তাঁহার৷ পরীক্ষা ছারা এই বিষয় সিদ্ধান্ত করিতে মনস্থ করেন । তদমুসারে প্রকাশ্য স্থলে ভাঁহারা পরীক্ষা করেন। বিভিন্ন ধাড় ও শারীরিক অবস্থাসম্পন্ন শতাধিক পুরুষ একশত রমণী ও প্রোয় স্বেচ্ছাক্রমে পরীকাধীন হয়েন। পরীক্ষার পর পরী-ক্ষক বৈজ্ঞানিকগণ যে সিদ্ধান্ত ক্রেন, তংহাই আমরা বিবৃত করিতেছি। তাঁহারা বলেন যে স্পর্শেক্সিয় পুরুষ দ্রীলোকে অধিকতর তীক্ষ।

मीवन कार्या, मानागाथा, स्ठाकाछ। ইত্যাদি কার্য্যে স্ত্রীলোকগণ যে পুরুষ অপেক্ষা অধিকতর পারদর্শিনী হয়েন, তাঁহাদের স্পর্শেন্দ্রিয়ের অধিকতর তীক্ষ-তাই তাহার কারণ। দর্শন ও শ্রবণে-ন্দ্রিয় সম্বন্ধে পরীক্ষায় প্রমাণিত হয় যে ঐ पुरुषि हे सिय शुक्रय ७ खीलाक म्यान রূপেই তীক্ষ। রদনেন্দ্রির পুরুষে অধিক-তর তীক্ষ। পরীক্ষকগণ কতকগুলি এ-রূপ মতা প্রস্তুত করাইয়াছিলেন যাহাদের উপাদানে অতি . সামান্য তারতম্য ছিল। পুরুষগণ এই সকল খাদ্য আস্বাদন করিয়া তাহাদের মধ্যে তারতম্য অন্তত্ত করিতে मक्रम इरेग्नाहित्तन, किन्त जीत्नाकशन তাহা অন্নভব করিতে- পারেন নাই।

স্ত্রাণেন্দ্রিরের তীক্ষণ পুক্ষে অধিক না স্ত্রীলোকে অধিক এই প্রশ্ন করিলে অনে-কেই হয়ত উহা স্ত্রীলোকে অধিক এই উত্তর করিবেন, কিন্তু বস্তুতঃ তাহা পুক-ষেই অধিক, নানা পরীক্ষার পর ইহা প্রমাণিত হইয়াছে! একটা পরীক্ষার কথা বলা যাইতেছে। এক আউন্স প্রুদিক্ এসিড্ একলক্ষ আউন্স জলে মিশ্রিত করিলে পুকুষগণ তাহার আদ্লাণ পাইরাছিলেন কিন্তু উহা বিশহাজার আউক্সের অধিক জলের সহিত মিশ্রিত করিবার পর পরীক্ষান্থলে উপস্থিত কোন্ ত্রীলোকই তাহার আস্ত্রাণ পান নাই।

শরীরতম্ববিদেরা এই সিদ্ধান্ত করেন যে ব্যবহারের তারতম্য অনুসারে পুরুষ ও দ্রীলোকে কতকগুলি জ্ঞানেক্সিয় তীক্ষ-তর এবং কতকগুলি ক্ষীণভর হইয়াছে। একথার মধ্যে যে সত্য আছে, সন্দেহ নাই।

निजा ।

কাহার পক্ষে কতক্ষণ নিদ্রা ঘাওয়া প্রশস্ত, বয়স, ধাতু ও দেশের জলবায়ু অহু-সারে তাহা স্থির করা কর্ত্তব্য। কফ্যুক্ত ধাতৃবিশিষ্ট ব্যক্তির পক্ষে বায়ুপ্রধান ধাতু-বিশিষ্ট ব্যক্তির অপেকা অধিককাল নিদা যাত্য়া আবশ্যক। যৌবন কাল অপেক্ষা বুদ্ধকালে অধিক নিদ্রা প্রশস্ত। স্ত্রীলোক অপেক্ষা পুরুষের অধিক নিক্রা আবশ্যক। প্রায় সকল গ্রীমপ্রধান দেশে গ্রীমকালে দিবাভাগে নিদ্রা ঘাইবার প্রথা প্রচলিত আছে। দেখা গিয়াছে উহা শরীরের যাহার পক্ষে যতক্ষণ পক্ষে উপকারী। নিট্রা যাওয়া প্রশস্ত, তদর্পেক্ষা অধিককাল নিদ্রা গেলে স্বাস্থ্যের হানি হইয়া থাকে। স্বস্থাবস্থায় ছয় ঘণ্টার কম ৫ আট ঘণ্টার অধিক নিদ্রা যাওয়া কাহারও পক্ষে উচিত নহে। দক্ষিণ পার্খে হেলিয়া শয়ন করাই প্রিপাক ক্রিয়ার পক্ষে বিশেষ অন্তকূল। বৈদ্য শাল্পে ব্যবস্থা আছে, বামপার্শে শয়ন

করা প্রশস্ত, কিন্তু এই বিধি যে কেন প্রশস্ত তৎসম্বন্ধে উক্ত শাস্ত্রে কোনীকারণ প্রদর্শিত হয় নাই। আধুনিক ইউরোপীয় শ্রীরতত্তবিদগণ বলিয়া থাকেন একটা বোতল উল্টাইয়া ধরিলে থেমন হয়, বামপার্যে শয়ন করিলে পাক্**ছলীর** অবস্থা অনেকটা দেরূপ হয়, স্থতবাং ভক্ষিত দ্রব্য অনায়াদে পরিপাক ক্রিয়ার সঙ্গে সঙ্গে নিমুগামী হইতে পারে না; অর্থাৎ কৃপ হইতে জল উত্তোলন করার ন্যায় পাকস্থলীকে আয়াস স্বীকার করিয়া ভক্ষিত দ্ৰব্যকে স্বীয় গন্তৰ্য পথে লইয়া যাইতে হয়! কিন্তু দক্ষিণ পার্শে শয়ন করিলে ভক্ষিত দ্রব্য স্বাভাবিক ভাবে অনায়াদে স্বীয় পথে প্রেরিত হয়। অত-এব দক্ষিণ পার্বে হেলিয়া শয়ন করাই নিমপুষ্ঠ হইয়া শয়ন করাও সাস্থ্যপ্রদ। নিষিদ্ধ। নিমুপ্ট হইয়া শয়ন করিলে শোণিত সঞ্চালনক্রিয়া বাধা প্রাপ্ত হয়,

শ্বতরাং নানা প্রকার ছুঃস্বপ্ন ও অজীণতা উপস্থিত হয় । উদর পূর্ণ করিয়া, গুরু-পার্কদ্রব্য আহারের পর নিম্নপৃষ্ঠ হইয়া শয়ন করিলে নিদ্রাবস্থায় কাহারও কাহা-রও মৃত্যু পর্যন্ত ঘটিয়া থাকে । স্ক্র্-শরীর লোক রাত্রে আহারের পর শয়ন করিয়াছে, প্রাতে শয়ায় মৃতাবস্থায় পতিত রহিয়ছে, এরপ ঘটনা অনেক হইয়া থাকে । এরপ অবস্থায় গুরুতর ভোজ-

নের পর নিমপৃষ্ঠ হইয়া শয়নই মৃত্যুর মুখ্য কারণ, অনেকানেক ভিষক একবাকো এই কথা বলিয়া থাকেন। নিজাবস্থায় পরিপাক ক্রিয়া অতি ধীরে ধীরে সম্পন্ন হইয়া থাকে, এই জন্য আহারের পর অস্ততঃ ছই ঘণীকাল বিশ্রাম করিয়া তৎ-পরে নিজা যাওয়া কর্ত্তব্য। যাঁহারা অজী পতা বা অম্বল রোগে কট্ট পান, এই নিয়ম ভাঁহাদের পক্ষে বিশেষ রূপে পালনীয়।

বাঙ্গালা প্রবচন।

র ।

১। রয়ু চৈয়া বলা,
 তিন কলির চেলা।

< । রঙ থাক্লে রঙে কড়ী, রঙ ফ্রালে গড়াগড়ি।

৩। রঙ্গ দেখে অঙ্গ জলে।

🖁 । রতন গর্ভের পেতন স্কান ।

ে। রতনে রতন মিলে।

৬। রত্নগর্ভা।

१। রথ দেখা, কলা বেচা।

৮। রণের ঘোড়া।

৯। রাই কুড়ায়ে বেল।

১০। রাথালের হাতে শালগ্রাম।

১১। রাথে গোঁদাই মারে কে, মারে গোঁদাই রাথে কে ?

১২। রাগ ক'রে আপনার ঘরে বেশী করে থাবে।

১০। রাগথানিও আছে, স্থানিও আছে। ১৪। রাগ চণ্ডাল।

১৫। রাঙা মূলো।

১৬। রাঙ্কের রাধা।

১৭। রাজা গেল পাটনে.

भूख देश्त (मग,

মাঝখানে বলে আছে নেড়া দরবেশ।

১৮। রাজা থাক্তে,

কোটালের দোহাই।

১৯। রাজা পশ্রতি কর্ণাভ্যাং।

২০। রাজায় রাজায় যুদ্ধ হয়, উলু খাঁকড়ার প্রাণ যায়।

২১। রাজার মা আনর পঞাতেলী।

২২। রাজার দোবে রাজ্য নষ্ট প্রজা কষ্ট পায়, গিন্ধীর দোবে গ্রেস্ত নষ্ট, লক্ষ্মী ছেড়ে যায়।

২৩। রাজার ভাল বাদা স্মার গৃহচ্ছের খাদী পোষা। ২৪। রাজার রাজ্যপাট, গরিবের শাক ভাত।

২৫। রাজার রাণী, কাণার কাণী।

২৬। রাজার হাল, মর্গে বাস।

২৭। রাধা থেয়ে কান্না পায়।

২৮। রাতারাতি বামনা হইল মহারাজ।

২৯। রাতের বেলা ভূতের ভয়।

৩০। রাম না হতে রামায়ণ।

৩১। রাম নামে ভূত পলায়।

৩২। রাম বলা ধুতি তোলা ছদিক কি দাজে ?

৩৩। রাম রাজ্যে বাস।

৩৪। রাম লক্ষণ ছটী ভাই, রথে চড়ে স্বর্গে যাই।

৩৫। রাম ছেন যেন স্বামী পাই।

৩৬ ৷ রামে মারুক আর রাবণে মারুক্

৩৭। রাবণের চিতা।

৩৮। রাত্র দশা।

৩৯া। কচে পুছে থা, মন চলেতো কা

80 । ज्रल निया भूख भास।

१)। ऋत्भ काका

৪২। রূপে লক্ষী, গুণে সরস্বতী।

৪০। রোকা কড়ি চোকা মাল।

৪৪। রোগ কেব**ল মু**ড়িতে,

আর ভুঁড়িতে।

৪৫। রোগা চড়ুয়ের মুলুক ধুড়ে বাদা।

৪৬। রোগিণো দেবতাভক্তঃ।

৪৭। রোগী এখন তখন,

রোজাছ মানের পথ!

৪৮। রোগী ভূই অম্বলে, সন্ন্যাসী ভূই কম্বলে। -

৪৯। রোগের **শে**ব,

আবার ঋণের শেষ।

৫০। রোজার ঘাড়ে বোঝা।

৫১। রেন্দ্রির তাত দয়,

বালির তাত দর না।

প্রহেলিকা।

তিন বর্ণে নাম তার অতি ম্ল্যবান,
আদ্য বর্ণ ছেড়ে দিলে দেবের প্রধান।
মধ্য বর্ণ ছেড়ে দিলে হরে বায় মোর,
শেষ বর্ণ ছেড়ে দিলে শত্রু হয় খোর।
বল দেখি হেন বস্তু কি আছে এ ভবে,
যার তরে লালায়িত সর্বাদাই দবে ? ১

সাগরের মাঝে থাকি নাহি থাকি নীরে, নগরের মাঝে থাকি না থাকি সহরে। গগনেতে আছি আমি—আকাশেতে নাই কি নাম আমার ভেবে বল দেখি ভাই ॥২

তিন বর্ণে নাম তার কি স্থল্পর অঙ্গ !
তক্ষপ'রে বাদ করে নহে দে বিহঙ্গ ।
আত বর্ণ ছেড়ে দিলে শ্রেষ্ঠ জীব গণি,
মধ্য বর্ণ নিলে বার বৃদ্ধিবে তথনি।
শেষ বর্ণ লোপে হয় তরজ প্রবেদ,
চাতুরীতে তার কাছে পরাত্ত সকল ॥ গ

তিন বর্ণে নাম তার অপূর্ব চেহার।। ্ৰাধা নাই স্বেচ্ছামত করে চলা কেরা। স্পাদ্য বর্ণ ছেড়ে দিলে সকলেরি হয়, सभा वर्ग ছেডে निला (मध्य करत छत्र। শেষ वर्ग ছেড়ে निल विभूथ नकला, যে ভাঙ্গিবে বাখানিব বৃদ্ধির কৌশলে॥ ৪

তিন বর্ণে নাম তার বাদ করে অঙ্কে, বাড়ায় আদর তার আখিনে এ বঙ্গে। মন্তক কাটিলে হবে কাল নিরূপণ, মাঝ কেটে দিলে তার হইবে গহন। অন্তিমে আকার দিলে হবে চলুহার. বল দেখি হে ভগিনি কি নাম তাহার ? ৫

তমু নাই তবু আমি দৰ্কত্ৰ প্ৰকাশ. মোর মাঝে বাস করে সবে বার মাস। আমারে ঠেলিয়ে চলে ধরিতে না পায়, আমি কিন্তু লেগে থাকি সকলেরি গায়। আমি না থাকিলে নাশ বিশ্ব চরাচর, কি নাম আমার বল ওহে বিজ্ঞবর ? ৬

জনতার মাঝে থাকি সকলেই জানে. সকলেই দেখে মোরে শয়নে স্বপনে। नश्रत नश्रत थाकि वहरन मनरन, অশনে বসনে থাকি দশনে বদনে।

শজনে বিজনে থাকি জনমে নিলানে, কি পদার্থ বল আমি বিধির বিধানে ? ৭ অবিনাশী বস্তু আমি বিজ্ঞানীরা কয়, আমা বিনা সৃষ্টি নাশ জানিবে নিশ্চয়। আমাকে আশ্রয় করি আছে এই ধরা, অসীম সৌরজগত গ্রহ চল্ল তারা। আমার স্বরূপ কেহ ভাবিয়ে না পায়. সুক্ষ হতে সুক্ষতর বলেন স্বায়। আছয় অন্তিত্ব মোর নাহিক বিস্তার, সাকার পদার্থ আমি নহি নিরাকার ॥৮ কলিকাতা আছি আমি ক'রে বাডীঘর, আমার দেবায় রত কত নারীনর। আমার মহিমা দবে করেছে প্রচার, বছরে দেবক বাড়ে হাজার হাজার। থামে গ্রামে ঘরে ঘরে মোর পূজা হয়. কায়মনে মোর কাজ ধর্মকর্ম ক্ষয় ॥ ৯ রমণীর প্রিয় আমি অসিত বরণ, কায়োমনে করে তারা আমারে যতন। অভাব হইলে মোর কত কষ্ট মনে. স্বরকোণে বদে থাকে বিষয় বদনে। ধার করে এনে মোরে করয় ধারণ. কথঞ্চিৎ মনকন্ত হয় নিবারণ। वन मिथि ভেবেচিস্তে कि नाम श्रामांत्र, নারীর সম্পত্তি আমি দান বিধাতার ॥২०

সতী ও শাস্তি।

(৩৪৩ সংখ্যা ১২৭ পৃষ্ঠার পর)

यष्ठे পরিচ্ছেদ। সম্ভান ভূমিষ্ঠ হইলে পর পরিষার

200

তাহার চক্ষু ছুইটি সর্বাত্তে ধোওয়াইয়া দেওয়া কর্ত্তব্য। তার পর অল্প ক কাপড় গরম জলে ভিজাইয়া তদারা | জলে তাহার *দর্কা*শরীর ধোওয়াইয়া ওক্ল

দক্ষ কাপড় দিয়া তাহার গা বেশ করিয়া মুছাইয়া দিতে হইবে। তার পর এক-থানি সরু পরিষ্কার কাপড় তাহার গায়ে দিবে। তাহা ছাড়া আমাদের দেশের যাহা করিয়া মেয়েরা সচরাচর যাহ। থাকেন, তাহা মনদ নয়। সন্তান প্রেস-বের পর অনেক স্থলে মাতা "বেছঁশ'' ও তুর্বল হইয়া পড়েন। কিয়ৎকাল পরে মাতার "হুঁশ" হইলে এবং উঠিলে ছেলেকে ভাঁহার কোলে দেওয়া উচিত। তিনি কোলে লইয়া তাহাকে স্তনপান করাইবেন। ছেলেদের প্রথমে স্তনপান করান বিষয়ে আমাদের দেশের মেয়েদের মধ্যে ভারি একটা কুদংস্কার আছে, দেটি এই যে, স্তনে প্রথমে যে ছুধ্ আহিদে, তাহা ভাল নয়, তাহা বিধাক্ত, স্ত্রাং তাছা গালিয়া ফেলিয়া দেন। কিন্তু এরপ করা ভারি ভুল। তাঁহারা যাহা বিধাক্ত মনে করেন, বাস্তবিক নয়। ঐ প্রথম তুব ছেলের ভাবি উপ-কারী। দ্যাময় প্রমেশ্বর, যিনি সন্তান ভূমিষ্ঠ ইইবার আগে, নে কি থাইয়া বাঁচিয়া থাকে, তাহার যোগাড় করিয়া রাথিয়াছেন, ইহা কি সম্ভব, যে তিনি দস্থানকে কষ্ট দিবার জন্ম প্রথম স্তন-তুগ্ধের সহিত বিষ মিশাইয়। রাথিয়াছেন ? অধিকন্ত চিকিৎসা-বিজ্ঞানবিৎ পণ্ডিতগণ পরীক্ষা করিয়া দেথিয়াছেন যে মায়ের স্তনে প্রথমে যে হ্ব আসিয়। তাহা সম্ভানের পক্ষে অত্যন্ত উপকারী। উহা এক পক্ষে যেমন খুব পুষ্টিকর, অন্ত

তেমনি পক্ষে আবার রোগনাশক। ছেলের পেটে ঘদি কোনরূপ গোলমাল থাকে, তাহা ঐ প্রথম হুধে সারিয়া যায়। ঐ প্রেথম হুধ কেবলমাত্র খাছা নয়, উহা একটি মহোষধ। স্থতরাং কুদংকার বশতঃ ঐ তুধ গালিয়া ফেলিয়া দেওয়া উচিত নয়। পাশের একটি প্রীলোক বলিলেন, "আমরা আগে এ কথাটি জানভূমনা, আপনার মুথে আজি ভন্লুম্। আগে মনে কতুম্ ও হুধ্টা দেখতে পুঁষের মত, উহা থাওয়ালে ছেলের অস্থ হবে, তাই আমরা গেলে ফেলে **দিডুম্**। ও তুধ্ এমন উপকারী, আমরা আগে जानल कि काल मिया? में ब्राजिनी বলিলেন, যাহাহউক, আর কগনও ফেলি-বেন না। অনেক মেয়ের আবার স্তনে তুব আসিতে দেরি হয়, যতক্ষণ পর্যাম্ভ স্তনে তুধনা আবে, ততক্ষণ আমাদের দেশের মেয়েরা গাই সুধ ছেলেকে থাইতে निया थाकिन। खानक चल लिया यात्र, যে তাঁহারা ছেলেকে যে ত্ব থাইতে দেন তাহা অত্যস্তাম। ছেলের পক্ষে এই ঘন তুধ হজম করা বড় সোজা কথা নয়। আপনারা দেথিয়াছেন স্তনের হুধ কত পাতলা, গাইয়ের ছব কি সেই রক্ম পাতলা করিয়া ছেলেকে থাইতে **দেওয়া**ু উচিত নয়? আমাদের দেশের অনেক মেয়ে তাহা করেন না। ব্যবস্থা করিলেন ছেলের জন্ত পাত্রশা ছুব, ভাঁহারা ব্যবস্থা করিলেন ঘন, ব্রুক্ मिथि এ मांव कांत ? हेश कि क्लांला

দোৰ ? যতক্ষণ পৰ্যন্ত স্তানে ছ্ব না আনে, ততক্ষণ পৰ্যন্ত এক ভাগ গাই ছ্বে ছুই ভাগ গরম জল মিশাইয়া পাতলা ক্ষেরিয়া ছেলেকে খাইতে দেওয়া উচিত। জনপান করাইবার সময় একবার এ জন একবার ও জন, এইরপ কিরাইয়া খ্রাইয়া স্তনপান করান উচিত। জনেক মেয়েকে আবার এরপ করিতে দেওিরাছি, যে ছেলেকে একটি জনপান করাইতেছেন, ছেলে এফিকে জনপান করিতে করিতে খুমাইয়া পাজিল। অধিকাংশ মেয়েকে অনেক সময় দেওয়াছি, শুইয়া ছেলেকে জনপান করাইয়া থাকেন। শোয়াইয়া জনপান

করাইলে যে কি সর্কানাশ হয়, আমাদের
দেশের মেয়েরা তাহা বোনেন না।
ছেলেরা যে "ছ্ধ তোলে" তাহার একটি
কারণ ছেলেকে শোয়াইয়া ছ্ধ থাওয়ান।
শোওয়াইয়া থাওয়াইলে ছ্ধ একবারে
গিয়া তাহার পেটে পড়িতে পারে না,
স্থতরাং তাহা উর্কাগানী হয়। যদি মাতা
একটুক্ট স্বীকার করিয়া নিজে বিদিয়া এবং
ছেলেকে কোলে বদাইয়া ছ্ধ থাওয়ান,
তাহা হইলে আর রাত ছুপুরে "ডাইন
ছাড়ান ওকা" ডাকিতে হয় না। আর
দারারাত ছেলেকে কোলে নিয়ে থাক্তে
হয় না। আর "গোটী শুদ্ধ" দকলকে
জারাইয়া কাঁদিয়া হাট পাকাইতেও হয় না।

মহারাণী সীতাবিলাস। *

দেবজন্মনীর বিবাহের পরে, ভাঁহার

ক্রিকা মহিশুরে আসিয়া বাস করেন।

এখানে ৮০ অশীতি বৎসর বয়সে ও
ক্রিয়ার পরিণয়ের দাদশ বৎসর পরে ইহার

মৃত্যু হয়। ইহাঁর সন্তান অর্থাৎ মহারাণীর

ভাতা বাসবরাজ দত্তক পুত্র রাথিয়া মানব
ক্রীকা সম্বরণ করেন। এই দত্তকপুত্র

ক্রিবার নিঃসন্তান হওয়াতে দত্তকপুত্র

ক্রেন। এই দত্তক প্রপাতি কাল
ভাবে পতিত হইয়াছেন; তাঁহার মাতা,

ত্রী ও সন্তান একবে মহিশুরে অবস্থিতি

ক্রিতেছেন।

'মৃত্যু নিকট' এইটি এক পক্ষকাল পূর্ব্বে বৃঝিতে পারিয়া মহারাণী স্বীয় শুক্রকে ডাকিয়া স্থানীয় প্রথান্নসারে প্রায়-শিচ্ছাদি ক্রিয়াকলাপ সম্পন্ন করেন ও পুত্রকে ডাকিয়া উক্ত কার্য্য গুলি অক্ষুণ্ণ ভাবে সংরক্ষণ করিতে বলেন। মৃত্যুর অব্যবহিত পূর্ব্বে পুত্র ও পুত্রবধূকে ডাকিয়া এই উপদেশ দেন যে, 'শিশু সম্ভানের মৃত্যুতে শোকাভিভূত হওয়া মানবের স্বভাবদিদ্ধ ধর্ম্ম। কিন্তু অত্যম্ভ অভিভূত হওয়া উচিত নছে; হওয়াতে কোনও কল নাই। ভোমাদিগের বিভৃত

🗮 রেখকের অনুস্তি ভিত্র কেহ এই প্রবন্ধ কোনরপে ব্যবহার করিতে পারিবেন না। বা, বে', স।

রাজ্যের দিকে দৃষ্টি রাখিবে; তোমাদিগের শাসনাধীন সহস্র সহস্র প্রজা ভোমাদিগের তাহাদিগের প্রতি দৃষ্টি সম্ভানের মত। রাথিবে; অবশিষ্ট যাহা কিছু দ্রপ্টব্য তৎ-সমস্ত দর্বশক্তিমান পরমেশ্বরের হস্তে সম-র্পণ করিবে।" "দেওয়ান জম্মের মত তাঁহার নিকট বিদায় গ্রহণ করিতে ্যাইলে তিনি বলিলেন "তাহার প্রধাত দেওয়ান রঙ্গচালু যেরূপ দক্ষতার সহিত রাজ্য পরি-চালনা করিয়াছিলেন, তিনি যেন সেইরূপ করেন।" এই সকল সত্পদেশ প্রদান করিয়া গত ২৬এ মার্চ্চ রবিবারে মহারাণী দেবজন্মনী নশ্বর দেহ ত্যাগ করেন। অতি সমারোহে প্রাতে সাডে **সাতটার সম**য় মহারানীর মৃতদেহ শাশানাভিমুখে বাহিত হইতে থাকে। চারিদিকে আবালর্গ্ধ-বনিতা ধনী নিধনী প্রজাপুঞ্জ শোকার্ত্ত হইয়া দণ্ডায়মান। মহারাজ ক্ষণ্ডী

উদয়ারের যেস্থানে সৎকার্য্য হয়, তাছার বামপার্খে ইহার ভান নির্দিষ্ট হয়। মুখা-গ্রির পূর্কে ও দাহের পর ধন ধান্য তঙু-লাদি প্রচুর পরিমাণে অকাতরে বিতরিভ মৃত্যুর দিন ও তৎপরদিন ও শ্রাদ্ধের তিন দিন (৪ঠা,৫ই ও ১ই এপ্রেল) সমস্ত আপীস বন্ধ রাখিবার জভা মহিশুর গভর্ণমেন্ট গেজেটের এক বিশেষ সংখ্যা প্রকাশিত হয়। মহিশুর ও বান্ধালোর রাজপ্রাদাদ হইতে স্বর্গীয়া মহারাণীর বয়:ক্রম জ্ঞাপক ৮৯টি তোপ ধ্বনি প্রতি মিনিটে হইতে থাকে ৷ গত ৬ই এপ্রেল পর্যান্ত রাজ্যের মধ্যে সমস্ত প্তাকা অর্জ উজোলিত মান্তল হইবার জাচেশ বিঘোষিত হয়। ''মহীশুর হেরল্ড'' ''ইণ্ডিয়ান্স্পেক্টের" ''ইভিনিং মেল" প্রভৃতি সংবাদ পত্রে থেদস্থচক মৃত্যু বিব-রণ প্রকাশিত হয়॥

পুস্তকাদি সমালোচনা।

১। আকাশকুত্ম কাব্য—জীনবীন
চন্দ্র দান এম, এ, প্রণীত। একটা যুবক
ও বালিক। অকুত্রিম প্রেমে বদ্ধ হইয়া
একস্রোতে জীবন ভাদাইবার আশা করিয়াছিলেন, পিতা ধনলোভে বালিকাকে
অন্যপাত্রসাৎ করিলেন, প্রণয়ীদের আশা
"আকাশকুত্মম" হইল, এই বিষয় লইয়া
কাব্য রচিত। নবীন বাবুর এই ৰাল্যরচনায় ভাঁহার কবিত্বশক্তির পরিচয়
পাওয়া যায়। ইহার দক্ষে বে কয়েকটী
কুদ্র কবিতা আছে তাহা অতি সুকর।

২। ভারতবর্গীর ভক্ত কবি, প্রথমভাগ—জীবীরেশ্বর চক্রবর্ত্তি প্রণীত, মূল্য
।৯০ আনা। কবীর, নানক, ভূলদীদাদ
ও ভূকারাম এই চারিটী ভক্ত দাধকের
জীবন ইহাতে বর্ণিত আছে। এতৎপাঠে ধর্মান্ত্রাগী নবনারীর উপকার
হইবে। গ্রন্থকার অন্যান্যভক্তের জীবনী
প্রকাশের দক্তর করিয়াছেন, তাহা আমরা
স্থাসিদ্ধ দেখিতে চাই।

৩। An Indian Woman's Impeachment, সুক্তর বাই এচ্ পাউরার

প্রণীত। অহিফেন সেবনে ভারতের কি সর্বনাশ হইয়াছে, কয়েকথানি ছবি সহিত অদয়বিদারক ঘটনা সকলের বর্ণনা দারা তাহা প্রতিপন্ন করা হইয়াছে। গ্রবণ্মেন্টের চক্ষ্ণ থোলা আবশ্যক।

8 । विश्ववात जामा—मृत्या ८० श्रमा ।

বরাহনগর হিন্দু বিধবাশ্রমের উপকারিত।
প্রদর্শনই এই ক্ষুদ্ধ পুস্তকের উদ্দেশ্য।
ইহা কথোপকথনচ্ছলে নিগিত। বিধবাদিগের তৃঃথের অবস্থা এবং তাহা
মোচনের উপায় সম্বন্ধে ইহাতে অনেক
কথা আছে।

নূতন সংবাদ।

- ১। মজঃকরপুর ও পূর্ববাঙ্গালার আনেকস্থানে বিষম জলপ্লাবন হইয়াছে। ঢাকা জেলার স্থানে স্থানি ছভিক্ষ দেথা দিয়াছে।
- , ২ । ইংলওেশ্বরী বাতরোগে আক্রান্ত হইয়া কট পাইতেছেন শুনিয়া আমর। ছঃথিত হইলাম। ঈশ্বর তাঁহাকে নিরা-ময় করুন।
- । বিক্টোরিয়া কলেজ শিল্পবিজ্ঞা
 শিক্ষা দিবার জন্য সম্পুতি একশ্রেণী
 খ্লিয়াছেন, বেতন ২ টাকা। মেডাল
 ও ছাত্রবৃত্তি ভারা স্থদক্ষ ছাত্রীদিগকে
 উৎসাহদান করা হইবে।
- ৪। বিবি টিলি ষ্টিভেন্সান, ক্রেঞ্ সেলডম, অনীতা নিউকম ও কুমারী এলিদ্ ক্লেচার এই চারিটা রমণী আদিম জাতি-দিগের সম্বন্ধে গবেষণার জন্য ওয়াসিংটন এছে পলাজিকাল্ সমাজের সভ্য বলিয়া মনোনীত হইয়াছেন।
- ৫। থিলাতের খাঁ সিংহাসনচ্যত

 হইয়াছেন। তাঁহার জ্যে

 গৈ তাঁহার পদাভিষিক্ত হইয়াছেন। বড় খা

 'সাহেবকে যাবজ্জীবন বন্দী থাকিতে হইবে।

 ৬। এলাহাবাদের পোই আফিনে

- অনেক স্ত্রীলোক কেরাণী হইয়াছেন। কলিকাতার বড় ডাকঘরেও এরূপ ব্যবস্থার কথা হইতেছে। সিংহলের ডাকবিভাগের কর্ত্তাসাহেব স্ত্রী কেরাণীর জন্য বিজ্ঞাপন দিয়াছেন।
- ৭। বৃদ্ধপুতে সেতু নিশ্বাণের জন্য
 ময়মনিদিংহের জমীদার বাবু যোগেল্ডকিশোর রায় চৌধুরী ৩০০০ ত্রিশ হাজার
 টাকা দিয়াছেন।
- ৮। ডাক্তার শ্রীমতী কাদস্বিনী গঙ্গোপাধ্যায় বঙ্গমহিলাদিগের প্রস্তুত যে সকল শিল্পজাত সঙ্গে লইয়া গিয়াছিলেন, তঙ্গর্শনে ইংলণ্ডের রাজপরিবারের মহিলা-গণ প্রশংসা করিয়াছেন এবং প্রিন্দেন ক্রিশ্চিয়ানা সে গুলি চিকাগোতে পাঠাই-বার সাহায্য করিয়াছেন।
- ৯। নব্দীপের প্রধান নৈয়ায়িক মহামহোপাধ্যায় পণ্ডিত ভ্রনমোহন বিদ্যারত্ব উদরাময় রোগে দেহত্যাগ করিয়াছেন।
- ১০। মেন নামী এক বিএ উপাধি-ধারিণী মাদ্রাজী রমণী এবৎসর গিলকাইট রুত্তি পাইয়াছেন, ইনি বিলাতে গিয়া শিক্ষা করিবেন। বিজয়পুরের মহারাজা

ইহার দাহাধ্যার্থে বার্ষিক হাজার টাকা করিয়া দিবেন।

১১। বোম্বাইয়ের প্রসিদ্ধ দেশহিতৈশী হাইকোর্টের বিচারপতি কাশীনাথ ত্রিম্বক তিলাঙ গত ৩১এ আগ্রন্থ পরলোকগমন করিয়াছেন। ইনি যেমন নানা বিদ্যায় পারদর্শী, তেমনি বাগ্মী এবং তেমনি দেশহিতকর কার্য্যে অগ্রণী ছিলেন। ইহাঁর বিয়োগে ভারতমাতা বিষম ক্ষতিগ্রস্ত হইলেন।

১২। বরাহনগর হিন্দু বিধবাশ্রমের ক্রমশঃ উন্নতি দেথিয়া আমরা পরম সম্ভ ইইলাম। ইহাতে এখনও ১০।১২টী হিন্দু বিধবার স্থান হইতে পারে। প্রার্থিনীগণ বাবু শশিপদ বন্দ্যোপাধ্যায় মহাশয়ের নিকট সকল সংবাদ অবগত হইতে পারিবেন।

পত্তে বর্তমান সময়ের প্রধান প্রধান ইংরাজ মহিলাদিগের বিষয়ে এইরপ মজবা প্রকাশ করিয়াছেন;--বিবী বুথ পরলোক-গতা। বিবী আমওয়েল বুথ পতিতোদ্ধারে এরপ বাস্ত, যে রাজনৈতিক তাঁহার অবদর নাই। বিবী ফদেট হোমরলের বিরুদ্ধে যুদ্ধে শরীর প্রাণ মন ঢালিয়া দিয়াছেন। বিবী বেসান্টের ঘেরপ বিদ্যা, বুদ্ধি, গুণ ও চরিত্র তাহাতে তিনি রাজনৈতিক ক্ষেত্রে সর্বাপেকা কার্যাক্ষম, কিন্ত তিনি থিওজ্ঞাীৰ কাৰ্য্যে আছোৎ-দর্গ করিয়াছেন। ডচেদ এডিলান এীক ভাষায় পারদর্শিনী, গুণবতী ও স্থলেথিকা এবং সম্রেণীর রমণীগণের উন্নতির বিশেষ সহায়তা করিয়াছেন. কিন্তু তিনি কোন দলের নেত্রী হইবার উপযুক্ত নন। লেডী হেনরী সমারসেট ১৩। একথানি বিখ্যাত ইংরাজী এই নেত্রীত্ব পদ লাভ করিয়াছেন।

বামা-রচনা।

विकदन।

বিজন ভূধর মানে একেলা বদিয়া, জ্যোতির্ময় মূর্তিথানি ধ্যান করে থাকি; অাধারেতে আলোকের জ্যোতি প্রকাশিয়া. জদয়ের থরে থরে ছবিথানি আঁকি। শীতল বাতাস ওই যায় পরশিয়া, প্রকাশিয়া তাঁর জ্যোতি হাদয় মানারে; প্রেমের প্রদীপ ছেলে আরতি করিয়া. স্থাপিব প্রেমের মূর্ত্তি নাশিয়ে জাধারে। তাঁহার আলোকে আমি পাইব আলোক, হাদয় মাঝারে আমি রাখিব তাঁহায়, যা বলে বলুক ওই জগতের লোক, একেলা যদিও আমি তব্ও দোঁহায়।

রাথিব ভাঁহারে আমি আপনার মনে; যেমন কমল থাকে দলিল শয়নে।

> **এ**মতী হিঙ্গনকুমারী ঘোষ রায়না, বর্দ্ধমান।

ফটে। বিচার।

ডুই আর আমি ভাই! ছবির ভিতর, ভাই বো'ন হুই জনে, বদে আছি এক দনে, এঁ কেছে স্থের চিত্র, কুতী চিত্রকর !

অনস্থ সন্তোষ প্রীতি, সুথমাথা ওভ শ্বতি. त्रत्व अहे इवि मा अ इहेश अमत ! **थ**रे मिन, मान, मत् কোন্ দূরে পড়ে রবে, আমরা মিলিয়া র'ব অনন্ত বৎসর !— **ভুই আ**মি র'ব অই ছবির ভিতর ! ১ **শাংধ কি এ ছ**বি দেথি অতৃপ্ত অন্তর ?— তুই আমি একসনে, আনন্দ ধরে না মনে, **ছপ্তিহীন এ** বাসনা, মর্ম ভিত্র ! কি দেখে গিয়েছি ভুলে, বলিতে পারিনে খুলে, **ছুই এ রহ**দ্য ভেঙে, বল্ অতঃপর— দেথিলি তে ছটি ছবি, কে ছেন স্থন্দর १২ বল ভাই! ছজনের কে হেন স্থলর >---চাহিতে কাহার পানে, উन्नाम উथल প्राल, কার মুখ শরতের কচি শশধর ৭ দংশারের শত জালা, শত কালকৃট ঢালা, ভুলি চেয়ে কার চোখে—নীল ইন্দীবর ১ বৃশ্ব দেখি, ছজনের কে হেন স্থলর ? ৩ বৰু ভাই! হুজনের কে হেন স্থুন্দর ১ কার মধুমাথা হাদে প্রভাত কিরণ ভাসে, বিরাজে বাসন্তী উষা স্থমেরু উপর ? কার তরে সন্ধ্যাকালে, প্রকৃতি দোণার থালে, আনে উপহার হীরা মাণিক নিকর ১ বলু দেখি, ছজনের কে হেন স্থন্দর ? ৪ বৃদ্ ভাই ৷ ছজনের কে ছেন স্থন্দর ?— त्मानामूथी निशक्ता, কারে করে অভ্যর্পনা, ক্রে মুখ চেয়ে হাসি হাসে স্থাকর ? আনন্দ জাগা'তে কার

স্থেম্য়ী বরিষার

প্রাণ গ'লে ঢেউ চলে, তর তর তর ? বল দেখি গুজনের, কে হেন স্থলর 🤊 ৫ বশু ভাই! ছজনের কে হেন স্থন্দর १-আজিও মরত-বায় লাগেনি কাহার গা'য় স্বরগ-সৌরভ ভরা কার কলেবর ? জগতের পাপলেশ পরশেনি কার কেশ, কে সে দেবতার শিশু, কে সে মনোহর গ বল্দেখি, ছ্জনের কে হেন স্থন্দর ১৬ বল ভাই। হুজনের কে হেন স্থানর, সরলতা মধুরতা, মিশিয়া রয়েছে কোথা ? প্রীতি পবিত্রতা—যাহা ত্রিদিব উপর, – মাথিয়া কাহার হিয়ে, বিধি দেছে পাঠাইয়ে, দেখা তৈ এ মর পুরে দেবের আদর ? বল্দেখি, ছুজনের কে হেন স্থন্দর ১ ৭ বলু ভাই! ছজনের কে ছেন স্থন্দর ?— হেরি কার ক্ষুদ্র দেহ, বুকে ওঠে প্রীতি স্নেহ, মরমের তারে তারে বাজে দপ্ত স্বর!— বল্ দেথি কার রূপ প্রাণতোষ অপরপ ! অনস্ত সংস্থাব লভে বিরক্ত অন্তর। বলুকে আমার চোথে এমন স্থন্দর ১৮ বল্ কে আমার চোথে এমন স্থন্দর, ষদি তার ছবি নিয়ে প্রাণে রাখি মিশাইয়ে, পশিবে কি তার ছটা আমারো ভিতর ১ তারি মত নির্মল श्दा कि ध क्षमिजन, পুনঃ কিরে ভেঙে চুরে গড়িবে ঈশ্বর १-এই আমি তারি মত হব কি স্থলার ? ৯ লেখিকা-"मिमि"

বামাবোধিনী পত্রিকা।

BAMABODHINI PATRIKA. "कन्याप्येवं पासनीया त्रिश्रसीयातियत्रतः।"

কন্তাকে পালন করিবেক ও যত্নের সহিত শিক্ষা দিবেক।

৩৪৫ সংখ্যা

আশ্বিন ১৩০০—অক্টোবর ১৮৯৩।

৫ম কল্প। ২য় ভাগ।

সাময়িক প্রসঙ্গ।

নূতন গবর্ণর জেনারেল—
আগামী ডিলেখরে লর্ড ল্যান্সডাউনের
সময় পূর্ণ ইইতেছে। সার হেন্রী নরম্যান্ নূতন রাজপ্রতিনিধি মনোনীত
ইইয়াছেন, ইনি কুইন্সল্যাণ্ডের শাসনকর্তা। লর্ড লিটনের সময়ে ইনি সামরিক সেক্টেরী ছিলেন।

মধ্যম রাজকুমারের রাজত্বলাভ—ইংলওেশ্বরীর ভাস্থরের সম্প্রতি
মৃত্যু হওয়াতে মধ্যম রাজকুমার জন্মণির
অন্তঃপাতী স্থান্নিকেবার্গ রাজ্য পাইয়াছেন। ইনি ইহাঁর ভাগিনেয় জন্মণ
স্মাটের অধীনস্থ রাজা হইলেন।

হোমরুল—স্থ্যাডটোনের প্রিয় আইরিদ্ আইন বিল কমন্দ দভার অহ-মোদিত হইয়াছিল, কিন্তু লর্ড দভায় অধিকাংশের মতে অগ্রাহু হইয়াছে। কোরিস্থ যোজকের বিয়োজন—

১১ বৎসরের চেন্টায় বছ অর্থ বায়ে
কোরিস্থ যোজক কাটিয়া প্রায় স্থই কোশ
দীর্ঘ একটা থাল হইয়াছে। গ্রীসরাজ স্বরং
উপস্থিত হইয়া মহা সমারোহে থাল
খ্লিয়াছেন।

রমণীর তিক্সত ভ্রমণ—কুমারী পেলার নামী এক ইংরাজ রমণী তিবত দেশ ভ্রমণ করিয়া তত্ত্তা রীতিনীতি প্রভৃতি লিপিবদ্ধ করিয়াছেন। তিবাৎ রমণীগণ সাহায্য না করিলে তাঁহার বোর বিপদ হইত।

বিশ্বজনীন ধর্ম সভা—চিকা-গোতে একটা নৃতন ব্যাপার হইয়াছে, পৃথিবীর দকল ধর্ম সম্প্রদায়ের প্রতিনিধি-গণকে আহ্লান করা হইয়াছে, তাঁহাক্র একত্র হইয়া দকল ধর্মের সার কথা শ্রবণ কীর্ত্তন করিবেন। ভারতবর্ধ হইতে বাবু
প্রতাপচন্দ্র মজুমদার, বি বি নগরকার,
জাষ্টিদ আমীর আলি ও দিংহলের ধর্মপাল
গমন করিয়াছেন। ১১ই হইতে ২৭এ
সেপ্টেম্বর পর্যান্ত ধর্মদভার কার্য্য চলিবে
এবং প্রতিদিন নিম্নলিথিত এক একটা
বক্ত্বা হইবেঃ—

(১) অভার্থনাস্চক বক্তা,(২) ঈখর, (৩) মন্থ্য,
(৪) ধন্ম মানবজাতির বিশেষ লক্ষণ, (৫) ধন্ম শ্রণালীসমূহ, (৬) পৃথিবীর ধন্ম শাস্ত্রসমূহ, (৭) ধন্ম ও পরিবার, (৮) ধন্মের নেতা সকল, (১) বিজ্ঞান ও সাহিত্যাদির সহিত ধন্মের সম্বন্ধ, (১০) ধন্ম ও নীতি। (১১) ধন্ম ও সামাজিক প্রশ্নসকল, (১২) ধন্ম ও সভ্যসমাজ, (১৩) ধন্ম ও মানব প্রীতি, (১৪) খৃষ্ট জগতের ধন্মের বর্ত্তমান অবস্থা, (১৫) খৃষ্টজগতের ধন্মের পুনর্মিলন, (১৬) সমূদায় মানব পরিবারের ধন্ম সন্মিলন, (১৭)ভিন্ন ভিন্ন ঐতিহাসিক ধন্মের পূর্ণ ধন্মের মূলস্ত্র যাহা স্বীকৃত ও বিবৃত হইয়াছে।

রচনা পারিতোষিক—আগামী

>লা মার্চ্চের মধ্যে "শিশুপালন বা পিতৃভক্তি" সুইটীর অন্তত্তর বিষয়ে রচনা
বঙ্গমহিলা মাত্রেই লিথিয়া প্রেদিডেন্সী
দার্কেলের স্কুল ইনস্পেক্টরের আফিদে
পাঠাইতে পারেন। ইহা ব্রজমোহন দত্তের
পারিভোষিক রচনা। এবার ৮০ টাকা
করিয়া সুইটী পারিভোষিক প্রদত্ত হইবে।
বিশেষ বিবরণ বিজ্ঞাপনে ক্রাইব্য।

প্রাহেলিকার উত্তর—শ্রাবণ মাদের বামাবোধিনীতে যে প্রহেলিকা প্রকাশিত হইয়াছে, নিম্নলিথিত ব্যক্তিগণ তাহার উত্তর দিয়াছেনঃ—শ্রীমতী মৃণোলিনী মুখোপাধ্যায় বহরমপুর, শ্রীমতী সত্যবতী দেবী ফতেগড়, শ্রীযুক্ত জগদ্বন্ধু চক্রবর্তী নোয়াখালি, অবনীপ্রসাদ নিয়োগী ময়মনসিংহ ও শ্রীমতী অছিমানের। থাতুন ছিদ্দিকা হবিবগঞ্জ। মূণালিনীর উত্তর সর্ব্বাপেক্ষা সম্ভোষকর।

বামাবোধিনীর মহোৎসব।

বামাবোধিনীর তিংশ জন্মোৎসব উপলক্ষে গত ২০এ ভাদ্র সোমবার সিটা
কলেজ গৃহে ইহার হিতৈষী ও অন্তরাগী
বন্ধুলিগের এক বৃহৎ সন্মিলন হয়।
প্রায় সহস্র ব্যক্তির স্মাগ্যে কলেজ হল
পরিপূর্ণ হইয়াছিল। অনীতিপর বৃদ্ধ
মহান্মা রামতন্ত লাহিড়ী মহাম্য় চলৎশক্তিহীন হইয়াও উৎসাহভরে আসিয়া উপশ্বিতহইয়াছিলেন। হিন্দু, মুসলমান, ব্রাশ্ধ,
শ্বীন সকল শ্রেণীর প্রতিনিধিগণ ছিলেন।

বেথুন কলেজের অধ্যক্ষ শ্রীমতী চন্দ্রম্থী
বস্থ এম এ এবং আরও অনেকগুলি বিত্যী
রমণী মহিলাদিগের নির্দিষ্ট স্থান অবিকার
করিয়া সভার শোভা বৃদ্ধি করিয়াছিলেন।
সর্ব্ধ প্রথমে নিম্নলিথিত সঙ্গীতটা হারমোনিয়ম সহকারে গীত হয়। বেথুন বিভালায়ের ভ্তপূর্ব ছাত্রী ও রান্ধ বালিকাবিদ্যালয়ের অন্ততম শিক্ষয়িত্রী শ্রীমতী
কাদম্বিনী গঙ্গোপাধ্যায় অতি স্কম্পষ্ট
স্বমধ্ব স্বরে গান করিয়া শ্রোভগণের

চিত্ত মোহিত করেন এবং শ্রীষ্ক্ত বাবু উপেক্সকিশোর রায় চৌধুরী হারমোনিয়ম বাদন করেন।

সঙ্গীত।

রাগিণী বেহাগ—তাল আড়া। গাও জয় জগদীশ জয়, জয় জগদীশ-জয়। আজি আনন্দ উৎসবে. ভাই ভগ্নী মিলে সবে, আনন্দে উৎকুল্লমন, প্রকুলহাদয়। অজ্ঞানা অবলা হীনা, কারাবন্দী পরাধীনা, কত দীনা বঙ্গাঞ্চনা বর্ণন না হয়; তুর্বলের থিনি বল, তুঃখীর চিরসম্বল, মুথ তুলে চেয়েছেন হইয়ে সদয়। কে জানিত বল কবে, অন্ধজনে চক্ষু পাবে, মত দেহে জীবনের হইবে উদয়; আজি নারী নরসাথে. চলেছে উন্নতিপথে, বাধা বিদ্ন দব চূর্ণ আর কিবা ভয় ? পিতার প্রেমভাণ্ডার, দদা অবারিত্রার, সম-অধিকারী তাহে তনয়া তনয়; এক পদে করি ভর. কে হইবে অগ্রসর, তুই পদে চল গতি হইবে নিশ্চয়। পিতৃ-আজা শিরে লয়ে, স্থপুত্র স্থকন্যা হয়ে, জ্ঞান ধর্মে নারীনর সাজাও হৃদয়;

যাবে ছঃথ যাবে পাপ,
দ্র হবে মনস্তাপ,
মানবদমাজ হবে সুধ শান্তিময়।
তৎপরে দম্পাদক বামাবোধিনীর গত
জীবনে নানা অবস্থার মধ্যে বিধাতার
আশ্চর্য্য অপার করুণার জন্ম ভক্তিপূর্ণ
কুতজ্ঞতা প্রকাশ করেন এবং ইহার ভাবী
জীবনের কল্যাণ প্রার্থনা করেন।

অতঃপর পণ্ডিতবর শ্রীযুক্ত বাবু কালী-চরণ বন্দ্যোপাধ্যায় এম এ, বি এল মহা-শয় ইংরাজীতে ওজন্মিনী ভাষায় একটী স্থান্দর বক্তৃতা করেন এবং সকলে তন্ময় হইয়া তাহা শ্রবণ করেন। তাঁহার বক্ত-তার বিষয় * "প্রীজাতি, ইহাঁদের বর্ত্তমান সময়ের কর্ত্তব্য এবং আমাদের পরস্পরের দায়িত।" খ্ৰীজাতি জনসমাজে হীন ও অজ্ঞান বলিয়া অনাদত, এজন্য তিনি হঃধ প্রকাশ করিয়া বলেন জীজাতির প্রকৃত স্থান অতি উচ্চ, তাহা ভাঁহাদিগকে প্ৰদন্ত হইতেছে না। গ্রীক, রোমান, সকল জাতির বিদ্যার অবিষ্ঠাত্রী দেবতা পুরুষ নহেন, কিন্তু গ্রীলোক। স্বতীর বরপুত্র" বলিয়া মহাকবি কালি-দাসের এত গৌরব। তবে ল্রীন্সাতি উচ্চ ख्वात्नत व्यक्षिकातिनी विनिया किन ना দ্মানিত হইবেন এবং ভাঁহাদের পদতলে বদিয়া ভ্রানশিকা করিয়া পুরুষগণ কেন না ধন্ত হইবেন ? পরে তিনি দেখান আমাদের বিশ্ববিদ্যালয়ের এতদিনের এড

Womanhood; Its Mission at the present day, and our Relative Responsibility.

উচ্চ শিক্ষা ধে বিজ্পনা মাত্র হইয়াছে, তাহাতে আমাদিগকে মাত্র্য করিতে পারিতেছে না, ইহার প্রকৃত কারণ স্বীলোকদিগের হীনাবস্থা ও শিক্ষাভাব। আমাদের মাতা, জ্ঞী, ভগিনী ও কলার প্রভাব আমাদিগের উপরে অদীম, তাহা কে**হ অস্বীকার** করিতে পারেন না। ভাঁহারা নীচ হইয়া থাকিলে আমরা নিশ্চয়ই নীচ হইয়া ঘাইব। ঈশ্বর ভাঁহা-দিগকে আমাদের স্বাভাবিক শিক্ষয়িত্রী ও নেত্রী হইবার জন্ম স্ঞান করিয়াছেন. ভাঁহারা স্থশিক্ষিত, উন্নত, ও মহচ্চরিত্র হইলে গৃহের ও সমাজের মহাশক্তি হইয়া আমাদিগকে ঈশ্বরের চরণের দিকে লইয়া যাইবেন। ইউরোপ ও আমে-রিকার স্ত্রীজাতি সমাজোদ্ধারে মহাশক্তি-রূপে কার্য্য করিতেছেন। তিনি পরে রলেন জ্ঞান ও ভক্তি উভয়ই স্ত্রীপুরুষের জন্ত সমান প্রয়োজনীয়। পুরুষগণ ভক্তি-হীন জ্ঞানী এবং জীলোকগণ জ্ঞানহীন ভজ্জিমতী হইবেন ঈশ্বরের **দাঁড়াই**য়া কে একথা বলিতে পারেন ? আপনাদিগকে ও পুরুষজাতিকে উন্নত করা যেমন জীলোকের কার্য্য, আপনা-দিগকেও দ্বীজাতিকে উন্নত করা তেমনি পুরুষজাতিরও,কর্ত্তব্য । পুরুষজাতি যে দয়া করিয়া শ্রীকাতির উন্নতির সহায় হইবেন ভাষা নহে. ইহা করিতে ভাঁহারা সায়ত: বার্ধ্য। ইহা না করিলে ভাঁহার। ঘোর র্মপরাধে অপরাধী ও সেই অপরাধের ফলভোগী হইবেন।

পরে পণ্ডিত শিবনাথ শাস্ত্রী মহা-শয় বঙ্গদেশে সাধারণ শিক্ষা ও স্ত্রীশিক্ষার ইতির্বত্ত অতি স্থন্দররূপে বর্ণন করিয়া প্রদর্শন করেন যে অনেক যত্ন, চেষ্টা ও উৎপীড়ন দফ করিয়া দেশহিতৈমী মহাত্মা-দ্রীশিক্ষার পথ একট প্রসারিত করিয়াছেন, কিন্তু ইহার কার্য্য এখনও অনেক অবশিষ্ট আছে। স্থাশিক্ষিতা রমণীর সংখ্যা অঙ্গুলির অধ্যে গণনা করা যায়। অসংখ্য অসংখ্য রম্ণী প্রকৃত জ্ঞান ইইতে বৃহদূরে রহিয়াছেন, তাঁহাদিগকে স্থাশিক্ষিত ও উন্নত করিতে না পারিলে আমাদের সমাজের কল্যাণ ও উন্নতির আশা নাই। তিনি কয়েকটী पृष्ठीड पिया (प्रथान ट्य এथन टेश्नए७ (य কিছু সংস্কার ও জনহিতৈষণার হইতেছে, তত্ত্তা স্থশিক্ষিতা মহিলারা তাহার তলে তলে রহিয়াছেন এবং পালে মেন্ট ও ইংরাজ সমাজকে ভাঁহারাই চালাইতেছেন। আমাদের রমণীগণ শিক্ষিতা ইইলে নিশ্চয়ই দেইরূপ সমাজের মহাশক্তি হইবেন। বামাবোধিনীর তিনি একজন বছদিনের লেখক এবং ইহার সঙ্গে একীভূত, এজন্য ইহার গুণের কথা না বলিয়া তিনি ইহার কার্য্য দম্বন্ধে ছুই একটী কথা বলেন। আজি কালি দভা-সমিতি,স্ত্রীবিদ্যালয়, পত্রিকা,পুস্তক প্রভৃতি नानाविध छेशास ही शिकांत य मकन কার্য্য হইতেছে, এক সময় বামাবোধিনী धकाकी ता नकल कार्या कतिशास्त्र । वागारवाधिनौ भग्नः अवानौत्र मङ नानाविध

জ্ঞান অন্তঃপুরের অতি নিভ্ত স্থান পর্যাস্ত. লইয়া গিয়াছেন। একাদিক্রমে তিশ বৎসর কাল ইনি এই কার্ষ্যে রত থাকিয়া ঈশ্বর কুপায় প্রীজাতির উন্নতি বিষয়ে वित्मय (हुट्टी क्रिया(इन। हेट्टा मार्माना আনন্দ ও গৌরবের বিষয় নহে।

ইহার পর বামাবোধিনী সম্পাদক বক্তাদ্য়কে স্ক্রের সহিত ধন্যবাদ দিয়া সভাস্থ সকল বন্ধুর নিকট ক্লতজ্ঞতা শীকার করেন, বিশেষতঃ ভক্তিভাজন রামতন্ত্র লাহিড়ী মহাশয়ের অধিষ্ঠানে সভার সকল অভাব পূর্ণ হইয়াছে বলিয়া লাহিড়ী মহোলাদ প্ৰকাশ করেন। মহাশয় বাকা অপেকা ভাঁহার ভাব

ভঙ্গীধারা ভাঁহার অভরের গভীর আন-ন্দের পরিচয় দেন এবং স্ত্রীশিক্ষাহিতৈষী মহোদঃদিগকে ধন্যবাদ দিয়া এক একটা করিয়া উপস্থিত সকল মহিলাকে আশী-ব্যাদ করেন। সভার কার্যা অতি আন-ন্দের সহিত সমাহিত হয়। সভার আরত্তে রঙ্গিল কাগজে মুদ্রিত সঙ্গীত সকলকে প্রদত্ত হয়, সভা ভঙ্গ সময়ে পুষ্পস্তবক বিতরণ করিয়া সভাস্থগণকে বিদায় দান করা হয়। জগদীশ্বর করুন বামাবোধিনী मीर्घकीविनी इहेश। এইরপ স্থিলন সুখ উপভোগপূর্বক ভাঁহার করুণা করিতে ও মহিমার যেন সাক্ষ্যদান পারেন।

বালক আকবর এবং গুলবিবি।

বর্গের অত্যাচারে প্রপীজিত হইয়া যথন করাচী হইতে আটকাভিমুথে প্লায়ন করিতেছিলেন, সিন্ধুদেশের অন্তঃপাতী অমরকোট নগরে দেই সময়ে আকবরের জন্ম হয়। ছুমায়ুনের কনিষ্ঠ সংহাদর এবং একজন বৃদ্ধাদাসী বালক আকবরের লালন পালনের ভার গ্রহণ করেন। এক বৰ্ষকাল অতিবাহিত না হইতে হইতে, থুলতাতের মৃত্যু হওয়াতে আকবরের আহার, স্বাস্থ্য, শিক্ষা প্রভৃতি যাবতীয় 🕈 বিষয়ের ভার ঐ দাসীর হস্তে সম্যক্ व्यकारत नास्त इत्र। तुषाक मकल खन-विवि विनिद्या मत्याधन कतिछ। अनविवि

মোগল সমাট ভ্যায়ুন স্বজাতীয় বৈরি- | মিসর দেশীয় এক সম্ভান্ত যবন বণিকের বিবর্ভনে দিতীয়া কন্যা; ভাগাচকের দাসীত্বে আজি নোগল রাজপ্রাসাদে নিযুক্তা। ত্নায়ুন ইহাকে প্রধান। দাসী-পদে নিয়োজিত করিয়াছিলেন বটে, কিব দাদীর ভায় কথনই বাবহার করিতেন না। সভাব, স্থশিকা, পরিচ্ছন্নতা, পৌন্দর্য্য এবং সুসাস্থ্যের জন্ম গুলবিবি মো**গল** সমাজে বিশেষ খ্যাতিলাভ করিয়া**ছিলেন।** দাসীর অধীনে পালিত হইয়া আকবরের বৃদ্ধি ও শিক্ষার এতদূর 🕮 বৃদ্ধি সাধিত ट्**डे**शाहिल (य, आवृत कवन अनविविद् "আক্বরের মাতা এবং শি**ষ্ণা তব্দী**" সম্বোধন করিয়া গিরীছেন ! বলিয়া

ভলবিবির নিকটেই বালক আকবরের পারস্য ও আরব্য ভাষার শিক্ষা হয় এবং ভাঁহারই মঞ্জে ভাঁহার স্বভাবের দৌল্গ্যও বিকশিত হয়। দিল্লীর সিংহাসনে আরো-হণ করিয়া বছবর্ষ পর্যান্ত মহামতি আকবর যে সকল অনন্তসাধারণ প্তৰ ভারতকে বিমোহিত করিয়া তুলিয়া-ছিলেন, বুদ্ধা গুলবিবিই তাহার মূল। স্ত্রী-বৃদ্ধি বিক্বত হইলে যেমন প্রলয়ক্ষরী, সুমা-জিত ইইলে তেমনি শুভকরী। শিক্ষিতা ও ধার্মিকা রমণীর হত্তে বালকের ভার ন্যস্ত হইলে বালকের ভবিষ্য জীবনের এতদুর উরতি হয়, গুলবিবি ও আকবর তাহার অন্যতম উজ্জল প্রমাণ। অতি বাল্যা-বস্থাতেই আকবর কিরূপ বুদ্ধিশক্তির পরিচয় দিয়াছিলেন, এস্থলে একটি স্থন্দর দৃষ্টান্ত আমরা কোনও স্থেসিদ্ধ প্রাচীন পারস্য পুস্তক হইতে উদ্ত করিয়া দিতেছি।

ছ্মায়ুন বাদদা আপন বৈরিবর্গকে
পরান্ত করিয়া যথন দিলীর সিংহাদন
ভাষিকার করেন, দেই দময়ে আকবর এবং
ভালবিবি উভয়েই দিলীতে আনীত হয়।
ভ্যায়ুন আকবরকে নিতান্ত ভাল বাদিভোন এবং শততই আপনার চক্লুর সমুধে
রাধিতেন। ক্রমে আকবরের বয়ঃক্রম
বৃদ্ধি ইইলে, রাজবিধি, বিচার এবং ন্যায়
শিক্ষা দিবার জন্য, ভ্যায়ুন কখনও
ভার আকবরের হন্তে ন্যন্ত করিতেন।

হণ করিয়া অপরাক্তে বায়ু দেবন করিতে বহির্গত হইয়াছেন, এমন সময়ে ক্ষত্তিয়-জাতীয় এক হিন্দু বণিক সদস্থান সেলাম করতঃ সমাট্ সমীপে এই বলিয়া নিবেদন করিল যে, "মহাত্মন্"! আপনার ধর্ম-ময়ী নগরী মধ্যে এ পর্যান্ত কাহারও একটি কপৰ্দকও অপহাত হয় নাই, কিন্তু পঞ্চ-সহস্র রৌপ্য মুদ্রা বঞ্চনা করিয়া একব্যক্তি আমার সর্বানাশ সাধন করিয়াছে; আমি তিন মাদ কাল ব্যাপিয়া রাজভারে অভিযোগ করিয়া আসিতেছি, কিন্তু আমার হুর্ভাগ্যক্রমে কেহই আমার চীৎকারে কর্ণপাত করেন নাই। আপনি কুপা না করিলে আমি ধনে প্রাণে বিনষ্ট হইয়া যাইব।" সমাট ছ্যায়ুন এই **অ**ভিযোগের বিচারের ভার বালক আকবরের হস্তে নাস্ত করিলেন।

যথাসময়ে ক্ষত্রিয়াতীয় বিন্ক্
বিচারালয়ে উপস্থিত হইয়া অভিযোগমঞ্চে দণ্ডায়মান হইয়া আপনার বক্তব্য
বিষয় এইরূপে বর্ণন করিল:— "মহাশ্বন্! আমি জাতিতে ক্ষত্রিয়, ধর্ম্মে হিন্দু
এবং ব্যবসায়ে বণিক্। গত বৎসর
কোনও দ্রদেশে সন্ত্রীক তীর্থ দর্শন
করিবার অভিলাষে দিল্লী পরিত্যাগ করি।
দিল্লী নগরী পরিত্যাগ করিয়া যাইবার
সময়ে আমার গৃহে ৫ সহস্র রৌপ্য মূজা
ছিল, আমি ঐ মূজা আমার স্বজাতীয়
একজন মহাধনী এবং বিধ্যাত বণিকের
বাটীতে জ্বমা রাধিয়াছিলাম। একটি
স্বরুহৎ কার্পেট বন্ধন (ব্যাগ) মধ্যে মূজা

সমূহ রক্ষা করিয়া উহা দিল্লীর নির্শ্বিত कठिन जाला घाता वन कता श्रेताहिल; তদনস্তর লোহিতবর্ণের স্থল বন্ত্রথণ্ডের দারা গালিচা-বন্ধনটিকে স্থন্দর ও কঠিন রূপে আবৃত করিয়া চারিদিকে দেলাই করিয়া দিয়াছিলাম, ঐ সেলাইয়ের উপরে পারদ্য ভাষায় আমার নামের মোহরটিকে লাক্ষা দহযোগে মুদ্রাঙ্কিত করিয়াছিলাম। বছদিন পরে আমরা তীর্থদর্শন করিয়া দগ্রীক বদেশে প্রত্যাবর্ত্তন করিয়াছি। আমাদিগের আত্মীয় বণিক মহাশয় সাদরে আমাদিগকে অভার্থনা করেন এবং পর-দিবদে তোমাদের গচ্ছিত দ্রব্য নিরাপদে পুন্র্ত্রণ কর" বলিয়া আমাদের হস্তে ঐ গালিচা-বন্ধনটিকে প্রত্যপণ করেন। ব্যাগ খুলিয়া বিস্ময় ও বিষাদের সহিত (मिथिनाम, উহার দেলাই, नाकारमाइत প্রভৃতি সমুদায় ঠিক আছে, কিন্তু অভ্য-স্তবে রোপ্য মুক্র। নাই, কেবল কতকগুলি যমুনানদীর তীরদেশদংগৃহীত শুভ্রবর্ণের কুদ্র কুদ্র প্রস্তর থও! ওজন করিয়া দেখিলাম, গচ্ছিত ব্যাগের ওজন এপর্যাম্ব ঠিক আছে, রতি মাধা কম নাই !! মহা-এই অপুর্ব বঞ্না দারা আমার আত্রীয় দর্বনাশ সাধন করিয়াছেন। বিচারালয়ে অপরাধীর দত্ত এবং আমার অপহত অর্থের পুনরুদ্ধার না হইলে আমার জীবন ধারণের ভরষ। নাই।" বালক আকবর, অভিযোক্তার সমুদর কথা মনোযোগ সহকারে প্রবণ করতঃ ভাঁহাকে এই বলিয়া সাম্বনা করিলেন যে,

"ষত শীষ্দ্র পারি, তোমার অর্থের পুনরুদ্ধার করির। প্রকৃত অপরাধীর সমূচিত দণ্ড-বিধান করিব।" বণিক্ সন্তোষ সহকারে স্বগৃহে প্রত্যাবর্ত্তন করিল।

এদিকে, অন্ততম ক্ষত্রিয় বণিককে আহ্বান করিয়া আকবর জিজ্ঞাসা করি-লেন, "তুমি এই অভিযোগ সম্বন্ধে কি বলিতে ইচ্ছা কর ?'' বণিক বলিল, "মহাত্মন! লাক্ষার মুদ্রান্তন, ওরন. সেলাই, আবরণ প্রভৃতি সকল বিষয়**ই** স্থান্যরূপে সংরক্ষিত; ওজনের এক রতি মাষা ন্যুন নাই; বোধ হয় ঐ ছষ্ট ক্লজিয় আমার সর্বনাশ সাধন করিবার শঞ্চ প্রোক্ত কার্পেট বন্ধনে প্রস্তর স্থাপন করিয়া, পঞ্চ সহজ্য মুদ্রার মিথ্যা অভি-ষোগ উপস্থিত করিয়াছে।" আকবর, ইহাকেও সাম্বনা করিয়া সহাস্থবদনে বিদায় দিলেন।

এইরপে একপক্ষকাল অতিবাহিত
হইলে, এক দিবদ মধ্যাহ্নকালে বালক
আকবর সমাট ভ্নায়ুনের বৈঠকখানায়
প্রবেশ করিয়া এক ক্ষুদ্র শাণিত ছুরিকা
দারা পিতার পরম রমণীয় বহুম্ল্যবান্,
প্রাতন অথচ স্বর্হৎ উপাধানটিকে
(বালিদ) সহস্তে গ্রহণ করতঃ গোপনে
তাহার মধ্যদেশের দামান্ত অংশ কর্তন
করিয়া দিলেন। এই বালিদটি সমাট
বাবরের দমদাময়িক; সমাট্ ভিন্ন কাহারও
ইহাতে শরীর স্পর্শের অধিকার ছিল্
না। বালিদের দেলাই এমন চমৎকার
ছিল বে, এত বর্ষ বিগত হইয়া সিয়াছে,

তবুও যেন ইহা সম্পূর্ণ নৃতন ৷ আক্রর रेश कर्छन कतिया, धनविवित्र निकारी গমন করতঃ কহিলেন যে, আমি কোনও কারণে পিতা মহাশয়ের প্রিয় বালিসটি কাটিয়া ফেলিয়াছি; কল্য প্রাতে কাছা-দীর সময়ে সমাট শিরোধানের এরপ অবস্থা দেখিলে আমার উপরে নিতান্ত বিরক্ত হইবেন। মাতঃ! আমি এমন একজন কার্য্যকুশল চতুর দর্জী চাই, যে **राष्ट्रि** थूर कीगल महकारत स्मलाहे করতঃ এই বালিসকে পূর্কাবস্থায় পরি-ণত করিতে পারে।

खनविवि कवन खानाएक नमानात অভিজ্ঞ ছিলেন এমত নহে. मिल्ली নগরীর সমগ্র অংশ তাঁহার নথদপুরে ছিল। তিনি আকবরকে বলিলেন "এই সহরে কেবল এইরপে একজন মুদ্লমান দৰ্জী আছে, যে ব্যক্তি তোমার অভিলাষ পরিপুরণ করিতে পারে।" গুলবিবি তাহাকে ভাকাইয়া পাঠাইলেন। দক্জী আসিয়া শিরোধানের সেলাই ক্রিয়া এরূপ आकर्षा की गलमहकारत मण्यन कतिल যে, বালিদের ছিন্নতা আর সহজে দেখা বার না অথচ ওজনও পূর্বের মত ঠিক त्रहित ।

্**বাল**ক আকবর, দক্ষীকে গোপনে এক গৃহমধ্যে লইয়া গেলেন এবং বহ পুরস্কারের লোভ দেখাইয়া জিজ্ঞাসা

করিলেন, "ভূমি কার্পেটবন্ধনেক দেলাই শিখাইতে পার কি ?" দক্রী দিলীর অধিবাসী, স্মৃতরাং বণিকের অভিযোগ সম্বন্ধে মহত্রে যে আন্দোলন উপস্থিত হইয়াছে তাহা তাহার অবিদিত ছিল না। সমাটপুতের কথার মর্মে দর্জী তাঁহার মনোগত অভিপ্রায় বুঝিতে পারিয়া দকল কথা ব্যক্ত করিয়া দিল। আকবর দোষী বণিকের যথাবিধি দল দিলেন এবং নির্দোষী বণিকের হস্তে পঞ্চহত্র মুদ্রা দিয়া তাহার আশীর্কাদ গ্রহণ করিতে করিতে গুরুরী গুলবিবির গ্রহে গমন করিলেন।

বাঁহারা স্ত্রীশিক্ষার বিরোধী ভাঁহার। এই ক্ষুদ্ৰ দৃষ্টান্ত হইতে একটি মহৎ শিক্ষা লাভ করিতে পারেন। স্ত্রীলোকের শিক্ষা সম্পূর্ণ না হইলে পুরুষের শিক্ষা সম্পূর্ণ হইবার সন্তাবনা নাই। স্ত্রীলোক স্মা-**ए** अर्काः वितः शुक्रस्तत अर्काकिनी, ম্বীলোকের উন্নতি না হইলে পুরুষ এবং পুরুষ সমাজের উন্নতি অসম্ভব। সামান্তা দাসীকর্ত্তক নালিত। ও পালিতা হইয়া যদি আকবরের স্থায় মহাপুরুষের উদ্ভব সম্ভব হয়, তাহা হইলে না জানি হত-ভাগ্য ভারতের **সমগ্র** নারীসমাজ শিক্ষিতা ও ধার্মিকা হইতে পারিলে ভারতের ভাগ্যচক্র কি অসাধারণ স্থন্দর गळि धात्रं करत !

वाकाला अवहन।

ল

১। লমুপাপে গুরুদণ্ড।

২। লক্কাকাণ্ড।

৩। লঙ্কায় গেলেন দরিদ্রি, নিয়ে এলেন হরিদ্রি।

৪। লঙ্কায় রাবণ মলো, বেউলো কেঁদে রাঁড় হলো।

ে। লঙ্কার বাণিজ্য ক্ষেতের কোণা।

৬। **লজ্জানাহি যায়,** রাজাহারে তায়।

৭। লক্ষানারী ভূষণং।

৮। বস্বা কোঁচা ফতো জারি।

৯। ললাটের লেগা বল কে থণ্ডিতে পারে ?

১০। লক্ষ বাঁটুল পক্ষ তীর, তবে হয় হাত হির।

১১। লক্ষণের মত দেবর হোক।

১২। লক্ষণের শক্তিশেল।

১৩। লক্ষী আস্তে কি ত্তুরে আগড় 🕈

28। लच्ची ठकना !

১৫। লক্ষীছাড়ার ঝক্কি বড়।

১৬। লক্ষীর পে। ভিক্লে মাগেন।

১৭। লক্ষীর বর্যাত্র।

१४। लक्षीत (वर्णे ककी।

১৯। লক্ষীর ভাগুর।

২০। লাউ শাকের বালি, আর অস্তরের কালি।

২১। লাধ কথা না হলে বে হয় না।

২২। লাখকথার এক কথা।

২৩। লাথ টাকা লাথ টাকা, তুকুড়ী দশ টাকা।

२८। लाश ठोका मित्र शोही तमन।

२৫। लाग जीत ना लाग जुक।

২৬। লাজের মাথায় পড়ুক বাজ, দার গিয়ে আপনার কাজ।

২৭। লাজে বৌ ভাত থান না, চালতা হেন গ্রাস।

২৮। লাজ নাইকো যার, রাজা হারে তার।

২৯। লাট দাহেব।

৩০। লাঠির আগে ভূত ভাগে।

৩১। লাড়ার মার ভাঁড়া।

৩২। লাখি মেরে পায়ে পড়।

৩৩। লাথি চড়ে নাহি লাজ, আনার নাম কবিরাজ।

৩৪। লাথির টেঁকি মাধায় চডে।

৩৫। লাখির ঢেঁকি কি চড়ে উঠে ?

७५। लाकस्य हाम ध्रता।

৩৭। লাভ লোকসান জেনে, চাস করে না সোনার বেণে।

৩৮। লাভের গুড় শিপড়ে খায়।

৩৯। লিখিলে পড়িলে মরিবে ছঃখে, মৎস্য ধরিবে, ধাইবে স্থথে।

৪০। **লুকয়ে খেলে ও**ক্য়ে যায়।

৪১। লুণ থাই যার, গুণ গাই তার।

B र । नून चार्क भावः। क्तान ।

৪৩। শেখা পড়া ঘন্টা নাড়া।

৫০। লেবু রগড়ালেই তিত।

৫) । লোক দেখানে ভালবাদা,
ভাল্ল মাদের কচি শশা;
দেখলে তারে হয় লোভ,
খেলে পরে পিছের কোপ।

৫২। লোকে বলে আছ ভাল,সালুক থেয়ে দাঁত কাল।

৫০। লোভে পাপ পাপে মৃত্যু।

৫৪। লোহা জন্দ কামার বাড়ী,
 মেয়ে জন্দ শৃত্র বাড়ী।

৫৫। লোহার কার্ত্তিক।

৫৬। লোহা পাথরে যুদ্ধ করে, শোলা দিদি পুড়ে মরে।

ভাতৃদ্বিতীয়া।

(৩৪৪ সংখ্যা ১৪৮ পৃষ্ঠার পর)

আজি ভারতে ভালবাদার বড টানি" পড়িয়াছে। "টানা অন্যান্য দেশের পক্ষে যাহাই হউক, ভারতের পক্ষে ইহা হাসিয়া উড়াইবার কথা নহে। —म**रा**दिक कीर्छिमिनत, अमाशिकछात শিক্ষাগৃহ, প্রেমের আনন্দমঠ ভারতভূমি পাজি যে ভালবাসা হারা হইয়াছেন, ইহা হাসিবার কথা নহে; প্রেমময়ী ভারত ভূমি আজি যে বিবাদের রাজ্য,ইহা বড় সর্বানালের কথা। যে দেশে ভ্রাতৃ-ভ্রীভাব শিথাইতে ভ্রাতৃদ্বিতীয়ার জন্ম হইরাছিল,দে দেশে নানা রকমের বিবাদ। লৈ দেশে ধর্ম লইয়া বিবাদ। ^শসকলের ধর্মেই বলিতেছে ''দেবতায় ভক্তি কর, সংযতেন্দ্রির হও, সত্যপ্রিয় হও, পরোপ-कारत कारचारमर्ग कर"-अञ्चल गरि

এমন কথা ৰলিতেছিনা, কিন্ধ প্ৰধান নীতি গুলির যখন দামঞ্জদ্য আছে, তখন বিবাদ "অপরিহার্য্য" নহে। পরস্পরের দামাজিক আচার ব্যবহার লইয়াও বিবাদ; সকলেরই কর্তব্যবৃদ্ধি বলিতেছে "ঘাহা সত্য, যাহা ন্যায়সঙ্গত, যাহা জনসমাজের হিতকর, গ্রহণীয়" তথাপি দারুণ বিবাদ। আজি ভারতে ক্ষুদ্রাদপি ক্ষুদ্র ক্রটি ধরিয়াও পারিবারিক ঘটনা পরস্পরে বিবাদ। असूमसान कतिला (मधा याप्र, अपनक সময়ে ভুৰ্চ্ছ বিষয়---যাহা এক কথায় মীমাংদা হইতে পারে, এ রকম ভুচ্ছ विषय लहेसा ७ गृहविष्ट्रम न्यात छ हस । বর্ত্তমান ভারতবাদীর দামাজিক বিবাদ বা জাতীয় বিবাদের মূলেও অনেক সময়ে

সেইরপ ক্ষুদ্রাদ্পি ক্ষুদ্র ঘটনা পরিলক্ষিত হয়! জগতের নরনারী সকলেই এক বিশ্বমাতার সন্থান, মা'কে ঘিনি যেমন করিয়া ডাকিতেছেন, তাঁহার সেই ডাকই মা'র চরণে পৌছিতেছে, তথাপি ভাই ভূগিনীদিগের মধ্যে দাকুণ বিবাদ। এ-বিবাদ শ্লেহভাবে ক্রটি বুঝাইয়া দেওয়া নহে, এ বিবাদ ভাল বাসিয়া দোষ সমা-লোচনা নহে, এবিবাদ কোনও মঙ্গলের আশয়ে নহে, কেবল হিংসাবৃত্তি চরিতার্থ করিতে গিয়া বিবাদ ! - তীব্র গালি, মর্ম -ভেদী বিজ্ঞপ, নিদারুণ বিবাদ। কোথায় বা সেই ভাতভগীভাব আর কোথায় বা এই সাপ্তা ঈর্ঘা! কোথায় বা সেই সন্তাব আর কোথায় এই শক্রতা! লিখিতে লক্ষা করিতেছে কত জ্ঞানী ব্যক্তি— লোকে বাঁহাদিগের উপদেশ গ্রহণ করে. এইরূপ জানী ব্যক্তি, এই বিবাদের পক্ষসমর্থক, পুর্গুরোষক অথব। ऋशः প্রবর্ত্তকরূপে রঙ্গভূনে অবতীর্ণ হন!! জ্ঞান যদি স্থনীতির পোষক না হইল, তবে সে জ্ঞান "ভারবহন'' মাত্র : বিশেষতঃ অজ্ঞান মূর্থের অপণাধ অপেকা জ্ঞানী ব্যক্তির দোষই অধিকতর গ্রহণীয়।

এই সকল শোচনীর ঘটনার আমুবঙ্গিক কারণ বতই থাকুক না, প্রধানতঃ
পরস্পরের ভালবাসার অভাবেই এ সকল
বৈষম্য। কেহ যে কাহারও জ্বন্থ বোকোন না, কেহ যে কাহারও অবস্থা ও উপবোগিভা বিবেচনা করেন না, কেহ যে
কাহাকে সহাকুত্তি দিতে পারেন না,

সে কেবল ভালবাসা নাই বলিয়া। যাহাকে ভালবাসি, তাহার ভ্রম কি ক্রেটি দুরে যাউক, সে যদি প্রকৃত দোষী হয়; তথাপি দে ক্ষমা পাইয়া থাকে—এ ক্ষমা পক্ষ-পাতিতা নহে; দোষীকে ভাল বাসি-লেই দোষের ''ইতিবৃত্ত" বুঝিতে পারা যায়, দোষীর ফ্লয়ে ও ঘটনাবলীতে কিরপ' সম্বন্ধ তাহা অনুসন্ধান করিতে ইচ্ছা হয়, "তাগার আবেম্বায় পড়িলে এরকম দোষ অনিবার্ধ্য" একথা স্বতঃই মনে আসিবে। তথন ক্রমা করা অতি मरङ । ७५ कमा नटर, नग्ना, विनग्न, महि-ফুতা, আত্মত্যাগ এ গুলিতো ভালবাসা হইতে জন্মে: নচেং এ জগতে কে কার্ সকলেই স্বার্থপরতায় অন্ধ, হিংসা দ্বেষ घरकारतत करल रकरल है विवास, रकरल है শক্রতা। তাই বলিতেছি সকলেই যদি मकलरक जाल वारमन, मकरलई यान সকলকে বিশ্বজ্বনীর সন্তান বলিয়া বিবে-চনা করেন, তাহা হইলে এ সকল গোচ-নীয় ঘটনার পরিবর্তে বিশ্বজনীন সভাব সকলের আয়ত্ত হয়, এই মানবরাজ্য দেবরাজ্য বলিয়া অন্তভ্ত হয়।

একথা তুমি আমি বুঝিতেছি, কিন্ত বহু শতাকী পূর্কে, সিসিরোর বাঝিতা, কোম্তের দর্শন, মিলের বৃক্তি ধ্বন ভবি-ব্যতের অন্ধকারে লীন ছিল, তাঁহাদের জাতিদের অন্তিত ব্যন জগতের সভ্য জগতের অজ্ঞাত ছিল, তথন ভার-তীর আর্য্যগণ ও সকল তথ বুকিতে পারিরাছিলেন, বুবিতে পারিরা সূর্ম সাধারণের কার্য্যকারিণী বৃত্তিগুলি পরিক্ষুট করিতে, তাহাদিগকে বিশ্বজনীন
সন্তাবে অভ্যন্ত করাইতে ভাতৃদ্বিতীয়া
প্রবর্তন করিয়াছেন। তাই এক একবার
ভরসা হয়, ভাতৃদ্বিতীয়া উপযুক্তরূপে
অস্থান্তিত হইলে বুঝি বা ভারতের লুপ্তা
প্রায় সন্তাব আবার ফিরিয়া আসিবে!
তাই ভরসা হয় ভাতৃদ্বিতীয়া উপযুক্তরূপে অনুষ্ঠিত হইলে বুঝি বা সকলেই
ভাই, সকলেই ভগিনী হইবে! বুঝি
প্রেমসাধক আর্য্যগণের মহামন্ত্র ব্যর্থ
হইবে না। বুঝি ভাতৃদ্বিতীয়ার জন্ম
নিক্ষল হইবে না!

আমরা পূর্বের বলিয়াছি, সভাবের পরিণতির অবস্থাকে প্রেম বলে। য়াছি যেমন কলিকা ও ফুল, সেইরূপ সভাব ও প্রেম। সন্তাব হইতে পর আপনার জন হয়, প্রেম হইতে পর প্রেমিক দিজেই ৷ সন্তাব বলেন "এই জগতে যত নর নারী সকলেই এক মায়ের সন্তান;" প্রেম মানবকে বলেন "এ যত মানব **দেখিতেছ**, এ সব তুমিই" ! " বস্থাবৈধৰ কুট্ৰকম্" এই হইল সভাবের কথা, আর "আত্মবৎ সর্কভৃতেয়ু" এই হইল প্রেমের कथा ! श्रमध्य श्रमध्य (य अकर्के राव-ধান, প্রেম তাহা সহিতে পারে না, প্রাণে আণে যে একট্রু প্রভেদ, প্রেম তাহা महिए भारत ना। महाव मक्टलेव मूर्य-হাসি দেখিতে চায়, সৰুলের বুকে হুখ দেখিতে চার! প্রেমিক নিজে সর্যাসী ভিশারী হইয়া পরের হুগ বাড়াইতে চায়!

প্রেমিক বুদ্ধ—প্রেমিক চৈতন্য কিসের জন্য সংসার ছাড়িয়াছিলেন গ ময়ী মীরা বাই-করমেতো বাই কিসের জন্য পথের ভিথারিণী হইয়াছিলেন ? কেবল প্রেমের জন্য। প্রেমিক বিশ্বে-শ্বকে—এই অনন্ত বিশ্বের সমাটকে আপনার বুকের ভিতর পরিয়া রাখিয়া-ছেন। প্রেমিক পঞ্চতের সমষ্টিও নহে, रेक्तिरवत-এकामम रेक्तिव व्यधिकातील নহে; প্রেম, কায়মনোবাক্যে প্রেমিককে ঈশবের চরণে উৎসর্গ করিয়াছে, প্রেমিক সেই ঈশবের। প্রেমের সহিত ধর্মের মিলন অপরিহার্য। ধার্মিক বলিতে প্রেমিক বুঝার, প্রেমিক বলিতে ধার্ম্মিক বুঝায় একথা তুমিই বুঝিয়াছিলে, হিন্দু আর্য্য তুমিই বলিয়া গিয়াছ—

"সর্ব্বভূতস্থমাস্থানং সর্ব্বভূতানি চাত্মনি। ঈক্ষতে যোগযুক্তান্থা সর্ব্বত সমদর্শনঃ॥"

অর্থাং " ঈশ্বরে ধোগ যুক্তাত্ম। ব্যক্তি
সর্বত সমদর্শী হইলা আপনাকে সর্বভূতের মধ্যে সর্বভূতকে আপনার মধ্যে
দেখেন " ইছাই প্রেমের চরমোংকর্য।
এমন স্বর্গীয় কথা যে জাতি বলিয়াছেন,
সে জাতি মানব কি দেবতা, পাঠক
পাঠিকা স্বয়ং তাহার বিচার করন।

প্রকৃত পতিপ্রাণা রমণী সপত্নী-সন্তান কে "পর" ভাবিতে পারেন না, স্বামীর সন্তান বলিয়া, স্বামীর ধন বলিয়া তাহাকে অপত্য নির্কিশেষে স্বেহ করেন; সেইরূপ প্রকৃত ধার্ম্মিক কোনও ব্যক্তিকে পানী বলিয়া, কোনও সম্পাদায় কে ভান্ত বৰিয়া, ঘুণা বা অবহেলা করিতে পারেন না !— সকল মানব ঈশবের স্ক্রিড বলিয়াই তাহাদিগকে প্রীতির চক্ষে দর্শন করেন; শক্রতা কি বিদ্বেষ বলিয়া যে কোন পদার্থ আছে, প্রেমিক তাহার অন্তির অবগত বিশ্বপ্রেমিক দেবত৷ যীশুপুট নহেন। মৃত্যু কালে প্রাণহস্তাদিগের মঞ্চলের প্রার্থনা ক্রিয়াছেন, বিশ্ব-कना প্রেমিক দেবতাগণেরই এ কার্য্য সম্ভবে। ভক্তপ্ৰেষ্ঠ श्रक्तारमंत्र कथा चारतकरे জানেন: প্রহলাদ হরিভক্ত ছিলেন বলিয়া অধার্দ্মিক পিতা হিরণ্যকশিপু, প্রহ্লাদের প্রতি পাশব অত্যাচার করেন; কিন্তু জগ-দীশ্বরের কুপায় প্রহলাদের কোনও অনিষ্ট হইল না; হরিভক্ত প্রহ্লাদ, পিতৃরূপী অস্থুরের সহস্র চেষ্টাতেও মরিল না! মরিল না কেন ৭-- যিনি তোমার আমার মত অভক্র অক্বতজ্ঞ মানুষগুলাকে আপনা দিয়া সর্বদাই রক্ষা করিতেছেন তাঁহার অনুরক্ত ভক্ত প্রহলাদের র্ফার্থে তিনিই সহায় হইলেন, তাই প্রহলাদ মরিল না। ইহাতে হিরণ্যকশিপু অধিকতর কুপিত হইয়া পুরোহিতদিগকে আদেশ দিলেন প্রহ্লাণকে অভিচার ক্রিয়া ঘারা বিনাশ করিতে হইবে। পুরোহিতেরা অনুষ্ঠান পূর্ব্বক মন্ত্রপাঠ করিতে লাগিলেন, সেই পাঠ্য মন্ত্ৰ প্ৰত্ৰলিত অগ্নি হইয়া প্ৰহলাদের পরিবর্ত্তে ভুরাশয় পুরোহিতগণকে দদ্ধ করিতে লাগিল। প্রহলাদতো হিংসাপরায়ণ मानव नरहन रा भटका विशेष जानन উপভোগ করিবেন ৷ প্রহ্লাদ মন্তব্যত অতিক্রম করিয়া দেবতা হইয়াছেন কিনা, জগদীশ্বরের চরণে আপনা উৎসর্গ করিয়া প্রহলাদ 'ভাপনাকে সর্বভৃতের মধ্যে ও সর্ব্বভূতকে আপনার মধ্যে" দেখিতে-ছেন কিনা, তাই এ "শোচনীয়" দুশ্য দেখিয়া প্রহলাদের বুক ফাটিয়া গেল. প্রহ্লাদ কাতর কঠে তাঁহার প্রাণের হরিকে, ডাকিতে লাগিলেন।— "मर्काराभिन्। जगक्षभः । जगदयष्टेः । जनार्यनः । পাহি বিপ্রানিমানশ্মাদ ছঃসহান মন্ত্রপাবকাৎ। যথা সর্কেষু ভূতেষু সর্কব্যাপী জগদ্ভক:। বিষ্ণুরেব তথা সর্কে জীবন্ধেতে পুরোহিতা: । यथा मर्व्यगं कर विकृत मनामारना न शावकम्। চিন্তয়ামারিপকো ২পি, জীবন্ধেতে পরোহিতাঁ: । যে হজমাগত। দুৰুং ঘৈৰ্বিয়ং বৈছ তাশনঃ। বৈদি গি গজৈরহং কুলো দষ্টঃ সর্বৈশ্চ বৈরপি ॥ তেষ্ঠং মিত্ৰভাবেন সমঃ পাপোহন্মি ন কচিৎ। তথা তেনাদা সত্যেন জীবস্তস্ক্রয়াজকাঃ ॥"

কি অমৃতময় কথা! যে কেহ প্রক্লোদেব জীবন বিনাশের চেপ্তা করিয়াছিল,
প্রহলাদ তাহাদের কাহাকেও শত্রু জ্ঞান
করেন নাই! প্রহলাদের জীবনবিনাশে
সক্ষরকারীপ্রোহিতগণের জীবন ভিক্লার্থে
প্রহলাদের এত দীনতা! প্রহলাদ প্রেমিক
বলিয়াই এ সব কথা বলিতে পারিয়াছেন,
প্রেমে মাত্র্যের "মত্যাত্র" যুচিয়া যার,
মাত্র্য দেবতা হয়!

কিন্ত আগে সভাব চাই! কলিকা
না হইলে ফুলের বিকাশ হয় না; সভাব
অভাবে হিংসা, ছেম, বিবাদ হইনেই
হইবে। সভাবের সাধনায় সিদ্ধ হইনে
না পারিলে প্রেম-সাধক হওমা মাম না।

ब्यटम সাধারণের অधिकाর नाहे--- मंहा-বেই সাধারণের অধিকার। **अस्टाट्य** व লকুলীলনে সাধারণের সাধারণত ত্রচিয়া ষ্থান বিশেষত্ব জন্মে তথন প্রেমের সাধক হইতে পারেন। সাধারণের ধারণার অতীত। মহাপ্রাণ দুরুদ্দী আর্য্যপণ এই কারণেই ব্রত প্রথা প্রভৃতি প্রবর্ত্তন করেন। এই সকল ব্রত প্রাথা, অন্ধভাবে গ্রহণ করিলে কোনও क्ल इस ना-रिष आयता उक्कान कि **इक्क** भी इहेशा श्रद्ध कति, छाटा इहेरल ইহাতেই কতক দুর্"মন্নুষ্যত্ব" শিক্ষা পাই-তে পারি। এজগতে প্রহলাদ দধিচ ক্ষচিং জন্মগ্রহণ করেন, মহাত্মা কেশব-চল্ল সেন বা বিদ্যাদাগর মহাশয় দৈবাং জন্মগ্রহণ করেন; কিন্তু তোমার আমার मठ "इरत, श्रॅंगेत" मठ जनमा मानव নিতাই জন্মগ্রহণ করিতেছে। আমরা-সাধারণ নর নারীগণ যাহাতে "ক্দয়" লাভ করিতে পারি—এই ক্ষুদ্র, সংকীর্ব হৃদয়ে যাহাতে "সমগ্র জগং এক পরি-বার' এই বিশ্বজ্ঞনীন সদ্ভাব ধারণা করিতে পারি সেই অভিপ্রায়ে আর্য্যগণ ভাত-দ্বিতীয়া প্রচলিত করিয়া প্রিয়াছেন। এখনও কি হুকুচিপ্রাপ্ত দেশীয় ভগিনীগণ ভ্রাতৃদ্বিতীয়া প্রবর্ত্তক আর্য্য-পণকে "কুসংস্থার প্রবর্ত্তক" বলিয়া মনে ভাতভাব ভগীভাব—নিকাম ভালবাসার অমুশীলন করিতে বিরত থাকেন ৭ এখনও কি ভ্রাত্দ্বিতীয়াকে "কুসংস্কার" মনে করিয়া ভাই ভগিনী ভাতছিতীয়ার দিনে পর হইয়া রহিবেন ৭ প্রিয় পাঠিকা ভগিনি ! এমন কাজ তুমি কখনই করিও না, এমন অমূল্যনিধি হেলায় হারাইলে অনোদেরই ভবিষ্যং উন্নতির পথে কাঁটা পড়িবে, আমাদেরই মনুষ্যত্ব हरेंदि ना। (ক্রমশঃ)

ভারতীয় য়িহুদী।

আর্দ্ধশতাকী পূর্বে বোগদাদ, বুশাযার এবং অন্যান্য করেকটা আরবীর
ক্রেদেশ হইতে বিংশতি জন রিহুদী
সন্ত্রীক ভারতবর্ধে আগমন করে। এক্ষণে
ভারতে বে সকল রিহুদী দেখা যার,
ভাহাদিগের মধ্যে প্রার সকলেই উহাদিন্তেই বংশ। পৃথিবীর অনেক দেশে
ক্রিহুদীরা দ্বাজা ও দেশবাসিগণ কর্তৃক
নিশীভিত হুইরা থাকে, এই জন্ত অনেক

রিছদী এক দেশ হইতে দেশান্তরে গমন করিয়া উপনিবেশ স্থাপন করে। অপর রাজ্য অপেক্ষা বিটিব শাসনাধীন ভারতে অপেক্ষাকৃত অধিকতর স্বাধীনতা ও শাস্তি উপভোগ করিতে পারিবে এই বাসনা হাদরে ধারণ করিয়া উক্ত বিংশতি জন রিছদী এদেশে আগমন করে। বোম্বাই নগর ভারতের বাণিজ্য ব্যবসাহের উপ-বোদী নগর নগরীর মধ্যে স্ক্রিশ্রান

এবং সমুদ্রতীরবর্ত্তী হওয়াতে ঐ নগর হইতে বিভিন্ন দেশ প্রদেশের সহিত বিশেষ বপ্রানি করিবার আমদানী এইজন্ম উহারা ঐ নগরেই স্থবিধা, প্রথমে বসতি করে। বিহুদী জাতি অতি প্রাচীনকাল হইতে বাণিজ্য কার্য্যে সবিশেষ দক্ষতার পরিচয় দিয়া আসি-ভারতপ্রবাসী এই তেছে, স্থতরাং विक्रमीत्रण व्यक्तितां वाशिकाकार्या स সিদ্ধি লাভ করিয়াছিল তাহা বিশ্ব-য়ের বিষয় নহে। ক্রেমে ইহাঁরা এক-দিকে চীন, জাপান, ব্রহ্মদেশ এবং অপর দিকে মিসর, ইটালী, ফ্রান্স ও ইংলঙে ভারতজাত দ্রব্যাদি রপ্তানি এবং তত্তৎ-দেশ হইতে ভারতবাসীর প্রয়ো**জনীয়** দ্রবাদি আমদানি করিতে আরম্ভ করি-চীনদেশে অহিফেন রপ্তানি করার কার্য্য ক্রমে ইহাদিগের একচেটিয়া इहेश छेकि। खहिरकन বাবসায়ে ইহাদিগের উদ্যম, কার্য্যতংপরতা ও দক্ষতার প্রমাণ পাইয়া ভারত গবর্ণমেণ্ট পर्याञ्च इंद्रांनिरगत छे शत्र विरम्ध महर्षे হইলেন। ক্রমে এই য়িছদীদিগের বংশ ভারতের অত্যান্ত ছানে বিক্লিপ্ত হইয়া আজকাল ভারতের অনেক পডিল। अधान नश्रदा आश्रहे इ ठावि जन विक्षी দেখা যায়, কিন্তু বোম্বাই ও কলিকাতাই ইহাদিগের প্রধান বাসন্থান।

ভারতবাসী বিহুদীগণ তিন শ্রেণীতে বিজ্ঞা প্রথম শ্রেণী প্রাচ্য বিহুদী, বিতীব শ্রেণী বেনি-ইজ্বেল, এবং তৃতীয় শ্ৰেপী কোচিন মিছদী নামে খ্যাত। প্ৰাচ্য বিচ্চদীগণই উচ্চত্রেণীর বিহুদী বলিয়া পবিচিত। ইহাঁরা য়িত্দী জাতির ব্রাহ্মণ । धटन, बाटन, विष्णांत विक्री नवाट्य ইহাঁরাই সর্কোচ্চ ছান অধিকার করিয়া থাকেন। ইহাঁরা প্রায়ই ইয়োরোপীর-দিলের ক্সায় গৌরবর্ণ ও স্থানী। বেনি-ইজবেল য়িহদীগণ মধ্যশ্রেণীভুক্ত। ইহার। খুব পরিশ্রমী ও কার্যাপটু। এই শ্রেণীর অনেক য়িহুদী হিন্দুর পরি-চ্চ্দ ও বেশভ্ষার অত্করণ করিয়া নিমতম শ্রেণীর স্থিত্দীগণ্ট কোচিন থ্রিছদী নামে খ্যাত। ইহারা অশিক্ষিত এবং অপর হুইশ্রেণী মিহ্নী-দিগের ভৃত্য ও পাচকের কার্ব্য করিয়াই জীবিকা নির্ম্বাহ করে।

ভারতীয় যিত্দীগণ ইয়োরোপীর
যিত্দীগণের ভায় ইরোরোপীয়দিগের
রীতি নীতি ও আচার ব্যবহার অসুসরণ
করে না। ইহাদিগের সধাে ত্রী সাধীনতা
প্রচলিত আছে, কিন্তু ইয়োরোপীয়দিগের
মধ্যে ত্রীসাধীনতার যে আতিশয় দেখা
যায়, তাহা ইহাদিগের মধ্যে লক্ষিত
হয় না। অবিবাহিত যুবক ও অবিবাহিতা যুবতী বিবাহার্থী হইয়া আলাশ
পরিচয় করিবার রীতি য়িত্দীগণের
মধ্যে প্রচলিত নাই। হিলুদিগের ভায়
পিতামাতা বা অভ্য অভিভাবকেরাই
পুত্র কভার বিবাহ সম্ম্ব স্থির ক্রিমা
থাকেন। প্রাম্রাপ (কোট্সিপ্ত্রী
প্রার্থী ইহারা স্থাকর বিবেতনা করে।

ৰৌবন বিবাহ প্ৰচলিত থাকাতে পাত্ৰ ও পাত্রী উভয়েই সম্মতি দান না করিলে ইহাঁ-निद्भन्न मत्था विवाह मन्मन रम्न । मिल्नी দিপের বিবাহপদ্ধতি খীষ্টীয়ানদিগের বিবাহ পদ্ধতির অমুরপ, তবে কোন কোন **বিশেষ বিশেষ পার্থকাও আছে।** য়িভ্দী বিৰাহপদ্ধতির একটী নিয়ম এই ধে বর **७ क्या डेभामनालर** याहार्या व नी ए रहेल वब क्यां क वकी चर्न, वकी রৌপ্য ও একটী তাম মুদ্রা উপহার দিয়া ৰলেন, "মৃসাও ইজরেল প্রবর্ত্তিত ধর্ম শাল্তামুসারে তুমি আমার সহিত আজ **পবি**ত্ৰ উদ্বাহ শৃত্ৰলে আবদ্ধ হইলে।" বে তিনটী মূজা উপহার প্রদত্ত হয়, তাহা বিশাস, প্রেম ও আশার চিহ্নস্কপ বিবেচিত হয়। পরিণয়স্তত্তে আবদ্ধ হইয়া বিশ্বাস, প্রেম ও আশাপূর্ণ জ্নয়ে मन्मि कालगाभन कतिरा मगर्थ हरेरत, **এই বাস**নার নিদর্শন স্বরূপ উপরোক্ত ভিনটী মুদ্রা বিবাহে ব্যবহৃত থাকে।

রিছণী মহিলা গৃহকার্য্যে বিশেষ
দক্ষতার পরিচয় দিয়া থাকেন। স্নেহ,
প্রেম, স্থামিভক্তি এই সকল জীজনোচিত
প্রেম, স্থামিভক্তি এই সকল জীজনোচিত
প্রেম, স্থামিভক্তি এই সকল জীজনোচিত
ক্রেম, তাঁহারা বুদ্ধিতা। অশিক্ষিতা
ক্রেমাও তাঁহারা বুদ্ধিমতার বিশেষ পরিচয়
দিয়া থাকেন। অশিক্ষিতা হইলে জীলোকগণ প্রায় কুসংস্কারের রশীভূত
ক্রেন, কিন্তু দিছলী জীলোকগণের মধ্যে
ক্রেম্ন, কিন্তু দিছলী জীলোকগণের মধ্যে
ক্রেম্ন, কিন্তু দিয়িক পরিচ্ছিদের পারিপাট্য

मन्नत्क ब्रिड्नी त्रम्गीरांग राज्नीला, किन्छ অনেকানেক ইউরোপীয় মহিলাগণের আয় তাঁগারা ফ্যাসন লইয়া উন্মত্তা হয়েন না। ইহাঁদিগের পরিক্ষদ ও বেশভূষার সম্বন্ধে পরি**চ**্রতা ও সাদাসিদে ভাব এই হুইটী লক্ষণ দেখা যায়। অতি ধনাত্যা য়িত্দী রমণীও পোষাক দম্বন্ধে জাঁকজমক ভাল বাসেন না। ভারতীয় য়িল্গী রুমণী গণের মধ্যে একটা কুপ্রথা প্রচলিত দেখা অত্যস্ত ধূমপানপ্রিয়। হঁকা বা গুড়গুড়ির সহযোগে ধ্মপান शिल्मी शूक्ष उ রমণী বডই ভাল বাসিয়া থাকেন। ইহাঁরা এদেশীয়-দিপের ন্যায় তাম লও ব্যবহার করিয়া থাকেন। কিন্তু বাটীতে কোন আত্মীয়-বা বন্ধু উপস্থিত হ'ইলে হিন্দুদিগের ন্যায় পান তামাক না দিয়া ইহাঁরা তাঁহাকে এক পাত্র কাফি পান করিতে দিয়া অভ্যর্থনা করেন। য়িছদীরমণীগণ অতিশয় সঙ্গীত-ইহাদিগের মধ্যে অনেকে সঙ্গীত विष्यां विषय भावपर्नि । ब्रिङ्गी পুরুষগণ যে দেশে বাস করেন, প্রায়ই সেই দেশের লোকদিগের পরিচ্ছদ অনু-করণ করিয়া থাকেন। ইয়োরোপীয় प्रिक्ती **भूक्षकान हे** द्यादताशीय शतिक्कृत ব্যবহার করেন। ভারতীয় য়িভ্দী পুরুষ গণ এতদিন মুসলমানদিগের পরিচ্ছদের অত্নকরণ করিতেন, কিন্তু এক্ষণে সাহেবী পোষাক ব্যবহার করিতে আরম্ভ করিয়া-ম্ভিদী রমণীগণের ইবোরোপীয় ও হিন্দৃত্বানী পরিচ্ছদের

সংমিশ্রণ—গাউন, আঙিয়া, কুতা, মোক্রা ইড্যাদি। অলকারের মধ্যে হার, বালা, ইয়ারিং ও ক্রচ এই কয়টী রিছদী রমণী-গণের অতি প্রিয়। ভারতীয় য়িছদীগণের মধ্যে একটী অতি অত্ত প্রথা প্রচলিত আছে, তাহা এই যে পুত্রসন্তান জন্ম গ্রহণ করিলে পুত্রের পিতা তাহাকে হুইমাস কাল পরে প্রথম দর্শন করিয়া থাকেন। ঐ সম-রের পূর্ব্বে পুত্রমুখ দর্শন করা য়িছদীগণের মধ্যে অভ্যকর বিবেচিত হইয়া থাকে।

নিহলীগণের ধর্মজুডাইসম্ (Judeism)
নামে খ্যাত। উহা অতি প্রাচীন ধর্মা
উহাতে হিন্দু ও বৌদ্ধর্মের ভাব অনেক
পাওয়া যায়। য়িহলীগণ অতিশয় স্বধর্মানিরত। অতি প্রাচীন কাল হইতে
য়িহলী কাতি ঈশ্বরপরায়ণতার পরিচয়
দিয়া আসিতেছেন। অনেক পণ্ডিতের
মত এই যে খ্রীষ্টধর্ম্ম অপেকা য়িহলীদিগের
ধর্ম্ম বিভদ্ধতর,কারণ ইহাতে অধিতীয় ঈশরই একমাত্র উপাক্ত দেবতাওমুক্তিদাতা।

পঞ্চযত্ত।

"পঞ্চযক্ত" নাম গুনিরা আ্যার পাঠিকা ভগিনীরা কি ভাবিতেছেন জানি না, আমি কিন্তু যে দিন প্রথম উহা ভ্রিয়া-ভাবিয়াছিলাম, সে ছিলাম দে দিন কালে যেমন রাজস্য়, অশ্বমেধ, প্রভৃতি যজ্ঞ প্রচলিত ছিল, পঞ্চযজ্ঞও হয় তো সেই রকম কোনও একটা ক্রিয়া। পরে হিন্দুশাল্লের প্রসাদে ক্রমে ক্রমে বুকিলাম, পঞ্চযজ্ঞের বিষয়ে যাহা ভাবিয়া-ছিলাম, বাস্তবিক তাহা নহে। পঞ্চযজ্ঞ मानत्वत्र कीवत्वत्र निकाः ७ काल मा বাপ বে উদ্দেশ্যে বিদ্যালয়ে ছেলে মেয়ে পাঠাইরা থাকেন, ভারতীর আর্ব্য ঋবিগণ महे উष्मभाई "প্ৰায়জ্ঞ" করিরাছেন-ইহা হইতে মানবের মন্থ-বাৰ লাভ হইতে পারে। "পঞ্চতত' কি মহা পরে বলিতেছি।

হিন্দুশাক্রান্থসারে চারি প্রকার আঞ্ মের মধ্যে গার্হসাশ্রমই শ্রেষ্ঠতম আশ্রম। ব্ৰহ্মচৰ্য্য, বানপ্ৰস্থ ও সন্ন্যাসাশ্ৰমে, আছ-**দং**যম, ত্যাগস্বীকার প্রভৃতি মহ**লা ণাবলী** সম্পূর্ণরূপে বিকাশ প্রাপ্ত হয় বটে, কিন্তু গাহস্থাশ্রম অবলম্বন ব্যতীত মানবের সর্কা-কীণ মন্থব্যত্ব পরিষ্ফ্,টিত হইতে পারে না। ভগবান মানবজাতির শরীর, মন ও ক্সদরে যে সকল শক্তি ও ভাব দিয়াছেন, গাৰ্ছস্থা-अम अवनयन कत्रितारे त्य नमूनम विक-সিত ও চরিতার্থ হইতে পারে; ভগবান মানবজাতির জন্য যে সকল কর্ত্তব্য নির্দেশ করিয়াছেন, গার্হসাভাম অবলম্বন করিলেট পে সমুদয় পালিত হইতে পারে। অতএয়ু মানবজীবনের যাহা প্রধান উদ্দেশ্য. গাহ্রাভ্রম অবলম্বনেই তাহা পূর্ণ হইবার **ब**दे बना भारी **ब**दिशन

শার্হ আমকেই "জ্যেষ্ঠাশ্রম" বলিয়া গিয়া-হেন; আমাদেরও প্রতীত হয় যে গার্হস্থা-শ্রম স্বর্ধের দোপান।

ঁকিন্তু সকল কথা সকলের পক্ষে ঠিক্ খাটে না। যদি গাইভাশ্রম সকলের **পক্ষেই"সর্গের সোপান"হইত, তাহা হইলে** ব্রামায়ণে রাবণের চিত্র থাকিত মহাভারতে হুর্য্যোধনের চিত্র থাকিত না, আমাদের দেশে কুদ্রাশয় স্বার্থপর গৃহস্ত-গণের চিত্র সচরাচর দৃষ্টিগোচর না। অতএব ঠিক করিয়া বলিতে হইলে বলা যায় যে, ভগবানের চরণে আত্মোৎ-**দর্গ করিয়া, বিশ্বহিতৈ**ষণা উদ্দেশ্যে যিনি গার্হসাশ্রমে প্রবেশ করেন. গার্হসাশ্রম অবলম্বন করা সফল হয়। সেই গৃহস্থই প্রকৃত ধর্মজীবন লাভ করিতে পারেন এবং তাঁহার পক্ষে সংসারাশ্রম **ঘথার্থই স্বর্গের সোপান হইতে** পারে। আর যে ব্যক্তি সার্থপরতায় অন্ধ, আত্ম-সংযমে অকম, গার্হসাশ্রম তাহার পক্ষে অধ:পতনের পিচ্ছিল পথ, নরকের প্রশস্ত ষার*। সে মানব গৃহধর্মের অযোগ্য।

অতএব সাধারণ মানবকে গার্হস্থা-শ্রুমে প্রবেশ করিতে হইলে অপ্রে ভগবানের চরণে আত্মোৎসর্ম ও বিশ্ব-ইইতৈরণা বতে দীক্ষিত হওয়া অবশ্য-

কর্ত্তব্য। সমাতম ধশ্মবেতা সর্কাত্রদর্শী আৰ্ষ্য ঋষিগণ ইহা বুঝিয়াই গৃহত্ত্বের স্থশিক্ষার জনা বছবিব উপায় করিয়া গিয়াছেন। তাঁহার। জানিতেন, কেবল শাস্ত্রাস্থালন ভারা সকল মসুব্যের মনুষ্যুত্ লাভ হইতে পারে না; প্রকৃত জীবন লাভ করিতে হইলে সদা সাধুভাবে **উত্তে-**জিত ও সাধু কার্য্যে অভাক্ত হওয়া সাবশুক। প্রকৃত জীবনের জন্ম জ্ঞান চাই, কর্ম চাই, ভক্তি চাই। এই তিমের সম-বায়ে মন্তব্যত্ত বিকাশ প্রাপ্ত হইয়া থাকে। এই জন্য আর্ঘ্য ধর্মাচার্য্যগণ কেবল বেদ, উপনিষৎ, গীতা, ভাগবতে শিক্ষা প্রচার করিয়া ক্ষান্ত হন নাই। জ্ঞান যাহাতে কর্ম ও ভক্তির সহিত মিলিত হয়, তাহার জন্য বহুবিধ ব্রত, নিয়ম, ক্রিয়া প্রবর্ত্তন করেন। এই সকল ব্রত, নিয়ম, ক্রিয়া-দির অনেক গুলিই মানব জগতে চিরস্থায়ী হইতে পারে; কারণ মানব জগৎ চির-দিন যে উন্নতির পিপাস্থ, আর্য্য ঋবিদিগের অনেকগুলি ব্ৰত নিয়ম মানব জগংকে সেই উন্নতিপথেই লইয়া যায়—মানবের মনুষ্যত্ব লাভের সহায়তা করে। দিগের আলোচ্য "পঞ্চয়ক্ত"ও আর্য্য-গণের এই উদ্দেশ্য পূর্ণ করিবার জন্ত প্রবর্ত্তিত ইইয়াছে। ইহার বিষয় **আলো**-চনা করিলে ইহার প্রবর্ত্তক মহাত্মাগণের ধর্মনিষ্ঠা, মহাপ্রাণতা ও বৃদ্ধিমন্তায় চমৎ-কৃত হইতে হয়, আর আর্ব্যভারত বে **জগ**-তের শীর্ষভানীয় হইয়াছিল কিলের জক, তাহাও কতক পরিমাণে বুরিতে পারা বার

^{ु *} हिन्मादिष्य अहे कथा वतन ; छत्रवान् अह

[্]য সকার্য্য: প্রবড়েন অর্থনক্ষমিচছত। । স্থাধ্যে হক্তিক্র) নিতাং বোহধারো। হুর্কলেন্সিলে: । মন্ত্রসংহিতা ৩৭৯।

পঞ্চ প্রত্ত প্রত্ত গণের দৈনিক পাঁচ প্রকার কার্যা। এই পঞ্চযজ্ঞের নাম, ১ম, ব্রহ্মযজ্ঞ । ২য়, পিতৃযজ্ঞ । ৩য়, নুযজ্ঞ । ৪র্ম, ভূত্যজ্ঞ । ৫ম, দেবযজ্ঞ । হিন্দুশাস্ত্রে লিথিত আছে,—

''ব্রহ্মযক্তং দৈব্যস্তং ভূত্যক্তং চ দর্বক।। দুয়ক্তং পিতৃযক্তং চ যথাবিধি ন হাপয়েও॥"

অর্থাৎ মানব ব্রহ্মযজ্ঞ, দৈবযজ্ঞ, ভূতযজ্ঞ, নৃযজ্ঞ, পিতৃযজ্ঞ যথাবিধি পালন করিবে—কখনই পরিত্যাগ কবিবে না। ইহার পরে পঞ্চযজ্ঞ-ত্যাগী গৃহীকে আর্য্য শ্ববিগণ "নরাধম"ও বলিয়াছেন, "নরপিশাচ"ও বলিয়াছেন।

পঞ্চযজ্ঞের কোনটা কি প্রকারে আচ-রিত হইবে তদ্ধিয়ে হিন্দুশাস্ত্র বলেন,— 'অধ্যাপনং ব্রহ্মগ্রুঃ পিতৃযজ্ঞস্থ তর্পণম্। হোমো দৈবো বলিভৌতো নুযজ্ঞোহতিপিপূজনম্॥" মনু, ৩৭০

অর্থাৎ অধ্যয়ন অধ্যাপুনের নাম এশা-যজ্ঞ *, পিড়লোকের তর্পণের নাম পিড়-যজ্ঞ, হোমকে দৈবয়জ্ঞ, বলি জর্থাৎ সকল জীবকে আহারদান করাকে ভূত-যজ্ঞ, এবং অতিথিসেবাকে নৃযজ্ঞ কহে। এই সকল কার্য্যের ধারা পঞ্চয়ক্ত আচি-রিত হইয়া থাকে। পঞ্চয়ক্তের আচরণে গৃহী ও গৃহিণীগণ কি পুণ্য লাভ

* মূলে ব্ৰহ্মযজ্ঞের কার্ম "অধ্যাপন"ই লিখিত আছে। কিন্তু টীকায় কুলুক্ডট্ট "অধ্যাপন-শব্দেনাধ্যয়নমণি গৃহুতে" ইত্যাদি লিখিতাছেন। অধ্যয়ন ব্যতীত অধ্যাপন বে অসম্ভব, ইহা সকলেই বুবিতে পারেন। ক্রিবার যোগ্য হন, আমরা তাহা যথা-সাধ্য বিবৃত করিতে প্রবৃত হুইলাম ।

১ম যজ্ঞ-ব্ৰহ্মযজ্ঞ, অধ্যয়ন ও অধ্যা-পন। গৃহস্থগণ নিজে নিরেট মূর্থ অধ্বা লেখাপড়ার প্রতি বিত্য হইলে পারি-বারিক বা সামাজিক অমঙ্গলের সভাবনা; অন্ততঃ মানবের গার্হহা জীবন বৈরূপ সম্পূর্ণ হওয়া উচিত, মুর্থ গৃহস্থগণের সেরপ হইতে পারে না; এই অনিষ্ট নিবা-রণের আশয়ে আর্য্য ঋষিগণ অধ্যয়নকে रेमिक कर्जिरवात मरका ध्रतिशास्त्र (১)। কিন্তু কেবল তাহাই নহে। নিজের অথীত উপদেশে অত্যের মুর্যতা দুর করাইতেই শিক্ষার সার্থক**তা। আর্ব্য** ঋষিগণের অনেকেই জানিতেন, যে সমা-জের প্রত্যেক ব্যক্তি স্থশিক্ষিত, সেই সমাজেরই প্রকৃত উন্নতি হইয়া থাকে (২)। কিন্তু সমাজের প্রত্যেক ব্যক্তির স্থশিক্ষা, বড সহজ কথা নহে। সে কাজের জন্ম প্রত্যেক শিক্ষিত ব্যক্তির প্রম, হত্ন ও চেষ্টা আবশ্যক। আমরা অগ্রে বলিয়াছি, অধ্যয়ন গৃহস্থগণের অবশ্যকর্ত্তব্যরূপে নিদিপ্ট ছিল। খুতরাং গৃহস্থেরা অনে-কেই শ্বনিকিত ছিলেন। তাঁহাদিগের

- (>) শিক্ষিত ও অশিক্ষিত বাক্তিদিপের মধ্যে বে কি দারণ পার্থকা তাহা অনেকেই বোঝেদ। তথাপি কেহ কেহ বৃথিয়াও অবৃথ হন ইহা বড়ই ছংখের বিষয়।
- (২) যে সকল আর্থা বেলাদি বাক্তিরিংশকের পক্ষে নিবেধ করিয়াছেন, তাঁহাদের কথা আৰক্ষ বলিতেছি না।

ইপরে লোকশিক্ষার ভার অর্পিত হওরাতে সমাজের বছ ব্যক্তিই স্থশিক্ষা লাভ
করিতে পারিত। ই এইরপ কৌশলেই
কর্মাজে ছোট, বড়, দরিজ, ধনী, ত্রী, পুরুষ
স্কলেই স্থশিক্ষা লাভ করিত। লোকশিক্ষার এই প্রকার বছল প্রচারে ভারতীর আর্ঘ্যসমাজ প্রকৃত পক্ষে উন্নততর
উন্নততম হইয়াছিল। এই আক্মশিক্ষা ও
লোকশিক্ষা হিন্দু আর্ঘ্য-গণের "ব্রহ্মযজ্জের
আচরণে মানব কি পুণ্যের অবিকারী
ইইরা থাকেন, ভরদা করি আ্মাদের
দেশের ভাই ভগিনীরা সে কথা
বুবিরাছেন।

২য় পিতৃযজ্ঞ---পিতৃলোকদিগের শ্রান্ধ ও তৰ্পণ। পরলোকগত পিতৃলোক-দিপের আদ্ধ ও তর্পণ আর্য্য ঋষিগণ গৃহ-স্থের দৈনিক কর্ত্তব্যরূপে নির্দেশ করিয়া-ছেন কেন, এ কথা এখনকার কালে অনে-**কেই** বুঝিতে চাহেন না।—তবে ইহ-লোকবাসী পুত্র, পৌত্র, প্রপৌত্রদিগের প্রদত্ত জলপিও যে পরলোক পর্যান্ত পৌছিয়া পিতা, পিতামহ, প্রপিতামহ-কৃপ্তিসাধন করিতে পারে, বিষয়ে আমরা কোনও বিশ্বাসযোগ্য প্রমাণ **শ্বশ্য দিতে পারি না; কিন্ত যে তুইটা** কারণে আর্য্যগণ ইহা মানবের ''কর্ত্তব্য-কাৰ্বা" বলিয়াছেন, তাহা বুকিতে পারা, स्रभेगाध्यः नटह । व्यथमङ: य मकल **উক্তিমান্ সভান পরলোকগত পিতৃপুরুব**-বিগের জন্ম শোকাকুল হন, পিড্যজ্ঞের

অমুঠানে ভাঁহারা বিশেষ শান্তিলাভ করিতে পারেন। পিড়ফজের আচরণে একদিকে আয়োর আমেরত বেমন অহুভূত হয়, অপর দিকে ইহলোকবাদী আস্ত্রীয়ের সহিত পরলোকবাসী আত্মীয়ের সমক্ষের पृष्ठां परिकार क्षाप्रकार रहा। কুল মানবের পক্ষে এরপ ঘটনা যে কত-দূর শাস্তিপ্রদ, ভুক্তভোগিপণ তাহা অবশ্রই বুঝিতে পারেন। কিন্তু পিতৃযজ্ঞের উদ্দেশ্ত কেবল ইহাই হইলে "পিত্যজ্ঞ" স্ক্ৰ-সাধারণের "অবশ্র কর্ত্তব্য" বলিতে পারি-তাম না। ইহার দিতীয় উদ্দেশ্রই মানব-জগতের অধিকতর কল্যাণ সাধন করে; দেই জন্ত ইহা মানবমাত্রেরই অবভা-कर्खवा वना यात्र। (म উष्म्यः धहे (य. ভরদা করি দকলেই বুঝিতে পারেন যে ভক্তিও কৃতজ্ঞতা অভাবে মানব-স্থান मक्र्मिव भी बन हरेश भए । — किवल তাহাই নহে, ভক্তিহীন ও ক্বতচ্চতাবিহীন বৃদয়ে কোনও मम् ७१७ डेलगुक्तक्राल বিকাশ লাভ করিতে পারে না, মানব-প্রকৃতিও কাজে কাজে গর্কা ও কঠোরভার প্রতিক্বতি সক্ষপ হইয়া দাড়ায়। হৃদয়ের অন্যান্ত সাধুভাবের ন্যার ভক্তি ও ক্লভজতাও অনুশীলন ধারা ক্রমবিকাশ লাভ করে। পরলোকগত পিতৃপুক্লৰ-দিগের আদাদি হইতে মানবহৃদয়ে সেই ভক্তি ও কৃতজ্ঞতা উদ্দীপ্ত হইন্না থাকে। आषामि मानत्वत्र चक्कि-উन्मीनक किशा ; মাত। পিতা প্রভৃতি পিতৃলোকদিগের শ্রাদ তর্পণ করিতে২ মানবের ভক্তি ও কুতজ্ঞতা

ভরক্তের উপরে ভরক ছুটাইরা যে সহল লোতে উথলিয়া উঠে, মানবের অহলা-রাদি সকল প্রকার কঠোরতা চূর্ণ হইয়া যায়, এ সকল বিষয় "পিতৃযজ্ঞ"-কারী মানবগণ অবশুই বৃকিতে পারেন। আবার হিন্দুশাপ্রাহ্মশারে পিতৃযজ্ঞ সমাপন করিয়া পিতৃগণের নিকটে গৃহস্থকে যে বর যাচ্ঞা করিতে হয়, তাহাতে প্রকৃত নিঃস্বার্থতা ও পরার্থপরতার অভ্যাস হয়, আমরা দেশীয় ভাই ভগিনীদিগের অবগতির জন্ম এস্থলে তাহা উদ্কৃত করিলাম,—

"অঘোরাঃ পিতরঃ সন্ত গোত্রং নঃ পরিবর্জতাস্।
দাতারো নোহহভিবর্জস্তাং বেদাঃ সন্ততিরেব চ ।
আদ্ধা চ নো মা বাগমদ্ বহু দেরঞ্চ নোহস্থিতি।
আদং চ নো বহু ভবেদতিধীংক লভেমহি ।
যাচিতারক নঃ সন্ত মা চ যাচীক্ম কাঞ্চন।
আদং প্রবর্জতাম্ নিত্যং দাতা শতং জীবত ॥"

অর্থাৎ পিতৃগণ আমাদিগের নিকটে দদাই সৌম্যমূর্ত্তি হউন; আমাদিগের বংশপরক্ষারা বিস্তীণ ইউক; দাতাদিপের সংখ্যা ও সমৃদ্ধি বৃদ্ধিত হউক; আদা হইতে আমবা যেন কদাচ বিচলিত না হই; দানের বন্ধ আমরা যেন প্রচুর লাভ করি। আমরা যেন প্রচুর আর ও বহু অতিথি লাভ করি। আমরা যেন বহু ভিক্ষার্থীর প্রার্থনা-পূর্ণ করি; যেন কাহা-রও নিকটে আমরা কিছু ভিক্ষা না করি; গৃহে জন্ম নিত্যই বৃদ্ধিত হউক; এবং দাতারা চিরজীবী হউন।

ভগবলগীতার যে নিকাম ধর্ম প্রকাশিত, যে ধর্ম হইতে প্রের্মন্তর ধর্ম জ্বভাপি মানবজগতে প্রচারিত হয় নাই, এই প্রার্থনার ছত্তে ছত্তে সেই নিকাম ধর্ম প্রতিভাত হইয়। আছে। এই জ্বপূর্ব পিতৃযজ্ঞ মানবের শান্তিবিধান করে, ভক্তি কৃতজ্ঞতার উদ্দীপন করে, মানবকে স্বার্থত্যাগী ও পরার্থপর করে। এতগুলি স্থাশিলা হয় বলিয়াই জার্য্যাণ পিতৃযজ্ঞকে মানবের দৈনিক কর্ত্তব্যরূপে নির্দেশ করিয়াছেন। জ্বনশঃ

সতী ও শান্তি।

সপ্তম পরিচ্ছেদ।

আমাদের দেশের মেয়েদের আর একটা
মহন্দোষ এই, ছেলে যখনই কাঁদিয়া উঠে,
তথনই ভাহাকে স্তনপান করান। ছেলে
কাঁদিলেই কি জানিতে হইবে যে তাহার
ক্থা হইয়াছে? এ ছাড়া কি তাহার কাঁদি
বার আর অন্য কোন কারণ নাই? ছেলে
হুধ খাইয় ছুমাইল, হঠাৎ কাঁদিয়া উঠিল,

অমনি মুখে ক্তন না দিয়া দেখা উচিত কেন সে কাঁদিয়া উঠিল। কাঁদিবার আনেক কারণ থাকিতে পারে। মশা কামড়াইল, ছারপোকা কামড়াইল, ছেলে কাঁদিয়া উঠিল। ভারি পরম ইইরাছে অথবা ভারি শীত লাগিয়াছৈ, ছেলে কাঁদিরা উঠিল। অতিরিক্ত ইশ্বাণ্ডরাতে মুমাইতে পারিতেছে মা, ছেলে

কাঁদিয়া উঠিল। এ ছাড়া কাঁদিয়া উঠি-বার আরও অনেক কারণ থাকিতে পারে। অতএব ছেলে কাঁদিয়া উঠিল ৰ্বলিয়া যে অমনি তাহাকে স্তনপান করাইতে হইবে এরপ মনে করা ভারি মাতার এ বিষয়ে অনবধানতা বশত: যে কত হাজার হাজার শিশু माणांक काँमाहैया हिल्या যাইতেছে. তাহার ধবর কে রাথে গ আমাদের **(एटबंद अरा**नक भारत मान करतन (य, ছেলেকে যত বেশী থাওগাইবে, তত সে বেশী হাই পুই হইবে। এই ভ্রমে পড়িয়া আমাদের দেশের মেয়েরা যে স্ভানের কি অনিষ্ট করিতেছেন, তাহা মনে করিলে কালা আদে। ইহাতে সন্তান হার পুর বলিষ্ঠ হওয়া দূরে থাক, বরং রোগে ক্রমশ: তুর্বল হইয়া পড়ে, অজীণ্তা প্রভৃতি পীড়ায় অশেষ কর পাইলা মায়ের কোল ছাড়িয়া অবশেষে মৃত্যুর কোলে শান্তি লাভ করে। যত দিন আমাদের **দেশের মে**য়েরা এ বিষয়ে সতর্ক না হইবেন, ততদিন সন্থানের এই অকালমৃত্যু কখনই বুচিবে না। ছেলে স্তনপান করিতে করিতে যথনই দেখিবে আর স্তন্পান করিতেছে না, সেই মুহুর্তে তাহাকে স্তন দিতে বিরত হওয়া উচিত। যথনই স্তন ছাড়িল, তথনই জানিতে হইবে যে, তাহার ভ্রমপান করা শেব হইরাছে- তাহার, ্পেট ভরিয়াছে। স্তন পান করাইবার ্রিকটা ঠিক সময় থাকা ভারি দরকার। দিনের বেলা ছুই ঘটা অন্তর, এবং

রাত্রিতে ভিন ঘণ্টা অন্তর স্তনপান করাম উচিত। বয়স বৃদ্ধির সঙ্গে সঙ্গে স্তন্পান করাইবার সময়ও বুদ্ধি করা উচিত। যদি মাতার স্তনে হুধ না থাকে, তাহা হইলে গাই ছধ ব্যবস্থা করা যাইতে পারে। কিন্ধ সেই গাইত্বধ থাওয়াইবার প্রণালী এইরূপ হওয়া উচিতঃ-প্রদবের পর প্রেথম মাদে এক ভাগ খাঁটী গাই ছধের সহিত ছই ভাগ জল মিশাইয়া ছেলেকে দিবে। দিতীয় ও তৃতীয় মাসে যতটুকু হুধ তত টুকু জল, চতুর্থ মানে ছই ভাগ ছব এবং এক ভাগ জল মিশাইয়া ছেলেকে খাওয়ান চতুর্থ মানের পর খাঁটি হুধ ছেলেকে দেওয়া যাইতে পারে। **ছে**লেকে "বাসী ছ্ধ" থাওয়ান কথনও উচিত নয়। বাদী ছল যত রোগের মূল। এদিকে থেমন বাদী ছুধ খাওয়ান একেবারে নিষিদ্ধ, ওদিকে আবার যেন কথন ঠান্তা ত্ব থাওয়ান না হয়; কারণ ঠাতা ত্ব হজম করিতে অনেক দেরি হয়, এবং ইহাতে অনেক রোগের উৎপুত্তি হইতে পারে। আর যে গাড়ীর ছধ পান করান হয়, দেখা উচিত, সে গাভীর কোন রোগ আছে কিনা? যদি কোন রোগ থাকে,তাহাইইলে ভাহার হুধ কশনও ছেলেকে থাওয়াইবে না। **ত্**ধের সঙ্গে যে জল মিশাইয়া দেওয়া হয়, দে জল পরিপাক হওয়া উচিত; কারণ জ্বলের खनांखानत छेलत्र क्रांधत स्वांखन स्रात्क নির্ভর করে। তথ ফুটাইরা লইলে আর কোন রকম দোষ থাকিবার সভাবনা

থাকে না। কিন্তু ত্ব ফুটাইবার সময়-ইহাও মনে রাখা উচিত যে "এক বলগ্" ত্ব ছেলের পক্ষে উপকারী।

এখানে একটি কথা বলা আবশ্যক যে যত ছেলের অকাল মৃত্যু হইরাছে, ভাহার মধ্যে এই দেখা গিয়াছে যে নাতার স্তনত্ব্ধ পানে পরিপুষ্ট সন্থান অপেক্ষা গো-ভ্রম পানে পরিপুষ্ট সন্থান অধিক অকালে মৃত্যুমুখে পতিত হয়। স্তনত্ব্ধ পানে পরিপুষ্ট সন্থান সকল অভিশয় ক্ষষ্ট পুষ্ট ও বলিষ্ট হইতে দেখা যায় এবং ভাহারা দীর্ঘকীবী হয়। অভএব আমা-দের এদেশের মেয়েদের এবিষয়ে বিশেষ মনোযোগ থাকা আবশ্যক। কি করিলে মাতার স্তনে প্রের পরিমাণে হুধ হয়, তাহা আগে বলা হইয়াছে। অত-এব সেই সকল নিয়ম মত কাজ করিলে আর ত্ধের ভাবনা ভাবিতে হইবে না। সন্তানের পক্ষে গাই ত্থ অপেকা বে স্তনের ত্থ শতত্তণ উপকারী, ইহা সর্বাদা সকলের মনে রাথা উচিত। এই স্তন্ত্রের উপর সন্তানের সাস্থ্য, এমন কি, তাহার দীর্ঘজীবন নির্ভর করিতেছে। অতএব সন্তান যাহাতে ঐ সুনহুগ্ধ হইতে বক্তিত না হয়, সে বিষয়ে বন্ধু রাধা সকলের উচিত।

মন! তুমি হওনা রাজা।

১
মন ! ভূমি হওনা বাজা
কেন বও ভূতের বোঝা !
ছ'জন রাজার অধীন হয়ে *
কাল কাটাবে আদেশ ব'য়ে ?
একটুও জ্ঞান নাই তব কি,
তাই হতে চাওনা স্থাী ?
মন ! ভূমি হওনা রাজা,
রাজা হওয়া বড় মজা।

হাট, কোট, গাউন, বভি, সেমিজ কামিজ লাখ কি কোটী, চেন আংটী চিক বালা, জাপার গেলাস রূপার থালা,

इंग्रन त्रांका वक् तिथा।

আতর গোলাপ ল্যাবেণ্ডার,
অতিকলোন, ম্যাকেসার,
লুচি মণ্ডা, মুরগি মটন
দধি হুদ্ধ স্থত ওদন,
দোতালা তেতালার ভিতর
কোমল শন্যা থাটের উপর,
স্বার্থে যাহা থেটে মর
ও গুলি ছয় রাজার কর,
কর দেওয়া নয়ত সোজা,
তাই বলি মন! হণ্ডনা রাজা।
ত
বাহিরেতে শরচ সহ,
আর:পুরে কর্মান্তর,
আর কত দিন এমনি ভাবে

🤻 হয়ে দেহ লাভোর রাজ। আর কত কি ভুগ্বে দাজ। ? ভূতের বোকা ল'রে মাথার পড়িতেছ প্রতি পার, আর কেন ভূগবৈ সাজা গ ः छारे विन मन ! रुथना ताका।

যথন রে মন! রাজা হবে, े इंड्डिय ने दिन्य ने देव---বশীভূত হয়ে র'বে আদেশ তব মাথায় ব'বে। এক বার ভেবে দেখ দেখি মন। ब्लांत मांभरि ताका छ'कन স্থুখ শাস্তি কেড়ে নিয়ে भरथत्र ककौत्र करत मिरह তব দেহ রাজ্যের রাজা--হরে ব'লে করছে মজা, একটুও বল নাই তব কি, निल नव मिख काँकी। ৰতা, ধুতি, ক্মা, দম, শৌচ, ইব্রিয়সংধ্য, मार्कीका, चारकाथ मान ৰী বিছাকে পাঠাও রণে.

বেঁধে তারা ছট দলে দিবে তব চরণতলে, किया शीत मन करत, **मग**णे श्रद्ध+ मृष् ४'दत्र যুদ্ধে হয়ে অঞ্সর ছয় রাজাকে দূর কর, স্থথ, শান্তি ধর্ম সনে वित एक्ट-ब्राक्तंत्रत्न, পা'য়ের উপর পা দিয়ে. যাও ওরে মন! কাল কাটিয়ে, হওরে নিজে রাজার যোগ্য, দেহ রাজ্য ভোরি ভোগা. বিশ্ব রাজ্যের রাজা যিনি, দিয়াছেন এ আদেশ তিনি, লজ্বিলে তাঁর আদেশ ভবে ছ'জন রাজার অধীন হবে। রাজা হওয়া বড় মজা, তাই বলি মন হওনা রাজা।

কু, রা।

 ধৃতি ক্ষমা দমোহতেরং পৌচমিক্রিয়নিগ্রহঃ। थीर्विमा अञामदकारभागनकः धर्मानकनम् । উপরিউক্ত 'দশচী অব্র' এই দশ ধর্মকে বলা रहेन।

পশুহতা।

ি(👀 সংখ্যা ১৪৪ পৃঠার পর।) ুল্ভা করাসিরা ভেকজাতির দক্ষিণ **।** প্রকৃতিকণ করিয়া থাকেন। ছুঁচা অতি ক্ষুদ্ধ কর; কিন্ত ক্ষেত্রিক করাসিস্

मित्र मिर्देश मार्था अवनी नित्री आहरू, ্ৰেবল তাহা হইতে ছুৰ্গন্ধ ৰাছিল হয়, ঐ শিরা শরিভ্যাগ করিলেই ছুঁচার মাংস উপাদের ভক্ষা ज्ञवा इंहेरव। अहे व्यादि-প্রতিভ আবিজ্ঞিরা করিরাছেন বে, ইহা- জিরা ছারা ঐ পণ্ডিভ মহাশর

জাতীর অনেকের প্রমাবক্সবলিয়া পরি-। প্রণিত হইগাছেন।

ভারতবর্ষের অনেক জাতি. মুগ-মাংস ও গণ্ডারের মাংস পবিত্র বলিয়া ভোজন করে। আসাম দেশবাসীরা হস্তি-মাংস ভক্ষণ করে। কাফরিজাতি জল-হস্তীর মাংস এবং আফরিকার অস্তাস্ত অসভ্য লোক সিংহের মাংস, আসিয়ার ভ্রাণ প্রদেশবাদীরা ঘোটকের মাংদ, ঞ্জীক ও রোমকেরা কুকুর, কুরুট, বিরাল ও গাধার মাংস, চিনেরা ইন্দুর মাংস, ভারতবর্ষের পর্বতবাদী অসভা জাতিরা সাপ, গোদাপ, টিকটিকী প্রভৃতি দরীত্প-গণের মাংদ ভক্ষণ করে। विद्वहना कतिया एमथिएन न्याष्ट्र ताथ इहेरव रव, পভ, शकी, मज़ी एभ, की है, পত্ৰু প্ৰভৃতি কোন প্ৰাণীই মানব জাতির করাল প্রাস হইলে নিস্তার পায় নাই।

কৌত্হল চরিতার্থ করিবার নিমিত্তও অনেক ব্যক্তি অনেক প্রকারে প্রাণিহিংদা করিয়া থাকে। অজ্ঞান বালকেরা যেমন আপনাদের কৌত্হল চরিতার্থ করিবার নিমিত্ত ভেকাদি নিরীহ জন্তকে যৎপরোনাত্তি যন্ত্রণ প্রদান করে; তাহারা যেমন পক্ষী,পতঙ্গ, কীট প্রভৃতি কোন একটী জন্ত দেখিলেই তাহাকে বন্ধন করে, কাহারও পদ, কাহারও ডানা কাটিয়া দেয়, উহারা যাতনার যত ধড় কড় করে, বালকেরা ততই আক্লাদে নৃত্য করিতে থাকে; দেইরপ এতক্লেশীয় অধিকবয়ক্ষ অনেক

ব্যক্তিও বিষয় কর্ম ইইতে অবক্ষ ।

দিবদ প্রাপ্ত হইলেই নিদারুল ব্যাধগরী
ভায় দলবন্ধ হইয়া প্রারণীতে মংগ
শিকার করিয়া থাকেন। ভাঁহারা নিরপ
রাধ মংসাকে কন্টকবিন্ধ করিয়া কেরুপ ।
কৌতুক প্রদর্শন করিয়া থাকেন, ভাহাতে ।
ভাঁহাদিপের অভঃকরপে দ্যার দেশ ত
আচে, এরপ বোধ হয় না।

তৃতীয়তঃ। পূর্ব্বোক্তরপে প্রাশ্রমণ করা ভিন্ন মানবজাতি কত শত প্রকারে জন্তগণের প্রতি নৃশংসাচরণ করিয়া থাকেন, তাহার ইংস্তা নাই।

কুষক ও বণিকেরা যথন প্রাদি প্রা ঘারা ক্রষি ও বাণিজ্য কার্য্য করে, রজ-কেরা যথন পর্দভগণের দ্বারা আপনা-দিগের গুরুতর বঙ্জার বহন করায়,্ তথন তাহার। ঐ মহোপকারক জভর্ম প্রতি যেরূপ নিষ্ঠুর ব্যবহার করে, তাহাট্র কাহার অবিদিত আছে? তাহারা ঐদ নিরীহ জন্তুগণের উপর অপরিমিত ভারা প্রদান করে, অরপরিমাণে ও অতি জঘত আহার প্রদান করে, যথার্থ পিপাসা বুকিয়া বারি পান করিতে দেয় নানিতার অসাস্থাকর স্থানে বন্ধ করিয়া রাখে, কোনরূপ রোগ উপস্থিত হইলে বায়ের আশহায় চিকিৎদা করায় না, বার্ক্ট-গ্রস্থ ও শীর্ণকলেবর হইলেও ভাহাকে विनक्त विवाहित छात्र भत्रिश्चम कदारैवार्ट চেষ্টা পায়। অধিক কি, দিবারাতা और চ্ছেদ ভার বহন করাতে শরীরেম্ব বিচ্ছিন্ন হইয়া শোণিতপাত

বামাবোধিনী পতিকা। 😁 ৫ম ক-২য় ভাগ।

া ঐ পাবণ্ডেরা তাহাদিগকে কিছু। অবকাশ বা কিঞ্চিন্মাত্র তাহাদিগের
ার লেখন করিয়া দেয় না বরং তাহারই
পর কশাঘাত করে। ছাগ গবাদি
তরা থোঁয়াড়ে যেরপ ক্রেশ পাইয়া
থাকে, তাহা কাহার না বিশ্বিত আছে ?
হস্তিপকেরা আপনাদিগের অভিলাবান্ত্ররপ ক্রেতগননের ক্রেটা দেথিলেই
হস্তিগণের মন্তকে এরপ ভীবণতর অক্শেল আঘাত করে যে এতাদৃশ পর্বতাক্রার প্রকাণ্ড জন্তও একবারে আর্ত্রসরে
চীৎকার করিতে থাকে; তাহাদিগের
আইত্বা মন্তক্ত বিদীর্ণ হইয়া শেণিত
বর্ষণ করিতে থাকে।

শকটবানেরা যে দকল ঘোটক, গরু
ও মহিব দারা শকট চালন করিয়া আপনাদিগ্রের জীবিকা নির্কাহ করিতেছে, প্রতিদিন যাহাদের সাহায্য ব্যতিরেকে তাহাদিগের সংসার নির্কাহের কিছুমাত্র উপায়
নাই, তাহাদিগকে উপযুক্ত আহার বা
পানীয় প্রদান করে না; অতীব হুর্গম
পথে ফ্রুতগমনের কিঞ্জ্মাত্র শৈথিল্য
দিথিকৈই আপনার যত শক্তি ততই

কশাখাত করিতে থাকে। প্রচণ্ড রোদ্রের
সময় পিপাসায় শুক কণ্ঠ হইয়া যাইতেছে
গলদ্খর্ম কলেবরে অনবরত কেনোদার
করিতেছে, তথাপি মৃত্ গমন দ্বারা পাছে
সেই স্বার্থপরগণের নিতান্ত অভ্যায় লাভের
অণুমাত্র হানি হয়, এই ভয়ে ঐ হততাগ্য
নিরূপায় প্রাণীকে যথার্থই প্রাণ সমর্পণ
করিতে হইবে, কিছুতেই ঐ নিষ্ঠ্রদিগের
লোহময় অভঃকরণে দয়ায় সঞ্চায় হইবে
না! এক কলিকাতা নগরীতে প্রতিদিন
এ বিষয়ের শত দহত্র দৃষ্টান্ত প্রত্যক্ষ পরিদৃশ্যমান রহিয়াছে।

হা নির্দয় মানব! হতভাগ্য পশ্বাদি
জন্তুগণ আত্মযন্ত্রণা প্রকাশ করিতে অসমর্থ
বলিয়াই কি তোমরা দম্মার ভায় তাহাদিগের প্রতি এইরপ নির্চুর ব্যবহার
করিবে? যদি আত্মযন্ত্রণা প্রকাশ করিবার
নিমিত্ত উহাদিগের বাফ্শক্তি থাকিত,
তাহাইইলে বোধ হয় উহারা এরপ
কাতর ও করুণস্বরে বিলাপ ও অত্মধোগ করিত যে, তদ্বারা তোমাদিগের
পাধাণময় স্থাদয়ও এককালে দ্রবীভূত
হইয়া যাইত।

প্রহেলিকা।

চারি বৃদ্ধ প্রবাদে করেন অবস্থান;
পুর্কু পোলে পথপ্রদর্শক দেশে চলে যান।
পুর্কুচারি ষ্গের বৃদ্ধ তারা জানে সর্বজন,
পুঞ্জিহাদের বাল্য কেহু দেখেনি কথন।

সংসারের কাজে বছ উপকার করে, *
ভেবে দেখ,বিনা ক্লেশে পাইবে তাহারে।
প্রভাতের নব কলি করে পড়ে যায়,
মধ্যাক্লের থর তাপে উন্ধলে শোভায়।

সায়া হের স্থাতিল মৃত্ল অনিলে,
"বঞ্চাবাতে তক্ষম" পড়ে, হেলে, ছলে।
নর কলি ব'রে গেলে,
শোভে পুন: নর সাজে;
যায় সে জনম মত যে কুস্থম বারে সাঁজে।
কভু সে প্রস্থম নাবে বজের নিঃস্থন,
কি আশ্চর্যা! নাম তার বল ভগ্নীগণ। ২
প্রথমেতে কাঁধে ভুলে করয়ে সম্মান,
শোষে কান ধরে তার করে অপমান।
নহে কোন দোষে দোষী কভু সেই জন,
কশাঘাতে জর জর করে নরগণ।
প্রতিশোধ দিতে সেই না জানে কথন,
আকুলি ব্যাকুলি ভধু করয়ে রোদন।
তাহার রোদনে সবে হরষিত মন,
কেবা সে, কোথায় থাকে বল সর্বজন।

কমলেতে বাদ মম নহি ত ভ্ৰমর,
কিন্তু মধুকর দহ রহি নিরস্তর।
কোমল কলিকা পরে বিদ্যু অনুক্ষণ,
কুস্থম কেশরে দদা কাটাই জীবন।
ভক্ষ্য মধ্যে ভূবে থাকি কেহ নাহি দেখে,
ব্যঞ্জনের গোড়া কিন্তু দবে জানে মোকে।
কালিয়ে কাবাব হতে শাক কচু কলা,
তরকারী দকলেতে করি দীলা খেলা।
কি অকাল কি তুর্ভিক্ষ কভু ছাড়া নই,
কাংশ পাত্রে কলাপাতে স্মুশোভিত হই।
পাচক পাচিকা দহ দদা বাদ করি,
কি নাম আমার ভাই বলহ বিচারি। ৪ .

স্থবর্ণের বর্ণক্ষর করিয়া যতনে,

শংসারের **শার ত্যাজ অতি হু**ষ্ট মনে ;

স্বাদে স্থ বাদ দিবে, সংস্থাচ ন है। পরে যাহা পাবে তাই হরিছে পাঠ

তিন বর্ণে নাম তার জানে সর্বজন, প্রথম অক্ষর ছাড়ি পাঠে দাও মন। মাঝের অক্ষর ছাড়ি করগে লুঠন, শেষাক্ষর ছাড়ি দিলে বুঝার ছলন। তিনাক্ষর যোগে হর লজ্জা নিবারণ। কোন্বস্ক হয় তাহা বল ভগ্নীগণ। ৬

কোধেতে জনম তার কোধেই জীখন,
কিন্তু কোধজয়ী সেই জানে সর্ব্বজন।
নানা কোধে মন্তিত তাহার তমুখানি,
সর্ব্বছানে সর্ব্বকাল কিন্তু আদরিণী।
কি আশুর্ব্য কেহ তারে দেথেনি নর্নান,
কিন্তু সদা লীলা তার বদনে বদনে।
আকর্ষণী শক্তি বহু ধরে সেই জন,
কিন্তু পরপ্রতাশী দে সদা সর্ব্বজ্ঞান,
দর্ম্ম
সর্ব্বকাল মানবের বজু সেই হয়,
গতিনে সেবিলে তার যাতনা প্লারাজ
শোকে ছঃথে শাস্ত করে যেন গো জননী,
ক

আন্য বৰ্ণ ছেড়ে দিলে ক্ষুদ্ৰশাৰা হয়, গ্ৰা মধ্য বৰ্ণ ছেড়ে দবে তুষ্ট হ'য়ে ৰাষ্ট্ৰ। শেষ বৰ্ণ বাদ দিয়ে কৰ্মে দাও মন, ভিন বৰ্ণ যোগে রেঁধে ধার স্ক্রিন। ৮

নহে তক্ত, নহে বত। নহে সে উদ্ভিজ, ^{জী}
আছে তার পত্র পূস্প আছে তার বীঞ্^{জী}
কুন্মমেতে বীজ তার আশ্চর্যা ঘটন, ^{রিরী}
কি পদার্থ হয় সেই বল ভয়ীসণ। ৯

্প ঐ ডিজন

একটা বিছ্ষী নারীর মৃত্যু সৌভাগ্য।

(প্রাপ্ত)

भन्न*।* পৃষ্ঠবংসর অতীত হইল এক দিন থাতাকটা তীর্থময় প্রদেশে দেখিয়াছিলাম, ভাগ্যবতী মুক্তকেশী মৃত্যুশয্যায় শায়িত।। न निरंत्राम्टम जूनमी, गनाकन হা আপরাতিশয়ে স্থাপিত গীতা, রামা-রণ, দেবীমাহাত্ম চতী ও শ্রীমন্তাগবত প্রভৃতি রাশীক্ত ধর্মাগ্রন্থ। চতুর্দিকে **কানবান্পতি** এবং পিতাদি ভরুমণ্ডলী 🙀 সমাসীন। অঞ্মুথী মাতা শিরঃসল্লি-ধানে বসিয়া পবিত্র হস্তে कुममी মিশ্রিত গঙ্গাজল বিন্দু বিন্দু করিয়া 😘 र मूर्थ প্রদান করিতেছেন। পিতা শিরে *রি* ে হরিনাম, কঠে নারায়ণ নাম ও বাছতে দিন যাঁতি নাম লিথিয়া কর্ণে অজত্র নামপীযুষ দিপের্বিঞ্ন করিতেছেন। আর পতি পার্খ-নাই, দেশে বসিয়া একান্তমনে জীবের পর্ম-পানীরগতি ও চরমসহায় ভবকাণারীকে পথে বারণ করিতেছেন। এইরূপ নামধ্বনি, দ্বিজ্ঞাদিছ নারায়ণ ও গুরুমগুলীর মধ্যে তমু-্রতাগ করিয়া দিব্যধাম প্রয়াণ অবশ্যই

আৰ্শংসনীয় মৃত্যু সোভাগ্য।

চারি বুট ইহার দিতীয় দৃশ্য বিশ্রেগণ বাহিতশেলে প্শারণে ঐ পবিত্র দেহ যজ্জভ্মিতে

নারি যুইেয়া যাইবার কালে ঘটাবাদন করিতে

ইংদের রতে পশ্চাৎ পশ্চাৎ পিতার গমন।

ী বারে ইহাই দেবীর প্রথম দৃশ্য ও অতি

স্কৃতির ফল বলিতে হইবে।

তৃতীয় দৃশ্য—একটী দেবনদীর তীরে কদস্বমূলে ভাব দহকারে গয়া গদ্ধাদি বিবিধ তীর্থ আহ্বান করিয়া ঐ পৃত দলিলে দেহের অভিষেক এবং পতিকর্ত্বক মন্ত্রপৃত অগ্নিতে দেই পাঞ্চভৌতিক সতী-দেহের আছতি।

তৎপর চতুর্থ দৃষ্ঠা—পিতৃক্নত্যের জন্য প্রদিদ্ধ অশ্বক্রাস্ত নামক এক প্রাচীন তীর্থে ঐ ভাগ্যবতীর প্রাদ্ধান্থ ও তত্তীর্থবাদী যিপ্রবর্গের দেবা।

এর চেয়েও অধিকতর ভাগ্যের কথা দেবীর ভন্মাবশিষ্ট অন্থিনিচয়ে বিরচিত জপমালা। জানি না ইহা হইতে আর অধিকতর প্রেমের নিদর্শন জগতে কি আছে! কবিছ নয়, কল্পনাও নয়, এক-মাত্র প্রাণের প্রবর্ত্তনাতেই এই এক নৃত্তন প্রেম-ক্রিয়া সদান্ধা মুক্তকেশী-পতি আমা-দিগকে প্রদর্শন করিলেন। অহো! ভাগ্যবতীর অন্থি নিশ্বিত প্রত্যেক মালা-বীজই প্রত্যেক অভিনিবেশে পতির হৃদ্যে ভগবান্কে আনিয়া উপস্থিত করে! অহো! কি ভাগ্য কি ভাগ্য!

তাহার পর মনস্বিনী দাধবা রমণীকুলের দর্শনিযোগ্য ৬ ছ ছ — মুক্তকেশীপতির তীত্র বৈরাগ্য। প্রেমাস্পদ পত্নীর
মৃত্যু হইতে ইহার মুনিত্রত, মুনিবেশ প্র
যত্যাচার আরক্ত। ভারতের প্রানীর্যা

দতীকুল অবগত হউন, পুরুষের মধ্যে ও এমন জনৈক দৎপুরুষ আছেন, যিনি বৈধব্যের ভায় কঠোর এক পত্নীত্রত লইয়া প্রীতির পহিত দময় যাপন করিতে পারেন।

দেবীর সপ্তম দৃশ্য—পিতার কাছে একটী ক্ষুদ্র উত্থানস্থিত একটী ক্ষুদ্র ধর্মা-লয়ে স্বর্গীয়া দেবীর অস্থি ও চিতাভস্ম প্রোথিত ধর্মবেদী। এই সতীক্ষেত্রে আবার একটী পঞ্চবটী স্থাপন করাতে স্থানটী বেনতীর্থময় হইয়াছে। এই পাঁচটী বৃক্ষ পাঁচটী সতীমাতার নামে রোপিত। গাছ একটী উপলক্ষ্য মাত্র, নানাপ্রকার ভাব ঘনীভূত করিয়া আনন্দের উপচয় করাই এই সমস্ত দৃশ্যের উদ্দেশ্য। ভাবের চক্ষে চাহিলে এই সকল তরুলতাপ্র

দেবালয়ের দক্ষিণে পঞ্চবটীর জঙ্গীভূত আমলকী-রোপিত স্থানটা নারায়ণীক্ষেত্র বলিয়া চিহ্নিত ও আদৃত। নারায়ণী মুক্তকেশীর শ্বশ্রুঠাকুবাণীর নাম।
প্র্কিদিকে পঞ্চবটীর অঙ্গীভূত অশ্বশ্ব
রোপিত স্থানটা ভাগীরথী ক্ষেত্র বলিয়া
সমাদৃত। ভাগীরথী দেবী মুক্তকেশীর
পিতামহী। দক্ষিণ প্রক কোণের অংশাক
তর্কটী উমাতারা সেনগুপ্তার নামে আদৃত।
ক্ষিত আছে এই অংশাক তরুতলেই
ভপক্তা করিয়া নগনন্দিনী উমা বীতশোদ
হইয়াছিলেন।

বাছন্য ভয়ে নিধিত হইন না, কিন্তু

পঞ্বটীর প্রত্যেক বুক্ষেরই স্
একটী ঐতিহাসিক প্রসঙ্গ আছে।
মৃক্তকেশীর মাতামহী দিনময়ী
নামে একটী বিশ্বতক রোপিত।
বৈজ্ঞানিক অর্থ আছে জানি না,
পুরাণে উল্লেথ আছে বিশ্বতকতলে মৃ
অক্ষয় স্বর্গোৎপাদক। আর পঞ্চর্ট অঙ্গীভূত পশ্চিমের ছায়াপ্রধান বটত
রোপিত স্থানটী সাবিজ্ঞীক্ষেত্র বলিং
সমাদৃত। সাবিজী ভদ্রজায়া, ঐ ভ্-সাম
রমেশ বাবুর স্বর্গীয়া মাতা।

এই দতীক্ষেত্রে এইবার মুক্তকেশী।
১৪ দামৎদরিক কত্য তিন দিবদে সম্প্র
ইয়াছে। প্রথমতঃ ২৯ শে শা
দেবালয়ে একটা ধর্মসভা হয়, তাহা
একজন দর্ক প্রথম হিন্দুধর্মের মাহ
কীর্ত্তন করেন। তৎপর যথাক্রমে এন
একজন সভ্য গ্রীষ্টধর্ম, মুসলমান ধর্ম,
বৌদ্ধ এবং রাহ্মধর্মের মহিনা ষথারীতি
বর্ণন করেন। দর্কশেষে পাদ্রি লোক
দাহেব গ্রীষ্টধর্ম-বিশাদ মতে পরলোক
দম্বন্ধে কয়েকটা কথা বলেন।

তৎপর ৩০শে তারিথ মাতৃপুদা

মাতা দেবালতে উপস্থিত হসলে পর্গীয়া
দেবীর কনির্গ ভাত প্রীমান স্থরেক্স ন'ব'
প্রথমত: সেই দেবীমাতার চরণ ধৌত
করিয়া দেন। তৎপরে তিনি আসনস্থা
হইলে তাঁর চরণ সন্নিধানে সবত্ত একটা কলপুলেব তালা স্বর্গীয় মুক্তন কেশীর নামে উপহার স্থাপন করিয়া
প্রণাম ও প্রাক্তিণ করেন। তাহা ধ ৰণ্টাদি বাদনধার। আনন্দ ও শাত্র পাঠ ধারা রোক্তমানা মাত্রির আন্মাতে শান্তিকল সেচন য়ে।

ু শে ভারিথ সংক্রান্তি দিবস অক্ষয়া-্রীয়া বলিয়া মাতার খুব আনন্দ। আর ভা মুক্তকেশীর স্বর্গারোহণের দিন শিয়াই অতিশয় অন্ত্রাগের সহিত

পূর্ব্বাহ্নে স্বান্ধবে ভগবত্পাসনা, অপরাছে সভীমাহান্ধ্য পাঠ ও সায়াছে বিশ্বরাজের আরতি করিয়া অপর্যাপ্ত তৃপ্তি অন্থভব করেন। এই সকল পূর্ব্বাপর ঘটনা একত্রিত করিয়া মুক্তকেশীর মৃত্যু সৌভাগ্য বা মৃত্যুগন্ধ আন্ত্রাণ করিলে নিশ্চয়ই অন্মদেশীয় রমণীকুল: আপ্যায়িতা হইবেন। শ্রীগোপালকুফ দে,—শিলচার।

নৃতন সংবাদ।

বামাবোধিনীর ৩০ জ্বোংস্ব ইপ্**লকে** বিজ্ঞাপিত পারিতোষিক রচনায় মালিখিত মহিলাগণ প্রতিঘোগিনী হইয়া-ন এবং তাঁহাদিগের প্রবন্ধ প্রাপ্ত রা গিয়াছে। প্রবন্ধ সকল বিচারিত পারিতোষিক যোগ্যা, ধাহারা ৰহাদিগের নাম পত্রিকাতে প্রকাশিত **ছইবে। (১) বিগত শতবর্ষে ভারত** রমণীদিগের অবস্থা—শ্রীমতী মানকুমারী বন্দ্র, বদন্তকুমারী দাসী ওপ্রভাবতী দেবী। ২) দ্রীলোকের নির্দোষ আমোদ—জ্রীমতী ভাৰতী দেবী, সুশীলা সিংহ ও মান-হুমারী বহু। (৩) রোগীর শুশ্রাযা— **क्रिमजी कुम्**षिनी त्रात्र, वत्रमा श्रुम्मती (मवी ও নিস্তারিণী দেবী। (৪)পঞ্চয়ত্র—জ্রীমতী मानकुमाती वस्र। (e) विमानदा छी भिका - শ্রীমতী প্রভাবতী চট্টোপাধ্যায় ও প্রভাবতী দেবী। (৬) একালের শাশুড়ী ও বহু-- শ্রীমতী শারদা অন্দরী দেবী ও সভ্যবতী দেবী।

২। গত ২৬ শে সেপ্টেম্বর সিটি

কলেজে মহাত্মা রাজা রামমোহন রায়ের ম্মরণার্থ যে সাংবৎসরিক মহাসভা হয় তাহাতে এত লোকের সমাগম হইয়াছিল. যে উপরের হলে ও নীচের উঠানে এক-কালে বক্ততা হয়। উপরে জ্ঞাস গুরুদাস বন্যোপাধ্যায় ও নীচে বাবু আনন্দ মোহন বস্থ সভাপতির কার্য্য করেন। বাবু কালী-**চরণ বন্দ্যোপাধ্যায়, নগেন্দ্র নাথ চটো**-পাধ্যায়, কৃষ্ণকুমার মিত্র ও পণ্ডিত শিবনাথ শান্ত্রী প্রভৃতি বক্তৃতা করেন। রাজা স্ত্রীজাতি সম্বন্ধে যে সকল কার্য্য করিয়াছেন, নগেন্দ্র বাবু তাহা বিশেষরূপে উল্লখ করেন। ৬০ বংসর হইল রাম মোহন রায় স্বর্গা-রোহণ করিয়াছেন, তু:খের বিষয় তাঁহার জন্য অদ্যাপি কোন স্মৃতিচিহ্ন ছাপিত হইল না। তিনি ভারতের গৌরবরবি রূপে উদিত হইয়াছিলেন এবং ভারত-বাসী সকল শ্রেণীর লোকের উপকার করিয়াছেন, তাঁহার প্ৰতি সকলেরই বিশেষ কৃতজ্ঞতা প্রকাশ করা কর্ত্তব্য।

৩। স্বর্গীয় জ্বীস তেলাক্ষের স্থানে

ডাক্তার ভাণ্ডারকার বোম্বাই বিশ্ববিদ্যা-লয়ের ভাইস চ্যানশেলার হইয়াছেন। ৪। সার হেনরি নর্ম্মাণ ইতিমধ্যে

গভর্ণার জেনারলের দ প্রকাশ করিয়াছেন। বেন এখনও স্থির হইডেছে না

বামারচনা।

পদাকে চন্দ্রে ছায়।। পদান্ধ সলিলে আজি কি মাণিক জলে, গগন হইতে শশি! হেথায় পড়েছ খসি, অন্ত ঠাই তোমার কি ছিলনা ভূতলে ? মর্মার প্রস্তুরে মোড়। ধনীদের গেহ, মণি মুক্তা তায় কত শোভা পায় শত শত उथा (कन ना जालिटल अ खुलात (नर १) হীরা ও স্বর্ণের ধনি আছেত ভূতলে, ও মোহন রূপ চাঁদ! ভুগর্ভে রাখিতে সাধ হয় যদি, তবে কেন এই কুদ্ৰ জলে ? সরসী, সরিং, দিন্ধু বক্ষন্থল ছাড়ি, একাঞ্চলি মাত্রবারি পদাঙ্কে রয়েছে ভরি তার সহ কেন এত প্রেম বাড়াবাড়ি 🖓 ১ যদিও এ ধরাধাম খীন সর্গ চেয়ে, রহিয়াছে তবুও তো রমণীয় স্থান কত তাহাও কি একবার দেখ নাই চেয়ে গ্ বাবুর বৈঠকখানা অট্টালিকা পরে, नाष्ट्रेगलरम् श्रूटल्यापगरन, শুভ বিবাহের স্থানে বৌ ঠাকুরাণীদের শয়নের খরে--৩ পাইলে না স্থান ? চোখে লাগিল না শশি ? তাই কি রজনীকান্ত হইয়া এমন শান্ত কৰ্মন পদান্ধ নীরে পড়িয়াছ ধসি ? ভাস্বরের প্রিয় কাকা, জত্তির নন্দন.

কমলালয়ার ভাই রাজা যক্ষের জামাই কেন তুমি কুদ্ৰ প্ৰতি সদয় এমন বড় লোক হ'য়ে কর ক্ষুদ্রের সং ক্ষুদ্র সহ আলাপনে ঘূণা কিছু নাহি মনে সর্বাণ তৃষিছ ক্ষুদ্রে তৃমি মতিমান ক্ষুদ্র ক্ষুদ্র তরুপত্রে শতধা হইয়া, 🗸 শিশিরের স্বচ্ছ জলে ক্রীড়াকর কুতৃহলে বায়ু সঙ্গে পাতা সঙ্গে রহিয়া র নৃত্যকর শশধর নঃন রঞ্জন। নবদুর্কাদল শিরে ক্ষুদ্র শিশিরের নীরে কেমন ক্ষুদ্রতী হও জগং মোহন! হৃদয় খুলিয়া ক্ষুদ্র চকোরের তরে কর সুধা বিভরণ ধরাধান্ম কয়জন বড় হ'য়ে ক্ষুদ্রজনে এড সমাদরে কি বলিলে শশধর १ ক্লুডের উপ> তোমার বড়ই স্লেহ, ক্ষুদ্রে না আদরে কেহ বড় ত্যঞ্জি ক্ষুদ্ৰে তাই এমন আদ ধন্য ধন্য ধন্য তুমি ধন্য মহাশয়: বেমন মোহন রূপ থ্যণ তার অমুরপ বেমন উচ্চেতে থাক তেমনি হাণয় কিন্তু শশ্ধর ! যবে মানব সকল कि जानि कि खक्रामाद

বামাবোধিনী পত্রিকা। [৫ম ক-২য় ভাগ।

কুই চঞ্চল,
বৈ সহিয়া এসব
বি কর্তুব্যে রত
ইয়াছ অবিরত
দি তোমা কুমুদ-বান্ধব ৮
হু যথা প্রীকৃষ্ণের বক্ষে
ব পরে হে শশাক্ষ !

কর্দমেতে এ পদাক
সেই মত শোভা পায় ভাবুকের চক্ষে,
সাধারণে ধনীদের বড়লোক কহে;
দয়া, ধর্ম আর আর
বড় গুণ আছে যার
সেই বড়, সুধু দলী বড়লোক নহে। ১

শ্রেকুমুদিনী রায়।

্ট্রিছিলাদিগের রচনার নিমিত্ত বাবু ব্রজমোহন দত্ত স্থাপিত পারিতোষিক ।

ত ১৮৮৯-৯০, ১৮৯০-৯১ ও ১৮৯১
কান রচনা পারিতোষিকের
বিবেচিত না হওয়াতে ইহা
হইয়াছে যে ১৮৯২-৯০ অব্দের
মিক দান কালে ৪০, চল্লিশটাকা
দারটির পরিবর্ত্তে ৮০, আশী
টিয়া ছুইটি পারিতোষিক প্রদত্ত
শিশুপালন" বা "পিতৃভক্তি"
বিষয়ের অন্যতরটি অবলম্বন
বিষয়ের কারিতে ইইবে।
ভোষিক দানের নিয়ম:—

্তাবিক পানের নির্ম :—
) বঙ্গমহিলা মাত্রেই পারিতোগার্থিনী হইতে পারিবেন; এতংবয়সের কোন নিয়ম নাই।

পারিতোষিক প্রার্থিনীগণকে তেই হউক বা সংস্কৃত ভাষাতেই নান একটি নির্দিষ্ট প্রবন্ধ রচনা ইববে।

এই বিজ্ঞাপন প্রচারের তারিধ ্র মাদের মধ্যে প্রবন্ধগুলিকে র জন্য দেণ্ট্রাল টেক্ট বুক কমি-ফুট পাঠাইতে হইবে।

) প্রত্যেক প্রবন্ধের সহিও গ্রামিকপ্রার্থিনীর স্বামী, পিতা বা বৈককে এরপ অসীকার পত্র লিধিয়। তে হইবে যে তাঁহার বিশাসমতে ঐ প্রেয়ক্ষ রচনা কালে প্রকাশ্য বা অপ্রকাশ্য ভাবে কোন প্রকার সাহায্যই গ্রহণ করেন নাই।

১৮৯৪ অব্দের ১লা মার্চ্চ তারিখের
মধ্যে কলিকাতায়, প্রেসিডেন্দি সার্কেলের
কুল সমূহের ইন্ম্পেক্টরের আফিনে,
মেণ্ট্রাল টেক্স্টবুক কমিটির সম্পাদক
মহাশয়ের নামে এই প্রবন্ধ পাঠাইতে
হইবে। এই প্রবন্ধর মোড়কের (কভারের) উপর ''ব্রজমোহন দত্ত পারিতোফিকের রচনা" এইরূপ লিখিত থাকিবে।
য়াহার রচনা সর্ক্ষোংক্ট হইবে কলিকাতা
গেজেটে তাঁহার নাম প্রকাশিত হইবে।

যিনি একবার পারিতোষিক প্রাপ্ত হইয়াছেন, তিনি ইঞা করিলে অন্য বৎসর পুনর্কার প্রবন্ধ রচনা করিতে পারেন।
যদি তাঁহার রচনা সে বারেও সর্কোংকৃষ্ট
হয়, তাহা হইলে তাঁহার নাম কলিকাতা
গেজেটে প্রকাশিত হছবে, কিন্তু পারিতোষিক, রচনার গুণাসুসারে তাঁহার
পরবর্ত্তিনী মহিলাকে প্রদত্ত হইবে।

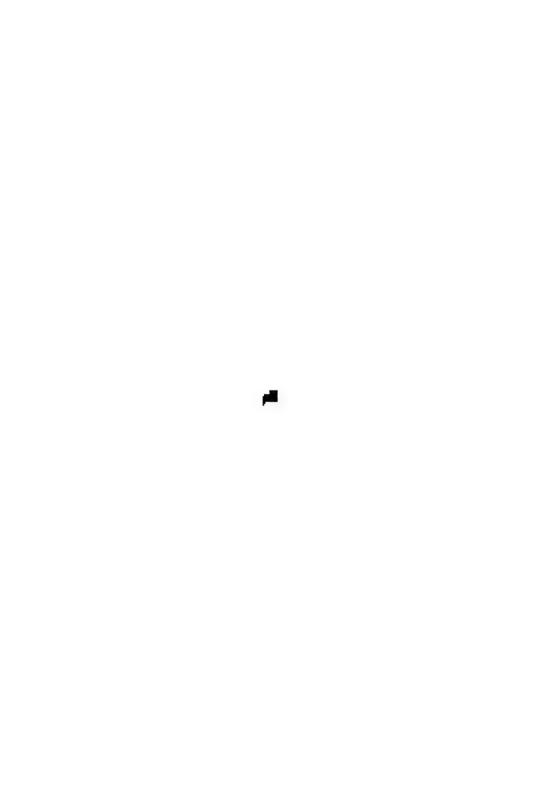
ষদি বিচারকগণ সর্কোৎকৃষ্ট রচনা-টিকেও পারিতোষিকের উপযোগী বলিয়া বিবেচনা না করেন, তাহা হইলে পারি-তোগিক প্রদত্ত হইবে মা।

সি, এ, মার্টিন্ বাঙ্গালা দেশের বিদ্যাধ্যাপনের ডিরেক্টর











ব্যস্থিনী পত্রিকা।

UNI PATRIKA. श्रिश्वचोयातिय

ও যজের সহিত 🕦

াত |তে

হায়ণ ১০০০—ডিসেম্বর

ম কল্প। ২য় ভাগ।

মিয়িক-প্রসঙ্গ।

লর্জ লা ক ও সদল সিমল।
বৈল হইতে কবিকাতায় আসিয়া ব্রহ্মদেশ ভ্রমণে যালা করিয়াছেন। নবজিত ব্রহ্মরার বির এই প্রথম পদার্প ব্যবস্থা।

গত ১০ তার এজেট র জেমস ব ত খুদাদাদ খার তুর মীর মামুদ খাঁকে থিলাতের সিংহা-সনে অভিবেক করিয়াছেন। তিনি বেলুচিস্থানে সন্ধারগণসহ ইংরাজরাজ-ভক্ত হইয়া ভায়ায়্সারে রাজ্যশাস্ন করিবেন বলিয়া অলীকার করিয়াছেন। পূৰ্ব্বই আৰু । গত ১৯ই
নবেম্বর নিকাতার
প্রত্যাহ
সহিত্
আপ্র
আপ্র
করিয়া
করেন

কোম্প কলে মেটাবিলি
দেশে বদ্যাৰ আবিছার করিতে যাওরাতে তত্ত্তা অনভাজাতিদিলের সহিত্ত বিবাদ ও যুদ্ধ বাধে, ইংরাজপক্ষ অয়বুজ হইয়াছেন।

সপদংশনের চিকিৎসা—
মান্দ্রাকের চিকলিপটের ডাজ্ডার টমাসের
নিকট মৃত্বৎ এক সর্পদত্ত আহ্বণক্তি
আনা হয়, তিনি তাহার গাত্রের স্থানে
ানে ছিল্ল করিয়া ক্রেন্ডা কিনিমিত

দলের পিচকারী দেন, ইহাতে সে ব্রাহ্মণ কির্থক্ষণ পরে সচেতন হইরা বাঁচিরা উঠে। "বিষদ্য বিষমৌধং।"

কাপ্তেন রোহিণী—মুক্তিফোজের প্রতিষ্ঠাতা জেনারল বুথের কনিষ্ঠা ক্যা কুমারী বুদী বুধ ভারতের প্রচার-কার্থ্যের লইয়া অতি

উৎসাহের সহিত কার্য্য করিতেছেন। গত ২১এ নরেম্বর বঙ্গর্মিলা সমাজের তিনি করেন। क्रम প নিষ্ঠাবতী. O তত্ততে অমু-চমৎক্রত

বিরোচন সংবাদ/

ৰীর অধিকার नकलबरे चाट्ड वर नकलारे डांशाक অহ্সদান করে ৷ কিছু জানীরাই তাঁহাকে যথার্থ জানিত **্লভানী**র। তাঁহার স্বর র না। এই বিষ উপ-নিষৎ য়িকা বলিতে

একদ্য মনে मत्न भःक कि সেই মহান আত্মাকে অ श्रानित पर्गानि नक्त लोक उ त्याकानि गकन कन क्षांश হ ওয়া যায়। **অভিপ্রা**য়ে দেবভাদিগের মধ্যে ইন্দ্র এবং সম্মাদিগের মধ্যে বিরোচন প্রতিনিধি-স্বরূপ হইয়া প্রজাপতির নিকট সুমিৎ रुख + लरेश अमन क्रिल्म। তাঁহারী

 भूर्क्काल उक्कळान भिकाब खना अनुगति-ধানে নাইবার সময় শিবাগালু সর্মিৎ অর্থাৎ বজকাঠ প্রধা প্রয় করিছের।

হিংদাবশত: করিয়া স্বত্ত कत्रित्वन । ए গৃহে ব্ৰহ্মচৰ্য্য করিতে লাগিলেন। প্রজাপতি তাঁহাদিগকে ভিজ্ঞাসা করিলেনু তোমরা কি অভিপ্রায়ে করিয়াছে ? আপনি বলিয়া পহত-পাপ, অজর,ী পাসা-বৰ্জিত, সভাকী ভাঁহাকে कारबयन कत्रितर জানিতে ইচ্ছা করিবে। যে ব্যক্তি সেই আত্মাকে অনুসন্ধান ছারা জ্ঞাত হন, তাঁহার সুকুল লোক ও সকল কামনা প্রাপ্তি হয়।" হে ভগবন ! আমরা দেই জ্ঞান লাভেচ্ছায় এখানে <u>স্থাপ্তমন</u> করিয়া অবস্থান 🐫 রতে

शकाशकि

আস্থা, তিৰিই অমৃত, তিনি অভয়, তিনি
বন্ধ।
ইন্দ্ৰ ও বি
চক্তে বে ছ
ব্ৰি প্ৰক
তাহারা
ভগবন্!
হোৱা দৃষ্ট হয়, তা
পতি কলি স্থান্ত বিতেই সেই আস্থা

াদিগকে বলিআকে গিয়া
তেপাও, তবে
ভাসা করিও।
পাত্রে দেখিতে
লাগিলেন। প্রজাপতি জিজ্ঞাসা করিলেন কি দেখিলে? তাঁহারা বলিলেন,
ভগবন্

তাহাদিগকে বলিলে স্থীর পরিষ্ণত করিয়া, বলিলে করিয়া ক্মাজিত করিয়া ঐ জলে নাম কর। তাহারা তজ্ঞপ করিলে পর প্রজাপতি জিজ্ঞাসা করিলেন কি দেখিলে? তাঁহারা বলিলেন ভগবন্! আমরা বেমন পরিষ্ণত ও বাল্যত স্থাজ্ঞিত হইয়াছিলাম, জলেতে সেই

হাই সেই আত্মা.

সম্ভইচিত্তে সম্ব স্থানে গমন করিলেন।
আনেকেই এইরূপ ব্রহ্মদর্শন করির।
থাকেন! প্রজাপতি মনে মনে করিলেন,
যেহেডু ইহারা ব্রহ্মকে না জানিয়া এবং
উপলন্ধি না করিয়া চলিয়া গেল, ইহাদের পরাজয় হইবে। ইহারা শ্রীরকেই
আস্মা মনে করি
আস্মর্যাদা
পরমধর্ম
করিতে পা

কৈ জানিয়াছি এদিকে এই আহলাদে উত্তর হইরা অস্থরদিগের নিকট উপস্থিত হইলেন এবং তাহাদিগকে বলিলেন, আফিকিকিড অভয় পুরুষকে ছেই ব্ৰহ্ম, এই জানিয়া ই পরিচর্য্য জগতে পরিচর্য্য করি व क्र ক বি উপনিষ্ বায় বং তদ্ম অর্থা তদব্ধি 1941 রূপ দেনা, সংকর্ম করে না যুক্ত করে না। আহার বিহার বেশভূষা আমোদ প্রমোদই তাহাদের ধর্ম। মৃত-দেছকে গন্ধনাল্য বেশভ্যানারা স্থসজ্জিত করে। এই স্কল অমুঠান্বারা তাহারা जरून (नाक ७ नकन कामना इहेरव मन् कर्द्ध ।

কিন্ত ইক্স দেবতাদিগের নিকট সেলে। না। তিনি মনৈ মনে ভীত হইলেম তিনি ভাবিশেক

যখন শরীরে ভ্ষণ থাকে, তথন তাহা সুষিত বোধ হয়; শরীর স্থদক্ষিত হইলে তাহা স্মাঞ্চিত, পরিষ্ণত হইলে পরিষ্ণত, পদ্ধ হইলে অদ্ধ, অপরিষ্ত বা ক্লেদ-অপরিস্কৃত বা ক্লেদযুক্ত, युक्क रहेल हिन्दर , किन श्रम व्हेल हाया छ केत्र রে বিনাশ হইলে ইহার তা ইহাকে कानिया कर्न मत्न अहे **সং**শয় উপস্থি পুন-ৰ্মার প্রজাপরি कतिरलन्। প্রভাপতি ভাঁহার দেখিয়া গাগত जिल्लामा कत्रितन **(ह** मघवन्! তুমি সম্ভপ্ত হইয়া সহ সহিত গমন कंत्रिशोहित. ভিপ্রায়ে **প্র**ত্যাগ্মন্ লেন, ভগবন ! র র্ভন व्यक्त गाउ কান আত্মলক জ†-পতি বলিৰে ট থাৰ্থ বুকিয়াছ। ভুমি 1र्ग কর,পরে আমি তো ল স্কা দিব। ইন্দ্ৰ দ্বাজিংশ বৰ্ষ তথায় অবস্থিতি করিলে পর প্রজাপতি বলিলেন যিনি স্বপ্নাবস্থায় নানা ভোগ্য বিষয় উপভোগ করেন, তিনি সেই আস্থা, তিনি অমৃত, তিনি শভয়,তিনিই ব্রন্ধ। ইন্ত বৃদ্ধান লাভ ক্রিয়াছি মনে ক্রিয়া সম্ভটিততে প্রস্থান করিলেন। क्षि (क्षणिक्शाद निकृषे गाँदेवात भूत्र

তাহাৰ কাৰ্যৰ সংগ্ৰহ উপস্থিত হইল

যিনি স্বপ্লেডে ভোগ করেন, শরীর অন্ধ रहेल जिल्ल ना, क्रिमयुक हन **इ**हे*ं* ছিন্নহ**ন্ত**পদ क्हें এবং ধবংস रहे কি স্ক ক্ৰ স্প্ৰন রৈন, তবে हेशा াকিরূপে হইতে পারে? অততাব পুনর্মার প্রজা-পতির নিকট ফির্নি পতি তাঁহাকে হে মঘবন ৮ গিয়াছিল,আই हेस विलालनी আত্মার কথা भंदीत अक इहेल अक रम मा, हकू নানিকা হইতে ক্লেদ নিৰ্গত হইলে তাহার কেদ নিৰ্গত হয় না, 🚁 তাহার তদ্ধপ इडे (न তাহার বিনাশ লাকা আহত ও বিচি প্রিয় আশ্রেয় জ্ঞান হয় উ রোদন করেন, অত্ত কি ? প্রজাপতি উত্তর করিলেন, ভূমি যথার্থ বু ঝয়াছ; ভূমি পুনর্কার দালিংশ বর্ষ তপ্সা কর, পরে আমি তোমাকে উপ-দেশ করিব।

हैस्सब जिन्हा लग होत

वितित्वन, सहारक

স্থান

वाबादवाधिनी পणिका।

हेक महुटे हहेग्रा छिन्छ। (गतन । किन्ड দেবতাদিগের নিক্র পূৰ্বে **ভাই**রার ভাঁহার পুনর্কার ां श ₹-ও স্বপ্লাবস্থার ান জ্ঞান ধাকে क ना 5র ব্ৰহ্ম হইবেন ৰ্ববৎ নিকট পুনর্কার তাঁহার সক্রেহ অবগত কারনেন। প্রজা-আর পাচ বংসর পরি তাহার কর, রক্ষের বিষয় বৎসর অব-তি বলিলেন র নশ্বর ইহা আয়ার আবাদস্থান। এই শ্রীর প্রিয় ও অপ্রিয়ের অধীন। প্রিয় অবস্থাবয়কে ইহা এই প্রিষ না। কিন্ত অতিক স্পৃষ্ট হন না। আৰু! ্র অশ্রীরী। বায়ু, প্রারশিষারা ঐ কিন্ত যে

আকাশ হইতে সমুখান করিয়া খণ্ট ক্লশ ধারণ করে, সেইরূপে আত্মা সেই প্রম জোতি:স্বরূপ পুরুষের ক্যোতিয়ার। এই শরীর হইতে সমুখান করত: স্বীর ঘথার্থকপ ধারণ করেন। তিনি উত্তম পুরুষ, তিনি সমস্ত ঐশ্বর্থ্যাদি করেন, শরীরকে ভূমি ्या অধ্যকল যারে আতা শরীটে হ্যবস্ত দর্শন আতা: যি করিবার ইউ করেন, তিনি গন্ধ আন্ত্ৰাণ আতা: যিনি কহিবার ইচ্ছা করেন, তিনি আছা; যিনি শব্দ প্রবর্গ করিবার ইচ্ছা তিনি আত্মা। কুরেন, তিনি যিনি মনর চকুৰারা আত্মা 🖟 टक छेश-আ আ লোক ভোগ উখাৰ বিমাঝার ইজন্য তাঁহার উপাস য়াছিলেন সকল পিন্ধ হইয়াছিল। তাহাট

विवी क्रम्हे।

ইনি কে ? ইহার বিশেষ পরিচয় । ভারতবাসীকে দিবার কোনও প্রয়োজন নাই। ইনি ভারতহিতৈবী মৃত মহাঝা ধর্মিণী, সহযোগিনী

সকক বিভাগত নৰ্বরো আম ইহার জন্মত্বান্ধ। ইহার পিতা নিউসন গ্যারেট
অব্ভিবরো নগরের অন্যতম ভ্তপূর্ব মেংর বা মার্ফিট্টেট। প্রথমে ইনি একবার সামান্যা শিক্ষরিতী সকাশে অবসার ₹७.

পাইলে যখন গৃহে মিলিত হইতেন, মাতা মোজা বুনিতেন, ও পিতা মাতা উত-सिरे कथाभकथनक्राल देशांक उ देशेत **জ্যে**টা সংহাদরা (যিনি এফণে ডাক্তার বিবি প্যারেট এক্ডারসন্) উভয়কে শিক্ষা-দান করিতেন। কবিতা, রাজনীতি প্রভৃতি विवय छवि ধ্যায়ন করিতেন। কিরপ আরটে যে পরি-क छे रहेश हिं ার পরিচয়। अकि मिन हें हो। বুনিতে ছেন, ইনি সেক্ষাপিয় থেলো" পাঠ করিতেছেন, এমন সমুদ্র কৈন্দ্রি জ বিখ-উত্তীৰ্ণ একজন দীৰ্ঘ্য বিদ্যালয়ের বলবান খুবক তথা ক্রিক্তিত। পাঠিকাকে এট্র **এ**शान দিতে হইটে দিগের ভাবী বন্ধ हिनि এরপ কাকে উক্ত পৃত্তী ব্যয়া-ৰিভ হইলেন पर्भ জশ্বর সকলে বলেন যে? भूटर्क्ट निकादन कामना हेर्। দিগেরও তাহাই হইল। ইনি উহার বর, উনি ইহার কন্য। বিধাতার নিৰ্বন্ধ, তখন কোনও মতে কেহ তাহা থণ্ডন করিতে পারে ? বিবাহ সম্পন্ন হইল।

সামী স্ত্রী পরস্পর পরস্পরের উপর शावकीयन বিতেন। **उन्** श्रे করা জীর को চাহার অমু-যো শ্র নিক্তির নি ত্ন। আবার य भा ভোহা জী ভাঁহার নিকট শিকা করিতেন। জিনি তাঁহার অর্থনীতি বিষয়ক বিশেষ সহায়ত নহে, বিবি অতি প্রাঞ্জ ছেন। আশা সর্ব্বকালে সর্ব্বত ন্ত্রীর সহিত পরামর্শ না করিয়া কখনও কোনও বিশয়ে চূড়ান্ত মতামত প্রকাশ করিতেন না এ হই লে কে না এইরপ একহানে সভা বজ্তা করিতেট কজন ইংরাজ ভদমহিলী "গ্ৰীতেই কসেট গৌৰবাৰিত।" একজন আর এক সমরে বলিয়াছিলেন বে "ফসেট্ৰ(অন্ধতাবশতঃ) দ্ৰীকে দেখিতে পান না, কিন্তু তাঁহাকে ভাবিলেই যথেষ্ট।" (ক্রেমশঃ)

প্রভুর প্রতি কর্ত্তব্য পরায়ণতা।

भागुषा गर्भात)

19 রাজস্থানে সিংহের সর্বা ছিলেন, তৰ ब মৃত্যুর পূর্বে একটা ঘোর এই আশস্কা ভাইট ক্রনা তাঁহার পরোলোক বারের উত্তরাধিe তিনি প্রিয় সক্ষু রাথি-লেন। অমর ির্ব্যর উপযুক্ত ন, স্বতরাং মৃত্যু শয় নেও তিনি মিবারের ভাবী অবস্থা করনা করিয়া শাস্তিলাভ করিতে পারেন নাই। ল অমর সিংহের প্রতাপ ট্র গাচনা করিয়া **हां नहन** শছিলেন যে এই সি দার হইবে না; অমরের স্বাধীনতা তিনি ঠুর্কির করে প্রদান করিয়া না বদেন। অল্স-অমর বিলাসী; পাছে অম্র বৎসরের কঠোর ভাঁহার পঞ্বিংশতি বনবাসত্ৰত বিফল হইয়া মাতৃভূমি ভূকির করায়ন্ত হয়,—পাছে অমর আলস্যে দিন লাস-বাস 🗫 চরিতার্থ काछाक ম মাতৃভূমিকে

লিকায় বাস করেন। * কালের করাল গ্রাস হইতে কাহার ৪ নিস্তার নাট. উত্তম, মধ্যম, অধ্ম তোমার নিকট বিচার্য্য, কিছ কাল এস বিচার করে না, অনন্তকাল অপুর কাল বিস্তত্ত রসনা অনন্ত कान दीयन, नःहा अन्य-কাল সাধু অস্ তিলক কুলাসার, छानी मूर्य, धनी मंत्रिक नकन कर ठर्का व চর্ণ করিতেছে। যখন সদেশ প্রতাপসিংহের কাতি প্রেমির मू मृष् प्र ল *ভাডিত দীর্ঘাস বেগে বহিত্তে ৰ ব্যাক-তাহার লিতচি ब्रिवाब ८०हे। বাথিত করিতে অন্মিম কাতর: ঘটিবার শান্তির 10 প্রতাপদিংহ ক্ষীণকঠে জিজ্ঞাসা করায় ধীরে ধীরে বলিয়াছিলেন যে "কুমার অমরসিংহ সুখাভ্যস্ত, আলস্যপরায়ণ ও বিলামী, তাহাদারা ঘবনগ্রাস হইতে মাতৃ-

* মিবারণতি প্রতাপ সিংহের প্রতিজ্ঞা ছিল,
বত দিন চিতোর উদ্ধার না হর, তত দিন তিনি জ
তাহার উত্তরাধিকারী বনবাস ব্রস্ত অবলম্বন করিয়া
পর্ণকুটারে বাস করিবেন।

ভূমিকে রক্ষা করিয়া পিতৃপুরুষগণের পৌরব অক্ষু রাখা অসম্ভব, তবে খদি লাপনারা মিবারের শুভ্র যশঃরক্ষা করি-বার জন্য প্রতিজ্ঞাবদ্ধ হয়েন, হইলে আমি শান্তচিত্তে মৃত্যু শয়নে শায়িত রাণার বাক্য শেষ হইলে সকল সন্দার প্রাক্তো বলিয়া উঠিলেন "মহা-রাওলের পবিত্র লৰ করিতেছি, সিংহাসনের বী থাকিব, তত যুত্তদিন একৰ মিবার ভূমি দিন কোন মট অধিকার করিতে করেবে না।" প্রতাপদিংহ সন্দারগণের এই বাক্যে **আশ্বন্ত**চিত্তে শেষ <u>নিঃশা</u>সত্যাগ করিলেন। রোজ হানের রাজপুত-হলাক उक्तन नक्त তাম র ভ্যাগ ক देनन । সিংহ তা অম্ন-তিনি সি রিণত রাকা প্রতাতে कृप इहेल। অম্র মহল" কুটীরগুলি পরিত্যাদ নামক একটা প্রাসাদ নিমাণ করিয়া তথায় চাটুকারগণে পরিবৃত হইয়া বাস क्ति का शिलान। अभन निःश यनि अ শৈশবাবধি পিতার বীরোলাহরণে অন্ত-মহাম স্ত্রে দী ক্লিড প্রাণিত ও তাঁহার হুইব্লাছিলেন, কিন্তু মোগল সমাট আকবর ৰীখনের শেষ সময় কৰিঃকেত্র হইতে বিদার এহণ করার মিবার ভূমিতে পুন-রায় শা<u>ন্তি বিয়াজ করিতেছিল।</u> টিতো<u>র</u>

উদ্ধার না করিয়া প্রভাপের আস্বাজের সে শান্তি উপভোগ করা নিতান্ত অমুচিত, শান্তিভঙ্গ করি-তবুও কাল মোগল-লো প্রণালীতে কুৰ ইহলোক sel. । * छारा-र है হইলেন। जीव ্র জাহানীরের রণভেরী অচিরে শু ছইয়া গিবারের প্রান্তদেয়ে উঠिल। ভার হইতে অপর অধিকার বি মোগলের আ বোধ হয় সেই রোহণ করিবামাত্র তা কিনী মিবারের প্রতিকূলে চালিত করিয়া-ছিলেন। জাহাঙ্গীর সমূরের শান্তি উপভোগ াসিলেন ভাঁহার না। মিবার কর (সই পিতার প্রাণপ র সিংহের পথে অগ্রসর হা যে মাতৃভূমির প্রতিমন্ত ছিল না অথব শুল্র যশঃ ইচ্ছা একেবারে ছিল না এমত নংহ, কিন্তু চাটুকারগণের প্রলোভন আল্স্যুপরতন্ত্রভায় বাক্যে ও নিজের তিনি স্বক্রব্যে বিরত পাকিলেন। তাঁহাকে কৰ্ত্তব্যবিষ্ট ও নিক্ৰৎসাহ দেখিয়া मक्तात्रभव केर्किव करि উঠি-

প্রতাপের নিকট যে তাঁহারা ৰা কি मलश लहेश हिला करत्रन ! ताकात्र त्न প্রতাপের পুরে আবার যুদ্ধ ায় মাতৃভূমি র ? সদারগণ বিষ্ম ধে. নাড়লেন, ক্ষোভে ও রোবে জবদ কিন্ত ক্রোভ প্রতীশার করিতে চেঠা বীর শালুমা ক্রি প্রারিলেন না, রাজবোবকে রাণা অমর ''মহা-ভায়মান, বাপ্লারা-ওলের বংশধর, বীরপুঙ্গব প্রতাপ সিংহের পুত্র ও মিবার রাজ্যের অধিপত্তি হটয়া আপনি কিরূপে কিয়াছেন ? ব রক্ষা করিতে এইরপে সমৰ্থ ই C7 31. ক্রিয়াছেন—ক্রিক শোণিত আপনার প্রবাহিত। चटमगटेवती মনী শিরার আপনার সম্বাধ মোগলদল করিতেছে, আর আপনি কিনা চাটুকার দলে পরিবৃত হইয়া ভীক্ন, বীর্যাহীন কাপু-ক্লবের ন্যায় সময় অভিবাহিত করিতেঁ-বিদেশ্যন কি ? ভিলমানগণ विद्य, भीवन-

বর্গকে নিপীড়ন করিবে, পবিত্র দেবালর
সমূহ ভগ্ন করিবে, ধর্মপুশুক সকল দশ্ধ
করিরা ভন্মরাশি করিবে, এমন কি হিন্দুর
ক্রিয়া কলাপ প্রতিরোধ করিয়া "হিন্দু"
নাম বিলুপ্ত করিবে, আর আপনি জীবিত
থাকিয়া তাহাই দর্শন করিবেন! মহারাজ! এ বিলাদের আলক্ষের সময়
নহে, এখন আরু বিহার করুন.
বিলাস সুখ বিলাবের বংশাভাতি
রক্ষা করুন।"

সামন্তশিরোমণি শালুসাপতির এই-রূপ তেজবিনী বক্তায় সভান্থ উঠিলেন, কিন্ত ব্যক্তিই উছে অমর সিংট হই অনা। কার্চের তখন हे मर्गन পুত্তলে সিংহা-করিয়া এ সন হল ন। তাহাতে অমর সি রাজদ্রোহী য়া যৎপরোনাস্তি রাজাবমা जित्रेकात की प्रदर्भ नाशितनम, किन्न मानुषा অকুৰ্মনে ্বস্র গন্তীরস্বরে বলিতে লাগিলেন, "রাজন! আমি আমার কর্তব্য পালন আপুনাকে যুদ্ধে অগ্রসর হইতেই হইবে, উঠুন, এই অধে আরোহণ ককন" এই বলিয়া শালুস্কাতি বলপূর্বক সমংক্র **ज्यान जार्त्वार**्ग कत्रारेत्रा मनल भर्कार হইতে অবভরণ করি<mark>তে লাগিলেন। রাণী</mark>

হটলেন এবং ইহার কোন প্রভীকার করিতে না পারিয়া তাঁহার আর্জনয়ন-হয় হইতে অনুৰ্গল অঞ্নিপ্তিভ হইতে লাগিল, তিনি দে অশ্রু কিছুতেই সম্বরণ করিতে পারিলেন না। অনস্থর কিয়দ্দর গমন করিলে রাণার জ্ঞানচক্ষু উন্মীলিত হইর। তাঁহার মনোবিকার দুরে গেল। তিনি আয়াকত ক্রপারাধ বুঝিতে পারি-ক্রিকে সংখ্যন লেন এবং শ নির শিরোমণি ! করিয়া বলি আমাকে ক্ষমা কর্ম প্রাথনি শিরোদীয় কুলের যথার্থ হিতকারী, পিতা দীর্ঘকাল ধরিয়া নিবারের স্বাধীনত। রক্ষার জন্য যে এত কঠি সহ কুরিয়া গ্রিয়াছেন, আজ त्रव विनहे আমাছারা উ হইবার উপ য় আপনি আমার নৈ **5** 93 01-ভাজন मछनी। আপনারা অ পিতা স্বর্গারোহণ করি গৌরব রক্ষা র্থ ভাঁহার পুঁ ছে, চলুন আমরা নিবারের গিরিজ্ঞান কম্পিত করিয়া মোগল দেনার সমুখীন হই।" রাণার এই উৎসাহ বাক্যে প্রোৎসাহিত

হইয়ারাজপুতগণ দিগুণ বলে বলীয়ান্ হইলেন ও চেত্ৰীৰ নামক ক্ষেত্ৰে শত্ৰুগণকে রা মুসলমানগণের भूर কামান সমূহ গ্রাম করিতে ভে লা র দিন উভয় लेट लाशिन. মুমর সিংহ বিশাল মোগলবাহিনীর উপর জয়লাভ नम्राल मार्गात्रात् গ্ৰমন করিলেন। সা যুদ্ধ সংঘটিত নিজের কর্ত্তক তিনি প্রভুর চাহিয়া তোষাঁট ন্যায় চাট্বাক্যে তাঁহার সম্ভোষ্যাধনে চেষ্টা করিতেন, তাহা হইলে এইদিনে মিবারের কি শোচনীয় দশা ঘটিত এক স্যু শালু হা-পতি। ধন্য 📢 তোমার সদেশ থে কৰ্ত্ব্য-জ্ঞান! আজ তোন পিরায়ণতা গুণে প্রভুর জড়ভাব দূর ইইয়া চৈতন্যো-দ্য হইল—তোমারই বীর্ষ্যে আজ মিবা রের গৌরব রক্ষিত হইল। ক,

সতী,ও শান্তি।

্ (৩৪৫ সংখ্যা ১৮৩ পৃষ্ঠার পুরু)

দেখা যায়।

অষ্টম পরিচ্ছেদ।

আজ কাল অনেক মেয়েকে কাচের

ত্বিয়া ত্ব থাওয়াইটে

থাকে, এবং উহার স্পগ্রভাগে ঠিক স্তনের "্বাটার" মত "নিপ্<u>ল" থা</u>কে। ঞ্জিজপ कि स প্রণালীতে হধঃ ाक। এ বিষয়ে এৰ যে মাইপোষ ইতে পারে, যন্ত্র 👌 চিত। নত্বা উহাতে (नक সময় অহিত হইজ নলের মধ্যে অনেক সময় দেখা যায়, তথ জমিয়া এবং উহা টক্। ঐ লৈ তাহাও শীঘ্ৰ র যায়। স্থুতরাং লৈই ''অস্থল্ড ভতি নানাবিধ দেৱ ৷ আমাদের দেশের বুড়ীরা গৈমন অনেক সময় ছেলেকে বিস্তুকে করিয়া ভূধ থাওয়াইয়া থাকেন, আন্ত কাল পারার অনেকে 'ভামতে' ানটি নিরাপদ নয়। ধরিয়াতে ी उगान इहे उट्ह, বিজ্ব কে রাইয়া লইল, এরূপ স্থলে অনেক সময়ে ছেলের ঠোট অথবা দাঁতের "মেড়ে" কাটিয়া ঘাইতে দেখা গিয়াছে। চামচেতেও অনেক সন্ধে তাই হয়।

শান্তি বলিলেন, আচ্ছা দিদি, আমাদের দেশের অনেক মেয়ের। যে নরম
কলমী প্রতির নলে করিয়া পুধ্থাওয়াইয়া
ত মূল নয়। সরো-

অপকারের সস্তাবনা নাই,তেমনই আবার একটা খুব উপকার আছে। ছেলে যখন মায়ের স্তানের বোঁটার দক্ষে দেই কলমীর নল চ্ষিয়া ত্ব টানিয়া লইতে থাকে, সেই সময়ে তাহার জিভের সৃহিত ঘর্ণণে প্রচর লালা উৎপন্ন হইতে থাকে। সেই লালা তুধের সহিত মিশিয়া হজমের পক্ষে থব সহায়তা করে। পাশের একটি মেয়ে বলিলেন, "লালা ক্ষেত্ৰ উপকারী?" সব্যোজিনী বলিটে খুব্ উপকারী বৈ কি। উপকারী বৈশিয়া ত ডাক্তারেরা ভাত থাইবার সময় জল গাইতে নিষেধ করেন। কারণ দেই সম্যুজল থাইলে, লালা জলের সহিত্র মিশিয়া অনেক নষ্ট হইয়া যায় মা যায়, তাহার পারে না।" স্হতি 👿 পাশের (कन मा. জল থাইয়া অনেকে থাকেন, মর বাঘোতের কথা ত ক য় না ?" স্রো-জিনী ব তা শোনা যায় না वर्ष ; लाना रायम करमक महे इहेश যায়, তেমনি আর যে চারিটি রস জাছে, তাহাদের ভারা হজম হইয়া যায়। পাটেট রদে শীঘ্র হজম হইত, চালিটি রদে একট : দেরি হয়; যেমন পাঁচজনের কাজ ঢারি-জ্বেন করিতে গেলে দেরি হইয়া থাকে।" পাশের মেয়েট্রলিলেন, "ই্যামা এবার বুঝতে পেরেছি।"

সরোজিনী বলিলেন, যতদিন না **দাঁতি** উঠিবে, ততদিন <u>পর্যন্ত তথ্</u>য বাতীত অন্য কিছু ছেলেকে থাইতে দেওয়া উচিত নয়। বি তাহার অন্য থাদ্য দ্রব্যের আবশ্যক হই-

ৰথন সব দাঁতে উঠিল, তথন জানিতে হইবে । য়াছে। সেই সময় ভন্নপ্রাসানের প্রয়োজন।

অ'াধারে আ

সংসার! নি**লে**না মম ভালবাসা, ভজি সেহ অভাগা দেৱা আমার (৩) দিলেনা কেহ। হঃথেতে সহামুভূতি

সারল্যের খোলা প্রাণ নিলেনা আমার ঠাই করিলেন

উৎসাহ महामा भू বাধা ব তোমার এ বর

আছি ভগ কাওঁ হর্দান্ত অশান্তি তার দলিতেছে প্রতি পার।

তবুও অধীর নহি হইব, ভরুসা আছে বাসনাকে দিব বলি না হয় তোমার কাছে। তব ঘাত প্ৰতিঘাতে অবশ্য হইবে মম

তা হইলে শান্তি দেৱী

করিবেন আ

দিবেনা নি কায় গ

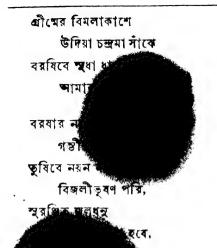
হাসিয়া বাসন্তী উন থোলা প্ৰাণে কথা কবে।

मुर्ग थेजा ফুলের আতর भीरत भीरत

সঙ্গেহে ঘাইবে ব'রে Î গোলাপ, মল্লিকা যুথী <u> শেভাগ্য গরব ভুলি</u>

ছুবিবে এ অভাগায় মুদিত পাপড়ী খুলি।

প্রভাত চাতকচয় গাঁহিয়া মধুর প্রা মাতাইয়া ধর্মি



হাসিয়া সরল হাসি कृषिद्य मम इनग्र। শারদ চন্দ্রিকা রাশি, থ্রিকের ন্যার, ভাগায়।

কল্লোলিয়া তবঙ্গিনী গাহিবে মধুর গান

ভুলিয়া তোমার রোষ তায় জুড়াইব প্রাণ। মুছল প্ৰন মাখা স্থনীল সলিল রাশি তুষিবে হাদর মম হেদে অকপট হাসি। ভোমার পেষণ যন্ত্রে হয়েছে যা শতথান জুড়ে গেঁথে মিশাইব नीलाचिरं रेनेहे थान, আতিথ্য করিবে মোরে ঋজু তীর-তরু চর, বিহগের সদালাপে र्व शास्त्र छिमय । ভীষণ

मिलिर কাছে! গৰ্বৰ ৫ শীবি সালোক আছে।

. কু, রা।

বাদন প্রণালী

शिशानारकार्णे ७ शतस्मानियम । (७८) मःथा। ४৮ पृष्ठीत पत्र)

রাগিণী ইমন কল্যাণ-তাল কাওয়ালী। অস্থায়ী

৩৷

িম ক-২য় ভাগ।

রাগ শব্দে মনের ভাব অথবা প্রক্র-তির শোভা বুঝায়, এবং ধ্বনিবিশেষ দারা লোকের চিত্তরঞ্জন করাকেও রাগ কহে।

ব্ৰদার মতে আদি ছয় রাগ, যথা—
১ ভৈরব, ২ জ্ঞী, ৩ মেৰ, ৪ বসস্ত,
৫ পঞ্চম ও ৬ নটকারীয়ণ।

৩৬ রাগিণী, যথা,---

 ১। তৈরবী, গুর্জরী, রামকেলী, গুণকেনী, সৈন্ধরী ও বালালী।

২। মালত্রী, তিবলী, গৌরী, কেদারী মুবুমাধ্বী ও পার্ক্ত

৩। মান সারেবী, কৌশিকী, গ

৪। দেশা, ললিতা ও হিনে

. ৫। বিভাষা, পুণাটা, বড়-হংসিকা, মালবী, ও

ৃ ৬। কামোদী, কঁলাাণী, আভিরী, নাটিকা, সারঙ্গী, ও হসিরা।

উল্লিখিত ৬ রাগ ও ৩৬ রাগিণী ব্যতীত আরও যে সকল রাগ রাগিণী ব্যবহৃত হয়, তাহাদিগকে উহাদের পুত্র ও পুত্রবধূ, অথবা উপরাগ ও উপরাগিণী বলে। হিন্দু সংগীত গ্রন্থে রুগগ, রাগিণী ও উপরাগ ও উপরাগিণী সম্বন্ধে অনেক মত-ভেদ দৃষ্ট হয়। ভরত ও হন্তমন্ত মতে এক একটা বাগের পাঁচ পাঁচ্টী রাগিণী।

ব্রস্নারণ ও অন্ম অনেক গীত তম্ববিদের মতে রাগের <u>ছয় ছ</u>য়া রাগিণী।

রাক পুত্রবধূ সম্বন্ধেও অনেক ন মতে এক এক কান মতে ছয়,

রা — ড দ্ধ, সালস্ক
এবং সংক
অভ রাগের সংশ্রব থাকে না, তাহাদিগকে
ড দ্ধ রাগ কহে। তুই
যে রাগ উৎপা
বহু রাগ সংযোগ
সংকী বলা যা

ভদ্ধ, দালক জাতীয় রাগ আ
নিগতে বিভক্ত, যথা,—ওড়ব, খাড়র ও দম্পূর্ণ।

যে যে রাগ রাগিণীর স্বর বিন্যাসে

নাত স্বর ব্যবস্ত হইয়া প্রান্ত, তাহারা

নম্পূর্ণ জাতীয়। যে গ্রান্ত ব্যক্ত হার

ছয় স্বর ব্যবস্ত হর্ম ব্যক্ত রাগ
জাতি বলা যায়। আন যে সকল রাগ
রাগিণী পাঁচ স্বর বিশিষ্ট, তাহারা ওড়ব
ভাতি বলিয়া নির্দেশিত হইয়া থাকে।

কোন রাগ আলাপে যে সুর প্রথম ব্যবস্ত হয়, তাহার নাম গ্রহ। রূপের বিশ্রাম্ক যে সুর, তাহাকে ন্যাস কহা যায়।

রাগে শুসুর স্বামিবৎ ব্যবস্থত হয়, অর্থাৎ যে প্লর অন্য স্বর্থানে প্রধান বা যাতার বহুল প্রা ৩৪৭ সংী

স্থুর ব্যবস্ত হয়, অর্থাৎ বাদী স্বরের অনুগত হইগা প্রযুক্ত হয়, তাহাকে मन्नामी करइ। স্থ্র वामी ভূত্যবৎ ব্যবস্থ মর্থাৎ কছে। রাগ্র ना, রাগাদির অর্থে ভাহাকে বিবাদী

রাগ রাগিণী আলাস্লার করিবার বিশেষ বিশেষ সম্য দিবারাত্রির মধ্যে **ক**তক**ও**লি আবার নিকি ना शांदक :--- दशा ও দোলযাতা। ঝতুতে গানের দেশাচার মতে শীন করেন, তাহা হই লে দৃষ্য হয় না এবং রঙ্গভূমিতে ৩ রাজার আভায়ে সকল সম্যে সকল রাগ গান করা ফাইতে পারে। কাৎরানী।

নি সা \times \forall \times 9× 4

| অন্তরা। | | | | | |
|---|----------------------|-------------------------------|---------------|------------------------|--|
| • & 9 | ণ × ম | × প | <i>ত</i> ধ | ৺ প | |
| >৺ ম | × গ | × भ | 4 | ম | |
| + ৺ গ | * * | × | <i>৬</i> গ | ⊌∕ ষ | |
| ৩ × ৬ × ৬ × × । গুন ক্ষুণ কা কা | | | | | |
| ু লুম। কাওয়ালী। | | | | | |
| {+1 | । ৩। গ া ম | | •। ৺ গ ম | ₩ | |
| ১৬ ৬ গ ব •। । ঝ গ ৩৬ | おき 日 | ः म? । - । • | | গ্ৰা ম গ লা ন | |
| +1 1 | T. | # P | | ৺ ৺ শা ং ধ | |

প্রবাদ বিচার।

(১৪৬ দংখ্যা ২০৮ পৃষ্ঠার পর)

অনেক প্রাদ্দীয় য়াছে। তাহার কতকগুলি বঙ্গভা**না**য় অনুবাদিত হইয়া চলিয়া <u>আসিতেছে</u> :-

ৰথা----

- ১। মনুষ্যের চিস্তাই জার।
- ২। ভাগ্যবানের বোঝা ভগবানে বয়।
 - ৩। বৃদ্ধি যার, বল তার।
- ৪। ছর্ভিক্ষ কণ কাল, স্মরণ থাকে চিরকাল।
- ৫। দশপুত্র সম কন্যা, যদি পাত্রে
 পড়ে।
 - ৬। দারিক দোষে, গুণ রাশি নাশে।
 - কাটা দিয়া কাঁটা তোলা।
- ৮ । অভিদানে বলির পাতালে হইল ঠাঁই ইত্যাদি।

কতকগুলি অবিকল সংস্কৃত থাকিয়া বঙ্গভাষার মধ্যে যে যাত্র । যথা—

- 31 E F
- ٦ ١
- ৩। অধি
- ৪। অরচিত
- ে। আতুরে বি
- ৬। আবুবন্মনাতে জগৎ।
- ৭। কাক্সাপরিবেদনা।
- ৮। ক্ষেত্রে কর্ম্ম বিধীয়তে।
- **৯! গণ্ড্**ষজ**লমা**ত্রেণ শফরী ফার-ফারায়তে।
 - ১০। প্রসা স্ট্রা নাস্তি।
 - ১১। চটকদ্য মাংসং ভাগ শতং ।
 - ১২। চনদনং ন বহে বনে।
- ১৩। দারিদ্রদোষা ওণরাশিনাশী।
 - ' ১৪। নিয়তিঃ কেন বাধ্যতে।
 - নিয়ুমো নাস্তি।

- ১৬। প্রহারেণ ধনঞ্জা:।
- ১৭। ফলেন পরিচীয়তে।
- চু হু বি ক্লি ক্লি ক্লি ক্লি ক্লি ক্লি চু বি
 - धनः ।
- (शः ।
- বরা।
- ২২ পছা।
- २०। मुनानां गिजनः।
- २८। मूर्गमा लाटिगोनधः।
- ২৫। মৌনং সর
- ২৩! য:তা
- ২৭। **বড়ে** কোহ**ত দো**ষঃ।

२৮। यस्त्रिक

- ২৯। যাদৃশী ভা সিদ্ধি-ৰ্ভবতি তাদশী।
 - ৩০। যোগ্যং যোগ্যেন যুজ্যতে।
 - ৩১। শতংবদমঃ বিশ্
- ৩২। শত মারী 📞 📆 সহত্র-

মারী চিকিৎসক:।

- ৩০। শনৈঃ প্রতিলভি নং।
- ৩৪। শরীর মাল্যং খা ধর্মার্মাধনং।
- ৩৫। শস্ত্র গৃহমাগত:।
- ৩৬। বহ্বাবন্তে লঘু লিয়া।
- কতকগুলি বিজাতীয় ভাষার প্রোনদ
- অবিকৃত বা কিঞ্চিৎ বিকৃত হইয়া বঙ্গ-ভাষায় চলিয়া গিয়াছে। যথ —
 - ১। ∢ বদকী বাত হাতীক¥দাত।
 - २। टेटग्राही थाना क्राप्त हु।
 - এগু দিন

বুকে ना।

৫। হাম্ছোড়া, লেকেন কম্লি
 নেহি ছোড়া।

নেহি ছোড়া।

৬। মহতের

পড়েত নড়েনা।

৭। মন চা

৮। বেক

না বেকার

বিবার

১০। তৈয়ারি ভাত ছাড়তে নাই।

থার। ইত্যাদি।
থার। ইত্যাদি।
তা ও অমিতবাকে দে দকল
প্রবাক বাকে, রাজরাজড়ান নার্তাদি অবলম্বনে
দে দকল প্রবাদের সৃষ্টি হইয়াছে। যথা---

১। লাগে টাকা দেবে গৌরীদেন।

২। ছকু বাবু।

०। न बाजिया

ও। রা**জান্তি ক্ডী,**এক বিয়ানে বুড়ী।

 নবাব আর কি ?

৬। নবাব পুত্র।

৭। নবাবি চাল। ইত্যাদি।

এইরপে প্রবাদের সৃষ্টি হয়। বাঁহার।
দেশের হিতৈষী বলিয়া আপনাদিগের
পরিচয় দেন, প্রবাদ পুষ্টি ও রক্ষা বিষয়ে
তাঁহাদিগের ষরপর হওয়া নিতান্ত
প্রার্থনীয়, ককেননা প্রবাদ দেশ্বের অতীব
উপকারী প্রার্থ। বেমনু প্রাচীরাদির
উপর

তাহাকে দৰ্মতোভাবে আছন্ন প্রবাদসকলও তজ্ঞপ সমাজের প্রত্যেকা-ভবে প্রবেশ করিয়া বিবিধপ্রকারে তাহার হিত্যাধন করিতেছে। কোথাও সরন উপনেশ, কোথাও শ্লেষ, কোথাও ব্যাজ-স্তুতি, কোথাও উপমা, কোথাও আদর্শ ইত্যাদি দ্বারা যেখানে যেরূপ আবশ্যক, সেখানে তাহাই করিতেছে। मगार्क अमन विषय किडूरे नारे, व्यवान থাহাকে স্পর্ণ না করিয়াছে। শিক্ষা, চিকিৎসা, ব্যবস্থা, কৃষি, শিল্প, বাণিজ্য, গার্হ্যধর্ম, সমাজনীতি. রাজনীতি, বৈরাগ্য, ত্যাগ, দান, আতিথ্য, তপস্তা, তীগাটন, অর্থনীতি, পরকাল,জান, ভক্তি,• মকনকেই প্ৰবাদ স্বার্থ, পরার্থ আপনার বি আমরা টা প্রবাদকে । একণে ঐ 🔻 র্বিবার চেষ্টা উদাহরণ যাউক প্ৰবাদ করিব ৷ কোথায় কিরূপ ্রী দিতেছেন। অতি-শ্য দর্প, অতিশয় অভিমান এবং অতিশয় দান ইহার কিছুই ভাল নহে। তাহাই দেখাইবার জন্ম পুরাণ ২ইতে উদাহরণ সংগ্রহ করিয়া বলিতেছেন,—

> "অতিদর্পে হতালস্ক। অতিমানেচ কৌরবাঃ,

় প্ৰতি দানে বলিব্দ্ধঃ দৰ্কমতান্ত্ৰু গহিতং।"

সকলের অবস্থা চিরকাল সমানু থাকে না। সম্ভান্ত, সুশিক্ষিত, সঙ্গতি-পুনু ব্যক্তিগণ্ড ভাগ্যাক্ষের স্থিবশাৎ কথন কথন ছ্রবস্থায় পতিত হইয়। বড়ই ক্লেশ প্রাপ্ত হন। উন্নতির সময়ে যে সকল লোক তাঁহাদিগের অধীন ছিল, ছঃসময়ে হয়ত তাঁহাদিগকে সেই সকল লোকের অধীনতায় পতিত হইতে ইই-য়াছে। ইহা সংসারী লোকের পক্ষে শাসাভ তৃঃখ নছে। প্রবাদ তাঁহাদিগকে সাম্বনা করিতেছেন,—

हित्री हाटि है, मसब खटन

উৎকলের অনার্য্য শূদ্র।

পরাজিত অনার্য্যজাতি, কিরপে থীবে ধীরে আর্ঘ্য সমাজভুক্ত হইয়াছিল, আর্ঘ্য-শাসিত এবং অনার্য্যপ্রাবিত মধ্যপ্রদেশে, এবং থড়িযার * কিয়দংশে, সমাজস্তরের প্রতি সম্বন্ধ নিক্ষেপ করিলে, তাহার অনেক তম্ব বুলিক

বে অনা নী ওড়িষার
আদিম প্রতি সর্ক
প্রথমে শৃক্তা প্রতি ক্রিয়াছল, আদি ক্রিয়াছল, আদি কর্মাছল, আদি কর্মাছল, আদি কর্মাছল, আদি কর্মান করিয়া ভানিলাম দে "ওড়িয়া," তথন বড়ই বিশায় জন্মিয়াছল। বাঙ্গালীর কাছে ওড়িযাবাদী মাত্রেই যথন ওড়িয়া, তথন বিশেষ জাতির

* 'উড়িবাা' না লিখিয়া 'ওড়িবা' লিখিলাম, কারণ ভাহাই প্রকৃত নাম। মাঁহাদের দেশ, তাঁহারা বলেন ধাঁট্বা; ইংরাজীতে লিখিউ হয় Orissa: কেবল 'বালালায় চলিয়াছে উড়িব'। ওড়িবা শব্দে বিশেষ-ক্ষণে এছানকার ইতিহাস সংযুক্ত আছে; কাজেই বালালাক

'ওডিয়া' পরিচয়ে বিশেষ কৌতৃহল জিম্মা চরিতার্থের জহ হন্টার সাহের (अर्छ। किन्छ রাজনৈতিক বিভালে ইতিহাস লিখিয়াছেন; কাজেই মধ্যপ্রদে শের অন্তর্গত একটা বিস্তীর্ণ ভূভাগ, যেখানকার ভাষা উড়িয়া—আচার ব্যব-হারাদি সকলই উড়িয়া কেনের কোন সন্ধান তাঁহার গ্রন্থে প্রিয়া যায় না। সম্বলপুর অঞ্লের কৌন তত্ত্বা লইয়া ওড়িমার ইতিহাস লিখিত হওয়ায়, স্মনেক ক্রচী জন্মিয়াছে, একথা পূর্বে আর এক প্রবন্ধেও দেখাইয়াছি।

একালের সভ্যতার স্রোত, বিদেশীয় বাণিছ্যের স্রোত, প্রচীনকালের মুসল-মানদিগের প্রভুতা, কটক পুরীর এবং বালেখন্ট্রের অনেক পরিবর্ত্তন-স্রাধন ক<ি-রাছে। কিন্তু ওড়িবার গড়জাত বা

বনের কুপায়, মুসলমানদিপের আক্রমণ হইতে চিরদিন স্থরক্ষিত ছিল। এখানে ক্লব্যিতে বিদেশীয় বাণিজ্য মবস্থা পারে নাই; কারে লিয়া অপরিবর্ত্তিতভারে লপুর আসিয়াছে। জেলাটুকু ইংরা**ভ**ী ইহার ৮০০ গুণ ভূভাগ দেনার রঞ্জি-শাসনে এ অঞ্চল প্রাচীন কাজেই শাসিত। ছবি পাওয়া যায়, ভাবের বেঙ্গল नदर । এম য়--এ প্রাচীনত্ব ্ন রবে না; শীঘ্রই অ প্রদেশ পাশ্চত্য 974 ্র বিপ্লাবিত সভ্য তরিক ইহাতে দেশের সুথ বাড়িবে কি ছঃথ বাড়িবে বিধাতা জানেন ! অনেক বিষয়ে পরিবর্ত্তন বিশেষ বাঞ্নীয়, কিন্তু আবার ঈশ্বর করুন যেন অনেক বিষয়েঁ <u>র</u>েই। দেশের লোক প্রাচীনকালের ধর্মানুরাগ, স্ত্যপ্রিয়তা, স্রল্তা এবং আড়ম্বরশূন্সতা, সভ্যতার নামে বলিদান না করেন।

ভড়িষা এবং মধ্যপ্রদেশে যত "স্পর্ণ্য" অনাধ্যপুজাতি আছে, তাহার মধ্যে "ওড়" জাতি কেবল "মানবধর্মশারে" উলিথিত আছে। কিন্তু ধর্মশার রচিত হইবার পরেও অনেক অনাধ্যজাতি হিন্দু সমাজে স্থান পাইয়াছে; শাক্ষেতাহাদের উল্লেখ নাই অথচ তাহাদের হাতের জল বালবাদি

দিগেরও শ্রেষ্ঠবর্ণের কাছে বশ্বতাব। দাসত্ব সম্পূর্ণ দেখিতে পাওয়া যায় ; কিছ স্থদ প্রভৃতি অনেক জাতি এখনও সম্পূর্ণ বন্ধ হয় নাই; এখনও দাসত্তনিগড়ে ভাহারা আপনাদিপের বিষয়ে প্রাধান্ত বজায় রাখিতে প্রায়াস ব্রাক্ষণের উচ্চিষ্ট আহার, কিমা—স্পর্ণ করার বিষয়ে, গোপ নাপিত প্রভৃতি সংশুদ্রদিগের কোন আপত্তি নাই; বরং সেটা তাহারা **পু**ণ্যকার্য্য বলিয়া মনে করে। কিন্তু এ অঞ্লের কোন কোন গোয়ালা জাতি, 'ওড়'দিগের সম্প্রদায়, এবং স্থদ প্রভৃতি শৃদ্রেরা; কাহারও উচ্ছিষ্ট স্পর্শ করে না। বের দাসহ সম্পূর্ণ দিগের যে সম্প্রা লাথর কাটার গ্রহণ করে 🕱 অসাস वर কাজ, রাজ বিকানিৰ্বাহ শিল্পবিভার নিকালে ভূমিকৰ্ষণ করিয়া শস্য উৎপাদন করিত. দিগের অপেক্ষা তাহারা যে বেশী আদৃত হইত, প্রাচীন জান্তিবিবরণ পাঠ করিলে তাহা অনায়াদে বুঝিতে পার। যায়। কাজেই 'কুষক ওড়' জাতিই মন্থর **গ্রন্থে** স্থান পাইয়াছে সন্দেহ নাই। এই কৃষক ওড়েরা দাদত্বে অত্যান্য শৃদ্রের অন্থরূপ। পরে বঁথন ওড়িবার মন্দিরাদির স্ক্রপাত হয়, তথন হইতেই হয়ত অন্য শ্ৰেণী আদৃত হইয়া সমাজভুক হয়। যাহার। আদর পাইয়া কাছে আসে, দারে ঠেকিয়া मल পुरिषा लहे ए इग्र, য়াহাৰিগকে

তাহারা যে একট্থানি আপনাদের সন্মান বজায় রাখিতে প্রয়াদ পাইবে তাহার আর আশ্চর্য্য কি ! আর যে গোরালা জাতির কথা বলিতেছিলাম, তাহাদের বিশেষত্ব আরও অধিক। ইহারা যে খুব অন্নদিন আর্য্যসমাজভুক্ত, তাহার অনেক প্রমাণ পাওয়া যায়। অন্যান্য অনার্য্যজাতির মত ইহারা মদ থায়, কুকুট মাংদ থায়, শৃকরাদি খায়;—কেবল চুধ দই বিক্রয় করে বলিয়া ইহারা গোয়ালা। কিরূপে ইহার৷ আ্যাদমাজভুক্ত হইল, তাহা সহজেই বৃক্তিতে পারা যায়। কোন ক্ষতিয় রাজার ভাই বা আর কেহ, যথন বিস্তীর্ণ বনপ্রদেশ কেবল আরণ্যজাতি পরিপূর্ণ লৈর সাহায্যে দেখিয়া--জনক্ত ইয়াছিলেন, সেখানে তথন আৰ্য্যৱি . শিল্পী বা ব্যবসাধী কেহা ব্রাক্ষণ আনীত হ্রয়ার করণাদি বর্ণও রাজকার্যাের জন্য বিশেশবাদী হইয়া-ছিলেন; কিন্তু কোন দূরদেশের ব্যবসায়ী জাতি আমে নাই তাহা নিশ্চিত বলিয়াই বোধ হয়। কারণ একালেও এই শ্রেণীর লোক বড় দেশভূই ত্যাগ করে না। -অনার্য্য গোয়ালা মতাপায়ী বা কুকুট মাংসাশী হইলেও, গোণজাতি মুৎশূর বলিয়া শান্তে অভিহিত বলিয়া, ইহাদিগকে সমাজভুক্ত করা ইইয়ুহে। কিন্ত এই আরণ্যজাতি পোষ মানিবে কেন?

তাহার বিশ্বন দেখিল যে আর্থ্যেরা উচ্ছিষ্ট স্পর্শকারী শুদ্রদিগকে নীচ বলিয়া জ্ঞান করে, ক্ষান বজায় রাথিবার জন্য চর উচ্ছিষ্ট স্পর্শ করিট

এই সকল অনাধ্য বিষয় व्यानमामिरगत श्रुका শুদুগুণ সম্পূর্ণ অক্ষুণ্ণ রাখিয়াছে—দৃষ্টাত সরূপে বিধবার বিবাহের... যাইতে পারে। স্মাজের শারে আ্য্যুগণ য্থন তখন আগ্যনমারী ছিল না। কিক এই প্রাব্যেরা, আর্য্য-সমাজে যাহা স্থাণিত, তাহাও বজায় রাখিয়া আসিয়াছে। বিধবা বিবাহিতা হয়, স্কুলে হয়-পর কুলেও হয়। কিন্তু স্কুলে বিবাহিতা হইতে হইলে প্ৰবর্কে সামী করিতে হয়। এই দেবর-সামী গ্রহণ করি-বার প্রথা, আর একটি অতি প্রাচীন প্রথার সাক্ষ্যদান করিতেছে, কিন্তু এখানে ন্মাজতত্ত্বের দে কথাট। অপ্রাণক্ষিক হইবে বলিয়া ভয়ে নিথিলাম না। এখানে লিখিলাম না; হয়ত অন্য প্রবন্ধ তাহা দেখাইবার প্রয়োজন হইবে। কারণ আর্ঘ্য অধিকারের পর্বের উৎকলের আর্য্যসমাজ কিরপ (লৈ, ভাগ না লিখিলে मम्भूर्व इहेरव नः।।

বাঙ্গালা প্রবচন।

শ (শেষ)।

১। শিকল কু **্রিন** না।

২। শিকারী ক্রিথলে চেনা য

৩। শিগান

৪। শিথেছো কোঁথার। না ঠেকেছি যেথায়।

্রে কি কিন্তু বাছুরের পালে মেশা।

নাকুড়ে ফ্

তোর রয়েছে বসিয়ে।

১১। শিয়রে রাজা,

কোটালের দোহাই।

১২। শিয়ীলের ডাক।

১৩। শিয়ালের যুক্তি।

১৪। শিরে করিলে সর্পাঘাত, তালা বাঁধিবি কোথা **?**

১৫। শিরে দংক্রান্তি।

১৬। শিরোনাস্তি শিরোব্যথা।

১৭। শিব গড়তে বাঁদর **গড়া**।

১৮। শিব নাচে র**কে**,

পাৰ্কতী নাচে সঙ্গে।

১৯ 🛩 শিব রক্ষক বন, বন্ধাক্ষক শিব।

২০। শিবের জামাই শিব।

২১. শিবের দকে থোঁজ নাইকো,

२२। गीलः मर्त्ताळ ज्यापः।

২৩। শুক বলে আমার কৃষ্ণের

মাথায় ময়ুর পাথা,

শারী বলে তায় আমার

রাধা নামটী লেখা।

२८। ७क मत्ना मूथ मिरि,

দানিক মলো দেই তরাদে।

২৫। শুক্না কাঠে বজাঘাত বা ব্ৰহ্মশাপ।

২৬। শুকনা গাছে জল ছেঁচা।

২৭। ওকনা ঘায় আকলের আটা।

২৮। ভক্রা ইবায় ভরা ডুবি।

२०। पुरु

७०।

७)। उ

৩২। ভন্লো লাভা ড নিলো পাড়া।

৩৩। শুভস্ত শীঘ্রং অশুভদ্য কালছ্রণ

৩৪। শুঁড়ীর দাক্ষী মাতাল।

৩৫। ওঁড়ীর নাই কান,

মুচীর নাই নাক।

৩৬। শৃওরের কপালে

গঙ্গামৃত্তিকার ফোঁটা।

৩৭। শৃহুরে গোঁ।

তি৮। শুকর চেনে কচু আর ঘেঁচু।

৩৯। শেয়ুকুলের কাঁটা।

৪০। শেয়ান মুমুর ছাঁ।

कां (म भा (मग्र ना।

৪১। শেরান ঠকুরে বাপকে বলে না

৪২। শেয়ান পাগল।

৪ ৩। শেয়ানে শেয়ানে কো**লাকৃনি**,

মুঠম হাত আড়াআড়ি।

৪৪। শেষ বেশ।

৪৫। শেষ স্থাপরম সুধা।

৪৬। শোকে পাথর।

৪৭। শৌল চেক্সও সোজে না, পোলা চেক্সেরাও বোঝে না। ৪৮। শ্রাম রাখি কি কুল রাখি। ৪৯। শ্রদার ছাই.

থাই।
৫০
৫১
রাপুরী,
ভাদর ভারি।

৫০। বৈত চামর আর কোঞা পাঠ।

পুত্রশোকে আত্মহত্যা

স্থাশিকা বিস্তারের জন্ম স্থাসভ্য জাগৎ **वित्रकानरे महावाध अनिदिग्य यक्नीन**; সুশিকা-কেন ন ু মানৰজীবন পশুজীবন হইও মানুষকে মানুষ করাই ব न्न। এই নিমিত্ত শিক্ষা, ্যুশকা প্রভ-তির প্রবাহ আবহুমানকাল হইতে প্রবল বেঙ্গেই চলিয়া আসিতেছে। স্থসভ্য ইউরোপ, আমেরিকা প্রভৃতি দেশে শিক্ষা क्विवन श्रुक्विनिष्ठं नत्य, त्रम्भीभरगत्र মধ্যেও সমভাবে চলিতেছে। সে সকল দেশে কোন কোন জংশে শারীরিক আকারগত কিঞ্চিৎ বৈদক্ষণ্য ব্যতিরেকে স্ত্রীপুরুষের আচার ব্যবহার, ধর্ম কর্ম, সাংসারিক কার্যা ইত্যাদি কোন বিষয়ে কিছুমাত্র ভেদ নাই। এ সকল দেশের অমুকরণে এবং ভারতীয় প্রাচীন স্ত্রীশিক্ষা-প্রতির অনুসরণে ভারতেও অনেক দিন रहेए ही कि थहिन हरेगाह

ভগবদিজ্ঞায় যাব হৈ ।
ভাল, তাহাতে ।ই।
ভবে কেন যে তিনি আন্দর্কের স্থানিকা
দর্কতোমুথী ও দর্কাঙ্গীন করিবার জন্য
আমাদিগকে মতিগতি দিতেছেন না,
তাহা ভাবিয়াই তৃঃথ হয়।

বিভালয়ের নির্দিষ্ট পুস্তকাবলী অধ্যা

য়ন করিয়া ভাষাতে পরীক্ষোত্তীর্ণ হইতে
পারিলেই আমাদের শিক্ষা সম্পূর্ণ হইল,
আমরা এইরূপ মনে করিয়া থাকি। যদি
বিভালয়ের পাঠ্য গ্রন্থাবলী তাদৃশ সমীচীনতা সহকারে নির্দিষ্ট করার প্রথা
থাকিত,তাহা হইলে আমাদের প্ররূপ মনে
করা সঙ্গতই হইত। কিন্তু গুর্ভাগ্যবশতঃ
বিভালয়ের পাঠ্যাবলী সেরূপে নির্দিষ্ট
হয় মা। মন্ত্রুয়ের জীবনকে প্রেরুত্ত মন্থ্যের
জীবন করিতে হইলে কত প্রকার শিক্ষার
প্রয়েজন হয়, তাহা চিতালীক বেদুশী

ভারতবর্ধ ব্যতীত পৃথিবীর আর ফেখানে যতপ্রকার শিক্ষাপ্রণালী প্রচলিত আছে, তাহার ফলে জীব্র <u> সারাসক</u> ্বশিক্ষার ও বহিন্দ্র করে। ্বশিক্ষার প্রণালী তাহার প্ৰভাবে জীব 🗬 रुय । ন, তাঁহার ফলে ষিনি য়তই খ অনাসক্তি শিক্ষার সহিত একটু বৈরাগ্য না থাকিলে তাঁহাকে স্থানিকিত ুবৈরাগ্যবিহীন বিক্সা 🕊 করিতে পারে ছে, এমন শিক্ষাই যে সকল শিকার नार পতে ছতে ছতে অগ্রগ তাহার নিদ্দিন অভিছ।

এমন লোকও অনেক আছেন, বাঁহারা আর্ঘ্য শিক্ষাকে সুশিক্ষা বলিতে কৃষ্ঠিত হন এবং উচ্চপ্রেণীস্থ ইউরোপীয়-গণের দিন্ধান্ত ব্যতিরেকে অন্যের দিন্ধান্ত কর্ণপাত করে না। ভাঁহাদিগের জন্য একটা গল্প করি।

ভূতপূর্ক চিক্ দেকেটারি এড গার সাংহ-বের নাম অনেকেই ভনিরাছেন। তিনি যে আর্য্যশিক্ষার সন্মান উত্তমরপেই করিতেন, তাহাও অনেকে অবগত আছেন। তিনি যথন প্রেসিডেন্সি বিভাগের কমি-সনার, তথন এদেশীয় কোন উচ্চপদস্থ স্থানিকভশ্বাভির সহিত ক্রাণ্যশেক্ষনে বলিয়াছিলেন,--"ভারতে স্লাগ্যনের পূর্কো ভারতীয় হিন্দুগণের প্রতি আমার প্রাচ্

দেশ বলিয়াও মনে করিতাম; কিন্তু এদেশে আসিয়া এবং নানাস্থানের বিজ্ঞালয় পরি-দর্শন করিয়া আমার সে সকল সংস্কার দ্রীভৃত হইয়াছে। ভারতীয় হিন্দুগণকে এখন অতিনীচ ও অকর্মণা বলিয়াই মনে হইতেছে; কেননা যে ভাতির "রামায়ণ মহাভারত" আছে, সেই জাতি কি না তাহা পরিত্যাগ করিয়া আপনাপন পুত্র কন্থাগণকে অস্তাজ জাতির রচিত গ্রেছর অনুবাদ পড়াইতেছে"।

যে শিক্ষা প্রভাবে ধন জনাদির মায়াল মৃশ্ধ না হইয়া অনাসক্ত চিতে দংলারের **সুধ** ভোগ করা যায়, **জামা**-দের বালক বালিকাগণ ও যুবক যুবতী-उम (मरे गिका काल रन, 'वरे कथांगे। প্রবন্ধের অব-বলিবার জ্বান মাদের দেশের তারণা। কি শ্লী কি পুরুষ্টি কাই হইতেছে না। অধিকন্ত নবীন প্রণালীতে শিক্ষিতা নবীনা-গণ যেন সাংসারিক মায়া মোহে অধিক কড়াইয়া পড়িতেছেন। ঐ শিক্ষার প্রভাবে ঘরে ঘরে নগরে নগরে পৃজ্ঞা অর্চ্চা,কর্মকাণ্ড আমাভরণ পরিচ্ছদ, ভোজন বিলাস এবং আলোচনা, প্রস্থা, গ্রন্থ প্রচার, সভা সমিতি, বক্তৃতা, পরোপকার ই**ত্যা**-দিরু বিশেষ অবীর্দ্ধি ও পারিপাট্য .হইতেছে, তাহাতে দলেহ নাই; কিছ করালগ্রাদ ু হটুতে ত্রিতাপ ভালার আত্মাকে রক্ষা করিবার কি উপায় হট্ট-তেছে ? যদি তৃঃখদাবানলে সংসার ভক্ हरेल हिनन, उद्द हिन्सी प्रांतिति

হইল কি ? যে সকল তৃ:খ দ্র করা মন্থয়ের চেষ্টাসাধ্য, তাহা দ্র করিবার জন্য বিশেষ চেষ্টা হইতেছে এবং তাহার কলও হইতেছে; কিন্তু যে সকল তৃ:খ অপ্রতিবিধেয়, তাহা হইতে রক্ষা পাই-বার জন্য কি হইতেছে? ভীষণ তরক্ষা-ক্ল ভব সমুদ্রে ভাসমান জীবকে উঠিতে বসিতে তরকের আঘাত পাইতে হয়; সে আঘাতে প্রাণ বাঁচাইবার জন্য আমরা কি করিতেছি ?

वक्रांतरम अकृषि ध्ववाम आरह,-"वक्ष व्याँहिनि, कनका श्राटता।" व्यामारमत দেশের প্রচলিত শিক্ষাপদ্ধতিও তজ্ঞপ। শিক্ষার জন্য কত যত্ন, কত অর্থব্যয়, কত আড়ম্বর হইতেছে 📜 💁 🗷 এক আত্ম-্ৰাই "ফদ্কা-জ্ঞানের অভাবে গেরো'' হইয়া সম্প্রতি কোন ব্মণী অধিফেণ সৈত্য বিষয়-ছেন। ভাঁহার ছইটী পুত্র সন্তান ছিল। উপ্র্যুপরি ছই বৎসরে ছইটীর দেহান্তর হইয়াছে। তিনি সেই শোক সহ্য ক্রিতে না পারিয়া আত্মঘাতিনী হইয়া-ছেন। অথচ সুশিক্ষিতা বলিয়া তাঁহার খ্যাতি ছিল। ইহা কিরূপ স্থশিক্ষা বুঝিতে না পারিয়া সমাদটী প্রবণ মাত্র আমরা স্তুজিত হইয়াছি। অথবা যদি তিনি चानिकिठाहे इन, हिन्दूत घरतत सरस বটেত! তাঁর এত মুাহা মোহ কেন ? হুদ্ধ ঐ সন্থাদটা নহে ;—এ জাতীর সন্থাদ প্রায়ই শ্রুতিগোচর হয়। কোন রমণী বা পতি<u>র সময়েরে অ</u>ভিমানিনী হইয়া

আত্মঘাতিনী হয়েন। কেই বা সপত্নী
অথবা শ্বার গঞ্জনা সহ্য করিতে অশক্তা
হইয়া প্রায়ণ বা প্রাটী
ভীবন হিলাপি
অনেক ইয়া থাকে।

नारतन, এमिनीय র্মণীগণের এইরপ শোচনীয় পরিহারাথ ই জীশিক্ষার জন্য এত হ**ইতেছে। এ**য়ত্ব সহস্রক্ষেত্র প্রশংসনীয় তাহাতে সন্দেহ না কোন রমণীর 😘 উপলক্ষ করিয়া এ করিয়াছি, তথাপি ফার অসম্পূর্ণতার পালোচনা করাই প্রবন্ধের লক্ষ্যনহে। দেশীয় সাধারণ শিক্ষার আনোচনাই উহার বিষয়ীভূত। আত্মাভিমান, অহঙ্কার, লজ্জা, আশাভঙ্গ, ঋণদায়, পরিজনগণের সহিত ইত্যাদি কারণে কত পূর্ণবয়ক্ষ পুরুষ ও বিছালয়ের উচ্চশ্রেণীস্থ ছাত্র আত্মহত্যা করিয়াছেন। তাঁহাদিগের মধ্যে অনেকে শিক্ষিত বা স্থশিক্ষিত বলিয়া পরিচিত ছিলেন।

কেহ কেহ আত্মহত্যাকে মানসিক উৎ
কট রোগমূলক, বলিয়া মনে করিয়া থাকেন;
যদি তাঁহাদিগের দিছান্ত সত্য হয়, তাহা
হইলেও বর্তুনান শিক্ষাপছতিকে এককালে
বিশুদ্ধ ও সম্পূর্ণ মনে করা যার না।
কেন্না যেরূপ মানসিক রোগ আত্মহত্যা-

অশিকা বা কুশিকা হইতেই উৎপন্ন হইয়া ধাকে, ইহা ভুক্তভোগী ব্যক্তি ভিন্ন অন্যের অনুভব কবি । বৰ্তমান ইহার সাক্ষিসরপ্রে ৰীকাৰ্য্য. আছেন। তবে रेंग महन স্থশিক্ষিতগণেরও জন্মলাভ করিয়া 👣 🕠 ক্রেকে এরপে আক্রমণ করে যে, ভখন আক্রমাশ এক-রূপ অপরিহার্য্য হইয়া পড়ে। স্থল অ<u>তি বিক্রমান</u> স্থক্ত ঘোর ত্রুতির আনসিক রোগের যাতনা এরপ ছর্কিবছ যে, আন্ধাশ ভিন্ন প্রায়ই তাহার প্রতীকার হয় না। বিদি কেহ দেরপ রোগে আক্রান্ত হইয়া আন্ধাশ করেন, এ রোগের যাতনা বিষয়ে অভিজ্ঞ ব্যক্তিগণ তাঁহার প্রতি দোষারোপ করেন না। কিন্তু সচরাচর যত আন্ধহতা৷ সংঘটিত হইয়া থাকে, তাহার অধিকাংশই মায়ানোহম্লক। দেইগুলি স্থানক্ষার ধারা নিবারিত হইতে পারে, এ প্রবন্ধে কেবল সেই কথাটা বলিবার চেঠা করা হইয়াছে।

ধর্মের জয়।

প্রথম পরিচ্ছেদ।

সম্প্রেমশান। মশান শ্বশানের নামান্তর নহে, মশানে ও শ্বশানে বিন্তর
পার্থক্য দৃষ্ট হয়। মশান যদিও আমাদের
প্রত্যক্ষীকৃত নহে, তথাপি উহার বিষয়
ভানা আছে এবং উহা কর্মনার অতীতও
নহে। যথায় অপরাধী ব্যক্তির প্রাণদও হয়,
এখন যেমন সে ছান্টীকে আমাদের দেশে
কাঁসথানা বলে, প্রাকালে তক্ষপ ছানকে
মশান বলা হইত। আমরা যে সময়ের কথা
বলিতেছি,সে সময়ে বর্তমান সময়ের কাঁদীদারা বা তাড়ি চ্যোগে অপরাধীর প্রাণদণ্ড হইত কাঅথবা অতিপূর্বকাশ-প্রচলিত
শ্ল প্রথাও ছিল না। এই সময় প্রাণদণ্ডার্হ অপরাধিগণ যে বধ্য ভূমে চণ্ডালের
কুঠারামাতে প্রাণত্যাগ ক্রি

ু এইরূপ স্বাতৃক টীকে মশান বুৰ চণ্ডালগণ জনাতি ভিহিত ছিল। শশান দৰ্শনে মনে ক্ৰিক কি এক অনি-র্বাচনীয় বিষাদমিশ্রিত শান্তির আবি-ভাব হয়—মুহুর্ভের জন্য সংসারে বিরাগ कत्म-मूह्र्र्खंत्र कना भागानवानहे कीव-নের চিরশান্তি বলিয়া অমুভূত হয়-মুহুর্ত্তের জন্য গৃহে ফিরিয়া ঘাইবার বাসনা তিরোহিত হয়। শাশানদর্শনে মনে কতক্রপ করনার উদর হইতে থাকে এবং শুশানকে বিখে পৰিত্ৰ ও নিত্য বুলিয়া বোধ হয়, আর—"মরণং প্রকৃতিঃ শ্রীরিণাং বিক্লক্সিবিতমুচাতে বু^ন্তু। জ্বস্পাব্তিৰতে খসন্, যদি জ্যুন্ত লাভ∗ বানসো ॥" কবিবর কালিদাসের এই বাক্যের দারত স্কর্রপে ক্রেন্স হয়।

শশানে যেরপ অলক্ষ্যে শাস্তি বিরাজ করে, মশানে দেইরূপ অলক্ষ্যে কেমন একটু বিভীষিকা বিরাজ করে। মশান যেন পিশাচের রঙ্গভূমি,বিভীষিকার বিকটমূর্ত্তি।

এইরূপ মশান দিয়া একজন অখারোহী পুরুষ কৌগুল্য নগরে যাইতেছিলেন, এই বধ্যভূমি কৌতিল্যরাজের অধিকারভুক্ত। অখারোধীর অধ অতিশয় ক্লান্ত হওয়ায় এই স্থানে ধীর গমনে চলিতেছিল, এমন সময় শিশুর সকরুণ ক্রন্সন ধ্বনি অখা-রোহীর কর্ণে প্রবেশ করায় তিনি অশ্ব-রশি সংযত করিয়া পুনর্কার সেই ধ্বনি আকর্ণন করিবার আশায় তথায় অপেক্ষা করিতে লাগিলেন। এই সময় দেখিতে পাইলেন যে ছুইলে জ্বলাদ বেশধারী পুরুষ ঐ মশান **ছি**ৰ্গত হইয়া ক্ষতপদে শর্মান করিয়া তিনি আকলকে অধ হইতে ষ্মবতরণ করিয়া পলাতক ব্যক্তিধয়কে ধুত করিয়া স্থমিষ্ট বচনে বলিলেন "তোমরা অসময়ে এই মশানে কেন আসিয়াছিলে গ ষদি এই রাজ্যে কোন অপরাধীর প্রাণ-দও হইত, তাহা হইলে আমি দে বিষয় অবশ্যই অবগত থাকিতাম, যেহেডু আমি এই রাজ্যের রাজমন্ত্রী, আমার ডোমরা নির্ভয়চিত্তে হাকপট মনে আমার প্রশের উত্তর প্রদান কর. যদি তোমরা কোন স্ক্রায়াচরণ করিয়া °থাক, তাহাহইলে আমি <u>ভোমাদিগকে</u> 'রাজরোষ হইতে রক্ষা করিব।" পলাতক <u>িমা কাতরবচনে কহিলে</u>

লাগিল, "মন্তিবর। আমরা জলাদ নহি, রাজাক্তায় আজ কৌণ্ডিল্য রাজকুমারের মাসিয়াছিলাম। এই জীবন বধ্য হ'লে রা আপনাকে স্মরণ করাইয়া রাজ্যের রাজা थार्श्विक বুন্ধি কুটোপায়ে নিহত করিরা সিংহাদন অধিকার করিয়াছেন। দধিমুগ একটা পঞ্চমব্ধীয় শিশু সন্তান রাথিয়া পরলোক গমন করেন। ভাঁহার মৃত্যুসময়ে ছিলেন, কারণ তাঁহার সহধ্যিণী বং মহিষীর মৃত্যুতে शैन মাতৃলালরে নিকট প্রতিপালিত হইতেছিলেন। ধৃষ্টবুদ্ধি এই অনুসন্ধান জানিতে পারিয়া কৌশলপূর্বক महे वालक का भारत इरछ थाना न করিয়া গোপনভাবে তাহার নিধন সাধন করিতে আদেশ দেন, আমরাও অনিচ্ছা माज करे অসময়ে তাহাকে বধ্যভূমিতে আদিয়াছিলাম, কিন্ত (मग পानन कतिए भातिनाम ना, স্থকুমার নির্দোষী রাজপুত্রকে কোন মতে আঘাত করিতে পাঞ্চি না-জ্বয় করুণরদে আর্দ্র হইয়া গে জল্লাদগণ তাহাকে বধ করিলে হইবার আশস্কায় এই আমাদের প্রতি অর্পিত হইয়াছিল, রাজপুত্রকে পোপনে এই মশানে আনিয় कनिष्ठाञ्चल कारिय তাঁহার বামপদের অইয়া রাজাকে দিব এই

বাদনায় শিশুকে এই স্থানে একা রাখিয়া আমরা পলাইতেছিলাম।" মন্ত্রী ভাল মন্দ কিছু না বলিয়া গ্ৰামীৰভাবে বলি-লেন—"তোমরা প্রা ল জীবন কৰ্ত্তব্য পালন ক্ৰি मञ्जी (क যাপন কর।" মির দত্তবৎ প্রণাম করিবা পানন্দে প্রস্থান করিল। মন্ত্রী মশান ইইতে কুমার চল্ল-হংসকে আনিয়। নিজ অখে আরোহণ कब्राहेलन अवः (कोखिला ना याहेशा ুক্রিলেন। তথায় নিজা কে পুত্ৰবৎ প্ৰতি-স্বাম পাল

षिजीय नेति एक म।

উক্ত ঘটনার সাত আট বৎসর পরে একদিন মন্ত্রী কলিন্দ চন্দ্রহংদের প্রকৃত পরিচয় জীর নিকট বর্ণনা বলিলেন যে ''চক্রহংদের বয়ঃক্রম প্রায় ১৬।১৭ বৎসর হইল, আমার বিবে-চনায় সে এখন আত্মপ্রকাশ করিয়া শ্বীয় পিতৃদিংহাসন অবিকারের চেষ্টা কুকুক। বিশেষতঃ চন্দ্রহংস শন্ত্র ও শান্ত্রাদি

বিষয়ে অদ্বিতীয় পণ্ডিত হইয়াছে, সে এখন ধর্ম ও ন্যায়বলে জগৎ বশীভূত করিছে সক্ষম, অত্এব তাহাকে সঙ্গে লইয়া আমি ধুষ্টবুদ্ধির নিকট গিয়া ভাহার প্রকৃত পরিচয় প্রকশে করিলে চক্রহংস হয়ত পিতৃ-সিংহাসন উদ্ধারে স্বত্ন হইবে, আর ধুষ্ট-বুদ্ধিই বা এখন তাহার কি করিবে ? চল্ল-হংস সশত্রে দণ্ডায়মান হইলে শত ধৃষ্ট-বুদ্ধিও তাহার নিকট পরাজিত হইবে সন্দেহ নাই। আবার যদি ধৃষ্টবৃদ্ধি সশস্তে প্রকাশ্যে চক্ষ্রহংসের প্রতি অত্যাচার করে, তাহা হইলে আমিও দদৈন্যে ধুটবুদ্ধির সহিত যুদ্ধ করিব, বিশেষতঃ রাজ-দৈন্য সকলেই আমার বাধ্য। এখন জিজ্ঞাস্য এবিষয়ে তোমার কি মত ? প্রী চল্লহংদের অমুর্বাই আশস্কায় প্রথমতঃ কিছুতেই এই ক্ৰেন্ত হইলেন না, পরে ধখন কলিক বুলেইয়া দিলেন যে সে রাজপুত্র, তাহার উপর কঠোর কর্ত্তব্যের ভার ন্যস্ত. নিদ্ধ রাজ্য পিতৃষাতককে দিয়া নিজে আলদ্যে জীবন কাটান তাহার কর্ত্তব্য নহে, তখন কলিঙ্গ-পত্নী স্বামীর প্রস্তাবে সন্মত হইলেন। (ক্ৰমশঃ)

নীতি-কণ্ঠহার।

ক্ষাধ্যঃ কুষাবজঃ ক্ষাবেলঃ কুষা এতেন্। य এতদেবং জানাতি সর্বাং স কন্তনহ তি।

বেদ, কমাই শাত্র, যিনি ট্র

তিনি সকলকেই ক্ষমা করিতে সমর্থ

আক্সান নি সংসমপুণাতীর্থাঃ,সতেরাদকাশীলতটা দয়োর্ডিঃ ক্ষমাই ধর্ম, ক্ষমাই যতে, ক্ষমাই চারি ত্রাভিলেকং কুক পাওপুর, ন বারিণা গুণাতি চাতর ক্ষা আ খাই পবিত্র নদী, হে পাওপুন!

সংযম তাহার পুণ্যতীর্থ ক্ষেত্র, সভ্যই তাহার সলিল, চরিত্র তাহার তট, দ্য়া তাহার তরঙ্গ, ভূমি তাহাতে স্নান কর। অন্য-জলে অন্তরাম্মা শুদ্ধ হয় না। ১২

নিক্ষস্ত নীতিনিপুণা যদি বা শুবন্ত, লক্ষীঃ সমাবিশতু গচ্ছতু বা বণেষ্টম্। অদ্যৈব বা মরণমন্ত যুগাস্তরে বা, ন্যায়াৎ পথঃ প্রবিচলস্তি পদং ন ধীরাঃ।

নীতিজ্ঞ লোকের। নিন্দাই করুন আর প্রশংসাই করুন, বন্ধীদেবী আস্থন বা যান, মরণ অভাই হউক কিয়া ব্গাস্ত-রেই হউক, ধীরগণ কথনও ন্যায্য পথ হইতে বিচলিত হয়েন না। ১৩

প্রীণাতি যঃ স্কচরিতৈঃ পিতরং স প্রো যন্তর্ভুরের হিতমিচ্ছতি তৎ কলত্রন্। তন্মিত্রমাপদি স্থাপ চ সর্বাই প্রাযাতি এতত্রমং জগতি

সচ্চরিত্রধারা কৈ পিতাকৈ সতত সভ্ত রাখে, সেই পুত্র; যিনি সর্বদাই স্বামীর হিতাকাক্ষা করেন, সেই স্ত্রী; কি সম্পদে কি বিপদে, যে বন্ধুসমীপে সমানদ্ধপে গতায়াত করেন, সেই মিত্র। পুণ্যবান্লোকেরাই এইরপ পুত্র, স্ত্রীও স্বক্ত প্রাপ্ত হইয়া থাকেন। ১৪

त्रथः मत्रीतः शूक्रवमा पिष्टः

आश्वा निवरत्वत्वियागारुत्वनान् ।

रेजब्रश्रमतः कूमली मनरेष
श्वीरतः क्षरः वाजि तथीत शीतः ॥

श्वीकरवत मात्रीत निवस्ता निवस्ता निवस्ता

এবং ইন্দ্রিয় সকল অখসরপ। ধীর ব্যক্তি
অপ্রমন্ত হইয়া বশীকৃত সদর্শবাজিত
রথাধিরত কার্যার ইন্দ্রিয়গণছারা
পরম সংক্রে বিবে। ১৫

যদ্বং পর

বদ্বং পর

বদ্বং পর

বদ্বং পর

বদ্বং বার্যার বার

আত্মবশ্ সমুদার যত্তপূর্বক
সম্পান করিবেক। পারবশ কর্ম সমস্ত
যত্তপূর্বক পরিত্যাগ করিবেক। ১৬
সর্বং পরবশং হঃখং সর্বয়

স্বাধীনতাই স্ব সর্স্ব হুঃথ। সংকে লক্ষণ জানিবে। ১৭ প্রাণায়থান্মনাহভীষ্টা ভূতানামপি তে তথা।

প্রাণায়পাল্পনোহজীপ্রা ভূতানামণি তে তথা।
আন্মোপম্যেন ভূতানাং দয়াং কুর্কস্তি সাধবঃ।

যেমন আপনার প্রাণ ইট, দেইরপ সকল প্রাণীর প্রাণ ইট, অতএব সাধু লোকেরা আত্মবৎ সকল জীবকে দরা করিয়া থাকেন। ১৮

হিতেহছিতঞ্চালরকোহহিতেহহিতং পশুম দুব্যা হিতমহিতে হিতে। কুতেহহিতে শবদণি প্রকৃষ্টং হিতং করোতাঙ্গ দ নাম দেবঃ।

সয়তানে ভালর বদলে মন্ট্র করে, পশু মন্দের বদলে মন্দ করে, মারুষেতে ভালর বদলে ভাল করে, দেবুডুায় মন্দের বদলে ভাল করেন। ১৯

ফেলোনা মা।

কেলোনা মা কেলোনা মা কলে রেথে দাও,
কাজে লাগে যা' রাখি
আপনার—অপরের
কত করে, দূরে বাহ
দেখনা দে দিন বাঁধা বৈত্র পুঁটুলি
ছিল দড়ি, রেখে দিল্ল জানালায় ভূলি।
থোকা কাঁদে অন্ধকারে ছিড়িল মশারি,
দেশালাই পাই নাই করি তাড়াতাড়ি;

সেই দড়ি দিয়ে দেথ মণারি বাঁধিছ,
থোকা কেঁদে সারা হয়, তারে মাই দিছ।
ভাই বলি ফেলনা মা কিছুই ফেলনা,
কোন্দ্রব্য কত কাজে লাগে তা জাননা!
সোণার পৃথিবী আছে কত জীবে ভরা,
পেলে কুঁদ শুঁড়া মহা সুখী হবে তারা।
মাও ফেল তাও তারা ওমা! খুঁটে থায়,
ফেলিবার কিছু নাহি জানিবে ধরার॥

ন্তন সংবাদ।

রায়চাদ ছাত্রবৃত্তি
পরীক্ষায় কুমারী ফুোরেন্স হলেও এম এ
প্রথম স্থানীয় হইয়া ৮ হাজার টাকা পুরক্ষার লাভের যোগ্যা হইয়াছেন। বিশবিদ্যালয়ের দর্কোচ্চ পরীক্ষায় রমণী
পুরুষকে পরাভব করিল, স্তীবৃদ্ধিকে আর
কে হীনভর বলিতে সাহসী হইবেন?

- ২। কুমারী মেটিল্ডা হল্ট বোদাই বিশ্ববিদ্যালয়ের এম এ পরীক্ষায় উত্তীর্ণ হইয়াছেন। বোদাইয়ে স্ত্রী এম এর এই প্রথম দৃষ্টাস্ত।
- ত। World's Women's Temperance Association বিশ্ব স্ত্রীমিতাচারিতা শভার অধ্যক্ষ বিবী হসার কলিকাতার আসিয়া মাদক্ত সেবনের বিক্ষম্বেক্সতা করিতেছে।
 - ৪। ভারতের নব রাজপ্রতিনিধি
 লর্ড এলপিন ২৫এ জায়য়ায়ি

পঁছছিবেন এবং লর্ড ল্যান্সডাউন ২৭এ জানুয়ারি কলিকাতা হইতে বিদায় গ্রহণ করিবেন।

- ৫। প্রীমতী বাহুবী চৌধুরাণী ময়-মনসিংহ জেলার গাজিয়াবাড়ী থালের উপর একটি পোল নির্মাণার্থ ৪০০০১ টাকা দান করিয়াছেন।
- ৬। জ্রীমতী দি, এইচ, ডল মার্কিন মহিলাদিগের মধ্যে সর্ব্বপ্রথম এল, এল, ডি উপাধি পাইলেন।
- ৭। এবৎসর লাহোরে জাতীয়
 মহাসমিতির অধিবেশনে দাদাভাই নৌরোজী সভাপতির আসন অলক্কত করিবেন । দাদাভাই যথন বোম্বাই প্রছেন,
 তথন উক্ত নগরের সুনর্বভোণীর অধিবাসিবৃন্দ তাঁহাকে অতি সমারোহের সহিত অভ্যর্থনা করিয়াছিল। মিইর এ, ও
 হিউম ভারতবর্ষ হইতে শেষ বিদায় লই-

মহাসমিতিতে উপস্থিত থাকিবেন। ২৮এ হইবে।

বার জন্য এ দেশে আদিয়াছেন। তিনিও | ডিদেম্বর হইতে মহাসমিতির কার্য্যারস্ত

পুস্তক প্রাপ্তি ও সমাত্র

১। জ্ঞান ও ধর্মের উন্নতি—শ্রীমনাহর্ষি দেবেল্ল নাথ ঠাকুরের শেষ উপদেশ, **শ্রীবৃক্ত ক্ষিতীন্ত্র নাথ ঠাকুর কর্ত্ত, ক লি**থিত, মূল্য ॥ • আনা মাতা। মহর্ষি জরাজীণ ও কাৰ্য্যক্ষেত্ৰ হইতে অবস্ত হইলেও যাঁহারা ষ্থন উপদেশার্থী হইয়া তাঁহার নিকট গ্রমন করেন, তাঁহাদিগকে আপনার গভীর চিতাও সাধনালক মহা সত্য সক-লের উপদেশ দিয়া থাকেন। ফিডীল বাবু সেইরপ উপদেশ সকল সংগ্রহ করিয়া এই পুস্তক্থানি প্রচার করিয়া-ছেন। ইহা যে বানারীর জ্ঞান ও ধর্মের উন্নতি প**ক্ষে বিশেষ সহায়তা ক**রিবে বলা বাহল্য।

২। মাইকেল মধ্স্দন দত্তের জীবন চরিত—শ্রীযোগেন্সনাথ বস্থু, বি, এ, প্রধাত, মূল্য ২ টাকা। সংস্কৃত যন্তের পুন্তকালয় হইতে প্রকাশিত। বাঙ্গালা সাহিত্য ভাতারের একটী মহার্ঘ রত্ন বলিয়া আমরা এই গ্রন্থানি গ্রহণ করিলাম। ইহারয়েল ৮ পেজী ৫০০ শতাধিক পৃষ্ঠায় অতি স্থন্দর কাগজে ও পুন্দর অক্ষরে ১০ থানি উৎকৃষ্ট ছবির সহিত মুদ্রিত এবং বিশুদ্ধ সরল ভাষায বিরচিত। এরপ পুস্তকের উপযুক্ত সমা-লোচনার স্থানাভাব বলিয়া আমরা হৃঃথিত

কবিবর মাইকেল হইতেছি মধুস্দনের ক্রিক্রিনহে, কিন্তু তৎনম-সাময়িক একটা বিস্তৃত জাতীয় ইতিহাস। গ্রন্থকার এই জীবনা ও ইতিহাস ঘটনা-বলীর তালিকাকারের ন্যায় অন্ধ বা উদা-সীনভাবে লিখিয়। খার দৃষ্টিতে ঘটনার মুৰে ান ও নীতিবেন্তাও সমারে সমীচীন পাণ্ডিতে তিনি কবিবরের জীবনভাত কর্পঙ্গে সঙ্গে চলিয়া তাঁহার শিক্ষা, নাধনা ও সিদ্ধির ক্রম সকল যেমন প্রদর্শন করিয়াছেন, তেমনি তাঁহার প্রতি দেবাকুগ্রহ ও তাঁহার নিজ্বদোষে তাহার অপব্যবহারের কুফল সকলও অপক্ষপাতে উজ্জ্বল অক্ষরে চিত্রিত ক্রিছেন। বঙ্গদেশের সাধারণ শিক্ষা ও সাহিত্যের উল্লভির বিবরণ বর্ণনেও গ্রন্থ-কারের বিচক্ষণতার পরিচয় পাওয়া যায়। বস্তুতঃ আমরা তাঁহার অসামান্ত লিপি-নৈপুণ্য, গভীর গবেষণা, অপক্ষপাত সমা-লোচনা, তুর্নীতি দমন ও সুনীতি সংস্থানের প্রয়াস—কোন গুণের অবিক প্রশংসা করিব বলিতে পারি না। এই পুস্তক-ধানি ষেক্লপ বহুল মৃত্ন, পরিভাম ও ব্যয়ে প্রচারিত হইযাছে, সেইরূপ সাগ্রহে ও স্মাণরে বঙ্গ সাহিত্যপাঠকস্মাজে য়ে, এই আমাদের অসুরোধ।

বামারচনা।

আমন্ত্রণ ৷

প্ৰতি) লুদী বুথ্ বা কাপ্তেন

ছাড়ি দেশ ঘর বাড়ী, মহাসিজু দিয়া পাড়ি, নয় হেথা, কোন্ দূর, সিজু-পারে **খেতপুর** ! এদেছ সরলা বালা!

এমো এসো এসো !

ভারতের হৃদাকাশে, যেথানে তারকা হাদে, ছাড়ি প্রিয় পরিজন,

রোহিণী তারা!

বদো

কিবা ড

ব্ৰ-কলিকা মাখা—

অমর সৌরভ!

ছেয়ে আছে কচি প্ৰাণ কি মহা গৌরব!

শেই প্রীতি দেই ^{ক্ষ}ূর্ত্তি, বিনীত সডেজ মূর্ত্তি, পতিতপাবনে রত, "পতিত-উ**দ্ধার" এত,**

জনকের মন্ত্রশিষ্যা

वालिका कूगाती !

এ শ্রদ্ধা-তর্পণ পুণ্য যাই বলিহারি!

আগুনের কুদ্র কণা মহাতেজোময়;

(মুক্তিফৌজের বর্ত্তমান নাফিকা মিন্ এ কুড বালিকা-হিয়া, মহা উপাদান দিয়া গড়েছেন বিশ্বধাতা মঙ্গল-আবায়।

সেথা তার প্রাণ কাঁদে

ভারতের তরে।

সরবন্দ করি পণ অনায়ানে দিল ঝাঁপ

অদৃষ্টসাগরে !

। বাপের যোগ্য মেয়ে, দেশী নাম দেশী সাজ, সকলি ছাড়িয়া আজ সাজিয়াছে বীর-বালা ভারত-কুমারি!

সেই মহা উদারতা, আর্জন্ম, সহিষ্ণৃতা, ভারত-হিতের ত**রে,** দহ ম**ন অকাত**রে, ঢালিতে, ভারত-বুকে

এসেছে আমরি!

সুরভি গোলাপে মাথা— অন্তক্ত চন্দন !

সার্থক সন্থান-প্রাণ, পিতৃকার্থ্যে করে দান! এ মৃত পতিত দেখো, অমৃতময়ীর বেশে ত্রিদিবের উষা কিগো

मिल प्रग्न।

ক্ষুত্র বেল ফুল, স্থ্রাদে কে ভার তুল ? এস স্থকুমারী বালা! প্রীতি-ফুলে গেঁথে মালা, পরারে ও কম গলে

ভারত-জননী !

 শত ২রা ডিসেঘর সিটী কলেজ গৃহে জেনারল বুথের কনিষ্ঠা কনা৷ কুমারী রোহিশীর বস্তুতা উপলক্ষে ভাঁহাকে এই উপহার প্রদু

ক্ষেত্রে আঁচলে মা'র বসো আসি একবার, ফুটিবে সোহাগ-ছায় কনক-নলিনী!

যে দেশে সাবিত্রী,দীতা,শক্তি,লক্ষ্মী,বিরাজিতা আজি সে দেশের দশা দেখ গো চাহিয়া ;

মায়ের বৃকের পর, অগণ্য "জীবিত জড়"
বুঝি না যে কি করিব
জীবন বহিয়া!

ষাহোক সে মনোরমে ! তব ওভ সমাগমে হোক্ এ নিজ্জীব দেহে জীবনী সঞার.

মলয়ার পরশনে, শুকানো রদাল বনে নবীন মুকুল, পাতা, জাগুক আবার !

বিধাতার স্নেহাশীয়, প্রাণে পেয়ে অহর্নিশ, লভিতে বিজয়-খ্যাতি এসো হেথা এসো ! মা'র বুকে যেই পাশে, উজ্ঞল তারকা হাসে,

সেথানে, রোহিণীরাণি ! আলো করে বদো.!

ञी गा--

অহিফেন কাহিনী।

এক সম্পত্তিশালিনী বিধবা ভাঁছার একমাত্র পুজ্ব লইয়া কোন প্রসিদ্ধ নগরে গুলির

আড্ডার নিকটে বাস করিতেন। এই

বাক্ষকটা অত্যন্ত বুদ্ধিমীনি ও চতুর ছিল।

সে ক্ষুলে পড়িতে যাইত এবং বেশ ভালরূপ লেখাপড়া শিথিতেছিল; ভাহার

মাতার সে বড় আশার ধন হইয়াছিল কথনও কখনও সে তামাসা দেথিবার জন্য অহিফেনের আড্ডাতে যাইত। তত্রত্য অহিনেত্রসেবনকারীগণ তাহাকে অহিয়েন শে রোধ করিত। প্রথমে সে এইরপ করিবে না বলিয়া দৃঢ়প্রতিজ্ঞ ছিল, কিন্তু ক্রমে ইচ্ছা বল-বতী হইতে লাগিল এবং সে নেশা আরক্ষ করিল। যখন তাহার মাতা জানিতে পারিলেন, তখন এই অভ্যাস পরিত্যাগের নিমিত্ত 👬 ৰ কাকৃতি মিনতি করিতে লা ধরিয়াছে, ছাড়িল 🚚 বংশোম্ভব, এই মিয়মাণ ও ভয়ে ভীত হইয়া সন্তানকে এই সর্বানাশকর বিষপান হইতে নিবুত্ত क्रिवांत बना मिन मिन विविध (हड्डी) क्रिन তেন। বালক বারবার প্রতিজ্ঞা করিত যে এই অভ্যাস পরিত্যাগ করিবে, কিন্ত লোভের বশবর্তী হইয়া ক্রমে লেখা-পড়া পরিত্যাগ করিল এবং অলমভাবে সমস্ত দিবদ মাটিতে শুইয়া কাটাইতে লাগিল। সে শীঘ্রই উৎকট রোগাক্রাস্থ হইল; এত অধিক অহিফেন সেবন করিয়া-ছিল যে চিকিৎসক তাহার কিছুমাত্র শাহায্য করিতে পারিলেন না এবং কোন ঔষধে তাহার কিছুই উপকার হইল না। অবশেষে হচভাগ্য বালক মৃত্যুসূত্য পতিত হইন। তাহার মাতা পুত্রশোকে অভি-ভূত এবং ভগ্নস্থ হইয়া নিজেও প্রাণ-विवर्ण दिन। (क्रमणः) वि, वा, म।

বামাবোধিনী পত্ৰিকা।

BAMABODHINI PATRIKA. "कन्याप्येवं पालनीया श्रिश्वहीयातियत्नतः।"

কন্সাকে পালন করিবেক ও যত্নের সহিত শিক্ষা দিবেক।

৩৪৮ সংখ্যা পৌষ ১৩০০—জানুয়ারী ১৮৯৪।

৫ম কল্প। ২য় ভাগ।

সাময়িক-প্রসঙ্গ।

জাতীয় মহাসমিতি—লাহোরে কনগ্রেদের কার্য্য অতি উৎসাহের সহিত সম্পন্ন হইয়াছে। ভারতের নানাস্থান হইতে প্রায় সহস্র প্রতিনিধি উপস্থিত হন। লাহোরের আপানর সাধারণ কনগ্রেদকে নিজের সম্পত্তি বলিয়া অন্ত্রুত করিয়াছেন। সভাপতি দাদাভাই নৌরজীর অভ্যর্থনার সমারোহও যথোপযুক্ত হইয়াছে। আগামী বৎসর মান্ত্রাজ্ব পুনরায় কন্গ্রেস হইবে।

নব রাজপ্রতিনিধি—লর্ড এলগিন ২৫এ জানুয়ারিতে কলিকাতায়
পদার্পণ করিবেন। জগদী তাহাকে
নিরাপদে এদেশে উত্তীণ করুন এবং
প্রজাগণের হিতার্থ শাসনকার্য্যে প্রবর্তিত
করুন।

.নূতন বাঙ্গালী জজ—বাবু প্রমদা-

চরণ বন্দোপাধ্যায় এলাহাবাদ হাইকোর্টে বিচারপতি মামুদের পদে, অধিষ্ঠিত হুইয়া-ছেন।

বিশ্ববিদ্যালয়—জষ্টিশ পিগট ছুটী লইয়া বিলাত যাওয়ায় সার আালক্রেড ক্রুফট্ তাঁহার স্থানে কলিকাতা বিশ্ববিদ্যা-লয়ের ভাইসচেন্সলর নিষ্কু ইইয়াছেন।

নারী কুস্তকর্ণ—ক্রান্সে এক রমণী
২০ বংশর বয়নে এক গুরুতর মানসিক
কপ্ত পাইয়া অজ্ঞান হন, সেই অবধি দশ
বংশর ক্রমাগত নিজা ঘাইতেছেন।
অনেক বিচক্ষণ চিকিংসক ইহাঁর নিজা
ভঙ্গ করিবার চেপ্তা পাইয়াও বিফলমনোরথ হইয়াছেন। কুক্রিম উপায়ে খাওয়াইয়া ইহাঁকে জীবিত রাথা হইয়াছে।
চিকিংসকেরা বলেন মৃত্যুর পূর্কে ইহাঁরে
নিজা একবার মাক্র ভাঙ্গিবে। রমণীকে

দেখিলে পীড়িত বোধ হয় না, যেন তিনি স্বাভাবিক নিদ্রায় নিমগ্র ।

দান—(১) ভবনগরের মহারাজ কলিকাতায় অবস্থান কালে নিম্নলিধিত-রূপ দান করিয়াছেন:—মেয়ে। হাঁস-পাতাল ৩০০১; লেডী ডফারিণ ফণ্ড ৩০০১; দাতব্য সভা ২৫০১; জীব-ক্রেশ-নিবারিণী সভা ২০০১; সথীসমিতি ১০০১; কেন্ট ভিন্সেন্ট হোম ১০০১; আলিপুরের জীববাটিকা ১০০১; সকের সৈনিক দল ১০০১; হিন্দু অনাথ আশ্রম ১০০১; মুসলমান অনাথাশ্রম ১০০১ টাকা।

- (২) কলিকাতার রাজা সার সৌরীন্দ্র মোহন ঠাকুর বাঁকুড়া জেলার এক-জন প্রধান জমিদার। তিনি বাঁকুড়ায় একটা জানানা হাঁসপাতাল স্থাপন জন্য ৩০০০ টাকা দান করিয়াছেন।
- (৩) জষ্টিশ চন্দ্রমাধব ধোষ ঢাকা বিক্রমপুরের ছর্ভিক্ষপীড়িত স্থানে ১০০০, টাকার
 চাউল বিতরণ করিয়াছেন। (৪) টাঙ্গাইলের ভ্ন্যবিকারিণী শ্রীমতী বিদ্যাবাসিনী
 চৌধুরাণী ঢাকা মালখান নগর স্কুলের
 কর্ত্পক্ষের হাতে ৩০০, তিন শত টাকা
 দিয়াছেন। ঐ টাকার বাধিক স্থদ হইতে
 ঐ বিদ্যালয়ের যে বালক প্রবেশিকা
 পরীক্ষায় সর্ব্লোচ্চ স্থান অধিকার করিবে,
 ভাষাকে একটী বর্ণান্য পদক দেওয়া
 হইবে।

ন্ত্রীশিক্ষা—বোম্বাই প্রদেশের পুনা নগরীতে বোধ হয় স্ত্রীশিক্ষা সর্ব্বাপেকা অধিক প্রচলিত। পুনায় বিদ্যালয়ে ফাইবার উপযুক্ত বয়দের যত বালিকা আছে, তাহার শতকরা ২৪ জন বিদ্যা-শিক্ষা করিতেছে।

সমাজ সংস্কার—(১) রামনদের রাজা রাজপ্রাদাদন্থ মন্দির হইছে চরিত্র-হীনা নর্ত্তকীদিগকে বিদায় দিয়া তাহাদের পরিবর্ত্তে পুক্রষ গায়ক ও বাদক রাথিয়াছেন। মান্দ্রাজের সকল স্থানে রাজার দৃষ্টান্ত অনুকরণীয়।

(২) নাভারাজ্যে সমাজসংস্কারের জন্ম থালসা সভা প্রতিষ্ঠিত হইয়াছে।

গজমুক্তা—পঞ্চাব প্রদেশে এ বং-দর এক প্রদর্শনী খোলা হইয়াছে। অমৃতদর হইতে দেই প্রদর্শনীতে একটী গজমুক্তা প্রেরিত হইয়াছে। এক রৌপ্যা-ধারে ঐ মৃক্তা রক্ষিত হইয়াছে।

অর্থে বিপদ—জে গোল্ড আমেরিকার একজন মহাধনী লোক, হেলেন
নামে তাঁহার কন্য। পিতার সমস্ত ধন
পাইয়াছেন। তিনি এখনও অবিবাহিতা,
তাঁহার বিবাহ করিবার জন্ম এত লোক
পাগল হইয়াছে মে, ভয়ে তাঁহাকে সর্বদা
পুলিসের পাহারাতে বাদ করিতে
হইতেছে!

বৈজ্ঞানিক কৌশল— বাণ্ডি-য়াল নামন এক ফরাদী বৈজ্ঞানিক তাড়িত প্রয়োগে বৃষ্টি উৎপাদন করিবার উপায় আবিদার করিয়াছেন। ইহা দারা বিন্দু বিন্দু হইতে মুসলধারে বৃষ্টি হইতে পারিবেক। মহিশুরের জয়—সিকাগো মেলায় পট্টবল্রের জভ মহিশুর সর্বপ্রধান পারি-ভোষিক পাইয়াছে।

বানরী ভাষা—অধ্যাপক গার্ণার বানরের ভাষা শিক্ষা করিবার জন্ত আজিকার দক্ষিণ পশ্চিমন্থ বানরদেশে পিয়াছিলেন। তিনি সিম্পাঞ্জি ও ক্লু-কাম্বা জাতীয় বানরের ভাষা মান্তবের ভাষা হইতে যে অভিন্ন তাহার বিশিষ্ট প্রমাণ সংগ্রহ করিয়া আনিয়াছেন।

নীতি শিক্ষা।

১। আজ কাল নীতি লইয়া আমাদের দেশে অনেক আন্দোলন চলিতেছে।
আনেক লোকের বিশ্বাস নীতিসম্বন্ধে
আমাদের দেশের লোকের কডকটা অবনতি হইরাছে। কেহ কেহ বলেন অবনতি না হউক যতটা উন্নতি হওয়া উচিত,
তাহা হইতেছে না। নীতি বিষয়ে উন্নতি
কি অবনতি হইতেছে, এই বৃহৎ প্রশ্নের
মীমাংসা করা আমার ইচ্ছা নয়। বালকবালিকাদের নীতি শিক্ষা বিষয়ে ছই চারি
কথা বলা এই প্রবন্ধের উদ্দেশ্য।

২। বালক বালিকাদের নীতিশিক্ষার আবশ্যকতা বিষয়ে কিছু বলিবার প্রয়োদ্ধন নাই। এ বিষয়ে মতভেদ হওয়া অসম্ভব। এখন কথা হইতেছে নীতি শিক্ষার প্রশস্ত উপায় কি? বাল্যকাল হইতে যে এ শিক্ষা আয়ন্ত হওয়া উচিত, তাহা সকলেই স্বীকার করেন। উপায় সম্বন্ধে অনেকে অনেক কথা বলিয়াছেন। কি উপায় অবলম্বন করিলে বালক বালিকাগণ সত্যবাদী, মিইভাষী, দয়ালু এবং মিতাচারী হইতে পারে তাহাই বিবেচ্য।

৩। অনেকে বলেন নীতিশিক্ষার ছুইটি উপায় আছে:—(১) উপদেশ, (২) পুস্তক পাঠ। প্রথমটি সম্বন্ধে এই মাত্র বলিতে চাই শুধু কথায় চিড়া ভিজে না। যদি সদা সর্বাদা ছেলেদিগকে বলা যায়--- "সত্য কথা কহিবে," "ছুঃখীকে দ্যা করিবে," তাহা হইলে বোধ হয় সতা এ দুয়ার উপর তাহাদের বিভ্ঞা **জ্মাই**-বার সন্তাবনা। উপদেশের যে কোন ফল নাই এ কথা বলিতেছি না। ভাল করিয়া উপদেশ দিতে পারিলে অনেকটা উপ-কারের সন্তাবনাঃ কিন্ত মনোরঞ্জনকারী উপদেশ দিবার ক্ষমতা কয়জন লোকের আছে ? সেইজন্য শুধু উপদেশের উপর আমার বিশেষ আন্থ। নাই। লয়ে যে নীতিবিষয়ক পুস্তক পঠিত হয়, তাহাহইতে যে নীতিশিক্ষার বিষয়ে বিশেষ সাহায্য হয়, তাহাও বোধ হয়। না। পাঠাপুত क विकारण मगर वालक वानि-কারা ঔষধ গেলা করিয়া ফেলিয়া দেয়। ছোট ছোট ছেলে মেয়েদের পাঠ্য পুষ্ট-কের উপর কিরূপ ভয়ঞ্জড়িত স্থণার ভাব, তাহা বোধ হয় অনেকেই লক্ষ্য করিয়া-

ছেন। বিশেষতঃ অনেক সময়ে পাঠ্যপুস্তকের ভাষার প্রতিই মনোযোগ বেশী
দেওয়া হয়, ভাবের বিষয় কেহ ভাবে না।
নিক্ষক মহাশয় পরীক্ষার ফলের চিন্তাতেই
আকুল। শিক্ষাবিভাগের পরীক্ষার ফল
ছাড়া অন্য বিষয় দেখিবার অবকাশ
হয় না। পরীক্ষার ঢেউ বালিকাবিদ্যালয়েও পৌছিয়াছে। পিতামাতার মুখেও
"পরীক্ষা" "পরীক্ষা"। এই সব কারণে
আমার বিশ্বাস নীতিবিষয়ক পুস্তক
হইতে ঘাহা আশা কর। যায়, তাহার সিকি
ফলও পাওয়া যায় কি না সন্দেহ।

৪। এখন কথা উঠিতে পারে, নীতি শিক্ষা সম্বন্ধে কি উপায় অবলম্বন করা অনেকের বিশ্বাদ সৎদৃগান্ত নীতিশিক্ষার এক উৎকৃষ্ট উপায়, আমিও এই দলের লোক। পিতা মাতা দিবা-রাতি বলিতেছেন ''সত্য কথা কও।" "দত্য প্রম ধর্ম, মিথ্যা মহাপাপ।" এই কথা বলিয়া শিক্ষক মহাশয়ও গলা ভাঙ্গিয়া ফেলিতেছেন। কিন্তু অনেক সময় দেখ। গিয়াছে ঐ পিতামাতার পুত্রকন্যা এবং ঐ শিক্ষকের শিষ্য শিষ্যা মিথ্যা ভিন্ন প্রাণান্তেও সত্য বলিতেছে না। আবার দেখা গিয়াছে, অনেক পিতা মাতা "সত্য কথা কও" "দতা কথা কও" বলিয়া পুত্ৰ কন্যাদিগকে ঝালাপালা করেন না, কিন্ত তাঁহারা নিজে সত্যনিষ্ঠ। শিক্ষক সত্য সম্বন্ধে উপদেশ দিতে তত ইচ্ছুক নন, কিন্তু নিজে ন্যায়পর। বালক বালিকারা নিজেই তাঁহাদিগকে ভক্তি করিতেছে

এবং তাঁহাদিগকে অন্তুকরণ করিবার চেষ্টা পাইতেছে। আমি হয়ত আমার পুত্র কন্যাদিগকে তুঃখীকে দয়া করিতে শিক্ষা দিতেছি, কিন্তু তাহারা দেখিতেছে আমাঝ রই দ্বার হইতে একজন অতুরকে ভিক্ষার পরিবর্ত্তে গালি খাইয়া চলিয়া যাইতে হইতেছে। এ দিকে আমার স্ত্রীর সত্যের প্রতি তত বিশ্বাস নাই, তিনি হয়ত নিজে প্রবঞ্চনা করিতেছেন, জ্বাথবা পুত্র কন্যা-দিগকে প্রবঞ্চনা করিতে শিক্ষা দিতে-শিক্ষক মহাশয় হয়ত বাহবা লইবার জন্য তাঁহার একজন ছাত্রকে ১৪ বৎসরের স্থলে বয়স ১২ বৎসর লিথিবার উপদেশ দিতেছেন। এরূপ অবস্থায় যে আমাদের বালক বালিকাদের উচ্চ নীতি-জ্ঞান হয় না, ইহা আশ্চ্যান্য। তাহা-দেব যে কিয়ংপরিমাংণে নীতিজ্ঞান হয়, ইহাই আশ্চর্য্যের বিষয়। উপরে গে ক্ষটি দুর্গান্ত দেওয়া গেল, এরূপ দুর্গান্ত যে নিতান্ত বিরল নয়, তাহা বোধ হয় অনেকেই জানেন। বালক বালিকাদের মন অতি নমনীয়, দেইজন্য সহজেই তাহারা দৃষ্টান্তের অনুকরণ করে, এবং বাল্যকাল হইতে সৎদৃষ্ঠান্তের অনুকরণ করিতে আরম্ভ করিলে ভাল কাজ করা ভাহাদের অভ্যাদের মধ্যে হইয়া পড়ে।

৫। তাড়না ও পুরস্কারের বিষয়ে
 বোধ হয় চুই এক কথা বলা আবিশ্রক।
 আমরা অনেকে তাড়না করিতে ও পুরকার দিতে জানি না। অত্যান্ত বিষয়ের
ন্যায় ইহাও শিকা করিতে হয়। থেলা

করিতে করিতে একটি বালক কি বালিকা হঠাৎ একটি কলসী ভাঙ্গিয়া ফেলিল, সেইজন্য হয়ত তাহাকে খুব প্রহার করিলাম। আবার দে হয়ত একটি বিড়াল ছানার উপর ধুব অত্যাচার করিতেছে, তাহা দেখিয়াও দেখিলাম না, অথবা হাদিয়া উড়াইয়া দিলাম। যে বাড়ীতে এরপ বন্দোবস্ত, সে বাড়ীর ছেলেদের নীতিসম্পন্ন হওয়া এক প্রকার অসম্ভব। অনেক ছলে আবার লঘু পাপে গুরুদণ্ড ও গুরুপাপে লমুদও হয়। ইহা বড় থারাপ। দোষের তারতম্য অনুসারে দত্তের তারতম্য না হওয়া নীতিশিক্ষার এক মহৎ প্রত্যবায়। বাল্যকালে মনো-বৃত্তি দকলের অবস্থা অপরিপক। বিশেষ য্তুও সাবধানতা না লইলে তাহাদের বিকৃতির সম্ভাবনা। এ সময় পিতা মাতা ও শিক্ষকের এমন ভাবে কথা বলা উচিত যে ন্যায়ান্যায়ের তারতম্য অনুভব করিতে বালক বালিকাদের কোন অস্থ-বিধানানয়। একটি কথামনে করিয়া রাখা উচিত—বালসভাব নিবন্ধন ছেলেরা যে দোষ করে, তাহার জন্য অনেক সময় দণ্ড পাওয়া উচিত নয়, এবং কথনও তাহাদের প্রতি এরূপ ব্যবহার করা উচিত নয় যে তাহাদের নিজ দোব ঢাকি-বার প্রবৃত্তি উত্তেজিত হয়। আর একটি কথা বলা আবিশুক। অনেক সময় একটা ভাল কাজের আতিশয্যও দোষের। কিন্তু এরূপ আতিশ্য্য অনেক সময় দুমন করা তত আবশ্যক নয়। নিষ্ঠুরতাও দান

প্রবৃত্তি তুইরেরই আতিশ্যা দোষ্যুক্ত। নিষ্ঠুরতার দমন না করিলে একটী বালক কিন্তা বালিকার মন পাষাণবৎ কঠিন হইয়া যাইতে পারে। পরস্ক দানপ্রবৃত্তির আধিক্য দমিত না হইলেও বিশেষ কোন অনিষ্টের আশস্কা নাই। জগতের কর্ম-কোত্রে উহা শুধরাইয়া যাইবে। পৃথি-বীর খুব কম লোককেই দান করিয়া ফকির হইতে দেখা গিয়াছে। যেমন দোষ করিলে দণ্ড, তেমনি ভা**ল কাজ** ক্রিলে প্রশংসা ও পুরস্কারের বন্দোবস্ত থাকা উচিত। কিন্তু উহা এরূপ ভাবে যেন না হয় যে বালক বালিকা প্রশংসা ও পুরস্বারপ্রাপ্তি জীবনের উদ্দেশ্য মনে বিশেষতঃ অয়থা প্রশংসা ও করে ৷ পুরস্কার অনেক সময় ছেলে বিগড়াইবার কারণ হইয়া দাঁড়ায়।

৬। পৃর্বেই বলিয়াছি যে বিভালয়ে পাঠ্যপুত্তক দারা নীতিশিক্ষা দিবার চেষ্টার প্রতি আনার আছা নাই। নীতিশিক্ষার উদ্দেশে রচিত অনেক পুত্তকের উপরেও আমার ভক্তি নাই। ওরপ বই প্রায় নিস্তেজ ও নীরদ হয়। "এদ ভাই একবার নীতিচর্চা করা যাক্" এই বলিয়া ঘিনি বই লিখিতে বদেন, ভাঁর বইয়ের উচ্চ নীতির বিষয়ে আমার দন্দেহ না হউক, কিছ পাঠোপযোগিতার বিষয়ে অনেক সময় 'দন্দেহ হইয়া থাকে। কিন্তু ভাল পুত্তক পাঠে যে অনেক উপকার হয়, তাহা জ্পামি অবিশ্বাস করি না। যে দব উচ্চ অক্ষের

ভান না করিয়া পরোক্ষভাবে অনেক শময় নীতিশিক্ষা দেয়, তাহাদের উপর আমার গ্রগাত ভক্তি। আমার মতে বালক বালিকাদের হাতে এরূপ পুস্তক বছল পরিমাণে দেওয়া উচিত। বিষয়ে কবিতা হইতে অনেক উপকার হইতে দেখা গিয়াছে। কবিতা নীতির সহচরী। নীতিশিক্ষা দেয় এরপ ছোট ছোট কোমল কবিতা যদি শিশুদিগের মনে অঙ্কিত করিয়া দেওয়া যায়, তাহা কখনও অপনীত হইবে না ইহা আমার দুঢ়বিখাস। নীতিশিক্ষা দিবার উদ্দেশে যে সব কবিতা লিথিত, আমি তাহাদের কথা বলিতেছি ন। ইহারা প্রায়ই কবিষরস্বিহীন ও কঠোর। দেশের ভাল ভাল কবিদের গ্রন্থে অনেক সময় উচ্চভাবপূর্ণ বাক্য দেখিতে পাওয়া যায়। বাছিয়া বাছিয়া যদি ঐরপ কতকগুলি ক্ষুদ্র কবিতা কি ছত্রসমষ্টি সংগ্রহ করা যায়, এবং বাল্য-

কাল হইতে যদি বালক বালিকাদের
তাহা মুখস্থ করিতে দেওয়া হয়, তাহা
হইলে উহাদের ভাব তাহাদের কোমল
অন্তঃকরণে প্রোথিত হইয়া যাইবেক।
সহজে নীতিশিক্ষায় ইহা অপেক্ষা ভাল
উপায় আছে কি না আমার সন্দেহ।
একটি উদাহরণ দিয়া এই প্রবন্ধের উপসংহার করা যাউক। যদি বালক বালিকাদের মনে স্বদেশহিতৈষিতার ভাব উদ্রেক
করিতে চাও, তাহা হইলে—

'ধিক্ হিন্দুক্লে, স্বীয় ধর্ম ভুলে, আত্ম সভিমান ভুবায়ে সলিলে, দিয়াছে ফেলিয়া শক্র পদতলে— সোনার ভারত করিতে ছার।"

বাল্যকাল হইতে এই কয়ছত্র মুখস্থ করাইলে যত ফল হইবে, বড় বড় বক্তা-দিগের সদেশপ্রেমউদ্বীপক বক্তৃতা পাঠে ও প্রবংগ সেইরূপ হইবেক কি না, সম্পূর্ণ সন্দেহস্থল। দে।

ধর্মের জয়।

তৃতীয় পরিচ্ছেদ।

কেণ্ডিল্য-রাজ-মন্ত্রী কলিক আজ
সপুত্র রাজসভায় সমাগত। কলিকপুত্র
নানাবিধ ধনরত্ব রাজচরণে উপহার দিলে,
রাজা ধৃষ্টবুদ্ধি মন্ত্রিপুত্রকে সম্নেহে কুশলাদি জিজ্ঞানা করিলেন। তিনি পুর্বেধ
পাকমুথে শুনিতেন যে মন্ত্রী কলিকের
পুত্র রূপে, গুণে, বিনয়ে, স্থাীবতায় ও

ধর্ম্মে অন্বিতীয়, এখন তাহা প্রত্যক্ষ করিয়া পরম প্রীতি লাভ করিলেন, এবং মন্ত্রীকে জিজ্ঞাসা করিলেন—"তোমার এই পুত্রের নাম কি ? কতদিন জন্ম গ্রহণ করিয়া-ছেন ? ইহার সহোদর সহোদরাদি আছে কিনা ? এত অল্প বয়সে কিরূপে বছগুণে ভূষিত হইয়াছে? এ ঈশ্বরের ভক্তিতত্ব কোথায় কাহার নিকট শিক্ষা করিল ?" এবং বলিলেন—"ছে মন্ত্রি-বর! তুমিধনা! যে ছেতু তুমি এমন পুত্ররত্নের পিতা।" মন্ত্রী বিনয়নমভাবে বলিলেন, "মহারাজ! এপুত্র আমার নয়, ইহাকে আমি অনাথ অবস্থায় প্রাপ্ত হইয়া পুত্রবৎ প্রতিপালন করিয়াছি। ইহার নাম চক্রহংস, আমি নিঃসম্ভান এবং ইহার আর সহোদর সহোদরা নাই।" স্নচভুর ধৃষ্টবুদ্ধি সবই বুঝিলেন এবং স্বীয় প্রত্যুৎপ্রমতিত সহকারে নিজ কর্ত্তব্য তৎক্ষণাৎ অবধারণ করিয়া বলি-লেন, "মন্তিবর! তোমার এই পুত্র একথানি জরুরী পত্ত লইয়া আমার পুত্রের নিকট অদ্যই কি যাইতে পারিবে?" মন্ত্রী একবার চন্দ্রহংসের মুখপানে তাকাইনেন, এবং তিনি সম্মত আছেৰ জানিতে পারিয়া "আজা হাঁ" বলিয়া রাজার কথার প্রভ্যুত্তর দিলে, রাজা তৎক্ষাণাৎ ক্ষিপ্র-হস্তে একথানি পত্র লিথিয়া চক্রহংদের হস্তে প্রদান করিয়া বলিলেন, "বংস! আমি জানি তুনি ধার্ণিক এবং পরম বৈক্ষৰ, অভএব তোমার ইইদেবতার দোহাই, যদ্যপি আমার এই পত্র পাঠ কর।" চন্দ্রহংস তাহাই স্বীকারপুর্বাক পত্র লইয়া প্রস্থান করিলেন।

প্রথম জ্যেষ্ঠ, গ্রীমের বড়ই প্রাছভাব; আকাশ পরিকার নীলবর্ণ, মেঘের
নাম গন্ধও নাই, প্রথর রৌদ্র কাঁ কাঁ করিভেছে, এই সময় চক্সহংস নগরোপবনে
প্রথেশ করিলেন; তাহার চারিদিকে
পুস্পোদ্যান মধ্যে সরোবর শোভা পাই-

তেছে, সরোবরতটে বকুল পাদপশ্রেণী উন্নত মন্তকে বিরাজ করিতেছে। চন্দ্রহংস বিশ্রামার্থ তথায় উপবেশন করিলে
সরোবরের জল-কণস্পর্শী স্থশীতল বায়্
তাঁহাকে সেবা করিতে লাগিল। স্থকুমার
চন্দ্রংস ক্লান্ত দেহে শীতল বায়ু সেবনে
বকুল ছায়ায় স্বোর নিদ্রায় অভিভূত হইয়া
পড়িলেন।

চতুর্থ পরিচ্ছেদ।

ধুইবৃদ্ধির অবিবাহিতা কন্যা বিষয়া দেবদেব মহাদেবের পূজার জন্য পুস্পো-দ্যানে প্রবেশ করিয়া ইতস্ততঃ ভ্রমণপূ**র্ব্বক** পুষ্প চয়ন করিডেছিলেন, এই সময় নিদ্রিত চক্রহংদ তাঁহার দৃষ্টিপথে পতিত হইলেন। বিষয়া, বালিকা-স্থলভ কৌতৃ-হলের বশবর্তী হইয়া হন্দ্রহংসের পার্ষে উপনীত হইয়া দেথিলেন, যে একটা যুবক বকুলতলায় নিদ্রাভিভ্ত, তাহার শির-প্রাণের মধ্যে একথানি লিপি রহিয়াছে এবং নিদ্রিত অবস্থায় অসাবধানতা জন্য উহার কিয়দংশ বহির্গত হইয়া পড়িয়াছে। কুমারী ধীরে ধীরে লিপিথানি লইয়া পাঠ করিয়া দেখেন যে ঐ লিপি ভাঁহার পিতা যুবরাজ মদনকে লিথিয়াছেন, এবং উহাতে লিথিত ছিল—চক্সহংদের পরিচয়, তৎপরে চন্দ্রহংসকে বিষদান করার বিষয়। পত্র-পাঠে বিষয়ার কোমল ক্রদ্য কাঁপিয়া উঠিল। বিষয়। মনে মনে ভাবিলেনীযে ইনি পিতার জানাতা হইলে ইহার প্রতি স্নেহ্বশে কোনরূপ অভ্যাচার পিতা

করিতে পারিবেন না; ইনিও যথন নিজ্প পরিচয় জানিতে পারিবেন,তথন সরাজ্যের জন্য শশুরের বিপক্ষে অসিধারণ করিবেন না, জার আমারও মনোমত পতিলাভ হইবে। এই চিস্তা করিয়া বিষয়া নিজ-নথ কোণে নয়ন কর্জ্জল উঠাইয়া 'বিষ" এয় অস্তে 'য়া' যোগ করিয়া দিয়। লিপি যথাস্থানে রাখিয়া গৃহে প্রত্যাগত হইলেন।

মদন চন্দ্রহংসের নিকট লেখনী প্রাপ্ত হইয়া ভগিনীর বিবাহ যথা-বিধানে মহাসমারোহে সম্পন্ন করিয়া পিতার নিকট সংবাদ পাঠাইলেন। মদন মনে করিয়াছিলেন যে তিনি এত শীঘ এমন সমারোহের সহিত পিতৃ-আদেশ পালন করায় পিতা তাঁহার প্রতি বড়ই সম্ভই হইবেন। কিন্ত ভাঁহার সে আশা বিফল। ধৃষ্টবৃদ্ধি পুত্রের কার্য্যে হাড়ে হাড়ে চটিয়া গেলেন। তিনি পুত্রের নিকট আসিয়া পুত্রকে তিরস্বার করিতে লাগি-লেন। পুত্র ভাঁহাকে পত্র দেখাইলেন, ধৃষ্টবুদ্ধি বলিলেন, পাপিট নিশ্চয়ই আমার পত্রপাঠ করিয়াছে।" অনন্তর ডিনি চন্দ্র-হংসকে দেখিতে চাহিলে, চন্দ্রহংস আসিয়া ভাঁহাকে প্রণাম করিলেন। ধৃষ্টবুদ্ধি বলিলেন—"তুমি আমার কন্যার পাণি-গ্রহণ করিয়াছ, কিন্তু আমাদের কুলদেবী চণ্ডীর পূজা কর নাই শুনিরা হুঃখিত হই-লাম। স্বতরাং অদ্য নিশীথ রাত্রে এখাকী যাইয়া ভগবতী চণ্ডীর পদ্ধা ক্রিয়া আসিও, কোনও মতে অগ্যথা कंत्रिख ना।" চल्रहःम তাहाहे श्रीकात

করিয়া প্রস্থান করিলে ধৃষ্টবৃদ্ধি একজন বেতনভোগী, প্রভুভক্ত, কার্য্যতৎপর, मारमी ও वनिष्ठं अञ्जवाती रिम्नि-ককে বলিলেন--- ''গুন, অন্থ নিশীথ রজ-নীতে যে কেহ ভগবতী চতীর সমীপে গমন করিবে, তুমি নিঃশক্ষচিত্তে তাহার শিরশ্ছেদ করিবে, আমার কোন বিশেষ আখীয় হইলেও তাহাকে ক্ষমা করিবে না; যাও সশস্তে অতা চণ্ডীদেবীর ভবনে নিশাঘাপন **ৈ**সনিক কেব। সীকার করিয়া প্রস্থান করিল। চন্দ্রহংস যথাসময়ে পূজার উপকরণ দ্রব্যাদি লইয়া চণ্ডীমণ্ডপে গমন করিতেছিলেন, পিতার হুরভিদন্ধি বুঝিতে পারি**না ভ**গি-নীর প্রতি স্নেহবশতঃ জাগরিত ছিলেন. এবং চন্দ্রহংস যখন পূজা করিতে যাইতে-ছিলেন, তখন তিনি পূজার সামগ্রী স্বয়ং গ্রহণ করিয়া বলিলেন "রাত্রি অবিক হইয়াছে, ভুমিশয়ন কর গিয়া, আমি পূজা করিয়া আসিতেছি।" ইহা শুনিয়া চন্দ্রহংদ শয়নাগারে প্রত্যাগমন করিলেন। মদন যুদ্ধে সৈনিককে পরাস্ত ও নিরন্ত্র করিয়া চণ্ডীর পজা সমাধা করিয়া আসি-লেন। পর দিন ধুষ্টবুদ্ধি সমস্ত বুতাত্ত অবগত হইয়া ভাবিলেন যে এই নিঃসহায় বাল-ককে কেবল ধর্মই বারসার রক্ষা করিতে-ছেন, অতএব ধর্মের জয় অনিবার্যা। এই মনে করিয়া তিনি চক্রহংদকে রাজিদিংহা-সন প্রদান করিলেন এবং মদনকে তদীয় মন্ত্রিত্পদ প্রদান করিয়া যোগমার্গাব-লম্বী হইয়া তপোবনে প্রস্থান করিলেন।

পত্নীকে পিতা মাতারূপে প্রাপ্ত হইয়া ন্যায় প্রজাপালন করিতে লাগিলেন : *

চক্রহংদ, মদনকে মন্ত্রী, কলিঙ্গ ও তৎ- | নিরাপদে স্বধম্মে নিরত থাকিয়া পিতার

সতী ও শান্তি।

নবম পরিচ্ছেদ।

অন্নপ্রাশনের বিষয় বলিবার আগে "ধোয়ান পোছান" সস্ক্র কিছ বলিব। গায়ের চামড়ার যে ক্ষুদ্র ক্ষুদ্র অনংখ্য ছিদ্র দেখা যায়, তাহাদিগকে লোমকূপ বলে। উহারা এক একটি "বরনাল" স্বরূপ। স্বর ধোওয়া ম্যুলা জল যেমন বুৱনাল দিয়া বাহির চ্টয়া যায়, সেইরূপ এই সকল ফুদ कुल लागकूल निया गतीरतत गयला जल কতক পরিমাণে ঘামরূপে বাহির হইয়া হায় ৷ হরের বরনাল বন্ধ করিলে থেমন মধলা জল ঘরের মধ্যে থাকিয়া ঘরকে ছুর্গন্ধ্য করিয়া তোলে, সেইরূপ শরী-রের এই সকল বরনাল যদি কোন রক্ষে वस इडेश याय, जाबाइडेरन इडाव गर्धा যে ময়লাজল রহিলাছে, তাহা শীঘ্র ঐ সকল লোমকুপ দিয়া বাহির হইতে পারে না, সভরাং শরীরমধ্যে অধিকক্ষণ থাকিয়া শরীরকে খারাপ করে এবং নানাপ্রকার গোগের কারণ হইয়া উঠে। অভএব দেখা উচিত যে কোন কারণে ছেলের গায়ের লোমকূপ দকল না বন্ধ হইয়া যায়। এই সকল লোপক্রের পথ পরিষার রাথিতে ইইলে "ধোয়ান পোছান" আবশ্যক। সমস্ত দিনের মধ্যে অন্ততঃ একবারও "ধোয়ান পোঁছান" উচিত; তুইবার হইলে আরও ভাল হয়। ঠাওা জল ছেলের পক্ষে ভাল নয়, গ্রম জলও অনিষ্টকর; অনতএব জল ঈষ্তুঞ্হওয়া আবিশ্যক। জল ঈষ্তুষ্ণ হইয়াছে কি না, জানিতে হইলে হাত ভবাইয়া দেখিলে হইবে না, কারণ হাত আ্যাদের শ্রীরের অস্তান্ত অঙ্গ অপেকা অধিক গ্রম। সেই কারণে হাত ভূবাইয়া না দেখিয়া কুকুই ডুবাইয়া দেখা উচিত। रेराधाता जाना यारे(त, जल सेगज्य হ্টয়াছে কি না; ইহা ছেলের গায়ে সহিবে কি না। ছেলেকে স্নান করাইবার আগে মাথা ভিজাইয়া দেওয়া উচিত। তার পর একখানি পাতলা পরিদার কাপড সেই জলে ভিজাইয়া তাহার সর্কাশরীর পরি-কার করিয়া দিবে। বিশেষতঃ তাহার বগল, উরু এবং গলা ভাল করিয়া পরি-ন্ধার করা উচিত। তার পর তাহার मर्खनद्वीरत जल जालिया मिरव। विटम-বতঃ তাহার পিঠে জল ঢালিয়া দেওয়া উচিত। ইহাধারা ছেলে বেশ বলিষ্ঠ[®]

* কাশীদাসী অশ্বমেবপর্কের কোনও অংশ অবলম্বন করিয়া এই প্রবন্ধটী লিথিত হইল।

হইরা উঠে। তৎপরে পাতলা ফরসা কাপড় দিয়া তাহার গা মুছাইয়া দিতে **হইবে। সানের সময় ছে**লের গারে যেন। সান করাইয়া দেওয়া থুব ভাল।

ঠাতা বাতাস লাগে না, কারণ তাহাতে সৃদ্ধি হইতে পারে। মেই কারণে ঘরের মধ্যে

"অঞ্কণার কবি।"

বিধবার অশ্রন্থলে মিশাইয়ে অঞ্জণ্— কে সিঞ্চিলা ভঙ্গপ্রাণে কেবা দিল এ সাম্বনা ? এই কি সে দয়াবতী !--তাজিয়ে অমরধাম অবতীর্ণা বঙ্গভূমে---বিধবার প্রাণারাম ! বঙ্গ-বিধবার তরে কাদে আজ কার প্রাণ (তারে) কে ভনায় দয়া করি তটো সাস্থনার গান গ পতির পদারবিন্দে গঁপি দেহ প্রাণ মন, বিলাস বাসনা ভোগ मिए मव विमर्कन, কে দাজাবে তপদিনী বঙ্গের বিধবা সবে--ভুমি বিনে, পুণাবৃতি দে কাজ কি অন্যে শোভে? ব্রহ্মচথ্য জীবনের সার ধর্ম বিধবার-পালন করিছ সদা মহাত্রত-যত্যাচার।

মুর্জিমতী সভী যেন মর্ত্তে করে বিচরণ। বদনে পুণ্যের ভাতি প্ৰবিজ্ঞা বিলেপন। আলম্বিত কেশ দাম আলু থালু আণে পাণে, কি স্থন্দর আহা মরি শোভিয়াছে শুভাবাদে ! পাদপের প্রতিবিম্ব থেনগো জোছানা গায়। বাকদেবী কাব্যবনে ফুটেছে কি কবিতায় ? কবিতা-কুম্বুম রাজি---প্রিমল 'অশ্রুক্ণা,' বাদে মুগ্ধ বন্ধবাদী-তুলনায় অতুলনা ! 'অক্রকণা' এক মাত্র বিচ্ছেদের শাজি-বারি. সে জলে যাতনা-মুক্ত कामश्या विधवा नाडी। সরগের মন্দাকিনী কি গুণে বহালে বঙ্গে প মজাইলে মকভূমি কবিতা-স্থা-তরঙ্গে ?

বামাবোধিনী পত্রিকা।

বনদেবী হয়ে আজ শোভিলে কি বঙ্গবন ? পজিবে তোমারে সবে অনুদান অনুকাণ। গাথিয়ে সগীয় কুলে অপর্কা কবিতা-হার— 'क्राक्रकश'-- जानि फिल জননীরে উপহার। এধার শোধিতে পারে বঙ্গে নাহি হেন কবি, क मिथाद विधवादत স্বর্গের অপূর্ব্ব ছবি ? 'অশ্রকণা'--কণা কণা যেনগো মুকুতাফল, স্বরিতেছে নেত্র কোণে অবিশান্ত অবিরল। মহাভাবে উন্মাদিনী বিশ্বপ্রেমে আত্মহারা,

অশ্রকণা কারে শোভে গ প্রেমে যে পাগল পারা। পরার্থে সঁপিয়ে গ্রাণ সাধিচ অবলা-হিত, বদন ভরিয়া সবে দাইবে তোমার গীত। পতির অমর আখা স্মরণ করিবে তায়, পাত কর এ শরীর সদেশের সাধনায়। যে ভাব দেখালে সতী ভূলিৰ না এজীবনে, আগ্যনারী বন্ধচর্ঘ্য इन। नाई जिड्डान ! দে মহাজীবন-ব্ৰতে ত্রতী হয়ে চিরদিন, দেখাও আদর্শ ছবি, গাই তণ নিশি দিন।

বাদন প্রণালী।

| রাগিণী ঝিকিট। তাল একতালা। | | | |
|---|---|--|--|
| जण्ड िही। | শন্তরা। | | |
| ि । । । । । । + ॥ व । । य श्रंका मः मा निः वः। | 1 | | |
| ७॥। ०॥। २॥। +॥। १८: मा मा अ अ अ अ | ा । । । । । । । । । । । । । । । । । । । | | |
| জা •॥ । ১৯ : +॥ । ৩॥ মুমুমুমুমুমুমুমুমুমু | 1 _ 1 | | |

গ গ ঝ ঝ ঝ ঝ গ ম :: } । । । । গ

প্রথমে অস্থায়ী স্থইবার বাজাইয়া, পবে অস্তরা স্থইবার বাজাইয়া পুনরাষ অস্থায়ী স্থইবার বাজাইরা, গরে আভোগ স্থইবার বাজাইয়া, পরে আভোগ স্থইবার বাজাইয়া পুনরায় অস্থায়ী ধরিবে। এইরূপ একবার বাজানকে এক ফেরা কহিয়া থাকে।

আলেয়া খাস্বাজ। ঠুংরি।

৬৬ { +৬ ৬৬ ৬ ৬৬ ৬ ঋগ { শা <u>ঋ সা</u> গ<u>গম ঋ</u>গ

म প প भ भ গ

 +। • • • ।
 ७ ७ ७ ४ | + ७ ७

 म १ १ १ | १ १ १ | १ १ १

ত । ০ ০ | প ম গ ঋ গ | }

৬ ৬ ১ ৬ ছ । ৬ ৬ + । ৬ ৬ ७ ७ म। নি ধিম ম । ম প প প প

রামপ্সোদী সুর। একতালা। তাঁভাগী।

ि ।।।|| ३।।।| +॥।||•।| । गंस गंथ माथ। गंगी स् || 이 || 어 되어

অন্তরা।

ol ॥ (১। ॥ + ॥ । । । । নি নি সাং ঋ সাং নি সাং সাং

ा ॥ ०॥। । । ॥ +। ॥ मार्गार्गार्गार्गार्गार्गा

য প ::}

মলার কাওয়ালী।

ি। ৮ ৮ । ৮ ৮ | ১। । । । ১ ধ নি ধ প ধ প । ম প নি নি

সংগ্ৰহ +॥। গা। ॥ । ॥ । ।। স। নি কং সাং কং কং কং ক

।।।।।।।।।।। ম ম ম ম । প ম প প ধ । ম

1 1 1 의 ! 1 1 이 11 기 기 지 최 왕 왕 카기 | নি নি

প্রবাদ বিচার।

व | +। व । । श्राप्त । व । । व । व । मा निश्रं भ भ भ । मा

(ছিতীয় পত্র।)

মনুধা সমাজকে কাৰ্য্যকরী শিক্ষা দিবার ভিরচিত্তেও স্থন্ধ দৃষ্টিতে সমাজের কার্য্য-জন্য প্রবাদ-রচ্চিত্রপথের কত্ই দ্রদর্শন। কলাপ দর্শন করিয়াছেন। স্মাজে এমন কতুট পর্যবেক্ষণ ও কতুই স্থিকতার কার্য্য অনেক আছে, ধাহা স্থ্যস্পাদন

এক একটা প্রবাদ পাঠে বোধ হয়,* প্রয়োজন হইয়াছে এবং ভাঁহারা কেমন

262

করিতে পারিলে ষশং নাই, কিন্ত ভৎসম্বন্ধে বিন্দুমাত্র ক্রাটিতে অবশের সীমা
থাকে না। প্রবাদ সেই সকল কার্য্য
সম্বন্ধে জনসমূহকে দতর্ক করিতেছেন:
আপে হাঁটে, পাটা কাটে,
প্রদীপ উদ্ধায়, দই বাঁটে।
ভাণ্ডারী, কাণ্ডারী, রাবুনী বামন,

য": নাপায় এই সাতজন। পথপ্রদর্শক নির্দিষ্ট গম্য স্থানে লইয়া যাইতে পারিলে কোন কথা নাই; কিন্তু তাহার দোষে অনুযাত্রিগণকে যদি একট বিপথে পদার্পণ করিতে হয়, আগমন-कां ती व लाइ नां त नी या था कि ना । व्यनी व **उम्मीश हरे** एन উদ্দীপনকারীকে কেহ জানিতেও পারে না; কিন্তু নির্বাপিত হইলে তাহার অ্যশের একশেম। উত্তম রূপ অন্ন ব্যঞ্জন পাক করিয়া প্রভুর ম্বর্গ সম্পাদন করা পাচক বান্দণের কর্ত্তবা, তাহাতে আবার যশঃ কি ? কিন্তু একদিন দশটা ব্যঞ্জনের মধ্যে একটায় একটু লবণ বেশী বা কম হইলে তাহার নাক কান থাকা কঠিন।

এইরূপ বহু দর্শন ও স্ক্রদর্শনে রচিত প্রবাদ আরও অনেক আছে।

আমরা পূর্বের উল্লেখ করিরাছি যে, প্রবাদের শিক্ষা সমাজের সর্ববিদশ ব্যাপিনী। সমাজে এমন বিষয় নাই, যে বিষয় প্রবাদ শিক্ষা দেন নাই। স্বাস্থ্য-রক্ষা বিষয়ে প্রবাদ উপদেশ দিতেছেন।

> ্থায় শা থায় সকালে নায়, হয় না হয় তিনবার যায়, তার কড়ি কি বৈদ্যে পায় গ

গৃহত্বের ভদ্রাসনের দূরে সহস্র সহস্র বাগ বাগিচা থাকিলেও তহারা তাদৃশ উপকার হয় না। কিন্তু ভ্রোদনের মধ্যে ২।৪টী গাছ পাল। থাকিলে বিশেষ উপ-কার হয়, কেননা দরস্থ গাছ পালা হইতে অর্থের আকারে কিছু কিছু লাভ হইতে পারে বটে; কিন্তু স্থপক ফলমূল ও টাটকা শাকসবজি গৃহাঙ্গণন্থ গাছপালা ভিন্ন পাওয়া যায় না। মানুষের আত্মীয় স্বজন, কুট্ম, বন্ধু অনেকেই থাকিতে পারে এবং সেই সকল দ্বারা সম্য়বিংশদে অনেক উপকারও হইয়া থাকে; আপন সন্তান দারা যতথানি উপকার পাইবার আশা লোক করিতে অন্য আর কাহারও দারা ততথানি উপ-কারের আশা করা যায় না। এই জন্যই প্রবাদ বলিয়াছেন,---

"ঘরের গাছা, পেটের বাছা।"

যাঁহার। সঙ্গীতব্যবসায়ী, কণ্ঠসর অব্যা-হত রাখা যাহাদের নিতান্ত আবশ্যক, প্রবাদ তাঁহাদিগকে শিক্ষা দিতেছেন,—

> "ঘোল, কুল, কলা; ভিনে নষ্ট গল;।"

সংসারী ব্যক্তিগণ স্থা সচ্চন্দে সংসার্থাতা নির্কাহ করে, এ বিষয়ে প্রবাদের কতই যত্ন। তাহা দেখিলে বড়ই অনন্দ হয়। সংসারে যে গুলি কইজনক, তাহা পনিকার করিতে এবং যাহা স্থাও সৌন্দ্র্য্য সাধক তাহার উপা-জ্ন বিষয়ে প্রবাদ কেমন কৌশলে শিকা। দিয়াছেন। "ছেঁদা ঘটী,চোরা গাই, চোরপড়্শী, ধুর্ত্ত ভাই।

মূর্থছেলে, ভার্যা। তুই, এই ছয়টা বড় কই।"
পুরুষাছক্রমে যে গৃহস্থ যে ব্যবদার
করিয়া থাকে, ভাহা ত্যাগ করিয়া ব্যবদায়ান্তর অবলন্দনে মঙ্গল হয় না। জাতীয়
ব্যবদায়ের উন্নতি সাধনে উদ্যোগী
থাকাই সকলের কর্ত্ব্য। এজন্য প্রবাদ
বলিতেছেন,—

"জাত ব্যবসা নরের <mark>ভূ</mark>ষা, আর যত সব ফাযা ফুষা।"

প্রা দ্বোর উৎপাদক অপেক্ষা সেই

দ্ব্য নইয়া যাহারা ব্যবসায় করে, তাহাদের অধিক লাভ হইঃ। অবস্থার উন্নতি
হয়। ইহা অর্থবিদ্গণের একটা প্রধান
সিদ্ধান্ত। কৃষক সমস্ত বাণিজ্য দ্রব্য
উৎপন্ন করে, কিন্তু কৃষক অপেক্ষা বণিকের অবসা ভাল। গ্রন্থকার অপেক্ষা
পুত্রক ব্যংসায়ীদিগের অবস্থা ভাল।
ইহার উদাহরণ সর্কত্র স্থলভ। এই তত্তী
কথায় প্রকাশ করিয়াছেন এবং ইপিতে
বাণিদ্য করিবার উপদেশ দিয়াছেন।

"জেলের পরণে টেনা, পাজারির কাণে সোণা।"

ধাহারা জেলের নিকট মৎস্য ক্রয় করিয়া বিক্রয় করে, তাহাদিগকে পাজারি কহে।

ফদিও বছ মৃল্যে শত সহস্র টাকের ঔষধ বিক্রয় হইয়া থাকে, কিন্তু একবার মাথার টাক পড়িলে তাহা আর মৃত্যুর পূর্বের সারে না। যাহার জন্ম হইতে যে

প্রকৃতি, কদাচ তাহার অন্যথা হয় না।
পায়ে একবার গোদ (একপ্রকার জল
দোষ জন্য পীড়া) হইলে তাহা আর
কথনও গারে না। ঐ সকলের প্রতীকার
জন্য রুথা চেটা করিয়া অনেকে কষ্ট
করিয়া থাকেন। প্রবাদ লোকের সেই
কষ্ট নিবারণের জন্য বলিতেছেন;—

"টাক, প্রকৃতি, গোদ,

মর্লে হয় শোধ।"

কোন ব্যক্তিকে স্থপদ হইতে অপস্ত করিতে হইলে তাহার উপগৃক্ত অপরাধ পাওয়া আবশ্চক। কিন্তু কোন কোন ক্ষমতাশালী ব্যক্তির সার্থ এতই প্রবল এবং হৃদর এতই নীচ যে, অন্নায়রূপে পরোক্ষ চেষ্টা দ্বারা স্বকার্য্য দিদ্ধ করিয়া থাকে। প্রবাদ একটী মাঞ্জুক্ত বাক্য-দ্বারা তাদৃশ তুর্ক্তের চরিত্র চিত্রিত করিয়াছেন।

"তাড়াই না উঠান চিষ।"

শারীর-তথ্বিৎ পণ্ডিতগণ মস্তিকের
জাবার মস্তককেই বুদ্ধির স্থান বলিয়া
থাকেন। স্মৃতরাং যাহার মস্তক সংখ্যা
যত অধিক, ভাহার বুদ্ধিও তত অধিক।
এই জন্য প্রাচীন ব্যক্তিগণকে লোকে
"তেমাথা" বলিয়া থাকে। অশীতিপর
বৃদ্ধণণ তুই হাটুর মধ্যে মন্তক রাধিয়া
বিদিয়া থাকেন। তুই হাঁটুর সন্ধি তুইটী
মস্তক কল্লিত হয়। বুদ্ধের নিকট
উপদেশ লইবার আদেশ আগ্য শান্তের
ভূরি ভূরি স্থানে আছে। প্রশান্ত মিষ্ট
ভাষায় বলিভেছেন,—

"তিন মাথা যার, বৃদ্ধি লবে তার।"
প্রবাদে না আছে, এমন উপদেশ
নাই। যে কোন প্রকার তৈল শরীরে
লাগাইলেই উপকার হয় না, বিশেষরূপে
মর্দন করিলে তবে বিশেষ ফল হয়।
তামাক এবং রুটী বা লুচি করিবার জন্য
ময়দা যত অধিক পরিমাণে মর্দন করা
যায়, ততই তামাক, রুটী ও লুচি উৎক্রপ্ত
হইয়া থাকে। এইজন্য প্রবাদ ব্লিতেছেন,—

তেল, তামাক, ময়দা,
যত রগ্ড়াও তত ফয়দা।"
ক্লিকার্য্যে প্রবাদের উপদেশ
অসংখ্যা এমন কি, বঙ্গদেশে প্রবাদই
ক্লির নিয়ামক। ক্লমি বিষয়ক সমস্ত
প্রবাদ একস্থলে সন্ধনন করিলে একটা
স্বতন্ত্র প্রবন্ধ হইতে পারে। সে চেষ্টা
পরে করা ঘাইবে। এস্থলে প্রকরণ সঙ্গতি
জন্য তুই একটা মাত্র ক্লমি বিষয়ক প্রবাদ
উদ্ধৃত করা গেল।

"তিনশ সাইট ্কলা রুয়ে, থাকগে চাষা থাটে শুয়ে, কলাপাতে দিস্নে হাত, পুতেই কাপড়, ওংতই ভাত।"

তালের বাগুলা কাটিয়া দিলে তাল-গাছ বাড়েনা এবং থেজুর গাছ মধ্যে মধ্যে কামাইয়া না দিলে তেজাল হয় না। এই বিজ্ঞানটী প্রবাদের ভাষায় শিক্ষা দেওঁয়া হইয়াছে।

> "তাল বাড়ে ঝোঞে, থেজুর বাড়ে কোলে।"

কতকগুলি ফলের স্বভাব এইরূপ অপকাবস্থায় যত ভাঙ্গা ঘাইবে, ফল তত্তই অধিক পরিমাণে ফলিতে থাকিবে, যেমন কাঁটাল, নাজিকেল ইণ্যাদি। বাঁশের স্বভাব ইহার বিপরীত। কাঁচা বাঁশ কাটিলে ঝাড় শুদ্ধ নই হইয়া যায়। এইজন্য প্রবাদ হেঁয়ালির ছন্দে শিকা দিডেছেন;—

> "দাতার নারিকেল, বথিলের * বাঁশ।"

কি প্রকারে ঘর দার নির্মাণ করিলে স্থার বসত হয়, গৃহীকে প্রবাদ তাহারও শিক্ষা দিয়াছে।

> 'দিক্ষিণ দারী ঘরের রাজা, পূর্ব্ব দারী তার প্রজা, পশ্চিম দারীর মুখে ছাই, উত্তর দারীর খাজানা নাই। পূবে হাঁস, পশ্চিমে বাঁশ,'' দক্ষিণে ছেড়ে, উত্তরে বেড়ে, বাড়ী করগে পোতা যুড়ে।"

যগন জনসমাজে লোকসংখা। অধিক ছিল না, তথন গৃহস্বামী উত্তর্ধারী ঘবের কর লইতে পারিতেন না।

এককালে একাধিক দার পরিগ্রহ করিলে সংসার অভিশয় অস্থ্যের ২ইয়া থাকে, প্রবাদ বারাস্তর সংসারী ব্যক্তিকে ভাহাবুকাইলা দিয়াছেন।

> 'হুই সতীনে ঘর কলা,'' "ঘরের গিনী ভাত পানা।'' "বিমাতা বিধের ভরা'' "হুই দ্রী যার, বড় ছঃথ তার।''

> > * কুপণ।

প্রবাদ যে কেবল সালারীকে সালোরিক শিক্ষা দিয়াই নীরব হইয়াছেন. তাহা
নহো জ্ঞান, ধর্মা, ভক্তিন, বৈরাগ্য ইত্যাদি
বিষয়েও প্রচুর শিক্ষা দান করিয়াছেন।
"ধনে অহপ্কার নহে, অহস্কার মনে।"
"দোয ছাড়া লোক নাই।"
"ধন, জন, পরিবার, কেহ নহে আপনার।"
"ধন, জন, যৌবন, জোয়ারের জল।"
"ধর্মা রেখে কর্মা।"
"ধর্মোর জ্ব, অধর্মোর ক্ষয়।"
"ধর্মের তাক আপনি বাজে।"
"প্রের জন্য গর্ভ খোঁড়ে,
ভাপনি তাতে মরে প'ড়ে।"

ঝণের জালায় না জলিলে ঝণের অনিপ্টকারিতা বোধ হয় না। কিন্তু জি জাগুণ মাত্রুষকে গেরপ ছারখার করিয়া দেয়, তাহাতে দূর হইতে ঝণকে দণ্ডবং করিয়া সকলেরই সাবধান হওয়া উচিত। প্রবাদ বিবিমতে সে চেটা করিয়াছেন। জনাহারে থাকিয়া জঠরজালা ভোগ করা ভাল, তবু ঋণের দিকে যাইবে না।

"নাথেলে যাবে দিন, ধার কল্লে হবে ঋণ "

শারকারেরা সংখাদরকে সহজ শক্র ও সহজ মিত্র উভয়ই বলিয়াছেন। সংখাদরের ন্যায় শক্তাও আর নাই, সংখাদরের ন্যায় মিত্রও আর নাই। শক্তাও মিত্রতার এমন অপূর্বর নিশা-মিশি আর কোথাও দৃই হয় না। প্রারাদ একটা কথায় তাহা প্রকাশ করিয়াছেন। "ভাই ভাই, মেরে যাইত ফিরে চাই।" "মার পেটের ভাই,কোথা গেলে পাই।"

ধ্যোথাতের বিচারেও প্রবাদ উদা-গীন নহেন। কচি উচ্ছে, পাকা পটল, অল্ল বয়সের ছাগ ও অধিক বয়সের মৎস্ত ধাইতে ভাল। তাহাই প্রবাদ বলিতে-ছেন--

"উচ্ছের কচি, পটোলের বীচি; ছাগের ছা, মাছের মা।" এইরূপ

> "আমড়া, চালতে, তাল, আবাল রদ্ধ ভাল।"

জামড়া, চালতে এবং তাল এই তিনটা ফল কচি ২ইতে পাকা সকল অব-স্থায় থাইতে ভাল।

কোন কোন ব্যক্তি এত নীচ ও ইতরপ্রকৃতি যে, যাহা হইতে যতক্ষণ উপকারের প্রত্যাশা থাকে, ততক্ষণ ভাহার
প্রশংসা করে। কিন্তু উপকার প্রাপ্তির
কাল অতীত হইলে আবার সেই মুখই
তাহার অজন্ম নিন্দা করে। ইতর
ভাতির মধ্যে এইরপ লোকের সংখ্যা
অধিক। প্রবাদ এক কথার তাদ্শা
নরাধ্যের চরিত্র চিত্র করিয়াছেন।

"কাজের বেলা কাজি, কাজ দুরালে পাজি।"

সংসারে হতপ্রকার কার্য আছে,
তন্মধ্যে ক্রবি সর্কাপেক্ষা উপকারী, স্কৃতরাং
প্রেষ্ঠ। রোগের মধ্যে কাশ রোগ সর্কাপেক্ষা ভয়ানক ক্ষয়কারী। এইজ্ঞ প্রবাদ বলিলাছেন,—

> "কাজের মধ্যে চাষ, কোগের মধ্যে কাশ।"

যথন রাম চন্দ্র দীতা উদ্ধারের জন্য সাগরে সেতৃবন্ধন করিয়াছিলেন, তথন তাঁহার হংখে হংথী হইয়া স্থাবর জঙ্গনের মধ্যে ক্রুন্ত মহৎ দকলেই স্ব স্থ সাধ্যান্ত্র-সারে সাহায্য করিয়াছিলেন। কাষ্ঠ মার্জ্ঞারগণ সাগরে স্থান করিয়া জলাভি-থিক্ত দেহে বালুকাক্ষেত্রে লুগুন করে। তাহাতে কিছু বালুকা তাহাদের গাতে লগ্ন হইয়া বায়। তাহারা সেই অব-স্থায় সেতৃতে গমন পূর্ণক গাত্র সঞ্চালন করার সেতুর উপরে কিছু কিছু বালুকা পতিত হইতে থাকে। পুন: পুন: এই-রূপ করিয়া সেতুর পুষ্টিসাধন করিয়াছিল। এই পৌরাণিক ঘটনা অবলম্বন করিয়া,—

কাঠ বিড়ালের দাগর বাঁধা।"

এই প্রবাদের সৃষ্টি ইইয়াছে। এক্ষণে সুশীল পরোপকারী ব্যক্তিপণ ঐ প্রবা-দের উল্লেখে দৈন্য প্রকাশ করিয়া খাকেন।

(ক্রমশঃ)

চীন কাহিনী।

(পুর্ব্ব প্রকাশিতের পর)

আমাদিগের দেশের অজ্ঞ রম্ণী-দিগের ন্যায়, পুত্র সম্ভান লাভ করিবার জন্ম চীন রমণীরাও নানাপ্রকার দৈব উপায় অবলম্বন করে। পাঠক পাঠিকা-দিগের অবগতির জন্ম এন্থলে কেবলমাত্র চুইটা বিবরণ লিখিত হইল। পুতার্থিনী অতি প্রভাষে শয়া ত্যাগ করিয়া সীর পতির পরিচ্ছদ পরিধানপূর্বক সন্নিহিত কোন কৃপসমীপে গমন করে এবং উক্ত কুপটী তিন বার প্রদক্ষিণ করিয়া গৃহে প্রত্যাগত হয়। যদি প্রত্যাবৃত্ত হইবার সময় কাহারও সহিত সাক্ষাৎ না হয়, তাহা হইলে মনোর্থ স্থাসিদ্ধ হইবে স্থির' कर्। आमानिश्वत प्रामात यश्चीरमवीत ন্যায় চীন দেশেও শিশুদ্রিগের রক্ষাকত্রী দেবতা আছে। পুত্রার্থিনী ঐ দেবতার

নিকট পুত্র প্রার্থনা করিয়া, তাহার এক থণ্ড পাত্না গৃহে আনমনপূর্বক প্রভাহ পূজা করিয়া থাকে। অভীপ্র পূজনাভ হইলে চীন রমণী পুরাতন পাত্কার পরিবর্ত্তে দেবতাকে এক যোড়া নৃতন পাত্কা প্রভাগণ করে।

সন্তানকে প্রেতাত্মার হস্ত হইতে রক্ষা করিবার জন্ম চীন রমণী নবপ্রস্ত সন্তানের গলা ও কটাতে এক একগাছি লোহিতবর্ণের স্তাবা রেশম বন্ধন করিয়া দেয়। সন্তানের বয়দ পূর্ণ এক মাস হইলে আত্মীয় বন্ধুবান্ধবদিগের সন্মুথে তাহার মন্তক মুগুন করিয়া দেওরা হইয়া থাকে। এই মন্তক মুগুন উপলক্ষে সমাগত বন্ধু বান্ধব শিশুকে ব্থাশন্তি উপহার প্রদান করে

অশীতিপর বৃদ্ধের ছিন্ন পরিচ্ছদ হইতে নির্শ্বিত পরিচ্ছদ শিশুদিগকে সর্কপ্রথম প্রিধান করাইয়া দেওয়া হয়। চীন-বাদীদিগের বিশ্বাস-যত বৎসর বয়সের ব্যক্তির পরিচ্চদ সর্বপ্রথম শিশুকে পরি-ধান করান হয়. শিশুও তত বৎসর পৰ্যান্ত জীবিত থাকে।

পুত্রসন্তানদিগকে চীনবাসীরা ফেমন ষ্মতিশয় আদর ও যত্ন করে, কন্যাসস্থান-দিগকে আবার দেইরূপ ঘুণা ও তাচ্ছিল্য কন্যাসস্থানগণ পালন করিতে करव । অনেক পিতামাতাই নিতান্ত অনিচ্ছ. স্থতরাৎ চীন দেশে কন্যাহত্যা বডই প্রবল। চীনদেশীয় কোন মহাত্মা কন্যা-সন্তানদিগের ছরবন্থা দেখিয়া একটী আশ্রম প্রতিষ্ঠা করিয়াছেন। যে সকল ব্যক্তি কন্যাসম্ভান পালন করিতে ইচ্ছক নহে, তাহারা স্ব স্ব কন্যাকে উক্ত আশ্রমে নিকেপ করিয়া আইসে।

ইচ্ছা করিলে চীনবাসীগণ স্বীয় স্বীয় পুত্র বিক্রয় করিতে পারে। রাজনিয়ম বিরুদ্ধ হইলেও চীনদেশে শিভুহত্যা করিতে কেহ শক্তিত হয় না। শিশুর মৃতা হইলে তাহাকে এক নিৰ্দিষ্ট কৃপ মধ্যে নিক্ষেপ করা হয়। যে কোন কারণে শিশুর মৃত্যু হউক না

কেন, চীনবাসীরা মনে করে প্রেডাম্বা কভ ক শিশুর জীবন নষ্ট হইয়াছে।

হাঁটিতে শিথিলে চীন বুমণী সন্থানকে স্তন্যপান হইতে বির্ত করিয়া অত্যধিক সিদ্ধ তণ্ডুল থাইতে দিয়া থাকে। শিখা বক্ষা করিয়া বালকের মহকে সর্বদাই মুওন করিয়া দেওয়া হয়। মাতা আদর করিয়া স্বীয় শিশু সম্ভানের শিখা মূল্যবান স্থত্তে বন্ধন করিয়া দেন। গ্রীমকালে শিশুদিগকে প্রায়ই কোন পরিচ্ছদ পরি-ধান করাইয়া দেওয়া হয় না, কিন্তু শীত-কালে তাহাদিগকে বদন ও তুলাম্বারা এরপ ভাবে আরুত করা হয় যে দেথিলে এক একটা উপাধান বলিয়া বোধ হয়। আমাদিগের দেশে যেমন শিশুকে কোন ভানে লইয়া ঘাইতে হইলে কোলে বা বক্ষে করিয়া লইয়া থাকে, চীন লেখে সেরপ করে না; শিশুকে পুঠে স্থাপন পুর্বাক চর্মারার বন্ধন করিয়া লইয়া যায়।

ही नवालक मिरशत मर्था (य नकन ক্ৰীড়া প্ৰচলিত আছে, তাহাৰ মধ্যে যুড়ী উজানই প্রধান। চীনদেশে বিভিন্ন আকা-রের বহুবিধ ঘুড়ী দৃষ্টিগোচর হয়। এই শকলের মধ্যে কোনটার আকার বাহুড়ের शाह, कानजी विजाल, कानजी कुकूत अवः কোনটা বা শুগালের স্থায় আকৃতিবিশিষ্ট।

'শেকের শান্তি।

বলিয়া জানিতাম, যাহার দিকে চাহিয়া সহসা সে আমাকে

এ জগতে যাহাকে বড় "আপনার" | শংশার-পথে পাদক্ষেপ করিতেছিলামঃ এ ভনমের

ছাড়িয়া গিয়াছে!--নাধ করিয়া নহে. নিষ্ঠুর মৃত্যু নিয়তি বাঁধনে তাহাকে বাঁধিয়া लहेस शिराह्म, आत এ জনমে সে আমার কাতে ফিবিয়া আনিবে না। তাহার এন্য অভপ্ত আকাজেলা লইয়া, আমাকে ডিতার আগুণে পুড়িয়া মরিতে হইবে! এখন বলতো ভাই। তাহার জন্য আমি কাঁদিব না কেন ? আরও বলতো ভাই, তাহার জন্য আমি কাদিলে ত্মি আমাকে "তুর্বলচেতা অথবা "মোহ-পরায়ণ" বলিয়া খুণা করিবে কেন গ তোমার এরকম ঘটনায় তোনার চক্ষে ভোমার প্রাণের প্রাণে যদি আঘাত ন। লাগিয়া থাকে, তুমি যদি ইহা এক ফুৎ-কারে উড়াইল্ল দিতে পারিল্ল থাক, তাহা হইলে আমি তোমাকে ''চিত্তজ্ঞী বীর'' বলিব, "নর্রূপী দেবতা" বলিব; কিন্তু (मरे माम, তোমার क्षम प्र भी तम, তোমার হাদ্য যে শুক্ত, ভূমি যে প্রাকৃত ভালবামার আমাদ কিছুই পাও নাই, ্য কথাও অবশ্য বলিব। আগার হৃদ-থের সমস্ত প্রীতি মমতা, আমার প্রাণের সকল সাধ বাসনা, আমার মানবজীবনের অথাদক্ষিপ, সবই যদি মুক্তুহন্তে আমার ভালবাসা-ভাজনকৈ ঢালিয়া দিতে না भातिनाम, यिन ভাহাকেই ''आमात मव'' বলিয়া না ভাবিলাম, যদি ভাহারই **অস্তিত্বে নিজের অস্তিত্ব অনুভব না** করি-লিফি, **তবে আম**লৈ ভালনাল ভালবামার

এব আমি ঘাহাকে প্রকৃত ভালবাসিয়া-ছিলাম, তাহার সহিত এ নিদারুণ বিচ্ছেদে আমার বুক ফাটিবে না কেন ? কেবল আমার মত নগণ্যমনুষ্য বলিয়া নহে – বৃদ্ধদেব, চৈতন্যদেব, যি শুখ্ৰী ষ্ট প্রভৃতি দেবতার কথা বলিতে পারি না-শোকের প্রথমোচ্ছাদে আকুলতা মানবের এতই সাভাবিক, যে অজ ও অর্জুনের मण यौत्रश्रूक्ष, नाविजी ७ शाकातीत মত বীরাঙ্গনা পর্যান্ত তাহাতে অধীর হইয়া পড়িয়াছিলেন। বলিতে কি জগদী-যতদিন স্নেহ ধর মানবজনয় শুন্য া করিবেন, ততদিন তরুণ শোকো-চহাদে মানব আকু শিহইবেই! অতএব এই স্বাভাবিক ঘটনায় মানব মানবের নিকটে নিন্দিতই বা কিসে ? আর মুণিতই বা কিলে গ

তবে একটা কারণে মানব নিন্দিত সেই সঙ্গে, তোমার হৃদর যে নীরস, তোমার হৃদর যে শুক্র, ভূমি যে প্রকৃত লোকামার আসাদ কিছুই পাও নাই, সেকথাও অবশ্য বলিব। আমার হৃদ-এ জগং জরামরণসক্ল, নানাবিধ বিশ্ব বিসনা, আমার মানবজীবনের ফ্রথা করাই ভগবানের অভিপ্রায়; মহাসর্কির, সবই যদি মুক্তহন্তে আমার ভালবাসা-ভাজনকৈ ঢালিয়া দিতে না পারিলাম, যদি তাহাকেই "আমার সব" বলিয়া না ভাবিলাম, যদি ভাষাইই বলিমান ভাবিলাম, যদি ভাষাইই ক্রেমান ভাষাই ক্রেমান ক্রেমান

না! তাই আমরা সহজেই বুঝিতে পারি, আ্মাদের মত হতভাগ্য মানবকে সকল তুঃথ পরিহার করিয়া অনন্ত স্থথের রাজ্যে বিচরণ করিতেই, ভগবান্ নীরব ভাষায় বলিতেছেন! এখন আমরা যদি স্বার্থ-প্রতার জন্য অথ্যা অন্য কোনও কারণে সুধ শান্তি লাভ করিতে বিমুথ হই, তাহা হইলে আমাদের অধর্ম হয়, তাহা হইলে আমুৱা নিদিত হই ৷ শোক্ষাত্না এ জগতে অসহনীয় যাতনা সত্য, রোগ দ্রি-দ্রতা প্রভৃতি অনেক রকম তুঃথের তুলনায় শোককেই শ্রেষ্ঠ আসন দিতে হয় সভা*, কিন্তু এ কথা আমাদিগের মনে করা উচিত, যে যে দয়াময় দেবতা আমাদের ভিজা কাপড় শুকাইবার জন্য রৌদ্র বাতা-সের ব্যবস্থা করিয়াছেন, সেইদ্যাময় দেব-তাই আমাদের ভীষণ যাতন। পূর্ণ শোক নিবারণের উপায় সৃষ্টি করিয়া রাখিয়াছেন! দেই ভগবংস্ট শান্তিলাতে অবংহলা করিয়া আমর৷ যদি গৃহধর্ম পরিত্যাগ করি, অব্ধবা আ্মিইত্য। স্বিন ক্রি—এই স্ব অধর্ম ও মুশংস পথে গিয়া ধদি শোকের

* রোগ দরিশ্র চা প্রভৃতি ছুর্যটনা হইতে মানৰ বছ ছুঃগ পাইলেও শোকের তুলনায় সে সকল ছুঃগের যাতনা অপেক্ষাকৃত মূছ। আসলমুত্র রোগীও উষধ সেবন করে, অননোপায় দরিলও ধনবানের ছুয়ারে ভিক্ষা করে, কেন না এমন ছুরবহারও তারাদের মনে আশার ক্ষীণ অলোক প্রতিভাত পাকে! কিন্তু শোকার্ত্তের আশা ফুরা-ইয়ছে, তারার বাঞ্জিত বাজি ইছ্জগতে ফ্রিয়া আদিবেন:! নৈরাশোর জনাই প্রধানতঃ শোক-যাতনং, এমন অসংনীয়। ধা, লো।

জালা জুড়াইতে চাহি, তাহা হইলে আমরা নিন্দিত, স্থণিত এবং মানবকুলকলক; নচেৎ শোকে কাতর হই বলিয়া আমরা কথনই নিন্দিত নহি।

অতএব প্রকৃত শান্তি কিসে পাওয়া যাইতে পারে. তাহাই অনুসন্ধান করা আমাদের এক প্রধান কর্ত্বা। যাঁহার হৃদয়ে একটুকু সহাত্মভৃতি আছে, তিনি অব্যস্ত বুঝিতে পারিতেছেন যে তরুণ শোকে শান্তির আশা বুথা। **আকাশে** যুখন দারুণ ঝড় বহিতেছে, স্মুদের জ্বল তখন শান্ত থাকিবে কি করিয়া 🤊 শোকের প্রথম আঘাতে প্রাণ যথন ভাঙিয়া পড়ি-য়াছে, তথন হৃদয়ে শান্তি টিঁকিবে কি ক্রিয়া? সে সময়ে শমতাই শোকার্ত্ত হৃদয়ের ঔষধ। শমতা শান্তির মতু স্বায়ী ভাব নহে; ক্ষণিক ৷ কিন্ধ ক্ষণিক হইলেও শ্মতায় উপকারিতা আছে; শোকের জলস্ত আত্ত^{্ৰ} শমতা হইতেই কিছুলণ চাপা পড়িয়া থাকে; পুনঃ পুনঃ শমতা প্রাপ্ত হইলে শোক-সম্ভপ্ত হাদয় অপেক্ষা-কুত সংযত ও শান্তিলাভের উপ্যোগী হইয়া থাকে। মানব ছুই উপায়ে শমতা লাভ করিয়া থাকেন। প্রথম উপায়,রোদনঃ এ কথাটি শুনিতে ভাল না লাগিলেও প্ৰকৃত পক্ষে সেতা। ভত্তিভোজন বৰিমে বাবু বলিলাছেন "যে শোকের রোদন •নাই, সে শোক ধমের দৃত" এ কথাটীর সত্যতা, শোকসম্ভপ্ত ব্যক্তিদিগের স্থানে-কেই অহভব করিয়া থাকিবেন। য**ং**ন আগ্নেয়গিরির ধাতুনিংস্রবের মত শোক-

তপ্ত স্থান্ডাদ অশ্ধারারপে বাহির ररेश भारम, उपने किছूक्पाव सना অদয় একটু অরাম পাইয়া থাকে। শমতা লাভের অপর উপার দহাসুভৃতিপ্রাপ্তি। **শোকসন্তপ্তহা**দর সহাত্ত্তির ভিখারী। সে হাদ্য জগতের অন্য কোনও জিনিস চাহে না-অন্য কোনও জিনিসে তাহার স্থ্ নাই, কেবল নীরবে একজন সহাদয় সহায়ভাবক চাহে-একজন মনের মত সহাত্মভাবক পাইলেই সে হৃদয় পরিতৃপ্ত হ্
ইয়া থাকে। যদিও সহসা বন্ধুর সহিত দাক্ষাৎ হইলে স্বনীভূত শোকরাশিও नवीकुष रहेशा छेट्ठ, यिषि कविट्यार्ट कांगिमात्र विविद्याहरून, "अञ्चनस्य हि **হঃধম**গ্রতা বিব্রতদারমিবোপজায়তে।" তথাপি আত্মীয় বা বন্ধু যখন শোকসন্তপ্ত-বৃদয়ে বৃদয়পূর্ণ সহারুভূতি ঢালিয়া **(एन, ७**थन (म ऋ एरात रान अर्द्धक যাতনা কমিয়া যায়। তাই বলিতেছি একজন ব্যথার ব্যথী পাইলে শোকার্ত্ত ছাদয় ৰছক্ষণ পৰ্য্যন্ত আরাম লাভ করিয়া থাকে; এই আরামের নামই শমত।।

আমরা পূর্কে বলিয়াছি, শমতা স্থায়ী
ভাব নহে। শমতা লাভে মানবচিত্ত
প্রকৃতিস্থ হয় না; তবে শমতা হইতেই
বাদয় অপেকাক্তত সংযত ও শান্তি লাভের
ভূপযোগী হয়। প্রকৃত শান্তি কিসে মিলে,
একণে তাহাই আমাদের অনুসন্ধানের বিষয়।

ে শোককাতর হাদয়ের শান্তির জন্য কেন্দ্র কেন্দ্র বিশ্বতিকে অর্থাৎ মৃত^{্রি} আছীয়

वा वक्रुत्क जूनिया गाउमारे छे०कृष्ठे छेभाम यत्न करत्रन । व्यामारमत्र त्वाथ इत्र, त्कान्छ শোকে কেহ কেহ বিশ্বতি হইতে শাস্তি লাভ করিলেও বিশ্বতি, শান্তির উৎকুষ্ট উপায় ক্ধনই নহে। বিশ্বতির পথে গিয়া যে শান্তি লাভ হয়, সে শান্তির নাম "শুদ্ শান্তি" বলিলেই সকত হয়; কারণ সে প্রকার শাস্তিতে স্থধের সংস্রব নাই। মানব জীবনের উদ্দেশ্য সুথ।* আমরা শোক-কাতর অদয়ের শান্তি চাহি কর্ত্তব্য পাল-নের জন্য, কর্ত্তব্যপালন করিতে চাহি স্থার জন্য ; কিন্তু মূর্য আমি, নির্কোধ আমি, বুঝিতে পারি না যে এক দিন যাহাকে প্রাণ ভরিয়া ভাল বাদিয়াছি, যাহার বিষাদ-বিন্দু ধুইয়া দিতে হৃদয়ের তপ্ত শোণিত ঢালিয়া দিতে পারিয়াছি, যাহাকে স্থা দেখিবার জন্য আমার জগৎটা উল টিয়া পারিয়াছি, আজি দেই একাস্ত ভাল-বাসা-ভাজনকে—আজি সেই পর্জগৎ-

* অগন্ত কোন্ট, মিল্ প্রভৃতি পাশ্চাত্য দার্শনিকেরা মানব জীবনের উদ্দেশ্য "উন্নতি" বলিরা নির্দেশ করিয়াছেন, কিন্তু হক্ষ বিচারে হুথকেই জীবনের উদ্দেশ্য বলিতে হয়। উন্নতি লাভের কলপ্ত তো অনির্বাচনীয় হুখ! যদিও কর্ত্তবাপালন করিতে গিরা মানবকে অনেক সমরে কঠোর আছ্ম-সংযম, ক্লেশকর ত্যাগ্যীকার প্রভৃতি বহবিধ হুংখ সহু করিতে হয়, কিন্তু কর্ত্ববাদানজনিত আছ্ম-প্রসাদপূর্ণ অসীম হুখের তুলনায়, সে সকল হুংখ নগণ্য মাত্র। প্রকৃতপক্ষে হুখ ভিন্ন মানৰ মনের গতি নাই। প্র, লে।

বাদী একান্ত ভালবাসা-ভাজনকে আমি म्प्रूर्ण ज्लाश शहत, आमात मकल স্থুখ উপভোগ করিবার যে শক্তি. ভাহা সেই মুহুর্ভেই বিলুপ্ত হইয়া যাইবে !-- এ জীবনে দে যে দিন ছিল, **শেই দিনই উষার মুথে স্বর্গীর হাসি ছিল,** চাদের বুকে অমৃত জ্যোৎস্না ছিল, বিহন্ধ-কঠে মধুর কাকলী ছিল, ফুলকুস্থমে অপুর্ব মাধুরী ছিল, যাহা যাহা প্রকৃতি चुम्मतीत व्यालीकिक मोम्मर्यात विषशी इंछ, দে সবই সে দিন জীবস্ত, অফুরস্ত ও পরি-ক্টুছিল। সেযে দিন ছিল, সেই দিনই সংসারের বন্ধন ছিল, মানবজগতে মমতা ছিল, হাদয়ও স্থা-সাধ পূর্ণ ছিল। এখন সে চলিয়া গিয়াছে, কিন্তু স্থগন্ধি ফুল শুখাইয়া গেলেও যেমন আতরের মধ্যে তাহার ফুল জীবনের অংশ রাথিয়। যায়, সেও সেইরূপ ইহজগৎ হইডে চলিয়া গিয়া—এই জালাম্য়ী স্মৃতির মধ্যে তাহার প্রীতিময় জীবনের অংশ রাথিয়া নিয়াছে। তাই এ হাদয় শাশান হইলেও প্রকৃতির দেই স্থন্দর রাজ্যের সহিত অথবা স্লেহ্ময় মানব জগতের সহিত একেবারেই সম্বন্ধ ঘুচিয়া যায় নাই। তাহাদের কোনও কাজ করি না বটে, তথাপি তাহাদের উপরে প্রাণের একটা

গভীর টান আছে, তাই তাহাদের আত্রায়ে দাঁড়াইতে চাহি। কিন্ধ যে দিন তাহাকে ভুলিতে যাইব, সেই দিনই আমাকে জগতের সহিত, মানবজাতির সহিত সকল সমদ্ধ ছাড়িতে হইবেঃ করিলেও বিশাল মানবদমাজে বাস আমাকে পদ্মপত্রের জলবিন্দুর মত সম্পূর্ণ স্বতন্ত্ৰ পদাৰ্থ হইয়া থাকিতে হইবে: কারণ তাহাকে ভুলিলেই আমাকে বিশাস-शीन, श्री जिहीन, अपराविशीन रहेरा हरेरा। এই রকম মকুভূমির মত জীবন বহিলে, এই রকম নিজের হৃদয়থানিকে জ্যামিতির বিন্দুবৎ সম্প্রদারণশৃত্য করিলে, এই রকম জীবস্ত আত্মহত্যা ঘটাইলে, আমার ধর্মাচরণের শক্তি ক্র্তি প্রাপ্ত হটবে কি না ?--সে আশা বড়ই ত্রাশা; কারণ স্থাদহের ওকাবস্থায় ভগবন্তক্তির **অসুশীলন** কখনই হ**ইতে পারে না। তাই বলি-**তেছি বিস্মৃতি শোক-শান্তির আশ্বরিক উপায়। বরং অসহনীয় যাতনাময় শোক-ভোগেও সুখ আছে, ডগাপি বিশ্বতিতে নহে। ভক্তি, প্রীতি বা স্নেহের অন্তশী-লনেই মান্ব-স্বদয়ের উন্নতি ; তাহাই মান্-বের পরম স্থা; অতএব সেই ভক্তি,প্রীতি বা স্নেহের উচ্ছেদ ঘটাইয়া—মৃত আহির জনকে ভুলিয়া গিয়া মানব (ক্রমশঃ) সুখী হইবে ?

বিবিধ তত্ত্ব সংগ্ৰহ।

অপেকা ডেভবেগে গমন করিয়া থাকে। আমেরিকা মহাদেশে বাস্পীর্যান খণ্টার সম্ভব হইলেও তাহা নিরাপত্ব নহে। কিছু

কোন কোন পক্ষী বাস্পীয় যান | পঞ্চাশ ক্রোশের হিসাবে পরিচালিত ক্ষী তদপেকা অধিক বেশে চালীৰ र्ष ।

গোলডেন ইগল নামক এক জ্বাতীয় পক্ষী আছে, তাহারা সচরাচর হুণ্টায় १০ সন্তর ক্রোশ চলে।

২। প্রাচীন মিসরবাসিগণ কোন কোন বিষয়ে এতদূর উন্নতি করিয়াছিলেন বে বর্ত্তমান কালের অতি স্থসভা জাতিগণ ভাষা পর্য্যালোচনা করিয়া স্কৃত্তিত হয়েন। মিসরের পিরামিডগুলি বে কি উপায়ে নির্মিত হইয়াছিল, তাহা নির্মাণ করিতে প্রকাপ্ত প্রকাণ্ড প্রস্তুর্থগুসকল কি কৌশলে হাজার হাজার ফুট উর্চেচ উত্তো-लन कड़ा शहेश हिल, वर्खमान काटल त विठ-ক্ষণ গৃহনিশ্বাণবিদেরা তাহা স্থির করিতে পারেন নাই। আবার মিসরীগণ যে ব্র প্রস্তুত করিতেন, তাহা এরপ মজবুৎ ষে আড়াই হাজার বৎসরের পূর্কে যে বস্ত্র প্রেক্ত হইয়াছিল, আজও তাহা জীর্ণ হয় নাই। মিসরের মমি বা সংরক্ষিত মৃত শরীরের আচ্ছাদন এরপ উজ্জল অব-স্থায় রহিয়াছে, যে তাহা আজও পরি-ধান করিতে পারা যায়।

০। অধ্যাপক বেল নামক একজন বৈজ্ঞানিক আবিদার করিয়াছেন যে
কেবল আলোকরিশার সাহায্যে বাক্য
কাবনা করা যাইতে পারে। যতদ্রে কথা
কহিলে শুনা যায়, তদপেক্ষা অধিক দ্রে
হুইটা প্রজনিত বর্জিকা রাধিয়া, হুইটা
লোক হুইটা বর্জিকার নিকট উপবিষ্ট হইয়া
কি উপারে কথা চালনা করিতে পারে,
বেল মার্কের তাহা দেখাইয়া দিয়াছেন।

৪ ইয়োরোপ ও আমে কিল্লেন

দেশে অনেকেই হোটেলে বাস করিয়া থাকেন, এই জন্য সেখানে নগরে নগরে প্রামে গ্রামে গ্রামে অসংখ্য হোটেল দেখা যায়। নগরের হোটেল গুলি অতি প্রকাণ্ড, এক একটীতে তিন বা চারি শত হইতে হাজারট পর্যান্ত প্রকাষ্ঠ দেখা যায়। হেম্বর্গ নগরের একটী নব-নির্মিত বড় হোটেল সমস্তই কাগজে প্রস্তুত করা হইয়াছে। হোটেলটী দেখিলেই কাষ্ঠ-নির্মিত বলিয়া বোধ হয়। কাগজ দগ্ধ হইনবার বিশেষ সম্ভাবনা,কিন্তু যে কাগজে এই হোটেল নির্মিত হইয়াছে, বৈজ্ঞানিক উপায়ে তাহার দাহগুণ নই করা হইয়াছে।

ে। একজন বিখ্যাত ইংরাজ বৈজ্ঞা-নিক পণ্ডিতের মত এই যে যদি বায়ুমণ্ডল সম্পূর্ণরূপে নির্মাল হইড, তাহা হইলে আমরা কিছুমাত্র আলোক প্রাপ্ত হইতাম না। বায়্মগুলে যে অগণ্য ধূলিকণার সমষ্টি আছে, তাহাতে স্থারশাি প্রতি-ফলিত হয় বলিয়াই আমরা পৃথিবীতে আলোক প্রাপ্ত হই। সূর্যোদয় ও সূর্য্যান্ত কালে আকাশের সৌলংগ্যের তারত্য্য বায়ুমণ্ডলের ধূলিকণার তারতমোর উপর নির্ভর করে। ১৮৮২ দালে আমেরিকার অতঃপাতী বোষ্টন নগরের নিকটবর্ত্তী ক্রাকোটোয়া নামক আগ্নেয়গিরিহইতে অণ্য**্পাত হয়। অতি প্রবল**বেগে দ্রব ধাতুদণাদমূহ আকাশমার্গে উপ্রিত হইয়া বায়ুমণ্ডল আঞ্জন করাতে অ্নেকদিন প্র্যান্ত তত্ত্ব স্থ্যান্তকালীন আকাণের শোভা অতীব চমৎকার হইয়াছিল।(ক্রমশঃ)

विवी करमाहे।

(७८१ मर्था २०० श्रुकांत भत्र)

এক দিন অবারোহণে গমন করিতে
করিতে ঘটনাক্রমে বিবী ক্ষেট তৎ
পৃষ্ঠদেশ হইতে পতিত হইরা আবাত
প্রাপ্ত হন। ইহাতে তাঁহাকে কিছু
দিন শ্ব্যাগত থাকিতে হর। কিন্ত দেখ
যাঁহাদিগের বিদ্যাল্রাগ ও জ্ঞানপিপাসা
প্রবল, তাঁহারা কি নিশ্চিত্ত বা অলস
থাকিতে পারেন ং কোনও মতেই নহে।
ইনি সেই অবস্থাতেও " জেনেট তন্
ক্যান্তার "নামে একথানি ক্ষুদ্র উপনাস
গ্রন্থ রচনা করেন। আপনি ক্ষেনেট
তন্ ক্যান্তার গ্রন্থের নারিকা, স্তরাং
তন ক্যান্তারের ক্ষপ বর্ণনার আত্মরুপই
বর্ণনা করিয়াছেন। যথা,

একহারা, 'গোজা, খুরপুরে, অজ বন্ধস, নীরোগশরীর, স্থক্ষর গঠন, সরল মন, তাহাতে ক্তত্তিমতার লেশ মাত্রও নাই। পুণ্য ও চরিত্রের বল ধেন পদে পদে প্রকাশ পাইতেছে। কেশ কৃষ্ণ, চক্ষু অতি স্থক্ষর, দেখিলে বোধ হয় ধেন স্ভরে নিভীকতা রহিয়াছে।

বৃক্ষাদি রোপণে ও প্রীতি ভোজনে তিনি পরম আনন্দ অন্তত্ত্ব করিতেন; গৃহে থাকিলে, লিথিতে ও পড়িতে ভাল বাসিতেন। সন্ধ্যাকালে তিনি বেমন আপনার স্বামীকে পড়িরা শুনাইতেন, সেইরপ কেহ পড়িলে, শুনিতে ভাল বাসিতেন ও নিজে বসিরা ক্লিপ্রহস্তে মোজা প্রভৃতি বুনিতেন, ক্থনও অলস থাকিতে পারিতেন না।

য় রোপ ও এশিরা ভূই খতর মহাদেশ। ভিন্ন ভিন্ন আচার ব্যবহারে ও রাজনীতিতে এই খাতত্র্য যেরূপ্ ভাবে পরিলক্ষিত

হর, এমন আর কিছুতেই হয় না। তুলনা করিয়া বলিতে হইলে বোধ হয় এডট্কু বলা যাইতে পারে ষে, প্রথমটি দ্রীসত্ত্রধান, শেষোক্তটি পুরুষস্বত্ত-প্রধান মহাদেশ। তথাপি সুসভ্য স্থাদিকত ইংরাজগণ কোনও ন্ত্ৰী জাতির সাম্য স্বীকার না ক্রিয়া তাহাদিগকে হীনাবস্থায় রাখিতে কুঠিত হন না। বিবী ফসেটের মত ভাষা নহে। তিনি বলেন সত্য সত্য গৃহই নারী কার্য্যক্ষেত্র এই ক্ষেত্র সংকীৰ্ণ হইলেও রাজনৈতিক জগৎ হ**ই**তে বিলুপ্ত হইতে দেওৱা উচিত নহে। পিড়া याजात किक्रण मात्रिय, श्वी शुक्रस्यत পরস্পরের স্বতঃসিদ্ধ কিরূপ সম্বন্ধ তৎ তৎ বিবয়ে তাঁহার জদয়ে অতি উচ্চ. ফ্রন্সর ভাব ছিল। আমাদিগের দেশে সাধা-রণে বলে যে," আহা। অমন মেরে, भए**एए** कि ना এक वीमरत्रत्र हारू ।" বলিয়াই আবার" যার বর বে" এই কথা বলিয়া সকলে মনকে প্রবোধ দেয়। বিবী ফলেট বলেন এরপ স্থলে স্ত্রী একান্ত জদয়ে স্বামীর সেবা করিয়া স্বামিভক্তির পরাকাঠা প্রদর্শন করিলেন-পরিবারের গৃহিণীর কার্য্য করিলেন, দাস দাসীর কার্যা করিলেন, রোগে নিজদেহ পাড করিয়াও শুশ্রাষা করিলেন: কিন্তু জিজ্ঞাস্য ইহাতে কি স্বামীর কর্ত্তব্যপরায়ণতা প্রকাশ পাইবে ? কন্যারত্ব এবসিধ কর্ত্তব্য পরাজ্য 💐 धनवान मानकरगवक यूवरकत्र महिछ विवाह দেওয়া অপেকা কর্তব্যপরায়ণ সচ্চরিত্র মধ্যবিত বা গরিব যুবকের সহিত বিশাহ কেওয়া কি বাপ্তানীয় নয় ?

ক্ষতিত ।

- ভূমির সার।

(७८७ मर्था। २८१ मृहीतं नत्र।)

অতি শীতল কর্দম ভূমিতে চুণ প্রয়োগ করিলে প্রবিধা হয় না। ক্রয়কের। ইহার এই কারণ অবধারণ করিয়াছেন,যে জলের ছারা ইহার অতি গুণকারক শক্তি অপজ্ঞত হয়, বারংবার চুণ প্রেয়োগের ছারা ধাড় মিশ্রিত মাটির আধিক্য হওয়াতে উভিদংশ বিনষ্ট হইয়া বায়। চুণ সক্ষিত্র করিলে গু পোড়াইলে তাহাতে কোন গুণ দর্শে মা, কেন না তাহার অন্তর্গত ভন্তবং উভিদংশ অগ্নিতে পুড়িয়া বায়।

যেখানে যেখানে যাতৃমিশ্রিত সার আবশ্যক, চ্ণ-পাথরের চ্ণ সেথানে প্র-রোগ করা যাইতে পারে, এবং ভাহাতে কল দর্লে। ভাগাড় জমিতে চ্ণ পার্থ-রের কল্পর প্রয়োগ করিলে ফল দর্শে কি না তাহা বলা যায় না।

কর্দ্ধন, আটালিয়া মাটি এবং বালুকা প্রারেগর ফল জনির অসম্পূর্ণতা বিশে-বের উপর নির্ভর করে। বালুকার উপর কর্দ্দমের প্ররোগ সর্বালা কলদায়ক, কিছু কর্দ্দমের উপর বালুকা তাহার সমান ফলদায়ক হয় না; অনেক কর্দমে অভা-বতঃ অনেক বালুকা থাকে, সকল কুবক তাহার পরিমাণ অস্থান করিতে পারে না বলিয়া আটালিয়া মাটিল্লেই কর্দম বলিয়া গ্রহণ করে, কারণ উত্তয়রূপ জনস্রাবের স্মভাব হেডু এই মাটি ভারি থাকে।

সমূদ্রের বালুকা আর এক জাতীয় সার; ইহাতে জারের লবণ (Muriate of Soda) অংশ থাকে, এবং কড়ির বালি হইলে কড়ির মাটির সঙ্গে ইহার জাতীয় সম্বন্ধ ঘটে।

ইংলও ও স্বট্লপ্তের অনেক অংশে কর্দম বড় বড় পাদা করিয়া পোড়ায়, এবং তাহার হাই সার ৰলিয়া গৃহীত ও ব্যব-হত হয়। মাটি পুড়িলে পর তাহাতে ধাতুর যে ভাংশ থাকে, ভাহার সহিত তাহার প্রকৃতি ও ৩ণ পরিবর্ডিত হয়, কারণ অগ্নির কার্য্যের ফলে মাটি চুণ হইয়া পড়ে। পোড়া মাটিতে আটা থাকে না, স্বতরাং ও ড়া হইরা যায়, এবং কোন পদার্থের ছারা পুনঃ সংলগ্ন করা शाय ना । शाय मकन माहित्वई अक्षककाछ অমু থাকে, অগ্নিযোগে তাহা পরিবর্ত্তিত হইয়া যায়, ইহার অন্তর্গত লৌহ ও কর্মম অমুজানের সহিত মিলিত হইয়া থাকে এবং কোন কোন ছলে যবকার (Nitre) উৎপাদনের সহায়ত। করে। এই অব-স্থায় ইহা লবণের সঙ্গে মিলিডে পারে। ডাক্ডার ডাকুইন কহেন, পোড়া कर्मम क्षित्र উপর ছড়াইলে ফলোৎ

পাদক হইতে পারে, কারণ ইবার আক্রজান, বাল্পাকারে বাহির না হইরা স্তবহুইরা বাহির হয়। সেই অরজান অলারক, আফ্ ন কথবা ঘবক্ষারজানের সহিত সংযুক্ত হুইলে উদ্ভিদের জীব-সম্বর্জক জব্য বোগাইতে পারে। ইহার খালে কঠিন ভূমি বিশিল ও কোনল হইরা রস শোবণ করিডে সক্ষম হইতে পারে। এই কারণে কোন স্থলে ইহ

নার দ্যবহার করিয়া কুতকার্য হইয়াছেন।
কেন্ট প্রভৃতি স্থানে মরদমার কাদা
পোড়াইরা নারক্রপে ব্যবহার করিয়া
থাকে।

কাছন ও সঙ্কোচন থেপিক কাৰ্য।
ইহার ধারা ভূমির দদ্য কোন উপকারিতা উপলব্ধি হর না, কিন্ত কোন
কোন ছলে ইহার অসামান্য কল প্রতীয়মান হইয়াছে। (ক্রেমশঃ)

वाकाला श्रवहन।

- नशामक श्रम ।
- २। यहे कर्ल महाराजन।
- ৩। যটকৰ্মধুক্তা থলু ধৰ্মপত্নী *
- ৪। ষড়রসের লবণ প্রধান।
- ে। বছরিপু জয়ী বিশ্বজয়ী।
- ৬। বঞ্জী রাগ করেন, জেলে ধরে থাবেন।
- ৭। বাটের বাছা ষ্ঠীর দাস।
- ৮। বাডের গোঁ।
- ৯। বাঁড়ের গোবর।
- ১০। বোল কড়াই **কা**গা।

म।

- ১। সকল কলে ঘলী, বাকী আছে ভীম একাদশী।
- কাব্যের্ দাসী করণের্ মন্ত্রী স্নেহেচ ভগ্নী
 ক্ষরা ধরিত্রী। কোকের্ সাতা সেবনের্ লারা
 বট কর্মবুলা বল্ ধর্মক্রী।

- ২। সকল চিল প্লালো, বেঁড়ে চিল ধরা পড়লো।
- । দকল দিন যায় হেলে কেলে,
 দক্ষ্যাবেলা বৌ কাপাস ভলে।
 - अक्न नित्तमा कीक्र भारत।
- ৫। সকল নোড়া যদি শালগ্রাম হয়ত
 হলুদ বাট্বে কিসে ?
- ৬। সকল পথ মাড়ুয়ে চলা।
- ৭। সকল পথ দৌড়াদৌড়ি, ধেয়াঘাটে গড়াগড়ি।
- ৮। সকল পাখীতে মাছ খায়, মাছরাঙার কলঙ্ক।
- ৯। সকল বাড়ীতে এক বর, তার আবার অক্ষর।
- ১০। স্কল বাঁশে বংশলোচন হয় না।
- ১)। नकल সেয়ানের এক वृक्ति 🗠
- ১२ । मकल **नियालिय এक ए**कि ।
- **३२॥। मकनि क्लांत क्रां**

১৩। সংখ্য প্রাণ গড়ের মাঠ।

১৪। সঙ্গ দোষে গ্রাম নষ্ট।

১৫। সঙ্গ দোষে কি না হয়, ছুঁচো ছুঁলে গন্ধ কয়।

১৬। সৎমার শ্রন্ধা পাস্তা ভাতে বি, মাথাচী মুড়ায়ে এস তেল পলাটী দি।

১৭। সৎসক্তে কাশীবাস,

অসৎ দঙ্গে দর্কনাশ।

১৮। দতীনারীর পতি থেন পর্কতের চূড়া, অসতীর পতি থেন ভাঙ্গা নৌকার গুঁড়া।

১৯। সতীনের বার্টীতে গু**লে খাও**য়া।

২০। সতীবাক্য রক্ষা হৈছু বিধিবাক্য নড়ে।

২১। সতী সাবিজী।

২২। সত্য কথার ডাল পালা নাই।

২৩। সতং ক্রয়াৎ প্রিয়ং ক্রয়াৎ।

২৪। সত্যের জয় সর্বাঠ ই।

২৫। সত্যের বাড়া ধর্ম **নাই,** মিখ্যার বাড়া পাপ নাই।

२०॥। मनदाउ हुँ हे हता ना,

মফম্বলে হাতী চলে।

২৬। সদানকের পোদা পা, ডাইনে আনৃতে বাঁর যা।

২৭। সত চিনেছেন কল্প।

২৮। সন্দেশের খোসা ফেলা।

২৯। সরিপাতের ভূফা।

৩০। সম্মাসী চোর নয় বোচ কায় ঘটায়। ৩১। সন্ন্যাসীর ভূষনাড়া।

৩২। সব চালে বাইশ পশুরি।

৩০। সব শরীরে ঘা,

তা ঔষধ দিবে কোথা?

৩৪। সবাইকে পারা ধার,

পায়পডাকে পারা যায় না।

७৫। मृत्व कलित मन्ता।

७७। मृत्य धन नौलम्बि।

৩৭। সবুরে মেওয়া ফলে।

৩৮। সময়ে সকলে বন্ধু,
আসময়ে কেউ নয়।

৩১। সময়ে না দেয় চাব,

তার হুঃধ বার মাস।

৪০। সমুদ্রে পাদ্যার্ঘ। ৪১। সমুদ্র শ্যা,

তার শিশিরে কি ভয় ?

৪২। সম্বন্ধোজীবনাবধি।

৪০। সরস্বতীর বর পুত্র।

৪৪। দর্বব্যভ্যাগতো গুরু:।

8¢। नर्त्ताप्तवस्तार्शिकश्चः।

८७। मर्जनार्ग मम् ९ भारत

অৰ্দ্ধং ত্যন্ততি পণ্ডিতঃ।

৪৭। সর্কাং পরবশং ছঃধং, সর্কামাত্মবশং স্থধং।

8b । मर्कमणाखरगर्हिज्र ।

৪৯। সর্বান্থের বাড়া দণ্ড নাই।

৫১। সন্তার ভিন অবস্থা।

ইং। সহরে আগুণ লাগনে,
 পীরের ঘর বাঁচে না।

গছিলে সম্পত্তি,
 না সহিলে বিপত্তি।

৫৪। সংশর্গজা দোষা গুণা ভবস্তি

ন্তন সংবাদ।

১। বরদা প্রথমেন্ট মহীশ্রের
ন্যায় বর ও কন্যার বয়স নির্দিষ্ট
করিয়া দিয়াছেন। মহীশ্রের কোন বাশক
চৌদ্দ বৎসরের পূর্কের বিবাহ করিতে
পারিবে না এবং কন্যার বয়স দশ বৎসর
হওয়া আবশ্যক; বয়দাগবর্ণমেন্ট কন্যায়
বয়স দশবৎসর নির্দিষ্ট করিয়াছেন
বটে, কিন্তু বরেরও বয়স দশ রাধিয়াছেন।

২। থিওজফিষ্ট দলের স্থাসিদ্ধ আনা বেজ্ঞান্ট ৫দিন মাত্র কলিকাভায় থাকিয়া ভাঁহার বক্তৃতায় সকলকে মোহিত করিয়া গিয়াছেন । আপনাকে হিন্দু বলিয়া পরিচয় দিতে ভাঁহার বড় আনন্দ!

৩। ওয়াসিংটন প্টেটের একটি খনিতে

এক চাই কয়লা পাওয়া গিয়াছে, তাহা ওজনে ৪১ হাজার পাউও। এত ওজনের কয়লার চাই বোধ হয় কথনও পাওয়া ষার নাই।

৪। মহারাণী স্বর্ণময়ী তমলুকের
মধ্যবাঙ্গালা বিভালয়ের সাহায়্যার্থ ১০০১
টাকা দান করিয়াছেন।

ে। জুন মাসে কেপ কলোনির

একটা ধনিতে পৃথিবীর বর্ত্তমান হীরকের

মধ্যে সর্কাপেকা বৃহৎ একথও হীরক
পাএয়া গিয়াছে। সন্তবতঃ জর্মণ সমাট

১০ লক স্থারলিঙ মুদ্রা দিয়া এই হ্রীরকধত কর করিবেন।

৬। দিকাগোতে কেবল অন্ধদিগের

জন্ত একটা পাঠাগার খোলা হইয়াছে।

পুস্তকাদি সমালোচনা।

১। প্রবাদ পৃস্তক— প্রীবারকানাথ
বস্থানীত, মৃল্য । তথাট আনা।
বাঙ্গালা প্রবচন সকলের সংগ্রহ নিভাস্ত
আবশুক, এজন্য অনেকদিন হইতে বামাবোধিনী সেই কার্ব্যে প্রবৃত্ত হইরাছেন।
ইতির্ধ্যে এভিষ্যের একপ্লানি পুস্তক
পাইরা আমরা অতিশব্ধ আনন্দিত হইলাম। ইহাতে অনেকগুলি প্রবাধ সংগ্-

হীত হইরাছে এবং কতকগুলি প্রবাদের
মর্ম স্থান্দর প্রথা ব্যাখ্যাত হইরাছে।
এ প্রক্থানি অনেক প্রয়োজনে লাগিবে।
২া ব্রহ্মগাধন—প্রীকালীনাথ দত্ত
প্রণীত, মূল্য। ১০ আনা। ইহাতে ধর্মুত্ত
পস্বদ্ধীয় কতকতলৈ স্থান প্রবন্ধ আছে।
নিগ্চ প্রেম, সাধনের অবস্থাবের, প্রক্কত
আত্মদর্শন প্রভৃতি প্রবন্ধে লেখকের ধর্ম-

শাধন সম্বন্ধে বিশেষ অভিজ্ঞতার পরি- দিগের পক্ষেউপাদের ও উপকারী হইবে চর পাওয়া যায়। পুত্তকথানি বশ্বসাধ্জ- । শন্ধেক্ নাই।

বামারচন।।

স্থ-নিকেতন।

"ৰদাতা ন নিবৰ্ত্ততে তদ্ধাম প্রমং মম।"

s

এসেছি প্রবাস-ক্ষেত্রে, নিজ নিকেতন তরে,
উপাজ্জিয়া ধন, রত্ন ফিরিয়া যাইতে ঘরে;
ধ্রুপার সময় গত হলে সন্ধ্যা সমাগত
শৃষ্ণ হাতে যাইতে হইবে কি স্থানিকতনে?
বিফল প্রবাদে আসা তবে হবে কি জীবনে?
শৃষ্ণ হাতে বাব ঘরে, লজ্জা হবে না অন্তরে
কি করিতে আসিয়াছি, কিকরে ঘাইব ফিরে?
ফার্ময়া মুহুর্জ তরে একথা ভাবনা কিরে?
কেন ভোর এত ভূল, হেরিয়া সিমুল ফুল,
বাহির চটকে তার মোহিত হইয়া আছ,
দিশাহারা উর্দ্ধানে তারি পানে ছুটিয়াছ?

>

অনল-আলোক-ছটা হেরি আনন্দিত মনে
না জানি কি স্থে প্রোণ বিসর্জে পতগগণে?
কেনরে মানব কুল, আসক্তির অন্থক্ল,
শিরার শিরার কেন মোহের বন্ধন তার ?
অসমর্থ ছইয়াও বহিছে সংসার ভার ?
অনিত্যকে দকে ল'ছে, এসেছে প্রবাদানরে
ছবু প্রিয় বিরোগেজে কেন করে হাহাকার,
কেন বহে ছুনায়নে অবিরল অন্ধার ?
প্রণ্য-অর্থ ভার নাই ধরনী প্রবাদে ভাই

আদিয়াছে পুণ্য অর্থ করিবারে উপার্জ্জন,
ভূলিয়া দে সব এবে ভ্রমিছে সে কি কারণে?
ভবের মেলার এসে যদি নিকেতন তরে
বাসনা থাকরে কিছু লইতে সম্বল করে,
দাবধান! তবে বেন মাকাল-দৌন্দর্য্য হেন
অনিত্য অসার দ্রব্য পরশ করিওনারে!
স্বর্গীয় সৌরভমাধা, নিত্য বাহা ল'ও তারে।
নাহি অনিত্যতা আঁকা, স্বর্গীয় মাধুরী মাধা,
স্বর্গীয় আলোকপুণ স্লিগ্ধতা করিছে যায়,
এমন যে 'সত্য' আগে ধরিদ করিও তায়।
শারদ চন্দ্রিকা ভায় স্থচির বাসন্ত বায়,
সৌন্দর্য্য, সৌরভ মাধা বিকচ কুস্থমচয়,
ইহার শীর্ষক 'প্রেমে' যতনে করিও ক্রয়।

૭

বালারপ-কর মাধা উষার সৌন্দর্যা ছটা,
মৃত্ল হিলোলে দোলা পাতার খ্রামল ঘটা;
নদীর স্থনীল অলে তেউ গুলি নেচে চ'লে
ভল্ল ফেন রূপ মূথে চুমিছে বেলার পায়,
সাঁডারিয়া ফিরে কড ভল্ল কল হংস চয়,
করিয়া অরুদ্ধ কর পড়ি নদী বক্ষোপর
বেজনীল,লোহিতে মিশিয়া বেই শোভাষরে,
'স্থসংয়ম' সে স্করের শোভাকে পরাস্ত করে।

উষার মধুর শোভা হইতেও মনোলোভা ধখন 'সংযম' মান্থবের হুদে বাদ করে কল্পিত বিক্রম আর কত টুকু শোভা ধরে ? হুদি তরঙ্গিনী মাঝে হুত রিপু-ঢেউ নাচে, বিলুক্তিত হয় আদি 'সংযম' বেলার পায়, সমুচিত স্যতনে চিনে কিনে লও তায়। বাজারে আদিয়া যদি নাহি মিলে মুত দধি,১ তব্ও তণ্ডুল (২)লুণ(৩)তেঁতুল(৪)লইয়া যাও, যদি নিজ নিকেজনে স্থাদিন থাকিতে চাও। শ্ভাহাতে গেলে বাসে ফিরিতে হবে প্রবাসে,৫ আবার পেটের দায় তাওকি জাননা মনে ? অগতা। উহাই লও নামিলিলে অন্য ধন।

बिक्यू मिनी तांत्र।

রাঁচীর বর্তমান অবস্থা।

রাঁটীর সমুদার স্থানে কোল জাতীয় অসভ্য লোকের বাস। কৃষিজ্ঞাত বস্তু ইহাদিগের জীবিকা নির্বাহের উপায়। ইহাদিগের আর্থিক অবস্থা স্ফুল নতে; কারণ প্রথমতঃ ইহাদিগের দেশে ভাল- রূপ কবিদাত দশায় না,ছিতীয়তঃ রাস্তার ञुविश नाहे विनिश किंदूरे सामनानि রপ্তানি হয় না। গরিব লোকের অণ্ট কিজ সর্বব্যক্র সমান বটে. इहेरले वकरमरणत नाम व रमर्थ पूर्कि-ক্ষেরপ্রবল কোপে দেশ ছারধার হয় না । বর্ত্তমান সময়ে অসভ্য জাতির অবস্থা (एथिया मटन इस (य मानदात आपिम সময়ে পাপপ্রবৃত্তি খুব কম থাকে,পরে জ্ঞান ও সভ্যতার বিস্তারের সহিত পাপের সংখ্যাও বাড়িতে ধাকে। ৰাহাইউক সভ্যন্তাতি সাধনা করিয়া যে অবস্থা লাভ করিতে পারে না, অসভ্যন্ধাতি সভাবতই তাহা লাভ করিতেছে। স্থশিক্ষিত সভ্যতা-ভিমানী বাঙ্গালিদের এতাদৃশ অন্ভা পার্বত্যদিগের নিকট অনেক শিথিবার আছে। রাজনীতিবিদের কৃটবৃদ্ধি পার্বত্য-দিগের হৃদয়ে স্থান পায় না। ব্যবহারা-ফীবদিগের কপটতা ইহাদিগের অজ্ঞাত। এমন কি ইহাদিপের সহিত বাক্য বলিলে দ্বিজ্ঞিল সভাতাভিমানী লোকদিপকে धिकात मिर्फ हैक्का हम **धैरः अ**ख्यानकात অন্ধকারের মধ্যেও সরলতা ও সভাবাদি-তার আলোকরেখা দেখিয়া তক্রপ নায় প্রকৃতিলাভের বাসনা জন্মে। यमि कश-টতা এবং মিথ্যাবাদিতা শিক্ষা সভ্যতার ্রিভ্য সঙ্গী হইয়া থাকে, তাহাইইলে সে শিক্ষা ও সভ্যতা মানবসমাজের অধু:-**देश**मित्त्रत পাতের কারণ। "পাহাল" বলে। ইহাদিগের ভূতের ভয় বেশী। ইহারা সাপ, ই হুর,ইত্যাদি ধাইয়া

⁽১) অর্থাৎ যাগ যক্ত, ব্রত দান, উপবাস, তীর্থ-পর্যটনাদি।

⁽২) সভ্য। (৩) প্রেম। (৪) সংবম।

⁽৫) ইহার ভাবার্থ এই যে পুণা কর হইলে পরমধামে স্থান হয় না, মৃতরাং পুণা কর হইলে, আবার এই পৃথিবীতে জন্মগ্রহণ করিতে হইবে। বেমন তথুল, লব্দ ও তেঁতুল থাকিলে গৃহীর জনা ধন অর্থ না থাকিলেও প্রাণে মরিতে হয় না, তেমনি সন্তা, প্রেম ও সংঘম থাকিলে পূর্ণার কর হয় না।

এই দেশের একটা স্থানে পাথর আছে, ঐ স্থানটীকে "থড়পাকনা" কছে, এ পাথরটা প্রথমে ১ ইঞ্ছিল, তার পর এখন প্রায় ১০ হাত উচ্চ হইয়াছে। এখানে ভূত প্রেড থাকে বলিয়া, লোকে প্রতি অমাবস্যায় পূজা দিয়া शिक । পাথরটী ক্রমশঃ বড হইতেছে। এদেশে যেমন উই, তেমনি সোঁপোকা। कि गार्छ किया छेठारन जराज हाँ छित्रा याहैवात या नाहै। जाविनिक त्नाँ त्ना-কায় বেষ্টিত। দেশের অবস্থা অতীব শোচ-নীয়। কিন্ধ আজকাল অনেক ইংবাজী-শিক্ষিত নব্য সভা বাঙ্গালী মহাশ্যেরা আসিয়া দেশকে গমগম করিয়া তুলিয়া ছেন। প্রায় সমস্ত বাঙ্গালীরা ইংরাজদের আচার ব্যবহার অকুকরণ করিয়াছেন ও সমরে সময়ে অনেকেই আপনাদিগকে मारक्व विनित्रा श्रीतुष्ठम पित्रा शास्त्रना কুখাদ্যাদি খাওয়া চলোয় যাক, অনেকে আরও কিছু উচ্চদরে যান। তুঃখের বিষয় মেয়ে মানুষেরা বা বাঙ্গালী বিবীরা ইংরাজীভাষা বলিতে যান, কিন্তু কথা জিহ্বায় আটকাইয়া যায়। তবু যদি अमार्थ डाल वानिका कुल कतिया तमन, তাত নয়, কেবল "বোনদেশে শিয়াল রাজা।" তাই বলি বা করিতে পারিবে না. তা করিবার দরকার নাই। কোল জাতীয় লোকেরা বলে যে সব বাবুরা আসিয়া 'আমাদের থাদ্যের মূল্য চড়াইরা দিরা-ছেন। ভদ্রলোকের ভোগিবলাসের জন্য সমুদায় কর অতিরিক্ত দরে বিক্রীত হর।

धरे कांत्रण भन्नीय लाक्त्रा, याहाता সমস্তদিন থাটিয়া হুইআনা রোজগার করে, তাহারা কেমনে আগেকার ন্যায় ঐ দকল বস্তু ভোগ করিবে ? সভামহো-দয়গণের একটুও জ্ঞান নাই যে তাহাদের দৌরাক্সে দেশটা একেবারে ছারখার হইয়া যাইতেছে। কেনইবা না হয় এখানে ত কোন সমাল সভা নাই, সেই জনাই বাবদের যথেচ্ছারিতা এত বাডিয়াছে। এদেশের লোকের মধ্যে অনেকেই ইতর-জাতীয়, কেহ কেহবা সদাগর-সময়ে বড-লোক হইয়াছে; কেহ বা চাষা, চাষবাদ করিয়া বড়লোক হইয়াছে। এনব লোকে-**(एत्र विशय किছ विनिवाद एतकाद नाहे.** কেবল ছঃধ হয় ভদ্রলোকেদের শোচনীয় অবস্থা দেথিয়া। যাহা হউক ঐ দমস্ত ভদ্র-লোকদিগকে বিনয় করিয়া বলি, যে বাজে থরচ, যাহা হইতেছে,ঐ অন্তত ধাতুনির্মিত कुप शालाकात वज्र छिनित्र किछ यमि म९-উপদেশে বায় করা হয়, তাহলেও কিঞিৎ দেশের উন্নতি হয়। এখানে বালিকা ক্ষল ভাল নাই ওবিদ্যাশিক্ষায় উত্তেজিত করি-বার লোক কেহই নাই। অনেক স্থলে পাপ-পথযাত্রী প্রবন্ধ বিলাসীর সহিত পাপীয়সী-দিগের দশ্মিলনে যাহা ঘটিতে পারে, তাহা ভালরপ ঘাটতেছে। ভাঁহাদিগকে বিশেষ করিয়া বলি অপব্যয় করিতে নিরস্ত থাকুন। এখন হইতে না তৎপর হইলে আর করিতে সময় পাইবেন না, কারণ সময় কুরাইতেছে। এথানে গুটী लाक थ्रव हमश्कातः नगामिव विनाल ষ্ঠাক্তি হয় না। ইহারা যেমন উচ্চপদন্ত, ইহাদিগের অন্তঃকরণে তেমনি সততই বিরাজমান। ই হারা প্রতি রবিবাবে গরীব লোকদিগকে অর্থ তণ্ড-वापि मान कत्रिश थारकन।

বামাবোধিনী পত্রিকা।

BAMABODHINI PATRIKA. "कन्याप्येवं पालनीया शिक्षकीयातियत्नतः।"

কন্তাকে পালন করিবেক ও যত্নের সহিত শিক্ষা দিবেক।

৩৪৯ সংখ্যা

মাঘ ১৩০০—কেব্রুয়ারী ১৮৯৪।

৫ম কল্প। ২য় ভাগ।

সাময়িক-প্রসঙ্গ।

রাজপ্রতিনিধির আবির্ভাব ও তিরোভাব—লর্ড এলগিন ২৫এ জামু-য়ারী কলিকাতায় পদার্পণ করিয়া রাজ্য-ভার গ্রহণ করিয়াছেন। লর্ড লাস্স-ডাউন ২৭এ জামুয়ারী ইংলওে যাতা করিয়াছেন। জগদীশ্বর ইহাঁদের উভ-য়েরই কল্যাণবিধান করুন।

মাঘোৎ্যব—ব্রাক্ষণমাজগত ১১ই
মাঘে ৬৪ বংশর অতিক্রম করিয়া ৬৫বংসরে উপনীত ইইয়াছে । এ বংসরও কলিকাভার তিনটা প্রধান সমাজ সনাবোহের
সহিত মহোৎসব সম্পন্ন করিয়াছেন । ব্রাক্ষসমাজের রমণীগণ বিশেষ বিশেষ দিনে
সমিজিত ইইয়া ঈশবপূজা করিয়াছেন।
তাঁহাদিগের অনেকে বালক বালিকাদিগের ীতি ও ধর্মাশিকার সাহাষ্য করিয়া
আপনাদিগের উপাঞ্জিত জ্ঞান ও ধর্মের

সার্থকতা সাধন করিতেছেন ইহা দেথিয়া আমরা অত্যন্ত সম্ভোধ লাভ করিতে**ছিঁ**।

বিশ্ববিদ্যালয়— ৩রা কেকরারি
বিশ্ববিভালয়ের (Convocation) উপাধি
বিতরণ সভায় মহা সমারোহ হইয়াছে।
নূতন বড়লাট উপভিত হইয়া উৎসাহদান
করেন এবং বাইস চান্সেলর সায় আলক্ষেড্ ক্রফ্ট স্থদীর্ঘ বঞ্জা করেন। এবার
প্রেমচাদ রায়চাদ বৃত্তিবারিনী ফুারেন্স মেরী
হলাও সর্কোচ্চ গৌরব লাভ করিয়াছেন।

আমেরিকায় বজের গৌরব—
চিকাগো মহানেলায় পৃথিবীর সকল
ধর্মের লোকের মহামণ্ডলী ধর্মাছিল।
তাহাতে যে সকল বক্তা হইয়াছিল, তন্মধ্যে আল্মধর্মপ্রচারক বারু
প্রতাপতক্ষ মজুমদারের বক্তাগুলি
সর্বোৎকৃত্ব বলিয়া প্রশংগিত হইয়াছে।

আমেরিকার লোকে প্রতাপ বাবুর প্রতি এরপ অমুরক্ত হইয়াছিল যে পরে প্রায় তুই মাদ কাল তাঁহাকে অমুরোধ করিয়া রাথিয়া নানাস্থানে বক্তৃতাদি করাইয়া-ছেন।

মাখ মেলা— ১২ বৎসরের পর এ
বৎসর প্রাগ তীর্থে এই মহা মেলা হয়।
এতত্বপলক্ষে অসংখ্য লোকের সমাগম
ইইয়াছিল। স্থাধের বিষয় রাজকর্মচারিগণের স্থব্যবস্থায় খাজীদিধের ক্রেশ হয়
নাই।

আনি বেজাণ্ট—ইনি কলিকাতা পরিত্যাগ করিয়া বহরমপুর, বাঁকীপুর, কাশী ও প্রয়াগে ভ্রমণ করিয়াছেন। কেক্রয়ারি মাদে আগ্রা, মথুরা, দিল্লী, মিরট, হরিঘার, অস্বালা, লুধিয়ানা, জলন্দর, কপ্রথালা, অমৃতসর, লাহোর ও মোরাদাবাদ ক্রমে ক্রমে দর্শন করিবেন। মার্চ্চমাদে লক্ষ্ণৌ, কানপুর, নাগপুর, পুনা, বোসাই ও স্থরাট ভ্রমণ করিয়া ইংলণ্ডে পুনর্ঘাতা করিবেন। তিনি ঘেখানে যাইতেছেন, দেইথানকার লোকেই ভাঁহার হিন্দুভাবে আরুই ও বক্তৃতায় মোহিত ইইতেছে।

দান—(১) পাটিয়ালার মহারাণী
লাহোর অনাথাশ্রমে ২০০০ টাকা দান
করিয়াছেন। (২) দ্বিতীয় রাজপৌত্রের
প্রমী শুভবিবাহকালে বে ১৬০০০ টাকা
তথোজুক পাঠাইয়াছিলেন, ভাহা বিধবাশ্রমে
শান করিয়াছেন। (৩) একজন ইংরাজ

বণিক কলিকাতা বয়দ্ স্কুলের জন্য দেড্-লক্ষ্ণ টাকা দান করিয়াছেন।

লেডী এলগিন—নৃতন রাজপ্রতি-নিধি পত্নী লেডী ডফারিণ ফণ্ডের ভার সহস্তে গ্রহণ করিয়াছেন। ইনি লেডী ডফারিণের স্থায় পরসেবায় জীবন সমর্পণ করিয়া পুণ্যবতী ও ষশস্বিনী হউন, আমা-দের সর্ব্বান্তঃকরণে এই প্রার্থনা।

শৃতি চিহ্ন-লর্ড ল্যান্সডাউনের কীর্জি শ্ররণীয় করিবার জন্ম ঢোলপুরের মহারাজা ৮০০০, য়ভবনগরের মহারাজা ৭০০০, কাশীর ও বিজিয়ানাগ্রামের মহারাজা প্রত্যেকে ৫০০০ টাকা, মহারাজা থতীক্রমোহন ২ হাজার, মহারাজা হুর্গাচরণ লাহা ১ হাজার টাকা দান করিয়াছেন। ইংরাজ বণিক্দিগের মধ্যে জার্ডিন স্কিনার ১ হাজার দিয়াছেন, আর আর সকলে কেহ ২ শত, কেহ ৫ শত দিয়াছেন; অথচ কীর্ভিস্ক রাথিবার জন্য শাহেবদের আগ্রহটাই অধিক। এ পর্যাক্ত মোট ৭০ হাজার টাকা চাঁদা সাক্ষরিত হইয়াছে।

দীর্ঘজীবী পরিবার—ইংলণ্ডের এসেক্সমায়ারের বালকন্মি নামক ছানে এক পরিবারের সকলেই দীর্ঘজীবন ভোগ করিতেছে। বাটীর কর্তার ৯৪, গৃহিণীর বয়স ৯০। ইহাদের ৮ পুত্র বর্ত্তমান, উহাদের বয়স বথাক্রমে ৭০, ৬৯, ৬৬, ৬৪, ৫০, ৫৩, ৫১, এবং ৪৯। বাটীর কর্ত্তা জ্বছাপি স্কৃতার ব্যবসা করিতেছে।

লেডী হেনরী সমারসেট্।



উনবিংশ শতাদীতে যে সকল রমণী জ্মাগ্রহণ করিয়া ইংল্ওের নারীসমাজের মুপ উজ্জ্ব করিয়াছেন,লেডী হেনরী সমার-সেট্ ভাঁহাদিগের অন্যতম। অপুত্রক আরল্ সমারসেটের ছুই কন্যার মধ্যে ইনি ইহার পিতদত্ত নাম লেডী (कार्बा। हेकारवन्। किल्छात्र नाम लिखी এएए-আরল্ সমারদেট পুত্রনির্মি-लीन। শেষে কন্তান্বয়ের লালনপালন ও স্থশিকার বন্দোবস্ত করিয়াছিলেন। লেডী এডেনীন বেডফোর্ডের ডিউকের পাণিগ্রহণ করেন। ইনি সম্প্রতি বিধবা হইয়ানেন। ইজাবেল লর্ড হেনরী দুমারদেটের পত্নী হইয়া লেডী (रुनदी नमाद्राति । এই नाम व्याख रन।

কথিত আছে, শৈশব হইতে কুমারী
ইজাবেল কিঞ্চিৎ অভিমানিনী ছিলেন।
"বড় ঘরে জন্ম, বড় লোকের কন্সা, অতএব আমি একজন বড় লোক " এইরূপ
একটা অভিমান সর্বাদা হদয়ে পোষণ
করিতেন; কিন্ত বয়:প্রাপ্তি ও স্থানকার
সঙ্গে দক্ষে ক্রমশ: এই অভিমান বিদ্রিত
ইইয়াছিল। আরল সমারসেট্ একজন ওপবান পণ্ডিত পুরুষ ছিলেন। তিনি
কার্য্যোপলক্ষে বৎসরের প্রায় অধিকাংশ
সময় স্থানান্তরে বাদ করিতেন। কিন্তু পুরী
এবং শিক্ষয়িত্রীগণের উপর কন্সাম্বয়ের
শিক্ষার ভার অর্পণ করিয়া নিশ্চিত্ত থাকি
তেন্না,মধ্যে মধ্যে তিনি সয়য় কন্যান্বরের

শিক্ষার তত্ত্বাবধান করিতেন। ইজাবেলের अननी कतानी तमनी। कामापम विनास्मत লীলাকেত বলিয়া চিত্রপ্রসিদ্ধ, স্থতরাং "মাটীর গুণে" ইহার বিলাদবাদনা কিঞিৎ वनवजी छिल । त्रीन्नर्गशालिमी म्यात्रस्र পত্নী বিলাদিনী হইলেওমাতৃগুণে বঞ্চিতা ছিলেন না। মাতার দোষ গুণ সচরাচর শস্তানে বছল পরিমাণে সংক্রামিত হইতে **দেখা যায়।** এইজন্য বোধ হয় বালিকা-বয়সে ইজাবেলের আভিজাত্যাভিমান এত প্রবল ছিল। প্রত্যেক ক্রিয়ারই একটী প্রতিক্রিয়া আছে ; ইহা প্রাক্বতিক নিয়ম। এই প্রতিক্রিয়াবশতঃ হউক অথবা স্থানি-ক্ষার গুণে হউক, কুমাগ্রী ইজাবেলের এই প্রবল আভিজাত্যাভিমান উত্তরকালে থৰ্ক হইয়াছিল, এবং তৎস্থানে বিশ্বজনীন উদারভাব অটল দিংহাদন প্রতিষ্ঠিত করিয়াছিল। তাঁথার জীবনের এইরূপ অত্ত গতি তাঁহার ভবিষ্যৎ জীবনী আলোচনা कदिल मगुक् পবিক্ষ ট হইবে।

পুর্বের্ব উক্ত ইইরাছে, লেডী ইজাবেল লর্ড হেনরী সমার সৈটের পাণিগ্রহণ
করেন। লেডী ইজাবেল যথন যৌবন
প্রাপ্ত ইইলেন, নানা স্থান ইইতে বিবাহের সম্বন্ধ আসিতে লাগিল। ইজাবেল
পুত্রহীন পিতার অতুল সম্পত্তির উত্তরাদিকারিণী ছিলেন। অনেক ধনলোলুপ
্রুবক ইহার পাণিগ্রহণের অভিপ্রায় প্রকাশ
করিলেন। কিন্ত বুদ্ধিমতী ইজাবেল এই
নীচ বাসনাকে অন্তরের সহিত ত্বাণ করি-

তেন। তিনি বিলক্ষণ জানিতেন, যাহারা **সম্পৎলাল**সায় তাঁহার পাণিগ্ৰহণাৰ্থী. সম্পদের অপগমের সঙ্গে সঙ্গেই ভাঁহা-দিগের অন্তর্ধান অবশ্রস্তাবী। এইজনা তিনি কাহারও বাসনা পূর্ণ করেন নাই। যে কয়েক জন যুবক লেডী ইজাবেলকে বিবাহ করিবার জন্য প্রস্তাব ও আগ্রহ করিয়াছিলেন, তন্মধ্যে হেনরী সমারসেট একজন। সমার সেট একজন সম্ভ্রান্ত বংশীয় যুবাপুরুষ ডিউক অব্বোফোটের মধ্যম পুত্র। ডিউকের জ্যেষ্ঠ পুত্র বর্তমান থাকিতে মধ্যম পুত্র পৈতৃক সম্পত্তির উত্তরাধিকারী হইতে পারেন না। লর্ড হেনরীর সহিত কন্যার বিবাহ দিলে, কন্যা এবং জামাতা তাঁহাদের সম্পত্তির উত্তরাধিকার লাভ করিবে এবং উভয়ে সুখে ও সচ্ছন্দে জীবনযাত্রা নির্ব্বাহ করিতে সমর্থ হইবে, এই মনে করিয়া সমারদেটপত্নী কন্যা ইজা-বেলকে লর্ড হেনরীর পাণিগ্রহণ করিতে বারম্বার অন্ধরোধ করিতে লাগিলেন। লর্ড হেনরীর পাণিএহণে কুমারী ইজা-বেলের আদে ইচ্ছাছিল না। এইজন্য তিনি দর্ব্ব প্রথামই লর্ড হেনরীর প্রার্থনা প্রভ্যাখ্যান করিয়াছিলেন। আগ্রহাতিশয় দেখিয়া কুমারী ইজাবেল অগত্যা সমতা হইলেন। ১৮৭২ খৃঃঅংকে উধাহক্রিয়া সম্পন্ন হইয়া যায়। কিন্ত ত্রভাগ্যক্রমে এই শুভপরিণয় পরিণামে অশেষ হৃঃথের আকর বলিয়া প্রতীয়মান হইয়াছিল। উভয়ের প্রকৃতিগত বৈষ-

মাই ইহার একমাত্র কারণ। দয়াও নিষ্ঠুরতা, বিরাগ ও অহুরাগ, প্রেম ও অপ্রেম, সহৃদয়তা ও হৃদয়হীনতা, কি একত্র সম্মিলিত হইতে পারে ? মানবমনের এই হুই ধর্ম তৈল ও জ্বলের ন্যায় চির-পতি মুগ্যা-কাল পৃথক থাকে। প্রিয়, নিষ্ঠুরভাবে পশুপক্ষীর প্রাণবধ করিতে কৃষ্ঠিত নন; পত্নী দ্যাময়ী, ভীবনৎদলা, জীবজন্তুর ক্লেশ দেখিলে অস্তুরে ব্যথিত হন। পতি প্রমন্ত আম্ব-तिक विषयांत्रत आंत्रक, आंश्रुश्वात्वरी, পত্নী ভদ্নিপরীত ধর্মাবলম্বিনী, এরপস্থলে পতি পত্নীর সুখের মিলন মরুভূমিতে জনাৰেষণ ব্যতীত আর কি হইতে পারে ৭''

ধর্ম্মের অনাহত হুন্দুভি আপনাপনি বাজিয়া উঠিল। লর্ড হেনরীর কলক্ষিত চরিত্রের কথা চারিদিকে প্রকাশিত হইয়া পড়িল। লর্ড হেনরী বিলাতে প্রজা সভার সভ্য ও প্রিভিকাউনসিলের সৈনিক সভ্য ছিলেন। চরিত্রহীনভাবশতঃ এই উচ্চপদ হইতে অচিরে এপ্ত হইলেন। ইনি ডিজরেলির বিশেষ প্রিয়পাত্র ছিলেন, চরিত্র অক্ষুগ্ন থাকিলে, এতদিন পালে মেণ্টের কার্যানিকাহক সভার সভা হইতে পারিতেন। চরিত্রহীনতাই ভাঁহার সকল ভবিষ্যৎ দমুন্নতির মূলে কুঠারাখাত করিল। ইনি আর স্বদেশে মুখ দেখা-हेट भादितन ना। व्यवस्था हेडाँक (मगडानी इहेश. विस्तर कीवरनत অবশিষ্টাংশ সময় অভিবাহিত করিতে

হইতেছে। ইনি জীবিত আছেন ও ফুরেন্স নগরে নির্বাসিতের ন্যায় কালাতিপাত ক্রিতেছেন।

এদিকে লেডী হেনরী স্বামীর এইরপ চরিত্রহীনত। দেখিয়া মর্মাহত হইলেন। পতি বর্ত্তমানেও বৈধব্য দাবানল তাঁহার হৃদয়কাননকে দগ্ধ করিতে লাগিল; মনে আর তেমন স্বথ নাই, প্রাণে তেমন শাস্তি নাই, হৃদয়ে তেমন আরাম নাই। কি এক নিরানন্দ, কি এক বিষাদ-কালিমা, তাঁহার মুখমগুলকে সমাচ্ছাদিত কবিল। চারিদিকে নিরাশার ছায়া, গভীর হৃদয়-কন্দরের গভীরতম স্থল হইতে নীরব কন্দনের রব শ্রুত হইল।

এই সময়ে তাঁহার পুত্র অতি শিশু। ১৮৭৪ খঃঅকে,একবিংশবর্ধ বয়ংক্রমকালে তাহার এই একমাত্র নবকুমার ভূমিষ্ঠ হয়। অভাগিনী জননী এই সম্ভানের মুখাব-লোকন করিয়া কিঞ্চিৎপরিমাণে ধৈর্যা-ধারণে সম্থা হহয়ছিলেন। এই স্ভানই তাঁহার সাস্থনার একমাত্র কারণ হইয়া-ছিল। লেডী সমারদেট এইরপে পতি-বিরহিত হইয়া স্লেহের পুত্তলী পুত্রকে বুকে করিয়া কুংখময় জীবন অতিবাহিত করিতে লাগিলেন। তিনি পুর্বের মত আর সামাজিক আমোদ প্রমোদে বোগদান কুরিতেন না। লোকসঙ্গ বিষধং বোধ হইতে লাগিল। নির্জ্জনত। তাঁহার পুকে व्यधिक প্রিয় হইয়া উঠিল বটে, किरु তাহার সুধাসাদনে বঞিতা রহিলেন। নিজ্প নতা ভগবিষ্যাদীর **ETTC9**

শাস্তি আনয়ন করে. লেডী সমারসেট সেই শান্তির সুশীতল ছায়া লাভ করিতে সমর্থা হইলেন না। কথিত আছে. বাল্যকাল হইতে লেডী সমারসেট জন ষ্ট্রার্ট মিলের গ্রন্থ অধ্যয়ন করিতে ভাল বাসিংতন। সে সময় মিলের গ্রন্থ অধ্যয়ন নারীজাতির পক্ষে অগৌরবের বিষয় ছিল। বিশেষতঃ যে দকল রমণী " স্বাধীনতাবিষয়ক মিলের প্ৰস্থাব" অধ্যয়ন করিতেন, তাঁহাদিগকে ইংলগ্রীয় সমাজে নিন্দনীয়া হইতে হইত। লেডী সমারদেট গোপনে গোপনে এই তুই থানি গ্রন্থ অধ্যয়ন করিয়াছিলেন। তাড়-নার ভয়ে, পুস্তক লইয়া বনমধ্যে প্রবেশ করিতেন, এবং তথায় লুকায়িত ভাবে উহা পাঠ করিয়া আসিতেন। এই তুই থানি গ্রন্থ অধ্যয়ন করায় তাঁহার আভি-জাত্যাভিমান থৰ্ক হহয়া যায় এবং জদয়ের যে কিছু অনুদার ভাব, তাহা অপসারিত হয়। এই সময়ে আমেরিকার ক্রীতদাস ব্যবসায় লইয়া ইউরোপে তুমুল আন্দো-লন চলিতেছিল।লেডী সমারদেট কৌমার হইতে দাসত প্রথাকে অভরের সহিত ম্বণা করিতেন। এই সময়ে ইংলণ্ডের অধিকাংশ ক্ষমতাশালী ব্যক্তি দাস ব্যব-সায়ের প্রশ্রের দিয়া আসিতেছিলেন। অধিবাসিগণ প্রদেশের ব্যবসার বিরুদ্ধে ভীষণ সংগ্রাম আরম্ভ ক্রিয়াছিলেন। লেডী সমাবসেট উত্তর প্রদেশবা**লিগণে**র বিজয় কাম্যা করিতেন। তখন **ইছীর বয়স** একাদশ বর্ষ মাত্র।

वानिका वराम भित्नत श्रम भार्र कतिया একদিকে ষেমন তাঁহার মনে স্বাধীন ভাব ও সাধীন চিন্তা জাগ্রত হইয়াছিল, অন্য দিকে তাঁহার তদানীস্তন ধর্ম্মবিশ্বাস ক্ষীণবল হইয়া গিয়াছিল। নানাপ্রকার সংশয় আদিয়া ভাঁহার কোমল মনকে বিক্ষোভিত করিয়া তুলিয়াছিল। তদ্যতীত ষ্ট্রস্, রেনান প্রভৃতি দার্শনিকগণের গ্রন্থাদি পাঠ করিয়া তাঁহার খ্রীষ্ট ধর্ম্মে বিশ্বাস সম্পূর্ণরূপে তিরোহিত হইয়া যায়। খ্রীষ্ট বলিয়া এমন কেহ ছিলেন, একথা তিনি বিখাস করিতেন না। এমন কি, যাহা **অপেক্ষা আ**র তুভার্গ্য হইতে পারে না, সেই সভ্যসনাতন প্রমেশ্বরের অস্তিত্ব সম্বাদ্ধে তাঁহার মন সন্দেহ দোলায় আন্দো-লিত হইতেছিল। যথন বিশ্বাদের স্থানে দংশয় ও নাস্তিকতা আদিয়া সিংহাসন প্রতিষ্ঠিত করিল, দেই সময় হইতে ভাঁহার মনের শাস্তি তিরোহিত হইতে লাগিল। তিনি শান্তিহারা হইয়া চারিদিক অন্ধ-কারময় দেখিতে লাগিলেন। স্থানাশ হইতে সুখচন্দ্রমা অস্তমিত হইল, অশাস্তির ঘনঘোরা অমারজনী দেখা দিল, তিনি চারিদিক অন্ধকার দেখিতে লাগিলেন। এইজন্য নির্জ্জনতাও তাঁহার মনে স্থ্যদানে সমর্থ হয় নাই।

এই সময়ে তাঁহার কনিষ্ঠা ভগিনীর উদ্বাহক্রিয়া সম্পন্ন হয়। বিবাহের পর লেডী এডিলিন পিতৃগৃহ পরিত্যাগ করিয়া পতিগৃহে গমন করেন। এদিকে কিছু-দিন পরে তাঁহার পিতার স্বাস্থ্যভক্ষ হয়।

স্বাস্থ্য লাভের জন্য তিনি পুনঃ পুনঃ গৃহ ত্যাগ করিয়া স্থানাস্তরে যাইতে লাগিলেন। স্থতরাং পৈতৃক বিষয় সংরক্ষণের ভার লেডী সমারসেটের উপর পড়িল। তিনি যুদ্ধের সহিত পিতার বিষয়ের তত্তাবধান করিতে মনোধোগিনী হইলেন। লেডী मभातरमधे देहेनत कारमल तिरगषे अममर्ग টাউন প্রভৃতি পিতার বিপুল বিভবের অধীশ্বী হইলেন। যতক্ষণ একমার বৈষয়িক ব্যাপারে অভিনিবিষ্ট থাকিতেন. মনের বেদনা কথঞ্চিৎ উপশ্মিত হইত বটে, কিন্ধু অবসরকালে তাঁহার মনের আবি আবার দ্বিগুণ প্রেক্সলিত হইয়া উঠিত-এ ত্যানল কিছুতেই নির্ম্বাণ প্রাপ্ত इहेन ना। जिन दिशारि अविधि कुप গৃহ নির্মাণ করাইলেন। এই গৃহকে তিনি "কুটীর" নাম প্রদান করিলেন। রিগেটের জনশূন্য প্রান্তরে ডিনি অধি-কাংশ সময় অধ্যয়ন ও আত্মচিস্তায় লিপ্ত তিনি বিগেট থাকিতেন। একদিন উত্থানে এক বৃহৎ বৃক্ষতলে উপবিষ্ট আছেন, হঠাৎ তাঁহার মনে এই এক প্রশ্নের উদয় হইল, ''ঈশ্বর কি আছেন ? যদি তিনি নাই, আমি ভোগা হইতে আসিলাম ৷ যদি তিনি থাকেন, তবে আমি কি ? এবং এই জীবনলাভ করিয়া কি করিতেছি ৽'' সেই বুক্ষতলে বসিয়া এইরপ গাঢ চিস্তায় মগ এমন সময় কে যেন কোথা হইতে বলিয়া উঠিল, "আমি আছি, এই বিশাস কার্য্য কর, জানিতে

পারিবে আমি নিশ্যুই আছি।" লেডী সমারসেট চকিত হইয়া চারিদিক নিরীক্ষণ করিলেন, দেখিলেন কেই কাছে নাই. কোথা হইতে এই কণ্ঠমর প্রত হইল। 'আমি আছি এই বিশ্বাস করিয়া কার্য্য কর, জানিতে পারিবে, আমি নিশ্চয়ই আছি।" এই কথা তিনি বার-মনোমধ্যে আন্দোলন তিনি এইস্থান লাগিলেন। তৎপরে হইতে গাত্রোখান করিলেন এবং উত্থা-নের চারিদিকে পাদচারণা করিতে লাগি-দেখিলেন দশদিকে প্রকৃতির প্রসন্নমূর্ত্ত অপূর্ব্ব দৌন্দর্য্যের ভাণ্ডার খুনিয়া বিরাজ করিতেছে, মৃত্মশ সমীরণ প্রক্-টিত গোলাপের স্থগন্ধ বহন করিয়া ভাঁহার প্রাণে কি যেন এক স্থশীতল শান্তি আন-য়ন করিতেছে ! কিয়ৎকাল পূর্বে তাঁহার মুখমওল বিষাদ কালিমায় আচ্ছন্ন ছিল, এখন তাহা প্রসন্নভাব ধারণ করিয়াছে। সেই আশাসবাণীতে আশ্বন্ত হইয়া গ্ৰহে প্রত্যাগমন করিলেন! যে ধর্মগ্রন্থ বছ-কাল হইতে অধ্যয়নে বিরত ছিলেন, তাহা তিনি অন্বেষণ করিয়া বাহির করি-তন্মধাহইতে সেই রাত্রিতে "দেউজন লিখিত স্থামাচার" তিনি গাঢ় অভিনিবেশের সহিত পাঠ করিতে প্রবুত্ত ट्रेलन। यज्दे भार्र कतिए नागिलन, ততই সেই আশার বাণীর সত্যতা তাঁহার প্রাণে বন্ধমূল হইতে লাগিল। রাত্রিতেই তিনি সংকল্প করিলেন, 'ব্রুম্ভ হইতে আমি ঐ আশার বাণী শিরোধার্ব্য

ক্ষিয়া কার্য্য করিব। আমি বিখাস করি, তিনি যথাসময়ে আমার নিকট প্রকাশিত হইবেন।'

প্রদিন প্রাতঃকালে তিনি স্মাগত वक्रवीक्षवंश्रीतक विलालन, खाउः भन्न खामि আর কোন প্রকার সামাজিক ব্যাপারে মিশিব না। বন্ধগণ তাঁহার কথা ভনিয়া বিশ্বিত হইলেন। हेष्टेनत आमारम अजानमन कतिरलन। এই প্রাদাদ ম্যালবারন পর্বতের পাদ দেখে অবস্থিত। সৌন্দর্য্যে ইহাকে অপারা-পूरी विनिद्य अञ्चाकि इर मा । अविभान তক্করাজি ভেদ করিয়া এই অভভেদী ইষ্টনর প্রাদাদ পর্কতের ন্যায় দণ্ডায়মান। নিকটে একটা মনোরম হ্রদ: পর্বতের পাদমূলে অবস্থিত হওয়ায় ঐ স্থানের সাভাবিক স্থ্যমা শতগুণ বৰ্দ্ধিত হইয়াছে। এই স্থানে লেডী সমারসেট একখানি পুস্তক লইয়া কালহরণ করিতে লাগি-লেন। ধর্মগ্রন্থ অধ্যয়ন এবং পুত্রের অধ্যাপনাতে অধিকাংশ সময় অতিবাহিত হইতে লাগিল। কোন্কার্য্য সাধনের জন্য ভগবান্ তাঁহাকে আহ্বান করিয়া-ছেন, যতদিন এ বিষয়ে ভাঁহার প্রত্যাদেশ না পাইলেন, ততদিন ধৈর্য্যের সহিত অপেকা করিতে লাগিলেম এবং আপ-নাকে তাঁহার কার্য্যের জন্য ক্রমশঃ উপযুক্ত করিতে যত্নবতী হইলেন। তিনি ভार्वित्वन जाननाक नर्सवा देशदात অমুগত করা, এবং তাঁহার আংদেশ শিরো-ধার্ব্য করিয়া চলা আমার সর্বপ্রথম এবং

नर्मश्रमान कर्खना । देश्वाकी एक धकछि প্রবাদ আছে, "Charity begins at home." (नाडी मगांतरमा एमिस्सन, ভগবান্ অ্যাচিতভাবে আমাকে এই যে পুত্ররত্নদান করিয়াছেন, ইহার যথোচিত লালন পালন ও সংশিক্ষাবিধান এবং আমার পরিচারক ও প্রজামণ্ডলীর হিত-দাধন করাই আমার দ্বিতীয় কর্ত্তব্য। এই কর্দ্ধব্য সাধনে তিনি যত্নবতী হইলেন। তিনি দেখিলেন, আপন প্রজামগুলীর মধ্যে অনেকেই অতিহীনভাবে জীবন যাপন করিতেছে। ছঃখ দারিদ্যের পেষণে কত নিঃস্ব নরনারী আর্ত্তনাদ করিতেছে। এই এক বিশাল কার্য্যক্ষেত্র তাঁহার জন্য উন্মুক্ত রহিয়াছে। তিনি অতুল সম্পদের অধিকারিণী **७३ मकल** मीन पूःशीत **তঃ**থমোচন করিবার জন্য মুক্তহস্তে অর্থদান করিতে লাগিলেন। কিন্তু তিনি (मिथितिन, युष्टे मान कहा याहे (एए). কিছুতেই ভাহাদিগের অবস্থা উন্নত হই-তেছে না, যে ছঃথ দারিদ্রা, যে হাহাকার, তাহাই রহিয়া যাইতেছে। ইহার কারণ কি? ইহা জানিবার জন্য তিনি তাহাদের সঙ্গে নিশিতে লাগিলেন এবং অনুসন্ধানে জানিলেন,তাহাদিগের এই হুর্গতির কারণ -স্থরাপান এবং অমিতাচার। তিনি দান করিতেছেন, তাহারা অর্থ লইয়া স্বচ্ছনেদ স্থ্রাপান করিতেছে। তাঁহার দান আর ভুমো মৃতাছতি উভয়ই সমান। তিনি দেখিলেন ইহাদিগের চরিত্তের मूल (र এक महा लाव अञ्चाविष्ठे. इहे-

য়াছে, তাহা সমূলে উৎপাটন করিতে না পারিলে কিছতেই কিছু হইবে না। তাঁহার পরিচারক ও প্রজামগুলীর মধ্যে মদ্যপান এমনই প্রবল ছিল যে, ভাঁহার নিজের একটা পোষা শুকপক্ষী "Pop! take a glass of sherry, take another glass" অর্থাৎ পপ ! এক মাস শেরি খাও, আরও এক গ্লাদ খাও" এই-রূপ বুলি ধরিয়াছিল।

তিনি শ্বির করিলেন, এই সকল হজভাগ্যদিগের অবস্থা উন্নত করিতে হটলে দর্বপ্রথমে ইহাদিগের চরিত্র গঠন করা প্রয়োজন। এইজন্য তিনি এক দিন এক স্কুলগৃহে পরিচারকবর্গ ও

প্রজামওলীকে আহ্বান করিয়া "সুরা-পানের অপকারিভা" বিষয়ে ১৫ মিনিট কাল বক্তৃতা করেন এবং বক্তৃতা শেষ হইলে, ''আর কখনও সুরাপান করিব না" এই মর্শ্বের একথানি প্রতিজ্ঞা পরে দর্কপ্রথমে আপনার নাম স্বাক্ষর করেন। উপস্থিত শ্রোভূগণের মধ্যে অনেকে তাঁহার দৃষ্টান্তের অনুসরণ করিল এবং সেই দিন হইতে সুরাপান পরিত্যাগ করিল। এইরূপে তাঁহার গ্রামে সর্বপ্রথমে এক সুরাপান নিবারিণী পভা দংস্থাপিত হইল এবং সুরাপানের বিরুদ্ধে বিশ্বব্যাপী ভূমূল আন্দোলনের স্ত্রপাত হইল।

(ক্রমশঃ)

সৃষ্টি প্রক্রিয়ার রহস্ম।

অতি প্রাচীন কালে আর্য্যগপ ভূগোল বিষয়ে কতদর অভিজ্ঞতা লাভ করিয়া-ছিলেন, তাহা এক্ষণে নির্ণয় করা তুঃসাধ্য। অতি প্রাচীন কালের গ্রন্থের মনুসংহিতা ও অষ্টাদশ পুরাণে ভূর্তান্তের যাহা কিছু আভাদ প্রাপ্ত হওয়া যায়, তদ্যারা এ বিষয়ে সম্যক্ কৃতকার্যাতালাভ অতীব তুরহ। মুরুসংহিতার সৃষ্টিশর্ণনা ম্বলে ভূমগুলের যে বিবরণ প্রাপ্ত হওয়া যায়, তাহার মধ্যে রূপকের বিলক্ষণ সম্ভাব न्नहेरे मुटे रुव, এবং পুরাণ সকলের মধ্যে অত্যক্তির বিশেষ প্রাতুর্ভাব শক্ষিত হয়, স্তরাং সে সকল হইতে প্রকৃত বিবরের

নির্দারণ একাস্ত অসম্ভব। মধ্যকালেরও ভূগোল দংকান্ত হুই এক থানি গ্ৰন্থ অদ্যাপি প্রাপ্ত হওয়া যায়। ১ম, "विक्रम • প্রতিদেশব্যবস্থা," ইহার বয়:ক্রম প্রায় দেড সহস্র বংসর। এই গ্রন্থথানি আবার ইংরাজী দশ শতাদীতে বিখ্যাত ভোজ নূপ-তির উত্তরাধিকারী রাজা মঞ্জর্ত্ত ক সংস্কৃত হইয়া "মঞ্জ প্রতিদেশ ব্যবস্থা" নামে ध्यकाभिত इया धारे उख्य मः कत्रवर এখনও গুলুরাটে প্রাপ্ত হওয়া যায়, কিছু जुल्लाभा । २४, "देश**ाका •** বঙ্গদেশে ত্র থানি বৌদ্ধদিগের ছারাণ প্রকাশিত হয়। ৩য়, "কেত্র দর্শন।"

এথানি জৈন মতাবলখীদিগের গ্রন্থ। এই রূপ আরও তুই এক খানি ভূগোল গ্রন্থ প্রাপ্ত হওয়া যায়, কিন্তু বঙ্গদেশে তুপ্রাপ্য হইয়াছে।

व्यार्गामित्रात्र मत्था (श्रीतानित्कत्र) ও জ্যোতির্বিদের ভিন্ন ভিন্ন প্রকারে ভূমগুলের আকার ও বিভাগ নির্ণয় করিয়াছেন। এই উভয় প্রকারেরই মানচিত্রাদি বিদ্যমান ছিল, এবং এক্ষণেও দৃষ্টিগোচর হয়। কাপ্তেন উইল্ফোর্ড সাহেব নেপালের একথানি মানচিত্র সন্দর্শন করিয়া এইরূপ লিথিয়াছেন,— ''মানচিত্রখানি দীর্ঘে ৪ ফুট, প্রাস্থে ২॥ ফুট, পেষ্টবোর্ডের উপর অন্ধিত। পর্ব্বত-শ্রেণী পেষ্টবোর্ডের উপরিভাগ হইতে এক ইঞ্ উচ্চ করিয়া গঠিত। বুক্ষ স্কল **চতুर्कित्क** तक्षिত जवः वच्च मकन लाहि छ রেথায় ও নদী সকল নীলরেখায় চিত্রিত। বিবিধ শৈলভোণী তন্মধ্যন্থ সংকীৰ্ণ পথ সকলের সহিত স্থম্পষ্টরূপে গঠিত ও রঞ্জিত এবং নেপালের উপত্যকা ভূমিও স্কররপে চিত্রিত হইয়াছিল। ইত্যাদি।

উপরে কথিত হইয়াছে, পৌরাণিকেরাও জ্যোতির্বিদেরা ভিন্ন ভিন্ন প্রকারে
পৃথিবীর আকার ও বিভাগ নির্ণয় করিয়াছেন। অতএব এক্ষণে ভূমগুল সম্বন্ধে ঐ
দ্বিধি মত বর্ণন করিয়া তন্ত্বদ্ বিষয়ের
ক্রিঞ্চিৎ আলোচনা করা ষাইতেছে।
ভাতি প্রাচীনকাল হইতেই পৌরাণিক মত
প্রচলিত আছে। পৌরাণিকেরা বলেন
ভূমগুল জলবেষ্টিত দ্রাব পৃষ্ঠের ভান্ন

এবং জ্যোতির্ব্বিদেরা বলেন পৃথিবী
গোলাকার। বাধ হয়, পৌরাণিকেরা
নূতন ভূখণ্ডের (আমেরিকার) অন্তিম্ব
পূর্ব্বে অবগত ছিলেন না, তাঁহারা প্রাচীন
ভূখণ্ডেরই (আসিয়া, ইউরোপ ও
আফ্রিকা) কতক বিষয় অবগত ছিলেন,
স্থতরাং সেই ভূভাগকেই সমুদায় ভূমণ্ডল
জ্ঞান করিয়া বর্ণন করিয়া গিয়াছেন।
কিন্তু জ্যোতির্বিদেরা অবনীর গোলছ
নির্ণর করিয়া ভাহার নিয়ার্কের বিবরণ
কেবল কয়না বলে সক্কলন করিয়া লইয়াছিলেন। অতএব পৌরাণিক মত, কল্লিড
জ্যোতিষী মন্ত অপেক্ষা শ্রেষ্ঠরপে গণ্য
হইয়াছে।

বিষ্ণুরাণের মতে সাগর পরিবেষ্টিত পৃথিবী লোকালোক নামক পর্ব্বতপ্রেণীদারা বেষ্টিত হইয়া রহিয়াছে। মুসলমানেরা এই পর্ব্বতকে ''কাক্" ও প্রাচীন
ইউরোপীয়েরা "আটলাদ" কহে। মিছদী
ও অফাল্য প্রাচীন জাতিরা পৃথিবীকে
দমতল বলিয়া নিশ্চিন্ত হইয়াছিলেন।
এ সিদ্ধান্তটীকে অনৈস্তিক বলা যাইতে
পারে না, কারণ জ্যোতিষশাল্পের আলোচনা ব্যতিরেকে, বোধ হয়, পৃথিবীর
গোলত্ব সপ্রমাণ করিবার উপায় আবিদৃত হইতে পারিত না।

পৌরাণিকেরা বলেন, সরাব পৃষ্ঠা-কার এই পৃথিবীর ঠিক মধ্যন্থলে স্থমেরু পর্বত স্থাপিত। ইহার আকার পদ্ধ-কর্ণিকার স্থার। ইহার মূল হইতে ইহার উপরিজ্ঞানের পরিসর বিগুণ এবং উচ্চ- তার পরিমাণ পঞ্চত্ত। ক্লীয়াছ্দ্ও পৃথিন বীর আকার উপ্টান কর্ণিকার (Coue) স্বরূপ বিবেচনা করিতেন। পাশ্চাত্য পণ্ডিত লিউশিপদ্ভ এই প্রকার ভাব ব্যক্ত করিয়াছিলেন।

পৌরাণিকদিগের মতে পৃথিবীর আকার একটা পদ্ধের মত। ইহার ম্ধ্যক্ষল ক্ষেক অথবা বিষণুর নাভি विनया छेक चाहि। এই ভূ-পদ্মর চারিটী পাপড়ী, অবনীর পুর্ব্ব, পশ্চিম উত্তর ও দক্ষিণ মহাথও নামে খ্যাত; অৰ্থাৎ প্ৰথম কুফুবৰ্ষ, দ্বিতীয় কেতুমল বর্ষ, তৃতীয় ভারতবর্ষ, ও চতুর্থ ভদ্রাশ্ব-এবং ইহার পত্তুলি দ্বীপ— বলিয়া খ্যাত। এই দদ্বীপা পৃথিবী জলে নৌকার ন্যায় ভাগিতেছে। কাল ডিয়া-নেরা পৃথিবীকে তরণীর ন্যায় বলিয়া সিদ্ধান্ত করিয়াছিল, এবং প্রাচীন আর্য্যগণ অর্ধ্যেতে ইহার সাদৃশ্য স্বীকার করিয়াছি-লেন। অর্ঘ্যের উন্নত প্রদেশ "অর্ঘ্যনাথ" বা ''ঈ'ংর" বনিয়া উক্ত হয়। পাঠিকা-গণ এই স্থলে আরগোনটীক্ ব্যাপার (Argonautic Expedition)ম্মরণ করিয়া (मध्न। मिमत्रवामीत्रा काँशालत्र व्यथान দেবতা ''অশিরিশ্কে'' আরপোর সেনা-পতি বলিয়া কীর্ত্তন করিতেন, তাঁহাকে বছলোকবাহী এক নৌকারোহী পুরুষের আকারে গঠন করিয়াছেন। এইকণে মিসর দেশীয় "ক্সারগোনট" ও আমাদিগের "অর্ঘ্যনাথ" এই হুয়ে কোন সম্বন্ধ আছে কিন। বিবেচনা করুন্।

ফলভ: ঋতি প্রাচীনকাল হইতে এই চুই জাভি যে নৈকটা সম্বন্ধে আবন্ধ ছিল,ইহা তাহার অন্যতম প্রমাণ। আর্য্যেরা প্রাতঃ-স্থা সমুধীন হইয়া সমুথস্থ দিক্কে পর বা পূর্ব্ব,পশ্চান্তাগম্থ দিক্কে অপর বা পশ্চিম, অবন্য হুই দিক্কে দক্ষিণও বাম বা উত্তর विनिशं निर्दम् करत्न। (वीरकता शृथि-বীর পাশ্চাত্য ভাগকে অপরিকা বলিয়া নির্দ্ধেশ করিতেন। সিংহলবাসিগণ উত্তর দিক্কে উত্তুর কুরু বলিয়া থাকেন। বায়ু পুরাণে পৃথিবীর পূর্ব্বাংশকে পূর্ব্ব দ্বীপ এবং অক্ষশ্নদী অপর গণ্ডিকা অর্থাৎ পশ্চিম গণ্ডিকা বলিয়া উল্লিখিত আছে। ইহাহইতে সিদ্ধান্ত করা হইয়াছে যে পৃথিবীর পশ্চিমাংশকে অপর দীপও বলা হইত। আবার অপরেয়ম্এবং অপরেয় অপর হইতেই উৎপন্ন হইয়াছে। আইবিরিয়া ইউরে!পের পশ্চিমাংশের প্রাচীন নাম। বোধ হয় ইহা ঐ অপরেয়ম বা অপরেয় শব্দের অপভংশ। মহাক্বি হোমারও হাইপিরিয়া বা অপর শব্দ ঐ ভাবেই ব্যবহার করিয়াছেন। পুরাকা**লে** ইউরোপ ও আফ্রিকা ভূমগুলের হুই প্রধানাংশের অন্যতর অংশ বলিয়া যে বিদিত ছিল, বিজ্ঞ জন মাত্রেই বোধ হয় তাহা অবগত আছেন।

দৃশ্যমান ঈশরবিরচিত এই জগন্মওলকে পণ্ডিতেরাও এক একবার স্বস্থ বৃদ্ধি
অকুদারে রচনা করিয়া থাকেন। এই
রোগ সকল দেশের লোকেরই আছে।
এইজ্পে সেই পৃথিবীর আকার, প্রকার,

সংস্থান, উৎপত্তি, স্থিতি, ও লয় প্রভৃতির সম্বন্ধে আর্য্য দার্শনিকগণের মধ্যে কে কিরূপ বলেন, তাহা প্রকটন করিতে শ্রম্মন্ত হইলাম।

সাংখ্য, পাতঞ্জল ও বেদাস্থ বলেন, ঈশ্বরুষ্ট ভূত পঞ্চকের মধ্যে পৃথিবী দর্শ শোষোৎপদ্ধ ভূত। আর্ধ্যেরা মূল পদার্থকে "ভূত" নামে ব্যবহার করিয়া থাকেন। 'ভবতি অক্ষাৎ' যাহা হইতে হয়, তাহারই নাম ভূত। কিন্ত ঘট, পট, গৃহ, কুড়্যাদি জৈবিক কার্য্যের

উপাদান ভূত নহে। এই প্রকাণ্ড বিশ্ব
বন্ধাণ্ডের উপাদান যে যে বস্তু, তাহারাই
প্রকৃতরূপে ভূত শব্দে প্রকৃত বাচ্য।
আর্য্যদিগের মতে পাঁচটীর অভিরিক্ত
ভূত নাই। পাঁচটী মাত্র ভূতের সংযোগ
বিয়োপ ন্যুনাধিক ভাবে সংহত অসংহত
হইরা ঈদৃশ প্রকাণ্ড বিথের উৎপত্তির
কারণ হইরাছে। প্রথমতঃ আকাশ,
তৎপরে বায়ু, অনস্তর বহিন, বহিন হইতে
জল, জল হইতে পৃথিবী উৎপন্ন হইয়াছে।

(ক্রমশঃ)

श्रुनि वा भक्तविक्जान।

কিছুদিন পূর্ব্বে পাঠিকাগণকে বারি বিজ্ঞান সম্বন্ধে কয়েকটা উপদেশ প্রদত্ত হইয়াছে, এক্ষণে শব্দ-বিজ্ঞান বিষয়ে কিছু বলা যাইডেছে।

"কদম্ব কোরক ন্যায়াছৎপত্তিঃ কস্য-চিম্মতে। বীচি তরঙ্গন্যায়েন তহৎপত্তিস্থ কীর্ত্তিতা।।

মীমাংসা ও পাণিনিদর্শনের মতে
শক্ত নিত্য। সেই নিত্য শক্তের নাম
ক্রোট। আঘাতাদি ঘারা শক্ত ব্যক্ত
হয়। ঘট এই শক্তের ক্রোট নিত্য।
কিন্ত মুখ ঘারা প্রথমে ঘকার, তৎপরে
ফ্রার, তৎপরে টকার এবং তৎপরে
অকার উচ্চারিত হইয়া সেই ক্রোটের
ব্যঞ্জন মাত্র হইয়া থাকে। যেরপ বায়্
সর্বার বর্ত্তমান থাকিলেও তালবুত্ত

সঞ্চালনাদি ছারা তাহা প্রকাশ পায়, সেই রূপ আঘাতাদি ছারা ক্ষোটের প্রকাশ মাত্র হয়।

নৈয়ায়িকের মতে শক অনিত্য। ইহা
আকাশের বিশেষ গুণ। আঘাতাদি
ঘারা ইহার উৎপত্তি হয়। কোন কোন
নৈয়ায়িকের মতে যেরপ কদম্বগোলকের
দকল দিকেই পাপড়ী হইয়া থাকে,
সেইরপ আঘাতোৎপদ্দ প্রথম শক হইতে
দকল দিকেই পৃথক্ পৃথক্ শক দকল
উৎপদ্দ হয়। আবার ঐ দকল শক্তের
প্রত্যেকের দকল দিকে পৃথক্ পৃথক্ শক
দকল উৎপদ্দ হইয়া থাকে। এইরপ
ক্রমে প্রায়ারিত হইয়া কর্ণক্ররে শক
উৎপদ্দ হইলেই উহার জ্ঞান হয়। নৈয়া
য়িকদিগের মতান্তরে প্রথম উৎপদ্দ শক

বেষ্টন করিয়া জলের তরক্ষের ন্যায় একটী শব্দ উৎপত্ন হয়। সেই শব্দের অব্যবহিত পরেই আর একটী তরঙ্গাকার শব্দ উৎ-পত্ম হয়। এইরপে ক্রমে প্রসারিত হইয়া কর্ণকুহরে প্রবিষ্ট হইলেই ঐ শব্দের জ্ঞান হয়।

এই শেষোক্ত মতটির দহিত ইউরো-পীয় শন্ধবিজ্ঞানবিৎ পণ্ডিতদিগের মতের ঐক্য দেখা শায়। তাঁহাদিগের মতেও বায় এবং বীচিতরঙ্গাকারে তরল পদার্থে শব্দের প্রসারণ হইয়া ইহা বোধহয় এক্লণে আর কাহারও অবিদিত নাই, যে ভূমণ্ডল চতুৰ্দিকে সমুদ্ৰ তল হইতে উৰ্দ্ধে প্ৰায় ৫০ মাইল পর্যন্ত বায়ুছারা পরিব্যাপ্ত। যেরূপ মীন কচ্ছপাদি জলের মধ্যে পরিভ্রমণ করে, সেইরূপ মহুষ্য, পশু, পক্ষীপ্রভৃতি সমস্ত ভূচর ও খেচর জীব এই বায়ু রাশির মধ্যে পরিভ্রমণ করিতেছে। আমাদিগের চতুৰ্দিকে যে যে স্থান শৃত্য বলিয়। ৰোধ হইতেছে, সে সমস্তই ৰায়্তে পরিপূর্ণ। জগতে যাবতীয় বস্ত আছে, স্মস্তই গ্ৰজা-তীয় প্রমাণু পুঞ্জের সন্মিলনে উৎপন্ন रुप्त। প्रतमापू रेखियुणाय नरह। किक ষ্থন শত শত প্রমাণু একতা সংঘটিত হয়, তখন ইন্দির্গ্রাফ হইভে পারে। ষদি কোন বস্তকে ক্রমাগত ভাগ করা ষায়, এবং শেষে উহার এরপ সৃষ্ম ভাগ

পাঞ্রা যায় যে তাহা আর ভাগ হইতে পারে না, তবে ঐ স্ক্রাংশই সেই বস্তর প্রমাণু। একটা বালুকাতে শত শত প্রমাণু আছে। স্থুতরাং, এরপ স্থুন অস্ত্র হওয়াই অসম্ভব যদ্ধারা কোন বস্তকে প্রকৃতই প্রমাণুতে বিভাগ কবা বার। বিজ্ঞান শাস্ত্রে স্থিরীকৃত হইয়াছে যে, প্রমাণু সকল সন্নিহিত হইলে প্রস্পরকে আকর্ষণ করে। এই আকর্ষণ দ্বারা তাহার। পুঞ্জীকৃত হয়। এই আকর্ষণকে যোগা-কর্ষণ বলে। যোগাকর্ষণে পরমাণু যভই আকৃষ্ট হউক না কেন, উহাদের অস্তর্ভূ ত তাপ-বলে উহারা এক কালে মিলিয়া যাইতে পারে না। উহাদের পরস্পরের মধ্যে অবকাশ (ফাঁকি) থাকিয়া যায়। এই নিমিত্ত সকল বস্তুই আঘাতে বা চাপে কিছু না কিছু সকোচ প্রাপ্ত হয়। কতক -গুলি বস্তু চাপে সৃক্চিত হইয়া সেই চাপ বল অন্তহিত হইলেও প্রায় সেই সন্কৃচি-তাবস্থাতেই থাকে। আর কতক গুলি বল্প চাপবল অন্তৰ্হিত হইলেই পুনৰ্কার পূৰ্ব্বাবন্থা প্ৰাপ্ত হয়। সীসা ধাতু আঘাতে স্কুচিত হইয়া আখাত বল অন্তৰ্হিত হইলেও প্রার সেইরূপ সন্কৃচিত থাকে। কিন্তু ইম্পাতে বা হস্তিদন্ত আঘাতে শৃষ্কৃতিত হইলেও আবার পূর্মাবস্থা প্রাপ্ত হয়।

(ক্ৰমশঃ)

वामन अगानी।

"THERE IS A HAPPY LAND." কাওয়ালী। स श स मा मा म मंग सं सं मं मं मं * X Y Y | V X X ! | 4 9 4 9 1 9 1 | । ७ ७ | ७ ७ । | 1 ~× × | 1 | } POLKA. একতালা ক্রতগতি। { +॥ । ॥ ! ॥ । (सं जानानिनिध

+॥ । ॥ । । । । मामानिक्ष OUR FATHER IN HEAVEN. একতালা। | +1 | 1 | |취 | 취 위 성 | 취 | Our | Fa- ther in hea-। । । । । নি নি সা^১ সা^১ সা^১ ven. We hal- low thy +। । নি প thy king-নি name, May ना नि श्रे य dom tru- ly on earth ॥ । । म +1 be the same. O give 위 य to us dai- ly our 1² ॥ नि नि मार्गिन por- tion of bread. It
 भ

 १

 १

 १

 १

 १

 १

 १

 १

 १

 १

 १

 १

 १

 १

 १

 १

 १

 १

 १

 १

 १

 १

 १

 १

 १

 १

 १

 १

 १

 १

 १

 १

 १

 १

 १

 १

 १

 १

 १

 १

 १

 १

 १

 १

 १

 १

 १

 १

 १

 १

 १

 १

 १

 १

 १

 १

 १

 १

 १

 १

 १

 १

 १

 १

 १

 १

 १

 १

 १

 १

 १

 १

 १

 १

 १

 १

 १

 १</ ध आ_ठ for thy boun- ty is

বিবিধ তত্ত্ব সংগ্ৰহ।

১। আমে কিলা নিবাসী অসভ্য জাতিগণের মধ্যে এক প্রকার সাক্ষেতিক ভাষা প্রচলিত আছে। ইহাদিগের মধ্যে যে কয়েকটা ভাষা প্রচলিত আছে, তাহা ভিন্ন ভিন্ন, কিন্তু আমেরিকার আদিম নিবাসীর প্রত্যেক লোকেই এই সাক্ষেত্রক ভাষা বৃশিতে পারে।

২। ইরোরোপের একটা মাত্র দেশে প্রাণদণ্ড দিবার রীতি রহিত করা হই-য়াছে, সে দেশ ইটালী।

০। প্রাণ দণ্ড দিবার জন্য নিয়লিখিত কয় প্রকার উপায় অবলখিত হইয়া
ধাকে। (১) ফাঁদি কাঠ, (২) কুঠার,
(৩) রজ্জু, (৪) আগ্নেয়াস্ত্র, (৫) তরবারি।
বাদ্যউইক রাজ্যে কুঠার, চীনদেশে রজ্জু,
ইউক্ডের প্রদেশে আগ্নেয়াস্ত্র এবং
প্রুদিয়া রাজ্যে তরবারি ব্যবহাত হইয়া
ধাকে।

৪। কোন কোন দ্বাভীয় বিৰধর সূর্প আত্মহত্যা করিয়া থাকে। কোন কোন প্রাণিতত্ববিদ পণ্ডিত এরূপ ঘটনার দৃষ্টাত্ত দিয়াছেন। একবার একটা আমে-विका (मध्य व्यव्य धनकाती मर्गरक কোন প্ৰাণিতখবিদ বায়ুশূন্য প্ৰকাণ্ড ম্বচ্ছ কাচের বোতলে প্রবেশ করান। বায়ুবৰ্জিত স্থানে থাকিয়া দৰ্প কতক্ষণ জীবিত থাকিতে পারে, তাহা পরীকা ক্রিয়া দেখাই তাঁহার উদ্দেশ্য। তিনি দেধিলেন বায়ুশ্ন্য বোতলের মধ্যে কিয়ৎ কাল অবন্ধিতির পরেই সর্পটী ছট্ ফট করিতে আরম্ভ করিল, তৎপরে সজোরে স্থাপনার শরীরে দংশন করিল। দংশনের পর মুহর্ত হইতেই সে নিশ্চেট হটুরা পড়িল, এবং এক মিনিটের মধ্যেই তাহার• আরু:শেব হইল। সর্পটী স্বীয় শরীয়ের বে সানে দংশন করিয়াছিল,তথার তুইটা

দাতের স্পাষ্ট চিহ্ন পরে দৃষ্ট হইয়াছিল।
কোন কোন জাতীর সর্পের ন্যার কাঁকড়া
বিছাও আত্মহত্যা করে, তাহার প্রমাণ
শীগুরা যায়। একবার এ৬টা কাঁকড়া
কিছার চতুর্দিকে অগ্লি প্রস্থলিত করাতে
দেখা গিয়াছিল সে চতুর্দিকস্থ অগ্লির
উত্তাপ সহু করিতে না পরিয়া স্বীয় দেহে
দংশন করিল এবং দংশনের ক্ষণেক পরেই
তাহার মৃত্যু ইইল।

 অাফ্রিকায় যে খর্মজাতীয় মহুষ্য আবিষ্ত হইয়াছে, তাহারা সচরা-চর দীর্ঘে প্রায় আড়াই হাতের অধিক নহে। ইহাদিগের মন্তক গোলাকার, নাসিকা থকা, মুখ দীর্ঘাকত, শাঞা হ্রম এবং দেহ লোমাবুত। ইহারা নিষ্ঠুর প্রকৃতি, চতুর, এবং চৌর্যাবৃত্তিপরায়ণ। ইহারা কোন প্রকার গহনা কিমা গাত্রে উলকী ধারণ করে না। ইহারা উপরিস্থ ওঠের উপর তুইটা ছিড করিয়া থাকে, বলে উহা সেন্দর্য্য সম্পা-দক। ইহারা এককালে ধর্মভাবশৃন্ত নহে। একপ্রকার বিবাহ রীতি ইহা-দিগের মধ্যে প্রচলিত আছে। কিন্তু তাহা সভ্যতাসমত বিবাহ-প্রথার অনুযায়ী নহে। ইহারা মৃতদেহ সমাধি করিয়া থাকে। নরমাংস ভক্ত রীতি ইহাদিগের मर्था थानिक नाहै। हेलरमन नामक वर्षन थानिउचित्र वरतन य थाहीन-कारन मन्छ चाक्रिकाल्य अरे गर्का-কার কাড়ি দেখা যাইউ, কিন্ত একণে আক্রিয়ার মধ্যভাগেই উহাদিগৈর বাস। ৬। আমাদের দেশে মহাকালী রণদেবতা বলিরা প্লিত হইয়া থাকেন; তাঁহার মৃত্তি অতি ভয়য়রী, দেথিলেই প্রাণ আতক্ষে কাঁপিয়া উঠে। পাঠিকা! জেডো নগরের একটী রণদেবতার বিবরণ ভাবণ কর। ইহা আরও ভয়য়রী এবং মন্ত্যাকয়না কভ দূর অগ্রসর হইতে পারে ইহাতে তাহার প্রমাণ পাওয়া য়য়।

জেডে নগরে যে রণদেবতার মৃত্তি প্রতিষ্ঠিত আছে, তাহার নাম হচিমান। ইহা নারীমূর্ত্তি। কাষ্ঠ ও প্লাষ্টারদারা এই নারীমৃত্তি গঠিত, ইহা প্রায় ৩৬ হাত উচ্চ। ইহার শিরঃপ্রদেশ এত বুহৎ যে, তাহার মধ্যে ২০ জন লোক বিনা কেশে বসিয়া আমোদ প্রমোদ করিতে পারে। এই রণদেবতার এক হস্তে কার্চনির্মিত তরবারি; তাহার ফলা ১৮ হাত দীর্ঘ। অন্য হত্তে একটী গোলা আছে, তাহার ব্যাস ৮ হাত। মানবদেহ যেমন অন্থি-দ্বারা সংগঠিত, সেইরূপ কৃত্রিম অস্থি-দারা এই রণদেবতার দেহ গঠিত। ইঁহার চক্ষু দেহাত্মরপ,এক একটী প্রকাণ্ড গবাক বিশেষ; প্রয়োজন হইলে এই গবাক্ষধারা নগরের সমস্ত অংশ বিশেষ ভাবে দর্শন করা ষায়। যদি তুমি এই রণদেবতার শিরোদেশে উঠিতে ইচ্ছা কর, তাহাহইলে তন্মধ্যস্থিত ঘোরাণ ঘোরাণ সিড়ি আছে, ডুমি এক আনা দর্শনী দিয়া স্বচ্ছনেদ উপর প্রদেশে উঠিয়া নগর দর্শন কর !

শোকের শাস্তি।

(পত প্রকাশিতের পর)

ভবে-কি শান্তির প্রকৃত উপায় স্থৃতি ? মুতিই তো শোকানগের আছতিসরপ। স্থতির জন্মই শোকের অমন আঞ্ব জনির্মানে। বাহার জন্ত শোকাকুল হইরাছ, সৈ কত ভাল বাসিত, ভোমাকে দৈৰিলে কত স্থনী হইড, কেমন করিয়া আপন দিয়া ভোষার হব সম্পূর্ণ করিতে চাহিত, মৃতি রাক্ষমীই তে। জ্বমালায় মে দব কথা পাঁথিয়া রাধিয়াছে।---তাহার প্রাবে কিনের জন্ম দারুণ ক্ষোভ রহিরাছে, দে कি চাহিয়া পাইয়াছিল না, ভাহার কাছে ভোমার কত ক্রটি, কড অপরাধ, অসংশোধিত অবস্থায় এজনমের মত রহিয়া গিয়াছে, স্মৃতি পোড়ারমুখীই তো দিন রাত্রি সেই স্বসংবাদ সংগ্রহ করিয়া আনিতেছে। তাইতো শোকের ষশ্রণা। আবার তাহাকে মনে করিলেই তাহাকে আবিশ্যক হয়, অথচ সে এখন মানবেঞ্জিয়ের অতীত, তাহার জন্য তুমি मौन**रे** रूप, भाषत्र जिथातीरे रए. नित्रहरे হৎ, সে আশা পূর্ণ করিতে—তোমার একবিন্দু জভাব দুর করিতে, ফিরিয়া আসিবে না! ভাই বলিতেছি, পিপা-নিতের জলপানে হুখ আছে সভ্য, কিন্ত বদি কখনও মন্তুমির মত জলশুন্য স্থানে यहिए दम, তবে সেখানে कलात मृहि উদীপনের ফল দারুণ হুঃখ ব্যতীত অন্য किছ्हे नहा (महे ब्रक्म,

পদে, ইহলোকবাসী আন্ধীরের বা ব্রুদ্ধিত বড়ই মধ্মান—বড়ই মুধ্মার; কিবাইন ভালবাসাভাজন বধন পরলোকে চলিরা বায়—শরীরী মানব বধন তাহার সাহত পার্থিব সম্বন্ধ অমুভব করিতে অক্ন হয়, তথন তাহার অধিময় স্কৃতি আলাইবার কল কেবল "পুড়িয়া মরা" ব্যতীত অফ্রাকিছুই নহে। এ রক্ষম প্রীতিশৃষ্ম একতা, জীবনশৃষ্ম বেছাইতে কে চাহিবে ?

বিশ্বতির স্থা বলিয়াছি, শ্বতির স্থাও বলিলাম। স্বতরাং এখন আমর। সহতে বলিতে পারিব, যে এরকম বিশ্বতি অথবা স্মৃতিতে শোকসন্তপ্ত হাদরের শাস্ত্রি নাই। বিশ্বতি শোক শান্তির নিকৃষ্ট উপায় এবং শ্বৃতি শোকানল জালাইবার সহায় মাতা। অতএব আমরা শান্তির অনুসন্ধিৎসু হইলে আপে আমাদিগকে क्षक्षाधा ঢ় কিয়া তলাদী' করিয়া দেখিতে হয়। धमन धकरे। जिनित्र चाहि, त्र त्रहेंवैद জনাই আ্মাদের "শান্তি" সহজে পাত হইতে পারে না।—আমরা এই দৃষ্টি প্দার্থ টা অথবা "চোরামার টা বেঁপ্তার कविशा वित्वक त्मवजात रहत र मिन সমর্পণ করিতে পারিব, সে দিন কেনিব বিষয়ে আমাদের অশান্তি থাকিবে মুন

धरे बिनिन्छैत नाम चार्च । बार्च अनि

বর স্বীভাবিক প্রবৃত্তি। আমি বে ভাব-লকে "বাৰ" বলিতেছি, লোকে তাহাকে ঠিক সার্থ বলে না—"আমিত্র" বলে। এই অথবা আমিত্ব আর কিছুই নহে, ক্রীনাকে সকল স্থথের কেন্দ্রীভূত করা। অবক্ষম স্বার্থের জন্য কেহ কাহাকে নিন্দা করে মা, কারণ ইহা সার্থপরতা নহে। কিন্ত লোকে নিন্দানা করিলেও আমরা **জনেক সম**রে স্বার্থের জন্য ঠকিয়া বাই— ছু:থের বোঝা কিনিয়া বসি। এই বিষয়ের এক প্রধান প্রমাণ আমারদর শোক।-যাহার শোকে হাদয় এত কাড়র হইয়াছে, তাহাকে যদি নি:সার্থরূপে ভাল বাসিতে পারিতাম, যদি তাহাকে আমার জন্য ভাল না বাসিয়া তাহারই জন্য ভাল বাসিতে পারিতাম, যদি আমার প্রাণের গোপনীয় দৃষ্টি আমার নিজের সুখের উপরে না থাকিয়া তাহার স্থাের উপরেই থাকিত, ষদি মামি আপনা ভূলিরা ভাহাকে ভাল ৰাদিতাম, তাহা ইইলে তাহার জনা এত ক্লেশ পাইতাম না! সত্য বটে, সে এ জগতে থাকিলে আমি ভাছাকে যত্ন করিতে পারিতাম, আদর করিতে পারিতাম—বড জোর আমার মানবশক্তির বাহা আয়ত, ভাহাকে সেই সৰ জিনিস দিয়া সুধী **্ষ্ঠিরতে পারিতাম**েকিন্ত মর জগতের শোক হুংখ হইতে, মুর জগতের জরা মরণ हरें अब अगेराज्य विश्व विभन वहेरज, এট মুহ ও তাহাকৈ বস্থা করিতে আমার প্রতা হইত না। এ সংসাধে থাকিলে সংসায় করিলা ভাষাকে ভোগ করিতেই

হইত ৷ আবার দেখ, মাতা পিতা সম্ভানকৈ ভাল বাদেন সত্য, সম্ভান পিতা মাতাকে ণভি বাসেন সত্য, স্বামী স্ত্রীকে ভাল বাসেন সভা, স্ত্রী স্বামীকে ভাল বাসেন সত্য, বন্ধু বন্ধুকে ভাল বাসেন সত্য, কিন্তু অনন্ত স্নেহ্ময়ী বিশ্বজননীর মত ভাল বাসিতে কাহার সাধ্য সাহে ৭ ক্ষুপ্ত ক্রদয়ের ভালবাসাকে আমরা "অসীম"ই বলি, "অনস্ত"ই মনে कति. आमार्मत ভानवामाय तांग चार्छ, অভিমান আছে, বিরক্তি আছে, স্বার্থের কত জিনিসই তাহাতে মিশান আছে। অতএব ভগবতী বিশ্বজননীর ভালবাদার — मिटे पांच ६ एवं. शांभ भूरवा, जीवन মরণে আবিকৃত, সমভাক, (म**डे** मण्ला ভালবাসার তুলনায়, আমাদের এ অ-সম্পূৰ্ণ ভালবাদা নগণ্য মাত্ৰ ! তাই বলি-তেছি, যাহার শোকে বুকে বড় বেদনা লাগিয়াছে, এখন সে সেই শোকভাপ-হীন, জরামরণহীন, বিল্লবিপদ্ধীন, অন্ত স্থাবে বাজ্যে গিয়াছে, অনন্ত স্লেছ-ম্বী বিশ্বজননীর স্নেহের কোলে গিয়া অনম্ভ স্থা প্রাপ্ত হইয়াছে, স্বর্গের অমৃত-মাথা ভাল বাসাতে তাহার প্রাণ জুড়াইয়া গিয়াছে; আর পাপাশর আমি, নিষ্ঠর আমি তাহার জন্য কাঁদিয়া মরিতেছি ! काॅि (कन १--(अरे "आंभिएव"त छन्।। তাহাকে দেখিতে পাই না, জীবনে তাহার সহিত সংস্থাৰ অমুভৰ করিতে পারি না, তাহার সুগ হঃথের অংশ গ্রহণ করিতে পারি না! আমার তাহাকে বড় প্রয়োজন

হইলেও সে আদিতে পারে না। এই সব (का (७३ कं मि ! बना वाबना ध नव क्षांहे जागात्मत्र (प्रदे "जागिष" मृतक ! (महे बराहे विवाधि चार्थत क्रनाहे আমুরা এ সংসারে অনেক সময়ে প্রতারিত হই। যত দিন এই স্বার্থ, প্রাণে জড়িড शांकिद्ध्य, ७७ मिन (मांककां क क्षेत्र প্রকৃত শান্তি লাভ করিতে পারিবে না ; এই স্বার্থ বা আমিছই আমাদের শান্তির অন্তরায়।

🦛 এখন, আমরা ঘদি আনাদের মৃত--ভক্তি. প্রীতি বা স্নেহভাজনকে ভাল বাসিয়া তক্ষয় হইয়া ৰাইতে পারি, ৰদি ভালবাসার অনুশীলনে সার্থপুর হইতে नाति, यनि निःशीर्थ श्रीफिटफ क्षमप्र पूर्व ক্রিতে পারি, তাহা হইলেই আমাদের খোকের প্রকৃত শান্তি হয়। শোকের শান্তি স্বাৰ্থপূৰ্ণ স্থৃতি বা বিশ্বতিতে নহে, নি:স্বার্থ ভালবাসার অনুশীলনে। নি:-স্বার্থরূপে ভালবাসাই আমাদের শোক-যাতনা নিবারণের উপায়।

এই খানে বলা আবশাক, আমরা বে নিঃস্বার্থ প্রীতির কথা বলিতেছি, তাহা সাধারণতঃ জীবিত আত্মীয় বন্ধগণের প্রাণ্য নহে। জীবিত ব্যক্তিগণ সুলে-জিম্বেরও গ্রহণীয়, সেই জন্য কেবল ভাঁহা-निश्वत शान कवित्रा भागानित्वत यथ নাই--- অন্ততঃ সম্পূৰ্ণ সুধ নাই। তাহা-मिन्रत्क (मधिटक देव्हा करत, ভाহामिरगत সুধ হুংধের অংশ গ্রহণ করিতে ইচ্ছা করে, স্থাপনা দিয়া ভাহাদিপের মুখের হাসি.

समात्रत पूर्व कृषे। देए देखा चार क नकन हैका पूर्व ना इहेल मानव-मानक পরিত্রপ্রি নাই: অতএব আমিতের এত ভবি জিনিস বেথানে, সেধানে "নিংসার্থ প্ৰীতি" কাহাকে বলিব ?—ভাই বলিভেটি প্রীতিভাজন মহিলা বধন দেবতা ছবু, দেবতার মত হখন সুক্ষেন্সিয়েরই আপ্রা হয়, দেবতার মত অশরীরী হইয়া যথন তাহার ভড়ের প্রাণের প্রাণে নীরব আধিপত্য করিতে থাকে, তেখন সেই শোকসম্বপ্ত ভাদয়েই নিংসার্থ প্রীতির জন্ম হয় ! তথ্নকার ভালবাসায় রাগ নাই, গৰ্ব নাই, আকাজ্ঞা নাই ৷ সে ভালবাসা পৰিত্ৰ পুণ্যময়। সেই ভালবাসার পূর্ব विकारमहे-मानव क्षप्राव मन्त्र्री-চরমোৎকর্ষ সাধিত হইতে পারে। এই-জনাই দৰ্কতত্ত্বশী হিন্দুশাল উপদেশ निशारक्त, "मृठक जूलिया गारेख नाः তাহার ভালবাসা অনুশীলন করিও অর্থাৎ তাহাকে পূজা ক্রিও, তাহার মৃত্যুর তিখিদিনে সাধু মহাঝা আহ্নণ ও বন্ধ-দিপকে আহার করাইও, তাহার নাম করিয়া অনাথ দরিদ্রদিগকে দান করিও।" मकल कार्या कतिए गानावत्र নিঃবার্থ প্রীতি জভ্যাস হয়, শোক-সম্ভপ্ত জ্বয় ইহলোক পরলোকব্যাপী করিতে—উজ্জলর। অমুভব **অহুভব করিতে সমর্থ হয়; তাহাতেই** শোকের প্রকৃত শান্তি মিলে, ভগবৎকাই "শান্তি" তাহাতেই পাওয়া যায়।

অভএব যে দিন আপনা তুলিয়া, নো

প্রতি পর্বা সেহ লালন পর-ক্ষিণ্ডবাসীকে ভালবাসিতে পারিব, বেদিন ইই জগতে থাকিয়াও তাহার জন্ম জগ-হৈছের সাধু ও পবিত্র কাজ করিতে পারিব, দ্রিদিন ইহলোক পরলোকের অলোকিক সীশ্বর স্থান্তম করিতে পারিব, সেই দিন্ত এ অসহনীয় শোকের শান্তি বিলিবের সে দিন সে বাফেল্রিরের অতীত হইলেও ধ্যানের প্রাপ্য হইবে, ভাষার ধ্যানেই এ হাদয় চিরপরিত্প ছিট্যা রহিবে। সে দিন এ বিশজ্পং তাহারই দৌরভপূর্ণ "নক্ষৰ বন' হইয়া রহিবে। শেদিন আমার উপরে তাহার ক্লেছ মুমতার পরিচয় না পাইলেও, আফার নিরীক্তিক ভালবাসা তাহাতে জড়িত থাকিয়া এ হাদয়কে স্বর্পের পথে লইরা ষাইবে ! সে দিন তাহাকে "আর দেখিতে পাইব না" তাবিয়া কাঁদিব না, একদিন ৰে তাহাকে দেখিতে **পাই**য়াছিলাম, সেই नित्नत कथा मत्म क्षियां विक निन ক য়টা আনন্দে কাটাইতে পারিব ! অবস্থা, এ তপস্যা মানবের তৈমার আমার মত শাধারণ মানবের भरक वर्ष्ट वाशाममाधा। **চুইবংসরে** অথবা পাঁচবৎসরে সিদ্ধি লাভের আশা জ্বিতে পারি না: তথাপি যদি সিদ্ধি-জনীতের আশাশৃত হইয়াও এই মহাতপ-সায়ে জীবন নিয়োজিত করিতে পারি. ভাষাতেও আমার মানব-জীবন সার্থক হট্বে কারণ নিংমার্থ নিশ্বটা ভালবা-সার সংখ্যারণে মানব-ছাদর বতই সপ্তা-

সারিত হয়,ফানব ততাই বিশ্বজগংকে এবং বিশ্বপতি জগদীখরকে ভালবাসিবার উপ-युक्त रहेन्न। थाव्क! देशाउरे जान-বাসার সফলতা ৷ ইহাতেই মানব জন্মের সাৰ্গ্ৰহণ দ ভালবাসাভাজন প্রকৃত লোকান্তরিত হইলে ফ্রদ্য শ্রশানবং---ভয়ানক, শাশানবৎ যাতনাময় হয়, কিন্তু অফুশীলন ভালবাসার হইবার নহে—সেই শ্ৰাশানে, সেই চিতাভন্মে সর্পের সোপান গঠিত হইতে থাকে। মঙ্গলময় জগদীখার অনন্ত যাতনা-ময় শোক হইতেও জ্লব্লের এইরূপ উৎকৰ্ধসাধন করেন. মানব-জীবনকে এইরপ উন্নতি পথে কইরা যান ! এমন দেবতার মহামহিমা বুঝিতে কি ভোমার আমার মত মানবাপুর সাধ্য আছে প

শোকসম্ভপ্ত হৃদয়ের জন্য ভগবান ষে উপায় দিয়াছেন, তাহা সাধনা করিতে श्हेरल जामानिरगत रेबर्ग, সহিষ্ণ তা, স্থিরচিত্তা ও একাগ্রতার প্রয়োজন।--স্বার্থ পরিত্যাগ সহজ কবা নহে। এই সকল মহতী শক্তি লাভের উপায় ভগবা-নের চরণে প্রার্থনা। প্রার্থনা করিলে ভগবান "আয়ু, যশ, তনয় বিভ্ৰ" দেন কিনা ভাহা আমি জানি না; কিন্তু চুর্বেল মানব আত্মার উন্নতির জন্য যাহা ভিকা করে, দয়াময় তাহা দিয়াই থাকেন। অতএব ভগবানের চরণই সহায় করিয়া আমাদিগকে শোক শান্তির সাধনা করিতে হয়।—কেবল শোকের শাস্তি বলিয়া নহে. ভগবানের প্রতি আমাদের ভক্তি ও বিহাস

বতুই প্রবশ হইতে থাকিবে, আমর। বতুই চির স্থ শান্তি লাভের যোগ্য জীহার হইতে পারিব, ততই আমাদিগের থাকিবে। মানব জীবনে ইহাই সর্ব্যাক্ত জীবন সকল প্রকার হঃধের অতীত হইয়া সাধনীয়।

লেখিকা-জী মা দ

বালিকার আত্ম-বিসর্জ্জন।

বোর বড় যক্ত জালে আবন্ধ হইয়া শিখসচিবপ্রধান ধ্যান সিংছ প্রকাশ্ত সভামধ্যে শাণিত তরবারিমুখে প্রাণত্যাগ कतित्न। एउजनी, निश्हिकिम, यूवक भूज होता भिश्ह रेमलनन-महास थिक-হন্তা শত্ৰু অন্ধিত সিংহের মস্তক ছেদন করিলেন এবং জ্রুতপদে গৃহে ফিরিয়া ছিন্নপ্তক জননীর পাদদেশে নিক্ষেপ করিব। বলঃছলে হন্তাঞ্চল বন্ধন পূৰ্ব্বক ধীরভাবে দণ্ডায়মান রহি-লেন। ধ্যানমতিধী পতিহস্তার কৃধিরা-প্রত বিকটাকৃতি মস্তক দর্শন করিয়া প্রতীররবে কহিলেন, "বৎস! তোমার জয় হউক, আমি একণে সন্তোধলাভ ক্রিলাম। আর কেন ? তোমার জনকের মন্তক অঙ্কে এহণ করিয়া সহমরণে প্রস্তৃত হইব। বংদ! তোমার পিভার সহিত चर्गालां भिनिज इहेम्रा कहिव य, তোমার প্রিয়পুত্র বংশোচিত করিয়াছে—সৎপুত্রের কর্ত্তব্য হীরা সিংহ সিদ্ধ করিয়াছে। একণে চিতা প্রজলিত মহিধীর চিরপ্রফুল করিয়া বেও।" হাস্ত্রময় বদনে তৎকালে কোন বৈলক্ষণ্য मृष्टे इट्टेन ना। नकल्पत्र निकृष्टे इटेंटि **८** त्रश्य मधुत्र बारका विलाय श्रहण कति-

নিজ সম্পতিরাশি মরিদ্রগণতে বিতরণ করিতে লাগিলেন। ঐতিক সমস্ত কাৰ্য্য শেষ করিয়া প্রিয় পতির উষ্ণীয হইতে বহুমূল্য পুচ্ছ গ্রহণ করিয়া ক্লেকা-স্পদ তনয়ের উধীষে সন্নিৰেশিত করি-লেন।

ধ্যান সিংহের অপর ত্রয়োদশ পদী हित्ता। नकलाई महश्यान अंखड़ा সকলেই তৎকালীন বেশভূষার ক্ষিত্ত इडेरलन। भागन्यनी (कमकान कुउरन লুক্তিত হইল। ললাটদেশে সিন্দুর-স্তর শোভা পাইতে লাগিল। রক্তমবা মালা-রূপে এবিত হইয়া পতিপদতল চুম্বন क्रिल्म। (म व्यभक्तभ भोम्मर्ग मर्गान দর্শক মাত্রেই শুস্তিত হইল। সে সৌশ্র্যা বৰ্ণনাডীত।

প্রধানা মহিষী আপন অত্তে প্রেয় পতির ছিল্ল মস্তক গ্রহণ করিয়া চিতা-রোহণ করিলেন; চতুর্দিকে অপরাপর মহিধীরা মণ্ডলাকারে উপবেশন করি-লেন। অগ্নি প্রজালিত হয়, এমন সময়ে একি ? সকলে ভভিত ইইয়া দৰ্শন করিতে লাগিল। কি অপরূপ। অক্ট দশ্মব্যাগি বালিকা সভীবেশে হাসা রাশিতে দশ্দিশ উত্তল করিয়া টিউ

সমীংশ উপস্থিত। এ বালিকা কে ? বালিকার বা এ সভীবেশ কেন ? মহিনীও অবীক্ । সেই বালিকার দিকে চাহিয়া আছেন। বিস্ময়ের ভাব তাঁহার বদন-তিলে প্রফুটিত হইয়া উঠিল।

্রালিকা অপর কেছ নহে, ভাঁহারই অকুচরী। মহিষী বালিকাকে অত্যস্ত শ্লেক করিতেন। বালিকাও প্রাণাপেকা ভীহাকে প্রিয় বিবেচন। করিত। মহিষী সহলক্ষে ঘাইবেন, বালিকা কি পার্থিব স্থানোভে এ মরজগতে থাকিতে পারে। সে দৃঢ়প্রতিজ্ঞ। সে কি আশায় সংসারে খাকিবে 📍 সেজানিত আঁমি মহিবীর, মহিবী আগার। এই বর্গীর প্রেমে মাতো-লারা ফারা সংসার তরকে নীলা করিতে-ছিল। তাহার অন্য শ্বখ ছিল না, রাণীর নেবাই তাহার একমাত্র সুথ। রাণীর মধুর হাসি দেখিলেই সে নাচিয়া উঠিত। সেই রাণী আজি সহগমনে উগতা; আর কি দে দেই রাণী হারাইয়া, রাণীর মুখ না দেখিয়া এ সংসারে থাকিতে পারে? ভাবিতে ভাবিতে দেখিল, এ জগৎ আঁধার, রাণী বই ভাহার আর কেহ নাই। তবে সার কেন १ রাণী প্রিয় পতির সহগমনে হাসিতে হাসিতে ঘাইতেছেন, সে কি প্রিয় শাণীর সহগমনে যাইতে পারিবে না ? ৰালিকা সহগমনে প্রস্তুত হইল, সকলের **অনক্ষ্যে নতীবেশ ধারণ করিল এবং** ন্ববৈশৈৰে ডিভাসমীপে আসিয়া মধুর হাস্তবঙ্গে চতুর্দিক ধবিভাসিত क्खान्रयान रहेन। जारा कि শধুর । কি স্বর্গীর ভার । ধরু নেইজন, বে মধুর হইতে মধুরতর এ ভাব দর্শন করিল-। ভার ধন্ত সেই প্রেম ! যে প্রেমে আন্ম-হারা হইয়া মানব জীবন-সর্ববিদ্ধকে হৃদয় প্রাণ ঢালিয়া দিতে পারে ।

महिमी विनाय महकादा कहिलान, অরি বালিকে। একি ? আমি আমার প্রির পতির সহগমনে ঘাইতেছি: তোমার এ ভাব কেন ? বালিকা মহিষীর অনিল্য-মুখপানে চাহিয়া—বলে-বলে—বলিতে পারে না—ভাবে কহিল; "আমি আর এ অংগতে থাকিব না।" রাণী সেহমধুর বাক্যে অনেক প্রবোধ দিলেন, অনেক সাংসারিক প্রলোভন ্দেখাইলেন। বালিকা কিছুই শুনিল না; কেবল অনিমেষনয়নে রাণীর মুখের দিকে চাহিয়া রহিল, বলপ্রকাশদারা স্থানাম্বরিত করি-वानिका श्रूनः श्रूनः আসিয়া চিতায় কাঁপাইয়া পড়িতে লাগিল। একবার, তুইবার, তিনবার চিতায় ঝাঁপা-ইয়া পড়িয়া অন্ধনয় ও কাতরবাক্যে সক-লের হাদয়ভেদ করিরা কহিল, আমাকে ষেন অহুগমনে বাধা দেওয়া না হয়। পরে যেন ক্রোধে পূর্ণ করালিনী মূর্ত্তি मर्काखनमध्यक कहिल, করিয়া আমি ঐ মহান্তার শব সাক্ষী করিয়া विनि एक स्था विभाग কেহ অনুগমন হইতে নিরুত্ত করে, আমি অন্ত উপায়ে প্রাণত্যাগ করিব। এই দির দ্যপ্রতিক্স বাক্যে

विश्वतकः शाममहिनी वृतिरामम, त्व और मूर्थत निरक् छाहिन। त्राकीन বালিকাকে আর প্রতিনিবৃত্ত করা জ্পোধা। তথন রাণী নাদরে ভাহাকে आश्रम अम्प्रत्न बहुन कतित्वत । वानिका | इहेन । आज यनि दमहे छन्त्र शहे. मस्तक পদতলে পড়িয়া অনিমেষনরনে রাণীর । গ্রহণ করিয়া কুডার্থ হই।

অভ্যতিতে চিতা প্রজালিত দেখিতে দেখিতে সকলই ভাষে পরিগত

वात्राला अवहन।

मा, मि, भी।

- ১। সাক্ষী গোপাল।
- ২। সাগরও শুকায় না, পাপও লুকায় না।
- ৩। সাজ্তে গুজুতে ফিঙে রাজা।
- ৪। সাজার ম। গঙ্গা পায় ন।।
- ে। সাত কথার এক কথা।
- ৬। সাত কাণ্ড রামায়ণ প'ডে শীতা কার ভার্য্যা 🤋
- 9! স.ত কুঁ.ড়র ঘর, গোঁসাই রুফা কর।
- ৮। সাত গেঙের কাছে মামদবাজী।
- ১। শাত ঘাটের জল এক করা।
- ১০। সাত চডে রা বেরোয় না।
- ১১। সাত নকলে আসল খাস্ত।
- ১২। সাত পাঁচ খতয়ে মনে, **চা**य करत ना त्यानात त्वरण।
- ১৩। সাত পুরুষে বিয়ে নাই, ৰভাৰ বাড়ী যায়।
- ১৪। সাত সতীনে নড়ি চড়ি, বেড়া আগুণে পুড়ে মরি।
- ১৫। সাত সমুদ্র তের নদী পার হওয়া।
- ১৬। সাতেও হঁ পাঁচেও ভঁ।

- २१। माना यत्न काती (न**७३**)।
- >৮। माना मृत्यक्षाना।
- ১৯। সাধ কত ছিল রে চিতে, मत्नत जारत कृष्कि निष्ठ।
- ২০। সাধ হয় বৈষ্ণুর হ'তে, मुन्किल वर्ष मध्हव मिर्छ। *
- २)। সাধ इय वानमा इएड, थामा (मग्र ना त्यरंग ८४८७।
- ২২। সাধিলে মান কাড়ে।
- २०। माधित कामाई काँगेल थान ना, না সাধিলে ভোঁতাটা পান না
- २८। गांधितारे मिकि।
- २৫। সাধু योशंत्र मःकज्ञ, ঈশর তাহার সহায়।
- २७। माध विधाहेलाम कान, কাটি দিতে যায় প্রাণ।
- ২৭। সাধের কান্সল পরতে গিরে হয়ে এলি কাপা।
- ২৮। সাধের কমন ভুল্তে গিয়ে शांख कृषेत्वा कांगे।
- २>। नापक ना महत्र, नाठिक ना कार्ती

🕶 মাণ হয়ে কাম্ডায়,রোজা হয়ে বাড়ে।

🔑 ীপাপ মলেই সোজ।।

ছং i সাপা ডরায় ব্যাডাকে,

্ব্যুঙা ভরায় সাপাকে।

। जात्य इंटा थवा वा लिला।

🕦 সাপে নেউলে।

🎉 । সাপের মুখে ঈশার মূল।

্রাপের লেখা, বাছের দেখা।

👏 🗓 সাপের হাঁচি বেদে বুকো।

্লিবধানের ঘরে মার নাই।

্রিই। সারা দিন থাকব নায়, কথন দিব প্রভয় পায় হ

কখন দিব খড়ম পায় ?

श्रेश সারা দিন বঁড়সী হাতে,
 সন্ধ্যা বেলা আমড়া ভাতে।

। সালুক চিনেছে গোপাল ঠাকুর।

ইং। সালুক থেয়ে দাঁত কাল,
 লোকে বলে আছে ভাল।

ইত। সাহসের ভরা ভোবে না।

৪৪। সাহেবের সাত ধুন মার্প।

৪৫। সাঁতার দিয়ে সিকুপার।

৪৯। সাঁতার না জানিলে, বাপের পুক্রে ডুবে মরে।

৪৭। সিকি প্রসার মা বাপ।

৪৮। সিকেয় তোল।

8>। সিংহের ভাগ শুর্গালে থায়।

গৈছি খেলে বৃদ্ধি বাড়ে,
 গাঁজা খেলে লক্ষ্মী ছাড়ে।

८)। मिकित यूलि।

৫२। मिधा आकृत्त घि छेर्छ ना।

পের কাছে ধার করা।

বিংহের মামা ভোম্বল দাস,
 বাঘ মেরেছে গণ্ডাদশ।

৫৫। সীতারামি স্থ।

৫৬। সীতা সাবিতী।

ছোট বৌ।

'দংসারক্টবৃক্ষসা হে ফলে অমৃতোপমে। হভাবিতরসাখাদঃ সঙ্গতিঃ স্ঞ্জনৈঃ সহ ।''

ভাদ্রমাস, আকাশ মেঘাচ্ছন্ন, অর অল

ই ইইতেছে, তাহার সহিত বিদ্যুৎ
বিনিডেছে ও ধরবেগে বায়ু বহিতেছে।
ই একটা বায়স আন্ত্র ও কাঁঠাল বুক্লের
ইপুর শরীর সকোচন প্র্কক চুপটা করিয়া
বিদ্যু আছে এবং হুই একর্ব;র ডানা
ইড়িতেছে, অস্তাম্থা বিহ্নগণের অস্তিত্ব

পর্যান্ত অন্নতব ইইতেছে না। বেলা ৪টা বাজিয়াছে। এই সময় বোড়শ বৎসরের একটী বালক কডকগুলি পুস্তক ও গাতা হন্তে লইয়া একটা বাড়ীর ভিতর প্রবেশ করিল। তাহার হন্তস্থিত বিস্তৃত ছাতাটী মস্তক ও বসন রক্ষা করুক না করুক পুস্তকাদি রক্ষার জন্য বিশেষ ভাবে নিযুক্ত

ছিলেন। বালকটা যে বাড়ীর ভিতর প্রবেশ করিল, সে বাড়ীটী অতি দামান্য। একধানা বাঙ্গালা হর ছোট একথানা রম্বই ঘর, আরে বহির্কাটীতে এক খানা সাত চালা খর। এই বহিবাটীতে সর্ব্ধদা লোকে উঠা বনা, ক্রীড়া গল্প ও গান বাদ্যাদি হইয়া থাকে; আজ ছুর্দিন বলিয়া কেহ বিনা প্রয়োজনে গৃহের বাহির হয় নাই, সুত্রাং এতক্ষণ সাতচালা ধানি নীরবে বিরাজ করিতেছিল। বালকটীর জ্তার শব্দ শ্রেবণ করিয়া একটা লোক শশব্যক্তে তথায় আনিয়া বলিন, ছোট বার। অদ্য থাবার খাইতে দোকানে বাইতে পারিবে কি, না আমি যাইব ৭ " বালকটা একটু ভাবিয়া চিভিয়া বলিল, 'জুঃগীরাম ! আমার জন্য না গেলেও চলে, किन्द्र मामात कि इटेरव १ "जुःशीताम বলিল,"বাবুর জন্য আর কি, তাঁহার জন্যত ছোলা ভিজাও বাতাসা আছে, আপনার জনাই বলিতেছিলাম। সেদিন আমাকে বলিলেন "ছঃখীরাম! যোগেন मत्य माञ এই विषय भागिशाष्ट्र. আমাকে অনেক সময় আফিসে থাকিতে হয়, ভূমি দর্কদা ইহার তথাবধান করিবে; দে যদি কোন রূপ ক্লেশ পায় ভাহা হইলে হয়ত পড়া ভুনা ছাড়িয়া বাড়ী পলাইবে।" আমিও বাবুর নিকট আপনার তথাবধা-নের ভার লইব স্বীকার করিলাম। বাবু যদি আজ জানিতে পারেন যে, আপনি বৃষ্টির জন্য দোকানে যাইয়া থাবার খাইতে প'রেন নাই, ভাহা হইলে ভিনি কি মনে

কারী আনিতে বাজারের দিকে যাইতেই হইবে, অতএব আপনি কাহার দোকান হইতে থাবার থাইয়া থাকেন বলুন আমি আনিয়া দিতেছি। ''বাবুর ছোলা ভিজাও বাতাসা আছে "এই কথাটা বালকের কর্ণে যেমন প্রবেশ লাভ করিল, অন্য কথাগুলি তেমন করিয়াছিল কি নাসলেই। বালক যোগেন জানিত যে, তাহার ন্যায় ভাহার দাদাও দোকান হইতে থাবার খাইয় থাকেন। যোগেন জিজ্ঞাসা করি-লেন ''দাদা কি প্রত্যাহ ছোলা ভিজা খাইয়া থাকেন ?' ছঃখী বলিল 'হ।।" যোগেন্দ্র মনে মনে প্রতিজ্ঞা করিলেন, আগামীকল্য দোকানদারের পাওনা হিদাব করিয়া দিবেন এবং সেই ময়রার দোকানের থাবার জার थ। हे (तन ना। োগেন বাড়ীর ভিতর গিয়া যথাস্থানে পুস্তকাদি বাড়ীর রাখিয়া দিলেন। ভিতরের বাঙ্গালা ঘরখানির আনবাব-একগানা বিছানাযুক্ত বড় ডক্তপোষ। যোগেন তাঁহার দাদার সহিত গাত্রে এই তক্তপো-ষেশারন করিয়া থাকেন, মেজেতে একট। (हेरिल ७ प्रधाना (कमाता, अक है। यान ना, একটা দেল্ফ ও একটা ছোট আল -মারা। আলমারাটীতে ৪টা খোপ, ৩টার ভিতর পুস্তক, অন্যাটীর ভিতর ছোট একটা বাক্স, প্রত্যেক খোপেই আছে। ধরটাতে এটা জানালা ও হুইটা দরজা, বেডাগুলি মাটিখারা ঘর্টী ও জিনিষ গুলি বেশ পরিকার পরি-

क्ट्न, देश इःथीतास्त्रदे छ।। **ઝ**ુ:થી-রাম কারস্থ, তাহার আত্মীয় পরিবার কেই ছিল না, যোগেল্র নাথের পিতার मभरत्रत लाक, अवर खारमन्द्रक पूरे ভাতাকে যথেষ্ট স্নেহ করিয়া থাকে। ভাত রাধা, জলযোগ, বাদন মাজা, গৃহ পরিষার कता, वाजात कता ममस्टे वका करत. কিন্তু ইহার মাহিয়ানা কত, তাহা আমরা শুনি নাই, যোগেনের দাদা ইহার সহিত পরামর্শ না করিয়া নাকি কোন কার্য্য করেন না। যাহাহউক যোগেন ভাকি-লেন "ছঃখীরাম।" ছঃখীরাম যোগেনের আদেশের জন্য বাহিরের ঘরে অপেক্ষা করিতেছিল, এখন যোগেনের নিকটে আসিলে, যোগেন বলিলেন "আমাকে ছোলা ভিজা, বাতাসা ও এক গেলাস জল দাও।" ছুঃখীরাম কি বলিতে ঘাই-তেছিল, কিন্তু যোগেন তাহা না বলিতে দিয়াই বলিয়া উঠিলেন, "আমি এখন হইতে ছোলা ভিজাই গাইব, উহা খাইতে বেশ।" দন্দেশ, রুগোগোলা, মালপুরা, মতিচুরাদি অপেকা ছোলা ভিজা কেমন স্থাদ্য ছঃথীরামের স্কুদ্র বৃদ্ধিতে তাহা আদিল না, সেমনে মনে যোগেনকে নিৰ্কোধ ছেলে বলিয়া ঠিক করিয়াছিল কি না জানি না, কিন্তু আর কোন কথা না বলিয়া যোগীনের আদেশমত কার্য্য করিল। যোগেন জলযোগ করিয়া পড়িতে বদিল,কিন্ত পড়া ভাল লাগিল না,কেননা তিই মাত্র কেবল স্থুল ্থকে পড়িয়া আঁসিতেছেন, তাহার পর তুর্দিন, কোন

শ**হা**ধ্যায়ী বালক ভাঁহার নিকট আইদে নাই, তিনিও তাহাদের নিকট যাইতে পারেন নাই। যোগেন মনোযোগের সহিত পাঠ করিতেন, ধীর, বুদ্ধিমান, দয়ালু; বালকসভাবস্থলভ দোষও আছে;—ভীরু, ইয়ারকি পরায়ণ ও ক্রীড়াসক্ত। যোগেস্ত্র ক্রীড়া করিতে বড়ই ভাল বাসিতেন, কিন্ত বৃদ্ধিমান বলিয়া অল্প সময়ে পড়িয়াও ক্লতকার্য্য হইতে পারিতেন। যোগেত্র নাথ নিজ বাস্থামের স্কুলে মাইনর পাস করিয়া এণ্টান্স স্কুলে ৩য় শ্রেণীতে ভর্ত্তি হইয়াছেন, যাহাহউক যোগেনের খেলা, গল্পও বেড়ান কিছুই হইল না,পড়াও ভাল লাগিল না, একা থাকিয়া বড়ই বিরক্ত হইয়া উঠিলেন, তাহার পর সন্ধ্যা সমাগত, ভুখাপি তাঁহার দাদা বাদায় আদিলেন না। যোগেলনাথ বড়ই উদিল ইইয়া উঠিলেন, বুদ্ধ হুঃখীরামও উনান জ্বালিয়া প্রভুর উদ্দেশে বাটীর বাহির হইলেন।"

পথিমধ্যে বাবুর সহিত তুঃগীরামের দেখা হইল। এই স্থানে যোগেনের ও তাঁহার দাদার একটু পরিচয় দিয়া রাখা যাউক। যশোহর জেলার অন্তর্গত আগড়-হাটি নামক স্থানে ইহাঁদের বদতি। ইহাঁদের পিতার নাম হরেক্রনাথ মিত্র, তিনি বন্ধামে নিশ্ন আদালতে ওকালতি করিতেন। তাঁহার উপার্জ্জন নিতান্ত মন্দ্র ছিল না, কিন্তু পানাস্তিক দোষে নিজের সাংসারিক অবস্থাকে উন্নত করিতে পারেন নাই। হরেক্স নাথের ৩টী পুত্র, প্রথম দেবেক্সনাথ, দ্বিতীয় যোগেক্সনাথ

ও ড়ভীয় স্থরেন্দ্র নাথ, আর একটা মাত্র কলা বামাস্থ করী বালবিধবা. একটী বিধবা ভ্রাতৃবধু ও দ্রী, এই মাক্র পরিবার। হরেন্দ্রনাথ জ্যেষ্ঠ পুত্র দেবেন্দ্রকে বন-থামের এণ্টান্স স্কুলে পড়াইবার জন্ত রাথিয়াছিলেন, দেবেক্স পরীক্ষায় তৃইবার অকৃতকার্য্য হইয়া তৃতীয় বাবে পাস করিলেন। এই সময়ে হরেন্দ্রনাথ বাত-ৱোগে আক্রান্ত হইয়া কার্য্য হইতে অব-সর গ্রহণ করিলেন। বিষয় সম্পত্তি যাহা ছিল, তাহাতে ৯'১০ মাসের অন সংস্থান হইত, স্বতরাং দেবেক্সকে কাজ কর্মের চেষ্টা দেখিতে হইল, অনেক চেষ্টার পর ৫० होका दिल्ला अक्षी कार्या नियुक्त হইলেন। ইতিমধ্যে আরও তুইটা পরি-বার বৃদ্ধি হইয়াছিল, সে তুইটা দেবেল বাবুর খ্রী ও পুত্র। দেবে**ন্দ্র** বাবু বাসায় আগিলেন ও অত্যন্ত বিমর্বচিত্তে তুঃখী-রামকে একথানা গরুর গাড়ী ভাড়া করিতে বলিয়া যে;গেনকে বলিলেন "বাডী হইতে চিটী আদিয়াছে ভারী পীডিত, আমি এখনই রওনা হই-नाम, शामी किंकृ इहेटन जूमिख बहना इहेख।"

ş

দশ দিন পরে দেবেক্সনাথ ও যোগেলনাথ বাসায় ফিরিয়। আদিগাছেন, কিন্ত
ছটা ভাতার নয়ন অঞ্জতে আপ্লুত;
ইহারা এখন পিতৃহীন। এখন আর
ছঃখীরানের পাকে চলে না, দেহেক্সনাথ
মুংপাতে সহস্তে ছই ভাতার হবিষার

প্রস্তুত করিয়া থাকেন। এইরূপে একমাস কাল গত হইলে দেবেজ্রনাথ গঙ্গাতীরে পিতৃশ্রাদ্ধাদি কার্য্য করিয়া আসিলেন।

দেবেক্সনাথের পিতার মৃত্যুর পরে ৬ মাস কাল গত হইয়া গেল। বিপদ যথন আইদে, একাকী আইদে না। থাত দেখিলে কাক ও পিপীলিকা আরও সঙ্গী যুটাইয়া আনে। বিপদও তেমনি ভাগ্য-विপर्वास (मशिल, जावल मधी नहेश) মানুষকে আক্রমণ করে। বাটী হইতে সংবাদ আসিল, দেবেল্ল বাবুর প্রী পীড়িত, উপযুক্ত চিকিৎশা হইতেছে মা। দেবেক্স বাব জ্রীকে বাসায় জানিয়া চিকিৎসা করিবার জ্বাতা বাড়ীতে পতা লিথিলেন। एएरवन वाबुत की साभीरक लिशिलन "আমার পীড়ার জন্ম তুমি ব্যস্ত হইও না, সামাতা একটু পুৱাতন জ্বর, ঔষধ দেবন করিতেছি, সম্ভবতঃ সম্বরই **নিরাময়** হইতে পারিব। আমি এখন তোমার ওথানে গেলে অধিক টাকা ব্যয় হইবে। শুভুর মহাণয়ের ল্রান্ধের ভোজ নিম্তরণ উপলক্ষে প্রজাগণের নিকট আগানী সনের ও থাজনা লওনা ইইয়াছে, বাড়ীতে টাকা না দিলে চলিবে না. শুতরাং ৫০১ টাকায় তোমার কুলান ভার হটবে, এই স্বস্ত চিন্তা ক্রিয়া এখন আমি ওখানে ঘাইতে চাহি না, নতুবা আনার কি তোমার নিক্ট থাকিতে ইচ্ছা হয় না—সহস্তে তোমার সেবাভশ্ৰম ও আহারাদি করাইতে কি · আমার প্রাবে দাধ ও বাসনা হয় না १ কিছ

1

অ'মাদের অবস্থা বুরিয়া আনি দে সাব-বাসনাকে সংগত করিয়াতি, ভূমি যদি পার, তবে ২ ৪ দিনের ছটী লট্যা ঠ কুরপোর শহিত বাটী আদিবে: ঈশ্বেচ্ছায় ঠাকুর-পো উপ জেনজম হটলে আমরা একতা থাকিতে পারিব।" দেখেন্দ্র বাবু সেই চিটী পাইয়া কি করিবেন স্থির করিতে পারিলেন না। এইরপে ২া৪ দিন কাটিয়া গেল, ছটী লইবার চেষ্টা করিলেন, মাহেব দিল না। আবার বাড়ী ইইতে দেহেন্দ্র নাথের দিদি বামাস্থকারী পত্র লিখিলেন, "বৌষের পীড়া ক্রমশঃই বৃদ্ধি পাইতেছে, ভাল রকম চিকিৎস। ইইতেছে না, এখ-নও তাহাকে স্থানাস্থরে লইয়া যাওয়া যায়, ইহার পর তাহাও ঘটিবে না।" এবার দেবেন্দ্রনাথ আর থাকিতে পারিলেন না, তিনি যোগেন্দ্রকে বাটী পাঠাইয়া বলিয়া দিলেন, ঘরে তালা লাগাইয়া সকলকে লইয়া আসিবে।

দেবেল বাবুর সমস্ত পরিবার বাসায় আসিয়াছেন, ত্রী ভারী কাহিল, পীড়া িকিৎসকের অসাধ্য, তবুও "যাবৎ শ্বাস তাবৎ আশ" বলিয়া চিকিৎসা চলিতে-ছিল, দিন পনর পরে পতিপুত্র ও শাভডী ननका आश्रीयवर्गक कांम:हैया क्रिटक বাবুর সাধ্বী দ্রী গোলাপফুলরী ইহলোক পরিত্যাগ করিলেন। মাসেক পরে দেবেন্দ্র বাবর মাতা, জেঠাইমাতা ও ভগিনী মাতৃহীন শিশুবালকট কে লইয়া শোকা-কুলচিত্তে বাটীতে ফিরিয়া আসিলেন। বাটীতে ফিরিয়া আসিলেন কেবল আসিলেন না খাভড়ী ননলার প্রতি ভক্তিমতী, সানীতে অনুরক্তা, পুত্র ও ्रमवत्रशाल (अहमशी, शृष्टत व्याननगशी, পরিজনগণের আরামদায়িনী, গ্হের লক্ষীসরপিণী—গোলাপ স্থন্দরী।

(ক্রমশঃ)

সতী ও শান্তি।

একাদশ পরিচ্ছেদ।

শান্তি। এটা কি ?
বড় বৌ। এটা সিদের চাক্তি।
হরিণের পেটের গুলি কামারের হাড়ভীতে পিটে গ্রহকম চাক্তি করে গলায়
দেওয়া হয়েছে।

শান্তি। গলায় দিলে কি হয়? বড়বৌ। অনেক বোপ ভাল হয়। এক বার আনাদের গ্রামে এক জন লোক হরিণ মাংস বেচ্তে আসে, ভাকে পাঁচটি টাকা দিয়ে ঐ গুলি আনয়েছি।

শান্তি। পাঁচটি টাকা দিয়ে ঐ গুলি আনাতে' হ'য়েছে! সিকি প্রদা দিলে যে এখানে এর চারি গুণ গুলি পাওয়া যায়।

বড়বৌ। এ সব গুলিতে কাজ হয় না। শিকারীরা যে হরিণ মারে, সেই হরিশের পেটের গুলি চাই। শাস্তি। হ্রিণের পেটের গুলি না হলেহেবেনা কেন ?

বড়বে । হরিণ শিকারীরা বলে, হরিণ বনে এমন অনেক রকম পাত।
লতা ত্যুবের গাছ গাছড়া খায়,
মাহা এখানে খুঁজিলে পাওয়া যায় না।
সেই সব গাছ গাছড়া হছম হয়ে পেটে
ওযুধ হয়।সেই পেটে বন্দুকের গুলি
গোলে ত্যুধের সঙ্গে মিশে ওয়ুধ হয়ে যায়।
ভাইতে হরিণের পেটের গুলি এত উপ-কারী।

শান্তি। উপকারী যদি, তবে আপ-নার ছেলের উপকার হল কৈ १

বড়, বা। আরমা, আমার "অদেষ্ট"। আট্কুড়ার ব্যাটা টাকা কটি ফাঁকি দিয়ে নিলে।

শান্তি সরোজিনীর মুখের দিকে চাহিয়া বলিলেন, দিদি দেনুন দেখি, হরিণ শিকারীদের কেমন টাকা নেবার ফলি। একটা হরিণ বেচে পাঁচটাকা পায় না, কিন্তু একটা সামান্য গুলিবেচে পাঁচটাকা! আমি অনেক জেলের গলায় ঐ রকম দেগেছি। সরোজিনী বলিলেন, কত ধূর্ত্ত লোক ঐ রকমে ভাল মাহুষকে ঠকাচ্ছে। প্রবঞ্চনরা যাই বলে, সরল লোকে ভাই বিশ্বাসকরে। প্রভারণা, প্রবঞ্চনা, জাল, জুয়াচুনী, বাটপাঁড়ী, রাহাজানি, ভাতানি, গুড়ামি, বগুমির মস্ত একটা ব্যবসাবেন পৃথিবীর চারিবিকে চলেছে।

তংপরে শান্তি সেই সকল মাতলি

হাতে লইয়া বলিলেন, উ: এ যে প্রায় আধ সের ভারি! এতে কি আছে 🕈

বড় বৌ। এই সব সোনার মাছলিতে ঠাকুরের ওযুধ, রূপোর মাতৃলিতে 'ভণি-ূনর" ওয়ুধ, তাঁবার মাত্মলীতে কবচ আর উনাসীনের ওবধ আছে। আর এই বে मव "প্ৰটলীপাঁটলী" এতে যে যখন যা বলেছে, তথন তাই বেঁধে দেওয়া হয়েছে। শান্তি। কি কি, বলুন না ভানি। বড় বৌ। এই সব সোনার মাতৃলীতে ''পঞাননা' মনসা, চিলেখালী, নবছুৰ্গা, "দ্ফিণ্দার" শীতলা, মঙ্গলচণ্ডী, জলষ্ঠী, "রক্ষেকালী", "কসাই কালী," খাশান-কালী," জয়চতী, "বিশালাক্ষী," "তারকে-শ্বর." "বাবা কপিলমণি,"গাজিসাহেব, পীর গোরাচাদ, বদর সাহেব,গাজি ফোজুঁদোর, পাচপীর, নারায়ণজী, মত্যপীর,ওলাবিবি, আশানবিবি, পাষাণবিবি, বোরকুং বিবি, অবচনী আর আর ঠাকুরদের "থানের" মাটী, ঘটের জল, "কাড়ান" ফুল আর সপ্রণত ভযুধ। আর এই রূপোর মাচ-লীতে রাগচণ্ডালের হাড, কাল বেরালের "কুল," ''ছেলে মাছের"দাঁত, "ভালু কের" গায়ের লোম, পোঁচার পালক, "উদ্-বেরালের পিতি," বাঘের জিভ, সাদা বিশুকের পোঁটা, হাভীর "নাদ," উৎসর্গ যাঁড়ের খব, আর আর কন্ত কি আছে মনে নাই। তাঁবার মাহলীতে আছে র মকবচ, "র (क्क" कবচ, "বংশকব।" জয়কবচ, লক্ষীকবচ, রাধাকবচ, কৃষ্ণকবচ, पृश्चित्रहरू, शिवकद्रह, अक्षां छविद्धाकवह,

विकाकविह, व्यक्ष्यकविह, सथूतात्र कलसकृत, विभानद्रित "जितिमाही," देकलाद्मित
"क्रमञ्ज्र" कृत, श्वक्ष्यतादित वहेकल,
कानीत वश्रक्षपृत्तत कृत, मीठा कृत्छत
व्यक्त, द्विधातत्र माही, श्वद्यात्मत गश्रद्यत
स्मृतात गश्रद्यत माही, शांतत गश्रद्यत
साही, "कामत्रभात माही, गांतत गश्रद्यत
साही, "कामत्रभात माहि, गांतत गश्रद्यत
साही, "कामत्रभात कामित्कत" माहि, कालीचार्टित कालीत कलार्टित मिं पृत, विकानहत्तत विकानिमीत श्र्मात कृत, कानसार्थित महाश्रद्याम, श्रीद्याद्यत हाड़ीत
वंगित काहि, कल् स निष्ति वाली, देवठत्रभीत काहि, काल् स निष्ति वाली, देवठत्रभीत काहि, काल् स निष्ति वाली, देवठविकात काहि, काल् स निष्ठित काहि, वाली
भीहिती," वाद्य वाला वाला क्षार्य " निष्ती,"

ভূতভৈরবী," "গুয়ে বাবলার' শিকড়, শেত আকল, শেত সিম্ল, "আঁত মোড়া" "ময়না" কাঁটা, "বাছড় য়টপুটে", "ম্যাড়া দেড়ী", "বন চাড়াপ", "হারা ভারা", "নোদকাট," "ভোঁদকাট," "বনহলুদ," "তকালম্বা," "ম্যালার মাটা," কলুর ন্যাতা, ধোবার পাটের কাঠ, ঝাটার দড়ী, কোমরের চাকের মাটা, "ন্যাডা." "গুকানি," "কাল্গু," হরিণের বিষ্ঠা, রেলগাড়ীর কাঠ, ফানদের কপুর, বংশ-লোচন, গোরচনা, মুগনাভী, আমড়া আঁঠা,আর একটা কল্লাক, ভ্রাক্ষ যোগিনীচক্র, "রসকাটা," "ফ ক্রেকাঁঠা, আর এটি গক্ষের চাকতি আর গুটে সিকি প্রদা।

নৃতন সংবাদ।

- ১। পুর্ণিয়ার কুমার নিত্যানন্দ সিংহ
 লেভি ভফাবিণ কণ্ডে ধহাজার টাক।
 দান করিয়াছেন।
- ২। সাতপুকুরের বাগানে গত ১০ই
 ক্ষেক্র পারী কাশীপুর পুপ্পপ্রদর্শনীর অবিবেশন হইবাছিল। জজ নরিস সাহেব
 পুস্প্রদর্শনী খোলা উপলক্ষে সভাপতির
 আসন গ্রহণ করেন।
- ৩। কলিকাতা পাথ্বিরাঘাটার রাজা সৌগীক্সমোহন ঠাকুর তাহার মাড়-শ্রাজ •উপলক্ষে শোভাবাজার দাতবা সঙীর হাত দিয়া ২৫• বোখাট চাদর গরিব ব্রাহ্মণ ও কার্যু বিধ্বাদিগকে শ্রিকরণ করিয়াছে।
- ৪। সম্প্রতি বেলুণ সহরে ভয়ানক
 অয়িকাও হইয়া নিয়াছে। শতাধিক গৃহ
 ভক্ষসাং হইয়াছিল। প্রায় দেড় লক্ষ
 টাকার ক্রব্যাদি নপ্ত হইয়া নিয়াছে।
 কিছু দিন হইল বেলোই পুনানগরে অয়িকাও হইয়া প্রায় দেড় লক্ষ টাকার
 সামগ্রী ৪৭২ম হইয়াছে।
- ৫। কতকগুলি নরপিশাচ মেদিনীপুর হইতে মেয়ে ধরিয়া আনিয়া কলিকাতায় বেশ্বাদিগের নিকট বিক্রয় করিয়া
 থাকে। সম্প্রতি ইহাদের ২১ জন ধুত
 হইয়া মেদিনীপুর সেসন জ্বজের বিচারে
 কঠোর দতে দণ্ডিত হইয়াছে।
 - । লেডী ল্যানসভাউন স্বর্গীয়

কেশবচল্ল সেনের পরিবারবর্গের সহিত ক্রিয়াছিলেন। রান্নাঘর, রুঁাধিবার হাড়ী, । ১ঘন্টা পরিদর্শন ক্রিয়া প্রীত হইয়াছিলেন।

কড়া, কুটনা,বাটনা,রাহা প্রভৃতি তাঁহাকে সাক্ষাৎ করিতে কমলকুটীরে পদার্পণ দেখান হইয়াছিল। লাটমহিষী এখানে

বামারচনা। পীতি-প্রতিমা।

মরিতে জনম ম্ম মরণে করি না ভয়, মরিব মা, ভোরি ভরে ষত্ট মরিতে হয় ! সংগারের অবহেলা. खनालत, अश्रमान, কভু না দেখিব চে য় কাণে নাহি দিব স্থান। মানবের--জগতের দ্রে—শত দূরে র'ব, নি'জন বিজন-বাস আন্দে সকলি স'ব। নাহয় গোলাপ, বেলি, कृष्टिया भाव वत्न, "वडे कर्षा कर्ष" कथा কবেনা আমার সনে। না হয় আনার বাড়ী व'रत ना मलग वाग, সরস বসন্ত হেথা আসিবে না পুনরায়। না হয়, তরুণ উষা ছড়াবে না সোণা হাসি,

শরতে টাদিমা চাক্র

ঢালিবে না স্থা রাশি !

না হয়, এ মান বুকে আরও লাগিবে কালি. বিব্ৰক্ত সংসার মোরে শত মুথে দিবে গালি।

ব্ভ "আপনার" জন সেও পর হয়ে র বৈ, নীরবে আধার চিত আঁধারে মগন হবে !

পাধাণ পরাণে মম o गति गश्**ष्य म**'रा, মরিব মা। তোরি তরে যতই মরিতে হয় !

ভিক্ষা করা, প্রায়ে ধরা, বজ্ৰ ছেন বাক্যবাপ, [তোর লাগি কভু আমি নাহি ভাবি "অপমান।" د د

আগুনে পুড়েছে যেই দে কি তাপে ভয় করে? সমুদ্রে বসতি যার সে কি গো শিশিরে ভরে?

অণ্ত আঘাতে ঘাহা ভেঙে গেছে সমুদায়, य उदे व्याघा उ कत्र, ভা' কি আর ভাঙা যায় १-

–আমারে। এ মত প্রাণ মরিবার নাহি ভয়, মরিব মা। ভোরি ভরে যভট মরিতে হয়। অনাথ কাঙ্গাল আমি তাই দহাময় বিধি, দিয়াছেন স্লেহাশীয তো'হেন অমুল্য নিধি! তোরি তরে সাধ আশা, ভোরি ভরে বাড়ী ঘর. তোরি তরে গ্রেহ প্রীতি, ভোরি তরে পরাপর। **সংসারে** বন্ধন ভূনি, শ্বদয়ের ভাল বাসা, করমে উংগাই মম---—খুঁ জিয়া না পাই ভাষা! বিধাতার জীতরণে এই ভব ভিক্ষা চাই, বুক ভরা হুখ ভোর ८ए (थ. श्वरथ म'८व याहे। তোর স্থ-আশে আমি. किया मा श्राहित रहा. ডুবিব অন্তে হুখে ভক।ইব সিন্দ-জল। কি করিলে তোর মুখে ির-এখ-ছ:সি র'বে গ শোক, বোগ, পাপ, ভাপ, কিলে শত দূর হবে १---জানি না লগাট-লিপি-

কি বাসনা দেব পার--

चम् (हेब मगाठाव !--

বোঝেনা জবোধ নর

-জানি এই, বিশ্ব ম্ম ও প্রীতি-প্রতিমা-ময়।--মবিতে মা ভোর তরে আনার কিসের ভয় প ন্ত্ৰী প্ৰিয়-প্ৰদক্ষ ও কাব্যক্সমাঞ্চলি রচয়িকী।

नव नां चांगमरन।* এস এস নব লাট এস এলগিন। আজি ভারতের ভাগ্যে বড শুভ দিন। রাজ-প্রতিনিধি তুনি, এসেছ ভারতভূমি, ভারত কল্যাণ ব্রত করিয়া গ্রহণ, সমাদ্রে কে না ভোনা ক্রিবে বর্ণ গ তব ভভ আগমনে হাদয় স্বার আনন্দ সাগ্রমাঝে দিতেছে সাঁতার। किछ (भारा भीन, शीन, রোগে শোকে कारहे निन, ত্ব যোগ্য উপহার কি দিব তা বল গ প্রা.পর ভকতি এক আছয়ে সম্বল। সে ভক্তি-ফুলে মালা ক্রিয়া গ্রন্থন, দিলাম ডোমার পদে করগো গ্রহণ। রাজীর স্বরূপ তুমি, এমেছ ভারত ভূমি, রহ নিরাপদে সদা আন্দিত্মন, পুরবং প্রজ্পে । করহ পালন। একমনে একপ্রাণে অমিরা সকলে এ মিন্তি করি জগদীশ-পদতলে— ভোমার স্থ্যাতি চয়, ভরুক্ ভূবন্ময়, ভোমার স্থেশ গান করুক স্বাই. দুর হোকু ভারতের অপেদ বালাই। बीवरी नशास्त्रवाना मुखाकी, ষ্:জুপুর।

স্থানে স্থানে সংশোধন করা হইল। বা, বো, স।

বামাবোধিনী পত্রিকা।

BAMABODHINI PATRIKA. "कन्याप्यवं पासनीया जिल्लायातियत्नतः।"

কন্যাকে পালন করিবেক ও যত্নের সহিত শিক্ষা দিবেক।

ু ৩৫ ∘ সংব্যা

কাল্পন ১০০০— মার্চ্চ ১৮৯৪।

৫ম কল্প। ২য় ভাগ।

সাময়িক প্রসঙ্গ।

নবলাট এলগিন—লর্ড এলগিন তাহরে উদার-স্বদারতাখার। ইতিমধ্যে দকল শ্রেণীর প্রজার আদের ও ভক্তি আকর্ষণ করিয়াছেন। বড় বড় অনেক্ সভাসমিতি তাহাকে অভিনন্ধন করিয়া প্রীত হইগাছেন এবং তাঁহোহইতে এদেশের আশেষ মঙ্গলের আশো ক্ষিতেছেন। লর্ড এলগিনের চরিত্রও দেবচরিত্র বলিয়াবোর হইতেছে—তিনি নিরামিধাশী এবং মাদক প্রশৃত্রিক বরেন না।

নবলাট পরিবার—আমাদের বড়লাট লভ এলগিন বাহাছরের ১০টা সম্ভান। ভাঁহার প্রথম ০ কন্যা লেভি এলিজেবেথ, ধুরীখানা ও কন্টান্স সঙ্গে আসিরাছেন—ভাঁহাদের বয়স ১৭, ১৫ ও ১৪ বৎসর। ভাঁহার জ্যোদপুত্র লভ্ জন্মের বয়স ১৩ বংসর। তিনি এবং অবশিষ্ট ৬টী শিশুসন্তান বড়লাট বাহা-ভুৱের ভগীলেডী লুইসা ক্রুসের তথাই-ধানে দেশে আছেন।

বোবা বালক দিগের শিক্ষা—
গত ২৭এ ফেব্রুয়ারি সিটাকলেজে বোবাকালাদিগের প্রথম বাধিক পারিতোবিক
বিবরণ অতি সমারোহে সম্পন্ন হইয়াছে।
বাঙ্গালা প্রথমেণ্টের প্রধান সেক্রেটারী
কটন সাহের সভাপতির কার্য্য করেন।
অনেক মান্যগণ্য সঙ্গদম লোক উপস্থিত
ছিলেন। ইছার বিশেষ বিবরণ স্থানাছরে প্রদত্ত হইল।

ন্ত্রীরত্র—মেরী পুলি-নারী এক ইং-রাজ বালিকা লগুন বিশ্ববিদ্যালয়ে ২৪০ জন প্রতিদ্বন্ধীর মধ্যে মনোবিজ্ঞান, ইং-রাজী ও করাদী, ভাষায় ছালবৃত্তি প্রীকার সর্কোচেন্ডান লাভ করিয়া- ছেন। ইহাদের মধ্যে ১৬০ জন পুরুষ ছিলেন।

দূর নিকট হইল—কলিকাত।

ইইতে নাগপুর ৭৬০ মাইল। এই উভ
য়ের মধ্যে টেলিকোঁ নলের যোগ হইয়া

কথোপকথন চলিতেছে। নাগপুর হইতে
নলের এক মুণ দিয়। একজন কথা বলিতেছেন, কলিকাভায় শ্রোভা আর মুণ

দিয়া ভানিতেছেন যেন বক্তা নিকটে

বসিয়া আলাণ করিতেছেন! কি
আশ্বর্যা!

দান—রাউলপিণ্ডির মাননীয় ক্ষেম সিংহবেদী আপন জ্যেষ্ঠা কন্যার বিবাহ উপলক্ষেও লক্ষ টাক। দান করিয়াছেন। ঐ অর্থধারা উক্ত সহরে এক শিল্প বিভা লয় প্রতিষ্ঠিত হইবে। আপাততঃ ঐ টাকার
মধ্যে ১লক্ষ টাকা লইয়া কার্য্য আরম্ভ
হইবে। (২) মিয়ানমিরের সেঠ বংশীয়
প্রেসিদ্ধ ধনী রায় রামরতন বাহাত্বর মৃত্যুর
পূর্বে ৫০ হাজার টাক। দাতব্য কার্য্যে
ব্যয় করিতে বলিয়া নিয়াছেন।

নূতন প্রধান রাজমন্ত্রী—সংবাদ আসিয়াছে গ্লাডটোন সাহেব পদত্যাগ করাতে লর্ড রোজবেরী প্রধান রাজমন্ত্রি পদে বৃত ইইয়াছেন।

মৃত্যু—কলিকাতার প্রসিদ্ধ ধনী বাবু ষত্নাথ মল্লিক এবং রেইস ও রায়তের সম্পাদক বাবু শভ্রেন্ত মুখোপাধ্যায় পরলোকগত হইয়াছেন।

প্রহু দের ম।।

প্রহলাদ মহাশয় সত্যকালের বালক
ভক্তন ত হার মহাশয় চরিত্রের অন্থপম জ্যোতিঃ ত্রিয়ুগবাপী অতীতের অন্ধকার ভেদ করিয়। কলিকালকেও সমুজ্জ্ল
করিয়া রাথিয়াছে! তাহার অলোকিক চরিত অবলম্বনে কভ প্রবক্ত,
কভ কাবা, কভ সন্দর্ভ এবং কভ কি
বস্তুর সৃষ্টি হইয়ছে, ভাহার ইয়ভা
নাই। প্রহলাদচরিত্র কভ লোকের
উপজ্লীবিকা ইয়ছে, তাহারই বা সংখা।
কে করে প থিয়েটারে প্রহলাদ, মাতায়
প্রকাদ, কথকের বেদিতে প্রহলাদ, ম্দীর
লোকানে, কল্ব ঘানিতে, সুল্লপাচ-

শালায়, প্রহলাদ না আছেন, এমন স্থানই
নাই। জগংপাবনী সুরধুনীর স্থায়
প্রহলাদচরিত্র হিন্দু জগংকে চিরকাল
পবিত্র করিয়া আসিতেছে। কিন্তু যে
গর্ভ হইতে এই অসমুদ্রসম্ভূত ভুবনবিজ্ঞা
মহারত্বের উন্তব্য, সেই গর্ভধারিণী কয়াধু
রাণীর উল্লেখ ত বড় শুনা যায় না।
আজ আমরা এই প্রবন্ধে সেই ভগবৎপরায়ণা সাধুশীলা রাণীর ছই একটী কথা
বলিব।

ত্রি লাকাবিপতি অস্থররাজ হিরণ্য-কশিপু প্রহলাদের পিতা এবং কয়াব্রাণী ভাঁহার মাতা, ইহা অপর সাধারণ সক-

লেই অবগত আছেন। সে সকল পো-রাণিক বা ঐতিহাসিক বিবরণমারা প্রব-দের কলেবর বৃদ্ধি করিবার প্রয়োজন নাই।' এন্থলে কেবল ইছাই দেখাইতে হইবে ষে, যে গর্ভে প্রহলাদ নদুশ ভগ-বন্ধক্রের জন্ম হইয়াছিল, ভগবান সেই গর্ভটীকে সম্পূর্ণরূপে তাহার উপযোগী কবিয়াছিলেন।

হিরণ্য কশিপুর প্রতাপে তিভুবন প্রক-ম্পিত। এমন কি হিন্দু পুরাণ মতে, তাঁহাকে বিনাশ করিয়। পৃথিবীতে শাস্থি ভাপন জন্য স্থং ভগ্যানকেও অবতার স্বীকার করিতে হইয়ছিল। হিরণা-কশিপুর হৃদয় এত কঠিন ও নৃশংস যে, পুত্র প্রহলাদ বিষ্ণুভক্তি আগ্রয় করিয়া-ছিলেন বলিয়া ভাঁহাকে হত্যা করিবার विविध ८५ हो। कड़िशा हिल्लन: (कनमा বিষ্ণুকে তিনি আপনার শত্রু বলিয়া বিশাস করিতেন। তাঁহার পুত্র তাঁহার শক্তর আশ্রেয় লইয়াছে, এ অপুমান তাঁহার সহাহয় নাই। এই জনাই তিনি প্রহলাদের প্রতি তাদুশ অত্যাচার করেন। পুত্র সহস্র অপরাথী ও সহস্র অত্যাচারী হইলেও পিতা তাহাকে সহল্ল দওদানে मक्य ए अधिकाती वर्षे ; किन्तु आप-নাশের চেষ্টা করা ভাঁহার পক্ষে অসা-ভাবিক। হিংশ্যকশিপু দেরপ অসা-ভাবিক চেঠা করিতেও বিমুখ হন নাই। ষে ব্যক্তি আপন প্রাণাধিক প্রিয় পুত্রের প্রতি এরপ নিষ্ঠর ও নির্ম্বর ব্যবহার ক্রিতে পারে, তাঁহার অমুগত ও আল্রিত | বিস্তুত্তিক ছাড়াইরা দিবার অন্য রাজার

ব্যক্তিগণের মধ্যে কেহ তাঁহার মতের প্রতিকুলাচারী ছিল,একথায় কি কাহারও বিখাদ হয় ? বিশেষতঃ এতাদৃশ প্রভাপ-শালী তুর্দান্ত পুরুষের সহধর্মিণী হওয়া যে দকল ললনার ললাটলিপি, জাঁহা-দিগের মধ্যে কেই প্রকৃতরূপে ভাঁহার সহংশিণী ছিলেন না, ভাহাইবা কে বিশাস করিতে পারে ? আমরা দেখাইব, ভক্তিদেবীর কুপায় করাধু মহিশীর বামা-জ্বয় এত উচ্চভাব ধারণ করিয়াছিল যে, হিরণ্যকশিপুরূপ জলস্ত অগ্নিকেও তিনি জ্র**কে**প করেন নাই।

প্রহলাদ মহাশয় অস্বরারি হরির শরণাপর হইয়াছিলেন বলিয়া মদগর্বিত হিরণ্যকশিপু ভাঁহাকে বধ করিবার বিবিধ চেপ্লায় অকতকার্যা হইয়া অবশেষে মনে कतित्वन. श्रद्धातित गर्डशतिनी श्रद्धा-দের এই ত্মতি দূর করিতে সমর্থা इहेरदन ।

"এতেক চিভিয়া মনে,পাঠায় মায়ের স্থানে, বুঝাইতে কহি পাঠাইয়া। কয়াণু স্থনতি রাণী, তুবন পাবনী ধনী, প্রক্রাদেরে কোলে করি লইয়া॥

घन मूश हचार्य,

মস্তকে আত্রাণ লয়ে, **চিবুক ধরিয়া হেরে মুখ।** আহা মরি বৎশ মোর, নিরদর স্মৃকঠোর, পিতা তোর কত দিলা হুখ ॥" ভক্তমাল। थक्लाए बननी क्यांधु तांशी भूखरक এইরূপ স্লেহাদর করিয়া তাঁহাকে অতি নিৰ্দ্ধন স্থানে লইয়া গেলেন এবং

বিশেষ নির্বান্ধ থাকিলেও তিনি পুত্রকে এইরূপ লোকবেদসাধুসন্মত উপদেশ দিলেন,—

" এক্সফ ভকতি নিধি, রাথহ হাদয়ে বাঁথি, হুষ্টের কথায় নাহি ভূল।

ভয় কি অসুর হইতে, ঐকুষ্ণ সহার যাতে, বিদ্বের সে বিল্ল অনুকৃল ॥

ছ্ঠনতি রাজা তোরে, প্রতিকূল বুঝাবারে, স্মামারে কহিয়া পাঠাইলা।

হাহা কি হুদৈব গতি, কি হু**ট অসু**রমতি, বিধি নিধি বঞ্চিত করিলা॥

কৃষ্ণপ্রেম স্থাধার, নাহি যার পারাবার, হেন স্থথে বঞ্চিত হইলা।

আৰা তাহে নিজে ছুই, বিষমগরলে পুই, হিতাহিত বুঝিতে নারিলা॥

তুমি যে হরির ভক্ত, তোমা দ্বেযে অন্তর্মক্ত, ইহাতে মঙ্গল কড় নহে।

অচিরাতে হবে নাশ, মরণে হ**ই**বে বাস, এ দৌরাত্ম্য ধর্মা নাহি সবে।

তুমি মাত্র শ্রীচরণ, রাখিও করিয়া পণ, হুদয় মাধারে দৃঢ় করি,

জনম জীবন মম, তাঁরে কর সমর্পণ,
সদা রক্ষা করিবেন হরি ॥" ভক্তমাল।
করাধুরাণী পুত্রকে এইরূপ শিক্ষা
দিয়া তাঁহাকে স্থান ভোজন করাইলেন
এবং রাজসভার যোগ্য বন্ধালয়ারে
সক্ষিত করিয়া রাজার নিকট প্রেরণ
করিলেন। এরূপ শিক্ষায় রাজা পুত্রকে
করিবেন না। ভাঁহার ভাল্লানে এভই
বিশাস ও এভই নির্ভর যে, লৌকিক

পুত্রক্ষেষ্ট তাহার নিকট তিষ্টিতে পারিল না, প্রবল শ্রোতে পতিত তৃণবৎ কোথায় ভাসিয়া গেল।

জননীর নিকট শিক্ষা ও সহামুভৃতি পাইয়া প্রফ্রাদের মুখজ্যোতিঃ দিওণ শোভা ধারণ করিয়াছে। রাজা তদর্শনে অতিশয় আনন্দিভ হইলেন। ভাবিলেন, মাতার যত্নে প্রহলাদ এখন নিশ্চয়ই কুবৃদ্ধি ত্যাগ করিয়াছে। এইরূপ চিন্তা করিয়া পুত্রকে নিকটে বসাইয়া অঙ্গে হস্তামর্শ পূৰ্বক কহিলেন,—' "আমি যাহাকে তৃণবৎ গণ্য করি না, তুমি আমার পুত্র হইয়া সেই হরিকে ভঙ্গনা কর, ইহা অতি-শর লক্ষার বিষয়। অতএব আমার সহিত আর হঠ ব্যবহার না করিয়া হরির আত্র-গত্য ত্যাগ কর।" প্রহলদে পিতার এরপ আদর ও লৌকিক সুখৈর্য্য অপেক্ষাও উচ্চতর বিষয়ের অধিকারী হইয়াছেন, স্তরাং তাহাতে ভুলিলেন না। কহি-লেন :---

"প্রহ্লাদ কহে যে পুন,, মহারাজ কহি শুন যতেক কহিলে নীতি বাণী। সকলি অনিত্য হয়, সংসর্গ বিপর্যায়,

নিন্দিত অথাক দৃষ্ট মানি॥ যার সনে কর হট, সেই প্রাণেক্রিয় পট, তাহ। বিনে পড়িয়ে রহয়।

শৃগাল কুরুর ভক্ষা, এই যে স্থধের পক্ষ, ক্ষণ মাত্রে উড়িয়া পলায়।

ষহারাজ ভজ পদ অভয় শরণ। কাপুরুষ ষেই জন, নাহি ভজে শ্রীচরণ,

करत राहे नतक उद्धन ।

ভাঁরে না গণরে ফেই, জগতে অনিত্য দেই, নিশ্চর বিধাতা তারে বাম। সংসার যাতনা ভোগ,সদা সেবে শোক রোগ कषािं १ शूर्व नहरू काम ॥ ইচ্ছির বিষয় জ্ঞানে, তৃঃথ সুধ করি মানে, নাসিকায় মায়ারক্ষু বশে। व्यविना। याहात नामी, भताभत श्रूच तानि. নাবুকিয়া বঞ্চিত সে রসে। অত এব মহারাজা, অন্তরে তাজহ ছুজা, ভক্তরি অভয় চরণ। বিষয় যে কুটা নাটা, ছাড় অন্য পরিপাটা, সদা কর অনন্যশরণ॥" ভক্তমাল। क्षक्तारमत्र এই সকল উक्तित शर्व যে যে ঘটনা সংঘটিত হইয়াছিল, এ প্রবন্ধে সে দকল বক্তব্য নহে। কেবল ইহাই দেখান উদ্দেশ্য, মানবগণ **ে**দবসূন'ভ ভজ্জিধনে ধনী হইলে লৌকিক ভোগৈশ্ব্যা, সুথবিলাস ও ভয়মৈত্রী কিরূপে ভুচ্ছ করিতে পারে এবং তাহা-দের শ্বদয় কত উচ্চভাব লাভ করে। ভক্তি শাপ্ত বলিয়া থাকেন যে, ভগবানে ভক্তি ও বিশ্বাস হইলে তীব্ৰ ভক্তিযোগ-শালী ব্যক্তিগণ কৈবল্য মুক্তিকে নরক ভুল্য, স্বৰ্গস্থকে আকাশ-কৃষ্মবৎ অলীক

भगार्थ, एफी छ है जिल्लान दिवन छविशीन কালসপ্ৰৎ, বিশ্বকে স্থপূৰ্ণ এবং বিধি মহেন্দ্রাদিকে কীট তুল্য মনে করিরা थाकिन। अस्तामहिक वरे উ ক্টিব জনন্ত দৃষ্টান্ত। প্রহলাদ, ত্রিলোকবিজয়ী তৃদ্দান্ত বহিষ্মু থ পিতা হিরণ্যকশিপুকে ষে উপদেশ দিলেন, তাদুশ নিভীকতা ও নিরপেক্ষতা, বিষয়বিরাগী ভগবৎভক্ত ব্যতীত আর কে প্রকাশ করিতে পারে ? চৈতন্যচবিতের নিগুড় রহ**দ্য উত্তেদ** করিতে পারিলে স্পষ্টই বুঝা যায় বে, ভগবন্তক্তি বাস্তবিকই ভগবানেরও লোভ-নীয় পদার্থ। এইজন্যই শাত্রে ভক্তি, ভক্ত ও ভগৰানকে অভিন্ন তব্ৰূপে নির্দেশ করিয়াছেন। যে ভক্তির উপরে ভক্ত ভগবানের সাহাধ্য লাভ করেন. তাদৃশ ভক্তি, জীবের ভাগ্যে প্রায়ই ঘটে ना। (यशान घटि, मिहेथान के क्यांपू-রাণীও আহলাদের সৃষ্টি হয়। আমর৷ কায়ননোবাক্যে ভগবা**নে**র নি**কট** প্রার্থনা করি, বামাবোধিনীর প্রত্যেক পাঠিক৷ ক্য়াবুরাণী হইয়া পাপ-কলুষিত বঙ্গভূমিকে পবিত্ৰ কক্ষন এবং প্ৰহ্লাদ সদৃশ পুত্রের জননী হউন।

লেডী হেনরী সমারসেট্।

(পত বারের শেষ)

বাড়ী ভ্রমণ পূর্বক ধর্মপুস্তক পাঠ করিয়া গিছে আহ্বান করিয়া আনিয়া

তিনি শ্রমণীবী ক্রবকদিগের বাড়ী আসিতেন; এবং প্রস্থতিগণকে আপুন

পালন সম্বন্ধে উপদেশ দিতেন। এইরূপে লেডী সমারসেট প্রাক্ষামগুলীর হিত-সাধনে যত্মবতী হইলেন।

কবিঞ্জ বাশ্মীকি গাইয়াছেন,—

"বাতি গল্ধঃ স্থমনসাং প্রতিবাতং সদৈব হি।
ধর্মজন্ত মনুস্যানাং বাতি গল্ধঃ সমস্ততঃ ॥"

অর্থাৎ বায়ু যে দিকে বহিতে থাকে, পুষ্পদৌরভ সর্ব্রদা দেইদিকেই চালিত হয়, মানবের ধর্মসৌরভ আপনাআপনি চতর্দিকে অপ্রতিহতভাবে প্রবাহিত **रहेश थाकि। लिखी नमात्रसा**ढेत छानत সৌরভ কি কেবল স্বগ্রামেই বন্ধ ছিল ? না, তাহা নহে। তাঁহাব ধর্মপুস্তক পাঠ ও বক্তা অতীব হৃদয়গ্রাহী। যথন এই সংবাদ ঢারিদিকে প্রচারিত হইল. অমনি নিকটম্ব ও দুরম্ব প্রাম্সকল হইতে ধর্মপুস্তক পাঠও বক্ততা শ্রবণ क्रवाहेदाव আদিতে আমন্ত্ৰণ माशित। কার্য্যক্ষেত্র তাঁহার মুদ্র গণ্ডীর মধ্যে আবন্ধ রহিল না. দুরপ্রারিত হইয়। চারিদিকে বিস্তৃত ছইয়া পড়িল। তাঁহার স্বাভাবিক বক্তডা मंकि ग्रंथेटे हिल। अভ्यामवात। सिर् স্বাভাবিক শক্তি আরও পরিমার্জিত हरेशा छेठिल। लिखी (इनवी अदनक बाह्म পরিভ্রমণ করিয়া দেখিলেন, ধর্মাজ্ঞান অভাবে লোক সকল অতি হীনভাবে পশুর মত জীবন যাপন করিতেছে। ঘাছাতে চারিদিকে ধর্মজ্ঞান প্রচারিত হয়, এইবন্ত স্থানে স্থানে লোহনির্বিত ভলনা-লব সংস্থাপন এবং ধর্মবাজক ও পরি-

ব্রাঞ্চক নিয়েঞ্জিত করিলেন। এই সময়ে **टे**श्न**ी**श বহুসংখ্য পুরোহিত মিলিত হইয়া লেডী হেনরীর প্রতি মথেষ্ট ছুর্ক্যব হার করিয়াছিলেন। তাঁহারা মনে করিলেন, লেডী হেনরী তাঁহাদিগের কৌলিক ব্যব-সাবে হস্তক্ষেপ করিতেছেন, সেইজন্য ইনি নিজের ইচ্ছামত ধর্মঘাজক নিযুক্ত করিতেছেন। কৌলিক ধর্মযাজকগণের হস্তে তাঁহাকে অনেক লাঞ্জনা ক্রিতে হইয়াছিল, এমন কি সকলে মিলিত হইয়া তাঁহাকে "একঘরে" করিয়া-একবার তিনি যাজকবর্গকে নিজ গহে নিমন্ত্রণ করেন। তাঁহাদিগের জন্য অরণান প্রস্তুত, কিন্তু কেহই তাঁহার বাটীতে আসিলেন না; একজন লোক দারা বলিয়া পাঠাইলেন ''আপনি যে সকল ভজনালয় প্রতিষ্ঠিত এবং যাক্ষক ও পরিব্রাঙ্গককে নিয়োজিত করিয়াছেন. তাহা ইংলণ্ডীয় যাজকমণ্ডলীর অনুমো-দিত নহে, অতএব আপনার নিমন্ত্রণ রক্ষা করিলে অন্যায় কার্য্যে প্রশ্রয় হইবে, সেইজন্য আমরা কেহই আপনার গৃহে অলপান গ্রহণ করিব না।" তিনি এইরপ প্রত্যাখ্যানে অপ্রতিভ হইলেন না। তৎক্ষণাৎ গ্রামস্থ ক্রিকেট ক্রবের লোকদিগকে আহ্বান করিয়া পাঠাইলেন, নানাপ্ৰকার व्यादमान व्यत्मादमञ যাজকদিগের জন্য প্রস্তুত অরপানদারা উহাদিগকে পরিভৃপ্ত করিলেন। কিছু-कान পরে পুনর্কার ধর্মবাজকদিপকে নিমন্ত্রণ করিয়াছিলেন ; কিন্ত এবার

আর কেহই ওাঁহার বাড়ীতে নিমন্ত্রণ রক্ষা করিতে অহীকত হন নাই।

এই ঘটনার কয়েক দিন পরে, কুমারী ক্রান্সেস্ উইলাডের লিখিত একথানি পুস্তক লেডী হেনরীর হস্তগত হয়। সেই পুস্তকের নাম "Nineteen Beautiful Years" বা "স্থন্দর উনবিংশতি বর্ষ"। এট উনবিংশ শতাকীর অবসান সময়ে ষে নারিজাতির বিশ্বব্যাপিনী মাদক-নিবাবিণী সভার শাখা প্রশাধা সমগ্র পুথিবীতে ব্যাপ্ত হইয়া পড়িয়াছে, যাহা স্থরাপান ও সর্ব্যকার চুনীতির বিরুদ্ধে সম্প্র মান্বস্থাজে তুমুল আন্দোলন সমুপ-विश कतियाद्य, कुमाती छेरेलाए (मरे সভার সংস্থাপরিত্রী। তরিথিত প্রাথক পুস্তকে ঐ সভার কার্ঘ্য বিবরণ প্রক-টিত হইলছে। লেডী হেনরী এই পুস্তক পাঠ করিয়া এমনই উৎসাহিত হইলেন, যে, তিনি আর গুহে থাকিতে পারিলেন ना। क्याती উইलाएं कि पर्नन धवः ভাষার কার্য্য প্রগালী শিক্ষা করিবার জন্য ভদ্মজেই আমেবিকা যাত্রা করিলেন। তিনি আমেরিকায় উপনীত হইয়া সিকাগো নগরীতে উইলার্ড পরিবারে আতিথা श्रद्धण कतिलाम। कूमानी छहेलाएज त्र জননী এই ইংরাজ মহিলাকে আপন কন্তার ভার যত্ন করিতে লাগিলেন। তিনি ইহাকে পাইয়া মনে করিলেন যেন তাঁহার মৃত মেরী মৃর্তিমতী হইয়া আবার এই মর্ত্রাধ:মে লীলা করিতে আসিয়া-স্থরাপান নিবারণ করিবার জন্ম নারিজ্ঞাতি দারা কি অনুত কার্য্যের অনুষ্ঠান হইরাছে, লেডী হেনরী তাহা দেখিয়া বিশ্মিতা হইয়াছিলেন। আন্দেরিকার সর্ব্যক্ত লেডী হেনরী সাদরে অভ্যথিতা হইয়াছিলেন। সর্ব্যক্ত সভানবার জন্য আনেরিকাবাসিগণ যে কিরূপ উৎস্কেক হইয়াছিলেন, তাহা বর্ণনাতীত। লেডী হেনরী যে কিরূপ প্রতিভাশালিনী রমণী, আনেরিকাবাসিগণ তাহার বর্ষেষ্ঠ পরিচয় পাইয়াছিলেন, এবং আনেরিকাবাসীয়া সংকার্য্যে কিরূপ উৎসাহী এবং কর্মণীল লেডী হেনবীও তাহা বিলক্ষণ জানিতে পারিয়াছিলেন।

দিকা:গা নগরীতে লেভী হেনরী'ইউনিয়ান সিগ্নাল'' নামক সামায়কপঁতিকার সম্পাদকত। কার্য্যে সহায়তা করিতে
লাগিলেন। এই "ইউনিয়ান সিগ্নাল"
আমেরিকায গৃসীয়মহিলাগণের স্থরাপান
প্রতিশোধক সন্মিলনীর মুখপাত্র। এই
মহানগরীতে অবস্থানকালে তিনি ধর্মযাজক মুজীর ধর্মবিভালয়ে ধর্মপাত্র অধ্যযান করেন। অভংপর তিনি আমেরিকা
হইতে প্রত্যাবর্ত্তন করিয়া সদেশে নিজের
সংক্রিত কার্য্যের অনুষ্ঠানে তৎপর হইলেন।

লেডী হেনরী স্বদেশে প্রত্যাগমন করিয়া দেখিলেন দক্ষিণ ওয়েলসের প্রম-জীবীদিগের অবস্থা অতীব শোচনীয় িক শারীরিক, কি মানসিক, কি আধ্যাত্মিক, সকল বিষয়ে, এই স্থানের প্রমন্ত্রীবিদ্ধের

অবন্ধা যারপরনাই হীন। দক্ষিণ ওয়েল্-দের উপতাকাপ্রদেশে যে সকল পন্নীগ্রাম चाट्ड,रत तकन नर्तन। धूमाञ्चत । পथ घारे সর্বাদা কর্দমিত। এই স্থানে অনেকগুলি লৈতির কারখানা আছে। এমজীবিদল ঐসকল কার্থানায় দৈনিক পরিভাম করিয়া যৎকিঞিৎ অর্থ উপার্চ্জন করে. ভদারা তাহাদিগের গ্রাসাক্ষাদন অতি কাই নির্বাহিত হয়। তাহার উপর এই সকল লোকদিগের পান্দোষ এমনি প্রবল যে, তাহাদের উপার্ক্তিত অর্থের অধি-কাংশ স্থরাক্রের ব্যবিত হয়, কাজেকাজেই व्यवगाना भन्यक्रिएग्र গ্রাসাচ্চাদনের জনা চিন্তা করিতে তাহাদিগকে থব কম শেখা যায়। কোন প্রকার নীতি বা ধর্মের শাসন না থাকাতে এই সকল শ্রমজীবী প্রুর মত জীবন যাপন করে। লেডী হেনরী ইহাদিগের অবস্থ। উন্নত করিবার খন্য ঐসকল স্থানে আপনার কার্যাক্ষেত্র মিশিষ্ট করিলেন। তিনি স্থানে স্থানে পটমতপ স্থাপন এবং গৃহ ভাডা করিয়া শ্রমজীবীদিগকে আহ্বান করিতে লাগি-লেন এবং কিরূপে তাহার৷ আপনা-দিগের অক্কারময় জীবনকে করিতে পারে, ভিষয়ে নানাপ্রকার **म्हाभा** দিতে লাগিলেন। তিনি (पंथिएमन, त्लारकत्र मर्क ना मिनिरल. তাহাদের প্রকৃত অবস্থা পরিজ্ঞাত হওয়া যার মা। এইজ্ঞ তিনি প্রম্মীবিদিগের সাহিত মিশিতে লাগিলেন। তাহাঁদিগের সহিত এক সঙ্গে বাস এক সঙ্গে আহারাদি

করিতে লাগিলেন। মোটের উপর ইহারা যেরূপভাবে থাকে, তিনিও সেইরূপভাবে থাকিতে দেখিলেন। তাহাদের অভাব যথন তিনি সম্যক্ পরিজ্ঞাত হইলেন, তথন সেই অভাব দূর করিবার উপায় উত্তাবন করিতে লাগিলেন।

ক্রারী উইলার্ড আমেরিকাতে নারী-জাতির স্তরাপান নিবারণার্থ যে মহা-সমিতি সংস্থাপন করিয়াছেন, তাহার সহিত রুটিশমহিলাগণের মাদক নিবারণী সম্যুক যোগ স্থাপনার্থ চেষ্টা করিতে লাগিলেন। গ্রেট বটেন এবং আমেরিকা এই হুই মহাদেশের মহিলাগণ মিলিত হইয়া সমগ্র পথিবীতে সুরা ও অন্যান্য মাদক ডবা এবং বিবিধ-প্রকার হুনীতি ও ছুরাচারের ভীষণ সম্বানল প্ৰছলিত ইহাই লেডী হেনরীর উদ্দেশ্য। এই মহান উদ্দেশ্য সংসাধন জন্য তিনি প্রাণপূর্ণ ক্রিতে বিগ্ত ১৮৯১ খঃঅকে লেডী লেন। হেনরী বুটিশ মহিলাগণের মাদক নিবা-রণী সভায় সভাপতি নিযুক্ত হন। তিনি অগাপি সেই সভায় সভাপতি নিযুক্ত আছেন। তিনি যথন প্রেমস্থত্তে আমে-রিকা এবং গ্রেট বুটনকে সম্বন্ধ করিতে চেষ্টা করিতেছিলেন, তথন অনেক অন্ত-দার ইংরাজ ভাঁহার বিপক্ষতাচরণ করিয়া-हिल्न। छाँशता मत्न कतिबाहिल्न, লেডী হেনরী প্রেট বুটনকে আমেরিকার মত করিয়া ভূলিবার চেষ্টা করিতেছেন।

ইংরাজ মহিলাগণকে মার্কিনভাবাপর করিয়া তোলা ভাল নয়, এই তাঁহাদিগের বিশাস। কিন্ত পরিশেষে বিশেষরের কুপার সকল বিপদ কাটিয়া পেল, লেডী হেনরীর উদার নীতিরই জয় হইল।

লেডী হেনরী দেখিলেন কেবল স্থরা-भारतत विकृष्क चार्त्मालन कतिरल हरेरव না। সর্বাতো পতিতা রমণীদিগের উদ্ধার সাধন করিতে হইবে। পতিতা রমণীগণই সুরারাক্ষদীর সহচরী। বেশ্রালয়ই স্থরা-পূজার প্রধান স্থান। অতএব সর্কাগ্রে এই সকল নরপিশাচীদিগকে তুর্নীতির অন্ধকৃপ হইতে উদ্ধার করা চাই, নতুবা खेलाय नाहे। **ख**बूनात हे:ताक्रमन धरे মহাপাপ নিবারণের বিরোধী ছিলেন। এইজন্য ইহারা লেডী হেনরীর কার্য্যের বিক্লাচরণ করিয়াছিলেন ।ইহার। বলিয়া-ছিলেন, স্থরাপান নিবারণার্থ বুটিষমহিলা সমাজের অভ্যুদয় হইয়াছে, অন্যু প্রকার ছনীতি মার্গের সংস্কারে বন্ধপরিকর না হইয়া কেবল ঐ কার্য্যে মন প্রাণ ঢালিয়া দেওয়া কর্ত্তব্য। লেডী হেনরী ইহাদিগের ষ্পার যুক্তি থণ্ডন করেন এবং স্থাপনার ভভ উদ্দেশ্ত সাধনার্থ রুটিশমহিলানমাজের সভাপতি পদে পুননি য়োজিত হন। এই-রূপে লেডী হেনরী সক্ষপ্রকার স্থনীতির বিৰুদ্ধে গ্ৰেট বুটেনে এক ভুমুল আন্দো-লন উত্থাপিত করিয়াছেন।

ইংলণ্ডে হইন এবং টোরী নামক চুই সম্প্রদায় আছে। এই টোরী সম্প্রদায়ের মধ্যে এক ব্যক্তি একবার বিলাতের

রাজসভার সভা হইবার জনা প্রাথী হন। ইনি চরিত্রবান নন, তম্বতীত ইনি একজন মদ ঢোলাই কারখানার সভাধি-কারী। এরপ ব্যক্তি মহাসভার সভাহইলে বিশেষ অনিষ্টের সম্ভাবনা। নেডী হেনরী প্রকাশ্য সভার ভাষার নিয়োগের প্রতিবাদ করেন। টোরী সম্প্র-দায় এই প্রতিবাদে ক্রোধান্ধ হইয়া সভা ভঙ্গ করিবার জন্য বিধিমত চেষ্টা করেন। উহারা কেবল সভা ভঙ্গ করিয়া ক্ষান্ত হন নাই.লেডী হেন্বীকে প্রহার এবং অপ-মানিত করিবার জন্য উহার গাড়ী অফ-সরণ করেন এবং মারিয়া ফেলিবার জন্য প্রস্তরখণ্ড নিক্ষেপ করেন। লেডী হেনরী ইহাদিগের অভদ আচরণে কিঞ্মিয়াত্রও ভীত বা বিচলিত হন নাই। নিভীকভাবে এবং সমধিক অধাবসায়ের সহিত সীয় লক্ষা পথে অগ্রসর হইয়া-ছিলেন।

নারীজাতির রাজনৈতিক অধিকার
লাভের জন্য বিলাতে উলাবনৈতিক নারীদিগের যে এক সভা আছে,লেডী হেনরী
তাহার কার্যানিকাছক সভার একজন
প্রধান সভ্য। নিরাশ্রেয় বালিকাদিগের
প্রতিপালন ও সংশিক্ষার জন্য ইনি
রিগেটে এক অনাথাশ্রম প্রতিষ্ঠিত করিয়াছেন। অনেক অনাথা বালিকা এখানে
বিনা ব্যয়ে কাজকর্ম শিক্ষা করিয়া এখন
যাধীনভাবে প্রথে সক্তব্দে জীবিকার্জন
করিভেছে। রোগার্জ দীনহংশীদিগের
জন্য দাভব্য চিকিৎসালয় ও সাহ্যনিবাস

সংস্থাপন করিয়াছেন। এধানে অসংখ্য দীন দরিদ্র ঔষধ পথ্য ও দেবা প্রাপ্ত হইয়া সাম্ব্যলাভ করিতেছে। রিগেট ও ইঠনর প্রাদাদের অবান্ধিত ছার সর্বাদা দীন তৃঃখীদিগের জন্য উন্মুক্ত।

সাধারণ শিক্ষা বিস্তার এবং সদ্জ্ঞান প্রচারাথ ইহার "উওম্যানস্ হেরালড্" নামক এক থানি সাপ্তাহিক সংবাদপত্র

আছে, ইনি স্বয়ং সেই সংবাদ পত্তের সম্পাদিকা। ইংরাজীতে গদ্য লিথিবার ও বক্তৃতা করিবার ইহাঁর যথেষ্ট ক্ষমতা আছে। তদ্যতীত ইনি কবিতা রচনা ও চিত্রবিদ্যায় পায়দর্শিনী। ইহাঁর পুত্রের বয়স এখন একবিংশতিবর্ধ। সম্ভবতঃ ইনিও জননীর কার্য্যে জীবন উৎসর্গ করিবেন।

সতী ও শান্তি।

भागभ পরিছেদ।

শান্তি। এ মাতৃলীটি কিসের ?
বড়বৌ। ওটি "অষ্টধেতে" মাতৃলী।
শান্তি। এর মধ্যে কি আছে ?
বড়বৌ। বল্বনা মা, সেটা ব'লুতে
নিষেধ আছে।

শান্তি। বলুননা, ব'ল্তে দোষ কি? বদি ভাল ঔষধ হয়, জান্লে জনেকের উপকার হ'তে পারে। আমরাত ঔষ-ধের গুণাগুণ সব জানিনা, দিদি এখানে উপস্থিত আছেন, যদি ভাল ঔষধ হয়, ইনি ব'ল্বেন।

বড়বৌ। এতে যে ওর্ধ আছে, তা
"মড়াঞে পোয়াতীদের" ভারি উপকারী।
এতেই নাকি অনেকের "মড়াঞে" সেরে
যায়। তাই মা আমাকে, এই ওর্ধটি
সংগ্রহ করে দিরেছে।

गांकि। अवशि कि वनुम्ना अनि।

বড়বৌ। আমার ত মাপাঁচটি ছেলে হ'ল। প্রথমে কোণা থেকে এক মরা মেয়ে এল, দেই গত "আপদ্ বালাই" এর মূল। ভার পর ছটে। ছেলে হ'ল। ভাদের মধ্যে একটি "আঁড়ুড়ে" আর একটি ছ'মাসের হ'তে না হ'তে চ'লে গেল। ভারপর আমার "পালান" হ'ল। বাছার আমার "হাতে খড়ি" হ'ল, পাঠশালে গেল, আর, ভার পর বছরে.....

বড়বৌ আর কথা কহিতে পারিলেন না, তুই চকু দিয়া দর দর ধারে জল পড়িতে লাগিল।

শান্তি বলিলেন, থাক্ ওসব কথার যদি মনে কট হয়, ব'লে কাজ নাই। আপনি কাঁদ্বেন না। বড়বৌ জাবার বলিতে লাগিলেন, বার বার ঐরপ ছেলে-হ'রে ম'রে যায় ব'লে, মা ঐ ওর্ধ এনে দেয়। এই জইধেতে মাত্লীটি জামার পালানের গলাতে ছিল। এই মাত্লিতে

"পুত্রবতীর" গাঙ্গের মলা, পরণের কাপড়, আর মাথার চল আছে।

সরোজিনী বিশ্বিতা হইয়া বলিলেন, "সে কি, এতে কি সম্ভান, রক্ষা হয় ?" বড় বে বলিলেন,হাঁ এতে নাকি সন্থান রক্ষা হয় ও "মড়াঞে" সারে। শনি মকলবার অমাবস্যাতে পুত্রবতীর গায়ের কৌশল ক'রে ভাহার অজ্ঞাতসারে নিতে হয়, ''অাশবঁটী' দিয়ে তাহার কাপড় কেটে নিতে হয়, এবং খুমন্ত অবস্থায় মা**থা**র চল কেটে নিয়ে, তিনটী একতা করে বন তুলসীর শিকড়ের সহিত কাঁটালি কলার মধ্যে পূরে থেতে হয় এবং "অপ্তথেডে মাত্রিতে ক'রে ছেলের গলায় দিতে হয়। ইহাতেই নাকি "পোয়াতীর" "মড়াঞে" দারে এবং ছেলের কোন "व्यादमानगरमा" इय ना, तम मीर्घ भीवी इस । স্বেজিনী বলিলেন, গলাতে ধা কিছু বাঁধা হয়েছে, এর কোন্টাতে কি

উপকার হয় গ

বড বৌ বলিতে লাগিলেন, "রাগ চণ্ডালের হাড়ু" গলায় বাধিলে ভূত শ্রেতের বাতাস লাগে না, ''ডাইন বো-কোদের নজর" এবং মন্লোকের' দৃষ্টি इहेट एइएलरक तका करता "काम বেরালের ফুলে" কোন শোক থাকে না। "ছেলে মাছের দাঁতে" ছেলের দাঁতে পোকা লাগে না এবং ছেলে কখন জলে ডুবে মরে না। "পেঁচার পালকে" ছেলে "लम्भीवस्त्र" इत्र। "উদ্বেরালের পিভি"তে রক্ত আমাশয় বারে। "হাতীর

বিষ্ঠাতে নাদ" বা ছেলে মত ধর্ব "নাত্স্ মুত্স্" হয়। "ফ'কুরে কাঁঠা" পলায় বাঁধিলে "গতর" স্থাৰে থাকে—কোন রোগ मथ्रतात कममकृत्त कृष्ण मथा इरा। লয়ের "গিরি মাটীতে" ছেলে গৌর বর্ণ ও স্থানর হয়, কোন রোগ শোক থাকে ना-वः । कथन कान (इल इम्र ना। কৈলাসের কল্লভরুর ফুলে দকল কামনা নিদ্ধ হয়। গুজুরাটের বট কলে সম্ভান मीधअीबी इश-(कान द्यांग थांक ना। কাশীর যজভুম্বরের ফুল ধারণ করিলে ছেলে খুব ভাগাবান হয়।

শান্তি। তদ্ম রের ফুল কে এনে দিলে १ वड़ (वी। अक मन्नाभी ठेक्त्र अस्म जिया (छ।

শাস্তি। জ্লারের ফুল নাকি তবে মার্ষে দেখতে পায় না ? পা, পি'প্ডের রা, আর ভুনুরের ফুল," (य प्ल(थ, भारति हाका इस? भारति সন্নাসী কাশীর রাজা হয়েছে নাকি?

বড বৌ। ''এ পুরী'তে কি আর রাজা হবে ? ''আর পুরী'তে রাজা হবে। শান্তি। তবু ভাল। আপনার গোপা-লকে মন্ত্ৰী কৰ্বে ব'লেছে ত ?

বড বৌ। আর না, জগদীশ্বর কি গোপালের কপানে "মতটা" লিখেছে !

শান্তি। সন্ন্যানী ঠাকুর এবার যধন "বাৰ্ষিক" নিতে আদবে, তখন কথাটা ঠিকু করে নিলে হবে। তার পর সীতা• कुरखंत्र चल कि र्य ?

वामारवाधिनी পजिका। [७म क-२म्र छात्र।

वष दर्ग। **१था**व छान इय । इतिवात, প্রয়াগ, সাগর সঙ্গম, কামরূপ প্রভৃতি তীর্থের মাটা গলায় বাঁঞ্চিলে কোন রোগ শোক থাকে ना। "निष्ली"भलाय वाँधिल ছেলে রাতে काँ ए ना, श्व शूमश। "जुड ভৈরবী"তে ভূত প্রেভের বাতাদ লাগে না। "আবাঁত মোড়া"তে ছেলের ঘন ঘন "হাই তোলা" আর "গা ভাঙা" সেরে যায়। "বাছড় সুট পুটে" গলায় वाँथित्न (इतन मत्रीदन थूव वल इस। শনি মঙ্গলবার অমাবস্যার রাত্রিতে অথবা গ্রহণের দিন "ম্যাদার মাটা" বা ধোবার পার্টের মাটী চুরি করে আন্তে হয়। সেই মাটী ছেলের গলায় **বাঁধিলে তাহা**কে **ক**থন ভূত-প্ৰেত ডাইন-বোকদে কিছুই করিতে পারে না। **অ**থার ছেলের "হুধ তোলানি" সেরে যায়। কোমবের চাকের মাটীতে "ছোঁয়াচে রোগ" ভাল হয়। বনহলুদে ছেলের "পাগ্ল।" ভাল হয়। "কলুর নাাতা" চুরি করিয়া ছেলের গলায় বেঁধে দিলে

ছেলে খুব ধীর হয়—উপদ্রব করে না।
"প্রীক্ষেত্রের হাড়ীর ঝাটার কাঠী" দিয়ে
ছেলের নাক কান ফোঁড়াইয়া দিতে হয়
এবং একটু কাঠী ছেলের গলায় বেঁধে
দিতে হয়। তা হ'লে ছেলে আর মরে
না। ঝাঁটারকাঠী গলায় বাঁধিবার সময়
এই মন্তরটি বলিতে হয়,—

"গলায় বেঁধে হাড়ীর ঝাঁটা। যমের দোরে দিলুম্ কাঁটা।"

মন্ত্র শুনে সরোজিনী এবং শান্তি আর হাস্য সম্বরণ করিতে পারিলেন না। শান্তি হাসিতে হাসিতে বলিলেন, 'ভা হ'লে বুনি যমন্বরে বন্ধ হয়ে থাক্বে।" এত যদি কলেন তার সঙ্গে যদি চিনের দেশালাইয়ের একটা কাঠী খরচ কর্তেন, তা হলে সব গোল চুকে থেত। যমরাজ্ব ঘরের মধ্যে পুড়ে ''থাক্" হয়ে থাক্ত; মান্ত্রের জালাযন্ত্রণা সব নিবে যেত; বাচ্চা কাচ্চা নিয়ে সুখে স্বচ্ছন্দে স্বরকল্লা ক'র্চ্নে পার্দ্ত।

বাঙ্গালা প্রবচন।

म ।

- মৃথ ছ:থানি ডুল্যানি,
 ম্থাক্সনি তথা পরে।
- ্ ২। **পুথে থা**কৃতে ভূতে কিলোয়।
- ত। স্থের কপোত বা প্রায়রা।
 - ৪। সুধের চেরে স্বস্তি ভাল।
- শ্ৰহ্ণৰ পিরীত সোনা ভেঙে

 গড়া ষায়, কুজন পিরীত কাচ
 ভাঙ্গিলে ফুরায়।
- ৬। সংধ্ কথার চিড়ে ভেজে না।
- १। श्रूमात वर्ग वामात त्रांका।

৮। হ'চ গড়িতে পাকে না, বৃদ্ধের বায়না নের।

১। স্ট সোহাগা **স্থল**ন, ভাষা গড়ে তিনজন।

১০। স্টুচ হরে সেঁধোর, ফাল হয়ে বেরোয়।

১১। সেই একদিন আর এই একদিন।

১২। সেই কড়ি ক্ষয়, তবু বৌ স্থলর নয়।

১৩। সেই গাধা সেই জ্বলে যায়, তবু গাধা ঘূলয়ে থায়।

১৪। সেইত মল ধ্যালি, তবে দেশটা কেন হাসালি।

১৫। সেই বুড়ি নাচে, কড কচি কাচে।

১৬। সেকরা বাড়ীর বিড়াল, ঠকু ঠুকনিডে ভয় পায় না।

১৭। সেকরার ঠুক ঠাক্, কামারের এক ঘা।

১৮। সে কহে বিস্তর মিছা, যে কহে বিশ্বর।

১৯। সে কাল গেছে বয়ে, এটে কচু বেয়ে।

২০। সেওডে বালি।

২১। সেধে পড়ে ভাব, আহার মেজে ছসে রূপ।

২২। দে বড় কঠিন ঠাই, গুকুশিয়ে দেখা নাই।

২০। সে রামও নাই সে আযোধ্যাও নাই। ২৪। সেরেকে পশুরি চুরি।

२৫। - সোজা णाडुल वि উঠে ना।

২৬। সোনা দানা হুধের বাটা. ছুয়ো মেগের ওচলা মাটী।

২৭। সোনাফেলে আঁচলে গেরো।

২৮। সোনাব'লে জ্ঞান ছিল, কসিতে পিতল হল।

২৯। সোনার অক কালি হল।

৩ । সোনার উপর মিনের কাঞ্চ।

৩১। সোনার ওজন কুঁচের **সঙ্গে**।

৩২। সোনার দাঁড়ে কাক বদান।

७७। সোনার থালে বুদের জাউ।

৩৪। সোনার পাধর বাটী।

৩৫। সোনার লক্ষা ছার ধার।

৩৬। সোপানংক সদা ব্ৰঞ্ছে।

৩৭। সোপোকার বংশ।

৩৮। সোমে বুধে না দিও হাত, ্ ধার করে ধেরে। ভাত। •

৩৯। দৌরভে ভ্রমর মঞ্জে।

৪০। স্ত্রী গৃহের 🛍।

८३। द्वीविद्यमध्याध्यम्।

৪২। স্ত্রী ভাগ্যে ধন, স্বামিভাগ্যে পুদ্র।

८७। जीलारकत्र नव्यारे पृष्ण।

88। शाम भाग ना है, उठ करता।

8य । अह नी हशायी।

৪৬। সংদশে পৃষ্টতে রাদা,বিশ্বান সর্বতি পৃদ্ধাতে।

শ্বাচীন হিন্দুদের মতে সোম ও বৃধ্বীরে গোলা ংইতে ধান পাড়িতে নাই, বরং ধার করিয়া
বাওয়া ভাল । 89। श्रथा निधनः (खायः)

৪৮। স্বনামা পুরুরোধ্যুক্ত পিতৃনানাচ মধ্যম:।

8 श्रेष्ठा अपूर निकः।

.৫১। স্বর্ফোপ্দরী।

পামীর কিবা সুধ,
 পোষ মাদে ভাতের তুগ।

গ্রামী নাই পুত্র নাই,
 কপাল ভরা দিন্দুর;
 ধান নাই, চাল নাই,
 গোলা ভরা ইন্দুর।

৫৪। স্বামীর হাতে ধন থাকিলে, জীর নাম লক্ষীমণি।

৫৫। স্থারেও অগোচর।

৫৬। স্রোতেগা ঢালা।

৫৭। স্রোতের আগে টেপা ভাসে।

স্বর-সাধন প্রণালী।

স্বর্যাপি দেখিল গীত শিক্ষা করিবার এক মাত্র অস্থবিধা এই, যে তদারা সুর সকলের যথাযোগ্য স্থায়িত্ব নিরূপণ করা मर्ज नत्र, এवः এই शामिक निक्रभन হইলেও ছন্দাসুসারে বাজান বা গান করা যায় না। কিঞ্চিৎ মনোযোগ ও অধ্যবসায় সহকারে নিম্নলিখিত প্রণালী ক্রমে স্থারের স্থায়িত্ব পরিমাণ করিতে অভ্যাস করিলে ক্রমে বাদন ও গান षांभना षांभनिहे महक इहेशा षाहेता। প্রথমতঃ ১, ২, ৩, ৪, ৫, ৬, ৭,৮ এই करमकी कक भूनः भूनः ममान एकतन **মুখে গণনা করিতে অ**ভ্যাস ভাহার পর প্রত্যেক অঙ্ক উচ্চারণ কালে অকলে কিন্তা পদ ধরে ভূমিতে সমান ওন্ধনে আখাত করিতে অভ্যাস কর। ভাহার পর মুখে গণনা পরিত্যাল করিয়া কৈবল ভূমিতে আঘাত কর।

করিলে সমান ওজনে আঘাত করিতে পটুতা জন্মিবে না, করিণ অঙ্গুলি কিন্তা। পদ দারা সমান ওজনে আঘাত করিতে এরপ অভ্যাস করিয়া রাখিতে ২ইবে, যে যন্তাদি বাদন কালে আঘাতের নিবৃত্তি ও তাহার পরিমাণ হুন্দ দীর্ঘ না হয়। কেননা গাইবার কিন্তা বাজাইবার সময় ঐ আঘাত দারাই স্থ্রের স্থায়িত্ব পরিমাণ করিতে হইবে।

শুর অভ্যাদ করিতে হইলে একটা এস্রাজ বা বেহালা, কিন্ধা দারকী অথবা একটা হারমোনিয়ম অতিশয় প্রয়োজ-নীয়। ইহাদের সহিত আভ্যাজ দাধিলে কণ্ঠ শুললিত হইবার সম্ভাবনা। হার-মোনিয়ম যন্ত্রটী প্রথম শিক্ষার্থিগণের পক্ষে প্রকৃত উপযোগী কেন না ইহার শুর বাঁধিতে হয় না।

হারমোনিয়মের বাম দিক হইতে

व्यावच्छ कविया अथम ३६ ही माना हावि ছাডিয়া প্রুদ্দটী অধবা হারমনি ফুটের ১১টা সাদা চাবি ছাড়িয়া দ্বাদশটা টিপিলে ষে শ্বর নির্গত হইবে, সেই শ্বরটি প্রথমতঃ ছুই এক দিন শ্রবণ করিয়া পরে ওঠাধর চাপিয়া অল্ল শব্দে হুঁহুঁ করিয়া উক্ত স্বরের সহিত কর্ম মিলাইতে চেষ্টা কর। ষধন দেখিবে যে হারমোনিয়মের স্থারের সভিত কর্মস্বর মিলিয়া গিয়াছে, তথন अष्ठीयत मूक कतिया "मा" मन छेक्ठात्रण भुर्त्तक २।९ मिन किवल के ऋतरे माधन কবিবে। ঐ প্রণালীতে হারমোনিয়মের চাবি পর পর টিপিয়া ঝ. গ.ম.প.ধ, নি অভ্যাস করিবে। এই সাধনটী প্রকৃতরূপে আয়ন্ত হইলে সা. ঝ, গ, ম, প, ধ, নি এই সাত্টী সর আরোহী ও অবরোহী ক্রমে হার্মোনিয়মের সহিত অন্ততঃ একপ্র কাল অভ্যাস করিবে।

যথন দেখিবে কণ্ঠন্থ সরগুলি যদ্ধের স্থারের সহিত ঠিকু হইয়াছে, তখন উদারা ও তারা সপ্তকের স্থার গুলি ঐ ক্রপে অভ্যাস করিবে। উদারা ও তারা আমের যে কয়েকটী স্থার সহজে বাহির হয়, সেই কয়েকটী অভ্যাস করিবে। জ্যোর করিয়া অতিরিক্ত স্থার বাহির করিতে গেলে কণ্ঠস্বর বিকৃত হইবার সম্যক্ সস্থাবনা।

হিন্দু সংগীতে উদারার প বা ম এবং তারার ম বা প পর্যন্ত ব্যবহৃত হইয়া থাকে, অতএব পাঠিকাগণ অভতঃ এই ক্যেকটী শুর উত্তমরূপে অভ্যাস করিতে চেটা করিবে। যদ্যপি ইহাও কাহার কণ্ঠ হইতে সহজে বাহির না হয়, তাহা হইলে যে পর্যান্ত বাহির হয়, সেই পর্যান্তই অভ্যাস করা উচিত, ততোধিক বাহির করিতে চেটা যেন আপাততঃ না করা হয়; কেন না যে কয়েকটা বাহির হইতেছে, তাহা উত্তমরূপে অভ্যাস হইলে, পরবর্তী স্থরগুলি সহজেই বাহির হইবে।

অনন্তর কোমল ও কড়ি সুরগুলিকে পূর্ব্বাক্ত প্রণালীতে উদারা, মুদারা, তারা তিন গ্রামে অভ্যাস কর। প্রকৃত এবং কোমল স্থর উত্তযরূপে আয়ন্ত হইলে এবং মাতা বোধ হইলে পাঠিকাগণ অনায়াসে গীত অভ্যাস ক্রিতে পারিবে।

মনে কর, পশ্চাৎ লিখিত এই গীতটা অভ্যাস করিতে হইবে, "ভুমি বিনা কে প্রভু সঙ্কট নিবারে।" ভু, মি, বি, না, এই কয়েকটা অক্ষর ভুল্য সময় অন্তর উচ্চারণ কর ত্রবং ভুর ছানে সা, মি-র ছানে গ, বি-র ছানে গ, ও না-র ছানে গ স্থর লাগাও, তাহা হইলে গীতের ঐ অংশটা অভ্যাস হইল। পরে "কেএ প্রভু" অভ্যাস করিতে হইবে। পাঠিকা দেখিবেন যে, কে-র পরে এ অক্ষরটা আছে, তাহার কারণ এই, বি হইতে না—র অন্তর যত, অথবা না হইতে কে ও প্র—র অন্তর যত, কে হইতে বি—র অন্তর তাহার দিওপ, এই নিমিত্ত স্থাবি-ধার নিমিত্ত কেও প্র—র মধ্যে এ কেওরা

হইরাছে। কে প্রভু ইত্যাদি অক্ষরগুলি
মাজাম্পারে উর্চারণ কর এবং কে—র
হানে ম, প্র—র হানে প, ভূ—র হানে
প ইত্যাদি লাগাও, ভাহা হইলেই এই
পীতটী অভ্যাস হইবে।

দকল গীতের তাল ও রাগিণী আছে, ও যে দম্দায় গীত মুদ্রিত হয় তাহার উপরে তাল এবং রাগিণী লেথা থাকে, কিন্ত তাহা দেখিয়া স্থর অবগত হওয়া বায় না। তাল ও রাগিণী স্থরের সাপেক্ষ নহে, অর্থাৎ এক ভাল ও এক রাগিণীতে বছতর স্থর প্রস্তুত হইতে-পারে। লিপিবছ স্থর দেখিয়া গীত ক্ষত্যাস করিলে আপনা আপনি রাগিণী হইয়া যাইবে।

এই গীডটির তাল কাওয়ালী।
পূর্দেন উলিখিত হইয়াছে কাওরালী
১৬টা দ্রুস্থ মাত্রার তাল ও ইহার সম
২য় তালে। কিন্ধু এই গীতটীর আরস্ত
৪র্খ তালে যাহাকে ফাঁক বলে। যাহা
হউক পাঠিকার এইক্ষণে তাহা দেখিবার
তত প্রারোজন নাই। অক্ষরগুলি
মাত্রাহ্মপারে নির্দিষ্ট স্থর দিয়া উচ্চারণ
কর, তাহাহইলেই গীতটা অভ্যাস হইবে
ভাপনা আপনি কাওয়ালী তাল ও
বেহাস উপরাগ হইয়া যাইবে।

বৈহাগ উপরাগ। ভাল কাওৱালী।

| नि | | _ |
|------------|---|---------|
| -র | † ॥ । । । । । । । । । । । । । । । । । । | |
| | भर- क है सि- वा- त्व, रिक | |
| নে ১ | | |
| र | । । । । । । । । । । । । । । । । । । । | 11 |
| | 1 1 </th <th>[]-</th> | []- |
| হ, | | |
| র | । সা রে, } •। । । । । । । । সা প প প সা রে- য়ে- ছি ব- শি | |
| ۶, | 기 | |
| ग | 14 (1 21 15 41 14 | |
| व्र | 1 1 +1 1 1 1 1 | |
| 4 | 기 기 기 기 기 기 기 기 기 기 기 기 기 기 기 기 기 기 기 | |
| - | | |
| | | |
| 1 | আ ॥ । । । । । । । । । । । । । । । । । । | |
| | 1 | |
| | र्प शिमा शिमा शिमा शिक्ष | |
| | । + ৩ । । । ম সা গ গ বি- কা- রি- বি- য- য়- | |
| . | r I su | |
| : | । । । । । । । । । । । । । । । । । । । | I |
| 1 3 | - বি-র-ত তিব প্রে | I |
| | 1 1 % 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 | |
| | । ৩।।।। ।। গ' ক' মা- ম' নি মা- ম- ৩ ছাজি ম | |
| . | । ৩।।।। । •। গ' শ' শ' শ' নি মা- মৃ- ৩ ছাড়ি ম- | |
| | | l |
| f | न नि अ स नि नि स अ अ | |
| 1 | 기 이 이 이 이 이 이 | |
| | | |
| l l | गि ग म । भ । | |
| (f | व- छ- ऱ- क्व- भा- छ- | |
| + | H I I SH I I | |
| | । । । । । । । । । । । । । । । । । । । | |
| _ | ग त । व व व व व व व व व व व व व व व व व व व | • |

| OC . 11 | व । राजिया । |
|---|---|
| 1 1 >1 >1 +1 +1 +1 -1 म म म म म म भ < | তা । । । । । । নি প নি গ' সা ঋ'না দয়ে- আন- নি) কি- আ- র- জা- |
| ॥ । । । । । । । না গুমানা না না না না রে, প্র- প- তি- মি- র- | ১। ৬ ৬ । । । + । ॥ । ।। नि ध ल प ध हिं ध ल ना- व- ७-व । ।। |
| । । 十। । । । না না না না ঝ না না- শি- বি- রা- জ- জ- | |

সৈত্রেয়ী যাজ্ঞবন্ধ্য।

महर्षि राष्ट्रदस्तात एहे टार्या। हिःल्न, ৈছেত্রী ও কাত্যায়নী। তর্নধ্যে মৈত্রেনী ব্ৰদ্বাদিনী এবং কাতাগনী গৃহকৰ্মে হুৰকা ছিলেন। যাজব কার গাইছাএন প্রিত্যাগ করিবার স্থয় হওলায় তিনি নৈত্রেী ৬ কাত্যায়নীকে আপনার নিকট ভাকিল প্রতিল্যা আমি প্রবিব্রভ্রান গমন করিব, অতএব আনার ধন সম্পত্তি সকল ভোমাদিগকে বিভাগ করিয়া দিতে ইচ্ছ। করিতেছি।"

নৈতেথী বলিলেন, "ভগবন ! यपि বিত্তেতে পরিপূর্ণ এই পৃথিবী আমার হয়, তাহ। হইলে কি আনি অন্তৰ লাভ कतिरूठ পाहित १ यो छदका वलिलग, गी, না, ঐর্য্যবান্ লোকদিগের জীবন বেরূপ হয়, ভোষারও জীবন সেইরূপ হইবে। বিত্তের ছারা অনুরত্ব লাছের আশ। নাই।

নৈত্যে কিংলেন, "যেনাং নাম্তাব্যাৎ কিমহং তেন কুগাং।" বাহাতে **আ**মি

অমর হইতে পারিব না, তাহা লইয়া আমি কি করিবণ্ডগংন্! অনরম্বাডের উলায় **যাহা আ**গনি অবগত **আছেন** আমাকে বলুন।

যাক্তবক্ষ্য বলিংলন, "ত্নি আমার প্রিয় এবং প্রিয় বাক্যা বলিতেছ, অতএর তোমাকে আমি অমর্য লাভের উপায় বলিংভছি, মনোনিযেশগুর্বক প্রবণ কর।

অয়ি নৈতেয়ী, পতির জন্য কি পতি প্রিয় ? না, ভাষা নাহ, কিন্তু আত্মার অর্থাথ পরমায়োর জন্য পতি প্রিয় হয়।

অনি! ভার্যার জন্য ভার্যা প্রিয়া হর না, তিন্ত আত্মার অর্থাৎ পরনাম্মার জন্য ভাষ্য, প্রিয় হয়।

অয়ি! পুতের জনা পুত জিয় হয় না, কিন্তু আত্মার জন্য পুত্র প্রির হর।

অরি! বিভের জনাবিত প্রির হয় • না, কিঃ আত্মার জন্য বিত্ত প্রিয় হয়।

उपितालित स्विक्तित्व सन

ত্রাহ্মণ ও ক্ষত্রিয় প্রিয় হয় না, কিস্ত আহ্মার জন্য রাহ্মণ ও ক্ষত্রিয় প্রিয় হয়।

জারি! লোক সকলের জন্য লোক সকল প্রিয় হয় না, কিন্তু আন্থার জন্য লোক সকল প্রিয় হয়।

অয়ি! দেবতাদিগের জন্য দেবতারা প্রিয় হয়েন না, কিন্ত আন্মার জন্য দেব-তারা প্রিয় হয়েন।

আর বেদ ও শাস্ত্র সকলের জন্য বেদ ও শাস্ত্র সকল প্রিয় হয় না, কিন্তু আত্মার জন্য বেদ ও শাস্ত্র সকল প্রিয় হয়।

আর ভূত সকলের জনা ভূত সকল প্রিয় হয় না, কিন্তু আত্মার জনা ভূত সকল প্রিয় হয়।

আত্মা বা অরে! দ্রপ্তব্যঃ শ্রোতব্যো মন্তব্যো নিদিধ্যা-দিতব্যঃ।

পরমাত্মাকেই সেই জন্য দর্শন, শ্রবণ, মনন ও নিদিধ্যাসন করিবে।

হে মৈ ত্রি আয়ার দর্শন, শ্রবণ ও
বিজ্ঞানে এই সকলই বিদিত হয়।
পরমাস্থাকে না জানিয়া যে ব্যক্তি
সংসারের কার্য্য করে, স্ত্রী পুল্লিদিগকে
থির জ্ঞান করে, ত্রাহ্মণা ও ফাত্রধর্ম
পালন করে, বিজ্ঞান, দর্শন, ধর্মশাত্রাদি
অক্ত্যাস করে, তাহার সকল কার্য্য বিফল
হয়।

्र बाक्कवका देमद्वज्ञीतक और गमरा बाका किना और किनदम्म मिलाम स्व नजनाचारे একমাত্র সত্য বস্ত ও প্রিয় বস্ত এবং তাঁহার জন্মই আর সকল বস্ত সত্য ও প্রিয়। যে ব্যক্তি আত্মা হইতে এই সকলকে বিচ্ছিয় বা সতন্ত্র দেখে, সে ভ্রাম্ভ। এই আত্মা হইতেই এই লোক সকল, ভূত সকল, দেবতা সকল উৎপন্ন হইয়াছে, তাঁহাতে স্থিতি করিতেছে এবং তাঁহাতেই সকলে প্রলয়কালে লীন হইবে।

যেমন ছলুভি জ্ঞান না থাকিলে যদি কোন অদৃশ্য দেশে ছুলুভি ধ্বনি হয়, তাহা ছুলুভি ধ্বনি হয়, তাহা ছুলুভি ধ্বনি বলিয়া অলুভব করিছে পারা যায় না, কিন্তু যথন ঐ জ্ঞান হয়, তখন তাহা বুকিতে পারা যায় না, কিন্তু যথন শুভা জ্ঞান হয় তথন পারা যায় না, কিন্তু যথন শুভা জ্ঞান হয় তথন পারা যায়; যেমন বাণা জ্ঞান না থাকিলে কোন অদৃশ্য দে.শ বাণা বাদন হইলে তাহা যে বাণা ধ্বনি ভাহা উপলব্ধি হয় না, কিন্তু বাণা জ্ঞান হইলে তাহা যে বাণা জ্ঞান হইলে তাহা যে হয়; সেইরূপ আল্লেজ্ঞান না হইলে অন্য বস্তুর প্রকৃত জ্ঞান হয় না।

যেমন আর্দ্র ইন্ধন হইতে ধুনাদি
নির্গত হয়, সেইরপ হে মৈতেয়ী, এই
মহান পরমেশরের নিঃখাস এই ঋগ্বেদ,
যজুর্বেদ, সামবেদ, অথব্দাঙ্গীরদ, ইতিহাস, পুরাণ, অক্ষবিদ্যা, দেবজন বিদ্যা,
উপনিবং, শ্লোক, স্ত্র, জনুব্যধো, মন্ত্রব্যাখ্যা সকল।

বেমন নদী, তড়াগাদি সকল প্রকার জলের একমাত্র জাধার ভান সমুদ্র, বেমন

न्भटर्ना खाधात चक. (यमन ब्रामत खाधात त्रमना, शटकत आधात नामिका, वर्धत **इक, ग्रांक (मांक, मकरबंद मन, खारनद** হাদয়, কর্মোর হস্ত, গতির পদ, বেদের বাক্য: যেমন একখণ্ড লবণ ছলে নিষিক্ত হইলে জলবং হইয়া যায়, কেহ তাহা আর দেখিতে পায় না কেবল তাহা আসাদন धातः উপল कि छ। (महे जल मर्जाधात মুলাধার এই মহদন্তত মহান পুরুষ। তিনি অনস্থ অপার এবং বিজ্ঞান্যন অর্থাৎ জ্ঞান মাত্রে উপলভ্য। আর এই সমস্ত ভূত এবং জীবাল্লা বিনাশণীল। মৃত্যুর পর কাহার অরে সংজ্ঞা বা নাম থাকে না। হে মৈতেয়ী। আমি এইরপ বিশাস করি।

মৈত্রেয়ী কহিলেন, ভগবন আপনি নৃত্যুর পর জীবাত্মার সংজ্ঞা থাকে না বলিয়া আমাকে ভ্রমে নিক্ষেপ করিলেন। যাজ্ঞরেরা বলিলেন, ভামি ভোমাকে মেংহে নিকেপ করি নাই। একারা ক্রিণাশী ও অবিভিয়। কিন্তু হৈত জ্ঞান इरे.ल दिनांशी विनिधा (वाध रुख। आखाः একমাত্র বভা বস্তু আরু সমস্ত ভাহারই প্রতিবিদ। গেমন জলেতে চল্লের যে প্রতি-বিশ্ব পতিত হয়, ভাহা দত্য নহে, যেহেত ৰুল স্থানাস্থিত কংলে ঐ প্রতিনিয়

आंत्र शांक ना, (कदल हम्म शांक: (महे-রূপ ভূত সকর ও জীবাহা সকল সেই সভাবরণ প্রমান্তার প্রতিবিশ্ব মারে তাহারা সতা নহে। অজ্ঞানতা বশতঃ ঐ প্রতিবিম্ব দত্য বলিয়া প্রতীতি হয়. অজ্ঞানতা তিরোহিত হইলে সেই পর-মাত্ম। মাত্র থাকেন, প্রতিবিদ্ধ সকলের আর অস্তিত থাকে না।

যেখানে হৈতজ্ঞান আছে সেখানে এক অন্তকে দর্শন করে, এক অন্তকে আঘ্রাণ করে, শ্রবণ করে, এক অন্যতে বর্ণন করে, এক অন্যকে মনন করে,এক অত্যকে জানে। যাহার একত জ্ঞান হইয়াছে তীহার পক্ষে ইহা কি প্রকারে সম্ভব হইতে পারে? বাঁহাছারা সমস্ত ভামা धात, छाँशांक कि श्रकांत्र स्नानित्व १ অধি নৈত্রেরী ৷ বিজ্ঞাতাকে কি প্রকারে জানিবে १ *

* व्यदिख्यान नाना समाप्त नाना প্রচারিত হইয়াছে। যি পুগত বলিয়াছেন "I and my father are one" আমি ও আমার পিতা এক। "অহংবৃদ্ধি যথন লোপ হয়, তথন ঈশব সর্ক্ষয় ও সকলি ঈশর্মর বলিয়। বোধ হয়। প্রাচীন প্রবি-দিগের অবৈত্রাদের মধ্যে এইরূপ পুলা ভাব নিটিছ আছে বোধ হয়। কিন্তু দৈতভাব ভিন্ন উপাসনা ও বা, বো, म।

বাইবেল এম্ব।

शिन्द्र निरंशत (यमन (उम. शावनी निरंशत) ও বৃটানদিশের নিকট বাইবেল দেইকপ 🏻 অহুবাদিত হট্যা প্রচারিত হট্যাছে এবং

ঈশবের বাক্য এবং অভ্রান্ত শাস্ত। আবেতা, মুসলমানদিগের কোরাণ, ইছদী বাইবেল পৃথিবীর প্রায় সকল ভাষাতে 🕻 ইং। অবশ্বন করিয়া যে কত পুস্তক বিচিত হইয়াছে, তাহার সংখ্যা নাই।

বাইবেশ ছুই ভাগে বিভক্ত, প্রাতন বিধান ও নৃত্ন বিধান। যীত গ্রীটের জন্মের পুর্বের ধাহা লিখিত হইয়াছিল, তাহা হিক্র ভাষার লিখিত ও ইছনীদিগের শাস্ত্র, তাহা পুরাতন বিধান; এবং তংপরে গ্রীক ভাষার বাহা নিখিত হয়, তাহা "নৃত্ন বিধান" নামে অভিহিত। গুরীনেরা উভয় ভাগকে গ্রহণ করিয়াছেন, কিন্তু শেষ ভাগকে গ্রেষ্ঠতর বলিয়া মানেন।

বাইবেল ছম্ট্র পুক্তে বিভক্ত।
সেই পুসকগুলি নানা প্রকাব, এবং নানা
সময়ে নানা লেখকখারা হচিত। এই
পুস্তক গুনির মধ্যে ১৯ উন্সল্লিশ থানি
পুরাতন ও ২৭ খানি নুতন বিধানের
অন্তর্গতি।

প্রথনে নোশিলিথিত প্রকল্প ।
নোশি থীত প্রতির অবতীর্গ ইইবার ৯৫০০
বংসর পুর্ণে জন্ম গ্রহণ করেন। তাঁহার
রিটিত প্রথম গ্রন্থ জ্যাদিপুত্তক "নামে
অভিহিত। এই পুত্তক লেখা আছে
নে, ঈশর সর্কাগ্রে জগৎ ও প্রথম নরনারী প্রথি করিয়ছিলেন। সেই নর
নারী প্রথম নিম্পাপছিলেন, কিন্তু ঈশবরের আজ্যা লত্তন করিয়া শীল্প পাপে
পতিত হন। তাঁহাদের বংশ জন্মশঃ
এমন এই ইইরা পড়ে যে, ঈশর সম্কর
জন্মংক জন্মাবনে বিনষ্ট করেন, কেবল
নাহ নাম্চ একজন ধান্ধিক লোককে
সপরিবারে রক্ষা করেন। জ্যে ক্রমে

নোহের বংশও ভ্রু হইয়া পড়ে, তাহাতে ঈশ্বর আবাহাম নামক এক ব্যক্তিকে মনোনীত করিয়া ভাষার কাছে আপ-নার পরিচয় দেন, এবং তাঁহাকে সপরি-বারে কনান দেশে যাইবার আদেশ করিয়া এই প্রতিজ্ঞা করেন যে তিনি ত।হার বংশকে নেই দেশ দিবেন। আদিপুস্তকে আবাহামের এবং ভাঁহার পুত্র, পৌত্র ও প্রপৌত্রগণের ইতিহাস বিস্তারিতরপে লিখিত হইরাছে। কাল-ক্রমে তাঁহার পৌত্র ঘাকোৰ দপ্রি-বারে মিসর দেশে যান, এবং ভাঁহার বহুক¦ল ভথায় ব!স বজসংখ্যক হইয়া প্রভূ। োশিলিখিত অন্য চারি গ্র.ছর নাম থাত্রাপুত্রক, লেবী। পুস্তক, গণনাপুস্তক ও দ্বিভায় বিবরণ। এই সঙ্গ পুস্তকে লেগা আছে বে, নিসররাজ কালফ্রনে ইস্রান্মলীরদের উপরে অভিশা ধৌরাল্মা করিভে লাগি-লেন: কিন্তু সালর মোশির হস্ক হারা অতি আশ্চর্যাও অলৌকিক কার্য্য সকল শাধনপূর্ব্ধক ইত্রায়েলীঃ দিগকে মিনর দেশ হইতে উদ্ধার করেন। তিনি ভাছা-निगदक अन्ती दृहर आछत्त हाईसा जिला তথায় তাহাদের ক:ছে তাগার দশ আজা ख राज्या गकन खाहाग करवन, जुदर তাহাদের ভ্রমণ হাল ১ল্লিগ বংমর পর্যান্ত অতি আন্ধর্যরূপে তাহাদিগকে ভদ্ম ও পেয় যোগান। **এ**ই गकन विषय (मह চারি পুস্তকে বিস্তারিতরূপে নিহিত হইয়াছে। মোশিলিধিত পঞ্চাত্রে পরে

কাষ্টেক থানি ঐতিহাদিক পুস্তুকে পাওয়া যায়। বিহোশ্য পুস্তকে ইআয়েলী চদের কনান দেশ অবিকারের বিবরণ লিখিত হইয়াছে। তংপরে এক সহস্র বংসর পর্যান্ত যে সকল ঘটনা ঘটিয়াছিল, তাহা বিচারকগণ, রং, শামুরেল, রাজাবলি, বংশাবলি, ইযুা, নহিমিহ ও ইন্থারে, এই সকল পুসকে বিবৃত হইয়াছে।

এই দকল ঐতিহাসিক পুত্তকের পরে चार ख नागादिश ज्ञान गर्छ छ छेत्र मन भूर्व श्रद्ध दाहै (दल भारता याता। পুজকে একজন ঈশ্বরভক্তের বিবরণ লিখিত হইনছে। ভিনি ধাত্মিক হইয়াও অতিশা: বিল্পগ্রস্ত হুইবা পড়েন; কিন্তু ঈশ্বর ভাহাকে.বিপদ ২ইতে উদ্ধার করেন, এবং ভাষাের কন্ত হটতে মলল উৎপন্ন করেন। দায়ুদের গীতাবলী পুসকে ঈরবের স্ততি ও মাহ:আপুর্ণ অ:নকঙলি অতি উংকট গীত সংগ্হীত হইয়াছে। হিতোপ্ৰেশ ও উপদেশক নামক ছইবানি নানাবিধ বছাড়েশ লিপিবদ্ধ গ্ৰ'ছ ২ইটাছে। প্রম্থীতে **আধন প্রজাগ**নের হাতি ঈশ্বরের প্রেম দাম্পত্য-প্রেমের দুটাকুছলে বাঁতি হইগছে।

াহরে পর যোলগানি ভবিষ্যবানী
পুত্র বাইবেলের অন্তর্গত। ভবিষাবাদীরা ঈর্থবের ভাব মন্থ্যাদিগকে
বৃশাইয়া ভাহাদিগকে পাপপথ হইতে
কিরাইঘা আনিয়া ঈর্পবের সেবাঘরত ও
বৃদাহরবে বাপ্তে করিবার জন্য উত্তজনা করিতেন এবং স্বায় সময় ভাঁহার

ঈশবাণুপ্রাণিত হইয়া ভবিষাৎ **ঘটনাও** প্রকাশ করিতেম।

পুরাতন বিধানের আন্তর্গত খেব পুস্তক-রচ্ডিতার নাম মালাথি। জন্মের ন্যুলাধিক ৪০০ বৎসর পরে যীও-এছি জন্মগ্রহণ করেন। "যীত" শব্দের অর্থ "ত্রাংকর্তা," এবং "ধাষ্ট" শব্দের অর্থ "অভিষিক্ত" অর্থাৎ 'ইশ্বরকর্ত্ত ক নিযুক্ত।" প্রায় ১৯০০ বংসর **হটল,** খন্ত এই জগতে আবিভূতি ইইয়াছিলেন। বাইবেলের বর্ণনায় যীতথী স্তর জন্ম অভুত এবং তিনি নানাবিধ অংগৌকিক জিয়া সাধন করেন। বিশেষতঃ পীডিতদিগকে এক কথায় স্বস্থ করিতেন, আমদিগকে द्याचात्र. थक्षपिशदक एलिनात. catat-पिशरक कथा करियात शक्ति निरुठन. এমন কি, মতা মাতুগকেও জীবন দান করিঃছিলেন। যীভ লোকদিগকে সতুপ-तम पान उ छाशात्मत कन्यापमाधरन ৩ বংগর অবিশান্ত চেটা করেন। কিন্ত ভাষার সভাতি ইত্দীরা ভাষার দারুণ শক্ৰ ইইয়া ভ্ৰশকাঠে বিদ্ধ ভাগকে মারিল ফেলে। বিশাস করেন, নিরপারাধী যীভের মৃত্যুতে ছগতের সকল পাপের আঃ-চিত্ত হই-য়াছে।

বীত্রী ষ্টের ইতিহাস ও শিক্ষা বিত্যান রিতরপে বাইবেলের দিতীয়ভাগে, অর্থান "নুতন বিধানে" বিরুত হইয়াছে। ফ্রাতান ইশ্যানি ভিন্ন ভিন্ন পুত্রক নুতন বিধান নের অন্তর্গত। প্রথমে মবি, মার্ক, শৃক্

ও যোহন লিখিত চারি "স্থস্মাচার" পাওয়া বায়। এই চারিখানি পুস্তকে বীশুর অম, অভ্ত কর্ম, উপদেশ, মৃত্যু, পুনরু খান, ও স্বর্গারোহণ বর্ণিত হইয়াছে, সে **জন্ত এই পুস্তক চতু**ইর "স্থ**সমা**চার" নামে অভিহিত। তাহার পরে 'প্রেরিতদের ক্রিয়া" নামক পুস্তক পাওয়া যার। এই পুস্তকে ত্রিশ বৎসর পর্যান্ত নানাদেশে হুস্মাচার প্রচারিত হইবার বিবরণ উল্লি-**বিত**ূলইয়াছে। তংপরে মহাত্ম পুল প্রভৃতি প্রচারকেরা কোন কোন খীষ্টায়-মওলী অথবা বিশ্বাসী ব্যক্তির সমীপে। সর্ব্বত্র প্রতিষ্ঠিত হইবে।

যে সকল পত্র লেখেন, তাহা পাওয়া সেই সকল পত্ৰে ধর্ম্ম সংক্রোন্ত নানা বিষয় আন্দোলিত হইয়াছে এবং তাহা ধর্মজীবনের অভিজ্ঞতায় পরি-পূর্ণ। সকলের শেষে "আপ্তবাক্য" নামক পুস্তক , আছে; এই পুস্তকে গোহনের নিকটে প্রকাশিত স্থাীর বর্ণিত হইয়াছে। সেই দকল দর্শনের শার এই যে বিশাসীরা ক্ষ**ণি**ক তুঃথ ভোগ করিবে বটে. কিন্তু অবশেষে বিশ্বাদের জয় এবং যীত্থীষ্টের রাজ্য

জরুর সিং।

লাত্নেহরপ স্থায় ভূষণে ভূষিতা যে নারী, এতিন ভুবনে (मेरे इस धना। এ (इन नलना রমণী সমাজে কে আছে বলনা? वालिकात मत्न कि महान छाव, **এ** इ छेमात तमनी-सङ्ख्या ছাড়ি অবরোধ দিতে ঋণ শোধ---(य अर्पत मार्थ व्यावक लाहे. অবলার প্রাণ উদ্ধারিতে ভারে **উঠि**न काँ पिया! माद्य कि शाहे বালিকার গুণ 📍 সর্বের প্রস্থন— ফুটিয়ে মরতে শে:ভিছে বিভাগ! ্র মোহিছে স্বায় কি নবরাগে ?

निभाषी माजिए इत्राद्यभू धति, भिना क्यादी। **দৈনিক**্রানেতে

कि চরিত্র-বল স্থুদৃঢ় অটল। কে বলে অবলা এত হীনবল গ বে কাজে পুরুষ ভয়ে ভীত অতি. সে কাজে নারীর কিলে হ'ল মতি প্ (বুঝি) ভাতৃ-সেহ রংস বিগলিত মন। (ठाइ) सार्थ-यूथ मत मिटर विमुद्धिन, অধারা সাধনে হ'ল অগ্রসর, এহ'তে কি আমাছে লক্ষ্য উচ্চতর ৭ আপ দিনে আজ প্রীক্ষার মাঝে। এ হেন সাহস বালিকারে সাজে ? व्यक्रिमध्य यात इत्रेशां ए मीका, সে কি করে কভু সময় প্রভীকাণ এত যে তিতিকা কি শিকা বলে গ ছ তিন বছর গেল এই ভাবে, (कर ना कानिल त्रभ्ती-अভाব।

किछ এक मिन रेमछ এक मन, হয়ে সন্দিহান-পশ্চাতে গমন করিল ভাহার অতি সংগোপনে, একেলা স্নানেতে যায় কি কারণে ? আড়োলে থাকিয়ে দেখিল ভাষায়, দিপাহীর দাজে দেনা-বালিকায়! শিবিরে সে কথা হইল প্রচার কেন একাকিনী করে স্নানাছার ? সেনাপতি ভানি চাহিলা দেখিতে. সেনা-দল গিয়ে আনিল সাক্ষা**তে**। সিকিয়ার কাণে পেছিল সংবাদ. বারেক হেরিবে মনে বড সাধ। রাজা ওমহিষী সুধাইলা তারে থাকিবে কি ভুমি এ রাজ সংসারে ? 'জরুর দিং^{*}ভাতে একান্ত নারা**জ** কহিলা কাতরে ক্ষম মহারাজ। আসির একাজে ভাতার তরে। সিদ্ধিয়া তথন লিপি সহযোগে অর্থ রাশ দিয়ে কতই উদ্যোগে, ভূপালে ভাহারে-নবাবের কাছে পাঠালেন বরা কারা-মুক্তি থেচে,— জকুর ভাতার যেবা ঋণ-দায়. ফটেকে অটিক করেছে তথায়। তাহ'তে উদ্ধারি গেল নিজ বাসে ভাতার সহিত মাতিয়ে উল্লাসে। श्राप्त व्यानम स्टूना व्यात ।

তোমার স্থনাম গাইবে দকলে पिरम कत्रफ: लि " वीत-वाला व'टल। ভারতের নারী তুলা দিতে নারি, সাহস উভাষ ঘাই বলিহারি। যে ভাব দেখালৈ ৰালিকা জীবনে. जुलित ना कजू अरमभीय अरम ! তৰ নাম হ'ল চির্মারণীয়, সকলের তুমি হ'লে বঁরণীয় ! রমণী সমাজে রাখিলা যে নাম, শত কঠে সবে গাবে অবিরাম ! চল্র সূর্য্য কিতি অগণন ভারা, ঘোষিবে হুৰণ দিবানিশি তারা। बाइदी रमुना कुका लामावडी, निकु उक्तभूज नक्षमा कारवती, বিহ্য হিমাচল গাবে অবির্ল তোমার কাহিনী হইয়ে বিহবল ! কে বলে মানবী জরুর তোমারে 🕈 স্বলের দেখী বিরাজো শংসারে! ভাতক্ষেহ রূপ স্থধারসে প্রাণ माट्डाबादा कांद्र ट्डामां ममान, কে চায় গরিব সহোদব পানে! এত ক্ষেহ রস আছে কারপ্রাণে! যে মহাপ্রাণত। দেখাইলে তৃমি, उद नाभ जाक धना जारी जृपि, धना। धना। पूर्वि धना। धरे च्दा। **3** 5 1

क्षिनि वा नक विष्ठान।

৩৪৯ সংখ্যা ৩০১ পৃষ্ঠার পর।

বে সকল ৰস্ত্ৰ এই দ্ধপ পূৰ্ববিদ্ধা বলে। কোন ছিতিত্বাপক বস্তুতে চুচ আপ্তান্ত হয়, ভাহাদিগকে ছিতিত্বাপক স্বাঘাত করিলে আহত প্রমাপুসকল

আবাত বলাভিমুখে চালিত হইয়া অব্যব-হিত পরবর্তী প্রমাণু সকলকেও চালিত করে। ইহারা আবার ইহাদিগের অব্য-বহিত পরবর্ত্তা পরমাণু সকলকে ঢালিত করে, এইরণে সেই আহত বস্তুর সমস্ত পরমাণু আঘাত বলাভিমুথে পরিচালিত হয়। কিন্তু প্রথম আহত প্রমাণু সকল **যথন অ**ধ্যব**িঠ** প্ৰবৰ্তী প্ৰমাণু সমূহের দিকে ধাবিত হয়, তথন তাহারা ঐ পরবর্ত্তী পরমাণু ইইন্ডে প্রতিঘাত প্রাপ্ত হইয়া সমানাভিমুখে প্রতিপ্রেরিত হয় এবং ঐ প্রতিঘাত বলে সন্থান ছাড়াইয়া কতক দূর চলিয়া যায়। এইরাপে এ বস্তুর পরমাণুদকল বার বার আঘাত বলের অভিমুগে ও প্রতিমুগে পরিচালিভ হয়। একটী রধার বা হস্তি-দতের গোলক যদি ভূমিতলে আঘাত করা যায়, উহা ভূমিতল হইতে প্রতিঘাত পাইয়া ফিরিয়া আইসে। অথবা যদি একটা দোলককে (Pendalum) একদিকে টানিয়া ছাড়িয়া দেওয়া যায়, তবে ক্র সন্থানা ভিনুথে ধাবিত এবং সভান ছাড়াইয়াও কতক দ্র ষাইয়া শাবার ফিরিয়া আইসে। धहेकदभ वाव বার অভিমুখে ও প্রতিমুখে চালিত হইল শেবে সভানে অবস্থান করে। আহত বস্তুর প্রমাণু দকলের অবস্থা এইরূপ ছইয়া থাকে। এই অবস্থাকেই পারমাণ্য व्यक्ने (Vibrations) वला यात्र ।

্যথন কোন হিতিহাপ^{েই} বস্ততে দৃঢ় ছাঘাত করা যায়, তথন তাহার পারমাণ্ড

প্রকম্প জনিয়া পার্যবর্তী বায়ুতে সংক্রো-নিত হয়। বায়ু নিজে বিলকণ স্থিতি-স্থাপক, স্বতরাং বায়্তে ঐ পারমানব প্র-কম্প বহুদুর প্রসারিত হয়। জলাশয়ে যদি লোষ্ট নিক্ষেপকরা যায়, তবে অবিলম্বে তরঙ্গ উংপন্ন ও প্রসারিত হইয়া তীরে আগোত করে, এবং ঐ জলে পদ্ম পত্রাদি যাহা কিছু থাকে, ঐ তরঙ্গ সংযোগ কম্পিত হইতে থাকে। সেইরূপ বায়ুতরজ কর্মধাস্থ পট্যাকার পাতলা চর্ম প্রকম্পিত করে। এই কর্পট্র रभा रका बाग्न घाता मिखिएक मः लग्न কর্ণপটহে বায়ু তর ক্বর সংস্পর্শ **হইলেই ঐ স্নায়ু**,ত তাড়িতবেগব**ৎ** এক প্রকার বেগের উৎপত্তি বেগ মস্তিংক নীত হইলে আমাদিংগ্র শক জ্ঞান হয়। ইহা এক্ষণে প্রায় ছিরী-কৃত হট্য়া**ছে**, যে আমানিগের ইন্দ্রি-জনিত জ্ঞান মাত্রই লায়ু,বগ্রহত। যথনি হস্তাদির স্থকে অগ্নিবা অন্ত কোন বস্তুর সংস্পার্শ হয়, তংকণেই ঐ ত্রু সংলগ্ন স্নায়ুতে এক প্রকার বেগেৰ উংপত্তি হয়, এবং ঐ বেগ মতিকে উপস্থিত হই লেই স্পর্ণজ্ঞান হয়। এইরপ रथन कान थाला खरा तगना मरगुक इस, অথবা আলোক চন্দ্ৰ সংযুক্ত হয়, তখন ঐ রসনা বা চক্ষ্যংগগ্ন স্নায়ুতে এক প্রকার বের উৎপন্ন ইইয়া মস্তিকে নীত হয়, এবং তাহাতে আয়াদন বাদুৰ্শন कान इत्र। (महेत्रं भ स्य क्लार्ने नम्द्र কৰ্ণ পটহ সংলগ্ন স্বায়ুতে

বেগের উৎপত্তি ছয়। উহা কর্ণ পটহের কম্পনবেগ হইতে সম্পূর্ণ স্বতম্ভ্র।

ভুপুঠে বাবতীয় পদার্থ বিদ্যমান আছে, সকলেই বায়ভেরে আক্রান্ত রহিয়াছে। বায় সকল পদার্থকেই পেষণ করিতেছে, কিছ বায়ু নিজে অতিশয় স্থিতিস্থাপক खनविभिष्ठे। यथन हेरात अनु मकल বিচলিত হয়, তখন তাহাদের পূর্কোক্ত প্রকার গতি সমুদ্রের তরজের তায় অনেক দুর প্র্যান্ত বিস্তৃত না হইয়া নিবৃত্ত হয় না। যবন কোন স্থিতিস্থাপক পদার্থ কম্পিড হয়, তথন তৎসংস্পৃত্ত বায়ুও তাহার সঙ্গে দঙ্গে কম্পিত হইয়া थारक, के कम्मन किया वायु मर्था वहनत পর্যান্ত সংগারিত হইয়া যায়। হলি একটা জলপূর্ণ পাত্রে আঘাত করা মায়, তাহা হইলে উহা কাপিতে থাকে. এবং তদীয় কম্পন জলমধ্যেও স্কারিত হয়। ইহ। পাত্রন্থ জলের তরঙ্গ হার। স্পষ্ট প্রভীরমান হয়। যদি ঐ পাত্রের জল किलिया (मध्या याय, जारा इहेल कलत পরিবর্ত্তে ভথায় যে বায়ু থাকে, কম্প-মান পদার্থ মাত্র হই তেই কম্পন ক্রিয়া তৎপরিহিত বায়ুমধ্যে স্কারিত হয় এবং তাহা বায়ু রাশিতে বহুদ্র পর্যান্ত ব্যাপ্ত হইয়া ক্ষান্ত হয়।

ধেমন গঙ্গাথ তরক্ত সকল বেগে
আবিষা তদীর তট ভূমিতে আখাত করে,
সেইরূপ কম্পানান বাযুর নিকটেও যদি
কোন হির পদার্থ রাখা যায়, তাহাও
ঐরূপে বার্থীয় তরক্ত থারা আহত

হইতে থাকে। যদি পূর্কোন্নিথিত পাত্রের তিন চারি হাত অন্তরে একটা কাগৰ ধরিয়া ঐ পাত্রটীভে বিলক্ষণ আঘাত করা যায়, তাহা হইলে ঐ পাত্রের কম্পন বায়তে স্কারিত হইয়া ক্রমশঃ প্রস্ত হইতে হইতে সেই কাগতে আসিয়া আঘাত করে। কিন্তু মনে কর, ঐ কাগজ অচেতন তত্ত সমূহ দ্বারা নিশ্মিত না হুইয়া যদি বস্তুতঃই সজীব অনুভবক্ষ ধমনী সমূহ দারা নিশ্বিত হইত, তাহা হইলে ঐ কাগজ স্থন্দররূপে বায়বীয় কম্পন **অনু**ভব করিতে স্মর্থ ইইত। সে যাহা হউক ঐ প্রকার সজীব ধমনী সকল জন্তুগণের কর্ণকুহরে সন্নিবেশিত আছে। ভাহারা অতি স্কাতর বায়বীর কম্পন প্রায়ত অনুভ্র করিতে সমর্থ হয়। কম্পিত বায়ু কর্ণমধ্যে প্রেবেশ করিয়া উক্ত ধমনী সমূহের প্রান্তে আঘাত করিলে যে জ্ঞান জন্মে, তাহাকেই আমরা শব্দ ক্ৰিচ।

''আকাশসস্থবোনাদস্তথানাহত উচ্যতে।' নাদ পুৱাণ।

নিকটে কোন স্থিতিস্থাপক পদার্থ
কম্পিত হইলে শক ভনা থায়, কিন্তু যদি

ঐ কম্পনান বস্তু কোন বায়ণুতা পাত্রে
থাকে, তাহা হইলে আর ভনা থায় না।
এতদ্বারা স্পষ্ট প্রতীয়নান হইতেছে ধে
বায়ুর কম্পনে শক কর্পকুহরে নীত হয়।

"नारमन वाकारण दर्गः भम॰ वर्गाः* भगमाराः।"

নাদ্দংহিতা।

शृद्धकारणत विश्व हिञ्जातीन आधा-থবির। হলিয়া গিয়াছেন যে অকাশই সর্ব্বাদিন, অগতের মূল কারণ, সৃষ্টি শাক্তর ্বীজ অরপ। আকাশ হইতেই বায়ু ঞ্ছতি ভূত**িচ**ঃ ছ**ন্মগ্রহ**। করিলাছে। ক্ট হস্ত আকাশেই অংশ্বিত করে, জাবাবেই ধীন হয়। আকাশ এক সংভী শক্তির রাশির স্বরূপ। "শক্ত গুণলাকাশ্।" আকাশ বাযুর শাক্র ননবাী কারণ। বায়ুও আকে।শ হয়তে ভানিয়াছিল, অতএব শব্ধবারী আৰু শ্ৰাণ্ড সাধারণ প্রেণি বারু প্রভৃতি প্রভাবক ভূতেও শক্তণ আছে বটে, কিছ ভাষা ভাষালা আকাশের নিকটেই ল্ভে ফ্রিয়ে-ছা। অভগ্ন, আক**াশ:ক** অনুভাতে কারতে হয়লৈ বায়ুর ভাশা কর তামুডি ভাগাং আদাসভাই আক**শে, এই**-রপ্রানকরিতে ইইবে। দুক্রের প্রবৃতি ষ_া ছালেবছা খেনে নীজ, সেইরপ শব্দের ও হারু আলাবস্থা বা বীজ আকাশ। रीव वाथ किला तमन खाडाई रस मा, নেইয়প আকাশ না থাকিলেও শল হইত না। পদান্তরে ইউরোপীয় পণ্ডিতেরা আমাকাশে। বছত থীকার করেন না। लीकाका वाहास. কোন বস্ত 'আকাশ সংজ্ঞানাতা; छेश (करण ₹ (₹ : ভুড**াং উহার কোন ৩৭ বা ক্ষ**তা লাই। শোল শন তথের কথা ববিলে. ভীহা সায়ুৱ তণ। ৰানুত্ইতেই শব্দ উৎগন্ধ হয়। বায়ুই কটিন বস্তংয়ের ছাতা অভিহত হইয়া শক্ উৎপাদন করে।

শদ যে বামু ইইডেই জ্বান, আকাশ হইতে জ্বানা, ত হার প্রত্যক্ষ প্রনাণ আছে। যথা—বামু নিলানন যন্ত্র হারা কোন হান হইতে বামুকে নিজানিত কর, তবপরে সেই বায়ুক্ত স্থানে ছই কঠিন যন্ত্র লইয়া পরক্ষরকে অভিযাত কর, দেখিতে পাইবে, তথার কোনও শল উৎপন্ন হইডেছে না। এতজ্ঞপ বিশেষ প্রীমাধারা হির হইরাছে যে, শল্প বামুর গুণ—আকাশের গুণ নহে; শল্প আকাশ্যর গুণ নহে।, তথ্য ক্রিতে পার না।

এই যক্তি ভারতবর্ষীয় প্রাচীন আর্য্য ঋষিদিগের যুক্তির নিক্ট অকিধিৎকর। ষ্থা—আকাশ যা হোম বাডীত শব্দ উৎপ্র ২ইতে পারে না। ২দি আবাদকে ছাড়িয়া শন্দ উংপাদন করিতে পালিতে. বায়ু •িংহত কৰণের ভাষ যদি উহাকে বুলাইয়া ফেলিয়া শগ ডন্মাইতে পারিতে তাহা হইলে ভূমি শংকে আকাশের ক্ষণ না বলিয়া বয়ের ওণ বলিতে পারিতে। কিলু যান ভিমি ভাষা পার না, তথন ভূমি কিলে তানিংল যে শদ আকাশের গুণ নহৈ ৪ অকোশকে ছাড়িয়া শক্ত করা দূরে থাকুক, শক্তনক বস্তম্বরে জভি-ঘাত সিদ্ধও কলিতে পাটিবে না। यनि তুমি সত্য শত্যই "বায়ু শৃহ্য হুলে শব্দ হয় না'' এরপ প্রত্যক্ষ বরিয়া থাক, তবে তোমার ভদ্বিয়ে বুঝিবার ত্রী মাছে।

নেছনে তোমার ইংাই বুনা। উতিত যে, সংগ্রন্থলৈ বেলন শব্দ হল, নিব্রাত ছলেও ঠিক্ সেইরপশক্ষ বইনকারী বায়ুব মানাবে তাহা তোলার কর্ণকৃহরে প্রবিষ্ট না হওয়াল প্রবেশগুলাক হর নাই, কেন লা আঘারন্থালা আকাশে যে শব্দ জ্যো, তাহা বায়ুদালা বাহিত হইরাই প্রবেশে ক্রিল হলের শব্দ বায়ুবলা বাহিত হইরাই প্রবেশের শব্দ বায়ুবলা বাহিত হইরাই প্রবেশের শব্দ বায়ুবলার বাহিত হরান করেনে ভূমি তাহা ভূমি তাহা ভূমি তাহা ভূমি তালার শ্রন্থালার মানাবে বিশ্বার হর বারে, শব্দের কিরপে কারণ, ভাগও থেবা আনোক। যুক্তিবালা নির্ণয় হয় যে, ব্রহ্মা ও অভিযাত তাহার নিন্তিত কারণ মাত্র; সমবীয়ী বা অসমনবালী কারণ

নাহ। কেন না সম্বায়ী ও থানাবারী কারণের সভাব এই যে, উপার নাই হাইলো ভংসমবেত কাবাও নাই হাই। ঘটের সমবায়ী কারণ মৃতিকা সার জহার অসমবারী কারণ কলাল কপানিকার সংযোগ। এই ছুই কারণের অভাব হয়, ইথা প্রেক্তাসামান কিল বস্তায়া ও তলতিবার মান মৃত্যাং ক্ষরিয়া শক্ষ নিমিন্ত্র কারণ এবং আকাশ স্থানিকার বারণ এবং আকাশ স্থানিকার কারণ এবং আকাশ স্থানির স্থানিকার কারণ এবং আকাশ স্থানির কারণ বিনিষ্টি কারণ বিনিষ্টা কারণ বিনিষ্টা কিলেণ করেন। শক্ষ বার্লীকারণ বিনিষ্টা করেন। শক্ষ বার্লীকারণ বিনিষ্টা করেন। শক্ষ বার্লীকারণ বিনিষ্টা করেন। শক্ষ বার্লীকারণ বিনিষ্টা করেন। শক্ষ বার্লীকারণ বার্লীকারণ করেন। শক্ষ বার্লীকারণ বার্লীকারণ করেন। শক্ষ বার্লীকারণ করেনা সংশ্রীকারণ করেনা সং

(্ৰুম্ধঃ)

পক্ষীর স্মৃতিশক্তি।

(রোমান হইতে সংগৃহীত)

পথীত তির ছতি-শক্তি অন্ত। আনক পর্ফা কোন নিদিষ্ট পর্টে এক নিদিষ্ট দেন হইতে অল নিদিষ্ট দেশে গনন করে। থদিও ইগার নিতৃত্ত অলাপি ছারা যায় নাই, তথাপি একথাটা নিঃদন্দেহ বলা ঘাইতে পারে যে স্থান বিশেষের স্থাতি মনে রহিল যায় বলিয়া বর্গান্তে পুলোয় ভাহার। সেইস্থানে ফিরিয়া আলিতে পারে। বাক্লাও সাহেব ভাঁহার কৌ হুল্লমালা (Curiosities) নামক গ্রন্থে একটা পায়রার বিব-

রণে লিখিয়াছেন, যে একটা ফপোত
আঠার নানের অন্থান্থিতির পর, কেবল
নাত্র হুর গুনিয়া ভাগার পদ্দী ক পার্থিতে
চিনিলা লইতে পানিয়াছিল। উইলান্
লাহেব ভাগার বিষ্পবিজ্ঞান প্রাপ্ত (American Ornithology) একটা কারেবর
স্থৃতি শক্তির বড় হুন্দর এক দৃষ্টাত্ত
দিয়াছেন। আনেরিকার ভিলাভয়ার
নদীর ভটে, একটা আনে একজন ভ্রান্
লোক একটা কাক পুনিলাছিলেন।
কাকটাকে লইয়া ভিনি সর্বাদা ধেলা

কাকটা একবার দৈবাৎ कविराजन । উড়িয়া চলিয়া যায়। অনেকদিন চলিয়া গেল; কাকটি আর ফিরিল না দেখিয়া, ভদ্রলোকটি মনে করিলেন যে. হয়ত কোথাও বন্দুকের গুলিতে অথবা অন্য কোন প্রকারে মরিয়া গিয়াছে। প্রায় এগার মাদ পরে একদিন দেই লোকটি অন্যান্য বন্ধুবর্গের সহিত নদীকূলে বেড়া-ইতেছেন; সহসা একটা কাক ছাড়িয়া ভাঁহাদিগের দিকে স্বাসিল, এবং ভদ্রলোকটির ঘাড়ের উপর বসিয়া নানা স্বর ভঙ্গীতে চিৎকার করিতে লাগিল। ভদ্রলোকটা প্রাচীন বন্ধকে চিনিতে পারিয়া ধরিতে প্রয়াস পাইলেন; কিন্ধ সে ধরা দিল না। সে মুক্ত আকাশ-ক্ষেত্রে স্বাধীন জীবন যাপন করিয়া স্বাধী-নতার মধ্রতা আপাদন করিয়াছিল. काटक है ज्यात यनी इटेट गिहिल मा; কিন্তু অনেককণ খুরিয়া খুরিয়া 'কা' 'কা' করিয়া উড়িয়া আপনার দলে গিয়া মিশিল। তাহার পর হইতে আর তাহার দেখা পাওয়া যায় নাই। কাকচরিক্(Logic of Chance) গ্রন্থের প্রবেতা বিখ্যাত ভেল সাহেব একটি তোতার বিবরণ রোমানে (Romanes) সাহেবকে এইরপ লিধিয়াছেন:—''আমার একটা ভোতা ছিল; সেটি পশ্চিম আফিকায় অবস্থায় ধৃত হয়। আমি এই পাধীটীকে **°লানালার ধারে ঝুলাই**য়া, রা**খি**য়াছিলাম, সে স্থান স্ইতে সে সদর দর্কার ও থিড়-কীর সরজার ঘণ্টার আওয়াক স্মান

শুনিতে পাইত। থিড় কীর দরজার একটা কুকুর থাকিত, সে ঘণ্টার আথওয়াজ শুনিলেই ডাকিয়া উঠিত। তোতাটি স্বধু যে কুকুরের ডাক অন্তকরণ করিয়াছিল, তাহাই নয়, সদর দরজার এবং থিড়কীর দরজার ঘণ্টার আওয়াজের প্রভেদ পর্যান্ত ব্রিয়াছিল; কারণ দেখা নিয়াছে যে যখন কুকুরটি দরজায় থাকিত না, তথনও থিড়কীর দরজার ঘণ্টার আওয়াজ পাইলেই, কুকুরের মত ডাকিয়া উঠিত।

ওয়ালটার পলক সাহেব যে বৃত্তান্তটি লিথিয়াছেন, তাহাতে বেশ বুঝিতে পারা যায়, যে তোতা পাথী কথা মুখন্থ করিতে তো পারেই, তাহা ছাড়া আবার পূর্ব্বের অভাস্থ কথা কিঞ্চিৎ ভুলিয়া গেলে, চেষ্টা করিয়া ধীরে ধীরে মারণ করিয়া লইতে পারে। বিবি নেপিয়ারের এ**ক**টা ভোতা "বুড়া ডান টাকর" পড়িতে শিথিয়া-ছিল। একবার সে সেই কথাটা ভূলিয়া গিয়া, পুনরায় স্মরণ করিবার জন্য "বুড়া, বুড়া" বলিয়া ডাকিতে লাগিল। কিছুক্ষণ পরে বলিল, "বুড়া বেদি টাকর" কিন্তু বুঝিতে পারিল যে তাহার কথা ঠিকৃ হয় নাই; অমনি আবার "বুড়া বুড়া" বলিয়া কপচাইতে লাগিল। সে বাস্তবিকই "ডান " শক্টি স্মরণ করিবার প্রয়াস পাইতেছিল, দেখিবার জন্য বিবী নেপি-यात याहे 'जान' भक्ति जेक्तात्रण कतित्वन, অমনি ভোতা বলিয়া উঠিল, "বুড়া ডান্ টাকর"। তাহার পর আর 'বুড়া বুড়া' वित्रा ना (कैठाडेब्रा, अन्तककण धनिया

দাঁড়ে বসির: স্থলের বালকের মত "বুড়া ডান্টাকর্" আবৃত্তি করিতে লাগিল। যাঁহার। পাথী পুষিয়া থাকেন, তাঁহার। পাধীর বৃদ্ধি, মেজাজ, স্বৃতিশা প্রভৃতির যদি পরীক্ষা করেন, তবে জনেক শিক্ষা ও আমোদ লাভ করিতে পারেন।

কলিকাত। মূকবধির বিদ্যালয়।

কাল। ও বোবাদিগের ন্যায় হুর্ভাগ্য ভীব মানব সংগারে অল। শব্দ কি প্ ইহারা জানেনা এবং শব্দজান না থাকাতে সকল জ্ঞান উপার্জ্জনের ছার ইহাদিগের নিকট রুদ্ধ। যাহারা অন্ধ, তাহারা কথা শুনিতে পায় ও বলিতে পারে, স্কুতরাং ভাগাজ্ঞানের সহায়তায় সমুদ্যে জ্ঞান উপার্ক্জনে তাহারা অধিকারী। কিন্তু কালা-দিগের অক্ষা নিতান্ত শোচনীয় এবং তাহাদিগের জ্মাগ্রহণ একপ্রকার বিড্মান। মাত্র।

কালা বোবারা যে শিক্ষালাভ করিতে পারে, এদেশের লোকে তাহা বিশ্বাস করেন না। কিন্তু ইউরোপ ও আমেরিকার ইসাদিপের জন্য শত শত বিদ্যালয় আছে এবং ইহারা স্থাশিক্ষিত হট্যা বড় বড় কাজ করিতেছে। ভারতবর্ধে থদিও মুক বিরের সংখ্যা প্রায় দেড় লক্ষ্য, ইহাদিগের জন্য একটিও বিদ্যালয় ছিল না। ৪।৫ বংসর হইল বোদাই সহরে একটা নাত্র বিদ্যালয় প্রথম স্থাপিত হয়। ইহাতে প্রায় ২৫টা ছাত্র আছে এবং গ্রন্থনেন্ট, মিউনিসিপালিটা ও দ্যাল্য লোকদিগের সাহায্যে ইহার কার্য্য বেশ চলিতেছে।

গত মে মাসে কলিকাতার কালা-বোবাদিগের জন্য প্রথম বিদ্যালয় স্থাপিত निधी करलाइत श्रंट काष्त्रकी मनामय लाटकत छेरमाट कुरेंगे माज ছাত लहेश हेशा अधिष्ठा हम, करमक মাসের মধ্যে ছাত্রসংখ্যা ১১টী হইয়াছে এবং ৩ জন শিক্ষক অংশস্ত মত্বের সহিত তাহাদিগকে শিক্ষা দিতেছেন। এই শিক্ষকদিগের মধ্যে একজন বোষাই বিদ্যালয়ে শিক্ষিত হইয়া শিক্ষকতা করেন। শিক্ষা গুণে কালা বোবারা মা. বাবা, কাকাবাবু, হাতী, ঘোড়া, খাঁব, আতা, বাবা টাকা দাও, মা ভাত দাও, মাদ্যা কর, ভোমার নাম কি প্রভৃতি অনেক কথা উচ্চারণ করিতে ও লিখিতে পারে, আপুনাদিগের নাম বাঙ্গালাতে ও টংবাজিতে লিখিতে পারে, কেই কেই **অ**তি স্থুন্দর ছবি আঁকিতে পারে। এত্তির ইহার৷ পুস্তক অধ্যয়ন করিতে ও অভ কসিতে শিখিতেছে। এক একটা ছাত্ৰকে এক একটা কথা শিকা দিতে বহু পরিশ্রম কবিতে হয়, কিন্ধ শিক্ষকেরা এবিষয়ে অসাধারণ দৈঘ্য, অধ্যবসায় ও সেত্রের পরিচয় দিয়া থাকেন।

গত আগষ্ট মাসে বোবাকালা বালক-

গের ত্রৈমাসিক পারিতোষিক বিতরণ হয়, ভাহাতে জষ্টিদ গুরুদাস বংশ্যাপা-ধ্যার মহাশর সভাপতি ছিলেন এবং বাবু কালীচরণ বন্দ্যোপাধ্যায়, পণ্ডিত তারা কুমার কবিরত্ব ও বাবু কুঞ্ কুনার মিত্র প্রভৃতি ইহাদিগের সপক্ষে বক্তৃতা করেন। ভথন ছাত্রেরা যে অর অর শিক্ষা করিয়া-ছিল, ভাহা দেখিয়াই অনেকে চমৎকৃত ছেইয়াছিলেন। এই বালকদিগকে আলি-পুর পশুশালা দর্শনার্থ লইয়া যাওয়া হয়, তাহাতে তাহায়া বড়ই আনন্দ করে। শোভাবাজার রাজবাটী, বিসপ্স ক্ষেত্র প্রভৃতি আরও কয়েকস্থানে ইহারা আহুত হইয়া যায় এবং আহার ও পারি-ভোষিকাৰি পাইল বড়ই প্ৰীত হয়। वालक कि(शत मर्द्धा मकरल है हिन्तू, तक्वल **একটা ফিরিস্ট: ই**হাদিগের বয়স ৪*হ*ইতে ১৬ বৎসর পর্যান্ত। অর্থয়ক্ষ বালকের। অধিক পরিকারর পে কথা কহিতে শিংখ। বালকদিগো মধ্যে কেহ কেহ প্রথমে বল অংকুর মত উগ্রসভাব ছিল, কৃষ্ঠি এনে ধীর ও শান্ত হইয়া আংসিতেছে।

গত ২৭এ ফেক্রমারি নিটা কলেজ হলে এই বিভালয়ের প্রথম বার্ষিক পারি-ভোষিক উপলক্ষে মহাসমারোহ হয়। ভাছাতে বাঙ্গালা গবর্গনেটের সর্কপ্রধান সেকেটারী জনরেবল কটন সাহেব সভা-পতির জাসন গ্রহণ করেন। কলিকাতার অনেক মানাগণ্য লোক এবং ক্রেকটা ইরোজ, মেম সাহেব এবং বঙ্গমহিলাও উপন্তিত হন। প্রথমে একটা জরবয়স

ছাত্র কালা বোবাদিগের জন্ম রচিত তুইটী স্থুন্দর কবিতা আরুত্তি করে, তংপরে मन्त्रामक वार्विक कार्याविदत्रम अवः अकरी শিক্ষক "নুক ব্রিব্রদিগের বিভাশিকার আমানুল ইতিরুভ" পাঠ কংবন। পরে বালকেরা ভাহাহিগের শিক্ষার পরিচয় দেয়। বাক্য উচ্চারণ, লেখা, উচ্চারিড শব্দ অনুসারে বস্তু প্রদর্শন, ঈশ্বরের নিকট প্রার্থনা এবং পরস্পারে কথোপকথন ইত্যাদিতে তাহারা যেরপ দক্ষতা প্রদর্শন করে, ভাহাতে সভাহগণ কোতৃহলাকান্ত ও মোহিত হন। তংপরে সভাপতি ডুইং ও চিত্রের বাক্স. পুস্তক, ছবি ও নানা-প্রকার থেলনা পারিতে:যিক দান করিদে কালা বোবারা মন্তক অবনত করিয়া শান্তভাবে একে একে গ্রহণ করে। ইহার পরে কয়েকটা প্রস্থাব হয়। দেশহিতিথী নাধারণ গোকে এই বিছা-লয়ে অর্থসংখ্যা দান করেন, মাতবর বিচারপতি ওক্দান বন্দ্যোপাধ্যায় মহা-শর এই প্রস্থাব করিয়া আপনার মন্তব্য প্রকাশ করেন। বিগণ্স কলেজের অধ্যক্ষ হোয়াইট(হড সাহেব ইহার পোষ্কতা করিয়া সংযোগে কিছু বলেন। পরে প্রেসিংডনী কলেজের অধ্যক্ষ রো সাংহৰ ও পণ্ডিত তারাকুমার কবিরত্ব হৃদয়কুঠি ভাষায় ইহার সমর্থন করেন এবং রো সাহেব নিজে ২৫ টাকা দান করিয়া প্রশেষ ইংরাজকে উ(হাদের ব্দ্বিত নৃতন বেতনের দশমাংশ এই कार्या मिट षञ्चाताय करतन।

কাতা মিউনিসি ানিটার নাহাধা লাভার্থ বাব কালীচরণ বন্দ্যোপাধ্যায় বিভীয় প্রস্তাব করিয়া এ সম্বন্ধে নিউনিবিপালি-টীৰ কঠেবা বিশদ ভাষায় প্ৰকাশ করেন এবং তেবরেও মান্ডোনাল্ড সাংহ্র তাহার পোষ্কত। করেন। পর্ম শ্রেন-স্পাদ ফাদার লাফো গ্রগ্মেণ্টর সাহা-গ্ৰের জন্ম ততীয় প্রস্তাব করেন, সিবি-লিয়ান জজ বাবু নভোজনাথ ইহার পোষকতা করিলে বাবু বিপিনচন্দ্র পাল ইহার সমর্থন করে। সঙল বক্তাই সংক্ষেপে যে যে বজতা করেন,ভাষা লোভা-দি গর অব্যগ্র িণী ইই । ছিল এবং স্ক্রিঃতিতে সংল প্রস্থাবহ গুহীত হয়। অবংশ্যে সভাপতি মহাশ্র অনেক সময় অভিক্রান্ত হওয়াতে বেশী বলিতে অক্ষয়

বলিয়া তৃঃগ করিলেন এবং বিদ্যালয়ের সহিত তাঁহার সহাহভূতি ও যাহা দেখিনিলেন ও ওনিলেন তাহাতে পর্মানক প্রকাশ করিয়া গভাকার্য্য শেষ করিলেন। সর্বন্ধের বারিষ্টার বাবু আনল্যোহন বন্ধ মহাশ্য গভাপতিকে ধনাবাদ প্রদাননের প্রস্তাব এবং মহারাজকুমার বিনয়ক্ষণ বাহাত্র তাহার পোষকতা করিলে সর্ব্যাধারণে আনক্ষনেনি করিয়া তাহার অহামাদন করেন। সভাকার্য্য অতি ক্ষলার পোষকার হয়।

আনরা মঙ্গলিধিত। পরমেশ্বরের নিকটী সংগ্রিত্যকরণে এই ওভান্ন ছারেছে ও উন্নতির জন্য প্রার্থনা করি এবং সহাদ্য হিতৈথী নরনা ীদিগকে অর্থে ও সামর্থে ইহার সহায়তা করিবার জন্য অনুরোধ করি৷

शुखकानि नगाला हन।।

২। তীর্থাতো প্রধম থও জীরফচন্দ্র দে প্রণীত, মূল্য । আন। স্থাসিদ্ধ 'Pilgrim's Progress'' পুতকের ছায়া অব-লন্ধনে এই পুস্তক ইচিড হল্যাছে। ধর্মা-প্রথাতীদিগের পক্ষে এরপ পুস্তক অভি উপাদের ও উপকারী। ইহার কবিতা সকল যেমন ফুললিত, ইহার মধ্যে নেখ- কের স্বাধীন চিন্ত। ও ধর্মবিষয়**ক অভিন্ত** ভারও নেইরূপ প্রিচয় পাও্য। যায়।

০। সঙ্গীতহার ২য় ভাগ জ্ঞীবৃত্তীকাক মুখোপাধায়ে প্রণীত। বেজনঙ্গীত
পানকলিপের মধ্যে প্রনীক থাবু একজন
গংনীয় এবং ওাহার গান সকল েমন
ভানল্য বিভন্ধ, সেইরূপ ভক্তিরসোদ্দীপর ।
তাহার রতিত প্রথমভাগ সঙ্গীতগার
এজনা বিশেষ আদর্শীয় হইয়াছে।
বিতীয় ভাগের মধ্যেও অনেক্তলি মধ্র
সঙ্গীত ওলভীর্তন আছে। ভগবিত্ত
ভ সঙ্গীত বলভাদিপের নিক্ট এ প্রান্ধ

নৃতন সংবাদ।

ু ১। কৃষণ নদীর উপর দিয়া যে টেশিকাফ ভার নিয়াছে, তাহার দৈর্ঘ্য ৬০০ ফুট, উচ্চতা ১২০০ ফুট।

হ। বাইবেল পুস্তকগানি ৩৪৪টা ভাষায় অসুবাদিত হইয়া পৃথিবীর প্রায় মুক্তিয়ানেই বিস্তৃত হইয়া পড়িয়াছে।

। মিস চক্রবর্তী নামে একটা বঙ্গ
ক্রিল। এলাহাবাদ বিশ্ববিদ্যাক্রেক অম,এ

প্রীকা দিয়া উত্তীর্ণ হইয়াছেন।

৪। সিটি কলেজের মৃক ও বধির

বিদ্যালয়ের জ্বন্থ প্রেসিডেন্সী কলেজের অধ্যাপক রো সাহেব ও ঠাঁহার পত্নী বিশেষ যত্ন করিতেছেন। তাঁহাদের চেষ্টার লড ও লেডী এলগিন এবং লেডী ইলি-য়ট ইহার সহায়ত। করিতে সম্মত হইয়াছেন।

৫। কেব্ৰুয়ারি মাণের ইণ্ডিয়ান মেগাজিন এণ্ড রিভিউ নামক পত্রে প্রকাশ যে ভারতের ৩০৬ জন লোক এখন বিলাতে বাস করিতে ছন্। ১৮৯০ সালে মোট ২০৭ জন ছিল।

বামারচনা।

বদন্ত।

ৰস্ত ! সাধে কি তোমায় বলে ঋতুরাজ ? নীতের প্রকোপ বায় তব পরশনে। তোমার পরশ পেয়ে, কোকিল মধুর গেয়ে, তুলায় ভাবুক প্রাণ ভাবুকের সনে,

ভব সম কেছ নয় পৃথিবী রঞ্জনে।
বসস্ত ভোমার সনে সকলি স্থল্পর,
প্রশা মণির সম তব পরশন;
নির্মাল নদীর জল,
নির্মাল আকাশ তল,

তোমা ছুঁয়ে ঝাঞাবায়ু মলয় প্ৰন ,
ছুমি দেও ফলে মূলে নৃতন জীবন।
আক্ৰোজিত হাসাতে ভূমি পাব হে বদস্ত।
জাশা হাস গতেঁধবি জাননী খেমন,

্ছেরে সন্তানের মুধ,
ভূলে যার গর্ভত্থ,
ভূলে যার গর্ভত্থ,
ভূলে বার গর্ভত্থ,
ভূমিক কর্মানির ছংখ, হয় বিশারণ।
হে বসভা! সাধ্য যেন সকলি জোদ্ধার,
বিশারী হাসাতে, পার কলিক। ফুডাতে,

্ৰক্ষা গাছে দেও ফল ্ৰেক্স ভাপে ঢাল ফল, কভুবা ইচ্ছায় পার ময়ুর নাচাতে, মৃতপ্রায় লতিকায় পারহে বাঁচাতে। সকল সমান তুমি করহে বসস্ত। দিবায় নিশায় কর সম পরিমাণ,

শীত গ্রীষ্ম সম হয়,
হিম ভাপ নাহি রয়;
হলে নানা ফুল, জলে পল্প শোভমান,
পশু পাথী নরগণে আদেরে সমান।
জীবনে থোবন সম, সময়ে বসস্ত।
ভিবিতে পূর্ণিমা সম, মানবে রাজন,

নগরের রাজধানী, ফুলে পারিজাত মানি

ফুলে পারিজাত মানি ; দেবে যেন, দেবরাজে করি দরশন, তেমতি সময়ে তুমি মানসরঞ্জন।

তাই বলি দদা তুমি থাক হে বসম্ভ ! শীত গ্রীঘ্মে বরষায় হেরিয়ে তোমায়,

সদ। তব প্রশ্নে,

প্রকৃতি প্রফ্লমনে, থাকে যেন, সদা পিক কুত্রৰ পায়, হরিলীলা রসে ভাবে বিশ্ব সমুদায়।

> ত্রী সরোজিনী দেবী কিশোরগঞ্জ।

বামাবোধিনী পত্রিকা।

BAMABODHINI PATRIKA. "कन्याप्येवं पासनीया ऋस्त्रीयातियत्नतः।"

क्लाक शालन क्रिटिक है या अब महिल शिक्का **मिटिक**।

ু তথ্য

চৈত্র ১৩০০—এপ্রেল ১৮৯৪।

ংম কল্প। ২য় ভাগ।

সাময়িক প্রসঙ্গ।

পালে মেণ্ট—এ বংসর মহারাণী স্বয়ং পালে নেওঁ থুলিয়াছেন এবং বক্তৃ-তায় বলিয়াছেন পৃথিবীর সমগ্র জ্বাতির সহিত ভাহার মন্তাব আছে।

শ্লাভটোন্—ভৃতপর্ক প্রধান মন্ত্রীর ছই চক্ষ্ ভেই ছানি পড়িয়াছে। তাঁহার চক্ষ্র অবদা দেখিয়া সহ্লয়া ইংলওেশ্বরী ছংশ করিয়াছেন। প্লাড্টোন্ পার্লে-মেণ্টের সভ্যপদ এখনও পরিত্যাগ করেন নাই। তাঁহার আশা আছে একটু সুস্থ হইলেই পুন্বায় রাজনৈতিক সুদ্ধে প্রবৃত্ত হটবেন।

দান—কাকীনিয়ার রাজা মহিমা-রঞ্জন রায়চৌধুী লোইস জুবিলি সাস্থ্যা-লয়ে ৩,০০০ এবং রক্ষপুরের শিল্পবিদ্যা-লয়ে ৪,০০০ টাকা দান ক্রিয়াছেন।

বিদ্যাদাগর ছাত্রীর্ডি—বঙ্গ-

মহিলাগেণ পণ্ডিত ঈশ্বরচন্দ্র বিদ্যাদাগ্রের ম্বনার্থে যে ১৬৭০ টাকা চাঁদা দংগ্রছ করেন, তাহার স্থদের টাকায় একটা রন্তির ব্যবস্থা হইতেছে। বেথুন স্থলের স্থায় উত্তীর্ণ হইয়া যে হিন্দুবালিকা বিশ্ববিভালয়ের পরীক্ষার জন্ম অধ্যয়ন করিবে, তাহাকে ছই বংসরের জন্য এই বৃত্তি প্রাক্ষত হইবে।

মহারাণীর ভ্রমণ—ইংলভেশরী সদল ক্লোরেন্দে গমন করিয়াছেন, সমতা ইউরোপ ভ্রমণ করিবেন। ভ্রমণের ব্যয় প্রায় ২০ লক্ষ টাকা ছইবে।

রামমোহন রায় ক্লব—মহানা রাজা রামমোহন রায়ের অরণার্থ সিটী-কলেজ গৃহে এই সভা স্থাপিত হইয়াছে। পত ২৩এ মার্চ্চ ইহার বারাসিক অধি- বেশনে বছলোকের সমাগম হয়। মাননীর বিচারপতি গুরুদাস বন্দ্যোপাধ্যায়
সভাপতির আসন গ্রহণ করেন এবং বাবু
মোহিনী মোহন চটোপাধ্যায়, বিপিনচস্ত্র
শাল, মনোরঞ্জন গুহু এবং মাল্রাজ
নিবাসী পিটার পিলে রামনোহন রায়ের
মাহান্ত্য সহকে স্বন্ধর বক্ততা করেন।

বেথুন কলেজের পারিতো
বিক বিতরণ—৫ই মার্চ এই কার্য্য
সমারোহে সম্পন্ন হয়। লর্ড এলগিন
স্বয়ং উপন্থিত হইয়া বক্তৃতা করেন, লেডি
বৈবিলটন্ স্মিথ পারিতোফিক দান করেন।
কভকগুলি বড় মেয়ে এক একটা ছোট
মেয়েকে লইয়া ফ্লের গহনা পরাইবার
যে অভিনয় করেন, তাহা অতি স্মার হইয়াছিল।

বিলাত প্রবাসী ভারতবাসী— ইহাদের সংখ্যা দিন দিন বাড়িতেছে। ১৮৯০ সালে ২০৭ ছিল, এখন ৩০৬ হই- য়াছে। হিন্দুদিগের সমুদ্রমাজার সপক্ষে আনেক প্রধান প্রধান পণ্ডিত মত দিয়া-ছেন, গত প্রদেশীয় কনফারেন্স সভায় অধিকাংশের মতে ইহা গৃহীত হইরাছে। বিলাত ভ্রমণ ক্রমে আরও সাধারণ ও নির্বিল্ন হইবে।

বরাহনগর বিধবাশ্রম—ইহার
এক নৃতন ক্ষুণ্ঠান পত্র পাঠে আমরা
আনন্দিত হইলাম। ইহার হায়ী ফণ্ডের
জন্য ৪০০০টাকা সংগৃহীত হইয়াছে। বাবু
শশিপদ বন্দ্যোপাথ্যায়ের ত্যাগ স্বীকারকে ধন্তবাদ। তিনি তাঁহার বরাহনগরের
বসতবাটী বাগান প্রভৃতির সহিত ৭ বিঘা
জনি (যাহার মূল্য ২০। ২২ হাজার
টাকা) ইহার জন্য উইল করিয়া দিতেছেন। হিন্দু বিধবারা ধর্ম ও আচার
প্রভৃতি অক্ষ্ম রাথিয়া এখানে বাস
করিতে পারিবেন। এরূপ সদম্প্রানে
সাধারণের আনুক্ল্য দান করা কর্তব্য।

বার মেসে।

(বৈশাধ হইতে চৈত্র পর্য্যন্ত দাদশ মাদের সংক্ষিপ্ত কৃষি বিবরণ।)

তক্ষণে সমস্ত ভারত ব্যাপিয়। যেরপ ভারকট হইষাছে, অনাহাবের হাহাকার ধানিতে দেশের একপ্রান্ত হইডে অপর প্রান্ত যেরপ প্রতিধানিত হইডেছে, আর্থী শ্রাের হর্তিক মূল্য বেরপ শিক্ষিত ব্যক্তিগণ কৃষি কার্য্যে মনো-যোগ পূর্বক উৎপন্ন বৃদ্ধি না করিলে স্বস্ফুন্সে জীবন ধাত্রা নির্ব্বাংহর উপায়া-স্তর নাই। বঙ্গনেশের ভূরাজ্ঞার সহিত বঙ্গীর গ্রণমেন্টের ব্যরূপ বন্দো-বস্তা, ভাষাতে এদেশের কৃষির উন্ধৃতি

करब शवर्गरमण्डेत मरनारवांश कतिवांत कथा नदश किन्छ आयामित निमाजन শোচনীয় অবস্থা দৰ্শনে দেই গ্ৰণ-মেণ্টেরও মন টলিয়াছে, তজ্জনা তিনি ১৮৯২ সালের ১৫ই জুলাই তারিখের কলিকাতা গেজেট হারা কয়েক খানি কৃষিপুস্তক স্কুল পাঠশালায় পাঠ্যরূপে নির্কিষ্ট করিয়াছেন। আমরাও বামা-বোধিনীর বিপ্রত কয়েক সংখ্যায় কৃষি বিষয়ে কতক গুলি প্রবন্ধ প্রকাশ করি-য়াছি--উদ্দেশ্য, ক্রমশঃ শিক্ষিত জন-দ্বিপাত দারা গণের হীনাবন্থ ক্ষরির উন্নতি হইবে; তৎসঙ্গে উৎপন্ন বৃদ্ধি হইগা আমাদের উপস্থিত হুঃথ দ্র হইবে। কিন্তু ছুভাগ্য বশতঃ এ দেশীয় শিক্ষিত জনগণের মন, আদে কৃষিৰ দিকে যাইতেছে না, তাহা-দিগের সভ্ষা দৃষ্টি দাস্যের প্রতিই নিয়ো-জিত রহিয়াছে। যতদিন এইরূপে চলে চলুক। চাকুরীর ছারাও আনাদের অনেক মঙ্গল হইতেছে। কেননা জীবিকা নিৰ্ব্বাহ ব্যতীতভ শ্রীর ও মনকে সংযত ও নিয়-মিত করিবার শত উপায় আছে, তন্মধ্যে পরের চাকুরি একটা প্রধান ও স্বাভাবিক উপার। স্থতরাং মহুধ্যস্মাজের সঙ্গেহ উহা চিরকালই থাকিবে। কিন্ত কতক গুলি শিক্ষিত লোককে কৃষিকার্য্যে মনো-(यात्र कत्रिएके इकेट्य अवः अन्नकन्ने, ছর্ভিফা, দারিদ্র্য প্রভৃতি ক্রমশ: সেই कामरक निकरेवर्खी क्त्रिट्टर ।

শাংশারিক সচ্চ্ল অবস্থা আনয়ন জন্য

শিক্ষিত ব্যক্তিগণের সাধারণ কৃষিকার্থ্যে यत्नारयाश कत्रिवात विलय शाकित्स व কোনরূপে কিঞ্চিৎ সাংসারিক নিতাব্যায়ের मः काठ कता त्वाथ श्व, नकल **मगरप्रदे** কর্ত্তব্য ও প্রার্থনীয়। এই জন্য আমরা বর্তমান চৈত্র মাস হইতেই গৃহত্বের নিভা वावश्रां भाक, भवजी, जबकाबी, कन, कुल, মসলাদির চাস আবাদের এমন একটা প্রধালী যথাক্রমে প্রকাশ করিতে আরম্ভ করিলাম, যহারা প্রত্যেক কিছু কিছু উপকার হইবার সম্ভাবনা। যে দকল শাক, তরকারী, ফল, মূল নিভ্য আহার করিতে হয়, তাহা গৃ**হ সন্নিহিত** উদ্যানে বা গৃহ প্রাঙ্গণে উৎপন্ন করিবার ইচ্ছা সকলেরই আছে। यं शिटनज উদ্যান কাৰ্য্যে অভিজ্ঞ মালী চাকৰ বাঞি-বার সঙ্গতি আছে, তাঁহাদের দে ইচ্ছা পূর্ণ হয় : कि इ कान ममदय कान कमदन কিরপে চাদ আবাদ করিতে হয়, ভাষা জানা না থাকায় অনেকেরই সে বাসনা পূর্বিয় না। যে যে মালে যে যে কসলোর চাস আবাদ যেরপে করিতে হয়, আমরা তৎপূর্ক পূর্ক মাসের বামাবোধিনীতে সেই সেই বিবরণ প্রকাশ করিব। মনোযোগ পৰ্বাক ভাষা পাঠ কৰিলে সকলেই প্ৰতি মাসের কর্ত্তব্য সম্পাদনের স্থযোগ পাই-**এইक्छ्रे ध्वेवस्त्र नाम हहे**न "বারমেসে"।

চাস আবাদের জন্য ভূমিনিপ্রয়, মৃত্তিকা পরীকা, সারধান, শস্যপর্যায়, পাইট (culture) প্রভৃতি বছবিধ বৈজ্ঞান

निक कार्रा चारह। हाम व्यावात्मत्र भूटर्स ষেওলি অবগত হওয়া নিভান্ত আবশ্যক হইলেও আমরা একণে তাহাতে হস্তক্ষেপ করিব না। হস্তকেপ নাকরিবার ত্ইটী কারণ-প্রথমতঃ এবৎসর মাসিক পত্রি-কায় সে দকল প্রকাশ করিবার সময় নাই, খিতীরত: আমরা যে সকল ফসলের চাস আবাদ বামাবোধিনীর পাঠক পাঠিকা-গুণুকে শিক্ষা দিবার চেষ্টা করিব, তাহাতে **ঐ স্কল ভারতের** বিষয় **জা**নিবার তত প্রয়েজনও নাই। যে টুকু জানা নিভাস্ত আবশ্যক, তাহা এই স্থলেই বলিয়া দিব।

গৃহস্থ মাতেরই বাটীতে প্রায় চুই একটা গরু থাকে এবং তজ্জন্য একটা গো-শালা আছে। গোশালার সম্মুখে ৫।৬ হন্ত গভীর একটী কৃপ বা পর্ত্ত থনন করা গোশালার মেজে হইতে ঐ পর্ত্ত পর্যান্ত একটা নালা এরপে প্রস্তৃত করিয়া দিতে হইবে যেন প্রতিদিনকার গোমুত্র গড়াইয়া ঐ গর্জে আসিয়া পড়িতে পারে। প্রতিদিন বাটীতে থত গোবর হইবে, তাহার কিয়দংশ এবং ঘুঁটে পুড়া-ইয়া যত পাশ হইবে, সেই গুলি ঐ গর্ত্তে নিকেপ করিতে হইবে। তদভিন্ন ঘর **মার, উঠান কাঁই**ট দিয়া যত ওচলা ও বুক্ষের গলিত পত্র জড় হইবে, তৎসমুদয় ইতন্তত: নি:কেপ না করিয়া ঐ গর্তে প্রতিদিন বাটীতে কেলিডে **ब्हे**(व। ৰ্দ্দি মৎস্য**, মাংদের** ব্যবহার থাকে, जारात अवातरांश अरम इहिरोठ कनक के भारत जानिए रहेरव ।

क्रम, এবং চাউन তরকারী জলও যাহাতে ঐ গর্ভে পড়িতে পারে. তাহারও ব্যবস্থা করিতে হইবে। অভান্তরম্ব সমন্ত বস্তু পচিয়া ক্ৰমশঃ মুক্তিক। হইতে থাকিবে। ঐ মৃত্তিকা উৎকৃষ্ট সার। উহা সকল প্রকার কস-শের ক্ষেত্রেই ব্যবহার করা যায়। গর্ত্তকে ''দার কুড়'' কহে। এইরপ একটী ''সার কুড়'' প্রতি গৃহস্থের বাটীতে প্রস্তুত করিবার জ্বন্থ সকলকেই বিশেষ করিতে হইবে; কেন না এইরূপ একটী সারকুড় থাকিলে প্রয়োজনীয় শাক্ষবজি প্রস্তুত করণ বিষয়ে বিশেষ হইবে। এক্ষণে আমরা ১৩০১ দালের বৈশাথ মাসে কোন কোন ফসলের চাস আবাদ কিরপে করিতে হইবে, ভাহার দংক্ষিপ্ত বিবরণ এই চৈত্র মাসে প্রকাশ করিলাম, ইহাতে সকলেই বৈশাধ मानीय हान व्यावादनत मनव ७ व्यापान পাইবেন। এইরপে टेड्यार्ड মাসের বিবরণ বৈশাথ মাদে, আয়াচু মাদের বিব-রণ জ্যৈষ্ঠ মাদে ইত্যাদি ক্রমে বার মাদের চাস আবাদ লিখিত হইৰে।

অনেকের এইরপ সংক্ষার আছে, বং-সরের মধ্যে হুইবার মাত্র কৃষি কার্য্যে মনোযোগ করিলেই চলিতে পারে, এক-ৰার চৈত্র বৈশাথ মাসে, আর একবার আখিন কাঠিক মাসে; ভক্ষন্য পর্বাদা চিজা ও চেষ্টা করিবার প্রয়োজন নাই। এটা ভাঁহাদিগের ভ্রম, বলিতে হইবে। কেননা চৈত্ৰ বৈশাখ ও আবিন কাৰ্ডিক

बलन (बालरबद श्रवान नमत्वरह): किछ অন্যান্য মাসেও চাস আবাদের কিছু কিছু কার্য্য আছে এবং তাহা না করিলে व्यागाञ्चल क्ल भावया यात्र ना। বারি ছারা যে সকল ফদলের সৃষ্টি ও পালন হইয়া থাকে, তাহাদিগের বপন ও রোপণের প্রধান কাল চৈত্র বৈশাখ মাস: বেমন আভিধান্য অরহর, কচ, रविद्या. आमा, कनाय, भाठे, मना. क्रमण्, नार्षेगांक हेजानि। (स्मास्त्रत শিশিরে যে সকল ফদলের সৃষ্টি ও পরি-পালন হইলা থাকে, ভাহাদিগের বপন ও রোপণের প্রধান সময় আখিন ও কাত্তিক মান ; যেনন ছোলা, মটর, সর্যপ, ভিসি, তামাক, আলু, মূলা, কপি ইত্যাদি। গে সকল ফদলের আবাদ অল্পরিমাণে করিলে কোন লাভ নাই, খেমন ধান, পাট ইত্যাদি, বার মেদে প্রবন্ধে ভাহাদিগের বিবরণ সংক্ষেপে এবং যে সকল নিত্য বাবহার্যা শাক্তরকারা, মস্লা প্রভৃতির অল্ল পরিমাণ আবাদেই গৃহত্তের ধথেই উপকার আছে, তাহাদিগের বিবরণ বিশেষরপে লিখিত হইবে; যেমন কলা, মুলা, আলু, কপি, বেগুন লক্ষা, হরিদ্রা, नाउँ, कूमड़ा, भाक हेल्यामि । मांगे (शंड़ा, ডেলাভালা, জনি দমান করা ইত্যাদি কার্য্যের নাম "চাস"। বীজ্বপ্র, চারার, দানা রোপণ, পাইট ইত্যাদির নাম "আবাদ"। যে মৃত্তিকায় এ পরিমাণ तम थाक, यथन लाक्ल वा कामाहेल धाता ভূমি খনন করিলে লাঙ্গল বা কোদাইলের

কালে মাটা জড়াইর। ধরে না, মাটার তাদৃশ অবছাকে "যো" কছে। এই প্রেৰ-কের যে যে ছলে ঐ তিনটা শব্দ ব্যবস্ত হইয়াছে বা হইবে, সর্পত্রই তাহাদিগের এরপ অর্থ বুঝিতে হইবে।

বৈশাখ।

জ্ঞগৎপাতা জগদীখরের মঙ্গলময় নির্ম বশে মাৰ মাস হই ডেই বর্ষের প্রথম বর্ষণ আর্ক হইয়া থাকে। বিশেবতঃ চুর্বাৎসর ना हरेरन टेठज टेवभाध मारमहे ध्यातके क्षल इस । यभि टेडज मारमद अवम आरम উত্তমরূপে বর্ষণ হয়, তাহা হইলে বৈশাৰে বপনীয় ও রোপণীয় অনেক ক্ষদলের আবাদ টৈত্র মাদেই হইতে পারে। এরপ घটना इहेल कान कान भाक भवा কিছু অথে (আগুড়ি) ক্য়াইয়া ভোক্স-কারীগণের আনন্দ বর্দ্ধন ও বিক্রেডাদিগকে কিছু অধিক লাভবান করে। যাহাইউক रेठिक किया विभाश्य कल श्रेट (महे "द्या" দেখিয়া আভ্ধাল, পাট, হরিজা, অরহর, কচ, বেগুন, শৃণা, ঝিলে, কুমড়া, নটে, होता, कनका, छल, कनांत्र, आहा, त्याहे-আলু, শণ, ইক্ষু, করলা, লঙ্কা, ডেকো ইত্যাদি শস্যের আবাদ করিতে হয়। যে ভ্রমিতে এই সকল শ্রোর আবাদ করিতে হইবে, পুর্কোক্ত "লারকুড়" হইতে (যদি পূৰ্ব হইতে উহা প্ৰছত ক্ৰা थारक ।) कन इरेवांत्र भूर्व्स स्मिर व्यक्ति শার দিতে যেন ভুল না হয়।

এই সমকে একটা কৰা বন্ধান্ত্ৰের বলিতে বিশ্বত হইয়াছি; এ**জন্ত এইবলৈই** ভারতারি কল, মৃল, সংসারের নিত্য ভারতারি কল, মৃল, সংসারের নিত্য ভারাদনীয়, যথাকালে তাহাদিগের চাদ ভারাদ করিতে পারিলে যেগন সংসারের উপকার ও কিয়ংপরিমাণে নিত্য থরচের লাখ্য হইবে; তেমনি ঐ কার্য্যে নিয়ত মনোযোগ থাকিলে এবং উহাতে নিয়মিত রূপে শ্রম করিলে শরীর ও মনের স্বাস্থ্য রুদ্ধি ও মন ক্রিযুক্ত হইবে। শান্তি রুদ্ময়ী বাফ প্রেকৃতির সহিত নিয়ত ঘনিট-তা থাকায় মনও শান্ত হইবে। যে কার্য্য এত লাভ, গৃহস্থ মাত্রেই সে কার্য্যে মনো-নিবেশ করেন, ইহাই আমাদের প্রার্থনা।

আভধান্য, যে জমিতে জল বাধে না,

এরপ সমভ্মিতে আউশ ধান বুনিতে

হয়। অনেকে জল হইবার পুর্নেরই চৈত্র

মাসের ধূলিময় ভূমিতে আউশ ধান্যের

বীক বুনিয়া থাকে। এইরপ বপন

কিয়াকে "কাকড়" করা বলে। এই

বপনের একটা বিশেষ উপকার এই যে

কাকডের ধানে কখন পোকা ধরে না।

পাট, মৃষ্টিমেয় পাটের বীজ ভদ্রাগনের এক পার্শ্বে ছড়াইয়া রাখিলে এবং ষথা-কালে কাটাইয়া রাখিতে পারিলে ২। ৪ সের কোষ্টা প্রস্তুত হইতে পারে এবং ভাছারারা সংসারের কিঞ্চিৎ উপকার হয়। কিন্তু আমাদের পাঠক পাঠিকাগণকে তে চেষ্টা করিতে নিবেধ করি। বাঁহারা কিন্তুবন ভাঁহারা বেন পাটের গাছ এক কিন্তুবন ভাঁহারা বেন পাটের গাছ এক কি বেড় হন্তু পরিমাণ বৃক্ত হইলেই ভাইনি অর্কেক, বা এক ভূতীরাংশ

পরিমাণ চারা তুলিয়া ফেলেন এবং পাটের শাক বিতরণ বিষয়ে যথেষ্ট মুক্তহস্ত হন। তাহাতে অবশিষ্ট গাছ গুলি বিরল ও সরল হইবে। এইরূপ কার্য্যে পাটের ফ্রন্সল বেশি হয়।

হরিন্তা,—ইহার আবাদ করিতে হইলে জনিতে উত্তমরূপ চাস দিতে ইইবে। হলুদের মোতাগুলি শারি করিয়া পুঁতিতে পারিলে আবাদের স্থবিধা হয়। মধ্যে মাটা গুঁড়িয়া দেওয়া ও ঘাসনিড়ান ভিন্ন হলুদের চাসে আর কোন বিশেষ কার্য্য নাই। আর যে কার্য্য আছে, তাহা মাম্ব কাপ্তনের বিবরণে লিখিত হইবে।

অরহর,—এই শশু অল্প পরিমাণে করার বিশেষ লাভ নাই; কিন্ত টুমুর বলিয়া এই জাতীয় এক প্রকার শশু আছে, তাহার গাছ ও ত টি ঠিকু অরহ-রের হ্যায়। গৃহদের বাগানের বেড়ার ধারে ধারে উহার বীজ কিঞ্চিৎ ছড়াইতে পারিলে উপকার হয়। উহার ত টী একপ্রকার বেশ তরকারী, কাঁচা ধাই-তেও শ্বমিষ্ট।

গুল ও ওঁড়িকচ, ওল ও কচুনানা প্রকার। তমধ্যে চণ্ডী ৬ল এবং ওঁড়ি ও শোলা কচুউৎকৃষ্ট। চণ্ডীওলের গঠন মেটে আলুর ছায় লম্বা ও ভিডর ফুট সাদা।

হরিদ্রার ক্ষেত্রের স্থার জমিতে চাস দিয়া ও ওলের মুখী ও কচুর মোতা পুঁতিতে হয়। কচু অপেকাও ওলের মাটা অধিক শল হওয়া আবশ্যক। কোন্ কোন্দেশে কত প্রকার কচ্ লোকে তরকারী রূপে ব্যবহার করিয়া থাকে, ভাহা বিনি বিশেষরূপে জানিতে ইচ্ছা করেন, তিনি "বিশ্বকোষ" নামক অভি-ধানের 'ক' পর্যার্টী পাঠ করিবেন।

বেশুন—ইহা আমাদিপের একটী প্রধান তরকারী। বেশুন তৃইপ্রকার, আশু ও আমন। আউশ বেশুন অপেক্ষা আমন বেশুন থাইতে স্থাদ। আশু বেশুন শীঘ্র ফলে, কিন্তু থাইতে ভাল নহে। যাহাছউক, এই নাদে হাপেরে বেশুনের বীজ পোতা ভিন্ন তৎসদকে অন্য কার্য্য নাই।

কোন শদোর চার। প্রস্তুত করিবার জ্ঞাসার দির। যে ক্ষুদ্র স্থান প্রস্তুত কর। যায়, তাহাকে হাপোর কহে। চৈত্র মাসেও বেগুনের হাপোর করা ধাইতে পারে।

শশা—নচর চর এদেশে তুইপ্রকার
শশা দেখা যায়, স্মীরে শশা ও ভূঁরে শশা।
রাঁধা ও কাঁচো তুই প্রকারেই শশা। ফাইার
করা যায়। জন সিঞ্চনতার। বার মাসই
ভূঁরে শশা হইতে পারে। এই শশার
জন্ম মাচা বাঁধিতে হয় না, ইহা কাঁকুড়ের
ন্যায় ভূমিতেই ফলিয়া থাকে। অপক
কচি শশা কাঁচা যায় এবং পাকা শশার
উত্তম তরকারী হয়। স্মীরে শশা এবং
বিস্নের বীজ ৩৪ টা করিয়া এক এক
থানায় মাচার নীচে প্রিত্তে হয়।

বিলাতী কুমড়া---৮ হাত অন্তৰ এক

একটা থানার ২।৪টা বীজ রোপণ করিছে
হয়। ইহার গাছ বত দূর লতাইয়া বাইবে,
ততদূর পর্যান্ত জামি উত্তম রূপে পরিছার
করিয়া বুঁড়িয়া দিতে হইবে। উত্তমরূপ
ফলিলে এক কাঠা জামিতে ৫০টা কুমড়া
হয় এবং ৩।৪ টাকার কমে উহা কের
করিতে পাথয়া বায় না।

শাক—উত্তমকপে মাটা গুঁড়িরা এবং তাহাতে ২।১ বৃড়ি সার দিয়া নটে, কনকা, চাপা প্রভৃতির বীজ বপন করিছে হয়। শাকের জমি উত্তমরপ পরিকার ও শল রাথিতে হইবে। মধ্যে মধ্যে সিঞ্চন আব-শুক। ডেলে। ডাঁটার হাপোর চৈত্র মাসেকরা না থাকিলে এই মাসে করিতে হয়। ইহাও তুই প্রকার—আউশ ও আমন। শাধারণতঃ আমন ডাঁটা মিষ্ট ও অধিক-কাল স্থায়ী। কলিকাতার হাট বাজারে শাদা রক্ষের একপ্রকার ভাঁটা বিক্রয় হয়। তাহা বড় মিষ্ট ও স্মুসাদ। বর্জমান ও হগ্লী জিলার অংনক স্থলে উহা জন্মে। ঐ ভাঁটার বীজ সংগ্রহ করিছে পারিলে বড় ভাল হয়।

কলায়—এদেশের ক্ননকেরা আভধান্য
ও অরহরের ক্লেত্রে কলায় দিয়া থাকেন।
পদ্মার উভয় ভীরবর্তী চড়ায় প্রচুর
পরিনাণে কলায় জন্মিয়া থাকে। পলিপড়া
চড়া জনিই উহার উপযুক্ত ক্ষেত্র। অল পরিনাণে উহার চাদ আবাদে কোন লাভ নাই।

আদা—নৃতন আদা একটা প্রিক্র হানে গাদা করিয়া রাধিতে এবং উহার

उभन्न मर्था मर्था जल निक्षन कतिराज इत्र। किछू मिन भटत छेशासत कला বাহির হয়। তথন হলুদের ভায় উহার চাস করিতে হয়। আদার চাস বিলক্ষণ লাভজনক। কিন্তু গৃহস্থের পকে ২।৪ খানা আদা বাগানের কোন স্থানে পুঁতিয়া রাখিলেই যথেষ্ট। ''আম আদা'' বলিয়া িউহার এক জাতি আছে, তাহার গন্ধ অবিকল আন্তের যথন আন্ত্র र्शिय । মিলে না, তথন যে কোন অন্নের সহিত একটু "আমআদা" দিলে ঠিকু আমের ঝোল খাওয়ার সাধ মিটে। অতএব শামআদার আবাদ করিতে যেন কাহারও ছুল নাহয়। মোদকেরাও আমআদার ুবোগে আমসন্দেশ প্রেরত করে। আদা বেমন ভৃত্তিকর, তেমনি কৃচি-260

দেটে আলু—ইহা নানা প্রকার,
চুপ্ডি, গড়ানে হরিণশৃঙ্গ, আলতাবোল,
ভাষনি ইত্যাদি। গভীররপে মৃত্তিকা
খনন করিয়া উহার ফল পুঁতিতে হয়।
উহার গাছ অন্ত বৃহৎ বুক্ষে বা বেড়া ও
মাচার উঠাইয়া দিতে হয়। আল্তাবোলের রক্ষ ঠিকৃ আলতার আয়।
ইহা ভাতে বা বাঞ্জনে দিলে ভাতব্যঞ্জনও
লাল হইয়া ধার। মেটে আলু পুষ্টিকর

শণ ও ইকু—এই উভয় শস্তেরই
বৃপনীও রোপণ এই মাসে ক্রিভে হয়।
ক্রিউহার জন্ম পরিমাণ চাস আবাদে
ক্রান লাভ নাই। বিশেষতঃ ইকুর বীঞ

তৈয়ার করা বড়ই কঠিন কার্য্য। তবে
শামশাড়া আকের অগ্রভাগ ১০।১৫টা
শসার ভূমিতে রোপণ করিয়া মধ্যে থৈল
ও জ্বল দিতে পারিলে জ্বল খাইবার উপযুক্ত ইক্ষু প্রস্তুত হইতে পারে।

করলা—ইহা উচ্ছে জাতীয় তরকানী। কলিকাতার হাটবাজারে উহা
যথেষ্ট্র পরিমাণে দেখা যায়। উহার
ভাজিও তরকারী উত্তম হয়। উহার
বীজ মাচার তলে পৃতিয়া মধ্যে মধ্যে
গোড়া খুঁড়িয়া দার দিলে উহা বার মাদ
যথেষ্ট্র পরিমাণে ফলিয়া থাকে।

লঙ্কা—চারা প্রস্তুত করিবার জ্বন্ত হাপোরে ধীজ পোতা ভিন্ন এ মাদে লঙ্কার জন্ম কোন কার্য্য নাই।

কাঁকুড়,— দোআঁশ মাটীর জমিতে থানা করিয়া কাঁকুড় দিতে হয়। কাঁকু,ড়ের চাদ স্থাবাদ ঠিক্ কুনড়ার আয়।

এই প্রবন্ধ পাঠ করিয়া গাহ স্থ্য ত্থ সৌকর্ষার্দ্ধি করিবার জন্ম বাঁহাদিগের ঐরপ অন্থান করিতে ইচ্ছা হইবে, তাঁহারা প্রথমেই একটা অস্থবিধা দর্শন করিবেন। শাকসবজ্ঞী, তরকারীর বীজ হঠাৎ কোথা মিলিবে । তাঁহাদিগের স্থবিধার জন্ম একটা সংবাদ দেই। কলিকাতার দক্ষিণ চেতলা গ্রামে সপ্তাহে ত্ইবার যে হাট বসিয়া থাকে, সেই হাটে এবং শিলালদহ স্টেসনের নিকট গুলুবৈটকখানার পুরাতন বাজারে নানা-বিধ বীজ বিক্রের হইয়া থাকে। ঐ বীজের হাট দর্শন করিলে. বাঁহাদিগের হোন কালে

এ প্রবৃত্তি নাই, তাঁহাদিগেরও চাব আবাদে কোঁত্হন কমিবে।

'বারমেদে' প্রবন্ধ পাঠ করিতে করিতে যদি কাহারও একটু বাছলা এপ চাস আবাদ করিবার প্রবৃত্তি জন্মে, আমাদের অন্ধ্রোধ, তিনি প্রীযুক্ত পণ্ডিত কালীমর ঘটক প্রণীত "কৃষিণিকা" ও

ত্রীবৃক্ত বাবু সিরিশচক্ষ বস্থর "কৃষিসোপান" নামক প্রক হইখানি মনোযোগপ্র্যাক পাঠ করিবেন। তাহাতে চাস
ভাবাদ বিষয়ে বিশেষ সাহায্য পাইবেন।
(ক্রমশঃ)

माम्भजाधर्म।

কান্তারেশপি বিপ্রামে। জনস্যাধ্বনিক্স্য বৈ । বং স্বারং সুবিশাস্য অংশাকারা প্রাস্তিঃ ।

সংশার কান্তারে ভ্রমণকারী মানবের পক্ষে ভার্যাই একমাত্র বিশ্রামন্থন; ঘাহার ভার্যা আছে, সেই ব্যক্তি বিশ্বাস-পাত্র, এই জন্য ভার্যা শ্রেষ্ঠ সহায় বলিয়া গণনীয়।

ভার্য্যাবন্তঃ ক্রিয়াবন্তঃ
সভার্য্যা গৃহমেবিনঃ।
ভার্য্যাবন্তঃ প্রমোদত্তে
ভার্য্যাবন্তঃ প্রিয়াবিতাঃ।

ভাষ্যাবান লোকেই ক্রিয়াবান্ হয়, ভাষ্যাবান্ লোকে বধার্থ গৃহী, ভাষ্যাবান্ লোকেই সর্বাদা আনন্দিত হয় এবং ভাষ্যাধারাই লোকে লক্ষীবঙ্ক হইয়া থাকে।

অর্থ: ভার্য্য: মনুব্য: ।
ভার্য্য: শ্রেষ্ঠতন: হবা।
ভার্য্য: মূলং জিবর্গপ্য:
ভার্য্য: মূলং তরিব্য:: ঃ

ভার্যা মানবের অর্থ অঙ্গ, ভার্যাই সংসারে শ্রেটতম দ্বা, ভার্যা ত্রিবর্গ অর্থাৎ ধর্ম, অর্থ ও ভোগের মূল এবং ভার্যা মোক্ষেরও দহার।

> সধার: প্রবিবিক্তের্ ভবক্তোডাঃ প্রিরংনদাঃ। পিতরো ধর্ম্বকার্ব্যের্ তবস্তার্ভিদ্য মাজরঃ।

বেধানে কেহ নাই সেই নির্ধন স্থানে প্রিয়ভাষিণী ভার্য্য বন্ধুর কার্য্য করেন, ধর্মকার্য্যে পিতার স্থায় সহপদেশ দান করেন, রোপে, শোকে হু: ধে ভার্যাই মাতার স্থার ভাপিত হুদরে শান্তি অলা সেচন করেন।

> ব্ৰতিনাং বীভন্নাগাণাং দৃশ্যকে দিনি দেবতাঃ। মহব্যাণাং ভূ ভাৰ্যা বৈ ভত্ৰ দেশেচ দৃশ্যতে।

সংসারবিরাগী ধবি তপ্রীদিসের দেবতা ধর্গলোকে, ফিন্ধ সাধী ভার্মা বাহার গৃহে, তাহার দেবতা সে গৃহের
মধ্যেই দেখিতে পার।
পতির্বন্ধ্র কর্তন্তা
দৈবতং গতিরেব চ।
সর্বন্মাচ্চ গুরু: সামী
ন গুরু: সামিন: পর:।

পতিই নারীর বন্ধু, উপদেশক, পালনকর্তা ও দেবতা, পতিই জীবন; সকল সত্পদেষ্টা অপেক্ষা স্বামী শ্রেষ্ঠ হর সত্প-দেষ্টা, স্বামীর অপেক্ষা গুরু আর নাই।

> পিতা মাতা স্থতো ভ্রাতা ক্লিষ্টো দাত্মিদং ধনং। সর্ব্বস্থাত। ভবতি পতিরেব হি যোবিতঃ।

রমণীর পি্ডা, মাডা, ভ্রাতা ও পু্ত প্রার্থিত ধন দানে কাতর হন, কিন্তু পতি অকাতরে সর্বাহ্য দান করেন।

> ছায়েবাহপতা কছা সধীব হিডকর্মন্থ। সদা প্রস্থান্তীয়া ভাব্যং গৃহকার্যোবু দক্ষ্যা।

পত্নী ছায়ার স্থার পত্তির অন্থপতা ও দথীর স্থায় ভাঁহার হিতকর্মসাধিকা হইবেন এবং স্বন্ধা অর্থাৎ কারমনোবাকো বিশুদ্ধ থাকিবেন এবং সর্ব্বদা স্বস্থিতিত্ত হইয়া গৃহকার্য্যে দক্ষতার পরিচয় দিবেন।

> পতিপ্রিয়হিতেযুক্তা সাচারা সংঘতেব্রিয়া। ইহ কীর্ত্তিমবাপ্নোতি প্রেত্য চানুপমং স্কুথং।

যে ভার্যা পতির প্রিয় ও হিতকার্য্যে নিযুক্ত থাকেন এবং সদাচারা ও সংযতে-ক্রিয়া হন, তিনি ইহলোকে কীর্ত্তি ও প্রলোকে অনুপম স্থব প্রাপ্ত হন।

> সম্ভাষ্টো ভাৰ্য্যয়া,ভৰ্জা ভৰ্ত্তা ভাৰ্য্যা তথৈবচ। যশ্মিনেব কুলে নিত্যং কল্যাণং তত্ৰবৈঞ্বং।

যে পরিবারে পতি পত্নীর প্রতি এবং পত্নী পতির প্রতি নিত্য সম্ভষ্ট, সেই পরিবারেই নিশ্চিত কল্যাণ হয়।

মুক বধিরেরজন্ম প্রার্থনা।*

হা হন্ত ! মা-নাম স্থাময়ং যঃ
শ্রেজ্থ নবাকপিয়িত্থ সমর্থ:।
আক্সনো বো বধির ক্স মুকঃ ক্
ততো দ্যাভাজনমন্তি কোবা।। ১।।
মু-নাম অমৃতময় নাপায় তনিতে,
ধা বোলে বালেক আহা ! স.কাবে ডাকিতে,

জনম জাবৰি মৃক বধির যে জন,
কে আছে দয়ার পাত্র তাহার মতন ? ; ১।
থেবাং প্রথতৈরপি মৃকবালাঃ
বদন্তি বাণীমমৃতার্মানাম্।
তএব ধ্যাঃ ধ্রু পুণ্যবন্তঃ

তারাজনক্ষা ভূবি তে স্পুত্রা:॥ २

🌺 প্ৰভাবৰ এ ক্ষেত্ৰারি মুক্ত ব্যির বিদ্যালয়ের পারিতোবিক বিভরণ উপলক্ষে পাইত :

000

মৃক শিশু বাঁহাদের অত্ল বভনে
অমৃত-সমান বাণী বলিছে বদনে;
এ ভ্বনে তাঁহারাই ধন্ত পুণ্যবান্,
ধথাবিই তারা-মার ভারা সুসন্তান। ২।

আরাক মুর্ববুধপাতকিপুণ্যবন্ধ:
চণ্ডালবিপ্রধনহীনসমৃদ্ধিমন্ত: ।
পঙ্গুক্মক্বধিরাত্রত্:খশাবৈষ্ট প্রোণান ধন্ঞ সকলং বয়মুংস্কাম ॥৩॥

আররে ! চণ্ডাল বিপ্র পাণী পুণ্যবান্ ! আররে ! দরিদ্র ধনী জ্ঞানী বা অজ্ঞান ! পঙ্গু অন্ধ ক্ঠী মুক বধিরের তরে, ধন প্রাণ সবি মোরা দুণি অকাতবে ।৩।

> ৰো দীনসেবাস্থ সমাহিতান্ধা তারাপদে কল্লফলং সমর্প্য। তারা ধধা শ্রাবণবারিধারাং কিরত্যঞ্জ: ভভমেব তদ্মিন্॥৪॥

কর্ম্মফল তারা-মার চরণে স'পিয়া, দীনের সেবায় আত্মাবে দেয় তালিয়া, প্রাবণের ধারা সম অঞ্জ্ঞ ধারায় তারা-মা কল্যাণ ভার তালেন মাথায়।৪।

ত্যারসজ্বাতইবার্কভাবৈ:

আন্তা দ্রবীভূর পরস্য স্থাইর:।

করত্যক্রসং করুনাং যদীয়ঃ

স সেবকস্তারিণি ! তবভন্তে ॥ ৫ ॥

হিমান্ত্রির হিমরাশি আওপে বেমন, তেমনি পরের হুংখে পলে বার মন; শহস্র ধারার ঝরে করুণা বাহার, বধার্থ দেহক সেই তারা-মা! ভোমার। দামের দৃষ্ট্ । সর্বজ সর্বজ সমসৌহাল: ।
সর্বজ্ তহিতে যুক্ত: স তারে তব সেবকঃ। ।
সর্বজ্ তে তোমাকেই হেরি বিদ্যমান,
প্রেণর স্বারি প্রতি বে করে সমান ;
স্বারি কল্যাণ তরে সঁপে, মন প্রাণ,
তোমার সেবক তারা । সেই ভাগ্যবান্। ।
সেবাড়প্রোন গৃহ্যাতি নির্বাণমণি হত্তপ্রম্ ।
তব সেবানিযুক্তস্য সংসারোগোম্পদারতে॥ ।
তোমার সেবায় তৃপ্ত বাহার হৃদ্যর,
দিলেও নির্বাণ-পদ সে কি তাহা লয় ।
সে তুপ্ নিযুক্ত থাকে তোমারি সেবার,
সংসার তাহার কাছে গোম্পাদের প্রার । ।।

দর্মায়ী হং হি দর্যৈকসারা প্রেয়েহন্তি তে নৈব দর্মসমানম্। তাবংপ্রসাদং লভতে ত্বদীয়ং যাবন্দরাং প্রাণিষু যঃ করোতি ॥৮॥

দরামনী তারা তুমি, দরা তব সার,
দরা হ'তে প্রির বন্ধ নাহিকো তোমার;
যে জন জীবের প্রতি দয়া করে যত,
তার প্রতি মুখ তুলে চাও তুমি তত। ৮।
শক্ষোতি পদ্মরপি বারিধিমুত্তরীতুং
হল্তে করোতি শশিনং কিল বামনোহশি।
ম্কোহপি,বিক্তি বচনানি চ যৎপ্রসাদাৎ
তাং বিশ্বমাতরমহং শতশো নমামি ॥ ৯॥
পদ্মুও সাগর লভ্যে যাঁহার প্রসাদে,
বামনেও হাতে ধরে আকাশের চাঁদে;
বোবা ছেলে,কথা কয় কপার ঘাঁহার,
সেই বিশ্বজননীরে শত নমস্কার। ১।

প্রীতারাকুমার শর্মণঃ

यथन है:ब्राक्तिरिशत असूकत्रान अपन-শীয় শিক্ষিত যুবকের৷ কেহ কেহ গো-ধাদক হইতে আরম্ভ করিলেন, তথন कवि देशकाल थथ. डांशामिशक वाक করিয়া গোমাহাত্ম্য কীর্ত্তন করিতে গিয়া লিখি:ছিলেন:-

"যত দেশীভায়া কপ্চে উঠে, हांन (हरनाइ मार्दामा; ত রাধাড়ি হৃদ্ধ দিচ্চে পেটে আছে ভগবতীর ছানা।

গরুতক, কল্লন্ডক ; এমন তরু আর হবে না; कला शक शांद्ध मधि पुध, नत नवनी, युक्त हाना।"

প্রকৃতপকে মহুব্যের খাছের মধ্যে ছুর, অভীব উপাদেয় এবং প্রয়োজনীয়। শিশুর পক্ষেত হয়ই একমাত্র খাছা; কাজেই এবিষয়ে ছ চাহিটি কথা শিশু পালয়িত্রীদিগের নিকট উপেন্দিত ইইবে না আশা করি।

মুশ্ব মাতেই সাধারণত: ছানা (casein) हर्कि, हिनि, क्या भनार्थ ७ नवन मिर्ड প্রাভন্ন বায়। বে ছংগ্ধ যে পরিমাণে ভিন্ন ভিন্ন পদার্থ মিতি 🛊 থাকে, নিমে ভাষার একটা তালিকা দেওয়া গেল।

| ा रूषम् नाहे होकन | . Se 9 | ¢.42 | ୬ % | ₹ ₽.9 |
|--|-------------------------|---------------------|-------------------------|----------------------|
| ्रामा हे | 3 9 | ÷ | 9 | 9 |
| ठिक् | 400 | 3.0 | 7. | 89.8 GC. |
| ত | 3 . | 39. | 8 9 • | |
| চিনি ম্বনপ্দাৰ্থ লবন চৰ্ফি ছানা-ভজ্ঞানাই চৌজন | \$4.65 | 50.63 | RR. | ۶. د. د. |
| िन | 9 | | £,•¢ | 80 80 80 |
| 15 150 150 | 阿阿斯斯——18.83 6.63 | (शिष्ट्य - ४५.८ ७.४ | भक्ष ह्य- ४० ६.०६ १०.३३ | माङ्ग्रू — ४४.३ 8.७५ |

গাধার তুধ এবং গরুর তুধ সমান পরিমাণে মিশ্রিত করিলে প্রায় মাতৃহক্ষের মত হয়; এইজ্ল মাতৃত্যের অভাব হইলে, শিশুদিগের পক্ষে তাহা বিশেষ উপৰোগী। অনেক ছানে গাধা পাওয়া যার না। সে সকল খলে মাড় ছংগ্রের অভাবে, গোত্ম এইরপ ভাবে দেওয়া বাইতে পারে; যথা—॥৴৽ পরিমাণ গোচুছ, ৮০ গ্রম জলে, এবং এক পাইন্ট

চ্ৰের পরিষাণে **অর্ছ আ**উল পরিস্থার কলের চিনি।

আজি কালি বিলাত হইতে টিনের
ছবের (Preserved milk) খুব আমদানী
হইতেছে। ডাক্টার(Daly) ডালী সাহেব,
১৮৭২ সালের নবেছরের ২রা তারিথের
Lancet কাগজে এ সম্বন্ধে অনেক
প্রয়োজনীয় কথা লিপিবদ্ধ করিয়াছেন।
বিলাতের স্থাসিদ্ধ ডাক্টার Foods
গ্রন্থের প্রনেতা বিখ্যাত Smith সাহেব,
ডালীর কথায় সার দিয়া তাঁহার সারগর্ভ
কথাগুলি দীয় গ্রন্থে উদ্ধৃত করিয়াছেন।
ভাহার সার মর্ম্ম এই—

"বালকেরা গোহুর অপেকা, জমান
ছ্ধ (Condensed milk) থাইতে বেলী
ভালনাসে; মিষ্টতা বোধ হয় তাহার
প্রধান কারণ। এই ছ্রুপান করিলে
শিশুদিগকে বেশ অইপুর হইতে দেখা
ছায় এবং মনে হয় যেন মাড়ছ্র অপেকাও এ হুর অধিক উপকারী। কিন্তু
প্রকৃত পক্ষে এই পুষ্টি কোন কর্ম্মের নহে।

विश्व अञ्चनकान कतिया राष्ट्री विश्वरिक त्व प्रकल बालक हित्तव प्रथ श्रीत्र. তাহারা কোন রোগ **इहे** (ल অল্লেই অভিকৃত হইরা পড়ে। অর এক্ট পেটের অসুধ হইলেই সহসা ওক্তর इहेश भएए। (व कान द्रारंग हेशनिभरक এতটা পরাভূত হইতে দেখা যার, বে অনেক সময়েই বাঁচ'ন ভার হটরা উঠে। বড় বড় সহর মাত্রেই পোহুত্ব অতান্ত দৃষিত। লণ্ডন সহরে হুগ্ধ অত্যন্ত দৃষিত, তাহা অনেকেই কানেন। द সকল শিশু এই দৃষিত ছগ্ধ পান করে, তাহারাও টিনের হ্রপায়ী শি**ওদিগের** পক্ষে অধিক শুস্থ অপেকা প্রকৃত থাকে। জমান সুইস হয়পারী শিভ অকালমৃত্যু অভিশন্ন দিগের মধ্যে অধিক।

কলিকাতায় ভাল ত্ধ পাওয়া বার না বলিয়া বাঁহারা Swiss milk ব্যবহার করিয়া থাকেন, তাঁহারা একথাগুলি ভাল করিয়া বিবেচনা করিয়া দেখিবেন।

মহামতি গ্লাড্ফোনের মন্ত্রিপদ ত্যাগ উপলক্ষে।

উদাব নৈতিক দল—দলপতি আজ
তিরাণী বছর বর: করি অতিক্রম,
প্রধান মন্ত্রীর পদে থাকিতে নারাজ
কত কাল থাকে আর বৌবন-উদ্যান ? >
সাধিতে দেশের হিত মন্ত্রী মহামতি
সমস্ত শকতি-বল করেছেন কর,

শেষকালে হইরাছে বিশ্রামেতে মতি,
স্থভাবের গতি—সেত ফিরিবার নর। ২
শ্রার পথে থাকি সদা কর্ত্তব্য পালন
করেছেন প্রাণ পণে পরের কারণ,
পরসেবা মহাত্রত করি উত্থাপন
লভেছেন পুণ্য ধন অম্লা রক্তম। ৩

দিয়াছেন সাৰ্থবলি, ভূলি আত্মান্থৰ বিশ্বশ্বেমে স্পৈছেন দেহ মন প্রাণ, পর স্থাপ দরশনে কাটিয়াছে বুক, वाजितारक कि विषय वार्क्यत नमान ! 8 হঃবিনী ভারত আৰু কার পানে চেয়ে আবিস্ত হইবে বল ? কেবা অঞ্ধার মুছাইবে স্লেছে গলি ? সোহাগের মেয়ে **কার কাছে** করিবে দে এত আবদার। ৫ জনকের মত তারে করিয়ে যতন তুবেছেন দিবা নিশি তন্যা রতনে, এত দিনে ফুরাইল স্থথের স্থপন সাধে কি বিধাদ রেখা ভারত বদনে। ১ माष्ट्रीन काष्ट्र थाए।, यात्र कादत छत्र १ সহায় থাকিলে হেন বীরে-দ্রুকেশরী कुर्वाक्रभी हात्र वान कहेरत्र निर्ख्य ! দে দিন ফুরাল আজ,—তুঃখের শর্কারী আসিল ভারত! ত্রাসে কাঁপিছে অন্তরে কি জানি কি গ্রহ দোকে নিগ্রহ আবার কথন ভূগিতে হয় ? মাদ্র অবসরে কোনু শনি ক্ষমে পুনঃ করিবে বিহার १৭ ভারত কি রাশিচক্রে খুরিবে কেবল ? কথন কি খুচিবেনা কপালের ফের ?

ৰত কাল ভূগিবে সে নিজ কৰ্মকল 📍 ভোগের অভাব নাই ভুনিয়াছে চের! ৮ উদার নৈতিক দল—এক আশান্তল। সে দলের দলপতি দরা ধর্ম গুণে বিভূষিত হইলেই মনে আসে বল; আখাসিত হয় প্রাণ ওই কথা ওনে। ১ 'লর্ড রোজবেরি' অতি উদার-প্রকৃতি। তিনি নাকি হইলেন প্রধান সচিব ? তাঁর কাছে, আমাদের বিনীত মিনতি ধন্ত হ'ক তাঁর নাম সাধি প্রজা-শিব। ১০ যাও যাও গ্লাডটোন লভগে আরাম. পরিশ্রান্ত দেহ মন পিয়ে শান্তি রস শীতল হউক এবে, গ্লাডপ্টোন নাম ধন্য হ'ক, সবে মিলি গাই তব যশ। ১১ ভূলিও না ছঃখিনীরে রেথ সদা মনে। ভারত-হিতৈষী তুমি সর্ব্বত প্রচার, তব গুণে বাধ্য মোরা ঋণী তব ঋণে, কি দিয়ে শোধিব মোরা, তব সেই ধার গ দূর হোক আধি ব্যাধি আপদ জঞ্জাল, আর(ও)দীর্ঘজীবী হয়ে কাট স্থথে কাল।১২

বাঙ্গালা প্রবচন।

₹

- इंदे मांह, ना हूँ है, शानि,
 इंदे शिक्षि।
 इंदे शिक्षि।
 इंदे शिक्षि।
 इंदे शिक्षि।
 इंदे शिक्षि।
- ৩। হওয়া ভাতে কাঠি।
- ৪। হক্ কথায় আহাত্মক ব্যাক্সার।
- । इक् ठांठांत्र मत्रवात्र ।
- ৬। **হকের ধন কোথা**য় বার ?

७॥ इक्सी धनी।

গ। হঠাং বাবু।

৮। হন্দ কলে পরমুখী।

১। হ্যবর্ল।

১ • । হয় না হয় তুবার যায়, থায় না থায় সকালে নায়। তার কয়ি কি বৈদ্য থায় ?

১১। হয়ত পুতনাহয়ত ভূত।

১२। इय यपि ख्जन,

এক বিছানায় নজন।

১৩। হরি খোষের গোয়াল।

১৪। হরিদ্বার ও গঙ্গাসাগর।

১৫। হরি নামে খোঁজ নাই, ফটিকের রাঙা থোপ।

১৬। হরি বঙ্লেই কাঁড়া চাউল।

১৭। হরি বড় দয়াময়,কথায় বটে কাজে নয়।

১৮। হরি মটর।

১ন। হরির খুড়।

२०। इतिस्य विशाम।

२५। इतिहत आञ्चा।

२२। इ.त मत्त ठाँढ़े छल।

২৩। হলুদ থেলে কি রাডা ছেলে হয় १

২০॥। হলুদ রঙ্নয় যে ধুয়ে যাবে।

२८। श्लूम खम भीत्न,

মেয়ে জন্দ কিলে, পাড়াপড়সী জন্দ হয়

চোকে আঙ্ল দিলে।

২**৫ হলুদের গুঁ**ড়া ভরকারিতে লাগে।

২৬। হব চক্র রাজার পব চক্র মন্ত্রী।

२१। इत् (ছ्लात्र व्यवधानन।

२४। इच्डि मूर्थ।

२३। इत्म मध्य वत्का वयो।

৩ । হাকিম কেরেড হকুম ফেরে না।

৩১। হাগার নাই বাগার ভয়।

৩২। হা**গ**ন্তির লা**জ** না**ই**,

দেখুন্তির লাজ।

৩৩। হাজার টাকায় বামন ভিখারী।

৩৪। হাট চোরের পার্বব।

oc। हा कि कला मिविनाम नमः।

७७। शास कि मत्र ठाउँन १

না মামার ভাতে আছি।

७१। হাটে গেছিল বার মা,

সে দেখেছে বাবের পা।

अ►। शास्त्रि इशास्त्र कवाछे।

৩৯। হাটের নেড়া হজুক চার। -

৪০। হাটে হাঁড়ি ভাঙা।

৪১। হাড় এক ঠাঁই

মাস এক ঠাই। ৪২। হাড় ধাবমাস থাব,

চামড়া নিয়ে ভূগভূগি বাজাৰ।

৪৩। হাড় গোড় ভাকা 🔻।

৪৪। হাড পেকের বোকা।

8 । शाफ़ी द्र कामाल **माथा कांग्रे।**।

৪৬। হাড়ীর ষরের লক্ষী।

৪৭। হাড়ে দুবা গজার।

8৮। हाए टिकि (धरम।

৭৯। হাত কাড়লে পর্কাত।

৫০। হাত দিয়ে হাতী ঠেলা।

🖒 । হাত থাকৃতে মুখ মুখী কেন 🥍

৫২। হাতী বেষন ধায় তেষনি নাৰে।

সতী ও শান্তি।

क्रायाम अतिरहरू।

ধে সকল রমণী তথায় উপস্থিত ছিলেন, তাঁহাদিগের মধ্য হইতে একটি রুদ্ধা বিলয়া উঠিলেন, তোমরা, মা, এ সব কথা ওনে হাস, কিন্তু এসব "মেয়েলী শাস্তর।" এসব চাই বৈ কি ? ছেলের কোন্ বড়ি কি হয়, তা কি জানা যায় মা ? পাঁচটা ওবুধ পত্তর গলায় বেঁধে রাখলে, একটা না একটায় উপগার হয়।

সরোজিনী বলিলেন, হাঁ, তা হয় বৈ

কি । কিন্তু যা তা একটা বেঁধে রাখ্লে,

কি যা তা একটা বাওরালে উপকার না

হইয়া বরং অপকারই হয়। এই দেশুন
না, "হাড়ীর ঝাঁটার কাঠা" কি

একটা ঔবধ ? না ঐ যে সব

ঔবধের নাম করা হ'ল, ও সব ঔবধ ?

"মনগড়া" যা তা একটা ব'লে দিলেই

কি ঔবধহ'ল ? আমাদের দেশের অকাল

হুছুার বডগুলি কারণ বিদ্যমান আছে,
এই মনগড়া ঔবধ তাদের মধ্যে একটা।

বৃদ্ধা। আসল কথা হ'চেচ,মা, ভক্তি।
ভিজ্তিক ক'রে একটু দূক্সবাসের শিকড়
বিটে থেলেও উপগার হর, অনেক
কঠিন রোগ ভাল হর।

जाजिमी। ७ जर कोन कावाद क्यों गर्म। ॰ द्वाः। हैं। मां, जामि के बेकस्य कड स्त्रेत्र छान करतिहै। সরোজনী। আপনি ঐ রক্মে কভ রোগ ভাল করেছেন, কিন্তু আবার কোনও ঔষধ না দিলেও ত অনেক রোগ ভাল হয়। আপনার দূর্ব্বাঘাস যে ঔষধ নয়, তা বলিতেছি না, উন্তিদ্ মাত্রেই শরী-রের কোন না কোন উপকার করে। মনে করুন, দূর্ব্বাঘাস বাত রোগের ঔষধ। এক জনের শিরঃপীড়া হইয়াছে, যদি আপনি ঐ দূর্ব্বাঘাস ভক্তি করিয়। শিরঃ-পীড়া নিবারণার্থে ধাওয়ান, আর রোগী যদি ভক্তি করিয়া থায়, তাহা হইলেই কি তাহার শিরঃপীড়া ভাল হইবে ?

বৃদ্ধা। তা কি হয় ? যে রোগের যে ওব্ধ।

সরোজিনী। তবে আপনি ভক্তির কথা বলিতেছেন কেন? ভক্তি করিয়া বিব থাইলে, বিব কি অমৃত হইয়া যাইবে?

বৃদ্ধা। তবু পাঁচটা ওবুধ বেঁধে রাধলে, অনেক উপপার হয়, একটা না একটা রোগে লেগে যায়।

महाकिनी। धरे एम्यून ना, धरे हिलागेंद क्रमन स्टाइह। धद भनाव धरुकि खेर हिन, खाद वड़िकिन हिला हिला क्रमन क्रमन हैं कर्वा नाहें खर्क भंदीद्र किमन हम्यून हिला है। दिना धर्मन हम्यून क्रमन हम्यून क्रमन धर्मन हम्यून हम्यून क्रमन धर्मन क्रमन स्टून हम्यून हम्यून क्रमन धर्मन क्रमन स्टून हम्यून हम्यून क्रमन धर्मन स्टून हम्यून हम्यून क्रमन धर्मन स्टून हम्यून हम्

নিয়ম আছে, দেখানে স্বাস্থ্য আছে, সুখ আছে, শান্তি আছে। কিন্তু বেখানে নিয়ম নাই, দেখানে স্বাস্থ্য নাই, সুখ নাই, শান্তি নাই। বড়দিদি ছেলেদিগকে স্থানিয়মে রাথিয়াছেন, তাই তাঁর ছেলে-গুলি এমন হুট পুট ও বলিষ্ঠ।

ুবৃদ্ধ। সকলে কি আর নিয়ম পালন ক'রে চল তে পারে মাণ্

সরোজিনী। কেন, যে সকল নির-নের কথা বলা হ'ল, তা কি পালন করা বড় কঠিন ? ইচ্ছা থাকিলে সকলেই ডাছা পালন করিতে পারেন।

বৃদ্ধা। সকলে কি আর নিয়ম টিয়ম ছানে ? ধারা জানে, তারা নিয়ম মত কাজ কব্তে পারে। ক্লিন্ত ধারা জানে না, তারা কেমন করে পালন কর্কে ? কাজে কাজেই যে যা বলে, সেই মত কাজ কর্তে হয়।

সরোজিনী। যাঁরা নিয়ম জানেন না, তাঁদের শিক্ষা করা উচিত। যে যা বলে, তাই ঔষধ ব'লে খাওয়ান বা গলায় বাঁধা উচিত নয়। রোগ হইলে ভাল চিকিৎ-সককে দেখান উচিত। চিকিৎসকের পরামর্শমত কাজ করিলে কোনও বিপদের সন্তাবনা নাই।

বৃদ্ধা। সকলে কি আর ভাল চিকিং-সক দেখাইডে পারে মা ? যারা গরিব ছু:খী, তারা ভাল চিকিৎসক কোণা পাবে ?

দরোজিনী। ভাল চিকিংস্ক বলিলে ধে ধ্যম্তরীকে আনিতে হইবে বা হানি-ষানকে ডাকিডে হইবে, তার এমন কোন

মানে নাই। বাঁহাদের চিকিৎসা বিষয়ে অভিজ্ঞতা আছে, তাঁহাদের প্রামর্শ গ্রহণ কর। উচিত। ধেরূপ দিন কাল পড়িখাছে, তাহাতে যার তার কথা মত কাজ করিয়া নিশ্চিত হট্যা থাকা বিধের নয়। আগে আমাদের দেশে সন্তানাদি পালন দম্বন্ধে বেশ স্থানিয়ম ও স্থবন্ধোবন্ত ছিল, এক্ষণে নানা কারণে चातक পরিমাণে বিকৃত হইয়া निয়াছে, অনেক কুনিয়ম ও কুসংক্ষারবশতঃ আমা-দের দেশের যে কি সর্বানাশ হইতেছে. তাহা বৰ্তমান যুগের চিকিৎসাবিজ্ঞানৰিৎ পত্তিতগণের একটি চিস্তার বিষয়। পাড়া-গাঁয়ে হাজার হাজার "হাতুড়ে বৈছ," বা "ঠ্যাঙাপ্যাথিক" ডাব্ডনার দিন দিন এরপ আধিপত্য বিস্তার করিতেছেন, সে তাহাদিগের হাত হ**ই**তে দে**শকে রক্ষা** না করিলে, অচিয়ে দর্শনাশ হইবার বস্থাবনা। ইহারা সব কুডান্তের সহো-দর। কুরুকেতের বৃদ্ধে কয়জন লোক মরিয়াছিল ? কিন্ধ এই "শতেকমারী"— ''দহস্রমারী'' ''ঠ্যাঙাপ্যাথিকের'' প্রতি বৎসর তাছাদের বিষবটিকারণ অত্তে এবং ''অত্বকারে ঢিল ছোড়া" রূপ শল্পে তাহার চারিগুণ লোক নিপাক করিতেছে। ইহারা সব কলির পর্ভরাম।

কুতান্তের আর এক সংহাদর—
"গুণিন্"। পাড়াগাঁরে ইহাদের আধিপত্য অত্যন্ত বেশী। ইহারা মন্ত্রনে
ক্ষপৎ অধিকার করিতেতে, এরা সব
"গুডুমীরের" বাবা; এদের "বাশেষ»

কেলা'শীস্ত্র না ভাঙ্গিলে আর নিস্তার নাই।

কুডান্তের আর এক সহোদর দেখা **मिन्नाटह--- म**न्नामीत त्वभवाजी क्रुवाटात । ইহাদের গতিবিধি সহর অপেক্ষা পাড়া-**शैंरित्र कि**ष्ट्र ८वभी। देशद्वा পाড़ानाँद्रि **"কেষ্ঠ** বিষ্ণু" 1 পদার প্রতিপত্তি যথেষ্ট। ইহারা এক নিঃখাসে পৃথিবী প্রদক্ষিণ করিতে পারে। কল্পতরুর ফল, **ভুম্বরের ফুল পর্য্যন্তও এর**া এনে দিতে পারে। এমন অনেক সল্ল্যাসী মহাপুরুষ দেখা গিয়াছে, যাঁহাদিপের নিকট অনেক नगर जातक প্রতাক ফলপ্রদ মহৌষধ পাওয়া যায়, যদারা অনেকের উপকার হইরাছে ও হইতেছে। সেরপ সদাশয় মহাত্মারা প্রসার প্রত্যাশী নহেন। কিচ জুরাচোরের দল যেরূপ অত্যাচার আরস্ত করিয়াছে,ভাহাতে তাঁহারাও যেন ঘূণাতে **ক্রেমশঃ স্**রিয়া দাঁড়াইতেছেন'। এখন এমন দিন কাল পড়িয়াছে বে ভাল মন্দ ঠিক করা বড় কঠিন। কোন্টা সোণা, কোন্টা পিত্তল, কোন্টা রোপ্য, কোন্টা রাভ **কোন্টা হীরক,** কোন্টা কাচ, তাহা ঠিক্ করা বড় কঠিন হইয়া পড়িয়াছে। মুড়ি **মিছি**রি **স**ব এক দরে বিক্রয় হইতেছে। अतिर दःशी সাধারণের জনা আমা-দের দেশে অর চেষ্টা ও অল্পব্যয়সাধ্য अमन व्यानक नीहन, मुडि शांशानि छेयध অবৈশ্বত হইয়াছে, বদারা অনেক কঠিন পীড়া আরোগ্য হয়। क्रिक সে সব • মহৌবধ ঠিক করা বড় কঠিন। সত্যে

ব এবং অসতো "খিচ্ড়ী " প্রস্তুত হইয়াছে।
এ খিচুড়ি সেবনে হয় জীবন, নয় মরণ,
কুয়ের এক হইবেই হইবে। যে দেখে
"শাস্তি জল" দিবার সময় "পাঁটা কাটার
মন্ত্র" পঠিত হয়, সে দেশের আর মঙ্গল
কোথায় ৪

আপনি যে "মেয়েলী—শাস্তের" কথা বল্ছেন, বেশ ত। আপনার মেয়েলী শান্ত্রে যাহা কিছু আছে, তাহা যে সকলই অসার, অসত্য, তাহাত কেহ বলিতে-ছেন না। বরং উহাতে যত টুকু সার যত টুকু সভ্য আছে, ভাহা গ্রহণ করিতে मकल श्रञ्ज । ८२म, वाहेरवम, त्कातान, দর্শন, বিজ্ঞান সকলইত ঐ মেয়েলী শাস্ত্রের কাছে পরাভূত্। এই গেয়েলী শাস্ত্রের সমাক আলোচনা নাই বলিয়াও অবনতি। তথু মেয়েলী শান্তের দোহাই দিলে চলিবে কেন ৪ দেখান, যে শাপনার মেয়েলী শাল্রে এমন একটি উপায় বনিয়া দেওয়া আছে, যাহা দারা করতক স্ঞিত হয়, অথবা জ্বোৎস্পার উত্তাপে জল ফুটাইতে পারা যায়। আপনার মেয়েলী শাস্ত্রে বলে যে জুন্ধ রের ফুল দেখা যায়, তবে দেখান্। আপনার মেয়েলী শাজে লিখিয়া রাখুন (य, " पुत्र (तत क्ल (कह कथन (मध्य नि, কখন দেখিবে কি না, তাহার স্থিরতা নাই। অভএব যে ব্যক্তি ঔষধ বলিয়া ডুম্বরের ফুল আনিয়া দেয়,দে মিধ্যাবাদী প্রভারক।"

বৃদ্ধা। তাকি সব সত্যি হর মা?

সরোজিনী। তবে বে গুলি বত্য নর জানেন, সে গুলি গ্রহণ করিয়া কেন প্রতারিত হন।

বৃদ্ধা। কোন্টা গত্যি স্মার কোন্টা মিথ্যা কেমন করে ঠিকু করা যাবে •

সরোজিনী। তার অনেক উপায়
আছে। তার মধ্যে একটি সহজ উপায়
এই যে পণ্ডিতেরা বিচার করিয়া থাহাকে
সভ্য বলিবেন, সেই সভ্য এবং বিচারে
যাহ। নিধ্যা বলিয়া ঠিক্ হইবে, ভাহাই
মিধ্যা।

বৃদ্ধা। ধেরপ দিন কাল প'ড়েছে, তাতে নিথা হ'তে সভ্যকে, মন্দ হ'তে ভালকে পৃথক্ না করিলে জারও জনি-প্রের সন্থাবনা। আমার কাল মাথা সব সাদা হ'রে গেল, কিন্তু এত রোগ শোক

জার জকাল মৃত্যু আমি কথনও দেখিনি।
তথু অনিয়ম জত্যাচারের দরণ এরূপ
হইতেছে।

এই কথা শুনিরা আর একটি শ্রীলোক বলিলেন, হাঁ মা তা ঠিক। ইনি ধে শব নিয়ম পালনের কথা বলেছেন, আমরা তার শতাংশের একাংশ করি কি না সন্দেহ। সাধে কি আর এত রোগ— শোক—অকাল মরণ ?

বড়বৌ। কি কি নিরম পালন কর্ছে হয়, বল না মা, গোড়া থেকে ভনি।

এই কথা ভনিয়া আর একটি দ্রীলোক বলিলেন, আবার গোড়া থেকে হ'লে দেরি হবে, আমি তথন সে সব পরে ভোমাকে ব'ল্ব। আমার সব মনে আছে। ভার পর থেকে হ'ক। (কমনঃ)

সৃষ্টি প্রক্রিয়া রহস্য।

(৩৪৯ সংখ্যা ৩০০ পৃষ্ঠার পর।)

"তন্মান্বা এতন্মদান্তন আকাশঃ সক্ত আকাশালান্ত্র বাব্যার্থির থেরাপা অন্তঃ পৃথিবী''—ভাঁহারা এই শুভি বাক্যকে প্রমাণ রূপে উপস্থিত করেন, সঙ্গে সঙ্গে ধৃক্তিরও উদ্ভাবন করেন। উপাদান কারণের গুণ কার্যা পরীরে সংক্রোমিত হয়, পশ্চাৎ আকাশ, বায়ু, অগ্নি ও জলের অন্তর-জ্বাত পৃথিবীতে তত্তাবতের গুণ আছে; বেমন স্বর্ণ হইতে বলয় জ্বানে আর

মগুলাকার রূপ অপর একটা বিশেষগুণও

করে। ইহাদারা এই বলা হইল বে,

শক্ষ-স্পর্শ-রূপ-রুস-গন্ধ এই পাঁচটা গুণই
পৃথিবীতে আছে, সন্দেহ নাই। পরন্ধ,
পরমাত্ম। হইতে আকাশ,—আকাশ হইতে
বায়ু কি প্রকারে উৎপন্ন হইল, ইহা অনেকেরই বৃদ্ধিগম্য না হইতে পারে; কিন্তু
বায়ু হইতে আগি,অগি হইতে অল,এবং, জন

হইতে বে পৃথিবী সমুৎপন্ন হইলাছে/
ইহা নিভান্ত বিচিত্র নহে; ইহা বৃভিন্ত

দারা অনামানেই বোধগম্য করান যাইতে পারে। এছলে ইহাও বক্তব্য যে, প্রাণি-পণের আবাসভূমি পৃথিবীর বর্ত্তমান व्यवस्थ अकवाद्यरे अमूर्भन रम्र नारे। উৎপত্তিকালে কেবল অনন্তসংখ্যক পর-मापूरे উৎপन इहेग्राष्ट्रिम, अन्हार जर-শমুদাম সংহত হইয়া প্রাণিগণের ব্যবহার্য্য এই পৃথিবী জন্ম লাভ করিয়াছে। श्रिवी धरेकार कीवाकीव নানাবিধ পদার্থে পরিব্যাপ্ত হইয়াছে—সেই পৃথিবী এক সময়ে পরমাণুরূপে শুন্তের উপরে শুকায়িত ছিল; বর্তমান পৃথিবী পার্থিব পরমাণুর সংহতাবদা হইলেও ইহাতে অস্থান্ত ভূতের সংযোগ আছে ইহাও বুৰিতে হইবে।"

আর এক সম্প্রদার (ভার ও বৈশে-বিক অর্থাৎ পোতম ও কণাদ) বলেন, "বর্ত্তমান পৃথিবী এক সময়ে অদৃশু ছিল বটে, কিন্তু যে দকল প্রমাণু সংহত হইয়া বর্ত্তমান পৃথিবী জন্মিয়াছে, দে সমস্ত প্রমাণু উৎপন্ন বস্তু নহে। প্রমাণুর উৎপত্তি বিনাশ কন্মিন্কালে নাই—উহা চিরনিজ্য। প্রমাণুদিগকে সংহত করিয়া বিবিধাকারে পরিণত করাতেই ঈশ্বরের ঈশ্বরছ।"

অপর এক সম্প্রদার (মীমাংসক সম্প্রদার) বলেন, "ন কদাচিদনীদৃশং," এখন আমরা জগতের অবস্থা যে প্রকার প্রস্কুক্ষ করিতেছি, জগৎ চিরকালই এই শ্ববস্থাবিত, এডদপেকা স্কৌন নৃতনবিধ ক্ষাবস্থা কগতের ঘটে নাই, ঘাটবেও না। বর্ত্তমানকালে বেমন এক বুক্লের অভাব, অক্স বুক্লের উৎপত্তি, এক জীবের মৃত্যু অন্য জীবের জন্ম; এক প্রদেশের বিলর, অন্য প্রদেশের উদর ইইতেছে—এইরপ হওয়া অতীত অনাদিকালের ও আগামী অনস্তকালের নিমিন্ত নিরমিত। উৎপত্তি, বিনাশ প্রবাহ জগতের একদেশ লগ্ন হইয়া চলাই সাভাবিক।"

বেদ, স্মৃতি ও দর্শনবেত্তা আর্থ্যের। উক্তবিধ বক্ত আকারের বাক্য প্রয়োগ করত পৃথিবীর ও পৃথিবী সম্বন্ধীয় কার্য্য-জাতের বিচারণা করিয়া গিয়াছেন। —"আত্মতত্ত্ব দর্শন সৃষ্টিকল্প।"

আদি সৃষ্টিকালের ব্রহ্মাণ্ডের উপাদান স্ক্রপ তত্ত্ব সকল বভকাল, অমিলিতাবস্থায় ছিল; কারণ প্রকৃতি পরিণত ত্ত্বসকল প্রস্ব করিতে করিতে ক্ষিতি-তথে আসিয়া উপস্থিত হইতে অনেক সময় লাগিয়াছিল। যথন প্রকৃতি ক্ষিতি-তথে আসিয়া উপস্থিত হইলেন, তখন त्रभ, त्रम, गक्क, म्लर्भ, मक् ७ व्याकाम. বায়ু, তেজ, জল সমস্ত তত্ত্ব কিতিতত্ত্ব আসিয়া সমষ্টীভূত হইল। ক্ষিতিত্ত সকল তত্ত্বের চুম্বকম্বরূপ হইল। (প্রবীণা পৃথিবী ভত্ত শেষাণাং সহকারিতা)।— এজস ইহা একাধারে ভগৰতী গীতা। সকল তথ্যেরই প্রকাশক ও বোধক বলিয়া উক্ত ইইয়াছে। এই ফিডিডব সমস্ত তবের মিলিত বা সংহতাবন্থা। এ অব-স্থাকে ব্ৰহ্মাণ্ডের দ্বিতীয় -অভাৰম্বা বলে, এবং ইহা প্রাকৃতিক

পরিণামের একটা প্রধান বিশ্রামন্তন। সীমা অর্থাৎ প্রকৃতি এই ছলে আসিতে পারিলেই তথাত্তত্ত্ব কতকটা শ্রান্তি দ্র করিয়া পুনর্ত্রমণে দক্ষম হন। এজন্ত এই পর্যান্ত হাষ্টি । তাহাকে বৈ ছণ্ডয়ার নাম প্রাকৃতিক বা সর্গ স্কৃষ্টির শেষ স্কৃষ্টি বলে।

সীমা অর্থাৎ মহন্তব, অহংতব, ইঞ্জিরতব, তথাত্রতব এবং মহাভূততব পর্ব্যন্ত স্টির শেষ বলা বার । ইহার পর যে সকল স্টি হর, তাহাকে বৈকৃতিক, বিসর্গ বা বজার স্টি বলে। (ক্রম্ণঃ)

স্বরসাধন প্রণালী।

(०৫० मः था। -- ७९१ शृक्षेत्र भत)

শ্বর ও মাত্র। উভয়ে মিলিত হইলে তাহাকে গীত বলা যায়। গীত ত্ই প্রকার

কঠগীত ও যন্ত্রগীত। স্থলনিত শ্বরসংযোপে মহ্বয় কঠবিনি: স্ত বর্ণাত্মক
গীতকে কঠগীত এবং বীণাদি যন্ত্রোপিত
ধবতাত্মক গীতকে যন্ত্রগীত কছে। কঠগীত
আবার শ্বর্থাম, তেলেনা, থেরাল, চতুরঙ্গ, ত্রিবট, বিষ্ণুপদ, গ্রপদ, জাত, কাওল,
গুলনক্স, রাগমালা, আলাপ, ট্রা,
ইত্যাদি প্রকার ভেদে নানাবিধ হইয়া
থাকে। ইহাদিগের প্রত্যেকের লক্ষণ
সংগীত রহাকরে দ্রস্টব্য।

গীতে চারিটা চরণ দৃষ্ট হইয়া থাকে:—
যথা অস্থায়ী, অন্তরা, সঞ্চারী, আত্তরা, দকারী, আতিরা চরপ্রেম চরপের নাম অস্থায়ী, বিভীয় চরপের নাম অস্তরা, ভৃতীরের নাম সঞ্চারী,
চতুর্পের নাম আভোগ।

শা, ঝ, গ, ম, প, ধ, নি শুদ্ধ এই শাতটী হর রাগরাগিনী বোগে, বিবিধ ছব্দোবন্দে ও নামা তালে শীত হইলে, তাহাকে স্বর্থাম কছে। স্বর্থা**মে হুইটার** অধিক পদ থাকে না।

স্বের স্কাংশকে ক্রান্তি কৰে; অর্থাৎ এক স্বর হইতে অস্তা স্বর অবিভেছেটো প্রকাশ করিতে গোলে, সেই উভর স্বরেশ মধ্যে যে অতি স্কা স্বরাংশগুলি অনুভূত হয়, তাহাকে প্রাতি বলে।

সা, ঋ, গ, ম, প, ধ, নি, এই সপ্তকে বাবিংশতি খণ্ড সর আছে, বধা—বড্জ, হইতে ঋবতে চারিটা, ঋবত হইতে গান্ধারে তিনটা, গান্ধার হইতে মধ্যমে হইটা, মধ্যম হইতে পক্ষমে চারিটা, পঞ্ম হইতে ধৈবতে চারিটা, ধৈবতে হইতে নিবাদে তিনটা, এবং নিবাদ হইতে উচ্চ বড্জে হইটা করিয়া থণ্ডসর প্রাপ্ত হণ্ডরা হায়।

কঠে গীত অভ্যাস করিতে হ**ইলে** আরও করেকটা সাধন প্রধালী অভ্যাস করা আবশ্বক। বধা— গমক, মুর্চ্ছনি, বিক্লেপ, ও প্রক্লেপ।

গমক ৷

শর কম্পনের নাম গমক। নির্গমন কালে কঠের আফুঞ্চন ও প্রসারণ দারাই শর কম্পিত হয়। গমকের "W" এইরপ চিহ্ন। এই চিহ্নটী কম্পনীয় সরের নীচে শাকিবে, এবং চিহ্নের সংখ্যাহ্নসারে স্বর কম্পিত হইবে।

্গামক সাধন।

। । । । । । সা. নি সা. ধ সা. ধ সা. W W W W ২W ২W ৩W

্**ঋ** ৩W ইত্যাদি।

मृष्ट् ना।

কোন স্বর হইতে স্বর মধ্যবর্ত্তী শ্রুতিশুলি ভঙ্গ না করিয়া অন্তলোম বা বিলোম
শতিতে অস্থাস্থ স্বই, তিন বা তদতিরিক্ত স্বর অবিভেদে প্রকাশ করার নাম মৃষ্ঠিনা।
মৃষ্ঠিনার "

এইরপ চিহ্ন।

मृद्धन। माधन।

।।।।।।।।।।।।। **नैवा कार्ग नकार्ग का**र्गम

। । । । । । । । সা. নি ধ প

नि व ल ल रेडापि।

বিকেপ ও প্রকেপ।

কোন একটা স্বর নির্গত করিয়াই তৎক্ষণাৎ অন্থলোম গতিতে তৎপরবর্ত্তী ছই, তিন, বা ততোধিক স্বর ব্যবহিত স্বরাস্তর প্রকাশ করার নাম বিক্ষেপ এবং ইহার বিপরীত ভাবকে অর্থাৎ পূর্ব্বোজ্ঞ নিয়মে বিলোম গতিতে স্বরাস্তর প্রকাশ করাকে প্রক্ষেপ বলে। বিক্ষেপের ">" এইরূপ আর প্রক্ষেপের "<" এইরূপ

বিক্ষেপ প্রক্ষেপের সাধন।

× ৺×< × ×⊌ऽ × x⊌< म। अ। मा ग म∤िन

× ×*৬*< সা. ধ ইত্যাদি।

থায়াজ-একতালা।

গীতসার। অস্থায়ী। নবীনচন্দ্রক ক হ **স্থর।**

৬ব ১৬ ৬ ৬ ৬ | +৬ ৬ নি ধ প ম গ | সা সা ধ- য়-বা-স-না, র-স-

৬ ৬ | ১৬ ৬ | ব গ্ম | প প নি সা. ক্ষ. সা. না ভা- | য- না কা-

অন্তরা।

'+৬ ৬ ৬ ৬ ১৬ ৬৭ ৬ ম ম ধ ধ ধ নি নি ৃ প- ই- যে কি । ছা- র, মি

| সা. বা নি সা. স | া. সা. নি |
|-----------------|------------|
| ছা- র সং- সা র | া, কা- টা- |

৬ ৬ ১৬ ৬ ব৬ ৬ ১৬ ব ৬ ৩. ৪. | সা. নি সা নি নি ইশি কা- ল- ৬-রে ছুরা-

৬ | +৬ ৬ ৫ ৫ ১৬ ধ গ গ গ গ গ গ চার, | না বি- কা- লি- কা-

| গ | मं | 4 | ₩. | 아 (편 | ₩. ₩. | 4. 4. |
|-------------------------|------------------|---------------------------------|-----------------|----------------|------------|----------------|
| ৶ সা • বা- | ⊌ मा. द्र, | । मा. क- | । সা ব্যে | ত্ব নি ম | ₩ . | ्र अ। अ। |
| ্ সা জ | | ।ব নি সা কা- | ঝ • স | \ | × 4 | × जा |
| ৺ ব নি লি | ! ध | <u>व</u> |) | • | (ক্ৰম গ | :) |

বিবি ফসেট্।

मात्रल उतिहेत निकार अकमा अक নারী আসিয়া,বলেন, "আমি এই এই অকার্য্য করিব, যদিনা করিতে পাই, মরিব।" দারলট উত্তর করিলেন "মর ক্ষতি নাই, তবু সে ঙলি করিতে পাইবে না।" বিবী ফুদেট সেই প্রেণীর মহিলা। তাঁহার স্থানেরা কথনও অবারাতা প্রকাশ পূর্দ্ধক "মরিব" বলিলে ভিনি বলিতেন"মর,"বার হইতে হইবে।"এক-मिन होने **आ**जुका किलिशा करते (यिनि একণে ক্যাম্বিজ বিশ্ব বিদ্যালয়ের দিনি-য়র রাক্ষেলর) সম্ভিবাহারে কোন্ড ম্বানে যাইবার জন্ম প্রেম্বত হইতেছেন: এমন সমায় কতাকে জিজ্ঞাসা করি লেন "তোমার সঙ্গীকে লইয়াছ 🖓 যেখা:ন পুত্ত निका हिन, मिटे मिक मृष्टिभाउ করিয়া কন্তা উত্তর করিলেন" পুতৃস 🕈 ''ইহাতে মাতা প্রত্যুত্তর করেন 'আমি ঐ

পুতৃনটিকে পুতৃল বলিয়া ভাবিতে দিতে চাৰিন। আমি উহাকে মানুৰ বলিয়া জ্ঞান করি। যেমন তুমি আমি মানুর-মেয়েমানুষ, দেই কপ উহাকেও জ্ঞান করি।" ইহার গুঢ়ার্থ এই যে, পুত্তলিক। माञ्च मञ्जीत छात्र कीवन पर्रत्नत मह-কারী। আর জনসমাজে নারী পুত-লিকা বিশেষ নহে। পুরুষের স্থার ইহারও সমালে স্থান আছে, অধিকার আছে, मात्रिक चाहि, कर्छवा चाहि, হইতে কেহ ভাঁহাকে বিচ্যুত করিতে পারিবে না। তৎতৎ কার্যাণ্ডলি বে বে নারী স্থচাকরণে সম্পন্ন করিতে সক্ষম হন না, ভাঁহারা কর্তব্যপরারণা বলিয়া বিবেচিত ইইতে পারেন না। এই বিপৎ-প্রলোভন-দক্ত সংসারে কি ত্রী কি-পুরুষ সকলকেই অভি সাবধানে বিচরণ করিছে रत । পুরুষ বসিরা কাহারও শত খুন মাণ

नारे, खीलाक वनिश कारावर अर् माज লোৰ কলনার পর্বতাকারে পরিণত इहेर मा। विवि कत्मरे ममनर्गिनी। देनि की शूक्रव डेच्यर मगान पृष्टि उ শেখিতেন, কাহারও প্রতি কোনও রূপ পক্ষপাতিত নাই ও কখনও ছিল না। এই উজির যাখার্থা প্রতিপাদন করিবার মানদে আমরা উহার একটি বাকা এছলে উদ্বত করিলাম। তাহা এই "পুর্ণবয়স্কা নারীকে কুত্রাপি এরপ ভাবিও না যে, তিনি পাপের প্রলোভন

এড়াইতে পারেন না।" হিন্দুশান্তে বে আছে 'অরকিভা গৃহে রুদ্ধা ইত্যাদি'' গৃহে রুদ্ধ থাকিলেও অর-ক্ষিতা, বাঁহারা আপনারা আপনাদিগকে করেন, তাঁহারাই সুর্ফিতা।" এই বাক্যের সহিত তাঁহার মতের কেমন ঐক্য দেখা যায়। যিনি বিষম সামাজিক পাপ রোগের নিমিত সর্বাদা শক্ত ঔষধ ব্যবস্থা করিতেন,নারীচরিত্রের উপর তাঁহার বিশ্বাস কেমন দৃঢ়!

(ক্রমশঃ)

দেশাচার ও সংস্কার।

দেশাচার বড় ভয়ানক জিনিষ, গৈহজে ইহার হস্ত হইতে পরিত্রাণ পাওয়া তুক্ষর। **ইহা যদিও অমন্য হ**য়, তাহ। হইলেও ইহা ভ্যাণ করিতে গেলে নিন্দিত, সমাজচ্যত হর্মচ্যত, জাতিচ্যত এবং সময়ে সময়ে প্রহারিতও ইইতে হয়। দেশাচার পরি-ভ্যাপ করিয়া কেছ কেহ মৃত্যুদণ্ডেও দণ্ডিত ছট্রাছেন, এরপ দৃষ্টান্ত দেখা যায়। আমাদের সমাজের অর্থাৎ বঙ্গদেশের হিন্দ্ সমাজের দেশাচার গুলির মধ্যে অনেক শুপ্রথা আছে, আবার কতকগুলি কুপ্রথাও আছে। কুপ্রথা গুলির সংস্থার হওয়া নিভান্ত আবশ্যক হইয়া উঠিয়াছে। লোক্ষণিগের মধ্যে সচরাচার বে নিডা খাচার খৰি প্রচলিত, বর্ত্তনান প্রস্তাবে म्ररक्र अस्क अरक रम अलित विठात

कतिशा (मथिवात देख्या आट्या मूमल-মান রমণীগণের মধ্যেও এই দেশাচারের অধিকাংশ প্রচলিত হইয়া উঠিয়াছে, অত-এব এই প্রস্তাব তাঁহাদের পক্ষেও উপ-কারী হইলে হইতে পারে।

मिन्दूत।--- मधवा वा क्यांत्री हिन्दू-কন্যার কপালে সিন্দুর বিন্দু স্থাপন করা হিন্দু সমাজের একটা দেশাচার ৷ বছ-পুর্ব্ব কাল হইতে এদেশে ইহা প্রচলিত। শরীরের অঙ্গ বিশেষে লোহিত রঙ্গের চিত্র স্থাপন করা অথবা লালবর্ণের পরি-চ্ছদ পরিধান করা হিন্দুরা স্থধের সোপান বলিয়া বিশ্বাস করেন। এই জন্য বিবাহের সময়ে পাত্র ও পাত্রীকে "চেলীর জ্বোড়," লাল পট্টবন্ধ, নাল কাপড় প্রভৃতি পরিতে হয়। ব্ৰভাদি বা পূজা কালে গৃহস্থ

পুরোহিতকে লালবন্ত পরিধান করিয়া কার্য্যে নিযুক্ত হইতে হয়। গম্ভ বিতী রমণীর সাধভক্ষণ কালে লোহিতবন্ত্র পরিধান করা শান্ত্রসক্ষত। লোহিতবর্ণ হিন্দুর সুধ, দৌভাগ্য ও ধর্মের চিহু। সিন্দুর বিশ্ ভাল দেশে ছাপন কর৷ হিন্দু সধবার সৌভাগ্য ও স্থাধর পরিচায়ক স্বরূপ। मुजनमान नाती पिराव मर्था हैश शुर्वा প্রচলিত ছিল না, তাঁহাদের ধর্ম শান্তেও ইহার ব্যবস্থা নাই; কিন্তু বঙ্গদেশে হিন্দু ও মুসলমানের সম্বন্ধ যতই ঘনিষ্ঠতর হইতে আর্ভ হইয়াছে, মুদলমানেরাও অনেক বিষয়ে হিন্দুর অন্তক্রণ করিতে আরম্ভ করিয়াছেন। সিন্দুর দেবনের প্রথা আমরা এককালে উঠাইয়া দিতে সমত •হি. ষেক্তে ইহাতে কিয়ৎ পরিমাণে উপকার আছে ইহা আমরা বিশ্বাস করি। সিন্দুরে (অকুসাইড অব মার্কারি) পারা-বিশ্লেষ্ণ নামে এক প্রকার পদার্থ আছে, তাহা মহিক্টের পঞ্চে উপকারী। বিশুদ্ধ পারা বে কোনও প্রকারে হউক, শরীরের অভ্য-স্তবে বা বহির্দেশে থাকিলে জীবদেহের ইষ্ট ভিন্ন অনিষ্ট হয়না, ইহা জগছিব্যাত চিকিৎসকদিগের মত এবং ইহা বচতক ও মীমাংসায় সিদ্ধ। সিন্দুরে উপকার করে ইহাতে সন্দেহ নাই, কিন্তু তৈলের

সহিত সিশ্ব মিশ্রিত করিয়া কণালে ছাপন করার প্রথা নিতান্ত জবন্য। পারা ও তৈল একত্রে মিশ্রিত হইলে ভয়ানক বিধের হৃষ্টি করে; প্রাচীন বৈদ্য প্রস্তের মতে গোহুর্ম, বটপত্রের হৃষ্ণ বক্ষুল (বাবলা) গাছের নব্য গাঁদ অথবা নবনীত সহ সিশ্ব মিশ্রিত করিয়া কপালে দিলে সিশ্বের আরও গুণ কলিতে পারে।

মিশি।—বঙ্গ দেশের লক্ষ লক্ষ স্ত্রীলোকে মিশি ব্যবহার করিয়া থাকেন। মিশি দারা মুখের তুর্গন্ধ বায় এবং দত্ত-মূল দৃঢ় হয়। কিন্তু যে প্রণালীতে মিশি প্রস্তুত্ব তাহা উত্তম নহে, ইহাতে দক্ষের স্বাভাবিক উজ্জলতা ও চিক্লতাকে নই করিয়া এক কদাকার ক্রফ বর্ণ উৎপ্রাদন করে এবং ভজ্জান্ত দম্বপাতির মাংসাদি জবতা আকার ধারণ করে। পুরাতন ম্বপারি,চাথড়ি (চক্), মাজু ফল, তামাকুর পাতা, দারু চিনি, লবঙ্গ ও তেজ পত্র, এবং কিঞিৎ ভূঁতিয়া অলম্ভ অগ্নির শিখায় গরম করিয়া লইয়া চুর্ণ কর এবং একত্রে মিশ্রিত করিয়া প্রতি দিন প্রাতে দস্তমর্জন কর। ইহাতে দাঁত কাল হয় না, অথচ দন্তমূল বহুকাল পর্যান্ত শক্ত থাকে। দস্তমূল ফুলিলে ক**খন** কথন দাঁতের গোড়ার काल लक्षा हिलिया धतिरल छेलकात रत्र।

বিবিধ।

১। টিকিট সংগ্ৰহ।—আজ কাল বিলাতেও অভাভ দত্য দেশে নানা-

দেশীয় ও নানা সময়ের টিকিট সংগ্রহের বি বড় ধুম পড়িরাছে। সে দিন ১৮৪৭ দালে মরিসাস দ্বীপের তুইটা টিকিটের দর ৬৮০ পাউও পর্যস্ত চড়িয়াছিল অর্থাৎ প্রায় সাড়ে নয় হাজার টাকায় বিক্রেয় হইয়াছিল।

২। সাক্ষ্য প্রথা।—পূর্ব্বে ক্রাক্ষক্লেশে কোন জমি জমা নিলাম হইলে
১২ জন প্রেটাড় ও ১২ জন বালক সাক্ষী
'হইত। ক্রেডা মূল্য দিবামাত্র বালকদিপকে সজোরে কান্ মলিয়া প্রহার
করিতে করিতে তাড়াইয়া দেওয়া হইত।
ইহার, কারণ ভবিষ্যতে তাহারা কান্মলার
সহিত জমি বিক্রয়ও অরণ রাথিবে।

৩। শরীর পালন।—ডাক্তার নদেন বলেন যে তিনি যাহাদিগকে অধ্র চিকিৎসা করেন, তাহাদের মধ্যে শতকর। নকাই জন খাওয়া দাওয়ার অনিয়নে ভূগে।

৪। মাতাল তুরস্ত।—একজন ভয়ানক মাতাল কিছুতেই শোধরাইল না।
একদিন দে মদে ভৌ হইয়া গড়াগড়ি
থাইতেছে। এদিকে চতুরা ভার্যা এক
ব্যক্তি কর্ত্ব তাথার মন্ততাবস্থার একটী
কটো (চিত্র) লইলেন ও টেবিলের উপর
রাধিয়া দিলেন। সামী সজ্ঞান অবস্থায়
তাথা দেথিয়া সিহরিয়া উঠিলেন এবং
দীরবে প্রতিজ্ঞা করিয়া তাথার কদভ্যাস
চিরকালের জন্ত বর্জন করিলেন।

৫ । এক বার বিলাতে বড় ওলাউঠা

হইয়াছিল, চারিদিকের লোক মরিতেছে,

কিন্তু একটা গৃহে রোগ ঞ্কবারে প্রবেশ

কেরে নাই। পরে জানা গেল বে

ঐ গৃহে কতকগুলি কাঁচা পোঁরাজ বুলান ছিল। উহার বায়ু বড় উপকারী, সংক্রো-মক রোগ দূর করে। দেইজ্ঞ ঐ গৃহ-স্থেরা রক্ষা পাইয়াছিল। পরীক্ষা করিয়া দেখিলে হয়।

৬। ফুল্সকাপ কাগজ সকলেই দেথিয়াছেন, কিন্তু কেন এই নাম হইল, তাহা অনেকে বোধ হয়, জানেন না। ইংলত্তের অধিপতি-->ম চাল্দ ১৭শ খঃ অব্দে একটা কোম্পানীকে কাগজ প্রস্তুত করিবার অনুমতি প্রদান করেন। কোম্পানী এই অনুমতি লাভে কাগজ প্রস্তুত করেন, সেই কাগজে জলের চিত্র দারা রাজকীয় চিহ্ন অক্কিত থাকেন। কিছুদিন পরে ১ম চার্লস বিপক্ষপক্ষধারা নিহত হওয়াতে সাধারণতন্ত্র প্রতিষ্ঠিত হইল। সভাপতি ক্রমওয়েল ইংলণ্ডের শাসন ভার গ্রহণ করিলেন। তাঁহার সময়ে রাজনিদর্শন সমুদায় একে একে লুপ্ত হইতে লাগিল। রাজ্চিত্র থাকিবে কেন্দ ক্রমওয়েল অনুমতি করিলেন, কাগজে থাকিতে পারিবে না, বরং তৎপরিবর্জে ঐ স্থলে গাধার টুপি বসাইতে হইবে। দেই অবধি শাসন পরিবর্ত্তন হইলে ও ঐ কাগজে ফুলদ ক্যাপ অর্থাৎ বোকা গাধার हेली वावज्ञ इहेश वाजिष्ट ।

৭। অষ্ট্রিয়ার রাজধানী বিয়েনা সহরে একটা নারীর হৃদ্যত্তে পীড়া উপস্থিত হইয়াছে। তিনি সর্কাদা স্থাদ্-কম্পানের সঙ্গে সঙ্গে অভি সুমধুর তান- লয়বৃক্ত বাতের স্থার স্বর ওনিতে পান। সেই স্বরে তিনি মাতোরারা হইরা পড়িয়াছেন।

৮। আজিকার মাটাবিলি নামক
অসভ্য, জাতি বিশ্বাস করে যে মৃত্যু ইইলে
মানবান্ধা বৃষ,সর্প অথবা মহিষ প্রভৃতি
জন্তর দেহে প্রবেশ করে এবং সংসারের
চহুদিকে পরিভ্রমণ করিয়া থাকে।
জীবিত কালে যদি কেহ শত্রুর শত্রুতার
প্রতিহিংসা করিতে না পারিয়া থাকে,
তাহা হইলে মৃত্যুর পর ঐ সর্প প্রভৃতির
আকৃতি ধারণ করিয়া ঐ শত্রুকে দংশন
করে বা হত্যা করিয়া প্রাকে। কাহার
হঠাৎ সর্পাঘাতে বা মহিষের শৃক্ষাঘাতে

মৃত্যু হইলে তাহার। বিশাস করে, তাহার শক্ত তাহাকে মারিয়া ফেলিয়াছে।

ভাষার শক্ষ তাহাকে মাারয়া কোলয়াছে।

১। নারী জাতি সৌন্দর্য্য বর্ধনের জন্ত
এমন কোন কার্য্য নাই যাহা করিছে
প্রস্তুত্ত নহেন। ফ্রান্স দের্দের রমনীরা
সৌন্দর্য্য বাড়াইবার জন্ত পশুহত্যার
সময় ঐ পশুর রক্ত পান করিয়া থাকেন।
সম্প্রতি কোন ব্যক্তি প্রকাশ করিয়াছেন
বে, কাঁচা পেয়াজ সেবনে সৌন্দর্য্য
বর্ধিত হয়। এই সংবাদে কোন কোন
সভ্য নারী মহলে আনন্দের রোল উঠিয়াছে, তাঁহারা কাঁচা পেয়াজ সেবন
করিরা দেহ পৃষ্টি ও লাবন্য বর্ধন
করিবেন!

বর্ষ-শেষ চিন্তা।

১। এক বংসর কাল আমার ছিল, এখন আর আমার নাই। আবার যে এক বংসর আমার হইবে, কে বলিতে পারে!

২। ঈশবের দ্যা অপাদ ও অনন্ত।
পলকে পলকে, দণ্ডে দণ্ডে, দ্বিনে দিনে,
নালে মাসে কত তার দ্যা লাভ
করিয়াছি ! এক এক পলকের দ্যার জ্ঞ ফুভজ্ঞতা সংবৎসর কাল দিয়াও শেষ করা
যায় না, সংবৎসরের দ্যার জ্ঞা কৃত্জ্জভা
প্রকাশ করা কিরপে সম্ভবে ? হুদ্র—
ভন্নী প্রতিক্ষণ তাঁহার প্রশংসা ধ্বনিতে
ধ্বনিত হউক, প্রত্যেক নিঃখাদ প্রখাদ
তাঁহার দ্যাল নাম কীর্ত্রন করক।

৩। জীবন পরীক্ষা করিয়াকে না

অনুতাপ করিবে ? কত কাজ কর্ত্তব্য ছিল, তাহা করি নাই; কত কাজ অকর্ত্তব্য ছিল, তাহা করিয়াছি। মলিন, অজ্ঞান, চুর্ন্বল মানবেৰ জ্রুটি ও অপরাধ অপরি-মেয়। তবে ভরুদা এই ঈশবের দ্যার পরিমাণ ইহার অপেক্লাও অধিক এবং ভাঁহার ক্ষমার সীমা নাই।

৪। অঞ্সিক্ত না হইলে মাসুষের চক্ষু পবিত্র হয় না। অনুতাশের অঞ্চতে স্নান কয়, শরীর য়েমন নির্মাল হইবে, চিত্ত সেইরপ বিভদ্ধ হইবে।

বয়দ য়ত বৃদ্ধি ৼয়ৢতেছে, আয়ু
 ততই ফায় হয়তেছে এবং ততই আয়ৣয়া
 মৃত্যুর সয়িহিত হয়ৢতেছি।

७। हात्र कि कृःश्वित्र विवन्न, स्व

পরিমাণে বয়োর্বন্ধি হয়, তাহার সঙ্গেসঙ্গে জীবন সে পরিমাণে উন্নত হয় না, কিন্তু পাপ ও অপরাধের সংখ্যা বাড়িয়া থাকে।

१। আমাদের পূর্বপুরুষেরা যেমন এদেশে বিদেশী পথিক ছিলেন, আমরাও সেইরপ। আলি হউক, কালি হউক, তাঁহাদিনের তায় আমরাও এখান হইতে চলিয়া যাইব। পৃথিবী যে পান্থশালা, সেই পান্থশালা পড়িয়া থাকিবে।

৮। ধর্মসাধনের জন্ম ভবিষ্যতের উপর নির্ভর করিবে না। "কোহহি জানাতি কস্যাদ্য মৃত্যুকালো ভবিষ্যতি।" কে জানে অদ্য কাহার মৃত্যু হইবে ?

১। জগতে তুইটী মাত্র সত্য গ্রুব
সত্য:—(১) মৃত্যু, (২) ঈশর। মৃত্যুতে
ইহিক জীবনের সকলেরই শেষ, ঈশরে
অনন্ত জীবনের আরস্ত। মৃত্যু ছায়া, ঈশর
বন্ধ; মৃত্যু মিথ্যা সত্যু, ঈশ্বর সত্য দত্য।

১০। বৎসর পুরাতন ও নৃতন হয়,
কিন্ত ঈশ্বর চিরন্তন। তাঁহার মহিমা
ও ক্রণা নিত্য নবভাবে প্রকাশিত
হইতে থাকিবে।

১১। হে জীবনের কর্তা ঈশ্বর! আমা-দের গণা দিন আমরা যেন সর্বাদা স্মরণ রাথি এবং জীবনের প্রত্যেক বিন্দু সময় জ্ঞান ও ধর্মা উপার্জনে এবং তোমার করুণা স্মরণে যেন নিয়োজিত করি।

১২। হে প্রভু! মানব জীবনকে
অনিত্য ও অসার করিয়া তোমার
জ্ঞানের ও করুণার পরিচয় দিয়াছ, তাহা
না হইলে নিত্য ও সার বস্তুমে
তোমাকে আমরা অন্তেষণ করিতাম না
এবং দেবতার স্লায় অমর জীবনের
অধিকারী হইয়া নিত্যকাল তোমাকে
সম্ভোগ করিবার অধিকার পাইতাম
না।

ন্তন সংবাদ।

১। বাঙ্গালার স্থাসিদ্ধ উপ্যাস লেখক ও স্পতিতবর বাবু বঙ্কিম চল্র চট্টোপাধ্যায় গত ৮ইএপ্রেল বহুমূব রোগে মানব শীলা সংবরণ করিরাছেন। বঙ্ক-মান্তা একটা অম্ব্যুরত্ন হারাইলেন।!

২। অধ্যাপক রো দাহেব ও ভাঁহার ত্রীর উদ্যোগে কালা বোবাদিগের স্থলের সাহায্যার্থ টাউন হলে এক "কনদাট" হইরাছিল। রাজপ্রতিনিধি, লেডী এল-শিন্ধ তালভী ইলিয়েট ইহার প্রতি-পোষকতা করেন। ইউরোপীয় ও দেশীয় অনেক সম্ভান্ত লোক ও ইংরাজ মহিলা ইহাতে উপস্থিত ছিলেন। ইংরাজীব্যাও বাজে াবং কয়েকটী সাহেব বিবী গান বাদ্য ও অভিনয় দার। সভাস্থগণের আনন্দ বর্দ্ধন করেন। সার রাজা সৌরীক্র মোহন ঠাকুরের সঙ্গীত সভার সভ্যগণ ভ্যাসভরঙ্গ ও দেশীয় একভানিক বাদ্যে শ্রোভাগণকে আমোদিত করেন। কালা বোবাদের কথা বার্ছা শুনিয়া সকলে চমৎকৃত হন।

৩। বিলাতের কতকগুলি বিবি

ভলন্টিরার (সধের স্ত্রী সৈনিক) ইইবার
জম্ম কৃতসংক্র ইইরাছেন। ইহারা লগুনে
সভা সমিতি করিরা উদ্দেশ্য সিদ্ধির
চেষ্টা করিতেছেন। বহিঃশক্র কর্তৃক
আক্রমণের সময়—দেশ রক্ষা করিতে
পারিবেন এই ইহাদের আশা।

৪। বাঁকীপুর ডিল্পেলারী দংশ্লিই একটি অন্তচিকিৎসাগার নির্মাণের অক্ত ভ্রমরাওনের মহারাজ ৩৬০০ টাকা দান করিয়াছেন। ছোট লাট বাহাত্র এলভ মহারাজকে দাধুবাদ দিয়াছেন।

বামারচনা।

ভিক্ষা।

সনীডে বসিয়া পাখী পঞ্মে উঠিল ডাকি দে কাকলী ধারা পূর্ব ঘারেতে ছুটিল; চন্ত্ৰিক ক্ৰচিয়া উষা, পরিয়া কনক ভূষা, মোহন ব্যুন খানি অঙ্গেতে আঁটিল: চম্পক অঙ্গলি দিয়া আঁথি ছটা রগডিয়া শশব্যক্তে ভ্যোময় ছার সরাইল। হেরি সে মোহিনী ছবি হাসিয়া উদিল রবি, সে রূপছটায় দশ দিক উজলিল। মছল সমীর কোলে नवीना वज्जती त्माता : পরাণ নিভত কক্ষে করে হায় ! হায় ! কি খেন মাথিতে চিভে আত্মা উপহার দিতে কাহারে খুঁজিছে মন কারে বেন চায়। কোধা সে হারাণ জন ! আকুল ব্যাকুল মন ধরি ধরি করি তায় ধরা নাহি বায়, আবছা আবছা মত কতবার দেখেছিত, ধরিতে গেলেই মিশে মহ। শুন্তভায়। তাঁরে কলনা দেখিতে পায় হৃদর ধরিতে যায়

কিফ বিশ্বস্তর ভার না পারি সহিতে. আন্ত তুরবল হিয়া কিরে আ'দে ছেডে দিয়া ধমনী শিরায় বজে আকাজা মাখিতে. পরিণাম আকার্ক্কার নিরাশার অন্ধকার कीवत्नद्र भतिनाम मतन (यमन, ष्यत्वाध, উमोम मन তবু চাহে অফুক্ণ। চাত্তক, করুক ভিক্ষা যাবৎ জীবন ; ছোট খাটো হাদি ভ'রে রাখিতে সে বিশ্বস্তরে. করুক করুক ভিক্ষা শত শত বার, যদিই চাহিতে হ'লেগ মন মৃত ভিকা ভালো যে ভিকার করিতে হবেনা ভিকা **আর**।

8

সে ভিক্ষা পাইলে ভবে
আকাজ্জা ত নাহি রবে,
অ্বদয় হইবে সদানন্দে ভর পূর,
কল্পনা পরাস্ত করি
সে জ্যোতি ক্রদয় ভরি
রহিবে, পলাবে যত অভাব অস্মর।
মানস-অমরাপুরে
ভীবন মাতানো স্থ্রে

'এই বিশ্ব আমারই
আমি ও বিশ্বের হই''
বিশিরা আনন্দে প্রাণ ধরিবে স্থতান।
বদি সে পরম ধন
ধরিবারে চাও মন
কর কর ভিক্ষা তবে মনের মতন;
ভিক্ষা দরিভের বল
ভিক্ষা দীনের সম্বল
ভিক্ষা বিনা মনোর্থ হবেনা পূর্ণ।
' শ্রীকুর্দিনী রায়।

শিশুর হাসি!

শিশুর স্থন্দর হাসি
কি মধুর মরে থাই।
তেম্ম স্থন্দর ভবে
আরত কিছুই নাই!
পেথেছি বসস্তকালে
গোলাপ বেলীর হাসি,
কিন্তু এর মত নয়
ভাহার স্থ্যমারাশি;

শারদে চাঁদের হাসি করিয়াছি দরশন. দেখেছি জোনাকী হাসি ভরিয়া নয়ন মন: দেখেছি জলের হাসি গঙ্গার পবিত্র গায়. সে স্বয়মা কিন্তু নয় এ শোভার তুলনায়; प्राथिष्ठि विकली शामि গগনে মেখের কোলে. দেখেছি বর্ষার হাসি मृश् रक कि। रक कि। करन ; দেখেছি নলিনী-হাসি घटव वाल-ऋर्पग्रामय. কিন্ত ইহা শিল হাসি সনে কভু তুল্য নয়! ওরে নিদারণ বিধি কি বিধি তোমার হায় ! একটী শিশু রতন **ंक**न नां फिल्म श्रामाय १ জ্রীনতী নগেল্ল বালা মুস্ফোফী যাজপুর।

১৩০০ সালের বামাবোধিনীর নিয়মানুসারে সূচিপত্ত।

| ১। বামাবোধিনী ও জীশি | का। |
|-----------------------------|-------------|
| विवन | পৃষ্ঠা |
| न्तवर्ष | ၁ 80 |
| ৰামাবোধিনীর ত্রিংশ জম্মোৎসব | \$ 25 |
| व्यक्तिमन | >28 |
| ৰামাৰোধিনীর মছোৎস্ব | 3305 |
| বৃদ্দাদিগের রচনার নিমিত | |
| বাবু বেজমোহন দত ভাপিত | |
| পারিতোধিক | >>< |

২। নারীচরিত ও নারীজাতির সংকীর্ত্তি।

| বি ষয় | | बे |
|----------------------------------|--------|-----------------|
| াববর বিলাভি মহিলাগণের কার্য্য | 7 | 8 آها |
| আর্য্য মহিলা—স্থমিতা | ••• | 9 |
| व्यापर्य हिन्दू त्रम् । — मुक्ट | কশী | ৩৪ |
| রজকী সমিতি ··· | ••• | دی |
| মহারাণী সীতাবিলাস | ৬৮,১০৮ | 7,565 |
| স্ফাতার অপূর্ক কথা | | 90 |
| शार्डचाषीयत्न मातीत्र वीत्र | ₹ | 350 |

| | WE WILL |
|-------------------------------------|------------------------|
| विषय शृष्टी। | বিষয় |
| একটা বিজ্বী নারীর মৃত্যু সোভাগা ১৮৮ | পথত্ৰান্ত লোক ঘোট |
| विवि कामणे २२৯,२৮১,७१८ | क्रीय-वश्या |
| লেডি হেনরি সমারসেট ২২১,৩২৫ | শ্লেট্ |
| বালিকার আত্মবিসর্জ্ঞন ৩০৯ | তাপমান ষয় |
| প্রহলাদের মা ৩২১ | বর্ফ মিশ্রিত জ্ব |
| | মানব দেহ |
| ৩। ধৰ্ম ও নীতি। | পুরুষ ও খ্রীলোকের ব |
| উদাসীনের চিম্ভা ১৫,৪০ | তারতম্য |
| বিবাহিতা কন্মার প্রতি উপদেশ 👊 👊 | নি জ া |
| স্বার্থে পরার্থ ৬৬ | ৰিবিধ-ভত্মসংগ্ৰহ |
| নারীচরিত্রের গুণকীর্ভন ৯৩ | স্টি প্রক্রিয়ার রহস্য |
| মহধাকা ১৮৮ | ধ্বনি বা শব্দ বিজ্ঞান |
| নীতি কণ্ঠহার ১৪৪,২৫১ | পক্ষীর স্মৃতিশক্তি |
| প্রক্ষন্ত ১৭৭,২১• | বার্মেসে |
| हेळ विद्याहन गैरवान २२७ | হ্য |
| প্রভুর প্রতি কর্ত্ব্যপরায়ণত। ২০১ | |
| পুল্রশাকে সায়হত্য৷ ২৪৬ | व। स |
| নীতিশিকা ২৫৯ | ইয়োয়োপে প্রচলি |
| শোকের শাস্তি २१६,७∙৫ | কুশংস্কার |
| र्भारवाशी थाञ्चवस्रा ७७१ | ক্যথানি চিঠি (ঘটক |
| দাম্পত্য ধর্ম 👑 ৩১১ | ভাত্ৰিতীয়া |
| বৰ্ষ শেষ-চিন্তা ৩৭৯ | বাঙ্গাৰতায়া |
| | 2 55,2 ob,236, |
| 8। বিজ্ঞান। | अथान विहात |
| विधयः। शृष्टी। | শাহার সম্বন্ধে বি |
| कृषिङ्च २५,৮४,२४७,२৮२ | বিভিন্ন ক্রচি |
| ভাড়িভ ৰাৰ্ছাব হ ২০ | উৎকলের অনার্য্য শূত্র |
| জাপানে কপ্ৰ বৃক্ষ ৪৩ | বিবিধ ভ্রসংগ্রছ |
| व्यातासङ्ख् ४৮,৯২ | দেশাচার ও সংস্থার |
| मूर्व (टेनिस्कें) ६२ | |
| | |

| বিষয় | | পৃষ্ঠা |
|---|-----------------|-----------|
| পথভান্ত লোক ঘোরে কে | F 9 | €-9 |
| कीव-दश्या | , | €8 |
| শ্লেট্ | ••• | >8 |
| তাপমান যন্ত্ৰ | > | •≈,₹১€ |
| বরফ মিশ্রিত জন | ••• | 728 |
| मानव (पर | ••• | >>'€ |
| পুরুষ ও ধ্রীলোকের জ্ঞানে | छ रत्र त | |
| তারতম্য | | >4. |
| নিজা | ••• | >45 |
| ৰিবিধ-ভত্তসংগ্ৰহ | ••• | ap 5, |
| স্ ষ্টি প্রক্রিয়ার রহস্য | 3 | 690,96 |
| ধ্বনি বাশস বিজ্ঞান | 9. | ,088 |
| পক্ষীর স্মৃতিশক্তি | • • • • | 989 |
| বার্মেসে | ••• | 908 |
| হ্য | ••• | ७७४ |
| American | | |
| ৫। प्रभाग | র। | |
| ইয়োলোপে প্রচলিত ব | विष्ठा | |
| क्मःकात्र | ••• | ८६ |
| কয়থানি চিঠি (ঘটকালী) | ••• | > • |
| ভাত্বিতীয়া ৭৬,: | 00,58 | 10,590 |
| বাঙ্গালা প্রবিচন ২৫,৫০ | ,৮8, ১ ३ | .,, 5 @ ₹ |
| ১ ৬৯,২ ০৮,২ ৪৫,২৮৩,১ | ১৯০,৩৩ | 2,046 |
| व्धवान विठात २ | ०७,२७ | ৯,२५৯ |
| শাহার সম্বন্ধ বিভিন্ন জ | তির | • |
| বিভিন্ন কৃচি | • • • | ₹3₩ . |
| উৎকলের অনার্য্য শৃদ্র | ••• | ₹82 |
| বিবিধ ভবসংগ্ৰহ | ••• | D.O. |
| দেশাচার ও সংকার | ••• | 1014ª |
| *************************************** | | |

| ৬। ইতিহাস ও দেশজমণ | |
|--|---|
| विषय | পृष्ठी प्राक्रकभात कवि २७७ |
| নর্হত্যা ১৭,৫৯ | |
| সৌভরি-চরিত | ৯৮ মুক বধিরের জন্ম প্রার্থনা ৩৬২ |
| প্রত্যা ১৪৮,২০০,২ | |
| होनकांश्नि ১ ৪৮,२००,२ | |
| वानक प्राक्तव धवः छनविवि > | |
| ्रां चात्र छीत्र देहगी ১१ | «) > · < \ |
| चाकत भत्रम् ১०२ | रमञ्ज ऋक्त् ७३ |
| वादेरवन वाच ००३ | (भोकाको खाउलांच (शह ५३ ५५ l |
| - | মা (পত্য) ৬২ |
| १। छेलनगरा | হতাশে " ১৬ |
| तकशृंह ४२ | ভিখারিণী " ১২৮ |
| मडी ७ गाँछ ১२ ৪,১ ৫ ৪,১৮১,२७৪,०৬৮ | বিজনে " ১৫৯ |
| २ ५४,७५७,०७०,७७৮ | ফটো বিচার " · · ১৭০ |
| थटचात्र ब्लूब २८२,२७२ | भनारक ह त्स्वत होशो ,, ১৯১ |
| ছোট বৌ ৬১২ | ভাতৃষিতীয়া " ২২০ |
| | অভাগা বালক ,, ২২০ |
| ৮। বিবিধ। | আমন্ত্রণ " ২৫৫ |
| সংক্রিপ্ত পঞ্জিকা ১ | ष्यश्रिकन काश्नि ,, २०७ |
| . वामन व्यनामी . ३৯,8४,२७१,२७१,७०२ | স্থ নিকেতন (দছা) ২৮৬ |
| भनाम् (राष्ट्रभूना ७० | রুঁটির বর্তুমান অবস্থা,, ২৮৭ |
| র্বাং লিকার উত্তর ৮৯ | প্রীতি প্রতিমা ,, ৩১৯ |
| व्यतिहरू | নবলাট আগিমনে " ৩২০ |
| স্বরসাধন প্রণালী ৩৩৪,৩৭৩ | वम्रख , ७८२ |
| প্ৰসাহেব ১৩৮ | ভিকা ,, ৩৮) |
| ক্ষলিকাত। মৃ ক্বধির বিদ্যালয় ৩৪৯ বিবিধ ৩৭৭ | শিশুর হাসি ,, ৩৮২ |
| াৰাবধ ৩৭৭ | |
| ৯। পদ্য। | ১১। সাময়িক প্রসন্থ। |
| मात्रर्ष्किलिः १८ | 8, 99, 54, 59, 192, 551, 139, 224 |
| সুমপাড়াইবার গান ৮৭ | २६१, २৮३, ७२১, ७६७। |
| रकनात्रमा ১১७ | ১২। নৃতন সংবাদ। |
| भात्र (कारन भात्र ১২১ | |
| মন ভূমি হওনা রাজা ১৮৩ | २.৫৩, २४८, ७४४, ७७४, ५४४, ५४०, २४७, |
| जाडो इंगे २०० | |
| লাঁধারে অলোক 🗼 👬 ২৩৬ | > । श्रुखकामि नमात्ना । ' |
| (करना ना ना २०० | ا ۱ ا ۱ ۱ ۱ ۱ ۱ ۱ ۱ ۱ ۱ ۱ ۱ ۱ ۱ ۱ ۱ ۱ ۱ |

বামাবোধিনী পত্ৰিকা।

BAMABODHINI PATRIKA. कन्यायवं पासनीया विश्वसीयातियवतः।"

কন্তাকে পালন করিবেক ও যত্নের সহিত শিক্ষা দিৰেক।

18645 AD-CO

| | म | | ३२ धुरा | make as whosh as or re- | } | | বৈ | শাখ | >0 | ۰>- | − <i>c</i> × | 1 > 6 |
|----|-------|-------------|------------|-------------------------|--------------|-----------|-----------|-------|------------|-------|--------------|---------------------|
| - | •7 | 4 | •t•, | কা | শ্ৰ1 | ভ1 | অ | | - | | | |
| | , | 3 | লো | 3 | মে: | যু | त्र | ग्र | ক্ষ | প্ত প | ি | 71 |
| | • | > | će | э २ | <i>دو.</i> | 9) | э. | | | | ाल । | |
| | • | এ | ৰে | জুৰ | জু | স! | শে | · · | . • | 4 | ->c | 1 242 6 , |
| | | শ্ব | ম | *3 | • র | 3 | 4 | | | | , সক জ-৬১ | |
| | و | • | 2) | 9. | . 9 5 | 95 | ·9• | | | | | |
| - | :• | 3 | :গো | 7 | সে! | इ | র | 2+ | ь | 26 | २२ | २३ |
| | • | 4 | ষ | • | ম | 3 | শে! | ₹† | è | 35 | ર ૭ | ٠. |
| | | ব্ল | ব্ | = | षू | 7 | ম | • | ٠. | 54 | ₹8 | 95 |
| | . (| স | রূ | ব্ | 3 | 3 | ৰু | 8 | >> | 22 | २¢ | .95 |
| | | 7 | 4 | সে! | 9 | মে | . 1 | • | ۶ ૨ | . 35 | २७ | 1. |
| | | বু. | 4 | ষ | 4 | 7 | 3 | 6 | \$ ·9 | 4. | ২৭ | |
| | | 7 | র | বু | র | 1 | * | • | 38 | 42 | 26 | |
| | ζ | ₹ | 185 | অগ | 4 | 91 | या | 3 | | | | অ!রম্ভ |
| * | 9;4: | 8 | ર | \$ | 24 | 45 | . ર¢ | | | ð. | | - रेक है > फ़िरन |
| 9 | (: | ٩ | • | 8 3 | (-0) | •• | ۹ ۵ | | | | | ৰিবাঞ জ্যাদি |
| 3 | (*e*) | > | 74 | >• | >• | ેર | >• | | | | | ত।।।দ ব শনি |
| 9 | म: ३ | • | २ऽ | 23 | >+ | 34 | >« | | | | | নোম দি। |
| 1 | ta: | - < | L | कावनी | , শৃ:- | -পূৰি | ষা। | :देव | 77 | Si v, | >e, : | १२, २४ |
| 1 | Ma:- | _= | F# &1 | गरनी | T: ~ | ্ ভাষা | गार्थ | | | | r, ·>e | , ૨૨ |
| _' | | • | , 7 | | , | | - a. aid. | 23, 1 | ভো | 11 | | |

| ব্ৰ | (' 41) | হ্ম ৬ | ৱ- ৬ ৬ | 2 | |
|-------|----------------|--------|---------------|---------------------------------------|----|
| | b | 50 | ર ર | ₹ ≥ | - |
| ₹† | ä | 35 | ર ૭ | ٠. | |
| • | ۶. | 54 | ₹8 | 95 | |
| 8 | >> | 22 | ર¢ | .95 | |
| • | 3.8 | . 32 | २७ | Pa . | |
| • | 3.9 | 4. | 29 | | |
| 9 | >8 | 42 | २४ | magning are provided to the Parker Fo | - |
| os fi | न न न | तत्रं। | रेका- | य!द्रष्ठ. - कि हे > भित्न | 13 |
| | | | | विवादम | |
| | | | _ | ত্যাদি। ব শনি, | 7 |
| | | | লাঠ , ইতা | সোম দি । | 4 |
| :বৈ | 37 | S . | >4, | રર, ર > , રર, | 9 |
| 23, | | | | | 13 |

| | 41 | 0 | পো | 41 | 4.1 | LD . | |
|-------------|-------|------|----------------|-------------|----------------|------------|-----|
| | ৰু | 9 | 4 | গো | 4 | ₹. | |
| | •• | 4.5 | ٥. | २» ` | ৩٠ | o.(t | •) |
| | প্তা | न | ি | वा | (T : | • | |
| (| সে! | বৃ | ¥ | ਸ਼ - | 4 | 9 | |
| | ce | ٠. | ٥٥, | 97 | २৮ | 9 (0 | 2 |
| | 4 | 9 | 4 | সো | 4 | 4 | |
| | 享 | 4 | র | 4 | ৰ্ | • | |
| | • | র | সো | ৰু | 4 | 4 | |
| | = | সো | ম | ৰ | 4 | শ | |
| | ब्र | 4 | ą. | 7 | 7 | শে ্ | |
| | শে | 4 | (2. 4) | 4 | 4 | * | |
| | ম | ৰ | 9 | a | গো | . 3 | |
| | * | অ | পৌ | 41 | का | to | |
| * | 4:38 | 50 | 28 | , w | 4.8 | 48 | |
| 7: | 39 | 33 | 31 | 21 | 29, | 1 | |
| क :⊍ | : > | ٧ | . v | ٧ | ٠. | | 1 |
| | | | | |) ⁶ | | 1 |
| | | | | | | 47 | |
| a R | ne f | मेन, | | | | 150 | |
| 34 | क्ट्र | 41 | | | | Z | 4.5 |

কাত পৌষাকাটে

সাময়িক প্রসঙ্গ।

বাঙ্গালী কমিসনর—সিবিলিয়ান বাবু রমেশচন্দ্র গত বর্জনান বিভাগের কমিসনর পদে নিযুক্ত ইইগছেন। বাঙ্গালী করেক বংসর ইইতে জেলার মাজিট্রেট ও জজের পদ প্রাপ্ত ইইতে-ছেন, কিন্ত বিভাগীয় কমিসনর পদ পাইবার এই সর্বপ্রথম দৃষ্টান্ত। মহারাণী ও রাজপ্রতিনিধি লর্ড এলগিনের জয় হউক।

ইংলতে এখন এত অন্ধলোক শিক্ষিত
ইংলতে এখন এত অন্ধলোক শিক্ষিত
ইংলছে, যে তাহাদের জন্য সংবাদ
পরের প্রয়োজন হইয়াছে। ১৮৮২
গালের জুন মাস হইতে ''Weekly
Summary নামে ০ পেনী দামের একখানি সাপ্তাহিক পত্র প্রকাশিত হইতেছে।
ইংগর অক্ষর সকল উঁচু উঁচু, ইহাতে
ক্রীছের আবশাক সংবাদ সকল থাকে।
কালা বোবারা শিক্ষিত হইলে তাহাদিগের
জন্যও ক্রেমে উপায় হইবে স্থেম্বহ
নাই।

ইউরোপ প্রবাসী বাদালী—
সময় এক তালিকা দিয়াছেন, তাহাতে
দৈবা নায় প্রায় ৫০টা বাদালী হিন্দু
সন্তাম বিলাতে আইন, ভাক্তারী, বা
কানাঠা বিভাশিকা করিংতছেন। ইহাঁধ্যের মধ্যে ১ কম ইইনগীতে চিত্রবিদ্যা
বিশিতভ্যের ।

কৃতিক জ্রীশিক্ষা—ক্রাফে গ্রন্থ কর্ত্তীর সংখ্যা ২:৩০, ইহাঁরা গত বংসরে ১২১১খানি গ্রন্থ প্রচার করিয়াছেন। ইহাঁ-দের মধ্যে ২১৭ জন শিক্ষয়িতীর কার্য্য করেন।

ইনকম্ট্যাক্স—বঙ্গদেশ ইইতে গত বংসর ৪০ লক্ষ টাকা আরকর আদার হইয়াছে। ভারতগবর্ণমেণ্ট ইহার অর্কুল্য লইয়াছেন।

কিনভাষী—পৃথিবীর চারিকোটী লোক চিন ভাষায় কাথাবার্তা কয়। আর কোন ভাষা এত লোকের ব্যবহারে আসে না।

স্ত্রীসংখ্যা হৃদ্ধি—বর্ত্তমান সময়ে পৃথিবীতে পুরুষ অপেক্ষা স্ত্রীসংখ্যা যেরপে বাড়িতেছে, তদহসারে এক জর্মণ পত্তিত গণনা করিয়া দেখিয়াছেন ৩০০০ বংসর পরে এক একটা পুরুষের স্থলে ২২০টা করিয়া স্ত্রীলোক হইবে । ইহার জন্য হুর্ভাবনা রুখা, মানবের অপেনা হৃষ্টির জন্য কৃষ্টিকর্ত্তারি চিন্তা কি অধিক নয় ?

বিবি বেজাণ্ট—গত নবেছর

হইতে মার্চ্চ মান পর্যান্ত ভারতের নানা
হানে ভ্রমণ করিয়া ১২০টার অধিক বক্তৃতা

করিয়াছেন। ভাঁহার অসাধারণ বাগ্যিভার শ্রোড্বর্গ সর্বাত্ত বোহিত ক্রিয়াছেন।

স্ত্ৰীডাকার—শ্ৰীমণী কাদম্বিনী গান্দুনী বি. এ, বিনি বিনাতে চিকিংসা भिका मुबाशन कतिहा धन, चात, ति.शि. এল,আৰ,সি,এস প্ৰভৃতি উপাৰিতে ভৃষিতা হইয়াছেন, তিনি ছোটলাটের আদেশে ইডেন হাসপাতালে বাহিরের সকলকে দেধিবার ভার প্রাপ্ত হইরাছেন। । ছিলেন, পরে দার্ন্সিংছে গিরাছেন।

বিবি টেলার—ডিকত ত্রমণ-काविनी विवि टिनात ३२ कन मधीत কণিকাতায় কিরিয়া আসিরা-সহিত

নব-বর্ষ।

ক্রয়েদশ শতাশীরে করিয়া বিদার. চতুৰ্ধ শতাৰ্কীর ওড সমাগম; একদিকে মৃত যুগ করে হায় হায়, ন্বযুগ আর দিকে খেলে ন্বোদ্যম। যা গিয়াছে কালগর্ভে ফিরিবে কি ভার। পুন্য শুন্নীর কোল পূর্ব কে করিবে 🔊 আধারে শুভির ২ফে বছে অক্রধার, অবিরত--অকুরস্তা, বল কে মুছিবে ? হা রামমোহন কোথা নব বঙ্গরবি, क्तवाथ, दावाक छ, ममन माहन, কোখায় রামগোপাল, কোথা ওপ্তক্বি, কোথায় ছারকানাথ, জীনধুস্থদন ! निशचत, मीमवजू, अकरक्रात्र, ছরিশ, গিরিশ, প্যারী, কোথা ক্লফদাস, काथाय जेबबरम नर्क छनाधात्र, কোথায় কেশব ধর্ম জ্যোতির উজ্াস! कार्यात्र हास्त्रम्, निवहम्म, भग्नाहीकान, बामनाबायन, विन्ताञ्चन क्लाथाय, বন্ধিম বঙ্গের পূর্ণ সাহিত্যের চাঁদ, ध्य ध्य मृत्व लात्र खहे ब्यन्त यात्र ।। যুগোংশীটনে ঢাকে আঁধারের ছায়, প্রনায়ে ব্রহ্মাণ্ড বুঝি পুন: লয় পায় !!!

অতীতের শবস্বন্ধে যুগ পুরাতন, অনস্ত আধারে মিশি বিলাপ আপনি. নব্যুগ নব বার্ত্তা করিয়া বহন, কুনাও জগতে আশা-আনাক্ষর ধানি। এ বিশ্ব-বিধাতা যিনি, নিত্য শীলাক্স. মহিমা কণিকা তার অতীতে প্রকাশ. দেখ নাই যাহা তাহা দেখিবে নিল্ট্স, অনস্থ ভবিষ্যে রাথ অটল বিশাস। মহাদাতা—মুক্তহন্তে স্যোতি পাৰ স্থা প্রেম পুণ্য সুধ শাস্তি কতই বিলার महर-कीरन, छात्रि कक्रगांत्र मान, মন্ত্ৰ সংকল্প নিজ সাধিতে ধরায়। निव ७क नाइम वाग्रीकि (वनवाम. वक जिला महत्रण दिख्ना भक्त, হোমার বার্ক্লিল দেবপীর কালিদাস. দ্বীন্ম দ্রোণ কর্ণ পার্থ বীর সেকন্দর। গোত্ৰ কণাদ প্ৰেটো সোকাৎ কমত, নীতা সভী সাবিত্রী মৈতেরী লীলা ধর্মা, কবি বাগ্মী ধর্মবীর কর্মবীর কত. কত বীরাজনা তার কে করে গণনাল নিংখাসে প্রকাশ বার নিখাসে বিলয়, কে করিবে তাঁর জ্ঞান শক্তির সীমা

যা গিয়াছে পুনঃ তাহা হইবে উদয়
নবভাবে, প্রচারিতে তাঁহার মহিমা।
এস এস নবষ্গ নববর্ষ সংথ
বিশ্বাস, আনন্দ, আশা জ্যোতি পরকাশ,
তব সচ্চে বিশ্বদেবে করি প্রণিপাত,
জীবনের ব্রত পালি পুণ করি আশ।

জননীর শ্ন্য কোল পূর্ণ হোক্ পুনঃ, জননীর অঞ্জল হউক মোচন, প্রাণভরি গাই সবে বিধাতার গুণ, নবভাবে তাঁর লীলা করিয়া দর্শন। ত্রয়োদশ জন্মদাতা যাও আশীষিয়া, চতুর্দ্ধশে পুণ্যলোকে যাইব চলিয়া।

পরলোকগত বঙ্কিমচন্দ্র।

গত ২৬ এ চৈত্র বঙ্গ সাহিত্য আকা- | শের উজ্জল চন্দ বাবু বিষ্কমচন্দ চট্টো-পাধ্যায় অন্তমিত হইয়াছেন। তাঁহার বিয়োগে সমগ্র বঙ্গসমাজে হাহাকার :**ধানি উঠি**য়া**ছে**। ইহা হইবারই কথা। তিনি একজন অসাধারণ প্রতিভাসম্পর লেখক ছিলেন। তিনি ৰক্ষীয় উপ-न्तास्मत्र रुष्टिकर्खा, धकथ। वलिलाई म्या হইল নাঃ তিনি একজন সিদ্ধহস্ত লেখক —বিজ্ঞান, কবিতা, ইতিহাস, ধর্মনীতি, **স্মালোচনা, যাহাতে হস্তক্ষেপ** করিয়া-ছেন ভাহাতেই ঠাহার প্রতিভার পরিচয় দিয়া পাঠকদমাজের চিত্ত আকৃষ্ট মোহিত করিয়াছেন। বহুদর্শন ভাঁহার প্রতিভার অক্যকীর্তি। তিনি রাজ-সেবার অধিকাংশ জীবন ক্ষেপণ করিয়াও বছসাহিত্যের বেরূপ শ্রীবৃদ্ধি করিয়াছেন. তাহাতে তাঁহার সমধিক প্রশংসা।

সাহিত্য সেবায় সমক্ষুজীবন উৎসর্গ কুরেন নাই বলিয়া তিনি নিজে তু:ধ কুরিয়া গিয়াছেন, ইহা করিতে পারিলে তাঁহা ছারা বন্ধ সাহিত্য যে আরও লাভবান্ হইত, সন্দেহ নাই। বন্ধদর্শন
প্রকাশ করিয়া তিনি একটী নৃতন
আলোক প্রাপ্ত হন এবং দেই সময়
হইতে তাঁহার জীবন ও কার্য্যের শুভপরিবর্ত্তনও লক্ষিত হয়। ধর্মই যে মানব
জীবনের শ্রেষ্ঠ উদ্দেশ্য এবং ধর্মচর্চাই
সর্বাপেক্ষা শ্রেষ্ঠতর চিতার বিষয়, শিক্ষিত
সমাজে তিনি এই মহাসত্যের সাক্ষ্যদান
করিয়া গিয়াছেন। মঞ্চলময় প্রমেশ্বর
ইহলোকে তাহাকে যেরপ কীর্ত্তিমান
ও যশ্বী করিয়াছেন, প্রলোকে তাঁহার
আন্মার প্রম শান্তি বিধান করুন।

বছিম জেলা ২৪ পরগণার অস্তঃপাতী কাঁটাল পাড়ার ভৃতপূর্ক ডেপুটী
কালেক্টর বাব্ ফাদবচন্দু চটোপাধ্যার
মহাশরের ভৃতীয় পুতা। তাঁহার জ্যেষ্ঠ
ও মধ্যমাঞ্জ বাব্ শ্যামাচবণ ও সঞ্জীবচন্দু
ভাহার পুর্কেইহলোক পরিভ্যাপ করেন।
ভাঁহার কনিষ্ঠ পূর্ণচন্দু ভাঁহার মৃত্যুশয্যার
উপস্থিত ছিলেন। ভাঁহার পুত্র সন্ধান

.

নাই, বিধবা পত্নী ও সন্তানের মংখ্য চুইটা কন্যা মাত্র আছেন। ৫৭ বংসর বয়সে বহুমৃত্র রোগে তিনি কলেবর পরিত্যাগ করিয়াছেন।

বন্ধিম বাবু চগলী কলেজে শিক্ষা লাভ করিয়া দিনিয়ার ছাত্রবৃত্তি প্রাপ্ত এবং তৎকালীন ছাত্রদিগের মধ্যে লক্ষ প্রতিষ্ঠ হন। তিনি প্রেসিডেন্সী কলেজে ভাইন অধ্যয়ন করেন এবং কলিকাতা বিশ্ব-বিদ্যালয়ে বাবু মহুনাথ বহুর সহিত প্রথম বিএ, পরীক্ষায় উত্তীর্ণ হন। বিভার ন্যায় ভাঁহার। চারি সংহাদক্ত ডেপুটী মাজিইটে পদ ভূষিত করেন, কিন্ধ তাঁহার মত উন্নতি ও রাজসন্ধান লাভে কেহই সমর্থ হন নাই। তিনি রায় বাহাহুর ও সি,আই, ইউবাধি প্রাপ্ত হন। বাল্যকাল হইতে সাহিত্যান্তরাগী এবং সাহিত্য-সংলাক্ষে পরিচিত। জীবনের শেষাংশ সাহিত্যংস্বাতেই পরিস্মাপ্ত করিয়াছেন।

বৃদ্ধিচন্দের বিয়োগে শিক্ষিত পুরুষ সমাজত আক্ষেপ করিবেনই, বৃদ্ধবিশার চিত্ত কিরূপ বাবিত ও আলোড়িত হইয়াছে, নিম্নলিখিত শোক্ষম্ভ হৃদ্যের উচ্চাস তাহার প্রিচায়ক।

শোক-সম্ভপ্ত-হৃদয়।

"——কত দিনে পুনরঃর, ফলিবে এমন রফু ?—ফলিবে কি ভার ং"

ওমা! অভাগিনী মাতৃত্মি! আজ মা, ডোর একি সর্কানাশের কথা ভনি-লাম ! ডোর নাকি মণিরছ খসিয়া

পড়িয়াছে, ভোঃ নাকি শেষ বধাসর্থাৰ ফুরাইরাছে, ভোর না ক বগীয় আছবুৰ চরি গিয়াছে—ভোর হৃদয়াকাশের পূর্ব চল তোর অহম্বার স্বরূপ 'ব্রিমচন্দ্র' নাকি তোৰ কোল শৃত্য করির৷ গিরাছে 🕆 আহা : সেই বন্ধিমচন্দ্র, সেই মাত্র-বন্ধের উজ্জ্বল রত্ন, বঙ্গ-দাহিত্যের নবঞ্জীবনদাতা, বঙ্গবাসীর নবজীবন-পথের-নেতা, রাম্বার বিশ্বস্থ, গৌরবারিত কর্মচারী—আহা সেই ব্রিক্সচন্দ্র, সেই একে "এক সহল্র" বস্থাকাশের প্রব নক্ষত্র, থাহাকে পাইরা বন্ধবাসী অহকত ইইয়াছিল, বন্ধননী গৌরবাবিতা হইয়াছিল, ভারতভূমির বক আঁধার করিয়া চলিয়া গিয়াছে! আজ আর ক দিবার ভাষা নাই। বভিমচ স্ত্রের অভাবে আমাদের জন্ম মির বে কত দর্মনাশ হইল, দে সব কথা বলিবার—সে সকল গুলি কথা বলিয়া প্রকাশ করিবার মাধ্য নাই! বাঙ্গালার সাহি**ড্যক্ষেত্রের** আজি দৰ্কনাশ হইল, আর দেধানে पूर्विननिनी, मुणालिनी, विषयुक्त, कमला-कान्छ, व्यानन गर्ठ, त्यवी दर्शभूतानी, সাতারাম প্রভৃতি অপুর্ব গ্রন্থ জ্মিবে নাং বাঙ্গালার দর্শন শাতের আজি সর্কনাশ হটল, যে মাথায় "বল-দর্শন" পতা জাগিয়াছিল, আজি সে মাধা লইয়া কেহ কবির ভাষায় দর্শন শাস্ত্র বুণাইতে বসিবে না। আ**জি বালালার** সামাজিক জীবনেরও সর্কনাশ আজি বৃক্তরা প্রীতির উচ্ছাসে ক্লেছ बाडीव बीवरन ह কৰ্ছব্য.

ক্র্যাণাসুধান, মানব্দীবনের সার্থকত! क्रियात वय मर्जमावात्रगटक উट्छिङ করিবে না। আজি বাকালার ধর্মজগ-(ভরও দারুণ ক্ষতি হইল, আর বক্ষিচন্দ্র স্তু ধর্ম উদ্ধারের জন্য ধর্মতবের অনুত-ম্মী ব্যাখ্যা, কৃষ্চ্রিত্রের অমৃত্য্ধী ব্যাখ্যা, ভগবালীভার অমৃতম্বী ব্যাখ্যা, প্রচার করিবে না। তাই বলিতেছি রভিমন্তলের অভাবে আমাদের যে কত नर्सनाम दहेत. त्म कथा वित्तात ভाषा মিলে না। গোপাল বাবুর মত মাতুর মরিলে ভাহারই জীর সিঁথির সিঁহর মুছিয়া শায়, ভাহারই বস্তান ও পোষ্য-হ্র্ব লোকাকুল হইয়া থাকে, কিন্তু আমা-দৈর ৰভিষ্ঠভেল্ল সহধ্যিণীর সিঁথির সিঁত্র মুহিয়াছে বলিলা, আমাদের বান্ধন চন্দের ক্যাগণ পিতৃথীনা হয়াছে ৰলিয়া আজি আনরা সকলেই বহিয়া विश्वाहि। आमारमञ्ज मा'त-कामारमञ চিরত্র:থিনী হক্ত জননীর সৌভাগ্যের শৈৰ চিহ্ন মুছিয়া গিয়াছে ৷ মা আজি ভাতার কংনভারা, আদরের ধন বছিম-**চন্দ্রকে হারাইয়াছে!**

জাজি বঙ্গভূমির বক্ষে বিকমচন্দ্র নাই !- এ যে খত বছাঘাতের অপেনা ্নিশাকুণ শব্দ, বাঞ্চালায় আজি বঙ্কিমট্ল লাই ৷৷ আর মায়ের কোল আলো ুক্রিয়া "বৃধিন্দ্রন্ধ" থালিবে না! আর প্রকৃত্রাণ দিয়া মারের সকল অভাব পুর্ব করিতে চাহিবে না! স্বার একমাত্র প্রজের গৌরবে মা শত পুত্রবভীর অধিক

স্থ-বোভাগ্য লাভ করিবেনা! আর ব্হিম শ্রামস্থান রের বাঁশির গীতির মত, মধুর, বাসস্ত কোকিলের কাকলীর মত, দিগতপ্রাবী, নারদের বীণাঝকারের মত পবিত্র মাতৃগাথা মাতৃ-স্তোত্ত শুনাইবে না। আর দিগদিগন্তে অমৃতস্রোত ছুটাইয়া "বলে মাত্রম" গীত প্রবাহিত হইবে না ! আর মাতৃভক্তির উচ্ছাসে 'বাহতেমা তুমি শক্তি, হৃদয়ে মা তুমি ভক্তি" গাহিয়া পারর প্রাণে মাতৃভক্তি জাগাইয়া দিবে না। আর সর্মায় পণ করিরা মাতৃপূজা করিতে কেহ শিক্ষা দিবে না!—তাই বলিতেছি ওমা! জন্মভূমি! ওমা! ব্দিন্চন্দ্রের "পুজনা, পুফলা, মন্য়জ শীতলা" খ্যামাস্কলরি ! যে মুহর্তে ভোর ব্যিষ্ঠিমচন্দ্র জ্বোর মত ভোর নিক্ট इदे उ विनास सहसार , त्मरे मूह्र ई নৌ ভাগ্যরেখা শেষ গিলাছে ৷ বস্থাহিত্যের সংস্থানরা ংশ্বাসীও অতলদাগরে ডুবিয়াছি-আজি মারের কোল থালি অব্নাদের বৃক্ষিচনদ্ চলিয়া গিয়াছেন। আজ আর আনাদের দে বকিমচন্দ্র নাই !

ব্**কিম্চক্রের অভাবে আমরা বহি**য়া গিয়াছি!—এ সংসারে তোমার আমার মত প্ৰাণী কত আসে, কত ধায়; কিন্তু ্ছিমচ্জের মত মহাতার च्रामनवामी दहिया शिया शांक। रकन হহিয়া গিয়া **থাকে, সে কথা** কিছু বলি-তেছি। তুমি আমি জগতে আসি, খাই দাই, ঘুরিয়া বেড়াই, দিন সুরাইলে চলিয়া

दाहे, हेश्रंत्र खिवक खांत किछू कति ना। কাজে কাজে তোমার জীবাপুর জীবন মরণে প্রেকৃত পক্ষে সংস্ঃ-রের লাভ ক্ষতি বিশেষ কিছুই হয় না। কিক বৃদ্ধির মত মহাত্মাদিগের কথা স্বতর। তাঁহারা হুগতে আইনেন मिटक लहेश অপূর্ণ জগৎকে পূর্ণভার যাইবার হুলু, জগতের কাজ করিবার জন্য, ভগবানের ইচ্ছা পুর্ণ করিবার क्रमा। वीहात्। दक्षिमहत्स्त्रत धर्मध्य ७ প্রবন্ধলি পডিয়াছেন, তাঁহারা জানেন "শরীর মন ও আল্লার সর্লাংশে সম্পৃতি।" ইছাই বন্ধিমচন্দ্র "মানবজীবনের উদ্দেশ্য" বলিয়াছেন। ভিনি এই বিখান কর্তি যাহাহটক, সে সম্পুতি। পরিচালিত। লাভের জ্বন্থ ডিনি দৈবের বা অনুটের উপরে নির্ভর করিতে বলেন নাই, শহীয় মন ও জনয়ের শক্তি অনুশীবন, পরি-কুট e চরিভার্স করিতে পারিলেই বঙ্কিম বাবুর মতে মানবের সম্পৃতি৷ লাভ इहेट शादा। এই भारत फ मड रा স্ক্রিদি-সম্মত নতে তাহা আম্লা জানি, আমাদের মতামতের বিচারের দিন আলি नहर-यानदा अहे माज रति हा याजि-কার দিনে, বঙ্গালে, ব্যক্তিমচন্দ্রের জীবন বান্তবিকই অনেক অংশে সম্পূর। বঙ্কিম বাবু কবি-পত্তে নহে, বঙ্গভাষায় গদ্য कावा विकार एम्बर रही। वक्र छात्राव গদ্য কাব্যকার বহিমচল ভ্রজাপি অধি-তীর। বন্ধিমচক্রের ভাব, ভাষা, বিবয়-নির্বাচন, সবই বাঙ্গালা সাহিত্যে অভুল-

নীর। ইছোরা বৃদ্ধিনচন্দ্রের "স্**মানো**-চনা" পড়িয়াছেন, ভাঁহারা জামেন ভাৰ গ্রহণ করিতে, পরের প্রাণের বুকিতে, বক্তিমচক্তের কি অসাধারণ ক্ষমতা৷ বৃদ্ধিমচন্দু যেমন ভাবুকতার দেইরক্ষ ভাব-গ্রাহিতার বঙ্গবাসীর শীর্ষ-স্থানীর। वांकाता विद्यावत्स्य क्रमनाकाष्ट्र, लाक-রহস্য প্রভৃতি গ্রন্থ পড়িয়াছেন, বিভর্ম বসিক্তাৰ পরের চিত্র বিনোদন করিছে विक्रवित्व व्यालोकिक देनभूरगात शक्ति-চয় ভাষা । অবদাই পাইরাছেন। বৃদ্ধি-চন্দ কঞ্চবিত্রের এক স্থলে লিখিয়াছেন "আমি রাজনীতিজ নহি," কিন্ত ক্লক-চরিত্র ও বঙ্গদর্শনের অনেক প্রবৃদ্ধ সভিলে বুনিতে পারা বায় বন্ধিনচক্রের মত রাজ-নীতিজ, ব**ছিমচ**ালর লাৰ্শমিক মত এবেশে অতি অল গোকই আছেন। ব্যক্তিমন্ত্রে ভাঁহার শেব পুত্তকগুলিতে তাহার ধর্ম সুরাগের, তাহার ধর্মনীভিজ-णांत त्व +तिहत निवादक्त, **जाशांट** তাঁহাকে "দার্কভৌমিক ওক" বলিলেও অত্যক্তি হয় না। বদেশের ও বলাতির হিতাৰ্থে বক্ষিমচন্দ্ৰ বে আমানুষিক আম করিয়া শিয়াছেন, ভাষা বোধ হয় এখে-C43 অনেকেই क्षात्वम । এডবির. অর্থোপা ভিন করা মুস্বাবের প্রধান সহায় লানিয়া বক্ষিমচক অর্থোপ:র্জন করিভেঙ कथन विभूष इन नाहै। ब्रावकार्याप নিপুণতার রাজ্বারেও উচ্চপৌরব-মার राश्वत डेनावि नाउ कतिशारकः हि: मा ७ (बरवत बना कुट डाविकन जना-

রূপ বলিলেও আমাদের দেশের অনেকে প্রভাক করিয়া থাকিবেন, এদেশে বরিম চন্ত জীবিতকালেই যশসী। সেক্ষপীয়ার ক্রি-যশলাভ করিয়াছেন, জীবনের পরে: महिरकन मधुरुपन पछ कविश्य-लाङ ক্রিয়াছেন, সেও জীবনের শেষে: কিন্ত অদেশে বন্ধিমচন্দ্ৰ জীবিতেই তাঁহার মহতী অতিভার মহাপূজা পাইয়াছেন! দেবতার **মন্ত ৰশোলাভ** করিয়াছেন!তাই বলিতেছি. ৰ্শ্ব, জ্ঞান, ধন, ষণ, লোকণিকার উপ-যুক্ত ক্ষমতা, বৃদ্ধিনচন্দ্র সকলই লাভ করিয়া-ছেন-সকলেরই সংয় করিয়া গিয়াছেন। এমন স্থান পাইলে মাডা পিতা কুতার্থ হন, এমন স্বামী পাইলে ভাগ্যা কুতার্থা হন, এমন পিতা পাইলে স্থান কুতার্থ হন, এমন বন্ধু পাইলে বন্ধু রভাগ হন, অমন লোক দেশে জিমালে সদেশীয় মানব কুতার্থ হন, এমন লোক জগতে আদিলে মা বসুমতী কৃতক্তাৰ্থ। হন! এমন নিনিস-অমন দেবসুর্ল ভ অনুল্য রত্ন चामना चकारल, माठाझवर्ष वशरम हाता-ইলাম, তাই আমরা বহিয়া গিয়াছি! ভাই আমাদের এ শোক "অকুরন্ত" क देशारक ।

বভিমচক্র সাতার বর্ষ প্রমায় মাত্র পাইয়াছিলেন। কিন্তু সাতারবর্ষ পর-য়ায়ু পাইয়া তিনি বঙ্গভূমির, বঙ্গভাষার এবং রুজ্বাসীর উরতি ও অধ্থের জ্ঞা জাছা করিয়াছেন, তোমার সামার মত সাধারণ মানব সাত হাজার বংসর পর-রাজু পাইলে ও তাহা করিতে পারে না।

অতএব বকিম চক্ষেয়জন্য দিগদিপত্ত-(जमी, शांशकांत्रहे कति, विक्रम**हत्स**त অভাবই অনুভব জন্য অন্ত विक्रमहम्म-वक्रामा विक्रम हित्रिमिने জীবিত রহিবেন। মা'র "বঙ্কিন" মা"র কোলে অমর, অফেয়, হইয়া রহিবেন। र लिया हि मां व विक्रमहस्य धकारे धक महत्य ! य नित्क हाहित, त्मरे नित्कृरे বিশ্বমচন্দ্রকে দেখিতে পাইব! মা'র অণ্ প্রমাণুতে মা'র "বিক্ষমচন্দ্র" তাঁহার জ্যোৎসা ছড়াইতেছেন। — বকিমচন্দ্র যাহা করিয়াছেন, তাহাতেই তিনি অমর। ইংরাজী সাহিত্যে সেক্ষপীয়ারের আসন েখানে, সংস্কৃত সাহিত্যে কালিদাসের আসন যেখানে, বাঙ্গালা দাভিত্যে বঙ্কিম চন্দ্রের আসন সেইবানে। যতদিন বঙ্গ-সাহিত্য জাবিত বহিবে, ততদিন বন্ধিম চন্দ্র অজর, অমর, অক্ষয়।—শরীর সহদ্ধে ঘাহা**ই** হউক, বক্তমির ক্লেহের কোন হইতে, বজভাষার সোহাগের আচিল ♦हेट इ. व्यात दक्षताभीत क्षमधमन्तित ह**ेट**ङ বৃদ্ধিমচন্দ্ৰকে কাড়িং৷ লইতে কোনু যমের मावा ?

আর কি বলিব—হাও দেব! বন্ধিন চন্দ্র! বন্ধবাদীর নবজীবনের শুরু! কাজ অনরধানে ঘাইতেছ, যাও। যাও দেব! তোমার শুভজীবনত্রত সম্পূর্ণ করিয়া, আত্মপ্রসাদের হাসি মুধে লইয়া কিয়িরা ঘাইতেছ,' আমরা কাঁদিরা বাধা দিব লা, আমরা তোমার শুধের প্রের কাঁচা হইব না! হাও দেব!

ষাe, বাঙ্গানার উজ্জ্বল রড়! বাজালীর পৌরব। যাও, অমরাবতীতে যাও। যে দেশে তোমার যশের মত সবই শুল. সুবই পবিত্র, যাও সেই অমরপুরে খাও। ষাও দেব! যে দেখে তোমার উপন্যাদা-বলীর মত সবই চির নুতন, সবই আনিক ও স্থার প্রবাহ, যাও সেই দেব-দেশে ঘাও। যাও দেব! যে দেশে তোমার ধর্মগ্রন্থার মত সবই নিরপেক্ষ, স্বই অনুত্ময়, যাও দেই বৈকুঠপুরে ধাও। আশীকাদে করিয়া যাও, আজি নিমতলার শাশান-ভদ্ম মাথিয়া, বঙ্গজননীর এ অধ্য সভানেরা ধেন তোমার ''শিষ্য'' বলিয়া পরিচয় দিতে পারে; যেন তোমার দেব-প্রাণে অনুপ্রাণিত ২ইতে পারে। আশী-র্বাদ করিয়া যাও, ভূমি ভোমার জন্মভূমি জননীকে যে রাজরাজেররী দেখিতে চাহিরাছিলে, মা'র এ অধন সন্তানেরা মা'কে যেন সেই রাজরাজেরী দেখিরা মরিতে পারে। আশীর্কাদ করিয়া যাও, তুমি যেনন ভগবানের চরণে আস্থাসমর্পণ করিয়া জীবনের কর্তব্য পালন করিয়া গোলে, এ অধন জীবাণুরা যেন সেই আদর্শ গ্রহণ করিতে পারে। তবে আর ভাই বঙ্গবাসী! আজ বঞ্গ-ভূষণ বৃদ্ধিম চল্লের চিতার পাশে দাঁড়াইয়া, এক্লের প্রাণ খুলিয়া ডাক্ ভগিনি, একবার প্রাণ খুলিয়া ডাক্

"হরে মুরারে মধুকৈটভারে, গোপাল গোবিন্দ মুক্ক সোরে !!" লেখিকা— শ্রী মা।

সঙ্গমিত্র।।

বর্ত্তমান সময়ে ভারত্বর্ধের অন্ক ছানেই ইয়োরোপীয় রুমনী প্রচারিক। দৃষ্ট হয়। ইহারো মুক্তিফোজ নামে অভি-হিত। গৃষ্টধর্ম প্রচার এবং নানাউপায়ে জনসমান্তের সেব। করাই ইহাদের জীব-নের ব্রত। বিলাভের অনেক সম্বান্ত ও ধনাচ্য বংশের কন্যাগণ সমুদ্র সাংসারিক স্থ স্থবিধা পরিত্যাগ পূর্ব্বক এই মহাত্রত অবলম্বন করিয়া এ দেশে আসিরাছেন। কেহ কেহ বা চির-কৌমার্যাব্রতে দীক্ষিত হইয়া দেহ মন প্রাণ ধর্ম্ব প্রচারার্ষে উং-

সর্গ করিয়াছেন। এই রমণী প্রচারিকাদল এ দেশে আদিয়া ভারতীয় ডপছিনীগণের ন্যায় গৈরিক বসন পরিধান
করেন, সর্প প্রকার বিলাসিতা পরিত্যাগ করিয়া ছাতি সামান্যভাবে জীবন
ছাত্রাহিত করেন। ইউরোপীয় জাতি
মাত্রেই মৎস্য মাংসাহারী। মৎস্থ মাংস
তিল্ল ভাহাদের আহার সম্পূর্ণ হয় ন্যু।
এই প্রচারিকা ভগিনীগণ খনেকে
নিরামিষ ভোজন করেন; ওধু ভাহা,
নহে, এদেশীয়দিশের মত কেবল ভাল,

ভাত থাই রা জীবনধারণ করেন। ভারতবর্ষে রমণীগণের বক্ষঃ ছল সম্পূর্ণ আর্ত
রাথা থেমন সামাজিক নীতি ও সভ্যতামূলক, বিলাতের রমণীগণের পদধর
সম্পূর্ণ আরুত রাথার নিয়মও সেইরপ
সভ্যতা অন্থমাদিত। রমণীর অনার্ত
পদ ভয়ানক ঘুণা ও লক্ষার কারণ।
রমণী প্রচারিকাগণ এদেশে আসিয়া
ভাহাদের সামাজিক প্রথালভ্যন করিয়া
এদেশের মহিলাগণের ভ্যায় পদধ্য অনাবৃত রাথেন, সামান্ত জুতা পরিধান করেন
মাত্র।

পতিতা রুমনীদিগকে সংপ্রে আনয়ন করিবার জন্ম এই প্রচারিকাগণ কলি-কাভায় একটা আশ্রম স্থাপন করিয়া-**ছেন। যে সকল হতভাগিনী রমণী**র আর हें कीवत्न नाधुन्थ माधु मह्वारम याहे-বার উপায় ছিলনা, এই দেব কফাগণের ষত্ন ও উদ্যোগে তাহারা দিন দিন নীতি ও ধর্মের পথে অগ্রসর হইতেছে। মাত। থেমন ক্যাকে লালন পালন ও শিকা দান করেন, রমণী প্রচারিকাগণ সেই ভাবে পতিতা রমণীদিগকে পালন কবি-তেছেন ও শিক্ষা দিতেছেন। ই হা-**(मंत्र शार्थक्रांग, टेस्सियमध्यम, देवत्रांग्र,** (ज्ञवा, धर्माविशाम, कर्नाहरेख्यना কর্ত্তব্যনিষ্ঠা, শ্রমশীলতা প্রভৃতি সদগুণ দর্ঘন করিলে দেবী বলিয়া ভক্তি ও अकात व्याप भूप इत-भण र 🕻 देशांत्रत প্রশংসাধানি করিতে ইচ্ছা হয়। হয়, যেন ব্যাধি-প্রপীড়িত, হুভিক্ষত্রস্ত,

পাপে তাপে অভিভূত শাশানসম ভারত-বর্ণকে মরণের গ্রাস হইতে উদ্ধার করিবার জন্ম স্বর্গ হইতে এই দেবীগণ অবতীণ হইয়াছেন।

কিন্তু এইরূপ ধর্ম-প্রচারিকার অভ্য-দয় এদেশে নৃতন ব্যাপার নছে। মহাস্থা মোক্ষমূলার বলেন 'ভারতবর্ষ আধ্যাত্মি-জন্মভূমি ৷" বাস্তবিক ধর্মের উচ্চ নীতি, গভীর জ্ঞান, যোগ ভজি প্রভৃতি যেমন সাধকগণের প্রাণে প্রফ্টিত হইয়াছে, দেই স্বর্গীয় অমৃত-রাশি আজে সমাজে বিভরণ করিবার জন্মও তেমনি আয়োজন হইয়াছে। অদ্য আমরা কেবল রমণীদিগের কথাই উল্লেখ করিব। ব্রহ্মবাদিনী গার্গী প্রভৃতি পরব্রহ্মের তত্ত্ব গভীররূপে শিক্ষা করিতেন এবং প্রচার করিতেন। বর্ত্তমান সময়ে শত শত বকুতায় যাহা না হয়, তাঁহাদের এক একটি কথায় তদ-পেক্ষা অধিক ফল প্রস্থত হইয়াছে। তাঁহারা মানবের চিন্তাসাগরে এমন তরঙ্গ তুলিয়াছেন যে, তাহার এখনও চলিয়াছে। বৌদ্ধসমাকে, মহা-রাজা অশোকের সময় রমণী প্রচারিকা-গণের দ্বারা অত্যন্তুত কার্য। সাধিত হই-য়াছে। সে সময়ের একজন বরবর্ণিনী প্রচারিকার কথা অত্য আমরা সংক্ষেপে বর্ণন করিব।

অংশাকের ম্যায় নরপতি ভারতবর্বে অতি জন্ত জন্মগ্রহণ করিয়াছেন। কিন্ত তিনি প্রথম বয়ুদে ভয়ানক ক্রের প্রকৃতির

লোক ছিলেন। তিনি রাজপদে অভিধিক । হইবার পূর্বের উচ্ছব্রিনী প্রদেশের শাসন-কর্ত্তা ছিলেন। সেই সময় তাঁহার হুইটী স্তান জন্মগ্রহণ করে—একটা পুত্র একটা পুত্রের নাম মহেন্দ্র, ক্সাটীর নাম সঙ্গমিতা। কালক্রমে অশোক ভার-তের অধিতীয় সমাট হইলেন। বৌদ্ধধর্ম চ্ছবিকে প্রচার করিবার জন্ম ভিক্ষুক-দিগকে পাঠাইলেন। অশোকের সময় বৌদ্ধাম প্রবল বন্যার স্থায় জগৎকে ষেরপ প্লাবিত করিয়াছে, এরপ আর ধৰ্ম্ম কোনও সময়ে করে কোন ও নাই। তথন লক্ষাধিক প্রচারক চীন, ব্রহ্ম, সিংহল প্রভৃতি স্থানে প্রচার করেন। বৌদ্ধর্মের বিজয়-ভেরী চতুন্দিককে নিনা-দিত করিল।

অশোক রাজপদে অভিষিক্ত ইওয়ার ৬ বংসর পরে তাঁহার পুত্র মহেন্দ্র ভিক্ ব্রত অবলম্বন করিয়া বৌদ্ধ ধর্ম আচার আরম্ভ করেন। ইনি প্রচারার্থে বছতর ভিক্রবহ লভার গম্ম করিলেন। তথ্য নবপতি লক্ষায় তিয়া নামক বাতঃ কবিভেছিলেন। দেবোপম মহেন্দ্রের ধর্মভাব দর্শন এবং অমৃতময় বাক্যাবলী প্রবণ করিয়। তিনি নবধর্ম গ্রহণ করি-লেন। রাজা বৌদ্ধর্ম গ্রহণ করিলেন দেখিরা রাণী অসুলা এবং তাঁহার সহচরী-গণ বিশেষরূপে নবধর্ম সাধন ভজন ও ভিক্ষুকী হইবার জন্য অভিনাম জ্ঞাপন क्रिलन। महिलाग्राप्त चिन-প্রায় বুকিতে পারিয়া কহিলেন "পাটলী- পুত্র নগরীতে বন্ধচর্ব্য-ব্রতধারিণী আমার ভগিনী সঙ্গমিতা ধর্মপ্রচার করিতে-ছেন। তিনি এখানে আসিয়া আপনা-দিগকে শিক্ষা দান করিতে পারেন।'

মহেন্দ্রে নিকট সঙ্গনিতার বিবরণ ভনিয়া রাজা এবং মহারাণী-প্রমুথ মহিলা-গণ অভিশয় আনন্দিত হইলেন। সক-মিত্রাকে আনয়ন করিবার জনা তাঁহারা মহেন্দ্রকে সাতুনয় অভুরোধ করিলেন। উৎসাহী এবং ধর্মপ্রাণ মহেন্দ্র ভূগি-নীকে আন্য়ন করিবার জন্য তৎক্ষণাৎ পাটলীপুল্র নগরে স্বীয় জনকের নিকট লোক পাঠাইলেন। মহারাজ **অশোক** আনন্দ চিত্তে মতেদেৰ আংবেদন প্রতণ করিয়া সীয় কন্যাকে লক্কায় গিয়া মহিলা দিগের মধ্যে বৌদ্ধর্ম্ম প্রচার করিতে चारमम फिल्म। ७७ मित्म सङ्चार পাটলীপুত্র হইতে সঙ্গনিত্রা লক্ষায় গমন করিলেন। সঙ্গে আরও অনেক প্রচা-রিকা গমন করেন, তমুধো ক্যেক জনের নাম উল্লেখ করিডেছি:-উত্তরা, হেম।, মালাগরা, অগ্নিতা, তপা, প্রতিছিলা, धर्मनामी। এই প্রচারিকাদল সিংহলে উপনীত হইয়া নবোৎসাহ এবং অক্লান্ত পরিপ্রমের সহিত বৌদ্ধর্মের সত্য সমূহ মহিলাগণের প্রাণে মুদ্রিত করিয়। দিতে লাগিলেন। **डॉहा(**) व মধুর উপদেশে नांत्रीनन मरन 'অনলে প্তক্ষের ন্যায়' ন্বধর্মে আয়া-সমর্পণ করিতে লাগিল।

বামাবোধিনীর পাঠক পাঠিকারৰ

মানস চক্ষে সেই ভারতের বৌদ্ধ ধর্ম্মের রাজত্ব দর্শন করুন। এখন যেমন ভারতে माल माल हैश्ताक तमनीत्रन रितातिक वमन পরিধান করিয়া এটি ধর্ম প্রচার করিতে-ছেন, তজ্ঞপ ঐ দেখুন ভারত, সিংহল, চীন, তিকাৎ প্রভৃতি দেশে পীত বসনে আচ্চাদিতা, ধর্মাভূষণে ভূষিতা বৌদ্ধ ভিকুকীগণ বুদ্ধের যোগনিশান হস্তে ধারণ করিয়া ভ্রমণ করিতেছেন। তাঁহার বেমন উপদেশ ঘারা ধর্মা প্রচার করিতেন, তেমন রোগীর দেবা, উপবাদীকে আহার দান, পভ পক্ষীর প্রতিও প্রেম স্থাপন

করিয়া জনসমাজকে মোহিত করিতেন। "অহিংসা পরমো ধর্ম?" এই মহাবাক্য বৌদ্ধশাই কার্য্যতঃ প্রচার করিয়াছেন। বৌদ্ধশ্মের বাহ্যিক কলেবর এদেশ হইতে দুরীভূত হইয়াছে বটে; কিন্তু বুদ্ধের সার উপদেশ ভারতবাসীর রক্ত মাংসের সহিত মিশ্রিত হইয়া গিয়াছে। ভগবান করুন সঙ্গমিত্রার ন্যায়—ভিক্ষুকী দিগের ন্যায় শত শত রমণী প্রচারিকা পুনরায় অভ্যাদিত হইয়া অবশ্রপাণা ভারতরমণীদিগের প্রাণে বৈহ্যতিক শক্তির সঞ্চার করুন।

পারিবারিক সঙ্গীত।

वुक्त।

বিশ্র—একতালা।

("স্থা সাগরের তীরেতে বসিয়া" হর) वर्षे उक्र मृत्ल, विश्व विवृत्ल, মগন পরাণ ধাানে: ছাড়িরাজ্য আশ, পরি চীর বাস, বাস গছন বনে।

নিরখনা বহিতেছে ধীরে ধীরে. পুমায়ে বস্থা রজনীর ক্রোড়ে, নীরব নিশীথে, পরিশাস্ত চিতে সিদার্থ রত সাধনে।

किया (गांभा-कांधा बाका अस्तानन, কৌৰা কপিলবন্তর স্থরমা ভবন,

গিয়াছে অদার, স্থাথের দংশার, অ্থ ত্থ আর নাহি প্রানে:

ছুটেছে বিহঙ্গ অনন্ত আকাশে, পর্ম চৈত্ন্য জ্যোতির প্রশে, যত চলে যায়, ততই দূরে যায় ? কে তাঁরে আর পায় ভবনে গ

গভীর গভীর হইল রছনী, निष्ठिত मानव निष्ठिত अवनी, निंचन मिकार्थ अमृट्य थिन, নির্বাণ পরম ধনে :

দংসার ডিমির করি পরিহার. मङ्गालाक প्राप्त इहेन विस्नात. সংসার সাগর হইলেন পার,

বৃদ্ধ নিতা সতা জ্ঞানে।

মনুর দীঘি।

জীবন বক্ষার্থ জল সর্বাপেকা প্রয়ো-জনীয়, এজনাই জলের নাম "জীবন।" অপরিষ্ঠ জলপানে নানাপ্রকার ব্যাধির উংপত্তি হইয়াথাকে। কলের জল পান স্মারস্ত হইবার পূর্কে কলিকাতা মহানগরী বিস্থচিকা, জর, हिन । বারামশালা আমাশয় প্রভৃতি রোগে প্রতি সপ্তাহে বহু লোক মৃত্যমুখে প্তিত হইত। জলের কল স্থাপিত হওয়ার পর হইতে মৃত্যু সংখ্যা অভাত হাস হইয়াছে। প্রতি বংসর পূর্দ্দিবঞ্চে এখনও সহস্র সহস্র লোক विष्ट्रिका द्वारण जीवनशीना **স**্বরণ করে। ইহার কারণ এই যে, পূর্মবঙ্গ জ্লাদেশ, ব্ৰাতে সমুদ্য ভান জ্লে প্লাবিত ছইয়া যায়। যথন কার্ত্তিক মাসে জল শুকাইতে আরম্ভ হয়, তথ্য বুফাদি প্রিয়া ছলের মধ্যে প্রাণনাশক বিষের স্কার করে। সেই কর্দ্যাক, শ্ন্য ও বক্ষপত গলিত দ্ধিত জল পান করিয়াই বছলোক বিস্থচিকায় শাক্রান্ত ও মৃত্যু-মুখে পতিত হইয়া থাকে। পরিষ্কার জল পান করিলে এরপ অপকার হওয়া অসম্ভব। কিন্তু অভ্যন্ত তঃথের বিষয় যে, অল পরিকার রাখা দরে থাকুক, লোকের দোবে পুতরিবী এবং খাল প্রভৃতির জল অত্যন্ত অপরিকার হইয়। থাকে।

এদেশের পুষরিণীগুলি নরকরুও বলিলেও অত্যক্তি হয় না। অধিকাংশ

গৃহন্তের বাড়ীর নিকটেই একটী কি ছুইটা
পুকরিণী আছে। পুকরিণীর চারিধারে
আম কাঁঠালের গাছ। দেই স্মুদর বুক্রের
গলিত পত্র নিয়ত পুকরিণীতে পতিত
হইয়া পচিতেছে। ইহাভিন্ন জলের
মধ্যে পানা ও ঘাস দামত আছেই।
লিভ সন্তানগণের মল মুত্রের কাপড়,
কাঁথা, মংসা প্রভৃতি পুকরিণীর জলে
ধোঁত করা হয়, বাসন পরিকার করা,
এবং মৃত্র তাগি করা হয়। এরপ পুক্রিণীতে স্থান ও সেই জল পান করিলে
যে নানা বাাবিতে শরীর আক্রান্ত ইইবে,
তাহাতে সলেহ কি আছে ?

বর্ত্তনান সময়ে কোন কোন বিদেশীর স্থিবিজ চিকিৎসক বলেন যে, এদেশবাসিগণ নদীর জলকে যেরপে অপরিষ্কৃত্ত করে, ভাহাতে প্রবাহশীলা নদীর অলপান করাও নিরাপদ নহে। মনে করুন, নদীর উন্ধানে কলেরা ব্যারাম হইতেছে। প্রাথের লোকেরা কলেরা রোগীর মূল-লিপ্তা বন্ধাদি নদীতে ধূইভেছেন, সেই বিষ প্রোতের সহিত দ্বে ঘাইতেছে। প্রজন্ম বাহারা বহু দ্রে (ভাঁটিতে) থাকিয়া সেই জল পান করিতেছে, ভাহারাও বিস্তৃতিকায় আক্রান্ত হয়। ভিনি বলেন গে, ইহার জন্যই নদীর ধারে বিস্তৃতিকা আরম্ভ হইলে শীক্ষ শীক্ষ সংক্রামিত হয়। থাকে।

জল কিরূপে পরিফার করিতে হয় এবং পরিষার রাখিতে হই'লে কিরূপ স্তর্কতার প্রয়োজন, তাহা ইংরাজজাতির कार्याकनाभ (मिशिटन चामता वित्भवत्र(भ **শিক্ষা করি**তে পারি। তাঁহারা পুক-রিণীতে নামিয়া কাহাকেও স্নাম করিতে কিছা মূত্র পরিত্যাগ করিতে দেন না। প্রকরিণীর ধারে পতনশীল পত্রবিশিষ্ট वकाणि (द्राप्तण करत्रन ना धवर मर्खणा দাম ও পানা ফেলিয়া দেওয়ার ব্যবস্থ। করেন। কলিকাতা এখং অন্যান্য বড বছ সহরে গবর্ণমেন্টের এরপ সুর্ফিত **অনেক পু**ষরিণী আছে। সে সকল পুদ্ধ-বিশীর জল কেবল পান করিবার অধিকার সকলের আছে। ঐ সকল দীঘিওলিকে 'Reserve Tank' কছে। এই সুরক্ষিত পুছরিণী গুলি পানার্থিগণের জীবন স্বরূপ। रेशास्त्र जन পরিকার না রাখিলে ব্যাধির মুল ধ্বংস হইবে না, রাজকর্মচারীগণ এ ভব অতি পরিকাররূপে অন্নভব করিয়া-**ক**লিকাভার மனவாற் এথন ন্যায় অন্যান্য নগরে জংলর কল ভাপিত क्षेट्रडा किंद्र वहे প্রিজ্ঞার রাথিবার রীতি যে কেবল जािक जाभारमञ्जूष धामनं कति-**एक्स,** छोडा नरह। এদেশের শ্ব এ মীতি সম্পূর্ণ অবগত ছিলেন। **''জলেডে প্র**ক্রাব করে, ব্রহ্মহত্যা ধরে ভারে" এক প্রাচীন বন্দকবি গাহিয়া-**ছেন। জল** পরিষ্কৃত রাশিবার স্থত্ত ৰহাত্বা মন্ত্ৰ বলিতেছেল 🕫

নাক্স্মুত্রং পুরীবং বা গীবনং বা সম্ৎক্ষেৎ অমেধ্য লিগুমন্যবা লোহিতং বা বিযাণি বা । মন্তু ৪র্থ অধ্যার ৫৬ শ্লোক।

্ মর্ম্ম এই, জলেতে প্রস্রাব বা বিষ্ঠা কিলা শ্রেমা পরিত্যাগ করিবে না, বিষ্ঠা ম্ত্রলিপ্ত বত্রাদি ক্ষালন করিবে না এবং রক্ত বা কোন প্রকার বিষ নিক্ষেপ করিবে না।

বহু শতাকী পূর্বের, ভারতীয় সভাতার মধ্যাহ্ন সময়ে মহাত্মা মনু জল পরিস্কার দম্বন্ধ যে অমূল্য উপদেশ প্রকাশ করিরা গিয়াছেন, বর্ত্তমান সময়ে ভমিতে প্রকৃতির প্রিয় পুত্র খেতাঙ্গণ কর্ত্ত ভাহা পরিপালিত হইতেছে, আর যাহারা মন্ত্র বংশধর বলিয়া পরিচয প্রদান করেন, মনুর বিধি পালন করেন বলিয়া গৌরব প্রকাশ করেন, ভাইারা মরুর অমৃল্য উপদেশ কার্য্যতঃ পালন করিতেছেন না। মনুর উপদেশ মত কাদ্ধ করিলে প্রত্যেক বাড়ীর পুষ্করিণী গুলিই রিসার্ভ টেম্ক (সুরক্ষিত পুঞ্রিণী) করিতে হয়। থে জলে নান. যে জলে মললিপ্তবন্ত্র পরিকার করা মূত্ত্যাগ, इस, मञ्जूत ভाষাতে कहिट इहेटन. म পुष्कतिशी हिन्तृत श्रुकतिशी नहर ।

মন্থ যেরপ উপদেশ দিয়াছেন, গ্রণ-মেণ্টের স্বর্জিত পুক্রিণী গুলি তদন্তরূপ হইয়াছে। এজনা ঐ সকল দীখিকে আমরা "মন্ত্র দীখি" নামে অভিহিত করিলাম। গ্রামে গ্রামে ঐরপ মন্ত্র দীঘি না ধাকিলে ব্যাধির করালগ্রাস ইইতে এদেশ রক্ষিত হইবে না। স্বিজ্ঞ ডাজার বাব্ যত্নাথ মুখোপাধ্যার বলিয়াছেন বে, "জল পরিক্বভ
রাথিবার সহক্ষে আমাদের দেশীয়
লোকে বড়ই অবিবেচনা প্রকাশ করে।"
বাস্তবিক একথা অতি সভ্য। যে যে
কারণে জল অপরিক্রত হয়, তৎসমূদয়
কারণই এদেশে বিদ্যমান। জল অপরিভার করিয়া আমরা নিজের মৃত্যু নিজেই
ঘটাইতেছি। ঐ আবেজ্জনারাশি পূর্ণ,
পদ্ধিল, পৃতিগদ্ধময় জলে সমূদয় ব্যাধির
বীজ্ঞ নিহিত। হায়! আমাদের নিজ
নিজ্ঞ দোষে বৎসর বংসর কত লোক
আকালে কাল্আসে পতিত হইতেছে।কত
গ্রাম শ্র্মানজ্বের পরিগভ ১ইতেছে।

জল পরিক্ষত রাখিতে ইইলে প্রধানতঃ
তুইটি উপায় অবলম্বন করিতে ইইবে।
১ম গ্রামে গ্রামে মন্ত্র দীঘি রক্ষা করা,
২য় পানীয় জল দাধারণ ভাবেই হউক
কিমাবিলাতি ফিল্টার ঘারা ইউক বিশেষ

রূপে বিশুদ্ধ করা। আমরা দেখিয়াটি यै:शाहा कलाह विश्वका दका करवन. তাহাঁরাই ব্যাধি হইতে প্রমুক্ত থাকেন। জল পরিক্ষত রাথিবার সম্বন্ধে মছিলা গণের বিশেষ দায়িত আছে। তাইাত্মাই পুকরিণীতে ময়লা বস্ত্র, বাদন ও মৎস্যাদি ধোত করিয়া থাকেন। পুকরিণী হইতে জল তুলিয়া ঐ সকল কাৰ্য্য অবলীলা ক্রমে সম্পাদিত হইতে পারে। মনুর কথা করেণ রাথিবেন। জল আমা-(एव कीवन; कल नष्ठे कवित्न शरवाक-ভাবে স্বীয় স্বীয় জীবনকে নষ্ট করা হয়। ভগবান করুন, বঙ্গের প্রতি পল্লিভে মহুর দীঘি মাপিত হউক, জল পরিকৃত রাধি-मकरन यष्ट्रभील इछन। বার জন্য আমাদের বিখাদ, এরূপ হইলে বলের অৰ্দ্ধেক ব্যাধি কমিয়া ৰাইবে, ম্যালে-রিয়া বিস্থাচিকার প্রকোপ প্রশমিত হইবে।

মাধব সিৎহের রাণী।

আজ কাল অনেক সভ্য ভব্য শিক্ষিত কুতবিদ্য ব্যক্তি বৈষ্ণবের নাম শুনিলে, জ্র কুটিত ও নাসিকা কুঞ্চিত করিয়া সং হৃদয়হীনতার পরিচয় দেন। তাহাদের মুখতকি দেখিলে বোধ হয়, যেন ''বৈঞ্চব-গণকে'' তাঁহারা ধর্ম-সেবক বলিয়াই বিবেচনা করেন না। তাঁহাদিগের বিশাস উক্ত পদবীধারী ব্যক্তিগণ কেবল ধর্মের অবমাননাকাশী ভিন্ন কেছই প্রাকৃত সেবক নহেন। বৈক্ষবের নাম শুনিলে, জাপনা-আপনি, ভাঁহাদিগের মনে তৎক্ষণাৎ "নেড়ানেড়ীর" কথা জাগিয়া উঠে, সজে দক্ষে অমনি, অস্পষ্ট হাসি ছারা, বৈষ্ণবক্তে উড়াইয়া দেন ফলতঃ এসকলু, ভাঁহাদিগের কুশিকা, এবং অনভিজ্ঞভার পরিচাহক ভাহা নিঃসংক্ষেহ। কোন কপ্ট বৈক্ষবনামধারী ব্যক্তি ধারা পবিত্র বৈষ্ণব ধর্মের সমুজ্জল দীপ্তি স্তিমিত হইলে জাদি ধর্মের উপর দোষারোপ করা, মূর্বতা ভিন্ন, আর কি বলিব ? বস্ততঃ এসকল, জালোচনা করিয়া আমরা উল্লি-ধিত ধর্মের যশোবৃদ্ধি করিবার বাসনা করিনা; তবে, ভক্ত বৈষ্ণবের ধারা, কত সংসারাসাক্ত, পাপাচারীর কঠিন অদয় ভগবস্তক্তিতে তরল হইয়া গিয়াছে, তাহা-রই ছই একটী কথা আলোচনা করিবার জন্ম এ প্রস্তাবের অবতারণা।—আমরা, সর্বাব্রে বৈষ্ণব মহিমার একটা উদাহারণ স্বরূপ নিম্লিধিত গ্রুটী লিপিবদ্ধ করিলাম।

পুরাকালে, মাধবদিংহ নামে এক-জন পরাক্রান্ত নরপতি ছিলেন। তিনি অলীক এখাৰ্য্য সুথে মুগ্ধ হইয়া অলগ্য বনিতা সহবাদে ও রাজকার্য্যে জীবনের **অধিকাংশ কাল অ**তিবাহিত করেন। ভাঁহার অপণ্য মহিষীর মধ্যে স্থবৃদ্ধি, স্থমতি, সর্ববিত্যাধিতা, ভোগবিলাসান-ভিজ্ঞা,একজন পাটরাণী ছিলেন। ভাঁহার পৰিক জাদয়, দয়া দাফিণ্য সৌজনা ও ঁ**ৰদান্য**ভায় পূৰ্ণ ছেষ্হিংসা প্রিশুন্য, একাধারে দর্বগুণের আকর স্বরূপ ছিল। কিছ, অপ্রমেয় সৌধীন সামগ্রী সজ্জিত ব্হমূল্য মণিরত্নাচ্চাদিত, ত্রিতল হর্ম্ম, অমাবুদ্যার তমসাচ্ছন গভীর নিশীথে, **একরাত্র আলোকা**ভাবে যেরূপ **ু**লাভা-ুন হয়, সেইরূপ একমাত্র ঔষরিক-প্রমণুন্য বুভয়ার উল্লিখিত, দর্বভণপূর্ণ

রমণীহাদর অপূর্ণ ছিল। অভক্ত মাধব

সিংহের প্রেমশৃন্যচিত্তে সর্ব্বদাই ক্রম্ম

দ্বেষ বিরাজ করিত, তাহার ফল স্বরূপ
রাজান্ত:পুরে কেহই ক্রম্ম চিন্তার অব
সর পাইত না। রাণী অভুল ধনৈশ্বর্যাপরিবেষ্টিত হইলেও ভগবৎপ্রেমাভাবে

দিন দিন মানমুখী হইতে লাগিলেন।

ষোড়শী সহধর্মিণী সহবাস কবিয়া নবনীজো পম কোমল কমনীয় অঙ্গের চর্চিত চন্দন মুছিয়। ফেলিয়া 'হরি হরি' বলিয়া গভীর নিশীথে করিয়াছিলেন, যিনি, সংসার ত্যাগ ভগবৎপ্ৰেমের প্ৰবল প্ৰশাহে অস্পা গোথাদক, মুসলমানের কলঙ্কিত ক্লায়ের কলক ভাসাইয়াছিলেন, সেই অলোকদামান্য যড়েখব্যশালী জীরফ চৈতনা অথবা ভাঁহার কোন সহবাসী বৈষ্ণুৰ বৰ্ত্তমান থাকিলে আজু মহারাণীকে প্রেমাভাবে, স্লানমুথী হইতে হইত না, কত শত মাধ্ব সিংহ সেই বৈফ্ব সহবাদে পবিত্র ইইতে পারিত। কিন্তু, তংকালে সমগ্ৰ সামাজ্যে এরপ কোন ব্যক্তি বর্তমান ছিলেন না, যিনি, বৈষ্ণব বসিয়া পরিচিত হইতে পারিতেন। বৈষ্ণৰ অভাবেই মাধৰ সিংহের প্রেমহীন এত অভ্যাচার করিতে সমর্থ হইয়াছিল; তাই রমণীর তুর্বল হৃদয় প্ৰেমপ্ৰবণ হইয়াৰ ফুটিতে পাইত না।

যাহাহউক, ছিরণ্যকশিপুর অবতার-অরপ মহারাজা মাধব সিংহ, বছদিন পরে প্রাণোপম পুত্র প্রেমসিংহ সমভি-

ব্যাহারে কাবুল রাজ্য শাসনে যাতা করিলেন। রাজা নাই, এক্ষণে পাটরাণীই অন্তঃপুরে সর্বপ্রধানা হইলেন, কিন্তু সহচরী ও অত্যান্য পুরবাদীদিগের ভয়ে ক্ষা নাম উচ্চারণ ক্রিতে পারিতেন না-নীরবেই চিন্তা করিতে লাগিলেন। ভগবানের অপার মহিমা,অন্তঃপুরে – সেই কুঞ্নাম-পরিশুনা অন্তঃপুরে দাসী নামে একটী পরম বৈঞ্বী ছিল। সে দিবা-নিশি হরি-প্রেমাম্বাদ করিত, অথচ কেহ জানিতে পারিত না। পরম ভক্তি-মতী দাসী অন্তঃপুরের প্রধানা রাণীর অন্তরের কথা কিছু অবগত ছিল। সে এক দিন, নির্ভন্তে দিবা দিপ্রহরে হাসিতে হাসিতে মহারাণীর প্রকোঠে প্রবেশ কবিল। মহারাণী পালকে শাহিত। ছিলেন, দাদী পদপ্রান্তে উপবেশন করিয়া, পদদেবা কৰিতে লাগিল, আর অফ ট-স্ববেক্ষতে লাগিল, "এ অনিহা মুখ ভাতে কত বা আসাদ, কুঞ্পৌম-ভক্তির কি সুনার হাদ।" শৌকে ভানিয়া মহারাণীর হৃদয়বেগ উথলিয়া উঠিল। কুঞ্নাম ভুনিলেন, নিজমুখে একবার উচ্চারণ করিবার ইচ্ছা হইল। मानी कहिन "समिछा दिवस्य ए देन सात পেল, কঞ্প্রেম পরাৎপর নিতা করে আলো।' রাণী 'প্রেম' এই কথা ভনিয়া. আর অসাড থাকিতে পারিলেন ন:! ভক্তিবারি নয়নপ্রান্তে বহিয়া বাহির হইল। দাসী সম্ভলনয়নে কহিল, জ্রীগো-विम रति (र, क्श (र, ७ छत्वरे फार्क-

মতী। আজ সৃস্পিনী মিলিয়াছে, রাণী কঠোর রাজ্যশাসন ভূলিয়া গেলেন, উচ্চৈ: त्रत अम्पतित क हत्क छ र्मार्थ था कार्र প্রকম্পিত করিয়া কহিলেন "হরি, দীন-বন্ধু এদাসীরে কুবা কর।" দাসী বিভোর হইয়া, নিমীলিতনেত্রে বাষ্ণাকুলিত কঠে কম্পিতওঠে ধীরসন্তীর স্বরে "হরি হে কৃঞ হে। আমি চিরকালই দাসী, করুণাময়,একবার কুপাকর। **আত্র অসুর-**গৃহে দেবলীল। খাশানে হরি সন্ধীর্ত্তন।" हति हति, देवश्यदत कि **खालीकिक** ক্ষমতা-বৈক্ষৰ ভিন্ন, এ ক্ষম্ব প্ৰাৰে এছ ভজি সনিল কেহ দিতে পারে কি • উভয়ে মিলিয়া এইরূপে অনেকক্ষণ কাটিয়া পেল। রাণী কহিলেন, "দাসী। আমিত ভোমার পদ-সেবিকার যোগ্য নই, আমি যে ডোনাকে দাসী বলি দে আহার অপরাধ, বিচার করিয়া দেখিলে ভোমার দাসীর দাসী হইবার উপযুক্তও আমি नहि।" यादा। क्रकाश्चम जित्र, व्यक्ताती মানবল্লব্যেকে এত হীন করিতে পারে কি ৭ প্রবল প্রতাপারিত মহারাজাধিরাল वीय (अर्ध মাধ্বরাজের প্রোণাধিকা कक्काकिनी इहेशा, अधाना। नगगा। शीम তঃখিনী দাবীর পদসেবার জনা লালা-য়িতা ৷ রাণী আবার সাঞ্চনরনে ন্যুমুখী ब्हेश कहिलन, मानी आमात हरून ছাডিয়া আমার মন্তকে চরণ রাখ, পাঞ্জি **≆ইতে ভোমাকে ওক্লব**ৎ यानिनाव. বিষয়স্থ ভ্যাগ করিয়া, কুফপ্রেম কীর্ডনৌ রত হইলাম। দাসী রাণীর সেই ভঞ্জি

দেখিয়া বিভোর হট্য1 পেল. উक्टिःश्वतं कांनिए नांगिन। আমরা ছুর্ভাগা, তাই হাসিবার জন্য ব্যাকুল হই: দাসীর মত কাঁদিতে পারিলে বোধ হয় আর কেহ হাসিতে চাহিতাম না। যাহাহউক, রাণী ও দাসী উভয়ে নির্ভয়ে रित्रिमाम कतिया च्यत्मक मिन काठीहरतन। এইরপে হরিনামায়ত পানে পুলকিত ও বিভার হইতে লাগিলেন। দাসী কহিলেন, "বৈঞ্ব সেবন বিনা কুঞ্জের পিরীতি, নাহি হয় শুনিয়াছি ভজ্জন প্রতি।" রাণী আর তথন রাণী नारे, जिनि मत्न मतन ক্ষের দাসী ररेग्नाकिलन। देवश्व নাম ভূনিয়া बाइलारि विश्वा दहेराना। श्रवित 'हिन् नीलमिन" पृष्टे व्यक्तिमा, व्यक्तिं। कतिया, नेमार्द्राट्ट मर्टा९नव निट्लन । ब्राङ्ग छत्य দেশে বৈক্ষবেরা কীর্ত্তনাদি বন্ধ করিয়া-ছিলেন, এক্ষণে রাণীর প্রশ্নয়ে নির্ভয়ে দমীর্জন করিতে করিতে অন্তঃপুরে প্রবেশ করিলেন। নিতা নৃতন মহোৎ-সব হইতে লাগিল। অন্তঃপুরে রাত্রিদিন ভক্তিশান বৈষ্ণবগণের স্মাগ্ম ছইতে नाशिल, अलु: भूतवातिनी तमनीशन आत পাকিতে পারিলেন না. বৈষ্ণবগ্রের কীর্ত্তন স্রোতে ভাগিতে লাগিলেন। अकलातरे ठाक कल, मकलातरे मूर्थ **অপুর্কভা**ব বটে, একাধারে অঞ্চ, হাসি ! মহারাণী সহচ 🖣, সপত্নী শীগণ শইয়া নৰ নৰ আনন্দান্তৰ

এদিকে প্রধান রাজ-কর্মচারী অন্তঃপুরে অসকোচে পুরুষ সমাগম দেথিয়া
ছির থাকিতে পারিলেন না—ধীরে ধীরে
মহিষী সমকে গমন করিয়া কহিলেন—
মহারাণী! আপনি রাজরাণী হইয়া,এরপে
লজ্জাহীনার ভায়—রাণী বাধা দিলেন,
সাঞ্চনয়নে ধোড়করে কাঁদিতে কাঁদিতে
কহিলেন—

"আর রাণী না কহিও মোরে—
দাসী নাম লিথে দিরু যুগল কিশোরে,
পরদা উঠাইয়া, নৃতন কিশোরের সঙ্গে
অঙ্গ সমর্পিছ ঢাক বাজাইয়া রঙ্গে,
জাতি পাতি তেয়াগির বৈহুব সমাজে,
চতুর্বর্গ তেয়াগির পিরীতের কাজে,
সরম ভরম মান ধন জন কাম,
যুগলের বালায়ের সনে ত্যজিলাম।"

দেওয়ান ব্যাপার বুনিলেন: আফুপূর্ব্বিক মাধবরাজকে জ্ঞাত করাইলেন।
রাজা পত্র পড়িয়া, পুত্রকে ভাকিলেন,
এবং কহিলেন তোমার মান্তা "নেড়ার"
দক্ষে "নেড়ী" হইয়াছে, এই দেথ পত্র
আসিরাছে। শ্রেমসিংহ পত্র দেথিয়া
আনন্দিত হইলেন,কহিলেন,—"বুনিলাম,
মাতা শ্রেষ্ঠপদে আরোহণ করিয়াছেন,
ক্রক্ষসেবা ধরিয়াছেন, ইহাতে তিনকুল
উদ্ধার হইবে, ইহা স্থ্থেরই বিষয়।
রাজা কোধান্ধ হইলেন, বিরক্তভাবে
রানীর মন্তক্ছেদন জন্য পুত্রকে আদেশ
করিলেন। এদিকে "প্রেমসিংহ ক্রে
মোর মন্তক্ষ ধানিতে, কার সাধ্য আছে

মোর মাতারে হিংদিতে ?'' ভত্তের সহার
এইরপেই মিলে বটে; রাজা দহধর্মিনীকে হত্যা করিবার অভিপ্রায়ে শ্বরং
শ্বদেশে যাত্রা করিলেন,রাজ্যে উপস্থিত
হইয়া মন্ত্রীর সহিত পরামর্শ করিয়া
স্থির হইল, হঠাং শ্বহন্তে প্রীহত্যার প্রয়োজন নাই, পালিত হিংস্র বাাঘের জঠরানল নির্ব্বাপিত করিবার জন্য রাণীকে
দেওয়া হইবে।

পরামর্শমত কার্য্য হইল। একদিন মহারাণী গলে তুলসীমালা, সর্কাঙ্গে नामावली, পরিধানে কেমি বসন, সম্মুখে, প্রতিষ্ঠিত ইন্দ্নীলমণি মুর্তিষ্য, নিমীলিত নেত্রে সহাস্য আননে গোড়করে উপ-বিস্তা; দেই সময়ে নিষ্ঠুর মাধব সিংহ ক্ষুধার্থ শার্দ্ধ লের পিঞ্চর ছার মোচন করি-লেন। ব্যাভ এক লক্ষে বৈক্ষবী সমক্ষে উপস্থিত হইল, আক্রমণের উদ্যোগ করিল রাণীর চমক ভাচ্চিল, সম্মুথে ভীষণ মুক্ত ব্যাঘ্র দেখিয়া রাণী কহিলেন ''আইদ আইদ বাপু কৃষ্ণ কৃষ্ণ বল।" হায় কি মুগ্মতা, শক্ত মিত্র সমজ্ঞান, এনন না হইলে কি देवस्थव इय । - इति इति, वााख थाहेत কি প সে কুঞ্চ নাম গুনিয়া রাণীকে সাষ্টাকে প্রণিপাত করিল।* टिवसवी डिहिलन, वााञ्चक रुष्टेटङ (যাগাদন বৈক্ষৰ সাজাইলেন, ভাহার গলে তুলদীর

* ভক্তমালে যেরপে বর্ণন আছে, এই আধ্যা-রিকাতে তাহাই উল্লিখিত হইরাছে। এ বর্ণন আলৌকিক ও রঞ্জিত হইলেও এককালে অসম্বত কে বলিবে ? সুস্বর লছরীতে যখন বনের গণ্ড মোহিত হর, ভক্তের সান্ত্রিকভাবে নৃশংস পশুও শাস্ত হইতে পারে। মালা, নাদিকার তিলক দিয়া, হরিবোর, বিলিয়া গাঢ় আলিক্ষন করিতে লাগিলেন। রাজা পার্শের প্রকোষ্ঠ হইতে এ দৃশ্য দেখিলেন, হিংল্র পশুর সরলতা দেখিয়া মুগ্ধ হইলেন, হৃদয় দ্রুব হইয়া গেল। মনে মনে ভাবিলেন "আমার দৌরাগ্ধয় এত কৃষ্ণ না সহিবে" হায় হায় আর যায় কোথা; গর্ল তেজ দূরে গেল, কৃষ্ণছেষ নয়ন সলিলে ভাসিয়া গেল, 'নিজল্লী বলিয়া অভিমান নাহি কৈল।" নিকটে যাইয়া রাজা সাষ্টাঙ্গে পড়িলেন, যোড়হন্তে শুব শুতি অনেক করিলেন এবং অপরাধ ক্ষমা কর বলিয়া কাকুতি করিতে লাগিলেন।

রাণী কহিলেন "বাহ ক্লফ ক্লফ বল মঙ্গল হইবে, মুক্তি তব অধীনা জায়া অবশ্য রাথিবা।" রাজার তথন জ্ঞা**নোদয়** হইয়াছে, নয়নে প্রেমাঞা পড়িডেছে. কাতর ভাবে কহিলেন বৈষ্ণবী ভূমি স্ষ্টিন্তিতি নাশ করিতে পার, ভূমিত কাহার অধীন নহ। বুঝিলাম, "বিপদ নাশের হেতু সম্পদের দাতা, ভক্তি মুক্তি আদি কৃষ্ণ প্ৰেমভক্তিপ্ৰদা"। বলা বাছন্য এই সময় হইতে মহারাজ মাধব সিংহ একজন যথার্থ ভক্তিমান বৈক্ষব হইরা-**डिटमन। ४७७ (महे दिक्क दी रव. निर्मिन** কারচিত্তে হিংল্র ব্যাদ্ধকে ক্লফ কুফ বলিতে অনুরোধ করে, যার কৃষ্ণবেমের উন্নতভার বিফুছেমী ঘোর পাষ**্টমাধ্য** রাজের গর্ক চুর্ণ হইল।

মহারাণীর একমাত্র বল হরিভঞ্জি

ভজিখারা ভক্ত ভূপবানের সহিত একা- তাহাকে সৎপর্থে চালিত করিবার পক্ষে **জার হয়। পাপচিতের** মন্ততা দূর করিয়া । ভক্তসহবাস ভিন্ন আর উপায় কি আছে ? क. घ।

বিবি ফসেট।

(৩য় প্রস্তাব)

এখনে একটা প্রকৃত ঘটনার উল্লেখ কবিতেছি। একদা **O T** মানব-পশু দৈনিক এক বুবতী পরিচারিকাকে পথি-মধ্যে ছেথিয়া তাহাকে কুপথগামিনী **করিবার চেষ্টা ক**রে। সেহাবা গোবা, সাদাসিংখ, পাড়ার্গেয়ে মেয়ে; সবে পাডা গাঁ হইতে পেটের দায়ে লেণ্ডন ৰগৰে চাকরি করিতে আসিয়াছে। **সাসিয়া এক ভদ্র মহিলার প**িচ্য্যা কার্য্যে নিযুক্ত। এই মহিলার সহিত বিবি কলেটের জানা তনা ছিল। একদিন দাসী ভয়ে কাঁপিতে কাঁপিতে কাঁদিতে কাঁদিতে কত্রীর নিকট বলিল যে, পুরুত্ত সৈনিক নানাপ্রকার ভয় দেখাইয়া ভাঁহাকে ভয়ানক বিপদে ফেলিবার চেষ্টা করায় সে অগত্যা তাথার মানস পূর্ণ করি-বার আখাস দিয়া সেই নর-রাক্ষ্যের হাত ছইতে আপাততঃ পরিক্রাণ পাইয়াছে। আগামী কলা সে এক নিদিট স্থানে थाकित्व विषया जियाता : त्मी अमना-গমনের পথ, তাহাকে সেই স্থান দিয়া ু**ৰাইতে হইবেই হ**ইবে। তাহার কর্ত্রী अम्ब दिवर्ण दिवि करमप्रेटक वर्णन। বিবি ক্ষেট শুনিয়া তৎমণাৎ তাহার

শতীত রক্ষার উপায় বিধানে তৎপর হন। তিনি কণ্মাত বিলম্বনা করিয়া জাতীয় হুনীতি নিবারণী সভার কতকগুলি ভীমের মত বলবান সভ্যের নিকট আ দ্যোপান্ত সমন্ত বিবৰণ বলিলেন। আপনি চলিলেন ও তাঁহাদিগকে সংক লইলেন এবং পরিচারিকাও চলিল। হুরুত্ত দৈনিকও কীচকের মত পুর্বে হইতে আসিয়া অপেক্ষা করিতেছিল। রমণীকে দেখিয়া যেমন সে ভাছার নিকট অগ্রসর হইল, অম্নি প্রহার আর্ভ হইল। মার্জার যেমন মুষিক ক্রীড়া করিয়া থাকে, তাঁহারা সেইরপ তাহাকে লইয়া করিলেন। তাঁহায়া পুলিস ডাকিলেন এবং তাহাকে হোদলকুতকুতে সাজাইয়া একথানি কাগজে কতকগুলি অবজ্ঞা ও হিদ্ৰাপথূৰ্ব কথা লিখিয়া আল-পিন দিয়া ভাষার কোর্টে আঁটিয়া দিলেন। চারিদিক হইতে লোক জমিয়া গেল, সকলে দেখিয়া হাসিতে ও হাত তালি দিতে লাগিল। পাপের অভিনয় এই ছানে শেষ श्रेन ना। किश् विनिष्ठ লাগিলেন "তুমি না মহারাণীর সেনাদল-कुछ।" किहवा नमत्वक लाकिनिश्रक

ডাকিয়া বলিলেন ওহে জোমরা সকলে

একজন সেনাকে দেখ। সে যে সমিতির
সভ্য ছিল, তাহা হইতে বিদ্রিত হইল;
নারীসমাজ কর্তৃক পরিত্যক্ত হইল এবং
তাহার সহিত যে নারীর বিবাহ হইবার
কথা হইতেছিল, তাহা আর হইল না।
এই সব দেখিয়াও বিবি ফদেটের অফরে
কিছুমাত্র দ্যা হইল না, হইবেই বা
কেন ? হুটের দমন মহবের কি একটি
পরিচয় নহে? পুর্নেই বলিয়াছি যে
তিনি দেখিতে শীর্ণ ওথর্ককায় ছিলেন;
কিন্তু তৎসব্যেও কেহ তাঁধার পানে সংসা
চাহিয়া কথা কহিতে সাহস্ব করিত না।

উক্ত বিবরণ পাঠ করিয়া আমাদিগের মনে একটি বিষ্ণ উদিত হই তে,ছে, যাহা লিপিবদ্ধ না করিলা আমরা ক্ষান্ত থাকিতে পারিলাম না। তাহা এই,— এই মহানগরী কলিকাতান্ন পল্লিগ্রাম হইতে অনেক হুংস্থা নারী চাকরীর জ্ঞ আসিয়া থাকে। ইহারা অবলা সরলা ও সচ্চরিত্রা, উক্ত প্রেকার সৈনিকের বা অক্সবিধ নরপশুর সম্বাথে পড়িয়া ইহারা

বিপনা হয়, সর্বাস্থ হারায়, সভীত হারায় এমন কি প্রাণও হারায়। ত্রীলোকের পক্ষে সতীয় অপেকা মূল্যবান রত্ন আর রহিল কি । কিন্তু এই রূপ কত শত স্ত্রীহত্যাকারী (আমাদিগের ধর্মে স্ত্রী-হত্যার অপেকা পাপ নাই) অবদীলা ক্রেম বিচরণ করিতেছে, কেহ দেখিতেছে না বা দেখিয়াও দেখিতেছে না এ দৌরাম্বা কি কোনও উপায় নাট? আমরা সুশিক্ষিত বলিয়া সভ্যক্ষতে পরিচিত হইতেছি, কিন্তু স্থানিকার প্রথম ও প্রধান নিদর্শন অবস্থা নিবিশেবে স্ত্রী-সন্মান। আবার দেখ, দ্রীসন্মানের পূর্বে দ্রীসংরক্ষণ। অগ্রে রক্ষণ করিলে, তবেতো দখান করিব। অভ**এব হে স্থশিকিত** ভাত্বর্গ, এস স্ত্রীজাতির রক্ষণ হেন্ত আমর। সকলে বন্ধ-পরিকর হই। আইস আমরাও হুনীতি নিবরণী সভা সংগঠন করিয়া সমাজের হিতরতে **ত্রতী হইয়া** আপনাদিগকে স্থমভা ও স্থশিকিত বলিয়া পরিচয় দিবার উপযুক্ত হই।

শিশু-শিক্ষাতত্ত্ব।

শিশুরা মাতৃগর্ভ হইতে ভূমিষ্ঠ হইরাই বহির্দ্ধগতের সহিত এক নৃত্ন সম্বন্ধে স্থাপিত হয়। বহির্দ্ধগতের বিষয় গুলি চক্ষুবাদি ইঞ্জির সাহায্যে সনের উপর

কার্য্য করিতে থাকে। মনও বিধিনি বিষ্ট প্রণালী অন্সারে বহির্ত্তগতের জান। লাতে প্রবৃত্ত হয়।

শারীরিক যেমন একটা নির্দিষ্ট পঠন

শাছে, সমেরও তেমন একটা গঠন ভাছে। কার্য্য করিবার জন্য শারীরিক বস্ত্র'ওলির বেমন একটা নির্দ্ধারিত প্রণালী পাছে, মনেরও তেমন একটা নির্দারিত প্রণালী আছে। এই সভাবজাত প্রণা-শীর অনুসরণ করিয়া জনার্ভুর্ত হইতেই মন বহির্জগতের জ্ঞান লাভে প্রবৃত্ত হয়। এই বহিৰ্ভগতের জ্ঞান লাভেই মনের বিকাশ ও পরিপক্তা। কি প্রণালী অন্ত-লাছে মনের এই কার্য্য চলিতে থাকে. মনোবিজ্ঞানবিদ পণ্ডিতেরা নানা প্রকারে ভাষা নির্দারণ করিতে চেষ্টা করিয়াছেন। ৰণা আনমরী শক্তি, ভাবময়ী শক্তি ও हेकामती भक्ति। মনের কার্য্য গুলিও এইরূপে তিন শ্রেণীতে বিভক্ত হইতে পারে--যথা, জ্ঞান,ভাব ও ইচ্ছা। আমরা প্রথমে কেবল জ্ঞানের বিষয়েই আলো-চনা করিব।

(মনঃসংযোগ—attention.)

মলোবিজ্ঞানবিদ্ পণ্ডিতেরা বলেন,
মনংসংযোগ মানসিক শক্তি বিকাশের
একটা সাধারণ অবস্থা অর্থাৎ জ্ঞানময়ী,
ভাবময়ী ও ইচ্ছাময়ী এই ত্রিবিধ শক্তির
বিকাশ পক্ষে মনংসংযোগ নিতাভ আবশাক । বিশেষতঃ মনংসংযোগ না হইলে,
ভানার্জনী বৃত্তির বিকাশ ও পরিপক্ষতা
হওরা অসম্ভব । নিউটন-প্রম্থ পণ্ডিতেরা গভীর মনংসংযোগকেই জাহাদের
লোকপ্রসিদ্ধ অসাধারণ প্রতিভার একমাল কারণ ব্যালার নির্দেশ করেন।
স্কেরাং ক্রিভিক্তাল হইতেই ইহার

ষধারীতি অনুশীলন হওরা আবশ্যক।
আনেকেরই ধারণা, শিক্ষারপ্তের পূর্বের
এই বিষয়ে মনোধানী হইবার আবশ্যকতা নাই। এইরূপ বিশ্বাস নিভান্তই
ভ্রমান্ত্রক এবং মনোবিজ্ঞানশাল্তে অনভিজ্ঞতার ফল। আমাদের দেশে প্রায়
৫।৬ বৎসর বয়সে বালকদের শিক্ষারস্ত
হয়। এই ৫।৬ বৎসরে বালকেরা বহির্জ্বপতের আনেক জ্ঞান সঞ্চয় করিয়া থাকে।
মনোবিজ্ঞানবিদ্পপ্তিতেরা বলেন, শিশুরা
প্রথম ২।৩ বৎসরে পৃথিবীর যত জ্ঞান
লাভ করে, পরে বহুবৎসরেও তত জ্ঞান
লাভ করিতে পাঁরে না।

ফলতঃ মাতা যথন অঙ্গলী-সংস্কৃত ছারা বস্তা বিশেষে শিশুর মনঃসংযোগ করিতে পারেন, তথমই শিশুর প্রকৃত শিক্ষারস্ত হইল মনে করিতে হইবে। তথন নৃত্ন নৃত্ন আমোদজনক বস্তুর দাহাযো মাত। সহজেই শিশুকে নৃতন নুভন বিষয় শিক্ষা দিতে পারেন। অনেকে ধাত্রী অথবা অন্যের হস্তে শিশুর লালন পালনের তার দিয়া নিশ্চিম থাকেন। ইহাতে যে কত অনিষ্ট হয়. একটুকু ভাবিয়া দেখিলেই বুঝিতে পারা-যায়। বিধাতার বিধানে মাতাই শিক্তব একমাত্র শিক্ষালয়। একজন শিক্ষাতত্ত-বিদ পণ্ডিত বলিয়াছেন,—"বালকদিগকে সর্ব্বদাই পিতামাতার নিকটে রাখিবে: বেশী বয়দ না হইলে বিদ্যালয়ে পড়িতে পাঠাইবে না. অথবা অন্যের সংসর্গে ৰাইতে দিবে না।" শিক্ষিতা মাতা নিজ

হত্তে শিশুর শিক্ষার ভার দইলে, উহ। কত সুফলপ্রস্থ সুখপ্রদ হয়।

বালকেরা স্বভাবতঃই চঞ্চপ্রপ্রকৃতি। তাহাদের মন একবিষয়ে বেশীক্ষণ স্থির থাকিতে পারে না। কোনও বিষয় বিশেষে বালকের চিত্ত আকর্ষণ করিতে হইলে. অতি সাৰধানে কাৰ্য্য করিবে। বিষয়-টীকে যত আমোদজনক করিয়া বালকের সম্মুথে ধরিতে পার, ততই ভাল। বিষয়টী স্থান্দর এবং আমোদজনক হইলেই, বাল-কের মন সে দিকে সহজে ধাবিত হয়। ইহা শিক্ষার একটী গুঢ় তথা। বিষয়টী জটিল হইলে, বিশেষণ দারা উহাকে সরল ও আন্মোদজনক করিবে। সর্ব্রদা প্রফুল্ল মুখে বালকদিগকে পাঠাভ্যাদ করাইবে। প্রসঙ্গক্রমে হুই একটা গল্প বলিয়া তাহাদের চিত্তরঞ্জনের প্রয়াস পাইবে। কতকগুলি অসম্বন্ধ বিষয় এক-সময়ে বালকদিগকে অভ্যাস করিতে দে হয় অথবা এক বিষয়ে অধিকক্ষণ ভাহা-দিগকে নিবিষ্ট রাখা অন্যায়। একবিষয় কিছুক্কণ শিক্ষা দিয়া, ভাহাদিগকে কিছু-कारलंद कमा व्यवज्ञत मिरन । या विषश् একটুকু গভীর মনঃসংখে!গের আবশ্য-কতা, কান্তি ও প্রান্তির সময়ে এরপ বিষয়ে তাহাদিগকে প্রবৃত্ত করাইবে না। শারীরিক অথবা মানসিক উত্তেজনার সময়ে কোনত বিষয় শিক্ষা দিবে না। অন্যদিকে সহছেই **त्रकात** दिन्दा, চিন্তাকর্যণ হইতে পারে, এক্লপ স্থানে ববিরা ভাহাদিপকে শিকা দিবে না।

বালকদের পাঠগৃহ নির্জ্জন ও শোভাশুন্য হওয়া আবশ্যক।

প্রাথমিক শিক্ষার বিষয়ঞ্জল আমোদজনক হয়, তত্তই ভাল। বিষয়ে বালকদের চিত্ত সহজে বসিজে চায় না। এই জন্য সাবধানে পুস্তক নির্বাচন করিবে। জোর করিয়া কোনও বিষয়ে চিন্তাকর্ধণ করিবে না; তাছাতে কুফল ফলিবার সভাবনা **আছে। পড়িতে** ইচ্ছা না করিলে, তাহাদিগকে আর পড়াইবে না। পাঠে অমনোযোগী হইলে, বেতাঘাত করিবে না অথবা অন্যক্রপ কঠোর দও দিবেনা। এরপ কঠোর শাসনে তাহাদের মন ভালিয়া হাইডে পারে, তাহাদের তেজ্বিতা ও পুরুষদ্বের वीक अङ्कुदब्रहे दिनाम भाहेरक भारत्र। প্ৰাসিক শিকাতিববিদ্ভান্লক্ "প্রশংসা ও ভর্মনাই শিক্ষার সময়ে বালকদের একমাত্র পুরস্কার 😮 📆। বেত্রাম্বাত কিম্বা অন্যরূপ দণ্ডের উপ-কারিতাতে আমার বিশাস নাই। পাঠের সময়ে বালকের চিত্র বিষয়ান্তরে থাবিত হইলে, তাহাকে ভং সনা না করিয়া ধীরে ধীরে নানা কৌশলে তাহার চিত্তকে निर्मिष्टे विषया होनिया चानिया। হইলে, এরপ অমনোযোগের কথা ভখন তাহাকে আদৰেই বলিবে না।"

নিওরা তৃশ্ব অথবা অন্য জিনিব থাইডে না চাহিলে—ক্রন্সন করিতে থাকিলে, অথবা বিষয়ান্তরে তাহাদের চিডাকর্বনের প্রয়োক্তন হইলে, এদেশের পৃথিনীরা শুত" "প্রেত" কিমা "কুন্তীরের" ভর দেখাইরা থাকেন। এইরপ প্রথা যে বিশেষ অনিষ্টকর, শিক্ষিত ব্যক্তি মাতেই ভাষা বৃঝিতে পারেন। কঠোর শাসন ও ভর প্রদর্শন এই উভরের ফল প্রায় একপ্রকার। পরত এইরপ ভয় প্রদর্শন দারা তদভিরিক্ত একটা কুনংস্কারের শিক্ষা দেওরা হয়। অনেক মনস্বীরা বলিয়াছেন, "অনেক চেষ্টা করিয়াও পরিণত জীবনে

তাঁহার। বাল্যকালনদ্ধ অনেক কুসংস্কার ও কদভ্যাদের হাত হইতে সম্পূর্ণরূপে পরি-ত্রাণ পাইতে পারেন নাই।

ইংরাজ প্রভৃতি ইয়োরোপীয় জাতিদের মধ্যে এইরপ ভয় প্রদর্শনের প্রথা
নাই বলিপেই চলে। এদেশে জনেক
বৃদ্ধিনান ও শিক্ষিত লোকের গৃহেও এরপ
প্রথার বছল প্রচলন দেথিয়া জনেক সময়
বিশেষ তৃঃথিত হইতে হয়। (ক্রমশঃ)

বার মেসে চাস আবাদ।

रेकार्छ।

এই চাস আবাদ সমদ্ধে বৈশাথ

মানের কর্ত্তব্য কর্ম আমরা চৈত্র মানের

পত্তিকার প্রকাশ করিয়াছি, একণে জ্যৈষ্ঠ

মানের কর্ত্তব্য এই বৈশাথের পত্রিকায়

থকাশিত হইবে।

জ্যেষ্ঠ মাসে অধিক কর্ম নাই।
অনেক গৃহস্থ সম্ম ভদ্যাসনের পার্থে, বা
মন্ধ উদ্যানে বৃহৎ বৃহৎ বৃদ্দের চার।
নাগাইতে ইক্সা করেন। বাহাদিগের
ঐরপ ইচ্ছা হয়, তাহাদিগকে মাঘ মাস
ইতে কিছু কিছু আয়োজন করিয়া
ইসিতে হয়। ঐ আয়োজন আর কিছুই
নহে, মাঘ মাসে ৮ হস্ত অস্তর এক একটী
ছই হস্ত গভীর গর্জ ধনন করিয়া তাহ।
কিনিৎ সারস্কুজ আটাল মৃত্তিকাধারা
প্রক্রিয়া মাধিতে হয়। গ্রারি মাস
কাল সমান পরিষাণে উহাতে বায়, উত্তাপ

কেবল এইভাবে একটু দৃষ্টি রাখিতে হইবে যেন, ঐ গর্ভ সকলে তৃণ বা অন্য উদ্ভিদ জিমায়া গর্ত্তক মৃতিকার তেজ হরণ না করে। জৈটে মাসে ঐ গর্ত সকলে শিষ্ঠ, শেগুণ, বেল, নিম, কদম, চাঁপা, বকুল, शितीय, आमलकी, इतीएकी देखानि বড় বড় বুক্ষের চারা রোপণ করিবে। चाम, जाम, काँठाल, थ्यक्त, लिह, लितू, গোলাপজাম প্রভৃতি বিবিধ ফলের বীজ, চারা বা কলমও এই মাসে রোপণ করিবে। বেগুন ও ডাঁটার যে হাপোর চৈত্র বা বৈশাথ মালে প্রস্তুত করা হই-য়াছে, তাহাদিগের চারা হাপোর হইতে উঠাইয়া কথিত সমভূমিতে ছই বা দেড় হস্ত অন্তর সারি করিয়া পুঁতিয়া দিবে। ত্ৰ, পত্ৰ, গোৰৱ ইত্যাদি পচিয়া মাটীর উপরিভাগে যে সার জন্মে, বেগুণের পক্ষে তাহাই উত্তম সার। স্কর্ত্রব বেঞ্চণ ক্ষেত্রে ঐরপ সার

মেটেল জমিতে অর বালি মিশাইয়া তাহাতে ওাঁটা রোপণ করিতে হয়; নতুবা ওাঁটা মিষ্ট হয় না। আমন ওাঁটা জারহায়ণ মাস পর্যান্ত রাখা যাইতে পারে।

माहि क्मज़ उ शूँ है,- এই इहे প্রকার চারা বর্ধার জলে দারস্কপে প্রায় আপনিই জনিয়া থাকে। আহাত ও প্ৰাবণ মাদে ৰেখানে দেখানে ৰংগ্ৰ পরিমাণে ঐ ছই প্রকার চারা দেখা যায়। যদি পাওয়া যায়, তবে এই মাসেই ঐ ছুই প্রকার চারা সংগ্রহ পূর্বক ষ্থাস্থানে রোপণ করা উচিত। এই মাসে রোপণ করিতে পারিলে, কিছু অগ্রেই কুমড়া পাওয়া যায়। সাচি কুষড়া অনেক কাব্দে লাপে। কচি কুমড়ায় উত্তম তরকারী হয়। পাকা কুমড়ায় বুড়ি, মোরকা হয়। তদ্তির কুমড়া অনেক উৎকট রোগের ঔষধে ব্যবহাত হয়। বিখাতি "কুমাতখত" ঔষধ এই কুমড়া ভিন্ন रुव ना। हेरा छाए। हिन्दू त्रम्भी गरनत ন্সনেক ব্রতাদি কার্য্যে ঐ কুমড়া আবশ্রক হয়। এই সময়ে অনেক মূল্য দিয়া ঐ কুমড়া ক্রন্ত করিতে হয়। আমর। ভনি-য়াছি, কোন সময়ে বৈঁচির বাজারে কোন ব্রতের সময়ে ছুইটা বড় মানুষের ভূত্যের জিদাজিদিতে একটা দাচি কুমড়া শতা-विक मूखांत्र विक्लीफ इहेग्राहिल। यथन শমরে সময়ে কুমড়ার এত আছর হয়,

তথন গৃহস্থের বাড়ীর মাচায়, চালে, বা कारमत छेभेत मन भावत। कुर्मेषा कनिता বড়ই আনন্দ হয়। কুমড়া ও পুঁই শাকের চারা স্থানাস্তর করণ কালে উহার গোড়ার অনেকথানি মাটী ওদ্ধ তুলিতে হয়: নভবা চারা বাঁচে না। পুরের শাঁক ও ভাঁট। অনেকে আদরপূর্বক আহার করেন; কিন্তু উহা অতিশন্ন কুষ্পাচ. এজন্য উহা অধিক থাইলে আমাশয় পীড়া হইতে পারে। সাধারণতঃ একটা কথা সকলেরই মনে রাখা উচিত। বে দকল শাক, দবজি ও তরকারী পাক করিলেও তাহার হরিৎবর্ণ যায় নাবা কমে না, তাহা প্রায়ই ত্রপচ। সেইওলি আহার কালে একটু সতর্ক হইলে ভাল ङ्य ।

হনুদ, কচু ও আদা; এই সকল
ফসলের ভ্নিতে যদি উত্তমরূপ চারা
বাহির হইয়। থাকে, তবে সেই সেই
ক্ষেত্রের ঘাস নিড়াইয়া জনি অর পরিমাণে ধনন করা ভিন্ন এমাসে উহাদিগের
অন্য কোন কার্য্য নাই।

বৈশাধ মাসে যে সকল কসলের
চাদ আবাদ করিতে হয়, যদি দৈব হুর্গোপে
বা অন্য কোন কারণে তাহা না বটিয়া
থাকে, তবে এই মাদে দে দকলের
ভাবাদ হইতে পারে। ভাহাতে কদল
কিছু বিলকে হইবে, এইমাত্র; নভুবা
ভজ্জন্য অন্য কোন ক্ষতি হইবে না।

সতী ও শান্তি।

ठष्ट्रभ्भ शति दक्ष्म।

তৎপরে সরোজিনী বলিতে লাগি-লেন, প্রথমতঃ ছেলে প্রায় সমন্ত দিন युगरिया पाक । किनल यथन थिएन লাপে, তথনই জাগে মাতা। তার পর ক্ষশ: ক্রমশ: অধিককণ জাগিয়া থাকে। বেমন ঠিকু সময়ে থাওয়ান, দেইরূপ ঠিক শময়ে খুমান অভ্যাস করান উচিত। ছেলে যাহাতে রাত্রিকালে অধিক সময় নিজা যায়, তাহা অভ্যাস করান উচিত। শতান ছয়মাসের হইলে, দিনের মধ্যে তিনৰার যুম পাড়ান উচিত। ছেলে **যতদিন পর্যান্ত না তিন বছরে**র ভতদিন পর্যান্ত তাহাকে তুপর বুমাইতে দেওয়া কর্ত্তব্য। জোর ক'রে **ছেলের সুমপা**ড়ান উচিত নয়। মেয়ে ছেলেকে চাপ্ডে, "আয় চাঁদ আয় গো, সোণার ঘাত খুমার গো" এইরপ গান গেয়ে অথবা হদি কাঁদে, তবে "এ কুৰু আস্চে, ঐ শ্যান আস্চে, ঐ ভুত আদ্চে' এইরপ ভর দেখিরে জোর ক'রে খুম পাড়ার। এ তালি ভারি দোব। এইরূপ ভয় দেখান দারা ছেলে-দের যে কি সর্কনাশ হয়, আমাদের (कर्मत (सद्दर्श का व्यासन ना।

শাশের একটি মেরে বলিলেন, "ছেলে একবার কাঁদ্তে স্থক্ত কল্লে সহজে থামে না। তাই জাের ক'বে ভরটর দেখিরে কায়া থামাতে হয়।" শাস্তি বলিলেন, তা ব'লে কি জোর ক'রে, ভয় দেথিয়ে কায়া থামাতে হবে ? কেন, দিদি ত ব'লেছেন, ছেলে কেন কাঁদে, তা ভাল করে দেখা উচিত, যে যে কারণে ছেলে সচরাচর কাঁদে, সেই সব কারণ হ'তে ছেলেকে রক্ষা করা উচিত। এই সকল বিষয়ে যদি একটু সাবধান হওয়া যায়, তা হইলে আর "ঐ জুজু আস্চে, ঐ ভূত আস্চে" বলে জোর করে ছেলের কায়া থামাতে হয় না, আর অকারণ কতক-গুলো মিথ্যাভয় ও কুসংস্কারে ছেলের সর্বর্নাশও হয় না।"

এই কথা শুনিয়া আর একটা দ্রীলোক বলিলেন, ''এতে আর ছেলের কি সর্ব্ব-নাশ হ'চেচ মা ? "ভূত আসে চে" বল্লেই কি অম্নি "ভুতে পার," না আস্চে" বল্লেই অম্নি कुक् ছেলেকে ধরে ৭ ও একটা ভয় দেখাম মাত্র। ওতে আর ছেলের কি অনিষ্ঠ হয় ? শান্তি বলিলেন, কোনও অনিষ্ট হয় না ব'ল্ছেন ? আপনাদের মণি খোঁড়া इ'व किन १ जिनि विनिश्नन, উপর প'ড়ে গিয়ে, তার পা ভেঙে গেছ্লো, তাই খোঁড়া হ'য়েছে। বলিলেন, কেন শাণের উপর প'ড়ে গেল ? जिन विलालन, जन्न (भारत विमन द्रिक्ती क्रिक्त পালিয়ে আস্বে কি, না অমনি প'ড়ে

পেল। শান্তি বলিলেন, কেন ভন্ন পেলে ? তিনি বলিলেন, চুণীর মা, ঘরের মধ্যে ছেলে সুম পাড়াচ্ছিল, ছেলে ভারি কালা যুড়ে খিলে। তাকে থামা'বার জন্য ষেমন ব'লে "ঐ জুজু আস্চে, ঐ ভূত আস্চে রে:--বা--বা, চুপ্ কর্, চুপ্ কর;" আমাদের মণি ছিল কোথায়, ও ভনতে পেয়ে ভয়ে বাছা ঘেমন দৌড়ে ঘরের মধ্যে পালিয়ে আস্বে, অম্নি দড়াম ক'রে আছাড় খেয়ে শাণের উপর পড়্লো, আহা, বাছা একবারে অম্ভান হ'য়ে পড়্লো। একটা দাঁত ভেঙে গেল, মুখ ছেঁচে গেল, আর বাচার পা ভেক্ত গিয়ে জন্মের মত থোঁড়। হ'য়ে গেল। কত ডাজার দেখলে, কত টাকা উড়ে গেল ওর জন্যে; সেই কালেজ হাঁসপাতালের সাহেব ডাক্রার একাই ত ওর জন্যে হাজার টাকা নিলে, কোনমতে ভাল হয় না, ভিতরে মস্ত ঘা হ'য়ে বাছাকে একবার "জেল জরা" করে ফেলে। ছেলেটাকে নিয়ে ছ'মাস একবারে 'নাস্তানাবুদ্"। শেষে ডাজার সাহেব পা'টা কেটে দিলে, বাছা একবারে জ্ঞাের মত থোঁড়া হ'লে ঘরে ব'সে রইল।

শান্তি বলিলেন, "তবে দেখুন্ দেখি," ঐ জুজু জাস্চে, ঐ ভূত আস্চে বলাতে মণির কি সর্বনাশ হ'ল। আপনাদের এক মণি, সে ত খোঁড়া হয়ে ঘরে রইল, বেঁচে রইল, কিন্তু অমন কত মণি কেবল মাত্র বিধ্যা ভূতের ভরে মারা গিয়াছে, এরপ ওন্তে পাওয়া বার। দেখুন দেধি কি দর্কনাশ !

শৈশবাবছা থেকে কেই যদি "ঐ

স্কু সান্চে, ঐ ভ্ত সান্চে" বরাবর

এই কথা ভনে সাসে, তা হ'লে কমশঃ

এই ভ্তের ভর জুকুর ভয় তাহার মনে

একবারে বন্ধমূল হ'য়ে যায়। মিল যদি

ছেলে বেলা হ'তে ভ্ত সার স্কুর্
নাম না ভন্ত, তা হ'ল সমন করে দৌড

দিত না স্থার তাহার এরপ সর্কনাশও
হ'ত না। দেখুন দেখি, মিধ্যা একটা

ভয়ে সে নিজেকট্ট পেলে, গোটাভন্ধ সকলকে কট্ট দিলে, কভ টাকা উড়েগেল, জা

নয় যাক্, শেষে একটা পা কাটা পেল,

জন্মের মত থোঁড়া হ'ল, নিম্পা। হয়ে যরে
বসে বইল!!

একবার আমাদের বাড়ীর চাকরটার কলেরা হ'ল। কেহ আর ভাজার
আন্তে বেতে রাজী নয়। যাকে বলা বার,
সে বলে, "আজ শনিবার, ওদের গোবর্জন
মরেছে,"একসের দোষ" পেরেছে, "পুন্ধরা"
হ'য়েছে। কে ভাজার আন্তে যাবে,
আমি পার্ব না। দেখ দেনি বোন্,
এমন বিপদের সময় ভূতের ভয়ে কেহই
বেরুতে রাজী হয় না। কি ভাস্যে কেশব
দাদা এসে ওঁদের বাড়ীতে উপস্থিত
হ'ল। তিনি বেচারীর অবস্থা দেখে
দয়া ক'রে, নিজে গিয়ে ভাজার আন লেবে

দয়া ক'বে, নিজে গিয়ে ভাজার আন লেবে
হ'লে ঔবধ নাপেরে গরিব মারা সেই দ্ব

ছতের ভরে মার্থের কি সর্বনাশ হচ্ছে। ভূতে শত করুক না করুক, মাসুষ ভয়ে মরে যায়। কত দুইলোক এইক্লপ মিথা ভয় দেখিয়ে কত লেকের সর্কানাশ কচ্ছে, কে তাহার খবর রাথে ? ঐ সকল প্রতারক প্রবঞ্চক, রদ্মায়েদ্, চোর, উহারাই জীবন্ধ ভূত, আর ভূত কে ?

বাঙ্গালা প্রবচন।

₹

- হাতী কাদায় পড়িলে ভেকেও লাথী

 নারে।
- ২। হাতী ঘোড়া গেল তল, মশা বলে কত জল ?
- ৩। হাতী চড়ি ভিক্ষা করি, ইচহার না দাও ঘর ভাঙ্কি।
- হাতীপর হাওদা ঘোড়ে পর জিন, কালমুরগীপর ভঙ্কা বাজাবে হেসটিং।
- ৫। হাতী পাকে পড়লে, হাতীই উদ্ধার করে।
- ৬। হাতী বলে আমার ছই দাঁত,
 শুকর বলে আমারও ছই দাঁত।
- হাতী ম'লেও লাথ টাকা,
 জিয়জেও লাথ টাকা।
- ৮। হাতীর খোরাক।
- ৯। হাতীর গলায় স্বন্টা।
- । হাতীর দর্প চূর্ণ হয় পাহাড়ের কাছে।
- ১১। হাতীর পিঠে আংদে যায়, হামা দেশে ডর পার।
- ১২। ছাতীর মিন মিন, খোজুর দৌড়।
- , ১৩। হাতে কড়ি, পান্ন বল,
 - ত্ৰে যাই ৰীনাচন।

- ১৪। হাতে কালী মুখে কালী, বাছা আমার লিখে এলি।
- ১৫। হাতে খোলা, পাছে মালা।
- ১৬। হাতে গোধ পায়ে গোধ, গোধ কর্ণমূলে; কোন্ পুরুষের জানি ভাগো, ছিল গোধ চলে॥
- ১৭। হাতে জল গলে না।
- ১৮। হাতে দই পাতে দই, তবু বলে কই কই।
- ১৯। হাতে না মেরে ভাতে মারা।
- ২০। হাতে নাই সিক্কা, বাহিরে বাহির ফটকা॥
- ২১। হাতে নাই কঢ়া বট, প্রাণ করে ছট ফট।
- ২২। হাতে যদি নাই ধন, পাচে হও এক মন।
- ২৩। হাতে পাজি মঙ্গলবার।
- ২৪। হাতে মাথা কাটা।
- ২৫। হাতে নাই কড়াকড়ি, ক'রে বেডায় বাডাবাডি ॥
- ২৬। হাতে যদি ফল পাই, তবে কি মার মাঁকুড়সি চাই ?
- ,২৭। হাতে শাঁথা নড়ে,

বিভাল বলে আমার ভাত বাডে ৷

২৮। হাতে হাতেই ফল পাবে।

২৯। হাতের কম্বণ বেচে এনেছি বান্দী। त्र इरेल गृश्गि. আমি হলেম তার বান্দী ॥

৩ । হাতে মুখ চিনে।

৩১। হাতের পাচটা

चाकुल সমান नय ।

৩২। হাতের লক্ষ্মী পা দিয়া ঠেলা।

৩০। হাতের বাড়ি, পথের বন্ধ।

৩৪। হাতের শাঁখা দর্পণে দেখা।

৩৫। হাদোব গোঁসাই প্রমেশ্বর।

৩৬। হারাতে ফ্কির হল, দেশে ও মন্ত্র এল।

৩৭। হাবাতে ষদ্যপি চায়, সাগর ভকায়ে যার।

৩৮। হাবাতে ঘটা হল, জল থেতে খেতে প্রাণ গেল।

৩৯। হাবাতের হুনো গ্রাস।

৪০। হায়রে আমড়া, কেবল আঁটি আর চামডা।

8)। हान रिम बात टीएम. ষায় কি ভরি ছুফানে ভেসে?

৪২। ছাসি কালা বোঝা যার না।

৪৩। ছিতে বিপরীত।

98। হিন্দুর গরু মুগলমানের হারাম।

৪৫। হিন্দুর ঘরের বিড়ালও আড়াই অকর পডে।

8%। हिजादित शक वा**रा श**ांत्र ना।

89 । इक्स शक्ति इला।

৪৮। কুজুরের মজুরও ভাল।

৪৯। কর্মোদে সাপর ছেঁচে।

৫০। হেলায় কাৰ্য্য ৰাশ।

e>। হেলে ধরতে পারে না, কেউটে ধরতে যায়।

८२। दश्ल यात्र हव राज, বামন হার বসতে।

€७। इटल चांग्र हान नित्त्र, বিধাতা বার তুল নিয়ে !

68। (इ.स. (इ.स. कथा करें). এ মিনদে কি পেয়াদা নয় ?

৫৫। হেঁপায় পড়ে সোঁতে ভাষা।

৫৬। হোদেন সার আমল।

৫৭। ইোদল কুঁতকুঁতে।

পুস্তক প্রাপ্তি ও সমালোচনা।

১। ভক্তচরিতামূত—শ্রীপ্রঘোর নাধ। চটোপাধ্যায় প্রণীত মূল্য। 🗸 • আন। । ও জীৰ গোসামীর জীবনচরিত বর্ণিত ইহাতে বৈষ্ণব

এবং ভক্তিতবের অনেক জাতবা কথা আছে। ভক্তিপিপাস্থ সাধকগণ 🕰 🔍 এই পুস্তকে বৈষ্ণৰ চূড়ামণি রূপ সনাতন । পাঠে বিশেষ উপকৃত হইতে পারিবেন। 🤏

২। ঐসৎ রতুনাথ দাস গোতাদীয়া नवारकत वीवनहतिल--- नःजारत देवताश्र मार्कन

कित्रो छभरहाकि नाटि य माधू-भीरन नाछ रम्न, त्रध्नाथ छारात छेळ्ळ्ल हरोस । धरे क्ष्मकीयनी भार्य मुश्नाता-नक भीरवत रेठछरनग्रामय रहेरछ भारत ।

উপনিষদ:—শ্রীদীতানাথ দত্ত কর্তৃক

শহবাদিত এবং মূল ও টাকা দহিত প্রকাশিত, মূল্য ১ টাকা। এই পুতকে ঈশ,
কেন, কঠ, প্রশ্ন, মৃত্তক ও মাণ্ডুক্য এই

হর্মধানি উপনিষদ সন্নিবেশিত আছে।
উপনিষদ ব্রক্ষজানলাভের পরম সহায়।
এরপ গ্রন্থ বিশুদ্ধরূপে মুন্তিত ও বঙ্গীয়
পাঠকদিগের উপযোগী করিয়া গ্রন্থকার

শাধারণের বিশেষ ক্বতজ্ঞতাভাজন হইয়া-ছেন।

8। ভক্তিসাধন ১ম খণ্ড,—মূল্য
॥॰ আনা। মহান্মা থিয়েডোর পার্কারের
উপদেশ বাবু বিপিন চন্দ্র পাল বঙ্গভাষার
অন্থবাদ করিয়া প্রচার করিতে আরম্ভ
করিয়াছেন। তিনি ইহা সম্পূর্ণ করিয়া
ধর্মার্থীদিগের বিশেষ অভাব পূর্ণ করিতে
সমর্থ হউন এই আমাদের প্রার্থনা।
ভক্তি কেবল ভাব নয়, কিন্ত জীবনে
ঈশ্বরান্থন্ড্য, পার্কারের এই সার উপদেশ
সকলের শিক্ষণীয়।

न्जन मर्वाम।

১। রায় বিষ্ক চন্ট্রোপাধ্যায়বাহাছর পত ২৩এ চৈত্র জ্বননী বঙ্গভূমিকে
শোকসাগরে ময় করিয়া পরলোক যাত্রা
করিয়াছেন। তাঁহার স্মরণার্থ অনেক
ছানে ক্ষনেক সভাসমিতি হইতেছে।
পত ৪ঠা মে টাউন হলে এক বিরাট সভা
ইয়া স্মৃতিচিত্র স্থাপনের অর্থসংগ্রহার্থ এক
বৃহৎ কমিটা নিযুক্ত হইয়াছে। বঙ্গমহিলাদিগের অনেকে বেমন শোক করিয়া পত্র
লিধিতেছেন, এই পবিত্র কার্য্যে তাঁহালের
বিশেষ সহায়ভা করা কর্ত্ব্য।

ং। বিশ্বিদ্যালয়ের পরীক্ষা সকলের কল কাইর হইরাছে। প্রবেশিকা পরী-কার ক্রেড পরীকার্থীর মধ্যে হঠ৬৯ জন ক্রিশ হইরাছে;—১ম বিভাগে ৩৯৯, বিভারে ক্রেড এবং ৩র বিভারে ৯৩৭ জন। ২৪ জন পরীক্ষোতীর্ণা বালি-কার মধ্যে ১ম বিভাগে ৫, ২য় ১২ এবং ৩য় বিভাগে ৭ জন।

এফ এ পরীক্ষায় ৯২৬ জন উত্তীর্ণের মধ্যে ১ম বি ৪২, ২য় বি ২৩১ এবং ৩য় বি ৬৫৩ জন।

বিএ পরীক্ষায় অনর শ্রেনীতে ১০৩ এবং পাসে ৪৩৮ মোটে ৫১১ জন উত্তীর্ণ হইয়াছেন। বেথুন কলেজের তুইটী ছাত্রী বিএ হইয়াছেন, তম্মধ্যে একজন সংস্কৃতে অনর পাইয়াছেন।

ত। ইংলণ্ডের বর্ত্তমান প্রধান রাজ-মন্ত্রী লর্ড রোজবারীর সহিত ব্বরাজ-কন্যা কুমারী বডের ভভ বিবাহ হইবে ছির হইরাছে। মহারাণী এ বিবাহে মত দিরাছেন। ৪। এক পশুত গণনা করিয়া ছিরু করিয়াছেন একটা শামুকের এক মাইল পথ ভ্রমণ করিতে ১৪ দিন ৫ ঘণ্টা লাগে।

৫। কলিকাতার বিডন্ ট্রীটে বিবি থোবরন এবং আর করেকটা হিতৈবিণী রমণী নিরাশ্রয় রমণীদিগের জন্য একটা প্রকাণ্ড গৃহ খুলিয়াছেন। আমরা আশা করি হতভাগ্য রমণীগণ এই মহাপ্রাণ। মহিলাগণের সাহায্যে সাধু ভাবে জীবন কাটাইতে সমর্থ হইবে।

৬। ইংলণ্ডেশরী উইওসর পরিত্যাপের পূর্বেল গাড়ী হইতে পড়িয়া গিয়া জায়তে আঘাত প্রাপ্ত হইয়াছিলেন, ঈশরকে ধন্যবাদ, ত্রিখন সম্পূর্ণ জারোগ্য হইয়া-ছেন।

৭। সম্প্রতি এক শিল্পকার হীরক শলাকা হারা এক থপ্ত কাচের উপরে এড কুড আকরে (Lord's prayer) খ্রীষ্ট উপদিষ্ট প্রার্থনা লিথিয়াছেন যে এক বুফলের ৮০০০ ভাগের এক ভাগে তাহা সম্পন্ন হইয়াছে। অবশ্যা, অণুবীক্ষণ দিয়া পডিতে হয়।

৮। আফ্রিকা উকলা নদীর তীরে নর-মাংসভুক্ রাক্ষদিগের ভয়ানক প্রাত্ত ভাব। বাজারে আন্ত একটা মান্ন্র্য কিনিতে না পারিলে দশ জনে মিলিয়া কেহ হস্ত, কেহ পদ, কেছ মন্তক ক্রয় করিয়া থাকে। বিক্রেতা জীবস্ত মাসুব-টাকে বধ করিয়া সেই অঙ্গ গুলি কাটিয়া ক্রেতাদিগকে বিভাগ করিয়া দেয়।

১। সম্প্রতি প্রিসে সার একটা স্থানকম্প হইয়াছে। আটলাণ্টিক্ ও থিব্দ্
এক কালে ধ্বংসপ্রাপ্ত হইয়াছে। কোন
কোন স্থানে গির্জ্জা স্বর পড়িয়া উপাসক
মগুলীকে কবরসাৎ করিয়াছে। কোন ২
স্থানে বাড়ী ভাঙ্গিয়া সমগ্র পরিবার
ভূগর্ভসাৎ হইয়াছে!!

১০। আমেরিকায় সৌল্ব্য শিক্ষার জন্য এক বিদ্যালয় স্থাপিত হ**ইরাছে।** ব্বতীরা তথায় স্থার মুথভঙ্গী ও চাল চলন শিথিয়া থাকেন।

১১। আলবানীতে ১০০০০ এ**কর্ণক** লোকের বাস। তাহার মধ্যে ১৫০০০ প্রমন্ত্রীবনী দ্বীলোক।

১২। ম্যানভ্যাই প্যালিভো নামী স্পেন দেশের একমাত্র ত্রী উকীল যুবতী ও পরমা স্থল্যী। বিশ্ব প্রাদ-শনীতে স্পেন বিভালের পুরোভালে ভাহার ছবি ছিল।

১৩। কুমারী লিলিয়ান মেরিট্ নায়ী
ইংরাজ মহিলার আশ্চর্য স্মরণশক্তি।
তিনি শত শত অক কেবল মনে রাধিতে
পারেন, এরপ নহে, কিন্ত মনে মনে
তাহাদের ঘোগ, বিয়োগ, গুণম, ভাগ
প্রভৃতি যদৃচ্ছাক্রমে করিতে পারেন।

বামারচনা।

ख्डानौर्याम ।

১७०३ मान--->२हे देवभाव।

व्यागाधिका !

क्रमानी शिव्रवाला वसू,

আয়ু শতীয়ু।

বিবাদে স্থের স্থৃতি
অঁধারে মধুর বাঁশি,
বিপদে দেবের বর
হতাশে উভম রাশি;
কাঙ্গানের ধন মোর
প্রাণময়ী প্রিরবালা,
শুভ বিয়ে আজি তোর
র্গেথে দিব ফুলমালা;
আরো দিব কোটী চুমো
হাদরের সোহাগিনি,
কি আর তোমারে দিব—
তোর "মা" বে "ভিধারিনী"—
চাহিন্যু সাজাতে প্রিয়,
সোণা, মণি মুক্তায়,
শু শুলো কঠিন বড়,

ব্যথা পাছে লাগে গা'য় ; কুলময়ী মেয়ে মোর

ফুলমালা গলে পর, স্কুলের সৌরভ তেকে 💆

পর আমোদিত কর।

দেবতার হয়ে প্রিয় দেবতার কালে থেক,

"म्रीनवज् नवात्रिज्"

ारे मना भटन द्वृष ।

স্থে প'ৰ ৰাজা শাড়ী

হাতে লোহা করে যা'কু;

চির দিন সিঁথি যুড়ে

व्यक्त मिं मृत्र था क्।

পতি অনুকূল যার

তারে বলি "রাজরাণী,"

তুমিও মা প্রিয়বালা!

হও রাজ-রাজেন্সাণী!

সোণার জীবন তোর

হো'ক্ চির স্থাময়,

হো'ক্ মা তোমার ষরে

নিতা **স**ত্য **স্থ**থোদয়।

খে দেশে সাবিত্রী সীতা

व्यवमा क्रमप्रमी,

मान दार्थ मानावरमा

সে দেশে এসেছ ক্সমি।

व्यापन वालाहे भव

যা'ক্ তোর শত দুরে,

হো'কৃ ভোর বাস ওধু

व्यानम ऋ (थेत शूरत ।

বিধাতা করুন তোরে

শতী পতিপ্রাণা মেয়ে,

নারীর ভূষণ আর

কিছু নাই তার চেয়ে!

বেশি কি বলিব প্রিয়,

কত কি পরাণে ভাসে,

ভয় করে শুভ দিনে

পাছে চোখে জন জাসে!

তোর লাগি বিভুপদে

वह उधू जिका हाहै.

কাঁদিয়া জনম গেল,

रुरा दिस म'ति बाहे।

আশীর্কাদিকা

তোমার "ম।।"

বামাবোধিনী পত্রিকা।

BAMABODHINI PATRIKA. 'कन्याय्येवं पासनीया शिक्ससीयातियत्नतः।"

কন্তাকে পালন করিবেক ও যত্নের সৃহিত শিক্ষা দিবেক।

०৫० मःथा

देकार्छ ১००১—कून ১৮৯८।

ুম্ক**র।** তম্ভাগ।

সাময়িক প্রসঙ্গ।

ইংলতেশ্বী—মহাবাণী বিক্টোবিষয় কদেশে প্রত্যাগত হইয়।
উহওদর প্রামাদে বাদ করিতেছেন।
মহারাণী আগামী ২৪এ মে ৭৫ বংসর
পূর্ব করিয়া ৭৯ বংসরে পদার্পণ করিবেন। প্রমেশ্বর ভাহাকে চিরঞ্জীবিনী
গুহিরস্থিনী করুন।

বিশ্ববিদ্যালয়ের প্রীক্ষার ফল—নিয়লিখিত রমণীগণ নিয়লিখিত পরীক্ষায় উত্তীর্গ হইখাছেন। বি এ—সরসাধালা রক্ষিত্র, সংস্কৃত অনর হর বিভাগ তেন-প্রভা বহা। এফ এ,—ক্ষীরোদক্ষারী থোদ ৩ছ. প্রিশিং মেরী ৩র বিভাগ।

| এবেশিক) | বিভাগ | विकालका। |
|--------------------|-------|---------------|
| শিশির কুমারী বাগচী | ১ৰ | ব্ৰাহ্মবালিক! |
| हेनाहेका वनहे | *, | ওরায়েশ সূল |
| निनी जिन्छिद्यान् | ,, | লোকেটে। |
| শ্ৰেষাৰ ডি ভেৰাৰ | •• | 3 |

| | | ** |
|-------------------------------|-------|---------------|
| প্রবেশিক। | বিভাগ | विमानम ६- |
| মেরী ঝিড | ** | লোরেটে। |
| এমী রাইপার | ,, | ডবটন |
| निवनी बटम्मा। | २व | (वर्षून |
| হলতা সরকার | ٠, | 4 |
| চন্দ্রপ্রভা বিশাস | •1 | 3 |
| সরোজিনী ঘোষ | >9 | 3 |
| लिलियान <u>डिक</u> ृ ल | ** | ভৰ্টদ |
| আগ্রেস ডি মণ্টি | •• | 4 |
| শরংবালা ঘোষ | ,, | কাইট চার্চ |
| হল মার্গারেট | •• | লোরেটো |
| রাচেশ হাউরার্ড | 79 | - ওব্রাহরতা |
| ₹. এ, अवनी | ,, | লামাটিনিয়ার |
| গ্রেমধা দাস | 31 | গ্ৰাহ্মৰালিকা |
| শৈলবালা হাজ্ঞা | ওয়ু | বেশুন |
| সরলাবালা মিজ | 1, | ∌ • |
| | | |

মৃত্যু—কগীর কেশবচন্ত সেলের প্রবধ্ ও জীমান ক্রণাচন্ত সেনের প্রী মনোমোহিনীর পরসোকপ্রাপ্তি সংবাদে আমরা শোকসম্বপ্ত হইরাছি। ইনি নানা আনে ওপবতী ও গৃহের গৃহলক্ষী-স্বরূপা ছিলেন। পরিচারিকা সম্পাদন করিয়া ত্রীজাতির অনেক উপকার করিয়াছেন। ইহার আত্মা স্বর্গের শাস্তি ওঅমৃত লাভ করিয়া শীতল হউক।

বাবু বিষমচক্র চটোপাধ্যায়ের পশ্চাংশ পশ্চাৎজারও হুইজন প্রসিদ্ধ ডেপুটী ম্যাজি-ষ্ট্রেট্ পরলোক গমন করিয়াছেন:—বাবু কালীচরণ ঘোষ ওবাবু ব্রহ্মনাথ সেন। সাধারণ হিতকর কার্য্যে ইহাঁদের যথেষ্ট জন্মরাগ ও উৎসাহ ছিল। তুমরাওনের মহারাজ কলেবর পরিত্যাগ করিয়াছেন।

কুমারীকলেট— আমরা শুনিয়া অত্যন্ত হৃথিত হইলাম ইংলণ্ডের স্থাসিদ্ধ বিছ্মী ও ভারত-হিতৈষিণী সোফিয়া ভবসন কলেট গত ২ গশে মার্চ্চ মানবলীলা সম্মন করিয়াছেন, ইহার বিশেষ বিবরণ সানাভারে দৃষ্ট হইবে। বামাবোধিনীর সহিত ইংলার ২ বংসারের অধিক কালের মোগ। ঈশার ইংলার আজ্মার শান্তি ও কল্যাণ বিধান করুন।

নুতন ট্রামওয়ে—কৃঞ্চনগর হইতে নদিয়া শান্তিপুর দিয়া একটি টুমেওয়ে নির্মাণার্থ ছোট লাট অহমতি দিয়াছেন।

দান—জন ক্লাৰ্ক নামক এক সাহেব এইধৰ্ম প্ৰচারাৰ্থ ভারত গ্রীষ্টান সমিতিতে ৩৭ লক্ষ ৫০ হাজার টাকা দান করিয়া-হেন।

পাশ্চাত্য স্ত্রীলোকদিগের উচ্চ শিক্ষা-সেও এওল বিশ্ববিদ্যালয় ১৮৭৭ সাল হইতে স্ত্রীলোকদিগকে পরীক্ষা করিতেছেন, ইতিমধ্যে তথায় ৬৬•৫ জন মহিলা প্রবৈশিকা পরীক্ষায় উত্তীর্ণ হইয়া-ছেন। ইহাঁদের মধ্যে ১২২৩ জন L. L. A অর্থাৎ সাইতো পারদর্শিনী উপাধি পাইয়াছেন। লণ্ডন বিশ্ববিদ্যালয়ে গত कुलारे मार्ग २१० कन महिला প্রবেশিক। পরীকায় উলীর্ণ হন: একটা মহিলা L. L. B., চারিটা M. D., ছয়টা M. B., বারটা B. S. S. এবং ছয়টা M. A. ও উনআশীটা B. A. উপাধি পাইয়াছেন। কেম্বিজ विश्वविमानायः । ৮৬० भान इटेट की-লোকের প্রবেশাধিকার হইয়াছে। কুমারী রামসে সিনিয়র ক্লাসিক অর্থাৎ গ্রীক লাটন প্রীক্ষায় উচ্চ শ্রেণীতে উত্তীর্ণ र्हेशाट्या क्यांती कत्मे तम वर-সরের দিনিয়র র্যাক্ষেণারকে হারাইয়া অক্সফোর্ড বিশ্ববিদ্যালয়ে দিয়াছেন। ১৮৮৪ সালে,(মলবোর্ণ ১৮৮०, এবং ম্যান-চেইনেরে বিক্লোরিয়া বিশ্ববিদ্যালয়, ১৮৮৩ সালে মহিলা-পরীকার্থিনী লইতে আরম্ভ করিয়াছেন। ক্রিন্ডিয়েনা বিশ্ববিদ্যালয়ে অনার পরীফার স্ত্রীলোকেরা উচ্চস্থান व्याश इहेश थारकन । ब्रांतिह विश्वविकाा-লয়ে ১১১ জন বালিকা গত বৎসর প্রবে-শিকা পরীকার উত্তীর্ণ হইয়াছেন।

(मवानम् ।

ইষ্টদেবের সেবা কৰিয়া যে আনন্দ হয়, তাহাকে ধদি জীবের একটা অর্থরূপে পরিপণিত করা বায়, তাহা হইলে সার্থ-শ্ন্য জীব নাই। কিন্ত এরপ সেবানন্দ বাসনা বা ভক্তিকামনা লোকিক অর্থ মধ্যে পরিপণিত হয় না। সেবানন্দ বা ভক্তিবাসনাকে নিকাম ধর্মই বলা হইয়া থাকে, তাহাতে কোনও দোষ হয় না। ভক্তিবাসনা বা সেবানন্দই জীবের চর্ম লক্ষ্য।

ইছ সংসারের লৌকিক জীবন হই-তেই ভজিবাসনা ও ইষ্টদেব-দেবার স্থান-হইয়া থাকে এবং মাসুষের সেই ভাব বয়দের সঙ্গে দক্ষে কেমন আংচ্য্যারূপে পরিপাক প্রাপ্ত হয়। বালক বালিকার। প্রথমে পিতামাত। ভিন্ন আর কিছুই ধরিতে পারে না। ইহাও যে তাহার। ইচ্ছা বা জ্ঞান প্ৰকৃত্ব ধৰে, ভাহাও নছে। পিতা মাতা তাহাদিগের লালন পাল্ম করেন ত ব্রাদি এব: सार्व বাঁচাইয়া রাখেন, অতএব তাঁহাদের অরুগত হওয়া উচিত, এ জ্ঞান তথন তাহাদের থাকে না। সভাতীয় পদার্থ গণের মধ্যে যে একটা আকর্ষণী শক্তি আছে, বালক বালিকাগণ প্রথমে যেন সেই শক্তির বশেই বাল্যজীবনে পিডা माठात व्यं ि चाकृ हे इहेता था क। কিছ সন্তানের প্রতি পিতা মাতার ভাব সম্পূর্ণ পরিক্ট ;—তাহার নাম বেহ বা

বাৎসল্য। এই স্বেছ দেবভার প্রতি প্রায়ুক্ত হইলে তাহা এক প্রকার দেবা বলিয়া কথিত হয়; ভাছার নাম বাৎসল্য সেবা।

পিতা মাতার প্রতি বালক বালিকার যে ভাব, ভাহা বয়োবৃদ্ধি সহকারে ভঞ্চি ও প্রীতিরূপে পরিণতি প্রাপ্ত হয়। কিছ পিতা মাতার প্রতি সন্থানের ভক্তি বা প্রীতি, এবং সন্তানের প্রতি পিতা মাতার বাৎসল্য যেমন **অবন্থা বিশেৰে** নির্মাল হয় না: তেমনি মন্থব্যের দেব-ভক্তিও অবস্থা বিশেষে নিৰ্মাল বা বিশুদ্ধ হয় না। ভাহাদিগের মধ্যে একটা কামনী অন্ত:সলিলা নদীর ন্যায়, অলক্ষিত ভাবে প্রবাহিত হইয়া থাকে। "সম্ভান **আমা**-দিগের অসময়ে করিবে' সম্ভতি-বৎসন পিতা মাতার মনে এই ভাব যে কিছু कारतत्र कता ना थाक अमन नरह अदर 'পিতামাতা হইতে আমরা কতই উপকার পাইচাছি এবং পাইব" পিতৃমাতৃভক্ত সম্ভানগণের মনে যে এই ভাব থাকে না, তাহাও নহে। তবে উভয়েরই এমন একট। সময় আছে, বখন ঐ ভাব বিভন্ হইবার অবসর পায়। মনে কর, সম্বান এককালে অকর্মণ্য ও চিরক্লা,-কোন কালেই ভাষা হইতে বিন্দুমাত্র উপকার পাইবার সন্তাবনা নাই,—অথচ পিতা মাতা অকাতরে ও অবিরক্তি**তে তাড়শ** সহানের লালন পালন বা সেবাওআনা

করিরা কর্তব্যপালন জন্য বিমল আনন্দ ভোগ করিতেছেন। পিতা মাতাও জর। **দ্মীর্ণ, সকল কর্ম্মের বহিভূতি ও সং**সারের ক্ষতিজনক হইয়া পড়িয়াছেন, অথচ সস্তান সহজ্ঞ কৃতি ও অসুবিধা সীকার করিয়াও **অক্রিষ্ট অধ্য**বসায়ে তাঁহাদিগের সেবা ক্রিতেছেন এবং সেই জন্য প্রচর আনন্দ উপভোগ করিতেছেন। এই গুলিই ইহ **দংসারের নিকাম**ধর্ম, সেবানন্দ, বা প্রেন-ভক্তি-বাসনা, যাহ৷ ইচ্ছা তাহাই বলিতে ইহা অপেকা অতিশয় কঠিন; কেননা জীবের ইষ্ট দেবতা কথনই অকর্মণ্য, কুরু, बताकीर्व, ७ क्विकातक स्टब्स मा;--**তিনি मन। नर्जक**न्दे खुळान । वृद्धका । দরাশীল ও দাতা,-করণাময় ও কল্ল-ছক। এ হেন ইপ্তদেবের নিকট কিঞি-एलि कामना ना काना हैशा (कवल त्यवानरक বিভার হইয়া থাকা বিশেষ ভাগ্যবল-সাপেক। তবে ভরদা এই বে, নিরপরার হইয়া ভজন করিলে কখন না কখন মীবের এ ভাগ্য ঘটতে পারে। তাহা **কোন অবস্থা**য় কিন্ধপে হইতে পারে, পরে তাহা দেখাইবার চেঠা করা ঘাইবে।

যে উপাসনায় ভক্তি ও নিষ্ঠা আছে,
ভাছা যে আকারে হউক, ফলপ্রান্থা নাধনা
কার চিৎ-স্বরূপের উপাসন। মুখ্য সাধনা
ক্রিলেণ্ড নিম্ন অধিকারিগণ সাকার উপাসন্ধারা ভসবৎ সেবার অধিকারী হন।
সামরা এই প্রাবদ্ধীতে সাধ্যের ক্রমোৎকর্ম দেখাইবার চেষ্টা করিব; এই জন্য

দাকার উপাদক হিন্দুগণের উপাদন। প্রণালী হইতে উদাহরণাদি দংগ্রহ করি-তেছি কেননা এমন অধিকার ভেদ প্রথা আর কোন উপাদনায় দৃষ্ট হয় না।

ষেমন বালক বালিকাগ্য প্রথমে পিতা মাতা ভিন্ন জানে না; সেইরূপ উপাদক সম্প্রদায় মধ্যে ঘাঁহারা বালক বালিকা, তাঁহারা প্রথমে শ্রীভগবানকে পিতা মাতারপেই দর্শন করিয়া এই জন্য প্রথমাবস্থাপর উপাসকগণকে প্রায়ই হর পার্কভীর উপাস্ক হইতে দেখা যায়। তাঁহার। সদাশিবকে জ্বগং পিতা ও পার্কতীকে জগৎজননী বলিয়া পূজা করেন। মহাদেব স্বয়ং তনোগুণাব-লম্বী হইয়াও সাধককে ক্রমশঃ রজঃ ও করিয়া দেন। **শত্বের দিকে** অগ্রসর মানবর্গণ যেমন বরোর্দ্ধি সহকারে ক্রমশঃ বন্ধু বান্ধব ও স্ত্রী-পুত্রাদির প্রতি আস্ত্র হইতে থাকে. উপাদকেরও শ্রীভগবানের নহিত ঐরূপ সম্বন্ধ সকলের স্ষ্টি হয়। বয়োবুদ্ধি সহকারে মানুষের আরও একপ্রকার সমন্ধ ঘটে, তাহার নাম প্রভুর নিকট দাসহ। ক্রমশঃ প্রীভগ-বানেও উপাসকের ঐরপ সম্বন্ধ স্প্ত হয়। ঞ্জীভগবান প্রভু, আমি ভাঁহার দাস, উপাদকের এই ভাব বিশ্বক্ষনীন कीवन व्याशक। বছতর সাধকের ঐ ভাব পরিপঞ্ হইয়া আমরণ রহিয়া যার। এমন কি অনেক ভক্ত দাসবের মাধুর্ষ্যে আফুষ্ট হইয়া নির্ব্বাণ মুক্তিও পায়ে ঠেলি-য়াছেন।

"——ভবান্ প্রভূরহং দাস ইতি যত্র বিলুপ্যতে।"

লোকিক লীলায় দৃষ্ট হয়, মানরগণ প্রায়ই বাল্যজীবন অতিক্রম করিয়া জীবিকাদি স্ত্রে একটা প্রভুর অধীন হইয়া পড়ে। এই জন্য দাস্য ভাবকে উপাসকের দিতীয় সোপান বলা যায়।

रा मनारा बीजगवान नाधरकत गरन পিতৃ মাতৃভাবে বা প্রভুভাবে বিরাজ করিতে থাকেন, সেই সময়েই ভগবান যে পর নহেন, সর্বাপেক। আপনার জন,— এমন কি ঠিক যেন স্থার স্থী, ছঃথের ছঃথী, বন্ধু বান্ধবের মত, ভাহার কাছে মনের সকল কথাই বলা যায়.—ভিনি यन आगात मुकैल खश कथा लुकाहेगा রাথিবেন,-এইরূপ একটা ভাবের স্ত্র-পাত হয়। পতিপরায়ণা ব্বতী জীকেও এই বন্ধু বান্ধবের মধ্যে ধরা যাইতে পারে। ক্রমোংকর্ষণীল সাধকের মনে এই ভাব ক্রমশঃ এত বলবৎ হয় বে, পুর্ববর্ত্তী চুইটা ভাবকে আপনার অন্ত-ভূতি করিয়া ফেলে। তখন পিতৃমাতৃ ভাব ও প্রভুভাব অধিক ক্র্রিপাইতে পারে না। ফুর্ত্তি পাইতে পারে না বলিয়া এককালে নষ্ট হইয়া যায় না। এরাম চন্দ্রের প্রতি ওহকাদির, এীক্ষের অতি বন্ধবালার ও ব্রন্ধ রাখালগণের---**এ**মান কৃষ্ণ চৈতন্যের প্রতি পুরুষোত্ত্য, নিত্যানন্দাদির এই ভাব।

যথন মান্ত্র এক দিকে পিতামাতার স্বেহ্বাৎস্ল্যলাভে কৃতার্থ হইতেছেন,

অন্য দিকে প্ৰভুৱ কুপা ৰটাকে প্ৰীভ হইতেছেন, আর এক দিকে স্বদ্যবন্ধ-গণের সহিত প্রণয়-কেলি করিয়া আনন্দ-সাগরে ভাসমান হইতেছেন, এমন সমলে তাঁহার অধাদরপিণী পর্ম প্রণরিনী যুবতী ভার্যার গর্ভে একটা পুত্র সন্তান অনিলে তাঁহার মনে কি ভাবের উল্ব হয়, তাহা তিনিই জানেন, যে ভাগ্য-বানের ভাগে। এরপ ঘটনা ঘটিরাছে। এরপ ভাগাবানের সংখ্যা সংসারে বে নিতান্ত অৱ, তাহাও নহে। ফলে উধন যেন প্রকাবন্ধী তিন্টী ভাব নদীর আকার ধারণ করিয়া এই ভাবসমূত্রে প্রবেশ করে। এখানেও স্মরণ করাইরা দিতেছি, পূৰ্ববৰ্ত্তী ভাৰত্ৰয় এই সমুদ্ৰে প্ৰবেশ কল্পৈ বটে; কিন্তু একেবারে তলাইয়া যায় না. —মধ্যে মধ্যে ভাসিয়া উঠে,—বেশ **দেখা** साय। आवात (मधा शाय वटें), किन মে সকলের প্রতি আর পূর্ববৎ উন্মন্ত ভাব থাকে না। এখন "সবধন নীলমণি।'

তেমনি শ্রীভগবান্ পূর্কবর্তী ভাবমর।
দেহ ধারণ করিয়া সাধকের সহিত ক্রীড়া
করিতে করিতে ক্রমশঃ উপরি উক্ত
পুত্রের আকার ধারণ করিয়া বসেন।
শ্রীভগবান্ পূর্কে পিতৃ মাড়রূপে,—প্রভুরূপে,—বা সধা সধীরূপে সাধককে ধে
আনন্দ প্রদান করিতেন, এখন প্ররূপে
সেই সকল স্থ একীভ্ত করিয়া এবং
তাহার উপর আরও শত্তণ বিভিত্ত
স্থের আবরণ দিয়া সাধককে প্রদান
করিতে ধাকেন। প্ররূপী শ্রীকৃষ্ট

নক্ষংশোদার (ভক্তগণের) সহিত যে বাৎসল্যরসের শীলাখেলা করিয়াছেন, ভাছা ভক্তের বোধগম্য, তাহার সম্যক্ বিবরণ সাধারণ্যে প্রকাশ করিতে আমা-দের যেন কেমন একটু সকোচ হয়।

এ ভগবানের প্রতি কোন অবস্থায় ৰিন্ধপে নিষাম ভজি ইইতে পারে, **আমরা তাহা দে**থাইবার চেঠা করিব, **এই প্রবন্ধের** পূর্ববন্ধী কোন ছলে এরূপ প্রতিজ্ঞা আছে। বালক বালিকার যত-দিন পিতৃমাত্ত-আরুগত্য পরিত্যাগ করি-বার উপায় থাকে না, ততদিন তাহা-দিগের পিডামাভার প্রতি যে ভাব টুকু बारक, छाहा विकक्ष अवः एश्काल मधा-বর্তী পিতামাতার বাৎস্লাও বিশ্বর। এই क्यारे देक्ष्विमात्र निकरे और मायत ভগবানের কৈশোরলীলা! সর্ব্বপ্রকার স্বার্থ-শুনা হইরা পরের ক্থে জ্থ, তু:থে তুথ ;---এভাব যদি নরলীলার কোন ছলে থাকে, তাহার একটা স্থল বালক সম্ভির প্রতি **পিতামাতার** ভাব। আর একটী ত্থল পরে দেখাইব। বাহাহউক, ভক্তের মনে ভগ-ৰালের প্রতি পুত্র ভাব, সাধনার পরাকাল না **হইলেও,** সাধনার উচ্চতর একটা **ভাব বলা মাইতে পারে। এই** শ্রেণীর ভ্রুপণের মধোই জীভগবান 'লেহের পুতুল,—ছুধের গোপাল,—গৌরগোপাল, ৰাছ,—বাছা,—'ইত্যাদি নামে অভি-ুহিত হইয়া থাকেন। বে সুকল সাধ-কের মনে এই ভাবের ছারা আদে পতিত हा अहि, छाराएन कर्त के শব্দগুলি বাড়ুল প্রলাপ বোধ হইবারই কথা। হয়, হউক, তাঁহাদের সহিত এ প্রবন্ধের বড় সম্পর্ক নাই।

ষেমন ব্যোম মক্তে প্র্যাবসান প্রাপ্ত হয়, মক্ত তেজে,—তেজ অপে,—অপ্
কিতিতে প্র্যাবসিত হয়, সেইরপ পূর্ব্ব পূর্ববর্তী ভাব সকল আর একটি ভাবে সম্পূর্ণরূপে সমাহিত হইয়া থাকে।
সেই ভাবই ভক্তি শাস্ত্রমতে সাধনার পরাকাঞ্চা। সেই ভাবের নাম মাধ্য্য বা পতিপরী ভাব। ভক্ত সাধক শিবতুর্গারূপে এবং রাধাক্রফরেপে এই ভাবের সাধন করিয়াছেন। প্রীভগবানের সহিত সাধকের পতিপত্নীত সহর ছিরী-কৃত হইলেই বিশুদ্ধ ও নিকাম মাধ্র্য্য হয় না। লোকিক কোন ভাবের সহিত ভাহাব সাদৃশা আছে,তাহা দেখাইতেছি।

যুবক সামী ও যুবতী ভাষ্যার মধ্যে পতি পত্নীত্ব সহাদ্ধ আছে এবং তাহার ভাব মাধুর্যন্ত কলৈ আছে এবং তাহার ভাব মাধুর্যন্ত বলৈ কলৈ না ভাহাদের মধ্যে একটা ঐত্তিয় বা কাম সহাদ্ধ আছে। সে সহক্ষের বলে উভয়ে উভয়ের নিকট আয়ুহুর্য কামনা করিয়া থাকেন। বে ভাবে এরপ আয়ুহুর্যকামনা, ভাহাকে বিশুদ্ধ প্রীতি বা "প্রেম" বলা বায় না। ভাহা কামেরই নামান্তর মাত্র।

"আয়য়বে স্থী থেই তারে বলি কামী, তাঁর স্বংগ স্থী থেই তারে বলি প্রেমী।" এই জন্মই আমরা একছলে ব্বতী ভাগ্যাকে বন্ধু বাদ্ধের মধ্যে পথা করি- য়াছি;কারণ সধা সম্ব জ্বও একটু স্বার্থগন্ধ আছে। এই কারণে যুবক যুবতীর ভাব ভগবানে প্রযুক্ত হইলে ভাহা প্রকৃত মাধুর্ণ্যে পরিণত হয় না,—একটু নৃতনত্ব রহিয়া যায়। আমরা পুর্বেক কোন ছলে প্রকৃত মাধুর্য্যের ছল দেখাইবার প্রতিজ্ঞা করিয়াছি, অতঃপর তাহারই প্রাদক্ষ করা যাইবে। (ক্রমশঃ)

ভ্রাতৃদ্বিতীয়া।

(পূর্ব্ব প্রকাশিতের পর)

বুদ্ধদেবের যথন নিতাধন পাইবার পিপাসঃ বলবতী হইয়া উঠিয়াছিল, তথন তিনি দারামুত, ভোগৈৰ্য্য ও রাজ্য ধনাদি অনিভ্য বস্তু পরিভ্যাগ করিয়া নিত্য বস্তু পাইবার আশায় যোগধর্মাব-লম্ম করিলেন: অনেক সাধনার পর জানিতে পারিলেন যে প্রেমই নিত্য, বিশ্বজননীর পুত্রকন্যাগণ স্কলেই প্রস্পর ভাইত্রান, অহিংসাই প্রম ধর্ম, আর ভ্রাতা ভগিনীগণের শোকে সাস্ত্রনা, ছংখে সহাস্কুতি ও আত্মার উন্নতি বিধান করাই মনুষ্য জীবনের কর্ত্তব্য। এই ঘোগ সাধনের পর্ই তিনি ভাতা ভগিনীগণের নিকট খীয় মত প্রচার করিতে লাগি-লেন। বলা বাছল্য যে তিনিও বর্ণভেন, জাতিভেদ মানিতেন না, ভাছার বিখ-জনীন ধর্মোপদেশ শ্রবণে তৎকালীন লোক দলে দলে আসিয়া ভাঁহার পবিত্র ধর্ম গ্রহণ করিতে লাগিল। আছে যে সিংহলের রাজকনা তাঁহার পবিত্রধর্ম্মের কিম্মদম্ভীতে মোহিত ইইয়া ভাঁহার নিকট ধর্মোপদেশ প্রবণ করিবার

জন্য সহদাগরদিগের নিকট বুদ্ধকে চিটি लिचिताहिरतम अवः मनागत वृत्रामयं লিঙ্গভেদখুনা জ্ঞানে রমণী বলিয়া ছুণা না করিয়া পত্যোত্তরে ধর্ম্মোপদেশ খারা উক্ত রাজকন্যাকে কৃতার্থ করিয়া**ছিলেন।** वृक्षरमत्वत এकी च्यान्ध्या डेश्राम्म अ সাস্ত্রনার বিষয় শুনা যায়। তৎকাদীন কোন বিধবার একটা মাত্র শিশুসম্ভান কালকবলিত হইলে, দেই ব্যক্তির বিশ্বাস মত মৃত পুত্র কোলে করিরা বুজের নিকট পমন করিয়া বলিল, প্রভো! তুমি দেব-তার অবতার, আমার এই মৃত শিশুকে জীবিত করিয়া আমার জীবন রক্ষা কর।' বুদ্ধ শোকোন্মাদিনী রমণীকে সাল্পনা পূৰ্কাক বলিলেন—"ভগিনি! ভূমি এমত গৃহ হইতে আমাকে এক মৃষ্টি সর্বপ আনিয়া দাও, যে গৃহে কখনও কাহারও মৃত্যু হয় নাই।" রমণী মৃত পুত্রকে ক্রোড়ে লইয়া বাড়ী বাড়ী সর্বপ চর্মাইতে वाशिव, अकरवह विविव ''अर्थे आहु কিন্তু এ গৃহে কেহ কখনও মন্ত্ৰে নাই **ब कथा किंद्र(१ मखर श्रेट शाद्य !"**

এতক্ষণে রমণীর চৈতন্যোদয় হইল। সে বৃদ্ধের কথার পভীর মর্ম বৃদ্ধিতে পারিয়া মৃত প্রে ত্যাণ করতঃ বৃদ্ধের চরণ পাস্তে আদিয়া বলিল "প্রভা! আমি বৃদ্ধি-য়াছি.—মৃত্যু বিকারই জীবন, অর্থাৎ মৃত্যুই জীবনের মূল, এখন আমি তোমার শরণাপর হইতেছি, আমাকে ধর্মোপদেশ প্রদান কর।" বৃদ্ধদেব তাহাকে সাম্য মৃত্রেশাক ভূলিল।

বিশহিতে প্রবৃত্তি জন্মিলেই সহজে জাতা-ভগিনী মিলে, কেননা ভাল বাদিলে ভাল বাসা পাওয়া যায় এ কথা আনোঘ সত্য; তাহার প্রমাণ, বৃদ্ধ, ঈশা, চৈতন্য, নানক ও মহন্দ্র প্রভৃতি; কারণ ভাঁহার। বেমন নি:স্বার্থভাবে জগৎকে বাসিয়াছিলেন, জগৎও আজো তাঁহা-দিগকে ভূলিতে পারে নাই, আজও সেই মহাত্মাগণের নাম প্রবণ, গুণকীর্ত্তন প্রবণ করিলে অতি পাষত্তেরও প্রাণ পুলকিত ও ভক্তিরসে বিগলিত হয়। এমন পিতা মাতা কে আছেন যিনি সন্তানগণের মধ্যে ৰুদ্ধাৰ দৰ্শন করিলে স্থী না হয়েন ৪ আর কেই বা এমন পিতা মাতা, যিনি সন্তান-গৈণের অসভাবে হংখিত ও বিরক্ত না হরেন ? অতএব আমর যথন প্রতাক দৈৰিতে পাইতেছি যে সন্তানগণের স্থা পিভা৽ মাতা স্থী, সম্ভানগণের হৃঃথে পিতা মাতা হংখী, আবার গৃত্যানগণের ৰংগ নতাৰ খাকিলে সন্তানগণ ও পিতা क्षि प्रकार भारत यूरी, उथन विध-

জনক তাঁহার সন্তানগণের মধ্যে সন্তাব দর্শনে সুখী ও সন্তুষ্ট হয়েন, ইহাতে সন্দেহ নাই। ইহার প্রমাণ কাহারও সহিত কাহারও অসম্ভাব ঘাটলৈ যুদ্ধ বিগ্ৰহ গালি গালাজ প্রভৃতি বিখের অহিত-কর ঘটন। ঘটে ও অসদ্ভাবকারীগণের মধ্যে উভয় পক্ষেই ঘোর অশান্তি অনু-ভব করিয়া থাকেন। আর কাহারও শহিত কাহারও সদ্ভাব থাকিলে প্রস্পর আলাপেও কত সুখ শান্তি অমুভব করিয়া থাকেন! অতএব আমাদের বিশ্বজনকের ইচ্ছা মঙ্গলময়ী, আমরা যে কোন কার্য্য করিয়া দীর্ঘকাল স্থুথ শান্তি অমুভব করিতে পাই তাহা ঈশ্বরান্ত্মোদিভ, নতুবা যে সমস্ত কাৰ্য্য আপাত সুখ-শান্তি-পূৰ্ণ, পরিণামে বিষময়, তাহার অনুষ্ঠানে বিশ্ব-পিতা সন্তানগণকে কথনই অনুমতি দেন নাই। ধদি কেছ বলেন যে অসংকার্যা করিয়াও ত লোকে স্থুখ শান্তি অনুভব করিয়া থাকে, কিন্তু প্রকৃত প্রস্তাবে সেটা কথনই স্থা শাস্তিকর হইতে পারে না। মনে করুন কোন মদ্যপাগীর বিস্তর টাকা আছে, এবং ডাঁহার স্ত্রী পুত্রেরও কোন-রূপ অর্থের অভাব হইতেছে না. স্থতরাং তিনি নিরুছেগে মদ্য সেবন করিতেছেন, এমন কি পরিপামে অর্থা-ভাব ঘটিবার খুব সন্তাবনা হইলেও না হয় ধরিলাম ভাঁহার কোনও অর্বাভাব হইল না, কিন্তু এমন পীড়া আসিয়া ভাঁহাকৈ আক্রমণ করিতে পারে বছারা তিনি বাবজ্জীবন রোগশব্যার শান্তিত

হট্যা অতি কটে কাল বাপন করেন। এইরপ প্রত্যেক অসংকার্য্যের ফল যে নিজের ও বিখের অসুথকর, তাহার খত শত উদাহরণ আছে, শতএব অসং কার্য্যে যে স্থধ লাভ হয় তাহা বিকৃত্মন্তির ব্যক্তির ক্ষণিক সুধ মাতা। বিশ্বে সদ্ভাব জন্মিলে, বিশ্বের হিতের দিকে প্রবৃত্তি আপনিই চলে, এবং সেই প্রবৃত্তি দারা নিজকে ও বিশ্বকে সুখী করা यात्र। यनि (कह बलन (य मश्मात्रक দকলেই কি স্ত্রী পুত্র পরিবার পরিত্যাগ করিয়া বৃদ্ধ চৈতন্য ও ঈশা হইবেন ? তত্ত্বে বলা যায় যে অবশ্যই নহে। হিন্দুগণ গৃহাশ্রমকে শ্রেষ্ঠ আশ্রম বলিয়া-ছেন, কেন না—"ঘথা বাযুংস্মাঞ্জিতা বর্ত্তরে দর্বজন্তবং। তথা গৃহস্থনাপ্রিতা বর্জনে দর্বে আশ্রমাঃ।" কিন্তু উহা অপ্রশস্তাভঃকরণ গৃহাতুরাগী সার্থপর वाक्तिश्वत उपयुक्त नरह। गृहाखनीय উচিত সর্বভূতের ভৃত্তিপ্রদ হইয়া, রাজা-জনক হইয়া বিশ্বের হিতসাধন করা। केश्रत्व क्रमार्थ महिमा (य शार्थव माधा অলক্ষ্যে পরার্থ বিরাজ করে এবং পরার্থের মধ্যে সার্থ লুকাইয়া থাকে, ইহার প্রমাণ এই, আমরা হত সভা হইতেছি—বত বিলাসী হইতেছি—ফড অভাবকে প্রদারিত করিতেছি, ততই আমাদের বদেশক ও নিকটন্থ (আয়ীয় वर्ष) शानत्र कथा मृद्ध थाक्क, मृत्र वाकि বর্গের সহিত্ত সম্বন্ধ দৃঢ়তর হইতেছে, কারণ,

वक्क, मावान, मावू, ठां, काकि, अफि-कल्लान, खुणा, जाकिः, मन्त्र, खेरधानि त्य किছ वावशर्या किनिव आत्मिकिन, हेरनथ, जाभान, हीन, न्याभनश अङ्ख দেশে উৎপন্ন হয় এবং এক দেশের জিনিব অন্য দেশে রপ্তানি হয়। এইরপ হর বলিরা चामता প्रत्रम्भारत भरम्भारतत छाल मास्मत ভাগী, বেহেতু ইংলণ্ডোৎপদ দ্ৰব্য বাহা ভারতে ব্যবহাত হয়, সেই দ্রব্যাদি নির্দ্মাতাদিগের প্রতি যদি অধিক কর ধার্য্য করা হয় কিন্তা ভালাদের মধ্যে অনৈক্য জন্মে অথবা ভাহার। বিলাদী বা ক্ষ হয়, তাহাহইলে ভার-তেরও স্বার্থে আঘাত লাগে,কেন না এরপ क्रा के ज्यापि दश अधिमूना दहेश करते. নয় একেবারে অপ্রাপ্য হয়,স্বতরাং ভারত हेश्त खित ख्र कृः (धेत खर्मी। 'म्रम्म কাশীবাদ, অসং সঙ্গে বনবাস,' এই যে প্রবচন আছে ইহার সার**তথ অনু-**দারে আমরা যাহাদের সহিত আলাপ কুশল, ব্যবসায় বাণিজ্যাদি করি, স্বার্থের জন্য তাহাদের সুথপাচ্ছন্য ও সচ্চরি-ত্রতা কামনা করি, কেন না ভাহারা क्ष, कनशे ७ अमुक्तविक इहेल, তাহারা যেমন ক্তিপ্রস্ত হইবে, আবরাও মুত্রাং বিশ্বপিতা ভেমনি হইব। প্রত্যক্ষ ও পরোক্ষ ভাবে আমাদের বে বিবপ্রেমের শিক্ষা দিতেছেন, এই আত্থিতীয়ায়ও সেই বিশ্বশ্ৰেমের ছায়া পতিত। (ক্রমশঃ) গ

সতী ও শান্তি।

পশদশ পরিচেছেদ।
শান্তির সমবয়স্কা একটি মেয়ে বলিলোন,
সাজ্যা, দিদি, ভৃত কি নাই ং

শান্তি। তা কেমন ক'রে ব'লব ?

আমি ত কখনও ভূত দেখি নাই। ভূত

আছেন কিনা ভূত ম'শায় নিজে তা

বল্তে পারেন। কেন কিরণ, তোমাকে

কি কথনও ভূতে পেয়েছিল নাকি ?

কিরণ। ভূতের কথা ব'ল্লেই দিদি ঠাটা করেন আর ভূতের 'গল্ল' ভন্লে আমাদের বুক গুরু গুরু করে, গা কাটা দিরে ওঠে। 'সেই লম্বা লম্বা ঠ্যাং, সেই লম্বা লম্বা হাড, সেই কুলোর মত দাঁড, সেই বিভীষণের মত রক্তমাধান মুধ, সেই কামারের জাঁতার মত চাম-ডায় ঢাকা বুকু, ধামার মত লাল টক্টকে ছটো চোথ, যেন তাতে কাঠের আঙ্রা জল্ছে,"—এ গপ্প ধ্থন মনে হয়, তথন বা কাঁপ্রে ভোলে।

শাস্তি। এ গঞ্জটি কার কাছে শুনে-ছিলে, কিরণ ?

কিরণ। কেন দিদির কাছে।

্শীন্তি। তুমি এমন ভূত কোথায় দেখ্লে হিরণ ?

্ **হিরণ। দিদি, আমি কথন দে**থিনি। মার মুখে **ওনেছি**।

হিরথের মা তথার উপস্থিত ছিলেন, শান্তি ভাঁহাকে বিজ্ঞানা করায় তিনি

বলিলেন, 'আমি কখনও দেখিনি, তবে লোকের মুখে কতবার কত গপ্প ভনেছি। তখন শাস্তি বলিলেন, ঐরপ সকলে ব'লে থাকেন, কেহ কথন দেখেন নি, গল ভনে রেখেছেন। ভূত যদি থাকৃত,তা হ'লে কেহ না কেহ কথনও দেখ্ত। কিরণ বলিলেন, আচ্ছা দিদি, ভূত, প্রেত যদি না থাকুবে, তবে ওসব কথা কোথা থেকে এল ? শাস্তি বলিলেন 'খরগোসের শিং' 'সোনার পাথর বাটী 'কাঁটালের আঁবসন্থ,' পাঁটার গোহাড়' 'খোড়ার ডিম,' 'গগন ফুল' এ সকল কথ। কোথা থেকে এল ভুমি কখন সোণার পাথর বাটীতে ক'রে কাঁটালের আঁাব্সবের চাট্নী দিয়ে 'পাঁঠার গোহাড় খেয়েছ কি কেনন লাগে ভাই ? কিরণ বলিলেন, ছি:. ত। হলে দদ্য 'মহাব্যাধ' হবে। শান্তি বলিলেন, "পাঁটার গোহাড়ে"র কথা হচ্চে, তুমি "ভগবতীর' হাড় আনুলে। তা যাকু বাস্তবিক ফেমন আঁব্সৰ হয় না, তথাপি হইতে লোকে ব'লে থাকে "কাঁঠালের আব্সঘ," বাস্তবিক "দোনার পাথর বাটা" নাই, তথাপি লোকে বলিয়া থাকে "সোনার পাধর বাটা'। এ সকল বেমন কথা মাত্র; ভূত প্ৰেত ডাকিনী, শাকিনী ও সব ভেমনি কথা মাত্র। ভূত প্রেভের বে সকল "আজ্ গুৰী--জাৰাড়ে" গল পোনা

যার, ওসব প্রার ছষ্ট লোকের রচনা। কিরণ বলিলেন, কেন দিদি, ছ্টলোকের ও সব গরারচনা ক'রে ফল কি ?

भांखि विलित्न, शांता औ भव गंद्र রচনা করেছে, তারা সব চোর। লোককে ঠকিয়ে খাওয়া তাদের ব্যবসা। ভূতের ভারে কেহ বেরবে না, চোরেরা সব চুরি করে নিয়ে যাবে। এমন অনেক গল শোনা গিয়েছে, যে কোন বাড়ীতে চোর পড়বার আট দশ দিন আপে বাড়ীর মধ্যে রাত্রে থুব চিল পড়ছে; কয়লা, হাড়, মড়ার মাধা, এই সব ছ এক দিন আছের পড়ছে। বাড়ীর লোকের। একবারে সশক্ষিত। বাড়ীর মধ্যে এঁক টু টু শব্দ হ'লেই মনে করে ঐ ভূত এসেছে, আর নিস্থার নাই। কিষে ভূতের হাত হইতে রুখা পাওয়া যায় ও বাড়ীর বিধবা ঠাকুরমা ব'ল্ছেন, "আমি ছেলেদের বার্বার্ বলি, ভোরা বাপু গ্রায় ষা, পিতি টিঙি দিয়ে আয়ে। বুড়োটা আর কত দিন ঐ রকম করে বেড়াবে। তা, ওরা বলে, "একবারে হাব।" তা, আমি অভাগী ম'র্কোনা, আর ওঁর উদ্ধারও হবে না।" বাড়ীর বড়থে বলিভেছেন, নেজে বৌর ছোট ছেলেটা ম'ল, ''ছপো দোৰ'পেলে, তাবে দোষ কাটিয়ে দিলে না। সাধে কি আর এ ভূতের অভ্যাচার হয় ৭ কেই ব'লছেন ''শান্তি স্বস্তায়ন' কর, কেহ विलिएए इन . "बह्यान" कर, बहेब्राल নানা জনে নানা কথা বলিতেছেন।

मिर्ड परिंड स्मार्या अस्म नेष्म, সারা রাত্ অন্ধকার। আর ঐ অনা-বস্যা রাত্রিতে ভূত, প্রেত, ডাকিনী, শাকিনীর মাহেল বোগ। ছানা পোনা কাচ্চা বাচ্চা নিয়ে সারা রাভ নেচে বেড়ার। যে বেরর, তার বাড় মুড় ভেবে রক্ত থার। কার বাড়ে ছটো মা**ধা, বে** আজু রাত্রে বের'বে। ঐ **বে ঘরের** দরজা বক্ষ হ'ল, সারা রাতের মত। চোর এদিকে এসে ধানের মরাই কেটে সারা-রাত ধান ব'য়ে নি**রে যাক। ভোর হ'তে** না হ'তে হু কাহন ধান পাতার**়। সকাল** e'ল। কাক কোকিল ভাক্ল। বা**ড়ীর** কর্ত্তা গিলী "হুগুগাঁ" বলে শ্ব্যা ভ্যাগ ক'লেন, চোকু মূচ্তে মূচ্তে বের্রৈ এসে দেখেন এই কাও। সর্বনাশ! দেখেই অমনি মাথায় হাত দিয়ে ব'সে পড़ लन। किकात जाक, श्रु निम जाक, তদস্ভ কর্। আবে ত**দন্ত। চোর যধন** ''থানা পার" হয়েছে, তখন আর ভাকে ধরে কে
 বাড়ীর ঠাকুর মা ব'ল্ছেন, ''আমি ঠাওর পেয়েছিলেম গো! বখন भक्ते। इ'ल, जामि मत्न करलम, जाब অনাবদ্যা রাভ্, বোধ হয় বাড়ীতে মড়ার মাথা পড়ােলা, পর পর জনেক বার भक्ष ह'ल। जानि मत्न क द्वान, मज़ान মাথাটা বোধ করি উঠনে গড়িছে বেড়াটে, আমি অম্নি রাম-রাম-র।ম--রাম কতে লাগ্লেম। আরি 🔩 রাম নাম কংত কতে পুৰিয়ে পড়লেম। হার, হার, আমি অভাগী বদি তথক উঠি.

छ। र'तम खात ध नक्तनाभाने रह मा। ন্দেশ দেখি বোন, ভূমি ব'লছিলে কি व्यनिष्ठे रहा । अरे तन्य कि र'न १ त्य পৰ ভুত প্ৰেভের গল শোনা যায়, ওসব কুরী ক'রে লোক ঠকাবার ফন্দি। ঐ বাড়িরে কষ্ট বাড়ান নির্কোধের কাল।

গর ভনে মূর্ব লোকে বিখাস করে, সড়া সভ্য ও সৰ কিছুই নৰ। व्यत्नक कृत्यं कहे चाहि। जात्र मुख् মাবার ভূত প্রেত ইত্যাদির মিধ্যা ভয়

ত্রিকাল।

অভীত।

যাঁধার অভাব হয় ভাল লাগে বুঝি তারে, সমুখে থাকিলে তার সমাদর জানিনারে। ষ্ণতীত চলিয়া গেছে শ্বতি হাদে লেখা আছে, কেন বা চলিয়া গেল কেন না রহিল কাছে ! যে দিন চলিয়া গেছে সেদিনত ছিল ভাল. व्यनांनरत्र व्यवदश्ल वृक्षि वा हिन्सा (अन ! **সভীত মেদিন গুলি** আৰ না আসিবে হায়। এলে সমুচিতাদরে প্রাণ ভরে তুৰি ভায়। এথনো শে অভীতের উজল কিরণ রেখা ছাদয় লিডুত কব্দে রয়েছে হুব্দন্ন লেখা:

এখনো সে অতীতের হরিষে আশার জাঁকা চিত্র খানি রহিয়াছে পরাণে পরাণে মাথা: এখনো সে অতীতের স্থন্দর মোহন ছবি হৃদয় আকাশে যেন উষার লোহিত রবি; এখনো সে অতীতের বাজানো বীণার তার. মক্রময় হাদয়েতে বরষিছে স্থাধার।

বর্জমান। চলিয়াছে বর্তমান ভবিষ্যতে লক্ষ্য করি, ভাগিতেছে জীবকুল ঘটনার স্রোতোপরি, ষটনার প্রতিকৃল যাইবারে কত জন ৰ্বিছে ভাগ্যের সৰে করি যত্ত্ব প্রাণপণ।

কত জন বৰ্ত্তমান ঘটনা স্লোভেতে ভাগি সুখের স্বপন কত হেরিতেছে রাশি রাশি। কডজন ক্ষুদ্ৰ বাছ করিতেছে দক্ষালন, ভাডাইয়া বর্তমানে লভিতে অমূল ধন। কভল্পন পোষা আশা সফল করিবে ব'লে ভাবিতেছে বর্ত্তমান मिनि। यांडिक छ'ला। স্থী জন ভাবিতেছে 'शाक ठिल वर्छमान, আরও অধিক স্থগ নাচাইবে মনঃ প্রাণ। চ:খীজন ভাবিতেছে যাক এই বর্তমান, তা হলে হইবে মম এ হুঃখের অবসান 1' কিন্ত থাক থাক থাক . থাক ভূমি বর্ত্তমান, কি দিন আসিবে বলে' ভয়েতে আকুল প্রাণ ! ভবিষ্যৎ। ভাবি ! তুমি মম ঠাই ভীষণ মুরতি হও, কাঁপে প্ৰাণ তৰ নামে

রও ভূমি দূরে রও।

কেন বে পভর তব भूर्व व्यक्तकात्र जानि, কেন যে তোমার নামে মনে এত ভন্ন ৰাসি. কেন বে ভোমার নামে তুরু তুরু কাঁপে হিয়া সাধ হয় তব হাত এডাই পরাণ দিয়া অত্যের আরাধ্য হ'রে কেন যে আমার ঠাই ভবিষ্যং! विष्यू माछ ভোমার আদর মাই. তাহা কি বুঝিৰে ভূমি! তুমিত অনন্ত-ৰণা, कुप्त, ভग्न कीवरमत्र কি যাতনা তা জাননা, হতাশ জীবন মাধে कि (य जर मना कारन, আমিও তোমার মড নাহি জানিতাম আগে। প্রতিপদে ভগ আশ হয়েছি, এখন ডাই শ্বরিলে মূরতি তব পরাণে চমক পাই, তব চিত্ৰ কল্পনাতে काॅं (१ हिया बड़ बड़, তাইতে চাহেনা আপ হতে **আ**র **অগ্রসর** । कु, जा।

৺ गराषा विक्रमहें हर्षा भाषाय ।

णानि नव छोटा वाकाना ভारादा माकारेना नव तक, **নর নারী স**ব নির্থি তাহায় ভাগিল ভাব তঃকে। লেখনী প্রদক্ষ সকলেরি মুখে বরে ঘরে আলোচনা, ছর্বেশনন্দিনী কপাল কুওলা উপস্থাস অতুলনা। ভাষার মাধুরী রচনা চাতুরী লিপির নৈপুণ্য কত, কিবা কাব্যবস বিষত্তক মধু---ক্ষরিতেছে অবিরত। **সাহিত্য ভাঙা**রে রতন মাণিক মণি মুক্তা থরে থরে, **য়াখিলা** দেখায় কতই ২তনে , সাজাইয়া নিজ করে। ছাই কাল কীট জীবন প্রস্থান কাটিয়া করিল কয়, বুস্তচ্যত আত্ম বঙ্গের বস্থিন তাই বঙ্গ শোকনয়। প্রতিভার যেন প্রদীপ্ত তপন নিশ্বতার—শশধর, ছবি শুশী ছুই একাধারে যেন বিরাজিছে নিরন্তর। **লেধক সমাজে** স্বার অগ্রাণী ⁴ শি**কিত সমাজে** বড়, ক্ৰির স্মাজে ক্রি চুড়:মণি विচাদে अवीव क्छ।

এহেন রতন হারায়ে জননী শোকেতে পাগল পারা. বঙ্কিমের স্থান কে পুরিবে আর নিবিল উজল তারা। পূর্ণিমার চাঁদ শুক্ত করি দিকু ভিরোহিত একবারে, অঞ্লের নিধি কেড়ে নিছে কাল ধরা পুর্ণ হাহাকারে। যাও স্থর পুরে, অনিত্য শরীর পুড়ে যাক চিতানলে, আত্মা অবিনাশী, নিত্য স্থাংখ ভাসি, মিশুক অমর দলে। নন্দন কাননে আনন্দে বিহার कत श्राथ पाञ्चित्तन, মায়ার বেজনে বন্ধ - হে জীব সেথায় চির স্বাধীন। জরা মৃত্যু শোক অতীত সেদেশ অনন্ত স্থথের ধনি,---স্থার ভাণ্ডার খুলিয়ে তোমার मिर्वन विश्व-खननी। বজের বছিম হ'লে বরণীয় চির শ্বরণীয় ভবে, তোমার গৌরব গাইবে ভারত শত কর্পে উচ্চরবে। ভাবী বংশধর ভূলিবে না কভ অক্স বহিষ নাম, বিশ্বরে ৰগন হইবে সকলে স্থারি তব গুণগ্রাম।

স্বর-সাধন প্রণালী।

(७৫) मःथा। ७१: शृक्षात भन्न।)

ভূপালী—মধ্যমান। দংগ্ৰহ

{ मा थि. मा थ <u>न</u>

মে— রে **ৼ—র বা—** ৩৬ ৮ | | ০। | ১৬ ৮ পুধুপুগুঝুসাধ

জে স-্র-

ভ ভ | +। । সা শ্ব সা শ্ব শ্ব

শামু- শ- র

ত। ৮ ৮ | •। ৮ <u>সাঞ্জাসাসা</u> গাধ.

বী- ণামৃ- দ হ।

 उ
 ।
 +

 मा
 ४
 मा
 भ

 ग
 भ
 ग

(ম- (র ঘ-র, ব- **হ**-

প সা সা সা ঋ গা

ভ দি- ন- ন প- র

<u>না. ধ. ম.</u> ক. মা. ধ প ক

পি- য়া খ-র জা- এ

5년 X X 1 + 6 년 위 위 4 제 : 4 개

স-ৰ মি-লি গা-ও

न ।

মিশ্র বিভাস—কাওয়ালী। আহায়ী।

बः गीः

ना मा स । ज ज ज

्राचन् व्यक्तात्र स्नात्र वर्ष

क-विबसा ब-विवस

इ-**त्रि इ-**त्रि इ-त्रिय-त

ত।।।। ।।।।। প্ৰপ্পর গ্ম গঙ্গা

ভ-ব দি-কু পা-রে চল্।

। । । +। ।।। श्र श्र ६ मा मा मा मा

प- लाइ-ब्रि **भ-ला**इ-ब्रि,

চ-ट्यार-त्रि ए-ट्यार ति

वलाद मन इति हि. হরি তোর ক্ষুধার অন্ন, হরি ভোর পিপাসার জল। ছুর্বলের বল হরি, অধ্যভারণ হরি. পতিতপাবন হরি. হরি ভকত-বৎসল॥ ছাক্তি রস পান কবি. ৰে বলে হরি হরি, যাশা কলভক হরি. দেন তারে মোক্ষ ফল। रित दिन रित विधि, হরি মন্ত হরি সিন্ধি, হরি বল হরি বৃদ্ধি, হরি ভরুদা কেবল। **পাষ্ড-দল**ন হরি, নান্ডিকের দর্পহারী. ঘাঁহার পুণ্য প্রতাপে, কাঁপে পাণাক্রর দল। अत्म हति वद्य हति, পুহ পরিবারে হরি,

(एक् मन व्याप्त इति,

নিশাদে প্রশ্বাদে হরি. শোণিত প্রবাহে হরি, নয়ন অঞ্জন হরি. হরি শক্তি হরি বল। চিনায় অরূপ হরি. নহেন কভু দেহধারী, िं हिमानम अप धति. করেন প্রাণ শীতল. প্রবাসে কাননে হরি. পর্বত পাথারে হরি, আকাশে ভূতলে হরি, হরি ব্যাপ্ত সর্বান্তল। গৃহে দেবালয়ে হরি, পথে কর্মক্ষেত্রে হরি. আহারে বিহারে হরি. হরি প্রাণের সম্বল। অখণ্ড অব্যন্ন হরি, ভক্তবাঞ্চা-পূৰ্ণকারী, मीन अरन मश कति. দেন চরণ কমল। সুখে হরি জু:থে হরি. विপদে मम्भए इति. क्रनाम महाल इति. হরি পরম মজল। হরি ভক্তি হরি মুক্তি. হরি স্বর্গ হরি গতি, হয়ি জগতের পতি. হরি ইহ পরকাল। হরি পিতা হরি মাতা. रित्र ७क कानगणा,

ছরি সর্বজনত্রাতা, শুদ্ধসন্থ নিরম্প । নরনে দেখ হে হরি, রসনার বল হরি,
হ্বি চরণ কমল । ক্রম্ণ:)

তপস্বিনী রাবেয়া।

ভারতবর্ষে মৈত্রেরী ও গাগী এগ-ধর্ম্মবিজ্ঞানা-জ্ঞানে, তপস্যায় এবং লোচনায় ঋষিদিগের मुश् লাভ করিয়াছিলেন। শত শত ব্রহ্মজ্ঞান-मम्भन महिं । ताकविंगन (महे न्नर्गीया বরবর্ণিনীগণের অসামান্ত প্রতিভা ও ধশ্বভাৰ দৰ্শনে বিষুধ্ধ হইতেন। ভাঁহারা অবলা হইয়াও বিপুল আধ্যান্থিক জ্ঞানসম্পন্ন ঋষিগণের সহিত স্থবুকং ৰাক্ৰসভাতে, নৈমিষারণ্য ক্ষেত্রে ও যক্ত-শাসের গভীর তত্মলোচনয়ে সকলকে বিশ্বিত কবিছেন। সেই পুণাবতী রম্বীগণের পবিত্র চরিত পুরাণ ইতিহাসে স্বৰ্ণাক্ষরে বর্ণিত ইইয়াছে। অন্তান্ত কেলের ধর্মপান্তেও আমরা ঐরপ দেবীগণের পবিত্র চরিতকাহিনী পাঠ করিয়া প্রীতি লাভ করিয়া থাকি। অদ্য আমরা মুসলমান তপ্রিনী রাবেরার অপূর্ক জীবন বুতান্ত সংক্ষেপে বর্ণন করিব।

মুসলমান সমাজে চিরাবরোধ প্রথা প্রচলিত । এই অবরোধ শৃথাল ভগ করিয়া রমণীগণ স্বাধীন ভাবে গ্রনা শ্রম, নির্জ্ঞানসাধন এবং পুরুষগণের সহিত ধর্মালোচনা ইত্যাদি করিতে তেমন স্থােগ ও স্থবিধা প্রাপ্ত হন না; কিন্তু যেখানেই স্বৰ্গীয় ডেজ ইইয়াছে, সেণানেই এই সামাঞ্চিক শুঝল ভগ্ন হইয়াছে। আকাশবাসিনী বিহলিনীর ভাষে উন্তের রমণীগণ পর্মে-পাধীনভাবে সেবার ব্রের অতিবাহিত করিয়াছেন। ৰলমোত প্রবল হইলে মৃত্তিকার বাঁধ ভাঙ্গিয়া যায়, তথন অতি প্ৰবল বেগে জল বহিৰ্গত হইতে থাকে। কালাবলোধবাদিনী রমণীগণের প্রাণ বর্থন স্পর্নীয় তেকে উদ্দীপ্ত হয়, তথনও তাহারা সমাজের গণ্ডীকে অভিক্রম করিয়া নকভাবে, নৰ বলে ধর্ম্মের বিভারপতাকা-ছত্তে সংসার ক্ষেত্রে ভ্রমণ করিতে থাকেন।

ভূক্তের অন্তর্গত বসোর। নগরে
অতি দীন দরিজ গৃহত্বের পর্ণকৃটিরে
রাবেরার জ্ম হয়। রাবেয়া অতি
শৈশবে পিতৃমাতৃহীন হইলেন। "নিশদ
কর্মনত একাকী উপস্থিত হয় না।" বিদ্ধালিন বাইতে না বাইতে বসোরা মধারেও
ভারে সকলে বিষম প্রবাদ প্রবিদ্ধাল

রাবেরা এই সময় তাঁহার ভগীগণের
নিকট বাস করিতেছিলেন। এক জন
ছই লোক ছলপূর্বক রাবেরাকে আত্মীয়
গণের নিকট হইতে বিচ্ছিন্ন করিয়া
করেকটী তাম মূলার বিনিময়ে এক জঘত্ত
ক্রুমতি ধনীর নিকট বিক্রেয় করিল।
ছংথিনী রাবেয়া পরিজনের নিকট হইতে
বিষ্ক্ত হইয়া দাসীরূপে জন্য গৃহে
গমন করিলেন।

বর্ত্তমান সময়ে স্থসভ্য দেশের লোকে
পশু পক্ষীর প্রতিও সকরুণ ব্যবহার
করিয়া থাকেন; কিন্তু সে সময় ক্রীত দাস
দানীর প্রতি লোকে তদপেক্ষাও হীন
ব্যবহার করিত। যে ব্যক্তি রাবেয়াকে
ক্রেয় করিল, সে একে ধনগর্কের গর্কিত,
তাতে আবার হিংলপ্রকৃতি, স্থতরাং
সাবেয়া ভয়কর করে পতিত হইলেন।
সেই নিষ্ঠ্র প্রভ্ রাবেয়াকে এত কাজ
করিতে আদেশ দিত, যে বালিকা তাহা
কিছুতেই সম্পন্ন করিয়া উঠিতে পারিত না।
সকল কার্য্য সমাপন করিতে না পারিলে
ভাহাকে ভয়ানক য়য়ণা ভোগ করিতে
হইড।

এসময় হইতেই রাবেয়ার প্রাণের
প্রভীরতন ছানে ধীরে ধীরে ধর্মবীজ
অভুরিত হইতে লাগিল। তিনি প্রভুর
তিরস্নার, অপমান ও লাজনা ভোগ করিয়া
নির্ভানে গিয়া দেই অভ্যামী ভগবানের
নির্ভাট ক্রন্সন করিতেন তাহার হই
তল্পে ভ্রন্থারা বহিত, প্রাণের সকল কথা
সর্বাহর পর্যোধ্রের নিকট নিবেদন

করিতেন। প্রতিদিন এইরূপে নিজ্জন প্রার্থনা করিতে আরম্ভ নির্যাতনপ্রাপ্ত বালিকার কোমল প্রাণ ভিখারিণী হইয়া দয়ার প্রমেশ্বরের তাঁহার দিকে ছুটিন। কিন্ত যতই দিন যাইতে লাগিল, ততই নিৰ্যাতন বাড়িতে লাগিল। বালিকার প্রাণ অস্থির হইল। এই তুঃসময়ে পতিত হইয়া এক দিন তিনি পলায়ন করিবার উদ্দেশে গোপনে গৃহ পরিত্যাগ করিলেন। অতি ব্যস্তদমন্ত হইয়া কণ্টক ও জঙ্গলময় পথে উৰ্দ্বাদে দৌড়াইতে লাগিলেন। হঠাৎ ভূপতিত হওয়ায় তাঁহার এক থানি হাতভগ্ন হইয়া গেল। তথন তিনি আর গমন না করিয়া অশ্রুপূর্ণ নয়নে উদ্ধি দিকে দৃষ্টি-করিয়া নিম্ন লিখিত মৰ্মে প্ৰাৰ্থনা করিলেন,—"দীনবন্ধে পরমেশ্র ! আমার পিতা মাতা নাই, অসহায় অবস্থায় পতিত হইয়া প্রগ্রে বন্দিনীভাবে কাল্যাপন করিতেছি। আমি বে কপ্তে আছি, তুমি দেখিতেছ। কিন্ত ইহাতেও আমি শোক कित ना यनि जुमि व्यमम रख। (इ আমার পরমেশ্বর! তুমি কি আমার প্রতি প্রসন্ন ''? প্রার্থনার পর ডিনি প্রাণে স্থায়িবল লাভ করি**লেন। তখন** পলা-য়নে বিরত হইয়া গৃহে প্রতিগমন ক্রবিলেন।

তিনি নিয়তই গভীর রাতে জাগ্রত হইরা প্রার্থনা করিতেন। এক দিন তিনি গভীর রম্পনীতে তাঁহার শ্রনকক্ষে বসিরা প্রার্থনা করিতেছিলেন, এমন সমর গৃহস্বামী জাগ্রত হইরা সেই জম্পর প্রার্থনাধ্বনি ভনিতে পাইলেন। তিনি शीत शीत निकरेवर्खी इरेश मता-যোগের সহিত ভনিতে লাগিলেন। সেই নিৰ্জ্ঞন কৃটিয়ে নৈশ নিস্তক্তা ভেদ कतिया धीरत धीरत य अगुरुनिमानिनी উপিত হইভেছিল, বাকা প্রার্থনার তাহাতে গৃহস্বামীর কঠোর স্বাদ্য দ্রবীভূত **হইল, পাষাণ গলিল, মরুভূমিতে জ্লধারা** প্রবাহিত হইল। রজনী প্রভাত হইবা-মাত্র গুহস্বামী রাবেয়াকে অতি বিনীত-ভাবে কহিলেন,"আপনার ন্যায় পূজনীয়া মহিলাকে দানীরূপে গৃহে রাখিয়া আমি অত্যক্ত অন্যার করিয়।ছি। অপরাধ মাপ করুন, আপনাকে সাধীনতা অপুণ করিলাম। আপুনি সীয় মনোমত স্থানে বাস করিয়া অভীষ্ট মহৎ ব্রত সাধন কর্মন।" রাবেয়া ক্রীভ দাসীয় হইতে প্রমৃক্ত হইলেন। তিনিসে ভান পরি-ত্যাগ করিয়া সাধন ভজনের অনুকল স্থানে গমন করিলেন, এবং কঠোর তপ-স্যায় প্রবুত হইলেন। তিনি অনেকদিন নির্ক্তন অরণ্যে বাস করিয়া গভীর ধান সমাধিতে মগ্ল ছিলেন। সাধনায় সিদ্ধি-লাভ করিয়া পরিশেষে তিনি মকানগরে গমন করেন এবং দেখানেই অবশিষ্ট মীবন অভিবাহিত করেন।

রাবেরা মক্কানগরে ভাঁহার ক্টারের মধ্যে উপবিষ্ট । বাহিরে অনেক লোক জন বিদিয়া রহিয়াছেন । রক্কনী জ্যোৎসাময়ী। চল্লালোকে চতুষ্কিক্ উভাসিত। স্থনীন আকাশতদ রক্তবর্ণে অন্নরঞ্জিত। এই
ননোহর শোভা দর্শন করিয়া বাহির
হইতে একজন লোক বলিয়া উঠিলেন—
"আর্য্যে। একবার বাহিরে আগমন করুম,
দেখুন স্টের কি অপরপ শোভা হইয়াছে!" গৃহের অভ্যন্তর হইতে রাবেয়া
উত্তর করিলেন "তুমি একবার ভিতরে
আদিয়া স্রন্থার অপূর্বে শোভা দর্শন
কর।' রাবেয়ার ঈশরাম্থভ্তি, ঈশরপ্রেম কি গভীর ও সত্যমূলক ছিল।
আর্যাঞ্জিগণের ন্যায় তিনি স্বীয় আন্ধার
ভিতরে সেই চিময় পরমান্ধাকে দর্শন
করিতেন। বিনি ভিতরে তুবিয়াছেন,
তিনি কি বাহিরের অসার অকঞ্জিৎকর
সৌল্ব্যা দেখিয়া সন্তই হইতে পারেন ?

রাবেয়া লেখাপড়া জানিতেন নাঃ ধর্ম্মবিজ্ঞানের ফটিল তথ শিক্ষা করেন নাই: কিন্তু তিনি প্রমেশবের সহিত যোগলাভ করিয়াছিলেন। তিনি বাহা বলিতেন তাহার সহিত উন্নত ধর্মণাত্রের মিল হইত। যিনি প্রমেশবের দক্ষিৎ-কার লাভ করিয়াছেন, তিনি বোগরুজ অবস্থায় ধাহা বলেন. ভাহাই বেদ विमाल, कांत्रांग, वाहेरवन । अवनाहे রাবেয়ার প্রত্যেক কথা সকলে—এমন কি মকার সাধুগণও ধর্মণাত্তের ন্যায় এছণ ब्राट्यशंटक मर्मन कब्रिशं. করিতেন। ভাহার পবিত্রবাক্য শ্রবণ করিয়া কৃতার্ হইতেন। দলে দলে লোক রাবেয়ার উপ-দেশ গ্রহণের জন্য দূরদেশ হ**ইতে আসিওঁ।** রাবেয়া অনেক সময় সম্র নিশা

জ্পাসনাভধ্যানে বাপন করিভেন। স্বর্গ बदक, भाभ भूगा এवः क्रेश्वरत्त्र चत्रभ স্বাদ্ধ তাঁহার অতি পরিষার किन। ভাঁহাকে অনেকে ধর্মসম্বন্ধীয় নানাবিধ প্রশ্ন করিত, তিনি অতি স্থন্দর-ল্লপে ভাহার উত্তর প্রদান করিতেন, হ্ন সকল প্রশ্নের উত্তর পাঠ করিলে প্রতীতি হয় যে, তিনি ধর্ম্বের উচ্চ অঙ্গ-नाथरन छात्रछत देविक महर्विक्रित्रत সৰভোগী ছিলেন। নিরক্ষর, শাস্ত্রজান

বিহীনা রমণী বে কেবল ভগবদারাধনার ভিতর দিয়া আধ্যাত্মিক সমুদর সত্য লাভ করিতে পারেন, রাবেয়া ভাঁহার উজ্জল দৃষ্টাস্ত। সত্যান্তরাগ, ঈশবান্তভৃতি, ভক্তি এবং বৃদ্ধজ্ঞানে ভাঁহার হৃদ্য বিভূষিত ছিল। তিনি শীবিতাবস্থায় যেরূপ স্থগীয়া দেবীরূপে মুষলমান জগতে সম্পুজিতা হইতেন, চিরকাল নানাদেশীয় সাধুপণের মুখে তাঁহার পবিত্র জীৰন-কাহিনী সেইরূপ কীর্ত্তিত হইতে থাকিবে।

আশ্চর্য্য অতিথি সৎকার।

সকল ধর্মে সকল দেশে অতিথি-ন্থকার উচ্চ স্থান অধিকার করিয়াছে। क्षिक मरमानेत्र जिल्लावनीटक हेरात किছ व्याधास्त्र पृष्टे इस । आत्रव सदक्षणीस क्ष-क्षशंम দেশ; স্তরাং তথায় যে বাভিখ্যের প্রাধান্য পরিলক্ষিত হইবে. ভাছার বৈচিত্র্য কি ? আরবীয়দের আডিশ্য শুপ্রবিদ্ধ, কিন্ত ইহাদিগের बैर्स्य दिश्वान नारम दक शृह्यूना जम्ब-শামী শাতি आंटि. তাহাদিগের **অতিথি-স**ৎকাৰ্য্য অত্যাশ্চৰ্য্য, আদৰ্শস্থল 🖷 অন্তক্রণীর। নিয়ে হউরাণের বিদ্যান সিংগর আতিখ্যের বিষয় প্ৰকটিত ছইছেছে। ইরাক্ ও সিরিয়ার প্রান্ত-त्ररन च्छेत्रान नादम বাহে। প্রধাকার বেদবানদিগের কাহারও विषक् स्थाप्ति पार्ट (स्थारन[े] स्थ स्थन আৰু বাস করে) অতিথি আসিলে

বা আসিতে দেখিলে গৃহস্বামী তৎক্ষণাৎ অগ্রসর হইয়া ভাহাকে অভ্যর্থনা করিয়া আনেন এবং কহন্তে তাহার আধর্মজ গ্রহণপূর্ব্বক অবভরণে সহায়তা করেন। অভি তৎপরতার উদন্তার मर्क्सा के शालिका चानिया छी लाक-দিগের অনধিকৃত তামূর এক অংশে তাহা সহতে বিছাইয়া দেন। শীঘ্ৰ করি ত্রালিয়া কাফি প্রস্তুত করিয়া তাহাকে অংগ্রে দিয়া, যদি অপুর কেহ তথার উপস্থিত থাকে, ভাহাকে দেন, কিছু অবশিষ্ট থাকিলে অসুমতি গ্ৰহণ পূৰ্কক শাপনি গ্রহণ করেন নচেৎ নহে। কিছু খাদ্য ডব্য তার পর আনিয়া ঐ ক্রপে (मन। नर्करभरव बारज बानील इत्र। আপনি অতিধির হাত ধোরাইরা দিয়া "মহাশর অভ্ঞহ করিয়া প্রহণ করুল" এইরণ সাল্লার বাক্যে ভাষাকে ভোজন

করিতে অসুরোধ করেন। অতিথি সমন এইরপ একত্রে ভোষন করিতেবদে। ইহার পর কেহ আসিলে, ষতক্ষণ না পুর্বোক্ত জনের আহার শেষ হয়, ততক্ষণ म **अर्थका करत,** जश्मद्र स्म वस्म । অভিথি সন্ধ্যা পর্যান্ত অবন্থিতি করিলে. আরব তাহাকে পুনর্কার ভোজন করাইয়া তাহার অধের নিমিত তুণাদি আনিয়া দেষ। অতিথি বাটী পরিত্যাপ করিয়া গমন করিলে যতক্ষণ সে আর এক জনের আতিথ্য স্বীকার না করে, ততক্ষণ ভাহার পশ্চাদগমন করে। ইহার মধ্যে তাহার যদি कान ७ विभन घटि, उब्बना त नामी ७ কোনও ক্ষতি হইলে তাহাকে তাহা পুরুষ করিতে হয়। যদি-পথিমধ্যে অতিথির দক্ষা হত্তে পড়িবার সন্তাবনা থাকে, ভাহা-হইলে অতিথি-সেবক সণস্তে স্থসচ্ছিত

হইরা দলবলে ভাহার অহুসমন করে।
কোন প্রব্য অপষ্ঠ হইলেওনা কিরিছা
পাইলে দক্ষ্য বে দলে ভ্রু, সেই দলপতির নিকট গিয়াবলে বে, "মহাশর!
অমুক আপনার দলভ্রু সে আমার অভিথির অমুক প্রব্য অপহরণ করিরাছে;
অভএব প্রতিপ্রেরণ করিতে আদেশ
হয়।" ফিরাইয়াপায় ভালই, নচেৎ উভর
দলে বিবাদ আরম্ভ হয়—এমন কি অনেক
সময় প্রাণ পর্যন্ত বিনত্ত হইয়া থাকে।

আর একটা কথা। বাটা অবস্থিতি কালে অভিধির অধ মরিয়া গেলে বা চোরে চুরী করিলে, গৃহস্বামীকে ভাছার অন্য আর একটা খোটক দিতে হয়। আরবীয়দিগের মধ্যে এইরপ অভিধি-সৎকার প্রথা না থাকিলে বে তৎসমাজে কত অনিষ্ট হইত, ভাহা বলা যায় না।

আশ্চর্য্য সতীত্ব রক্ষা।

আমরা পদাবতীর বিষয় সকলে অবগত আছি। ইনি স্ব সন্তান করাত দিয়া কাটিয়া অতিথির সেবা করিয়া-ছিলেন। এই প্রবদ্ধে বাঁহার বিষয় আলোচিত হইতেছে, তিনি সন্তান বিশ-জ্বান দিয়া দতীয় ধর্ম রক্ষা করিয়াছেন। ইনি একজন মহারাষ্ট্রীয় হিন্দু রমণী—মধ্যবিত্ত প্রহের কন্যা ও গৃহত্বের ভারা। কিছুদিন হইল সোলাপুর ও বিজয়পুরের মধ্যবন্তী তম্বল নামে ষ্টেশনে ব্রেক্রাড়ীতে কোন স্থামে

বাইবার জন্য সালক্কতা শ্রসজ্জিতা হইর।
ক্রোড়ে একমাত্র একবৎসরের শিশু
সন্তান লইরা উপস্থিত হন। টেশনের কর্মচারিগণ পশুপ্রকৃতির মানব,
হরতিসন্ধি নিন্ধির জন্য ইহারা বড়্যত্র
করিরা উহাকে উক্ত গাড়ীতে বাইতে
দিল না। রমণী নিরুপায় হইর। অন্য
গাড়ীর প্রত্যাশার তথার কিছু সমর
বাকিতে বাধ্য হইলেন। গাড়ী চর্লিয়।
গেশ, ইহারা উহাকে সমন্তান একটি
বরে লইরা পিরা উইার স্কীত্ব নাবের

কথা উত্থাপন ও চেঠা করে। সতী গতান্তর না দেখিয়া বোধহয় মল মূত্র ত্যাগের ভান করিয়া অনেক কণ্টে বাহিরে আসিতে পান। বাহিরে আসিয়াই অংমনি মরের দরভার শিকল বন্ধ করিয়া দেন। তুরাস্থাগণ নানা প্রকারে অনুনয় করিল ও ভীতি প্রদর্শন করিল; কিন্তু সতী সাসর বিপদের আশস্কায় তাহা-দিগের কথায় কর্ণপাত করিল না ৷ ইহার পর উহারা বলিল যে, ''তোমার স্ভানের व्याग विनाग कतिय, यनानि एमि आमा-দিগকে দরজা থুলিয়া না দাও।" তিনি কোনও কথায় কর্ণপাত করিলেন না। ছরামার। কিছুতেই ক্লতকার্য্য হইতে না শারিয়া গুহের গ্রাফ থুলিয়া মাতার সম্মুথে সম্ভানের প্রাণহত্য। করিতে উদ্যত হইল। সতীর মন কিছুতেই টলিল না। **ওেরা শত্য স**ত্যই সন্তানকে মারিয়া ফেলিল। মারিয়া মৃত দেহ গবাক দিয়া মা**ভার সমুখে ফে**লিয়া দিল। ইত্যবসরে धक थानि मानगाड़ी दिन्दात निक्रि

আসিয়া অতাসর হইবার সক্তে না পাওয়াতে থামিল। শকটচালক রক্ষক হাঁটিয়া টেশনে আসিয়া ছঃস্থা স্ত্রীলোকটাকে দেখিতে পাইল। রমণী ইহাদিগকে আদ্যোপান্ত সমস্ত বিবরণ বলিলেন। ইহাদিগের নিকট সংবাদ পাওয়াতে রেল**এ**য়ের কর্ত্ত পক্ষীয় ও অন্যান্য কর্মচারিগণ ও নগরের বিস্তর লোক সমবেত হন। ছরাত্মাগণ ধৃত হইয়া বিজয়পুরে আনীত হইয়াছে। আশা করি উপযুক্ত দণ্ড পাইবে। দতীত্ব সংরক্ষার জন্য স্স্তান হইতে বিনষ্ট এই দেখার मञ्जाखा

স্থানের জন্য নারী প্রাণ কিন্তু পারেন, সতীব প্রাণাপেকাও মূল্যবান্—সম্ভান অপেকাও মূল্যবান, তাহা কিরূপে বিস্গুন দিবেন ? সে ষাহাহউক, কিন্তু অবলাদিগের প্রতি মুরুত্তদিগের এইরূপ ভয়ঙ্কর অত্যাচারের পথ কি রোধ হইবে না ?

সফায়া ডবসন কলেট।

ভারতের পরম হিতৈষিণী কুমারী। স্থাপতি হয় এবং ডাব্ডারেরা হুরারোগ্য करन है जेज २ १ अ मार्क १२ वरमं वस्ता কলেবর পরিত্যাগ করিয়াছেন। তাঁহার মাতা ও আর কোন কোন আখায় (Cancer) বক্ষের মধ্যে ক্ষত হইরা মারা বান, সেই রোগে তাঁহারও মৃত্যু হই-গচ্চ ৰৎসর হইল, এই রোগের STCE !

রোগ বলিয়া ইহাতে ভাঁহার মৃত্যু হইবে चित्र करत्रन। ১৮৮৮ माल आमारमत्र কোন শ্রহ্মের বন্ধু বিলাতে গিয়া ভাঁহার সহিত দেখা করিতে যান, ভাহাতে ভিনি সহাস্যবদ্দে তাঁহাকে বলেন "আদ্য २ त्रिनि (थात्र ४०) होका) पित्रः स्नामात्र

'দুড়ালিপি' ক্রন্ত্র করিয়াছি।" পরে তাঁহার পীড়া সম্বন্ধে ডাক্টারের নিধিত অভি-বৎসর হইল প্ৰায় দেখান। কয়েক তিনি বর্ষে আমাদিগকে লিখি-তেন, ''মৃত্যুর আরি ৪ বৎসর, ৩ বৎসর, ২ বৎসর বা ১ বংসর মাত্র বিলম্ব আছে. আমার কার্য্য শীঘ্র শেষ করিতে পারিনে হয়।" বস্ততঃ সমুদ্রে জাহাজ ডোবার মত তাঁহার জীবন তাঁহার জ্ঞাত্সারে ক্রমে ক্রমে ডুবিয়াছে এবং তিনি বিশান ও নিষ্ঠার সহিত প্রস্তুত হইয়া ইহলোক হুইতে পরলোকে প্রবেশ করিয়াছেন। মৃত্যুর কিছুদিন পূর্বে হইতে তিনি অভি-শয় হৰ্মল হইয়া পড়েন, নিছে পুস্তক পাঠ করিতে পারিতেন না, অন্যকে ধর্ম পুশুকাদি পাঠ করিতে অনুরোধ করি-তেন এবং তনিতেন। শেষাত্তে অবিক মাত্রায় ঘুমাইতেন, যুধন জ:গিতেন রাজা রামমোহন রায়ের জীবনচরিত ঘাহা লিখিতেছিলেন, তাহারই উল্লেখ করিতেন এবং বলিতেন ভাহার ধাহা কিছু বাঁচিবার সাধ, এই পুস্তকখানি मन्पूर्ण कतिवात का। ত্ভিগাক্তে ইহা শেষ করিয়া ঘাইতে পারেন নাই। রামমোহন রাধের মন্তালীলা হয়, ২৭এ সেপ্টেম্বর, কুনারী কলেটের २१७० मार्फा ७३१ এপ্রেল ভাষার সনাবিকার্যা সম্পন্ন হয়। যদিও তিনি ৭২ বংস্ব বয়সে প্রলোকগত হন, কিন্তু তাঁহার পরিবারম্ব সকল লোকে অভি भीर्षभौरी अवर जिनि বলিতেন

পরিবারের মধ্যে তিনিই **অল্পবন্তুদে** মরিলেন।

কুমারী কলেট ৭২ বৎসর বাঁচিয়াও আপনার অলায়ুর জন্য হুঃখ করিয়াছেন, কিন্তু বাঁহার৷ তাঁহাকে দেখিয়াছেন তিনি যে এতদিন কিরূপে বাঁচিলেন ইছা ভাবি-য়াই তাঁহারা আশ্চর্য্য হন। তিনি বিক-লাক, কুন্দ ও থঞ্জপ্রায় ছিলেন", অতি কট্টে চলিতে পারিতেন। শেব অবস্থায় ভাঁছার এক পালিতা কন্যা কোলে করিয়া এক ঘর হইতে তাঁহাকে অন্য খরে লইরা যাইতেন। তাহার শরীরের উপলোগী করিয়া একখানি কেদেরা নির্মিত হটবা-ছিল, তিনি তাহাতে বসিয়া লেখাপডার কার্য্যাদি করিতেন। গত গাদ বৎসর পীড়ার যাতন। অতি ভীব্র ও অস্থ হইাছিল, তথাপি সাধ্যমত কার্দ্য করিতে তিনি কখনও ভাট বা শৈথিলা করেন নাই।

তাঁহার মন চিরপ্রক্ল, এই জন্য, তাঁহার মৃথ সর্থান। সহাস্য ছিল, ভারে পীড়াধছণার মধ্যেও তাঁহার জান্তরিক প্রকৃত্যতা ফুটিয়া বাহির হইত। তাঁহাকে কেহ কথনও মান, নিকংশাহ বা জবসর-হাল্য দেখেন নাই। তিনি এত জল্পু-বিধান মধ্যেও যে ঈশ্বরের কার্ব্যে থাটিতে গারিতেন এজন্য তাঁহাকে সর্কান ধন্য-বাদ দিতেন এবং তাঁহার করণার উপর অউল নির্ভর করিতেন। তাঁহার অজ-বাদ্ধা ইশ্বরে সমর্পিত এবং শরীর সেই আশ্বার জন্ত্যত ছিল।

रेप्त्राकी १५२२ मालत १मा (कक-বারি কলেটের জন্ম হয়। তৎকালীন অন্যান্য ইংরাজবালিকার ন্যায় তিনি বিদ্যালয়ে সামান্যরূপ লেখাপড়া শেখেন, कि भारत जाभगात यह. (हेश ७ जशाय-मारत विष<मगारक श्वनीत हहेता है छेन। ডিনি বিলাডের অনেক পত্রিকায় নিয়-মিতরূপে লিখিতেন। তাঁহার মতসকল **অতি উ**দার **ছিল** এবং সাধারণের হিত-ৰতে তিনি চিরকাল লেখনী করিরাছেন। ভারতের প্রতি তাঁহার अफुननीय । অনুরাগ ভারতবাদী-দিগের হৃংখে হৃংখী ও স্থাধ পর্ম পুৰী হইতেন। ভারতবাসী ইংরাজের। व्यक्ति त्यहेरन चरमानत मार्गातन स्वता বেষন একাভ উৎস্ক হইয়া থাকেন, ভিনি ভারতের সংবাদ পাইবার জন্য উৎস্ক হইয়া থাকিতেন। ভাঁহার বন্ধবানবেরা এজন্য ভাঁহাকে **শর্কার উপ**হাস করিয়া বলিতেন "ভোমার 'home' স্বদেশ অর্থাৎ ভারতের সংবাদ 🏝 ?" ত্রাহ্মনমাজ ভারতের ধর্ম, সমাজ, আন এড়তি সকল বিষয়ের উল্লভির गरात्र, धरेषना जिनि निष्क मुद्रीन मल-**ভূক্ত ইই**য়াও ইইাদের সহিত একীভূত रम धनर रेशामत्र कार्या जाशनात कार्या বলিয়া চিয়কাল প্রাণপণে তাহার সহা-प्रकंतिकदम्ब ।

ৰাশ্যনাজের তৎকাদীন েওঁ। বাবু ক্ষেত্ৰজ্ঞ, সেন মহাশয়কে বিলাভে ক্ষয় বাইবার ভিনিই প্রধান উল্যোগী।

ভাঁহার বিশাত যাত্রার পূর্বের তিনি প্রাদিছ অনেক পত্তে ব্ৰাহ্মসমাজের মহৎ উদ্দেশ্য সকল প্রচার করেন এবং তিনি ইংল্পে গমন ক্রিলে ভাঁহার সেবাতে কায়মনঃ-প্রাণ উৎসর্গ করিয়াছিলেন। বিলাভে কেশব বাবু যে সকল বক্তভা করেন. তিনি সে সকল সংগ্রহ করিয়া "Keshub Chandra Sen's English নামে এক বুহৎ পুস্তক অতি উৎ-ক্লষ্টকপে মুদ্রিত করিয়া প্রচার করেন। "Keshub Chandra Sen in England" নামে এক পুস্তক এবং ''Sketch of the History of the Brahmo Samaj" নামে আর এক পুস্তক লেখেন। কেশব বাবুর পূর্বতন বব্দু তাগুলি হইডে কডকগুলি উৎকৃষ্ট বজ্ঞা নির্ব্বাচন করিয়া প্রচার করেন। ভারতের প্রাণ ব্রাহ্মসমাজ এবং ব্রাহ্মসমাজের কেশব বাবু এই দৃঢ় বিশ্বাস করিয়া তিনি কয়েকবৎসর কেশব বাবুর জন্য আত্মোৎ-সর্গ করিয়াছিলেন ।

এই উপলক্ষে বামাবোধিনীর সহিত্ত তাঁহার পবিচয় হয় এবং তদবধি তিনি ইছার নিয়মিতপাঠিকা ও উৎসাহদাত্রী ছিলেন। এদেশের য়মণীদিগের সহিত পত্রালা-পাদি করিবার জন্য তিনি বাজালা ভাষা স্বয়ং বছ পরিশ্রম করিয়া শিক্ষা করেন। বামাহিতৈষিণী সভার সম্পাদিকা কুমারী রাধারাণী লাহিড়ীকে তিনি সহস্তে বাজালা ভাষার বে একখানি পত্র নেখেন, ভাহার অক্ষরতিল ছাপার অক্ষরের নাার এবং ভাষাও স্ক্র। একজন ইংরাজ রমণী জ্বাদনের শিক্ষার এরপ বিশুদ্ধ বাদলার রচনা করিতে পারেন, ইইছা ভাতি বিশারকর। ১২৮০ সালের জ্বজ্ঞারণ মাসের বামাবোধিনীতে এই পত্র প্রকাশিত হইরাছিল, জামরা তাহা এথানে প্রকৃষ্ণ ত করিলাম।

ঁ "লগুন ২৯এ সেপ্টেম্বর ১৮৭০। শ্রন্ধের ভগিনি!

বিপত জুন মাদের বামাবোধিনীতে আপনার লিখিত বামাহিতৈবিনী সভার বিবরণ আগ্রহের সহিত পাঠ করিরা আপনার সঙ্গে পরিচয় না থাকিলেও আপনার নিকট এই পত্রখানি লিখিতে সাহসী হইতেছি। এই বিষয়ের স্বিশেষ সংবাদ জানিতে আমার এখন ইছা হইয়াছে এবং তজ্জন্য এই প্রের্জনিত জিল্লাসা করিরা বিরক্ত করিতে উদ্যত হইরাছি।

- (১) ব্রীলোক ভিন্ন জনা কের এই সভার পাঠ করিবার জন্ত রচনা লিপেন কিনা ?
- (২) মছিলার। কি নিজেই খ-লিখিত রচনা পাঠ করেন ? তাহা ন। হইলে রচনাগুলি কে পাঠ করেন ?
- (৩) আপনার সভা-বিবরণে যে সকল বচনার উল্লেখ করিরাছেন, তাহা কে কে লিখিরাছেন ?
- (a) এই সমুদার রচনাঞ্চলি কি প্রকাশিত হইবে ? বিগত এপ্রিল মাস হইতে আমি বামা-বোমিনী পাইতেছি, স্তরাং ইহাতে বাহা প্রকাশিত হয়, তাহা আমি দেখিতে পাই।

্ ০র্থ ও ৮খ রচনার শিবোনাম পঢ়ির। বোধ হইতেহে বে এই রচনাঙলি ক্ষতাত্ত ভাল হইবে। (*) বাবারচনারেলীতে উত্ত রচনার ববেং কোন্থ রচনা ভারত সংখ্যার বী বিদ্যালয়ের ছাত্রী কর্ত্ত লিখিত হইরাছে।

বাঙ্গালাক্ত আমার অভি অল্পই অধিকার, কিন্ত আমার ভরসা এই, বে সমন্ত্র
আপনার উত্তর পাইতে আশা করি,
তথন বিনা সাহায্যে। আপনার পত্ত পড়িতে পারিব। আমাদের বামাকুলের
উন্নতির অনা আপনারা যেরপ চেটা
ও মত্র করিতেছেন, তাহাতে আমার
কিরপ পাঢ় সহাত্ত্ত্তিত তাহা কিরপে
প্রকাশ করিব ?

আপনাদের উঃতি হ**উক ই**হা আমার আঅরিক বাসনা।

আপনার ইংরাজ ভগিনী

मकात्रा छवमन् कला ।"

কুমারী কলেট ১৮৭৬ হইতে ১৮৮২

সাল পর্যন্ত ৭ বৎসরকাল "Brahmo

year Book" ত্রাক্ষসমাজের বিবরণী
পুস্তক প্রচার করেন, ইলাভে জাঁহার
গভীর গবেষণা, পান্ডিত্য, বিবরণসংগ্রহ ও
অসম্জীকরণে পটুতা, সমালোচনা এবং
ত্রাক্ষসমাজালুরাগ ও ভারতহিতৈবিতার
সবিশেষ পরিচয় দিয়াছেন। তাঁহার শরীর
কর্ম ও তথ হওয়ায় এবং রাজা রামমোছন
রায়ের জীবনী প্রকাশের ইচ্ছায় তিনি
এ কার্য্য ভইতে অবসর প্রহণ করেন।
হুথের বিবর ত্রাক্ষমাজের ক্রোন্ড
ব্যক্তি জন্যাপি ভালার এই কার্যের জারপ্রহণ করিয়া আপনাদের সমাজের মহৎ
জভাব পূর্ণ করিতে পারেন নাই।

শ্বন্ধ বিবাহ উপশক্ষ কেশব
বাবুর সহিত কুমারী কলেটের সোহাদ্য
বিচ্ছেদ হয় এবং তদবধি তিনি সাধারণ
বাক্ষসমাজের পক্ষপাতিনী হইয়া সাধ্যমত তাহারই সহায়তা করিয়াছেন।
শামরা তনিলাম এই সমাজকে তাহার
প্রকাশর দান করিয়া গিয়াছেন।

बाबा बामरमारन ब्रायंत्र श्रिक कृमाती কলেটের আজীবন প্রগাঢ় ভক্তি ও **সম্বরাগ ছিল** এবং তাঁহাকে তিনি একজন অসাধারণ মহাপুরুষ বলিয়া করিতেন। ভাঁহার गर्ड জের আর কোনও নেতা অদ্যাপি রামমোহন রায়ের নিকটবর্জীও হইতে পারেন নাই। রামমোহন রায় যথন विनाए गान, क्यांत्री कलाठे उथन ১ । । ১১ ৰৎসরের বালিকা। তিনি একেশ্বরাদী এটানের ঘরের মেয়ে, রামমোহন রায় এই সম্প্রদায়ের সহিত বিশেষরূপে সন্মি-লিত হইয়াছিলেন। রামমোহন লওনের লিটল পোর্টলেও ষ্টাটের একেশ্বরবাদী-দিগের ধর্মস্পিরে গিয়া উপাসনা করি-राजन, क्यादी कला मिश्रादिक छाँशांक **অনেকবার দেখিয়াছিলেন।** রাম্যোহ্ন স্নায় বেমন জাতিবর্ণ নির্বিলেযে স্কল বন্ধনারীকে এক ঈশ্বরের সন্তান ও निक পরিবার বলিয়া উদার-ছাদরে ধারণ ক্রিয়াছিলেন এবং সকলের হিতসাধনে बढी इरेबाहित्मन, क्वांबी करमण्ड ্ভাহাই আপনার জীবনের আদর্শ করিয়া-ছিলেন। Encyclopedia Britannica

नामक विवार्छत्र मर्वाधान विश्वरकाव প্রকাশকের৷ তাঁহার লিখিত রাম্মোহন রায়ের সংক্ষিপ্ত রুত্তান্ত ইহাতে সন্নিবেশিত করিয়াছেন। রামমোহন রাম্বের সম্পূর্ণ জীবনর্ছ প্রচার করিয়া মনের সাধ পূর্ণ করিবার জনা কুমারী কলেটের বিশেষ আগ্রহ হইয়াছিল। ভাঁহার জীবনের শেষ ১০।১২ বর্ষকাল তিনি রামমোহন রায় সম্বন্ধে স্কাতুস্ক অনুসন্ধান করিয়া প্রচুর উপাদান সংগ্রহ করিয়াছেন এবং জীবনীর কতক অংশ লিখিয়া ও কতক অংশ মুদ্রিত করিয়া গিয়াছেন। আমরা আখা করি তাঁহার ন্যায় সহাদয় ও হুযোগ্য কোনও ব্যক্তি এ কার্য্যে ইহার হইয়া পরিসমাঞ্চি করিবেন।

কুমারী কলেট যে একজ্বন উচ্চদরের
মহিলা ছিলেন, তাহার জনেক প্রমাণ
পাওয়া গিয়াছে। রয়টার তাঁহার মৃত্যু
সংবাদ তাড়িতঘোগে ভারতে প্রেরণ
করেন, বিলাতের জনেক প্রসিদ্ধ পত্রে
ভাঁহার শিক্ষা ও সদ্প্রপের প্রশংসা বাহির
হইয়াছে। আর বাঁহার লেখা "এনসাইক্রোপিডিয়া বিটানিকার" স্থার
স্থবিখ্যাত পৃস্তকে আদরের সহিত গৃহীত
হইয়াছে, তিনি স্থনামপ্রসিদ্ধ, তাহাতে
কিছুমাত্র সন্দেহ নাই।

আমরা দেখিয়া সম্বন্ধ ইইলাম, ভার-তীয় আনেক প্রধান প্রধান পরে কুমারী কলেটের মৃত্যুর জন্য শোকপ্রকাশ করা ইইয়াছে এবং আক্ষমধাক্ষমক্ষ ক্ষম্ম- ননা করিয়াছেন। এই প্রাকৃত ভারত- ক্লভজ্ঞতার সহিত স্মরণ করুন।

ভার সহিত তাঁহার পবিত্র মুখির সন্ধা- | হিতৈষিণীর নাম ভারত রষণীগণৰ

यहातानी विट्छोतियात कीवरंनत करयकणि कथा।

মহারাণী বিক্টোরিয়া বাল্যাবস্থায় भत्रमा चन्त्रती हित्तन। ভাঁহার ওরু-জনেরা তাঁছাকে আদর করিয়া "May Flower" বা ''বসক্তের ফুল" বলিয়া সম্বোধন করিতেন। মহারাণীর মাত। অর্থনির মধ্যে অতি কুন্দরী মহিলা বলিয়া বিখ্যাতা ছিলেন। ইহার ন্যায় ধর্ম-ভাবাপরা রমণীও অতি অন্ন দেখা যাইত। ইনি স্বীয় কন্যাকে ধর্মশিক্ষা দিবার জন্য বিশেষ তৎপরা ছিলেন, প্রত্যন্থ विक्रोतिशारक (वाहरवन) धर्मपुष्ठक অধায়ন করাইতেন এবং তাঁহার সদয়ে যাহাতে ঈশ্বর-বিশ্বাস ও ভক্তির উত্তেক হয় এরপ উপদেশ দিতেন।

ষধন মহারাণীর বহুস ভালশ বংসর মাত্র, তথন ভিনি জানিতে পারেন যে তাঁহাকে শীব্র ইংলণ্ডের সিংহাসনে व्यक्षिद्राञ्च कत्रिट्ड इक्ट्रेट । ভাঁহার भिक्तियों डांशारक मर्वाख्यय वहे मरवान দেন। বিক্টোরিয়া ঐ কথা ভনিয়া উত্তর कत्रित्मम, "वड् शक्का कावा। लीतरवंत्र कथा वर्छ, किन्छ वर्फ इत्रह व्याभाक, बाद्धाचनी-भएनव भीवय चाहर, কিন্ধ তেমুনি **আবার দারিত আছে।**" তৎপত্নে কিন্তৎকাল নিৰ্ব্বাক থাকিয়া বালিকা গভীর খরে

বলিলেন "রাণী হইয়া আমি নিশ্চরই ভাল করিয়া কাজ করিব।" মহারাধী দেই বালিকাবস্থার যে প্রতিজ্ঞা করিয়া-हिलान, प्रकलाई अकवात्का चौकांत्र করিয়া থাকেন, যে সেই প্রতিক্ষা ডিনি এপর্যান্ত সম্পূর্ণ রূপে পাণন করিয়াছেন। রান্দ্যেশ্বরীরূপে, স্ত্রীরূপে, মাডারূপে ডিনি शीव कर्खवा भागत मर्खनार मन्त्रभ ভৎপরা।

মহারাণী চিরকালই অতি বৃদ্ধিমতী। বাল্যাবভার ইনি অতি সহজেই খীর পাঠাভ্যাস করিতে পারিতেন। বালশ বৎসর বয়সে ফরাসী ও অর্থাণ ভাষার ইনি উত্তমরূপে কথোপকথন করিতে শিখেন এবং লাটন ভাষার বঞ্জিল ও ্ছারেসের এম্ব পাঠ করিতেন। বিংক্তা-রিয়া অরকাল মধ্যে ক্রীক ভাবা ও অস্ক विमा। चि छेखमज्ञाल निविद्यां कितन। সর্বাপেকা অন্ধ বিদ্যা শিখিতে ট্রীন অভান্ত ভাল বাসিতেন।

মহারাণীর সত্যঞ্জিরতা একটা প্রধান গুণ। তাঁহার বাল্যকালে একদিন তাঁহার মাত: জাহার পাঠাপারে প্রন করিয়া ডাঁহার শিক্ষরিত্রীকে শিল্পাস। করিলেন, "(क्मम, विक्लितिया ब्रहीमि करतन मा विकशिकी विमानम.

নুষ্টামি করিয়াছিলেন, তাহার পর খ্ব ভাল ব্যবহার করিতেছেন।" বিক্টোরিয়া এই কথা ভনিয়া তাঁহার শিক্ষরিত্রীকে বলিলেন ''না, মহাশয়া, একবার নহে— চুইবার। আপনি ভূলিয়া একবার বলিয়াছেন।" বাভবিকই তাঁহার শিক্ষ-য়িজীর ভূল হইয়াছিল। বলা বাহল্য, বিক্টোরিয়ার এরপ সত্যপরারণতা দেখিয়া তাঁহার মাতা ও শিক্ষয়িত্রী অতীব সক্তরী হইয়াছিলেন।

यथन ठेड्थ छेटेलियरमद मृज्य ट्टेल, তথন চিরপ্রচলিত নিয়মানুসারে রাজ্যের ध्यभान धर्त्र्याध्यक विट्छात्रिहाटक मःवान দিতে গেলেন যে তিনি যেন রাজ্যভার শইবার অন্য প্রস্তুত হয়েন। বিক্টোরিয়া প্রধান ধর্ম যাঞ্জকের মূপে ঐ সংবাদ পাইয়া ভাঁহাকে বলিলেন "আপনি আমার बना लेबारात्र निक्र शार्थना करून।" ধর্মান্দক তাঁহার অসুরোধান্নসারে ভক্তি-ভাবে এই প্রার্থনা করিলেন যে বিক্লোরিয়া ৰে শুক্লভার গ্রহণ করিতেছেন তাহা বহন করিতে ঈশ্বর যেন তাঁহাকে বল ও সাহস প্রদান করেন। বিক্টোরিয়াও অবনত-ভান্ত ইইয়া ঈশ্বরের নিকট ঐ মর্থে প্রার্থনা कतिलान । महातानी वित्रकालहे धर्म-विकामिनी ७ वार्थना भीला।

পূর্ব্বে ইংলতে নিরম ছিল বে কোন ব্যক্তির অাণদণ্ডাজা হইলে ভাহাতে ভরাজা বা রাণীর সম্মতি আবশ্যক হইত। আমাদের মহারাণী রাজ্যেশ্বরী হইবার কিছুকাল পরেই একজন সৈনিক পুরু-

বের প্রাণদণ্ডাব্রা হয়। ডিউক ওয়েলিংটন মহারাণীর নিকট সন্মতি লইতে ভাঁহার নিকট দণ্ডাজ্ঞা পত্র পাঠ করিয়া সম্ভালনয়নে বিক্টোরিয়া জিজ্ঞাসা করিলেন, 'ভিহার পক্ষে বলিবার কি কিছুই নাই ?' ডিউক উত্তর করিলেন ;—"না, এ ব্যক্তি তিন বার সৈন্যদল ছাড়িয়া পলাইয়া পিয়া-ছিল
 তবে কোন কোন সাক্ষী উহার সচ্চরিত্রতা সম্বন্ধে অনেক কথা বলিয়া-এই কথা ত্ৰিয়া মহারাণী বলিলেন, "তবে ইহার দোষ পরিমাজ্জ-নীয়." এবং দণ্ডাজ্ঞা-পত্রের উপর লিখিয়া किल्न "क्या कतिलाम।" মহারাণী महार्ख-क्रम्ब्रा. এবং কাহারও প্রোণদ গ্রাহ্রায় সম্মতি দেওয়া তাঁহার পক্ষে একপ্রকার অসম্ভব বলিয়া, উপ-রোক্ত ঘটনার পর হইতে নির্ম হইল যে स्थान-मञ्जाख्या देवध कतिवात कना त्राका বা রাণীর সম্মতি আবশ্যক হইবে না।

মহারাণী তাঁহার দরিত প্রতিবাদী ও প্রতিবাদিনীগণকে বড়ই ভাল বাদেন। "প্রতিবাদীকে ভাল বাদ" এত্তীয় ধর্মপ্রত্যন্ত এই উপদেশ বারস্বার প্রদন্ত হইরাছে। মহারাণী দে উপদেশাসুদারে কার্য্য করিতে কুরাপি বিস্মৃত হরেন না। উইওসর, কেনশিংটন, বেল্মোরেল, প্রভৃতি বে যে স্থানে মহারাণীর প্রাদাদ আছে, ভাহার নিকটবাদী হংথী দরিত্ত পরিবারগণের প্রতি মহারাণীর স্কেপট ক্লেক্ত্রমাজার বহল উলাহরণ প্রাপ্ত হওরা ধায়। এই সকল পরিবারদিগের সঙ্গে তিনি সমর পাইলেই সাকাৎ করিতে গমন করেন এবং ভাহাদিগের ঘাহার যে অভাব জানিতে পারেন, তাহা মোচন করিয়া থাকেন। কাহারও গৃহে গিয়া দেখিলেন হয়ত নবজাত শিশুর শীত-নিবারক বস্ত্র নাই। মহারাণী প্রাসাদে . প্রত্যাগ্যন করিয়া অয়নি তাহার উপযোগী বস্তাদি প্রেরণ করিলেন। কাহারও ৰূৱে দেখিলেন, হয়ত কেহ পীড়িত, অমনি তাহার চিকিৎসার স্বস্থোবস্ত করিয়া দিলেন। কাহারও গৃহে দেখিলেন পুত-বিয়োগ-কাতর হইয়া বৃদ্ধ ও বৃদ্ধা ক্রন্সন করিতেছে, জুমনি তাহার শোক দুরী-করণে তৎপরা হইলেন। একবার মহা-রাণীর প্রতিবাসীদিগের মধ্যে কোন শোক-সম্ভপ্তা রমণীকে কোন এক ধর্ম-যাল্লক হঠাৎ এক দিন অতীব প্রফুল্লমনা দেখিয়া জিজ্ঞাসা করিলেন 'আপনি আপনার কন্যাবিয়োগছঃখ এত শীঘ্র কি করিয়া ভূলিলেন 📍 তিনি উত্তর করি-লেন, ''মহারাণী আমাকে একথানি ধর্ম-গ্ৰন্থ পাঠাইয়া দিয়াছেন, তাঁহা পাঠ করিয়া আমি ঈশরে নির্ভর করিতে শিধিয়াছি এবং অনেকাংশে শোক **जुनि**ाहि।" (वन् सात्त्रन् व्यानारमञ নিকটবর্তী দ্বিদু লোক্দিপের সহিত তিনি কিরপে সাক্ষাৎ করিয়া থাকেন তাহা মতারাণীর ঐ প্রাসাদে অবহিতি কালেয় এক দিনের বিবরণ তাঁহার

निष्यत निषिष रेमनिष्य निशि इदेरक উদ্ধৃত করিয়া দিলে বেশ অ্দর্জন হইবে। ''আঞ্চ প্রাতে প্রথমে কিটি-কিয়ার নামী বুদ্ধা মহিলার কুটীরে আমরা তুইজনে গেলাম। কিরারের বৃদ্ধক্রম ৮৬ বংসর। সে আজও বেশ খাড়া আছে। আমরা যাইবামাত সে সদল্ভমে আমা-দের অভার্থনা করিল। আমরা আসন-গ্ৰহণ করিলে কিটি কাণড সেনাই কবিতে করিতে আমাদের দক্ষে পদ করিতে লাগিল। আসিবার সময় আমি তাহাকে গ্রম কাপডের একটা আমা দিলাম। সে সকৃতভাচিত্তে বলিল, 'আমি আশীর্বাদ করি ঈশর আপনাদিগকে বরাবর স্থাধ রাধুন, সকল অমঙ্গল হ'তে রকা করুন আর স্বয়ং আপনাদের পরি-চালক হউন। আমরা তাহার পর আরও তিনটা কুটারে গমন করিলাম। বিবি লিমনের পুত্রটাকে পীড়িত বেধি-লাম। তাহার পর আর একটা বুদা-মহিলার ঘরে গেলাম। সেধান হইতে বেয়রের (সে কিছুকাল আমাদের বাদ্য-কর ছিল) কুটারে গেল:ম। কিরিবার সময় বিবি গ্রাণ্টের হরে গেলাম এবং তাহাকে একটা পোষাক ও একবাৰি সে ভাহা পাইয়া কডই কুমাল দিলাম। ধন্যবাদ দিতে লাগিল! এই স্কল দরিত পরিবারদিগের সহিত স্থা**হত্তি** দেখান অতীৰ সুধকর।"

(ক্ৰমণঃ)

ন্তন সংবাদ।

- হ। দিকাগো মহামেলার ভারতবর্ষ ইইতে কচ্ছের রাও সাহেব এবং লিখ-ভীর ঠাতুর সাহেব পুরস্কার প্রাপ্ত ইইরাহেন।
- ং। আমেরিকায় সিভরী নদীর উপরে সম্রতি এক প্রকাণ্ড সেতৃ নির্দ্ধিত হুইভেছে। পৃথিবীতে ঝোলান সেতৃর ক্ষােইছা সর্কাপেকা বৃহৎ হইবে।
- থ কা বিসমার্ক ৪৮২ প্রকার কাষান চিহ্ন লাভ করিয়াছেন। চিহ্ন-ভালি পাশাপালি রাখিলে ১৪ হাত জারগা
 করেক ইঞ্চি ঢাকিয়া ঘাইবে।
- ৪। রাজা রামপাল সিংহের ঔেটে হিল্মতে একটি বিধবা বিবাহ হইয়া লিয়াছে। পাত্রী আদ্ধাকুলোত্তব ও ভাঁহার বয়ল ১১ বৎসর।
- গ্রীসদেশে আবার ভয়ানক
 ভূমিকল্প হইয়া পিয়াছে। দেশের এক
 লীয়া হইতে অন্য দীমা পর্যান্ত ৮ দিন
 ক্রাবরত ভূকল্পন হয়। শত্রহত্র লোক
 লর্ময়াত ও কতশত বাড়ী ভূমিসাং
 ক্রিয়াছে।
- ৬। বহিষ্যক্ত মেমোরিয়ল কতে

 জ্ঞানার সোরীজ্ঞমোহন ঠাকুর ১ হাজার

 টাকা দান করিতে খীকার করিরাছেন—
 ভারাকা নাম ঘতীজ্ঞমোহন ৪ শত এবং
 ভাতবিহারের মহারাকা আড়াই শত
 - ्। विनाएत्र धक्षम व्याप्रनि

- ৬০ জন কোরপতিকে নিমন্ত্রপ করিয়াং ধাওরাইরাছেন। ৬০ জনকে ধাওয়াইজে ২৪ হাজার টাকা ধরচ হইয়াছে। প্রত্যেক লোকের আহারের জন্য ৪ শক্ত টাকা করিয়া ব্যয়। লোকগুলি কি রাক্ষম ?
- ৮। ডিট্রেটের জীউকিল মিসেন্ মার্থা ট্রকুল্যাগু চিকাগোর মহিলাদিগের নিকট পার্লিয়ামেণ্টের আইন সম্বদ্ধে বক্তুতা করিভেছেন।
- ১। আমেরিকার এক নিগ্রো মহিলার হেনরী সমারসেট্ নামী একটা মহিলার অধ্যক্ষতার ইংলণ্ডে মাদক নিবারণ বিষয়ে একটা বক্তা করিয়াছেন।
- › । নিউজিল্যাণ্ডের অন্তর্গত ওয়ানহকা বাসিনী মিসেস ইয়েট্স্ নামক
 একজন মহিলা ব্রিটিষ সাঞাজ্যের সর্ব্রেথম জী মেয়র বা ম্যাজিট্রেট্ হইয়াছেন।
- ১১। বিবী স্যাত্টোন ৮১ বৎসর পূর্ণ করিয়াছেন, বৃদ্ধ স্থামীর ন্যায় তাঁহারও শ্রীর মন সতেজ আছে।
- ১২। একজন মহিলা এল্ ফ্যাটাট নামক একথানি পাক্ষিক পত্রিকা মিদরের অন্ত-গত আলেকজণ্ডিরা নগরে প্রকাশ করিয়া-ছেন। সিরিয়াবাসিনী কুমারী হিও এই পত্রিকার সম্পাদিকা এবং উাহার লেধার সাহায্যকারী সকলগুলিই মহিলা।
- ১৩। কলোরেডেরা ভ্রিংছ মিদেন্ এল নি ভিউনেন্, কলোরেডোর শাসনকর্তা

দারা তত্ত্ত্য মৃক বধির ও পদ্ধগণের বিদ্যালয়ের টুটি সভার সভ্য নির্ক্ত হুইয়াছেন।

১৪। চৈতন্য লাইবেরী। আমর।
অন্তক্ষ হইরা প্রকাশ করিতেছি এই
বংসর চৈতন্য লাইবেরি হইতে নির
লিখিত পদকওলি প্রদন্ত হইবে:—
(১) Blackie প্রাণীত "Self-Culture"
নামক প্রম্বের সর্বোৎকৃষ্ট বালালা অন্তব্যাদের জন্য একটি স্বর্ণ পদক; (২)

"ৰাজ্ঞা নাটকের ইতিহারী" স্বাদ্ধে সর্কোংকট বাজালা প্রবন্ধের জন্য একটি রোপ্য পুদক: এবং (৩) "বিজ্ঞান শিক্ষার নৈতিক ফল" সম্বন্ধে সর্কোৎকট ইংরাজী প্রবন্ধের জন্য একটি রোশ্য পদক। জন্মবাদ ও প্রবন্ধতিলি আগানী ৩০ শে নবেম্বরের মধ্যে চৈতন্য লাই-বেরির সম্পাদক, নং ৪।১ বীতন্ত্রীট, কলিকাতা,এই ঠিকানাগ্র পাঠাইতে হইবে। সাধারণের প্রতিবোগিতা প্রার্থনীয়।

বামারচনা।

विक्रम विद्याग ।

ভয়েছে শাশানে নাকি মুদিয়া নয়ন সুক্ষবি বৃদ্ধিমীচন্দ্র ভারতের ধন ! কবির লাগির। আজি প্রতি ঘরে ঘরে ভাসে শোকে বঙ্গবাসী নয়নের নীরে ॥ ब्बल्डिंग्स इ'ल हाग्र । कृतित बीवन, নিবিল স্থাবর্ণ দীপ করের মতন। বাকালা দাহিত্য স্বাঞ্চি হইল রে দীন, ভারতবাসীর প্রাণ হ'ল নর্দ্ধনীণ। বঙ্গমাতা তুঃখে আজি ফেলে অঞ্গারা. ছারায়ে দে পুত্রবরে পাগলিনী পার।॥ क चात इंडाटिय मधु मधुत तम त्वाला, বস্ত রাগিণী রাগ ভাসায়ে হৃক্লে। **म्हानिका वृंदे याठि क**ठहे कृष्टि । মধ্র বহিয়া বায়ু মধু ছড়াইত ॥ विव्रष्ट भिन्नन मधु वैधुव त्म व्यान, এক স্থার গেছে গেরে কবির সে গান 🛭 জুড়াত মানৰ প্ৰাণ নৰ কলনাতে, আনি দিত ধরা পরে স্বর্গ হাতে হাতে।

त्य मधु छ्फार्य कवि शिष्ट् कृत्व कृत्व, রুয়ে ধাবে চির দিন অনত্তের কোলে # विषद्भक्ष कृष्टिशां ए प्र्याभूषी कृत. म्रानम्थी क्रमकित जिम्मर्या चलून । করেছিল বনমাঝে কুটারেডে আলা, স্নেহের পালিতা কন্যা ক**পালকুওলা।** ना कृष्टिक महनात्रमा थनिन मुक्न, ভিথারিণী গিরিজায়া হাসিয়া আৰুল ॥ ভ্ৰমর্কপিণী বালা ভ্ৰমরার পোম 1 মণিতে ছড়িত যেন সমুজ্বল হেম। একবৃত্তে হুটী ফুল দেখায়েছে কবি। প্রতাপের ভালবাসা—শৈবলিনী ছবি ॥ कवित्र कवित्र समि वहिट्ह ध्वात, ce राम क्या हिन माध्रा हा । কখন গান্তীৰ্য্যভাৰ, কখন নবীন। ধর্মেতে গঠিত হাদি কখন প্রবর্তী। লোকেরে হাসারে গেছে রহস্য ক্রীয়. এমন বসের কবি দেখিনে কোখার।

তেত বহু করা মিঠা জগতের কাছে।

জ্বল মধ্র হস ছড়ায়ে গিরাছে।
কাদরে ভারত মাতা কাদ অনিবার।
গিরোছে ভোমার ছেড়ে বছিফ কুমার॥
জ্বার কি পুরাবে এবে কেহ তাঁর স্থান।
কাড়াও ভাঁহার খ্যাতি-কবির সন্থান॥
সাওবে ভারত তুমি চিরদিন তরে,
স্থাবি বছিম নাম জগতের পরে॥
শ্বীমতী গিরিবালা।

किंह्रे नारगना जान।

প্রভাতের তরুণ তপন বিহুগের মধ্র কৃজন বসজের স্থাতিল বার নিশিভরী পূর্ণ ক্যোৎস্বায় লালেনা কিছুই ভাল স্থদরে আমার।

ফুলে ফুলে ভরা উপবন
শতিকার আনত বদন
নিরমণ আকাশের পট
শ্বিমণ নির্করের তট
শাগেনা কিছুই ভাল নয়নে আমার।
ক্যুবে থাকি নিশীথে শগ্রন
ডুবে থাকি অনীক স্বপনে

আঁথিক বহেন। তথন
ঢাক। পড়ে জদর বেদন
তবুও না বার মোর জদরের ভার।
আমি তথু পথ পানে রাখি
টেরে আছি অনিমিথ আঁথি

কৰে পুন আসিবে হেথায় আঁথি ভরি হেরিব তোসায়

হইবে শীতল পরাণ আমার।

এ জুবুনে পারিকাত প্রার ইট্রেই হে নব কলিকার ইবিন চালি আকুল জীবনে ব স্থবিতে নবারে নিবি দিনে হুপারে স্থবিকা বেছিন বোকে। ভেদনা ভেদনা সে কৃত্ত হাদি মোর ডুবিক্লেগাকুক সেই খুমের ঘোরে রহিব চির সে স্থপন দেখিব কাগায়ো না আর আমায় কেই। জীনিস্তারিণী দেবী—কাণপুর।

অবসান।

কখন যে এসেছিল, কখনি বা চলে গেল,

কিছুই না জানি। কি গান গাহিয়া গেল, কানে মাত্র প্রবেশিল,

স্থ্ এর, কটি প্রতিকানি।
বতনে কুখুম গুলি,
আনিয়া ছিলাম তুলি,
সাজি জ'রে, মালা গাঁধিবারে,
মালা ত হ'ল না গাঁধা,
ফুল গুলি হেপা সেধা.

ছড়ায়ে পড়িল ভূমি পরে। আধেক না হতে মালা, ভেক্তে গেল স্বপ্ন ধেলা,

দেখি খে সে চলিয়ে নিয়েছে। যা কিছু সে এনেছিল, কিছু না রাথিয়া গেল,

শ্বতি হুধু জাগিয়া রয়েছে। পাথী গুলি মনে মনে মধুব লনিত তানে,

আরম্ভ করেছে সবে গান। শ্বনিশ্ব নার, সবে ধীরি-ধীরি বয়

হেন কালে সব অবসান।
ভাবকোটা ফুল চয়,
ফুটিতে পেলেনা হায়,
ভার—অলির কলার নাহি শুনি;
কথন বে এসেছিল,
কথনি বা চলে পেল,

किष्ट्रे ना कानि। अभी-

বামাবোধিনী পত্রিকা।

BAMABODHINI PATRIKA. "कन्याध्येवं पालनीया त्रिश्वसीयातियस्ताः।"

কন্তাকে পালন করিবেক ও যত্নের দহিত শিক্ষা দিবেক।

०৫ ४ नरथा

আয়াড় ১০০১--জুলাই ১৮৯৪।

্ম ক**ল।** ৩য় ভাগ।

সাময়িক প্রসঙ্গ।

মহারাণীর ^{*}জন্মোৎসব—২৪ এর পরিবর্ত্তে গত ২৬এ মে মহারাণীর জন্মোৎ-সব হইরাছে। মহারাণী ৭৬ বর্বে পদার্পণ করিলেন এবং তাহার রাজত্ব ৫৮ বর্ব হইল। জ্বদশীপর তাহাকে আরও দীর্ঘ-জীবিনী করিয়া প্রজাপালনে নিযুক্ত বাখুন।

কৃত্তিবাদের কীর্ত্তিরক্ষা—
প্রাসদ্ধ রামায়ণগায়ক কবি কৃত্তিবাদের
জন্মন্থান শান্তিপুরের নিকট ফুলিয়া
গ্রাম। কতকগুলি সন্থান্ন ব্যক্তি এইথানে একটা গৃহনিমাণ করিয়া রামসীতার
মূর্ত্তি প্রতিষ্ঠা করিবেন এবং বৎসর বংসর একটা মেলা আহ্বাম করিবেন,
ডাহার আরোজন করিতেছেন। আমরা
স্ক্রান্তঃকরণে এই আরোজনের সকলত।
প্রার্থনা করি।

ভূদেবের বদান্যতা—স্বর্গীর মহাস্থা

ভূদেব মুখোপাধ্যায় দাধারপের হিতার্থ নগদ দেড়লক টাকা, তাঁহার বুধোদর প্রেস এবং এভূকেশন পেন্দেট প্রিকা প্রদান করিয়াভেন। দাভব্যগুলি এই:—

- (১) চুঁচড়ার বিশ্বনাধ চতুম্পাঠী, বার্ধিক অন্যুন ৬৯৬ টাকা।
 - (२) जनमग्री टेखरक्तानग्र, ४>२, डीका।
- ্ (৩) সংস্কৃত পুত্তক প্ৰচার—ছাপাণানা **আছে**, তস্তির সাবগুক হইলে বার্ধিক ৩০**০, টাকা**।
- (a) এডুকেশন গেজেট—আবহাক **হইলে** বাৰ্ষিক ৮০-৮ টাকা।
- (৫) একজন হুপারিণ্টেওেণ্টের বেস্তন বার্থিক অন্ধিক ১৪, টাকা এবং অস্তান্ত বায় ৬৪, টাকা।

এই সকল দাতব্য কার্য্যে বর্ষে বর্ষে ২৬২০ টাকা ব্যয় হইবে, তথ্যতীত ৩৭৮০ টাকা হইতে জাতি, স্মৃতি, দর্শন শাল্পের শিক্ষকদিপকে বর্ষে অন্যন ৫০১ ও ইন্সিল্ দিপকে অন্যন ০০১ টাকা করিবা দেওরা হইবে।

বিলাতী দেশালাই আমদানী—
ত বংসর পূর্বেত ত লক্ষ টাকার দেশালাই
আমদানী হয়, তৎপর বংসর ৩৬ এবং
তৎপর বংসর ৩৭॥ লক্ষ টাকার আমদানী
ইটরাছে। সামাক্ত দেশালাই কাঠা এদেশ
হইতে ক্রমে ক্রমে অর্দ্ধকোটা ও কোটা
টাকা হরণ করিবে।

বিলাতী ছাতা—গত ৩ বৎদরে বধাক্রমে ৪০, ৪৪ ও ৪৮ লক্ষ টাকার ছাতার আমদানী হইরাছে।

পুর্ডিক্স—ফরিদপুর অঞ্চলে ভৃতিক্ষ না কমিতে কমিতে মধ্য ভারতবর্ধ হইতে ভরানক ভৃতিক্ষের সমাচার পাওয়া বাইতেছে। ইতিমধ্যে সাহায্যভাণ্ডার পোলাতে হাজার হাজার লোক থাটতে আরম্ভ করিরাছে।

জাপানে দ্রী স্বাধীনতা—জাপানে দ্রীলোক অপেকা পুরুষ সংখ্যা ১০ লক্ষ অধিক, এক্ষয় প্রত্যেক রমনীকে বিবাহিত হইতে বাধ্য হইতে হইত। কোনও দ্বীলোক নিজে বর গ্রহণ না করিলে গ্রহণেনই বর মনোনীত করিয়া দিতেন। এখন এ অধীনতা-শৃত্যল হইতে জাপানী মহিলারা মুক্ত হইয়াছেন।

বরাহনগর বিধবাশ্রম—ইংার
প্রতিষ্ঠাতা বাবু শশিপদ বন্দ্যোপাধার
ইংার একটা স্থানী ফণ্ডের জন্ম সচেই
ইংলার । আমরা-শুনিয়া সভাই হই-শুনিয়ননিসংহের কমিদার বাজা স্থান শালাব্য চৌধুরী এই ফণ্ডেব। তাজা দান করিয়াছেন। ঢাকার ৺প্রতাপচন্দ্র দাসও মৃত্যুর পূর্ব্দে ১০০ টাকা দান করিয়া গিয়াছেন। অস্তাস্ত ধনাত্যপণ হিন্দৃবিধবা-দিগের কল্যাণার্থে সাহায্য দান করিয়া অর্থের সার্থকতা করুন।

মহিলা ডাক্তার—এমতী হেমবতী সেন এবার কলিকাতা কেম্বেল মেভিকেল কুল হইতে বিশেষ পারদর্শিতার সহিত উত্তীর্ণ হইয়াছেন। অনার পরীক্ষায় উচ্চ স্থান অধিকার করায় পাঁচটি রৌপ্য পদক প্রস্বার প্রাপ্ত হইয়াছেন। জেনারেল প্রদন্ত রৌপ্যপদকও তিনিই পাইয়াছেন। লেডি এলগিন এজনা বিশেষ আনন্দ প্রকাশ করিয়া উক্ত স্কুলের স্থপারিণ্টেণ্ডেন্টকে পত্র লিখিয়া-ছেন। কেম্বেল মেডিকেল স্কুল স্থাপনা-বধি এপর্য্যস্ত কোনও মহিলাই এরপ যোগ্যতার সহিত উত্তীর্ণ হইতে পারেন नाई।

বিবী বেদার্ভের প্রতিবাদ
পত্র—ডাক্তার পুন নামক কোন খৃষ্ঠভক্ত
হিল্পর্যের গ্রানি করিয়া মেথডিই টাইম্ল পত্রে এক প্রস্তাব লেখেন, বিবী
বেদান্ট ইহার যে উত্তর দিয়াছেন তাহা
যেরূপ যুক্তিগর্ভ, দেইরূপ বিজ্ঞতাপুণ।
এই পত্র ৯ই জুনের ইণ্ডিয়ান মিররে
প্রকাশিত হইয়ছে। ইহা পাঠ করিলে
হিল্প্রেমী খৃষ্টানদিগের ন্যায় প্রাচীন
সদাচারত্যাপী নামধারী হিল্পিরেপ্রও
চক্ষু কৃটিবেও উপকার দর্শিবে।

রামায়ণ ও তদন্তর্গত নীতি।

"বাল্মীকি গিরিসস্ভৃতা রাময়ণো মহানদী। পুনাতি ভুবনং ধন্যা রামসাগরগামিনী।"

এরামচন্দ্রের মাধ্র্য্য-সম্পন্ন নাম अमिशेष आवाल वृक्ष विन्छा मकत्वत्रहे মনে প্রপাঢ়রূপে মুদ্রিত আছে। ভারত-বর্বের মধ্যে যে যে ব্যক্তির কবিত্ব বিষয়ে ष्यक्रियान हिल, थाय मकलहे कान ना কোন প্রকারে তদীয় পৰিত্র চরিত্র কীর্ত্তন পূর্ব্বক আপনাদের লেখনীর সার্থকতা সাধন ও অমরকীর্ত্তি লাভ করিয়াছেন। অলেকিক কাৰ্য্যদারা তিনি জগতের মহোপকার করিয়া গিয়াছেন, সেইজন্য ভাঁহার নাম ও চরিত্রকে ভূলিতে পারা যায় না। স্বর্গীয় ধনপূর্ণ আক্রয়ভাতার-সহ তাঁহার চরিত্রের তুলনা দেওয়া অভ্যক্তি নহে। ক্রমাগত চারিসংস্র বৎসর লোকে ভাঁহার নামোচ্চারণ করিয়াছে, তথাপি এখনও তাহা আনন্দ-কর নিত্য নৃতন বলিয়া প্রতীত হইতেছে। রামচক্র ঘথার্থই এক সর্কলোক প্রায় রাজভার মহাপুরুষ ছিলেন। পৃথিবীর সহিত আততায়িরূপে যুদ্ধ করিয়া যবন নুপ্তি সিক্ষুর যদি একজন মহাজন বলিয়া আধ্যাত হয়েন: নেপোলিয়ন বকীয় मिश्रिक्य काता यपि "रुष्टितालात পति-ত্রাত্য" উপাধির যোগ্য হরেন,তবে আমা-**(मत्र बायहत्त्र, विनि चामा- अहे दृश्ख्य** ভারতরাজ্যে সুখশান্তি সমানয়ন করেন, विनि निश्ननक ठित्राखंड अञ्चन जामर्न

দৃষ্টান্ত প্রদর্শন করিয়া গিয়াছেন, ভাঁহাকে এতক্ষেশীয় পণ্ডিতেরা যে ঈশ্বর বলিয়া বর্ণন করিয়াছেন, তাহা কোন মডেই বিচিত্র নহে। ভাঁহার চরিত্রের তুলনা-ত্বল মিলে না। তিনি গৃহমধ্যে থাকিয়া चकीम जाशात खेलाग्रंखन ध्वरः वलाना শ্বভাব ৰশত: যজ্ঞপ পিতা, মাতা, ভাতা. ভার্য্যা, স্মৃত্দ এবং দীন দরিড অনগণের প্রম্প্রীতির পাত্র হইয়াছিলেন, শিংহা-সন্ত ইইয়া অপক্পাত স্বিচারখারা প্রজাবর্গ হইতে তক্রপ ধন্যবাদ উপাক্ষ ন করিয়াছিলেন, এবং অমিত ডে**ল:প্রভাবে** সংগ্রামস্থলে আতভায়ী শক্রদল নিপাত পূর্ব্বক সেইরূপ যশোভাজন হন। **ঈদৃশ** মহাত্মার চরিত্র অভ আমরা পাঠিকা-গণের বিদিতার্থ সংক্ষেপে বর্ণনা তরিতে অগ্রসর হইয়াছি।

প্রথমে দেখায়াউক প্রীরামের জীবনী সম্বন্ধে কি কি গ্রন্থ প্রচলিত আছে ৷

বাল্যীকির রামারণই দর্ম জ্যেষ্ঠ ও প্রধান। রামের কীর্জি বথার্পতঃ বাল্যীকি হইতে প্রচারিত হইয়াছে। তিনি বিদ ভাহার জীবনী রচনা না করিতেন, তবে রাম নাম জগতে এত পরিচিত হইউ না। রামায়ণ চতূর্সিংশ সহল্ল গ্লোকালক ও সপ্তকাতে বিভক্ত। ইহা কাব্য জগা-প্রয় প্রহন, রচনা সর্ক্ত দর্মণ ও সানে ষানে বিলক্ষণ মাধ্যাব্যঞ্জক। গ্রন্থকার আত্মসমরে ভারতবর্ষে কিরূপ লোকিক ব্যবহারাদি প্রচলিত ছিল, তাহা উত্তম-রূপে বিরুত করিয়াছেন। বাল্মীকি রামের সমকালবর্তী ছিলেন, এবং দর্মন্থিমে কাব্য রচনা করাতে "আদি কবি" বলিয়া বিখ্যাত হইয়াছেন।

মহাভারতে রামের রুজান্ত সংক্ষেপে বর্ণিত হইয়াছে। ব্যাসদেব ইহাতে তাঁহার রামান্থরাগের পরিচয় দিতে ক্রটী করেন নাই। অধ্যাক্ম রামায়ণ নামক আর এক ব্যাসদেব বিরচিত বলিয়া প্রাসিদ্ধ। তাহা আধ্যাত্মিক ধর্মভাবে পূর্।

কালিদাস কত রখুবংশ। বাল্টীকি ষাহাকে নির্মাণ করিয়া স্থচাক্র পরিচ্ছদ व्यमान करत्रन, कानिमान क्षकीय करली-কিক হক্ত স্পর্শনারা তাহাকে সজীব করিয়াছেন। রখুবংশ উনবিংশ স্গা-স্থক মহাকাব্য, ভশ্মধ্যে নৰ্মাব্ধি পঞ্চল পর্যাক্ত সপ্তসর্গে দশর্থ এবং রামের भौवनौ वर्षि इहेशाह । हमानी छन এতকেশীয় কোন হক্ষদশী পণ্ডিত কৃতিয়া-ছেন "রখুবংশের আদি অবধি অন্ত পর্ব্যন্ত সর্কাংশই সর্কাত্মসূত্র । যে অংশ পাঠ করা যায়, সেই অংশেই অদি-তীয় কবি কালিদাসের অলৌকিক কবিই-**শক্তির সম্পূর্ণ লক্ষণ স্ক্**পান্ত করে।" কালিয়াস বিক্রমাদিত্যের সভার নব-বৰ্ষের মধ্যে একজন ছিলেন, স্বভরাং উনবিংশতি শত্ত্বর্থ পুর্বেগ প্রাযু 💆 ত হইয়া-ছিলেন ৷ বন্দলি প্ৰভৃতি যে কতিপন্ন ব্যক্তি

তাঁহাকে আধুনিকরূপে প্রতিপন্ন করিবার চেষ্টা করেন, ভাহারা ক্লতকার্য্য হন নাই।

মহানাটক। বিক্রমাদিত্যের প্রান্থ-ভাবকালে হনুমান নামক কোন পণ্ডিত তাহা রচনা করেন। মহানাটক নর অঙ্কে বিভক্ত ও ৬১২ শ্লোকাত্মক। এই গ্রন্থের স্থানে স্থানে উৎকুঠ রচনা আছে।

ভটিকাব্য। ভট্ট নামক পণ্ডিত রচনা করেন। গ্রন্থখানি ২২ সর্গে বিভক্ত। গ্রন্থকার রামচন্দ্রের চরিত্রের সহিত ব্যাক-রণের নানাবিধ উদাহরণ প্রদর্শন করিয়া আশ্চর্যা পাণ্ডিভ্যের পরিচয় দিয়াছেন।

বীরচরিত ও উত্তরচরিত। এই হুই
উৎকুট্ট নাটক ভবভৃতি প্রণীত। ভবভূতি
কান্যকুজাধিপতি যশোবর্মার সভাসদ
ছিলেন, স্থতরাং শকাকার দপ্তম শতাকীতে প্রাহুভূতি হয়েন। পাশ্চাভ্য
সমালোচকদের মতে তিনি কালিদাদ
ভপেক্ষাও শ্রেষ্ঠতর কবি।

অস্কুত রামায়ণ নামে এক গ্রন্থ বাল্মীকির কত বলিয়া প্রসিদ্ধ আছে, বস্ততঃ
তাহা অতি আধুনিক গ্রন্থ। গ্রন্থকার
দশানন রাবণের উপাখ্যান শ্রবণে
পরিত্প্ত না হইয়া শতানন রাবণের গল
লিথিয়াছেন।

বশিষ্ঠ রামায়ণ বা যোগবাশিষ্ট। এই গান্থে অভীব সংগ্রেপে রামচক্রের এক কলিত অবস্থার বিষয় লিগিত ইইয়াছে, বেদান্ত দশ্মকে সাধারণের হৃদয়ঙ্গম করাই এছকারের উদ্দেশ্য।

রাঘব পাণ্ডবীয় নামক গ্রন্থ ফ্বিরাজ

40

পণ্ডিত প্রণীত। ইহা এক অন্তুত গ্রন্থ। এক ভাবে ইহা জীরামের চরিত্র,ভাবান্তর গ্রহণ করিলে পঞ্চ পাণ্ডবের বুজান্ত হইয়া উঠে।

ভূলদীদাস হিন্দীভাষায় এক রামায়প রচনা করেন। তিনি চিত্রকৃট সমীপছ হাজপুর গ্রামে রাহ্মণকুলে উৎপন্ন হইয়াছিলেন। যৌবনাবস্থায় কাশীনগরী-পতির দেওয়ানরূপে নিষ্কু হয়েন। তিনি ৩১ বর্ষ বয়সে (১৬৩১ সম্বতে) বারা-ণদীধামে রামায়ণের অনুবাদ আরম্ভ করেন। রামভণাবলী নামে এক গ্রন্থ ও ভাহার ধারা রচিত হয়।

বৃহদ্ধর্ম প্রভৃতি কোন কোন প্রাণে শ্রীরামের সংক্ষিপ্ত বিংবং আছে।

বঙ্গদেশে ক্বৈন্তিবাস পণ্ডিত প্রায় তুই
শত পচিশ বর্ধ পূর্বের রামায়ণকে বাঙ্গালা
পরিচ্ছদে প্রকাশ করিয়াছিলেন। ভাঁহার
পূস্তকে হানে ছানে কবিরশক্তির বিলক্ষণ
পরিচয় পাওয়া বায়। তাঁহার পুস্তক
এক্ষণে পুনঃ পুনঃ মুদ্রিত, পরিবর্ত্তিত ও
সংস্কৃত হইয়া বিভ্রন্তি হইয়া রিয়াছে।

শ্রীশ্রীন দামর সায়ন। বর্জমান নিবাসী
শ্রীরঘুনন্দন গোলামী বাস্থালা প্রে এই
গ্রন্থ বিরচন করিয়াছেন। গ্রন্থখানি
কৃত্তিবাসী রামায়ণের ভার সুরুহৎ ও
স্থালিত।

প্রায় বোল বংসর হইল এীযুক্ত ঘারিকানাথ ভঞ্জ সহাশয়ের অনুমতি অনুসারে পণ্ডিছবর এই: ইমচন্দ্র ভট্টাচার্ব্য মহাশয়ধার। বাঙ্গালা গছে মূল বালীকি রামায়ণ অনুবাদিত হইয়াছে।

্ শ্রীবৃক্ত কৃষ্ণগোপাল ভক্ত মহালয় বাঙ্গালা গজে মূল বালীকি রামায়ণ অন্ত-বাদ করিয়াছেন।

কয়েক বংসর অতীত হইল বৰ্দ্ধমানাধিপতি মহারাক্ষ ৺ মহাতাবটাদ
বাহাত্ত্র মহোলরের ব্যয়ে মূল বালীকি
রামাধণ বালালা গভে অসুবাদিত
হইরাছে।

কবিবর ৺ রাজকৃষ্ণ রারও বা**লালা** পতে মূল রামায়ণ অঞ্বাদ করিয়া**ছেন।**

রামের চরিত্র ভারতবর্ষ মধ্যেই নিবজ ছিল না। আরাকান দেশে এক প্রশ্ব আছে, তাহার উপাধ্যান এই, স্বে ভোৎ-সকল নামক এক ব্যক্তি প্ররামের পত্নী নংসীদাকে হরণ করিয়াছিল; প্ররাম ও তাহার প্রতা প্রালাক তাহার জাতা প্রালাক তাহার করিয়ালিক নংসীদার উদ্ধার করিয়ালিলেন।

শ্যামদেশে অবিক্ল এইরূপ এক প্রস্থ প্রাপ্ত হওয়া যায়, তাহার নাম রা**মকিউন ।**

বলীবীপে কবিজ্ঞানার রামারণ গ্রন্থ আছু আছে। বাল্টাকি ভাষার রচনাকর্ত্তা বলিয়া উক্ত হন। এখনকার রামান্ত্রপর ন্যায়, ভাষা সপ্তকাণ্ডান্থক নহে; কিন্তু উত্তরকাণ্ড বাতীত অপর ছব্র কাণ্ড একব্রীভৃত হইয়া ২৫ সর্গে বিভক্ত হইন্যাছে। উত্তরকাণ্ড একখানি পৃথক গ্রন্থ, ভাষাণ্ড বাদ্দীকিকৃত বনিরা প্রসিদ্ধ।

লভাষীপের ইতিহাসে রাম ও রাব্র পের প্রসঙ্গ আছে।

করেক বংগর অতীত হইল বারাণ্দী

কলেকের অধ্যাপক প্রীকিথ সাহেব ইংরাজী পজে বাল্মীকি রামায়ণ অসুবাদ করিয়াছেন। পূর্ব্বোক্ত বিবরণদারা প্রতীত হই-তেছে, বে প্রীরামচন্দ্রের জীবনর্ত্তান্ত বহু দ্রদেশ পর্যন্ত ব্যাপ্ত হইয়াছে। (ক্রমশঃ)

রমণী পরিত্রাণের সহায়।

রমণি। তোমরা স্বর্গের দেবী, আমর। ভোমাদিগকে পূজা করিয়া থাকি। কেন পুৰা করি, সে কথা আজ লিখিতেছি। রমণী-জদত্তে পবিত্র পরমেশ্বরের বাস, **শেইজন্ত** এঘুণে তোমরা আমাদিগের পুজ্য। অতি প্রাচীনকাল হইতে এপর্যান্ত রমণী-জাতিকে পুরুষগণ চিনিতে পারে নাই, ভাই এত দিন গৃহের দেবী-প্রতিমা অনাদরে হতাদরে মলিন হইয়া গিয়াছে-প্রক্ষের খেলার সামগ্রী হইয়া রহি-বাছে, দশটা উপভোগ্য জিনিসের মধ্যে একটা উপভোগের পদার্থ হইয়। আছে। আছ উনবিংশ শতান্ধীর শেষ ভাগে পবিত্র স্বর্গের আলোকে চরাচর ব্রহ্মাণ্ড জ্যোতিমান হইয়াছে—অগতের কোথায় কি ভাঁধারে ঢাকিয়া ছিল, সমস্ত প্রকা-শিত হইয়াছে, আজ রমণী-হাদয়ের অস্ত-ৰেশ উত্থল হইয়া উঠিয়াছে, সেখানে দ্রেখা গেল, স্বর্থ পরমেশ্বরের জীবস্ত সিংহাসন প্রতিষ্ঠিত।

রমুদ্দ আৰু জড় নহে—ঘট বাটা বা কুশটা গৃহ সামগ্রীর একটা নহে । রুমণী পুক্ষের ইজিয়সেবার বিষয় নহে। রুমণী এতাদিন পুক্ষের দাসী ছিল, আল আর দাসী নহে, দাসী দেবী হইরাছে, পুরুষের হৃদয়ের সর্কোচ্চ স্থানে এখন রমণীর আসন প্রতিষ্ঠিত। রমণী এতদিন পুরু-ষের শরীরের সেবা করিয়াছে, এখন হৃদ-য়ের সেবা করিতেছে—পুরুষের জীবন-টাকে ধরিয়া বিশ্বাধিপের চরণতলে লইয়া যাইতেছে, দে চরণস্পর্শে পুরুষ মুক্তিলাভ করিতেছে—রমণী এযুগে পুরুষের পরি-ত্রাতা।

পরিত্রাণের প্রধান উপাদান প্রেম। প্রেমের স্পর্ণে প্রেম বিকশিত হয়। রমণী-দ্বদয় এই প্রেমে বিগঠিত, নারী-প্রেমের স্পর্শে পুরুষ কেন না পরিত্রাণ পাইবে গ কেবল পুরুষের কথা বলিতেছি না, জন-সমাজের কল্যাণের জন্য-জন-সমাজকে মুক্তিধামের পথে লইয়া যাইবার জন্য সমাজ মধ্যে এই দেবী-প্রতিমা প্রতিষ্ঠিত হইয়াছে। বিখ-জননী আপনার ফুদ্র হইতে তিল তিল করিয়া প্রেম, পবিত্রতা ও পুণ্য আহরণ পূর্বক এই তিলোত্তমা প্রেম-প্রতিমা নির্মাণ করিয়াছেন ও বিশের পরিতাণহেতু বিশ্বমধ্যে স্থাপন করিয়াছেন। এ প্রতিমার হৃদরে প্রেম, হস্তে সেবা, মুখমগুলে পবিত্রতা। অগং!

স্থাক হাসিরা উঠ, তোমার পরিতাণের দিন স্মাগত।

রমণি! তবে আজ এস, হৃদরের সিংহাসনে ব'স, আমরা তোমার পূজা করি, নারী-পূজা ভিন্ন এষ্গে মৃজ্তি নাই, এ সমাচার জগতের ছারে ছারে ঘোষিত হইতেছে। ভারত আর খুমাইবে না, ভারতও জ্বাগিয়া উঠিবে, এই বিশ্বব্যাপী মহাপ্রজায় যোগ দিবে।

জগতের চকু আজ পবিত্র হউক, জগৎবাসী আজ পবিত্র চোধে রমণীর मुथलात्न मृष्टि करूक । के विमल, श्रन्मत्र, শোভন মুখের অন্তরালে যে সৌন্দর্য্যভাতি কৃটিয়া উঠিতেছে, উহার উৎস কোথায় ? (मरी-मू(थत अन्नत्रात्न विध-(मर आक भानार्यात कात्राता युनिया नित्रा वापनि (नहे भीन्म(र्य) यश शहशास्त्रन, ,निश्रानी প্রেমিক। দেখিরা মোহিত হও, ও দৌৰ্দর্য্য ডুবিয়া যাও, তলাইয়া যাও, আত্মহারা হইয়া যাও, ক্ষুদ্রের মধ্য দিয়া অনত্তে মিশিয়া যাও। কে বলিপ "কা তব কান্তা ?" কে বলিল এ সৌন্দর্য্য অসার ?— কে বলিল রমনীর মুপমওল পতনের সেতৃ? ভাস্ত মানব! চকু মেলিয়া চাহিতে জান না, তাই স্থার ভাণ্ডার হইতে গরল আহরণ কর, সে পুরল পান করিয়া মরপের কোলে ভইয়া পড়। পবিত্র চোখে চাও, দেবীর মুখের পানে যেমন করিয়া চাহিতে হয়, তেমনি করিয়া চাও, দেখ ভোমার ইচ্ছির নিভে कि ना, व्यान कारन कि ना, खनरत्रत्र

শিরার শিরার জীবনের স্রোত বহে কি না, মুক্তিধামের পথ খুলিয়া বার কি না ?

প্রাচীনকালের শাস্ত্রে আছে পর্মীকে মাতবৎ দেখিবে, আধুনিক কালের শাস্ত্র বলিতেছে, বিশ্বজননীর মাড়ভাব জীলোক মাত্রেই দর্শন করিরা তাহার शृका कतिरव। रव मिस्कत औरक सिवी-বৎ দেখিতে জানে না. সে যে পরস্তীকে দেবীবৎ দেখিবে, তাহার কি কোনও প্রমাণ আছে ? যে নিজের ছীকে দেবীর আসনে বসাইয়া পূজা করিতে পারে না, সে কি পরস্তীকে দেবীর সন্মান দিতে পারিবে প যে নিজের ঘরে দেবী প্রতিমায় অস্থান করে, সে কি পরগ্রে দেবী-প্রতিমার আদর করিতে শিখিবে ? সমাজের শাসন উঠিঃ। যাক-রাজনীতির বাঁধন শিথিল হউক, দেখ দেখি এই অধংপতিত দেশে শান্তের শাসন কিরপে রক্ষা পায় 🎗

কি বলিডেছিলাম. কোথার আসিরা পঢ়িলাম ? দেবি! তোমার মুথথানি সর্বের ছবি। নয়নদ্গলে কি আছে, জানি না, যখন ঐ মুখপানে প্রাণ ভরিয়া চাহি, তথনি ঐ নয়নদ্গল হইছে এক স্বর্গীয় বৈহাতিক শক্তি আসিরা প্রাণের মাঝে প্রবেশ করে,প্রাণের কোন্ এক গুপুছানে পিয়া কি সে বেন আলাভ করে। প্রাণের সেই খানটা থেকে কি বেন প্রলিয়া যার, আমাকে কোন্ এক ক্ষাভাত হানে কইলা যার, আমাকে কোন্ এক ক্ষাভাত হানে কইলা যার! সেখানে প্রেম ফুটিভেছে, পবিত্রতা উপলিতেছে, স্বারি

THE PARTY OF THE P

মুখে হাসি রাশি, দবারি মুখে ভত্ত শোভি. সকলে বেন পবিত্রতায় সান कत्रित्रा छेठिराट्ट, প্রাচীন কালের ময়লা শোষাক ছাডিয়া কি বেন এক স্বর্গের পোষাৰ-পুণ্যের পোষাক পরিয়াছে। बाबा चुनि (मवला, जामि देशारमत कार्ड থাকিতে চাই। রমণি। তবে এস, আমি ভোমার ঐ মুখের তল তল লাবণ্যের मधा पिया के कापरयंत्र मार्थ एविशा घारे, (मरीक्रमस्य এ क्रम्य छानिया দিয়া **সেধানে প্রেম ও** পবিত্রতার স্নাত হইয়া আমিও ই হাদের মত পবিত্র হইয়া **गाहे, ७ (क्षरम**त উंश्मृतली व्यनस्त्रत প্রেমে গা ভাষাইয়া দিয়া আপনাকে হারাইয়া ফেলি।

दम्पि । ट्यामाद श्रमस्यद ष्य खताता औ কাহাকে চাকিয়া রাখিয়াছ • প্রাণের ঈশার

পাহাড়, পর্বাড, নদ নদী, বন बाजन कड कि थें जिया आमिनाम, यांशांक शिहेलाम ना, जांक टिंगांत क्षत्रित मृत्व ভিনি ? এ কথা এতদিন বল নাই কেন ? অথবা ভূমি বলিয়াছিলে, আমি তুনি মাই। আমার চোক এত দিন প্রিকার

হয় নাই, তাই ও হাদরের মূলে নরক দেখিয়াছি—মর্পের ঈশ্বর অনন্ত ব্রহ্মাণ্ডের অধিপতিকৈ দেখি নাই। তোমার হৃদদ্ধে প্রাণরপী ভগবান বিরাজমান, তাই মহাযোগী, কঠোর সংঘমী শাক্যদেব এত কঠোর সাধনার পরও তাঁহাকে পান নাই; যথন তোমার পানে দৃষ্টি পড়িল— য়খন তোমার ঐ শ্বদয় নিহিত প্রেমরূপী ভগবান সেবারপে ভোমারই হাত দিয়া এই সংসারহীন, পরিবারহীন, হীন ক্লিষ্ট সাধকের মুখে ক্ষুধার সময় একটু পরমান তুলিয়া দিলেন, তখনই তাঁহার মুক্তি ঘটিল। তুমি যে ঐ দেবার ব্যঙ্গনিকা হস্তে লইয়া পরিপ্রাস্ত মানবের ঘর্মাক্র কলেবরে বাতাস করিতেছ, উহা ভগবানের করুণার মলয় रिलाल। ७ रिलाल आन जानिया দিলে পরিতাণ পাইব না কেন ? রম্পি ! তুমি ভগবানের প্রতিনিধি হইয়া আমার মুক্তির জন্য প্রেম, পবিত্রতা ও সেবার ভার লইয়া আদিয়াছ। তবে এদ দেবি। এ क्रमयुद्ध म्लार्ग कव, यामि छन्नाव इटेग्रा साहे।

পুরাণ কথা।

র্তামর বধ।

बक्तांत्र পুত্র ঘট। এক অহর-কন্যার । আপনার মাতামহকুল ⁶পাণিঞহণ করেন। অহর-ক্রাণীর পর্ভে তাহার অংশ প্রদান করেন, ইহাতে - আিশিরা নামে একটা পুত্রের জন্ম হয়। দেবরাজ ইক্স কুপিত হইয়া ভাঁহার শির-ভিনি এক সময়ে একটা মহা বজ করিয়। স্কেদন করেন। ভটা ক্ষিত্র তপোত্ত

অস্থর দিপকে

ছার এক পুত্র হয়,ভাহারই নাম বুর্তাম্বর। দে বিফ ভক্ত ও মহাবলপরাক্রান্ত হইয়া ইন্দ্রের ইন্দ্রত্ব কাড়িয়া লয় এবং সকল দেবতাকে পদ্চাত করিয়া বর্গ মর্ত্তা পাতাল ত্রিভূবন অধিকার করির। বলে। দেবগণ তাহার ভরে ছল্পবেশ ধারণ করিয়া মানবগণের সহিত পৃথিবীতে ইতম্বত: ভ্রমণ করিতে লাগিলেন। একপ কষ্টকর জীবন অধিক দিন ধারণ করিতে না পারিয়া তাঁহারা ব্রহ্মার নিকট গমন করিৰেন এবং দুর্গতি মোচনের क्छ छ। हात माहाया आर्थना कतितन। ব্ৰহ্মা ভাঁহাদিগকৈ দক্ষে লইয়া বিষ্ণৱ সমীপবর্ত্তী হইলেন এবং অনেক তবে স্ততি করিয়া ভাঁহাকে বুত্রান্ত্র বধের উপায় নির্দারণ করিতে বলিলেন। বিফাবলি-লেন ব্তাহ্মর বধের আর অন্য উপায় নাই, কেবল একমাত্র উপায় আছে-দধীচি নামে এক মুনি আছেন, বদি ভাঁহার অস্থিতে বন্ত্র নির্মাণ করিতে পার, তদ্যারা অস্থরের প্রাণনাশ হইবে। বিফুর উপ-দেশে দেবগণ দ্বীচি মুনির আত্রমে উপনীত হইলেন এবং তাঁহার নিকট সবিশেষ সকল বুভান্ত বর্ণন করিলেন। পরম দয়ালু ঋষি দেবকার্ষ্যে দেহপাত হইবে ভাবিয়া আপনাকে কুভার্থ জ্ঞান করিলেন এবং প্রমানন্দে দেবগণের নিকট প্রাণ উৎদর্গ করিতে প্রতিশ্রত হইলেন। পরে তিনি যোগাসনে ধাানময় व्यावज्ञांग कदित्वम । चारित्य विश्वकर्षा वश्च निर्द्धान कविरतन.

দেবগণের মহা আনন্দ ! তাঁহারা অবিলয়ে রণসক্ষা করিয়া বুত্তের ভবনাভিমুখে গমন করিলেন এবং "যুদ্ধং দেছি"বলিয়া তাহাকে আহ্বান করিতে লাগিলেন। রুজ দলবল লইয়া বোৰতর মৃদ্ধে প্রাবৃত্ত ইইল, অনেকক্ষণ যুদ্ধ হইল,কোনও পক্ষ ফ্রিড বা পরাজিত হইল না। অবশেষে দৈত্যবর मुथवामान कतिश हेसारक निमित्ड धारमान इहेल। अत्र अवि आश्रव-छात्र ভীত হইয়া. ফ্রতবেগে পলায়ন করিলেন। দেবগণত যুদ্ধ ভঙ্গ দিয়া যিনি বেধানে পারিলেন গিয়া লুকাল্লিড হইলেন। কিছু দিন পরে ইন্দ্রনহ দেবগণ পুনরায় বিফ্র শরণাপর হইলেন। বিষ্ণ তোমাদিগের একটা অভাব তোমরা আপনার তেজে যুদ্ধ করিতে গিয়াছিলে, তাহাতে কিরপে জ্বরী হইবে ? তোমাদের মধ্যে বিফুতেল চাই, এই লঙ দিতেছি। আমি তাহা বিফুতেতে প্রদীপ্ত ইইয়া দেবগণ নির্ভয় ও মহোৎ-সাহপূৰ্ হইলেন। তৎপরে ভাঁহারা মতুল সাহসে অম্বরদিগের সহিত যুদ্ধ করিলেন এবং দেবরাজ ইন্দ্র দধীচি মূনির **শস্থিনির্শ্বিত বক্স ধারা বুত্রাম্বরকে নিহত** করিতে সমর্থ হইলেন।

এই উপাধ্যান হইতে অনেক গুলি দার উপদেশ লাভ করা যায়। (১) অনেদ্র অনিষ্ট করিলে নিজের অনিষ্ট ইয়া। দেবরাফ তিশিরাকে বধ করিয়া বুরান্দ্রী স্থরদারা ধারপরনাই লাঞ্চিত ও দক্তিত হন। (২) বিশদ কালে ভগবানের নরবাপর হওয়া ভির বিপত্তাবের উপায় নাই। দেবতাগণকেও বিফ্র আশ্রম লাইতে হইল। (৩) দখীচি মুনির অহি জালের শিক্ষাপ্রদ। দেবকার্য্য সাধনের ক্রমাই সাধ্র জীবন এবং সাধ্ তাহাতেই জীবন উৎসর্গ করিয়া আপনাকে ধন্য ও কুডার্থ মনে করেন। (৪) প্রাপদান বিলা কোনও চুক্রহ কার্য্য সম্পন্ন হর না। একজন অন্বরের অফি নিউক, ত্রিভুক্র তাছাতে নির্ভর ও নিরাপদ হইবে। (৫) অব্যর্থ উপার হন্তে পাইলেও নিজের তেজে জরলাভ করিবার আশা করিলে তাহা বিফল হয়। (৬) বিফুতেজে জর্থাৎ শ্বরং ভগবানের শক্তিতে পূর্ণ হইরা অল্প্রশ্রেগ করিতে পারিলে তবে মহাস্থর দিপাত হয় এবং সংগ্রামে জর্লাভ হয়।

श्ति व। भक्त विद्धान।

(পূর্ব্ব প্রকাশিতের পর।)

ইতিপূর্বে উলিখিত হইয়াছে যে কর্ণপটহে বায়ুতরকের সংস্পর্ণ হইলে ভৎসংলয় সামুতে এক প্রকার বেগের উৎপত্তি হয়, এবং ঐ বেগ মস্তিকে নীত ছইলে শব্দজান নিম্পন্ন হয়। এই বায়তে ভরক কিরূপে উথিত হয়, তাহাও আমরা পাঠিকাগণের **হা**দগত করিতে চেষ্টা ক্রিয়াছি। নিম্নলিখিত উদাহরণ হারা 🚵 ৰাষ্ড্রকের প্রকৃতি অপেক্ষাকৃত পরি-क् हे इहेरव। यमि एठी या उठी या ক্ষমৰিক সংখ্যক হন্তিদত্তনিৰ্মিত গোলা কোনও এক মহুণ ছানে এক সরল রেখার পরস্পর সংলগ্ন করিয়া শ্রেণীবছ बांश बात, अवः উदांत्र अक व्यास्त्रत গোলাতে ঐ শেশীৰ সমস্ত্ৰে আৰু একটা 'গোলা গড়াইয়া আখাত করা স্থান, তাহা ब्हेल केहान जनन बार्खन लागांग गांक प्राथमिक अधिक निवस विदेश

অন্যান্য গোলাগুলি যথাস্থানেই অবস্থান করিবে, স্থানভ্রন্ত হইবে না। ব্যাপারে কি কি কাও ঘটিতেছে, অহ-যাউক। প্ৰান্ধন্থিত বে ধাবন করা গোলাটীতে প্রথম আঘাত করা ছইল. যদি দেই গোলাটা মাত্র দেই স্থানে शांकिए, छाराहरेल निःमत्मरहे छेश আঘাত বলাভিমুখে ধাবিত হইত। কিন্ত উহার পরে আর একটা গোলা খাকাতে. উহা ঐ দিতীয় পোলাতে চাপিয়া পডিয়াই প্রতিঘাত পাইতেছে এবং ঐ দ্বিতীয় গোলাতে নিজ বেগ সংক্রামিত করিয়া স্বস্থানে ফিরিয়া আদিতেছে। আবার দিতীর গোলাটীও তৃতীর গোলার উপর চাপিয়া পডিয়া উহাহইডে প্রতিঘাত পাইতেছে, এবং নিষের বেম উহাতে সংক্রামিত করিয়া স্বস্থানে কিরিয়া আরিভেছে। ভূতীয়, চতুর্ব এবং মধ্যবর্জী

আর ইতপ্তলি গোলা আছে, তন্তাবতের
ক্রিয়াই ঐ একরপ হইতেছে। সকলের
প্রান্তের গোলাটা প্রতিষাত পাইবার কোন
বন্ধ না থাকাতে সন্থান হইতে ধাবিত
হইতেছে। এই শেবোক্ত গোলাটার সমুথে
বলি একখানি পাতলা চর্ম লম্বভাবে
আবন্ধ করিয়া দেওরা যার, তারা হইলে
গোলা মহজেই সীর রেগ ঐ চর্মে গংকামিত করিয়া ফিরিয়া আসিবে এবং চর্মথানি আবন্ধ থাকাতে কম্পিত হইতে
থাকিবে। আমাদিগের যখন শন্ধ জান
হয়, তথ্ন কর্পিটহে বারবীর পরমাণ্র

ক্রিরাও অবিকল এইরপ হইরা থাকে।

বধন কোন বস্ততে আঘাতবারা বস্তু
উৎপত্ম হয়, তথন ঐ আঘাত-বল পূর্ব্বাক্ত
গোলার শ্রেণীর ন্যার বারবীর পরমার্থ,
শ্রেণীর পূর্ব্ব পূর্ববিটা হইতে পর পরচাতে
ক্রমে সংক্রামিত ও কর্ণপটছে উপস্থিত
ইইয়া উহাকে কম্পিত করে। ঐ কম্পানে
তৎসংলগ্ন সায়ুজালে বেগ বিশেবের উৎপত্তি হয়, এবং ঐ বেগ মস্তিকে গিয়া শব্দে
পরিণত হয়। এই ক্রিয়াগুলি এত শীন্ন
নিশান্ন হয় যে যুগপৎ উৎপন্ন হইতেছে
বলিয়া প্রতীত হয়। (ক্রমশঃ)

পাঁচন ও মুর্ফিযোগ।

বে দেশে বাভ প্রাকার বোগা উৎপদ্ম হয়, সেই দেশেই সেই সকল রোগের ঔষধ স্বরূপ উত্তিদ, ধনিজ বা অপর প্রকার প্রব্যু অবশ্রই আছে। মিনি আমাদিগকে मर्काळकात विश्वन क्देट तका कतिया ধাকেন, ধাহার কুপায় আমরা সর্বপ্রকার স্থতোগে সমর্ব হই, ছিনি যে রোগরপ বিশদ হইতে উদ্ধার হুইবার উপায় করিয়া দেন নাই, অধবা সাম্যাত্রণ সভোগের উপাত্ম বিধান করেন নাই, এমন ক্ধনই হইভে পারে না। স্বামাদের দেশে বে मकन छेरकें द्वारभन्न आच्छीव सिंधी যার, অনুসন্ধান করিলে ঐ সকল রোগের প্রকৃত ঔষ্ধও আমাদের দেশে পাওয়া সম্পূৰ্ণ বিশ্বাস যে चामारमञ

এ দেশীর অতি সামান্ত ও অনারাস-কতা
পদার্থের মধ্যেই আমাদের রোগশান্তির
উপার আছে। বিচক্ষণ এবং স্থাপ্তিত
ব্যক্তিরা যত্তপুর্নক অনুসন্ধান ও পরীকা
করিলে, অবস্তুই দেশার অতি সামান্ত
বন্ধর মধ্যেই কোনটা ওলাউঠার, কোনটা
অরের, কোনটা কাশের প্রকৃত ঔবব
বলিয়া হির করিতে পারেন, এবং নেই
সকল ঔবধের ছই এক পান অধ্বা
তাহার পাঁচনের ছই এক কাঁচা সেবন
করিলেই রোগের সম্পূর্ণ শান্তি হইবে।

বহকাল হইতে জন্মদেশে "ঠাকুকণ দিদির টোট্কা" বা মৃষ্টিবোগ বাণালী প্রচলিত আছে। বঙ্গদেশে এমন বার্টী নাই বে বাড়ীর প্রাচীনারা সামার

শামান্ত রোপ সকলের চিকিৎমা জানেন ना। छाँदापित कृत्यापर्यत्तत्र कत निक-রই উপকারক। আজ কাল পাশ্চাত্য চিকিৎসাপ্রণালী অস্থদেশে প্রাবেশা-**ধিকার ও আধিপত্য লাভ ক**রিয়াছে। এখন ক্রোডম্ব শিশুর সর্দি, উদরা-মর, অর (বালসা), হাম-এমন কি চলকণা প্রভৃতি রোগের প্রতীকারার্থ শামরা ইংরাজী চিকিৎসক অর্থাৎ ভাজার না ডাকিয়া নিশ্চিত্র থাকিতে পারি না। ডাক্তারের হাতে প্রাণের প্রতাদিকাকে অর্পণ করিতে পারিলে সকল চিতা দূর হয়, কিন্তু এখনও এমন অনেক शांत चाहर. त्यथारन चाहरी जाकात्र মিলে না। ঐ সকল স্থানে পিডামহী ও ভাঁহার অবর্তমানে মাতাঠাকুরাণীর দত্ত ঔবধ খারাই রোগ মুক্ত হয়। त नकन कथा मान इटेल वाखिवकरे वफ कड़े हरा। अथन माथा धतिताहर. ভাডাতাড়ি ডাজারের নিকট যাই, অজীণ स्टेर्लंडे आहात वक कतिया छाळारतव দত্ত পঞ্চাম্বাদ বিশিষ্ট ঔষধ সেবন করিতে বাকি। ফল এই হয়, না থেয়ে ভকিয়ে बति. खेराधत भाषामान लागा इत्. व्यवं काष्टेकि, लिनियम छ ७ (वल-ভারার আলায় কিছুকাল ছট্কট্ করিতে তর। ব্যয়ের কথা আর বলিব কি. শেষে क्टिंट निता होन १८७। (१८६व अयून. ज्ञिमाना, जजीन, देणानि বোগে ঠাকুকুৰ্ণদিদি কেমন সকল পাচক ঔৰধ হাজিল, ছই এক দিন সেবনেই রোগত

শারিতই, আহারও এক দিনের তরে বছ থাকিত না। পাঠিকাদিগের বিদিতার্থ এই পত্রিকার কতিপয় সারগর্ভ উপদেশ ও वावका जवः मृष्टियांग मःश्रव शुर्वक ক্রমশঃ প্রকাশ করা যাইরে।

(ছलिए त मिर्क ।

তুই এক দিবদের সন্দিতে ছেলেদের হুধের পরিমাণ কমাইয়া দিতে হইবে। বে সকল শিশু কেবল স্তন্ত তুগ্ধের উপর নির্ভর করে, তাহাদের প্রস্থতিদিগকে একবেলা অল্লাহার দিবে, মৎস্থাদি খাইতে निरम्भ, ज्ञान वस । बोर्का श्रीष्ठ छेनबान. অথবা হুই একথানি কুটি খাইতে দিবে, বৈকালে গা ধোয়া নিষেধ । ছেলেটীকে ভাল মধু ২০৷৩০ কোটা ঈষৎ উষ্ণ করিয়া ৩৪ বার দেবন করিতে দিবে, তাহাতে ২।১ ঝার পরিষার দাস্ত হইবে। সন্দি এক 👺 বেশী হইলে যু তরল জলবৎ পদার্থ নাক দিয়া পড়িতে থাকিলে, ঐ মধুর সহিত প্রতিবারে ২৷১ ফোঁটা আদার রস भियाहेश मित्व। मिक वृत्क विमाल মধুর দক্ষে কালা কপুরের রস প্রতিবারে ৩০।৪ • কোঁটা মিশাইয়া দিবে ও প্রছাহ ঐ নিয়মে এ৪ বার সেবন করিতে দিবে। গলা ডাকিতে থাকিলে সর্বপ তৈল উষ্ণ कतिया भनात्र मिरव। मिक यमिया भना ডাকিতে থাকিলেও সেই সঙ্গে বৈকালে भद्म अब अत स्ट्रेल मधु ७ कालाकश्रु (ब्रुव রসভো দিতেই হইবে, তা ছাড়া কাল ভুলসীপাতার রদ প্রভিবারে

কোঁটা একটু মধুর দক্ষে উষণ ই করিয়া ২াথবার দেবন করাইবে। এই উপারে এ৪ দিনের মধ্যে সন্দি ও অর প্রায় আরোগ্য হয়। সন্দিতো দারিবেই, দন্দি দারার পরেও যদি অর থাকে, তবে এ৪ দিন শেকালিকার পাতা ও কালমেবের পাতার রস দেবন করাইবলে, অর আরোগ্য কুধা বৃদ্ধি ও শরীর স্কৃত্ব ইবৈ।

পানে তৈল মাধাইয়া, উহা অগ্নিডে গরম করিয়া, শিশুদের বক্ষে লাগাইয়া রাখিলে দর্দ্ধি ও কাশি সারে।

ময়ুরপুচ্ছ অন্তর্গুনে, অর্থাৎ আবেদ্ধ মৃথার পাত্রে রাখিয়া ভন্ম করিবে। পরে কিঞ্চিং পিপ্ললীচুর্ণ ও মধুসহ সেই ভন্ম বালকদিগকৈ সেবন করাইলে দর্দ্ধি, মুঙরি, হিকা ও প্রবল খাস নিবৃত্তি হয়, ও সর্দ্দি তরল হইয়া মলসহ নির্গত হইয়া বায়, কতক বা বমি হইয়া উঠিয়া বায়।

> বালকের বালনা প্রভৃতি রোগের চিকিৎসা।

কেণ্ডরতে সাছের শিক্ড অল পরিমাণে তিনটা গোলমরিচ দিয়া বাটিয়া তিন দিঘস ভক্ষণ করাইলে বালসার হুর আবাম হয়।

বনপুঁরের শিকড ২ । টা গোলমরিচ দিরা বাটিরা ভক্ষণ করাইলে, অথবা কোঁকসিমের মূল ২ । টী মরিচ দিরা বাটিয়া ভক্ষণ করাইলে বালকদিগের বালসা ভাল হয়। পানের বোঁটার ছত বা তৈল মাধা-ইয়া, অথবা মুক্তবর্গির পাতা বাটিয়া, বা বকুল বিচি মধিয়া মল মারে দিলে, শিশুদের সঞ্জিত বন্ধ মল নির্গত হইয়া কোই বিশুদ্ধ হয়।

অচিরজাত শিশু তান্য পান না করিলে হরী একী চূর্ণ অত্যন্ত পরিমাণে, দ্বত ও মধু সহ মিশাইয়া, তদ্বারা তাহার জিহুরা ঘর্ষণ করিলে উপকার হয়। চোয়াল ধরিয়া বিবর্ণ হইলে কাল ভূলনী-পাতার রম ও নাকদানা পাতার রম একতা করত ঈষৎ উক্ষ করিয়া গাত্রে মালিদ করিলে উপকার দর্শে।

ধাইফুল ও পিপুল চূর্ণ আমলকীর কাথ বা রসসহ সেবন করাইলে দভো-ত্তেদ-জনিত শিশুর জর, উদরাময়, বমি প্রাভৃতি সমস্ত পীড়া নষ্ট হয়।

শিশুদিগের পীড়ার স্থন্যদায়িনীকৈ
সেই রোগোক্ত পথ্যাপথ্য পালন করিতে
হইবে। পীড়াদি কোন কারণে তাঁহার
ভানের হগ্ধ দ্বিত হইলে অন্য ধাতীর
হৃত্ব পান করান কর্ত্ব্য।

কাশী ও গলা ঘড়ঘড়ানী ও বালসার ঔষধ।

আৰপ্তপান—১টা, লবক ১টা, জার-ফল ১আনা, জবানী ১আনা, জল একতোলন, এই করেকটা লব্য পেবদ করিয়া প্রদীপের উদ্ভাপে উষ্ণ করিয়া সেবন করাইলে ভূই তিন দিবসের মধ্যে ভাল হয়। একটা আকল তুলার বালিস প্রস্তুত করিয়া উহা ছেলের মাথার দিবৈ, এইরূপ করিলে ছেলেদের খুংরি, কালি, কর্ণরোগ, চক্ষে জলপড়া, কাতপ্রেমা রোগ জন্মে না।

বালকদিগের উদরাময়াদি পীড়ায় গাধার হুগ্ধ উপকারী। উদরাময় থাকিলে অর্থেক অন ও অর্থেক গৃথ ধানকওক বেল ভাঠ সহ দিছ করিয়া সেই গৃথ পান করাইবে। অজীর্গ, হল ভোলা থাকিলে হথ্যে ২।৪ কোটো চুনের জল দিবে। এঁড়ে লাগায় পৃষ্টিকর সহজ্ব পাচ্য এবং অন্নিকর আহার ব্যবস্থা করিবে। (ক্রমশঃ)

ব্ৰহ্মবাদিনী বেসান্ট।

আনি বেসাণ্ট ইংলণ্ডের অন্ত:পাডী कीन शास ३৮८१ मुः व्यत्म बना शहन করেন। ইহাঁর পিতামহ ইৎরাজ হইলেও কর্ম উপলকে আয়র্ল তে বাস করিতেন। এইছানে বেসান্টের পিত। জন্মগ্রহণ এবং অত্তত্য বিশ্ববিদ্যালয়ে চিকিৎসা বিশরক পরীক্ষায় উত্তীর্ণ হইয়া উপাধি লাভ করেন। কিন্তু তিনি ক্থনও চিকিৎসা ব্যবসায়ে হস্তক্ষেপ করেন নাই। কিছুকাল পরে, তিনি ইংলওে **দাসিয়া কোন কর্ম্মোপলক্ষে জীবনের** অবশিষ্টাৎশ অভিবাহিত করেন। বেদা-ণ্টের পিতা নান্তিক এবং জননী ও ভগিনী খোর পৌত্তলিক ছিলেন। বেসাণ্ট बटनग. তাঁহার পিতার মৃত্যুকালে, অভোট ক্রিয়া নির্বাহার্থ পুরোহিত আহত হয়, কিড ডদীয় মুমুর্ পিতা टिक्रारिंध व्यवीय स्हेबा छीशास्त्र शृह स्हेर्छ বহিত্ত কৃত্রিয়া দিতে আদেশ দেন।

বেদার্কের পিতা ডাক্টার উড মরীস নারী জনৈক আইরিদ রমণীর পাণিএইণ

করেন। বেদান্ট যধন শিশু, তখন তাঁহার পিতার मृष्ट्रा रत्र। (वनात्णेत्र क्रानी একজন গুণবতী রমণী ছিলেন। বেদাণ্ট ভাহার স্থ্যাতি করিয়া বলেন, "She tenderest, sweetest, the proudest, and noblest woman I have ever known" ১৮৫২ গৃঃ অব্দে ডাক্তার উডের মৃত্যু হইলে পর, বেদান্টের মাতা লণ্ডন সহর হইতে হারো নামক স্থানে আদিয়া বাস করেন। এই স্থানে মিদেস উড কয়েকটি ছাত্রকে অধ্যয়ন করাইতেন. এবং তাহা হইতে যাহা পাইতেন, তদ্বারা তাঁহাদিপের আসাজ্ঞাদন নির্কাহ হইত। হারো কুলের হেড্মান্তার সলাশর ডাক্তার वकान मार्टिंग, नाना क्षकात्र अहे विश्व পরিবারের সহায়তা করেন। ৰালিকা বয়দে বক্তবালিকার नाव গৃহক্ষা না থাকিয়া ববেচ্ছবিচরণ করি-তেন। ইনি ক্রিকেট ধেলাতে বিশেষ **नात्रवर्गिनी हिल्लम। गृहमात्रिहे छेन्छात्म** বুহৎ বুহৎ বুক্তে অবলীলা ক্রমে আংরাহণ

করিতেন। একটা বিশাল বিস্তৃত বৃক্
ভীহার পাঠাপার ও বিশ্রামাপারের কার্য্য
করিত। বেসাওঁ বছক্ষণ ধরিয়া সেই বৃক্ষশাধার বসিয়া অধ্যয়ন করিতেন। মিলটনের 'প্যারাডাইস্ লই," বা স্বর্গচ্যতি
নামক গ্রন্থ পড়িতে তিনি অতিশর ভালবাসিতেন। বেসাওঁ বলেন, "এই প্যারাডাইস্ লই হইতে সরভানের বক্তৃতা
মুধ্য করিয়া, সয়তান সাজিয়া, তাহার
অভিনর করিতাম।"

উপন্যাস-লেখক কাপ্তেন মেরিরটের নাম আনেকে গুনিয়াছেন। ইহার **শিক্ষিত ভপিনী মিদ মে**রিরট **জ**নৈক সুল্পত্তিশালিনী রমণী ছিলেন। ইহার এক ভ্রাতৃষ্ণ জীকেঁ ইনি স্বয়ং শিকাদান করিভেন। বেসাণ্টের জননীর সহিত মিদ্ মেরিয়টের একদিন সাক্ষাৎ হয়। ৰেদাণ্ট তখন বালিকা। বেসাণ্টের আচরণ দেখিয়ামেরিয়ট যার পর নাই প্রীত হন। তিনি বেগান্টের জননীকে বলিলেন, আপনি বদি বেসাউকে আমার বাটীতে লইয়া ঘাইতে দেন, ভাহাহইলে আমি উহার শিক্ষার ভারগ্রহণ করিতে পারি। ইহাতে আপনার কিছু মাত্র चर्व वाम्र इहेरव ना। বাৎসল্যের ৰশীকৃত হইয়া, তুহিতার ভবিষ্যৎ সমু-ছতির অন্তরায় হওয়া উচিত নয়, এই মনে করিয়া তিনি মিশু মেরিয়টের क्षजात मन्त्रजा इहेरान। व्यवस्य धर्म कतिया (अहरक खरमयन कहा, दूनानी মহিলাবর্থের এই এক চরিত্রের মহব। वक्रमहिलाशन धरे मश्च हरेष चान-काःम विश्वा।

মিস মেরিরট এক স্থাপা পদ্মীতে বেসাণ্ট বৎসম্বের বাস করিতেন. अधिकाश्य नमत्र अहे शास छांदात निकृष्टे অধ্যয়ন করিতেন। কেবল পর্কোপলক্ষে এক একবার বাটী যাইতেন। মিলু মেরি-ষ্ট নিরতিশন্ন ধর্মপরারণা রম্পী ছিলেন। তিনি নানা উপারে ছ:খীর ছ:খমোচনে যত্রতী ছিলেন। তিনি তাঁহার ছাত্রী-বৰ্গকে মধ্যে মধ্যে বসিতেন, "বন্ধং বিদ্যা-শিকা করিয়া যদি অপর পাঁচজনকে সেই বিখ্যা দান করিতে না পার, তবে সেরপ বিদ্যাশিকা করা না করা নমান।" লোভ শিক্ষারূপ কঠোর ত্রত গ্রন্থপের যে উচ্চা-जिलाय, जाशाब वीय धरे नमाय मिन মেরিগ্রট কর্ত্তক বেসাণ্টের ছানর ক্ষেত্রে उस दहेशाहिल।

মিস্ মেরিরট তাঁহার ছাত্রীগণকৈ
সর্ব প্রকার অস্ত্রীল নৃত্যুগীতে বাগদিতে বা থিরেটারে বাইতে নিবেধ
করিতেন। ছাত্রীগণ্ড তাঁহার আদেশের
অনাথাচরণ করিত না। বেদান্ট করাসী ও
অর্থণ ভাষা শিক্ষার্থ মিস্ মেরিরটের
সহিত দাত্যাস কাল প্যারী নগরীতে
অবহান করেন। এই হানে বেদান্ট
ইংলতীর ধর্মমণ্ডলীর দলভূজা হন। প্যারী
হইতে প্রভ্যাগমন করিলেন বটে, কিছ
করাসী ও কর্মণ ভাষার অসুশীলন গাঁনিভ্যাগ্র করিলেন না। এই সমর হইতে ভিনি
স্ক্রীত বিহ্যার আলোচনাতেও প্রক্রাহন।

হিন্দুস্মাজের ন্যায় গৃষ্ঠীয় স্মাজ্ও নানা প্রকার সম্প্রদারে বিভক্ত, তমধ্যে রোম্যান ক্যাথলিক ও প্রোটেই্যার্ট এই ष्ट्रे मच्चनाम्र व्यथान । शृद्याक मच्चनाम তেত্রিশ কোটি দেবতার উপাসক না हरेरनं चरनकारम পৌত্তলিক । ভাহারা ক্রিয়াকাও অনুষ্ঠানের পক্ষপাতী এবং পোপের শাসনাধীন। এই সম্প্রদায়ের পুরোহিতগণ যাবজ্জীবন বিবাহ করিতে পান না। শেষোক্ত সম্প্রদায় তাহার সম্পর্ণ বিরোধী। ইহারা পৌত্তলিকতা অথবা পোপের প্রাধান্য স্বীকার করেন ना। जानि विभागे नर्सक्षथरम काथनिक स्ट्रीन हिल्लन। পরে এই শেষোক স্প্রদায়ভুক্ত হন। মিদ মেরিয়টের অবস্থানকালে বেসাণ্ট কোন প্রকার নৃত্যগীত করিতে বা থিয়েটারে যাইতে পারিতেন না। যথন শিক্ষ-মিত্রীর নিকট বিদায় লইয়া গৃহে প্রত্যা-গমন করিলেন, তখন তাঁহার স্বাভাবিক বিলাসবাসনা বিশেষ বলবতী হইয়া উঠিল। এবার তাঁহার বছকালের রুদ্ধ প্রবৃত্তি দিওণ করিতে বলে কাৰ্য্য তিনি প্রাণ মন খুলিয়া নৃত্যগীতে যোগ দান করিতে লাগিলেন। নানা প্রকার অক্লাচনা ও প্রগল্ভতাতে দিন কাটিতে লাগিল :

এই সময়ে ইংলগুীর প্রোটেন্টাণ্ট ধর্ম সম্পূলারের মধ্য হইতে "হাই চার্চাণ সম্পূলার নামক এক নৃতন দলের মন্ত্রাধান হয়। সাময়িক প্রবন্ধ ও বিশাস চারিদিকে বিঘোষিত হইতে লাগিল। পরিত্যক্ত কার্থলিক মত ও অনুষ্ঠান শ্রেটবোধে তাহা পুনর্গ্রহণের জন্য এই দলের বিশেষ আগ্রহ দেখা গেল। বেসাণ্ট এই সাময়িক উত্তেজনার হাত এড়াইতে পারিলেন না, প্রোটেটার মত পরিত্যাগ করিয়া কার্থলিক মতে দীক্ষিতা হইলেন! অন্তর্দ্ধৃ বি বে পরিমাণে জীণ ইইল, বাহ্যাড়ম্বরের মাত্রাও সেই পরিমাণে বাড়িয়া গেল। বেসাণ্ট সহস্তে ভঙ্গলালয় পত্র পুষ্পাও চিত্রাদি হারা স্থসজ্জিত করিতে প্রবৃত্তা হইলেন। এই সময় হইতে বেসাণ্ট জননীর সহিত লগুন সহরে বাস করিতে লাগিলেন।

মিশন চ্যাপল ছাইচাচ্চ সম্প্রায়ের একটি ভজনালয়। রেভারেও ফ্রাক বেসাণ্ট এই মিশন চাপেলে আচার্য্য ও তথাবধায়কের কার্য্যের সহায়তা করিতেন। ইনি কেন্দ্রিজ বিশ্ববিদ্যালয় হইতে কয়েকটি উপাধি লাভ করেন এবং त्रीय कीविकार्कत्नत कना অন্ত:পাতী ইকওয়েল গ্রামে একটি বিদ্যা-লয়ে শিক্ষকের কার্য্য করিতেন। খ্যাত-উপন্যাপলেথক মি: ওয়ালটার বেসাণ্ট ইহাঁর সহোদর। আনি বেসাণ্ট ২০ বংসর বয়:ক্রমকালে রেভা: ক্রাক্ বেসান্টের পাণিগ্রহণ করেন। বাহল্য আনি ধর্মার্থিনী হইয়া স্বতঃ এই শিক্ষিত ও ধার্শিক বৃহককে পতিছে করিয়াছিলেন। এই ঘটনার

०६३ मर]

কিয়দিন পরে মি: বেসাণ্ট ইংলত্তের পশ্চিমস্থ বেলটেনহাম নগরে শিক্ষকতা কার্য্যে বভী হইয়া গমন করেন। আনি-পতির সংক্ষ তথায় গমন করিলেন। আনি স্থানে অবস্থানেকালে এই ফ্যামিলী হেরালড় নামক মাসিক পত্রি-কায় প্রবন্ধাদি লিখিতে লাগিলেন। ইহার দারা ভাঁহার কিছু কিছু আয় হইতে লাগিল। এই সময়ে ইনি "Lives of the Black Letter Saints" নামক এক থানি গ্রন্থ লিখেন। আর্থিক অভাব-নিবন্ধন আনি তাহা তৎকালে প্রকাশ সর্ব্ব প্রথমে নাই। পারেন আনি বেসাণ্ট একথানি পুল্ডিকা'প্রচার করেন। তাহাপাঠ করিলে জানা যায় ইনি তংকালে ফ্লায়ে রোমান কাথলিক মত পোষণ করিতেন এবং এই পুস্তিকায় আনি উপবাদ-মাহাত্ম্য বর্ণন করিতে यरबर्धे अद्योग भारेषाहित्तन।

ইংলণ্ডের লর্ড চান্সেলার লর্ড হাথারলী মিসেদ্ বেদান্টের পিতৃত্য ছিলেন।
ইহার সহায়তায় আনির স্বামী লিকনশায়ারের অন্তঃপাতী দিবসী নামক ছানে
বার্ধিক ৪৫০ পাউশু বৈতনে ধর্ম্মযাজকের
পদে নিয়োজিত হন। ইতিমধ্যে ধৃষ্টীয়
ধর্মের সারবতা দম্মদ্ধে আনিবেদান্টের
মন সন্দেহ দোলায় দোলিত হয়।
এ পর্যান্ত খৃষ্টধর্মের সপক্ষে শু বিপক্ষে
যতগুলি উংকৃষ্ট গ্রন্থ প্রকাশিত হইয়াছে,
আনিক্রমে ২ তৎসমন্ত অধ্যয়ন কবিলেন।
কিন্ত কিছুতেই পরিতৃপ্তা হইতে পারিলেন

না। অবশেষে আনি ডাজার পুদীর
পরামর্শ গ্রহণ করিলেন। ঈর্বরায়্রাগী
পুদী বলিলেন, প্রমেশ্বের শ্রণাপর
হওয়া ব্যতীত সত্যাবধারণের আর
প্রকৃষ্ট পথ নাই। আনি বেদান্ট তাঁহার
পরামর্শ মতে দাকাং প্রমেশ্বরের উপান
নাই দার ধর্ম বলিয়া গ্রহণ করিলেন।

এই সময়ে গৃষ্ঠীয় সমাজে এক মহা সমুখিত আন্দোলন रुग्र । দিন সারণার্থ প্রীয় যী ভর मुकुर ভজনালয়ে এক ক্রিয়ার অফুষ্ঠান হয়। थ द्वीनगन ममछ कियात मार्था कहेंगितक দর্বপ্রধান ও অভি পবিত্র জ্ঞান করেন, ইহাকে ' Holy communion " বলে। भीवभी छळनालाय यथन **এই किया** অনুষ্ঠিত হইতেছিল, আনি বেদাণ্ট তখন তথায় উপস্থিত ছিলেন। এই অমুষ্ঠানে व्यवाचानिवक्षन बक्कवाविनौ ভ্ৰুনালয় হইতে বাহি**র হইয়া আইলেন।** তথায় শাহারা উপস্থিত ছিলেন, তাঁহা-पिरात्र माधा अरनाक मान कतिरानन. শারীরিক অসম্ভতানিবদ্ধন ইনি ভজনা-লয় পরিত্যাগ করিলেন। এই ঘটনার বেদাণ্ট একথানি কয়েকদিন পরে পুন্মিকা প্রচার করেন। তাহাতে খুষ্টধর্ম সম্বন্ধে কঠোর স্মালোচনা বাহির হয়। বেদাণ্ট প্রত্তকে সীয় নাম প্রকাশ করেন নাই। বহিভাগে কেবল"জনৈক ধর্মবাদক-পত্নী কর্ত্তক" এই কথা কয়েকটি লিখিড ছিল। এই পৃত্তিকা প্রকাশিত হইলে ধ্সীয় সমাজে এক মহা হলভূল পড়িয়া

यात्र । बेहीन, धानात्रकत भन्नी व्यवहान ! প্তকু অপরাধ অমার্জ্জনীয়। হয় हि আনি পতির সহধর্ষিণী হউন, নয় ভাঁহাকে পরিত্যাপ করুন, এই বলিয়া খৃষ্ঠীয় সমাজ বেভারেও বেসাণ্টকে উত্তেজিত क्रिक लाशिता। हैनि छेल्य महत्वे পড়িলেন। যদি পত্নীকে পরিত্যাগ না হইলে চাকরী ঘায়. ধর্মধাজকের পদ হইতে অপস্ত হইতে হয়; স্থাবার যদি শীরপদ অক্ষুধ রাখিতে হয়, তাহা হইলে প্রিয়তমা পত্নীকে পরিত্যাগ করিতে হয়। ধর্ম বিষয়ে মত ভেদ হইলেও আনি এক দিনও জন্য কোন প্রকারে পতির বিক্লচরণ करवन नाहै। অবশেষে আনি সীয বিবেকবাণীর অত্করণ করা শ্রেয়ঃ জ্ঞানে ছ: থের সহিত প্রিয় পতির নিকটে বিদায় গ্রহণ করিয়া জননীর নিকট আগমন করেন। রেভারেও বেসাণ্ট পত্নীর কথা একবারে বিমাত হইতে পারিলেন না। আনির্দাংসারিক অভাব মোচনার্থ মাসে মাসে কিছু কিছু অর্থসাহায্য করিতে नातित्व। এদিকে বেদাণ্ট ধাত্রীর कार्या कतिशा ध्ववः मर्था मर्था नामशिक পত্ৰিকাদিতে প্ৰবন্ধাদি লিখিয়া কিঞ্চিৎ অর্থ উপার্জন করিতেন, তদ্যুরা একপ্রকার স্থানে সচ্ছন্দে সংসার্থাতা बिकार হইতে লাগিল। লওন নগরে অবহান কালে তত্ত্বত্য ব্ৰাহ্মধৰ্ম্ম প্ৰচারক মহাসা মনকিওর কনওয়ের (Moncure Conway) श्रामाभ्रम অভিনিবিষ্ট-

চিত্তে নিয়মিত শ্রবণ করিতেন এবং ভত্তিত্য ব্ৰাহ্মসমাজে खपर्यत সহিত যোগদান করিতেন। এই ব্যন্ত হইতে বেসাণ্ট বিশ বৎসর কাল পৌত্তলিকভার বিরুদ্ধে অপরাঞ্চিত্রিছে করেন। খ ষ্টধর্মের বিক্ত প্রবন্ধাদি লিখিবার জন্য জাঁহার অধি-কাং**শ সম**য় অতিবাহিত **হইত।**

১৮१८ थः अरम धकमिन "न्याम्या-ন্যাল রিফরমার নামক একথানি সাপ্তা-হিক দংবাদ পত্র আনি বেদাণ্টের হস্তগত হয়। এই সংবাদ পত্তে বিজ্ঞাপন পাঠ করিয়া বেসাণ্ট স্থানীয় বিজ্ঞান মন্দিরে ব্রাডল সাহেবের বক্তৃতা প্রবণার্থ গমন करत्रन। रचीवरनत्र अथगावसात्र कफ्वानी নাস্তিক বলিয়া ব্রাডলর একটা ছুর্নাম শুনা যায়। কিন্তু ব্রাডলর শেষ জীবনী আলোচনা করিলে তাঁহার আস্তিক্য বুন্ধির কত**ক আভাস প্রাপ্ত হও**য়া যায়। ব্রাডল এক বক্তৃতায় বলেন, (The Atheist does not say "There is no God, "but he says I know not what you mean by God; I am without an idea of God "wate नांखिक এकथा वलन ना य क्रेन्द्र नाहे, কিন্ত এই কথাই বলেন যে 'ঈশ্বর শব্বের অর্থ কি তাহা আমি জানি না। ঈশ্বর সম্বন্ধে আমার ধারণার অভার'। অন্তিম-বাডলর অন্তরে ভগবং প্রীতি সমুদিত হইয়াছিল কি না জানি না, তবে এ কথা শভ্য **ৰে তিনি** যাব**জী**বন

পরমেশরেরং প্রিরকার্য্যে দেই মন প্রাণ নিয়োগ করিয়াছিলেন। মহামতি ব্রাডন আমাদিগের জাতীর মহাসমিতির অন্যতম সহায় ছিলেন।

দেইদিন বিজ্ঞান মন্দিরে ব্রাডলর বক্ততা শ্রবণ করিয়া বেদাণ্ট গৃহে প্রত্যা-গমন করিলেন। বেসান্ট উক্ত বাগীর কৃট বৈজ্ঞানিক তর্কজালে এরপ আবদ্ধ হইয়াছিলেন যে কিছুতেই তাহা হইডে মুক্ত হইতে পারিলেন না। ঈশবের অন্তির এবং জাঁহার স্বরূপ বিষয়ে নানাপ্রকার সংশয় আদিয়া বেদান্টের কোমল মনকে বিজ্ঞড়িত করিল। ইতঃপূর্কো এক বিশেষ ঘটনা বেদান্টের আন্তিক্যবুদ্ধির স্রোতকে ক্ত করিয়া দেয়। তাহা এই:— বেদা-ন্টের একটি পুত্র ও একটি কন্যা। ঘধন কন্যার বয়দ সাত মাস, তথন শিশুটী শ্বাসরোগে কট্ট পায়। কয়েক সপ্তাহ ধ্রিয়া কন্যাটীর ক্লেশ দেখিয়া বেসান্ট তাহার জীবনাশায় জলাঞ্জলি দিয়া এক-বারে হতাশ হইয়া পড়িলেন এবং ওাঁহার

মনে এক প্রশ্নের উদয় হইল বে, ঈশ্বরকে শান্তিদাতা বলা বাইতে পারে কি না ? তিনি বদি শান্তিদাতা হইতেন, তাহা হইলে আমার কন্যা এতদিনে আরোগ্য-লাভ করিত। কিন্তু তাহা য**খন হইতেছে** না, তথন ঈশ্বর শান্তিদাতা নন। ইহা মিথ্যা কথা। অবশেষে বেসান্ট ক্রোধিত इहेश विनित्नम, "How eanst Thou torture a poor baby so? Why dost Thou not kill her at once and let her be at peace" ভূমি কেন এই হতভাগ্য শিশুকে এরপ কট দিতেছ ? ভুমি কেন এখনই ইহাকে মারিয়া ফেলিয়া ইহার সমস্ত ক্লেশের অবসাম করিতেছ না ৭ যাহাইউক অনেক কটের* পর কনাটি আরোগ্যনাভ করেন। কিন্ত এই সময় হইতে বেসানী ঈশবের আরা-ধনা পরিত্যাগ করিলেন এবং পরে ভ্রাড-লর বক্তাতে মুগ্ন হইয়া নাজিকভা ও জডবাদ গ্রহণ করিলেন।

(ক্ৰমশঃ)

বাঙ্গালী কমিসনার।

ধন্ত ধন্ত আজ্ঞ ধন্ত বন্ধবাসী কি নব উৎসবে সবে মাতোয়ারা, এমন স্থদিন কবে হবে আর ? খুলে গেছে শত আনন্দ-ফোয়ারা।

ভারতের ভাগ্যে যে পদ-মর্য্যাদা ষটে নাই কভু, বাঙ্গানী দে পদ পাইলেন আজ প্রতিভার গুণে এ হ'তে কি আছে অতুল সম্পদ?

কি শুধ বারতা শুনির শ্রবণে। , শ্বদেশের মান করিতে বর্দ্ধিত, কে কবে পেয়েছে এহেন সন্মান ? কমিশনারীতে রবেশ বরিত।

বালালী বলিয়ে ভূচ্ছ করে যারা, দেখুক চাহিয়া বালালী রমেশে,— মানসিক বলে কত বলীয়ান, কতই যশসী সংদেশে বিদেশে!

কার্য্যপটুতার ইংরাজ দদৃশ, সুধীর প্রবীণ অগাধ পণ্ডিত, উৎসাহে উজমে অদম্য অটল, স্বাধীনপ্রকৃতি সর্বত্র বিদিত।

দেশের কল্যাণে সঁপি দেহ মন
কে থাটিবে এত রক্ত করি জল
ও হেন স্থসদ কেবা আছে আর,
নিয়ত কামনা প্রজার মঞ্চল।

সাহিত্য সমাজে স্বনাম-বিখ্যাত স্থলেখক বলি সকলে আদরে, উপত্যাস লিখে কতই স্থনাম! মাতৃভাষা ঋণী রমেশের করে।

শিক্ষা বিভাগেতে উচ্চ অবিকার কে পেয়েছে এত তাহার মতন ? "ইতিহাসে তিনি 'অথরিটী 'আন্ধ' শত মুথে সবে করিছে কীর্তুন।

যেদিগেতে চাই সেই দিপে তাঁর সমকক্ষ লোক দেখিতে না পাই, উদার ইংরাজ গুণ-পক্ষপাতী, গুনীর গৌরব করেছেন তাই।

দেও ধস্থবাদ 'দার ইলিয়াটে'— বঙ্গবাসী দবে একান্ত হৃদয়ে, দব দেশে ভূলে গাও ভার ভীগ একভানে ভালে একপ্রাণ হয়ে। লর্ড এল্ গিনের শাসন সময় বাঙ্গালীর কত বাড়িছে সন্মান, চিরস্মরণীয় এল গিন নাম ইইল ভারতে, —তাই যশোগান

করিছে সকলে—ভারত সন্ততি।
সাধে কি ও নামে বিশক্মেটী প্রাণ
মাতিয়ে উল্লাসে—দিয়ে করতালি
কহিছে ''এল্ গিন—উদার প্রকৃতি।"

ধন্য ভিক্টোরিয়া—-শাসন তোমার ! রাজা প্রজা আজ সকলি সমান, নাহি পক্ষপাত—'ইংরেজ নেটিভে, গুণ দেখে সবে করিছ সন্মান।

থাকো মা স্থথেতে—দীর্ঘজীবী হয়ে,: প্রজাহিত:ব্রত পালো জনিবার, 'জয় ভিক্টোরিয়া' হোক জয়ধ্বনি হিমালয় হ'তে কুমারিকা পার।

দেও উলুধ্বনি প্রনারীগণ—

সবে মিলি আজ দেশের সম্মানে,

কদলী পুতিয়ে ঘরের ভ্যারে

রাগো পূর্ণ কুন্ত রমেশ-কল্যাণে।

নির্কাণ-প্রদীপ জলিছে আবার ! নিরাশা আধারে আশা চন্দ্রোদয়, বিধির বিধানে সকলি সম্ভব, ভারত-ভবিষা উজ্জ্বতাময়।

দৈববাণী যেন পশিয়াছে কাণে
চির হুঃখ নাই অদৃষ্টে কাহার,
"সুথ অন্তে ছুঃখ, হুঃখ অত্তে সুখ"
মহা সতা হ'ক ভারতে প্রচার।

পাশ্চাত্য শিক্ষায় ফুটায়েছে আঁথি অন্ধজনে এবে চিনিয়াছে পথ, উন্নতি-শিধরে তাই অঞ্জসর হতেছে লজিয়ে অলজ্যা পর্যাত।

কে রোধিবে গজি १—উন্নতির স্রোত বহিছে ভারতে তর তর বেগে, পাষাণ চাপুক—কি হইবে তায় १ বাধা পেলে স্রোত ধায় মহাবেগে। কিছুতে এ বেগ ধামিবার নর।
ভাসাবে পাষাণ ভূপের সমান,
শত বরষের বাগা বিশ্ব ষত
কঠিন আঘাতে হবে ভিরোধান।

ইংরেজ শাসন উন্নতির মুলে, কারমনে তারে কর আলিজন, তুঃখের তিমির হবে অবসান উদিবে আবার সৌভাগ্য-তপন।

এস্কুইমোজাতি।

উত্তর মহাসাগরের অন্তর্গত দ্বীপ সমূহে এন্কুইনো জাতির বাসস্থান। তবে গ্রীনলণ্ড দেশে ইহাদিগের সংখ্যা যত অধিক্য এত আর কোথাও দৃষ্ট হয় না। সমুদ্য গ্রীনলণ্ডে ৫০০০ হাজার গ্রাকুইনো বাস করে।

এনুকুইমোগণ ইংরাছদিগের অপেক্ষা থকাকিতি। ইহারা সাধারণতঃ ৫ কুটের অধিক উন্নত হয় না। বিদেশীয় কোন জাতির সহিত এনুকুইমোদিগের ঘনিইতা না থাকাতে ইহাদিগের ভাষা ৬ আচার ব্যবহার অভ্যাপি অপরিবর্ত্তনীয়ভাবে বর্ত্তনান আছে। ইহাদেরমধ্যে সভ্যতার প্রোত প্রবাহিত না হওয়াতে ইহারা আজিও প্রাচীন পরিচ্ছদাদির পরিবর্ত্তন করে নাই। ইহাদিগের পরিচ্ছদ শীল, বন্ধা হরিণ কিয়া তিমি মৎস্যের চর্প্থে নির্শ্বিত

স্চীর পরিবর্ত্তে পক্ষীর স্কল্ম অন্থিতে এবঃ
স্ত্রের পরিবর্ত্তে বলা হরিণ, তিমি বা
শীলের তন্ততে ইহারা পরিচ্ছদের
সেলাই কার্য্য সম্পন্ন করিয়া থাকে।

গ্রীনলতের উত্তর প্রদেশীয় এস্ক্ইমোগণ ত্যার-গৃহে বাস করে। কিন্ত উত্তর
ীপের দক্ষিণাংশবাসিগণ প্রত্তর কিন্তা
কাঠনিশ্বিত ক্টার বৃক্ষশাথা ও কর্মাদিতে আচ্ছাদিত করিয়া ভাহাতে বাস
করিয়া থাকে। গ্রীক্ষকালে এস্ক্ইমো
জাতি চর্মনিশ্বিত তাবুতে বাস করিতে
ভাল বাসে। সচরাচর দেখিতে পাওয়া
যায় বহুসংখ্যক এস্ক্ইমো পরিবার
অল্লভানের মধ্যে বাস ও আহার বিহারাদি করিয়া থাকে।

উত্তর নেকপ্রদেশে বে সকল অভ দৃষ্টিলোচর হইয়া থাকে, তৎসমৃদগ্র প্রস্কুইনো জাতির ভোজা। কিন্তু বৎস-রের করেক মাস শীল ও সিকুষোটক ইহাদিগের প্রধান খাদ্য। অপরিপাম-দর্শিতা অনেক সময় এস্কুইমোদিগের সমস্থতির কারণ। কাপ্তেন পারী বলেন, খাদ্যাভাবে এসকুমো পরিচ্ছদ চর্ম্বণ করিয়া কুরিবৃত্তি করিতেছে ইহা তিনি বচক্ষে দেখিয়াছেন।

এশৃকুইমো জাতির সন্থান সন্ততিগণ **यङ्गिन** ना २।७ वरमञ्जवसङ्ख হইয়া य य मंत्रीत तकात खना व्यन्ताना वाकि-দিপের অন্তকরণ করিতে শিক্ষা করে. তত্তদিন জননীগণ তাহাদিগকে অতি বছের সহিত সর্কদা পশ্ম পরিচ্ছদে আহুত করিয়া পৃঠে বহন করিয়া অতি বালককাল হইতেই **এব্রুইমোগণ** তীর ও ধনুক ব্যবহার করিতে ভারন্ত করে। লকা ক্রিবার জন্য প্রস্তুর থগু কোন নিশিষ্ট বস্তর প্রতি ছুড়িবার প্রথা এজাতীয় বালকদিগের মধ্যে বড়ই প্রচলিত। বালকগণ যাহাতে নৌকা-চালন বিদ্যায় ৰিশেৰ পারদশী হইতে পারে, তজ্জন্য শিতা পুত্তকে দশম বর্ষ বয়:ক্রম সময়ে এক থানি নৌকা প্রদান করিয়া থাকেন। বোড়শ বৰ্ষ বয়ংক্ৰম হইলে পুত্ৰ পিতার সহিত শীল ধরিতে গমন করে। প্রথম ধৃত শাল বন্ধুবাদ্ববে একত্ৰিত হইরা **জ্**তি **জানক্ষেত্র সহিত** ভোজন করিয়া बादक ।

চতুর্দশবর্ষীয়া বালিকাগণ খেলাই,

রন্ধন ও চর্ম প্রস্তুত করণ প্রভৃতি কর্মে নিযুক্ত থাকে। বোড়শবর্মীরা যুবতীগণ গৃহনির্মাণ ও নৌকা চালন বিদ্যায় বিশেষ পারদর্শী দেখা যায়।

পুক্ষেরা পশু ও মৎস্য শিকারের সমৃদ্য অন্ধ এবং বোটনির্মাণোপযোগী কাষ্ঠাদি প্রস্তুত করিয়া থাকে।
বীলোকগণ বোটসকল চর্মান্ত করে।
কোন শীল মৎস্য গুত করিয়া তীরে
আনীত হইলে এস্কুইমো রমণীগণ
উহা খণ্ড খণ্ড করিয়া রন্ধন করে এবং
বন্ধ পাত্রকা ও অন্যান্য দ্রব্য নির্মাণোপযোগী অংশ সকল স্বতন্ত্র স্বতন্ত্র করিয়া
তাহাতে যথোপযুক্ত দ্রব্যাদি নির্মাণ
করে।

স্টিকার পরিবর্তে রমণীগণ স্ক্রধার স্বস্থি ব্যবহার করিয়া থাকে। অস্ত্রের মধ্যে গোলাকৃতি এক প্রকার ছুরিকার ব্যবহার দেখিতে পাওয়া ধায়। যতদিন স্ত্রীলোকগণ পিতা মাতার নিকট প্রতিপালিত হয়, ততদিন তাহারা সোভাগ্য ভোগ করে। কিন্তু বিংশ বৎসরের পর হইতে ইহাদিগের জীবন বড়ই কটকর হইয়া পড়ে।

গ্রীনশণ্ডে পণ্য দ্রব্য অতি অরই
আছে। প্রস্তরনির্দ্ধিত রক্ষন পাত্র, তীর
বহু ও অন্যান্ত শিকারোপধার্গী অন্ত
শক্র ব্যতীত এখানে অন্য কোন পণ্য
দ্রব্য নাই। দন্দিণ গ্রীনলণ্ডে ভাসমান
কাষ্ঠ সকল দৃষ্টিগোচর হয়। ঐ সকল
কাষ্ঠ এতকেশীয় লোকদিসের পণ্যের

नःशा दृष्टि करत। प्रक्रिशक्तरात्रीता क्षे अक्त कार्ड बाबाविश खवानि अहर করিয়া তাহার বিনিময়ে অস্থি, তিমি-তন্ত এবং সিদ্ধবোটকের মাংস গ্রহণ ক বিয়া থাকে। ভাছার সচরাচর বরফের উপর চলিতে সক্ষম। চক্রহীন भक्छे खबवा कनशास भग अवा नहेशां সপরিবারে বাণিজ্যার্থে বহির্গত হয়। এসকুইমো জাতি ভ্রমণ করিতে এত ভাল বাদে যে কোন প্রয়োজন থাকিলেও পরিবর্ত্তন না করিয়া তাহারা স্থান প্রায়ই থাকিতে পারে না। ইহারা একবর্ধ বা ততোধিক কাল বিদেশে অতিবাহিত করে। জল ও ম্বল উভয়ই ইহাদিগের সমান বাবহার্য।

সদেশীয়দিগের দ্রব্যাদি বলপূর্বক প্রহণ করা ইহারা বড়ই গুণাকর বলিয়া মনে করে। কিন্তু ইয়ুরোপীয়দিগের দহিত প্রভারণা বা ভাহাদিগের দ্রব্যাদি অপহরণ করিতে পারিলে বড়ই প্রীত হইয়া থাকে। স্বর্ণ এদকুইমোদিগের নিকট টিন বা পিতল অপেক্ষা অধিক ম্ল্যবান বলিয়া বিবেচিত হয় না। লৌহ যেরপই হউক না কেন ইহারা অভি যায়ের সহিত প্রহণ করে।

এস্কুইমোগণ উৎসবাদিতে বড়
অমনোযোগী নছে। তাহার। পরস্পর
পার্ববর্তী হইরা বরফের উপার বলের
কীড়া করিতে বড়ই ভাল বাসে। বালকগণ অস্থিলইয়া বরফের উপার অভি
আমনেদ্র সহিত কৌড়া করিয়া থাকে।

এস্কুইমো জাতির প্রধান উৎসবের নাম স্থোগিংসব। ২১শে ডিসেম্বর খনন এখানে দিনমান সর্কাপেকা অলকাল-ব্যাপী হয়, সেই সমর স্র্গ্রের প্রক্ষিশ পাইবার জন্য ইহারা এই উৎসব করে। সমস্ত প্রীনলপ্তে এই দিনে আনক্ষ উৎসব হয়, ও আত্মীর বন্ধু-বাদ্ধব পরস্পরে একত্রিত হইয়া প্রীতিভ্তোজ, অভিনয় ও সন্বীতাদি করিয়া থাকে।

এস্কুইমোদিগের বাদ্য যমের মধ্যে কাঠ বা অছিনির্মিত এক থাকার চলা দেখিতে পাওরা যায়। ঐ সকল চলা হরিণ চর্ম বা তিমি মৎস্যের জিহ্বার ত্ক্ দিয়া আচ্ছাদিত। বাদ্য করিবার সময় এসক্ইমোগণ সঙ্গীদিগের মধ্যে দণ্ডায়মান হয় এবং প্রত্যেকবার বলে আঘাত করিবার সময় নানা থাকার অঙ্গভিদ করিয়া এক এক বার লন্দ দিয়া উঠে। ইহারা শীল মৎস্য শিকার বা ক্লার কত্ত আগমনস্চক সীত গান করিয়া থাকে।

অসকুইমোদিগের কোনও রাজা নাই,
সুতরাং রাজনৈতিক কোন নিয়মেরও
অধীন ইইয়া চলিবার প্রয়োজন হয় না।
কতকগুলি চির প্রচলিত আচার প্রতির
অহবর্তী ইইয়া ভাহাদিগকে চলিতে হয়
মাত্র। এস্কুইমোদিগের মধ্যে নিয়
লিখিত প্রতি সকল প্রচলিত আছেঃ

(১) যে কোন ব্যক্তি শিকাকে **প্রযুক্ত** হইতে পারে।

- (२) আবাস গৃহের নিকটেই হউক বা দ্রেই হউক যে কোন ব্যক্তি কোন ভাসমান কাঠ দেখিতে পাইয়া তাহার উপর এক খণ্ড প্রস্তুর স্থাপন করিলেই উহা তাহারই নিজস হইল।
- (৩) যদি কোন ব্যক্তি কোন শীল
 মৎস্যের উপর বর্ষা নিক্ষেপ করিয়াও
 উহা সংহার করিতে সক্ষম না হয়,
 আর অন্য কোন ব্যক্তি উহা সংহার
 করে, তাহাহইলে উক্ত শীল মৎসা.
 প্রথম আক্রমণকারীর সম্পত্তি হইল।
- (৪) ছই বা ততোধিক ব্যক্তি এক ত্রিত হইমা কোন প্রাণী দংহার করিলে উহা বকলেই সমভাগে বন্টন করিয়া লইবে।
- (৫) অনেকে এক ত্রিত হইয়া যদি কোন
 শীল শিকার করে, তাহা হইলে যাহার
 তীর উজ্জ প্রাণীর হৃদয় বা তৎসমিহিত
 কোন স্থানে বিদ্ধ হইবে, দেই উহা গ্রহণ
 করিয়া সহযোগিগণকে ইচ্ছায়ূলারে
 কিঞ্চিং অংশ প্রদান করিবে।

এন কুইমোগণ কার্য্যোপযোগী উপা-দানের ও শিক্ষার: অভাব সত্ত্বেও যেরূপ স্রব্যাদি প্রস্তুত করিয়া থাকে, তাহা

দেখিলে বিশায়।বিষ্ট হইতে হয়। ইছারা চিরপ্রচলিত নিয়মের ব্যতিক্রম করিয়া কোন দেবোর গঠন প্রণালীর উন্নতি করিতে মনোযোগী হয় না। ইহাদিগের গৃহ অতি ফুন্দরভাবে নির্ম্মিত হয়। উহাতে তাপ ও আলোক সমাগমের বিশেষরপ বন্দোবস্ত করে। গৃহ অপেক্ষা নৌকা নিম্মাণে ইহারা আরও নৈপুণ্য প্রকাশ করিয়া থাকে। অনেকে সভ্যসমাজ চেষ্টা করিলে গ্রীনলগুবাসীর অপেক্ষা স্থন্দরতর কেয়াক(Kayak)নৌকা প্রস্তুত করিতে পারেন কিনা সন্দেহ। নৌকা দেখিতে আমাদিগের **एएएवं भावित नाम अवः देनर्द्या ५** হইতে ২০ ফুট পর্যান্ত দুষ্ঠ হয়। তবে শাশ্তির ন্যায় ইহার প্রস্থ সর্বত্ত একরূপ নহে। ইহার মধ্যস্থল দর্ব্বাপেকা অধিক প্রশস্ত মধ্যস্থল হইতে ক্রম্শঃ অপ্রশস্ত হইয়া ছইধারে হক্ষ হইয়া গিয়াছে। ভনিলে আশ্চর্যা হইতে হয় এক এক থানি কেয়াক এক দিন ৬০।৭০ মাইল গমন করিতে সক্ষম হয়।

(ক্ৰম**শঃ**)

প্রতিবাসী।

কারে বলি প্রতিবাসী,

বারে আমি ভাল বাসি;

বে আমারে ভাল বাসে,

স্থান হাসে হথে গলে।

যার কাছে সব খোলা, যার কাছে সব বলা ; নাহিক কিছুই ছাপা, যে আমারে সব বলে॥ 3

ষথা এক পরিবারে, আর বস্তু ভাগ করে; প্রতিবাসী—পরিবার. স্থ্য তুখ করে ভাগ। আপনার ভাব সংব, তাবাও আপন হবে. নাহিক অভিন্ন কিছু, অনুরাগে অনুরাগ॥ ভাইরে এদেছি ভবে. ভাব ফের যেতে হ'বে; বাহির হয়েছি মোরা ভব তীর্থ দরশনে। এক সঙ্গে থাই দাই, এক সঙ্গে মিলি বাই: একত্রে ধরিত্রী কোলে শুইব অমিল কেনে গ কেন বোন রাগ কর. জাল। ৬ ও জলে মর; ভূমি রাঁধ, এনে দিই যা'পাই ভবের হাটে। স্থেতে সংখের ভাত. থাই এস পাতি পাত, বির্মিব সেথে। সাথে সরাইয়ে রাভ কেটে । খোঁড়া-মাথে ভারী বোঝা: বেতে নারে হয়ে সোজা; এই তো মোদের দশা, ভাষ থাব বহু দুর।

না ফেলি চোকের জল, ছाড़िবে मन्दीत पन ; সমল করিয়া ধর্ম, हल जुता श्रेगा-श्रुत । অভএব মিলে চল. স্বিনয় বাক্য বল ; क्रष्टे ভाष्टि कार्त्वा मरन, पिछना पिछना बाथा। কারেও ভেবনা পর. প্রতিবাদী সহোদর: ত্মিও তাদের জেন, নাহিক তার অগ্রথা॥ পার্থপর হয়ে পর ভাব, কিছু অতঃপর বুনিবে কেছই নাই প্রতিবাদী ধরাতলে। কত কাল ভ্ৰমে পড়ি. বেড়াইব মিছে খুরি; আত্ম পর মিছে বাছা, মুজি এই বুজি বলে। এক পিতা স্বাকার. নাহি ভিন্ন কিছু কার, यादः वाहि * चाहि डाहा শবাকার সমভাবে। কারো মন্দ কারো ভাল, নাহি হ'বে কোন কাল : স্বারে আপন বল, श्रुरथ मिन हरत यादा। खीन

ু যথা বালু, জল, আলোক ৷

যথার্থ প্রভুত্ব কি?

আজ কাল প্রভুত্ব লইয়া সকলেই ব্যস্ত ; পুত্ৰ বয়ঃপ্ৰাপ্ত হইলে পিতার প্রভূষে অস্থ্যী, কনিষ্ঠ ভ্রাতারা এখন আর ভরত, লম্মণ, ভীম, অর্জ্বন প্রভৃতির न्यात्र (कार्षित श्रेष्ट्राव स्थी नरहन, वर्ष খণ্ডর খাণ্ড্রীর প্রভুত্ব গ্রাহ্ম করেন না, পদ্মী স্বামীর প্রভুত্ত মানেন না-সক-(लहे चच थेजूद तका कतिवात जना লালায়িত। বিশেষতঃ অন্তঃপুরবাসিনী **সংসারানভিজা বধুগণ প্রভু**র উপর প্রভ্ হইয়া, পরিবারে কেমন একটা অশান্তি ও বিশুক্ষালা ঘটাইয়া স্থথের সংসারকেও বিষময় করিয়া ভুলেন। ইহারা নিয়ত স্বার্থ ও বিশাসিতার পূজা করিয়া মনে ভাবেন যে আমি প্রভু, কিন্তু ভাবেন না যে "তা বড় প্রভুরও প্রভু" আছেন, তিনি অগৎ-প্রভু। যদি এই অন্তঃপুর প্রভুগণ যথার্থ প্রভুষ করিতে জানিতেন তাহা হইলে সংসার বড়ই স্থের হইড; কিন্ত ভাঁহাদের প্রভুষ কেবল "মড়ার উপর ৰীড়ার ঘা।" ভাঁহাদের প্রভুত অনাথা माला, ननमा, नित्रीश्यकार माम मामी এবং পদ্মীত্রত বেচারা পতিকে পীড়ন করিবার ও লাঞ্না দিবার জন্ম। শাস্ত্রে দমন ও পালনের তুইটা কথা আছে (অবশ্ৰুই রাজা বা প্রভু-দিগের পক্ষে)। এই অতঃপুর সমাজী-গৰ অন্তান্ত প্ৰভূধৰ্মগুলি পালন ককন্ चात्र नारे कञ्जन, किन्ह नमन, लागन हु।

তাঁহার। রক্ষা করিয়া থাকেন। কিনা প্রাণের পুরাণত্ব আর এই সভ্যতার দিনে ভাল লাগে না, তাই নৃতনত্বের আবশ্যক বলিয়া ভাঁহারা "ছুষ্ট দমন ও শিষ্ট পালনের" হুলে শিষ্টদমন ও তুইপালন করিয়া থাকেন। এই প্রভুগণের শাসনদণ্ড প্রায় হুইটি পরিবারে চলিয়। থাকে, তন্মধ্যে শতর পরিবারে দমন আর পিতপরি-বারে পালন প্রথা প্রচলিত করিয়াছেন। (যে অন্তঃপুরবাসিনীগণ এইরূপ প্রভুত্তের পক্ষপাতিনী নহেন, তাঁহাদের জন্য এ প্রবন্ধের অবতারণা নহে।) আর খাঁহা-দের উপার্জনে অন্তঃপুর প্রভূগণের প্রভূত্ব, দেই সব পড়ীব্রত পতিগণের ফ্রমতা **যু**খন পত্নীকর্ত্তক পরিচালিত, তথন তাঁহাদের জানিবার আবশ্যকতা নাই যে খণ্ডর সম্বন্ধী বাতীত ন্যায়তঃ ধর্মতঃ আরও কতক ঙলি পরিবার তাঁহাদের পোষ্য হওয়া উচিত। স্থতরাং ঘাঁহারা প্রাত্ত, ভাহাদের নিকট বক্তবা এই যে ধাহারা নিরাশ্রয় হইথা তোমার আশ্রয় গ্রহণ করিয়াছে, তাহাদের সমান হরণ দারা উৎপীড়ন করিলে ,তামার প্রভুবের প্রভা বৃদ্ধি হইৰে যদি শিজের একটুকুও স্বার্থত্যার করিতে না পারিলে, ভবে ভোমার প্রভু-বের ফল কি ৷ অভাকে স্থী করার অন্ত ত্যাগদীকার করিয়া স্থা হওয়া, জীবন রকা করিবার জন্ত নিজ

জীবন দিতে প্রস্তুত হওয়া প্রভূষের ভিদ্তি, কেবল আদেশ ও পীড়ন করিলে প্রভূর কার্য্য হয় না। যাহাহউক এই অচঃ-পুর প্রভূগপের জন্ম তাঁহাদের ক্ষুদুবুদি ভগিনী একটা ক্ষুদ্র উপহার সংগ্রহ করিয়া তাঁহাদের করে অপণ করিল।

কোনও সময় ক্যাম্পাডাউনে ডচ ও ইংরেজে একটী যুদ্ধ সংঘটন হয়। উভয় পশ্যেক বছফাণ ধরিয়া সিংহবিক্রমে যুদ্ধ চলিয়াছিল এবং বহুত্র লোক হত ৫ আহত হইয়াছিল, কিন্তু অবশেষে বিজয়-লক্ষ্মী ইংরেজের হস্তগত হইল। ডচ্দিরের অনেকগুলি জাহাত ইংরেজাধিকত হইল-ছিল, তন্নধ্য ভেল্ফট্ নামক একখানি জাহাজ ভগ্নপ্রার ইইয়াছে দেখিয়া ইংরেজ-গুণ ৫ দিন কাল ব্রিয়া উহা এফা করিবার জনা বিস্তর প্রয়াস পাইয়াছিলেন: কিন্তু ঐ জাহাজ রফা হইল ন। দেখিয়া উহার আশা পরিত্যাগ করিলেন। যদিও উহার আশা পরিভ্যাগ করিলেন, কিন্তু কর্ত্তব্য ভুলিলেন না। তাঁহারা ডচ সেনাপতির ভীবন রফার চেষ্টা করিতে লাগিলেন। ঐ জাহাজে ডচ সেনাপতি হিউবর্গ অনেক গুলি আছত ও পীড়িত দৈনোর সহিত অবস্থান করিতেছিলেন। তাঁহার সঙ্গি-গুণের অব্ভাতথন এমত শোচনীয় যে তাহাদিগকে স্থানাম্বরিত করা বা নিরাপদ ভানে লইয়া যাভয়া অসভৰ হইয়া পড়িয়া ছিল, স্থতরাং ভাষাদের সহিত জলমগ্ন হইবার মন্য হিউবর্গ প্রতিমুহুর্ভ অপেক। করিতেছিলেন। কিন্তু এখন ইংরেজ দেনা-

পতির প্রস্তাবে ডচ্ দেনাপতি বলিলেন, 'আমি কি আমার অধীনম্ব স্বদেশবাসি-গণকে পরিত্যাগ করিয়া নিজের জীবন লইয়া পলাইব ? না,না, যে সকল সাহসিক দঙ্গী স্দেশের জন্ম প্রা**ণপণে যুদ্ধ করি**শা এই অবস্থ। প্রাপ্ত হইয়াছে, আমি কখনও তাহাদিপ্তকে পরিত্যাগ করিয়া যাইতে পারিব না, তাহা অপেকা সহস্রবার মৃত্যুকে শ্রেয়:জ্ঞান করি।" **হিউবর্গের** এই মহতুত্তরে ইংরেজ সেনাপতির মন বিগলিত হইল, তিনি ডচ্ সেনাপভিকে শত শত ধন্তবাদ দিয়া বলিলেন "ঈশ্বর আপুনাকে অনুগ্রহ করুন, আমি প্রতিক্রা করিভেছি, আপনার সহিত রক্ষার্থ সাহায্য করিব।" এই বলিয়া ভিক্তি ভাগার লোকদিগকে রসেল নামা জাহাজ পরিত্যাগ করিতে বলিলেন এবং ডচ-দিগের সাধায়ে নিজে ডেল্ফট জাহাজে থাকিল রসেল জাহাজ হইতে বোট আন্ত্রন করিলেন। সেই বোটে **যতগুলি** লোক ধরে, ততগুলি করিয়া লোক ছই-বার রদেল ভাহাজে রাথিয়া আসিল, ভূতীয়বার ডেল ফটের নিকট বোট না (भी हिएडे इशेष (छन् करें छन्मध হত।। ভেল ফটে ইংরেজ সেনাপতি, হিউ-বৰ্গ, তিনজন পদস্ভ চ্ ও ৩০ জন নাবিক ছিলেন। এই ঘটনায় ইংরেজ সেনাপতি लम्क अमानभूनर्सक कला পড़िशा मस्त्र-থারা জীবন রক্ষা করিলেন, কিছু **মচাঝা** হিউবর্গ তাঁহার প্রিয় ড**চ্মণের সহিত** তৰে চিওকালের

হিউবর্গ ! ভূমি ধন্য, ধন্য তোমার প্রভৃত্। তোমার অধীনস্থগণও ধন্য, ঘাহারা তোমার ন্যায় প্রভুকে ভক্তি করিয়াছে— তোমার মত প্রভুর আদেশ পালন করিয়াছে।

"জাতি দ্রব্যবলানাঞ্সাম্যমেষাং ময়া দহ।
মংপ্রভুত্তকাং ক্রহি কদা কিংতন্তবিষ্যতি॥"
দেনাপতি হিউবর্গ! তুমি যথার্থ
এই মহাবাক্যের দার মর্ম্ম স্বদয়ক্ষম
করিয়াছ!
কু, রা।

মহারাণীর ৭৫ জন্মোৎসব।



আয় ভাই, সবে মিলি,
হয়ে একমন-প্রাণ,
গভীর আরাবে করি,
রাণী মা'র যশোগান।
রমণী-ললাম মাতা,
রূপে রমা, গুনে বাণী;
ভারতে ভারতেশ্বরী,
বিলাতে ব্রিটিশ-রাণী।
নাগর-সম্ভবা মাতা,
কমলা-রূপিণী যাই.
প্রতিভাত দেব-জ্যোতিঃ,
শীম্থ-মণ্ডলে তাই।
বিলাত সরোজ-রূপে,
ভাসিছে জলধি-জ্বলে;
সবোজ-বাসিনী মাতা,

ভাদেন দে শতদলে।
মরতে ছাপিলা মাতা,
ত্রিদিবের জয়-কেতু,
স্টের দলন, আর
শিষ্টের পালন হেতু।
আমরা ভারতে রই,
হিমগিরি-পাদ মৃলে;
রাণী মা বিলাতে রন,
স্থদ্র সাগর-কূলে।
সভান আমরা ভাই,
বহু পথ দূরে রই;
জননীর স্নেহ-ওণে,
দূরে থেকে দূরে নই।
আকান্মের রবি শশী,
যদিও স্থদ্রে রয়;

ভাদেরি আলোকে এই ভূলোক আলোকময়। ভনেছি ধে ত্বেতায়গে. লক্ষেশ পাশব বলে বেঁধেছিল নাগপাশে. वामवानि (नवनतन। क्रममीत छात्र वांधा. আজি দেই দেবগণ. কলিতে পার্থিব ব্রত করিছেন উদ্যাপন ! সংযমি কুলিশ-তেজ, পরিহরি দেব-কাজ. তারেতে তাড়িত বার্ছা, मकालन (पवड़ाक। চালান বৰুণ বহি. বাষ্পরূপে অবতরি, ভ্নিতে পুষ্পক রথ, অকুলে•অর্থব ভরি। বান্ড বিত্ত ভাক, ভ্ৰমিছেন বৃক্ষি-বেশে . বাণী মা'ব পদাশিত. ভভাগের উন্ধদেশে।

মানুষ তো মানুষ সে, বশীভূত দেবগণ, দে হেন মায়ের ছেলে, নহি মোরা সাধারণ। মায়ের কোলেতে আছি. মাধের জয়েতে জয়: শশি-কোলে মুগ-শিশু, নিধাদে কি করে ভম ? মালৈ: ভারতবাসী। কেন তবে মিয়মান ? জননীর ভাগাব**লে**, আমরাও বলীয়ান। অচলে ভূতলে জলে. (यशांत यथन याहे, জননীর জয়ডকা, সেধানে ভনিতে প ই। मिक्स गाहिए निक क्य तानीमा'त छय । গাও তবে সবে মিলি, হয়ে এক-মন-প্রাপ জলদ গভীর রবে. জননীর যশোগান। প্রীরাজভক্ত বিরচিত।

वीववाना।

যথন সিকাগোর মহামেলা হয়, তথন
একদা ৭০০ শত যাত্রী লইয়া একাগানা
রেলগাড়ী ক্রভবেগে সিকাগো অভিমুখে
বাইতেছিল। জেনি কেরি নামী দশম
বধীয়া এক বালিকা ক্রানিত, রেলগাড়ী
যে সেতু পার হইয়া য়াইবে, তাহা আগুল
লাগিয়া কিরৎক্ষণ পূর্বেধ ধ্বংস হইয়াছে।
রেলগাড়ীর চালক ভাহা জ্রানিত না।
বালিকার পরিধানে একধানা লালরক্ষের
বস্ত্র ছিল, সে সেই বস্ত্র ধূলিয়া হাতে
লইল এবং তাহা যুরাইয়া গাড়ী ধামাইতে

সংক্ষত করিল। চালক অতি ক্রোধের সহিত পথিনহো গাড়ী থামাইল, কিন্তু যথন অবগত হইল বালিক। কি মহৎ কার্যা করিয়াছে, তথন চালক ও শত শত যাত্রী সমকঠে তাহার নামে জ্যুধ্বনি করিয়া উঠিল। অনেকগুলি ফ্রাণী যাত্রী এই গাড়ীতে ছিলেন, তাঁহারা স্থাপেশ ফিরিয়া গিয়া ফ্রাসী সাধারণভ্রের সভাপতিকে বলিয়া বালিকাকে এই সম্মানস্চক উপাধিতে ভ্যিত করিয়াছে।

স্বর-সাধন প্রণালী।

(৩৫৩ সংখ্যা ৪৯ পৃষ্ঠার পর)

व्यादनश- मशुमान। (রামমোহন রায় কুত গীত। নবীনচন্দ্র দত্ত ক্বত স্বরলিপি।) मा म भ भ ક્ષ ધનિક્ષ બ ম- (ন- ক- র-√5**ग**वाब्र**∽**-বের শ্ সামগ গ ধ ধনিধপ্ধ প 9 **অ- শ্রে বা-কা ক-**বে কি ফ, 21 1 সা' নি ধ নি সা সা. फू- मि ब्र- व नि-

না ভা।।। গা।।। ১।
সা সা সা সা সা ধ ধ সা সা সা
ভি ৰ- ভ মা- য়া, কি-বাপু- ত কি-

্ৰা সা' স' ক' মা' সা'নিধনিধ প বা জা- য়া.

১। । <u>সা' নি ধ নি সা' নিধ প ম প</u> ত-

সা' সা' ধ ধ সা' সা' সা' अ'সা'গ' শ' ক স- শ্বু থে স্ব-জ- ন

সা সা নিধনি ধপ প ম প স্ত ক, না ড়ী ফী

১। । । সা'নি ধনি সা' নি ধ প ম প ব-র।

†। ।। । । ।। । প প ধ নি সা' শ্ব' সা' সা' সা' সা' অ- ত- এব সা- ব-ধা-

। ০'।।। ১।। সা ধ ধ সা সা সা সা সা কা কাক। ন, তা জ দ জ অ - ভি-

। । সা: সা: নিধনিধপ প প মগ মা- ন, বৈ-রা-গ্য

। ৩।।।।। ।।। ম প প ধনিধপধসা সাং ঝং অ-ভ্যা- ন ক্র, স-ভ্যে-ভে

সা' <u>সা' নিধ নি সা'</u> নিধ প ম প নি- ভ- স্বর সাধন প্রণালীতে বে গীত গুলির স্বরলিপি প্রদত্ত হইতেছে, সে গুলি হার-মোনিয়ন, পিয়ানোফুট, ক্লারিয়নেট প্রভৃতি ইউরোপীয় বাদ্যবন্ধে এবং এদ- রাজ, দেভার, বেহালা দারক ও বংশী প্রভৃতি ভারতীয় বাদ্যবন্ধে বা**জাইতে** পারা যাইবে।

(ক্ৰমণঃ)

নৃতন সংবাদ!

১। মহাধানী বিক্টোরিয়ার পৌত্র-।
বধু পত ২০এ জুন একটা পুত্রসন্তান প্রসা
করিয়াছেন। ইনিই ভারতের ভাবী
সমাট্। জগদীশ্বর ইহাকে কুশলে
রাখুন।

ই। গ্রীশদেশের ভূমিকস্পে হৃদ্ধা-গ্রন্থ লোকদিগের জন্য কলিকভাতেও চাদা সংগ্রহ হইতেছে।

- ত। ইউরোপের অধিকাংশ বিবাহ জুন মাদে হইঞা থাকে। এদেশে বৈশাগই প্রশক্ষ।
- ৪। নরোয়েলেশে থাহাদের টিকা দেওয় হয় নাই, তাহাদের ভোট দিবার অধিকার নাই।
- ৫। বহরমপুরের জ্বলের কল প্রতি-ধার জন্য মহাবাণী স্বর্ণয়য়ী সম্ভ বয়য় ভার বহন করিবেন।
- ৬। বিলাতে ১০ লফ লোক কোনও ধর্মের ধার ধরেন না, অথচ বিলাত সভ্য-তম দেশ!
- ৭। জাপানে সের ও মণ দরে পোষাক-বিক্রেয় হয়। যে পোষাক ষঙ ভারী, তাহার দামও ৩৩ বেশী।
- ৮। বিলাভের কমন্দ সভাব সভা শ্রেণীতে ১০ জন সংগাদপত্র সম্পাদক, ৬ জন প্রিন্টার, ৪ জন দর্বজি, ০ জন ষ্টেসনার, ২ জন কসাই, ৩ জন হোটেল-ওয়ালা, ৬ জন ক্লমক, ১ জন কলার স্প্রদাগর এবং ১ জন সাড়ীভয়াল। আছেন।

১। এক অসুত পরিবার আবিকৃত
ইইরাছে ও সেই পরিবারের কর্তা পুরস্কার
পাইরছেন। কর্তা মরিসন, উচ্চে ৪হস্ত দেড়
অঙ্গুলি, ওজনে ২ মন ২৫ সের। গৃহিণী
উচ্চে অবিকল কর্তার মত, কেবল ওজনে
বেশী-১মল ১০ সের। বড় ছেলে টমাল
উচ্চে ও হাত লাড়ে চারি অঙ্গুলি, ওজনে
১মল ২০ সের। মধ্যম পুত্র জেম্ল উচ্চে
৪হাত ছব অঙ্গুলি, ওজনে ২মণ আড়াই
সের। তৃতীয় পুত্র জন উচ্চে প্রায় ৫হস্তু,
ওজনে ১মণ ৩০ সের। আর সকলের
ডোট মেন্টোর ব্যল ১৪ ব্ৎসর, উচ্চে
সভ্রা চারি গাই।

১০। সম্প্রতি কাশীরের রা**জমাতার** মুত্তু ১ইয়াছে।

১১। ফালের সভাপতি **কার্ণোকে** এক গুরুত্ত সভ্যা করিয়াছে।

১২। পৃথিনীতে পর্কে যত **মাংসের** প্রয়োজন হটত, এখন শতকরা **তাহার** ৫৭ গুণ ব ড়িয়াছে।

্ত। সমস্ত পৃথিবীতে **যত ধন** আছে, ইংলণ্ডের এক হাদার ব্যক্তি ভাহার অর্দ্ধেকের অধিকারী।

28। মাজাজের টাউনহলে স্থাপিত
মহারাণীর মৃষ্ঠি এক বৈষ্ণব চন্দনে চর্চিত্ত
করিয়া পূজা করিয়াছে। ধ্রু রাজতজি !
১৫। মৃত-পত্নীর ভগিনীকে বিবাহ করিব
বার বিলখানি লও হাউদে পাস হইল মঃ।

১৬। মার্কিনের নিউগ্রানে**ডার এক** প্রকার বৃক্ষ আছে, তাগার **খকের র**বে

ভাল কালি তৈয়ার হয়। এই কালি প্রথমে দেখিতে অল লালাভ, কিছুক্সণ পরে কিছ ছোর কাল হইয়া দাঁড়ায়। তৈয়ারি। রসের কালি সেরপ হয় না।

কালির লেখা অন্য ডব্যগুণে নষ্ট বা किंकारम इहेशी यहिए शादि, किंकु अहे

বামারচনা।

विदिन (भ)।

আমার মেঘের ছায়া-ঘন আঁধারে, **अत्मिष्टि अ क्लान (मर्म), विनितन का**रत ! আপনার জন যারা, কেউ হেথা নাই ভারা. ভিজিল না তপ্ত বক্ষ করুণা-ধারে. কে স্থানে এসেছি কোথা, চিনিনে কারে। এ বিদেশে পর আমি, তাহে অবেলা, বনে আছি এক পাশে, হয়ে একেলা; এদেশে তমাল শাখে. কলকণ্ঠ নাহি ডাকে, না বাজায় দিগসনা বাসন্থী মেলা। এখানে নরের হিয়া, রহিয়াছে ভকাইয়া, তাহারা কেবলি খেলে নিঠুর থেলা-**अमाषाट्य मीन कृति ভाञ्चिया (कला।** আমার সে "মেহভূমি' কতই দুরে— বেখানে বাঁশরী বাজে সোহিনী স্থারে। यंशास विकाल (वना, नियतियो (शत (थल). ত্মরভি সমীর টুকু বেড়ায় যুরে। বেধানে শ্যামল গাছে **हैं। कि कि कि कि कि कि** সবে সবা ভালবাসে পরাণ পুরে, আমার সে ঘর বাড়ী, কতই দুরে ৭ यদি মোর স্নেহভূমি "ছু'হাত" ধরা, ভবুও দে রোগ খোক যাত্না-হরা! তবু ভাহে মেহ প্রীতি, •তবু তাহে স্থশ্বতি, তবু তাহে রাশি রাশি আদর ভরা! সেধা যে বিহগকুল, তক্র, লতা, ফল, ফুল,

আমারি আমারি তারা "নিজস্ব" করা ! হো'ক না সে স্বেহভূমি "ত্রিপাদ ধরা"। একেলা রয়েছি আজ পরের দেশে, সেই সব মনে মনে জাগিছে এসে। লনিতে স্নেহের ভাষ, মরমে অতৃপ্ত আখ। व्यक्त व्यंथि, क्रक श्राम, कि इत्त स्मर्थ ? কে জানে বিধির লেখা. इर्व कि ना इरव (मधा. কোন্ স্রোতে কোন্ খানে ঘাইব ভেসে। কতান্ত বা দেন দেখা "স্থন্দ" বেশে। এ কাব্যকুত্বমাঞ্জল রচ্যত্তী।

বাসনা।

একত্র রহিব নাহি পর্ণিব, व्यवाक् इटेर्स (म भूव ह्हिति, করিব ভাঁহার সাধনা; প্রেম ভক্তি দিয়া পুঞ্জিব দে হিয়া, তাহার চরণে সদয় সঁপিয়া कतिव भ इति धात्रका। ভাঁহার জীবনে জীবন ঢালিয়া তার শ্বৰ তঃখে হাসি অঞাদিয়া, করিব সে নাম জপনা: তাঁহারি তরেতে এ স্থ্য যৌবন, তাঁহারি তরেতে জীবন মরণ, তাঁহারি চরণ বাসনা; তার প্রেমগান গাহিয়া পাহিয়া, ষাইৰ হরবে অনতে মিলিয়া, ভাহারি চরণ কামনা। এমতী প্রেয়বালারায় কাটিহার।

বামাবোধিনী পত্ৰিকা।

BAMABODHINI PATRIKA. "कन्याप्येवं पासनीया शिक्षसीयातियत्नतः।"

কল্লাকে পালন করিবেক ও যত্নের দৃহিত শিক্ষা দিবেক।

०৫৫ मংখ্য\

खायन ১००১--- आगष्ठे ১৮৯८।

্ম কর। ত্য ভাগ।

সাময়িক প্রসঙ্গ।

নব রাজকুমারের নাম করণ

—গত ১৬ই জুলাই খেড-ভবনে ইংলণ্ডেখরীর পৌত্রের নামকরণ সম্পন্ন ইইয়াছে।
আচার্য্য কান্টারবরীর প্রধান ধর্মাধাক্ষ।
মহারালী, সপত্মীক যুবরাজ এবং রাজপরিবারত্ব আরও অনেকে উপস্থিত
ছিলেন। নামটা যথোপযুক্ত ইইয়াছে—
এডওয়ার্ড আলবার্ট ক্রিশ্চিয়ান জর্ম
আণ্ডু পেট্রিক ডেবিড।

প্রেসিডেন্ট কার্ণোর হত্যা—
'নিয়তি: কেন বাধ্যতে।'' ইনি এ বংসর
কান্সের প্রেসিডেন্ট পদ পুন্ত্র হণ করিতে
চান নাই। কিন্তু জাঁহার বন্ধুগণ অহরোধ করিয়া তাঁহাকে পদস্থ থাকিতে
বাধ্য করেন। লিও নগরে তিনি এক
প্রস্থানী দেখিতে যান। এক নাটাগালার হাইতেছিলেন, প্রেই শীব্দ-

নাটা শেষ হইল! পথিমধ্যে ওঁলেকি দর্শন লাভের জন্য বছলোকের জনতা হয় এবং তাহারা উটচ্চ:ম্বরে বার বার ওঁহার জয়ধ্বনি করিতে থাকে। ইতিন্দ্রির জয়ধ্বনি করিতে থাকে। ইতিন্দ্রির জয়ধ্বনি করিতে থাকে। ইতিন্দ্রির জয়ধ্বনি করিতে থাকে। ইতিন্দ্রির জালা ওঁহাকে এক দর্থান্ত দিবার ভান করিলে তিনি বেমন হন্ত প্রামার্থ করিবেন, জননি ওঁহার উদরে ছোরার আঘাত করে। ওঁহার পাঁজরার হাড়, লিবার ও ধমনীন্ল কটিয়া যার। ১০৪০ টার সময় আহত ম্বান বাবা হয়,১২৪০টার সময় ভাহার মৃত্যু হয়। ছ্রান্ধা হত্যান্ধ্রী বলে ভাহার সঙ্গী কেহ নাই, সেজরাম্বক-প্রিয়, কার্থো-বধে এক জন্যান্ধ্রীকে নিহত করিয়াছে!

म्क विधित्र विष्णाणत्र--- रेरा क्रिकाका क्रमण क्रातास ६ वर छ्वरन স্থানান্তরিত হইরাছে। ছাত্রসংখ্যা ১৫টা হইয়াছে এবং বোর্ডিডের বন্দোবন্ত ছইতেছে। কলিকাতা মিউনিসিপালিটী মাসিক ১০০১ টাকা সাহায্য মঞ্জুর করিয়া শহাদয়ভার পরিচয় দিয়াছেন। এই বিদ্যালয়ের অন্যতম শিক্ষক মৃক-বধিরদিগের সম্পূর্ণ শিক্ষাপ্রণাসী শিক্ষার बना भीख देश्म ए वादेश्यन । देशांत ৬০০০ টাকার প্রয়োজন। আমরা শুনিয়া আনন্দিত হইলাম সার महात्राका यञीसारमाह्म ठीकृत ७ वात् কালীক্ষ ঠাকুর ১০০০ টাকা করিয়া দান স্বীকার করিয়াছেন। ফণ্ডের সাহা-যার্থ অন্যান্য দেশ-হিতৈষীদিগের অগ্রসর হওয়া আবশ্যক।

আদর্শ বঙ্গরমণী— স্বর্গীয় শিব-চল্ল দেব মহাশরের পত্নী গত ২৮এ আবাঢ় মানবলীলা সংবরণ করিয়াছেন। ইনি ৭ বৎসরে বিবাহিতা হন ও প্রায় ৬৫ বৎসর কাল সামীর সহধর্মিণী ও সহকর্মিণী হইয়া পরম পরিজ দাম্পত্য স্থাভোগ করেন। প্রায় ৩ বৎসর বৈধব্য জীবনের আদর্শ দেখাইয়া আফর্য্য বিখা-সের পরিচয় দিতে দিতে দেবলোকবাসী সামীর সহিত মিলিত হইয়াছেন। ইকার कौरत्नत्र मःक्लिश्च विवत्रभ ऋामाश्वरत्र मृष्टे इंदेरिय।

ইউরোপীয় রমণী দিণের
কার্য্য— (১) প্রশান্ত মহাসাগরের
জ্যোতিষী সভার কুমারী রোস্ ওহালেরান রুত হইয়াছেন। ইনি সভার্ এক
মাত্র জীসভা।

- (২) বকিংহামের ডচেঁদ্ সমুদর
 পৃথিবী ভ্রমণ করিয়া "Glimpses of
 Four Continents" চারিপত্তের আভাস
 নামক পুত্তক প্রচার করিয়াছেন। পুত্তকের ছবি সকল ভাঁহার স্বহস্ত-অন্ধিত।
- (৩) নিউইয়র্কে জাতীয় চিত্রপ্রদশনী সভার উনসপ্ততি অধিবেশনে তিন্টী
 জীলোক উৎকৃষ্ট ছবির জন্য পুরস্কার
 পাইয়াছেন। এডিথ মিচেল্ ২০০ টাকা,
 কুান্সিদ্ মারফি ১০০ এবং ক্লারা ম্যাকচেন্নি ৩০০ ডলার পাইয়াছেন।
- (৪) ব্রীজাতির স্থরাপান নিবারণী দভার আবেদন পত্র পৃথিবীর সমৃদয় গবর্ণমেণ্টের নিকট প্রেণিড হইবে, তাহাতে ৩০০০০০ তিশ লক্ষ সাক্ষর সংগ্রহার্থ লেডী হেনরী সমরসেট এবং কুমারী ক্রান্দিন্ উইলার্ড স্পোল বাঙ্গীয়পোতে ধোগে সমৃদয় পৃথিবী ভ্রমণ করিবেন।

বৌদ্ধ রমণী।

বৌদ্ধ ধর্মের ও বৌদ্ধ সমাজের। কেরই বে আগ্রহ বৃদ্ধি হইতেছে, তাহার আহিম বিবরণ জানিবার জন্য জনে-। অনেক কারণ দেখিতে পাওয়া নার।

অধুনা সভা সমাজে বে প্রণালীতে সকল ধর্ম প্রচারিত হইয়া থাকে, বোধ **इत्र পृथिवी** छ ती स्वर्णा र अर्द्ध थरम त्र क्ष्मानीर७ क्ष्मादिङ इहेबाहिन। সিস্কার্থ গোত্র স্বয়ং নির্কাণ দিছি উপা-ৰ্জ্যন করিয়া অপের সাধারণকে স্বোপা-আজিত ধর্ম্মবল অর্পণ করিবার অভিলাষে অমিত উৎসাহে ও অভিনব উপায়ে জন-সাধারণের মধ্যে সীয় ধর্ম প্রচার করিতে প্রেব্র হইয়াছিলেন। ভাঁহার নৃতন ধর্ম ও নৃতন প্রচার-পদ্ধতি কেবল যে পুরুষ-দিগের চিত্তকে আকর্ষণ করিয়াছিল ভাহা नाइ; नादीशनध उनीय व्यामीकिक धर्य-ভাবে আকৃত্ব হুইয়া বৌদ্ধ ধর্মা প্রচারে ও বৌদ্ধ সমাজ সংগঠনে আত্মোৎসর্গ করিয়াছিলেন। তৎপূর্কবন্তী ইতিহাদে ঈদশ দৃষ্টান্ত দেখিতে পাওয়া যায় না। যে ধর্ম প্রথম হইতেই পুরুষ ও রমণী কর্তৃক প্রচারিত ও দংগঠিত হইতে লাগিল, তাহা যে এক সময়ে পৃথিবীর অধিকাংশ লোকের ধর্ম হইবে, তাহার আর বিচি-ত্ৰতা কি १

বৌদ্ধ ভাষ্যকার বৃদ্ধবোষ পালিভাষার যে সকল গ্রন্থ রচনা করিয়া নিয়াছেন, ক্রমে ক্রমে সেই সকল গ্রন্থ যতই লোকের দৃষ্টিপথে পতিত হইতেছে, ততই বৌদ্ধ ধর্মের ও বৌদ্ধ সমাজের আদিম বিবরণ প্রকাশ হইয়া পড়িতেছে। ক্রদ্ধদেশের ও সিংহলের গ্রন্থ সম্পন্ন হইতেও বহল বিবরণ সংগৃহীত হইতেছে। উপরি উক্ত প্রাচীন ইভিহাস সকল হইতে জানিতে

পারা বার, সৌতম কর্ডক বৌৰধর্ম প্রচা-রিত হইবার অব্যবহিত পরেই এগার জন রুমণী বৌশ্বধর্ম সাধনার্থ ও প্রচারার্থ সন্যাসিনী হইযাছিলেন। জीঈশা, बाम्भ জন পুরুষ শিষ্য লাভ করিয়াছিলেন; ঞ্জীচৈত্ৰ্য, নিত্যানন্দ প্রভৃতি সহযোগী বন্ধুদিগকে প্ৰাপ্ত হইয়াছিলেন; গৌতম ভিন্ন অপর কোনও মহাপুরুষ জীবনশার व्यभीमालद मारास्य সংস্থাপনে পাইয়াছিলেন, কি না, সম্পেহ। खन-সমাজের এক হস্ত যদি পুরুষ, ও অপর इस यमि तम्ती विद्युष्टना कता योत्र, छाशा হইবে,—জনসমাজের বলিতে উভ্যুহতে বৌদ্ধর্মান্দর প্রস্তুত হইয়া-চিল।

উপরিভাগে যে এগারজন তপ্স্থিনী বৌদ্ধ রমণীর কথা উলেখ করা হইরাছে, এই প্রবন্ধে ভাঁহাদিগেরই সংক্ষিপ্ত বিবরণ দেওয়া হাইবে। ঐ একাদশ রমণীর নাম—(১) মহাপ্রজাপতি গোভমী, (২) কেমা, (৩) উপলাবণ্য, (৪) পতাকারা, (৫) ধর্মদীনা, (৬) নন্দা, (৭) সোনা, (৮) সুকুলা, (৯) ভজা—কুস্তলকেশা,(১০) ভদ্ধা —কাপিলানী, (১১) কেশা পোতমী।

মহা প্রজাপতি গোত্মী—
মহা প্রজাপতি গোতমী, গোতম-মাতা
মায়াদেবীর কনিটা ভগিনী। মায়াদেবী
সন্থান প্রসাবের সপ্তাহ কাল পরেই ইছলোক পরিত্যাপ করেন। কবিত আর্ছে
রাজা ভ্রোদন কোন এক উৎসব
উপল্কে মায়াদেবীকে ও গোডনীকে

কশিলবান্তর রাজভবনে আনয়ন করেন।
তাঁহাদিগতে দেখিয়া কপিলবান্তর আগললণ বলেন এই নারী হুইটির গর্ভে যে
সকল সন্তানের জন্ম হুইবে, তাহারা এই
বিষের অধিপতি হুইবে"। রাজা ভদ্যোদন
মায়াদেবীকে ও গোভমীকে বিবাহ করিরাছিলেন। মায়াদেবীর লোকান্তর-যাত্রার
পরে পৌভমের লালন-পালন-ভার গোতমীর হত্তে অর্পিত হয়। অরকাল পার
পোতমীও এক প্ত্র প্রসব করেন।
গোতমের প্রতি বিমাতার ঈদৃশ স্নেহ
সঞ্চার হুইয়াছিল, যে তিনি স্বীয় পুত্রের
পালনভার তদীয় ধাত্রীর হস্তে অর্পণ
করিয়া স্বয়ং গৌতমকেই পালন করিয়াছিলেন।

অধিকাংশ প্রাচীন ইতিহাস, বিশেষতঃ **ধর্মসালের ই**তিহাস কবির রচনা। ক্ৰিছ ভেদ ক্রিয়া ঘটনা নিক্কাশন করা বছ কঠিন ব্যাপার। বৌদ ইতিহাসে **লেখা আছে,** গোডমী পূর্বজন্ম বারাণদী নগরীতে অন্ম গ্রহণ করিরাছিলেন। ভাঁষার চরিতের প্রধান সদাণ ছিল। **তৎকালে সম্নাসীগণ** বৎসরের সকল ৰভুতে পৰ্কভে ও অরণ্যে বাস করিয়া বর্ষা**লনাপ্রেন্** কাসিরা লোকালয়ের **আঞ্জর এইণ করিতে**ন। এক বর্বাকালে পাচ পড় ভিকু সন্ন্যাসী পর্বত হইতে অবতর্প করিয়া ইসিপ্তানা নগরীতে র্থক ধনবান বণিকের আবাসে ঈাছিত হন। যে **সময়ে ভাহা**রা বণিকের ভবনে ्नीकिस्नन, उपन त्रका नमान्यक्षात्र।

সন্মাসীরা বণিকের নিকটে আপনাদিপের প্রার্থনা ব্যক্ত করিলেন বল্লট, কিন্তু ভাষা शूर्व रहेन मा। विविक कहितन, "खामा-**मिश्यत असन मस्त्र नांहे (व मक्काञी-**দিগের জন্য পাঁচ শত কুটীর নিশ্বাণ করিয়া দিই, তাঁহারা অন্যত্ত গমন সর্যাসিবর্গ বিফলপ্রয়াস হট্যা ৰুকুন।" প্রস্থান করিলেন। পথিমধ্যে পোত্মী তাঁহাদিগকে দেখিতে পাইলেন। তিনি কল্স-কক্ষেদুর হইতে জল আনিতে-ছিলেম। পূর্বে যথন সন্ন্যাসীরা নগরে প্রবেশ করেন, তথন তাঁহাদিগকে দর্শন করিয়াছিলেন। অলকাল্মধ্যে বিশেষতঃ সন্ধার প্রাক্তালে নগর হইতে নিজ্ঞাত্ত হইতে দেখিয়া কারণ জিজ্ঞাসা কবিলেন। সর্গ্রাসীদিগের প্রমুখাৎ আদ্যোপান্ত विवत्र अवन कतिया जिमि बिलालन. ''আপনারা নিরাশ হইবেন না; আমরা আপনাদিগের বাসগৃহ প্রস্তুত করিয়া দিব।" গোত্মীর পাঁচ শভ দাসী ছিল। তিনি তাহাদিগকে আহ্বান কহিলেন, "কন্যাগণ। তোষরা দাসীভাবেই চিৰকাল থাকিতে চাও,---ना मुक्ति खार्यना कत्र ?" তাহারা উত্তর कतिन, "मा! आमता मुक्ति धार्थना করি।" গোতমী কছিলেন, "তবে এক কর্ম কর। তোমরা পাঁচ খত দাসী আমার,—আপন আপন খামীকে এক দিনের অন্য আনর্দ কর ও পাঁচ শত मजानी व वर्षाकात शाकिवात सना भाक শত থানি কুটার প্রে**ভত করিরা দাও।**"

ভাষারা ওদমুস রে গোড়মীর আজ্ঞা পরিপালন করিল। গোড়মী সর্যাদি-বর্দের জন্য ঐ সকল গৃহ স্থসজ্জিড় করিয়া দিয়াই জান্ত হল নাই, বর্ষার তিন মাস কাল ভাঁছাদিগকে আহার-পানীর প্রদান পূর্বক দয়াধর্ম প্রতিপালন ও সাধ্সেবা করিয়াছিলেন। কথিত আছে, এইরূপ বহু সৎকার্ধ্যে গোড়মীর পূর্ব জন্ম অভিবাহিত হইয়াছিল।

মহাত্মা বৃদ্ধ দেশে দেশে ধর্মপ্রচার আরম্ভ করিলে পরে তাহার পিডাও তৎপ্রচারিত নবধর্মে আক্রষ্ট ছইয়া-ছিলেন। গৌতমের স্বরাজ্যে উপস্থিত ছইবার দিতীক দিবদেই গৌতমীর পুত্র নন্দ বৌদ্ধধর্ম অবলম্বন পূর্বক সন্ন্যাসী হন। দপ্তম দিবসে গৌতম-নন্দন রাহণ ও ভাষার অনুসরণ করেন। এই সময়েই রাজা ভাষোদন পরলোক-প্রাপ্ত হন। রাজার লোকাম্বর যাতার পরে গোত্মী ও বুদ্ধের শিষ্যত স্বীকার পূর্ব্বক সন্ন্যাদিনী হইবার জন্য ব্যাকুল হইলেন। তৎকালে বুদ্ধদেব বৈশালীর নিকটস্থ এক আশ্রমে অবস্থিতি করিতেছিলেন। গোত্নী ভাষার নিকটে উপস্থিত হটয়া সীয় অভিপ্রায় প্রকাশ করিলেন। সিদ্ধার্থ শাক্য তাঁহাকে এই মহাত্রতে দীব্দিত করিতে প্রথমে

शीकुक क्रेट्रिन ना। रा वाकि लीध-নম্যাস-জীবনের সৌন্দর্ব্যে আরুট হইরাছে. সে নিবৃত্ত হইবে কেন ? গোডমী নিবৃত্ত হইলেন না। তিনি নাপিত ডাকিয়া কেশমুগুন করাইলেন; তদনন্তর গৈরিক বক্ত পরিধান পূর্বেক পুনরায় উপরিউক্ত আশ্রমে উপশ্বিত হইলেন। এবার বুদ-দেবের প্রধান শিষ্য আনন্দকে ভাকিরা তিনি কহিলেন, "বৎস। আমাকে দীক্ষিত করিবার জন্য তুমি সিদ্ধার্থকৈ অন্পরোধ কর।" আনন্দের অমুরোধ--বিশেষতঃ গোত্মীর মহদভিপ্রায় বিশেষরূপে অব-গত হইয়া বুদ্ধদেব, মাতা গোভমীকে বৌদ্ধ সন্ন্যাসত্রতে দীক্ষিত করিলেন। তাঁহার পাঁচশত দাসী ছিল, তাহারাও বৌদ্ধসন্ন্যাস ত্ৰত অবসম্বনপূৰ্বক বুদ্ধ-(मरवत्र छेभामभ माछ कतिशा (बीफ-সমাজের পৌরবের স্থল হইল।

এখন নারীগণকে সেরপ সন্ন্যাসিনী হইতে হইবে না বটে, কিন্তু ধর্ম্মের জন্য, সমাজের জন্য, সদেশের জন্য আছোৎ-সর্গ করিতে হইবে। গোতমীর ন্যার,— তাঁহার অস্ক্রনী বর্গের ন্যার কে ক্ষে ধর্মার্থ আন্ধোৎসূর্গ করিবেন ?

> (ক্রমশঃ) শ্রীনগেল চল মিত্র।

বার্মেসে।

(কৃষি বিবরণ)

আমরা যে নিরমে থাদশ মানের। তদসুসারে জ্যৈর মানের পত্রিকার আবার কৃষি বিষয়ণ প্রকাশ করিতেছিলাম, মানের বিবরণ প্রকাশিত হওয়া উচিত ছিল; কিন্তু তুর্দ্দেববশে তাহা ঘটে নাই।
এজন্য ভাষাত মাদের পত্তিকার ভাষাত
ভ প্রাবপ তুই মাদের বিবরণ প্রকাশিত
হইল। প্রাবণ মাদ হইতে পুনরার প্রতিভাত নিঃমান্ত্রনের চেন্তা করা বাইবে।
আষাত।

কৈ ঠি মাসে বেগুণের চারা রোপণ করিবার উপদেশ দেওরা গিয়াছে।
বদি তাহা না ঘটিয়া থাকে, এই মাসে রোপণ করিবে। তেঙ্গো জাঁটার ন্যায় বেগুণও দিবিধ, আগু ও আমন।
আউশ বেগুণ শীতের পুর্কেই কলিতে আরম্ভ হয় বটে; কিন্তু তাহা অধিক কলে না এবং থাইতেও তত স্থমিট হয় না। আমন বেগুণ যত শীত পড়ে, ততই কলে। সাধারণতঃ আমন বেগুণ আউশ অপেকা অনেক অধিক কলে ও থাইতে স্থলাদ হয়। সচরাচর আবাঢ় শ্রাবণ মানেই তাহার বোপণ হইয়া থাকে।*

লঙা—সসার দোআঁশ মৃত্তিকার চৌকা প্রস্তুত করিয়া তাহাতে পরিপুট লঙ্কার বীজ বপন করিবে! ইহাকে লঙ্কার হাপোর কহে। এ মাদে হাপোর দেওয়া ভির লঙ্কার অন্য কাষ্য নাই।

নারিকেল—নারিকেল পৃথিবীর মধ্যে সর্কোৎকৃষ্ট কল। খদি একমাত্র কল ভক্ষণ করিয়া শীবন ধারণ করা সম্ভব হয়, তাহা নারিকেল: কেননা শরীর রক্ষার্থ যতপ্রকার উপাদান আবশ্যক-নারিকেলে তৎসমুদায়ই বিদামান আছে। শ্ববিখ্যাত উদভিদতত্ববিদ ও পূর্বতন ক্ষল ইনস্পেক্টার (C. B. Clark) সাহেব বিদ্যালয় পরিদর্শন জনা যখন মফঃললে অবস্থান করিতেন, আমরা ভ্রিয়াছি. তিনি একমাত্র নারিকেল ভোজন করিয়া অনেক দিন কাটাইয়া দিতেন। এতা-দৃশ উৎকৃষ্ট ফল নারিকেলের বৃক্ষ প্রস্তুত করিতে যদি কাহার ইচ্ছা হয়, তাঁহাকে এই মাসেই তাহার চারা রোপণ করিতে ভজাগনের মধ্যে নারিকেল চারা রোপণ করায় আরও একটা বিশেষ উপকার আছে। যদি কাহারও বাটীতে দৈবাৎ বহুলাঘাত হয়, আর সেই বাডীতে নারিকেল গাছ থাকে, তাহা হইলে বজাগ্নি নারিকেল গাছের মন্তকেই পতিত হইবে, কারণ দকল বুক্ষ অপেক্ষা नातिरकन तुक्त छेक्र हहेशा शास्त्र।*

* উচ্চ পদার্থের উপর পতিত হওয়া বজ্রাগ্রির
একটা সভাব। এই কারণেই অট্টালিকার এক
কোপে অত্যাচ্চ লোহমর শিক রক্ষা করা হয়।
পরিচালক লোহমর শিকের উচ্চতা ভিন্ন আরও
একটা বিশেষ শুণ আছে। শিক যে স্থানে অবন্ধিত
সেই স্থান হইতে ৮০ হস্ত বাসার্থ লইয়া বৃত্ত স্থানের
মধ্যে যেধানেই বজ্ঞাযাত হউক, শিকের মন্তব্দে
পাঞ্জিয়ে এবং শিক্ষারা পরিচালিত হইয়! পুশর্ভে
এবেশ করিবে। বজ্ঞাগ্নি যেমন মেষ হইতে পূতলে
শতিত্ত হয়, তেমনি ক্ষান ক্ষান পুত্রল হইতে

^{*} ধনার মডে বারমাসেই জল নিরী বেঙণ ফলাইডে পারা বার। একখা সভা; কিন্তু সে বেঙ্কণ খাইডে ভাল লাখেনা।

নারিকেলের ফলন বন্ধ হইলে তাহার কতকণ্ডলি পাশ শিক্ত কাটিয়া দিবে। ডাব যত ভালা যায়, ফলন তত বেশি হয়।

প্রত্যেক নারিকেলের চারা বার হাত অন্তরে রোপণ করিতে হইবে। প্রতি চারার নিকটে এক এক ঝাড় কলা গাছ লাগান উচিত। নারিকেল গাছ প্রস্তুত করিতে হইলে আর একটা কঠিন কার্য্য করিতে হয়, অনেকে আলস্য বা অঞ্জতা বশতঃ তাহা করিয়া উঠিতে পারেন না; এজন্য ভাঁহ:দিগের নারিকেল গাছের তেজ হয় না এবং ফলও ভাল হয় না। চারা ২।০ বৎসরের হইলেও উহার মূলদেশে শিকড়ের দ্বারা আরুত বীজ নারিকেলটা রহিয়া যায়। অতি দাবধানে শিক্ত না কাটিয়া ঐ বীজ নারিকেলটা বাহির করিয়া দিতে হয়। हेशांक नात्रिकलात्र "शिल कांगे।" কহে। পিলে কাটা কিছু কঠিন কাজ; কিছ পিলে না কাটিলেও গাছ ভাল হয় না। কলাগাছ ছারা নারিকেল গাছের ছিবিধ উপকার হয়। প্রথম, কলাগাছ চতুঃপার্শ্ববর্তী ভূমির রস আক-র্ণ করিয়া যেমন আপনার স্তল্দেরের পুষ্টিবিধান করে, তেমনি আপন গৃহাগত অতিথি নারিকেল 'গাছকেও ঐ রসের ভাগ দেয়। দিতীয়, যদিই কোন গতিকে

উটিরা মেঘে মিলিত হর। ঐ বৃদ্ধের অন্তর্গত যাই-তীয় বক্সায়ি ঐ শিকের মূলদেশ দিরা উর্ছে পরি-চালিত হইরা যার।

উহার নিকট গোরু বা মাছব আইনে, সে চলচলৈ কলা ত্যাগ করিয়া কথন নারিকেল গাছে মুখ দের না। কলা-গাছ আপন দেহ দানে নারিকেল গাছকে রক্ষা করে।

বাঁশ,—বাঁশ গৃহস্থের অনেক কাজে বিশেষ্ড: বাঁশ বড় পাকা-আওলাত। যদি কাহার অধিক আমি ধাকে, আর তিনি ৪া৫ শত কাড বাঁশ প্রস্তুত করিতে পারেন, বার্ষিক ৪।৫ শত টাকা অবাধে আইসে। ঝাড় প্রেডি ১, টাকা নিশ্চয়ই লাভ হয়। এই মাৰে বাঁশের নৃতন কোঁড়া বাহির হয়। **লেই** সকল কোড়া রক্ষা করা গৃহছের একটা প্রধান কার্য। কারণ যথন উহা ছোট থাকে, তখন অতি কোমল, গোকতে ধাইয়া ও ভাঙ্গিয়া বড় ক্তি করে। উহার তরকারী রাঁধিয়াও অনেকে খায়। খাই-তেও উত্তম লাগে। কিন্তু ২া৩ ধানি বাঁশ নষ্ট না করিলে আর এক দিনের তরকারী হয় না।

পুঁই ও সাচিক্মড়া,— জৈ । ইমানে
এই ছই ফদলের আবাদ করিবার উপদেশ দেওয়া গিয়াছে। যদি ঐ মাসে চারার
অপ্রাপ্তি বা অন্য কোন কারণে না
ঘটিয়া থাকে, এ মাসেও উহাদিগের
আবাদ হইতে পারে। এ মাসে উহাদিপের চারা চারিদিকে যথেট পরিমাণে
পাওয়া যায়।

কলা,---কলার আবাদ গৃহছের বিশের উপকারী। উহার দক্তই আমা-

(मन विष्यास्त नात्त्र। त्यांहा. त्यांह. ৰুশা. (কাঁচা ও পাকা) পাত কত প্ৰয়ো-শ্দীয়, ভাহা সকলেই জানেন। ৰাপ মার প্রান্ধ করেন, উছার গাছগুলাও छाँशमिश्तर काष्म नात्र। **ৰী**দ্মকালে ৰধন ধরতর রোজে মাঠের বাস গুক रहेबा बाब, धवः चात्र विकिली मा शास्त्र, ভ্ৰম অনেক পোক কলাগাছ শীবন ধারণ করে। বিশেবতঃ ভুগ্ধবৃতী গাভীকে কলাগাছ খাওয়াইলে তাহার क्ष दुषि इया তনভিন্ন উৎসব ও ৰাঙ্গলিক কৰ্ম্মে কলাগাছ একটা প্ৰধান **डे**भागाम। वैशिमिरगत स्टब्ह ভূমি नार्ट, छाँरात्रा विद्यहमाभूर्वक कना-যাগান করিতে পারিলে লাভবান হইডে পারেন। ধাঁহাদের ভূমি নাই, তাঁহা-দের বাটার এক পাশে ২৷১ বাড় क्लाशीह श्रेटन नःमादित वफ छेलकात ₹7.1

"আট ছাত অস্তর এক ছাত বাই। কলা পোঁতগে চাদা ভাই॥"

আট হাত অন্তরে এক হাত গভীর পর্ত থনন করিয়া এই মাসেই কলাগাছ রোপণ করিতে হয়। কলার তেড় বা চারাম যে দিকে নৃত্রন তেড়ের মুখী খাকে, সেই দিক্ দকিণ দিকে রাখিয়া পুঁতিতে হয়। আবার যে বাড় হইতে তেড় মারিতে হইবে, সেই বাড়ের দকিণ দিকেয় তেড়ভালি রাখিরা আমি ডিন দিকেয় তেড়ভালি রাখিরা আমি ডিন

ভূলিতে হইলে ভাহার এঁটে আর্থাৎ মূল-খলা তুলিতে হইবে। ঝাড়ে এঁটে থাকিলে তাহা পচিয়া ভাহাতে এক প্রকার কীট জন্মে। ঐ কীটে সমস্ত কাড় নই করিয়া কেলে।

"ৰুবা পুঁতে না কেটো পাত। তাইতে কাপড় তাইতে ভাত॥"

উদ্ধিনাত্তেরই কতকগুলি শাধাপদ্ধব কাটিয়া দিলে, তাহার কল কুল বেশি হয় ও গাছ স্মন্থ হয়; ইহা বিজ্ঞান-শম্মত। তদস্সারে কলাপাত কাটায় কোন হানি নাই। তবে বোধ হয়, কলাপাত বাইল ওদ্ধ কাটিয়া ফেলিলে উহার কাণ্ডকোষ অর্থাৎ খোলা ওকাইয়া বা পচিয়া গাছ নই হইডে পারে, এই আশকায় এককালে পাতা কাট। নিষিদ্ধ হইয়াছে। বাইলের অর্দ্ধেক পরিমাণ রাধিয়া পাতা কাটিলে পাতার প্রয়োজন ও গাছ রক্ষা উভয়ই দিক হইডে পারে। আমরা পুনরায় কলার প্রবদ্ধ লিখিব।

সুপারি,—ইহাও উৎকৃত্ত আওলাত।
বলের সমস্ত দলিণ প্রদেশে ইহার প্রচ্ন
আবাদ হইয়া থাকে। বিশেষতঃ মেদিনীপুর, চব্দিশ পরগণা, খুলনা প্রভৃতি
জিলার অনেকের স্থপারির আবাদই
উপদ্দীবিকা। এই শাসে গাছ পাকা
শুবাকের হাপোর দিতে হর। যে ক্রে
শুবাকের আবাদ করা যার, তাহার বেড়া
পালিতা মাদারের বৃক্ষধারা দিতে
পারিশে ভাল হয়, কারণ ধনার বচনে
উক্ত হইরাতে, ঐ পাভার শুবাকের

উৎকৃষ্ট সার হয়। ধনা গুবাকের আরও একটা সারের উল্লেখ করিয়াছেন। তাহা সোবর পঢ়া ভিন্ন আর কিছুই নহে।

"শোন্রে বাপু চাসার পো। ভপারি বাগে মান্দার রো॥ মান্দার পাতা প'লে গোড়ে, ফল বাড়ে ঝট্ফট্কোরে।"

প্রথমে ওপারির চারা আট হাত
অন্তর রোপণ করিতে হয়। স্থায়ীরূপে
চারা রোপণের পূর্ব্বে ওপারির চারা
তিনবার নাড়িয়া পুঁতিতে হয়। আট
হাত অন্তরস্থিত চারা সকল বড় হইয়া
ফলবান হইলে, তাহার মধ্যে মধ্যে আর
একটা করিরা চারা পোঁতা যায়। তাহাতে
কোনও গাছের ক্ষতি হয় না, অধ্চ অন্তর্মান অধিক গাছ হয়।

চারা,—কোন প্রকার কল বা ফুলের ছোট কিন্তা বড় চারাকে দ্বানান্তর করিবার প্রায়েজন হইলে এই নালেই করিছে হয়। যদি বুকা যায়, যে চারাকে নাড়িছে হইবে, তাহার মূল শিকড়টা অনেক মাটার নীচে পমন করিয়াছে, তাহা হইলে ভূলিবার অন্যন এক সপ্তাহ পুর্বেমিড়ানী বসাইয়া ঐ শিকড়ের অপ্রতাগ ছেদন করিয়া রাখিতে হয়। ইহাকে "থাসি করা" কছে। বড় বড় চারা ভূলিতে হইলে, চহুপোর্বের মাটা খুঁড়িরা কতক মাটার সহিত চারার মূলদেশ ছেঁড়া চট্বা তক কলার বোলার হারা অরে উত্তমক্রেপে বাধিয়া প্রে চারা

ভূলিতে হইবে। ভাহাতে কোন শিক্ত নষ্ট বা আহত হইবে না।

আলবাল,—বাড়ীতে বা বাগালে ধে সকল বড় বড় ফল ফুলের গাছ থাকে, তাহাদের গোড়া খুঁড়িয়া গোলাকারে এরপ আটল বাঁধিতে হয়, ধেন তল্মধ্যে জল দাঁড়াইতে পারে। এই মাসে এই কায্য করিতে হয়। ইহাকে গাছপালাকে 'জল ধাওয়ান' কহে! বর্ধাকালে এইরপ: কিছ শীতকালে ইহার বিপ্রীত ব্যবস্থা। তাহা কার্ত্তিক্যাসে বলিব।

আনারস, এই মাসে যথেষ্ট পরিমাণে পাওয়া ধায়। তাহার মুখে ও বেঁটার চারিপাশে যে সকল পত্র মুকুল (মুখী) থাকে, তাহার গোডায় গোবর দিয়া মাটীতে রোপণ করিলে এক একটী মুখীতে এক একটা আনারদের গাছ ছইবে। আনারস উত্তম ফল। ইহার চাদ আবাদ বড় সহজ। ইহা ধিবিধ ভূমিতে হইতে পারে। আওতাজমি অর্থাং অন্যান্য বুক্ষের তলভাগে যে জমি থাকে, সেই क्यि धवर कांका क्यि छेख्य शास्त्रे আনারস হইতে পারে। আওতা জমির এক বিষায় এক হাজার এবং এক বিষা ফাকা জমিতে আড়াই হাজার আনারদ গাছ হইতে পারে। মুখী পোঁতার ভূতীয় বৎস্বে আমারস ফলে। गंशीदमञ অধিক ভূমি নাই, তাঁহারা মনে করিলে ৰ ৰ ভতাসনে অনায়াৰে ২০৷২৫ টা আনারদের পাছ করিতে পারেন এবং

গাঁছপাকা আনারসের অমৃত স্বাদ বিনা-বারে ভোগ করিতে পারেন।

বড়গাছ,—বে সকল গৃহত্বের ফলের ৰাগান আছে এবং তাহাতে সকল প্ৰকার পাছ রাখিতে ইচ্ছা করেন, ভাঁহারা যেন এই মাসে বাবলাও তেঁতুলের, তাল ও পেঞ্রের আঁটি রোপণ করেন। বাগান ও শুক্রিণীর চতু:পার্খে যে তোলা মাটী থাকে, এক একটু গোবরের সহিত তাহার উপর বাবলার বীজ রোপণ করিতে পারিলে গাছ শীম্র বড় হইরা উঠে। বাবলা কাঠে দেশীয় গাড়ী ও লাকল বয়কে অনেক গড়ন হইয়া থাকে। এমন কি পাড়ীর চাকা বাবলা কাঠ ভিন্ন হয়না। এক এক বোড়া চাকা ১৫১ হইতে কুড়ি টাকার বিক্রেয় হইয়া থাকে। वावना कार्छ छेखम जानानि कार्ठ इत। সহরের লোকেরা পাড়ুরে কয়লার কল্যাণে কাঠের ধার বড় शांद्रिन नाः किन्न মফঃমল জীবন বাত্রার উহা একটা প্রধান छेभामान । বাবলার বৃদ্ধি বড় সত্তর रत। अञ्चना छेटा वावमात ७ जानानि উভয়তঃই উপকারজনক। বাঁহাদিপের ১ । १ • शोष वीं भ ७ किছू वावना कति-बात चान चाटक, डांशकितत कालानित কোন চিন্তা নাই। তক বাঁশে অনেক शृंदरच्य चरनक चालानि कांग्र निर्माष्ट र्देशी शाटक ।

ভেঁছুৰ্ স্থাহ ছোজনীয়। ইহাৰ পাছ আপনার বাগানে ২।৪ চী ভিক্ত দাধিতে পারিদে নিজগুছের শ্রমাজন দিছ হইয়া অনেক টাকায়
বিক্রেয় হইতে পারে। তেঁতুলের ব্যবসার
যে বিশেষ লাভজনক ও অন্ন মূল ধনে
চলিতে পারে, "স্থাকর" নামক মুসলমান
পত্রিকায় ভাষা উত্তমরূপ প্রতিপন্ন করিয়াছিলেন। আজ ভাষার সংখ্যা নির্দেশ
করিতে পারা গেল না।

তাল ও থেজুরের আঁটি এই মাসে রোপণ করিতে হয়।

> "এক পুরুষে রোপে তাল। অন্য পুরুষে করে পাল। অপর পুরুষে ভূঞ্জে তাল॥"

এই ভয়ে কেহই তালের গাছ করিতে আমরাও তজ্জন্য কাহাকে অমুরোধ করি না। তবে আপনার বাড়ী বা বাগানে সকল প্রকার ফলের वृक्त थाका, विनि वज् श्रुरथत्र विषय मतन করেন, তিনি এই মাদে তালের আঁটি যোপণ করিতে পারেন। (थक्द्रव আবাদ বিশেষ লাভজনক। তাহার বিবরণ আমরা অনা সময়ে বলিব। আপ-नात्र अधिकादत ১०।১৫ है। श्राष्ट्र श्राकित्न এবং তাহা শিউলীদিগকে জ্বমা কবিয়া দিলে শীভকালে দেবছলভি ''লিরেন-কাঠের রস" ও নলেন্ গুড় পাইবার আর কোনও ব্যাঘাত থাকে না। ঐ গুই পদার্থ ৰাঁহায়া ধথাকালে উপভোগ করিয়াছেন,* छांशाहाह वृक्षित्वन, आमि "(एव इल्ड") (कम विनाम। धहे मात्र (चक्रुव्वव्र "জাপোর" দিতে হয়।

खावन ।

এই মাসে প্রবলবর্ষা হয়। জল উদ্ভিদের
যেমন ইট্ট করে, জতিরিক্ত জল গাছের
পোড়ার বদিরা তেমনি জনিট করে।
এই মাসেই তদ্রপ অনিট হইবার অধিক
সন্তাবনা। যদি বুঝিতে পারা যায় যে,
কোন গাছের গোড়ার জল বদিতেছে,
তাহা হইলে আলবালের আইল ভাঙ্গিয়া
এরূপ গোড়া খুড়িয়া দেওয়া উচিত, যেন
গাছের গোড়া শীল্ল তক হইয়া যায়।
এমন কি পাশের শিকড় গুলিতেও একটু
রৌদ্র পাইলে ভাল হয়। যদি আবাচ্
মাসে কলাগাছ লাগান না হইয়া থাকে,
এ মাসে লাগাইলেও চলিবে।

বেগুন, আদা ও হলুদ, এ মাদে এই তিন ফসলের বিশেষ কাম্য নাই। কেবল উহাদিলের ক্ষেত্র পরিকার করিয়া গোড়ায় মাটী ধরাইয়া দিতে হইবে।

ইক্স্,—যদি ইক্ষ্র জাবাদ থাকে, কি সাংসারিক প্রয়োজন জন্য বাড়ীতে ২।৪ ঝাড় ইক্ষ্করা হইয়া থাকে, তাহা-দিপের নিম্নদিকের কতকগুলি পাতা ভাক্ষিয়া দিয়া অবশিষ্টপাতাগুলি গাছের গাত্রে জড়াইয়া দিডে হয় এবং গাছগুলি যখন বেশ বড় হয়, তখন পরম্পর নিকট-বজী ৩।৪ টা গাছ একত্র বাঁধিয়া দিতে হয়। নহিলে বাতাসে গাছ হেলিয়া পড়ে, কি ভালিয়া যায়।

লন্ধা,—এই মাসে হাপরে লন্ধার চারা প্রায় অর্থ হন্ত পরিমিত হয়। বে ছানে দর্শনা রৌজ পার, এমন স্থানের

উত্তমত্ৰপে কৰিডকেতে শ্ৰেণীবছ কৰিয়া ঐ লঙ্কার চারা রোপণ করিতে হয়। त्रीख ना भारेल नकांत्र साल रह ना। এই মাসের প্রথম পক্ষের মধ্যে ল্ডার চারা ক্ষেত্রে রোপণ করা নিভান্ত আব-শ্যক, কেননা তদন্যখায় লম্ভার ফলনে ব্যাঘাত ষটে। যে ছানে ধানের ঝাডাই মাড়াই হয়, ধান উঠিয়া গেলে, সেই স্থান কাঁইট দিয়া যে ওঁচলা মাটী জনেয়. তাহা লক্ষার উৎকৃষ্ট সার। অভএব থাহারা উত্তমরূপে লক্ষার চাস আবাদ করিতে ইচ্ছা করেন, ভাঁহাদিগের বিশেষ ঘতে ঐ মাটী দংগ্রহ করা উচিত। ধনার বচনে ভাত্র কি আখিনে লছা রোপার্শের ব্যবস্থা আছে। কিন্তু প্রকৃতির পরি-বর্ত্তনে এখন ভাবণ মাদে লক্ষা রোপণ অপরিহার্যা হইয়াছে।

''হাউয়ে লাউ উঠানে কাল। কর বাপু চাসার হাওয়াল।'' উঠানের ন্যায় পরি**কার ফেতে**্ল**ডা** করিবে।

শাঁকআৰু—্যে দোৰ্মাশ মাটাতে বালির অংশ অধিক থাকে, তাহা শাঁক আলুর পক্ষে বিশেষ উপযোগী। শাক আলুকে দেশান্তরে কেণ্ডর কছে। উহা সিঞ্চ, পৃষ্টিকর ও রোদ্রের সময় ভোজনে স্থতাদ। ছভিক্কালে কোন কোন ছানের ছংখী লোকেরা কেণ্ডর, ধাইয়া জীবন ধারণ করে। এই মাসে উহার আবাদ করিতে হয়। উপরি উক্ষা

দাঁড়া বাঁধিয়া তাহার উপর অর্ভ্রন্থ অন্তরে ২টী করিয়া শাঁকআলুর বীজ রোপণ করিতে হয়। দাঁড়ার যত শিথিল (শল) হয় আলু ততই বড় ও কোমল হইয়া থাকে।

আভধান্য,—এই মাদের শেষভাগে, কিস্বা ভাদ্রের প্রথমে আভধান্য ছেদন করিয়া বাড়ীতে বা ধামারে আনিডে হয়।

হৈমন্তিক ধান্য,—এ প্রবন্ধে ধান্যাদি ফগলের, অর্থাৎ থাহাদিগের অল্প পরিমাণে চাদ আবাদে কোন লাভ নাই, তাহাদিগের বিশেষ বিবরণ বলিবার কথা নাই, তবে তত্তৎ ফসল সম্বন্ধে ২০১টা শুক্তর কথা মাত্র বলিয়া ঘাইব।

"আষাঢ়ে কাড়ান মাণকে। শ্রাবণে কাড়ান ধানকে। ভাদরে কাড়ান শিষকে। আধিনে কাড়ান কিস্কে।

এই প্রবাদ দারা প্রতিপন্ন হইতেছে

যে, এই মাদেই হৈমন্ত্রিক রোপণের

প্রশস্ত সময়। বর্ত্তমানেও এই নিয়ম

অক্ষ্ম আছে। ক্রমকদিগের এ কথাটা
ভাল করিয়াই মনে রাখা উচিত। ভাদ্রের
১২ই পর্যাস্ত রোপণ চলিতে পারে।

"শ্রাবণের পুর ভার্ফের বার। এর মধ্যে যত পার।" খনা। শ্রাবণে অথার কোন বিশোস ব

শ্রাবণে আর কোন বৈশেষ কার্য্য নাই।

কবির পরিণাম।

সতীশ বাল্যকাল হইতেই কবিতা। **লেখে।** যথন সতীশ স্থলের বালক ছিল, তথন তাহার দহপাঠারা বিম্মিত-নেতে দেখিত य पाकार नील মেঘন্তবক অথবা জ্যোৎসাম্থী तांजि एक थिएन, अकूल कूलवन वा गांमल **প্রাড**রবাহিনী নদীকৃলে বেড়াইডে গেলে বালক সভীশ মুশ্ববৎ বসিয়া কি ভাবিঞ্জ থাকে; তার পরে বিনা भाशास-विमा पाछिशात्म, अकृति सुमात কবিতা লিখিয়া ফেলে।

धक्था यथन चानाकक कार्य

পৌছিল, তখন অনেকে সভীশের উপরে বড় অসক্ত হইল। কেছ বলিল "ও ছেলের লেখা পড়া হইবে না," কেছ বলিল "এ ছেলের প্রকৃত বুদ্ধি হইবে না" বাঁহার। শাধারণের নিকটে আপনাদিপকে অধিক বুদ্ধিমান্ বলিয়া প্রতিপন্ন করেন, ভাঁহারা অপেক্ষাকৃত গভীর ভাবে বলিলেন, "মাথা কিছু ধারাপ বলিয়া সভীশের ঐ একটা রোগ হইয়াছে।" এসব কথার মধ্যে কোন্তলা সত্য কোন্তলা মিথ্যা আমরা ভাহা জানি না, তবে এই মাত্র জানি বে "বে রোগের জন্য"

স্তীশ মাষ্টার মহাশরের কাছে ধমক ৰাইল, গুরুজনদিগের কাছে গালি ধাইল, বন্ধুরা "কালিদাস, শেলি, মাইকেল দত্ত" বলিয়া তাহাকে ঠাটা করিল, তাহার সে দারুণ রোগ কিন্তু কিছুতেই তাহাকে ছাড়িল না।

ক্রমে দতীশের বয়স তেরো ছাড়াইয়া তেইশ, তেইশ ছাড়াইয়া তেরিশে
পৌছিল, সতীশচন্দ্রও স্কুল ছাড়িয়া
কলেজে, কলেজ ছাড়িয়া আপিসে
উপন্থিত হইলেন। সেই দলে সেই"ছুশ্চিকিৎসা রোগ"ও প্রবল বেগে বুদ্দি
পাইতে লাগিল। তথন কাজে কাজে
সতীশের ভভান্ধাজ্জিগণ এই কবিভারোগগ্রন্থের "আরোগ্য" আশা ছাড়িয়া
দিয়া একরপ নিশ্চেট হইয়া বিদলেন।

অন্য লোকে এইরপ "নিশ্চেষ্ট" হইলেও, একজনের চেষ্টায় ''নির্'উপদর্গ থোগ করিতে আমাদের সাধ্য হইল না। কারণ দতীশের সহধর্মিণী এথীমতী সরোজিনী দেবী সামীর এই "ছরারোগ্য রোগ'' দূর করিতে যথাসাধ্য চেষ্টা ক্রিতে লাগিলেন।—যথন সতীশ কলি-কাতায় কলেজে পড়িত, যখন ছুটীর গভীর রাত্রিতে দময়ে বাড়ী পিয়া, অচিরজাগ্রতা পঞ্চশ বাবোড়শ ব্যীয়া ভাষণ সরোজনীকে "সুক্তর পূর্ণিমা-নিশি" কিন্তা "ফুটিছে বকুণ ফুল" অথবা "কার মুখ পড়ে মনে" প্রভৃতি, মধুর পদাৰলী যুক্ত নিজের রচিত কবিতা গুলি স্রল ব্যাখ্যা সহ ওনাইতেন, তথন যে

সরোজনীর তাহা ভাল লাগিত না,
একবার শুনিলে জাবার শুনিতে ইছা
হইত না, তাহা কখনই নহে। বরং
আমরা বিশ্বস্ত স্ত্রে শুনিয়াছি, সতীশের
সে মধুর গাধা, বাসস্ত কোকিলের বস্থারের মত সরোজনীর হৃদরে অতি নিভ্ত
স্থানে প্রতিধ্বনিত হইত ! আরও শুনিরাছি "কবির ভার্য্যা" বলিয়া সরোজনীর
মনে বেশ একটু গর্মণ্ড জ্মিত।

যাহা হউক এখন আর সরোজনীর
সে দিন নাই। এখন সরোজনী ঘরে
গৃহিনী, শিশু সন্থানের জননী, দাস
দাসীগণের শাসনকারিণী; তাই এখন
আর কবিতা বা কবি-ছাদয় লইয়া সরোজিনীর চলে না। এখন নিজের প্রাতন
বালা ত্গাছি নুতন করিয়া গড়ান চাই;
থোকা খুকীর সাটীনের পোষাক চাই;
লোক জনের কাছে লৌকিকতা ও প্রতিপত্তি চাই। যে সময়ে যা' শোভা পায়।
চিরদিন ও সব ছেলেমী ভাল লাগিবে
কেন ?

স্তরাং সামীর "ছেলেমী" ঘ্চাইতে সরোজিনী রাগ করিল, জঞ্জ ফেলিল, কোনও দিন "প্রচণ্ড" ম্থকামটা সহ ভীব বাক্য বাণ, সেই কবিতা-রোগগ্রস্ত, উপর ওয়ালার জালায় ত্রন্ত, সামীটীর জদমে বিভ করিতে চেটা করিল, কিছ সে হৃদয় কিছুতেই আঘাত প্রাপ্ত হুইল মা! দে ক্দয় জড় কি পাষাণ তাহা জানি না, কিছু সরোজিনীর ভীক্ষার সকল ভোঁতা হুইবারউপ্রুম হুইল। অবশেষে সরোজিনী ন

"বন্ধান্ত-প্রয়োগ করিতে বাধ্য হইলেন—
উপবাদ করিলেন; ভখন কবিতা-রোগী
বিনর বচনে বলিল "তোমার বালা ও ছোট
থোকার পোষাক কি নয়া দিব, কিন্তু দিন
কতক পরে। সেভিংস ব্যাক্তে যে টাকা
রহিয়াছে, তাহা দিয়া শীঘ্র একথানি
পুক্তক ছাপাইব। সংবাদ পত্রেও সাময়িক পত্রে যে দকল কবিত। লিথিয়াছি,
সে দকল যতক্ষণ একথানি পুস্তকাকারে
ক্রকাশ করিতে না পারিব, ততক্ষণ আমার
মনের ভৃপ্তি নাই।—আগে বইথানি হউক,
তার পরে ভূমি যা চাও তাই দিব।"

রাপে দরোজিনীর মুথ লাল ছইল।

এ রক্ম কাণ্ডজানশ্ন্য পুক্রের উপরে
রাগ করিয়া উপবাদ করা বিফল, তাই

দরোজিনী উঠিয়া ভাত খাইল। সেই

দিন হইতে সহধর্মিণী দতীশের সহিত
ভাল করিয়া কথা কহিল না; কেবল মনে
মনে ডাকিল ''হে ঠাকুর ! হে সিদ্ধেশ্বরি !
ভোময়া ওঁর এ রোগ দ্র কর, আমি
ভোমাদের পুজা দিব।"

যথাসময়ে সতীশের কবিতা পুস্তক
মৃদ্রিত হইল। অনেক টাকা বার
করিয়া সভীশ অভি স্থলর কাগজে,
অভি স্থলর অক্রের, তাঁহার প্রাণময়ী
কবিতাগুলি প্রকাশ করিলেন। বাঁধানও
খুব স্থলর হইল। সভীশ কুডকুতার্ব
হইলেন।

ক্রীনাথ বাবু নৃতন গ্রীলোচক। বাঙ্গালার অনেক বিখ্যাত সাপ্তাহিক ও বাসিক পরের প্রধান লেঁথক,। জ্রন্থ সমালোচনার তিনি কৃতী শুনিরা সতীশ একথানি পুস্তক জামার পকেটে লইরা ভাঁহার বৈঠকথানায় উপস্থিত হইলেন।

ছই চারি কথার পরে, নৃতন মক্কেল বেরূপ দক্ষাচে উকীলের নিকটে কথা কহে, কন্যাদায়গ্রস্ত ব্যক্তি ফেরূপ দক্ষেটে পাশ করা ছেলের পিতার নিকটে কথা কহে, সেইরূপ সক্ষোচে—সেইরূপ ইতস্ততঃ করিয়া সতীশ জীনাথ বাবুকে, নিজের লিখিত পুস্তকথানির বিষয়ে প্রকৃত মতামত প্রকাশ করিতে অনুরোধ করিলেন।

সতীশকে "কুপাপ্রার্থী" জানিয়াই
শ্রীনাথ বাবুর মুথে সহসা, গান্তীগ্য উদিত
হইল। অনেকেরই এ রকম হইয়া থাকে।
সতীশের প্রার্থনায় কোনত উত্তর না
দিয়া, নিজে কি কি কাগজে লেথেন এবং
সম্পাদকগণ ভাহার লেখা পাইবার জন্য
কিরূপ 'লালায়িত" হন, কল্পনা দেবীর
সহায়তার জীনাথ বাবু সেই সকল পরিচয়
দিতে প্রার্থত হইলেন। সতীশ বেচারাকে
জাগ্ত্যা সেই সকল কথা ধীর মনোধাগ
সহ ভনিতে এবং বিশায় ও আননদ প্রকাশ
করিতে ছইল।

আরও থানিক ক্ষণ পরে, জ্ঞীনাথ বাবু জিজাসা করিলেন 'আপনার গ্রন্থ থানির নাম কি ?" ধীরে ধীরে সহীশ উত্তর করিলেন 'আজে, এথানির নাম 'অক্ষধারা।" পূর্ববিং গল্পীর ভাবে জ্ঞীনাথ বাবু বলিতে লাগিলেন, "অক্ষধারা! মামটী আমি ভাল বিবেচনা করি না। কথা কি জানেন, নামের ভিতরে মাধ্যা গুণের অপেকা গুলো গুণই অধিকতর হাদরপ্রাহী হয়। কৃতী দেশক সেই রূপই করেন।"

অতর্কিত ভাবে দতীশের এক দীর্ঘ নিঃখাদ পড়িল। সতীশ কি তবে অকৃতী লেখক ?

ভিবা হইতে পান লইয়া চিবাইতে
চিবাইতে জীনাধ বাবু বলিলেন "আপনার
এছের এক্টু পড়ুন দেখি।" সতীশ পুতক
ছাতে করিয়া পড়িতে লাগিলেন; প্রথমে
কবিভার নাম পড়িলেন "গঙ্গা স্ভোত্র"
ভার পরে কবিভা পড়িলেন—

"নমো দেৰি স্থান্ধনী, পতিতপাবনি !—"

একছত্ত না ফুরাইভেই সমালোচক

বাধা দিয়া "এযে ভট্টাচার্য্যদিগের পাঠ্য

মন্ত্র—এরকম কবিতার এখন চলন নাই।

আপনি আর একটী পড়ন।"

আমরা সত্য কথা বলিব; সতীশ বদি দার্শনিক বা বৈজ্ঞানিক প্রবন্ধ নিখিতেন, তাহা হইলে অন্ততঃ নিজ্ঞ পক্ষ সমর্থনে হইটী কথা বলিতে পারিতেন; কিন্তু হুর্ভাগ্য ক্রমে তিনি কবিতা লিখি-রাছেন। লোহার গায়ে অনেক আঘাত সহে, কিন্তু কুলের গায়ে হাতের তর সহেনা। ঘাহা হউক সতীশ, কম্পিত-অদয়ে কম্পিতকরে, তাহার "বর্ষা" শিরম্ব কবিতা পডিজেন—

> "পরাণ কেমন করে। আকাশে বরবা, ধরার তবসা, একেলা রয়েছি খরে।

মোহন ঠমকে, চপলা চমকে, হেরিয়া নয়ন করে।—"

শ্রীনাথ বাবু ৰাধা দিয়া বলিলেন
"থাক, আর আবশ্যক নাই। সভাবকবিতার বেরূপ উচ্চারের ভাষা ও জ্বীবন্ত
ভাব থাকে, ইহাতে দে দব কিছুই নাই।
আপনার কবিতা ক্বিমতা-হুই; আপনি
ক্ট ক্রনার কবি !"

ভেড়ার শৃক্ষের আঘাতে হীরার ধার ভাঙ্গিল! বেচারা সতীশ, এতকালের পরে আজি সমালোচকের কাছে আখ্যা পাইল "কষ্ট কল্পনার কবি!" এতদিনের পরিশ্রম, এত দিনের আনন্দোচ্ছ্যুস, আজি সমালোচনার আগুণে পুড়িয়া" ভক্ষ হইল! সতীশ নীরব, নিশাকা!

ককণ-ছাদর শ্রীনাথ বাবু তথন অছুগ্রহ-পরবশ হইরা বলিতে লাগিলেন
"আপনি ছংখিত হবেন না; চেষ্টা কক্ষন,
কালে ভাল ফল হ'তে পারে। আনেন,
সতীশ বাবু! আমার ভগিনী পতি এক
জন স্কবি—পতাব কবি; তিনি 'চিলানন্দ বিকাদিনী' নামে একথানি কাষ্য
লিখিয়াছেন, আমরা লকলে সেধানি
'বস্থভাবায় অধিতীয় কাব্য' বলিয়াছি।
আপনাকে তা গেকে কয় ছল্ল ভনাই।"
অতি কটে সতীশ ধৈগ্য সংগ্রহ কয়িয়া
বিলান; সমালোচক "চিলানক্ষ বিকাদিনী" খুলিয়া পড়িতে লাগিলেন;
কবিভারে নাম পড়িলেন "বিহাৎ।" ভার
পরে গভিলেন—

"হে বিহাত। ছে বন্ধাগি। তব শ্রোতে ভাসিছে গগণ, আরো, প্লাবিত হতেছে দারা বিশ্ব ; কি প্রথর তেজম্বিনী. কিবা বল্কিমহাসিনী, কোথা মিলে হেন অপূর্ব্ব স্থাদশ্য। সমর্ভ আবর্ত্ত পুরুরাদি মহামেম যত. সবে চায় লইতে আশ্রয়, তব পদাস্ব জে অবিরত।"

সতীশ আর বদিলেন না। ঞ্জীনাথ शुस्क फिल्मन न।। পলকের মধ্যে এক নির্জ্জনে উপস্থিত হইলেন। তার পরে সাঞ্চনেত্রে সেই ক্ৰিতা পুস্তক্থানি বুকে চাপিয়া বলিলেন **"কবিতে! তোমার জন্য আত্মী**য় পরের অবাধা হইয়াছি, বিদেশভাজন হইয়াছি, शानि थारेशाहि, তোমার জন্য স্বই শহিতে পারি, কিন্তু বক্সদংষ্ট্রা কীটের মত নির্ম্ম সমালোচক যে তোমার স্থকোমল প্রাণ থাকিবে— আমার চিবাইতে

অংপিও তাহার ভোঁতা অন্ত করিতে থাকিবে, তাহা আমি কখনই সহিতে পারিব না। স্বীতিকামনায় অথবা নিজের বাসনায় আর তোমাকে বাহিরে পাঠাইব না—আমার হৃদয়ান্তঃপুর বাদিনী কবিতা দেবি ! ভূমি আমার হৃদয়ে থাকিলেই আমার সকল স্থ, আমার স্বর্গস্থ। তোমার জন্য খ্যাতি সন্মান ছাড়িয়াছি, ভার্য্যার প্রণয় ছাড়িয়াছি, এবারে চল, লোকালয় ছাড়িব; কেবল তোমাকেই ছাড়িব না !"

আর সভীশ চাকরি করিল না, বাড়ী আসিল না : কোথায় গেল সে সংবাদও পাওয়া গেল না! সরোজিনী পিতৃগৃহে বাস করিয়া সন্তান ক্য়টীকে মাকুষ করিতে লাগিল; কিন্তু সে নিজে জীবন্ম তা।

লেথিকা-

3 m-

বিবি ফসেট।

(०৫२ मःथा २० शृष्टीत्र शत)

পরিপাটী ও স্থানিয়মাধীন। গণিতশাল্লে যেরপ সমস্ত ঠিকু, কিছুই ভুল হইবার য়ে नारे, रेहांत्र मानिषक श्रीकृशा प्रयक्त ্সেইক্লপ বলা যাইতে পারে। ই আমরা **ब्यटनक विवस ब्यटनक अगरस आगाना छ** ছত্ত আন করিয়া উপেকা করি; কিন্তু । সত্যপরায়ণতা—এই ৩০তর

বিবি ফসেটের কাষাপ্রণালী সমস্ত | আমাদিগের সর্প্রদামনে রাখা উচিত বে সামান্য ৪ কুদ্র বিষয় হইতে অসামান্য ও মহৎ কাৰ্য্য অসুষ্ঠিত হইয়াছে ও इहेए इ। महत्त्व अकि अधान পরিচয় সামান্য বিষয় গুলিকে ভুদ্ধজান না করা। পরিচ্ছন্নতা, নিয়মপরতা ও ভাঁহাতে

বিষয় মহং অভুপ্রাণিত ছিল। সকলে এট গুণগুলি উব্বৃদতররূপে প্রকাশ পাইত। তিনি অপক্ষপাতিনী नाविश्वास्ताः क्न हे बार्टे विन সম্বন্ধে কথিত আছে যে অন্যায় কাৰ্য্য করিতে ইচ্ছা করা যে কি, তাহা তিনি ক্ৰন্ত জানিছেন না। সেইরূপ নিয়মিত ও পরিমিতরূপে সংসার যাত্র। নির্কাহ করিতে পারিলে, আদৌ অলিতপদ হইতে হয় ন। বিবি ফবেট, স্পলিতপদ হওয়া ৰে কি ভাহা জানিতেন না। भ्रमृला। देश गैंहात भाहि, जिनि धना। বিবি ক্ষেটকে এ গুণের জীবন্ত দৃষ্টান্ত দেখিয়া আনলা ভাঁহাকে ধন্যবাদ না করিয়া কি থাকিতে পারিণু কপটতা ভাঁহার নিকট অনার্ছনীয় পাপ। মুখে এক কথা, অন্তরে আরে এক ভাব, কার্য্যে অন্য প্রকার—এইরপ ভণ্ডামি অবলম্বন করিয়া লোকের নিকট ভাল বলিয়া পরিচিত হইতে পার, কিন্তু আপ-নার অন্তরান্ধার নিকট পার না, সর্বদশী প্রমেশ্বরের নিকট পার না-বিবি ফুসেটের নিকটও পার না, তাঁহার এত-দর স্থাদশিতাও অন্তদশিতা। কি অর্থ বিষয়ে, কি অন্য কোনও বিষয়ে কোনও মহুস্যের আচরণে কপটতার বিন্দুমাত্র প্রমাণ পাইলে ভাহার নিক্ট হইতে স্কুদরে থাকিতে সচেষ্ট হইতেন। পতিত নর নারীদিপের মন্য তিনি মর্মাহত হই-তেন। যাহারা আনুনির্ভর না করে,

বা আপনার সহায় আপনি হইতে প্রস্তুত্ত না হয়, তিনি ভাহাদিগের সহায়তা করেন না। তথ হংখে ইহার সমভাব। ইহার শান্ত মূর্ত্তি সর্বাদা অবিচলিত। যদি তৃমি সন্তান সমভিব্যাহারে তাঁহাকে দেখ, যদি তৃমি তাঁহাকে কোনও রূপ মানসিক বা শারীরিক যন্ত্রণায় আক্রান্ত দেখ, যদি তৃমি তাঁহাকে কোনও এক অসম্পাদিত প্রশংসনীয় কার্য্য সম্বন্ধে কিছু বলিতে শুন, তাহা হইলে তৃমি জানিতে পারিবে বে, সেই প্রশান্ত বাহ্যাবরণ ভেদ করিয়া কোমল রমণী-শ্বদয় অংশাভিত ও আলো-কিত হইতেছে।

ধন্যা রুজুপ্রস্বিনী ধর্ণী, বেছেত্ ভূমি বিবি ফদেটের ন্যায় নারী গর্ডে ধারণ করিয়াছ! ধন্য সেই জাতি, যে জাতিতে ভাঁহার মত মহিলা ধাকিয়া জাতীয় গৌরব বৃদ্ধি করিতেছে, ধন্য সেই পিভা মাতা, বাঁহাদিগের ভাঁহার মত কল্যা আছে। ধন্য দেই স্বামী, যিনি তাঁহার মত বুর্নিমতী বিদ্যাবতী পুণ্যবতী ভাষ্যা পাইয়াছিলেন। ধন্য সেই পুত্র-কুন্যা, বাঁহার। ভাঁহার মূত মাজা পাইয়া-ছেন। ধন্যা সেই কন্যারত্ত ফিলিপা ফসেট বাঁহাৰ কেন্দ্ৰিক বিশ্ববিদ্যালয়ের উচ্চশিক্ষার বীজ সেই বিছ্দী মাতা বপন করেন, এবং এক্ষণে ধাহার পৌরভ সমস্ক সভ্যতগতে বিভৃত হইডেছে। আমরা এন্থলে আপাততঃ ইহ'ার সংশিপ্ত জীবন বৃত্তান্ত সমাপ্ত করিলাম।

পাঁচন ও মুফিযোগ।

(७४८ मध्या १४ शृष्टीत भत्)

ন্ত্রী-রোগ।

বজ্জভূমুরের রস মধ্র সহিত পান করিলে, প্রদর নষ্ট হয়।

খেত আকন্দের শিকড়ের ছাল ২তেগলা, গোল মরিচ অর্দ্ধ তোলা, জল দিয়া বাটিয়া পীড়িত শ্রীলোককে এক দিন খাওয়াইবে।

় পথ্য টাটকা মৎস্যের ঝোল এবং কিঞ্চিৎ শীতল সামগ্রী থাইবে। এক দিনেই রক্ত প্রদার ভাল হয়।

অশোক ছাল ২ তোলা ও ছগ্ধ এক পোরা, ১ সের জলে সিদ্ধ করিয়া ছগ্ধাব-শেষ থাকিতে নামাইয়া সেবন করিলে অধিক রক্তব্রাব ও প্রেদর রোগ সত্তর আরোগ্য হয়।

সোহাগার থৈ ১০ রতি ও দারুচিনি
চূর্ণ ৫ রতি একত্র সেবন করিলে রজোরোধ নিবারণ হয়।

আমাধ জাম ছালের কাথ, থৈ চুৰ্ব সহ সেবন করিলে গর্ভিণীর গৃহিণী রোগ নষ্ট হর।

ঈবত্বফ শিকার নেকড়া ভিজাইর। ১০।১২ ঘন্টা স্তনোপরি বাধিরা রাখিলে এক দিনেই ঠুন্কা আরোগ্য হয়।

পুদরিশীর বড় পানার শিকড় সুইয়া

প্রস্থার মাধার চুলে বাঁধিয়া দিলে, বিনা কর্ম্ভে প্রস্ব হয়।

ওলট কম্বলের শিক্ত হুই ইঞ্চি পরিমাণ, ৮।১০ টা গোল মরিচ সহ বাটিয়া
ঋতু হওনের ২ দিন পূর্ব্বে এবং ঋতুকালীন ৩ দিবস ও পরে ছুই দিবস
খাইলে বাধক ব্যামোহ আরোগ্য হয়।
এইরূপে ৫।৬ মাসের ঋতুকালে ব্যবহৃত
হুইলে জ্রায়ুর দোষ স্ঃশোধিত হয়।
এই সময়ে জীর সাচারা সংঘতে শ্রিয়া
হুইয়া সর্ব্বিথা শুদ্ধাচারে ধাকা কর্ত্ব্য।

মেথি এক তোলা আট তোলা চ্শ্বের দহিত উত্তমরূপে পিলিয়া ২।৩ দিন প্রাতে সেবন করিলে,বাধক, বন্ধ্যা, মৃতবৎসা, অকালে প্রসব প্রভৃতি দোষ নম্ভ হয়।

খেত অপরাজিতার মূল কটিলেখে বাঁধিয়া রাখিলে গর্ভপাত হয় না।

স্তনের বোঁটার ক্ষত হইলে, দোহাগার থৈ ও স্বত একত্র মাড়িয়া তথায় প্রয়োগ করিলে উপকার হয়।

চাটিম কলাগাছের পাতা যাহা এক-টুও ছেঁড়া নাই, সেই পাতার ডগার শিষ লইয়া কোমরে বাঁধিয়া দিলে সহজে প্রসব হইয়া ধাকে। (কুমশ:)

স্রোতের ফুল।*

3

কমল-মুকুল ওই স্রোতে ভেসে যায়, धूना-माथा कानि-माथा, লাবণ্য পড়েছে ঢাকা, চঞ্চল সমীর ভবে ছুটেছে কোপার! ও যে কলি এক विन्त्र, তুমুৰে অকূল সিদ্ধ হ্বারে গরজে, ধরা গরাদিতে চায় ! হয়ে যাবে ছিন্ন ভিন্ন. রবে নাক শেষ চিহ্ন. ও তকুণ কচি প্রাণ মরিবে ব্যথায় ! হতভাগা শতদল। কে ভোৱে ছিড়িল বল ? কেডে নিয়ে পরিমল, কে দলিল পায় ? সে প্রেগু নির্ম্ম, ভার কি ছিল নাধ্ম. मिल मा भवित कूल (मवणा-भूकाश ! ক্মল-মুকুল তাই স্রোতে ভেসে যায়!

ভূলিয়া চলেছে ক্ল ভূবিয়া মরিতে —
কোপা দে রূপের ছটা,
ভূবন-মোহন ঘটা!
"অপবিত্র পদ্মক্ল," কে পারে দহিতে!
নিঠুত বাতাস হায়,
ভূবায়ে মানিতে যায়!
ও' লাক্ল পরিপাম পারনি দেখিতে!

বোকেনি অবোধ হিরা,
তাই আসিরাছে নিয়া,
দেবভোগ্য স্থারাশি, পিশাচে পঞ্জিতে!
সরবস্থ যায় ভাসি,
তবু তার মুখে হাসি!
জানে না যে রসাতলে চলেছে ভ্বিতে!
তানে না সে 'বিহ-পান, কেবলি মরিতে'!

জানে না সে ''বিষ-পান, কেবলি মরিডে''! মহামূর্থ বাষু! তোর নাহি কাওজান, কি করিলি মাথা খেয়ে. क्रमन कमन (मार्त्र, ভাসালি পকিল স্লোতে নিঠুর পাষাণ ! ও'তে। জাপনার মনে, ষুটেছিল পদাবনে, ভ'র কাণে কত পাধী ভনাইত গান ; ভপন সোণার হাসি, দিত ও'রে ভালবাসি, কতই আদর ও'র কত ছিল মান; মধুর মল্য বা'য়, হাত বুলাইত গা'য়, ভ্রমর করিত স্কৃতি খুলিয়া পরাণ; বড় দাধ ছিল মালি, দাহ্লায়ে পবিত্র ডালি. एए (वंद्र ठंद्र एक किए वे किए विकास में प्रे জনম সফল হবে সর্কোচ্চ সঞ্চান !

একটা প্রিকা অলবরকা সুষ্ণী দর্শনে লিবিত।

তোর ও পাষাণ চিত, र'न ना कि विव्रतिषठ. ছিড়িতে সে পুত কলি, দিয়ে বজ্র টান ? কি করিলি নীচাশয়, নিরেট পাষাণ।

বাস্'নে ভাসিরা ফুল, আয় ফিরে আয় ! পৃত "গঙ্গাজল" ঢালি, (धांशाहेश मिव कालि. শাগিবে পবিত্র রক্ত নীরক্ত হিয়ায়। শায় রে ! শুনাব নিতি, "পতিত-পাবন" গীতি, ন্দাবার শৌভিবি বালা কমল-মালায় !— যদি অনুভাপী পাপী প্রীতি নাহি ---নাগোনাআমারি ভুল, कि च्राथ कित्रिय कृत, আদি এ নিঠুর দেশে দাঁড়াবে কোথার গু ওর তরে হেতা মেল। মুণা গালি অবছেলা, কি স্থাথে ফিরিবে ফুল, কেবা ওরে চায় গ্ গাছের উপরে পাখী, তারও অকণ আঁথি, উপহাসে ঢেউ সব দূরে স'রে যায়।

কাৰু বুকে বক্ত আছে, আয় চলি আয় ! अक वात्र वाहि मति, सींश क्रि. क्रिल शिष्ट्र, বভার ফুল কেন স্রোতে ভে্সে যায়।

करों क आकीर् कल, যা'ক ভেসে পোড়া ফুল,

अ'दत्र या'क्, पूरव या'क् खलिथ-उलाय,

কিরিলে দাড়াবে কোথা,কে উহারে চায়।

ধূলি মেখে কালি মেখে, মাধুরী গিংছে ঢেকে, হুরস্ত সমীর হায় ! অতলে চুব য় ! धरे (रम हन ! कृत्न-ধরিয়া আনিগে কুলে, পুত মন্দাকিনী-জলে ধোয়াইয়া কায়; मजीवनी यञ्च मिहा. (म'रगा! ७'रत वाँ ठाइगा, সুগলি চন্দন মেখে দিব দেবতায়; কেন গো। দেবের ফুল স্রোতে ভেনে যায়। অামাদের ভয়ে ফুল যদি ভেদে যায়, পায়: র্থা গান ধর্মগীতি. রথা ভান 'বিশ্ব-প্রীতি' व्यामारमञ्ज क कीरन तुथा क धताव ! আয়। ভোর। বাঁচি মরি, ঝাঁপ দিয়া জলে পড়ি, বাঁধিয়া আনিব ফুলে ক্লেছ মমতায় ;

পথ-হারা দিশাহার। হইয়া পড়েছে সারা, धक्रे (ऋद्द हा'य मांड़ाइटड हाथ ; হাস্থক অবোধ চেউ, ভাবলে ভেবনা কেউ, পাথীর গরম আঁথি কেইবা ভরায় ? गंड (माय अवद्यक्ति.

ছুণা' রোষ দূরে ফেলি, ''পতিত-পাবন" বলি, জায় ভোরা আয় ! ধরিয়া স্বোভের কুল দিব দেবভার।

কাব্যকুস্থমাঞ্চলি-রচঠিত্রী।

স্বৰ্গীয় অধিকা দেব-জায়া।*

ষে ধর্মপ্রাণা পতিপ্রাণা ক্ষেহমঙী ককুণাময়ী নারী-দেবীর বিষয়ে কিঞ্ছিৎ বলিবার ভার এই অভাজনের ন্যস্ত হইয়াছে, আমি নিজের সম্পূর্ণ অক্ষমতা সম্বেও সেই পুণ্যবতীর অশেষ ওপরাশি ছই চারিটা কথায় বিবৃত করি.ড প্রয়াসী হইয়াছি। বিধাতা ধেন ভাঁহাকে व्यानर्ग नावी कविवाद क्रमा मकल खविवार ক্রিয়া দিয়াছিলেন। ভাঁহার লোপালনগর নিবাসী ৬ বৈদানাথ ঘোষ ঋষিতুলা মনুষা ছিলেন এবং তাঁখার জননীকে মৃত্তিমতী দয়া বলিলেও অত্যক্তি ছয় না। যদিও তিনি আহল বয়সেই পিত্মাত্হীনা হয়েন, তথাপি তিনি যে তাঁহাদের সমস্ত সদগুণের উত্তরাধিকারিণী হইঃ।ছিলেন ত্রিষয়ে অণুমাত্র নাই। তিনি নিজে সর্বাদাই বলিতেন আমার যে কিছু সৌভাগ্য ঘটিয়াছে, সমস্তই আমার পিতা মাতার পুণো। ইহা কেবল ভাঁহার মুখের কথা নহে; পিড়দেবের স্মরণার্থে তিনি নিজ ব্যয়ে কোরগরে গভাতীরে একটি হুন্দর ঘাট নির্মাণ করিয়া দেন, তাহা এখনও তাহার অসাধারণ পিতৃভক্তির পরিচয় দিতেছে। নবম বর্ষে তাঁহার বিবাহ হয়। भश्किष्ठक जिनि পতি द वज्रव करत्रन, তাঁহার কথা আর কি বলিব ৭ কোরগর গ্রামের সকল জীবৃদ্ধির মূল কারণ

এক মাত্র,তিনি বলিলে অভ্যাক্তি হর না। এরপ পতিলাভ অতি অৱসংখ্যক মহি-লার ভাগ্যে ষটিয়া থাকে। বিবাহের তুই এক বংশর পরেই তিনি স্বামীগৃছে বাদ করিতে যান। সেকালে বধুজনের জীবন নিতাল সুধাবহ ছিল না। यहिं। তাহার খভর ৺ ব্রুকিশোর দেব সম্পর গৃহন্ত ছিলেন, তৎকাল-প্রচলিত প্রধা-মুসারে তাঁহার দাস দাসী অধিক ছিল না এবং সংসারের পাকাদি সমস্ত কার্য্য পৌরাক্ষনাধারা নির্কাহিত হইত। স্মুতরাং নব্রধকেও প্রায়ক্রমে দেই বৃহৎ পরি-বারের উপযোগী অল ব্যঞ্জনাদি এক্সড-করিতে হইত। এ কার্য ভাঁহার ন্যায় বালিকার পক্ষে কতদূর তুকর ছিল তাহা ইহা বলিলেই মথেষ্ট হইবে যে ভাতেঃ হাড়ী নামাইবার সম্য ভাঁহাকে অপরের সাহায় লইতে হইত। তাঁথার বিবাহের প্রকাই ভাষার শ্বজাঠাকুরাণীর কাল হয়, স্তরাং তাঁহাকে যদ্ধ করিবার লোক কেহই ছিল না, কিন্তু তিনি নিজগুণে তাঁহার খণ্ডর, ননন্দা ও যাতৃরুন্দের বিশেষ অহভাজন হইয়াছিলেন। বৃদ্ধ খণ্ডরের পরিচ্য্যায়তিনি সমাক্ যথবতী ছিলেন এবং ভারার স্বামী কলেজ হইতে বে মানিক বৃদ্ধি পাইতেন, তাহার কিয়ুদংশ যাহা ভাঁহাকে প্রদন্ত হইত তিনি প্রায়ণ তৎসমস্তই ননস্বা ও বাত্লিগের पृথি

" ইহার আছবাসরে ইহার এক কুতবিখা সৌহিত্র কর্ত্ব পটিত।

শাধনে ব্যন্ন ক্রিতেন। শিশুকালেই তিনি অসাধারণ মেধাবিনী ছিলেন, কিন্তু তং-কালপ্রচলিত কুসংস্থারের বশবর্তী হইয়া উাঁহার পিতদেব তাঁহার শিক্ষাসম্বন্ধে কোনওরপ চেষ্টা করেন নাই। সে অভাব তাঁহার সামীর ষজে দুর হয়। ক্লিছ এজন্য তাঁহাকে সামান্য কন্ত স্বীকার করিতে হয় নাই। তাঁহার সামী পঠ-**দশা**য় কলিকাতা হইতে সপ্তাহান্তে বাটা যাইতেন। সেকালে স্ত্রীলোক দিগের দিবাভাগে স্বামীর সহিত **শাক্ষাৎকার** হইত না। পুতরাং তাঁহাকে সমস্ত দিবদ ঘৎপরোনান্তি পরিভাম করিয়া গৃহকার্য্য সমাপনপূর্বক নিশীথে স্বামীর নিকট বিদ্যাশিক্ষা করিতে হইত। এবিষয়ে অন্যের নিকট সহায়তা লাভ করা দূরে থাকুক, তিনি যে লেখাপড়। শিখিতেছেন ইহা অতি সতর্কতার সহিত গোপন করিতে হইত। তাঁহার নিজের মুখেই শুনিয়াছি যে রন্ধন করিতে করিতে তিনি অসারখণ্ড লইয়া ভূমিতলে বর্ণমালা লিখিতে অভ্যাদ করিতেন। এইরূপ ক্ট খীকার করিয়া তিনি অমগাল মধ্যে ভংকানপ্রচনিত অধিকাংশ বালালা পুস্তক অধ্যয়ন করিতে পারিয়াছিলেন। সামীর বিদেশে কর্ম হওয়ায় ভাঁহাকে প্রবাসে ঘাইতে হর। এই সমরে তিনি নানাবিধ উপাদের আহারীয় প্রস্তাত করিতে শিংৰদ ও বিশেষ য**্র** ভাছার জীক্ষাৰ্থনকে গাওয়াইতেন। লোককে ক্ষিত্ৰ প্ৰিনি বিশ্বেৰ ভাৰ ৰাসিতেন, দিসের কাৰ্যপ্ৰণালী

এই প্রবৃত্তি তাঁহার আমরণ বলবতী ছিল। ভাঁহার গৃহিণীপনা অতি প্রশংসনীয়। লক্ষীর ভাণ্ডারে কোনও দ্রব্যের অপ্রভুল ছিল না, অথচ কোনও রূপ অপব্যয় হইত না। তাঁহার যেরূপ পতিভক্তি, তেমনি সন্তানবাৎসল্য ছিল। তাঁহার অনেক-গুলি কন্যাসন্তান হয় ও একটি মাত্র পুত্ৰসন্তান জীবিত। কিন্তু ভূলেও কোনও শস্তানকে কথন প্রহার করেন নাই। দাসদাসীদিগকেও তিনি সম্ভাননির্বিশেষে প্রতিপালন করিতেন। পো-দেবায় ভাঁহার আন্তরিক যত্ন ও অনুরাগ ছিল। তিনি গৃহ দংদারে কোনও রূপ অপরিচ্ছন্তা দেখিতে পারিতেন না, আঁহাকে কখনও মলিন কিন্তা ছিল্ল বস্ত্ৰ পরিধান ক্রিতে দেখি নাই। তিনি সকল প্রকার অপুরাধ মার্জনা করিভেন, কেবল মিখ্যাকে বড় ত্বণ। করিতেন। তাঁহার দ্য়ার ইয়তা ছিল না। তাঁহার দানের কথা কাহাকেও জানিতে দিতেন না। দরিত্র প্রতিবেশী-দিগের ছঃথের কথা তিনি আঞ্চের সহিত ভনিতেন ও যথাসাধ্য তাহাদের ছঃধ মোচন করিতেন। এই উপচিকীধা প্রবৃত্তি ভাষার ক্রমেই বৃদ্ধি পাইয়াছিল। তাহার মৃত্যুর অল দিন পূর্বের তিনি শ্রন্ধা-স্পদ বিজয়ক্ত্ব্য গোসামী মহাশয়কে বলি-য়াছিলেন রাস্তার মৃটিয়াকে ও আমার সম্ভানদিগকে আমি সমান স্লেছের চক্ষে (मिर्फ नमर्थ) रहेशाहि। त्मणेखिन्तमणे হোমে গিরা তথাকার দ্যাবতী

ঐ আশ্রমের দাসা-মুশ্ধ হইয়া অর্থদাহায় করিতে প্রবন্ধ হন। তাঁহার উইলের মন্ম আমি আসক-গত নহি. কিন্তু আমার বিশ্বাস যে তাহাতে ভাঁহার পরার্থপরতার পরিচয় পাওয়া যাইবে। কোলগরের বান্দ্রসমাজে ও বালিকাবিদ্যালয়ে তিনি খ্রীতিমত টাদা দিতেন ও নিজব্যয়ে উক্ত গ্রামে একটি দাতব্য চিকিৎদালয় ছাপন করেন এবং যাহাতে এই চিকিৎসালয়ের কার্যা স্থচাক্তরূপে চলে, মৃত্যুশব্যার পড়িয়াও ভাহার বন্দোবস্ত করিবার জন্য ব্যগ্রভা প্রকাশ করিয়াছিলেন। তাঁহার প্রকৃতি অভি কোমল ও মধ্র ছিল। রোগের যত্রপায় ভাহার কোনওরপ বৈলভ্জ দেখা যায় মাই। ভাঁহার পতিভক্তির कथा कि वनिव ? ५৫ वर्मत कान धकामि-ক্রমে সামীর সহিত স্থাধ কাটাইয়াছিলেন, ভূনুধো একদিনের জনোও উভধের মনাস্তর হয় নাই। তিনি প্রকৃতপক্ষে সামীর সহধ্যিতী ছিলেন। ভাহারই অনুরোধে ভাঁহার সানী সবল ও সূত্র-শরীর থাকিছে থাকিতেই উচ্চ বেতনের লোভ পরিহার করিয়া রাজকীয় কর্ম হইতে অবসর গ্রহণ করেন ও দেশের বিবিধ হিতকর কার্ধ্যের অফুষ্ঠান করেন। এই সকল অনুষ্ঠানে তাঁহার সম্পূর্ণ সহা-সুভৃতি ছিল। তিনি প্রথমে লোক প্রচ-

লিত হিন্দুধৰ্মে বিশেষ আহাৰতীছিলেন, পরে সামীর উপদেশে স্নাতন ব্রাক্ষধর্মে দীক্ষিতা হন ৪ প্রতাহ ঐকান্তিক শ্রদ্ধার দহিত ব্রহ্মোপাসনা করিতেন। দম্পূর্ণরূপে ব্রাক্ষধর্মের উদার মর্ম্ম গ্রহণ করিতে পারিয়াছিলেন, তাঁহার অদরে কোনও রূপ দঙ্কীর্ণতা বা সাম্প্রদায়িকত। ছিল না। সামীর মৃত্যুর পর তোঁহার ধর্মভাব আরও বৃদ্ধি পাইয়াছিল। তিনি অহরহ কেবল ভগবানের নাম জ্বপ করি--তেন ও বলিতেন যে অন্য কর্মে ব্যাপ্তা হইলে আমার মনে হয় আমার সময় নষ্ট হইতেছে। মৃত্যশ্যায় শ্রানা হইরাও তিনি রোগের যন্ত্রণাকে উপেক্ষা করিয়া সান্দে বন্ধনাম গান ও উপাসনা করি-ভেন। বন্ধতঃ মৃত্যুশব্যায় তিনি স্পামা-দিগকে ভগন্তক্তির যে পরাকাঠা দেখাইয়া-ছেন, তাহা আমরা জীবনে ভূলিতে পারিব না। মৃত্যুর সপ্তাহ পুর্কে তিনি আমাকে বলিয়াছিলেন যে আমি যে কি আনন্দ নোধ করিতেছি তাহা ভূম বুঝিতে পারিবে। এখানে এই টুকু বলা আবশ্যক ষে কয়েক বৎসর পর্কে আমার হী-বিয়োগ হয়। পুণ্যবতী তাঁহ'র প্রাণ-বল্লভকে আনন্দধামে পাইয়। বিরহ যত্ত্রণা ভুলিয়াছেন। তাঁহার প্রিত্র যেন আমাদের জীবনপথের চিরসুহায় 要す!

মানব চরিত্র বিচার।

মানব প্রকৃতিতে দেবভাব ও পশুভাবের একত্র সমাবেশ দেখা যার।
ভিন্ন ভিন্ন নর নারীতেই কেবল যে ভিন্ন
ভিন্ন ভাব লক্ষিত হয়, তাহা নহে। একই
মহয়ে অবস্থা বিশেষে ভিন্ন ভিন্ন জীবের
চরিত্রের পরিচয় পাওয়া যায়। স্প্রপ্রসিক
ইংরাজ লেখক আডিসন মানব প্রকৃতিকে
সিংহ, কুর্ব, মার্জার প্রভৃতি নান।
জক্তর চরিত্র অনুসারে যে বিভাগ করিয়া
দেখাইয়াছেন, অনেক দিন হইল বামাবোধিনীতে আমর। তাহার উল্লেখ করি
য়াছি, অদ্য স্ববিধ্যাত চিকিৎসা-শাস্ত্রকার
চরক মুনির ক্বত বিভাগ প্রকটন করা
যাইতেছে।

চরক বলেন ;---

ওছত সৰত সপ্তবিধং ভেদাংশং বিদ্যাৎ কল্যা-শংশ**ৰাৎ ডং** সংযোগান্ত, ব্ৰাহ্গমেতন্তেণ্ডদ্ধং বাৰন্তেও।

অর্থাৎ শুদ্ধ সংখ্য সপ্তপ্রকার ভেদ জানিবে। তশ্মধ্যে রাক্ষাস্থ শুভকারী ও অত্যন্ত শুদ্ধ বলিয়া জানিবে। নিমে শুদ্ধস্থের সপ্তপ্রকার ভেদ ও লক্ষণ বলা যাইভেচে।

তি স্ত্যাভিসন্ধং জিতান্ত্রানং সংবিভাগিনং জানবিজ্ঞানবচনপ্রতিবচনসম্পন্নং স্থৃতিমন্তং কাম-ক্রোবলোভমানমোহেরাামব্যাপেতং স্থং স্কৃত্ত্ব্ ব্যাদ্ধাং বিশ্বাধ।

অর্থাৎ বিনি ওচি, সতাসক, জিতেজির বাঁহার কর্তব্যাকর্ত্তব্য বিভাগকরণে উৎকৃষ্ট ব্যাহান থাকে, যিনি জ্ঞান, বিজ্ঞান, বচন ও প্রতিষ্ঠমা বিবরে উৎকৃষ্ট শক্তি- সম্পন্ন, স্মরণশক্তিবিশিষ্ট, যিনি কাম, কোধ, লোভ, মোহ, ঈর্যা এবং অমর্য প্রভৃতি দোষে দ্বিত নহেন এবং বাঁছার সর্ব্বভৃতেই সমান জ্ঞান, ভাঁহাকে বান্ধ্য বলিয়া জানিবে।

ইজাধারনর তহোমর ক্ষচর্যামতিপিরতমুপশান্তমদন মানরাগছেবমোহলো তরোবং প্রতিবচন বিজ্ঞানোপধান রবশক্তি সম্পন্ন মার্থং বিদাবে।

অর্থাং যিনি বন্ধন, অধ্যয়ন, হোম এবং ব্রহ্মচর্য্যায় সতত অন্তুরক্ত, যিনি উৎক্রপ্তরূপে অতিগিসংকার করেন এবং বাঁহার আসক্তি, দ্বেষ, লোঁভ, মোহ এবং রোগপ্রভৃতির উপশম হইয়াছে, যিনি প্রতিভাসম্পন্ন এবং বচন, বিজ্ঞান ও ধারণাশক্তিসম্পন্ন, ভাঁহাকে আর্থ অর্থাং ঋসিসর বলিয়া জানিবে।

ঐগর্থবেস্তমাদেরবাকঃ যজানাং শ্রমোজ্বিনং তেজসোপেত্মক্লিইকর্মাণং দীঘ্দিশিনং ধর্মার্থ কামাভি রত্ত মৈন্দ্রং বিদ্যাৎ।

অর্থাং খিনি এপর্য্যশালী, বাঁহার বাক্য লোকে গ্রাফ করে, থিনি যাগশীল, বিক্রমশালী, গুজুঙ্গী ও তেজ্পী, আর ফিনি কোন কইকর কর্মনা করেন, ফিনি দ্রদশী এবং অর্থ, ধর্ম ও কামনার বাঁহার অত্যন্ত অহ্রাগ, তাঁহাকে ঐক্র অর্থাং ইক্রদেশ বলিয়া জানিবে।

লেখায়ৢর্ত্তং প্রাপ্তকারিণমসংহাল্মুখানবস্তং স্মৃতি-মস্তুমৈদ্বর্গালখিনং ব্যাপগ্তরাগ্দেবযোহং যামাং বিদাৎ। অর্থাং বাঁছার কর্ত্তব্য ও অকর্ত্তব্যবিষয়ে ব্যবস্থা নির্দিষ্ট থাকে, যিনি
অসঞ্চী, সামর্থ্যবান, স্মৃতিমান, ঐপর্য্যশালী এবং বাঁছার বিষয়াস্তিক, ছেম,
স্বিগ্য ও মোহ না থাকে, ত হাকে বামা
অর্থাং যমস্ব পুরুষ ব্লিয়া জানিবে।

শূরং শুচিনশুচিদ্বিণং যথানমস্তোবিহাররাঁচন-ক্লিষ্টকন্মণিং স্থানকোপপ্রসাদং বারুণংবিদাং।

অর্থাৎ থিনি বিক্রমশালী, গুদ্ধাচারী, অগুচিদ্বেশী, যাগকারী, জলবিহারে রও. অক্নিষ্টকর্মা, আর থিনি যথাযোগ্য স্থলে কোপও অনুগ্রহ করিয়া থাকেন, ভাঁহাকে বাক্ষণ অর্থাৎ বক্ষণসত্ত্ব বিষয়া জানিবে।

স্থানমানোপভোগং পরিবারসম্পন্নং হধবিহারং ধর্মার্পকামনিতাং শুচিং বাজকোপপ্রসাদং কৌবেরং বিদাং।

অর্থাং হিনি যথান্থানে মান ও উপ-ভোগ করেন, আর যিনি পরিবারসাপার, স্থাবিহারী, ধর্ম, অর্থ ও কামনাতে স্থিন-মতি, শুটি এবং যাঁহার কোপ ও অনুগ্রহ ব্যক্ত, ভাহাকে কোবের অর্থাৎ কুবেরসায় বলিয়া জানিবে।

প্রিয়ন্তারীতবানিজোলাপক প্লোকার্যায়িকেতি-ভাসপুরাণের কুশলং গদ্ধনালাকুলেপনবস্ত্রীবিহার-কামনিত্যমনস্যুক্ধ গাদ্ধনি বিদ্যাং।

অর্থাৎ যিনি গীত, বাদা, নৃত্য এবং উল্লাপকপ্রিয়, আর যিনি লোক, অংখারিকা, ও ইতিহাস প্রভৃতির আলোচনায়
অত্যক্ত নিপুণ, বাঁহার গন্ধ, মাল্য, অর্থলেপন, বল্প এবং শ্রী ইত্যাদিতে অত্যন্ত
অভিলাষ ও যিনি অস্যাশ্ন্য, তাঁহাকে

গান্ধর্ম অর্থাৎ গন্ধর্মণত বলিয়া জানিবে।
সেইরপ রোগাংশ বলিয়া রাজসসত্ত ছয়প্রকার! নিম্নে তাহাদের লক্ষণ বিবৃত হইতেছে।

শ্রঞ্ভমস্য়কমৈথগ্নস্তমৌদরিকং রৌজনমন্থ-ক্রোশকা আত্মপুত্রকমাস্বং বিদাবি।

অর্থাৎ যে অত্যন্ত বিক্রমশালী, চণ্ড, অস্থাপরতক্র, ঐশ্বন্যশালী, ঔদরিক, উগ্র, নির্দিয় এবং আত্মন্তবী, তাহাকে আত্মর অর্থাৎ অস্থ্যন্তব বলিয়া জানিবে।

অস্থিনসূব্ধকোপঞ্জিপ্রহারিণং জুরমাহারা-তিমাত্রক্তিমামিবপ্রিয়তমং অপ্রায়াসবহলমীব্রং রাক্ষসং বিদাং ।

অর্থাৎ যে অত্যন্ত অমর্থা (অপমানা-সহিষ্ণা), একবার কুলিত হইলে অনেক , দিবদ পন্যন্ত কুলিত থাকে, অল অপরাবেই প্রহার করে, অত্যন্ত ক্রুর, আর ঘাহার আহারে অত্যন্ত কচি এবং যংপরোনান্তি মাংদ্যাবিদ, নিদ্যাবর্ত্তন্ত, অত্যন্ত পরিশ্রমী ও ঈ্রবাবান্, তাহাকে রাক্ষণ অর্থাৎ রাক্ষসমন্ত বলিয়া জানিবে।

মহালসং ধ্রৈণং খ্রীরহ্দামং অন্তচিং শুচিবেদি-খ্রীকৃষ্টীস্থিতারং বিকৃতিবিধারাহারশীলা ইপশাচং বিদাং।

অধাং অভান্ত অনস, হৈণ, স্ত্রী-বিহারী, অভচি, ভচিদ্বেষী, ভীক্ষ, ভয়ক্ষর এবং বিশ্বত আহার বিধারণীল ব্যক্তিকে পৈশাচ অর্থাৎ পিশাচম্য ধ্রিয়া স্থানিবে।

জুদ্ধ পূরং প্রকৃত্ত্ভীক্ষতীক্ষমারদেবচলং সম্প্রকৃত্তি

অর্থাৎ যে মতান্ত জুন, বিক্রমশ,দী, ভীক্ন, তীশ্বপরিভাষী, যে মরেতেই মত্রগা বুৰিতে পারে এবং যে সর্বাদা আহার ও বিহারাসক্ত, তাহাকে দার্প অর্থাৎ সর্পসন্ব বলিয়া জানিবে।

আহারকামমতিত্বঃখশীলাচারমস্য়কমস্যবিভাগি-নমতিলোপুশমকম্মশীললৈ তংবিদাং।

অর্থাৎ যাহার আহারে দর্মদা অত্যন্ত অভিনাম, আচার ও উপচার তুঃথজনক, যে অস্থাপরতন্ত্র, অসংবিভাগী (কর্ত্তব্যা-কর্ত্তব্যবিধায়ক বৃদ্ধিশূন্য) লোভী এবং অকর্ম্মণ্য, তাহাকে শ্রৈত অর্থাৎ প্রেত-সম্ব বলিয়া জানিবে।

অমুবক্ত কানমজন্র মাহারবিহারপরং অনবস্থিত্য-মর্বিশমক্ষয়ং শাকুনং বিলাগে।

অর্থাৎ বাহার মনে সর্কাণা কামনা বিদ্যমান থাকে, আর যে দর্কাণা আহার ও বিহারাসক্তন, অনবস্থিত, অমর্থনশীল এবং অসঞ্চয়ী, তাহাকে শাকুন অর্থাৎ শকুনসন্ত বলিয়া জানিবে।

সেইরূপ মোহাংশ বলিয়া তামসদ্ব বিবিধভেদে বিভক্ত, যথা—

নিরাকরিকুমধমবেশমজুগুলিতারং আহারবিহার-মৈথুনপরং স্থানীলং পাশবং বিদ্যাং।

জর্থাৎ যে কেবল সর্ব্রদা নিরাকরণ করিয়া থাকে, যাহার নীচবেশ, যে নিয়ত নিশ্বীয় আহার, বিহার ও মৈধ্নাসক্ত এবং নিজাপরতন্ত্র, তাহাকে পাশব অর্থাৎ প্রসাম বলিয়া জানিবে।

ভীক্ষমব্ধমাহারপুর্মনবস্থিতমত্বস্তকামকোধং সরণশীলস্তোয়কামং মাৎভং বিদ্যাৎ।

অর্থাৎ যে ভীরু, মূর্থ, আহারলোভী, অনবস্থিত এবং সর্ব্ধদা কাম ও ক্রোধের ধারা অভিভূত, গমনশীল ও সর্ব্ধদা জল-কামী, তাহাকে মাৎস্য অর্থাৎ মৎস্যসম্ব বলিয়া জানিবে।

অলসং কেবলমভিনিবিষ্টমাহারে সর্কাবৃদ্ধাঙ্গহীনং বানস্পতাং বিদ্যাৎ।

অর্থাৎ যে অত্যন্ত অনুস, যাহার কেবল আহার ও বিহারবিষয়ে সর্বাদা অভিনিবেশ এবং আর আর বিষয়ে বুদ্ধিহীন, তাহাকে বানম্পত্য অর্থাৎ বনস্পতিসন্ত বলিয়া জানিবে।

ইতাপরিসংখ্যেতেদানাং ধলু ত্রয়াণামপি সবানাং ভেদৈকদেশে। বাাধ্যাতঃ।

অর্থাং তিনপ্রকার সত্তের অপরিসং-থ্যেয় ভেদ হইলেও আমরা কিন্ধ সেই সত্তের ভেদবিষয়ে একদেশ মাত্র ব্যাধ্যা করিলাম।*

কতকগুলি সুমাতা।

মানব প্রকৃতির একটি বিশেষ গুণ এই যে বাহাকে ভাল বাদী বায় সে উপস্থিত অনুপদ্ধিতে, বর্তমান অবর্তমানে সুকুদাই ভাহার চিন্তা মনে উদিও হয়।

সে কোন্দিন কোন্কথাটি বলিয়াছে, কোন্দিন কোন্গলটা করিয়াছে মনে পড়ে। লক্ষ্য করিয়া দেখিলে শিভ-

° ठिकि९मा मचिननी स्ट्रेट मुहोउ। बा, त्या,म ।

দীবনেও ইহার ব্যতিক্রম ষটে না। ক্সুদ্র-শিশু তার মাতা পিতাকেই সর্ব্বাপেক্ষা ভাল বাসে। পিড়া কি মাতার অমুপস্থিতিতে শিশুর মুখে প্রায়ই শুনিতে পাওয়া যায় "ভাই মা অমুক কথা বলিয়াছেন," "না ভাই! বাবা ও কাজ করিতে নিষেধ করি-য়াছেন" সমবয়স্কদিপের সহিত কালে শিভগৰ প্রায়ই এই কথা বলে। পিতা অপেকা আবার মাতার উপরেই শিশুক্লীবন অধিক নির্ভর করে। মাতার নিকটেই শিশু অধিকক্ষণ থাকে, সুভরাং মাতাকেই দে দম্বিক অনুকর্ণ করে **এ**वः জनगीत निकछिटे अधिक स्नावनात করে ও তাঁহাকেই অধিক ভালবাদে। স্তানের শ্রীর রক্ষার জন্য জননী যে-রূপ দায়ী, সভানের মনোরতি বিকাশের হুনা সুমাতার ততে।ধিক যত্ন করা কর্ত্তবা। জন্নী শৈশবকালে সম্লেহ চুম্বনের সহিত অুকুমার শিশুকে যে শিক্ষা দেন, বা প্রছেলে যে উপদেশটা বলিয়। থাকেন, শিশুর চির দিন তাহা মনে থাকে। জননী যদি স্থাধিকতা উচ্চহ্নদ্যা বুদিমতী হয়েন, ভাহাহইলে "বাবা পাপা" বলিবার সময়েই শিশুকে শিকা দিতে আরম্ভ করেন। দে যাহাইউক শিশু শিক্ষা কি? উহা কত ওক্তর বিষয় ৭ কি করিলে সুমাতা হওয়া যায় ? তাহা বামা-বোধিনীতে পুন:পুন: আলোচিত হইরাছে ও হইতেছে। পৌরাণিক সময় হইতে আধুনিক উনবিংশ শতাকী পর্যন্ত মাতৃ-ভণে কত জন ধাৰ্ষিক, জানী, বুদ্ধি-

মান, বীণ্যবান্ বীর জন্ম গ্রহণ করিয়া পৃথিবীকে পবিত্র ও মানব সমাজের প্রভৃত উপকার সাধন করিয়া গিয়াছেন, তাছাই আমরা ক্রমশঃ আলোচনা করিব।

১। স্থনীতি। ত্রেতাযুগে উত্তান-পাদ রাজনহিষী ধ্ববের মাতা সুনীতি অতিশয় ধর্মপরায়ণ। রমণী ছিলেন। বাল্যকাল হইতেই ধ্রুবকে তিনি হরি-ভক্তিই উত্তম জ্ঞান, সংসারে হরি- চরণই জীবের একমাত্র মুক্তির উপায়, একমাত্র হরিই মানবকে হুঃথ বিপদ ও অপমান হইতে উদ্ধার করিতে পারেন, যে তাঁর উপর ভারার্পণ করে তিনি তাহাকে ক্থনই নিরাশ করেন না ইত্যাদি শিকা ধ্রুবের হৃদয়ে বন্ধমূল করিয়া দিয়াছি**লেন**। যে দিন উত্তানপাদ নূপবর ঞ্রবকে অপ-মানিত করিয়া সিংখাদনারোহণ করিতে দিলেন না, ছংখিত ও অপমানিত ঞ্ব করিতে করিতে নিজ মাতা স্থনীতির নিকট গমন করিলেন। রোদন-পরায়ণা ধ্রুবের সহিত দেই রাতি স্থ-নীতির কথোপকথন দৃষ্টান্ত স্বরূপ উল্লেখ করা ঘাইতে পারে।

ধূলা-ধূসরিত ও ব্যথিত্চিত ধ্রুব রোদন করিতে করিতে মাড়-কূটারে সমা-পত হইয়া ঝাজার তুর্ব্বহারের বিশয় বলিলেন। স্মাতা স্থনীতি কিছুমাত্র অবৈধ্য না হইয়া সম্বেহ চুম্নপূর্বক ধ্রুবকে ক্রোড়ে লইয়া জাচল দিয়া ধূলা মুহাইয়া দিলেন ও কহিলেন "বৎস! ভবিতব্য ধঞ্চন করিবার দেবতারও সাধ্য

নাই, তুমি কোন্ ছার ক্ষুদ্র মানব মাত। ঈশ্বর জীবের কর্ম্ম দেণিয়া ফল দেন, আমে মন্দভাগিনী পূর্ব জন্মে অনেক অপকর্ম করিয়াছি তাই এজন্মে ভগবান প্রায়শ্চিত করাইতেছেন। হতভাগিনীর সম্পূর্ণ প্রায়ন্চিত্তের জন্যই তোমাকেও कहे मिट्टइन। মানবের নিকট ইহার প্রতীকার হইবেন।। দ্যাম্য ছরিই এ বিপত্নর করিতে পারেন। ভূমি একান্ত ভাবে ভাঁহারই শরণাপুর হও। অনন্ত দয়াময়, অনাথনাথ পদ্ম-পলাশলোচন নিশ্চয়ই দয়া করিবেন: বংদ! পূর্ববিকালে জাটীল নামে এক অনাথ বাহ্নণ কুমার ছিলেন। লোকা-नम श्रेट किছ्नत এकी प्रताना ভাঁহার। বাস করিতেন। অল বয়সে তাপসকুমারের পিতৃবিয়োগ ইইলছিল, তজন্য তাহাকে একাকী শিক্ষার্থপাঠ-শালায় আসিতে হইত। পঞ্ম বংসরের निक अठील व्यतना मधा निया धकाकी শাসিতে ভয় পাইত। তাই জটীলমাতা विनश पिशा छिलान "फिंगिन वरन यथन ভয় পাইবে তথন "দীনবন্ধু রশা কর" বলিয়া ডাকিল, ভাষা ইইলে তিনি ভয় দূর করিবেন"। বালক জটীল মাতৃশিক্ষা-মত "দীনবন্ধু আমাকে রক্ষা কর, গভীর অরণ্য পার করিয়াদাও" বলিয়া সরল বিখাসের সহিত ডাকিলেই ভক্তবংস্ল দীনবন্ধু প্রকাশিত ইইয়া তার্থাকে অরণ্য वारम ७ भागितात बाम स्टे(७ क्नीरत शोहरिया, जानि-

তেন। বালক জ্ঞাল দীনবস্থুর শিক্ষামত কাহাকেও ওকথা বলেন নাই। দে নির্ভন্ন নিশ্চিন্ত, তার এখন ভয় নাই, ভগবানকে পাইয়া দিব্য চকু (স পাইয়াছে। এইরপে এক বৎসর পরে জ্ঞটীলের শিক্ষকের পিতৃশ্রাদ্ধ উপস্থিত। শিক্ষক গ্রান্ধাদি করিলে প্রত্যেক ছাত্র ফলা-হারের উপকরণ দ্রব্যের এক একটীর ভার লইলে আন্ধণ ফলাহার করাইবেন ঠিকু হইল। তদহুসারে দরিদ্র বালক জটীলের উপর দধি যোগাইবার আদেশ হইল। জ্ঞটীল জানিত গৃহে মাতা শুন্যহন্ত, গাভীও নাই যে দবি প্রস্তুত করিখেন। মাতাকে দধি চাহিলে। সামীকে স্মার্ণ পূর্ব্বক রোদন করিবেন মাত্র। এই সকল চিন্তা কবিয়া স্থবোধ বালক জ্জীল भीन**रक्**त निक्छे मित्र हाहित्सन । मीनदक्त একটা ক্ষুদ্র ভাণ্ডে দধি দিয়া বলিলেন "এই দৰি অনুপম স্থমপুর, এক অজুলী পরিমাণ দধি লইয়া প্রত্যেকের পাত্রে দিবে, পরিপূর্ব ইইবে। এদিকে ফলাহার आवस हरेलारे कींगलत छेलत मि আনিবার আদেশ হইল। ভাও হত্তে জটীল দৰি পরিবেশনে উদ্যত দেখিয়া সহপাঠীরা অঙ্গুলী সঙ্কেত করিয়া হাসি-লেন এবং শিক্ষক মহাশয় কুদ্ধ হইয়া একটা বেত্রদারা জ্বটালকে প্রহার করিয়া विलियन "करवाध। यनि मधि मिर्छ না পারিবি পূর্বের বলিলি না কেন 🤊 এই ভাণ্ডের দধিতে কি কখন এত লোকের ভোকন করান

হতভাগ্য আৰু আমাকে ৰথেই লব্জায় ফেলিল।" বালক জটীল বলিলি "মামি দধি বন্টন করিতেছি, ভয় আপুনাকে লক্ষা পাইতে হইবে না।" এই বলিয়া যথাযোগ্যরূপে ঋষিকুমার कारील पृथि व हैन कतिशा अति शर्भ पृथि-ভাগু শিক্ষকের হস্তে দিলেন। ব্রাহ্মণ-গুণ পুনঃ পুনঃ দধির প্রশংসা করিলেন। প্রিপূর্ব দ্ধিভাগে দেখিয়া বাক্ষণশিক্ষক আশ্রেষ্টা হট্যা জটীলকে দিধি কোথায় পাইলে গ' জিজাসা করিলেন। বালক সরল ভাবে সমস্ত বলিল। বৃদ্ধ আত্মণ ভ্রিয় ভূটীলকে সহস্র আলিম্বন করিয়া বলিলেন <u>ভাতা</u> তোমাকে ধন্যবাদ, ঈশবকে ভূমি প্রভাই দর্শন কর, ভোমার ভাগ্যের সীমা নাই। ভোমার মত ছাত্র পাইয়া আমিও ধন্য হইলাম। বংস ! ভোমার দীনবন্ধকে একবার মেখাইতে ब्रहेरद । अतुल বালক জ্ঞাল ওকর কাকৃতি মিন্তি ভ্রিয়া वहेशा भीनवन्नाद ভাঁহাকে সঙ্গে দেখাইলেন। বুদ্ধ ভাপদ দেখিলেন অন্যায়রূপে ভটিলকে তিনি যে বেলাছাত করিয়াছেন সেই চিত্র ভক্তবৎসল হরি নিজ পৃষ্ঠে গ্রহণ করিয়াছেন। দয়াময় হরির কুপায় তাঁহার দিব্যচকু হটল। শিষোর সাহায়ে ভাঁহার ভব-বন্ধন মোচন হইল। ভজ্জনাই বলি-তেতি বৎস ধ্রুব। হরি ভজ্জনে দেশ কাল সময় অসময় নাই। পার হইবার ও কট ছ:খ দুর করিবার একমানে মহোস্ধি হরিনাম চিলা। ত্রি কাংমনে তাঁর শরণ লও, সরলভাবে আপুনার প্রাণের ব্যথা তাঁকে জানাও, তিনি নিশ্চয়ই তোমাকে অভীষ্ট বর প্রেদান করিবেন। বংস। সংসারের लाकरक दृश्य कष्टे कानाईरम (कह নিদ্রপ করে, কেছ বা ভৎ সন। করিয়া প্রভাত্তর দেয়, এক মাত্র শান্তিদাতা হরি বিনা কেন্ট শান্তি দিতে পারে না। সুমাতা সুনীতির সাভনাবাক্যে দথপোপ ক্র উৎসাহিত্চিতে হরিসাধনার জন্য মাত্রতার প্রথান করিয়া বন্মধ্যে প্রস্থান করিলেন। (ক্রম্প:)

নৃতন সংবাদ।

১। কলিকাত। মিউনিসিপ্যালিটী
এক বংসবের জনা কলিকাত। মৃক-বর্ধির
বিদ্যালয়ে মাসিক ১০০ টাকা করিয়া
সাভাষ্য মঞ্জুর করিয়াছেন। বিদ্যালয়ের
একজন শিক্ষক শিক্ষার্থ শীক্ষ বিলাভ
যাইবেন।

২। কোরিয়া লইয়া জাপান ও

চীনে যুদ্ধ ৰাধিয়াছে। জাপানই যুদ্ধ বাধা-ইবার মূল।

 ইউরোপের রাজ্ঞীদিপের মধ্যে ডেন্মার্কের রাজকুমারী এবং পর্ত্তৃপালের রাণীই দর্মাপেকা দীর্ঘজীবনী।

৪। পাতিরালার মহারাজের পাট-রানী একজন খেতাফিনী, ইহা সকলেই জানেন সৈ দিন ভাওয়ালপুরের নবাবঞ দেখা দেখি এক ইংরাজ রমণীর পাণি-কাহণ করিয়াছেন।

ে। মহারাণী মধন সিংহাসনে অধিরোহণ করেন, তথন ইংরাজদিগের মধ্যে
শতকরা ৪১ জনেরও অধিক নিজের
নামটি পর্যাস্ত লিখিতে জানিত না,
থাকণে নাম দত্তথত করিতে পারে না
থামত লোকের সংখ্যা শতকরা ৭ জনের
ভাষিক হইবে না।

ভারতবন্ধু মৃত মহান্ধা বাডল দাহেবের থাতিমূর্ত্তি স্থাপিত হইয়াছে। এই উপলক্ষে সেথানে ২০ হাজার লোকের সমাগ্রম হইয়াছিল। প্রতিমূর্ত্তি এমন ভাবে প্রেক্ত করা হইয়াছে যে বাডল বেন মহাসভায় দাঁড়াইয়া বক্তৃতা করিতেছেন। ইংলণ্ডের জন সাধারণের ও ভারতবাসীর তিনি যে অক্বতিম বন্ধু ছিলেন, প্রতিমূর্ত্তির নিম্নে দে কথা ক্ষিতে হইয়াছে।

१। কুলু অঞ্চলে পাহাড় ধ্বংস হত-য়ায় সম্প্রতি ৯ জন লোক, ৭ টা ঘোড়া এবং প্রায় ২৫০০ ভেড়া চাপা পড়িয়া মরিয়াছে। ৮। চীনের কোন কোন সম্প্রদার সঞ্জাতীর রমণীদিগকে নিরামিষ আহার করিতে উপদেশ দেয়। তাহারা বলে নিরামিষ থাইলে স্মার তোমার রমণী হইয়া জন্মগ্রহণ করিতে হইবে না।

৯। দাক্সনীর রাজ্ঞী তিন জন ডাক্তার নিযুক্ত করিয়াছেন, তাঁহারা কেবল দরিদ্র রোগীর ঔষধাদি ব্যবস্থা করেন।

> । একজন ফরাসী ডাক্তার এক-জন স্ত্রীলোকের লুপ্ত ওঠের হানে একটি নুতন ওঠ নির্মাণ কি য়া দিয়াছেন। স্ত্রী-লোকটির হাতের চামড়া কাটিয়া লইয়া ঐ ওঠ নিবিত হয়।

১১। বরদার গুইকুমারের জনৈক
সহচর মিপ্তার আব্বাস ভয়াবাজীর পত্নী
সার উইলিয়ম ওয়েডরবরণ ও দাদাভাই
নৌরজীর সহিত মহাসভা দেখিতে গিয়াছিলেন। মুসলমান রমণীদিগের মধ্যে
তিনিই এই সর্ব্ধ প্রথম মহাসভা দর্শন
করিলেন।

১২। মাননীয় ডবলিউ, দি, বনা-জ্জির কন্যা মিদ্ এদ্, এ, বনাজ্জি বিলাভ হইতে "বেঙ্গণাব" হইয়া এদেশে প্রত্যাগত হইয়াছেন।

বামাগণের রচনা। শোক সঙ্গীত।

পরাণে সংহনা লেখনী সরেনা কোপায় বভীক্ত মুম অমূল রডন !

तूक (काउँ यात्र कात्र, कात्र, कात्र ! জভাগী দিদির তুই কাঙ্গালের ধন ;
কি দোষ পাইয়া
গেলিরে ছাড়িয়া
যেন রে জপরিচিত পাছের মতন.

७०० मर 1 खन्नी-छोवन. वक-छित्रा-धर्म ! তোরে বিদর্জিয়া ধিক, ররেটে জীবন। সে চাকু আনন ক্ৰমল লোচন সুবর্ণ সুবর্ণ, নবনীতোপম দেই, বাসনা আমার আর এক বার (मिथ धिम मग्ना करत (मशांस दत्र दक्ष । বড়ই হৰ্জন কুতান্ত শমন জানিরে श्रमय ভার কাঠিনোর গেই, তবু ধরি পায় কাল মহাশ্য়! প্রাণের যতীনে মোর ফিরাইয়া দেহ। প্রাণের ঘতীন। অভ্ৰেকত দিন হেরি নাই বাপ তোর চারু চন্দ্রানন। ও বচন স্থা ছরিত রে ক্ষুধা 'মাসীমা' বলিয়া ডাক জুড়াক জীবন। ঈশ্বর-ক্রায় ध मृत्रा खनय, পুত্র-স্নেহ সরোবর তোদের কারণ। ভরা পরিমল পূৰ্ব শতদল ফুটেছিল চারি ভাই হৃদয়-নন্দন, পাবাপ হাদয় धम निव्रमव নিশ্বম হইয়া তোবে করিল হরণ। বড সাধ মনে শুশান শগুনে তোগের সমূথে আমি ত্যক্তিব জীবন,

बुध। र'ल माध

আমার সম্মুধে তোর অভিন শরন !

ত্ৰি প্ৰমাদ।

বড় সুধ-আশে भविषयं भारम বাঁধি ভৌরে মাতা তব সানন্দে মধন, (সেই) বন্ধন ছিড়িয়া গেলে পলাইয়া त्म ठाक लेडिका इनं जुडाल পडन! সেই কচি মেধে পর মুখ চেয়ে বহিয়া বৈধব্য জালা কাটাবে জীবন, আহা! চাক্ৰালা নিতান্ত সরলা वृत्यांना तम मःमारमेन कृष्टिन चंटेन ; व्यक्ति म श्रा ! ভাতৃভায়া পায় কিরূপে করিতে হয় মন্তক পুঠন, याक-नन भारम অমুগ্রহ জালে कि क'रत्र कदिए एर्ट मानम त्रभन; হায়। অভাগিনী আত্ত বুৰোনি কি অমূল কঠহার হরিল শমন !

জগতের সার সামী কণ্ঠহার হারায়েছ বংগে। ছুমি বুঝিবে যখন, পূর্বেই তাহার থেন রে তোমার

পাষাণে বেঁধেছি বুক তবুও এখন বলিতে সে কথা रकन नात्र वाया १ পতিহীনা নারীর ত মঞ্চল মরণ। ভূইরে সরলা বালা বুকে পোৰি শত আলা ক্ষেমনে কটিাবি কাল ? ভাই ডোর তরে অভানী মানীম। মৃত্যু আশীর্মাণ করে।

बिक्युपिनी श्राप्त

বঙ্গমহিলাগণের রচনার নিমিত্ত বারু ব্রজমোহন দত্ত স্থাপিত পারিতোষিক।

ইহা দ্বিরীকত হইয়াছে যে ১৮৯০-৯৪
আব্দের পারিতোষিক দান কালে ১টি ৮০
টাকা ও আর একটি ৪০ টাকা করিয়া
ছইটি পারিতোষিক প্রদন্ত ইইবে। "মন্ত্র্যা
ও প্রশুর প্রতি দয়া" বা "শিশুদিগের
নীতিশিকা" এই চুইটি বিষয়ের অন্যতরটি
অবলম্বন করিয়া প্রবন্ধ রচনা করিতে
হইবে।

- পারিতোষিক দানের নিয়ম—
- (১) বঙ্গমহিলা মাত্রেই পারিতোষিক-প্রার্থিনী হইতে পারিবেন; এতৎসথদ্ধে বয়ুসের কোন নিয়ম নাই।
- (২) পারিতোষিকপ্রার্থিনীগণকে বঙ্গ-ভাষাতেই হউক বা সংস্কৃত ভাষাতেই কোন একটি নিশ্বিষ্ট প্রবন্ধ রচনা করিতে হইবে।
- (৩) এই বিজ্ঞাপন প্রচারের তারিথ হইতে ছয় মাসের মধ্যে প্রবন্ধগুলি বিচারের জন্য সেণ্ট্রাল টেক্টবুক ক্মিটির নিকট পাঠাইতে হইবে।
- (৪) প্রত্যেক প্রবন্ধের সহিত পারি-ভোবিকপ্রার্থিনীর স্বামী,পিতা বা অভি-ভাবককে এই মর্ম্মেপত্র লিণিয়া পাঠা-ইতে হইবে, যে, ভাঁহার ব্লিখাসমতে, রুচয়িত্রী, ঐ প্রবন্ধ রচনা কালে, প্রকাশ্য বা অপ্রকাশ্য ভাবে কোন প্রকাশ সাহাষ্ট গ্রহণ করেন নাই।

১৮৯৪ অব্দের ৩১শে ডিসেম্বর তারি-থের মধ্যে কলিকাতায়, প্রেসিডেন্সি নার্কেলের স্কুল সম্হের ইন্পেক্টরের আফিসে, সেণ্ট্রাল টেক্টবুক কমিটির সম্পাদক মহাশয়ের নামে এই প্রবন্ধ পাঠাইতে হইবে। এই প্রবন্ধের মোড়-কের (কভারের) উপর "ব্রজ্মোহন দন্ত পারিতোষিক রচনা" এইরূপ লিথিত থাকিবে। যাঁহার রচনা সর্ক্ষোৎক্রই হইবে কলিকাতা প্রেজটে তাঁহার নাম প্রকাশিত হইবে।

যিনি একবার পারিতোযিক প্রাপ্ত হইয়াছেন, তিনি ইচ্ছা করিলে জন্য বৎসর পুনর্কার প্রবন্ধ রচনা করিতে পারেন। যদি তাঁহার রচনা সে বারেও সর্কোৎকৃষ্ট হয়, তাহা হইলে তাহার নাম কলিকাতা গেজেটে প্রকাশিত হইবে, কিছু পারিতোষিক, রচনার গুণারুসারে তাহার পরবর্তিনী মহিলাকে প্রদত্ত হইবে।

ষদি বিচারকগণ সর্ব্বোৎকৃষ্ট রচনা-টিকেও পারিভোষিকের উপযোগী বলিয়া বিবেচনা না করেন, তাহা হইলে পারি-ভোষিক প্রদত্ত হইবে না।

এ, ক্রফ ট, বাঙ্গালা দেখের শিশাবিভাগের ডিরেক্টর। কলিকাতা ১১ কুলাই ১৮৯৪।

বামাবোধিনী পত্ৰিকা।

BAMABODHINI PATRIKA.

"कन्याय्येवं पालनीया जिल्लायातियत्रतः।"

क्यारक भानन कतिरवक ७ यरङ्गत महिछ निका मिरवक ।

७৫७ मःश्रा

ভাদ্র ১৩০১—দেপ্টেম্বর ১৮৯৪।

৫ম ক**রা।** ৩য় ভাগ।

वागारवाधिनीत এक जिर्भ करमारमव।

মজনবিধাতী প্রমেশ্বরের বামাবোধিনী ৩১ বংসর পূর্ণ করিয়া ৩২ বর্ষে প্লার্পণ করিল। এই বর্ষ রুদ্ধির জন্য আমরা সেই দেব-দেবের চরণে সর্ব্বান্তঃকরণে প্রণত হই। তিনি ভাঁহার এই ক্ষুদ্র সেবিকার মস্তকে ভভাশীৰ বর্ষণ করুন—ইহার সকল আপদের শান্তি হউক এবং তাঁহার সেবায় বয়োবৃদ্ধির সহিত ইহার অনুরাগ ও শক্তি বর্দ্ধিত হউক। বাঘাবোধিনীর আহক আহিক। পাঠক পাঠিকা এবং সহাত্ত্তিকারী ও হিতৈষী সকল শ্ৰেণীর ভাই ভগিনী-দিপকেও আজি সাদরে ও কৃতত্ত হৃদরে অভিৰাহন করিতেছি, তাঁহারা এই পূৰ্বন ক্রিয়া পত্ৰিকাকে প্ৰসঞ্চক্ষে ইহার ভাভোছতির শহায়তা করুন।

इडीना वन्रामान इडीनिनी वमगी-

দিগের হিত্যাধন উদ্দেশ্য করিয়া এই ক্ষুদ্র পত্রিকা যে শতাব্দীর প্রায় তৃতীয়াংশ काल कीवन शांत्रण कतिए ममर्थ रहेन, ইহা সামান্য সৌভাগ্য ও আনন্দের কথা নহে। বামাবোধিনীর এই দীর্ঘ জীবন নারীজাতির প্রতিইদেশ্য সাধা-वर्षत स्वरम्ब निमर्गन । वामारवाधिमीत क्य जगरा अम्मान व्यक्तित्व द्य অবস্থা ছিল, আজি ভাহার কত ভভকর পরিবর্ত্তন হইয়াছে, তাহা ভাবিশে স্থান্য আনমে পরিপ্রত হয়। বে জীলোক-গণের বিদ্যাশিকা হওয়া উচিত কি না, এই তর্ক লইয়া আমরা পত্রিকার অনুষ্ঠান করিয়াছিলাম, আজি সেই দ্বীলোক্পণ শুশিক্ষিতা ও বিশ্ববিদ্যালয়ের সর্ব্বোচ डेलाबिएड कृतिका। खाँशमित्मन मध्या কত শিক্ষয়িত্ৰী, কত কবি, কত এছকৰ্ত্ৰী,

কত চিকিৎসাপারদর্শিনী ও কত নরসৈবা-ব্ৰতে দীকিতা त्रमधीत অভ্যাদয় হইতেছে। বঙ্গনারীগণ আর এখন মুং-পিওরূপে হের নহেন এবং দাসীর ন্যায় পুরুষের কুপাপাত্রী নহেন। নারীর मर्गामा ७ मचानना कनमगांक मगिक বৰ্দ্ধিত হইয়াছে এবং পুঞ্চবের সহিত জ্ঞান, ধর্ম, ভোগ ও মোক্ষে তাঁহার সমান জ্বধিকার ক্রমশঃ তাহা স্বীকৃত হইতেছে। ব্রীজাতির অশেষ হু:খ ও তুর্গতির কারণ বাল্য বিবাহ, বছবিবাহ প্রভৃতি সামাজিক কুপ্রথা সকল কেমন ক্রমে ক্রমে নিঃশব্দে তিরোহিত হইতেছে! আমরা আশা করিতেছি স্ত্রীজাতির জ্ঞান, ধর্ম ও কৃতিয যে পরিমাণে বর্দ্ধিত ङहेर**व.** ⊅हे পরিমাণে ভাঁহারা উচ্চহইতে উচ্চতর অধিকার লাভ করিবেন এবং স্যাজের উৎকুষ্টভর অদ্ধাঙ্গরূপে পরিগণিত ও পুঞ্জিত হইবেন।

গত ৩১ বর্ষের মধ্যে বেগবান্ পরি-বর্ষ্তনের স্বোতে পড়িয়া ক্রীজাতির সকল বিষয়ে কেবলই উন্নতি হইয়াছে, কোনও

विवत्त्र व्यवनिष्ठ दश्र नाहे, अक्षा आमता বলি না। মানব সংসারে অবিমিশ্র সুধ সৌভাগ্য কোথায় আছে ৷ বিশেষতঃ পরিবর্তনের যুগে ভাহার আশা ছরাশা মাত্র। বলনারীদিগের আংশিক উন্নতির সঙ্গে সঙ্গে আংশিক অবনতি লক্ষিত হইতেছে। প্রাচীনাদিগের ধর্ম-নিষ্ঠা, বিনয় ও লজ্জাশীলতা, সরলতা ও স্বার্থত্যাগ, ধৈর্য্য, সহিষ্ণুতা ও কর্মঠতা এবং সর্বোপরি গুরুভক্তি ও পরিজনের भिराय **आयुरिमर्कन ध मकल १७८**५व কতক অপচয় দৃষ্ট হয়। কিন্তু আমরা আশা করি এ ক্তি দাময়িক মাত্র এবং সুবুদ্ধি নব্যাগণ আংশিক উন্নতিতে কখনও সভাষ্টা হইয়া থাকিবেন তাঁহার। জ্ঞানের আলোকে আপনাদের অবস্থা প্রকৃতরূপে বুঝিতে শারিবেন এবং আপনাদিগের সর্কাঙ্গীণ উন্নতি সাধনে সমর্থা হইবেন। ভগ্ন প্রাচীন ঘর ভাক্তি-তেছে, কিন্তু তাহার উপর যে গৃহ নির্শ্বিত হইবে, বিধাতার কুপায় তাহা সর্কাঙ্গস্তব্দর श्रदेश

সাময়িক প্রসঙ্গ।

দান—(১) সিছু দেশের মুসলমানদিগোর উচ্চশিকার সাহাব্যার্থ ধ্যেরপুর
েইটের মীরক্ষেত্র মহক্ষদ ধা ৩০, ত্রিশ
হাজার টাক্য হিরাছেন। এই টাকা
হাজার ছাত্রহান্তির ব্যবহা হট্ডে।

(২) কয়লার খনির হু:ছ লোকদিগের সাহাব্যার্থ অধ্যাপক টিগুলের পত্নী ৫০ এবং স্বরং ইংলগুেশ্বরী ৫০ পাউক্ত অর্থাৎ প্রায় হাজার টাকা করিয়া দান ক্রিয়া-ছেন।

জলে ডোবার আশ্রব্য চিকি-**্সা — সঞ্চী**বনী লিধিয়াছেন জলে ডুবিয়া সংজ্ঞাহীন হইলে রোগীর **ठो**निया वाहित कतिलाहे चारताना हम, স্প্রসিদ্ধ ডাক্তার লেবোর্ড এই নৃতন প্রণালী আবিষার করিয়াছেন। হাতে পরিকার নেকড়া জড়াইয়া জিব টানিয়া বাহির করিলে উদরস্থ জল সমুদয় বাহির हरेब्रा वहित्व अवः त्त्रांगी कृत्य चान প্রশাস ফেলিয়া আরোগ্য লাভ করিবে।

কালা ও বোবার মহাসভা— গত ২৫ এ জুলাই ইংলতে কালা ও বোবা ধর্মপ্রচারকদিগের এক বিরাট সভা হইরাছিল এবং আমেরিকা ও ইউরোপের নানা স্থান হইতৈ প্রতিনিধিগণ আদিয়া তাহাতে উপস্থিত হন। ইহারা ০ দিন নীরবে কেরল অনুনি সঙ্কেত দারা কথোপকথন করিয়া স্ব স্থানে প্রস্থান করিয়াছেল।

গ্বর্ণমেন্টের ভারত এই ধণের পরিমাণ প্রায় ১০৫। কোটা রাজকোষ হইতে होका, हेशंत्र अना न्यवंदर है প্ৰভূত স্থদ দিতে হয়। স্থাপের হার কমাইবার ব্যবস্থা করিয়া সুবুদ্ধির কার্যা করিয়াছেন। কিন্তু বে স্কল স্থায়ী দাতব্য ফণ্ড এই সুলে চলিতেছে, তাহার মায় কমিয়া অনুষ্ঠা-ভাৰিগের অভীষ্ট কার্যোর ব্যাঘাত না हब्र, त्म विद्युष्टना क्वा क्छेरा।

বিবী বেসান্টের পুনরাগমন-বিবী বেসাণ্ট অট্টেলিয়া দর্শন করিয়া

व्याभागी नत्त्रपत्र मारम भूनतात्र खात्ररङ পদার্পণ করিবেন।

545

রাণী হাটাসুর সিংহাসন-রাণী হাটামু খুষ্টের জ্বের ২৬০০ এবং मुनात कामात २० वर्णत शृत्व मिन्नत রাজ্য করেন। তাহার দিংহাসনের পদগুলি স্বর্থমন্তিত এবং পৃষ্ঠদেশ রৌপ্য-খচিত। ইহা অত্যন্ত দীর্ণ হইলেও ব্রিটিব মিউসিয়মে সম্পত্তি সমাদরে স্থাপিত হইয়াছে।

নব-রাজ কুমার—ইংলওেখরীর প্রপোত্র ও ভারতের ভাবী স্মাট ইডি-মধ্যে অনেক সম্ভ্রান্ত লোকের দর্শন ও দর্শনী লাভ করিতেছেন। মহারাণী স্বয়ং ভাঁহাকে ক্রোড়ে লইয়া মুধচুম্বন পূর্ব্বক ভভাশীয় দান করিয়া কত সুখ অহুভব করিয়া**ছেন,** তাহার **সুথে আমরা** यूची: त्राख्युती चानम्यूर्व, मत्न मत्त সম্ভান্ত ও পদস্থ লোকেরা স্থাসিয়া ধাত্রী ক্রোড্ছ রাজণিও দর্শনে আনন্দ প্রকাশ করিরা যাইতেছে। চিরংগীব রাজপুত্র:।

মহতের মৃত্যুৎসব—মৃত করাসী প্রেসিডেণ্ট কার্ণোর সমাধিযাতা দর্শনে কিরূপ লোক সমাগম হইয়াছিল, ইহাতেই বুঝাষায়---এক ব্যক্তি ২৫ হাজার টাকা দিয়া রাস্তার ধারে ৭টা জানালা ভাড়া नहेब्राह्नि, उथाय मर्नकिमिटगत (मर्विवात স্ত্রিধা হইবে বলিয়া। সে ব্যক্তি অস্ততঃ শ্বিভণ টাকা লাভ করিয়াছে।

রুহৎ পরিবার—ভূতপূর্ব বছলাট লাসভাউনের শাভড়ী ঠাকুরাণীর ৮ং

ক্ষমোৎসব হইরাছে। ইহার পুত্র পৌত্রাদির সংখ্যা ১০১ জন।

বাদালী বীর—বারু স্বেশচন্ত্র বিশাস কলিকাতার ইটালিনিবাসী। তিনি স্পেন হইতে যুদ্ধ বিদ্যা শিক্ষা করিয়া বেজিলের স্থাধীনতা সাধনের সহায়তা করিতে যান। তথায় এক সেনাুখ্যকের পদাভিষিক্ত হইয়া বিশেষ বীর্থের পরি-চর দেন। ইনি জীবিত আছেন এবং আরও পৌরবের কার্য্য করিয়া স্বদেশের মুখো-জ্ঞল করিতে পারিবেন। আমরা জগদী-খরের নিকট ইহার দীর্ঘ জীবনের প্রার্থনা করি।

মাতৃভক্তি ও মাতৃ-উপাসনায় সন্তানের মুক্তি।

"বদ্পর্ভে জায়তে লোকে! যস্যাঃ স্লেহেন জীবতি। সা সাক্ষাদীশরী মাতা কে!হন্তি মাতৃসমে! শুরুঃ ।"

ভগবভক্তি ও ভগৰত্বপাসনায় মানব মুক্তি লাভ করিয়া থাকে, এ কথা অনেকে জানেন, দলেহ নাই। কিন্ত প্রতিক্বতিরূপা, ভগবানের সস্তানের মাকাতে দাকাৎ **देश**दी মাত্দেবীর প্রতি ভক্তি ও উপাসনায় স্থান যে মোক্ষণাডের অধিকারী হয়, সে কথা বোধ হয় আজিকার দিনে অনেকেই ব্রঝিতে পারেন না।—তাহা পারিলে, মাতৃভক্তির থনি, আধাভূমি ভারতবর্ধ আজি ভক্তিথীন সন্তাননিগের জন্য মকু মিপ্রায় হইত না! তাহা হইলে মাতৃভক্তি অবহেলা করিয়া ভ্রান্ত মানব ্মক্সবাজের উচ্চ সীমায় উঠিতে চাহিত ভাহা হটতে ভারতলক্ষীও ভারতকে অভিশাপ দিয়া অতল জলে प्रविष्ठन ना! य रमण मखारात क्रम्र মাড়ভকি আছে, সে দেশে[া]মর্গের চিত্র चार्छ।---१४ मानव शक्छ মুক্তির

আকাজ্ফী, দে আগে মাতৃতক্ত হউক; সেযাহা চাহে তাহাই পাইবে।

সন্তানের প্রক্রাফ দেবতা। মর জগতে যে সকল মহত্ব—যে সকল দেবত্ব ছম্প্রাপ্য, বহু সাধনা-ফলে কোনও মানব যাহাতে কচিৎ দিদ্ধি লাভ করিয়া "নরদেবভা' আথ্যা পাইয়া দেই অপার্থিব মহনু, সেই অনোকিক দেবত, দংসারে মাতৃহ্বদয়ে ও মাতৃ-চরিত্রে মিলে। মানবশিশু যে রকম জড়ও চেতনের মধ্যবন্তী হইয়া জগতে আইসে, তাহাতে মাতার ন্যায় অটল ন্বেহম্য়ী, মাভার ন্যায় সহিষ্ণু, মাভার ন্যায় আনুবিশ্বতা ও আন্ততাগিনী দেবীকে জনয়িত্রী রূপে না পাইলে সে অসহায়ের জীবনধারণ বা মনুষ্যবলাভ व्यमञ्जय इरेश छे छै। अरे व्यवस्थितिना-রবের পন্য ভগবভী বিশব্দননী নিজের चार्र्स माक्-अपम्र भवेन करत्त्।

याज्यूदि अञ्झा, अनेत्राव्यका ७ मर्सःमश মৃর্ব্তি! এ লগতে এমন ক্লেশকর, এমন আনাসসাধ্য কি কাল আছে যে সস্তানের ছুংখ দূর করিবার জনা, সন্তানের মঙ্গল-দাধনের জন্য মা তাহা করিতে বিষ্ণী হইয়াছেন ? চল্ৰ স্থ্য নিৰিয়া যাইতে পারে, গ্রহ উপগ্রহ ধসিয়া পড়িতে পারে, পৃথিবীর মাধ্যাকর্ষণশক্তিও বিল্প হইতে পারে-কারণ এসকল বিপ্লবে বিশ্বকৃষ্টি রকা করিতে স্টিকর্ডা স্বতম উপায় কিন্ত ভগবানের করিবেন, বিধান প্রেমশক্তিরপিণী জননীদেবী কোনও দিন সন্তানের সর্বাদীণ মদলায়গ্রানে বিৰুচা হইতে পারিবেন না —ভাহা भावित्व विश्व . क्यार भवः म इहेरव, मर्ख-শক্তিম∖ন্ ভগবান্ সে দিন "নিকুপায়'' হইবেন।

এ জগতে ভাতা ভগিনী, সামী স্ত্ৰী, পুত্র কন্যা প্রভৃতি সকলেই মানবের বিশেষ আত্মীয়, সকলেই স্লেহ, প্ৰীতি ও ভতি দিয়া থাকেন; কিন্তু মায়ের মত ঢালিভে. অপিনা ভুলিয়া ভালবাসা মায়ের মত মর্ত্তালোকের অতীত স্নেচ বিলাইতে, মায়ের মত ভাল বাসিয়া জগতে আর আস্থবিদর্জন করিতে, च्चारह १ मास्त्रत মত শাধ্য <u>কাহার</u> স্ভানের উদর পূর্ণ হইলে নিজে শত উপবাসেও ভৃত্তা থাকিতে, মায়ের মত मूर्थ निष्यंत्र ज्ञान इः ४ সত্যানের উপেকা করিছে, মারের মত স্কানের উন্নতিতে নিষ্কের স্কল জ্বন্তাব ভূলিতে,

ৰগতে আর কাহার সাধ্য আছে ঃ মারের মৃত বিপদ-মা স্ভানের উদ্ধান-কামনার, বুক চিরিয়া রক্তধারার দেব-প্রজা করিতে, রোগকাডর रुइंद সন্তানকে যমগ্রাস আনিতে, জগতে আর কাহার শাধ্য আছে ? মায়ের স্থান অধিকার করিন্তে পারে, এমন কে কোধার আছে?— লগতে এমনও দেখা বার, সম্ভানের গুরুতর দোবে পিতা তাহার উপরে বীত-স্থেহ হইয়াছেন; এমনও দেখা বায় সংসার-চক্ত-নিপীডিত ত্রাতা ভগিনী-দিগের ভাড়প্রেম বা ভগ্নী-ক্ষেহ-বন্ধন শিধিল হইয়া পডিয়াছে; এমনও দেখা ধায় যে সার্থপরতাতেই হউক বা আর ঘাহাতেই হউক, স্বামী দ্রীর ক্রদর বিচ্ছিত্র হইয়াছে, এমনও দেখা যার প্রাপ্ত वयुष्म भूव कन्ता, धन मान, विमा वृद्धि, সুথ সম্পদের মোহে পড়িয়া ভীবনের দেবতা মাভা পিতাকে বিশ্বতি-স্লোতে ভাসাইয়া দিয়াছে! কিন্তু হানবের এমন কোনও অবস্থা নাই, বানব-স্পতে এমন কোনও অপরাধ নাই যে তাহা क हो ज ষাত-দ্বেহ পরাক্ত দারা পারে —বা মাড়- স্বন্য বিচলিত হইতে পারে ৷ আধ্যদিগের জাতীর ইতিহাস অপবা মহাকাৰ্য মহাভারত অহে বৰিত चारक, बर्चव्याना शाकातीरमवी चरार्चिक পুত্ৰকে "ৰভোধৰ্মস্তভোজঃং" 'লালী-র্ব্বাদ করিয়া বিপক্ষের অন্ধ কামনা করিয়াছিলেন। কুফকেল্লের সুদ্ধাৰসালে

পুত্ৰগণ নিহত হইয়াছে দেখিয়া সেই গাৰারীদেবীই বালিকার মত আকুল थार्ष कॅानिशाहिरलन ! "नवाश्य मञ्जन" विकाध माज्-त्वर वाक्षा मानिन ना। শামাদের দেশে জনৈক কুতম সন্তান মাতার সহিত নিতাম্ভ পাশবাচরণ করিত, व्यधिक कि या शाहारि "क्रम" इन, শানশের সহিত সেইরূপ কাল করিত; किक महमा रम माक्रम রোগে পড়িলে, মাতাই প্রাণপণে ভাহার ভ্রাষা করি-शास्त्र व्यवः अनेनेभारतत हतरा चाकूल আবে আর্থনা করিয়াছেন,—"ঠাকুর! আমার বাছা রাগের মাথায় আমার উপর অন্যায় ব্যবহার করিয়াছে, ভূমি অপ্ররাধ লইও না, আমার বাছাকে আরোগ্য কর।" এখানে কুসস্তান

বলিরাও মাড়-শ্বেহ বাধা মানিল না।-মানিবে কেন ? মাতৃ-স্নেহ অপরাঞ্জিত, মাচৃ-দ্বেহ স্বৰ্গীয় भनार्थ! ऋर्षात्र আলোক প্রতিভাত হইয়া চল্লকে যেরূপ জ্যোতিখান করে, বিশ্বজননীর প্রেমা-লোক প্রতিভাত হইয়া মাতৃহাদয়কেও সেইরপ প্রেমময় করে। তাই মাভৃজ্ঞাদ-উপমান য়ের পদার্থ জগতে মিলে না! ভগবতী বিশ্বজননীতেই পূর্ণসতা বিদ্যমান। জ্ঞান ও কর্ম্মের দমবায়ে ষেমন মনুষ্যবের পূর্ণতা, ভগবং-শক্তির নিম্নস্তারে মাতৃ-শক্তি থাকাতে মানব-জগৎ প্রাণিজগতেরও **দেইরূপ** পূর্বতা। মাতৃ-শক্তি জীবরক্ষার প্রধান সহায়; তাই ভগবানের ইচ্ছাক্রমে মাতৃ-হৃদয় দেবতে পূর্। (ক্রমশঃ)

পুণ্য কীৰ্ত্ত।

একবার শিবপুর কোম্পানীর বাগানে করেকজন ইংরাজ পুরুষ রমণী ভ্রমণ করিছে গিয়াছিলেন। তাহারা নানা হান দর্শন করিয়া এক লতামগুপে বিস্তা বিশ্রাম করিতেছিলেন। হঠাও জক্ষল হইতে একটা বিষধর সর্প ছুটিয়া আসিয়া একজন সাহেবের পা জড়াইয়া দম্পন করিবার জন্য কণা বিস্তার করিল। নিকটিই কোনও রমণী ইহা দর্শন করিয়া তৎক্ষণাও লক্ষেত্রে দক্ষিণ ইস্ত হারা সর্পের মন্তক দুক্তাবে ধরিয়া টানিয়া

দ্রে নিক্ষেপ করিলেন, সাহেব আঞ্ মৃত্যু প্রাস হইতে রক্ষা পাইলেন। সংবাদ পত্রে এই ইংরাজ মহিলার প্ণ্যকাহিনী পাঠ করিয়া মনে মনে কত ধন্যবাদ প্রদান করিয়াছিলাম এবং এই কথাও মনে উদয় হইয়াছিল যে, এই ইংরাজ রমণী যেরপ প্রভ্যুংপল্লমতিজ, সাহস ও দ্যার্ভির পরিচয় প্রদান করিয়াছেন, এ দেশে এরপ সাধু দৃষ্টান্ত অসভব।

এরপ দিকাত্তে উপনীত ছইবার যথেষ্ঠ কারণও আছে। একবার হরি-

দারের শেলায় একটি বুদা দ্রীলোক প্রসাতে স্নান করিতে গিয়া সকমাৎ জল-স্রোতে ভাসিয়া বায়। গঙ্গার উভয় তীর পরিপূর্ণ করিরা লক্ষ্ণ ক্ষ্ম হিন্দু সন্তান দণ্ডায়মান। ঘাঁহারা ধর্মকে একমাত্র দার করিয়াছেন-এমন কি ধর্মসাধনের অন্তরায় বলিয়া সংসার একবারে পরিত্যাগ করিয়াছেন,ধশের চিছে ঘাঁহাদের সর্কাঙ্গ মুশোভিত—সেইরূপ ঘোগী সন্মাসী সাধু ভক্তগণই তীরভূমিতে শোভা বিস্তার করিতেছিলেন; কিন্তু দেই অসহায়া কুলস্রোতে ভাসমানা হতভাগিনীকে একটা হস্তও উদ্ধাৰ কৰিবাৰ खना প্রসারিত চটল না। সেই সময় সেম্বানে সাহরণপুরের মাজিষ্টেট সাহেব উপস্থিত ছিলেন। তিনি বৃদ্ধাকে নক্ষত্র বৈগে ভাসিয়া যাইতে দেখিয়া জলে काह्र প্রদান করিলেন এবং অনেক ভাটিতে বহু দুর পিয়া তাহাকে তীরে উঠাইলেন। লক্ষ লক্ষ স্বদেশীয় লোকের षादा (य कार्य) मन्भानिक इटेन ना, এक-মাত্র সাহেবের হারা ভাহা হইল। ঘটনা নিয়ত্ই আমরা দেখিতে পাই। সেই জনাই এদেশীয়দিলের সন্তান্ধ বিশেষ व्यजागाव हिट्ट (मधा यात्र मा। किन्द **এ**মতী কুমুদিনী ছোষ সম্প তি যে সাধু দৃষ্ঠান্ত প্রদর্শন করিয়াছেন, তাহা সাধু খেত্ৰীপ বাসি-कार्यात्र ज्ञामर्नकृत পণেরও অত্তরবীয়।

কুমারী কুমুদিনী খোব ব্রাহ্ম বালিকা শিক্ষালয়ের শিক্ষয়িত্রী। ডিনি বর্থন নলহাটীতে অবস্থান করিতেছিলেন, তথার একদিন একটা বালককে সঙ্গে করিরা স্থাব্রে মাঠে ত্রমণ করিতে খাল। হঠাৎ একটা গোক্ষুর পর্ণ আলিরা বালকের পদে দংশন করিল। কুষ্দিনী তৎক্ষণাৎ স্থীর বস্তাঞ্চল ছিল্ল করিরা ক্ষত স্থানের উর্ক্লেন্ট রুলে বন্ধন করিলেন এবং কৃত স্থানে মুখ দিয়া বিষ চ্বিয়া কেলিলেন। তৎপরে অবশাস্থ বালককে পৃষ্ঠে বহন করিয়া প্রায় এক মাইল দ্বে বালার প্রত্যাগ্রমন করিলেন। বিষ চ্বিষা কেলিরা প্রত্যাগ্রমন করিলেন। বিষ চ্বিষা কেলিরা দেওয়ায় বালকের জীবন রক্ষা হইয়াছে।

मकलाहे कार्तिम मर्लिव प्रस्कत সহিত মিশ্রিত না হইলে প্রাণনাশক বর না। এমন কি যদি গলনালীতে কত না थारक, তবে দর্পবিষ উদরত্ব করিলেও কোনও কৃতি হয় না। কিন্তু দাঁতের গোডাতে যদি ঈষৎ বা থাকে এবং ভাষাতে একটু বিষ লাগে, তবে স্থার नारे। अकना मूर्थ विव इविज्ञात्रका रामा निटकत व्यागशनिकनक कार्या ग्रहताः क्यांत्री क्यूमिनीत कार्या धकनिएक स्वयन অসামান্য সংগাহস ও উপস্থিত বৃদ্ধি প্ৰকাশ পাইয়াছে, অপর দিকে নিজের প্রাণ হানি করিয়া অপরের জীবনরকারণ অতুলনীর ধর্ম ভাবের চিহ্নও লক্ষিত হইয়াছে। বাস্থানী দারা এরপ আকর্ব্য कार्या मन्भागन इश्वया व कथा देशियुर्व भात अंटिপোচর रहा नारे। अभिनी सूत्र-দিনী এই অসামান্য কার্য্য সম্পাদন করিয়া বঙ্গরমণীপণের পুখোজ্ঞা করিরাছেন।

বার্মেসে।

(धानमं माजिक कृषि विवत्र।)

ভাদ ৷

रिष्ट ठाम आवारि मध्यक कृष्टक व বার মাবই কাজ আছে; কিন্তু বর্ষের मत्या प्रदेशांत्र थे कार्या वाइना ऋत्भ ৰব্লিতে এক বার মাৰ্মাসে. ও এক বার ভারে মাসে। যে সকল प्रिंबिट और काल कनल इस, माध्यात **সেই সকল ভূমিতে** চাস আরস্ত করিতে হয়; এবং যে সকল ভূমিতে শীতকালের শ্ব্য অন্ত্রে, ভাত্র মাসে তাহাদের চান্ স্পারস্ত করিতে হয়। যে সকল ভূমিতে আখিন ও কার্ত্তিক মাসে বপন বা রোপণ क्रिए इटेर्टि, धरे मार्टि स्वरे नकल স্থুমিতে সার দিতে হয়। জন্তুসার ও यन नकन फनलारे वावरात कता घारेट ভাজ মাসে নিরম্বর বৃষ্টি **इ.स. की नव**रत রেডির তৈল, পচা শোবর বা অন্যবিধ দার যাহা সংগ্রহ क्या श्विथा दश, खिया निया नाजन बाता মার্টী উলট পালট করিতে হয়। ব্লীটার জলে ঐ সকল সার মাটীর সহিত মিলিড ও গলিত হইয়া ভূমিকে উর্বয়তা पिक थेशन करत ।

নারিকেল,—নারিকেল কেমন কসল, জাররা প্রকা ঘলিরাছি। সেই নারিকে-লের চারা এই জাবে প্রস্তুত করিতে হয়। জাতুএক স্বাহাটের নারিকেলের

চারা তৈয়ার করিবার প্রয়োজন আছে. তাঁহারা এখন হইতে তৎবিষয়ে প্রস্তুত হউন। ভাক্ত মাদের জ্ঞলনা পাইলে সম্পূর্ণ পরিপক হয় না। ঐরপ পরি-পক নারিকেল গাছে থাকিলে, তাহা 😎 হইয়া সময়ে সময়ে আপনিই বৃক্ষ হইতে পতিত হয়। তাহাকে 'প্ৰলন নারিকেল' কংহ। চারা করিবার জন্য এই গলন নারিকেল দংগ্রহ কবিতে হয়। शास्त्र दिश्व लार्श ना,मर्खना छाया थारक, তাদুশ স্থানে কাদা করিয়া नातिरकल नकल (वाँगात निक् छेপत রাধিয়া ঈষৎ হেলাইয়া স্বাৰ্দ্ধপ্রোধিত বা আধ-পোতা করিতে হয় এবং মধ্যে মধ্যে সেই ভূমিতে ও নারিকেলের গায় জল দিতে হয়। কিছু দিন পরে বোঁটার এক পাশ দিয়া নারিকেলের চারার অভ্র বাহির হয়। কিন্তু প্রতিদিন সন্ধ্যাকালে থড়ের গোছাধারা জলের ছিটা দিতে श्हेरव।

কণী—কণী একপ্রকার উৎরুপ্ত
লাক, দীত কালে জন্মি। থাকে, সকলেই
ব্যবহার করেন। উহা ত্রিবিধ—বাঁধা,
ফুল ও ওলকোলি। এই মালে উহাদের
চারা প্রস্তুত করিতে হর। দুসার
মৃত্তিকার উব্ পূর্ণ করিয়া ভাহাতে ঐ
তিন প্রকার কশির বীঞ্চ বশ্ব

कतिए इत्र । के जकत ऐव् निनमारन খরের মধ্যে এবং রাত্তিকালে বাহিরে রাখিতে হয়। উহাতে কোন মতে বৃষ্টিবারি না লাগিতে পারে, এরপ ধে ভূমিতে ব্যবস্থা করা আবশ্রক। এই দকল কলির চারা রোপণ করিতে হয়, তাহা চুই প্রকারে প্রস্তুত হইতে পারে। একপ্রকার এই, মাম মাসে ৩৯ পুন্ধরিণী, বিল, বা খালের তলভাগে বে মৃত্তিকা বা পৰি পড়ে, তাহা তুৰিয়া কপির জমিতে দিয়া আশিন পৰ্যান্ত ভাষাতে পুনঃ পুনঃ লাজন দিতে হর এবং ঐ অমি এরপ পরিকার রাধিতে হয়, বেন তাহাতে একটা হণও না **ভলো**। যিনি কপির চাস আবাদ করিবেন, তিনি বলি মাঘ মালে ঐরপে জমি তৈয়ার করিয়া না রাখিয়া থাকেন. তাঁহাকে এই ভাদ্র মাসে রেড়ির ধৈল দিয়া ভামি তৈয়ার করিতে ছইবে। আধিন, বা কাত্তিক মাদে ঐ জমিতে কপির চারা রোপণ করিবার পূর্দো চারা সকলকে আর একটা বভন্ত স্থানে किছू मित्नत झना (तांभन कतिरक वहरत। পরে ঐ স্থান হইতে সুলিয়া পুর্বোক প্রস্তুতীকৃত ভূমিতে শ্রেণীবন্ধরূপে রোপণ করিতে হইবে। কপি চাদের অন্যান্য কথা আমরা ঘণাকালে বলিব।

লাউ,—লাউবীত্ব এ৪ দিন হঁকার ভলে ভিজাইরা রাধিয়া পরে শিথিন মৃত্তিকার রোপণ করিবে। লাউবীজের আবরণ অভিশয় কঠিন, এজন্য একবারে

মাটাতে প্তিলে উহার অহুর হইতে

মনেক বিলম্ব হয়। হঁকার জালে জী

আবরণ কিরৎ পরিমাণে হির হইরা

যার, তাহাতে শীজ অহুর হয়। যে

হানে লাউবীজ রোপণ করা ধার,

তথাকার রৃত্তিকা দর্মণা দরদ রাবিতে

হইবে। যদি লাউগাছ উঠিবার জন্য

মাচা বাঁধা না যার, তাহা হইলে উহার

লতা যতদ্র লতাইরা ঘাইবে, ভতদ্র

প্যান্ত জমী শল ও পরিকার রাথিবৈ।

লাউ পাছের গোড়ার মাচধোরা জন্ম

দিবে এবং উহা ওক হইলেই পুনঃ পুনঃ

গুঁড়িরা দিবে। ধনা বলিয়াছেন,—

"উঠান ভরা নাউ শশা। খনা বলে নন্ধীর বাসা। লাউ গাছে মাছের জল। ধোনো মাটীতে বাড়ে বাল।

কার্তিকে আবাদ,—আখিন কিন্দা কার্তিক মাসে যে অমিতে আলু, কপি, মূলা ইত্যাদির আবাদ করিতে হইবে, এই মাসে সেই সকল ভূমিতে সার দিরা পুন: পুন: লাজল খারা চাস দিতে হয়। উপরি উক্ত ফসল সকলের রোপণের পুর্বে ঐ সকল অমিতে ঘাস ও আগাছা না হয়, তৎপক্ষে বিশেষ দৃষ্টি রাণিবে। ঘাস বা অন্য কোন আগাছা অন্মিতে দিলেই ভূমি তেজোহীন হইরা যায়।

হনুদ ও আদা,—হনুদ ও আদার ভূমিতে শ্রাবণ মাসে দাঁড়া বাঁধিরা দিতে, হয়। বদি অতি বৃত্তি বা অন্য কোন কারণে প্রাবণ মাসে ঐ তৃইটা কসলের দাঁড়া বাঁধা না হইরা থাকে, ভবে এই মাদে বাঁধিয়া দিবে। হলুদ ও আদা পুঁতিবার সমর সারিবন্দী করিয়া পুঁতিবার উপদেশ আমরা পুর্কেই দিয়াছি। ঐ শ্রেণীর উভয় পার্শ হইতে কোদাইল দারা মাটী উপ্টাইয়া চারার গোড়ায় মাটী উপ্ত করিয়া দেওয়ার নাম "দাঁড়া বাঁধা।"

ওল,—ওল অতি উত্তম তরকারী।
তদ্ধ স্থাদ্য নহে, ধাতু বিশেষে বিশেষ
উপকারী। ধাহাদের অর্ণ রোগ আছে,
ওল তাঁহাদের পরম ঔদধ। কাঁচা ওল
ক্তুত্র ক্ষুত্র আকারে কাটিয়া প্রভ্যাহ ২।৪
ধানি ধাইয়া ও নিয়মিতরূপে উহার

তরকারী ধাইয়া অনেকে অর্শ রোপের
যাতনা হইতে নিক্কৃতি পাইয়াছেন, এরূপ
শুনা যায়। ঐ ওল এই মাস হইতে
থাইতে হয়। শ্রাবণেও উহা থাওয়া
যায়; কিন্তু ভাদ্রীয় জল না পাইলে
ওল স্থাদ হয় না এবং মুধ ধরে। যে
স্থান হইতে ওল তোলা যায়, সেই গর্ভে
ওলের সিকড় গুলিও ছোট ছোট মুখী
গুলি রাথিয়া এরূপে মাটী চাপা দিতে
হয়, যেন তাহাতে জল প্রবেশ করিতে
না পারে। ঐ শিকড় ও মুখী হইতে
আগামী ভাদ্রে একটা বড় ওল জ্মিবে।
মুখী পুঁতিবার সম্য একটু গোবর দিলেও
ওল বড় হয়।

বিরহিণী প্রকৃতি।

কাহাকে পাইবে ব'লে,
আশা পথ চেয়ে চেয়ে;
বিষাদে প্রকৃতি বালা,
বহিয়াছে দাঁড়াইয়ে;
তবু দেখা পাইল না ভার। ১

বিরহ নিদাব তাপ,
মরমের প্রতি স্তরে
পশিরে দহিল অই—
স্থকোমলা প্রকৃতিরে,

সহেনা অবলা প্রাণে আর ॥२
^{*}দিগন্ত নয়ন তার,
অলদ নয়নাসারে—
পুরিল হেরিল বিশ

বেরিল, ঘোর জাঁধারে— বিরহের বিষাদ ছায়ায়। ৩

আর না পারিল বালা চাপিয়া রাখিতে হিয়া, শোকের অনস্ভোচ্ছ্বাদ— উঠিতেছে উথলিয়া,

ছিল ভিল করিয়ে হাদয়। ৪

প্রার্ট-জলদ-নীর
প্রকৃতির জাঁবি ধারা;
করিতেছে, পড়িতেছে,
ভাসিতেছে চাক ধরা,
ভাসিছে জাপনি সেই ধারে ।৫

বিষাদ-কাজর-কঠে ডাকিতেছে ঘন ঘন; কাঁপে না পাইরে সাড়া বিজ্ঞলী-চমক হেন;

সে কোথা ? প্রকৃতি বোঁজে যারে? ৬
শোক–বিষাদিত কঠে
ডাকিতে ডাকিতে ডার—
ফুরাইল, শুকাইল—
জ্বাদ নয়নাসার।

ভবু দহে বিরহ-জালায়। ৭
আখাসিতে কেউ বুঝি
বিরহ-বিধুর প্রাণে,
জ্বালিয়ে কনক বাতী
শারদ নৈশ গগনে;

সম্বোধিয়ে কহিল বালায়। ৮ হে বালে ? আকুল প্রাণে— দিগন্ত নয়ন মুছি, কি ভাব ? বিকাশ আঁথি, প্রিয় নির্বিবে খদি;

আশার আখাস বাণী, মরমে পশিল গিয়ে; স্থাক নয়ন মেলি প্রকৃতি দেখিল চেয়ে,

প্রিয় দেখা পাইবে অচিরে। ৯

মূহ হাসি হাসির। অন্তরে। ১০ শারদ নৈশ গগনে ইন্দু আসি প্রকৃতিরে সাজাইল চারু স্বাচ্ছ বিচিত্র চারু ক্ষরে,

डिव्रारम माबिल स्मर्ट वामा । ১১

মনে আশা. প্রিয়তম দেখা দিবে এইবার কিন্ত কই १ কই সেই হুদয়-রতন তার १

যার লাগি সহিছে এ জালা १১২
না পাইয়ে তার দেখা
সে সাজ ফেলিল খুলে;
ঘেরিল প্রকৃতি অংক,
বিষাদ কুয়াশা জালে।

পুনঃ সব খেরিল আঁধারে। ১৩

দিগন্ত নয়ন হ'তে

শিশির নয়ন-জল

টুপ্ টাপ্ পড়িতেছে—

করিতেছে অবিরল,

বিরহ ছাড়ে না **তবু ডারে। ১৪** এ বিষাদ ছবি তার জ্বগন্ধনে দেখাইতে প্রকৃতি পাইবে লাল, ভাই কি ভাবিয়ে চিতে

ব্যাকৃলিত সন্ধ্য ববি। ১৫ স্থাপি যামিনী কোলে পুকাবারে প্রকৃতিরে, উদিয়ে উদ্যাচলে, পশি ক্রত অসু নীরে—

বুকাইছে আপনার ছবি। ১৬
যামিনী অপন কোলে
বিহাদিনী প্রকৃতিরে
যতনে ঢাকিয়ে রাখি
প্রবাবে কত কি ক'রে,

ম্পনেতে শে জনে দেখার। ১৭ ⁻

কিন্ত কই প্রকৃতির— সে জন ? যে জুন ডক্তে দারুণ বিরহ শিখা দহিছে হুদয় স্তরে।

শেকি দেখা দিবে না তাহায়ণ্১৮

প্রাক্কতি-বালার হাদে
নাই আর সে শক্তি
প্রির অদর্শন ব্যথা
নিবে যে হাদ্য পাতি,
সহিবে যে সে দারুপ জালা। ১৯

কোমলা অবলা প্রাণে—

এত কি সহিতে পারে,

যায় বুঝি যায় প্রাণ্—

প্রেক্তির দেহ ছেড়ে

সম্বনে কাঁপিছে তাই বালা ৷২০

প্রকৃতি ! প্রকৃতি সতি !
প্রকৃতি গো ! বল মোরে—
কে তব প্রাণের জন ?
কোধা সে বসতি করে ?
থুঁজে ধদি দেখা পাই তার ৷ ২১

শুধাইব তার ঠাই প্রাকৃতি তোমার তবে মরিল, মরিল প্রাণে দেখা কি দিবে না তারে ? দে কি দেখা পাবে না তোমার १২২

কোকিল কাকুলি কঠে মধুর মধুর তানে কি যেন কহিল কথা অভাগীর কাণে কাণে,

চাহিল প্রকৃতি সেই দিকে। ২৩ বিশাদিনী প্রকৃতির আজিকে সহসা কেন বিমল হাসির ছটা

বদনে নেহারি ছেন ?
আজি কি পেয়েছ সতী তাকে ? ২৪
প্রেকৃতি গো! বল বল!

যার তরে এত দিন বিরহের অন্তর্দাহে হইয়াছে তমু ক্ষীণ,

সে কি দেখা দিয়েছে তোমারে?২৫
তাই কি স্থচারু দাছে
দাজাইয়ে তন্তু থানি
প্রাণভরি প্রাণ্ধনে
নয়নে গেরিছ ধনি!

প্রকৃত কবে কি তাই মোরে
কবে কি
কবে কি
কবে কি ভাহার কাছে
প্রোপের কথাটি মম—
বে কথা মরমে আছে

বলো তাঁরে কথাটি আমার ! ২৭
কহিও তাঁহার গাঁই
"আমিও তোমার মত,
পাইতে তাঁহার দেখা
হমেছি ব্যাকুল-চিত ।

কবে দেখা পাইব তাঁহার 🥍 ২৮

ভারতের সে দিন কোথায়?

একদিন একথানি বিখ্যাত সাপ্তাহিক পত্র পাঠ করিতে করিতে দেখিলাম, একস্থানে লিখিত আছে বাবু স্থারেশচন্দ্র বিশ্বাসের বীরত্বের কথা; ইনি এটি ধর্মা-বলম্বী এবং ভারতসন্তান হইয়া ব্রেজিল-ইনি যুদ্ধনৈপুণা ও বাসী। অধ্যবসায় গুণে নাকি একটা বাহিনীর লেফটেনাণ্ট পদে উল্লীত হইগাছেন। ব্রেজিলের একটা ভয়াবহ যুদ্ধ উপদ্বিত হওয়ায়, বাঙ্গালী বীর স্থারেশচন্ত্র প্রথ-মেন্টের পক্ষ হইয়া শক্রের নিবিড গোলা-वर्षां व साथ अन्तर्भ व व्यापा श्रविक বলিয়াছিলেন—"বীরপ্রস্থ পৰিত্র ভারত ভূমির সম্ভান কিরূপে শত্রুর কামান ८म्थ ।" স্বরেশ বাব করে "বীরপ্রস্থ পবিত্র বাস্তবিক ভূমির" উপযুক্ত সন্তান হইলেও হইতে পারেন, কিন্ত তাই বলিয়া কি আছও ভারতভূমি "বীরপ্রস্থা এই কথাটী মনে উদয় হইবা মাত্র কি এক চিস্তা তাড়িতপ্রবাহ মত মন্তিকে, শিবায় ও ধমনীতে প্রবাহিত হইল. **अ**अभ्रम्पद्रश করা কঠিন হইয়া উঠিল। <u> শাপ্তাহিক</u> পত্রথানি রাখিয়া কর্ণেল টডের রাজস্থান লইয়া পাঠ করিতে বদিলাম, - মনো-বেগ ভাহাতে আরও বহিত হইল। মহাভারত লইয়া পাঠ করিলাম, সে চিন্তাবেগ থামিল না। স্বশেষে শাস্তির

আশ্রম এহণ করিবার জন্য গীতা পাঠ করিতে প্রবৃত্ত হইলাম। দ্বিতীয় অধ্যায় সাংখ্যবোগ পাঠ করিতে করিতে দেখিলাম ভগবান অৰ্জ্নকে বলিতেছেন—"সুধে शः (४ नाम क्या नाजाना (जी क्याक (मी)। ততো যুদ্ধায় যুদ্ধ্যস্থ নৈবং পাপুমবা**দ্যা**দি॥" कता जमरत्र এই "मूद्य"रक "बौरन শংগ্রাম" মনে করিয়া তুপ্তিলাভ করিয়াছি. কিন্তু অদা তাহা পারিলাম না। গীতা রাখিয়া নিদ্রার্থে শয়ন করিলাম, নিজা আসিল না, পুনঃ পুনঃ মনে হইতে লাগিল "পবিত্ৰ ভারতভূমি" আজও কি বীরপ্রস্থ যদি তাহাই হইবে, তবে একটা বা ততোধিক বড়জোর ২০০টা * মাত্র ভারতসন্তান কোথায় পোষ্যপুত্র-রূপে † वृ (भ স্থািকিত হইয়াছেন বলিয়া ভারতবাসী আনিক্ষিত এত কেন ? ভারত-মাতা কি ইহাতে আন-मिछ हहेए भारतम ! क्थमहे नहा। রাজ্বাণী শত শত মাণিক হাবাটয়া দাসতে জীবন যাপন করিয়া যদি ভনিতে পান যে কোথায় স্নুরদেশে কোনও বন্ধুর নিকট ভাহার লুঠিত ভ্রব্যাদির একথত পূৰ্ব আছে, তাহা হইলে তাঁহার

[°] ১৩+১ সালের ২৬শে প্রারণের ছিত্রাদীক্তে আর তটী বাঙ্গালী দৈনিকের বিবর লিখিত শক্তি।

[†] ইইার। ভারত-সভান হইতেও ভারতবাসী নহেন, তন্মন্য পোষ্যপুত্র কলা হইরাছে ।

পূর্ব্ব কথা শারণে সুখ না হইয়া নির্বাপিত শোকাগ্নিই জলিয়া উঠে। হা হতভাগ্য ভারতভূমি ! ২০০টী সম্ভানের বীরা-বদানে কি তোমার কলক ধৌত হইতে পারে ? একটি মাত্র প্রাপ্তবয়স্ক ভারত বীরের বীরত্ব কি তোমার এই ওক অভাব পুরণ করিতে পারে ? ভূমি কি **(मरे कुक़्टकज ममरत खेडानग अटको**हिनी ব্যতিব্যস্তকারী বীর বালক অভিমন্থা-প্রিস্থানও ? যথন আলাউদীনের পাশব অত্যাচারে চিতোর পুরী ছার থার হইবার উপক্রম হইয়াছিল, তথন যে দাদশ বর্ষীয় বালক বীর শত্রু সৈন্য মধ্যে অতুল বিক্রম প্রকাশ করিয়াছিল, তুমি কি সেই বাদলের জন্মভূমি নও ?-- যথন মোগল শাক্বরের হুর্দ্ধ তেব্রে রাজস্থান নিস্তেজ হইতেছিল, তুমি কি সেই সময়ের চতুর্দশ ববীয় বীর বালক পুতের জননী নও গ একাকী একলক্ষ্য নৃপত্তি-বিজেতা ভোমারি পাতীবীর জ্যা-নিৰ্যোষ ভকুপবয়স্ক আত্ত তোমার হীনবীর্য সন্তানগণের কল্পনাকর্ণ বধির করিভেছে। যদিও ইহাঁরা কেহ বাঙ্গালী নহেন, তবুও তোমার দ্যান ত বটে। বালালীত এখনকার স্থস্ত্য আধ্য সন্তান, তোমার তথনকার জনার্ব্য মৃশায় ডোণ-শিষ্য নিষাদপুত্র একলব্যকে স্মরণ কর, এমন কি ভোমার ভখনকার প্রত্যেক কিশোর, যুবক, (थी ह व बुद्धारक न्यात्रण कत्र, मिथिएव **Cजामा**त वीत श्रद्धारमत वीतावमान कानम **द्याधात्र छानिया शहरव १ मान १हरव**े

"যাহা হারাইয়াছি, তাহা বুকি আর পাইব না।" যে ভারত-বীরপণ এখন অক্ষয় সর্গ ভোগ করিতেছেন অথবা শেত্ৰীপ প্ৰভৃতি স্থানে জন্মান্তর গ্ৰহণ করিয়া অসাধারণ বলে বলীয়ান হইয়া-ছেন. আজও তোমার শত শত সন্তান তাহার একটীর স্থানও পুরণ করিতে পারিয়াছেন কি ? একা পরভরাম ২১ বার ক্ষত্রিয় রাজগণকে পরাস্ত করিয়া-ছিলেন। ঈশবেচছায় যদি এমন দিন ক্রখনও আইদে ফেদিন তেমার শত শত দহ্মান স্থারেশ বাবুর ন্যায় বীরত্ব যশোমুকুট মন্তকে ধারণ করিবেন, সেই দিন মনে করিব, "পবিত্র ভারতভূমি বীরপ্রস্থ।" যে দিন তোমার রাজভক্ত শস্তানগণ স্বীয় প্রভুর জন্য দমর **ক্ষে**ত্রে অকাতরে হৃদয় শোণিত প্রদান করিতে প্রস্তুত হইবেন, সেই দিন জানিব তুমি "বীরপ্রস্থ"—সেই দিন আমরা ঝালাবীর মারার শোক ভুলিতে পারিব। হা হতভাগিনী ভারত জননি ! তুমি যেদিন বীরপ্রস্থ ছিলে, তোমার সেদিন আজ কোথায় ?

হায়! ভারতেব আজ সেদিন কোথায়? যে দিন পবিত্র ভারত বক্ষে মহারাজ রামচন্দ্র, ভীম, অর্জ্জুন, অভিমন্থ্য, ভীম, জোণ, কর্ণ, অর্থপামা প্রভৃতি ক্রীড়া করিয়াছিলেন,—যে দিন ভারত-ভূমির বক্ষে বাপ্পা, সঙ্গু, সমর, রাজ্ঞদিংহ, পুত্ত, ভ্র্নাদাস, শাহিদাস, রবজিৎ, শিবজী, জহুরী বাই, দীলাবাই, কর্মদেবী প্রভৃতি বর্দ্ধিত ছইয়াছিলেন ? ভারতসন্তান ! আজ ভূমি একটী কৃত্বুরের আক্রমন ইইতেও আপনাকে রক্ষা করিতে অক্রম, কিন্তু এমন একদিন ছিল যে দিন ভারতবাসী একটা প্রকাণ্ড বন্য হন্তীর ক্রোধবেগকে পিপীলিকার আক্রমণ মনে করিতেন, বন্য সিংহ ব্যাত্রের কর্ণাকর্ষণ করিয়া ক্রীড়া করিতেন। এ কথা যদি ভূমি বিশ্বাস করিতে না চাণ্ড, তবে ব্রেজিলে ভারত বীরের বীরখে

তুমি আনন্দে নৃত্য কর। কিছ বছদিন
পরে মৃত আত্মীরের কোনও নিদর্শন
প্রাপ্ত হইলে ধেমন পূর্ব্ব শোকস্মৃতিতে
উত্তপ্ত অঞ্চ নীরবে গণ্ডদেশ প্লাবিত করে,
স্থরেশ বাব্র বীরাবদানে আজ আমাদেরও সেই দশা ঘটিয়াছে ভাই পুনঃ
পুনঃ মনে হইতেছে "ভারতের সে দিন
কোধার ?" কু, রা। (ক্রেমশঃ)

আদর্শ স্বামী।

হিন্দুশাপ্ত মতে "সন্তটো ভার্যায়া ভর্ত্তা" যে পামী স্ত্রীতে সন্তত্ত এবং ভাঁহাকে সহধর্মিণী করিয়া "সত্রীকং ধর্মমাচরেৎ" স্ত্রীর সহিত ধর্মকার্য্যের অনুষ্ঠান করেন এবং ভার্যাকে শ্রেষ্ঠতম সধা জানিয়া ভাঁহার সহিত একজ্বদম, একমন ও একজ্ঞাণ হন, তিনিই উৎকৃত্ত স্বামী। আদর্শ স্থামি-ঘন্ধে পাশ্চাত্য দেশের ক্রেক্টী জ্ঞানীর মত উদ্ধৃত করা ষ্ঠিতেছে।

১। ডাক্তার চার্ল স পার্থারন্ত নামে এক ধর্মাচার্য্য বলেন যে ব্যক্তি আপনার পরিবারের আচার্য্য নহেন, তিনি কথনও উৎকৃত্ত স্থামী হইতে পারেন না। গৃহ যেমন প্রথম ধর্মানিস্বর, স্থামী সেইরপ প্রথম আচার্য্য। স্থামীগৃহের প্রধান যাজক, ভার্য্যা প্রধানা, যাজিকা। ঈর্মর প্রীতিস্করণ, ভারাকে ভালবাসা এবং তাঁহার সন্তান সকলকে ভালবাসা যদি ধর্ম হর,

গৃহে সে ধর্মের দৃষ্টান্ত ও শিক্ষা অভ্যাবশ্যক। স্বামী যদি এই ধর্মের প্রচার না করিয়া প্রক্রভ শিক্ষাদান করিতে পারেন, সম্ভানের। ধর্ম ভাবে গঠিত হইবে এবং পরিবার যথার্থ সুখী পরিবার হইবে।

২। পামার কক্স নামে এক শ্বিথাত গ্রন্থকার বলেন—বে স্বামী সন্তানদিগের থেলার সঙ্গী হন, তিনি উত্তম
শ্বামী—যিনি ক্রীকে দর্মদা সম্পূর্ণ বিশ্বাসভাজন করেন তিনি, আরও উত্তম।
আদর্শ স্বামী স্ত্রীকে প্রাপ্ত স্থান সকল
কথা বলেন এবং স্ত্রীর সহিত স্থকে করিরা
এক সম্ম স্থানে উপনীত হইবার জন্য
অঞ্জনর হন। আদর্শ বিবাহ হুইবালেমুর
একতান—হুইপ্রাণের একত্র সংমিশ্রণ।

ত। বিল নাই নামে এক **সুঃসিক**

লেখক ও বক্তা বলেন—তিনিই উৎকৃষ্ট বামী বাঁর, অনুরাপ সর্ব্বপ্রথমে জীও সন্ধানদিদের প্রতি এবং তৎপরে কার্য্য বা জন্য বিষয়ের প্রতি। এক ব্যক্তিকান ছানে অভিনয় করিবার জন্য ২০ হাজার টাকায় এক রাজির কুরান চুক্তি করিরা আসিরাছিল। ভার যোগে লংবাল পাইল তাহার জীও চারিটী সন্তান প্রাক্তি, শে তথনি চুক্তি রহিত করিয়া প্রথম ট্রেণে স্বদেশ বাজা করিল। আমার মতে এই ব্যক্তি উৎকৃষ্ট স্বামী।

৪। পাপ-নিবারণী সভার সভাপতি
আপিনি কমন্ত্রক বলেন—২২ বংগর কাল
নামি "পিতার দোষগুণ সন্তানে কিরপ
বর্জে" তার্যা অধ্যয়ন করিতেছি এবং
তারার শত শত দৃষ্টান্ত স্বচক্ষে দেখিয়াছি।
আমার এখন এই দৃঢ় বিশ্বাস যে মিতাচারী ও পবিত্র না হইলে কেহ উৎকৃষ্ট
সামী বা পিতা হইতে পারে না।
মিতাচারীর অর্থ লাল পাণি অর্থাৎ স্থ্রার
সংস্পর্শ হইতে দ্রে থাকা—পবিত্র অর্থাৎ
দেহকে সর্ক্রপ্রকারে স্কুত্ব ও পরিভদ্ধ রাধা।

প্রার্থনা।*

3

জীবন, মরণ, বিভো! কারে আমি চাই—
তুমি তাই স্থিছ এখন গ্
আমারে জীবন দাও, মৃত্যু কাজ নাই,
চাই না এ অলস মরণ!

বরণ চাহি মা কেন, কি বলিব হায়।
এ দেশে তে। মরিছে সবাই,
কেই সন্ধা কালে—কেহ ভোৱে চলে যায়,
অংমি নয় সবেশায় যাই।

ধনী, দীন, জানী, মুর্থ, শমনের করে,

ক্রিন্ কালে কে পেরেছে আন ?—
ভাষারি কি মরিবার, এত ভর ভূরে,

ক্রিন্টারি কি মারিবার, এত ভর ভূরে,

8

"প্রবাসী পথিক আমি," হইবে ফিরিতে— সে কথা কি ভুলে গেছে মন ? মায়ার সংসার কেলে চাহি না যাইতে, আমারি কি এতই বাঁধন ?

à

ম'লে কি, সাধের ফুল যাইবে শুকিয়ে,
ছিঁড়িবে এ বীণা বাঁশী তার ?
মায়ের নয়ন জল পড়িবে করিয়ে,
ব্যথা পাবে, যাহারা আমার ? —

কোন অধু কণা আমি, সেই সব তরে, জগদীশ! চা'ব এ জীবন ?— তোমারি মঙ্গল ইচ্ছা অমৃত বিতরে, তাই নাধ, হউক পুরণ। ٩

নোর কোভ—দরাময়, জীবন থাকিতে রহিয়াছি, মৃত জড়প্রার ; তোমার জগতে আসি কিছুই করিতে, হডভাগা পারিল না হায় !

আরো কোভ—এই তৃত্র জীবনের লাগি এত চেষ্টা, এত আয়োজন ; এত দয়া, এত স্নেহ, এত ত্থভাগী, এত বক্ষ সহিছে বেদন!

তাই চাই—সংসারের শত নিম্ম মতা, অামি নাথ, সকলি দহিব; তুমি বার, প্রাণে তার কেন কাতরতা, ভব নামে বাঁচিয়া বহিব !

٠ د

সহস্র মরণে, হরি ! কার আবে ভর মৃত্যুঞ্জয় ! স্মরণে তোমার ?— কিন্ত এ যে "মহামৃত্যু" কন্তু নাহি দ'র, এ কি শান্তি দিলে অভাগার ?

জীবন, মরণ, জামি কোন্টারে চাই,
তাই যদি স্থিছ এখন,
থুলে দাও মহা পাশ, খাটবারে যাই!
কাজ নাই এ পোড়া মরণ।
শ্রীকাব্যকুসুমাঞ্জনি-রচরিত্রী।

সতী ও শান্তি।

ষোড়শ পরিচ্ছেদ।

কিরণ বলিলেন, দিদি, আপনি
যাব'লেন তা সব ঠিক্। দাদা একবার
ঐ রক্ম ব'লেছিলেন। আমারও ভূতে
বিশ্বাস নাই তথাপি অনেক সমর ভর
হয়। আমি এর কারণ কিছুই বুঝ্তে
পাচ্চি না। এর কারণ কি, দিদি ও
শান্তি বলিলেন, ছেলে বেলা হইতে যে
কিছু কুমংস্কার অত্যাস হইয়া যায়, তাহা
ছাড়া বড় সোজা কথা নয়। একটা
চারা গাছকে মারা যত সহজ্ব নয়।
সহজ্ব নয় বলিরা যে তাহাকে একবারে

সম্লে বিনাশ করা যাইতে পারে না,
তাহা নয়। অন্ত দারা কত প্রকাণ্ড
শাল পাছ সন্লে নপ্ত হইয়াছে। যে
চারা গাছ প্রকাণ্ড বৃক্ষরূপে পরিণত
হুইলে বিশেষ অনিষ্টের সন্তাবনা,
তাহাকে বরং চারা অবস্থায় মারিয়া
কেলা উচিত। বরং যাহাতে তাহার
বীজ একবারে অঙ্ক্রিত হুইতে না পারে,
তাহার উপার করিলে, চারা গাছকে
মারিতে যে টুকু আয়াস স্বীকার করিতে
হর, তাহাও আর করিতে হয় না।
কুশংকার যত অনিষ্টের মূল। মনে কর
কুসংকার একটি নিষ্গাছ। নর্ম মানীতে

एकां विक्रि नियात बीक कान बकरम মাটা नव्य. পড়িবা মাত্র इहेन. क्रम्भः অক্সিত হইয়া চারা त्त्राप, निनित, अन, वाजाम भारेश চারা বাড়িয়া উঠিতে শাগিল। ক্রমণঃ বৃহৎ একটি বৃক্তরূপে পরিপত হইল। নেই পাছের ভাল পালা শাথা প্রশাথা কাণ্ড প্রকাণ্ড এতদূর পর্যান্ত বিস্তৃত হইয়া পড়িল, এত স্থান ঢাকিয়া ফেলিল, যে, ভাহার নিয়ন্থ জমিতে আর কোন রক্ম शाइ इटेट পाद ना। यनि कान वीक পড়িরা অক্সবিত হয়, সেই গাছের ছায়াতে তাহা আর বাড়িয়া উঠিতে পারে না। সেই প্রকাণ্ড নিমগাছের তলে যে কোন মেওয়। ফলের গাছ রোপণ করা যায়, ভাষা স্পার বাড়িতে পারে না। মামুষ যত যদ্ধ করুক, যত দিন পর্যান্ত সেই নিম্ন তক সমূলে বিনাশ প্রাপ্ত না হইতেছে, নিম্ম তরুর তেজে যে मुखिका निरस्त करेश शिशाटक, यछिनन প্রয়ন্ত আবার তাহা সতেজ হইগানা উট্টভেছে, ততদিন পর্যন্ত মারুষের **সাধ্য কি সে**ধানে মেওয়া কলের গাছ জন্মায়। মানুষ ৰত এছ করুক, যত পরিশ্রম ক্ষক্ৰ, সৰ ৰুপা হইৰে। সেইরূপ সংমান্য একটি কুসংখার বীজ মাহবের কোমল স্থান কোতে উপ্ত হইলে, তাহা কুলোকের সহবাবে, ভূঞ্জদকে, কুপুন্তক পাঠে, কৃচি-ভাতে জনশঃ বদ্ধিত হইয়া প্রকাণ্ড আকার शांत्रण करता कमना मत्नत (जेक, मरनत चाचाः अक्वाद्म नष्ठे हरेश रात्र। अपत्र

কোন রূপ সদভাবের বীজ ধারণ করিতে সমর্থ হয় না, ধারণ করিতে সমর্থ ছইলেও ভাহা অক্রিত হয় না, অক্রিত হইলেও বৰ্দ্ধিত হয়না, বৰ্দ্ধিত হইলেও তেমন বিকসিত হয় না। সেই কারণে কোন রকম কুসংস্থার বীজ ধাহাতে সন্তানের কোমল মনে একবারে উপ্ত হইতে না পারে. म विषय भागामित प्रामन स्मार्यस्य বিশেষ সাবধান হওয়া উচিত। ভূত আস্চে, ঐ জুজু আস্চে" এ পাপ কথা মুখে আনা উচিত নয়। বালকবীর অভিমন্থ্য মাভার গর্ভে থাকিয়া নাকি যুদ্ধ বিদ্যা প্রভৃতি অনেক বিদ্যা শিক্ষা করিয়াছিলেন, আজ সন্তান সভতিরা মায়ের কোলে থাকিয়া কুদংস্কার ও ভীকতা শিক্ষা করিতেছে,এ শক্ষা রাথিবার স্থান আর কোথায় ও তথনকার মাতা ঠাকুরাণীরা সন্তানকে যুদ্ধ দাজে দজ্জিত করিয়া যুদ্ধ ক্ষেত্রে পাঠাইবার সময় বলিতেন, যাও বাছা, আশীর্কাদ করি, তমি দিগবিজয়ী হও। আর এথনকার মাতা ঠাকুরাণীরা, ছেলে যদি একবার বাড়ীর বাহির হইয়াছে, অমনি ভাড়া-তাড়ি হাপ ইতে হাপাইতে আদিয়া वितर्वन, ''(यथना, (यथना, ভূতের বাভাস লাগ্বে'! তথ্নকার মাতা ঠাকুরাণীরা বলিতেন, বাছা!

"যাও সিজ্নীরে ভ্রর শিধরে, গগনের গ্রহ তল্প তল্ল করে, বাস্থ্ উদ্ধাপাতে বল্লশিখা ধরে স্কার্য্য সাধনে প্রবৃত্ত হও।" ভার এখনকার মাতা ঠাকুরাণীরা বলিতেছেন,

"ৰৱে বাছা বের্ষোকেছু 'মা বাপের পুণ্যি হেছু' অনম লভিলি ৰদি

উদরে আমার। আশীকাদ করি বাপ্, হও ভূমি ঢোঁড়া দাপ্, ধনে প্তাবে লক্ষীলাভ

হউক **ভোমার**।

তোর জন্যে বার বের্ড করি আমি অবিরত; আঁচল ছাড়া হইও নারে

অঞ্চলের ধন। ১৯৪৮ প্রহোর পরে

(ও তোর্) বৃঞ্জী প্জোর পরের দিনে, রাঙা বৌ দেবো এনে, হেলে গুলে ভার সনে

(शाला याष्ट्रधन।"

এই সমরে মেরে মহলে ভারি একটা হাসির ধুম পড়িয়া গেল। কিছু ক্ষণ পরে একটি বৃদ্ধা বলিলেন, "ভালা মেয়ে ভালা, এত কথা জানে।" পাশের একটি মেরে বলিলেন, "আর সীতে, জানুবে কেনৃ ? 'কালীর আকর' যার পেটে আছে, সে না জানে কি ? ঐ কথায় বলে, "বিদ্যেহীন পশু।" তা আমরা ভাই। আর একটী জীলোক বলিলেন, "ইনি যা যা ব'লে, তার কোন্ কথা মিথ্যে গো সীতে, সব সত্যি।" গোলমাল থামিয়া গেলে পর, শাক্তি বলিলেন, "আমালের গোলের এখন

এইরপ অবস্থা। এখন সে রামও নাই, त्म पराधां नाहे। अथन प्राटक কেবল সেই রামারণ আর মহাভারত। भिरुष्ट भक्त बननी एवं बख् वख् माय **७**नि, পড়ি, ञात्र नात्व मत्त्र साई। তথ্ন মনে হয়, আমরা কি ? আমরা কি মানুষ! আমরা ৰদি মানুৰ ভবে পত, তারা কি । "ভাল क एक भारती ना यम क'रती, कि निवि कृहे वन्"। (ছলেদের ভাল किছু निका দেওয়া দূরে থাকু, বা কিছু সদ্তুণ, তা দব শিকা দেওয়া দূরে থাকু, যেওদি অসদ্তণ, যে গুলি কুসংস্কার, যে গুলি কুশিকা, যাতে ছেলে অধ:পাতে যাবে, ঘা'তে বংশের নাম ডুবে যাবে, মুখে চুণকালী প'ড়বে, যা'ডে সম তের অকল্যাণ হবে, দেশের সর্কমাশ হবে, সে বব শিক্ষা দিতে আমাদের **দেশে**র (मरावा रफ मक्तूम्। धमन् मानाव টাদ মেয়ে আর কোনও দেশে পাওয়া शांत्र कि ना मत्स्र ।

সরোজনী বলিলেন, শান্তি, বাল্তবিক আমাদের দেশের মেরেরা সোণার
চাঁদ মেরে, অয়তে "ম'র্চে" ধরেছে বৈত
নর। তাঁদের দোব কি १ ঐ সব সোণার
চাঁদ মেরেদের যদি মেজে খ'সে পরিকার
করা বার, এঁদের জ্যোতি দেখে কত
আতি লক্ষা পাবে। এ সোণার দেশে,
অনেক সোণার চাঁদ মেরে এমন শ্রমান,
ক্রিত হ'রে ছিলেন, যে, এখন বাঁহারা
পশ্চিম দিকে অকুলি নির্দেশ করে ব'লে

থাকেন. "ঐ দেখ।" ভাহারাও विज्ञातिम, "मा, मा, अभव क्लामाकी, काँका भव भागात है। मा का का का का शर्क क'रत्र व'लएड भारत्र, "এই দেখ व्यामारमञ्ज नाविजी, এই म्ब व्यामारमञ भीषा. এই দেখ আমাদের দময়ন্তী, এই দেখ আমাদের চিন্তা ও কোন জাতি করে বলতে পারে এই দেখ

व्यामात्मत व्याद्वती, अहे त्मध व्यामादमत খনা, এই দেখ আমাদের মৈত্রেয়ী, এই দেখ আমালের গার্গী, এই দেখ আমাদের লীলাবতী. এই দেখ আমাদের সুনীতি ৭ শান্তি, আমাদের ছিল না কি ৭ জানি না, কবে আবার তাঁরা ফিরে আসবেন, দেশের মুখ উজ্জ্বল হবে! * (ক্ৰমশঃ)

श्वत माधन প्रशाली।

(७৫৪ मः था। ৯৫ পृष्ठी . श्रत्र)

খাম্বাজ। একতালা। ঞীবৎসচিন্তা।

শীনবীনচন্দ্র দত্ত কুত স্বর্রলিপি।

64 নি माः म। সা ব ন-٠/ मा: (ক-खा-নি গ জা- মা-স-মে। ধ্যে মা য1-**ই-** রি 71, मा मा. माः नि नि यु -펙!-4w 4 নি 71 নি मा' ध् નિ-14-

नि নি मा मा नि সা. ণী, রা-मन-র

+ ~ নি नि **স**1° রা- জ ভো- গে न- म्रा,

> 4 সা' નિ ध ·D

* वना वाह्ना, यपिछ नोनावडी, थना, शात्री, নাত্রেয়ী। ফুনীতি প্রভৃতি প্রাতঃক্ষরণীর। আর্যার্মণী-গণ বহুকাল হইল এ দেশ ছাড়িয়াছেন, তথাপি এ ছব্দিনে ভারতের খরে ঘরে সাবিত্রীর অভাব नारे। (व पिन माविजो अपन ছाड़िश्वन, म पिन এ দেশ রসাতল বাইবে, তাহার আর অণুমাত্র সম্পেহ নাই।

W 36 6 6 6 সা সা নি অ- তি, का- न- त्न क हे भा- व e/ Hi. সা' নি নি ব্-ৰে-ন-য় – 514 ধপ র-নি नि मा বে 줘-

+6 ઋ. मा. मा' म्। নি अ). अ। -IE 귝-4 ত-য়ে হে প্র

৩৭ ১৩৭ ৩ব नि নি নি লি **피**~

মু -

24-

6 36 +6 51 প गा-নে প-ব-न 50 স⊹া મ গ লি-C٩ ম-30 +0 ય গ ય મ 71 স fa, ব ভ-

36 নি সা সা হে জী- বি- তে- খ

+6 म्। नि मा বে- না থ স-**U**-

नि नि नि गा F1- 주- 이 주-

मा' माः স1° 16-ুত, মা-

36 20 নি নি 71. স)' 챙. (5 E) ₹1-ि **5**-न१

ব লি যাও জ-3 তা-ুত্ত,

10 নি मा मा নি मिन (भ- ति य টী (T, বা

214 50 নি ধপ সাং নি সা **ਸ**1' মিল নে॥ भी ব ₹-(ক্রমশঃ)

নখ।

বর্ত্তিত হয়। সদ্যঃপ্রস্ত শিশুর নধ-মধ্যস্থ শোণিত কুফাৰণ, স্থুভরাং নথও जेनर कुकर्व (पर्य) राह्य; शदद क्रस्य খাস প্রখাস ক্রিয়ার গুণে ঐ শোণিত লোহিতবর্ণে পরিবর্ত্তিত হইলে নধও নধের জীবনী-শক্তি কেশের

বয়:ক্রমানুসারে নধের বর্ণ পরি- | ঈশং রক্তবর্ণ ধারণ করে। বরোর্থির সহিত নধঙলি ছুব ও দৃঢ় হইতে থাকে। বৃদ্ধাবস্থায় নখের উপর খেতবর্ণের श्वाकाववर हिस् मृहे ह्या (करमन ন্যায় নথের জন্মভূমি মাংস, স্করাং शैवनी-

শক্তির অনুরূপ। নথের অবস্থা ঘারা শারীরিক স্বাস্থ্যের অবস্থা প্রমাণিত হয়। ক্ষয়কাশ রোগে নথের আকার ও বর্ণ পরিবর্তিত হয়। নথের বর্ণ ও আকার পরীকা করিয়া কোন কোন চিকিৎসক রোগ নির্ণয় কার্য্যে বিশেষ সাহায়তা লাভ করিয়া থাকেন স্বীকার করিয়া-ছেন। যাহার স্বাস্থ্য যত ভাল, তাহার মধ তত শীঘ্র বন্ধিত হয়। সচরাচর এক সপ্তাহের মধ্যে ৩৯ ইঞ্চির এক সহত্র অংশ পরিমাণে নথ শীল বৃদ্ধি হয়। ডাকার ছফোর বলেন যে যদি আশৈশৰ নখ না কাটা হয়, তাহা হইলে ৬০ বৎসর বয়সের সময় নথ গুলি ৪ হাত লম্ব। ইইবার সম্ভাবনা। আনাম । কি তাহা স্বিশেষ বোধগুনা হয় না।

এক সম্প্রদায়ের দক্ষিণ হস্তের বৃদ্ধান্স লির নথ আবদ্ম রক্ষা করিয়া থাকে। দশ ইঞ্চি লম্বা হইলে ভাহা নীচের দিকে বাঁকাইয়া দেওয়া হয় এবং এইরূপে প্রতি দশ ইঞ্চি পরিমাণের নখাংশ বক্রাকারে তিন চারি স্তরে রক্ষিত হয়। বছকাল জ্বর রোগে প্রপীড়িত অথবা অজীর্ণ রোগাক্রাম্ভ ব্যক্তির নথ নিষ্পভ হয়, এবং নথের উপর কিয়দংশ উচ্চ ও কিয়দংশ নিয় ভাব ধারণ করে। নথের উপর খেত বর্ণের সে দাগ দেখা যায়, তাহার সহিত স্বাস্থ্যের কোনও সহন্ধ দেখা যায় না, এবং ঐ রূপ দাগ হইবার কারণ

নরভুক্ অজাগর সর্প।

দক্ষিণ আমেরিকার উত্তর ভাগে টিনিভাড নামক একটা ক্ষুত্র খীপ আছে। কয়েক মাস গত হইল এই দীপের অন্তঃপাতী পোট অব স্পেন নামক নগরের নিকটবর্তী কোনও পর্বত পার্খে নিবিড জঙ্গলের মধ্যে এনাকতা (Anacanda) ভাতীয় একটা -बुक्शकांत्र व्यक्षांगत मर्भ मृहे इस । देश दिए वा हा कि छ वर्ग कि कि प्रशिक ७) हाक, धनर देशक भनी दिन कुलकम ক্লংশের ব্যাস আড়াই ফুট অর্থাৎ প্রায় দেড হাত। নিকটবর্ত্তী আমসমূহ

হইতে দরিদ্র শোকেরা উক্ত বনের মধ্যে কার্চ আহরণ করিবার নিমিত্ত প্রায়ই যাতায়াত করিত এবং জঙ্গলের পাৰ্যম স্থবিস্তীৰ্ণ প্ৰান্তরে রাখাল বালক-গণ গো মেধাদি চরাইতে আসিত। উক্ত অজাগর দর্প মধ্যে মধ্যে মেব-পালের মধ্যে জ্বভ বেগে উপস্থিত इहेशा अकी वा इहेंगे स्वय बृत्य করিয়া লইরা জঙ্গল মধ্যে করিত। ক্রমে ইহার মাংস-লোলুপতা এডই বৃদ্ধি হইল যে মেব ছাড়িয়া (ম্বপালক

করিতে লাগিল। একটা হুইটা করিয়া মেষপালক বালক বা বালিকা সর্প কর্ত্তক প্রায়ই নিহত হইতে শাগিল। পরিণতবয়ন্দ বলবান মানুষকে ইহা ভক্ষণ করিতে সাহস করিত না বটে, কিন্তু পুচ্ছাম্বাতে হনন করিত। গ্রামবাসী দরিদ্র ক্রবকগণের পক্ষে বনে বাহ্যা এক প্রেকার অন্যেম্ব চুট্টা উঠিল ৷ পরিশেষে একদিন প্রাম্বাসি-গণ একত্রিত হইয়া টি নিডাডের শাসন-কর্ত্তার নিকট উপস্থিত হইল এবং এই ভয়ানক সর্পের অত্যাচার হইতে তাহা-দিগকে রক্ষা করিবার জনা স্বিন্ত্রে প্রার্থনা করিল। শাসনকর্তা অনুসন্ধান করিয়া তাহণদিগের বৰ্ণিক সমস্তই সভা জানিয়া সূপ নিধনে একদল আগ্রেয়ারধারী সাহসী সৈনা প্রেবণ করিলেন। ইহারা বছসংখ্যক লোক নিযুক্ত করিয়া পর্বতের উপরিভাগভ জঙ্গল কাটাইয়া অত্যে উক্ত সর্পের বাস-ভান আবিকার করিল। দেখাগেল যে গিয়ছিল।

একটা প্রকাও পর্বতভহা উছার বাদ-স্থান। ইহার একদিকে অগ্নি প্রজ্ঞালিত कताहेश ध्रम छेप्लामन कता हतेल। ধুমের তেজ সহু করিতে না পারিয়া সর্পরাজ গুহার উপর দিকু দিয়া বাছিয় ষ্ট্যা পড়িল। অমনই সৈন্যগণ আন-তিদুর হইতে ভাগার শরীরের উপর গুলি বর্ণণ করিতে লাগিল। প্রথমত: হুট চারিটা গুলির আখাত লাগিবা মাত্র উহাকৃতি कृषे डेळ इहेश मांकाहेश मूच डेल्डानन পূর্বাক আক্রমণকারীদিগের প্রতিধাব-मान इहेन। किंद्य छिनद छेनद छिन উহার শরীরকে ক্ষত বিক্ষত করাতে উহা আৰু দৌড়িতে সক্ষম হইল না; অচিরাৎ ভূপত্তিত হইয়া রোধে ও ক্লোভে সম্পোরে মৃত্তিকার উপর পুচ্ছ আঘাত করিছে করিভে পঞ্ড প্ৰাপ্ত क्टेल। वेहात উদর বিদীর্ণ করিয়া ভক্সধ্যে হরিণশিল এবং একটা মানব কিয়দংশ অপরিপাক অবভায় পা ৬ সা

মহাযতত।

ইতিহাসে কত মহাযজ্ঞের কত কথাবোষিত হইতৈছে। নরমেধ বারা
দেবপ্জা তাহাও শুনিয়াছি। স্বর্ণের
জ্বন্য, দেব সংস্থাবের জ্বন্য নরবলি,
ইহাও শুনিয়াছি। শুনিলে হলম কাঁপিয়া
উঠে, প্রাণ আতত্তে শিহরিয়া উঠে।
প্রাণ খুলিয়া মুক্তকঠে বলি, এমন স্বর্গ

চাহি না, এমন দেবসকোৰ সাধন করিয়া অর্গের ঐপর্য্য ও ইচ্ছের ইচ্ছের চাহি না। কিছু পাঠিকে । কঠোরে কোমণড়া আছে; বক্ছে কুসুম ক্ষমা আছে; গরলে অনুভ আছে। স্পার উত্তাল তরক্ষময় সাগরে আভেত্ব ও প্রমোদ উত্তরই আছে। আলু আইস ভাগিবিঃ একটা মহাযজের মহান্ ভাব দর্শন করিতে যাই। মরজগতে অমরভাব দেখিবে, স্থার স্থান রার স্থানীলাং মোহিত হইবে; যদি হাদর থাকে, জীবন থাকে, সেই স্থানরীর ভন্মাবশেষ দেহে মাথিয়া ক্বতার্থ হইবে; জ্রামরণশীল জগৎকে প্রেণ্ড করিতে পারিবে।

রাজপুতনার ভীলার পল্লীর এক ব্রাহ্মণ ভবন ক্রদ্ধার,তন্মব্যে ভীষণ অগ্নি-কুণ্ড জলিতেছে। অগ্নিশিখা লক লকু জিহবায় আকাশমণ্ডল স্পর্শ করিতেই যেন উঠিতেছে। কুণ্ডের নিকটে যজ্ঞ সামগ্রী ন্তরে স্থরে দক্ষিত, ব্রাদাণ যজীয়বেশে উপবিষ্ট : পার্মে স্থশানিত তরবারি বান্সণ উদাত্ত গজীরন্বরে মন্ত্র পাঠ করিতেছেন, পাঠ করিতে করিতে প্রশান্ত নয়ন রজ-वर्ग इहेशा डिठिल, क्लातां कि हर्ज़ मिक छडाहेश १६ल। यक्कानात वक्किर्धात ষেন জগংকে স্তস্তিত করিয়া, বায়ুকে প্রচালিত করিয়া, হোমাছতি প্রদানে डेमाड इरेश भार्यतिए চारिश कहिलन, "বংসে! প্রস্তুত হও। তুমি আমার— আমার বংশের—সর্কোপরি ধর্ম্মের ও শতীবের মুথ উজ্জ্বল করিবার পাত্রী। স্বামি জানি, ভূমি তক্তন্য প্রস্তত। আজ ভোমার ক্ষেহময় পিতার, ধর্মের, সতী-দেৰতার আশীর্কাদ গ্রহণ কর। প্রেফুল বদনে হাসিতে হাসিতে অগ্রসর হও। এস তোমাকে একবার আলিখন করিয়া ভোষার অভ্নরে বল প্রদান করি। ভোমার জীবন রক্ষা করিতে

পারিলাম না, ভাহাতে আমার আর তুঃধ নাই, কেননা ভূমি জানিতে পারি-য়াছ, ভীষণ কাল সর্প তোমাকে. পবিত্র আমাকে. দংশন করিতে ফণা বিশ্বার করি-য়াছে। তুমি বুঝিয়াছ, যে স্বয়ং এ যজের আছুতি স্কুপ না হইলে তোমার ও আমার পরিত্রাণ নাই। ছার জীবন অপেকাসতীৰ মহামূল্য; তাহা তুমি জান। যাও,সর্গে যাও,ঐ দেখ কুলদেবতা, বংশের দেহ-মুক্তা জননীরা ও দেববালাগণ সহাস্য বদনে তোমাকে আলিক্সন করিয়া লইবার জন্য দণ্ডায়মান। বলিতে বলিতে বদনমগুল আনন্দে উংকুল্ল ব্রাক্ষণের इहेग्रा डेडिन। वियाम नाहे, विद्राश নাই, আছে কেবল আনন্দ। ব্ৰাহ্মণ ষেন আনন্দে ফুলিয়া উঠিতে লাগিলেন। আর খন খন পার্যদেশে কুণ্ডের দিকে ও উৰ্দ্ধদেশে স্থ্যমণ্ডলের প্রতি তাকাইতে लाशितम् ।

পার্থে অপরিক টুংযাবনা জ্বোতিপ্রিয়ী আল্লায়িতকুস্তলা রক্তান্তর পরিধানা, বালিকা মৃতি ! আ মরি মরি !
কি মাধুরী। চক্র কিরণ বেন আকৃতি
ধরিয়া ছিরভাবে সহাস্যমুখে দণ্ডায়মান। বালিকা হাস্যছটার দিঙ্মওল
উদ্ধাসিত করিয়া কোমলকরে কহিল,
পিতঃ ! আল জীবন সার্থক। সতীয়,
ধর্ম ও বংশ ও ভোমার মুধ উজ্জ্বল
করিতে পারিব, ইহা অপেকা আমার
আর স্থধ কি, সোভাগ্য কি ! প্রার্থ-

নাই বা কি। জানি পিত:। আমার উপর আমার দতীত, আমার বংশ. আমার ধর্ম নির্ভর করিতেছে। আমি জানি সতীদেবতা, কুলদেবতা আমার চিরসহার। জানি বলিয়া, সেই তুরাচার, পামরের মুখের উপর তিরস্কার করিয়া আসিয়াছি। পিত: । ত্যাপভিন্ন তাহার হন্ত হইতে পরিত্রাণের আর অন্য উপায় নাই; তাই পিতঃ। জীবন আছতি দিব বলিয়া সতীবেশে আসিয়াছি। সেই জনা পিতঃ। এই যজকুও, এই যজনতা, এ তীক্ষধার অসি সাজাইয়াছি, আর বিলম্ব কেন গ ঐ শুন ছার দেশে পুনঃ পুনঃ আঘা-উপর • আঘাতের শদ হই-তেছে, ঐ ভন কোলাহল বাড়িতেছে। পিত: । আর কেন গ বিলম্ম করিলে আমাকে আর রক্ষা করিতে পারিবে না।

পিতা একবার কন্যার দিকে চাহিয়া দণ্ডায়মান হইলেন, মুহর্ছে অসি গ্রহণ করিয়া কন্যার বক্ষঃস্থল হইতে সপ্তথ্ত মাংদ গ্রহণ কবিয়া পাতাভবে রাখিয়া দিলেন। সপ্তধারে কন্যার বক্ষোরভাধার। वुं विश्व পড়িতে नाजिन। পিতা কহিলেন বংদে। তোমাকে আছুতি দিয়া পরে আপনাকে আহুতি मि**र्छि । या ७, पर्गवामिनी (मवकना)** मकन অপেকা করিতেছেন। বালা কোন কষ্ট প্রকাশ না করিয়া, হাস্য করিতে করিতে, আমশাৰা খুৱাইতে ঘুৱাইতে, পিতা াৰ্গ পানে চাহিয়া জীবন আহুতি প্রদান করিল। রাক্ষণ সেই দ্র্রা মাংস থণ্ড মন্ত্র পাঠ করিতে করিতে অমি কুণ্ডে আছুতি দিলেন। অন্নি প্রবল বন্ধিতভাবে জলিয়া উঠিল।

এমন সময়ে বাহিরের ধার ঘোর শক্তে ভাঙ্গিরা পড়িন, দঙ্গে সঙ্গে জনস্রোতের ন্যায় জনস্রোতে ভবন ভরিয়া পেল। সর্কাতো মহাধ্বেশধারী, মণিমুক্তা-বিছু-বিত একটা যুবক। যুবক সেই আগ্নি-কুও, সেই কুওমধ্যম্বা দগ্মপ্রায়া বালিকা, দেই লোহিতনয়ন বজীয় সেষ্ট যভকীর দ্ৰবা সম্ভার ব্ৰাক্ষণ. দেখিয়া স্তম্ভিত হইয়া পড়িল। ঘটনা-ক্ষেত্র পরম্পরাদর্শনে যুবক ভীত হইরা কাঁপিতে লাগিল। মুখমওল 😎 বাক্য রহিত হইল। জনসমূহও স্তম্ভিত হইয়া দাঁডাইয়া রহিল ৷

রান্ধণের অন্য দিকে দৃষ্টি নাই;
কোন রূপ চাঞ্চল্য নাই; রান্ধণ আরক্ত
নয়নে স্থা্রের প্রতি স্থিরদৃষ্টে চাহিয়া জলগভ্ষহন্তে কহিলেন যে, "নরাধম আমার
প্রাণ-প্রিয়তরা স্থিতার এই পরিণামের
মূল, যদি দেব সভ্য হয়, যদি রান্ধণবংশে
রন্ধতেক্তে আমার জন্ম হইয়া থাকে,
যদি ধর্ম সত্য হন, বদি অগতে সতীত্বের ও
পবিত্রতার আদর ও মহত্ব থাকে,তবে সেই
নরাধম ও তাহার বংশের কেহ যেন
ক্থনও স্থাশান্ধি সন্তোগ না করে।" এই
বলিয়া জলগভ্ষ অগ্রিক্তে নিক্লেশ
করিলেন এবং লক্ষ প্রদান করিয়া সেই
অগ্নিক্তে আন্ধা বিসর্ক্তন করিলেন।

নহাযক্ত শেব হইল, আইন পাঠিকে! এই মহাযক্তের মূলতত্ত জানিতে কি জেমার ইচ্ছা হয় না ? ইতিহাস অয়-সন্ধান কর, ডোমার ইচ্ছা পূর্ণ হইবে।

মারবরাধিপতি উদয় সিংহ সৈন্য-সামস্ত দক্ষে দিলীহইতে স্বরাজ্যে প্রত্যা-গমন করিতেছেন। ভীলার পলীর তরু-চ্ছারা-সমাচ্ছর সরোবরতীরে বিশ্রামার্থ উপস্থিত হইয়া চতুর্দিকে পরিভ্রমণ ক্রিতে ক্রিতে দেখিলেন, এক অবিবা-हिका वानिका सन कलम कत्म (मीम (ध) वनश्राम उज्जान कतिका मृत्रमन्त्रपत এরপ লাবণাম্য়ী গমন করিতেছে। ৰারী কখনও তাঁহার নয়ন পথে পতিত হয় নাই, অধিক কি, এরপ স্থন্দরী জগতে বিদ্যমান আছে, ইহা ভাঁহার বোধ ছিল না। তিনি এরপ স্থানে এই বালি-कारक मिशा जिन्न खित्र नाम अनिरमय-নয়নে ভাহাকে দর্শন করিতে লাগিলেন। **छेनग्र जिःह् यूदक, जा**ट्ट अधना हेस्सिय-कांशांत देश्यात्नाभ वहेन. পরায়ণ। উন্ধত্তের ন্যায় কহিলেন, এই বালিকার আতুসুরণ কর। ইহার পিতাকে গিয়া বল "মারবরপতি উদয় সিংহ এই বালিকার বিৰাহাৰ্থী, সে শীভ খেন আমার নিকট প্রেরিত হয়"। অনুসন্ধানে প্রকাশ পাইল, বালিকা আর্য্যপথী নামক সম্প্রদায়ের व्यथान (बनायाची जामात्वत कना। ক্রির জাতি ব্রাহ্মণের কন্যা বিবাহ করিতে পারে না, স্বভরা^ই রপোয়ত উদয় সিংহ আপন অভিপ্রায় সিদ্ধির কোন উপায় না দেখিয়া চু:ধে, षरिश्रं ७ त्कार्य शतिशृर्व इटेलन। अमन नमात्र प्रवित्तन त्य, त्मरे चुन्दती পুনরায় কলস কক্ষে আগমন করিতে-ছেন। যুরক আর স্থির থাকিতে না পারিয়া বালিকার নিকটবর্ত্তী হইয়া কহিলেন, "স্থলরী! আমি মারবারাবিপতি উদয় निःर, তোমার অলোকিক দৌন্দর্যো মোহিত হইয়াছি, আমাকে বিবাহ কর, রাজসিংহাসন, এই মণিমুক্তাখচিত রাজমুকুট, সমস্ত মারবার তোমার শতদল-নিশিত পদে অর্পিত হইল। আইস, দোলা প্রস্তুত, তোমাকে বিবাহ করি। স্থন্দরী! শতশত দাসী তোমার সেবা করিবে,মণি মুক্তার তোমার ভাগুার পূর্ণ থাকিবে।" বালিকা রাজার দিকে না চাহিয়া ক্রোধে যেন আপন সৌন্দর্যাকে আরো বন্ধিত করিয়া কহি-লেন, "মারবার! তোমাকে ধিক, যে ভূমি এমন পিশাচকে ক্রোডে ভান দান করিয়াছ। যুবক! আমার চরণাঙ্গলির তুলনায় রাজমুকুট, তোমার সিংহাসন, ও তুমিও অতি সামান্য; আমি ব্রাহ্মণ-কন্যা ; বন্ধতেজে আমার জন্ম। বংশের, ধর্মের মর্য্যাদা রক্ষা করিতে জানি,পার্থিব ঐশব্যের হুখের লোভে বংশকে মলিন করিতে পারি না। যাও, দূর ছও, ঐ অবস্তু নরক কুণ্ড তোমার জন্য অপেক্ষা করিভেছে।" বালিকা এই বলিয়া ধীরে ধীরে চলিয়া পেলেন। রাজা স্তব্ধিতঃ দৈন্য সামস্তভিত। বনস্গীও বেন ভবিত

412

কির্থকণ পরে যুবক আরো चरिश्वं हरेना चालम कतितन, यां এখনি পিয়াঐ দর্পিতাকে বন্ধন করিয়া আন ।

বালিকা গৃহে আসিয়া পিভাকে সমন্ত ব্রাক্ষণ নীরব चछेना निर्देशन कतिन। হইয়া রহিলেন, চতুদ্দিক্ অন্ধকার দেখি-লেন, নয়নজ্ঞল দর দর ধারে বহিতে লাগিল, কহিলেন, "বৎসে এখন তুমি কি উপায় চিন্তা করিলে ? আমি তো ভোমাকে বৃক্ষা করিতে পারিব কিন্তুমা! ভোমার জীবন হইতে যে বংশের পবিত্রভা, ধর্মের মহত্ব, ও সতীত্ব পরীয়ান, তাহা ভুলিও না। এবন ভোমার কর্তব্য তুমি কর। খামি তোমার পিতা, আমার কর্ত্তব্য তোমীকে রক্ষা করা, তাহা আমাদারা হইল না।" এই বলিয়া কন্যার মুখের দিকে চাহিয়া उहिर्देशन ।

কন্যা হাস্যমুধে বলিলেন "পিত: । চিন্তা কিং অগ্নিকৃত প্রস্তুত করুন। আমি জানি, এছার দেহ অগ্নিসাৎ ভিন্ন আমার পরিত্রাণের অন্য উপার নাই।"

পাঠিকে। এই দেই মহাযভা। মহা-यटक महाविन व्यक्त इहेन। हेकिहान জ্বানে এই যজের শেষ ফল কি?

যোগ-মাহাত্ম্য।*

কৰিহভাশ্চাধিকো যোগী তন্মাদ্ধোপী ভবাজুন।

যোগী তপস্বীদিগের অপেকা শ্রেষ্ঠ. জ্ঞানীদিগের অপেক্ষা শ্রেষ্ঠ, কর্মীদিগের जार्शका (अर्ड, जाड्य दर कार्जून, जूमि যোগী হও।

বোলিমামপি সর্কোবাং মদ্গতেনাম্বরাম্বনা। এছাবান্ ভলতে যো মাং স মে মুক্তমোনতঃ **৪**

শ্রদ্ধাবান্ ও অন্তরাস্বার সহিত মকাত-চিন্ত হইয়া যে আমাকে ভজনা করে, সে সকল যোগীর মধ্যে শ্রেষ্ঠতম যোগী। দৰ্বভূতস্থিতং যে। বাং ভল্পত্যেকসমান্তিওঃ। मर्सवा वर्डमानाणि न वानी मन्नि वर्डए ।

ৰে সৰ্বভূতে

তপশ্বিজ্যোহিধিকো যোগী জাবিজ্যোহপি মতোহধিক: অভিন্নভাবে ভজনা করে, সে বোগী স্কল অবস্থার মধ্যে থাকিয়াও আমাতে অবস্থিতি করে।

আক্রোপম্যেন সর্বতে সমং পশ্যতি বোহসুনিঃ। সুখং বা যদি বা ছঃখং সংঘাগী প্রমোমতঃ ।

হে অজুন আপনার সহিত তুলনা कत्रिया त्य वाक्ति मर्त्तश्रीवत्क ममान त्मर्थ এবং সুথ তুঃথে সমভাবাপন্ন, আমার মতে সেই পরম যোগী। স্কৃত্তহ্মাশ্বানং স্কৃত্তানি চাশ্বনি।

ইক্তে বোগযুক্তার। সর্বতে সমদর্শন: ।

যোগদারা সমাহিতচিত্ত ব্যক্তি দর্শক্ত সমদশী হইয়া প্রমালাকে সক্ষত্তে এবং অবস্থিত আমাকে সর্কভূত পর্মান্তার অবস্থিত দর্শন করে।

^{*} বীষ্ত্ৰৰংগীতা অধাখ্যাৰ অভ্যাদ বোগ হইতে পৃহীত।

যো মাং পশ্যতি দৰ্বতে দৰ্ববঞ্চ মন্ত্ৰি পশ্যতি।
তদ্যাহং ন প্ৰণশ্যমি স চ মে ন প্ৰণশ্যতি।।

ৰে ব্যক্তি সৰ্বত আমাকে দেখে এবং আমাতে সকল বস্ত অবলোকন করে, আমি তাহার বিনাশক হই না, দেও আমার বিনাশক অর্থাৎ বিশ্বাস্থাতী হয় না।

প্রশান্তমনসং হোনং যোগিনং হুপমূত্তমং।
উপৈতি শান্তরজ্ঞসং ব্রহ্মভূতমকল্মবং।।
বিশোবিহীন প্রশান্তচিত্ত নিম্পাপ

ব্ৰহ্মগতপ্ৰাণ যোগীকে সৰ্ব্বোন্তম স্থ্ ব্ৰৰ্থাং ব্ৰহ্মসমাধিজনিত প্ৰম স্থুথ আপ-নিই সাশ্ৰয় করে।

বৃশ্ধদ্রেব সদান্ধানং যোগী বিগতকল্মবঃ। স্ববেন ব্রহ্মসংস্পর্ণ মত্যন্তং স্বসশ্বতে।।

মন সর্বাক্ষণ বশীভূত রাথিয়া বিগত-পাপ যোগী অনারাসে ব্রহ্ম সংস্পার্শের যে অত্যন্ত স্থাধ, তাহা ভোগ করেন অর্থাৎ জীবস্মুক্ত হন।

পুস্তকাদি প্রাপ্তি ও সমালোচনা।

১। তারা মা-পণ্ডিত তারাকুমার কবিরত্ন প্রণীত এবং বাবু জ্ঞানচন্দ্র চৌধুরী এম এ কর্ত্তক প্রকাশিত জগৎ-জননী जक्न कीरवंद जादनकर्जी यिनि, जिनिहे তার। মা। গ্রন্থকার অতি উদার ভাবেই সকল ভক্ত প্রাণের সহিত মিলিত হইয়া সেই মার পূজা করিয়াছেন এবং সম্প্রদায় নিবিশেষে সকল ভক্তই প্রাণের সহিত ইহাতে যোগ দিয়া কৃতকুতার্থ হইবেন। ইহাতে যে পূজা অহুষ্টিত হইয়াছে, তাহা আদ্যন্ত প্রাণের পুরু, স্থতরাং সরলতা, বিধাস ও ভক্তি প্রেমে পূর্ণ, বলা বাহল্য। ইহার সংস্কৃত ও বাসাল। ক্ৰিডা সেই প্ৰাণের ভাষাতেই বৃচিত। व्यक्तेपरक जामता अधिक कथा कि वनिव ? গ্রন্থকারের উদ্দেশ্য "তারা 'আধ্যাত্মিক মহা পূজা ইহার রা জগৎময় প্রচারিত হউক।

প্ৰণীত-প্ৰয়াগতীৰ্থে গতুমাৰ মাদে ৰে মহা মেলা হইয়াছিল, তাহার স্থন্দর চিত্র হইয়াছে। **অ**ক্ষিত মেলায় উপস্থিত হইতে পারেন নাই. এই কুদ্র পুস্তক পাঠে তাঁহারা তাহার দৃশ্য কতক পরিমাণে হৃদয়ক্ষম করিয়া তীর্থ যাত্রার ফলও কিয়ৎ পরিমাণে লাভ করিতে পারিবেন। লেখকের মতের সহিত আমাদের ঐক্য না হইলেও তাঁহার ভক্তিপূর্ণ হাদরের সহিত হাদয় যোগ করিয়া আমরা পরমানন্দ লাভ করিয়াছি। পুস্তকধানি ভক্তির্বপ্পত লেখনী বিনিঃস্ত **সাধুভক্তি** এবং উদ্দীপনের বিশেষ সহায়।

৩। জীবনী-কোষ—শ্রীধারকা নাথ বহু প্রণীত, মূল্য ১ টাকা। গ্রন্থকার অনেকগুলি ব্যবহারোপ্যোগী প্রন্থ প্রচার করিয়া প্রশংসিত ছইয়াছেন। ভাঁহার বর্ত্তমান গ্রন্থখানি সর্কসাধারণের উপকারী विनिशं विष्मेष आमत्रभीत इटेरव । श्रान, ইভিহাস ও কাব্য প্রভৃতিতে উলিখিত মহাত্মা এবং বর্ত্তমান কাল প্রেসিঙ্ক বুভান্ত ইহাতে নরনারীদিগের জীবন বৰ্ণিত আছে। বুত্তান্ত সকল সংগ্ৰহে গ্রন্থকার যথেষ্ট পরিশ্রম স্বীকার করি-য়াছেন। এ গ্রন্থপাঠে সুলভাবে এদেশের পুরাণ, ইতিহাস ও ধর্মশান্তের জ্ঞান লাভ হইতে পারে। এরপ অস্থের উৎসাহ দান করা সর্ব্ব সাধারণের কর্ত্তব্য।

8 । वामारवाधी नीत विस्थे आमन. ক্ৰমে বঙ্গসাহিত্য সমাভে **অ**ধিকতর সংখ্যক স্থলেথিক। আভূতি হইয়া ইহার মুথোজ্জল করিতেছেন। আমরা কর্তৃক প্রণীত, মূল্য ১০ মাত্র।

বক্ষমহিলা রচিত যে তিন খানি উৎকৃষ্ট গ্রন্থ অল্পকাল সধ্যে দর্শন করিয়াছি, তাহার স্বিস্তর স্মালোচন না করিলে গ্রন্থ-কর্ত্রীদিপের প্রতি নায়াচরণ হর না। স্থানাভাবে এবার সে সম্বক্ষ মনোভিলাষ পূর্ণ করিছে না পারিয়া কেবল প্রাপ্তি মাত্র স্বীকার করিলাম:--

- (১) কাব্যকুত্বমাঞ্চল-শ্রীমতী মান-কুমারী প্রণীত ও পণ্ডিত তারাকুমার কবিরত্ব কর্ত্ত প্রাকাশিত, > होका।
- (२) প্রতিধানি—জীমতী মূণালিনী প্রণীত, ১ন; হারিণ্টন ষ্ট্রীট হইতে প্রীযুক্ত তারাগতি ভট্টাচার্য্য ধারা প্রকাশিত।
- (৩) প্রেমলতা—বেহলতা রচয়িত্রী

ন্তন সংবাদ।

১। চীন ও জাপানের যুদ্ধে পিঞি-য়াক নামক ভানে জাপানীরা পরাভূত ও তাহাদের পাঁচ সহস্র সৈন্য নিহত হইয়াছে। চীনদিগের বিজয়ী সেনা-প্তির নাম ইয়ে, ভাঁহার বর্ণনায় চীন সেনা অল্পাত বিনষ্ট ইইয়াছে। ইংরেজ কুষ প্রভৃতি জাতি নিরপেক হইয়া ইহাদের কাণ্ড দর্শন করিতেছেন। **ইউরোপের** শাভি ন্যায় আসিয়ার সংস্থাপনার্থ অন্তৰ্জাতিক দভা সমিতি নাই, চীন-শ্রাপানীরা সভর্ক না হইলে প্রক্রারের विवाम खेरमन गरेत।

আমেরিকা প্রবাসী স্বামী বিবেকানন্দের সম্বন্ধনার্থে কলিকাডার টাউনহলে এক মহাসভা হইয়াছিল, তাহাতে হিন্দুদিগের সকল শ্রেণীর লোক যোগ দিয়া দেশহিতৈবিভার পরিচয় দিয়াছেন। রাজা প্যারীযোহন মুখো-পাধ্যায় সভাপতির কার্য্য করেন।

৩। নবাবমীর মহক্ষদ আলি 🏎 হাজার টাকার ভূসম্পত্তি দান করিয়াছেন, ভাহার আয়ে দরিদ্রদিগের জন্য বিদ্যালয়, চিকিৎসালয় প্রভৃতি স্থাপিত হইবে। নবাব ষ্ণাৰ্থই উন্নত-প্ৰদান নবাৰ নামের যোগ্য

ত্ত শ্বানান্তরে 'দ্ধ' সহছে বে আবদ্ধ থাকটিও হইরাছে, তাহাতে আনাম বেশা বাসীদিগের নথ রক্ষা প্রথার উল্লেখ আছে। আনামের রাজার নথ আহিক মূল্যবান্ সন্দেহ নাই, ইহা রক্ষার জন্য তাঁহার প্রধানা ৫টা মহিনীর একটি নিযুক্তা। তাঁহার জীর সংখ্যা থাকশত।

৫। ফরিদপুর বরিশাল প্রভৃতি

অঞ্চল ভৃতিক্ষের প্রকোপ খৃব প্রবেল।

নব্য ভারত লিখিয়াছেন ফরিদপুরের মধ্যে

জনাহারে ৯টা লোকের মৃত্যু ইইরাছে। ছর্ডিক পীড়িতদিগের প্রাণ রক্ষার্থ সাধা-রংণর সাহাত্য দান নিতান্ত জাবশ্যক।

ভ। বামাবোধিনীর ৩০ জ্বাংস্ব উপলক্ষে বাঁহারা পারিতোধিক রচনা লিধিয়াছিলেন, তাহাদিগের মধ্যে কেবল শ্রীমতী মানকুমারী বস্থর "বিগত শভ বর্বে রমণী দিগের অবস্থা" পরীক্ষক-দিগের মতে পারিতোধিক বোগ্য বলিয়া বিবৈচিত হইয়ছে। ভিনি ৫০ পঞ্চাশ টাকা পারিতোধিক পাইবেন।

বামারচনা।

সঙ্গীত বাদ্য জ্রীলোকের পক্ষে আবশ্যক।

आंबारमञ्ज (मर्ग अधिकांश्म वास्त्रि কুলরমণীগণের সঙ্গীত বাদ্য শিক্ষার विषयी। खाँहात्रा जातन ना य अहे কুটী রমণীকুলের কত **উপকারক**। অধ্যতঃ গীত বাদ্য ছারা আপনার मन थक्त द्वांश यात्र। माननिक यखनात्र অদরাকাশে আনন্দরণ চন্দ্রালোক বিভরণ করিতে সমর্থ হয়, ইহার মত कि चार्छ। चल्येन मनीज মানসিক ষম্ভণা অন্তর্হিত করিবার এক माज महोबर। विजीवनः मनीज वाला মনের এফুরতা বশত: সাহ্য খ্যাকে। এই চুটী উপকার ব্যতীত সঙ্গীত बाम् इत्रकी कूरनद आत्र अक्षी ध्रधान উপকার করে: সে উপকারটা সামীকে नव्हास्य द्वाचा ।

यामी विषम विषाटम मध इहेटन छ त्रीक वामाधाता की यामीक नमानतम রাখিতে পারেন। আমাদের কুল-মহিলা দিগের জন্য যদি সঙ্গীত বাদ্য প্রচলিত থাকিত, তাহা হইলে প্রতিদিন এত পুরুষ কুপথগামী হইগা দর্বসাম্ভ হইত না এবং তাহাদের অভাপিনী মাতা ও জी अनुपार कृतिविष्ट यज्ञना করিতেন না। অনেক পুরুষ শুধু দঙ্গীত বাদ্যের বিমলানন্দ উপভোগের জন্য कुश्राथ अञ्चन कित्रा शांकिन। श्रीत्शास অবস্থা ভারানক শোচনীর ছইরা দাঁড়ার। পুরুষ এরপ কুপথে যার কেন? কুল-महिना निरभन्न मेजीङ वारमान अखाव स्थ देशन अक्षी अधान कात्रन ठाश द्याय-रत थकात्मी ना रहेक चल्राद मकर्ष

খীকার করিবেন। বে সঙ্গীত বাদ্যের श्रभावन आश्रामत्मव बना अर्थ वाव कविश পুরুষ কুপথগামী হইতে কৃষ্টিত হয় না, यि (महे मञ्जी व वारमात श्र्यात्रम श्रह অস্বাদন করিতে বসিয়া পাইতেন, ভাহা হইলে নিশ্চরই প্রতি নিরত এত পুরুষ কুপথগামী হইয়া নিজের নন্দন কাননরপ দংদারে অশান্তিরূপ অগ্নি জালিতেন না। অনেক ছীলোকে মনে করেন সঙ্গীত বাদ্য ककी लक्कार বিষয়, কিন্তু প্ৰকৃত পক্ষে তাহা নহে। ষাঁহার। এরূপ করিয়। থাকেন ভাঁহাদের ধারণা ভুল। দল্লীত বাদ্য পিতা মাডা, শভর শাভড়ী ভাতর ইত্যাদি দকলের কাছে করা যাইতে পারে। কতগুলা অল্লীল গান কঠছ করিয়া সেই ওলা গাওয়া অন্যায় ও ঘণাকর। ভূগিনীগণ তোমরা গুরুজনের সম্মুখে वीना वाकाहेया क्रेश्वतंत्र छन गान कत्र. তাহাতে কেহ নিন্দা করিবে না এবং সংসার স্থাধের হইবে। গীত বাদ্য যদি একটা লক্ষাকর কার্যা হইবে, ভাগ হইলে আর্য্য মহিলাগণ যত্নের সহিত গীতবাদ্য শিক্ষা করিতেন না। ভাঁহার। कि निवर्षा ছिলেन? डाहा कथन है নর। প্রাচীন ভাগ্যমহিলাদিগের ন্যার লক্ষাবতী রমণী আমাদের মধ্যে কর জন ? কি ছ:খের বিষয় এক সময় যে দেশের কুল মহিলাগণ যত্বের সহিত সঙ্গীত বাদ্য भिका कतिवाहित्यन, कर्मा स्मेर त्रत्यंत রমণীপণ্ট এই মঞ্চলকর কার্ব্যক্তে লক্ষা-

কর কার্য্য ভাবিরা দুরে নিক্ষেপ করিরা-ছেন। যে দিন জারাদের কুলমছিলাও গণ প্রাচীন জার্য্য মছিলার ন্যার ধীবা বাজাইরা গান গাহিতে শিবিবেন, সেই দিন হইতে পুরুব আর কুপথগামী হইবে না; দম্পতিদিনের মনোমালিন্য ঘটিয়া সংসার বিষময় হইবে না। সেই দিন হইতে জামরা সংসারে ধর্ম লাভ করিব।

লেধিকা

मशिख वाना म्रामि ।

৺অশ্বিকা দেবজায়ার উদ্দেশে চিত্রপট।

আমার জাঁধার ঘরে,
এ কে গো বিরাজ করে,
লন্ধী-প্রতিমার মত এ কার প্রতিমা।
মাধ্র্যা সৌলর্ষ্যমন্ত্রী,
দয়ামন্ত্রী, স্বেংমন্ত্রী,
মানবীতে সন্তবে কি এত মধুরিমাণ
ভূতল পবিত্র করি,
বৃবি কোন দেবনারী,
ধেলা করে চলে গেল আপন আবাসে।
আমরা কি লয়ে রব,
এই চিত্রপট তব,
প্রেব চিরজীবন অঞ্চনীরে ভেসে।
স্বধু কি এ প্রতিম্র্রি,
কত তব প্রাকীর্ষি,

কত হেহ কত দ্যা জাগিছে অদৰে!

সতী লক্ষী তুমি দেবী, जापर्य जीवन गणि, ভবিলে মানবী লীলা মরত আলয়ে। মর্ছ্যেও দেবতা পতি, লভেছিলে তুমি সতি, কে বলে মানব ডাঁরে তিনিও দেবতা। শাপভাষ্ট হজনায়, क्रमिल ७ धताय. পালিলে সভীত ধর্ম অয়ি প্রতিবতা ! হরিনাম লয়ে মুখে, জীবন ত্যজ্ঞিলে স্বধে, **জটল** বিশ্বাস বুকে, নির্ভয় হৃদয়; আপন পুণ্যের বলে, কি আনন্দ মৃত্যুকালে, ভভদিনে চলে গেলে অমর আলয়। কুতান্ত বছণা দিতে, পারে কি ও শরীরেতে.

মৃত্যুছারা না পড়িল ও পবিত্র দেহে;

অব্দরা মুরতি ধরি,

গেলে চলি স্থবনারী আপনার গেহে॥

হাসি মুখে কায়া ছাড়ি,

জ্ঞীমতী হৃ—বোষ। নওগা।

यथन।

দৈথিত্ব স্থপনে আর বসস্ত না হবে,
প্রকৃতির সে ক্ষমতা নাহিক এখন,
কু আশায় ধুমজালে আর্ত সে পথ,
বারে আসি মিছে কথা বলে সর্কজন।

স্থনপদ ছাড়ি আমি চলিত্র স্বদূরে, দেথিলাম বনলতা কন্টকে আর্ভ, কাঁটাগুলি লইলাম বাঁধিতে ললাটে, বিজয়-মুক্ট সম পরিলাম শিরে।

কত যে শুনিত্র আমি ঘূণা কটু কথা

যুবক বালক আর রুদ্ধের নিকট,
সভামাঝে সমস্বরে বলিলেক তারা
কাঁটার মুকুট মাথে বোকা দে নিশ্চয়।
৪
বলিতে লাগিল সবে নির্কোধ বালিকা।
নিশায় দেখিলু এক স্বরগের দৃত;
অধরে নাহিক ভাষা, উজ্জ্বল নয়ন;
নীরবে মধুরে হাঁসি দেখেন মুকুট।
৫
ক্রমে ইন্ত পরিমিত হ'ন অগ্রসর
ছোঁবা মাত্র কণ্টক হইল পারিজাত,
দে ভাষা মুখের ভাষা কভু না সন্তবে
বলিলেন "ধন্যা ভূমি নারী ভাগ্যবতী।"*

শ্ৰীমতী সুশীলাবালা বস্থ।

* শেৰচরণ স্থা পরিবর্তিত। বা, বো, স।

* পারিতোবিক রচন !— বাবু ব্রন্ধমোহন দল্ভের পারিতোবিক প্রবৃদ্ধ গত শ্রাবণ মাসের সংখ্যার বিজ্ঞাপন জন্তব্য ।

বামাবোধিনী পত্রিকা।

BAMABODHINI PATRIKA.

"कन्याप्येवं पासनीया ऋश्वहीयातियत्रतः।"

কস্তাকে পালন করিবেক ও যত্নের সহিত শিক্ষা দিবেক।

৩৫৭ সংখ্যা

আশ্বিন ১৩০১—অক্টোবর ১৮৯৪।

৫ম কল্প। ৩য় ভাগ।

সাময়িক প্রসঙ্গ।

মৃক বধির বিদ্যালয়—এই বিদ্যালয়ের শিক্ষক বাবু যামিনীনাথ বন্দ্যোপাধ্যায় পত ১২ই সেপ্টেম্বর বিলাত যাত্রা করিয়াছেন। তিনি তথা হইতে মৃক বধির এবং অন্ধদিগের সম্পূর্ণ শিক্ষাপ্রণালী শিক্ষা করিয়া আসিবেন। মৃকবধির বিদ্যালয়ের অধ্যক্ষণণ তাঁহার জন্য অন্যন ও হাজার টাকা বায়ের ভার লইয়াছেন। দেশহিতৈষী নরনারীগণের এ সাধুকার্য্যে মৃক্তহন্তে সাহায্য কর। উচিত।

ইংলণ্ডেশ্বরীর বিদ্যাবতা—
মহারাণী বিক্টোরিয়া ইউরোপীয় ১০টী
ভাষার ব্যুৎপর, ইছার উপর হিন্দীভাষা
শিক্ষা করিরাছেন। ভারতীয় কোনও
ব্যক্তি ভাঁহার সহিত সাক্ষাৎ করিতে

গেলে তিনি বিশুদ্ধ হিন্দীভাষায় আলাপ করিয়া থাকেন।

লগুন দাতব্য—এক লগুনসহরে
ধনাত্য লোকের মৃত্যুর সময়ে সাধারণ
হিতকর কার্য্যে দান প্রতি বৎসরে প্রায়
২কোটা টাকা। ইহাতেই তথায় এত দেশহিতকর অন্তর্গান স্মম্পন্ন হয়। এ দেশের
ধনাত্যদিগের অর্থ মোকর্দমা ও পোব্যপুত্রে প্রায় নিংশেষিত হয়।

লেডী ডফারিণ—ভারত-হিতৈবিণী এই অশেষ গুণবতী রমণীর নাম
আমাদের বিশেষ প্রিয়। ইনি কেবল দয়ার
কার্ব্যে প্রসিদ্ধ নন, বিদ্যাতেও স্থবিধ্যাত।
ইহার রচিত কাব্য গ্রন্থের প্রথম সংস্করণ
আল্ল দিনে নিঃশেষিত হইয়াছে, বিতীর
সংস্করণ শীত্র প্রকাশিত হইবে।

ন্ত্রী-বারিষ্টার—মিদ্ মেদ্বা এস টাইটদ গড ছুন মাদে নিউইয়র্কে আইন প্রীক্ষা দিয়া এল এল বি উপাধি পাই-গাছেন। তাঁহার শ্রেণীতে ১০৫ জন পুরুষ ও ৫ জন দ্রীলোক ছিলেন, তিনি প্রীক্ষায় ৪৫ ইইয়াছেন।

ন্ত্রী ডাফার—কুমারী হামিল্টন আফগানিস্থানের আমীরের জেনানা ভাজার হইরা ভারতবর্ব হইতে গিরাছেন। ব্রী উপনিবেশ প্রতিষ্ঠাত্রী—
বিবী ফেঞ্ দেলডন একবার আফি কা
ল্মণ কবিয়া আসিয়াছেন, তথার
এক নব জাতি প্রতিষ্ঠার জন্য প্নরায়
যাইবেন এই জন্য ইংলণ্ডে বন্দোবস্ত
করিতেছেন। জাঞ্চবারের উত্তরে একটা
বাণিজ্য বন্দর করিবেন। ৩০০ মার্কিন
শ্রমন্দীবী তথার ঘাইতে প্রস্তুত।

বাল্মীকি চরিত।

যে প্রশিদ্ধ দক্ষ্য রক্ষাকর প্রভাবর দেবর্ধি নারদের মহামন্ত্রে দিব্যক্ষান লাভ করিরা অমর কবি বাল্মীকি নামে জ্ঞগদি-থ্যাত হইয়াছেন, বর্জমান প্রবন্ধের বাল্মীকি তিনি নহেন। ইনি দ্বাপর বৃগের জনৈক ভক্তিমান্ বৈষ্ণব। ত্রেতা বৃগের বাল্মীকির ন্যায় ইহাঁর পাণ্ডিত্য এবং প্রাসিকির ন্যায় ইহাঁর পাণ্ডিত্য এবং প্রাসিকির ন্যায় ইহাঁর পাণ্ডিত্য কর্মাপা অবনীর অধীশর ধর্মপুত্র ধ্রিটির ইহাঁকে যথেন্ত সম্বর্জনা করিরাছিলেন, অধিক কি মহারাজ ব্ধিটিরের জ্গদি-প্রান্ত রাজস্য় বক্ত উক্ত মহান্ধার আগ-

জাতিভেদ অথবা লাত্যভিমান থাকার দোষগুণ সম্বন্ধ আমরা এখানে কোনবিচার ক্রিভেছি মা, ভবে বলিতে চাহি সর্কেশর জগদীপবের ক্রিভেট "ভজের জাতিভেদ"

नारे अकथा मर्क नाधात्रलंत जीकार्या এবং দেই হিদাবে ধরিলে নীচ জাতি বলিয়া কাহাকে অশ্রহা অথবা দ্বুণা করা যাহাহউক অন্যায়। বান্মীকি মহাশয় জাতিতে রোহিদাস অর্থাৎ মুচি ছিলেন। আমরা ভাঁহাকে অশ্রন্ধা কর, তাহাতে তাঁহার ক্ষতি কি? যে 🕮 কৃষ্ণ হিন্দুজাতির নিকট পূর্ণব্রঙ্গের অবতার, তিনি স্বয়ং এই ভক্তের অপ্রমেয় সন্মান ও সম্বৰ্জনা করিয়া গিয়াছেন। বৰন পুৰিবীম্বাবভীয় পরাক্রান্ত জাতি পরাস্ত হইয়া মহারাজ চক্রবর্তী ধার্মিক প্রবর যুধিটিরের আশ্রর লইরাছিলেন, সেই সমর তিনি মহাসমারোহে রাজস্র বজের অমুঠান করেন। সেই মহাযতে সদাস্থা বান্ধণ, ক্তির, বৈশ্য, শৃত্ত সকল শ্রেণীর হইয়াছিলেন, লোকেই সমাপত

লক বিদেশীয় নরপতি মহারাজের
চরণপ্রান্তে মন্তক জবনত করিরাছিলেন,
মহাসমারোহে লক লক ব্রাক্ষণকে
অপরিতোব ভোজ্য দান, নানাবিধ ধাগ,
মন্ত, ক্রিয়াকাও অনুষ্ঠিত হইয়াছিল।
অনুষ্ঠের বাবতীর ক্রিয়া স্থ্যসম্পন্ন হইলে
মন্ত্রীর শব্দ নিনাদ ধারা যজ্যের সম্পূর্ণতা
ধ্যোষণা করা হইয়াছিল।

কিন্ত এই যজের পরিসমাপ্তি কালে
প্রথমে শব্দ ঘণ্টার স্বর বন্ধ হাই রাছিল,
কোন চেষ্টাতেই কেহ ভাষা বাজাইতে
সক্ষম হইল না। এরপ স্থাঞ্চল দর্শনে
যজের অনুষ্ঠাতা মহারাজ বৃধিটির নিতাত্ত
ভীত চকিত হইয়া উৎকটিত ভাবে
ক্ষকেক জিল্পানা ক্রিলেনঃ—

"শাস্থা ঘণ্টা না বাজিল, ছিদ্রা কি হইল ?"
কৃষ্ণ কহে "মহৎ ছিদ্র বৈষণৰ না থাইল;
যেহেতৃ অপূর্ণতায় শব্ধ না বাজিল;
ক্রাতি, স্মৃতি, পুরাণেতে বিধিহীন হৈল।"
যথিষ্টির শক্ষের অপূর্ণতা শুনিয়া বসিয়া

যুধিনির বজ্জের অপুর্ণতা শুনিয়া বসিয়া
পড়িলেন, এড ধুমধাম এত ব্যয় ব্যসন
করিয়া যজ্ঞ করিলেন, তাই। সম্পূর্ণ
বিকল হইল ভাবিয়া তাঁহার মাথা যুরিয়া
সেল ! তিনি পুর্কাপর সমুদায় চিতা
করিলেন, অতি আক্রাগাবিত হইয়া ব্যঞ্জাবে জিজাসা করিলেন, "মহাত্মন্ ! এই
অসংখ্য অসংখ্য সদাচারী আহ্মণ, লক্ষ
লক্ষ ক্রিয়, বৈশ্য, শুল, পরিতোবপূর্বক
ভোজ্য প্রহণ করিলেন, ইইাদিপের মধ্যে
কেইই কি বৈক্ষৰ নহেদ গুঁ

"কৃষ্ণ কৰে স্নাহি, নাহি, ৩ছ ভক্ত বারী, যজেতে ' প্রাসিয়া কেন ধাইবেক তারা ?"

রু । ইটির অছির হইরা পুনরার কিং এসা করিলেন 'কুফ তবে উপার ?' ত,খন মহাপ্রাজ্ঞ প্রীকৃষ্ণ কহিলেন, মহা-রাজ, তোমার এই নগরের মধ্য অভি পবিত্র, ভাগবত, শুদ্ধচেতা, পরম বৈষ্ণব রোহিদাস বাল্মীকি; তুমি স্বহ্র সেই মহাত্মাকে আহ্বান করিরা সম্বর্জনা কর।

মহান্তা যুধিটির প্রসন্তমনে কৃষ্ণাদেশ পালনে প্রস্তুত হইলেন, মহানদে ভীমা-জ্ব্নকে বাল্মীকি সন্নিকটে পাঠাইলেন; তাঁহার সম্বন্ধনা ও অভ্যর্থনাজন্য নগর পুন-ব্বার নব বেশে সজ্জিত হইছে লাগিল, বেন পুনরায় নব যজের উদ্বোগ হইতেছে; অভ:-পুরেপুনরায়রক্কন ক্রিয়ায়ত হইল! আর মহারাজ চক্রবভী ধর্মান্তা বুধিটির একজন নিতান্ত অপরিচিত গরীব মুচির অপেকার সোংস্ক্ররনে ইতশুত: নিরীকণ করিতে লাগিলেন। হায় হায়। প্রাণস্থা ক্রফের প্ৰতি এত বিশ্বাস, এত ভক্তি না পাকিসে কি নিৰ্কাদিত যুধিটির রাজস্ম বজ্জের অমুঠাতা হইতে পারিতেন ? ক্তিয়, চাতুর্বর্ণ ক্রাভি সমূহের শ্রেষ্ঠ হ্ইয়া দিগ্দিগভরে প্রসিদ্ধ পরাক্রার ভূপালগণের দওমুতের কর্তা হইয়া ভক্ত-প্রবর যুধিটির আজ কুঞ্চের সামান্য ध्यन्थ्रना हर्यकारतत स्मरा मक्तित वना ব্যাকুল, চিন্তিত, ও পরম আগ্রহাবিউ।

বাহাহউক এদিকে চথকার পরীতে পরিক্রতম বাশীকি মহোদর হুহে নিশী-

লিত-লোচনে ইউদেবের চিস্তায় বাহুজ্ঞান नुना, अमन समाय वीताबागना जीमार्क्त,न স্বদলবলে, তাঁহার সমক্ষে উপস্থিত হটলেন। রোহিদাসের সেই ভক্তি-পূর্ণ বিশাল বক্ষস্থল, জ্যোতির্ময় মুখাবয়ব, চাক্চিক্যময় প্রশস্ত ললাট দর্শনে ভীমা-র্জ্জনের মনে যুগপৎ ভক্তিও আনন্দের উদয় হইল।—তাঁহাদিপের অবস্থামু-যায়ী বীর্ঘ্য, পরাক্রম, খ্যাতি, ষশ, গর্ম্ব, সকলই ভক্ত সন্দর্শনে অবনত ও অন্তর্হিত रहेन। इहे जाजात वाकाफ कि रहेन ভয়ে সবেগে বাল্মীকির পদময় ল্ট্যা বক্ষে ধারণ করিলেন। চমকে ভগ্নধান হইয়া বালীকি মহোদয় সকতে নেত্রোমীলন করিলেন, দেখিলেন, মহা পরাক্রান্ত রাজায়ক, মধাম ও ততীয় পাশুব, পদতলে পতিত। তিনি ভীত চকিত হইয়া কিছু উপলব্ধি করিতে পারিলেন না, বালকের ন্যায় হাউ হাউ করিয়া কাঁদিতে লাগিলেন। বান্মীকিব সেই দীনভাব দেখিয়া ভীমাৰ্জ্বৰ অঞ সংবরণ করিতে পারিলেন না। বছক্ষণ অঞ্লীলার পর ভীম মহাশয় কম্পিত-কলেবরে জ্যেষ্ঠের আজ্ঞা নিবেদন করিয়া कहिरलन, "८२ रेवश्ववकृतिख्लक ! रमत-ছুর্লভ আপনার পদ-রজোদানে ইন্দ্রপ্রস্থের রাজপুরী পবিত্র করিতে হইবে, অন্প্রহ করিয়া আমাদিগের ক্ষমে আরোহণ পুর্বাফ রাজধানীতে ওভাগমন করুন।" 'আহা ৷ নিয়ক্ষ বালীকি অত উচ্চ সাহিতা উপ্লব্ধি করিতে পারিলেন না;

তবে বুকিলেন, যে তাঁহাকে রাজনাটী
যাইতে হইবে। তখন খীরে খীরে
বৈঞ্চবোচিত বিনয় সহকারে বলিলেন:—
"তবে যদি যাব আজ্ঞা লজ্বিতে না পারি।
মো সমান যোগ্য কর্ম করিবারে পারি॥
উচ্ছিষ্ট পাড়িব আর ঝাড়ু বাড়ু দিব।
পদ ধোয়াইতে মুঞি যোগ্য না হইব॥"

याहाइछक, वान्मीकि याहाइ वनुन, ভীমাৰ্জ্জন মহাদমারোহে তাঁহাকে রাজ-श्रामारम লইয়া গেলেন। মহারাজ যুধিষ্টির কুতাঞ্জলিপুটে ভাঁহার অভ্যর্থনা ও সম্বর্জনা করিলেন, পরিতোষপূর্ব্বক ভাঁহাকে ভোজন করাইলেন। ভক্তপ্রবর বাল্মীকি এ রহস্য কিছুই বুনিলেন না। বিরক্ত হইয়া, "কৃষ্ণ কহ, কৃষ্ণ কহ" বলিতে বলিতে নেত্র নিমীলিত করিলেন। ভাহাকে পুনরায় সমারোহে স্বধামে রাথিয়া আসা হইল। হরিধ্বনি করিয়া মহা-যতঃ সম্প্র হইল। যত্তীয় শভা যেন বাশ্রী-কির সন্মান বুদ্ধির জন্যই এভক্ষণ নীরব किल, এখন मञ्चलिंग ऐटिक: यद वाकिया যজের সম্পূর্ণতা ঘোষণা করিতে লাগিল। মহারাজা আপনাকে কৃতকৃতার্থ বিবে-চনা করিয়া, মনে মনে বৈষ্ণব-মাহাত্ম্য চিন্তা করিতে লাগিলেন।

ফলত: এই বাল্মীকি চরিতে ভগ-বানের আশ্চর্য্য লীলা প্রকাশিত। "গুদ্ধ ভাজিতেই ভগবান্ বাধ্য," জাতি ধন বুদ্ধি বিদ্যা পদম্ব্যাদার অপেক্ষা নাই, এই বাল্মীকি ডাহার অন্যতম জাজ্জন্য উদাহরণ। শ্রুতিপুরাণ, গীতা ভাগবত প্রভৃতি শাস্ত্রও এই তত্ত্ব ঘোষণা করিডে-ছেন, যথা—বোমে ভক্ত সমে প্রিয়া।

বে আমার ভক্ত, সেই আমার প্রির।
"ভক্তিবশ: পুরুষ: ভক্তিপ্রিরোমাধ্য:।
ভগবান্ ভক্তিতে বন্ধ, ভক্তিপ্রির।

মাতৃভক্তি ও মাতৃ-উপাসনায় সম্ভানের মুক্তি।

(৩৫৬ সংখ্যা ১৩২ পৃষ্ঠার পর।)

"নচাপভাসম: স্বেহ: 'এ কথা প্রায় मकल कीत करुत्र शक्करे थार्छ। আমাদের গৃহপালিত পশু পক্ষীদিগের মাড়-স্নেহ অনেকেই দেখিতে পান। আরও আশ্চর্য্য এই যে মাতৃ-প্রকৃতি-প্রাপ্ত হিংস্রজন্ত প্রহপূর্ণ স্থাদরে পালন করে !—মানবণিভ **শাবকাদি** তাহাদের ভক্ষ্য হইলেও তাগারা নিরাশ্রয় পাইলে স্বীয় সন্তানবৎ মানবশিশুকে প্রতিপালন করে; পুস্তকাদিলিথিত ''ব্যাঘ্ৰপালিত মানুষ'' এবং কলিকাতা "ভল্কপালিতা দাসাপ্রমের ইহার উজ্জ্ব দৃষ্টান্ত। যাহা হউক, মাতৃ-শ্বেহ ইতর ও হিংস্র জক্তর মনেও ষ্থন এত প্রবল, তথন জীবগণের মধ্যে শ্রেষ্ঠতম, স্থদর্বিশিষ্ট মানবভাতির माज-एक रा अপतिभीम ७ हित्रकारी, ध কথা বলা বাছলা মাত্র। সন্তান গর্ভন্থ ২ইলে দেই জ্রনের উপরেই মাভার শ্লেহদঞার হয়। গর্ভন্থ শিত কিলে নিরাপদ থাকিবে, । কদে সুস্থ দেহে ভূমিষ্ঠ হইবে, ইহাই মাতার ভাবনা। ছেহাতিশরে আনন্দ ও আএহে মাতা প্ৰসৰকাল পৰ্যান্ত গৰ্ত- যন্ত্রণা সঞ্চ করেন; তাহার পরে নিদাকণ প্রস্ববেদনা—যে যন্ত্রণা ব্যক্ত করিতে মানবের দাধ্য নাই. পরিণাম মৃত্যুও হইতে পারে, সেই ছ:সহ বেদনা সহিয়াই <mark>মাতা সভান</mark> প্রস্ব করেন। আবার সদ্য:প্রস্থতা মাতা সন্তানের মুধ দেখিয়া এত আন-নিতা হন, সভানের মঙ্গলাকালার এড বাগ্র হন, যে নিভের মরণাধিক ক্লেশ উপেকা করিয়া প্রাণের সন্তান হীনাক হইয়াছে কিনা, ভাষার শারীরিক ক্রিয়া সকল উপযুক্ত রূপে সম্পাদিত ইইতেছে কিনা ইহাই মাতার প্রধান চিন্তনীয় হয়। সেই চেতনাবিশিষ্ট জড়বং শিশুটাকে "মাসুব" করা যে কি আয়াস্বাধ্য কি শ্রমসাধ্য, তাহা মাতাই জানেন, আর প্রম মাতাই জানেন। সেই অসহার নিরাশ্রের শিশুটী মাতার হৃদরের শোণিত, জীবনের আনন্দ, মুমভার পুড়লীরূপে পালিত হয়—তাহার সকল অভাব পূর্ব হয়। একই মা তাহার ধালী, দানী ও মেধরাণী রূপে নিযুক্তা থাকেন। यन মৃত্রে মাতার শরীর ভূবিয়া পাকে, স্থন্য

শ্লুপে অকল শোণিত ব্যৱ হইরা শরীর কুশ চ্ছতে বাকে, ভাহাতেও মা'র কত আনন্দ ! শিক্তর পীড়া হইলে মাতা রোগীর ন্যায় শ্বীনাহার ত্যাপ করেন, রোগীর ন্যায় खैयध लथा बाहन करत्रन ; भिख्त भन्नीत-স্থন্যবুদ্ধিকর পোষণ আশয়ে মাতা আহার পানীয় গ্রহণ করেন এবং শিশুপালন অন্নরোধে মাতাই কুধা তৃঞা নিজা প্রভৃতি শারীরিক বৃত্তি দকলকে সংযত করেন। দাসত্ত্বের মহত্ব, আত্ম-ভ্যানের দেবত্ব মাতৃ-হাদরে মাতৃ-ব্যবহারে नर्सनारे (नथा यात्र। এ क्रगर्ड माधात्र মানৰ অধ্বপ্ৰাৰ্থী; যে কেছ অধ্বের ক্ষতি করে, সাধারণ তাহার হাত মানব नाटा। कार्डक পারিলেই **অলোকিক—মা**ড়-চরিত ইহার বিপরীত। এ ভুগতে সম্ভানের জন্য মা "সর্বস্থিহারা" বলিলেও অত্যুক্তি হয় না—দেহ শিশুর वल मृत वमनानि निश्च, वाहाइ निश्चानि ছইতে বঞ্চিতা, রোগাদির অন্য সদাই **শক্তিভা—এড** তু:খভাগিনী মা কেবল সন্তানেরই জন্য: কিন্তু সন্তান কর্তৃক মাতৃ-জনত্ব এত নিপীড়িত হইলেও, মাতার বিরক্তি দূরে থাকুক, স্বেগ-সিকু সহস্র লোতে উথলিয়া সেই সম্ভানকে ভুবাইতে থাকে ৷ আবার স্তানের মধ্যে যেটা কাৰা খোঁড়া প্ৰভৃতি বিক্লাক, অথবা नीक्षिक, मूर्व, वा मतिम विनश कन-अवाद्य व्यवस्थानीय- क्या क्यांत्र स्थ ज्ञानी वरेट माठात रेश, भाकि, आणा अकृषि त्रमृदन विमद्धे वरें।

ধাকে, দেই হতভাগ্য সন্তানটীই মা'র বভ বছের ধন-বভ আদরের জিনিস হর ! निर्देव मः नात "अध्य" दिश्वा शास्त्र भन-দলিত করে, এই ভয়ে মা সেই ছুর্ভাগ্য ক্ষেহের বুক দিয়া ঢাকিয়া জীবটীকে নিঃস্বাৰ্থতা, द्वार्थन । এমন क्रशीम (क्षम, क्रश् चात्र मिदित ना! মাত-জদম্বের উপমেয় পদার্থ জগতে আর মিলিবে না ৷ এইজন্যই, মাতৃ-তম্ব বুঝিয়া মাভ্ভক্তিরপ মহাসাগরে ভূবিয়া आर्था अधिश्व, अमरत्रत्र शूर्व छेक्ट्रामखदर বলিয়া গিয়াছেন,

> "নান্তি মাতৃ-সম। ছারা নান্তি মাতৃ-সমা গতিঃ। নান্তি মাতৃ-সমং, তাণং নান্তি মাতৃ-সমং। প্রিয়া॥"

''মাতার ন্যায় ছায়া আর নাই, মাতার ন্যায় আশ্রয় আর নাই, মাতার ন্যার রক্ষা আর নাই, মাতার ন্যায় শ্রিয় বস্তও আর নাই!" আমরাও বুকিতে পারি মায়ের মত জিতাপজালা-নাশিনী দেবতা আর নাই!

এ সংসারে স্থেষ দিনে বেমনই
হউক, তৃঃখের দিনে মহাপাপীও তগবান্কে একবার মনে করে। সেই রকম
সোভাগ্যের সময়ে যাহাই হউক, ছুর্ভাগ্যের
সময়ে অতি বড় কুডছ সন্তানও "মা" বলিয়া
নিখাস ছাড়ে। ভাই রোগী রোগযাতনার, শোকী শোক-যাতনার, ভীক
বিভীষিকার, সকল ব্যবিতেরাই ব্যথার
সময়ে "মা" বলিয়া ভার্ডনাদ করে;

ভগবানকে ভাকিলে মহাপাশীর পাপের জালা বেষন ভূড়াৰ, মা'কে ভাকিলে বড় আলাও সেইরক্ম ডুঃখের चु:बीव क्छारेश থাকে। মানব রোগী হউক, **(माकी रुषेक, मिल इर्षेक, दृष रुषेक,** ধনী হউক, দরিজ হউক, বড় ব্যধার नमात्र ति ''मा' विनिश् **অর্তি**নাদ করিবেই। কুসন্তান হইলেও সেই মাতৃ-শ্বরণে তাহার আত্মা এক পলকের জনা পরিতৃপ্তি লাভ করিবেই। তাই বলি-তেছি মা'র মত অবৃত্নয়ী দেবতা ষেমন এ জগতে আর নাই, "মা" শব্দের মত অমৃতময় শব্দও সেইরূপ ভাষায় আর নাই! মানবশিও জীবনের প্রথমে "মা" বলিতে লিখে, প্রাপ্ত वत्राम मार्क मत्त्राधम আৰ-ভিন্ন তৃপ্তির লালসাতেও প্রতিদিন অগণ্য वात "मा" मा" करत, मूम्र् मानवक বুৰি তাহার খেব নিখাপ "মা" বলিয়া ত্যাগ করে। কিন্তু এতবার ব্যবহৃত হইলেও "মা" শব্দ সন্তানের প্রাণে চির-নৃতন! "मा" উक्कांत्रण कत्रिलिटे সञ्जान-चमरत्र নৰ বল, নবোৎসাহ, নৰ ক্ৰি, নৰ-

জীবনী দক্ষাবিত হয় ৷ ওনিয়াছি আৰক্ষ পান করিয়া কাহারও পরিত্তি করে चानिए বিষয়ে **নতাতা** ना--ध मानत्वत्र डेलाव्र नारे. किंड सांदर ডাকিয়া ডাকিয়া সন্তানের পরিছবি ক্ধন্ত হয় না ইহা স্কলেই বুরিছে পারি। এ অগতে মাতৃ-ছেহ বেষন অমৃত, মাতৃ-অন্য ধেমন অমৃত, মাতৃ-জৈছি বেমন অমৃত, মার আদর বেমন অমৃত, 'মা' বলিয়া ডাকাও সেই রক্ম অমৃত! 'মা'বলিলেই সভানের বুকে অয়ত-বোজ वार ! अहे अपूर्व तक्ता वृतियाह हिन्दू-अच्छानांत्र अश्रमीश्वत्रक इर्गा, काली, অপদাতী প্রভৃতি মাতৃমূর্ডিতে করিয়াছেন ! এই অপুর্বে রহস্য বুঝিয়াই দে দিন আন্দ্ৰন**াজে** মহান্তা কেশব চল দেন ভগবান্কে মাতৃরূপে উ**পাসনা** করিয়াছেন! ভপবান্ বলিয়া ডাকিলে বাহার জ্পয় ওক থাকে, 'মা'বলিয়া ডাকিলে তাহার জনমণ্ড ভিজিমা বার! এই টুকুই ভগবানের কৌশল ! ভবে এ কথা কুসন্ধানের জন্য নহে।

(क्यभः)

कलावागान।

একটা কলাবাপান ছিল। বাবু জাভিতে কায়ত্ব, বয়স পঞ্চাশের অধিক। কৌলীন্য আছে, বিলভণ স্থশিকা আছে, ধাৰ্ষিক विनिज्ञा नर्कत्व समः चाट्यः। चायतः। वर्छ

আমাদের পরিচিত কোল বাব্র। দ্র জানি, ভগৰদ্ভজিও অসাধারণ বলিলে অত্যক্তি হয় না। কিছ ছৰ্তাগা বণতঃ তিনি কলাৰাগানের পাইট্ জানি-তেৰ না। ভাহাতেই ভাঁহার দর্শনাশ হইরাছিল। বালক কালে শিক্তা স্বাঞ্চা

বিবাহ হইয়া-একবার हिन। এই পদ্দী পরমা ऋसती ও গুণ-বভী হইলেও তাঁহাকে মধ্যে মধ্যে নিশাভ্রমণে বহিৰ্গত পতির আগমন প্রতীক্ষার অনিদ্রায় त्रखनी যাপন পত্নীর মনে একট ব্যথা থাকিলেও তিনি কখনই পতির প্রতিকৃলচারিণী হন নাই। যাহা হউক, বাবুলীর ধৌবননদীতে ভাট। পড়ি-বার উপক্রম হইতেছে, এমন সময়ে তাঁহার পত্নীর লোকান্তর হইল। পত্নীর প্রতি ক্ষেহ, মমত। কি অনুরাগ যে কিছু কম ছিল, তাহা নহে। স্ত্রাং ভাঁহার বিয়োগে অতিশয় কাতর হইলেন! हरेल कि रय, जधन ७ धन जाहि, धना-গমের উপায় আছে, বয়স আছে, বাদনা षा (छ।

বাবৃদ্ধীর কলাবাগানে ঘাদশটা মাত্র কলাগাছ ছিল। কিন্তু গাছ কয়টা খুব বড় বড়; একটা গাছের অসংখ্য বাদ্না বা বাইল ঘারা বাগানের অনেক স্থান ব্যাপ্ত হইয়াছিল। ঐ কলাবাগানে বাবৃর এক ঘর ধোবা প্রজা বাস করিত। ধোবা ও ধোবানী ভিন্ন তাহাদিগের অন্য পরিজন ছিল না। বাবৃজ্ঞী কলাবাগানের কলা, মোচা, থোড়, পাত প্রভৃতি নিত্যই জোগ করিতেন বটে; কিন্তু বাগানটা ক্ষেন, তাহা প্রান্তই চক্ষে দেখিতেন না এবং তাহাতে কোন প্রকার কর্মণের বা পাইটের প্রয়োজন আছে কি না, তাহাও ভাবিতেন না। কালে ভর্মে কথনও যদি

বাগানের কথা মনে পড়িত, একবার বেড়া-ইতে যাইতেন; কিন্তু ধোবা ধোবানীর দাক্ষাৎ প্রায়ই পাইতেন না—তাহারা কোথার আপন কাজে বুরিয়া বেড়াইত। তাহাদের সাক্ষাৎ না মিলিবার আবর একট কারণও ছিল। কলাগাছের বাইলগুলি ওছ না হইলে বাবু তাহাকে বাসনা বলিতেন না, আমরাও বলি না। ৩ ক বাসনাই পুড়াইতে হয়, এই ই তাঁহার ধারণা ছিল। কিন্তু ঐ ধোবা কাঁচা ও শুক উভয় প্রকার বাইলকেই বাসনা বলিত এবং ঐ উভয়বিধ বাসনাই ছেদ করিবার জন্য বাবুকে নিয়তই অন্পরোধ করিত। আরও বলিত, "কাঁচা বাসনা পুড়াইয়া যে কার প্রস্তুত হয়, তদ্ধারা কাপড়ের ময়লা কি, গাতের ময়লাও ছাড়িয়া যায়। আর এই বাদনা সকল যত অধিক পরিমাণে ছেদ করা যাইবে, বাগানে মোচা কলা তত অধিক ফলিবে এবং মোচা কলা ভোগের স্থপ ও বাড়িবে।" वावुक्षीत, हां मूर्य वड़ कथा कारनी ভাল লাগিত না। তিনি মনে করিতেন. ধোবা বেটা নিতান্ত স্বার্থপরায়ণ; আপ-নার কারের জন্য আমার সাধের কলা-বাগান নষ্ট করিতে উদাত হইয়াছে। চলচলে কাঁচা বাসন। সকল নাকি ছেছ করা যায় ৭ এই সকল বাসনা ছেদ করা আব আমার এক একটা আল ছেদ করা উভয়ই সমান।" এইরপ ভাবিয়। ধোবাকে কহিতেন, "ভন ধোৰা, ভূমি আমার ৰাগানের একটা বাসনাতেও হাড দিবে

না : ঐ সকল আমার বড় হথের সামগ্রী; যদি আমার একটী বাসনা নষ্ট হয়, তোমাদের উভয়কেই বাগান হইতে তাড়াইয়া দিব।" ধোবা ধোবানী সেই ফন্য বাবুকে প্রায় দেখা দিত না।

পত্নীবিয়োগে ষধন বড কাতর, ভখন বাবুজী মহাশয় এক দিন বাগান বেডা-ইতে গেলেন। পত্নীর সহিত একাদি-ক্রমে বিংশতিবর্ষ সংসার ধর্ম করিয়া-ছেন। মনের কত হুখ ছুঃখ, কত আশা ভরুদা, কত ভাবের বিনিময় তাঁহার সহিত হইয়া গিয়াছে। এমন অনেক ক্ষতির অসুভব হইতে লাগিল, পত্নীর অভাবে চিরকালে যাহার আর পুরণ इहेरव ना। अयन अर्थ अरनक मरन পড়িতে লাগিল, হয়ত এজন্মে আর তাহা পাইবেন না—ইত্যাদি নানাপ্রকার চিম্বা করিতে করিতে বাগানে উপস্থিত হই-লেন। জন্য বাগানে ঘাইবামাত্র খোবা ধোবানীর সাক্ষাৎ পাইলেন। ধোবাকে धक्रहे भागत्र कतित्रा निकटि छाकित्न। বাগানের কলাগাছ ওলির প্রতি একবার ছষ্টিপাত করিলেন। আজ প্রায় সকল शास्त्रहे २। जी ७६ वामना मिथिए शाहे-लाम। (मिथिया पुःच हहेता। स्थानाव বাদনা ছেদের পরামর্শ আত্র একট মিষ্ট (वाध क्रेन। इहेटन कि क्रें(व १ व ক্থনও বাসনার উপর অপ্রাঘাতের চেষ্টা করে নাই, বাসনা-ছেদ তাহার পক্ষে অসাধ্য বা ছংসাধ্য ব্যাপার। ধোৰা, ৰাবুর ভাৰ বৃবিত্না কহিল, "কলাগাছে ৰে সকল বাসনা শুক হইয়াছে, তাহা কাটৰ কি? বাবু কহিলেন, "আজ না।" ধোবা মনে মনে কহিল, "তোমার কপাছে আনক হুংগ আছে।" ধোবার মূপ হুইডে বাসনাচেছদের ব্যবস্থা বাহির না হুইলে বাবুলী মহাশয় হয়ত আজ ২।৪টা বাসনাচেছদের ব্যবস্থা বাহির না হুইলে বাবুলী মহাশয় হয়ত আজ ২।৪টা বাসনাচেছদ করিতেন। কিন্তু একে ধোবার কথা ভাহার আদে ভাল লাগিত না, তাহাতে আবার তাহাদের গ্রীপুরুবের অসকত নাম হুইটাতে তিনি হাড়ে চটিয়াছিলেন। ধোবার নাম "বৈরাগ্য" এবং ধোবানীর নাম "প্রজ্ঞা," স্মৃতরাৎ তাহা-দের কথা শুনিতে ভাহার প্রবৃত্তি হুইল না; গল্পীরভাবে গৃহে প্রস্থান করিলেন। এখন বাবুলীর বয়স প্রায় ত্রিষ্টি

সিভাত্তই-একপ্রকার বর্ষ । হইয়াছে আর দার পরিগ্রহ করা হইবে না, কেন্লা ৩।৪টা পুত্র কন্যা; তশ্বধ্য क्ष्यां भूकवध् चरनक मिन भूके एरे-তেই ঘর সংসার করিতে আসিয়াছেন এবং তিনি সমস্ত সাংসারিক কার্য্য निकारि ममर्था ए दहेशा एन। शृहिनी व थाछाटव आधीत यक्त क्रूपामित छत्र পোষণ, অভিধি দেবা, নিত্য নৈমিত্তিক কাৰ্য্য কলাপ ইত্যাদি কোনও বিষয়ে কিছুমাত্র ব্যাঘাত উপশ্বিত হয় নাই। স্কল বাসনার কিছ বিনি আদম थ्यत्र मित्रा चानित्रा एन,-क्थन पूर्नि-बां अकृषे। वामनाद एक नक् कर्बन नारे , काम कवी ९ आकरेलिय-न्यथ-वाहा[®] তাঁহার পরে পরিহার ক্যা সহসা

বাবুঁজী মহাশরের দ্বিভীয় व्यम् धा দারপরিগ্রহের বাসনা প্রবল প্রন-সদ্ধক্ষিত দাবানলবৎ জলিয়া উঠিল। চারিদিকে পাত্রীর সন্ধান আরস্ত হইল। কিন্তু সকল পাত্রীর বয়:ক্রমই বাবুজীব অন্ধ বলিয়া বোধ হয়। হইতেও পারে, **বিতীয় পক্ষের সংসার, পাত্রী যত** বড় হর, ততই ভাল। বাবুজী ভাবিতে শাগিদেন, "আমাদের ববে অনুঢ়া কন্যার অধিক বয়স হইতে পারে না, আমি বিদ্যাসাগর মহাশয়ের শাস্তান্ত্ৰসাৱে বিধবা বিবাহ করিলে আমার যোগ্যা পাত্রী পাইতে পারি। তদভিন্ন আমি এ অবস্থায় স্থাী হইতেও পারিব না। **ডবে সমান্ধ কিছু গোল করিতে পারে। তাহাতে আ**মার বিশেষ ক্ষতি হইবে না। এইরপ চিম্ভা করিতে করিতেই একটা বিবাহার্থিনী বিধবার সন্ধান পাইলেন। বাবুজী স্বচক্ষে তাঁহাকে দেখিলেন এবং ভাঁহার সহিত কথোপকথন করিলেন। বিধবা রমণীর রূপলাবণ্য ও কথাবার্ত্তায় বাবুজী মুগ্ধ হইলেন। যথাকালে বিবা-शिक मण्यम इहेश (शल। কিন্ত এই সমাজবিক্ত কাৰ্য্যামুষ্ঠান নিবন্ধন ভাঁহাকে বরে ও বাহিরে একটু লান্তনা ও পঞ্জনা ভোগ করিতে হইয়াছিল। বেমন শরোবরের গভীর জলে নিমগ্ন ব্যক্তি তীরস্থ আহ্বানকারীর বাক্য গুনিতে পার গা, তেমনি বাবুজী দিতীয়া পদ্মীর 'জেহ মমভায় নিময় হইয়াছিলেন, উপরি উক্ত লাম্বনা প্ৰনা তাঁহার কেশাৰও

স্পর্শ করিতে পারে নাই। উভরের প্রতি পাঢ় আস্থিক ও মমতা অন্মিল। বাবুজীর প্রথম। পত্নীর বিরোগ-জনিত मकल पू:थ एत इट्टेल। किन्न नित्रस्त्र উপভোগ দারা কামনার শাস্তি না হইয়া মৃতাভিসিঞ্চিত বহিন্ন ন্যায় তাহা বৃদ্ধি পায় এবং আত্মস্থ কামনা কর্তৃক পরিচালিত হইয়া বিষয় ভোগ করা অপেক্ষা পরস্থুখ কামনা-পরিচালিত হইয়া উপভোগ করিলে অধিক আনন্দ হয়, ইহা তাঁহার একবারও মনে হইত না। স্থতরাং কোন দিন কোন স্থাধের কামনা প্রণের ব্যাঘাত উপস্থিত হইলেই মন অশাস্ত হইয়া উঠিত। এইরূপে প্রায় পঞ্চদশ বর্ষ কাটিয়া গেল।

এত দিনে বাবুজী মহাশরের কাল-চক্রদর্শন হইল। কালচক্রথানি ত্রিগু-ণাত্মক ও ছদ্মভাবরূপ অসংখ্য ব্যাসের সমষ্টি। ঐ সকল ব্যাসের উভয় প্রাস্ত চক্রনেমি ধর্কা করিয়াছে। যে ব্যাসের এক প্রান্তে শীত, সেই ব্যাদের অন্য थास्त्र फेकः, वादात এक श्रास्त्र व्यास्त्र कालाक, ভাহার অন্য প্রান্তে অককার; যাহার এক প্রান্তে সুখ, তাহার মন্য প্রান্তে তুঃ খ; যাহার এক প্রান্তে আশা, তাহার व्या । व्यारङ निवागा; এই क्रश वात्र (क्र. ভভাভভ, শোকণান্তি, আদক্তিবৈরাপ্য, ভোগত্যাগ, কামপ্রেম, ইত্যাদি হস্বভাবে কালচক্রের নেমি আবুত রহিরাছে। এই চক্র শ্রণারমান। স্তরাং আজ ধিনি ধে সকল ভাব ভোগ করিতেছেন

চক্রের আবর্জনে অবশ্যই ভাহার বিপরীত ভাব সকল তাঁছাকে একদিন না একদিন ভোগ করিতেই क्टेर्टर । আমাদের বাবুর বয়স গড়াইল, বার্কক্য चारेन, धन क्वारेन, माविद्या (मथा मिन, ধনাপ্রের পথে কাঁটা পড়িল:-কাল-চক্রের ভীষণ ঘর্ষণে সব গেল: কিন্তু পেল নাকেবল মনের স্থাশ।। প্রণারিনীর নিকট পঞ্চশ বর্ধ ব্যাপিয়া বে সকল সুথসস্তোগ যেরপে করিয়াছেন. এখনও ঠিক সেই আশা। বাবুজী আছা সুখাসক ও বিলাদী ছিলেন বলিয়া যে ভাঁহার শিক্ষা ও ধর্ম ভাব এক কালেই নিক্ষীৰ হইয়াছিল, তাহা নহে। ডিনি এক্ষণে পত্নীকে ধর্মোপদেশ ও বিবিধ সমযোপ্রোগী উপদেশ দিতে আরম্ভ করিলেন: কিন্তু ইচার মধ্যেও অংক্তম্থ কামনা ছিল। কেননা তাঁহার উপদেশ দিবার তাৎপর্য্য এই যে পত্নী এক্ষণে ভাঁহার অবভা বুঝিয়া ভাঁহার জংখে ছঃখিনী হইয়া আপনার বিলাদ লালস। একট থকা কক্ৰন, নচেৎ ব্যয় সন্তুলান করিয়া উঠিতে পারেন না। প্রীর বিলাসলালসা এখনও বাবুদীর অপেকা অধিক বলবতী ছিল; বিশে-ষ্ডঃ পাকা ভালের খোড় কলম মঞ্বুড্ रम ना। পত্নী, বাবুর মনের ভাব वृतिका कहिलन, "लामात्र वस्त्र गार्हे वर्ष इहेट हिनन; ध्रधन्त छामात्र এও কেন । আরও দেখিতেছি, তুমি আমার ভূথের হিংদা কর; वागाव

ভাল থাওয়া পরা দেখিতে পার না। ভোমার ইচ্ছা বে, আমি ভোমার হু: ধে হু:খিনী হট্য়া সঞ্জিনার শাক ধাইয়া ও নেকুড়া পরিয়া কাল কাটাই। কেন १ ভোমার முக করিব কেন চ তোমার পদ্মী নই,—ভূমিও আমিত আমার পতি নও। বাঁহার সহিত প্রথম বিবাহ হইয়াছিল, এবং বাঁহাকে লইয়। প্রায় পাঁচ বংসর হার করিয়াছি, তিনিই আমার প্রকৃত পতি। আমি কেবল স্থাব্ৰ জনাই ভোমাকে বিবাহ করিয়া-ছিলাম: ভোমার যখন আর আমাকে সুখী করিবার ক্ষমতা नाहे. আমার জন্য প্রাণ কাঁদাইলে কি হইবে ? এখনও যে ভোমাকে যত্ন করি. মে আমার দয়। এখন যত শীদ্র তোমার মৃত্যু হয়, তত্ই আমার মঙ্গল; আমার যেরপ রূপ আছে, আমি এখনও সার একবার বিবাহ করিতে পারি।" পদ্মীর এই সকল কথা ভনিয়া বাব্দীর মন্তক घर्विङ इहेन। নীরবে অনেক কণ রহিয়া কহিলেন,-

> ''বিধোবানে বামঃ স্থন্থদিপি সকামং প্রেডবতি।"

বুঝিলাম, নিশ্চয়ই বিধি শ্বামার প্রতি বাম হইয়াছেন, নভুবা তোমার ন্যায় প্রভাদ বাম হইবে কেন ? ভাল ! একটা কথা তোমার বিভাসা করি, আমি বে তোমার বিভাস ? না রাপের? কথা ?" পৃহিণীর জ্বল শতি সরল,

কিন্ত রাপ হইলে এক কালে আত্মহারা হইতেন। সেই আত্মহারা অবস্থাতেই 🕸 দকল উক্তি করিয়াছিলেন। একণে কর্ছাকে নিতান্ত কাতর দেখিয়া হাদয় প্রশিরা গেল। কহিলেন,—'ভূমি কর-**चिम ध्रिया नाना व्यकात धालारमला** ক্ষা কহিয়া আমাকে জালাতন করি-ভেছ; এমন কি আমার স্থাভিলাষ 🗯 বেশবিন্যাদ দেখিয়া আমি যেন अना शुक्रवाखिनाविनी इहेग्राहि, जन्नीकृत्म ভাহা বলিতেও ফ্রাট করিতেছ না। ঐ नकन कथा अक काल वक्त कतिवात অন্যই আমি এরপ উক্তি করিয়াছি: লচেৎ এত মশ্বান্তিক ও এত নিষ্ঠুর বাক্য কি আমি ডোমাকে বলিতে পারি? তেমার বলে আমার বে সম্বন্ধ দাঁড়া-ইয়াছে, তাহা কমিন কালে বিচ্ছিত্ৰ रहेवात नहां"

গৃহিণীর বাক্য শুনিয়া বাবুজী জার কোনও কথা কহিলেন না। কঠোর চিন্তার বেগে সে দিন সমস্ত নিশায় একবারও চক্ষু মৃদিতে পারিলেন না। প্রত্যুবে গাজোখান করিয়া গৃহিণীকে কহিলেন,—"প্রিয়ে, এত দিন তোমার নহিত থেলা খেলিলাম, তাহাতে একটা চাল্ ভুল হইয়াছিল; তাহাতেই এই বন্ধ বন্ধল এত হংখ পাইলাম; এক্ষণে সেই ভুল শুধ্রাইয়া পুনরায় নৃতন খেলায় রুকিক।" বলিয়াই বেগে প্রস্থান করি-শেন। গৃহিণীর উত্তর শুনিবা ক্রিপেকা

छेनचित्र। वाहेनामाळहे त्यांना त्यांनामी সম্বাধে হাজির। আন্ত কলাপাছের মনেক রাসনাই ৩% বলিয়া ৰোধ হইল। আজ বাবুজীর চক্ষে বাগামের অবস্থা অতীব খোচনীয় বোধ হইতে वातिव। (सन मक्ताकात्व भूना भागात পিশাচের "হো হো" শব্দ শুনিভে পাইলেন। ধোবাকে ভাকিয়া কহিলেন. "অংহ, তুমি অনেক দিন হইতে কার করিবার জন্য আমার কলাবাগান रहेट वामनाध्यक्षामत मत्रवात कतित्रा আসিতেছ। আজ আমি দাঁড়াইয়া ছকুম দিতেছি, সকল গাছের সকল বাসনায় এক কালে অগুণ ধরাইয়া দাও।" ধোবা কহিল, 'মহাশয়, বলেন কি
 আমিত অনেক বাগানের বাসনা সংগ্রহ করিয়া থাকি, কখন কাহার মুখে এমন কথা শুনি নাই; বিশেষ আপনার মুখে একথা বড়ই অসম্ভব। আপনি কখন একটা শুষ্ক বাসনাও কাটিতে দেন নাই। আৰ বাগানের (ফ্রদয়) সকল বাসনা এক কালে ইতে আদেশ করিতেছেন, অথচ थाल्यक नाष्ट्रे (हेस्स्य) छूटे ठादिनी বাসনা আছে; ভক বাসনার আগতনে বেসে গুলিও পুড়িয়া ৰাইবে ? শামি ধোবার ছেলে,—বাসনা পোড়া-আমার ব্যবসায়,—আমি কাঁচা তকনা সকল বাসনাই পূড়াইতে পারি; কলাগাছের কাঁচা আঙৰ দিলে তাহা হইতে যে অক্লছ

বুমোলাম হইবে, তাহার আলা মাছবে লহিতে পারে না;—বে আলা সভ করা কি আপনার ন্যায় খোর সকাম পুক্ষের কার্য ?" বাবু কহিলেন, "কাঁচা বাসনা হাহের আলা সভ করা আমার ন্যায় 'ঘোর সকাম' পুরুষেরই কান্য। কেননা আমি জানি, বাসনা পোষণে যে আলা পাইতেছি,—বাসনা দাহনে সে আলা পাইব না।" খোবা, বাবুর কথা শুনিয়া একটু হাসিল,—সে হাসিতে সমস্ত কলাবাগান উদ্ভাদিও হইল। বাবুর ।

দিকে বাম হস্তের তর্জনী নির্কেশ করিরা বোবানীকে ভাকিরা কহিল,—"হে ধোবানি, দিনত আধের হরা,—বান্না মে আগ্লাগাও। কামনা সমুদ্রের বিলাস তরকে ভাসমান বলদেশের বে বাবু বুদ্ধবর্গেও ওছ বাসনার সহিত ছই চারিটা কাঁচা বাসনা পুড়াইতে পারেন, আমরা ভাঁহার চরণ শিরে ধার্থ করি।

বার্মেসে।

(ছাদশ মাসিক কৃষি বিবরণ)

আমাদের অবলম্বিত নিরমান্থসারে ভাদ্র মাদের পত্রিকার ভাদ্র ও আম্বিন মাদের বিবরণ প্রকাশিত হওর। উচিত ছিল, কিন্ত কোন গতিকে তাহা মটে নাই। এই জন্য এই আমিনের সংখ্যার আমিন ও কার্ত্তিক একত্র প্রকাশিত হইল।

আধিন।

বর্ষার আরম্ভ ও শেষ, সক্ল বর্ষে একরপ হয়না। আরম্ভ, কোন বর্ষে আরেছ, কোন বর্ষে পরে হয়। ঐরপ শেনও, কোন বর্ষে কিছু পরে হইয়া থাকে। বে বর্ষে বর্ষার শেষ, কিছু অব্রে হইয়া যায়, মেই বর্ষে শীভলাকের বাবভীয় ফদলের বর্পন ও রোপন আখিন মানে কয়া

যাইতে পারে, নহিলে কার্ডিক মানের অপেঞা করিতে হয়। কপি, গোলমাসু, রাঙ্গান্থালু, পালং, মুলা, চুকোপালং, গাজোর, বিট প্রভৃতির বপণ ও রোপণ করিতে হয়। কপি রোপণ করিবার কিরপ প্রস্তুত করিতে হয়, আমরা ভাল মাসের বিবরণ মধো যে কথা বলিয়াচি সেইক্লে প্রস্তাকত ক্ষেত্রে চারিদিকে দেও হাত অভর কপির চারা বোপণ করিতে কপি ক্ষেত্ৰে প্ৰতি পক্ষে একবাৰ ৰূপ সিঞ্চন করিতে হয় বেগুন, হরিস্রা, কি আদার ভূমির ন্যার যদি কপি ক্লেজে দাঁড়া বাঁধা হয়, তাহা হইলে "দাঁড়ায় भार्षवर्की शिनि वा इनि मक्श **बैग** श्रिकटनत (वन श्रुविधा एम् । কপি ক্ষেত্ৰে

শাভা বাঁধার রীতি দর্মত প্রচলিত নাই। কোন কোন দেশের কুবকগণ কপি ক্ষেত্রকে সমভূমি করিয়া থাকে। কিন্ত যে দিক হইতে জল সিঞ্নের স্থবিধা খাছে, তাহার বিপরীত দিকু অভিমুখে ঐ ভূমি ঢাল করিয়া থাকে, তাহাতে সিঞ্চিত গডাইয়া **সহজে**ই সকল ক্ষেত্র অভিষিক্ত করিতে পারে। **जन (मक्द्र शद्र "या" इट्टेल्ट्ट कामाटेल** षात्रा क्लाज नमल मुख्तिक। খুঁড়িয়া মুত্তিকার দিতে হয়। যে অবভায় তাহাতে রস থাকে, অথচ খননকালে লাকল বা কোলাইলে মাটী জড়াইয়া ধরে না, মাটীর সেই অবস্থাকে ''যে।" কপি গাছের যে সকল পত্র ওছ বা পর হয়, কিম্বা পচিয়া যায়. তাহা সর্বাদাই ভাকিয়া দিতে হয়। এদেশে সচরাচর বাঁধা, ফুল ও ওল এই ত্রিবিধ কপির চাস আবাদ হয়। প্রধনোক্ত ছই প্রকার কপিরই অধিক পরিমাণে ব্যবহার হইয়া থাকে।

আলু,—মাবের শেষে কিন্তা ফান্ত-পের প্রথমে আলুগাছের মূলে যে সকল ক্ষুদ্র ক্ষুদ্র আলু জন্মে, তাহাই ক্ষকেরা বীজের জন্য রাখিয়া থাকে। আলুর বীজ কিরপে রাখিতে হঃ, আমরা যথা সময়ে সে কথা বলিব। একণে আলু রোপণের কথা বলি বীক আলু সংগ্রহ পূর্বক প্রেণীবদ্ধ করিরা অর্ক হন্ত অভরে এক একটা বীজ রোপণ করিতে হয়। এক শারি হইতে

অন্য শারির অবকাশ যেন এক হাতের क्य ना इया (व मिन ज्यान (त्रांभन করা যায়, সেই দিন প্রত্যেক বীজের উপর জলের ছিটা দেওয়া আবশ্যক। যতদিন চারা বাহির না হয়, প্রতিদিন সন্ধ্যাকালে ঐরপ জলের ছিটা দিতে হয়। বাজমিদ্রীগণ যেরূপ থড়ের আচাড বাঁধিয়া আপনাদিগের কাৰ্য্যবিশেষে জল ব্যবহার করে, আলুর বীজের উপর সেইরূপ খডের আচাড ছারা জল দেওয়া উচিত। এদেশের কুষকেরা একস্থানে এক একটী আলুর বীজ রোপণ করে কিন্তু এক একটী বীজের উপর যত-গুলি চক্ষু থাকে, ততগুলি চার। বাহির হয়। আয়ল তের কুষকেরা যে সকল আলুর বীজ রোপণ করে, তাহা অপেকাকৃত বড। এজনা তাহারা একস্থানে একটী আলু না পুঁতিয়া একটা আলুকে ছই, চারি, অথবা তদ্ধিক থণ্ডে বিভক্ত করিয়া এক এক খণ্ড একস্থানে পোঁতে। ঐ থতে যতটা চম্মু থাকে, ততটা চারা বাহির হয়। আলুর জমি প্রস্তুত করার कथा यथा कारन वना यहित। भून छः উহার জনি বারমেদে হওয়া উচিত। অর্থাৎ প্রায় বার মাসই উহাতে চাস দিতে হয়, অথচ আলু রোপণের পূর্বে ফসল, কি আগাছা, উহাতে কোন ষাস ইত্যাদি ত্ব, হইতে দেওয়া হরনা। হইতে দিলে অমির তেজ:কর হয়। ঐ জমির মাটী কাশির চিনির नाम हर्व ७ निधिन इख्या चारनाक।

कुबरकत्रा वलन, जानू (ज्ञात्त्र मात्री এমন শল হইবে, যেন তাহাতে ভরম্ভ (**জলপূ**ণ) কলসী কেলিলে না ভাকে। ঘাছাছউক, বীজ রোপবের ৫।৭ দিন **পরেই এক একটী বীজ হইতে এক** এক গোছা চারা বাহির হয়। ঐ সকল চারার মধো যে গুলি সতেজ ও পুষ্ট, তাহা রাধিয়া হর্কল চারা গুলি মারিয়া দিতে হয়। তাহাতে অবশিষ্ট চারা-গুলি অধিকতর বলবান হয়। উভয় শারির মধাবতী জমিতে পিলি কাটিয়া প্রতি সপ্তাহে এক একবার জল সেচিয়া দিতে হয়। জনসিঞ্নকালে এরপ সতর্ক হইতে হইবে, ধেন আলুর চারায় হল না লাগে। চারায় বল লাগিলে চারা পচিয়া ঘাইতে পারে। পিলি কাটিবার সময় চূর্ব মৃত্তিকা গাছের শারির গোড়ায় ধরাইয়া দাঁড়া বাঁধিয়া দিতে হয়। পিলিতে জলদিলে দাঁড়ার শুক্ষ মৃত্তিক। কৰ্তৃক ঐ জল শোষিত হয়। তাহাতেই গাছের পুষ্টি হয়। এই জল-শোষণ কালে দাঁড়ার অনেক মাটী করিয়া পিলিতে পড়ে। পিলির জল ওক हरेशा "या" हरेलारे मांगे थ् जिया वितः কতক মাটা দাঁড়ায় ধরাইয়া দিবে। আখিন বা কাৰ্ডিক হইতে পৌষ বা মাৰ পৰ্যান্ত এইরূপ কার্য্য করিতে **हहे**(व।

রাঙ্গাআনু:—গোবরের সারই রাঙ্গা-আলুর উপযুক্ত সার। রাঙ্গাআনুর জমিতে অধিক পরিমাণে ঐ সার দেওয়া

আবলাক। ঐ আলুর লতার এক কি
দেড় হাত পরিমাণে ডগা কাটিরা ভাহার
মাক খানে মাটা চাপা দিয়া রোপম
করিতে হয়। ঐরপ ডগাকে বলরাকারে
জড়াইয়া কেবল অগ্র ভাগের ৫।৬ অজুলি
মাত্র বাহিরে রাথিয়া সমস্ত বলয়টা মাটা
চাপা দিলেও হয়। লতার যে অংশ
মাটা চাপা পড়ে, তাহাতে বডগুলি পর
কক্ষ থাকে, প্রভারক পত্র কক্ষ হইতে
শিকড় নির্গত হয়। রাসাআলুর কেত্রে
মধ্যে মধ্যে নিড়াইয়া এবং য়ুঁড়িয়া দিতে
হয়। কোন কোন স্থানে প্রাবণ ভারে
মাসেও রাসাআলুর চাস আবাদ করিয়া
থাকে।

পালংশাক,—শীত কালে খত প্ৰকাৰ দেশীশাক জন্মিয়া থাকে, তন্মধ্যে পালং অতি সুখাদ্য। উহা শীতকাশের বেশুন ও মুলার সহিত মিলাইয়া উত্তম তরকারী হয়। বিশেষতঃ উহার গো**ড়া ও শিব**ু বড়ই মিষ্ট। উহার বীল অভি কঠিন; শীত্র অকুরিত হয় না। উহা একবারে ভূমিতে ব্পন করিলে অকুর হইতে অনেক বিলম্ম হয়। তশ্বধ্যে কীট, পতক ও ভেকে উহার অধিকাংশ নষ্ট করিয়া ফেলে। এজন্য ঐ বীক ৪।৫ দিবস জলে ভিজাইয়া পরে একদিন নেকৃড়ার পোট্লায় টাকাইয়া রাথিয়া কেজে বপন করিতে হয়। এইর**ে**শ বপন করার পরও যে কয় দিন উরম্মপ্রে অছুর নিৰ্গত না হয়, কলাপাতা, বা মান কচুর পাত হার। ঢাকিয়া রাখিতে হর।

শিপীলিকা এবং পূর্ব্বোক্ত কীট পতকে

ব বীক্ত নই করিরা কেলে। বপন

ক্ষিক্ত না ঘন হয়। বপন বিরল হইলে

গাছ গুলি বড় ও সতেক্ত হয় এবং

ক্ষমি নিড়াইয়া দিবার স্মবিধা হয়।

বে কোন শাকের কেত্রে, বিশেষতঃ

পালং কেত্রে ঘাস হইলে শাক ভাল

হয়না এবং শাকে পোকা ধরে। এজন্য

পালং কেতে মধ্যে মধ্যে নিড়াইয়া

পরিছার করিয়া দিবে।

ম্লা,—ম্লার চাস আবাদ সক্ষে
ধনার অনেক বচন আছে। থধা,—
"লতেক চাসে ম্লা, তার অর্জেক তুলা।
তার অর্জেক ধান, বিনা চাসে পান॥
ধনা বলে ভন ভন, শরতের লেবে ম্লাবুন।
ম্লার কৃই তলা, কৃশরের (ইক্ষু) ভূঁই ধুলা॥

মূলার ভূমিতে অনেক চাস দিতে হয় এবং চাস দিয়া ঐ কেত্রের নূর্ভিকাকে ভুলার ন্যায় কোমল ও শিথিল করিতে শরতের শেষে, অর্থাৎ আবিন মাসে মূলার পুরাতন বীজ বপন করিতে মুলার বীল যত পুরাতন হয়, ভতই ভাল। নৃতন বীল কোন কার্য্যের বপন **প্রথ**ম পুৰ করিবে। পরে গাছ গুলি শাক গাই-वात्र छेभयुक इहेत्व मध्या मध्या भाक ভুলির। খাইতে হয়। নুতন ও কোমণ ৰুলাৰ শাক ভাকা, সহিবা বাটার সহিত विनिक रहेरन উপारमं बाग्र क्षेत्रक इत्र। মূলার খাক ভোজনে বিবিধ পাকার। প্রথম উৎকৃষ্ট শাক ভোজন,

ষিতীর কতক গুলি গাছ তুলিয়া কেলার
মূলার কেত্রে পুরিরল হয়। তাহাতে
অবশিষ্ট গাছ সতেজ হয় এবং স্থূল ও
কোমল হয়। কোন কোন কেত্রের
মূলা এমন কোমল ও স্থাদ হয় যে
কাঁচা থাইতে বড় স্থা বোধ হয়। মূলা
রক্ষন করিয়া বিবিধ উৎকৃত্তী ব্যশ্ধন
প্রস্তাত হয়।

চুকোপালং,—ইহা টক্, অধিক ধাইতে ভাল লাগেনা। কিন্ত ইহা দারা উৎক্লপ্ত চাট্নী প্রস্তুত হয়। বাঁহার ইচ্ছা হর, তিনি পালং শাকের ক্ষেত্রের ন্যার ক্ষেত্র প্রস্তুত করিয়া তাহাতে অল্ল পরিমাণে চুকো পালক্ষের বীঞ্চ বপন করিয়া রাধিতে পারেম।

শিষী,—ইহা নানাবিধ। পটুলে, আল্তাবোল, ত্থে, বাখনথো ইত্যাদি।
শীতকালের তরকারী, প্রথমে হাপোরে
ইহার বীজ রোপণ করিতে হয়। চারা
গুলি আধহাত তিন পোয়া পরিমাণের
ইইলে হাপোর হইতে তুলিয়া মাচার
তলে, অথবা অন্য কোন বৃহৎ রক্ষের
তলে রোপণ করিতে হয়। কিন্তু অন্য
গাছের তলা অপেক্ষা মাচার তলায়
রোপণ করিতে পারিলেই ভাল হয়।
কেননা অন্য গাছের আভতার শিষীলতার অনিই হইতে পারে। মধ্যে মধ্যে
গোড়া খুঁড়িয়া সার ও অল দেওরা
ভির শিমের অন্য কোন আবাদ নাই।

মাঠ কড়াই.—ইহার আৰ একটী নাম চিনের বাদাম। ছোলা, মটর,

কলার ইত্যাদির ন্যার ইহার ও প্রচুর वावशांत्र इरेया शांक, शारेराज्य मन .नरर। किन्न छेरा टिलाक, अबना অধিক খাইলে উদরের অসুধ হয়। এই উত্তিদের একটা প্রকৃতি আশ্চর্যা। আখিন মাদে উত্তমরূপে কর্ষিত ভূমিতে উহার বীব্দ বপন করিতে হয়। গাছে ফুস ধরিবামাত্র উহার শাখা সকল নম হইয়া মাটীতে কুলিয়া পড়ে এবং ফ্ল দহ মাটার মধ্যে প্রবেশ করে। মাটার माधारे कम छत्म अवः পরিপক হয়। এক্সন্য ঐ ফলের জমি অধিক পরিমাণে কর্ষিত ও মৃত্তিকা উত্তমরূপে চুণীকৃত নহিলে আবেশ্যক। यरथष्ट পরিমাণে ফসল জন্ম না। ক্ষেত্রের मुखिका यक भिथिन हरेत्व, मार्क कड़ारे তত অধিক পরিমাণে ফলিবে।

শুঁড়ি কচু, — কচু অনেক প্রকার।
তথ্যে কোন কোন কচু অতি সুধাদ্য
ভরকারী। বাঁহারা "বিশ্বকোষ" নামক
বিল্পত অভিনব অভিধানের "ক" পর্যায়
পাঠ করিয়াছেন, তাঁহারা দেখিয়াছেন
বে কচু কত প্রকার এবং তাহার
চাস আবাদ কিরপ। বাঁহাদের পড়া
ঘটে নাই, অন্থরোধ করি, তাঁহারা
একবার বিশ্বকোবের কচু পড়িবেন।
এদেশে গুঁড়ি কচু ভিন্ন, অন্য কচুর
আবাদ প্রায় হর না। আবরা রৈশাধ
মাসে ভাহার চাস আবাদের কথা
বিশিরাছি। এই মাস হইতে ঐ কচু
ভূলিতে ও ধাইতে হয়।

मान करू,—উৎकृष्ठे ७ श्रुष्टिकत्र थाना । माज करू अक मिरक श्वयन श्रीकेन অন্য দিকে তেমনি লবুপাক। মান কচুত্র চারার কতক গুলি শিক্ষ্ ও গেঁড়র কিয়দংশগুদ্ধ এবং পাতাটী ছাড়া আর সকল পাতাকাটিয়া চারাটি রোপণ করিতে হয়। মানকচ রোপণের অন্যন এক পক্ষ পূর্বে একহাড কি পাঁচ পোরা পরিমাণে গভীর গর্ড খনন করিয়া তাছার অর্জেক পরিমাণ সার্মাটী ধারা পূর্ণ করিরা রাখিতে হয়। অপরার্দ্ধ শূন্য থাকিবে। মাটীর ছারা গর্ভের অক্সংশ পূর্ণ করা হইয়াছে, সেই মানীর উপর গর্ছের মধ্যে চারা পুঁতিতে হয়। যে টুকু ফাঁকু থাকে, সে টুকু আপনি পুরিয়া যায় এবং ঐ অংশে অতি শীল্প কচু জন্ম। কচুর মুখ গর্জ অতিক্রম করিয়া উঠিলে তখন উহার গোড়ায় ছাই ধরাইয়া দিতে হয়। ছাই যত উচ্চ করিয়া দিতে পারা যার, কচু ভতই বৃদ্ধি পার। মান কচুর বৃদ্ধি উপরের দিকে এক বর্ষের মধ্যে থত খানি কচু **জন্মে, তাহাই কোমল ८ यथा**ना ।

"কচু বলে যদি ছড়াস ছাই।
ধনা বলে তার সংখ্যা নাই।
নদীর ধারে পঁতদে কচু।
কচু হয় ডিন হাত উঁচু।"
নদীর ধারে মান কচুর আবাদ ।
করিলে ব্ব বড় বড় কচু হয়।
আধিন মানে বে করেকটা ফসলের

কথা কৰা হইল, বাগানে বা ক্ষেত্রে তথাতিরিক্ত পূর্ব্য পূর্বে মাসের যে সকল ক্ষাল আছে, এই মাসে ভাহাদেরও আবশাক মত পাইট করিয়া দিতেহয়।

কার্ত্তিক।

বো বাঁধা— জৈ ঠিমালে কেবল আলবালের কথা বলা গিয়াছে, যোবাঁথা,
ভাহার ঠিছ বিঁপরীত ক্রিয়া। অর্থাৎ
সকলপ্রকার জক্ত লভার গোড়া বুঁড়িয়।
চূর্ণ মৃত্তিকা বারা মূলের চারিদিক উত্তমক্রপে চাকিয়া দিতে হয়। ভাহাতে ঐ
চূর্ণ মৃত্তিকার ছিত্ত মধ্যে বায় ও উত্তাপের
চলাচল হওয়ায় মূলছ মৃত্তিকা সকল
কর্পাঞ্চিৎ সরস থাকে ও ভদ্ধারা উত্তিদ্খরীরও হুছ থাকে। এরপ না করিলে
পরবর্ত্তী শীতে মূলছ মৃত্তিকা পাষাণবৎ
কঠিন হইয়া যায়। ভাহাকে ক্রকরেরা
"লিবিয়ে বাওয়া" বলে।

ওমধি,—কল পাকিলেই যে সকল উদ্ভিদ মরিয়া যায়, তাহাদিপকে ওমধি কহে। এই মাসে প্রায় যাবতীয় ওমধির চাব আবাদ হইয়া থাকে।

আৰু, কপি, মূলা ইত্যাদির আবাদ বদি আখিনমাজে না হইয়া থাকে, এই মানে করা ঘাইতে পারে।

শাধা ক্লম,—বাঁহাদিগের কুলের বাগান আছে, তাঁহাদিগকে গোলাব, কর্মী, জনা, বেল, মনিকা, বুঁথি, ছলপত্ন ইড্যাদি শাধা ক্লম এই মাসেই করিতে

দকল অর্দ্ধহন্ত পরমাণে ছেদন করিয়া চৌকা বা মৃতিকার একটা আটান হাপোরে ঈষৎ হেলাইরা পুঁতিতে হয়। কলমের যে মূলটি মৃত্তিকা মধ্যে "প্রোথিড করিতে হইবে, সেই মূলটা ঠিক কলমের (লেখনীর) ন্যায় করিয়া কাটিতে হইবে এবং সেই মুখের ত্বকু বা ছাল ছেঁচিয়া না খায়, কাটিবার সময় এরূপ দভর্ক হওয়া উচিত। বেল, মল্লিকা, ঘাঁতি, ষ্পির, ''লানা কলম''ও উত্তম হয়। এই মাসে করা আবশ্যক। ঐ সকল ক্তরুর দীর্ঘ ও পরিপক শাখা সকল গাছ হইতে নোয়াইয়া পাছের একপার্শে ঐ শাথার কিয়দংশ মাটী চাপাদিতে হয়। শাখাটা না নড়ে, এজন্য ২৷১ খানি ইউক বা প্রস্তর উহার উপর চাপা দিলে ভাল হয়। যে চৌকায় শাথা কলম রোপণের কথা হইল, ব্লোপণের পর প্রেড্যহই তাহাতে জলসিঞ্চন করিতে হয় এবং ঐ क्रीकात मुखिकात कत निस्त्रहे वालुका वा ইটের খোলা দিতে হয়। তাহাতে সিঞ্চিত জল অধিকক্ষণ উপরে ভিটিতে পারে না, क्ल खिकक्न उंशत शकित भाषा কলম পচিয়া যাইতে পারে। , আবার व्यक्तिम बन्जिकृत ना कतिरम डेँ है ধরিয়া শাথাকে বিনাশ করিয়া ফেলে। এই মাসে গোলাব গাছের মুলের তারি-দিকের সৃত্তিকা বঁড়িরা মূলে রাত্তের भिगित ए हिम्ब द्वीख था श्वाहेर इत्र এইরূপে ১০া১৫ দিন রাখিয়া পরে পার্বের ধনিত মৃতিকা হারা মূল উত্তৰ-

ক্লপে আচ্ছাদন করিতে হয়। এই ক্রিয়াট বেশ চার্ছুর্য দহ করিতে পারিলে গোলাব ফুল ধুব বঞ্চ বড় হয়।

এই মাদে ধনে, কার্পাদ, তরমুজ, জুঁরে দশা, পলাপু, কাঁকুড়, উচ্ছে, পটোল মটোর, বরবরটী, ছোলা, সর্বপ ইত্যাদি হরিত থন্দের চাদ আবাদ করিতে হয়। বিলাভী কুমড়ার আবাদ এ মাসেও হইতে পারে।

ধনে,— বেমন তেমন জমি, একটু
জলাল হইলেই তাহাতে বথেষ্ট পরিমাণে
ধনে জন্মে। স্থয়, মেথি, কালজিরে,
রাধুনী, মৌরি, এলেশে ভালরপ জন্ম
না; তবে উহাদিপের স্থগন্ধি শাক
ধাইতে বড়ই মুখপ্রিয়। ঐ শাকের
জন্য অতি অল্পরিমাণে ঐ সকল দ্রব্যের
ভাষাদ কবা ঘাইতে পারে।

তরমুক্ত, ভূঁয়ে সশা, কাঁকুড়, এই
তিনটি ফসল বালুকাময় পলিমাটাযুক্ত
চড়া ভূমিতে উত্তমরূপে ক্রমিয়া থাকে।
তরমুক্ত মাটা চাপা দিলে খুব বড় হয়।
চড়া ভূমিতে ঐ সকল ফসল করিবার
স্থোপ যাহাদিগের নাই, তাঁহাদিগের
ঐ সকল ফসলের ভূমিতে বালুকা মিশ্রিত
করিয়া দেওয়া উচিত। বালুকা ঐ
সকল ফশলের একটি সার শর্প। যে
সকল ক্রমলের একটি সার শর্প। যে
সকল ক্রমলের একটি সার শর্প। যে
সকল ক্রমলের বালুকাময় ভূমিতে ভাহারা
উত্তমক্রপে বর্ষিত হইয়া থাকে।

উচ্ছে ও পটোল,—এই ছুইট ফস-লের চাব আবাদ প্রায় একই প্রকার এবং উপরি উক্ত প্রকার ভূমিতে ইয়া-দিপেরও আবাদ হইতে পারে ৩।৫ লাভ अस्त छेटाइ थाना पित. পাইট করিতে ও উচ্চে ভূলিতে বড় क्षे इत्र। अक अक थानात्र উ एक्स बीख ৩।৪ টার অধিক রোপণ করা উচিত নছে। এক থানায় অধিক গাছ হইলে কোম রাছই সবল ও পুষ্ট হর না। পটোলের গেঁড় সকল প্রথমে গোষরের সার মিশ্রিত भव कल ভिकारेग्रा वाबिट एव। ভাহাতে ঐ সকল গেঁড়ুর মূল হইতে কল বাহির হয়। তখন উহাদিগকে ভূমিতে রোপণ করিতে হয়। পটোলেম थाना ७ वीक द्वांभरनत व्यनानी छ एक परे মত। পুন: পুন: ভূমি নিড়াইরাও খুঁড়িয়া ८म्ख्यारे भाषात्वा अधान भारेता আমরা পটোলের ভূমি সম্বন্ধে উপরে যে কথা বলিয়াছি, খনাও তাহাই বলিতে-ছেন।

"ওনরে বাপু চাষার বেটা।
মাটার মধ্যে বেলে ফেটা॥
তাতে যদি বুনিস্পটল।
তাতেই তোর আশা সফল।"

মটর, বরবটী, ছোলা, ধাঁহাদিশের এই তিন কদলের চাস আবাদ অধিক পরিমাণে করিবার স্থ্যোগ নাই, ওাঁহালা ভটি খাইবার জন্য আপন আপন উদ্যানে উহার কিছু কিছু আবাদ করিতে পারেন। কাঁচা মটরাদি নানাবিধ তরকারীর নাইভ পাক করিরাও থাওয়া ঘার। এই স্কুল কসলে জলের কিছুমাত্র প্রয়োজন নাইঃ জল পাইলে উহাদিপের অনিষ্ট হয়। উহারা হৈমভিক, হেমন্তের শিশির বারাই পুট হইরা থাকে। ফাঁকে ফাঁকে জমি শুঁড়িয়া দেওরা ও ঘাদ নিড়াইয়া দেওয়া ভিন্ন উহাদিপের অন্য পাইটনাই।

সর্ধপ ও তিসি,—এই তুই কসলের প্রয়োজন সকলেই জানেন। আখিনের শেষে, বা কার্ত্তিকের প্রথমে উহাদিগের বুনান হয়। নৃতন ডাঙ্গা জমিতে, বিশে-বতঃ ভিটা জমিতে সর্বপ উত্তমরূপ হয়।

"ঘন সরিষা পাতলা রাই।" দর্যপের বপন ঘন এবং রাই নামক অপেক্ষাকৃত বড় সর্বপের বপন বিরল হওয়া আবশ্যক। ধনা বলেন

"থনা বলে চাসার পো।
শরতের শেষে সরিষারো।"
আমারিনের শেষ ভাগ। আমেরাও

পূর্ব্বে ঐ কথা বলিয়াছি। বর্ষার জ্ঞান পশ্চাতে কার্জিকের প্রথমভাগেও সরি-যার বপনাদি হইয়া আসিতেছে।

> "সরিষা বলে কলাই মুগ। বুনে বেড়াও চাপ্ড়ে বুক।"

এক ক্ষেত্রে এককালে সরিষা কলাই,
কিন্তা সরিষা মুগ বপন করিলে এক ধরচে
ও এক শ্রমে ছুইটা কসল হওয়ায় ক্রকের
বড় লাভ বোধ হয়। এই জন্য থনা
ভাহাদিগকে বুক চাপড়াইতে, অর্থাৎ
আনন্দ করিতে শিক্ষা দিয়াছেন।

আলুও কপি—এই ছই ফদলের
জমি খুঁড়িয়া দেওয়া ও আলুর ক্লেত্রে
সাত দিন অন্তর এবং কপির ক্লেত্রে পনর
দিন অন্তর জল দিঞ্চ ভিন্ন কার্ত্তিক মাসে
উহাদিগের অন্য পাইট্নাই। *

কতকগুলি সুমাতা।

সৃদ্ধরূপে দেখিতে গেলে নৈতিক
জীবনই মহ্যুবের যথার্থ জীবন বলা
যাইতে পারে। নীতি বিনা যে জীবন,
ভাছা পশুলীবন বই আর কিছুই নহে।
মানব বদি অপকর্ম করে বা সাধ্য
থাকিতে নিরপরাধ জন্তর প্রাণ রক্ষা
না করে, কর্মক্ষম জ্ঞানবান ঈশ্বরের
হৃষ্টির মধ্যে সর্কোন্তম প্রাণী হইরা নিশ্চেন্ন
ভাবে থাকে, তবে মানব জীবনের
মহন্ত বহিল কোথায় ও আধুনিক সমাজের

তুরবন্ধার কারণ কি ? মুলে ঐ নীতির প্রতি অনাদর। আমাদের বালক-দিগের দোষ দিব কি ? জননীরণ তাহাদের নিকট এমন কিছু উচ্চ নীতির আদর্শ দেন না যাহা দেখিয়া

শপিওত জীবুক কালীকর ঘটক প্রাণীত কৃষি-দিকা হইতে কার্ত্তিকের অধিকাংশ বিবরণ সংক্ষিত হইল। কাপাস ও পলাপুর চাব আবাদের বিবরণ স্থানাভাব প্রযুক্ত এবারে দেওরা হইল না, আগামী বারে ইইবে। ভাষারা নীজিমান্ হইতে পারে। প্রত্ অপেকা ভাষারা যে কারণে শ্রেষ্ঠ, সেই কারণটী উহাদের নিকট বিশেষ ভাবে বাাথ্যা করা উচিত। উচ্চনীভিই যে "ষথার্থ জীবন" "প্রাণকে তৃষ্ট্র করিয়া সভাকে লাভ করিবে" এই উপদেশ পাইলে ও ইহার মৃত কার্য্য দেখিলে শিষ্য নিশ্চয়ই রত্ন^র হইবে। পূর্ব্বকার স্মাভাগণ শিশুকে প্রতি কার্য্যেই ঐ শিক্ষা দিতেন। ঐরপ হুইটী রমণীর বিবরণ উপস্থিত করিভেছি।

২। কয়াধু। ইহার বিষয় ইতি-পূর্ব্বে বামাবোধনীতে দবিস্তর মালোচনা হইয়াছে। ইনি দৈত্যরাজ হিরণ্যকশিপুর এবং• **ज्या** अ श्री दला राम व জননী। সংক্ষেপে প্রক্রোদের সহিত জননীর একদিনের বাক্যালাপের পরি-চয় দিব। হুষ্ট দৈত্য হিরণ্যকশিপু বে হরিনাম করা অপরাধে নিভান্ত নিৰ্দয়ভাবে श्रीक्लांमरक यञ्जना पात्रा নিম্পেষিত করিতেছেন, সে সময় প্রহলাদ শরীরকে ভচ্ছ করিয়া নীরবৈ যন্ত্রণা সহু করিতেছিলেন। পরিশেষে কিছ-তেই দৈত।রাজ তাহাকে জন্ম করিতে না পারিয়া আফা করিলেন একবার অন্ত:পুরে উহার জননীর নিকট লইয়া ৰাও। দৈত্যাত্মচরগণ ব্লায় ধ্বরিত দ্লান-मुख व्यक्तामरक कननीत्र निक्र नहेशा গেলে কয়াৰ প্ৰিয়পুত্ৰের ভাদুশ অবস্থ। দেখিরা নিভান্ত ব্যথিত হইলেন। বে অফুচর নিকটে ছিগ, তাহা

দিগকে মৃত্বাক্যে কছিলেন "নির্জ্ঞানে যত্ন করিয়া না বুকাইলে ইহার ছর্ম্বজি দর হইবে না. অতএব তোমরা স্থানা-স্তরিত হও।" তাহার। প্রস্থান করিলে করাধু সংমহে পুত্রকে ক্রোড়ে লইলেন এবং মধুরবাকো কহিলেন "বৎস। ভোমার দিব্যজ্ঞানের উদয় হইয়াছে দেখিয়া আমি পরমানন্দিত হইয়াছি। শভর বিরিঞ্জি ইন্দ্র নারদ প্রভৃতি বাঁহার অনম্ভ করুণার এক এক বিন্দু মাত্র প্রাপ্ত হইয়া সম্পদশালী ও কুভার্থ হইয়া-(ছন, উহাই (अर्थ कान **७ मन्म** । यहा-জনগণ যে জ্ঞান পাইয়া কুডার্থ হন, সাধারণের সেই জ্ঞানই উপার্জন করা কর্ত্তব্য। ঐ শ্রেষ্ঠবিদ্যা গ্রন্থ পাঠ ঘারা লাভ হইবে না-মনে মনে একান্ত যত্ত্ব-পুর্বাক সাধুসক্ষপ উপায়ে উহা উপা-ক্রন করা যায়। এ সংসারের সমস্তই বুখা জলবুদ্দমাত। কি অপরিমের धनवृष्ट, উচ্চপদ মুগ্যাদা कि व्यप्तर्शा দাস দাসী কি স্থামা হন্মা ও উপবনাদি এবং স্বেহময় পুত্র কলতাদি নিশ্চয়ই এकमिन ना এकमिन पुत्रस कान छैहा वाम कविदरहे। दत्र भूख! अयन कि এই যে ভোমার লাবণ্যময় সুকুমার দেহ-ষষ্টি, ইহাও কালের কবলিত রহিয়াছে। বৎস ৷ এই সমস্ত অকিঞ্ছিৎকর অনিত্য कृष्ठ भगार्थत कना रा मृह ममत्र ७ मकि অপব্যয় করে, তাহাকে ভূষাব্যাতীর সহিত তুলনা করিবে। যে হেডু তৃষা-বখাতী তৃ:ব আখাত করে মাত্র, তাহার

তপুল লাভ বিভয়না হয়। এইরপ অনিত্যতার মধ্যে কদাচ বে সাধু ভাগ্য-वांन बीत शुक्रावंत्र मिछा कान इत, (मरे धमा। সমস্ত সংসার মর্পশীল. महारकालाहरमञ्जू मर्था (य तहे मात নিভ্যামৰ চৈতন্যময় मग्रीमरतेत्र भेत-ণাপন্ন হুইয়া ভাঁহাতে বিহার করে. সেই শাধ্ই নমস্য। -তাত! বিল্ল বাধায় ভয় 🗣 গু তাহাতে অনিত্য শরীর বিনা খন্য কিছু ধ্বংস করিতে পারিবে না। ভূমি নির্ভয় চিত্তে হরিনাম কর। বিপদ ভল্প তাঁর একটা দাম, ঐ নামটা সাধন কর।" বিশ্বাসী জননীর সতপদেশে বিশ্বাসী পুত্ৰ বিশুণ উৎসাহিতচিত্তে বিভূপদে প্রাণ দিতে সম্বন্ধ করিলেন।

ত। কৌশল্যা। রামায়ণ পাঠকালে
রাম সীভা লক্ষণের পরেই কৌশল্যা
দেবীর চরিত্র আমাদের চক্ষে পড়ে।
কুংখের বিষয় রামায়ণে তাঁহার বিষয়
অধিক জানিবার উপার নাই। দশর্থ
মূপতির মহিবীদিগের মধ্যে তিনিই দর্বাপেকা ধর্মপ্রাণা ও কর্ত্তব্যপরায়ণা ছিলেন।
সর্বাদাই ব্রভ উপবাসাদিধারা তিনি
কুলদেবভার অর্চনা করিতেন। যদিও
কৌশল্যা পতিব্রেরা ছিলেন না, তথাচ
একান্ত পতিপ্রাণা ছিলেন, পতি তাহার
সর্বানাশ করিলেও কথনও পতিনিশা
করেমু নাই। যধন রামচক্রের রাজ্য-

লাভের পরিবর্জে বনগমন করিতে হইবে, কৌশন্যা গুনিলেম, তথনও তিনি পতি-মিশা করেন নাই। নিতান্ত অধীর হইরা তিনি "হা বিধি এ কি করিলে ? মন্দভাগিনীর স্থধ তোমার সহা হইলনা। ব্ৰিয়াছি যে কখনও স্থভোগ করে নাই, তার স্থ বিষাতার সহাহয় না। রাজকুলে জ্বারা আমার মত হত-ভাগিনী অতি অরই আছে। প্রথমাবধি পতিবিমুধ। কল্য পুত্র রাজা হইবে, অদ্য তাহার বনবাস। রাবধি যে আশা করিয়াছি, অকমাৎ তায় ৰজাঘাত ! হা বিধি, হা দেব ! নূপ-তির দোষ কি, সকলি আমার তুরদৃষ্ট !" এইরূপ অবস্থার কোন রমণী পতির দোব না দিয়া থাকিতে পারেন ? কৌশল্যার **এইরপ তর্জননিষ্ঠা, এইরপ উদার** কর্ত্তবাপরায়ণতা এবং সহাগুণ হইতেই বোধ হয় রত্মকর সদৃশ অশেষ গুণশালী बीवश्रुक्ष जायहत्त माष्ट्रश्रात श्रवनाम হইয়াছিলেন। স্ত্রীলোকের পক্ষে ধীর-চিছে সপত্নী ও স্বামি নিগ্ৰহ সম্বৰুৱা অভ্যন্ত পৌরবজনক সম্পেহ নাই। এক ज्ञवत्र (कोमला। यमसञ्जन। मनुम जन्त्री-প্ৰের বাকা যত্ত্ৰণা এবং স্বামীর অবজ্ঞা সভা করিয়াভিলেন বলিরাই কালে পুরুষোদ্ধমের জননী হইয়া ভাগাবভী ও চিत्रणात्रभीत्र श्रदेश तस्त्रात्स्न ।

স্বর-সাধন প্রণালী।

(७৫७ मर्था। ১৪२ पृष्ठीत्र शत्र)

विविं है। একডালা।

নীলাম্বর মুখোপাধ্যার ক্বড গীত পরিবর্ষিত।

र्म (क- मन-छा-व-नि-मा- मन,

সা' নি রে। (य- मिन की- वन या- वि-

সা সা

नि नि ভূ-লে আ-রে॥) म्- ना वा- का ही-

নী- লা- স্বর আর বল-বে ক-(৩য়)

मा. मा नि मा अ मा मा नि नि (১ম) छी- (व- ना ला-क वन रव म- फा,

(२য়) ल- য় श- व चा-मा- न वा- म्म,

(अर्थ) (य मू- (थ थ!- छ প- क!- मू- छ,

मा मा मा मा 41-

(म भा- नः भा-तः, (২য়) 🖅 🔻

मू- (थ- एड मा- ह्रा च- छ,

A

য়ে (১ম) থ-আর হে- দে শো- বে- রে 🖠

(২র) কে ত্তপ ছে- বে -t# (ge)

শিশু পালন।

সংসারে যতপ্রকার কার্য্য আছে,তরধ্যে শিশুপালনই পিতা মাতার পক্ষে দর্কা-পেকা গুরুতর, এই গুরু ভার মাতাকেই ष्यिकाः म दर्भ कृतिष्ठ रुव, छत् পিতার নামোলেখ করার কারণ এই যে পিতার সাহায্য পাইলে কাষ্যটী স্থচাক-রূপে সম্পন্ন হইতে পারে এবং সময় শুমুর পিতার সাহান্যের বিশেষ আবশ্য-ৰতাও হইয়া উঠে। এই সাহাৰ্য কেবল

অৰ্থ নতে, অৰ্থতিঃ অন্যান্য সাহায্যেরও প্রয়োজন হইয়া থাকে। পিতাকে অনেক मगग अर्थाशास्त्रन ६ विष्यिक कार्याः খ্যস্ত থাকিতে হয়, আর মাতার গৃহ-কাৰ্য্যের মধ্যে প্রধান অভিথি অভ্যাপত, আশ্বীয় কুটুম্বগণের আহার প্রস্তৃতি ও শিভপালন। এই শিভপালন করিতে হইলে সন্তান জন্মের পূর্বা হইতেই পিঙা মাতাকে দাবধান থাকিতে হয়।

নের সহিত পিতামাতার স্বাস্থ্য ও স্বভাবের অতি নিকট সম্বন্ধ, ইহাতে আর সম্ভেহ কি ? তবে বাল্যাবধি সুশিকা ও স্থনীতি দারা শিশুর সভাব গঠিত হইলে ফুল্ডবিত্র পিতামাতার স্থানও স্ক্রিতা হইতে কিছ পিতা মাতার স্বাস্থ্যভঙ্গ জনা সম্ভাবে বে দোষ সংষ্টিত হয়. তাহা युक्ति ७ क्षित्र अनाशा वितरमञ्ज वना ষাইতে পারে। রোগগ্রস্ত ব্যক্তি বর্গের পক্ষে পিতামাতা হওয়া অপেকা নাহওয়াই জগতের পক্ষে মকল। যিনি যত প্রকার বিশ্বহিতকর ব্রতে ব্রতী হউন না কেন. শিও স্থাননই উহার मध्य व्यथान. ভবিষাৎ কেন না শিলগণ ক্তের কর্মচারী, ইহাদিগকে নারী নরোচিত গুণে ভূষিত করিয়া সংসার কেত্রে ছাড়িয়া দিতে পারিলে বিশের কোন হিতসাধন করা না হইল ৭ স্বতরাং শিশুকে স্থপালন করাই বিশ্বের মৌলিক हिल्लाधन कार्या विनिधा त्वाध हम । এই ক্থায় কেই মনে করিবেন না যে আমি বলিডেছি, শিওপালন ব্যতীত অন্য কোনরপ বিশহিতকর কার্যাই নাই, ভবে ইহাকে বিখের মৌলিক হিত বলিতে চাহি কেন ৭ মহব্য সমাজ লইয়া বিখের छान मक घटेना। कानी ताशी अविश्व, ত্ৰ ও পৰ্বতকে সমান চকে দেখুন, क्षेत्र रखी ७ शिशीनिकारक महान উদ্দেশ্য शृष्टि कक्रम, किन्द्र माधा-রণ মন্ত্রা আমরা মন্ত্রা সমাজের নিকট धर्म e मका बावनी हाहि—दि বিশ্বকে ধারণ করিয়াছে, † সেই ধর্ম মতুষ্য সমাজের নিকট চাহি আরে চাহি একটা ক্ষুদ্র জ্লীব হইতে সর্ব্বজীবের প্রতি স্থবিচার ও দয়া। মনুষ্যসমাজ বাতীত ইহা আমরা অন্য কোন পার্থিব জীব লোকের নিকট আশা করিতে পারি না. তাই মনুষ্য শিশুর স্থপালন ও সুশিকা দারা আমরা বিখের উল্লভি ও মলবা-স্মাজের উল্লভি কামনা করি। কক্ষন কোন ব্যক্তি আজীবন বিশ্বহিত ব্রত পালন করিয়া স্বর্গ গমন করিলেন. ভাঁহার গুণাবলীও ভাঁহার সঙ্গে সঙ্গে পৃথিবী হটতে চলিয়া গেল, কিন্তু যদি কোন ব্যক্তি সুপালন ও স্থনীতি শিকা बाता नी दांग शहे भूहे, विलंहे, धार्मिक, मक्तत्रिक, अ मशाना २०।२विक निकदक সংস্বভাবসম্পন্ন যুবক যুবতী করিয়া রাধিয়া খাইতে পারেন, তাহাহইলে ঐ বৃবক বৃবতীগণ দারা সংসারের অনেক প্রকার হিত সাধিত হইতে পারে এবং শিক্ষত পরলোক **ভাঁহাদের**

শিতা মাত। অসক্তরিত্র হইকে সন্তান সক্তরিত্র হওরা করিন, কিত্র অসত্তব নর, কেননা অসক্তরিত্র পিতা মাতা হইতে শিক্ষেক বিদ্ধির ক্রিকা হাশিকাও হুনীতি শিক্ষা দিলে শিশু কালে সক্তরিত্র হইতে পারে।

ধারণাদর্শনিত্যাহর্দ্দর্শ ধারদতে প্রকা: ।

স্যাদ্দারণপ্রকুক্তং হিসংগাইতিনিক্ষঃ ।

মহাভারত কর্ণপর্বা, একোনসপ্রতিত্রোধ্যায়-

করিরা ইহলোকের অপূর্ব কার্যা পূর্ব করিভে থাকেন।

क्रेशद्वत विश्वशिष्ठत स्रमा (व अक নিগত সহান উদ্দেশ্য আছে, क्रमनीत सम्रत अभीय मञ्जान-वारमना নিহিত করিয়া ভাঁহার সে উদ্দেশ্যের সফলতা সম্পাদন করিয়াছেন। শিশুপালন কার্য্য যে বিশ্বের হিতকর ও ঈশবাভিপ্রেড ইহা বুকিডে পারিয়া গৃহাভামী জনক জননীগণকে জ্ঞানিগণ আধ্যাত্মিক উন্ন ভিব বাৰ্দ্ধকো চেষ্টা করিতে উপদেশ দিয়াছেন। * যুখন সহমরণ প্রথার অসীম আদর ও গৌরব ছিল, তখনও শিশু স্থানের ঘন্য জননী সহমৃতা না হইলেও ধর্মের হামি বলিয়া পরিগণিত হইত না, ডাই পবীক্ষিত-জননী স্বামিশোকে **উত্ম**রা কাতর হইরাও সহমরণ বাইতে পারেন নাই। অভএব শিশুকে সম্বেহে লালন পালন করা যেমন জননীর স্বভাবসিদ্ধ, তেমনি যাহা কিছু সংকাৰ্ঘ্য তাহাই পুণ্য---থাহাতে বিশ্বপতির বিশাল বিশের একবিন্দুও হিত করা হয়, ভাহাই পুণা। যদিও আপ্স সজানপণ কে স্ক্তোভাবে স্থাস্থ্য করা জননীর ইচ্ছা, তব্ আমরা জানি না-বুঝি না যে कि क्तिल म्हान मर्का का माना ए । श्राष्ट्रा (भोक्सर्वा विकृतिक स्वेत्व । काउन

क्: टबंब विषय अहे द्व भामता शह डेशनाम शक्षि हाहे, डेन वृति हाहे, বেশ বিন্যাস করিতে থাই, আরও কত কি শিখিতে চেষ্টা করি। কিন্তু সংলাবের গুরুতর কার্য্য যে শিশুপালন সেই শিশু-পালন কিলে ভাল ছইতে পারে, ভাছা শিক্ষা করি না বা শিক্ষা করিবার চেষ্টা করি না; স্থতরাং "শিওপালন" লেখা আল্লকাল আমাদের নিকট মাজ। তবে শিলপালন যে আমাদের भिका करा निजाड खावगाक, देहाई वना व श्रवरक्षत्र ऐत्समा ववर हेनात्रहे आञ्चिकिक गामाना भामाना विवस कुहे একটা লেখা বাইবে, কিন্তু ভাহাও বে নিভুল একথা সাহস করিবা বলিতে পারিতেছি না।

শিভগালন গর্ভ হইতে আরম্ভ হওয়া উচিত, কেননা অক্তরেই উহার মকলের मिक मृष्टि थाकिल পরিগামফল মকল-कनक रहा। কোন কোন গৰ্জিলীৰ পর্তের প্রথম অবস্থায় অকৃতি হয়, সেই সময় কুখা নিবারপার্থ তাঁহাদের মুগরোডক বাল ল্প সংগৃক্ত অন্নরদ খাওয়া উচিত নহে. উহাতে স্বাস্থ্যভঙ্গ হওয়া সম্ভব। গর্ভিণীর সাস্থ্য ভল হইলে গর্ভস্থ ক্রণের স্বাস্থ্যের দশাও তজ্ঞপ হওয়া সন্তব, বরং তুধ মিছিরী শরবত ইত্যাদি মুখরোচক লখুপাক দ্রব্যাদি আহার করা কর্ত্তব্য। গর্ভের প্রথম অবস্থায় ওক্তর পরিশ্রম করা অনুচিত। সাধ পঞ্চায়ত উপসংক্ষ নিমন্ত্ৰণাদিতে ওকুপাৰ অব্যাদি অধিক

 [&]quot;সৃহভত্ত বদাপশ্যেৎ বলী পলিতমাছনঃ। অপত্যমৈর চাপছাং তদারণ্যং সমাত্রতেং ॥"

পরিমাণে ভোজন করা উচিত নহে। আর গর্ভের সঞ্চার জানিতে পারিলেই অবসর মত 'ভারত কামিনী' ও 'ধাত্রী শিক্ষা' এবং ঐ শ্রেণীর পুস্তক পাঠ করিয়া তদত্মারে কার্য্য করা উচিত। প্রভাবভার দর্বদ। শুইরা আলস্যে দিন কাটাইলে প্রসবের সময় প্রস্থৃতিকে ভারি কট্ট পাইতে হয়। এ বিষয়ে আলস্য-পরায়ণা বিলাসিনী সম্ভান্ত বংশীয়া রমণী প্রস্তিগণ আর অসভা নীচ বংশীয়া रिम्निक खमछीविनी अञ्चित्रंग अकृष्ठे উদাহরণ-ভল। কোন স্থাসিক বঙ্গীয় লেখক ভাঁহার একথানি গ্রন্থে লিখিয়াছেন* ৰে তিনি দেখিয়াছেন কোন দৈনিক अमकी दिनी तम् शो शुक्रविष्ठात महिल শস্য কর্ত্তন করিতেছিল, এমন সময় হঠাৎ একটু আড়ালে গেল, অৱকণ পরে নদীতে গিয়া সদ্য:প্রস্থত শিশুর সহিত পরিষ্কৃত হইয়া শিশুকে কোড়ে করিয়া পুনর্বার শস্য কর্ত্তন করিতে লাগিল। আর আমরা ২।০টা ভদ্র বংশীয়া আলস্য-পরারণা স্তিনীকে প্রসবের প্রাক্রালে ভীবন ত্যাগ করিতে দেখিয়াছি। কোনও বুকোর বীজ বপন করিয়া সেই বীজাত্ব ভূগর্ভ হইতে যাহাতে দতেজে চারারূপে বহির্গত হইতে পারে, সেজনা भागीत (समन (**ह**ष्टे) ও सकु कता डेडिङ, প্রসৃতিকেও তেমনি গর্ভাবস্থা হইতে भिकुत मक्त (ठड़ी कहा कर्द्या। वना

বাব্ অক্ষরকুষার দন্ত কৃত বাহ্য বন্তর সহিত
 'মানব প্রকৃতির সবন্ধ বিচার' দেব।

বাছল্য যে গর্ডাবছার প্রস্তুতির সাছ্যের দিকে বিশেষ দৃষ্টি রাধা আবশ্যক। গর্ভাবভায় অতি হর্ষ, অতি ক্রোধ, অতি বিষাদ, অবসর ও নিরুৎসাহ হওরা বিধেয় নহে, সর্ব্বদা প্রসূত্রচিত্ত এবং নীরোগ হইবার চেষ্টা করা উচিত।

আ্মাদের স্থতিকাগার সাধারণত: যে প্রণালীতে নিশ্বাণ করা হয়, উহা অতি কদৰ্য্য এবং স্থতিনী ও শিশুর পক্ষে বিপদজনক। একেত অপ্রশস্ত স্থান, তাহাতে আবার উহাতে না বায় গ্রীমে বাভাস, না ঢাকে শীতের ঠাণ্ডা। এই ত্মবস্থায় শয্যাদির যেরূপ व(सावस তাহাও ভাল নয়। ছেঁডামাছর আর ময়লা বন্ত্র থণ্ড ইহাই সদ্য:প্রস্ত শিভর শব্যা। শিশু গর্ভে যে অতি গরমে থাকে, ইহা দহজে অনুমিত হইতে পারে, সুতরাং গ্রমের মধ্য হইতে ভূমিম্পুট হইলে তাহার লেপের ভিতর হইতে শীতল হুলে পড়ার ন্যায় ঠাণ্ডা অনুভূত হয়। গ্রমের সময় হইলেও সদ্যোজাত শিভকে আমরা শীতে কাঁপিতে দেখিতে পাই এবং উহাকে আমরা গর্ভ-শীত বনিয়া থাকি। শীতকালে উক্তরণ বিছা-নায় ভাহারা যে কত স্থাধ থাকে, ভাহা বুঝিতে অধিক সময় লাগে না। ইহাতে যে শিও হুধ কট পায় এমত নছে, হয়ত ইহাতে শিশুর প্রোণ পর্যান্ত নষ্ট হইতে পারে। অতএব সেই অবস্থায় তাহাকে গ্রম জল ও সাবান ছারা স্থপরিছত করিয়া গরম বল্লে উত্তমরূপে ঢ।কিয়া

রাধা আবশ্যক। আমাদের পলীপ্রামের ধরণী (ধাত্রী) পণ ডিপ্লোমা প্রাপ্ত না হইলেও অন্য উপায় দারা ঐ কার্য্য করিয়া ধাকে। তাহারা বেশী পরিমাপে সর্বপ তৈল শিলকে মাধাইয়া ধীরহত্তে নেকড়া দারা পরিকার করে, ভাহাতে শিশুর গাত্রমলা বেশ উঠিয়া বায়। অনস্তর আগুণের সেঁকে প্রম করিয়া পর্ভ-শীত নিবারণ করে। किक উপরোক্ত উপায়ই স্থবিধাজনক বলিয়া বোধ হয়। স্থতিকাগার সেঁত দেঁতে, বায় প্রবেশ করিতে পারে ন। অথবা ৰালাপালা হওয়া উচিত নহে, কেন না শিশু যে কয়দিন স্তিকাপরে ধাকে, দেই কয়দিনই তাহাকে অভি সাবধানে বাথা আবশাক। এই সময়ে শিশুর কোষ্ট পরিকার থাকা, নাডীকাটার সময় সভক হওয়া: গর্মে থাকা ও ভন্য বা জনমিন্দ্রিত উষ্ণ হয় থাওয়া উচিত।* স্তিকাগারে আগুণ রাথা উচিত, কিন্ধ ধোঁয়া হওয়া ভাল নয়, ভজ্জন্য কয়লা বা গুলের আগ্রেণ বাধা কর্তব্য। শিন্তকে সর্ব্বদা শুক্ত ভানে পরিকার কোমল শ্যায় পরিষার গরম বল্লে আর্ভ রাথা নিভান্ত আবশ্যক। জননীর শরীরের অবস্থার সহিত যে শিশুর শারীরিক অতি নিকট সম্বন্ধ আছে, প্রাচীনাগণ ইহা উদ্ভয় রূপ জানিতেন। ভদ্তির ভাঁহারা

* ৰাজী শিক্ষা প্ৰথম অধ্যায় দেব।

শিশুপালনে নিতাম্ব অনভিক্ষা ছিলেন না। কি কুক্ষণেই যে বন্ধ পরিবারের মধ্যে বিলাস-বিষ সংক্রামিত হইয়াছে বে আমৰা আলস্য বশত: ভুচ্ছ ও অনাবশ্যক বোধ করিয়া প্রাচীনাগণের সেই স্থন্দর শিশু-পালন রীতি শিক্ষা করি নাই। কিন্তু ঈশ্বর মঙ্গলময়, তাই 'ধাতীশিকা' পুত্তক আমরা প্রাপ্ত হইয়াছি। আমাদের শিশুপালনক্রপ কর্ত্তব্য জীবনীশক্তিংীন হইয়া পড়িতে-ছিল, কিন্ত ধাতীশিকা বেন উচার শঞ্জীবনীশক্তি কইয়া জন্মগ্রহণ করি**রাছে** विनिया व्यामा इत्र । वजुरु शुःरथत विश्वत्र বে অনেক প্রস্তি উহার উপকারিতা বুকিতে আজও চেষ্টা করেন না। আমা-(मत्र मध्य कान क्षत्र्यनित्र कहे-পूडे ७ विनर्ध मरमारमी भूकरवत ज्वर শিতপালন ও গাহ্ন্য ধর্মে স্থানিকতা রমণীর নিভান্ত প্রয়োজন হইয়া পড়ি-য়াছে। তাই কবি বড় হু:খে **ক্ষোডে** বলিয়াছেন--

"যত ভারত রমণী আছ ছরে, বিরম প্রসবে কিছু কাল তরে, বল-বীঘ্য-হীন দাস-মূতে কি কাজ প্রসবি অযুতে অযুতে।"

কিন্ত ভারতরমণী শিশুপালনে স্থান-ক্ষিতা হইলে 'বলবীখ্যহীন দাসস্থত'' কি বলবীধ্যসম্পন্ন হইডে পারে না ?

শুভ যাত্রিক।*

(সন ১৩০১ সাল, ২৭ শে ডাদ্র মঞ্চলবার)

ন্ডভ ধান দুৰ্ববা দিয়ে সাক্রায়ে মঙ্গল ডালা, এস মা ভারত লক্ষি! এদ যত বঙ্গবালা; নিয়ে এদ পূর্ণ কুন্ত সহকার-শাখা সনে, বাজাও বিজয় শঙ্খ সবে পুলকিত মনে; স্থপা জোছনা ভরা সুমজলা বিভাবরী, নিথর গঙ্গার জলে জাগিছে বুটিশ তরী; ছাডি বর ছাডি দেশ, ছাডি পরিচিত জন, দূর দেশে সে জাহাজে যেতেছেন একজন---বল জননীর ছেলে অনাথের সহোদর, উদারহাদয় আহা বিশ্ব প্রীতি সরোবর !— সাধিতে বিধির কাজ ষেতেছেন সিদ্ধু পারে, व्यवारम, विष्मारम, पृत्त, সেই শ্বেডছীপ ছারে।

স্মঙ্গল ধান দুৰ্কা দেহ সবে তাঁর শিরে, নীরোগ সবল রবে. পরাণের পুত আশা मकिन मक्न श्रा বৎস-সনে গাভী যথা তেমনি মার'বে কাছে. যে ছেলে "মায়ের ছেলে" তার ভয় কোথা আছে গু চারিধারে নীল জল করিছে ভৈরব খেলা. अभीन नहती (हाति, নয়নে আসে না বেলা: এহেন বিশাল নীল মহাসাগরের পরে, চলিছ বুটিশ ভরি। কত শিশু কোলে করে: যেতেছেন আজি দেবি, আমাদের একজন---বাজায়ে মঙ্গল শভা ডা'ক বিশ্বজননীরে; মা'র বরে মা'র শিভ বঙ্গজননীয় শিভ

বড় আদরের ধন।---

কলিকাতঃ সিটা কালেনে ই মৃক ও বধির শিশুগাণের শিক্ষার উন্নতি প্রন্য, তাহাদের জনৈক
সদাশয় শিক্ষক গত ১২ই সেপ্টেম্বর বিলাতে প্রেরিত হইয়াছেন, এই কবিতাটি তছুপলকে লিখিত।
লেখিকঃ।

দেবের আদেশ নিয়ে

বৈতেছেন দিল্ল পারে,
তুমি মা, "পরের ছেলে"
কথনো ভেবনা তাঁরে;
মা'র কোলে শিশু বথা
তেমনি রাখিও তুমি,
নিরাপদে নিয়ে যেও
সে দ্র বিলাত ভূমি।
ত
নমো যাতঃ! দ্যাম্মি,
দিদ্ধিণাতী, ভভক্ষরী
প্রাও শিশুর আশা,
ও পদে মিনতি করি।
মৃত জড় পুনঃ বাঁচে
বাবা ছেলে কথা কয়,

বরদে, জোমারি বরে

স্কলি সম্ভব হর!
তোমার চরণ স্মরি,

করিতে তোমার কাজ,
বঙ্গ জননীর শিশু

বুটনে হেতেছে আজ!
রেথ মা, সন্তানে সুথে

সে বিদেশে পরবাদে,
নিরাপদে প্রায়

মা'র কোলে বেন আলে।

যার তরে সারা বজ্প
রহিল চাহিয়া পথ,
সে স্থিত দয়া করি,
প্রিভ মা, মনোরধ।
লেখিকা শ্রীমা।

পাঁচন মুষ্টিযোগ।

(७৫৫ मश्या—১১৪ পृष्ठीत्र पत्र ।)

অৰ্শ ।

আদা ও আম-আদা একতা দেবন করিলে অথবা এক তোলা আতপ চাউণ আর আদ তোলা চারা নিমের শিক্ড একতো বাটিয়া ৩া৪ দিন ধাইলে অর্ণ-রোগের শাস্তি হয়।

পুরাতন ওক মূলা এক তোলা জলের সহিত উত্তমরূপে বাটিয়া কোন প্রভাৱ বা কাচ পাতে কিঞ্চিৎ জল মিঞ্ডিত ক্রিয়া সুন্দ্র বস্তব্ধত্বারা চাকিয়া শিশিরে রাধিবে। পর দিবদ প্রোতে স্থান করিয়া

উহা সেবন করিয়াই এক ভোলা নি**ত্তক** (থোসা ছাড়ান ক্লফাতিল) ও এক ডোলা আতপ চাউল চিবাইয়া থাইলে **অর্ল** সারে।

হরীতকী ২ তোলা গোমুত্রে চারি দিবস ডিজাইয়া কাটিয়া ভুলা পরিমাণে ওড় মিত্রিত করিয়া দেবি ত হইলে অর্থ ভাল হয়।

নিত্মক কৃষ্ণতিল ২ তোলা, সাধ্য ১ তোলা, মিছিরী ১ তোলা, জুথবা ক্টি পদ্মপত্র ৪০ তোলা ও ছাগহুর এক দুটাক সেবন করিলে অর্শ আরাম হর। অর্শ রোপের রক্তস্রাব হইলে গরম অবেশ কটকিরির গুঁড়া মিশাইয়া, দেই অবে শৌচ করিলে রক্ত পড়া বন্ধ হয়।

শুকরের রক্ত ও আফিং একত্তে শর্শের বলিতে লেপ দিলে বলি পতিত হয়।

বলিতে অত্যন্ত বত্রণা থাকিলে হরি-ণের শৃক্ষ শিলে ঘসিরা লাগাইয়া দিলে অথবা গন্ধবির্ঞার ধুম তথায় দিলে বেদনার আভি শাভি হয়। জালী হরীতকী চূর্ণ 👉 আনা, >
তোলা মাধনসহ মিশ্রিত করিরা সেবন
করিলে অর্শের বস্তুনার লাখ্য হয়।

হরীতকীর আঁটির লম্বাদিকের ছই
পার্স কিঞ্চিৎ কিঞ্চিৎ কাটিবে, তৎপরে আঁটির লম্বা দিকেই একটী ছিল্ল
করিয়া সেই ছিল্ল মধ্যে ৯ গুল অর্থাৎ
৯ থেয়া ব-স্থতা প্রবেশ করাইয়া কটাদেশে
ধারণ করিলে অর্লরোগ আরোগ্য হইয়া
থাকে।

मयोदनां ।

প্রতিধ্বনি.—আমরা অতিশয় আন-শের সহিত এই সমালোচনা বামা-কোধিনীতে প্রকাশ করিলাম; এই পুস্তকখানি কোন পঞ্চদশব্যীয়া ৰামার প্রণীত। প্রতিধ্বনি কবিতাময় পুস্তক, রচরিত্রীর নাম এমতী মৃণা-শিনী, এই পুস্তক প্রণেত্রীকর্ত্তক তাঁহার পিছদেবচরণে উৎদর্গীকত। সেই উৎ-**সর্গ পতা স্থ**াক্ষরে মুদ্রিত। পুস্তক খানির কাগজ, মুদ্রাখন ও বাইভিং এড উৎকৃষ্ট বে, কলিকাতা হইতে প্রকা-শিত আর কোন বাসালা পুস্তকে जामुन उरकर्व (पथा यात्र नारे विनातन অভ্যাক্তি হয় না। পুস্তক ধানিতে অষ্ট ৰটটা বিভিন্ন কবিতা প্ৰবন্ধ সন্নিবেশিত **ভ্টয়াছে। র**চরিত্রীর ভূমি^হাপাঠে আমা বেল, ডিনি খালখবৰ্ষ বয়স হইডে

পঞ্চাদশ বর্ষ বয়স পর্যান্ত ভিন্ন ভিন্ন বিষয়ে যত কবিতা রচনা করিয়াছেন, তাহার অধিকাংশই এই পুস্তকে প্রকা-শিত হইয়াছে। প্রত্যেক প্রবন্ধের শেষে রচনার সন, মাস, এমন কি তারিখ পর্যান্ত লিখিত আছে।

এই পুত্তক থানি আমরা আদ্যোপান্ত পাঠ করিয়াছি। অনেকে মনে করিতে পারেন, বামারচনার প্রশংসা করাই বামাবোধিনীর ব্যবসায়। নবশিকিতা বঙ্গবালাগণের উৎসাহ বর্দ্ধনার্থ ঐ ব্যবসায় অবলম্বনে বামাবোধিনী কৃষ্টিতা না হইলেও "প্রতিধ্বনির" প্রশংসা বাদে দে কথা কেহই বলিতে পারিবেন না। আমরা মৃককঠে অসকোচে বলিতেছি এত অল বর্সের রমণী—লেখনী হইতে এমন কবিত্বপূর্ণ এডভলি সরল কবিতা আমরা আদে দিখি নাই এবং ছরসা করি, প্রতিধ্বনির এই প্রশংসাবাদ ছচির কাল মধ্যে বঙ্গের সর্ব্বত্ত প্রতিধ্বনিত হইবে। বামাথোধিনীতে ছানাভাব না হইলে আমাদিপের পাঠক পাঠিকার অবগতি জ্বন্য অনেক কবিতা উদ্ব্ত করিতে পারিতাম। বাঙ্গালা কবিতা পাঠে বাঁহাদিপের অভ্রাপ আছে, তাঁহা- দিপের সকলকেই অন্থরোধ করি, তাঁহারা
"প্রতিধ্বনি" পাঠের কোন হ্যবোগ ত্যাপ
না করেন। অন্ততঃ ফুল, পাপী, কথন
বসন্ত এলো, ৬ সরোজিনী, ডেকেছি
কোন, স্থার আশা, তথন ও এখন,
বিষাদিনী, শেষ;—কোন গতিকে একধানা পুন্তক হাতে পড়িলে, এই করটী
পড়িয়া লইবেন।

ন্তন সংবাদ।

১। চীনজাপানের মধ্যে যুদ্ধ চলিতেছে, কয়েক দিন হইল নিউব্যাও
নামক স্থানে চীনেরা জাপানীদিগকে
আক্রমণ করিয়াছিল। তংপরে কয়েকটা
জলযুদ্ধ হইয়া চীনেরা বিশেষ ক্ষতিগ্রস্ত
হয়় ইতিমধ্যে দদ্ধির প্রস্তাব হইতেছে
ভানিয়া আছলাদিত হইলাম।

২। ফরিদপুর ছর্ভিক্ষের সাহায্যার্থ বেধুন বিদ্যালয়ের বালিকারা ৪৭০৫ চাঁদা ছুলিয়া আমাদিগের নিকট পাঠাইয়াছেন, উহা ঘণাছানে প্রেরিড হইল। বালিকাদিগের এ শুভায়ুটান বিশেষ প্রশংসার যোগ্য।

ত। বহরমপুরের জ্বলের কল স্থাপ-নার্য যত টাকা ব্যয় হইবে, মহারাণী

স্বৰ্ণমন্ত্ৰী স্বয়ং তাহা দিবেন। মহারাণীর রাজকীয় বদান্যতা চির-আনদর্শ স্থল।

৪। গত জুনমাসে বিলাতে বে

দিবিল সার্কিস পরীক্ষা হয়, তাহার কল
বাহির হইথাছে। বরাহনগরের বারু
শশিপদ বন্দ্যোপাধ্যোয়ের পুত্র শালবিয়ন রাজকুমার ও জে বোষাল ও
ভারতী সম্পাদিকা জীনতী দ্বর্ণ কুমারীদ্ধ
পুত্র জ্যোৎক্ষা বোধাল প্রশংসিতক্সপে
উত্তীর্ণ ইইয়াছেন।

 a। মাণাগান্ধারের রাজ্ঞীর সহিত
ফরাদীদিগের বিবাদ হেতু ইংরাজ
বাণিজ্য অত্যত্ত ক্তিপ্রত ইইয়াছে।

বামারচনা।

প্রয়োজনীয় প্রার্থনা।

আমাদের হিন্দু সমাজে রমণীর পতি
নির্বাচন করিয়া লইবার ক্ষমতা নাই।
কন্যার পিতা, ভাতা, খুড়া, জাঠা,
ইত্যাদি অভিভাবকগণ বাহাকে মনো
নীত করিবেন, তাহাকেই কন্যা সম্প্রদান
করাহইবে। কেহ একবার দেখিবেন
না যে, বাহার করে চির জীবনের জন।
একজন অবলার সুধ, আশা, ভরশা
সমস্ত অপিত হইবে, বাহার অধীন-

হইয়া সেই চু:খিনী অবলাকে অক্ল সংসারসমূলে কাপ দিয়া জীবনখালা নির্বাহ করিতে হইবে, তিনি সেই অবলার মনোনীত হইলেন কিনা ? এইত আমাদের সমালের রীতি! পতি পদ্মীর মনোনীত এবং পদ্মী পতির মুনোনীত হইবেন কিনা বিবাহের প্রের্থ এক বার তাহা বিশেষরপ প্রীক্ষা করিয়া দেখা হয় না বলিয়া জনেক প্রিবার জ্পাতি-

দ্ৰপ অগ্নিতে দশ্ব হট্যা থাকে। বিবাহ একটা কঠিন কাৰ্য্য। বিবাহের পর হইতে মানবের নৃতন জীবন আরম্ভ হয়। স্বামী जीत घरेंगे कीवन अक्षी कीवरन मिलिड করিরা অভি সতর্কতার সহিত জীবন বীত্তানিৰ্বাহ করিতে হয়। কিন্ত চুইটা জীবন একতা করিতে কয়ন্তন জানেন গ কর্মন পারেন ? যিনি পারেন তিনিই ধন্য, তিনিই এই সংসারে স্বর্গস্থ লাভ করিতে সক্ষম হইয়াছেন। ছুটী জীবন একজে মিলিত করিয়া নিরা-পদে জীবন যাত্রা নির্কাহ করা বড় চুরুহ এই তর্ম কার্যা সম্পাদনের কাৰ্য্য। জনা হুইটা জবোর আবশ্যক-একটা প্রেম, অপর্টী স্নেহ। সংসারে স্থর্খ লাভের ইচ্ছা থাকিলে স্বামী ও স্ত্রী উভয়কে উভয়ের সহিত এই মহামূল্য রত্নস্কপ **এট প্রে**ম স্লেহের বিনিমর করিতে হয়। কিছ এই পবিতারত্বের বিনিময় করিতে ক্রজন জানেন ৭ আর একটা কথা, এই অম্ল্য রুত্বয়ের বিনিময় করাও বড় ৰহজ কাৰ্য্য নহে। সামী স্ত্ৰী হইলেই বে এরত্বের বিনিময় করিতে পারেন ডাহা কথনই সম্ভব নয়। যদি ভাহা পারিতেন তাহা হইলে প্রতি নিয়ত দৃশ্ভিদিগের মনোমালিন্য ঘটিয়া স্বস্থ 🖷বন ভার বোঝা বোধ হটত না। হাদর যাহার ৩ণে মোহিত হয়, তাহার সহিতই এই অমূল্য রত্নের বিনিময় করা ঘাইতে পারে। তাই বলিভেচি **অত্যে দেখা** উচিত দম্পতিযুগল পরম্পর শরস্পরের প্রণয়ের উপযুক্ত কি না ? কিন্ত আই উপযুক্ততা অনুপযুক্ততা নিরূপিত করাও ভূরহ কার্ব্য, একজনের যাহাকে ভাল হোধ হয় অপরের যে তাহাকে ছাল বোধ হইবে তাহার নিশ্চয় 🕏 🤊 কুমুদিনী চ'বে শশী, অতুল স্থামা রাশি

্তাবলে কি ভাল লাগে নলিনীর নয়নে গ

পাত্রীর অভিভাবকেরা বাহাকে উপ যুক্ত পাত্তি বিবেচনায় পাত্রীকে সম্প্রদান করিলেন, পাত্রীর হয় ড তাঁহাকে ভাল লাগিল না—সকলের অজ্ঞাতে তাঁহার হৃদয় ভশীভূত হইতে লাগিল। তাই বলি প্ৰত্যেক লোকেৰ ক্ৰচি বিভিন্ন প্ৰকাৰ। কাষ্যত এক প্রকাব নয়। নিজের হৃদয় নিজে যেমন বুঝিতে পারা যায়, অপর সেরপ বুঝিতে কোন মতেই শক্ষম নহেন। অতএব দম্পতিষয় পর-ম্পারের প্রাথ্যভাক্তন হটতে कि ना, विवाद्धत्र शूर्व्य (म भूतीकात ভার দম্পতিদিগের করেই ন্যস্ত হওয়া উচিত। এই কঠিন পরীক্ষার मन्भि जिस्ता देश व नास व्यास विकास শামী ন্ত্রীর অপ্রপর শটিত মনোমালিনো কত সংসার অশাস্তি অনলে পুড়িয়া ছার-বার হইতেছে, তাহার ইয়তা কোথায় ? স্বামী পড়ী *ির্*র(চন ক্রিয়া লইবার **ক্ষম**ত। পাইলে সংসারে ক্লেশ থাকিবে না— দম্পতি-যুগল পরস্পর পরস্পরে পবিত্র উপভোগ করিয়া জীবনকে চরিতার্থ জ্ঞান করিতে পারিবেন।

কিন্ত হায় এ পোড়া ভারতে—পোড়া সমাজে আর্কি সে স্থের দিন উদয় হইবে যে দিন সাবিত্রী দময়ন্তী ভদ্রা ইত্যাদি আ্যা মহিলাগণ সয়ং পতি নির্বাচন করিয়া লইবার ক্ষমতা পাইয়া ছিলেন আমাদের হিন্দু সমাজে আর कि म ७७ मिन इटेरव ? একাজ মনে প্রমেশরের নিকট প্রার্থনা করি ভাঁহার কুপায় যেন আমরা আবার সেই ওভদিন ফিরিয়া পাই। ভগবান যে দিন আমাদের এই প্রয়োজনীর প্রার্থনা পূর্ব করিবেন সেই দিন হইতে আর দম্পতিদিগের মনোমালিন্যে विषयपु इट्टेंद ना।

নগেন্দ্রবালা মুক্তোফী।

বামাবোধিনী পত্রিকা।

BAMABODHINI PATRIKA. "कन्याप्यवं पालनीया त्रिश्वकीयातियत्रतः।"

क्लारक भानन कति (वक ७ यापुत महिल भिका नि (वक ।

०৫৮ गरथा

কার্ত্তিক ১৩০১—নবেশ্বর ১৮৯৪।

৫ম কল্প। ৩য় ভাগ।

সাময়িক প্রসঙ্গ।

রামমোহন রায় স্মরণার্থ সভা —গত ২৭শে সেপ্টেম্বর মহাত্রা রাজা রামমোহন রায়ের বাষিক মারণার্থ সভা ধেনন কলিকাতায় মহা-সমারোহে সম্পন্ন হইয়াছে, সেইরূপ বোম্বাই, মান্সাজ, লাহোর প্রভৃতি দূর-ম্বানে এবং বঙ্গদেশের অনেক প্রধান প্রধান নগরীতে সম্পন্ন হইয়াছে। রাম-মোহন রায় যেমন অসাধারণ মহাপুরুষ ছিলেন, তেমনি ভারতের গ্রী, পুরুষ, ভঞ্জ, ইত্র সর্বসাধার্থের প্রমহিতকারী বিদ্ধ ছিলেন, ভাঁহার কোন স্থায়ী স্মৃতিচিই স্থাপনার্থ সর্ব্ধসাধাণের ষ্ঠায়তা করা একান্ত বিধেয়। তাঁহার উদ্দেশে কলিকাতায় "রামমোহন রার কুব" নামে একটা ধর্মতবালোচনী দভা এবং একটা পুস্তকালর স্থাপিত হই- য়াছে দেথিয়া আমরা পরমা**হলাদিত** হইয়াছি।

জাতীয় মহাসমিতি—আগামী
বড়দিনের সময় মাল্রাজে কন্ত্রেসের
অধিবেশন হইবে, তাহার জন্য উৎসাহ
সহকারে আযোজন হইতেছে। কানাডার
গবর্ণরকে সভাপতির আসন গ্রহণার্থে
আহ্রান করা হইয়াছে। আমেরিকার
ক্মারী জানসিস্ উইলার্ড এল, এল, ডি
এবং ইংলণ্ডের লেডী হেন্রী সমরসেট্
এই হুই স্থাসিদ্ধা মহিলার স্মিতিতে
উপস্থিত হইবার সন্থাবনা।

ন্ত্রীকবির মৃত্যু—মাক্রাক্ক প্রেসি-ডেন্সি কলেজের দর্শনশাল্বের অধ্যাপক এন্ সত্যনাদনের পত্নী প্রীমতী কপাদাই পত ৩রা আগন্ত পরলোকগত হইয়াছেম। বন্ধবালা তক্রদন্তের ন্যার ইহার কবিষশক্তি থবং ইংরাজী সাহিত্যে বিলক্ষণ অধিকার
ছিল। ইনি ইংরাজীতে "সগুণা" ও
"ক্মলা" নামক তৃইখানি উপধ্যান গ্রন্থ
লিথিরাছেন; সগুণা ধরীর কলেজ মাগাজিনে মুফ্রিত হইয়াছে, কমলা শীজই
পুস্তকাকারে প্রকাশিত হইবে। এইরপ
ভণবতী রমণী ৩১ বংসর বরসে চলিয়া
প্রেলম, ইহা ভারতের বড়ই তুর্ভাগ্য।

সুখের মৃত্যু—কন্থেসের উংসাহী সভ্য রাজা রামপাল সিংহের মাতা
১২৫ বংসর বৃষ্ণে কলেবর পরিত্যাগ
করিরাছেন। এত ব্যসেও তাঁহার কিছু
মাত্র বৃদ্ধিভংশ হয় নাই।

দান-মহারাণী বর্ণময়ী হায়ার

ট্রেপিং সভার ৫০০ ও সুঁক বধির বিদ্যা-লয়ে ৩০০ টাকা দান করিয়াছেন।

চীন জাপানী যুদ্ধ— উভর পক্ষের বার বার জয় পরাজয় হইয়া প্রভৃত ক্ষতি হইয়াছে, তথাপি প্রতিহিংসা-প্রবৃত্তি খ্ব প্রবল। জাপানীরা একদিকে চীন রাজধানী পেকিন অধিকারে, অন্য দিকে চীনের প্রধান ধনাগার মৌকডেন নগর লুঠনে লোলুপ হইয়া অসংখ্য দৈন্য চালনা করিডেছে।

ভারত বিধবা — সেন্সসের গণনামুসারে, ভারতে বিধবা সংখ্যা আড়াই কোটি, ভারধো দশ বংসরের ন্যুনবয়স্ক বাল-বিধবা সংখ্যা ৭০,০০০ হাজারের অধিক !!

ভগবৎ-ক্নপা।

ভাগবত শব্দের অর্থ ভক্তিরদ পাত্র ও ভক্তিরস শাল্প। এই ভাগবত শাত্রে বলিয়া পাকেন, ভক্তি লাভের তিনটি কারণ; প্রথমত: জীবের ভক্তন দাধন, দিতীয়ত: সাধু কুপা, তৃতীয়ত: ভগবৎ কুপা। আমর) আজ এই প্রবদ্ধে প্রথমোজ কুইটি পরিত্যাগ করিয়া কেবল তৃতীয়টি সম্বন্ধে কিকিৎ বলিবার ইচ্ছা করিয়াছি।

আজ কাল শিক্ষিত সমাজে জ্ঞান বিজ্ঞান, ও বৃদ্ধিক্ষতাব বেরূপ প্রাধান্য খীরুড হইরা থাকে, তাহাতে ভক্তিবাদের ক্যাবার্ত্তা আরুই আকাশ কুসুমবৎ শুক্তিক প্রথার্থ্যে অনাদৃত হইরা থাকে, অথবা ঐ ক্স জালিক পদার্থের ন্যায় ফুৎকারে উড়িয়া যায়। এরূপ ঘটনা যে কেবল আজ কালই হইতেছে, এমন নহে; ভগবস্তাব প্রাপ্তি সম্বন্ধে চিরকালই এই রূপ হইয়া আসিতেছে। জীমদ্ভগবদ্-গীতাতেও উক্ত হইয়াছে,—

"মহুষ্যাণাং সহস্রেষ্ কশ্চিদ্যততি সিদ্ধরে।
যততামপি সিদ্ধানাং কশ্চিমাং বেজি তত্বতঃ।"
সহস্র সহস্র মহুষ্যের মধ্যে কদাচিৎ কেই
ভগবৎ প্রাপ্তির জন্য বন্ধ করেন এবং
তাদৃশ যত্নশীল সহস্র ব্যক্তির মধ্যে কোন
ব্যক্তি প্রকৃত পক্ষে ভগবৎ ক্ষান লাভ

করেন। যাহা হউক, "ভগবৎ কৃপা" বলিয়া একটা পদার্থ আছে এবং ভাহাতে বিশাস হইবার উপবৃক্ত ঘটনাবলী কথন কথন জীব-চরিত্রে দৃষ্ট হয়, অদ্য আমরা ভাহাই দেখাইবার চেষ্টা করিব।

ভারতের দক্ষিণ প্রদেশে রঙ্গনাথ বলিয়া এক দেব বিগ্রহ আছেন। ভাঁহার 🗬 মন্দিরের অবদূরে বাংমুখী নামী এক পরমা স্থান্দরী রমণী বাস করিতেন। ভাঁহার অতল এখার্য্য এবং বছসংখ্য উদ্যান ও পুদ্ধরিণী ছিল। আপনি বহুসংখ্যক মুন্দরী দাসী পরিবৃতা হইয়া প্রম স্থে অট্রালিকায় বাস করিতেন। মধ্যাক্ত কালে ভাঁহার বাস ভবনের অদূরবন্তী এক কুমুমোদ্যানে কতকগুলি বৈক্ষব সাধু উপস্থিত হইলেন। ভাঁহারা মধ্যাত্র তপনের প্রচও কিরণে পথভ্রমণ করিয়া নিতান্ত ক্লান্ত হইয়াছিলেন। উদ্যানের স্থান্ধি কুসুমযুক্ত স্থন পল্লবাচ্ছন্ন সরোবরের শীতল বৃষ্ণ চহায় । ও উপভোগ করিয়া পরম পরিতপ্ত হইলেন। ভাঁহারা তৃপ্তি জন্য আনন্দ কোলাহল পূর্বাক বিচরণ করিতে লাগিলেন। মুখী আপনার বাস-প্রকোষ্ঠের বাডায়নে উপবিষ্ট হইয়া সাধুগণকে দর্শন করিতে করিতে সহসা তাহার মনে এক অপুর্ব ভাবের আবির্ভাব হইল। জাপন মনে বলিতে লাগিলেন,--

"চ্ছৰ্দ্ম করি আমি কর্ম বানাইসু। ধর্মার্থে কখন কিছু ব্যয় না করিসু। ভথাপিই আরও অর্থপথ নির্ক্রির।
নিজ দেই পণ করি রক্তে সাজাইরা।
ভিছি মোরে ধিকৃ ধিকৃ যে অর্থ লাগিরা।
পাপ পথে সদা কিরি একাত করিয়। রু
সেই অর্থে ইহ(সাধ্গণ)সব কুৎকার করিয়। রু
স্কলন বাক্রবগণ চরণে ঠেলিয়। ॥
পরম পদার্থ দর্কা লোকের সমত।
শ্রীকৃষ্ণ চরণ পদ্মে হইল আঞ্রিত ॥
অতএব ছিছি মুই ত্যাঞ্জ হেন অর্থ।
দেহ পণ করিব নিতাত্ত পরমার্থ।"

পুর্শক্ত ছক্তির শাতি সহকারে এইরপ চিন্তা করিয়া বারমুখী হঠাৎ গাতোধান করিলেন এবং একখানি ধালা পর্ণ মুদার পূর্ণ করিয়া তৎসহ সাধুগণ সমীপে উপনীত হইলেন। সাধুগণ তাঁহার পূর্ণ যৌবন ও রত্বজড়িত আভরণ ধারা ভূবিতা কনকলতিকা-প্রতিমা মূর্ত্তি দর্শনে বিশিতা হইলেন এবং তিনি দেবী কি অপেরী তাহাই চিন্তা করিতে লাগিলেন। এমন সময়ে তাঁহাদিগের

"নিকটে যাইয়া বেশ্যা গদ পদ স্বরে।
কহে মো পাপীরে গোঁসাই কর অঙ্গীকারে#
বহু অর্থ আছে মোর ভাণ্ডার ভরিয়া।
শ্যামল স্থন্দরে দেহ ভোগ লাগাইয়া॥"
এই কথা ভনিয়া সাধুগণের মোহাত্ত
ভাঁহার পরিচয় ক্রিজাসা করায় ভিনি
অধোবদনা হইলেন। অবশেবে মোহাত্ত
পরিচয় পাইয়া কহিলেন,—

কুষ্ণে যদি মতি তব এতাদৃশী হয়। তবে ত কুতাৰ্ব ভূমি চিন্তা কি আছয়।

এক পরামর্শ আমি কহি যে তোমারে। তোমার মানস পূর্ণ হইবে অচিরে॥ মোহরের থলি রক্ষনাথের চরণে। ্ৰাথিয়া শ্বণ লও গিয়া কায় মনে॥ ব্দবশ্য করিবে দয়া ঠাকুর তোমারে। বারমুখী বুঝিল উপেক্ষা কৈল মোরে॥" সাধুগণের প্রত্যাখ্যানে বারমুখীর ক্রোধ হইল না, মনের নির্কেদ শতগুণ রুদ্ধি হইল। অঞ্জেল বদন প্লাবিত করিয়া আপনাকে শত শত ধিকার প্রদান করিতে করিতে দেই মোহরের থলি মস্তকে করিয়া রঙ্গনাথের শ্রীমন্দির ছারে উপস্থিত হইলেন। ঠাকুরের সম্মুথে মোহরের থালা রক্ষা করিয়া গললগ্রীকত-বাসা ও কৃতকরপুটা হইয়া শ্রীবদনের প্রতি এক দৃষ্টিতে চাহিয়া রহিলেন-দরবিগলিত অঞ্ধারায় বক্ষ ভাসিয়া ষাইতে লাগিল। পূজারি ঠাকুর বার-মুখীকে বেশ্যা জানিয়া তাঁহার অর্থ গ্রহণ করিলেন না। এখনও বারমুগীর ক্রোধ কি অভিমান হইল না; কেবল আপ-নাকে পাপিনী ও ভাগ্যহীনা বলিয়। আক্ষেপ ও ক্রেন্সন করিতে লাগিলেন। বারমুখীর সেবা লালসা ও রোদন দেখিয়া এবং করুণ বিলাপ ভনিয়া পূজারি ঠাকু-বের একটু দয়া হইল।

"চুড়া বানাইয়া দেও পশ্চাথ কহিল।" বারমুখী ইহাতে পরম উৎসাহিনী হইয়া গৃহে, প্রত্যাপমন করিলেন এবং ঠাকুরের বে ভালে যে গছনা দাজে, বছ থার্ব ব্যয় করিয়া সমস্ত রহাভরণ নির্মাণ করাই-

লেন। সেই সকল আভরণ একথানি
স্থালি পূর্ণ করিয়া আপনি মন্তকে
ধারণ পূর্বাক পুনরায় রঙ্গনাথের মন্দিরে
উপস্থিত ইইলেন। কিন্তু পূজারি ঠাকুর
অনেক বিবেচনা করিয়া দে আভরণ
লইতে সাহদ করিলেন না, বৈশ্যার
সামগ্রী দেব সেবার উপযোগী নহে
বলিয়া পুনরায় প্রত্যাথ্যান করিলেন।
বারমুখীর বদন শুদ্ধ ও মলিন হইল, নয়নে
অঞ্চ বহিতে লাগিল। রোদন করিতে
করিতে গৃহে গমন করিলেন এবং

"খরে গিয়া উপবাসী পড়িয়া রহিল। পরাণ ছাড়িব বলি প্রতিজ্ঞা করিল॥" কিন্ত

"দয়াল হরি না বাছে,উত্তম অধম। বেই প্রীতি করে সেই হয় প্রেয়তম॥"

দেই রাতিতে পূজারি সপ্রে দেখিতেছেন যেন ঠাকুর ভীষণমূর্ত্তি ধারণ করিয়া ক্রোধভরে ভাঁহাকে আদেশ করিতেছেন. "তুমি বারমুগীকে কল্য প্রাতে যত্নে আহ্বান করিনে এবং তাহাকে নিজহত্তে আমার অঙ্গে আভরণ পরাইতে দিবে। ময়ৰ শিষা করিয়া তাহাকে সেবায় নিযুক্ত করিবে, কদাচ ভাহাকে ছুণাকরিও না।" পূজারি ঠাকুর ভীতচিত্তে স্তপ্রাদিষ্ট আদেশ পালন করিলেন। বার-মুখীর আনন্দের সীমারহিল না। সহতে ঠাকুরের ঐক্তি আভরণ পরাইয়া দিযা "দৰ্বাস লুটাইয়া কৈল মহা মহোৎসব। বিষ ভ্যজি পান কৈল কমল আসব #

অভএব কি আন্ধণ চণ্ডাল হ্রাচার।
জীক্ষের হানে নাই জাতির বিচার॥
বারম্থীর উদ্ধার দৈবাৎ হইল। এই
জন্যই আমরা ইহাকে "ভগবৎ কুপা"
বলিলাম। জ্ঞান বিজ্ঞানশালী তীক্ষ বৃদ্ধি

শিক্ষিত ব্যক্তিগণ প্রথমত: এরপ ঘটনাকেই মিথ্যা বলিবেন। আর বিদি দয়া করিয়া সত্য মনে করেন, তবে ইহার কার্য্য কারণ সম্বন্ধে যে কি মন্তব্য প্রকাশ করিবেন, ভাহা তাঁহারাই জানেন

গোয়েণ্ডেলাইন।

১৮১৭ খৃষ্টাব্দে লণ্ডনের অন্তর্গত মেল্টেনহাম নগরে গোয়েণ্ডেলাইন জন্ম-গ্রহণ করেন। গোয়েভেলাইনের পিতা. শ্রজবেরীর আরল **दे**श्वरकत প্রেধান রাজমন্ত্রী ছিলেন। ভাঁহার মাভাও জ্বনৈক লর্ডের ছহিতা। এই সন্ত্রাস্থ না-বানের গৃহে জন্মগ্রহণ করিয়া গেলেডে লাইন বৰ্দ্ধিত হইতে লাগিলেন। কিন্তু ভাঁচাৰ পিতা মাতা ঐশ্বৰ্যা এবং সম্মে ইংলণ্ডের প্রধান ব্যক্তি হইলেও ধর্মাকেই স্কাপেকা উচ্চতর স্থান প্রদান করিতেন, পার্থির সুবৈশ্বয়া তাঁহাদের ধর্মপ্রবণ প্রকৃতিকে কিছুমাত্রও বিচলিত করিতে পারে নাই।

গোরেণ্ডেলাইনের জ্ব্যুগ্রহণের পর ভদীর পিতা মাতা িশিষ্টরূপে ভাষাকে ধর্ম্মপথের পথিক করিবার জ্ব্যু নানা-প্রকার উপায় অবলখন করিলেন। শিশু গোয়েণ্ডেলাইন 'বাবা' 'মা' ইত্যাদি কথা বলিবার পূর্বে যাহাতে পরমেশরের নামে মুখ পবিত্র করিতে পারে, ভক্ষন্য তাঁহার পিডা মাভার ঐকান্থিক স্বাঞ্চহ এবং

এই অভিপ্রায়ে সর্বাদা ভাঁহাকে ঈশরের নাম ভানাইতেন। পিতা **মাতার মনো**-বাঞা পূৰ্ণ হইল। ভাহাদের ক্ষেত্রে তুহিতা গোয়েণ্ডেলাইন সর্ব্যপ্রথমে পর্মে-বলিতে আরম্ভ শ্ববের নাম লেন। যথন গোয়েজেলাইন কথা বলিতে শিথিলেন, তথন তাঁহার মাতা ভাহাকে করপুটে স্বর্গীয় পিতার নিকট প্রার্থনা করিতে শিক্ষা দিলেন। গোয়েতে-লাইনের চরিত্রের বিশেষত্ব শৈশব হইতেই প্রক টিভ হইতে লাগিল। তিনি ভিক্কক एमिटलहे भाग कतियात स्था वादा रहे-তেন। কাহাকেও কিছু দিতে পারিলে তিনি যেমন আনন্দ লাভ করিতেন, বছ-মল্য বসন ভ্ৰম্প ও শুমিষ্ট আহারেও ভাহার তেমন আনন্দ হইত না।

ত্রমে তিনি জ্ঞানে ও ধর্ম্মে বিজ্বিত হইয়া যৌবন সীমায় পদাপণ করিলেন। ধনী কন্যাগণ যৌবন সমাগমে বেরপ বিলাস-স্থ এবং কাম্য বন্ধার অপুর্যাপ্ত সভোগে মত হইয়া অসারভাবে **ভীক**ন অভিবাহিত করিয়া থাকেন, সান্ধিক ভাবাপর গোয়েলেলাইনের ভাব তাহার সুম্পূর্ণ বিপরীত। তিনি আপাত-মনো-রম বিলাসিতা বিষবৎ পরিত্যাপ করিয়া ब्राह्म -- नत्रत्मवाध कीवन छे०मर्भ कति-ক্ষা প্রভুপরমেশ্বরের সেবা, তাঁহার সম্ভানগণের পরিচর্ঘ্যা ভিন্ন পোরেওেলাইনের অন্য কার্য্য বহিল না। তাঁহার সমগ্র দেহমন ধর্মের জনা সমর্পণ করিলেন। তিনি সীয় জনক ভাননীর সল্লিধানে বাদ করিয়। সমস্ত দিবস সাধু কার্য্যে অতিবাহিত করিতে লাগিলেন। যে দিন তিনি কোন দরিদ্রকে দান কিন্তা রোগীর সেবা করিতে পারি-ভেন না, সে দিন বুথায় গেল বলিয়া আক্ষেপ করিতেন। তিনি স্বীয় পদ-মধ্যাদা বিশ্বত হট্যা স্বহন্তে রোগীদিগের দেবা করিতে আরম্ভ করিলেন। বাস-স্থানের নিকটবর্তী অসহায় রোগীদিগের মাতা হইয়া তিনি সেবার ভার গ্রহণ করিলেন। তাঁহার সেবা ভ্রাষা এবং স্প্রেম ব্যবহারে সকলে এরপ প্রতি হইল যে, তিনি নিকটে উপস্থিত থাকিলেই রোপী আরাম বোধ করিত।

১৮০৫ গৃষ্টাব্দে রোমের প্রিন্স মার্ক
এন্টনী বর্ণীদের সহিত গোয়েওলাইনের
বিবাহ হয়। প্রিন্স মার্ক এন্টনীও
গোয়েওলাইনের সমুদ্ধ শুভ কার্য্যের
সহচর হইয়াছিলেন। শ্বতরাং এই
বিবাহে অতি শুভ ফলই উৎপন্ন হইয়াভিল। বিবাহের পর ভিনি শোমীর
লক্ষে রোমে গিয়া বাস করিতে লাগিলেন

এবং তথার নানাবিধ স্বনহিতকর কার্ব্যে প্রবন্ধ হইলেন।

এ সময় রোমে ভয়ক্কর বিস্তৃচিকা রোগের প্রাত্তাব হয়। সহস্র সহস্র নরনারী বিস্টিকার করালগ্রাসে নিপ-তিত হইয়া ইহলোক ত্যাগ করিতে लाजिल। नगद्र, भन्नीटा, हाहाकांद्र स्त्रिन উপিত হইল। গুহে গুহে রোগী, ওতা্রা করিবার লোক নাই, চিকিৎসা করিবার বৈদানাই। অভ্রাবায়, অচিকিৎদায় স্বীয় স্বীয় শ্যাতে কত লোক যন্ত্ৰণা ভোগ করিয়া প্রাণত্যাগ করিতে লাগিল। সমাধি করিবার লোকের অভাবে অনেক মৃতদেহ কবরন্থ হইল নাঃ সে সকল মতদেহের তুর্গন্ধে নগর পল্লিকে নরকময় করিয়া ভূলিল। সোণার রোম শ্মশানে পরিণত হইতে চলিল। এই যোর তৰ্দ্দার দিনে, স্বৰ্গ হইতে অবতীণা নাায় গোয়েণ্ডেলাইন সেবা কার্য্যে প্রবৃত্ত হইলেন। তিনি কয়েক-জন সহচরী সমভিব্যাহারে স্বীয় জীব-নের মনতা পরিত্যাগ করিয়া গ্রহে গৃহে ভ্ৰমণ পূৰ্বক রোগীকে ঔষধ পথ্য দান করিতে লাগিলেন। তিনি দিবারাত্র অক্লাক্ত পরিশ্রমে কিপ্রহন্তে ঐ সকল কার্যা করিতে লাগিলেন। ভাঁহার সেবা অপ্রায় এবং ঔষধ পথ্যে শত শত লোক মৃত্যুর গ্রাদ হইতে রক্ষা পাইতে লাগিল। এ সময় হইতে পোয়েণ্ডেলাইন অনাথ ও ক্রাদিগের পালনার্থে একটা মূল সমিতি এবং তাহার অনেক শাখা সমিতি

স্থাপন করিলেন। চিকিৎসালয়, জ্বনাধ-নিবাসও স্থাপিত হইল। তিনি সমূলর কার্ধ্যের ভার নিজ মন্তকে লইয়া সুন্দর-রূপে নির্বাহ করিতে লাগিলেন।

তিনি দরিতদিপের ধনরকাও বৃদ্ধির জন্য রোমনগরে একটী দেভিংদ্ ব্যাক্ষ স্থাপন করেন। দরিত্র শ্রমজীবিগণ চুই চারিটি কবিয়া পয়দা সংস্থান করিবার স্থান প্রাপ্ত হইল। ইহাদ্বারা দরিত্রপালর বিশেষ উপকার হইয়ছিল। দরিত্রবালক বালিকাদিগকে শিক্ষা দান এবং তুনীতি হইতে রক্ষা করিবার জন্য তিনি একটী বিদ্যালয় স্থাপন করেন। এইরপে গোরেণ্ডেলাইন যাবতীয় হিতকর অমু- শ্রান সম্পন্ন করিতে লাগিলেন। রোগীয় পার্শে, দরিত্রের কুটীরে, তুনীতিপরায়্বার্শের শিক্ষালয়ে, চিকিৎসালয়ের তথাবধারকভায়, শোকার্ণ্ডের সাজ্বার স্থলে.

কুধার্ডের অল্পত্রে সর্বত্র বিরাজিত সেই দেবী গোয়েণ্ডেলাইন। তিনি রোমের জননীরূপে অনাথ **উপার हो जिल्लाम** লালনপালন করিতে লাগিলেন। ডিনি যতদিন পৃথিবীতে জীবিত ছিলেন, প্রাণ-পণে জনসমাজের হিতকার্যসাধন করিয়া-ছেন। আলস্য, বিশাসিতা, সুধভোগেচ্ছা ক্ধনও তাঁহার পবিত্র ল্পন্থকে স্পর্শ করিতে পারে নাই। তিনি ধনে মানে দৰ্বশ্ৰেষ্ঠ হইলেও অতি সামান্য ভাবে জীবনহাত। নির্বাচ করিতেন। ভাছার धनवल, सम्बल, शतिरवद छेलकादार्श নিয়োজিত হইত। তিনি ষথাৰ্থ ই বিপন্ন मानत्वत्र वाक्षव हिल्लन । अहे मुर्चिम्डी पत्रा-अक्रिली, विश्वविदेशित नर्कालाक-कननी (शार्यर शाहेन ১৮8० थ होटचंड २१८म चाक्रीवत मानवनीन। करवन ।

(यघ।

আজ কনেক দিন পরে আবার গপনে মেঘের নিবিড় ঘটা! বাল্যকালে মেঘ দেখিলে—মেঘে বিজ্ঞলি দেখিলে—মেঘের শুরু গঞ্জীর শব্দ প্রবণ করিলে প্রাণে বড় আতম্ভ উপস্থিত হইত, মার ক্রোড়ে—মা'র বক্ষে মন্তকটী না লুকাইলে, মা'য়ের অঞ্চলে চক্ষু না ঢাকিলে আর নিরাভক্ষ হইতে পারিভাম না। মা ভূমি ধনা! অল্যকার এই মেঘে

আমার আর ভর নাই, তোমার ক্রোড়েও একটু স্থান নাই, যদি থাকিত ভাহা হইলে এই সংগার ভাপে তাপিত হইরা যখন ছট্ফট্ করি, তখন কি একযার কোলে শও না? তাই বলি মা ভূমি খন্য! কেন না ভোমার ক্রোড়ের গহিত আমার সেই মেঘের ভরটাও অবসারিত করিরাছ, তাই আজ নির্ভ্য বাধ্বন

বিহারী "ধ্ম জ্যোতিঃ মকতাং সরিপাত" বিজ্ঞলী-মালী মেঘের সহিত জালাপ করিতে ইচ্ছা হইতেছে।

হে অনন্ত আকাশ! মন্থব্যের এই
শাস্ত—কুদ্র স্বদ্যটা যেন তোমারই ছায়া
লইয়া গঠিত। দত্য তোমার তলে এই
উপগ্রহাদি জ্যোতিকমণ্ডল আবিভূতি এবং
ঘনষ্টা ও বিজ্ঞলী ছটা বিভাসিত
হইয়া থাকে, কিন্তু মন্থ্যের কুদ্র স্থল্যাকাশে সন্ভণাবলীই জ্যোতিকমণ্ডল;
আকাজ্কা ও আশাই, আবর্ত্ত, পুকরাদি
মেষ।

হে জলধর! ভূমি প্রকৃতির বিশাল রাজ্যের একটা অনস্ত সৌন্দর্যোর ব্যাঘাত জন্মাইয়া যেমন স্থনীল আকাশকে সমাজ্জন করিয়াছ--্যেমন বায়ু বিতাড়িত হইয়া শত শত ধণ্ড হইতেছ, তথাপি অপ-সারিত হইতেছ না, তেমনি আমাদের হৃদয়াকাশে-নির্মাল হৃদয়াকাশে বুথা চিন্তারাশি—অসার কল্পনা রাশি আসিয়া নিয়ত পরিভ্রমণ করিতেছে, একটা অপসারিত হইতে না হইতেই আর একটা আসিয়া পড়িতেছে, আশাও একটা পূর্ণ হইতে না হইতেই আর একটার षद्रतालाम इटेट एह, वक्षी शृनागात নেসা ছুটিতে না ছুটিতে আরটা আসিয়া क्षापत्र वाालिया किताउँ एए। यनि नभू प-তরকের বিরাম থাকে, তথাপি আশার ও চিন্তার বিরাম নাই। বায়-বিতাড়িত **হঁই**রা তুমি কতবার ছিন্ন ভিন্ন হঁইতেছ, 😉 শ্বনীল আকাশের নির্দ্মলতা টুকু

কলুষিত করিতে ছাড়িতেছ না, আশাও কতবার নৈরাশ্য-বায়ু বিভাড়িত হইয়া চর্ণ বিচুর্ণ হইয়া যাইতেছে, কিন্তু আবার প্রারুট কালীন গগনের ন্যায় হৃদয়াকাশ স্মাচ্ছর করিয়া উহার নির্মানত বিনষ্ট করিতেছে। তাই তোমার সহিত আমার ন্যায় সাধারণ মনুষ্যগণের অসার চিস্তা ও আকাজকাকে তুলনা করিতে ইচছা হয়। জলদ ! এই যেমন তুমি ভরপুর হইয়া সদর্পে গগন আরুত করিয়াছ অম্মি বায়ু আসিয়া বিতাড়িত করিতেছে, বায়ুকে তমি যদি কণ্টে হণ্টে কোন মতে পরাস্ত করিতে পার তবে বড়জোর জল হইয়া গলিয়া যাইবে, অতএব তোমার ভদ্রস্তা কৈ ৭ তেমনি মনুষ্যের আশা ও আকা-জ্ঞার ভদ্রতা নাই, হয়ত উড়িয়া গেল, পূৰ্ণ হইল না, যদি পূৰ্ণ হইল ত তৃপ্ত হইল না-প্রাণের পিপাসা মিটিল না। মেষ-শুন্য আকাশ যেমন নয়নের তৃপ্তি-সাধক, আশা ও আকাজ্যা রহিত হাদয়ও তেমনি দংশারের উত্ত্যক্ত প্রাণের শান্তিদায়ক। মেখে যেমন ঝটকার কঞ্চাবাত, পৃথিবী क्षावनकाती समस्या मुग्नधादत दृष्टि, কড় কড় শব্দ, বুহং বুহৎ করকাপাত ও বজ্লের অনল সমস্তই সম্ভবে, তেমনি আশা ও আকাজ্যাপূর্ণ হাদয়ে, ক্রোধের গুরু গর্জন, বজানলের ন্যায় কঠিন काश्रिय वहनावनी दात्रा लाकिनिशक দশ্ব করিয়া মারা, প্রেলয় কালীন ঝঞ্চা-বাতের ন্যায় মারামারি कारीकारि করিয়া লোকের জীবন-মূল

कता. ७ हिश्मा (ध्यानल ध्वामादन कता সবই দম্ভবে। কেননা আকাজ্যা ইইতে আশার উৎপত্তি, আশা হইতে লোভ, মোহ, ক্রোধাদির উৎপত্তি। এটা আরও একট ভাল করিয়া বুঝাইতে হইলে किकिश छेनाइत्रावत आवगाक। এই ধকুন সরিকী সত্ত লইয়া ভাতায় ভাতায়, যাতায় যাতায়, খুড়া ভাতৃপুত্ৰে কলহ বিবাদ হয় কেন ৭ উভয় পক্ষের মনের ভাৰ এই যে 'আমি ধনী হইব ও সুধে স্বচ্ছদে থাকিব। অনস্তর সেই আকাজ্ঞা চরিতার্থ করিবার জন্য অংশা আসিয়া কার্য্যারস্ত করে। সেই আশা চাহে কি १ সমধিক লাভবান হইতে। স্বতরাং মেব! তোমাতে যেমন ঝড় বৃষ্টি করকাদি সবই সম্ভবে, আশা ও আকাজ্জায় তেমনি ছিংসা দেষ সবই সন্তবে।

জলদ! মুলে ভোমার গুণ আছে,

যতই দোষ থাক মুলে তোমার গুণ,—
জগতের পৃষ্টিবর্দ্ধন করা। আশা ও আকাক্রমার মুলেও যে গুণ আছে তাহা জগতের হিত্যাধক। মহুষ্যগণ আকাক্রমার
অনলে পৃড়িয়া—নিরাশার তাড়না থাইয়া
—আশার নেসায় পাগল হইয়াও জগতের হিত এক পক্ষে করিতেছে বলিতে

হইবে। নিরবচ্ছিন্ন যাহাতে জগতের
অহিত হয় এমন বস্তু বোধ হয় ঈর্বরের
স্প্রীতে নাই। 'আমিঘ' স্প্রী করিয়া
ঈর্মার 'আমাকে' রক্ষা করিতেছেন, এই
'আমিঘ'ই যুবতীর কুলমান, লালন
পালন ধারা শিশুগণের জীবন, সেবা

শ্ববির ৩৪ শুক্রমান্বারণ রোগিগণের জীবন রক্ষা করিতেছে, কেননা "আমার ভাষ্যা, ভগ্নী, कन्या, পুত্ৰ, পিতা, মাতা" এ সমস্তেব মূলে 'আমিড্' নিহিত, 'আমিড্' সিঞ্চিত। যদি কেছ বলেন যে নি:স্বার্থ পরোপকারী, জিতেন্দ্রিয় বিশ্ব প্রেমিকগণ ভারা এই সকল কার্যা সম্পন্ন হইতে পারে, কিন্ধ আমরা বলি তালা হইতে পারে না কেন্না উক্ত শ্রেণীর লোক সংখ্যা এত অল্ল যে শতকরা একজনও মিলেনা। যে সময় তপস্থী ঋষিগণের কুটীরে তপোবন সকল জ্বনপদ ছিল-যে নময়ে যোগের ও বেদের প্রতি লোক সমধিক অনুবাগী ছিলেন—হে সময়ে পূর্ণগর্ভা কোশল-রাজনহিষী একটি উক্ত প্রকার মহাতারে আশ্রয় লাভ করিয়া নিবাপদে ছিলেন, সে সময়ের কথা বলিভেছি না.—যে দিন প্রজাপতিগণ সর্বলোক পিতামহের ''দার পরিগ্রহ কর" এই বাক্য লঞ্খন করিতে উল্যত হইয়াছলেন এবং মহাঝা নারদ সেই বাকা লাজন করায় জন্মান্তর গ্রহণ করিয়া-ছিলেন এবং দাসীর গর্ভে সমুদ্ধ উ इहेशाहित्सन * तम नित्तत्र कथा विन-

অহং পুরাতীত ভবেংভবং মূনে, দাস্যান্চ কস্যান্চ ন বেদবাদিনাং। ১ কল। এ অধ্যার 1১৩ লোক।

[•] জন্ধনৈবর্জ পুরাণ দেপ। শ্রীনজাগনতেও

যুখন মহামুনি ব্যাসদেবকে দেবর্ষি নারদ তাহার

পূর্বজন্ম বিবরণ বলিতেছেন, তথন দাসীর গর্জে

উহোর জন্ম হইয়াছিল বলিয়া প্রকটিত আছে।

অনাবশাক হইলেও উহার একটা মাত্র লোক নিয়ে

উদ্ভ করিয়া দেওয়া গেল।

তেছি না, বলিতেছি এই উনবিংশ শতাব্দীর কথা বে শতকরায় উক্তরপ লোক একটি মিলাও সন্দেহস্থল। স্থতরাং একটি 'অহস্থারী' অর্থাৎ ''আমিত্ব'' পূর্ণ মহুষ্য ভারা যথন ২০৷২৫ টা পরিবার 'আমিদ' রজ্জুতে পরস্পর দম্বন্ধ রহিয়াছে, ভখন অত অন্ধ সংখ্যক সাধু সাধ্বীগণ খারা যদি এই সকল কার্য্য স্থলররূপে চলিত, তাহা হইলে পিড় মাড় ও আত্মীয় বিহীন বালক বালিকাগণ মৃত্যু-মুখে পতিত বা তুরবন্ধাগ্রন্ত হয় কেন ? কেন্ট্ৰা আশ্ৰয়হীন অভাগিনীগণ বিপথ-গামিনী হয় ? অপত্যবিহীন বৃদ্ধ বৃদ্ধা-পণ এক বিন্দু জলের জন্য এক মৃষ্টি আল্লের জন্য যটি সাহায্যে পথে পথে

পণ বিষ্ঠা মৃত্য লিপ্ত দেহে এক ফোঁটা জলের জন্য ওড়তালু হইয়া জীবন হারায় ? অতএব মেম্ব ! ভূমি যেমন নীল আকাশে থাকিয়া জগতের হিত অহিত সাধন করিতেছ, হৃদয়াকাশে তেমনি আশাও আকাৰকা স্বাছে। তোমাতে বজ্ঞের অনল আছে, আবার সুশীতল সলিলও আছে; আশা ও অকোজনায় ষড়রিপুর দৌরাক্মা আছে, আবার অনিশ্ব সেহাদিও আছে। পিতা মাতা, ভাত।, ভগ্নী, স্ত্রী, পুত্র, কন্যা, স্বামী প্রভৃতির শ্বেহই গৃহবদ্ধন, গৃহ বন্ধনই আশা ও আকাজ্যার জনক। আশা ও আকা-আকার তাণ থাকিলেও জলধর ৷ আক্য যেমন ভোমার নিকট বিদায় চাহিতেছি,উহাদের কিরে কেন ? কেনই বা নিরাশায় রোগি- | নিকট কবে বিদায় চাহিব বলিতে পার ? কু, রা।

মাতৃভক্তি ও মাতৃ-উপাসনায় সন্তানের মুক্তি।

(७৫१ मः था। ১७१ शृष्टीत्र शत्र।)

সন্তানের শরীর বিকাশ মাতৃ কর্তৃক সাধিত হর একথা সকলেই জানেন। কিন্তু ভাবিয়া দেবিলে বোধ হয় বে দ্তানের জ্বয়ের বিকাশও মাতৃ কর্তৃক সাধিত হয়। ভালবাসা মানব-হাদয়ের স্ক্রথানা বৃত্তি। এই বৃত্তি পূর্ণমাতার স্প্রসারিত হওয়াকেই 'মানব-ছদয়ের উন্নতি" বলা যায় এবং ক্ৰয়ের উন্ন-তिक्ट "मस्राएक क्यान महात्र" वना যায়। সাভা হইতেই সম্ভানের সেই ভালৰালা-বৃত্তি পরিক্ট হয়। मा'व

বুকভরা ক্ষেহ পাইতে পাইতে শিভ সহজেই মা'কে ভাল বাসিতে **আ**রম্ভ करता हेशहे इत्राप्तत्र व्यथम कार्या। শিশু যথন জড়ও চেতনের সন্ধিত্বলে, যথন জাগতিক ব্যাপার তাহার সম্পূর্ণ অপরিতেয়, যথন আহার, রোদন মাত্র ভাহার সম্বল, সেই অঞ্জানতা-কোয়াসা **ভেদ** कतिया मि लिख- छाम स मा' कि है চিনিভে পারে ! সেই কুজ শিও ধর্মন মারের জন্য কালা ধরে, তথন অপর কেই তাহাকে সহজে শান্ত করিতে পারে

না।—সে কারা সে আফুলতা বে কেবল ন্তন্যের গোডে নহে, প্রধানতঃ মা'কে পাইবার জন্যই শিশুর প্রাণ এমন অধীর হইয়া থাকে, তাহাও বুঝিতে পারা যায়। আমাদিগের পাঠক পাঠিকাদিগের मध्य कत्नक প्रकाक कतिया शांकिरवन. রোদন-পরারণ শিশু অনেক সময়ে স্তন পান না করিতেই, মাত্তকাড়ে ঘাইবা-মাত্র শাস্ত হয়।--কত দমরে মাতার পদশব্দ ভনিয়াও রোদনে নিবৃত্ত হইয়া জীতি প্রকুলনেতাে মাতার জাগমন-পথ চাহিয়া থাকে। এমন প্রাণভরা ভালবাসা ষে হুধ খাইবার জন্য, এমন কথা কেছ কথনই বলিও না। শিশুর এই ভালবাস। স্বৰ্গের ভালৰাসা, এই ভালবাসা প্ৰথম ভালবাদা, এই ভালবাদা সহত্ৰ ভাল-বাসা। এই ভালবাসার অমর শক্তিতে মা'কে পাইলে ক্ষুদ্র শিশুর বুকে আনন্দ ধরে না; মা'র মুথে একটু হাাদ দেখিলে শিশুর আনন্দ লহরী উঠিতে থাকে; মা'র ক্লেহপূর্ণ চম্বন ও মধ্যাথা আদর পাইলে ভাহার প্রাণ পুরুকে গলিয়া ষায়! পর-অংহার-তাদিত শিল এবং প্তন বা প্ৰাদি ভয়-ভীত শিশু যথন অভয়া-क्रिभिगो मा'दक क्लाहेब्रा थरव, यथन टिंगि ফুলাইতে ফুলাইতে ছল ছল চক্ষে মাতৃ-মুখ-পানে চাহিতে থাকে, তখন ভাহার সে উচ্ছ সিত প্রেমের স্রোতে বিশ্বকগৎ **फु**विश शाब, मानव-दूषि निनाशाबा दहेश बाब, मानव-धान शामन इदेश यात्र। **অধ্য আমরা দে বর্গীয় প্রেমের মর্ম**

বুৰিতেও পারি না, বুবাইতেও পারি ना । अंकिमन यमि भिक्त मठ समझ्यानि পাই, একদিন যদি শিশুর মত বিশ্বজগত ভূলিয়া আমার মা'কে ভাল বালিতে পারি, ভাহাহইলেই আমার মানবজন্ম मार्थक हय ।

ध मगट भिक्ष भारत अमृज्यत व्यार्ग क्रम्यानिछ। मास्त्र नर्कवश्रम শিভ, শিভরও সর্ক্রিধন মা। সময়ে মহান্তা হইয়া জগৎকে আপনার করিতে পারেন, পরিণত জীবনে প্রেমিক ষীও বা প্রেমিক চৈতনা হইতে পারেন. প্রেমিক হাউয়ার্ড বা প্রেমিক বিদ্যাসাগর হইতে পারেন, উন্নতিশীল মানবজীবনে किছूरे अमञ्जद नाइ-किन्तु एव जन्द-বিস্তৃতির জন্ম তিনি নরদেহে দেবত লাভ করিতে পারেন, সে হৃদয় ভাঁছার মাতৃহক্তেই প্রথম বিকশিত হয়! যিনি मानव-চরিত लक्षा कतियाद्या. जिनि দেখিয়া থাকিবেন, যে ব্যক্তি শৈশবে মাতার (অথবা মাতার ন্যায় সহাদয়া সেহময়ী কাহারও) স্নেহের ছায়ায় পালিত হইতে না পারে, ভাছার প্রকৃতি অনেক দিন পর্যান্ত কঠোর রহে; হাদ-য়ের কোমলতা সাধিত **হইতে** বি**লম্ব** হয়।* তাই বলিতেছি সম্ভানের শরী-রের মত স্থদরেরও প্রথম বিকাশ মাতৃ

* ইহা সাধারণের প্রতি প্রবোজা; বাজি বিশেষের পক্ষে অন্যব্য হইতে পারে।

4: OF: 1

এইরপে যে মাতা সন্তানকে গর্ভে ধারণ, লালনপালন, হৃদয়-বৃত্তি পরিক্ষৃটন ও নঙ্গলাশয়ে যাবজ্জীবন আত্মোৎসর্জ্জন করেন, তিনি যে সন্তানের পরম দেবতা একথা বলা বাছল্য মাত্র! এই পরম দেবতাকে বিশুদ্ধ ভক্তিভাবে পূজা করিতে পারিলে সন্তানের দেহ ও জীবন সার্থক হয় এবং আত্মার দেবছ লাভ হয়। ধনী দরিদ্ধ, পণ্ডিত মূর্ধ, পাণী পুণাবান, পুরুষ রয়ণী মাতৃপুজায় সকলেই অধিকারী, এবং এ জগতে মাতৃ-ভক্তি ও মাতৃ - উপাসনাতেই সন্তানের মুক্তি।

মাতৃ-ভক্তি ও মাতৃ-উপাদনাতেই সম্ভানের মুক্তি। কিন্তু এইথানে বলা আবশ্যক, যে শিশু-হাদয়ে শৈশব কালো-চিত ভালবাদাকে প্রকৃত "মাতভজি"বলা ঘার না। শিশুর ভালবাসা হৃদ্যপূর্ণ উচ্ছাস-ভরা ভালবাসা হইলেও উহার স্থায়িত্বের প্রতি বিশ্বাস বাধা যায় না; কারণ শৈশবে প্রায় সকল শিশুই মাতার একান্ত অমুরক্ত হয়, কিন্ধ প্রাপ্তবয়দে মাতার নিকটে কভন্ন দারুণ কুত্রতা প্রদর্শন করিয়াও থাকে। মাতৃ-ভক্তি দূরে থাকুক, মাভার প্রতি স্ভানের যাহা অবুশ্য কর্ত্তব্য, কুসন্তানেরা তাহাও পালন করে না। সেইজন্য অজ্ঞান শিশুর ভাল-বাসাকে "ভজি-" বলা সক্ত হয় না। সম্ভান জ্ঞানপ্রাপ্ত হইয়া মাতার শ্রেষ্ঠতা বুঝিয়া মাতাকে সমানপূর্ণ বে সহরাগ দান করেন, তাহাকেই প্রকৃত''মাতৃভক্তি''

বলা যার। এই ভক্তিভাব স্থায়ীভাব।
মাতা ইহ জগতে থাকুন আর পরজগতে
থাকুন, ভক্তিনান্ পুত্র বা ভক্তিমতী কন্যা
চিরদিনই মাতৃভক্তি অলুশীলন করেন;
অবস্থার দাসত, বা ঘটনার দাসতে তাঁহাদিগের মাতৃভক্তি কথনই ভক্ত হয় না।
এই স্থায়িত্ব, বিশুদ্ধ মাতৃ-ভক্তির এক
প্রধান লক্ষণ।

আমরা বলিতেছি মাতৃ-ভক্তি ও মাতৃ-উপাসনাতেই সস্তানের মুজ্জির অর্থ আমরা, দেহাবদানে আত্মার স্বৰ্গবাস, পারলোকিক স্থুথ সম্পত্তি লাভ, मालाका, माभीभा, मायुष्ठा छ निर्व्हान প্রাপ্ত বলিয়াই জানি, মৃত্যুর পরে এ রকম মুক্তি যে পুণ্যবান পুণ্যবতীদিগের শস্তব, এ বিষয়ে অনেকেই বিশ্বাসী। কিন্তু মঞ্লময় জগদীখন্তের কুপায় কেবল পর-লোক-বিষয়ীভূত ও মৃত ব্যক্তি-**पिरागत व्यापा नरह**; मूक्ति हेहरलारक छ মিলে এবং জীবিত ব্যক্তিগণ্ড তাহাতে অধিকারী হইতে পারেন। এই ইহ-লৌকিক মুক্তির অর্থ পাপ কলুষাদি হইতে भूक रुख्या। यानरवत्र खाचा विमन, পুণ্যময়, সত্যস্ত্রপ ঈশবের অংশ বিশেষ। কিছ নিৰ্মাল দৰ্পণেও হাই দিলে যেমন মুখের প্রতিবিশ্ব পড়ে না, আমাদের সেই রকম পাপ মলিনতায় অপরিষ্ঠ হইয়া গেলে ভাহার মধ্যে ঐশিক জ্যোতিঃ অসুভব করিতে পারা থায় না। আরনায় মুখ দে<mark>খিতে হইলে</mark> আয়না মাজিয়া ৰবিয়া লইলেই মুধ দেখা

ষার, আশ্বার ঈশ্বর প্রকাশিত করিতে হইলে সমস্ত পাপ মলিনতা হইতে মুক্ত হইতে হয়; মলিনতা হইতে মুক্ত হওয়াই মর জগতের মুক্তি। ভারতীয় ঋষিগণও বছ শতাকী পূর্ব্বে এ কথা বলিয়া গিয়াছেন, পাঠক পাঠিকাদিগের অবগতির জন্যে হিন্দুশাল্প হইতে কয়টা ল্লোক উদ্ভ করিতেছি—

"মুক্তিহিত্বান্যথা রূপং স্বরূপেণ অবন্থিতিঃ॥" (শ্রীমন্তাগবত, ২ স্কন্ধ, ১০অ, ৬গ্রোক)

অর্থাৎ আত্মার অন্যরূপ পরিত্যাগ পূর্বক স্বরূপে অবস্থিতি করাই মুক্তি।

> "বিচারাদিত্যবিদ্যাজো, মোক্ষো ইত্যভিধীয়তে ॥" (যোগবাশিষ্ট ৭০ সর্গ, ১ খ্লোক)

বিচারাদিখারা অবিদ্যা * নাশ ইইলে তাহাকেই মোক্ষ (মৃক্তি) কহে। ইত্যাদি। মুক্তির বিষয়ে এই দকল তত্ত্ব আলো-

চন। করিলে, পাপ কলুষ দি হইতে মুক্তি লাভ করাই বে আধ্যাত্মিক মুক্তি, এ কথা সহজে উপনৱ হয়। মাতৃ-ভক্তি ও মাতৃ উপাদনাতেও সন্থান ইহ জগতে এই মুক্তি লাভ করেন; কিন্তু সে কথা বলিবার আগে আমাদের একট "বিজ্ঞা-পন' আবশ্যক হইতেছে। কারণ আমরা यान (मुक्तित विषयः) পারলৌকিক मुक्तिह খাড়া রাখিতাম, তাহা হইলে আমরাও সহজে প্রবন্ধ শেষ করিতাম, পাঠক পাঠিকাগণও বিনাশ্রমে (না হয় অল ত্রমে) আমাদিগের কথায় অহুমোদন করিতেন, সন্দেহ নাই। কিন্তু আমরা যথন প্রত্যক্ষীভূত ইহলোকিক আলোচন। করিতে প্রবৃত হইয়াছি, তথন প্রবন্ধ সংজে শেষ ইইবে, এনন ছুৱাখা করি না। এই জন্য পাঠক পাঠিকা-मिर्शव निकर्षे আম্রা অপেকাক্ত অধিক, ধৈণ্য ও সহিফুতা প্রার্থনা করি।

বার্মেসে।

অগ্রহায়ণ।

যে সকল শস্যের চাস আবাদ কার্ত্তিক মাসে করিতে হয়, যদি কোন গভিকে তাহা না বটিয়া থাকে, ভাগ হইলে সেই সকল চাস আবাদ এই অগ্রহায়ণ মাসে করিলেও হয়।

* অবিদারে অর্থ অঞ্জানতা, এজগতে অঞ্জানতাই মানবের সকল পাপের মূল। হিভাহিতবিচার করিতে শিবিলে অঞ্জানতা দূর হয়, তথন মূজিলাভ সহজ-সাধা। হিন্দুশান্তে অবিদার বিস্তৃত বাাধা।

শাক, সন্জি,—কাণ্ডিক মাসে যে
সকল শাকাদির চাস আবাদ করা হয়,
ভাহাদের গোড়া থোড়া ও আবশ্যক
মত সপ্তাহে সপ্তাহে জল সিক্ষ ভিন্ন এ
মাসে আর কোন কায় নাই।

আছে, কিন্তু বৃঝিয়া দেখিলে, তমঃ, মোহ, মহামোহ, তামিত্র ও অঞ্চতামিত্র এই পাঁচ রকম ^{ক্}অবিদ্যা" কেবল অঞানতার নামান্তরু।

বাঃ লে:।

় আলু,—আলুর ক্ষেত্রে গাঁড়া বাঁধা। এমালে আলুর অন্য কোন কার্য্য নাই।

লছা,—জনেক কৃষক এই মাসে
লছার পাকা চারা ক্লেত্রে রোপণ করিয়া খাকে; কিন্তু ভাহাতে ফল মোটে হয় না, কেবল পণ্ডশ্রম মাত্র হইয়া থাকে। ধনা বলিরাছেন,

ভাজ কি আখিনে না ক্রমে থাল।
বে চাসা খুমায়ে কাটায় কাল॥
পরেতে কার্ত্তিক অগ্রহায়ণ মাসে।
বুড়ো গাছ ক্ষেতে পুঁতিয়ে আসে॥
সে গাছ মরিবে ধরিরা ওলা।
প্রিতে হবে না ঝালের গোলা॥"

এই প্রবাদেই দৃষ্ট হইতেছে যে, ভাদ্র আবিনই ঝাল রোপণের প্রশন্ত সময়। ভ্রহায়ণ মাসে ঝাল রোপণ করা দ্রে থাকুক, এই মাস হইতে লকা ফলিতে আরভ করে। কিছ এই মাসের প্রথম প্রর দিনের মধ্যে যত লকা ফলিবে, ভাহা ভূলিয়া ফেলিতে হয়। ভূলিয়া না কেলিলে লকায় কিছুমাত্র ঝাল হয় না।

আমন ধান্য,—আমন ধানের যত দ্র
প্রিও পরিপাক হইতে পারে, তাহা
এই মাসের মধ্যেই হইরা থাকে; স্তরাং
অগ্রহায়ণ মাসই ধান্য ছেদনের প্রশস্ত
কাল। ধনার বচন,

"এক জামন ধান।
বিভিন্ন লাওনে পান।"

গানের সম্পূর্ণ পরিপাক। হইতে
ভিন্ন আবিণ আবিশাক হয়।

আমনে পৌট, পৌষে ছেউটি। মাৰে নাড়া, ফান্ধনে ফাঁড়া॥"

অগ্রহারণ মাসে ধান কাটিতে পারিলে বোলআনা ফদল মিলে, পৌষমাসে কাটিলে ছেউটা, অর্থাৎ দকল ক্ষেত্রের ধান পাওয়া যায় না, মাঘ মাদে কাটিলে ধান কিছুই পাওয়া যায় না, কিছু যথেষ্ঠ নাড়া-খড় বা বিচালী পাওয়া যায় এবং ফাছন মাদে কাটিলে না ধান, না খড়, কিছুই পাওয়া যায় না।

কাটাল,—যে বার অগ্রহায়ণ মাদে বৃষ্টি হয়, সেবার অপরিমিত কাঁটাল জম্মে। ভাহার অন্যথার কাঁটাল ভাল হয় না। খনা,—

> যদি নাহয় অব্যহায়ণে বৃষ্টি। তবে নাহয়, কাঁটালের স্টি॥

পৌষ।

আনু,—এই মাদের প্রথম সপ্তাহ হইতেই আনু ভূলিতে আরম্ভ করিবে। বরামীরা বাথারির যে সোমাজ কাঠী দিরা বাধন ভোলে, সেইরূপ একটী দারা গোড়ার মাটী খুঁড়িয়া আনু ভূলিতে হয়। পাছে আলুর গাছের শিকড়াদি কাটিয়া যায়, এজন্য এদেশের রুষকেরা আলু ভূলিতে কোনরূপ অল্ল ব্যবহার করেন না। কিন্ত বর্জমান ও হগলী জিলার ক্ষবকগণ কোদাইল দারা আলু ভূলিয়া থাকেন। মটরের ন্যার ছোট ছোট আনুগুলি রাধিয়া প্রথম বারে সমস্ত আনু ভূলিয়া কেলিতে হয়। আলু ভূলিয়া পর গাছগুলি উকৎ হেলাইয়া

গোড়ার মাটী ধরাইতে হয়। প্রথম আনু তোলার ৩।৪ দিন পরে জ্বল সিক্ করিবে। আনু তোলার পর গাছ গুলির একটু তেজ বৃদ্ধি হয়, তথন প্রতি পত্র-কলে, অর্থাৎ পাতার গোড়াতেও আনু ফলিতে আরম্ভ করে।

কশি,—এই মাস হইতে কপিও
তুলিতে ও থাইতে আরম্ভ করিবে।
কোন কোন ছানে অগ্রহায়ণ মাস
হইতেই কপি ভোজন আরম্ভ হয়।
ফুলকপি, ভদপেকা পূর্বেও প্রস্তাহ
হয়। পাটনা অঞ্চল হইতে এদেশে
যথেষ্ঠ পরিমাণে ফুলকপির আমদানী
হইয়া থাকে।

ধনা কোঁন বচনে অগ্রহায়ণ মাসে
ধান্য ছেদনের উপদেশ দিয়াছেন।
অগ্রহায়ণ মাদের বিবরণে সে বচন গ্রহ
হইয়াছে। আবার অন্য বচনে পৌব
মাদে ধান্য ছেদনের প্রাধান্য প্রকাশ
করিয়াছেন। ধনাকে অবথাবাদিনী
বলিয়া উড়াইয়া দিবার ধাে নাই।
স্তরাং ঐ বিক্ল বাক্যছয়ের একটা
মীমাংসা করা আবশ্যক। আমরা পূর্বে
কোন স্থানে উল্লেখ করিয়াছি যে,
বর্ষায়ন্তের অগ্রপশ্চাৎ হেডু কোনবার
ধান্যাদি ফসল কিছু অধ্রে, কোনবার

কিছু পরে জারিরা থাকে। তদস্পারে ধনার ত্ইটী কথাই সভ্য। একটী বচন অগ্রহারণ মাসের বিবরণে প্রকাশ করিয়াছি; আর একটা এই,—

"হলে ফুল কাট শণ।
পাট পাকিলে লাভ বিগুণ ॥
পোবের মধ্যে ধানে লাভা।
থনা বলে তুগুণের বোঝা।"
পৌব মানের মধ্যে ধান্য কাটিলে
দ্বিগুণ লাভ হয়।

তামাক,—এই মানে তামাক কাটিতে হয়। এই মানে কাটিয়া হালা ও ছালা না বাঁধিলে তামাক নষ্ট হইরা ধার। ধনা,—

"থনা বলে শুন শুন।
শরতের শেবে মূলা বুন।
ভামাক বুন ওঁড়িয়ে মাটী।
বীজ পুঁত গুটি গুটি॥
ঘন রূপে পুঁতনা।
পৌষের ক্ষধিক রেখোনা॥

এইবচনে তামাক চাদ সম্বব্ধ প্রয়োদনীয় কথা কয়টী আছে।

আখিন কার্দ্তিক মাদের উপ্ত ও রোপিত যে সকল ফদল তোমার কেছে আছে, আবশ্যক মতে তাহাদের পাইট্ তির এ মাদে আর কোন কাজ নাই।

श्वत-माधन প्रगानी।

(৩৫৭ সংখ্যা ১৮৩ পৃষ্ঠার পর)

রাগভৈরব।

ঠ ক ব ঠাট। সা ঋ গ ম প ধ নি সা

চৌতাল। ধ্রুপদ *

় রমাপত্তি বন্দ্যোপাধ্যায় ক্বত গীত।

🕮 নবীনচন্দ্র দত্ত কৃত স্বর-লিপি।

অস্থায়ী

দিন তা তেটেকতা কদেতা

১।। +॥ ০। ।ব ৩। ব গ্লুম গ্লুম গ্লুম ধা- র, বি- ধা-

ে। ৩। । ০। । সা সা সা সা সা মগ্<u>মগ্</u> গ- তি মু- জি- দা- ভা.

81 । ১/4 ।ব | +।ব । ম প ধুপ ধুপ পুদুম মুপ নি: তা নি- য়ন তা, নি-

। তাব। ০॥ গ্**ম** গ্ঞা সা রা- কা- র

8॥ ১াব ৬ ৬ | +॥ব দা॰ নিসা॰ দা॰ সা॰ । ধ ন ব- দি- ড, নি-

• চৌতাল গ্রুপদের তাল। একতালার নাায় ইছারও মাত্র। সমষ্টি বার, এবং ইহা ছুই ছুই মাত্রা-বিশিষ্ট ছরটা পদে বিভক্ত; তন্মধ্যে দিতীয় ও চতুর্থ পদে ফাঁক, এবং প্রথম, তৃতীয়, পঞ্চম ও ষষ্ঠ পদে চারিটা তালি; এইজনা ইছার নাম চৌতাল। ঠেকা যথা,—

स्था । । । ७०० ०० । ८० । ८० । । ४० ०० ०० । य शां मिन् डां उठ तें कडा किए डां उठ तें उठ तें ज मि घिना।

তেটেকেটে

ধ্ৰুপদ গানই হিন্দুদিগের উন্নত ভালসমাজে চলিত ছিল। ইহার রচনা বিস্তৃত, এবং চারি অংশ বা কলিতে বিভাক। ঐ কলিকে গান্ধকেবা তুক্ বলিয়া থাকে। যথা, অন্থায়ী, অন্তরা, সঞ্চারী ও আভোগ। প্রত্যেক তুকই তালের চারি কেরে পর্যাপ্ত। কিন্তু গায়কদিগের স্বেচ্ছাচারিতা বশতঃ কথন কথন তালের তিন পাঁচ বা ততোধিক ক্ষেরেও কোন কোন তুক্ নিম্পন্ন হইতে দেখা যায়। চৌতাল, ধামার, স্বক্তা, ক্ষিপভাল, ভেওট, আড়াচৌতাল, ক্লপক, চিষেতেতালা, সওয়ারী এই সকল তালেই প্রপদ গাওৱা হয়।

| ত । বামাবোধিনী পত্রিকা। | | |
|--|--|----------------------|
| •। ব । জ । ব •।ব । সা <u>• নি সা• সা• ব ঋ ঋ শ'।</u> •চ- ল, জ্ব- হি- তী- | । ৩ । •।।। মগ প্র ম গ ঞ্চ আরু- গ্য স- ব্র্ব- | 814 1 7 |
| ह। ব ।বব ১:ব । 🕂 ॥ ॰। সা'নি নি ধ প শ র, নি- শ্ব-ল, স- বর | ১॥ + ।ব ।ব ॰॥ ৩। ।ব •॥ । সা নি ধ সা গ ঞ সা । ভা- হা- র । । | |
| তাব ব ৷ •৷ ৷ব ৪৷ ব ৷ব ব নি ধ সা' সা'ক' সা'নি নিধ শ্রে- ৪ প- র- ব্র- | (৪॥८॥+॥ ৪। ।ব ৩। সা সা <u>নি সা ব।</u> জী- ব <u>পা-</u> ব | না |
| ১।ব ।ব ব +।ব । •॥ ৩। ।ব ধপ নি ধ ধপ পম ম প ক ক্ষা- সা- বা- ৎ সা- | , | 414 |
| • 1 স র ৷ | । Iq ৩। Iq । ব । ৪। Iq সা নি সা গাঞ্চ আং সা সাঞ্চ প্ৰ- মে- | |
| সঞ্জী। . {8#১॥×। াব •াবাহ্বা াব •॥ব সা ধ ধ্পধ্প ধ ধ স- ব্ৰা শ্ৰ য়, নি- | च- র, छ। न १ 81 14 31 +11 •14 14 | <u>ৰ পম</u> '- |
| 8#4 সাব । + #01 বিহাৰ । ধ ধ প পুন নি ধু সাব রা- ম- য়, নি- স্তা- র | 개월 기 기 <u> </u> | |
| • #481 4214 1 1 • 14 নিসা নিধ প্রম প সংগ্র কা র- গ, স- ক্র- | | ानः) |

यां अ एटल।

মারের কোলে ছেলের খেলা, (मध्त क्षात्र वान, छानवानि है। एन इशिन তাও কি এর সমান ?

বধন ছেলে মারের কোলে চোক্ পানে চোক্ চেরে, আপন ভাবে বিভোর হয়ে বাকে অবাক্ হয়ে।

চার চার চার চোক্ না স্থার প্লক নাহি পড়ে, আয়ের হৃদি সেহের নদী স্থার মৃতি ধরে।

সেই ধীয়তা চোকের কোণে বারেকু যদি দেখে, দেখ্তে চায় ভা শভবার দে ভূল্তে নারে তাকে।

আবার যথন টোকের প্লক ফোলে কণেক পরে, টাদের ছেলে টাদবদনে টাদের হাসি ধরে;

ভাবের সনে চাঁদবদনে
হাসির লহর দেখে, থেকে থেকে মেঘের কোলে চাঁদটি লুকায় তথে।

ছাসির ছটার জগৎ মাভার হাসির বাহার কত, হাসির সনে ভাবের রাশি ফুটিয়া উঠে তত।

ভাব দেখে ভাবনরী মায়ের ভয় ভাবনা ছোটে, ভাব-তরজে স্লেহের নদী আপুনি উথ্লে উঠে।

তনয় যবে মৃত্ল রবে
সহজ্ঞ সরল বোলে,
মা' তোর কোলে যাব' বলে
কাপ থেয়ে যায় কোলে,

উঠিরে কোলে ভড়িরে গলে। বলে মারের কাছে, দে 'মা' আমায় চাল ধরে দে' অই আকালে আছে,।

দেখ্লে থি চীম কেমন ভাল মোর নিচেক্ডেই জালে, ধরে দেমা ভাইয়ের স্থে থেশ্ব ঘরে ব'দে।

প্রোণজুড়ান আধ ফুটন শিশুর মধুর বাণী— শুন্তে পেঁরে নেচে উঠ্ল মায়ের পরাণ থানি।

সেহের ভরে সোহাগ করে
আমিরময় মুথে,
চুমটি থেয়ে ধীরে ধীরে
বল্ছে মাতা তাকে—

ওরে বাছা ননীর পুডুল অমিয় মোর বল, অবোধ ছেলে চাঁদটি বিয়ে কি হবে ডোর ফল ৭

চাঁদ কিরে কেউ ধরতে পার্বে শুন্যেতে ভার বাসা, চাঁদ ধরা সাধ ছেড়েঁ দে বাপ অইটি বুধা আশা।

মাহিরে কথা শুনে ছেলে বলছে সোহাপ ভরে, না দিলে, অই চাঁদের মড একটি চাঁদ দেও গড়ে।

মারের গড়া চাদটি নিরে ভাইয়ের হাতে দিব, ভাইয়ের সনে 'মিলে জুলে' চাদ নিয়ে খেলিব।

ভোমরা দে'খে। চাঁদের ধেলা চাঁদের বাহার কত. ডাই বলি মা গড়ে দে চাঁদ একটি, চাঁদের মত।

গোহাগভরে চুম্ খেরে মা শিশুর মধুর মুর্থে, ডাও কি বাছা হয় ক্থনৌ বলছে ভানস্থিকে,— চাঁদ ধরিতে চাঁদ পড়িতে মাসুব কথন পারে ? অবোধ ছেলে বোঝনা ত। ? বুঝ্বে কদিন পরে।

ষায়ের কথা ওলে ছেলে অমৃনি বলছে তাঁকে— অই চাঁদ কে গড়ছে মা বলে দেও আমাকে—

ছেলের মুখে গভীর ভাবের মৃত্ল কথা গুনে— স্থাের সিদ্ধু উথ্লে উথ লে উঠছে মায়ের মনে।

বল্ছে মাতা "শোন বাছাধন ভাবর জজন আদি অনল পবন গহন কানন ভূধর সাগর নদী—

ভোনার আমার জীব সমুদার গড়িয়াছেন যিনি, আই যে দেখ আকাশে চাঁদ ভাও গড়েচেন তিনি।

সেই কারিকর ভিন্ন ইহা কেউ গড়িতে নারে, কও বলি ভার নিকটে বে । গড়লে গড়তে পারে।

কুতৃহলে তনঃ অম্নি বল্ছে মারের কাছে,— তাই যদি হয় তবে বল ভাবনা কি আর আছে?

কারিকরের নাম কি গো মা কোন্থানে সে থাকে— বলে দে মা চাদ পড়িরে দিতে বলব তাকে।

লেহের ভরে আলিন্দিরে
চুমটি থেরে মুখে,
সোহাপ ক'রে তনয়েরে
বলছে মাতা স্মুখে;—

ভিনিই বাছা দয়ার সাগর
"দয়াম⊲" তার নাম,
এ সংসাতে হেথায় হোধায়
সব ঠাই তার ধাম।

তাঁর বড়ৌতে আমরা থাকি তিনিই দ্বার পতি, আয় বাছা আয় তাঁর চরণে কবি মোরা নতি।

B 4 1

আমেরিকার আশ্চর্য্য পক্ষী।

আমেরিকার গ্রীশ্বমণ্ডলে পশ্চিজাতির বেরপ বংগর্জি ও উরতি, এরপ আর কে.থাও দেখা বার না। তথার তাহা-দিগের বাসের জন্য বৃহৎ বৃহৎ বৃক্ষের জন্মল আছে, আহারের জন্য জনা ও মাঠে অসংখ্য ক্ষুদ্র ও বৃহদাকার কীট পদ্ধান্ধর অভাব নাই। আর দেসকল স্থানে মাত্রের সমাগ্য কম, এই জন্য তাংদিগের মৃত্যুর আশকাও কম।

১। বৃহৎ ভাতীর পকীর মধ্যে টোকান বিশেষ প্রসিদ্ধ। ইহাদের চঞ্ অতি বৃহৎ ও ধারাল, ভাহান্তারা কর্মন্ত কথনও আহাল কুটা করিয়া আরোহী-দিগকে বিপল্ল করে। এই ঠোট

হালকা ও সহিত্ত না হইলে ইহারা উড়িতে পারিত না, তথাপি চঞ্র ভরে উডिবার সময় ইহাদিগকে মাথা ভ জিয়া बाहेट इस । अहे बना छेड़ियात ममस ্টিছাদিগকে বিশ্রী দেখায়। ঠোঁট কিন্ত দেখিতে বড় স্থন্দর, উপরের ঠোটে ্রোরাল লালের উপর হরিফাবর্ণের রেখা, নীচের ঠোঁট নীল। মৃত্যুর পর ইহা বিবর্ণ হইয়াযায়। টোকান যথন উচ্চ রক্ষের ামস্তকে বঙ্গে, ব্যাধেরা তথন বিষাক্ত বাণ বা গুলি দারা তাহাকে বিদ্ধা করিয়া মারে। ইহার মত কোলাহল ও বিবাদ-কারী পক্ষী আর নাই। সায়ৎ কালে পরিষার আকাশে উড়িতে উড়িতে বিকট শব্দ করে, বর্ধাকালে চীৎকার বেশী ভনা যায়। গায়েনার এক ক্রবিক্ষেত্রে क्षीकान मर्व्यमर्का इहेशा मकल शक्ती ও চতুম্পদের উপর রাজত্ব করিত। ইহাকে সকলে ভয় করে। কোন স্থানে কোনও থাদাদেবা লট্যা অপর জন্ত্রা কোলাহল করিতেছে. এম্ন টোকানের আগমন হইলে সকলে চুপ ক্রিরা স্রিয়া যায়। ভাহার আহার অগ্রে, ভাহার ভুক্তাবশেষ মাত্র অন্যের প্রাপ্য। **उद कुक्**रतत काष्ट्र होकान क्य रहेश খাকে। টোকান আহার লুফিয়া লুফিয়া थात्र, जनभारमत नमत ठीं है पुतारेता খল ওবিয়া লয়, পরে বার বার মাণা पुतारेश काम करता हेशत किस्ता লেখা, সক্ষ পালকের ১৩ ছদিকে ইহারা চঞ্র আখাতে বুকে

কোটর করিয়া তমধ্যে বাস করে। কথনও কখনও ভো গাছের মধ্যেও বাসা ঠিকু করিয়া লয়।

২। আমেরিকার (হিমিংবার্ড) গুণ গুণ পক্ষী সর্কাপেক্ষা কুদ্র ও স্থলর। ইহারা এত কুদ্র যে ইহাদিগের পাথার পালক না থাকিলে ইহাদিগের পতক্ষ বলা যাইত। ইহারা ঝাঁকে ঝাঁকে আকাশে উড়িতে থাকে। মৌমাছির ন্যায় গুণ গুণ শক্ষ করে বলিয়া ইহাদিগের নাম হিমিং বা গুণগুণ। ইহাদিগের দাম্পত্য প্রণয়

৩। কটিকা নামে আর এক জাতীয়
পক্ষী আছে, তাহার। সৌক্র্য্যে হিন্তীয়
ছানীয়। আমেরিকার নিজন, নিবিড়
ও সজল বনে ইহারা বাস করে এবং
ফল ও বীজ ধায়। ইহার। লাল,
বেগুনে, নীল নানা বর্ণের। ছু:থের
বিষয় ইহারা গানশক্তি-বিহীন।

৪। কাম্পানিরো—ইহারা বরফের
ন্যায় শুল্র। ঘণ্টারবের ন্যায় শুক্ করিয়া শ্রোভাদিগকে চনৎকৃত করে। ইহারা প্রাতে, মধ্যাহে, রাত্রে, সকল সময়ে সঞ্চীভালাপ করে। ইহারা থামিয়া খামিয়া শক্ষ করে। ইহাদের গানে অনেক কালোয়াতও মোহিত হৌরাছেন।

৫। ক্রপিকোলা—গায়েনা পাহাড়ের
পাটলবর্ণের একজাতীয় মোরগ। ইহারা
ক্রতি নির্জন বনে থাকে। ইহারা আশ্চর্য্য
নৃত্যাভিনর করে। রিচার্ড সোমবর্গ
একজন প্রামাণিক প্রযুটক, তিনি ঘচক্ষে

ইহাদিপের কাণ্ড দেখিরা এইরূপ বর্ণনা করিয়াছেন:—

"একটা মহণ পাথরের উপর এক-দল পক্ষীর নৃতা দেখিলাম। বুক্ষশাখায় व्याह २ • ही मर्नक डेभविटे । व्यथरम এकहा মোরপ আসরে নামিয়া নৃত্য আরস্ত করিল। সেমর্রের মত পাধা ও পুচ্ছ বিস্তার করিয়া নাচিতে লাগিল। নাচিতে নাচিতে একবার ভূমি আঁচড়ায়, এক-বার উ.শ্ব উল্লুফন করে, নানা অঞ্চলী धामर्थन कविरक लाजिल। ক্লান্ত হইল, তখন সরিয়া গিয়া সার একটীকে আসর দিল। এইরপে পর্যায়-ক্ৰমে এক একটী মাচিতে লাগিল। পুরুষেরাই নর্ত্তক, পক্ষিণীরা এক দষ্টিতে দর্শন করে ও উচৈচ:ম্বরে চীৎকার করিয়া বাহবা দেয়। নৃত্যের সময় অভিনেতা ও দর্শকেরা আমোদে মাতিয়া আত্মবিশ্বত इय, निकातीता ऋ यात्र भारेया (मह मगर विवाक वाल जाशामिशक वध करता। हेशामत भानक वस मुला विक्री उरहा

৬। বাল্টীমোর বা ত্রুবার পক্ষী।
ইহারা টিউলিপ গাছের শাথার আকর্যা
বালা বাঁধে। তাঁতীরা টানা ও পড়েন
ছইভাবে স্তা দিয়া ধেমন কাপড় বুনিরা
ধাকে, ইহারাও সেইরূপে বালা বয়ন
করে। পক্ষী লগে লগে এক একটী
কৃটা রাথে, পক্ষিণী উল্টা বাগে আড়া
আড়ি করিয়া জন্য কৃটা সাজ্ঞায়, এইরূপে
ক্ষে জালের মত বুনিতে থাকে। বালা

বাধার কার্যায়ত শেষ হইতে থাকে, তত ভাহাদের প্রণয় ও আনন্দ যেন গাচভাব বাদানির্মাণে কৌশল প্রকাশিত হয়। শাৰকদের কট্ট হইবে বলিয়া মধ্যে মধ্যে বায়ুর পথ রাখে। লাউসিয়ানাতে উত্তর পুর্বের শীতলবায়ু স্বাস্থ্যকর, ডাহার জন্য বাসা বিশেষভাবে বুলাইয়া দের। পেনসিলভিনিয়া ও নিউইয়ার্কে দক্ষিণ-বাছ উপাদেয়, এজন্য সেধানকার পন্দীরা বাসার দক্ষিণদিকু খোলা রাখে। কোমল শাবকদের স্থকর হটবে বলিয়া পশম ও তুলা বিছাইয়া বাসা নরম করে। এই পক্ষীদের চলন সুন্দর, গান সুন্দর। ইহারা ভ্রমণকারী, শীতকালে মেকশিকো প্রভৃতি উষ্ণতর দেশে গিয়া বিবৃষ (চৈত্র) শংক্রান্তির পর যুক্তরা**জ্যে কিরিয়া** আ'দে।

9। কাসিক বানু টিধারী পক্ষী—
ইহারা আমাদের দেখের বাবুইরের মন্ত
তালগাছের উচ্চডগায় বা বেধানে বোল্ডা
প্রভৃতির বাদা আছে, এমত গাভে বাদা
বাঁধে। বাদা ৪ ফিটের অধিক লম্বা হয়।
ইহারা বিড়াল ও দর্প প্রভৃতিকে বড় ভর
করে। ইহারা অতান্ত দামাজিক। এক
একটা গাছে ইহাদের শত শত বাদা
বৃলিতে দেখা যায়। পাছের একদিকে
কতকগুলি পক্ষী বাদা বাঁধিতেছে,
অন্যদিকে অন্যদল, কোনও বিবাদ
বিদ্যাদ নাই। এ বড় শ্বের দুলাক।

क्षिनि वा भक्षिकान।

(৩৫৪ সংখ্যা ৭৫ পৃষ্টার পর)

্ন মৰে কর ছইটা মতের উপর একটা ক্রাপা নল রাখা হইয়াছে। ঐ নলের अक्षी मूथ कुरम अक इहेश हूँ हन क्रेक्का के कुंडन मूर्थत नमार्थ একটা বাতি জালিয়া দেওয়া হইয়াছে। ক্ষুৰ ঐ নলের অপের মুখের দিকে ছই ধানি পুত্তক লইয়া যদি আখাত করা হার, ক্ষে আবাত বল চতুর্দিকেই প্রস্ত ছইবে। নলের ভিতরে যে প্রমাণু শ্রেণী আছে, তাহাতেও ঐ বল প্রস্ত হুইবে। গদি অৱ বলে আখাত করা যায়, ভবে বাতির শিথা কম্পিত হইতে থাকিবে। আর যদি সজোরে আখাত করা যায়, তাহা হইলে ঐ বাতি নির্বাণ ছইরা যাইবে। যে স্থানে আ, বাত করা য়াইতেছে, যদি তাহার চতুদিকে এই-হ্লপ নল ও বাতি সাজান যায়, এবং টুপ্যুক্ত বলের সহিত হুইথানি পুত্তক উপরি উপরি আখাত করিয়া শব্দ করা ৰায়, ভাহা হইলে সমকালেই ক্ষেক্ট বাভি নিবিয়া ৰাইবে। এখন জুনায়াসে প্রতীয়মান হইতেছে যে, যে ক্লাৰাতে লক উৎপন্ন হইতেছে,ঐ আঘাত-ব্রশ্ব চতুর্দিকেই বায়বায় প্রমাণু শ্রেণীতে প্রায়ত হইতেছে। আরও প্রতীয়মান स्ट्रें (वृ, के क्ष्यू ग्रंटिक रवक्र स्वन-Cक्शांडब ह्रथ, मत्नव डूं हन शूथ काव শ্বাধিলে, তদপেকা অনেক অধিক গুনিতে

পাত্যা যাইবে। নলের মধ্যাহিত ভিন্ন
ভিন্ন পরমাণু শ্রেণীর বেগ একরে হইরা

ঐ ছুঁচল মুখ দিয়া বহির্গত হইতেছে
বলিয়া ঐ শক্ষ অধিক শোনা যায়।
পাশাপাশি বা উপর্যুপরি ছইটা গৃহ
এরপ অবস্থিত আছে যে, এক গৃহের
শক্ষ অপর গৃহে শোনা য়য়না। দেওয়ালের মধ্য দিয়া যদি একটা শ্নাগর্ভ
বা ফাপা নল চালান য়য়, এবং নলের
এক মুথে একজন কথা কহে ও অপর
মুথে একজন কাণ দিয়া থাকে, তাহা
হইলে ঐ কথা গুলি অনায়াসেই শোনা
য়াইবে।

নলের যে মুখেপুসকের আঘাত করা
হইতেছে, ধনি ঐ মুখে নীলবর্ণের কাগজ
পোড়াইয়া ধোঁয়া করা যায়, এবং যদি
অবিলম্বে পুস্তকধ্রের দৃঢ় আঘাতে শক্ষ
উৎপন্ন করা যায়, তাহা হইলে বাতের
নিথা পূর্ববং নিবিয়া ষাইবে, কিব্ধ ঐ
ধোঁয়া ছুঁচল মুখ দিয়া বাহির হইবে না।
ইহাতে প্রতীয়মান হইতেছে যে বলুক
হইতে গুলি যেরপ ছুটিয়া বাহির হয়,
বায়বীয় পরমাণু সেরপ চালিত হইয়া
বাতি নিবাইতেছে না। কিব্ধ পুস্তকধ্রের আঘাত বেগ জনম পূর্ব্বোক্ত গালক
প্রের আঘাত বেগ জনম পূর্ব্বোক্ত গালক
প্রের আঘাত বেগ জনম পূর্ব্বোক্ত গালক
প্রের আঘাত বেগ জনম পূর্ব্বাক্ত গালক
ক্রোনার ন্যায় পরমাণু শ্রুণীর একটীর
পর জায় একটীতে, তাহার পর জায়
একটীতে, প্রস্ত হইয়া বাতির শিধায়

উপস্থিত হইয়া উহাকে নির্বাণ করি-তেছে। ভাষাত বেগ প্রফত হইবার সমরে প্রত্যেক প্রমাণু যে কিছুমাত্র চালিতে হর না এরপ নহে। আমরা গোলা শ্ৰেণীতে আঘাত বেগ প্ৰদারের বৰ্ণন সময়ে দেখাইয়াছি বে, প্ৰত্যেক গোলা পরবন্তী গোলার উপর চাপিয়া পড়ে এবং উহা হইতে প্ৰতিষাত পাইয়া ফিরিয়া আইসে। স্তরাং প্রত্যেক গোলাই কিছু দুর বাতায়াত করিয়া থাকে। এইরপ প্রমাণু শ্রেনীতে যধন আঘাত বল প্রস্ত হয়, তখন প্রত্যেক পরমাণুর এই গতির আমেতির উপর ধ্বনির সুলতা ও মৃত্তা নির্ভর করে।

কোন বস্তুতে আঘাত করিলে ঐ আঘাত বল প্ৰসারের আশ্রয়ীভূত প্রশাণ, বঙ্গি অধিক দ্ৰ ব্যাপিয়া বাডায়াত করে, ভবে ফানি স্থুল হইবে, এবং যদি অৱস্থান মাত্র ব্যাপিয়া ৰাভায়াত করে, ভবে ধ্বনি মৃতু হইবে। আর পরমাণ্র এই গতির সমরের আধিক্য ও স্বল্পার উপর ধ্বনির নীচতা ও উচ্চতা নির্ভর করে অর্থাৎ প্রত্যক প্রমাণুর যাতায়াতে যদি অবিক সময় লাগে, তবে ধানি নীচ ट्डे**रिं, आ**त्र यपि अद्ग ममत्त्र **डेटाइ** যাতায়াত সম্প্র হয়, তবে ধরনি উচ্চ रुहेद्य ।

(ক্ৰমশঃ)

পাঁচন ও মুষ্টিযোগ।

(००४ मःचा ১১৪ भृष्टोत्र भत्)

প্লীঙা ও যকং—প্রত্যহ ২০০টা পিপুল পুরাতন ভড়ের সহিত সেবন করিলে, অথবা হরিটো চূর্ণ হুরতি স্তকুমারীর রবের সহিত, কিন্তা পেঁপের জাটা २० ফোঁটা অল চিনির সহিত দেবন করিলে, অথবা ফাল জটা ভন্ম, পুরাতন খাড়ের সহিত সেবন করিলে প্লীহা ও মৃকুৎ রোগের শাক্তি হয়। চিলার মূল জলে পেষণ করিয়া ১ রতি প্রমাণ বটিকা কংিবে, ইহা ৩ বটিকা পাকা কলার ভিতর করিয়া সেবন করাইলে প্রীহায় भासि दत्र। इत मारमद त्यभी सङ्ग এরপ নৈ বাছুরের চোনা

১ • । ১ ६ मिन ध्यां छ भान कहिला भीश প্রশাসিত হয়।

कडीर ७ উन्दामम्।— रेनक्वनवर्षे চনীতকী, পিপুল ও চিতামূলের ছাল ইহা-দের সমভাগ চূর্ণ একত্র ি ভ্রিত করিক্স 👉 আনা সাত্রায় উঞ্জলের সহিত, অথবা পাতি বা কাগজি লেবুর রস চিনির স্হিত, কিম্বা ।• জানা ধোয়ান 🛡 ।• আন৷ লবণ জলসহ সেবন কিলে মুক্তামি ও পেট-ফাপা প্রভৃতি নিবারিছ F

হিন্দ, মরিচ পিপুল, ও'ট ও নৈক্ষ-দ্বৰ একতে পেৰৰ করিয়া পেটে প্রলেপ

দিয়া নিজা বাইলে দর্কপ্রকার **সভী**র্ণ দিবারিত হয়।

আধ ছটাক পরিমাণ গোঁড়া লেবুর রসে একটা গোঁটে বা ঘিঁচি কড়ি দিয়া পূর্ব্বরাত্তে রাখিতে হইবে, পরদিন প্রাতে ভাহাতে অর পরিমাণ ইক্ষ্ চিনি দিয়া সেবন করিলে তিন চারি দিনের মধ্যে মক্ষাণি ভাল হয়।

ষোয়ান ১ তোলা, মৃতা ১ তোলা, এই উভয়কে থেঁতো করিয়া ৩২ তোলা লগে দিছ করিয়া ৮ তোলা জল থাকিতে হাঁক ও শীতল হইলে ৪ ভোলা পরিমাণ ২ বারে দেবা।

তচ্ঠীণ ৫ ভাগ, পিয়লীচৃণ ৪ ভাগ, ক্ষজীর চ্ণ ৩ ভাগ, যবানী চৃণ ২ ভাগ, বিটলবণ ১ ভাগ, হরীতকী ১৫ ভাগ—— মেনটে ৩০ ভাগ, একতা করিয়া, জলবারা মহ্দ ন তৎপরে কুলের ন্যায় বটী করিয়া দিবলে ছই বটা ছই সন্ধ্যায় সেব্য। ইহা সেবনে অজীণ রোগ সম্বর আরোগ্য হয়।

উৰরে শ্লনি থাকিলে, ৫ ফোঁটা পরিমাণে 'ক্ষয়েল পিপারমেণ্ট' জলসহ ২।৩ বার সেবন করিলে পেট কামড়ানি নিবারণ হয়।

ক্ষতি প্রত্যবে যোয়ান, মৃতা, মরিচ, লক্ষ, এই দকল দ্রব্য অল্ল পরিমাণে বোল করিয়া চর্মণ পূর্মক কপুরাদি ৰারা স্থাসিত স্থীতল ৰারি পান করিলে গ্রহণী ও অজীর বোগীর অসীম উপকার দর্শে।

অপক বেল পোড়াইয়া ভাহার শাঁস গুড়বা মিছরির ওঁড়া সহ পাঁচ সাত দিন সেবন করিলে গ্রহণী ও অভিসার বোগের উপকার দর্শে।

এক আনাভর দৈশ্ববলবণ ১০টা গোল মরিচের সহিত চিবাইয়া খাইলে পেট কামড়ানি ভাল হয়।

খাঁটী মুড়া মাথন এক ছটাক ও মিছরি একত্রে মিশাইয়া ধাইলে, একদিনে পেট গরম ভাল হয়। ঔষধটী খাইয়া ২০০ ঘণী জল খাওয়া বন্ধ করিবে।

কিছু প্রাতন ভেঁতুল ভিজ্ঞান জল দেড় ছটাক মিছরের গুঁড়ার সহিত থাইলে পেট গরম সারে ও বন্ধমল দাস্তবার। বাহির হইয়া শরীর স্থাহয়।

শন্ধি— থ্ব হোতফুঁতে শর্দ্ধি হইলে, রাত্রে শয়নকালে হল্তের ও পারের তালুতে সরিষার তৈল মালিস করিয়া মুমাইলে শন্ধি ভাল হয়।

আহারের পর মুথ ধুইরা সেই মুখে

জল না থাইয়া একটা ডাবের জল এক

নিখাসে যত পার থাইবে, পরে ২।৩ খণ্টা

জল খাইবে না, একদিনে শর্দি ভাল

হইবে।

মৃত্যু কালীন উক্তি।

মৃত্যু সংবারাসক ও পাপবিকৃত লোকের পক্ষে ভরকর, কিন্তু ঈশ্বরাস্থরাগী ধর্মনিষ্ঠ সাধুদিপের নিকট অতি সহজ ও স্বাভাৰিক। এ দেশের অনেক বিশাসী हिन्दू प्रत्र भकाठीक्रम हहेगात राज्या করিয়াছেন এবং নাম ডাকিতে ডাকিতে মরিয়াছেন। ইহা আমাদের চাকুষ প্রত্যক। ওনিতে পাই চূড়ামণি দত্ত নামে কলিকাতার এক প্রচীন ধনাত্য হিন্দু "চল লো চুড়ো যম জিনিতে" এই বাজনা বাজাইতে বলিয়া ভাষা গাহিতে গাহিতে প্রস্থাতীরে গিয়া সক্ষানে প্রাণত্যাগ করেন। ব্ৰহ্মনিষ্ঠ কতকগুলি নরনারী শেষ পর্যান্ত আশ্চর্যা বিশ্বাদের পরিচয় দিয়। কলেবর প্রিত্যাগ করিয়াছেন, ভাহাও আম্রা দেখিয়াছি। নিমে কতকণ্ডনি শ্ৰেনিৰ লোকের মৃত্যুকালীন উক্তি প্রকটিত ছইল, ইহাঘারা তাঁহাদের প্রকৃতি ও মনের ভাবের পরিচয় পাশুরা যার।

করাসিরাজ চতুর্দশ বুই মৃত্যু কালে তাঁহার চতুঃপার্যত বন্ধু বান্ধবিদিগকে বলেন "ভোগরা কেন অঞ্চপতে কর? তোমরা কি ভাবিয়াছিলে আমি চির্জীণী হইরা থাকিব ?" কিছুক্দণ নিস্তত্ত হইরা প্নরার বলিলেন "আমি মৃত্যুকে ইহা অপেকা কঠিন মনে করিয়াছিলাম।"

ভাক্তার হাউরে সৃত্যুশ্যার মৃত্যু-ব্যুক্তী এত ক্ম দেবিয়া আক্তর্যু হইরা বলিয়াছিলেন "আমার ৰণি কলম ধরি-বার শক্তি থাকিত, তাহা হইলে মরা বে কিরূপ সহত্ব এবং সুধন্তনক তাহা লিথিয়া যাইতাম।"

ভূতপূর্ক কেন্টারবারির (Arch Bishop) প্রধান ধর্মাধ্যক মৃত্যুবস্থার একট্ ক্লাস হইলে শাস্তভাবে বলিলেন "বাছা-হউক মরাটা কিছুই নম্ন।"

সক্রেটিসের মৃত্যু দণ্ডাজ্ঞা হইদে

এক ব্যক্তি উচ্চার নিকট গিয়া বলিল

"এখনিয়ানেরা আপনাকে মৃত্যুদণ্ডে

দণ্ডিত করিয়াছে।" ইহাকে সক্রেটিন

সহাস্যে উত্তর করিলেন "প্রকৃতি তাহা
দিগ্রে এই দণ্ডে দণ্ডিত করিয়াছে।"

কবিবর অণিভার গোল ড্ল্মিথের অস্তিমকালে তাঁহার নাড়ীর উদ্ভাপ অত্যক্ত অধিক দেখিয়া তাঁহার ভাক্তার তাঁহাকে জিজাসা করিলেন ''আপনার মনে কি কোন দাকণ চিন্তা আছে ?' ভিনি উত্তর করিলেন "হাঁ ধণের চিন্তা।"

ভাক্তার জন্সনের মুম্বু জাবছার ভেবিভ গ্যারিক তাঁহার নিকট তাঁহার স্থোভন জট্টালিকা দেখাইয়া তাঁহার মাহাল্য বর্ণনা করিতে লাগিলেন,তাহাতে জন্সন্ বলিলেন "হার ভেবিভ! এই সকলের জন্যই ত মৃত্যু এত ভয়ানীক বোধ হয়।"

क्षत अर्घनिहरू धक महिला क्रिकामा

করেন "আচ্ছা, বলুন দেখি আপনি যদি **জানিতেন যে কাল তৃপ**র রাত্তির সময় **সাপনাকে ম**রিতে হইবে, তাহা হইলে আপুনি মধ্যবতী সময়ট। কিরুপে ব্যয় করেন •" ভিনি উত্তর করিলেন 'ঠাকু-কুণ ৷ তাতে কি ? এখনও বেরপে সময় ক্ষেপণ করিবার ইচ্ছা করি,তথনও সেই-ক্রপে করিতাম। আজে রাত্রে ও কল্য প্রাতে পাচটার সময় মান্তারে ধম-প্রচারার্থ মাইব, তৎপরে অখারোহণে টিউকেসবারিতে গিয়া প্রচার করিব এবং সন্ধ্যাক।লে শামাজিক সন্মিলনে একত্র হইব। তৎপরে বন্ধুবর মাটিনের বাড়ীতে ষাইব ৷ তিনি আমাকে নিমন্ত্ৰণ করিয়া-ছেন, ভাঁহার সহিত আহার ও কথোপ-ক্থন করিব এবং তাঁহার পরিবারদিগের স্হিত স্চরাচর ঘেমন উপাসনা করি, সেইরূপ করিব। পরে ১০টার সময়
শব্যায় গিয়া স্বর্গীয় পিতার হত্তে আত্মসমর্পণ করিব। বিশ্রামের পর জাগ্রত
হইয়া দেখিব সর্গের জ্যোতির মধ্যে
উপস্থিত হইয়াছি।'

আমেরিকার সেনাপতি টোনওয়াল
ভ্যাকসনকে যথন বলা হইল যে আপনি
আর হুই ঘটা মাত্র বাঁচিবেন, তিনি
বলিলেন "ভাল, তাহাই হউক, এপিহিল্কে যুদ্ধের জন্য প্রস্তুত হইতে আজ্ঞা
কর, পদাতিকদিগকে ক্রুভবেগে সমুখে
আদিতে বল। মেলার হক্ষকে বল——"
এই সময়ে ভাঁহার বিবর্ণ মুগে অপূর্ব্ব মধুর
হাস্য দেখা দিল এবং তিনি নিশ্ভিস্ত ও
স্কচ্নুন্দভাবে বলিলেন "এগন—এখন ভবে
আমরা(ভব)নদী পার হইয়া ভক্নছায়াতে
গিয়া বিশ্রাম করি।"

নৃতন সংবাদ।

১। তুইটা নরপ্তির আসন্ন মৃত্যু ভাবিয়া সন্ত্য জগৎ বিশেষতঃ আমাদিগের ইংরাজ গবর্ণমেত খোর চিন্তাক্ল।
একজন রুসীয় সমাট, আর একজন
কাবুলের আমীর। রুসীয় সমাট আলেকভাতার বড় শান্তিপ্রিয়, বলিয়া প্রসিদ্ধ।
তাঁহার বিয়োগে রুসীয়েরা চতুদ্দিকে
স্মরানল প্রজালিত করিবে এই আশস্কা।
আমীর আবত্র রুখনন ইংরাজবন্ধ, তিনি
পাকাতে ইংরাজের কুসীয় ভীতি কম

আছে, তাহার মৃত্যু হইলে আফগান গোলধোগ এবং ক্রসীয় গোলধোগে ইংরাজকে ব্যক্তিবাস্ত হইবে হইবে। আমরা সংবাদ পাইলাম ক্রমীয় সমাটের মৃত্যু হইয়াছে, আমীর স্বস্থ হইতেছেন।

২। চিন জাপান যুদ্ধে জাপানীরা ক্রমশ: বিজয়ী ও প্রবল হই তেছে এবং চিনেরা হীনবল হই তেছে। জাপানীরা ইয়া-লু এদীর দাক্ষণ তীর অধিকার করি-রাছে এবং কোরিয়া হস্তপত করিয়া ভাষার শাসনের ব্যবস্থা করিতেছে।

চিন বন্দী সকল জাপানে দলে দলে নীত

হইতেছে, ইহাতে জাপানীরা মহোলাস

করিতেছে'! ইংরাজেরা উভয় দলের

মধ্যে সন্ধির প্রস্তাব করিতেছেন, ঈর্বরে
ছোয় ভাহাদের চেটা সফল হউক।

৩। গুইকুমারের মহারাজা স্থরা দমনের চেষ্টা করিয়া বিশেষ ধন্যবাদার্হ হইতেছেন। তথায় স্বোহণাপত্র প্রচারিত হইয়াছে রাজমন্ত্রীর অনুমতি ভিন্ন আর নুতন মদ্যালয় থোলা হইবে না এবং এ৬ টা গৃহস্থ কোন পল্লীতে মদ্যালয়ের বিবোধী হইলে তথা হইতে তাহা উঠাইয়া দেওয়া হইবে।

৪। প্রসিদ্ধ বঙ্গীয় লেখক পণ্ডিত রামগতি ন্যায়য়য়য়য় মৃত্যু সংবাদে আময়য় সন্তাপিত ১ইলাম।

৫। সমুদ্রের গভীর তলে মৃতদেহ
 ন¦কি বিক্ত হয় না।

৬। ৬৬ কেটি ৭০ লক্ষ লোক মহা-

রাণী বিক্টোরিয়ার প্রহা, এত প্রহা পৃথিবীর মার কোনও রাফার নাই।

৭। লড় ও লেড়ী এলগিন গত ২৪শে অক্টোবর সিমলা পরিত্যাগ করিয়া সদলে পঞ্জাব ঘাতা করিয়াছেন। তথায় রাজদরবার হইবে।

৮। আগামী নবেমরে ইংলভেশরীর দোহিতী এশাণ রাজকুনারী আলিকসের সহিত রুশীর যুবরাজের ওভ বিবাহ সম্পন্ন হইবে। রুশীয় সমাটের সাজবাতিক পীড়াজন্য বিবাহ কার্য্য শীক্স সমাধা হইবার উদ্যোগ হইগাছিল, ভনিতেছি ভাহা সমাধা হয় নাই।

৯। আমেরিকার যুক্তরাজ্যে ২৭৫টা মহিলা ধর্ম্মাজকা, ২৫০০ চিকিৎসা ব্যবসায়িনী, ৬০০০ গ্রীলোক ডাক বিভাগে কর্মা করেন। ১৮৮০ সাল হইতে শ্রী-কারীকরের। ২৫০০ পেটেণ্ট লইয়াছেন, এক এক শিল্প বিষয়ে তাঁহারাই উন্তাতিকা।

বামার6না।

বৈদ্যনাথ কুঠাশ্রম, কলিকাতা অনাথাশ্রম, ও দানাশ্রম স্থাপয়িত্গণের প্রতি।

٥

স্বর্গের দেবতা ভাই তোরা কি সকলে ? মানব গুগতি হেরি, আসিলি স্বরগ ছাড়ি, দুরিতে গুংখীর গুংখ নামিলি ভূতলে ? ₹

পথে পথে কেঁদে কেঁদে কুঠ রোগী যত।
তাদের বারতা পেয়ে,
আসিলি মরতে থেয়ে,
বুচাতে তাদের হুংখ চেঠা অবিয়ত।

é

দেখিরা তাদের মরি ক**ই অগণন,**করিলি এ ত্রত সার,
লইলি এদের ভার,
এদের রোদনে হার গলে গেল মন।

ইহাদের ছঃখ তাই যুচাবার তরে, তোদের কতই যত্ন; সংসারের সার রত্ম হয়ে জামাছিলি তোরা সংসার ভিতরে।

Œ

শনাথ দরিন্ত কত কাঁদে অসহায় !
হায় এই স্বার্থ ভর।,
সংসারে রয়েছি মোরা;
হুঃথী তাপী দেখে কভু গলে না হাদয়।

৬

কাক কাছে ভারা কভু পায় না আশ্রয় !.
কুধায় আকুল প্রাণ !
যন্ত্রণায় আন্চান !
কেহ ভাহাদের পানে ফিরে নাহি চায় !

٩

পথে পথে কেঁদে ফেরে রোগী ছঃথী কত;
সদা করে হায় হায় !
কেহ নাহি ফিরে চায়।
করে না হতন কেহ এমনি কগত!

চিরদিন সংসারের এই রীতি হায়!

সম্পদে সহায় যোটে,

স্থের লহরী ছোটে

বিশাস দেখিলে সবে পায় দ'লে যায়!

কি মহান্ উচ্চ ভাব তোদের পশুরে ! সংসারে বা মেলা ভার ; দৃষ্টান্ত দেখালে ভার, দেবভাও আছে মরি অন্থরের পুরে ? ১০

বড়ই কঠিন এত করিয়া গ্রহণ, বিভূর আদেশ মত থাটিতেছ অবিরত, স্বার্থ সুখে ভোগ সব দিয়া বিস্কুলে!

আমি সাথে যোগ দিই বড় সাথ মনে;
তোদের চরণ তলে
বসে ভাই বোন্ মিলে
শিধিরে তোদের ব্রত। শিধিব কেমনে ?
১২

নরকের কীট মোরা নিয়ত নরকে
আছিরে আমরা পড়ি,
অবলা তুর্বলা নারী,
আমরা স্বরণে যাব ? কে রবে নরকে ?
১৩

পারিব না-পারিব না-নাহি সে শকতি। বিরলে বনিয়া ভাই, মাগিব বিভূর ঠাঁই তোদের মঙ্গল সুথ অনন্ত উন্নক্তি।

ভিপিনীর আশীর্কাদ কররে গ্রহণ,
কভ শান্তি ভক্তি প্রীতি,
বিভূ পদে থাক্ মতি,
কর সদা অগতের তুর্গভি বোচন।
শ্রীমোক্ষদা কুম্মবী—কাকিনীয়া

ছিল্ফু নারীর গাছ দ্য ধর্ম। *

"ভর্কিভাল্গানিনা দেবারাংনশীলরা।

গাহ হার্ণরতরা ভর্তা দেবা কুলরিরা।"

বর্ষ-প্রাণ হিন্দুগণের গৃহাজন বে

দকল আজনের জেন্ঠ, ইহা সংগারবিরাগী আব্য ঋবিগণও স্বীকার করিযাছেন। নিম্নলিখিত স্লোকটা ইহার
প্রসূত্ত প্রমাণ—

'বিশ্বাৎ ত্রয়োহপ্যাক্রমিরো জ্ঞানেনাল্লেন চাবহন্। গুহত্তেনৈব ধার্যন্তে ক্রমাজ্ঞোঠাক্রমে। গৃহী।"

কিন্ত এই গৃহাত্রমে নারীই পুরুষের প্রধান সহায়, স্তরাং গাছ স্থাধর্মে নারীর অবিকার পুঞ্ষের সহিত সমভাবেই দেইজন্য **স্ত্রীর গাহ**স্থাবর্মে বিস্তত। অভিজ্ঞতা লাভ করা নিতান্ত আবশ্যক, ক্রিলে বান্রের হত্তে বছমূলা হীরক প্রদান করিলে তাহা ধেরপ ব্যব-হাত হয়, গৃহধর্মে অংনভিজ্ঞা রমণীর হত্তেও পবিত্ৰ গাৰ্হস্তা ধৰ্ম সেইরপ ব্যব-হাত হয়। অভেএৰ গাৰ্হ স্থৰ্গে অভিজ্ঞতা লাভ করা ও উহা পালন করারমণীর জীবনের লক্ষ্য হওর। উচিত। গাহ ভাৰম শিক্ষা শৈশবে আরপ্ত হওয়া আবশ্যক। কেননা হিন্দু নারীর পক্ষে গাহ স্থাধর্ম পালন করা বিলাদের কুত্ম শ্যা নছে—সথের পুত্ল সাজান নহে--সোহারের গোলাপটী নহে—অহভার ও স্বার্থপরতার লীলা-ক্ষেত্র নংই—বসন ভূষণের জন্য সামীকে

পারিতোবিক রচম!—বিদ্যাবন্দকাটা নিবাসিদী
 শ্রীরতী কুরুদিনী রায় লিখিত।

লাশ্বনা খাওয়ান নাছ এবং বাসনা
প্রণের চাতুর্যাও নাছে। উছা ছিন্দু
শান্ত্রোক্ত এই কবেকটি উপদেশের উপর
নির্ভর করিতেছে—
শ্বতা প্রাক্তর্যার রাজিবাসো বিহার চ।
লোকেশং প্রণমেৎ কান্তং প্রণারোকাংক্ত সর্বাণঃ ৪
গোমরেন চ চোরেন সংস্কৃথাৎ প্রাক্তরণ ততঃ।
স্প্রাত। শুরবেশাচ প্রবিশেৎ স্বরমন্দিরর ।
প্রাহরিং প্রারথ তত্যা পতুছি তার্বিনী।
পাক্বক্তং স্নিবর্ত্তা ভোজরেৎ অজনতিধীন ।
পতি প্রাতিধীন ভ্তাাননান্ পরিজনাংক্তর।
ভপ্রিভার্মপানীরৈঃ অরং ভ্রক্তে স্বং সতী।"

এই সারপর্ভ উপদেশ কয়েকটার
উপর গাহ হাধর্মের ভিত্তি হাপদ
করিয়া—প্রাকৃতিপর্মতিত, পরিণামদর্শিতা
ও আগভাবগ্রাহিত।শক্তি পরিচালনা
করিয়া মার্জিত বৃদ্ধি সাহায়ে প্রেম,
ত্যাগ, ক্ষমা, সত্য রুতি ও আলোভ
হারা হিন্দুনারীকে গাহ হ্যধর্ম পালর্ম
করিতে হইবে; তাহাকে পারিবারিক
স্থবের জন্য—সাবারণের হিতের জন্য—
সর্ব্ব প্রকার আশ্রমীর জন্য গাহ স্থাবর্দ্ধ
পালন করিতে হইবে কেননা—
'বলা বারুংসমান্রিতা বর্ততে সর্ব্বজ্ঞরাই যাং।
তথা গৃহহুমান্রিত্য বর্ততে সর্ব্বজ্ঞাক্ষমাঃ যাং।

গৃহধশ্ব রক্ষা করিতে ছইবে ভাছাতে যে কর্ম ওলি প্রয়োজনীয় সেগুলি
শ্বচাক্তরণে ও সুশৃত্ধলে হাছাতে সম্পন্ন
হয় ভাহাতে শিক্ষিত হওয়া নিতান্ত
আবশ্যক। হিল্পুরন্থীগণ যদি গৃহ
কার্য্যে অশিক্ষিতা হইরা বিএ এমএ
উপাধি প্রাপ্ত হয়েন—যদি ব্যাদ, বাল্মীকি,
মন্ত্র, পরাশর, বশিষ্ঠ, কালিদাস, ভবভূতিই
হোষর, সেকস্পিয়র, বাররণ, শেলি, স্কট,

পোপ ও মিল্টন প্রভৃতির গ্রন্থগুলি স্থলের মত আবৃত্তি ও ব্যাখ্যা করিতে পারেন— জ্যামিতির অনুশীলনীগুলি এক মিনি-টের মধ্যে কসিয়া দিতে পারেন-- धिन অক শাস্ত্রে লীলাবতী ও জ্যোতিষে থনার ন্যায় জ্ঞান লাভ করেন এবং বরক্রচি, গ্যালিলীয়, নিউটন প্রভৃতিকে পরাস্ত ক্রিতে পারেন—অন্তত বিজ্ঞান রহস্য গুলি জ্ঞানায়ত্ত করিতে পারেন—যদি সঙ্গীত বিদ্যাদিতে দেবী সরস্বতীকে পরাতৃত করিতে পারেন, আর গৃহধর্ম কর্মের কোন ধার না ধারেন, (বঙ্গীয় ভগিনীগণ ৷ ক্মা করিবেন) হইলে ভবুও আমরা ভাঁহাদের শিক্ষার অপূৰ্ণতা মুক্তকঠে ঘোষণা কুষ্ঠিত হইব না। গৃহকর্মে স্থ্রশিক্ষিতা না হইলে গৃহধর্ম পালন করা বড়ই কঠিন। স্থতরাং শৈশব হইতেই হিন্দু-নারীগণের ঈশ্বর ভক্তির সহিত সুনীতি ও গৃহকার্যা শিক্ষা করা উচত। হিন্দু নারী যে কোন সৎকার্য্যের অনুষ্ঠান করিবেন, তাহা ঈশ্বরকে সমর্পণ করিবেন। ঈশ-্রের প্রী**তি সাধনার্থে তিনি** গাহ[্]ভ্যধর্ম্মে রত এই কথাটা স্মরণে রাখিবেন, তাহা হইলে তিনি সংগারের কঠোর কর্জবা-গুলিও পালন করিয়া ন্যায় পথে বিচরণ করিতে পারিবেন। কর্ত্তব্য কার্যাগুলি অতি নীরস হইলেও উহা ঈশ্বরেচ্ছা মনে করিয়া উৎসাহের সহিত সম্পন্ন 'कता तमनीत कर्खरा। এই और १ इस्त ७ কোমলজদ্যা রমণীগণ ঈশ্বরকে স্মরণ

शृक्षक श्रामारा वन আনয়ন করিয়া কর্ত্তব্যের উর্বার ভূমিতে বিচরণ করিতে সক্ষম হইবেন। আমার অন্তর্গতের ও বহিজু গতের কার্য্য গুলি ঈশ্বর সমস্তই দেখিতে পাইতেছেন. সর্বদ। এইরূপ ভাবথাকিলে, অন্যায় কার্য্য করিতে কোন মতে লোকের শাহদ হইতে পারে না (অবশ্যই বিশ্বাসী ঈশ্বর ভক্ত ব্যক্তি গণের)। গাহ স্থাধর্ম পালন করিতে হইলে আপনাকে উত্তমক্রপে গঠন কবা আবশ্যক, আত্মগঠন না করিলে এই ধর্ম উত্তমরূপে আচরিত হইতে পারেনা। मर्त्रा मः राजिस हरेश क्लाय, व्यालमा, বিলাসিতা, অসহিষ্ণতা ও স্বার্থপরতা পরিহার করিবে। লেখা পড়া শিক্ষাদারা মনকে সমুশ্রত করিবে, সংসারের আয় ব্যয় ও অন্যান্য হিসাব রাখিয়া কার্য্য করা, বালক বালিকাদিগকে পাঠাভ্যাস করানও ইহাতে চলিতে পারে, স্বতরাং লেখা পড়া ও শিল্প কাৰ্য্যাদি শিক্ষা করিলে অনেক সময় নিজের গুসংসারের উপকার হইতে পারে। যেমন ইচ্ছানা থাকিলেও কঠোর কর্ত্তব্য গুলি পালন করা উচিত, তেমনি সেই ইচ্ছাকেও বিবেক ছারা সৎপথে পরিচালিত করা নিতান্ত কর্ত্ব্য। মনের অসৎ প্রবৃত্তি গুলি উন্ম লিত না করিতে পারিলে আপ-নাকে বশে আনিরাছ মনে করিও না, কারণ মনের অসৎ প্রবৃত্তি নিচঃ ছিড পাইলেই কার্য্যের সহিত যোগ দিতে ছাড়িবে না। সর্বভৃতে দয়া করাই

ধর্ম্ম; দর্ব্ধ জীবের প্রতি দন্তাব রক্ষা
করাই সেহ; দর্ব্ধ জীবের তৃপ্তি সাধন
করাই গাছ স্থান্মের প্রধান অক।
অতিথি অভ্যাগত, পতি পুল্র ও আত্মীর
স্কলনগণের সুথ দাধন কর!ই হিন্দ্রন্দীর গাছ স্থাধর্ম। গৃহে অন্তের অভাব
হইলেও অভিথি অভ্যাগতের প্রতি আদর
যত্ত করা কর্তব্য, কেননা—

"তৃণানি ভূমিকদক্ং ঝক্চতুৰীচ স্থৃত। । এতানাপি সভাং গেহে নোচিছ্দান্তে কদাচন।"

যখন অতিথি অভ্যাগত, পতি পুত্র, কুটুম্ব, পরিজনগণের ভৃপ্তি সাধন করাই রমণীর পাছস্থাধর্ম বলিয়া নির্দিষ্ট হইল, তথন গৃহকৰ্মে বিশেষভঃ পাক কাৰ্যানীতে ভাঁহাকে সুদক্ষা ও নিরলসা হওয়া চাই, নডুবা ক্ষনই তিনি গাৰ্হ-ছ্যুধৰ্ম্ম পালনে সক্ষম হইতে পারিবেন না, কেননা আহার, স্বৃত বচন ও স্বাবহার দারাই সর্কা জীবের ভৃত্তি সাধন হইয়া থাকে। কিন্তু নিজে পাক করিতে না জানিলে বানা করিলে হয়ত আহারে কাহারও তৃপ্তি লাভ নাও ইইতে পারে, সে জন্য পাকের ভারটা রমণীগণ নিজে निष्ठ वहन कविरल छात हु। कान প্রিবারের মধ্যে ঠাকুর বা বারুনদিদির উপুর পাকের ভার দিলে অনেক সময় গাইস্থাধর্মের অসুবিধা ইইয়। থাকে। ঠাকুর বা বামুন দিদি বেতন লইয়া পাক কাণ্য নির্বাহ করিবেন স্বতরাং বেতনটার উপর ষত ষত্ন থাকিবে, রশ্বটীর প্রতি তত্তী ধর থাকা সম্ভব

নহে, কেননা ভাঁহাদের রুষ্ট করার মুখ্য উক্ষেশ্য হউতেছে বেতন পাওয়া। "ঠাকুর বা বাম্নদিদি ভাল রস্ই করেন না" একথা আমেরা আনেক পরিবারের মুখে শুনিয়া থাকি, এবং কোন কোন গৃহিণী সে কারণ বাবুর জন্য নিজে পৃথকু ৰত্মই করিয়া থাকেন, কিছ তাহাতে তাহার গাহ স্থাধর্ম সমাকু পালন कता छत्र ना, कात्रन आमत्रा श्रास्त्री বলিয়াছি যে রমণীগণের গাছ ছাধর্ম পারিবারিক স্থথের জন্য—অতিধি অভ্যা-গত ও কুটুম্বদিগের জন্য। একদিন কোন গৃহত্তের বাটীতে একটা ছ:খিনী রমণী তাহার ক্ষ্ধা-কাতরা বাণিকার জনা এক মৃষ্টি অল প্রার্থনা করায় গৃহিণী "ঠাকুর, ঠাকুর" করিয়া ডাকিতে **থাকিলে** ঠাকুর রমুই ঘর হইতে উত্তর প্রদান গৃহিণী বলিলেন, করিলেন। नालिकाठीत्क छात्रिठी ভाত माख।" ठीकून বলিলেন, ''এখন ভাত কোণা পাৰ, এক জনের মাত্র ভাত আছে, সুতরাং ভাত দেওয়: হইবে না।" গৃহিণী নীরব। আমি গৃহিণীকে জিজাসা করিলাম 'ষদি একজনের ভাত আছে তবে তাহা হইতে এক মুঠা ভাত এই বালিকাটিকে দেওয়। হইল না কেন ? ধাঁহার ভাত ভাহার কম ২ইলে ঠাকুর আবে চারিটী ভাত চড়াইলেও ত পারিতেন।" গৃ**হিণী** 'ঠাকুরকে তাহা, বলিতে বলিলেন নানার সাহস হয় না, অতিথি **অ**ত্যাং পতের ভাত রাধিতে বলিলে, ঠাকুর

बलन य "आयात है होका বেতনে এত গুলি লোকের ভাত গাঁধাই ঠকা, ভাছাতে আবার উপরি লোকের ভাত রাধিতে হইলে এ কার্যা আমাকে ভ্যাপ করিতে হইবে।" এখন একবার ভাবিয়া দেখিলে বুঝা যাইবে যে গহিণী যদি নিজে ভাল রস্মই করিতে জানি-তেন ওনিজে রম্মই করিতেন, তাহা হইলে ভাঁধার পতি পুত্র খণ্ডর খাণ্ডড়ীও অন্যান্য **সাখী**য় পরিজনগণকে মন্দ রালা থাইতে হইত না; হুঃখিনী বালিকাটীও একমুষ্টি **শর** ভিকাকরিতে আসিয়া হতাশচিত্তে তাঁহার থারা হটতে ফিরিয়া যাইত না। একারণে রস্থই কার্য্যের ভার গৃহিণী নিজে नहेरन वर्ष्ट्रे स्वर्थत इत । अथन २०, छाका বৈভনের কেরাণী যিনি ভাঁহার জীরও একটা রম্ভয়ে নহিলে চলে না, কিন্ত शिमु भिश्ना महासूख्या (जोननी तनवी সমাজী হইয়াও পাক কার্য্যে স্থনিপুণা **ছিলেন এবং পাক কার্য্যকে তিনি নীচ**কার্য্য मान ना कतिया याज्य ७ छे० माह्य **সহিত সম্পন্ন** করিতেন। কথিত আছে अध्यन द्योननी सिवी आशंत्र ना कति-ভেন, ততকৰ গৃহের অন্ন ব্যঞ্জন অক্ষয় শাকিত। আমরা সুল বৃদ্ধিতে ইহাতে ভাষার মিতব্যয়িতা ও সর্বাশেষে আহার করা এই তাৎপর্যটী গ্রহণ করিতে পারি, अवी पाशांत्र निर्मित्रे मगत्र मध्य কোন অভ্যাগত আদিলে তাহার নিজের শা ওলি তাঁথাকে व्यक्तान इक्तिया भूकेलीय अध्ये कतिएकन ध्वर जादाद्वर

নির্দিষ্ট সময় অতীত হইয়া গেলে নিজে আহার করিতেম ও তাঁহার আহারের পর আর অল বাঞ্জন থাকিত না। বনে কালেও ফ্রোপদী উক্তরূপে অবস্থান ফুল্র গৃহধর্ম পালন করিয়াছেন, বন-বাসী পাণ্ডবালয়ে তুর্কাসার স্থিয়ে ভোজনের বিষয় গিন্দু জী পুরুষ মাতেই আছেন সুতরাং তাহা বলা **অবগ**ত মহাভারত পাঠে আরও জানা বাহিলা। यात्र (य हेन्स व्याद्ध व्यवज्ञान कारण यिष्ठ कू छनधाती यूवा ऋम्भव ব্তনে উপাদের খাদ্যাদি প্রস্তুত করিত. কিফ ডৌপদী দেবী তথনও সকলেয় আহারাদির পর্যাবেক্ষণ করিয়া সর্বন্দেষে আহার কবিতেন। আমাদের পূর্বোক্ত গৃহিণীটা যদি বাবুব সহিত দশটার সমর আহার না করিতেন, তাহাহইলে ঐ ছাখিনী বালিকাকে নিজের ভক্ষ্য অন্ন হইতেও কিছু অন্ন দিতে পারিতেন। ধিক সামাদের বিলাসিতায়-ধিক আমা-দের সুখে—ততোধিক ধিক এখনকার ইংরেজ অফুকারী বাবুদের; ভাঁহারা यक भारतम है:रत्राक्षत्र ७१७नि जार्श করিয়া দোষগুলির অফুকরণ করিয়া সাছেৰ হউন, কিন্ত "ল্লিয়ঃ গেহেবুন বিশেষোহন্তি কক্তন" मचानष्टेक आर्वा अविधन आमारमञ्ज (श छ । १ जा का किया किया किया किया है । দেই গুৰের মাথ। কে বাবুরা থাইতে विश्वाद्यन, देशहे स्वामात्त्र हृश्य । (ক্ৰমণ:)

বামাবোধিনী পত্রিকা।

BAMABODHINI PATRIKA. "कन्याप्यवं पालनीया शिक्षकीयातियवतः।"

কন্তাকে পালন করিবেক ও যত্নের সহিত শিক্ষা দিবেক।

७६५ जरशा

অগ্রহায়ণ ১০০১—ডিসেম্বর ১৮৯৪।

ৎম ক**র।** ৩য় ভাগ।

সাময়িক প্রসঙ্গ।

কুক্সাবাই—বোশ্বাই-খ্যাত কুক্সা-বাই স্কটলণ্ডের মেডিকাল কলেজ হইতে ডিপ্লোমা পাইরা এম ডি উপাধির জন্য বেলজিন্তম বাইডেছেন। ইনি বোশ্বাই-রেই চিকিৎসারক্ত করিবেন।

কনত্রেস—মালানী বড় দিনের
সময় মাল্রাক্স নগরে কনপ্রেসের দশম
অবিবেশন হইবে। পালেনিটের সভা
মেঃ ক্মালব্রেড ওয়ের সভাপতি মনোনীত
হইরাছেন। ছই হাজার টাকা দিয়া
এক প্রকাণ্ড খান ভাড়া লগ্ড্রা ছইরাছে,
তথার সভামণ্ডপ নির্মিত ছইবে। মাল্রাজ্ন
প্রেসের স্মাধারণ কন্ত্রেসের স্মাধারণ কন্ত্রিসের স্মাধারণ কন্ত্রেসের স্মাধারণ কন্ত্রিসের স্মাধারণ কন্ত্রিসের স্মাধারণ কন্ত্রিসের স্মাধারণ কন্ত্রিসের স্মাধারণ

বাবা নানক—পত নবেছরে শিধ ধর্মের সংস্থাপক গ্রন্থ নানকের স্মরণার্থ ৪৫> সাংবংসরিক ছেলা রাওলপিণ্ডীছে হইরাছিল। তাহাতে ব্যবস্থাপক সভার-সভ্য বাবা ক্ষেম সিং এক স্থলর ব্যক্তুতা করিরা শিথদিগের প্রতি অনুবাহের জন্য ইংরাজ প্রথমেন্টকে ধন্যবাদ দিয়াছেন।

দাতব্য—(১) দাক্দনির রাণী
নিজব্যয়ে ৪টা চিকিৎসক নিযুক্ত করিয়াছেন, ভাহা । পীড়িত গরিব লোকদিপকে
দাতব্যে চিকিৎসা করেন। (২) ঘারভাদার
গঙ্গপ্রধাদ বাহাছর উক্ত নগরে এক
দাতব্য চিকিৎসালয়ের জ্বন্য ১২০০০
টাকা দিরাছেন।

অধিকাদী—পৃথিবীতে ৬ অঙ্গুলি-বিশিষ্ট লোকের সংখ্যা ২১ গত এবং সপ্তা-জুলিবিশিষ্ট ৫৩১ জন।

ন্ত্রী-পরীক্ষার্থিনী—বোহাই বিশ্ব-বিদ্যালয়ের প্রবেলিকা পরীক্ষার্থিনীর সংখ্যা ৫৯, তথা গৈ ও৪ জন খাইনি, ২০ জন পারসী এবং ২টী মাত্র হিন্দু। গত বংসারে ৬৪ জন পরীকার্থিনীর মধ্যে ৬৬ জন খ্ইনে, ২০ জন পারসী, ১ জন রিছ দি এবং ৪ জন হিন্দু ছিল।

লেডী ডফারিণ ফণ্ড—আমাদের রাজপোত্রবধূ ইয়র্কের ডচেস ডফারিশ ফণ্ডের বিলাতী শাখার প্রতিপোষিকা
হইতে স্বীকৃত হইয়াছেন। এই কমিটীর
সম্পাদিকা স্বয়ং লেডী ডফারিণ এবং
কুমারী এডিথ হিথারবেগ তাঁহার
সহকালিশী।

বিদেশী রমণী দিগের কার্য্য—
(১) প্রসিদ্ধ ইংরাল রাজনীতিজ্ঞ পিলের পৌত্রী কুমারী
হেনেন পিন পিরারী সাহেবের দৃষ্টান্তে উত্তর হিমসাগর

ভ্রমণে বাত্রা করিয়াছেন। (২) তুরুকের **৩টা** যবন্তী করাসী বিশ্ববিদ্যালরের মেডিকাল উপাধি লাভের জনা : আসিয়াছেন, ইহাঁদের মধ্যে একজন এক পালার কন্যা। (৩) খ্রীমতী চিকা সাকুরাই একজন বিত্রবী জাপান রমণী। ইনি জাপানের সরাপান নিবারণী স্ত্রী সন্তার প্রতিনিধি হইয়া চিকাগো বিশ্ব-প্রদর্শনীতে আসিয়াছিলেন। ইনি টোকিওতে দেশীয় স্ত্রীলোক দিগের প্রথম ইংরাজী শিক্ষালয় হাপন করেন, ভাহাতে তথার স্ত্রীশিক্ষার যুগান্তর হইয়াছে। (৪) রোমের প্রসিদ্ধ অধাপক হমো-নিমের কনা লাবিওলা রোমীয় বিশ্ববিদ্যালয় হইতে ডি এল উপাধি পাইয়াছেন। (৫) লেডী সমারদেট গত বৎসরে ১১৫টা সভা ও ২৭টা সমিতি অধিবেশনের সম্পাদকতা করিয়াছেন, ৮০০০ মাইল ভ্রমণ করি-য়াছেন এবং ২০টী দেশে প্রায় ২লক্ষ লোকের নিকট বক্ত তা করিয়াছেন।

বিগত শতবর্ষে ভারতর্মণীগণের অবস্থা।*

''কনাপ্যেবং পালনীয়া শিক্ষণীয়াভি যতুতঃ।''

বিগত শতাকী উন্নতির শতাক।।
ভারতীয় আর্থ্যগণের রাজত অবসান
হুইলে ভারতের চক্ষে যে এক গাঢ় নিদ্রা
আলিয়াছিল—যে গাঢ় নিদ্রার ফলে
ভারত মৃত কি জীবিত তাহা বুঝিতে
পারা যাইত না, সেই গাঢ় নিদ্রা বিগত
শতাকীতেই ভাঙিয়াছে। আর্থ্য রাজতের পরে ভারতে রাজাও ছিল—হিন্দ্,
তুর্ক, শাঠান, মোগল কত জাতিই রাজত
করিল; ভারতে ধার্মিকও ছিল—চৈতনা
ক্রিক্ট্যানক্ষ, নানক ছিলেন; ভারতে

স্বদেশভক বীরপ্ত ছিল, রাজপুত, মারহাট্টা, শিথ প্রভৃতির কথা কে না
জানে ?—বাঙ্গালাতেও প্রভাপাদিত্য ছিল,
রাজা সীতারাম ছিল, মোহন লাল
ছিল,—ভুধু পুরুষ কেন, সে দিনপ্ত
ঝান্সিতে লক্ষী বাই ছিল; ভারতে
কবিও ছিল—বিদ্যাপতি, জ্বংদেব, জ্ঞানদাস, চণ্ডিদাস, গোবিন্দদাস, মুকুন্দরাম
রামপ্রসাদ, ভারতচন্দ্র ছিল; ভারতের
ধনপ্ত ছিল—ভারতের ধনেই তাজ মহল,
ময়্রাসন হইয়াছিল, ভারতের ধনেই

, बाबारवाधिनीत 🌤 नारबरनदिक भाविरजादिक त्रक्रना -श्रीमजी नान कूनात्री वद्र लिथिछ ।

জগৎ শেঠ, উমিচাদ প্রাধান্য করিয়াছিল; তাই বলিতেছি ভারতের সবই ছিল, কেবল একটা জিনিস ছিল না, সেই একটা জিনিস ছিল না বলিয়াই জামাদের মনে হয়, ভারত এত দিন খুমাইয়াছিল।—ভারতে ছিল না কি?—ছিল সবই, কেবল ভারতীয় সমাজে "সম্পূর্ণতা"ছিল না। যে সমাজে ত্রী পুরুষ উভয় জাতির জীবন স্থানিমাপ্রাপ্ত, নিজ নিজ কর্জব্য পালনে উপযুক্তরূপে গঠিত, জগতে সেই সমাজই সম্পূর্ণ। এই হিসাবে ভারতীয় সমাজ বড়ই অসম্পূর্ণ ছিল; তাই আমরা বলিভেছি, ভারত এতদিন মুমাইয়া ছিল।

আর্য্য ভারতের পরে, গত পূর্কা শতাকী পর্যান্ত ভারত রমণীর জাতীয় উন্নতি কিছুই ছিল না। বাজস্থানে মহাপ্রাণা রমণীরণ জন্ম গ্রহণ করি-য়াছিলেন সত্য, ভারত থুঁজিলে আরও ছুই একট--অহল্যা বাই, ভারা বাই, রাণী ভবানী প্রভৃতি রমণী রছ মিলিড সভা, কিন্তু ভাঁহাদের উন্নতি প্রেণীবিশে-ষের বারাজিনি। খাষর মধোট আবছ ছিল-ভাগকে ভারত মহিলার জাতীয় উন্নতি বলিতে পারি না: উন্নতির পথ সাধার পের জন্য উন্মুক্ত ছিল না। মানব-জীবনের উদ্দেশ্র সর্বাঙ্গীণ উন্নতি, রমণী-জীবনের উদ্দেশ্ত সেই সর্বাঙ্গীণ উন্নতি —একথা আর্ব্যভারতের লোক ভিন্ন এদেশে বড় কেই বুঝিত না। বছ শতা-শীর পরে বিগত শতাশীতে সেই কথা

অনেকে বুকিয়াছে, ঘুমন্ত ভারতের খুম ভাতিয়াছে। সে ঘুম কেমন করিয়া ভাঙ্গিল, সেই কথাই আমাদিগের আলোচ্য। আমরা সর্ক্রিছিদাতা ভগ-বানের চরণে আন্দোৎসর্গ করিয়া আমা-দিগের ক্মুডাদিনি ক্ষুদ্র ক্মতার যত্টুক্ সাধ্য, সেই কাজে প্রবৃত্ত হইলাম। আমার উপরে অন্ত্রহ করিয়া আমার পাঠিকা ভগিনীকে, অনেকগুলা নীর্দ পুরাজন কথা শুনিতেও হইবে।

জগতে প্রায় দকল সভ্য সমাজে দেখা ৰায় যে পুরুষজাতি বছি-র্ভাগ ও খ্রীকাতি অন্তর্ভাগরণে ন্থিত। * শারীরবিভানবিদ অথবা সমাজনীতিজ্ঞ পণ্ডিতেরাও স্ত্রী পুরুষের এইরূপ পার্থক্য অনুমোদন করেন ট এই জন্য পুরুষজাতি ত্রীজাতির রক্ষক ও আভিভাবক স্বরূপ। স্বভরাং পুরুষজাতির উন্নতি না ১ইলে ফ্রীজাতির একরপ অস্তব। সমাজের শীর্ষভাগ রাজা। (১) তাই যে সমাজে রাজা লোক শিক্ষার ও প্রকারণের উল্লভির সহায়, সাধারণ পুরুষগণ সুশিক্ষিত ও উনতচেতা, সেই সমাজেই স্ত্রীজাতির

^{*} প্রীজাতি যে সমাজে অভ্রতাপ ও পুরুষজাতি বহিত্যাগরূপে অবস্থিত, সেই সমাজই প্রকৃত উন্নত সমাজ। যে সমাজে ইহার জনাখা, সভা বলিয়া গণিত হইলেও সে সমাজকে "উন্নত সমাজ" বলা বার না, প্রকৃত পক্ষে তাহা বিকৃত সমাজ।

⁽১) যে দেশে একজন যাক্তি রাজা নহে, সেঁ কেশের রাজশক্তিই রাজা? যানীর।

প্রকৃত উন্নতি হইতে দেখা যায়। ভার-ভীর আইাগণ ও বর্তুমান সমুদর সভ্য-জাতির সামাজিক অবস্থা প্র্যালোচনা ক্ষরিলৈ এ কথার সতাতা অধিকতর শ্রীকৃত হর। আর্ঘ্যিতারতের শাসনকর্তা-দিংগর ইখন লোক শিকা ও জনসাধা-রণের উন্নতি এক প্রধান কর্তব্যরূপে পরিগণিত ছিল, দেশীয় পুরুষগণ অনে-কেই উন্নতচেতা ও স্পিকিত ছিলেন, তথনই ভারতমহিলাদিগের অবস্থা প্রকৃত উন্নত হইয়াছিল। আমরা এখন যেমন বিদেশীয় রমণীগণের উন্নতাবস্থার পরিচয় পাঁইয়া চমৎক্বত হইয়া থাকি, আৰ্ঘ্য ভার-তের মহিলাকুলের উন্নতির বিষয় আলো-টমা করিলেও সেইরপ চমৎকৃত ও আমিশিত ইইতে পারি। উপযুক্তরূপে विका, वृक्षि, खान, धर्मार्कन; नाती-बीरामत উপযোগी सुनिका नाउ वर्शर ষাহাতে রমণী-ছদয়ের স্বাভাষিক শক্তি 😼 ভবি সকল ক্রমশঃ পরিফুট হয়, পবিদ্রতা ও কোমলতা পরিবন্ধিত হয়, সেই সকল স্থিকা লাভ; মাডা পিতার সুকন্যা, ভাতা ভগ্নীর স্বভগ্নী, সামীর क्षार्वा, यंक्रें क्रलंत क्षेत्, भूज कमाति स्याजा, गृहशार्य अगृहिनी, ममास्क्र मार्छ। ও मन्नविक्ति, উপयुक्त कार्वा-(करक श्रुक्रवगरनत स्मका महकाविनी, चारीनिष्ठिष ७ व्यायमःस्य मक्या-ए जुक्न विवन्न मातीकाजित शूर्वाम्रिक পরিচায়ক, তাঁহাদিগের তাহার কিছুরই অভাব ছিল নী। ভারতীর স্থাকা, বিশ্ব

বারা, ভারতীর অনস্থ্যা নৈত্রেরী, ভার-তীর পৌত্মী পার্ন্ধী, ভারতীয় সীতা সাবিক্রী, ভারতীয় শৈব্য। মদালসা, ভার-ভীয় খনা, সীলাবভী প্রভৃতি ইহার প্রকৃষ্ট উদাহরণ। কালক্রংম ভারতবর্ষে ৰখন ধর্মবিপ্লবের সহিত শিক্ষাবিপ্লৰ ও রাষ্ট্র-বিপ্লব ২ইতে লাগিল, সমাজের কর্তৃপক পুরুষগণ ক্রমশঃ অশাসিত-চরিত্র হইতে লাগিলেন, ভারতরম্পীগণের তথ্য ক্রমশ: 'হামতর' হইয়া উঠিল। এইকপে বৌদ্ধার্মের অবসান বৌদ্ধর্মের 'নীরস বৈরাগ্য' ভ্যাগ করিয়া ভারতবাসিগণ ৰথন দলে দলে ভোগ-বিলাসিতার আত্রর গ্রহণ করিতে পাগি-লেন,-বলিতে বুক ফাটিয়া যায়-তখন ভারতমহিলাদিগের আধ্যান্মিক সম্মান গৌরব এতদুর বিনষ্ট ইইয়াছিল যে পুরুষ দিগের অনেকেই তাঁহাদিগকে খেলানা বা বিলাসের জিনিস মাত্র মনে করিতেন। পরবতী সময়ে রাজস্থানের ফাতিয় বংশো-স্তবারমণীগণ অনেকটা অংশিকা, গৌরব ও সম্মান লাভ ক্রিয়াছিলেন বটে, কিন্তু ভারতের অন্যান্য রাজগণ অর্থাৎ নদ वर्भ, (मोर्श) वर्भ, भानवर्भ ७ (मन বংশের দ্বাজগণ ভারতর্মণীদিগের অব-ছার উন্নতির ক্ষন্য যে বিশেষ কোনও চেটা করিয়াছেন, তাহার কিছুই প্রমাণ পাওয়া যায় লা। বিরং মৌর্যবংশীয় রাজহ স্থাপরিতা পণ্ডিভবর চাণক্য, জন-সমাজে সাধারণ নারীচরিত্র অতি স্থপিত ভাবে চিত্রিত করিয়া ভাহাদিগকে অং

দশ্ব করিরা গিয়াছেন; আবার দেন বংশীর রাজা বরাল দেন কোলীন্য অধা প্রথগ্ডন করার, বছবিবাছের বিশুভি হেড়্ বজবাসিনীদিগের অবস্থা অধিকতর শোচনীর হইরা দাঁড়াইরাছে। এইরূপে হিন্দুরাজগণের সমরেই ভারতমহিলা-গণের অবস্থার অবনতি সাধিত হর।

हेहात भरत मूनलमानगरभद्र दाक्छ। মুদলমান রাজ্গণও পর্য্যায়ক্রমে ভারতের সিংহাদন ভোগ দধল করিয়া আসিয়া-किला, किन्न छोटामिश्वत मध्य मिनीय প্রজাগণের স্থশিকা ও রম্ণীগণের উন্ন-তির সহায়তা করিতে ইচ্ছক, এ রক্ম লোক বড় কেছ ছিলেন না; বরং মুদল-মানদিগের শাসন সময়ে ভারতরমণী-मिश्नद 'खरदाथ खथा' अठनिङ इम। মহন্দদ অবরোধ প্রথার প্রবর্তক। কথিত আছে, তিনি নিজে জীদিগের প্রতি স্কাদা সন্দিশ্বমনা ছিলেন, তাই ভাষ্যা-দিলের কাথারও দোষের শান্তিমরূপ 'পর্দা নসীন' করেন। এইজন্য মহম্ম-দের শিষ্য সেবকদিগের মধ্যেও এই व्यथा व्यव्या क्या वाराजा व्याधीन সহিত পরিচিত পুরাণ ইতিহাসের আছেন, তাঁহারা জানেন থে আঘাভারত হুইতে পুরুবনী সমন্ন পুর্যান্ত, ভারতমহিল। প্রণ অন্তঃপুরবাদিনী হইলেও প্রয়োজনাত্র-সারে সভামধ্যবর্ত্তিনী বা রাজপথচারিণীও হইতে পারিতেন। কিন্ত মুসলমানদিগের ছুৱান্তে ভায়তের অনেক ছানেই অবরোধ থবা বন্ধসূত্র হয়; স্ববরোধ প্রথার প্রবর্ত্ত-

নেই হী চরিজ নিভান্ত 'লঘু' বলিয়া সাধারণের বিখাস জব্ম এবং স্ত্রী জাতিয় কুলিকার বিশেষ অন্তরার হর।

এত हिन्न, मूनलगान जावन काल द मकन ट्यांग विनामी वृक्तिवामक मूनन-মানগৰ রাজা বা রাজপুরুষপদ লাভ করিডেন, ভাঁহাদিগের অনেকে এরপ ছবু ভ নরপিশাচ ছিলেন, বে কোনও রূপ ওণবতী মহিলার বিষয় জানিতে পারিলেই ভাঁহাকে, ভাঁহারা আসমাৎ করিবার চেষ্টা করিছেন। এই কারণে ভাৱত মহিলাগণের অভিভাৰকেরা. নিজ নিজ পরিবারভা রমণীগণকে ত্রপ গুণের অক্টাত করিয়ার খিতে চাহিতেন। ইহাতে ভারতমহিলাদিগের অবস্থা বে কিরপ অধঃপতিত হইয়াছিল, চিজা-শীল ব্যক্তিগণ তাহ৷ কতক দুয় বুৰিতে পারেন, সঞ্জেহ নাই।

"বিগত শতাকীতে ভারত মহিলা
গণের অবস্থা"র বিষয় আলোচনা করিতে,
এতকালের পুরাতন ঘটনার উলেপ
করিতে হইল, ইহার তাৎপর্য্য এই যে
উলিখিত ঘটনাবলীই পরবর্তী সময়ে,
মহিলাগণের অংশ। গঠনের মূল। বিগত
শতাকীর প্রা স্তে ভারতমাইলাদিংগর
সাধারণতঃ যে অবস্থা ইয়াছিল, উলিখিত
ঘটনা সমূহও তাহার কারণ স্করণ।

এতত্তির, আমরা পুর্কে বলিয়াছি, যে
সমাজে রাজা লোকশিকার সহংর, ও
সাধারণ পুরুষগণ সুশিকাপ্রাপ্ত ও উন্নতচেতা, দেই স্মাজেই ত্রীজাতির প্রস্তুত

উন্নতি হইয়া থাকে। গত শতানীর প্রারত্তে ভারতবর্ষ ইংরাজরাজের নবা-ধিকত রাজা; ভারতের রাজকীয় কার্যা সকল তথনও সুশৃত্যলরপে চলিতে-हिल ना ; क्लांन उ वत्नाव छ है अथनकात মত "উপযুক্ত" ছিলনা; তাহার উপরে ঠগী, বগাঁ, চোর, ডাকাইত এবং অন্যান্য বিজ্ঞোহীদিগের বডই উপদ্রব ছিল। এই দকল কারণে বুটিষরাজ তথন পর্যান্ত লোক শিক্ষা বিষয়ে মনোযোগ করিতে পারেন নাই। এদিকে, দেশের পুরুষ জাতির সাধারণতঃ উচ্চতর শিক্ষা ছিল না, কারণ এদেশের অনেক পুরুষ আর্য্য ভাষা সংস্কৃত ছাডিয়া আরবী ও পারসী শিক্ষা করিতেন, আধ্যগণের মহতী শিক্ষা গ্রহণ করিতে অনেকেই অশক্ত ছিলেন: আরবী ও পারদী ভাষায় শিক্ষা লাভ করিয়া ভারতীয় হিন্দু জাতির জীবন গঠিত হইত না। বোধ হয় বলা বাছন্য যে, ষে পাশ্চাত্য শিক্ষা এখনকার দিনে মসুষ্যত্ব লাভের উচ্চতর উপায় বলিয়া পরিগণিত, সে পাশ্চাতা শিক্ষা তথ্ন এ দেশে প্রচলিত ছিল না। এই সকল কারণে পুরুষেরা স্ত্রীজাতির জাতীয় অবস্থা উন্নত করিবার জন্যও কোনও চেষ্টা কারতেন না। দিনের পরে দিন যাই-

তেছিল, ভারত রমণী একই অবস্থায় অবস্থিত ছিল; তাহাদের অবস্থার যে কথনও পরিবর্ত্তন হইবে. একথা কেইট জানিত না। তখন পুরুষ জাতির জীবন ষেমন সংজ ভাবে গঠিত হইত, তাঁহাদের পালিতা ও রক্ষিতা স্ত্রীঞাতির জীবনও তদধিক সহজ ভাবে গঠিত হইত। সাধা-রণ জীজাতির অবস্থা আলোচনা করিলে এ বিষয়ে আমরা অনেক দর বুকিতে পারিব, এই জন্য তাঁহাদিপের ব্যক্তিগত অবন্থা, পারিবারিক অবন্থা, এবং সামা-জিক অবস্থা আলোচনা করিতে প্রবৃত্ত হইভেছি। এই থানে বলা আবশ্যক যে এক শতাকীতে চারিযুগ ধরিলে, প্রত্যেক ২৫ বৎসর এক এক যুগ গুণনা করিতে হয়। আমর। ১২০১ সাল হইতে ১২২৫ সাল প্রান্ত প্রথম যুগ, ১২২৬ সাল হইতে ১২৫০ সাল পর্যান্ত দিতীয় যুগ, ১২৫১ সাল হইতে ১২৭৫ সাল প্যান্ত তৃতীয় যুগ, ১২৭৬ সাল হইতে ১৩০ সাল প্র্যান্ত চতুর্যুগ গণনা ক্রিয়া ভারত মহিলাদিগের অবস্থা আলোচনা করিতে প্রবৃত্ত হইলাম। এখলে, প্রথম মুগে ভারতমহিলাগণের যে অবস্থা তাহাই প্রথম আলোচ্য।

(ক্ৰমণঃ)

বিপদে সম্পদ।

বে লীলাখেলা, পুরাবে বর্ণিত আছে, তাহা বাজার বিপদ, কেছ বা সম্পদ কহিয়া

ে দৈতারাজ বলিকে লইয়া বীমনদেবের | বিপদ কি সম্পদ 🤊 ঐ ঘটনাকে কেছ বলি-

থাকেন। উভর পক্ষই সত্যবাদী। কেননা লোকে স্বস্থ কৃতি ও সভাব অনুসারেই লো-কিক ঘটনাবলীর বিচার করিবা থাকেন। বাঁহারা বহিমুখি, লোকিক ভোগস্থই বাঁহাদিগের চরম লক্ষ্য, ভাহাবা ঐ ঘটনাকে বলিরাজার বিপদ মনে করিয়া থাকেন। আরে বাঁহারা প্রনার্থ-প্রায়ণ, অন্তর্মুথ, ভাঁহাদিগের চক্ষে ঐ ঘটনা প্রম সম্পদ। মহারাজ বলি ও তৎ মহিবী প্রমতী বৃন্দা দেবী ঐ ঘটনাকে কি ভাবে গ্রহণ করিয়া-ছেন, ভক্তনাল গ্রন্থ হইতে আমরা ভাহা সংকলন করিলাম; বামাবোধিনীর পাঠক ও পাঠিকাগণ স্ব স্ব প্রকৃতি ও বৃদ্ধি বিবেচনা অনুসারে উহার ভাৎপর্য্য বৃদ্ধিবেন।

মহাভক এীমান থেকাদ মহাশয়ের পৌত এীমান বলি মহারাজ ডাজ্যের সুশাসন, সুশুখলা, দয়া, দাক্ষিণ্য, প্রজা-বাৎসল্য প্রভৃতি গুণগ্রামে ত্রিলোক-বিখ্যাত ও জগতের মধ্যে অদ্বিভীয় धनवी इडेग्राडितन। দেবরাজ ভাহাতে ঈগ্যাকাতর হইয়া বলির ब्राकाओं कोगल हवन कविवाद जना अ ७१वात्मत्र निकि छार्थना क्रतन। দেবগণের চিরসহায় ভগবান, ইঞ্জের প্রার্থনার বশবন্তী হইয়া এক অপূর্বা ভূবন-भावनी लीलांद अवजात्वा कतित्वन। অনাত্যী লীকা (मवकार्य) इल माज, বিস্তার দারা জীব চরিতার্থ করাই ভাহার প্রধান উদ্দেশ্য। বলি ছলিবার मना चरनोकिक बाधनवर्षेक्ररण क्छ्रप পুহে অবভীৰ্ণ হইলেন।

এদিকে বলিরাজা মহাবজ্ঞ জারত করিয়া ভূরি দান করিতেছেন। ব্রাহ্মণরূপী ভগবান বলির যজ্জভূমিছে উপস্থিত হইলেন : জ্রী অক্টের তেঞ্ছ:-স্থ্যালোকও স্থিমিত গেল। বলি মন্ত্রমুগ্ধের ন্যায় চকিত ও চমৎকৃত হইয়া নির্নিমিষলোচনে তাঁছার প্রতি দৃষ্টিপাত করিতে লাগিলেন। এই-क्रां क्रिय्काल का के इहेरल विल প্রকৃতিক হইলেন এবং গলগ্রীকৃতবাসে বামনদেবকে রত্ময় উচ্চাসনে বস ই লেন। অন্তর কুতাঞ্জলিপুটে মৃত্যধুরভাবে কহিতে লাগিলেন, "কি অভিলাবে এবং কোন প্রয়োজন সিদ্ধির উদ্দেশে এ দাসের ভবনে আপনার ওভাগনন হইয়াছে " वामनामव कशिलन. 'আমি কিঞ্চিৎ ভিকালাভের আশায় আসিয়াছি। যদি দানের প্রতিজ্ঞা করেন, তবে ব্যক্ত করি। নচেৎ বুথা বাক্যব্যয়ের প্রারো-জন কি ?" রাজা কহিলেন, "যে অর্থ চাহিবেন, তাহাই দিব।"

বামনের লোকাতীত সৌক্ষয় দর্শনে
তীহাকে লোকাতীত পুরুষ বলিরা
বুঝিতে কাহারই কট হয় না। গুরু
গুক্রাচার্য্য সর্বাশাস্তবেতা পরমযোগী তিনি
অনায়াছেই বুঝিলেন খে, বিষ্ণু ছম্ববেশে
আসিরাছেন। তিনি বলিকে ভৎসনা
করিয়া কহিলেন,—'ভূমি আপন লোকে
আপনার অনিষ্ট করিলে, এ ত মসুধী নহে,
তোমার বিপক্ষের পক্ষ হইয়া স্বরং জগবান্
ভোমার সর্বনাশ করিতে আসিরাছেন।'

"রাজা বলে গোঁসাই বে আপনে কহিলে। इन्नातर्भ विकृ व्याहेला बाह कात्र इस्त ॥ ভবেত ইহার পর ভাগা কি আছয়। यांका हाटक जाका निव त्महे थना हत ॥" রাজা গুরুকে উপরি উক্ত বাকা কছিয়া পুনরায় বট্কে কছিলেন, "আপনি স্পষ্ট করিয়া বলুন, কি ভিক্ষা চাহেন।" বাস্ন-দেব কহিলেন,"আমি রাহ্মণ,এজন্ম আমার পাদ পরিমিত 'ত্রিপাদ' ভূমি ভিক্সা করি।" ৰজমানের পরম হিতৈষী গুরুপুরো-হিছ ভক্রাচার্য্য পুন: পুন: নয়নভঙ্গীদারা রাজাকে প্রতিশ্রন্থি প্রত্যাহার করিতে উপদেশ দিতে লাগিলেন; কিন্তু রাজা তাহা দেখিয়াও দেখিলেন না। বামন দেবকৈ পুন: পুনং কৃত প্রার্থনা পরিহার পূর্দ্ধক ধন-রত্ম প্রাম ঐপর্য্যাদি প্রার্থনা করিতে অন্মরোধ করিতে লাগি-লেন। বামন দেবের একই প্রার্থনা। রাজা শগতাা প্রার্থী বান্ধণের ইচ্ছাতুসারে धिनाम ज्ञि मारन जीवक इहेरलन। রাশার এইরূপ ব্যবহারে ভক্রাচার্য্য **শতিশ**য় কোপাৰিত হইয়া রাজাকে যার-शत मारे शानि पिरनंत । अकाठार्यात त्रांणि ख তির্বার ভুনিয়া হাসিতে হাসিতে,-

'রাজা কহে বিষ্ণু যদি প্রতিগ্রহ করে।
ভাষার জাধিক ভাগ্য কি আছে সংসারে?
মজুবা ও বদি হর তেজন্মী আন্ধা।
প্রতিষ্ঠিত হরে পুনঃ জন্যনা করণ ॥
নিরক্ষের বার সেই অবশঃ প্রনে।
জীয়াকে বরণ পুন্য ধিকার জীবনে॥
ব

ভক্রাচার্য্য অর্থনীতি-বেভুগণের মধ্যে একজন শ্ৰেষ্ঠ পুরুষ। 'গুক্তনীডি' নাৰে অৰ্থশান্ত व्यनगानि श्राहित्व বিষয়িগণের ভাহা অনেক কাজে লাগে। রাজার ভাব দর্শনে গুকাচার্য্য পুনরায় ठाँक छेशलभ निल्म त्य, खार्थब ब्रक्सल মিথ্যা কথা বা অধ্বাচরণে কোন দোষ হয় না, মতএর জামার বাক্য জ্ঞাহ্য कतिरम, किरत ताका खेळा हे हहेरव। গুরুর এই কঠোর অভিসম্পাতে রাজা ও রাণী দৃক্পাতও করিলেন না। বিশেষকঃ রানী বুন্দাবলী দূর হইতে ওক্রাচার্ব্যের ঐ সকল বাক্য প্রবণ করিয়া আনতশয় তুঃখিতা ও কুদ্ধা হইলেন। শত শত দাদী-পরিবৃতা থাকিলেও সহন্তে জলপাত্র শ্ইর। যজ্ঞস্থানে উপস্থিত হ্রমা সহর্ধ-काध्यहरत कहितन,-'মহারাফ জীচরণ শীঘ্র ধৌত কর। শাব্ৰ সমত নিজ মঙ্গল আচর॥ मुनि ठिक्टबब भार्भ य इश इडेक। রাঞ্চা, জ্রী, কর্ম যায়, বরঞ্চ যাউক । অতিকৃশ মুমিবাক্য সব তেয়াগিয়া। বাহা আছে তাহা দেহ সৌচ্চাগ্য মানিয়া॥ এ কেন ভাক্ষের দীমা বাধুর ত্ল ভে। আৰু সে তোমার অগ্রে সংপ্রতি স্থলত। অতএব অতি শীল্প জীচরণ জ্ঞাগে। সসর্পণ কর ধন প্রাণ যাহা মাগে। क्ष वित वस्ताक्ती खन जाता भरता মহারাজ বলিবাজ প্রকালে আমোদে # স্থানি স্দর পদ প্রকাশন করি।

खन द्र धत्रद्र श्रनः छटक बरह शक्ति ।

শ্রী চরণ ধৌত জাল মস্তকে ধরিল।
জানম সক্ষল কৃতকুতার্থ মানিল।
বে চরণ রজঃ শিব অদ্যাপি ধতনে।
মস্তকে ধারণ করি শিব করি মানে।
বারি ঝারি কৃণ ভিন তুলদী লই ধা।
তিপোদ ধরণী দানে উদ্যুক্ত হইলা।"

ব্রাহ্মণ ক অক্ষীকৃত পান করিতে রাজা ও রাণীর এতারশ উদ্যম দেখিল ভক্রাচার্য্য পুন: পুন: নিষেধ করিতে লাগিলেন। কিন্ত গোবিন্দচরণাসক রাজা ও রাণীকোন রূপেই অবভীপিত কাৰ্য্য হইতে নিব্ৰু হইলেন না। তখন ভক্রাচার্য্য উপাগ্রান্তর না দেখিয়া অপিম। নিষ্কির প্রভাবে স্কল্ডম মক্ষিকারপ ধারণ পুর্বাক কারির নলে প্রবেশ করিলেন। ভাহাতে দানের সংকলকালে জল পতিত হওরায় দানের ব্যাঘাত হইতে বামন দেবের ইঞ্চিত মতে রাজা নলমধ্যে এক কুশা প্রবেশ করা-ইলেন। ভাহাতে ওকাচার্য্যের চক্ষু বিদ্ধ হইয়। গেল। তিনি সেই হইতে কাণা। অনন্তর বিধিমতে ত্রিপাদভূমি বামন (मवरक पछ इहेल। धरे घरेनाय প्रजूत তিন্টী কাৰ্য্য সাধিত হইল, দেব কাৰ্য্য-দাধন, বলিকে কুতার্থকরণ এবং ভূবন-পাৰ্মী লীলা বিস্তার।

ত্রিবাদ ভূমি এংণ কালে বামন দেব ত্রিবিক্রম মৃত্তি পরিগ্রহ পূর্কক এক পাদে পৃথিবী, এক পাদে স্বর্গাদি ব্যাপি-নেন; ভূতীয় পাদের উপবৃক্ত স্থান রহিল না। তথন বলিলেন, "বলিরাশ, তুমি প্রতিশ্রুত দানে অসমর্থ হওরার আমার দণ্ডার্হ ইইলে।" তগবানের এই উক্তির পর নাগপাশ বলিকে বন্ধন করিল।

"মহারাজ প্রেমাবেশে আনন্দিত হৈলা। প্রভুর যে গুঢ়াশর কে বুঝিতে পারে। কোন ছলে অনুগ্রহ নিগ্রহ বা কারে ॥ ব্ৰহ্ম। শিব ইন্দ্ৰ আদি যত দেব গণ। নারদ প্রচল্পাদ আদি করয়ে ক্ষরন। विनिदाक कटर किছू चशुर्व कथन। তাহা কিছু কহি গুন কর্ণের শোধন॥ বলিরাদ করে প্রভু দয়ার সাগর। তুনি সে শরণ্য প্রভু জগৎ ভিতর ॥ মুই হেন মৃঢ় পাপী অধ্য অংগাইছ। পর-স্রোহকারী নীচ সতের অভুজা ॥ এ হেন পামর জনে এত রূপা কৈলা। ভজন সাধন কিছু হেতু না গণিলা। ভোমার কুপায় কোনরূপে নহি পাত। প্রক্রানের পৌত্র এক হেতু দেখি মাত্র॥ তোনার আশর প্রভু অতি সে গভীর। বুনিতে আছয়ে কোন জন হেন ধীর। পুরন্দর পক্ষ হয়ে ছলিতে আমারে। তাহারে অনর্থ দিয়া অর্থ দিলা মোরে। (मवद्राक मूर्य हेहा वृक्षित्त मादिना। ক্ষুদ্র অর্থ সাধনে ভোমারে পাঠাইলা ম ভোমা হেন ধন নাহি চিনিল বর্লর। কাঞ্চন বেচিয়া নিল হাতু**ন্ধ্** কম্বর ॥ স্:াধুয় অগ্রাহ রা**জ্য** অনিভ্য অসার। সেই ভুচ্ছ ধন হেভু হারাইল সার 🌡 ভূমিত তুল ভি ধন সারাৎসার বস্তু। না চিনিল মৃঢ় মুক্মতি বস্তু হস্ত #

বড় কুপা কৈলে মোরে মান্না ফাঁস হতে।
মুক্ত করি দিলে নিজ চরপ অমৃতে॥
ব্রহ্মা আদি দেবগণ বলির বচন।
ভানিয়া প্রশংসা করে আনন্দিত মন॥
ইন্দ্র দেব বাক্য শুনি সলক্ষ হইলা।
বিলিয়াকে ধন্য মানি আপনে নিন্দিলা॥"

প্রভূ যদিও বলির চরিত্র দর্শনে
জন্তরে পরিভূই হইলেন, কিন্তু বাহ্যে
নিষ্ঠুরের স্থায় বাক্য কহিলেন। সেই
নিষ্ঠুর বাক্য ছারা বলিরাদ্ধার ভগবদ্ভক্তি অমি পরিভন্ধ কলধোতবং শত
ভণ উজ্জ্বল হইয়া প্রকাশ পাইল। প্রভূ
কহিলেন,—

"হাঁরে রে ক্র্তিত মোর তৃতীয় চবন।
কোথায় রাখিব কহ শীল্প দেহ স্থান ॥
বিল বলে জ্রীচরণ রাখিবার যোগ্য।
জ্ঞামার মন্তক এই স্থান হয় দীর্ঘ ॥
ইহাতে রাখহ পদ-কমল স্থানর।
বাক্যানত হইতে মুই হইন্থ অবসর॥
ভোমার জগৎ এই শরীর ভোমার।
ভোমার চরাণ সঁপিলাম সে নির্দার॥
ভূমি প্রভূ ভূমি বিভূ ভূমি জগরাথ।
বিশেষতঃ হও ভূমি অনাথের নাথ॥
বেই ইচ্ছা কর ভূমি শরণ লইন্থ।
জ্ঞামানিবেদন এবে চরণে করিন্থ॥
বিলির সোভাগ্য কিবা কহনে না যায়।
জ্ঞামান্তল পদ ধরিলা মাধার॥

বলিরাজের এই আপার সৌভাগ্য
দর্শনে "জ্ব জ্বর, ধন্য ধন্য, নমোনমঃ"
শব্দে ত্রিভ্বন মুখরিত হইল। প্রভ্ বলিকে বন্ধনমুক্ত করিয়া আলিজন করিলেন এবং গদ গদ মুহু মধুর স্বরে কহিলেন,—

"তুমি মোর প্রির সামি তোমার বিক্রীত। হইলাম নিত্যবন্ধ প্রাণ সহিত।"

এই বলিয়া পাতালপুরে মণিমন্দিরে বলিকে প্রতিষ্ঠা করিয়া আপনি চির-কালের জ্বন্য বলির স্বামী হইরা রহিলেন। এই "বলিভূমি" কাহার কাহার মতে দক্ষিণ আমেরিকার "বলিভিয়া।" বাহাইউক বেখানে অহৈতুকী ভক্তি, সেই খানেই ভগনানের এইরূপ লীলা। প্ররূপ ভক্তিব্যতিরেকে তংপ্রাপ্তির অন্য উপায় নাই। গীতাতে স্পষ্টাক্ষরেই উক্ত হইয়াছে,—

"মাঞ্চ যোহ বাভিচারেণ জাজিযোগেন সেবতে।
সঞ্গান সমজীতৈতান ব্ৰহ্মভুষামাক্ষতে।
নাহং বেদৈন তিপদা ন দানেন নচেজায়া।
শকা এবখিৰো জাই, দুইবানসি বাং যথা।
জাজুং জাইননায়া শক্ষো অহমেবখিধাহৰ্জ্ন।
জাজুং জাই, চ ভাগেন প্ৰবেই, চ পদ্মপ্ৰা।

বেদাধ্যয়ন, তপস্যা, দান যজ্ঞ ইত্যাদি কিছুই ভগবৎপ্রাপ্তির হেতৃ নহে; কেবল অব্যাভিচারী, অনন্যা বা অহৈতৃকীভক্তি মারাই ভাঁহাকে লাভ করা যায়।

কুমারী ওয়েফন্।

কুমারী আঘিদ্ ওয়েষ্টন্ নাবিকদিগের পরম বন্ধ। পোর্ট্ সমাউথ, ডিভনপোর্ট প্রভৃতি বন্দরে ইহার নাম প্রত্যেক লোকের নিকট পরিচিত; ইনি ধর্ম-প্রচার ও মাদক সেবন নিবারণ রতে প্রায় ২৭ বংশর কাল ব্রতী আছেন। ইহারই যত্নে একজন সামান্য নৌ-দৈনিক নিউইয়র্কের মেডিকেল মিসনের অধ্যক্ষ হইয়াছেন, তাঁহার নাম অর্জ ডোকট। ইহার পর এই ওণবতী রমণীর সাহাযো আরো অনেক হতভাগা সৈনিক স্থাসোভাগ্য ও উরত্জীবনের অধিকারী হইয়াছে। ইনি "Royal Naval Temperance Society." রাজকায় নাবিক মাদক নিবারণী সভার স্প্রিক্তা। এই

সভার শাথা ইংলভেরখনীর অধীনম্ব প্রত্যেক অর্থবণোতে প্রতিষ্ঠিত আছে; "Ashore and Afloat" স্থলে ও অলে নামক মাসিক পত্রিকা এই সভার মুখপাত্র। কুমারী ওয়েষ্টনের এক জীবনসহচরী এই পত্রিকার সম্পাদিকা। গতবর্ধে ইহার চারি লক্ষাধিক খণ্ড প্রচারিত হইরাছে এতান্তির কুমারী ওয়েইন পুরুবদিগের জন্য এবং বালকদিগের জন্য এক একখানি সভন্ম মাসিক পত্রিকা প্রচার করিয়া থাকেন। কুমারী যে সকল নাবিককে মদ চাড়াইয়াছেন, তাহারা মিতাচারিতার আভাত্যি কল জীবনে প্রদর্শন করিতেছে। ইহারা এক এক জন যে কার্যা করিতেছে।

মাতৃভক্তি ও মাতৃ উপাসনায় সন্তানের মুক্তি।

(৩৫৮ সংখ্যা ২০৫ পৃষ্ঠার পর)

 করেন, আর অসংবৃত্তির অনুশীলনেই
মানব অসং কার্য্য করেন। সাধুতা লাভ
করা মন্ত্র্যাপ্তীবনের যে সর্কোচ্চ কর্ত্ত্র্যা,
একথা কে না জানেন? এই সাধুতা
লাভ করিতে হইলে অসংবৃত্তিদিগকে
সংঘত রাগা এবং সংবৃত্তি বা দেববৃত্তিদিগকে সম্প্রদারিত করা মানবের
অবশ্য কর্ত্ত্র্যা। সংবৃত্ত্রের সম্প্রদার শেই
মানবের মৃত্তি লাভ হয়।

ভজি-বৃতি মানবের সর্বপ্রধানা দেব-

বৃত্তি। এই বৃত্তির উদরে মানবের
পশুদ্ধ হয়, এই বৃত্তির বর্জনে মানবের মহ্যাত্ব বিকশিত হয়, এই মৃত্তির
পূর্ণ বিকাশে মানবের দেবত লাভ হয়।
উৎপত্তি, বর্জন ও পূর্ণ বিকাশ, ভক্তির
এই তিন অবস্থা। ইহাকে আমরা প্রথমাবন্ধা, দ্বিতীয় অবস্থা ও তৃতীয় অবস্থা
বলিতেছি এবং হিন্দুশালোক্ত ভক্তি
হইতে এই সকল অবস্থার লক্ষণ সংগ্রহ
করিতেছি, ভরসা করি পাঠক পাঠিকাগণ
ইহাতে বিষয়টী সহজে বৃথিতে পারিবেন।

शिन् भाख वरल।---

"প্রেষমুরাগো ভক্তি:।" (অমরসিংহ)
প্রুনীয়ের প্রতি বে অনুরাগ, তাহাই
ভক্তি। আমরা ইহাকে ভক্তির প্রথম
অবস্থা বলিতেছি। প্রুনীয় ব্যক্তির
উপরে অমুরাগই এই অবস্থার লক্ষণ।
অস্তার "অত্যন্তারুরক্তিরীশ্বরে ভক্তি:।"
(শান্তিল্য সূত্র।)

ঈশরে অতিশয় অয়য়য়গই ভক্তি।
শ্লোকটী ঈশরভক্তি বিষয়ক হইলেও
ভক্তিমাত্রেরই লক্ষণপ্রকাশক। সকল
প্রকার ভক্তিরই দিতীর অবস্থা এই
রক্তম অর্থাং ভক্তিভাজনের প্রতি অতিশর অমুরাগ হইয়া থাকে। অন্যত্র
"বতোশ্চিত্তাব্যনোরৈক্যং ভক্তিযোগ
উদাহতঃ।"

পরমান্ধার সহিত যদারা মনের একতা সাধিত হর, ভাহাই ভক্তি যোগ। ইহাই ভক্তির ভৃতীর অবস্থা। ভক্তিভাজনের সহিত্যসনের একতা সাধনই এ ভক্তির লক্ষণ। ভক্তিভাজন স্বরং জগদীবর হউন বা জন্য কেহ হউন, তাহাতে ভক্তিব কোনও ব্যত্যর হয় না। ভক্তিই বরং ভক্তিভাজন মানবকে দেবতা স্থানীয় করিয়া থাকে।

ভক্তি-বৃত্তির ক্রিয়াকে উপাসনা কহে।
ভক্তিতাব মনে, উপাসনা কার্য্যে। উপাসনা কর্ম-ছানীয়।
চপাসনা কর্ম-ছানীয়, ভক্তি জ্ঞানছানীয়।
উপাসনা যোগে ভক্তিবৃত্তি সম্পূর্ণতা
লাভ করে। ভক্তিবৃত্তির ক্রম বিকাশের
সহিত উপাসনাও ক্রমবিকাশ লাভ করে।
তাহা ক্রমে বলিভেছি।

ভক্তিরত্তি মনুষ্যের সর্বশ্রেষ্ঠ ধর্ম-প্রবৃত্তি। ইহার মধ্যে পার্থিব ভক্তি বিষয়ে মাতৃ-ভক্তিই শ্রেষ্ঠতনা। ভক্তির প্রথম অবস্থা পূজনীয়ের প্রতি অনুরাগ —এই অনুরাগের কারণ পুজনীয়ের শ্ৰেষ্ঠতা। অতএব বয়দের সম্পর্কের শ্রেষ্ঠতা, গুণের শ্রেষ্ঠতা ইত্যাদি শ্রেষ্ঠতাই ভক্তির অবলম্বনীয়। পরকে লেট বলিয়া বিশাস হইলে ভকিব উদয় হয়। ইহাই ভক্তির প্রথম অবসা। ভক্তির প্রথম অবস্থাতেই মানবের আবা-ভিমান থকা ও গুণানুরাগ বিদ্ধিত হইয়া থাকে। সন্তানের পক্ষে মাছাই সংস্:-বের শ্রেষ্ঠতমা, তাই মাতার মাতৃত বুঝিতে পারিলে ভাহার প্রতি ভক্তি হওয়া সম্ভা-নের স্বাভাবিক। এই মাড়-ভক্তির উচ্ছাসে সস্তানের কেবল আত্মাভিমান ধর্বও গুণা-মুরাগ বন্ধিত হয় না; সম্ভানের সর্ব্ধপ্রকার অহকার চুর্হর ও আ্যার স্লাণ সমূহ

পরিবর্ত্তিত হয়। এ জগতে মাজা সন্তানের দেৰতা; সম্ভান মাতার ভুলনার জীবাণু মাত্র; সন্তানের আবার আত্মাভার কি আছে ? সন্থান জানেন ডিনি মাতৃ-শোণিতে গঠিত, মাতৃহত্তে পালিত, এবং মাতৃ-স্নেছে জীবিত। প্রাপ্তবয়সে তাঁহার স্বাস্থ্য, রূপ, বিদ্যা, বৃদ্ধি, সুখ, সম্পত্তি, খ্যাতি, কীর্ত্তি, আত্মীয়. বন্ধু, সবই মিলিতে পারে, কিন্ধ এ সৌভাগোর আধার বে দেহ ও দীবন, তাহা তো মাত-করুণার সঞ্জীবিত বহিবাছে ! নিরাশ্রয় শৈশবে যদি মাতৃ-শ্লেহের এক বিন্দু অভাব হইত, মাতার প্রাণপণ যুত্রে একবিন্দু আফটি হইত, তবে সন্তান কেমনে রক্ষা পাইত • তাই বলিতেছি যে মা'কে মনে করিলেই লোকে আপনার ওজন বুঝিতে পারে—আপনার ক্ষুদ্রত্ব জানিতে পারে। আপনার ক্ষুদ্রত জানিতে পার; মানবের এক মহা সোভাগ্য। কারণ দদীম মানব অসীম সুধ-প্রাথী হইলেই তাহার হাদরে অহতার প্রবেশ করিতে পারে। অহঙ্কার অর্থে কেবল বড় ই নহে, অহস্কারের প্রকৃত অর্থ আপনাকে বিশ্বয়গতের কেন্দ্র করিয়া "আমি আমি" कतिहा (वड़ा'न। ७ दे वक्म व्यव्हाउहे মানবের কুরুতির মূল, ও কুরুত্তিই পাপের মুল। লোভ, ক্রোধ হিংসা, পক্ষপাতিতা, অজিতে জিয়তা, স্বার্থ পরতা প্রভৃতি কুর্ত্তি रहेर्ड फीर्या, दिवान, सम्बा, वाडिवाद, হতা৷ প্ৰভৃতি মহাপাতক ঘটন৷ হইয়৷ থাকে। এই সকল কুবৃত্তির মূলাত্মসনান

করিলে আনা যার যে এক মাত্র অহতাত্তী ইহাদিগের উৎপত্তি দ্বান। এইজন্য শালে লিখিত আছে "নাহস্কারাৎ পরো-রিপু:" আর্থাৎ অহস্কার হইতে প্রবল नक आत नारे! धरे पृष्ठां नकरक বিনি পরাস্ত করিতে চাহেন; তিনি অপ-রাজিতা অভয়া মাতৃদেবীর শর্ণাপন্ন হইবেন !--বে মায়ের নিকটে সম্ভানকে ঘমেও ছ'ইতে পারে না, সেই মায়ের কাচে সভানকে অহকার রাক্ষ্য গিলিবে কি করিয়া ৭ ভাই মাথের কাছে দাঁড়া-ইলে সন্তানের সকল অহন্ধার চূর্বার, হৃদ্য প্ৰকৃত বিনীত হয়। মান**ৰ যতই** ক্মতাপন্ন হউন না কেন, বিশ্বস্তার চকে তিনি হ'ট পদাৰ্থ ব্যতীত অংন্য কিছুই নহেন; আর সন্তান গৌরবাবিত হউন না কেন, তাঁহার মায়ের কাছে তিনি সেই "কোলের ছেলে" সেই আদরের 'বাতুমণি' ব্যতীত অন্য কিছুই নহেন ৷ মহাত্মা জৰ্জ ওয়া-সিংটন যথন আমেরিকার স্বাধীনভার পতাকা উভাইয়া দিয়াছিলেন, যখন ভাঁছার মহতী কীর্ত্তি গগন প্রতিধ্বনিত করি-ভেছিল, যথন অদেশীয়গণ কুতজাচি**তে** প্রাণের প্রাণে সেই কীর্তিমানের পূজা করিভেছিল, তথ্য সকলে বিশ্মিত হইলেও এক ফানের প্রাণে ভয়াসিংটানের "শৈশব" षाशिर ७ हिल, धक स्व न - डिनि দিংটনকে হাতে গড়িয়া "মানুষ"["] করি-য়াছিলেন, অপনার রক্তে বাঁচাইয়া রাখি-য়াছিলেন, তাই এখনও তিনি,

সিংটনের মা, মেরী ওয়াসিংটন, গৌর-ৰাষিত পুত্ৰকে শিশুর মত দেখিতে-ছিলেন !--পুত্রের অনাসুধিক মাকু ইস ভনিয়া সংবাদদাতা মহাস্থা ভি লেফেটকে তিনিই বলিয়াছিলেন, "আমার জর্জি খুব ভাল ছেলে, সে এ বুকম কাজ করিবে তার আর আকর্ কি ?"এরকম কথা সহাত্ত্তির অল্লতা বা স্তানের মহত অবোধ্য বলিয়া নহে — ইহা মাতৃভাবের সহজোজি। मुखानरक रच निन अथम शहिशाहितन, সে দিন সন্তান নিরাশ্রয়, অসহায়। মা'র व्याल (म पिन ठित्रपिन हे व्यागक्रक थारक। ভাই জগতের কাছে তাহার কৃতিৰ অলো-ভিত হটলেও মায়েয় প্রাণে কেবল সন্তা-নম্বই বিদ্যমান! তাই মাতৃভক্ত সন্তানের প্রকৃতি অহঙারশূন্য ও বিনীত হয়। মাতৃভক্ত সন্তান কোনও অবস্থাতেই নিজের সম্ভানত ভূলিতে পারেন না, তাই "আমার জন্য জনং" মনে না ক্ষিয়া "জগতের জন্য আমি' মনে করেন। ইহাই নিরহন্তার ও বিনয়ের প্রকৃত লক্ষণ।

মাড়-ভড়ির প্রথম অবস্থার অথবা মাড়-ভজির উদ্রেক মাত্রে মানবের ক্তভ জঙা-বৃত্তি পরিবর্জিত হয়। কৃতজ্ঞতা বে মহবের পরিচারক একথা বলা বাছল্য; কৃতজ্ঞতার জনা উপকৃত উপ-কারীকে দেবভাবে দেখে; কৃতজ্ঞতার জন্যই মানবের জাতীর ভালুবাসা রক্ষা হয়, কৃতজ্ঞতার জন্যই মানব কুদ্রাদপি

পারে। এসংসারে সম্ভান মাতার নিকটেই मर्कार्यका चनी, जाहे मा'रक मरन कति-লেই সম্ভানের ক্বতজ্ঞতা উছলিত হইতে থাকে।—যে ব্যক্তি অকৃতজ্ঞ, দে মানব কুলের কলক্ষ। গৃহপালিত পশুদিগের মধ্যেও অনেক সময়ে, কৃতজ্ঞতার পরিচয় পাওয়া যায়। অকৃতজ্ঞ যে, সে পশুরও অধম। কিন্তু কুতজ্ঞতা পরীক্ষার সর্কোচ্চ স্থান মাতা। যিনি মাতৃ-ভক্তি করিতে শিথিয়াছেন, তাঁহার হাদরে কুতজ্ঞতা বৃত্তি অবশ্য পরিক্ট হইয়াছে। মাতা **বে** সম্ভানের কি প্রমদেবতা তাহা কু**ড্জ** সন্তান ব্যতীত অপরে বুঝিতে পারে না এবং কুতজ্ঞ সন্থান ব্যতীত কেহ মাতাকে করিতেও পারে না। ভক্তি বলিতেছি মাতৃভক্তির প্রথম অবস্থাতেই সস্তানের কৃতজ্ঞতা-বৃত্তি পরিবর্দ্ধিত হয়, এবং কৃতজ্ঞতার পরিবর্দ্ধনে মান্য-ছাদয়ের মহত সাধিত হয়।

মাতৃ-ভক্তির প্রথম অবস্থায়, সন্তানের দ্বাদ্য যথন অহস্কারের অতীত, বিনীত ও কুতজ্ঞতাপূর্ণ হয়, তথন সন্তান মাতাকে সম্মাননা, মাতৃ-চরণ-বল্দনা, মাতার পদ্ধান প্রহণ, মাতার আদীর্কাদেই উন্নতি-আশা প্রভৃতি কার্য্য করিয়া থাকেন। এই কার্য্য গুলিই প্রথম মাতৃ-উপাদনা। এইরপ মাতৃ-উপাদনা। এইরপ মাতৃ-উপাদনা। এইরপ মাতৃ-উপাদনাতে সন্তানের সন্তানত্ব পরিক্ষুট হয়, পশুরুত্তি সকল সংঘত হয়। মাতৃ-ভক্তি ও মাতৃ-উপাদনার প্রথম অবস্থায় সন্তান এইরপ উন্নতি পর্ণে অগ্রসর হইতে থাকেন।

ইহার পরে ভক্তির দিতীয় অবস্থা। ভক্তির এ অবস্থার লক্ষণ ভক্তিভাজনের ঞ্ঠি অভিশয় অহুৱাগ। মাতৃ-ভক্তির এই অবহায় সন্তানের হৃদয় মাতাতে অধিকতর অফুরক্ত হয়। সন্তান বতই মাতার মহত্ব বুকিতে পারেন, ততই মাভার উপরে ভাঁছার অনুরাগ বিদ্ধিত হয়। এই মাতৃভক্তির প্রবলতায় সম্ভানের সঞ্চরতা লাভ হইয়া থাকে। সহাদয়তার অর্থ হৃদয়ের বিস্তৃতি ও কোমলতা। ইহা মাতৃভক্ত সন্তানগণ সকলেই পাইয়া থাকেন। মাতৃভক্ত সন্তান, খ্যাতনাম। বিদ্যাদাগর মহাশয় হউন আর নগণ্য পেঁচো চাঁড়ালই হউন, সহাদয়তা ভাহাতে আছেই। সহাদয়তামাতৃ-ভক্তির সালা-বিক নিয়ম। এই সহাদয়ত। লাভ মানব-জীবনে বড় লাভ। সশ্বদয়তা হইতেই লোকে মহবের গৌরব বুঝিতে পারে, পর-ক্ষদয়ের তত্ত্ব বুঝিতে পারে; সজ্দয়তা হইতেই লোকে ভালবাসা, দয়া, সংগ্ৰ-ভূতি. ক্ষমা, গুণাসুরাগ প্রভৃতি দলাুণে অভ্যন্ত হইতে পারে। সহাদয়তা উর্বার ক্ষেত্র, এখানে মহুষ্যারের বীজ বপন করিতে পারিলে তাহা নিক্ষল হয় না। সন্থানয় ব্যক্তি কুপ্রবৃত্তিদিগের পরিচা-লনায় যদি মহাপাণী হইয়াও থাকে, তথাপি খুশিকা ও সাধু দৃষ্টান্তথারা তাহাকে সংপ্রে আনা বার। জগাই माधारे महाপाठकी हरेलच निठ्यानम

প্রস্থু তাহাদিগকে নবজীবন দিয়াছিলেন কি করিয়া ? চিন্তা করিয়া দেখিলে স্পষ্ট প্রতীতি হয়—নিত্যানন্দ কুতকার্য্য হইয়া-ছিলেন তাদৃশ মহাপাণীদিণে ০ও হৃদর ছিল বলিয়া। যদি নিত্যানদের মহত তাহারা না বুঝিত, যদি সাধুতা ভাহা-দের ধারণা না ছইত, তবে নিত্যান**লের** সাধ্য কি যে তাহাদিগকে **হরিভক্ত** করেন ! তাই বলিতেছি, মানবের সন্থ-দয়তাই দকল মহত্ত্বের মূল। মাজ্ভ 😉 অফুশীলনে সন্তানের এই সহাদরতা লাভ হয়। সন্তান মাতাকে যতই ভ**ক্তি করিতে** থাকেন, ভজ্জি বৃদ্ধির সম্প্রসারণে ওড়েই अन्य विस्तृष्ठ इटेटि थात्क, माङ्रास्टिक মধুর্তা যভই আখাদন করিতে থাকেন, এই দল্পথতার জন্য মাতৃভক্ত স্তানের মনে মাতৃত্থ কামনা প্ৰবল হয়-মাতাকে মুখী করিতে পারিলেই সন্তান কডার্থ হুইয়া ধাকেন। এইজন্য মাতৃদেবা, মাড়-আজ্ঞা পালন ও মাতার প্রিয় কার্যা করা সন্তানের জীবনব্রত হ**ইয়া থাকে। ভক্তির** এই কাৰ্য্যগুলি মাতৃভক্তির দ্বিতীয় অংশ-স্থার অন্তর্গত উপাদনা বলা খায়। এই মাতৃউপাদনায় অর্থাৎ মাতৃদেবা, মাতৃ-আজ্ঞা পালনাদি হইতে সম্ভানের কর্তব্য পালন, সেবাপরায়ণতা ও আত্মত্যাপ অভ্যাদ হয়। মাতৃউপাদনায় **সভান** মুক্তি পথে অগ্রসন্ন হইতে থাকেন। (ক্ৰমণঃ)

বার্মেসে।

(भीष।

मारमद अथरम चानू अथम ভাক্তি হর; অর্থাৎ থাইবার জন্য গোলআলু পৌষ মাসের প্রথম হইতে আরম্ভ করিতে হয়। প্রথম আলু তোলার পরই গাছগুলিকে ঈষং হেলাইয়া গোড়ায় মাটী ধরাইয়া দিতে হয়। ইহাতে গাছে। বহির্ভাগের কিয়দংশ মাটী চাপা পড়ে। **এই অবস্থা**য় ৩।৪ দিন থাকিলে আলুর ক্ষেত্রে জল দিঞ্ন করিতে হয়। ঐ সিঞ্চনের পর গাছের অপেক্ষাক্রত তেজো-বুদ্ধি হয়। তথন আলু গাছের মূলে এবং মৃত্তিকাবত অংশের প্রত্যেক পত্রকক্ষে আবালু জন্মিতে থাকে। যে সকল আবু পত্রককো জন্মে, তাহা ক্ষুদ্র হয় বটে; কিন্তু ঐ আলু হইতে উৎকৃষ্ট বীজ প্রস্তত হয় তাহাকে দোভাসা বীজ কহে। ইহার মূল্যও অনেক অধিক। প্রতিমণ ১০১ দশ টাকা হইতে কথন কথন টাক। মূল্যেও বিক্রীত হয়। যে বার বিশেষ পোকা ধরিয়া আলুর বীজ নষ্ট হইয়া যার, সে বার ৪০১ টাকা মূল্যেও বীজের মণ বিক্রেয় হইয়া থাকে। তাহা কিরপে প্রস্তুত করিতে হয়, তাহ। পরে বলিতেছি।

আয়াদের দেখে ফদলের বীজ উৎ-পংদন, বীজরক্ষা ও বীজ বিক্য় স্বতন্ত্র ব্যবসায় নহে; কিন্তু ইউরোপ ও আনে- রিকায় উহা একটী স্বতম্ব ও প্রধান ব্যব-দায়। তত্তদেশের কৃষিণান্ত্রিৎ কেরা বিশেষ যতুসহকারে বীজের উৎ-পাদন ও রক্ষা করিয়া থাকেন। বীজের উৎ-কর্ম সম্পাদন বিষয়ে তাঁহার। কিরূপ যুত্ ও অধ্যবসায় প্রকাশ করিয়া থাকেন, তাহা ত্রবণ করিলে আমাদিগকে বিশ্মিত হইতে হয়। বিলাতে 'চিভেলিয়ান' নামে বিখ্যাত এক প্রকার গম আছে, তাহার তুলা উৎকৃষ্ট গম বিলাতে আর নাই। ডাক্তার চিভেলিয়ার ঐ গম বীজের সৃষ্টি করেন। তিনি কোন গমের ক্ষেত্রে একটী মাত্র উৎকৃষ্ট শীষ্পাইয়াছিলেন। শীষের গমগুলি, ক্ষেত্রন্থ অন্য শীষের গম चार्यका दुहर छ भूडे हिन। छाउनाद मारहर के भौगितिक चानिया छेहात शम-छनिक जापन जेम्यादन वपन कर्तन। তাহা হইতে প্রথম বর্ষে ঐরপ উৎকৃষ্ট গম শীষের পরিমাণের শতগুণ অবিক জান্মল। পর বংদর ঐ বীজে তাহার শতগুণ জিলাল। এইরপে কয়েক ব্যব্যাপ ও অধ্যবসায়ে গমের একটা উৎকৃষ্ট জাতি সৃষ্ট হইয়া ডাকোর সাহেবের নামকে চিরস্মরণীয় করিয়া রাখিয়াছে।

প্রায় অন্ধ শতাকী পূর্ব্বে ব্যান্হাম নামক একজন বিলাতীয় কৃষক আপনার আবাদে গম কাটা দেখিতেছিলেন। গম-

ক্তের মধ্যে সর্কাপেকা উচ্চ একটী ীয় ভাঁহার দৃষ্টিপথে পতিত হটল। তিনি সেই শীষ্টী তৎক্ষণাৎ সংগ্ৰহ मूर्कक गृष्ट् नदेश शिलन। বড় বড় ও পরিপুষ্ট গমগুলি একটী ক্ষুম্ব ছানে বপন করিলেন। ভাহাহইতে যে গম জ্বিল, তিনি তাণা বাছাই ক্রিয়া পুনরায় বপন করিলেন। এইরূপে ৩।৪ বৎসরের মধ্যে একখানি ক্ষেত্রের উপ-যুক্ত উৎকৃষ্ট গম বীজ প্রস্ত হইল। ঐ গম অন্যান্য গম অপেক্ষা বড় ৪ ধারাল শ্রা বিশিষ্ট। ঐ শ্রা এর স ধারাল যে, ভাহাতে পাধী বসিতে পারে না। এইরূপে গমের যে জ,তি প্রস্তুত হইরাছে; তাহা পরীক্ষা ধারা উৎকৃষ্ট গুণবিশিষ্ট গন বলিয়া ছিরীকৃত হইয়াছে, এবং তাহাতে পক্ষীর উপদ্রব এককালে কমিয়া গিয়াছে।

আমাদের দেশে বীজের বাছুনি ও তাহার রক্ষা বিষয়ে এককালে বন্ধ নাই, এরপ নহে; তবে তিথিয়ে থেরপ যত্ন ও উদ্যোগ করা আবশ্যক, তাহা হয় না। অথচ কৃষিকার্য্য সহকে ঐ ব্যাপার একটা প্রধান ঘটনা।

পৌৰ মাদে আল্গাছের পত্তককে
বৈ ক্ষুত্র ক্ষুত্র আলু জন্মে, তাহা ষরপ্রকি
রাখা হয়। ফাল্কন মাদের শেব ভাগে
ঐ সকল আলু এবং ম্লদেশে যে সকল
আলু জন্মে, তাহার শেব ভাঙ্গার কালে
অর্থাৎ ফাল্কন মাদের শেব ভাগে ব।
আল মাদের প্রথমে যথন সমস্ত আলু

নিঃশেষ করিয়া তোলা হয়, ভখন মেই আনুর মধ্যে ৰে গুলি ছোট ছোট, দে গুলিকেও বীজের মধ্যে রাখা হয়। বে আংলুগুলি মাটীর বাহিরে পর ককে জন্ম, তাহাই সর্কোংকৃষ্ট নীজ। তাহাকে অনেক চকু থাকে। তাহার রং প্রায় পত্রের ন্যায় হরিৎবর্ণ হয়। বে বীক্সের চকুষত অধিক, ভাহা হইতে ডত বেশী অংক্র নির্গতহয়। ঐ উভয় বিধ বীজা আলু কুষকেরা বেত বা বাঁশের ঝুড়ী পূর্ণ করিয়াযে ঘরে রন্ধন ও আমনাচার হয় না, সে ঘরের আছো: শিক। করিয়া ঝুলাইয়া কিন্তা বাঁশের মাডায় রাথে। এত বত্বে রাখিলেও উহার কতক অংশ শুকাইয়া বা পচিয়া নষ্ট ইইয়া যায়। বাহারা আহারার্থ এককালে কিছু অবিক আৰু সংগ্ৰহ করিয়া রাখেন, ভাঁগারা দেনিয়াছেন যে, বহার শেষ ভাগে সেই অবালুৰ অধিকাংশ হইতে ফল বা অত্র নিৰ্গত হয়। ঐ বীয়া আপুরও ঐয়প ফল বাহির হয়। তাথাতে বী**জাদের** কোন হানি হয় না। কুণকেরা যথা সমধে के वीक जृशिष्ठ आंतर करता গ্লোপনকালে অনেক বীন্দ আনুর ঐ অস্কুর ভাকিয়া যায়। মানীতে রোপনের পর পুনরায় সেই সকে চকু হইতে व्यक्त र हित हत्र। धहे ज्ञाकन वीकाक কুৰকেরা কাড়াবীজ কচে।

আলুর বীজ সম্বন্ধে আর একটা কথা বলিয়াই আলুর বীজের উপদংছার করা হইবে। এদেখের কুষকেরা যে প্রধালীতে

আলুর বীজ প্রস্তুত ও রক্ষা করিয়া থাকেন, আমরা উপরে তাহাই বিবৃত করিলাম। কিন্ধ আলুর বীজ প্রস্তুত করিবার জন্য **एमएमात कृषकरान एय পরিমাণে यञ्च छ** কষ্ট স্বীকার করিয়া থাকে অথবা ঐ নীজ ক্রেয় করিবার জন্য যত অধিক পরিমাণে অর্থ ব্যয় করিতে বাধ্য হয়. তাহা সম্পূর্ণ ভ্রমবিজ্ঞিত বলিলেও षष्ट्राक्ति रग्न ना; काइन थाईवात जना ষে বড় বড় ও পরিপুষ্ট আলু বাজারে বিজ্ঞান হয়, তাহা সুলভ মুল্যে ক্র করিয়া ও তাহাকে ৩।৪ খণ্ডে বিভক্ত করিয়া যথাকালে কেত্রে রোপণ করি-শেই উৎকৃষ্ট বীজের কার্য্য নির্কাহিত হয়। বিহার, আসাম, দার্জিলিং প্রভৃতি ছানের কুষকগণ ঐরপে আলুর আবাদ করিয়া বিশিষ্ট্রপে লাভবান্ হইতেছে। আলু একটা আস্ত রোপণ করা অপেকা কাটিয়া বোপণ ক রায় লাভ আছে। প্রথমত: একটা আলুতে অনেক চক্ষু থাকাতে এককালে অনেক कन वादित रय। के नकल कलात २।8 होत्क विनिष्टेक्तरभ यनवान् कविवाव क्रमा यांकी ममस कलकाल नष्टे कतिए हरा। ইহাতে বীঞ্চাংশে যেমন ক্ষতি, আবাদঃং-শেও তেমনি ক্তি হইয়া থাকে; কারণ ৰে সকল ফল নষ্ট করিতে হয়, তদ্বারা বীক্লের অনেক শক্তি কর হইয়া যায়। দ্বিতীয়তঃ, বীজ আলু ক্টিয়া বোপণ क्रित्न, এक এक पंरा क्रमार्श हकू খাকার, অন্তুর বা ফলও অল্লসংখ্য নির্গত

হয় এবং তাহা নৈস্পিক নিয়মে বিশেষ বলবান হইয়া থাকে। অৱমূল্যে খাই-বার আলু ক্রেয় করিয়া তদ্বারা থে. বীজের কার্য্য নির্বাহ করিবার কথা লিখিত হইল, তাহার সত্যতা সম্বন্ধে এই প্রবন্ধলেথক প্রধান সাক্ষী। তিনি তাঁহার নিজের কৃষিক্ষেত্রে ঐরপে আলু তাহার খণ্ড সকল বীজরপে ব্যবহার করিয়া বিশেষ ফল পাইয়াছেন। অভএব এ দেশে বাঁহারা আলুর চাদ আবাদ করিয়া থাকেন, আমরা ভরসা করি, ভাঁহারা নিঃশন্ধচিত্তে ঐক্লপ বীজ ব্যব-হার করিবেন, ভাহাতে তাঁহাদের কোনও ক্ষতি হইবেনা। অধিকস্ক, আলুর বীজ তৈয়ারি অথবা তাহা ক্রেয় করার ঝঞাট হইতে নিক্ষতি পাইবেন।

কার্জিক মাসের বামাবোধিনীতে
পৌষনাদের কৃষি বিবরণ সংক্রেপে বিবৃত্ত
হইয়াছে। তাহাতে তামাকের পাইট্
করিবার উপদেশ আছে। ঐ পাইট্
কিরপ, এস্থলে তাহা বিবৃত করা যাইবে।

দোর্তাশ মাটীর সমহল ক্ষেত্রে তামাকের চাস হইয়া থাকে। মাদ মাস হইতে
ভাদ্র আখিন পর্যান্ত প্রায় ৮।» মাস
কাল ভূমিতে পলি কিফা বোদ মাটী,
অথবা গোবর, সোরা, লবণ, ভূপপত্রজাত
সার, কিফা নীলের শিটি ইহার যে কোন
২০১টী সার দিয়া অন্বরত চাস ছারা
মাটকে ধূলিবৎ চূর্ণ করিয়া রাথে।
ভাহার পর আখিন কিফা কার্ডিক মাসে
ভামাকের চারা ভূমিতে রেশেশ করেন

ভাষাকের চারা ভূমিতে এরপ ভাবে রোপিত হইয়া থাকে যে, তাহাতে আবশ্যক্ষত ल क्रम চলিতে शीदा । **८** शोषमाटम তামাকের কেত্রে গে'জা স্থাঞ্জি, কোণা কোণি, ও আড়ভাবে নানা প্রেকার লাক্ত দিতে হয় এবং অতি সাবধানে বারম্বার এরূপে ক্ষেত্র নিড়া-ইয়া দিতে হয় যেন তাহাতে একটাও হৃণ ফ্রন্সিডে না পারে। ভামাকের ক্ষেত্রে হত দিন রস থাকে, ততদিন পুন: পুন: লাঙ্গল দিতে হর। তামাকের গাছে ১০।১২টী পত্র হইলেই তাহার অগ্রভাগ এবং নিম্ন দেশস্থ ৩৷৪টা পাতা ভাঙ্গিয়া দিডে হয়। পত্ৰককৈ যে স্কল পত্ৰমুকুল, বা কুত্ম-মুকুল নিৰ্গত হয়, ভাহ, প্ৰতি সপ্তাহে ভান্নিয়া দিতে হয়। খণন ভামা-কের পত্র ও মুকুল ভাঙ্গার কার্য্য চলিতে ধাকে, তাহার দক্ষে দক্ষে পূর্ণেক্তি লাক-লের সীতা অর্থাৎ দাগ ওলি বুজাইয়। সমস্ত ভূমি সমান করিয়া দিতে হয়। তামাক পত্রের বুদ্ধি-সন্তাবনা থাকিতে থাকিতে যদি ভূমির মৃত্তিকা ভূক হইয়া |

ষায় এবং বৃষ্টি হইবার স্ক্রাৰনা না থাকে, তাহা হইলে ক্ষেত্রের স্বস্থা বুরিয়া ২।১ বার জল সিঞ্চন করিতে হয়। পত্তের রং কালো ছইলে এবং পত্তের বৃদ্ধি ন্তৰ বা বহিত হইলে, তখন কিছুমাত্র জলের প্রয়োজন থাকে না। তথন সমস্ত খেত্রে একবার এরপে নিডা-ইয়া দিতে হটবে যেন প্রত্যেক গাছের মূল শিক্ডটী বাদে আর সমন্ত পা**শ** শিক্ত ক্রাটিল ধার। তাহাতে **ভানাকের** পাছে। উত্তম রূপে প্রস্তুত হয়। ইহাকেই ভামাকের পাইট কহে। বর্ষের গ**ভিকে** এই পাইট করিতে কখন অল্লকাল, কখন श्वतिककाल आवनाक दहेशा शास्त्र।

ভাষাকের চাস, পাইট ও ভাষাক প্রস্থাকরণ, এই তিন্টী বিষয়েই অনেক কাৰ্যা এবং কাৰ্য্যগুলি বে**শ জটিল কুটিল।** পাইট ও প্রস্তুতী করণ এই ছুইটী কার্ছ্যে অগ্রহায়ণের শেষ হইতে ফাল্সনের শেষ প্রান্ত আবশাক হয়। এ চুইটা কার্য্যের মধ্যে প্রথমটা পৌষ মালে বলিলাম, ভিতীঃটী মাঘ মাদে বলিব।

রুষের জারের মৃত্যু উপলক্ষে।

धन सान कि हू है ना वरव। कालित कवल रु'एंड दक्षा नारे कान मएड, मकरवहे कालत्र भरीन, -काका अका धनी शृशी मीन।

হয় কত অভিনয় এ সংসার রক্ষালয় বারেক না ভাবে নৃত্মন-ষৰনিকা হইবে পতন। প্রভূত্ব সম্পদ বল 💢 बाবে সং রসাতল

কাল-চর্বণেতে হবে চুর, প্রমাণত রয়েছে প্রচুর। মায়াতে ভড়িত নর নশ্বর যে কলেবর নিরম্ভর হেরিছে নয়নে. ভবু ভোর স্থাধের স্বপনে। এই যে রুষের জার' প্রাবল প্রভাপ যার ष्यक्तिक धत्रनीश्वत्र यिनि । ভেবে দেখ কোথা আজে তিনি গ লক্ষ লক্ষ সেনাগণে থাকিত ঘাহার সনে প্রহরীদরূপ হায় হায় ! সে বীয়ত্ব রহিল কোথায়? সে শরীর ধূলিসাৎ হইল যে অকন্মাৎ বজ্লাত 'জারিণার' * শিরে, কার সাব্য বারে নিয়তিরে ১ শোকেতে মগন সবে চিরদিন নাছি রবে আবার মাতিবে রাজ্যমদে, দেখিয়াও শিখেনা বিপদে। পদের গৌরব করি পরিণাম নাহি সারি অভিযানে স্থীত যেই জন. কেনা ভ্রান্ত ভাষার মতন ? এদশা দেখেও যার অসার যে এ সংসার (श्न ब्लान नाश्य बेनग्र. विक विक विक (म श्रमश्र। বিষয় বাসনানল দহিতেছে অবিরল তবুও চেতনাশুনা স্বে, णिया छान श्रव खात करत १ বড় রিপু-মহাবল কালকুট-হলাহল **शिजाहेट** एःमाज-मित्रा, ে সাধে কিগো হয় দীগুশির।

অধাগতি দিনে দিনে প্রমার্থ চিতা বিনে পাপেতে মলিন সদা মন. করিতেছে কুপথে গমন। জাগাইতে মৃঢ় জীব সাধিতে অশেষ শিব বিধি করেছেন ভগবান. শমন থাকিবে বিছমান.-গুরু হয়ে দিবে শিক্ষা; 'মৃত্যুমদ্রে'লও দীক্ষা উপেका ना कत्र की तशन. কেন—শেষে করিবে ক্রন্দন গ রাজৈখার্য্য পদমান সব হবে তিরোধান ভুরি ভূরি রয়েছে প্রমাণ, না হারাও নিজ পরিতাণ। বিবেক বৈরাগ্য ব্রত পালন কর নিযুত সংসারের অনিত্যত। হেরি, শুভ কাজে নাহি কর দেরি १ লাভ হবে ধর্ম ধন. কর ব্রত উদ্যাপন. আলস্থে না কাটাও সময়, পলে পলে আয়ুহর কর। কালে কি করিবে তার বাসনা নিবেছে যার रहेशा ह दिवाना छेन्य, সেকি মোহে বন্ধ কভু রয় ? শোনে দে বিবেক বাণী দিব্যজ্ঞানে মহাজ্ঞানী महाভाবে मना निमनन, ভেকে গেছে মোহের স্বপন। की नमुक की व रहा नि का जिल्लामान है। মাতোয়ারা নিভ্য মহোৎসবে দীনভাগ্যে সে দিন কি হবে १ কোথা রাজ-সিংহাসন দারাস্থত পরিজন नाम नामी भावित्रम गन. त्रव काँकि मूमिल नम्रन !

* क्रमिद्रात मुखाउँ ''बारू,' नेबाब्दी 'बादिना''

अपर दूरवाज "बाबडेहेठ" विनया विशास ।

পাঁচন ও মুক্টিযোগ।

विष माय।

ছড়ছড়ের মূল, ৮।১০টী গোলমরিচ সহ জলে পিষিয়া সেবন করাইলে দর্প বিষ নাই হয়। ইহা দেবনের কিছুকাল পরে দই ব্যক্তিকে ফটকিরির জল পান করিতে দিবে। যদি ভাহাতে বমি হয়, ভাহা হইলে বিষের হ্লাস হয় নাই বুনিতে হইবে; এবং পুনরায় ঐ মূল প্কাবৎ দেবন করাইতে হইবে। দর্প বিষের ইচা উৎকাই প্রতি-বিষ।

সর্প বা উন্মন্ত শুগালাদিতে দংশন করিলে, তৎক্ষণাৎ যদি অন্ত্রছার। চিনিয়া দষ্ট স্থান হইতে রক্ত শোষণ করা গায়, তাহা হইলে অনেক স্থলেই ঔষধ প্রয়ো-গের আবিশ্যকত। হয় না।

বিশুক মুলতানি বনাত একটুকি কাঁঠালী কলার সহিত ভক্ষণ করিলে, জথবা প্রেতাই কিছুদিন ধুহুরার মূল ২।১ রতি পরিমাণে সেবন করিলে, উন্মন্ত শৃগালে ও কুকুর দংশনজ্বনিত দোষ নিবারণ হয়। কলাইয়ের ডাল, মৎসা ও শাক গাইতে মিষেধ।

আমরুল বাটিয় থাইলে ছুঁচার বিষ বায়। মৌমাছি কামড়ান স্থানে ক্লঞ্চ ভূলদি পত্তের রস ও মধুর লেপ দিলে ব্যাপা নিবারণ হয়।

দঠ স্থানে পুনঃ পুনঃ ভারপিন তৈল

বা পাথবিয়া করলা লাগাইয়া দিলে,
বুন্চিক, ভীমকল, বোলতা ও মৌমাছির
দংশনজনিত জালা সত্তর নির্ত্ত হয়।
কপুরের স্তাণ লইলেও বিবের জালা
নিবারণ হয়। ভিমরল বা বুন্চিক
দংশন স্থানে কাল কচুর জাঠা মাণাইয়া
দিলে, অথবা বকুল বিচি বাটিরা দিলে
তৎক্ষণাৎ জালা নিবারণ হয়।

মাকড়সার গরলে কাঁচকলার **জাটা** প্রস্ত্রহ ৩।৪ বার লাগাইলে ২।৩ দিনে উপকার দর্শে।

কাঁচা হরিদ্রা, হু**গ্লে বাটিরা গাতে** মাগাইলে গ্রল **আ**রোগা হয়।

সর্পদার স্থানে কাইকি উত্তমরূপে স্বিরা দিলে অত্যন্ত উপকার হয়। দই ব্যক্তিকে লঙ্কাপাতা খাওরাইলেও উপকার হয়।

পুনর্বা, প্রিয়ন্ত, টগরবুন্ত, খেতবুহতী,
কুমাণ্ড ও অপরাজিতা, ইহাদের মূল
ললের সহিত বাটিয়া হত মিশাইতে
হইবেক। যে ব্যক্তি দর্প দংশনে অসাড়
হইয়া পড়িয়াছে, ভাহার আঙ্গে লেপন
করিয়া দিলে, সে ব্যক্তি নিশ্চর আরোগ্য
শাত করে। দর্গে দংশন করিবামাত্র
উষ্ণ হত পান করিলে কিলাঃ দংশনের
কিঞ্চিৎ উর্কভাগে তাগা বাঁধিলে জার
বিব বৃদ্ধি পাইতে পারে না।

েকলে কড়ার পাতা হকার জলে বাটিয়া গরলের উপর মর্দন করিলে ভয়-ভর গরল রোগ হইলেও আরোগ্য হয়।

হিলু জলের সহিত গুলিয়া দংশন ছানে লেপন করিলেও বৃশ্চিক বিষ নষ্ট **হয়।**

ী পাপুরিয়া কলিচুণ চিতে সাপে চাট। স্থানে লাগাইয়া দিলে, বিষ উঠিয়া যায়।

খেত করবীর শিক্ত 🗸 আনা, খেত অকাফ্লের শিক্ত 🗸 আনা ইসার মূল ১০ আনা একত্রে বাটিয়া কাঁচা হুগ্নের নহিত মিশাইয়া খাইলে, সাপে কাঁটা আবোগ্য হয়।

খেত অপেরাজিতার মূল ও দে ধানের মূল একতা জলের সহিত পেষণ করিয়া নস্য গ্রহণ করিলে কালদন্ত ব্যক্তিও জীবিত হইরাখাকে।

রাথাল শশার মূল, খেত পুনর্ণবা, কাকুঁড়লতার মূল, তালমূলী অথবা আপা-কের মূল তভুলোদকের (চলুণির) সহিত ভক্ষণ করিলে দর্প বিষ বিনষ্ট হয়।

ভাক্নাদির মূল তাহার রদে পেষণ করিয়া পান করিলে, কালকুট বিষ বিনষ্ট ≷সঃ

অপরাজিতার মূল স্থতের সহিত পান
করিলে চর্মগত বিষ, চুপ্তের সহিত
পান করিলে রক্তগত বিষ, কুড় চুর্ণের
সহিত পান করিলে মাংসগত বিষ,
হরিজার সহিত পান করিলে অহিগত
বিক, কাকোলীর সহিত পান
ক্রিলেড বিষ,

করিলে মজ্জাগত বিষ, এবং চাণ্ডালী (লতা বিশেষ) মূল চূর্ণের সহিত পান করিলে শুক্রগত বিষ নই হয়।

খেত আকলের মূল কিম্বা রক্তচিতার মূল ও ইন্দ্র গোপ কীট একত্র পেষণ করিরা সর্প দংশন ছানে প্রলেপ দিলে উপকার দর্শে।

আফুলা কাঁটা নটে গাছের শিক্ত, বাসি হঁকার জল ও হলুদ একত বাটিয়া গরলে লাগাইলে তিন দিবসে রোগ ভাল হয়।

৪ তোলা প্রমাণ তেঁতুল ও গৃহের ঝুল পুরাতন স্বতের সহিত মিশ্রিত করিরা এক সপ্তাহ লেহ্ন করিলে ইন্দু-রের বিষ নষ্ট করে।

সর্বপ, চ্কুম,তক্র ও ঘ্রত, সমভাবে লইয়া পান করিলে তৎক্ষণাং মুষিক-দংশন-জনিত জালা নিবারণ হইয়া থাকে।

মৃতকুমারীর পতা দৈদ্ধবলবণের সহিত পেষণা করিয়া উত্তপ্ত করত উন্মন্ত কুকুরে দঠ স্থানে বন্ধন করিয়া দিনতার রাথিয়া দিবে, তাহাতে বিষপীড়া নিবা-রণ হয়।

গুড়, তৈল, ও আকলের চ্য় একতা পেষণ করিয়া দংশন স্থানে লেপন করিলে কুঞুর দংশন জন্য বিষপীড়া নিবারণ হয়।

ব্ৰক্ত নটিগার মূল ও তুলসীর মূল, চাউলের অলের সহিত পান করিলে কীট-দংখন জনিত বিষ দূর হয়।

কর্মাবীল, খেড সর্বপ ও ডিল একত্র

পেষণ করিয়া দৃষ্ট স্থানে প্রলেপ দিলে কীট দংশন জনিত দিষ দূর হয়।

নিসবৃক্ষের ও শমীবৃক্ষের ছাল একতে উফ্যোদকের সহিত পেষণ করিয়া দংশন স্থানে প্রাণ্ডেপ দিলে, ব্যাড্রাদির নথ ও দ্সুবিধ নিবারিক হয়। বৈইচ পাছের ছাল অর্কতোলা, তেলাকুচার শিকড় অর্ক তোলা, এক-সঙ্গে বাটিয়া খেপা শিরালে কামড়ান রোগীকে খাওয়াইলে রোগী আরাম হয়।

(ক্ৰমশঃ)

স্থর সাধন প্রণালী।

(७०४ मध्या २०२ शृक्षात भन्न)

আলেয়া—আড়াঠেকা। *
গীত্সার সংগ্রহ। নবীনচন্দ্র কৃত
•গীত ও স্বর্বাপি।

। ১।। 🕂।। ७। ৮ भ भ स मा: बा स भ (ध- म खान (शो- दी, (क- म

* অর্থ শব্দের বিকৃতি আড়। অর্থ খিশব্দের অপক্রণে আড়াই হর, সেই আড়াই হইতে আড়া কইয়াছে। বেখানে ছই মাত্রা ক্রবে প্রবন হইরা পদ বিভাগ। হয়, তথার প্রত্যেক পদের প্রথম মাত্রা ভারে বিভাগ মাত্রার করে। কাওয়ালীর গান আড় করিয়া গাইলে আড়াঠেকার উত্তব হয়, অতএব আড়ারও মাত্রা সমষ্টি কাওয়ালীর নায় ১৬টা হব বা ৮টা দীর্ঘ। মধ্যনানের এক কের মধ্যে আড়া ছব্দের ছই ফের পাওয়া বায়। কাওয়ালীর সহিত চিমে তেতালার বে স্বভ, আড়ার সহিত মধ্যমানেরও সেই সম্বন্ধ। মধ্যমানের মাত্রা সমষ্টি ১৬টা দীর্ঘ কিছা ৩২টা হব বালা। (বী, হু, সা,)। আড়া-ঠেকার ঠেকা বধা,—

वा, छा विन् का विन् विन् जिन् विन् किन् का छिन।

(2714)

| ₹8৮ | | | | বামা | বাধি | নী প | াত্রিকা। | [৫ম | ক-৩য় ভা | গ। —— |
|----------------------------------|-----------------------------------|---|-------------------------------------|--------------------------------------|--|--|---|-----------------------------------|--|-------------------------------------|
| | ম গ | । ১। গ গ রং কা- | | । ৺ * ম হ- ন | <i>৬</i> প ব্রি | গ গ পু- | । •। ঋসা রা-রি | | | - |
| (২য় (৩য় | বার) বার) বার) বার) | । প শ্রো- কো- কি | ১। প স্থা থা ক- কি | f | | ৶ স† য়ে- য়ে- ব মা- | +। ঝ. ছে গি- পা- য়ে- | । সা' ত- দ্বি গল র | সা [.] ন- নি- | াণ সা, য়া, দ্য়, য়েই, |
| (১ম) (২য়) (৩য়) (৪র্থ) | । ধ ব্য- ফু- অন: ক | ১। নি জন ধারি - কার ন্যা | : | । স:" ক- হ- দি- দে- | ; ; | -। ঋ• ব র র- য়ে ভুয়া | । সা বি- ছে ছেন নি- | ৩। নি জ- স- ছা গু | । ধ য়।, , ময়, ই, লে, | |
| । भ वा व- रक- | ১॥ প ন তো- শ- বল | †। ম জা- মার নের দি- | । ম ন- সা- বি- লাম (| ৩। প জ- ধ্য ব্য় তোমা | ।•। ধ য়া, হয়, নাই, ধনে, | স। আ- আ- এ- কু- | ১॥ +। ঋ ঋ ন কো ন ড ম- ন লীন দে | । সা' লে রা ভি- খে | তা । নি ধনি ক- রি ক- রি ধ:- রি ভা- রি | * |

পারিবারিক সঙ্গীত।

সাধুচরিত।

চৈতন্য।

কীৰ্ত্তন!

প্রেমিক সন্নাসী তিনি প্রেমের মহাজন। জাচণ্ডালে নাম সুধা করেন
বিতরণ। (প্রেম রসে বিভোর হরে হে)
ুবলৈছে বীমুধ দিয়া, নামে কচি
জীবে দরা, হই বাছ পদারিরা করে
জানিছন। (ছরি বলে কোল দেররে,

প্রেমে পাগল হয়ে) (ভেলভেদ নাই তাররে, উচ্চ নীচ বলে) নাহি কোন শাত্র বিধি, নাম মন্ত্র মণ যদি, পার হবে ভবনদী নামের গুণ এমন। (নাম যপে তরে গেলরে, মহাপাণী সবে) মধুরভাবে মধুর নব অমুরাগে চিদানক রসপানে সদানক মন। (প্রেক্তিরে বাগির বোগির হে, ভক্ত জ্বীচৈতক্ত)

कां, (बाग।

রাজা রামমোহন রার। বাহার—মধ্যবান ঠেকা।

জানিনে কে ভূলোকে এসেছিলে, হে।

নইলে এততাণ কি একাধারে, মতুষ্যে ছইতে পারে, বিদ্যাতে সর্বতি পুজা কি জম্ম জনমি পারে;—পুরাণে তানি একবার, হয়েছিল বেদউন্ধার, কর্লে তার তম্ব বিস্তার, এ কোন্ অবতারের লীলে।

ছিল জগৎ অম্বকারে, উজ্জল করিলে

ড়ারে, ব্রহ্মনামে ধরাধামে মাতিলে মাতা-ইলে;—হ'লে জ্ঞান কর্মতক, উর্কর কালে মঞ্চ, ধন্যভূমি জগৎ-গুরু, প্রণরি সবে মিলে।

কি হিন্দু কি মুগলমান, কি বৌদ্ধ,
কি এটিন, চরম ধরম তথ বিচারে
ছারাইলে;—ভোমার, নাম রাজা রাম
মোহন রায়, চির দিন রবে ধরায়,
বিলালে জ্ঞান ধন সর্বব্র, পাত্র নাবিচারিলে।

প্রিক্রাম চট্টোপাধ্যায়।

হিন্দু নারীর গাছ স্থ্য ধর্ম।

. (৩৫৮ সংখ্যা-২২৪ পৃষ্ঠার পর)

রমনীলণের দ্বিতীয় কর্তব্য, সংগারের কাৰ্য্যকলাপ ৰাহাতে সুসৃত্ধন হয় ভাষার ব্যবস্থা করা। স্পবস্থা বাঁহার যেরপই হউক না কেন, নারী যদি গৃহ কর্মে মুশিক্ষিতা ও ধর্মপ্রায়ণা হয়েন, তাহা হইলে বন্য কুটীরও গৃহত্ত আলয় হইয়া উঠে এবং সেই कमाहे (वःश्रह्म "म शृहम् পৃহমুচাতে গৃহিণী গৃহমুচ্যতে।" এই বাক্যের সৃষ্টি হইয়া থাকিবে। জিনিব পতাদি সুশৃতাল ও পরিকাররপে वृष्ण करा, यस्न (य किनिय कार्यणाक द्य তখন তাহা ঠিক স্থানে প্রাপ্ত হওয়া, গৃহপ্ৰাঙ্গণ স্পরিষ্ঠ রাখা এবং প্রাতে ছড়াঝাট দেওয়া বাহাতে হয় তাহা করা विराव कावनाक, स्मा ना ममस्य निवम छ ৰাত্ৰির প্ৰস্ৰাব, এ টো ও বালক বালিকা-

গণের মলত্যাগালির স্থান হইতে বে তুর্গক জন্মে, টাট্কা গোময় জলে গুলিয়। প্রাঙ্গণ, আন্তার্কুড় ও পথাদিতে ছড়া দিলে সেই দুৰ্গন্ধ দকল বিনষ্ট হয়, (কিন্তু এখন আর সৃহিণীগণ এ সকল কার্য্যে মনো-যোগ করেন না, ৰাবুদের বাবুগিরির एउँ अक्षः शूरव नानिवास्त्र, छा**रे जीनरन**ह ৰাব্লিরি, বিলাদিতা, দৌধীনতা ও অম-কাত্রতা দর্শন করিলেপ্রাণে এক প্রকার হতাশার ছায়া পড়িগ ক্ষোভ কালিমায় ল্পর কলুষিত এবং জীবনটাকে অবসর ও নিকৎসাহ করিয়া ফেলে।) সময় ঝি এক একটা আলে৷ সকল মন্ত্ৰে निया जिल, भारता मिट्ड विनव ११ हा 'वि! व्याता नित्रा व' अहे हिंदनातु शृहिलीय हवा (हरे। रुख्या छिहिछ नाह, नुका। हरेल चत्त्र चत्त्र व्यक्तीन कात्रा,

तारप्रश्राधिक छैदन्त हैत्रवरक बक्रिक।

গদ্ধক ও ধুনার ধুঁয়া দেওয়া কর্তব্য। গুছে যদি মশক, আভুলা, চামচিকা প্রভৃতি থাকে, তাহা হইলে আলোও ধোঁয়ায় ভাহারা উত্ত্যক্ত হইয়া বাহির হইয়া যার এবং গৃহের দৃষিত বায়ু বিনষ্ট হয়। গৃহে রম্বয়ে ও চাকর চাকরাণী রাথাই দোষের, একথা আমরা আবশাই বলিতেছি না: আপনার ন্যায্য থরচ চালাইয়া আত্মীয় স্ক্রনের ভরণ পোষণে কোনও কষ্ট না দিয়া, অভিথি ও দীন কাঙ্গালীকে তাহাদের প্রার্থিত এক মৃষ্টি জল প্রদান করিয়া, পারেন ত চাকর চাকরাণী ও রপ্রে রাখ্ন, কিন্তু তাহারা শ্ব স্ব কর্ত্রব্যে যদি অবহেলা ও অব্যুক্তের কিনা ফাঁকি দিবার চেষ্টা করে, তাহা हरेल निष्करे गृहकार्यापि कता जाल। অবশ্য অন্যান্য স্ত্রী পরিজনগণ কার্য্যে আপনার সংহায্য করিবেন। ष्मात्र यनि शृहदर्भ भानामाभाषांशी वास কুলাইয়া চাকর চাকরাণী ও রম্থ্যে রানিতে পারেন ও তাহারা আপনার ও পরিজনগণের মনোনীত হয়, **১ইলেও** ব্দিয়া শুইরা তাস খেলিয়া গ্র করিয়া রুখা সময় নষ্ট করা নিতান্ত অনু-চিত। বডি, কামীজ, সেগীজ, কন্ফটার তোয়ালে, গামোছা, দোপাটা, বিভানার চাদর, কার্পেটের জুতা, লেপ, ভোষক গদি, উপাধান ও তাহার আবরণ এবং হেলেদের পোৰাক প্রভৃতি প্রস্তুত করা निका क त्रिया (मनाहेरवद कन, श्रुष्ठि छ **টাটা হারা প্রস্তুত ক**িলে সংসারের

प्रात्मक श्वा वाहिया यात्र । जेश्वत ना व क्रन्, রমণী বিধবা হইয়া গুরবন্ধায় পড়িলে অথৈর নিতান্ত অভাব হইয়া সেই সময় নানাবিধ শিল্প কার্য্য দারা রমণীগণ সক্তন্দে নিজ জীবিকার উপায় করিতে পারেন, একার্য্য অনিন্দিত ও হিন্দুশাত্রামুমোদিত।^{*} বাঁহারা রম্বয়ে নহিলে জীবন ধারণ করিতে অসমর্থ অথবা প্রভৃত অর্থ আছে বলিয়া রন্ধনের কন্ত লইতে অধীকৃত, ভাঁহাদের কর্ত্তব্য যে ভাঁহারা খাদ্য দ্রব্যাদির ভবাবধান বিড়ালে থা ওয়া, शेख्या, + काटक ठीक्तान, मञ्घान्ना ঘরে অধিকক্ষণ আল্গা থাকা, খাদ্যের ভাপ বাহির হইতে না পারিয়া ঢাকুনি ঘামিয়া পড়া জ্বিনিষ, ডেয়ো পিপীলিকা লাগা ও অপরিষার খাদ্য কি আস্মীয় পরিবার, কি স্কতিথি, কি চাকর চাকরাণী কাহাকেও থাইতে দেওয়া উচিত নহে। বিশুক জল ও বায়ু মহুহ্যের জীবনের ও স্বাস্থ্যের বিশেষ প্রয়োজনীয়, স্থতরাং ব্যবহারের জলটা যাহাতে স্থপরিস্কৃত হয়, তাহার চেঠা করা বিশেষ আবশ্যক। জল বিশুদ্ধ করার কয়েকটা দহজ উপায় আছে। (১) উচ্চ ছালে পরিকার গামলা বা জালা পাতিয়া রাখিলে যে বৃষ্টির জল

 [&]quot;বিধার প্রোবিতে বৃত্তিং জাবেলিয়মমান্তিতা।
 প্রোবিতে ত্বিবারের জাবেল্লিটেলরগহিত ।।"

[†] পূর্বে কৃত্র ঘরে গেলে হিন্দুগণ হাঁড়িও বলের কলসী ফেলিয়া দিতেন, কিন্তু অধুনা বিলাভী কৃত্র গুহুছের একটা সধ্যের বস্তু হইলা গাড়াইডাছে।

পতিত হয় তাহা, বিশুদ্ধ জল। 38-भू हि চারিখানি व्यान्तरव কালে পুঁতিয়া ভাষাতে এক খানি কাপড টাঙ্গাইয়া দেই কাপড়ের ঠিক মধ্যন্থলে একটা স্থাডি রাথিয়া দিবে এবং ভাহার नीत डिक्त अक्यानि कन्द्रोकि वा हेलत উপর খডের বিভা পাতিয়া তচপরি কলসী বা পামলা বদাইয়া দিলে বিশুদ্ধ পরিকার জল পাওয়া যায়। কিছু এই জল অধিক দিন রাখিয়া ব্যবহার করা ৰায় না, কারণ অধিক দিন হইলে পোকা ক্রে । জলে প্রথম যথন পোকা ছব্মে তথ্ন সেগুলি এত ক্মৃদ্র যে চক্মুর অগোচর-অণুবীক্ষণ ব্যতীত দেখা যায় না। সকল গৃহত্বের বাড়ীতে অণুবীকণ প্রাপ্ত হওয়। যায় না, কিন্তু তবুও ঐ পোক। দেখিবার একটা সহজ উপায় আছে, সে উপায়টী এই,--নির্বাত বা অল্ল বায়্যুক্ত ভানে একটা পরিকার কাচের গ্রামে এক গ্রান জল ঢালিয়া টেবিলের উপর অধ্বা কোন উচ্চ ও আলোক যুক্ত ভানে রাধিয়া দিলে যুখন कन्छ। त्यम चित्र इहेर्द, त्महे मनम धिन অতি ক্ষুদ্র পদার্থ ঐ জলের উপর নীচে ভাষিত্র ভাষিত্র নডিয়া বেডায়, তাহা হইলে জান। যায় পেক। জলে অনিরাছে। ধদিও ঐ কুদ্র পোক। গুলি জলের ময়লার ন্যায় দেখায়, তথাপি বুকিতে হইবে বে পাত্রন্থ কল স্থির हरेल महना बलाइ मी ह भेड़ा महत्, নীচে উপর মড়িয়া বেড়াইবে কেন?

वर्षन काना गाहेरव रच करल के क्रम (भाका জিমিরাছে তথন মান, পান ও রম্মই कतिवात कना आंत्र तम कल बावशांत कतिरव न। (२) अला कडेकिति मिला জল প্রিকার হয় এবং নিশ্বলা খসিয়া मित्व कन পরিকার ফিণ্টার-ফিন্টার ক্রেয় করিবার শ্ববিধা না হইলে বাটীতে কাঠের বা বাঁশের उत्यास कल किल्हार कदिया लख्या माठेटक পারে। কিরুপে ইহাতে জল বিভন্ধ কর। হয়, তাহা বোদ হয় এখন অনেক গৃহস্থই ভানেন স্বতরাং তাহা লেখা বাছলা। গহিণীর লেখা পড়া শিক্ষা করা আবশ্যক এ কথা আমর। পুর্নেষ্ট ধলিয়াছি, অত-এব নভেল নাটকের পরিবর্জে শারীর পালন' 'সাম্বারক্ষা' 'ধাতীশিক্ষা' একং এ শ্রেণীর অন্যান্য পুস্তক গুলি মনো-যোগের সহিত গৃহিণীর পাঠ করিয়া যাহাতে পারিবারিক স্বাস্থ্য রক্ষা হয়. ভাহার ম্থাসাধ্য চেটা করিবেন ও ধারীশিকা লিণিত ঔষধ গুলি আনাইয়া গ্ৰহে রাথিবেন। এইরূপে খাহা কিছ সংসারে আবেশ্যকে লাগে, खादा बटक সংগ্রহ করিবেন এবং ষত্নের সহিত ও জ্প্তি:করণে গৃহকার্য গুলি স্থচারুরূপে সম্পন্ন করিবেন এবং আয়োচিত ব্যয় कति (दन, हिम्मु गाञ्चकात्रभव हेहाहै इमलीत कर्खना निष्या व्हिन कतिशा शिब्रा-ছেন—বথা "দদা প্রস্তীয়া ভাষ্যং গৃহ-क र्पायु नकता। শুনকেতোপমবুরা বালেচাৰজগ্ৰয়া 🛚

वैश्वातं नीटाई यामी तमनीनात्वतं শারীষ্য ও প্রির হওরা কর্তব্য। গার্হস্থার্থ-भागात्मंत्र व्यथान महाइ कामी। ती अ कामी উভन्न भिलामत महाम উक्तिना धर्मा। (मह ৰ্শ্বচ্যার জন্য পবিত্র বিবাহ श्रीवन्तरकः। हिन्दुत्र विवाहं त्य दक्वन माज ধর্মদূলক, তাহা "কুমার সম্ভব কাব্যে সপ্তম দর্গের 'বধুং দ্বিজঃ প্রাহ তবৈৰ-বংসে। বহিবিবাহং প্রতি কর্মসাকী। শিবেন ভজা সহ ধর্মচর্যা কার্যা ত্যা মুক্ত বিচারয়েতি।" এই শ্লোকটা পাঠে জানা ধায় এবং অন্যান্য প্রমাণও আছে কিছ তাহা উদ্বত করিলে প্রবন্ধ র্দ্ধি হইবার সম্ভাবনা। যাহাহউক "নারায়ণাৎ পরং কাজ: ধ্যায়তে সততং সতী। তদাজ্ঞা রহিতং কর্ম নৈব কুর্যাৎ কদাচন ॥" এই কথাটী আরণে রাখিয়া সর্বদা সামীর প্রতি আনা প্রদর্শন করা রমণীর কর্ত্বা। যে গ্ৰহে স্বামী দ্বীতে সভাব নাই, সে গৃহত শাশানহইতেও ভীৰণ, তাহাতে আবার গাহ ছা ধর্ম কিলের । পতি যদি অস-করিতা হয়েন ভাষা হইলে ভাঁছাকে ঘুণা করা কথনও কর্তব্য নহে, তাঁহাকে জগৎ খুঁণা করে কম্বক, কিন্তু স্বামী কোন অব-স্থায় পদ্মীরম্বণার পাত্র নহেন: অসচ্চরিত্র পতিকে সচ্চনিত্র করাই সহধর্মিনীর কর্ত্তব্য. কেন না "গংশার্ভমপিপ্রেতং বিব্যোজক পাতিনয়। ভার্ণ্যেবাবেতি ভর্তারং সততং यो পंडिडंं । " वाोनवादी दथा वाानर বিশাপুদরতে বলাৎ। তথ্যভারমানার-তেনৈৰ সহ **মোদতে ।" স্বামীকে** ভোজ্য.

ভক্ষা, পেয়, সরল ব্যবহার, অকপট প্রাণর ए श्रमिष्टे वहन बोबा मर्लमा गर्छ कति व এবং ঈশ্বরের নিকট ঠোঁচার মকল আকা জ্বো করিবে: সামীর शामीत कः व निर्देश कः व. নিজের হুখ স্বামীর নিক্ষা নিজের নিক্ষা ও স্বামীর মঞ্চল মিজের মঞ্চল বলিষামনে করিবে। নিচ্ছের জন্য পতিকে কখন কায়মনো-বাক্যেও ক্লেশ প্রদান করিবে না: পতি বাহাতে লোকসমাজে নিল্নীয় হয়েন, ভেমন কার্য্যে পতিকে নিযুক্ত করিবে না ; পতির সৎকার্ধ্যের সহকারিণী হইবে; অকারণে সর্বাদ। নিজের নিকট আবছ রাধিয়া তাঁহার সমূচিত চিস্তাণীলতা ও কর্ত্ব্যুপরায়ণাতর ব্যামাত জ্মাইবে না; निष्ठ সর্বাদাই পতিধ্যান, পতি खान, পতি ভালবাস। সদত্বে জাগকত রাখিবে: কিন্তু পতি যাহাতে স্বীয় কর্জব্যগুলি ষড-নের সহিত পালন করিয়া অবসর মত ভোমাকে ভাল বাদেন তাহার চেষ্টা বিখ্যাত শ্ৰন্ধেয় কবি বাব করিবে। রবীক্রনাথ ঠাকুর তাঁহার "রাজা ও রাণী" ভে এবিবরে সুইটা ফ্রী চরিত্র অতি হুস্পর অন্ধিত করিয়াছেন, ঐ দুই স্ত্রী চরিত্র হিন্দু রমণীগণের অবশ্য অত্করণীয়। हेला धकञ्चल कुमात्रक विलाखहन-"আমি দিবানিশি তোমায় ভালবাসিব, ভূমি অবদর মত বাসিও; আমি দারা নিশি ভোমার লাগিয়া হেথার রহিব, ডুমি অবসর মতে আসিও।"ছেথার **ধসিরা**

তবধ্যানে নিমগ্ন থাকিবে। এইরপ পতিভজিই—প্রকৃত পতিভজি, ইহাই প্রকৃত পতিব্রতার ধর্ম। পুরুষের সংসারে অনেক কঠোর কর্তব্য পালন कतिया-नमित्क मृष्टि दाथिया मश्माव পথে विচরণ করিলে, "দশ দশ।" विश्वात জন্য মন্তক পাতিয়া ধাকিলে তবে ড পৌরুষ! কিন্ত তৎপরিবর্তে সর্বাদ। त्रमणीत अकल धतिता विभिन्न शांकित्त. চিন্তাকে স্বাধীনভাবে চারিদিকে বিচরণ कदिए ना मिटन, दिर्द व्यम विस्तृत করিতে না দিলে তিনিত জ্রৈণ নামে আরূও ভাঁহার অভিহিত হইবেনই। মাতাকে পুত্ৰপ্ৰস্বিনী না বলিয়া মাংস-পিত প্রস্বিনী অথবা বন্ধা বলিলেও ক্ষোভ মিটিবে না—শৃতরাং স্বামীকে নাক-কোড়। বলদ না করিয়া তাহার কর্তব্য कार्यात्र महायुखा कत्रा ७ कर्खवा कार्या উৎসাহ দেওয়া রমনীর কর্তব্য। উজ গ্রন্থের নাম্নিক। রাণী স্মিতার সামী व्राक्ता विक्रम (एव दिव्याजा পরবশ হইशा ষ্থন স্বীয় কওঁবা রাজ্যপালন পরি ত্যাপ করিয়া দিবানিশি অস্তঃপুরে অব-স্থান করিডেন, তখন রাণী স্মিত্র। বড়ই ব্যথিতশ্বদয় হইতেন। বাস্তবিক সংদা-রের প্রিয়তম বস্তুতে কোনও খুঁৎ ভাছে कानिएक भादित्म खात्न वक्ष्टे विमना व्यक्ष्ठ हत अवर प्रहे थूंद नियुंद

করিবার অনা আণ বাগ্র হইরা উঠে। তাই ধাণী শুমিতা রাজা বিক্রম দেবলৈ তাঁহার কর্ত্তবা রাষ্ট্য সুপালনের কর্মা স্থারণ করাইরা দিতে লাগিলেন—রাজ্যো অরাজ্ঞকতাজনিত অনাহারী ও অভ্যা-চার প্রণীড়িত প্রস্নাগণের হাহাকার ধ্বনি রাজার কর্ণগোচর করিয়া তাঁছার কর্ত্তব্য রাজ্য স্থালনের কথা পুনঃ পুনঃ খুরণ করাইয়া দিতে লাগিলেন—কিন্ত কিছুডেই কর্ত্তবালনে উদাসীন, বৈরণ রাভার জ্ঞানোদ্য হইল না, বরং উহাতে তিনি বিরক্তি প্রকাশ করিতে লাগিলেন। তখন স্থমিত্রা দেবী মনে ভাবিলেন বে তিনি কিছুদিনের খনা ছানাভরিত না **হটলে রাজা স্বকর্ণে মনোযোগ দিবেন** না। এই ভাবিয়া তিনি গোপনে ছম্বেশৈ পিতভবনে গমন করিলেন। ইহাতে যেন কেহ মনে না করেন যে স্থমিত্রা স্বামীকে ভাল বাদিতেন না. সুমিজার ভালবাদা নাধারণ রম্বীগণের ভালবাসা অপেক্ষা অনেক উচ্চ, শুমিত্রা পত্তি বির্হিতা চট্যা পতির বিরাগভাষন হইবার ভয় না করিয়া স্বামীকে কর্দ্তব্য পথে লইবার জন্য পাগল! এইরূপ কার্যাই প্রকৃত সহধশ্বিণীর কর্ত্তব্য । অত্তর্থ সামীর কর্ত্ত ব্যুপথের কণ্টক হওয়া কথনই সহ-क, রা। ধর্মিনীর উচিত নহে। (ক্ৰমশঃ)

নৃতন সংবাদ।

- ১। অস্ট্রীয়ার সমাজী ভারত ভ্রমণে উ**ক্ত**। ক্রিয়াছেন।
- ই। বোন্সাইরের প্রসিদ্ধ দানশীলা শীমুক্তা বাই দীনবাই বোন্ধেতে একটা টাউনহল ও একটা পুস্তকালয় স্থাপনের জন্য ৭ লক্ষ পঞ্চাশ হাজার টাকা দিতে প্রস্তুত হইয়াছেন। গ্রথনেত বাটা নির্মাণের জন্য জমি দিবেন।
- ০। মহারাণী ভারতেশ্বরী মুসী
 আবহুল কয়িমকে বড়ই ভাদ বাদেন।
 ইহার নিকটেই তিনি হিন্দীভাষা শিক্ষা
 করিয়াছেন। সে দিন মহারাণী যুবরাজকে সঙ্গে করিয়া মুসী আবহুল
 করিমের বাটীতে গিয়া ভাঁহার শ্রীর
 সহিত সাক্ষাৎ করিয়াছিলেন।
- ৪। পৃথিবীতে সাড়ে এগাব কোটী লোক ইংরাজীতে কথা কহিয়া থাকে। পৃথিবীতে প্রতিবৎসর প্রায় ১৮ হা দ:র লোক আত্মহত্যা করে ও দশ লক্ষ অন্ধ আছে।
- ৫। মহারাণী ভিব্টোরিয়া ডিউক

 অব এডিনবর্গ জ্বাইলে রেজেন্টারি

 অবাফিনে থবর দিতে ভূলিয়া যান। ছয়

 সপ্তাহের পর এই ভ্রম ধরা পড়ে, তখন

 অব্যের তারিখ রেজেন্টরি না করার

 জন্য ৭ শিলিঙ ৪ পেন্স ভ্রমিমানা

 ইয়াছিল।
 - ত। ক্লসের মেমাচিন সংরে কেবল পুরুষভূত্রের বস্বাস, একটীও দ্রীণোক

- নাই। পৃথিবীর আর কোনও স্বলে এরপ রমণীশূস নগর নাই।
- ৭। প্রদিক্ষ বৈজ্ঞানিক এডিসন সংহেব বিহ্যতের সাহাধ্যে এমন এক যন্ত্র প্রস্তুত করিয়াছেন যে, তাহাতে মহুয্যের অঙ্গচালনা ঠিক রক্ষিত হইবে। ফনো-গ্রাফে ধেমন মান্থবের কথা ধরিয়া রাখা হয়, এই গল্পে সেইরূপ অঙ্গচালনা ও নৃত্য ধরিয়া রাখা যাইবে। যন্তের নাম হই-য়াছে 'ফিনোটেকোপ।'
- ৮। চিন-জাপানী যুদ্ধে চিনেরা

 সন্ধি স্থাপনে ব্যস্ত হইয়াছে, কিন্তু

 জাপানীরা জয়েয়ালে উন্মন্ত হইয়া

 আরও যুদ্ধ চালাইতে অগ্রসর। সম্প্রতি

 তাহারা মেটিনলিং আক্রমণ করিতে

 গিয়া চিন সৈত কর্ত্ক প্রাভ্ত ও

 বিতাড়িত হইয়াছে।
- ১। খোরতর যুদ্ধের পর জাপানীরা আর্থর বন্দর অধিকার করিয়াছে। চীন দৃত জাপানে সন্ধি প্রস্তাব লইরা যান। জাপানীরা সমুদায় যুদ্ধের বায় ছাড়া প্রায় শতকোটী মুদা চাহিতেছে
- ১০। জাপানের নারীগণ রণোৎসাহে উন্মন্ত হইয়ছে। এক দল জীলোক
 জাপান সমাট মিকাডোর নিকট চিনের
 বিরুদ্ধে যুদ্ধ করিবার প্রার্থিনী হয়।
 স্মাট তা্হাদিগকে স স্তুনা করিবা আহত
 ঘোদ্ধাদিগের শুক্রাবা করিতে পরামর্শ
 দিয়াছেন।

১১। রাজকুমারী আলিক্সের (আলেকজাল্লা কিওডোভ্না) সহিত নব কশীর
সমাট্ নিকোলাসের ওভবিবাহ শীত
প্রাসাদের নিভূত ধর্মনিদরে বিনাড়ম্বরে
সম্পন্ন হইয়াছে। সমাট এই ওভাম্নগ্রানের মারণার্থ এক ছোসণা পত্র প্রচার
করিয়া দীন দরিদ্র ও কারাবাসীদিগের
প্রতিষ্থেষ্ট দয়া প্রদর্শন করিয়াছেন।

১২। রাজপ্রতিনিধি লড এলগিন অমৃতস্রের শিখদিগের সর্গমন্দির দর্শনে গমন করিয়া ১৯০০ টাকা দান করি-য়াছেন।

১৩। জন্মণ ভীন্মদেব প্রিন্স বিসমার্ক বুদ্ধবন্ধসে দ্রীহীন হইয়াছেন।

১৪। ইংলণ্ডেশ্বরী নব জারকে রাজকীয় স্ট গ্রে সৈন্যের কর্ণেল পদ দিয়াছেন। ইংলণ্ডের মুবরাক্সও ক্রসিয়েশ্বর কর্তৃক এইরূপ স্থানিত হইয়াছেন।

১৫। কুমারী কর্ণিলিয়া সোরাবজী একটা পাংসী যুবভী। বিলাত হইতে বাংস্টোর হইয়া বরদারাজ্যে ওকালতী করিবার করুমতি পাইয়াছেন। ইংল্ও ও ভারতের মধ্যে ইনিই সর্ব্বপ্রথম জী-বারিষ্টার।

১৬। দক্ষিণ আমেরিকার পাটাপোনিয়াবাসীরা সর্বাপেকা দীর্যাক্ষতি এবং
লাপলগুবাসীরা সর্বাপেকা কুলাকৃতি।
তথাপি অক্সজাতির মধ্যে এক একটা
অভ্ত মহ্যা দেখা যায়। স্কটলণ্ডের
কনাম নামক এক সাহেব দীর্ঘে ১৯৪ কৃটি,
ভালার মত দার্ঘাকার মহ্যা পৃথিবীতে
দৃষ্টিগোচর হয় না। আর হলগুর ১৮
বনীয় এক মুবতী দীর্ঘে ২০ বুকল মাত্র,
উহার মত কুদাকারও বোধ হয় আর নাই।

১৬। সাবিত্রী লাইত্রেরীর ১৪শ সংবেৎস্ত্রিক অধিবেশন সমারেছে সম্পুদ্ধ হইয়াছে। রাজ্ঞা প্যারীমোহন মুখো-পাধ্যায় সভাপতির কার্যা করেন এবং বাবু হীরেন্দ্রনাথ দত্ত এম এ "বাঙ্গালার অভাব ও অবস্থা" বিষয়ে একটা প্রবন্ধ পাঠ করেন। এই পুস্তকালয়ের দীর্ঘ-জীবন প্রার্থনা করি।

বামা রচনা।

নিরাকাঙ্গী।

ক চাহিব প্রিরতম,
এ মর-জ্বংর মম,
কামনা, বাসনা, সাধ, কিব। অপ্রণ ?—
দাসীরে দঃল বিধি
দিতেছেন যেই নিধি,
স্বরগ মঃতে প্রভো, কি আছে তেমন ?

ব চাতি না, রক্তিম ছবি, উবার বালক রবি, শারদ সন্ধার শানী রক্ত বর্ষ; চাহি না ভারকা কুল, গ্রেকুভির হীরা কুল, চাহিনা, বাসব ধকু, বংবা প্রশা। .9

চাহিনা বাসস্ত বার,
স্থানিয়া ছড়ায়ে বার,
স্থানিয়া ছড়ায়ে বার,
স্থানিয়া ক্রান্ত মবুমাথা গাল;
চাহিনা ক্রান্ত নানি,
দেশার সে হাসি-মাথা, আধেক ব্যান!
৪
চাহিনা ব্যুল-ভলে,

প্রজাপতি দলে দলে,
লাটন পোষাক পরি, বেড়ায় নাচিয়া;
চাহিনা শুনিতে স্থাথ,
শ্যাম ভ্রমরের মুখে,

হসজ বাহারে বীণা উঠিছে বাজিয়া। ৫ চাহিনা সংমক্ত-গা'য় স্বৰ্গকা বহি যায়,

জবীভূত হেম স্রোতঃ স্বর্গ হ'তে আমে, চাহিনা, তাহার পরে দেখি চাক শশধরে !—

ৰঙ্গি সে স্থৰণ শৈলে চলন বাতাসে।

চাহিনা নন্দন বনে দেবের বালিকা সনে, হসিয়া মন্দার-ছায় গাঁথি ফুলমানা;

ষ্ঠিয়া মন্দার-ছায় গাথি ফুলমালা; সেথা মন্দাকিনী-জলে জুট বুল শতদলে,

চাহিনা করিতে খেলা মিলি স্থরবালা !

চাহিনা, করিনা আশ, অলকা অমরা বাস, বক্ষের ভাণ্ডারে যত অমুল্য রতন ; রাজ্য কিবা মহারাক্সা, নাহিক আমার কার্য্য, ধন মান যশে মম কিবা প্রয়োক্সন ?

কি চাহিব, স্বিং/ছে—
ভূষিই মহান, উচ্চ, ভোষাবিদা হাই ভল্ব কি কৰিব আশা- ডুমি দেব, প্রাণারাম, স্মরণে সফল কাম, তব শ্বৃতি কোটা স্বর্গ, অমর-পিপাসা।

৯

যে ক'দিন বেঁচে থাকি,
যেন গো ডোমারে ডাকি,
যোগী যথা যোগীশেরে করে আরাধনা;
দিয়ে শত অঞ্জল,
ভিজায়ে ও পদতল,
মিটাই মনের সাধ, প্রোণের কামনা!

১০
বল তবে প্রিয়তম,
কে স্থান মম সম,
কার ভূমি মতি গতি ধ্যান ও ধারণা ?—
এত স্থাধ ভ'রে হাদি,
কারে দিয়াছেন বিবি,

কে,ও'রাজ্য একেধরী—অনন্যপ্রধানা ! জ্ঞীকাব্যকৃত্বমঞ্চলিরচয়িত্রী।

यर्ग।

2

স্বরগ স্বরগ নাম গুনি স্ক্রিকণ। কোধায় স্বরগ ধাম, স্বরগুকাহার নাম, ভেবেছি করিব স্থামি তাহার বর্ণন।

পুণ্যাত্মা জনের পুণ্যময় হৃদিতল বহু যথা নির্মণ ধর্মনীর সুণীতল, প্লাবিত করিয়া ধরা, সেই স্বর্গ ছল 🛭

বচে যথা নিরন্তর ধর্মের স্থবাস চির দিন যার গুণে, চিরস্থী সর্বজনে, শাভিতে বিধোক সদা ঘাহার আবাস।

সেই সর্গ ধাম ভবে সেই স্বর্গ ধাম, পাপ সঙ্গ পরিহরি চল মন স্বরা করি, প্রিত্র স্বর্গ রাজ্যে লাভ তে বিশ্রাম।

ज्ञिबस्या ज्नती शाम **क्**रा।

'বামাবোধিনী পত্রিকা।

BAMABODHINI PATRIKA. "कन्याय्येवं पासनीया शिक्षसीयातियस्तः।"

क्चांक भागन कतित्वक अयुद्धत महिल भिका मित्वक ।

৩**৬**০ সংখ্যা

(भोर ১००১ - जानू शांवि ১৮৯৫।

৫ম কল্প। ৩য় ভাগ।

সাময়িক প্রসঙ্গ।

রাজধানীর শুভ্যোগ—রাজপ্রতিনিধি লওঁ এলগিন সপরিবারে ও
সদলে প্নরায় কলিকাতায় প্রত্যাপত
হইয়াছেন।ছোট লাটও সদলে আসিয়ান
ছেন। ত্রিপুরা, মহীশুর প্রভৃতি রাজ্যের
রাজারাও এখানে শুভাগমন করিয়া
নগরের শোভা বর্দ্ধন করিয়াছেন।
জয়পুর, যোধপুর, কর্পুরতলা, পত্কোই।
প্রভৃতির মহারাজগণেরও আগমনের
সস্তাবনা।

জাতীয় মহাসভা—বিলাও হইতে পালে মেণ্ট সভা মে: ওয়েব এন, পি এবং ভারতের নানাম্বানীয় প্রতিনিধিগণ মাজাজে উপনীত হইয়াছেন। ওয়েব সাহেব সভাপতির কার্য্য করিবেন, প্রবেধিকার বাদ্যাইয়ে তাঁহার জাঁকাল অভাবনা হইয়াছে।

নারিকেলে মুক্তা—বিলাতের ডাক্তার মরিস বলেন ফিলিপাইন ছীপ-পুঞ্জের নারিকেলের জলে বহুমূল্য মুক্তা জন্মে। সিমুকের ন্যায় নারিকেলও কি স্থাতীনক্ততের জল পান করে ১

কুজতম পক্ষী—বামাবোধনীতে হমিং বা গুণ গুণ পক্ষীর বিবরণ দেওয়া হইয়াছে, ইহা পক্ষিজাতির মধ্যে কুল-ভম। এক একটা ওজনে ১০ আনাও হইয়া থাকে।

মহৎলোকের মৃত্যু—সংগ্রেজথালের প্রসিদ্ধ ধননকর্তা ক ডিনেও
লিসেপ্র ৮৯ বংশর বন্ধদে পরলোক গমন
করিরাছেন। শেব অবস্থায় তাঁহার বড়
হংগ প্রতি সিরাছে। ঈশর তাঁহার
আবার শান্তি বিধান কক্ষন।

होतात क्रिकम्थ-- धरे कृति-

কম্পে শত শত লোকের মৃত্যু, অনেক অটালিকা ভগ এবং অনেক সম্পত্তি নষ্ট হইয়াছে। একটা গিজার উপাসনা হইতেছিল, গৃহটী পড়িয়া গিয়া অধি-কাংশ লোক হত হয়।

চিন জ্ঞাপানী যুদ্ধ—জ্ঞাপানীর। পোর্ট আর্থর হুয়ের পর টাকুবক্জ্ঞা এবং হে : চেং অধিকার করিয়াছে। চিনের। ক্রমাগত হারিতেছে ও হঠিতেছে। চিন্দৃত সন্ধিপ্রস্তাব লইয়া **জাপ**ান সমা-টের নিকট গিয়াছেন।

ভারত চিকিৎসা সভা— গ
২৪ এ ডিদেশ্বর দেউ জেভিয়ার কলেজ
গৃহে ইণ্ডিয়ান মেডিকাল কনপ্রেসের
অধিবেশন হইয়াছিল, নানা দেশ বিদেশ
হইতে প্রতিনিধি ডাক্তার সকল উপস্থিত
হইয়া বক্ততা করিয়াছেন।

আলেকজণ্ডার এবং আফ্রিকার কোন প্রদেশীয় অধিপতি।

আজ কাল সভ্যতার জন্ম অনেকেই পাগল, কিন্তু চৈতন্ত, বুদ্ধ, রামপ্রসাদ **প্রভৃতির ভার ধর্মের পাগল আ**র দেখা যায় না। ধর্ম সভ্যতার ভানমাথান, কপট গান্তীর্য্যপূর্ণ, গণিয়া গণিয়া কথা বলার মধ্যে বড একটা মিশিতে চাহেন না। ধর্ম কেবল লেখনীনি:স্ত বামুখনি:স্ত "দ্যা" "প্রেমের" নিকটও ডিষ্টিতে পারেন তিনি রাজনীতির, সমরনীতির, অর্থনীতির ও সমাজনীতি প্রভৃতির কৃট-তর্কেরও বাধ্য নহেন। ধর্ম নিজে সরল, চাহেন সার্ল্য, ইহার প্রমাণসরপ আছে আমরা একটা সভ্য দিখিজয়ী অধিপতি ও একটা অসভা রণানভিজ্ঞ নপতির রিষয় পাঠিকা **শান্তি**প্রিয় ভগিনীগণকে উপহার দিতেছি।

যে সময় মহাবীর আলেকজাণ্ডার

দিধিজ্বয়ে বহির্গত হইয়াছিলেন, সেই সময়ে তিনি একদিন জয়োল্লাসে তাঁহার বিজয়ী সৈন্যগণের সহিত আফ্রিকার কোনও অসভ্য দেশের মধ্যে উপস্থিত হইলেন। ঐ স্থানবাদী লোকেরা অতিশয় শান্তিপ্রিয় এবং পত্রকুটিরে বাস করিত। ইহারা কথনও যুদ্ধ বা জেতা বিজেতা কাহাকে বলে তাহা জানিত না। আলেকলাগুার দদৈয়ে উপস্থিত হইলে এই দেশবাদীরা ভাঁহাকে সমাদ্রপ্রক্ক রাজার নিকট লইয়া গেল। আফ্রিকা অধিপতি নৃতন **ম**তিথিকে সামরে গ্রহণ করিলেন ও তাঁহাকে উপযুক্ত আসনে উপবেশন করাইলেন; এদিকে অতিথি দংকারের **চ**लिएक ব্রক্ত থাতাদিরও আয়োজন नाजिन। ষ্থাসময়ে আলেকজাণ্ডারের সম্মুখে প্রচুর ধান্তবন্ধ রক্ষিত হইল, ঐ ধান্ত

আর কিছুই নহে, সোণার কটী, ফল ও মাংস ইত্যাদি। ঐরপ অস্তুত থাদ্য-দর্শনে আলেকজাণ্ডার সবিশ্বরে বলিলেন "আপনার দেশে কি স্বর্ণ ভশ্বিত হইয়া থাকে ?"

আফ্রিকার বর্ষররাজ বলিলেন, "আমি তাহাই বিবেচনা করি, কারণ যথন আপনাদের দেশে প্রচুর খাদ্য দ্রব্য আছে, তথন আপনি কিজন্ম এই স্থান্য প্রেদেশে আগমন করিয়াছেন ?"

আন। আপেনার এই স্বর্ণরাশির লোভে আমি এখানে আদি নাই, আপে-নাদের রীতিনীতি জানিবার নিমিত্ত এই মুদুর প্রেদেশে আদিয়াছি।

স্থচতুর আংলকজাতারের বাক্য এবণ করিয়া অধিপতি বলিলেন, "আছে। তাহাই হউক, আপেনার বতদিন ইছে। আমাদের মধ্যে বংশ করুন।"

ইহাঁদের এই সমস্ত কথে প্রক্ষান প্রতিবাদীর বিবাহ দেওল সমাপ্ত হইবার অব্যবহিত পরে তুইটা নগরবাসী বিচারপ্রাণী হইয়া রাজধারে উপস্থিত হইলেন। বাদী বলিলেন, "আমি প্রতিবাদীর নিকট হইতে একখণ্ড ভূমি ক্রেয় করিয়াছি। ঐ জ্মীতে আমি নালা খনন করিতে গিয়া অনেক অর্থ প্রাপ্ত হইয়াছি। ঐ জ্মীতে আমি নালা খনন করিতে গিয়া অনেক অর্থ প্রাপ্ত হইয়াছি। ঐ জ্মীতে আমি লামি কেবল স্থমী থবিদ করিয়াছি মাত্র, ভামি কেবল স্থমী থবিদ করিয়াছি মাত্র, ভামি কেবল স্থমী থবিদ করিয়াছি মাত্র, ভামি চমংক্র জ্মীর প্রাধিকারী ঘিনি প্রতিবাদী, ভাহাকে বিভার জ্মুনার বিনার করাতেও করিতেন ?

তিনি ঐ অর্থ গ্রহণ করিতেছেন না।" প্রতিবাদী বলিলেন, ''আমি ভরদা করি আমার দেশীর ভাড়গণের স্থার আমারও বৃদ্ধিও ধর্মজ্ঞান আছে, আমি বাদীর নিকট জমীর সমুদ্র স্বত্ব বিক্রম্ম করিয়াছি, স্মৃতরাং ঐ অর্থ এখন বাদীর।"

এই দেশের অধিপতিই প্রধান বিচারক। তিনি এই সকল কথা আছুপ্রিক প্রবণ করিলেন। যাহাতে তাঁহার বিচারে বিন্দুমাত্র দোষস্পর্শ না হয়, তিনি সেজন্ম বিশেষ চিতা করিয়া তৎপরে প্রতিবাদীকে বলিলেন, "ভরসা করি আপনারও পুত্র সন্তান আছে।"

প্র। আজাহাঁ।

বিচারক তৎপরে বাদীকে বলিলেন, ''আপনার ক্যা সম্ভান **আছে** ?"

বা। আজা, হা।

অধিপতি বলিলেন "তাছা হ**ইলে** প্রতিবাদীর প্রের সহিত বাদীর কন্সার বিবাহ দেওয়া হউক এবং সেই নব-দম্পতীকে ঐ অর্থ বেভিক্সরূপ প্রদান করা হউক।"

এই ঘটনায় আলেকজাণ্ডারকে আশ্চর্যাবিত এবং বিশ্বয়াবিষ্টের স্থায় দর্শন করিয়া অধিপতি জিজ্ঞাসা করিলেন, ''কামার বিচার কি অত্যায় হইয়াছে ?"

আ। না মহাশয়! আপনার বিচারে আমি চমংকুত হইয়াছি।

জ্ঞ। যদি আপনার দেশে এইরপে, ঘটনা ঘটিত, তাহা হইলে কিরপে বিচার করিতেন ? আ। সত্য বলিতে কি, আমরা বাদী প্রতিবাদী উভয়কে আবদ্ধ রাখিয়া ক্র অর্থ রাজ-ভাণ্ডারে রক্ষা করিতাম এবং ক্রি অর্থ রাজারই ব্যবহার্য্য হইত।

আলেকজাণ্ডারের এই বাক্য শ্রবণ করিয়া অধিপতি আকর্যাাধিত হইয়া বলিলেন, "কি. রাজার ব্যবহার্যা! স্থ্য কি সেই দেশে কিরণ প্রদান করিয়া থাকেন ১

का। है।

অ। সে দেশে বৃষ্টি হয় ?

আ। নিশ্চয়ই।

আ । থ্ব আশ্চর্য্যের বিষয়। আছো, তাহার মীমাংদা কর দে দেশে গৃহ পালিত পশু আছে, বিদায় গ্রহণ করিলাম।

বাহারা তৃণ ঘাদ হারা জীবন ধারণ করে?

আ। বছসংখ্যক এবং নানাবিধ।
আ। কারণ বুঝিয়াছি, জগদীখর ঐ
সকল নিরীহ পশুগণের থাতিরে স্ব্যকে
কিরণ এবং মেঘকে জলবর্ষণ করিতে
দিতেছেন।

পাঠিকা ভগিনীগণ! আলেকজাণ্ডারের সভ্যতা ভাল, কি অসভ্য আজিকা
অধিপতির সরল ধর্ম বিশ্বাস ভাল এবং
উক্ত দেশ স্বর্গ কি মর্জ্য এবং উক্ত দেশবাসিগণ দেবতা কি মানব । আপনারা
তাহার মীমাংলা করুন, আমি অদ্য
বিদায় গ্রহণ করিলাম। কু, রা।

মাতৃভক্তি ও মাতৃ উপাসনায় সন্তানের মুক্তি।

(৩৫৯ সংখ্যা ২৩৯ পৃষ্ঠার পর)

এইরপে মাতৃ-ভক্ত মাতৃ-উপাসক
সম্ভানের ভক্তি-বৃদ্ধি যথন পূর্ণ বিকাদ
পাইতে থাকে, তথনই ভক্তির তৃতীয়
বা চরম অবস্থা উপস্থিত হয়। হিন্দু
শাস্ত্রে লিখিত আছে ''যদারা পরমাস্থার সহিত মনের একতা সাধিত হয়,
তাহাই ভক্তিযোগ।'' আমরা ইহাকেই
ভক্তির তৃতীয় অবস্থা বলিতেছি। মাতৃভক্ত, সন্তানের পক্ষে মাতৃত্বের দহিত
মনের একতা সাধনেই ভক্তির সম্পূর্ণতা।
মাতৃত্বের সহিত মনের একতা করিতে
হইলে মাতৃত্বের আদর্শে সন্তানের আন্ধ-

পঠন করিতে হয় ; মাতার সদ্গুণ সকল গ্রহণ করিতে হয় । এই ভক্তিভাবে মাতৃত্বসাধনা অর্থাৎ মাতার সদ্গুণের মহত্ব
বুরিয়া তাহা অভ্যাস করাই শেষ মাতৃউপাসনা । ইহাতেই সন্তান মাতার
দেবভাব স্পষ্ট দেখিতে পান । ইহাই
ভক্তির শেষ সীমা,উপাসনার শেষ সীম—
মাতৃভক্তিরও শেষ সীমা! উপাস্য
দেবভার মত সম্পূর্ণ হও, এই
শিক্ষাই শিক্ষা! আর্য্য অ্বিগণ বেদ
উপনিষদে, গীতা ভাগবতে, এই শিক্ষাই
দিয়াতেন । নরদেবতা যীভঞ্জীই এই

শিকাই দিয়াছেন। চৈতন্ত, নিত্যানন্দ, নরদেবতারাও এই শিকাই দিয়াছেন। ব্রাহ্ম সম্প্রদায় এই শিকাই দিতেছেন;নব্য ছিন্দু সম্প্রদায়ের মুখোক্ষমকারী মহাত্মা বিছমচন্দ্র চট্টোপাধ্যায় ভাঁহার "ক্ষ্ণ-চরিত্র" গ্রন্থে এই শিকাই দিয়াছেন। মাড়-ভক্তি ও মাড়-উপাসনাতেও সম্ভানকে এই শিকায় প্রবর্ত্তিত করে। মাড়-ভক্তির উচ্ছাসে সম্ভান যদি বন্ধাতাবে তন্ময় হইয়া মাড়-উপাসনায় মাড়বের আদর্শে আপনাকে সম্পূর্ণ করিতে পারেন, তাহা হই-লেই সম্ভানের দেবত্ব লাভ হয়, সম্ভানত্ব সম্ভানের মৃত্তিক ও মাড়-উপাসনাতে সম্ভানের মৃত্তিক লাভ হয়।

এইখানে একটা কথা আছে, কথা এই যে এ জগতে সাধারণ মতুষ্যজীবন অসম্পূর্ণ; শিক্ষা ও সাহায্য অভাবে সাধারণ বঙ্গমহিলার জীবন আরও অস-ম্পূর্ণ; অথচ এ দেশে বঙ্গমহিলারাই স্কানের মাতা। জগতে দেবচরিত্রই মানব শিক্ষার পূর্ণ আদর্শ, তদভাবে দেব-छुना हतिज्ञान सानवह सङ्घारकेत चामर्न। এরপ ছলে বঙ্গমহিলাদিগের স্ভানগণ মাতৃ-চরিত্র আদর্শে আয়ুগঠন ক্রিলে-মাভার অনুক্রণ ক্রিতে প্রার্থ ছইলে ভাঁহাদিগের জীবনের সম্পূর্ণত। বাভ অসম্ভব। মাতা কোপনস্বভাবা इहेर्ड পात्रम, कलहिख्या इहेर्ड भारतम, কুসংস্কারপরারণা হইতে পারেন--বঙ্গ-(मर्म कीनिकांत्र त तक्म वृत्रवचा, তাহাতে এদেশীর ম:তাদিগের চরিত্রে

এ প্রকার বছল ক্রাট লক্ষিত হইতে পারে, তবে ভাহাদের कानी, कुछविषा नशान-গণও কি মাড়-ভক্তি সম্পূর্ণ করিতে গিয়া এই দারণ অবনতিগ্রস্ত হইবেন ! মুজি লাভের পরিবর্ত্তে কি মুক্তি পথে কাঁটা পড়িবে ? কোনও মাতৃ-তত্ত্বজ্ঞ ব্যক্তি এরপ व्यन्न अवश्रहे कत्रित्वन मा। किन्द्र माधान्त्रवंद मत्न এ প্রশ্নের উদয় হওয়া অসম্ভব নছে। ইহার উত্তর এই বে মাড়ভাবের অন্তই মাতা বিশ্বমাতার প্রতিকৃতি। বঙ্গমহিশা-मिरात कीवन अला**ल खरान खमन्त्र হইলেও মাড়তে সম্পূর্ণ। মাডা শিক্ষিতা** হউন আর অণিক্ষিতা হউন, বিশ স্টি রক্ষা করিবার জন্ত ভগবান দেবভাবে माष्ट्र-छारम पूर्व करत्रन। বিশ্বস্থাত ভগবানের দেবৰ যেমন প্রকাশিত, দস্তা-নের পক্ষে মাতার দেবছও তেমনি প্রকা-শিত; তাই মা সন্তানের দেবতা—মা সংগারের চক্ষে অশিকিত। হউন, অধ-**জে**য়া হউন, নগণ্যা হউন, তিনি সভানের স্কার্থসাধিকা প্রম দেবতা। মাড়ংখর আদর্শে সন্থান যখন আস্বগঠন করিতে পারেন, তথন স্থানত দেবতা হইতে পারিবেন। মাতৃত্ব ও যা, দেবত্ব ও তাই। এই মাকৃত্বে ও দেবত্বে কিরপ ঐক্য ভাহা আমরা ভাহা সংক্রেপে লিখিডেছি। মাতৃত্বের প্রথম লক্ষণ-ভালবাসা।

মাতৃত্বের প্রথম লক্ষণ—ভালবাসা।
ভালবাসা গুরুজনের প্রতি সমর্গিত হইলে
ভিক্তি, বকুছানীয় ব্যক্তিদিগের উপত্তে
সমর্গিত হইলে প্রথম এবং কমিষ্ঠ সংশ্বন কাঁয় ব্যক্তির উপত্তে সমর্গিত হইলে শ্বেছ স্তরাং ক্লেছ ভাগবাসারই রূপাত্তর মাত্র। ভালবাসা বৈ দেব-বৃত্তি, একথা **অনেকেই জানেন, আমরাও** উপস্থিত **প্রবন্ধে পুন: পুন: উল্লেখ** করিয়াছি। ভালবাদা প্রেমময় জগদীখরের প্রকৃতির আংশ। ভগবতী বিশ্বজননীই ভালবাদার পূর্ব আদর্শ। এ বিশ্বজ্ঞ গৎ কি দের বলে টি কিয়া আছে । এই সকল গ্রহ উপগ্রহ, **এই नकन** दुश्ख्य भनार्थ हटेट छड़ानू, জীবাণু, পরমাণু পর্যান্ত কিসের বলে স্থনিয়মে রক্ষিত ও বর্দ্ধিত হইতেছে ? কিদের বলে জগতের অস্থ্য অভাব প্রতিক্ষণেই পূর্ণ হইতেছে ? আর তুমি মর মানব! তোমার শারীরিকী, জ্ঞানা-कानी, कायाकातिनी ও চিতর अनी, এই চতুর্বিধ বৃত্তির পোষক ও রক্ষক উপ-করণসমূহ কোথা হইতে পাইতেছ? ভূমি ক্ষুধা ভৃষণা দূর করিৰে বলিয়া উপযুক্ত আহার পানীয়, তুমি জ্ঞানী হইবে বলিয়া তোমার জ্ঞান-প্রবর্জক উপকরণ নিচয়, তুমি সাধুতা ও মহত্ব লাভ করিবে বলিয়া তহুপবোগী সাধু, মহৎ প্রবৃত্তি ও স্দিচ্ছা স্কল, তুমি প্রীত হইবে বলিয়া স্থলর কুস্মরাজি, স্প্রাব্য বিহঙ্গ-নীতি, স্থৃদৃশ্য মেষশ্রেণী, প্রকৃতির অনস্ত त्मोम्पराष्ट्रो, ध नव क्यन कतिशा আসিল? ইহাতেও কি আমরা বুঝিব ना (व अ म न हे मिह मिहमशी विश्व कन मी त জ্বপরিমিত স্লেহের দান! ্বিশ্বতর যভই ভত্ত বুঝিতে कारमाहन। कतिरव, কাৰ্য্য পারিবে, বিশ্বন্ধগতের কোনও

क्तन कर्खवाभागात्मत्र **अ**ञ्चरतास मण्णन হয় নাই সকল বিষয়ই বিশ্বজননীর ভাল-বাসার পূর্ণ আদর্শ। আর এ জগতে স্লেহের —অপরিসীম স্লেহের পরিচয় পাওয়া য়য়! তাই বলিতেছি ভগবতী বিশ্বজননীর মাতৃ-মেহই আদর্শ ভালবাসা! ভগবতী বিশ্বজননী অগীয় ভালবাদায় মাতৃহাদয় পূর্ণ করেন, তাই মাড়ন্সেহ দীমাশুন্ত! তাই সন্তানের ভালবাসায় মা' পাপলিনী! তাই সন্তান মা'র প্রোণের সর্কাম্ব; মা' সন্তানের মকল আশয়ে অনায়াদে প্রাণ পরিত্যাগ করিতে পারেন, সকল স্থাধর মাথায় পদাবাত করিতে পারেন! মাত-শ্বেহ ভাষার লিথিবার জিনিস নহে, বক্ত-তায় বুঝাইবার জিনিস নহে ; তাহা কেবল প্রকৃত মাতৃভক্ত সন্তান প্রাণের প্রাণে অক্তর করিতে পারেন। এই ভালবাসায় অভ্যস্ত হইতে পারিলেই মানব দেবতা হইতে পারেন। যাঁহারা "নরদেবতা" আখ্যা পান, ভাঁহাদের হৃদয় মাতৃস্পেহের म् ज्यानर्ग जानवामाश भविभूग। शहे, চৈতন্স, শাক্যসিংহ হাউয়ার্ড, জেনারল বুথ, ঈশ্বরচন্দ্র বিদ্যাসাগর প্রভৃতি ইহার উদাহরণ।

মাতৃত্বের দিতীয় লক্ষণ সমতা—
মাতৃ-দ্বেহে যে বৈষম্য নাই, একথা সকলেই জানেন। মাতা বছ সন্থানবতী
হইলেও, প্রত্যেক সন্তান মাতৃত্বেহ সমভাবে পাইয়া থাকেন। এ উদারতাও
ভরবৎ-সম্পত্তি। এ জগতে কি বৃহত্তম
কি কুক্তেত্ম, সকল পদার্থই ভগবানের।

"ছোট বড়["] বিচার না করিয়া তিনি मकल (कहे ममला(४ (घर कति एक), দমভাবে প্রতিপালন করিভেছেন, সম-ভাবে সকলের অভাব পূর্ণ করিতেছেন! এই অন্ত শক্তিতে শক্তিমতী হইয়াই মাতা সমভাবে দকল সন্তানকে স্বেহ করেন, সমভাবে পরিচর্ঘ্যা করেন, সম-ভাবে মঙ্গলকামনা করেন! তবে একথা অবশ্য স্বীকাৰ্য্য যে ভগবস্তক্ত সাধু যেমন ভগবানের প্রিয়, মাতৃভক্তী স্থশীল সন্তা-নটিও সেইরূপ মাতার অধিকতর প্রিয়ঃ কিন্ধ তাহা ১ইলেও ভগবানের মমতার ন্যায় মাতার মুমতাও স্কল সভানের প্রতি সমভাবাপর। এই মমতার আদর্শে নরদেৰতাগণ সমতা শিক্ষা করেন; बाष्ट्रप हुणान, श्रूक्य, द्रम्भी, धनी, प्रतिप्र স্কলকে সমভাবে প্রীতি দান করিয়া থাকেন।

মাতৃত্বের তৃতীয় লক্ষণ সহাকুত্তি ও

দয়া—সন্তানের শরীর যেমন মাতৃরতে

গঠিত, সন্তানের হৃদয়ও দেইরপ মাতৃকর্তৃক বিকলিত হয়। তাই প্রাপ্তবয়দেও
সন্তানের হৃদয়-তব মা' বুঝিতে পারেন।
অত্যের নিকট মানবচরিত্রের যে সকল
রহস্য অবোধ্য, মাতা তাহাও বিশেষরূপে
বুঝিতে পারেন। কোনও ভাবোচ্ছ্যুদে

সন্তান কোনও কাল্য করিয়াছে, অন্তথামিনী দেবতার মত মাতাই সে সকল

জানিতে পারেন। তাই সন্তান সহজ্ঞ

দোষী হইলেও মা তাহাকে পরিত্যাপ
করিতে পারেন না। বাঁহার হৃদয়ে

প্রকৃত সহাসুভৃতি আছে, যিনি দোবীর অবস্থা, উপযোগিতা, দোৰের অবশ্যস্তাবী কারণ বুঝিতে পারেন, এজগতে দোষী-কে তিনিই প্রকৃত দয়া করিতে পারেন। মাত্রদয় এইরপ সহাতুভতিপূর্ণ। "আমার বাছা রাগের মাধায় কুকথা বলেছে" অথবা "আমার বাছা মোটে খিদে সইতে পারে মা, আজ থিদের জালাতেই কুপথ্য করেছে' এ রক্ম কথা বে কডদুর সহাসু-ভৃতিপূৰ্ণ, তাছা সহাদয় বাজিপৰ অবশাই বুঝিবেন। এরকম কথা বাঁহার মুখে স্কাদাই ভূনিতে পাওয়া বায়, সেই মাছ-জ্বর বে কিরূপ সহাত্ত্তিপূর্ণ, তাহা ভাবিতেও পারা ঘায় না! মানব প্রস্তুত সহামুভূতি হুই জানের কাছেই পাইয়া থাকেন; একজন, যিনি मानव-छात्र शर्वन करत्रन, (मरे खगक्कननी; আর একজন থিনি দেই হুদর একটু একটু করিয়া ফুটাইয়া ভোলেন, গর্ভধারিণী। এই সহামুভূতির জন্যই মা সন্তানের শ্বথে मकन অপেকা সুধী হন, সম্ভানের হুংথে সকল লোকের অপেকা হংথিতা হন! মা' আমাদের মুখ হঃখ যতদূর গ্রহণ করিতে পারেন, অনেক সময়ে আমরা নিজেরাও ততভুর পারি না। সহাহুভূতি **बह** হইতেই দরার উৎপত্তি। যিনি ছঃবীর তুঃথ অমুভব করিতে পারেন, দয়া ঠাঁহার হইবেই। মা' সভানের **চঃধ স**ম্পূৰ্ অস্তুত্ব করিতে পারেন বলিয়াই সন্তা-নের মধ্যে ছঃখী সন্তানটা তাঁহার সর্বাদ

ধন হইরা থাকে। তাই ভগবান্ বেমন দীনহীনের পতি, দয়াম্যী মা'ও সেই রক্ম দীনহীনের গতি; মর জগতে বাঁহাদের এই সহাস্তৃতি ও দয়া আছে, ভাঁহারাও দীন হীনের পতি; তাঁহারা নরদেবতা।

মাতৃত্বের চতুর্থ লক্ষণ ক্ষমা—সাধারণ মানৰ ক্ষমাকে তুৰ্বলতা মনে করিতে পারেন, কিন্ধ জ্ঞানিগণ বোঝেন যে ক্ষাই প্রকৃত বীরত। 'বে মারিকে **ভাহাকে** মারিব, যে গালি দিবে ভাহাকে গালি দিব, যে রাগ করিবে তাহার উপর রাগ করিব" ইহাই সাধারণ মানব-বাব-ছার। মা'র খাইয়া আশীর্কাদ করিতে, গালির উত্তরে মিইকথা বলিতে, শক্রেব দহিত সাধু ব্যবহার করিতে, একগতে কর্মানের ক্মতা জাছে ? তাই বলি-তেছি, ধন মান, বিদ্যা, বৃদ্ধি প্রভৃতি উপার্জন কর। সহজ, প্রকৃত ক্ষাণীল হওয়াই কঠিন। সাধারণ মানবচরিত্র অসম্পূর্ণ; ভাই দাধারণ মানব চরিকে खम, व्हार्ट ७ मात्र वहन अतिमार्थ मिना ষাইতে পারে। কিন্ত অনেক মানবের च्छाव धरे त्य निकासत वह ताव धाक-লেও ভাহাতে জক্ষেপ করেন না, অর্থচ পর-চরিতো সামান্য ক্রটি দেখিলেই **(क्वांशाक हरेश) शर्**जन ! स्वांशीक क्रमा ক্লা পূরে খাকুক, পদ-দলিত করাই বেন **'छोड़ा**(मन्न व्यवमा कर्डवा। किन्छ (मन-ভাব ইহার সম্পূর্ণ বিপরীত। ভগবানের **इड्डा मानव बाखरे ज**नवादी।

ছর্বলচেতা মানবদিগের তো কথাই নাই, জ্ঞানী, মহাস্থারাও কত সময়ে ভ্রম প্রমা-দাদির জন্য পাপচিন্তা, পাপকামনা প্রভ-ভির বশবন্তী হইয়া থাকেন। কিন্তু ক্ষমা-ময় জগদীখন চিন্দিনই মানবের সকল অপরাধ ক্ষম: করিতেছেন, চিরদিনই মান-বকে কুপথ হইতে ফিরাইবার করিতেছেন; নরাধম বলিয়া তিনি কাহাকেও ত্যাগ করেন না। এই কমা আর আছে মাতৃ-হাদয়ে! মানবকুলে এমন ভাগ্যবান বা ভাগ্যবতী কে আছেন ষে মাতৃচরণে কোনও অপরাধ করেন নাই ? কেবল কুমস্তান নহে, স্থমস্তান-পণ্ড মাতৃচরণে বছতর অপরাধ করিয়া থাকেন। সময়ে মানব ইতালীর ম্যাট-मिनि वा वालालात विकामागरवत छ।य ভজিমান সন্তান হইতে পারেন; কিছ তাঁহারও শৈশব কৈশোরে ছ্রম্বপনা ছিল, আবদার ছিল, স্বেচ্ছাচারিতা ছিল! প্ৰাপ্ত ৰয়দেও ভ্ৰম ও অসাবধানতায় ভাছার সহস্র ক্রাট হইতে পারে ! কিন্তু দন্তান সহস্র অপরাধী হউন, চোর হউন, **डाकाड इडेन, आश्रीय दक्कव युगा इडेन,** দ্মাকের পরিতাক হউন, তথাপি মা ভাছাকে "সন্ধান" বলিয়া গ্রহণ করিবেন! ভগৰানের মত মাও অনুভপ্ত সম্ভানকে 🕶মা করিতে দক্ষদাই প্রস্তুত।

মাত্রের পঞ্ম ও বঙ লক্ষণ বৈর্ব্য ও দহিষ্ণুতা—সন্তান গর্ভত্ব হইতে সন্তানের জীবিত কাল প্রয়ন্ত মাতার বৈর্ব্য ও দহিষ্ণুতা অকুরাবস্থার থাকে।

মগতের মাদ্র সহস্র দুর্দ্ধান্ত হইলেও ভগৰতী বিশ্বজননী তাহা ধীৰভাবে স্হিয়া থাকেন। আর প্রতন্তাত সন্তান সহস্র অভ্যাচারী হইলেও জননী দেবী ধীরভাবে সহিয়া থাকেন। তা ছাড়া সন্তানের লালমপালন কবিতে সন্তানের পতিষ্যার জন্য নিজের গাণ্ডের বক্ত জল করিতে যা' অধীর হইয়াছেন বা কবে 🕈 অস্থিয়া হ**ট**য়†্ছন বা কবে > ব্রহ্মা ওপালনে ব্রহ্মাও জননীর যেমন ধৈর্যা ও সহিষ্ণতা, সন্তানপালনে मञ्जान-खनभीत्र ৰক্ম ধৈৰ্য। ও স্চিপ্তা। যে মহায়া क्रवेजन देशभागि भ महिका পারেন, তিনিই জগতে ওঞ্তর কার্য্য সম্পাদনে সহযে।

মাচতের দ্রুম ও ম্ট্রম লক্ষণ আ্থা-ভাগে ও সেবাপরায়ংতা--- আত্তাগে ও ্ষ্বাপ্রায়ণ্ডা, এ ছইটাতে বড় নিকট সম্বন্ধ,একটা অপর্কীর সাপেক। এসংসারে বিনি আত্মভাগে করিতে পারেন, সেবা-পর্বিণ চইতে উচারই ক্ষমতা আছে: অথবা বিনি সেবা-প্রয়েণ হইতে পারেন, আৰ্তাগে ভাহারই ক্ষত! का बङ्गाण क भारत अर्थ कालर्भ केवत. তিনি বিশ্বজগতের জনা যেরপ আছ-ভ্যাগী, যেরপ সেবাপরায়ণ, ভাষা ভাবিলে অবাক হইতে হয়। এই ভগবংশক্রিতে निक्य ही इरेहारे माहा मशास्त्र क्या व्यापन व्यापाटापिती-व्यापन (प्रवाभवा-রণা। মা সন্তানের মন্ত কি প্রকার দাস্বত্যাপ করেন, কি প্রকার

আত্মসমর্পণ করেন, তাহা আমরা ইতি-পূর্ব্বে বলিয়াছি। আত্মত্যাগপূর্ব সেবার উচ্চ পৌৰৰ এই যে ইহাতে দীনতা ও সক্রদয়তা ভিল্ল **অহলা**রের **লেশ মাত্র** থাকে না। মা' কখনও ভাবেন না "আমি মূহৎ, তাই শিক্ত অথবা **স্তানের** পরিচর্গা করিভেছি।" অথবা "আমার জন্যই সন্তঃন এত উপকৃত হইতেছে। মা সভানের জনা আ'অবিস্ক্রেন করিয়াই সেবাপরায়ণা হন, ভাই সঞ্চল সুধ হইতে বঞিভাহইলেও মাতার প্রাণ আকুল হয় না এবং সভান-সেবায় প্রাণ গেলেও আহগৌরব ভাবিতে পারেন না। পাছে তাঁহার সেবার অধােগাভাঃ স্তানের ক্লেশ হর।-- এই দীনতা। আর "বাছ। আমার কিলে অধে থাকিবে ?" এই প্রাণের টান সজ্ল:ডা। বাঁহার। ঈশ্বের প্রির পুত্র কন্যা, ভাঁহাদের মধ্যে এই আত্মভাগে 😉 সেবাপরায়ণকা প্রবল হইরা **থাকে**। বুংগর মুক্তিফেলিজ সম্প্রদায় ও কলিকাভার দাসাল্মও ইহার উজ্জ্ব দৃষ্টান্ত।

ারেন,

মাকুত্বের নতম লক্ষণ নিংমার্থ হিতিবালে কালীবারের কাণ্য বেমন অপতের

করি, হিতের জন্য, নিজের কোনও প্রয়োজন
আরুবিবিধ্ন অভিপ্রারে নছে, মাতার সকল
বিবেল
কাণ্যও সেইরূপ সম্বানের মুল্ল আপারে,
ক্রিতে
ক্রিয়ে কান প্রয়োলন সিদ্ধি অভিপ্রারে
নহে। স্ক্রানের স্ক্রানীব মুল্ল ক্রিয়ের
মাপরান বিদ্যা, ব্যাতি, ক্লপ,
সেবার
বাদ্য প্রভৃতির অপেকা রাবে না; বরং

थनी जारभका प्रतिप्त, विश्वान जारभक्ता मूर्य, ত্মন্ত্র অপেক। কুংসিত প্রভৃতি তুরবস্থা-এক সন্তানের উপরে মাতার আদর ও যত্ত্ব অপেক্ষাকুত অধিক, একথা আ্যারা পুর্বেই বলিয়াছি। এরপ ভাব যে निः वार्थजात चामर्न, (मकथा वला वाह्ना মাত্র। এইরপ নিঃসার্থ হিতেষণা শিকা कतिला मानव "(पवका' हहेचा छेर्छन ।

যাত্তের দশম লক্ষণ পবিত্ততা— ষিনি সকল প্রকার পাপ মলিনভার অভীত, विनि निष्मक, विश्वक, भूग्रमम, जिनिहे প্রকৃত পবিত্র। সভানের কাছে মাতৃ-দেবী এইরূপ পবিত্রা, পবিত্রতমা। যেমন পবিত্তম ঈশবের পবিত্র কির্গে মানবের অসংবৃত্তি ও পাপ সকল পুড়িগা ভন্ম হয়, পবিজ্ঞারপিনী মাজ্দেনীর পৰিত্ৰ কিরণে সম্ভানের অন্তব্তি পাপ সকল দেই রকম পুড়িয়া ভক্ষ হয়। সম্ভান মা'র কাছে দাঁড়াইলে---বুদ হৈউক, ব্ৰকহউক—দে শিশু। দে শিশুর মত সরলতা, শিশুর মত কোম-**লভা, শিশুর ম**ত পবিত্রতা পাইবার **যো**গ্য **ছর। "মা" বলিলেই সন্তানের** ব্দণকালের জন্যও নিস্পাপ ও নির্ম্বল **क्टे**श थारक। **এই** कना माङ्-मरशासन **আমাদের দেশে** পবিত্রতা ও বিশ্বস্ততার

প্রতিজ্ঞান্তরূপ। বে কোনও পুরুষ ''মা'' বলিয়া ভাকে, অবরোধবাদিনী বছ-মহিলা তাহাকে গর্ভজাত পুত্রবৎ নির্মাল-চরিত্র, বিশ্বাসভাজন ও পবিত্রজ্বর মনে करतन। "ना" विलिटल मा'त महत्व. মা'র দেবত্ত, মা'র পবিত্রতা সন্তানের মন-*চক্ষে আবিভূতি হইবে, পরের মা'কে "মা" বলিলেও সেভাব জাগরুক রহিবে। পবিত্রস্বরূপ ঈশ্বর ও পবিত্রতারপিণী ম।তা, ইহাতে দস্তানের চক্ষে কোনও পার্থক্য নাই—যাহার থাকে সে "সম্লান" নামের মযোগ্য। এই পবিত্রতাতেই ম'ার পূর্ণ মৃত্তি দেখিতে পাওয়া যায়। পবিত্রতা মানব জগতেরও শ্রেষ্ঠতম অলস্কার।

এই সকল দেবভাবে মাঁতৃ-স্থানয় পূর্ণ। দেবতে যাহা আছে, মাতৃত্বেও তাহাই আছে। মাতৃ-ভক্তগণ ভক্তিভাবে তন্ময় হইয়া যথন মাতার ব্ৰহ্ভাব পারেন, যথন মাতৃ-হাদয়ের আদর্শে আয়-গঠন করিভে পারেন, তখনই দেবত্ব লাভ করিতে পারেন। জগতের চক্ষে তিনি মহং হউন বা ক্ষুদ্র হউন, তাহারই জীবন ধন্য হয়, মাতৃভক্তি ও মাতৃ-উপাসনাতে সম্বানের মুক্তি সাধিত रुग्न ।

(ক্ৰমশঃ)

বিগত শত বর্ষে ভারত রমণীদিগের অবস্থা।

(७६३ मःचा २७० भृष्ठीत शत्र)

ব্যক্তিগত অবস্থা

ধৰ্মভাৰ; গত | সালে) এদেশে ধৰ্মভাৰ অৰ্থাৎ ঈশ্বরে भाषाकीत अथम मूल क्षेत्रक्षेन ममरत् (>२०) एकि विश्वाम तक्ष्टे क्षेत्रम हिन ।

ধর্মনিকার প্রধানতঃ হুইটি পথ ছিল, এক পুরাণ প্রবণ অপর ব্রভ নির্মাদির অনুষ্ঠান। তথন মরে মরে ঠাকুর মর ও धारम आरम राग्य मिनत व्यक्ति হইত। পুরুষেরাও অতি অল বয়সে हें इक्ष क्रांत निकटि यश खर्म कतिया সন্ধ্যা আফিকাদি ধর্ম ক্রিয়ায় রত হইতেন। এসময়ে, পিতা, ভাতা, সামী প্রভৃতির উপদেশে, মাতা পিতামহী শঞ প্রভৃতির আদর্শে ভারতবাসিনীরাও অতি অলু বয়স হইতে ঈশ্বরে ভক্তিমতী হইতেন। ভক্তি বিশাস অর্শীলন-ফলে প্রাপ্তা বয়সে তাহাদের ধর্মভাব এত প্রবল হইত যে তাহারা শতাধিক কোশ দূরবর্তী ভীর্থ ছানে ইাটিয়া ঘাইতেন; পীডিত স্থানাদির আরোগ্য কামনায় সপ্তাহাধিক কাল আহার নিড়া প্রিত্যাগ করিয়া হত্যা দিখা থাকিতেন: কোনও কোনও ব্ৰতে ব্ৰতী হইতে গিয়া কুধা, পিপাসা, শীত, আম প্রভৃতিতে অলৌকিক সাংফুতাৰ পরিচয় দিতেন !— দেবতার প্রাতি কামনায় <u>ক্লেহনয়ী</u> মাতা প্রাণের সন্তানকেও অকুল সাগরে ভাসাইতে পারিতেন (১) ৷, ধর্ম লাভ

আশায়ে নব বিধবা মৃত পতির কলছ চিতার শরীর ঢালিয়া দিতেন! (২) বন্ধ-চারিণী বিধ্যাগণ মত্তক মুগুন, চীর বা লৈরিক বন্ত্র পরিধান, হবিব্যাল ভোজন, কম্বল বা কুশাসনে শয়ন প্রভৃতি কার্য্য ছারা পুন্যার্জ্জন করিতেন (৩)। আধিক কি. ধর্মের নামে তাঁহাদের জীবন এরপ উৎস্থীকৃত ছিল, যে ধর্মের জনা তাঁহারা অসাধ্য-অসাধা না হউক, সকল রক্ষ ছ:দাধ্য কাষ্যই করিতে পারিতেন। মান্ব-শিশু যত দিন মস্তিকের পরিচালনা করিতে ন। শিথে, যত দিন তাহার বিচার ∗क्ति अक्षित्रात थाटक, यङ्गिम মক্তিকের শক্তি বিকাস না হওয়াডে छन्द्राव ভावह अमर्थङ्क्राल প্রবল হয়, ভত্দিন ভাহার অ্দুরে থেমন অলোকিক সরলতা ও অলোকিক বিশ্বাস, গত শতাকীর প্রথম যুগের আবিক্ত সময়ে ভারতমহিলাদিগের স্বদ্যে সেইরূপ বর-লতা ও সেই রূপ বিশ্বাস বর্ত্তমান ছিল: ক্রমশঃ এবিষয় অধিকতর পরিক্ট **হইবে**। ফলতঃ ধর্মপ্রাণ্ডায় ভাঁহার৷ যে অলো-কিক শক্তিমতী ছিলেন, ভাহার কারণ সেইরপ সরলতা ও বিশ্বাস।

⁽১) সে কালে যে রমণীর উপযুক্ত বহনে সন্তান না জারিত, তিনি ভাগবানের উদ্দেশে প্রতিক্রন্ত হইতেন যে "সন্তান জারিলে প্রথম সন্তানটা গালাকে দিব," পরে সন্তান জারিলে প্রথম সন্তানটা সাগর সক্রম তার্থে নিক্ষেণ করিতেন।! এ প্রথা জারি বংশীরের। জনায়াজাতির নিকটেই শিধিরাছিলেন, সন্তেহ নাই।

 ⁽২) সহস্তা বা অনুষ্ঠাদিগের ষ্ঠুার উদ্দেশ্য

বে "নিছাম ধর্ম" নহে, তাহা শাল্পও বেশ:চার
অনুস্কিৎত্ ব্যক্তিগণও অবশা লানেন।

⁽৩) অলাপি ভারতের হানে ছানে এইরপ আরাসসাধ্য 'ব্রক্ষ্যবা' প্রচলিত আছে; ইহাও। নিকাম ধর্মামুমোদিত নহে। ইহার উম্মেশ্য বর্গলাত বা জনাভরে বিধবা না হওয়া।

ক্ষান-ত্রনকার সময়ে সাধারণতঃ মক্তিক হইতে প্রদর্শের শক্তি অধিকতর अधूनीविष इहेड, এই अञ्चीत्र এক বিশেষ ক্ষতি ক্রীকাতির ছট্ত বে, স্বভাবতঃ রমণীগণের স্বদয়ের খক্তি, মানসিক শক্তি অপেকা প্রবলতর, ভাছার উপরে কেবল হুদয়ের শক্তির অসুশীলনে মস্তিকের শক্তি নিত্তেজ হইয়া পড়িত। জানামুশীলন ব্যতিরেকে জ্ঞান লাভ করা মানবের পক্তে—অন্ততঃ সাধারণ মানবের পক্ষে তুরুহ ব্যাপার। জানামূশীলন অভাবেই প্রাচীনা মহিলা-প্রশ সাধারণ বিষয়ে তর্ক, বিচার, মীমাংসা, পরিণামদর্শিতা প্রতৃতি কাথ্যে পক্ষম ছিলেন। এই জন্য ভূত, প্রেত, ব্রশ্ব-দৈত্য প্রভৃতি উপদেবতাগণ স্ত্রীকাতির উপরে বড়ই "উপদ্রব" করিত; এই খন্য রোখা, ফকির প্রভৃতি বেশধারি-গণ জীলোকের নিকট হইতেই অধিকতর উপার্জন করিতে পারিত; এই জন্য স্বামিৰণীকরণ মন্ত্র, মৃত্রংসার সন্তান-রক্ষার মন্ত্র, বন্ধ্যার সন্তান জন্মিবার মন্ত্র—প্রভৃতি নানাবিধ মন্ত্র তার ব্রীজাতির উপরে প্রায়োগ করিলেই আধকতর সফল रहेड ! कानाइनौलत्न अভाবেই সাধা-রণ মহিলাগণের মন এইরূপ অজ্ঞানতায় श्र्व हिम ।

মানবের বহিবিজ্ঞিরের মধ্যে যেমন চুকু, অস্করিজ্ঞিরের মধ্যে সেই রূপ জ্ঞান। অক্সের অন্যান্য সহজ্ঞ স্থের উপাদান ধাকিলেও ভাহার ন্যায় তুংধী এঞ্গতে আর নাই, কারণ হাতে থাহা কিছু
প্রিয়দর্শন, দে তাহা কিছুই দেখিতে
পার না, এবং দর্শনিশক্তির অভাবেই
তাহাকে পরম্থাপেক্ষী, সাবলম্বনে অক্ষম
হইয়া জীবন্মৃতরূপে থাকিতে হয়;
জানহীন মানবণ জগতে এই রকম
হংগী। জগতে যাহা সত্য, সে তাহা
কিছুই বৃকিতে পারে না; হিতাহিত বিচার
শক্তির অভাবে তাহাকে আত্মরক্ষাতেও
অভান্য ওরতের কার্য্য অশক্ত হইয়া
থাকিতে হয়! হিন্দুশাস্ত্রে লিখিত আছে,
শ্রেয়ান্ দ্রবাময়াদ্যজ্ঞাক ্জান্যজ্ঞ: পরস্তপ!
সর্বাং কর্মাথিলং পার্থ, জানে পরিসমাপ্যতে ।

ভারতীয় ধর্মাচার্য্যগণ যে জ্ঞানের এতাদৃশ গৌরব করিয়াছেন, তাহার এক প্রধান কারণ, জ্ঞানের অভাবে माञ्चत मञ्चाद थाक ना-यादा किছ মহুষ্যবের উপকরণ, জ্ঞানের অভাবে তাহার একটাও উপযুক্ত রূপে বিকাস করিতে পারে না।—জ্ঞানহীন ধর্মের নামে অধর্মাচরণ করে, তাহাদের বিদ্যা অবিদ্যার ফল উৎপাদন করিয়া থাকে, নীতি ও চুনীতি হইয়া উঠে। যাঁহার। অসভ্য জাতির ইতিব্রতে মনো-যোগ করিয়াছেন, ভাহারা দেখিয়াছেন ए. मन्यात्र ५७ मकः। जिनिम थाकिया যাং।দি গর জ্ঞানের অভাব থাকে, ভাহার। কিছুরই উপযুক্ত রূপে ব্যবহার করিতে

হে পার্থ ! ফলের সহিত সমুদর কর্ম জানের অন্তর্ভ ; অতএব দ্রবাময় বৈব বজ্ঞ হইতে জান বজ্ঞাই লেট । বী । এর্থ অং—৩০ রোক ।

७७० मर]

পারে না—জানের অভাবে সরলতার নির্কোধতা, ধর্মভাবে কুসংস্থারাকতা, আর সকল বিষয়ই আতিশয় দোবে দ্বিত হইরা থাকে। আমাদের কুর্ভাগা তাই সভ্যের অন্ধরাধে বলিতে হইতেছে, প্রাচীনা মহিলাদিগের জীবনও মার্জিত জানের অভাবে এই সকল দোবে দ্বিত ছিল।

কিল এইখানে বলা আবিশাক. সাধারণ বিষয়ে জানাজনী বৃত্তির অসু-শীলন না হওয়াতেই পুরাতন মহিলা-দিগের মানসিক শক্তি এরপ নিস্পভ হট্যা গিয়াছিল। নচেৎ ওঁটোরা যে প্রক্রত পক্ষে নির্কোধ ছিলেন না, তাঁহাদের সহজ বৃদ্ধি যে স্বভাবতঃ উপযুক্তরূপে বিকসিত হুইড, এবিষয় তাঁহাদিগের গাহ স্থ্য জীবন আলোচনা করিলে বুঝিতে পারা বায়। এ জগতে ভাঁহাদিগের একমাত্র **কার্যা**-ক্ষেত্র গৃহ, আরু এক মাত্র কাণ্য গৃহ-ধর্মা পালন। এই কার্যা কেতে তাইারা থেরপ দক্ষতার সহিত কার্যা করিতেন. প্রকৃত নির্কোধ মানবের পক্ষে ভাহা অস্ত্রব ৷ এত্তির, ভাহাদিগের ব্যবস্থ (স্ভুবতঃ কাহারও কাহারও চুট্কী গল্প প্রবচন হইছে, ভাঁহাদিগের ভাবগ্রাহিতাও চতুরতার বিশেষ প্রবিচয় বৃদ্ধিবৃতির যায়। এগুলিও পাওয়া কার্য্য। কেহ কেহ তীক্ষুবৃদ্দিদশারাও हिलन।

নীতি—আমরা পূর্বে বলিয়াছি, তথন মানদিক শক্তির অপেক্ষা স্বদরের শক্তি

অধিকতঃ প্রবল ছিল। এই জনা নীতির বা চরিতোর বে সকল সদা প অসংশক্তির সেই সৰল অন্তর্গত, প্রাচীনাদিগের দলাণ বথোচিতরণে পরিক্ট হইড; অর্ধাৎ দয়া, সহিষ্ণতা,লক্ষাশীলতা প্রভৃতি माधुज्ञावमकन अवर (मवा, भद्राभकान, ত্যাপদীকার প্রভৃতি দাধুকার্ঘা দকল, প্রায় সকল রম্বীর অধুর ও শরীরের এইজনা নারী-অলভার শরণ ছিল। জীবন কোমলতার প্রতিক্লভি বলিয়া অফুড়ত হইত। পক্ষাস্তবে, নীডিয় বে স্কল স্কাণ মানসিক শক্তির অভুগত— ধীরতা, অপক্পাডিতা, আস্বসংয্মন, প্রভৃতি, ভাহাদিগের অনেকটা হীনতর ছিল ।। এই জনা তাঁহাদিগের অনেকে-কোমলভার প্রভিকৃতি ইইয়াও বৃদ্ধিনীনা, কোপনস্বভাবা, কলছবিস শ্রমণীলতা ও বলিয়া অপবাদগ্রস্তা। গৃহকার্যাসুরাগ দ্দিনীতির অর্ভুত্ত্র, ভবে ভাহাতে ভাঁহারা উচ্চতর প্রশংসা লাভের যোগ্য পাত্রী— অরপূর্ণা জগন্ধাত্ৰী গৌৰবে গৌৰবাৰতা হইবাৰ উপযুক্ত।

বিদ্যা—সেকালে জীলাতির মধো লেথা পড়া শিধিবার প্রথা রহিত হইরা-গিথাছিল, আমরা ইতিপূর্বের সে কথার উল্লেখ কবিয়াছি। স্থতরাং গত শতাশীর

এ সকল কথা সাধারণের অতি এলোকা।
 নচেৎ সেকালে বাঁহার। হহাপ্রাণা দেবী ছিলেক,
 তাঁহার। একথার লক্ষা নহেন। তাঁহারা উরত-চরিলা।

প্রারভাসময়ে ভারত মহিলাগণ বিজ্ঞান, দর্শন, ভূগোল, ইতিহাস, অন্ধ, সাহিত্য প্রভৃতির অমৃতাসাদ গ্রহণে সম্পূর্ণরূপে विका हिल्ला। मःमादात्र देविक आश বারের হিসাব, বিদেশভ আত্মীয় বন্ধ-গণের লিখিত প্রাদি পঠন বা তাঁহা-দিগকে পত্রাদি লিখন, শিক্ষদিগকে **অধ্যাপনা প্রভৃতি কা**র্যাও রমণী-হস্তে সম্পন্ন হইত না। এতত্তির বেখা পড়া শিথিলে মনের যে রূপ উন্নতি সাধিত হয় ও কগতের হুধ যেরূপ আয়ত হয়, ভাষা হইবারও কোন সম্ভাবনা ছিল না। আমরা তথনকার মহিলাগণের মানসিক শক্তি যে অনেক অংশে হীন দেখিতে পাই, তাহার এক প্রধান কারণ এই শেখা পড়ায় অনভিজ্ঞতা। তবে দৈবাৎ কোনও ত্রীলোক লেখা পড়া শিথিতেন এমন কথাও জানিতে পার। যার।

দেশীয় শিল্পবিদ্যা ও কারুক: গ্র্যে অনেক মহিলাই সুশিক্ষিতা ছিলেন। কাঁথা, বৃতি, ক্ষীরের ছাঁচ, থ্য়েরের বাগান, চুলের দড়ি, দিকা, ধানের হার, যবের হার প্রভৃতি প্রস্তুত করিয়া তাহার। স্ক্র শিল্প নৈপুণ্যের পরিচয় দিতেন। এই সকল জিনিস দেখিতে ধ্রেপ স্কর, কানেক গুলি সেইরূপ প্রয়েজনে ও আসিত।

কচি—মানব জীবন গঠন পক্ষে ক্লচি এক প্রায়ান উপকরণ। বে জাতির ক্লচি ফ্লেরপ পবিত্র ও উন্নত, ভাঞ্জাদিগের সমাজও সেইরপ পবিত্র ও উন্নত হট্যা থাকে। গত শভাকীর প্রথম যুগে ভার তীর ত্রী পুরুষদিগের রুচির যে পরিচয় পাওয়া বায়, তাহা সস্তোষজ্ঞনক নহে।

সুন্দ্র দৃষ্টিতে দেখিতে গেলে বোধ হয়, মানবের ক্লচি ছই ভাগে বিভক্ত। মানবের শিল্প, চিত্র, সঙ্গীত ও সাহিত্যে ক্ষির বে ভাগ প্রকাশিত হয়, সে ভাগ ক্রচির আন্তরিক ভাগ; আর বেশ, ভ্যা, আলাপাদিতে কচির যে ভাগ প্রকাশিত হয়, দেভাগ ক্ষচির বাহ্যিক বাঁহারা ভারতের ইতিহাসের সহিত স্থপরিচিত, তাঁহাদের অবশ্য মারণ আছে যে চৈতন্যদেব-প্রচারিত বৈফাব ধর্ম্মের অবনতির সহিত বাঙ্গালার বিশুদ্ধ কুচিও প্রায় দূর হইয়াছিল। বাঙ্গালীর শিল্প. চিতা বেমনই হউক, বাঙ্গালির সঙ্গীত. দাহিত্য বড়ই কুকচি পূর্ণ ছিল। তখন-কার তর্থা প্রভৃতি দঙ্গীতে ক্রচিদোষ वहल धाराल लिक्क इहेक; उथनकात মাহিত্যে—বাঙ্গলা সাহিত্যে গদ্য জ্বিত না, পদ্য**লেখক**গণ অনেকেই জয়দেব, विमालिं , ७ हिज्या मुख्यमाह्य देवश्व কবিগণের ভাব ও ভাষা লালিভ্যে মুগ্ধ হইয়া বাঙ্গালা ভাষার কপাল পোড়াইতে হইয়াছিলেন। অনেক ক্ষমতা-পন্ন কভী গ্রন্থকারও ভদ্রলোকের অপাঠ্য গ্রন্থ প্রচার করিতেন। বড় ছঃথের বিষয় সেই সকল সঙ্গীত ও সাহিত্য নিৱা-পত্তিতে অনেক ভদ্ৰ সমাজে হইত। ইহা যে অবনতির পরিচারক, এ কথা বলা বাছল্য মাত্র। *

ক্লচির কথা বলিতে এখনও লক্ষ্য করে।
 গৃহত্ব বাড়ীতে এখনও বাই নাচ, খেন্ট: নাচ প্রচলিত।
 তবে সেকালের তুলনার অনেকটা উন্নত কটে।

স্থর সাধন প্রণালী।

(७०७ मर्था) २८৮ शृष्टीत शत)

শ্রীযুক্ত পণ্ডিত শিবনাথ শান্ত্রী এম এ ক্রত গীত।

জীনবীনচন্দ্র দত্ত কুত স্বরলিপি।

कीर्छन-एाल मगकूमी। *

 শ্বামর: পূর্বে পত্রিকার একটা আগমনা গীতের স্বরলিপি দিয়াছি, এই পত্রিকার একটা কীর্ত্তনের গীতি দিলাম।

দশকুশী তালটা বার মাত্র। বৃক্ত, ভন্মধো সাভটি আঘাত ও পাঁচটা ফাক। ঠেকা বধা,---

| <u>श</u> | ঙ। | •। | ⁸ । | •। | र। | •। ৬। |
|---------------------|------------------|-------------|------------------|--------|------|-------------------|
| ÷। | ধিনাক্ধিনা | रिनाक् | धिमाक्षिना | धिनाक् | धिना | তিনাক্ তিনাক্তিনা |
| •। <u>তিনাক্</u> | ণ। তিনাক্তিনা | • তিনাক্ | । ডিনা | | | |

লারনীয় পুজার সমধ্যে ভগবতীর কৈলাস হইতে জিমালয়ে আগমন সম্বন্ধীয় গানকে আগমনী কছে। বছির দিন তুর্গা, কৈলাস ত্যাগ করিয়া, সগুমীর দিন মাতৃপুছে তিন দিন বাস করিয়া দশমীয় দিন আধার কৈলাসে চলিয়া বান। ভগবতী সম্বংসর কৈলাসে থাকেন, তজ্ঞনা মেনকা, ভুগার পুনর্বায় আগমন সময়ে বাংসলাজাবে নানাপ্রকার ভুঃগ করেন। পুর্বে করিয় দলে ভুগা পূজার সময়ে আগমনী গানের সৃষ্টি হয়, পরে পাঁচালীতেও ইছার প্রচলন হইয়া পড়ে।

ছরিলীলা বিষয়ক গীতকে কীর্ত্তন করে। অপর গীত অপেকা ইচার ব্যুর অন্যরূপ। কীর্ত্তনের স্থারের মধ্যে মনোহরসাহী উৎকৃষ্ট।

| २१२ | বামাবোধিনী পত্রিকা। | | | | | [৫ম ক-৩য় | | | ভাগ। | | |
|---------------|---------------------|------------|-------|---------|-----|-------------|--------|--------|---------|-----------|----------|
| +1 | । मा | । नि | 1 | । बि | . I | l 위 | । श | । প | । य | । भ | । গ |
| প জী• | ব- | न, | (यो- | ব- | ન, | নি- | কে- | র | ৰ কি | <u>\$</u> | Cच |
| U - | ন- | ্ম- | র | ত্ত- | (র, | ম- | গ - | ন | \$ | \$ | ডে |
| 17 1- | म | ∌ ∙ | রে | র- | ব, | 약- | রা | el | স"- | পি | ব |
| +1 101 | 1 | 1 | 1 | H | 1 | 11 1 | +1 | ł | ı | ! | 1 |
| প কা না ই | 7 | ** | গ | 7 | ध | गि | প | ध | 24 | भ | 4 |
| ना है | 1 - | थि | হ্ন- | म स | না | থেরে | নি- | (B- | র | কি | 5 |
| 5 हे,- | 3 41- | મિ | স :- | তার | \$ | বে, | ম | গ | ন | ₹- | \$ \$0 |
| छाहे,- | ơ- | ভূর | - ক্ল | ভয় | 4- | CF . | 역. | রা | ণ | স | |

পাঁচন ও মুফ্টিযোগ।

(००३ मरशा २८० शृष्टीत भत्)

রক্তপিন্ত।

কা (কা-

(341-

हाड़ । इंडिंग्ड মি) মি)

প্রতিদিন নবদ্ধরির রস্পানে রক্ত-রোগর রক্ত বমনাদি নিবারণ হয়।

- ২। কিস্মিস ভিজান জলপান ও কিস্মিস ভলপ করিলে রজপিত রোগে উপকার দর্শে।
- ৩। মধু ১৬ তোলা, শীতল জল ১৬ ভোলা, একত্র যোগ করিয়া রক্তপিত্ত রোগীকে প্রতিদিন পান করাইলে, ভয়-ছর সক্তেপিত্ত বমনাদিস্ক রক্তেপিত্ত করাগের উপশম্ভয়।
- ৪। প্ৰতিদিন কিস্মিস্ ভিজান জন্মান ও কিস্মিস ভক্ণ কিলা ভূষুব

দিজ করিয়া তাহার কাথ মধুসহ পান করিলে রক্তপিতাদি রোগের রক্তভাব বন্দহয়।

- ৫। সাজো গোবরের রস নস্য করিলে, নাসিকা, মুখ, চক্ষু ইত্যাদি দ্বার দিয়া রক্তপ্রাব হইলে,তাহার সত্তর উপশম হয়।
- গান্ধারির শিকড় এক আনা পরিমাণ ভালরপে ধৃইয়া বাটিয়া ধাইলে রক্তপিত ভাল হয়।
- १। আধছটাক কচি যজ্ঞভূত্বের রস আধ ছটাক বাঁটি গোলাপজন একত্রে মিশ্রিত করিয়া ভুই দিবস প্রাতে ধাইলে রক্তব্যন নিবারণ হয়।

কাশি।

- ১। আদার রদ একতোলা মধ্য সহিত সেবন করিলে দর্দ্ধি ও কাশি নিবারিত হয়।
- ২। কটীকারীর রসে অথবা বাসক ছালের রসে পিপুল চূর্ণ মিশ্রিত করিয়া সেবন করিলে কিখা ভূলসী পত্রের রস্ মরিচের ওঁড়াসহ সেবনে কাশ রোগের উপশম হয়।
- ৩। মুখে গঁল ও মিছরী কিবা
 ছরীতকী ও বাষ্টিমধ্ অথবা লবক ব।
 কাবাব চিনি রাগিলে কাশির বেগ শান্তি
 ছয়।
- ৪। বুকে সর্দি বসিলে পুরাতন স্থত কর্পদেশে মালিন করিবে, কিয়া একটা পাতিলেবু গোবরের ভিতর করিয়া পোড়াইবে, এবং সেই লেবু ও পুরাতন স্থত একত্র মিশ্রিত করিয়া বুকে নালিন করিলে উপকার হয়। বুকে বেদনা হইলে পুরাতন স্থতে আদার রস ও কপুর মিশাইয়া মালিস করিবে। গরম তুঃধর সহিত গাওয়া স্থত জন্ধ করিয়া সেবন করিলে সন্দি ও কাশির লাখব হয়।
- ৫। ৰাসক পাতার রস কাঁচ্চা থানেক লইরা সেইরূপে কাশীর চিনি নিপ্রিত করিয়া তিন চারি দিন ধাইলে কাশি ভাল হয়।
 - পুছরিণীর পাড়ের আমগাছের

- আর্ক্ক অলপচা পাতা দিরা নুজন হাঁড়িতে এক দের জ্বল দিজ করিয়া আর্ক সের থাকিতে নামাইরা ২০০ দিন খাইলে কাশি ভাল হয়।
- ় ৭। কাবাবচিনি পানের শহিত ২।৪ দিন খাইলে কিখা মিছরি ও মরিচ এক সঙ্গে মিশাইরা সিদ্ধ করির। খাইলে কাশি ভাল হর।
- ৮। কাশিদ্ধনিত ক**ন্ত হইলে থোনা**চাড়াইয়া আদার পোল গোল কুচি একটী
 শলাতে গাথিয়া তাহাতে লবণ মা**খাইবে।**পরে প্রদীপের শিশে বেশ করিয়া পোড়াল ইয়া আদা চিবাইয়া থাইলে কাশি ভাল হয়।
- । আকরকরা বচ সর্কাদা মূথে রাথিলে, কিন্তা দর্কাদ। গঁদ চ্বিলে সামান্ত কলে নিবারণ হয়।
- ১০। ইবহ্ফ গব্যস্ত্ত, গোলমরিচ চূপ, আদার রস, এই সকল দ্রব্য একজ বোগ করিবা সেবন করিলে, কাল, সন্ধি-বসা, গলাগুস্থুসনি, স্বয়ভল স্বর আরাম হয়।
- ১১। বাসক্ছাল, বামনহাটা, যঞ্চিমধ্, কণ্টীকারী, বচ, কুড, তালিশপ্র,
 শিপুল, কটকল, কাঁকড়ারশৃদ্ধী প্রভৃতির
 কাথ, বংশলোচন, তুলসীপত্র, পান ও
 আদার রদ প্রভৃতি কাশ ও প্রতিখাস
 নিৰারক স্তব্য।

চীন সত্রাটের প্রার্থনা।

चात्रक्रे जातन त्व, त्वीवश्र নাজিক ধর্ম। বৌদ্ধেরা এই ত্রন্মাণ্ডের **স্ষ্টিভিতি প্রলয়কর্তা কেহ আছে**ন এরপ বিখাস করেন না, জীবত কর্মশীল পরমেশবের উপাসনা করেন না ও তাঁহার সংস্থ এছিক বা পারত্রিক কোনও সমন্ধ আছে খীকার করেন না। কিন্তু স্থবিশাল চীন সামাজ্যের বৌদ্ধ প্রজামগুলীর অধিনায়ক চীনসম্রাট সিংহাদন আরো-হৰকালে ৰে প্ৰাৰ্থনা করিয়া থাকেন, ভাহা পাঠ করিলে আশ্র্র্যান্বিত হইতে হয়। পণ্ডিতপ্রবর ভট্ট মোক্ষমূলর **हीनाम्भीत धर्माधारहत (व देशताकी अञ्च-**बान व्यकाम कत्रियाह्म, स्मिर्ट भूछक হইভে চীন প্রাটের সিংহাসনে আরো-হণ কালীন নিয়লিখিত প্রার্থনাটী अभूवानिष इहेल:---

"হে লীলামর প্রভা, তোমারই দিকে আমার চিন্তাকে নিয়েজিত করিতেছি। এই শ্বিশাল ব্রহ্মাণ্ড তোমার অপার মহিমা প্রচার করিতেছে। হে প্রভা, আমি তোমার দাস, একটু সামান্য ভূপের মত কত ক্ষুণ্ড আমার হৃদ্য পিলীলিকার ক্ষুত্রদয়ের মত! কিব্ব ভ্রমান ভূমি তোমার ক্পাহইতে বঞ্চিত না করিয়া এই ক্ষুত্র জীবদে আই বুহৎ সামাল্য শাসনের ভার দিরাছ! আমার অক্সতা ও অক্ষতা সম্বন্ধে আমি মুম্পুর্ব

অভিজ্ঞ আছি। আমার ভর হইতেছে

যে, পাছে তোমার দরালাভে অবোগ্য

হই। সেইজন্য আমি সাধ্যমতে বিধিব্যবস্থার অধীন হইরা কার্য্য করিব।"

"আমি তোমার স্বর্গীয় আলোকের প্রতি দৃষ্টিপাত করিতেছি। তোমার মহার্য বানে আবোহণ করিয়া আমার এই মন্দিরে আবিভূতি হও। হে দ্যাময়! তোমার চরণে আমার মন্তক অবনত করিতেছি, ভূমি আমাকে কুপা কর। ভোমার প্জার জন্য, ভোমার চরণতলে এই ড্তা পারিষদগণ্মহ উপন্থিত হই-রাছে। মৃত আত্মাগণ শুন্যদেশে পর্ব হইতে পশ্চিমে, তোমার চতুর্দ্দিক বেষ্টন করিয়া রহিয়াছে। হে ঈশ্বর ! জামি ভোমার সেবক, ভোমার চরণতলে পতিত হইয়া ভজ্জির সহিত তোমাকে নমস্বার করিতেছি। তোমার সহবাদের জন্য ভোমার দিকে মন নিয়োগ করিতেছি। হে প্রভা, ভূমি স্বামার নৈবেদ্য স্বকল গ্রহণ কর; আমার প্রতি ভূমি করুণা কর; তোমার অপার করুণায় আমা-पिश्रक मर्लमा उका करा "

"তৃমি বলিয়াছ বে, তৃমি আমাদের প্রার্থনা শুনিবে। তৃমি আমাদের পিতা, পিতার ন্যায় আমাদিগকে রকা করিতেছ। তোমার সন্তান হইয়াও আমি তোমার প্রতি প্রকৃত ভক্তি অর্পণ क्तिए अम्पर्थ, क्तामा आमि अक उपापिशीन।''

"হে প্রভো! তুমি আমার প্রার্থনা ক্রাহণ করিয়াছ, তোমাকে ধন্যবাদ করিতেছি। ডোমার নাম মহান্। ধন্যবাদ ও ভক্তির সহিত তোমার চরণতলে পতিত ছইতেছি। কোকিল ধেমন নব্যস্ত সমাগমে আনন্দিত হয়, সেইরূপ আনন্দের সহিত ডোমার চরণ-তলে এই বহুম্লা রম্ন ও ব্রাদি রাখিয়া তোমার প্রেমের কথা প্রচার করিতেছি।" বাহারা ঈশ্বর মানেন না, এই পৃথি-

বীর স্টেকর্ত্তা বলিরা কাহাকেও ঘীকার
করেন না, কেবল 'শ্নাবাদ' লইরা বাহাদের ধর্মকর্মা, ভাহাদের জ্বন্ত হইতে
কি এরপ প্রার্থনা উথিত হইতে পারে প্
চীনসমাটের এই প্রার্থনাবারা ইহাই
প্রতিপন্ন হইতেছে যে, বৌদ্ধমাল্ল
মতে নান্তিকতা প্রকাশ করিলেও কার্ব্যত
কর্মরবিধাসী। আজিক চীনসমাটের
তাব ও ভজিপুর্ব এই মর্মন্দর্শী প্রার্থনা
প্রবর্ণ করিরা বৌদ্ধর্মক্রে নাজিক
ধর্ম বলিতে জার কাহারও সাহস
হইবেনা।

याघ।

খনা বলিরাছেন,— "খন্য রাজার পুণ্য দেশ। খদি বর্ষে মাথের শেষ।"

ত কথা অতি সার। কারণ প্রকৃত পক্ষে মাঘ মাসই সসংসরের চাস আবাদ আরস্তের সময়। ঐ মাসে কল হউক বা নাই হউক, কৃষকদিগকে চাস আবা-দের কিছু না কিছু আয়োজন করিতেই হয়। ভাহার উপর যদি ঐ মাসের শেষ ভালে বৃষ্টি হয়, ভাহাহইলে "সোণায় সোহাগা" হয়। আমাদের প্রধান ধাদ্য ধান্য, ভাহার আবাদ চৈত্রের শেবে, কিয়া বৈশাধের প্রথমে করিতে হয়। সেই ধানের জমির প্রথম চাস মাঘ মাসে হইরা পাকে। পাট, শণ, কচু, আরহর, হরিজা প্রভৃতি নানাবিধ প্রধান প্রধান কসল, বাহাদিগের চাদ আবাদ বৈশাধ মাসে হইরা থাকে, তৎসমু-দারের জমির প্রথম চাদ এই মাঘ মাদে। আধিন কার্ত্তিক মাদে আলু, কপি, পলাও প্রভৃতি যে সকল উৎকৃত্তি ও মূল্যবান্ ক্ষল হইরা থাকে, তাহার আর্ল্যকনও এই মাঘ মাদ হইতে করিতে হর।

বর্ষাকালে বে সকল বৃহৎ বৃহৎ বৃদ্ধের
চারা ভ্রিতে রোপণ করিতে হয়, এই
বাব মানে উহাদিগের জনা যথাখানে
দেড় বা চুই হল্ত গতীর গর্ভ ধনন করিয়া
ধনিত মৃত্তিকা ঐ গর্ভের চভূংপার্থে কিছু
দিন জেলিয়া রাধিতে হয়। রৌজ ও

बाइ बारेबा के नकन मांगे डेर्क्त प শিখিল হইলে মৃত্তিকার বিপর্যয় করিয়া व्यर्वा ६ छेशदात्र मांगे नीत्र धारः निवात बांगे डेलरत निया के अर्ख भून कतिया রাথিতে হয়। উহার সহিত কিছু সার बिश्चिष्ठ করিয়া দিলেও ভাল হয়। वर्षाकारन (४ जकल फनल कब्रिट्ड इय, वर माम जाहारमत जुमित्ज यथारमागा দার দিয়া রাখিতে হয়। ক্ষেত্রের নিকট-বন্ধী ভক বিল, খাল, বা অন্যবিধ জলাশয় হইতে পলি তুলিয়া আলু, কপি, ও প্লাওর ক্ষেত্রে দিতে হয়। ঐ পলি-माणि मिशा श्रूनः श्रूनः लाजन यात्रा সকল মাটীকে উলট পালট করিয়া কমি ভালিকে এরপে রক্ষা করিতে হয় বেন তাহাতে একটাও তৃণ বা আগাছা না ব্দেশ্য।

ওল,—এই মাস হইতেই ইহার চাস আবাদ আরত্ত করিতে হয়।

ইক্স্,—এই মাদ হইতেই ইক্স্ ছেদন ও তদ্বারা ওড় প্রস্তুতীকরণ আরক্ষ হইয়া থাকে।

ম্লার বীজ,—এই মাসে ম্লার হডদ্র
পরিপৃষ্টি হইতে পারে, তাহা হইয় থাকে।
বেশ মোটা ও পৃষ্ট ম্লার অগ্রভাগ কর্ত্তন
করিয়া মাটাতে রোপণ করিলে তাহা
হইতে উৎকট্ট বীজ জমিয়া থাকে।
কোন কোন ফ্রক কল ধরিবার অগ্রে
ঐয়প ম্লার অগ্রভাগের দিকে চারি
অকৃলি কার্টিয়া তাহাতে ধোল করেন
এবং ঐ ধোল পূর্ণ করিয়া ফ্রল নিয়া

তাছাকে অধঃশার্থ ভাবে টাঙ্গাইয়া রাখেন। প্রতিদিন ঐ থোল পূর্ণ করিয়া জল দিতে হয়। ভাহায় পত্র ও শীষ্ গুলি ক্রমশঃ বাঁকিয়া উপরেয় দিকে উঠিবে এবং ভাহা হইতেও উত্তম বীজ জামিয়া থাকে। মৃত্তিকা প্রোথিত মূলা অপেকা ঐরপে লম্মান মূলা হইতে যে বীজ জামে ভাহা উৎক্রইতর এরপা কেহ কেহ বলিয়া থাকেন। আমরাও ভাহা বিধাস করি। মূলার বীজ ষভই পুরাতন হয়, তাহা কসলাংশে ততই উপযোগী হইয়া থাকে।

হলুদ ও আদা,--এই মাদের শেষ ভাগ হইতেই তাহা ক্ষেত্ৰ হইতে ভূলিতে আর্ত্ত করে এবং হলুদের মোডাও মুখী ভবিষাং বীজের জন্য গাছের ছায়ায় তৃণ পত্রাদির আছোদন দিয়ারাথিয়া দেয়। যাহাদিগের অথবিক ব্দের চাৰ আছে, তাহার। অগ্রহায়ণ মাসের শেষ ভাগ হইতেই হলুদ তুলিতে আরম্ভ করে। কিন্ধ এই মাসের পূর্বের হলুদ তুলিলে ফসলে কিছু কম হয়, তেমন হলুদ দমে ভারী হয়। তুলিতে হত বিলম্ব হয়, ফসল ভত বেশী হয়, কিন্তু अज्ञान शान्का हम। हनून (क्का हहेरड তুলিয়া প্রথমতঃ গোবর মিপ্রিত জলে मिक कतिरंक रह अवर भटत रवीरम एक করিতে হয়। উদানে চড়াইবার পর একবার উত্তলাইরা উঠিলেই নামাইতে इय़, नरह अधिक निक्क इटेरन इनुम নষ্ট হইয়া যায়। অৰ্দ্ধ তক হইলেই ভাছা

इंडे किया वैद्यांत्र ठाठी हेत्र खेलत त्राधित। প্রতিদিন অপরাহে একবার রগ্ডাইতে इत। अर्स (मान क्यक्ता अक्यानि ৰাশ বা কাঠ লওড়ের অগ্রন্তাবে একখণ্ড কুড় তকুন বৃড়িয়া তদ্বারা হরুদ রপ্ডা-ইয়া থাকে। হবুদ যত রণ্ডাইতে পারা হার ভঁঠ হলুদ ততই গোলাকার, শক্ত, পরিষ্কত, জন্মায়ত ও ভারবিশিই হইয়া থাকে। উত্তমরূপে ভকাই তেও রগ্ডাইতে পারিলেই উত্তম হলুদ প্রস্তুত হয়। হলুদের চাস আবাদে বিশা প্রতি २० । २८ चेका चंद्रक कतित्राख ०० चेका লাভ থাকিতে পারে। আমরা এই লাভজনক ফদলের বিশেষ বিবরণ পুন-রায় প্রকাশ করিব। আলার মুখী পোঁতা, যথাকালে তোলা, ছায়াৰুক স্থানে ৰত্নে রাধা এবং আবশ্যক মতে ব্যবহার করা, বা অধিক থাকে ত বিক্রর করা ভিন্ন উহাতে কোন কথাট কাল নাই, অথচ লাভ বিলক্ষণ আছে। আমরা चारांद विस्मव कथा अपद विव।

কুল, পিয়ারাদি ফল,—ইহাদিগের পুরাতন ডাল কাটিয়া দিতে হয়। নহিলে পুরাণ ডালের ফল ছোট হয় ও তাহাতে পোকা ধরে।

বেল, মলিকাদি ফুল,—ইহাদিগের
পুরাতন পাকা শাধা সকল কাটিয়া
ফেলিতে হয়। শাধা কাটিয়া দিলে নূতন
তেজাল ভাল বাহিঃ হয় এবং ভাহাতে
উৎকৃষ্ট ফুল হয়। ঐ সকল কবিত শাধা
ঘারাই শাধা কলম প্রস্তুত হইয়া থাকে।

সর্বপ ও মাঠ কড়াই,—এই মাসে সর্বপ মাড়িয়া ঝাড়িয়া এবং মাঠকড়াই কাটিয়া ফমল সংগ্রহ করিতে হয়।

ধান,—এই মাসে ধান কাটিলে ফ্সল পাওয়া যায় না, কেবল নাড়া হয়।

আসরা মাধ মাসের বিবরণ শেষ
করিবার পূর্বে একটা অভীকারপালনে
বাধ্য আছি। অগ্রহায়ণ মাসের বামাবোধিনীতে লিখিয়াছি যে, তামাকের
চাস, পাইট্ ও প্রস্থানী করণ এই তিনটী
ক্রিয়ার মধ্যে পাইট পৌষ মাসের বিবরণ সহ প্রকাশিত হইল, প্রস্থানীকরণ
প্রণালী মাখ মাসের বিবরণের সহিত
প্রকাশিত ইইবে। অতএব তামাক
কিরপে প্রস্থাত করিতে হয়, তাহাই
এম্বলে লিখিত ইইবে।

মাৰ মাদের শেষ ভাগে কিন্তা ফান্তন মাদের প্রথমাংশে তামাকের পাতার চরম পাক হইয়া থাকে। তবে ঋতুর বাতিক্রমে, বা বর্ষার জ্ঞান্তাতে কথকিং উহার বাতিক্রমেও ইইতে পারে। কিন্ত প্রায়ই ঐ নির্দিষ্ট সমরে তামাকের পাতা পাকিরা ঈর্ষণ লাল হয়। তথন তাহা কাটিতে হয়। তামাকের পাতা গুলি এরপ কৌশলেক;টিতে হয় বেন পত্রগ্রহ্মির (কাণ্ডের বে স্থান হইতে পত্র নির্গত হয়) কিয়ন্তান্ত প্রথমাক পত্রের সহিত থাকিরা ব্যার, তাহাতে হালা বাধিবার স্থাবিধা হয়। স্থাবিধা এই, ঐ গ্রন্থি হালার ছাড়তে বেশ বাধিয়া থাকে; মতেৎ

পত্র সকল হালার রক্ষ্য হইতে খলিত হুইরা বাইতে পারে। ভাষাক কাটিয়া ক্তেরে দিন ক্ষেত্রেই ফেলিয়া রাখিতে es । পত্ৰ সকলকে ওৰ করাই কেত্রে क्षित्रा दाचात्र উष्म्मा। किंड ७६ क्या फेल्म्मा स्टेल्प अकट्टे त्रम थाकिए থাকিতেই পত্ৰসকলকে গৃহে আনিতে হর। অন্তার চারিটা চারিটা পাতা একতা করিয়া বাঁশ কিন্তা দভার উপর ঐ ভকীকরণ কার্য্য ভকাইতে হয়। একপ ভাবন করিতে হইবে. যেখানে দিনমানে ব্লেড, রাজে শিশির লাগিতে পাৰে। ঐ ভামাকের উপর ঘাহাতে ব্ৰম্ভ বৃষ্টি লাগিতে না পার, ভদ্বিয়ে সবি-भिष मर्क करेए हरेरा। ৩।৪ দিন ৩ছ হইলে তামাকে "ৰাত" বিতে হয়।

ভাষাকের "ঘাঁত" আবার কি ৭ **এখনে** ভাছাও বলিতে হইবে। बानि वा यठ छति महे आवभाक हरू. ভাষার উপর তামাক দাজাইতে হয়। मच्चीकत्राव धक्छ किमन चार्छ। **অভ্যেক** ডামাক পত্রের পোড়া গুলি সইয়ের পার্বে এবং অগ্র ভাগ মইয়ের অব্যাম তামাকের माथा थाका हारे। শোডা ভলি মইয়ের একধারে রাখিয়া नाबाहरव । পরে অন্য ধারে গোডা द्राविश् माञ्चाहेत् इहेरव। बहेन्नत्न পুর্বান্বক্রমে উপর্বাপরি মইয়ের উপর ভাষাক লাজাইয়া ঠিক ভাষার মধ্য म अक थानि वीच मित्रा वीट्यंत्र महे প্রাপ্ত মইরের সহিত বন্ধ করিতে হর।
তাহাতে তামাক পত্রগুলি চাপ পাইরা
পাটে পাটে চাপিয়। যায়, ইহাকেই
তামাকের "যাঁড" কহে। এই সকল
কার্যা অতি প্রত্যুবে বা কোরাসার দিন
ভিন্ন হইতেই পারে না, অনা সময়ে
করিলে তামাক প্রতীকরণ অলস ক্ষকের
কর্ম নহে,—ইহাতে বিলক্ষণ উদ্যুম
ও ক্ষিপ্রকারিতা আবশ্যক।

এই রূপে ২৷০ দিবস "ষাঁতে" রাধিয়া পুনরায় খুলিয়া পূর্ব্ববৎ বাঁশের উপর ভকাইতে হয়। উত্তমরূপে শুক হইলে ভাষাক সকল মরের মধ্যে মাচার উপর উপযুগপরি স্জোইতে হয়। দিবস এই ভাবে রাখিয়া পরে "হালা" "ঝাড়া" বা "গোছা" রূপে বাঁধিতে হয়। অনম্ভর তাহাদের উপরেও নীচে এক এক খণ্ড চট় দিয়া প্যাকু করিলেই তামাকের "পাটী" বা "হালা" প্রস্তুত रता हेशहे छे ९ कहे वानिका स्वा क्राप গাড়ী, নৌকা, ইত্যাদি যোগে নানা স্থানে প্রেরিত হয়। ঐ "পাটী" বা "হালার" আকার ভিন্ন ভিন্ন দেশে ভিন্ন जिम व्यकात मुद्रे दश । त्रक्रभूत, निनाब-পুর, পাবনা প্রভৃতি অঞ্চলের মডিহার. হাতীকাণী প্রভৃতি বড় বড় তামাকের পাটি কাঠের অষ্টিকার ন্যায় করিয়া বাঁধা एत थरः छारामित भीस छनि अक मिटक ७ घटित्र वाहिटत शास्त्र।

শেসিডেন্সি বিভাগের নানা ছানে

"হিল্লি" নামৰ একপ্ৰকার উৎকৃষ্ট ভাষাকের চাস আবাদ হইরা বাকে। ভাহার প্রস্তুতীকঃপ প্রণালী একটু স্বভন্ন। আমরা পূর্বে যে প্রণাণীর বর্ণন করি-লাম,ভাহার অধিকাংশ রাজসাহী ও চাকা বিভাপের। "হিশ্বলি" তামাক কাটিয়া "ধোলায়" ওছ করে। বেমন বে স্থানে धानगानि **भारतात कां**कृष्टि माक्ष्टि इत्र. ''ধামার'' क(र. ভাহাকে ভামাকের খামারকে "খোলা" কছে। তাহা কৃষি কেত্রের মধ্যেই নির্ন্মিত হয়। ধোলায় ভামাক ওকাইতে ংগিন হইতে ৪ দিনের অধিক লাগে না। তামাকের পাতা গুলি সুপক হটলে ওচ হটতে অধিক রৌর লাগে না। অপেকারত কাঁচা থাকে, তাহা 😎 করিতে অধিক রৌদ্র আবশ্যক হর। হিল্পলি তামাক গাছ ওন্ধ গুকাইতে দেয়। শুক হওয়ার পর একপ্রকার দস্তহীন দারা তাহা কর্ত্তন করে। কান্তিয়া প্রত্যেক খণ্ডে ২টা হইতে এটি পাতা রাথে। পরে তাহা গৃহে লইয়া বিয়া পোশালার, বা শ্ন্য ছবে খড়ের দড়ির

উপর ক্রকাইতে দের। সেই ভাবে প্রায় এক কি দেও মাস থাকে। তাহার পর পর্ব্বোক্ত প্রধানীতে পার্টী বা হালা বাঁবো।

এই বিবরণ পাঠের পর হয় ত কোন কোন পাঠক পাঠিকার ভাষাকের বিবিধ নাম গুনিবার ইছা হইতে পারে। স্প্রসিদ্ধ প্রাচীন বন্ধকবি বিলিরাছেন,— "কোনা ভনাইবে ঐ নাম। না জানি কডেক মধ্, ঐ নামে আছেলো বদন ছাড়িতে নাহি পারে।"

क्वी नाम।

জত এব প্রেপাল সহল নামের নার তামাক সহল নামের গাধা হইতে পারে। এখনে নমুনা পরুপ করেকটা নাম দেওরা: গেলঃ—

(১) পানমুটা, (২) হরিণপানী, (৩) হাতিকানী, (৪) ফটাভাং বা শিব-ফটা, (৫) কপি, (৬) শকুনকানী, (৭) কালীজিবে, (৮) ছোটনা, (৯) ক্ষ-কলি, (১০) মান্বাতা, (১১) সিন্দুর ঘটুরা, (১২) ভেলেজি, (১৩) চামা, (১৪) নত্নো ধোল ইত্যাদি। *

মহীস্বের মহারাজার মৃত্যু উপলক্ষে। (১)

কি কঠিন হিন্না তোর—নিঠুর শমন,
অঞ্চলের নিধি না'র করিলি হরণ!
কোল হ'তে কেড়ে নিলি ধিতীয়ার চাল,
ভাই বুঝি পেতে ছিলি মৃত্যু রূপী ফাল ?
অংগন করিলি আল আরক্পাইন,
শ্ন্য হ'ল এতদিনে রাদসিংহাসন।

সতীর মাথার মণি—কবরীর ফুল, কেড়ে নিলি অকন্মাৎ বুকে বিধে শুল। নিবাদ শরেতে বিদ্ধ বিহলিনী করে, চুটু ফুটু করে সতী সরম বাধার।

ত পণ্ডিত শ্ৰীকালীবর ঘটক প্রদীত কুবি শিক্ষা বেক।
(১) বে বহারাজার আগবন সংবাদ দিয়া আবয়া

विवाप-कालिया याथा अमूब कमरन, রাছগ্রন্ত শশী বেন শোভিছে ভূতলে! পতিশোকে একেবারে সুখশাবিংহারা, নয়নে বহিছে শত যমুনার ধারা। পভীর আঁধার বরে ঘেরেছে জ্লয়, হুখের তপন আর হবে কি উদয় গ প্রবাসের স্থা যত ফুরাইল সব, भावात्म हत्नदह मछी मूर्य नारे बत्र ! পতি-সহ গৃহবাস-আশার স্বপন, ভাঙ্গিয়াছে একেবারে নির্হুর শমন। কি কাল সামাজ্যে তার-পতি নাই যার, সংসার শ্রশান তুল্য-অনিত্য অ্বার। সঙ্গিনী পতির ভন্ম রেখে বন্ধদেশে, দেশে যায় একাকিনী কাঙ্গালিনী বেশে। কে লভিবৰে বিধাতাৰ অলভ্যা বিধান. তাঁর কাছে রাজা প্রজা সকলি সমান। আশা ও ভর্মা কত-কত আকিঞ্ন, অতল সমুদ্র তলে হলে। নিমগন। মরতে অমরাবতী পুরী মহীস্থর, আনশ আহলাদে সদা ছিল ভরপুর; রাজার অকাল মৃত্যু বার্ত্ত। ভয়কর, বিনা মেঘে বজাঘাত মাধার উপর। **লক লক প্ৰজা আজি** লুটায়ে ভূতলে, ভाস।है (इ महीगृत नत्रत्र अला। কড হ্রথ ভূঞিয়াছে রাজার শাসনে, नकति कार्तिष्ठ जाय ठाशालत मत्। রাম রাজ্যে যেন ভারা করিয়াছে বাস: জগৎ ব্রুড়িয়া বার যণ অ্প্রকাশ, এমন রাজারে কাল করিলি হবৰ **क्ष पाए निर्ह**त (श्न **ए**) मात्र यउन १ **অপরও শিও আজ** হরে পিড়হীন.

দীন হ'তে সেও যেন হইয়াছে দীন। রাজ্যস্থ ধন মান জ্জুল সম্পূদ্ সব হ'তে শ্রেষ্ঠতর জনকের প্ল। সে পদ সেবনে খেবা না পায় স্থয়োগ, রাজ্যভোগ তার কাছে করমের ভোগ। বৈর্য ধরিয়ে এবে শান্ত হও রাণী, ওই শোন কাণপেতে বিধাতার বাণী ? "পতিশোকে সতী কেন হইছ কাতর ? দেব লোকে আজি ভাঁর মহা সমাদর। প্রবাস ছাড়িয়া ধেবা যায় নিজ বানে. ডেকে ল'ন বিশ্বমাতা আপনার পাশে। बता मृजा नाहि (मथा,---वानकवादाद, ষাইতেছে কত যাত্রী হয়ে ভব পার। **শেধা**য় বসন্ত চির বিরাজে কেবলি বহিছে মল্য়ানিল ঝলারিছে অলি। বিক্ষিত পাবিজ্ঞাত অতুল মাধুরী, कि च्रम्बत मित्र मित्र !-- ए चमताभूती। দেব পতি, মর্ত্তো তব দেবীর জীবন, কিছু দিন পরে পুন: হইবে মিলন। যে বৃত্ত নিমেছ সভী—পাল কায় মনে, জ্ঞানে ধর্মে শাস্তি স্থাপাল প্রজাগণে। মহীশুর 'মহীশুর-মাহ্ষীর' গুণে, क उरे कानम रव्र ५ हे कथा छ ता ! 'ম্বর্গদেবী' মহীশুরে করিছেন বাস, এই কথা কোটিকর্গে কক্ষক প্রকাশ !! **3**5---

আৰক্ষ প্ৰকাশ করিতেছিলাম, বিধির ছুল^{*}কা বিধানে তিনি অকলাৎ অন্তৰ্হিত হইলা রাজধানীকে ও তারতকে শোকাছের করিরাছেন। অগদীশ তাঁহার শোকার্ত্ত পরিবারকে শাস্ত করন্।

শুক ভোতা প্রভৃতি পাথী মাছবের কলা শুনিয়া তাহার নকল করিতে পারে, हेश मकलाइहे खाना चाहि। এমন কতক জাতীয় পক্ষী আছে, ভাহার। স্বভাৰত: মান্ত্ৰের বুলী বলিয়া থাকে। आमारमुद्र (मर्ग 'दछ कथा क' भकी दछ কথা ক বা গৃহস্থদের খোকা হোকৃ বলিয়া থাকে। ভোতল নামে এক ভয়ম্বরমূর্ত্তি পক্ষী আছে, তাহারা রাত্রিকালে উচ্চ বুকে বনিয়া ঘোঁষরা সরে "নি দিবি কি বউ দিবি" বলিয়া বার বার ভাকিতে থাকে, না ভাভাইলে উডিয়া যায় না। কডকডে নামক আর এক জাডীয় পঞ্চী আছে, তাহারাও রাত্রিকালে উচ্চবুক্ষ বা গ্ৰহের চূড়ায় ব্যিলা "কড় কড়। কড় কড় কড়াৎ" বার বার এই শব্দ করে এবং শুৰু বাজাইয়া বা টিল ছড়িয়া ইহা-দিপকে তাঙাইতে হয়। ভোতল ও কড় কড়ে পক্ষী 'অলক্ষণে' গলিয়া খ্যাত, ইহারা যে গৃহের নিকটে বসিধা ডাকে, সে গৃহে কনেক সময় মৃত্যুদ্টনা হইতে দেখা যায়। আমাদের চাতক "ফটিক ছল" বলিয়া গ্রীমকালে আকাশকে প্রতি-ধ্বনিত করিয়া সকলের প্রাণকে শীত্র করে।

আমেরিকার শস্তুত রবকারী বিথিধ জাতীর পক্ষী আছে। বামাবোধিনীর পাঠক পাঠিকাপণ হরবোলার সহিত বিশেষ পরিচিত। वहे भक्ते नक्त প্রকার পক্ষীর ডাকের নক্ল করিয়া ক্ত आंत्मान करत ! (श्रुक्त कन्नान देखां-भिक नारम शकी मृदक वृष्य**र्गन जा**ह ভয়ক্তর শক্ত করে। **हेनकृष्टे ब्रह्मवर्ग,** क्कपण, ज्मात पन्नी, किंड मुक्दबंद मड "ভাত ভাত" করিয়া ভাকে। ভেমারারা প্রদেশে ছাগ্র-শোষক (Goat-sucker) নামক পঞ্চী, মাত্ৰৰ অতি শোকে যেমন "হাহাহাহা" করিয়া প্রথমে উটেচ: খরে প্রে মৃত্রপরে কালিয়া থাকে, ইহারাও সেইরপ ডাকে। উচ্চস্থৰ ধরিয়া খামিয়া থানিয়া ক্রমে নরম হরে ভাকে। ইহারা িশাচর পথী, পোকা মাকড় হইতে গোরু বাছুর ওকা করে। **ख्या** हे। ब्रहेन নামক এক প্রাণিডখবিদ পণ্ডিত **কডকওলি** পক্ষীর ডাক অনুসারে তাহাদের নাম-করণ করিয়:ছেন। देशाया न्यावेश्वत्व **ं** हे देशाओं कथां छिन यतन। **ह भा**न ইউ প্কীর ডাক who are you? who, who, who, who are you? & कात हेडे, इंड इं इ बात हैं है ? देशांत्रा এই ডাক ডাকিতে ডাকিতে বাহের কাছে অাসিরা করেক হাত উড়িরা এও হাত উত্তভান পিয়া বঙ্গে। ওয়ার্ক এওরে প্রকী work away, work work work away, अत्रार्क अश्रद्ध, अत्रार्क अत्रार्क अत्रार्क अश्रद्ध বলিয়া ভাহেক।

"Willy come go, willy willy willy come go" উইলী কম লো, উইলী উইলী কম গো করুণস্বরে এই ক্যা বলে। আর এক জাতীয় পক্ষী "Whip poor will, whip whip whip poor will" इंडेन পুতর উইল, ছইপ হুইল ছইপ পুতর উইল, ছইপ হুইল হুইন ব্যায় ডাকিয়া খাকে।

পুস্থর পক্ষী যন্ত্রবাদক। ইহারা অর্থান বাজনার ভাষে স্ক্রের বর্ধণ করিয়া পেরুর নির্কান বনপ্রদেশ আনক্ষময় করে। এই স্বর এরপ মুক্কর যে পথিক ইহা শুনিয়া আগদ বাটিকা বৃষ্টি ভূলিয়া থমকাইয়া দাঁড়ায়। সিলজিরো পক্ষী কঠ-সঙ্গীতে কিউবার পর্বতময় প্রদেশকে প্রতিধানিত করে। বুলবুল ইহার গানে পরাজিত হয়। ধনী গায়েনাবাসী শত শত মুদ্রা দিয়া এক একটা পক্ষী কিনিয়া থাকে। গায়েনার বাঁশী পক্ষী ও আমেরিকার চামচচঞ্ পক্ষীর গানও স্মধ্র।

হিন্দু নারীর গার্হস্থ্য ধর্ম।

(২৫৯ সংখ্যা ২৫৩ পৃষ্ঠার পর)

শরীর ভাল না থাকিলে কোনও ধর্ম— কোনও কর্তব্যকর্ম পালন করা যায় না। শারীরিক নিয়ম লক্ষন করিলে ঈশরের নিকট অপরাধ করা হয়, সেই অপরাধের কল খাছ্যভক্ন। বিশুদ্ধ জল, বিশুদ্ধ বায়ু দেবল, নিয়মিত স্থান, পান, আহার পরি-শ্রম, ও ধর্ম চিডাদির খারা মনে শান্তি আনরন করিয়া শারীরিক নির্মাদি রক্ষা করা উচিত।

বিদ্যা ও নীতি শিক্ষা দারা বৃদ্ধি
ক্বৃদ্ধিকে শুমার্জিড করিবে, কি কার্য্যের

ক্বিক্ষক তাহা বুনিয়া লউবে, পরিজন
ব্ধ ও জন্যান্য পবিভিত্ত লোকগণ কেকিসে

পত্তিভূই হরেন, তাহা দ্বানিয়া লোককে

পরিভূই করা কর্ত্তব্য কেন না

শাসনালোচ্য ধা ধণা পরিভূষাতি।

তং তথৈবাছবর্তেড পরারাধনপণ্ডিতঃ॥"

শরীর ভাল নাথাকিলে কোনও ধর্ম— কোনও আন্ত বিপদ উপস্থিত হইলে
নও কঠেব্যকর্ম পালন করা যায় না।
কি কিয়ম লক্ষন করিলে ঈশ্বরের হইতে উদ্ধার প্রাপ্ত হওয়া যায়, তাহার
ভি অপরাধ করা হয়, সেই অপরাধের চেষ্টা করা কর্তব্য।

শৈশবহইতেই নীতি শিক্ষা করা
নিতান্ত আৰশ্যক। স্থনীতি ও উপযুক্ত
বিদ্যাশিক্ষা, জীবনের প্রত্যেক কর্ত্তব্য
দেখাইয়া দেয়; কর্ত্তব্য কার্য্যে আদেশ
ও উৎসাহ প্রদান করে; অসুচিত
কার্য্যে অগ্রসর হইতে দের না; কার্য্যের
স্থাক্ষালতা ব্নাইয়া দেয়; মনুষ্যকে
সৎকর্ষের দিকে ও ঈশ্বরের দিকে আকর্ষণ করে। নীতিকে সকল কার্য্যের
ভিত্তি করিলে সমস্ত ওণঙলিই স্থান
কাশিত হয়।

স্নীতি ছারা স্বভাবের পঠন করিতে। ছইবে। ছীনচরিত্র ব্যক্তির কোনও সংকার্থ্যে অধিকার নাই, আছ-দংব্যবার।
মার্জিত হইলে সভাব প্রোজ্ঞল হইবে।
সভাব সঠন করিলেই আপনাকে গঠন
করা হয়, কেন না "অতীত্য হি তণান্
সর্কান্ সভাবোম্ছি, বর্ত্তভো" অভএব
সচ্চরিত্র রমণীগণ—কমা, সহিষ্ণুতা, সত্যপরায়ণতা, প্রমণীলতা, মিতাচারিতা,
অপক্ষণাতিতা, সংঘতেক্রিয়তা, পরসেবাপরতা ও ত্যাগ প্রভৃতি গার্ছা ধর্মের
উপবোগী গুণগুলি সহজেই আয়ন্ত
করিতে পারিবেন।

লক্ষা রুমণীকুলের উচ্ছল ও স্চাক-ল্ড্যাহীনা রুমণীর অন্যান্য সহল্ল গুণ থাকিলেও ডিনি কুমুমবিহীনা লভার ন্যায়, বারিশ্ন্য স্রস্বীর ন্যায়, ছাদশুন্য খরের ন্যায় শোভা-বিহীন। চৌদ্ধ হাত ঘোষটার মধ্যহইতে অট-হাসির রোল বাহির হওর!, ও একজন লোক বা ভাশ্বর অপবিচিত मिश्रित विद्युष्ठी (त्रुव भाष्टित न नात इस দাম করিয়া গৃহমধ্যে প্লায়ন ক্রা প্রকৃত লজা নঙে; প্রকৃত লক্ষা মৃহতা ও বিনয়-মাথা। কোন একটা বালক বালি-কাকে অপরিচিত লোকের নিকট আর-किम १८७, दिन उलाइटन, शकाशवहरन নিশ্ব নগ বঁটিতে বঁটিতে তাঁছার প্রলের উত্তর করিতে দেখিলে বে লক্ষার প্রতি-মুষ্টি বলিয়া বোধ হয়, সেই লক্ষার কথা বলিভেছি। খাভড়ী মনদ ও অন্যান্য পরিবারস্থানে নামে সিখার নিকাপূর্ণ চিট্টি স্বামীর সকাশে প্রেরণ করিতে লক্ষা

ना रहेत्रा भी छित्र पासीत भार्त्य विकास ভন্রবা করিতে বে লক্ষা অবভীর্ণ হরেন, সে লক্ষার কথাও বলিতেছি না বলি-তেছি, অসং কর্ম করিতে বে শক্তা হয়-সার্থের জনা অসাকে ক্রেশ বিতে (य लक्का रह- ७कक्कन मगरक हार्गना ও পরিহাসাদি প্রকাশ করিতে বে লক্ষা হয়-পরিজনগণের প্রতি জন্যায় আচরণ করিতে বে লক্ষা হয়-এক অনকে নিশিত করিবার জনা নিয়া বলিতে ধে লক্ষা হয়—বুধা গৰ্ম ও আৰুপ্ৰশংসা করিতে এবং ওনিতে বে नका रम्—वकातान वह शूक्त गराक, অনাজীয় বা অপ্রিচিত পুরুষ সমক্ষে বাহির হইতে বে লক্ষা বোধ হয়, সেই लक्षारे हिन्तु व्रमशीनात्व व्यक्ष नक्षा, বুমণী গণের এই দ্ধাশ লক্ষায় বিভূষিতা হওয়া কর্ত্তব্য।

স্বীরে ঈখরই সকলের প্রথান
ভারাধা। ঈশরের প্রতি অটল বিশাস
ও তক্তি রাশিরা সর্ব্ধ কর্ম করিবে।
যেমন বাজীকরগণ মন্তকে কলসী ভাশন
করিয়া অফ প্রতাজাদি চালমা করে
অথচ তাহাদের মন্তকের কলসী অটল
থাকে, সেইরূপ ঈশরকে জ্লরে অটল
রাখিয়া আহার, বিহার, শরন, বিশ্রার ও
সাংসারিক কার্যাসমূচ নির্কাহ করিবে।
ব্যবভাহাারে হিজ্পণ প্রায় সকল অবভার ঈশরকে জ্রণ করিবা থাকেন ক্ল
শয়নে পদ্মদাত, ভোজনে ক্লাক্তিন,
সম্বটে মধ্পনে, স্ব্রিকার্যে) মাধ্য প্রবং

ক্লাৰে প্ৰহা, পাচমৰে বিষ্ণু, सद्भार्था, बनार्कात नन्त्री, व्यश्रवत नव-প্রতী প্রভৃতি নামে ঈবরকে মারণ করিয়া থাকেন, স্থতরাং রমণীগণকে সেদন্য প্ৰভন্ত পৃথ অবলম্বন ক্রিতে হইবে না. **ৰেবল মনের একাগ্রতা** থাকিলেই চলিৰে। ঈৰৱাৱাধনার গৃহটা স্বতম্ব হওয়া আবদ্যক, দেই ঘরটাতে কোন অপৰিত্ৰ প্ৰব্যাদি রাখা কর্ত্ব্য নহে। ধর্মপুত্তক, সুগকি কুসুম, চন্দন, ধুনা তল্প, অমি, পবিত্র আসন ও দেওয়া-লের পারে প্রাতঃম্মরণীয় মহাত্মা গণের অতিমূর্ত্তি ব্যতীত অন্য কিছু রাখিবে না। নেই গুছে হাস্য পরিহাস করিবে না ও শালাশাশ ব্যভীত অন্য কথা বলিবে না। ধৌত ৰছ পত্নিধান করিয়া সেই গতে আবেশ করিবে এবং যভক্ষণ তথায় থাকিবে. কেবল ঈশ্বরচিতা ও ঈশবের ভর্ণগান করিবে। যে বাটীতে স্পাধ্যের পৰিত্র ও অনুতময় নাম কীভিত না হয়, ৰে বাড়ী মকভূমি বা খাশান।

পারিবারিক প্রথ সাধন ও অতিথি
কোবাই পার্ছ প্রথমের মূল। বহু পরিবার
কোবার থাকিয়া খানবিশেষে যে আমরা
কাবারি দেখিতে পাই সে কেবল গৃহিণীকাবার বার্ছপরতা, পরিপ্রম-কাতরতা ও
ক্রিবাপরারণতা দোবেই ঘটিরা থাকে।
কাবী তপুর্বে এত অধিক ছিল না, তাহা
হিছা ও অনুসন্ধান করিয়া দেখিলে বুঝা
বাইবে, কেন্দ্রা পুর্বে হিন্দু পরিবারে
ক্রিয়েক্ত অনুকর্ষ প্রেরণ করে নাই। এখন

ইংরেজ অমুকরণের গুণের ভাগ আন্ধ-নির্ভর, কর্মশীলতা প্রভৃতি আন্তক না আসুক, বিলাসিতা ও সৌখিনতার অংশ টুকু পূর্ণ মাত্রায় হিন্দু পরিবারে বিরাজ করার অনেক গৃহিণী আর এখন একারে বভ পরিবার মিলিত হইয়া থাকিতে চাহেন না। যদিও বহু পরিবার একালে থাকার দোৰ গুণ আলোচনা করা এই প্রবন্ধের উদ্দেশ্য নহে, তবুও এই টুকু না বলিয়া থাকা যায় না যে বছ পরিবারবেষ্টিত ও একারভুক্ত ব্যক্তির মৃত্যুকালে আপন দ্রী পুত্র কন্যাগণের জাতি ও মানরকা এবং প্রতিপালনের ভাবনা যাইতে হয় না। যাহাহউক একান্নবর্ত্তিতা বেন রমণীর দোবে পলায়ন না করে। কেননা হিলুরমণীর গাহ স্থাধর্ম-তরু-জনের ভশ্রায়, ননন্দা ও যাত্গণের প্রতি প্রিয়দখীর ন্যায় ব্যবহার করা, দেবরগণের প্রতি ভাতার ন্যায় প্রদর্শন করা, ভাতা ভগিনীর করা ও সংসারত্ব ৰাহাতে স্থাৰ থাকেন কায়মনোৰত্তে ভাহার অফুঠান করা। মহর্বি বেদব্যাস র্তাহার মহাভারত নামক গ্রন্থের নারী-ধর্মে বলিরাছেন-

"ৰজ বভরবোঃ গাদৌ তোবন্ধী গুণাৰিত। চ
পিতৃমাতৃগরা নিতাং বা নারী সা তপোধন ।"

এখন অনেক স্থলেই বিশেষতঃ
ধনিকন্যা পুত্তবব্দে পুত্তের স্তোবার্থে—বিলাসিনী বধুর বিলাস-বাসনা
চরিতার্থ জন্য খাতভীকেই বধুর ওপ্রাক্

4

করিছে হর, কিছ হংখের বিষয় মহর্বি
ব্যাস্থেব এখন জীবিত নাই, থাকিলে
"বজ্ঞা শতর্রোঃ পাদে তোবরভী" হলে
বধ্বাঃ পাদে তোবরভী, বসাইয়া দিতেন
যদি বধ্র অকল্যান হওয়ার আশকা
হইড, তাহা হইলে নয় "পাদে" হলে
"হস্তো" দিনেই চলিতে পারিত। সে
য়াহা হউক অতিথিকেও যতনে আহাব্যাদি প্রদান করা রমনীর কর্ত্তবা,
আতিথি শক্র হউক, মিত্র হউক, হীন
জাতি হউক অথবা যে অবস্থাপর হউক,
গৃহে আসিলেই মনে করিতে হইবে—
"সর্ব্রদেব্যাঘাহতিথিঃ"।

সভান-পালন রম্ীর এছটা ওক্তর কার্যা। সুধীমান, পান, আহার, বেশ-ভূষা করাইয়া 'বাবা,যাত্ম, গোপাল' বলিয়া खालद्र कतिरल श्रालन कता इस ना. ধাতীকরে সমর্পণ করিলেও সে কর্ত্ত-বোর শেষ হইল না। অশিকিতা, অসহং-শলা বেতনভোগিনী ধাত্রী-করে কদাচ मञ्जानक ध्वनान कतित्व ना. मञ्जानत चाट्यात निरक मर्खणन मृष्टि दाचिरत, স্থনীতি ধারা সম্ভানের চরিত্র পঠন করিবে, অসভা ও অসক্তরিতা লোক হইভে সম্ভানকে দূরে রাখিবে, শিশুর निकृष्टे प्रिया कथा बनिद्य ना ७ अन्यात्र ভার্যা করিবে না। সন্তানকে সুধু বাওরাইরা শোওরাইরা আছুরে গোপান করিয়া তুলিলে চলিবে না, বাহাতে শিশু শারীরিক, মানসিক ও আধ্যাত্তিক উন্নতি লাভ কৰিতে পাৰে, তাহাৰ সম্ভূৰ

শিশুর কোষণ ভাররে উপ্ত কবিরা বিভা ভাছা হইলে শিশু ভবিবাতে গ্ৰাভেম্ম জনতের কার্ব্যে আসিবে অবং বাজানী शर्वत मरधा "जानर्भ माठा नारे" अरे कन्द्र पृष्ठिता वाहेत्य । भिश्रत स्तरत কুদ:ভার বাহাতে ভান না পার ভাবার (**हिंडी क**ब्रिय, निश्च नश्नाहरन **डेश्नाह** मित्व, क्लीका कुर्फरम वाशा मित्व मा. তবে যাহাতে আঘাত প্ৰাপ্ত না चवगारे त्म विवास मृष्टि साथिरवा अप কথার সন্থানটীকে স্থানিজিত ও সঞ্চরিত্র क्वाहे जनमीत कर्खवा, जाहा महित्स আরু সভুষ্য-জননীর গৌরব কি 🔊 পশু পদীরাও ভ সভান প্রস্ব করিয়া বাঁচা-हेशा तार्थ. किंद्र शुक्त शक्तिकामी অপেকা মহুব্য-জননীর সারিত্ব ভইতর এই কথা মূরণ করিয়া রাশা মতুব্য জননীর কর্ত্বা, কেননা সমাজের আশা ভবসা ও উন্নতি ভাষাদের করে মাজ। অভএব সন্তানকে বাধাতা, সহিক্ষত অধ্যবসায়, ন্যায়পরায়ণতা ও কর্ডক্তে चढेन डा निका पिरवन ७ चनात्र, इच्य धार कालाजनहरेल पृत्व साथित्यमः পাপ কার্ব্যে হুণা ও ঈশবের প্রতি ভঙ্জি क्याहेश मियन। कननी निवद व्यक्ति बिटे वाबहात कवित्वन । कर्मन वाबहारक निलग्न बाबा मा हरेता जनावा स्टेंडी केट्रे निक्क भामन कविए रहेका তুষ্ণাম করিয়া প্রহার না করিছা জ ৰ্ষের বাড়ী বাইতে আবেশ মাংকিছা

ক্ষিত করিলে সৈ বিগদশ শিকা থাও ইছবে। শিশুকে কোল প্রবা বিডে ক্ষিত্রা পরে তাহা না দেওয়া অন্যায়, কার্মি উহাতে তাহাকে প্রভিন্নণা শিকা শৈক্ষা হয়। শিশুগণ শ্বইচ্ছায় যাহা ধার তাহা ব্যতীত জুজুর ভর দেখাইর। ধাওয়ান জন্যার। শিওগণ বাহাতে উদ্যমশীল ও শ্রমশীল হর তাহা করা কর্তিয়।

(ক্র-মশ:)

न्जन मर्वाम।

১। দ্তন বর্ষে নিম্নলিধিত ব্যক্তিগণ কলিকাতা বিশ্ববিদ্যালয়ের 'কেলো' ক্রৈছেন:—বাবু নৃসিংহচক্র মুথো-পাধ্যায়, বাবু ভূপেজনাথ বস্থ এবং বাবু দেবপ্রসাদ স্কাধিকারী। তিনজনই ক্রেমান ও স্থাবাগ্য।

হ। গত ২৮ এ ডিসেম্বর প্রাতে
কলিকাতার বেলেকাটা প্রাসাদে মহীভরের বহারাজা বার রাজেল উদিয়ার
বাহাছরের মৃত্যু হয়। ইনি বিধবারাণী
এবং ২ পুত্র ও ও কন্যা রাবিয়া গিয়াহৈল। সদাশ্যা রাণী এই উপলক্ষে
১০ হাজার ভিক্তককে এক একধানি
ক্রিল বিভরণ করিয়া সদল মাদেশ গমন

ত। মাজাল বিশ্ববিদ্যালয়ে এক কুন্দ্ৰান বালিকা এফ এ পরীকা দিয়া-হেল। ইইার নাম কুমারী বেলগ্রামি। ইয়া স্বল্যান ত্রীলিকার উন্নতির প্রমাণ। ১৯০০ লাভীয় মহালমিতি উপলক্ষে কাজালে নামাজিক সভাত ৮ব বার্ষিক অধিবেশন হব, আকৃতির আগন গ্রহণ করেন, সভায় কয়েকটা সৎপ্রস্তাব ধর্মি। হইয়াছে।

ব। সমাজ-সংস্থার প্রচারক বারু
মহেশচন্ত্র চক্রবর্ত্তী বঙ্গদেশের নানান্থান
পরিদর্শন করিয়া বছবিবাহের যে বিবরণ
শিপিবন্ধ করিয়াছেন, ভাহাতে দেখা
যায় বরিশালের কলসকাটীর ঈশ্বরচন্ত্র
ম্বোপাধ্যায় অন্ধদিন পরলোকপত, তিনি
১০৭টী বিবাহ করিয়াছিলেন। বর্দ্ধমান
জেলায় ভাটকুল প্রামের কিশোরীমোহন
ম্বোপাধ্যায় জীবিত বছবিবাহকারীদিগের শ্রেষ্ঠ, ভাঁহার স্ত্রীসংখ্যা ৬৫টী।
২০ বংসরের হুইটী ব্রাহ্মণ মুবক ১১টী ও
গটী করিয়া বিবাহ করিয়াছেন। আজিও
ক্রেমের কি হুর্দশা।

৬। ভিশ্নেরা নগরে আডল্ফ লেসিপ্লার নামে এক ব্যক্তি সম্প্রতি করকাশ রোপে মারা নিয়াছে। তাহার কংপিও বক্কাশের দক্ষিণ দিকে এবং রীহা, ফরং ও মাড়ী সকলের সংস্থান উল্টাদিকে ছিক।

১৬ বাইবেল ও কোরাশ্বতে মানবের আবিমাতা ইক্ট আহতে লিড ডা নগরে তাঁহার এক কবর আছে, প্রতি বংসর ৪০ হাজারের অধিক যাত্রী ভাচা দৰ্শন করিতে বার।

HI अल्बामात > किंग्रे भी वं अक्री वदाठिका जान १ किए शीर्ष अस नहरुव मर्गाक डेमब्रमा९ कविद्राट ।

৯। সুরাজপুরের রাজরাজেশরী প্রসাদ সিং আবায় জলের কল ছাপনার্থ দেড় नक ठोका मान कतिशास्त्र ।

मुक्दवित्र विशानात ७०० होका हात. कब्रिब्राएकन ।

১১। जाक्शानचाटक विवि शामिल्य টন-আমীরের অন্তঃপুরের ডাক্টার হইরা-ছেন, কিন্তু তাঁহাকে একা এক মরে ৬ জন শান্ত্রি-বেটিত হইয়া থাকিতে হয়। কোনও সংবাদ পতাদিতে ভাঁছার কিছা निधिवात अधिकात नाहै।

३२। रखी ७०० रख एत रहेरछ ১০। মহারাণী পর্ণমরী কলিকাতা। মানবের আমাণ বুঝিতে পারে।

বামারচনা। শীতকালের পত্র।

এমতী নঃ-কি শিখিব বিধুমুখি, তব স্থাপ আমি সুখী, জানিছ তা' চির দিন কি কাজ কথার, ভবে কি না পৌৰ মান. ভাহাতে পশ্চিমে বাস. এত শীতে চিটি ফিটি লেখা বড দার! भाषात्र मृत्यंत्र क्या. কি লিখিব স্বেহলতা, দাকৰ পাহা'তে শীতে ফেটে পেল কার; আনিতেই পতঃপর, জগাউন কলেবর. পায়ে নাই বুট মোলা, ক্যাপ না মাথার। विधि পाठाहेना फूटन, বান্ধালি হিন্দুর কুলে-পাৰৰ বোহাৰ গ'ডা বাহাদের ৰামী-चारता का ननी-पना-्याध बाहे बूल बना-

मा' शिनी, ठांकू'बा नव आमता कि शांति ? প্রম গুণের নিধি **अ**यङी वासन मिशि গরম গরম ছুটি দিবেন বাঁধিয়া---কণালে তা লেখা নাই, णारे (बढ़ सब चारे. निर्व तकन-भारम "व्यवणा" प्रतिहा ! যদি মোরে ভালবাস ত্বা ভূমি হেখা এস, তোমা বিনা এত শীতে টি'কেনা পরাণ; এ বাছতে তুমি শক্তি, এ সদরে তুমি ভঞ্জি, এ শীতে ভূমিই সম শাল আলোয়াস ! धन हिन श्रवमान. (ननं नार्त्र कुरेक्टन. चुनि कृषि युनि वृथ कानि नाता द्राठि, চারণোকা ভরি আণ শোণিত করিয়া পাম. নামানের "মহতের" ক্ষক ভ্রাড়িটি

আমি ভাই ভাবি নিত্য, িকি শ্বৰ ভ্ৰমিতে তীৰ্ব. দ্বি ভাই. চলে গেলে হরিতার কালী ? कि वनिव कि य शुःथ, छुबिछ हे'ला कि मूर्थ १--ভোটা ভীৰ্যক্তৰ পেতে এখানে বে নাদি। (चांबेटोंब यूथ एएक, (है। एए अने जात (यर्थ !) এথানে হ'ডনা সদা নুকাতে অক্সরে, ফিরিতাম হুই ফনে रेमाल रेमाल यान यान. मिकात, छाँछेनी-छटि, नीवव कमाद्र । रा विकृ कामात हित्स, এর চেয়ে কোন ভীর্থে भौगात चुनात्र किया; किया भूगा मिल १ শনিতা অগত ভাই. श्वशहीन नर्स हैं।है. কি ইইবে রেলওরে ভ্রমিতে লাগিলে প নিতা শ্বধ চিরতরে এখানে বিরাজ করে. द्गीरम मानदवत भिट्ठ यग-भूगा-काला, अमृष्टि भोजागा कारते, নিত্য ছপহরে জোটে ী পায়সে ভয়া ধাগড়াই থালা। (वनी कथा कांक नाहे "পরসা" অনিতা ভাই---"ৱিষ্টাৰ্ণ টিকেট" থানি ছি ছে ফেলে দাও, कारा रग, शता हत,

अतिनाम अहे मारम যাবে ভূমি পতি-পাশে. ক্রিতে গৃহিণীপনা—ধিকু মুর্থতায়— এত শীতে নারী কেবা. করে পতি-পদ-দেবা, পৌৰ মাবে ঘরকলা কে করিতে চায় : শান্তের বচন সতি! শীত কালে যার পতি রাঁধেন বাড়েন নিজে প্রফুল্ল অন্তরে, "দেই ধন্যা নারীকুলে, : লোকে তারে নাহি ভুলে" চির-সোহাগিনী জায়া শিবত্র্গা-বরে ! ছুতো পেলে মুখ নাড়া— মনে মনে "লক্ষী ছাড়।" সে অনিত্য আবদার দূর করি দাও, ছরা করি এস চলে. আমারি লেপের তলে, কিছুদিন নিত্য স্থথ ভোগ করে যাও। পত্ৰ পাঠ মাজ, রাণি, निष्य क्षत्र मुथ्यानि, व्यथद्व तम शामि अन, नयदन तम पिछि, কথা এন মিঠে কড়া, (অভিমানে স্থর চড়া) कां हत्न वां विशा धन स्म क' थानि हि । এ শীতে পাহা'ডে দেশে, একেলা नित्रीष्ट व्यक्त. নিভান্ত নীরব হ'রে থাকা বড় দায়-जारे भव जारक मिरत्र, পথ-চাওয়া আঁথি নিয়ে, বহিলাম লেপ মুড়ি দিয়ে বিছানার। ভোষারই

বামাবোধিনী পত্রিকা।

BAMABODHINI PATRIKA. "कन्याय्यवं पासनीया शिक्षसीयातियस्तः।"

কন্সাকে পালন করিবেক ও যত্ত্বের সহিত শিক্ষা দিবেক।

৩**৬**১ সংখ্যা

মাঘ ১৩০১—ফেব্রুয়ারি ১৮৯৫।

ংগ ক**ল্প।** ৩য় ভাগ।

সাময়িক প্রসঙ্গ।

কুমারী মূলার—ইনি বিলাভের
(Purity Society) পবিত্রতা সংরক্ষী
সভার সম্পাদিকা এবং এক ধনাত্যা
রমী। ভারতের প্রতি ভাঁহার এওদ্ব
অনুরাগ যে অক্ষরকুমার ঘোষ নামস্থ
এক হিন্দু বালককে পোটা পুর এওদ্
করিষাছেন এবং তাহার বারিষ্টারী
শিক্ষার ব্যয় দিতেছেন। ইনি নিরামিদ্র
ভোজন করেন এবং আনেক বিষয়ে হিন্দু
ভাবের পক্ষপাভিনী। মান্ত্রাক কনতেস
দেখিরা কলিকাভার আসিয়াছেন।

মূক-বধির বিদ্যালয়ে আশ্চর্য্য দান—থিদিরপুরবাসিনী শ্রীমতী কামিনী দাগী স্বর্গবিক্জাতীয়া এক বিধবার মণী। ভাষার স্বামী তেজানতী করিয়া কিছু টাকা সঞ্জয় করেন এবং মৃত্যুকালে সং-কার্য্যে অর্থ দান করিবার আদেশ করিয়া ধান। পভিত্রতা রমণী "কালা বোবারা অভি দয়ার পাত্র" বুনিয়া ভাগাদের জন্য ১১৮০ টাকা দান করিয়াছেন। ইলাধারা কোম্পানীর কাগস ক্রীত হইয়। মুক্-ববির বিদ্যালয়েশ টুরীদিনের হস্তে থাকিবে। আমরা আলা কবি এই লানে বিদ্যালথের ছারী কভের স্ত্রপাত হইল। অন্যান্ত দয়ানীল পুক্রবর্মণীগণ এই সৃদ্ধান্তের অন্তর্প করিয়া এই কণ্ডের উরভিবিধান করুন্।

দান—মহীশ্বের মহারাণী শোভা-বাদার খাতব্য সভায় ৪০০ টাকা দান করিরাছেন। বোঘাই সহরের হুর্ম মধ্যে এক পুস্তকাণ্যের গৃহনিস্মাণার্গে দীন বাই লক্ষ টাকা দিশছেন।

চীন জাপানী যুদ্ধ—হাইকৰ নামক স্থানে নাবার এক বোরতর বুদ্ধ হর,

ভারতেখনীর সৌজন্য—
বোম্বাইয়ের ফভেহালি দেখ মহম্মদের
ছুহিতা আনি আকবর বিবি সাহের উইওনার প্রাসাদে মহারাণীর সহিত সাক্ষাং
করিয়া স্বহস্ত নির্মিত কয়েকটা জ্বীর
পাড় উপহার দেন। মহারাণী অতি
সমাদরে তাহা গ্রহণ করিয়া স্মৃতিতিহ-

স্বরূপ বিধীর এক পুস্তকে স্বহত্তে জাপ-নার নাম নিধিয়া দিয়াছেন।

নগর ভাঙ্গা গড়া— দিল্লী মহানগর অনেকবার ভাঙ্গিয়া নৃতন নৃতন
স্থানে সল্লিবেশিত হইয়াছে, কিন্ত হিরাটের ন্যায় ধ্বংসশীল নগর আরে নাই।
ইহা ৫৬ বার ধ্বংস হইয়া ৫৬ বার নৃতন
গঠিত হইয়াছে।

রুকা। বাই—বিলাতে এম ডি প্রীক্ষোত্তীর্ণা হইরা স্বদেশে ফিরিয়াছেন ও চিকিৎসা ব্যবসায় আরম্ভ করিয়াছেন।

অতিকায় রমণী—বেকুণে এক স্থূলকায় মগ যুবতী প্রদর্শিত হইতেছে। ইহার বয়স ২১ বংসর মাত্র, ইতিমধ্যে দেহের উচ্চতা ৭ ফুট অতিক্রম করিয়াছে।

বারমেসে।

काझ्न।

কাছন পুরা বসন্ত কাল। এই কালে
মৃত্তিকায় নব রসের সঞ্চার হইয়া থাকে।
এই জন্য এমাসে চাসবাসের জনেক কথা
ভাছে। জামরা অতি সংক্রেপে ভাহা
বিরুত্ত করিব।

শান,—হাহার। পানের চাস করে, ভারাদিপকে বারজি বাক্ষই কহে। বারজি নবশাখু জাতির অন্তর্গত, জলাচরগীয়। পানের চাসে বেরপ লাভের কথা তনা বার, ভাহাতে এক বিখা জমিতে পানের চাস ক্রিতে পারিলে, প্রীগামের একটী

কুত্র গৃহত্তের সংসার চলিয়া ধায়। পান
চাসের জমা থরচ ঠিক করা বড় সহজ নহে;
কিন্ধ শুনিতে পাই, থরচ বাদে এক বিঘা
জমির পানে বাৎসরিক ১৫ • দেড় শত
টাকা লাভ হইতে পারে।

ষেধানে বেশি রোজ পার না, প্রারই

হারা থাকে, তাদৃশ দো আঁশ মাটীর

ভ্মিকে হ্যজপৃষ্ঠ অর্থাৎ কাছিম পিঠে

করিয়া ভাহাতে পানের চাস করিতে হ্য;

কারণ পানের গোড়ায় বর্ধার জল

লাগিলে অনিষ্ট হয়। এই জন্য ভূমিকে

কাছিম পিঠে করিতে হয় এবং বৃষ্টির ভ্রল সহজে নিৰ্গত হইতে পারে, এজন্য ঐ कृमित्र मध्या मध्या नाला कांग्रिए द्या। ঐ নালার উভর পার্বে দাঁড়া বাধিষা ফাৰ্ছন মাধ্যে পান লভার পোড়া, ব: দুগা রোপণ করিয়া তাহা তণপ্রাদিথার: আজাদন পূর্কাক ততুপরি জল সেচন করিতে হয়। ঐ তৃণাদি সর্বাদ। জলসিক্ত থাকা আবশ্যক। পরে উপরে ও চারি-পালে শর, থড়ি, বা লাকাটির মাচা ও বেড়া বাঁধিয়া দিবে এবং প্রত্যেক দাঁডার পার্বে শর বা ধড়ির জাফরি বাঁধিয়া निर्द । ज्ञित मध्य मध्य क्रियन, जीवन. জয়ন্ত্ৰী প্ৰভৃতি বহুপত্ৰযুক্ত জীবিত বুক সকল রোপণ করিতে হয়, ভাহাতে পানের ভূমিতে ছায়া হয়। ছায়ায় পান ভাল থাকে। প্রভাক পানের মলে এক একটা সর, থড়ি, বা পাকটি দিয়া পার্বের বেড়াও মধ্যের জাফ্রির সহিত যোগ করিয়া দিকে হয়। ভাগতে পানের লতা সকল ঐ শরাদির আপ্রয়ে মাচায় উঠে। ভূমি পরিকার রাথা, মধ্যে জল বেচা এবং পানের লভা সকলকে টানিয়া ও গোছাইয়া দেওয়াই পানের প্রধান পाইট। পাকা পানই ব্যবহার যে:গা, এজন্ম লভার গোড়ার দিক হইতে পান ভাঙ্গিতে আরম্ভ করিতে হয়। পানের ক্ষেত্রে অধিক চাস দিতে হয় না। যথা-

> "বোল চাসে মূলা, তার অঠিক তুলা; তার অঠিক ধান, বিনা চাসে পান।" ধনা।

আড়াই বৎসরের কমে পানলঙা পূর্ণতা প্রাপ্ত হর না। প্রথম ফার্ছন বা চৈত্রে রোপণ করিতে হইবে, ভাহার পর ডিন শ্রাবণ অভীত হওয়া আবশ্যক। বধা,—

"এক আমনে ধান;
তিন শাওনে পান।" ধনা।
আবাঢ় প্রাবণ মাদে অতিরিক্ত পান
জন্মে, সে পান ধাইলে পিতত্ত্তি হয়;
এজত তাহা খাওয়া নিবিদ্ধ।

ধান,—বদি বর্ষার গতিকে এমন
ঘটনা হয় যে, ফাছন মাসের পুর্কে হৈত্রত্বিক ধাল্যছেনে করা যার না, কাছনেই
ভাহা করিতে হয়, তাহা হইলে সে ধানে
কিছুই হয় না। যথা,—

"—কান্তনে ফাড়া।" কাড়া পৰ্বাৎ ধান্তে মহা বিশ্ব।

ভিল,—ফা**ভ**নের শেব **জাট দিন** এবং চৈত্রের শেব আট দিন, ইছার মধ্যে ভিল বপন করিলে সেই ভিলপা**ছ উত্তম**-রূপ সভেজ হয়। যথা,—

"ফাল্পনের আট, চৈত্রের আট;
সেই তিল দায়ে কটে।" ধনা।
কলা,—ফাল্ডন মাসে কলাগাছের
আঁটে কাটিয়া রোপণ করিলে কলার ঝাড়
বুব বড় হয় এবং সেই ঝাড়ে অধিক কলা
ফলে। যথা,—

"ফান্তনে এঁটে পোঁত কেটে; বেধে বাবে কাড়কি ঝাড়। কলা বইতে ভাঙ্গবে ঘাড়।" ধনা। ফান্তন মাসে কলার আবাদ করিলে ঝাড় এত উত্তন হয় বে, সেই কাড়ে মাঝে নাবে কলা ফলে। ব্ধা,

"यमि द्राप्त कास्त्र कना ; তবে হয় সাস ফসলা।" थना । পটল,--এই মাস পটল রোপণের প্রাশস্ত সময়। পটলের মূল সকল উত্তম-ক্লপে কবিত ভূমিতে প্রতি থানায় ৩।৪টা **টিদাবে রোপ**ণ করিতে হয়। রোপিত মৃলগুলির উপর শুক্ষ আচ্চাদন করিতে হর। ঐ পরিচালক তথে শিশির সঞ্চিত হইরা সত্ত্র অজুরোদ্গনের সহায়ত। করে।

"পটল বনলে ফাগুনে; यन वाटफ विश्वता থনা।

७ल.— छत्नद्र क्षथम आवान्छ । इहे माम कति उद्य। এই मान एल त আবাদনা করিলে ওল ভাল হয় না। ওল উৎক্লপ্ত তরকারী। এই মাসে বিশেষ **বদ্দশহকারে ওলের আবাদ করা উ**চিত। "ফাওনে না কলে ওল;

শেৰে হয় গণ্ড গোল।" বে স্থানে উত্তমরূপে রৌদ্র লাগে না. সর্বাদা ছায়া থাকে, সেগানে ওলের আবাদ করা উচিত নহে; কারণ তথা-কার ওলে মুখ ধরে; কিন্তু তত্ততা ওল বেশ বড় বড় হয়।

> "ছায়ার ওলে চলকায় মুখ, কিছ তাতে নাহিক হখ। ' থনা।

বাঁশ.-এই মাসে বাঁশকাড়ের গোড়ায় আঞ্চন দিতে হয়। শরতের প্রারম্ভ **হইতেই বৃক্ষাদির পত্ত খলন আর**ভ হয়। অগ্রহায়ণ হইতে ফা**ন্ত**ন পর্যান্ত তক্লতাদির প্রায় সমস্ত হইর) যায়। এই মাসে বাঁশ ঝাডের পোডায় যত ওচ পাত। পতিত থাকে. ত'হা মূলদেশের চতুঃপার্শ্বে রাশীকৃত করিয়া তাহাতে অগ্নি দিতে ২র। অগ্নিভারা গোডায় সমস্থ পুড়িয়া ছাই হয় এবং চৈত্রমানে ঐ ছাই-নের উপর মাটা চাপা দিতে হয়। मांगे পनन इहेटन उफ़ ভान इया। বাঁশপাতা পোড়া সার এবং মাটা পর-বন্ত্তী বৰ্গ নাবিতে গলিত ও মিলিত হইয়া বাঁশকাড়ের বিশেষ ঞীর্দ্ধি সম্পা-দন করে। এই এীবৃদ্ধি অতি সত্র হয়। এই সঙ্গে বাঁশঝাডের আরও একট। নিয়ম জানা উচিত। যথন ঝাড় হইতে বাঁশ কাটিবার প্রয়োজন হইবে, তথন তিন বৎসরের ন্যুন-বয়ন্ধ বাঁশ কাটা হইবে না।

"ফাল্কনে আগুন চৈতে মাটা; বাঁশ বলে শীঘ্র উঠি। অথবা বাঁশ ছেড়ে বাঁশের পিতামহ কাটী।"

মাতৃভক্তি ও মাতৃ-উপাসনায়, সম্ভানের মুক্তি। (७७० मःशा २५७ शृष्टोत भन्न)

এ ধগতে বিনি মাতৃ-ছক্ত ও মাতৃ-। মাতৃ-ভক্তি, আদর্শ মাতৃ-ভক্তি। উশাসক তিনিই দেবভুলা, িটিই নর দেব সন্নাসী হইযাও মা'কে দেশিতে धक्राम ७ अरवत च त्रिशक्रितन.

मा'दक मित्राছित्तन, मा'त आकात कार्ड ভ্ৰাভাকে অবেৰণ ও नौनाहरन राम করিবাছিলেন। মহাস্মায়ী 🖰 औष्ठे শক্তব চাড়রীতে ধর্বন ক্রুশে নিহত হন, তথন পার্থিব ভাবনার মধ্যে দেবল মা'র ভাবনাই ভাবিয়াছিলেন, পার্থিব কাজের মধ্যে কেবল মা'কেই শিব্যের হতে সমর্পণ করিয়াছিলেন (১)। যে রাজ। রাম মোহন রায় ধর্মবিশাস, সভানিষ্ঠা ও মহাপ্রাণ্ডার আদর্শপরপ, তিনি এমনই মাতৃ-ভক্ত ছিলেন ৰে মাতৃ-ৰাজ। পালনের জন্য (নিরাকার ঈশ্বরবাদী হইয়াও) ইস্কার চাপকান থুলিয়া, গোময়ে চরণ স্পর্ণ করিয়া হিন্দু-দেবালয়ের সীমায় পদার্পণ করিয়াছিলেন (২)। যে কেশব চল্ল সেন দেশে বিদেশে"নহাপুরুষ" বলিরা कीर्डिमान, (संहे (कश्व हल्ल (मन अमनहे মাতৃভক্ত, যে মৃত্যু-কালে মায়ের পদধুলি মাথায় দিখা বলিয়াছিলেন 'মা! ভোমার ওপঞ্জী পাইডাই আমি মানুষ হট্যা-ছিলাম—ভোমার মত মা মেন সকলেরই হয়" ৷ যে অক্ষয় কুমার দত বিলালার উজ্জ্বল রতু, বাঁহার মহত্ব শুনিয়া ভাতিত इहेश बाहे एक इब, स्मृहे व्यक्त क्रांत्र এমনই মাতৃভক্ত যে প্রাণের উচ্ছাসে বলিয়াছেন-

প্রক্রত-বেবত-মাতৃক্রবং ক্ষলারতে। অস্থাক ক্লারতে মনো যে ব্যরারতে।" (৩)

ৰে উপায়চজ বিদ্যাসাগৰ ৰাজালা দেশ ধন্য করিয়া পিয়াছেন, বে বিদ্যাসাপকের গুণের খ্যাতি ভারতে"বাবচ্চক্রদিবাকরৌ" রহিবে, সেই বিদ্যাসাগর এমনই মাতৃ-ভক্ত যে সাঁভার দিয়া নদী পার হইয়া মান্ত-मर्नाम शिथाहिलनं धरः वहमिनगणा काभी का भारत इहे ताहे वाह का माहि কাঁদিয়া ফেলিতেন ! এ সংসারে যে কেছ প্ৰকৃত ৰাত-ভক্ত, মাতৃ-উপাস্ক, ভিনি বিনীত, নিরহকারী, কুডজু, সম্বদ্য ও সকলেই যে বিদ্যাসাপ্ত নরদেবতা। প্রভৃতির মভ বশখী হইতে পারেন না একথা সত্য, কিছু মাতৃভজি ও মাতৃ-উপাদনতে সম্ভান বে মুক্তি লাভ করিতে পারেন, একথা আরেও সভ্য।

যে সন্থান মাতার নিকটে অকৃতজ্ঞ,
সে মানব-ক্লকলত্ব। সে জ্ঞানীই

১উক, ধনীই, বত বড় ক্ষমতাপরই হউক,
বরং মাতৃভক্ষ দীন, মুর্বের পদ-ধৃলি
লইব,তথাপি সে অকৃতজ্ঞ সন্থানের ছারাও
স্পর্ল করিব না! তাহার অদরও নাই,
তাহাতে মহুব্যন্ত নাই!—বড় হুংধের
কথা, বড় ক্ষোভের কথা, আজি কালি
আমাদের দেশে অকৃতজ্ঞতার কিছু

⁽১) ছোহন লিখিত জসমাচল্ল দেব।

⁽২) রাজ: রামবোচন রায়ের উক্ত কার্য জীবুরু মহেজ্ঞনাথ বিদ্যানিধি সিধিত ও 'সোহিতা পত্র অকাশিত।

^(♦) প্রভের অক্ষর বাব্র কবিতার কর্ণ, এই বে 'প্রত্যক্ষ-দেবতা-মাতার চরণপত্ম, অলু, বিশুলি নেই প্রের ফল এবং আবার বন তাহাতে ক্রমর ক্ইলা আছে ।'

বাডাবাভি হইয়াছে। মা'বে বভানের "গান্ধাৎ ঈশ্বরী" একথা অনেকেই ভূলিয়া গিরাছেন: কারণ ভারতবর্বের হ্রদৃষ্ট ক্রমে অনেক ভারত-সন্তান বিচারশক্তি হীন হইয়া পাশ্চাত্য আচার ব্যবহার এছণ করিতেছেন! ভারতীয় নীতির अत्मक श्रीत रा जानर्ग भीति, हेश তাঁহারা বোঝেন না তবে যাহা ভাল ভাষা বিদেশের হইলেও এহণীয়, যাহা মৃদ্ধ তাহা দেশের চিরস্তন প্রথা ইইলেও ত্যাল্য-কিন্ত আজিকার দিনে हिमाव प्रत दहेशाएड-यादा देश्त्राटक राम, ভाम इडेक चात मन्म इडेक, ভাহাই ভারতবাদীর শিরোধার্য। যাহা ইংরাজে করে, সঙ্গত হউক আর অসমত रफेंक, जाशांडे जात्रज्यामीत ''অবশ্য কর্ত্তব্য'। ইংরাজের পদাসুদরণ করিয়া চলিতে পারিলেই ভারতবাসীর জীবন সার্থক হয়। এসব কাজ রাজভক্তি-মুলক নহে, মহত্বের ভক্তিনুলকও নহে-**শদ ভব্তি** মাত্ৰ ! সদ্ধ ভব্তি প্ৰণোদিত হইয়াই ভারতবাসী সর্বস হারাইতে বিসিয়াকেন, গুণ ছাড়িয়া দোষ অসুকরণীয় হইতেছে, ভাল ছাড়িয়া মন্দ টানিয়া भानिए एन ? अनिदक श्रामान की राष्ट्र মীতি, অমূল্য রত্নাবলী, ছাই চাপা পড়িয়া माता वाहेए एहा - এই এ एए मा ज-**छक्ति विवत्रक अ**भूता डेशरमम, **डेव्ह**ल আদর্শ সকল থাকিতে, পাশ্চান্ড্যে,নেপো-লিয়ান বোনাপাটি, ডিউক অধি ওয়েলিং-हैन, वर्ष्क अञ्चानिःहैन, स्राह निन, नामू-

রেল রোমেলি প্রভৃতির উচ্ছল দুঠান্ত থাকিতে, এদেশীয়েরা সাধারণ সাহেব. নগণ্য সাহেব, চূণাগলির পঢ়া সাহেব-দিগকে "আদর্শ" স্বরূপ মনে করিতে-ছেন! মাত্র-ভক্তি দূরে যাউক, এই রকম দাহেবেরা মাতার ভরণ পোষণ যে প্রাপ্তবয়স্ক সন্তানের অবশ্য কর্ত্তব্য, তাহাও বোঝেন না ! ইহাদিগের পদাক লকাকারী অনেক দেশীয় "কতীসন্তান"ও সেই আদর্শ গ্রহণ করিতে উদ্যত হইয়া-ছেন!—ইঁগারা কেহ কেহ মাতাকে "Dear mother" বলিয়া "অসু গ্ৰহ" করেন, কেহ কেহ "বুড়া মাগী"কে ভক্তি ও বড়াদি করা ভারি "অসভ্যতা" মনে করেন !! ভারতবর্য যত কারণে অধঃ-পতিত হইভেছে, সম্ভানের মাতৃভক্তির হীনতা ভন্মধ্যে এক প্রধান কারণ। মাতৃ-ভক্তির হীনতার মানবের ত্ত মকভূমি হইয়া যাইতেছে; সন্নুদয়তা, নিরহঙ্কারিতা দূর হইতেছে; আত্মার সকাণ **শকলও বিলুপ্ত হইতেছে!! খে ব্যক্তি** মাতার নিকটে অকুতজ্ঞ, সেইই প্রকৃত কুতমু ! যেথানে কুতভের বাস, সেন্থান শাণান হইতেও ভয়ানক। কুতন্ন ব্যক্তি নরপিশাচ সদৃশ—হিন্দু শাস্ত্রে কৃত্সতাকে পাপের ''শেষ সীমা' বলা হইয়াছে. সংস্কৃতে আছে---

"ব্ৰহ্ময়ে চ হ্বাপে চ চৌরে ভগ্নবতে তথা।

নিৰ্ভি বিহিতা বাজন কৃত্যে নাতি নিৰ্ভি: ।"

প্ৰকৃত পক্ষে কৃতস্থতা যে মহা পাতক,
একধা ভাবিয়া দেখিলে সকলেই বুৰিতে

নারেন।—এবং সেই দক্ষে মাড়-ভক্তি
লাভ যে সন্তানের অবশ্য কর্ত্তব্য তাহাও
বুবিতে পারেন। যেদিন এদেশের ছোট
বড়, বালক বৃত্ত, মুর্থ পণ্ডিত, জী পুরুষ
সকলেই মাড়-ভক্ত হইবেন, মাড়-ভক্তির
পূর্ণ বিকাস করিতে পারিবেন, এ পতিত
দেশ সেই দিনেই উঠিবে, সেই দিনেই
মানবের—এ দেশীয় মানবের ''জাতীয়
উত্থান" ঘটিবে!

আমরা প্রের বলিয়াছি, ভারতীয়
আনেক নীতি জগতের আদেশ নীতি।
জ্ঞান, ধর্ম ও সভাতায় এক দিন
ভারতীয় আর্থাজাতি পৃথিনীর শীর্ষমনীয
ছিলেন। তাহাদের বুদ্ধিরুত্তি ও ধর্মপ্রের্তি সর্কাইশে সম্পূর্ণ ছিল। তাহাদের
মাতৃ-ভক্তির প্রবলতায়ও সকলকে মুঝ
হইতে হয়; তাহাদেরই নিকটে "জননী
জন্মভূনিশ্চ সর্গাদ্পি গ্রীয়সী" ছিল!
তাহারা ক্লানিতেন

"বদ্গভে জায়তে লোকো বস্যা: তেনে জীবতি। সা সাকানীৰ্থী মাতঃ কোচ্ছি মাতৃসংমাঞ্জ ।"

ম.তাকে সন্মাননা, মাতৃ-দেবা, মাতৃআজা পালন, মাতৃ-প্রিম্বকার্য্য সাধন,
মাতাকে সামান্য মানবী না ভাবিয়া
পরম দেবতা মনে করা, এই সকল মাতৃউপাসনা তাঁহারা সন্তানের সর্ব্বোচ্চ
কর্ত্তব্য মনে করিতেন। আবার মাতা
পরলোক পামিনী হইলে সন্তান পাছে
মাত -ভক্তি চ্যুত হইমা শড়েন সেই ভরে
ভাহারা পরলোকগতা মাতার আলা প্রাত্ত,
সপিতীকরণ, বার্ষিক শ্রাদ্ধ প্রভৃতি ক্রিয়া

প্রচলিত করিরা সিরাছেন। এই কাজ-গুলি মাতার উদ্দেশে সম্ভানকেই করিছে হর; এই কাঞ্ডলি বে মাড়-উপাসনা ভক্তিবৃত্তির ক্ষুরণ ও ভক্তি-বৃক্তি চরিতার্থ क्ता (व धरे काकश्रीत जिल्ला, देश বোধ হয় ভক্তিমান ও ভক্তিমতী সন্তাদ-গণ সকলেই বুকিতে পারেন। ইহার মধ্যে "মাত-বোড়শী" ভজিবুরি গয়াধামের ক্রণের একটা উৎকৃষ্ট উপায়। গরাকেত্রে গদাধরের পাদপদ্মের অতি নিকটে মাত-বোড়শী বলিয়া একটা স্থান আছে। দেখানে মাতৃ ভাদাধী সন্তানকে মাভার উদ্দেশে যোড়পটা পিও দান করিতে হয়. এবং প্রত্যেক পিওদান সময়ে এক একটা মন্ত্র পাঠ করিতে হর, মন্ত্রগুলি মাতৃভক্তি-উদ্দীপনার এত সহায়, বে প্রত্যেক মানবের স্থান্ত মাজ-ভক্তি-লোতে প্লাবিত হইয়া থাকে এবং মাডা ৰে সম্ভানের প্রভাক্ষ দেবতা ভাছাও বোধগম্য হইতে খাকে। পাঠক পাঠি #1-দিগের অবগতির জন্ম আমরা মাত্রোড-শীর(১) সংস্কৃত মন্ত্র বজাসুবাদ প্রকাশ কবিলাম---

> মাসি মাসি কৃত কটাং বাতনাং প্ৰসংবৰ্চ। ক্যাঃনিক দ্বণাৰ্থীয় মাজু-পিঞা বদামাহৰ্।

গৰ্ভাবস্থার বে মাতা (আমার জনা) মাসে মাসে কট্ট ও পরে প্রসবকালে যাতনা ভোগ করিলাছেন, সেই সকল

(>) বছাধন পুর্বে সাক্সোড়নী বাবাবোদিনী। প্রকায় প্রকাশিক হইলাছিল। নিভৃতির জন্ত আনি মাতৃ-পিও জীন ভরিতেছি।

গালভগোতবেরাতু: বৃধিং নৈব প্রযক্ষতি।
ভাসা নিভুরণার্থন মাতৃ-পিগুং বনামাহর । ২ ।
গভাবিদ্যায় সর্ব্রদাই মাত্রার গা
ভালিত, কিছুতেই তৃপ্তি হইত না, সেই
নিজ্তির জন্য আমি মাতৃ-পিগু দান
করিতেতি।

পদভাদ্সপ্লায়তে মাতৃত্বিংশ হছতবন্।
তথ্য নিৰ্বেগাৰ্থায় মাতৃ-পিওং দদামাহম্। ৩।
গভাবস্থায় সন্তানের পদতাড়নার
অস্ত মাতার বিবিধ, ছুন্তর ক্রেশ হইয়া
বাবে তাহা নিক্তির জন্ত আমি মাতৃপিও দান করিতেতি।

পুর্থে দশমে নাসি মাত্রতান্ত ছকরন্।
তদ্য নিক্রণার্থায় মাতৃ-পিওং দদামারম্। ৪।
দশমাস পুর্গ ইউলে মাতার যে দারুণ গঠিষস্ত্রণা হইয়াছে, তাহা নিকৃতির জ্লা আমি মাতৃ-পিও দান করিতেতি।

পর্জাদবগমে চৈব বিবমে ভূমি বন্ধ নি। তালা নিজুরণার্থায় মাতৃ-পিএং দদামাহম্। «

পর্ত হটতে ভূমিষ্ঠ হইবার সমরে মাজার যে বিষম কন্ত হইডাছে, তাহার নিছতির (অর্থাৎ প্রতিশোধ) জন্ম আনুমা মাজ-পিশু শান করিভেচি।

গৈশিকাং অসকে চৈৰ মাজুরভাগ্যহসহৰ । ভাষা নিকুরণার্থার মাজু-পিওং ক্যামাহম । ৬

্ প্রদাবের বিলম্ম হওয়াতে মাতার যে
হঃসহ যুদ্ধনা হইয়াছে, ভাহার প্রতিশোধ
মুক্ত মামি এই মাড়-পিও দান কুরিতেছি।

শায়িদা গুবালে দেহো ত্রিরাক্রানশনেবৃচ। গুদা নিজুরণার্থায় আঞ্চুণিতিং ক্লাবারন্। ১ অরিধারা সেঁক তাপে এবং তিন্
রাত্রি অনাহারে (প্রস্বান্তে) মাতার দেহ
তক হইরাছে, তাহার প্রতিশোধ জ্বন্ত
আমি মাতৃ-পিও লান করি তেছি।
সেবেত কটু দ্ববানি হংগানি বিবিধানিচ।
তস্য নিজু রণার্থার মাতৃ-পিওং ললাম্যহম্। ৮
নানাবিধ কটু দ্রব্য ভক্ষণে মাতার
নানাপ্রকার ক্রেশ হইয়াছে, * তাহার
প্রতিশোধ জ্বন্ত আমি মাতৃ-পিও লান
করিতেছি।

ছলভানাক ভক্ষাণাং আগে বিন্দৃতি যৎফলম্।
তস্য নিকুরণার্থায় মাতৃ-পিণ্ডং দদামাহম্। »
স্মৃতক্ষ্য পদার্থ সকল ত্যাগ করিয়া
মাতার যে তুঃথলাভ হইয়াছে, তাহা পরিশোধ জ্বল্য আমি মাতৃ-পিণ্ডু দান করিতৈছি।

রাজো মৃত্তপুরীবাজনং জিলাতে মাতৃকপ টিন্।
তদ্য নিজ্বলার্থার মাতৃ-পিওং দলামাংন্। ১০
রাজিকাংল সভানের মল মৃত্ত ছারা
মাতার পরিধের জীর্ণ বাদ ছি ছিলা যাতৃযাতে মাতার যে কেশ হইয়াছে, তাহা
পরিশাধ জন্ম মাতৃ-পিও দান করিতেছি।
পুত্রে বাধিসনাযুক্তে মাতৃহংগমংনিশন্।
তদ্য নিজ্বলার্থার মাতৃ-পিওং দলামাংন্। ১১
পুত্রের পীড়া ইইলে দিবারাত্তি
মাতার যে হংগ হয়, তাহা পরিশোধের
ভক্ত জামি মাতৃ-পিও দান করিছেছি।
বদা পুত্রোন লভতে তদা মাতৃত লোচনম্।
তদ্য নিজ্বলার্থার মাতৃ-পিওং দলাম হন্। ১২
পুত্রে জাহার না পাইলে মা যে

এবেশে প্রস্বান্তে প্রস্তিদিসকে, স্বান,
 পাঁচন প্রকৃতি বাইতে হয় ।

শোকাকুলা হন, ভাহা পরিশোধ জন্ম
আমি মাড়-পিও দান করিতেছি।
কুম্মা বিজ্ঞান প্রেদ্যাতি নির্ভরত্তনম্।
ভগা নিছুরণার্থার মাড়-পিওং দ্যামাহন্। ১৩
কুবায় বিজ্ঞান প্রক্রে মাতা যে বছল
পরিমাণে স্তান-তৃপ্ত পান করাইয়া থাকেন,
ভাহা পরিশোধ জন্ম আমি মাড়-পিও
দান করিতেছি!

নিবারত্রী সদ: মাহ্য শোষণক পুনঃ পুনঃ।
তদ্য নিক্তরণার্থয়ে মাহ্-পিওং দনামহেম্। ১৪
ত্তর্যাপান করাইতে দিবারাত্রি মাতার
শারীর শোষণ হইতে থাকে, তাহা পরি-শোষ জ্বস্থানি মাহ্-পিও দান করি-ভেছি।

অল্লাহারবটা মাতা থাবং প্রোভত্তি বালক: ।
তদা নিশুবেণাথাঁর মাতৃ পিও দেশমাতম্ । ১৫
নিশু পুনের স্বাস্থ্যের জন্য মাতাকে
অল্লাহার করিতে হা, তাতা পরিশোধ
জন্ম আমি মাতৃ বিও জান করিতেছি।
ব্যম্বারে মহাযোরে পথি মাতৃক শোচনম্ ।
তদা নিভ্যাগার্থা মাতৃ পিও দেশমাতম্ । ১৬
পাছে সন্থানের বিপদ বা মৃত্যু হয়
এইজন্ম মাতা (দিবানিশি) শোকাক্লা
ছইয়া থাকেন, গোতা পরিশোধ জন্ম আমি
মাতৃ-পিও দান করিতেছি।

ইহাই হিন্দু আয়াগণের মাতৃ-বোড়শী। ভক্তির কায়ে উপাসনা এ কথা আমর। আলে বলিখাছি। উপাসনার আব এক উদ্দেশ্য এই যে উপাসনাধারা ভক্তিস্থৃত্তি সম্পূর্ণতা লাভ করে। হিন্দুর মাতৃ-যোড়-শীভ এক মাতৃ-উপাসনা; হিন্দুর অনেক ব্রত, নিঃম, ক্রিয়া, উপাসনারই নামান্তর।

সর্কভিত্বজ্ঞ শ্বনিগণ মানব-স্থান্থ-ত্বীক্রাই সে সকল ওভকর নির্ম প্রব-ভূন করেন। আজি কালি দেশের জনেক ব্যক্তি কিনা স্থানীর সকল প্রথাই "ছ্পিড" ৬ কুসংস্থার" বলিয়া মুখ বিকৃত করেন, ভাই আমরা এ সকল কথা লিখিলাম। থিনি ভিন্দু আধ্যগণের মাতৃ-বোড়শী বুকিবেন, তিনি ভিন্দু আধ্যগণের মাতৃ-ভজ্তি-ভ্রাণ্ড বুকিবেন, ইহা আমি বিশেষ অশা করি। তবে এ আশা আমার ভ্রাণাকি না তাহা বলিতে পারি না।

উপসংহার কালে আমরা এজগতে মাতৃ-উপাদনাতেই সম্ভানের মুজি । মানবের সকল উন্নতির মূল ভজি; আয়োরভি, পারিবারিক উন্নতি, সাম্য-জিক উন্নতি, জাতীয় উপ্রতি-সকল প্রকার উন্নতি ভক্তিযোগেই সাধিত হয়। ভুক্তিবুদ্ধির সংগ্রিছে স্থান ভুগবান, কিছ মাতৃ-ভক্তিই ভক্তির আর্ড পোড়োগ মাচ-ভক্তি, আগায় ভগব**ভক্তি**-রূপে সম্পর্ণতা লাভ করে। আমরা আবুগ বলিয়াছি, এ সংসারে মাডাই ভগৰতী বিশ্বমাতার প্রতিক্রতিরূপিণী; বিখেৰবী বিশ্বকণ্ডের জন্ত আৰু মাত-দেবী সম্বানের জন্য দেবভাবে পরিপূর্ণ। বিনি মহাসমূদে যাইতে চাকেন, ভাঁহাকে महान्यो वाहिया याहेटड इय, महान्यीत (नव मीमा (७३ मन्ष । (मरे तकम विनि ভগবন্ধক্রির রাজ্যে পৌচিতে চাছেন, তাঁহাকে মাতৃ-ভক্তির রাজ্য দিয়া চলিতে হণ, মাতৃভজ্জির পূর্ণভাতেই ভশবভজি।

মহাত্মা বীভঞ্জী বলিয়াছিলেন "বে ব্যক্তি দুশ্যমান ভ্রাতাকে প্রেম করিতে না পারে, সে সমুশ্যমান ঈশ্বরকে কিরুপে প্রেম **করিবে ?" আমরাও** বলি, যে ব্যক্তি প্রভালদেবতা জননীকে ভক্তি করিতে **শক্ষ্য, সে অপ্র**ত্যক ভগবানকে ভক্তি করিবার ক্মতা কোথায় পাইবে ? বর্ণ-মালা ত্যাগ করিয়া, লেখাপড়া শিক্ষা **অসম্ভব, মাতৃ-ভক্তি না শিথিয়া ভক্তি-**বৃত্তির অহুশীলন-চেষ্টাও সেইরপ অস-তব। মাতৃ-ভক্তিই ভক্তিভাবের বর্ণ-মালা। **থে**ত্যেক সন্তান ইহা বুঝিয়া মাতৃ-ভক্তি অভ্যাস করিবেন, মাতার মহত্ত ও দেবত্ব স্মরণ করিয়া মাতাতে ঈশবের শক্তি সকল দেখিবেন; প্রীত ও প্রস্কুতাবে মাতার চরণ বন্দনা, মাতার সেবা ভজাষা, মাতৃ-হিত দাধনে আছোৎ-সর্গ ও মাত পরিত্তিতে আপনাকে কুতার্থ জ্ঞান করিবেন। যাঁহার মাভা পরলোকগামিনী,ভিনি মাতৃ-ভক্তি বিকা-সের অন্য প্রতাহ দেবার্চনা বা উপা-সনার সময়ে মাডোর স্বেহ ও দেবত স্মরণ করিবেন, মাতৃ-যোড়শী-স্তোতাদির নাায় माष्ठ-ভक्ति-উদीপक স্থোত্তাদি পাঠ कतिरवन, माकुमूर्जि धानश्रक्तिक हत्रव वक्षमा করিবেন। পরলোকগতা মাতার উদ্দেশে নিয়মিত প্ৰামাদিকিয়া ও অন্যান্ত সাধুভাবপূর্ণ কার্য্য করা স্ভানের অবশ্র কর্মতা। এততির মাতা এজগতেই ধাকুন, भार पार्वरे शाकृत, त्रष्ठान हित्रविनरे মাছভাবে ওশ্বর হইরা মাতার আদর্শে

আপনাকে সম্পূর্ণ করিবার চেষ্টা করি-বেন। এজগতে মাতৃঞ্চণতো অপরিমিত্ত অপরিশোধ্য, তবে মাতৃভক্তি ও মাতৃ-উপাসনায় সিদ্ধ হইতে পারিলে সন্তানই মুক্তিলাভ করিবেন।

ষ্পতএব ধিনি যাতৃভক্তি মাতৃ-উপা-সনায় সম্পূর্ণতা লাভ করিয়াছেন, তিনি षरकातगुना, विनशी, मक्तम्य, সেৰাপরারণ, দ্যাময়, ক্ষমামর, সহিষ্ণু, বৈর্ঘাণীল, আয়ত্যাসী, পরার্থপর, জিতে-স্ত্রিয়, দেশহিতৈষী * ও ভগবন্তক ; তিনি श्रुक्य इटेटल (नव, तमनी इटेटल (नवी। হিন্দুধর্ম-শাস্ত্র এই রকম নরদেবতাকেই "মুক্ত" বলিয়াছেন (১), আমরাও नद्राप्तवजारक देशलोकिक विन ।-- शत्राताक्ष (य এই রকম ব্যক্তি মুক্তি লাভ করিয়া থাকেন, मालाका, माजभा, माभीभा ७ मायूका-আত্মার যতদূর সন্গতি সম্ভব, ভাহাই যে প্রাপ্ত হন, একথা বলা বাহলা। ভগবতী বিশ্বমাতা জেহের হস্ত প্রসারণ করিয়া মাতৃভক্ত সন্তানকে, ভাঁহার অমৃতময়

বাঁহার আন্ধা জ্ঞান বিজ্ঞানে তৃপ্ত, বিনি নির্মিকার জিডেন্ডির, নোট্ট পুজর কাকনে সমবর্ণী, সেই বোনীই বৃক্ত।

শাত্ভক্তকে দেশহিতৈ
 ই বিললাম, কারণ
 জননীও জন্মভূমি
 একই বক্ষেরপদার্থ। ভাই
 বিনি জননীর মর্থ বাঝেন, তিনি জন্মভূমিরও মর্ব
 ব্রিতেপারেন।

 ⁽১) জ্ঞান-বিজ্ঞান্ত্রাল্লা, কৃটছো বিজিতেজিয়:।

মুক ইত্যাচাতে বোগী সম-লোট্রাল্ম-কাঞ্চন:।

ভগবলগীতা, ৬ জ্ঞান ।

কোলে ভান দিয়া থাকেন। ভাই ভাকি-তেছি, ভাই এস, ভপিনী এস, একবার সকলে মাতৃভক্তিরূপ মহাসাপরে—মহা সমুদ্রে ভূবিব, মাতৃউপাসনা কবিতে শিধিব, তাহা হুইলে এ জীবন সার্থক श्हेरव, आमारमत मुक्ति लाख श्हेरव । मुर्च হই, অধম হই, নগণ্য হই, আমরা মারের সন্তান তো বটে। মার আশীর্কাদে লেখিকা त्रिक्रकाम शहेर ।

এমা-

বিগত শতবর্ষে ভারতরমণীদিগের অবস্থা।

(७५० मरथा: २१० प्रक्षेत्र भन्न ।)

শ্রী ও পুরুষ এই উভয়ের সংমিপ্রণেই মমুবাসমাজ। একের যাহা দোষ ওণ. অপ্রেও তাহা দংক্রামিত হইরা থাকে। স্তরাং বে সমাজে পুরুষগণ কুরুচিগ্রস্ত. সে সমাজে তীজাতি লক্ষাশীলা ও প্ৰিত্ৰতা-আক্ৰাক্তিনী হইলেও ভাষা-দিপের ক্রচি অপবিত্র ও হীন ভাব ধারণ করে। যে সময়ের কপা বলিতেচি. তুধন বন্ধ মহিলাদিপের মধ্যেও এইরূপ দোৰ ছটিয়াছিল; প্ৰাধান প্ৰভৃতি ক্রিয়া উপলক্ষে খ্রীদিনের মধ্যে অভি বুণিত আমোদ প্রচলিত ছিল। ভরির সম্বয়স্কারা একতা হইয়া যে স্কল রসিকতা করিতেন, ভাহা ন্যস্করেজনক ৰলিলেও অত্যক্তি হয় না। জীলোকেয়া ক্রিয়া বিশেষ উপলকে কুৎসিত ভাবে নুত্য ও গীক করিতেন, এমন কথাও তুনা वाद ।

বাঙ্গালার পঠাধান প্রভৃতি ক্রিয়। উপলক্ষে স্ত্রীজাতির বেরূপ কুরুচির পরিচর পাওরা ঘাইত, ভারতের অন্যান্য

বিচ, ছোলী, প্রভৃতি শর্কে সেইরূপ কুক্চির ছড়াছড়ি হইড, ভনা বার। ইছাতে কেবল বালালি ন**ছে, ভারতের** অন্যান্য উচ্চতর ভাতিও বে কচিলোবে দ্যিত ছিলেন,এ কথা বুকিতে পানা বার। এইরপ তখন ক্ষচির আক্তরিক ভাগ विश्मत कि नुर्विहन।

व्यामना शृत्स्य विनत्नां , नदौरतन বেশ, ভুষা ও আলাপাদির হারা মাশবের ক্রির বাহ্মিক ভাগ প্রকাশিত হয়। ত্থনকার দিনে বাঙ্গালার বারুগণ পর্যন্ত স্চরাচর পিরাণ, জামা, জুতা, মোজা প্রভাতর ধার ধারিতেন না। এখন থেমন বাজকর্মচারীনিপকে ইংরেজী পরিচ্ছেদ পরিয়া আপিসে যাইতে হয়, তথম (महेक्रल मुनलमानी श्रिक्ल ছিল। মাধারণ ব্যক্তিপণ ধৃতি চাদ-রেই দিন কটিটিতেন; ধনী **अट्टब** বালকেরা ১৮৷২০ বংসর বয়স পর্যাস্ত হার, বাজু, ৰালা, গোঠ অভ্তি পহনা ব্যবহার করিতেন। বল্পহিলারা কপাল, খানে (হিন্দু খান, দাকিণাত্য প্ৰভৃতি) নিুরিকা, চিবুক প্ৰভৃতি **উন্ধি দি**ৱা

চিক্রিত করিতেন। কোনও কোনও ধর্মপরায়ণা মহিলা হস্তবক্ষ প্রভৃতি অবয়ৰে "রাম, ছুর্গা" ইত্যাদি দেব শেবীর নাম উল্কি দিয়া চিত্রিত করিয়া नहेराजन। मधवात्रा मिंथि, कलान ७ নাসিকায় বহু পরিমাণে সিন্দুর লেপন করিতেন। সাদা দাঁত তাহাদিগের পছন্দ হইত না, এজন্য মিসি ব্যবহারে পত্ত গুলি "ভ্ৰমন ক্লফ" কনিতেন। নবীনারা চুল বিনাইয়া বহুতর দড়ি দিয়া, মাথার উপরে (প্রায় ব্রহ্মতালুকার কাছে) শ্বমা রকমের খোঁপা বাবিতেন। স্মাথের চলক্তনি ছোট ছোট করিয়া কাটিতেন; কাট। চুল গুলি "ঝাপ্টা" নামে কর্ণনূলে শোভা পাইত। ধনিগৃহের রমণীদিগের সোণা ও রূপার তুই হুট গহনা থাকিত; সোনার স্ট নৈমিত্তিক গ্রহনা অর্থাৎ ক্রিয়া কর্ম উপলক্ষে ব্যবহাত হইচ: আবে রপার স্ট নিতা গহনা অর্থাৎ সকল শময়ে ব্যবস্ত হইত। সে স্কল্পুঃনার নাম ভানিতে যদি দেশীয় ভগিনীয়া কেহ উৎস্ক হন, মেজন্য তাহাও বলিতেছি; নাকের গহনা নথ, অর্থ্ধ চল্র ; কানের গহনা চাঁপা, কড়ি; গলার গহনা মোহন, ৰড় বড় মাছলি; মনিবজের তাড় বাজু; হাতেৰ গহনা বাউটী, পৈছে, থাড়; কোমরের গহনা গোঠ চল্লহার; পাষের গহনা সাধামল, বাক-मन, ^{*}हेजानि हैजानि। शहसासनित ভারতি ধেরপ ছিল, তাহার ভাষুনা এখন পাওয়া যায় না, তবে আমার পাঠিকা

ভিনিনীদিগের মধ্যে যদি কেহ প্রপিতা-বা প্রমাতামহীঠাকুরাণীদিগের কোনও গ্রনা দেখিতে পাইয়া থাকেন তিনি বুঝিতে পারিবেন। ভাঁহারণ সকল সময়েই একবন্তা আর্থাৎ একথানি মাত্র কাপড পরিয়া থাকিতেন। তখন বিলাতি কাপড় বা পাছাপেড়ে সাড়ী এ দেশে ছিল না; দেশের তাঁতি. জোলাদিগের হাতের কাপড় পরিয়াই ভাষাদের দিন কাটিত। উৎসবের শময়ে ধনী রমণীরা মেঘডুসার, আশ্-মানতারা, রাসমণ্ডল, লক্ষ্মী বিলাস, नाजैन-- **এই সকল বহু**মূল্য বস্ত্র ব্যবহার করিতেন। বেনারসী তথন বড় একটা ব্যবহার্য্য ছিল না। সধবারা প্রচুর পরিমাণে শাঁখা বাবহার করিভেন।

বঙ্গােশ বাতীত ভারতের অন্যান্য স্থানের মহিলাদিগের প্রিস্কলানি অপেকাকত উন্নত ছিল। একশতাকীৰ পরেও তাহা যে বিশেষ পরিবর্ত্তিত হইয়াছে, এমত বোধ হয় না। ভবে পশ্চিম প্রদেশীয়া রম-ীগণ সর্ব্বাজে উল্কির গহন। পরিভেন। व्यत्यानि দেদিকে অপেকাকত নিম্ন শ্রেণীর রমণী-গণের মধ্যে তাহ। প্রচলিত আছে। প্রাচীন সময়ে সাধারণ ক্রতির এইরূপ পরিচয় প্রথম ধায়।

বাজ্য ও পরিশ্রম—গত শতাকীর প্রথম মূগে ভারেত্রাসিনীদিগের স্থাস্থ্য এখনকার অপেকা যে আনক ভানোছন, একশা বোধ ১৪ অনেকেই জানেন। ইशांत टाक्छ कार्य मंत्रीत-विष्णान विन् পণ্ডিতেরা বলিতে পারেন; কিন্তু তথাপি আমাদিগের বোধ হর বে তথনকার রমণীরা অতি জল বয়সেই গৃহকর্মে জভান্ত ইইতেন; ব্যায়ামে যে ফল লাভ হয়, নিঃমিত রূপে অক্চালনাও লম করিলে তদমুরূপ ফল লাভের সম্ভাবনা; তাই গৃহলন্ধীগণ ভাত বুঁাধা, জ্বতোলা, वामनगाङ्गा, चतरलाला, धानडाना, चूँढि-ভাঙা, গোয়াল পরিষ্কার করা প্রভৃতি সংসারের ধাবভীয় কর্ম সহত্তে নির্বাহ করিল অনেক স্কৃত্ব ও সবল ছিলেন। শারীরিক বলে ভাহারা এখনকার অনেক "সূকুণার" পুক্ষদিগের উপরেও স্থান পাইবার যোগা। সাংস গে প্রধানতঃ শ্রীরিক বলেধ ফল একথা বোধ হয় অনেকেই ভানেন । যে সময়ের কথা বলিতেছি, ভুখন রাজ-শাস্নের শিথিলতা এবং সম্মান্য কারণে ভারতে এঠ হরতে, চুরি ডাকাতি প্রভৃতির প্রাণ্ডার হইয়াছিল। কিন্তু ভগন--বর্ত্তমান সময়ে যাহারা ভারতের সকল ভ;তি অংশক। ভাক ও দুর্বল বলিধা প্রিভিড, ভগন সেই বান্ধালি জাতিরও প্রকৃত সাহস ভিল ; বছীয় অবলং দিংগ্র এমন সাহদের কথা ভনা যায় যে অভি-ভাবক পুত্ৰগণ বাড়ী নাথাকিংল বম-रोता कार अवसातिनी इन्या कार, एकाइ মবল হি.শ্ৰু জন্তনিগকে ভাড়না করি-

 সংগ্রেষ্ঠ আর এক কারণ দাবুতা। অনাধু বলবান্ চইলেও প্রকৃত দাব্দা হইতে পারে না।

ভেন ! * এখনকার দিনে এ সকল কথা
"আবাঢ়ে গল্ল" বলিয়াই বোধ হয় । বাধাহউক গত শতাকীর প্রথম বুগে ভারত
মহিলাদিগের বাজিগত অবস্থা সাধারণতঃ
এই রকমই দাড়াইয়াছিল।

পারি বারিক অবস্থা—আমরা রমণী-গণের বাক্তিগত অবস্থা ষতটুকু চিত্রিত করিলাম, ভাহাতে গত শতানীর অধন ৰুগে নারীজীবন বে বছ সৌভাগ্যপূর্ব ছিল না, একগা সকলেই বুঝিতে পারেন। কিজ বজিগত জীবন অপেকা পারি-বারিক জীবনই তাঁহাদিগের পক্ষে অধিক-সূর্ভাগাজনক। নারী-জীবনের অজ্ঞানতা, নিৰ্ধনতা, প্রাধীনতা, **পুক্রের** বহুবিবাহ প্রচলিত থাকাতে স্পদ্ধীযন্ত্রণা, रेवधवाममा छेलचित्र इहेरल व्यक्तिमा ্ক্লশ---এই সকল ভূৰ্যটনাৰ ক্থন কোনটা আক্রমণ করে, এই আশকায় ভারত-বাসিনীধিগকে জীবমূতা থাকিতে হইত; প্রতরাং কন্যা সভান ভূমিলা **হইলে** মতে। পিত। ও বন্ধুগণের আনন্দ লাভ দরে থাকুক, দারুণ ভ্রেই অন্মিত। স্লোজাতা কন্যার এক বিভীবিকামর পরিণাম ভাঁহাদিগের মনশ্চকে আবিভূতি ভটলা ভাঁচাদিংগর স্বয় দাক্রণ নৈরাশ্যে

কুমারী শাল ট্ ছিখ্ তাহার কাপজে
ছীলোকদিগকে বাছান শিখাইতে লিখিছাছেন।
তাহার বিবেচনার বাছানে সৌকর্যা বৃদ্ধি হয়।
তাহানের দেশে স্তীলোকের বাছাম শভব হইছে
পারে, কিন্তু এদেনে বাছান লিগিবার বত দেবী
চৌধুরাণী সহজে নিলিবে না পার্ছা কর্মই ভারতমহিলা নিপের ছাছান।

शूर्ग हरेंछ। अदक कन्या मञ्जान हरेएछ বংশের কোনও উন্নতি সম্ভব হর না, তাহার পরে তাহাদিগের জীবনে এই শ্ৰুল ছুরবন্ধার আশ্রা, ভাই পুত্র সন্তান বেরপ আদর ও ষ্টুলাভ করিত, কন্যা **কি**ছুই **সম্ভানে**র ভাগ্যে সে रहेंछ ना। অনেক ভাহার অনাদৃতা ও অবহেলনীয়া হইত !--বুঝি ভবিষাৎ জীবনে অনেক সহিতে হইবে विषयारे निगरव अजाशिनीरमञ्ज जागा-ক্ষেত্রে সহিস্থার বীজ উপ্ত হইয়া থাকিত। যাহা হউক ক্রমশঃ গর্ভধারিণীর ক্ষেতে. আত্মীরগণের পালনে, স্কলের উপরে বিশ্বজননীর কুপায় শিশু বালার **দেহ ও দীবন পরিপৃষ্টি** লাভ করিত। বালিকা বয়সে ভাহার৷ খড: প্রবুতা হইয়া খেলামরে গাহঁষ্টা জীবনের অভিনয় করিত: বালিকা বিদ্যালয়ে ভাহাদিগকে লেখা পড়া শিখিতে হইত না, কিন্তু থেলা ঘরে বশুগৃহিণী প্রভৃতি সাজিয়া রন্ধন, পরিবেশন, শিষ্টাচার আচরণে গৃহধর্মের কার্যো অভাস্তা হইত। बक्रोन वानिकाशन क्रांच्य (मं क्रुंडि, क्रांन निक्त व्र. আদর সিংহাসন ইত্যাদি ত্রতাচরণে প্রবৃত্তা হইতেন। बातावृद्धित अहिष्ठ मा, ठाकूतमा, लिमीमा অভূতির সহিত গৃহকার্যো বোগ দান করিতেন। কন্যাদিগের বিনয়, লক্ষা, শীলভা, ধর্মজাব, বাধ্যতা ও গৃহকাধ্যে মিপুৰতা শিকা দেওয়া অভিভাবিকা-विरमंत्र এक क्ष्यांन উत्मन्त्र किल।

বিবাহ মানব জীবনের এক প্রধান সংস্থার। কিন্তু বিগত শতাকীর প্রেথম যুগে দেশীয় মহিলাদিগের অনেকের বিবাহ এত অল্লবয়সে সম্পাদিত হইত যে প্রাপ্তবয়সে নিজের বিবাহের বিষয় কাহারও স্মরণ থাচিতে ভারতের পরবন্তী সময়েও এদেশে প্রাপ্ত বয়দে রমণীগণের বিবাহ চলিত ছিল. কিন্তু বল্ল।ল সেনের ছাপিত কৌলীন্য প্রথা ও মুসলমান রাজগণের অত্যাচার. এই হুইটা ঘটনা হইতেই প্রধানত: বালা বিবাহের প্রাত্রভাব হয়। কোলীন্য প্রথা হইতে কন্যা পণের উৎপত্তি; কন্যাপণের জন্যই বাল্য বিবাহ অধিকতর প্রচলিত হইয়া উঠিয়াছিল।—বিবাহের সময়ে কন্যার পিত্রাদি বর পক্ষের নিকট रहे**र्ड मृ**ला धर्ग कतिरल "কন্যাপণ" কহে। যাঁহার। রাহ্মণবংশে উচ্চশ্রের শ্রোতীয় ও কায়স্থ বংশে উচ্চত্রেণীব কুণীন, তাহাদিগের মধ্যে অনেকে (এখনকার পাস্করা ছেলের বাপের মত) কন্যার বিবাহ দিয়া প্রচর টাক। শাভ করিতেন। নিম্নশ্রেণীর হিন্দু-গণ অদ্যাপি কন্যাপণ গ্রহণ করিয়া থাকেন।

কিন্ত এই রকম পণ লইয়া কন্যার বিবাহ দেওয়াকৈ আর্য্য-ধর্মাচার্য্যগণ ''আহ্বর বিবাহ'' বলিয়া গিয়াছেন; ''আহ্বর'' শব্দের অর্থ নিন্দিত, অপবিত্র, অভ্ডকর, ইত্যাদি। মনু বুলিয়াছেন— ''পঞ্চানান্ত ত্রয়োধর্ম্মা দ্বাবিহ। দৈশাচন্দান্ত্রবৈদ্বৰ নক্তব্যা ক্লাতন।" অধাৎ প্রাজ্ঞাপত্য, গান্ধর্ম, রাক্ষ্য, আহর ও পৈশাচ এই পাঁচ প্রকার বিরাহের প্রথমোক্ত জিবিধ বিবাহ ধর্মার্মুদিত; অবশিষ্ট পৈশাচ ও আহর বিবাহ কাহারও কর্ত্তব্য নহে।

এই সকল বিষয় আলোচনা করিলে অনুমিত হয় যে আমুর বিবাহ হিন্দুণায়ের অনুমুমোদিত—নীতিরও বিরোধী। কিছু চুর্ভাগ্যবশতঃ এদেশের বছলোক শাল্ল বা নীতি অপেক্ষা দেশাচারকে অধিকতর ভক্তি করেন। এইজন্য আমুর বিবাহও ভারত সমাজে গৃহীত হুইয়াতে! যাহা হউক বাল্য বিবাহের আনুর্ভাবে মাতৃত্বন্য ভাগ্য না করিছেই অনেক কন্যার বিবাহ হুইয়া যাইড; সম্প্রদায় বিশেষে কন্যা গর্ভন্ম হুইনে অববা গর্ভন্ম হুইবার পর্মে ভাগ্যর

বিবাহের সম্বন্ধ ভির ছইরা থাকিছ। এইরপ বাল্য বিবাহ ছইতে শিশু বিষয়া-দিপের সম্বাধি অনেক বেশী ছিল।

এতত্তির ভারতের পশ্চিম প্রদেশে
কনা বিবাহ এত ব্যর-সন্থল ছিল, বে
লাধারণ ব্যক্তিগণ তাহা নির্মাহ করিছে
আক্ষম হইয়া পড়িতেন, অথচ কন্যার
বিবাহ না দিলে তাঁহাদিগকে সমাজচ্যুত্ত
হইতে হইত।—সম্রাদায় বিশেষে সমাজচ্যুতি না হইণেত বড় অপমানিত হইছে
হইত। এই সকল কারণে সেই সকল
ভানে সদ্যোজাতা কন্যাদিগকে বিনাল
করা হইত।—আনক স্থলে কন্যার স্তেহমন্ত্রী জননীই সহত্তে এই নৃশংসোচিত
কার্য্য করিতেন। তত্ত্বপ্রদেশীর বুমণীকুলের জীবন যে কিপ্রকার শোচনীর ছিল,
এই ঘটনা হইতে ভাহা বুনিতে পারা যার।

পাঁচন ও মুষ্টিযোগ।

(२४३ मःच्या २८१ शृहीत्र भन्न)

খাদ কাদ ও রক্তপিত।

১। ইাপকাস বেগৌ লোকাতামাক মূবে বাখা অভানে কহিলে ইাপকান ক্ষমন থাকে।

২ । হাঁপোনী রোগীরা আফিন থাওয়। জভ্যাদ করিলে স্বস্থ থাকে।

৩। আদার রস ৫ তোলা, পঞমুখী লাল জবা কুলের গাছের পাতার
বস অর্থ ছটাক। এই চুই বস্তুতে ঘোগ

করিয়া পরিবর্জিত ইাপরোপ সময়ে, এই
মক্ষেত্রিয় নিজা একবার করিয়া এক
সপ্তাহ দেবিত হইলে বিশেষ উপকার
দর্শে।

৪। ত্লদী পাছের খুংরী পোজা
 ভাষদাত্লী করিয়া গলার ধারণ করিলে
 বালকদিপের হাঁপানি রোপ আরাম হয়।

e। कहेकां विरक्षत स्थानिका

চারিভাগ করিয়া একটা ভাগ কলার ভিতর প্রিশ্না প্রত্যন্থ প্রাতে থাইলে ৪।৫ দিনের মধ্যে হাঁপ কাশি রোগী আরোগা হয়।

কালে একবার, আড়াই প্রহরের সময়

একবার সায়ংকালে একবার, ঔষ্ধ দেবন

করিবে। ইহাতে হাঁপ রোগ আরোগ্য হয়।

৮। মিঠা যাহাকে অমৃত বাবিষ कर, विक् प्लोकान इटें जानिहा চাকাচাকা করিয়া কাটিয়া গোমুত্রে ২।১ দিন ভিজাইয়া রোস্তে ওক করিলে শোধিত হইল। এই শোধিত মিঠা চারি আনা কৃষ্ণ বুত্রার বীজ তুগ্ধে পাক করণা-নস্তর রোদ্রে শুক্ষ ও চুর্ণ করিয়া বস্ত্রে ছাঁকিয়া এই চুর্ণ চারি আনা ; এই সমস্ত দ্রব্য থলে জলম্বারা বিশেষরপে মৃদ্দিত হইলে সর্বপ পরিমিত বটিকা প্রস্তুত করিয়া হাঁপ রোগীকে চর্ব্বণীয় তাম লের দহ প্রতিবারে ২।৩ বটী দিবে। এই নিয়মে দিবসে ২াত বার সেবন করাইলে ভয়ক্ষর হাঁপ আরোগ্য হয় ৷ শ্বাস রোগে রাত্রিকালীন আহার লঘু হওয়া নিতান্ত আবশ্যক।

জ্যোতিক্ষের দূরত্ব নিরুপণ।

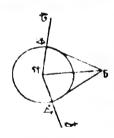
পৃথিবী হইতে কতদ্র, তাহা অনেকের করনারও অনায়ত্ত। অথচ বালক বিজ্ঞার প্রথম পর্যান্ত দেখাখার, স্থ্যা পৃথিবী হইতে এতদ্রে, চক্র এতদ্রে ইত্যাদি। ছাপার লেখার অনেক বাল-কের ভক্তি অচলা বলিয়া, এসকল কথা ভাহারা বিখাস করে; কিন্তু অনেক প্রাপ্তবিষ্ক লোক, এসকল কথা হাসিয়া উড়াইয়া দিয়াছেন দেখিয়াছি:। তাহারা বিনা করেন, এসকল আন্ধাজের কথা,

যাহার বাহা খুসী সে ভাহাই বলিয়া ফেলে। প্রকৃত পক্ষে জ্যোতিক্ষের দ্রত্ব নিরপিত হইতে পারে না, এইরপই তাঁহারা মনে করেন। কি উপায়ে জ্যোতিক্ষের দ্রত্ব নিরপিত হয়, অভি স্থলভাবে সে বিষয়ে কিছু বলিব। তাহাতেই অনেকে বুঝিতে পারিবেন মে দ্রত্ব নির্প্ত বিশ্ব অসম্ভব নয়।

রেল গাড়ীতে দাইবার সময় প্রত্যক্ষ করা যায় বে, যে গাছটি নিকটস্থ, সেটি দেখিতে দেখিতে দূরে চলিয়া যায়; किंक मिरे भाष्ट्र मस्ट्रा मृष्ठे मृतक শীন্ত ছাড়াইয়া একটি গাছ, ভত भाशास्त्र पृष्टाष्ट হাওয়া যায় না। আরও উপৰোগী। বনপথে হউক, অশ্বা-(बाइर्न इंडेक. व्यवदा दाँदिश इंडेक, যে কোন প্রকারে পার্কত্য প্রদেশে গ্রমনাপ্রনের স্ময়, কোন পাহাড় দুর্ভ কোন্টি নিকটন্থ, ভাগা অবয়বের পরি-আকুটতা ভিন্নও অন্য উপায়ে নির্দারিত হইতে পারে। চলিবার সময় ছইটি পাহাড়ের প্রতি লক্ষ্য করিয়া অব্যসর হইলে দেখিতে পাওয়া যাইবে যে. একটি পাহাড় ধেন ধীরে ধীরে অতিক্রম করিয়া যাভয়া মাইতেছে, কিছু অন্য একটি যে ক্লনে ছিল ঠিকু দেই স্থানেই ষেন আছে; যেন একটুও অতিক্রম ক্রিয়া যাভ্যা যায় নাই। যে পাহাত যত দুরস্থ, সেইটি তত এক স্থানে আছে বলিয়া অনেকক্ষণ প্ৰয়স্ত দেখিতে পাওয়া ষায়। এই সংক্ষত অবলম্বন করিয়া অন্তস্র হইলে জ্যোতিকদিপের মধো कान्টि चालकाङ्गङ পृथितीत निकडेस, এবং কোন্টি দূরত্ব, ভাষা নির্ণয় হুইতে পারে। আমরা চক্র স্থ্য প্রভৃতির উদয় ও অস্ত প্রত্যক্ষ করি, কিন্ত এমন অনেক নক্ষত্ৰ আছে, বেগুলি অতি শ্বির वित्रा मान रहा एवं समय हम्मान আকাশের উর্চ্চে, আমাদিপের সাধার छेलत्र (पश्चिट्ड পास्त्रा यात्र, यनि ठिक সেই সমরে একটা "হ**ন্ন**মান ৰৱে" চাপিয়া, এক লম্ফে নিষেবের মধ্যে

কলিকাতা হইতে আজিকার গিন্নি উপকূলে উপন্থিত হইতে পারা যাইড, তাহা
হইলে দেখিতে পাওরা বাইত বে চন্দ্র
বেন ঠিক বিপরীত দিকে সেই সময়ে
এক লক্ষ্য দিরা প্রায় সমান পরিমাণে
পিছাইয়া গেল; কিন্ধ কতকগুলি নক্ষ্য
বেন প্রায় যেখানে ছিল, সেই স্থানেই
রহিয়া গেল।

ভ্ইটি বিভিন্ন স্থান হইতে একটি জ্যোতিককে দেখিলে, একট্ বিভিন্ন বিভিন্ন বিভিন্ন দিকে সেটিকে দেখিতে পাশুনা যাইতে পাবে। এইকপে ভ্ইটি বিভিন্ন স্থান হইতে দৃষ্ট বিভিন্ন ভ্ইটি দিকের অস্তর হির করিলে, জ্যোভিকের দূর্ঘ নিরূপণ করা যায়। এবিষয়ে একটা দৃষ্টান্ত দেশুয়া যাউক:—



পার্বছ চিত্রে
বৃত্তটিকে পৃথিবী
মনে করা যাউকঃ
এবং মনে করা
যাউক বে ক
চিত্তিত ছানে
একজন গাড়াইরা

চ নামক জ্যোভিকটিকে দেখিতেছে।
বলা বাহুল্য যে, জ্যোভিকটি জুটার চল্ফে
ক চ রেখা জ্রুমে দৃষ্ট হইবে। ভেমনি
বদি আর একজন ব চিহ্নিত ভাষে
দাঁড়াইয়া দেবে, ভবে দে ঐ জ্যোভিকটি
ব চ রেখা ক্রুমে দেখিতে পাইবে।

এখানে কচখ কোণ, বিভিন্ন **ছান** হইতে দৃষ্ট বিভিন্ন দিকের **সম্ভ**র। এ**গ**ন ক গ থ চ চতুত্ জৈর কোণ গুলির পরিমাণ, এবং পৃথিবীর ব্যাসার্দ্ধ 'গক' এর পরিমাণ নির্দ্ধারণ করিলে, ত্রিকোণ, মিতির একটি সহজ আন্ক করিয়া, কচ, খচ এবং গ চ রেথার দৈখা স্থির করা যাইতে পারে। বাঁহাদের গণিত শাত্র জানা আছে তাঁহারা অনায়াসেই একথাটার সম্ভবত্ব বুর্কিতে পারিবেন।

ক্যোতিকের দ্রছ নিকপণের কৌশল
বুঝাইবার জন্য এ প্রবন্ধ নহে । কোনও
কুজ প্রবন্ধে তাহা করাও অসম্ভব। তবে
এই দ্রছ নিরূপণ যে সম্ভবপর ব্যাপার,
তাহাই বুঝাইবার জন্য প্রয়াস পাওয়া গেল।

উদাসীনের চিন্তা।

मा कुङ धनक्षनायोयनगर्काः । द्वाठि निष्मवाः कोनः मर्काः ।।

ধন জন বৌবনের গর্কা করিওনা, কাল নিমেবে সমস্তই হরণ করে।

ভবানীপ্রসাদ নিওগী ভেঁড়লিয়া আমের একজন প্রসিদ্ধ ধনী। ভবানীপ্রসাদ শৈশৰ কালেই পিতহীন হন। **অতি কটে তাঁহার ভরণ পোষণ নির্কাহ** করেন। তিনি যৌবন কালে পদার্পণ করিয়া আপনাকে সম্পূর্ণ সহায়-সম্পদ-বিহীন দেখিতে লাগিলেন। প্রসাদ কলিকাভায় ঘাইয়া জীবিকা নির্ম্বা-**হের কোনও উপা**য় করিতে পারেন কি না, ভাহারই চিস্তা করিতেছিলেন। **অবশেবে ভিন্ন** করিলেন কলিকাভান্ন बाहेबा কোনও সওদাপরের বাডীতে সাৰালা কাজ করিবেন। কিছ কলি-কাভারু যাইবার ব্যন্ত নির্বাহ করিতে ্পারেন, অমন সংস্থান কিছু নাই। জননীর ছাত পুন্য, স্বতরাং তাঁহার নিকট **ঘই**ডেও কিছু প্রজাশা করিতে পারেন

নাই। কিন্তু প্রমেশ্ব বাঁহার সহায়, তাঁহার কোন না কোন উপায় শীল্লই সন্তাবিত হইয়া থাকে। ভবানী প্রসা-দের কোনও প্রতিবেশী বিধৰা গলাবাসে যাইবেন ভির কবিয়াছেন, কিন্ধ ভাঁহাকে সঙ্গে করিয়া কলিকাতায় লইয়া হায এখন লোক মিলিতেছে না। তিনি এক-দিন ভবানীপ্রসাদের নিকট এই প্রস্তাব উপস্থিত कतिरलन । তখন প্রসাদ যেন হাতে স্বর্গ পঠেলেন। তিনি মনে মনে ঈশ্বকে কড ই ধনাবাদ প্রদান করিলেন। কাল বিলম্ব না ক্ৰবিয়া বিধবা মহিলার সকে ভবানী-প্রসাদ কলিকাভায় আসিলেন। অচিরে ভাঁহার এক সওদাগরের বাড়ী সামান্য কর্ম্ম জুটিল। ভবানী প্রসাদ মাসে ৰাহা উপাৰ্জন করিতেছেন, कि मुनः ग बनगीत পাঠাইয়া

निर्म्वाह कतिया किथिए किथिए नश्य ভবানীপ্রদাদ ভদ্রবংশ-করিতেছেন। সন্তুত ছিলেন বটে, কিন্তু তিনি বংশ-ম্ব্যাদার অন্ধ্রোধে অবস্থ। অতিক্ষ कतियां हिलाएक ना। चहत्त्व तस्त विवर ভূত্যের সমস্ত কাধ্য সম্পাদন করিতেন। ইহাতে তাঁহার মনে মুহর্ভতবেও লোক-निकात जब किरवा करहेत छेरानक हा নাই। বিধাতার বিধানই চমৎকার। তিনি ৰাহাদারা যে কাল সম্পাদিত করাইয়া লইবেন, তাঁহাকে সে কাজ मुल्लामस्त्र উপযোগী উপामात्वर गठेव করেন। ভবানী-প্রসালের চিত্তে জাতা-कियात्मत्र खावणे। व्यवन इहेल, जिनि ভাঁহার সামান্য আয় হইতে কখনও কিছ স্ঞ্যু করিতে পারিতেন না। ধাহা হউক ভবানী-প্রসাদ তিন বৎসর কর্ম ক্রিয়া যাহ: স্ক্র ক্রিয়াছিলেন, ভশ্বর এক ধামানঃ বোতলের দোকান খুলি-লেন। তথন আর তিনি সওদাগরের ৰাড়ীর কাল বাধিতে পারিলেন না। ছুই চারি মাদ চলিয়া পেল, কাববার ভাপরপ চলিতেছে ন।। ইহাতে ভিনি ভরমনোরধ হটলেন না। ঠাচার মনে কেমন এক বিশাস যে তিনি সারে বড়লোক হইবেন। এই বিশ্বংসের বলেই কথনও ভাষার ধৈধাচ্যতি হয় নাই। ফলসম্বন্ধে দৃত্বিশ্বাস না থাকিলে शासूर महत्करे देश्रीमृष्ट हरेता लए। এক বৎসর্কাল লোকান একরূপ চলিল। बरमात भमार्भन कि वामाज

বেন অবস্থাচক বুরিয়া গেল। চডুর্বিকৃ হইতে আশার আলোক আদিরা ভবানী-প্রসাদের চিত্তকে আলোকিড করিছে লাগিল। দোকানে বেশ লাভ দাঁডাইভে লাগিল, নিকটবর্ত্তী গ্রামের এক অবস্থাপর বাজি ভবানীপ্রসাদকে कनामान अञ्च इहेलन। লেবানী-প্রসাদ বিবাছ করিলেন। বিবাছে বে অর্থ পাইলেন, তাহাও দোকানে মৃলধ্ন-क्राल थां छोडे ए गांगिलन। একপুরুবের মধ্যেই ডিনি বড়লোক হুইয়া উঠিলেন। অর্থাগমের সহিত কুমতেতা লোকদিপের সভাব পরিবর্তিত থাকে। কিন্ত ভবানীপ্রসাদের ভাষা इम्र नाहे। ज्वानी अजात्तव साहे सिर्वा, भिर विनय, भिर अधावमात्र, सिर निविध-মানিতা, দেই পরিশ্রমশীলতা সকলই ষে ভবানীপ্রসাদকে পুর্বে বহিল। গ্রামের লোক অব্জা করিত, বে এখন প্রাচীর স্কলের আদেরের পাত । লোকের৷ এখন ভাহাকে নিওগী মশার এবং নবা ধ্বকের। ভবানী বাবু বলিয়া সংখ্যাধন করেন। ভবানী বাবু দান**দীলতা**-গুলে সরকার বাহাত্রের নিকটও বিল-কণ সুধ্যাতি লাভ করিরাছেন। এখন ভিনি রায়বাহাতুর ও একজন সমানিত मासि(हेरे । ভवानी वावूत अक्सात करा। নার নাম নির্যকুমারী। নির্বকুমারী পিড়ঙৰ কিছুই পায় নাই। মারের দান্তি-কতা, ধন ও ভাত্যভিষানটুকু বোল আঁশ শাভ করিয়াছেন। অলুদের শিরোমণি,

মুধ্রার হল। নিরয় যথন বালিকা ছিল, ভখন তাহার মধ্যে এ সকল দোষ বড় দেশা যায় নাই। প্রতিবেশী রাধাগোবিন্দ বাৰুর কন্যা স্থ্রজা তাহার বাল্যস্থী ছিল। রাধাগোবিন্দের অবস্থা ভাল ছিল না। তবুও নিরয় স্থরজাকে আপনার বোনটীর মত দেখিত। তালার সহিত থেলা করিত। **অজ্ঞাতে** একত্র বসিয়া আহারাদি করিত। कननी स्नातिहरू পারিলেই ভাহাকে তিরস্বার করিতেন। বাদ্যস্থলভ **শর্লতা** নিরায়ের প্রাণ অধিকার করিয়া-ছিল, স্থতরাং দে জনমীর তিরস্কারেও মুরজার সহিত ভগীর ন্যায় মিশিতে वित्रष्ठ रहा नारे। क्या करम वरतावृक्षित **বলে সলে** মাজভাব তাহার হাদয়ে সঞা-রিত হইতে লাগিল। স্বাভাবিক সরলতা, নিরভিমানিতা এবং সাম্যভাব ধীরে ধীরে বিদায় গ্রহণ করিতে লাগিল। জনক জননীর কুশিকায় অনেক বালক বালি-কার দর্কনাশ হইয়া থাকে। নিরয়কুমা-রীর দীবন ভাহার একটা জলত দৃষ্টান্ত। নিরয়কুমারী এখন আর স্থরজাদের বাড়ী যার না, সরজার সঙ্গে কথা বলা অপমান-ভানক মনে করে। স্থরজাকে দেখিলে পাশ কাটিয়া চলিয়া যায়। সুরুদাও সাহস করিয়া তাহার নিকটবন্তী হয় না। निवृत्रकृषांतीत वत्रभ अथन मण वरमद्वत অধিক নয়। তাহার পিতা তাহার বিবাহ पिर्वन चित्र कतिराम। कि और वर्यन স্ভান হইবার আশা নাই --তথ্ন নির্যু-

क्रमात्रीत विवार मित्रा सामारेक गृह রাথেন ইহাই ইচ্ছা। অথচ মৃত্যুর পর পিও প্রাপ্তির আশা প্রাণ হইতে দূর করিতে পারিতেছেন না। তাই এক একবার পোষ্যপুত্র গ্রহণেরও আকাজ্জা করিতে-ছেন। অবশেষে ত্রীর অনুরোধে পোষ্য পুত্র গ্রহণ কামনা পরিত্যাগ করিলেন। জামাইকে গৃহে রাখিতে হইলে বর মুর্থ उ पतिज ना इहेला ठलिए ना, कांत्र বর শিক্ষিত লোক হইলে শ্বন্ত রের গৃহে চিরকাল থাকিবেন প্রত্যয় কি ? ধনী হইলেও কেহ এরপ জীবন কাটাইতে সম্মত হইবে না। এজন্য ভবানী বাবু এক মর্থ দরিজের সন্থানকে কন্যার বর করিলেন। বরটী দেখিতে মনোনীত खु हिन वर्षे, किन्न खड़: मात-विशीन। নিরয়কুমারীর পক্ষেও এরূপ বরই আদর-ণীয়, কারণ দে তাহাকে কলুর বলদের ' মত ধর্থেচ্ছা খুরাইতে পারিবে। হের পর পাচ বংসর বেশ কাটিয়া গেল। কিন্ধ তৎপরে প্রতিকৃষ বায়ু বহিতে লাগিল। ভবানী বাবু পদ্মানদীর ভীরে এক প্রকাণ্ড জমিদারী ক্রের করিয়া-ছিলেন। তাঁহার জমিদার হইবরে ইচ্ছা এত প্রবল যে ঐ সম্পত্তি ক্রয়কালে ১॥ लक्क है। का अन करतन। ঋণের স্থাদ ক্মশ: পুঞ্জীকত হইতে লাগিল। এদিকে ব্যবসায়ের অবস্থাও ওত ভাল লাভ আর পূর্কের মত হইতেছে না। किय्दकान এहेज्ञाल हिनाउ नाशिन। পদ্মানদী অভি ভীষণ। বাঁহারা তাহার

মহিমার বিষয় ভানেন, ওাঁহারা সহজে তাহা ভূলেন না। বৎসর বৎসর কত ব্রাম অট্টালিকা-কত গৃহস্থপন্নী উদর-শাৎ করিতেছে। हेशाब कालाव कड অনিদার হুই তিন বৎসরের মধ্যে ফকির হইয় পড়িতেছে! ভবানী বাবুরও সে তুৰ্গতি ঘটন। পদ্মানদীর প্রকোপ তাঁহার অমিদারীর উপর পতিত হইল। পাচ বৎসরের মধ্যে তাঁহার প্রকাত क्षिमात्री ममन्त्र भूषा गार्छ निश्राण इहेल। এখন তিনি ঋণজালে জড়িত। দৈব-পুর্নির্বাক্তমতঃ অদ্ধ হট্যা পডিয়াছেন। विश्वम अकाकी आस्त्र मा। उट्टानिक হইতে যেন বিপ্ররাশি মুখবিস্থার করিয়া তাহার স্থচন্দ্রমা গ্রাস করিতে আসিতে লাগিল। কন্যা নিরয়কুমারী চিরক্স। হইয়া পড়িয়াছে। পত্নী বাভবাাধি রোপে শ্য্যাশানিনী। এদিকে উত্তমণ্পৰ ঋণ শ্বের জন্য পীড়াপীড়ি করিছেছেন। ভবানা বাবু আর কোনও পথ না পাইয়া বিষণানে আত্মহত্যা করিলেন। উত্তমর্থ-গণ এই সংবাদপাইয়া অমনি ভাছার সমস্ত मण्यक्ति व्यावश्व कतिल। निद्रश्रकुमातीत আর এখন উচুমুথে উচু কথা নাই-- গ্রিয়-হইলা পড়িয়াছে। স্বানী এক পাখীর দলে জুটিয়া গৃহ পরিত্যাপ করি-हाइह। मगदःमत्र भूटर्स एव नित्रह রাজকুমারী ছিল, আজ সে পথের কাঙ্গা-শিনা। এমন কি উত্তমর্ণগণ বসত বাড়ী থানি পর্যান্ত আধিকার করিয়া বদিরাছে। এখন নির্হকুমারী এবং ভাছার জননী

बान काथा ? श्रवमा धरे मःवाम स्रतिहरू পাইল। সুরন্ধার পিতা নির্ধনী ছিলেন राष्ट्रे, किंक श्रवका अक धनी क्रिमारवन হাতে পড়িয়াছে। তাহার স্বামীর বিপুল সম্পত্তি। কিন্তু এতঃদুশ সম্পত্তির অধি-কারিণী হইয়াও স্বর্জার মন্তক ঘ্রার-মান ধর নাই। তাহার প্রকৃতি অধিক পরি-मा(म ভवानी वावृत व्यक्तित मठ हिम। অবস্থার পরিবর্ত্তনসহ তাহার চরিত্রে কোন পরিবর্জন লক্ষিত হয় নাই। স্থর্ঞা নির্রের তুরব্ছার কথা শুনিজে পাইরা ভাচাকে বিপদ হটতে উদ্ধার কবিবার सना यथामधा माहाबा कब्रिटा जिल्ल করিল। কিড অভিমানী নিরয় তাহার সাহাব্য গ্ৰহণ করিবে কি না এই স**ম্পেহ** তাহার মনে উপত্তিত হইল। কিয়ৎকাল সম্পেতে দোলায়মান অবভার থাকিয়া অব-শেবে স্থাকা সাহায্যের প্রস্তাব করাই ছির করিল। সুরজা স্বয়ং এই উদ্দেশ্র সাধন জন্য পিড়গুছে চলিয়া আসিল। তাহার স্বামীও উদারচরিত্রের লোক ছিলেন। তিনি স্থাকার সাধু সংকলে বিশ্ব না জন্মাইয়া সর্বান্তঃকরণে তাহার সমুমো-দন করিলেন। সুরকা পিতৃগৃহে আসিয়া ভবানী বাবুর বাড়ীতে গেল। **প্রসাকে** দেখিরা নিরয়ের বাল্যমাতি জাগিরা উঠिन, आंत्र त्म अक मः नत्त्र कतिएड পারিল না। কিয়ংকাল স্থ্যসার, দক্ষে वाका वन। डाहात लक्ष्म अमञ्जय हरेन। भाकारवन कियर शतियात निवृत्व **इहेरन** সে আদ্যোপাত সমস্ত কৰা স্থাত্তাৰে

वनिन, धवर भूक्कु अभन्नाधन सना সুরজার পারে ধরিয়া কমা করিতে লাগিল। নিরুয়ের এই অবস্থা দেখিয়া মুরজাও সংবরণ করিতে পারিল না—অবশেষে নিরয়ের পিতার আংশিক ঋণ পরিশোধ করিয়া বসতবাড়ী খানি মুক্ত করিবার প্রস্তাব করিল। নিরয়ের আর এখন সে অভি-মান নাই। বিপদের বুর্ণিপাকে পড়িয়া সমস্ত গর্ম ধর্ম হইয়াছে. স্ত্রা: শ্বরজার প্রস্তাবে বিক্তি না করিয়া উহা গ্রহণ করিতে রাজী হইল। উত্তমর্ণ-দিগের কেহ কেহ স্থরজার এই মহবের কথা ভূমিয়া আংশিক টাকা গ্রহণ করি-यारे निवयरक अन मुक्क कविया निर्वान। নিরয় এখন সুরজার অনুগ্রহে গ্রাসাচ্ছা-**খনের এবং বাদগৃহাভাবের কপ্ত হইতে** পরিত্রাণ লাভ করিল। ধন্য স্থরজা!!! তোমার মহত্ত্ব সকল মহিলারই অন্থকরণীয়।

উপদংহারে ভগিনী দিগকে প্রস্তাবের শিরোভাগন্থিত স্লোকটার প্রতি লক্ষ্য করিকে অনুরোধ করিতেছি। বিধাতার বিধি বুঝা ভার, ভবিষ্যতের গর্ভে কার জন্য কি নিহিত থাকে, কেহ তাহা বুকিতে পারে না। তাই ক্ষুদ্রমনা লোক ভিন্ন কেহ কালের ক্রীড়ার বস্তু ধনমানের গর্কা করে না। জ্ঞানিগণ সর্কাদাই ধন, জন এবং যৌবনকে ক্ষণস্থায়ী মনে করেন, এজন্য তাঁহারা কথনও পর্কিত হন না। তাঁহারা সর্কাদাই তৃণের মত নীচু হইয়া থাকেন। প্রত্যেক নরনারীর এতাদৃশ আদর্শের অনুকরণ করা কর্ত্তব্য। তাহা হইলে জীবন মধুমর হইবে।

হিন্দু নারীর গার্হস্যু ধর্ম।

শেষ

দাস দাসীগণকে পরিবারের ন্যায়
ব্যবহার করা কর্ত্তব্য, কিন্তু ভাহাদের
সহিত ইয়ারকি দেওরা বা পরিহাসাদি
করা কর্ত্তবা নহে এবং ভাহারা বেখানে
হাসা পরিহাস ওগলগাছ। করে, তথার
অবস্থান করা কর্ত্তবা নহে। ভাহা দর
ক্রেভি, জননীর নাার স্নেহ প্রদর্শন
ক্রিবে। ভাহাদের পীড়া হইলে চিকিশা করাইবে—চিকিৎস্কুকে টাকা
দিবে এবং পীড়িতের ওপ্রবা করিবে।

রোগী ভাল হইলে যদি তোমার আর্থিক অভাব থাকে, তবে না হয় ভাহার বেতন হইতে কাটিয়া লই ে কিছু আঞ্জিত বাজি বিনা চিকিংসায়, বিনা যত্তে মারা গেলে প্রভাবায়গ্রস্থা হইতে হইবে। ভাহার মনোনীত না হইলে জবাব দেওয়া ভাল, কিছু গালি গালাজ দেওয়া উচিত নহে। গৃহে কোন উপাদের খালাদি প্রস্থাত হইলে অন্যান্য পরিবার-গণের নার উহাদিগকেও দেওয়া

উচিত। গৃহিণীর নিকট বাতার ন্যায় শ্বেহ ও শাসন প্রাপ্ত হইলে উহারাও সন্তানের ন্যায় ভক্তি ও ভর করিয়া গৃহের কার্যা ভলি নিজের কার্যাের ন্যায় মনোযােগের সহিত সম্পন্ন করিবে এবং ঐ গৃহ ভ্যাগ করিয়া অন্যত্র বাইতে ইচ্ছা করিবে না।

গাভীগণ হিন্দুদিগের মাতার নাার প্রসা। আমরা ইহার অর্থ ষেটুকু বৃকিতে পারি, তাহা এই যে গাভীচুগ্ধ স্থপের স্ঠায় মনুষ্যুশরীরের প্রষ্টিবর্দ্ধক। যে সকল শিশু অন্ন অথবা তজাপ কোন জিনিয ভক্ষণ করিতে পারে না এবং যে শিক্তগণ ন্ধন্যে বঞ্চিত, গাভীত্ম তাহাদের ভীবন সরপ। পাতীদ্ধে নানা প্রকার উপাদেয় খাদ্য প্রস্তুত হইয়া থাকে। জনা কিছু আহার না করিয়াও এক পাভীহুগ্নে মুমুষ্য জীবন ধারণ করিতে সমর্থ : ত্তির যাগ্যজ্ঞ হোম বিবাহাদি ক্রিয়া কলাপে গাভীহুদ্ধ হুত একটা প্রধান সামগ্রী। এমন উপকারিণী পাভীকে মাতকানীয়া করিয়া হিন্দুগণ কেম্ন বল-দয়তার পরিচয় দিয়াছেন। গাভীগণ অতি নিরীহসভাব এবং উদ্ভিদ ভঞ্চ-ণেই জীবন ধরের করে—হিংসা প্রবৃত্তি ইহাদের আদে নাই, সুতরং এই স্থক্র প্ৰভাবাপন্ন ভীব ক দেবী বলিঘা পঞ্জা করিতে হিন্দুগণ কেন কুক্তিত হইবেন? পাভীর বিঠা মৃত্তও গৃহত্তের অংনক উপকারে আইলে। পার্চস্থাবর্ত্মপরারণা গৃত্তিশীৰণ এই পাড়ীকে অতি ভক্তির

স্থিত বছ ও পালন করিবেন। এইরপ বে প্তপ্ৰ আমাদের উপকারে আইসে এবং আমাদের প্রতিপাল্য, ভাছাদের বছ গু ভখাবধান করা রমণীর কর্ত্তবা। গৃহ-পালিত পক্ষীন্তলির প্রতি**ও ব**ছ চে**টা**র ক্রচী ছeরা উচিত নছে। স্বাধীন**তা**-বঞ্চিত পিঞ্জরাবন্ধ পক্ষিগণ বলি গৃহত্ত্বর का अट्ट शकिया क्या हात क्रा मित्र বায়, ভাহা হইলে ঈণুশ শোচনীয় মৃত্যুতে কি তোমার জদর বিগলিত হর না 🕈 বলি না হয় তবে ভূমি হাদয়হীনা গাহন্ত্য ধর্মপালনের ধোগা অতএব গৃহপালিত পশীদিগকে অননীর নায় আছার প্রদান করি**বে ও স্কাল** ভাছাদের ভবাবধান করিবে। যথান্সনোহভীষ্টা ভূতানামপি তে তথা। আত্মোপমোন ভৃতেয় দরাং ভূকভি माधवः॥" ७३ উপদেশটী नर्सना चाहरन ৱাখিয়া চলিবে।

যান্ব্য হখন সকল ধর্মের, সকল
কর্মের, ও সকল মুখের মূল, তখন রোলীর
ভক্রমা ভারা যদি ভূমি ভাঁহাকে সাত্র্য
দিতে পার ভবে রোগীকে কি না দিলে প্
পথাভাবে ঔষধ, রোগীর কোন উপকার
করে না। ঔষধাভাবে পথাখারা রোগী
বাচিলেও বাচিতে পারে, কিন্তু পথ্যাভাবে
বাচিতে পারে না,—"খা না করে বৈশ্য
তা করে পথ্য" এই কথাটা অভি নার।
মৃতরাৎ প্রাদিখারা রোগীর ভক্রমা
করাও গার্ছ স্থাধর্মের অন্তর্গত।

এখন আৰু তপোবন নাই---সংসাৰ-

ভ্যাপী, ফলম্লাছারী সংযতে ক্রিয় বনবাসী আর্ব্য অবিগণও নাই এবং সহমরণ প্রথাও নাই, স্করাং বিধবাগণকে বথন গৃছে থাকিয়াই চিরজীবন অক্ষচর্ব্যাবলম্বন করিতে হইবে, তথন সধবা রমণীকেও ঈশর এবং পতি পদে মতি রাখিয়া উক্ত প্রকারে গার্ছহা ধর্ম পালন করিতে হইবে। সধবা রমণীগণের সহিত গার্ছহা ধর্ম আচনরণে তাঁহাদের প্রভেদ এই যে তাঁহারা নিলিপ্ত ও নিরাসক্তভাবে গৃহধর্ম রক্ষা করিবেন। একদা মহামুনি বশিষ্ঠ, ভগবান্ রামচক্রকে উপদেশ দিয়াছিলেন—
"বহির্ব্যাপারসংরত্যেক্স্দি সংক্রবর্জ্বিতঃ। কর্ম্বাহিরকর্ত্যন্তরেবং বিহর রাঘ্ব॥"

হিল্পবিধবাগণেরও এইরপে গার্হস্থাধর্ম পালন করা উচিড। পরিজন অতিথি
ও গৃহপালিত পশুপক্ষিগণের সেবায়
আপনাকে নিযুক্ত না করিলে তাঁহার
ধর্মের উৎকর্য হইবে না। স্বয়ং ভগবান্
ক্রিক্ষ বলিয়াছেন—"ধারণাদ্ধর্মিত্যাহর্দ্ধর্ম ধারয়তে প্রক্রাঃ। ধৎস্যানারণপ্রযুক্তং
সধর্ম ইতি নিশ্চয়ঃ॥"

সভীধর্ম যে কেবল মাত্র স্বামীকে
লইরা তাহা নহে, তাহা হইলে স্বামীর
চাকরীমানবাসিনী—শুণুর শ্বান্ডড়ী ভাম্মর
অভিতিকে অবজ্ঞাকারিনী—পরিজনগণের
দহিত কলহপ্রিয়া—পরিজনদিগের মধ্যে
কেহ পল্লা ভকাইরা মরিলেও এক বিন্দু
কুল না দিয়া, বাবু (সামী) আসিলেই
মিছরী ভিজ্ঞা ও থাবারাদি লইরা বাহারা
হাজির থাকেন, তাঁহারা কি পবিত্র সভী

নামের যোগ্যা ? কথনই নহে। শাণ্ডিলী
নামী একটা সতীরমণী স্বর্গে গমন করিলে
স্বর্গবাসিনী স্থমনা তাঁহাকে জিজ্ঞাস।
করিলেন, "দেবি! তুমি কি পুণ্যে এত
উচ্চ স্বর্গে আসিয়াছ? ইহার উত্তরে
শাণ্ডিলী যাহা বলিয়াছিলেন, তাহাই
প্রকৃত সতীধর্ম—তাহাই হিন্দুরমণীর
গার্হম্য ধর্ম, এইজন্য শাণ্ডিলীর সেই
স্থাময় নীতিপূর্ণ বাক্যগুলি আময়া
নিম্নে উদ্ধৃত করিয়া প্রবন্ধের উপসংহার
করিতেছি।

नादः काषायवमना नानि वस्त्रनधाविनी। ন চ মুশু। চ জটিল। ভূত্ব। দেবত্বমাগতা॥ অহিতানি চ বাক্যানি সর্বাণি প্রুষাণি চ। অপ্রমন্তা চ ভর্তারং কদাচিন্নাহমক্রবং॥ দেবতানাং পিতৃণাঞ্চ ব্রাহ্মণানাঞ্চ পূজ্নে। অপ্রমত। দদা যুক্তা খতাখতরবর্তিনী ॥ পৈতনোন প্রবর্তামি ন মমৈত মনোগতং। প্রদারি ন চ ভিঠামি চিরং ন কথয়ামি চ॥ অস্বাহসিতং কিঞ্চিদ্হিতং বাপি কর্মণ। রহস্যমরহদ্যং বা ন প্রবর্তামি সর্বর্থা 🛭 কার্য্যার্থে নির্গতকাপি ভর্তারং গৃহমাগতং। মাসনে নোপদংযোজ্য পজয়ামি সমাহিতা।। ষদগ্রং নাভিজ্ঞানাতি ষর্যোজ্যং নাভিনন্সতি। ভক্ষ্যং বা যদি বা লেহ্যং তৎসর্ববং বর্জ্জয়ামাহং। কুট্মার্থে সমানীতং হৎকিঞ্চিৎ কার্য্যমেবতু। প্রাতরুপায় তৎসর্কাং কারয়ামি করোমিচ। প্ৰবাসং যদিমে যাতি ভৰ্ত্তা কাৰ্য্যেণ কেন চিৎ। মক নৈৰ্বছভিষু কা ভবামি নিয়তা তদা। অঞ্চনং রোচনাকৈব স্নানমাল্যাসুলেপনং। প্রসাধনাঞ্নিক্রাস্তে নাভিনন্দামি ভর্তরিঃ নোপায় যামি ভর্তারং স্থপস্থমহং দদা। অভবেত্রপি কার্য্যের তেষ্ তুষ্যতি মে মনঃ। নারাসায়ামি ভর্তারং কুটুমার্থেপি সর্বাদা। ওপ্ত ওহ্যা সদাচান্মি স সংস্টু নিবেশনা

সমাহিত হইরা এইরপ ধর্ম প্রতিপালন। পর্ম স্থভোগ করেন। জীকুষুদিনী রার।

তৎপরেট বলা হইথাছে যে, "যে নারী | করেন, তিনি অরুজভীর ন্যার বর্পলোকে

কোরিয়া প্রদেশের মহিলা।

পাঠিক পাঠিকারা অবগত আছেন কিছুকাল ২ইডে কে:বিয়া खारसभ লইয়াচীন ও জাপানের সহিত যুদ্ধ বলেন নায়তঃ চলিতেছে। ভাপান কোরিয়া রাজা ভাঁচাতই অধিকার-ভুক্ত, কিন্তু চান জাপানের এই দাবী অস্বীকার করেন। ক্রেরিল ভারেন্ত্র উপর কে আবিপত্য কলিবেন, তাশাই মামংপার জ্ন্য বর্ষণে মহাসুর উপস্থিত ছইলতে। ্কাবিবা প্রদেশ সভাজগ-ের নিকট ৭ক প্রভার মজাত ছিল।

চীন-জাপান সমর আবত ইওয়া অবসি কেইবিয়া আনেশ স্থভায় বিবিধ ভুত্র অসগত ৬ইছে স্কলেই উৎস্কল अ(म) मिर्लंड প্রকাশ করিতেছেন। পাঠিকগেৰ কোৱিয়ার মহিলাগণের অব-স্থার বিষয় জানিতে সভারতিই কৌত-হলাকাস: হইতে পারেন। অনেরা সংক্ষেপে ভাষ্টের কৌত্রল চরিতার্থ कृष्टि ७४। कृष्टित ।

কোরিয়াদেশীয় মহিলাগানুর জীবন বত-লাংশে চীনমভিলংগণের ভীবনের অপেশে গঠিত ৷ কোরিয়ের সান্যজ্ঞিক ব্যবস্থাস্থ-माध्य की लग्द शुक्रावत मन्त्र्य योग। সেগানে বছবিবাহ রীভি প্রচলিত আছে । যে পুৰুষ একেৰ অধিক শ্ৰী গ্ৰহণ কৰেন,

ভাহাকে প্রভাক জীর জন্য এক একটী পুথক গৃহ নিশ্মাণ করিতে হয়। এক বাটীতে বলুলী লইয়া বাদ করার প্রথা কোরিধাবাধিগণ ছবনীয় বি**বেচনা করেন।** চীন ও জাপানীয় রম্বীগণ সাধারণ্ড: রপলাবণ্য-বিশিষ্টা,কিন্ধ কোরিয়া মহিলা-গ্রের মরের অনেকেই সৌন্দর্ঘা-বির্হিতা। ইউরে:পীর পরির:জকগণের বিধে**চনার** কোরিয়ার ভিন্নলেশীর জীলোকগণ অতীব কুংসিতা। ভারতবর্ধের ন্যায় কোরি-য়ার নিম্ন লেণীর সীলোকগণ **রাজপথে** বাহির হইতে সকৃচিতা হ্য না, কিন্তু ভন্ত मञ्जाल: तः नोशा तमनीशन अवढ्छेमवङी হটয়া গ্রহমধ্যে অবক্তম্ব। থাকেন। নিডার প্রয়োজনাত্র রোধে ইঠাদের মধ্যে বাঁচারা हाज्ञभाष विदर्शता इस, छोराजा मस्त्र ह মুগম্ভল সম্পূৰ্ণক্ৰপে বল্লৰায়া আৰুছ করেন, এবং ভাগতে কেবল চক্সুথ্যের উপ্যাগী ছইটা ছিদ্ৰ রাথিয়া দেন। কংবিয়া প্রদেশে সাত বংশর বস্তুত্ম প্রাস্থ বালিকাগণ বালকদিগের সহিত একত্র ক্রীড়া করে এবং বালকদিপের ন্তায় পরিচ্ছর পরিধান করে। এবানে वानाविवार अहिनाउ मारह। अहम वर-সূত্রে পদার্পন করিলেই কোন্ধ বালিকাকে (কোনও বালকের স্টিত আর বাক্ট লাপ্ট করিতে দৈওরা হয় না এবং অন্তম বৎসর উতীর্ণ হইবার পূর্বেই ভাছাকে উদ্বাহ শৃত্যকে আবদ্ধ করা হয়। কোরিয় মহিলাগণের পরিচ্ছুদ কতকটা ভারত-বর্বের পশ্চিম প্রদেশীর কোন কোন হলের রম্পীগণের পরিচ্ছদের অসুরূপ। কোরিয়া প্রদেশে ধৃতী বা সাড়ী ব্যবহৃত হয় না। খ্রীলোকগণ পাজামা পরিধান করেন বকিছ একটা পাজামা পরিধান করা শ্রীলোকের পক্ষে যথেষ্ট নহে;

উপর্যাপরি তিনটা পাজামা পরিধান না করিলে তাঁহারা দেশাচাতের বিরুদ্ধে কার্য্য করারূপ অপথাধে অপরাবিনী হন। পাজামার উপরে পিরাণের ন্যায় একটা গাত্রাবরণ পরিধান করিতে হয়; উহা রঞ্জিত হওয়া আবশ্যক। গাত্রাভাণে পকেট না ধাকাতে, ইহারা একটি থলিতে দড়ি বাধিয়া তাহা কোমরে আবের করিয়া রাথেন।

কতকগুলি সুমাতা।

(৩৫৭ সংখা-১৮২ পৃষ্ঠার পর)

মাতাই সন্তানের আদিওর । প্রকৃতি ₹ইতে শিশু যে শিক্ষা প্রাপ্ত হইয়া থাকে. তৎপরেই জননীর নিকট শিক্ষিত হইতে পাকে। কুদু শিওর গৃহই প্রধান শিকা-গরে। এই গৃহে যদি ত্থগান্তি, পবি-অতা, বিভদ্ধ আমোদ থাকে এবং আদি-**७कः यनभी यमानि द्रशिक्छ।** উচ্চ*ছानश* **४%** न बाह्य । इट्यम, खाहा इहेल खेनाम-আত খুগৰ কুত্মের ন্যায় শিশুচনিত্র পরিণামে অপন্ধ ও মধুম্য হইয়া জনক अन्मीत आनम्बद्धन कतिया शाक। শভাৰতঃ শিশুচরিত্র বিশুদ্ধ; কিন্তু পাত্র-ডেলে লবণ খেমন তিক হইয়া পড়ে, জননীর ছোবঙ্গে শিভগণ তেননি বিগ্ন **फारे**श वात्र 🛊 📆 शिर्ध (व सर्वाट) एव ।। मिथा। यक्त, त्म कारांव (कार १ कारांव

না তাহার শিক্ষাদানী জননীর १ পূর্বে কালে মাতা শিভকে যদ্রপ শিক্ষা দিতেন শিভগণ সেইরূপ আচরণ করিয়া যশহী হইতেন। নিম্ননিথিত জননীৎখের চরিত্র-ধারা বুঝা যাইবে কিরূপ শিক্ষাদারা ভাহারা কর্ত্তবাপরায়ণ সন্তান প্রস্তুত করিয়াছিলেন।

শ্বনিতা—রামায়ণবর্ণিত শ্বনিতা দেখী
এক আদর্শ মাতা। প্রাণাধিক পুরুকে
চতুর্দশ বংসর অরণ্যে জ্যেটের আজ্ঞাবহ
ইইরা থাকিতে তিনি আদেশ করিয়াছিলেন। আদর্শ মাতা আর্ণা গ্রমনোদাত পুরুকে বলিতেছেন;—

ফুটবং বনবাসায় ৰমুগ্ৰক্তঃ হুজজনে;
রামপ্রমাদং মাকারীঃ পুত্র ভাতরি গছেতি ।
ইনংবি বুরুষ্চিতং জুলসাস্য সনাত্রমাদ;
বাকং বীকাচ কচেবু ওলুভাবে ১৮বছ বি ১

- রামং গণরণং বিদ্ধি বাংবিদ্ধি অনকাম্বদার্ ; অবোধামটবীং বিদ্ধি গচ্ছ তাত বধাস্থপমং ।

"ছে পুতা! বনবাসের নিমিশ্বই তোনার সৃষ্টি হইগছে। আমি ভোমাংক বনগমনে আদেশ দিতেছি। রাম বিপর বা সংশান ছউন, ইনিই তোমার গতি. कुबि हेहा स नकत विवास मध्क रहेरव। ভোষার ভ্রাভা অর্ণো চলিলেন, ভোরের क्षक्र ही इस्ताहे हेरला क्रिय मनाहात विविधा कामित्व : दिल्बिडः धर्त्रथ काधा कहे वः(नद्रहे यांगा। मान, यक्काइक्षेत्र, দমরে দেহত্যাগ ইহাই এ বংশের ধর্মা। এক্ষণে তুমি রামকে পিতা, জানকীকে क्षत्रभी खरेर शहस दमक व्यध्यक्षा জ্ঞান করিবে,।" অমিতাদেবী প্রিয়দর্শন ল্মুপের খিরোতাণ করতঃ গ্রাকনারনে পুনঃ পুন: কহিতে লাগিলেন "বংগ! তবেএ ধন তুমি সচ্চদে জীরামের সহিত অর্ণাচ্থী হও।" অ্নাতার নিকট সাধুবাক্যে উৎসাহ পাইনাছিলেন বলিয়াই লক্ষ্য ক্ষেধ্যার অপ্রিমিত ঐশ্বর্য্য, প্রাণাধিক। সহবর্ষিণী এবং খেবন-তকা পরিহার করিয়া ভট। অজিনধারী তক্ষ্যারী হইতে পারিয়াছিলেন। অনিতা দতী ভাষাবেগ ক্ল করিয়া কর্মবাপালন করিতে পুত্রকে উপদেশ দিয়াছিলেন, চাই शदिवास देखकिय-सभी वीत वन्तावद क्रममी इहेग्राकितम अवः जामर्ग (मरण। হট্যা অন্যাপি প্রড্যেক বন্ধবাসীর প্রছা-ভক্তি গ্ৰহণ কৰিতেছেন।

कृशीत्ववी-रहरश्रामंत्र मुत्राप्तन कामावि

ছহিতা। বছবংশের ভাগিনের ভোজরাজ কুত্ত অপুত্ৰক থাকার শূরসেন-নূপতি নিম্ম क्छाक छांशव निकृष्टे नाननभाननार्थ দিয়াছিলেন। শুধ্বেন-তমন্ত্রী বে সময় পুৰা নামে অভিহিত ২ই তেন। পরে ভোল-त्राक कुछ निक्र नामाङ्गात कृषी आधा প্রদান করিয়াছিলেন। ধর্মদীন কুম্ব নুপতি हरिए। कुछी (मरी, दक अविधिशति हर्गार्थ নিযুক্ত করিয়াছিলেন। সেই সময় কুমী (मनी कुर्कामाध्यमामार "माठीडे मड" প ইয়াছিলেন। महावर्थं महात्राच পাওর সহিত কুডীদেবীর বিবাহ ছইথা-ছিল, এবং তাহার পুরুগণ এক এক জ্বন প্রাক্রান্ত বীর, তথাচ তিনি এক দিনের জ্মত অহঙ্কার করেন নাই। ধর্মপ্রাণা কুত্তী দেবী ধর্মকে প্রাণাপেক্ষা প্রিয়তর ক্ষান কৰিছেন। ভাই মাড়ী শেবী নিজ শুভগ্রুকে ওাঁহার হত্তে সমর্পণ করিয়া-ছিলেন বলিয়া গাওঁজাত পুতাপেকা নতুল अहरणदरक कथिक त्यह कवित्रहम । बन-वाज अमनकारत कुछी (मवी नगड़ी-भूम रू লক্ষ্য করিয়া বলিতেছেন;--

"era পুত সহদেব! কিরে চাহ মোরে।
কেমনে আমার মায়া ছাড়িলে অন্তরে।
তিলেক না বাঁচি ভোমা না দেখি নয়নে।
কেমনে হহিবে প্রাণ ভোমার বিহনে।
ভাই সব বাক্ বিক না পারে রহিতে।
সবে যাকু ভূমি বাক আমার বহিতে।

ষ্ণন কৃষী দেখী দেখিলে**ন সহকে** ভ কৃষণের সঙ্গ ত্যাগ করিবে না, সক-

লেক্ট বনরাসে নিশ্চরই বাইতে হইবে, তখন বধুকে বলিতেছেন ;--লা করহ আন, ভাবী নহে আন. ধাতা নারে খণ্ডিবারে। পাল সত্য ধৰ্ম. কর সাধু কর্মা, ধর্ম রাথেধামি কেরে॥ ভূমি সত্য ক্রিডা. সতী পতিৱতা, জামি কি করাব শিকা। শহ সামিগণ. যাইভেছে বন. আমি মাগি এক ভিক্ষা॥ क्रिके नमन. व्यामात्र कीवन. ভূমি জান ভাল মতে। সহতে বালক. वत्न महा कुःथ, সদা দেখিবে স্নেহেতে। श्रुमात (मह. প্রাণাধিক স্নেহ, আপনি করিবা ভূমি। কুতী ইহা বলি, যেমন বাতৃলী, মৃতিহত। পড়িল ভূমি।' कृडीर्धांद्रात, बहे धक भर्य। आश-নাকে ভূলিয়া পরকে ভালবাদা এই ভ অসাধারণ মহত। জননী মাতেই প্রাণা-**পেকা পর্তজাত** তনয়কে স্নেহ করেন। সপদী-তনয়ে যাহার এতাদৃশ না আনি ভার ভালবাসা কতই ছিল! আর এক ছলে কুরুকেতের যুদ্ধ শেষে পাওবেরা রুভজ্ঞতা প্রকাশ করিলে ঐকুঞ वर्षन यह अमान कहिट्ड हाहिलान, (मह সমন্ত্ৰ পিতৃত্বসা কৃতী দেবীকে বলিতে-**(इन "(१** माठ: जामनाद छान्हे जाम-নীয় পুত্রপ ভয়লাভ করিয়া নসাগ্রা ৰবাৰ অধীশ্বর হটলেন। জামি আপ-मात्रक जानमात्र भूजभरभत छान वकास वेश्रीकृष क कील इरेग्नाहि, अर्थन बालिन क्षीदे वत बार्थना कड़न्।" श्व शहाहना

ক্তা প্ৰীকৃষ্ণের বাক্য ভনিয়া विभग्न সহकात्त मक्कनग्राम লাগিলেন, "তাত! ध मःगात्रत धन मम्माप किছूरे नटर, अकिकिएकत प्रश्ने বস্তু মাত্র। ইহা ভোগত্বকাও প্রবৃত্তি-কুলকে বর্দ্ধিত করিয়া মানবকে বিনাশের পথে চালিত করে। স্থাঞ্ছা বন্ধিত অসংযত হইয়া ম'নব হয় এবং মত হইয়া তোমার দেবতুল ভ চরণারবিন্দকে* ভূচ্ছ করিয়া থাকে। হে वर्म! यपि এकाउँ आभारक अञ्चर করিনা পাক, ভবে ছঃখই পুনরায় প্রদান কর, কারণ তঃথের অবস্থায় ভোমাকে ম্মরণ ও ভোমার উপর নিউরের ভাব রন্ধি হইয়া থাকে। তোমাকে বিশ্বত ও ভোমার প্রতি ভক্তিশূন্য হ্ডাই নৃত্যুর অবস্থা। হে কৃষণা এই অবস্থা হইতে আমাকে ও আমার প্রাণাধিক পুত্রগণকে রক্ষাকর। কুত্তীদেবীর চরিত্রে উদা-রতা, প্রেম, সহিফুতা, নির্ভরশীলতা, ঐকান্তিক কৃষ্ণভক্তি একাধারে বিরাদ্ধ-মান। এমন প্রেমম্য়ী নিঃস্বার্থ জননী না হইলে কি পাণ্ডবগণ এতদূর শক্তি-শালী হইতে পারিতেন গ কথনই না। যে যত মং২ হউক না কেন, মুলে জননীর শক্তি। কুন্তীর ঐ সকল ওণ এক এক্ষন পাওরের চরিত্র লক্ষিত হইয়া থাকে। (ক্ৰমশ:) श्रभौनावाना मिरह।

° কুন্তী [®]কুককে ভগৰান্ বলিয়া বিখাস করিতেন।

ইয়োরোপীয় নাবিকদিগের কয়েকটা কুসংক্ষার

কোন অপ্ৰপোতে শব লইয়া পেলে সেই অপ্ৰপোতের ভবিষ্যতে অমঙ্গল হইবে।

জ্ঞ গামী অব্বপোতের প্রতি অঙ্গুলী নির্দেশ করিলে তাহার অমঙ্গল ঘটিবে।

কটিকার সময় ব্যক্তীত অন্য কোন সময়ে বৃদি কোন অর্থবিপোতারোহী কেশ মুগুন বা নধ কর্তুন করেন, ভাহাহইলে সেই অর্থবিপোতের বিগদ ঘটিবে।

অব্বিপোত্ত মৃষিকগণ যদি তাহা ছাড়িলা চুলিয়া যায়, ভাহাহ**ইলে অল-**কালের মধো জাহাজ জনমগ্রহীবে।

জাহাজ্জাড়বার সময় যদি আরোহী-দিপের মধ্যে কেহ বামদিকে ফিরিয়া হাঁচিয়া ফেলেন, ভাহা হইলে থাহা বড় অভ্তক্র। যদি অনুকৃল বারু প্রানহিত করাই।
বার আবশ্যক হয়, তাহা হইলে একটী
পুকরশাবক হনন করিলে, কিলা আহাকের মান্তলে একটা ছুরিকা বিদ্ধা করিছা
রাধিলে উক্ত বাসনা পূর্ণ হইবেক।

পেট্রেল নামক পকী দৃ**টিগোচর** হইলে কটিকা ও বৃষ্টিপাত হইবে এবং অক্-পক্ষী নয়নপথে পড়িলে শীম পম্য ভানে পৌছান যাইবেক।

জাহাতের উপর হই তে সমুদ্রবারি মধ্যে বিভাল নিংক্ষপ করিলে শীক্ষকটিকা হইবে।

সমু, দ্রর যে সকল স্থলে কোন স্থাবিক পাতি পুর্বে জলনিমা হইরাছে এরূপ প্রবাদ আছে, সেই সকল স্থলে জলমার পোতারোহীদিগের প্রেতামা স্বাদাই বিচরণ করিতে ছে।

বিবিধ তত্ত্ব সংগ্ৰহ।

পলীগ্রাম অপেক্ষা নগরেই আত্মঘাতীনিগের সংখ্যা অধিক দেখা যায়। ষ্টোনিক
(কৃন্ধু সাধান) সম্প্রদায়ভূক গ্রীনদার্শনিকগণ আত্মহত্যা প্রদায়ভূক গ্রীনদার্শচনা করিতেন। রোমান, ব্যবস্থাপকদিগের মতে আত্মহত্যা দোষ বা পাপ
বলিয়া বিবেচিত হইত না। বর্ত্তমান
মনরে দেখা যায় শিক্ষিত ও ধনবান
শ্রেণীর শোকদিপের মধ্যেই আত্মহত্যা
অধিক সংখ্যায় ঘটয়া থাকে। ইরো-

রোপে স্বীলোক আর্থাতিনীদিগের
মধ্যে অনেকেই বিধপান, উৎজন, জনাহার, প্রভৃতি উপারে কিম্বা অন্তরারা
গলদেশচ্ছেদন করিয়া আর্হত্যা করেন।
ক্রীষ্টের কম্প্রহণ করিবার তিন শক্ত বংদর পূর্কের রোমান্দিগের মধ্যে শক্ত
মুগুন প্রথা প্রবর্ধিত হয়। প্রমুদ্ধ দিন
শক্ত মুগুন করিবার স্বর মহোৎজ্ব
করিবার রীতি রোমান্দিগের মধ্যে প্রত্
দিত ছিল। তাহার। মনে ক্রিজ্বেক

নিন হইতে জাহার। প্রোচাবছার পদা-র্পণ করিছা সংসাধে প্রকৃতপক্ষে প্রবেশ করিলেন।

টিন্টোরোটো নামক ইতানীর চিত্রকর কর্ত্ব চিত্রিত "বর্গ" মামক চিত্রের
ক্রার দীর্ঘারতি চিত্র পৃথিবীতে আর
নাই। এই চিত্রখানি ৮৯ ফিট্ প্রশস্ত
এবং ৩৩-১ ফিট উচ্চ। ইহা একণে
দিনিদ্ নগরের "ডোলেস্ পেনেস্"
চিত্রশাসার রক্ষিত আছে।

কিছুকাল পূর্বে উদ্ভিন্বিদ্দিগের
মধ্যে বুক্ষের দীর্ঘতা লইরা আলোচনা
হর। তৎকালে প্রতিপার হর বে বিজ্ঞোরিয়া প্রদেশে ১২৫ ফিট দীর্ঘ বে বুক্ষ
মন্ত্রমগোচর হইরাছিল, তদপেক্ষা বুহৎ
বুক্ষ আর কুরাপি নাই।

ইরোরোপবাসিগণ বর্ষে বর্ষে বিবাহ দিবসের সাংবংশরিক উৎসব করিরা থাকেন। প্রথম বাৎসরিক উৎসবকে ইহারা গৌঃমর বিবাহ আখ্যা প্রদান করেম, এবং তদমুসারে পঞ্চম বাৎসরিক উৎসবকে কাঠমর, দশম বাৎসনিক উৎ-সবকে উন্মন, পঞ্চদশ বাৎসরিক উৎ- সৰকে ক্টিক্ষয়, বিংশ বাৎস্ত্রিক্
উৎসবকে কাচ্ময়; পঞ্চবিংশতি বাংস্ত্রিক্ উৎসবকে দ্বৌপ্যম্ময়; ত্রিংশ
বাংস্ত্রিক্ উৎসবকে তুলাময়; পঞ্চতিংশ
বাংস্ত্রিক্ উৎসবকে বছময়; চত্তারিংশ
বাংস্ত্রিক্ উৎসবকে উর্গাময়; পঞ্চতাত্রিংশ বাংস্ত্রিক্ উৎসবকে রেশমময়;
পঞ্চাশং বাংস্ত্রিক্ উৎসবকে ত্রশমময়;
প্রবং পঞ্চসপ্ততি বাংস্ত্রিক্ উৎসবকে
হীরক্ময় বিবাহ আখ্যা প্রদান ক্রিয়া
থাকেন।

রেলগাড়ীতে জ্ঞমণকালে তাহা খণীর
ক্র মাইল গমন করিতেছে, তাহা জ্ঞানিবার একটা সহজ্ঞ উপার আছে। একটা
রেলের সহিত জপর একটা রেলের
বেখানে সংখোগ আছে, সেই ছানের
উপর দিয়া গাড়ী বাইবার সময় একটা
বিশেষ শক্ষ শ্রুতিগোচর হয়। কুড়ি
সেকেণ্ডের মধ্যে যতবার ঐ শক্ষ শুনিতে
পাওয়া যাইবে, রেলগাড়ী প্রতি ঘণ্টায়
সেই সংখ্যক মাইল যাতা করিতেছে
ছির করিতে হইবে। এই গণনা সকল
রেলগাড়ীর সম্বন্ধেই প্রযুদ্য। (ক্রম্শঃ)

নৃতন সংবাদ।

১ । পত ২৬এ ছাছ্বারি কলিকাড়া বিশ্ববিদ্যালয়ের কনভোকেশন বা
উপাধি বিভরণ সভা ছইরা পিরাছে।
এবার ছোটলাট ও কটিস ওল্লাস বার্
ছইবারে বলেম এবং বাইস চাপেলর নার
শালুক্তে কক্ট ভিঞ্জী পনীকোভীৰ্ণ-

ভাছমারি কনিকরেন। জনেকওলি ইংরাজ ও বজহইরা পিরাছে।

ইস ওফ্লাস বাবু

সোম দিঙীর বার এম এ এবং কুম,রী

ইস চালেন্দ্র সার

হেৰথতা বস্থ ও স্বলার কিও বি এ

প্রীক্ষোভানউপাধিতে ভ্রিতা হুইরাছেন।

१। वहे क्लाजार्ति भार्लामके महा-বভা বুলিরাছে। ঐপ্রতিনিধি বারা মহা-রাণীর বক্ততা পঠিত হয়।

৩। হচিং নামক ছানে চীনজাপানী-शर्बंद्र मर्था चाहांत्र এक महावृद्ध रह, ভাহাতে চীনেরা পরাভূত হইরাছে; **धैनिमर्ग**प्र ১००० अवर बालानीमिरगङ्ग 🕯 অন মাত্র সৈন্য হত হইয়াছে।

e। (याचारे राहेटकाटिंत सम मात ी मधनामी आंत्र तक, ति, आहे, हे পরলোক প্রমন করিয়াছেন। ইহার মৃত্যুতে ভারতমাতা একটা উপযুক্ত সন্থান হারাইলেন। স্থ্রকণ জার সি জাই ই ইগার পদে নিযুক্ত হইয়াছেন।

৬। বিলাতের প্রসিদ্ধ রাজনীতিজ্ঞ नर्छ ठर्छहिला मृज्य वरेपाए ।

৭। প্রশাস্ত মহাদাগরের হাবাই থীপের রাজী নিলুফে:কেলানিকে সিংহা-

श्रः, त्रमवानीका शूनवात्र **कांशरक**े शृक्ष করিতে চেষ্টা করিতেছে।

৮। কৰ্মণীতে বিভালের ট্যায় व्हेत्राट्य ।

21 मानावी 33ई क्लाबादी विश्व विन्तानरप्रत व्यविभिका भन्नीका अवस अपने यक कार विकास निकास विकास । ১৮৯৬ मारनत व्यविनका भेत्रीका २१व बाह्यात्री वर वक् व, वि व नहीका अरे क्ष्याति वनित्व।

> । भावनारमध्य कृताम मन्दर **ज्यानक कृषिकच्या स्ट्रेश व्याप्त अपारक्ष** মৃত্যু হইন্নাছে। '

১১। स्थिष्डि वृद्धेत मध्यमाद्रत श्रीलांक निरंशत এक देवस्मिक व्यक्तात्र मुख्य मार्क, डावात गांचात मरवा ७३३৮ वदर मठा मःथा। (१५ म(क्द ब व्यक्ति। देशां गठ अक बर्मात धर्मविवास द० স্নচাত করিবা তথার সাধাঃপ্তত্র স্থাপিত | পৃঠা বেশা মুজিত ও প্রচারিত করিবাছেক।

বামার6না।

स्वच्यः।

"সকলে ভারেই ডাকে আমি যারে ডাকি" অনত খবের প্রোতে ভাগিছে ভুবন ! শ্যামল কুক্তর হট। চাক্র তপেবেল---अब्रवाशम हिम আরামে পড়িছে খুমি, কানন, প্রান্তর, পিলি, পশু, প্রাথিপণ। मान (वह वृत्क वृत्क, काम जनायत चार्य. ধুলিয়া বেভেছে যেন স্থা প্ৰস্তুবৰ। विक्य नवाय मनः

নরনে জাগিছে খ্যাম চাক তপোরনা

अर्था नरमा नुकि महरूव या है, जशास पूर फ-नाइ,

कृत कृषि नाशि संद्र्य है मिना हारकमा बूब **जावनी मिनीब**हर चानि करे समानत्म, (अगय-ण वर-मरना रमण, इ'किएक युवि विदय सामि स्रोत हैं

এই খানে চির তরে, পাহাডের ভরে ভরে. বরষা উছলে বুঝি শত ফোয়ারায় 🕈 ধরার বিষাক্ত বায়ু इत्त (य कीरवत्र आयू, त्म केंद्र क तमय-रमण हूँ है एक ना शांश ! এখানে বহেনা কভু মরতের বা'য় ! বিরামিছে "তপোগিরি" দেব-সৌধ বৎ-ক্ষেহ কোল প্রসারিত, ৰুড়া'তে আত্তের চিত, গড়িলা কি বিশ্ব কারু শত শৃঙ্গ রথ ! ও বরাকে মধুমাসে কচি কিশলয় ভাসে, দনক কেতন রাজা, মাতায় জগৎ ! এদিকে ভালয়া কর ''নদ্ন'' ভূধর বর, দেখার পথিকে ডেকে ত্রিদিবের পথ ! **এ দেখের সব যেন দেব-চিত্রবৎ** ! নিরমল শশী তারা জাগিছে আকাশে, एक मिक्करत्रत्र मार्थिः শত শহ্ম খণ্ট। বাজে, অবীকৃত পৰিত্ৰতা 'শিব-গঙ্গা' ভাষে। **(कां)** कर्छ जारक नत्र. "वभ वस् इत इत" দিগন্ত প্লাবিত করে একই নিখাসে। পুণ্য, শান্তি, পবিত্রতা, নরে দিতে অমরতা, ছাজি সে অমরাবতী ভবে নেমে আদে, তারি সাকী তারা শণী জাগিছে আকালে। मनीम बानव-वार्ष "बनीम" हेन्य. ज्योग जनक मिल. অসীম অনত ভাক্ত, দ্বীম শ্ৰমন্ত দেবে পুরিত হাণয় ! अलि समि पूर्णि मन আন্ত জাকি, জাই বোন, शास्त्रकात्र, देवश्चे नाथ स्रतः।"

मूहि भूक-गाथा जाबि, প্ৰাণ ভবৈ সুবে ডাকি-কোমল তুৰ্বল কণ্ঠ তাহে নাহি ভয় !--শিশুর করুণ ভাষে, স্নেহে মা ছাটয়া আদে, এক ফোঁটা অশ্রু পড়ি ভিজে বিশ্বময়। জনন্তে-দিগন্ত প'র. এ আকুল দীন সর উঠিবে, মিলিবে সেই চরণে আশ্রয়— স্বায় ডাকি, ভাই বোন, ডাকিতে কি ভয় 🔊 ধন্য ভূমি পুণাভূমি, ধন্য দেব স্বর, ধন্য তুমি মহাতীর্থ, তোমার বাতাদে চিত্ত, মন্দাকিনী-স্নাত যথা পূত কলেবর ! ভূধর, নিঝর, তব অতুল স্থন্তর সব, প্রকৃতির লীলাগৃহ, এ বন প্রান্তর ! নগর কি বাজালয়, এ মাধুরী—কোথা নয়, (कात क উमात था। मतल भूकत १) সেথা যে গরছে কাজে, বেহাগ ভৈরবী বাজে ৷— (मधा वाँभि वर्ष नानी, मना अव्यक्त ! कृषि या ज्यानक्षाय, বুকে ভর। শিব নাম, সাধক-হৃদয় ভূমি দেবভার ঘর ! জনতায় পরিহরি, তাপসীর বেশে মরি, লুকি আছ শান্ত, স্নিগ্ধ, আশ্রম ভিতর ! তাই তুমি নিকুপম, म!रात्र अकल मम. ত্বেহ মমতার গঙ্গা, স্থথের নিঝার। एक मान जाध करित, थ भीकर्षा पूरव मति, এক পলে, হয়ে যা'ক কোটী ক্ষমান্তর !া ধন্য তুমি পুণাভূমি; ধন্য কেব কর। **ञे. स्वा कृष्याश्रम उ**ठा प्रकी।

বামাবোধিনী পত্রিকা।

BAMABODHINI PATRIKA. "कन्याप्यवं पालनीया विश्वलोयातियवतः।"

क्लाक भावन कडित्वकं ६ बर्फ्ड महिल भिका निर्वे ।

०७२ मरथम

काञ्चन ১००১—मार्क ১৮৯৫।

ৎম করা। ৩য় ভাগ।

সাময়িক প্রসঙ্গ।

ক্ষাম্ভ্য-পৃথিবীতে প্রতি
মিনিটে ৭০, প্রতিদিন ১ লক্ষাদ শাস্ত এবং প্রতি বংসর ৩ কোটা, ৬৮ লক্ষ্ লোকের জন্ম হয় এবং প্রতি মিনিটে ৬৮; প্রতিদিন ১৭, ৭১০ ও প্রতি বংসর ৩ কোটা, ৫৭ লক্ষ্ লোকের মৃত্যু হয়। মিনিটে জাত ৭০টার মধ্যে ২টা সন্তান বাচে, ভাহাতেই পৃথিবী চলিতেতে !!

দান ককাশীর মহারাজ তত্ততা ঈশ্বরী স্ত্রী-হাসপাতালে মানিক ৩০০, টাকা দান শীকার করিয়াছেন।

সংস্কৃত কলেজ— মহামহোণান্যায় পণ্ডিত মহেশচ্জ ন্যায়য়য় নি,
আই, ই, পুলীর্ষ ধাল ক্ষত্তে কলেজে
অন্যক্ষের, ভার্য করিয়া স্থাতি ন্যব্যর
ক্ষীয়াছেন, ভারার স্থানে প্রেসিডেলী

কলেজের সংস্কৃতাধ্যাপক বাবু নীল্মনি
মুখোপাধ্যার এম, এ, নিবৃক্ত হইরাছেন।
ন্যাররত্ব মহাশয় বেরপ প্রশংসিতরশে
কার্য্য করিয়াছেন, কলিকাতা গেলেটে
ছোটলাট ভাহার বিশেব উল্লেখ করিয়াল

বদত্তে মারীভয়—কলিকাত ও
উপনগরের স্থানে স্থানে এবৎসর বসক্তের
বৈরূপ প্রাত্তিবি, অনেক দিন এরূপ দেবা
বার নাই। প্রতি সপ্তাহে কলিকাতার
এই রোগে গড়ে প্রায় ৫০ জনের মৃত্যু
হইতেছে। বাহারা ট্রকা না লইমাকে,
ভাহাদের মধ্যে পীড়া ও মৃত্যু স্থাকিক

বিষ্যবিশ্যালনের, প্রীক্ষাল প্রবিশ্যালগীর সংগ্রাপুর্যকর • প্রক্রের ২০১০ ; এফ,এ ৩০৪১

গত্ত বংসর ২০১০ ; বি, এ, ১৪২ ৭, পত

বংসর ১৪২৯ জন। বি এ ভির জন্যান্য

পরীক্ষার পরীক্ষাধীর সংখ্যা বাড়িতেছে।

বিবী আনি বেদাণ — প্নরায়
কলিকাভার আগত। এই মার্চ্চ মাদের
প্রথমে নানাম্বানে তাঁহার প্রকাশ্য বভূতা
ছইবে।

লেডী এলগিনের দৌজন্য—
রাজ্পতিনিধিপত্নী গরিবদিগের ছোট
ভালিনীগণের আতান পরিদর্শন করিয়াহেন।

শেভিবিজার দাতব্য সভা—
পত ১৫ই কেজরারি ৮ মহারাজা কমলক্রম বাহার্রের ভবনে ইহার বার্ধিক
সভা মহা সবারোহে সম্পন্ন হয়। ভোট
লাট সভাপতির আসন গ্রহণ করেন।
পত বংশর এই সভার আর প্রার বিশ্বণ
বাজিরাছে এবং অনাথ নিরাশ্রয় বিশ্বনরিপেক্তর্পপোষণ ও গরিব হাজদিপের
কাজাব্যে অধিভাংশ হয়র হছটারাছে।
আনহা স্কাত্তঃ ক্রমেণ্ডেই স্হার উন্নতি

कार्या धूतकत तमनी—विमाएडत "एमान' नामक गरवाम भव ১৮৯৪ সংলে जीकाजित উপकाहार्थ यछ बीलाक कार्या करियाहिन, छाटात मस्या रिवि व्याविटेन एए हिल्क भ्य, तम्खी एटनती ममादरगिरक रेय, ममात्रताखत एटमरक च्या, देशमधीय युवताक्रभन्नीरक हर्य, खरावडेरेरकत कार्डे होन मिहाहिन। नामकामा ना ट्रेयाड भारत ए मकल महिना व्यक्तित कल्याम माधन किन-एएहन, क्युर्यामी देखेत होशाहम्ब भूत-कात्रमाण।

গৃহক-মনিপুণা , রমণী—
জেলাকের রাণী স্বংস্তে স্বামীর ছেঁড়া
পোষাক মেরামত করিয়া থাকেন।

উ: প: স্ত্রীশিকা সভা—
পত ১১ই ফেজয়ারি লক্ষোর প্রানাদে
নৃত্র হাপিত এই সভার কার্যা নির্কাহক
সভার এক অধিবেশন হর, ভাহাতে
তত্তত্ত ছোটলাট সভাপতির আসন লন।
বেশ্ন স্থলের মত একটা হী বিদ্যালর
লক্ষোরে শীভ স্থাপিত হইবে আশা করা
বার।

বড়লাটের সিমলা ৰাত্রা—
বড়লাট আগানী ২১০ মার্চ কলিকাতা
ত্যাগ করিয়া গরা, দার্ভিলিং, দানাপুর
বড়তি দর্শন করিয়া গিমলায় ঘাইবেন।

লেডী ইলিয়ট স্বগার্থ কও— অর্থিন পরে ছোটনাট স্ত্রীক এলেশ ভ্যাম ভরিবেন। ভাহার পদ্মীর তৈলতিত্তের জন্য ৬০০০ টাকা টালা উঠির!ছে,
আরও ৪০০০ টাকা চাই। এ টাকার
বঙ্গমহিলাদের হিভার্থে কোনও অমুঠান করিলে অর্থের অধিক সার্থকভা
হইত।

রাজনোজন্য—বর্ণ নির ছুক্ত পূর্ম পাঞ্জী জাপনার ছুক্ত নিগকে দিবদের অধিকাংশকাল জানন্যে কটিল ইতে দেখিয়া ভাষাকের জন্য এক পুঞ্জবাল লয় স্থাপন করিয়াছেন। পুঞ্জবালি ভাষার নিজের নির্মাচিত।

বিগত শতবর্ষে ভারতরমণীদিগের অবস্থা।

(৩৬১ সংখ্যা ৩০৩ পৃষ্ঠার পর।)

বঙ্গদেশে নব্বধূদিগকে শ্বভরগৃহে বিশেষ সংগত ও সৃতিষ্ণু ইইয়া বাস করিতে হইত। তাঁহারা প্রভাবে উঠিয়া শতর শাত্তী সামী প্রভৃতি তরুজন-দিগের পাদবক্ষনা ও চরণামৃত পান ক্রিভেন। গুরুজনদিগের সহিত কোনও অবিনীত ব্যবহার করা তথন ওয়েতর অব্রাধ হলিয়া গণনীয় ছিল। প্রাপ্ত-বয়স্ক পুত্রও তথন মাতা পিতার কোন অন্যায় কার্যোর প্রতিবাদ করিতেন না---দে রক্ম ক্রা মহাপাপ মর্নে ক্রিভেন। পাছে বালিকা বধ্দিগের বিনরের কোনও রূপ ক্রেটি হয়, এই আশঙ্কায় ভাহাদিগের লজাশীলভা জাভিন্যা দোষে দ্বিভ **१हेछ। नरदर्शन व्यानाय्य ७**क्बन-দিগের সহিত কথা কহিতে পারিতেন ना; छोटानिश्वत क्या इका वा छात्र-কাতরতা নির্লম্ভার পর্প গণা হইত। उधनकात वाष्ट्रक शृद्ध वा व वकान-ভূক্ত বছপরিবার থাকিত। জীবনের

উচ্চ উদ্দেশ্য-শৃত্য, অসংহত-চিত্তা, ভিত্তা
ভিত্ত প্রকৃতির বহুলাক একল স্থাপ
করিলে সে স্থান বেমন অশান্তিকর হর,
তথনকার অনেক গৃহ সেই রকম অশান্তিকর হইত *। লুণ্টুক্, চুণ্টুক্ উপলক্ষ
করিয়া গার্হায় বিবাদ, প্রায় সকল স্থাপ্টি
ছিল। নববধুগণ, অনেক স্থালেই দক্ষণ
নিপীড়িতা হইতেন। স্থান্তড়ী, ননদিনী,
স্থানি—প্রধানতঃ সপত্তী (সপত্তা তথন
প্রায়ই থাকিত!) নববধুনিগের নিপীড্নের প্রধান কারণস্করণা হিলেম।
অভিতাবিকা রমণীগণ যে রকম চাহেন,
নববধু সেই রকম নিরীহ, সেই রকম
মৃত্ত্বভাবা, সেই রকম গৃহকার্য্যে স্থাকশা
এবং সেই রকম নেবা-পরাস্থানা হাইনেই

আনেকে তেলেবেগুলে জলিয়া উঠিতেন !

**শাতিঃ কিছু করিবার ক্ষমতা না পাঁকিকেঞ্জনেক বালিকাবধ্র পক্ষে এ রকম

ক্রেক্সাজনকার" বলিরাই বোধ হইত !

ক্রিক্সাজনকার" বলিরাই বোধ হইত !

ক্রিক্সাজিলাটীর পক্ষে এরপ বধ্তের ক্রেক্

বে কিরপ ক্রেক্সাকর, ভাহা বাহার হলর

আছে, তিনি ব্রিতে পারেন। সেই

মববধ্দিপের জনেকে সান্তরালয়কে "ব্যাশায়" বলিয়া মনে করিতেন।

ভাर्यागर्वत व्यवन्त्र। (यज्ञभ काना यात्र, তাহাতে অহুভূত হয় যে পতিপ্রেম অপেকা পতিভক্তিই ভাঁহাদের "প্রচলিত" ছিল। ভাঁহার "অভিন্তুদর বদ্ধ" मत्न ना **কেবল 'পুজনী**র গুরু"ই মনে করিতেন। সেইজন্য সর্বন। স্থানীর शामयनाः. চরণামৃতপান এই সকল ভক্তিভাবপূর্ণ কার্বোই তাঁহাদের পরিতৃপ্তি জ্বিত। বামীর দহিত একজনয় হওয়া, ভাঁহার निकटि व्यन्तकारक मान्त्र कथा वला. ভাঁহার সহিত বিভদ্ধ আমোদ প্রমোদ **ज्या ज न**कल, उथनकात्र नमास निल का-ভার ও প্রশন্ভতার পরাকাঠা বলিয়া ৰিবৈচিত হইত। প্রাচীনা গৃহিণীগণও ন্দ্ৰীকে দেখিলে একহাত ঘোষটা ক্রীক্ষিয়া দূরে পলায়ন করিতেন।

কৰিবতা প্ৰেমের বাধা শ্ৰেষ্ঠতম লক্ষ্য, বৈদী একমিষ্ঠা প্ৰক্ৰমাতিত মধ্য কচিং বিলিত। প্ৰধেয়া একবিন্দু ছল ছুডা জাইলেই বিভীয় সকে বিবাহ কয়িতেম।

প্রথমা जी कना अमितनी, কেবল কোনও কুমারীর পিতাপি কর্তৃক বিবাহ অসুরুদ্ধ, স্থানরী বা উচ্চ বংশীয়াকন্যা "পুত্র বধু হইবে" এই লোভে মাতা পিতা কর্ত্তক জাদিই, প্রথমা ভার্যার সৃহিত্ত বিবাদ করিয়া তাহাকে "জব্দ" করিবার প্রয়োজন এই সকল ঘটনার কোনও একটী উপস্থিত হইলে অনেক পুরুষ বিডীর পক্ষে বিবাহ করিতেন। এতত্তির বন্ধীয় কুলীন আন্ধণ ও কুলীন কায়স্থাণ বিশেষ কারণ না থাকিলেও বহুতর কুমা-রীর পাণিপীড়ন করিতেন। ব্রাহ্মণদিগকে ভার্য্যার ভরণ পোষ্ণ করা দূরে থাকুক, অনেক ভার্য্যার সহিত বিবা-হের সময় ব্যতীত সাক্ষাৎ হইত না। ইঁহারা বিবাহে অনেক টাকা পাইতেন বলিয়া বিবাহ করিয়া অনেকে জীবিকা নিৰ্ম্বাছ কবিতেন। ।

এইথানে একটা কথার উল্লেখ করা অপ্রাদিদক হইবে না। দেকালে অনেক প্রেষই বছবিবাহ করিতেন; ভাই স্থানীর গভার প্রথারভূষণা রমণী-স্থাদরে অপরিতৃপ্তাবস্থাতেই থাকিত। এই জ্না, সপত্নীবতী রমণীগণ অনেক সময়ে ঔষধ বা মন্তপ্রয়োগে স্থানীকে স্ক্তোভাবে নিজের বশীভূত ও পত্নী হইতে বিচ্ছির ক্রিবার চেষ্টা করিভেন। এই কার্য্য হইতে তথ্যকার মহিলাগণের জীবন বে

কেলীন্য থাপা এদেশ হইতে অন্যাপি দুর হয় নাই, ইহা নবা ভারতের কলকের কথা। তবে অনেকটা ব্রাস হইলাছে বটে।

क्छम्कः अञ्चनीः हिन, छाष्टा द्विएउ भारत वाद।

ब्रम्भीत्रम गृहश्रदर्भ विरमक निर्मण नाड क्तिर्डन, तम कथा भागता भूर्र्सहे বলিয়াছি। ভাঁহাদিগের গৃৰকৰ্মদক্ষতা ও ভামশীলতা ধেরপ প্রশংসমীয়, তাঁহা-দিগের দয়া ও দেবাপরায়ণতাও সেই-রূপ প্রশংসনীয়। আত্মীঃদিগের তো কথাই নাই, অতুর, অনাথ, দরিজ, বিপর ব্যক্তিগণ নিভাস্ত "পর" হইলেও মাডার মত স্লেহে, ভগিনীর মত ৰক্ষে, দাসীর মত পরিচ্যায় ভাষাদের সেবা ভল্লবা করিতে প্রস্তুত থ্যকিতেন। তথন অভিথিসং-কার গৃহস্থগণের পর্ম ব্রত স্বরূপ ছিল; প্রতিদিন খারে খারে অতিথি সেবা হইত। গৃহিণীগণ অতিথিসেবার অনুরোধে মুখের আস অভিথিকে দিয়া সন্তই মনে উপবাস ক্রিতেন। অপ্রিচিত বিপর মানব প্রবাসে এইরপ মাতা, ভগিনী ও পরি-চারিকা লাভ করিত।

কেবল মন্ত্রা-সেবা কৃতে, জাঁহাদের
দরা সকল জীবে পরিব্যাপ্ত হইত, ডাহাদের সেবায় ইতর জীবগণও পরম স্থাধ
থাকিত। গৃহপালিত গরু, বিডাল,
কুকুর প্রভৃতি তাঁহাদিগের নিকটে অপত্যবৎ লেহে পালিত হইত। ইহার মধ্যে
গো-সেবা একটা প্রধান ধর্ম কার্য্যের
মধ্যে পরিগণিত ছিল। গো মাভি
আমাদের থেরপ উপকারী, ভাহারই উপযুক্ত সেবা ভ্রাবা,লাভ করিত। এত্তিক
ভাতি বা প্রতিবেশী পরিবারের কোন্ত

অভাব বা প্রয়োজন জানিকে **উংলার** প্রাণণণে সহারতা করিতেন।

মাত্রণ শিওর (শরীর) পালকের নিপুণা ছিলেন। পাশ্চাত্য শিক্ষান্তর না হউক, ওাঁহারা শিও-চিকিৎগার-শিও-ভুক্তরার বিশেব অভিজ্ঞা ছিলেন। তথ্যে অনভিজ্ঞতাবশতঃ মানাসক শিক্ষা বিভেন্ন পারিতেন না। "ভুক্ত" "কামকাটা " ভাকিয়া, ভুত পেলীর কথা বলিয়া, প্রাধের সভানকে অনেক সমরে ভীক ও নিজেলা করিয়া বসিতেন। স্তিকা গৃহের প্রণাশীী তথ্য অভিশ্র কঘন্য ছিল।

রোগীর ওতানায় গৃহিণীগদ আছা নিপুণা ছিলেন বে চিকিৎসক বে মেলীনি কৈ ঔষধে আরাম করিতে পারেল নাই। প্রবীণা গৃহিণীগণ কত সমরে জল্লবাক্তরণা দে রোগীকেও আরাম করিয়াছেক। কলতঃ গৃংধর্ম রক্ষা বেমন তাহাছেক। কীবনের ত্রত, তাহারা প্রায় ভাষারই সম্পূর্ণ উপস্কু ছিলেন। গ্রত শতাকীর প্রারম্ভি ভারত মহিলার পারিবারিক অবস্থা এইরপই।

সামানিক অবস্থা। পুরুষ লাভি বেরুপা সমাজের বহির্জাগ, দ্রীজাভি সেইরুপা অস্তর্ভাগরণে অবস্থিত। সমাজের কাবি-রের কাজ বে রুকম পুরুবের কর্জান্ত ভিতরের কাজ সেইরুপা রবণীর কর্জান্ত পুরুষ যেমন সমাজের পালক, রমণী মেই রূপ সমাজের বেবিকা। কিছু ভারতা অদ্যাপি এমনাকোক সকল আংক্রা

ৰলিগা স্বীকার কারতে পারেন মা। ক্সপ্রাদিক এমাদলি বলিয়াছেন, পুরুষ লেগন কৰি, কিন্তু রমণী কার্য্যকরী কৰি। শ্ৰীলোক কঠোর প্রদয়কে কোমল, নিরাশ मनदक चानाभून, विक्रंडरक महायान व्यवः স্কাৰিত্তকে পৰিত্ৰ করিয়া থাকে।" হইতে পারে, মহাত্মা এমার্যন জীঞাতির **শতি অস্**গ্রহাতিশার এরপ মস্তব্য अकाम क बेडा हिन, किंड जाकी ज्ञी-কিতা মেশী বে জনসমাজের আধ্যা-श्चिम खेन्नाजित मरात्र. छावित्रा एमशिल একখা আ-নকেই সতা বলিয়া বুঝিবেন। আমন্ত্রা বিশাস করি, বে দিন সকল রম্বী अष्ट विभिष्टा व नाको इहेरवन, त्य দিন সকল রমীকেই পুরুবজাতি পবি-**অভার অভিরপ** বলিয়া বুঝিবেন, যেদিন এজগতে পাপ নীত্তা কিছুই রহিবে ন।। बाशक्रित्व छाजीत উন্নতির উপরে वशर छत्र अक्षूत मत्रन निर्देश कति (उर्ष) कार विराव "जामाजिक कर्जवा किन्नदे सकि ' अक्था वना क्षेत्रान माता।

রমণীর সামাজিক কর্ত্ব্য আছে।—
রমণীর সামাজিক কর্ত্ব্য অক্ট্রের কর্ত্ব্য
নতে, বৰণীর সামাজিক কর্ত্ব্য পুক্ষের
নেক্ত্র অহণ নহে, রমণীর সামাজিক
কর্ত্ত্য স্ক্রিঅহ নহে, ব্যক্তিবিশেবের
পক্তে স্ক্রিঅহ নহে, ব্যক্তিবিশেবের
পক্তে অবস্থা ও ঘটনাক্রমে সক্তর চইক্রেক্ত সাধারণতঃ কোনাক্রম অভাত্তিক
শ্রেক্তাতিক ভার্য রমণীর কর্ত্বক্র নহে।
স্ক্রিক্তাত্তিক ভার্য রমণীর ভার্ত্তিক পালনীয়।

ধৰ্মভাব-উদীপন, সাযুতা 🛶 পৰি-ব্রভা বিকাশ, দয়াবুত্তির চরিতার্থতা, জাতীর অভাব (খ্রীজাতির) জাতীর (স্ত্রীজাতির) উন্নতিসাধন, এবং यदमभक्षी कि कहमी नम, এই कश्री कार्यादक রমণীর সামাত্রিক কর্ত্তব্য বলা ষায়। **এই क्य़** की कति टिंहे त्रम्ती श्रुक रचत्र शह-কারিণী হইবেন। কিন্ত ভাঁহার এই गकन कार्या कतियात्र छेशमुक्क शिष्ठ कीवन व्यावनाक। द्रम्तीगरावत अहत्रन সামাজিক কর্ত্তব্য পালনোপযোগী গঠিত জীবন হইলে, রমণী তাঁহার স:মাজিক कर्खवा भानान यथामाथा हारे। कबिल মানব সমাজ বছতর উনতি লাভ করে— স্থনির এমার্নের মহাবাকী সম্পূর্ণ-রূপে সফল হয়।

বিগত শতাকীর প্রারম্ভে স্ত্রীজাতির অবস্থা ভারতবর্ষে যেরূপ জানা যায়, তাহাতে বোধ হয় যে সামাজিক কর্ত্তরা পাননে অনেকেই অমুপযুক্ত ছিলেন। মহাঞাণা রুম্ী विन्यागागत-वन्ती, কাণীকৃষ্ণ হিত্রের জননী প্রভৃতি ভুইচারি জন মহিলা সামাজিক কর্ত্তবা পালনে মহা-প্রাণভরে পরিচয় দিয়া পিরাছেন, কিন্তু महिलात्र वाहा **শাবার**ণ শামা ভিড कर्डरा यानक हिन शालक दहेज मा। उदव ममारक दौहारा (व कुरुषि बहर কার্য্য করিতেন, আম্বর্যা ভারার পরিচয় भारेश शकि। धनवडी ब्रम्मीत्रन (एवडा-প্রতিষ্ঠা, ব্রতাচরণ, তার্থদর্শন প্রভৃতি धर्य सारकाषीयक कार्या कहिर्देशन, देशारप

নাধার্মার ননও ধর্মপুরে আকর্ষিত হইত। আর দীনে দান, ব্যবিতে দরা, জরসত্র স্থাপন, ফলাশর ধনন প্রত্তিপুণ্য কার্যার হারা দরার্ত্তি চরিতার্থ করিছেন, ইংগতেও জনস্মান্দ সংহাপক্ত হইত। এতভিন্ন অন্যান্য কার্য্য ব্রিবার মত তাঁহাদিগের শিশা, অবস্থা ও ক্মতা কিছুই ছিল না।

সমাজে ক্রীজাতির জাতীর সম্মান ও পৌরব যে রকম ছিল, তাহা মনে করিতে পোনে আপে আর্থ্য ভারতের কথা মনে পড়ে। সেই একদিন, এই ভারতবক্ষে দাড়াইয়া, প্রাণের উচ্চ্যুদে দিগন্ত ভরিয়া আর্থ্য ক্ষিণের বাহাছিবেন.

"বত্ত নাৰ্যন্ত পুলাভ রমছে তত্ত দেবতাঃ।
বত্ত তাত ন পুলাভে সকাতত কোলা ক্লিয়া।":
বৰ্তমান সভ্য সমাজে (বিলেশের
অবশা) হীজাতি বিশেব সম্পানিতা ও
গৌরবান্বিতা বাট, কিন্তু ভারতীয় জার্বাপণ জীজাতিকে বে রবম সকান গৌরবের চক্ষে কেথিগাছেন, ভালা বুকি
কোনও দেশে—কোনও সাগতে নাই।

ভারতীর আর্থ গণের রাজ্যতা সহিত ভারত মহিলার সে সানাজিক সম্ব ন পৌরব দূর হইয়াছিল, আনাদের পাঠক পাঠিকাগন ভাষা ভানিতেকেন। বিগত শতাজীর প্রথম মুদ্রে (ব্যক্তি বিশেষ না হই জ) সংধ্যাব রমনীগর এবেশে পুক্ষ

্বেশ্যনে গ্রীণে কেছ। পৃত্তিত হন, সেশানে বেবভারা এনত্ত হন; আত্ত বেশ্যনে গ্রীলোকেছা অনাসুকা হন, নেশ্যনে সকন জিলাই বিকল।

म्बार्य कलाका ७ वर्षमानिक विस्कृत शुक्रत्वत्र मध्या देशाता पार्थशक, काशाब লীজাতির উপরে নানারণ নিশ্বন আছুক্ খার্থপর পুরোহিত যা ৰ টাইতেন। ব্রাহ্মণুগ্র "ধর্মাচরণ" বলিরা খ্রীকাডিছ निक्छे इद्देश्य अञ्चलका वर्ष मः গ্ৰহ করিত ; বিধ্বা রমনীর সম্পত্তি স্বার্থ-পর আন্দ্রীর বা কুটুবগণ কাঁকি বিয়া অথবা ক'ডিয়া শইত। শ্রীজাতির অগ[ু] ক্ৰটি, লোব প্ৰভৃতি দেখিলে সংশোধন করা দূরে থাকুক, "ত্রীবুদ্ধি: **প্রদয়দরী**" হলিয়া সাধারণ লোকে হাসিত। মার্জিক জান ও চিডাদীলতা মহাবে হীলাভি নিষেদের ছববছার বিষয় বৃশিতে পারি-তেন না—অধ্যা জাখীর উচ্তির অলাভ कान (एडे। करिएक शांदिएम मा 'অনুষ্ঠ লিপি' অথবা মুমান্তবের **কর্মকা** विवाहे मक्य पृथ्य महित्यमा

श्रात्व रहित्राहि, ब्रावीशिशक आमान (कहे देशभारत दिश्हिए। इहेछ। देशभानी হেট কোন কোন ছুমারীকে বল গঞা मन्त्रीत छेन्द्र हालाहेश स्वद्धा दहेत। ८कारा**श्व नाठ वरमटव्र** वाशिकात्म जन्मविकी**ण**ः **अकात्रवर्गवश्र** भू के विव कदिएक (महन्ना ६१क। वाशिका विश्वका অথবা পিও বিধৰ অপরিচিত, অভামিত शिव करा कि: विसे बाबक्या का कि ভাষানিগকে অং চার্যার উপবোগী কমিঞ্চ र देन कड़ा १हेंच हो, (व नकन बाह्यिक শক্তির অনুধীনতে সামৰ আছ-জানী निका नाक करत, शाकाविश्वत कि वाम-

দিয়া শক্তিৰ অহুশীলন হইত লাঃ ख्याल म्याक छाहामिनाक "পভিজ্ঞान। ৰ্মান্তি প্ৰী" সাজাইতে চাহিত। প্ৰাপ্ত-ৰশ্ৰম নৰ্বিধৰাগণ কেহ কেছ হাদয়ের 🌉 াদে স্বামীর সহিত সহমূত। হুইতেন। **"সহৰ**য়ণে" বংশগোৱৰ ভিল বলিয়া আহবদে নহমরণের জনা জীজাভিতে উদ্ভেজিত করিত। যে নববিধবা অত্যে খীকতা হইরা. পরে সংমরণের ক্লেণ শীকার করিতে অসম্মতা হইত, সমাজ ভাহাকে কথনুই ছাডিত না. ৰাশবাধারির লাঠির আঘাতে আধ্যয়া ্**ক্রিয়া সহমূতা** করাইত। সেইরূপ রম্ব-শীর# বহুবৎসর স্বর্শ লাভ হইত।

বিগত শতাধীর প্রারম্ভে ভারত-**সহিলাদিগকে, সমাজ এই রক্ম নির্ভ**র 🗝 নিভাম বাঁৰিয়া পদদলিত ক্রিতেন। মীলাতির নাছিক স্বাধীনতা আমরা ''বঙ্গ-**क्टिश्व डेशर**गंभी अल्यांनि बलिटड

পারি না। । কিন্তু কার্য্য হাংগ্রামীনতা, काठीत कीवानती छेत्रकि विश्वत शाबीन-চিত্ততা, স্বাধীন চিন্তা প্রভৃতি, শভাক্রী পূর্বে ভারত মহিলাদিগের সাধারণতঃ স্থারও অগোচর किन। বোম্বাই. লাহোর. অযোধ্যা প্রভৃত্তি প্রদেশে স্ত্রীজাতির বাহিক স্বাধীনতা षात्कि । अहिन हिन, किन्त प्रभाना বিষয়ে তাঁহারাও বক্সমহিলার ন্যায় দর্বতোভাবে পরাধীনা ছিলেন। শৈশব विवार, वहविवार, महमत्रग व्यथा उँ।।-দের সমাজেও প্রচলিত ছিল। লেখা পড়া অথবা জ্ঞানামুশীলন , ভারতের কোনও স্থানেই প্রচলিত ছিল না। वह भेटाको भूर्व्य (र ভाরতবর্ষে আর্য্য-গণ "বজ নাৰ্যাক্ত পুজাক্তে বম্ভে ভত্ৰ দেবতা" বলিয়াছিলেন, গত শতালীর মেই ভারতবর্ধে, নারী জাতির অবস্থা: মোটের উপরে এই রকমই দাঁড়াইয়াছিল। (ক্ষমশঃ)

বিবিধ তম্ব সংগ্ৰহ।

শশুনে নগরে ও প্রশিরার অভ্যপাতী विश्वम नगरत निवाचात्र ১৬ वर्गी कात शक्त कामी द्य । স্ইডেনের অন্ত:-**প্রামী এক্ছন্ম নগ**রে দিবাভাগ ১৮ ঘট। स्थेन अधिकेत्राती एत । कविश्वत त्राय-शबी कार्के भिष्ठेम वर्ष नगरव स माहे-वित्रप्रकृत्याद्भारमञ्जू मास्य गामी १८हारमञ्जू क्षत्रक क्रिकालाय १० वर्ता काम नर्गत माने का विम्हाना बारमहान देविहा

नगरत क्य यारमत २४ छात्रिय २२ घणी কাল পর্যান্ত স্থায়ী হয়। উত্তর ক্রেছ न्निडेक बार्ध्वन नगरत मीर्चेडन निरमत স্থারিত্ব সার্ছ তিন মাস কাল।

ভারতবর্ষে দর্বাধ্যে কোলু সমরে

 ন্ত্রী-ভাষানতা বিষয়ে আমানিসের বে বতানত छोड़ा ५२०४ जालाइ स्थीन माराम नामारवाधिनी भक्तिसार "किशक्तिदे लोकि" नोर्वक अस्तरक विकासिक मिलिसिस ।

ध्वर (स्तिन् वास्ति हम्मा अपन करतम, তাহার কোন বিবরণ পাঁওরা বার না। কিছ ইয়োরোপে উহা ত্রয়োদশ শতাব্দীতে আর্লাটি নামক ক্লোরেশবাসী একজন ইতালীয় কর্তৃক প্রথম প্রস্তুত হয়।

ইংল্ডের অশিক্ষিত বা অরশিক্ষিত লোকদিগের দংক্ষার আছে যে জাত্তরারি মাসে জন্ম গ্রহণ করিলে কন্যা সংসভাবা ও বুদ্ধিমতী গৃহিণী হইবে; ফেব্ৰুয়ারি মাসে জ্বন্ন গ্রহণ করিলে দরাবতী, স্লেহ-ময়ী ও স্বামিভক্তিপরায়ণা হইবে; মার্চ্চ মাদে জন্ম গ্রহণ করিলে কলহঞিয়া ও আমোদ্প্রিলা ইইবে; এপ্রেল মাসে জন্ম গ্রহণ করিলে বৃদ্ধিহীনা কিন্তু জীসম্পুন্না হইবে; মে মাঁদে জন্ম গ্রহণ করিলে স্থগ-मम्भन जाशिमी, यून्स्त्री ও सिट्टे जांविशी হইবে: জুন মাসে জন্ম গ্রহণ করিলে আবেগ পূর্ণা হইবে এবং অন্ন বয়দে পরিণীতা इहेरत ; जुलाहे भारत अना धारण कतिरल অসংখ্যেপ্রকৃতি হইবে; অপিষ্ট মাদে হুৰু গ্ৰহণ করিলে কার্যানিপুরা ও অমা-য়িকসভাবা হইবে এবং ধনী ব্যক্তির স্হিত পরিণীতা হইবে; সেপ্টেম্বর মাসে ভন্ম গ্রহণ করিলে বিবেকসম্প্রা ও মিষ্ট ভাষিণী ও সর্বজন প্রিয়া হইবে, অক্টোবর माम छन्म थार्ग कतित्व ज्ञालनावना-বিশিষ্টা কিছ অন্মধিনী হইবে, নবেম্বর মানে অসু গ্রহণ করিলে স্থূলকারা ও অপ্রিমিতব্যয়শীলা হইবে।

শাকাৎ হইলে ইংরাজে জিজ্ঞাশা কুরেন, "ভূমি কেমন আছ 💅 🛮 করাসীরা विकाम करान, "कृषि चाननारक स्वकृष खानाहेबा नहेबा तिषाहेरा १° हेडी লীর জিজ্ঞাসা করেন, "তোমার অবহা কিরপ " অন্ত্রিবলেন "ভূমি আপ-স্থ ডেমবাসী नारक (कमन (नथ्ड.?" वालन "ज्ञि (कमन १" अलमाख वालन, "ডুমি কিরূপ বলেছ ? "মিসরবামী বলেন ;—"তোমার কেমন বস্থা হচ্ছে " **ही**न ক্রিজাসা कटब्रन "তোমার উদরের অবস্থা কিরূপ ?" অথবা "তুমি কি ভাত খেয়ে**ছ** ?" পো**লাওবালী** জিজাসা করেন, "তুমি **ভাপনাকে কেম্**ন রেখেছ •্" রুষ বলেন, ভূমি কেমন বেঁচে আছ ?" পারস্যবাসী বলেন "ভোষার ছায়া যেন কখন হয় না হয়।" পार्ठक विद्युष्टना कतिया ए**पित्वन अरे** দমস্ত সন্তাৰণ গুলির একই ভাবার্থ।

মংস্যের ভাবণ শক্তি শাছে ইহার नाना अमान পाउम्रा यात्र। मरमाजीवी-দিলের এই তথ প্রায় জানা নাই। তাহারা মংস্য ধরিবার সময় মৎস্য শ্রবণ-भक्ति-विशेम मत्म कतिया भक्त कती দখলে কিছুমাত্ৰ সাবধানতা **অংশখন** করে না। মংস্যের ভাবণশক্তির আমা-ণিকতা সম্বন্ধে কোন ইংরা**ল প্রাণিত্য** বিদ্বলেন যে একবার তিনি একটী পুক্রিণীর ঘাটে বসিয়া আছেম, এমন সমধ্যে দূরে বন্দুকের শব্দ ওনিতে গাই-लम्। अक्षम निकारी भक्ती मात्रिवास খন্য বাহির হইয়াছিণ; ক্রমাপত বৃদ্ধ ছুড়িতেছিল ৷ তিনি দেখিলেন বৰ্ডনায়

বন্ধের শব্দ হইল, তত্থার তাঁহার শব্দুবন্ধ থাটের জলে বে সকল মৎস্য কীড়া করিডেছিল, তাঁহারা ভীত হইরা জলের মধ্যে ডুবিয়া বাইতে লাগিল।

উত্তর আমেরিকার অত্তঃপাতী মির্দিরিপি নদীর ভীরে "রাক্ষণ পাদপ"
নামে এক আতীর বিষাক্ত বৃক্ষ দৃষ্টিগোচর হয়। এই বৃক্ষের নিকটছ ছানে
অন্যান্য লতা বৃক্ষাদি রোগিত হইলে
ভাহা অলকাল মধ্যে শুক হইয়া যায়।
ইহার লালবর্ণ ছোট ছোট ফুল হইয়া
থাকে। ফুলগুলি দেখিতে পেয়ালার

ন্যার; মধ্যভাগে অভি অন্ধ অপরিবাণ জলীর পদার্থ দেখা বার; উহা কীট পড়লদিপের প্রাণনাশক। পুস্পমধ্যন্থ এই জলীর পদার্থে শত শত মন্দিকা ও অন্যান্ত পড়ল কৃতাবন্থার পতিত রহিয়াছে দেখা পিরা থাকে। পরু বাছুর এই বুক্লের পত্র বা পুস্প আহার করিলে মৃত্যু মুথে পতিত হয়। এই বুক্লের বিষের প্রতিশোধক এ পর্যান্ত আবিষ্কৃত হয় নাই। আমেরিকার যে সকল হানে "রাক্ল্স পাদ্দ" জন্মাইতে দেখা বার, সেই খানেই প্রারই ভয় হইয়া থাকে।

বার্মেসে।

टें के ब

অপ হইরা "যো" হইলেই এইমাসে
অধিক পরিমাণে ভূমিতে লাজল দিছে
হর। বৈশাধ মাসে যে সকল ফসলের
আবাদ করিতে হর, অলের স্থবিধা
হইলে, তৎসমুদর এই মাসে করা যাইতে
শারে। অস না হইলেও ক্বকেরা এই
নাসে আত্থান্যের "কাঁকড়ি" করিরা
নাকে। চৈত্রমাসে তক ভূমিতে অধিক
পরিমাণে লাজল ও মই দিরা মৃতিকা
ধূলিবৎ চূর্ণ করিতে হর। সেই গুলির
মধ্যে আত্থান্যের বীজ বপন করিতে
হর। পরে অল হইলে অবিলম্বে সেই
বীজ অন্থরিত হর। ঐলেশ তক ভূমির
বালির উপর বীজ বশন করাকে 'কাঁক্ডি'

পক্যাদিতে নষ্ট করিয়া কেলে বটে,
কিন্ধ ঐ প্রক্রিয়ার আর একটা বিশেষ
গুণ আছে। ঐরুপে উক্ত বীক্ত হইতে
বে সকল ধানের গাছ জন্মে, ভাছাতে
আদে কোন প্রকার পোকা লাগে না।
ইহা ধান্য আবাদের পক্ষে নিভান্ত অর স্থবিধা নছে। কেননা আভ্রধান্য বিষিধ কীটের উৎপাত হইরা থাকে।

বেগুণের চারা—এই মাসে বেগুণের চারা তৈরার করিছে হর। একটী চৌকার ষাটী উত্তমরূপে চূর্ণ ও সার মিশ্রিক করিয়া তাহাতে বেগুণের বীজ বপন করিবে এবং চৌকার মাটী চাসিরা দিবে, নচেৎ পিশীলিকা ও অন্যান্য কীটে ভাহা থাইরা কেলে। থেগুরের भाषा क्लान बारेल बाता के कीका আছাদন প্ৰ্ক প্ৰতিদিন সম্যাকালে ভাৰার উপর অভ পরিষাণে তল সিঞ্ন कतिरव। अहे हाता वछ इटेल टेहज ख বৈশাৰ এই চুইটা মাস বাদ দিয়া অবশিষ্ট খণ মাসের বে কোন মাসে কেতে রোপণ করা বাইতে পারে। আৰাড় কিখা প্ৰাবণ মাসে রোপণ করাই প্রশস্ত। বেগুণের ক্ষেত্র ওছ হইলেই তাহাতে জল দিতে এবং গাছে বা কল-কুলে পোকা ধরিলে তাহাতে ভস্মচূর্ণ দিতে পারিলে বার মানই বেতাপ কলে। কিন্ত শীতকাল ভিন্ন অন্যকালে জাত বেতাৰ তালুৰ অ্খাছ হয় না। এই ফ্সলের চাব আবাদ সম্বক্ষে ধনা আপন यामी मिरिवरक 'वबार्ट्य (भा' अरे नाम मित्रा विनित्राद्धन,-

শ্বলৈ গেছে ৰরাহের পো।
দশটা মাদ বেগুণ রো।
টৈচত্র বৈশাধ দিবে বাদ।
ইথে নাই কোন বিবাদ।
পোকা ধরলে দিবে ছাই।
এর চেয়ে ভাল উপার নাই।
মাটা ওকালে দিবে জল।
সকল মাদে পাবে ফল।

ইকু,—কাজন নাসে ইকু কাটিয়া কোন হয়। কোন কোন ক্লবক প্রত্যেক কাড়ের কিয়দংশ ভূমিতে রাধিয়া ইকু ছেলন করে। ঠৈত্র মাসে সেই ভূমিতে গানধানে ২০ বার লাক্ষণ হিলা তাহাতে জনসেচন করে। তাহাতে প্রত্যেক

ইক্ষ্বের চকুংপার্থ হইছে নৃতন ইক্ আলে। সেই ইক্ষ্পে রীজ্মিত পালন করিলে তাহা সম্পূর্ণ কার্বেরাপরোধী হয়। এইরূপে একবার আবাদ করিয়া ২াও বর্গ ইক্ষু আবাদ চালাইতে পারা বার।

পান,—এই মাসে পানের লকা
আনেকটা বড় বড় হর। তাহার কিরুল
লংশ টানিয়া বড়ি বাঁকড়ার গোড়ার
অড়াইয়া দিয়া অপ্রডাগ মাচার উঠাইয়া
দিতে হয়। পানের পাড়া প্রভাত
অর্থাৎ পরু হইলে প্রথমে লড়ার মূলের
দিক্ হইডে তালিতে আরম্ভ ক্রিবে।

আর একজাতীর পান ও লকা আছে, উভরই লভা ভাতীর, বে কোন বৃহৎ বৃক্তের মূলে উহা রোপশ করিয়া ঐ বৃব্দে উঠাইয়া দিতে হয় । উহার বিশেব চার আবাহ কিছু নাই ! লকার নাম ''চই,'' উহার পোড়াই লকার কার্য্য নির্কাহ করে । কলভঃ লকা হইতে উহা লিও ও উপকারক । বে সকল পীড়ার লকা মরিচের ঝাল এককালে নিবিদ্ধ, ভাষোভে 'চই ঝাল' অনারাসে ব্যবহার করা বাইভে পারে, কিছুমাত্র ভানিই হয় না । ঐ পানের বিশেব কোন লাম নাই । উদ্ধানর বিশেব কোন লাম নাই ।

কুলের কলম,—বলি কুলের "চোক কলম" ও "চকু কলম" করিবার "ইক্ছা হয়, ভাহা এই মানেই করিতে হইছে।" কলম করা উল্যান কার্যের অভবন্ধ। উহা নামাবিধ একং বিলক্ষণ ক্ষমিশ ব্যাপার। একবার স্বচক্ষে ঐ সকল শ্রেকিয়া দর্শন না করিলে, কেবল বিবরণ নাঠে কৃতকার্য্য হওয়া কঠিন।

একটা দেশী কুলের নধর চারার মূল হইতে এক কুট আন্দাজ ब्राचित्रा एकपन कतिरव। औ वित्र प्यःरभत অব্যবহিত নিমে বে পত্রগ্রন্থি আছে, তাহা **হটতে ভিন্ন অংশ পর্যান্ত চারিপাশে**র हान है। हिया स्मिनिय। এक है। विनाजी কুলের নৃতন তেজাল শাখার কর্তিত मूर्थंद्र मिरक किश्विद माहेख वा कार्छ वाहित করিয়া ফেলিবে। চতুর্দ্ধিকের অক্টী যেন ছিঁ ডিয়া বা কাটিয়া না যায়। এই শাধার কাঠশুন্য অংশ পুর্ব্বোক্ত চারার कार्ट वनारेश निरव। এर कार्या अक्र एखरेमभूगा ७ वृक्ति विरवहमा भूवर्वक করিতে হইবে যেন, ঐ যোড়ের কার্চ ও षक् ছোট বড় এবং শিথিল না হয়। পরে উহার চারিদিকে মসল: মাটা দিয়া চট বা মোটা কাপড ছারা উত্তমরূপে বাঁধিয়া দিতে হইবে। এই কলমে অধিক রোজ না লাগে এবং যে পর্য্যস্ত বর্ষারক্ত না হয়, তদবধি জ্বলের ঝারা মিতে হয়। এই প্রস্তীকরণ প্রক্রিয়ার कान अर्थ किছूमां कि इहेलहे कलम ७६ रहेशा यात्र। देशांत नाम "रहाकक्वम्'।

(২) দেশী কুলগাছের যে সকল ছান ংইতে শাখা নির্মত হা, ^দনেই সকল কানকে চক্ষ্ কছে। এই মাসে গাছে হইতে থাকে। উত্তম ধারাল ছুম্মী ছারা
চতুঃপার্শের কিঞিৎ ত্বক্ ও কার্ছের সহিত

ঐ কুঁড়ি কাটিয়া ফেলিতে হইবে।
অনন্তর বিলাতী কুলের তাদৃশ নৃতন
শাথা মুকুল বা কুঁড়ি আনিয়া উহার মধ্যে
বসাইয়া দিতে হইবে। পরে তাহাকে
যথাবিধিপালন (যেমন চোক্সকলমে বিবৃত
হইয়াছে।) করিলে চক্ষু কলম প্রস্তুত হয়।

বাঁশ,—গভীর গর্জ ধনন করিয়া তাহার মধ্যে গোবর ও জল দিয়া উত্তমরূপে কাদা করিবে। একখানা পুরাতন
বাঁশের কিয়দংশ মূল শুদ্ধ তুলিয়া ঐ
গর্জের মধ্যে বসাইয়া দিবে। ঈবং
হেলাইয়া বসাইবে এবং চারি পাঁচ
হাতের অধিক রাথিবে না। উহাকে
বাঁশের মূড়া কহে। মধ্যে মধ্যে উহার
মূলে জল দিখন করিতে হয়। ইহা
হইতে কাল দহকারে একঝাড় নূতন বাঁশ
প্রস্তুত হয়।

আরও এক প্রকারে নৃতন বাঁশবাড় প্রস্তুত করা ঘাইতে পারে। এক থানা বছগ্রন্থিক পাকা বাঁশ লম্বাভাবে পুতিয়া কেলিতে হয় এবং মধ্যে মধ্যে তত্তপরি জল দিতে হয়। ক্রমে উহার প্রত্যেক গাঁইট হইতেই প্রায় নৃতন বাঁশ জয়ে। প্রথম হই তিন বৎসর বাঁশ সকল বড় ছল হয় না। পরে ম্থাকালে অল্পরণ অস্তরে কয়েকটা কাড় রাখিয়া অবশিষ্ট কাড়গুলি মারিয়া কেলিলে বাঁশ ক্রমশঃ মোটা ও লম্বা হইতে খাকে। এই সকল ব্যাশার কেবল পড়িলে চলিবে না।

বাঁছার স্থাবিধা আছে, ভাঁছাকে ছাডে কলমে করিতে ছইবে, বে হেডু এসকল বিষয় ক্ষণিক আমোদজনক কার্যাও নহে,—
নাটকও নহে। কাজের কথা, কাজে দাড় করাইবার চেটা করাই উচিত।
এই মাসে পুরাতন বাঁশঝাড়ের গোড়ায়
সরস্পলি মাটা তুলিয়া দিতে হয়, য়থা—

"কান্তনে আগুন হৈতে মাটা।
বাঁশ বলে শীস্ত উঠি।
বাঁশ ছেড়ে বাঁশের পিতামহ কাটা।"
তিল,—ফান্তন মাসের শেষ আটি
দিন এবং চৈত্র মাসের প্রথম আটদিন,
এই যোলদিনের মধ্যে যে রুষক তিল
বপন করিতে পারেন, তাঁহার তিল বেশ
হয়। যথা,—

কান্তনের আট হৈতের আটি।
সেই তিল দায়ে কটি।

এই প্রবাদে গাছ তেজাল হইবার কথা
আছে। গাছ তেজাল হইলেই ফলন
বেশী হওয়া সন্তব।

ভূটা,—এই ফসলকে এদেশে জনারা কহে। ধান্যাদির চাব আবাদ বেমন এদেশে প্রচুর পরিমাণে হয়, পশ্চিমে ভূটার আবাদ তজ্ঞপ। মথুরা, কাণপুর, বৃলন্দসহর, ফরেকাবাদ প্রভৃতি স্থানে আমরা ভূটার ক্ষেত্র ও আড়ত দেখিয়াছি তাহা দেখিয়া বেশ বৃবং বার য়ে, ঐ ফলল তত্তদেশের একটা প্রধান শদ্য। আড়ত সকলের প্রকাণ্ড প্রকাণ্ড বরে ভূটার ফল বোঝাই হইয়াছে। বহুসংখ্যক ত্রী পুরুষ বালক-বালিকা ঐ কল হইডে দান।

বাহির করিতেছে। বেলেখাটা আছুতি
চাউলের আড়তে বেমন প্রক্তমর চাউল লের কাঁড়ি দৃষ্ট হইরা পাকে, উপরি উজ্জান সকলে সেইরপ ভূটা দানার অপ্রেখণ বার। পশ্চিমাঞ্লে ভূটা একটা মূল্যবান্ কলন। সেই জন্য ক্ষিড

'যদি থাকে টাকা করিবার গোঁ।
তবে চৈত্রমাদে ভূটা পিয়া রো ॥"
তৈত্রমাদে ভূটার আবাদ করিলে ফ্ললী
বেশী হইয়া অর্থাগম হয়।

আমরা এতদিনে "বারমেনে" কর্বাৎ
ভাদেশ মাদের প্রব্যাজনীয় কৃষি বিবরণ
শেষ করিলাম। একণে "কৃষি সন্ধান্ধ নানা কথা" এই শিরোনামে কিছু বলিতে
উদ্যত হইলাম। তন্মধ্যে চৈত্তমানের
বিবরণের সহিত মাদ, ফাঙ্কন ও চৈত্ত এই তিন মাদ সংক্রান্ত কথার আলোচনা
করিব।

"যদিবর্ধে মাধের শেষ;
ধন্য রাজা পুণ্যদেশ।
যদি বর্ধে ফাজনে,
চিনা কাউন দিওপে।"
মাঘের শেষে বর্ধণ হইলে নৈদাম ও
হৈমন্তিক উভরবিধ কসলই উত্তম হর।
ফাজনে বর্ধণ হইলে পশ্চিম দেশীর চিনা
ও কাউন নামক ধান্য হিন্তৰ পরিমাণে
ফলিয়া থাকে।

"মাঘ মাসে বর্ষে দেড়া।

রাজা ছেড়ে প্রকার সেরা ॥"

মাখ মাসে সুরুষ্টি হইলে কুম্করণ বৃত্ত

প্ৰয় পাইরা প্ৰম ক্বী হয়। তথ্য তাহারা অন্যের নিকট রাজবৎ সেবা ও নক্ষান আগু হয়।

া "ৰদি বন্ন চৈতা মাসে বৃষ্টি।

তবে হন্ন ধামের কৃষ্টি।"
বে বৎসর হৈতা মাসে স্বৃষ্টি হন্ন, সে বার
আচুর পরিমাণে ধান্য অন্মিয়া থাকে।

"বদি বর্ষে মকরে।

ভবে ধান হবে টিকরে।" কাম নাসে স্মৃত্তী হইলে টিকর, অর্থাৎ উচ্চ ভূমিতেও ধান জন্মে।

"চৈতে ক্রা ভাজে বাণ।
নরের মৃও পড়াগড়ী টান ।"
বে বংগর চৈত্র মাসে কোয়াসা এবং ভাজ
নাসে বন্যা হয়, সে বর্বে নিশ্চয়ই সহানারী হইরা সেধানে সেধানে মর কপাল
পড়াগড়ি বার।

"চৈতে ধর ধর বৈশাধে রাড় পাধর জ্যৈষ্ঠেতে তার। কুটে। তবে জানবে ববা বটে।"

যে বৎসর পর্যান্ত থ্ব শীত থাকে. বৈশাধ মাসে ঝটিকা সহকারে শিলার্টি হইয়া থাকে, এবং জ্যাষ্ঠ মাসে অধিক মেঘ রুটি হয় না; সে বৎসর নিশ্চরই স্থবর্ষা হইয়া থাকে।

বদি বাছ প্রকৃতির ফলাফল, ঐ সকল প্রবাদ অনুসারে সংঘটিত হয় এবং রুষক গণ পূর্ব্ব হইতে তাহার অনুশীলন করিতে পারেন, তাহা হইতে পারে। দিগের কার্য্যের স্বব্যবন্ধা হইতে পারে। এই সকল বিষয়ে রুষক মাত্রেরই পরীক্ষাকরা উচিত।

(ক্ৰমশঃ)

সিংহলের কতকগুলি আচার ব্যবহার।

ভগিনীগণ। আপনারা লানেন বা
নাই জানেন আমরা বলি বে সিংহল
আচীন বাকালালাতির উপনিবেশ মাত্র।
বধন বৌধধর্মের অভিশর প্রাকৃতাব,
ভবন এই উপনিবেশ সংস্থাপিত হর।
ক্রেলা আনক সিংহলবাসী এখনও
নাল্যনীদিপের বংশসন্ত ও বাকালী
উপনিবেশীদিপের বংশসর বলিয়া আপনাক্রিমের পরিচয় বেওয়া গৌরবস্তুচক মনে
ক্রেলা। করিবারক কথা। কালের
ক্রেলা। করিবারক কথা। কালের

পেলেও একটি অবশিষ্ট আছে, তাহা কোনও কালে যাইবার নয়। সেটা দেহের গঠন। আহা! আমরা বাজালী, আমরা যজদুর অধঃপতিত হইতে হয় হইয়াছি। আমাদিগের আবার উপনিবেশিকগণ আবার আমাদিগের অপকীর্ত্তন করেন এবং আমাদিগের আদর্শে চরিত্র ও সমাজ গঠন করিতে যত্ন পান। একথা তানিলে হাসিও পার, হুঃখও ধরে। ইহাতেই বেশ জানা বার বে.বর্জনান মিংহশবাসিগণ

ক্তদুর বিদাতীয়ভাবে অনুপ্রাণিত ৫ আচারত্রন্ত ইইয়াছে। বিধাতার নির্মে হুখন কোনও জাতি অধঃপ্তনের চর্ম সীমায় উপস্থিত হয়, তখন তিনি এক অভ্তপুৰ্ব্ব অবস্থায় তাহাদিগকে আনিয়া উद्याद्वित शर्थ क्षाप्तर्गन कतित्रा शास्त्रन। তাই বলিয়াই বুকি আৰু সিংহলের কুতবিদ্য ধনী মানীব্যক্তিগণ সমাজ. ৰ্যবহার সংস্করণে ভাচার নীতি ও हेराषिटशब বছপরিকর হইয়াছেন। বহুকাল হইতে প্রচলিত পরিচ্ছেদ অনেক পরিবর্ত্তিত হইয়াছে এবং আরও হইবে। শিক্ষিত পশুদায়ের ইহাতে দৃষ্টি পড়ি-বাছে, আন্দোলন চলিতেছে।

সংপ্ৰতি সিংহনের কতকভাল ভব-মহিলা বুদ্ধ গ্রাদিতীর্থ প্রাটন উপলক্ষে ক্ৰিকাডার আসিয়াছিলেন। ইহা-দিগের পরিচ্ছদ জনেকটা আমাদিগের ন্ত্রীলোকদিগের মত। ভবে দেখিলাম সধ্বাতেও থান পরিয়াছেন আরু বিধ্বা-তেও সধবার মত শাটী—বোশাই শাটির মত শাটি পরিধান করিয়া খাকেন। তথ্যাসুসন্ধানে জানিছে পারিলাম বে উহারা বেরূপ পরিহিতা ছিলেন, ডাহা উহাদিগের দেশ প্রচলিত প্রথান্থমাদিত নহে। তথার খতর প্রণানী। সে ঘাছা হউক আস্রা বাহা দেখিয়াছিলাস ভাছাতে বেশ বুকা পেল বে, উঁহারা আমাদিপের স্ত্রীলোকদিপের পোবাক অনেকটা অমুকরণ করিরাছেন। ইহা-विरागत गरिक गार्वका 💐 ता, कांशाबा

नानि वा बाजारकत्र बहिनाविरशत विक কুলা আমা পরিধান করিরা দক্ষিণ ক্ষ त्रश**िक्ष** वाहित कतित्रा तार्थम। বাহাকে ভাষার আট পহরিদ্বা পোষাক বলে. ভাহা সচারাচরভামরা বহির্দ্ধণতে বাকিরা দেখিতে পাই না। ইহা কোনও প্ৰকাৰ চুট খণ্ড ৰৱে সম্পন্ন। একখণ্ড क হইতে পাদদেশ, অপর থণ্ড কাট হইতে গ্রীবাদেশ পর্যান্ত বিস্তত। কি বিধ্বা কি সধবা জামা সকলেরই গাত্তে। অবভঠন প্রথা সিংহলে প্রচলিত মা ধাড়াছ সিংহলমহিলাকে অবভঠনে মন্তক আরুড করিতে দেখি নাই। মাদ্রাজী দ্রীলোক-क्रिश्व मण विनास स्टेशांस : क्य বিধৰাকেও আমাদিগের দেশের স্বর্ণ বৌপ্য ফুল সদৃশ অৰ্ণ বা শ্লৌপ্য কেশাল-স্বারে কেশ বিভূবিত করিতে শেখা গিরাছে। সিংহল নারী চর্ম পাচুকার বাবছার করিয়া থাকেন।

চিন্দু সন্ন্যাসিনী আছেন, বৌশ্ব
সন্ন্যাসিনীও আছেন। ধর্মজীবনের ভিন্ন
ভিন্ন অবস্থার উপস্থিত হইলে, ইংগারা
ভিন্ন ভিন্ন উপাধি লাভ করিয়া থাকেন,—
বলা উপাসিকা ও ভিক্লুনী। গৃহন্দের করা
পূর্ব্বে উক্ত হইল, এক্লণে বৌশ্ব-বৈরাগিনী
দিগের বিষয় কিছু বলা যাইতেছে। এই
স্থানেলে লেখক অনেক উপাসিকাকেও
দর্শন করেন। ইংগাদের মধ্যে অনেকতলি বৃদ্ধা, প্রোঢ়া ও কতক্তলি মুখ্যীও
ছিলেন। কেই কেন্ত্র বিবাহ ভ্রিক্র
প্রের বানীর সৃষ্ট্র পর বস্তব্যানক্ষর

পूर्वक मन्नामधर्च शहन करतन, क्र কেছ বা চিরকুমারী আছেন-আদৌ বিবাছ করেন নাই। ইহারা পাছক। পরিধেয় সাদাথান পরিধান করেন না। বা ধৃতি। সকলের গায়ে জামা দেখি-লাম। ইহাঁরা ভিক্ষ শ্রমণদিগের ও আমাদিশের দেশের বিধবাদিগের ন্যায় একাহারিণী। বৌদ্ধ বলিলে বাঙ্গালী সাধা-রণে আছিংস। পরমধর্ম-পরতক্ত নিরামিষ-**ভোজী ধর্ম-সম্প্রদায়কে বুকিতে পারেন।** কিন্ত তাহা নয়। সন্ন্যাস আভামধারী বৌদ্ধদিগের মধ্যে অধিকাংশই নিরামিষ-ভোজी। গৃহীদিগের মধ্যে অনেকেই আমাদিগের আমিষভোজী। বেরপ সধ্বাকে আমিষ ভোজন করিতেই इहेरव, निःश्ल मिक्रभ मट्य। মাংসাদি ভক্ষণ করা তথাকার সধবা-দিগের সেচ্ছাবীন, খাইলেও কোন বাধা नारे, ना थारे (लख (माय नारे। সিঁহুর, হাতে "লো" যেমন আমাদিগের সধবার ডিহ্ন, সিংহলবাসিনীর শেরপ किंद्रहे नारे। **बे**श्चीमत्त्रत অসুধীত ব্ৰতাদির কথাও বিশেষ কিছু শুন। যায় না, তবে এইমাত্র শুনিয়াছি যে, শুক্র পদীয় পুর্ণিমা ও অপ্তর্মী তিথিতে ইহারা रेक्ट्रा कतिरल वृक्ष्तरत्व উष्मर्थ উপवान कत्रिया शास्त्रम ।

পাথের বরঃক্রম অন্ততঃ ১৮।২০ ও পাথ্যীর বরঃক্রেম অন্ততঃ ১৬/১৮ বৎসর হইলে বিবাহ কার্য্য সম্পাদিত হয়। ব্যেষ্ক বিবাহ হিন্দু বিবাহের মত নহে। ইহাতে পুরোহিতও নাই, মন্ত্রও নাই, বিগ্রহও নাই। উভয় পক্ষের সম্বতিক্রমে, উভয় পক্ষের সম্বতিক্রমে, উভয় পক্ষের কর্তৃপক্ষীয় মাঙ্গল্য ও বস্ত্র অলক্ষারাদি লইগ্রা বিবাহ দেন। বলিতে কি ইহা কতকটা(সিভিল ম্যারেজ্বের) আই নের বিবাহের মত। সিংহলে বিধবা বিবাহ প্রচলিত আছে। বিধবা ইচ্ছা করিলে বিবাহ করিতে পারেন, নাও পারেন। কোনও রূপ সামাজিক বাধা নাই।

কিছুদিন পূর্বে সিংহলে দ্রীশিক্ষা ছিল না এক্ষণে, কিছু কিছু, দেখা যাই-তেছে। অনেকগুলি বালিকা, বিদ্যালয় সংস্থাপিত হইয়াছে। তন্মধ্যে কলম্বে। নগরীর সঙ্গমিতা বালিকা বিদ্যালয় প্রধান। প্রধান প্রধান বালিকা বিদ্যালয় গ্রহাতে ইংরাজী অধ্যাপনাও প্রবর্ত্তিত ইইয়াছে।

মনে করুন কাহারও নাম নবীনচন্দ্র সিংহলী প্রথানুসারে ইহা ঘোষ। রাথিতে হইলে ঘোষ নবীনচন্দ্র এইরূপ হইবে। আবার দেখুন, প্রায় সমস্ত সিংহল অধিবাসীর অনাধ্য বিজ্ঞাতীয় খ্রীষ্টায় নাম। বৌদ্ধবর্মা লুপ্ত প্রায় হইলে খন্তীয় ও ললাজদিগের অধীনে বহুকাল থাকাতে সিংহল এতদুর আচার ও ধর্ম-ভ্রষ্ট হয় যে, অধিবাদীরা প্রায় সকলে বিজাতীয় খৃষ্টীয় নাম ও ধন্ম পরিগ্রহ এজনা ইহাদিগের প্রায় সকলে-রই ইউরোপীয় नाम । বিধর্ম কিম্বা বিবৃত বৌদ প্ৰেতাস্বামূলক

ধর্ম। বর্ত্তমান সময়ের বিকৃত হিন্দুধর্মের ধে প্রকার শোচনীয় অবস্থা, কি
সিংহলে, কি তির্কতে, কি শ্যানে, কি
ব্রক্ষে, কি চীনে, কি জ্ঞাপানে, বর্ত্তমান
বৌদ্ধ ধর্মেরও সেই প্রকার বিকৃত শোচনীয় অবস্থা, স্তরাং সিংহলের ধর্মসংস্পারক ও সমাজ সংস্পারকের প্রধান ও
প্রথম কর্ত্তব্য নাম পরিবর্ত্তন ও ধর্মের
অঙ্গীভূত কুসংস্পারের অপনয়ন এবং
সমাজ পুন্র্গঠন করা।

মুসলমানদিগের মত সিংহলীদিগের শগড়ির বিচার নাই। ইহারা বিছা- নার বদিয়া শ্বরাদি ভোজন করিরা থাকেন। উত্তর-পশ্চিমাঞ্চল ও পাশ্বাব প্রভৃতি দেশে হিন্দুদিগের আচারটা গ্রুপ ছইলেও তাঁহারা শ্ব্যার বদিয়া ভোজন পানাদি করেন না।

মৃত্যুর পর হিন্দুদিগের মধ্যে বেমন
চতুর্থী, দশপিও, ক্ষেরিকর্ম ও প্রান্ধ কিরাদির বিধি আছে, সিংহলনিবাদী বৌদদিপের তংসমতুল্য ক্রিয়া কলাপের
ব্যবস্থা আছে। চল্লিণ দিনে অশোচ
শেষ হয়—পরে প্রান্ধ ক্রিয়া সম্পন্ন হইরা
থাকে।

সৃষ্টি প্রক্রিয়ার রহস্য।

(८६) मःथा। ०१८ पृष्ठीत भद्र ।)

শারে যে অণ্ড হইতে, মতাওরে বিমুর নাভিপদ্ম হইতে, রজার উৎপত্তি বলা হয়, তাহার অর্থ এই যে অণ্ডাকার ক্ষিতিন্মণ্ডল বহুকাল জলে ভালনান ছিল। তথ্য সকল পরিণত হইয়া আসিতে আসিতে যথন জল হইতে গদ্ধ তন্মান্ত উংপদ্ম হইয়া তাহার পরিণামে ক্ষিতিওয়া উংপদ্ম হইয়া তাহার পরিণামে ক্ষিতিওয়া উন্ত হইল, তথন ঐ জল রাশিকে ক্ষিতি তথ্যের আধার বলা হইল। এজনা ক্ষিতিন্মণ্ডলকপ অণ্ড জলে ভাসনান ছিল বলা যাইতে পারে। ক্ষিতিমণ্ডলকপ অণ্ড-কেই ব্রহ্মার আবাসস্থান কপ পথ বলিয়া ক্ষিত হইয়া থাকে। মহাস্তরে উহাক্তি ইয়া থাকে। মহাস্তরে উহাক্তি শ্রিণামের সীমান্ত ভিতত্ত প্রাকৃতিক পরিণামের সীমান্ত

ছল। সমস্ত তবাই মুকুলাবকা হইতে এই স্থলে আদিয়া পরিপুষ্টতা লাভ করে।
মান, বৃদ্ধি, অহঙার ও ইন্দ্রিয়াদির প্রকাশ এই কিভিতবেই হইয়া থাকে; কারণ আফু প্রভাগ্ন ও ইন্দ্রিয়াদির আন্তর স্থান আফুডির উত্তব এই কিভিতব হইতেই সম্পন্ন হয়। স্থতরাং, ইহাকে ব্রহ্মার আধার ক্রপ পদ্ম বা উৎপত্তিয়ানক্রপ অশু এই উত্তর প্রকারেই কল্পনা করা বাইতে পারে। উক্তলম্ম প্রাকৃতিত হইলে, অর্থাৎ ভ্রপ্ত জল হইতে স্বতম্ভ হইয়া প্রকাশিত হইলে, ব্রহ্মা তত্ত্বারি অধিচান স্কুরিলেন অর্থাৎ ক্রিটিত ব্রহ্মা প্রকাশিত হইলে, ব্রহ্মা তত্ত্বার পরিলামে, ব্রে প্রাণ্ড্রা উন্তিদরূপ জীবত্বভাব দেখা দিল, তাই ব্রহ্মানামে করিত হইল।

ব্ৰহ্মা উৎপন্ন হইয়াই কোথা হইতে আসিলাম বলিয়া চতুর্দিক নিরীক্ষণ করাতে তাঁহার চারিটী মুখ হইল এবং নিরীকণ করিয়া কাহাকেও দেখিতে না পাওয়াতে পদ্মনাভের অভ্যন্তরে নিজ্মল व्यापरवार्थ क्लमाया व्यापन कतिता। কিছ অবেষণে কৃতকার্য না হইয়া, পুন-রায় স্বস্থানে আদিয়া উপস্থিত হইলেন। এই সকল কথাদারা এই অনুভব হয়, যে, জনম বুক্ষের পত্র পুষ্পসকল কোনও রূপ আবরণাভাবে একই সময়ে চতুর্দ্দিক দর্শন করিতেছিল, এজন্য ব্রহ্মা চতুমুখি বলিরা কল্লিড হইলেন, এবং জ্লজসুক্ষের মুলস্থিত মৃত্তিকা জল ভাগ হইতে পতন্ত্ৰ হইয়া উত্থিত হইতে যে কতকাল লাগিয়া-ছিল, তাহার সংখ্যা করা তুঃসাধ্য বলিয়া ব্ৰশা তাঁহার মূল অবেধণে কৃতকাৰ্য্য इहेरनम ना।

অলঅ বৃক্ষের ম্লস্থিত মৃতিকারাশি কালক্রমে অলভাগ অভিক্রম করিয়া উবিত হইবার পুর্বের ঐ জলে মংসা, কীট ও অল অভসকল উৎপন্ন •ইয়া ছিল, কারণ চণ্ডীর প্রথম মাহান্ম্যে লিথিত আছে বে, বিফ্র কর্ণম্ল হইতে মধুও কৈটনামক দৈত্যধন্ন উৎপন্ন হইয়া ব্রহ্মা-কে প্রাস করিতে উদ্যুত •ইলে, নারায়ণ

কর্ত নিহত হয়। কীটভ শব্দের উত্তর স্বার্থে "ষ্ণ" প্রতায় করিলে, কৈটভ পদ-সিদ্ধ হয়। অতএব জলমধ্যে প্রথম কীট সকলের জনা হওয়াকে लक्ष्य कतियाह কৈটভ নামক অস্থরোৎপন্ন হওয়া কল্পিত হইয়াছে। মধু এক প্রকার পত বিশেষ, যাহারা কীটরূপে জন্ম গ্রহণ করে, পরে পাথা নির্গত হইলে মশক ও মক্ষিকা ইত্যাদি ইয়া উড়িয়া যার। মধু কৈটভ দৈত্যদ্বয় বিষ্ণুর সহিত বছকাল (দেবমানে ৫০০০ বৎসর) যুদ্ধ করিয়া বিনাশ প্রাপ্তি-কালে এই বর প্রার্থনা করিয়াছিল যে, আমরা যেন পুধিবীর উপরিভাগে তোমার হঁন্তে নিহত হই। ইহার অর্থ এই যে কালক্রমে যথম জল ভাগ ক্রিয়া গেল এবং মৃত্তিকা ক্রমশঃ প্রকাশিত হইয়া (मथा मिल, उथन की छे अख्यामि छीवगन ধ্বংস প্রাপ্ত হইল। এইক্ষণে দেখ উলিদ রাজ্যের জীবহ ভাবের নাম ব্রহ্মা, এবং উদ্ভিদ সকল দেই জীবনী শক্তির অধীন বলিয়া উহা অক্ষার স্টবস্ত হইল, কর্থাৎ ব্রহ্মা যেন প্রথমে উদ্ভিদ্ হৃষ্টি করিলেন। ব্রমার ঘিতীয় স্টিতে কীট, প্তস্থ, প্ত. পক্ষী ইত্যাদি তির্ঘাক জীব স্রোতের উৎপত্তি হইয়াছিল।

(ক্ৰম্বঃ)

জাপান।

ধ্ব বে দীপটা লোহিত বরণ আশাস্ত্রসাগরে কুক্ত আরতন,

দেখ নিরবিয়ে দেখ একবার ভূলনার চীন-সামাজ্য উহার কভন্তৰে বড় !—নগণ্য জাপান একতার বলে কড বলীয়ান ! অবাক হইবে শুনিলে সে কথা— স্বদেশের ভরে কি মহাপ্রাণ্ড। ! স্বাৰ্থ সুধ দৰ দিয়ে বিসৰ্জ্বন শত শত নর করি প্রাণপণ, যুঝিছে সমরে নাশিছে অরাতি অদম্য উৎসাহে রণমদে মাতি। মহাবল করী—মুষিকের করে পরান্ত মানিছে সন্মুধ সমরে। রণ-বিশারদ—ব্রিটশ কেশরী ফরাসী জর্মণ উঠিছে শিহরি। বিশংবছরের সভ্যতার বলে কিবা স্থনিপুন সমর কৌশলে ! জলগুছে কিখা স্বশ্ব জাপান ডুবাইছে কত চীন জন্মান मरिम्सा मागरत,—अन्याय मङः ধন্য হে জাপান ভোমার বাঁরহ। শত শত নারী করিবারে রপ রাজার নিকটে করে আবেদন ! মত মাত্রিনী—জাপান রমণী! বীবাসনা কত-বীর-প্রস্বিনী, সমর প্রাঙ্গণে প্রাণ দিতে চার: 'স্পেশামুরাগ' ধন্য এ ধরায় ! অসীম দাহদে করিয়ে নির্ভর পশিছে সমরে নির্ভর অন্তর ! শক্রদেনা হৈরি হটিবে না রণে,

वात्र साक क्यान स्मापन कांत्रस्य । অহিফেন সেবি—পুরুষত্ হীন, গেছে একেবারে অধ:পাতে চীন! शुक्त अर्क धर्क पर्ण हुत मान, অপদার্থ এবে নিস্তেক অসার! অন্তত জগতে চীনের প্রাচীর! ষে চীনেতে ছিল শত শত বীর, কোগায় দে চীন—নেশার অধীন তাই তার এত হুর্দশা হুর্দিন ! ভাবিলে সে কথা চোধে বছে খল, একেবারে চীন গেছে রসাভল। অধাল্যা বিলাগবাসনা ও ভৌগ একবার দেখে পশিলে এ রোগ, कत्त्र मर्क्तनाम । यह वौर्ग्यहौन সাধে কিগো গেছে রুসাতলে চীন ? ধন্য হে জাপান! ধনা বীরপণা, এসিয়ায় নাহি তোমার তুলনা। কুদ্র কলেবর—বিক্রম বিশাল ! ভেবে দেখ ভূমি কি ছিলে হে কাল ? কাল চক্ষে খুরি—চীনের পতন, উদয় তোমাতে স্থের তপন! কেমন বালাৰ্ক শোভিছে ও শিলে! चारता य उच्चन श्हेर्य चित्र ! স্মত্য সমাস্ত্ৰে লভি উচ্চ স্থান ভূমিও জগতে হইলে প্রধান। আরও উচ্চ হবে তারি স্ত্রপাত, সৌভাগ্য তোমার তাই স্প্রভাত !!

হৈয়ালি।

তিন অক্ষরে নাম মম বিদিত সংসারে, কিন্তু পণ্ডিতেরা মোরে অধিক আদরে।

আপন কৰ্ম্মেতে আমি নাহি হুই পিছু, কালী কালী বিনে মন মুৰে নাই কিছু। পরের মনের কট না পারি সহিতে, পর উপকার খাটি দিবসেনিশিতে। টেনিসন বঙ্গবাসী বন্ধিন স্থজন, সকলেরি উপকার করেছি সাধন। নামের প্রথম আর দ্বিতীয় জক্ষর, একতা করিলে বিজ্ঞানের সহচর। আদি বর্ণে শেষ বর্ণে একতা করিলে, তথনি বলিয়া হীন সবে অবহেংলে। শেষ আর দিভীয়েতে কর একত্রিত, ছিছি বলি পলাইবে তথনি ত্বরিত। যেথানে সেথানে থাকি মূল্যবান নই, কিন্তু যদি চেন তবে মূল্যবান্ হই।

পাঁচন ও মুফিযোগ।

(২৬০ দংখ্যা ৩০৪ পৃষ্ঠার পর।)

আমাশয় ও রক্তামাশয়।

- ১। আমাশর হইলে জোলাপ লওরা উচিত। অপক বেল পোড়াইরা তাহার শাঁস ওড়ও মিছরির ওঁড়া সহ সেবন করাইবে। আকন্দ ম্লের ছাল চূর্ণ সেবনে আমাশর রোপের উপশম হয়।
- ২। কেণ্ডরিয়া, কচি দাড়িম, দাড়িন পাতা, আয়াপানের পাতা, কালা কর্পূর আমপাতা বা হর্কার, অথবা কুড়চি ছাল ইহার কোন একটার রস ছাগীহুগ্ধসহ সেবন করাইলে রক্তাতিসার নিবৃত্তি
- ত। কোকশীমের পাতা সিদ্ধ করিয়া ভা**হার কাথ সেবন** করিলে আমরক্ত বন্ধ **হর**।
- ৪। টাপাকলার শিক্ত ছই ক্ঁচ বাটিরা ধাইলে আমর জ সারে। থ্ল-কুড়ি নামীক গাছ ধলিসা মাছের সহিত কোঁল করিয়া ১ সপ্তাহ রোগী কি ধাওয়া-ইলে আমরক্ত ভাল হয়।
 - ा त्रलक्ष्ठा, शाद क्ल, वाला,

লোধ, গজপিপ্পলী এই সকল দ্রব্য সমভাগে লইয়া কিঞ্ছিৎ যোগান, মৃতা, ও
ভঠ যোগ করিয়া, সিদ্ধ করণানন্তর গাঢ়
কাথ ছাকিয়া মধুসহ মৃত্যু অবলেহন
করাইলে শিশুগণের আমাশয় রোগ
নিরুত্তি হয়।

- ৬। বেলগুঠা, ইক্রযব, বালা, মোচরস. মৃতা এই দকলে মিলিত ২ জোলাকে
 ঈশৎ কুটা করিয়া ১৬ জোলা জ্বলে স্থানিদ্ধ
 হইলে কেবল চুগ্ধ মাত্র অবশিষ্ট থাকিলে
 ছাকিয়া কিঞ্চিৎ কিঞ্চিৎ পান করাইলে
 শিশুদের মাংস ও রক্তক্ষরণ সহ গৃহিনী
 ৪০০ দিবদৈ আরোগ্য হয়।
- १। श्रथम धक्छै न्छन है। ড়িতে रेद मित्र कल मित्र। अधिए जान मिए थाकिरन, यथन मिश्रित स्य कल कृष्टि छिए, मित्र मेथन मित्रा कृष्टी /> मित्र कृष्टि छीत छान स्वनिया मित्रा चाँछि छ थाकिरन। यथन मिश्रित स्वभ मिक्र हहेग्रा और भाषा स्थान कल खाछि, भहे मुमन नामा-हरन। भारत सिहे तम नर्जन बाना

ছাঁকিয়া লইয়া দেখিবে ষে পাঁচ পোয়া হইরাছে কিনা। অনন্তর এক ছটাক ঐ রস এক কাঁচো মধুর সহিত মিলিত করিয়া সকাল ও সন্ধ্যা তুইবার খাওয়া-ইবে। তিন দিন পরে একবার করিয়া থাওয়াইবে। এইরূপে সাত দিন খাওয়া-ইলে আমরকু আরাম হয়।

৮। জর অসত্ত তেুঁতুল পাতা সিদ্ধ করিয়া সেই কাথ কিছুদিন পান করিলে রক্ত আমাশয় আরাম হয়।

৯। তিন চারি দিন তেলাকুচা পত্রের রস ১ তোলা পরিমাণে আমাশয় রোগী-কে সেবন করাইলে আমাশয় নির্ভি হয়। ১০। শুক চিড়ে ৮ তোলা ছভ দ্বারা মাথিয়া রাত্রিকালে আমাশয় রোগীকে ভক্ষণ করাইয়া জল পান করিতে দিবে না। এইরূপ ৩ বা ও দিন ব্যব-হার করাইলে ভদ্মক্ষর আমাশ্য রোগ আরোগা হয়।

১১। ও তোলা ইমবগুল জনে ভিজাইয়া সেই জল চিনির সহিত দিবদে ছুই তিনবার খাইবে। পাঁচ ছয় দিন ব্যবহার করা আবশ্যক। ইহাতে আমা-শ্য রোগ আহোগ্য হয়।

১২। ইনবগুল কতকটা বাছিয়া
লইয়া গালে জল দিয়া তাহা গিলিয়া
ফেলিলে আমাশয়, এমন কি রক্তামাশর
ভাল হয়। রাত্রিকালে শ্রনের সময় ও
প্রাতে সেবদ করা প্রশস্ত। বেশীভেদ
হইলে ২০০ ঘন্টা শস্তর এক একবার
সেবন করিতে হয়।

১৩। ধই, য**টি-মধু ও ইক্চিনি**সমভাগে চূর্ব করিয়া ৪ রতি মাজার মধুসহ মাড়িয়া এক চামচে আত্প চালের
জলসহ পান করাইলে শিশুদিপের আমাশর আরোগা হয়।

রক্তপ্রাব।

১। নাসিকা হইতে ব্লক্ত আব হইলে খেত ত্র্কার রস, ফটকিরির অল কিছা চিনি সংগ্রুক ত্রের নস্য বইলে উপকার হয়।

২। ফটকিরি / জানা ও ছার্গ
ত্রা / পোয়া সমপরিমাণে জালের সহিত
সিদ্ধ করিরা ত্রাবেশেষ থাকিতে নামাইয়
দিবার তিনবার সেবন করিলে, রক্তাভেদ,
রক্ত বমন, রক্ত প্রদর রোগের রক্তশাব
নিবারণ হর।

ত। ছাগহ্ম ও **ভাতপ চাউলের** চেলোনি হল একত্র মিশা**ইয়া পান** করিলেরকু উঠা ছাত্ত হয়।

৪। পুরাতন চামড়া জল দিরা
থেঁতো করিয়া কভাষানে পটা বাদিরা
রাথিলে কিন্তা মুখে চিবান জুর্মা বাসের
রস অস্তাদি জন্য ক্ষত (কাটা) ছানে
প্রদান করিলে রক্তরোধ ও বেদনানিবারণ
হইয়া কাটা ছান যোড়া লাপিয়া বার।

৫। বদি কোন অজ্ঞাদি বা আখাতাদি দারা রক্তবাহিনী শিরা ছির হইয়ь
নিরত শোণিত স্রোত বহিতে খাকে,
তাহা হইলে নেই হুত হানে বর্ক অথবা
কট্কিরি ব্রিত জল বারংবার দিকুন

করিলে শিরার মুখ সকুচিত হইয়। রকু রোধ হয়।

৬। স্বারাপ্রনের পাতার রস পান ও ক্ষত স্থানে প্রদান করিলে রক্ত রোধ হুইয়া বেদনাদি নিবারণ হয়।

ফট্কিরির গুঁড়া, বা তামা কের পাতা লাগাইয়া দিলে রক্ত পড়া
 বছ হয়।

৮। পাথুরিয়া করলা জলে ঘদিরা ক্ষত ভাবে দিলে কাটা যা ভাল হয়।

১। কাটিবা মাত্র কাটা স্থানে গাঁদা পাতার রস দিলে কাটা ঘা যুড়িয়া ষায়, কোনও বেদনা হয় না।

১০। মাধন ও তিল তৈল সম পরিমাণে লইয়া মস্তকে মর্দন করিলে নাক দিয়া রক্ত পড়া নিবারণ হয়। (ক্রমণঃ)

স্বর সাধন প্রণালী।

(৩৬০ সংখ্যা ২৭২ প্রষ্ঠার পর।)

लक्को--र्रेश्ति।

নবাব ওয়াজাদ আলি সা কৃত গান।

শ্রীনহল্র দত্ত কুত স্বর্গাপি।

বিंবিট মিশ্র।

একভালা।

🕮চরণ দাস বৈদ্বাগী কৃত শীভ পরিবর্ত্তিত ল ও স ।

(+।। । । । । । । । । | | | + | ' | | । (এ পু এ বা প প গ গ ম এ সা সা সা সাম ম গ (ছে- লা-ডে ছ-ড- রু, ছা- রু। ও-নাম- ন, হ-রি-ছ রি ব

| ०७२ मर] | 7 | ামাৰোধি | নী পত্ৰিক | 71 | | A8.0 |
|--|---|---|---|--|--|---------------------------------------|
| । ।।। म श भ म न व- म | প | ⊦॥ । । সা নি ^হ হ- রি বে | : निष | । । প ম - বোল, ব- | i +1 म म ल म- | l 어 및- |
| । । । প প প নে, স্ব- প- | । । । ধুম প নে, জা- গ | | } | | | |
| +। গ (১ম) ঐ- (২২) ম- (৩২) ভ্য (৪ৰ্থ) চ- | । । গ গ হি- কে- নে ক- জা ক- রণ- ব- | । । । গ <u>গুম</u> র জুং র সেই রে যে ুল গ- | হ'ল দি- দিন | | त नर म | ার, |
| †। প তা জ-' কো- হ-' | । । সা' নি ব- লে বশ অঙ্গ ধায় র- | সা [.] | । । ধনি প নাম র দিন, হ- ডোর পু মু ধা | । । ধ প হি- বি ই- বে ত্র প- পিড-রে | । । ম গ ভূ লি ভো- মা- রি- বা- ব- দ- | । গ রে, র, র, |
| ×॥ সা যার সেই দং ক্লি- | । নি না দিন সার তেও | ।।। ধ মে, ব- জ- | । নি বার দনে সার রাতে, | । । ধ প থেন্দ্র মে, ম দি জ্ঞা- ধি হ- রি | • | । ম লেন ল ্ডে দ্লো ম |
| - ! -। ম ত- পা- জ- ব্ৰ- | । । প প ক- দে ব না ছ- কা | । । প প ব স্থ ম, হ- র, ক- র, বে | । । ধুম খী, না রি পু- র হ জন জা | | । । ম গ বি- রা- মন শ্বা- দ সা- নি ক | । श्री- म, म, म, |
| +। গ্ৰ ম- ড- ম- ড- | ॥ ম হা- বে দি স্ব | ।। সা: দেৰ বা ে বা | ৰ মো ৰ ভ- | | । ম (व- ধা ধা- ভ- | → 平 1 平 利 、 有 君, |

| | _ | | | |
|----|------------|----------|-----------|------|
| 88 | বামাবোধিনী | পত্রিকা। | [৫ম ক-৩য় | ভাগ। |
| 00 | | | - | |

| +1 | • | 1 | 1 | 1 | F | 1 | 1 | 1 | 1 |
|-------------|------------|------|------------|-------------|-----|-----|------|-------|--------------|
| ম | প | भ | প | প | ধ | ম | 9 | ম | গ |
| 41 - | 41- | নে- | ম | *1 1 | নে, | যো | গ্ৰ- | ধ্যা- | নে। |
| | | | | | | | | ম্- | |
| বে- | 4 | রতি- | N - | তি | ₹- | রির | চ- | র | C 9 1 |
| (শ- | छन | তরি- | ভে | পা | রি | বে | ছ- | ফা- | ৰে। |

পিতৃ-ভক্তি।

ভানে যাঁহার পবিত্র আসন ; যিনি পরম एक (जब्मशी (श्रममशी जननी (प्रवीद পুৰাতম দেবতা ; ফিনি নিরাশ্র বাল্য-জীবনের আশ্রয়; এবং যে ক্লেহ্ময় দেব-ভার অসীম, অপরিমেয় ও অতুলনীয় স্লেহে আহার সাজ সজ্জা বিদ্যাশিকাদি নানা-বিধ মজল লাভ করিয়া আৰু আমবা অগতে মানব মানবী বলিয়া পরিচিত হইতেছি; সেই মঙ্গলময় প্রত্যক্ষ দেবতার প্রতি যে কি প্রকার শ্রদ্ধা ভক্তি প্রদর্শন করা আমাদের কর্ত্তব্য তাহা বর্ণনা করা আমার কুদ্র শক্তির অতীত। এমন কি आमात्र धरे कीन 'मस्डिक त्य तम विषय ধারণা করিতেও নিতায় অক্ষম ইহা বলিলে অভ্যুক্তি হয় না। যে পিতা অপত্য স্থেত্র বশীভূত হইয়া নিজের ক্লেশের প্রতি দৃক্পাত না করিয়া, সন্তা-नरक र्यंथी, थनी, मानी, क्लानवान, वृक्ति-মীন্ ও ঘশোগোরবে বিভূষিত দেখিয়া আত্মহারা হইয়া আপনাকে স্থী ও ধন্য

গগনের অপেকা শ্রেষ্ঠতর—উচ্চতর। কি প্রকার কৃতজ্ঞতা প্রকাশ করা কর্ত্তর তাহা অবধারণ করা আমার ক্ষুদ্রবৃদ্ধির পিতা যে অপত্য-বিচ্ছেদ অসাধ্য। শোকের বশীভূত হইয়া নিজ জীবন দিতেও অপ্রস্তুত নহেন, তাহা আমরা মহারাজ দশরথের অকাল-মৃত্যুতে বেশ অনুভব করিতে পারি। এমন যে স্লেহা-ধার পিতা: আমরা অধম, আমরা কি ভাঁহার শ্লেহরসের একধারারও ভাষিতে পারি ৭ পিতা যে কি পরম বস্তঃ আমরা অন্ধ, আমরা কি তাহা চিনিতে পারি ৭ আমরা কি সেই দেবতার মংঘ অনুসরণ করিয়া চলিতে পারি; না ভাঁহার প্রীতি বন্ধনের নিমিত্ত তাহার প্রতি যথোপযুক্ত থেম বা এদ্ধা প্রদর্শন করিতে যত্রান থাকি ৭ এই মহাপুরুষের মহিমা কীর্ত্তন করা মৎতুলা জ্ঞানহীনা অবলা জনের পকে নিতান্ত অসম্ভব এবং এই পিতভক্তি বিষয়ক রচনা কি এই সামান্য ভক্তিহীনা মানবীর নিজ্জীব লেখনী প্রকাশ করিতে পারে ? পরম ভক্ত না **জ্ঞান ক**রেন; সেই দয়ানয়ের প্রতি যে। হইলে কি কেহ ভক্তিত্ত প্রকাশ করিতে

ममर्थ इम्र १ ७ कित दलहे खर अस्ता-দের নিকটে হিংস্র জন্ধগণও শাস্তভাব ধারণ করিয়া তাহাদের শুভাকাক্ষী ছইয়াছিল: আর সেই ভক্তি এবং বিশাস বলেই ভাহাদের ঈশ্বর দর্শন লাভ হইগ্রা-এই ভক্তিভাবে বিভোর हिन। इहेबा (मदिव नावम वीनामहत्यात्म हिन-গুণপাথা গাহিতে গাহিতে ভক্তিতেই উল্লেড হইয়া আপনার হীনতা ও বীণার শ্রেষ্ঠত। অসুভব করত নিজ্জীব বীণাকে সজীব ভাবিরা বীণার নিকটে ভক্তিত্র জানিতে চাহিতেন। আর বিশাস এবং ভক্তির প্রভাবেই নারদ সামান্যা দাগী-পুত্র হইয়াও আজ দেবপুত্র বলিখা সংসারে পুঞ্জিত। रेरकरतद्राधः यनिहा थाकिन নিলায় কৃষ্ণ তকে বহ-দুর"। ভাষাতেই যলি আমর। িচভক্তির বিষয় মুখে ছাজার পক্তৃতা করি, কিমা সুদীর্ঘ সুদীর্ঘ প্রবন্ধ লিখি না কেন, 'পিড়া যে প্রম দেবতা, ইগা বিখাস ভিন্ন ও পিতার প্রতি ঐকান্তিক ভক্তি ভিল," গোপরাণীর সামান্য রজ্জ্ধারা গোপাল বন্ধনের ন্যার ছই অসুলি ফাঁক থাকিবেই থাকিবে। বিশাস এবং ভক্তি উভয়ের একত্র ধোগ ভিন্ন, কেবল বিশাস কিন্তা কেবল ভক্তিবারা যে আমর। সেই পরম পিতাকে পাইতে পারি না, ইছা रमधाइयात्र निमिख्डे य, आमारमत श्र्य-ভন স্চভুর আর্যক্ষিগণ বিশাসরূপিণী यामा, ७ ভक्तित्रिभी एपदकीत अर्छ এক কৃষ্ণ চুই অংশে উৎপন্ন করিয়া- ছিলেন, ইছা বুঝিতে পারা যায়। অভ-এৰ বিশ্বাস ভক্তির বোগ ভিন্ন বৰ্থন পূৰ্ণ প্রেমের আবিভাব হর না, তথন আমরা অবিশ্বাসী এবং ভক্তিহীনা, স্থত রাং প্রেম-হীনা হইয়া প্রেময় পিতার প্রতি কি প্রকার ভক্তি সম্ভব, ভাহা কিরপে সম্যক্ উপলব্ধি করিব ৫ আমরা অবিখাসী বলি-য়াই ত নিয়ত ভনিতে পাই পিতার ভং-স্নায় কত সন্থান আপনাকে অপমানিত জান করিয়া নানাপ্রকারে আছ্রত্যা করিয়া মনের ছঃধ দুর করিতে সচেট ठेहेश थारक । यनि व्यामात्मत सम्दर्भ **अक**-বিন্দু বিশ্বাস কিন্তা ভক্তি থাকিত, ভাছা হটলে অবশাই বুঝিতে পারিতাম বে পিতা আমাদেরই মকলের নিমিত্ত ভং-সনা করেন অথবা শান্তি দিয়া থাকেন। আমরা অবিখাসী অন্ধ বলিয়া নিজের দোৰ দেখিতে না পাইয়া মদলময় পিতা-কেই কেবল শান্তিদান্তা ভাবিয়া অশা-ছিতে ভবিয়া বাই। আমাদের এই মহসি বাল্মীকি বেদব্যাস প্রভৃতি ভবি-ব্যংজানী মহাপুরুষগণ ভারতের পুর্ব-ইভিহাসে পিডভক্তির প্রমাণ জন্মিত করিয়া ন্ত নারীয় অশেষ উপকার সাধন করিয়া গিয়াছেন।

প্রিরাম, পুরুরাজ, ভীন্মদেব প্রভৃতি
মহান্মাগণের পিতৃভজির ফলত দুঁইাতে
আমাদের কুল হাদর স্বভিত ও বিক্তি
ইইরা বার। প্রীরাম চল্লের হতুপত
রাজ্য প্রশ্ব ভাগে করিয়া বনবাস আশ্রয়,

পুরুষাজের নিজের যৌবন দিয়া পিতার জরা ভার গ্রহণ এবং ভীম্মদেবের অমাত্র-বিক স্বার্থত্যাগ দেখিয়া আমরা হতবুদ্ধি চ্টয়া ঘাট। মানবের অলৌকিক ক্ষমতা স্মরণ করিয়া, সেই সমস্ত অতীতের কথা আমাদের পক্ষে উপন্যাস বলিয়া বোধ হয়, অধবা ভাঁহাদের কার্য্য সমূহকে আমরা (मदलीना विनया वर्गन कतिया थाकि। কিজ বাহ্মবিক পক্ষে যদি আমবা একাল বিশ্বাস ভক্তির সহিত "পিতা স্বর্গঃ পিতা ধর্ম: পিডাহি পর্মত্তপ:। পিত্রি প্রীতিমা-পরে প্রিয়তে সর্বদেবতাঃ।" ইহা ভাবিতে পারি, তাহা হইলে পিতার প্রীতির নিমিত আমাদের কোন কার্যাই অসাধা বোধ হয় না। তথন স্ক্রিয় দেবতা পিতার প্রিয়কার্য্য সাধনার্থে জীবন হাক বা থাকু সে জ্ঞান থাকে না; তখন পিতৃ আছে। পালনেই বর্গস্থ মনে হয়। পিত-ভক্তিপরায়ণ সন্তানের পক্ষে একার্য্য করিব কি না, ইহাতে আমার পক্ষে মঙ্গল কি অমকল ঘটিবে তাহা চিন্তা করিবার **অবকাশ থাকে না;** পিত-আজ্ঞাই ভাহার প্রতি ঈশ্বরাদেশ যরপ জ্ঞান হইয়া থাকে। পিছভক্ত সন্তান বুঝেন যে পিতাকে **থীতিযুক্ত** রাখিতে পারিলে, পরম পিতা नद्रायंत मुख्छे श्राम । অতএব যদি এই জাগতিক পিডার প্রীতিতেই সেই জগৎপিতার সজোৰ সাধন হইল, তথন পিতার আদেশ হাজার টুরহ ইউক না বিচার না করিয়া ভাহার শৰ্ম বাৰ্ম পরিভ্যাস পূৰ্মক অগ্ৰে তাহা

পালন করা আমাদের পক্ষে একান্ত কর্ত্তব্য কার্য্য হইতেছে।

এন্থলে অনেকে বলিতে পারেন যে. যদি কোনও পিতার অসাধু কার্যাই প্রিয় হইয়া থাকে, তবে তাহাও কি দেবাদেশ বলিয়া তৎক্ষণাৎ প্রতিপালন কর্তব্য ? এরপ জিজাদ্য স্থলে বলা আবশাক যে, সে স্থলে সর্ব্যকার্যা পরি-ত্যাগ করিয়া যতক্ষণ পিতার সেই অসাধু ইচ্ছা দূর না হয়, ততক্ষণ প্রাণপণ চেষ্টায় ধীর স্থিরভাবে ধর্মশাস্ত্রোক্ত যুক্তি প্রদান দারা পিতার চিত্রের মলিনতা মুছিয়া দেওয়া যে পিতৃভক্ত সন্তামের একান্ত কর্ত্তব্য তাহা অনেকেই বুঝিতে পারেন। মানব মাত্রেরই সময়ে সময়ে ভুল, ভ্রান্তি ভ্রম, প্রমাদ বা হাদয়ের তুর্কলতা প্রকাশ পাইয়া থাকে। একপ ভলে ধীরমনে এবং স্থবিবেচনার সহিত পিতার আঞা পালন করা বৃদ্ধিমান সভানের নিতাভ আবশ্যক। আর পিডভক্তি কেবল যে সর্কলা পিতার মন যোগাই-লেই পিতৃভক্তি সম্পন্ন হইল. কিন্ত "পিতরি ভাষা বলিতে পারিনা। প্রীতিমাপলে" বলিতে কাণ্য করিলে পিতার আত্মার প্রীতি জ্বো, যাহাতে পিতার ঐহিক ও পার-ত্রিক সাধিত মঙ্গল কামনা ₹₹. করাকেই (महेक्स कार्य) ভায়বা বাস্তব পিড়ভক্তি বলিয়া বুঝিতে পারি; আর তাহাতেই সর্বদেবতা युक्त इरेबा थाक्न । हेरा बाबा न्यांडेरे

বুঝা ষাইতেছে যে এক পিতৃভক্তি ছইতে সেই সর্ববিগাপী সর্বাণজ্ঞিমান বিশ্বনয় দেবজা সম্ভূট হয়েন, স্তরাং ভাহাতে সম্ভানেরও ঐতিক পারত্রিক সর্ব্ব বিষয়ে মঞ্চল হইয়। থাকে। স্থার পিতৃভক্ত সম্ভা নের গুণে পিতারও পরম পদ লাভ ছইরা থাকে। পিতৃভক্ত স্মুজ্ঞানপরারণ সন্ধা-নের গুণে যে পিতা মাতার সদ্দতি ছইডে পারে, কপিল দেব. প্রহুলাদ প্রভৃতি হইতে তাহা আমরা জানিতে পারি। ক্রিমশঃ)

বিদেশবাসিনীর পত্র।

আজি দর্শসিদ্ধিদাতা ভগবানের কুপার আমার জীবনে এক শুভ বা স্থ-পর্নীয় দিন আসিয়াছে। তাই এমন দিনে আমি কানার স্নেহ্নয়ী দেশীযা ভগিনীকে আমার স্বদ্যের গভীর প্রীতি উপহার দিকেছি, ভরসা করি তিনি ইহা গ্রহণ করিবেন—ভাহার অনুগ্রহা চাজ্ফিণী ভগিনীকে অধিকত্র সুথী করিবেন।

আজিকার দিন "মামার জীবনের এক শুভ বা স্থাস্থেরণীয় দিন" কিলে, দেই কলা আলে বলিতেছি। আজি কালি ইংরাজ রাজের রাজত্বে আমাদের রেলের গাড়ী, কলের জাহাজ, তারের খবর, ডাকম্বর প্রভৃতি (আমাদের ভারত-বাসীর জীবনে) যুগ্যুগাস্তরের অভিনর পরিবর্ত্তন ঘটাইয়াছে। ইংরাজরাজের প্রসাদেই বছনুরদ্ধী দেশ সকল জনশং কাছাকাছি হইয়া পড়িতেছে। এই স্থিয়ার জন্য ভগবানের ভক্ত সম্ভানেরা অনায়াদেই স্থাদেশ ও বিদেশ ভ্রমণ করিয়া ভগবংস্ট স্থার, মহৎ ও অপুর্বা দৃশ্য সকল দেখিতে পাইতেছেন; চল্কের

স্ফলতা, জানের কৃপ্তি এবং ভক্তির প্রবলতা লাভ করিয়া ক্লভক্লতার্থ হইতে পারিতেছেন। এই সকল কারণে **অপরি**-চিত ভান, সমুদ, পৰ্কত প্ৰভৃতি দেখিবায় সাধ আমার মনে বছদিন হইতে বছই প্রেবল। কিন্তু মনের সাধ "বছদিন হইতে वड़ हे त्थ्रवन" हरेल कि इस, **ध कि**— সোভাগ্যই বল আর ছর্ভাগ্যই বল, আমি বঙ্গবালিনী ৷—অনেক বঙ্গবালিনীর মত অমোর সঙ্গেও বিনা কৈফিয়তে চল্ল স্বর্ণ্য সৰ সময়ে সাঞ্চাৎ করিতে পারেন না. তার পরে আরও নানারকম অহবিধা. স্ত্রাং আমার পক্ষে "সংদশ ও বিদেশ ভ্ৰমণ্' কভদুৰ সভ্ৰৰ, ভাহা আমাৰ বদে-শীয়া, সঙ্গদ্ধা ভগিনীকে থুলিয়া বলা বাচলা মাত্র। তিনি মনে মনেই সব বুঝিতে পারিতেছেন, সন্দেহ নাই।

কিক আমার পাঠিকা ভলিনী বাহাই
মনে করন আর আমি বাহাই মনে, করি,
একগতে ভগবানের ইচ্ছা হইলেই ''অন্ত-স্তব'' সন্তব হটরা পড়ে। তাই দেশ-ভ্রম্পটা দুশাতঃ আমার পক্ষে যতই অসম্ভব হওক না কেন, ভগবানের কুপাতেই আনি কার্য্যতঃ বাসভূমি হইতে অনেক দ্রে আসিরা পড়িয়াছি। বিল্লহারী দেবতা আমার সহজ বিল্ল কাটিয়া, সত্যসত্যই আমাকে বাজালার প্রেসীডেন্সী বিভাগ হইতে ছোটনাগপুর বিভাগ পর্যান্ত লইয়া আসিয়াছেন।—বে সকল ভগিনী বঙ্গদেশ হইতে বহুদ্রে বাস করেন তাহারা বোধ হয় আমার এই ''ভ্রমণ বিবরণে' হাসি আমাইতে পারিতেছেন না; কিন্ত আমি এছদিন হাওড়ার টেশন পর্যান্ত কথনই দেখি নাই, তাই এই টুকু আসিয়াই আমার মনে বিদেশ ভ্রমণের প্রথ অন্ত্র-ভূত হইতেছে।

এ পতে বাহা কিছু লিখিব মনে করিতেছি, সে সব লিথিবার আগে একটা কুত্র ঘটনা (?) আমার মনে জাগিতেছে, পাঠিকা ভগিনীকে অনুগ্রহ করিয়া সেই কথাটী আগেই গুনিতে হইবে। বিশেষ কিছু নয়; যে দিন পশ্চিমে আদিবার জন্য প্রথম হাওডার ঔেশনে প্রবেশ করিলাম, আত্মীয় স্বজনদিগের विष्कृष धदः পन्तिम जमानत कानतम অপরে একটী মিলিত স্থ ডু:থের ছারা পডিয়াছিল, প্রাণের ভিতর কি অনিক্চনীয় ভাব অডাইয়া গিয়া যে দিনটা স্থতিপটে চিরদিনের জন্য আঁকিয়া वारिटिश्न (भामारमवरे भमा वार्थिक) **अभी वामरक**त श्रुकात विवासक्रिष्ठे ৰুখপাৰে চাহিল চাহিল চকে অনাহত দাবিয়াছিল, বেই দিনে—বেই

মধুমাধা বিষাদের দিনে, আমরা অভি-ভাবকের নির্দ্দিষ্ট স্ত্রীলোকের গাড়ীতে উঠিলাম। সে গাড়ী "রিকার্ড" করা इस नाहे. मिछना घुटेंगे हिन्दु हानी महि-লাও আমাদের অধিকৃত গাড়ীতে উঠ-লেন। তাঁহাদের মধ্যে এক জনেব ভাঁহাকে বেশভূষায় একজন মহিলা এবং অপরা তাহার পরিচারিকা অনুমিত হইল।—ভনিতে পাই এখন-কার দিনে বিশেষ কারণ ব্যতীত অপরি-ব্যক্তির সহিত আলাপ করা "বিশেষ অসভাতার" মধ্যে পরিগণিত। আমার হিসাবে সামাজিক সী পুরুষে এইরূপ নিয়ম থাকাই আব-শ্যক; কিন্তু রমণীর কাছে 'রমণীর মুখ চুপ করিয়া থাকিবে কি করিয়া 🤊 আমার পাঠিকা ভগিনী বর্ত্তমান আইন কার্ম দেখিয়া যাহাই বলুন, রেলের গড়ীতে আমার অধিকৃত ঘরে, জ্রীলোক দেখি-লেই আমার কথা কহিবার প্রবৃত্তি বড় প্রবল হয়, এবং দে প্রবৃত্তি আমি যথা-''অফুশীলন'' ক্রিয়া থাকি। মৃতরাং এই ছুইটা হিন্দুখানী মহিলার সঙ্গেও কিছুক্সণের মধ্যে আমার আলাপ হইয়াছিল।

ইতি পূর্ব্বে প্রয়োজন বশকঃ কয়দিন
শরীরের উপরে কিছু "নিষ্ঠুরতা" করিতে
হইয়াছিল, সস্তবতঃ সেই জন্য কোন্নপর
টেশন পার হইডে না হইডে আমার
শরীরে প্রবল অর আসিল। শরীরের
যাতনার সহিত আমার মনেও যাক্লণ

অভাৰ অমুভূত হইতে লাগিল--বেধানে জরে জেহময়ী মা'র জেহমাখা দেবা না মিলে, আত্মীর ব্রুদিপের "আহা" না মিলে, পীডিত আমার ক্লমা একটা ক্ষেহার্ক জদয়ের কাতর উষ্ণ নিমাস না মিলে, দেখানে অর হইলে, আমার বেন শতগুণ যাতুনা হইতে থাকে। ভাই শ্রীরের হার অপেকা মনের অক্সন্থতা সেদিন আমার বড়ই বেশী বোধ ইইল। কিন্তু প্রিয় ভূগিনি, বলিব কি প সেই হিলুস্থানী মহিলাগ্য সত্য সভাই আমাকে মাতার মত ক্লেহে, ভগিনীর মত যতে ভুজাষা করিয়াছিলেন; ভাঁহাদের নিকটে সেই অঘাটিত স্বেহ মমতা পাইয়া আমার মন কুডজ্ডা স্রোভে ভাসিয়া গেল। এক মুহতের জ্বন্য আমার সকল অভাব पृत इहेल : (महे मुहार्ख भाषात गत्न हहेन ---জলম্ভ সভ্যের মত আমার মনে হইল এজগতের মূলবন্ধন দয়া, সহার্ভতি। সেই দয়া ও সহাত্তভূতির খনি প্রধানতঃ व्रम्बी-क्षत्र । च्राथव क्षित्र वाहाहे इंडेक, ছ:খের নিনে মানব জগৎ দয়া ও সহাত্য-कुछि পाইदात्र कना श्रधानणः त्रमधीत्रम-

রের প্রতি চাহিরা থাকে-রমণী ক্লান্তর দরা ও সহামুভৃতিই তাহার সে দাল্লা পরিতপ্ত করিয়া থাকে। একখন বিষয়া-সাপর মহাশবের কি কাদার দামিরেনের দ্য়া, শত সহত্র সাধারণ রম্বীর হয়া रहेट उर्ज इंट्रेल थ, प्रा व्यथानकः নারী-জুদ্রের সম্পতি। আমি ভগ-वारमञ हतर्ग व्यार्थमा कति, खगवारमञ् প্রদর-অামাদের মা বিশক্ষনীর প্রদত্ত দয়ারপ অমূল্য রত্বের স্ব্যবহার, এই হিন্দুখানী মহিলা ভুইটার মত আমরাৰ বেন করিতে পারি; ই হাদের দয়া ও স্বেহে আমার সম্বপ্ত জ্বয় বেমন আরাম লাভ করিল, আমর। সকলেই যেন পারের সভ্প ক্লারে এমনি আরাম ঢালিতে পারি - हेहाई तमनी खीवरन अक व्यथान ख्या আমি প্রবাদের পথে, ভগবতী বিশ্ব-অননীর কুপার এই স্থানিকা লাভ করি-লাম আর আমার কেহময়ী ভাগিনী বামাবে:ধিনীর অনুগতে লক্ষ জ্ঞান টুকু পাঠিকা ভলিনীর কাছে বলিয়া কুডার্থা इटेन(म।

(ক্রমশঃ)

পুস্তকাদি সমালোচনা।

১। বুগান্তর-সামাজিক উপন্যাস,। পরিবারে ও সমাজে **এ**শিবনাথ শাল্লি-বিরচিত, মূল্য ১া• এই পুস্তকথানি প্রায় ৩০০ পুঠা পরিমিত, অতি সরল স্থমিষ্ট ভাষায় লিৰিত এবং ৫০ বৎসর পূৰ্কে বছদেশের

ছিল, ভাছার বিবিধ চিত্রে পরিপ্র। ইহা পড়িতে আরম্ভ করিলে শেষ-না করিয়া ছাড়িতে ইচ্ছা হয় না এবং এতৎপাঠে পাশ ও দূৰিত দেখাচারের

প্রতি শ্বণা এবং সাধৃতা ও সমাজসংস্কারের প্রতি উৎসাহ উদ্দীপিত হয়। শালী মহাশয় মধুর ভাষায় গরচ্ছলে উপদেশ দিবার কৌশল এই স্থন্দর গ্রন্থ-থানি হার। সম্পন্ন করিয়াছেন। ইহা সর্ব্বসাধারণের আদরণীয় হইবে, অবশ্যই আশা করা যায়।

২। শ্রীমন্তগবদগীতা—শ্রীক্ষিতীশ্র-নাথ ঠাকুর বি এ সম্পাদিত, মূল্য ১১ **ठाका। मम्ला**मक এकठी सम्मत स्वीर्च ভূমিকা এবং টীকা ও বঙ্গালুবাদসহ গীতা এছ প্রচার করিয়। ধর্ম্মাহিত্যজগভের বিশেষ উপকার সাধন করিয়াছেন। ব**লাহবাদ** রামায়ণের স্থাসিদ্ধ অনুবাদক প্রিত হেমচন্দ্র বিদ্যারত্বকৃত। গীতার প্রকৃত মর্ম পাঠকদিগের হাদগত এবং এতংসম্কীয় অনেক প্রশ্নের মী্যাংসা করিবার জন্য সম্পাদক যেরূপ পরিশ্রম कति। दश्न, उद्ध्य जिमि मर्त्रमाधात्राभत विद्रभव धनावानाई।

গুৰু ও দাধনতখ-জী কালী-নাধ দত্ত প্ৰণীত, মূল্য ॥ আনা। এই আছে গ্রন্থকার ধর্মসাধন ও ভক্তিতত্ত্বের

অতি গভীর বিষয় সকল ষেরূপ স্কুরূপে আলোচনা করিয়াছেন, তাহাতে তাঁহার পাণ্ডিতা ও ধর্মাভিজ্ঞতার বিশেষ পরি-চয় পাওয়া যায়। তবে এরপ বিষয় সাধারণের বোধগম্য হইবার যাঁহারা শ্রমশীল সভ্যাত্মক্যায়ী, ইহা-হইতে অনেক সত্য লাভ পারিবেন।

৪। রমুবংশ, দ্বিতীয় ভাগ জ্ঞীনবীন-চক্র দাদ এম, এ, প্রণীত। ইতিপুর্বের ইহার প্রথম ভাগের স্মা-লোচনা করিয়া গ্রন্থকারকে যে অন্তরের ধন্যবাদ দিয়াছি, এবারে তাহা সারও শতগুণে না দিয়া থাকিতে পারি না। মহাক্বি কালিদাসের অতুপ্নীয় গ্রন্থ বঙ্গীয় পরিচ্ছদে শোভাহীন হয় নাই একথা আমরা মুক্তকণ্ঠে বলিতে পারি। যেরপ স্বললিত কবিতায় অনুবাদ সম্পর হইয়াছে, তাহাতে ইহা অনুবাদ বলিয়াই বোধ হয় না. আমাদের প্রিয় কবির কবি-তের ইহা সামান্য প্রমাণ নহে। উক্ত কবিতাদি সংযোগে গ্রন্থানি আরও উপাদের হইয়াছে।

न्जम मर्वाम।

>। গ্রন্থ সংক্রিকালা বোবা বিদ্যা- করেন এবং অনরেবল দার আংলেক-সমারোহে সম্পন্ন হইরাছে; হাইকোর্টের পাধ্যায়, বাবু প্রভাপচক্স প্রধান বিচারপত্তি **শভাপতির**

শন্ত্রের দিতীয় বার্ষিক পারিভোত্মিক মহা- অওর মিলার, বিচারপতি গুরুদাস বন্দ্যো-কাৰ্য্য ডাক্তাৰ বাসবিহানী খোব প্ৰভৃতি ৰহো- দম্বরণ বক্ততা করেন। ছাত্রদিপকে মেডাল ও বিধিধ মনোরম বস্তুপারি-ডোবিক দেওয়া হইয়াছে।

- ২। মহারাজা সার ষ্টীক্রমোহন ঠাকুর সংস্কৃত শিক্ষার উন্নতি করে ১৫০০০ টাকা দিয়াছেন।
- ০) বিবি আনি বেসাট কলি-কাভার নানা খানে স্বলব বক্তা করিয়। সাধারণের প্রশালাজন হইয়ছেন।
- ৪। আগানী এীমকালে ক্ষীয়
 সমাট্ সপজীক ইংলভেশ্বরীর সহিত
 সাক্ষাৎ করিবেন।
- ৫। সার চার্লস ত্রস ওয়েট্ ষ্টেট সেক্রেটরীর কাউনসিলের মেম্বার নিষ্ক্ত হওরাতে সার অল্টনী ম্যাক্ডোন্যান্ড উত্তর পশ্চিমের ছোট লাট হইলেন, সার আলেকজাওার মেকেন্থি বাঙ্গালার ভোট লাট হইবেন।
- ৬। সার টি মাধুসামী অনেক টাকা রাধিয়া গিয়াছেন তন্মধ্য ২০০০ টাকা দাতব্যে ব্যয় ইইবে।
- ৭। অধ্যাপক জগদীশচন্দ্র বহু বিনণ তারে তাড়িত চালাইবার কৌশল আবি-দার করিয়াছেন ইহা ঠিক হইলে বাঙ্গা-লীর বড় গৌরব।

৮। বিয়ানা নগরের জোগেক ট্রেল্
নামক এক বৃদ্ধ ৯১ বৎসর বয়গে পরলোক
গমন করিয়াছেন, মৃত্যুকালে ওত্তেতা
বিজ্ঞান মন্দিরের সাহাধ্যার্থ প্রায়৪৫০০০০
লক্ষ টাকা দান করিয়া গিয়াছেন।

১। চীন জাপানীগণের মধ্যে সম্প্রতি একটা মুদ্ধ হয় তাহাতে চীনদিগের ২০০০ জাপানীদিগের ১৯৬ জন সৈনা হত হইয়াছে। জয় জাপানীদিগেরই।

১০। মাতাজী প্রতিষ্ঠিত মহাকাশী বালিবা বিদ্যালয়ের পারিতোধিক বিত-রণ কার্যা বিশ্ববিদ্যালয় গৃহে সম্পন্ন হয়। এই বিদ্যালয়ের সর্ব্বাঙ্গীণ উন্নতি হউক আমাদের এই প্রথনা।

১১। রামপুরের নবাব আউডের বালিকা বিদ্যালয়ে ৪০০০ টাকা দান করিমাছেন।

১২। প্রধান রাজ্মন্ত্রী লও রোজ-বেরী উৎকট পীড়াক্রাস্ত। **তাঁহার** পীড়ার একটু উপশম হইছেছে, ঈশর কুপায় সম্পূর্ণ আরোগ্য হউন।

১৩। রায় স্থানল ঝুমুঝুমঞ্যাল। বাহাজ্রের মৃত্যু হটরাছে। ইনি এক-জন ধন-কুবের ছিলেন এবং সংকর্মে অনেক অর্থ বায় করিয়াছেন।

বামারচনা। বনন্ত কোকিল।

রজত ভ্যোছনা-বাস ধরণীর তলে ওটাবে যামিনীনাথ ল'ঙে তারা দলে। পাওুল বঃপ ধরি নভস্তল শূন্য করি ভয়ে তরে ধীরে ধীরে যাঁয় প্রভাচলে

সে সমরে পিকবর
তোমার মধ্র পর
হড়ারে অমির রাশি মরতের তলে;
দিগস্ত কাঁপারে মহাশুম্যে ভেসে চলে।

ভকুণ অকণ বাগ উবার মাথাব. धीरत थीरत मगौरन वृति वृति कृत वन **দুল সনে খে**লা করি সৌরত ছড়ায়, ফুলের ভূষণ অঙ্গে ধরণী পরেন রঙ্গে, উবার মোহিনী মৃত্তি জগং হাদায় তখন ভাসাও বিশ্ব সঙ্গীত-ধারায়। প্রাথর ভাতুর করে তাপে ধরাখান, তাপিত ধরণীবাদী উত্তপ্ত বালুকা রাশি রৌদ্রের প্রতাপে প্রাণ করে আন চান, ছইতে গেহের বা'র পরাণ চাফেনা আর, তুমি কিছ ভরুকুঞ খুলি মনঃপ্রাণ, পাহিতেছ কলকঠে অ্মধুর গান। শম্বরি কিরণমালা ভামু অত্তে যায়, ধরণী শীতল যবে সুলিগ্ধ ছায়ায়; নবীন পল্লব ওলি বায়ভরে হেলি ছলি শার করি করি তেছে শাখার শাথার নীল সাকাশের গায়. রজিম বরণ ভায়. ছএকটা ভারা উঠি মিটি নিটি চার, স্থাপ তুমি গাও দেই মোহিনী সন্ধ্যায়। **স্থ্য ধ**রা পূর্ণিমার গভীর নিশার प्रमुख वन कन কাৰ্য্য ভাঁজি অচেডন जुनि वक्र, कडी, व्यंम, व्यं ममजात, • কেবুল গগন তলে অগণ্য ভারকা অলে ভার মুক্ত জাগে শশী অতুংশভায়, कारत जारत ननी नव

अधिन पुत्र पुरावन

बामक क्यांह्या ऋरथ बाबि मर्का शा'त তোমার মধুর স্বরে নীরবতা ভক্ত ক'রে অষ্প্ত ধরণী থানি যতনে চিয়ায়. মাতাও জগৎ সেই গভীর নিশায়। এ আনন্দ রাশি কোথা পেলে পিকবর। বিষাদ কালিমা রেখা যদ্যপি থাকিত লেখা শ্বতি পটে, থাকিত না স্থমধুর শ্বর, তুমি নদানন্দ চিত, আমি শত ভয়ে ভীত. শংশার আবর্ত্ত মাঝে কাঁপি থর থর. এই উঠি এই পড়ি ভাগ্য দনে জডাজডি कतिया काठाई काल शैन क्यून नत्, আশা ও নিরাশা চটী দলা করে ছুটা ছুটী হাসি অশ্রু, স্থুণ তঃখ চির সহচর, সংকার্ণ অন্তরে বাঁধি আসক্তির ঘর। জগতে ত্ষিতে তুমি ধরেছ জীবন, ভূনি নাধু মহাপ্রাণ, বদত্তে মধুর গান গাহিয়া করহ তমি অধা বরিষণ, यपिछ क्षायू धत्, তবু হুছে পিকবর, मीर्घ **फा**ग्न ८ हा उव श्रद्ध स्त्रीवन! (শামি) দীর্ঘ-আয়ু তব ঠাই ও গুণ শিথিতে চাই. কি করিলে হবে মন ভোমার মতন, বিনাশি কুচিন্তা রাশি দদানন্দ-নীরে ভাসি यक मिन गैंहि श्रू का होव की वन। স্কর মধুর গীতি গাহি মুখে নিতি নিতি স্থান্থরে পিকবর! জোমার মতন বিশ্বজন মন আগে করিব হরণ। কু, রা

বামাবোধিনী পত্রিকা।

BAMABODHINI PATRIKA. "कन्यायारं पालनीया शिक्षखोयातियस्तः।"

ক্লাকে পালন করিবেক ও বন্ধের সহিত শিক্ষা দিবেক।

०७० गरशा

চৈত্র ১০০১—এপ্রেল ১৮৯৫।

ংম ক**র।** ৩য় ভাগ।

नागशिक अनम।

বেপুন কলেজের পারিতোষিক—
গত ২০এ মার্চ বেগুন কলেজের পারিভোষিক বিতরণ আন্যাসক্ষম হইলাছে।
নার আলেকজন্তর নিলান সভাপতির
আসন প্রচণ করেন এবং তালার পদ্দী
সংক্তে পারিতোবিক বিতরণ করেন।

দান—(১) তুমরাওনের মহারানী লেডী ডফারিণ ফণ্ডে ২০০০ টাকা দান করিয়াছেন, এই নাকায় ক্যান্সেল ইয়ান-পাতালের ছালীনিগের অভাগ্রহ প্রায়ত হটবে। (২) রাবু কৈলায়চন্দ্র মুখো-পাধায় নদীয়া জেলার বেলগড়িয়া প্রায়ে এক চিকিৎসালয় স্থাপনছন্ত ২৮ হাজার টাকা দান করিয়াছেন। (৩) জেম্ব ডিল্পুরাটা মৃত্যুক্তের প্রায় ২০ কোটা টাকা রাখিয়া পিরাছেন, ইহার অধিকাংশ

বেপুন কলেজের পারিতোযিক— নিউজিলাওে দরিত বালকদের **হত এই**ক ২০০ মার্ল সেল্ল কলেজের পারি- বিদ্যালয় ছাপনে ব্যথিত হ**ইবে**।

বসন্তের নিবারক—এবার ফান্তন
চৈত্রে কলিকাভার বসত্তে মৃত্যুবংখ্যা
সপ্তাহে একশভ হইতে দেড় শতের উপর
উন্নিচে, সংর্ময় আভক্ত, স্থল কলেজ
ভাড়াভাড়ি নল চইতেছে। গত ২০।২৫
বংসরের মধ্যে এরূপ বসস্ত-মারীভদ্ম দেখা
ঘাদ নাই। এই রোগ ছইলে টিকিৎসা
নাম মাল, যে বাঁডিবার বাঁডে, মরিবার
মরে। কিল্ল ইছার নিবারণের ক্ষেক্টী
উপার অনেক ফলপ্রদ:—(১) ভাজিনেসন বা গোবীপে টীকাদান, (২) ভাজিনিহস, (৩) ল্যাব্টস টিংগুরা এই সুই
ছোমিভংগাবিক ঔষঃ, (৪) বিটিকাটীর
শিক্ত গোলম্বীচের সহিত্ব বাঁচিরা খাঁভরাঃ

কাঁসীদও রহিত—আমরা ভনিয়া আক্রাদিত হইলাম ফাঁসীদভের অসভা ও নিষ্ঠুর প্রথা পোনরাজ্য হইতে উঠিয়া পিয়াছে। সভা ইংরাল গ্রণ্ডেটের এ কলম দুর হত্যা উচিত।

লেডি ডফারিণ ফগু--গত ২রা চৈত্র ভকারিণ ফণ্ডের দশম দাস্থসরিক শভাধিবেশন হয়। গত ১০ বংসরে এই কণ্ডের সাহাযো প্রায় ৩০ লক্ষ বালক ও বালিকার চিকিৎসা ইইয়াছে, ১৭ লক্ষ **टेंका वारत्र** कांत्रक्ति नानाकारन न की হাঁদপাতাল স্থাপিত হইয়াছে এবং ১০০ জন জী ডাক্তার এই সকল হাঁসপাতালে টিকিৎসা কার্য্যে নিযুক্ত আছেন। এত-ভিন্ন ২৪ • জন স্ত্রীলোক মেডিকেল ক্লে **শিকা লাভ** করিতেছে। কে না এই ফণ্ডের উন্নতি প্রার্থনা করিবে গ

জাহাজ ড বি-একথান স্পেনী আহাজ কড়ে জলমগ হওয়াতে সাড়ে চারি শত লোক মার। গিয়াছে।

ৰাজ্ঞতিনিধি স্ত্রীক গত ২৯০ মার্চ্চ ধর্ম প্রচার করিভেছেন।

কলিকাতা ত্যাগ করিয়াছেন, আগামী ७१ ७ (अन मिमनाय (भी हिर्यन।

আমিরের ইংলও দর্শন—অনেক দিনের পর আমিরের ইংলও দর্শনে মতি স্থির হইয়াছে। ইতিমধ্যে বিলাতে ভাঁহার অভ্যর্থনার বিশেষ আয়োজন হইতেছে।

রাজপদচ্যতি—ভরতপুরের যুবক রাজ। প্রজাদিগের উপর করাতে গ্রণ্ডেণ্ট ভাঁহাকে করিয়াছেন। রাজনৈতিক এজেণ্ট কর্ণেল ফ্রেদার আপাওতঃ রাজকাব্য পরিচালনা করিতেছেন।

होन जाशास्त्र यूक्तं—होन ७ कार्रानितमत्र मर्सा आत्र कृत्यक्री युक्ष হইয়াছে, ভাহাতে জাপানের জয় ও চীনের পরাজ্য হইয়াছে।

আমেরিকায় হিল্ফু ধর্ম্ম—স্বামী বিবেকানল আমেরিকায় "বিশ্বজ্ञনিতার মলির" নামে এক দেবালয় প্রতিষ্ঠা রাজপ্রতিনিধির শিমলা যাতা— করিয়া তত্ততা লোকদিগের মধ্যে হিন্দু-

ববিমেসে। *

ভূম্যাদি বাঁহাদিগের নাই, ভাঁহারাও উপকার হয়। যাঁহার।

কার্পাস,—লাভের উদ্দেশ্যে অধিক | ২া৪টা কার্পাদের গাছ দিয়া রাখিতে পরিমাণে কাপাদের আবাদের উপযোগী | পারেন, তাহাতে খর ব্যবহারের অনেক লাভের জন্ম **অজনের এক পার্বে,** বা উজানের বেড়ায় বিপাদের আবাদ করিতে ইচ্ছা করেন,

[•]বার মাজের চালের সংখিক্ত বিবরণ বামাবোহিনীতে প্রকাশিত হইরাছে। একণে সভিরিজ কলটা চালের বিশেষ বিষয়ণ দেওয়। হইরাছে।

অবপতির জন্ম কার্পাদের সংশিপ্ত বিবরণ আমরা এই মূলেই বলিভেচ্চি। যে দেখে যত প্ৰকাৰ কাৰ্পাস জ্বো, তনাধ্যে আমেরিকার কার্পাস এ ভদুৎপন্ন ভুলা দর্কাপেকা उंदक्रे : কেননা ঐ দেশে অভি ঘদের গহিত কার্পায়ের চাস আবাদ ३ हे सू থাকে। বিশেষ অনুস্কান্তারা ভিত্তী-কুত হইয়াছে যে, আমেরিক। হইছে ঐ कार्जात्मव वीक स्थानयन कविका याप চাদ আবাদ করিলে বিহার আসাম. স্থুক্তরবন, উত্তর পশ্চিমাঞ্চল প্রভৃতি ভানে উত্তমরপ তুলা ফ্রিভে পারে। বালুকা ও চিক্লণ মুদ্রকা একর মিলিত ইইলে क्षाओं म में जिल्हा। या ज्ञीन किशिए উচ্চ এবং যাহার মাটা লে:আঁশ, ভালুগ ভমিই তলা চাবের উপথোগী। অধিক থাকা আবশ্যক। আমেরিকর বীল বপুন করিতে হটলে, বৈশাথ গ হৈছে মালে এবং অত্যাল মানের বীজ কার্ত্তিক মাংস বপুন করিতে হয়। বে ভূমিতে বৈশাৰ বা জৈটে খাবাদ কৰিছে হইবে, মাম মানে গোবরের সার ও বোদ মাটা দিয়া সেই ক্রমি ভৈয়ার করিতে ছইবে এবং ফাল্পন মালে ঐ জমিতে তিন ছাত অন্তর দাঁড়া বাঁৰিতে হয়। কাপাদ পাছের গোড়ায় জল লাগিলে বড় অনিট হয়, এজন্ত দাঁড়ার উপর বীজ রোপণ করিতে হয়। বে ভূমি সভাবতঃ পরি-ওছ এবং জল হইলেও যাহাতে জল দীড়ায় না, সে কেত্রে দাড়া না বাঁধিলে

চলে ন।; কিন্ত ঐসপ কেন্তে ভলার आवाम ना कताई छाता। वाशक्षक देवभार्थ वा देकार्ड मारम के बाजात हिलक একটা পর্ছে এ৪টা বীক্স রোপণ করিছে হর, যদি এক এক গর্ভে চুইরের অধিক চারা বাহির **হয়, তাহা হইলে এত্যেক** গর্ভে ভুইট মাত্র চালা রাধিয়া অবশিষ্ট ষ্যপূর্বক উত্তোলন করিয়া অফ্স স্থানে दाचिया हिटल अया त्य शर्ख कान বীক্রই অঙ্করিত হউবে না, বা একটা চারাও বাঁচিবে না, ঐ অতিরিক্ত চারা তুইটা করিয়া প্রত্যেক শৃষ্ট গর্ছে পুঁতিরা দিবে। এইরপে প্রত্যেক গর্ভে ছুইটা कतिया ठाउ। वीडिया शिल ३०।१२ मिन পরে প্রতি গর্ছে একটা মাত্র চারা রাথিয়া অবশিষ্ট ভলি ত্লিখা ফেলিতে হয়। কার্পাদের টারা সকল বত্ত বড় হইডে থাকিবে, তত্ত বাদ ও আগাতা নিডা-ইয়া ভূমি পরিষার করিতে ই**ইবে। ধনি** বেশি ঝড় বৃষ্টি না হয় এবং অমি ভাশ en, ভাহা **হটলে কার্পাস** গাছে তিন मारम कुल धरत । चानिन मारमत धरम চটতেই কাপাসের ফল তুলিতে **আরম্ভ** করিবে। বদি নিঃমিত কালের মধ্যে গাছের বেশি তেজ হওয়ার ফুল ফলের व्याचात्र चर्छे, ठाहा हहेल व्याखान পাছের ২০০টা উপশাবা ও ডাল কাটিয়া দিতে হয়। ভাহাতে গাছের ভে**লো**রাস रहेश भीख कुन सन सत्त्र।

ফলের মূধ ক্ষিত হইবার পুর্বেই গাছ হইতে ফল ভোলা উচিত। ফল

তৃলিবার কালে তিনটা থলিয়া রাখিতে इप्र। कनदिनिक देखम, मधाम, व्यथम তিন শ্রেণীতে বিভক্ত করিয়া তিন্টী पिशांत्र माभा করিতে হয়। রফা পরে কিছু দিন রৌদ্রে দিয়া তুলা বাহির क्तिरव। राल जुलियां जगर তাহার সহিত পাতা বা অন্য কিছ মিশাল না হয়। যদিও তুলার চাদে প্রতি বিষায় অধিক লাভ হয় না, কিন্ত কাট্তি বেশি হওলায় নোটের উপর অধিক শাভ ইইয়া থাকে। তুলার প্রতি छात्म कावान चट्ट वातन ३२, १३७, টাকা লাভ থাকিতে পারে।

আমরা যে তুলার চাস আবাদের কথা লিপিবন করিলাম, ভাহা আমেরিকার তুলা। ভদ্ভির অভ্য প্রকার কার্পাব্যের চাস আবাদ এই মাসে করিতে
হয়। এ দেশীয় ক্যকগণ কার্পাসের
চাস আবাদে ঐরপ পারিপাট্য করে না;
করিলে কিন্তু আশাধিক ফুল পাইতে
পারে।

ত্বার চাম আবাদ সদকে খনার ২।১টা প্রবাদ আছে; তাং। উভঃবিধ কাপামের চাম আবাদেই প্রযুক্ত হইতে পারে।

"ঘন সরিবা পাতলা রাই।
নেকে নেকে কাপান যাই।
কাপান বলে কোন্তা ভাই।
কাজি পানি যেন না পাই।"
দিনিয়ার যপনাপেকা রাহিট্রের বপন
শাতলা হওয়া আবশাক। কাপানের

বপন বা রোপন এরপ বিরলভাবে হওর।
আবশ্যক, যেন এক গাছ হইতে এক
গাছের কাপাস সংগ্রহ করিতে এক
"নেঙ্গের" অথিক ষাইতে না হয়। এক
ক্ষেত্রে কাপাদের ও পাট বপন নিষিদ্ধ;
কারণ পাটের গাছের জলে কাপাসগাছের হানি হয়।

পলাপু.—পলাপু একটা উৎকৃত্ত পুষ্টিকর মসলা বা তংকালী। ভোজন করা
বাঁহাদিগের অভ্যাস নাই, তাঁহাদিগের
নাগিকার উপর গক ভাল লাপে না; কিন্তু
তরকারী ও মাংসাগির সহিত উহা
বাঁহারা নিয়ত ভোজন করিয়া থাকেন,
উহার গক্ষ পাইলে তাঁহাদের মুথ দিয়া
লাল পাড়। ফ্যলাংশেও ইহা বিলক্ষণ
লাভজনক। এই জন্য উহার চাস
আবাদের ২০৪টা কথা এই স্থানেই বলিব।

হিলুগণ পলাপুকে অপনিত্র থাদ্য মনে করেন। কিন্তু উপা হৃতিকাজাত অন্যানা উভিদের ন্যায় এক প্রকার উভিদের অন্ত-ত্থন কাশু বা কল ভিন্ন আর কিছুই নতে। ভবে উচ্চদেশবাহিগণের পক্ষে উথা অনিষ্ঠ-কর বোধ হয়, এই জন্যই শাংগে উগার ভোজন নিষিদ্ধ হইরাতে। ফলে এফণে হিলুদিগের মধ্যে অনেকেই ঐ নিষেধ অগ্রাহ্য করিয়া গলাপুর প্রাচুক্ক বারহার আরম্ভ করিয়াছেন।

আলু ও কপির ন্যার পশাসুর পক্ষেত্র পলিমাটা উত্তম সার। এই জন্য নদী, খাল, বিলাদির ভীরবন্তী ভূমি বা চড়া জনিতে পশানুর আবাদ হইয়া থাকে। त नकत छेडिएन काल कार्र शेर न সরস, বে সফল উত্তিদের কেত্রের নিয়ে বালুকা থাকিলৈ অনিষ্ট না হইয়া বরং বালুকামিশ্রিত हेट्टे इतः (करना মত্রিকা স্বভঃই শিথিল হইয়া থাকে। निश्रिल मुखिकारे डेक दिश डेडिएमव বিশেষ উপযোগী।

উন্তম্ভূপে জুমি প্রস্তুত করিয়া আধি-নের শেষে, কিন্তা কার্ত্তিকের প্রথমে ছয় অন্ধৃতি জমির উভ্যাপার্ফে নারিক্দী করিয়া ভোট পিয়াজের এক এফটী করি রোপন করিতে হয়। গাছঙলি ৪া৫ অকুলি পরিমাণে বৃদ্ধি পাইলেই উভয় । ফ্সলে ৭০।৭৫২ টাকা লাভ হইয়া খাকে।

(अशीत गरा मुं फिता किरव । अहे अमस এক প্রকার বিশেষ কোলাইলছারা ছইরা शाक। के कामारेशनत विचात हाति অক লির অধিক নহে; উহা কেবল পলাও ব চালেই ব্যবস্থত হইয়া থাকে। শীতকালে প্রচুর শিশির ছারাই উহার পুষ্টি হইয়া থাকে। যদিই কোন কারণে পলাও মোত্র অভিশার ওক হইনা যায়. ভাহা হইলে ঐ জুমিতে ২।১ বার ভাগ त्रिकानत व्यासास्त्र स्हेशा थादक।

প্লাপুর চাসে বিদ্বা প্রতি ২০১ ট:কা चत्र शटा के चट्ठ वारम् व अक विचान

বিগত শতবর্ষে ভারতরমণীদিগের অবস্থা।

(৩৬২ সংখ্যা ৩২৮ প্রচার পর)

গ্র শতাকীর প্রথম মুগে ভারতের রক্ষো ইংরাজ। থিবাতার চরণে সংস্র নমস্বার, ভারত যদিও পরাধীনা ১ইরাছে, তগাপি এক মুগোগ্য জাভি সাম্রাজ্য অনিকার कतियाद्य । "লোক-শিক্ষা" আর্থ্যগণের পরম ব্রত ছিল—गেই या धनी पति<u>ज</u> ष्टास्त, (महे (य कुष महर फाउत्म, जी शूक्य অভেয়ে, লোকশিকা প্রচারিত ছিল, নেই "সার্কভৌনিকতা" পূর্ণ শিক। এত किन ভারতংর্বে—আর্যা রাজ্বের পরে এত দিন ভারতবর্ষে, কেহই বুরিয়া-ছিল না। ভাই বলিয়াছি বে ভারত

যুমাইলছিল—ভারতীয় সমাজ বড়ই ष्यमुल्पुर्व हिन ।

কিন্ত ভারতসমালের এ প্রকার অস-স্পৃতি বিধাতার ইচ্ছা নহে—বিগ**ত** শতাকীতে ভারত-মহিলাদিগের অবস্থা আলোচনা করিয়াই আমাদের বিশাস হর যে, ভারতসমাজের এ প্রকার অস-ম্পুর্ব । বিধাতার ইচ্ছা নহে। তাই ইংরাজ পুরাবীন ভারতের রা**জসিংহাসনে বসিল।** স্তরাং বে কণে ভারতবর্ধ ইংরাজের হ্ট্যাছিল—মোটের সেকৰ ঘতি ওডকৰ। हेरहाल-हालदहे नवकीयन शा

লাবার মহ্ব্যত্ব বুঝিল, আত্মেরতির প্রয়েজন বুঝিল, স্বাবলম্বন वृशिम, জাতীয়ত। বুঝিল, স্ত্রী পুরুষের সামাজিক मचन दुक्तिन, चात्रक मिन याद। कानिज मा, लाहा भारात मान्ति। देश्ताब-ताब যদি ভারতের উন্নতির জন্ম কিছুই না **ষ্ট্রিয়া থাকেন,** তথাপি লোকশিকার **জন্ত.** নারী-হিতৈবণার জন্য, ভারত देश्यामबादमब निकटि চির-ক্রতজ্ঞ। ইংরাজ রাজত ভারতের সর্বা সীণ পুথকর मा इटेंटि नात्त, किंह देश्त्राज-ताज (य ভারত-দেহে জীবনী नकात कतिशाहिन, ভারতকে গাঢ় নিজা হইতে জাগরিও করিয়াছেন এ কথা অনেকেই "সত্য" विमादिन ।

বিগত শতাশীর প্রথম যুগের কথা বলিতেছি। ইংরাজ-রাজ রাজতের স্থ-খলার সহিত আগে লোকশিকার প্রতি मृष्टि करत्रन । ১२०৫ वन्नारम मार्क् हेन् अव् ওয়েলেগলি গ্র্পুর জেনেরল হইয়া ভারত-বর্ধে আইসেন: তথন ভারতবাসীদিগের ख्य "मग्नाना"वरमावस भाषी कहेग्राह : ্**অস্থান্ত অনেক** বিষয়েও ভাল বন্দোহন্ত रहेतारह। व्यावात लर्फ श्राटलम्लित সময়েই মহীশুবের টিপু স্থলতান যুদ্ধে শীৰ্ড ও মহারাষ্ট্রীয়গণ পরাজিত হওয়ায় বুটাৰ **প্ৰভুত্ব অ**ধিকতর নিরাপদ হইল। তাই এটু সময়েই লোকশিকার প্রতি রা**জার দৃষ্টি পঞ্জি।** ভারতের সাধা-্রণ লোকে আর্থান্ডারা সংস্কৃত শৈড়িত না, रियो ७ वक्षांबाः विमानित, अवस्तर

ह शो मात्र. (शाविम मात्र, देवश्व कविश्व. কাশীরাম, ক্বন্তিবাস, কবিকঙ্কণ প্রভৃতির স্মধুর কাব্য ছিল বটে, কিন্তু ভাহা হইতে সাধারণ লোকের মাননিক শক্তি কিছু মাত্র বিকাস লাভ করিত না। সাধারণত: বঙ্গভাষার অবস্থা বড়ই হীন हिल, একথা আমরা পূর্কে বলিয়াছি। लर्फ स्टेंब लिन लिव ममत्य देश्वाक कर्मा जाति-দিগের বদভাষা শিথিবার প্রয়োজনে ও বঙ্গ শাহিত্যের উন্নতির নিমিত্ত বঙ্গভাষায় কয়খানি গদ্য পুশুক ও কেরি সাহেবের ব্যাকরণ, অভিধান প্রকাশিত হয়। শময়ে কেরি সাহেবের প্রধান উচ্চোগে মুদামন্ত্র ভাপিত হইল। তাহাতে মিশনরি সাহেবদিগের উৎদাহে, পণ্ডিত জয়গোপাল ভকালভার মহাশহের সাহায্যে রামায়ণ ও মহাভারত ছাপা ২য়। এত ষ্যতীত এতদিন গজাসাগরে সন্থান-বিসর্জনরপ যে নৃশংস প্রথা প্রচলিত हिल, लर्फ स्टार्∽मिल छ। दाव नुनंश्मछ। এদেশীয় লোকদিগের জ্বয়ক্ষম করাইয়া, সে প্রথার হিত করেন।

ওরেলেগলির কিছুকাল পরে—লর্ড
মিণ্টোর সময়ে, ১২১৪ বঙ্গান্দে (১৮০৭
খ্রীঃ) খ্রীষ্টবর্দ্ধ প্রচারকগণ ভারতবর্ষে ধর্মপ্রচার করিতে প্রবৃত্ত হন। দেশের
লোকের স্থশিক্ষা এই ধর্ম প্রচারকদিগের
এক প্রধান উদ্দেশ্য ছিল। এই সকল
প্রচারকের উদ্যোগে (লর্ড ময়রার
সমরে) বঙ্গভাষার প্রথম সংবাদ পত্ত
"সমাচার দর্পন" প্রকাশিত হইল।

প্ত শতাকীর প্রথম ব্ধের শেবভাগে
১২২৪ বক্লান্তে (:৮১৭ ঝ্রী: অব) এ
দেশীর লোকদিপের স্থশিক্ষার জন্য
কলিকাতার হিন্দু কালেজ সংস্থাপিত হর।
হিন্দু কালেজ সংস্থাপন জন্য এদেংশর
অনেক পুক্ষই বিশেষ চেটা করিয়াছিলেন।

এইরপে ইংরেছের। ভারতের অভ্যছরীণ সংবাদ বতই জানিতে পারিলেন,
ভারত মহিলাগণের অবস্থা ততই "শোচনীর" বলিঃ। বৃঝিতে লাগিলেন। লোকহিতৈষণার ইংরেজ সর্ব্রণাই প্রস্তুত, তাই
ভারতবাসিনীর জাতীয় অবস্থা উরত্ত করিতে ভাহাদিগের মধ্যে আন্দোলন
চলিল। থীইধন্ম প্রচারকেরা ধর্ম প্রচারের সাহত এদেশের পুদ্ধদিগকে থীজাতির ভ্রবছার বিষয় বৃঝাইতে
লাগিলেন।

এদিকে, পাশ্চাত্য শিক্ষার ফলে এ-(मनौत्र श्रूक्षण अस्टिक्ट निकारने সামাজিক অবহ। অনেক বুঝিতে লাগি-মুদলমান্দিদের রাজ্য দম্য এদেশের স্ত্রীভাতির জীবন যেরূপ বিপদা-कीर्व हिल, देशांध बाधाय काहां एत **इडेल। ७३ अ**कल काइंट्स (१८%) শ্বশিক্ষিত পুরুষেরা অনেকেই উজাতির অবস্থার প্রতি মনোবোগী হইলেন। দেশীয় রমণীপ্রক অবস্থা প্রালো-চনা ক্ষিত্র। ভাছতে। স্থলেজেই আঁল্রাভির হীনাবছা বুঝিতে পারিলেন। আঁডাতি হীনাবভার থাকিলে যে পুরুষের জাতীয काटन(कब्र हे একথা क्षप्रदर.

बान हरेत।-- शुक्रम काजिएक रेम्पन देकाभाव, त्योदन ७ वार्षका, श्रीवरमञ् সকল স্থয়েই ৰাহাদিগের সহিত বিশের न्द्र वाचि ए इम् ज्ञानित्मम कीयन e हिंद्र डेशव्कक्र. न निष्ठ ना व्हेल. (कवन काशामित निष्यमित नाइ, शुक्रव জাতিরও সমূহ ক্তি, একথা মনেকেই वृक्षित्वता कहे भक्त वृक्षित्रा, विभौत পুরুষগণ রমনীর সুধ, ছংধ, জবছা, উপ-যোগিতা ও কর্ত্তব্য, সকল বিষয়ের অছু-সন্ধান করিতে প্রব্রত হইলেন। এই অহস্থান দূলে, গ্রীজাতিকে লেখাপড়া শিখাইয়া ভাহাদিগের মানসিক শক্তি পরিষ্ণুট করা, তাহ দিগকে স্থানিকডা করা, বছাববাহ ও সংমরণ প্রথা রহিত করা, ভাহাদিগের কেহ কেহ অবশ্য কর্ত্তবা বলিয়াও বুকিলেন। বিধাতাৰ করুণ দৃষ্টি তাঁখার অভাগিনী ক্যাদিশের উপরে পড়িল। বিধাতারই কুপায় ভারতে পাশ্চাত্য শিক্ষার প্রথম ফল ফলিল। गात्रीहिरे ज्यनात कात्माल (नहे अ ड मफा-শীর প্রথম যুগ শেষ হইল শ্রীৎ প্রথম পচিশ বৎসর কাটিল।

ইহার পরে বিতীয় মুগের আরম্ভ।
প্রথম মুগে নারী ফাতির উন্নতির থে
আন্দোলন হইতেছিল, থিতীয় বুগে তাই।
কার্য্যে পরিণত হইতে আরম্ভ হইল।
থেশের স্থিশিকত ব্যক্তিগণের অনেকে
জীজাতির উন্নতির জন্য চেঠা করিছে
লাগিলেন।

হিলুশালে দিবিত আছে "লেয়ানি

বছ বিশ্বানি" একথার সত্যতা বোধ হয় व्यानकरे जातन। এলেশের বামা-হিহৈৰীগণত প্ৰথমত: ৩ভ ইচ্ছ। সফল করিতে পিরা পদে পদে বিম ও বিগদ-প্রস্ত হটতে লাগিলেন।

প্রথমতঃ এদেশের লোকদিগকে বাঘা হিতৈৰী ব্যক্তিগণ স্ত্ৰীশিক্ষার আবশ্যকতা वृकाहर अश्व कार्य कर कार्य कर होता। আমরা পুর্বের বলিয়াছি যে এদেশের লোক শাস্ত্র হইতে দেশাচারকে অধিক-করে। তাই হিন্দুশাস্ত্রে ভর মান্য "কন্যাপ্যেরং পালনীয়া, <u>•িক্ষণীয়াতি</u> यप्रडः" छेशरमण थाकित्लख "दमरहत्मत्र লেখা পড়া দেশে চলিত নাই," বলিয়া ব্যক্তি শাপনাদের পরিবারভা ब्रम्भीभगुदक লেখা পড়া **শি**থাইকে আপত্তি করিল। দিঙীয়ত: স্ত্রীলোকে শেশা পড়া শিথিলে পাছে পুরুষদিগের व्यक्रूष बाटी इहेशा यात्र, अहे छात्र कछ স্বার্থপর, ক্ষুদ্রচেতা ব্যক্তি স্ত্রাশিকার বিক্লমে কুৎসা, বিজ্ঞাপ প্রভৃতি করিয়া সাধারণের বিতৃষ্ণা জন্মাইতে লাগিল। তৃতীয়তঃ "ত্রীলোকে লেখা পড়া শিথিলে विषया इत्र" अहे कथा दिनहा चानक দ্বৰণী নিজেই লেখা পড়া শিখিতে একান্ত विक्रक रहेश रिगलन।

 णात्रक्व विमा प्यविकांको स्मर्वो मञ्जल्को ন্ত্র পুরিবাই পুরিতা; ভারতের আধামহিলাগণ चार्च (विनावको : वक पूर्व मकाकोटक हानी क्यानी. বুল বিলালভার, ভাষাত্ত্ত্বরী দেখা মুদালাত্ত্বে ও रर्गिक्डा दिएनव

সংমরণ ও বছবিবাহ নিবারণ করিছে প্রথমতঃ বামাহিতৈবীদিগকে গিয়াও হতাখান হইতে হইয়াছিল। সহমবল প্রথা আর্য্য ভারত হইতে এদেশে চলিয়া অ।বিতেছিল। ভারতবাদিগণের ধর্ম-ভাবের সহিতও সহমরপের নম্বন্ধ ছিল, কারণ তাহারা মনে করি-তেন সহমৃতাবা অনুমুতা রমণী বছকাল পর্যান্ত স্বামীর সহিত (পরলোকে) স্বর্গ-ভোগ করিয়া থাকে। এতহাতীত স্থ-মরণ প্রথার জন্ত-সহয়তা সতীর আতীয়-গণ সমাজে বিশেষ গৌরবাম্বিত ইই-वह नकल कांत्रा मध्यत्र व्यश নিবারণ বিষয়ে অনেকেই স্মত হই-লেন না।

ব্চবিবাহও আর্য্যভারতের প্রথা। বঙ্গদেশে বঙ্গাল সেনের সময় হইতে এই প্রথা এতদূর প্রশ্রেয় পাইয়াছিল, যে কুলীন বাদ্দেরা অনেকে কেবল বছ বিবাহের প্রসাদাৎ জীবিকা নির্বাহ করিছেন। বঙ্গীর কুলীন কায়ন্থদিগের মধ্যেও ইছার প্রাত্রির বড়'সামান্য ছিল না। এতংয়-তীত বছ বিবাহ প্রচনিত থাকায় স্ত্রী-জাতির উপরে পুরুষের যে অপ্রতিহত প্রভূত ছিল, পুরুষ দিগের মধ্যে বাঁহাদের

রাধাকান্ত দেব বাহাত্বর তাহার লিখিত ত্রীলিকা বিষয়ক এছে লিখিয়া গিয়াছেন। তবে গত খতা-দীর বিতীর বুগে "লেখাপড়া দিখিলে বিধবা হয়" अ मःकात, क्षीकांति काथा १६८० भारतमा কোনও বার্থপর পুরুবের উভাবিত ভৌশল

শার্থপরতা প্রবল, তাঁহাদের নিষ্ট সে প্রভূম রড়ই "উপাদের" বোধ হইত। এই সকল কারণে বহু বিবাহ রহিত বিষয়েও এ দেশের অনেক লোক অস-শ্বত হইলেন। ত্রীফাতির উল্লভি চেষ্টা প্রথমত: এইরপ বিফল হইল।

কিন্তু মন্ত্র্য শক্তির উপরে এক প্রভের শক্তি আছে; অগতের সকল শক্তি একীভূত হটয়াও এক পলকের জন্য সে শক্তির প্রতিকূলে পরমাণুপরি- নিত কাষ্টাও করিতে পারে না। ক্র্মীন ক্রিক কথা বলিতেছি—(আহ্নরা আহ্নিন্দ্র কথা বলিতেছি—(আহ্নরা আহ্নিন্দ্র সহল বুদ্ধিতে বতচুকু বুনিতে পারি তাহাতে অহুভূত হর বে) এ বেশের স্রীক্রাতির উরতির জম্ম এই শক্তিই পরিচালিত হইতেছিল; তাই দারুশ বিদ্ধ বাধাতেও বামাহিতৈবীয়া পরাজ্ঞিত হইলেন না—বরং স্রীক্রাতির উরতির নব নব উপার বিধান হইতে লাগিল।

(ক্রমশং)

কতকগুলি সুমাতা।

(धर्व मःच्या ।)

৬। মুদালসা। রাজমহিবী মুদা-লসা একটা স্থমাতা। ভাহার স্থামীর নাম মহারাজ কতকাজ। তাঁহার চারিটা পুতা, তম্মধ্যে রাজ্যবি অলকই প্রধান এবং স্কলের কনিষ্ঠ। ভিনি বাল্যকালেই পুত্রপণকে সংসারের অনিভ্যতা এবং ভগৰানের নিতাতার ধিষয় উপদেশ দিয়া নিবৃত্তি মার্গ অবলম্বন করাইয়া-ছিলেন। ক্রমে ক্রমে উপদেশ খারা তিনি তিনপুত্রকে পূর্বিব ধনে বিরাগী ক্রিয়া অপার্থিব মহাধনে ধনী করি-লেন। তদ্ৰশ্নে মহাবাজ গ্ৰহণ্ডজ হংবিত इहेब्रा धकमिन महिबीत्क कहिलान त्य, "ভূমি এ কি করিতেছ ? ফ্রীলোক মাত্রেই নিজ ভনর ও খামীকে নিকটে রাথিতে চাহে। ভোষার প্রকৃতিতে ঠিকু তাহার

বিপরীতাচরণ শব্দিত হইতেছে। যাহা-क्फेंक रंघ कन्मानि। शक्ता, व्यक्ता प বংশরকার কারণ কনিষ্ঠ পুত্রকে আয়াকে মদালসা প্রির পতির প্ৰীতাৰ্বে কহিলেন ভাষাই ষ্টক।" ভাৰ-নত্তৰ একটা ত্বৰ্ণ কৰচে নিয় বিশিষ্ট খ্রোক কয়টা লিখিয়া অলককে দান করি-ल्म । कहिल्म "वर्म। प्रः । विन. দের সময় এই কবচটা খুলিয়া পাঠ করিবে।" কিছুদিন পরে রা**লকু**মার অলর্ক কাশীরাল কর্ত্ত রাজ্যচ্যুত, অব-মানিত এবং বার পর নাই বিপদ্ধভ হইরা পড়িবেন। তথন খৈববাবে এক দিন বুক্ষতলে বসিয়া চিস্তা করিটে করিটে মাতৃদন্ত কবচের কথা তাঁহার সময়ৰ হইন। তিনি কবচ থুলিয়া পাঠ করিলেন ঃ-

সন্ধ: সর্বান্ধনা ভাজ্য সচেত্রকং নশক্তে,
স সক্ষি: সহ কর্ত্তবিয়া সভাং সলোহিত্যেজন্। কাম:
সর্বান্ধনা হেরে। হাতুং চেচ্ছক্যতে ন সঃ, মুমুক্ন্
ক্রিডি ভংকার্থাং সেব তস্যাপি ভেষজং। অস্যার্থ
মন্ত্ব্যসন্দ ত্যাগ করিতে অভ্যাস করিবে।
বিদি তাহা না পার, তবে সাধু সহবাসই
কর্ত্তব্য জানিবে, ইহাই বিষাদ রোগের
মহৌষ্ধি। সকল প্রকার বাসনা পরিভ্যাগ করা উচিত; যদি তাহা না পার,
তবে মুক্তির জন্য চেটা করিও। মোক্ষচেষ্টাই বিপদ রোগের একমাত্র ঔষধ।"

শকস্মাৎ তাঁহার প্রাণে যে ভস্মাছ্যাদিত বহি লুকায়িত ছিল, তাহা মহাশক্ষে
আলিয়া উঠিল। ধর্মপ্রাণা জননী স্তন
ছুব্বের মধ্য দিয়া যে বীজ রোপণ করিয়া
ছিলেন, ভাহাতে স্থাতিল বারিসেক
ছইল। প্রান্ত-কলেবর দক্ষপ্রাণ অলর্কের
আন আনাপ্র ইইল, তিনি অদ্রে দিব্যালোক দেখিতে পাইলেন। উদ্দেশে
ভক্তিভাবে অঞ্পূর্ব নেত্রে মাড়চরণ
বন্ধনা করিয়া তিনি সন্ন্যাসাশ্রম অবলম্বন
ভরিবেন।

৭। মহামায়। মহর্ষি বৃদ্দেবের

শানী শাক্য-মহিনী মহামায়। অভিশয়
ধর্মপরায়ণা ছিলেন। শাক্যরাজ শুদোর

দমের চারিটী মহিনী, তল্পধ্যে মহামায়।

শম্বিক লাবণ্যবতী, ধর্মপ্রাণা এবং স্লেহশীলা ছিলেন, স্তরাং মহারাজ তাঁহাকে

শবিক সৈহ করিতেন। দীন চুঃধীকে

্ । বাম্বোধিনীতে ইতিপূৰ্বে প্ৰাণসার বিষয় অৰ্থিত হইয়াছে বলিয়া সংক্ষেপে লিখিত হইল। দয়া, গুরুভজি, বিনয়, আছিথেয়ড়া, পতিভক্তি, পরিজনগণের প্রতি ফথোচিত সৌজন্য, তাহাদের স্থুৰ হুংখে দহাত্মভূতি, ৰথাসাধ্য পরোপকার, ও নিয়মিত দান, ধ্যানাদি প্রভৃতিগুণে ও কার্য্যে তাঁহার স্থকোমল জাদয় অলক্ষত ছিল এবং সমস্ত সময় ব্যয়িত ইইত। এক কথায় বলিতে হইলে ভিনি ধার্মিক বংশের উপযুক্ত প্রধানা মহিষী হইয়াছিলেন। অধিক পর্যান্ত অপুত্ৰক শুদ্ধচারিণী, मर्का न ব্রতপ্রায়ণ পবিত্রচিত্ত হইয়া দেবারাধনায় নিযুক্ত থাকিতেন। প্রবাদ আছে শাক) বংশের কোন পর্কোপলকে রাজা. মহিষীগণ অমাতাবৰ্গ সকলে मान धर्मार्थ এক মনোহর উদ্যানে দশিলিত হই-ममख मिन উপবাদী ও স্নান দান করিয়া সন্ধাকালেই সকলে অবসন্ত দেহে শয়ন করিলেন। নিজামাতে তিনি স্বপ্ন দেখিলেন ষে এক স্থলার শ্বেত পল্লের শ্যায় তিনি শায়িত আছেন. অক্সাৎ এক মন্ত খেতহন্তী ক্রতবেগে আসিরা ওও মারা ভাঁহার শ্যা বিশুশ্রল করিয়া নাভিদেশ বিদীর্ণ করতঃ গর্ভে প্রবেশ করিল। মহামায়া জাগ্ৰত হইয়া মহারাজকে স্বপ্রতাম্ভ বর্ণন করিলে তিনি তৎপ্রবণে প্রমানন্দিত হইলেন। দেই রাতেই দয়াময় বুদ্ধদেব মহাদেবীর পবিত্র পর্ভে জন্মগ্রহণ করিলেন। ঘাছা হউক স্তনহুগ্ধের সহিত মাতৃ-প্রকৃতি বে সভানের জদরে অমুপ্রবিষ্ট হইয়া থাকে.

ভালা এই দেবী চরিজে স্থানররূপ বৃথিতে পারা যার। বৃদ্ধের জন্মের পর বহিষী সপ্তদিন মাজ ইহলোকে ছিলেন। সপ্তদিন বৃদ্ধদেব যে স্তন চৃদ্ধ পান করিয়া-ছিলেন, জীবনে তাহার দ্বারা কি কাও করিয়াছেন। মাতৃ-প্রকৃতি উৎকৃত হইলে

কি ভড়কল উৎপন্ন হয়, অগৎ মৃত্তকঠে তাহা ঘোষণা করিতেছে। ধন্য সেই প্রকৃতি বাহার জন্য আজ অর্ছ পৃথিবী মাতোয়ারা এবং অগণিত প্রাণী মাহার সম্প্রদায়ের দয়ার জীবিত, রক্ষিত ওপ্রতিপালিত হইতেছে।

জাপান-সাম্রাজ্ঞী দয়।

मासाछी ১१०० এক পুর্বের কোরিয়া **छ** ग्र করেন, তাঁহার নাম জিকু কলো। ভাঁহার বেমনি রূপ, তেমনি ধর্মনিষ্ঠা ও মেধা, যুদ্ধ বিদ্যাতেও তিনি স্থবিখ্যাত ছিলেন-এমন কি •তিনি জাপান দেশের রণ-দেবতার মাতা বলিয়া প্রসিদ্ধ। তিনি ষধন সমাটের সহিত পরিণীত হদ, তখন চীন কিম্বা কোরিয়া রাজ্যের অস্তিম ভাপানীরা ভানিত না। রাণী একদিন স্বামী মিকাডোকে বলিলেন যে দেবতারা ভাঁহার নিকট সংবাদ পাঠাইয়াছেন বে "মুদ্র পশ্চিমে একটা রাষ্য আছে, জাপানী দৈনাগৰ পোতারোহণে তথায় যাইবে এবং তথা হইতে প্রচুর লুঠিত ন্তব্য আনিবে।" সমাট এই কথায় হাস্য করিয়া বলিলেন ''তোমার দেবতাও মিখ্যা, ভোমার কথাও মিখ্য।।"

কিছুদিন পরে প্রজারা বিজোহী হইর।
সমাটকে বন্দী ও নিহত করিল; এই
সমরে সামাজী হরৎ সৈন্যচালনা করিরা
কিয়োহ হমন করিলেন। তিনি জোরান

আব্ আর্কের ন্যায় পুরুষ বেশ ধারণ করিয়া অখারোহণে রাজ্য মধ্যে পরিজ্ঞন করিয়ে আধারোহণে রাজ্য মধ্যে পরিজ্ঞন করিছে লাগিলেন এবং বছদৈন্যও পোত্ত সংগ্রহ পূর্বেক দক্ষিণ কোরিয়াতে আদিয়া উপনীত হইলেন। তথাকার রাজা বিনাব্র জাহার হত্তে রাজ্য সমর্পণ করিলেন। রাণী সোনা রূপা রেসমী বক্তে ৮ থানি জাহাজ পূর্ণ করিয়া এবং খানীয় বড় বড় পরিবারের প্রতিভূসকল সঙ্গে লইয়া খদেশে প্রত্যাগত হইলেন। তাঁহার দেবতা প্রদত্ত বথা সকল ছইল। এই রমণী জাপানের শাসনপ্রণালী নৃত্তন করিয়া গঠন করিলেন এবং নানাবিধ শিল্প শিক্ষা প্রবর্তন করিলেন।

জিল্প কলের পরে আর নয়টা রমণী
আপানের সিংহাসনে অধিরোহণ করেন।
কিন্ত তাহাদিপের মধ্যে কেহই ইহার
মহিমার শতাংশের একাংশও আদর্শন
করিতে পারেন নাই। দেকাডোর
পদ্মার সচরাচর অভ্যপ্রে বন্ধ থাকিক্রেন।
অনেক দিনের পর আপানে আর এক
বরণীরা রমণীর উদয় হইরাছে। বর্জন

মান সামাজী হাসকো অনেকটা জিলু কলোর প্রকৃতি লাভ করিয়াছেন; ইনি বর্ত্তমান সভ্য জাপানী রমণীর আদর্শ। ভিনি কোরিয়া জয়ে জাপানীদিগকে উত্তেজিভ করিয়াছেন এবং প্রমং রণ-সদীত রচনা করিয়া সৈন্যদিগকৈ

মাতাইয়া তুলিয়াছেন। জাপানীরা ইউ-রোপ ও আমেরিকাবাদীদিগের ন্যায় সভা হয়, ইহা তাঁহার সম্পূর্ণ উদ্দেশ্য। ইনি জিল কলের ন্যায় এক নৃতন জাতি গঠনের সহায়তা করিতেছেন। ইহাঁর বিষয়ে পশ্চাৎ আরও বলিবার ইচ্ছা রহিল।

মসুরিকা বা বসস্ত।

মশ্ব কলাইয়ের ন্যায় আকৃতিবিশিষ্ট পীড়াকে মহারিকা বা বসন্ত বলে। হাম বা বসন্ত বোগ উপস্থিত হইলে, রোগীর গৃহ নির্কান, রুম্য ও পবিজ্ঞভাবে রাখিবে, সর্বালা ধূপ, ধূনা ও গুগুণুল ইত্যাদি ঘারা গৃহ সকান্তাবিত করিয়া সকলেই শবিক্ষভাবে সতর্ক থাকিবে এবং কোন জানে বসন্ত সম্বন্ধীয় পূর্য ও রক্তাদির সহিত সংশ্রেব দ্যিত ইইয়া দেহকে দ্যিত করিবে না। এই রোগ অত্যস্ত সংক্রোমক।

এ সময়ে চতুর্দিকেই বসন্ত রোগের প্রাহৃত্যিব দেখা ধাইতেছে, স্তরাং এ টোগের বিশেষ ফলদায়ক, কয়েকটা কুটিযোগ প্রদর্শন করিতেছি, আশা করি ইহার ছারা অনেকেরই উপকার দর্শিবে।

১। পুরুষের দক্ষিণ পার্বে এবং

শ্বীলোকের বাম পার্বে হরীতকীর বীজ

শ্বীক্ষ করিলে বসস্ত হয় না।

হ া ক্লোক ও মরিচ চুর্ণ থাত্যেকে

শ্বীনা বাসি কলে দিন্সিত করিয়া পাদ

করিলে তিন দিনে বসন্ত উপশ্ম প্রাপ্ত হয়।

৩। পটোল পত্র, নিম্পত্র, ইক্সেষব মিলিড ২ ভোলা, ॥০ সের জ্বলে সিদ্ধ করিয়া, শেষ ৶০ পোয়া থাকিতে এই কাথে বচ, ইক্সেষব, যাষ্টিমধু, মদন ফল বাটিয়া প্রক্রেপ করিবে। ইহা শীতল করিয়া পান করিলে বমন হইয়া বসস্ত প্রশমিত হয়।

৪। রোগীর জার থাকিলে জালপান পরিত্যাগ, নির্কাত গৃহে অবস্থান, গাতে জায়তী চুর্ণ মর্জন করা কর্তব্য।

 গোক্রী মৃল ও অনন্ত মৃল তথ্লাদকে বাটিয়া কোবন করিলে বসস্ত উপশমিত হয়।

৬। হলুদের ও ড়ার সহিত উচ্ছে-পাতার রস পান করিলে হাম্মর ও ব্সস্ত ভাল হয়।

গ। বাসি ললে মধু মিশাইয়া পান করিলে ওটা ও ওজনত গাতদাহ নিবারণ হয়।

৮। পটোল शेख, श्रमक, ब्र्या,

বাসকছাল, ছরালভা, চিরেতা, নিম্বছাল, কটুকী, ক্ষেতপাপড়া মিলিত ২ তোলা। জল । সের, শেষ ৮০ পোরা, ইছা পান করিলে অপক বসস্ত প্রশমিত এবং পক্ষরপ্ত শুক্ত হয়।

৯। টাবা লেবুর কেশর কাঁজির দহিত বাটিয়া আলেপ দিলে বসম্ভ পাকিয়া উঠেও দাহ প্রশমিত হয়।

১০। পায়ে বদন্ত হইয়া দাহ উপ-দ্বিত হইলে, তওুলোদক সেচন করিবে।

১১। বদন্ত পাকিবার উপক্রমে. গুলঞ্চ, যাষ্ট্রমধূ, জাক্ষা, ইক্ষ্মৃল, দাড়িম, গুড় সংষ্কু করাইয়া, দেবন করাইলে বদন্ত শীক্ষ পাকিয়া উঠেও বায় ক্পিত হর না।

১২। বসত্তে শূল, উদরাধান ও কম্প উপস্থিত হইলে, সৈদ্ধব লবণের সহিত মাংসের ধূব পান করিলে উপকার হয়।

১৩। কুল চুর্ণ থড়ের সহিত ভক্ষণ করিলে, বাড, পিত্ত ও প্লেম্মন্থ বসন্ত শীঘ্র পাকিয়া উঠে।

১৪। বসতে অধিক প্রহইণে বট,

যজ্জুর, অখথ, পাকুড ও বেড, ইহাদের

হাল চূর্ণ করিয়া তাহা বসস্তের উপর

হুড়াইবে, কিমা বিশ যুটের ভাম হুড়াইগা

দিবে।

১৫। বসতে কুমীভয় নিবারণ জন্ত সরল কাঠ ধুনা, দেবদাক, চন্দন ও অঞ্চক প্রস্তুতির শ্প প্রদান করিবে।

361 जिल्लात कार्**य छत्र्व**ण मित्रा

পান করিলে পূব নির্গত হইরা **দাব ও** বেছনা ভাল হয় ।

১৭। বসত রোগের প্রথমাবছাতেই প্রতিদিন হিংক্তশাকের রস ৪ তোলা। ঘর্ষণ করা খেত চন্দন ।• অর্দ্ধ ভোলা। এই উভয়কে একজ বোগ করিয়া দিবলৈ ২ বার পাম কর্মান কর্ম্বর। ইহাতে বসত শীঘ্র বহির্গত হয়।

১৮। ছাম রোগের শেষাবছার কৃত্
ও বাবুই মিলিত ২ তোলাকে কৃটা করিয়া
ত২ ভোলা অলে সিদ্ধ করিয়া ৮ ভোলা
জল থাকিতে নামাইয়া ছাঁকিয়া পান
করাইলে দেহে হামল্য চিহ্ন সম্ম মিলিড
হয়। ইহা ছুই তিন দিন ব্যবহার করান
আবশ্যক।

১৯। নিখছান, কেতণাপদ্ধা, আকনাদি মূল, পলতা, কটকী, হরীতকী,
রক্ত চলন, খেত চলন, বেশার ছুল,
আমলা, বাসক মূলের ছাল, হুরানভা,
এই খাদণ প্রকার মিলিত পাচন বসভা
রোগীকে পানার্থ প্রথমাবভার প্রদান
করা বাইতে পারে।

২০। খুখে, কঠে বসন্ত জন্ত কত হইলে আমলা ২ তোলা, বৃষ্টি মধু ২ ভোল। এত ছত্তমকে কুটা করিয়া ৬৪ তোলা জলে সিত হইলে ১৬ তোলা আন্দাল জল সংখ ছাঁকিয়া রোগীকে বারখার কুলি করিতে দিবে। ইহারখারা মুধুও কঠন কতাদি শীত্র ওক হইরা বার 1

২১। পাত্র বেদনা, শিরোবেদনা, পেট ভার বোধ, মুখ ও চক্ষু রক্তবর্ণ এবং কাশি থাকিলে দেই অন্তে হাম বা বসত প্রকাশ পাইবার সন্তাবনা। এই জন্ত অধিক দিন ছানী হন না। প্রান্ত তিন বা চারি দিনে হাম বা বসত প্রকাশ পার। এই সমরে কোন ঔবধ প্রদান করা বিবেচন হন, এরপ ঔবধ প্রদান করাই উচিত।

২২। সমস্ত বসস্ত প্রকাশ হওয়ার পর ক্ষত ওক ও অর ত্যাগ হইলে কাঁচা হরিস্তা ও নিমপাতা মাথিয়া স্নান করিবে।

২০। বসস্ত শুক হইবার সময় হইতে বাহাতে রোগীর শরীর স্লিগ্ধ থাকে, এরূপ পথ্য প্রদান করা উচিত।

২৪। বসভের মুখ ক্ষত হইয়া গেলে হরিকাচ্ প ও মাথন লেপন করিলে ক্ষত আরোগ্য হয় ও বসভের চিহ্নগুলিও মিলাইয়া যায়।

২৫। থে রোগীর চকু মধ্যে বসস্ত

হইয়া যাতনা উপস্থিত হয়, সেই বাতৰা নিবারণার্থে পড় গড় ১ তোলা, যষ্টিমধু ১ তোলা, এই উত্তয়কে কুটা ও সিদ্ধ করিয়া এবং ছাঁকিয়া ঈষৎ উষ্ণসন্থে সেই জল্মারা চক্ষুর উপর স্বেদ (Fomentation) প্রদান করিবে। তাহাতে বাতনা নিবারণ ও রস স্থানাস্তরিত হয়।

২৬। বসন্ত পাকিয়া পৃষাদি সঞ্চার হইলে কণ্টকাদিলারা বিদ্ধ করিয়। পৃষ্
নির্গত করিবে। তৎপরে ষষ্টিমধু, আমলা, হরীতকী, বয়ড়া, চালমুগরা বীজ্ঞা, দারু-হরিদ্রা, নীলোৎপল, বেণার মূল, লোধ-কাঠ, মঞ্জিঠা, গোময় ভয়া, এই সকল রোজে তদ্ধ করিয়া চূর্ণ করত স্ক্রবজ্ঞলারা পুটলী বাঁধিয়া বসন্তের ক্রতের উপর মুহ্মুহ্ ঝাড়িয়া ঝাড়িয়া গুড়া নিক্ষেপ করিবে। ইহালারা সত্বর ক্রতাদি তদ্ধ হয়।

(ক্ৰমশঃ)

अत्रत्माथन अभानी।

(৩৬২ সংখ্যা ৩৪৪ পৃষ্ঠার পর)

ললিত রাগিণী—ভাল আড়াঠেকা। 🔮

শীকুক্চক্র মন্মদার কৃত গীত। শীনবানচক্র যন্ত কৃত বর্ষাদিশি।

| ৩৬৩ সং) | বামা | योभिनी शबिक | T. I. | and the second s |
|---|---|--|--|--|
| ভ ৬১৮ ম প কে ডো- | ४ +1 म व १ मा- (त नि- | । ৩৬' ४ <u>स्थल</u> क | ৺ [♠] •। ৬ গ বা স ⊢ ল ং | े न की- वा- मा- |
| ⊌ । मा मा क मि- | +। △ । ৩৺ ঋ নি সা सन् র- | দি ধ <u>প</u> কোঁ- টু | •। ৮ নি ম নি কে | প্র ম ধ তে। মা- র |
| ×। । ৩ পুপু ভা- লে | ध भ भ भ भ भ भ भ भ भ भ भ भ भ भ भ भ भ भ भ | •! ** 커 } | | |
| (১মুবার) - | প পু ই হা- সি- ে ক- ম- ই | । +। ম প ধ ড- ছ মূ- ম ন- য়- ম তু- মি | ু সা' ফ হ, য় ন (| ৺ ।•। ৺ না না সা র- ছ- আ- যে লি, কা- যা- রে, দে- |
| ত ১৮ ৮ সা: রা ন- নে র পা ধাও দে | া সা দ ভা- সি- া- নে চে | ৰ সা ৰ ছ ছে য়ে খি | গ গ গ গ গ ব বব, আ ছা ভা বে | |
| ৺ ৺১৺ প ধ কে শি- কা- র ছে- ন | সা সা বা বা ব ব ব ব ব ব ব ব | + ১ ৭ থ- নি ⁷ এ- ত য- বি য- নী | ণা নি ধ হা- f তে- (| । ০। ৬ ৬ ১৬ প ধ ম গ ম দ, কে বা ছ, প্রে ম কি, কে ডো- |
| ম ধ সে যে জ- শ্ৰ | †। । ৩৬ ' প প্ধ প হা মা- নি- র- প্র- দা- | ৬ 1 • ৣ। প- প এ ফ ই- ল ? ম- ল ? নি- ল । | ा जा ज छ - १ | ১৮ ৮ । া সা সা া- ড মো- ছি ল |
| ब हि- | ^ ৩৮ ৮ ক ব ব ড ক- ব- গ- | ি ioi ত শু সা বি, গ শ, মু | l ∜ 1- ≷ '- | म म स चि- धी- |

| ্ | । । পুমুগ্র বো; | ⊌ সা ব- | গ গ | A 60 | । . मा |
|----------------|-----------------------|--------------------------------|-------------------------------------|---|---|
| | | | স | * | |
| ◆ 1- | α : | ব- | 38 | | |
| | /- T 3 | 4 | ~ I | € | শে |
| ত্ত- | ਜ, | 2 - | ব | প- | র- |
| | val | v | W 3W | . | |
| <u>ৰি. ধ</u> . | नि | . 7 | সা | 311 | শ |
| - 9- | | 201 – | 24- | 6 | ক- |
| मा- | যে, | পা- | ₹- | ट र्ग | ন- |
| | ी नि. थ. - अ- | 1 ৮৫। নি.খ. নি - জু- লি, | 1 ৮৫। ৮ নিধ নি সা - জ- লি, জ- | 1 ৮৫। ৮ ৮১৮ নি.ধ. নি সা সা - জ্ব- লি, জ- প- | 1 ৬৫। ৬ ৬১৬ ৬ নি. ধ. নি সা সা সা - জ- লি, জ- প- ল |

ফুান্সে ভারতরাজকুমারী। *

এক বায়, অন্য এক আইদে, একের পুত্র, অন্যের অভ্যুদয়-সংসারের এই नित्र्म। देशांत्र व्यक्षीन इहेग्रा जकत्नहे **চ**निएउट्ह । বড় বড় বীর পৃথিবীতে অন্ম এহণ করিলেন; প্রবলপ্রতাপে ধরাতল করতলশায়ী করিলেন; আবার কালের বিচিত্র গতিতে ক্ষয়তর বীর হারা পরাঞ্জিত হইলেন। বালার্কের ন্যায় वधन वाटमालाहि त लीत्रव स्वा वज **অর** করিয়া প্রকাশ পাইতেছিল, সেই শ্রমর করাসী সামাজ্যের নভোমওলে সারাক্ষী ক্লোভেফাইনের গৌরব স্থ্য मान्त्र विदासमान । हेनि ७थन इतारशद শুন্যান্য রাজ্যভার কেন্দ্রহরণ উল্লেল-ভ্রম মণি। টুলারের রছগচিত রাজ-মন্দিরে ° সেই সময় ভারতবর্ষের এক নিৰি ছিল, বাহার ক্ষুণ্যাতিতে

অত্ত্য অনাান্য মণি নিশ্ৰভ হইয়াছিল। মে নিধি কি

প্রক্রপলাবণ্যময়ী ভারত-রাজকুমারী। সামাজী ইহাঁকে দত্তক গ্রহণ করেন; করিয়া অপত্য নির্বিশেষে বছ্যত্বে লালন পালন করেন। একেত রাজকন্যা, রূপবতী, থৌবনা, ভায় দামাজীর নয়নপুত্তলী; মণি কাঞ্চনের যোগ। এতাবস্থায় তিনি যে সমগ্র ফরাসী দামাজ্যের কিরূপ আদরের বস্তু, তাহা বোধ হয় কাহাকেও বিশেষ করিয়া বুঝাইয়া দিবার আবশ্যক নাই। স্থতরাং অচিত্রে তিনি আবাল বৃদ্ধ বনিতা ছোট বড় দকলের মনোষোগ ও দৃষ্টি আবাকর্যণ করেন। বলা বাহল্য সকলে ইহাঁর বিষয় জানিতে সমুৎস্ক হইবেন, र्हेबाइटे ७ कथा। आमारनद म्राध्य কাহার না জানিতে কৌভূছল হইতেছে ?

ইহাঁর সম্বন্ধে এক অতি অনুত বিবরণ প্রকটিত আছে। তাহা ক্ষমশং বিবৃত হইতেছে। বুসিক ফ্রাসী ছাতি কতক বিদ্রূপ ও কতক কুপাপরতক্র হইয়া ইহাকে La Sultana Indianna অৰ্থাৎ ভারত স্থলতানা বলিয়া আপনাদিগের পরিচয় দিতেন এবং ग्राधा বিকই প্যারী মহানগরীতে ইনি স্থল-তানার মত সমস্তমে প্রাসাদে অবস্থিতি কবিতেন। তিনি যে ভারত-কন্যা তঙ্বি-যয়ে অণুমাত্র সন্দেহ নাই, তবে হিন্দু কি মুসলমান তাহা কিছু মাত্র নির্ণয় করা याय नाः ষেহেত যাঁহারা ভাহার সহিত বাক্যালাপ করিয়াছিলেন, তাঁহা-मिश्यत अम्ब विवत्न देवस्या साम দ্বিত। শুনা যায় তিনি দিলদার নামে আত্ম-পরিচয় দেন। নামে মুসলমান বলিয়া অনুমিত হয়। কিন্তু এত কালের পর সত্যে উপনীত হইবার কোনও সম্ভা-বনা নাই। ইহাঁকে অবলম্বন করিয়া ১৭৯৭ ফরাসী দেশে "La Belle Indienne, on les Aventures de la Pittie fille du Grand Mogol" এই দীৰ্ঘনানে এক উপন্যাস গ্রন্থ প্রকাশিত হয়।

ক্ষিত আছে তাঁহার আত্মপরিচয় এই যে, তিনি এক বড় রাজার কন্যা তাঁহার পিতার ষমুনা-গুলিনে মনোরম প্রাসাদ ছিল। কিন্তু কোথায় ছিল, সেই স্থানের নাম কি, কিমা তাঁহার পিতারই বা নাম কি ইত্যাদি অবশ্য-জ্ঞাতব্য ও বক্তব্য বিষয় গুলি-ভাঁহার

কিছু মাত্র আরণ ছিল না। চারি বং, আর वशःक्रम काल এक हिन्सू ताकात महिक विबार्श्त वांशमान रय। এম্বলে পাঠক भाठिका (पथुन हेहाँद नाम **मुगबमान**, হিন্দু রাজার সহিত বিবাহের কথা হইল আর যে সময়ের কথা বলা বাইতেছে. এইটার কোনওট ধরিয়া বিচার করিলে কিছুই স্থির করিতে পারা যাইতেছে না। তাহার কারণ এই—অদ্যাবধি উত্তর পশ্চিনাঞ্লে हिन्दु मुभलमानिष्टिशत मध्य স্থাৰ্থকাল প্ৰ্যান্ত এক মুসলমান শাসনা-ধীন হট্যা বাস নিব্ৰান আচার ব্যবহারে এমন কি নামের কতকটা মিল দৃষ্ট হয়। তজ্জন্য সুধু নাম ধরিয়া ইহাকে হিন্দু ৰা মুগলমান বলিয়া স্থির করা যাইছে পারে না। আর যে সময়ের কথা, তথন হিন্দু মুস্লমানদিগের মধ্যে বিশেষত: রাজা ও রেইস্ দিগের মধ্যে বিবাহ প্রচলিত ছিল। স্থতরাং ইনি মুদলমান কন্যা হইয়া হিন্দু স্বামী গ্রহণ করিতেও পারেন এবং হিন্দু कन्ता इहेश भूमलमान सामीत महिए 6 পরিণীত হইতে পারেন। ছুইই সম্ভব। সে যাহাহউক প্রাচ্য দেশোচিত স্বারোছে: বিবাহের আয়োজন হইতে লাগিল। বিবাহ দিন উপন্থিত। কন্যা স্বৰ্ণবন্ধ পরিহিতা ও বছন্দ্য অলকারাদিতে এত ভারাকান্ত হইলেন যে অন্যদীর সাহায্য ব্যতীত এক পদও তিনি সঞ্চরণ করিছে কিত কেই কি লপ্পেঞ পারেন না। জানিয়াছিল যে, সিন্দুরবিন্দু-শোভিড বলি-প্রস্তুত ছাপের ন্যায় ঠাহাকে জৰি

লম্বে প্রকাপতির স্কাশে হম্মের মত देवराहिक पूथ विमुद्ध न कतिए इहेरव १ বাদ্যকর ও পভাকাবাহীতে তর্গী পরি-পূর্ব। এক একথানি করিয়া শত শত তরণী বিবাহ বাটীর নিকট ক্রমশঃ অগ্রসর হইতে লাগিল। একে যমুনা ভটস্থ ড়য়ালিকা, তায় সন্ধ্যাকাল; প্রকৃতি এক অরপম তনির্বাচনীয় শোভা ধারণ পরিয়াছে। শোভন দৃশ্যে সকলের প্রাণ বিমোহিত। স্থন্যস্থবাসিতা পাপে অকল্কিডা মুর্ভিমতী **সরলতা** হির থাকিতে পারে গু যৌবন-স্থলভ লজাশীলতা ভাঁহাকে স্পর্শ করে নাই, বিবাহ যে কি বস্তু তাহা কি ভিনি তখন বুৰিবাছন ? স্বামী স্ত্রীতে যে কি সম্বন্ধ ভাহা তিনি কি তথন বুঝিয়াছেন? বুর্বিলে লক্ষায় অধামুখী হইতেন, অব-

রোধে ক্লম থাকিতেন। কিন্তু তাহাত নহে। অন্যাতানর নারী বেরপ আন্ন-मिত, তিনিও তজ্ঞপ। আপনার বিবাহ দেথিতে—আপনার বরের শোভা দেখিতে দেখিতে—আহলাদে ষ্মাটধানা। ভাড়াভাড়ি উত্তমরূপে দেখি-বার জন্ম সংচরীদিগকে পশ্চাতে ফেলিয়া ছাদের এক প্রামভাগে আবোহণ করেন। হায় ! বিধাতার বিভ্যনা ! স্লোত্সিনীতে পড়িয়া গেলেন। টানে বছদূরে ভাসিয়া গেলেন, কেহ জানিতে পারিল না। मक्त चार्याम मख, मक्त छारन रगरह কোনও না কোনও ছানে খেলার মাতিয়া আছে; আর ভাবনাই বা কি. ভাব-নারও কোনও কারণ নাই, বেহেড সঙ্গে লোক আছে।

(ক্রমশঃ)

উদাসীনের চিন্তা।

(উপন্যাস।)

কোন এক নগরে একদা জনৈক
সন্ধাসী উপন্থিত হইলেন। তিনি এক
বৃক্ষতলে অগ্রিক্ত করিয়া বাস করিতে
সাগিলেন। তিনি ঈশরপরায়ণ পরম
ভক্ত সাধু। তাঁহার স্থনাম চতুর্দিকে
পরিব্যাপ্ত হইল। তাঁহার নাম শুনিয়া
নগরবাসী বহু নরনারী তথায় উপন্থিত
হইতে লাগিলেন। এক দিনী নগরের
এক প্রসিদ্ধ ধনী হিত্বপদ্ধী তথায়

উপস্থিত হইলেন—ভাঁহার নাম লক্ষী।
পিড়গৃহে শৈশবকালে তিনি এই নামে
পরিচিতা ছিলেন। কিন্তু লক্ষী চঞ্চলা
বলিয়া স্থামী আদর করিয়া তাঁহাকে চঞ্চলা
বলিয়া ডাকিতেন। আমরাভ ভাঁহাকে
শেষোক্ত নামেই অভিহিত করিব। চঞ্চলা
স্থামী নহেন, তাঁহার বর্ণ কাল, চক্ত্ ছইটি ক্ষুদ্র, নাসিকা চেপ্টা, হস্তু পদাদির গঠনও প্রশংসনীয় নহে: কিন্তু প্রাক্তিক অভাব দূর করিবার জন্তই
ইউক কিংবা ধনী লোকের গৃহিণী বনিরাই ইউক চঞ্চলার বেশভ্যার প্রতি
বেশ লক্ষ্য ছিল। তাই সাধুদর্শনে আনিবার কালেও বেশভ্যা করিতে ক্রেটি
করেন নাই। তাঁহার শরীর আপাদমন্তক রোপ্য ও স্থালকারে ভূষিত ছিল।
পরিধানে একখানি বছমূল্য শাড়ী। চঞ্চলার ঐথর্যের আড়ম্বর দেখিরা সন্ন্যামী
ঠাকুর মনে মনে একটু বিরক্ত ইইলেন।
তৎপরে চঞ্চলাকে সম্বোধন করিরা
কিজ্ঞাসা করিলেন—''মা। এখানে কি
চাই গ'

চ—"আপনার শ্রীচরণ দেখবার জ্বন্ত এমেছি।

স—''দাঁবু দৰ্শনে এসেছ, তাতে আবার এত ঐধংগ্যের **অভেম্**র কেন ?

চকলা একটু লজ্জিত। হইলেন এবং কিয়ৎকাল নিঃশধ্যে অধোবদনে রহিলেন।

স—না, কিছু মনে কগ না, আনি সন্ন্যাসী মানুব, ঘা মনে উঠে তাই বলে কেলি। ইচ্চা হয়ত বস।

সন্ত্যাসীর আধাসবাণী ওনিয়া চক্টনা স্থীপথতা এক আসনে উপবেশন করি-লেন। সন্ত্যাসী আরও ছুই এক ব্যক্তির সহিত কিয়ৎকাল বাক্যালাপ করিয়া চক্ষলার দিকে ফিরিয়া বলিলেন 'না! জ্ঞীচরন দেখা হ'লত, এখন ইক্সা হ'লে ধেতে পার।"

চ—-'বাবা! আপনার নিকট কিছু ধর্মোপদেশ চাই।" ন—তোমার ধর্ম কর্ম হচ্চে বেশ-ভূষা করা। ঐ প্রের্ডিটা একটু থামলে ধর্মের থবরটা নিলেই ভাল হয়।

চ—বাবা, আমরা সংগানী মান্ত্র, পাপেই আমাদের মতি, ভাইতে আপে-নাদের প্রীচরণ দর্শনে এসে থাকি, আপ-নারাও যদি পাপীজন ব'লে তাড়িয়ে দেন তা'হলে যাই কোথা ?

স—আমরা পাপী ব'লে তাড়াই না, তবে কিনা ভরা কলসীতে বায়ু পুরা যায় না। বিষয়াসন্তিতে পুর্ণ ভোমার অক্ষে আমি ধর্মের বায়ু কি করে প্রবেশ করাব ?

চ—বাবা, আপনাদের অসা**ধ্য আবার** কি আছে ? আপনারা কুপা কলেইত জনেক পাপী তরে যায়।

সন্নাদী দেখিলেন চকলা সহজে ছাড়িবার পাজী নহনে, তাহাকে ফাঁকি দেওয়া সোজা নয়। তৎপরে বলিলেন "মা, এফটু অপেফা কর। সন্নাদী নিবস্ত হইবার প্রায় পনর মিনিট পরে তথার অনাহারে খীর্ণ শীর্ণ, ছিন্ন বত্ত পরিবানকারী ভ্রজন ভিক্ক আসিয়া উপস্থিত হইবা। সন্ন্যাদী জিম্পানা করি-লেন—সামি সন্ন্যাদী মাহ্ব এখানে কি চাই প

ভিক্ক—বাবা, কিছু থাবার চাই, অনাংরে আর প্রাণ বাঁচে না।

কাতবোজি ওনিয়া স্থানীর কোমল প্রাণ পলিয়া গেল। ন্যুন্ধী ইইডে অক্রব্যরি পড়িতে লাগিল। ত্রুপুর বলিলেন বাধা বস, দেখি ভগণান্ ভোষা-

लंब क्या किछू तम्म किया। महाभीत আখাস বাণী ওনিয়া ভিক্তুক্ত্র নিকটে উপবেশন ক্রিল। সন্ন্যাসী চঞ্চার দিকে ফিরিয়া বলিলেন মা, ভূমি ধর্মো-পদেশ চাহিয়াছ। "পুণ্যঞ্চ প্রোপকারে পার্গফ পরপীড়নং।" এইত ধর্ম্মের দার **কথা। এথন পরোপকারে**র কাল উপ-ছিত। সম্পুধে এই ভিপারীদ্বয়কে শেথিতেছ। অক্লাভাবে ইহাদের শরীর জীর্ণ শীর্ণ হইয়াছে। পরিধেয় বস্ত্রথানি মলিন এবং ছিল। আমি যতদূর বুকিতে পারিতেছি তাতে বিচার করিয়া গেলে বলিতে পারি যে ই হারা দানের **উপযুক্ত পাত্র। "**দরিদ্রান ভর কোস্তেয় मा व्ययत्कि भदत धनग्। व्याधिकत्त्रा विश्वम भधार निक्रकमा किरमीष्टियः।" (इ की-তেম। দরিভাদিগকে ভরণ কর, ধনী দিগকে ধন দান করিও না। বোগীরই ঔষধ ও পথ্যের প্রয়োজন, নীরোগীর প্রয়ো-খন নাই। তাই মা আমি অফুরোধ করি বে তোমার কানের হল হটা এই **इ:बीब**ग्रंदक माछ। ইহারা অনাহার-**জনিত মৃত্যুর হস্ত হইতে রক্ষা পা'**ক।

পর্যাসীর সমক্ষে যে এইরপ কঠিন সমস্যায় পতিত ইইবেন, চঞ্চলা এইরপ কল্পনাও করিতে পারেন নাই। তিনি এখন কি করেন, কাণের তুল তুইটা এক ক্যাতেই পরিত্যাগ করিতে পারেন তাঁহার মনের বল এতটুকু হয় নাই। ভাষি সন্মানী ঠাকুর উহা দাহি করিতে-ছেন। তিনি চিঙ্কা করিরা একটি উত্তর ঠিক করিলেন। উত্তরটি সত্যমূলক হই-লেও চঞ্চলা তাঁহার প্রকৃত অভিসন্ধি প্রচ্ছের রাধিলেন। তিনি বলিলেন ঠাকুর। আমার বাবা আদর করে এই, তুল হুইটী আমাকে দিয়েছেন, ইহা আমার বাবার চিহ্ন। আমি আর কোন গহনা দিতে পারি, কিন্তু এই তুইটী তুল দিতে পারি না।

শ—মা তোমার হাতের বালা ছ গাছি কে দিয়েছেন ৭

চ—তা ও বাবা দিয়েছেন।

স—তবে তাই কেন বাবার চিহ্ন হ'ক না ?

চকলা যে এইরূপ পরীক্ষাণ পড়িবেন তাহা ভাবিতে পারেন নাই। এখন সন্ম্যানীর সঙ্গে বাগ্বিতগুায় প্রবৃত্ত ইইলেন।

চ—আমি এই ছল ছইটির পরিবর্তে কিকিৎ অর্থ সাহায্য ক'লে কি আপনি স্থবীহন না?

শ—মা সন্ন্যাদীগণ এক ঝোঁকের লোক। তুমি লাথ টাকা দিবে বল্লেও
আমি আমার দক্ষল পরিত্যাগ কর্ত্তে
পারি না। আমি বুঝেছি তোমার তুল
হুইটীতে আগতি রয়েছে। তুমি ধখন
ধন্ম বিনী হ'য়ে এসেছ, তখন আমি
তোমার আগতির জিনিবই সর্ক্রাগ্রে
কাড়িয়া লব। তুমি হুল হুইটি দিবে
কিনাবল গ

চ—(কর্যোড়ে) বাবা আমার মাপ কর, আর কিছু দি, আপনি খুদী হউন।

স—অন্যের প্রতি দৃষ্টি নিক্ষেপ করিয়া বাক্যালাপ করিতে লাগিলেন। এদিকে দেবান্থরের সংগ্রাম চঞ্চলার অন্ত:ব চলিতে नाशिम। ठकना यद्यभा করিতে না পারিয়া হল দেওয়াই স্থির করিলেন। তৎপর সন্ন্যাসীকে সম্বোধন করিয়া বলিলেন "বাবা, এই হল ছটা নিন। আমি এ পর্যন্ত আমার ভোগ-বাসনার সহিত সংগ্রাম করিভেছিলাম, কিন্তু বাবা এখন দেখতে পেলেম সং-পাতে দান জনা ভোগবাদনাযু জলাঞ্জলি দেওয়াই ধম সঙ্গত। তাই আপনার আদেশ পালনে মত্বতী হইয়াছি। সন্ন্যাসী দেখিলেন তুলের প্রতি চকলার অরুরাগ ছিল, তাহার অবসান হই-য়াছে। এই অনুরাগের বিনাশ সাধনই তাঁহার উদ্দেশ্য ছিল। স্বতরাং সেই উদ্দেশ্য সাধন হইয়াচে দে থিয়া তিনি আর চুল গ্রহণ করিলেন না। তিনি এক শিষ্যের প্রতি আদেশ করিয়া বলিলেন 'আমার ঝুলনা হইতেগত কল্য-কার প্রাপ্ত টাকা কয়টা আনিয়া ভিগারী-দিগকে দাও। শিষ্য প্রভুর আজ্ঞাক্রমে টাকা কয়টি লইয়া ভিক্কুকম্বয়কে প্রদান कतिल। एकला मन्नाभी ठीकूरवर्ष अह ত্যাগের দৃষ্টান্ত প্রত্যক্ষ করিয়া আপনাকে

मान मान विकास किए जाइक किना **Бक्ष्मा (म पिन आार्शत एव मोक्स धार्थ** হইল, জীবনে তাহা ভূলিতে পারে নাই। সল্লাসী তাঁহার দত্ত তুল তুটা গ্রহণ করি-লেন না সভা, কিন্তু চঞ্চলা গৃহে প্ৰভ্যা-পমন করিয়া কেবল চুল কেন, সমস্ত প্রথমী এक বাব্রে বন করিয়া ভর্ণকারের নিক্ট প্রেরণ করিলেন। স্বর্ণকারের নিকট সমস্ত ज़वन विक्रव कविया याश आश इहेरनन, তাহা এক কুঠরোগীদিপের জন্য প্রতিষ্ঠিত আপ্রমে প্রেরণ করিলেন। কিছ আপ-নার নাম ধাম সমস্তই পোপন করিলেন। ইহারই নাম প্রকৃত দান, ইহারই নাম দয়ান্ত চিত্ত হইয়া প্রকৃত বৈরাগ্য। নৱনারীগণ যে ভোগবাসনায় বিকর্জন দেন, তাহাকেই প্রকৃত বৈরাগ্য বলা যায়। এজন্য সাধু বলিয়াছেন "বার্থ-নাশস্ত বৈরাগাং।" যাঁছারা কুপ্রভা-বশত: কিয়া নাম ক্রেয় করিবার জন্য ভোগম্পুহাকে দূরে নিক্ষেপ করেন, তাহারা প্রকৃত বৈরাগ্যের দৃষ্টান্ত প্রদর্শন करहन ना। जामा कत्रि त्मज्वा-वित्र বল-ললনাগণ এই আধ্যায়িকটির সার মুর্ম গ্রাইণ করিয়া প স জীবন ভদসুদারে নিয়মিত করিবেন।

বিদেশবাসিনীর পত্র।

যাহাহউক ভগৰংপ্রসাদে, আমার এবং রেলখনে গাড়ীর কল্যাণে ওভাকাক্ষী আত্মীয়দিপের সদাশরতার, আমি পচৰায়। পচৰা

ছোটমাগপুর

বিভাগে। ইট ইতিয়া রেলওয়ের গিরিদি **টেশন হইতে পচস্বা প্রায় ৪ কোশ** দূরে: অবস্থিত। আমার কোনও ভক্তিভালন काफीरवर निकटि स्निग्नाष्टि, এवान পাঁচটা প্রকাও আমের গাছ পাকার এই ভানের নাম পচন্দা (পঞ্চানা) হইবাছে। পার্বভ্য প্রদেশে অবস্থিত বলিয়া প্রস্থার অলবায়ু অতীব স্বাস্থ্যকর। প্রায় দশ ৰৎসর পূর্বের প্রদের দখা-সম্পাদক স্বর্গীয় অমদাচরণ দেন পচখায় আসিয়া ইহার অনেক বিবরণ লিপিবদ করিয়াছিলেন। কিন্তু দশ বৎসর পরে আমর৷ এথানে আনেক পরিবর্ত্তন দেখিলাম। ছই একটী শামান্য বিষয় হইতে ইহা সকলের বোধ-গম্য হইবে। প্রমদা বাবু এথানে আসিয়া লাউ, কুমুড়া, ঝিঙ্গা, ব্যতীত অন্য তর-कांबी (मर्थन नारे, किन्ड कान्या अथात नाउ, क्मणा, सिना, (वश्वन चानू, निम, বরবটী, মটর, কপি, ওল, কচু এবং আমাদের দেশীয় শাক সব্জী যথাক্রে পাইতেছি। তবে এথানকার কচু আমা-দের দেশের "মানকচু" জাভীয় নহে, "শোলাকচু" ভাতীয়। প্রমদাবাবুর আসার সময়ে হগ্ধ স্বত নাকি অভিশয় श्रुगे हिन, अथन किছू महार्घ इहेशाए। ্**যাহাহউক কলিকা**তার তুলনায় এখানকার इस, युठ, ভরকারী, कन প্রভৃতি বেমন श्रवामा, अहे तकम श्रवछ।

এতো গেল পচমার সাধারণ অবস্থা। প্রকরার বিশেষত এই বে প্রস্থা প্রকৃতি দেবীর জীড়া কানন। শীর্ক * * *

মহাশয় আমাদিগকে ব্লিয়াছেন যে পচমায় মানবের বসতি ও ক্রষিকার্ব্যের উন্নতি হইয়া ইহার স্বাভাবিক সৌল্ধা অনেক হাৰ হইগা গিয়াছে। কিন্তু এমন সৌন্দর্যা আর কোথাও আছে কি না আমার মনে বড়ই সন্দেহ হয়! প্তৰার দিকে চাহিয়া চাহিয়া আমার মনে হয় (य. आमारित वक्रामान (मरावत काला-হলে, পল্লিগ্রামের ম্যালেরিগ্রায়) প্রকৃতি-দেবী মনের সাধে পরলা বালিকার মত থেলিয়া বেড়াইতে পারে না--আমাদের বন্ধভূমি—"প্রজনা প্রফলা মলয়জনীতলা শ্যামাত্রশরা" তুঃখনারদ্রতারণ আঁচলে প্রকৃতি জননীকে ব্যাইয়া মনের দোহার করিতে পারেন না, তাই **মা** वाष्ट्रिया वाष्ट्रिया धरे भागमेल निर्द्धान ক্রীডাকানন ভাপন তাহার ছেন। তাই নদী।নঝার-নিনাঞ্চিত, বিহপ্প-কুল্লিত, পাহাড় প্রাচীর বেষ্টিত, শ্যান-কান্ত বিজ্বনে মা প্রাণ ভরিত্রা খোলিয়া বেড়াহতেছেন! ভাই পচখার বুকে এত শোভা, তাই পঞ্জার শোভা এত মনো-त्यादिनी । यह अञ्चलनीय कीन्य इहै। আঁকিয়া দেখাইতে পারি, সে শাক্ত प्यामात कथनहै नाहै, তবে यथामाधा পাঠিকা ভগিনীকে দেখাইতে চেঙা कावर ।

এধানে আদিয়াই আমরা বিশ্রান
শিলা" এবং তাহার নিকটম্থ ঝরণা
দেখিতে গিয়াছিলাম। যিনি আমার এই
বিদেশ ভ্রমণের এক প্রধান সহায়, আমার

সে প্রম স্বেহাস্পদ আত্মীর অসুস্থতার क्षता (अपिन चामाप्तत मन्नी दहेए পারিলেন না। এমন আনক্ষের সময়ে তাঁহাকে বাডীতে রাধিয়া যাইতে আমার মনটা একটু কেমন কেমন করিতে লাগিল। যাহাইউক আমরা ছাডিা, রান্তার উপরে উঠিয়াই এক ष्यपूर्त म्या रमिनाम। कार्डिक माम, তথাপি দক্ষিণ দিকের আকাশের পারে স্তব্বে স্তব্বে মেঘ সকল-গাঢ় নীল রঙের মেঘ সকল সাজান রহিয়াছে! বিনায়ে তেলুলনেতে সে দৃশ্য দেখিতে গিয়া ভনিলাম উহা সত্য সত্য নীল মেঘ নহে, উহা পরেশনাথ পাহাড়শ্রেণী ! সেই মেঘমালা সদৃশ পাহাড় শ্রেণীতে সর্কো-চচ চড়াবৎ পরেশনাথের মন্দিরটা এক-খানি ছবির মত দেখিতে পাওয়া যার। আমাদের অভিভাবক মহাশ্য তাহাও আমাদিগকে দেখাইয়া দিলেন। ইহার পরেও আমরা পুন: পুন: দেই পরেশনার্থ পাহাড়ের ছবি দেখিয়াছি, কিন্তু চাঁদের আলো দেখিয়া যেরপ পরিতৃপ্তি জাম না, শিশুর হাসি দেখিয়া থেমন পরিভুপ্তি क्षामा ना, त्मरे अकम मृत इहे एक शासन-নাথ পাহাড়ের ভুবনমোহন দৌশ্ব্য দেখিয়াও আমার একট্রুও পরিভৃপ্তি জ্ঞান নাই ! সে শোভা চিরদিনই নৃতন ! সুৰ্ব্যান্ত সময়ে সেই নীল ছটার উপরে ব্ৰক্তিমবৰ্ণ, সোণালিবৰ্ণ, ফি'কে গোলাপী-বৰ্ণ মেখনালা যখন খেলা করিয়াছে, দ্বিভীয়া, তৃতীয়া, প্রভৃতি তিথিতে নবো-

দিত চক্রমা বধন পশ্চাছর্তিনী ভারাটী
লইয়া হীরক মৃকুটের নীতে লোচ্লামান
গল্পফার মত বাহার দিরা দাঁড়াইরাছে,
তথন আমরা নীরব নিশাক হইরাই
প্রেরুতির সেই মনোমোহিনী ছটা দেখিয়াছি! আর সেই সৌক্র্যাসাগরে ঝাঁণ
দিরা পড়িবার জন্য মনে মনে পাখন
হইরা গিলছি! সে সৌক্র্যা লিখিরা
বুঝাইবার জিনিস নহে।

ঘাহাইউক আমরা ক্রমণঃ বিশ্রাম-শিলার দিকে অগ্রসর হটতে বাগিলাম ৷ পাঠিকা ভগিনী আনেন যে রেলওয়ের গাড়ীতে আমার অর হইরাছিল। তাই বিশ্রাম-শিলা দেখিবার দিনে, অভিভাবক महाभारतत चारिताम, वांधा हहेता धानिक দূর আমাকে গাড়ীতে উঠিতে হইল। এ রক্ম স্থানে গাড়ীতে বসিয়া প্রাকৃতিক দুখ্য দেখা, আমার বিবেচনায় নিডা-ন্তই"পোড়া ক্লালের ভোগ।" **নেই** জন্ম আমার পান্ধাকে আমি মনে মনে বিলক্ষণ 'দশ কথা' শুনাইতে লাগিলাৰ। তা' সৌভাগ্যক্রমে এই পোড়া কপালের ভোগ আমাকে অধিকক্ষণ ভূগিতে হইল না, খানিক দুরে গিয়া আমার জেংময় অভিভাবক মহাশর, আমাকে গাড়ী হইতে নামিতে জহুমতি করেন। আয়ার বড়ট আনল হটল—আজাপ্রাপ্তি মাত্রে গাড়ী হইভে নামিয়া আমি বাঁচিলাম (!)। তখন দেই ভাষণ ত্কাদলপূৰ্, গৈরিক मुख्कात मार्छ निया, मार्स जाम 🕶 विशि ফুলের গাছ সকল দেখিতে দেখিতে,

পৰে কাঁকরে ও সাদা কালো প্রভৃতি নানা বর্ণের উপলখতে "মৃত্মধুর" হোচট ধাইতে ধাইতে, আমরা বিশ্রামশিলার मार्टि উপস্থিত হইলাম। धरे गार्ठ **প্রথমেই ব্যাত্র মুখাকৃতি, নরমু**গুাকৃতি 🗷 কচ্চপ পৃষ্ঠাকৃতি অনতিবৃহৎ প্রস্তর-ভভ সকল রহিয়াছে: তার পরেই विज्ञामिना। विज्ञामिना अक अकी অনতিবৃহৎ পাথরের বিছানা; বিছানা, কত দূর ব্যাপিয়া রহিয়াছে। वर्तीय धामना वावूरे नाकि এर अनूर्त প্রস্তর শ্ব্যাকে "বিশ্রাম শিলা" নাম দিয়া গিরাছেন। এতকণ পথে আমাদিগের বে টুকু প্রাতি হইয়াছিল, বিশ্রাম শিলার মাঠে আসিরাই তাহা দূর হইল। আমার বোধ হইল আমি খেন কোমল মকমলের উপর দিয়া চলিতেছি: ব্যগ্র হইয়া পদ-আত্তে চাহিয়া দেখিলাম, এথানে এক **জাতী**য় পাৰ্ববতা শৈবাল জন্মিয়াছে: মকমলের উপর দিয়া চলিতে লাগিলে মানব বেমন আরাম লাভ করে, এই পার্বত্য শৈবালের উপরে পাত্রকাবিহীন পদে চলিতে লাগিলেও সেই রকম আরোম পাওয়া যায়! প্রমদা বাবু জল-ব্য়ক হইলেও একজন ভগবৎ হক্ত সাধু ছিলেন। তাই তিনি এ সুখশযার নাম "বিশ্লাম শিলা" রাখিয়া গিয়াছেন ! বিশ্রাম শিলা, সভ্য সভাই বিশ্রামশিলা। সভা সভাই মা' বিশ্ব জননী ভাঁহার প্রান্ত ক্লাৰ্ড সভানবিসের আরামের ক্লন্ত প্রহন্তে **এই অন্ত**র শ্**রা** ওচনা করিয়াছেন।

এখানে আসিয়া আমার প্রাণ কৃতকুতার্থ
হইল! হলবের উচ্ছ্ সিত আনন্দে
আমার সঙ্গী বালকেরা কেছ বিশ্রামশিলার উপরে শুইয়া পড়িল, কেছ উল্টা
বাজী থেলিবার মত গড়াগড়ি দিতে
লাগিল; আমারও বড় সাধ হইল, মা'র
স্বহস্ত রচিত এমন সুখশযায়, এই স্লিশ্ধ
"পশ্চিমে বাতাস" রূপ অঞ্চল সঞ্চালনে,
অদরবর্ত্তী নির্বার স্রোভের মধুমানা গীত
শুনিতে শুনিতে, দিগত্তপ্রলারিত নীল
আকাশের তলে শর্ম করিয়া, একবার
প্রাণের প্রাণে এই অপূর্ব্ব সৌন্দর্যোর
স্বাটিকারিণীকে গাঁথিয়া ফেলি! সেই
সৌন্দর্যাসাগরে ডুবিতে না পারিলে এ
স্বন্দর জগতে কিছুতেই পরিভৃত্তি নাই!

বিশ্রাম-শিলার অনতিদ্রে শালবন।
শালবন দেখিতে ফাইবার সমনে আমরা
চারিদিকের শস্কেত্রগুলিও দেখিলাম।
যিনি বক্ষভূমির হরিৎবর্গ ধান্যক্ষেত্র
প্রভৃতি দেখিয়াছেন, তিনি যে এ দেশের
শস্ক্রের প্রতি বিশেষ আক্রন্ট হইবেন,
আমি এমন ভরসা করি না। এখানে
স্থানে স্থানে শস্ক্রের বাহা দেখিলাম,
তাহা বঙ্গীয় পল্লিগ্রামের ভ্লনায় অল।
যাহাইউক মাঝে মাঝে এক একথানি
শরগুলার ক্ষেত্র * েথিয়া আমার মনে
হইল প্রকৃতি দেবী তাঁহার সব্স্ব বারাগদী শাড়ীর সোণার আঁচলটী এইথানে

শরংগুরা এক প্রকার শ্লা। ইহা হইতে পশ্চিমবাসীরা তৈল প্রস্তুত করে। এ তৈল কতকটা সরিবা তৈলের মত।

বিছাইয়া দিয়াছেন! সোণালী রঙেই কুল সকল স্টির। ক্ষেত্র বেন আলো করিয়াছে! আমার পলিগ্রামবাসিনী ভাগিনী যদি সরিয়ার ও শণের কুল-ভরা বিস্তীর্ণ ক্ষেত্র পেথিয়া থাকেন, তবে পশ্চিমের শোরগুলা ফুলের ক্ষেত্র-শোভাও তিনি অনেকটা বুকিতে পারিবেন।

শালবনে প্রবেশ করিবার সময়ে খামার মনে বিলক্ষণ একট "সৌভাগ্য-পর্বা উপস্থিত হইল। কারণ ইতিপূর্বো **एएटम आमि भारत**त किकाई, भारतत খাট, উক্তাপোষ, শালের বাক্সপ্রভৃতির ষহিত বিশেষ পরিচিতা ছিলাম। অধিক কি, দেশে শালকাঠের প্রতিপত্তি দেখিয়। মানবদগতের গ্লাডপ্টোনের মত, বৃক্ষঞ্গতে শালবক্ষের একটা বে ভারী বিশেষঃ चाहि, क दिश्व यामि मत्नक-भूना। তাই এত দিনে শালবন দেখিতে পাইয়া আমি আমার গৌভাগ্য অসুভব করিছে লাগিলাম। এ বনের বুহৎ বুকা সকল লোকে প্রয়োজনার্থ কাটিয়া ফেলিয়াছে: এখন অন্তিরুহং, ন্ধর, সরল শাল্ডক नकेल शिश्व हाम्रा विखात कतिया माजा-हेब्रा घारह। भानत्रत व्यवन क्रियार নির্বারের অক্ট শব পাষ্ট শুনিতে

পাইলাম। आब একট অগ্রসর इहेब्रो নির্মবের অপর্ক কাজি দেখিতে পাই-नाम ! त्रशास्त स्मिशे (य, क्राईम) अखब्रवामि एक कब्रिया "भौ भौ (माँ) त्राव व्यवस्थान कलवानि विद्या যাইতেছে! সে যেন দ্রবীভুত হীরক-লোত ছুটিয়াছে! সে বেন শ্রুতির অবোধ্য স্বর্গীয় গীভি পাহিতে গাহিতে দিগদিগতে চলিয়াছে! আমরা रिष्टे भवित अमृज्यस अन नहेशा मृत्य চোথে দিলাম; সেজলের স্মিশ্বতা যেন আমাদের প্রাণের ভিতর প্রবেশ করিয়া অন্তরাম্বাকেও মিগ্ধ ও পরিত্থ করিল। সেই সময়ে একটা বালকণ্ঠ নিংমত ভগব-দ্বিষয়ক অনুত্যাথা গাঁতি শুনিতে শুনিতে আমার বাদয় দ্বীভূত হইয়া গেল! আমার ইচ্ছা হইল আমি একবার প্রাণ খুলিয়া ভাকিয়া বলি "মা । বিশ্বসনী ! তুমি আমার সুধের জন্য এত খাটুনি গাটিলে, আমি তোমার জ্বয় কি করি-লামণ এ অকুতত, অদয়হীন অধ্য সন্তানের জন্য এডটা খাট্নি কেন ভূমি খাটিলে মা প"

ইহার পরে আমরা বাড়ীতে কিরিলাম। (ক্রমণঃ)

পুগুরীক কাহিনী।

পতর পুরেতে বাস দ্বিক একজন,
পুর জাশে ভার্ব্যা সনে প্রে নারাংশ;
কত দিন পরে ভবে প্রসাদৈ ধাতার,
দ্বিল প্রকর পুরু, উন্ধানি আগার।

পিতা মাতা দিলা তারে "পুণুরীক" নাম, দিনে দিনে বাড়ে শিশু, পূর্ণ মনস্বাম ক পুণুরীক, মা বাপের নয়নের তারা, পুণুরীক শ্রুলির জাম, হ'লে জাধি-ফারা।

এইরপে শিশুকাল, বাল্যকাল গেল, তঙ্গণ ধৌৰন তবে যথাকালে এল: मध्यारम एक यथा नदीन नधत. তেমনি বরাঙ্গ তার হইল স্থলর। छै॰नार, উদাম, क र्छि, উঠिन जानिया, অথের পিপাসা দিল প্রাণ মাতাইয়া, তাই হায়। ধর্মজ্ঞান করি বিশ্বজ্ঞান. शाशाणाद्य शुक्तीक छात्व मिन मन। তাঞ্জিল সে পবিত্রতা, মা'-বাপে ভকতি, পাপে বৃদ্ধি, পাপী সঞ্চী, পাপ কাজে মতি নাহি শোনে মাতা পিতা শিক্ষা দেন যত, সে অবাধ্য অবিনীত ক্লাচারে রত। এক দিন ভাসি মাতা নয়নের জলে, ধরিয়া পুত্রের করে লেহ্ডাবে বলে, "তুই বাপ পুওরীক ! অকলের ধন. এ দশা দেখিয়া তোর, বিদরিছে মন। শামার মাথার কিরে, দিবা দেবতার. **দাজি হ'তে পা**প কাজ করিওনা আর।" অমৃত ঔষধ যাহা, এ মর ধরায়, মুত্যুকালে হোগী তাহা ভয়ে নাহি থায়. তেমনি মায়ের সেই পীষ্য বচন, ना छनित পুछतीक नारि पित मन : দ্র:খিত অন্তরে পিতা কত গালি দিল, তথাপি সে কোন মতে পাপ না ছাড়িল। বিবম কুবাক্যে আর রুক্ষ ব্যবহারে, মা বাপের ব্যথা দিল অশেষ প্রকারে; कुक् स्थ छता हाय ! अभूना कीवन, किति अमिन क'रत भारभ निम्मन ; मा वारशत थार्व किया मार्क्व रवमना, ना इहाँ अजाशात अक्ट्रे तर्जना। এক্ষিন পুণ্য ঝোগে আনন্দিত মনে,

চলিল অনেক লোক কাশী দরশনে; পিতা যাতা সনে আর প্রতিবাসিগণ. পুণ্ডারীক কাশী পথে করিল গমন। কত দুরে থেতে যেতে আসিল রজনী. ष्यांथात्र वज्ञात मूथ छाकिन धर्वी ; শশুখে দেখিলা এক সাধুর ভন্ন, ভাষারি নিকটে সবে করিল শয়ন: একে একে সকলেই পড়িল ঘুমিয়া, ওপু একা পুতরীক রহিল জাগিয়া: নিদ্রা নাহি আদে তার তাই আন মনে, নিরথিছে চারিদিকে চকিত নয়নে। ट्रन काल कुश्दर्भ डिन्ही युवडी. জলের কলস শিরে মৃত্র মৃত্র গতি; সাধুর আশ্রমে তারা করিল গ্রমন, নিরথিয়া পুরুরীক মঠেন তুক-মন, কত ক্লে বামাগণে আসিল ফিরিয়া: অপুর্কা জ্যোছনাময়ী মুরতি ধরিয়া; পবিত্র রূপের ছটা উঠেছে উথলি. (प्रशिल्हे मान इस (प्रवदानादिता। হেরিয়া বিসায় মনে পুতরীক উঠি. প্রণাম করিল গিয়া ভূমিতলে লুটি; যুড়িয়া যুগল কর ভক্তিভাবে কয়, "কা'রা মা! তোমরা, দাসে দেহ পরিচয়• হাদি মুখে উত্তরিলা দে তিন যুবভী, "আমরা যমুনা, গঙ্গা, আর সরস্বতী।" ७नि প् ७ बीक श्रम करत्र निरवणन, "এত রাত্রে এখানে মা, কিবা প্রয়োজন ? मिश्रिय यथन मत्य जाञ्चाम हितान, তামনী নিশার মত কুঞ্বর্ণা ছিলে. এবে যে রছত-শুদ্র, বরক্স-বর্প, জানিতে বাসন। মম ইহার কারণ।"

(प्रवीत्रव बरल "धहे माधु महानंत्र, পিতা-মাতা-পদ সেবে গকন সময়। আমাদের জলে গিয়া স্থান দান করে. না পায় সে অবসর, এককণ তরে: তাই মোরা নিজে মাসি এ দেব-মাগ্রমে, পরাণ পবিত্র হর সাধু-সমাগমে। লক্ষ লক্ষ মহাপাপী স্থান করি যার. ডাই মোরা সারা দিন থাকি কৃষ্ণকায়; কিছ পিতা-মাঅ-ভক্ত এই নাধু জন, वाँद शूगा चक्र यदा कदि भद्रगत, পুন অব্যাদের দেহে দেব-জ্যোতিঃ আদে, বলিফু সকল কথা তোমার সকাশে। ভূমি যদি পুত্রীক ! চাহ দিব্য গতি, জনক-জননী-পদে রাখিও ভকতি; মাত। পিতা পূর্ণ ব্রহ্ম এ মর ধ্রায়, দে পদ পুজিলে নবে শুভ গতি পায় !' এত বলি দেবীগণ হৈল অন্তৰ্জান, কথা ভনি চমকিল পুত্রীক-প্রাণ! পিতৃ-মাতৃ-ভোগী সেই আমণ-কুমার, দেবীগণ বাক্যে হিলা গণিল ভাহার ! খুমন্ত মানব বেন উঠিল জাগিয়া, অমৃতাপে অঞ্চ পড়ে কপোলে বহিনা; মনে মনে পুঞ্রীক ভাবে সেই ক্ষণ, "সর্ব্ব পুণ্যতীর্থ পিতা মাতার চরণ ! ष्यध्य भागत चामि महाभारभ दड, मा' वाश्रित वृत्क नमः वाशा तिहे कछ। জনমিকু পুণ্য কুলে আমি কুলাকার, কি উপায় হবে হার! এই অভাগার!! অ জি হ'তে পাপ কাক সনুলে ছাড়িব, মা'-বাপ-সেবার ভরে দীবন দঁপিব। পিতৃ-মাতৃ-ভক্ত স্থতে করিয়া করণা,

परत जारा मत्रपठी बाक्रवी सम्मा-দেবীয়া পৰিত হয় দে নয়ে প্রশি মাথার করিয়া বহে জলের কলসি। देशात्र अधिक कल किरम (कवा भाव १ কি ভূচ্ছ পুণোর লোভে জন্য তীর্থে বারা ইহ। ভাবি মা বাপেরে দক্ষেতে লইরা. পুগুরীক নিজ বাসে আসিল ফিরিয়া। তদ্বধি পাপ কাজ সকলি ছাডিল. মাতা-পিতা-দেবা তরে জীবন দ**্পিল**। সে চরণ সেবা বিনা জনা নাছি মনে. মা' বাপেই পুভরীক দেখে নারায়তে। এইরণে কিছু দিন হ'ল অবসান, সাধনা হেরিয়া তার, ভুষ্ট ভগবান; ভকতের ভকতির পরীক্ষার তরে. আসিলা কক্নাময় পুঞ্জীক-ঘৱে ৮ ভক্তিমানু পুঞ্রীকে দেখিলা ঞী । রি, পিতা-মাতা-পদ দেবে আপনা পাসরি: হরি-আগননে গৃহ পুরিত গৌরবে— অপূর্ব্ব পর্ণায় জ্যোতি, অমৃত দৌরভে! সবিদ্দয়ে পুগুলীক ফিরি চাছে পাশে, (मिथिन जिनित इंगे, शृहमार्य छ। एम ! চাহির। চিনিল আতু সাধক বৎসলে, ভরিল মুগল আঁনি প্রেম-অঞ্চ জলে ! কিছ পিতা-মাতা-সেবা তবু নাছ, ডিল, হাত বাড়াইয়া এক ইপ্তক আনিল: বিখনাথে দিয়া দেই ইটক-আসন. পুনঃ মাতা পিতা দেবে হ'রে একমন। (ब्राथ (म टेट्डेंब भ'रब छ्वन क्मन, বহিলেন দাঁড়াইয়া ভকত-বৎসণ ! বছক্ষণে পুত্রীক সেবা সমাপিল, তবে ভগবান-পদে প্রণান করিল।

হেরি সে ভক্তি, সেবা, প্রীত হয়ে অতি, "বর লহু পুগুরীক" বলে বিশ্বপতি।
পুগুরীক বলে "প্রভা, কি চাহিব আর,
কুম্মি দাঁড়িয়ে থাক, সন্মুখে আমার।
দাদা পিন্তা-মাতা-দেবা করিতে করিতে,
ও রাঙা চরণ যেন পাই নির্থিতে।" ভকত-অধীন হরি ভক্ত-পরাণ,
"তথান্ত" বলিয়া দিলা দেই বরদান!
দিক হৈল পুগুরীক মহাসাধনায়,
অনস্ত ব্রন্ধাগুনাথে সদা দেখা পায়!
ধেখানে সে পুণ্যান্ হ'ল সিক্কাম,
এ ভারতে সে নগর "পুণ্য-ক্ষেত্র" নাম।
শ্রিমা।

নৃতন সংবাদ।

- ১। মহারাজ কুমার বিনয়ক্রফ বাহাহুরের রাজভবনে গত ২৫ এ চৈত্র বঙ্গীর
 সাহিত্য পরিষদের প্রথম সাংবংসরিক
 উৎসব ক্ষতি সমারোহে সম্পন্ন হইয়াছে।
 ক্ষনারেবল রমেশ চক্র দন্ত সভাপতির
 কার্য্য করেন। বাবুরবীক্রনাথ ঠাকুর এক
 ক্ষার বক্তা দারা সহস্র সহস্র লোককে
 মোহিত করিয়াছেন। ঈশ্বরের আদীকালে এই দভা চিরজীবিনী হইয়া বঙ্গভাষার উন্নতিসাধনে সমর্থ হউন।
- ২। ভৃতপূর্ব সামরিক সেকেটারী সার জব্ব চেসনী ৬৫ বংসর বয়সে হঠাৎ গতায়ু হইখাছেন।
- ত। কল্টোলার বাবু গোপাললাল
 শীল শিবপুর ভড়পাড়া থালের পুলের
 জন্য ৩০ হাজার টাকা দান করিয়াছেন
 এবং এই কার্য্যের জন্য প্রর্থনেন্ট হইছে
 ধন্যবাদ প্রইয়াছেন।

- ৪। চিত্রলের উমার ধার সহিত গবর্ণমেটের খোরতর যুদ্ধ বাধিয়াছে। ইতিমধ্যে ইংরাজ পক্ষে ৭০ জন, বিপক্ষ দিগের৫০০লোক হত হইয়াছে ভনা যায়।
- ৫। কাবুলের আমীরের মধ্যম পুত্র নজরল্লা র্থ: এই মাসেই বিলাত ধাত্রা করিতেছেন।
- ৬। মহারাণী বিকৃটোরিয়ার রাজত্ব কালের মধ্যে ৮০০ লোকের না কি প্রাণদণ্ড হইয়াছে। অকলছ রাজত্বের এ বড় কলছ। মহারাণী কি করিবেন, আইনের বাধ্য।
- ৭। জাপানের যে যুবক চিন রাজদৃত শিহংচকে ওলি করিয়াছিল, তাহার
 যাবজ্জীবন কারাবাস দও হইয়াছে।
- ৮। জাপানীরা তৃইবার অকৃতকার্য্য হইয়া তৃতীর বারের চেষ্টার কর্মোসা খীপ অধিকার করিয়াছেন।

বামারচনা।

বসন্তে শৈশব-স্মৃতি।

5

ম্রিনিন স্বসন্ত বিরাজিত তথা, প্রোণ প্লকিত হয় ভাবিয়া দে কথা। আমার আনন্দ ধাম, ছোট খাট পলীগ্রাম নগরের হাব ভাব বিলাস সভ্যতা;

ર

নগরের কোটা বাড়ী গাড়ী খোড়া সব।
সহরের সাজ সজ্জা অতুল বিভব:
সহরের মহ। রোল,
সহরের গওগোল,
নাহি সেধা স্বার্থপর মানবের রব।

৩

সেধানে এ কিছু নাই—সব স্বত্ত্যর।
নির্ক্ষনতা চারিদিকে বাঁধিয়াছে স্বর।
পুকুরের চারিধারে
বটপাছ শোভা করে
স্থমিষ্ট রসাল তক্র বাড়ীর ভিতর।

8

পরিকার পুকুরটী তটে বট গাছ,
সমান সমান তার জল আর মাছ।
হাত-জালী লয়ে করে
সাঁজ বেলা মাছ ধরে
সরলা কুরক-বালা অরপের ছাঁচ।

আন্তর হরিৎক্ষেত্রে মৃত্র কিরণ
ধীরে ধীরে লিশ্বকারী বহে সমীরণ।
বাড়ীর পশ্চিমে,গাছে '
শিরিব কুন্থম আছে
প্রক্ষুটিত প্রবাসেতে আকুল ক্লীবন।

ছোট ৰড় ব্যনেক ররেছে ভক্তর, বসস্ত পরশে সবে নব শোভামর। সন্ধ্যা বেলা দাঁড়াইরে চারিদিকে নির্থিয়ে জুড়াইত প্রাণ দেখি নব কিশ্সর।

বাড়ীর হুদিকে জাছে মাঠ মনোহর। অন্যদিকে করথানি ক্লমকের ছর। পূর্ব্বদিকে সরোবর চিরপূর্ণ কলেবর আনম্দে ধেলিছে সেধা কভ জলচর।

কিছু দ্রে মাঠ মাঝে ঝোপ পারা বন।
বন ফুলে আলো করে ররেছে এখন।
ভূত্যবং সমীরণ
আমাদের অনুক্রণ
কুমুর পুরতি লয়ে করিত বাজ্য।

আগে মনে থেকে থেকে সে পুরাণ কথা

মধুর সে আগ পেয়ে বলিতেল পিতা।

'স্থী' মা গো গন্ধ পা'ন ?

ভাসিছে কি যে স্থবাদ,

স্বৈভি প্ৰন আনে মনে প্ৰিব্ৰভা।

বট বৃক্ষে কোকিল কোকিলা প্রাণ খুলি, ডাকে পরস্পরে স্থমধুর তান তুলি। কোকিল বলিছে আর, কোকিলাও তাই গার, মাতার জগৎ প্রাণ স্থমোহন স্থরে।

হাত ধরাধরি করি ছই বোনে মিলে
বেড়াতাম চারিদিকে কত হেসে থেলে।
দৈশবের সরলতা
শৈশবের পবিত্রতা
শৈশবের মোথা আনন্দেতে গলে।
শ্রীমতী স্থানীলাবালা সিংহ।

মরণ ৷

শগতে এসেছি বলি

মরণ চাহিনা আর,
কৈ জানে কেমন কোথা

মরণের : শাব দ

वर्षात (रमन प्रःथ স্থও তেমনি আছে. অদয় ডুবিয়া থাক অতীত শ্বতির মাঝে। দ্য়া মায়া স্বেহ স্থ वर्थात जकि मन. মরণ কি হবে কভু এমন প্রাণের সম ? অপবা ঢাহিনা সুখ হউক দগধ হিয়া, खनग्र कतिव द्वशी পরত্বধ নির্ধিয়া। ভাসিতে দিবনা কভু হৃদয়ে পাপের ছায়া. ভরিৰ পরাণ টুকু পরার্থপরতা দিয়া। জগতে এসেছি যদি মরণ চাহিনা আর. করিব পরাণ ভরি ভগতের উপকার। দরা মারা স্বেহ স্থা ध्यान मकति गर्म, , मत्र १ हरव कि कड़ এমন প্রাণের সম্

अभर्या स्मत्री मान क्र

১৩০১ সালের বামাবোধিনীর সূচী পত্ত।

| | 116-1 | •1 11 | |
|------------------------|----------------|------------------|--------------|
| ১। বামাবোধিনী | रे उ | विश | 51 |
| বামাবোধিনীর একত্রি | १म कर | पाৎসৰ | د ۶ د |
| নববর্ষ | ••• | ••• | ၁ |
| বাবু অগমোহন দত স্থ | াপিত ব | ামারচন | ার |
| পারিতোষিক · · · | ••• | | २२৮ |
| বিগত শতবর্ধে ভারত | त्रम्भी मि | গের | |
| व्यवद्या २३०, | | | 961 |
| | | | |
| ২। নারী | চরিত | 5 1 | |
| শঙ্গ মিতা ··· | ••• | • • • | 7 |
| মাধ্ব সিংহের রাণী | • • • | | 2 4 |
| বিধি ফলেট | •• | ١٠, | 552 |
| তপশ্বিনী রাবেয়া | • • • | ••• | 68 |
| আশ্চর্য্য সভীত্ব রক্ষা | ••• | ••• | as |
| দ্ফায়া ভব্সন্ কলেট | | ••• | ₫8 |
| মহারাণী বিক্টোরিয়ার | । जीवर | नत्र कर श | কটা |
| কথা ••• | ••• | ••• | ৫৬ |
| ব্ৰহ্মবাদিনী বেশাণ্ট | ••• | ••• | 76 |
| বীরবালা | ••• | • • • | >0 |
| স্বৰ্গীয় অফিকা দেবজা | য়া | ••• | >>1 |
| কতকওলি স্থমাতা | ऽ २२,ऽ६ | -•,७১8, | 600 |
| श्वाकीर्खि | ••• | ••• | 708 |
| महायकः | ••• | ••• | 7 47 |
| গোরেতেলাইন | | ••• | >>3 |
| क्मात्री ७८४३न | ••• | . ••• | 305 |
| | | | |
| ় । নীতি | ख सः | र्भ। | |
| শিশুর শিক্ষাত্ত | | ••• | ٤, |
| বাঙ্গালঃ প্রবচন | ••• | ••• | २४ |
| (भवानम | ••• | ••• | oe. |
| ত্রাভৃদিতীয়া | ••• | ••• | 6 > |
| রামারণ ও তদত্র্গত | | ••• | ৬৭ |
| রমণী পরিতাপের সহ | TH . | ••• | 1- |
| বৰাৰ্থ প্ৰভুত্ব কি 🕈 | ••• | ••• | 2. |

| मानव हिंख | বিচার | ••• | ••• | 25. |
|------------------------|-------------|-------------------|------------------|------------|
| মাতৃভ জি e | गाष्ट्र-छे॰ | ণা স নার : | নস্তা ে | ার ী |
| মৃতি | | ••• | | |
| • | | २०२,२७ | ૯,૨૭૧ | ,222 |
| আদর্শ স্বামী | ••• | ••• | | 780 |
| খোগ-মাহাস্থা | | ••• | ••• | see |
| ক্লাব গান | | ••• | ••• | 309 |
| ভগবৎ ক্বপা | ••• | • • • | • • • | 258 |
| মেঘ | ••• | ••• | ••• | 799 |
| মৃত্যুকালীন উ | কি | ••• | • • • | २३१ |
| হিন্দুনারীর গ | हिन्दा ब | ৰ্ম ২৪ | 2,244 | .030 |
| চীন শমাটের | লার্থনা | | ••• | 298 |
| উ नामीत्मन्न वि | চম্ভা | ••• | ••• | O . 8 |
| পিতৃ ভক্তি | ••• | ••• | ••• | 083 |
| | - | | | , |
| ৪। ই ডি | চহাস ' | उ एम न | ভ্ৰমণ | 1 |
| আৰু হা অতি | धि मु९३ | ার | • • • | *e2 |
| এনুকুইমো জা | তি | ••• | ••• | +4 |
| (वीक त्रमणी | ••• | ••• | ••• | 25 |
| ভারতের সে | भिग ८व | াথায় 😲 | ••• | >8> |
| নরভূক অজা | গর সর্প | ••• | ••• | >40 |
| আমেরিকার ' | আশ্চর্য্য | পকী | ••• | \$72. |
| অ:বেকছাণ্ডা | | | কোন | - 1 A A |
| व्यामनीश अधि | পতি ' | •••. | | 264 |
| কোরিয়া প্র | দশের ম | হিলা | ••• | 070 |
| সিংহলের কভ | क्छिन | আচার ব | ग् यहोत्र | - |
| বিদেশবাসিনী | র পত্র | ••• | 981 | 990, |
| ভাপান সামা | क्षीवय | ••• | ••• | 989 |
| ক্রান্সে ভারত | রাজ কু | यात्री | ••• | - |
| | | | | |
| 019 | ্রাণ ধ | 3 উপন | ान । | |
| সতী ও শান্তি | | ३७ | e co, | 184 |
| বুত্রাস্থ্য বধ | | ••• | • >• | 94 |
| বাঙ্গীকি চরিয় | 5 | ••• | | |
| _ | | | | 7 |

বিপ্ৰে সম্পদ ... উদাসীনের চিকা

| ७। इति ७ विकाम। | প্রবোদগত বৃদ্ধিচ্ছা |
|--|--|
| वाजात्यत्म हाम भावान ३। | (गाक-मज्ञ स्र समय |
| >>•,>७४,,>१७,२•१,२८०,०८६ | ক্রির পরিণাম ১০৮ |
| श्विति का मना विख्यान १८,२०८, | 1 |
| নপ ু 👫 💮 \cdots ১৪৯ | |
| ক্রোতিকের গ্রম্ব নিরূপণ ৩০৪ | विविध उप मश्यक ७३१,७२৮ |
| প্রতিকারহস্য ৩৩৭ | The second secon |
| । স্বাস্থ্যরকা ও গৃহচিকিৎসা। | ১১। नामसिक धानकः। |
| बर्फ्ड भीषि ১৩ | २,७५,५६,१८,१८,७७,,७७, |
| निहित ७ मुडि रवान १८, ১১৪, | ₹७¢,₹¢¶,₹৮৯,₹₹১,७¢७ |
| ১৮ ৯ ,२১৫,२৪৫,२१२,৪০৩,७৪ ० | 10 1 TEN |
| শিশুপালন ১৮৩ | |
| बर्राबका वा वम्रक ०५% | 348 54,000,000 of 54,000,000 |
| المعادلة الم | ₹€8,₹₩७,७ऽ₩,७€•,०№• |
| ৮। গীত ও বাদ্য। | ১৩। বামারচনা। |
| পারিবারিক সঙ্গীত ১২,৩৪৮ | अं अभीकीम ७३ |
| पत्रमार्थन व्याणी 81,68,586 | विक्रम विद्याश ७७ |
| २ 8४,२१১ ७ ७ 8 २,०७७ | किट्टरे लालिना छाल ' ७८ |
| ৯। পদ্য। | चर्यान ७८ |
| विकास ॥॥ | र्श्वरम् ১৬ |
| ক্ষাৰ বিষমচন্দ্ৰ চটোপাধ্যাক ৪৬ | वामना ৯৬ |
| नामानी कमिननतः ৮৩ | ्रियाक अवश्रिक ३२७ |
| অভিবাসী ৮৮ | সঙ্গীত বিদ্যা স্ত্রীলোকদিগের পক্ষে |
| महादावीय कामाद्यत | व्यादनाक ১৮৫ |
| ह्वांटिश्व मूल ১১৫ | 🛩 অমিকা দেবজায়ার উদ্দেশে |
| वित्रस्भि धङ्गिक ১৩৮ | চিত্র পট১৬০ |
| 5¢8 | क्रिन |
| ৳ৠ বাতিক ১৮৮ | व्यक्तिकनीय व्यर्थना३३ |
| मा अ रहरन २०३ | বৈদ্যনাথ কুঠাখ্ৰম, কুলিকাতা অনুখোভ্ৰম |
| हर्मा कार्यत्र मृज्य डेननत्क २८० | ও দানাশ্রমের ভাগরিত্গণের প্রতি ২১৯ |
| 1 2 2 2 2 1 1 1 1 1 2 2 2 1 1 1 CH 4 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 | हिन्दूक्मातीत गार्ड्स धर्म२२১ |
| 001 | নিরাকাজনী ২৫৫ |
| | भीजबात्तर्भव २६४ |
| क्षा कियो ००१ | त्रवर्षेत्र ०১৯ निष्ठु कार्किन ०१১ |
| > । विविधा | मांच देशांक विकास करिया |
| | 14 |
| A STATE OF THE PARTY OF THE PAR | The state of the s |

বামবোধিমী পত্ৰিকা।

BAMABODHINI PATRIKA. न्याप्येवं पासनीया विस्तरीयातिसम्तः।"

ক্সাকে পালন করিবেক ও ষড়ের সহিত শিক্ষা দিবেক

ग**ः**श्रा

বৈশাশ ১৩০২—মে ১৮৯৫।

ংশ ক**র**ী ঃর্থ ভাগ।

| | _ | 4 | সংখ | T | S | | | , 4 | 117 | , | ` | ં ગ . |) F 2 C | 1 | 1 | 8 % | ভা | গ। |
|-------------|---------------|------------|------------|------------|--------------------|------------|--------|---------------------------------------|--|--|-------------------|--------------|--|--------------------------------|---------------------|-------|-------------|------|
| | | • 7 | 4 C | জ্বা ব | ষা ভ | া ভা | আ | - 1 | | | | | * | অ | পৌ | भा | ₹ | ti . |
| \parallel | বা | রস্ভ | 4 | ম ব | , , | ₹ ₩ | 4 | | नर् | ক্ষ প্ত | পৰি | 9 কা | ব | = | ब्र | নো | Ę | • |
| | | 3 | 9 2 | 8 2 | 8 7 | • > | 9 39 | | ٥ | ७ ०२ | সাল ৷ | 1 | 39 | >4 | 24 | >8 | >8 | 30 |
| | শেব | , | 9) K | , o | ર ૭ | ર ૭: | ٠. | | ₹९ | 71-2 | ¢-⊅6 | ł | | 4> | 45 | 4.5 | | |
| | ¥ | | এ ে | म अपू | न कु | জ্ব। | শে | म | : वंदऽ | 42-63 | , শক্ | 674 | অ | न | ডি | | CT | 41 |
| | আ: | C | দা ব্ | . * | ে স | া বৃ | র | | বা | মাব্দ ৬ | 6-69 | ł | 1 | 7 | র | ₹ | 4 | × |
| \parallel | শে: | و | • • | ۶, ه | • 03 | رد ا | ٠. | _ | | | | | 93 | •• | ૭ | 42 | 45" | 45 |
| | t | ٦ | ैं † म | . 4 |) 4 | 7 | শ | > | ‡ b | > 0 | २२ | ર× | 3 | 4 | ¥ | গো | 1 | 4 |
| | | র | ৰু | 4 | ৰু | র | ৰু | 2 | • | >> | e /s | ٠. | 9 | 7 | শে | 4 | 9 | 4 |
| | | শে | র | র | ৰূ | শে! | ৰ্ | 9 | ۶• | ۱۹ | ₹8 | ા | 4 | শো | 2 | Ţ | 4 | of t |
| | | ম | 4 | (Pi | 9 | ষ | 3 | 8 | 33 | , >r | ₹4 | •4 | 7 | শ | ৰু | 1 | ₹ 6 | या - |
| | | ৰু | 4 | ম | 4 | 4 | শ | ŧ | ે ર | >> | 26 | | সো | ৰ্ | 1 | • 6 | শা | 1 |
| | a | ব্ব | র | ৰু | 3 | যু | র | Ŀ | 20 | •• | ٦1 | | ম | इ | | 1 | • | ₹" |
| l_ | | 4 | সো | ব্ | গো | 4 | সে! | 9 | 38 | *2 | 46 | • | ৰু | 9 | 4 1 | | ₹* | 7 |
| | , in | বৈ | टेका | আ | শ্ৰ | 3 1 | ষ্ | | | | नेवात्र, | | 4 | i ad | পৌ | वा | ₹1 2 | H |
| 4 | 4 : 4: | ર ૭ | 45 | >> | 34 | >8 | 2 to 1 | | | | ০১এ (* গার, ১৪ | - 1 | 4:4: > | ૭) ર | 30 | >9 |) e . 1 | - |
| - | • | 40 | २६ | २७ | ۲۶ | >> : | 29 | | | | শেষ । | - 1 | গ: > | 1 21 | 59 | >9 | 57 1 | 4 |
| | 4: | ~ | 1 | • | • ; | : دور |) w | | | দানবাঢ টেডা | র আনু ভি | | कृ:এ: २४ | 41 | 41 - | 24: 1 | 4.4 | |
| • | |) ર | >> | • | 1 | 8 | | | | | । या स्त्रा | - 1 | • • • • | , | | | 1 | |
| | . 4- | | | | ो, প्:- , ब:-१ | | | •ज्ञा + > •ज्ञा • टे •ावा | সোম লাইজ বৃংশো ব শা ড়ণ্ডজ | ইত্যাদি মৈক্ল তি ইত্য নি. বৈ ১,৮,১ | । , ২য়া | व्य, ज, | পরীম বার তি উ। ৮ই একাদনী ২০ একাম | ৰি কি বৈ শ ি । ১২ | नेगात्र २० इटियम | acar | * | |
| _ | | 20.0 | | | - | * | 1 6 | गाव | 4, 50 | JAN I | | | Ħ | 8 | | | | |

নব বর্ষ।

প্রকৃতির নব ভাবের আবেশে, नर्वे वर्ष भूगः जातित्व वं तित्न, নবীন তপন স্থনীল গগনে, शृद्रिल क्रग९ नवीन कीवतन, নব পল্লবিত পাদপ সকল, নৰ রাগে গায় বিহঙ্গন দল, नवीन शिल्ला (ल वरह ममीत्र) নবোদ্যমে মন্ত জীব অগণন. জীবন শকতি সৌল্ধা চেতনা— বাঁহ'তে হতেছে সকলি কল্লনা, নিতা সত্য দেব চির-বর্তমান. দেখ সর্বাভুতে তাঁর অধিধান, ছাড়ি ভূতভাবী ছাড়ি কর্মভোগ, বর্তমানে তাঁরে কর স্থথে ভোগ। গত যে জীবন ফিরিবার নয়, অনম্ভ সাগরে হইয়াছে লয়, তার হুঃধ হুখ তার কালা হাসি, ফুরায়ে থিয়াছে কাল স্রোতে ভাগি। জাগায়ে দে স্ব স্মৃতিপটে আর, বুথা কালক্ষয়ে হবে কি স্থদার গ গতস্য শোচনা, বিফল ভাবনা; বর্ত্তমানে কর সাধ্যের সাধনা; **জাছে** দেহ মন, কর প্রাণপণ— **"মন্ত্রে**র সাধন শরীর পাতন. **অশ্রুপাতে বীজ যে** করে বপ্ন, সহাস্যে সে শস্য করে আহরণ।" (एव-कुण) महा माध्य महत्र, বর্তমানে ভার্মার পরিচয়।

ভবিষ্যে নির্ভর অদৃষ্টে দেহাই শিখ না এ নীতি কাপুরুষ ঠাই। আজি যা হলে৷ না, কালি কি তা হবেং কে বলিতে পারে, কালি কোখা রবে? ভবিষ্যৎ সদা হয় বর্ত্তমান. বর্ত্তমান করে অতীতে প্রস্থান. কত ভবিষ্যৎ কুরায়ে গিয়াছে, ভবিষ্যে বিশ্বাস করিতে কি আছে 🕈 আজিকার কাজ আজি শেষ কর, কালিকার জন্য ভরসা ঈশ্বর। বর্ত্তমান তব নিজ্ঞ সময়. ভাবনা ভয়েতে করে। না বিলয়। যা হবার হবে, থাকিতে জীবন স্বকার্য সাধনে সুপ প্রোণমন। পলকে পলকে জীবনের ক্ষয়, নীরব প্রবাহে চলেছে সময়, দেখিতে দেখিতে নৰ বৰ্ষবরে দেখিবে ভূবিল কালের সাগরে। रेष्ठे नाग लाख रुख माठ्यन, বসিয়া স্বস্থানে স্বকার্য্য সাধন. পলকে পলকে পুণোর সঞ্চয়, পলকে পলকে কর পাপ জয়. ভূতের ভাবনা ভবিষ্য কল্পনা, ছাড়ি কর নিত্য কঠোর সাধনা, চির-বর্ত্তমান দেবতা সহায়, অসাধ্যও সাধ্য ভাঁহার কুপায়। নিতা নথোদ্যমে করি ভাঁতে ভর, ভীবনের পথে হও অগ্রসর।

সাম্যিক প্রসঙ্গ।

ভিষ্ণত্ম স্থান — পৃথিবীর মধ্যে মাসোয়া নামক ছান উঞ্জন। মক্ত্মি হইতে উষ্ণবায়ু বহিতে থাকিলে এগানে ভাপমান হয়ের পারদ ১৬০ ডিগ্রী উঠিয়া থাকে।

বন্ধবালার বিলাত গমন—
হায়ন্ত্রাবাদের নিজ্ঞান ডাজার অংথারনাপ চট্টোপাধ্যাবের জ্যেষ্ঠা কন্যাকে
বার্ষিক ৩০০ পাউগু হুন্তি দিয়াছেন।
কুমারী ঐ বৃত্তি লইয়া বিলাতে গিয়া
শিক্ষালাভ করিবেন।

প্রবৈশিকা পরীক্ষা—এ বংসর কলিকাতা বিশ্ববিদ্যালয়ের প্রবেশিকা পরীকায় শর্কভিদ্ধ ২৭১৩টা ছাত্র উত্তীর্ণ হইয়াছে, তনাবো ৫৪১ প্রথান, ১২০৮ দ্বিতীয়, এবং ১৯৪ জন তৃতীয় বিভাগস্থ। ए मकल वालिका भवीरकाछौनी इहे-য়াছে, ভাহাদের বিশেষ বিবরণ এই:-বালিকার নাম বিভাগ স্থল ক্ষেহলতা মজুমদার ১ন বেশ্বন লামাটি নিয়ার মাটিন এল সীহার্ট ঐ লিলিয়ান পালিত শোরেটো 3 ডি সিলভিয়া 3 ঝোরাব কেটা 3 আর্চেন এলিস 3 ğ কামেল কেটা Þ কিসার জেন বিএটি স মেরী স্মিপ 3 নিস ওরায়েন্স হেনবিয়েটা ওয়াকি 3 কলিকাতা গালস আলিস ৰাইট Ģ, প্রাইবেট 3 Š সি এম করির। আরাটুন লিলী লোরেটে! ২য় Ž সিনক্লেয়ার ফোরী

| मद्राकिनी एएव | ১ম | व्यारेडे छर्छ |
|------------------------------|----------|-----------------------------|
| ডি সণ্টি | 3 | ডবটন |
| डि माना सावकारेन | 3 | 🌤 লিকাত। গাল স্ |
| মূপ্রভা গুপ্ত | ২ গ্ল | বেপুন |
| ডি, চ ক্র | 3 | 3 |
| গাল্টন রোজিনা | 3 | 3 |
| डि मा ज । विनी | Ž, | রেজুণ কন্বেণ্ট |
| কে, টি, মিৰ্ম্বা | 3 | पार्कि विः (म ें) पन |
| সরোজিনী ঘোষ | 3 | ব্রাহ্মবালিকা |
| পেনেন্স এক | ৩ছ | নেপডিষ্ট রেজুণ |
| সৌদামিনী বন্দো। | B | डाक रालिका |
| হেমকুহ্ম ৩৪ গু | 4 | প্রাইবেট |
| उग्राह्नी जार्त्वनिग्रा | 4 | লেডী ডকারিণ |

মান্দ্রাজ বিশ্ববিদ্যালয়—এবং
গর এই বিশ্ববিদ্যালয়ের বাধিক উৎসবে

কয়েকটা দেশীয় মহিলা উপাধি প্রাপ্ত

হন, তদ্দন্দে প্রায় ৪০টা হিন্দুম্হিলা

উপস্থিত হইয়াছিলেন। মাল্রান্দে ইহা

নুত্র ঘটনা।

निष्ध विवाद-वन्नामान निष् বিবাহ কুপ্রথা কতদূর প্রবল রহিয়াছে, ভাহা গত (দেশস্) কোকসংখ্যা স্থ্যা তালিকা (मिथिटन है সপ্রমাণ ৪বৎসরের ন্যানবয়ক্ষ বিবাহিত বালিকার সংখ্যা ৩০,৩৩২, বালকের সংখ্যা ৬১৮০ এবং ৪ বৎসরের ন্যানবয়কা বিধ্বার সংখ্যা ৬৭৮০টা। ইহাতে বোধ প্রায় ২৪ হাজার ত্র্মপোষ্য মেয়ে বয় ্যক্তিদিগের সহিত বিবাহিতা, তম্বধ্যে বুদ্ধও থাকিতে পারে। ১ বৎসমের ন্যুনবয়স্ক বালিকা ৩,৭৮,৭৫৪ ব্রিবাহিতা **এवः ১২.১**৯৪ विश्वा। श्वामान छेदमय-विषशिष्यी

ন্ত ১০১ বৎসর হইল মানবলীলা
নংবরণ করেন। এ বংসর ভারতবিজ্ঞান
নভাগৃহে ভাঁহার উৎসব হইয়া গিয়াছে।
কন্যাপ্রম—জললরে আর্ব্যালিকালিগের,বাসের জন্য একটা বোর্ডিং প্রতিত হইয়াছে ভনিয়া আমরা আহ্লাদিত
হইলাম। আর্য্যসমাজের সভ্যগণ এই
ভারতান করিয়াছেন ইহা আরও আনদের কথা।

कन्ता विकश-हीतन कन्ता

বিক্রের করিয়া থাকে। মেরের দর করেন বাড়িতেছে। ১৫ বৎসর পূর্বে ৫০ টাকা ছিল, এক্ষণে ৫০০।১০০০ টাকা হইরাছে। বঙ্গদেশে ঘরের টাকা দিরাও মেয়ে বিকার না। বরের দর শুন্য স্থানে ৫০০০ টাকা হইরাছে।

নি-মেয়ে দেশ—ক্ষের অধীনত্ত মেমাচীন নগরে কেবল পুরুষ বাস করে, একটীও খ্রীলোক নাই।

गांजृ-श्रमश्र।

۵

সন্ন্যাদী ঠাকুর দেবালয় প্রতিষ্ঠা अतिग्राट्सन, रमधारन मीन शीन व्यवाध **পাতুরদিগকে সেবা করা হয়। ভ**নিলাম ৰে সংসারবন্ধন-শৃত্যা, সবলা, স্বভ্কায়া সাৰী বদি তাঁহার সহকারিণী হইতে চাৰে, ভাহা হইলে ভিনি তাহাকে দে প্রীয়ালমের সেবিকা করিতে পারেন। আমি একজন "সংসারবদ্ধন-শূলা, करणा प्रकाश" वम्भी।* **मन्त्रामी** বাসুদ এযুক্ত বোগনারায়ণ বাবাজী ক্ষাশয়ের কাছে অনেক দিন হইতে পরি-টিভা;ভধু পরিচিভা নহি, ভাঁহার 🗣 ে আমি কন্যার ন্যায় স্বেহাম্পদা। ভাই আমি তাঁহার কাছে গিরা বলিলাম ভীকুরণ আমাকে আপনার সেবালয়ে

• "बामि" जरूना चांबारवाधिनी है 'बामि" नरह ।

রাখুন; আমার যথাসাধ্য আমি সেবা-লয়ের কার্য্য করিব।"

প্রতিভা-বিক্ষারিত, বিশ্বস্ত ও পবিত্র দৃষ্টিপূর্ণ চক্ষ্ হুইটা ভূলিয়া সন্ন্যাসী আনার মুথের প্রতি চাহিলেন, তার পরে বলিলন "এখন সেবালয়ে থাকিয়া তোমার কাজ নাই মা।"

লজ্জায় আমার মুখ শুকাইয়া গেল। আমার কপোল রাঙা হইগা উঠিল। শেষে আপনাকে সামলাইয়া মবিনয়ে বলিলাম "আমার জপরাধ কি ঠাকুর ?"

সেংার্জস্বরে সন্নাদী বলিলেন "ভোমার অপরাধ নহে মা, তুমি শিশুর মত পরিত্রা, বীরের মত সাহসিনী।

"কিন্ত সেবালয়ের সেবিকা হইতে হইলে পবিত্রতা, সাহদ দত্তে জারও একটা জিনিস চাই; বদি দে জিনিস ভগবান তোমাকে কোনও দিন দেন, ভবে সেক্টিনে আমি ভোমাকে সাধির। ডাকিরা আনিব। এখন ভূমি বরে যাও মা।"

এ প্রহেশিকার অর্থ ব্কিতে পার।

আমার সাধ্য নহে। আমি অতীব কোতৃ
হলাকান্তা হইয়াছিলাম, তাই আবার

জিজ্ঞাসা করিলাম "সে জিনিস ট। কি,
ঠাকুর ?"

ঠাকুর হাসিয়া বলিলেন " যখন ভগবানের ইচ্ছা ইহবে, তখনই জানিতে পারিবে।"

ইহার পরে ঠাকুর মহাশয়ের সহিত আর বাদারবাদ নিজ্ঞল। আমি ভক্তি-ভাবে গলায় কাপড় দিয়া তাঁহাকে প্রশাম করিলাম; তাহার পদধূলি গ্রহণ করিয়া বাড়ীর দিক্তে ফিরিলাম।

আমি দত্য কথা থলিব; আমার অভিমানের মাত্রা একটু বেশী। তাহাতে ঠাকুর মহাশয় আমার পিতৃতুল্য ভজিভাজন। স্থতরাং আমার মনে মনে কেমন একটু রাগ হইল। স্থানে ভালামা, অভিমান দেখানে তে: আমেই। আমি তাহার কাছে কিছু দিন গাতা, ভাগবত, বিমূপুরাণ প্রভৃতি ভলিতে ধাইব না, স্থির করিলাম।

আমার খুম ভাঙিরাছে মাত্র—এখন উষার প্রথম হাসি জগথ-বঞ্চ আলে। করিতেছে, নব-জাগরিত বিহঙ্গ মধুর কাকলী ছড়াইতেছে, নবকুট চ্যুত মুকুলের সৌরত বহিয়া স্থীরণ পৃথিবীকে বিশ্ব করিতেছে; এবন সমরে আবার পর্ককৃতিবের চরারে নবজাত শিশুর রোক্ত্র
করিন ক্রত হইল। আমার প্রাণ ক্রেক্ত্র
চম্কিয়া উঠিল—আজি বারো বছর
আমি সদেশ ছাড়িয়া তীর্থবাসিনী হইয়াছি, বাছিয়া বাছিয়া নির্ক্তন স্থানে
কৃত্রীর বাঁধিয়াছি, আমার বাড়ীর কাছে
চই এক বর নীচ জাতি যাহায়া আছে,
তাহাদের বরে শিশুও নাই, সহসা জন্ত্রিবার কোনও সন্তাবনা নাই, তবে এত
ভোরে এখানে কচি ছেলের কারা তানিলাম কেন ? যাহাহউক ভগবানের নাম
করিতে করিতে চক্তু মুছিলাম; তার পরে
ত্রপাধ্যা ছাড়িয়া, উৎস্ক চিত্তে হরের
দরজা থুলিলাম।

मत्रका थृनिया स्मिथ, शालाश **क्रान**्य আৰ ফুটন্ত কুঁড়িটির মত একটা শিশু এক, টুকরা কাঁথার উপরে ভইয়া কাঁদিভেছে বিশ্বিতা হইর। যতদূর দৃষ্টি চলে, ওতাভুর চারি পাশে চাহিয়া দেখিলান, কোথাও मञ्चा সমাগম । पशिष्ठ शाहेलाम माः কেবল জামার কৃটার বেটন করিয়া সেই সব তরু লভা দাঁড়াইয়া র**হিয়াছে** ; **উপরে** नीन चाकाग-निस्नक मीन স্তুতিত হইয়া রহিয়াছে; আর ঊবার শিদিরমাত ভূতলের উপরে, বিশ্বসাতের ককণা-ভিখাতী হইয়াই বেন **এই অসহায়** শিশু করুণকঠে কারা ধরিয়াছে। আঃ সর্বনাশ। একি १ এউটুকু ছেলে এখারে রাধিয়া গেল কে ? আবার আদি ভারি পাশে শিশুর মা'কে বঁ জিতে লাগিলায

কিন্তু তাহার "মা" কেছ মিলিল
না। "আমারই" বলিয়া সেই অনাথ,
অশরণের প্রতি কেহই দাবী করিতে
আনিল না। এখন আমি করি কি?
পিকৃত যত্নের অভাবে শিশুটী এখনই
আরা যাইবে—ভগবানের কাছে আমারই
অবাব-দিহি করিতে হইবে। ভাবিলাম,
ঠাকুর মহাশয়ের সেবালয়ে দিয়া আসি,
ভিনি অবশ্য একটা সহুপায় করিবেন।
আমার সাত জল্মে বোধ হয় সন্তান হয়
নাই—পরের ছেলে মানুষ করিতে
আমার ক্ষমত। নাই।

ছেলেটাকে নিয়া সেবালয়ে যাইব, ভাবিয়া তাহাকে কোনে তুলিতে গেলাম।
সে কাঁদিয়া কাঁদিয়া প্রান্ত হইয়াছিল বিলয়া মুমিয়া পড়িয়াছিল,—এখন আবার ঠাতা কন্কনে হাত গায়ে লাগিয়াই, কাঁডা রাঙা ঠোঁট তুথানি ফুলাইয়া কাঁদিতে লাগিল! মরি! মরি! কি ফুলার, মুখ! কি মনোহর ছবি! জগতের অপবিত্র বাতাস গায়ে লাগে নাই বনিয়া শিত্রা বুঝি এতই ফুলর!

করিয়া আমার কি হইল কে জানে ?

আমার প্রাণের প্রাণে যেন কি এক
বৈষ্ণাতিক ছুটিল ! আমি এত দিন স্নেহ

ক্রমভার সহিত সম্পর্কে বফিতা ছিলাম;
কন্ত নদীর উপরে যেমন বালির
আমাত প্রিক্তা আনক, আমার হৃদয়েও
ক্রেমভার উপরে সেই রকম
বিরক্তি ক্রমভার জনতি পড়িয়াছিল,
সাছি খুলিবার অধিকারিলী হইলাম।

শালি বেন সেই আবরণ সরিয়া সিয়া
সহস্র মুথে দিগন্তপ্লাৰী স্রোত ছুটিল !
আমার কপালে যাহাই হউক, এ শিশুকে
আমি কথনই পরের হাতে দিতে পরিব
না ; আমার মনে হইতেছে, পরে ইহার
মূল্য বুঝিবে না ! এই স্বর্গীয় ফুল
অনাদরে অবংহলায় শুকাইয়া ঘাইবে,
প্রাণে তাহা কথনই সহিবে না ! ভগবান্
যথন ইহাকে আমার হাতে দিয়াছেন,
তথন যথাসাধ্য আমিই ইহাকে মানুষ
করিব।

আমার গত জীবনের ইতিহাস এই-খানে একটু বলা আবশ্যক। আমার মাজা পিতার কথা আমার মনে পড়ে না। ত্তনিয়াছি আমার বয়দ তিন বৎদর পূর্ণ **শাহইতেই তাঁরা ইহ জগ**ং ছাড়িয়া-ছেন। তদবধি আমি পরের হাতে গঠিত হইয়াছি; তাও পাঁচ জনের "কর্তুব্য জ্ঞান" আমাকে রক্ষা করিয়াছে—কোনও ব্যক্তি অলোকিক স্নেহপুর্ণ হাদয় লইয়া জামায় পালন করে নাই। অনাথ নিরাশ্র স্দয়ও "জগতের অব-লম্বন" বলিয়া কোন নির্দিষ্ট ব্যক্তিকে মুড়াইয়াধরে নাই। ভার পরে আনট বছর বয়সে, আমার জেঠা খুড়াদিগের ইচ্ছান্সারে বিবাহ-বন্ধনে আবন্ধা হইতে হইমাছিল, কিন্তু আনার "জোর কপান" বলিয়া সে বাধনও বেশি দিন টিকৈ নাই--দশবছর বয়স না হইতেই আমি निंथीत मिं इत मू ছिवात अवर हु भी कत

বিধবা হইতে স্ত্রীলোকে ভরে মরিরা বার কেন, ভাছা ভগবানই জানেন, আমিতো খণ্ডরখাণ্ড্রীইন, বাতা ও ননন্দাদিগের নিষ্ঠ্র শাসনপূর্ণ খণ্ডর বাড়ীরূপ "কারাগারে" আর হাইতে হইবে না ভাবিয়া বেশ একটু পরিভৃত্তি লাভ করিলাম।

किक (म "मुध" अ आमात अमृष्टे ভোগ হইল মা। সামীর কাছে বঙ্গ-মহিলারা নাকি স্নেহ, প্রীতি, স্মানর, সম্মান, বত্ব, মনুষাত্ব ইত্যাদি ইত্যাদি পাইয়া থাকে; কিন্তু দে সব পাইবার আগে তো তাঁহাতে আমাতে" স্বৰ্গ মৰ্ত্তা ব্যবধান" হইয়া গেল। পাইবার মধ্যে পাইলাম কেবল তুই জিনিস; এক ব্ৰহ্মচৰ্যা, আর স্বামীর ত্যাজ্য বিষয় সম্পত্তি। ব্রশ্ব-চর্য্যের উপরে কেহ অবশ্য "সভ্ষা দৃষ্টি করিল না। কিন্ত বিষয় সম্পত্তির উপরে ষ্মনেক পিপাদিত চক্ষু পড়িল। অধিক কি, নিরীহ মেন্ডকে দক্ষ্থে পাইলে, क्रुंबिङ भार्कनिम्तात (य व्यवहा इस, আমাকে বিষয়সম্পত্তির অধিকাহিণী হইতে দেখিয়া আমার পিচকুলের ও পত্তিকুলের আত্মীয়দিগেরও সেই রক্ম অবস্থা হইল ! মোকৰ্দ্মা মামূলা প্ৰভৃতি উপস্থিত হইল। শেষে পতিকুলের আত্মীয়ের। প্রবল পক্ষ বলিয়া ভাঁহাদেরই জয় হইল। আমাকে তাহাদের আখ্রুই গ্রহণ করিতে হইল।

সে গৃহে গিয়া, স্নেহ মমতা ভিন্ন আর সবই আমি পাইলাম। জামিও ভাল বাসা ভিন্ন আর সবই ভারাদিশকে
দিলাম। এই রকমে প্রায় পচিশ বৎসর আমি
কাটিয়া গেল। এই পচিশ বৎসর আমি
সংসারাক্রমে বাস করিলাম সত্য, কিছ
পদ্ধপত্রের বারিবিল্বৎ সম্পূর্ণরূপেই
আমি নির্লিপ্তা। কাহারও তৃঃথে আমার
হলের ভাল করিয়া ভিজে নাই; কাহারও
স্থধ আমি আমার নিজের স্থধ বলিরা
গ্রহণ করিতে পারি নাই; ভাই আমি
এক স্বর লোকের সহিত বাস করিরাও
প্রক্রতপক্ষে একা ছিলাম।

কিন্তু এ রক্ম খরকরা আমার ভাল লাগিত না। কাহার জন্য সানানারপ ত্যাগ স্বীকার করিতেও আমার বছ বিরক্তি জন্মিত। মানুষে নিজে কষ্ট পাইয়া পরকে সুখী করিতে চাছে 📭 করিয়া ? অথচ এই সকল প্রীতিশৃত্ত বন্ধদিগের জন্য আমাকে থাটিয়া বেডা-ইতে হইবে! তাই সকল গোলমাল হইতে অব্যাহতি পাইবার জন্য আমি তীর্থবাদিনী হইতে প্রস্তুত হইলামনা জ্ঞাতি বন্ধদিগকে বিষয় আশায় লিথিয়া দিয়া আদিলাম, স্থতরাৎ তাঁহারা কেহই আমার সংবার ত্যাগের জন্য তঃথিত इहेटन ना । दिवय गुल्लेखि छोडाएन है রহিল: তবে আমার জীবন বতদিন থাকিবে, ততদিন ভাহারা আমার ভরশ-পোষণের জন্য, আ্মাকে মাসে মানে किছू किছू है।का शाठीहेश मिर्दन, धरे मार्च्य (नथा পড़ इहेन। होका क्फिन विवत्त्र व्यवादा विधवादक (व्याचीत्रमित्मत्र)

কাঁকি দিবার প্রথাটা এ দেশে গুতরাষ্ট্রের সময় হইতে প্রচলিত থাকিলেও আত্মী-রেরা আজিও আমাকে ফাঁকি দেন নাই। তাঁহারা সত্য সত্যই আমাকে মনে করিয়া মাসে মাসে "কিছু কিছু" দিয়া থাকেন, ভাষাতেই আমার জীবিকা নির্বাহ হইয়া থাকে।

"জীবিকা নির্কাহ" হয় সত্য, সে
আমার নিজেরই। আর এক জনের
ভরপপোষণ হয়, এমন কিছুই আমার
সংস্থান নাই—তা না থাকুক, আমি নিজে
না হয় একটু ক্লেশ পাইব; তা এ থোকাকে
ছাজিতে পারিব না; নিজে আধপেটা
থাইরাও যদি ইহাকে বাঁচাইতে পারি,
ভাহার অপেকা স্থথ আমার আর কিনে ?
আমার আপের জদরে, আমার অজ্ঞাতে,
এই অথম পরার্থপরতা জাগিল।

্ৰামি ছেলে "মাহব" করিতে প্রবৃত্ত হইলান। টিপুর মা গয়লানী আগাম টাক। পাইয়া, তাহার কপিলা গাভীর ৰাটি হুধ দিতে প্ৰতিশ্ৰুত হইল। আমি কৰে ৰল মিশাইয়া, পলতে থোকাকে থাওয়াইতে লাগিলাম। আমার ব্যবহারের জন্য ছেঁড়া কাপড় রাথিয়া, ভাল কাপড় গুলি দিয়া থোকার জন্য क्रामा, काँथा, वानिम, (लभ, (ठांचक, ্**প্রভতি দেলাই** করিয়া ফেলিয়াছি ! ন্নাত্তিতে খোকা বুমাইলে আমি সারা রাত্তি আলৈ৷ জালিরা বসিয়া থাকি; শাবাদ তো পর্তীর, পাছে স্থাবি ঘ্যা-ক্টুয়া পড়িলে আৰার "साञ्यित" (क

বিছা, পিপীড়া **প্রভৃতি** বিবা**ক্ত জী**বে কাম্ডায় !

मित्नत भन्न, मिन यात्र। এমনি করিয়া যথন ছয় সাস কাটিল, তথন ৰোকা বাঁচিবে বলিয়া আমার ভরসা হইল। সত্য কথা বলিতে কি, আমার জীবন এতদিন যেন লক্ষ্যভ্ৰষ্ট ছিল, এখন এই জড় চেতনের মধাবতী ছেলেকে পাইয়াই লক্ষ্য প্রাপ্ত হইল। মামু ধের **ে**শনের थाकिल, भ खान किन्नुत्र আমি এত দিন কি করিয়া বাচিয়া ছিলাম? আজি থোকাকে পাইয়াই षानि गृह शाहेनाम, मःमात शाहेनाम, সমাজ পাইলাম; মনে মনে ভগবানের সত্য মৃত্তি অনুভব করিতেও পারিলাম। থোকার মঙ্গলের জন্য ভগবান্কে ডাকিতে ডাকিতে—বলিলে লোকে ভাবিবে কি ?—আমার মনে হয় আমি ধেন ক্রমশঃ ভগবানের দিকে উঠিতে পারিতেছি ৷ খোকা আমার স্ক্রিধন ৷

ক্রমে আমার সর্কাস্থন হাঁটিতে
শিবিল; তারপরে তার মুখে আধ আধ
কথা ফুটিল। এ জগতে মানুষের যে সব
আকাজ্জিত জিনিস—ধন, মান, খ্যাতি,
প্রতিপত্তি সবই একদিকে, আর আমার
থোকার অমৃত বিজ্ঞভিত, আধ আধ
কথায় "মা" "মা" বলিয়া ডাকা, আর
একদিকে! আগে বাহা বলিলাম, দে
সবই মর জগতের জিনিস; সে সব
জিনিস ভোগ করিতে গিয়া ছই দিনেই

মন পরিতৃপ্ত হই লা বার; তথন আবার ক্থের জন্য জন্য কোন নৃত্তন বন্দোবন্ত করিতে হয়! কিন্তু শেষে যাহা বলিলাম, তাহাই স্বর্গের জমৃত! তাহার ভোগ আছে, পরিতৃপ্তি নাই; আনন্দ আছে, সীমা নাই! থোক। আধ আধ কথার আমার প্রাণে জমৃত ঢালিয়া দিল; আমার সঙ্গে সেকত কথাই কহিল—পাথীকে বলিল "বাতী," ঘটিকে বলিল "ততী," গরুকে বলিল "গলু," প্রতিবাসিনী স্বর্ণকে বলিল "দোনো"। স্তুতরাং স্থানের উচ্চু সিত আননেদ ভাহার সোনা মুথে চুমো থাইয়া খাইয়া অগ্নম অন্তির হইয়া পভিলাম।

এখন খোকার একটা নাম বাধ্য দরকার। আমি বাবাজীর কাছে বিম্-পুরাণপড়িতে শিথিয়া ছিলাম—থোকাকে পাইয়া লেখা পড়া করিবার প্রপ্তিবা অবকাশ বড় ছিল না, তথাপি আজি একবার "বিষ্ণুপুরান" মনে পড়িল। বিষ্ণুপুরাণেক স্থনীতি রাণী বিজন বনে

পাতার কুটারে একটা মোটা নাটা নদীর পুতৃলের মত, রাঙা টুকটুকে খোকা লইয়া বাস করিতেন—সেই কথা আমার বাঁ করিয়া মনে পড়িল। তখন খোকার নাম রাধিতে আর বিলম্ব ছইল না-আমার অনুলা ধনের নাম রাবিলাম "গ্রুব"। নামকরণের দিনে আমি শত সহস্রবার খোকাকে "গ্রুব" বলিয়া ভাকি-লাম। খোকাও শত সহল্রবার আমার ডাকে ভাক ক্রনিল। শেবে ভাছাত্ৰ বুকে চাপিয়া ধরিয়া বলিলাম "সে এব তার মা'কে যেমন হরি এনে দিবেছিল, তুই ধ্রুব তোর মা'কে তেমনি হরি এনে দিতে পার্বি?" জব তাহার নীলোও-পলের মত চকু তুইটা আমার মুখের উপরে রাধিরা অনায়াসে, অভ্যস্তের মত সহতে विन "हिन मिरम शाख्रवा।" अव एका কচি ছেলে, প্রতিধ্বনির মত কথা কর্মঃ কিন্তু আমার বুক চমকিল কেন ? চলে এक विमु अक्ष आमिनहेवा किनं १ (ক্ৰমণঃ)

আর্শ্বেণীয় রমণীর বীরত্ব।

আর্থেনীয়া বর্ত্তমান ত্রক রাজ্যের অন্তর্গত একটা প্রদেশ। এ স্থানের অধিবাসিগণ পৃষ্টধর্মাবলগী ও রোমান ক্যাথালিক সম্প্রদারভূক্ত । এই প্রান্ধান উপর এক নৃত্ন কর নির্দারিত হইলে, তাহা আদার করিবার জন্য রাজকর্ম চারিগপ আর্থেনীরাতে গ্রন করেন।

করভারে-প্রপীড়িত আর্মেণীরপণ আর অতিরিক্ত কর দিতে অশক্ত বলিরা আপত্তি প্রকাশ করে। স্থলতান-কর্ম-চারিগণ তাহাদের আপত্তি প্রাক্ত করেন না, তাহারা বলপূর্ক্তকর আলামকরিক্তে আরক্ত করেন। এই উপলক্ষে রাজনৈত্য-গণের সহিত প্রকাদিশের কুন্ত কুন্ত মুক্ত প্রকাদিশের ছইরাছে। ভূর্কিসৈন্য কর্ত্ব আর্থেন,
নীরপণ ভরন্ধর উৎপীড়িত হইরাছে।
এই জত্যাচারের দংবাদ ইউরোপের
প্রবল শক্তিদম্পন্ন পৃষ্টান রাজদিগের
ক্রতিগোচর হইলে, ভাহার। এক কনিলন ভাপন করিয়া দংবাদপত্রে লিথিত
জত্যাচারকাহিনীর দত্যাসভ্য নির্পন্ন
করিতে ইচ্চুক হইয়াছেন। ইংলভের
মহামতি গ্লাডগ্রোন সাহেবও এজন্য
ভার্মেণীয়াতে আগমন করিয়াছিলেন।

এই সমবেত অন্থসন্ধানে প্রকাশ পাই-তেছে যে, যথার্থই আর্মেণীয়ার খৃষ্টান প্রজাদিগের প্রতি তুর্কি কর্মচারিগণ অমান্থবিক অত্যাচার করিতেছে। তাহার। ভয়ন্তর বন্ত্রণা প্রদান করিয়া বহু নর-শারীকে হত্যা করিয়াছে। সে সকল রোমইর্থণ অত্যাচারকাহিনী পাঠ করিলে মন্ত উফ হইয়াউঠে। কিন্তু অপর দিকে আর্মেণী পুরুষ ও রমণীগণ চিতোর যোক্সণের ন্যায় সন্মান ও আত্মরকার জন্য লোকাতীত বীরত্ব প্রদর্শন ক্রিমান্ত্রন। তাই প্রজা ও রাজা, তুর্বল ও স্বল, শিক্ষিত সেনা এবং অশিক্ষিত অন্তর্গন পল্লীযাদিগণের মধ্যে যে ভয়ানক

ু জুর্কিগণ আর্মেণীয়দিপের আওক নামক স্থান অবরোধ করিরাছে। বছ পুরুষ প্রক্রমণী প্রাণভয়ে নগর পরিত্যাগ ক্ষিরাছে। গ্রেগো নামুক এক জম সাহসী রীরপুরুষ প্রাণপণে নগর রক্ষা

সংঘর্ব হইয়াছিল, তাহার একটা উপা-

भाग निथिष स्टेटिए।

করিতেছিলেন। তিনি প্রস্তর ও তরবারীর সাহাধ্যে ক্রমাগত ছর দিবন নগরটী
রক্ষা করেন। কিন্তু প্রবল ভুর্কিলৈন্যদিগের অস্তাঘাতে আর্মেণীরাগণ ক্রমে
নিঃশেষিত ছইতে লাগিল। পুরুষদিগকে
মৃত্যুমুথে পতিত হইতে দেথিয়া অবশেষে
রমণীগণ অসমসাহসে যুদ্ধে প্রবৃত্ত
হইলেন।

গ্ৰেগা গত ২৩শে আগন্ত খাদ্য खेवानि, युष्टाशकत्व अदः देमना ७ अञ्च শত্র সংগ্রহ করিবার জন্য স্থানান্তরে গমন করেন। তৎপর দিবস (২০শে আগ্রন্ত) প্রাতঃকালে রমণীগণ প্রবল উৎসাহে পুনরায় যুদ্ধ আরম্ভ করিলেন। সমস্ত দিবারাত্রি ভয়ানক যুদ্ধে অতিবাহিত হইল। অনাহার ও অনিদ্রাজনিত ক্লেখ বিশ্বত হইয়া কোমলাঙ্গী রমণীগণ ভুদ্ধ ভূর্কিদৈন্যদিগের সহিত প্রাণপ্রে যুদ্ধ করিতে লাগিলেন। / কিন্তু স্থশিকিত মুদলমান দৈন্যের গতিরোধ করা তাহা-দের পক্ষে অসন্তব হইয়া উঠিল। মুস্প-মান সৈন্যগণ রমণীদিগের **চতৰ্দিক** বেষ্টন করিয়া অন্ত নিক্ষেপ ক্রিতে লাগিল। তথ্য রুম্গীগণের কি ভ্যানক व्यवसा! महानवजी नाबीशन सीव सीव **শি** अत्र जानि गरक श्रेष्ठ वेसन कतिया শত্রুপক্ষের গতি রোধ করিবার জন্য প্রাণপণে চেষ্টা করিতেছে। বয়ক্ষ পুত্র কন্যাগণ মাতাদিগের সম্বাধে রুধিরাপ্ল ত দেহে দণ্ডায়মান! যুদ্ধের ভীষণ পরি-ণাম চিন্ত। করিয়া রমণীগণ প্রান্থান করি-

**

वाव भःकद्य कविन । किन्त हारिकिटक খক্তগণ প্রাচীরবৎ দণ্ডার্মান পাকার ভাহারা কোন্ত ক্রমেই প্লায়ন ক্রিভে সমর্থ হটল না। এই ঘোর সক্ষটকালে শ্রেপোর পত্নী সোহাথী এক পর্মতো-পরি আরোহণ করিয়া উচ্চেঃসরে বলিয়া "ভগিনীগণ। উঠিলেন. এখন আসন काल छेश्चिछ। कुरुजी भथ ट्यामाल्य দশ্বথে বহিয়াছে, এই তুইয়ের এক প্র তোমাদিগকৈ অবদন্তন করিতে হইবে। প্রথম পথ এই, ভোমাদিগকে ভর্কিদিগের হত্তে আত্মসমর্পণ করিতে হইবে: ভোগা-দের সামী, জন্মভূমি এবং ধর্ম পরিভাগে করিলা মুসলনান ধর্মা গ্রহণ ও সতীত্ বিনাশ কবিতে ইইয়ে। আৰু এক পুথ আছে, নেই পথে আমি ঘাইভেছি।" এই বলিয়া তিনি এক বৎসর বয়ন্ত একটা শিশু সন্থানকে জ্যোড়ে ধারণ করিয়া প্রবৃত্ত শীর্ষ ভান হইতে গল্পরে পতিত হইলেন ! মুহার্ড মধ্যে ভাহার দেহ চুণী-কুত হইয়া **গেল**। এই দুখ্য দৰ্শন করিয়া অনলে প্তক্পতনের ন্যায় বছসংখ্যক বমণী সেই প্রতিগ্রহরে কাম্প প্রেদান করিলেন। ভাহাদের সম্ভানগণ মেধ-শাবকের ন্যায় মাতৃগণের অসুগ্ৰান कतिल। अञ्चलका मधारे मानवापद বিস্তুত গহররে পূর্ণ হইয়া গেল। সর্বন শেষে যে রমণী কম্প প্রদান করিয়া-ছিলেন, শবরাশি পর্ণ গর্ভে পতিত হল-য়াতে ভাঁহার শরীরে কোনও আঘাত তুর্কিনৈন্য ইতিমধ্যে সে ছানে উপ্পিছিত হইরা জীবিত পঞ্চাশ জন ত্রী ও এক শত শিশু সন্তানকে বন্দী করিয়া তাহাদের প্রতি জ্মান্তবিক জ্বত্যাচার করিতে
লাগিল। কিন্তু তাহারো জ্বন্ত ব্যবদা
প্রাপ্ত হইয়াও তাহাদের জ্বিনারক
ত্রেপোর দলবল কোথার গিয়াছে, তাহা
প্রকাশ করিল না।

এই चार्यभीय बृष्टीन नवनाती-দিগের আদিম বুতান্ত যিনি অনুসন্ধান করিবেন, তিনিই এই সীমাংসার উপনীত হটবেন যে. ইহাদের মধ্যে হিন্দু-শোণিত-সম্ভত। বছ দিন প্ৰে हेशामत श्रुक्तश्रुक्षकान हिन्नु हिल्लामें। তাহার ইতিহাস এই, খুষ্টান্দের ১৫+ বৎসর পর্কে বাণিজ্যাদি করিবার ভারী এক দল হিন্দু বণিক আর্মেণীয়াতে গিলা বাস করে। হিন্দুগণ কর্ত্তক সেথানে তিন**ী** নগর ভাপিত হয়। ইহারারাই অনুষ্ঠিত হর ্য ভাহারা সেখানে কিরপে সমৃত্তি লাভ করিয়াছিল। তাহারা বহু অব বারে ভত্ততা কেশী নামক পর্বভোপরি ত্রতী দেবমন্দির নির্মাণ করে। অক্সাৎ এই উন্নতিলোতের দার চির্দিনের জন্য খণ্টের চারিশত ক্ষ হইয়া গেল। ব্ৎসূর পরে সেন্ট গ্রেগরি নামক বিশ্বাস্ত ধর্মপ্রচারক আর্মেণীয়াতে গৃষ্টধর্ম প্রচার করিতে গমন করেন। তিনি তথাকার খষ্টান বাজাদিগকে এই "পৌত্তনিক অনন্ত নর্ক্বাসীদিপের" প্রতিকূলে উত্তেজিত करतम। यथन हिन्तुशन शृहेशक वाहन

विक्रिष्ठ अभीकृष बरेलन, छथ्म वृक्ष জারভ হইল। "বে তোমার দক্ষিণ গতে চপেটাৰাত করে, তাহাকে বামগও ফিরা-हैया (एख।" धरे बराम्ना यनीय छेनाम ্র নর-দেবতা প্রচার করিয়া গিয়াছেন, ছুর্ভাপ্যের বিষয় যে, তাঁহার কথিত ধর্ম শোণিত বিনিময়ে প্রচারিত হইতে লাগিল। খৃষ্টধর্ম গ্রহণে অনিচ্ছ ক হত **হিন্দুদিগের দে**হ গর্ভে পুতিয়া তত্ত্পরি একটা শুস্ত নির্মিত হয়। আর্মেণীয়ার **७६कानी**न टेलिशमानथक (कानिशा-**भित्र हे** जिहारि **अहे व्**रिक्षत्र मिक्कित विवतन লিখিত আছে। তিনি নিজে এই যুদ্ধ मिथिप्राहिलन। এই यूष हिन्दू मृज ३००५ वन। অবশিষ্ট হিন্দু বন্দী হয় अबः छाटारमत धनतज्ञामि नमूमय शृष्टीन-প্রশাস্থাসাৎ করেন। দেবমন্দিবের পুরোহিতগণ খৃষ্টানদিগের চরণে ধরিয়া **পার্থনা ক**রিতে লাগিল যে, দেব মন্দির ও व्यक्तिमा रान छध कता ना इत। রোকত গৃষ্টানগণ তাহা ভনিল না।

প্রশান করিল। খৃষ্টানগণ তৃই জন পুরে।

হিতকে তৎক্ষণাৎ তরবারীর আঘাতে
বিনষ্ট করিলে চারিশত পুরোহিত ও
রমণীকে খৃষ্টান করিবার জন্য বন্দী করা
হইল। তাহারা খৃষ্টান হইতে অস্বীকৃত
হওয়ার স্বয়ং গ্রেগরি বিচার করিয়)
তাহাদের প্রাণদণ্ড বিধান করিলেন।
হৈদ্টকরণ নগরে এই চারিশত পুরুষ ও
রমণীকে কাটিয়া ফেলা হয়। অবশেষে
৫০৫০ হিন্দু পুরুষ ও রমণীকে ১লা আগষ্ট
তারিখে একবারে খন্টান ধর্ম্মে দীক্ষিত
করা হয়। * যাহারা ইহার বিস্তৃত বিবরণ জানিতে ইচ্ছা করেন, তাঁহারা
আসিয়াটিক সোলাইটির ১৮৩৯ সালের
জুন সংখ্যার পত্রিকা দেখিবেন।

প্রাথি পান্ধসাথ করেন। দেবমন্দিবের সময়ে তুর্কি স্থলতানের অভ্যাচারী কর্মাহিতগণ খৃষ্টানদিগের চরণে ধরিয়া কর্মাচারিগণ কর্তৃক আর্মেণীয়াতে যে সকল খৃষ্টান নরনারী উৎপীড়িত হই-তেছে, তাহারা অনেকেই হিন্দুবংশ-রোক্ষন্ত খৃষ্টানগণ তাহা শুনিল না। স্কৃত। তরবারার সাহাব্যে ধর্ম প্রচার সম্ভরাং পুরেণিইতগণ যথাসাধ্য বাধা না ইইলে এখনও তাহারা হিন্দুই থাকিত।

वीताञ्चना।

অমূত রাজভক্তি।

রাজভক্তি মাছবের একটি সদ্ত্রণ বটে, কিন্তু তথাপি সকল অবস্থাতে ইহার পুশংসা করিতে পারা যায় না। অনুক ছলে দেখা গিয়াছে যে মানুষ রাজভক্তিবশতঃ অভ হইরা অত্যাচার।

রাজার সহারতা করিয়া স্বদেশের সর্বা-নাশ করিতে পরামুখ হয় নাই। এরপ হিতাহিতজ্ঞানশূন্য রাজভক্তি অবশ্য নিস্দনীয়, এবং এরপ রাজভক্ত নরনারী

" अत्रो छोड ১७०० मालाव "ममव" अटेवा।

কথনই প্রশংসার পাত্র নহেন। কিন্ত তথাপি ভাঁহাদের তথু নিজ্ঞা করিরাই জাত্ত থাকা উচিত নহে। ভাঁহাদের অপরাধ অমার্ক্তনীর হইলেও একথা অমীকার করিতে পারা ধার না হে তাঁহাদের মধ্যে অনেকেই স্বার্থত্যাগ ও আন্মোৎসর্গের পরাকান্তা দেখাইয়াছেন। রাজক্ষরতার উরতি সাধনার্থ ভাঁহারা আক্রাদের সহিত সর্ব্বসাত্ত হইয়াছেন, এবং অবশেবে অমানবদনে প্রাণদান করিয়া ভাঁহাদের শত অপরাধের প্রায়-শিত্ত করিয়াছেন।

শতাধিক বর্ষ অভীত চইল ফরাসি-দেশে একটি ভয়ানক রাজন্রোহ ঘটয়া-ছিল। তৎকালে ধিনি ফরাসি সিংহাসনে আসীৰ ছিলন, তাঁহার বিশেষ অপরাধ ছিল না। তাঁহার পূর্বপুরুষগণের হুঃশা-সনের ফল ভাঁহার মস্তকে পণ্ডি হইল। পদদলিত ফরাসিজাতি বক্ষপিপাস্থ হুইয়া मलक है:फालन कदिल जुदः क्राहित्व বিদ্রোহান**লে একেবারে** রাক্তক্ষ্যতা ভশ্মীভূত হইয়া পেল। রাহারা রাজার পृष्ठे (भाषक ছिलान, मर्खा छ। हारापद मछक विक्रित हरेन ; किन्र जारातित রক্ষে বিদ্রোহিগণের গোণিত-পিপাদার শাজি হইল না। তথন রাজা ও রাণী প্রাণভয়ে ভীত হট্যা বিদেশে আশ্রয় नहेवाद मःकत्म खश्चात् वामधानी ত্যাগ করিলেন। এই সময়ে রাণীর এক পরিচারিকা ছিলেন। ই হার নাম মাণম রাজা ও রাণীর পলায়ন-

कारन नायन छे जी नाय मा कि विश्व भनावन कविष्ठ श्रेश हरेलम, कि তিনি তাঁহাদের সহগামিনী না হট্ডা हेरमञ्जिष्य याजा अतिसम्ब । हेरमर् উপস্থিত হট্যা তিনি শুনিলেন যে রাজা ও রাণী পথিমধ্যে !ধত হইরা পুনরার বিক্রোহিগণের হত্তে পতিত হইরাছেন। এখন কি কর্ত্তব্য? ডিনি ইংলংগ্রেই थाकित्वन, ना श्रनदाय चाराए धार्का श्रमम कतिरवन ? हेश्लरख शांकिरन जनगा ভাঁচার নিজের প্রাণের আর কোন আশক্ষা থাকে না, কিন্ত তাঁহার প্রভূতরের উপায় कि **इटे**(व ? वित्या**रो**ता **এवार** নিশ্চয়ই ভাঁহাদের প্রাণ বধ করিবে। কিন্ত যদি ভাহাদেরই প্রাণনাশ হইল, ভবে ভাঁহার নিজের বাঁচিয়া থাকার স্থ কি । যে বটবুকের ছুলীতল ছায়ার তিনি এও দিন জীবনাতিবাহিত করিয়া-ছেন, গদি ভাষাই কুঠারাঘাতে পতিত इय छ (व वृथा कोरम छात्र वश्न कर्मान লাভ কি • মাদম ডি লাখল একজন প্রকৃত থীরান্দনা ছিলেন, ভাঁহার বীর-হৃদয় মৃত্যুভয়ে অণুমাত্র ভীত হইল না। রাজা ও রাণী গুড হইয়াছেন ওনিবামাত্র ভিনি বীরোচিত সাহস ও সংকলে অবর বাঁধিলেন। "যদি বাঁচিতে হয় ত তাঁহা-एत माम वीहित, माहिए छाँदाएपत्रे माम মরিব।" স্বতরাং আর ইংলতে অব-স্থান না করিয়া তিনি অচিরে খনেশা-ভিমুখে বাতা করিলেন।

कत्रात्रित्तरण वाठ्यादुख श्रेरा नाव

নাৰম ডি লাখন রাজা ও রাণীর সহিত মিলিত হইলেন। বিদ্যোহিগণের মতে **ইহাই ভাঁহার অপ**রাধের মথেক্ট প্রমাণ। কিন্ত তথাপি আপনাদের ন্যায়পরায়ণতা শেখাইবার জন্য তাঁহারা বিনা বিচারে ভাঁহার প্রাণবধ করিতে দমত হইলেন না। একণে বিজোহিগণ কর্তৃক মাদম **ডি লাম্বলে**র বিচার **আ**রস্ত হইল। এই বিচারের ফল কি হইবে, তাহা লাফল **শবশা দহজেই** বুঝিতে পারিলেন। বিজোহীরা অভিযোগকারী, এবং ভাঁছা-রাই বিচারকর্ত্তা, স্মৃত্রাং বিচারের ফল প্রাণদণ্ড ব্যতীত আব কি হইতে অমন স্ময়ের মধ্যে বিচার শেষ रहेबा श्वा বিচারপতিগণের মতে লাখলের অপরাধিতে আর কোন সক্ষেত্র হিল না। তিনি রাণীর পরি-চারিকা, অভএব তাঁহাদের মতে ভিনি **ক্ষেব্য শক্ত। ভাহার** অপরাধ অমা-অফুনীয়, অভএব ভাঁহাদের বিচারে মৃত্যুই তাহার একমাত্র শান্তি। তথাপি তাঁহারা আপনাদের দয়াশীলতার পাঁরিচয় দিতে বিশাত হ≹লেন না। লাখ-েলর **প্রে**গাঢ়রাজভক্তির বিষয় অংবশাই ভীছারা অবগত ছিলেন। ভাঁহারা বিলক্ষণ আৰিতেন যে লাম্বল জীবন ত্যাগ করিতে পারেন না। কিন্ত রাজভক্তি ত্যাগ করিতে পারেন, এই কারণে হউক অথবা জন্য কেইন কারণ্যশতঃ হউক, তাঁহারা নিকট একটি স্বৃতি विचार कतिरामा। "कृति रोनि शौकात

कत रा अथन इहेर्ड त्राष्ट्रा क त्रांगी अवः দেশের শত্রুগণ ভোমার হুণার পাত্র, ভাহা হইলে ভূমি প্ৰাণদান পাইবে।" কিন্তু লাৰ্ল শীবনের জন্য কিছুমাত্র লালায়িত ছিলেন না। জগতের সামান্য নরনারীর প্রে জীবন মহামূল্য ধন বটে,কিন্তু তথাপি এই স্বার্থপর ক্ষুদ্রচেতা জগতে এরূপ স্থই একজন দেবতুল্য লোক পেথিতে পাওয়া যায় বাঁহার। কথনই মৃত্যুভয়ে ভীত হইয়া কর্ত্তব্য সাধনে পরাজুথ হন না। ই হারা সার্থান্ধ নর নারীর পথ প্রদর্শক জ্যোতি সরপ—ই হারাই প্রকৃত বীর। শক্র-পরিবেষ্টিতা লাম্বল প্রকৃতির রমণী ছিলেন। তিনি ভাঁহার বিচারকর্ত্তাদিগের প্রস্তাব শুনিয়া স্থির विलिय- 'श्वरमणीय्रान চিরকালই আমার ঘুণার পাত্র, কিস্ত রাজা ও রাণী কথনই মুণার পাত্র হইছে পারেন না।" বোধ হয় বিচারপতিগণ এইরূপ উত্তরেরই প্রত্যাশা করিতে-তাঁহারা তৎক্ষণাৎ লাম্বলের व्याग मरखत चारमभ मिरलम। কর্ত্ব্য-পরায়ণা বীরাঙ্গনা লাম্বল অমানবদ্নে ঘাতকের অসিভলে মন্তক পাতিয়াছিলেন। অসির আঘাতে ভাঁহার মস্তক বিচ্ছিন্ন কিন্ত ইহাতেও বিভোহিপপের বৈরনির্ঘাতনের পরিকৃপ্তি श्रेल ना। সেই ছিল্ল মস্তক বড়সার অগ্রভাগে বিদ্ধ **रहे**शा **बाक्**धानीत भाष भाष व्यक्तिज रहेन, धवर धहेक्रा अष्टीविःग गणामीत শেষ ভাগে স্থমভ্য ফরাসি জ্বাতির যশঃ-নৌরভে অগৎ পরিপূর্ণ হইল

গীতগোবিদ।

গীতগোবিৰ মহাকবি কয়দেব কুত একধানি গীতকাবা। এই গ্ৰন্থ ভাদশ সর্গে বিভক্ত। ইহাতে অয়দেব কবি-ছের পরাকার্চ: দেখাইয়াছেন। কবিতা-গুলি অভিশয় মধুর ও প্রসাদগুণ-বিশিষ্ট। গীতকপে প্রায় সম্প্র ক্ষ্ণচরিত্ই বর্ণিত আছে। সংখ্ত ভাষায় গীতগোবিদের ক্রায় রচনা অতি অল্ল দেখিতে পাওয়া যায়। এই গ্রন্থ আদ্যোপান্ত সঞ্চীত্ময়, কেবল গ্রন্থের স্থচনা এবং সমাপিকাতে ক্ষেকটা কবিতা ও প্রত্যেক আরস্তে অবতারণাস্চক ও সমাপিকাতে স্মাপ্তিস্চক এক একটা শ্লোক রচিত হইয়াছে। গীতগুলিতে বৃচ্ছনা, তান, লয় প্রভৃতির বিলক্ষণ সমাবেশ আছে। **এই मकल्पत्र द्राह्मा यक्ता खानस्थारिनी,** বর্ণনাও তদ্রেপ সভাবশালিনী।

গীতগোবিদে প্রেমভক্তিরসের আধিকা দেখিয়। কেই কেই বলেন মে, নিও নি ব্রুদ্ধের উপাদনা হুঃসাধ্য হেছু বখন সঙ্গ প্রীকৃষ্ণরূপ ধ্যেয়, তখন আদিরস বর্ণনা করা জ্বাদেবের উচিত হয় নাই। কিক কি অদেশীয় কি বিদেশীয় বৃদ্ধিমান্ ও সম্ভাবগ্রাহা পণ্ডিতেরা এই গ্রেছর স্থাত্ত এবং ভক্তাছ্তাসক প্রণালীতে মোহিত হইয়া উক্ত কারণে দোম ব্যক্ত না করিয়া ইহার জলেষ গুণ কীর্জন করিয়াছেন। তাহারা ইহার রূপক

রচনার অতি স্থন্সর ব্যাখ্যা করিয়া-ছেন। এ দেশীয় বিদ্যাপতি, চণ্ডীদাদ, গোনিদ্যাস, জ্ঞানদাস প্রভৃতি ভক্তবৃন্দ ধাহার। জয়দেবের চরণচিত্র অনুসরণ করিয়া পদর্চনাথারা খ্যাতনামা ইইয়া-ছেন, ভাষাদের কথা দুরে থাকুক, বিদে-শীয় অহিন্দুনানা বিদ্যাবিশারদ ভাষা-তৰ্জ্ঞ প্ৰত্তভবিৎ অনেকেই গীৰগোৰিক পাঠে মোহিত হইয়া ভাহার মধুরভাব, মধুরচ্ছন্দ, নির্মাল ভাক্তপীযুষ্দিক্ত প্রবন্ধ অালোচনা করিয়া কিরূপ ভাষাছটার ইহার গুণ কার্ত্তন করিবেন, তাহা ছির করিতে পারেম নাই। সর্বাঞ্চথম শার উলিয়ম জোন্স ইংরাজী ভাষায়,পথিত ল্যাসন ল্যাটন ভাষায়, রুফট অর্থণ ভাষায় এবং স্কবি এড উইন সাণ্ল্ড देश्त्राची कात्या कहे बाह्य अञ्चलाम এই গ্রন্থ দীয় মহাপ্রয়োজন বিষয়ে অল্লাধিক শুলর মন্তব্য লিথিয়াছেন। ভাহারা সকলেই ভাগবভের অধ্যাত্ম ভাবানুসারে ইহার অর্থ বুঝিতে ও বুঝা-रेट ए एडिंग क्रिया हिमा देशव व्यत्नक गैका ७ जातक छोंग था होन दका ख्वान मृष्टे इत्र, उन्नाक्ष्य दान व कवि গিরিধর কৃত পদ্যাত্মবাদ প্রধান।

চৈতন্য দেব গীত গোৰিক্ষ, পাঠাছ-ব্লক্ত ছিলেন এবং ডদৰ্থ বুবাইতে আনুষ্যায়-ভৰ ক্রিতেন, ভাহা চৈতন্য চরিতায়তে বৰিভ আছে। সীত সোবিন্দের গীত-ভুলি মাজা বুল্ডিতে রচিত এবং কেই **क्टि** (वांध करत्रम हेटात्रहे हमाः असूनद्रान হিন্দি বোলর চৌপেয়া প্রভৃতি কবিতা क्रिक चरेशाटक ।

গীতগোবিদে অপ্তপদবিশিপ্ত চতু-विश्विष्ठित शीउ चार्ट, अखना अहे महा-কাব্য অষ্ট্ৰপদী নামে অভিহিত হইয়া সচরাচর গানে বে প্রকার অস্থায়ী, অন্তরা, সঞারী, আভোগ প্রভৃতি हातिहै निर्मिष्ठ भन थात्क, व्यर्थाय जान মাতেই প্রায় চতপাদ দেখা যায়, কিন্ত অন্তপদী হওয়া প্রযুক্ত क्रमात्वत गान ইংার অনাথা দৃষ্টিগোচর হয়, বস্ততঃ ইছাতে ফলের কোনও বিশেষ হানি হয় না। আরো গীতগোবিনের "বদসি इसि किकिमिन मछक्रिकिम्मी रदि শরভিমিরমতিবোরং" প্রভৃতি করেকটা প্রাসিদ্ধ গীত অন্ত প্রকার ভালে গীত হইত বৰিয়া গীতগোবিন্দকে অইতালীও কহা যায়।

এই গ্রন্থের পদগুলি এদেশে পশ্চিমাঞ্চল গীত হইয়া আসিতেছে। ৰাকালার এই সকল গায়কদিগের মধ্যে বিষ্পুরনিবাসী ভৃতপুর্ব শঙ্ক ভটাচার্য্য, তৎপুত্ৰ কেশৰ ভট্টাচাৰ্য্য এবং চুঁচুড়ার রামস্থদর শীলের নাম স্পরিচিত। ইহা-দের গানে শ্রোত্বর্গ বিহ্বল হইয়া , অঞ্-विनर्कत वा कृतिया थाकिएक भातिरजन ना।

ग्रहाकृति अञ्चलन बाएएनएम बीब्रज्य জেলার অন্তর্গত অজ্যানদের উত্তরস্থ

क्मिविष धार्य क्षेत्र थर्न करत्न। बाम धकरन (कमुलि वनिशारे अधिक প্রসিদ্ধ। জয়দেবের পিতার নাম ভোজ-দেব, মাতার নাম বামাদেবী পত্নীর নাম পদাবতী দেবী । কান্যক্জ আহ্মণকুল সভ ত পঞ্জাহ্মণের অন্যতমের সন্তান। **छ**श्रा**म**च সময়ে প্রাছ্ড ত হইঃছিলেন, নির্ণর করা হঃসাধ্য। অনেক স্থপণ্ডি**ড**-দিপের মতে ভিনি লক্ষণ সেনের সম-সাগ্যয়িক।

জয়দেব অত্যস্ত করুণ-হাদর ও পরম ধাৰ্মিক ছিলেন। ভক্তি-বিল্িিত-মহত্ব-চ্ছটা ও প্রবীতিব্যপ্তক উদায় ভার উভয়ই তাঁহার অঅকরণে নিরম্বর প্রতিভাষিত হইত। তিনি স্কীয় জীবনাৰ্মণাল কেবল উপদনা ও ধর্মকোষণাতেই অভিবাহিত করিয়া গিয়াছেন। रेवकाव मुख्यानाय মধ্যে তাঁহার ন্যায় পর্ম ভাগ্রত নিতান্ত विदल हिला क्यामरवद विमामिका. বিবাহ, নিত্য গঙ্গাল্লান,মৃত পত্নীর পুনজ্জী-বিভ হওয়া, গীত গোবিন্দের উৎক্যাপকর্য এবং "সারগরলগভনং মম শির্সি মতুনং" এই গীতের বক্রী অংশ "দেহি পদপল্লব-मुमातः" निथन विषयः अत्नकश्वनि अली-কিক কিম্বন্ধী প্রচলিত আছে। এখানে একটা মাত্র উল্লেখ করিতেছি। "মম শিরসি মণ্ডনং (অর্থাৎ আমার) (🗬ক্ষের) মন্তকে ভূষণ স্বরূপ) পর্যান্ত লিখিয়া প্রভুর মন্তকে পদার্পণের কথা निधिवात ভत्त 'मिक अम्भन्नवभूमातम्'

অর্থাৎ 'ডোমার (শ্রীরাধার) উদার পদ भन्नव **अ**र्भन कत्र' **अः**मठी जाहम कतिहा লিখিতে না পারিয়া পুঁখি বন্ধ করিয়া স্মানার্থ গমন করিলেন। কিন্ত ভপবান **এ**কুফ দামান্য নায়কের ন্যায় বর্ণিত হইলেও ভক্তের অপ্রাধ গ্রহণ করেন না, ञ्जार, ভक्ति माम औरति, अयामावत ভাগীরধীতে স্থানগমন হুযোগে, স্থান-জয়দেব রপ ধারণপুর্বক ण्नीय ভবনে উপস্থিত হ**ই**য়া, জন্দেব-পত্নী পরাবতীর প্রস্তুত অন্ন ব্যঞ্জন ভোজন করিয়া, সহস্তে "দেহি পদপল্লবমুদারম্" এই পদটা পুঁথিতে লিখিয়া অন্তৰ্দ্ধান হইলেন। জয়দেব সানাস্তে প্রত্যাগত হইয়া, পদ্মাবতীকে অগ্রে ভোঙ্গন করিতে দেখিয়া, দাভিশয় বিসায়াপল হইলেন। জয়দেব জানিতেন, পদাবতী প্রাণান্তেও তাঁহার ভোজনের পূর্ব্বে জলগ্রহণ করেন জয়দেব পত্নীর মুখে পুর্দ্ধাপর সমস্ত বুত্তান্ত শ্রবণ করিয়া ও নিজের পুঁথি খুলিয়া দেখিয়া বুঝিতে পারিলেন যে,ভগ-বান 💐 হরি সমুং আসিয়া লিথিয়াছেন। তখন তিনি আনলে মত হইয়াও আপে নাকে দৌভাগ্যবান মনে করিয়া, ত্রীহ্রির

खाबनावनिष्ठे त यह हिल धवर राष्ट्री পদ্মাবতী ভোজন করিতেছিলেন, সেই অল্ল লইয়া ভোজন পূৰ্বক আল্লাকে পরম পবিত্র বোধ করিলেন।

গীতগোবিশ-তবজ হিন্দু ও অহিশু উভর শ্রেণীর মহান্দারা তাঁহাদের মন্তব্যে প্রকাশ করেন যে জীবাত্মা প্রমান্তার একটী রূপ হইয়াও মায়া বলে অহংভাবে পরমাত্মাকে বিশ্বত হইয়া থাকে। আরা-ধনায় জাগরিত হইয়া আপনার অবস্থা বুঝিতে পারে। তখন পরমান্দার বিরহে ব্যাকুল হইয়া তাঁহাকে পাইবার জন্য ভ্রমণ করিতে করিতে তলিকটে উপস্থিত হইয়া ক উচিত্তে পবিত্র প্রেম রসে মুর্র হয় এবং তাহাতে লীন হইয়া প্রমানন্দে ভাস্মান হইয়া থাকে। গীত গোবি**ন্দের রূপক** বর্ণনায় ইহাই গুহাভাবে নায়ক নারিকার কথার ছলে প্রকাশ। এইরপ গুছা-ভাবে ঈশ্বর ভক্তির বর্ণনা পারস্য ভাষায় হাফেজ মহাকবির গ্রন্থে প্রচারিত আছে।

পাঠিকাগণের বিদিভার্থ গীত গোবি-ন্দের একটা শ্লোকের ব্যাখ্যা ও শ্বরলিপি স্থানাস্তরে প্রকটিত হইল।

बीनवीनहस्र मस्त ।

श्वत्रमाथन প्रभानी।

(৩৬৩ সংখ্যা ৩৬৮ পৃষ্ঠার পর)

গীতগোবিন্দ।

প্রথম সর্গ। ১ন প্লোক।

স্তমানজ্ঞমৈনজ্ঞঃ ভীকররং গমের তদিমং ! শুলিত্রোঃ

स्टिपर्स्वत्रमञ्जर वनकूरः भागा- | त्राट्य शृहर खालत्र । हेथा समानित्यक প্ৰত্যধাকুঞ্জজনং,

মাধবমোর্জয়ন্তি বমুনাক্লে রহ: কেলয়:।

এই শ্লোকের প্রকৃত অর্থ কি বলা হ:সাধ্য, কেননা পণ্ডিতেরা তথিষয়ে একমত নহেন, এক এক জন এক এক প্রকার
ব্যাখ্যা করিয়াছেন। প্রবোধানন্দ গোস্বামী মহাশর যে অর্থ করেন, তাহা
অধিক সঙ্গত বোধ হওয়াতে নিম্নে প্রদত্ত
হঠল:—

এক দিন গোপরাজ নন্দ নিজে গোদোহনার্থ সন্ধ্যার সময় গোঠে গমন করিলেন। শ্রীকৃষ্ণ অলক্ষিতে তাঁহার পশ্চাৎ পশ্চাৎ গমন করিয়াছিলেন। শ্রীনন্দ কৃষ্ণকে দেখিয়া ভীত হইলেন, এবং তৎক্ষণাৎ রাধিকাকে কহিলেন, "রাধে! দেখ আকাশমগুল মেঘাছর এবং তমাল বৃষ্ণরাজিতে বনভূমি শ্যামবর্ণ হইয়াছে, এই বালক শ্রীকৃষ্ণ রাজিতে একাকী যাইতে ভীত হয়, অতএব ভূমি ইহাকে গৃহে লইয়া যাও।" মহাত্মা সার উইলিয়ম জোন্স এই অর্থই গ্রাহ্য

ক্রিয়াছেন ৷ কিন্তু আর্ণল্ড সাহেব এই শ্লোকের যে গৃঢ় অর্থ প্রকাশ করিয়াছেন তাহা এই:—

"The sky is clouded; and the wood resembles the sky, thick-arched with black Tamala boughs; "O Radha Radha! take this soul, that resembles in life's deep midnight to thy golden house." So Nanda spoke, and led by Radha's spirit the feet of Krishna found the road aright. Wherefore in bliss which all high hearts inherit together, taste they Love's divine delight.

পুর্ন্বোক্ত শ্লোকটী সন্ধীত অধ্যাপক

শ্রী ক্ষেত্রমোহন গোন্থামী মহাশ্ম, তাঁহার

শ্রকাশিত গীতগোবিন্দে, স্মোরটী রাগিণী
ওতিওট তালে লিপিবদ্ধ করিষাছেন।

শ্রী ত্রিভ্বন ও শ্রীসজীবন পাঠক দ্বয়
ক্কুভা রাগিণী ও ঠুংনী তালে পাঠ করিতেন। এবং কোন কোন ভক্ত রাগ
ভৈরব ও ত্রিভালীতে গাইয়া থাকেন।

সুরট বা সৌরটী রাগিণী। তাল তিওট।* 🛱

^{*} সংস্ত এছে ইহা 'অপুট'' নামে থ্যাত। তেওটের চারিটা পদ, তিনটা আঘাত ও একটা ফাঁক। ইহার প্রথম ও তৃতীয় পদ চারি মাত্রায় পূর্ণ। দ্বিতীয় ও চতুর্ব পদ তিন মাত্রাসূক্ত। অতএব তেওট চৌদ্দ মাত্রাযুক্ত। ইহার ঠেকা খধা,---

०७३ गर] रामात्कांशिनी शक्तिका। । ১॥ । । <u>+॥ ।</u>

<u>মগ প প ম ম ম বা</u>

ব: শ্যা- মা- ভ মা-৩॥ 4 ल- ख- रेग-
 기
 1
 1
 +11

 행
 지
 지
 지
 어
 어
 어

 행
 주 로 로 로 エー
 O 1 ৰি •ারু। । ১০রু। । । নি মা: ঋ'গা-ঋ' সা: নি মা: মা: ঋ: গু- হং ঝানা নি না না ঝা ধুনি না নি যুগ পুপ বি হ:- কে- ল- য়ঃ॥

পাঁচন ও মুফিযোগ।

(০৬০ দংখ্যা ০৮৬ পৃষ্ঠার পর) ওলাউঠার সময় সাবধানতা।

ওলাউঠা যে অতি ভরানক রোগ প্রকৃত ওলাউঠার উপযুক্ত ঔষধ এ প**র্য়েভ** সে পরিচর কাহাকেও দিতে হর না। প্রকাশিত হর নাই বলিবেই **হর। ওলা**- উঠা সঞ্চারে সাবধানতা সম্বন্ধে কর্টী कृत २ छांच्या निव्रम উল্লেখ कवा याह-তেছে।

শরীর, কাপড়, ঘর, বিছানা প্রভৃতি गर्समा পরিষার পরিছেল রাখিবে।

নুতন চাউলের কিন্তা পাস্তা ভাত, অত্যন্ত শীতল অথবা অত্যক্ত গ্রম **विभिन, काँ** हा वा भहा कल, भहा र कृति বা তেলাল মাছ, অথবা চৰ্কি ওয়ালা মাংস, তেলে ভাজা দ্রব্য, পিয়াজ, রস্থন, বিশাতী বা মিঠা কুমড়া প্রভৃতির তর-কারী এবং যাহা সহজে জীর্ণ হয় না, এরপ গুরুপাক দ্রব্য আহার করিবে না।

নিয়মিত পুষ্টিকর আহার বিধেয়। শীতল জলে স্নান করিবে। অধিক-क्ष जल शकित ना।

ধারাপ জলে স্নান অথবা সেই জল পান করিবে না।

অনিয়মিত পরিশ্রম কিন্তা হৃশ্চিস্তা না **করিয়া সর্ব্বদা শান্ত**ভাবে থাকিবে এবং ঈশর চিন্তা করিবে।

অধিক রাত্রি জাগরণ, কিম্বা স্থরা প্রভৃতি মাদক দ্রব্য সেবন করিবে না।

এক স্বরে অধিক লোক বাস বা নিদ্রা যাওয়া উচিত নহে।

শরীরে অধিক হিম লাগাইবে না। কোন ভানে মহামারি আর্ভ হইলে. ষত শীঘ্র পার সে স্থান ত্যাপ করিবে। तिशीत यल भृजानि मःयुक्त वक्तानि हिष्यम चन्हीत अधिकक्ष सा ताचिता भूणा-

একবার পাতলা বাহে বা বমি হই-लाहे माउर्क इहेरव।

প্রতিদিন প্রাতেও সন্ধ্যাকালে ব্রে গন্ধক ও ধুনা পুড়াইবে।

দর্বদা কপুরের ভ্রাণ লইবে। অধ্বা বাড়ীর মধ্যে এমন কি সকল গৃহ কপুর ও হিন্দু নেকড়ায় বাঁধিয়া ঘরের বে যে স্থান দিয়া সকলে গতিবিধি করে, সেই স্থানে ঝুলাইয়া রাখিবে।

এই রোগ উপস্থিত হইলে শীঘ্র চিকিৎসককে আহ্বান করিবে, চিকিৎ-সকের আসিতে বিলম্ হইলে অথ্যা চিকিৎসক না পাইলে নিম্নলিখিত ঔষধ প্রয়োগ করিলে বিশেষ উপকার দর্শে।

কর্প র ১ গ্রেণ হিঙ্গ ১ গ্রেণ, পিঁপুলি-চূর্ব প্রেণ। জল দিয়া মাড়িয়া এক এক একটী বটী প্রস্তুত করিবে, এবং তাহা ১ বা **২ খ**ণী অন্তর সেবন করাইবে।

অমু নিবারণ জন্য দোড়া ও পটাস নিদার অভাব হইলে, অল মাত্রায় অহিফেন দেওয় যাইতে পারে। বমন নিবারণের জন্য তার্পিণ তৈলের সহিত কোমেউশন করা ঘাইতে পারে। মস্তক উঞ্হইলে কেশ মুগুন করিয়া भी उस कम नित्र।

েরত অপাক্ষ্য ছের একটি শিক্ড শাভটি গোল মরিচের সঙ্গে মিলাইরা পেষণ করিবে, পরে উহা অর্দ্ধ ঘন্টা অন্তর जिनवात थाहेटल (छम वन्म इहेटव । यमि রোগীর পিপাসা অধিক হয় তবে বড় हैया ফেলিবে। মল ও বমি মাটিচাপা দিবে। এলাচি পোড়াইয়া ঐ দান। ওড়া করত।

জলের দকে মিশাইর। থাওরাইলে পিপাসা বন্ধ হইবে।

ওলাউঠার আরম্ভাবস্থার ক্যান্দর (কপ্র) ব্যবহার করিলে উপকার দর্শে। গরম ভাতের কেণ কিম্বা জলের সহিতপুদিনা পাতা বাটিয় সরবৎ করিয়া খাইলে অথবা কপ্র ও হিলের আত্রাণ

लहेल वि(भव छे भका व मार्ग।

আফিম ২ মাসা, হিসু ২ মাসা, গোল
মরিচ ২ মাসা, ও কর্পর ২ মাসা, একত্র
পেষণ করিয়া ও জল দিয়া মাড়িয়া, ১৫টা
প্রস্তুত করিবে। পরে একটা থাওয়াইবে,
যদি ভেদ বন্ধ না হয় ২ ঘণ্টা অন্তর ৩৪টা
থাওয়াইবে তাহাতে বিশেষ উপকার
হইবে।

গাত্ৰ লাভ থাকিলে, হরিক্সা চূ**ণ**িত ভূঠ চূর্ণ মাধাইবে।

একটু ডহর করঞ্জার ফল, হরিছা, বনমাতুলুক মূল; জলে বাটিরা, ছারার ভকাইরা ভড়িকা প্রস্তুত করিবে। ইহার অঞ্জনে বিস্তৃতিকা রোগ নই হর।

পাথর কুচির পাতার অর্জ থানা, ওটা গোলমরিচ সহ বাটিয়া থাইতে হইবে। উক্ত পাতার অপরার্জ থান ওটা গোল-মরিচ সহ বাটিয়া তলপেটে প্রলেপ দিবে। ইহাতেই রোগীর প্রস্রাব হইবে ও বাহে বন্ধ হইবে। যদি একবার থাইলে প্রস্রাব হয় তবে আর থাইতে হইবে না, নতুবা উক্ত ঔষধ ২।৩ ঘণ্টা অস্তর ব্যবস্থা করিবে।

সন্তানের ধর্মশিকা।

বর্ত্তমান নময়ে ভারতের অথাগতির প্রধান কারণ যে ধর্মহীনতা, তাছা স্ক্রাদ্দা বিবেকী ব্যক্তি মাত্রেই অমুভব করিতেছেন। ভারতের পুনরুদ্ধারেরও প্রধান উপায় ধর্মোল্লতি। কিন্তু সন্তান বাল্যকাল হইতে ধর্মভাবে গঠিত না হইলে সমাজ মধ্যে এই ধর্মোল্লতি প্রকৃত্তভাবে সাধিত হইতে পারে না। পূর্লকালে বাহ্মগ্রেমা সমাজের নেতা ছিলেন, ভাঁহারা সন্তানদিগকে উপনয়ন ও দীক্ষা ঘারাধর্মজীবনের পথে অঞ্চলর করিতেন। বালকের জ্ঞানোদ্র ছইলে তাহার উপন্যাকর জ্ঞানোদ্র ছইলে তাহার উপন্

নয়ন হইত। তৎপরে সে ব্রহ্মার্য অমুঠান প্রকাক গুরুগৃহে বাস করিয়া যথাবিধি
শাল্র অধ্যয়ন করিত এবং ধর্মনিঠ ও
গঠিত-চরিত্র হইয়া গার্হ স্থার্ম পালনের
জন্য সংসারে প্রবেশ করিত। ইহাতে
তাহ্মণের সংসার—ধর্মের সংসার হইরা
প্রেরত স্থার আল্য ইইত। ত্রাহ্মণেতর
আগ্রভাতি সকল ত্রাহ্মণের জীবনের
আলর্শে এবং ত্রাহ্মণের প্রদত্ত বিধি ব্যবহাস্সারে জীবন গঠন করিয়া ধর্মজীবনের অধিকারী হইত। এইরটো অনসমাল ধর্মভিত্তির উপরে প্রতিষ্ঠিত হুইরা

বর্ষকেই এইক ও পারত্রিক মঙ্গল সাধনের উপায়রূপে অবলম্বন করিয়া চলিত।

স্মাজের পরিবর্ত্তন হইয়াছে। এখন হিশুসমাজে পুর্বতন বিধি ব্যবস্থার মৃত কারা বা ছায়ামাত্র আছে,প্রাণের চিহ্ন অতি অন্নাত্র দেখিতে পাওয়া যায়। তাই বাঁহাদিগের মধ্যে উপনয়ন ও ধর্মদীকার ব্যবস্থা আছে, তাঁহারাও তাহা একটি **কৌলিক নিয়ম মাত্র বলিয়া রক্ষা করিয়া** খাকেন, তদ্বারা উল্লত জীবন গঠনের প্রাদী হন ন।। আর তাঁহাদের বাহিরে ুকো**টা কোটা লো**ক রহিয়াছেন, যাঁহার**। ধর্মোরতির প্রকৃত** উপায় লাভেও বঞ্চিত। বর্ত্তমানকালে মুখে সকলে খীকার করুন আর নাই করুন, অনেক পরিমাণে সাম্যের কাল উপন্থিত হইয়াছে। পর্বে কালের ব্রাহ্মণ ক্ষত্রিয়, বৈশ্য ও শুদ্রের মধ্যে যে ছুৰপনেয় বৈষ্ম্য ছিল, কাৰ্য্যতঃ এখন তাহা अबरे আচে। আর স্ত্রী শৃদ্রকে জ্ঞান ও ধর্মের জন্ধিকারী বলিয়া পশ্চাতে **ফেলিয়া রাথা** যায় না। এথন ধর্মা সকলের পক্তে প্রয়োজনীয় বলিয়া তাহা সকলেরই **এহণীয়** এবং পিতা মাতা পুত্ৰ কলা উভ-্বকেই যেমন বিদ্যাশিক্ষা দিতেছেন, সেই **ত্রপ ধন্দ শিক।** দানের জন্যও দায়ী। সম্ভান সকল বাল্যকাল হইতে ধন্ম ভাবে ি**নংগঠিত হইলে** গৃহ সকল ধৰ্মময় হইবে এবং জনম্মাজ সহজে ধর্মপ্রাণে পুন-কর্জনিত হইবে। ধর্মপ্রাণ্ডা হইতেই হ্যক্তিগত, পরিবারগত ও জাতিগত বল

वीर्षा, न्यूथगाँखि, क्षेत्रर्षा ७ महस्तु नकन्हें नाम्ब हहेरव।

হিন্দুসমাজের স্কাবস্থাপক প্রাচীন ঋষি মুনিগণ গায়তী মন্ত্রের উপাসক ছিলেন এবং সন্তানদিগকে শৈশ্ব হইতে এই মস্ত্রে দীন্দিত করিতেন। এই গায়ত্রী বেদমাতা এবং ইহা সকল ধর্মের নার। ক্ষুদ্ৰ বীজ হইতে যেমন বিশাল বুক্ষ উৎপ্ৰ इटेशा थारक, **এ**टे शास्त्री तीक कारस উপ্ত হইলে এবং প্রতিদিন সহিত তাহার পরিচর্য্যা হইলে তাহা হইতে ধর্মজীবনরূপ মহারুক্ষ বিকাশিত হইবে আশা করা যায়। তবে ইহা কেবল জাতিবিশেষে বা শ্রেণী বিশেষে वक्त थाकित्व (कन १ न्नेश्वतंत्र स्वां) हस्त জল বায়তে যেমন জাতি বৰ্ণ শনিবিশেযে অধিকার—ঈশবের সকল নৱনারীর উপাসনাভেও সেইরপ। আনরা লাধা-রণের গোচরার্থ একটা সংস্কৃত উপনয়ন অর্গ্রান ও ততুপলক্ষে প্রদন্ত উপদেশ নিমে প্রকটিত করিলাম।

শ্রীমান্ স্তুকুমার দত্তের শুভ উপ-নয়ন উপলক্ষে ভক্তিভাজন শ্রীমন্মহর্ষি দেবেন্দ্রনাথ ঠাকু-

েরর ঊপদেশ ।*

৪ঠা চৈত্র রবিবার।
বিসোপাদনায় মহুধ্যমাতেরই অবি-

[°] এই উপনরন বিন!-উপবীতে সম্পন্ন হয়।
গত ২০এ কান্তন শ্রীমন্মহর্বির পার্ক ষ্ট্রীট ভবনে বালক
গারতী মন্ত্রে দীক্ষিত হয়। করেক দিন ব্রাক্ষধর্ম
অধ্যয়ন, ব্রহ্মচর্যা অসুষ্ঠান ও গায়ত্রীবারা ব্রহ্মোপাসনা অস্ত্রাস পূর্বক সমাবর্ত্তিত হইলে ব্রহ্মোপাসনাস্তে মহর্বি এই উপদেশ প্রদান করেন।

कात। रमभएजन नाहे, कौलएजन नाहे, জাতিভেদ নাই, ব্ৰেমাপাসনাতে মুমুষ্য-মাত্রেরই অধিকার; বেহেতু ব্রহ্ম এক পিতা, সকল মহুষ্ট ভাষার সন্তান! অতএব ধে মন্তবারা ত্রন্ধকে লাভ করা যায়, তাহাতেও সকল মহুষোর অধিকার। (मिं शायुकी प्रक्रा करे प्रत्मंत पूर्वन-কালের ঋষিরা সকল বেদ মন্থন করিয়া ব্রুপোসনার জন্য একটা মন্ত্র উদ্ধার করিলেন, সেই মন্ত্র গায়ত্রী মন্ত্র। ঝরিষরা ম্পত্ন কবিষা বলিয়া গিয়াছেন:-

'প্রণব্বনাজতিভাকে গায়ত্র্যা ত্রিতয়েন চ I উপাস্যং প্রমং ব্রহ্ম আয়া যত্র প্রতিষ্ঠিত:।" *

এই মন্ত্রায়া ত্রেলোপাদনা হয়। আজা প্রমানার যে যোগ, তাহাও এই মল্লে রহিয়াছে। বান্ধণ, ক্ষতিয়, বৈশ্য, भुष, कि हिन्तू, कि खहिन्तू मकलहे अहे মস্ত্রের অধিকারী। আমরা ব্রহ্মোপাসক হইয়া উন্নত ভূমিতে দণ্ডাঃমান হইয়া এই কথা বলিতেছি, গায়ত্রী মস্তে সকল মহ-माहे श्वधिकाती।

*যে পরমরক্ষে আন্তা প্রতিষ্ঠিত আছে, প্রণব, ব্যাহ্রতি ও গায়তী এই তিন দার। তাঁহার উপাসনা কর্ত্ব। প্রণব-ওঁ, বাাহ্নতি-ভূভু বস্বঃ, গায়ত্রী-তৎসবিভুর্বরেণাং **ज्राता क्षित्रा धीमहि क्षित्रा था नः श्राह्मणार ।** ইহার অর্থ স্ষ্টিস্থিতি প্রলয়কর্ত। ভূলোক, অন্তরীক ও স্বৰ্গলোকের প্ৰকাশক সেই জগৎপ্ৰস্থিত। প্ৰম দেবতার জ্ঞান ও শক্তি ধানি করি, বিনি আমাদিগকে বৃদ্ধিবৃদ্ধি সৰুল প্ৰেরণ করিতেছেন।

शाव्यो महत्रामा मावियो उक व्यव করা হয়। জগৎ-প্রদবিতা পরম দেব**তার** আরাধনা এই, সাবিত্রী ব্রস্ত বিধিপর্কক গ্রহণ না করিলে ইছাতে কোনও কল হয় না। অতএব ব্রহ্মবিদ পিডামাতা হাঁহারা আপনাদের বংশ পবিত্র করিতে চান, তাহাদের কর্ত্তব্য উপযুক্তবয়য় বালককে কোনও ব্ৰহ্মবিদ আচাৰ্য্যের নিকট উপস্থিত করেন। সেই আচার্য্য ভাঁহাকে ত্রন্ধোপাসনা শিকা দিবেন-যাহাতে সেই অজর অমর অভয় **পুরুষকে** জানিতে পারে, তাহার উপদেশ দিবেম। উপনীত বালকের কর্ত্তব্য, অবলম্বিত ব্রক্ত শ্রদাপূর্বক যাবজীবন পালন করিবে। ইহাতে ব্রহ্মকে লাভ করিয়া সংসারবন্ধন হইতে মুক্ত হইবে।

সুকুমার,

তুমি যে গাবিত্রী-ব্রত অদ্য বিধি-शूर्विक धारण कति (ल, हेरा हित्रभीवन यफ्न পূর্বাক পালন কর, এই আমার উপদেশ। গায়তী মন্ত্ৰ কি গু তাহা তুমি শিকা কবিয়াছ। ক্রদয়ের প্রেম ভক্তিসহকারে নেই গায়ত্রী মন্তের দেবতা যে পরমেশর প্রতিদিন তার উপাসনা করিও, কখনও ভুলিও না। ভাহাহইলে উত্তরোভর সিদ্ধিলাভ করিবে। সংসিদ্ধ হইলে এক্সকে মৃত্যি-লাস্ত করিবে--ব্রন্ধলাভে লাভ इट्टेंद्र ।

''অণ মর্ত্তোহমুতে! ভবতি''

টহাতে মর্ড্রাকীর অমর হয়। "অত করে। তোমীকে আশীর্কাদ করি, তুরি ব্রশ্ব সমশ্রতে" এখানেই ব্রশ্বকে উপভোগ । তোমার অবলম্বিত ব্রন্থ পালনে সমর্থ হও।

বিগত শতবর্ষে ভারতরমণীদিগের অবস্থা।

(৩৬৩ সংখ্যার ৩৬১ পৃষ্ঠার পর)

ভারতে যে সকল খ্রীষ্ট ধর্মপ্রচারক এ দেশের অবস্থা পরিজ্ঞাত ছিলেন, তাঁহার। অনেকে স্বদেশে গিয়া ভারত-বাসিনীদিগের তুরবস্থার কথা সাধারণের निकारे श्रकाम कतितान। এদেশের বছবিবাহ, সহমরণ, স্ত্রীজাতির অজ্ঞানতা, মুর্থতা, পরাধীনতা প্রভৃতি শুনিয়া সাম্য-বাদী ইউরোপীয় পুরুষ ও রমণীগণ বড়ই **হঃধিত হইলেন। ইংরাজের হুঃ**থ, বা**হা**-লির ছঃথের মত চুই ফোঁট। চক্ষের জলে ভাসিয়া ষাইবার নহে। তাই ইউ-রোপীর স্ত্রী পুরুষগণ অনেক স্থানে সভ¹ **সমিতি স্থাপন করিয়া এদেশের স্ত্রীজাতির** আন্দোলন করিতে লাগি-ৰুনা বহ েলন। খ্রীইধর্মাচার্যাদিগের হতে ভারত অহিলার মঙ্গলের জন্য অনেকে প্রচুর ধনও দান করিতে লাগিলেন।

এই সকল ভারতহিতৈষিণী রমণী-প্রের মধ্যে কুমারী কুক একজন শ্রেষ্ঠতম। বিগত শতাশীর দিতীয় যুগে ভারতবর্ধের (यात्रानित १) দাধারণ পুরুষদিগের শিক্ষার সহায়তা করিতে, ইংলণ্ডীয় সভা-কর্ত্তক কুমারী কুক্, এদেশে প্রেরিত হন। এদেশের রমণীগণের হীনাবছা দেখিয়া

স্ত্রী-শিক্ষার উন্নতি করিতেই আব্যোৎসর্গ করেন। এই মহাপ্রাণা বিদ্যোৎসাহিনী রম্ণীরত্ন হইতে ভারত মহিলাগণ যে কিরূপ উপকৃতা, ভাহা বলিয়া শেষ করা যায়না। প্রচারের জন্য ইনি এত যত্ন, চেষ্টা ও পরিশ্রম করেন যে তাহারই ফলে এদেশে এক বৎসরের মধ্যে ৮টী বালিকাবিদ্যা-লয় স্থাপিত এবং ১১৪টা বালিকা অধ্যয়ন করিতে প্রবৃত্তা হয়। এই সকল বালিকা দেশীয় নিম্ন শ্রেণীর ও খ্রীষ্টান বংশসম্ভূতা। এদেশীয় নীচজাতায় মাত। পিতাকে অর্থ দানে সম্বত ও সম্ভষ্ট করিয়াই কুমারী কুক, তাহাদিগের কন্যাগণকে বিদ্যালয়ে আনিতে দক্ষম। হইয়াছিলেন।

কিন্তু এইরপ শিক্ষা বিস্তারেও মহা-প্রাণা কুক পরিভৃপ্তি লাভ করিতে পারি-লেন না। কারণ, তিনি সম্ভান্ত বংশীয়া হিন্দু মহিলাদিগকেই শ্বশিক্ষাহীনতার জন্য অধিকতর অভাবগ্রস্তা বলিয়া জানিতেন। (प्रदे प्रकल महिला । वालकानिरशत শিক্ষা বিষয়ে কোনও স্মবিধা হইল না---বালিকাবিদ্যালয়ে কোনও সন্ত্ৰান্ত হিন্দু নিজ কন্যা বা ভগিনীকে পাঠাইতে সমত

इहेलन ना; काट्य काट्य डाँहात महन একটা বিষম অপরিভৃপ্তি থাকিয়া গেল: রমণীগণের যাহাতে সম্ভ্ৰাত্ম শিকার অভাব দূর হয়, কুমারী কুক তাহার জন্য ৰিশেষ চেষ্টা করিতে লাগিলেন।

কুমারী যখন স্ত্রীশিক্ষার জন্য এইরূপ চেষ্টা করিতেছিলেন, সেই সময়ে বিধা-তার অনুগ্রহে আর এক অনুকূল ঘটনা সংঘটিত হইল। যিনি ভারতের প্রম হিতৈষী, সংস্কৃত ভাষার একাস্ত অমু-রাগী, সংস্কৃত কলেজ স্থাপনের প্রধান উদ্যোগী, পণ্ডিতবর জগরাথ তর্কপঞ্চানন মহোদয়ের এক প্রধান शिया-(मह মহাত্ম। উইলদন দাহেবের সহিত কুমারী কুকের ভভ বিবাহ সংঘটন হইল। এ বিবাহ ভীরতের পক্ষে "মণিকাঞ্চন যোগ।" দম্পতী একহাদয় হইয়া ভারত-হিতৈষণায় আত্মোৎদর্গ করিলেন।

বিবাহের পরে এীমতী উইলসন অনাথ, অতুর, মূর্য ও দরিদ্র ব্যক্তিদিগের অভাব পূর্ণ করিতে একান্ত চেষ্টা করিতে লাগিলেন। তাহার দয়া, তাহার ছেহ এ দেশের অনাথ দরিত্রগণকে মরণাধিক ষাতনা হইতে মুক্তি দিতে লাগিল। দেই সব হতভাগ্যগণ উইলদন দেবীকে মাতৃরপেই পূজা করিতে প্রবৃত্ত হইল। বিবি উইলসন সম্ভান্ত মহিলাদিগের ত্মশিক্ষার জন্যও এক উপায় অবল্যন করিলেন। ভাঁহার বালিকাবিদ্যালয়ের মুশিকাপ্রাপ্ত ও কুত্রিদা ছাত্রীপণ হইয়া অন্তঃপুর শিক্ষরিজীর কার্য্য করিতে

পারিবে, তাহাতে ধনী রমণীর-ভদ্রবংশীরা রমণীর প্রকৃত স্থানিকা লাভ হইবে, এই আশয়ে শ্রীমতী উইলসন তাঁহার ছাত্রী-দিগকে শিক্ষয়িত্রীর উপযুক্ত করিয়া পঠন করিবার জন্য একান্ত চেষ্টা করিতে লাগিলেন। এহেন পর-হিতকর-ব্রত-পরায়ণা, এহেন নারীহিতৈষিণী দেবীর নাম ভারত-বক্ষে ও ভারতর্মণী-বক্ষে অমূতাক্ষরে লিখিত থাকাই উচিত।

মণি থনির ভিতর থাকিলেও মনো-হর প্রভা বিকীর্ণ করে; ফুল বনের নিভূত স্থানে ফুটলেও তাহার সৌরভ দিগন্ত প্লাবিত करतः अभी থাকিলেও ভাঁহার লুকায়িত অন্যের অদয় আকর্ষণ করে। তাই হিন্দু-मभाष किছ्मित्वत मध्य (नवी छेरेन-সমকে চিনিল। তিনি বিদেশবাসিনী 😉 ভিন্ন ধর্মাবলম্বিনী হইলেও কলিকাডার অনেক সন্ত্ৰান্ত হিন্দু সম্ভটিতে তাঁহাকে অন্তঃপুর শিক্ষয়িত্রী করিলেন। नन क्रडकार्या इहेश आवे करमकी अरमभीया महिलाक निरक्त महरवाशिनी করেন; ই হাদিগের নিকটে কলিকাভার অনেক সম্ভ্রান্ত হিন্দুকন্যা বাঙ্গালা ও ইংরাঞ্চিভাষা, উলের ও হচের কাল শিখিতে লাগিলেন। এই সময়ে কলি-কাতায় অনেক বামাহিতৈৰী ত্রীশিক্ষার জন্য বক্তৃতা ও প্রথম প্রকাশ कतिया माधात्रात्व मन चाकर्यवार्थ कही। करवर्र ।

এইরণ শিকালাভের সহিত র্য

জাতির ভূত প্রেতে বিশ্বাস, উল্কি, মিসি, ও সিন্দুরের বছল ব্যবহার ক্রমনঃ ক্ষিয়া আসিতেছিল। এই সময়ে বঙ্গ-দেশের অবস্থা আলোচনা করিলে বোধ হয় যে ভারতবাসিনীদিগের হুর্ভাগা নিশিতে ওকতারা অলিয়াছিল; কিন্তু ছাহাদিগের ভাগ্য এত শীল্র পরিবর্ত্তিত ছইবার নহে। বিগত শতাকীর দিতীয় যুগোর মধ্য শম্যে এদেশের ক্তকগুলি তক্ষণৰয়ত্ব প্ৰুষ থী প্তথৰ্মে দীক্ষিত হইলেন। धरेकना हिन्दूनमाक थी होत्नत छे परत, সাঁহের বিবিদিগের উপরে বড়ই চটিয়া বিলাভী বিবিদিপের হঙ্গে **दश्रमा**ग। **শেন্তঃপুর শিকা**র ভারার্পণ অনেক হিলুর নানারপ আশহা জিবাল; **ভূতরাং যেরূপে** জীশিক্ষা প্রচার ইইডে-ছিল, তাহা রহিত ইইয়া গেল।

কিন্ত এইরপে গ্রীশিক্ষা রহিত হইলেও

ত্রীক্ষাতির উরতির জন্য এ দেশের

জনেক পুরুষ চেন্তা করিতে লাগিলেন।

সহমরণ নিবারণের জন্য এদেশে তুমুল

আদ্দোলন চলিল। ভারতের উজ্জ্বলতম

রন্ধ রাজা রামমোহন রায় স্তীজাতির

এক পরম হিতৈষী ছিলেন; সতীদাহ

নিবারণ বিষয়ে তিনিই সর্ব্ব প্রধান

উল্যোপী। ভাহার পরিবারস্থা কোনও

রমণীকে সহম্ভা হইতে দেনিয়া স্তী
ভাতির সহমরণ নিবারণ জন্য তিনি

অধিকত্র চেন্টা করেন। স্বর্গীর ছারকা

নাম রাক্র, কালীনার্ধ মুন্দী প্রভৃতি

কর্মেক জন্ম মুধ্যী প্রভৃতি

কর্মেক জন্ম মুধ্যী প্রভৃতি

কর্মেক জন্ম মুধ্যী প্রভৃতি

রামমোহনের বিশেষ সহায়তা করেন।
বিদেশীয় রাজপুরুষদিগের অনেকে যে

এ দেশের সহমরণ নিবারণ করিতে
ইচ্চুক ছিলেন, এ কথা আমরা পূর্বেই
বলিয়াছি। এই সকল সমবেত চেষ্টার
ফলে বিগত শতাকীর দিতীয় যুগে, লর্ড
বেণ্টিক মহোদয় (১) সতীদাহ নিবারণ
বিধি বদ্ধ করেন। সেই অবধি ভারতে
সেনুশংস প্রথা রহিত হইয়া যায়।

দর্ভ বেণ্টিক্কের সময়ে এদেশে পুরুষদিগের মধ্যেও অনেক উন্নতিকর কার্য্য
হইয় জীজাতির ভবিষ্যং-উন্নতির পথ
সম্প্রদারিত করে। পুরুষদিগের পাশ্চাত্য
চিকিৎসা বিদ্যা শিথিবার জন্যু মোডকেল
কলেজ স্থাপিত হয়; মুদ্যাযন্তের স্বাধীনতা
হয়; বঞ্চাষায় স্বগীয় ঈশরচন্দ্র গুপ্ত সংবাদ পত্র প্রকাশ করেন।ইতিপুর্কেই রাজা
রামমোহন রায় কতকগুলি গ্রন্থ রচনা
করেন। রাজা রামমোহন রায় সত্যধর্ম
অনুস্বিধিৎস্ম ছিলেন; তিনি নিজের জ্ঞান
ও বিশ্বাসাস্থারে একেশ্ববাদী হইয়া,
১৮২৯ খাঃ অকে কলিকাতায় ব্রাহ্ম সমান্দ্র
স্থাপন করেন।* এই সকল ঘটনা হইডে

⁽১) উইলিয়ম বেণ্টিশ্ব।

^{*} মহাক্সা রাজা রামনোহন রায় বঙ্গভূমির বহ উপকরৌ। ধর্মোল্লতি, ভাষার উন্নতি,দেশের লোকের মানসিক উল্লতি প্রভৃতি বহুতর কার্য করেন। ত্রা-লোকদিগকে কেবল জীবন্ত দাহন হইতে রক্ষা করেন নাই। তাহাদিগের শিক্ষা, তাহাদিগের স্বভাধিকার ও তাহাদিগের প্রকৃত জ্ঞান ও ধর্মোল্লতি বিষরেও জনেক চেষ্টা ও পরিশ্রম করিরাছেন।

দেশীর পুরুষদিগেরও অ্বন্ধার উন্নতির বিশেষ পরিচয় পাওয়া যায়।

খষ্টার মহিলাদিপের সহিত হিন্দুমহিলা-গণের সংস্রব দূর হইলে, এদেশে বামা-हिटेडियिशन क्षीतिका भूनः श्राहनता कना विरयवक्रण ८० छ। क्रिड नाजित्वर। ইহাদিপের মধ্যে কলিকাভার রাজা রাধা কান্ত দেবও স্ত্রীশিক্ষার এক প্রধান সহায়। ই হার পরিবারস্থ রমণীদিগের অনেকেই লেখা পড়া শিথিয়াছিলেন। ইনি, স্ত্রী-শিক্ষা বিষয়ক পুস্তক প্রেণয়ন করিয়া সর্বা-সাধারণকে স্ত্রীশিক্ষার আবশ্যকতা ও বুঝাইতে চেটা করেন। উপকারিত। কিন্তু কিছুদিন পর্যান্ত স্ত্রীশিক্ষার বিশেষ किছूहे वानावछ इहेन मा। সমাজে কোনও কোনও কুত্বিদ্য যুবক নিজ নিজ কন্যা ভগিনী প্রভৃতিকে লেখা পড়া শিখাইতেন। ইহার পরে--গত শতাব্দীর দ্বিতীয় যুগের শেষভাগে ত্রাহ্ম সমাজের যুবকগণ নিজ নিজ পরিবার মধ্যে স্ত্রীশিক্ষা---স্নীতি ওসভাতা দহ দ্রীশিক্ষা প্রচলিত করেন। এই সকল গুবক কেছ কেছ ছানে ছানে বিদ্যালয় ও স্থাপন করিতে পারিয়াছিলেন।

ইহার পরে তৃতীয় মৃণের আরস্ত।
তৃতীয় মৃণ ভগবানের কুপায় ভারতমহিলাদিপের ওভ স্মরণীয় মৃগ। এই নৃগে জীভাতির ভাগা যে রকম পরিবর্তিত হইতেছিল, তাহা মনে করিলে চমৎকৃত হইতে
হয়।

মহাত্মা বেধুন সাহেব গ্ৰণ্মেণ্টের

শিক্ষা বিষয়ক সভার সভাপতি ছিলেন ক্রীজাতির উন্নতির জন্য বে সকল বিজে শীর মহাত্মা চেষ্টা করিতেছিলেন, বেশ্ব সাহেব ভাহার मध्या ব্যক্তি। খাষ্টিয়ানদিগের স্থাপিত বালিকা বিদ্যালয় হইতে ভারতরমণীদিগের শিকা প্রাপ্তির আশা নাই দেখিয়া, বেথন ছুলের স্থান নিজিপ্ত হয় নাই, কাৰ্য্যও ভালরণ চলে নাই, এবং কোনও সম্ভ্ৰান্ত হিন্দু বেখন কুলে কন্যা প্রেরণও করেন নাই। ৰাহা-হউক, এক বৎসরের মধ্যে উক্ত বিদ্যালয় শিমুলিয়াতে স্থাপিত रुष ७ উराई প্রধান শিক্ষক, স্ত্রী-শিক্ষার পরমোৎসামী মদনগোহন তকালকার ম**হাশয় প্রথম্ভ** নিজ কন্যাদিগকে উক্ত বিদ্যালয়ে অধ্যা-পনা করাইতে প্রেরত হন। তর্কালভার মহাশয়ের এই কাজে দেখের কত লোকে বিরক্ত হইয়াছিল, কত লোকে উপহাদ করিয়াছিল, কত লোকে গালি দিয়াছিল, কিন্ত তিনি কর্ত্তৰ পরায়ণ বীরের ন্যায় সবই সহিয়াছেন! ভাষার পরে হাই-কোটের জন্মভুনাথ পণ্ডিত নিজ কন্যাকে বেথ্ন স্থুলে প্রেরণ করেন। সে সময়ে দেশেও স্ত্রীশিকার জন্য বিশেষ আন্দোলন চলিতেছিল—এ সকল দেখিয়া ভ্নিয়া এবং বেধন সাহেব নিরপেক ভাবে হিন্দু পণ্ডিভদিগের মারা বালিকা-দিগকে শিক্ষা দিতেছেন, সেপানে নীচ বা অসচচরিত্র লোকের সংঅব নাই, এ কথা জানিয়া उध्यानः **(एएनव्र फारनक व्यक्ति (दब्न क्रु.ल कन्मा**

ভারিনীদিগকে প্রেরণ কল্পেন। কিছুদিন পারে, ভারত মহিলাদিগের পিতৃত্বানীর কার চক্ত বিদ্যাসাগর মহাশয়ের হস্তে, বেশুন স্কুলের সম্পূর্ণ ভার সম্পিত হয়।

ৰে সময়ের কথা বলিতেছি, তথনৰ ৰাঙ্গালা সাহিত্যের শৈশবাবস্থা। রামায়ণ মহাভারত, চণ্ডী প্রভৃতি কয়খানি পদ্যগ্রন্থ ব্যতীত স্ত্ৰী-পাঠ্য পুস্তক মিলিত না। এই **শভাব দুর করিতে মদনমোহন তর্কালঙ্কার** 🌂 বিদ্যাদাগর মহাশর কতকগুলি বাঙ্গালা श्रुष्टक थान्यम ७ मक्तम करतम। त्वथूम বিশ্যালয়ের ছাত্রীদিগকে এই সকল পুস্তক 🛰 ৰিছু কিছু ইংরাজি ভাবা শিক্ষা দেওয়া **ংইল। কিছ্**লিনের মধ্যেই বিদ্যাসাগর মহাশয় শিক্ষা বিভাগ হইতে (তখন তিনি শিকা বিভাগের কর্মচারী ছিলেন) ৪০টা वानिका विन्तानग्र अः शालन करत्न। রাজ-জহুগ্রহে পলিগ্রামেও জনেকগুলি বালিকা বিদ্যালয় প্রতিষ্ঠিত হয়। বঙ্গ, মান্ত্রাজ, বোম্বাই প্রভৃতি ভারতের বহু-প্রদেশে বালিকা বিদ্যালয় স্থাপিত হইতে नांशिन এवः भवर्गायणे वानिका विम्रा-শয়ে বৃত্তি পুরস্কার প্রভৃতি প্রবর্ত্তন করিয়া দ্রীশিক্ষার অধিকতর উৎসাহ দান করিতে ি**লাগিলেন। * পত শতাকীর ভৃতী**রযুগে ক্রীশিকার এতদ্র উন্নতি হইয়াছিল।

কেবল শিক্ষা বিষয়ে নহে, এ যুগে অন্যান্য বিষয়েও ভারতবাসিনীদিগের সৌভাগা পরিকুট ইইভেছিল। এ দেখে

শিশুবিবাহ প্রচলিত থাকার অজ্ঞান বালিকাকে বৈধব্য যন্ত্ৰণা সহিতে এই দক্ষ হতভাগিনীদিগের रुषु । মত ছর্ভাগ্য জীব এ বিশ্বসংসারে অতি অরই আছে। কিন্তু হিন্দুআর্য্যগণ এরকম বালিকা বিধবাদিগকে চিরকাল "বিধবা' থাকিতে বলেন নাই; পুন: मःकारतत चारिका विद्या**र**छन। ব্যবস্থা থাকিলেও ভারত সমাজ, দেশা-চারের অমুরোধে, কুল-গৌরব বুদ্ধির জন্য অপোগণ্ড বিধবাদিগকে "পতিপ্রাণা সতী" দেখিতে চাহে !—অস্বাভাবিক হইলেও ইহার অন্যথা সহিতে পারে না। গত শতীকীর তৃতীয় যুগে বঙ্গদেশে কোন কোন মাতা পিতা এইরূপ হতভাগিনী সস্তানের হুরবস্থায় একান্ত ব্যাথিত হইঃ।, শাক্তজ পণ্ডিতদিগের নিকটে বিবাহের বিধি আছে কিনা" জানিতে চাহেন। হিন্দু পণ্ডিভগণও বিধবা বিবাহ "শাজ্ঞসন্মত" বলিয়া ব্যবস্থা দেন। কিন্তু বাঙ্গালির মধ্যে এমন সাহদী ব্যক্তি কেহ দেখা গেল না যে বিধবা বিবাহ সমাজে গ্রহণ করিতে সমর্থ হন। বিধবা বিবা-হের আবশ্যকতা বুঝিয়া, বিধবা বিবাহ শাস্ত্র সমত-একথা জানিয়াকতক স্বার্থ-পরতায়, কতক দেশাচার-ভয়ে বিধ্যা বিবাহ সমাজে গ্ৰহণ করিতে কেহই অগ্রেসর ইইলেন না। वत्रः (य अकल পণ্ডিত বিধবা বিবাহের শান্ত্রীয়তা প্রেতি-পল্ল করিয়াছিলেন, আন্দোলনের সময়ে তাঁহারাই "বিধবা বিবাহ অশাদ্রীয়"বলিয়া প্রচার করিতে লাগিলেন *।

* বিদ্যাসাগর মহাশয়ের বিধ্বাবিবাহ বিবয়ক
 এছের প্রথম বারের বিজ্ঞাপন ক্রষ্টব্য ।

শীলিকা-বিদ্যালয়ের শিক্ষকবিংক্স বেতন, গ্রহণ-বেন্টই দিয়া ঝাকেন। ইহা কম দয়া নহে।

ন্তন সংবাদ।

১। কলিকাতা বিশ্ববিদ্যালয়ে ১৪২১ পরীক্ষার্থীর মধ্যে বি এ পাদে ৩৫০ এবং অনরে ১৬ জন উত্তীর্ণ হইয়াছেন। श्वीत्वाकितिशत मध्य (मिष्ठिन छ। कादिन এক মাত্র উত্তীর্ণা এবং ইংরাজী ২য় বিভাগে ৪র্থ স্থানীয়া হইয়াছেন। এফ এ পরীক্ষায় ১২৮৮ উত্তীর্ণ, তন্মধ্যে ৬১ জন ১ম, ৩২৪ জন ২য় এবং ৯০৩ জন ৩য় বিভাগম। উত্তীর্ণা বালিকাদিগের বিব-রণ নিমে দেওয়া গেল। তিন্টী প্রতি-যোগিতায় ষ্থাক্রমে ৬৪, ৮ম ও ১ম হইয়াছেন,ইহা অত্যন্ত প্রশংসার বিষয়। নাম এল সি রোজ কলখাই লোরেটো এবেল পার্টু,ড গাম্পার 3 সরকা সেন বেগুন হেমলতা ঘোৰ ₹य মিলিদেউ ফ্রোরেন্স সক্ষার প্রাইবেট ২য় মেরী এস ল বেপুন ওর

ইংরাজ গ্রণ মেন্টের জয় হইয়াছে।

- ৩। কলিকাতা মিউনিসিপালিটী মৃক ববির বিদ্যালয়ের সাহায্যার্থ আর এক বংসবের জন্য মাসিক ১০০ টাকা মঞ্জুর ক্রিয়াছেন।
- ৪। চিন ও জাপানের মধ্যে দদ্ধি প্রস্থাব ধার্য হইয়াছে। কিন্তু জাপা-

নের সৌভাগ্যে ক্রসিয়া উর্ব্যান্বিত; ফরাসী ও জর্মাণেরাও ক্রসিয়ার প্রতিবাদে বোগ দিয়াছেন। ইংলও ও আনেরিকার যুক্তরাজ্য জাপানের সপক। শেব ফল কি দাঁড়ায়, বলা যায় না।

- ৫। গত বর্ষে নিম ব**দ্ধে সর্প দংশনে** প্রায় ১০,৮০০ লোকের মৃত্যু হইয়াছে।
- ৬। ইউরোপে পুরুষ অপেকা জী-লোকের সংখ্যা ৪৫ লক্ষ ৭০ হাজার অধিক।
- ৭। কাবুলের আমীরের পুত্র নসী; ক্রমা ভাঁহার প্রতিনিধিস্বরূপ বিলাভ যাইতেছেন। বোখাই হইতে ভাহাল ছাড়িরাছে।
- ৮। কলিকাতায় জাপানের **এক**প্রতিনিধি থাকে, এজন্য এক**জন উচ্চ**পদস্থ জাপানী **অ**নেকগু**লি অসুচরসহ্**দিমলায় রাজ প্রতিনিধির সহিত সাকাৎ
 করিতে গিয়াছেন।
- ৯। ইংলতের প্রধান রা**দ্রমন্ত্রী লর্ড** রোজবেরী উৎকট পীড়াগ্রস্ত। **তাঁহার** পদত্যাগের সভাবনা।
- ১০। ভিন্নার রাজার একমাত্র উপযুক্ত পুত্র আত্মহত্যা করাতে রাজা আপনার রাজ্য কোর্ট অব ওরার্ডের হত্তে
 দিয়া স্বয়ৎ কাশীবাস করিয়াছের।

বামারচনা।

व्यवद्वाद्य शैनावद्य।

আমাদের দেখে—আমাদের সমাজে ক্রীজাতির জন্য যে অবরোধ প্রথা প্রচ-निष्णाह, जामता क व्यथा जान विदय-চনা করি না। এই অবরোধ প্রথাই আমাদের সর্বনাশের মূল; এই অবরোধ **প্রথাই আমাদের হীনাবন্থার কারণ।** আমেরা পিঞ্জরের পাথীর নাায় নিয়ত **অবরোধরূপ পিঞ্জরে আবদ্ধ রহিয়াছি.** कारकरे जामारनत मतात्रुखि नकन क्रमभः নিতেল হইয়া পড়িয়াছে, আমাদের হাদয় জানালোকে প্রক্টিত হইতে পারি-তেছে না। সংজ্ঞানলাভ করিতে না পারিলে জীবন উন্নতিপথে অগ্রসর হইতে পারে না। সংজ্ঞান বাতীত হলভি মানবজীবন পশুর অপেকাও হেয়ভাবে বাপন করিতে হয়। আমরা বাল্যকাল হইতে পিঞ্জাবন্ধ আম্রা সংজ্ঞান কোথায় পাইব? পিঞ্জাবন্ধ পক্ষীর **এতি কুণাপুর্মক** পিঞ্রের নিকট **ভাসি**য়া যদি কেহ 'হবি' নাম শুনার, ভবেই সে ওনিতে পায়। কিন্ত হায়। ক্ষুত্ৰৰ এমন স্পাশ্য ব্যক্তি আছেন, বে, অরপে অনর্থক সময়ক্ষেপ্ করিবেন 🔊 পিলরাবদ্ধ পক্ষীও আমর: উভয়েই

লইয়া যাইতে ইচ্ছুক হন, তাহাহইলে তাঁহার কুৎসা গাখায় দশ দিক পুর্ণ হয়, মুক্তরাং তিনি নিজ উদ্দেশ্য বিরত হন। কাজেই আমাদের জীবন-পথে সংজ্ঞানালোক নিপতিত হইতে পায় না। পাখী কি "হরি" নাম না শুনিয়া হরিত্তণ গাহিতে পারে ৭ হরি নাম গাহিবার জপ তাহাকে শিক্ষা দেওয়া আবশ্যক। আমাদিগকে ভধু অবরোধে রাথিলে আমাদের শিকাহয় না ৷ আমা-দিগকে সংজ্ঞান লাভের জনা সমাজের শিক্ষা দেওয়া আবশাক। শিক্ষাতেই মানবহাদয় গঠিত, শিক্ষা অভাবে মানবের কোন কার্য্য করিবার ক্ষমতা থাকে না। কুশিকায় মানব অসংকর্মে প্রবৃত্ত হয়-হৃদয়হীন হইয় পড়ে। সংশিক্ষাতেই মানব-হাদয় পূর্বতা প্রাপ্ত হয়। সংশিক্ষা অভাবেই আমরা এত হীন হইয়া যাই-তেছি এবং সেই জন্যই **ठक्कः गुल २**हेशः পড়িয়াছি। किन्न हायः! আমরা কিজনা এত হীন হইয়া পড়ি-কেছি সমাজ বদি একবার তাহার অমু-সন্ধান করিয়া তাহার প্রতীকারের চেষ্টা করিতেন, তাহা হইলে আমরা সমাধ্বের চক্ষ:শুল হইয়া শত ব্যথা ৰুকে বহিয়া জীবন যাপন করিতাম না। যদি আমা-দের প্রতি সমাজের এক বিন্দু স্কুপাদৃষ্টি

থাকিত, তাহাহইলে আমরা আর্ছাবংশীয়া বলিয়া পরিচিত হইতে পারিতাম, আমা-দের জীবনও আর্ঘ্য মহিলাদিগের ন্যায় পবিত্র ও উন্নত হইত। আর্থা মহিলা-দিগের জন্য অবরোধ প্রথা প্রচলিত ছিল না। তাঁহারা বইচ্ছায়-এমন কি যুদ্ধক্ষেত্রে অবতীর্ণা হইয়া অরাতি-মস্তক ধিখণ্ডিত করিতেন, ভাহাদের এতদুর প্র্যান্ত ক্ষমতা ছিল। তাহাদের শ্রীর যে ব্রক্তমাংসে গঠিত, আমাদের শ্রীরও দেই রক্তমাংসে পঠিত, তবে ভাঁছারা অধিক বলশালিনী ও অধিক ক্ষমতাপরা ছিলেন কেন ? আমরাই বা এত হীনবল কেন ? ইহার একমাত্র কারণ স্থাজ নয় কি ৪ সমাজ তাহাদিগকে পালিত পক্ষীর নীশয় অবরোধন্নপ পিঞ্জরে আবদ্ধ করিয়া রাথেম নাই বলিয়াই তাঁহারা সৎজ্ঞান,সৎসাহস, সৎকীর্ত্তি লাভ করিতে সক্ষমা হইয়াভিলেন। আমালিগের ভাষে তাঁহাদিগের জন্য যদি অবরোধ প্রথা প্রচলিত থাকিত, ভাহাহইলে ভাঁহাদের পবিত্র জীবনও আমাদিগের নাায় হীনা-বস্থায় যাপন করিতে হইত। ভগিনীগণ। আইস, আমরা এ ভীষণ অবরোধ প্রথা হইতে মুক্তিলাভ করিয়া জীবনকে উন্নতি-পথে লইয়া ষাইবার জন্য একান্তমনে পরম পিতা পরমেশ্বরকে ডাকি । ভারার ক্লপার আমর। নিশ্চয়ই এই হীনতা হইতে মুক্তিলাভ করিব ও আনাদের জীবন প্রাচীন আর্ব্য মহিলাদিগের ন্যায় বরণীয় ও আদ্বলীয় হটৰে।

बिनरंशस्त्रवाना मुरस्त्राभी । इशनी ।

হেঁয়ালি ।

মহাদেব শিরোদেশে বস্তি আমার: কুম্বনের পদতলে, থাকি আমি কুড়হলে, আসামে আমার বাস, বামে থাকি বারুমাসঃ মনের ভিতরে থাকি বিদিত সংসারে: দাঁড়াইয়া থাকি পুনঃ মরণের শিরে। মদন আমার তবে, মাথা ধরে দেহপরে, সরমের পদে আমি বাঁধা অফুক্রণ। চেষ্টা কর পাবে ফল মনের মতন।

डेश्राम्य ।

বিনয়! বিনয় ভণে হও ওণবান, ঈশর তোমার বাছা, করুন ক্ল্যাণ। দেশ-হিতকর ব্রত করহ গ্রহণ, ঈশ্বরের প্রিয় কাজ করহ সাধন। অধর্ম অথবা কোন ডুচ্ছ প্রলোভনে, ভূলিওনা, ভূলিওনা, পতিতপাবনে । 🦤 যিনি দিয়েছেন বাছা, জ্ঞান প্রাণ মন, यिनि निरह्म वाह्य, खर खन्नन, ভূলিওনা তাঁরে, তাঁর সম্ভোব কারণ পরের মঙ্গল সাধ করি প্রাণপ্র। প্রথম সন্তাৰীবাছা ভূমিরে আমার, দিন দিন বয়োর্দ্ধি হতেছে তোমার, রেখেছি বিনয় নাম করিয়ে যতন বিনয়ে ভূষিত হও বিনয়ভূষণ !!

विवयुकायमदी माम छछा।

^{*} গত কান্তন যাসের প্রকাশিত ইেরালির উত্তর " কলম " আঁমেক পাঠিকা লিবিরাছের 🗢 ঠিক ब्हेब्राइ । बा, त्वा, न।

প্রভাতী।

নিজ কাকি—একতালা।
সোণার স্থমেক্স-শিরে

হুয়ার খুলিয়া বায়,
এখনি জাগিয়া উবা,
পরিছে রতন ভূষা,
পড়িছে রতেন ছুটা.

অশৈধার জগত-গা'য়।

প্রকৃতির যুম ভাঙা, নয়ন অলস, রাঙা, মলিক। ফুলের মত

হাসিটী ভাসিছে তা'র ! ১

অবনী তৃষিত প্রাণে, চাহিছে আকাশ পানে, এখনো আসেনি যেন,

সে যারে দেখিতে চার ! ২

বিদায় মাগিয়া রাকা, (চাঁদনী, শিশির-মাখা) শিথিল জাঁচল টেনে,

धीदत धीदत म'दत साह ! ७

বিহপ বিহগী তা'রা

দিতেছে মণুর সাড়া,
কে যেন ভাঙিছে যুম,

ডাকিছে "বাহিরে আয় !" &

সোণামুখী দিক্ বালা, ছিড়িয়া মুক্তামালা, ছড়ায়ে ফেলিছে হেসে, বস্থা সধীর গায়ু। ৫

निश्ति भीत्रव च्रत्त,

পুন: কোলাহল ভরে,
পুন: দে অমিয় ব'রে
বাতাস, দিগত্তে যায় !৬
আবার গোলাপ, জাতি,
বিকাসি রূপের ভাতি,
আদরে আতর চেলে,
মাথাইছে মন্যায় !৭

জাগিল নরের মনে, সংসার-স্থলদ জনে, ভকতি, মুমতা, ক্লেহ,

পুনঃ বুকে উথলায় ! ৮
নমো, প্রভো ভগবান !
আমারো এ নব প্রাণ,
দজীব, পবিত্র কর,

তোমারি চরপ-ছায়; ১ তোমারি আশীবে, হরিুন তব সেবা যেন করি, আজিকার যত বাধা,

সবি যেন দলি পা'য়; ১০
সংসারে যে অরণন,
নীচতার প্রলোভন,
দেখিও, এ দাদে ভা'রা,

বেন না ছুঁইতে পা'ব ! ১১ এ কুদ জীবন মম, ফুট স্ব্যুখী সম, ভোমা পানে চেল্লে চেল্লে,

থন গো ওকায়ে যার। ১২ কিসের ভাবনা মন, তুমি রেখ পদ ছা'র, সারাটী জীবন মোর, ঢেলে দি' অভয় পা'র। ১৩ শ্রীকাব্যকুসুমাঞ্চি রচয়িত্রী।

वागात्वाधिनौ পত्रिका।

BAMABODHINI PATRIKA.

"कन्याधेरं पालनीया शिच्चणीयातियत्नतः।"

কন্তাকে পালন করিবেক ও যত্নের সহিত শিক্ষা দিবেক।

৩৬৫

সংখ্যা।

জ্যৈষ্ঠ ১৩০২—জুন ১৮৯৫।

৫ম কর।

৪র্থ ভাগ।

সাময়িক প্রসঙ্গ।

ছোটুলাটু-পত্নীর ছবি ইংার জন্ত ৮০০০ টাকা চাঁদা উঠিয়াছে। কোন সং-কার্য্যের অন্তর্গানে ইংার কতক টাকা ব্যয় হইলে কি ভাল হইত না ? বিনাচিত্রে লেডী ডফরিণের কীর্ত্তি চিরস্থায়িনী হইয়াছে।

ছুই রাণীর সম্ভাষণ— মহীশুরের বিধবা রাজ্ঞী উৎকামুণ্ডে আছেন। বরদার মহারাণী সমবেদনা প্রকাশার্থ সেথানে আদিয়া তাঁহার সহিত সাক্ষাৎ করেন।

চীন-জাপান সন্ধি—গত ৯ই মে
চীন সমাট দন্ধিপত্রে স্বাক্ষর করিয়াছেন।
ক্ষুসিয়া, ফ্রাক্ষা, জার্মণী প্রতিবাদী হওয়াতে
জ্ঞাপান লিওটং উপদ্বীপের দাবী পরিত্যাগ
করিয়াছেন, কিন্তু তৎপরিবর্ধ্বে অনেক
টাকা লইয়াছেন।

চীনের সোভাগ্য--চীনসামান্ত্যে

৪০ কোটা লোকের বাস, কিন্তু ১০০ জনের অধিক চিকিৎসক নাই। কলিকাতার ৬ লক লোকের বাস; চিকিৎসকের সংখ্যা ৬ হাজারের অধিক হইবে; তথাপি রোগের আধিকাই হইতেছে।

কুদ্রতম সাধারণতন্ত্র—সার্ভিনিরা দ্বীপ হইতে ১০ মাইল দ্রবর্তী ষ্ট্রাভোলারানামক দ্বীপের পরিমাণ ২॥০ ক্রোল মাত্র,
এবং অবিবাসীর সংখ্যা ৫৫ জন। ১৮৮৬
সালে ইহা সাধারণতন্ত্ররূপে পরিণত
হইয়াছে; এখানে পুরুষদিগের জার্র দ্বীলোকদিগেরও রাজনৈতিক বিষয়ে মত
দিবার অধিকার আছে। পিরানিস্ পর্বতে
গৌষ্ট নামে এক স্বাধীন রাজ্য আছে;
ইহার পরিমান্ত এক ক্রোলও নহে, এবং
অধিবাসীর সংখ্যা ১০০ জন। ১৬৪৮ ক্রীক

হইতে ইহা সাধারণতত্ররূপে পরিগণিত ररेगा जानिएएए।

প্রবৈশিকা পরীক্ষার ফল-এ বংসর কলিকাতা বিশ্ববিদ্যালয়ে সর্বাশুদ্ধ :৪৫ জন মহিলা উত্তীর্ণ হইয়াছেন; তন্মধ্যে ১৩ জন ১ম বিভাগে, ১৯ জন ২য় বিভাগে এবং ১৩ জন ৩য় বিভাগে।

পৃথিবীর ওজন—বরজ নামে এক পণ্ডিত গণনা করিয়া বলিয়াছেন পৃথিবীর ভার ৫,৮৩,২০,৬৪,০০,০০,০০,০০,০০, 000 हैन ।

কাগজের মোজা—জর্মণিতে ইহা বহুল পরিমাণে চলিত হইয়াছে। ইহা **পরিধান ক**রিলে পায় ঠাণ্ডা লাগে না।

অন্নধ্বংস—ভগবানের প্রদত্ত যত আমে আমরা ধবংস করি, তাহার উপযুক্ত **কান্স কি ক**রি ? এক পণ্ডিতের গণনায় সামান্ত কুধানীল লোক ৬০ বংসরে প্রায় ১৩০০ মণ थोना थोत्र; এ हिमादि वंश्मदि २० मण এवः প্রতিদিন ২ সেরের কিছু

अधिक रहा। कछ लाक रेरांत्र विश्वन চতুপ্ত ণ আহার করিয়া থাকে !

ন্ত্ৰী এল, এল, ডি,—অহাবধি ৩টি স্ত্ৰী-লোক L. L. D. এই উচ্চ উপাধি পাইয়া-ছেন। তাঁহাদের নাম মেরিয়া मिद्रम. এমিলিয়া এডওয়ার্ডস এবং ফ্রান্সেস উইলার্ড। ইহাঁদের गरधा প্রথমটি জ্যোতির্বিভা-বিশারদ ও দ্বিতীয়টি মিসরের ইতিব্ৰুজ্ঞ।

ন্ত্রী-স্বত্ব—আমেরিকা এত বড় সভ্য ও স্বাধীন দেশ, তথাপি সেথানে স্ত্ৰীলোককে কোনও কারবার খুলিলে স্বামীর নামে ্ খুলিতে হয় এবং স্ত্রীলোক মজুরী করিয়াও যাহা উপাৰ্জ্জন করে, তাহার অদ্ধাংশের উপর স্বামীর বৈধ অধিকার। এই ব্যবস্থা রহিত করিয়া স্ত্রীধনে স্ত্রীলোককে পূর্ণস্বস্থ দিবার জন্ম কালিফোর্ণিয়ার নামক নগরস্থ এক সভা হইতে এক আবেদন স্বাক্ষরিত হইতেছে।

বিগত শতবর্ষে ভারত রমণীদিগের অবস্থা।

বিধাতার কুপায় বাঙ্গালাদেশে এমন বিক্রমে যে সকল কাজ করিয়াছেন, তাহা দিনে এক মহাপুরুষের আবিভাব হইল। হম্ম, বদাম্ভতা, পরার্থপরতা, সংসাহস, ভেজবিতা, আত্মত্যাগ, বিদ্যা বৃদ্ধিতে তিনি **শবস্থানী**য়। পণ্ডিতবর ঈশরচক্র বুদ্যাসাগর মহাশরের কথা বলিভেছি। विश्वा-विवादहत्र अञ्च अहे क्रियिनिः हिन्ह- विश्वह-

আলোচনা করিতেও স্তম্ভিত হইয়া যাইতে হয়। সামাজিক সংগ্রামে দেশের শত লোক এক দিকে, আর তিনি একা এক मिर्क माँ । इशिक्तिन ; শক্তিতে বিধবাবিবাহ

"শান্ত্ৰ-সিদ্ধ" ৰশিয়া প্ৰতিপন্ন হয়। এই वक्रामान विनि अथाय विधवाविवाह करवन. বিধবাবিবাহের বিপক্ষেরা ভাঁহাকে ও বিধবাবিবাহ-প্রচারক বিদ্যাসাগর শয়কে হত্যা করিতে গিয়াছিল, দ্যাময় ঈশরের রূপায় সে হুরভিদন্ধি সফল হয় কিন্ত বোম্বাই প্রদেশে এই इर्पण्ना वाखविक इरेग्नाहिन । त्वात्यत्र हाण আদালতের জজুমেরবা কেনবা সেখানে नर्सार्थ विश्वविवाह करत्रन। বিবাহের বিপক্ষগণ (উপাদাস্তর অভাবে) এক রাত্রিতে এই দম্পতীকে নিদ্রিতা-বস্থায় কুপের মধ্যে নিক্ষেপ করিয়া হত্যা क्तिश्राहिल। किञ्च এই घটनाश त्म त्मर् বিধবাবিবাহ রহিত হওয়া দুরে থাকুক, আরও প্রবলষ্ট্র উঠিল (১)।

বিধবা-বিবাহ প্রচার করিয়া, বছবিবাহ নিবারণ জন্তও বিভাসাগর মহাশয় বিশেষ আন্দোলন করেন। বছবিবাহ নিবা-রণের সময়েও শাস্ত্রীয় বিচারে এ দেশের বড় বড় পণ্ডিতেরা বিভাসাগর মহাশয়ের কাছে হারিয়া গিয়াছিলেন। বছবিবাহ "অন্তায় ও অশাস্ত্র" বিলয়া রাজাও বৃঝিয়া-ছিলেন, বিভাসাগর মহাশয়ও বছবিবাহ নিবারক আইনের জন্ত রাজন্বারে প্রার্থী হইয়াছিলেন; কিন্তু নানা কারণে তাঁহার চেষ্টা সফল হয় নাই। অবশেবে, এ দেশের

नर्कनाथात्रभ त्वादक बांबाटक वहविवादहेव ষসভ্যতা ও অপকারিতা বৃ**ৰিন্ধা স্বভঃ**-প্রবৃত্ত হইয়া ঐ ম্বণিত প্রখা পরিত্যাগ করে, এই আশয়ে স্থশিকার বৃত্ত প্রচারে একান্ত যত্রবান হন। শুনা যার দেশের লোকের মধ্যে এইরূপ স্থলিকাবিন্তারই বিভাগাগর মহাশরের কলেজের (মেট্-পলিটন ইন্ষ্টিটউশন) উৎপত্তির এক শ্রেষ্ঠতম উদ্দেশ্র। ফলত: স্ত্রী-শিক্ষার উন্নতি, বিধবা-বিবাহ প্রচার ও বছবিবাছ নিবারণ--হতভাগিনী ভারত-মহিলাদিগের জন্ম এই সকল কাজ করিতেই বেন বিধাতা বিভাগাগর মহাশয়কে পাঠাইয়া ছিলেন। বিস্থাসাগর মহাশয় মাধুনিক ভারত "ধন্তবাদের" যোগ্য श्रेग्राष्ट्र ।

বর্ষার পরে যেমন শরৎ আইসে, শীতের পরে যেমন বসম্ভ আইসে, ভারত-মহিলা-দিগের বছ-শতান্দীব্যাপী হুৰ্ভাগ্য-অন্ধ-কারের পরে সোভাগ্য-চক্রমা তেমনি ধীরে ধীরে ফুটতেছিল। বিগত শতাকীর **ब्र**ेश যুগের শেষভাগে ন্ত্ৰীজাতির উন্নতির জন্ম অধিকতর আন্নোজন হইতে नाशिन। আগে খ্রীষ্টান্-ধর্ম্ম-প্রচারকগণ স্বীজাতির উন্নতির জন্ম যে রক্ম চেষ্টা করিয়াছেন, এখন দেশীয় ব্রাহ্মগণ স্ত্রী-শিক্ষার জন্ম সেই রকম চেষ্টা করিছে লাগিলেন। ব্রাহ্মসমাজের নেতা মহাম্ম কেশবচন্দ্ৰ সেন অসাধারণ-ক্ষমতাপক্ষৰ্যক্তি ছিলেন। তাঁহার ধর্মভাব, খদেশ-হিটভ-বণা, উদারতা, বাগ্মিতা ও বিবিধ মহত্তে

⁽১) নেরবা কেনবা সন্ত্রীক নিহত হইলে, পর বৎসরেই সেধানকার প্রধান বণিক্ মাধব দাস রব্-নাথ বিধবাবিবাহ করেন। ইহাতে বিপক্ষগণ প্রাঞ্জিত হইলাছিল।

वह भानव मूक्ष ७ हम९कुछ रहेएछ লাগিলেন ঃঅনেকেই কেশবচন্ত্রের শিব্যথ প্রছণ করিতে লাগিলেন। থাহারা ব্রাহ্ম-সমাজে প্রবেশ না করিলেন, তাঁহারাও কুনংখার ও অসত্য পরিত্যাগ করিয়া সত্য, নীতি ও বিশ্বজনীন ধর্ম গ্রহণ করিতে চেষ্টা ক্রিতে লাগিলেন। এই ধর্মাচার্য্য কেশব চক্র নারীকুলের একজন পরম হিতৈথী ছিলেন। যাহাতে স্ত্রীজাতির ধর্ম, জ্ঞান, বিদ্যা, বৃদ্ধি, আচার, ব্যবহার উন্নত হয়, যাহাতে স্ত্রীজাতি পরাধীনতা হইতে মুক্তি **ঁলাভ করিয়া ঈশ্বরের অ**ধীনতায় আপনা-দিগকে চালিত করিতে পারে, যাহাতে विश्वाविवाद श्रीत्मन, वह्यविवाद निवादण अ জ্বীশিক্ষার বছল প্রচার হয়, স্বর্গীয় কেশব-চক্র একান্ত যত্নে তাহাই চেপ্তা করিতে লাগিলেন। তাঁহার অসাধারণ বক্তৃতা-শক্তি ছিল; তাই তাঁহার উত্তেজনায় দেশের শত শত ব্যক্তি স্ত্রীজাতির হু:থে সহায়ভূতি প্রকাশ করিতে লাগিলেন। নারীজীবনের একমাত্র উদ্দেশ্র গৃহ-কর্ম নহে,পুরুষের তায় রমণী-জীবনেরও প্রধান উদ্দেশ্য সত্যধর্মো আত্মোৎসর্গ করিয়া আত্মোন্নতি, পরোপকার, বিশ্বজগতের মন্ত্রের জন্ম যথাসাধ্য কাজ করা; এ কথা ব্দনেক পুরুষই সত্য বলিয়া বুঝিলেন। বী-শিকার জন্ম প্রায় প্রতি পল্লিগ্রামে মহোৎসাহে বালিকা-বিভালয় रहेराज्याशिल। महत्त्र धनी महिलानिशतक জেম্ সাহেব শিক্ষয়িতী বার্ ইংরাজিভাষা, উলের কান্ত, সচের কান্ত, প্রভৃতি শিকা

দেওয়া হইতে লাগিল। শিক্ষিত যুবকের। নিজ নিজ স্ত্ৰী, ভগিনী প্ৰভৃতিকে উলকি. মিসি, বছল পরিমাণে শাঁখা সিঁদুর ব্যবহার অস্থান্থ কুরুচি পরিত্যাগ করিতে শিথাইতে লাগিলেন। পৌরাণিক ব্রতাদি সতাধৰ্মে আত্যোৎসৰ্গ অৰ্থাৎ সতাস্বরূপ ঈশবে আত্মসমর্পণ করিয়া. আত্ম-সংযম কবিয়া অভাাস জগতেব *হি*তৈষণা শিক্ষা যে মানব-জীবনের উচ্চতর কর্ত্তব্য, এ কথা অনেক রমণীই শিখিতে পারিলেন। শিক্ষিত যুবকেরা বছবিবাহ নিবারণ ও বাল্যবিবাহ পরি-ত্যাগ করিতে ক্রতসঙ্কল হইলেন। স্ত্রী-জাতির স্থক্চি ও সভ্যতার সহিত অলঙ্কার ও পরিচ্ছদেরও উন্নতি হইতে লাগিল। ব্রাহ্মসমাজ কার্য্যতঃ এই সর্কলের অনেক বিষয়ের "আদর্শ" স্বরূপ হইয়া উঠিলেন। ব্রাহ্মদমাজে অনেক বালিকা-বিধবার পুন:-সংস্থার হইল। অনেক ইউরোপীয় স্ত্রী পুরুষ, ভারতবাসিনীদিগের উন্নতির বিষয়ে যোগদান করিলেন।

এই সময়ে কলিকাতায় উন্নতিশীল
ব্যক্তিগণ "ভারত-সংস্কার সভা" সংস্থাপন
করিয়াছিলেন। দেশে স্থনীতি ও সম্ভাব
প্রচার করা এই সভার এক প্রধান
উদ্দেশ্য। এই সভার অন্তর্গত শিক্ষয়িত্রীবিস্থালয়ে এ দেশের অনেক বালিকা
উচ্চতর শিক্ষার সহিত গার্হস্থা, শিল্প ও
সঙ্গীতবিস্থা শিক্ষা পাইতেছিলেন। প্যারীচাঁদ মিত্র, অক্ষয়কুমার দক্ত প্রভৃতি কয়েকজন মহাত্মার লিখিত বালালা পুত্তক হইতে

বন্ধবাসিনীপণ শহোপক্তা হইডেছিল।
ইত্যগ্রে কবিবর মাইকেল মধুস্দন দত্ত,
দীনবন্ধ মিত্র প্রভৃতির হত্তে বঙ্গভাষার
বিশেষ উৎকর্ষ সাধিত হইয়াছিল।

এ মুগে ভারতের একজন বিহুষী রমণী ভারতের মুখোজ্জল করিয়াছিলেন। ইনি বৈদিক মহিলাগণের আসনে বসিবার যোগ্য। এই মহিলা মহীশুরের মহারাণী দীতাবিলাদ দি, আই, ই। এই রমণীরত্ন কোনও প্রসিদ্ধ বিস্থালয়ে শিক্ষালাভ করেন নাই, নিজগুণেই দেবী-জীবন লাভ করিয়াছেন।*

রিপত শতাব্দীর তৃতীয় যুগের শেষ-উন্নতিকব ভাগে স্ত্রীজাতির একটি শুভ । ঘটনা বিশেষ উল্লেখযোগ্য। তথন বালিকারা (বিশেষতঃ পল্লিগ্রাম-বাসিনীরা) অল বয়সেই বিভালয় ত্যাগ করিত। ঘরে বসিষ্ম পড়িতে পারে, নিজেদের উপযোগী স্থশিকা লাভ করিতে পারে, তথন সে রকর্ম স্ত্রী-পাঠ্য সাময়িক পত্র একথানিও **हिन्मुमहिनानि**रशत्रं ছিল না। বলিতেছি ৷--ইহার ফল এই ইইত যে, হয় তাহারা বিভালয় পরিত্যাগের সহিত লেখা পড়া ছাড়িয়া দিত, নয় কুরুচিপূর্ণ অপাঠ্য গ্রন্থ পাঠ করিত। এই অভাব দর করিবার জন্ম বাঙ্গালার কয়জন নারী-हिटेज्यी युवक >२१० माल "वामात्वाधिनी" মাসিক পত্ৰিকা প্ৰকাৰ ষাহাতে বাঁমাগণ সকল প্রকার কুচর্চা ও

* ২৩০০ সালের বামাবোধিনী, আবাঢ় মাস— সীতাবিলাসের জীবনী দেশ।

কু-অভ্যাস ছাড়িয়া উপযুক্তরূপে জ্ঞান, বিষ্ণা, শিল্পনৈপুণ্য প্রভৃতি উপার্জন করিতে পারেন, জাতীয় সদাণ সকল গ্রহণ করিতে পারেন, ধগোল, পদার্থবিদ্যা, ইতিহাস, প্রভৃতি শিক্ষার সহিত ঈশ্বরে ও বিখাস, সতীত্ব, সরলভা, লজ্জা, নম্রতা, দয়া, দাক্ষিণ্য, গুরুত্তক্তি, পতিপ্রেম, ভগ্নীভাব, সম্ভান-ম্বেহ, প্রভৃতি তাঁহাদের জাতীয় সদাণ যাহাতে উপ-যুক্ত রূপে বিকাস পায়, যাহাতে তাঁহারা গার্হস্থা নীতি উপযুক্তরূপে শিক্ষা করিরা গৃহকর্মে পারদর্শিনী হইয়া সুমাতা. মুভার্য্যা ও স্থকন্তা হইতে পারেন, বা**হাতে** তাঁহারা সমাজে জাতীয় কর্ত্তবা পালন করিতে পারেন, পুরুষের সহকারিণী-রূপে ধর্ম ও পবিত্রতা বিকাদের সহায়তা করিছে পারেন, সেই সকল বিষয়ের স্থশিকা দিতেই বামাবোধিনী জন্মগ্রহণ করিলেন। বামাবোধিনী অন্তঃপুর-বাদিনীদিগের মধ্যে সেই স্থশিকা প্রচার করিতে লাগিলেন। আরও এই বামাবোধিনীতে বামারচনা প্রকাশের নিয়ম থাকাতে অনেক রমণী উৎসাহিত হইয়া প্রভাও গল্প রচনার অভ্যাস করিতে লাগিলেন। বামাবোধিনীর বামা-রচনা স্তম্ভে বঙ্গবাদিনী দিগের প্রথম লেখা প্রকাশিত হইতে লাগিল। এতম্ভিন্ন বামাবোধিনীর কর্ত্রপক্ষগণ পরীকা ও পরীকোতীর্ণ মহিলাগণকে পারিভোষিক প্রদান 2101 করাতে অনেক পাঠিকার শিক্ষাব্রাপ कुर्छि পाইতে नाशिन। वामारवाधिनीव

জন্মগ্রহণের কিছুদিন পরে ইহার প্রবন্ধ নকল সঞ্চলন করিয়া "নারীশিক্ষা" নামক ছইথানি স্ত্রী-পাঠ্য উৎক্লপ্ত'ক প্রকাশিত হইল, তাহা হইতেও বঙ্গমহিলা শিক্ষা বিষয়ে বিশেষ উপক্রতা-হইলেন।

মঙ্গলমর বিধাতা, স্ত্রীজ্ঞাতির এই সকল মঙ্গলকর ঘটনা সংঘটন করিয়া তৃতীয় বুগের পরিসমাপ্তি করিলেন।

ইহার পরে চতুর্থ যুগের প্রবর্তন।
করণামর ভগবানের রুপার প্রথম যুগে
জীজাতির উন্নতির যে বীজ উপ্ত হইরাছিল, দিতীর যুগে যাহার শাখা প্রশাখা হইরা
ফুল ফুটিরাছিল, চতুর্থ যুগেই তাহার ফল
ফলিবার কথা। এই ফল কি রকম ফলিল,
তাহাই আমাদিগের আলোচা।

আমাদিগের পাঠক পাঠিকাগণ জানেন যে, এ যুগে স্ত্রী-শিক্ষার পথ বড়ই সুগম হইরাছিল। স্থতরাং ভারতবাসিনীদিগের শিক্ষাবিভাগে বিশেষ উন্নতি শাগিল। ভারত-সংস্কার সভার অন্তর্গত निक्विजी-विशालस क्यांती রাজলক্ষী त्मन, मोनाभिनी काखिशित्र, রাধারাণী দাহিড়ী প্রভৃতি ছাত্রীগণকে পরীক্ষার সময়ে পণ্ডিত মহেশচক্র ক্লায়রত্ব, রাধিকা-প্রাসন্ধ মুখোপাধ্যান প্রভৃতি বলিয়াছিলেন ছাত্রীরা যে রকম পারদর্শিতা দেখাইয়াছেন, এ রক্ষ পারদর্শিতা একজন বিশ্ববিত্যা-লভার পরীকার্থীর পক্ষেও গোরবের বিষয়!" বেপুন স্থলের ছাত্রীগণও বিশেষ প্রাশংসিতা

হইরাছিলেন। এতম্ভির অভান্ত পরি-থ্রামস্থ বালিকা-বিভালরের পরীক্ষক ও পরিদর্শকগণও সম্ভোবজনক মন্তব্য প্রকাশ করিয়া বালিকা-বিভালরের উন্নতির জন্ত অধিকতর চেষ্টা করিতে লাগিলেন।

বঙ্গভাষার উন্নতির সহিত এ দেশে স্ত্রীপাঠ্য বছতর প্তক প্রচারিত হইল।
ডাক্তার যহনাথ মুথোপাধ্যায় মহাশ্ম
"ধাত্রীশিক্ষা", ডাক্তার গঙ্গাপ্রসাদ মুথোপাধ্যায় মহাশ্ম "মাতৃশিক্ষা", বাবু শিবচক্র
দেব "শিশু-পালন" প্রকাশ করিয়া
দেশীয় স্রীজাতিকে যার পর নাই উপক্রতা
করিলেন। স্তিকা-গৃহ, প্রস্তীর শুশ্রষা,
শিশুপালন, ও ধাত্রীবিভা বিষয়ে অনেক
মহিলা অভিজ্ঞতা লাভ করিলেন।

ধর্ম বিষয়ে ভারতবর্ষে বড়ই মন্তভেদ দেখা যায়। ভিন্ন ভিন্ন মতাবলম্বী ব্যক্তিগণ পরস্পরের ধর্মমতে অশ্রনা করেন, এমন ঘটনা ভারতবর্ষে সচরাচর দেখিতে পাওয়া এ দেশের রাজা ভিন্নধর্মাবলম্বী. দেশের লোকেরা পরস্পর বিপরীতধর্মা-वनन्नी, এই अन्त्र (भातिवादिक ব্যতীত) জাতীয় ভাবে এ দেশে ধর্মশিক্ষা দেওয়া হয় না। বিগত শতাব্দীর চতুর্থ যুগে দেশের ও বিদেশের কয়েক মহান্মা আর্য্য ঋষিগণের ধর্মশান্ত্ররূপ হইতে অনেক অমৃল্য রত্ন সংগ্রহ করিরা नर्सनाधात्रावत्र निकटि ध्यकाम करतन। পূর্বে মহাত্মা রামমোহন রার, পরবর্তী नभरत्र महर्षि एएरवन्द्रनाथ ठीकूत, महानन्त সরস্বতী প্রভৃতি এই কার্যা, করেন।

ৰাহা হউক চতুৰ্থ বুগে এই সকল অসূল্য রত্বের লোভে ভারতের বহুলোক হিন্দুশাস্ত্র অবেষণ করিতে লাগিলেন। আমাদের দেশের একজন মহাত্মা বলিয়াছেন যে, "প্রণিধানপূর্ব্বক দেখিলে বুঝিতে পারা যায় যে, যাহা হিন্দুর সার ধর্ম, তাহাই ব্রাহ্মধর্ম"। এই অমুসন্ধিৎসার ফলেও এই মহাবাক্য অনেকটা সফল হইল। আৰ্যা-ধর্ম্মের ভিতরে যে সকল উপধর্ম ঢুকিয়া-ছিল, শিক্ষিত সমাজে তাহার অনেকগুলি পরিত্যক্ত হুইন। সত্য, সর্বতা, বিনয়, পবিত্রতা, আত্মসংযম, আত্মসংগঠন. পরোপকার, পর-হিতৈষণা যে মমুষ্য-জীবনের উচ্চত্তম কর্ত্তব্য, এ কথা অনেকেই বুঝিতে পারিলেন। সত্য ও

নীতির অনেক স্থাপই প্রায় সকল সমাজে

গৃহীত হইল। এইরূপ আন্দোলনে ভারত-

বাসিনীদিগের অনেকে সত্যধর্ম্মে আত্মোৎ-

সর্গ করিতে সক্ষমা হইলেন।

এই যুগের মধ্য সময়ে (১৮৮৩ খ্রী:
অব্দ) বেথুন কলেজের হ্যোগ্য ছাত্রী
কুমারী চক্রমুখী ও কাদদ্বিনী বপ্রজাদ্বর
উচ্চতর পরীক্ষায়,উত্তীর্ণ হওয়াতে বেথুন
কুল "কলেজে" পরিণত হয়। কলিকাতার
বাক্ষমুল ও ভিক্টোরিয়া কলেজনামক
আরও ছইটী বিদ্যালয়ে রমণীগণকে শির্ম,
সন্দীত, গার্হস্থা শিক্ষা দিবার রীতিও
প্রবর্ত্তিত হয়। এতত্তির কলিকাতার রীইধর্ম-প্রচারকদিসের সংস্থাপিত কয়টী স্ত্রীবিদ্যালয়ে এবং বোদাই, মাক্রাজ, পঞ্লাব
প্রভৃতি প্রদেশে উচ্চ শ্রেণীর স্ক্রী-বিদ্যালয়ে

রমণীগণের শিক্ষাকার্ব্য সংসাধিত হয়।

বঙ্গবাসিনাদিগের মধ্যে কুমারী রাধা-রাণী লাহিড়ী, খ্রীমতী স্বর্ণকুমারী দেবী গ্রন্থকর্ত্তী, খ্রীমতী শ্যামাস্থলরী দেবী, অর্নারিনী সরকার প্রভৃতি স্থলেধিকা আখ্যা পান।

এ মুগে ভারতবর্ষে, বিদ্যাসাগর মহাশর, অক্ষকুমার দক্ত, হেমচক্স বন্দ্যোপাধ্যার, বহুনাথ মুথোপাধ্যার, ব্রজমোহন
দক্ত, শশিপদ বন্দ্যোপাধ্যার, দাদার্জী
নোরজী, মালাবারি * ইত্যাদি বহু মহাম্মা
নারী-হিতৈষণা-ব্রত গ্রহণ করেন। নারীহিতৈষীদিগের মধ্যে অনেক প্রধান ব্যক্তির
নাম এ প্রবন্ধে অপ্রকাশিত থাকিলেও
ভারতরমণীর জাতীয় ইতিহাসে তাঁহারা
অমৃতাক্ষরে মুদ্রিত হইরা রহিবেন।

এখন স্থাশিকিত যুবকদিগের মধ্যে সকলেই প্রায় বছবিবাহ পরিত্যাগ করিলেন। বিধবাবিবাহ ব্রাক্ষসমাজে খুবই প্রচলিত হইল; হিন্দু সমাজে সম্পূর্ণ রূপে গৃহীত না হইলেও অনেক হিন্দু যুবক বিধবাবিবাহ করিতে প্রবৃত্ত হইলেন। শিশু-বিবাহ প্রায় উঠিয়া গেল; বাল্যা বিবাহসম্বন্ধে হিন্দু সমাজে বিশেষ আন্দোলন চলিল। অনেক বিজ্ঞ ব্যক্তিও চিকিৎসকগণ বাল্যাবিবাহ বিশেষ অপকারী বলিয়া মস্তব্য প্রকাশ করিলেন।

শালাবারি একজন বিখ্যাত নারী হিতৈবী
 কিন্ত বড় ছু:খের বিষয় সেরপ উদারচেতা ব্যক্তিরও
 বহ বত অসসকুল।

এ দেশে পুরুষ জাতির মধ্যেই

চিকিৎসা-বিদ্যা প্রচলিত; ইহাতে রমনীগণের অনেক অস্থবিধা হয়। এই

অস্থবিধা দূর করিতে গবর্ণমেন্ট এ দেশে

ধাত্রী-বিদ্যালয় স্থাপন করেন। তাহাতে
বহু রমনী ধাত্রীবিদ্যা শিক্ষা করিয়া স্থদেশীয়া মহিলাগণের মহোপকার সাধন
করেন।

কিন্তু কেবল ধাত্ৰীর অভাব পূর্ণ হওয়া এ দেশের রমণাগণৈর পক্ষে ''যথেষ্ট'' হইল না। স্ত্ৰী জাতি স্বজাতীয়া চিকিৎসক অভাবে অনেক পীড়ায় কষ্টপায়। ভারতের কোনও সন্ত্ৰান্তবংশীয়া মহিলা ঐরূপ পীড়ায় বড় ক্লেশ পাইয়াছিলেন, পরে স্থানিপুণা জনৈক ইয়োরোপীয় মহিলা (চিকিৎসক) কর্ত্তক চিকিৎসিত হইয়া আরোগ্য লাভ করেন। উক্ত চিকিৎসক মহিলা দেশে ফিরিয়া যাইবার সময়ে সেই সন্ত্ৰাস্ত মহিলা তাঁহাকে বলিয়া দেন ''মেয়ে ডাক্তার অভাবে ভারতবাদিনীদিগকে কি ক্লেশ পাইতে হয়, তাহা আপনি স্বচক্ষে দেখিয়া গেশেন ; এ কথা ভারত-সাম্রাজ্ঞীকে অবশ্য অবশ্য বলিবেন।" ইউরোপীয় মহিলা স্বদেশে গিয়া ভারতেশ্বরীর নিকটে সেই কথা প্রকাশ করেন ; ইহাতে করুণা-ম্মী ভারতেশ্রী দ্যার্ডা হইয়া:ভারতবর্ষে ল্লীজাতির মধ্যে চিকিৎসা-বিদ্যা প্রচলন ভারতবর্ষের তৎকালীন मुद्रम क्रान्।

গবর্ণর জেনারাল লর্ড ডফ্রিণের সহধর্মিণী লেডী ডফ্রিণের উপরে এই কার্য্যের ভার অর্পিত হয়। ১২৯৫ সালে লেডী ডফ্রিণ এ দেশের রমণীগণের জ্লু স্ত্রীজ্ঞাতির চিকিৎসা-বিস্থালর স্থাপন করিয়া দেশে ফ্রিরা যাইবার সময়ে ভারতবর্ষের প্রায় ৭ হাজার রমণী তাঁহার প্রতি ক্লুজ্ঞতা প্রকাশ করিয়া অভিনন্দনপত্র লেখেন। যাহা হউক, এই বিস্থালয়ে অনেক মহিলা বোগ্যতার সহিত শিক্ষা করিতেছেন। ইতিমধ্যে কয়েকজন চিকিৎসকও হইয়া-ছেন।

এ যুগে ভারতের ছইটি মহারাষ্ট্রীয় মহিলা ভারতের মুথ উজ্জ্ল করেন। এক. পণ্ডিতা রমা বাই সরস্বতী ; এই বিছ্বী মহিলার বিভাবতায় এদেশের বলিয়া নহে. জগতের রমণীগণ গৌরবাম্বিতা হইতে ইনি স্বজাতীয় ভগিনীদিগের পারেন। মঙ্গলের জন্ম আত্মোৎদর্গ করিয়াছেন। অপর, আনন্দী বাই যোশী, এম, ডি; এই মহাপ্রাণা রমণীও যেরূপ বিছাবতী, সেই-রূপ উচ্চাশয়া ছিলেন। বড় ছঃথের বিষয়, কার্যক্ষেত্রে প্রবেশ না করিতেই এই तुमगी-तुषु मानवनीना मःवत्रण करत्रन। ইনি যেরূপ মহাপ্রাণা ছিলেন, ভাহাতে. ভারত মহিলাগণ ইহাঁর নিকট হইতে অনেক উপকৃত হইতে পারিতেন, সন্দেহ নাই। (ক্রমশঃ)

11:4

"সভাব যায় ম'লে।"

দাপ যথন বাঁচিয়া থাকে, কুগুলী পাকাইয়া থাকে, চলিবার সময়ও বাঁকিয়া বাঁকিয়া চলে। কিন্তু সেই সাপ যথন মরিয়া যায়, তখন সটান সোজা হইয়া পড়িয়া থাকে, সে যেন আর পূর্বের সে জন্তু নয়। সাপের স্বভাবের বক্রতা মৃত্যুতে দূর হয়। মামুষের স্বভাবের মধ্যে যে কুটিলতা থাকে, তাহাও সহজে দূর হয় না। যতদিন মাত্র্য বাঁচিয়া থাকে, কার্য্য করে, তাহার স্বভাবের পরিচয় কোন না কোনরূপে পাওয়া যায়। কত সময় দেখা যায়, কু-স্বভাব ব্যক্তিকে সৎসঙ্গে ব্লাখ, সত্নপদেশ দেও, সংকার্থ্যৈ অভ্যস্ত কর, তথাপি অবসর পাইলেই সে আপনার খলতার পরিচয় দিবে। চৌর্য্যস্বভাবের লোক সন্ন্যাসী হইয়াও "তুম্বনাড়া রোগ" ছাড়িতে পারে না; ক্রোধন স্বভাবের লোক .বিবাদী ব্যক্তি না পাইলেও বাতাসের সহিত যুদ্ধ করে; আর নিন্দুক স্বভাবের লোক পর্ম সাধুদিগের মধ্যে থাকিয়াও মক্ষিকার স্থায় ক্ষতস্থান অৱেষণকরে এবং গুণকেও দোষ विनम्ना वार्था करत्र। এই जन्न जी-कवि त्व वित्राष्ट्रिन "यात्र त्य त्री ठ, ना ছाङ् क्षांहि९", हेश वहमनिञात कथा वित्रा স্বীকার করিতে হইবে। কিন্তু উপরে যে ন্ত্রী-কবি-বচন উদ্ধৃত হইয়াছে, তাহার অর্থ কি ? সাপ যেমন মরিয়া গেলে তাহার বক্র অভাব ছাড়িয়া সরল হয়, মহুষ্য মরিয়া কি

সেইরূপ কুসভাব ছাড়িয়া সংস্ভাব হইবে? মরিলে অসং লোক সংহয় কি নাকে জানে ৷ তবে অবশ্য সমাজের কণ্টক হইয়া সে আর কোনও পীড়ন করিতে পারে না। কিন্তু লোককে মরিতে বলা রাগ ও হু:থের কথা, মরিলে যে স্বভাব বদলাইরা যায়, তাহার প্রমাণ কি? অহুধাবন করিলে এই বচনের মধ্য হইতে গুঢ় সভা আবিষ্কার করা যায় এবং তাহাই গ্রহণ করিতে পারিলে প্রকৃত উপকার লাভ হয়। মানুষ মৃত্যুকালেত মরিয়া **থাকে**, 'জীয়ন্তে মরা' আর এক প্রকার মৃত্যু আছে। এই মৃত্যুতে মান্থবের দেহ মরে না, কিন্তু আত্মার অবস্থার পরিবর্ত্তন হইয়া স্বভাব বদলাইয়া যায়। ধর্মজগতের ইতি-হাসে ইহার অনেক প্রমাণ পাওয়া **যায়।** নর্ঘাতক দস্ত্য রত্নাকর বিশ্বপ্রেমিক বান্মীকি হইয়াছেন, হরস্ত জগাই মাধাই মান্থবের পাথের ধূলি হইয়া বিনয়গুণের পরিচয় দিয়াছেন, অহল্যা পাষাণী আবার মানবী হইয়াছেন এবং খুট্তৰেষীপল খ্রীষ্টাত্ম-রাগী দেওঁপল হইয়া মহোৎসাহে তাঁহারই ধর্ম্ম প্রচার করিয়াছেন। যে মৃত্যুতে এইরূপ কুস্বভাব বিনষ্ট হইয়া যায়, তাহা যে কি, क विगति ? देश श्रेयद्वत क्रुशाध्यमस সুষ্ঠি। এই সুম্ভির উদয় *হইলে* **আহ্ব** পাপকে ভয়ম্বর সর্শের স্থায় ভয় কলে, দ্বণা করে ও দূরে পরিহার করে। কত

আমৃতাপ, কড় ক্রন্দন হাদয়কে থাক করিয়া ধৌত করিয়া দের। ইহাতেই প্রাতন জীবন গিয়া নব জীবন লাভ হয়, প্রাতন আভাব বিনষ্ট হইয়া নৃতন অভাবের উৎ-পত্তি হয়। এই মৃত্যু বৈরাগ্যের মৃত্যু। এই মৃত্যু না হইলে কেহ কুটিল অভাব ছাড়িয়া সরল হইতে পারে না, সংসারমায়া ছাড়িয়া ভগবৎ-প্রীতি শাভ করিছে পারে না এবং পাপময় অসার জীবন বিসর্জন করিয়া পুণ্য জীবনের অধিকারী হইতে পারে না। জলস্ত বৈরাগ্যানশে কু-বাসনা দং হইলে মানবপ্রকৃতি কুভাব ছাড়িয়া স্থভাবে ন্তনরূপে সংগঠিত হয়। এই বৈরাগ্যের জীবস্ত মৃত্যই প্রার্থনীয়।

কৃষিবিষয়ক নানা কথা।

थाना ।

ধান্তের চাষ আবাদ অতি সাধারণ ব্যাপার। উহার কিছু না কিছু সকলেই **অবগত আছেন,** এইজন্ম উহার চাষ আবাদ প্রায় কোন ক্র্যিপুস্তকে লিপিবদ্ধ দৃষ্ট হয় না। পণ্ডিত কালীময় ঘটক প্রণীত "ক্ষবিশিক্ষায়" ধাতা প্রবন্ধটী অতি স্থুক্ষর ও বিস্তৃত ভাবে লিখিত হইয়াছে। .ভৎপাঠে ধান্ত সম্বন্ধীয় সকল কথাই শিথিলাম বলিয়া বোধ হইলেও উহাতে আরও কিছু থাকা উচিত ছিল এবং ভাৰা থাকিলে ঐ প্রবন্ধটীকে ধান্তবিষয়ক অন্বিতীয় প্রবন্ধ বলিয়া স্বীকার করিতে পারি-ভাম। বাবু হারাধন মুখোপাধ্যায় প্রণীত **"কুবিতত্ব"** নামক পুস্তকেও ধান্ত প্ৰবন্ধ আছে। আমাদের বিবেচনায় তাহাও আংশিক অপূর্ণ। জি: সি: বস্থ সম্পাদিত **"ক্রকি** গেকেটে"ও ধান্ত সম্বন্ধে অনেক হ্মা আছে, কিন্ত তাহার ক্লান স্থানেই ভাষিত্ৰক একটা সম্পূৰ্ণ প্ৰবন্ধ নাই।

কিন্ত ধান্ত এ দেশের সর্বপ্রধান ফসল, তাহার সকল কথা জানিতে সকলেরই কোতৃহল হইতে পারে। এই জন্ত আমরা বামাবোধিনীতে ধান্তবিষ্ণাক একটী সর্বাবয়ব-সম্পন্ন প্রবন্ধ লিধিবার চেষ্টা করিব।

ভূমি। কোন্ প্রকার ভূমিতে কোন্
প্রকার ধাতা উত্তমরূপে জন্মিতে পারে,
অগ্রে তাহা নিরূপণ করা আবশুক। তাহা
না করিয়া যেথানে দেখানে ধানের আবাদ
করিলে, ধান না হয়, এমন নহে, কিন্তু
ক্রমক লাভবান্ হইতে পারেন না। ধাত্তের
প্রকারভেদ অমুসারে ধাত্ত জন্মিবার ভূমিও
বছবিধ। ধাত্ত সামাত্ততঃ ত্রিবিধ ধান্যের
ভূমি, আক্রতি, প্রকৃতি, উৎপত্তির নিয়ম
ও চাষ আবাদ সকলই পৃথক্ পৃথক্।
আমরা ক্রমশঃ ঐ গুলি বিবৃত করিব।
কোন্ প্রকার ধান্য কোন্ প্রকার ভূমিতে

জন্মে, তাহার আলোচনা করিবার পূর্বে ভূমির এবং মৃত্তিকার প্রকারভেদ জানা আবশ্যক, নতুবা ধান্যের জন্য ভূমি নির্কাচনের স্থবিধা হইবে না।

পৃথিবীতে ষত স্থলভাগ আছে, তাহা-দের সাধারণনাম ভূমি। আঞ্তির অসমতা নিবন্ধন তাহারা পর্বত. অধিত্যকা, উপত্যকা, শৈলতল, সমভূমি, নদীমুখ, মরুভূমি, ও ভূণভূমি ইত্যাদি বিবিধ নাম ধারণ করিয়াছে। এই সকল প্রকার ভূমিই সুণতঃ হুই ভাগে বিভক্ত--উচ্চ ভূমি ও নিমভূমি। আকৃতি প্রকৃতির ভিন্নতা বশতঃ ঐ বিবিধ ভূমিরও বছতর অবাস্তর ভেদ আছে, তাহাকে ক্ষেত্র-ভেদ কহে। ধান্যের ভূমি নির্বাচন জন্য এই ক্ষেত্ৰভেদ জানা আবশাক। ক্ষেত্ৰভেদ পাঁচ প্রকার: -- ১ -- কৃর্মপ্র্চ ; ২ -- ক্রম-निम; ७-- नमज्ञि; ४-- कुफ़; ৫--বিলান। ইহাদিগকে যথাক্রমে শিষেটান. আড়গড়ানে, একতলা, জোল ও বিল কহিয়া থাকে। ভিন্ন ভিন্ন দেশে এই সকল বিভাগের ভিন্ন ভিন্ন নাম দৃষ্ট হয়। কৃষি-শিক্ষায় অন্ত প্রকার নামের উল্লেখ আছে। ঐ পঞ্চবিধ ক্ষেত্রের প্রথম তিন প্রকারকে **ডাঙ্গা ও শেব ছই প্রকারকে** ডহর কহে। এই পাঁচ প্রকার ভূমির কক্ষণ, উহাদিগের नामअवनमात्वरे উপলব্ধ হইতেছে, এজন্ম তাহার বিস্তৃত বর্ণনা অনাবশুক বোধ হইল। তবে ইহা বলা আবশুক যে, কৃৰ্ম্বপৃষ্ঠ ও ক্রমনিয় এই দ্বিবিধ ভূমি অতি নিরুষ্ট, কেননা উহাদিগের পাত্রে রস দাভার না।

তহপরি বৃষ্টিপাত হইবামাত্র বৃষ্টির জল, कुर्चशृष्टित ठ्रुर्कित्क ७ क्रमनित्वत्र निव-দিকে গড়াইয়া বার। কৃ**র্মপৃঠ ভূমিতে** পান ভিন্ন অন্ত ফসলের আবাদ প্রার হয় না। তবে বিলের মধ্যে বে কৃষ্পষ্ঠ বা শিষেটান ক্ষেত্ৰ থাকে, তাহাতে ধাস্তাদির আবাদ হইতে পারে। এইরূপ বিলের মধাগত আড়গড়ানে কেত্ৰও কথঞ্চিৎ উর্বর হইয়া থাকে। সমভূমি, কুড়ী ও বিলান এই ত্রিবিধ ভূমিই উর্ব্বরা ও ক্লবি-कार्यात डेशयां श इहेग्रा शांक ; कांत्र চতুম্পার্যন্থ বর্ষাবারি ঐ স্থানে আসিরা সঞ্চিত হয় এবং পলি নিকেপপুর্বক উহাদিগকে উর্বার করিয়া তুলে। অবস্থায়-সারে কুড়ী জমির জোল, কাইটোল, কোলকুড়ী ও কোলদোপ এই চারি প্রকার নাম হইয়া থাকে। ঐ সকল ক্ষেত্রে **সর্ধ**-প্রকার শালী বা হৈমস্তিক ধান্ত উত্তমরূপে উৎপন্ন হইয়া থাকে।

বিল কাহাকে কহে, তাহা সকলেই
অবগত আছেন। কোন কোন বিলে নদীর
জল আদৌ প্রবেশ করিতে পারে না,
বর্ধাকালে বৃষ্টিবারি দ্বারা উহা পরিপূর্ণ হয়
এবং বর্ধাস্তে শুদ্ধ হইয়া যায়। কোন কোন
বিলের সহিত বড় বড় শ্রোতস্থতী নদীর
যোগ থাকায় বর্ধাকালে ভূরিপরিমিত
পলির সহিত নদীর জলে পূর্ণ হয় এবং
বর্ধাস্তে তাহার সম্লায় বা অধিকাংশ
নির্গত হইয়া "বিলকাভ্ডে" বা "চাতাল"
ক্রেকে বিলক্ষণ উর্বের করে। বিলের
অবর্গত অপেকাক্ত নির ক্রেকে

"বৈল্কাছড়ে" বা "চাতাল" কহিয়া থাকে। এই সকল জমিতেও সর্বপ্রকার হৈমন্তিক शक्त कामिया থাকে। তবে ভূমির উচ্চতা, निक्रणांनि व्यवशास्त्रभादत्र वित्नव वित्नव অণশালী হৈমস্তিকের আবাদ করিতে हव। আমরা দে কথা বিশেষরূপে পরে বলিব। কোন কোন বিলের মধ্যস্থলে গভীরতার শেষ সীমা, এবং কোন কোন বিলের এক পার্বে শেষ সীমা দৃষ্ট হয়। के शानक "त्रहे" करह। विलात मर्था एय ষে স্থলে জলের গভীরতা শেষ হয়, সেই সেই স্থলের জল প্রায় বার্মাসই থাকে এবং তাহার চতুম্পার্ষে অনেক দূর পর্য্যস্ত মৃত্তিকা পঙ্কিল হইয়া থাকে। ঐ পাঁকি জমিতে "বোরো" ধান, এবং ঐ পঞ্চিল ভূমিতে অল পরিমাণে জল থাকিলে তাহাতে "জলি" ধান হইতে পারে।

সাধারণতঃ আশু ধান্ত উচ্চ ভূমিতে এবং হৈমস্তিক নিম্ন ভূমিতে জনিয়া থাকে। ঝাটজাতীয় ধান্ত বিলকাঁহড়ে বা চাতাল জমিতে বা কিঞ্চিহ্নত কুড়ি জমিতে জনিয়া থাকে। কি প্রকৃতির যাস্ত কোন্ প্রকার বিশেষ ক্ষেত্রে জনিয়া কি প্রকার ফল প্রসব করে, আমরা তাহা বর্ণাস্থানে বলিবার চেষ্টা করিব।

মৃত্তিকা। যেমন মূল বর্ণ তিনটা, তেমনি মূল মৃত্তিকাও তিন প্রকার— মেট্যেল, পলি ও বালি। এই ত্রিবিধ মূল মৃত্তিকার সহিত অলার, চুর্ণ, উদ্ভিজ্ঞ ও কীবিদেহাবশেষ, যবকার, গ্রহ্মকাদি ধাতব নানা প্রকার সারীয় বস্তু মিশ্রিত হইয়া নানা প্রকার মৃত্তিকার স্থান্ট হইয়াছে।
সেই সকল মৃত্তিকার প্রকৃতি ব্ঝিতে
পারিলে ধান্ত আবাদের অনেক স্থবিধা
হয়। কিন্তু তাহার বিশেষ বিবরণ এ প্রবন্ধে
প্রদান করা ঘটিবে না, কারণ তাহার
আলোচনা করিতে তড়িৎ-বিজ্ঞান ও তদন্তগত রসায়নশাস্ত্রের আংশিক আলোচনা
আবশ্রুক। তাহা করিতে গেলে প্রবন্ধের
কলেবর হর্মাই ইইয়া উঠিবে। এজন্ত
মৃত্তিকার প্রকারভেদ খুব সংক্ষেপে বলিতে
হইবে।

মূল ও মিশ্র উভয় মৃত্তিকা অনেক প্রকার: তন্মধ্যে এইগুলি প্রধান:— মেটোল, হেড়মো মেটোল, ঘোষ কা মেট্যেল, ছথে মেট্যেল, চুণে মেট্যেল, রাঙ্গা-मांगि, आखदा त्मर्ह्यान, श्रामांगि, काममांगि, পাস্তামাটী,বেলেমাটী,লোণা সোম্বারা,লোণা কোটা, দো-আঁশ, ভিটামাটী ইত্যাদি। সর্ব্ব প্রকার মেট্যেলের সাধারণ নাম আটাল मुखिका। উহাতে জল লাগিলে চট্চটে আটা ও পিচ্ছিল হয়। এই মাটির ক্ষেত্রে প্রথম আবাদ করা অত্যন্ত কষ্টকর। কিন্তু ঐ মাটী এক বার শিথিল ও সচ্ছিদ্র হইয়া গেলে তাহাতে সর্ব্ব প্রকার শস্ত উত্তমরূপ জন্মিতে পারে। পচা বাদলা পাইলে ঐ মাটীর উৎপাদিকা শক্তি প্রচুর পরিমাণে বুদ্ধি পায়। শুদ্ধ হইলে আটাল ক্ষেত্ৰ কাঁকুড়ফাটা হইয়া যায়। রাঢ় অঞ্চলের ক্ষেত্র সকল প্রায়ই এই মৃত্তিকার। ঐ দেশের কোন কোন ভাগে বালুকা-বোগে মাটীকে বিশেষ উর্ব্বরা করিয়াছে

এবং কোন কোন ভাগে কাঁকর-সংবাগে মুত্তিকার দোব জন্মিরাছে। মোটের উপর রাচদেশীর আটাল ক্ষেত্র সকল অতিশর উর্বর: এই জন্ম ঐ দেশের धान्न थानः मनीय। वित्नय वित्नय वक्ष সহযোগে আটাল মৃত্তিকা বিশেষ বিশেষ শুণ প্রাপ্ত হয়। হেড়্মো মেটোলে বালুকা ও কন্ধর নাই ; উহাতে বছকালের পচা ও শিলাখণ্ডবং কঠিন মুত্তিকাভূত উদ্ভিজ্ঞাংশ দৃষ্ট হয়। এ मञ এ মৃত্তিকা ক্লফাবর্ণ, তাপ-শোষক ও অতিশয় উর্বরা। উহাতে ধান্তাদি প্রধান প্রধান শস্ত উৎকৃষ্টক্রপে জন্মিয়া থাকে। নদীয়া জিলার উত্তরে কালান্তর ও বনাজ প্রদেশ ঐ মাটীর আকর। ঐ মাটী একবার লাল. অর্থাৎ আবাদের যোগ্য হইয়া গেলে তাহার পর ছইবার মাত্র চাষেই সকল প্রকার ফসল উত্তমরূপে হইতে পারে। এই মাটী 😊 🛪 रहेरन श्रयुत्रवर कर्त्रिन ७ वृहर वृहर कांग्रेटन शूर्व इया त्यावका स्मर्द्धान অনেকাংশে হেড়মো মেট্যেলের স্থায়. কিন্ত এই মাটীতে অধিক পরিমাণে চার না দিলে কোনও ফসল জন্মিতে পারে না। যে বর্ষে অতিরৃষ্টি হয়, সে বর্ষে এই মাটীর क्रां व्यक्षिक क्रमण अस्य। इर्ध स्पर्धाण माना, क्रेयर व्याणिन, मिक्क ও কোমन। এই মাটী অস্তাস্ত মেট্যেল অপেকা উৎক্ট। অন্তান্য মেটোলে কোন কোন জাতীর উদ্ভিদ ভাল হয় না; কিন্তু হুখে মেট্যেলে না ব্ৰুন্মে এমন ফসল নাই। চূণে মেটোলের প্রকৃতি অন্যান্য মেটোল

হইতে সম্পূৰ্ণ পুথক এবং ইহার বর্ণত नानाविध। ज्ञानवित्यत्य त्येष्ठ, शीष्ठ, লোহিত বৰ্ণ দৃষ্ট হয়। এই মাটী শুক इटेटन व्यमःथा कांचेनिविभिष्ठे इत्र। कांचेन সকল প্রায়ই কুদ্র কুদ্র; কিন্তু এক একটা ফাটল অতিশয় দীর্ঘ ও গভীর। এই মাটী সমস্ত রাঢ়দেশ ব্যাপিয়া আছে। এই মাটীই ঘুটিঙ্গের আকর। ইহাতে অসংখ্য পরিমাণে ঘুটিং ও কাঁকর মিশ্রিত আছে; এমন কি, ঐ মাটীর এক তৃতীয়াংশ খুটিং কাঁকর ও চুণ। আশ্চর্য্যের বিষয় এই, ঐ মাটীর অবস্থা এরূপ হইলেও উহা অতি-° भग्न डेर्क्सता। डेहाट्ड कॅछिन. कमनी প্রভৃতি কয়েকটা উদ্ভিদ হইতে পারে না; কিন্তু ভূঁত ও হৈমন্তিক ধান্য বিশিষ্টক্রপে উৎপন্ন হয়। তবে এই মাটীতে প্রতি বংসর কিঞ্চিৎ কিঞ্চিৎ সার প্রদান করা আবশ্রক হয়।

মেটোল মাটার মধ্যে যাহার বর্ণ রাকা, তাহাকে রাকামাটা কহে। ইহা উর্বরা, ইহাতে নানাবিধ শক্ত জন্মে। রাচনেশের কোন কোন অংশে, ঢাকা জিলার স্থবর্ণ গ্রাম ও বিক্রমপুর অঞ্চলে, হিমালর পর্বতের কোন কোন অংশে এবং কোন কোন নলীর গর্ভে ঐ মাটা দৃষ্ট হইয়া থাকে। রাকামাটা ছই প্রকার। এক প্রকারের সহিত ঘূটিং ও কাকর মিশ্রিত থাকে, তাহা ঘূটাং ও কাকরের আকর। চুণ মেটোলের রূপান্তর মাত্র। আর এক প্রকারের ঘৃটিং আদির গন্ধও নাই, তাহাই বিভব্বরাকামাটা। তাহাতে উত্তরক্রপে ক্রিকার্য্য

নির্কাহিত হইরা থাকে। কুন্তকারেরা হতিকাদি মৃশার পাত্রের গাত্রে বে বর্ণক নামক মাটীর পোঁচ দিয়া থাকে, যাহা দগ্দ হইরা গাঢ় লোহিতবর্ণ হয়, তাহা এই রাজামাটী ভিন্ন আর কিছুই নহে।

বাঁঝরা মেটোল একটা পৃথক্ মাটী নহে।
বে কোন প্রকার মেটোলে কিছু কিছু
বালুকা মিশ্রণ থাকিলেই তাহাকে ঝাঁঝরা
মেটোল কহে। স্থতরাং মেটোল মাটীর
বত প্রকার বর্ণ আছে, ঝাঁঝরা মেটোলের
তৎসমূলার বর্ণ হইতে পারে। মিশ্রিত
বালুকার ন্যুনাধিক্যামুসারে ঝাঁঝরার
উর্বরতার তারতম্য হইরা থাকে।

বর্ষাকালে নদী উচ্ছ সিত হইয়া তাহার জল পার্ষবর্ত্তী বিল, থাল, ও নামাল জমিতে থাবেশ করে. কিমা রৃষ্টির জল উচ্চ স্থান হইতে গড়াইয়া নিম স্থানে গিয়া সঞ্চিত इस्। े अकल जल य छान निया প্রবাহিত হয়, সেই স্থানের উপরিস্থ मुखिका (थों छ इहेग्रा विन थानानि निम ভূমির তলভাগে সঞ্চিত হয়, উপরকার वन ७ इट्टरन थे मुखिका उक इम्र। म मुखिकारक शनन वा शनिमां करह। পলল দিবিধ,—মাটীপলি ও বালিপলি। বালিপলি অপেকা মাটীপলি অধিক পলিমাটী একপ্রকার সারের खेकां व মধ্যে পরিগণিত। উহার মিশ্রণে উষর মৃত্তিকাও উর্বারতা প্রাপ্ত হয়। পলিতে আলু, কঁপি, কড়াইওটী, পলাও, ও বিবিধ শাক সব্জি উত্তমরূপ জন্মে^{। ই} বিশেষতঃ বুক্জাতীয় উদ্ভিদ্ উহাতে স্থলবন্ধপে ক্ষমে। আম, কাঁটাল, নারিকেল, বর্জুর, বাঁল প্রভৃতি পলিমাটাতে ভাল হয়।
তিষ্কির যে হৈমন্তিক ধান্তের ক্ষেত্রের মৃত্তিকা অতিশয় কঠিন, তাঁহাতে কতক পলিমাটা মিলাইতে পারিলে প্রচুর ধান জন্মে। পলি এতাদৃশ উৎক্রপ্ত মৃত্তিকা হইলেও উহার একটা বিশেষ দোষ এই যে, পলল ক্ষেত্রে কোন ফদল জন্মাইতে হইলে উহাতে অধিক চাষ দিতে হয়; কারণ উর্বরতা হেতু পলল ক্ষেত্রের ভূণাদি মারা অতিশয় কঠিন হয়। পুনঃ পুনঃ চাষ না দিলে ঐ ভূণাদি মরে না।

যে মাটি দর্মদা সরস থাকে, তাহাকে পাস্তামাটী কহে। উত্তাপ বিকিরণ-শক্তির আধিক্য বশতঃ মৃত্তিকার ঐরপ প্রকৃতি হইয়া থাকে। রসপলি, পাস্তা-মাটির নামান্তর। অতিবৃষ্টির বৎসরে ঐ মাটীতে ভাল ফসল হয় না। অতি-বৃষ্টি না হইলে ঐরপ মৃত্তিকার ক্ষেত্রে বার মাস লাঙ্গল চালাইতে ও সময়োপামানী ফসল করা যাইতে পারে।

যে মাটার অধিকাংশ বালুকা, তাহাকে বেলেমাটা কহে। বেলেমাটা অমুর্বারা মধ্যে গণ্য। তবে ইহাতে বিশেষ বিশেষ লক্ষণাক্রান্ত উদ্ভিদ্ জন্মিতে পারে। যে সকল ওবিধির ডাঁটা বা কাণ্ড কার্চপৃষ্ঠ ও কাঁচা, তাহা ঐরপ মাটাতে মন্দ হয় না; যেমন, পটোল, কাঁকুড়, তরমুল্ল ইত্যাদি। কুড়ী ক্ষেত্র, অর্থাৎ যাহার চতুস্পার্শ উচ্চ ও মধ্যস্থল নিয়, বালুকাময় হইলে ভাহাতে ধান্তাদি জন্মিতে পারে। ভাতিবৃত্তিতে

বাসুকা-ভূমি এককালে অকর্মণ্য হইরা পড়ে; কারণ বায়ু, জললোতাদি কারণে দীর্মকালে বাসুকা-ভূমির উপর যে স্বন্ন পরিমাণে পল সঞ্চিত হয়, অতিরৃষ্টি হইলে তাহা ধোত হইয়া যাওয়ায় তত্পরি আর কোন কসলই হইতে পারে না। তবে অতিবৃষ্টিতে কুড়ী কেত্রের বিশ্বন আনিষ্ঠ না হইরা বরং ইউই হইরা থাকে। কারণ চতুপার্যন্থ উচ্চ ভূমি অতিবৃষ্টির অলে ধৌত হইয়া মধ্যস্থ বালুকা-ক্ষেত্রকে পল-আরত ও উর্বার করে।

(ক্রমশঃ)

মাতৃহদয়।

(গত প্রকাশিতের পর)

(0)

আমার ধ্বৰ এখন পাঁচ ছয় বছরের
হইরাছে। তাহার অনেকগুলি খেলার
সাথী জ্টিয়াছে। ধ্বৰ তাহাদিগকে পাইলে
আর কিছুই চাহে না; তাই তাহারা
আমারও বড় মেহের, বড় আদরের জিনিস
হইয়াছে। তাহাদের কাহারও গায়ে একটী
মশা বসিলেও আমার যেন অসহ যন্ত্রণা
হইতে থাকে। তাহারা ধ্বকে লইয়া
খেলা করে, নাচে, গান করে; আমি ঘরে
মুড়ি ভাজিয়া, বাতাসা কিনিয়া, তাহাদিগকে খাইতে দিই। তাহারা সকলেই
আমাকে "মা" বলিয়া ভাকে। আমার
মনে হয়, তাহারা আমার ধ্বরের
প্রতিক্তি।

কিন্ত ধ্বকে কেবল খেলা করিতে
দিয়াই আমি নিশ্চিম্ত নহি। তাহাকে
আমি লেখা পড়াও শিখাইতেছি। এরই
মধ্যে আমার ধ্বে হুই তিন খানা পুত্তক
পডিয়া ফেলিয়াছে। হাতেও লিখিতে

শিথিয়াছে। ধ্ৰুব এক এক খানা বই শেব করে, আর আমার মন আনন্দে উৎসুর হইতে থাকে ৷ এখন ধ্রুবকে স্কুলে দেওরা আবশুক। কিন্তু আমার যে রকম **অবস্থা**, তাহাতে তাহাকে ক্লে দিতে সাহস হয় না। তাই ভাবিয়া চিস্তিয়া, স্কুলের প্রধান অধাক্ষের নিকটে গ্রুবকে লইয়া গেলাম। এতকাল আমার ধন, মান, খ্যাতি বা প্রতিপত্তির জন্ম কোনও বড় গোকের ছয়ারে যাইতে প্রবৃত্তি হয় নাই, আজি अत्तत क्रम्हे तम श्रवृत्ति इहेन। स्निम এখনই বুঝিতে পারিতেছি পাঞালেখর ক্রপদ রাজার কাছে, দ্রোণাচার্য্য অর্থরাক্স কেন প্রার্থনা করিয়াছিলেন! আমি এখনই বুঝিতে পারি, কুধিতা ক্সাকে দেখিয়া, অটল, স্থিরপ্রতিজ্ঞ, বীরপ্রেষ্ঠ প্রতাপসিংহ কেন প্রতিজ্ঞা ভূলিয়া-ছিলেন—কেন আকবর সাহের শরণাপন্ন হইতে উন্থত হইয়াছিলেন! এ ক্লাকে মল্লাকাজ্লাতেই সস্তানের লোকে

অভিমান, প্রাত্মসন্ত্রম এক কুৎকারে উড়াইয়া দিতে পারে!

অধ্যক্ষ মহাশয় একজন সদাশয় মহৎ
ব্যক্তি । তিনি গ্রুবকে পরীক্ষা করিয়া,
আমার অবস্থা শুনিয়া, আমার গ্রুবকে বিনা
বেজনে ক্ষুলে ভর্ত্তি করিয়া দিলেন। আমি
এতদিন ক্ষতজ্ঞতার ধার বড় ধারিতাম না
—আমি কাহারও কাছে উপকারের
প্রত্যাশী ছিলাম না! যাহা হউক, ক্ষুলের
অধ্যক্ষ মহাশয়ের এই অমুগ্রহ পাইয়া
আমার প্রাণে ক্ষতজ্ঞতা-স্রোত উথলিয়া
উঠিল। আমি তাঁহার কাছে বিক্রীত
হইলাম।

এতদিন আমি সত্য সত্যই কাঙ্গালিনী ছিলাম; এখন ধ্রুবকে পাইয়া জগতের সব অমূল্য সম্পত্তি পাইলাম। ধ্রুবকে পাইয়াই আমি স্নেহ মমতা পাইলাম, পরার্থপরতা পাইলাম, ভক্তিক্বতজ্ঞতা পাইলাম, ত্যাগ্রীকার আত্মসংযম পাইলাম, অধিক কি বিলিব, একমাত্র ধ্রুব হইতেই আমি সত্য সত্য "সামাজিক মানব" হইলাম। এ ঘন আধারে ধ্রুবই আমার ধ্রুবতারা! ধ্রুবই আমার মানবজ্ঞরের স্থুখ, স্থুথে উৎসব!

(8)

আমার সর্কাষ্ঠ ধন এব আজি ঘরে কিরিয়া আসিল না কেন ? সাথীদের সাথে খেলিতে গিয়াছিল, সমস্ত দিন বাড়ীতে ফিরিল না কেন ? আমি "গোপাল-হারা" মা বিশাদার মত এবকে গুলিয়া বেড়া-ইতে শাগিলাম। ভাষার সাধীদের বাড়ীতে

গেলাম, তাহারা কেহই বলিতে পারিল না! আমি পাগলিনীর মত অন্থির হই-শাম-এবের কত অমন্ত্রের ভাবনাই মনে আদিল! আমার মাথা ঘুরিতে লাগিল। ক্রমে রাত্রি হইল-এভক্ষণে হয়তো ধ্রুব ঘরে ফিরিয়াছে. এতক্ষণে হয়তো পেতে করিয়া মুড়ি থাইতেছে. এই আশায় ছুটিয়া ঘরে আসিলাম, দেখি সেই জনশৃত্য স্থানে আমার জনশৃত্য পর্ণ-কুটীর আরও শৃত্তময় হইয়া রহিয়াছে। আমার জ্বের চাঁদের মত মুখথানি সে আঁধার ঘর আলো করিয়া নাই! দেব-মন্দিরে দেবতা না থাকিলে তাহা যেমন শৃত্যময় হয়, মানবদেহে প্রাণ না থাকিলে তাহা যেমন শৃত্যময় হয়, আমার কুটীর ঞ্বের অভাবে তেমনি শুন্তম্য—তেমনি মহাশূভাময় হইয়া আছে ! আমি এ দুখা দেখিতে পারিলাম না। মাটীতে পড়িয়া উচ্চ কণ্ঠে কাঁদিতে লাগিলাম।

মান্থবের স্থা হংথে জড় প্রক্কৃতির আসে যায় কি? গ্রুব আমার কোলে শুইয়া বৃক্রের ভিতরে মুখ লুকাইয়া থাকিলে, প্রহরে প্রহরে রাত্রির যেমন প্রহর বাজিত, আজও সেই রকম বাজিল। রাত্রির পরে যেমন করিয়া চিরদিন প্রভাত আইসে, সেই রকম করিয়া প্রভাতও আসিল। আমি সারারাত্রি প্রবকে খুঁজিয়াছিলাম, সকালেও খুঁজিতে লাগিলাম। যথন হতাশ হই, তথন মাটিতে পড়িয়া কাঁদি, যথন আশা বলে "এইবার শ্রুবকে খুঁজিয়া দেখ, পাইবে" তথনই দিওল উৎসাহে ইডড়েডঃ

ছুটিরা বেড়াই। মাঠে রাখাল বালকেরা

থক চরাইডেছিল, ক্লযকেরা চাষ করিডে
ছিল, আমার কাদামাখা দেহ, এলো চুল,
রক্তিম চক্ষ্ প্রভৃতি দেখিরা তাহারা

"পাগল" বলিয়া হাসিতে লাগিল। তাহাতে
আমার ছংখও হইল না—রাগও হইল
না! আমার আর কিছু দেখিবার বা
ভানিবার শক্তি নাই! আমার গ্রুব কোথায়
গেল ? আমার সংসার আধারের গ্রুবতারা! মানব-ক্লয়ের আশা! জগতের
বন্ধন! আমার গ্রুব! তোর্ অভাগিনী
মা'কে একবার দেখা দে' বাপ।

সমস্ত দিনের অসহ্য যাতনার প্রপীড়নে সন্ধ্যাকালে আমার মাথা কেমন করিতে লাগিল। আমি সংজ্ঞাশৃক্ত হইয়া এক নদী-তটে পড়িয়া রহিলাম। *

যথন চকু মেলিলাম, তথন দেখি রাত্রি গভীরা। বিলক্ষণ অমুভব করিতে পারি-লাম ছুইুথানি কোমল হস্ত আমার শুশ্রষায় নিয়োজিত রহিয়াছে! আমার মনে স্মৃতি, কর্মনা, আশা সবই জাগিয়া উঠিল। তথন ছই হাতে চোক ঢাকিয়া বলিলাম "আমার ধ্রুব, আসিয়াছ কি ?"

বড় মধুর স্বরে একজন উত্তর করিল "মা, আমি তোমার সস্তান!" এতো আমার ধ্রুব নয়!!

কণ্ঠ-বরে মাত্রব চিনিলাম। আমার পিতৃত্বা ভক্তিভাজন যোগনারারণ ঠাকুর। তিনি আমাকে কন্তার মত স্নেহ করেন, ভাই তাঁহার কাছে আমার ব্যথিত ক্রমর বহাসুভূতির ভিথারী হইল: আমি কাঁদিয়া কহিলাম 'ঠাকুর, আমার ক্রম বাঁচিয়া আছে কি ৭''

সন্ন্যাসী যেন দৈববাণী শুনাইলেন, কহিলেন "ভন্ন কি, মা, ভোমার ধ্রুব বাচিয়া আছে, ভাল আছে।"

আমার মৃতদেহে যেন অমৃত-বিন্দু পড়িল! তাঁহার পদতলে লুটিরা বলিলাম "বাবা! আমাকে বাঁচাও, আমার ক্রম কোথায় আছে বলিরা দাও।"

ধীরপ্রশান্তম্থে ঠাকুর কহিলেন "মা, ধ্ব অনেক দ্রে গিরাছে। এখান হইছে বছদ্রে এক রাজা আছেন, তিনি অপুত্রক, তাই ধ্বকে পোষ্যপুত্র করিয়া লইরা গিরাছেন।" আমি উচ্চকণ্ঠে কাঁদিতে লাগিলাম। তথন ঠাকুর আবার বদিলেন "কাঁদকেন মা? তোমার ধ্ব রাজার ছেলে ইইয়াছে, রাজ্ম্ব ভোগ করিতে পাইতেছে, তাহার জন্ম কাঁদিতেছ কেন মা ?"

কেন কাঁদিতেছি তাহা তুমি কি
বৃক্তিবে সন্ন্যাসী! তুমি যদি এ জগতে
কাহারও মা' হইতে, তাহা হইলে আজি
আমার এই মাতৃহদন্তের "ইতিহাস"
বৃক্তিত পারিতে! আমি কাঁদিতে
লাগিলাম। কেবল বৈলিলাম "এই দাক্ষণ শোকের আগুনে জলিবার জন্মই কি
আমি ধ্রুবকে পাইয়াছিলাম!"

যোগী সেই মেহার্দ্রবরে বলিলেন
"কেবল শোকের আগুনে জলিবার্ন জন্ত ধ্রবকে পাইয়াছিলে, এমন কথা ভাবিষ্ট না মা। দেখ দেখি মা, ধ্রব হইতে ভূমি ক্ত জিনিস পাইয়াছ! দেহ মমতা পাইন্নাছ, পরার্থপরতা পাইন্নাছ— নাহার শক্তিতে এই বিশ্ব স্থাষ্ট চলিয়া আসিতেছে, সেই মাতৃ-হাদর তুমি গ্রুবের জন্মই তো পাইনাছ। শোকের জন্মই গ্রুবকে পাইন্না-ছিলে, এমন কথা, ভাবিও না।''

আমি আবার কাঁদিতে কাঁদিতে বলিলাম, "আমার এ সকল জিনিসে কাজ কি ঠাকুর ? আমার গুবই যদি গেল, তবে আমার মাতৃ-হৃদয়ে কাজ কি ? জগতে যদি জলই না মিলিল, তবে পিপাসিতের আবশ্রক কি ?"

তথন সেই পলিতকেশ সন্ন্যাসী আমার মাধায় হাত দিয়া বলিলেন "মাতৃ-হৃদয় লাভ করাই মা, নারীজীবনের সর্ব্বোচ্চ উন্নতি। রমণী যথন স্বার্থপরতা ও পার্থিবতাশৃত্য হইয়া মাতৃ-হৃদয় লাভ করিতে পারেন, তথনই তিনি ভগবৎসাধনার সম্পূর্ণ উপয়্রকা হন। তুমি যে দিন তোমার হৃদয় হইতে স্বার্থ অর্থাৎ পার্থিব কামনাটুকু মৃছিয়া ফেলিবে, সেই দিন তোমার মন নির্মাল হইবে, প্রক্বত শান্তি মিলিবে।"

আমি এ সব কথা কিছুই ব্রিতে পারিলাম না! নির্মান, বনবাসী সন্নাসী! তুমি মহামহোপাধ্যায় পণ্ডিত, আমার মত অজ্ঞানা রমণীকে, তর্কে তুমি এক পলকে হারাইয়া দিতে পারিবে, কিছ বেগবতী স্রোত্বিনীকে তুমি ফিরাইতে পারিবে না! আমার যে শোক-প্রবাহিণী উপলিয়া উঠিয়াছে, ইহাকে ইনিবারণ করিতে ভোমার সাধ্য মাই! আমি কোনও কথা কিছিলাম না, কাঁদিতে লাগিলাম।

আমাকে নিক্তর দেখিয়া ঠাকুর পুন-রপি কহিলেন ''বুঝিতেছ না মা, তুমি আজিও শ্রুবকে খাঁটী ভালবাসা দিতে পার নাই। কতকটা তোমার বাদিয়াছ, কতকটা ধ্রুবের জন্ম বাদিয়াছ ৷ তাই ধ্রুব রাজসংসারে রাজস্পু ভোগ করিতে গিয়াছে; তোমার যাহা কল্পনার অতীত, গ্রুব সেই সব স্থুথ ভোগ করিতে পাইবে, এ সব বুঝিয়াও তুমি স্থী হইতেছ না ৷ কথা কি, মা, তোমার দৃষ্টি কেবল সেই ধ্রুবের স্থাথের উপরে নহে, নিজের স্থাথের উপরেও আছে। তাই বলিতেছি মা, তোমার গভীর স্লেহের সহিত স্বার্থপরতা জড়িত হইয়া আছে। যতক্ষণ উহা ত্যাগ করিতে না পারিবে, ততক্ষণ ধ্রুবকে সহস্র স্থুখী দেখিয়াও তোমার স্থুখ হইবে না। মানুষ, মানুষকে ভালবাসিয়া সাধারণতঃ যে স্বখী হয় না, তাহার কারণ তাহাদের মধ্যে স্বার্থপরতার যোগ থাকে বলিয়া। এখন বুঝিলে কি মা?"

আমি আশাশৃত উদাসনেত্রে সন্ন্যাসীর
ম্থপানে চাহিয়া বলিলাম "ঠাকুর! এই
রকম জিনিস যদি স্বার্থপরতা হয়, তবে
ভালবাসার মধ্য হইতে ইহা উৎপাটন
করা কি মর মানবের সাধ্য?" ঠাকুর
হাসিয়া বলিলেন "সাধনায় কি মায়য় এক
দিনেই সিদ্ধ হয় মা ? বছদিন, বছমাস,
বছবৎসর ধরিয়া তপতা কয়, তবে সিদ্ধিলাভ হইবে। শাক্য সিংহ কি এক দিনে
বৃদ্ধদেব হইয়াছিলেন মা ? কিন্তু এ কথা
নিশ্চর জানিও, ভালবাসাই জগতের

সাধনীর। ধনীভূত, স্বার্থপরতাশৃন্ত ভালবাসার নামই প্রেম। মানব যথন জাপনা
ভূলিয়া পরকে ভালবাসিতে শিথিবে,
তথনই এ জগৎ প্রেমাগার হইবে, মানবহৃদয়ে স্থা, শাস্তি মিলিবে। ভূমি এই
মহাসাধনা করিবে মাণু"

সামি সত্য কথা বলিব; আমার ওসব কথা কিছুই ভাল লাগিল না। আমি বাবাজীর পারে মাথা লুটাইয়া বলিলাম 'ঠাকুর! তুমি আমার পিতা, তুমি আমার পিতার মতন কাজ কর। বেখানে আমার জব পোবাপুত্র হইয়াছে, আমাকে দেখানে দয়া করিয়া রাখিয়া এদ, আমি দেই বাড়ীতে দাসী হইয়া থাকিব; আমার বাছার সোণাম্থখানিতো এক এক বার দৈখিতে পাইব।"

সেহময় পিতার মত উদাসীন সেহমাথা স্বরে বলিলেন ''মা! তোমার
শরীর বড়ই অস্ত্রন্থ দেখিতেছি। আজি
তুমি আমার সেবালয়ে চল। তুমি একটু
স্কৃত্বইয়া উঠিলে বেখানে যাইতে চাও,
যাইও, আমি তোমার সন্তানের মত তোমার
আক্তা পালন করিব।"

(a)

আজি এক বংসর হইল আমি সেবালয়ে আছি। এপানে আমি ঠাকুর
মহাশয়ের কাছে ধর্মশাস্ত্র ও ধর্মোপদেশ
ভূনি, আর পেবালয়ের অনাথ, দরিদ্র
বালকদিগকে আহার্য্য দিই। জিনিদ
সন্ন্যাসী ঠাকুরের, ভাগ করিয়া দিই আমি।
হতভাগ্য বালকেরা আমাকে "মা"

বলিরা ডাকে। মা'র কাছে ছেলে বের্ক্ট্রনিরা ডাকে। মা'র কাছে ছেলে বের্ক্ট্রনির করে, এই বর্ক্ট্রনির ছেলেরা আমার উপরে সেই রক্ষ্ম আবদার, সেই রক্ষ্ম অত্যাচার করে। আমি বেশ ব্থিতেছি, আমি না থাকিলে এই সব মাতৃহীন, বন্ধুহীন, নিরাশ্রম্দিগের এক দিনও চলে না।

এক দিন সন্নাসী বাবাজী নিভূতে আমাকে জিজ্ঞাসা করিলেন "মা, ভূমি এখন সেবালরে থাকিবে, না তোমার ধুবের কাছে যাইবে ?"

আমি প্রাণ খুলিয়া উত্তর করিলাম ''ঠাকুর। আমি ধ্বের কাছেই রহিয়াছি। নেই এক কোঁটা জব আমার প্রাণমর, বিশ্বময় হইয়া আছে। কি জড় জগৎ, কি জীব জগৎ, আমি যে দিকে চাই, সৈই-খানে আমার ধ্রুবকেই দেখিতে পাই। আমার ধ্রুব ছাড়া অন্ত কিছু আমি দেখিতে পাই না। আপনার সেবালয়ের অনাথ শিশুরা প্রত্যেকেই আমার এব। আমি উহাদিগকে প্রতিক্ষণ আদর করিয়া বেশ বুঝি আমার ধ্রুবকেই আদুর করিতেছি। [®] উহাদিগকে থাওয়াইতে গিল্লা মনে হয়, আমার ধূবের মূপেই থাবার তুলিরা দিতেছি। ছঃখী, দরিজদিগের **স্থের জঞ্চ** যথাসকাৰ আমি অনায়াদে, আমার আনন্দে, ত্যাগ করিতে পারি; আমার মনে হয় বেন আমার ধুবের স্বথের জন্তই ত্যাগন্ধীকার পরিভেছি। আমি এ কাহারও হৃ:থমলিন মুখ আমি সহিতে পারি না, আমার বোধ হর আমার কাছে

ধারুক থাইরা আমার প্রবই অমন মান মুখ করিয়া আছে ! ঠাকুর ! আমি প্রবের প্রবিকে পালন করিতে গিয়াই তোমার কাছে কোথায় যাইব ? আমি প্রবময় সকল সঙ্কীর্ণতা এবং স্বার্থপরতা দূর ক্রপতে বাস করিতেছি।''

তথন সন্ন্যাসী বাষ্পাকুলচকে গদগদ-খবে বলিলেন "মা! বিষ্ণুপুরাণের গ্রুব বেমন তাহার মা'কে 'হরি' আনিয়া निश्राष्ट्रिन. দেখিতেছি তোমার ধ্বও তোমাকে সেই রকম 'হরি' আনিয়া দিয়াছে! আজি হইতে এ সেবালয়ের व्यक्षिकातिनी जुमि। व्यत्नक नित्नत्र कथा, সৈই যে তুমি সেবালয়ের সেবিকা হইতে আসিয়াছিলে, তথন তোমাতে অন্যান্ত যোগ্যতা সত্ত্বেও, আসল জিনিস ছিল না।— তথন মা, তোমার হাদয় ছিল না, হাদয়ে कामणा हिन ना; यादात क्रमग्र नारे, সে অন্তান্ত বিষয়ে যতই উন্নত হউক না. ভগবতী বিশ্বজননীর সেবা করিতে সে ব্দবোগ্য। তাই মা. সে দিন তোমাকে সেবাশমের ভার দিতে, 'মা' জগজ্জননীর পুত্র কন্যাদিগকে পালন করিতে দিতে, আমার সাহস হয় নাই। তুমি চলিয়া (शिष्ण, किছू मिरनत मर्था এक ही नव-**অস্তা রমণী** পীড়িতা হইয়া সেবালয়ে আসিয়াছিল। তার পরে দশ দিনের শিল শতানটা ফেলিয়া ইহলোক পরিত্যাগ করিল। সেই শিশুই তোমার ধ্ব। আমিই ভাহাকে ভোমার গৃহছারে রাথিয়া আসি। 'যে উদ্দেশ্তে রাথিয়া আসি.

ঞ্বকে পালন করিতে গিয়াই তোমার সকল স্কীৰ্ণতা এবং স্বাৰ্থপরতা হইয়াছে। এই রকম মাতৃপ্রকৃতি প্রাপ্ত रहेटनहें नाडीकीवरनत मर्स्काक छन्निक সাধিত হয়। এখন মা, ভোমার হৃদ্র প্রভাতের নবক্ষুট কমলের মত কোমল, পবিত্র ও স্লিগ্ধ হইয়াছে! এখন মা, তোমার হৃদয় ভগবানের আসনের যোগ্য হইয়াছে। নদী যথন প্রথম উৎপন্ন হয়, তথন সে গিরিপাদমূলে, কুদ্রতম রজতহতের মত হশা। সেই নদীই क्रमनः विखीना रहेशा निगखभाविनी मुर्छि ধারণ করে। মানবের প্রীতিবৃত্তিও একটি ক্ষুদ্র শিশুকে অথবা ব্যক্তি বিশেষকে অবলম্বন করিয়া বিকাশ পাইতৈ থাকে। তার পরে সেই বৃত্তি অনস্ত-বিস্থৃতা হইয়া অনন্তদেবতার অভিমুধে গমন করে। এই জন্মই জ্ঞানিগণ বলিয়াছেন, "দ্যা গৃহ হইতে আরম্ভ হয়, কিন্তু দেখানে শেষ হয় না"। তুমি মা, ধ্বকে আত্মবিশ্বতা হইয়াভালবাদিয়াছ বলিয়া এ বিশ্ব জগৎকে ভালবাসিতে তোমার অধিকার জন্মিয়াছে! প্রকৃত ভালবাসাই মানবকে স্বর্গপথে লইয়া যাইবার প্রধান সহায়।"

আমি কোনও কথা বলিতে পারিলাম না। চোথ দিয়া বড়ই জল আসিতে-ছিল। যাহা হউক, সেই দিন হইতে সেবা-গুয়ের সকল ভার আমার উপরেই পড়িল।

वामर्भ-जननी-कर्गिनीया।

পুরাকালে ইটালির অন্ত:পাতী রোম এবং আফ্রিকার অন্ত:পাতী কার্থেজ নগর অতীব হন্ধর্ব ও মহাপরাক্রমশালী বলিয়া বিখ্যাত ছিল। এক পক্ষে রোমের অধি-বাসিগণ যেমন কার্থেজবাসীদিগকে অত্যন্ত ঘুণা করিত, অন্ত পক্ষে কার্থেজবাদিগণ্ও রোমকদিগকে নিরতিশয় অবজ্ঞার চক্ষে দর্শন করিত। পরস্পরের প্রতি পরস্পরের এই প্রকার বিষেষবৃদ্ধির ফলস্বরূপ দীর্ঘ-কালব্যাপী এক ভীষণ দংগ্রাম উভয় জাতির মধ্যে সংঘটিত হইল। হানিবলের কর্তৃত্বা-धीरन कार्थक्रवामिश्र हेहाली আক্ৰমণ করে। যথন শক্রসেনাদল রোমনগর অব-রোধ করিবার জন্ম অগ্রসর হয়, তথন রোমবাসীরা সিপিও নামক জনৈক মহা-বলীয়ান্ সেনাপতির নেতৃত্বাধীনে অভ্যুথিত হইয়া অরাতিদলকে যুদ্ধে পরাজিত করে। অবশেষে গত্যস্তর না দেখিয়া কার্থেজ-বাসিগণ বিজেতগণের সহিত সংস্থাপন করে। বিজয়ী সেনাপতি সিপিওর সম্মানার্থ তাঁহাকে আফ্রিকেনাস এই উপাধিতে ভূষিত করা হয়। কর্ণিলীয়া এই মহাবীর সিপিও আফ্রিকেনাসের ছহিতা। ইনি সেম্প্রোণিয়াস্ গ্রাকাস জনৈক রোমবাসী যুবকের পাণিগ্রহণ করেন। মিশররাজ টলেমী কর্ণিলীয়াকে বৈধপত্নীরূপে গ্রহণ করিতে অভিলাষ

প্রকাশ করেন, কিন্তু কর্ণিলীয়া মিশরবাসী যুবক অপেকা রোমবাসী বুবকের পাণি-গ্রহণ করাকে অধিক গৌরবস্থাক জ্ঞান করিতেন, এজন্ম তিনি টলেমীর প্রার্থনা প্রত্যাপান করেন।

সেম্প্রোণিয়াস ছই শিশু সম্ভান রাথিয়া প্রলোক গমন তাহাদিগের कदत्रन । প্রতিপালন ও শিক্ষার ভার কর্ণিলীয়ার উপর নিপতিত হয়। কৰ্ণিলীয়া স্বৰং শিক্ষিতা: গুণবতী ও ধর্মপ্রাণা রমণী ছিলেন। পুত্রদয় মহৎ লোক বলিয়া জনসমাজে সমাদৃত হউক, ইহা কর্ণিলীয়ার প্রাণগত ইচ্ছা ছিল। এই জ্বন্থ তিনি পুত্রময়ের শিক্ষার ভার স্বয়ং গ্রহণ করেন। তাঁহার পুত্রহয়ের মধ্যে একটির নাম টাইবিরিয়াস ও অপরটির নাম কেয়াস। উহাদিগের সংশিক্ষাবিধানার্থ এক দিকে যেমন স্বয়ং শিক্ষাদান করিতেন, অক্স দিকে অপর সংশিক্ষক নিয়োজিত করিয়া ভাহা-দিগের সমুন্নতির সমাক্ সহায়তা করিতে পরামুখ হইতেন না।

এক দিন জনৈক রোমবাসিনী রমণী কণিলীয়ার সহিত সাক্ষাৎকরণার্থ তাঁহার গৃহে সমাগতা হন। এই রমণী রোমনারে অতীব সমৃদ্ধিশালিনী বলিয়¹ পরিচিতা ছিলেন। ইনি নিরতিশয় অশহারীপ্রিয়া ছিলেন। রোমনগরে কোনু রমণী

धकात व्यवकात शतिशान करतन, ইনি তাহার সন্ধান করিয়া বেড়াইতেন। हैनि পরিমাণ অলস্ভারের ভদ্রাভদ্র স্থির করিতেন এবং অলঙ্কার-হীনা বুমণীগণকে অতীব কুপাপাত্রী মনে করিতেন। এই রমণী আপনার সর্কাঙ্গ অলফারে ভূষিত করিয়া যে থাকিতেন, তাহা নহে, অপর লোককে দেখাইবার জন্ম নানাবিধ অলঙ্কার-পরি-পূর্ণ বাক্স সর্বাদা সঙ্গে রাখিতেন। এইরূপ অবস্থায় ইনি একদিন কর্ণিলীয়ার গৃহে গমন করেন। কর্ণিলীয়া ইহাঁকে যথোচিত সমাদর করিয়া বদাইলেন। ইনি নানা প্রকার হাবভাব প্রকাশ করিয়া স্বীয় কর্ণিলীয়াকে অঙ্গের অলকার সকল দেখাইতে প্রবৃত্তা হইলেন। রমণীর সেই সকল অলম্ভার দেখিবার জন্ম কর্ণিলীয়ার মনে বিশেষ কিছু কৌতৃহল উপস্থিত হয় নাই। কিন্তু তিনি এক এক করিয়া অলঙ্কারগুলি দেথাইতে যথন অতিশয় আগ্রহ প্রকাশ করিতে লাগিলেন, তথন অগত্যা কর্ণিলীয়া সেই সমস্ত দেখিতে লাগিলেন। অতঃপর সেই রমণী কর্ণি-শীয়াকে বলিলেন "দেখাও দেখি তোমার কত অলহার আছে।" সেই সময়ে কর্ণি-ৰীয়ার পুত্রদ্বয় বিচ্ছালয় হইতে গৃহে প্রত্যা-গত হইতেছিল। কর্ণিলীয়া গৃহাগত পুত্র-ৰয়ের প্রতি অঙ্গুলি নির্দেশ করিয়া বলিয়া উঠিলেন, "निनि ! এই ! আমার অলঙার।"

টাইবিরিয়াস্ বরোর্থারীর সঙ্গে সঙ্গে সাহসী, সলাশর, সরল, সত্যাপ্রের, সত্য-

वानी, ञ्चवका ও मनाठात्रमण्यत्र वनित्रा कन-সমাজে সমাদৃত হইয়াছিলেন। কেয়দ সর্বাথা সহোদরের সমকক্ষ না হইলেও তাঁহার গুণের অধিকারী বহুলরূপে হইয়াছিলেন। টাইবিরিয়াসের শাস্ত ও মধুর প্রকৃতি যেমন শত্রু মিত্র উভয়ের হাদয় মন আকর্ষণ করিতে সমর্থ ছিল, কেয়াসের স্বভাব কিঞ্চিৎ রুক্ষ থাকাতে করিতে পারে নাই। সৈম্রদল সমরনিপুণ টাইবিরিয়াসকে এত ভালবাসিত তাঁহাকে ছাড়িয়া তাহারা এক মুহূর্ত্তকাল অতিবাহিত করিতে ক্লেশ বোধ করিত। সৈম্মদিগের কোন প্রকার অসম্যবহার দেখিলে, এমন মধুর ভাবে, তিনি তাহা-দিগকে শাসন করিতেন যে, তদ্ধারা তাহা-দিগের স্বভাব একবারে পরিবর্ত্তিত হইয়া যাইত।

সবলের অত্যাচার হইতে তুর্বলদিগকে রক্ষা করিবার জন্য উভয় প্রাতাই আপনাদিগের জীবন উৎসর্গ করিয়াছিলেন।
স্বদেশের সেবাতে তাঁহাদের অকাল মৃত্যু
ঘটে। মৃত্যুর পর তাঁহাদিগের সম্মানার্থ স্থতিচিহ্ন স্বরূপ তাঁহাদিগের প্রস্তর-থোদিত মৃর্তি
সংস্থাপিত হইয়াছিল। কুলদীপক প্রেষরের পরলোকগমনে মনস্বিনী কর্ণিলীয়া শোকে
গ্রিয়মাণা হন নাই, ধৈর্য্যের সহিত প্রতশোক সম্বর্গ করিয়াছিলেন। একদা এক
রমণী কর্ণিলীয়াকে বলিয়াছিলেন, "আপনি
নিতান্ত হর্ভাগিনী, নতুবা এমন প্রেরত্ব
হারাইবেন কেন ?" প্রত্যুক্তরে কর্ণিলীয়া
বলিলেন, "গ্রাকাইদিগকে গর্ভে ধারণ

করিয়া বে রমণীর পর্জ্বংপবিজ্ঞ. হইয়াছে, তাহাকে হর্জাগিনী মনে করা মহাত্রম।'' কর্ণিলীয়ার মৃত্যুর পর, রোমবাসীরা তাঁহার সম্মানার্থ যে স্মারক মৃর্ত্তি সংস্থাপন করেন, তাহাতে এই করেকটি কথা লিখিত ছিল "গ্রাকাইদিগের জননী কণিলীয়ার স্মরণার্থ"—

আমাদের দেশে অধিকাংশ অশিক্ষিত রমণী নিরতিশয় অলঙ্কারপ্রিয়া। শিক্ষিতা নারীগণের মধ্যে একণে এই সংক্রারক্রার রোগ আর দেখা যার না। স্থতরাং দেখা যাইতেছে, একমাত্র শিক্ষাই এই রোগের মহৌষধ। অশিক্ষিতা রমণীগণ কবে মনস্বিনী কণিলীয়ার মত সদ্গুণাম্বিত সস্তানগণের প্রতি অঙ্গুলি নির্দেশ করিয়া বলিবেন ''দিদি! এই যে আমার অলম্বার!" শাস্ত্র যথার্থই বলিয়াছেন সংপ্রের উৎপত্তিতে 'কুলং পবিত্রং জননী কৃতার্থা বস্ত্রন্ধর পুণারতী চতেন।"

যীশু খুফের প্রাণদণ্ডাক্তা।

যীত গৃষ্ট আজি সভ্য-জগতে 'ঈশ্বর' বলিয়া পূজিত, ১৮৬২ হইল ভাঁহার স্বজাতীয় ইহুদীগণ বিধৰ্মী ও রাজবিদ্রোহী বলিয়া রোমীয় শাসনকর্তা পাইলেটের নিকট তাঁহার নামে অভিযোগ করে এবং দেই শাসনকর্ত্তা পুষ্টকে হুই-জন তম্বরের সহিত ক্রুসবিদ্ধ করিয়া নিষ্ঠুররূপে হত্যা করিবার আদেশ দেন। একথানি প্রস্তরফলকে এই প্রাণদগুজার বিবরণ খোদিত হইয়াছিল। রোমনগরীর ৫৩ মাইল উত্তরপশ্চিমস্থ কোন স্থান ইংরাজি ১২০০ সালে খনন করিতে করিতে থনিত স্থান হইতে এই প্রস্তর-ফলকথানি উদ্ভ হয়। তাহাতে যাহা লেখা ছিল, তাহার অমুবাদ নিমে প্রদত্ত হইল:-- "সমাট টাইবিরিয়স্ সিঞ্চারের রাজত্বকালে মার্চ ১৭ বংসর

তারিখে, আমি প্রিটোরের শাসনকর্তা পান্টিয়স্ পাইলেট নেজারেথের যীশুর মৃত্যুদণ্ডাজা বিধান করিতেছি, তাহাকে কুসকাটোপরি ছই জন চোরের মধ্য- স্থলে মরিতে হইবে। কুইন্টিয়স্ কর্ণিলীয়স্ তাহাকে বধাভূমিতে লইয়া যাইবে।"

প্রস্তরফলকে আরও নিম্নলিখিত কথা-গুলি গোদিত ছিল :—

"এই দণ্ডাজ্ঞাপত্রে অনেকগুলি লোকের স্বাক্ষর ছিল। তন্মধ্যে প্রথম ডানিয়েল রাবি ফারিসি; দিতীয় জোহানেম রাবি, তৃতীয় রাফেল, চতুর্থ কপেট—একজন সামান্ত নগরবাসী। এই মৃত্যুদণ্ডাজ্ঞা কার্য্যে পরিণত হইয়াছিল।"

'বে চোর পৃষ্টের দক্ষিণ দিকে ফুনে হত হয়, তাহার নাম ডিস্মাট এবং বে বামে হত হয়, তাহার নাম জেটিস। পশ্চিম্বস পাইলেট এই শোচনীয় ঘটনা বর্ণনা করিয়া লিপিয়াছেন যে, তৎকালে সমুদার পৃথিবী এরূপ ঘোর তমসাচ্ছন্ন হয় যে, লোকে মধ্যাক্ত হইতে রাত্রি পর্যাস্ত বাতি জালিয়া রাথিয়াছিল।"

বোধ হয় 'খৃষ্টের মৃত্যুর পর পাইলেট রোমীয় সমাটের নিকট এই ঘটনা রিপোর্ট করেন এবং তাহাই স্মরণীয় বিনিয়া প্রস্তরফলকে থোদিত হয়। এই জন্ম এই দলিল ইটালীদেশে ছিল, পরে প্রাচীন তত্ব অত্নকানার্থ সেই স্থানাটি

খুঁজিতে খুঁজিতে প্রস্তর্থানি বাহির হর।

যাহা হউক কালের কি আশ্চর্য্য পরিবর্ত্তন! যে প্রভু দীশুর দোষের বিচার
করিয়া তাঁহার প্রাণদণ্ডাজ্ঞা বিধান
করিলেন, তাঁহার প্রভুদিগের প্রভুত্ব ও

শুর্ষ্য কোথায় স্রোতে ভাসিয়া অদৃশু

হইয়াছে, আর সেই কুশে হত যীশু মৃত্যুজয় হইয়া কোটা কোটা নরনারীকে
ধর্মজীবন দান করিতেছেন।

হরপার্বতী সংবাদ।

(শিবপুরাণ হইতে অমুবাদিত)

5

হর প্রতি প্রিয়ভাবে ক'ন হৈমবতী,
"মরতে যেতেছে কলি, দেব পশু-পতি!
ধরায় ঘটবে তাহে কত কদাচার,
সকলি জানিছ তুমি, কি বলিব আর ?
শুনিলাম কলিমুগে মর নর সবে,
সহধর্ম্মিণীর নাকি বশ নাহি হবে ?—
এ কথা শুনিয়া মম পুড়িতেছে মন,
রমণীই বোঝে দেব, রমণী-বেদন!
অতএব যাহা হয় সহপায় তার,
সেই কথা কহ প্রভা, মিনতি আমার।
শিব-পুরাণের কথা অমৃত উকতি,
আাদ্বারাম-দাসী বলে শুনে পুণাবতী।

হর বলৈ 'হেরিণাকি ! মিছা কথা নহে, 'অনাচারী কলিবুগ' সর্বা শাস্ত্রে কহে। সকলে অধর্মে রক্ত না হুইবে কভু— অনেকে অনেক দোষ পরপিবে তব্!
কলি-ধর্ম কথা পরে কহিব সকলি:—
আজি বা' স্থবিছ দেবি, তাই তোমা বলি;
মেছ শাস্ত্র "বেন বার্ক" করিয়া চর্ব্বণ,
হইবে হৃদয়হীন নর কত জন;
বচনে "পরুষ" তারা, পরাণ নীরস,
নাহি হবে গৃহিণীর যথোচিত বশ।"
শিব-পুরাণের কথা অমৃত উকতি,
আত্মারাম-দাসী বলে ভবে পুণাবতী।

শুনি বিষাদিনী শিবা, চাহে শিব পানে, দেখিয়া করুণাময় সক্রুণ প্রাণে, বলিলেন ''হু:খভা'ব, কি হেতু পার্ক্তি, 'কর্ম-বোগে' রমণীর বশ হবে পতি; সদাচার, মহৌষধ, করিলে রমণী, রবে তার বশীভূত সদা শুণমণি। এই কথা পদ্মাসন কহিলেন ব্যাসে, আমিও বদিব আজি তোমার স্কাশে;
পরম পবিত্র ইহা গোপনীর অভি,
এক মনে স্বতনে শুন তবে সতি।"
শিবপুরাণের কথা অমৃত উকতি,
আত্মারাম-দাসী কহে শুনে পুণ্যবতী।

В

"পতি ৰার বাধ্য নহে আরো অবিনীত, দে নারী আলভ্যে সদা রহিবে জড়িত; প্রভাতের আট ঘণ্টা হইবে যথন, ললনা, বিছানা ছাড়ি উঠিবে তথন; ছই পা ছড়ায়ে বিদ অতি পরিপাটী; মনস্থে চাঁদম্থে থাবে পোড়া মাটী। পরেতে স্থান্ধি তেল শ্রীঅঙ্গে লেপিয়া, দাবান, তোয়ালে নিয়ে রহিবে বিদিয়া, দিবানিশ্রি চারু চ্লে এলবার্ট করি, করাইবে গৃহকর্ম পরাপরে ধরি।" শিবপুরাণের কথা অমৃত উকতি, আত্মারাম-দাদী কহে শুনে পুণাবতী।

"আপিসে চাকরি করে দ্যিত যাহার, মাটী না পরশে যেন চরণ তাহার; গহনা পোষাকে দেহ সাজারে স্থানর, বিস রবে নোণামুখী, খাটের উপর; ঝি আসি মুছিবে ঘাম বাতাস করিয়া, দিবেন বামুন দিদি মুখে 'ছটি' দিয়া। সময় কাটিবে নিয়ে নভেল কি তাস, অথবা সন্ধিনী সনে রখা পরিহাস।— তদভাবে ঝি চাকরে মিছা অপরাধে, করিবে কলহ সতী পরাপের সাধে।" শিবপুরাণের কথা অমৃত-উক্তি, আছারাম-দাসী কহে শুনে পুণ্যবতী। 'দিরিজ যাহার পতি, সদা সে সন্না, চাহিবে পতির কাছে পোবাক গহনা; সে কথা শুনিয়া তিনি দেন যদি 'তাড়া', বিরাশি সিকায় সতী দিবে মুখনাড়া; আদেশ করিবে নাথে করিবারে ঝণ, না শুনিলে, অনাহারে র'বে তিম দিন। এইরপে 'সতীধর্ম্ম' করিয়া পালন, পতি-সোহাগিনী হবে শাল্লের দিখন।'' শিবপুরাণের কথা অমৃত উক্তি, আয়া-রাম-দাসী কহে শুনে পুণাবতী।

9

"ইহাতেও যার পতি বশ নাহি হবে, দে নারী অপ্রিয় কথা নিরস্তর ক'বে। পরিজন সনে সদা করিবেন আড়ি, এ এক ঘরে হবে তাহে আট দশ হাঁড়ী। যাঙ্ডীরে বধু নাহি করিবে ভকতি, যা' ননদী দ্ব করি দিবে গুণবতী; কলহ করিবে সদা প্রতিবাসী সনে, দয়া, মায়া, সরলতা, না রাখিবে মনে। র'বে সদা কক্ষ ভাবে, বদন বিরুদ; দেবি গুনি হবে পতি অতি ত্বরা বশ।" শিবপুরাণের কথা অমৃত উকতি, আয়া-রাম-দাসী বলে গুনে পুণাবতী।

ь

"ইহাতেও পতি যদি অ-বশ রহিবে, পরম গতনে সতী ছেলে ঠেঙ্গাইবে; তাঙ্গিবে কলদী, হাঁড়ী, ছিঁড়িবে বসন; পতি সনে দেখা হ'লে করিবে রোদুন। কখনো বা রক্তনেত্রে চাহি তাঁর পানে, বলিবে 'চলিত্ব আমি শমনের হাবে'। একবিন্দু ছুতা সদা বেড়াবে খ্ জিরা,
পোলেই—বাপের বাড়ী যাইবে চলিরা—
সেধানে যদ্যপি পতি নাহি দেন যেতে,
খ্যানখ্যানে, খুমা'তে না পান যেন রেতে!
পতি বিনা রমণীর গতি নাহি আর,
ভূষিবে তাঁহারে তাই করি সদাচার।"
শিবপুরাণের কথা অমৃত উকতি,
খাখ্যারাম-দাশী কহে শুনে প্ণাবতী।

"এত করি পতি যার বশ নাহি হয়, সে নারী মঙ্গলবারে সন্ধার সময়, এলো চুলে,ভিজা বস্ত্রে, হাঁটিয়া স্থরিতে, গোম্অ, গোবর নিয়া গোহাল হইতে, মুমস্ত পতির শিরে দিবে সেই রস অশিষ্ট, অবাধ্য পতি, তাহে হবে বশ।
বিজ্ঞান অজ্ঞান হেথা—শান্ত্রের বচন,
কোন মতে হৈমবতি, নাহিক থণ্ডন।—
অতএব, দেখি শুনি পতির অবস্থা,
রোগের ঔষধ সতী করিবে ব্যবস্থা।
কলিতে এ 'পুণ্য-গাথা' করিয়া প্রচার,
'বামাবোধিনী'র হবে সোভাগ্য সঞ্চার।
ভক্তিভাবে এই তত্ত্ব পড়িবে যে জনে,
কমলা অচলা রবে তাহার ভবনে;
আরো, আয়ু, পুণ্য, যশ, বস্ত্র লাভ হয়,
ব্রহ্মার মুথের আজ্ঞা নাহিক সংশয়।"
শিবপুরাণের কথা অমৃত উকতি,
আত্মারাম-দাসী কহে শুনে পুণ্যবতী।
অমুবাদিকা—শ্রীআক্ষারাম দাসী।

गृहिगीशना।*

ম্রশিদাবাদের সন্ধিকটে এক নিঃস্ব পরিবার বাস করিতেন। বড় গৃহস্থ। সাত ভাই, তাঁহাদের সহধর্মিনী ও পুত্র কন্তাগণ একত্রে একান্নভূক্ত থাকিয়া হুথে কালযাপন করিতেন। ভাতৃগণ প্রাতঃকাল
হইতে সারাহ্ণপর্যান্ত অপরের ভূমিকর্মণাদি
করিয়া যাহা পারিশ্রমিক পাইতেন, ভাহাভেই কট্টে সকলের ভরণ পোষণ
সম্পন্ন হইত। অর্থের সচ্চলতা ছিল নাবটে,
কিছুমনের হুপ ছিল—সন্তোব ছিল—শান্তি

ছিল। প্রাতাদিগের মধ্যে যেমন সৌহদ্য ভাব ছিল, বধ্গণের মধ্যেও দেইস্কপ। তাঁহারা পরস্পরের পুত্রকস্তাগণকে স্নেহের চক্ষে দেখিতেন, একের স্থথে অপরে প্রথী হইতেন, এবং ছঃথে ছঃথী হইতেন। সকলেই পর্যায়ক্রমে সংসারের রন্ধনাদি কার্য্য করিতেন, কিন্তু তাহার মধ্যে স্বার্থ-পরতা ছিল না। সাতটা বউএর মধ্যে ছোট বউ সাক্ষাৎ প্রীরূপিণী ছিলেন। তিনি এক দিন ভাবিলেন, ইহারা কয় প্রাতায় সমস্ত দিন

^{*} গভ ১০ই বৈশাণের "সমষ্টে" বাবু বিপিনবিহারী ভটাচার্যা এই প্রবন্ধটা লেখেন, ইহা নারীগণের বিশেষ উপবোকী বলিয়া বামাবোধিনীতে উদ্ধৃত ও প্রকাশিত হইল। বা, বো, সং।

পরিশ্রম করিয়া কেবল দৈনিক ব্যরের সংস্থান করিতেছেন, বদি কিছু দিন পারিশ্রমিক না পান, তবে সংসার চলা ভার
হইবে; অতএব কিছু সঞ্চর করা আবশুক।
সেই দিন হইতে তিনি,—টাকা পরসা
কোথার পাইবেন,—অত্যাবশুক থাদ্যদ্রব্য তণ্ডুল তৈল লবণানির কিঞ্চিং কিঞ্চিং
অপরের অজ্ঞাতসারে কোন নির্দিষ্ট স্থানে
স্থিত রাথিতে আরম্ভ করিলেন। তিনি
ক্রেক মাদের মধ্যে পাঁচ সাত দিন
ভাঁহাদের সংসার চলিতে পারে এরপ
তণ্ডলাদি সঞ্চয় করিলেন।

श्रहेरज একদিন প্রাতঃকাল বৃষ্টি পড়িতেছে। সাত ভাই বিষণ্ণবদনে স্ব স্ব দারদেশে উপবিষ্ট আছেন—আজ কোথাও মুজরী জুটিবে না। পর দিনও সেইরূপ। মুষলধারে বৃষ্টি—বিরাম নাই—গৃহের বাহির হওয়া হন্ধর। বাড়ীতে থাদ্যদামগ্রী কিছুই নাই। কল্য প্রতিবেশীর নিকট ধার করিয়া চলিয়াছে, अमा आत्र क धात्र मिर्व ? কিরূপে পরিশোধ করিব এ ভয় যাহাদের আছে. লোকে তাহাদিগকে ধার দেয় না, যাহাদিগের নিকট প্রতারিত হইবার সম্ভাবনা, তাহাদিগকেই প্রায় ধার দিয়া ভ্রাতারা ভাবিতেছেন, অদ্য थाक । সকলকে অনশনে মরিতে হইবে। আপনারা তাহা পারেন, পুত্র কন্তাগণের কুধা-ক্লিষ্ট ভদ্ধবদন কিরূপে দেখিবেন ? ভাঁহাদের বিষয় ভাব দেখিয়া ছোট বউ নিজ স্বামীকে বলিলেন ''আপনারা ভাবিতেছেন কেন ? আমি অন্ত আপনাদের সংসার চালাইব।"

খানী উত্তর করিবেন "ভূমি পরিছান করিতেছ নাকি? এ পরিছানের সময় নহে।" ত্রী বলিবেন "পরিছাস নহে। আপনাদের প্রতি আমার এক অছুরোধ আছে—অভ আমি রন্ধনশালার দরজা বন্ধ করিয়া রন্ধন করিব, কেহ সে গৃহে যাইবেন না; এবং কিন্ধপে আমি দ্বব্যাদি সংগ্রহ করিলাম, তাহাও কেহ আমাকে জিপ্তাসা করিবেন না।"

তাহাই হইল। যথাসময়ে ছোট বউ রন্ধনাদি সমাপন করিলেন। সকলে অতীব তৃপ্তি সহকারে আহার করি**লেন। পরেঁ** সহোদরগণ সমস্ত বিবরণ অবগত হইয়া, পরামর্শ করিলেন "ছোট বউয়ের প্রতি লক্ষীর বিশেষ রূপা আছে ; আমরা বছ ভাগাফলে এমন বউ পাইয়াছি। অত: পর কেহ তাঁহার মত্রনা লইয়া কোন কার্য্য করিব না : এবং যাহা উপার্জ্জন করিব. তাঁহার নিকট রাথিব।" ছোট বউরের নিকট এই প্রস্তাব করা হইলে ভিনি উত্তর করিলেন, "আমি সমত আছি, কিন্ত আপনাদিগকে আমার একটা কথা রাথিতে হইবে। আপনারা প্রতিদিন স্ব স্ব কার্য্য সমাপন করিয়া গৃহে প্রত্যাগমন করিবার সময় কোন একটা দ্রব্য সইয়া আসিবেন। কেই ক্লেত্রের কোন একটা ফল বা মূল, কেছ একথানি শুক কাৰ্চ रेजापि यिनि यांश शाद्यन आनित्यन-কেহই বিক্তহন্তে আদিবেন না।" প্ৰকেই সম্মত হইলেন। এক দিন কনিষ্ঠ আতা মাঠ হইতে বাড়ী ফিরিবার সমর রহস্ত

করিবার অভিপ্রাবে, রাস্তা হইতে একটা মুক্ত দর্প এক যৃষ্টি দারা উঠাইয়া লইয়া চলিলেন। বাটীতে আসিয়া ৰ্ণিলেন ''অন্ত আর কিছু পাইলাম না; প্রতিকারকার নিমিত্ত এই দর্প লইয়া আসিয়াছি।" খাঁহারা হৃদয়ের দুঢ় বিশাসা-क्रुयांग्री कार्या करत्न, यांशालत मत्नत वन আছে.ভাঁহারা সকল বিষয়েই সফল-মনোরথ হন। স্ত্রী উত্তর করিলেন ''যাহা আনিয়া-ছেন তাহাই যথেষ্ট, উহা ঐ মাচার উপর রাথিয়া দিন।" মৃত দর্পটীকে মাচার উপর নিক্ষেপ করিবামাত্র এক চিল শুন্ত হইতে নামিয়া তাহা লইয়া গেল। সেই মুহুর্তে তাঁহারা সবিশ্বয়ে দেখিলেন একছড়া বহু-मुना त्रव-थिठ अर्थशत हिटलत नथत হইতে তাঁহাদের সমুখে ভূমিতে পড়িল। শ্রাতাদিগের বড় আনন্দ, হার বিক্রয় করিলে অনেক টাকা হইবে, ঈশ্বর এত **मित्न छाँशामित इ:थ** घूठाईटनन। किन्न ছোট বউয়ের তাহা অভিপ্রেত

তিনি বলিলেন "এ হার বিজ্ঞান করা হইবে না, রাধিয়া দেওয়া হউক।" কেহ তাঁহার কথা অবহেলা করিতে পারেন না। হার যক্ত সহকারে রাধিয়া দেওয়া হইল।

অন্ন দিন পরে দেশের বাদশাহ ঘোষণা করিয়া দিলেন যে, চিলে তাঁহার বেগমের এক ছড়া বহুমূল্য হার লইয়া গিয়াছে— যে কেহ সেই হার দিতে পারিবে, তাহাকে প্রচুর পারিতোষিক দেওয়া হইবে। ছোট বউয়ের পরামর্শ মত সেই হার বাদশাহের সমীপে প্রেরণ করা হইল। বাদশাহ তাঁহাদিগকে প্রচুর অর্থ ও ভূমি সম্পত্তি দিলেন। তাঁহাদের সৌনা রহিল না। সকলে বলিলেন ছোট বউ মানবী নহেন—দেবী।" ভানিয়াছি সেই কয় ল্রাতাই জগৎশেঠের আদিপুরুষ। বাঙ্গালার প্রসিদ্ধ জগৎশেঠের বংশ কাহার অবিদিত আছে প

আবু গিরি।

আবু পর্বত রাজপুতানার নিরোহিথাদেশে অবস্থিত। ইহার উচ্চতা ৫।৬
হাজার ফিট। ভারতবর্ষের মধ্যে সর্বথাচীন জৈন মন্দির সকল এই পর্বতে
আছে হলিয়া ইহা অতি প্রসিদ্ধ এবং
দেশেন সর্ব্ধ স্থান হইতে ম্যাত্রী সকল
থানে আসিয়া থাকে। জৈনের।

আন্তিক বৌদ্ধদিগের এক সম্প্রদায় এবং
তাঁহারা দিদ্ধপুরুব ও অবতারের পূজা
করিয়া থাকেন। আবু পর্বতের উচ্চ
ও সমতল স্থান সকলে অসংখ্য বেদী,
মন্দির ও সমাধিগৃহ আছে, এবং
দেই গুলি অতি আশ্চর্য্য কারুকার্য্য ছারা
প্রস্তুত হইয়াছে। পর্বতের শিখরদেশে

একটা পোলাকার সমতল ভূষি আছে, তন্মধ্যে একটী গহর-এই গহরে এক-थानि वक्कवर्ग अखदा माजा ज्ञा अपनिहरू অঞ্চিত্ত আছে! ইনি বিষ্ণুর এক অব-গুরুশিধরা তার। নামক সর্বেচচ শুক্ত হইতে প্রায় পাঁচ মাইল দুরে মধা-श्रुटा প্রধান ছইটা দেবমন্দির প্রতিষ্ঠিত আছে। এই মন্দির ছইটী খেত মার্কেলে নির্মিত। ভারতবর্ষের মধ্যে এমন স্থব্দর মন্দির এবং জৈন কারুকার্য্যের আদর্শ অতি অল স্থানে দেখিতে পাওয়া যায়। মন্দির ছইটার মধ্যে যেটা অপেকাক্ত আধুনিক, তাহাও প্রার সাত শত বংসর পুর্বে নির্মিত হইয়াছে। ছই ধনাত্য বণিক্ সহোদর ইহা প্রস্তুত করিয়া দেন। এই मन्तिदर्भ रवक्ष अ मत्नाहत খোদকারী কার্য্য আছে তাহার তুলনা প্রায় কোথাও পাওয়া যায় না। প্রাচীন मिन्तिजी ১००२ थृष्टोत्म विमन मा नामक এক ধনী বণিক নির্মাণ করাইয়া দেন। हेरात गठनवानी यनित मतन, उथानि देशंत्र मरभाउ थाइत भिन्नदेनभूरणात পরিচয় পাওয়া যায়। মন্দিরের মধ্যে

দীপালোকোত্ৰল একটা কুত্ৰ গৃহ আছে ভাহাতে পরেশনাথ দেব আসনপিডি দিয়া বিদয়া আছেন। ইহার বারাতা ৪৮টা उड पाता निर्मिड। ১৪० किট मीर्च ७ ৯০ ফিট প্রস্থ এক চতুঙ্গোণ প্রা**ঙ্গ**ের মধ্যে এই মন্দির অবস্থিত। তাহার চারি দিকে হই সারি স্তম্ভ-শোভিত বারা**ঙা**। এই বারাণ্ডাণ্ডলিতে ৫৫টা কুন্ত্র তাহাদের এক একটার পরেশ-নাথমূর্ত্তি। এক এক দরকার উপর ও প্রাচীরে অনেকগুলি খোদিত মৃত্তি আছে, তাহা খারা এই দেবতার জীবনের নানা অবস্থা বর্ণিত। আকবর ১৫৯৩ খুটান্দে অর্থাৎ তাঁহার রাজত্বের সপ্তত্রিংশ বর্ষে ধেতাধরী জৈন সম্প্রদায়ের গুরু হরবিধ্য স্থরকে আব পর্বত ও মন্দির এবং ভারতের অমন্যান্ত জৈন তীর্থস্থান সকল দান করেন এবং এই দকল স্থানে পশুহত্যা নিবারণ করিবার আদেশ দেন। এই সু বিষ্ণ লিথি ত সমাটের সনন্পত্রে আছে "केश्वत-উপাদকদিগের निग्रम এই খে. তাঁহারা সকলধর্মকে রক্ষা করিয়া থাকেন।"

শুভ জন্মোৎসব।

ব্রাক্ষসমাজের প্রধানাচার্য্য শ্রীমন্মহর্ষি দেবেন্দ্রনাথ ঠাকুর মহাশয়ের শুভ জন্মোং-দৰ উপলক্ষে গত ৩রা জ্যৈষ্ঠ তাঁহার পার্কব্রীট ভবনে তাঁহার শিষ্যগণ এবং

পুত্র পৌত্র, ছহিতা দৌহিত্র প্রভৃতি পরিজন তাঁহাকে ঘেরিয়া বসিয়া তাঁহার সহিত পরব্রক্ষের উপাসনা করেন। উপা-সনাম্ভে পুষ্পবৃষ্টিতে তাঁহাকে

দিরাছিলেন; কেহ কেহ কবিতোপহারও দেন ! সহচর পত্রিকাতে প্রকাশিত একটী ক্বিতার কিয়দংশ আমরা আনন্দের সহিত এখানে উদ্ধৃত করিলাম:--্টাদের কিরণাভাব করিতে বিদূর সারাদিন ভাতে যথা রবি ভাজমান, সেইরূপ অন্তমিত আর্য্যক্যোতি স্থানে হে গুরো,দেবেক্স,দেব,তুমি জ্যোতিমান্। পরম পিতার ইচ্ছা করিতে পালন. এসেছ মরতে গুঢ় লক্ষ্য সাধিবারে— সাধিত সাধনা-শিকা, নিফাম সংসার, উদ্ধারিলে মগ্নজনে কল্পনা-পাথারে। যে মহা অমৃত তুমি মানবের হিতে উদ্ধারিলে বেদার্থ করিয়া মন্থন. শ্রদায় যে জন তাহা করিবেক পান অনুত্র কালের গর্ভে অমর সে জন। দুশ্য-পট মাঝে তুমি শরীরী মানব, অশরীর স্বর্গবাসী দেবতা অন্তরে. একাধারে যোগী হ'য়ে ভ্রম যোগপথে. নির্বাহ সংসার 'তম্ম প্রিয় কার্য্য' তরে। যে তানে মগন তুমি যাহা কর ভোগ, অহোরাত্র যে আলো করিছ সন্দীপন. যে আনন্দ বাদ্য গান স্থধারাশি ঢালে তোমার হৃদয়ে, তাহা অপরে গোপন। সাধিয়া আপন কাৰ্য্য উৰ্দ্বমুখী তুমি বসি আছ বিধাতার আদেশ চাহিয়া, বিধান্তার সহস্তের পুরস্বারলোভী, অৰ্থীৰ এ পৃথিবীরে পশ্চাতে রাথিয়া।

একোন-অশীতি বর্ষ বয়:ক্রমে আজ, হে দেব, করিলে তুমি প্ণ্য-পদার্পণ, তাই এই শুভ লগ্নে গাঁথি জয়মালা, এসেছি তোমায়ে তাহা করিতে অর্পণ।

এই সে জরের মালা গাঁথা ভব্তি-ফুলে হৃদয়ের ক্বতজ্ঞতা চন্দনে চর্চিত, লহ দেব ক্বপা করি, কর আশীর্কাদ, স্থির থাকি সে পথে যা তব পদাকিত।

যোগ-সমর্পিত-কর্ম্ম-সমাহিত তুমি, কি আর তোমার তরে থাচিব স্রষ্টারে, কুশলে উত্তীর্ণ হও, এই মাত্র থাচি, সক্কৎ-প্রভাত-বাদে, তমিস্রের পারে।

মহর্ষি দেবেজনাথ আমাদের ভারতেখরী ভিক্টোরিয়ার সহিত সমর্বয়য়। উভয়েই
৭৮ বৎসর অতিক্রম করিয়া এই জ্যৈষ্ঠ মাসে
৭৯ বর্ষে পদার্পণ করিয়াছেন। মহর্ষি মহাক্লসভ্ত,প্রিক্ষ দারকানাথের জ্যেষ্ঠ পুত্র।
রূপে গুণে,ধনে পুত্রে, যশে পৌরুষে যেমন
সৌভাগ্যবান্, দয়াশীলতা, দেশহিতৈষিতা
ও ধর্মনিষ্ঠতা গুণে সেইরূপ জগৎবিখ্যাত।
তথাপি তিনি শেষ জীবনে সংসারবিয়াগী
যোগী হইয়া "ব্রক্ষজান, ব্রক্ষধান, ব্রক্ষানন্দ রসপানে" ভুবিয়া প্রাচীন ঋষিজীবনের
পরিচয় দিতেছেন। তাঁহার জীবন অতি
ম্ল্যবান্, তিনি আরও দীর্ঘজীবী হইয়া
ভারত মাতার তাপিত হৃদয় শান্তিময়
করিয়া রাখুন্।

न्जन मःवाम।

১। গত ২৪এ মে মহারাণী বিক্টোরিয়া
৭৮ বংসর পূর্ণ করিয়া ৭৯ বংসরে পদার্পণ
করিয়াছেন। ইহাঁর পুত্র, কন্সা, পৌত্র,
প্রপৌত্র দৌহিত্রাদি লইয়া ৭০টী বংশধর
হইয়াছে। মঙ্গলবিধাতা পরমেশ্বর সগোষ্ঠী
মহারাণীকে দীর্ঘজীবিনী করুন।

২। দাক্ষিণাত্যে হিন্দু ও খুষ্টানে ভন্নানক
দালা হইয়া অনেক গুলি লোক হতাহত
হইয়াছে। খুষ্টানদের গির্জার নিকট দিয়া
কোলাহল সহকারে হিন্দুর রথ যাইতেছিল,
খুষ্টানেরা সহু করিতে না পারিয়া হিন্দুদিগকে
আক্রমণ করেন। ক্রমে উভয় পক্ষ উত্তেজ্বিত হইয়া বোরতর সংগ্রামে প্রবৃত্ত হন। ঝুষ্টানেরা খুষ্টের উপদেশ ভূলিয়াছেন, হিন্দুদেরও ধৃতি ক্ষমা কোথায় ৪

০। যে জাপানী চীনদ্ত লিহনকাংকে

হত্যা করিবার চেষ্টা করে, জাপান গবর্ণমেন্ট তাহার যাবজ্জীবন কারাদণ্ডের

আজ্ঞা দিয়াছেন। চীনেরা ফার্ম্মোসা দ্বীপ

জাপানের হস্তে সমর্পণ করিয়াছে।

৪। ১৯এ মে মুসলমান অনাথনিবাদের বার্ষিক সভা মাদ্রাদা স্কুলগৃহে
অতি সমারোহে সম্পন্ন হইরাছে। নবাব
সায়েদ আমীর হোদেন সভাপতির আদন
গ্রহণ করেন।সম্পাদক জ্জ আবুল হোদেন
এই আশ্রমের উন্নতির জ্ঞা বিশেষ ধরশীল। আশ্রমে ৭২টা বালক ও ২টা বালিকা
আছে। ইহার আর ১৮০০০ ও ব্যর

সাত হাজার টাকার উপর হইরাছে। আশ্রমের ফণ্ড হইতে ধেমন বালক বালিকারা শিক্ষিত হর, সেইরূপ করেকটী বিধবাও প্রতিপালিত হইরা থাকে।

৫। দর্শনশাত্ত্রে ডাক্তার একটা মাত্র স্ত্রীলোক। তাঁহার নাম ডাক্তার হেলেন ওয়েবেস্টার। ইনি ওয়েলেস্লি কলেকে শিক্ষিত হন; পরে জর্মণিতে গিয়া অসীম্ পরিশ্রমে অধ্যয়ন সমাপনপূর্বক এই উপাধি লাভ করিয়াছেন।

৬। লেভেন ওয়ার্থের ভৃতপূর্ব জজের
বিধবা পত্নী বিবি কট টেক্সদে প্রান্ত জাট
লক্ষ বিঘা ভূমির অবিকারিণী। তাঁহার
গা৮ হাজার গো মহিষ আছে। তিনি, এই
বৃহৎ জমিদারীর কার্য্য স্বয়ংনির্বাহ করিয়া
থাকেন।

৭। চিনসামাজী রাজভবন মধ্যে একটা বৃহৎ রেসমা বস্ত্রের কারথানা খুলিয়াছেন। হাজার হাজার বালিকা ও বয়স্বা স্ত্রীলোক এপানে কাজ করিরা জীবিকা লাভ করিবে। সাম্রাজী স্বরং কার্যা পরিদর্শন করিতেছেন।

৮। অধ্যাপক ম্যান্ত্রমূলার ইতিপুর্বের স্ত্রীকালেজের বিরোধী ছিলেন। এখন তাঁহার
মত পরিবর্ত্তিত হইরাছে। তাঁহার মতে
বালিকারা বালকদের অপেকা ভাল শিক্ষা
করিতেছে এবং স্ত্রীলোকদের বিভাক্তরালিতার অনুসর্ব করা পুরুবেশ্বের উচিত।

পুতকাদিসমাতে চিনা।

পাধ্যার প্রণীত, মূল্য ৩ টাকা। কর-রেখা মারা নরনারীর ভাগা পরীক্ষা এদেশে বছকাল হইতে চলিত আছে এবং তাহা তও গণকদিগের উপার্জনের এক উপায়। কিন্তু মূলে কিছু সত্য না থাকিলে তাহার ভান সম্ভব নয়। রমণ বাবু বহুদিন শিক্ষা

সামুদ্রিক শিক্ষা-শ্রীরমণকৃষ্ণ চট্টো-া ও প্রিক্রীক্রা দ্বারা যে অভিজ্ঞতা সাভ করিয়াছেন, তাহা সরল ভাবে সর্ব সাধারণের গোচর করিয়াছেন। বিষয়টী অমুসন্ধান-যোগ্য এবং যদি ইহাতে কিছ সত্য থাকে, তাহা সাদরে গ্রহণীয়। গ্রন্থ-কার স্থন্দর চিত্রাদি দ্বারা গ্রন্থথানি স্থবোধ্য করিয়াছেন।

निर्सितिगी ও विदाउनिमनी-- १ नार नारनाठा ।

বামারচনা।

কোন একটি বালিকার প্রতি।

প্রেমে ভরা ছবিথানি হাসি হাসি মুথ, েহেরে তোরে চাঁদমণি ভূলে যাই ছথ। স্থটানা নয়ন ছটি স্লেহের চাহনি, আনুলুক্রী তাম খেলিছে আপনি। ্ষুদ্র তত্ত্থানি তোর সোহাগেতে পোরা, ঐ ছোট প্রাণথানি মাধুরিমা-ভরা, গড়েছে বিধাতা তোরে কোমল আদরে তাই এত ভাশবাসা প্রাণের ভিতরে। ''মালতী মুকুল"বলি যে ডাকেরে তোরে, ছটে গিয়ে কত প্রেম ঢেলে দাও তারে। কচি হাত হটি দিয়ে গলা জড়াইয়ে, বুকের উপর দেও মাথা নোয়াইয়ে, প্রফুল বদনে কও কত মধুকথা, **জনে** প্রাণ ভূলে যায় সংসারের ব্যথা;

কতই করুণা ধর বিমল অন্তরে, নিতান্ত ব্যথিত হও হেরিলে কাতরে। ছুটাছুটি ব্যগ্রভাব সেবিতে ভাহারে, কতই যতন কর মমতার ভরে. मुशानि अशारय यात्र दिनना दनशिरन, উজ্বল নয়ন হুটি ভরি উঠে জলে; এত ভাল বাসা বাসি কেন তোর প্রাণে. জগৎ বুঝে না ইহা স্বার্থভরা মনে, স্বরগের ফুল তুমি ফুটেছ ধরায়, আমোদিত এ ভুবন সৌরভপ্রভায়। মালতী ফুলেতে গাঁথি স্নচিকণ হার, বাসনা প্রাণেতে নিব গলে দেবতার। वीनिछात्रिण तिरी,

কানপুর।

হেঁয়ালির উত্তর।

ক্, চ, ট, ভ, প, এ পঞ্চ বর্গের ভিতর शक्य दर्शन (वर्षे शक्य जकत,

বৈশাথের হেঁরালির তাহাই উত্তর : পাঠ মাত্ৰ বিনায়ালে ৰশিম শম্ব। 🗼

वागात्वारिनी পত्रिका।

BAMABODHINI PATRIKA.

"कन्याष्टेवं पालनीया शिच्चणीयातियत्नतः।"

কন্তাকে পালন করিবেক ও যত্নের সহিত শিক্ষা দিবেক।

৩৬৬

मःशा।

আযাঢ় ১৩০২—জুলাই ১৮৯৫।

৫ম কল্প।

৪র্থ ভাগ।

সাময়িক প্রসঙ্গ।

মহারাণীর জন্মোৎসব—এই উপলক্ষে এ বংসরও অনেকে উপাধি লাভ করিয়া-ছেন। মহারাজ-কুমার বিনয়ক্ষকে "রাজা" উপাধি দিয়া গ্রণ্মেণ্ট গুণ-গ্রাহিতার পরিচয় দিয়াছেন।

বিশ্ববিদ্যালয়ের উপাধি—অরফোর্ড বিশ্ববিদ্যালয়ে স্ত্রীলোকদিগকে বি, এ, উপাধি দেওয়া হইবে, সম্প্রতি স্থির হইয়াছে। ভারত-রমণীগণ উপাধিলাভের অধিকার বিষয়ে ইংরাজ রমণীগণ অপেকা দৌভাগ্যবতী।

দান—পাটনার কাজী রাকা হোদেন খাঁ বাহাছরের পত্নী কাজিমান বেহারের মুসলমান ছাত্রদিগের শিক্ষার জন্ত দশ হাজার টাকা দান করিয়াছেন। ইহাতে একটা স্থায়ী ফণ্ড হইবে। মৃত্যু—(১) কলিকাতা মিউমিসিপালিটির সভাপতি হারী লি, সি, এস,
পীজার জন্ম ছুটা লইয়া বিলাত গিয়াছিলেন, সম্প্রতি মারা গিয়াছেন। ইনি
একজন স্থবোগ্য ও সদাশয় রাজকর্মচারী
ছিলেন।

(২) গত ১৬ই জৈ ছি স্থবিখ্যাত বাব্ কেশবচন্দ্র সেনের কনিট ভ্রালা বাব্ ক্ষাবিহারী সেন জ্ববিকাররোগে পর-লোকগত হইরাছেন। ইনি একজন স্থবিঘান, স্থলেথক ও শান্ত প্রেক্কতির লোক ছিলেন। ইহার জ্বকাল মৃত্যুতে আমরা শোকার্ত হইয়াছি। ইহার বৃদ্ধা জননী রোমীয় মাতা কর্ণিলীয়ায় মত পুত্রগণের মহবের স্থৃতি লইয়া সাল্লনা লাভ ককন। জগদীশ পরলোকগত আছার

শক্তি বিধান ও তাঁহার পরিত্যক নিরাশ্রয় পরিবারের রক্ষার উপায় বিধান করুন। ফর্মোসার রূপান্তর-জাপান 'যুদ্ধ-জ্মী হইয়া চিনের নিকট হইতে ফর্ম্মোসা ৰীপ পাইলেন। কিন্তু ফর্ম্মোসাবাদিগণ বলিয়া বোষণা স্থদেশকৈ সাধারণতন্ত্র করিয়াছে। ভূতপূর্বে চিন-শাসনকর্তা টাং ইহার প্রেসিডেন্ট মনোনীত হইয়াছেন। ওমরা থাঁ-- চিত্রলযুদ্ধের এক প্রধান অভিনেতা ওমরা খাঁ যুদ্ধকেত্র হইতে কাবুলে পলাইয়া গিয়া আমীরের শরণাপন্ন **হইয়াছেন।** আমীর তাঁহার প্রতি বিরাগ প্রদর্শন করিয়াছেন, কিন্তু শরণাগত মুদল-মানের প্রতি দয়া প্রকাশ করা মুসলমানের কর্ত্তব্য বলিয়া তাহাকে আশ্রয় দিতেছেন। আমীরপুত্রের অভ্যর্থনা—প্রিন্স নিদ-কলা ইংলভে গিয়া বাদের জন্ম স্থসজ্জিত প্রাসাদ প্রাপ্ত হইয়াছেন এবং মহারাণী, যুবরাজ ও রাজপরিবারদিগের দারা সাদরে অভার্থিত হইয়াছেন। তাঁহার চিত্ত-বিনোদনার্থ নানাবিধ অমুষ্ঠান হইতেছে। হেয়ার বার্ষিক উৎসব—গত জুন ঋগীয় হেয়ার সাহেবের স্মরণার্থ কলিকাতা কলেজ কোয়ারে তাঁহার সমাধিন্তভের নিকট তাঁহার কয়েকটা প্রাচীন ছাত্রসহ তাঁহার :গুণামুরাগিগণ একত হইয়া তাঁহার গুণকীর্ত্তন ও তাঁহার বস্ত প্রার্থনা করিয়াছেন। ৫৩ বর্ষ হইল তিনি শের্শগত হইয়াছেন।

বুদ্ধ-সেবা--বৃদ্ধদেবা ধর্মলাভের প্রধান উপায় বলিয়া হিন্দুশান্ত্রে কীর্ন্তিত। অদ্বীয়ার সমাটু ও সাম্রাক্তীর এ সম্বন্ধে সদস্ঞানের সংবাদ পাঠ করিয়া আমরা পরম স্থা হইলাম। একটা স্থেসজ্জিত উচ্চ আসনে মহাসমারোহ করিয়া এক **मिरक २२** जै तुका महिला ७ अशत मिरक ১২টা বৃদ্ধকে বসান হয়। ইহাঁরা প্রাচীন দরিদ্র বংশ হইতে মনোনীত হন। এক দিকে সাম্রাজ্ঞী সহচরীদিগকে লইয়া বুদ্ধা-দিগকে পরিতোষপূর্বক আহার করাইয়া স্বহস্তে তাঁহাদের পদধোত করিয়া দেন. অন্ত দিকে সম্রাট্ বুদ্ধদের সেইরূপ সেবা করেন। খুব জনতা ও বাদ্যোদ্যমাদি হয়। স্ত্রী-শিল্পী—পাঁচদোনা-নিবাদিনী শ্রীমতী অক্ষরকুমারী গুপ্তা কাগজে ছবি কাটিয়া ও চিত্র করিয়া এরপে শিল্পপারদর্শিতার পরিচয় দিয়াছেন যে, তাহা দেখিয়া ইংরাজ-চক্ষুও মুগ্ধ হইয়াছে। ইনি সর্বতো-ভাবে উৎসাহলাভের যোগ্যা।

সাময়িক পত্রিকা--দাসাশ্রমের পত্রিকা ''দাসীর" বর্দ্ধিত আকার দর্শনে আমরা পরমাহলাদিত হইয়াছি। ইহাতে বিবিধ উপাদেয় ও সারগর্ভ প্রবন্ধও লিখিত হইতেছে। সাধারণে বার্ষিক ২ টাকা **मिग्रा देशत धाहक इटे**एल পত्रिकात উন্নতি এবং দাসাশ্রমের সাধু কার্য্যের সহায়তা করা হয়।

নারী-চরিত।

মেরিয়া আগ্রেসি।

त्मितिया गरीना व्यास्त्रिम हेरे।निरम्भीय এক স্থপ্রসিদ্ধ রমণী। ইনি বিজ্ঞানের উচ্চ তত্ত সকল শিক্ষা করিয়াছিলেন। ইহাঁর পিতা বলোনা বিশ্ববিদ্যালয়ে গণিত-শাস্ত্রের অধ্যাপক ছিলেন। ১৭১৮ খৃষ্টাব্দের ১৬ই মে মিলান নগরে ইহার জন্ম হয়। ইহাঁর বয়দ যথন ১ বংদর মাতা, তথন লাটিন ভাষায় ইহাঁর এ প্রকার ব্যুৎপত্তি জন্মিয়াছিল যে, তিনি ঐ ভাষায় এক স্থদীর্ঘ প্রবন্ধ প্রচার করেন এবং তাহাতে স্ত্রী-জাতির উদার শিক্ষার কর্ত্তবাতা সমর্থন করেন। মথন তাঁহার বয়দ ১৩ বৎসর, তথন তিনি গ্রীক, হিব, ফরাসি, স্পেনীয়, জর্মাণ, এবং আরও কতকগুলি ভাষায় স্থপণ্ডিতা হন। এই জন্ম লোকে তাঁহাকে "walking polyglot" সচল সর্ব্ধ-ভাষা বলিয়া ডাকিত। ছই বংসর পরে তাঁহার পিতা মধ্যে মধ্যে বলোনা নগরে পণ্ডিছ-মগুলীর সমিতি আহ্বান করিতেন। এই সকল পণ্ডিতের সমক্ষে—আগ্রেসি অতি উচ্চ দার্শনিক তত্ত্ব সকলের বিচার করিতেন। প্রেসিডেণ্ট ডিব্রসিদ্ এইরূপ এক সভায় উপস্থিত ছিলেন এবং তাঁহার রচিত একথানি পুস্তকে সেই সভার বিবরণ विशिवक कत्रियां एक । २१७৮ शृष्टीत्म আগ্নেসির পিতা "Propositions Philosophicœ" দার্শনিক-তত্ব নামে একথানি

পুত্তক প্রচার করেন, তাহাতে কন্যার বিদ্যাবভার পরিচয় পাওয়া যায়। মেরিয়া আগ্রেসি স্বভাবত: ছিলেন। বিদ্যার এরপ আডম্বরিতা তাঁহার:ভাল লাগিত না এবং ২**০ বংসর** বয়দের সময় তিনি সংসারের যশোবাসনা পরিত্যাগপুর্বক সন্ন্যাসাশ্রমে করিতে উৎস্থক হন। তাঁহার বাসনা তথন • পূর্ণ হয় নাই, কিন্তু এই সময় হইতেই তিনি লোকসমাজ পরিত্যাগ করিয়া নির্জানে বাস করেন। তিনি নির্জ্জনে গণিতশাস্ত অধ্যয়নে নিযুক্তা হন। ছইথানি গঞ্জি-পুস্তক এই নিৰ্জ্জন বাসের ফল এবং তাহা ১৭৪৮ খুষ্টান্দে মিলান নগরে প্রচারিত হয়। প্রথম ভাগে (Analysis of finite quantities) সুসীম সংখ্যা ও দ্বিতীয় ভাগে (Analysis of infinitesimals) অগীম ভগ্নংশের গঢ়তব দকল ব্যাখ্যাত আছে। त्य नगरा हेश धारति इस, उ९कानीन পণ্ডিতেরা ইহা দর্শন করিয়া চমংক্লত হন এবং মক্তকণ্ঠে গ্রন্থকর্ত্রীর প্রশংসা করেন। ১৭৭৫ श्रुष्टोत्म देशत विजीय थ्रञ्ज मन्नामि ভাষায় অনুবাদিত হইয়া প্রকাশিত হর। কেश्रिक विश्वविद्यालयत्र श्रिक-स्थार्थक কোলসন ইংরাজি ভাষায় ছইথানি পুস্তক্ই অস্বাদিত করেন এবং তাঁহার মৃত্যু পর कभिमादित वर्ष-नाराद्य এক ধনাচ্য

ভাষা প্রচারিত হয়। ১৮০৩ খৃষ্টান্দে এডিনবর্গ রিভিউ পত্রিকায় ইহার যে সমালোচনা
বাহির হয়, তাহাতে গ্রন্থকর্ত্রীর পাণ্ডিত্যের
যথেষ্ঠ প্রশংসা দেখা যায়। আগ্রেদি
(Conic Sections) কোণবিভাগ-শাস্ত্রের
এক টীকাগ্রন্থ লেখেন, তাহা মুদ্রাহিত
হয় নাই বটে, কিন্তু বাহারা তাহা দেখিয়াছেন, তাঁহারাই তাহার প্রশংসা করিয়াছেন।
১৭৫০ খুষ্টান্দে তাঁহার পিতা পীড়াগ্রন্ত
হইলে পোপ চতুর্দ্দশ বেনিভিক্ত পিতৃপদে
ইহাকে বলোনা বিশ্ববিভালয়ের গণিত
ও পদার্থবিভার অধ্যাপক নিযুক্ত করেন।

১৭৫২ সালে তাঁহার পিতার মৃত্যু হয়।
তথন তিনি ধর্মান্ত্র অধ্যয়নে নিযুক্ত
হইয়া আপনার বহু দিনের বাসনা পূর্ণ
করেন। বহুদিনাবধি তাঁহার মনের আর
একটা সাধ ছিল, তাহাও ক্রমে পূর্ণ হইল।
মিলানে (Blue Nuns) নীল সন্মাসিনীদিগের যে আশ্রম আছে, তিনি কিছু দিন
তাহার অধ্যক্ষতার কার্য্য সম্পন্ন করেন।
অবশেষে তিনি স্বয়ং সেই ভগিনীদলে প্রবিষ্ট
হইয়া আশ্রমোচিত কচ্ছু ব্রত দাধনে নিযুক্ত
হন এবং ১৭৯৯ সালে অশীতি বর্ষের বৃদ্ধা
হইয়া মানবলীলা সংবর্গ করেন।

সৃষ্টি প্রক্রিয়া রহস্ম।

(৩৬২ সংখ্যা, ৩৩৮ পৃষ্ঠার পর)

সমুখার ততন্তাভ্যাং যুযুধে ভগবান্ হরিঃ। পঞ্বর্ধসহস্রাণি বাহুগ্রহরণো বিভূঃ।

-- চড়ী ১অ, ৭২।

অনস্তর হরি সর্পশিয়া হইতে গাত্রো-খান করিয়া হুরাত্মা মধু কৈটভ দৈত্যদ্বরের সহিত পঞ্চ সহস্র বৎসর অতি ঘোরতর মন্ত্রমুদ্ধ করিতে লাগিলেন।

ইহার তাৎপর্য্য এই, নারায়ণ অর্থাৎ জলরাশি, দেবমানে পাঁচ হাজার বংসর, মহুষ্যমানে ১৮,২৫০০০, বংসর কীট্যুক্ত হইয়াছিল। উক্ত পরিমাণ বংসর পরে কীট্পুজ রূপান্তর প্রাপ্ত হইয়া নানা প্রকার কালভা উৎপন্ন হইয়াছিল। জলজন্ত হেখ্যে মুখ্যুই প্রধান, এলুক্ত ভগবানের

ইত্যুজ্বান্তৰ্ধধে মংস্থো মনুঃ কালপ্ৰতিষ্ঠকঃ।
—মংস্তপুরাণ।

যথন জলভাগ উত্তীর্ণ হইয়া স্থলভাগ দেখা দিল, তথন জল ও স্থল এই উভয় স্থানে বাস করিবার উপযুক্ত জন্ত সকল উৎপন্ন হইল। উহাদিগের মধ্যে কুর্মাই প্রধান, এজন্ম কুর্মা ভগবানের দিতীয় অবতার।

কুর্মরূপং সমাস্থায় দধ্যে বিকৃশ্চ মন্দরম্। —কুর্মপুরাণ।

তাহার পর জলও নয় স্থলও নর, অর্থাৎ কর্দমযুক্ত স্থানের উপযুক্ত জীব সকল আবিভূতি হইল। তল্মধ্যে ব্রশ্নহই শ্রেষ্ঠ মৃর্থি, এজন্ম উহা ভগবানের ভৃতীয় অবতার।

দেবৈৰ্সভা ভতো বিক্ৰজনশো বরাহক: ॥

অভূৎ তং দানবং হখা দৈত্যৈ: সাকঞ্ কণ্টকং।

—বরাহপুরাণ।

ষধন ভগবান্বরাহ মৃত্তি ধারণ করেন, তথন পৃথিবীর উৎপাদিকা শক্তি অত্যন্ত অধিক। ঐ সময় পৃথিবী যেন জঙ্গলে পরি-পূর্ণ হইয়া উঠিয়াছে। ক্রমশঃ এই উন্নতা-বস্থা যেরূপ বৃদ্ধি প্রাপ্ত হইতে লাগিল, অমনি তৎসঙ্গে সঙ্গে অখ, গো মেষ, মহিষ ইত্যাদি শৃক্ষী জন্তু সকল দেখা দিল।

"মহিৰাহ্বদেনানী চিকুরাপ্যে। মহাহ্বঃ। যুষ্ধে চামবৈশ্চাইঞ্চতুর্ক্বলাঘিতঃ॥
---চঙী, ২র অধ্যার, ৩৯।

পৃথিবীর এই অবস্থা লইয়া মহিষামরের সহিত প্রকৃতি দেবীর ভ্রমানক যুদ্ধবুত্তান্ত শুনা, যায়; অর্থাৎ পরিণামশীলা
প্রকৃতি এই ভাবে পৃথিবীকে দর্শন করিতে
লাগিলেন, যেন উদ্ভিদ্জীবী শৃঙ্গী পশুগণের
বংশ এত অধিক পরিমাণে বদ্ধিত
হইতেছে যে, তাহাদিগের বিনাশ সাধন
না করিলে সমস্ত পাদপরাজ্য নই হইয়া
যায়। স্কৃতরাং প্রকৃতি সিংহ্বাহিনী মূর্ত্তি
ধারণ করিয়া গোর সমরে প্রবৃত্ত হইলেন।

তত্যাজ মহিষং রূপং দোহপ্রিকো মহায়ুধে। ততঃ সিংহোহভবৎ সদ্যো যাবত্তস্যাম্বিকাশিরঃ॥ —চণ্ডী, ও স্থা, ২৮।

ইহার তাংপর্যা এই যে, শৃঙ্গী জীবের পর সিংহ ব্যাঘাদি হিংস্র জন্ত সকল প্রকৃতির বভাবগুণে দেখা দিল। হিংস্র জন্তরা বভাবতঃ গো, মেষ, মহিষ ইত্যাদি ভক্ষণে জীবন ধারণ করে, স্কুরাং হিংস্র ক্তুদিগের হারা শুলী নীব সকল কর্মার্ক্র হইতে লাগিল। তৎপরে পৃথিবী অবস্থান্তর প্রাপ্ত হইয়া ক্রমশঃ মহুব্যের বালোপবোগী হইয়া উঠিল। কিন্তু সমাক্ প্রকারে উপ-যুক্ত না হওয়াতে ব্রহ্মার ভৃতীয় স্থান্ত দেখা দিল। উহাতে দানব কিন্তর ও অর্জ্ব-নরা-কৃতি জীব সকল উৎপন্ন হইল।

"অর্জনিভান্ত এবাসো বৃদ্ধমানো মহাত্রঃ।
--চণ্ডী, ও আ, ওম।

এই সময় ভগবান্ ভয়ানক নৃসিংছ-মুর্ত্তি ধারণ করিয়াছিলেন।

জিতদেবযক্তভাগ: সর্বাদেবাধিকারকুৎ।
নারসিংহবপু: কৃত্বা তং জ্বান হুরৈ: সহ।।
---নারসিংহপুরাণ।

এই অবস্থার পর ভূমওল অপেক্ষাক্ষত
উল্লভ হইলে দেবাস্থরের যুদ্ধ উপস্থিত হয়।
এই যুদ্ধে বনজঙ্গল নাই ইইলা মন্থবের
বাস্যোগ্য স্থান সকল দৃষ্টিগোচর হইল।
এরপ অবস্থার পদার্পণ করিতে ভূমওলের
ছঞ্জিশ হাজার পাচ শত বংসর লাগিরাছিল,কারণ উক্ত পরিমাণ সময় দেবাস্থরের
যুদ্ধ হয়। যথা,—

"দেবাহরমভূদ যুদ্ধং পূর্ণমন্ত্রশন্তং পুরা।" অতএব দেবমানে একশত বংসর, মন্ত্র্যান মানে ৩৬,৫০০ বংসর হয়।

এই সময়ে একার চতুর্থ স্থাষ্ট মমুব্যবংশ উৎপন্ন হইয়া আপন আপন বাসহান
হির করিতে লাগিল। দানবদল ঐ সময়ে
রাজা হইয়া রাজ্য করিতে শিপ্সিয়াছে।
মমুবংশ তদ্দলনে আপনাদিগের আধিপত্য হাপন করিবার জন্ম বারা হালে।

ভগবান্ ুমস্বাকুলে বামনরূপে অবতীর্ণ हरेलन।

"দেবাস্থরে পুরা যুদ্ধে বলিপ্রভৃতিভিঃ স্থরৈঃ। ততোহসৌ বামনো ভুৱা হৃদিত্যাং স ক্রতুং যথৌ ॥ --বামনপুরাণ।

ভগবান বামন অবতারে ত্রিবিক্রমরূপ মহাবিরাট মূর্ত্তি ধারণ করিয়া দৈত্যরাজ বলিকে ছলনাপুর্বক রাজ্যচ্যত পাতালতলে প্রেরণ করিয়া মনুষ্যবংশের व्राक्ष मः शांभन कवितान। यथन शृथिवी অধিকতর উন্নতিশীল হইয়া উঠিল, তথন মহুষ্য সকল অস্ত্র শস্ত্র ধারণ করিয়া যুদ্ধ ক্রিতে শিথিয়াছে, ও নানাবিধ শিল্পকার্য্য উদ্ভাবন করিয়া আপনাদিগের স্থখনভোগ বুদ্ধি করিয়াছে, রাজা হইয়া স্থুপ সন্তোগ করিব এরপ সকলেরই ইচ্ছা জনিয়াছে. স্থতরাং এই সময়ে রাজ্যাধিকারলাভের **জন্ম ভয়ানক** বিদ্রোহ উপস্থিত হইবার উপক্রম হইল দেখিয়া, ভগবান পরগুরাম-क्राप व्यवजीर्ग इटेरलन ।

"বক্ষ্যে পরশুরামস্ত চাবতারং শৃণু বিজ। উদ্ধতান ক্ষতিয়ান মহা ভূভারহরণায় সং॥ --- অগ্রিপুরাণ, ৪ অ, ১২। এই সময়ে শান্তিস্থাপনের জন্ম ব্রাহ্মণ

कवित, देश ७ मूल वह हात्रिही (अनी সংস্থাপিত হইয়াছিল। পরভরাম এক-বিংশ বার বিদ্রোহীদিগকে সমূলে উন্মূলিত করিয়াছিলেন। এই অবতারসময়ে মন্ত্ৰয়বংশ সক্বাবয়বসম্পন্ন হইয়াছিল। পরগুরামের অস্ত্র কুঠার, মন্ত্র্যাগণ এই সময়ে যে মোটামুটি অস্ত্র সকল প্রস্তুত করিতে শিক্ষা করিয়াছিল তাহার পরিচয় পাওয়া যায়। তদনস্তর পৃথিবী উহা অপেক্ষা উন্নতিশীল হইয়া উঠিলে ভগবান মহুষ্যদিগকে রাজ্যশাসন, প্রজাপালন, পিতৃভক্তি, ভ্রাতৃ-শুশ্রুষা, স্ত্রেণভাব নিবারণ, শক্রদমন, ধর্মোপদেশ ইত্যাদি আবশ্রক বিষয় সকল শিক্ষা দিবার জন্ম শ্রীরাম. লক্ষণ, ভরত, শত্রুত্ব রূপ চারি মৃত্তি ধারণ করিয়া মনুষ্যকুলে অবতীর্গ হইয়া-ছিলেন।

"রাবণাদের্ব্বধার্থায় চতুর্দ্ধাস্থুৎ স্বয়ং হরিঃ। রাজ্ঞো দশরথাদ্রামঃ কৌশল্যায়াং বভুব হ। কৈকেয়াং ভরতঃ পুত্রঃ স্থমিত্রায়াঞ্চ লক্ষ্ণঃ। শক্রত্ব ঋষ্যশুক্ষেণ তাস্থ সন্দত্তপায়সাং॥ ---অগ্নিপুরাণ।

এই সময় হইতে মহুষাগণের যথোচিত छानठकू উन्नीलिङ रहेल। (ক্রমশঃ)

পাঁচন ও মুফিযোগ।

भुल ।

कर्न्ड, नाकिमां ि धवर मित्रिक यथा-। किरारिया थारेटन म्मट्यमनात्र পরিমাণ জল সহ সেবন কুরিলে অথবা নাদী (যোক্সন)॥• তোলাও লবণ।• আনা

তেঁতুলছাল ভন্ম /৽ আনা পরিমাণ

শীতন জলে গুলিয়া দেবন করিলে স্থায়ণ শূলবেদনা উপশ্মিত হয়।

আদি হরিতকী এক ছটাক, সিদ্ধি এক ছটাক, বেলগুঠা অর্দ্ধ ছটাক, পাতি লেবুর শিকড় অর্দ্ধ ছটাক, যোরান এক কাঁচচা, এই কম্বেকটা ক্রব্য এক সঙ্গে পেষণ করত: মটরের আকারে বটিকা প্রস্তুত করিবে। সেই বটিকা এক একটা ছই বেলা থাইলে অম্লুল আরাম হয়।

কাঁচা হল্দ ভিজান জল এক ছটাক, বয়ড়া ভিজান জল অর্দ্ধ ছটাক, হরিতকী ভিজান জল অর্দ্ধ ছটাক, পাতি লেবুর রস এক ছটাক, এই কয়েকটা দ্রব্য এক-সঙ্গে মিলাইয়া এক কাঁচ্চা পরিমাণ প্রাতে ২০ কোঁটা মধু মিশাইয়া থাইলে, বায়ুশূল ভাল হয়।

আমলকী বা ভূমি-কুন্মাণ্ডের রস বলাডমুর ও কিস্মিসের কাথের সহিত চিনি যোগ করিয়া পান করিলে অল্ল দিনের মধ্যে শূল নিবারিত হয়।

শতমূলী, ষষ্টিমধু, বেড়েলা, কুশমূল, গোকুর, ইহাদের মিলিত ছই তোলা ৩২ তোলাজলে সিদ্ধ করিয়া,৮ তোলা থাকিতে নামাইয়া পান করিলে, রক্তপিত্ত, দাহ, পৈত্তিকশ্ল, .ও জ্বরাদি নিবৃত্ত হইয়া থাকে।

ভুঠচুর্ণ ৫ পাঁচ ভরি, বিটলবণ ২॥॰ আড়াই ভরি, সোহাগা ১।॰ সওয়া ভরি, মূলতানী হিং॥৵ দশ আনা ওজনের পর ধৈ করিয়া লইতে হয়। সক্ষনাগাছের ছালের রস দিরা প্রাক্তি হিং মাড়িতে হয়, তৎপরে উহাতে বিট-লবণ মিশাইয়া মাড়িতে হয়, তৎপরে সেহাগার থৈ মিশাইয়া মাড়িতে হয়। অনস্তর ভঠচুর্ণ মিশাইয়া উত্তমরূপে মাড়িয়া ৫৪ চুয়ায়টা বড়ি বাধিতে হয়। সজনারসের পরিমাণের নিয়ম নাই। য়ত দিলে সমুদায় দ্রব্য উত্তমরূপে মাড়া ও বড়ী বাধা যায়, ততই দিতে হয়।

২৭ দিন প্রাতঃকালে এক বড়ী ও সায়ংকালে এক বড়ী মুথে ফেলিয়া জল দিয়া থাইতে হয়।

পথ্য —পুরাতন তওুলের অন্ন, দ্বতপ্র ব্যঞ্জন, হগ্ধ। মংস্থ নিষিদ্ধ নহে; দ্বত পাক করিয়া খাওয়া যাইতে পারে।

নিষিদ্ধ—শাক, অস্ন, মিষ্ট, তৈল, কাঁচা ম্বত, ডাউল, ময়দা, পিষ্টক, ভাজা দ্রব্য, মাদক দ্রব্য, নৃতন তপুল।

যে কয়েক দিন ঔষধ সেবন করিতে হয়, কেবল সেই কয়েক দিন পথ্যের নিয়মান্ত্রসারে চলিতে হয়।

হরিণের শৃঙ্গ চূর্ণ করিয়া আবদ্ধ মৃথায়
পাত্রে ভন্ম করিবে, দেই ভন্ম দ্বতের
সহিত মর্দনপূর্বক অবলেহন করিলে অয় দিনের মধ্যে স্দয় ও নিতম্বদেশের শৃন্নি ভাল হয়।

প্রত্যুষে ২ তোলা রম্বনের রসে কিঞ্চিৎ
মধু যোগ করিয়া ৫।৭ দিন পান করিলে
বাতলৈমিক শূল নিবারিত হয়।

(क्षेत्रभः)

ফ্রান্সে ভারতরাজকুমারী।

(পুর্ব্ধপ্রকাশিতের পর)

কাল্যোতে ও জল্যোতে কুমারী কিছু দুর ভাসিয়া গেল। পোত হইতে ইংরাজ নাবিকগণ দেখিতে পাইল যে, বহুমূল্য রত্নাদিতে বিভূষিতা একটা বালিকা ভাসিয়া যাইতেছে। তাহারা তৎক্ষণাৎ বোটে চড়িয়া আসিয়া তাঁহাকে তুলিয়া শইয়া তাহাদিগের জাহাজে লইয়া গেল। •**জাহাজথানি** তথন য়ুরোপে যাইতেছিল। ফরাসী রণপোত কর্ত্ত্ব উহা ধৃত হয়। অবশিষ্ট লোকদিগের কি দশা ঘটিল, তাহা আমরা অবগত নহি, এইটুকু মাত্র জানি বে, রত্মবিভূষিতা বালিকাটি প্রাচ্য দেশের এক অতীব আশ্চর্য্য পদার্থবং সাম্রাজ্ঞী জোজেফাইনের নিকট আনীত হয়। তিনি ইহাঁকে দত্তক স্বরূপ গ্রহণ করেন। ভারত-পরিচ্ছদ-পরিহিতা ভারত-রাজ-কুমারী তাঁহার সন্নিধানে উপবিষ্টা থাকিয়া ছোট বড় দকলের দৃষ্টিও মন আকর্ষণ করিতে লাগিলেন। তিনি তথায় এত স্থথে রহিলেন যে, তাঁহার পূর্ব্বদশার কিছুই স্মরণ রহিল না--নির্কাসনের ছঃথ-মেঘ স্থ্র-রবিকে ঢাকিবে কি, একবারও চিদাকাশে (मर्था मिन ना। ठिख-वित्ना मिना माओकी त চিত্রবিনোদন করিতে লাগিলেন। দীর্ঘকালু এইরূপে কাটিল না। **ফাইদ্রের স্থান মে**রী লুই <u>গ্র</u>হণ করাতে **ভাঁহার অবস্থান্ত**র ঘটিল। ^{*}এক্লপ ঘটাতে

ভারত-রাজকুমারী ফরাসীদেশে যে 'পথের कान्नानिनी' स्पर्टे कान्नानिनी হইলেন। কাল-চক্রের এইরূপ গতি। অপিচ, কথায় বলে, "আপনার দেশের ঠাকুর, পরের দেশের কুকুর।'' পরদেশে অতি স্থথ সচ্ছন্দে ও বিক্রমশালী হইয়া থাকিলেও তথাপি তথাকার কুকুর অপেক্ষা বড় নহে। এ ত গেল ভাগ্যবানের কথা। যাহাদিগের অদৃষ্ট মন্দ, পরদেশে কুকুর অপেকা তাহাদিগের দশা মন্দ। দে যাহা হউক চার্লস মার্গিয়ার নামে একজন সৈন্তাধ্যক্ষ সর্ব্বদা রাজভবনে কার্য্যোপলক্ষে গমন করিতেন। তাঁহাকে দেখিয়া তাঁহার অন্তঃকরণে বড় দয়া হইল। তিনি ছঃস্থা বালিকাকে আপনার মাতার ধানে লইয়া যাইবার প্রস্তাব করেন। তিনি প্রথমে সম্মত হন নাই। কিন্তু অবশেষে ভরণপোষণের উপায়াস্তর না দেখিয়া তিনি স্বীকার পাইতে বাধ্য হন। কথিত আছে, ইনি উহাঁর পাণিগ্রহণ করেন, কিন্তু রাজ-বালা প্রচলিত প্রথামুদারে তাঁহার পদবী ও নাম গ্রহণ করেন নাই। আবার দেখুন, অনেক উপত্যাসলেথক তাঁহার চরিত্র অবলম্বন করিয়া স্ব স্ব উপন্যাদের প্রবর্ত্তনা করাতে অনেকে এই মনে করেন যে, তিনি আদৌ সাম্রাজ্ঞীর প্রসাদলাভে সমর্থ হন নাই। অন্ত পক্ষের এইরূপ বিশ্বাস

(य, महावीत त्वानां भागि यथन मिनत्राम्दन প্ৰমন করেন, তথন জোজেফাইন ইহাকে দত্তকম্বরূপ গ্রহণ করেন। ভারতবর্ষ আক্র-মণ করিতে তাঁহার ইচ্চা ছিল। তিনি এ দেশে আগমন করিয়া 'হাঁহার তাঁহাকে দিবেন' এইরূপ অভিলায় করেন: किन्द कुमात्री निर्ध हेव्हा कतिया उरममस्यत সমরানলে সভা জগৎকে দগ্ধ হইতে দেখিয়া প্রত্যাবত্ত হন নাই। যদাপি কিম্বদন্তীর উপর নির্ভর করিয়া কিছু লিখিতে হয়, তাহা হইলে আমরা ইহাও লিখিতে वाधा रय. इंढे इंखिया काम्लानी याव-জ্জীবন তাঁহাকে ৫০ পাউও করিয়া বার্ষিক (अनमन् (मृन । अथत (कह (कह वर्णन : যে, উক্ত বাৰ্ষিক তাঁহাকে কোম্পানী দিতেন না. • ডাইরেক্টরদিগের মধ্যে কেহ কেছ দিতেন।

ইনি সাহিত্যসংসারে কণঞ্চিং পরিচিতা ছিলেন। ইনি বোধ হয় ফরাণী ভাষায় 🗄 অনেক প্রবন্ধাদি রচনা করেন। মার্সি-য়ারকে সেইগুলি পড়িয়া বলিতেন তিনি 🗄 ভাল করিয়া সেইগুলি লিপিবদ্ধ করেন। প্রসিদ্ধ ইংরাজ লেখক থ্যাকারে ও তাঁহার বিপিতা অর্থাৎ বিধবা মাতার পতি মেজর

ক্ৰিখ তাঁহাকে অনেক আৰ্থিক নাহাৰী মার্সিরারের মৃত্যুর পর ভিনি करत्रन। কাউণ্টেস ডিবফোর্টের আপ্রয়ে থাকিয়া জীবনের অবশিষ্টাংশ ক্ষেপণ কোন বংসর ইহার মৃত্যু হয়, ভাহা আমরা জ্ঞাত নহি। তবে এতটা ঠিক যে, তিনি ইংরাজী ১৮৫০ সাল পর্যাস্ত জীবিতা ছিলেন।

অত্যন্ত তঃখের বিষয় আমাদিগের দেশে কেহই ইহার বিষয় জানেন না। তৎসময়ের হিন্দি বা উদ্ কোনওপুস্তকে বাপত্রিকায় উল্লেখ আছে কি না জানি না, বোধ হয় নাই: থাকিলে কোনও না কোনও প্রকারে প্রকাশিত হইত। ইনি যে এক কাল্পনিক চরিত্র, তাহা নহে। ইহার সম্বন্ধে উপরে যে বিবরণ প্রকটিত হইল, তাহাও অলীক নতে। এমন এক আশ্চর্য্য ঘটনা, এমন এক আশ্চর্যাতর চরিত্র, আর এমন আশ্চর্যাত্রম প্রেহ ও আশ্রয়দান যে কালের স্রোতে ভাসিয়া গ্রিয়া একবারে বিলীন হইল. ইহার উপর ভারতের জ্ঞানালোক যে আদৌ নিপতিত হইল না, ইহা যে কতদুর আশ্চর্যোর বিষয় তাহা লিখিয়া জানাইব।

ত্রীক পুরাণ।

প্রাচীন হিন্দুদিগের ন্থায় কাল্ডিয়া ও গ্রীশবাসিগণও সৃষ্টিপ্রকুরণ ও ইহাঁদিগের পরস্পরের বর্ণিত বিষয়ের মধ্যে

शिमत्र, । निर्भितक कतियाद्यात्म **अतः अत्मकै ऋत्म** পৌরাণিক দেবদেবীগণের অন্তুত বিবরণ অত সৌসাদৃত্য দেখিতে পাওয়া বার বে,

ব্দ মূলজাতি হইতে এক আদি পুরাণ স্থ হইমা অন্তান্ত জাতির মধ্যে তাহাই নানা আকারে প্রচারিত হইয়াছে বলিয়া অন্তমিত হয়। এ স্থলে আমরা গ্রীক পুরাণের স্থল বিবরণ পাঠক পাঠিকীদিগের গোচর ক্রিতেছি।

গ্রীকদিগের বর্ণনামুসারে সর্বাত্যে "chaos" অস্ষ্টি নামে এক দেবতা ছিলেন। তিনি অতি বৃহৎ ও আক্লতিবিহীন। তাঁহা হইতে গা (পৃথিবী) এবং টার্টেরদ (নরক) **উৎপন্ন হয়। স্**ষ্টির প্রারম্ভদময়েই ইরদ (কাম) আবিভূতি হইলেন ; ইনি দেব ও মানবের জয়কারী। কেয়দ হইতে এরিবস (অন্ধকার) ও নিকা (নিশা) জন্ম গ্রহণ করে। গা আউরেনদ বা স্বর্গের এবং প্রন্ট্রদ বা লবণ সমুদ্রের জননী। স্বর্গ ভাঁহার অপেকা উচ্চতর হইল। পরে তিনি স্বর্গকে বিবাহ করিলেন এবং এই বিবাহের ফল-স্বরূপ ছয়টী দৈত্য উৎপন্ন হইল-ওদেমন. কইয়স, ক্রিয়স, হাইপিরিয়ণ, আয়াপিটস্ ও ক্রণস্ (শনি)। ছয়টী দানবীও উৎপন্ন হইল, তাহাদের নাম থিয়া, রিয়া, থেমিস. निस्मिनि, फिवि ७ छिथिन। শাইক্লোপিদ (একচকু দানব) জন্মিল:---বালটিন, ষ্টারোপিন ও আর্জিন। শত-বাহ অমুরও জন্মিল : — কটস. ব্রায়ারিয়স্, ও গাইজিদ। ক্রমাগত বংশর্ত্ত্রি দর্শনে ভীত হইয়া আউরেনস্ সম্ভানগণকৈ ভূগর্ভে বন্ধ করিয়া রাখিলেন। শনি স্বীয় মাতা কৰ্ক্সু উত্তেজিত হইয়া পিতার সহিত যুদ্ধে প্রবৃত্ত হইলেন।

আউরেনসের হন্তপদ ছিল্ল হইয়া যে রক্ত-পাত হইল, তাহাঁ হইতে ফিউরিস বা রাক্ষদী, জাগাণ্ট বা দৈত্য এবং মিলিয়ান নিস্ফ বা পরী উৎপন্ন হইল। কতক রক্ত সমদ্রে পড়িয়া আফ্রোডিটিস বা রতির জন্ম হইল। শনি ও তাঁহার মূহচর দৈত্যের। এখন জগতের একাধিপতা লাভ করিলেন। তাঁহারা প্রত্যেকে বিবাহ করিয়া অসংখ্য সস্তান উৎপাদন করিলেন। <u> ইউ</u>াদের ভগিনীরাই ইহাঁদের ভার্যা হইলেন। ওদেনস ও তাঁহার স্ত্রী টেথিস হইতে ৩০০০ পুল্ ও ৩০০ কন্তা উদ্ভূত হইল। হাইপিরিয়ান ও থিয়া হইতে হিলিয়স (স্থ্য), দেলিনি (চক্র), ও ইয়োস্ (উষা) জিমাল। কায়স ও তাহার স্ত্রী ফিবি হইতে লেটোনা ও আষ্ট্রিয়া উৎপঁল্ল হইল। কায়দ আইয়াদ, পালাদ ও পার্দিদের পিতা। আষ্টিয়াস ঊষার সহিত পরিণীত হইয়া জেফিরস. বেরিয়াস ও নোটস এই তিন বায়র জন্মদান কেবিলি। ওসেনদের কন্তা ষ্টিক্সের সহিত বিবাহিত হইয়া জেলদ (গৌরব), নাইকী (জয়). ক্রেটস (বল) এবং বিয়া (শক্তি), এই কয় সম্ভান উৎপাদন করিল। আয়েপিট্র ওসে-নদের অন্ততম কলা ক্রেমনীর পাণিগ্রহণ করিয়া প্রমিথিয়দ, এপিমেথিয়াদ, মিনিয়াদ এবং আটলাদের জন্মদাতা **इटेरलन** । এই সকল বিবাহোৎপন্ন সন্তানেরা আবার পরস্পরের মধ্যে বিবাহ করিয়া অগণ্য (मर्वापवी छेश्भन कतिस्त्रन। উৎপাদিকা শক্তি বিলুপ্ত হয় নাই।

ভাহার স্বামী আউরেনসের ঘোর হর্গতির পর তিনি পণ্টসকে স্বামিরূপে বরণ করিয়া नीत्रियम, मामम, कर्किम ও किটোর अननी इट्रेलन । नीतियम इट्रेट नीतिन वा अभाता সকল, দামদ হইতে আইরিদ ও হাপীম্বয় এবং ফ্রিস ও কিটো হইতে গার্গণ, গ্রেই এবং হিদ্পিরাইডিদের ডে গণ বা পক্ষয়ক্ত সর্প উৎপন্ন হইল, ইহাদের হইতে আবার কত বংশ জন্মগ্রহণ করিল। ইতিমধ্যে নিশা অবিবাহিতা থাকিয়াও সম্ভানের জননা হইল, তাহাদের নাম থানেটাদ (মৃত্যু), হিপ্পদ (নিজ্রা), ওরিয়দ (স্বপ্ন); মোমন (হাস্তা), অইজিস (শোক); **जिन अ**पृष्ठेप्तवी क्रांथा, नाकिमिम এवः আষ্ট্রোপন; বৈর্ঘাতিনী নিমিসিদ; আপেট (প্রবঞ্চনা), ফাইলোটস (প্রণয়); জিরাস (জরা) এবং এরিস (বিবাদ)। বিবাদ হইতে

भनम (तमना), तमि (खाकि), निका (इर्डिक), कनम (२७॥), माह (वृक्ष), ডিসমোমিয়া (অবৈধতাঃ), এটি (বৈশ্ব-প্রবৃত্তি) এবং ইর্কস (শপ্পসমর্থক) দেবতা। পৌরাণিক দেবতাদিগের মধ্যে আরও কতকপুলির নাম উল্লেখযোগ্য:---ক্রাইদেয়র. এবং পেগেসস অশ্ব গর্গণের রক্ত হইতে জারিয়ন এবং : অর্দ্ধাপ্সরা অর্দ্ধসর্পাক্ততি এচিড্নার পিতা ক্রাইসেম্বর, মাতা একটা विशीर्य कुकृत व्यत्रायान, সমদ্র-পরী। পঞ্চাশং-শীর্ষ সার্বিরস এবং नार्विद्रा দেশায় হাইড়া বা শতশীর্ষ সর্প-ইহারা সকলেই এচিড্নার গর্ভজাত। হইতে কিমারা, থিবসু নগরের ক্ষিংস্ক এবং নিমিয়া দেশীয় সিংহাউৎপন্ন।

(ক্ৰমশঃ)

বিদেশবাসিনীর পত্র।

আজি এ দেশের জলাশয়ের কথা
কিছু বলিব। এধানে পুকুর, নদী ও ঝরণা
আছে। মনে হয়, স্বর্গীয় প্রমদা বার্
''ঝিলে''র উল্লেখও করিয়াছিলেন। আমি
তাঁহার বর্ণিত শত শত পদ্মকূলপূর্ণ
'পদ্ম ঝিল'' দেখিতে বড়ই উৎস্কুক হইয়াছিলাম। কিন্তু শুনিলাম, তাহা শীতকালে
শুকাইয়া গিয়া থাকে। সেই জন্ম সে
'ঝিল'' দেখার দাধ আমার পূর্ণ হয় নাই।
এখানে পুকুরকে ''বাধ'' বলে। আমি

এথানকার ছইটা মাত্র "বাধ" দেখিরাছি। তাহা এথানকার রাজার। পুকুর ছইটা বেশ বড় বড়; পরস্পারের কাছাকাছি। ইহাদের একটা পুকুষদিগের, অপরটা জীলোক-দিগের জন্ম নির্মিত হইয়াছে। বোধ হয় জনও বেশ ভাল ভিল; এখন পশুদিগের মান ও ধোপাদিগের ব্যবহারের জন্ম জারাপ হইয়া গিয়াছে। তথাপি, "দেশীর রাজার কীর্ত্তি" বলিয়া ভাহাই দেখিরা আমরা স্থথী হইলাম।

পাহাড় হইতে যে সকল ঝরণা নামিয়াছে, তাহাতেই এ দেশের সাধারণ লোক-দিগের অনেক প্রয়োজন সাধিত হয়। এই সকল ঝরণা স্রোত বহিয়া বহুদ্র গিয়াছে; স্রোতগুলি ফল্গু নদীর ুজাতীয়া—অস্তঃ-সলিল। উপরে বালির জ্মাট; তাহাতে মাহুষ, গরু, মহিষ প্রভৃতি অবাধে যাতারাত করিতেছে; আবার দেই বালি খুঁড়িয়া ফোললে স্বচ্ছ, স্বস্থাত্ত জ্ল পাওরা যায়।

এ দেশের নদী সকল, আমাদের দেশের নদীর মত প্রশস্তা বা নিতা জোয়ার-•ভাটা-সঙ্কুলা নহে। এখানে নদী সকল গ্রীমকালে প্রায়ই শুকাইয়া যায়; কিন্তু বধাকালে যেমন জলপূর্ণ, তেমনি খর-স্বোতা হয়। সে স্বোতোবেগের মুখে পড়িলে মানব বা অন্যান্য জন্তুর রক্ষা পাওয়া **ছ:সাধ্য। আমরা গু**নিরাছি, বর্যাকালেও **যথন রষ্টি না** হয়, তথন এ সকল নদীর শোতঃ তত প্রথর হয় না, অভান্ত মানুষে সাঁতার দিয়া এপার হইতে ওপারে যাইতে পারে। কিন্তু এক পদলা বৃষ্টি হইলেই এত প্রবল বেগ হয় যে, সত্য সতাই "কুটা" **मिल्म ''इछे।'' इ**हेश्रा शांटक—तम्हे ममत्त्र অনভিজ্ঞ লোকে সাঁতার দিয়া পরপারে ষাইতে একেবারে "ভবসিন্নু" পার হইয়া यात्र ! *

আমি এ দেশের তিনটী নদী দেখিয়াছি।

 শ মাইকেল দত্তের জীবনচরিতলেথক এীযুক্ত বাবু যোগীলে নাথ বহু এই রকম একটা শোচনীয় সত্য ঘটনা অবলম্বন করিয়। "অভাগিনী-" শীর্বক কবিতা "দাসী" পত্রিকায় লিখিয়্ন ইছন।

व्यथम छेडी नहीं, विंछीय थाला नहीं, তৃতীয় শ্লেট নদী। ইহাদের মধ্যে উশ্র অপেকারত প্রশস্তা। উত্রীর হুই পার্শে শ্রামল শালবন। স্তারে স্তারে প্রস্তরশ্রেণী স্থসজ্জিত হইরা "বাঁধা ঘাট" আছে! দে দৃশ্য এত স্থলর যে, প্রথমে ইহা দেখিয়া আমাদের কাহারও মনে হইরাছিল যে, ইহা মান্তবের হস্তপ্রস্তত— কোনও নিপুণ শিল্পী কর্তৃক এই স্থানর, অপূর্ব্ব, প্রস্তরময় ঘাট বাঁধান হইয়াছে। কিন্তু সে ভুল শীঘ্ৰই ভাঙ্গিল; আমরা বুঝিলাম, এ শিল্পনৈপুণ্য মনুষ্য-শিল্পীর নহে-- সমস্ত স্থুন্দর স্থান্টর স্রস্তা দেই বিশ্বশিল্পীরই। তথন আমি মনে মনে বড়ই লজ্জিত, বড়ই অনুতপ্ত হ**ইলাম**। আমার মনে হইল, বিশ্বজগতের অনি-র্ব্বচনীয় সৌন্দর্য্য গাঁহার রচিত, এই স্কুন্দর পাণরের ঘাট করা তাঁহার পক্ষে আর কত টকু ? কিন্তু আমরা এতই সংশ্যাপন মুর্থ নে, তাঁহার অপেক্ষা, তাঁহার স্বষ্ট মানবের ক্ষমতা লইয়াই দিশাহারা হইয়া পড়ি!ছি!ছি!ছি!

আমরা সেই প্রস্তরাসনে বদিরা উত্রী
নদীর স-লীল তরঙ্গ সকল দেখিতে লাগিলাম। সেই কবিত্বের খনি, সেই বিহঙ্গনিনাদিত স্লিগ্ধ শালবন মধ্যে, সেই স্থান্দর স্রোত্তবিনীর রমণীয় প্রস্তরনির্মিত তটে
বিস্থা যে অভ্তপূর্ব আনন্দ লাভ
করিয়াছি, তাহা এ জীবনে ভূলিবার নহে;
অথচ ভাষায় প্রকাশ করিবারও নহে।

আমরা বধন দেখিলাম, তখন উত্রীর

ভ্রুষার সেই অস্ত মানুব, গরু প্রভৃতি ইাটিয়া পরপারে যাইতেছে, দেখিতে পাইলাম। উশ্রীর পরপারে যাইবার স্থ-ভোগ করিতে আমরাও "উদাসীন" ছিলাম না; ইহার ভিতরকার বালি সকল এমন আলগা যে, এক স্থানে পাদক্ষেপ করিলে অস্ত স্থানে সরিয়া পড়িতে হয়!

খাগোকে এখানে নদী নামে অভিহিত করিলেও প্রকৃতপকে খাগো একটা অনতিবৃহৎ ঝরণা। ইহার ছইধারে স্তম্ভাকৃতি প্রস্তর সকল বহুদ্র ব্যাপিয়া রহিয়াছে; এই প্রস্তর-প্রাচীরের ভিতর দিয়া, মধুর গীতি গাহিতে গাহিতে সেই দিগস্তবাহিনী দিগস্ত-পথে ছুটিয়াছে! স্থানে স্থানে, উচ্চ স্তম্ভের উপর হইতে প্রবাহিত জলরাশির উপরে স্থান্থ কিবল পড়িয়া, জবীভূত রামধন্থর মত স্থান্য দেখাইতেছে। আহা, সে দৌল্য্য কি অনির্বাহনীয়!

থাগোর এক প্রধান "বিশেষত্ব" এই
যে, এথানে বিচিত্র বর্ণের পাথরের মুড়ি
এবং অপেক্ষাক্বত বড় বড় পাথর দেখিতে
পাওয়া যায়। সে সব এত স্কুল্র যে, দেখিলে
কেবল ছই হাতে কুড়াইতে ইচ্ছা করে—
ছই হাতে কুড়াইয়াও সাধ মিটে না। ইহার
মধ্যে সাদা রভের পাথরগুলি চক্মিকি
পাথরজাতীয়। রাত্রে (বাসায়) ইহার ঘর্ষণে
আগুনের ক্লিক বাহির হইতে দেখিয়া
আমার ছোট ছোট ভাই ভগিনীরা বড়ই
স্থী হইয়াছিল—মামিও পুর স্থী হইয়াছিলাম। থাগোর স্থ-স্থতিবং মামরাসেই ছ
একটী ছোট মুড়িও স্বত্বে রক্ষা করিয়াছি।

এধানকার আর এক অপরপ ্রুক্ত লেট নদী। বছদিন আগে স্বর্গীর প্রমদা বাব্র "সধার" লিখিত প্রবন্ধ হইতে আমি প্রথমে লেট নদীর কথা জানিতে পারিয়া-ছিলাম, আর এই দিনের পরে ভগবানের কুপায় সেই অপূর্ব্ধ দৃশু স্বচক্ষে দেখিতে পাইলাম। তাই, প্রবাসবাসে পরিচিত বাক্তিকে দেখিলে যেমন আনন্দ হয়, সেট নদী দেখিয়া আমার তেমনি আনন্দ হইল!—সেই সঙ্গে প্রদের প্রমদা বাব্র কথাও মনে আদিল।

নেট নদী নির্জন-প্রান্তরবাহিনী ক্ষুত্র •
নির্মনিনি; ইহার ছই ধারে এটে পাথরের
শ্রেণী, কোণাও কুদ প্রাচীর, কোথাও
সোপান, কোণাও স্তন্তের আকারে শোভা
পাইতেছে। স্থানে স্থানে উচ্চ প্রস্তরস্তম্ভর
গাত্র হইতে ঝর্ ঝর্ রবে জল প্রবাহ
নিরে পতিত হইতেছে, সে যেন দ্রবীভূত
কার্চের ঝাড় বহিরা মাইতেছে। ইহার এক
একটা প্রাচীর, দোপান, স্তম্ভ প্রভৃতি এত
পরিচ্ছর যে, দেখিলে বোধ হয়, কেহ এ
সকল মাজিয়া ঘষিয়া, স্বন্দররূপে বসাইয়া
রাথিয়াছে।

শেট নদী বহুদ্রবাপিনী। অভাভ নদীর অভাভরের মত ইহার ভিতরে কেবল বালি নহে, শেট পাণর দিয়া ইহার মধ্য-ভাগ দেন বাধান রহিয়াছে। সেই অভ ইহার ভিতরে ইাটিয়া বেড়াইতে বড়ই মধ। আমরা শুনিয়াছিলাম, আর কিছুদুর গেলে শেট নদীর উৎপত্তি স্থান দেখিতে প্রাওয়া যায়। শুনিয়া, আমরা সে সাধ পূর্ণ করিবার

বর্ত্ত, রেট নদীর স্থন্দর শ্রোতে, হুই ধারে শ্লেট পাথরের অপূর্ব্ব দৃশ্র দেখিতে দেখিতে, শ্লেট পাথরের উপর দিয়া, বছ-দরে ধাইতে প্রবত্ত হইতেছিলাম; কিন্তু আমাদের সে সাধ পূর্ণ ক্রুয় নাই, কারণ আমাদের অভিভাবক মহাশয় শুনিয়া-ছিলেন যে, সেথানে নবজাত ব্যাঘ্রশিশু এবং তাহাদিগের "স্থেহ্ময়ী" জননী বাদ করিয়া থাকেন। আমাদিগকে দেখানে পাইলে, তাঁহারা যথোচিত "অতিথি-সংকার" না कतिया हाफ़िया नित्वन ना, এ कथा छनिया আর সে দিকে যাইতে আমাদের হইল না। গেলেও বোধ হয় প্রিয় ভগ্নী বামাবোধিনী-পাঠিকাদিগকে, এথানকার সংবাদ—যাহা আমি লিথিতেছি, তাহা আর লিখিতে পারিতাম না।

তথন, শ্লেট পাথরের নদীর নিকট হইতে বিদায় গ্রহণ সময়ে, আমরা এক টুকরা শ্লেট পাথর লইয়া কয়েকটী স্তম্ভের

উপরে বড় বড় অক্লরে "ধন্ত তুমি দরামর" লিথিলাম; তার পর ছোট ছোট অকরে নিজের নাম, এবং আমার যে সকল ভক্তি, প্রীতি, ও স্বেহভাজনদিগের কথা, সেখানে গিয়া আমার মনে হইতেছিল, তাঁহাদের নামও লিখিলাম: বনদেবীর ক্ষেহধারা-রূপিণী শ্লেট নদীর বক্ষে আমাদের দেই লেখাগুলি প্রীতিচিহ্নস্বরূপ জাগিতেছিল। এত দিনে আমাদের সে প্রীতিচিহ্ন হয় তো মুছিয়া গিয়াছে, কিন্তু প্রিয় জনের স্থতির মত শ্লেট নদীর সে মনোমোহিনী ছটা আমাদের হৃদয়ে নীরবে নীরবে বহিয়া যাইতেছে! এমন স্থন্দর, এমন মনোহর শোভারাশির রচয়িত্রী মা, বিশ্বজননি ! তোমাকে নমস্বার, নমস্বার! তুমি কোথায় কি অপূর্ব্ব বস্তু রাথিয়াছ, অধম আমি, কিছুই জানিতে পাইলাম না। তবে তোমার ক্লপায় এত টুকু যে দেখিতে পাইলাম, ইহাতে ক্লতার্থা হইয়াছি। (ক্রমশঃ)

ধ্বনি বা শব্দবিজ্ঞান।

বায়ুশ্স স্থানে কোন বস্ত রাথিয়া যদি
তাহাতে আঘাত করা যায়, তাহা হইলে
ঐ আঘাতের শব্দ শ্রুতিগোচর হয় না।
মনে কর, একটা বায়-নিক্ষাসন যন্ত্রের স্থল
কাচের পাত্রটা একটা লোহফলকের উপরে
অধােমুধে বসান আছে। ঐ পাত্রটার মুধ
এরূপু সমতলভাবে নির্ম্মিত, যে ইহাকে
অধােমুধে ঐ লোহফলকে নিয়তিন কিছু-

মাত্র ফাঁক থাকে না; স্থতরাং ভিতরের বাতাস বাহিরে আসিতে পারে না, অথবা বাহিরের বাতাস ভিতরে যাইতে পারে না। ঐ ফলকের মধ্যস্থলে একটী ছিদ্র আছে। ঐ ছিদ্রের সহিত এরূপ একটী কলের যোগ আছে, যদ্ধারা ঐ পাত্রমধ্যস্থ বায়ু আকর্ষণ করিয়া লওয়া যায়। ঘটিকা যদ্রের যে অংশ বাজিয়া থাকে, সেই অংশ উক্ত পাত্রের মধ্যে ছইটা দণ্ডের উপর রজ্জু
ধারা পুলান আছে। পাত্রের মধ্যস্থলে
দণ্ডটা এইরূপে মানান আছে যে, উহা
টানিয়া তুলিলে বা চাপিয়া নামাইলে
ভিতরে বাতাস যাইতে পারে না; এবং
চাপিয়া নামাইলে উহা ঐ ঘটিকা যয়ের
এরূপ স্থান স্পর্শ করে যে, ঐ ঘণ্টা বাজিয়া
উঠে। পাত্রন্থ বায়ু নিদ্ধাসন করিয়া দণ্ড
চাপিলে দেখিতে পাওয়া যাইবে যে, ঐ
ঘণ্টায় আঘাত হইতেছে, কিন্তু ঘণ্টার শন্দ
কিছুমাত্র প্রবণগোচর হইবে না। আবার
যদি পাত্র বায়ুপ্র্ণ করা যায় এবং উক্ত দণ্ড
চাপিয়া আঘাত করা যায়, তাহা হইলে ঐ
ঘণ্টাধ্বনি স্পষ্ট প্রবণগোচর হইবে।

আবার যদি পাত্র নির্মায় করিয়া ঘণ্টায় আঘাঁত করা যায় এবং একটা ধাতুনির্ম্মিত তার ঐ ঘণ্টায় ছোঁয়াইয়া বাহিরে বায়র সহিত মিনিত করা যায়, তাহা হইলে ঐ ঘণ্টা-ধ্বনি স্পষ্ট শ্রবণগোচর হইবে। এখানে ঐ ধাতুনির্ম্মিত তার আশ্রয় করিয়া ঘণ্টাপ্রকম্প বায়ুতে প্রসারিত হয় বলিয়া ঐ শন্ধ শোনা যায়। ইহাতে স্পষ্টই বুঝা যাইতেছে যে, ধ্বনি তরঙ্গ আশ্রয় তির প্রসারিত হইতে পারে না।

বায়্-নিদাসন যন্ত্রের দারা আরও দেখিতে পাওয়া যায় যে, পাত্র সমাক্ বায়ু-পূর্ণ থাকিলেও তন্মধ্যস্থ ঘণ্টার ধ্বনি অতি-শয় মৃত্র শোনা যায়। কিন্তু ঐ পাত্র অন্তরিত করিয়া অনাবৃত স্থানে দেই ধ্বনি করিলে, উহা পূর্কাপেকা অনেক উচ্চ উপলক্ষ হইবে। প্রথমোক্ত হলে ঘণ্টাধ্বনি অধীৎ ঘণ্টার প্রকম্প বেগ মধ্যন্থিত বায়ুতে প্রসা-রিত হইরা পাত্রে সংক্রামিত হইবে এবং ঐ পাত্র হইতে মুহিরের বায়ুতে প্রসারিত হইবে। স্থতরাং অনায়াসে প্রতীয়মান হইতেছে যে, ধ্বনি-প্রবাহ লঘু বস্ত হইতে গুরু বস্ততে প্রসারিত হইলে, ধ্বনি-প্রবা-হের বেগ কমিয়া যায়। এই নিমিত্ত যদি কেহ জলমগ্ন থাকে, এবং অপর এক বাজিক উপরে থাকিয়াকথা কহে, তবে ঐ জলমগ্ন ব্যক্তি ঐ কথা তাদৃশ গুনিতে পাইবে না।

ফলত: অন্তান্ত বেগ যে যে নিয়মের অধীন হইয়া চলিয়া থাকে, ধ্বনিপ্ৰবাহকেও সেই সেই নিয়মের অধীন হ**ইয়া চলিতে** হয়। বেগমাত্রেই লঘু বস্তু হইতে অঞ্জ বস্তুতে প্রসারিত হইলে হীনবল হইয়া থাকে, স্বতরাং ধ্বনিপ্রবাহেরও ঐরপ ঘটিবে। বেগমাত্রই যত দূরে প্রসারিত হয়, তত্তই তাহার হাস হইতেথাকে; ধ্বনি-প্রবাহও যত দূরে প্রদারিত হয়, ততই উহার হাস হইয়া থাকে। যেমন কোন বিস্তীৰ্ণ জলাশয়ে একটি গুৰু লোষ্ট্ৰ নিক্ষেপ করিলে, নিক্ষিপ্ত হানে প্রবল তরঙ্গ উত্থিত হইবে, কিন্তু ঐ তরঙ্গ যত বিশ্বত হইতে থাকে, ততই উহার প্রবলতার হ্রাস হইতে থাকে—ক্রমশঃই উহা অল্ল ও মৃত হইয়া পড়ে। ইহার কারণ অনায়াদে উ**পলন** (화자박:) হইতে পারে।

ভুল।

সে যে এক ভূলী—

সাধের শৈশব সেই

কিছু আজি মনে নেই,

সে আমি যে বাবা মা'র "মেহের মুকুল"!
ভূতলে ন্তন আসা,

মরমে ন্তন ভাষা,

কে জানে সে কি আনন্দ, কি স্থ অতুল,
আজি শুধু মনে হয়, সে যে এক ভূল!

সে যে এক ভূল—

যবে মিলি স্থীগণে,
থেলিতাম এক সনে,
তাটনী বহি'ত যথা করি কুল কুল,
কচি বুক ভরা ক্ষেহে,
এক প্রাণ সব দেহে,
হদরে হদর গাঁথা হথে চুল চুল।
আজি মনে হয় হুধু, সে যে এক ভূল!

সে যে এক ভূল—
সন্ধ্যাকালে গলাগলি,
ঘরে আসিতাম চলি,
ছ'পাশে হাসিত কত পুনাগ পারুল;
আকাশ হ'ফাঁক করি,
বুঝি বা দেখিত পরী
খুলি চারু নীল নেত্র, খুলি কালো চুল!
আজি মনে হয় শুধু, সে বেঁ এক ভূল!

8

সে যে এক ভূল, যে দিনে বালিকা উষা, পরিয়া মাণিক ভূষা, দাঁড়াইলা স্বর্ণাচলে হয়ে অমুকূল; त्यः नित्न नित्नत त्थार्थः, পশ্চিমে ডুবিল হেনে, স্থন্দর তপন থানি রক্ত জবা ফুল !— আজি মনে হয় শুধু, সে যে এক ভূল! সে যে এক ভুল, रय पितन मजरम भनी, হাসিয়া পড়ি'ত থনিং হেরিয়া তারকা মেয়ে হাদিয়া আকুল! যে দিনে হাসির মেলা, সংসার স্থথের থেলা, মানব সবাই যেন হাসির পুতুল !— আজি মনে হয় স্থধু, সে যে এক ভূল!

সে যে এক ভূল,
কুস্কমে সোণার দল,
অমৃতে মাথা'ন জল,
বাতাসে মন্দার গন্ধ ছুটিত বিপুল;
ছিল না যাতনা জালা,
সারা ধরা স্কধা ঢালা,
খুঁজে নাপেতেম কোথা সৌভাগ্যের মূল?
আজি মনে হয় শুধু, সে যে এক ভূল!

সে বে এক ভূব,
বেই দিন—অকস্মাৎ
সর্কানাশ, বজ্ঞাঘাত !
কামনা, বাসনা, আশা, সহসা নির্মাণ !
সে বে কি দারুণ কথা,
সে যে কি অসন্থ ব্যথা,
বলিতে পারি না খুলে, পরাণ আকুল !
আৰু মনে হয় যেন তাও এক ভূল !

Ъ

শে যে এক ভূল,
প্রতিজ্ঞা—সন্ন্যাসিবেশে,
বেড়াইব দেশে দেশে,
বিভূতি মাথিয়া দেহে, জটা ক'রে চুল;
পুরিব বাঘের ছাল,
গলায় কদ্রাক্ষ-মাল,
করে নেব কমগুলু, শিবের ত্রিশূল!
আজ মনে হয় যেন, তাও এক ভূল!

সে বে এক ভ্ল,

যার বদি সাধ আশা,

কেন থাকে ভালবাসা,

কি নিয়ে মলগা বহে না ফুটলে ফুল ?

এখনো কিসের ধ্যানে,

বেঁচে আছি ভাঙা প্রাণে,

এখনো কিসের ঘুমে আঁথি ঢুল ঢুল ?—

আমার জীবনে ছাই আগাগোড়া ভূল !

ना ना-

এতো নহে ভূল,
স্বরগে দেবতা ভূমি,
আমি নর মর-ভূমি,
তবু মোর শিরে মাথা তব পদধ্ল !
তোমারি অমৃত গদ্ধে,
এ শ্রশানে মহানন্দে,
কাটায়ে, দেথিব স্থাথে বৈতরণী-কূল,
এ মোর "জীবস্ত সত্যা" কভু নয় ভূল !

শ্রীকাব্যকুসুমাঞ্জলি-রচিয়িঞী।

উদাদীনের চিন্তা।

(পূর্ব্ধ-প্রকাশিতে পর.)

চঞ্চলা কুষ্ঠাশ্রমের জন্ম অলকারবিক্রয়ের ।
টাকাগুলি পাঠাইয়া বড়ই আনন্দিত
হইন্নাছেন। কিন্তু তাঁহার এ আনন্দ
চিরস্থায়ী হইল না। এই ঘটনার কিয়দিন পরে তাঁহার প্রতিবেশী শরৎ বাবুর
কন্সার বিবাহোৎসব আরম্ভ হইল। তিনি

নিমন্ত্রিত হইয়া তাঁহার গৃহে উপস্থিত হইলেন। এখন তাঁহার গাত্রে আর কোন অলকার নাই। হাতে কেবলমাত্র হই গাছি শাঁখার বালা। বিবাহোৎসবে অনেক মহিলা উপস্থিত হইয়াছেন। সকুলেই সাধ্যমত বেশ ভূষা করিয়া আসিয়াছেন।

কেহ ধার করিয়াও দেহ স্থসজ্জিত করিতে জ্রুটি করেন নাই। দাঁড়-স্থসজ্জিত ময়ুরপুচেছ আপনাকে যেরূপ ময়ূর বলিয়া প্রতিপন্ন করিতে চাহিয়াছিল, ৰুসইরূপ কোন কোন নিঃম্ব মহিলা প্রতিবেশিনীর বেশ ভূষা ৰারা স্বাস্থাসক স্থানজিত করিয়া ধনীর গৃহিণী বলিয়া প্রতিপন্ন করিতে প্রশাসী। আমরা তাহাদের কথা ছাড়িয়া চঞ্চলা মহিলা-সমাজে তীব্ৰ সমা-লোচনার বিষয় হইয়া পড়িলেন। যে সমাজে পকল লোকই বিষয়াসক্ত, ক্ষণস্থায়ী বেশ ভূষার জন্ম শালায়িত, সে সমাজে বিষয়-বিরাগী হওরা বিভ্সনা। মহিলাগণ চঞ্চলার বিষয়-বৈরাগ্য দেখিয়া নানা তাহাকে বিজ্ঞপ করিতে লাগিলেন। চঞ্চলা ধর্মরাজ্যের প্রথম সোপানে করিয়াছেন মাত্র; জীবনে যে অবস্থা লাভ করিলে লোকে নিন্দা প্রশংসার উপরে উঠিতে পারে, তাঁহার সে অবস্থা লাভ হয় নাই। তিনি প্রশংসায় উৎফুল্ল এবং নিন্দায় বিষয় হইয়া থাকেন। স্নৃতরাং যথন সমগ্র মছিলা-সমাজ তাঁহার বিরুদ্ধে নিন্দার তীত্র শর নিক্ষেপ করিতে লাগি-লেন, তথন তাঁহার যন্ত্রণা অসহ হইয়া উঠিল। তিনি এক কোণে গিয়া বসিলেন এবং অলক্ষিত ভাবে হই চারি বিন্দু অঞ্-জ্বপত্ত ফেলিলেন। তাঁহার মনে এখন শোচনার উদয় হইয়াছে। তিনি মনে মৰে ভাবিতে লাগিলেন যে, অলন্ধার পরি-ত্যাগ করিয়া বড়ই কুকার্জ করিয়াছেন।

তিনি তাদৃশ নিন্দাভাজন হইবেন পুর্বেষ যদি জানিতেন, তাহা হইলে এমন কাজ কথনও করিতেন না। তিনি মনে করিয়াছিলেন যে, তিনি একটা সংকাজ করিয়াছেন. দকলেই তাঁহার দে কাজের অমুমোদন করিবে এবং তিনি সকলের প্রশংসাভাজন হইবেন, কিন্তু তাঁহার সিদ্ধান্ত পণ্ড হইয়া গেল। তিনি প্রশংসার পরিবর্জ্তে নিন্দা কুড়াইতে লাগিলেন। সন্ম্যাসী ঠাকুরকে এই যন্ত্রণার কারণ মনে করিয়া তাঁহার প্রতি বিরক্ত হইলেন। নির্কোধ বালিক। অসাবধানতাবশতঃ যেমন পুতুলের আঘাতে পাইয়া রাগান্বিত.হইয়া পুতুলকে দুরে নিক্ষেপ করে, চঞ্চলারও সেই দশা হইল। তিনি তাঁহার পরমহিতৈষী সন্ন্যাসী ঠাকুরকে হৃদয় হইতে দূক্তে ভাড়াইয়া দিবার জন্ম প্রস্তুত হইলেন। কিন্তু সন্মাসী ঠাকুর যেরূপ দৃঢ়ভাবে তাঁহার উপর প্রভুত্ব স্থাপন করিয়াছিলেন, তাহাতে তাঁহাকে তাড়াইয়া দেওয়া সহজ্পাধ্য হইল না। যতক্ষণ বিবাহোৎসবে কেবল আপনাকে এবং সন্ন্যাসী ঠাকুরকে মনে মনে ধিকার দিতে লাগিলেন। বিবাহের উৎসব কোন দিক দিয়া চলিয়া গেল, তাহার প্রতি তাঁহার বড় লক্ষ্য ছিল না। তিনি যন্ত্রণায় অস্থির হইয়া স্থির করিলেন যে, পুনর্বার কতকগুলি অলম্বার নির্মাণ করাইবেন এবং লোকনিন্দার যন্ত্রণার হাত হইতে মুক্তি লাভ করিয়া শাস্তিতে कान काणेश्वितन।

বিবাহোৎসবের শেষে তিনি বাড়ীতে

প্রত্যাগমন করিলেন।তাঁহার স্বামী বৃদ্ধিমান্। त्नाक. जिनि **ठक्ष्माद विवश्च वमन** एमित्रा কারণ অমুমান করিয়া লইলেন—গৃহিণীকে কারণ জিজ্ঞাসা করিলে তিনি অধিকতর ব্যথিত হইবেন ভাবিয়া কিছুই জিজ্ঞাসা করিলেন না। যদিও চঞ্চলার স্বামী তাঁহার অলঙ্কার বিক্রন্ন ক্রিয়ার অমুমোদন করেন नारे, उथापि आगम्मा (अयमीत आए ষাঘাত দেওয়া সঙ্গত মনে করেন নাই। কোন কোন স্বদয়বিহীন স্বামী এতাদৃশ সময়ে জ্রীর যন্ত্রণার লাঘব না করিয়া বৃদ্ধি করিতেই আনন্দ অমুভব করেন—তাহার ভাঙ্গা হ্রদর আরও ভাঙ্গিরা ছঃথের আগুন षिख्य বৃদ্ধি করিয়া থাকেন। চঞ্চলার স্বামী সে উপাদানে গঠিত ছিলেন না বলিয়াই রকা পাইলেন । স্বামী জিজ্ঞাসা না করিলেও চঞ্চলা তাঁহার মনো-বেদনার সমস্ত কারণ স্বামীকে বলিলেন এবং সন্ন্যাসীর প্রতি দোষারোপ করিতে লাগিলেন। চঞ্চলার স্বামী একজন ধার্ম্মিক ছিলেন, তিনি সাধু-নিন্দা সহ লোক कतिरा ना शांत्रिया विनातन "प्तथ हथना, নিজের কর্ম্মের দোষ অপরের ঘাডে চাপাইয়া দেওয়া ঠিক নয়। **मद्या**की ঠাকুর তোমার ছল ছইটা মাত্র চাহিয়া-ছিলেন, তিনি তোমাকে সমন্ত গহনা বিক্রম করিতে বলেন নাই। তুমি ভাল কান্ধ ব'লে তা কল্লে, এখন তাঁকে দোধী কর কেন ? সাধুনিলা মহাপাপ, এমন কান্ত কর্তে নাই। আর কাল তুমি তাঁর সহিত দেখা কল্লে, তিনি হয়ত তোমার

সকল শোক প্চাইয়া দিবেন। ভাই কার একবার তাঁর সঙ্গে দেখা কর।"

চ। আমি আর তাঁর ওধানে বাব না বড় বিষম লোক, আবার কি কর্ত্তে বলেন তার ঠিক্ কি ?) তাঁর কথা কেলাও ভাল নয়।

শ্বামী। ধর্ম করা সোজা কথা নয়।
অনেক ছাড়তে হয়, অনেক সহিতে হয়,
অনেক সাধন কর্তে হয়। তুমি প্রথমেই
এত তয় পাচচ, তাহলে ধার্মিক হবে কি
করে ? সাধু লোকেরা যা উপদেশ দেন,
প্রাণপণে তা করা উচিত। তা কর্তে থেয়ে
লোকের মনের দিকে চাইলে চল্বে
কেন ? লোকের মনের দিকে চেছে কে
কোন্ দিন ধর্ম কর্তে পেরেছে ? তোমায়
অনুরোধ করি, কাল একবার সম্লামী
বারাজীর কাছে যাও।

চ। আমার ত মন চায় না। তবে তোনার কথায় না হয় একবার থেয়ে দেপ্ব। কিন্তু তিনি যদি কোনও অসাধ্য দাধন ক'তে বলেন, তা হইলেই ত নাচার।

স্বামী। সাধু মহাজনেরা ধর্মার্থী দিপের শক্তি বৃথিয়াই সাধন দেন, শক্তির অতিবিক্ত কিছু কর্তে বলেন না। তবে কেছ যদি রাতারাতি বড়লোক হ'তে ইছো করে, তা হলে উপদেষ্টার কোনও দোষ নেই—শিমোরই দোষ। তুমি একদিনেই সমস্ত বিষয়াসকি দ্র কর্তে চেয়েছিলে। কাজেই তোমার কট্ট হচে। ধুর্মারজ্যে জোর করে কোনও কাজ হয় না। মাধায় কাল চুল বেমন জোর করে শাদা করা

বার না, বরস হ'লে আপনিই লাদা হর,
সেইরপ ধর্মরাজ্যেও সাধন ক'র্ছে ক'র্ছে
চলতে হর, একবারে লাফ দিয়ে ছই চারি
ধাপ পার হওয়া যায় না। স্বামীর য়ুক্তি
চক্ষলার নিকট থুব সারস্থি বলিয়া অমুমিত হইল। তাঁহার মনে যে শোকতরঙ্গ
উঠিয়াছিল, স্বামীর সহপদেশে তাহা

প্রশমিত হইল। তিনি পরদিন পুনর্বার
সন্ন্যাসি-দর্শনে ইয়াইবেন স্থির করিলেন,
সন্ন্যাসীর প্রতি তাঁহার যে বিরক্তির ভাব
ছিল, তাহা দ্রে তাড়াইয়া দিলেন। পরদিন
প্রভ্যুষে গাত্রোখান করিয়া প্রাতঃকভ্যু
সমাপনের পর সাধুদর্শনে গমন করিলেন।
(ক্রমশঃ)।

কৃষিবিষয়ক নানা কথা।

(৩৬৫ সংখ্যা ৪৭ পৃষ্ঠার পর)

যদি কোন ব্যক্তি এই নীরস প্রবন্ধ
পাঠের কণ্ঠ স্বীকার করিয়া থাকেন,
অবশ্রুই তাঁহার স্মরণ থাকিতে পারে যে, যে
স্থলে মৃত্তিকার প্রকারভেদ লিখিত
হইয়াছে, তথায় "লোণা দোরা" ও
"লোণা কোটা" নামক হুই প্রকার
মৃত্তিকার উল্লেখ করা হইয়াছে। অতিরিক্ত
পরিমাণে লবণ ও সোরার মিশ্রণ থাকাতে
ঐ হই প্রকার মাটী নিতান্ত অমুর্ব্বর হইয়া
আছে। কিন্ত প্রকৃতির শক্তিপ্রভাবে ঐ
বিধি ক্ষেত্রের নিকটবর্ত্তী ক্ষেত্রে প্রচুর
পরিমাণে ধান্তাদি কসল হইয়া থাকে।

শার ছই প্রকার মাটার কথা বলিতে পার্ক্তিকই এ প্রবন্ধের মৃত্তিকা-প্রকরণ এক প্রকার শেষ হয়। ঐ ছই প্রকার মাটার ক্রমি-"দো-আঁশ মাটা" ও "ভিটামাটা"। ব ছই প্রকারই মিশ্র মৃত্তিকা। কিন্তু

উভয়ে মিশ্র মৃত্তিকা হইলেও উভয়ের প্রকৃতি একরূপ নহে ; কারণ স্মান সমান বস্তুর মিশ্রণে ঐ হুই বস্তু উৎপন্ন হয় নাই। বিবিধ উদ্ভিজের বিনাশাবশেষ, চুর্ণ, ভস্ম, বালুকাদি পূর্ব্বোক্ত সকল প্রকার মৃত্তিকার সহিত মিলিত হইয়া দো-আঁশ মাটীর সৃষ্টি হয়। এই মাটী অতিশয় উর্বরা। ইহাতে কি আশু, কি হৈমন্তিক, কি ঝাটী, সকল প্রকার ধাস্তই উত্তমরূপ জন্মে। তদ্ভিন্ন সর্ব্ব প্রকার তরু, লতা ও গুলের পক্ষে এই মাটী বিশেষ উপকারক। বিশেষতঃ নীল, তুঁতে, হরিদ্রা, আলু প্রভৃতি শিল্প-সহায় ও লাভজনক ফদল এই মাটীতে উৎকৃষ্টরূপ জন্মে। দেশভেদে এবং উপা-দান পদার্থের ভিন্নতা বশত: ঐ মৃত্তিকার ষেত, পীত, ক্লফ, লোহিত প্রভৃতি বিবিধ বৰ্ণ হইয়া থাকে।

"ভিটামাটা", "দো-আঁশ" মাটা অপেকা
আমিক উর্করা, ইহার উপাদানও বিবিধ।
গ্রাম, নগরাদি বিজন ও বিধ্বস্ত হইরা
ভিটামাটার উৎপত্তি হয়। মহুযোর ব্যবহৃত
বিবিধ পদার্থই উহার উপাদান:—যেমন
থড়, পোরাল, ভূষি, বিবিধ উদ্ভিজ্ঞ, ভন্ম,
গোবর, ওঁচলা, ভূষ ইত্যাদি। ইহাতে
নানাজাতীয় বৃক্ষ, লতা, শাক, সব্জী
উন্তমরূপে জরো। বিশেষতঃ তামাক ও
সর্বপ ভিটামাটীতে যেমন হয়, তেমন আর
আন্ত কোন ভূমিতে হয় না। কিন্ত ভিটামাটীতে কোন প্রকার ধান্তই ভাল হয়
না। আশু ধান্ত কিছু হইলেও আমন
আদৌ হয় না।

যত প্রকার মাটীর কথা বলা হইল. ্ত্ব্যতীত হিমানয়ের অধিত্যকা, উপত্যকা, ও তলদেশে আর কয় প্রকার মৃত্তিকা আছে। এই সকল মৃত্তিকার সহিত পুর্বোক্ত কোন মৃত্তিকার প্রায় সাদৃখ্য নাই। কেননা হিমালয় যেরূপ মৃত্তিকা দারা নিশ্মিত, সেরূপ মাটী পর্বতের কোন স্থানেই দৃষ্ট হয় না। কারণ বহু পূর্বাকালে বছসংখ্যক আগ্নের পর্বতের অগ্ন্যুৎপাত ঘারা হিমালয় নির্মিত হইয়াছে, অভাপি সুল্ল দৃষ্টিতে দুর্শন করিলে তাহার নিদর্শন প্রতাক হয়। স্থতরাং হিমালয়ের কি অধিত্যকা, কি উপত্যকা, কি তল্দেশ नकन ज्ञानरे मध मृखिकांत्र পূर्ণ এবং ঐ মৃত্তিকার সহিত কুদ্র কুদ্র প্রস্তরপঞ্চ ও বালুকা মিশ্রিত আছে। একন্ত ঐ মাটীতে কিছুমাত্র আটা নাই; সর্বাদাই শিবিল ও

ভাপশোৰক। কিছু উর্জন্নভাবিবন্ধে আছা কোন মৃত্তিকাপেকা নিক্কাই নহে। কোন কোন পার্বভান্ত উপত্যকান্ধ প্রচুর পরিমাণে ধান্ত জন্মিরা থাকে। মৃত্তিকাভেদ-প্রকরণ অতি সংক্ষেপে বিবৃত হইলেও, আমরা মনে করি, অন্যদেশীয় ক্রবিকার্য্য বিষয়ে ইহাই যথেষ্ঠ হইতে পারে।

ধান্তের প্রকারভেদ—আমরা शुटल উল্লেখ করিয়াছি, ধান্ত সামান্ততঃ তিন প্রকার—আঞ্চ, হৈমন্তিক বা আমন ও ঝাটি। সচরাচর বৈশাথ মাসে যে থাঞ্চের চাৰ আবাদ আরম্ভ হইয়া ভাদ্র মাসে শেৰ° হয়,তাহাকে আশু বা আউস কহে; স্বৈয় বা আষাঢ়ে যাহার চাষ আবাদ আরম্ভ হইয়া অগ্রহায়ণ বা পৌষ মাদে শেষ হয়, তাহাকে হৈমন্তিক বা আমন কহে; এবং আৰু ও হৈমন্তিকের মধ্যে কার্ত্তিক মাসে এক প্রকার ধান্ত প্রস্তুত হয়, তাহাকে কার্ত্তিকে ঝাট কহে। ভদ্তির বোরো, চালি, কাউন, চিনে প্রভৃতি কয়েক প্রকার ধান্ত আছে, তাহা পুথক-জাতীয় ধান্ত নহে। তাহাদের কোনটা আন্ত, ও কোনটা আমনের অন্তর্গত। ক্লযকেরা সচরাচর বলিয়া থাকেন, একাধিক * সহস্ৰ প্ৰকার ধান্তের নাম আছে। এ কথা নিতান্ত অসঙ্গত বোধ হয় না। যদিও আমরা অধিকদংখ্যক ধান্তের নাম সংগ্রহ করিতে পারি নাই, তথাপি যাহা সংগ্রহ করিতে পারিয়াছি, তাহা অবশুই এই ফলে বলিব।

কহ কেহ বোরো ও ললিকে প্রকৃত্বই
 প্রকার ধান কহিয়া পাকেন।

व्यामना दलवानी, शश्चेर व्यामापिरगत कीवन-রকার প্রধান সামন্ত্রী, এজন্ত তাহার নাম শ্বনিলেও ষেন কতকটা কুধা:নিবৃত্ত হয়। অতএব একণে আমরা ধান্তের নাম গ্রহণে প্রবৃত্ত হইলাম। আণ্ড প্রুমানন ধাত্যের মধ্যে কয়েকটা উপবিভাগ আছে:—যথা ছোটুনা আশু ও বরাণ আশু। আমন षिविध ; যথা রাঢ়ি ও বাগ্ডে। এই বাগ্ড়ে আবার হই প্রকার—ছোট্না বাগ্ড়ে ও বরাণ বাগ্ড়ে। * আশু ধান্তের मर्द्या र्यामिन, थुक्नी, मधुमान्जी, आखन-•বাণ, সন্ধ্যামণি, ফেব্রি, লোহাগজাল, দলকচু, তুলদীমঞ্জরী, পরাক্ষী, কাজলা, যুড়ে, পিপ্ডেশার, থেজুরছড়া ও চক্রমণি প্রধান। ছোট্না আশুর মধ্যে কেলে, মুদ, তানরেতেঙ্গা, ছোটকুমারী, তেঙ্গা-क्मांत्री, नज़ारे চामत्त्र, गांजान, त्नज़ामून, मानिकम्न, भूनिंदकरन, आखनपू, कान-মাণিক, কাদাচাপ, গুড়কপিলে ইত্যাদি প্রধান। আশু ধান্তের মধ্যে স্থ্যমণি. খুক্নী, চক্রমণি, ও মধুমালতী এই কয়টা সর্কোৎকৃষ্ট। আঞ্চ ধাত্যের মধ্যে কোন্টীর কৈ বিশেষ গুণ আছে, ক্নমকের তাহা ব্দানা থাকিলে অনেক উপকার হয়। সূর্য্য-মণি ধান্ত ফলে বেশি, এবং কিছুদিন জল না পাইলেও তাহার বড় ক্ষতি হয় না। মধুমালতী--অধিক উত্তাপ সহিতে পারে, এজন্ম প্রস্তর ও বালুকামিশ্রিত ভূমিতে উুহার চাষ আবাদ চলিতে পারে।

ताष्ट्रित क्रें अकात्र, व्हिंहिन। त नतान ।

চক্তমণি ধান্তের ফলন অধিক বটে; কিন্তু উহা পাকিতে কিছু বিলম্ব:হয়। মহাজ্পনের ঋণ পরিশোধ করিতেই যে সকল ক্বকের ঘরের ভাত ফুরাইয়া যায়, তাহারাই প্রায় আউশ ধান্তের চাষ করে; কেননা শীঘ্র এক মৃষ্টি ধান্ত পাইয়া উপক্লত হইবে। স্কুতরাং যে ধান বিলম্বে পাকে, তাহাদের পক্ষে সে ধানের আবাদে স্কবিধা হয় না। সন্ধ্যামণি ও ফেব্রি, এই ছই প্রকার ধান অতি শীঘ্ৰ পাকে; এই জন্ম ক্নুষকেরা নির্ভাবনায় চরভূমিতে ঐ হুই প্রকার ধানের আবাদ করিতে পারে। বার্ষিক প্লাবনে ধান ডুবিয়া যাইবার শকা থাকে না, অথচ চরভূমির আবাদে ক্ষকের বিলক্ষণ,লাভ আছে; কেননা পললের সংসর্গে চরভূমি অতিশয় উর্ব্বরা 🔒 হয় ; স্থতরাং দেখানকার ধান অতিশয় ফলশালী হয়। দলকচু মেটেল ভূমিতে জন্মে। কিন্তু মেটেল ভূমির ধান পাকিতে কিছু বিলম্ব হয়। ছোট্না আগুর মধ্যে "ধেটে" নামক এক প্রকার ধান আছে, তাহা ষাইট দিনের মধ্যে পাকিয়া উঠে। কার্ত্তিকশাল, ইহার প্রকৃত নাম কার্ত্তিক-

শালী। নামামুসারে উহাকে আমনের मर्था धर्ता यात्र, এवः উहात जाताम् अ আউশ অপেক্ষা নিম্ন ভূমিতে হইয়া থাকে। কার্ত্তিক মাসে পাকে বলিয়া নাম কার্ত্তিক-भानी । कार्जिटक सार्वि ३ हेराबरे नामास्त्र । ''কেশেফুল" নামক এক প্রকার ধাস্ত আছে, তাহাও কার্ত্তিকশালীর অন্তর্গত।

যে বৎসর অধিক বস্তা হইয়া আমন ধান

प्रविद्या ७ महिन्ना धककारन नहे हरेना यात्र, সেই বংসর ক্বকেরা বোরো ধানের আবাদ করিয়াবিশেষ উপকার প্রাপ্ত হয়: কারণ বোরোধান কাদা জ্বলে জন্মিয়া থাকে। বিশেষতঃ ঐ ধানের ন্যায় ফসল আর কোন ধানের হয় না। বিঘা প্রতি ১৬/ • (वाल भारत अधिक कलन **इ**हेग्रा থাকে। কার্ত্তিক মাদে ভূমিতে আইল বাধিয়া জল ধরিতে হয় এবং সেই জলে কাদা করিয়া বোরো রোপণ করিতে হয়। আমনের আবাদের বপন ও রোপণ উভয় প্রণালীতেই বোরোর আবাদ হইয়া থাকে। বোরো মাঘ মাদের মধ্যেই পাকিয়া উঠে। আবার সেই ভূমিতে চাষ দিয়া রীতিমত জ্যৈষ্ঠ আধাঢ় মাদে আবাদ হইয়া থাকে। বোরোর গোড়া, পাতা, ধান প্রিয়া ও মৃত্তিকাসাৎ হইয়া আমনের ফলতঃ পুৰ্ব বিশেষ সাহায্য করে। বংসরের বর্ঘা-বিনষ্ট হৈমন্তিকের ক্ষতি বোরো দ্বারা অনেকটা পোষাইয়া যায়।

মাব ফাল্পন মাসে নদীর জেয়োরের জল যতদ্র উঠে এবং ভাঁটার সময় যতদ্র নামিয়া পড়ে, এই উভয় সীমার মধ্যে "জলি" ধানের আবাদ করিতে হয়। বসস্তবায়ুর স্পর্শ ভিশ্ন "জলি" ধানের গাছ তেজস্বী হয় না, এজন্ম মানের শেষভাগে বা ফাল্পনের প্রথমে একটা মরা ফটাল দেখিয়া সেই পলির কাদার উপর জালির বীজ বপন করিতে হয়। উহা পৃথক্ এক প্রকার ধান নহে; ছোট্না আত্তর অন্তর্গত এক প্রকার ধাস্তবিশেষ। ভবে

উহা জলের মধ্যে জন্মে বলিরা উহার "জলি" এই নাম হউরুছে। উহার চার আবাদে ব্যরও অধিক নাই। ধান্ত-বপনকালে যে কিছু পরিশ্রম ও ব্যর, তন্তির ধান কাটার মধ্যে আর কিছুই করিতে হয় রা। জ্যৈষ্ঠ মাসে ঐ ধান পাকিরা উঠে।

বরাণ আশুর মধ্যে আরও কর্মটা নাম আমরা যথাস্থানে ধরিতে ভূলিয়ছি, এজফ্র এই স্থানে তাহাদের উল্লেখ করিয়া আশু-প্রকরণ শেষ করিব:—যথা সর্কভোগ, কলিলেরর, চক্রমণি, স্থামণি, কর্তর, ঝুড়ি, পিপ্ডেকেলে, লক্ষীজটা, সরু চামরে, হুধচামরে,বেণকুলি, পুটেগজাল,বেশুনবীচি, কালকচু, জ্বাদ্ধুলভ, ভূবনহর্লভ, লোহাগড়, ঘুতকাঞ্চন, চিঙ্গড়েশাল ইত্যাদি। ইহাদিগের মধ্যে লক্ষীজটা, পুটেগজাল প্রভৃতি ক্রেক প্রকার ধান বড় মোটা।

এক্ষণে আমরা হৈমন্তিক বা আমন ধানের কথা বলিব। পূর্বে উল্লেখ করিয়াছি, ইহা প্রথমতঃ রাড়িও বাগ্ড়ে এই হই প্রধান শ্রেণীতে বিভক্ত।তাহার পর রাড়িও বাগ্ড়ে আবার ছোট্নাও বরাণ এই হই ভাগে বিভক্ত। ছোট্না রাড়ির প্রকার অধিক নহে। অধিক না হওয়াই স্বাভাবিক, কারণ জল ভিন্ন আমন ধান হয় না। ধানগাছের দৈর্ঘ্য পরিমাণ অল্ল হইলে উহা জলম্ম হইয়া নই হইবার সপ্তাবনা। এল্ল সামঞ্জ বিধারক জগদীশ্বর উহার সংখ্যা অল্লই করিয়্বাছেন। এই ধান্তের উৎপত্তি, র্দ্ধিও পরিমাণ-

বিৰন্ধেও তাঁহার অত্ন শির-নৈপ্ণাের ভূরি নিদর্শন দৃষ্ট হয়। আমরা প্রদক্তঃ ভাহা বলিতে চেষ্টা করিব। লঘু, কেলেনি, কোরাকেলে, নিনামা, মৌল ইত্যানি ছোট্না রাঢ়ি।

বরাণ রাঢ়ি ধান বছত্বর। বেণাফুল,
বাঁশমতী,রামশালী, চামরমণি, পেশোরারি,
পাটনাই ছড়ো, পাতরকুচি, লোনা, করিমশাল, থাগুবশাল, ঝিঙ্গেশাল, বনগোঁটা,
কৈযোড়,কেলে, উড়কি, ছিলেট, কনকচুর,
পরমারভোগ, বাঁশকাটা, ভাদাপান্তী,
মেণি, মেনকি, বিকলা, কেউটেশাল,
পাদসাভোগ, হরিনারায়ণ, মাঠচাল, প্রিনী,
পানআস, কালহানা, মুগী, পুরবী, রাংমৌলা,
বৌনাগরা, কঞ্চুড়া, গুড়কচু, শালকেলে,
সফেদকলমা, হরিণখুরী, কদমশালী, কুস্থমশালী, সর্বভোগ, রাজভোগ, বাঁশফুলী,
হেতেমাগুড়, পোকা এইগুলি প্রধান।

ছোট্না বাগ্ড়ে আমন—যথা কেঁকো, ডেলাকুড়ি, কার্ত্তিকে ডেপু, হুমনাড়ী, কুঁচে, মেঘলাল, দেবমুনি, আয়দা, আঁধার-মাণিক, ডহরনাগরা, এইঙলি প্রধান।

বরাণ বাগ্ডের মধ্যে ক্লফকলি, মুক্তা-হার, ছোটদীঘে, বড়দীঘে, নেতা, ধনি, পিত্তরাজ, কেয়ারশালী, কুল আমলা, পুদি, কলমা, ভাপো, লালকানাই, মেহেরফল, হাসবত, কালবয়য়া, এইগুলি প্রধান।

রাঢ়ি ও বাগ্ড়ে এই ছই প্রকার আমনের মধ্যে যে ছই ছই প্রকার ভাগ আছে কৈই সকল ভাগের অন্তর্গত কভাৰী করিয়া থাক্তের নাম করা

গেল। এক্ষণে ঐ সকল ধান্তের মধ্যে কোন ধানের কি বিশেষ গুণ আছে, তাহার আলোচনা করা যাইবে। বরাণ রাঢ়ির মধ্যে যে সকল ধানের উল্লেখ করা হইয়াছে, তন্মধ্যে কৃষ্ণচূড়া, রামশালী, চামরমণি, বাঁশমতী, বেণাফুল, পাদসাভোগ ইত্যাদি কতকগুলি সুন্দ্র ও উৎকৃষ্ট। উহাদিগের চাউল অধিক মূল্যে বিক্রীত হয়। সে চাউলের অন্নভোজন সঙ্গতিশালী ব্যক্তি ভিন্ন অন্তের ভাগ্যে ঘটে না। কৈযোড় ধানের ফলন খুব বেশি, এঞ্চন্ত উহার আবাদে ক্বকের বেশ লাভ হয়। উড়ে, কনকচুর ও মেনকি, এই ত্রিবিধ थाट्ना देथ रुष, अवः উरामिटगत्र फलन्छ অধিক। থইয়ের ধানের মূল্য অপেকাক্কত অধিক এবং উহার ফলনও অধিক। এজন্ম ঐ ধানের চাষেও ক্বকের লাভ আছে। কিন্তু ঐ ত্রিবিধ ধানই,—বিশেষতঃ কনক-চুর অত্যন্ত নাবি, মাঘ মাসের পূর্বে পাকে ना। উড়ে ধান অধিক ফলে বটে; কিন্তু উহা সংগ্রহ করা কঠিন। কারণ উহা পরিপক হইবামাত্র গাছ হইতে ঝরিয়া পড়ে, তথন ভূমি-বিক্ষিপ্ত ও মৃত্তিকাসহ মিলিত ধান-সঙ্কলন ব্যাপার বোধ হয়। উড়ে ধানের আবাদ विषय हेश এक है। कु ज विश्व । आभारतत्र পাঠক পাঠিকার স্মরণ থাকিতে পারে, আমরা বরাণরাঢ়ি ধান্তের মধ্যে ''পোকা'' নামক এক প্রকার ধানের নাম করিয়াছি। আমাদের দেশে ঐ ধানের চাব আবাদ র্দ্ধি পাওয়া নিতান্ত প্রার্থনীয় । খুলনা

ו יד עטפי

জিলার অন্তর্গত দেঁতে পরগণার কোন কোন স্থানে এবং আষাম অঞ্চলের কোন কোন স্থানে এবং আষাম অঞ্চলের কোন কোন স্থানে অল্ল পরিমাণে এই ধান্তের আবাদ হইরা থাকে। যে ২০১টা ক্র্যক উহার চাষ আবাদ করিয়া থাকে, তাহারা স্থ স্থ জ্মীদারকে এবং আত্মীয় কুটুম্বকে উহা উপহার দেয়; বোধ হয়, আদে বিক্রম্ন করে না। এই ধানের চাউল, অমণকারী-দিগের বিশেষ উপকারী, কারণ উহা হইতে অল্ল প্রস্তুত করিতে অগ্লিপাকের প্রেয়েজন হয় না। চিঁড়ে, মুড়ি, থই, ছাতু ইত্যাদিতে কিঞ্চিৎ জল সংযোগ করিলে তাহা যেমন স্থথ-খাছারপে পরিণত হয়, পোকা ধান্তও জলনিক্তাহইলে কিয়ৎ-

শবের মধ্যে অমিপক স্থাসিক অরম্পে পরিণত হয়! বাঁহারা নিত্য অরাহার করিয়া থাকেন, একদিন অয়াহার না ঘটিলে তাঁহাদিগের বিলক্ষণ ক্লেশ হইরা থাকে। তবে পথে ঘাটে বিদেশে অয়ের অভাব বশত:ই অভাবিধ আহার করিতে বাধিত হুইয়া থাকেন। পাকাদি ক্রিয়ান্সম্পাদন সকল স্থানে সকলের পক্ষে সহজ্ব এই চাউল থাকে, তাহা হইলে তাঁহাদিগের বড় স্থাবিধা হয়, অনায়াসে অয় ভোজন করিতে পারেন। এই জভাই বলিতেছিলাম, আমাদের দেশে এই "পোকা" ধানের চাবই বৃদ্ধি পাইলে বড় ভাল হয়। (ক্রমশঃ)

বিগত শতবর্ষে রমণীদিগের অবস্থা।

(৩৬৫ সংখ্যা ৪০ পৃষ্ঠার পর)

চতুর্থ যুগের শেষভাগে লর্ড ল্যান্সডাউন
মহোদয়ের শাসনসময়ে ভারতবর্ষে বাল্যবিবাহ-নিষেধক আইন পাস হয়। এই
কার্য্যে অনেকের বিবেচনায়, শিক্ষিত
ভারতবাসীদিগের সম্বন্মের কতকটা হানি
হইয়াছে। তথাপি ভারতবানিনীদিগের
প্রতি রাজার যে বিশেষ অন্ধ্রাহ, এআইনেও
তাহার পরিচয় পাওয়া ঘাইতেছে।

এইরপে জগদীখরের রূপায়, ইংরাজরাজের অফুগ্রহে, এবং দেশীয় ও বিদেশীয়
নারীহিতৈষিগণের যয়, চেষ্টা ও পরিশ্রমের
ফলে গত শত বৎসরে ভারতমহিলাদিগের অবস্থা অভাবনীয় উন্নতি লাভ

করিয়াছে। ভারতবর্ষে ত্রী-শিক্ষার জক্ত বহুতর কলেজ স্থল সংস্থাপিত হইয়াছে। বঙ্গদেশে প্রায় প্রতি জেলায় দ্রীজাতির উন্নতির জন্ত সভা সমিতি হইতেছে। উত্তরপাড়া হিতকারী, মধ্য-বাঙ্গালা-দক্মিলনী, জীহট্ট-স্মিলনী, যশোহর-খুলনা-সন্মিলনী, বিক্রমপুর হিতসাধিনী, ফরিদপুর স্থান্থলি প্রভাত সভা কর্ত্ব রমণীগণের লেখা পড়া, শিল্প ও কারুকার্য্য, গার্হস্যা নীতি অধিকতর উৎসাহিত হইতেছে। ভারতমহিলাদিগের অনেকেই সভ্যাধর্মে দীক্ষিতা হইয়াছেন। ত্রীশিক্ষার ফলব্রুপ ভারতে পণ্ডিতা রমাবাই, ডাক্টার আনক্ষী

वारे, विष्वी औ वारे ७ अन्यम वारे व्यक्षि महोत्राङ्कीम महिनागन, क्माती हता-মুখী বস্থ, এম, এ, ডাক্তার কাদম্বিনী गैरकां भाषाय, अम्, वि, क्यांत्री, कांभिनी त्मन, वि, এ, क्म्मिनी का छिनिति, वि, এ, প্রভৃতি বঙ্গ-মহিলাগণ বিদ্যাবত্তায় ভারতের মূপ উচ্ছল করিয়াছেন। এতত্তির হইজন **পারদী মহিলা**—লগুন বিশ্ববিদ্যালয়ের পরীক্ষায় একজন ডাক্তার, আর একজন ব্যারিষ্টার হইয়াছেন। শ্রীমতী স্বর্ণকুমারী (परी, क्षण्डाविनी माम, शित्री सरमाहिनी দাসী, আলোও ছায়া রচয়িত্রী প্রভৃতি বঙ্গবাসিনীগণ <u>সাহিত্যক্ষেত্রে</u> শ্রেণীর লেখিকা" বলিয়া খ্যাতি লাভ कतियाष्ट्रम । महाञ्चा भिनेशम वत्म ग्राशीशगय महाभन्न वक्रामर्थ বিধবাশ্রম, পণ্ডিতা রমাবাই পুনাতে "শারদা-দদন" আশ্রম প্রতিষ্ঠিত করিয়া অনাথা বিধবাগণের **স্থ সফলতার** জন্ম চেষ্টা করিতেছেন। এক এক জন মহাপ্রাণা রমণীর প্রধান উদ্যোগে ও সহায়তায় ক্রিকাতায় "অনাথ-**নিবাস" ও** "দাসাশ্রম" স্থাপিত হইয়াছে। একজন **মহদাশ**য়া রমণী ভারতের পতিতা অবলাদিগকে ধর্মপথে লইবার ব্দম্ভ আন্মোৎসর্গ করিয়াছেন। ভারতের স্থলিকিতা নারীগণ, এইরূপে প্রক্বত জীবন লাভের পরিচয় দিতে সক্ষা হইয়া-ছেন। সাধারণ মহিলাগণ লেখা পড়ার नांशांसा देशनिक आप्र वास्त्रत हिमाव, cuiनीत हिनांव, त्शांशांनांव हिनांव, निल-দিগকৈ প্রথম শিকা দান প্রভৃতি কার্য্য

স্থচাক্তরপে: নির্বাহ করিতে পারিয়াছেন। वक्रणायात्र ज्रामन, बरगान, विकान, वर्गन, ইতিহাস, পদার্থবিচ্চা প্রভৃতি প্রকাশিত হওয়াতে, অনেক মহিলা সে সকল শাস্ত্রে অভিজ্ঞতা লাভ করিতে পারিয়াছেন। এ যুগে ভূত প্রেতেরা আর কথায় কথায় স্ত্রীব্দাতির উপরে উপদ্রব করিতে পারে না, সে সকল "কল্পিড কথা" বলিয়া বিজ্ঞান প্রমাণ দিতেছে। মৃতবৃৎদা রমণী আর পরের সর্বনাশের চেষ্টা না করিয়া শারীর-বিজ্ঞান-সন্মত ঔষধ ও নিয়ম দ্বারা জীববৎসা হইতে পারিতেছে। বশীকরণ জন্ম ভার্য্যাকে আর ঔষধ খুঁজিয়া বেড়াইতে হয় না। বহুবিবাহ পরিত্যক্ত হওয়াতে স্বামী সহজেই ভার্য্যার বশীভূত হইতেছেন। কচির উন্নতির সহিত রমণীগণ অনেকে বিশ্ৰী ঠাট্টা তামাসা, কুক়চিপূৰ্ণ পুন্তক পাঠ ও অসভ্যতাপূর্ণ অস্তাস্ত আমোদ প্রমোদ পরিত্যাগ করিয়াছেন। একখানি হক্ষ বস্ত্রের পরিবর্ত্তে অনেক নব্যা মহিলা (বস্ত্রের সহিত) দেমিজ, জ্যাকেট, বডী প্রভৃতি ব্যবহার করিতেছেন। রূপার গহনার পরিবর্ত্তে সোণার গহনা,এবং টেড়ি, পাশা, নথ, মাছলি, বাউটী, পৈছে প্রভৃতি গহনার পরিবর্ত্তে কটক, ঢাকা ও কলিকাতার খ্যাতনামা কারুদিগের ক্বত চিক্, চেন হার, কাণ, ইয়ারিং, অনস্ত, যশম, চুড়ি, বালা প্রভৃতি স্কৃদৃশ্র ও স্থন্দর নামযুক্ত গহনা সকলও বাহ্যিক কৃচির উন্নতির পরিচয় দিভেছে; স্ত্রীব্দাতির চিস্তা-শীলতা ও হিতাহিতবিচারশক্তি

পরিক ট ছইতেছে। বালিকাবিবাহ ক্রমশঃ দ্রাস পাইতেছে। বালবিধবাদিগের পুন:-সংস্থারের পথ ক্রমশ:ই উন্মোচিত হইতেছে: প্রাপ্তবয়স্থা বিধবাদিগের অনেকে শরীর-কুচ্ছ তার বাড়াবাড়ি অপেকা চিত্ত দিই ব্রহ্মচর্য্যের প্রকৃত উদ্দেশ্য ব্লিয়া বুঝিতে বহুবিবাহ-নিবারণ-ফলে পারিতেছেন। দাম্পত্য-প্রেম গভীর ও দৃঢ়তর হইতেছে। সমাজে বুমণীগণ পবিত্রতা, কোমণতা ও মধুরতা বৃদ্ধির সহায় হইতেছেন। ফলত: শত বৎসরে এ দেশের রমণীগণের অবস্থা সর্বাণা পরিবর্ত্তিত ও উন্নীত হইয়াছে। প্রাচীন কালের ভারতীয় আর্য্যসমাজের রমণীদিগের মত বা বর্ত্তমান ইউরোপীয় মহিলাগণের মত সম্পূর্ণতা প্রাপ্ত না হইলেও শতবর্ষ পুর্বে ভারতবাসিনীদিগের যে অবস্থা স্বপ্নেরও অগোচর ছিল, এখন তাহা প্রত্যক্ষীভূত হইতেছে! যে করুণাময় দেবতার প্রদাদে এবস্প্রকার শুভ ঘটনা সকল সংঘটিত হইয়াছে, সে দেবতার চরণে সহস্র নমস্কার ৷ যে সকল ব্যক্তি এই ওভ

কার্ব্যের সহার হইরাছেন, ভাঁহারাও ভারতবাসিনীদিগের শত শত বার নমত ও কৃতজ্ঞতাভাজন।

বিগত শতবর্ষে ভারতবর্ষের রমণীদিশের অবস্থা আমরা যথাসাধ্য বিবৃত করিয়াছি। কিন্তু এখনও স্পামাদের এক বিশেষ কর্ত্তব্য বাকি রহিয়াছে। যে সর্বাঙ্গীণ উন্নতি রুমণীজীবনের উদেশ্র, ভারতীয় সমাজে লেই উন্নতিপথে কতকগুলি দোব ও ক্রটি কাটা হইয়া দাঁড়াইয়াছে। সেই সকল मायानि अञ्चनकान कतिया, নিবারণ করা সকলেরই উচিত। সেই কথা মনে করিয়া আমরা ভারত-রম্পী-গণের উন্নতির অস্তরায়স্বরূপ দোৰ ও ক্রটি আলোচনা করিতে প্রবুত্ত হইভেছি। এরূপ আলোচনায় কেহ ছ:খিত, নিরাশ वा विव्रक्त ना इहेग्रा, त्नाय ७ कां निर्माण সংশোধন করিতে চেষ্টা করিবেন, আমি বামাহিতৈষী মহোদয়গণের নিকটে ও व्यामात्र श्रापनीया जिंगिगरात्र निकटि अहे প্রার্থনা করি। (ক্রমশঃ)

धर्मिकाकानीन छेशरम् ।*

তোমরা ঈশবের উপাদনার প্রাণিনী হইয়া আদিয়াছ। দেই জগতের স্ষ্টেকর্তা
ঈশব দর্বত আছেন। চকু পুলিয়া দেখ
তিনি এই বাহিরের জগৎ পুর্ণ করিয়া
রহিয়াছেন; চকু মুদিয়া দেখ, তিনি

আমাদের অন্তরে বিরাজমান। তিনি বিশ্বসংসারের প্রাণ হইয়া বিশ্বসংসারকে নিয়মিত করিতেছেন, আয়ারও প্রাণ হইয়া আয়াকে নিয়মিত করিতেছেন। তাঁহার উপাসনা করিতে হইলে; আয়াতে তাঁহাকে

^{*} ছুইটা মহিলার দীক্ষাকালে শ্রীমন্মর্বি দেবেক্সনাথ ঠাকুর মহালর বে উপদেশ প্রধান করে**ন, ভাহার** সার মর্ম।

प्राचित्रक इटेर्स्स जाहात मतीत्र नारे, তিনি অশরীরী আন্ধা, যেখানে দেখিবে সেইখানে তিনি। তিনি এখানে এখনি এই জ্যোতির মধ্যে এবং অস্তরে আমাদের শকলের কাছে বিশ্বমান। দূরে দেখিতে চাও, আকাশে দেখ, নিকটে দেখিতে চাও ষ্মস্তরে দেখ। অন্তরে তাঁহাকে দেখিয়া তাঁহার উপাসনা করিতে হয়। আমি যেমন একা আছি, আমার অন্তরে আর একজন তিনি। তিনি অন্তর্গামী, তিনি হৃদয়ের ভাব জানেন। তাঁর নিকট রোগে. শোকে, বিপদে প্রার্থনা করিলে তিনি শ্রবণ করেন, এবং সকল অবস্থাতে রক্ষা করেন। তিনি আমাদের কাহারও প্রতি উদাসীন নন, আমরা তাঁর নিকট যা **চাই, তা পাই।** তিনি পিতার মত—মার মত। মার কাছে ছেলে গেলে মা ছেলেকে

তাড়াইরা দেন না, কোলে করিয়া দন।
তাঁর নিকট পেলে তিনিও কোলে করিয়া
লন। প্রতিদিন তাঁর কোলে বদিরা প্রার্থনা
করিবে। তাঁর নিকট সম্পদ চাও, ধর্ম
চাও, শাস্তি চাও। বিপদের সময় বিপদ
হইতে রক্ষার জন্ম প্রার্থনা কর, তিনি
রক্ষা করিবেন।

একটা মহামন্ত্র আছে:—

"সত্যং জ্ঞানমস্তং ব্রহ্মা।"

স্নান করিয়া এই মন্ত্র দশবার জপ
করিয়া তাঁহাকে প্রণাম করিবে। তাঁর
নিকটে প্রার্থনা করিবে "হর্ম্মতি দূর করি
শুভমতি দাও হে, এই বরদান ভগবান্
মাগি।" আমার হর্ম্মতি দূর কর, আমাকে
শুভমতি দাও। প্রতিদিন এইরূপে প্রার্থনা
করিলে আয়ার বল পাইবে। প্রকার সহিত
হৃদরের সহিত এই জপ ও প্রার্থনা করিবে।

পারিবারিক সঙ্গীত।

বল্বে—'অন্তে নারায়ণ ব্রহ্ম' আগে ভাই তাই বল না,
দিন্ থাকিতে বল্লে ও নাম এড়াবে যম-যাতনা।
এসেছিলে যে দিন ভবে, গোপনে একা নীরবে,
একা পুনঃ যেতে হবে, কেউত সঙ্গে যাবে না;
গৃহ ধন পরিজন, অসার মায়া-বন্ধন,
ফ্রাবে দেহের সাথে কেন মিছে ভাবনা।
হদিনের থেলাতে ভূলে, দিন আর কেটো না বিফলে,
চিরদিনের বন্ধু যিনি তাঁরে ভূল না;
তিনি পিতা তিনি মাতা, তিনি শুরু জ্ঞানদাতা,
তিনি জাইবিবে এতা, (সদা) তাঁরে জপ না।

(रॅंग्रानी।

ধাভূমন্ব দেহে মোর সদাই বিকার, এক এক উপসর্গে এক এক প্রকার। এক উপসর্গে চাপি ভোজনের থালা, বিতীরেতে শোভা করি বরণের ডালা, ভূতীরে বহাই পৃঠে ক্ষধিরের ধার, চভূর্থে লইরা বাই শমনের ঘার। স্থবৃদ্ধি যে নারী খুঁজি ধরিবে আমারে, স্থলর শোভার আমি সাজাব ভাহারে।

ভূতন সংবাদ।

১। পঞ্জাবে বিবাহ ও শ্রান্ধের বায় অত্যন্ত অধিক, এবং দেশবাদীদিগের মহা-নিষ্টের কারণ দেখিয়া তত্রতা সহদয় ছোট লাট সার জেমদ ফিটুজুপেট্রক স্থানীয় কমিশনর ও ডেপুটী কমিশনরদিগকে দেশবাসীদিগের সহিত মিলিত অনিষ্টের প্রতিবিধানার্থ অমুরোধ করিয়া-ছেন। আমরা দেখিয়া সম্ভষ্ট হইলাম, এই मुष्ठारस स्वामादनत एकांचे नांचे नांत्र ठार्नम **रे**निग्रहे ७ বঙ্গবাসীদিগের হিতসাধনে হইয়াছেন। এ দেশের সমাজ-উত্তোগী হিতৈষী মহোদয়গণ এ সময় রাজ-পুরুষদিগের এই শুভ চেষ্টার সহাযতা কক্সন।

২। কুমারী ক্লোরেন্দ ডিনেণ্ট ব্রসেলদ্ নগরে এম্ ডি উপাধি পাইয়াছেন। আলো-য়ারের লেডী ডফরিণ চিকিৎসা-বিভালয়ে তাঁহাকে আহ্বান করা হইয়াছে।

৩। জাপানীরা দর্ম্মোসা দ্বীপের বিদ্রোহী-দিগকে যুদ্ধে পরাভূত করিয়া দলপতিকে বন্দী করিরাছে। তথাকার নবপ্রতিটিত সাধারণতক্স বিলুপ্ত হইরাছে। ৪। দক্ষিণ অথ্ট্রেলিয়াতে দ্বীলোকেরা রাজনৈতিক বিষয়ে মত দিবার অধিকার পাইয়াছেন। রাজী বিক্টোরিয়া এ বিষয়ের আইন মঞ্জুর করিয়াছেন।

৫। মেরী কাউডেন ক্লার্ক "Concordance to Shakespeare" পুস্তক প্রাচার করিয়া লব্ধপ্রতিষ্ঠ হইয়াছেন। তিনি এখন জেনোয়াতে বাস করেন, বয়স ৮০ বংসর হইয়াছে, তথাপি পাঠ ও কার্য্যে সমান অন্তরাগ।

৬। টাইপ রাইটারনামক মুদ্রাবন্ধ আবিকারের পর যুক্তরাজ্যে ৫০০০০ পাঁচ লক্ষ
স্ত্রীলোক ইহা বারা জীবিকা লাভ করিতেছেন। ইংলণ্ডে ৬ জন লোকের মুধ্যে
১ জন স্ত্রীলোক আপনার পরিশ্রব বারা
জীবিকা নির্মাহ করিয়া থাকেন।

৭। শ্রীমতী স্বর্ণক্মারী দেবী ভারতীর' সম্পাদকতা পরিত্যাগ করিয়া ছই কন্যা হিরথায়ী ও সরলা দেবীর উপর উক্ত ভার অর্পণ করিয়াছেন। উভরেই ইনিক্সিতা, মাতার গৌরব রক্ষা করিতে পারিবেন। ৮। আমেরিকার ইউনাইটেড ঠেইনে এক, শতের অধিক স্ত্রীলোক পাদরীর কার্য্য করিয়া থাকেন।

ন।বোষাইরের একজন শিল্পী একটি অতি
কুজকার ঘড়ী প্রস্তুত করিরাছেন। ঘড়িটীর আকার একটী সিকি অপেক্ষা বৃহৎ
নহে। অন্যাঞ্চ ঘড়ীর স্তার ইহার ভিতরে
যন্ত্রাদি সমস্ত আছে, এবং ইহা নির্ভূল
সমর নির্দেশ করিতেছে।

> । দক্ষিণ আমেরিকার ব্রেজিলদেশীয় এক মহিলা অন্ধদের জন্ম একথানি অভিধান প্রস্তুত করিয়াছেন। ১১। মার্কিন নিউইরর্ক সহরে থামের জাটা চাটিরা সম্প্রতি একটি লোক মারা গিরাছে। চিঠির থামের জাটা কখন কখন বিবের গুণ ধারণ করে।

>২। আমেরিকায় এখন চল্লিশ সহস্রাধিক ব্রীলোক কলেন্দ্রে অধ্যয়ন করিতে-ছেন। ২৫ বংসর পূর্ব্বে তত্রত্য ওবার্লিন কলেজ প্রথম ক্রীলোক ভরতি করেন।

১৩। আকাশমগুলের এক নৃতন ফটোগ্রাফ লগুনে প্রস্তুত হইতেছে,তাহাতে নক্ষত্রসংখ্যা ৬ লক্ষ ৮০ হাজার।

বামারচনা।

শিশুর জন্ম উপলক্ষে। (১১ই বৈশাখ—মঙ্গলবার ৪ ঘটিকা।) সেহের মুকুল।

মলয় স্বর্গের কেনা
আতর ছড়ায়ে যায়।৪।
আজি কি স্বর্গীয়ভাবে
ভরিয়া সামান্ত ছানি,
বৈকালিক বেল ফুলে
কপোত ঢালিছে গীতি।৫।
বৈশাথের তীত্র তাপে
আজি জালিছে না কায়,
রবি ছবি আবরিয়া
নব মেঘ ভেসে যায়।৬।
নীল নীলিমের কোলে
অভি নব নব ঘন—
দিগস্ত কম্পিত করি

করিতেছে গরন্তন। १।

আনন্দে ৰহিছে বেগে ধৰ্মনীতে রক্তধারা, আজি বে জগত দেখি স্থলর অমিরা-ভরা। ৮। জাজি যে প্রাণের মাঝে আনন্দের চেউ বয়. নিরাশায় ভগ্ন হুদি আজি কিগো শোভামর।৯। আৰু যে হৃদয় ভেদি জাগিছে করুণা গান, সঞ্জীবনী স্থধা আসি বাঁচাইল মৃত প্রাণ। ১০। বাছা,---স্বরগের ছার খুলে কে ডুই নামিয়া আলি ধরার অন্তর রাজ্যে অজন্ৰ আনন্দ ঢালি। ১১। বিশ্বপ্রেমে, মাতোয়ারা হ'লো আজি এ হৃদয়. বিভুর করুণা শ্বরি व्यानम উচ্ছाम वग्र। ১२। কে তুই দেবের শিশু, স্বর্গের পুতুল ! कृषिनि कारस मम মেহের মুকুল।। ১৩। উষার বরান্ব-ভূষা नक्त जिमिव-छात्र. অলকা অমরাবতী चारमा कत्रि ममुनात्र >8। আছিলে অথবা কিগো

বাসবের বাসস্থলে,

বেখানে সহস্ৰ শশী সহল তারকা অনে। ১৫ সেধানে সোনালী শাৰে वमञ्ज स्काम गाम আছিলে, বসস্ক-বান্ধে वृद्धि शथखष्टे रुख-->७। এসেছ ধরায় প্রিয় जिन्दनंत्र कून, এস তবে প্রাণাধিক क्ष्या पुरुष ॥ ১१। বিজ্ঞলী অপাঙ্গ-চ্যুত প্রাণে এদ জ্যোতি-কণা, চাবে না এ প্রাণ ছার হীরা মণি সোণা দানা। ১৮। সংসার দগধ বড তপ্ত মক্ত্মি পারা. কে তুমি এ তপ্ত ধূলে **ঢা**नित्न व्यभिग्रांशां । ১२। নিরাশার গাঢ় মেঘ ঘন আঁধারের ছায়, কে তুমি বাসবধহ শীতল করিলে কাম। ২০। শীতের কুহেলি মাথা মুত অবসর হিয়া আসিলে বসস্থ হেণা करव रकान् भव मित्रा। २५। জাগাইতে অভাগীর মূতবং আশাশুলি; ত্রিদশের নাথ প্রভূ দিয়াটেন হাত ভূলি। ২২

দেবরক্ত গায় ভরা স্বর্গের পুতৃন, লও মম স্বেহাশীয क्ष्टित मूक्न। २७। চাঁদের প্রতিভা মাখা বুঝি স্বৰ্গচ্যুত তারা, আসিলে হঃখীর ঘরে বুঝি পথ হয়ে হারা। ২৪। তোর এ অধরম্পর্শে কুড়াইল দগ্ধ প্রাণ, তুমিরে বিষাদে হাসি, আঁধারে আলোক-দান। ২৫। কোন দেব আনি দিল তোমা হেন ধন আহা, কি দিয়ে পূজিব তাঁরে ভাবিয়া না পাই তাহা। ২৬। কি দিয়ে—হঃথিনী আমি कि मिर्य शृक्षिव छाँद्र, তাঁর উপযুক্ত ধন কি আছে আমার ঘরে। ২৭। অনস্ত অব্যয় তিনি তুষ্ট কি হবেন ধনে ? প্রাণের ভকতি রাশি एटल मिव भि ठत्रत। २४। ৰূম মাত্ৰ এই কুলে পুজেছি তাঁহার পায়, **८मर**वत श्रमामि क्ल বিপদ ছোঁবে কি তায় ? ২৯।

চিরন্ধীবী হয়ে বাছা থাক মোর কোল যুড়ে, মায়েরে একেলা রাখি কথন যেও না দূরে। ৩০।

সেহের মুকুল মম
ক্রমে বিকশিত হও,

থার করুণার দান,
তাঁর ভাবে মজে রও। ৩১।

বিশ্ব-মার হিতব্রতে সঁপিয়া দিওরে প্রাণ, ছঃথী ভাই ভগ্নীগণে সাস্থনা করিও দান। ৩২।

স্বরগ কোথায় বাছা, স্বরগ কোথায় রয়, তোমারি হৃদয় যেন সহস্র স্বরগ হয়। ৩৩

সত্য, ধর্ম্ম, ক্ষমা, নিষ্ঠা এ'দেরি দেবতা কয়, তোমার হৃদয়ে যেন দেবতা-আলয় হয়। ৩৪।

ত্মি—
পারিজাত-মধু-ভরা
স্বর্গের পুতৃল,
ক্রদয়ের ধন মম
স্বেহের মুকুল।
শ্রীঅম্বুজাস্থন্দরী দাস।

** বিশেষ এটবা—পাঁচন ও মৃটিবোগ ৭০ পৃষ্ঠা ২৭২৮ পংক্তি বিধাপরিমাণ হলে অর্থ আনা পরি-ুমাণ হইকে: এবার ছামাভাবে সমালোচনা প্রকাশিত হইল না।—বা, বো, স।

वागाताथिनी পত्रिका।

BAMABODHINI PATRIKA.

"कन्यायेवं पालनीया शिच्चणीयातियत्नतः।"

কন্তাকে পালন করিবেক ও যত্ত্বের সহিত শিক্ষা দিবেক।

৩৬৭

সংখ্যা।

শ্রাবণ ১৩০২—সাগষ্ট ১৮৯৫।

৫म कझ।

৪র্থ ভাগ।

সাময়িক প্রসঙ্গ।

মন্ত্রিসভাঁ পরিবর্ত্তন—প্রধান রাজমন্ত্রী লর্ড রোজবেরী মন্ত্রিত্ব পরিত্যাপ করাতে লর্ড সালিস্বরী প্রধান রাজমন্ত্রি পদে রত হইয়াছেন। উদারনৈতিক দলের পরিবর্ত্তেরক্ষণনীল দল কর্তৃত্ব লাভ করিলেন। লর্ড সালিসবরী তৃতীয় বার এই মহোচ্চ পদ লাভ করিলেন। নবগঠিত মন্ত্রিসভায় লর্ড ল্যাম্পডাউন সমরবিভাগের স্টেট সেক্রেটারী ও লর্জ জর্জ হামিন্টন ভারতের স্টেট সেক্রেটারী ও লর্জ জর্জ হামিন্টন ভারতের স্টেট সেক্রেটারী ইইয়াছেন।

মাইকেল-ম্মৃতি—কবিবর মাইকেল মধুস্দনের ২২ সাংবৎসরিক বন্দুসমাগম গত ২৯এ জুন তাঁহার সমাধিস্থলে সম্পন্ন হইয়াছে। আকাশের ছর্য্যোগ সত্ত্বেও কবির অনেকগুলি বন্ধু ও অফুরাগী একত্র হইয়া তাঁহার প্রতি বিশেষ শ্রদ্ধার নিদর্শন

প্রদর্শন করেন। এতত্পগক্ষে পঠিত কবিতা স্থানান্তরে প্রকাশিত হইল। বাবু নরেন্দ্রনাণ দেন এই কার্য্যের নেতৃত্ব ভার সম্পন্ন কবিয়াছেন।

চীন-রুসীয় সন্ধি—গোপনে সেণ্ট-পিটার্সবর্গে এই সন্ধির লেখাপড়া হইরাছে, ইহাতে ক্রমের ক্ষমতাবিস্তারের অনেক স্থবিধা হটবে। জাপান ও চীনের গাঢ়তর মিলন প্রার্থনীয়।

দানশীলত। (১) টাকীর জমীদার রায় যতীক্রমোহন চৌধুরী ৩০০০ টাকা বায়ে স্থানীয় ছাত্রনিবাস প্রস্তুত করিয়া দিয়া গ্রণ্মেণ্টের ধ্সুবাদার্হ ইইয়াছেন।

(২) রাজসাহী জেলার কাদি**ইপ্রের** জনীদার কুমার কেদারপ্রদর **লাহিড়ী** ''বিস্থাসাগর বৃত্তি'' নামে ৫১ **টাকা**র ১৩৭টী ছাত্রবৃত্তি দিবার মানস করিয়াছেন। ইহার মধ্যে ৫০টী বঙ্গদেশে, ২৫টী করিয়া ৭৫টী উত্তর-পশ্চিম, মাজ্রাজ ও বোষাইয়ে, এবং ১২টী আসাম ও ব্রন্ধে প্রদত্ত হইবে। অতি সাধু অফুষ্ঠান।

বল্টিক খাল—বিস্তর ব্যয়ে জর্মণ-সাম্রাজ্যের ভিতরে এই থাল থনিত হইয়াছে,ইহার ভিতর দিয়া বড় বড় জাহাজ চলিবে। জর্মণ-সম্রাট্ উইলিয়ম সমারোহে ইহা খুলিয়াছেন। ফরাসী, ক্লশ ও ব্রিটিব পোত সকল এই উপলক্ষে একত্র হইয়াছিল।

রাজ্ঞী-চরিত—ভারতেশ্বরী বিবী ফসেট-রচিত স্বকীয় জীবন-চরিতের এক-থণ্ড আনন্দের সহিত গ্রহণ করিয়াছেন।

জ্ঞী-বিদ্যালয়—স্বর্গীয় কেশবচন্দ্র সেনের স্থাপিত বিক্টোরিয়া কলেজ বিলুপ্ত ইয়াছিল, তাঁহার কয়েকটা ভক্তিমান্ শিষ্য ও সহচর ঐ নামে একটা নৃতন বিভালয় স্থাপন করিয়াছেন দেখিয়া আমরা পরম আহলাদিত হইলাম। ইইারা বিশ্বাসের উপর নির্ভর করিয়া অতি ব্যয়সাধ্য কার্য্যে প্রবৃত্ত হইয়াছেন। সিদ্ধিদাতা প্রমেশ্বর ইহাঁদের সহায় হউন।

৫ম ক-৪ৰ্থ ভাগ

অনাথাশ্রম—শ্রীযুক্ত বাবু প্রাণক্ষণ্ড দন্ত ও তাঁহার সহধ্মিনী করেক বৎসর বহু পরি-শ্রম,ক্রেশ ও ত্যাগ স্বীকার করিয়া অনেক-গুলি শনিরাশ্রয় পিতৃমাতৃহীন বালক বালিকাকে লালনপালন ও শিক্ষাদান করিয়া আসিতেছেন। বর্ত্তমান বর্ষে এই আশ্রমের আরের কতক উন্নতি দেখিয়া আমরা বিশেষ আনন্দ লাভ করিলাম। সহুদয় নরনারীগণ এই সাধু কার্য্যে অর্থদান করিয়া ইহার স্থায়িত্ব ও উন্নতির উপায় করুন্।

ডাকে স্থ্যিধা—পুলিন্দা ডাকে ২০ তোলায় । আনা মাস্থল লাগিত, তাহার স্থানে ৮০ আনা হইয়াছে। ৪০ তোলায় চারি আনা, তাহার পর প্রত্যেক ৪০ তোলায় ঐ হার।

নৃতন রেলপথ — বঙ্গ-নাগপুর রেল-ওয়ের কর্ত্তারা মেদিনীপুর হইতে হাবড়া পর্যান্ত এক শাখা রেলপথ প্রস্তুত করি-বেন। ষ্টেট সেক্রেটারী এ প্রস্তাব মঞ্জুর ক্রিয়াছেন।

বেঙ্কটে হরিবোলা।

()

ভারতের দান্দিণাত্য প্রদেশে ত্রিবা-ধ্বোড়ের নিকট বেঙ্কট নামে একটি নগর আছে, তাহা অনেকেই অবগত আছেন। শকাসার পঞ্চদশ শতাস্থীর কোন সময়ে

একটা চতুর্বিংশবর্ষীয় নবীন সন্ন্যাসী দিবা দিপ্রহরে তথায় উপস্থিত হন। সন্ন্যাসীর মস্তকে জটাভার, বর্ণ পুরট স্থানর, কটিতে কৌপীন বহির্বাস, মৃর্তি মনোহর, বদনে নিরস্কর 'হরেক্লফ' নাম।

শ্ৰী-অঙ্ক পুলকিড, লোচন অশ্ৰ-প্লাবিড. মুন্দপ্রনান্দোলিতা কনকণ্ডিকার স্তায় দেহবৃষ্টি সুকম্পিতা, উদ্যাত স্বেদবিন্দ-निष्ठात्र **मर्काक मिनिवृ**मिक ष्टम्भकवर. কঠম্বর গদাদ,কণে কণে উজ্জল কনককাস্তি मिन हरेटाइ, कथन जिनि नामानत्म উন্মত্ত इहेग्रा विश्वनভाবে ভূমি-বিলুষ্ঠিত হইতেছেন, কখন এমন স্তম্ভিত ভাব যে, এককালে বাহজানশৃত হইতেছেন, কথন বা মৃত দেহের স্থায় নয়নন্বয় অর্জনিমীলিত इहेट उट्ह. कथन काँछा तथाँछा ना मानिया উলঙ্গভাবে ধরাতলে আছাড়িয়া পড়িতে-ছেন, শত শত ডাকেও বাক্য-ক্ষ্,ৰ্ব্তি নাই! এইরূপ অদৃষ্টচর অশুতপূর্ব্ব আশ্চর্যাভাবে তিন দিন তিন রাত্রি অনাহারে অনিদ্রায় কাটিয়া গেল। ঐ সময়ে বেকট নগরে বেদাস্ত-দৰ্শনে পারদর্শী একটা অদিতীয় অবৈতবাদী পণ্ডিত ছিলেন। সাধু, মোহান্ত, পণ্ডিত, অধ্যাপক কেহ কোন স্থান হইতে বেঙ্কটে উপস্থিত হইলেই তিনি তাঁহাদের সহিত বিচার করিতেন এবং প্রায়ই সকলকে পরাজিত করিতেন। তাঁহার নাম রামানক দণ্ডী স্বামী। এইরপে অনেক ব্যক্তিকে শাস্ত্রবিচারে পরাঞ্জিত করাতে ক্রমশ: দণ্ডী স্বামীর প্রবল অহন্ধার জ্বিয়াছিল। ন্বাগত ন্বীন সন্ন্যাসীর আগমনবার্স্তা শ্রবণ করিয়াই তিনি তাঁহার নিকট গমন করিলেন, বিচার করিবার हेका कानारेलन। नवीन मन्नामी जारा শ্রবণ্মাত্র কহিলেন, ''আমি আপনার নিকট বিচারের পূর্বেই পরাজিত হইলাম।"

তচ্ছ বণে দণ্ডী সামী অধিকতর বিচারাঞ্জ बानाहरनन । তখন नज्ञानी করিলেন। সে হাস্যে যেন এই ভাব প্রকাশ পাইল, দর্শহারী ভগবান সকলেরই দর্শ চুর্ণ করিয়া থাকেন। অনস্তর দণ্ডী সামী অধৈতবাদ স্থাপনার্শক বিচারের অবতারণা कविद्यान । वालक मन्नामी महामावम्दन স্থা-মধুর ভাষায় ধীর ও গম্ভীর ভাবে অবৈতবাদের গুঢ়ার্থ ব্যাখ্যা স্বামীকে দ্বৈতবাদ বুঝাইতে লাগিলেন। অনেক ক্ষণ ঘোরতর বিচারের পর রামা-নন্দ দণ্ডী স্বামী সম্পূর্ণরূপে পরাজিত হইয়া সন্ন্যাসীর নিকট হরিনামে দীক্ষিত रहेरान । नवीन ७क, नवीन निरमात्र कर्प इदिनाम-ऋधा जानिया मिटनन । **सामीजी**त হৃদয়ে ভক্তিরসামূত সিন্ধু উছ্লিয়া পড়িক। তথন তিনি নব প্রভুর চরণে প্রণতিপূর্কক তদীয় আজ্ঞা লইয়া স্বীয় মঠে গমন করিলেন এবং আপনার যাবতীয় শিষ্যকে হরিনাম-বীজ প্রদান করিলেন। শিষাগণ আপ্নাদিগের চিরকালকার অবৈত্বাদী কঠোর সাধক ঘোর তার্কিক গুরুর 😘 ফদয় ভগবংপ্রেমে উচ্চুসিত **দেখিয়া** এককালে বিশ্বিত ও মোহিত হইলেন।

(>)

বেষট নগরের উপকণ্ঠে অনভিদ্র-বর্ত্তী বগুলা নামক একটা ভয়কর অরণ্য ছিল। মহুয়াদির অনধিগম্য বন অলল স্বভাবত:ই বস্ত ও হিংল্ল জন্তগণে ভয়কর হইয়া থাকে। অধিকস্ত সেই বনে পাছ্তীল নামক একটা ভয়ানক দহ্যা সদলবলে অবস্থান করাতে বনবিভাগ ভীষণ হইতেও
ভীষণতর হইমাছিল। বনের মধ্যে মধ্যে
বক্স তকলভার সমাচ্ছম ও স্থ্যালোকপরিশৃষ্ট সঙ্কীর্ণ সড়ক সকল থাকিলেও
আরণ্য জন্ত ও দহার ভয়ে প্রায় কেইই
সে পথে যাতায়াত করিও না। নিভাপ্ত
প্রয়েজন উপস্থিত হইলে অবশ্যই পথিকগণকে বনমধ্যে প্রবেশ করিতে, এবং হয়
হিংস্র জন্তগণ-মুথে, নয় পাস্থভীলের হাতে
প্রাণ হারাইতে হইত। এজন্য কেহ
ইচ্ছা করিয়া বা নিস্প্রয়োজনে দিবা
বিপ্রহরেও সে দিকে গমন করিত না।

আমরা পুর্বে যে কনক-কান্তি-কলেবর কমনীয় নবীন সন্ন্যাসীর উল্লেখ করিয়াছি, তিনি তিন দিন বেঙ্কটে অব-স্থানপূর্ব্বক অকপটে ঘরে ঘরে হরিনাম বিতরণ করিলেন। ত্রত্য নরনারী. वानकवानिका, युवावृक्ष नकत्वरे नामानत्न মাতিয়া উঠিল। তদ্বাতীত নগরের উপ-কণ্ঠ হইতে প্রতিদিন অসংখ্য আসিয়া হরিনাম লইতে লাগিল। সন্মাসী 'নিজে উন্মন্ত ভাবে উদস্ত নৃত্য ও কীর্ত্তন করিয়া তাহাদিগকেও নাচাইয়াছিলেন। ভদ্ধ নাম নহে. সকলকে ভক্তিতত্ত্বেরও উপদেশ দিতে লাগিলেন। চিরকালকার বিখ্যাত মৃঢ়গণও :বালক সন্ন্যাসীর চরণে শুষ্ঠিত হইতে লাগিল। ক্বতপাপ, গুরাচার, পতিত, পাষও, নিন্দুক আদি নীচ জন गगदक दमिश्वाभाव महाभी जाशांकिंगदक আহিঙ্গন করিতে এবং দীন ভাবে নাম निष्ठ लाशिलन । वालक क्षामीत शविज

শ্রীবদন-বিনির্গত হরিনাম তাহাদিচার হদমে তাড়িতপ্রবাহের কার্য্য করিতে লাগিল। তাহারাও উন্মন্তবং তাঁহার চতুপ্পার্শ্বে নৃত্য ও কীর্ত্তন করিতে লাগিল।

একদা অপরাহে দেখা গেল, ঐ সন্মাসী পূর্ব্বোক্ত ভীষণ অরণ্যাভিমুখে গমন করিতেছেন। বহুসংখ্যক লোক তাঁহাকে ঐ বনমধ্যে প্রবেশ করিতে নিষেধ করিতেছে। তাহারা সাম্বরে কহিতেছে, "আপনি ঐ বনে যাইবেন না, পান্থভীল হরাচার জ্ঞানহীন. আপনাকে পাইলে বধ করিবে।" সন্ন্যাদী কাহারও কথা না শুনিয়া বগুলার ভীষণ বনে প্রবেশ করিলেন। সঙ্গে একটা মাত্র শিষ্য রহিল।

(0)

त्य पिन वालक मद्यामी काशांत्र नित्यध्य ना मानिया वर्श्वलात जीवन जात्र प्राट्य प्रदास कितिया वर्श्वलात जीवन जात्र प्राट्य प्रवास कितियान, जाशांत जाति शीं किन शर्त्र प्रका मधांक्रकार प्रकार प्राट्य कि किति प्रयाम कितिया कितिया

পাছভীল সেই আনন্দমঠের অধীশর এবং সহচর দম্মাগণ সেই মঠেশবের শিব্য হইয়া-ছেন। দম্যবৃত্তিপরায়ণ পাস্থভীলকে ও তাহার অমুচরগণকে পূর্বে অনেকেই বিবিধ কুকর্ম করিতে দেখিয়া বা শুনিয়া-हिल्न। এथन प्रिय्तन, मिरे शास्त्रीन ডোরকোপীনধারী সর্বত্যাগী সদাচার পুত সন্মাসী; হরি বলিতে নয়নজলে বক্ষ:ত্তল ভাসিতেছে এবং কদম্বুস্থমবং স্কাঙ্গ কণ্টকিত হইতেছে। অফুচরগণেরও সেই দশা। তাঁহারাও হরিনাম স্ক্রীর্তনের বলিতেছেন,—"মহাপ্রভূ मर्था भर्था আঁক্ত চৈত্ত কি জায় ৷ মহারাজ পাছ-ভীল কি জায় !" অন্নবৰ্ত্তী নগৰবাদিগণ বিশ্বিত হইলেন।

বালক সন্ন্যাসী বগুলার বনে প্রবেশ করিয়াই পাস্থভালের সাক্ষাৎ পাইলেন। প্রেমোনত ধরিবোলা সন্ন্যাসি দর্শনে পান্থের मत्न कि ভাবের উদয় হইল, তাহা জান। যায় না; কিন্তু দে পরম যতে সল্লাসীর আতিথা করিল। সন্ন্যাসী ভাহার আতিথ্যে পরিতুই হইয়া কহিলেন,— "--পান্থ তুমি সাধু মহাশয়। তোমারে দেখিয়ে সব পাপ হইল ক্ষয়॥ গৃহত্বের ক্রায় তুমি নহ গৃহবাসী। ভূমিত পরম সাধু বিরক্ত সন্ন্যাসী॥ विषय्त्र कीं नह शहरख्त छात्र। ষাতে তাতে তুষ্ট দেখি তোমার হৃদয়॥ পুত্র নাই কন্সা নাই নাহি তব জায়া। বিষয়েতে মন্ত নহ নাহি কোন মায়া॥ ধন্ত পান্থরাজ তুমি সাধুশিরোমণি।

ভোমারে দেখিয়া স্থী হইল পরাণী॥ कृष कृषा कान कति विवय विख्य। এখনি ত্যজিতে পার যত আছে সব॥ রমণীর সঙ্গে তুমি নাহি কর বাস। তাই আইলাম হেথা মিটাইতে আশ। नियाशरा थाक जूभि मनाई त्विष्ठित। তোমাকে দেখিলে হয় চিত্ত পুৰকিত।। মায়া মোহে বদ্ধ তুমি নহ মহাশয়। তুমিই সাধুর শ্রেষ্ঠ এই মনে লয়॥" **जीव नौतर्ति मह्यामिताका अंतर् कतिहा** তৎক্ষণাৎ ভূমিষ্ঠ হইয়া প্রণাম করিলেন। যে রূপ দেখিলে মন্ত্র্যা দুরে থাকুক, বনের পশু পক্ষীও মুগ্ধ হয়, সেই রূপ হইতে স্থাস্কপ হরিনাম শুনিয়া পাছের ছদ্যে ভক্তিপারাবার উথলিয়া উঠিল। তিনি সন্নাদীর চরণে লুটাইয়া পড়িলেন। তথন সন্ন্যাসী ঠাকুর পাছকে ক্রোড়ে শইরা श्विनाम भिर्वन। সেই দিন দস্কাদলপতি পাস্থভীল সব্ধপ্রকার পাপাচার পরিত্যাগপূর্বক ডোর কৌপীন করিলেন এবং ক্রমশঃ ভক্তিতত্তে প্রবীণ হইয়া সাধুর অগ্রগণ্য হইলেন। অস্তান্ত मरुठत मञ्चागपं आध्यामिर्गत्र ३८न्छ। পাস্থভীলের পন্থা আশ্রয় করিল। তাহার। হরিনামে উন্মন্ত হইয়া সাধুর অহুমোদিত সদাচার ও আতিথ্যাদি জিয়ার অনুষ্ঠান षाता. (महें .वंशा कृभित्क आनन-कानन করিয়া তুলিল।

যথন পাছতীল, ছরিবোলা **অতিথির** চরণে বিলুঞ্জিত হইতেছিলেন, **উথন** পাস্থের ছুই একটা অঞ্চর **সন্ন্যা**নী

শিষ্যের নিকট বসিয়া কথোপকথন করিতেছিলেন। তাঁহাদের কথোপকথনের किन्नमः । धेरे ऋता उक्ष পারিলেই এ প্রবন্ধের উপসংহার হয়। একজন অমুচর জিজাসা করিলেন,—

'ভাপনার এবং আপনার গুরুদেবের নাম কি ?" সন্ন্যাসীর সঙ্গী কহিলেন,—

''আমার গুরুদেবের নাম মহাপ্রভু শ্রীক্লম্ভ চৈতন্য এবং আমার নাম গোবিন্দ-मांग।"

অমুচর কহিলেন,—

"আপনাদের নিবাস কোথায় ?" গোবিন্দ কহিলেন,---

"আমার প্রভুর পূর্ব্ব নিবাস শ্রীধাম নবদ্বীপে ছিল, এখন সর্বাত্ত। আমারও তথৈবচ।"

অফুচর,—"এখন সর্ব্বত্র, এ কথার অর্থ কি ?"

"এখন আমার ঠাকুর সোণার সংসার ত্যাগ করিয়া সন্ন্যাসী হইয়াছেন। এক पिन,—श्रे पिन,—वष् **(कात जिन पित्न** অধিক কোথাও থাকেন না। আমিও কনককামিনী ত্যাগ করিয়া প্রভুর সঙ্গে मत्म फितिरा हि।" এই कथा विनार বলিতে গোবিন্দের চক্ষে জল আসিল। তদর্শনে অমুচরগণ কহিল,

"আপনি কাঁদেন কেন? ঠাকুর শশ্যাসী কইয়াছেন বলিয়া ? না আপনার ক্নক্কামিনীর শোকে ?" গোবিন্দ ध क्थात कान डेंडे कतिरान ना:

মৌনাবলম্বন অবনতবদনে রহিলেন। পাছভীলের অমুচরগণ-সমীপে পূর্ব্ব বিবরণ বিরত করিবার সময় শশিমুখীর অশ্র-স্পৃতি শশিবদন গোবিন্দের মনে পড়াও বিচিত্র নছে। কেন না গোবিন সামান্ত কারণে ক্রোধান্ধ হইয়া গৃহত্যাগ করিলে, তাঁহাকে পুনরায় গৃহে লইয়া যাইবার জ্বন্ত তাঁহার রমণী শশিমুখী অনেক কাঁদিয়াছিলেন, আমরা 'গোবিন্দের গৃহত্যাগ'নামক প্রবন্ধে, তাহা বর্ণন করিব। এই গোবিন্দ দাস. চৈতগ্যদেবের

সন্মাসগ্রহণের কিছু কাল পূর্ব্ব হইতে তাঁহার আশ্রয় লয়েন :এবং চৈতভাদেবের অপ্রকটকাল পর্যান্ত বরাবর তাঁহার সঙ্গে সঙ্গে ছিলেন। তিনি যেথানে যেরূপে হরিনাম প্রচার করিতেন. তাহা নিতা নিতা গোবিন্দ লিথিয়া রাখিতেন। ঐক্লপ লিপিকে ডায়েরি. मिन-लिशि, वा कत्र**ठा कट्ट।** গোবিন্দের ध निभि, कत्रा वनियारे বিখ্যাত হইয়াছে। সম্প্রতি উহা ''গোবিন্দদাসের করচা" এই নামীয় একথানি গ্রন্থরূপে প্রকাশিত হইয়াছে। শান্তিপুর মিউনি-দিপাল স্থলের পণ্ডিত শ্রীযুক্ত রামগোপাল গোস্বামী মহাশ্য উহার প্রকাশক। চৈতক্সদেবের হরিনামপ্রচার বিষয়ে ক্রেক্টা খটনা আমরা আখ্যায়িকার আকারে বামাবোধিনীতে প্রকাশ করিব। যে সকল গ্ৰন্থ হইতে ঐ সকল আখ্যা-রিকার ঘটনা সঙ্কলিত হইবে, তাহার অন্ত-তমরূপে এই ক্রচাথানিও গহীত হইল।

বিগত শতবর্ষে ভারত-রমণীদিগের অবস্থা।

(७५५ मःशा, २) शृक्षांत भत्र)

আমাদের সহজ বৃদ্ধিতে অমুভূত হয়, এদেশীর মহিলাদিগের উন্নতির প্রথম অন্তরায় পুরুষদিগের মত-বিসংবাদিতা। থাহারা ভারতের অভ্যন্তরীণ **সংবাদ** জানেন, তাঁহারা অবগত আছেন যে, স্ত্রী-জাতির হিতৈষিগণের মধ্যে (কতকগুলি বিজ্ঞ দুরদর্শী মহাত্মা ব্যতীত) এদেশে উদারনৈতিক ও রক্ষণশীল, হুই সম্প্রদায় অছেন। ·* স্ত্রীকাতির শিক্ষা, কার্য্য, আচার, ব্যবহার, কিছুই পুরাতন জিনিষ হইতে সংগ্রঁহ করিতে হইবে না, বিলাভ হইতে সংগৃহীত বা নৃতন আবিষ্কৃত উপ-করণে নারীজীবন গঠন করিতে হইবে. ইহাই উদার-নৈতিক দলের মত। আর দেশের যে সকল পুরাতন জিনিষ আছে. কোনও বিষয়ে এক চুল তফাৎ হইবে না,—শতাকী পূর্বের রমণীগণ যে অবস্থায় ছिলেন, শতाकी পরেও তাঁহাদিগের সেই অবস্থায় থাকা উচিত :-ইহাই রক্ষণশীল

* "বাঙ্গালী রমন্দিদেরে বর্ত্তমান অবহাঁ"
শীর্ষক প্রবন্ধে এই ছুই সম্প্রদারের বিবর বর্ত্তমান
লেখিকা কর্ত্তক বিস্তৃতভাবে আলোচিত হইরাছে।
উক্ত প্রবন্ধ ১২৯৮ সালের জ্যেষ্ঠ মাস হইতে উক্ত
সালের পৌব মাস পর্ব্যক্ত বামাবোধিনী প্রক্রিকার
প্রকাশিত।

দলের মত। এইরূপ তর্কের ফলে, অনেক সত্য উজ্জ্বলতর ভাব ধারণ করিয়া থাকে বটে, কিন্তু ইহাতে সাধারণ মানবের এই এক বিশেষ অবনতি হয় যে,সভ্যাত্মসন্ধান, সতারকা, জীবনের ত্রত না হইয়া আছা-পক্ষ সমর্থন করাই জীবনের ব্রভ হইয়া উঠে। এ দেশেও ভাহাই रुटेशांटक । গিয়া এই ছই স্ত্রী-হিতৈষণা করিতে সম্প্রদায় প্রতিপক্ষকে কুযুক্তি, বিজ্ঞাপ,গালি প্রয়োগেও আত্মপক্ষ সমর্থন করিতে প্রবৃত্ত হন। এইরূপ মত-বিসংবাদিতা **স্ত্রীকাতি**র উন্নতির পথে এই বিষম বাধা জন্মাইতে চে যে. যেখানে উদারনৈতিক দলের কর্তম. সেথানে রুমণীগণ অনেকেই জাতীয় ভাব হারাইয়া বসিতেছেন। আবার, যেখানে त्रक्रंग्गीन परनत कर्ज्य, रम्थारन त्रम्यात्र উন্নতিলাভ তুরুহ ব্যাপার হইয়া উঠিয়াছে। তাই বলিতেছি, যতদিন এই ছই সম্প্রদায় অভিমান, মতবাদ পরিত্যাগ করিয়া সত্য-রক্ষায় ও নারীহিতৈষণায় সম্পূর্ণরূপে ব্রতী না হইবেন, ততদিন এদেশীয় নারীগণের পূর্ণোন্নতির আশা হুরাশামাত্র।

উদারনৈতিক সম্প্রদায় জানিতেছেন, যাহা মানবের স্বাভাবিক শক্তি, অমুশীলন ঘারা তাহার বিকাস-সাধনকেই উন্নতি বলা যার। দেশ, কাল ও পাত্রবিভেদে মানবের•

স্বাভাবিক শক্তির পরিবর্তন দৃষ্ট হয়.। একজন পোরা দিপাহী-বালকের রুচি স্বভাবতঃ যে পথে ঘাইবে, একজন নিরীহ বাঙ্গালি-বালকের কচি স্বভাবতঃ সে পথে **যাইবে না।** যাহা হউক, স্ত্রীজাতির উন্নতির অর্থ তাঁহাদের স্বভাবের বিকার নহে. স্বভাবের বিকাস। এদেশে নারী-চরিত্রে যে সকল সদ্তাণ ছিল, তাহা ক্রমশঃ পরি-क्रुं के कितिल, आंत य मकल मन्खालंत অভাব ছিল, (নারীজাতির উপযোগী) সেই সকল সদগুণ সংগ্রহ করিয়া দিতে পারিলে, নারীজীবন প্রকৃত উন্নত হইতে পারে। নচেৎ এ গ্রীম্মপ্রধান দেশে গাউন পরিলে, "বুটু" পায়ে দিলে,অথবা অজানিত-চরিত্র পুরুষদিগের সহিত আলাপ সম্ভাষণ করিলে নারীজীবনের বাস্তবিক উন্নতির সম্ভাবনা নাই। সকল রকম উন্নতির विषराष्ट्रे व कथा প্रযোজ্য।

রক্ষণশীল সম্প্রদায়ও জানিতেছেন যে, উন্নতিই বিশ্বজগতের জীবন। এ জগতের যাহার উন্নতি নাই সে মৃত—সে জীবস্ত জড়। কিন্তু উন্নতির পথ গুধু . স্থিতিশীল নহে; তাহার পরিবর্ত্তনও আবশ্রক। তাল জিনিস যাহা, তাহা থাকিবে; মন্দ জিনিস যাহা, তাহা ত্যাগ করিতে হইবে; তাহার বদলে বিদেশে যদি ভাল জিনিস মিলে, ভাহাও গ্রহণ করিতে হইবে। এখনকার কোনও রমণী যদি চিঠি পড়াইবার জন্ত লোক খুঁজিয়া বেড়ান, সেটা কি বড় স্থপের বিষয় হয় !—তাই বলিতেছি, উভয় পক্ষ স্বিশেষ চিন্তা করিয়া মতের সামঞ্জন্ত করিলে এ অস্তরায় ছই দিনেই দুর হইতে পারে। মতামতের বাদামবাদ ছই চারি দিনের জন্ম, কিন্তু সত্যের জন্ম যে কাজ তাহা অনস্ত কালের জন্ম।

রমণীদিগের উন্নতির দ্বিতীয় অস্তরায়, পল্লিগ্রাম-বাসিনীদিগের স্থাশিকাহীনতা। বোধ হয় আমাদের পাঠকদিগের মধ্যে অনেকেই অবগত আছেন যে(বঙ্গদেশে) পলিগ্রামে দেশের প্রায় বার আনা লোক করে। স্থতরাং সহর অপেক্ষা পল্লিগ্রামে স্ত্রীলোক দিগের সংখ্যা\ও অনেক বেশি। এই সকল বমণীব স্থানিকার জন্ম গবর্ণমেন্ট ও স্বদেশহিতৈষী ব্যক্তিগণ যে বালিকাবিভালয় স্থাপন করিয়া-ছেন, এ কথা আমরা আগেই বলিয়াছি। এই দকল বিভালয়ে পল্লিগ্রামের (উচ্চ-শ্রেণীস্থা) বালিকাগণ.উর্দ্ধ সংখ্যা ১২।১৩ বৎ-সর বয়স পর্যাস্ত লেখা পড়া করিয়া ইহাদিগের মধ্যে অল্পসংখ্যক বালিক নিম শ্রেণীর ছাত্রবৃত্তি পরীক্ষা দিতে পারেন। উচ্চ শ্রেণীর ছাত্রবৃত্তি পরীক্ষা কচিৎ ছই একজন বালিকা দিতে পারেন মাত্র। অধিকাংশ বালিকাই বোধোদয়, ধারাপাত ও শিশুবোধ ব্যাকরণ পড়িতে পড়িতে বিছ্যালয় পরিত্যাগ করেন। বিদ্যা-ল্য় পরিত্যাগের সহিত অনেকে লেখা পড়ার চচ্চাও পরিত্যাগ করিয়া থাকেন, তবে বে সম্পূর্ণরূপে . অক্ষর-জ্ঞান লুপ্ত হয় না, দে প্রধানতঃ স্থপ্রসিদ্ধ বৃদ্ধিম বাবু ও অন্তান্ত কয় জন স্থলেখকের লিখিত উপন্তাস এবং

ल्यात्रहे कना । একে পश्चिश्रास्त्र विमा-লয়ে ইংরাজি বা সংস্কৃত কোনও ভাষা শিক্ষা বা শিল্প গৃহকর্মাদি শিক্ষা দেওয়া হয় না, তাহাতে বঙ্গভাষায়ও এতটুকু লেখা পড়া শিথিয়া, লেখা পড়া শিথিবার কোনও ফল পাওয়া যায় না। স্থতরাং প্রাচীনা মহিলাগণের অনেকের যে সকল অসদ্গুণ हिन, महे कनहिं अड़ा, भवनिना श्रियंडा. নেই অসংযতচিত্ততা, সেই কুসংস্কার প্রভৃতি ধারাবাহিকরপে নবীনাগণের বিরাজ করিতেছে। আজিও বাদর-জাগা. জামাই-তামাসা প্রভৃতি উপলক্ষে কত পলিগ্রামের নারী কুরুচির পরিচয় দিয়া থাকেন; রোজা প্রভৃতি কত পল্লিগ্রাম বাসিনীদিগের নিকটে প্রভন্ন খাটাইয়া থাকে: পরিচ্ছদাদির উন্নতিও অনেক পল্লিগ্রামে কিছুই দেখা যায় না; এতদ্ভিন্ন পলিগ্রামে শিক্ষয়িতা, স্থাশিকত ধাতী বা মেয়ে ডাক্তার, কিছুই পাওয়া যায় না। ইহাতে পল্লিগ্রামবাসিনীদিগের যে কত-দুর অস্থবিধা হয়, তাহা চিন্তাশীল বিজ্ঞ ব্যক্তিগণ বুঝিতে পারেন। আমরা পুর্নের বলিয়াছি, পল্লিগ্রামে বাঙ্গালার প্রায় বার আনা লোক বাস করেন। এই বার আনা লোকের মাতা, স্ত্রী, ভগিনী, কন্সা প্রভৃতি এতদুর হীনাবস্থায় থাকে. তবে ভারতরমণীদিগের জাতীয় উন্নতি এখনও ষে কত দূরে পড়িয়া রহিয়াছে, তাহা मिंहे नर्वतभी जगवान्हें काटनन। দিন পলিগ্রামবাদিনীদিগের উন্নতি না হইবে, ততদিন এ দেশীয় রমণীগণের

সর্বাদীণ উন্নতির কথা, কথার কর্মা মাত্র।

এই ছরবন্ধা দূর করিতে হইলে আর্থেপ পিন্নপ্রামের বিদ্যালয় গুলির সংশ্বার করা আবশ্যক। পন্নিপ্রামের বালিকাগণ, বিদ্যালরে যাহাতে স্থনীতি, সভ্যতা, গৃহকর্ম, শিল্প, সঙ্গীত, জ্ঞান ও ধর্ম শিক্ষা করিতে পারে, তজ্জনা এক জন উপযুক্ত শিক্ষয়িত্রীর প্রয়োজন। এইরূপ শিক্ষয়িত্রী বিদ্যালয় হইলে বালিকাগণ অনেকেই অপেক্ষাকৃত অধিক বয়স পর্যান্ত বিদ্যালয়ে প্রকৃত স্থশিক্ষা লাভ করিতে পারেন। গবর্ণমেন্ট যদি অনুগ্রহ করিয়া পন্নিগ্রামের মহকুমার বা থানায় এক একজন জ্রী-ডাক্তার ও স্থশিক্ষিতা ধাত্রী নিয়োজিত করেন, তাহা হইলে অভাগিনী পন্নিগ্রামবাদিনীগণ মহোপক্ষতা হইতে পারেন।

উনিতে পাই, এ দেশের অনেক ক্তবিভ মহিলা কাজ খুঁজিয়া পান না।
অভাগিনী পল্লিগ্রামবাদিনীদিগের প্রতি
যদি ইহাঁরা একটু অন্তাহ করেন, তাহা
হইলে বােদ হয় অবকাশই পান না!
কুমারী কুক্, কুমারী কার্পেন্টার প্রভৃতি
বিদেশবাদিনী হইয়াও হঃখিনী ভারতমহিলাদিগের মঙ্গলের জন্ত আন্মোৎসর্দ
করিয়াছেন; ভগবতী দেবী, রাণী রাসমিদ
প্রভৃতি উচ্চতর শিক্ষা না পাইলেও
ক্ষাতীয়াদিগের মঙ্গলের জন্ত কত তাাগ
ক্ষীকার করিয়াছেন, একালে উচ্চশিক্ষ্তা

* এইরূপ শিক্ষরিত্রী দারা *অন্তঃপুর-***রী শিক্ষাও** IIধিত ছইতে পারে। বঙ্গবাসিনীদিগের জাতীয় গৌরবস্বরূপা, কৃতবিশ্ত-বঙ্গমহিলারা কি তাঁহাদের অভাগিনী ভগিনীগণের হঃথ ঘুচাইতে মধাসাধ্য চেষ্টা করিবেন না ?

আবার, পল্লিগ্রামের উচ্চবংশীয়া রমণীদিগের অবস্থা অনেক অংশে হীন। বিগত
শতাব্দীর প্রবর্ত্তনসময়ে বঙ্গবাসিনীদিগের
বে রকম অবস্থা ছিল, আজি শতাব্দীশেষে
নিম শ্রেণীর রমণীগণের অবস্থার সহিত
তাহার অনেক সাদৃশু দেখা যায়। নিরক্ষরতা,
অজ্ঞানতা, কুসংস্কার প্রভৃতি এবং শিশুবিবাহ, বছবিবাহ, কন্থাপণ প্রভৃতি ইহাঁদিগের স্ত্রীপুরুষদিগকে দলিত করিতেছে।
ইহাঁদিগের প্রকৃত উন্নতি কতকালে হইবে,
ভগবানই জানেন।

রমণীগণের উন্নতির তৃতীয় অন্তরায় ভক্তি-ভাব-হাস। থাঁহারা সে কাল ও এ কালের নারী-চরিত্র বিশেষ লক্ষ্য করিয়া-ছেন. তাঁহারা অনেকেই এ শোচনীয় ঘটনা জানিতে পারিয়াছেন, সন্দেহ নাই। দেশের পুরুষগণের ভক্তিভাবের হ্রাস হওয়াতে যে বিষম ক্ষতি হইতেছে, ভক্তি-ভাজন বন্ধিম বাবু সে কথা তাঁহার ধর্মতত্ত গ্রন্থে সবিস্তারে ব্যাখ্যা করিয়াছেন। পুরুষ-জাতির অপেকা স্ত্রীজাতির ভক্তিভাব-অধিকতর অনর্থকর হাস আমরা বিবেচনা করি। বলিতে কি, আজি কালি স্ত্রীপ্রকৃতি যে অনেকটা রুক পড়িতেছে, **জী**চরিত্রের স্বাভাবিক কোমলতা কমিয়া যাইতেছে, সে এই জব্ধি-ভাব-ছাসের কন্স।

শতাব্দী পূর্ব্বে এ দেশের নারীগণের ভক্তিভাব কিরূপ প্রবল ছিল, পাঠকপাঠিকাগ্রন আমাদের আছেন। ধর্মের প্রতি ভক্তিমতী হইয়া. ভক্তির উচ্ছাসে তাঁহারা কত হরুহ কাজও সাধন করিয়া গিয়াছেন। তাঁহাদের মত এখনও যে কোন মহিলা কুসংস্কার-পরায়ণা रहेशा मान, विज्ञान नर्गाष्ठ जीव जन्दरक শতকোটী প্রণাম করিবেন, ইহা ক্থনই প্রার্থনীয় নহে। তবে যে ভগবন্তক্তির প্রবলতায় রমণী কোলের সম্ভান সমুদ্রে টানিয়া ফেলিতেন, ভগবন্ধক্তির যে প্রবলতার কুলবালা অবরোধবাসিনী বন্ধ-মহিলা, শত কোশ দূরে, দেবম্যাদিরে পদ ব্রজে যাইতে পারিতেন, আজি ভগবন্তব্রির উৎস শুষ্ক হইরী গিয়াছে। ভগবানের চরণে এখন সে আত্মসমর্পণ. সর্বাসমর্পণ, কোথায় দেখিতে পাওয়া যায় পাজি সে ধর্মপ্রাণতা কোথায় গেল নারীজাতির ভক্তির হ্রাস যে কতদুর অবনতিকর, তাহা লিখিয়া প্রকাশ করা হঃসাধ্য। ভারতের বর্ত্তমান ধর্মাচার্য্যগণ সত্যধর্ম্মের প্রচারে যতই যত্নবান হউন, তাহা গ্রহণ করিবার মত হালয় না থাকিলে :কথনও কুতকার্য্য হইবার আশা থাকিবে না। ভারতমহিলাদিগের ভক্তিবৃত্তিবিকাশের বছ উপায় ছিল, এখন তাহা গিয়াছে: সেই জন্মই দেশের এমন হুর্গতি হইয়াছে। যাহা হউক, এ দেশের ধার্ম্মিক মহান্মারা, আচার অমুষ্ঠানের সহিত যদি এ দেশের

সাধারণ মহিলাদিগের মধ্যে সত্যধর্ম প্রচার করেন, যদি প্রত্যেক শিক্ষিত ব্যক্তি নিজ্প পরিজ্ঞনদিগের প্রাণে গভীর ধর্মভাব জাগাইয়া দিতে পারেন, তাহা হইলে প্রকৃত ভগবদ্ধক্তি লাভ করিয়া কত মহিলার জীবন ধন্ত হইতে পারে ! নারী হৃদয়ের প্রকৃত উন্নতি সাধিত হইতে পারে ।

क्वित क्रेश्न जिल्लाहरू जिल्लाहरू থাণি-ভক্তি প্রভৃতি দারা ভব্তিভাবের সম্পূর্ণ বিকাস না হইলে এ দেশের মহিলা-গণের প্রকৃত উন্নতি হইবে না। ভক্তির বাড়াবাড়ি আমরা "শ্রেষ্ঠতম" বলি না: ভক্তিভাজনের পাদোদক খাইলে অথবা ভক্তিভাজনের সন্মুথে মুক সাজিয়া থাকিলে আমরা ভক্তির পরাকালা মনে করি না: তবে সে সঁকল কাজে যাঁহার পরিতৃপ্তি জন্মে, তিনি করিতে পারেন। হিন্দু শাস্ত্রে লিখিত আছে—"পূজ্যেষমুরাগো ভক্তি:" অর্থাৎ পূজনীয়ের প্রতি যে অম্বরাগ তাহাই ভক্তি। পূজনীয় ব্যক্তিগণের প্রতি অমু রাগ জন্মিলে মানব-হৃদয় সহজেই বিনীত হয়। পারিবারিক গুরুজন মাতা পিতা, জ্যেষ্ঠ ভ্রাতা ভগিনী, খণ্ডর খাণ্ডটী, ভাণ্ডর প্রভৃতিকে ভক্তি করিবে, তাঁহাদের আদেশ মান্ত করিবে: তাঁহাদের সেবা 🤊 শ্রুষা করিবে, সকলের উপরে তাঁহাদিগের শ্রেষ্ঠত্ব সর্বাদা স্মরণ রাখিবে। বিস্থাবতী ক্রার মাতা মুর্থ হইলেও তিনি কোনও মতে व्यवस्थानीया नरहन: खानाः । कृषि থাকিলেও মাতৃত্বে তাঁহার সম্পূর্ণতা। সন্তান যতই মহৎ হউন না কেন, মাতার

জন্ত তাঁহার দেহ ও জীবন। এই রূপ কথা—প্রত্যেক গুরুজনের বিষয়ে এই রূপ কথা মনে করিলে ভক্তি-রৃত্তি আপনা আপনিই অমুণীলিত হইবে, তাঁহাদের সহস্র ক্রটি দেখিলেও মনে অভক্তির ভাব আসিবে না।

পারিবারিক ভক্তিভাজন ব্যক্তিগণ ব্যক্তীত ধার্ম্মিক, সাধু, উপকারী, সমাজ-শিক্ষক, স্বদেশভক্ত, বিশ্বহিতৈধী মহাত্মা মাত্রেই ভক্তিভাজন। ভক্তির পাত্রকে ভক্তি করিতে পারাই ভক্তির উন্নতি; অভ্যথা অবনতির পরিচায়ক।

এইথানে স্বামি-ভক্তির কথা হুই এক ছত্র লেখা আবেশুক, কারণ সাময়িক বিপ্লবে এ দেশ হইতে তাহা প্রায় চলিয়া গিয়াছে। সেকালে ভার্যাগণ ভক্তির উচ্ছাসে স্বামীর চরণামুত পান করিয়াই কতার্থা হইতেন; একালে স্বামী "বন্ধ" বলিয়া ভার্য্যা তাঁহাকে ভব্জিভালন মনে করিতে লক্ষিতাহন। আমাদের বোধ হয় সাধারণ মহিলাদিগের পতিপ্রেম তখন যেমন অসম্পূর্ণ ছিল, এখনও সেইরূপ অসম্পূর্ণ: কারণ ভক্তি ও প্রীতির সম-বায়েই পতিপ্রেমের পূর্ণতা। রমণীর গুরু-জনও স্বামী, বন্ধুও স্বামী; তাই স্বামীতে ভার্যার ভক্তিও চাই, প্রীতিও চাই, ভক্তি প্রীতি একত্রে না মিলিলে পতিপ্রাণতা कत्म ना। शभीक डिक्ड कत्रित, প্রীতিও করিবে।

এইরূপে, প্রত্যেক ভক্তির **পাত্রকে** ভক্তি করিতে পারিলেই মুমণী-**ফাদ্য বিনীত** দিশ্ধ ও শ্রকুমার হইতে পারে। কর্কশতা বা উদ্ধত স্বভাব নারীজাতির পক্ষে বড়ই স্বস্বাভাবিক। ভক্তি-ভাবের সম্প্রসারণেই তাহা দূর হইতে পারে। ইউরোপীয় "সাম্য" ভাবের আন্দোলনে এ দেশে অনেকের

মন্তিক কিছু বিক্লত হইরাছে, সেই জ্বন্তও ভক্তির বিষয়ে এ কর্মটী কথা লিখিতে বাধ্য হইলাম, আমার স্বদেশীয়া ভগিনি ! ভূমি আমাকে ক্ষমা করিও।

(ক্রমশঃ)

পাঁচন ও মুফিফোগ।

(৩৬৬ সংখ্যা—৭১ পৃষ্ঠার পর)

ठक्द्रांग।

- । করবী পাতার রস চক্ষুতে ফুট দিলে।
 চকু উঠা নিবারিত হয়।
- ২। অর্দ্ধ ছটাক গোলাপ জলে ২।৩ রতি কট্কিরি দ্রব করিয়া তন্দারা বার বার চক্ষ্ প্রকালন করিলে চক্ষ্ উঠা আরোগা হইয়া যায়।
- ৩। সজিনা পাতার রস তাত্রপাত্রে মর্দ্দন করিয়া, তাহাতে অল্ল ত্বত মিশাইয়া চক্ষে লেপ দিলে, চক্ষুর শোথ, কণ্ডু, বেদনা ও জলপ্রাব নিবারিত হয়।
- ৪। টাটকা গোম্ত্রে নারিকেলফুল বাটিয়া চক্ষর চারি দিকে প্রলেপ দিলে চক্ষ্ উঠা ভাল হয়।
- ৫। তিন চারি দিন সন্ধ্যাকালে ২।৩ কোঁটা পানের রস চক্ষের মধ্যে ঢালিয়া দিয়া, কুছুক্ষণ পরে শীতল জলে চক্ষ্ ধৌত করিলে, রাতকাণা দোষ আরোগ্য
 - ৬। স্থমিষ্ট ডালিমের রদ শিশিতে

- পূরিয়া কিছুক্ষণ রোজে রাথিয়া, চক্ষুতে দিলে নানাবিধ নেত্ররোগ নষ্ট হইয়া চক্ষুর জ্যোতিঃ রৃদ্ধি হয়।
- ৭। নৃতন সরায় কাটখড়িও হরিদ্রা ঘসিয়া চকুতে দিলে চকু উঠা ভাল হয়। হরিদ্রামাথান বস্ত্রথগু দ্বারা চকু আচ্চাদিত রাথা হিতকর।
- ৮। পাঁটার মেটে ভাজিয়া দিনকতক আহার করিলে রাত্র্যস্কতা ভাল হয়।
- ন। মনঃশিলা, নাভিশজ্ঞা, পিপুল ও রসাঞ্জন সমভাগে লইয়া মধুসহ মর্দ্দনপূর্ব্ধক বাতি করিয়া গব্য দ্বত সহ লোহপাত্রে ঘর্ষণ করিবে, পরে প্রদীপের শিখায় ঐ লোহপাত্র ধরিয়া রাখিলে যে অঞ্জন প্রস্তুত হইবে, তদ্ধারা শিশুদিগের চক্ষ্র জলস্রাব, শোধ, রক্তিমতা ইত্যাদি শীল্প আরোগ্য হয়।
- > । শিশুদিগের চক্ষ্রক্তবর্ণ হইলে, প্রস্থতির কিঞ্চিৎ স্তনভূগ্ধ ৪।৫ দিন প্রাতে প্রদান করিলে আরোগ্য হয়।

১১। পাতিলেব্র শিক্ড উহার রলে বাটিয়া চক্ষ্র নীচে প্রলেপ দিলে চক্ষ্ উঠা ভাল হয়।

১২। প্রস্তরমন্ত্র পাত্তে স্তনত্থে হরিতকী ঘদিয়া সন্ধ্যার সমন্ত্র চক্ত্র অঞ্জন দিবে এবং প্রাত্তে ২।১ বার পানের রসে বটের কচি পাতা বাটিয়া চকুর চতুম্পার্যে প্রবেশ দিবে। ঋণ দিন এইরূপ করিলে রাজ্যকতা আরোগ্য হয়।

১৩। খেত পুনর্ণবার মূল ও হরিক্সা একত্র ঘতের সহিত পেষণ করিয়া চকুতে অঞ্জন দিলে কদাচ চকুতে কোনও রোগ জ্বিতে পারে না।

(ক্ৰমশঃ)

কৃষিবিষয়ক নানা কথা।

ধান্য।

(দ্বিতীয় পত্ৰ)

আমন ধানের মধ্যে কতকগুলিকে ছোটুনা বগিড়ে কহে। তাহা আল ধান্তের গাছের ন্যায়। বিলকাছড়ে, চাতাল ও কুড়ি ক্ষেত্রে ঐ ধানের আবাদ হইতে পারে। ক্ষেত্রে অন্যুন অর্দ্ধহস্ত এবং অন-ধিক তিন হস্ত পরিমাণে জল দাড়াইলেই উহার আবাদ চলিতে পারে। যদিও জলবুদ্ধির সঙ্গে সঙ্গে ঐ গাছের বৃদ্ধি হইয়া থাকে, তথাপি ক্ষেত্রের জল তিন হস্তের অধিক বৃদ্ধি পাইলে ঐ ধান জলে পচিয়া যায়। স্বতরাং ক্লযককে ক্লয়িকেত্রের অবস্থা বুঝিয়া ঐ ধানের আবাদ করিতে হয়। ঐ সকল ছোটুনা বাগ্ডের নাম; যথা, কোঁকো, ডেঙ্গাকুড়ি, কার্ত্তিকে ডেপু, গ্রথ-নাড়ী, কুঁচে, রোম্বাকেলে, ডহরনাগরা, स्विनान, औधात्रमानिक, स्विमूनि, आह्रमा ইত্যাদি।

বাগ্ড়ে আমনের আর কতকগুলির নাম বরাণ। উহাদের প্রকৃতিতে পরমে-খরের অপার কৌশল প্রকাশ পাইতেছে। ঐ সকল ধাতা জলমগ্ন হইয়াও আপনাকে জীবিত রাথিয়া জলবৃদ্ধির দঙ্গে দঙ্গে বৃদ্ধি পাইতে পারে। উহাদের মধ্যে কোন কোন ধান বিশ হাত জলের উপর ভাসিতে সমর্থ হয়। যে কেত্রের **জলের** উচ্চতা যেরপ হয়, সেই ক্ষেত্রে রোপণ করিবার উপযুক্ত ধান উহাদের মধ্যে আছে। আমরা ক্রমশঃ তাহা বিরুত कतिराङ्घ । উहारमत्र मस्या कृष्णकान, মুক্তাহার, ছোটদীখে, বড়দীখে, নেতা, ধলি, পিত্তরাজ, কেয়ারশালী, কুল আমলা, পুদি,কলমা, ভাপো, লাল কানাই, মেছের-ফল, হাসবত, কালবয়রা, পানত্রাস, নেখি ইত্যাদি। বর্ধাবারি কি বন্থাবারি ধারা

र्गर्व विवान अभि, अथवा विवापि अना-শরের রই ভিন্ন অন্তবিধ ক্ষেত্রে ঐ ধান ভাল হয় না। উহার মূলে অল্ল মাত্রায় अन रक्ष इटेटन विटमय উপकात इत्र ना । অন্যন হই তিন হাত জলের উপর না ভাসিতে পাইলে উহার ক্ষ ব্রিহয় না। হঠাৎ অতিরৃষ্টি হইয়া, কি নদীর বন্তা আসিয়া ঐ ধান্তের ক্ষেত্রে অধিক পরিমাণে জল জমিয়া গেলে উহার অনিষ্ঠ হয়। ক্রমে ক্রমে জল বাড়িলে উহার কোন অনিষ্ট হয় না। কেত্রের জল যদি ঘোলা ना थारक जवर विनक्षन त्तोरज्य मीखि পায় ও সেই কালে ঝড় তুফান না থাকে, তাহা হইলে ঐ ধান ২৷০ হাত জলের নিমে থাকিয়া পাতা ফেলে এবং অল্প দিনের মধ্যে জলের উপর জাগিয়া উঠে।

বাগুড়ে বরাণ ধান্তের প্রকৃতিতে বিশ্ব-অষ্টার কিরূপ স্বষ্টিকৌশল নিহিত আছে, তাহা দেখাইবার কথা আছে। বিশিষ্ট প্লাবন ব্যতীত এই ধান্ত জন্মে না। বিল বা অন্তবিধ জলাক্ষেত্রের কিনারা হইতে রই পর্যাস্ত জলের গভীরতা নানাবিধ व्यर्श प्रदे এक इस इहेट बात कोम इस পর্য্যন্ত হওয়া সম্ভব। ঐ বিভিন্ন প্রকার জলাক্ষেত্রে জন্মিবার জন্ম বিভিন্ন প্রকার ধান্ত আছে। যেথানে হুই হাত পরিমিত জল, দেখানে কার্ত্তিক ডেপু নামক ধান জন্ম। যেখানে তিন হাত জন, সেখানে **८ तर्भूनि अ इस्ना**फ़ी नामक सान इस। এইরূপ জলের পরিমাণ চারি হাত হইলে क्षकि ; भाँठ हाउ हरेले, एहाउनीय ७

त्रकृतीरम ; इत्र हाठ हहेत्न, त्नरका ७ ধলি; সাত হাত জল হইলে, পিত্তরাজ: আট হাতের ক্ষেত্রে মুক্তাহার ও কেয়ার শাল ; নয় হাত জল হইলে, হাসবত এবং দশ হাত জল হইলে, কালবয়রা ইত্যাদি ক্রমে জিমায়া থাকে। যে ক্ষেত্রে হাত তিন পোয়ার অধিক জল বাঁধে না. ডেঙ্গাকুড়ি, কেঁকো, আঁধার-তাহাতে মাণিক ও আয়দা ধান জিমায়া থাকে। জলাক্ষেত্রের অবস্থাভেদে যে কত প্রকার ধান জন্মিয়া থাকে, তাহার সংখ্যা করা ছক্ত। কৃষকেরা অনুমান করেন, উহার সংখ্যা সহস্রাধিক। আমাদেরও এ কথায় অবিশ্বাস হয় না। উপরি-উক্ত প্রণালী সম্পূর্ণরূপে নিণীত না হইলেও निशिवक कता रशन, आभारतं छत्रमा इय. এতৎপাঠে উপকার হইতে ক্রমকের পারে । ঐ সকল ধানের প্রারই ''ছেমুট" বুনানি হইয়া থাকে। "দ্বেমুট" বুনানি কাহাকে বলে, তাহা পরে বলিব।

অনেক স্থলে বরাণ ধানের ''বাওড়া" ব্নানি হয়। একেবারে বপন হইতে ধান জন্মে, রোপণের প্রয়োজন হয় না, তাহাকে ''বাওড়া" কহে। বিলান জমি জ্যৈষ্ঠ মাদের জলে প্রায়ই ডুবিয়া যায়। যে বার না ডুবে, সেই বারই উহাতে ধান পাওয়া যায়।

''হাতে কাটা, বাধে বিশ।''
ক্ষকেরা এই প্রবাদ স্মরণ করিয়া ঐরূপ জমিতে ধান করে। উহাতে হুইবারের
অধিক চাব দিতে হয় না। জ্যৈষ্ঠ আবাচ

ধান একবার জলের উপর ভাসিয়া উঠে. তবে আর উহার :বিনাশ নাই। বন বা শৈবাশাদিতে উহার হানি করিতে পারে না। বিঘা প্রতি উহার বীঞ্চ পরি-মাণে ১০।১২ সেরের অধিক নহে। কাটিবার সময় উহার গোড়া কাটিবার স্থবিধা হয় না, আগা হইতে এক, কি দেড় হাত কাটিয়া লয় এবং উহা মাড়াই করিলে পরিষ্কার ধান্ত পাওয়া যায়। কোন কোন ক্ষেত্রে ছোটনা বাগড়ের বীজ ও আত ধাত্মের বীজ সমপরিমাণে বপন করা হয়, তাহাকে "দ্বেম্ট" বুনানি करह। এই প্রণালীর বিশেষ লাভ এই, বংসর ভাল হইলে, উভয় ধান্তই: অধিক পরিমাণে ফলে। কিন্তু আউশ ধানের পোরাল বা বিচালি নষ্ট হইয়া যায়। কারণ আউশ ধান যথন পাকে, তথন আমন পাকে না, স্থতরাং আউশ ধানের গোড়া কাটিবার উপায় থাকে না. শিষ কাটিয়া লইতে হয়। এইরূপে যে ক্ষতি হয়, পোয়াল পচিয়া ভূমির উং-পাদিকা শক্তি বৰ্দ্ধিত হইয়া তদপেকা অধিক লাভ হয়, কেননা আমন কাটার পর ঐ ক্ষেত্রে প্রচুর হরিৎথন্দ জন্ম। রোপণপ্রণালীতে ও ছোটনা বাগড়ে উৎপন্ন হইয়া থাকে।

মন্ত্রমনিবিং অঞ্চলে বে সকল ধান্ত জন্ম, তাহাদিগকে পূরবী ও মূগী কহে।বালাম, বাধরগঞ্জ ও বরিশাল প্রদেশে উৎপন্ন হয়। শ্রীহট্ট প্রদেশে এক প্রকার ধান্ত

মানের বন্যার জ্বণময় না হইয়া বদি ঐ জব্মে, তাহার নাম হরিনারায়ণ. উহা ধান একবার জ্বনের উপর ভাসিয়া উঠে, অতি উৎক্লম্ভ।

> এ দেশে আর এক প্রকার ধাঞ্জের আবাদ হইয়াছে, তাহার নাম কারো-লিনা। উহা উত্তর আমেরিকার কারো-লিনা প্রদেশ হইতে আনীত। উৎপত্তি-স্থানের নাম অমুসারে ঐ ধান্ত নাম প্রাপ্ত হুইয়াছে। উহার চাব আবাদের :বিশেষ ऋविधा এই यে, वरमत्त्रत मधा उँशात्र ক্ষেত্রে হই বার ধান ফলে। এক বার অগ্রহায়ণ মাসে পাকে। কিঞিং গোডা রাখিয়া ধান কাটিয়া লইয়া ঐ গো**ডার*** একবার জল সিঞ্চন করিতে হয়। সিঞ্চনের কিছুদিন পরে প্রত্যেক গোড়ার চারি পাশ হইতে বহুসংখ্যক বোগ বাহির হইরা তাহাতে উৎকৃষ্টন্ধপে ধান্ত ফলে। উহা মাঘ ফান্তন মাসে পাকিয়া উঠে। কারে। লিনার চাষ আবাদের বিশেষ বাছলা নাই। আমরা এই প্রবন্ধের ধান্ত প্রকরণে "বোরো" ও "জলি" নামে আর ছই প্রকার ধানের নাম করিয়াছি। ন্থলে ভাহাদেরও কিঞ্চিৎ উল্লেখ করা আবশ্রক। বোরো ধান্ত অন্যান্য ধান্য হইটা इट्टेंट निक्टे इट्टेंग डेंट्रॉब বিশেষ গুণ আছে। উহা বার মাসই জন্মে এবং উহার ফলন সকল ধান হইতে অধিক। বোরো বিঘা প্রতি বোল মণেরও অধিক क्लिया थाटक। উहा मर्काज এक्ट ध्वकात्र। উহার ছোটুনা, বরাণ ইত্যাকি কোন **अकाव्रटम नारे। উराव शाह हैरे कि** আড়াই হাতের অধিক উচ্চ হয় না।

বোরোর স্বাভাবিক বর্ণ ক্লম্ভ; কিন্তু কথন কখন উহা খেতবৰ্ণও হইয়া থাকে। এক শিষে খেত ও ক্লফ. উভয় বৰ্ণই লক্ষিত হয়। উহার অল্ল ভাল সিদ্ধ হয় না, আউস চাউলের অন্নের স্থায় থস্থসে হয়। উহার আবাদ বপন ও রোপণ এই প্রণালীতেই হইয়া থাকে। বিল,পুন্ধরিণী বা ष्मग्रविध ष्मां ज्ञित स्था य मकन कर्फम-ময় ক্ষেত্র থাকে, তদ্তির অন্তবিধ ভূমিতে রোয়া বোরা জন্ম না। উহার রোপণ-প্রণালী আমনেরই ক্লায়, কেবল আমন **'অপেক্ষা** বোরোর গুছিতে চারা কিছু বেশি থাকা আবশ্রক, এবং উহার রোপণও কিছু ঘন ঘন হইয়া থাকে। উহার বীজ প্রস্তত-করণে ও কেত্রের চাষ আবাদে কিছু বিশেষত্ব আছে, তাহা যথাত্তলে বলিব। বপন দ্বারা যে বোরো ধান্ত জন্মাইতে হয়. তাহা কুড়ি ভিন্ন অন্ত কেত্রে জন্মেনা। আভ ধান্তের রীত্যমুসারে জ্যৈষ্ঠ আয়াত মাসে উহা বপন করিতে হয়। বিঘা প্রতি ।৬ टमत वीक नारग। द्रांभरणत वीक /8 সেরের অধিক লাগে না। বোরোর সহিত আভ ধাত্যের একটু সম্বন্ধ দেখা যায়। বোরোর বীজাভাব হইলে "স্থানিকেলে" নামক আশু ধানের বীজ পাতিয়া রোপণ করিলে তাহা হইতে উত্তম বোরো ধান্ত **জম্মে। কে**হ কেহ বলেন, আশু হইতেই বোরোর উৎপত্তি। আমাদের বিবেচনায় বোরো ধানই উচ্চ ভূমিতে উপ্ত হইয়া চাষ আবাদের প্রভাবে রূপান্তর ও গুণান্তর প্রাপ্ত হইয়া "স্থনিকেলে" জ্বীমক আভ

ধান্ত জন্মিরাছে। বোরোর আর একটা বিশেষ গুণ এই যে, যে সকল বোরো চৈত্র মাসে পাকে, তাহা কাটার পর গোড়া হইতে কারোলিনা ধানের ন্যায় বোগ বাহির হইয়া ২।২॥ মণ ধান জন্মে। ঐ সকল বোগকে "কেচেটি" কহে। "কেচেটির" অন্ত কোনরূপ আবাদ করিতে হয় না।

জলি, এক প্রকার পৃথক ধান্ত নহে। উহা ছোটুনা আশুরই প্রকারাস্তর মাত্র। চির-জলার্দ্র ভূমিতে জন্মে বলিয়া উহাকে জলি কহে। জলি ধানের ভূমি ও চাষ আবাদ একটু গোলমেলে। পঙ্কিল ভূমি কিঞ্চিৎ উচ্চ হইলে তাহা কঠিন হইয়া উঠে। এই পঙ্কিল ভূমির একদিকে উচ্চ ভূমি ও আর দিকে জলাশয়। উচ্চ ভূমির রস চোয়াইয়া ঐ পঙ্কিল ক্ষেত্রে আইসে এবং নিকটে জলাশয়ের অবস্থান প্রযুক্ত তথায় উত্তাপেরও তাদৃশ প্রাত্নভাব হয় না। স্থতরাং ঐ পঙ্কিল ভূমি চিরকালই আদ্র থাকে। ঐরূপ ভূমিতে বিঘা প্রতি।২ সের হিদাবে ছোট্না আশুর বীজ বপন করিলেই স্বাভাবিকরূপে চারা বাহির হইয়া ধান্ত জন্ম। তাহাকেই জলি ধান কহে। ফাল্পন চৈত্র মাদে উহার বনানি হয় ও জ্যৈষ্ঠ আষাঢ় মাদে উহা পাকিয়া উঠে। জলির পাক নামি হইলে প্রায়ই নদী বা বর্ষার জলে ডুবিয়া যায়। वैधि मित्रा নদীর জল নিবারণ করিতে পারিলেও আকাশ ভণা নিবারণ করা ছঃসাধ্য। বিদা ভিন্ন আর সকল চাষ্ট আন্ত ধান্তের

नोवि । ৰুলির ক্ষেত্র পদ্ধিল বলিয়া উহাতে বিদা চলে না। উহার আবাদ বোরোর স্থায় বপন ও রোপণ উভয় প্রণালীতেই হইয়া থাকে। মাঘের শেষে ফাঙ্কনের প্রথমে বীজ পাতিয়া ফার্ব্যনের শেষে বা চৈত্রের প্রথমে চারার শুছি রোপণ করিতে হয়। রোপিত উভয় বিধ ধান্তই এক সময়ে পাকে। বসস্ত ঋতুর বাতাস না পাইলে উহার গাছ তেজন্বী হয় না। नमीट জোয়ারের জল যত দূর উঠে এবং ভাটার সময় উহার জল যতদূর নামিয়া পড়ে, এই উভয় সীমান্তর্গত প্ললময় কেত্রেও জলির আবাদ হইয়া থাকে।

"বরা আন্ত" নামে আর এক প্রকার ধান্ত আছে । উহা চারি শ্রেণীতে বিভক্ত, যথা ছরা, মুকো, ঝাটি ও নেওয়ালি। এই ধানের সকল প্রকার সত্তর পরিপক্ক হয় না এবং উহা আভ ধান্যের মধ্যেও পরি-গণিত নহে; তথাপি উহার নাম "কুরা আও"। ইহার রোপণ ভিন্ন বপন প্রগা প্রচলিত নাই: কারণ উহা রাটি অঞ্চলের ন্যায় কুড়ি প্রভৃতি জলাভূমিতে জন্মে তথায় विमा हालाहेवात स्वविधा हुए ना। বিদা ভিন্ন উপ্ত ধানোর চারা তেজস্বী হয় না। বৈশাথ জোষ্ঠ মাসে বীজ পাতিয়া জ্যৈতের শেষ ও আযাতের প্রথম এই এক মাসের মধ্যে উহা রোপণ করিতে হয়। 10 ATTS বীঞে সের এক বিঘাৰ রোপণকার্য্য শেষ হইতে পারে। ভাক্ত মাসে পাকে, স্থকো ও ঝাটি আখিন

মাদে এবং নেওরালি কার্ত্তিক মাদে পাকোঁ।
দার্জিলিং অঞ্চলে খেত ও রুফাভেদে উহা
হই প্রকার হর। তত্রত্য অধিবাদিগণ
উহাকে "ভাছই" ধাস্ত কহে। ঐ অঞ্চলের
রুফবর্ণ ধান গুর্ভ হইতে বহির্গত হইরা
অস্তান্ত ধাস্তের স্তার শিষের আকার ধারণ
করে না. গর্ভমধাই পাকিয়া যায়।

বঙ্গদেশ ও পশ্চিমাঞ্চলে শ্রামা, চিনে, কাউন বা ভ্রো, মাতৃয়া, শেয়াললেজা, কোদো প্রভৃতি আরও কয় প্রকার ধান্ত-জাতীয় শশু উৎপদ্ধ হইয়া থাকে। উহা অতি অল্লায়ানেই প্রস্তুত হইয়া থাকে। উহা সকল শশ্রের বীজের আকার প্রায় গোল এবং চাউল প্রায় থুদের স্থায়। উহা গো, মহিষ ও পক্ষিগণের জন্মই স্ফুই বিনিয়া বোধ হয়। তবে উহার মধ্যে কোন কোন শশু নিয় শ্রেণীর দরিদ্র ব্যক্তিগণও আহার করিয়া থাকে। গো মহিষগণকে উহাদের শশু না থাওয়াইয়া ঘাসরূপে গাছ খাওয়ান হইয়া থাকে। বিশেষতঃ কোদোর বীজা গোরুকে খাওয়াইলে তাহাদের খোর

কখন কখন আশু ধাত্মের ক্ষেত্র নষ্ট হইয়া যায়, তাহাতে ধান ফলে না। ঐ দকল ক্ষেত্রে ২০০ বার চাষ দিয়া ঐ সকল শশু বপন করিতে হয়। বপনের পর আর কোন চাষ আবাদের প্রয়োজন হয় না। তবে কোন কোন শশু ২০০ পালা বিদে বাশী দিতে হয়। তাহা এই ফুলেই বলিতেছি।

ভূরে। বৈশাথ জৈঠ মাসে বপন করিলে

শ্রাবণ ভাজে পাকে। বীজ /> এক দের />।
পাঁচ পোয়ার অধিক লাগে না। বপনের পর
ছই পালা মই দিতে হয়। কোদোর চাষ
আবাদ ও বীজ পরিমাণে ঐরপ। ইহারও
শীব বাহির হয় না, গর্ভমধ্যে পাকিয়া
থাকে। শেয়াললেজার শীষ ঠিক্ শৃগাললাকুলবৎ; চাষ আবাদ ঠিক্ ভুরোর ভায়।
মাতুয়াতে মন্ত প্রস্তুত হয়; এজন্ত পার্বভীয়

প্রদেশে অতি আদরে উহার চাষবাস হইন্না থাকে। উহার চাষ আবাদ আমন ধানের স্থায় বপন ও রোপণ উভন্ন প্রণালীতে হইন্না থাকে।

কার্ত্তিক হইতে ফাস্কন পর্য্যস্ত চীনার বুনানি হয়। বুনানির পর ষাইট দিনের মধ্যে পাকিয়া উঠে। বীজের পরিমাণ /১ এক সের /১। পাঁচ পোয়া।

विजनी मशी।

5

মরতে এ ঘন তমসায়,
আয় মোর্ রাঙা দিদি আয় ;
নব ঘন-ঘটা ছাড়ি,
আয় রাণি, মোর বাড়ী,
ব'দে থাকি হুই বোনে গলায় গলায়;
তুমি রাঙা, আমি কালো,
মিলিলে মানাবে ভাল,
উজলে সোণার চিক্ রেশমী ফিতায়!

অই দিব্য হাসিমাথা মূথ,
মাথা যেন ত্রিদিবের স্থথ ;
আঁধার আঁধার পর
ঘন আঁধারের স্তর,
আঁধারে আঁধারে নাহি ফাঁক একটুক!
তুমি ভেদি সে আঁধার,
হাসাইলে ত্রিসংসার,
এতই আনক্ষে ভরা দেবীতার বুক!

৩

তোমার ও স্বরগের হাসি. আমি ভাই, বড় ভালবাসি, কেমন বিভল-পারা, হ'মে পড়ি মাতোয়ারা, মরমে বাজিয়া ওঠে মল্লারের বাঁশি। यनि वन जननाति. বালক সভয়ে কাঁদে. যদিও মানব-হিয়া চমকে তরাসি, তবু দেখ, পুজিবারে অসি করা শ্যামা মা'রে, কত আয়োজন করে ধরাতল-বাসী, পবিত্রতা বীরতায় কে না অভিলাষী গ তাই, দেবী, তোমারে হেরিয়া, यात्र विश्व श्रुलदक शिक्षा ! শ্যামল তরুর মূলে শিখী নাচে পাধা খুলে,

আবাহন করে ভেক শাঁথ বাজাইয়া

চাতক মহান্ খরে, তোমারে বন্দনা করে, বন্ধুধা সহস্র প্রাণে উঠে উপলিয়া!

a

চিরকাল কালো মেঘে বাস,
আকালেরও কালিমা বাতাস;
সবি হেন কালো কালো,
তবু তব রূপে আলো.
থনির আঁধারে যথা মণির বিকাস!
আমি তো কনক-লতা!
বুঝি না এ সব কথা,
তুমি কে অমৃতমন্ত্রী, অমৃত নিশাস?

শুনিয়াছি বজ্রের অনলে,
তব কাদি চিরদিন জলে !—

কে জানে বিধির আশ,
পদ্মবনে ফণি-বাস !

স্থাব চন্দ্রমা কেন রাহর কবলে ? —
অথবা পরশে তব,
বন্ধ্র, মহাবন্ধ্র, সব,
শীতল তুষার যথা হিলাচল-তলে !

9

যতক্ষণ তব বৃকে রয়,
ততক্ষণ বজ্ঞে কিবা ভয় ?—
কিন্তু হায়, কি অয়ুত,
হ'লে ও ক্দয়-চাত,
অনল উগারে বাজ মহামৃত্যুময় !
শঙ্করে পরশি যথা,
কালকৃট হাধা—তথা
তোমারে পরশি বক্স বিশ্ব, হাধা হয় !

এস দেবি, ভূতল উপরে,
মানবের অধিময় খরে;
তোমার অমির বা'র
লাগিয়া বিষাক্ত গায়,
হাস্থক মলয়ানিল শুক বন-পরে!
হোক্ বক্তানল শান্তি,
যা'ক্ হাড়ভালা শ্রান্তি,

দেবী তুমি স্বরগ-শোভনা,
জান না তো নরের বেদনা !
কি কহিব স্থরেশ্বরি,
সদা মোরা বেঁচে মরি,
নীরবে শুকায় কত পবিত্র কামনা-!
কি শুনিবে বিধুম্থি,
শত স্থেথ মোরা হথী,
সদাই নিরাশা আনে মরণ-যাতনা !

তাই ডাকি, মরতে আসিয়া,

এ বেদনা দাও ভুলাইয়া ;

নিয়ে হাসি মুখখানি,

যদি কাছে এস রাণি,
প্রাণের জ্বলন্ত বহিল থাইবে নিভিয়া !

দাও দেবী, এই বর—
ভাজাগা অধম নর
তোমারি মতন হাসি, উঠুক হাসিয়া !

অমনি পবিত্র আলো,
ভাদেরো মরমে ঢালোঁ,
পাপ, তাপ, মলিনতা, বাউক মুছিয়া !

শান্ত যাহে বল্পানল

দাও দেই হৃদি-তল,
মানবে দেবতা হ'তে দাও শিথাইয়া !
তোমারি বাতাদে ধরা,
হউক অমিয়-তরা,
নরের অমর প্রাণ উঠুক কাগিয়া !
১১
মরতের অাধারের ছায়.
আয়ু মোর রাঙা দিদি আয় !

শ্রাম জনধরে ছাড়ি,
এস সধি, মোর বাড়ী,
প্রীতির অঞ্চলে মম, বসা'ব তোমার;
এ জগতে রাঙা কালো,
চিরকাল মিলে ভাল,
শিবের সোণার আভা শ্রামা মা'র গা'র!
আয়, মোর দিদিমণি! আয়।
শ্রীকাব্যকুস্লমাঞ্জলি-রচয়িত্রী।

গ্রীক পুরাণ।

(৩৬৬ সংখ্যা ৭৫ প্রঠার পর)

(मव, (मवी, रेमंडा, भंती এवः व्यमःशा অস্ত্র পরিবার লইয়া স্বর্গরাজ ক্রণস (শনি) রাজত্ব করিতেন। তাঁহার ভগিনী বিষার সহিত তাঁহার পরিণয় হইয়া व्यत्नक श्वेल दम्त दमती छेरशन इम्र। वर्श-রাজের সন্তান বলিয়া অনা দেবতাদিগের উপর তাঁহাদের প্রাধান্ত। তিনটা কন্সার নাম হেষ্টিয়া বা বেষ্টা, ডেমিটার বা সিরিস (नची) এবং হীরা বা জুনো। তিনটী পুতের নাম হেডস বা প্রটো (যমরাজ), পোসাইডন, নেপচুন (বরুণ) এবং बित्रम (रेख) ; बित्रम मर्सकिनिष्ठ रहेरल ७ বৃদ্ধিও পরাক্রমে সকলের শ্রেষ্ঠ। এই সম্ভানগৰ অনেক কণ্টে জীবন লাভে সমৰ্থ रम । व जैनम् छवित्रामानी छनियाहितन নে, তিনি বেমন ভাহার পিতা ঔরেনস্কে -সিংহাসন-চ্যুক্ত করিয়াছিলেন, ভেমনি

তাঁহার এক সন্তান তাঁহাকে রাজ্যভ্রষ্ট করিবে। ক্রণদ সেই জন্ম সন্থান ভূমিষ্ঠ হইবামাত্র গ্রাস করিয়া ফেলিতেন। তাঁহার পত্নী রিয়া পিতামাতার (ঔরেনস ও গায়া) সহিত করিয়া প্রামর্শ একটা কৌশল অবলম্বন তাহাতেই কনিষ্ঠ সন্তান জিয়দের প্রাণরকা ইহার জনমাত্র ক্রণস ইহাঁকে গ্রাস করিতে আইসেন, কিন্তু সন্তানের পরিবর্তে বস্তারত এক তাঁহাকে দেওয়া হয় এবং তিনি তাহাই গ্রাস করিয়া ভ্রমে মনে করিলেন কনিষ্ঠ সম্ভানকেও উদরম্ভ করিয়াছেন। এ দিকে **(** त्वकी-नम् न क्रिक्षक ग्राप्त क्रिवम् স্থানান্তরিত করিয়া ক্রীট দ্বীপের আইড। পর্বতে রাধা হয়। তিনি দেখানে জঙ্গলের মধ্যে প্রতিপালিত হইয়া মহাবল পরাক্রাপ্ত

হইয়া উঠেন। তিনি এক দিন পিতার নিকটে উপস্থিত হইয়া কৌশলক্রমে তাঁহাকে কবলিত প্ৰস্তৱখণ্ড* বমন করিতে वांशा करत्रन, এवः कनम् क्राय क्राय পাঁচটী সস্তানকেও উগারিয়া বাহির করেন। আপনার ভাই ভগিনীদের সহায়তায় জিয়দ পিতৃরাজ্ব পৃষ্/দস্ত করিয়। নৃতন দেবরাজা স্থাপনে স্থিরসঙ্গল হন। ক্রণস্ এবং ভয়ত্বর যুদ্ধ আরম্ভ হইল। তাঁহার ভাই ভগিনী অস্থ্রদল এক দিকে, ধ্বিয়স এবং তাঁহার ভাই ভগিনী ও ক্রণদের বিপক্ষ কতকগুলি প্রাচীন দেবতা অন্ত দিকে। মিত্র-দৈগুদিগের প্রধান ষ্টিংক্স দেবী ও উাহার ৪ পুত্র; ৩জন সাইক্লপ্স (এक हकू मानवी), हेरात्रा हेट्स त्र सना বন্ধ প্রস্তুত করেন; এবং তিনটা হিকাট-চারীদ (শতম্বচী), ইহারা অমিতবলে দেবপক্ষ সমর্থন করে। দশ বংসর ঘোর-তর যুদ্ধ হয়। জিয়স সদলে অলিম্পস্ পর্বতে এবং দানবেরা অথ্রিদ পর্বতে সেনানিবেশ করেন। প্রকৃতিরাজ্যে ঘোর বিপ্লব উপস্থিত হয়। ওসেনস্ এই যুদ্ধে কোনও পক্ষ অবশ্বন না করিলেও দ্র হইতে ইহার কোলাহলে ও ঘাত-প্রতিঘাত-ধ্বনিতে অন্থির হন, গায়া ও পন্টসেরও (महे अददा हम। जिस्सम्ब रक्क ७ मह-

ঘটীদিগের নিক্ষিপ্ত পাহাড় পর্বত-খণ্ডের তাড়নে অবশেষে দানবেরা (পাতালপুরীতে) হইয়া টারটেরদে প্ৰবিষ্ট হয়। ক্ৰণদ প্ৰভৃতি এই অন্ধকারা-গাবে চিরদিনের জন্ম বন্ধ হন, নেপচুন ইহার চারি দিকে বিশাল পিত্তলের প্রাচীর গাথিয়া দেন এবং তিনটা শত্ত্বটা দিক্ প্রহরীরূপে পালের ন্যায় তাহাদের স্থাপিত হয়। ওসেনস্ দেবতা**গণের** বিৰুদ্ধাচরণ করেন নাই বলিয়া দণ্ড হইতে অব্যাহতি পান। আয়াপ্টদ অসুর, স্বপুত্র মিনিসিয়দের সহিত কারাবদ্ধ হয়। তাহার অন্ত পুত্র আট্লাদের উপর এই দণ্ডাজা হয় যে, সে জগতের পশ্চিম প্রান্তে দণ্ডায়মান হইয়া স্বর্গমণ্ডলকে মন্তকে ধারণ করিয়া থাকিবে। - जियन আর এক শত্রুকে পরাজয় না করিয়া নিষণ্টকে রাজত্ব লাভ করিতে পারিলেন বুদা গায়া সন্তানপ্ৰসৰে তিনি পূর্কো ঔরেণস নহেন। পোণ্টসকে যেমন বিবাহ করিয়াছিলেন, এখন দেইরূপ টার্টেরসকে বিবাহ করি লেন। টাইফিয়ন নামে এক মহাদৈত্য গায়ার গর্ভে জন্ম গ্রহণ করিল। ইহা ছারা দেবরাজ্যের সমূহ উপদ্রব হইত। কিন্তু জিন্তুস বন্ধান্নিতে তাহাকে অৰ্দ্ধ-দ্য করিয়া পাতালপুরীতে বন্ধ করিয়া क्लिलन।

(ক্রমশঃ)

এই প্রস্তরপত ডেলফি মন্দিরে স্থাপিত হয় এবং গ্ৰীকেৱা অনেক কাল ভক্তিভাবে ইহার পুসা क्त्रिट्डन ।

গৃহীর ধর্ম।

প্রত্যেক মমুগ্যের কর্ত্তব্য কর্ম্ম আত্মজান লাভ করা। আযুক্তান লাভ না করিলে আছার অন্তর্তম প্রমাত্মাকে পাওয়া যায় না। একটা মহয় জন্ম গ্রহণ করিল, আর একটা পশু জন্মগ্রহণ করিল। ছইটার পৃথি-বীতে জন্ম হইল বটে, কিন্তু পশুর জীবন কেবল আহারবিহারে পর্য্যবসিত হইল,আর मकूरगुत रात्रात्रित मान मान छोन ७ धर्य-ভাব সকল প্রক্টিত হইল, সেই সঙ্গে তাহার কর্ত্তব্য কর্ম্মের পথও প্রশন্ত হইল। মানবহাদয়ে প্রেয় ও শ্রেয়:, পশু ও দেব-ভাবের অহরহ: তুমুল ঘল্ব চলিল, একজন তাহাকে আপাত-মনোরম বিষয়ভোগ সকলে সবলে আকর্ষণ করিতেছে, আর একজন শাণিত কুরধারের ন্যায় পথে শইয়া যাইতে চেপ্তা করিতেছে। সেই পথই ঈশবের যাইবার পথ, যে পথে শ্রেয়ঃ ষাইতে বলিতেছে। জ্ঞান ও ধর্মের সহিত ঈশবের অভিপ্রেত কর্ত্তব্য কর্ম দকল না করিলে তাঁহাকে পাওয়া যায় না। সমস্ত মহয় যদি গুহী না হইয়া সন্মাসাশ্রম গ্রহণ করিত, তাহা হইলে ঈশরের সৃষ্টির উদ্দেশ্য সফল হইত না; তাই করুণাময় প্রমেশ্বর মারার বন্ধন করিয়া দিয়াছেন যে, মনুয্য তাহা সহকে ছিন্ন করিতে পারেন না। **শেই বন্ধশে আবন্ধ হ**ইয়া, বাল্যে পিতামাতা ভাতা ভগিনীতে পরিবৃত হইশু জীবনের প্রাত:কাল স্থাধ অতিবাহিত হইয়া যার,

এবং যৌবনের প্রারম্ভে জীবন-মধ্যাক্ত বিবাহিত হইয়া হুইটী প্রাণ এক হইয়া যায় ; তখন অৰ্দ্ধ পূৰ্ণ হইয়া দ্বিগুণ উৎসাহে কর্ত্তব্য কর্ম্মে প্রবৃত্ত হয়। সেই মঙ্গলময় পরমেশ্বর তাঁহাদিগের হাতে গুরুতর কর্ত্তব্য-ভার দিবেন বলিয়াই তাঁহাদের প্রাণে তাঁহার পালনী শক্তি যোগ করিয়া দেন। তথন এক দিকে কর্ত্তব্য কর্মের কঠোরতা, অপর দিকে ইন্দ্রিয়ভোগ্য বিষয় সকল আপাতস্থকর ; এই সময়ে দেবভাবের ও পশুভাবের জয়-পরাজয়ের সময় কর্ডই শক্তির প্রয়োজন। তাই করুণাময় পর্মেশ্বর যে (मर-मंकि প্রাণে যোজনা कंतिया (मन, তাহাতে অপূর্ণজীব পূর্ণ হয়। এই কর্তব্যের টানে যে ব্যক্তি ইন্দ্রিয়-স্থেকর বস্তু হইতে আপনাকে নির্লিপ্তভাবে রাখিতে পারিল, সেই স্বৈশ্বক সেই জিতিয়া গেল— লাভ করিয়া জীবন সার্থক করিতে পারিবে। জীবন-সন্ধ্যাকালে প্রৌঢ়াবস্থায় माग्रात तक्कन निथिल इहेट थाटक, उथन প্রায়ই সাংসারিক কর্ত্তব্য শেষ হইয়া যায়। তাই ঋষিৱা বলিয়া গিয়াছেন "পঞ্চাশোর্জং বনং ব্ৰঙ্গে।

আজীবন আয়চিন্তা করিয়া আয়জ্ঞান লাভ করিবে, পরে জীবন-সন্ধ্যাতে ঈশবের আরাধনা করিয়া তাঁহার সহিত বৃক্ত হইয়া দেহত্যাগ করিতে পারিলে অমৃতত্ব লাভ করিতে পারিবে। জীবন-মধ্যাকে বেমন

ভোগ করিতে ৷ প্রধরতা ক্রীবনের ছইবে, তেমনি জীবন-সায়াহে স্থশীতল করিতে পারিবে। শাস্তিহুধা ভোগ মধাকে প্রথরতা ভোগ করিলে সায়াক-অমৃতত্ব কালে তাহার कर মধ্যাহ্নে যদি তুমি করিতে পারিবে। প্রেয়ের অমুগত থাকিয়া বিষয়-ভোগে উন্মন্ত थाक, তाहा इटेरन जीवन-माग्रास्ट व्यवमान ও আত্মমানি এবং মৃত্যুকে লাভ করিবে। **अम्रिक्यारक अम्रकात्र हरेरक अम्रकारत** ফেলিয়া পলায়ন করিবে। অতএব্সাবধান। প্রেয়ের প্রলোভনে ভূলিও না। শ্রেয়: তোমার পরলোকের সঙ্গী হইয়া পরলোকে তোমাকে আনন্দ-আলয়ে লইয়া যাইবে।

প্রভাত হইতে শেষ পর্যান্ত আপনার প্রতি দৃষ্টি রাখিবে। দয়া ধর্ম ছইটা এক-স্তুত্রে গ্রথিত জিনিষ; তুমি যদি দয়াকে অমূল্য রহ ভাবিয়া কঠে স্থান দাও, তাহা হইলে ধর্মকেও লাভ করিবে। ভক্ত দাস বলিয়া গিয়াছেন "पग्रो ত্ৰসী ধরম্কা মূল হার, নরকমূল অভিমান, তুলদী কহে দয়া মৎ ছাড়ো বাবং কণ্ঠা-গত প্রাণ।" দয়া দাকিণা প্রভৃতি সদ্গুণ नकल याहाटा इत्य इट्टा हिना ना यात्र, তাহার প্রতি লক্ষ্য রাধিবে। প্রেমময় করিয়া সকলকেই স্থাবৰ পরমেশ্বরকে প্রেম করিবে। কুদ্র, মহৎ, ধনী, দরিদ্র সকলকেই সমানচকে দেখিবে। প্রেম ও পর্মাবলে বলীয়ান্ হইয়া নখর জীবন ছারা পৃথিবীর অনেক উপকার হয়। নীতি ও স্দাচারসম্পন্ন হইয়া ধর্ম্মলাভ করা যার।

আগে নীতিশিক্ষা করিবে, তার পর ধর্ম উপার্ক্জন করিবে, তার পর আদ্মক্ষান লাজ করিবে, তবে ঈশ্বর পাইবার উপর্ক্ত হইবে। এইরূপে গৃহীরা মুক্তিলাভ করিরা থাকে। আর সন্ধাসীদের হৃদরে ঈশ্বর বৈরাগ্যকে প্রেরণ করেন, তাঁহারা তাহারই সাহায্যে ঈশ্বরকে লাভ করিয়া থাকেন। আমি প্রকৃত ধার্ম্মিকের কথাই বলিতেছি; ভগুদের কথা পৃথক্। তাহারা এবং বিষয়ান্ধ সংসারীরা একই গতি প্রাপ্ত হয়।

ঈশ্বর স্ত্রীপুরুষ সৃষ্টি করিয়া ছই জনকে জ্ঞান ও ধর্মে সমান অধিকার দিয়াছেন বটে, কিন্তু ছই জনের কর্ত্তব্য ভিন্ন जिम्र क्त्रियारहन। योशांक राक्र কর্ত্তব্যের ভার দিয়াছেন, তাহাকে সেই উপাদানে গঠিত করিয়াছেন। মায়া কোমলতা ন্ত্ৰীলোককে দয়া করুণার আধার করিয়া সৃষ্টি করিয়া-ছেন এবং পুরুষ মানুষকে শৌর্য্য বীর্য্য ও কর্ত্তব্যবৃদ্ধি, উৎসাহ উত্মম প্রভৃতিতে গঠিত করিয়াছেন। ঈশ্বর যদি তাঁহার মাতৃভাব দারা রমণীকে গঠিত না করিতেন, তাহা .উপকার रहेरल त्रमणी बाता शृथितीत হইতে পারিত না। ঈশ্বর স্ত্রীলোকের শ্বদয়ে মাতৃভাব কিয়ং পরিমাণে দিয়াছেন বলিয়া স্ত্রীলোকের স্বারাজগতের এত উপকার সাধিত হইয়া পাকে। স্ত্রীলোকের হৃদরে এমন একটা গুণ আছে যে সহজে আপনাকে হারাইতে পারে। স্ত্রীলোকের পাতিব্রত্যীধর্ম निका मिला आंत्र किছूत्रहे मत्रकात हत

না। রমণী বতদিন বিবাহিতা না হয়,তত-দিন আপনাকে লইয়া থাকে। যথন করণাময় পরমেখর তাঁহার কোমলতার সহিত কঠোরতা, দয়ার সহিত কর্ত্তব্যবৃদ্ধি, मात्रात्र गरिङ छात्नत्र त्यांकना करत्रन, তখন সেই স্ত্ৰী পুৰুষ ছইটী এক হইয়া পবিত্ৰ বিবাহবন্ধনে আবন্ধ হয় আর অমনি **আত্তে আত্তে আপনাকে হারাই**য়া ফেলে। তথন আর স্ত্রীর আপনার কিছুই থাকে ना, তার যা কিছু সমস্তই স্বামীর হইয়া যায়। ইহলোকের দেবতা স্বামীকে, পর-লোকের দেবতা ঈশ্বরকে ভাবিয়া সে সংসারে কার্য্য করে। পবিত্র দাম্পত্যধর্ম পালন স্ত্রীলোকের প্রধানতম—পবিত্রতম কৰ্ত্তব্য ক্ষুধিতকে কর্ম। অন্নদান. তৃষিতকে জলদান, আতুরের শুশ্রষা করা রমণীর কর্তব্য। স্বামী কি সন্তানের কাহারও রোগ হইলে রমণী আহার নিদ্রা পরিত্যাগ করিয়া তদগতচিত্তে তাহারই ভশ্রবায় নিযুক্ত থাকে এবং যতদিন আরোগ্য লাভ না ঘটে, ততদিন রোগীর শহিত রোগী হইয়া থাকে। তার পর রোগ আরোগ্য হইলে দে হৃদয়ে যে আনন্দ লাভ করে, তাহাই ঈশবের প্রদত্ত পুরস্কার। यनि করণাময় প্রমেশ্বর স্ত্রীলোককে এই নকন ভানের প্রস্রবণরূপে গঠিত না করিতেন, তাহা হইলে সংসার চলিত না। वासी यनि सन्त इस, आंत खी यनि ভाग इस. তাহা হইলে নে ভাল জীর সহিত মিলিত

रहेता ভान रहेना यात्र, आंत्र सामी यनि जान इस, किन्ह जी मन्म इस, जरत मि जी স্বামীর সহিত মিলিত হইয়া ভাল হইয়া योष्र। कि शृंही कि श्रीव नकत्वह नकव কালে সকল সময়ে পাতিব্ৰত্য ধৰ্ম্ম শিক্ষা नियाद्या :--

> "দা ভার্যাা যা পতিপ্রাণা সা ভার্য্যা যা প্রজাবতী। মনোবাক্কর্মভি: শুদ্ধা পতি-দেশামুবর্ত্তিনী।"

সেই স্ত্রী, যে পতিপ্রাণা, সেই স্ত্রী, ষে সম্ভানবতী, আর যে মন, বাক্যা, ও কর্মকে ওদ রাথিয়া পতির আদেশের অমুবর্তিনী হইয়া থাকে।

> ''ছায়েবামুগতা স্বচ্ছা স্থীৰ হিতক্ষ্মুখ সদা প্রস্কৃষ্টিয়া ভাব্যং গৃহকার্য্যেষু দক্ষয়া।"

ছায়ার ভায় অনুগত হইয়া, মনকে নির্মাল করিয়া প্রক্কত ভার্য্যা স্থীর মত স্বামীর হিতকর্ম্মে নিযুক্তা থাকিবেন এবং সর্বাদা সম্ভষ্টিত্তে গৃহকার্য্যে দক্ষতা লাভ করিবেন। তাহা হইলেই ইহলোকে স্থ শাস্তি ভোগ করিয়া পরলোকে স্থগতি লাভ क दित्त। भः स्कार्भ এই शृशीत धर्मा। এই ধর্মামুশাসনের অমুসরণ করিয়া সমুদায় জীবন অতিবাহিত করিলে নিঃসন্দেহ ঈশ্বর ও মুক্তি লাভ হইয়া থাকে।

श्रीहेनिएता (मधी।

मन्त्रामी वावात मन।

বোড়শ শতাকীতে যথন প্রথম জেম্স ইংলণ্ডের অধীশর, তথন তিনি অশেষবিধ অক্সায় অত্যাচারে দেশবাসীদিগকে উৎ-পীড়িত করেন। ইহারই কুদৃষ্টান্তের অমু-সরণে ইহার পুত্র প্রথম চার্লসের রাজ্যনাশ ও শিরশ্ছেদ হয়। রাজকোপ প্রথমে ধর্ম-ভীক লোকদিগের উপরে পড়িয়াছিল। ইহার ফলে ঈশরের আশ্রুয়া বিধানে আমেরিকার সভ্যতম যুক্ত-রাজ্যের পত্তন হয়। ইহা কিরপে হইয়াছিল, তাহারই বিবরণ নিয়ে লিধিত হইতেছে।

ইংলণ্ডেৰ অন্তঃপাতী নটিংহাম সায়ারে স্কৃবি নামে একটা কুদ্র নগর আছে। এই নগরে কয়েকটী শান্তপ্রকৃতি ধর্ম-পরায়ণ লোক বাস করিতেন। তাঁহারা রাজবিধিবিহিত খৃষ্টানধর্মের ক্রিয়াকাণ্ডের বিরোধী ছিলেন। তাঁহারা ক্রন্তার (Brewster) নামে এক ভদ্র লোকের বাটীতে গোপনে মিলিত হইয়া উপাসনাদি কার্য্য করিতেন। রবিন্দন নামে এক জ্ঞানী ও সাধু লোক তাঁহাদের আচার্যাপদে বৃত হন। রাজকর্মচারীরা তাঁহাদিগের গুপ্ত ধর্ম-সাধনের সন্ধান পাইরা বিধিমতে তাঁহা-দিগকে নিৰ্যাতন করিতে লাগিলেন। মাহুবের স্বদেশ প্রাণ অপেক্ষাণ্ড প্রিয়তর, বদেশ অপেকাও আবার ধর্ম প্রিয়তর। এই ধর্মাত্মাগণ ধর্মবন্ধার উপায়ান্তর না দেখিয়া অবশেষে হির করিলেন

विरम्पः शिवा स्रोधीन छार्व धर्म्यसम्बन् क्रियदन।

এই যাত্রীর দল ভবিষাতে "Pilgrim fathers" বা সন্ন্যাসী বাবার দল বলিরা প্রদিদ্ধ হন। ইহারা প্রথমে একখানি লাহাজে দ্রব্য সামগ্রী লইয়া হলওে যাইতে উপ্থত হন, কিন্তু রাজ-সৈম্পুণ তাঁহাদিগকে আক্রমণ করিয়া সমুদান দ্রব্য সামগ্রী লৃটিয়া লয় এবং বোষ্টন নগরের বাজারে তাড়াইয়া লইয়া আইলে; তথার ইতর লোকেরা এই সাধু লোকদের উপরে যৎপরোনাত্তি অত্যাচার করে। ইহার পরে তাঁহারা কয়েক সপ্তাহ কারানও ভোগ করিয়া অনেক কঠে মুক্তিলাভ করেন।

পর বংশর তাঁহারা প্নরায় প্লায়নের
চেন্টা করেন। এবার অর্দ্ধেক লোক জাহাজে
চাপিয়াছেন, জার অর্দ্ধেক লোক তীরে
বোটে করিয়া আদিবার জক্ত অপেক্ষা
করিতেছেন, এমন সময়ে সৈনিক দল
আদিয়া পড়িল। জাহাজের কাপ্তেন
তাড়াতাড়ি জাহাজ ছাড়িয়া দিলেন।
তীরস্থ সঙ্গীরা গৃত হইয়া কারাগারে অবকৃদ্ধ হইলেন। কিছু দিন পরে মৃক্তিলাভ
করিয়া তাঁহারাও হলতে প্লাইয়া
আইদেন। আচার্য্য রবিন্সন হলত্তে, তাঁহার
মন্তলীস্থ সকল লোককে পাইয়া প্রেম

যাত্রিদল হলতে >> বংসর কাল

অতিবাহন করেন, এবং নানাবিধ শিল্পকার্য্যে অসাধারণ ধৈর্য্য ও পহিষ্ণুতার পরিচয়
দিয়া ওলন্দাজদিগের বিশ্বাস ও প্রীতিভাজন
হন। সেই সঙ্গে তাঁহাদের বিলক্ষণ
অর্থাগমও হইতে থাকে। ক্রপ্তার সাহেব
একটা ছাপাখানা খুলিলেন এবং স্বাধীনতা
বিষয়ে অনেক পুস্তক প্রচার করিতে
লাগিলেন। এই পুস্তক সকল দেখিয়া
ইংলগুরাজ জেম্স বড়ই ক্রিপ্ত হইয়া
উঠিলেন, এবং ইংলগুবাসীদিগের উপরে
অধিকতর অত্যাচার করিতে লাগিলেন।
তাঁহার অত্যাচার সংক্রিতে না পারিয়া
আরও কতকগুলি ইংরাজ এই যাত্রিদলের
সহিত আসিয়া মিলিত হইলেন।

হলতে যাত্রিদলের উপর কোন রাজঅত্যাচার ছিল না বটে, কিন্তু তাঁহারা বে
ধর্মজাব ও স্বাধীনতা লইয়া তথায় আসিয়াছিলেন, তাহা সেই দেশবাসীদিগের
সংস্রবে মান হইতেছে দেখিয়া তাঁহারা
অতিশয় হঃখিত ও চিস্তিত হইলেন।
তাঁহানের ভয় হইতে লাগিল পাছে তাঁহারা
ওলনাজজাতির সহিত মিশিয়া এক
হইয়া যান। অনেক ভাবিয়া চিস্তিয়া
তাঁহারা স্থির করিলেন শাটলাণ্টিক মহাসাগরের পরপারে এক ন্তন রাজ্য পত্তন
করিবেন, এবং তথায় আপনাদিগের ধর্ম
স্প্রশান্তিতিত করিবেন।

১৬২০ খৃষ্টাব্দের জ্লাই মাদে নৃতন দেশে
যাত্রা করিবার জন্ম তাঁহারা সমুদ্রতীরে
আসিয়া জামু পাতিয়া বসিয়া ভজনা আরম্ভ
করিলেন। একথানি ক্ষুদ্র জাহাজ তাঁহাদের
জন্ম প্রস্তুত, কিন্তু তাহাতে একশতের
অবিক গাত্রী ধরিল না। ইহাঁদের টাকারও
অভাব; অনেক লোক পশ্চাতে পড়িয়া
রহিলেন,তথাপি তাঁহারা ক্রন্দন ও প্রার্থনার
সহিত সহচরদিগকে বিদায় দিলেন, এবং
বলিতে লাগিলেন "আমরাও কিছুদিন
পরে তোমাদের অমুসর্গ করিব।" আচার্য্য
যাত্রীদিগকে জ্ঞানগর্ভ উপদেশ দিয়া বলিলেন
"নৃতন সত্যগ্রহণের জন্ম তোমাদের
মনকে সর্কাদা, প্রস্তুতা রাখিবে।"

এই যাত্রিদল আমেরিকার নৃত্র ইংলও প্রদেশের স্থাপনকর্তা। ইহারা ইংলওের প্রাইমাউণ বলর হইতে ছাড়েন বলিয়া যে স্থানে উপনিবেশ স্থাপন করিলেন, তাহার নামও প্রাইমাউণ রাখিলেন। ইহারা সজলনয়নে তুলনক দিন স্বাধীনভাবে ধর্ম্মাজনের উপায় লাভার্থ ঈশ্বরের নিকট প্রার্থনা করিয়াছিলেন। ঈশ্বর ইইাদিগের সরল ও কাতর প্রার্থনা পূর্ণ করিয়াছেন। ইহারই ফল আমেরিকার বর্ত্তমান ধর্মান্থানিতা—ইহারই ফল আমেরিকার বর্ত্তমান স্ব্রিকাণ মহোরতি।

কতকগুলি সুমাতা।

৫ম সংখ্যা।

কোনও চরিত্রবান্ সাধু বলিয়াছেন ''ব্যাকুলতা চরিত্রগঠনের জন্ম সম্পূর্ণ ক্ষেহমগ্ৰী জগ্য অফুকুল''। সস্থানের মাতার প্রাণ যাদৃশ ব্যাকুল, আর কাহারও জন্ম কাহারও প্রাণ তাদৃশ হয় না। ব্যাকুল-ভাবে দীনভাবে প্রার্থনা করিলে যে দয়াময় প্রমেশ্র প্রার্থিত বস্তু প্রদান করেন, তাহা এই ভক্তিমতী মহিলার জীবনে স্থস্পই রূপে প্রমাণিত হইতেছে। **সহিষ্ণ**তা नातीहितरवंत अधान खन। ধাশ্মিকা জননী প্রার্থনা ও সহিষ্ণুতা দারা চূর্নান্ত পাপী সম্ভানের জীবনে কিরূপ মহা পরিবর্ত্তন আন্যুন করেন, স্থ্যাতার শাসন ও শিক্ষা কিরুপে সন্তানকে অপবিত্রতা হইতে রক্ষা করে, এই মহিলা তাহার मम्पूर्व निपर्भग ।

মহাসূত্র দেউ অগস্থিনের জননী মণিকা দেবী ৩০২ গৃথাকে আফ্রিকাপণ্ডের এক নগরে জনগ্রহণ করেন। ইহার জনক জননী ধর্মপরায়ণ ভদ্রবংশজাত ধনী লোক ছিলেন। তাঁহাদের উপদেশ ও সাধু দৃথাত্তে অতি শৈশবাবভাতেই মণিকার অন্তরে সাধুতার বীজ নিহিত হইয়াছিল। মণিকা দেবী কোনও অভ্যায়াচরণ করিলে তাঁহারা তাহাকে তংক্ণাং শাসন করিতেন এবং সকল কার্য্যেই কর্দ্রব্য-পরায়ণতা ও ইক্সিয়-সংযুদ্ধের আবৈশ্রকতা স্ক্রম্বরুপে

বুঝাইয়া দিতেন। মণিকা সাধু পিতা
মাতার সদ্প্রান্তে যৌবনসীমায় পদার্পণ
করিয়াই ধর্মচিন্তা ও ধর্মতৃষ্ণা দারা সতেজ
চিত্তবৃত্তি ও বলবতী সুথস্পৃহাকে আয়ন্ত ও
সংযত করিয়াছিলেন। ক্রমে তাঁহার
বিবাহের সময় উপস্থিত হইল। তগন্তানগরবাসী জনৈক যুবকের সহিত তাঁহার
পরিণয়কিয়া সম্পন্ন হইল।

তুর্ভাগ্যবশতঃ তাঁহার পতির চরিত্র বড্ট কদৰ্য্য ছিল। কিন্তু মণিকা দেবী বিবাহের পরেই তাঁহার গৃহে আগমন করিয়া সর্বাদ সহিফুতা, নম্রতা, সপ্রেম ব্যবহার ও স্থমিষ্ট বচনের দারা তাঁহাকে স্থ্যী করিতে ও স্তুপুণে আনিতে প্রয়াদ পাইতেন। তিনি ভ্রমেও স্বামীর অস্চ্চরিত্রতা ও চুর্স্বাবহারের বিষয় কাহারও নিকট প্রকাশ করিতেন না। সর্মানাই বলিতেন "বিপণগামী ব্যক্তিকে স্তপণে রক্ষা করিতে হইলে প্রেম ও প্রার্থনাই একমাত্র মহৌষ্ধি।" ভিনি মুথে যাহা বলিতেন, কার্যোও তদমুরূপ করিতে যত্র করিতেন। তাঁহার প্রসন্ন প্রিত্র মুখে সাধুতা, বিনয় ও গভীর ধর্মনিষ্ঠার জ্যোতিঃ मर्यामा कृषिया वाश्ति इंडेड। সচ্চরিত্রতায় মুগ হইয়া ভাঁহার, পতির আত্মীয় বন্ধুগণ এবং উচ্চার ৰজঠাতুরাণী তাঁহাকে গভীর শ্রদ্ধা করিতেন। **কণিত** আছে, তাঁহার পতি মৃত্যুর করেক বংসর পূর্ব্বে সমুদার ফুঁছার্য্য পরিত্যাগকরতঃ খৃষ্ট-ধর্মাবলধী হইয়াছিলেন।

মণিকা দেবী যথাসময়ে ছইটা পুত্র ও একটা কলা প্রসব করিলেন। তমধ্যে তাঁহার জ্যেষ্ঠ পুত্র সেণ্ট অগষ্টিন বিল্লা বৃদ্ধি ও ধর্ম্মনিষ্ঠায় বিখ্যাত হইয়াছিলেন। মণিকা ও তাঁহার স্বামী তাঁহাদের প্রতিভা-শালী পুত্রকে তৎকালপ্রচলিত লায় ও অলঙ্কারশাস্ত্রে পারদর্শী করণার্থে কার্থেজ নগরে প্রেরণ করিলেন। অগষ্টিন কার্থেজে গিরা অভিভাবকশ্ল ও নান্তিকমতাবলম্বী হইয়া ঘৌবনকালেই ঘোর পাপে লিপ্ত হইয়া পড়িলেন। এইরূপ অবস্থায় তাঁহার পিত্র-বিয়োগ হইল।

বিধৰা পবিত্রপ্রাণা জননী মণিকা পুত্রের ব্যবহারে মর্মান্তিক যাতনাগ্রন্থ হইলেন। তিনি যৌবনমদে মন্ত পুত্রের হস্ত ধরিয়া কান্দিয়া কতই ব্যাইলেন, তিনি কি ভয়ঙ্কর পথ অবলম্বন করিয়াছেন তাহা ব্যাইতে অনেক প্রয়াস পাইলেন। কিন্তু হার! সমস্ত চেপ্তাই বিফল হইল। ধার্মিকা জননীর প্রাণ ফাটিয়া যাইতে লাগিল, সমস্ত বাক্য ও মর্মভেদী অশ্রুজল অরণ্যে রোদনের স্থায় নিফল হক্ষা গেল।

তথন মণিকা মাতা নিরুপায় হইয়া একেবারে দয়াময়ের শরণাপদ্ধ হইয়া তাঁহার নিকট ক্রন্দন করাই শ্রেষ্ঠ উপায় জানিয়া ঐ উপায়ই গ্রহণ করিলেন। হায়! সে ছবিটা মনে করিলেও শরীর কণ্টকিত হয়। পবিত্রপ্রাণা সাধনী জনন্ম একমনে জাল্প পাতিয়া বক্ষঃস্থলে অঞ্জাল বন্ধ ও্নিয়ন মুক্তিত করিয়া পুত্রের স্থমতির অন্ত প্রার্থনা করিতেছেন। মুক্তাফলের ন্তার কণাগুলি গণ্ডস্থল প্লাবিত করিয়া বক্ষে পতিত হইতেছে; পলক নাই, জক্ষেপ নাই, দৃক্পাত নাই, নিজের অন্তিত্ব পর্যান্ত ভূলিয়া গিয়াছেন। **ज्जनारिक मक्**रि নিক্ৰান্ত হইল, মণিকা আচাৰ্য্যকে বলিলেন "ছঃখিনীর প্রতি কুপা করুন, প্রিয়তম পুত্রের জন্ম প্রার্থনা করুন।" আচার্য্য ২া৪ দিন শুনিলেন, নিত্য ঐ এক কথায় বিরক্ত হইয়া বলিলেন "বাছা। গ্রহে যাও, যে পুত্রের জন্ত এত পতিত হইতেছে, সে পুত্র কি কথন একে-বারে নষ্ট হইবে ?" তিনি আশ্বন্ত হইয়া গৃহে ফিরিয়া আসিলেন।

এদিকে অগষ্টিনের কার্থেজ নগরের শিক্ষা একরপ সমাপ্ত হইল। তথন তিনি স্কু প্রসিদ্ধ রোমনগরে গিয়া কোনও প্রকার অধ্যাপকতা কার্য্যে নিযুক্ত হইবার বাসনা করিলেন। রোম মহানগর, তথায় বিপথ-গামী যুবকদিগের জন্ম সকল প্রলোভন-দার উন্মুক্ত, স্থতরাং রোমের নাম শুনিয়াই মণিকার মন্তকে বজ্রপাত হইল; তিনি কম্পিতহাদয়ে পুত্রকে বারম্বার নিষেধ করিলেন। কিন্তু অগষ্টিন মাতৃবাক্য শুনি-বার লোক ছিলেন না। তাঁর সঙ্কল স্থিরতর রাখিলেন। স্বতরাং মণিকা দেবী তাঁহার সহিত যাইবার ইচ্ছা করিলেন। অগষ্টিন কি করেন, মৌধিক সন্মত হইয়া মাতাকে সঙ্গে লইলেন। কিন্তু ব্রাত্রিকালে সমুদ্রের উপকৃলে নিদ্রিতা মাতাকে ফেলিয়া রাধিয়া পোতারোহনে চলিয়া গেলেন। নিজাভলে জননী পুত্রের কার্য্য অবগত
হইয়া যম্ভণায় মূচ্ছিতা হইলেন। তাঁহার
আত্মীয় বন্ধুগণ অনেক কটে সাম্বনা করিয়া
ভাঁহাকে গৃহে লইয়া গেলেন।

গ্রীম্মকালের ভয়ানক উত্তাপে মানবগণ ব্ধন অস্থির হইয়া পড়ে, সেই সময়েই সুবৃষ্টি হইয়া তাপিত জীবকুলের প্রাণ সুশীতল করিয়া দেয়। "ছঃখের পর সুধ" এक जी अवामवाका। भंदी त्रमहत्त्व त्यमन, মানসিক বিষয়েও তজ্রপ। বিশ্বস্তার অপার করুণা—অনস্ত দয়া। তাঁহার উপর নির্ভর-হীনতা ও বিশাদহীনতা প্রযুক্তই আমরা সময় সময় নিরাশ হইয়া পড়ি ও কষ্ট পাইয়া থাকি। মণিকা দেবীর ছঃথের "বোঝা" এত গুরুতর হইয়া উঠিশ যে, তার উপর আর "ভার" চাপাইলে তিনি একেবারেই মারা পড়িবেন। যৌবনের প্রারম্ভ হইতে প্রোঢ়াবস্থা পর্যান্ত তাঁহার প্রথমে স্বামী,এবং তৎপরে পুত্র হইতে: হু:খ ও অশাস্তিই উৎপন্ন হইয়াছিল। ছঃখিনী মণিকা এ পৰ্য্যস্ত সস্তান হইতে স্থুপ অমূভব করেন নাই। এইবার দয়াময় তাঁছার কঠোর তপস্ঠায় পরিতৃপ্ত হইলেন। এইবার মণিকার মেঘাচ্ছন্ন অদৃষ্ট পরিষ্কার হইবার উপক্রম হইল। ভগবান্ স্কঠোর তপস্তায় পরিতৃষ্ট হইয়াই যেন এইবার তাঁহাকে বরপ্রদান করিলেন।

এদিকে কতকদ্র গিরা হর্দান্ত অগষ্টিন প্রোণে বড়ই বাধা পাইতে লাগিল। নিজের হর্ব্যবহারের বিষয় শ্বরণ হওরাতে

অনুভাপে ভাহার হদরে শত শত বৃশ্চিক बर्भन क्रिएंड गांशिंग। अक मिरक स्वर्वेषी মাতার সধাবহার, পৰিত্র সভাব এবং নিঃৰাৰ্থ প্ৰেম ও উদারতার সহিত সেবা वज्र हेजामि, अञ्च मिटक निरस्त्र ध्र्मायहोत्र, অপবিত্র চরিত্র, অপ্রেম ও অনুদারতা ভাবিরা ক্লোভে ও হ:খে তাঁহার হানর विनीर्ग श्रेट नांशिन। मक्तांकान, नीट অগাধসমূদ্রের স্থনীল বারিরাশি মৃছ মন্দ সমীরণ হারা বিক্ষোভিড ও ভর্কা-তছপরি নীলাকালের ब्रिड हहेटडाइ, প্রতিবিম্ব সান্ধ্য কিরণরাশির সহিত পতিওঁ হইয়া অপুর্ব্ধ শোভা বিস্তার করিয়াছে। পাপরোগগ্রস্ত অগষ্টিন এই সমন্ব একেবারে অস্থির হইয়া পড়িল। বিশ্বস্তার অনস্ত কৰুণার হুরস্ত অগষ্টিনের পাপজীবন এইখানেই বিনষ্ট হইয়া নবজীবনের স্ত্রপাত হইল। মণিকা সতীর অঞ্জলে প্রার্থনার বীঞ্চ এইবার অঙ্গুরিত হইতে আরম্ভ হইল।

কিছুক্ষণ এইরূপ অন্তাপের তীব্র দংশন ভোগ করিবার পর অগষ্টিনের চৈতন্ত হইল। স্মাতার অশ্রমিক্ত নয়ন ও কাতর হাদর-ভেদী বাক্যগুলি স্তিপপার্কা হইবামান্ত অগষ্টিন গৃহে ফিরিয়া যাইতে মনঃস্থ করিলেন এবং ক্ষুদ্র তরী আরোহণে তাগস্তাভিমুখে বাত্রা করিলেন। তিন দিন পরে মণিকা জননী কুপথগামী প্রকে তীব্র অন্তাপের সহিত প্রত্যাগত দেখিরা সাধরে ব্রহণ করিলেন। ধৈর্যাশীলা পবিত্র অননীর প্রার্থনা এতদিনে পূর্ণ হইল। রে আ স্ক্রিল

পাপলোতে আপনাকে ছাড়িয়া দিয়া-ছিলেন, তিনি এখন ধর্মবাজক পদ গ্রহণ করতঃ জ্বলস্ত আমোৎসর্গ, গভীর ধর্মনিষ্ঠা ও কর্ত্তব্যপরায়ণতার জন্ম "দেউ" (শ্বৰি) উপাধি দারা বিভূষিত হইলেন। (ক্রমশঃ)

হেঁয়ালি।

সরস্বতী-ছারে বসি ত্রিভঙ্গ মুরারি,
ভামল স্কাম, মুথে মোহন বাঁশরী।
তাঁরে ছাড়ি কে লভিবে ধন মান জ্ঞান?
•হেরি রূপ কাঁপে কিন্তু শিশুর পরাণ।

যত্নে শিশু বশ তাঁরে কর একবার, থগ বাহনেতে জয় করিবে সংসার। দ্বার খুলি বিভাদেবী আদরে লইবে, সর্বাশান্তে স্ক্রপণ্ডিত অচিরে হইবে।

নূতন সংবাদ।

, ১। শশুন নগরের ছোট বড় যাবতীয় ব্যবসাদারের প্রাত্যহিক বিজ্ঞাপনের ব্যয় প্রতি সপ্তাহে প্রায় ৪০ লক্ষ টাকা।

২। নিউইয়কে চুল কাটিবার এক নৃতন বৈছাতিক যন্ত্র আবিদ্ধত হইয়াছে। এ যন্ত্রের এক অংশ চিক্লণীর স্থায় এবং উহার দম্ভ-শুলি প্লাটিনম্ ধাতু দারা আবৃত। যন্ত্রস্থিত ভাড়িতপ্রভাবে এই চিক্ষণী চুলের উপর নিরা টানিয়া যাইলে, চুলগুলি অতি পরি-ক্ষত ও সমানভাবে কাটিয়া যায়।

। মহীশ্রের মহারাণী স্বরাজ্যের বয়য়া
বিধবাদিগের বিভাশিকার জভা বালিকা
বিভালয়ের তিনটা অতিরিক্ত শেল্পী খুলিবার আদেশ দিয়াছেন। বিধবাদিগের

উপযুক্ত শিক্ষা পাইবার স্থযোগের জন্ত যথোপযুক্ত মাসিক বৃত্তির ব্যবস্থা করা হইয়াছে। শিক্ষা সমাপ্ত হইলে বালিকা-বিভালয়সমূহের শিক্ষয়িত্রা-পদে ইহাঁ-দিগকে নিযুক্ত করা হইবে।

৪। বিজ্ঞান-জগতের মহারথী অধ্যাপক হক্সলির মৃত্যু হইয়াছে। জীবতত্ত্ব সম্বন্ধে তিনি অনেক অভিনব আবিদ্ধার এবং পদার্থ-বিজ্ঞানশাল্পের অনেক উন্পতি করিয়া গিয়াছেন।

 ৫। ফ্রান্সের উত্তরাংশে থেন্লেস নামক স্থানে মার্শেরাইট রোনিনিড নামী এক বালিকা বিগত ১১বৎসর মধ্যে এক মুহূর্ত্তের জক্তও জাগরিত হয় নাই। আশ্রুর্যের বিষয় এই বে, এই बॉनिकाর नातीतिक धक्तिवात । देश वाजी**उ त्य विश्वान** কোন বৈলক্ষণা ঘটে নাই। নিদ্রিত অবস্থার মধ্যে মধ্যে সে চীংকার করিয়া থাকে:

করা কঠিন।

পুন্তক-প্রাপ্তি।

- (১) বিস্থাসাগর—শ্রীযুক্ত চণ্ডীচরণ বন্দ্যো-। (৩) প্রেম—শ্রীহেমেক্স নাথ সিংহ প্রণীত, भाशाय अभीज, मना २॥० हाका।
- (২) উপনিষদঃ, ২য় পণ্ড,—শ্রীদীতানাথ **দ**ख मम्लामिङ, मुला ১ होका।
- मुना > होका।

স্থানাভাবে এবারও কোন সমালোচনা প্রকাশিত হইল না।

বামারচনা।

वर्षा-वाला ।

কি. দাজে দেজেছ আজ. আনরি বরষাস্তি। কোষা লাগে এর কাছে. শরং-বসস্ত-জ্যোতি। ১ গলায় বিজ্লীহার আহাকি স্থন্য সাজে. মেঘ-গ্রজন-চলে চরণে নূপুর বাজে। ২ আকাশেতে ছুটাছুটি করিতেছে মেঘদল: ধরণী কর্দমময় ঝমঝম পড়ে জল। ৩ গাছের পাভায় পডে हेल हाल वातिविन. তব মুথ দেখি স্থাপ উথলি উঠিছে সিন্ধ। 8 ময়ুর পেথম তুলে ভোমার নহিমা গার,

তোমার ও-সোণা-মুখ কার না হৃদয়ে ভার গ যুঝিছে তারকা সাণে জলদ গরবভরে, দে যেন আকাশে ঠাই দিবে না একট তারে। প্রকৃতি শ্যামল বাদে हांक मुथ हांकियादह. হেরি সে মধুর দুশ্য হ্ৰপে প্ৰাণ বিগলিছে। তোর ও-মুরতি মোরে করেছে পাগল পারা, দেখেছি অনেক রূপ. দেখিনি এমনধারা। ৮ প্রাণ-মাতান রূপ তোর লো বরষা-বালা, তোর রূপ ভাতি মোর क्षम् करत्रक याना।

ভোর ও-রূপের লোভে फुटव रंगन भन्नाभान। कि चाक्रया पुरव गारव আমার এ কুত্র প্রাণ! ১০ তোর ও-মূরতিথাবি আলোক আঁধারে মেশা, যত দেখি তত মোর শরৎ বসস্ত শীত তোর কণা তুল্য হয়, তোর বুকে অবিরত প্রেমের তুফান বয়। ১২ তোর প্রেমে ডুবে গেল, রুবি শশী তারারাশি. তাইত বরষা আমি, তোরে এত ভালবাসি। ১৩ বাসস্তী উষায় ডুবে যাকু যে ভুবিতে চায়। আমার হৃদয়-ভূলে, বারেক চাহে না তার। চাহি না ডুবিতে আমি भात्रम (आइना-करत,

ভূবিবে না হিয়া মোর^{্ড} বীণার ললিত করে। ডুবাতে নারিবে মোরে বসস্ত-কোকিল-তান, वत्रवात्र नी निमात्र ডুবে রবে মোর প্রাণ। বরষা লো তোর ওই দোণা-মুখে মধু হাসি, আমি বড ভালবাসি তোরি মাঝে রব মিশি। তোর আগমনে আজ. व्यनीत्म ननीम नत्न, पिथि दश्न मिनामिनि, কারে যেন পড়ে মনে। ১৮ रम रयन नग्रतन खार्श, মোর মনে পড়ে যারে. করি কত অন্বেষণ, অথচ না পাই তাঁরে। ১৯ বোধ হয় তোর মাঝে ডুবিলে তাঁহারে পাব, তোরি মাঝে ডুবে আমি তাঁহারে খুঁজিয়া লব। শ্ৰীমতী নগেব্ৰবালা মুস্তোফী।

আবাঢ়ের হেঁয়ালির উত্তর।

শ্হশএতে আকার আর "ব"এ শৃস্ত র, এই ইেলালির এই প্রক্বত উত্তর। তিন বার পড়িয়াই বুঝিলাম সার, আবাকের ইেলালিটা শ্রেট অন্তার। আহার, প্রহার, উপহার ও সংহার, এই দব উপদর্গে হেঁরালি বাহার। অন্মুক্তাসুন্দরী দাসগুপ্তা।

वागात्वाथिनी পত्रिका।

BAMABODHINI PATRIKA.

"कन्याप्येवं पालनीया शिच्चणीयातियत्नत:।"

কন্তাকে পালন করিবেক ও বত্তের সহিত শিক্ষা দিবেক।

৩৬৮

मः था।

ভাদ্র ১৩০২—সেপ্টেম্বর ১৮৯৫।

৫ম কল।

৪র্থ ভাগ।

-বামাবোধিনীর ত্রয়স্ত্রিংশ জঝোৎসব।

এস ভাই বোন্ সবে,
শুভ জনম-উৎসবে,
আজি শুভদিন শুভক্ষণ,
প্রীতির কুস্থম-হার,
ভক্তিভরে উপহার
দিয়া পৃঞ্জি বিভুর চরণ।
জীবন সঞ্চার হ'তে,
সেই বিধি বিধিমতে,
করিছেন রক্ষণ পালন;
উন্নতি স্থা কল্যাণ,
সকলি তাহার দান,
অজন্র অজন্র অগণন।
তাহারই চরণাশ্রয়ে,
ক্র কলেবর লয়ে,

জনমিয়া এ বামা-বোধিনী;

অবলা-হিতের তরে,

সামান্ত যতন ক'রে,

কত প্রথে হ'য়েছে স্থিনী!

আজি বঙ্গে ঘরে ঘরে,

পুত্তক নারীর করে,
গ্রামে গ্রামে নারী-শিক্ষালয়;

নারী—

বিশ্ববিছালয়ে আজি,

উপাধি-ভূষণে সাজি,

গৌরবে পুরুষে করে জয়।

আজি নারী দেয় শিক্ষা,

উপদেশ ধর্ম্ম দীক্ষা,

পত্রী গ্রন্থ করে বিরচন;

দেশের হিতের তরে,
জীবন উৎসর্গ করে,
আত্মহুখ করি বিসর্জ্জন।
হয় নাই কড়ু যাহা,
হতেছে এখন তাহা,
আরো কি হইবে কেবা জানে ?
ধন্ম দেব দয়াময়,
তোমার কুপার জয়
বিজ্ঞগৎ সতত বাখানে।
ছখিনী তোমার মেয়ে,
আছে এই দেশ ছেয়ে.

আজও কত সহিছে পীড়ন,
কুসংস্কার, দেশাচার,
কতবিধ পাপাচার,
নারী-প্রাণ করিছে দাহন।
কুপাময়!
কর প্রভু কুপা কর,
তাদের তুর্গতি হর,
যাচি ভিক্ষা আজি নত-শিরে;
নারীর উন্নতি-ফলে,
স্বর্গরাজ্য ধরাতলে,
অবতীর্ণ হউক অচিরে।

সাময়িক প্রসঙ্গ।

নৃতন পার্লেমেণ্ট—গত ১৫ই আগষ্ট নৃতন পার্লেমেণ্ট মহাসভার অধিবেশন হইয়াছে। দাদা ভাই নৌরজী এবার মনো-নীত হইতে পারেন নাই।ভারতবাসীর মধ্যে মে: ভাউনগিরী নৃতন সভ্য হইয়াছেন। দাদার দৃষ্টান্তের অহুসরণ করিয়া তিনিও ভারতের কল্যাণ্সাধ্যে নিযুক্ত হউন।

মহারাণীর বক্তৃতা—নৃতন পার্লেমেন্ট রাজকীয় কমিসন ছারা খোলা হয় এবং লর্ড চান্দেলর মহারাণীর বক্তৃতা পাঠ করেন। ভাহার সার মর্ম এই:—

সকল বিদেশীয় রাজ্যের সহিত সম্ভাবের সমার্চার পাইয়াছি। ইউরোপের শান্তি-অব্দেহ্র কোনও কারণ নাই। জাপান জুলীনের সধ্যে বে সন্ধি হইয়াছে, তাহা ষায়ী হইবে আশা করা যায়। স্থাকিয়েন প্রদেশে ইংরাজ মিদনরী হত্যার জন্ত পরিতাপ করিতেছি; আশা করি ঠিন-গবর্ণমেণ্ট যেরপ উদ্যোগী হইয়াছেন, অপরাধীদিগের উপযুক্ত দণ্ডবিধান হইবে। আর্মেনিয়ার প্রতি অত্যাচারে দম্দায় খৃষ্টানজাতি এবং বিশেষতঃ ইংরাজ জাতি কৃদ্ধ হইয়াছে। ব্রিটিশ, করাসী ও রুশীয় রাজদ্তেরা বে দকল প্রস্তাব করিয়াছেন, স্থানা তৎসম্বন্ধে কিরপ মীমাংসা করেন দেখিবার প্রতীক্ষা করিতেছি।

জাপানের প্রাচীনত্ব—জাপান একটা প্রাচীন রাজ্য, ইহার ২৫০০ বংসরের ইতিহাস লিখিত হইরাছে। বেপুন স্মৃতি-সন্মিলন—ভারত-হিতৈবী মহাত্মা বেধুনের শরণার্থ তাঁহার স্বর্গা-রোহণ-দিন ১২ই আগষ্ট প্রায় ৪০।৫০ টী মহিলা ও কতকগুলি ভদ্রলোক তাঁহার সমাধিস্থলে গিয়া তাঁহার প্রতি সম্মান প্রদর্শন করিয়াছেন। এরূপ ভক্তির অমুষ্ঠান স্বায়ী হওয়া প্রার্থনীয়।

চীনে অরাজকতা—চীনের। কুচিওনামক স্থানে কতকগুলি ইংরাজ ধর্মপ্রচারককে হত্যা করিয়াছে। ইংরাজগবর্ণনেন্ট এ জ্ফর্ম্মের সমুচিত দণ্ডবিধানার্থ
বদ্ধপরিকর হইয়াছেন।

শাশুড়ীর সোভাগ্য—জানজিবারের জামাই শুগুরের গ্রামে গিয়া বাস করে এবং বিনা বেতনে শাশুড়ীর গোলামী করে।

ভুণেজ আইন—বঙ্গীয় ব্যবস্থাপক
সভায় জলনিকাশের এক নৃতন আইন বিধিবন্ধ হইয়াছে। অধিকাংশ গ্রন্থানিটি কর্ম্মচারী ইহার পক্ষ এবং দেশের প্রতিনিধিরা
বিপক্ষ ছিলেন। নৃতন ট্যাক্স ব্যিবার

সম্ভাবনা। কিন্তু ইহা যারা দেশের যথার্থ ছিত হইবে কিনা, সন্দেহ।

বৌদ্ধ টেক্ফ-বুক সভা—ভারত-বিজ্ঞান-সভাগৃহে ইহার এক অধিবেশন হয়। পূর্ব-উপদ্বীপ-প্রচলিত এক নৃতন রামায়ণের ছবি তাহাতে প্রদর্শিত হর— ইহাতে রামের নাম গদ্ধ নাই, রাবণ অহ্নর ভারত-রাজ ইন্তকে পরাজ্য করেন। কাম্বোডিয়ার এক প্রাসাদের ভ্রমাবশেষ, বর্ণিত হয়, ইহা অর্দ্ধ ক্রোশ যুড়িয়া আছে, মন্দিরটীতে ৬৪০০০ স্তম্ভ ছিল। ইহা ভারতবাসীদিগের হারা নির্শ্বিত।

মুকুল—এই নামে একথানি নৃতন পাক্ষিক পত্রিকা বাহির হইরাছে। ইহা বালক বালিকাদিগের উপবোগী। ইহাতে অনেক স্থল্পর ছবি ও গল আছে।

মহতের মৃত্যু—অধ্যাপক **হক্দলি** সম্প্রতি পরলোক গত হইয়া**ছেন। ইনি** পাশ্চাত্য বৈজ্ঞানিকদিগের মুপ্পাত্র ছিলেন।

গোবিন্দের গৃহত্যাগ।

(5)

ছুরী, কাঁচি ও অভান্ত গোহমর অন্ত শত্রের গঠন জন্ত বর্জমান জিলার অন্তর্গত বে কাঞ্চন নগর ভারতের সর্ব্বত্র খ্যাত, ৩৮৭ বংসর পূর্ব্বে, অর্থাৎ শকান্দার পঞ্চদশ শতালীতে তথার এক কর্মকার বাস করিত। অদ্যাপি সেধানে অনেক কর্মকার বাস করিরা ছুরী, কাঁচি গঠন ব্যবসার ধারা জীবিকা নির্মাহ করে। আমরা বে কর্মকার গৃহস্থের বিরুত্বণ বলিতেছি, এখনকার কোনও গৃহস্থ তদ্-বংশীয় কি না, বলা বায় না। ঐ গৃহস্থের নাম সামাদাস ও তাহার পত্নীর নাম মাধবী, পুত্রের নাম গোবিন্দ, পুত্রবধ্র নাম শশিমুখী।

বঙ্গদেশীয় স্বর্ণকার, কর্মকার, স্ত্রধর প্রভৃতি শিল্পী জাতিগণ স্থভাবত: অমিত-বায়ী। তাহাদিগের উপার্জন নিতান্ত অন্ন হয় না; কিন্তু ঐ অমিতব্যয়িতা-*C*मांट्य তাহাদিগের সংসারে नक्षी দাঁডাইতে পারেন না। আমরা প্রত্যক দেখিয়াছি. ঐ জাতীয় ব্যক্তিগণের • দৈনিক আহারাদির পারিপাট্য বড় বেশি. মুত, হগ্ধ, বড় মংস্থা, ছাগমাংস, ভাল তামাক, ২০১ বোতল ধানোখুৱী নভিলে ভাহাদিগের চলে না। शासाधनीत वात-হারটা স্বর্ণকার ব্যতীত অন্যের ঘরে বড় দেখা যায় না। ঘরে চাউল, দাউল, তৈল, লবণ ইত্যাদি নিতান্ত প্রয়োজনীয় দ্রবাদি আছে কি, না আছে, তাহার সন্ধান না লইয়া উক্তজাতীয় ব্যক্তিগণ অনা-য়াসে বড় মংশু বা ছাগমাংস ক্রয় করিয়া শইয়া যায়। গৃহিণীগণ স্বানিগণের এই-রূপ বিসদৃশ ব্যবহারে প্রথমতঃ এক পালা কলহ করিয়া, পরে কাঠা হাতে করিয়া অন্যের বাড়ী চাউল ধার করিতে বাহির হয়। যে ক্তর্ধরের ঘরে এক মৃষ্টি চাউল नार्ट प्र এकितित ममञ्ज डेशार्कन মৎস্যে বা মাংদে ব্যয় করিয়াছে, এরূপ घठेना आयता अठतक तिथिताछि । शुक्रम-গণের এইরূপ আচরণ নিয়ত দর্শন করিয়া ক্রমশঃ স্ত্রীগণও ঐ ভার্টি শিক্ষিতা হইয়া १ए। এই बना .--

"ছুতারের তিন স্ত্রী, তানে কোটে খার, থাকে থাকে, যার যার।"

থাকে থাকে, যায় যায়।"
এই প্রবাদের স্থাষ্ট হইয়াছে। কলিকাতার
অনেক ছুতার লেখা পড়া শিথিয়া "ভদ্রু"
লোক হইয়াছেন, তাঁহারা যেন এ প্রবন্ধ
পাঠে অসন্তুষ্ট না হন। আমরা পাড়াগোঁয়ে ছুতারের কথা বলিতেছি। যাহা
হউক, ঐরপ কোন কারণে, একদা
গোবিন্দের সহিত তাঁহার স্ত্রীর কলহ
উপস্থিত হয়। গোবিন্দ ভবিষ্যৎ জীবনে
এই কলহের কিরপ ফল পাইয়াছিলেন,
তাহা প্রদর্শন করাই এই প্রবন্ধের
উদ্দেশ্য।

(?)

যথন বলালবংশীয় শেষ ভূপতি নব-षी**र्वाधिश लाम्म**र्विष বথতিয়ার থিলিজির আক্রমণভয়ে পলায়ন করিয়াছেন, রাজ-পুরী বিধ্বন্ত হইয়া ধ্বংসাবশেষ স্তুপা-কারে পরিণত হইয়াছে, কিন্তু নৈস্গিক জলনিখাত ভাগীরণী ও থডিয়া তথনও রাজধানী পরিত্যাগ করিয়া দূরবর্ত্তিনী रुष्यन नारे, श्लायन श्रुत नवश्रु (य স্থানে জল্মানে আরোহণ করেন, ভাগীর্থী সেই স্থানেই বিরাজ করিতেছিলেন: জাহবী ও জলঙ্গীর সঙ্গমত্বল যথন শ্রীধাম নবন্ধীপের (অধুনা মারাপুর) পাদপ্রকা-লন-কার্য্য পরিত্যাগ করিয়া গোদ্রুম षीएभत (यक्रभगञ्ज) मक्तिगवर्डी इन नाई: যথন রগুনাথ, রগুনন্দন, গঙ্গাদাস, বাস্ক-(भव, क्रकानम, प्राचानम প্রভৃতি দার্শনিক, মার্ভ, তান্ত্ৰিক, ভাগৰত অধ্যাপকগৰ

নবৰীপ উজ্জল করিয়াছিলেন; যথন
নবৰীপের ঘাটে ঘাটে লক্ষ লক্ষ লোক
গঙ্গান্ধান করিত; যথন নবৰীপ, কাশী,
মিথিলা, পুনার ন্যায় ভারতবর্ধে সংস্কৃতচর্চার প্রধান স্থান বলিয়া পরিগণিত ছিল;
যথন নিমাই পণ্ডিতের শত শত ছাত্র
সকল শাস্ত্রের কৃষ্ণব্যাখ্যা তনিয়া গ্রন্থে
ডোর দিতে বাধ্য হইয়াছিলেন, তথন
(১৪৩০ সংলের) এক দিন পুর্বাহে
একটা পুরুষ নবৰীপের মিশ্র্যাটে উপবিষ্ট হইয়া বিষয়বদনে চিন্তা করিতেছিলেন। চিন্তা করিতে করিতে তাঁহার
মুথ হইতে একটা বাক্য পরিক্ষুট হইলঃ

"আমি বাহাকে দর্শন করিবার উদ্দেশে কাটোয়া হইতে ছটিয়া আসিলাম, তাঁহাকে দেখিতে পাইব কি ?" এই কথা বলিয়াই বেমন বনন উত্তোলন করিয়াছেন, অমনি নেখিতে পাইলেন,—

পেন্টতে গাংমাছা বাধা আশ্চর্যা গঠন।
পঙ্গে এক অবধাত প্রকুল্লবদন ॥
তিন চারি সঙ্গা আরো নাচিতে নাচিতে।
স্থানে নামিলেন প্রভু গঙ্গার গর্ভেতে ॥
অবধাত বার পাড় হইতে ঝাপ দিলা।
সাতারিয়া জলকেলি করিতে লাগিলা॥
শ্রীরাম ঠাকুর পিছু পিছু দামোদর।
দিল্ল হরিদান আর বামে গলাধর॥
অবশেবে আইলা তথা অবৈত গোনাই।
এমন তেজ্বী মুহি কভু দেখি নাই॥
পঙ্কেশে পক্ষ দাড়ী বড় মোহনিয়া।
দাড়ি পড়িয়াছে তাঁর হৃদয় ছাড়িয়া॥
হরিগনি সহ বুড়া করুরে চীৎকার।

অবধৌত সাঁতারিয়া করে পারাপার ম একে একে গলাগতে সবে ঝাপ দিলা। সম্ভবিয়া সবে নানা কেলি আর্ম্ভিলা॥ আশ্র্য্য প্রভুর রূপ হেরিতে লাগিছ। ক্রপের ছটায় মূহি মোহিত হইছু॥ স্থান করি গোঁরাচাঁদ উঠিলা ভাঙ্গাই। কুটিল কুন্তুলরালি পুঠেতে **লোটায়**। শুদ্ধ স্থবর্ণের ন্যায় অঙ্গের বরণ। नीलপ्रमुख म्य द्विभी नम्रन ॥ সুন্দর কপোলযুগ প্রশস্ত ললাট। मह्द हिल्ल एपश्रेष नाष्ट्रेषात्र नाष्ट्रे॥ রাম-রস্তা জিনি শোভে মনোহর উক। তুলি দিয়ে আঁকা যেন ছটা চাক ভুক। আলতা-রঞ্জিত যেন যুগল চরণ। নির্থিলে মুগ্ধ হয় মুনির বর্ম ॥ প্রেমময় তমুখানি মুখে হরিবোল। " যারে পান দয়া ক'রে তারে দেন কোল। হরি বলি অশ্রপাত করে মোর গোরা। পিচ্কারী ধারা সম বহে অঞ্ধারা॥ চলিতে লাগিলা তবে মোর গোরা রাম। অববোত নিত্যানল পিছু পিছু ধায়॥" (১)

এই সময়ে ঐ পুক্ষের সহিত কোন
বাবরের সাক্ষাং হইল। পুরুষ ধাবরের
নিক্ট উল্লিখিত ব্যক্তিগণের প্রত্যেকের
পরিচয় লইপেন। পরিচয় পাইবামাত্র
তাহার কলেবর কদ্যকুস্থমের স্থায় কণ্টকিত হইল, পর পর করিয়া কাঁপিতে
লাগিল এবং স্বেদজলে স্কাঙ্গ অভিবিক্ত
হইল। তাঁহার মনে যে কত অপূর্ব ভাবের

(১) শ্রীযুক্ত পণ্ডিত জয়পোপাল সোৰাবী অকাশিত গোবিন্দদাসের করচা।

উদয়ান্ত হইয়া গেশ, তাহা কে গণনা করিতে এই সময়ে হঠাৎ নিমাই পণ্ডিত शांद्व ? ममंदन সমীপস্থ তাঁহার ब्हेलन । পুৰুষ ছুটিয়া গিয়া তাহার চরণে পতিত र रेटिन न নয়নজ্ঞলে এবং চরণযুগল ধৌত করিলেন। তথন নিমাই পণ্ডিত তাঁহার হস্ত ধরিয়া উঠাইলেন। পুরুষ চরণোপাত্তে করযোড়ে জান্পরি উপবিষ্ঠ হইয়া অঞ্জল রোদন করিতে লাগিলেন। তথন নিমাই পণ্ডিত তাঁহার জিজাগা করিলে কহিলেন,— ["]এত **রু**পা কেন মোরে ওহে দ্য়াময়। অধ্যের নাম গোবিন দাস হয়। ছিলাম গৃহস্থগৃহে নানা কর্ম করি। এবে কিন্তু হইরাছি পথের ভিথারী॥ বিষয় ছাড়িয়া একু প্রভু-দরশনে। এবৈ স্থান দেও প্রভু ও রাঙা চরণে।। वर्कमान काक्षन नगदत त्यात थाय। খ্রামাদাস কর্মকার জনকের নাম। একণে পাঠক পাঠিকাগণ নবদীপের গঙ্গাতীরে উপবিষ্ট পুরুষের মুথে এই পরি-চয় পাইলেন যে, আমরা প্রবন্ধের শিরো-ভাগে স্ত্রীর সহিত কলহ কারী গোবিন্দের উলেথ করিয়াছি, এই পুরুষটা

(0)

खगवान् गृहिव एक्ट्रान्त

नरबीए जानिशाइन ।

ভিক্ষা ছারা উদরপূর্ত্তিঃ করিরা দিন স্থাপন করিব, এ পাপ সংসারে জার রহিব

সেই গোবিন্দ। গোবিন্দ মহাপ্রভুর দর্শন

পাইমা মনে মনে ভাবিতে লাগিলেন,

ছলে আমাকে

না, স্ত্রীর ষহিত কলহাস্তে গোবিন্দ এইক্লপ চিন্তা করিশ্বা কাঞ্চন নগর ত্যাগ করেন। গোবিন্দ .গৃহত্যাগের এইক্লপ হেতুবাদ নির্দ্দেশ করিশ্বাছেন,—

''আমার নারীর নাম শশিমুখী হয়। এক দিন ঝগড়া করি মোরে কটু কয়॥ নিপ্ত ণৈ মূর্থ বলি গালি দিলা মোরে। দেই অপমানে গৃহ ছাড়িলাম ভোরে॥"

গোবিল গৃহ ছাড়িয়া প্রথমে কাটোয়ায়
উত্তীর্ণ হন। তথার শ্রীচৈততা দেবের রূপশুণলীলাদির কথা শুনিয়া তাঁহাকে দেখিবার আকাজ্জা এতই বলবতী হয় যে,
অনাহারে অনিজায় সমস্ত দিবারাত্র মাঠে
মাঠে ছুটিয়া পর দিন প্রভাতকালে
নদীয়ার ঘাটে উপস্থিত হন। তাঁহার এই
আকাজ্জা ভগবান্ কিরূপে পূর্ণ করিয়াছিলেন, আমরা তাহা পুর্বেই বলিয়াছি।

চৈত্ত প্রভু গোবিন্দ দাসের পরিচয়
পাইরা কহিলেন,—"গোবিন্দ, তুমি আমার
সংসারে থাকিয়া প্রতিদিন গঙ্গাজল, তুলসী
আনিয়া,বিফুপ্জার সজ্জা করিবে, নিত্য
হরিনাম সঙ্কীর্ত্তন করিবে এবং উদর ভরিয়া
প্রাদাদ পাইবে। "গোবিন্দ, প্রভুর আজ্ঞা
শ্রবণে ক্কতার্থ হইলেন। বিশেষতঃ তৃতীয়
আদেশটীতে আনন্দের পরিসীমা রহিল
না, কারণ গোবিন্দ দাস একটু উদরপরায়ণ ছিলেন। স্ত্রীয় সহিত তাঁহার যে
কলহের উল্লেখ করা হইয়াছে, তাহা বে
গোবিন্দের উদরপরায়ণতা-ঘটিত, তাহাতে
কোনও সন্দেহই হইতে পারে না।
গোবিন্দ নিজমুখেই শীকারকবিয়াছেন,—

শোক সূপ দ্বি স্ক্রা মোদক পায়গ। বড়া লাড়ু পিষ্টকাদি থাইতে স্থরস 🛭 ু প্রতি দিন শচী মাতা করেন রন্ধন। আনন্দে করেন সবে প্রসাদ ভোজন॥ পেটুকের শিরোমণি মুই হই দাস। দয়ার্কাশ্রভুর পাত্রে খাই বার মাস॥"

গোবিন্দের প্রতি মহাপ্রভুর যে তিন্টী আদেশ হয়, তন্মধ্যে গোবিন্দের স্বহস্ত-লিখিত করচায় ভৃতীয় আদেশ পালন, ষোডোশোপচারে মহাপ্রসাদ অর্থাৎ সেবনেরই প্রাচুর্য্য দৃষ্ট হয়। অধিকন্ত তিনি প্রভু-চরিতের অনেক কথা লিখিয়াছেন। আমরা ভিন্ন ভিন্ন প্রবন্ধে তাহার আলো-চনাকরিবার চেষ্টা করিব। এক স্থলে লিখিয়াছ্ন, মহাপ্রভু,—

"কৃষ্ণ অমুরাগে সদা আকুল হৃদয়। ভনিলে ক্ষেত্র নাম অশ্রধারা বয়॥ ঘদি কেহ "রাধে" বলি উচ্চ শব্দ করে। অমনি অশ্রে ধারা ঝর ঝর ঝরে॥ 'প্রাণক্ল' বলি यनि देमद्य क्र ভাকে। ধেয়ে গিয়ে আলিঙ্গন করেন তাহাকে॥'' এইরূপে গোবিন্দ মহাপ্রভুর সংসারে থাকিয়া তাঁহার রূপগুণ আস্বাদন, তাঁহার দলবলের সহিত শ্রবণকীর্ত্তন এবং প্রসাদ ভোজনাদি ছারা প্রমন্থথে কাল্যাপন ক্রিতেছেন, ইতিমধ্যে একটা মহাঝটিকা উখিত হইয়া তাঁহার জীবন-তর্জিণীতে মহাতরকের সৃষ্টি করিল। মহাপ্রভূ দল্লাস প্রহণ করিরা গৃহত্যাগ করিলেন। কি খরে, কি বাহিরে, কি ভক্তমগুলীতে, হাহাকার ধ্বনি পণ্ডিতসমাৰে,

উঠিল। বেমন পর্কত উল্লেখনপূর্কক নদীর অলপ্রপাত হইলে তাহার বেগ জোব করা অসম্ভব, তেমনি পুরুষ-সিংছ 💐-চৈতভের এই বাসনা-শ্রোতে বাধা দের कारांत्र माधा ? अञ् जननी, त्रमणी, आश्रीत, স্বজন, শিষ্যা, বন্ধু, সকলের নিষেধ উপেকা করিয়া কাটোয়ায় গমনপূর্বক কেশব ভারতীর নিকট সন্ন্যাস গ্রহণ করিলেন। শিখা স্ত্র পরিত্যাগ করিয়া দণ্ড কমণ্ডলু ধারণ করিলেন। তাঁহার কুটিল কুন্তলার্ত মন্তকের মুগুন দেখিয়া মন্থব্যের কথা দূরে থাক, পশু পক্ষীও 'ঝুরিয়াছিল,' পাবাণও গলিয়াছিল। গোবিন্দের পর্ম সৌভাগ্য এই যে, প্রভূ তাঁহাকে পরিত্যাগ করেন নাই, বরাবর দঙ্গে রাখিয়াছিলেন। (8)

যে দিন সন্ধ্যাকালে কণ্টক নগরের গঙ্গাতীরে ভারতী গোস্বামীর নিকট সন্ন্যাস গ্রহণ করিয়া নিমাই পণ্ডিত শ্রীক্বক চৈতক্ত হইলেন, সেই দিন কেশব ভারতী তাঁহাকে কহিলেন,—

"লোক শিক্ষা লাগি তুমি পরিলে কৌপীন। ভক্তিমার্গ দেধাইতে দীনের অধীন॥ অপরাহ্নকালে প্রভূ সন্ন্যাসী হইলা। হলুধ্বনি নারীগণ করিয়া উঠিলা॥ ৰতা পাতা শাখা বৃক্ষ প্ৰেমেতে ভাসিব। পশু পক্ষী কীট যেন নাচিয়া উঠিল।। লক লক লোকে করে পুলা বুরিষণ। কণ্টক নগর হ'লো নন্দনকানন**্**।

আঁলনি পুরিরা যত কুনবধুগণ।

প্রভুর মাথার করে লাজ বরিষণ।। হরিধ্বনি উঠিলেক গগন ভেদিয়া। **গড়াগড়ি** যায় সবে ভক্তিতে রসিয়া॥ আকাশ ভেদিয়া নাম ভাসিছে গগনে। আনন্দে মাতিয়া ভবে যত দেবগণে॥" এই ঘটনার কয়েক দিন পরে বর্দ্ধমান জেলার কোন গ্রামে একটা নবীন সন্ন্যাসী উপনীত হইলেন। তাঁহার সহিত কৌপীন-বহির্বাসধারী আর একটা বৈষ্ণব ছিলেন। এই বৈষ্ণবঢ়ীকে তথন নিতাম্ভ কাতর-ফোবাপর ও উন্মনা বোধ হইতেছিল। সন্ন্যাসী সন্ধী বৈষ্ণবের এইরূপ ভাব দর্শনে তাঁহারপৃষ্ঠে চপেটাঘাত করিয়া কহিলেন "চল তোমাদের গৃহে গিয়া আতিথা খীকার করি।" এই কথা শুনিয়া বৈষ্ণব চমকিয়া উঠিলেন এবং কহিলেন,— "তোমার সন্ন্যাসকালে ধরেছি কৌপীন। **অহন্ধার ত্যজি**য়া হয়েছি অতি দীন। আর ত যাব না প্রভূ আপনার ঘরে। বিষ্ঠাসম ত্যজিয়াছি জঘন্ত সংসারে॥" সন্মাসী ও বৈষ্ণবে এইরূপ কথোপকথন হইতেছে, এই সময়ে একটা স্থলরী নারী **উচ্চর**বে রোদন করিতে করিতে বৈঞ্চবের চরণে আদিয়া আছাড়িয়া পড়িলেন এবং অঞ্গাবিত-লোচনে কহিলেন,— **"সাঁমান্ত ক**থায় তুমি সংসার ত্যজিলে। দাসীর উপায় তবে বল কি করিলে॥ কার ছারে গিয়া ভিক্ষা করিব কোথায়। দয়া **ৰ** রি কেবা ভিক্ষা দিবে গো আমায়॥" হরিচরণ স্বরণে সকল বঁজন কাটিয়া

ৰাৰ ভাৰিয়া বৈষ্ণৰ কেবল দীনভাবে

হরিধ্বনি করিতে লাগিলেন। নবীন স্ক্রাসী ঠাকুর এই ব্যাপারদর্শনে বিশ্বিত জিজাসিলেন,—"গোবিন্দ, এই তোমার কে?" গোবিন্দ কহিলেন. "আমার পূর্বাশ্রমের ধর্মপত্নী,—শশিমুখী" —শশিমুখী প্রিয় ভৃত্য গোবিন্দের নারী শুনিয়া শ্রীচৈতত্যের হৃদয়ে मग्रा इटेल। তিনি তাহাকে অনেক ধর্ম্মোপদেশ দিলেন. তত্ত্বকথা কহিয়া বুঝাইবার অনেক চেষ্টা করিলেন, কিন্তু "চোরা না শোনে ধর্ম্মের কাহিনী", শশিমুখী অজস্ৰ অঞ বিদৰ্জন করিতে এবং গোবিন্দকে গুহে লইয়া যাইবারজন্ম নির্বন্ধাতিশয় প্রকাশ করিতে লাগিল। তথন প্রভূ গোবিন্দকে কহিলেন, "গোবিন্দ,ভূমি গৃহে গমন করিয়া ক্লিছুকাল সংসারধর্ম কর, আমি অন্ত ভূত্য লইয়া পুরী প্রস্থান করি।" এই সময়ে গোবিন্দের অস্তান্ত আত্মীয় স্বজন আসিয়াও তাঁহাকে গহে লইবার .জন্ম বিস্তর যত্ন করিলেন। কিন্তু স্পর্শমণির স্পর্শে লৌহ একবার স্বর্ণত্ব প্রাপ্ত হইলে পুনরায় কি লৌহ হইতে পারে ? গোবিন্দ প্রভুর চরণ ধরিয়া ক্রন্দন করিতে লাগিলেন এবং উপস্থিত সঙ্কটে পরিত্রাণ পাইবার জন্ম অভয় ভিক্ষা করিলেন। ভবরোগীর জীবনে সংসঙ্গরূপ মহৌষধের ফল ধরিয়াছে দেখিয়া প্রভূ গোবিন্দকে অভয় দিলেন। গোবিন্দ তথন স্বজনগণকে কহিলেন,---

"শুন শুন ওছে ভাই রমণীর বাণী। রমণী রমণ হয় একই পরাণী। অমৃত হইওেঁ ৰারা স্থাছ ভাবিয়া।

- क লালা পিয়ে নয়ন মুদিয়া॥
 নিত্যানন্দ ভূলে, তাতে আনন্দ বাহার।
 ধিক সে পামরে, জন্ম বৃথাই তাহার॥
- * * * গৌরাক্ষ আমার।
 তেয়াগিয়া ভার সঙ্গ লইব সংসার॥"

ভগবানের ক্লপা, ভক্তান্থ্যই ও নিজের ভদ্দন এই তিনটা জীবের পরিআন্দের হেডু। গোবিন্দের কিসে কি হইল, পাঠক-পাঠিকাগণ তাহার বিচার / করিবেন।

বিগত শতবর্ষে ভারত-রমণীদিগের অবস্থা।

(শেষ)

রুমণীগণের উন্নতির চতুর্থ অন্তরায় সংকীর্ণতা। সে কালের খ্যাতনামা বিদ্যা-সাগর মহাশয়ের জননী, কালাকৃষ্ণ মিত্র মহাশয়ের জননী, রাণী রাসমণি প্রভৃতি দয়া, মৈত্রী, দেবা, পরোপকার, জন-হিতৈষণা প্রভৃতি মহত্বের পূর্ণ বিকাস উলাবতা স্বরূপ। তাঁহাদের জগতের আদর্শস্থানীয়। সে সকল মহাপ্রাণা রুমণী বাতীত অভাভা রমণীগণেরও এই সকল সদপ্তণ বহুল পরিমাণে ছিল। অতিথি-সেবা, প্রতিবাদীদিগের প্রতি সন্ব্যবহার, এবং বিপন্ন দরিদ্রদিগের প্রতি করুণা করিতে তাঁহারা কিরূপ অভ্যন্তা ছিলেন, সে কথা আমরা পূর্বেই বলিয়াছি। সে কালে এ দেশের একায়ভুক্ত পরিবারের फरनर अधानडः এर मकन मन्छन जी-জাতির অভান্ত হইত। কলহাদির আশহা থাকিলেও বছ লোক একত্রিত থাকিলে পরার্থপরতা ও স্বার্থত্যাগ, মানবের শীঘ্রই चात्रुख हरेश्रा थाटक । ध्यनकात्र कारम. ভালই হউক, আর মন্দই হউক, একার-

ভূক বহু পরিবার প্রায়ই দেখা যার না।
স্বেরাং একালে মহিলাগণ পিতৃগৃহে মাতা
পিতা ভ্রাতা ভগিনী প্রভৃতি, খন্তরগৃহে খামী
খন্তর খান্ডড়ী প্রভৃতি, খামী উপার্জন-ক্ষম
হইলে কেবল খামী ও সন্তান*, এরপু সকল
স্থানেই বিশেষ কর্মটী আত্মীয়ের সহিত
বাস করাতে তাঁহাদের অনেকের পরার্থপরতা সঙ্গুচিত হইয়া পড়ে। মানবস্বলম্বের উৎকৃষ্ট বৃত্তি সকল অফুশীলনে
যেরপ সম্প্রামিত হয়, অনুস্পীলনে
সেইরূপ সঙ্গুচিত হইয়া পড়ে। এই জ্লা
এথনকার অনেক বলীয় মহিলার মনের
অবহা এত সঙ্গীণ যে, পরের স্থের জ্লা
কিছুমাত্র ত্যাগ শীকার করিতে তাঁহাদের
প্রবৃত্তি হয় না । সঙ্গীণতা মহ্ব্য-

- * খানী উপার্জনক্ষম হইলে ভাহার কর্ময়ানে সাধারণত: ত্রী ও সম্ভানের অধিকার হইরা থাকে। হলবিশেনে পুত্রের কর্মহলে মাতাপিতীরও অধি-কার হয়।
- † বস রমগুর সভীর্ণতার বিষয় "ছুইটা আছল" পুস্তকে "সুলীলা রমগুর পরিজনের অতি কর্তব্য"

শীবনের উন্নতির পরিচায়ক নহে-অব-নতির প্রধান সক্ষণ। সঙ্কীর্ণতা পরিত্যাগ করিতে না পারিলে নারী-জীবনের উন্নতি নাই। সঙ্কীর্ণতা পরিত্যাগ করিবার জন্ম রমণী দরা ও সহায়ভৃতি অমুশীলন করি-বেন। দয়া ও সহামুভূতি অনুশীলিত হইলে পরোপকার ও স্বার্থত্যাগ করিতে সহজেই প্রবৃত্তি জন্মিবে।

রমণীদিণের উন্নতির পঞ্চম অন্তরায় **অলসতা।** সে কালে ভারত-মহিলাগণ টেকিতে ধান ভানিতেন, চর্কায় স্তা কাটিতেন, সংসারের সকল রকম কাজই আপনাদের হাতে করিতেন। কিন্তু এত কাজের উপরেও তাঁহারা তৎকাল-প্রচালত শিল্প ও কারুকার্য্য করিতে সময় পাইতেন। ইহার কারণ তাঁহাদের নির-লসতা—শ্রমশীলতা। আব এখনকার कारण ठाकत, बि, दांधूनी প্রভৃতির কল্যাণে গৃহকর্ম যতই কমিয়া যাইতেছে. গৃহলক্ষ্মীদিগের সময়েরও ততই টানাটানি हरेट एहं। शृहञ्च- घटत आग्रहे प्रिश याग्र. জিনিস পত্রের ছড়াছড়ি, ঘরের কোণে ময়লা জমিয়া আছে, খোকা বর্ষার দিনে খালি গাম্বে বেড়াইতেছে, বাবু আপিসে **ষাইতে** পারিতেছেন না, ভাত হইতে বড় বিলম্ব হইতেছে; এ সকল অস্কবিধার কারণ বিজ্ঞানা করিলে নব্যা গৃহিণী উত্তর দিবেন **"আমার বাড়ীর লোক গুলা বড় বেগোছ,** কাই এমন হ'ল।" প্রকৃত পক্ষে তাঁহারই বিক্তরূপে নিধিয়াই।

বাহুলাভয়ে

আল্ফ এ সকল অস্থবিধার মূল কারণ। থোকার গায়ে যথন জামা দেওয়া দুর-কার, তথন তিনি ছই পা ছড়াইয়া বদিয়া রামার মা'র সহিত গল্প করিতে বদেন: যথন ঘর পরিফার করা দরকার, তখন তিনি সমবয়স্কার সহিত তাস থেলিতে বসেন; যথন বাবুর ভাত হওয়া দরকার, হয় তো তথন তিনি একটুক্রা সাবান লইয়া জামা কাচিতেই বদেন। এ রকম "বেগোছ" হওয়ার একমাত্র কারণ বঙ্গ-মহিলার আলম্ভপ্রিয়তা। জন্মই, যে রমণী লেখা পড়া করেন তিনি সংসারের কাজ করিতে অশক্তা, যিনি গৃহকর্ম্ম করেন তিনি লেখা পড়া করিতে व्यमका रहेगा পড़েন। এ फिरक वन्न-বাসিনী দিনের বেলায় ঘুমাইতে পারেন, সমবয়স্কার সহিত তাস খেলিতে, গল্প করিতে পারেন, অসময়ে শুইয়া শুইয়া চিন্তা করিতে পারেন, কেবল নিজের প্রতিও অভ্যের প্রতি যে সকল কর্ত্তব্য. তাহাই পালন করিতে পারেন না! তাহাতেই "সময়ের অভাব" ঘটে।

যাঁহারা অলসভাকে এভদুর প্রশ্রয় দেন, তাঁহাদের উন্নতি যে কত দুরে, তাহা কিছুই বলিতে পারা যায় না। ভারত-মহিলাগণ যদি অলসতা পরিত্যাগ করিতে প্রস্তুত না হন, যিনি যুত্ত চেপ্তা করুন, তাঁহাদিগের সম্পূর্ণ উন্নতি কথনই শীঘ সাধিত হইবে না। ইউরোপীয় মহিলার শ্রমশীলভার বিষয় খালোচনা করিলে

চমৎক্লত হইতে হয়। তাঁহারা অনেকে গ্ৰহের নিতা কর্ম্ম বাতীত পোষাক সেলাই, কাপড় ধোলাই পর্যান্ত করিয়া জ্ঞানামু-भीजन ७ नमाकहिटे उपना विषय सान দান করিতে পারেন। এ রক্ম নির্লস ও শ্রমশীল না হইলে কেছ কি বাস্তবিক উন্নতি করিতে পারে ? আর এক কথা এই বে. গাঁহারা শ্রমনীলতা ও গৃহকর্ম-নিপুণতায় জগদাতী ও অন্নপূর্ণার সন্তান বলিয়া গৌরবাম্বিতা, সেই প্রাচীনা মহিলা-গণের শোণিতে জন্মগ্রহণ করিয়া আলভা-পরায়ণা, গৃহকর্মে অনভিজ্ঞা ও কর্ত্তবা-ভ্রম হুইবার মত অবন্তি বঙ্গ-মহিলার জীবনে আঁর কি আছে? তাই বলিতেছি. বদেশীয়া ভগিনি। তোমার নিজের জন্ম, তোমার পরিজনের জন্ম, আর তোমার জাতীয় জীবনের জন্ম তোমাকে আল্সা ছাডিয়া দিতে হইবেই হইবে। এই আপদ দুর হইলে তোমাব উন্নতি পথের এক বড় বাধা কাটিয়া ঘাইবে।

রমণীগণের উন্নতির ষষ্ঠ অন্তরায়
বিলাসিতা। সে কালের মহিলাগণের অবস্থা
আলোচনা করিলে সহজেই বৃঝিতে পারা
যায় বে, বিলাসিতা দেশী জিনিস নহে,
জাহাজে চড়িয়া এ দেশে আসিয়াছে:
"সভ্যতা" শিখিতে গিয়া এ দেশের লোক
বিলাসিতা গ্রহণ করিয়া প্রতারিত হইতেছেন। বঙ্গবাসিনীদিগের এই রোগ
বড়ই প্রবল ইইয়াছে। আতর, গোলাপ,
ল্যাবেশ্ডার, অভিকলম পর্যান্ত উঠিরাই
থ রোগ কারু হয় নাই; এখনকার দিনে

त्व मशाविक तमगीवां नःगादात का করিতে বিরক্ত হন, বাঁহার মানে দশ টাকা আয় তাঁহার যে পঁটিশ টাকা ব্যন্থ করিতে হয়, সেও এই পোড়া বিলাসিতা ষে নির্ধনতা বোগের জন্ম। বঙ্গদেশ উৎসন্ন যাইতেছে, সেই নির্ধনতার এক প্রধান কারণ বিলাসিতা। তঙ্কিন বিলাসী বাজি আপনার সাজ গোল করিতেই বাস্ত থাকে, জগতে কোনও উচ্চতর কার্য্য করিতে তাহার প্রবৃত্তি করে না; যে আপনাকে লইয়াই বোল আনা• বিব্ৰত, দে অন্ত বিষয়ে মনোযোগ করিবে কি করিয়া ? ভাই বলিভেছি "বিশাসিভা" বঙ্গ-ব্যণীর উন্নতির পথে বড় এক বাধা হট্যা দাঁডাইয়াছে। আমার বদেশীয়া ভুগিনীগণ ধুদি নিজের অবস্থায় সম্ভূষ্টা **इटेट** शास्त्रम, यनि विवासिकात नीठप ব্রিয়া আদক্তি পরিত্যাগ করিতে পারেন, তাহা হইলেই এ বিদেশীয় রোগ দুরীভূত হয় -- বঙ্গ-মহিলার উন্নতির পথ স্থান হইতে পারে।

রমণীগণের উন্নতির দপ্তম অস্তরার বর্তুমান সময়ে বিবাহার্থী যুবকের অর্থ-লালসা। এই ত্র্যুটনা জীজাতির উন্নতির পক্ষে যে কি দারণ বিন্ন হইরা আছে, সে বিষয় দেশের অনেকেই বুনিতে পারিতেছেন। তথনকার দিনে যে কল্পা-পণ প্রচলিত ছিল, এখনকার বুর-পণের ভূলনার তাহা হারিয়া গিরাছে; ক্ষারণ কল্পা-পণ হইতে বর-পণ অধিকতর বার-সাপেক। আর এক কথা—ক্লাপণের দার

হইতে কেই কেই নিমৃতিও লাভ করিতে পারিতেন. কিন্তু বর-পণের দায়ে প্রায় সকলেই দায়ী। পরীক্ষোভার্ণ যুবকের ভাগ্যে উপার্জন করিয়া ধনলাভ সকল नमरम हम ना किन्छ विवादहत नमरम পদ্মীর পিতৃকুল হইতে তিনি জীবনের সংস্থান করিতে চাহেন। ইহাতে দরিদ্র - एतिय दक्त. मधाविख दनाकि तिरशत् थ স্থাশিকিত পাত্রে ক্সা দান ক্রা অনেক সময়ে "সাধ্যাতীত"হইয়া পড়িয়াছে। পিতার ্রঅর্থের জোর না থাকাতে অনেক স্থপাত্রীকে অপাত্তে সম্প্রদান করিতে হইতেছে। ইহা যে নারী-জীবনের কতদূর অনিষ্টকর, তাহা ধাঁহাদের হৃদয় আছে, তাঁহারাই অমুভব করিতে পারেন। এতন্তির, ইহা হইতে বাল্যবিবাহও প্রশ্র পাইতেছে। ছেলে যত উচ্চ পরীক্ষায় উত্তীর্ণ হইতে থাকে, তাহার মূল্যও তত : অধিক হইতে পাকে। প্রবেশিকা পরীক্ষায় উত্তীর্ণ বালককে যে পরিমাণে টাকা দিতে হয়. এফ এ পরীক্ষায় উত্তীর্ণ ব্যক্তিকে অনেক সময়ে তাহার দ্বিগুণ টাকা দিবার थियांकन श्हेग्रा थाक । এই কারণে এ দেশের বালকেরা প্রবেশিকা পরীক্ষায় উত্তীর্ণ হইলেই ক্সাপক্ষীয় ব্যক্তিগণ বিৰাহের জন্ম তাহাদিগকে পীড়াপীড়ি করিতে থাকেন। এই জনাই ক্তবিগ্র স্থানিকত পুরুষদিগকে অতি অল বয়সেই সংসারে অভাইয়া পড়িতে হয়। এই জন্ম বৃদ্ধাসিনীগণ জমু সহণ করিলে মাতা পিতার রক্ত ভকাইতে ।

থাকে ! কন্সার মরোর্দ্ধির সহিত অভিভাবকদিগের প্রাণে অসন্থ বেদনা র্দ্ধি
হইতে থাকে ! ষত দিন এই কুপ্রথা দ্র
না হইবে, ততদিন এ দেশের স্ত্রীজাতির
প্রকৃত উন্নতি কথনই সাধিত হইবে না।
কিন্তু প্রজা-হিতৈষী রুটিশ-রাজ এ বিষয়ে
দৃষ্টি না করিলে, ভারত-বাসিগণ স্বতঃপ্রেরত হইয়া যে এ কুপ্রথা রহিত করিতে
পারিবেন, ইহা কথনই বিশাস করা যায়
না। সে জন্য এই বিষয়ে রাজদারে
আবেদন করা স্বদেশহিতৈষিগণের কর্ত্তব্য
বলিয়াই বোধ হয়।

স্ত্রীজাতির উন্নতিপথের এই সকল বিন্ন দ্র হইলে তাঁহাদিগের অবস্থা অধিক-তর উন্নত হইতে পারে। এই বিষয়ে মনোযোগী হওয়া স্বদেশহিতৈষী ব্যক্তি-গণের অবশ্য কর্ত্তব্য।

উপসংহার-সময়ে বলি, ভারত-মহিলা-দিগের সর্বাঙ্গীণ উন্নতি যে এখনও কত দুরে আছে, তাহা আমি জানি না—কিন্তু যে সর্বশক্তিমান দেব-দেবের প্রসাদে বিগত শত বর্ষে তাঁহাদিগের অবস্থা এরূপ অভাব-নীয় উন্নতি লাভ করিয়াছে, ভারতের গাঢ় নিদ্রা ভাঙিয়াছে, দেই সর্বাশক্তিমান করুণাময়ের চরণে প্রার্থনা ভারত-মহিলাদিগের সর্বাঙ্গীণ উন্নতির পথ নিকটম্ব হউক, ভারত-সমান্ধ প্রক্রত সম্পূর্ণতা লাভ কক্সক; বামাহিতৈবি-গণের আশা সফল হউক; আর ভারত-बननी-अन्नशृर्गा, कगकावी, देमव्वत्री, গাৰ্গী, শীতা, সাবিত্ৰী, ধনা, দীদাৰতী

প্রভৃতি ক্লারস্ক-প্রস্বিনী ভারত জননী হউক, সেই মঙ্গলময় দেবতার মন্ধ্রময় আবার কন্যারত্ব প্রসব করুক; স্থপুত্র ইচ্ছা পূর্ণ করিতে আমাদিগের সকল নর স্থকন্যার গৌরবে মা আবার রাজ- নারীর জীবন উৎদর্গীক্বত হউক।

त्रात्वचत्री ब्हेम्रा मखात्मत्र क्राक्क প্রকাশিত विकास ১०००। ভাদ। श्रीमानकूमाती वस्र।

ভক্তি-উপহার ৷*

তোরা কি বলিদ কিদে, আমি জানি মরেনি' সে. স্বরগের ছেলে গেছে স্বরগে চলিয়া; ফুলের আতর সম. কীর্ত্তি তার নিরুপম. ভারতের বুকে বুকে রয়েছে জাগিয়া !

ভারত-হিতার্থী যারা, কথ'ন বলোনা তারা, "দে ছিল পরের ছেলে পর একজন" বলিও "সে মহামূল্য, কোটা কোহিম্বর তুল্য, বলিও "সে ভারতেরি অমূল্য রতন।"

সেই শুর-শুরবর, ছাড়ি দেশ, বাড়ী ঘর. আপনা ঢালিয়া দিলা ভারত-পূজায়; বুকের ক্ষধির মরি ! প্রীতির অঞ্চলি করি. দিয়েছিল উপহার ভারতের পা'য়।

विज्ञां विदान में उद्यान. মনে না পাইল স্থান, ভারত-কুমার তার প্রিয় পরিজন: মমতা যতন কত. করিলা দে অবিরত, ''সহোদর ভাই'' ব'লে দিলা আলিজন!

আর --

ত্থিনী ভারত ক্সা, ধরাতলে নহে গণ্যা, খায় দায় কাজ করে পশুর মতন: পশু সম অবজ্ঞায়, मिला नरत्र भा'यू. সভ্যতা, উন্নতি, সত্যা, বোঝে না কথন !

त्म निर्काध नित्रकत्रो, (महे नव (वैक्ट-भन्न), তারাই জননী বোন, তারাই বুমণী; পুরুষেরা লেখে পড়ে,

कात्र हिटेडची बहाचा फुक्कबाहात्र व्यथुत्नत्र हह मास्यरमत्रिक वर्णात्त्राहम-मिन वात्रमा ১২ই আগষ্ট সমাধিছলে পঞ্চিত।

তত্ত্ব শেশে, সভা করে, কিন্তু সেই "পশুগুলা," তাদের ঘরণী !

9

সেই সব অভাগীর,
তপ্ত নয়নের নীর, °
হেরিয়া অনাথ-নাথ হ'য়ে সকরুণ,
অনায়াসে করি পার,
স্থবিশাল পারাবার,
আনিলা ভারতে, নর-দেবতা বেথুন।

ь

দে মহা-মহিমামর,
দরশনে পাপক্ষর,
অটল রজত-গিরি পবিত্র আকার;
ভারত-বালার হুথে,
বাজিল কোমল বুকে,
সহস্র ধারায় চোথে, বহে জল ধার!

5

জলদ-নিঃস্থন-রবে,
উচ্চ্বাদে কহিলা তবে,
ভারতের সারা বক্ষ করি উচ্চ্বাদত ;—
''রমণী, আনন্দ-হেতু,
জাতীয় উন্নতি-দেতু,
প্রেমময়ী বিশ্বমা'র প্রেমে নিরমিত !

٠.

"নারীরে স্থশিক্ষা দিলে,
আতীয় কল্যাণ মিলে,
পুরুষে ক্লীবন পায় নারীর শোণিতে;
বি চাও দেশের হিতু,
আজাতি-মঙ্গলে আত,
সে এস জীবন দিতে রমণীর হিতে।"

>>

শুনি সে অমিয় গাথা,
কত কোটা কোটা মাথা,
অদম্য উপ্তমন্তরে, অসীম উৎসাহে,
নীচতা হীনতা ভূলি,
দেখিল নয়ন ভূলি,
নারীই জননী, বোন, জায়া, স্থতা তাহে!

>2

আনন্দে চলিলা বালা,
বেথুনের পাঠশালা,
সাদরে সে ঋষিবর করিলা গ্রহণ;
ছথিনী মায়ের ক্তা,
নারীকুলে নহে গণ্যা,
দিল তারে পিভ্সেহ, লাতার যাঁতন!

30

সেথা---

আজি নারী লেখে পড়ে,
বি, এ, এম্, এ পাশ করে,
অদৃষ্ট ফিরিয়া গেছে, আজি শুভ দিন !—
ঢালে যদি রক্ত-ধার,
হাদি পিণ্ডে গাঁথে হার,
পারে কি শুধিতে তা'রা বেপুনের ঋণ?

٠.

দেবতুল্য পূজ্যতম,
স্বেহে জননীর সম,
উপকারী ওভাকাজ্জী জনক-মতন;
প্রণাম করিতে তাঁর,
প্রাণ আরাম পার,
কে জানে কিদের স্রোতে উধ্বে নয়ন

50

আহা !

সারা দিনমান-শেষে,
শ্রান্ত পরিশ্রান্ত বেশে,
ভরেছে সোণার খাটে উজল তপন !—
আয় ভাই, বোন আয়,
কে দিবি সে রাঙা পায়,
পুলাঞ্জি—সুর্য্য-অর্থ্য মনের মতন !

তোরা কি বলিস্ কিসে,
আমি জানি মরেনি' সে,
স্বরগের ছেলে আছে, স্বরগে বসিয়া;
কিবা ড়াঁরে দিতে পারি,
ছ জোঁটা নয়নবারি,
পবিত্র শ্রশানে তাঁর ষেতেছি রাধিয়া।

শ্রীকাবাকুসুমাঞ্চলি-রচমিত্রী।

রত্ব।

আমাদের অনেক পাঠিকা, বোধ হয়,
রত্ন ভালকাদেন। বস্তুত যাহারা অলকারকে
প্রাণতুলা, জ্ঞান করেন, তাঁহারা যে রত্নের
আদর করিবেন, তাহাতে আর সন্দেহ
নাই। রত্ন কোথায় জন্মে, এবং কি
প্রকারে উহা প্রাপ্ত হওয়া যায়, আমরা
তাহা আমাদের অলকার-প্রিয় পাঠিকাদিগকে জ্ঞাত করিতেছি।

প্রত্যেক জাতির মধ্যে যেটা উৎকৃষ্ট, সেইটাই রয়। যপা স্থারত্ব, পুক্ষরত্ব, অখ্যুত্ব, ধন্যুত্ব ইত্যাদি।

''লাভৌ লাভৌ যত্তংক্তঃ' তান্ধি রতুং প্রচক্ষতে। মণিবিশেষের সহিত রত্নশক্ষের সঙ্গেত বাধা আছে।

"রত্বস্তুমণিদভেদে স্যাং।' রত্নপদ্বাচ্য যত প্রকার মণি আছে, তক্মধ্যে নয়টা প্রধান।

"মৃক্তামাণিক্যবৈদ্র্ব্যো গোমেদোবজুবিক্রমৌ। পদ্মরাগং মরক্তং নীলক্ষেতি বধাক্রমং।" অর্থাৎ মৃক্তা, মাণিক্য, বৈদুর্য্য, গোমেদ,

বিজ্ঞা, পিলুরাগ, মরকত এবং **নীল,** এই নয় প্রকার রত্ব।

১ম-মুক্তা।

মুক্তা বহুমূলা রজ। ভারতবাসিগণের ন্যায় ইউরোপীয়গণও প্রাচীন হইতে ইহার বিশেষ আদর করিয়া আসিতেছেন। পূর্ককালে রোমকগণ ইহা বছবায়ে ক্রন্থ করিতেন। এক **জন রোমক** গ্রন্থকার তাহার সময় এক ছড়া মুক্তাহার अट्टे लक्क होकाम विक्रासन कथा উল্লেখ করিয়াছেন। প্রসিদ্ধ রূপবতী ক্লিওপেটা আট লক্ষাত হাজার ছই শত নকাই টাকা মূল্যের একটা মুক্তা চুৰ্ণ করিয়া মদ্যের সহিত পান করিয়াছিলেন এবং এতাদৃশ বহম্লা একটা মুক্তা ধি**ৰও** ক্রিয়া রোমের প্রসিদ্ধ দেবতা∙ভিনসের মৃঠির কণাভরণ করিয়া দেওয়া হইরীছিল। এক রাণীর কর্ণান্তরণে মিসরদেশীয় একটা সূক্তা ছিল, এক সময়ে উহা

ইউরোপে ১৬ লক্ষ টাকার বিক্রীত হয়।
রাজ্ঞী এলিজাবেথের রাজত্বলৈ তৎসমক্ষে দার টমাদ গ্রেদাম একটা দেড়
লক্ষ্ টাকা ম্ল্যের মুক্তা চূর্ণ করিয়া
মদ্যের সহিত পান করতঃ স্পেনদেশীর
রাজদ্তকে চমৎকত করিয়াছিলেন। মুক্তা
এইরূপ দকল সময়ে ও দকল রাজ্যেই
আদৃত হইয়া আদিতেছে।

ভারতবর্ষের জ্যোতিষশাস্ত্রে ইহার
সমধিক গৌরব দৃষ্ট হয়। মুক্তাধারণে
মহাফল, ইহার অবিষ্ঠাত্রী দেবতা চক্র ।
বৈদ্যক শাস্ত্রকারেরাও ইহার গৌরব
করিতে ক্রটি করেন নাই। ইহার গুণ
এবং ঔষধে উপযোগিতা ও উপকারিতা
রাজনির্মণ্ট ও ভাবপ্রকাশ প্রভৃতি বৈদ্যক
গ্রন্থে বিরত আছে ।

মুক্তার ছায়া বা কান্তি, বিশেষ বিশেষ আকর বা উৎপত্তিস্থান ও বিশেষ বিশেষ পরীক্ষা গরুড়পুরাণে আছে, কিন্তু ভোজ-রাজ-রুত ''যুক্তিকল্পতর্ক" গ্রন্থে কিছু অধিক পরিমাণে দৃষ্ট হয়। মুক্তার আকর বা উৎপত্তিস্থান, যথা—

"মাতকোরগমীন-পোত্রি-শিরসত্ত্কারশঝামুভ্-ছুক্তীনামুদরাচ্চ মৌক্তিক-মণিঃ শ্পষ্টং ভবত্যইধা ॥"

- (১) মাতঙ্গ—হস্তী, (২) উরগ— সর্প, (২) মীন—মংস্তা, (৪) পোত্রী—শৃকর, (৫) স্বক্সার—বাঁশ, (৫) শৃদ্ধ—শাঁথ,
- (৭) অমুভূৎ—মেঘ, (৮) শুক্তি—ঝিযুক। গল্পমুক্তা, ফণীর মণি, বংশলোচন্ ইত্যাদি কথা ইহা হইতেই প্রসিদ্ধ। (ক্রমশঃ)।

নীতিশিক্ষার প্রকৃষ্ট উপায়।

(>)

এক বংসরের উপর হইতে চলিল বামাবোবিনীতে নীতিশিক্ষা সম্বন্ধে ছইচারি কথা বলা হইরাছিল। বালকবালিকাদের নীতিশিক্ষার প্রকৃষ্ট উপায়
সম্বন্ধে গুটিকতক মূল মূল কথা বলা মাত্র
উদ্দেশ্য ছিল। মনে করিয়াছিলাম, পাঠকপাঠিকার এ বিষয়ে মন আকৃষ্ট হইলেই
যথেষ্ট। কিন্তু বামাবোধিনীর সম্পাদক
মহান্র নীতিশিক্ষা বিস্কৃত্ব আরও কিছু
ক্রিয়ার করায় এই প্রবন্ধ লেখা
গেল।

(२)

সঙ্গের উপর ছেলেদের নীতি অনেকটা
নির্ভর করে। "সংসঙ্গে কাশীবাস,
অসংসঙ্গে সর্ব্যনাশ" আমাদের মধ্যে এই
কথা অনেক দিন হইতে প্রচলিত।
কাহাকেও ইহার অর্থ ব্যাইবার দরকার
নাই। সংসঙ্গের গুণ ও অসংসঙ্গের দোষ
বোধ হয় এত অয় কথায় ইহা অপেকা
আর ভাল করিয়া ব্যান যায় না। বড়
হইলে লোকের মনোর্তি সকল, ভালই
হউক আর মন্দই হউক, এক প্রকার
পরিপক হইয়া বার এবং ভাহারা ভাহাদের

मनी निर्याচन कतिया नहेट भारत ও লয়। ছেলেবেলায় সাধারণতঃ আমর! তাহা পারি না। যেরপ সঙ্গী পাই, ভাহারই সঙ্গে মিশি। ছেলেরা অসং-সঙ্গে মিশিলে তাহার যে কি বিষময় ফল উৎপন্ন হয়, তাহা অনেক পিতা মাতার অবিদিত নাই। ছেলে মেয়েকে মান্ত্র করা কি কঠিন ব্যাপার, তাহা সকলেই জ্ঞানেন। যদি প্রথম হইতে তাহাদের সঙ্গী ও সঙ্গিনীদের উপর দৃষ্টি না রাখাযায়,তাহা হইলে ছেলে মেয়েকে "নাত্ৰ" করা কি কঠিন ব্যাপার হইরা উঠে ইহা বুঝাইবার জ্ञ প্রয়াস পাওয়া অনাবগ্রক। অনেক সময় দেখা যায়, অনেক ভদ্রলেকের ছোট ছোট পুত্র কন্সারা, বিশেষতঃ পুত্রেরা রাস্তায় টোটো করিয়া বেড়াইতেছে,গেথানে দেখানে যাইতেছে, যাহার তাহার সঙ্গে মিশিতেছে। দেখিয়াও বারণ করিবার (कह नाहै। वार्पत हमूठ हेळ्। नम, ছেলে ওরূপ করিয়া বেড়ায়। জানিতে পারিলে হয়ত তাড়না করেন এবং সেই জ্ঞাই হয়তমা তার নিকট ছেলের এই क्रुश द्वारती कविया दिखान द्यान करवन । ছেলে কেন, অনেক সময় আমি ভদ্রধরের ছোট ছোট মেয়েগুলিকেও মফস্বলে এইরূপ করিয়া বেড়াইতে দেখিয়াছি। সাধারণতঃ ত বিষয়ে জামরা অসাবধান। সাহেবদের দৃষ্টাস্ত এ সহস্কো অফুকর্ণীয়। কোনও ভদ্র মাহেব স্থাপনার ছেলে মেয়েকে বার তার সঙ্গে মিশিতে (मन ना।

এখন কথা হইতেছে, এ রোপের ওবং कि ? क्ह कि वित्न, यथन यात्र সঙ্গে মিশায় পরিণাম এত মন্দ, তার তথ্ন যতদুর পারা যায় ছেলে মেরেকে বাড়ীর বাহির হইতে না দেওয়া ও কাহারও সঙ্গে না মিশিতে দেওয়া ভাল। যার তার সঙ্গে মিলিয়া কদর্য্য ভাষা শিকা করা ও কদর্যা ভাব গ্রহণ করা অপেকা কাহারও দঙ্গে না মিশাই ভাল। কিন্তু একটি কথা মনে রাথা দরকার। **সক্রিলা** মানবমনের স্বাভাবিক ধর্ম। ইহা চরিতার্থ 🕳 হওয়া চাই এবং চরিতার্থ না হইলে মনের পূর্ণ বিকাশ হওয়া অসম্ভব। পরস্পর মিলিতে না পাইলে <mark>অনেক সময় ছেলেরা</mark> मून्इदिशा यात्र ७ करम व्यनामाजिक হইয়া উঠে। আরও একটি কথা আছৈ— হুধু মিশা নয়, ছেলেদের থেলা করাও আবশুক। আমার বিবেচনায় ছইটি বিষয়ে লক্ষ্য রাখিলে উপরি-উক্ত অভাব মোচন ২ইতে পারে: (ক) যাহাতে বাটার ছেলেরা প্রস্পারের সহিত মিলিতে ও থেলা কৰিতে পারে, তাহার বন্দোবস্ত কলা; শুধু বন্দোবন্ত নয়, ভাহাতে উৎসাহ দেওয়া। (খ)পলীস্থ শিক্তি ও ভত্ত পরিবারগণের ছোট ছোট ছেলে মেম্বেরা যাহাতে নিদিট সময়ে পরস্পারের সংক মিশিয়া থেলা করিতে পারে, তাহার চেটা কয়। পাড়ার সকল ছোট বালক বালিকাকে যে এক সঙ্গে মিশিতে হঠাবক, এরূপ বলিতেছিনা, এবং **অনেক সম্ম** ভাহা সন্তবও নহে ; কিন্ধ প্ৰত্যেক প্ৰতি-

বেশের ছেলেদের পরস্পর যতদুর মিশা সম্ভব, ততদুর মিশা ভাল। নির্দিষ্ট সমর বলিবার উদেশ্র আছে। যদি বাড়ীর ছেলেরা **শক্ল সম**য়েই এবাড়ী ওবাড়ী করিয়া বেড়ায়, তাহা হইলে কর্ত্তপক্ষের চক্ষ তাহা-দের উপর থাকিতে পারে না। ওরূপ করা ও রান্তার টোটো কবিয়া বেডানতে বিশেষ প্রভেদ নাই। আর একটি কথা এখানে বলা আবশ্যক। যদি তুমি বুঝ যে, কোন বাটার কর্ত্তপক্ষদের বাটার ছোট ट्रां एक्टल स्पार्यापत्र छेलत्र नकत्र नाहे, এবং দেই কারণে ও অস্তাস্ত কারণে উহাদের চরিত্র দূষিত হইয়া যাইতেছে, তাহা হইলে क्थनरे जाभनारमत एहरन स्मार्यक छेश-দের সহিত মিশিতে দিও না। এরপ ক্রিতে হয়ত চকুলজ্জা হইতে পারে, এরপ করাতে লোকে তোমাকে গর্বিত মনে করিতে পারে, কিন্তু দেখিও যেন চকুলজ্জার থাতিরে কিম্বা লোকের ভয়ে আপনার ছেলেদের মাপা থাইয়া বসিও না।

(७)

একটি বিষয়ের উল্লেখ না করিলে উপরে বাহা বলা হইল তাহা অসম্পূর্ণ থাকিবে। আন্ত কাল প্রায় সকল ভদ্র-লোকেই ছোট বালক, এমন কি বালিকা-দিগকেও বিশালরে পাঠাইয়া থাকেন। তাহাদিগকে লেখাপড়া শিখাইতে হইলে মধ্যথিত লোকের আর গতান্তর নাই।
ক্রিন্দালয় বে ছেলে বিগ্ড়াইবার এফ প্রধান আড্ডা ইহা বোধ হর অনেকেই

অস্বীকার করিবেন না। বিদ্যালয়ের উপকারিতা অনেক। ছেলের সঙ্গে মিশিয়া পড়া ভনা না করিলে,প্রতিযোগিতা-প্রবৃত্তি উত্তেজিত না হইলে পাঠার্থীদিগের বৃদ্ধি-বৃত্তির সমাক্ ক্রণ হয় না, মন স্বল ও मृष्ट इम्र मा, এবং বালক বালিকার। শামাজিক ধর্ম ভাল করিয়া শিক্ষা করিতে शाद्य ना । किन्द्र विमानग्र-श्रेनानीत खन-বর্ণনা করা আব্দ আমার অভিপ্রেত নহে. তাহার দোষ দেখানই উদ্দেশ্য। আজ কাল সাধারণতঃ আমাদের দেশের বিস্থা-লয়সমূহের অবস্থা অতি শোচনীয় হইরা দাঁড়াইয়াছে। রাজপ্রসাদেও অর্থলাল্সা **१९७ अत्मक विमागिय हहें एक उन्ना**ङ्ख প্রভেদ উঠিয়া গিয়াছে। ছেলেকে কোন বিদ্যালয়ে পাঠাইতে হইলে ভাহার দহ-পাঠীরা কিরূপ, তাহা নির্ণয় করা যায় না। व्यत्नक ऋत्म विमानदम क्मम ७ क्नृष्टी छ অপরিহার্য্য। পিতা মাতা মনে করেন. **ट्रां** (भरत्रक विमानस्य পाठाहरनह कैंशिए कर्खवा माधन इहेल। विका-লয়ের কর্তুপক্ষেরা মনে করেন, কেবল পাঠ দেওয়া ও বেতন লওয়া শেষোক্ত কার্যাটি মাত্র তাঁহাদের কর্ত্তব্য। এইরূপ পদ্ধতিতে সমাজের যে কত অপ-कात हरेटाइ, जाहा जकत्वत्र छाविमा দেখা উচিত। কেহ কেহ জ্বিজ্ঞাসা করিতে পারেন.তবে कि ছেলে মেরেকে বিদ্যালয়ে পাঠান इटेर्स ना, এवः विमानव मकन কি উঠিয়া যাইবেক ? আমি তাহা বলিভেছি ना । শিক্ক রাথিয়া

মেরেকে লেখা পড়া শিখান সকলের সে প্রণাদীর সাধ্যাবস্ত নয় এবং দোৰও আছে। এ সম্বন্ধে আমি গুট কভক কথা বলিব। আশা করি বামা-বোধিনীর পাঠক পাঠিকারা তাহাদের প্রতি একট্ব মনোযোগ দিবেন। (১) विमानम अदनक आहि, किन नकन विमा-नारत वादका ७ वत्नावक ममान नत्र। कान कान विमान्य ছिल स्याउत রীতিনীতির প্রতি কিছুই দৃষ্টি রাখা হয় না। পিতা মাতার কর্ত্তব্য যতদূর সম্ভব नगत्रष्ठ मर्क्सा १ क्रेडें विमान एवं एक्रांचे পুত্র কন্তাদিগকে পাঠান। ইহাতে কিছু বায়বাছলা হইতে পারে, কিন্তু এরূপ বামে কুপুণতা করা অতায়। অধিকাংশ স্থলে এরূপ বটে যে, পিতার যেরূপ আয় তাহাতে তাঁহার পক্ষে পুত্র কন্তাকে সর্বোৎক্রষ্ট বিদ্যালয়ে পাঠান এক প্রকার অসম্ভব। এরপ স্থলে এই টুকুথানি করিতে বোধ হয় বিশেষ অস্থবিধা না হইবার সম্ভাবনা। তাঁহার ক্ষমতার ভিতর त्व क्वीं विमानव आरष्ट, छाहारमव मरधा ষেট সর্বাপেকা ভাল, সেইটিতে ছেলে মেয়ে পাঠান। (२) धूव देनभवावञ्चात्र ছেলে মেয়েকে বিদ্যালয়ে পাঠান কর্ত্তব্য नरह। यमि शृरहत्र वस्मावक जाम हत्र

यि शिला भाषा श्वानिष्ठं इन, लाहा इहेरल ৭৷৮ বৎসর পর্যান্ত শিশুদিগকে গৃহে শিক্ষা দিশে তাহাদের চরিত্র এভটুকু গঠিত হইবার সম্ভাবনা বে, তার পর বিদ্যালয়ে গেলে তাহাদের চরিত্র শীত্র মন্দ না হইয়া যাইতে পারে। (৩) বিদ্যালরে পাঠাইবার পরও ছেলে মেরের প্রতি খুব চকু রাখা ও সর্বাদা তাহাদের তদারক করা আবশ্রক। অনেক পিতা মাতার বিখাস বে, পুত্র कञ्चारक विमानम পाठीहरनहे छाँहारमञ् कर्ज्या (भव इरेन। वाकि यादा कत्रा আবশ্যক, তাহা বিদ্যালয়ের কর্ত্বপক্ষদের কাজ ও কর্ত্তবা। ইহাতে বে কি বিষমন্ত্র ফল ফলে, তাহা অনেকে দেখিয়াও দেখেন ना। (8) विमानायत्र कञ्चलकामत्र कर्खवा সম্বন্ধে তুই এক কথা বলিতে চাই। বউদুর সম্ভব তাঁহাদের সকল ছাত্র ও ছাত্রীর প্রতি নজর রাখা উচিত এবং যদি কোন ছাত্র বা ছাত্রী অত্যন্ত অনস ও অসক্তরিত্র হয় ও তাহার স্থধরাইবার কোন সম্ভাবনা ना शांक, जाहा हहेंरन जाहारक विमानित्र इहेट विष्कृत कतिया नित्न छान इत्र। व्याक कान किन्न विमामान अक्री वाद-সারের মধ্যে হইয়া পড়িয়াছে, এবং বোধ হয় আমার কথা অনেক বিদ্যালয়ের কর্ত্ত-পক্ষের একটু ভিক্ত: লাগিবে। (ক্রমশঃ)

পূৰ্বাং বর্ষা তৎ কুর্বাং বেন বৃদ্ধ: কুবং বসেং।
বাৰজ্জীবেন তৎ কুর্বাং বেনামূত্র কুবং বসেং॥
প্রাথম ব্যাসে সেই কর্মা করিবেক.

যাহা দারা বৃদ্ধকালে সুথী হইতে পারে। যাবজ্জীবন সেই কর্ম করিবেক, যাহা দারা পরলোকে সুথী হইতে পারে।

ঈশ্বরের উপাসনা।

উপাসনা কেবল শুনিবার বা জানিবার কথা নয়, ইহা কাজে করিবার বিষয় এবং ইহার ফল সাক্ষাৎ প্রত্যক। শরীরের পক্ষে যেমন আহার, আত্মার পক্ষে তেমনি উপাদনা। আহার-তত্ত্ব-সম্বন্ধীয় ১০খান প্রকাণ্ড পুত্তকে ধান্তবপন হইতে প্রমান্ন প্রস্তুত হওয়া প্র্যান্ত সকল বিষয় পাঠ করিলেও যেমন কুণার্ত্তের কুধা একটুও নিবৃত্ত হয় না, কিন্তু ছটা মোটা চাউলের অন্ন পাইলেও তাহার উদর তৃপ্ত হয়:উপাসনা-স্থল বা শাস্ত্র হইতে গভীরতম তত্তের কথা শুনিলেও সেইরূপ আয়ার অভাব পূর্ণ হয় না, কিন্তু প্রকৃত উপা-সনার একটু আস্বাদন পাইলে আ্বার फुश्चि इम्र। अन्न इट्रेट भंतीरतत वन, বীর্য্য, শোভা, কাস্তি, ফুর্ত্তি সকলই ; উপাসনা দারা আত্মারও সেইরপ।

ই। আহারের মূল যেমন ক্ষা, উপাসনার মূল তেমনি প্রাণের ব্যাকুলতা। এই ব্যাকুলতার জন্মই নরনারী অতি বর্ষর অবস্থা হইতে অদ্যাপি নানা ভাবে ইই-দেবতাকে উপলব্ধি ও তাঁহার পূজা করিয়া আসিতেছে। আন্তিকতা আয়ার মূলগত বিশাস, সেই বিশাস যত উজ্জ্ল হয়, তত্ত সভ্যভাবে ইইদেবতার দর্শন হয়। আর ভক্তি ব্রত প্রগাঢ় হয়, তত তাহাতে প্রান্ধ আসক্তি হয়। ই বরকে কোন প্রবান আসক্তি হয়।

তাঁহাকে দেখা হয় না। তিনি প্রম চৈত্ত, প্রমায়া। শরীরের অঙ্গভঙ্গী, মুখের কথা বা মনের কল্পনায় তাঁহার স্তব-স্তুতি করিলে তাঁহার প্রকৃত পূজা করা হয় না; প্রাণের কথার, প্রাণের যজে, প্রাণের আদরে প্রাণাসনে বদাইয়া প্রাণস্করপকে পূজা করিতে হয়।

উপাসনার অর্থ—ঈশবে বাস। যিনি তাঁহাকে লইয়া যত থাকিতে পারেন. তিনি তাঁহার তত প্রকৃত উপাসক। বন্ধযোগ একই বস্তু, তুই ভাবে প্রকাশিত হয়—প্রীতি ও প্রিয়কার্য্য সাধন,। ব্রহ্মজ্ঞান, বন্ধান, বন্ধানন্ত্রস্পানে প্রাণ এক দিকে মগ্ন হয়; আর এক দিকে তাঁহার প্রিয় কার্যা---আপনার সাধনে আগ্নার স্বাভাবিক গতি হয়। আগ্না যেমন রদক্ষরপ ঈশ্বর হটতে অমৃত্রদ গ্রহণ করিয়া আত্মপোষণ করে, সেইরূপ শ্রীর মন, জদয় ও বিবেককে তাঁহারই ভাবে পূর্ণ করিয়া সর্বাঙ্গীণভাবে তাঁহার সেবায় নিগক্ত হয়। প্রকৃত উপাসকের নিকট উপাদনা জীবনের ক্ষণিক আংশিক कार्या नम्, किन्छ हेश ममश-कीवनवााशी অবিশ্রাস্ত সাধনার বিষয়। ত্রহ্মগতপ্রাণ হইয়া তিনি ত্রন্ধের উদ্দেশে সমুদায় কার্য্য সাধন করেন।

৪। উপাসনার হই অঙ্গ হইলেও এক অঙ্গ মূল ও অন্ত অঙ্গ শাখা প্রশাখা। বৃক্ষের মূল গভীর ও অটলভাবে ভূমিতে বৃদ্ধ হইয়া তাহার রস শোষণ করে, শাখা পলব সকলই সতেজ ভাবে বৃদ্ধিত হয়। আত্মা যদি অটল নিষ্ঠার সহিত ঈশ্বরকে ধরিয়া ভক্তিরসে সিক্ত থাকিতে পারে, তাহা হইলে তাহার জ্ঞান, ভাব, চিস্তা, কার্য্য সকলই পরিপুষ্ট হয়। বারপুরুষ যেমন নিভ্ত ব্যায়ামশালায় ব্যায়ামে অভ্যন্ত হইয়া রণক্ষেত্রে শ্রম্ব প্রকাশ করেন, নিজ্জনে গভীর উপাসনায় অভ্যন্ত হইয়া ধর্মবীয়ও সেইয়প কার্য্য কেত্র সংসারে ধর্মপরীক্ষায় কৃতকার্য্য হইয়া থাকেন।

৫। তিপাদনার কোন একটা নির্দিষ্ট প্রণালী নাই—যাহাতে আয়া ঈশ্বরম্থী হয়, তাহাই প্রকৃষ্ট প্রণালী। তবে সাধনার জন্ম প্রথমে প্রণালী অবলম্বন করিতে হয়। অক্সচালনা কর, বাচনিক বা মানসিক পূজা কর, ভক্তির উদ্দীপন হইয়া ভগবানের সহিত ভক্তের প্রাণকে যেনমিলত করিয়া দেয়। শাস্ত্র পাঠ কর, নাম জপ কর, সাধুসৃষ্ণ কর, ত্রত উপবাস কর, সকলই ঘেন ভগবানের প্রতি মনকে অবনত ও সুস্থির করে। বৈশ্ববেরা নবধা ভক্তিসাধনের উপায় বলিয়া নির্দেশ করিয়াছেন:—

"প্রবণং কীর্ন্তনিঞ্চব স্মরণং পাদসেবনং।
অর্চনা বন্দনা সথাং দাস্তমাত্মনিবেদনম্॥"
ইইদেবতার নাম প্রবণ ও কীর্ত্তন, তাঁহার
চিন্তা, তাঁহার সেবা, অর্চনা, বন্দনা,
তাঁহার সহিত স্থাভাব, তাঁহার আমুগত্য

এবং সর্বাশেষে তাঁহার চরণে আত্ম-সমর্পণ এই নরটী সাধনে পূজা পূর্ণাক্ষ হয়।

ইহারা শাস্ত, দাস্ত, বাৎসল্য, স্থা ও
মধুর এই পাঁচ প্রকার ভাবে ঈশর-সাধনার
ব্যবস্থা করিয়াছেন অর্থাৎ ঈশরকে নিশুর্ণ
কারণ, প্রভূ, সন্তান, স্থা ও স্থামিভাবে
সাধনা করিয়া দিদ্দিলাভ করা বার এবং
এই সকল সাধনার উত্তরোক্তর উৎকুইতর, এই তাঁহাদের মত।

ব্রহ্মসাধক প্রাচীন ঋষিরা প্রাণায়ম-যোগে চিত্ত হির করিয়া অধ্যাত্মযোগে প্রমাত্মাকে আত্মন্থ ও আত্মগত করিয়া তাহার সাধনা করিতেন। এই অধ্যাত্ম-যোগই সাধনার প্রকৃষ্ট উপায়।

৬। বাহ্পপ্রণালী সকল প্রাণহীন হইলে আড়ম্বরমাত সার হয়। এই জন্ত-সকল ধর্মপ্রণালী বিকৃত হইয়াছে। তীর্থ, বৈরাগ্য, গুক্ভক্তি, প্রায়ন্চিত্ত, মালাজপ, করজপ, নানাবিধ কুছে সাধন যোগ প্রাণহীন হইলে সকলই পণ্ডশ্রম সার হয়।

৭। উপাসনার ফলে জীবন মুক্ত

ইইবে। যত এক্ষে আসক্তি বাড়িবে, তত্তই

বিষয়ে বৈরাগ্য হইবে। প্রকৃত উপাসক্ষেক্ষণ নিতাস্ক স্কৃতরাং নিতামুক্ত—
সক্ষিক্ষণ সচেতন,সর্বাক্ষণ প্রেমপূর্ণ, সর্বাক্ষণ
পূণ্যকার্য্যে অমুরাগা। 'সত্যং শিবং স্কৃত্যং'
দেবতাকে প্রাণের প্রিয়তম জানিয়া তিনি
তাঁহাকে লইয়া পরমানন্দ সম্ভোগ করেন
এবং তাঁহাকে আয়সমর্পণ করিয়া
তাঁহারই সহচর অমুচর হইয়া তাঁহার
সেবায় জীবন সার্থক করেন।

কতকগুলি সুমাতা।

(গত প্রকাশিতের পর)

'জর্জ্জ ওয়াসিংটনের জননী।

প্রাতঃশ্বরণীয়া জর্জ ওয়াসিংটনের জননী এ**কজন স্থমা**তা। উত্তর আমেরিকার অন্তর্গত স্থসভ্য ইউনাইটেড ষ্টেট্স প্রদেশে ভাজিনিয়া নগরে এক স্থুসভ্য ইংরাজ ুপরিবারে ইহাঁর জন্ম হয় । সদাচার. কর্ত্তব্যপরায়ণতা, মিতব্যয়িতা, বিনয়, সত্যনিষ্ঠা এবং প্রগাঢ় ঈশ্বরামুরাগ ভাঁহার চরিত্রের প্রধান গুণ ছিল। শতা-স্থােভিত পর্বতােপরি, কল-নাদিনী ভরন্দিণীর ভীরে ঈশবোপাসনা করিতে তিনি বডই ভালবাসিতেন। সময়ে সময়ে পরমেশ্বরের গুণকীর্ত্তন করিতে করিতে তিনি বাহজানশৃত হইয়া পড়িতেন এবং প্রশাস্ত নয়ন হটী ভক্তি-অশ্রধারায় প্লাবিত হইয়া যাইত। তাঁহার স্বামীর বিষয় সম্পত্তি ছিল, স্মৃতরাং মেরী ওয়াসিংটন ধনীর সহধর্মিণী ছিলেন; কিন্তু বিলাগিতা এবং অনর্থক অপব্যয়ে তিনি একটা কপৰ্দকও কথন ব্যয় হইতে দেন নাই। মিতবায়িতা খারা তিনি অর্থসঞ্চর করিয়া নানারপ দেশহিতকর কার্ব্যে वर्ष वात्र कतिराजन धवः प्रशास मीनमहिता-দিগকে, সুর্থ দান করিয়া পরমানন্দ অমৃ-उन्दर्धिकन ।

ভারার ছর পুত্র, তক্মধ্যে জর্জ ওয়াসিং-

টন তৃতীয়। জর্জের বয়স যথন দশ বর্ণর, তথন তাঁহার পিতৃবিয়োগ হয়, স্ত্রাং পুত্রগণের লালন পালন ও শিক্ষার সম্যক ভার মেরী ওয়াসিংটনের উপরেই পতিত হয়। ছয়টা সন্তানের স্থানিকা বিধান একটা বিধবা রমণীর পক্ষে বড় সহজ কথা নহে। মেরী ওয়াসিংটনকে তজ্জন্ত সর্বাদা ব্যস্ত ও চিস্কিতথাকিতে হইত। তিনি রুণা চিস্তার অভিভূত হুইরা এক মহর্ত্তও ব্যয়করিতেন না। স্থনিয়ম ও স্থশিকা ৰারা ডিনি আপনার সদ্গুণ সকল সম্ভান-मिरगंत आर्व গাঁথিয়া नियाष्ट्रितन । জননীর স্থশিকার বলেই জর্জ ওয়াসিংটন কালে প্রসিদ্ধ সেনাপতি ও জগদ্বিখ্যাত (मणहिटेज्यी इहेग्राहित्नन ।

একদা যুদ্ধে ব্যস্ত থাকাতে জ্বৰ্জ্ব ওয়াসিংটন সাত বংসর মাতৃদর্শনে বঞ্চিত ছিলেন। যুদ্ধ শেব হইবামাত্র তিনি মাতৃ-সন্নিধানে উপস্থিত হইলেন। মেরী ওয়াসিংটন বছদিন পরে প্রিয় প্রকে সমাগত দেখিয়া পরমানন্দনাভ করিলেন এবং সহত্র সহত্র চুম্বন করতঃ শৈশবের প্রিয় নাম 'ক্রিজ্ব ক্রিজ্বে' বিদিয়া সন্থোধন করিতে লাগিলেন। পূর্ব্বতন ও আধুনিক সময়ের বয়্বর্বের্গর সবিশেষ সংবাদ সইলেন এবং

শারীরিক কুশন জিজ্ঞাসা করিলেন।
কিন্তু প্রিরতম প্রের পৌরব ও পদমর্ব্যাদার বিষয়ে একটা কথাও বলিলেন
না। কেহ বলিলে বলিতেন "জর্জি ভাল
ছেলে, দে ভাল কাজ করিবে জানি।"
. অক্ত এক সময়ে ওয়াসিংটনের সৈম্ভগণ তাহাদের নেতার জননীকে দেখিতে
চাহিয়াছিল। সৈক্তগণ ভাবিয়াছিল জননী
সমারোহের সহিত তাহাদিগকে দেখা
দিবেন। কিন্তু সকলেই সবিশ্বরে দেখিল,
মেরী সামান্তবেশে তাঁহার প্রিয় পুরের
বাহমধ্যে মন্তক নান্ত করিয়া উপস্থিত
হইলেন। অহকার ও পদাভিমান তাঁহার
উচ্চ হৃদরে স্থান পাইত না।

১৭৯৯ খুটান্ধে তাঁহার প্রের মৃত্যু হইরাছিল। হ:থের বিবর তিনি জীবিত থাকিতে থাকিতেই এই হুর্ঘটনা ঘটরা-ছিল। কিন্ত জধিক দিন তাঁহাকে প্রে-শোক ভোগ করিতে হর নাই, অনতি-বিলম্বেই তাঁহারও মৃত্যু হইরাছিল। তাঁহার মৃত্যুর পর প্রেদিডেন্ট জাকসন এবং দেশের সম্লার মান্তগণ্য লোক একজ হইরা ফেডারিস্কবর্গে তাঁহাকে মহাসমা-রোহে সমাহিত করেন। এই রমণীর বিষরে তাঁহার জগদ্বিখ্যাত পুত্র জর্জ্ম ওরাদিংটন, বলিরাছেন "আমার গোরব ও মহন্দের একমাত্র কারণ আমার জননীর স্থাশিকা।" স্থালাবালা দিংহ।

ব্ৰত্মালা।

হিন্দ্রমণীর পক্ষে অধর্মনিরতা, সদাচারনিষ্ঠা, অত্রতরতা হওয়া নিতান্ত আবশ্যক। ধর্মনীলা পদ্মীই পদ্মী, অক্তে সে
নামের যোগ্যা নহেন। বিনি পতিব্রতা,
শক্তর মাজ প্রভৃতির প্রতি তাঁহার ভক্তি
শ্রদ্ধা আভাবিক। যাহারা পতির প্রা,
তাঁহারা পতিব্রতারও প্রা। যাহারা
পতির আঘীয় মন্তন ও মেহভাজন,
তাঁহারা পতিব্রতা পদ্মীরও আঘীয় মন্তন
ও মেহভাজন। ওদিকে অক্তথা না হইলে
ত আর এদিকে অক্তথা হইতে পারে না।

হিন্দুরমণী শৈশবাৰধি মরণ পর্য্যন্ত ধর্ম-পথে মন দিতে বাধ্য হন। বাংল্যের অভ্যাস বৌবনে বদ্ধস্ল হয়; তথন
অভ্যাস স্থভাবে পরিণত হয়। হিন্দ্পাল্কের
মত শাল্প, হিন্দ্র শিক্ষার মত শিক্ষা অতি
বিরল। ধর্মের থেলাতেও ধর্মশিক্ষা হয়।
শৈশবের ব্রত প্ণাপুকুর; কিন্তু বস্ততঃই
প্ণ্যের পুকুর। এই থেলার পুকুরে বে
প্ণ্যাশিক্ষা হয়, বৌবনে ও বার্দ্ধকো তাহাই
মহা প্ণ্যকার্য্যে পরিণত হয়। বাল্যের
যমপুকুরেই হিন্দ্বালিকা ভবিষ্যতে ব্য
জিনিবার উপার শিক্ষা করেন ৯ শৈশবরাজ্যের জীড়া-ব্রতগুলি বড় অগ্রাহীনহে।
বেষন বাল্যের বর্ণমালার সকল বিদ্যার
স্ত্রপাত, বাল্যের ব্রতমালাতেও দেইরুদ্ধী

সর্ব্ধবর্দ্ধর স্ত্রপাত। ব্রত হিন্দুনারীর সঙ্গের সঙ্গা। বাল্যে পুণ্যপুকুর, ষমপুকুর, প্রস্তৃতি; ধৌবনে ধনগছান, জলসংক্রান্তি, বৈশাধী চাঁপা প্রভৃতি; প্রাবীণ্যে অনস্ত-চতুর্দ্দী, সাবিত্রীচতুর্দ্দী। বার্দ্ধক্রের তক্থাই নাই; তথন ধর্মই হিন্দুর্মণীর জীবনের একমাত্র কার্য্য।

হিন্দ্র সকল কর্মেই ধর্মের বন্ধন,
ধর্মের সংস্রব,—আহারে বিহারে শরনে
স্বপনে ধর্মের বন্ধন। এমন বিধি ব্যবস্থা
রীতি প্রথা আরকোনও জাতির মধ্যে দেখা
যার না। হিন্দ্রমণী যে এত ধর্ম্মনিষ্ঠা,
এত পতিব্রতা, এত সতী সাধ্বী, তাহা
হিন্দ্ধর্মের জন্ম, হিন্দ্পাস্তের জন্ম। ধর্মের
মতি আছে বলিয়াই হিন্দ্রমণী গৃহের
লন্মী, সংসারের দেবতা, সকলের প্রজা।
ধর্মের জন্মই পতিব্রতার তেজে জগং

অতএব পৌরাণিক প্রচলিত পরাঞ্জিত। ব্ৰত্মালা পাঠ বা করিলে পাঠিকাগণের বিশেষ উদ্রেক হইতে পারে, সেই সকল পুরাণাদি গ্রন্থ হইতে সঙ্কলন করিয়া ক্রমশঃ প্রকাশ করিবার সকল করিয়াছি । **স্থ**বৃদ্ধি পাঠিকারা ইহার যথাযোগ্য সন্মাবহার করিবেন। ব্রত কত আছে, এক মাসের তালিকা দেখিলেই কতক বুঝা যাইবে:---

জনাইমী ব্ৰত, তুলদী ব্ৰত, হ্রিতালিকা ব্ৰত, ঋষি-পঞ্মী ব্ৰত, কুকুটিব্ৰত,
দ্ৰ্কাইমী ব্ৰত, রাধাইমী ব্ৰত, ব্ধাইমী ব্ৰত,
তালনবমী ব্ৰত, শ্ৰবণাবাদণী ব্ৰত, বামনঘাদশী ব্ৰত, এবং অনস্তচ্তুৰ্দণী প্ৰত এই
ক্ষেক্টীই ভাদ্ৰমাদ-ক্ষ্তা প্ৰধান ব্ৰত।
এইরূপ ভিন্ন ভিন্ন মাদে প্ৰধান ও ক্ষ্তু
বহুসংখ্যক ব্ৰত আছে। (ক্ৰমশঃ)

পাঁচন ও মুষ্টিযোগ।

কর্ণ রোগ।

১। হড়হড়ের পাতার রস অল্প গরম করিয়া কর্ণের ভিতর দিলে তৎক্ষণাৎ কর্ণদূল (কান-কামড়ানি) নিবারিত হয়।

২। চামেলি ফুলের তৈল ২।১ ফোঁটা করিয়া ৪।৫ দিন কানে দিলে পুঁষ পড়া ভাল হয়।

৩। ঈম্বছফ নারিকেল তৈলে একটু আফিং মিশাইয়া কর্ণের মন্ত্রো দিলে কর্ণ-ভজ্জনিত যাতনা অবিলয়ে নিবা-বিত হয়। -৪। নারিকেল মুচি ছেঁচিয়া এই রস ঝিন্তুকে করিয়া কানে দিলে কান-পাকা ভাল হয়।

থাকা আকন্দ পাতার দ্বত মাথাইয়া

অগ্নিতে উত্তথ্য করিয়া. তাহার রসে কর্ণ
পূর্ণ করিলে, তীব্র কর্ণশূল সত্বর উপশমিত হয়।

৬। নীল বৃক্ষের মূলের রস কাঁজি ও তৈলের সহিত পাক করিয়া তাহাতে কর্ণ পূর্ণ করিলে কর্ণের ক্লমী বিনষ্ট হয়। ৭। লক্ষন, আমলকী সমপরিমাণে লইরা
তাহাতে কিঞ্চিৎ ছরিতাল দিরা পেষণ
করিয়া চতুগুণ তৈলে পাক করিবে,
পাককালে তৈলের চতুগুণ হগ্ন দিবে।
যথন হগ্ন শেষ হইয়া তৈলমাত্র অবশিপ্ত
থাকিবে, তথন তৈল নামাইয়া ঐ তৈলে

কর্ণ কিছুদিন পূর্ণ করিলে, ব্যিরভা রোগ বিনষ্ট হয়।

৮। খেতসর্বপ, বৃহতী, ও জ্বপামার্গ সম-পরিমাণে লইয়া হয়ে পেষণ করিয়া কর্বে প্রলেপ দিবে। •ইহাতে কর্ণ পালি বৃদ্ধি হয়।

হিন্দুগৃহিণীর রাজনীতি।

পল্লীতে ও গ্রামে পাকা গৃহিণী বলিয়া জননীর ধুব স্থ্যাতি হরিদাসবাবুর আছে। পলীবাসিনী স্ত্ৰীগণ দাক্ষাৎ লন্ধী দেবী বলিয়া তাঁহাকে ভক্তি করে। একে ব্রাহ্মণের কন্তা, ভাহাতে ধনেপুত্রে শন্মী-খরের গৃহিণী ; কেনই বা লোকে লক্ষা বলিয়া ভক্তি না করিবে ? ইহার উপর তাঁহার এত অসাধারণ গুণ ছিল যে, কেহই তাঁহাকে ভক্তি না করিয়া থাকিতে পারে না। কর্ত্তা পাচ শত টাকা পেন-সন্পান; চারিটা পুত্র, তন্মধ্যে একটা ডাক্তার, একটা ডেপুটা মাজিষ্টেট; তাঁহারা তুই ভাইয়ে মাসে প্রায় হাজার টাকা তদ্বিল্ল কোম্পানি আনেন । কাগজের হৃদও কিছু আসে। আয় যেমন দেখিতেছ, বায়ও তেমনি। পুত্র, পুত্রবধু, (भोज, (भोजी, कञा, भोहिज, भोहिजी, হুই একটা জামাই, হুই একটা ভাগিনেয়, গৃহিণীর গৃই একটা বিধবা নননা এবং माममानी हेगामिट इहे दिलाम आम ষাইট সত্তর ধানি পাত পড়ে। অতিথি-দেবার একটা প্রকাণ্ড আড়ম্বর নাই বটে,

किन अभन मिन यांत्र ना, रव मिन शार्फी অতিথির দেবা না হয়। এত্যাতীত নৈমিত্তিক ক্রিয়াকলাপও আছে। এক গৃছে বিভিন্ন প্রকৃতির এত লোক বাদ করে, তবু কোন দিন কেহ একটা 'টু'' শব্দ ভুনিতে পায় না। নিতা নিতা এক বায় হয়, কিন্তু এক কপৰ্দকও অপব্যন্ন হয় না। দৈনিক তিনটা অতিথির সেবা স্বতন্ত্র আয়োজন বিনা নিৰ্মাহিত হইয়া যাইত। অতিথি-সংখ্যা তদধিক इहेरन १थक আয়োজন হইত। সংসারে এতাঁদৃশী স্থ-শৃঙ্গলা কেবল গৃহিণীর গুণে। হরিদাস বাব্র মাতা বলিতেন, "যদি অতিথিসেবার জস্ত গৃহস্থ পরিজনগণের আহারাদির একটু ক্রটি না হইল, এবং পরিজনগণ যদি বুঝিতে না পারিলেন যে, তাঁহাদের গৃছে অতিথি আসিয়াছিলেন বলিয়া তাঁহাদের আহারাদির একটু ন্যুনতা হইরাছে, তাহা হইলে আতিথ্যের ফল ইয়ু না। এরপে অতিপিসেবা যে ঘরে সে ঘরে মিতবারিতার নিয়ম উপেক্ষিত হইয়া 'থাকে।" অতিবিদেবা

শ্বকে হরিদানের মার আরও যে সকল কথা আমরা শুনিয়াছি, তাহা পর্য্যালোচনা করিলে তিনি যে আতিথোর অদৃষ্ট বা অলোকিক ফলের প্রত্যাশা করি-তেন, এরপও বোধ হয় না। তিনি বলিতেন,—"অতিথিসেবা গৃহস্থের একটা প্রধান ধর্ম। এই ধর্মামুষ্ঠান দ্বারা সমাজের মকল হয়। এই জন্ম শিশুকাল হইতে গৃহস্থ বালকবালিকাদিগের এই অনুষ্ঠান ব্দভান্ত হওয়া উচিত।" তিনি যে এই-ন্ধপ উক্তিমাত্র করিয়া নিশ্চিস্ত থাকিতেন. তাহা নহে: উহা কার্য্যে পরিণত করিবার উপায়ও দেখাইয়া দিতেন। যে দিন গ্ৰহে অতিথি আসিতেন, সে দিন হগ্ধপোষ্য শিশু ব্যতীত পরিবারস্থ অন্তান্ত সকলের ভাগের হগ্ধ ও জলথাবার হইতে কিঞ্চিৎ কিঞিৎ লইয়া অতিথিকে প্রদান করিতেন. **এবং ভাহাদি**গকে বুঝাইয়া দিভেন যে. "আৰু তোমাদের বাড়ী অতিথি ঠাকুর আসিয়াছিলৈন বলিয়া তোমাদের ত্রগ্ধ অলথাবার একটু কম হইয়াছে।" তাহারা ৰাল্যকাল হইতে শিথিত আপনারা না পাইরা, বা অল পাইয়া, অতিথিদেবা করিতে হয়।

হরিদাসের মা কথন দাসদাসীগণের উপর অতিথিসেবার ভার অর্পণ করিতেন লা; তাঁহার অন্থরোধে শ্বরং কর্তাকে গিরা অভিথির অভ্যর্থনা করিতে ও সেবা আতিথির দিকট ঘাইতে একটু আতিথির নিকট ঘাইতে একটু

"দেধ কর্ত্তা। ভূমি ভাব, এই বর-সংসার টাকা-কড়ি, সবই তোমার, তুমি দয়া করিয়া আমাদিগকে প্রতিপালন করিয়া থাক, নয় ? আমি কিন্তু সেরূপ ভাবি না : আমি ভাবি, পৃথিবীতে যত ঘর বাড়ী. টাক। কড়ি, লোক জন আছে, সকলই একজনের ;--সে সকলকে রক্ষা করে.--সকলকে প্রতিপালন করে। সকল সংসারে সকলের সম্বন্ধ আছে। আমার ইচ্ছা করে, অতিথিগণকে এমন ষত্র করি ধেন তাঁহারা মনে করেন যে. 'এক বাড়ী ছাড়িয়া আর এক বাড়ী স্বাসিয়াছি।' কি করিব, বিধাতা আমাকে ভূমি না করিয়া তোমার নারী করিয়াছেন, বাহিরে যাওয়া তাল দেখায় কর্ত্তা দেই দিন হইতে আর কোনও কথা কহিতেন না:--অতিথি আসিবামাত্র অবিলয়ে নামিয়া আসিতেন। (?)

আমরা যে হিন্দুগৃহিণীর আখ্যায়িকা
বর্ণন করিতেছি, তিনি গৃহলক্ষীরূপে যে
গৃহে অবস্থান করিতেন, সেই গৃহের
পার্ষে হরিদাসনামক কোন ব্রাহ্মণযুবক
সন্ত্রীক বাস করিতেন। প্রতিবেশী
হরিদাস বালককালে গৃহিণীর জ্যেষ্ঠপুত্র
হরিদাস বালককালে গৃহিণীর জ্যেষ্ঠপুত্র
হরিদাস বাল্র সভীর্থ অর্থাৎ সহপাঠী
ছিলেন; ভদ্তির নাম, বয়স ও আঞ্চতিগত সাদৃশ্য বশতঃ উভয়ের বিলক্ষণ
সৌহত্ত জ্যিয়াছিল। পুত্রের স্কৃৎ
বলিয়া গৃহিণীও তাঁহাকে পুত্রবং মেহ
করিতেন। স্কুদের জ্বননী বলিয়া

প্রতিবেশী হরিদাসও গৃহিণীকে গর্ভধারিণী-বৎ ভক্তি করিতেন। বিশেষতঃ বালক-কালেই তিনি পিতৃমাতৃহীন হওয়াতে এবং হরিদাসবাব্র পিতার অসুগ্রহে তাঁহার চাকুরী হওরাতে তাঁহাদিগের সহিত তাঁহার বিলক্ষণ ধনিষ্ঠতা ও আমুগত্য ক্সিয়াছিল। किन्न रेमन्दर अजिजारकरीन रहेरन मुहत्राहत्र 'द्योवटन दव त्नाव चृतित्रा शांदक, প্রতিবেশী হরিদাসের হর্ভাগ্যক্রমে তাহা ঘটিরাছিল। তিনি স্থরা ও তদামুষঙ্গিক কুক্রিয়ায় আসক্ত হইয়াছিলেন। কিন্ত গাঁহার স্ত্রীবড় লক্ষ্মী;—সেই সাধনী যুবতী তাদৃশ উচ্ছু খল পতির প্রতি কিছুমাত্র অভক্তি প্রকাশ করিতেন না;বরং বিধিমতে জাঁহার চুরিত্র-সংশোধনের চেষ্টা করিতেন। হরিদাসবাব এখন ডেপ্টা মাজিটেট,— তাঁহার উচ্চপদ ; স্কুতরাং দেশীয় প্রপা-মতে তিনি বালাবনু গরিব হরিদাসের সংবাদ লইতে লজ্জাবোধ করিতেন। কর্ন্তা, "হোড়া মদ, বেশ্রা ধরিয়া অবংপাতে গিয়াছে" বলিয়া হরিদাদের মুখদর্শনও कतिराजन ना ; किन्तु शृहिनी हतिनामरक সমানই ভালবাসিতেন। তিনি একদিন ह्रिमामत्क जाकिया कहित्नन,-"इति! চল্লিশ টাকা মাহিনা পা'স, ধাইবার লোক তুই, তোর স্ত্রী ও একটা বিধবা বোন। বৃষিয়া চলিতে পারিলে ধরচপত্র হইয়া তোর মালে মালে কিছু দঞ্চর হইবার কথা; তা না হইয়া সকলই উড়াইয়ে দিস্—বাছারা পেট ভরিয়া খাইতে পার না,—কথন তাদের পরনে একধানা আত

कांशक प्रिथिनाम ना। तम मिम वर्षमा আসাদের বাড়ী নিমন্ত্রণ ধাইতে আসিরা-ছिলেন, দেখিলাম,—কেবল ছই গাছি কড় ও সিঁথের সিঁহরটুকু আয়তি-চিক্ রহিয়াছে, —উজ্জন খ্রামবর্ণে কত রূপ ;— বোধ হইল যেন নিৰ্মাসিতা পঞ্চালছহিতা কহিলাম. অজ্ঞাতবাস করিতেছেন। হতভাগা এমন শরীরে হ্থানা গ্হনা দের না। বৌমা হাসিতে হাসিতে কহিলেন, "মা! আমার কপাল।" হরিদান সাঞ্ৰরনে কহিলেন, ''মা, আর আমাকে তিরস্কার করিবেন না; আমি আস্চে মাস হইতে কিছু কিছু টাকা আপনার কাছে রাখিয়া দিব, আপনি তন্থারা বৌকে গহনা গড়াইয়া দিবেন," বলিয়া গৃহিণীর নিকট বিদায় গ্রহণপুর্বক প্রস্থান क्त्रिलन । वना वाल्ना, मात्म मात्म जीका গচ্ছিত করা দূরে থাকুক, ইহার পর হরি-দাস আর ৩। ৪ মাস গৃহিণীর সহিত সাক্ষাৎ করেন নাই। গৃহিণী ব্ঝিলেন, স্ত্রীর প্রতি হরিদাদের ভালবাদা থাকিলেও, ন্ত্ৰীকে ভাৰ কাপড়, ভাৰ পরাইবার ইচ্ছা থাকিলেও, ইচ্ছা করিয়া ত্রস্ত অভ্যাস ত্যাগ করা হরিদাসের সাধ্য নহে; তজ্জ্ঞ একটু ভৰিব আবশ্রক।

(0)

হরিদাসের সহিত কথোপকগনের ঠিক্
তিন মাদ পরে এক দিন গৃছিণী এক
কন বর্ণকারকে ডাকিয়া ভাহার হাতে
একটুকুরা কাগক এবং নগদ ও নোটে

থ০০ তিন শত টাকা গণিয়া দিলেন;
পরে একথানি হাতচিঠার রিদদ্ প্রাশ্প
দিয়া তাহাতে স্থাকারের স্বাক্ষর লইলেন।
স্থাকার বিদার হইল। এই সময়ে গৃহিণী
উপর হইতে কর্তার কণ্ঠধানি শুনিরা উর্ক্
দৃষ্টিতে দেখিলেন, কর্তা বার্রান্দার দাঁড়াইরা
দেখিতেছেন। অমনি দশন-দপ্ট-রসনায়
স্বরিতপদে কর্তার নিকট গমন করিলেন।
কর্তা জিজ্ঞাসা করিলেন,—"কি হইতেছিল ?" গৃহিণী কহিলেন, "যেখানে
বাবের ভর, সেইখানে সন্ধ্যা হয়। আর
কেহ জানে না জানে, তুমি জানিতে না
পার, এই আমার ইছা ছিল।"

"ব্যাপারটা কি ?"

"হরিদাসের স্ত্রীর জন্ম পাঁচখানা গহনা গড়াইতে দিলাম।"

"বড় বউমার কোন্ পাঁচথানা গহনার অভাব ছিল, আমি ত তা জানি না।"

"বুড়া হইলে পুরুষ মান্থবের বৃদ্ধিলোপ হর, এই জন্মই গবর্ণমেন্ট্ বুড়াদিগকে আফিস হইতে তাড়াইয়া দের। আমি কি আমার হরিদাসের বউকে 'বড় বউমা' বলিতে জানি না ?"

"ভাল! আমিই যেন বুড়া হইয়াছি, তুমিই কোন্ যোলবছরী ?"

"আমি ধোড়ধী ধুবতী নহি বটে; কিন্তু যুবতীর স্থায় বৃদ্ধি আছে।"

क्छ। এक টু कहे इहेग्रा कहित्नन,

"ৰয়াটে ৰাতাল হরিদাসের বউকে তিন শ টাকার গহনা দিয়া সেই বৃদ্ধি প্রকাশ করিলে না কি ?"

"তুমি একটু পায়ের ধ্লা দাও, তাহার জোরে অবশুই সেই বৃদ্ধি স্থফলা হবে," বলিয়া গৃহিণী কর্ত্তার পদধ্লি লইয়া মস্তকে দিলেন এবং হাসিতে হাসিতে অন্তঃপুরে যাইতে উদ্যুত হইলেন। কর্ত্তা কহিলেন, "শুন, একটা কথা বলি! তুমি তিন শ টাকা দান করিবার পাত্রী নহ, তাহা আমি জানি; কিন্তু হরিদাসের মত লোকের নিকট হইতে কি ঐ টাকা কেরত পাইবার প্রত্যাশা রাথ ?"

কর্ত্তার মুথে এত কথা শুনিতে হইবে বলিয়াই গৃহিণী গোপনে কার্য্য সারিবার চেষ্টা করিতেছিলেন। এখন একটু বিরক্ত হইয়া কহিলেন, "তোমার ঘরণী হইয়া অনেক টাকা করিয়াছি; না হয়, তিন শ টাকা যাইবে, তাহাতে মারা যাইব না। অথবা এককালে এজন্ত হয়ত, তুমিই আবার অনেক প্রশংসা করিবে।"

গৃহিণীর বুদ্ধিশুদ্ধি ও চাল চলনে কর্ত্তার সবিশেষ আস্থা ছিল। উপস্থিত ক্ষেত্রে পরিক্ষুট্ররপে কিছু বুঝিতে না পারিলেও ইহাতে গৃহিণীর একটা ভাল মতলব আছে, তাহা বুঝিলেন, আর কোন কথা কহিলেন না।

(ক্রমশঃ)।

| 30- | ₹] | | | | दर्गा | | | | | | | 29 T | |
|-----------------------------------|---------------|----------|-----------------------|-----------------------|-----------------|-----------------|----------------|------------------------|-------------|-----------------------|----------------|------------|--|
| স্বরসাধন-প্রণালী। | | | | | | | | | | | | | |
| | | | | | | | | | | | | | |
| বাহার (ঝাঁপতাল)। গ্ _{নি} | | | | | | | | | | | | | |
| 1+1 | । भ | ্যা ম | | 14 | | 이 <u>4</u> 키 | | | 1 | ম্ | İ | প | |
| ধ অ- | E - | न | | च | | ન | | | si- | ₹- | | न | |
| +1 | 1.4 | | ৩॥ | | i | • | | 1 | ^ নি | ्ञा ्>। | া ^ নি | 4 | |
| ম | গ | | ম | | 4 | 9 | | সা [.] হা- | 14 | -11 | त्रि ; | | |
| 13 - | প | | গাও | 6 | 5 1- | | | Į. | | | | | |
| +1 | 14 | | ઝા | | 1 | | o | | স া | 3 | ॥ ^ नि | সা | |
| ধ | নি জ্য | | সা [.] ন- | | श्वः त्य | | . ম স∙ | | বে | | র- | ৰি | |
| भाउ | আ- | | | , esti | - ', | ١٠ | | Δ | | >1 | م | | |
| +1 | ।^ नि | | | থ। ধ | | ٠ م | স্ <u>ব</u> | F | τ | <u>भा</u> | নি | * | |
| সা [.] চ- | - | | | <u>.</u> | | | তা- | | • | | রা। | _ | |
| | | ı | তা | Δ | U | v | , | · | • | 1 | 31 4 | n] | |
| | •+1 | स | | | দা [.] | ₩. | 3 | 1 1. | সা | সা | नि | সা | |
| (১ম | বার) স- | কল | _ | | ত- | | 7 | ኞ - | রা | ঞ্জি | সা- | खि | |
| | বার) গা- | હ | | | खी | | | ব | G - | ₹ - | জা- জা- | জি জি | |
| (৩য় | বার) ম- | ম | | | স্ - | | | ·F- | ষ্ | গাও ১৷ ^ | 1 | A 11 | |
| | +1^ | | 1 | ত। স্ব | | 11 | | ^। 'সা' | | ગ - નિ | • | नि ४ | |
| | নি স | | থা ল | সা [.] ফ- | | ध . ज | - | i1- | | 3 | রে | | |
| | क्रू- ८य- | | | আ- | - | ·*) -{ | | ,, বে | | খা | (F | | |
| | মি- | | नि- | য়া | | म | ; | 4 | | সা- | Ç¢ | थ, | |
| | +14 | | 14 | | ા 🛕 | | 11 | | Δ | 1 🛕 | >1 | 11 | |
| | શ. | | 5 | | গ | | ম [.] | হ ল | | গ [.] গাও | ঝ আ- | সা. জি | |
| | বি- জ- | | হ - গং | | ক পু- | | क् द्र- | ণ বা | | গাঁও গাঁ | म्- | বে | |
| | ख- ড1- | | ग क | • | ना | | વ | ভা | | 4 | না- | থ | |
| | +1 | | مَا | | ଠା | | ı | | •1 | i | >1 | 14 1 | |
| | সা | | নি | | ধ | | ধ | | প সা নি | | সা | मा बि ४ | |
| | ম্- | | ধুর- | | ক্ত- | | র | | তা - | | | নে। কো | |
| | গা- | | '9 G | | Ø. | | সু- আ- | | রা মা- | | | গে, রি। | |
| 1) 3c | ব- | | ৰি | | প্রাণ | | ٦١٠ | | ٦. | | | | |

击

হেঁয়ালি।

পাঁচটি অক্ষরে মম নামের গণন, রাজা আমি গুণ মম জানে সর্বজন। বৃদ্ধঃহিলুদের মনে হতেছে উদয়, "উত্তম কথায়" মম কণ্ঠ স্থুখ হয়। প্রেথম অক্ষর আর বিতীয় অক্ষর, এক্ত করিলে নর বুঝাবে স্বর। প্রথমের সনে যদি তৃতীয় মিলাবে, তথনই হ্যাবাটী দবি হয়ে যাবে। প্রথমের সনে যদি চতুর্থ মিশর, আদালত কাছারীতে বড় পদ হয়। প্রথমের সনে হ'লে শেষের মিলন, সবাকার সুমঙ্গল হইবে সাধন।

শ্ৰীঅ-

ভূতন সংবাদ।

>। মহারাণী ভারতেশরী কাব্লের আমীর-পুত্র নস্কলাকে একটা রাজমুকুট ও কতকগুলি বৈজ্ঞানিক যন্ত্র উপহার দিয়াছেন।

২। জর্মাণির ওয়ালক নামে এক ব্যক্তি বৈজ্ঞানিক নিয়মে ক্লফ বর্ণের গোলাপ ফুল প্রস্তুত করিয়াছেন।

৩। চীনে পুনরায় মিশনারি-হত্য।

হইয়াছে। ৮। ১০টা মিশনারি রমণী

এবং কয়েকটা শিশুও না কি হত

হইয়াছে।

৪। এবারডীন বিশ্ববিদ্যালয় কুমারী সে, ই, হারিসনকে তাঁহার গ্রীক প্রত্নতন্ত্ব সম্বন্ধীয় গবেষণার জন্ম এল এল ডি উপাধি দিবেন। কুমারী হারিসন এই সর্বপ্রথম ব্রিটিষ বিদ্যালয় হইতে উপাধি লাভ করিলেনং।

ে। বিশাতের ুশাসুষরে ২৫০,০০০ বিরুদ্ধ ও পদক আছে।

७। मुक्तिरकोरबद्र स्मानिक स्वनादन

বৃথ আগামী ১০ই সেপ্টেম্বর ইংলও পরি-ত্যাগ করিয়া দক্ষিণ আফ্রিকাও অষ্ট্রেলিয়ার ভ্রমণপূর্ব্বক পুনরায় ভারতবর্ষে আসিবেন।

৭। আগত্তের প্রথমে ডবলিন মহানগরে কালা বোবাদের শিক্ষার বিবেচনার্থ এক মহাসভা হইয়াছে। কলিকাতার কালা-বোবা-বিদ্যালয়ের শিক্ষক লগুন-প্রবাদী বার্ যামিনীনাথ বন্দ্যোপাধ্যায় বক্তারূপে নিমন্ত্রিত হইয়া গিয়াছেন।

৮। চিনের মুদলমান অধিবাসীরা বিদ্রোহী হইয়াছে। চিনের চতুর্দ্ধিকে গোলবোগ।

ন। ভারতেশ্বরী বিক্টোরিয়া "ইম্পি-রিয়াল ইন্টিটিউট" থূলিবার সময় স্বয়ং বক্তৃতা পাঠ করেন; এরূপ উচ্চ ও পরিকার স্বরে পাঠ করিয়াছিলেন যে, অতি দুরস্থ শ্রোতারাও স্ক্রপ্টিট্রন্ডনিয়াছেন।

১০। কর্প্রধালার হরনাম্ সিংহ বাহাহর সন্ত্রীক অসবোরন্ প্রাসাদে মহারাণীর সাদর অভ্যর্থনা লাভ করিয়াছেন। ১১। আমরা অত্যন্ত ব্যপিতছদরে আনিচ্ছাপূর্বক এই আমুরিক কাণ্ড পত্রস্থ করিতেছি। কলিকাতাবাদী ভূতপূর্ব দব জজ বাবু ঘছনাথ মলিকের গৃহে রাত্রি দিপ্রহরের পর এক দম্যা প্রবেশ করিয়া তিন্টী বালক, যহ্বাবুর

ছোট আমাতা ও পুত্রকে সাংবাতিকরপে
অক্তাঘাত করে। ছোট আমাতা ও ছইটী
বালক মারা গিরাছে, অন্ত ছইটীরও জীবন
সংশয় । বালকত্ররের পিতা বছবাব্র
আমাতা অল্লগাপ্রসাদ ঘোব এই দক্ষা
বিলয়া ধৃত ছইয়া বিচারাধীন !!!

পুস্তকাদি সমালোচনা।

১। নির্মবিণী— শ্রীমতী মৃণালিনী প্রণীত। ইহার প্রথম গ্রন্থ 'প্রতিধবনি' সম্বন্ধে আমরা যে সকল প্রশংসাবাদ করিয়াছি, নির্মবিণী ছারা তাহা সমর্থিত হইরাছে। ইহার কবিতা সরল, মধুর ও বিশুদ্ধভাষপূর্ণ, এইজন্ত এত ছালয়গ্রাহিণী। ইহার প্রাণের কবিতা নির্মার অক্ষর হইয়া বঙ্গসাহিত্যের ও দেশের হিতায়তিস্যাধনে সমর্থ হউক।

২। প্রেম—শ্রীহেমেক্সনাথ সিংহ, বি,

এ প্রণীত, মূলা ১ টাকা। প্রেম সম্বন্ধে
বেধানে বাহা কিছু উৎকৃষ্ট কথা পাওয়া
বায়, ইহার মধ্যে প্রার সকলই সন্নিবেশিত
হইরাছে। গ্রন্থকার হৃদয়বান্ এবং প্রেমাঞ্জনে
উন্মুক্ত-চক্ষু, তাই স্বচক্ষে প্রেমকে দেখিয়া
তাহার এমন চিত্র অন্ধিত করিতে সমর্থ
হইরাছেন এবং তাহার যে অঙ্গে যে ভূবণ
সালে, তাহা দিয়া সাজাইয়াছেন । ইহার
ভাষা সরল, ভাষ গভীর এবং ইহা পাঠ
করিয়া ল্লয় ও আত্মা তৃপ্র হইয়া কল্যাণকর
ফললাভে সমর্থ। প্রেমিকগণ ইহার
আবাদন করিয়া স্থবী হউন।

৩। বিভাসাগর— শ্রীমৃক্ত চণ্ডীচরণ বন্দ্যোপাধ্যায় প্ৰণীত, মূল্য ২॥• টাকা । পুত্তকথানি প্রায় ৬০০ পৃষ্ঠা পরিমিত এবং ইহাতে ১১ ধানি স্থন্দর ছবি আছে। বিদ্যাদাগরের জীবনের স্কল বিভাগের ঘটনাবলী অতি স্বিভ্তরূপে বর্ণিত হইয়াছে এবং তাঁহার সতেজ ও জীবন্ত ভাব ইহার পত্তে পত্তে জাজ্ঞগামান। ट्यक्रभ यङ्ग, भद्रिश्चम, शद्यवना, मस्तम्बर्छा, ও দেশহিতৈযিতা সহকারে গ্রন্থকার পুত্তকথানি প্রণয়ন করিয়াছেন, ভাহাতে हेश किनिय झना इहेबाट्ड। প্তী-শিক্ষা ও বিধবা-বিবাহ প্রচলন এবং বছবিবাহ নিবারণ-ক্ষেত্র অনন্যসাধারণ আখ্ৰ-সমর্পণ বারা বিস্থাসাগর যে নারী-হিতৈষিতা প্রদর্শন করিয়াছেন, ভাছার ইভিবৃত্ত ইহাতে বিশেষরূপে বিবৃত। সহাদর নারী-গণ এবং নারীহিতৈবিগণ এই পুস্তকের উপযুক্ত সমাদর করিবেন, অবশ্বই আশা করা যায়। পৃত্তকথানি সহকে আমাদের আর বাহা বক্তব্য আছে, ভাহা পরে প্রকার ।

বামারচনা।

নিরাশায়।

"I slept and dreamt that life was beauty, I woke and found that life was duty."

অলস জীবন-ভার वहरत कि अर्थाञ्जन। তাই এ ক্লেশের বোঝা নামা'তে আকুল মন। ১। व्यवम कीवरन नाथ। हम मझीवजा मां अ. নহে জীব-খাতা হ'তে এ নাম উঠা'য়ে লও। ২। পারি না বহিতে প্রভু! নিৰ্জীব জীবনভার, ছুরবল হাদয় ত পারে না সহিতে আর। ৩। কোথায় মরণ রাণি। ऋधामूर्य এम ट्राम. কোলে তুলে লও এবে স্নেহময়ী মাতৃবেশে। ৪। চিরশান্তিময়ী তুমি, মধুর মূরতি তব, আহা! কি স্থন্তর হেরি कत्रनात्र अञ्चितव ! ६। অন্সের অফুগামী তোমারিত হওরা সাজে, প্রকৃত্ব বাদ্ধব তার **्कृति जिल्ला** क्यू, मारवा। ७। ভৌমার পরশে তার

হাসিবে মলিন প্রাণ,

সংসার-যাতনা ভূলি বেহাগে গাহিবে গান। १। অরুণের প্রিয়সথী পরিয়া কনক-ভূষা আবার হৃদয়ে তার জাগিবে বাসস্থী উষা।৮। তোমার কুপায় রাণি! नी निय गगन मत्न নুত্ৰ জীবন পেয়ে ভ্ৰমিৰে সে ফুল্লমনে। ১। তোমারি কুপায় রাণি ! नौना अवाहिंगी जात. নাচিবে নৃতন প্রাণে তরক্ষের সঙ্গে রঙ্গে। ১০। ভভাননে ! তুমি তারে नं अ (मिथ क्लाम कूल, মলয় মাকৃত সনে जिमिर्व रम कृत्न कृत्न । >>। মরতে কীচক-বংশী বাজাবে মোহন-মুরে, পারিজাত গন্ধ ব'য়ে ভ্রমিবে অমরপুরে। ১২।

প্রীকুষুদিনী রার।

বামাবোধিনী পত্ৰিকা।

BAMABODHINI PATRIKA.

"कन्यायेवं पालनीया शिच्चणीयातियत्रतः।"

কস্তাকে পালন করিবেক ও যত্ত্বের সহিত শিক্ষা দিবেক।

৩৬৯

मः था।

আখিন ১৩০২—অক্টোবর ১৮৯৫।

৫ম কর।

৪র্থ ভাগ।

সাময়িক প্রসঙ্গ।

বক্সের নৃত্ন শাসনকান্তী—-সাধ্।
চালসি ইলিয়টের স্থানে সাধ্ আলেকজাণ্ডার মেকেঞ্জি লেপ্টেনন্ট গবর্ণর নিযুক্ত
ইইয়াছেন। আগানী নবেশ্বরে গদিতে
বসিবার কথা।

দৈনিক বিবাহ—এক পণ্ডিত গণনা করিয়াছেন সমগ্র পৃথিবীতে প্রতিদিন ও হান্ধার করিয়া বিবাহ হইয়া থাকে।

মুসলমান দ্রীশিক্ষা—বেথুনস্থলে মুসলমান বালিক। ভর্তির জন্ত আবেদন করা হইরাছিল, বিদ্যালয়ের নিয়মে বাধে বলিয়া তাহা গ্রাহ্ম হয় নাই। মুসলমানদিগের মধ্যে এরূপ স্ত্রীশিক্ষামূরাগ বিশেষ প্রশংসনীয়। বেথুন হিন্দু-বালিকা বিভালয়ে স্থান না হইলে মুসলমান-বালিকাদিগের জন্ত স্বত্ত্ত্ব বিভালয় স্থাপন করা গ্রহ্ণমেন্টের কর্ত্ত্ব্য।

চিত্রলের পরিণাম—ইহাকে বিটিষ্
সামাজ্যকুক করিবার জন্ম ভারত গ্রণ্মেন্ট্
লিথিয়াছিলেন, নৃতন রাজমন্ত্রী লর্ড সালিম্বরী না কি তাহার অন্তমোদন করিয়াছেন। ইংরাজ আশ্রমে স্ক্রাউল-মুধ্
নামে এক নৃতন নৃপতি চিত্রল-সিংহাসনে
অভিধিক্ত ইইয়াছেন।

ব্রজমোহন দত পারিতোষিক—
১৮৯৫-৯৬ সালে একটা ৮০, ও আর
একটা ৪০, টাকার প্রস্কার দেওয়া
হইবে। রচনার বিষয়—''শারীর ও
গার্হস্থা পরিচ্ছেরতা''। আগামী ০১ শে
ডিসেম্বরের মধ্যে সেন্ট্রাল ট্রেক্ট বৃক্
কমিটার সম্পাদকের নামে প্রচনা
পাঠাইতে হইবে। বিশেষ বিজ্ঞাপন অক্তর্জ্ঞ

বৈদ্যনাথ-কুষ্ঠাশ্রাম—ডাক্তার মহেন্দ্রলাল সরকার মহাশবের সহধর্মিণী রাজকুমারীর অর্থে এই কুষ্ঠাশ্রমের বাটী
নির্দ্মিত হওয়াতে ইহার নাম "রাজকুমারী
কুষ্ঠাশ্রম" হইয়াছে। ১ই ভাঁদ্র দ্বারভাঙ্গার
মহারাজা ইহা খুলিয়াছেন। স্থানীয়
ডেপ্টা কমিসনর ও সমস্ত ভদ্র লোক
উপস্থিত ছিলেন। মহারাজা আপনার নামে
১০০০ ও জননীর নামে ৫০০ টাকা দান
স্বাক্ষর করিয়াছেন।

সৎকার্য্য—বোদ্বাইয়ের মারবান্জী হারমানৃজী কামা পিতার স্মরণার্থ গৃহহীন পারসীদিগের জন্ম একটী বাটী নির্ম্মাণ করিয়া দিয়াছেন।

আশ্চর্য্য পাতিত্রত্য — দারণ জেলার সিরধিয়া গ্রামের রামান্ত্র্যুহ দিং নামক এক রজপুতের সাংথাতিক পীড়ায় তাহার পত্নী আস্মীয় স্বজনের নিকট বিদায় লইয়া অক্সজল পরিত্যাগপূর্ব্বক স্বামীর মৃত্যুর এক ঘণ্টা পূর্ব্বে ইচ্ছামৃত্যুর স্থায় কলেবর পরিত্যাগ করিয়াছেন। স্বামীর বয়স ১৯ বৎসর, বধু বালিকামাত্র।

মহারাণীর ভারতীয় সেক্রেটরী—
ইহাঁর নাম আবহল করিম, সি এস আই।
ইনি ভারতবর্ষের কোনও ডাক্তারের পুত্র,
১৮৬৩ সালে জন্ম গ্রহণ করেন। ভারতেধরীকে ইনি হিন্দী ভাষায় শিক্ষা দিয়া
তাঁহার অতিশয় প্রিয়পাত্র হইয়াছেন।

আমেরিকায় জাপানী মহিলা—
কুমারী হুকিঙ এঙ নামী এক জাপানী

যুবতী ফিলাডেল্ফিয়ার মেডিকাল

কলেজের উচ্চ পরীক্ষায় প্রশংসিতরূপে
উত্তীর্ণ হইয়াছেন। ইনি ৯ বংসর
আমেরিকায় অধ্যয়ন করেন।

কুমারী নাইটিসেল—এই বিশ্বহিতৈষিণী মহিলার বয়স ৭৫ বৎসর পূর্ণ
হইয়াছে। এই উপলক্ষে মহারাণী বিক্টোরিয়া স্বহস্তে তাঁহাকে এক পত্র লেখেন,
জন্মণি ও রূসিয়ার সমাট্ও পত্র দ্বারা
অভিনন্দন করেন।

দানবীর সার্ জেমসেটজী জীজী ভাই।

মহাম্মা দাদা ভাই নারোজি পার্লিয়ামেন্ট মহাসভার সভ্য নির্মাচিত হওয়া
অবধি অনেকেরই চক্ষু পারসীজাতির
প্রতি আরক্ত হইয়াছে। আমরা এ স্থলে
মারুসীজাতির সংক্ষিপ্ত বিবরণ সহ পারসী
মান্মা সার জেমসেটজী জীজী ভাইয়ের
দীবনী প্রদান করিব।

বোম্বে অঞ্চলে যে সকল পারসী দেখিতে পাওয়া যায়, তাহাদিগের আদি বাসস্থান পারস্তদেশে। খৃষ্ঠীয় সপ্তম শতান্দীর মধ্যভাগে মুদলমানেরা পারস্তদেশ আক্র-মণ ও অধিকারপূর্ব্বক পারসিকদিগের দেবালয়াদি চুর্ণ বিচুর্ণ করিয়া স্বধর্মপ্রচারে যত্নপর হয়। বহুসংখ্যক পারসিক অসম্ উৎপীড়নে জাতীর পৌত্তনিক ধর্ম পরিত্যাগপূর্বক মুসলমান ধর্ম গ্রহণ করিরা
নিরাপদে অদেশে অবস্থান করিতে থাকে,
আর অরসংখ্যক স্বদেশ পরিত্যাগপূর্বক
কাবে উপদাগরস্থ ডিউ নামক ক্ষুদ্র বীপে
পলারন করে। এই বীপে কিরৎকাল
অবস্থানের পর ৭১৭ অব্দে বোষের
উত্তরাংশে গিয়া বাদ করিতে আরম্ভ করে।
পৃষ্ঠীয় সপ্তদেশ শতাব্দীতে কভকগুলি
পারদী বোষে নগরে আদিয়া বাদ স্থাপন
করে।

পারসিকদিগের সংখ্যা নিতান্ত অল্ল। সমস্ত ভারতবর্ষে সর্বাভদ্ধ ৮৫,০০০ হাজারের অধিক পারদী বাদ করে না। কিন্তু এই অরসংখ্যক পারদীর মধ্যে স্বার্থশৃত্ত-পর-হিতৈবী মহাত্মার সংখ্যা যে পরিমাণে অধিক, সমস্ত ভারতবর্ষের হিন্দুলাতির মধ্যে সে পরিমাণে আছে কি না সন্দেহ। খুষ্টীয় ১৭৮৩ অব্দে বোম্বে নগরে মহায়া **ट्यम**मिष्यो की की जारे अन्य शहर करतन। ইনি বাল্যকালে গুজরাটা শিক্ষা করিয়া পরে ইংরাজী ফুলে ভর্ত্তি হন; এপানে ষংসামাত ইংরাজী শিক্ষা করেন। বালাা-বস্থায় পিতৃমাতৃহীন হওয়াতে জেমদেটজী শীয় শশুর, প্রসিদ্ধ বোতল-বিক্রেতা, নাম রোয়ানজার নিকট প্রতিপালিত হন। অব্দে বোড়শবর্ষ বয়:ক্রমকালে ইনি শীয় ভাতা মারয়ানজীয় সহিত ভদীয় বাণিজ্যপোতের একজন কর্মচারী **ब्हेश होनामा असन कार्यन** व्यवः ३२०० টাকা সংগ্রহপূর্বক चलেশে প্রত্যাগমন

क्तित्रा चत्रः वानिका वादनात्व ध्वत्र्ष इन। वानिकावाभारत कीकी छाहेरतत अनमा উৎসাহ ছিল। বাণিজ্য-কুশনতা, উদারতা ও স্থায়-নিষ্ঠা গুণে তিনি অচিরকাল মধ্যেই প্রচুর স্থ্যাতি ও প্রতিপত্তি লাভ সক্ষম হন। করেক বৎসর ক বিতে স্বদেশে বাণিজ্য করিবার পর তিনি ৩৫০০০ টাকা ঋণগ্রহণ করিয়া চীনদেশে বাণিজ্য করিতে প্রবৃত্ত হন। **জীজী ভাই हीन**(म्र স্বয়ং বাণিজাপোতে ক্রিতেন, সমুদায় কার্য্য স্বয়ং পর্য্যা**লোচনা**° করিতেন এবং ভবিষাতের প্রতি লক্ষ্য রাথিয়া কার্য্যে প্রবৃত্ত হইতেন। এই হেড তিনি অচিরকাল মধোই ঋণ-মুক্ত হইয়া প্রচুর ধনের অধীশ্বর হইয়া পড়েন। চতুর্থ বারে তিনি ৰখন চীনদেশ হইতে প্রত্যা-বুত্ত হইতেছিলেন, সেই সময়ে তদা**নীত্ত**ন ইংরাজদিগের সহিত যুদ্ধে নিযুক্ত ফরাসীরা তাঁহার বাণিজ্যপোত অধিকার ুকরে। জীজী ভাই গুদ্ধ যে সৰ্ব্যস্তান্ত হইলেন ভাহা নহে, তিনি ফ্রাসীদিগের বন্দী হইয়া প্রথমে উত্তমাশা অন্তরীপে প্রেরিড হন, তথা হইতে আবার ওলন্দান্দিগের হত্তে करत्रकलन मनत्रक्तम् নিকিপ্ত इन । মহাত্মার ও কতিপয় মহাসূত্রা মহিলার মৃক্তিগা ভপুৰ্বক তিনি অনু গ্ৰহে কলিকাতায় উপস্থিত হইতে সক্ষ হন। ক্লিকাতা হইতে তিনি বোছে গমন করিয়া সীয় হতাশ আশ্লীয়-স্ঞ্লী ও वक्वाकरिमात्र व्यानम वर्षन कारतन । बीकी छारे भूनकात हीनामत्मत महिल

বাণিজ্যে প্রবৃত্ত হন, এবং ১৮০৭ অবে বোছে নগরে বাসস্থান নির্মাণ করেন। কার্য্যকুশলতা ও কর্ত্তব্যনিষ্ঠা গুণে তিনি সর্বত্রই উচ্চাসন প্রাপ্ত হইক্সছিলেন। टिंगन, शांत्रजी ७ मूजनगान সহযোগী লইয়া তিনি পৃথিবীর প্রায় দেশে বাণিজ্যব্যাপার চালাইতে থাকেন। তিনি প্রত্যেক কার্য্য স্বয়ং পর্য্যালোচনা করিতেন এবং প্রত্যেক কার্য্যেই তাঁহার হক্ষদর্শিতা ও ভায়নিষ্ঠার পরিচয় পাওয়া ে যাইত। পরিচিত লোকমাত্রেই তাঁহাকে অন্তরের সহিত বিশ্বাস করিত। তিনি আশার উচ্চ সীমায় উপনীত হইতে সক্ষম হইয়াছিলেন। ১৮২২ অকের মধ্যেই তিনি ন্যুনাধিক ২ কোটা টাকা সংগ্ৰহ করিতে সক্ষম হন এবং পূর্কাঞ্চলের সর্বা-প্রধান বণিক বলিয়া সর্বাত থ্যাতি লাভ করেন। বাণিজ্যস্ত্তে পৃথিবীর অধিকাংশ জাতির সহিত তাঁহার কার্য্যকলাপ চলিত বটে, কিন্তু আশ্চর্য্যের বিষয় তিনি কথনও নিজ স্বার্থসিদ্ধির জন্ম কোনও বিচারালয়ের সাহায্য গ্রহণ করেন নাই। অধিকল্প অত্মীয় বন্ধবান্ধব অথবা প্রতিবাদীদিগের মধ্যে কোনও বিবাদ উপস্থিত হইলে বিবাদকারীরা উভয়েই তাঁহাকে মধ্যস্থ স্থির করিত। তিনি স্থাধবিচারে তাহা-দিগের বিবাদ ভঞ্জন করিয়া দিতেন।

খৃষীয় ১৮২২ অন্দ হইতেই সাধারণে তাঁহার দানশীলতার ্ব পরিচয় পাইতে ক। কিন্তু অতি বাল্যকাল হইতেই তিনি দানশীল ছিলেন। প্রতিদিন দরিদ্র-

গণকে পন্নসা বিতরণ করা **ওাঁহার প্রাতঃ**-ক্বত্য ছিল।

উত্তমর্ণের ঋণদায়ে কারাক্তন ব্যক্তি-দিগকে উদার করা তাঁহার দানশীলতার প্রথম নিদর্শন। এই কার্য্যে তাঁহাকে ৩,০০০ টাকা ব্যয় করিতে হয়। ১৮২৪ অব্দে স্থরাটনগরবাদী পারসিকদিগের ধর্ম-मिनत अधिनाट ध्वःम इटेटन जिनि ১৫,০০০ টাকা ব্যয় করিয়া উহা পুন-করিয়া দেন। নিৰ্মাণ ১৮৩৩ অব্দে षान्भनिन्यां श्री अधिनादः স্থ্রাটনগরের ২০,০০০ গৃহ একেবারে ভশ্মদাৎ হইয়া যায়। মহাত্মা জেমদেটজী এই সংবাদ পাইবামাত্রই নিরাশ্রয় নগরবাসীদিগের সাহায্যার্থ যথেষ্ট চাউল এবং ৩৫,০০০ হাজার টাকা প্রেরণ করেন।

পুনা সহরে জলের কল সংস্থাপন করা মহাত্মা জেম্সেট্জার মহৎ কার্যা। ইহাতে তাঁহার ১,৭০,৭০০ টাকা ব্যয় হয়।

বোষে ও সিলসিতি, এই ছাপছয় এক অপ্রশস্ত প্রণালী দারা বিভক্ত। এই প্রণালী দিয়া গমনাগমন করা বড়ই ভয়াবহ ব্যাপার ছিল। গবর্ণমেন্ট বছদিন হইতে এই প্রণালীর উপর একটা সেতৃ নির্মাণের করনা করিয়া আসিতেছিলেন, কিন্তু থথেই অর্থের অভাবে এতদিন তাহা কার্য্যে পরিণত করিতে পারেন নাই। মহায়া জেম্সেটজীর সাংলী সহধর্মিণী নিজ অলম্বার বিক্রেম করিয়া ১,৮০,০০০ টাকা দিয়া এই সেতৃ নির্মাণের যাবতীয় বায় নির্ম্বাহ করেন।

महासा व्याप्तिको चलाजीवनिरात कन्न । ৪৫০০০ টাকা ব্যয় করিয়া পুনাসহরে এক উপাসনা-মন্দির স্থাপন করেন। তিনি ৮०,००० টাকা ব্যয় করিয়া বোমে সহরে এক ধর্মশালা নির্মাণ করেন। উহার বায়নিকাঁচার্থ তিনি স্বয়ং ৫০ হাজার টাকা এবং ওঁহোর মহাসুভবা সদয়হৃদয়া সহধর্মিণী ২০হাজার টাকা 'বেনাভোলেণ্ট সোদাইটা' নামক ভাণ্ডারে জমা রাথিয়া-চেন। ধানদোলা এবং নাউমারী নামক স্থানৰয়ে তিনি আরও হুইটা ধর্মশালা সংস্থাপন করেন। ১৮৪৩ অব্দে বোম্বে-সহরে মহাঝা জেম্সেটজীর সংস্থাপিত চিকিৎসালয়ের প্রথম নির্মাণ আরম্ভ হয়। ইহাতে হুঁই লক্ষ টাকা ব্যয় হইয়াছে।

১৮৪২ অন্দে ইনি সর্বপ্রথম 'নাইট' উপাধি প্রাপ্ত হন। তদানীস্তন বোদে গবর্ণর সার জর্জ এনডারসন উপাধি প্রদানকালে বলিয়াছিলেন,—''ইউরোপীয়-দিগের নিকট 'নাইট' উপাধি বডই সন্মানজনক। অসাধারণ সাহসিকতার ষারাই হউক, অথবা অসামান্ত বদ্ধিশক্তির পরিচালনা বারাই হউক মনীধী মহাতারণ **এই উপা**ধি পাইবার জন্য সর্বনাই সচেষ্ট হন। আপনার জনহিতকর কার্যা, মনুষ্য-জাতির কই দুর করিবার জন্য আপনার অবারি হ वनामाञा আপনাকে এই উপাধিতে উন্নীত করিল। আপনি প্রসিদ্ধ-নামাদিগের মধ্যে অন্যতম হইলেন।"

মহায়া জেম্সেটজীর করেকজন বন্ধু ভাঁহার উপাধিতে প্রম আফ্লাদিত হইরা

এক প্রশংসাপত্র সহ 'সার কেম্নেটবী बीबी ভाই ট্রানরেসন কও! এই নামে ১৫০০ টাকা প্রেরণ করেন। তাঁহা-দিগের ইচ্ছা, এই ভাণ্ডার হইতে আবশ্রক-মত পুস্তক সর্কল গুজরাটা ভাষার অতুবাদিত হট্যা স্বজাতীয়দিগের মধ্যে প্রচারিত হইবে। মহাত্মা জেন্সেটজী তহ্তবে निविग्राहित्नन,—'व्यापनात्रा त्य উत्माना অর্থ সংগ্রহ করিয়া পাঠাইয়াছেন, তাহা ভিন্ন অন্য কিছুতেই আমাকে এত সম্ভই করিতে পারে নাই। আমাদিগের জাতির মধ্যে জ্ঞানবিস্তারের জন্য যে সকল উলাম হইয়াছে,তাহার প্রত্যেকটাতেই যেন আমার নাম সংমিলিত থাকে। ইহার পর লিখিয়াছিলেন, আমি -ইহাতে তিন লক্ষ টাকা প্রদান করিব।'

নিরাশ্রয় দরিজ পারসীণিগের সাহায্যার্থ

এবং তাহাদিগের সস্তান সস্ততির শিক্ষার

জন্য তিনি 'বেনাভোলেণ্ট সোসাইটী'

নামক একটা বৃত্তিভাগুার স্থাপন করেন।

এই সমিতির অন্তর্গত ইংরাজীক্ষ্ণ বোক্ষে
প্রেণিডেলির মধ্যে স্ক্রিশ্রেষ্ঠ।

তিনি স্তাণোকদিগের শিক্ষার্থে তিন্টা বিদ্যালয় সংস্থাপন করেন। স্ত্রীশিক্ষা-বিস্তা-রের জন্ম তিনি নেরূপ উদ্যোগী ছিলেন, এরূপ অতি অর লোকই দৃষ্টিগোচর হয়। স্কলাতায়দিগের প্রতি অনুরাগ সবেও তিনি নিজ ত্হিতার শিক্ষার জন্ম একজন ইংরাজ-মহিলা শিক্ষার্ত্রা নিবৃক্ত করেন। এক লক্ষ টাকা ব্যয় করিয়া তিনি একটা শিল্প ও বিজ্ঞান-বিভালয় স্থাপন করিয়া যান। দহাত্মা জেম্দেটজা জীবনের শেষ
দিনেও দানকার্য্যে বিরত হন নাই। তিনি
জীবনে অন্যন ২৫ লক টাকা কেবল
দানকার্য্যে ব্যয় করিয়াছেন। ইহা ভনিলে
মুগপৎ বিশ্বিত ও আনন্দিত ইইয়া তাঁহাকে
অন্তরের ভক্তি প্রজা দানে মন স্বতঃই
ধাবমান হয়।

১৮৫৬ অবেদ বোমে টাউনহলে তাঁহার মার্কেলপ্রস্তরনির্দিত একটা প্রতিমৃত্তি স্থাপন করিবার জন্ম এক সভা হয়, ১৮৫৮ আব্দে মহাত্মা জেম্দেটজী জীজীভাই 'ব্যারনেট' উপাধিতে উন্নীত হন। তিনি
মহারাণীর নিকট হইতে একটী স্বর্ণপদক
প্রাপ্ত হইরাছিলেন। ইহার হীরকধচিত পূর্চে মহারাণীর প্রতিস্তি পোদিত
ছিল এবং অপর পূর্চে লিখিত ছিল,—
'ব্যারনেট'-উপাধিধারী মহাত্মা জেম্নেটজী
জীজী ভাইকে তাঁহার বদান্যতার এবং
স্বদেশহিতৈধিতার জন্য ব্রিটিষ গ্রন্থমেন্ট
কর্ত্ক প্রদন্ত।'' পর বৎসর ৭৬ বৎসর
বয়নে তিনি ইহলোক পরিত্যাগ করেন।

শ্রী ম:।

নীতিশিক্ষার প্রকৃষ্ট উপায়।

(৩৬৮ সংখ্যা ১৪৭ পৃষ্ঠার পর)

(8)

পুত্র কন্তাকে নীতিসম্পন্ন করিতে হইলে
পিতামাতার আর একটি কর্ত্তব্য আছে।
নিব্দের পুত্রকন্তাকে সকলেই ভালবাসে,
কিন্তু সুধু ভালবাসা যথেষ্ট নয়। তুমি যে
তাহাদিগকে ভালবাস, ইহা যেন তাহারা
জানিতে পারে। এরপ না হইলে তাহাদের মনের উপর কথনও তুমি ক্ষমতা
বিস্তার করিতে পারিবে না, ও তাহারাও
ভোমাকে অন্তরের সহিত ভালবাসিতে
ও ভক্তি এবং বিশাস করিতে শিধিবে
না। "মা ও বাবা এইরপ করেন, অতব্যু আমাদেরও এইরণ করেন অতব্যু আমাদেরও এইরণ করিতে হইলে
ক্রাহার সহিত মাভাপিতার মিধা ক্রকার,

প্রতি সহাত্তভূতি তাহার প্রকাশ করা আবশ্যক। শিশু হয়ত গোলমাল করিতেছে, দৌড়াদৌড়ি করিতেছে, থেশা করিতেছে। এরপ সে করিবেই এবং তার করা দরকার। হঠাৎ পিতা ঘরে আসিলেন; শিশুট জড়সড় হইল, গোল-মাল ও খেলা ভুলিয়া গেল, যেন মুসড়াইয়া রহিল। আমার গৃহের অবস্থা যদি এমন হয়, তাহা হইলে আমার ছেলে মেয়ের মনের উপর, তাহাদের চরিত্র গঠনের উপর আমার বেশী ক্ষমতা থাকিবেক না। কিন্তু যদি আমি আমার ছেলেদের প্রতি সহামু-ভৃতি প্রকাশ করি, তাহাদের কুদ্র হ:থে इ: बी ও क्क खरब खबी हहे, जाहासित र्थनाव উৎসাহ मि, ও স্থবিধা পাইলে

বোগ দি, তাহা হইলে অলক্ষিত ভাবে তাহাদের মনের উপর আমার অসীম ক্ষমতা স্থাপিত হইবেক, আমার বাক্য তাহাদের বেদ-বাক্য জ্ঞান হইবেক, এবং আমাকে সম্ভষ্ট করাই তাহাদের সকল কাল্সের উদ্দেশ্য হইবেক। আমরা ত্রীপ্রেরে যদি চরিত্রবতী ও চরিত্রবান্ হই, এবং আমাদের পুত্র কল্পার প্রতি যদি উপরি-উক্ত রূপ ব্যবহার করি, তাহা হইলে আমার এক প্রধান সহায় হইব। এ সম্বন্ধে আর বেশী কথা বলা আবশ্যক বোধ করিনা।

(¢)

এक्टि कथा वित्रा खवरसत्र छेश-সংহার করিব। অবস্থা যতই ভাল হউক না কেন, পিতামাতার উচিত পুত্র কল্পাকে আত্মনিভর ও সেই সঙ্গে আত্ম-শাসন শিক্ষা দেওয়া। অনেক বাটাতে দেখিয়াছি ছোট ছোট ছেলেরা চাকর দাসীকে তাজিলা করে, তাদের দলে "অরে, হাঁরে" বলিয়া কথা কয় ও অনেক সময় তাহাদের প্রতি নিষ্ঠর ব্যবহার করে। এরপ ব্যব-হার শিক্ষা করা যে কতদর অমুচিত তাহা বলিতে পারি না। যাহারা আমাদের মুখাপেক্ষী, তাহাদের প্রতি কৰ্কশ ব্যবহার করা কেবল আপনাদিগকে নীচ ও হের করিতে অভ্যাস করা মাত্র। মান্তবের প্রতি মামুবের ভার ব্যবহার করিতে শিক্ষা কেবল আন্ধ-সন্মান অভ্যাস করা বই আর কিছুই নর। বাহারা আমার

ক্ষক, নিষ্ঠুর বা অসং ব্যবহারের প্রভিশোধ
লইতে পারে না, তাহাদের প্রভি ঐ
প্রকার ব্যবহার করা নীচতার পরাকারা।
অনেক পিতামাতা নিজেদের ছোট ছোট
ছেলে মেরেকে চাকর দাসীর প্রভি ক্ষক
ব্যবহার করিতে উৎসাহ নাই দিন, ঐক্সপ
করিতে নিবারণ করেন না। ইহাতে
সম্ভানের বে কি ভদ্মানক অপকার করা
হয়, তাহা বৃদ্ধিমান্ লোকে অনারাসেই
বৃদ্ধিতে পারেন। শচাকে ধরিয়া আানার
পর ঐপর্যা-মদে মন্ত ঐক্রিলা যথন তাঁহার
প্রতি নানাপ্রকার অবজ্ঞাস্চক বাক্যপ্রয়োগ করেন, তখন তাঁর প্র হইয়াও
ক্রম্পীড় বলিয়া উঠিলেন—

"দাসী হইতে আসিয়াছে

হইবে সে দাসী,

মহৰ হারাও কেন লঘুৰ

প্রকাশি।"

আত্ম-নির্ভর বাল্যকাল হইতে শিক্ষা করা দরকার। অনেক বাটার ছেলেরা একটু জল পর্যান্ত লইরা থাইতে পারেন না। প্রাট বিদ্যালরে বাইবেন, জ্তা যোড়াট পাড়া নাই; থাবার পাড়িরা না দিলে পাড়া হইল না। কন্তাটি কাপড় ছাড়িবেন, ঝী উহা যোগাইলত ভালই, নতুবা তিনি দাঁড়াইরা আছেন ও তাহাকে গালি পাড়িতেছেন। অবহা পরিবর্ত্তন-শীল, অতএব যতদুর সাধা নিজের কাজ্ম নিজে করিতে শিক্ষা করা উচিত। এই শিক্ষাটী সকলের পক্ষে আবশ্যক। শৈক্ষ-কাল হইতে ছেলে মেরেকে বাবু হইতে

দেওয়া কেবল আলস্য ও স্বার্থপরতার প্রশ্রের দেওয়া মাত্র। "আমি কি ঠুঁটা বে জুতাযোড়াটি পাড়িয়া লইতে কিমা কাপড়বানি আলনা হইতে লইতে পারি না' এই ভাবটি বাল্যকাল হৈইতে ছেলেদের মনে গ্রথিত করিবার চেপ্তা করা উচিত। আআনির্ভারতার সহিত্ব যে শ্রমন্দীলতার ও স্বাধীনচিত্ততার সম্বন্ধ অতি নিকট, তাহা বুঝাইবার বোধ হয় কোন আবশ্যকতা নাই।

* বালকবালিকাকে শ্রমশীল হইতে
হইবে বলিয়া আমি এরপ বলিতেছি না
যে, ভদ্র ঘরের সন্তান ও শ্রমজীবা ঘরের
সন্তানের মধ্যে কায়িক পরিশ্রম সম্বন্ধে
কোন তফাৎ থাকিবে না। অবস্থাভেদে
পরিশ্রমের তারতম্য অবশ্যস্তাবী। যে
বালককে পরে মানসিক পরিশ্রম করিয়া
সংসার-যাত্রা নির্ব্বাহ করিতে হইবেক,
তাহার অবশ্য একজন চাষার ছেলের
যেরপ ভাবে কায়িক পরিশ্রম অভ্যাস করা
দরকার, তাহা করিতে হইবেক না। যে
বালিকাকে শিক্ষিত ভদ্র ঘরের বধ্ ও পরে
গৃহিণী হইতে হইবেক, তাহার প্রধান কাজ
হইবে গৃহের পারিপাট্যের প্রতি দৃষ্টি রাথা,
সংসারে অপুঞ্লা স্থাপন করা, পরিজন-

বর্ণের স্থাব সচ্চন্দের প্রতি লক্ষ্য রাখা ও ছেলেপিলের পালন করা ও শিক্ষা দেওরা। তাহাকে চলিত ভাষায় যাহাকে "দেসো পাট" বলে তাহা অভ্যাস করিতে হইবে এরূপ কথা বলা আমার উদ্দেশ্য নয়। অবস্থাভেদে কায়িক পরিশ্রমের তারতম্য স্থাব্ অবশুন্তাবী নয়, উচিত ও আবশুক। বালকবালিকাকে শ্রমশীলতা ও আয়্মনির্ভরতা শিক্ষা দেওয়া উচিত, এ কথা বলিবার আমার অর্থ এই যে, অবস্থা যেরূপই হউক না কেন, কায়িক পরিশ্রম যে কেবল পেটের দায়ের জন্তা নয়, আয়্মনির্ভরতা ও পরিশ্রম যে আমাদের একটি বিশেষ কর্ত্ব্য, ছেলে মেয়েকে এ শিক্ষা দিতে কেহ যেন না ভ্লেন। .

(৬)

নীতিশিক্ষা সম্বন্ধে আরও অনেক কথা আছে, কিন্তু বামাবোধিনীর পাঠক ও পাঠিকারা সকলেই শিক্ষিত ও শিক্ষিতা, তাঁহাদিগকে বেশী কথা বলা অনাবশুক; বিশেষতঃ তাঁহাদের সময় অল্ল ও কাজ অনেক। আমার তাঁহাদের বহুমূল্য সময় ও অত্যাবশুক কাজের উপর অধিক হস্তক্ষেপ করা উচিত নছে।

ব ৷

(मृद्ध या'।

प्तरथ यां' किंदत हां' शथ (य शिल्टा ;

পড়িবি, হাসাৰি, সে কি ভাল বল ? ১ ভূগিবি, ভোগাবি,
অসহ বেদনা,
পূড়িবি, পোড়াবি,
মারের বাতনা! ২
দেখিতে, জগতে,
অনেকে তো আছে;
ভূগিতে, মুছিতে,
কে আসেরে কাছে ? ৩
কাস্ত যে, মারেরে,
নারিবি রাখিতে;

পোড়া ছা, বলি তা,
শিধরে চলিতে। ৪
চলিতে, শিথিতে,
দেরী কেন বল!
কাদ্রিলে, দেখিলে,
নাহি কোন ফল। ৫
নহিলে, গোড়াতে,
জনম কাটিবে;
মান্নের সতত

कृषिविषय़क नाना कथा।

धांगा।

আমরা বামাবোধিনীর পূর্ব্ব পূর্ব্ব সংখ্যায় ধাত্তসম্বন্ধীয় অনেক কথা প্রকাশ করিয়াছি। একণে উহার চাষ, আবাদ, সার, পাইট ইত্যাদি কতিপয় বিষয় বর্ণনপূর্ব্বক ঐ প্রবন্ধের উপসংহার করিবার চেটা করিব।

চাষ—লাঙ্গল, দেঁড়ে বা কুদাস দারা
ভূমি খনন, মদিকাদি দারা মৃত্তিকা
চূর্ণীকরণ ও ক্ষেত্রকে সমভূমিকরণ
ইত্যাদি প্রক্রিয়া সচরাচর চাষ শদে
কণিত হইয়া থাকে। এই প্রনন্ধের যে
যে স্থলে চাম শন্দ ব্যবহৃত হইবে। যে
ক্ষেত্রে আন্ত ধান্ত বপন করিতে হইবে,
কার্ত্তিক মাস হইতে ভাহাতে চাম আরম্ভ
করিতে হয়। পুনঃ পুনঃ চাম দারা

মাটীকে ধূলিবৎ করিতে হয়। গুদ্ধ আগু धारा विश्वा नष्ट, य कान धारात्र जनारे **(र्मा कुमिकर्वगरे अनछ। (र्मे छ क्वित्र** প্রাক্তিক অবস্থার উৎক্রপ্ত কাল। গতিকে জৈচি মাদেও বুনানি হইতে পারে। আঞ্চ ধান্যের বীঞ্চ বিঘা প্রতি । ত সের হিসাবে লাগিয়া থাকে। বীব বপনের পর একবার আল্গামুঠি লাক্ল দিতে হয়। কারণ এই সময়ের লাকলে অধিক মাটি ধরিলে চারা বাহির হওয়ার ব্যাঘাত ঘটে। আশুধান্যের প্রণালী দিবিধ--"দোবুনানি"ও "কাঁকড়ি"। হ্ইবার পূর্বে পরিস্কুক ক্ষেত্রে छ म নাম "কাক্ডি"। পরাশবে বপনের विवदम এইক্স कांक्षि ज्ञानकर्मण ব্যবস্থা আছে বে,---

"হৈমন্তে কুষ্তে হেম বসতে তামরোপ্যকং।
ধান্তং নিদাথকালেতু দারিদ্রান্ত ঘনাগমে।"
এই বচন দ্বারা হেমন্তকালই কর্মণের
উৎকুপ্ততম সময় ৰলিয়া নির্দিপ্ত হইয়াছে।
আবাদ—বপনাদির হাধারণ নাম
আবাদ। বৈশাধ মাসই আশুধান্য বুনানির
কাল। ক্ষেত্রে বুনানি চাধের পর মই দিতে
হয় নাও জল হওয়ার পূর্কে আর কোন
চাষ্ড চলে না।

মুত্তিকার मकल প্রকার ক্ষেত্রে কাঁকড়ি করার বিধি থাকিলেও আটাল ক্ষেত্র ভিন্ন অন্যত্র কাঁকড়ি করা উচিত কারণ অন্যবিধ ক্ষেত্রে কাঁকৃড়ি ক্রিলে তাহাতে উহার তলভাগ সরস থাকা প্রযুক্ত উই, কড়াপোকা প্রভৃতি কীটের উৎপাতে ধান্য ভাল হয় না। আটাল ক্ষেত্রে ঐ উৎপাত ঘটে না। বিশেষতঃ যে ক্ষেত্রে কাশ, কুশ, মুস্তা প্রভৃতির মূল থাকে, তাহাতে কাঁকড়ি করা সম্পূর্ণ নিষিদ্ধ; কারণ কাঁকড়ি कत्रात পत जल इहेट विलय इहेट ধানোর চারা বাহির হয় না; কিন্ত বিনা ৰলে ঐ সকল তৃণ জনিয়া ধান্যের ভাবী আশা এককালে ধ্বংস করিয়া ফেলে। কাঁক্ড়ি করা কেত্র জলসিক্ত হইলেই উপযুক্তরূপ চাষ দিতে হয়। ঐ চাব এবং দোবুনানির চাব ঠিক একরপ। আত্থার্ড অক্টান্ত স্ক্প্রকার ধারের অস অপকৃষ্ট হইলেও উহার মহৎ গুণ এই বে, উহা শীঘ দলে। তজ্ঞ ক্লযক-

গণ বিস্তর পরিশ্রম করিয়া উহার চাষ্
আবাদ করিয়া থাকে। আশু ধাল্পের
চাষ আবাদ এত বছল ও জটিল যে, আমরা
পাঠক পাঠিকার বিরক্তি-শঙ্কার উহার
বাছলাবর্ণনে ক্ষাস্ত হইলাম। যদি
কাহারও উহা শুনিতে কৌতুহল হয়,
তাঁহাকে আমরা হারাধন বাবুর ক্ষ্যিতত্ব
পাঠ করিতে অমুরোধ করি।

বপন সম্বন্ধে পরাশর যে স্থল ব্যবস্থা দিয়াছেন, তদ্বারা বপনকালের উৎকর্ষা-পকর্য জানা যায়, যথা,——

বৈশাপে বপনং শ্রেষ্ঠং জ্যৈটে তু মধ্যমং শ্বৃতং।
অধানতে চাধমং প্রাতঃ প্রাবণে চাধমাধমং ॥

আমন ধানের মধ্যে যে গুলি বপন দারা প্রস্তুত হয়, তাহাদের চাষ আবাদ ঠিক আশুধান্তের ভায়। বীজ বিঘা প্রতি ।২ বার সের। কেবল ঐ ক্ষেত্রে অধিক বিদা দিবার প্রয়োজন হয় না এবং আশু-मःथााग्र विमा ক্ষেত্রের অধিক ন্যায় টানিবার স্থযোগও আমন-ক্ষেত্রে হয় নাঃ তজ্জ্য "বাওড়া" আমনের কোন হানি হয় না। বৈশাথের মধ্যে বাওড়া-ক্ষেত্রে "উপর সার" দিতে পারিলে বড় ভাল হয়: অনেক স্থানের ক্লয়কেরা তাহা দিয়া थारकन । विना छाना त्यव इटेरन थारनव প্রতা এবং সারের প্রতা ক্ষেত্রের উপর ছড়াইয়া দিলে ধান্তের বিশেষ উপকার হয়। ইহাকে "উপর সার" কহে। তবে যে সকল সতেজ ক্ষেত্রের ধান হড়িয়া যাওয়া সম্ভব, তাহাতে "উপর সার" অনা-বস্তক। কোন কোন ক্ষেত্রের ধারুগাছ

খুব তেজাল হয়, ফল হয় না বা খুব অয়। হয়, তাহাকে ছড়িয়া যাওয়া কহে।

বে সকল আমনের আবাদ রোপণ-व्यनानीए इरेबा थात्क, देवनाथ ७ देवार्ड মাদের মধ্যে তাহাদের ক্ষেত্রে দোয়ার চাষ দিয়া রাখিতে হয়। পরে সেই ক্ষেত্রে कन वाधितन भूनतात्र मात्रात्र ठाव ও इहे भाना महे **मिटन मुखिका मिर्दि** इहेग्रा যার। প্রারই আঘাড় প্রাবণ মাদে ভূমির এই অবস্থা হয়। তথন তাহাতে ধানের চারা রোপণ করিতে হয়। ঐ ছই মাসের মধ্যে যে সকল কেত্রের রোপণ শেষ হয়. তাহাতেই উত্তম ধান্ত হয়। নচেৎ ভাজ ও আর্থিনে রোপণ রুপা। রোপণের পর দিনই এক্বার রোপিত ক্ষেত্র উত্তমরূপে পর্যাবেক্ষণ করিতে হয়, কেননা জলের व्यात्मानात माथा माथा होतात श्रीह উপড়াইয়। याয় । ঐ চারাগুলি পুনরায় বসাইয়া দিতে হয়। দশ বার দিন পরে मांजी दाँ कि वार्ष कुन, घानानि পরিষার করিয়া দিতে হয়। ইহারপর রোরার ক্ষেত্রে আর বড় চাষ আবাদ করিতে হয় না।

বীক্ষপাত—আমন ধান্যের যে সকল চারা রোপণ করা যায়, তাহা দ্বিবিধ প্রণালীতে প্রস্তুত হইরা থাকে; — বুনানীপাত ও নেওচ করা। ইহা ব্যতীত আরও

এক প্রকারে আমনের বীজ সংগৃহীত হইরা
থাকে। বাওড়া-কেত্রে বাওয়ানি বা
জাওলা অধিকু ঘন হইলে কাড়ান চাবের
অর্থাৎ বিদা দেওয়ার পূর্বের সেই কেত্রের
অনাবশ্রক চারা সকল তুলিয়া লইয়া
রোপণ করা যাইতে পারে।

যে সকল ভেজাল ক্ষেত্রে সচরাচর আর্ হস্ত পরিমাণে জল বাধে, তাহাতে বীজ-পাতের বীজ Is দের হইতে **দ**ং **শেব্র** পর্যান্ত বপন করা ঘাইতে পারে। বীজের জমিতে বুনানির পর আর লাক্ল দিতে हय ना, टकरन इहे भाना महे मिटा हम, এবং বুনানির পুর্ব্বে ও চারা বাহির হইবার পরে ঐ ক্ষেত্রে কিছু কিছু সার দেওয়া নিতান্ত আবশ্রক। বী**জপাত তেজাল** হইলে /২ পের পরিমিত ধান্তের বীজ-পাতে এক বিঘা ক্ষেত্রের রোপণকার্য্য সম্পন্ন হইতে পারে। নচেৎ 🖊 । সের পরিমাণের সের বিশেষতঃ বীন্দপাত তেল্বী ना इट्रेंटन फप्रन डिव्स इब्र ना। अहे প্রণালীকে বুনানিপাত কহে।

(ক্রম শঃ)

মেয়ের আদর।

গুনিতে পাই, স্থসত্য ইংরাজ জাতির জানে না, মেরে কি বস্তু তাহা বুঝে না । সংস্কার আছে, হিন্দুরা মেরের আদর অস্মদেশীর কোন কোন বহুদর্শী চিত্তাশীল

মুপপ্তিত ব্যক্তি ইংরাজ জাতির ঐ সংস্থার নিতান্ত ভ্রম্পক বলিয়া প্রতিপন্ন করি-বার চেষ্টা করিয়াছেন। আমরা বলি. পৃথিবীর মধ্যে যদি কোন জাতি মেয়ের কদর বৃঝিয়া থাকে, মেয়ের সাদর করিতে পারিয়া থাকে. রমণীর সন্মান কিরূপে করিতে হয়, তাহা দেখাইতে পারিয়া থাকে, দে আর্য্য হিন্দুজাতি। কিন্তু ইংরাজজাতির ঐ সংস্কারও এককালে অমূলক নহে। এক্ষণে আমরা এই কুদ্র धावत्क मः क्लाप्त के इरेंगे विषय प्रभारे-বার চেষ্টা করিব। প্রথমতঃ রমণী কি বস্তু হিন্দুজাতি তাহা বুঝেন এবং রমণীর যথা-যোগ্য সন্মান করিয়া থাকেন। দ্বিতীয়তঃ ইংরাজজাতির প্রাপ্তক্ত সংস্কারও অকারণ-সম্ভূত নহে।

যে সকল বিষয়ে জাতীয় হৃদয় পরিকটে হয়, তজ্জাতীয় দেবচরিত গঠন তাহার অগ্রতম। হিন্দুজাতির আদিদেব মহা-দেব দক্ষযক্ত বিনাশ উপলক্ষে মহাপ্রলয় উপস্থিত করিয়াছিলেন, প্রাণপ্রিয়া সতীর দেহত্যাগ তাহার কারণ। সেই সতীর শব-**দেহ মন্তকে লইয়া উন্মত্তের ভাগ্ন** পৃথিবী পর্য্যটন করিয়াছিলেন। সেই শবের অঙ্গ প্রত্যঙ্গ দ্বিপঞ্চাশৎ স্থানে (৫২ পীঠ) পতিত হইয়া অদ্যাপি হিন্দুজাতি কর্ত্তক **পৃথক্ পৃথক্ দেবী**রূপে পুদ্ধিতা হইতেছেন। कथन (मथू। याम, (महे मजी अमिरता, মুম্ওমালিনী, রণোমাছিনী মহাকালীর न महारमरवन वरक नृजा कतिरज्ञाहन। বাশ্বীকি-বিরচিত সপ্তকাও

রামায়ণের অর্দ্ধাংশ রামরমণী সীতাহরণের প্রতিশোধমূলক। অপ্তাদশপর্ক মহাভারতের হই পৃতীয়াংশ কৌরব সভায় পাঞ্চালীর অপমান-প্রতিশোধমূলক। আবার সেই পাঞ্চালীর বেণী-সংহারে, কৌরবপতির কনিষ্ঠ মহাবীর ছঃশাসনের বক্ষঃশোণিত প্রযুক্ত হইয়াছিল! অতিথিসেবায় অসমর্থা. নিৰ্বাসিতা. কাম্যবনবাসিনী, নন্দিনীর আহ্বানে বহুদূরবর্ত্তী দারকা-পতি মুখের আন পরিত্যাগ করিয়া মধ্যাক্ত-কালে তাঁহার মান রক্ষা করিতে আসিয়া-রমণীসন্মানের এতাদশ শত সহস্র ঘটনা হিন্দু পুরাণে দৃষ্ট হইরা থাকে। অধিক বর্ণন অনাবশাক, দিনদর্শন জন্ম হই একটা ঘটনা সংকলিত হইল। স্থিদুশাস্ত্রে নারী বিদ্যার অধিষ্ঠাত্রী সরস্বতী, ঐশর্য্যের অধিষ্ঠাত্রী লক্ষ্মী। শেষোক্ত শান্ত্রীয় ভাব, अमाि अवामकाल हिम् त शृंदर शृंदर বিরাজ করিতেছে, যথা—

"গ্রীভাগ্যে ধন, স্বামিভাগ্যে পুত্র।"

একমাত্র স্ত্রী লইয়াই হিন্দুর গার্হস্তা।
অন্ত লোকে যাহাকে গৃহ দ্বার বলেন না;
তিনি গৃহিণীকেই গৃহ বলিয়া থাকেন।

"ন গৃহং গৃহদিত্যাহপূ হিণী গৃহমূচ্যতে।"
এই জন্ম কাহার জীবিরোগ ঘটিলে
তাঁহাকে গৃহশৃত্য বলা হয়। রাবণকর্তৃক দীতা অপহৃতা হইলে, রাম যে সকল উক্তি ঘারা বিলাপ করিয়াছিলেন, ভদ্ধারা রমণী সম্বন্ধে আর্যা হিন্দুর হৃদয় ও দৃষ্টির পরিচয় পাওয়া যায়। তিনি দীতাকে গৃহের

मन्ती. नर्ष्य मधी, कार्या मन्ती, त्वरह माठा, নয়নের রসাঞ্জন ইত্যাদি রূপে বর্ণন করিয়া-ছেন। औমদভগবদগীতার বিভৃতিযোগ-নামক অধ্যায়ে ভগবান শ্রীক্কঞ জগতের যাবতীর পদার্থের মধ্যস্থ উৎক্রইতম অংশ সকলকে ভগবদ্-বিভৃতিরূপে উল্লেখ করিয়া-ছেন এবং ইন্সিয়পথ দারা বহির্জগতে আগত জীবাত্মাকে সেই সকল বিভৃতির আশ্রয়ে ভগবছপাসনার উপদেশ দিয়াছেন। (महे ऋटन ८५था यांग्र, नांत्री-इनस्यंत्र व्यत्नक ু গুলি বস্তু ভগবদ্-বিভৃতিরূপে ধৃত হইয়াছে। নারী ভিন্ন অন্তত্ত একাধিক বস্তু উক্ত বিভৃতিক্রপে কথিত হয় নাই। প্রকারা-স্তবে নারীকে নরের উপাসা বস্ত বলা হইয়াছে 4 এই স্থলে বিভৃতিযোগের কিয়দংশ উদ্বত করিতে পারিলে ঐ সকল উক্তির সমর্থন হইত; কিন্তু ভাহাতে প্রবন্ধের কলেবর বর্দিত হইবার শঙ্কায় দে বিষয়ে ক্ষান্ত হওয়া গেল। কেবল নিতান্ত প্রয়োজনীয় স্থলটা উদ্ধৃত করিলাম; যথা— 'মৃত্যু: সর্বাহরক।হমুদ্ভবক ভবিবাতাং।

কীত্তিঃ একাৰ্চ নারীণাং শ্বতিমেধাধৃতিঃ ক্ষমা।।" সংহারকগণের মধ্যে আমি সর্বহের মৃত্যু, ভাষা কাশবন্তী প্রাণিগণের মধ্যে আমিই অভ্যাণয়কাল,এবং নারীগণের মধ্যে याभिरे कींछि, औ, वाका, चुछि, त्यथा, ধুতি ও ক্ষনা। এই স্থলে ব্যাথ্যাতৃগণ-भिरतामनि जीवत्रवामी निविद्याहन त्य,-"नाबीनाः यद्या मध सरका क्रमाः ब्रिप्साश्हः বাসামাভাসমাত্রবোগেন আপিনঃ সাব্যা ভবস্তীতি তাঃ কীৰ্জ্যাদাঃ বিবো স্বিভূতর: ।"

नात्रीभर्गात्व ये भय चाहि, उच्चता ন্ত্ৰীর একটা নাম যোষা। এই যোষা শব্দের कार्य भर्यारलाइन बाजा अ ब्याना यात्र रव, नात्रीशंग आर्या हिन्दुत्र निक्रे भूवनीया। "বুষ্" ধাতুর অর্থ পূজা করা, এই "বুষ্" ধাতুর উত্তর কর্মবাচ্যের প্রত্যন্ন করিয়া "ঘোষা" পদ নিপাদিত হইয়াছে; স্ত্রাং শব্দের প্রক্রতি-প্রত্যয়-গত অর্থ পুজনীয়া। মহ ধাতুর অর্থ পূজা, তাহা হইতে মহিলা শব্দও এইরূপে উৎপন্ন। অতঃপরও বদি ভনা যায় যে, হিন্দুজাতি রমণী-সন্মান জানেন না, তাহা হইলে বুঝিতে হইবে, এই অপকলফ হিন্দুর ললাট-লিপি। আরও হুইটা কথা আমরা যথাস্থানে উল্লেখ করিতে বিশ্বত হইয়াছি। ভার্য্যা-পর্য্যায়ে যত শব্দ আছে, তন্মধ্যে একটা সহধর্মিণী। যাঁহার সহিত একত ধর্মামু-ষ্ঠান করিতে হয়, তাঁহার নাম সহধর্মিণী। মমুবাজীবনের প্রধান লক্ষ্য ধর্মসাধন; হিন্দুর গৃহিণী দেই ধর্মাধনের অভিতীয় সহযোগিনী।

হিন্দু শাল্পে আভাস আছে এবং ব্যব-হারে প্রচলিত আছে যে, স্ত্রী স্বামীর পাপাচারজনিত ফলের অংশিনী হইবেন না, কিন্তু পুণ্য ফলের ভাগিনী হইবেন। আবার স্বামী স্ত্রীর পুণ্য ফলের ভাগ পাইবেন না ; কিন্তু তাঁহাকে পাপফলের অংশ লইতে হইবে। এত ক্ষিপ্ৰাপ্ত কি হিন্দুকে শুনিতে হইবে বে, তিনি বেরের আদর জানেন না ?

विकीयकः, हिन्दूत मत्या वाहाता जीत

অদ্ধান্ত, অৰ্দ্ধজীবন বলিয়া না বুঝেন, তাঁহারা সাংসারিক অ্ঞান্ত উপ-ভোগ্য বিষয়ের মধ্যে স্ত্রীকেও একটা সামান্ত উপভোগের সামগ্রী মনে করিয়া थात्कन। वमन, जूषण, यौन, वाहनामित ন্থার স্ত্রীও একটী স্থবলাল্যা চরিতার্থ করিবার উপাদান মাত্র। স্ত্রীর প্রতি বাঁহাদিগের এরূপ ভাব, তাঁহারা কথনই রমণীজাতির প্রতি যথাযোগ্য সম্মাননা করিতে সমর্থ হন না। যদি বিবাহিত। ধর্মপত্নী বন্ধ্যা হন, বা যথাকালে সস্তানবতী ना इन. टेक्सिय्र श्रायन नवक्षि शिनाहरान 'পুরাম' নরক ভীতির ভাণ করিয়া অনা-য়াসে পত্নীকে তরুণী সপত্নীর বিষদৃষ্টিতে নিক্ষেপ করেন। এইরূপ ব্যক্তিগণ তরুণী ভার্য্যার বশীভূত হইয়া প্রথমা পত্নীর কতই লাঞ্চনা করিয়া থাকেন। অনেক রুমণী প্রাণপ্রিয় স্বামীকর্ত্ব এইরূপ লাঞ্চনা সহ করিতে না পারিয়া উদ্ভৱনাদি দারা আত্মহত্যা করিয়া থাকেন। ধর্ম্মপত্রীর প্রতি বাঁহাদিগের ধর্মপুত দৃষ্টি নাই ইন্দ্রিয়-সেবাই থাহাদিগের দারপরিগ্রহের উদ্দেশ্র विश्रा थात्रना चारह, ज्वीननं जांशितनंत्र সম্বন্ধে বাঘিনী ও ডাকিনী স্বন্ধপা হইয়া

থাকেন, স্ত্রী হইতে ভাঁহাদিগের ইষ্টাপেক্ষা व्यनिष्टेरे व्यक्षिक रहेग्रा थाटक। এই मकन স্থলে স্ত্রীগণের দোষোদ্ঘোষণ করিরা শাস্ত্রকারেরা ও সাধুগণ ইন্দ্রিমপরায়ণ অনেক সহপদেশ ব্যক্তিদিগকে করিয়াছেন। পশ্চিমদেশীয় ভক্তাগ্রগণ্য তুলসী দাস বলিয়াছেন;—

> "দিনকা বাঘিনী রাতকা ডাকিনী পলক পলক লচ চোবে। ছনিয়া সবু বাউরা হোকে ঘর ঘর বাঘিনী পোবে।।"

যে কারণেই হউক, এ স্থলে স্ত্রীগণের নিন্দার চুড়ান্ত হইয়াছে। স্ত্রীগণের প্রতি এইরূপ উক্তি সকল দর্শনে এবং ইন্দ্রিয়-স্থথোন্মত নরপিশাচদিগের ক্রীর প্রতি হুর্ব্যবহার দর্শনে, ইংরাজ বা অন্ত কোন অবিশেষজ্ঞ বিদেশীয় জাতির এরূপ সংস্কার হওয়া অসম্ভব নহে যে, হিন্দুগণ রমণীতত্ত্ব वृत्यन ना এवः व्रमगी-मन्त्रान कारनन ना। এই জন্তই আমরা পুর্বের বলিয়াছি যে, ইংরাজদিগের ঐক্রপ সংস্কার অকারণ-সম্ভূত নহে। এ সম্বন্ধে আরও অনেক কথা ৰলিবার আছে, পশ্চাৎ আলোচনা করা যাইবে।

হিন্দু গৃহিণীর রাজনীতি।

(৩৬৮ সংখ্যা-->৫৬ প্রষ্ঠার পর)

তিন সপ্তাহ পরে এক দিন রন্ধনীতে

रिव्रणाम वावुब सन्ती य पिन चर्गकां प्र थिजियनी रुविषाम आपन भवनग्रह 📕 কিয়া গহনা গড়াঁইটেড দেন, তাহার 🖯 ভোজনে বসিয়াছেন, তাঁহার দ্বী পরিবেশন করিতেছেন। হঠাৎ গা**ত্র হইতে ভূষ**ণ

ব্দার শ্রুত, ইবল। হরিদাস চমকিত ইইরা
দৃষ্টি নিক্ষেপপূর্বক দেখিলেন, বাস্তবিক
তাহার স্ত্রীর পাত্রে কয় থানি আভরণ
রহিয়াছে। জিজ্ঞাসা করিলেন,—"এ কি ?
যা না ইইবার, আজ যে তাহাই
দেখিতেছি;—আমার স্ত্রীর গান্ধে গহনা?"
বধু কহিলেন,—"তুমি বাচিয়া থাক, দিন
দিন তোমার এইরপ স্থমতি হউক,
আরও কত গহনা পরিব।" হরিদাস
গহনার "গ"ও জানেন না, আরও বিমিত
হইলেন। স্ত্রীর কথা ছলনাপূর্ণ মনে
হওয়াতে মনে একটু মালিন্তও জ্মিল।
একটু বিরক্তভাবে কহিলেন,—"গহনা
কোবার পাইলে বল, নহিলে ভোজন
করিব না।".

হরিদাসকে রাগাধিত দেখিয়া বধু বড় ভীতা হইলেন এবং কহিলেন, "আমি স্ব বলিতেছি, তুমি আহার কর। আজ মধ্যাহ্নকালে প্রাণহরি দেকরা আমার নিকট আসিয়া এই পাঁচ ধানা গহনা আমার হাতে দিয়া কহিল, এই গহনা-গুলি আৰু পরিয়া দাদাঠাকুরকে পরি-বেশন করিও। আমি কহিলাম, এ গহন। কে দিয়াছে? সে কহিল, তোমাকে ष्यात्र तक शहना मिटव, य मिवात महे निशाह्य। आमि छाविनाम, करत्रक मान পূর্বে তোমার বন্ধ-মা আমার গায়ে গহনা না দেখিয়া তোমাকে তিরস্কার করিয়া-ছিলেন, তাহারই ফলে আমার এই গহনা হইরাছে। আপনার স্ত্রীকে আপনি গহনা দিরাছ, তাহা গোপন কেন ? তাহাতে

রাগই বা কেন ?" বন্ধু-মার তিরস্কার ও জাঁহাকে মাসে মাসে টাকা দিবার কথা মনে হওয়াতে হরিদাসের মুখ গঞ্জীর হইল, আর কিছু না বলিয়া নীরবে আহার করি-লেন। আহারামন্ত স্ত্রাকে কহিলেন,— "প্রাণহরি তোমাকে কি কি গহনা দিয়াছে ?"

ত্রী—"এই দেখ ! কি কি দিয়াছে"
বিলয়া বাম হত্তে প্রদীপ লইয়া নিকট্ছা
হইলেন। হরিদাস, স্থল্লরী সাংলীর
গাত্রে স্থণাভরণ দেখিয়া মনে বড় স্থধ শ পাইলেন, এবং উদ্দেশে বন্ধু-মার চরণে অসংখ্য প্রণাম করিয়া শয়ন করিলেন। পরদিন অতি প্রত্যুবে হরিদাস প্রাণ-হরির দোকানে উপস্থিত হইয়া, প্রাণ-

"কি হে প্রাণহরি, এত দাতা হইলে কবে হইতে? ব্যাপারটা কি বল দেখি?" প্রাণহরি হরিদাসের পদধূলি লইয়া কহিল—
"ব্যাপারটা কি এখনও আপনার ব্বিতে বাকী আছে? বলি, গহনা কর্ম্বানা হইয়াছে কেমন ?"

"গহনা কর্ম্বানা কেমন হইরাছে, তাহা জ্ঞানি না;—গহনা কর্ম্বানা গার দিয়া ভোমার বউ ঠাকুরাণীকে বেশ দেখাইতেছে, তাহাই বলিতে পারি।"

্প্রাণহরির সহিত হরিদাসের একট্ট শুপ্ত সম্বদ্ধ আছে; এলস্ত ^{*}হাুসিতে হাসিতে কহিন,—

"তবে আন্ত রাত্রে মারের পূলা দিরা। আমাকে প্রসাদ দিবেন ?"

"আজ বাত্রে অবশ্রই দিব ; কিন্তু পূজা-প্রসাদ, বোধ হয়,এই পর্য্যস্তই শেষ হইল।" প্রাণহরি এ কথার কোন অর্থ বুঝিল না, কিছ সাংঘাতিক কথাটা শুনিয়া বড়ই ছ:খিত হইল: কেননা ছবিদাসের ব্যয়ে প্রাণহরির প্রায়ই প্রসাদপ্রাপ্তি ঘটিত। স্থরাসক্তি স্বর্ণকারজাতির স্বাভাবিক। প্রাণছরির চরিত্তেও সে নৈসর্গিক নিয়মের ব্যভিচার ঘটে নাই। অধিকস্ক তাহার দোকানবাড়ীটী বড় স্থবিধাজনক, এবং • সে স্থরাপানাস্তে অতি মধুর স্বরে গান করিতে পারিত: এজন্ম প্রায়ই হরিদাস তাহার বাড়ীতে সৌরচক্র সংগঠন করি-তেন। যাহা হউক, অদ্য হরিদাস প্রাণ-হরির সহিত কৌতুক কথন শেষ করিয়া কহিলেন.—

"গহনার হিসাবটা একবার আমাকে দেখাও।" প্রাণহরি দেখাইল বে, চারি গাছি মল, একগাছি দড়াগোট, ছই গাছি বালা, এক ছড়া কণ্ঠমালা, ও ছয়টা মাক্ডীতে তিনশ বিশ টাকা ব্যয় হইয়াছে। হরিদাস কহিলেন,—

"টাকা সমস্তই পাইয়াছ, না কিছু বাকী আছে ?" প্রাণহরি কহিল—

'পুর্বেই তিনশ টাকা দিয়াছিলেন,—
কল্য প্রাতে গহনাগুলি দিতে যাইলে
কর্তুমাতা আমাকে বসিতে বলিয়া নিজের
ক্রেক শ্বারা গহনা পরক করাইয়া
আনিলেন, এবং বাক্ট জুল টাকা দিয়া পূর্বে
তিঠিয় অমাধ্রচ করিয়া নইলেন।
পরে এই "গহনা ভূমি দিয়াছ, বধু-

ঠাকুরাণীকে এই কথা বলিয়া গহনা দিয়া
আদিতে আমাকে আদেশ করিলেন।
আমি দেই আদেশ মতে কল্য ছপর বেলা
দিয়া আদিয়াছি। ভাল দাদাঠাকুর, তোমায়
একটা কথা জিজ্ঞাদা করি, গৃহিণী মাতার
কাছে তোমার কত টাকা গচ্ছিত আছে ?
ভূমি যেরূপ সাথরচে পুরুষ, তোমার হাতে
যে এক পয়দা টিকে, আমার এরূপ বোধ
ছিল না। যা হোক, খুব চাপা মানুষ বটে!
হরিদাস বলিলেন,—

"প্রাণহরি, বন্ধু-মার কাছে আমার কত টাকা গচ্ছিত আছে এবং আমি কেমন চাপা মান্নুষ, তাহা তিনি জানেন, আর আমি জানি, অন্তের তা জানিবার উপায় নাই।" এই কথা কয়টা বলিঙে বলিতে হরিদাসের চক্ষুতে জল আসিল,— "আফিসের বেলা হইল" বলিয়া তিনি সম্বর গাত্রোখানপূর্ম্বক বেগে প্রস্থান করিলেন।

(¢)

প্রাতঃকালের প্রতিশ্রুতি অন্তুসারে পুনরায় রাত্তে প্রাণহরির সহিত হরিদাদের
সাক্ষাৎ হইল। অন্তান্ত দিন অপেক্ষা
অন্তকার আমোদ প্রমোদ কিছু বিশিষ্টরূপেই হইল। প্রাণহরিও,—

"রমণী স্থাপর নিধি, বতনে দিরেছে বিধি, রতনে মুড়িব তার শঙ্গা।

তার হথে হখী হব, নিত্য হথ পাসরিব, থেলিবে হথের ঘরে প্রেমের তরক॥"

ইত্যাদি গান অতি মধুর খবে গাইল। অনেকেই ইহা ওনিল; কিন্তু হরিদাসের স্কারে ঐ গান সহাপ্রাকরের পর নৃত্ন ক্ষি আরম্ভ করিল। হরিগান অজন রোগন আরম্ভ করিলেন, নরনজনে অকবত্র অতিবিক্ত হইয়া পেল। একটু প্রাকৃতিব হইরা হরিগান কহিলেন,—

"প্রাণহরি, তুমিত ভোষার কারবার-স্তুৰে জনেক ভত্ৰমহিলা দেখিয়াছ; কিন্তু আমার বন্ধু-মার মত চরিত্তের নারী কোণাও **पिशाक् कि? जामि नहें इहेग़** कि विना আমাকে ওবাড়ীর কেইই দেখিতে পারেন मा ; कि खुमा आमात नर्जनार जामात करा इ:शिनी। आयात्र जीत शात्र शहना नाहे, व्यामि मनभारत नर्सन्द উड़ारेब्रा प्लरे, এजन्न তাঁর কত হঃধ। হাজার গুণ থাকি লেও, নাম কেনার স্থবোগ ত্যাগ করা মেরে-মামুবের পক্ষে বড় কঠিন। দেখ! এত টাকা मित्रा व्यामात्र औरक गहना गड़ाहेना मिरनन. ভাহাকে ভাহা জানিতে দিলেন না; আনি দিয়াছি, বলিতে তোমাকে শিথাইরা দিলেন; কেননা আমার প্রতি তাহার শ্ৰদ্ধা ভক্তি আরও বৃদ্ধি হউকৃ—আমি বরে পরম সুধী হই। আমি তাঁর কে? আমার সজে প্রাম-সম্বন্ধ বই নর। আমি দশ हासात्र ठीका मिरमञ्ज हेहात्र व्यक्तिसाध इहेरव ना। जामि यनि छान इहेरड भाति. আষার ল্রীকে আরও পাঁচধানা গহনা দিতে পারি, খর ছাড়িরা বাহিরে না বাই; ৰোধ হয়, ভাহাহইলে ভাহার একটু সুধ र्हेस्ड भारत, कि वन धानरदि ?"

প্ৰাণহরি—''হাঁ! তা বটে, তা বটে, ডবে কি ুনা ধৰে পাঁচে এরণ একট্ট

আৰট্ আনন্দ করাও ভাল' বলিছা মন্তক কণ্ঠ্যন আয়ন্ত করিল। ক্রমন্ট কণায় কণায় রাত্রি অধিক হওয়ার হবি-লাস গৃহে গমন করিলেন। পূর্বে এপান হইতে বাহির ইইয়া আয়ন্ত ছই একটী স্থান না ঘুরিয়া হরিলাস বাড়ী ঘাইতেন না।

আমানের পাঠক পাঠিকার অবশ্রই

সরণ আছে বে, হরিদাস বাবুর জননী তিন

শত টাকা অগ্রিম দিয়া প্রতিবেশী হরিদাসের স্ত্রীকে আজরণ গড়াইয়া দিয়াছিলেন
বলিয়া কর্ত্তা মহাশরের সহিত তাঁহার

একটু বচসা হয় এবং সেই বচসাকালে
গৃহিণী বলিয়াছিলেন বে, হয়ত, এই বভ

কর্ত্তা তাঁহাকে এক সময় প্রশংসা করিবেন। সেই ঘটনার ঠিক্ এক বৎসর
পরে একদা গৃহিণী হরিদাসের স্ত্রীকে সলে

লইয়া কর্তার নিকট গমন করিয়া
কহিলেন,—

"বউমা, ভোমার বুড় খণ্ডরকে প্রণাম কর।" বধু কর্তাকে প্রণাম করিরা দণ্ডারমান হইলে, কর্তা গৃহিণীর মুখ চাহিরা কহিলেন,—"ইনি কে?"

গৃহিণী কহিলেন,—"আর বংসর ঠিক্
এমনি সমরে কোনল্লপ সিদ্ধিকামনার
ভোমার পদধ্লি লইয়াছিলাম, মনে হর
কি? এই ছই হাজার টাকা মূল্যের বসনাল্যার-শোভিতা প্র্যামালী স্থলরী বৃষ্টী
ভাহারই কল। গুধু ইহাই দহে, আরিও কিছু
আছে" বলিরা প্রাণহরি স্থানার্যার
বাক্ষিত হাতচিঠাধানি ধুলিরা কর্তার
হাতে দিলেন। কর্তা নির্দিই হাল পাঁঠ

করিয়া দেখিলেন, গৃহিণীর দত্ত তিন শত কুড়ি টাকার স্থলে তিনশ আশি টাকা হরিদানের নামে জমা হইয়াছে। তখন কর্তা বিশায়-বিক্লারিত নেত্রে গৃহিণীর মুখের প্রতি চাহিয়া কহিলেন,—

''বোধ হয়, এটা হরিদাদের ব্রাহ্মণী। হরিদাদকে আমি বছকাল দেখি নাই, শে এখন ভালই আছে বোধ হইতেছে।" গৃহিণী হাসিতে হাসিতে কহিলেন,—

"আজে হাঁ! সে এখন ভালই আছে। বাইট্ টাকা বেতন পায়, তা ছাড়া মাসে প্রায় হুই শত টাকা উপার্জন করে, অথচ পাপের কাণাকড়িও ঘরে আনে না, আজ কাল হরিদাসের চরিত্র প্রকৃত হরিদাসের ভাষা।"

"গৃহিণী, আজ তোমার কথা শুনিয়া আমার বড় স্থুপ হইতেছে।"

"এক বৎসরে তিনশ কুড়ি টাকায় প্রায়
চারিশ টাকা ঘরে আসিয়াছে; আজ
আমার কথায় তোমার স্থথ হইবে বই
কি!"

"না,—না, গৃহিণী, তা নয়! তোমার মূথে হরিদাসের চরিত্র ও অবস্থাগত আশ্চর্য্য পরিবর্ত্তনের কথা শুনিয়া আমার স্থথ হইতেছে। ভাল! কিরূপে এরূপ হইল, বল দেখি!" গৃহিণী কহিলেন,—

"বে মাদে বউকে গহনা গড়াইরা
দিলাম্য তাহার পর মাদ হইতেই হরিদাদ
সকল কু-অভ্যান দ্ব বাকে থরচ ত্যাগ
করিলা নালে মাদে ২৫ টাকা হিনাবে
কৈ হাতিটিটার উত্তল দিতে আরম্ভ করিল।

শ্বন্ধার পাইল। বেতন ৪০ টাকা হইতে ষাইট টাকা হইল এবং স্থারপথে উপার্জনের অনেক কার্য্য পাইল। সপ্তম মাস হইতে প্রতিমাসে ৪৫ টাকা হিসাবে দিয়া এক বংসরে মার স্থানে আমার টাকা পরিশোধ করিল এবং এই দেখ! বউমাকে কত গহনা দিয়াছে। কাল অঙ্গে পীতাম্বর ও সোণার গহনা কেমন শোভা পার, দেখিয়াছ ?"

"ভাল! গৃহিণী, একটা কথা জিজ্ঞাসা করি, হরিদাসের চরিত্র ও অবস্থার এইরূপ পরিবর্ত্তন হইবে, তাহা ব্ঝিয়াই কি তুমি টাকা দিয়াছিলে ?"

"আমি এক দিন হরিদায়কে তাহার কু-চরিত্র জন্য তিরস্কার করিয়াছিলাম: সে সজলনেত্রে প্রতিক্রা করিল "মাসে মাসে আপনার নিকট টাকা করিব:" কিন্তু তাহা করিতে পারিল না। আমি জানিতাম, সে বউমাকে খুব ভাল বাদে, কু-অভ্যাদ জন্ম ভাল খাওয়াইতে পরাইতে পারে না। যদিও টাকা দিবার পূর্বে পরিবর্ত্তনের পরিমাণ বুঝিতে পারি নাই বটে, কিন্তু তাহার দাম্পত্য প্রীতি ও আমার নি: স্বার্থ উপকার এই উভয়ে মিলিত হইয়া একটা হিতকর পরিবর্ত্তন উপস্থিত করিবে, তাহা নিশ্চরই বুঝিয়া-ছিলাম। তোমার পদ্ধুলির মহিমার আমার সে বৃদ্ধি কলবতী হইয়াছে।"

কর্তা হাসিতে হাসিতে কহিলেন,— শ্বাবার বখন ইণ্ডিয়া কাউন্সিলের মেষ্ট নিৰ্মাচন হইবে,তখন তোমাকে পাঠাইবার অপেকা তোম চেষ্টা করিব; কেননা অনেক পুৰুষ অধিক আছে।"

অপেকা তোমার রাজনৈতিক ব অধিক আছে।"

সৃষ্টি-প্রক্রিয়া রহস্থ r

(৩৬৬ সংখ্যা—৭০ পৃষ্ঠার পর)।

অনস্তর পৃথিবীর আরও উন্নতাবস্থা হইলে পরস্পরের মধ্যে স্থাভাব, সংসার-স্থাপন, রসালাপ, বিলাস এবং ধর্মা, অর্থ, কাম, মোক্ষ এই চতুর্ব্বর্গের উপদেশ দিবার জন্ম ভগবান্ শ্রীক্ষকরপে অবতীণ হইলেন।

সংক্রামিতোহভূচ্যেহিণ্যাং রৌহিণেরস্ততো হরি:।

রুষ্ণান্তমানক নভাসি অর্করাত্রে চতুভূজি:।

অগ্রিলরাণ।

এই অবতারে পৃথিবীকে সম্যক্রপে অলফ্ত করা হইল। ইহাকেই একার সর্গনামক পঞ্ম সৃষ্টি বলা যায়।

পরে মানবগণ বিষয়মদে অতিশয় মন্ত হইয়া যপেজাচারী হইয়া উঠিল। বেদের অন্ধিকার-চর্চা হইতে লাগিল, স্থতরাং ভগবান্ শাক্যসিংহরূপে (বৃদ্ধদেব) অবতীর্ণ হইলেন।

রক্ষ রক্ষেতি শরণং বদস্তো জগ্মুরীখরন্। মারানোহবরূপোহসৌ গুলোগনস্থতোহতবং।। অগ্রিপুরাণ।

এই অবতারে তিনি মারাশ্বরূপ হইয়া বেদাস্কের অর্থ ফিরাইরা বৌদ্ধর্শ স্থাপন-পূর্বাক অনধিকারীদিগের হস্ত হইতে বেদধর্শ বহিষ্ণত করিয়া লইলেন। ক্রমশঃ নৌদ্ধর্ম বদ্ধন্ হইয়া বদিলে, ভগবান্
যথন দেখিলেন যে, বৈদিক ধর্মের আর
আদর নাই, তথন পুনরায় বেদ সংস্থাপন
করিবার জন্ম শঙ্করাচার্যাক্রপে আবিভূতি ভ

শহর-দিখিজয় গ্রন্থ ব্যতীত শ্রীমচ্ছ রাচার্য্যের অবতার সম্বন্ধে কোন পৌরাণিক
গ্রন্থে কোনরূপ উল্লেখ দেখিতে পাওয়া
যায় না।

শকরাচার্য্য বেদাস্ত শাস্ত্রের ভাষ্য প্রস্তুত্ত করিয়া ব্রন্ধাহিতত আত্মনীমাংসার যথার্থ নর্মাভেদ করত: বৈদিক ধর্ম্মের প্রাস্থাপন করিলেন, এবং বৌদ্ধণিগকে বিচারে পরাস্ত করিয়া তাহাদিগকে ভারতভূমি হইতে নির্মাধিত করিয়া দিলেন। পরে জ্ঞানচর্চ্চা করিয়া লোক সকল যথন খোর নাস্ত্রিক হইয়া উঠিল, তথন শ্রীমতৈতক্ত্য-দেব আবিভূতি হইয়া ভক্তিরসে ভারতভূমিকে ভাগাইরা দিলেন।

শীমটেড জ্ঞা দেবের অবতারত্ব সক্ষেপ্ত কোন পৌরাণিক গ্রন্থে স্পষ্ট কোন উল্লেখ দেখিতে পাওয়া যার না। তিনি যে ভিজি-লোত আনিলেন, সেই লোভে নাডিক ও পাৰ্ব্জ কন প্রবন্ধ বেগে তাসিয়া গেল। সেই বেগবতী স্বোত্বতীর প্রবাহ অক্টাবনি মল-গতিতে বহুমানা হইতেছে। কিন্তু কালরপ মহানদের নিকট ভক্তিরপ ক্সু নদী কত-ক্লণ স্থায়ী হইতে পারে ? কালক্রমে ইনিও ভন্না হইবেন।

ধধন সমস্ত লোক বেদমার্গ-বহিন্ধত ও স্বেচ্ছাচারী হইরা, মেচ্ছভাবাপর হইরা বাইবে, তথন ভগবান করিরপ ধারণ পূর্মক প্রশার উপস্থিত করিবেন এবং মেচ্ছভাব নষ্ট করিয়া পুনরায় প্রোত ধর্ম স্থাপন করিবেন।

ক্ৰী বিভূষণ: পুজো যাঞ্জবক্যপুরোহিত:। উৎসাদ্দিব্যতি দ্লেচহান্ গৃহিতাল্ল: কৃত্যযুধ:।। ক্কীপুরাণ।

এইরপে কালচক্র ছারা প্রকৃতি পুরুষ কর্ত্বক এই বিশ্বমণ্ডল স্থাপিত ও বিবর্জিত হইরা আসিতেছে। প্রকৃতি স্বয়ং এই বিশ্ব-রাজ্যের সংস্থাপন জন্ম সত্ব, রজঃ ও তমঃ গুণভেদে লন্ধী, সাবিত্রী ও ভগবতী নাম ধারণ করত: পরিণামপথে বিচরণ করিয়া বেড়াইতেছেন; এবং পরমাত্মা চৈতন্ত (স্টিকার্য্যে লিপ্ত যে চৈতন্ত) ও উক্ত গুণত্ররভেদে ব্রহ্মা, বিষ্ণু ও মহেশ্বর আধ্যা প্রাপ্ত হইয়া স্টি স্থিতি প্রলয়ের কর্ত্ত। হইয়া রহিয়াছেন। মধ্যে মধ্যে বিদ্রোহ শাস্তি ও পৃথিবীর মঙ্গল বিধান জন্ত যথন বিশিষ্টরূপে আবিভূতি হন, তথনই অবতার বলিয়া গণ্য হন।

পৌরাণিক মতে পুরুষ অবতার মধ্যে বেরূপ প্রধান দশ্টী সংখ্যা আছে, তান্ত্রিক মতে প্রকৃতি অবতারেরও তদ্রুপ প্রধান দশ্টী সংখ্যা আছে। স্পটিস্থাপনের জন্ত বখন যেরূপ অবতারের আবশুক হয়, তখন হয় পুরুষ না হয় প্রকৃতি; এই ছয়ের একতররূপে আবিভৃতি হন। সেই পরমায়াই পুরুষ ও প্রকৃতিরূপ মূর্ত্তি ধারণ করিয়া এই বিশ্বক্রিয়া সম্পন্ন করিয়া থাকেন। (ক্রমশঃ)

শঙ্গীত-রোগের প্রতীকারক ঔষধ।

রাগবিশেষের আলাপ ছারা হৃদয়ের
আবেগ ও রজের উঞ্জা বৃদ্ধি অনেকেই
উপলব্ধি করিয়াছেন। কোন কোন সমরে
ইহা ছারা রোগ ব্যুণারও উপশম হইয়া থাকে
মটে, বিদ্ধা আই বলিয়া ইহা যে রোগের
প্রতীকারক উব্দর্শনে ব্যুব্যুত হইবে, ইহা
বিশ্ব বিশ্ব করিতে প্রবৃত্তি
হর না। বিশ্ব বিশ্ব করিতে প্রবৃত্তি
হর না। বিশ্ব বিশ্ব করিতে প্রবৃত্তি

সাহিত্যবিজ্ঞান সমিতিতে এতদ্বিবরে খোর আন্দোলন হইতেছে। একজন প্রাসিদ্ধ বৈজ্ঞানিক স্থির করিরাছেন ধে, অনেক উৎকট উৎকট বোগও সঙ্গীতের দারা আরোগ্য হয়। শারীরিক উত্তাপ হাস করিতে অথবা হুদরের বেগ রুদ্ধি করিতে হুইলে একমাত্র সঙ্গীত দারা এই কার্য্য উত্তমরূপে সংশার হুইতে পারে।

বেহালা (violin), বীণা (harp) ও
পারানেট (পারানো নহে) বাদনই
সর্কাণেকা প্রশস্ত। এতদর্থে সমিতির
অভিমত এইবে, লগুন নগরের কোন একটা
বৃহৎ চিকিৎসালরে পরীক্ষার জন্য একটা
সলীতগৃহ প্রতিষ্ঠিত হয়; তথায় স্থাক
সলীতাদিবাদক সকল নিষ্ক্র থাকিয়া
রোগের লক্ষণাসুসারে বাদন করিবেন।
অব্যাপক সকীতশাস্ত্রক্র চিকিৎস্কের

আহেশে বা ব্যবস্থায়ত গত সকল জাল লয় সহকারে গীত হইবে, অপর কোল ঔবধানির সম্পর্কও থাকিবে না। এতজারা কেবল বে রোগীর পারীরিক পীড়া সম্পূর্ণ আরোগ্য হইরে এমন নহে, অনেকের মানসিক শোকভারেরও লাখক হইবে। সঙ্গীতে পোক অস্তরিত হয়, ইহা সকলেই জানেন; কিন্তু ইহাতে যে সর্কব্যাধির নিরাক্রণ হয় ইহাই ন্তন।

উদাসীনের চিন্তা।

(পূর্বপ্রকাশিতের পর)

শ্রমাশী ঠাকুর খ্যান-ত্তিমিতলোচনে যোগাসনে বসিয়া ভগবচ্চিস্তায় নিম্ব আছেন, এমন সময় চঞ্চলা তথায় উপনীত হইলেন। স্বামীর প্রবোধবাক্য তাঁহাকে সম্পূর্ণরূপে প্রবৃদ্ধ করিতে পারে নাই। সমাসী ঠাকুরকে অভ্যন্ত তিরন্ধার করিবেন মনে মনে স্থির করিয়া আসিয়াছেন। কিস্কু তাঁহার তৎকাণীন সেই সৌম্যমূর্ত্তি দেখিয়া চিত্রপুত্র কির ভার দণ্ডারমান রহিলেন। कित्रश्कान চनिया (शन, भंद्राभी ठाकूरत्र थानजन रहेरज्ञ ना । हक्ता निक्रवर्शी मृखिकामत्नहे उभरवभन कत्रिन। वरत्रत्र मृत्यत्र निरक धक्नुरहे स्विर्छ লাগিল। বহক্ষণ চলিয়া পেলে পর ভাহার ধৈৰ্যাচ্যুতি হইল। খন উঠ্ বৃদ্ করিতেছে। একবার হির করিল দশ মিনিট পরে **छित्रा राहेरव। यथ शनत विनिष्ठ छित्रा होते।**"

গেল, কোন শক্তি যেন চঞ্চলার গভিরোধ করিয়াছে-চঞ্চলা উঠিতে পারিতেছে না. মনের অন্বিরতা প্রবল হইরা উঠিতেছে. তথাপি শরীর গমন করিবার জন্ত এছত **इटेट्ट्रिक् ना । अमन नमय नवाानी ठाक्रद्रब** रहेग । তিনি कित्रदमदा ধ্যানভঙ্গ किय्र कान प्रकार पिटक प्राहिमा बहिरनन। কোন বাকাই নি:সত হইল না। বাঁছারা বহুক্ষণ অতীক্রির রাজ্যে বিচরণ করিয়া ইক্রিয়গ্রাম্ব সুল জগতে অবতরণ করেন, डाहारमत्र भूनक्षात्र कित्रा चात्रक हरेगात्र शूर्व किছुकान हिनता वात । वर नगरे ৰোগিপ্ৰবন্ন নিম্মকাৰে চঞ্চার দিকে দৃষ্টি নিক্ষেপ করিয়াছিলেন। অবশেৰে ইক্রিরপরিচালনের শক্তি পুন:আগু হইছা भरीत परत विकाम कतिरमेन 🚮। वि

াচ—বাবা! তোমার কথা মত চ'লে
আমার এত অশাবি হয় কেন ? শুন্তে পাই
সাধু মহাজনদের আদেশে চলে লোকের
শোক তাপ দূরে যায়; তা না ইইয়া
কোধার আমার নৃতন তাপের সৃষ্টি হল!

না—আমি সাধু মহাজন হলেত; আমি অসাধুর হন্দ, তাই তোমার তাপ।

চ—(চঞ্চলা ঈষৎ লজ্জিত হইরা) আমি তোমার অসাধু বলিতেছি না। আমার তাপের কারণ কি, কি হলেই বা ইহা দ্র হুবে, তা আমায় বলে দাও।

স—তোমার তাপের কারণত তোমার স্বামীই বলেছেন, তবে আমায় জিজ্ঞাসা ক্চেকেন ? ছটি ছল চেয়েছিলেম, সমস্ত গহনা বিক্রী কর্ত্তে কে বলেছিল ?

চ—তুমি আমার স্বামীর কথা কি করে স্বান্তে ? তোমায় সে কথা কে বল্লে ?

সা—মা ! এ কথা পরে বৃষ্বে, এখন
বৃষ্বার সময় শৃহয়নি । এখন জিজ্ঞাসা
করি তাপটাত সয়তানের স্পষ্টি ! তোমার
মনে যে অশান্তি হয়েছে, তোমার
মনে কে তাহা তুলে দিলে ?

চ—আমি দোষ করেছিলেম বলে তার শান্তি স্বন্ধপ আপনা আপনি উঠেছে।

না—ব্ঝ্লেম দোষ ক'রে আপনাকে
নেই দোষের কর্তারপে মনে কল্লেই
অবঃকরণ অফুতপ্ত হয়। যে আপনাকে
দোবের কর্ত্তা মনে করে না, তার অসংক্রিয়াজনিত তাপ লাগিবে না। এক
বিশ্বার দল্লা বলি তামার হাতে
অক্থানি তরবারি দিয়া সেই তরবারি দারা

বলপূর্ব্বক একটি নরহত্যা করাইয়া লয়,
তাহলে তোমার অমুতাপ জনিবে কি না ?
চ—সে অবস্থায় না পড লে বলিজে

চ—দে অবস্থায় না পড়্লে বলিভে পারি না, তবে বোধ হয় জনিবে না।

गा-- (कम जिम्रात ना ?

চ—আমার সেধানে দোষ নাই, কারণ আমি হত্যাক্রিয়ার কর্ত্তী নই—দম্মূই কর্ত্তা।

সা—এ কথা এই সপ্রমাণ করে যে কর্জ্ব-বোধ না থাকিলে পুণ্যক্রিরা-জনিত আত্মপ্রসাদ কিংবা পাপক্রিয়া-জনিত অমুতাপ কিছুই জন্মিবে না, এজন্ত পাগল কিংবা শিশুর আত্মপ্রসাদ কিংবা অমু-তাপের বোধ নাই।

চ—তবে দেখ্চি অসং ক্রিয়া ক'রে পাগলের মত আপনাকে কর্ত্তা ্ৰোধ না কর্ত্তে পালেইত ভাল। তাহলে অস্তরে অমৃতাপ জন্মিৰে না।

সা—মামুষের কর্তৃত্বনোধ স্বাভাবিক।
ইচ্ছা কল্লেই কি মামুষ কর্তৃত্বনোধ দূর
কর্ত্তে পারে ? চোক দিয়া দেখা, কাণ দিয়া
শোনা স্বাভাবিক, ইচ্ছা ক'রে কি কেহ
কাণ দিয়া দেখ্তে পারে, না চোথ দিয়া
ভন্তে পারে ?

চ--মাহুষের কর্তৃত্ববোধ স্বাভাবিক হলে---

কানামি বর্মা: ন চ মে প্রবৃত্তি: কানাম্যধর্ম্মং ন চ মে নিবৃত্তি: ॥ ক্ষা ক্ষিকেল ক্ষমি ছিডেন ব্যা নিবৃক্তোত্মি তথা করোমি ॥

ংশ ও জানি তাহাতে প্রবৃত্তি নাই, অধর্ম ও জানি তাহাতে নির্ভি নাই। সা— দ্বা আমি তোমাকে একটা গন্ন বলিতেছি। ইহা হ'তে তুমি বুঝ্তে পার্কেষে, জাবের কর্তবোধ কিরপ স্বাভাবিক।

কোন এক প্রাহ্মণ এক সময়ে একটা
গোহত্যা করিয়াছিলেন। শাস্ত্রমতে গোহত্যা মহাপাতক; স্কুতরাং প্রাহ্মণ
আপনাকে সেই মহাপাতকের কর্তা বোধে
অফুশোচনা করিতে লাগিলেন; কিন্তু
তৎক্ষণাৎ মনে তাহার বিচার উপস্থিত
হইল। তিনি মনে ভাবিলেন, আমার
শান্তি কি ? বিষ্ণু অন্তরে থাকিয়া আমার
হারা এ কাল করাইয়া লইয়াছেন, স্কুতরাং
আমি দোষী নই। যদি কাহারও দোব
থাকে, তাহা হইলে বিষ্ণুই দোবী। এইরূপে
আম্মন্ত অপরাধের ভার বিষ্ণুর বাড়ে
চাপাইলেন। অন্তর্গানী বিষ্ণু প্রাহ্মণের

ব্রাইবার অন্ত অবগত হইরা তাঁহার অন্তর্গ ব্রাইবার অন্ত একদিন বৃদ্ধ আদ্দেশর বেশে তাঁহার বাড়ীর পশ্চাৎ দিকের বার দিরা তাঁহার বাড়ীরে পশ্চাৎ দিকের বার দিরা তাঁহার বাড়ীতে প্রবেশ করিলেন। আদ্ধণ ক্রোকের আরক্তলোচন হইরা বলিলেন, "ঠাকুর! তুমি কি আদ্ধ ? বিড্কিতে ভদ্রলোকের বাড়ীর মেরেরা ররেছেন, তুমি কি ক'রে পেছন দিকের ছয়ার দিরা প্রবেশ কর্লে? মেরেরা পর্কুমের কাছে বের হন না, এ কথা কি তুমি জান না ?"

বৃ—নশায় । রাগ কর্কেন না, আমিত আসিনি।

ব্ৰাহ্মণ—তুমি এগনি ? ভবে কে এসেছে ? তোমার হাত এল, পা এল, অথচ বল্ছ তুমি এগনি ?

বৃ—হৃদিস্থিত বিষ্ণু আমাকে এনেছেন,
আমার আস্বার শক্তি কি ?

আহ্নণ—বটে, আমি দেখ্ছি ভোমার,
আর তুমি বল্ছ, বিষ্ণু এনেছেন। এখন
ঠেকেছ কি না, তাই ওকালতি।

চন্মবেশী ব্ৰাহ্মণ न्न (राम তখন ধারণ করিয়া বলিলেন "গুরে নির্কোধ ব্ৰি ব্রাহ্মণ। গোহত্যার হেলার আমি কর্ত্তা হয়েছিলেম, কারণ তখন वाशनारक मारी कर्ख धान हा व्हिन করা CACA এখন অন্তকে ना । वानिम তার প্রতি রাগ কচিচস্। कर्इदाय चामिरे मानद्वत मान दश्चत्र ক্ষিত্। বধন মাগ্ৰ বাসনাৰ অতীত হরে আমার ইচ্ছার সহিত ইচ্ছা বৌল

স্থানা মিশাতে পার্কে, তথন তার কর্তম্ব-বোধ:বেডে পারে এবং আমাকে কর্ত্তা বলিয়া অন্তাপের হস্ত হইতে অব্যাহতি পেতে পারে। কিন্তু জানিস্ তখন তাহা बाता भाभ कार्या अञ्चित रहेरव ना। त्यार रहेर७ वामनात्र ऋहि. বাসনা বশতঃ জীব পাপ কার্য্য করিয়া থাকে। আমি যধন বাসনাতীত, তখন আমি जीवटक मक्क कतिया यथन दकान कार्या

করি, তখন পাপ ক্রিয়াও নাই, অমুডাগও नारे । जभन भीव निजानम् श्राशः हत्। চ-বাবা বেশ বুঝলেম। আমার এখনও বাসনা রয়েছে, তাই অনুতাপ জন্মিতেছে, কিন্তু এ তাপের শান্তি কিনে হবে ? সা-মা আজ বেলা হরেছে। গৃহে ফিরে যাও, অস্ত দিন আসিও। চঞ্চলা—(প্রশাম করিয়া) আচছা বাবা ज्ञम । Б: 1

কুরু-পাওব।

ব্যাসমূনি-বিরচিত, ভারত-মঙ্গল-গীত, ভূতনে অতুল উপাখ্যান ; সংক্ষেপে সরল ভাষে, বিবরিব তব পালে, अन वाहां! इ'रत्र मावशान। हिन खत-शूत्र नम, शूत्राकारन ठाक्र छम, নগর হস্তিনাপুর নামে; **एक मम्बद-यःम, क्क-क्न महावःम,** व्यिक्षिक तम विविध भारम। रुखिनांत्र ज्यशेत्रत्, ধুতরাষ্ট্র নরবর, अन्य-अक विधित्र विधारन ; ভার্য্যা তার গুণবড়ী, সুশীলা গান্ধারী সতী, পতি वह धर्म नाहि स्नादन । * মুপতির বছ স্বত, সবে পরাক্রম-যুত, পাপে মতি কিন্ত অনিবার; बंद्यावीया क्लाठाद्य, विनित्नक भवाकाद्य, श्र्यायन श्रामानन भात ।

नामात्री विवाहकान हरेएक माजीवन

বছারত করিয়া রাখিতেন।

সদা সত্য-পালনে তৎপর; † পাণু গুডরাট্রে কনিষ্ঠ আতা; জ্যেষ্ঠ অন্ধ ক্ষিত আছে, পতি জুকু ছিলেন বলিয়া বলিলা রাজা হলেন। পাও * শাপ্রত হইরা পরলোক- গত হইলে অব গুভরাষ্ট্র রাজ্যভার त्र्भ करवम ।

দর্কগুণে বৃহস্পতি, পাপু । নামে মহামতি ভাতা এক আছিলা রাজার; ন্ধপে রমা, গুণে বাণী, ছিল তার হুই রাণী, পাঁচ পুত্র সর্বাঞ্চলাধার। व्यकारन मानवनीना, পां पू खरे मश्त्रिना, गरम्ञा र'न माजीवानी : জ্যেষ্ঠা রাণী কুস্তী তবে,পালিলা পাণ্ডবসবে. আত্ম পর ভেদ নাহি জানি। এক মন এক প্রাণে, ভন বাছা সাবধানে, পঞ্চপাওবের গুণগীতি: পঞ্চদেব বেন হায়! অবতীৰ্ণ বস্ত্ৰধায়, শিখাইতে স্বর্গের স্থনীতি। नर्सवार्ध मूनिष्ठित, व्यागोकिक धर्मवीत,

जीवरमम छम्बन, , त्योश्यात विनि ज्य, श्रमायुष्क (यन श्रमाथव । **छ**ठीत व्यर्क्त नाम, वीतप-धीतप-धाम, বাণ-যদ্ধে অজের সংসারে; রাধিতে ভক্তের মান, ভাবগ্রাহী ভগবান, मथा वनि दकान मिना घारत । . অশেষ হস্তপালয়, বৈমাত্রেয় প্রাতৃষয়, नकुन ७ महरम्य नाम ; ধরা ধন্ত পাঁচ ভাই. পঞ্চ রত্ন এক ঠাই. बिनाइना विधि खनधाय। শত কৌরবের সনে. পালেন পাণ্ডবগণে, পিতামহ ভীম মহামতি ¶; অত্র শিক্ষাদান তরে, দ্রোণাচার্য্য গুরুবরে, নিয়োকেন অন্ধ নরপতি। সতত সচেষ্টমন পাপমতি ^{*} জুর্য্যোধন, সংহারিতে পাণ্ডব সকলে; নাশিতে ভীমের প্রাণ, করাইল বিষপান, वुदकानत वाटि देनववटन । পাওবের স্লাচারে, স্লা জয়-জয়-কারে, পরিপূর্ণ নিখিল ভূবন; ना मह को त्रव-श्राप्त, या हेवा जनकहारन, क् मञ्जना करत्र इर्स्याधन । ৰত্ময় নিকেতনে, রাথিয়া পাণ্ডবগণে, পোড়াইতে চাহে ছষ্ট্ৰমতি: ভাগ্যে সবে পায় ত্রাণ, কার সাধ্য বধে প্রাণ, ভগবান তুষ্ট যার প্রতি।

পঞ্চ দ্রাতা অতঃপর, त्यन १क वरनठत्र, পর্যাটন করি বনে বনে. উত্তরি পঞ্চালদেশে. পঞ্চ ব্রাক্ষণের বেশে. वरक माजा कूडी-त्रांगी मत्न। क्षान भक्षान भक्ति, ममारबार देवन चि, তনয়ার দিতে স্বয়ন্বর; ভারতের রাজদলে সমবেত সভান্থলে. ছিলা যত মহাধ্রপ্রের। অতিক্রমি রাজ্চয়, বিপ্রবেশী ধনঞ্জ, লক্ষা বিন্ধি বিজয়ী হইলা: অহুমতি কৈলা মাতা, মিলি তাই পঞ্চ ভ্ৰাজা পাঞ্চালীরে বিবাহ করিলা। তবে অন্ধ নরপতি, সদয় পাণ্ডব প্রতি. তোষিলেন নিকেতনে আনি: পেরে পুন: রাজ্য ধন, স্থাপিলা পাওবগণ, हेन श्रेष्ठ नाम त्रावधानी। যদিষ্টির প্রীতমনে, পুত্র সম প্রজাগণে, পালিলেন প্রীতি অমুরাগে; ভাতিল যশের ছটা, করি রাজা ঘোর ঘটা, ত্রতী হন রাজস্ম-ঘাগে। मिन मुका निर्वाभाग, भग्रमान्द्रद्र मिन्ना, निर्माहेना किंदिकत यत्र; পশি সেই নিকেতন, অপ্রতিভ ছর্য্যোধন, হিংসানলে জলে কলেবর। তবে হुष्टे इत्न वत्न, नाभिष्ठ পाखनमत्न, ষড্যন্ত্র করে পুনরার; कोत्रत्वत्र व्यक्ताहरन, वृधिष्ठित्र मुझ मरन, মগ্ন হন পাশক ক্রীড়ার।

ধন রাজ্য সহকারে, ভ্রাতা,ভার্য্যা, আপনারে,

श्रादित्वन धर्मात्र नमनः

মহামতি তীম, বৃতরাটু ও পা পুর পিতার জ্যেঠ
কাতা। ইনি পিতা শার্ডসুর মনস্তইর জল্প প্রতিকাপূর্বক আলল্প বিবাহ করেন নাই, এবং রাজভ
গ্রহণ করেন নাই।

পরিণ মনের আশ. "পাগুবেরা ক্রীতদাস," বলি দম্ভ করে তুর্য্যোধন। ছুরাচার ছঃশাদন, কেশে করি আকর্ষণ, সভান্থলে আনি দ্রৌপদীরে, অপমান করে অতি; কোখা ক্লম্ভ যত্নপতি! বলি ক্লফা ভাসে নেত্র-নীরে। গদা লয়ে বুকোদর, হইলেন অগ্রসর, कुक्र-कुल-मःहात्र कात्ररण; হিমাচল জিনি ধীর, ধর্মরাজ যুধিষ্ঠির निवादान अद्योध-वहदन। **° এরূপে পাওবগণ, হারাইয়া রাজ্যধন,** কুণ্ণমনা হইলেন অতি: রাথিতে তাদের মান, পুনঃ রাজ্য করি দান, তোষিলেন অন্ধ নরপতি। পুন: হুর্য্যোধন সনে, যুধিষ্ঠির ভ্রাস্ত মনে, দেবলে হইলা মগচিত; ष्यावात्र हातिना भग, नाज देशन निर्कामन. ত্রয়োদশ বর্ষ পরিমিত। সত্যের পালন তরে, ভ্রমি বন বনাস্তরে. পঞ্চ ভ্রাতা পাঞ্চালীর সনে, হয়ে পঞ্চ পরিচর, সংগোপনে সংবংসর, विकास विद्याप्त- ७वरन ।* ছরম্ভ কৌরবগণে, বিরাট-ভূপতি সনে, যুদ্ধ করে গোধন কারণ, বিরাটের দেনাপতি, হৈলা পার্থ মহামতি, রণে ভঙ্গ দিলা ছর্য্যোধন।

* পাওঁৰগণ বার বংসর বনবাস ও এক বংসর
অজ্ঞাতবাস করিয়াছিতে हैं। এরপ নিরম ছিল বে,
অজ্ঞাতবাসকালে কেহ ডাহাদিগকে চিনিতে
পারিলে ডাঁহারা পুনরার নির্বামিত হইবেন।

निर्कामन-व्यवमारन, शा छरवता कूक-हारन, নিজ রাজা ফিরিয়া চাহিল: হয়ে দম্ভ-পরায়ণ, বিনা রণে ছর্বোধন স্চাগ্ৰ ভূমিও নাহি দিল। অগত্যা পাণ্ডবগণ, রণ কৈলা বিঘোষণ, রক্ত মাংদে কত আর্-সন্থ : কুরুক্কেত্র রক্ষোপরি, অষ্টাদশ দিন ধরি, অঙ্গস্র শোণিতস্রোত বয়। ভারতের রাজগণ, করি সবে প্রাণ-পণ. ছই পক্ষে মিলিয়া যুঝিলা: ভক্তের অধীন হরি, তাই নিজে রূপা করি. অর্জুনের সার্থি হইলা। দশ দিন অহরহ, যুঝি ভীন্ন পিতামহ, পার্থ-শরে শর-শ্যাগত: অভিময়ু পার্থ-স্থত, প্রভূত-বিক্রম-যুত, সপ্তর্থি-বাণে হৈল হত। ধনজয় ধর শরে. জয়দ্রথ বীরবরে * রণভূমে করেন শয়ান: যুদ্ধ করি ভয়ন্বর, বক্ষ চিরি রুকোদর, ছঃশাসন রক্ত কৈলা পান। দ্রোণ কর্ণ+ আদি যত, কৌরবসেনানী শত, ক্রমে হয় নিধন স্বার; ভীম সনে করি রণ, গদাঘাতে হর্য্যোধন, नत्र-नौना करत्र পরিহার। मिलन (को त्रवकून, পুত्रामारक ममाकून, অন্ধরাক ভাসে অঞ্-নীরে;

 কর্মণ-সিদ্ধুদেশের রাজা, ছুর্ব্যোধনের ভর্মীপতি।

া কর্ণ-কুন্তীর গর্ভজাত পুত্র; জতএব বুধি-শ্বিরাদির সংহাদর আতা। ক্ষিত আছে, এ বিবর তাঁহারা পরস্বার অবসত ছিলেন না।

ছত্র দণ্ড দিলা যুধিষ্ঠিরে। "वशा धर्मा उथा छत्र," त्रव देशन विश्वभन्न, পুষ্পবৃষ্টি করে দেবগণ; কৌরবের আচরণে, শিক্ষা পায় ত্রিভূবনে, यश शर्ख उथाय भड़न। পেয়ে পুন রাজ্ঞাপদ, সহ শত সভাসদ, ধর্মের জ ধর্মের তনয়; স্মারোহে মহাভাগ, অশ্বমেধ মহাযাগ ममालिनां कति निधिषय ।

ভাকি স্রাতৃ-স্থুতগণে, বসাইয়া রাজাসনে, বিইন্নপে নীনা করি, নর-লোক পরিহরি, পঞ্চ ভ্রাতা হৈলা স্বর্গগামী; সর্ব্ব কর্ম্মে সুনিপুণ, কি কব তাদের গুণ, खरन दीधा शारनारकत्र चामी। धम् तांका यूधिष्ठेत, धम् भार्थ महावीत, ধন্য কবি ব্যাস তপোধন; ধন্ত ধন্ত উপাথ্যান, শিখি এ মঙ্গল-গান. মন:সাধে গাও বাছাধন। **এ** ম, না, সো।

বিজ্ঞান-রহস্থ।

প্রকাণ্ড দূরবীক্ষণ।

খুঠান্দে, এক প্রকাণ্ড "জগৎ মেলা" হইবার | খানির ব্যাস ১০ পাদ এবং নল ১৪০ প্রস্তাব হইতেছে। ভূমগুলে যাবতীয় আশ্রুষা ও অন্তুত পদার্থ আছে, া-তৎসমু ইইবে। দায়ের চিত্র বা সম্ভব হইলে সমস্ত যুস্ত गःगृ**ही ७ इ**हेबा अमर्नि ७ इहेर्द ।

চিকাগো "জগৎ মেলার" উপর জ্রকুটি করিয়া যে এই মেলার অমুষ্ঠান হইবে, চন্দ্রকে কেবল ১৫ পনর মাইল অর্থাৎ তাহা বলা বাহল্য। অভাবধি উক্ত মেলার 📒 ৭॥ ক্রোশ দূরবর্ত্তী দৃষ্ট হইবে এবং ভূমগুলে व्यादाखन व्यात्रस्त हहेग्राट्ट। डेहाट्ड প্রদর্শনের জন্ত একটি প্রকাণ্ড দ্রবীকণ

ফরাসী রাজধানী পারিস নগরে ১৯০০ । নিশ্বিত হইতেছে। এই দ্রবীক্ষণের দর্পণ-পাদ। দর্পণে বিশুদ্ধ রক্তত প্রতিভাতিত

আল্জিরার মানমন্দিরের অধ্যক্ষ মুস্কর ট্রেপাইড বলেন যে, পরিষার বায়্ম**ওল** ন্তির গাকিলে এই দুরবীক্ষণের সাহায্যে গাকিয়া চল্রমণ্ডলম্ব পদার্থ সকল সুস্পট (मथा गाइँद्य ।

নূতন সংবাদ।

রাজপ্রতিনিধি লর্ড এল্গিন মাক্রাজ ভ্রমণ করিয়া আগামী ১৩ই নবেম্বর হাইদ্রাবাদে আসিবেন। লেডী এল্গিন সঙ্গে[©] সঙ্গে ধাকিবেন। তথা হইতে বাঙ্গালোর পরি-। থাকিয়া मर्नटन याजा कतिरवन। छिनि त्वाशाहे, वितिरवन।

কল্পিকাভাষ <u>ন্ত্ৰী</u>হাঁসপাতাল পরিদর্শন

রাজবালা-নামী এক অসহায়া স্ত্রী-লোকের প্রতি রেলওয়ে কর্মচারী কয়েকটা সাহেব পাশব অত্যাচার করাতে বার্টলেট নামক এক আগামীর কঠিন পরিশ্রমের সহিত ৫ বৎসর কার্যারও হইয়াছে। বিচারপতি গুরুদাস বন্দ্যোপাধ্যায় ও চিফ জ্ঞষ্টিসের বিচারে এই হুষ্টদমন হইয়াছে।

৩। সিমলার চিত্রপ্রদর্শনীতে পাঁচ হাজার টাকার চিত্র বিক্রীত হইয়াছে।

৪। গত মাদে মধ্যবাঙ্গালা সন্মি-• ननी, जिश्रता हिजमाधनी ७ कतिनश्रत স্থলংসভার পারিতোবিক বিভরণকার্য্য সম্পন্ন হইয়াছে।

৫। ব্যাক্ষকে ছইটী বামনের বিবাহ হইয়াছে। পাত্রের দেহ ৪৮ এবং পাত্রীর ৪৬ বৃক্ল মাত্র।

কলিকাতা মিউনিসিপা*লি*টী ধোবার কারখানা করিয়া নগরবাদী-দিগের বস্ত্র ধৌত স্থ বিধা করার कत्रियन।

१। শ্রীযুক্ত বাবু রমেশচন্দ্র উড়িধ্যার কমিশনর হইয়াছেন।

বামারচনা।

হেঁয়ালির উত্তর।#

ভাদের হেঁয়ালি পড়ি করিমু নিশ্চয়। এ জনমেজয় বিনা অন্ত কেহ নয়॥ যার যজে সর্পগণ পেয়েছিল ভয়। পরীক্ষিতস্থত সেই রাজা জন্মেজয়? **"জন" "জমে" "জজ**" "জয়" এ সবকণায়। হেঁশালীর সমুদয় প্রত্যুত্তর হয়॥

প্রথম উত্তর হয় "জন" অর্থ নর, ছধ "জমে" দধি হয় বিতীয় উত্তর। "জজ" হ'লে আদালতে বড় সেই হয়, স্থমঙ্গল ভাবে নর হলে পরে "জয়"। श्रीमठी मताबिनी खश्र।

शिन्दु त्रभगी।

সভ্যতায় আমাদের অবভাবে কিরূপ দীড়াইভেছে তাহা সকলেই জানেন। व्यामारमञ्ज এथन भूव डेब्रडि इटेरडिह।

পাঠিকা ভগিনীগণ ৷ আমি একজন | পাশ করিতেছি, আমরা ডাক্তার হইতেছি, हिन्मू রমণী। বর্ত্তমান সময়ে বিলাতি। আমরা স্বাধীনতার নির্মাল বাতাদে মনের সাধে উড়িয়া বেড়াইতেছি। পুরাতন অধীনতা, পুরাতন আচার ব্যবহার, পুরা-তন বীতিনীতি, পুরাতন পোষাক পরিচ্ছদ, आमञ्च जेन्द्राच्य, ध्यम, ध, वि ध, धम ध कि कूरे आमारमत्र भरत शत्त्र ना। आमारमत्र

বশুড়ার শ্রীমতী গিরিবালা বস্থ এবং আরও কোন কোন আহক ও আহিকা ভানের কেঁরালীর

বিবি পূৰ্ণমাত্ৰাৰ এখন चान(वर হইয়া উঠিতেছেন—সাড়ী ত্যাগ করিয়া গাউন, বাশা ছাড়িয়া ব্ৰেসলেট, চিক্ ফেলিয়া নেক্লেস্ পরিয়া প্রকাশ্ত স্থানে, হাটে, বাঞ্চারে, সভা সমিতিতে অনেকেই বাহির হইতেছেন, এবং অনেকে বাহির इहेट ना लाबिटनं भा वाड़ाहेवात्र छैन-ক্রম করিতেছেন। আমরা এখন একটা নূতন বস্তু হইয়া উঠিতেছি। রন্ধন ক্রিতে বলিলে আমাদের মুওপাত হয়। সম্ভান পালন निक ছারা অপরের ক্রিতে পারিলেই আমরা আপনাদিগকে কুতার্থ মনে করি। বর্তমান সময়ে,— বর্ত্তমান সভ্যতার আমরা যেন বড়ই সুধী হইয়া টুঠিয়াছি। পাঠিকা ভগিনি ! আমাদের অবস্থাত এই। বাস্তবিক্ই কি আমর। এখন বড় সভা ও সুখী হইয়াছি? বাস্তবিকই কি এখন আমাদের উন্নতি হইতেছে ? বাস্তবিক্ট কি আমাদের অবস্থা পুরাকালের হিন্দুর্মণী অপেকা উন্নত হইতেছে? এই প্রশ্নের মীমাংদা করার জন্মহ এই প্রস্তাবের অব-চারণা। আমাদের প্রচৌন কালের ভগিনীগণ অপেক্ষা আমাদের স্থুৰ সৌভাগ্য বৃদ্ধি হইতেছে কি না, সে সম্বন্ধে আইস ভাই পাঠিকা একটু আলোচনা করি।

প্রথমতঃ বর্তমান যুগে, বিলাতী সভ্যতার প্রভাবে ও তথাকথিত স্ত্রীনিক্ষার গুণে আমরা স্বাধীনতা পাইরাছি। পূর্বে আমরা মূর্ধ ছিলাম, প্রান্তি তামদে আছের ছিলাম, এখন বিদ্যার বিমল আলোকে

व्यामारमञ्ज समग्र প्रकाशिक स्रेसारमे। আমরা স্থানকার প্রভাবে শিধিরাছি 😘 প্রমেশবের স্টিতে নর ও নারা উভরেই ममान, তবে नात्री नद्यत स्थीनका चीकात क्तिर्य एकन ? जारमत्र शमान्छ रहेशा शिक्टि (कर्न ? जूनि श्रामि ष्ट्रें नमान, তবে আমি তোমার অধান থাকিব কেন ? এই युक्ति नद्धा आमन्ना अथन यादीन হইতোছ। স্বাধানতা স্থারে সামগ্রী, তাহা কে অস্বাকার কারবে দ অধানতা কাহাকে বলেও বাডবিক আমরা অধানতা-পাশে আবদ ছিলাম কি না, দে বিষয় আলোচনা করা কর্তব্য। যাহার নিজের ইচ্ছানুসারে কোন কার্য্য করার শক্তি নাই, যে ব্যক্তি সম্পূর্ণরূপে পরের মুখাপেক্ষা, এক কথায় করিগারে বলা, সেই বাকিকেই প্রক্লুতরূপ অধীন বলিতে হয়। আমাদের অবস্থা কি কারাবদ্ধ বন্দার অবস্থার স্থায় ছিল ? অস্তঃপুর কি কারাগার তুশ্য ভয়াবহ স্থান 🕈 व्यामदा পुरूरवद कथीना मानी वा रिक्-রমণীর অবস্থা তজ্ঞপ শোচনীয়, এ কথা সমাজ-মন্মানভিজ, সুলদর্শী কয়েকজন বিদেশীরের রটনা মাত্র। ভগিনীগণ! তোমরা বল দেখি,—আমরা আমাদের গৃহে আমাদের স্ব স্থ পতির অধীনা দাসী বা প্রকৃত প্রস্তাবে আমাদের পতিরাই আমাদের আফাকারী দাস! আমি ভ यञ्जूत हाहिया (मधि, हिन्तुनमात्न, हिन्तू-পতির উপর হিন্দুরমণীর ষতদ্ব আধিপতা, এরণ আর কোনও দেশে, কোনিও

সমাজে, কোনও জাতির মধ্যেই নাই। যে ইংলগু এখন সভ্যতার গরিমায় ফুলিয়া উঠিতেছে, সমস্ত জগতের নিকট সভাতার আদর্শ বলিয়া অভিমান করিতেও সম্কৃচিত হইতেছে না, সেই ইংলঞ্জের ইতিহাস একবার চাহিয়া দেখ দেখি। যথন রাজা ष्पष्टम ट्रमत्रो नित्रभत्राधा त्रांनी क्रार्थ-রাইনকে ত্যাগ করিলেন, রাণী অ্যান-বোলিন ও ক্যাথেরাইন হাওয়ার্ডের শির-শ্ছেদ করিলেন, তথন ইংলণ্ডের, সমস্ত ইউুরোপের সমস্ত স্ত্রীস্বাধীনতা কি করিয়া-ছিল ? ভারতে হিন্দুর ইতিহাদে, পুরাণে বা জনশ্রতিতেও এরূপ হুর্ব্যবহারের কোন নিদর্শন পাও কি ? আমরা দাগীভাবাপলা অধীনা কে বলে ? পরের কথা ভূনিয়া আমরা নিজ অবস্থাকে ধিকার मभाक्र के दिन्द्र मि किन १ हिन्द्रमभाञ রমণীর প্রতি কোনরূপ অত্যাচার করেন নাই, বরং সর্বতোভাবে শ্রদ্ধা ও পূজা করিয়া আসিতেছেন। মহর্ষি মন্থ প্রভৃতি মহামাগণ রমণীর প্রতি ব্যবহার সম্বন্ধে বেরপ নিয়ম বিধিবদ্ধ করিয়া গিয়াছেন. পৃথিবীর আর কোনও শাস্ত্রকার দেরূপ হিতকর নিয়ম সংস্থাপন করিতে পারেন নাই। হিন্দুসমাজে রমণীর আসন অতি উচ্চ। "শ্রীরেব স্ত্রীন সংশয়ং" এরূপ কথা হিন্দুশাল্লকারগণ ব্যতীত আর কেহ উচ্চারণ করিতে পারিরাছেন কি? হিন্দু वयनीय प्यथीना ७ मानी छाताशवा गाहाता क होन, खांशानिशक तमशहर हाहे হিত্যমাত্রর উপর রমণীৰ যেরপ

আধিপত্য, অস্তু দেশের রমণীর তৎসমাব্দে সেইরাপ আবিপত্য আছে কিনা সন্দেহ। আকর্ষণী শক্তি যেরূপ চক্ষের অন্তরালে থাকিয়া তাহার কার্য্য সাধন করে, সেইরূপ রমণী অন্তঃপুরের প্রকোঠে থাকিয়া কি সামাজিক ব্যাপার, কি সামান্ত গৃহকার্য্য, কি গভীর রাজনীতি, এক কথায় সকল বিষয়েই তাঁহার প্রভূতা পরিচালন করেন। রাজপুতানার মরুপ্রান্তর হুইতে বঙ্গদেশের উপকৃষ পর্য্যস্ত এ বিষয়ের ভূরি ভূরি যাইতে পারে। প্রমাণ পাওয়া যপন চোহানবংশীয় প্রবলপ্রতাপ সমাট্ রাজ দিলীর সিংহাসন উজ্জ্বল করিতে-ছিলেন, সেই সময় ঘটনাক্রমে মাহোবা-রাজের সহিত তাঁহার বিরোধ উপস্থিত পুথীরাজ বিপুলবিক্রমে অসংখ্য বাহিনী লইয়া মাহোবা আক্রমণ করিলেন। মাহোবা কুদ্রাজ্য ও মাহোবারাজ সমাটের সমকক ছিলেন না। মাহোবা এমন কোন বীর ছিল না যে, প্রবলপ্রতাপ পৃথীরাজের সন্মুখীন হয়। কোন কারণ বশতঃ মাহোবা-সেনাপতি জেশরজের বীর পুত্রদ্বয় তাহাদের মাতার সহিত कत्नोत्क निर्मानित रहेशाहिल। স্ত্রাটের আক্রমণ হইতে রক্ষার উপায়ান্তর না দেখিয়া মাহোবারাজ এক সভা আহ্বান করিলেন। সভাগণের মধ্যে **क्टिंट ममायानाता श्री समझना मारन मक्स** হইলেন না।

পরে রাণী মলিনা দেবী প্রস্তাব করিলেন বে, "এখন রাজ্যে মাহোবার বীর- শ্রেষ্ঠ দেনাপতিছর (জেশরাজের পুত্রছর) অনুপস্থিত," এই হেডুবাদে পৃণীরাজের निक्ठे किश्रिक्तित अग्र निक जिका करा হউক ও কনৌজ হইতে বীর্দ্ধকে আনিয়া দেশবকা করা হউক। সকলেই রাণীর প্রস্তাব যুক্তিসঙ্গত বলিয়া অহুমোদন कतित्वन ও उम्मूयांग्री कार्या इट्टेन। আবার ধখন পাণিষ্ঠ সিরাজ-উদ্দৌলার দৌরাত্ম্যে বঙ্গভূমি জর্জব্রিত হইয়া উঠিয়া-ছিল, তাহার অসহনীয় অত্যাচারে ধনীর ধন, মানীর মান, সতীর সতীৰ রকা করা দার হইয়। উঠিয়াছিল; যে সময়ে বঙ্গের তদানীয়ান রাজনীতিজ্ঞ রড়গণ পরিত্রাণ-চিস্তা সমবেত হইয়া বঙ্গের कतिएंडिएलन, त्रहे नभरत्र, त्रहे शांत्र विक्षवनमध्य अभगीत मञ्जगा, युक्ति, त्राञ्जनी ठिक्कनिरशत व्यारमाञ्जन रहेगा-ছিল। যে সভায় মহামতি রাজা কৃষ্ণ-চক্র, রাজা রাজবল্লভ, ধনিশ্রেষ্ঠ জগৎশেঠ-প্রমুখ ব্যক্তিগণ সমবেত হইয়া বঙ্গের ভাগ্যচক্র পরিবর্ত্তিত করিবার মন্ত্রণা ক্রিভেছিলেন, রাণী ভবানী দেবীও সেই সভার স্বত্ত্বে আহুতা হইয়াছিলেন। वीत्रभूक्षणन् उरकर्ग इहेश विनशाहित्नन ''অন রাণীর কি মত।'' একণে আমাদের মধ্যে কয়জন শিক্ষিতা রমণী এরপ ব্যাপারে আহুতা হইয়া থাকেন?

আমাদের মধ্যে কেন, সভ্যতার আদর্শ, नीनाजृमि देश्नए७ कग्रयन স্তীশিক্ষার স্ত্রীলোকের কথা রাজনীতিজ্ঞেরা ভনিয়া থাকেন গ পাঠিকা ভগিনীগণ! ट्रांचि, श्निन्द्रमणी श्वाधीना, कि अधीना ? বল দেখি. আমরা এখন স্বাধীনতা পাইতেছি, না হারাইতেছি ? আমি তেজখিনী পতিপরায়ণা কতক জালি রমণীর চরিত্র উদ্ঘাটন করিয়া দেখাইব যে, পুরাকালে আমাদের চরিত্র কিরূপ দৃঢ়প্রাণ, কিরূপ সর**ল ও মন কিরূপ** উদার ছিল। আমি ধারাবা**হিকরূপে এক** একটি রমণীর বিবরণ প্রকাশ করিব। সীতা, সাবিত্রী, দময়স্তী, অরুদ্ধতীর কথা এ স্থলে উল্লেখ করিব না. কারণ কোন কোন বিছ্যা ঐ সকল চরিত্র অনৈতি-হাসিক কাল্পনিক কাব্যোপস্থাদের নায়িকা-চরিত্র বলিয়া উড়াইয়া দিতে পারেন; কিন্তু আমি যে সকল চরিত্রের অবভারণা করিব, তাহা আমাদের বর্ত্তমান শিক্ষাগুরু ইংরাজের ইতিহাসে জ্লদকরে প্রভা-সিত। সেই সকল দেবীচরিত্র. সন্মুধে ধরিয়া দেখাইব আমরা কি ছিলাম, কি (ক্রমশঃ) इहेनाम ।

> আমতী নগেক্সবালা মুন্তোফী কাটখরা লেন, ছগলী।

বঙ্গমহিলাগণের রচনার নিমিত্ত বাবু ব্রজমোহন দত্ত স্থাপিত পারিতোষিক।

১৮৯৪-৯৫ অব্দের জন্ম নির্দিষ্ট ২ টা পারিতোবিকের.উপযোগী ২ টা রচনা না পাওরাতে ইহা স্থিরীক্কত হইয়াছে যে, ১৮৯৫-৯৬ অব্দের পারিতোবিক দান কালে ১ টা ৮০ টাকা ও আর একটা ৪০ টাকা করিয়া হুইটি পারিতোবিক প্রাক্ত হুইবে, "শারীর ও গার্হস্থা পরি-চ্ছুক্কতা" বিষয়টা অবলম্বন করিয়া প্রবন্ধ রচনা করিতে হুইবে।

পারিতোষিকদানের নিয়ম।

- (>) বন্ধমহিলা মাত্রেই পারিতোষিকপ্রার্থিনী হইতে পারিবেন; এতৎসম্বন্ধে
 বন্ধসের কোন নিয়ম নাই।
- (২) পারিতোষিকপ্রার্থিনীগণকে বঙ্গ-ভাষাতেই হউক বা সংস্কৃত ভাষাতেই হউক, কোন একটি নির্দিষ্ট প্রবন্ধ* রচনা করিতে হইবে।
- (৩) এই বিজ্ঞাপন প্রচারের তারিথ হইতে ছয় মাসের মধ্যে প্রবন্ধগুলি বিচারের জন্ম সেণ্ট্রাল টেক্টবুক কমিটির নিকট পাঠাইতে হইবে।
- (৪) প্রত্যেক প্রবন্ধের'সহিত পারি-তোবিকপ্রার্থিনীর স্বামী, পিতা বা অভিভাবককে এই মর্ম্মে পত্র লিখিয়া পাঠাইতে হুইবে ধে, তাঁহার বিখাসমতে, রচবিত্রী প্রত্যুক্ত প্রকাশ

क्षिकांडा, ००० म्बूनारे, २५२८। বা অপ্রকাশভাবে কোন প্রকার সাহায্যই গ্রহণ করেন নাই।

১৮৯৫ অব্দের ৩১ শে ডিসেম্বর তারিথের মধ্যে কলিকাতার, প্রেসিডেন্সি নার্কেলের স্কুলসমূহের ইন্স্পেক্টরের আফিসে, দেণ্ট্রাল টেক্টর্ক কমিটির সম্পাদক মহাশয়ের নামে এই প্রবন্ধ পাঠাইতে হইবে। এই প্রবন্ধের মোড়কের (কভারের) উপর "ব্রজ্মোহন দত্ত পারিতোমিকের রচনা" এইরূপ লিখিত থাকিবে। যাহার রচনা সর্ব্বোৎকৃষ্ট হইবে, কলিকাতা গেজেটে তাঁহার নাম প্রকাশিত হইবে।

যিনি একবার পারিতোষিক প্রাপ্ত হইয়াছেন, তিনি ইজ্ছা করিলে অন্ত বৎসর পুনর্কার প্রবন্ধ রচনা করিতে পারেন। যদি তাঁহার রচনা সে বারেও সর্কোৎক্কই হয়, তাহা হইলে তাঁহার নাম কলিকাতা গেব্লেটে প্রকাশিত হইবে, কিন্তু পারিতোষিক রচনার গুণামুসারে তাঁহার পরবর্ত্তিনী মহিলাকে প্রদত্ত হইবে।

यमि বিচারকগণ সর্বোৎক্সষ্ট রচনাটিকেও পারিতোষিকের উপযোগী বলিয়া বিবেচনা না করেন, তাহা হইলে পারিতোষিক প্রদক্ত হইবে না।

এ, ক্রফ্ট, বাঙ্গালা দেশের শিক্ষাবিভাগের ভিরেক্টর।

বামাবোধিনী পত্রিকা।

BAMABODHINI PATRIKA.

"कन्यायेवं पालनीया शिचणीयातियस्ततः।"

কন্তাকে পালন করিবেক ও যত্নের সহিত শিক্ষা দিবেক।

ত্ৰ সংখ্যা ।

কার্ত্তিক ১৩০২—নবেম্বর ১৮৯৫।

৫ম কল। ৪র্থ ভাগ।

সাময়িক প্রসঙ্গ।

টেলিফোনে সংবাদপত্র অষ্ট্রহঙ্গেরীর পেট বুড়া নামক স্থানে ২ বংসর
এই আশ্চর্যা সংবাদপত্র চলিতেছে। পুস্কাস্
নামক এক ব্যক্তি ইহার আবিদ্ধর্তা।
গ্রাহকদিগের নিকট নির্দিষ্ট নিয়মাসুসারে
দিবসের ভিন্ন ভিন্ন সময়ে প্রবন্ধ, সংবাদ,
সমালোচনা প্রভৃতি মানবন্ধরে উচ্চারিত
হয়। সভায় বক্তারা যথন বক্তৃতা করেন,
তৎসক্তে সক্তে তাহার পুনরারেতি
হয়া থাকে।

ধর্ম্ম-মহোৎসব—আজমীরে ভারত-বর্ষের ভির ভির ধর্মসম্প্রদায়ের প্রতিনিধি লইরা শারদীর পূজাবকালের সময় এক মহাসভা হইরা গিয়াছে।

রামমোহন রায় বার্ষিক উৎসব—
গত ১৮ই সেপ্টেম্বর সিটি কলেকে রাজা
রামমোহন রারের স্বরণার্থ ৬২ বার্ষিক
উৎসব হর, ভাহাতে ক্ষ্টিস শুরুদাস বন্দ্যো-

পাধ্যায় সভাপতির আসন গ্রহণ করেন এবং বাবু কালীচরণ বন্দ্যোপাধ্যার, মোহিনীমোহন চটোপাধ্যায়, বিনয়েজ্ঞ নাথ সেন, দীননাথ গাঙ্গুলী এবং পণ্ডিত শিবনাথ শান্ত্রী বক্তুতা করেন।

আশ্চর্যা সংবাদপত্র—ইহা পোষ্ট কার্ডে ছাপা হইতেছে। প্রথম সংখ্যায় এক ধানি চবি আছে।

বাঙ্গালী কমিসনর—অনরেবল রমেশ-চন্দ্র দত্ত, সি আই ই, এক বংসরের জন্ত উড়িয়ার কমিসনর নিযুক্ত হইয়াছেন।

চন্দ্রে আমেয়গিরি—দ্রবীকণ-ঘোগে চক্তমণ্ডলে প্রায় লক্ষ আগ্রেমগিরি দৃষ্ট হইরাছে।

ভূ-প্রদক্ষিণকারিণী রমণী সুমারী জে সি আকারম্যান ৭ বংসর ভ্রমণ করিয়া তিন বার পৃথিবী পুরিয়া আসিরাছেন। ইংরাজী ভগবদ্ গীতা—স্থপ্রসিদ্ধ বিবি আনী বেজাণ্ট ভগবদ্গীতা ইংরাজীতে অমুবাদ করিয়াছেন, তাহা শীন্ত প্রচারিত হইবে। এতদ্দেশীয় ক্ষেক্জন শিক্ষিত লোক দংস্কৃতের সহিত ইহার মিল দেখিয়া দিয়াছেন। পুস্তক-খানি স্থপাঠ্য হইবে, সন্দেহ নাই।

আর্শ্রেণীয় বিভ্রাট—কতকগুলি আর্শ্রেণীয় দলবদ্ধ হইয়া তুরুদ্ধের স্থাতানের নিকট দরথাত্ত দিবার আয়োজন করে, পুলিস ইহাদের বাধা দেয়, ইহাতে কনষ্টাণ্টিনোপলের রাজপথে দালা হইয়া ৮০জন আর্শ্রেণীয় হত ও আহত হইয়াছে।

क्वी-शिटिविगीत मृजा-शिमित्रश्रात्त्र বিবি কলকোহান গ্রাণ্টের মৃত্যুসংবাদে আমরা অতিশয় হঃথিত হইলাম। নাইটের বিলাতগ্যন জাতীয় ভারতসভার বঙ্গীয সম্পাদিকা ছিলেন এবং উন্নতির জন্ম অনেক যত্ন ও পরিশ্রম করিয়াছেন। ইনি ৩০বৎসর কাল সৈনিক অনাথ-নিবাসের ভারগ্রহণ করিয়া সস্তান-নির্কিশেষে অনাথ সম্ভানদিগের তত্ত্বাবধান করিয়াছিলেন। ইংরাজ ও বাঙ্গালী জাতির মধ্যে সন্তাববন্ধনের জন্মও তাঁহার যথেষ্ট চেষ্টা ছিল। ঈশ্বর তাঁহার. আত্মার কলাণ বিধান করুন।

পণ্ডিতা রমাবাই ও শারদা-সদন।

পণ্ডিতা রমা বাই মহারাধ্রীয় রাহ্মণ কল্পা এবং একজন বঙ্গীয় বিধবা।
প্রীষ্ট ধর্ম গ্রহণ করার পর তাঁহার বোদাই
প্রদেশস্থ অনেক হিন্দু বন্ধু ও বাহ্মন
স্বভাবত:ই তাঁহার প্রতি বিরাগ প্রদর্শন
করিতে আরম্ভ করেন। কেবল কতকশুলি উদারভাবাপর হিন্দু তাঁহার প্রতি
বীতপ্রদ্ধ হয়েন নাই। তিনি আমেরিকা
হইতে ভারতে প্রতাার্ভ হইলে এই
সকল সভ্ভদম মহোদম তাঁহার প্রতি যথোচিত
সন্ধান প্রদর্শন করের বাহাতে প্রীয়ান বর্মন
ইংলেও, তিনি বাহাতে প্রীয়ান বর্মন
প্রারম্ভের ভাবাপরা না হইরা অনাত্র-

দায়িক ভাবে হিন্দু রমণীগণের উন্নতি ও
মঙ্গল সাধন করিতে পারেন, তাহার
সহপায় নির্দ্ধারণে মনোযোগী হয়েন।
ইহাঁদিগের সহিত পরামর্শ ও আলোচনা
করিয়াই রমাবাই প্রথমতঃ বোম্বাই নগরে
হিন্দু বিধবাদিগের শিক্ষাবিধানার্থ "শারদাসদন" নামে একটা বিদ্যালয় স্থাপন
করেন। এই বিদ্যালয় কিছুকাল বোম্বাই
নগরে প্রতিষ্ঠিত থাকে, তৎপরে উহা পুনা
নগরে স্থানান্তরিত হয়। হিন্দু বালিকা ও
বরন্ধা বিধবাগণকে বিদ্যা ও নানা প্রকার
শিক্ষা প্রশান করা এবং তাহাদিগের
মধ্যে বাহারা স্বাম্বা বীবিকা উপার্কনে

हेक्क क, जाशांमिरशंत्र त्रहे हेक्का भूग করিতে সাহায্য করা, এই চুইটা উদ্দেশ্ত সাধনে "শারদা সদন" ক্লভসংকর হইয়া-ছিলেন। কিন্তু রমাবাই অধর্ম পরিত্যাগ করাতে পুনাবাসী হিন্দুগণের তাঁহার প্রতি সমাক আম্বা:ছিল না, স্থতরাং তাঁহাদিগের অভিপ্রায়মুসারে "শারদা-দদনের" কার্যা-প্রণালী ভরাবধান করিবার জন্ম একটা ভৰাবধায়ক বা প্রামর্শদায়ক সভা গঠিত इ**हेन** ; श्रुनात हिन्तु-ममाख-जुङ करिष्ठक बन প্রধান ব্যক্তি ঐ সভার সভ্য-পদ গ্রহণ করিলেন। প্রায় তিন বংসর কাল এই ভন্নাবধানে এবং পণ্ডিতা রমাবাইএর অধ্যক্ষতাধীনে শারদা-সদনের কার্যা স্থচাক্তরণে ও নির্বিবাদে নির্বাহিত হইবার পর, পণ্ডিভার সহিত ভ্রমাবধায়ক क्रिरशंत मंडदेवबमा বটিল। পভিভা त्रमावाहे ছाত्रीनिशत्क धर्मानिका नित्वन ना, বন্দোবন্তে পুনার অনেক হিন্দু এই "শারদা-সদনে" স্বাস্থ পরিবারভুক্ত বাল-বিধৰা 🔊 অবিবাহিতা বালিকাগণকে ভর্ত্তি করিতে স্বীকৃত হন এবং তদমুদারে কার্য্যও করেন। রমাবাই ছাত্রীগণকে ধর্ম भिका मिटान ना वटा, किन्न भावना-সদনের পুত্তকাগারে একথানি "বাইবেল" গ্রন্থ রাথিয়া দিয়াছিলেন, তাহা ছাত্রী-গণ ইচ্ছামত পাঠ করিত এবং তিনি প্রত্যত্ত ধর্মন প্রীষ্টীয়ধর্মায় বিপাসনায় প্রবন্ধ হইতেন, তথন কোন কোন ছাত্রী তাঁহার নিকট উপস্থিত থাকিত এবং উপাসনা প্রবণ করিত। তভাবধারক

স্মিতির সভাগণ এই সকল কথা প্রবন্ধ করিয়া পণ্ডিতা রমাবাইকে করিলেন যে, তিনি যেন প্রাকাগারে বাইবেল গ্রন্থ না রাখেন, এবং তাঁহার উপাসনাগারে কোন ছাত্রীকে উপস্থিত থাকিতে না দেন। রমাবাই উত্তর দিলেন যে, তিনি এই হুইটা প্রস্তাবেই সম্বতা হুইতে পারেন না। এই উত্তর পাইয়া তত্মাৰ-ধায়ক সমিভির সভাগণ পদ পরিভাগ कत्रिरणन। उपविध त्रभावाई मण्युर्वक्ररण निटकत गांविएक "भातमा-नगरनत" कार्या... নির্বাহ করিতেছেন। হিন্দু ছাত্রীগণের মধ্যে কভকতালি "সদন" পরিভাগে করিরা গিয়াছে। কিন্তু বল প্রকাশ করিয়া কিন্তা প্রণোভন দেখাইয়া কাহাকেও এছীয়ান করা রমাবাইএর উদ্দেশ্ত নহে জানিলা অধিকাংশ ছাত্রীর অভিভাবকেরা ভাহা-षिशदक हाफारेया नत्यन नारे।

আমেরিকার যে সকল মহামুক্তব ব্যক্তির অর্থসাহায়ে ''শারদা-সদন'' প্রতিত্তিত হইরাছে এবং এই আট বংসর কাল তাহার কার্য্য চলিতেছে, তাহারা সর্বক্তেদ্ধ দশ বংসর অর্থ সাহার্য্য করিতে প্রতিক্রত আছেন। তাহাদিগের অলীকারাম্থসারে আর ছই বংসর কাল অর্থ সাহায্য করিবার কথা। তৎপরে ''শারদা-সদনের'' কার্য্য নির্বাহের জন্ত কি উপার অবলম্বিত হইবে তাহা বিবেচনা করিবার ক্যা সম্প্রতি নিউইয়র্ক নগরে প্রতিত্তার রমাবাইএর বন্ধ্যণ এক সভা আহ্বান করেন, তাহাতে হিরীকৃত হইরাছে বেঃ

শারদা-সদনের কার্য্য নির্কাহের জন্ম আমে-রিকার পুনরায় চাঁদা সংগ্রহ করা হইবেক। সভায় একজন মার্কিন মহিলা দণ্ডায়মানা হইয়া বলেন যে, তিনি পুনা নগরে অবস্থিতি করিয়া শারদা-রদনের কার্য্য-প্রণালী দেখিয়া বড়ই সম্ভুষ্টা হইয়াছেন এবং তদ্বারা যে কার্য্য সম্পাদিত হইতেছে তাহা সং ও শুভফলপ্রাদ, স্বতরাং তজ্জ্য আমেরিকগণের সাহায্য করা কর্ত্তব্য।

এই মহিলার উত্তেজনায় সভাস্থ অনেকে •''শারদা-সদন'' ফণ্ডে অর্থসাহায্য করিতে বীকৃত হইরাছেন। স্থতরাং আর ছই "भाजमा-ममदनत्र" পরে আমেরিকা হইতে প্রাপ্ত সাহায্য যে বন্ধ হইবে তাহার আশকা নাই।

ধর্মশিকা সম্বন্ধে সম্পূর্ণরূপে নিরপেক থাকিয়া পণ্ডিতা রমাবাই কার্য্য করিতে থাকিলে ক্রমে পুনার হিন্দুগণ শারদা-সদনের প্রতি পূর্বকার ভায় আন্থাবান হইবেন এরূপ আশা আছে। স্বাস্থ:করণে এই শুভামুষ্ঠানের স্থায়িত্ব ও উন্নতি প্রার্থনা করি।

সহাত্মভূতি।

হৃদয়ের যে রুস্তি দ্বারা পরের স্থুও ত্ব:খ / পরতার অভাবেই মানবজগৎ অস্তঃসার-প্রভৃতি নিজ হৃদয়ে অমূভব করা যায়, সেই বৃত্তিকেই ''সহামুভূতি'' বলে। যাঁহার क्रमस्य महासूज्ञि नारे, जिनि धनी इरेट পারেন, জ্ঞানী হইতে পারেন, উচ্চপদ বা উচ্চ থ্যাতি লাভ করিতে পারেন, কিন্তু **প্রকৃত মনুষাত্ব অথবা জাতীয় জীবন লাভ ৾৾≱যায় যে, সহানুভৃতির অভাবই সে সম্দায়ের** করিতে পারেন না। যে হৃদয় আর একটা হৃদয়ের সহিত মিলিত হইতে পারে না. পরের হু:থে বিগলিত বা পরের স্থথে উচ্ছ দিত হইতে পারে না, এক কথায় যে পরকে "আপনার" করিয়া লইতে পারে না, সে হুদর অস্ত যতই প্রয়োজনে আত্মক না কেন, মানবসমাজের এক প্রধান স্থ উন্নতির মূল যে পরার্থ-পরতা, তাহা সে ধদমে উন্তত হওয়া অসম্ভব। পরার্থ-

শুত্ত হইয়া পড়ে; সেই জন্ম সহামুভূতিকে মানবজগতের এক প্রধান "জীবনী" বলা যায়।

এ জগতে যত নিষ্ঠুর ও লোমহর্ষণ হুর্যটনা ঘট্যাছে, অমুসন্ধান করিলে দেখা এক প্রধান কারণ। ধর্মবীর রেগুলস্ कार्ल्डवामी निरंगत रूट व्यमस्नी म यज्ञनाम প্রাণ পরিত্যাগ করিয়াছিলেন কেন ? যদি তাঁহার অপার্থিব সত্যনিষ্ঠা, দেবোচিত বীরত্ব বৃথিবার মত লোক কার্থেজে পাকিত, যদি সে দেবহুদয়ের সহিত তাহারা হুদ্য বিনিময় করিতে পারিত, তাহা হইলে তাঁহার নির্যাতনকারী হওরা দূরে থাকুক, সকলেই ভাঁহাকে দেবতা ভাবিরা পূজা

ক্রিড! এ দিকে, প্রস্কুর প্রপুষ্প তুলা রাজস্তানের স্থপবিত্রা সাংবীগণ অবস্ত আগুনে পুড়িয়া ছাই হইল কেন ? বিজয়ী বিপক্ষগণ যদি প্রক্লভ বীরের মত, সেই जकन महामहिमामग्री महिनामिरगत्र छम्रायत অবস্থা বুঝিতে পারিত, হিন্দু-ললনার হৃদয়ে সভীত্ব যে কি অপূর্ব রত্ন, তাহা যদি জানিতে পারিত, তাহা হইলে পদ্মিনী প্রমুখ মহিলাগণকে চিতানলে পুড়িয়া "আ্যু-রক্ষা" করিতে হইত না! সতীর প্রতি ঘূণিত নেত্রে দৃষ্টিপাত করিতে কাহারও মনে সাহস হইত না। দিন পলাশি-যুদ্ধে বিখাস্থাতকতার এক-শেষ হইয়াছিল কেন ? যদি আত্মসংযম-হীন, উচ্চু খল, ভরুণবয়ত্ব সিরাজ উদ্দৌলার প্রতি তাঁহার বন্ধু ও অভিভাবকগণ সহামু-ভৃতিশৃক্ত না হইতেন, যদি সত্য সভাই তাঁহারা

" হোবনং ধনসম্পত্তি প্রভূত্মবিবেকতা, একৈকপামনধার কিমু তত্ত চতুষ্টরম্!" এই রহদ্য বৃঝিয়া, সিরাজকে কৌশলে কুপথ হইতে প্রতিনিবৃত্ত করিতে পারি তেন, যদি মহাত্মা বিষ্ণু শৰ্মা অথবা রাজনীতিজ্ঞ কোন ও চাণকোর মত পশুত দিরাজ উদ্দোলার মন্ত্রিথে নিযুক্ত থাকিতেন, তবে হয়তো "পলাশির যুদ্ধ" বলিয়া কোনও ঘটনা বাঙ্গলার ইতিহাসে অন্ধিত হইত না, এবং পলাশি-যুদ্ধের অমুঠাতৃগণকেও মাতৃ-ভূমি-দ্রোহিতা কলকে कनिक हरेए हरे ना! এইরূপ, বীরকলম ্র লক্ষণদেন यमि

প্রতি সহায়ত্তি দান করিতে পারিজেন, তাহা হইলে তিনি সপ্তদশ মাত্রবনের ভরে — কণভঙ্গুর তৃত্ত জীবনের অন্তরেধে, "অর্গাদপি গরীয়সী" জন্মভূমিকে পরপদদিতি হইতে, দিয়া পলারন করিতেন না! আমরা করেকটা মাত্র ঘটনার উল্লেখ করিলাম; এই ক্লপ প্রত্যেক মত-বৈষ্ম্য, যুদ্ধ, বিবাদ, হত্যা প্রভৃতি সকল পাপ ও মহাপাপের ম্লাহুসন্ধান করিলে প্রধানতঃ সহায়ত্তির অভাবই লক্ষিত হইবে।

সহায়ভূতির অভাবে যেমন মানবের ষেষ, হিংসা, অহকার প্রভৃতি পাশব বৃত্তি সকল প্রবল হইয়া থাকে, সহাত্ত্তির প্রভাবে সেইরূপ দয়া, ক্ষমা, শীকার, উপচিকীর্ষা+রপ্রস্তি দেব-বৃত্তি সকল কুৰ্ত্তি পাইতে থাকে। যথন স**হাত্-**ভূতি পরের হাদয়ের চিত্র আমাদের হাদয়ের সমক্ষেপ্রতিবিশ্বিত করে, তথন আমরা পরের প্রতি আরুষ্ট না হইয়া থাকিতে পারি না। একঙ্গন দীন ছঃথীকে দেখিলে, তাহার ছিন্ন , বস্ত্র, অনশনজনিত ক্লেশ এবং ভাহার দরিজভাময়, নানা অভাবপূর্ণ জীবন, যথন আমরা নিজ श्वनद्य अञ्चय कतिएड शाहि, छथनह আমাদিগের দ্যাবৃত্তি পরিক্ট र्व । কোনও দোৰী যথন সংসারের স্থায় ব্যক্তির হৃদয়ের প্রতি আমরা গভীর পারি, যথক দোৰীৰ मृष्टि क्रिएंड দোবের "ইতিহান" বুঝিতে পারি—বর্ণন

* উপ্চিকীর্যা—অভের উপকার করিবার ইক্ষা

সহামুভূতি আমাদিগের চক্ষে অঙ্গুলি দিয়া तिथारेया तिय (य, वाक्ष घटनाभवन्भवाव দোষীর অবস্থায় সে দোষ অনেকের পক্ষেই অনিবার্য্য, তথনই আমাদের হাদরে ক্ষমা উপস্থিত হইয়া থাকে। আর **যথন সহাত্ত্**তি পরের হৃদয়ের সহিত আমাদের হৃদয় এতদুর বিনিময় করিয়া দের যে, আমরা আপনা ভূলিয়া পরের ভিতরে অমুপ্রবিষ্ট হইয়া পড়ি, নিজেদের ত্বৰ শান্তি ভূলিয়া পরের স্থথার্থে সহস্র ভ্যাগশীকার করিতে পারি, তথনই व्यामारमत्र উপচিকীর্বা বৃত্তি পরিক্ট **ट्टेश प्रामानिशक् "**পরার্থপর" করিয়া থাকে। বুদ্ধদেব, যীভঞীষ্ট, চৈতভাদেব প্রভৃতি হইতে আমাদের দেশের রাজা রামমোহন, কেশব চক্র সেন, বিভাসাগর মহাশয়---বাঁহারা এ জগতে দেবতা অথবা নর-দেবতা আখ্যা পাইয়াছেন, তাঁহারা সকলেই এই সহাত্মভৃতি বৃত্তিকে পূর্ণ माजाय कुर्डि थाश्व इरेट ि प्राहितन! তাই বলিতেছি, সংসারে খ্যাতিলাভ করিতে না পারিলেও, যিনি সহায়ভূতি বৃত্তির উপযুক্ত বিকাশ করিতে পারিবেন, তাঁহার হৃদয় সত্য সত্যই দেবমন্দির হইবে। ধাঁহার চরিত্রে সহায়ভূতি আছে, **ভাঁহার "হ**দয়"ও আছে।—সহামুভূতি**শু**ন্ত भानवदक्र "क्षप्रशीन" वला यात्र।

পারিবারিক জীবনেও "সহায়ভূতি" বিশেষ প্রেরাজনীয়। 'আমাদের বরে ঘরে ত ঝগড়া কলহ, এত ভাই ভাই ঠাই ঠাই হয়, ভ্রাতার প্রভূত ধন সম্পত্তি

থাকিতে বিধৰা ভগিনীকে পরের দাসীত করিয়া উদরালের সংস্থান করিতে হয়, এইরূপ শোচনীয় ঘটনা সকল--্যাহা আমরা সচরাচর দেখিয়া থাকি—সে সমুদায়ের এক প্রধান কারণ আমাদিগের সহামুভূতির অভাব। যে ঘরে শাশুড়ী বোঝেন "বৌমা আমার বালিকা; উহার মাতা পিতার কত স্নেহ ও আদরের ধন; আমি বৌমার সহস্র ক্রটি দেখিলেও উহাকে স্নেহশুতা রুক্ষ শাসন করিব না": আবার বৌমা মনে করেন "শাভড়ী আমার মাতার ভায় স্বেহময়ী ও ভভা-काङ्किनी, উनि योश वर्णन ও योश করেন সবই আমার মঙ্গলের জন্য---অত-এব সকল বিষয় প্রীতিকর না হুইলেও डें हात्र जातम जामात यथानाधा भाननीय," সে গৃহে অশাস্তির স্থান কোথায় ?—আমরা কেবল খাশুড়ী বধুর উদাহরণ দেখাইলাম --- (य घरत मकलारे मकरमत्र ह्नारग्र প্রতি এতটা দৃষ্টি করেন, সে ঘরে কথনই অনৈক্য আসিতে পারে না; অথচ কেহ কাহারও গলগ্রহ হইয়া নিজের ভরে অন্য কাহাকেও কাতর করিতে চাহিবে না। সহামুভাবক তাহা করিতে পারেন না।

এইখানে একটা কথা একটু বিশেষ
করিয়া বলা আবশ্রক।—প্রত্যেক স্বামী
ন্ত্রীতে সম্পূর্ণ মহামুভূতি না হইলে
বিবাহের প্রধান উদ্দেশ্ত সফল হর না।
দম্পতীর মধ্যে একজন অপরের স্থণ, ছঃখ,
অবস্থা, উপযোগিতা সম্পূর্ণয়পে হাদরক্ষ
করিতে না পারিলে, কার্যকঃ প্রম্পরের

দাহায্য না করিলে, কখনই তাঁহারা "এক-হৃদর" হইতে পারেন না। দম্পতী "এক-क्षमग्र" इंटेंटिंज ना भाजित्म विवादह ऋष শাস্তি দুরে থাকুক, সে বিবাহ কেবল বিজ্মনা হইয়া উঠে। স্ত্রীর সামান্ত ক্রটিতে স্বামীর কর্মল শাসন,অথবা দরিত্র স্বামীকে গ্রহনা পরিচ্ছদের অস্ত স্ত্রীর উৎপীড়ন. निष्कत विवामिणांत क्य यामीरक अग-গ্রন্থ করা, এ সকল ঘটনা নিতান্তই সহামু-ভূতির অভাববশতঃ সংঘটিত হইয়া থাকে। যাহাহউক, একজন পরের নিকট হইতে সহায়ভূতি পাইলে মন তাহাকে কড "আপনার জিনিস" মনে করে, আর যাঁহা-দিগের কেবল দেহমাত্র প্রভেদ, তাঁহা-দিগের সহযোগিতা ও সাহচর্য্যে কি পরি-মাণে সহাযুভূতি আবশুক, সে কথা যাহার হৃদয় আছে, তিনি সহজেই বুঝিতে পারিবেন।

আমাদের সামাজিক জীবনও সহায়ভৃতি ব্যতীত চলে না। সহায়্ভৃতি মানবজগতের মৃল বন্ধন; তাই সামাজিক
মানবের সহায়ভৃতির অভাব হইলেই
সমাজে মতবৈষমা, বিবাদ, দলাদলি,
হত্যা প্রভৃতি নীচতা ও মহাপাপ সকল
অফ্টিত হইয়া থাকে। সেই জ্লুই সহায়ভৃতির অভাব হইলে সমাজ—মানব-সমাজ
পিলাচ-সমাজরপে প্রতীয়মান হয়। তাই
সহায়ভৃতি বৃত্তি উপযুক্তরপে বিকাশ
করিয়া, সামাজিক জীবন গঠন করা
প্রত্যেক মানবের অবস্তু কর্তব্য। বে

দিন সামাজিক নরনারীসপের সহায়ভৃতি

वृत्ति नमाक विकाम नाज कतिरव, तन विम সামাজিক সকল অনৈক্য দূর হইরা পর-न्भव भवन्भरवव जाठा खिशनी रहेर्यन। य मिन "जक" कतिवात जानात दक्र কাহাকে বিঁজ্ঞপ করিবে না; কেহ काहारक शानि मिरव ना ; काहांत्र मन দামাগ্ররপ ব্যথিত হয়, এ রক্ম কাজ কেছই করিতে পারিবে না। সে দিন हिংमा जुलिया, त्वव जुलिया, खर्कात जुलिया मकलाहे मकलात एडाकाडकी स्हेर्त; नकत्वहे नकनाक स्त्रह ममछ। कतिरव ; नकलारे नकलात विचय श्रह९ **रहेर्य**! যে দিন আমাদের সহাত্তভূতি সম্পূর্ণকপে পরিক্ট इইবে, সেই দিনই ভগবান্ আমাদের এই মরজগৎকে এইরূপ অমরা-वजी कतिरवन ! स्मंह छा निरनत डिस्मर्स পারিলেই-অমাদের তপস্থা করিতে সহামুভূতি বৃত্তিকে বিক্সিত ক্ৰমশ: করিতে পারিলেই আমাদের মানবজন্ম সার্থক হইবে।

এই থানে আর একটা কথা না বলিয়া
এ প্রবন্ধ শেষ করিতে পারি না। আমাদের যত রকম মনোর্ত্তি ও হৃদয়ের শক্তি
আছে, ভারপরতা তাহাদের সকলের
উপরে। এই ভারপরতার অপর নামবিবেকশক্তি। তাই বলিতেহি, সহাম্ভৃতি
প্রভৃতি উৎকৃষ্ট বৃত্তিও ভারপরতার অধীনে
পরিচালিত হইলেই তাহার কলু, বর্ণার্থ
ভক্তর হয়। দয়্য, বাভিচারী, হত্যাকারী
প্রভৃতি সমালবিপ্লবকারক মহাপানীদিপের প্রতি আমরা যতই সহাম্ভৃতি

করিতে চাহি না কেন, স্থায়পরতার দিকে
চাহিলে বৃঝিতে পারি যে,তাহারা স্থাসিত
না হইলে সমাজ টিকে না। তাই স্থায়পরতার অনুরোধে, (সমাজের কল্যাণার্থে)
সেই সকল ছর্ তিদিগের যথোচিত শাস্তি
বিধান করা সামাজিক মানবের অবশ্
কর্ত্তবা। কিন্তু ক্রোধ, হিংসা প্রভৃতি
নিরুষ্ট প্রবৃত্তির উত্তেজনায় কাহাকেও
শাসন করা সহায়ভৃতিবিরুদ্ধ কার্যা।
অতএব সমাজের মঙ্গলের জন্ম প্রত্যেক
শাপীকে পাণের পথ হইতে নিরুত্ত করাই
মানবের অবশ্ কর্ত্তবা। এই শাস্তিই
পাপীর প্রকৃত শান্তি, সে জন্ম পাপীর
চিত্তত্তি ও আত্মসংযমের জন্ম যে কোন
দণ্ড উপরুক্ত বোধ হয়, তাহাই করা

স্থায়সঙ্গত কার্য্য। অথচ এরপ কার্য্যে
আমাদের সহাত্মভূতি বৃত্তিও কোনও রূপে
ক্ষতিগ্রস্ত হইতে পারিবে না।

সহাস্থভৃতি বৃত্তির যথোচিত বিকাশ
মানবের ব্যক্তিগত উন্নতির মূল; গার্হস্য
উন্নতির মূল; বন্ধতালাভের মূল; দাম্পত্য
প্রেমের মূল; জাতীয় জীবন ওুসামাজিক
একতা লাভেরও মূল। ভগবানের ক্রপায়
আমরা এই দেবোচিত বৃত্তি পাইয়াছি,
এজন্ম তাঁহার চরণে সহস্র নমস্কার। প্রিয়
পাঠিকা ভগিনি! তুমি যদি এই অমূল্য
রন্ধের উপযুক্ত ব্যবহার করিতে পার, তাহা
হইলেই তোমার নারী-জন্ম সার্থক
হইবে।

' শ্রীমা।

কুদৃষ্টি দয়ন্ধে কুসংস্কার।

কোন কোন প্রথ বা স্ত্রীলোকের দৃষ্টির এমনি একটা শক্তি আছে যে, সে তদ্বারা যে কোন লোকের, তাহার অভীক্ষিত নানারপ অমঙ্গল সাধন করিতে পারে। এইরপ একটা বিশ্বাস অতি প্রাচীন কাল হইতে মানবজাতির মধ্যে প্রচলিত আছে। প্রাচীন ক্যাল্ডিয়া ও আসিরিয়া রাজ্যে এই বিশ্বাস সর্ব্ধত প্রচলিত ছিল। এই বিশ্বাস সর্ব্ধত প্রচলিত বিশ্বাস কর্বত প্রত্বিত ক্ষাত্রির ক্ষাত্রহণের সাত শত বংসর পূর্বে আসিট্রির দেশের লোকেরা মুদৃষ্টির কল হইতে রক্ষা পাইবার ক্ষাত্র উচ্চারণ করিত। প্রাচীন মিসরবাসী-

দিগের মধ্যেও ঐ প্রথা প্রচলিত ছিল।
পারশুবাসীদিগের ধর্মগ্রেছে কুদৃষ্টি সম্বন্ধে
আনক কথা পাওয়া যায়। ইহাঁদিগের
বিখাস যে, কুদৃষ্টিশালী ব্যক্তি দৃষ্টির বলে
বৃক্ষ লতাদির বৃদ্ধি সক্তিত করিতে পারে,
নদীর স্রোত রোধ করিতে পারে এবং
স্থাক ফলকে শুদ্ধ করিয়া দিতে পারে।
বাইবেল গ্রন্থে কুদৃষ্টির উল্লেখ দেখা যায়।
প্রোচীন গ্রীক ও রোমীর প্রস্থকারদিগের
রচিত নানা প্রেকে ইহার বর্ণনা আচে।
প্রিনি বলেন, প্রাচীন সিধিয়া ও ইলিরিয়া
দেশে আনক কুদৃষ্টিশালিনী রমণা দেখা

সময় কুদৃষ্টির উল্লেখ করিয়াছেন। খ্রীষ্টায় কিন্তু তাহার প্রকৃত তথ্য সম্বন্ধে কোন মত প্রাথমিক কালে ধর্মবাজকের। প্রকাশ করিয়া বান নাই।

যাইত। এটি একবার উপদেশ দিবার কৃদৃষ্টি সম্বন্ধে নানা আলোচনা করিতেন,

পশুগণের চিকিৎদা-শক্তি।

অনেক পশু স্বভাবসিদ্ধ সংস্কার অন্ধুসারে আপ্নারাই আপ্নাদিগের চিকিৎসক। বানর আহত হইলে ক্তস্থান হইতে রক্তনির্গম বন্ধ করিবার জন্ম সেই স্থানটা অপর হস্ত দারা চাপিয়া ধরে এবং তৎপরে কতকণ্ডশি তৃণ ও বৃক্ষপত্ৰ নিশিষ্ট করিয়া তাহা প্রলেপের আকারে ক্ষত-ন্তানের উপর সংলগ্ন করিয়া দেয়। যায়, যথন দৈবক্রমে কোন পশুর হাত বা পদ আহত হইয়া প্রায় অক্ছিয়া বস্থা প্রাপ্ত হয়, তথন সেইদংল্মাংশটুকু দে দস্ত দারা ছিন্ন করিয়া অন্ত্র-চিকিৎ-সকের কার্য্য করিয়া থাকে। একদা একটা কুরুরকে একটা বিষধর দর্প দংশন कतिप्राहित। कूकृत मधे ६१वात পत्तिहे পুছরিণীর জলে দট হান ক্রমাগত ভুৱাইতে লাগিল। সে তিন দিবদ কাল এই প্রক্রিয়া করিয়া দর্পাঘাতের ফল হইতে মুক্ত হইল। একদা একটা টেরিয়ার-জাতীয় কুরুর দক্ষিণ চক্ষে আঘাত প্রাপ্ত হয়। চকুরোগ হইলে চকে বাহাতে আলোক না লাগিতে পারে,

মানব চিকিৎসক এরূপ ব্যবস্থা করেন। দেখা গিয়াছিল, যত দিন এই কুকুরচীর চকুর অমুথ ছিল, ততদিন সে বীযু স্বভাবজাত সংস্থার অহুসারে একটা অন্ধকারময় স্থানে বাদ করিত। চক্ষুরোগ হইলে কুরুরেরা থাবায় নিষ্ঠীবন (থুথু) মাথাইয়া তাহা চক্ষে লাগাইয়া দেয়, ইহাতে তাহাদের অনেক চকুরোগ शास्य कींग ञादतांशा इंदेग्रा यात्र। জ্মিলে পশুগণ কৰ্দ্ম কিম্বা धुनाग्र শ্রীর বুটাইতে থাকে, ইহাতে की छेमुक इया अत इटेटन কোন পশু জল পান বা জলে শরীর নিম্জ্রিত করিয়া স্থত হয়। কোন কোন পভর, বিশেষতঃ কুকুর বিড়ালের অজীর্ রোগ হইলে তাহারা কোন বিশেষজাতীয় তুণ ভক্ষণ করিয়া আরোগ্য লাভ করে। গো ছাগাদি পত অস্তু বোধ করিলে কোন বিশেষজাতীয় তৃণাদি ভক্ষণ করিয়া রোগমুক্ত হব। বাত রোগ হইলে প্রগণ যতক্ষণ সম্ভব त्रोद्ध **अविश्**ठि कवित्रा था**रक**।

পশুদিগের পশ্চাদ্ফিশক্তি।

কতকগুলি পশুর উভয় সন্মুখ-দৃষ্টি ও ও পশ্চাদৃষ্টির শক্তি আছে। পশ্চাদ্দিকে মুখ না ফিরাইয়া শশক পশ্চাদর্তী বস্ত সকল স্পষ্ট দেখিতে পায়। ইহাদিগের চকু যেরূপ দীর্ঘ ও মুথের যে স্থানে অবস্থিত, তাহাতে ইহাদিগের এই ক্ষমতা থাকা আশ্চর্য্যের কথা নহে। শশকের পশ্চাদৃষ্টির ক্ষমতা আছে বলিয়া শশক শিকার করা বড়ই কঠিন। ঘোটকেরও পশ্চাদৃষ্টির ক্ষমতা আছে। ঘোড়ার যে পশ্চাদৃষ্টির ক্ষমতা আছে। ঘোড়ার যে

বেশ প্রমাণিত হইবে। অনেকেই দেখিয়াছেন, কোচমান্ বোড়াকে চাবুক মারিবার
জন্ম যেমন চাবুক উত্তোলন করে, অমনি
প্রহারিত হইবার পূর্কেই ঘোড়া ক্রতক্তর
পদবিক্ষেপে দৌড়িতে আরম্ভ করে।
অমুমান বা অন্ম কোন উপায়ে ঘোড়া
কোচমানের হস্তস্থিত উত্তোলিত চাবুকের
বিষয় জানিতে পারে না; তাহার পশ্চাদ্টিবলেই জানিতে পারে । জিরাফ্নামক
পশুরও এই শক্তি আছে। অনেকানেক
কীট পতক্ষেরও এই ক্ষমতা দেখা যায়।

ওজোন।

অক্সিজন (অমুজন) বাম্প জীবগণের পক্ষে স্বাস্থ্যকর ও শরীরের হিতকারী। ওজোননামক বাস্প অক্রিজেনের পরি-শোধিত ও সৃগাতর আকার। ইহাকে বিশুদ্ধ অক্যিজন বলিলেও বলা যে দেশের বায়ুতে ওজোনের অধিক মাত্রায় থাকে, তথাকার বায়্ ফুলের গাছ হইতে ষ্ণতীব স্বাস্থ্যপ্রদ। যথেষ্ট পরিমাণে ওজোন নিঃস্থত হইয়া থাকে। যথন ফুল ফোটে, তথন ফুলের গাছ হইতে অধিকতর পরিমাণে ওজোন हरगादबादशत निःश्कृ ' रहा। নানা কোন ^{ধ্}কান ঋতুতে যথন প্লাম্বর ও উপত্যকা পুষ্পে আবৃত হইয়া ৰায়, দেখা যায় ভত্তকালে সেই সেই স্থানে রোগের প্রাহ্রতাব অপেক্ষাকৃত ব্রাস্থা পাকে। কোন কোন বিশেষজাতীয় বৃক্ষ অস্তাস্ত বৃক্ষ অপেক্ষা অধিকতর
পরিমাণে ওজোন্ উৎপাদক। ওক্ বৃক্ষ
ওজোন্-উৎপাদক,কিন্তু পাইন্ বৃক্ষ ওজোন্উৎপাদক নহে। আমাদের দেশে নিম
অর্থাদি বৃক্ষ ওজোন্-উৎপাদিকা
শক্তি থ্ব কম। বজ্ঞাঘাত হইবার পর
আকাশমণ্ডলে ওজোনের আধিক্য হইয়া
থাকে। কিন্তু কোন ফুলের গাছে যথন
অধিক পরিমাণে ফুল ফুটিন্তে থাকে, তথন
সেই ফুলের গুদ্ধুটীর ওজোন্-উৎপাদিকা
শক্তি যেমন অধিক, তেমন আর কিছুরই
নহে।

ছোট।

ছোট নারী ছোট নর, ভালবাসি নিরস্তর, ছোট হ'তে সাধ সদা মনে, ছোট বালকের হাসি, সদা বড় ভালবাসি, মিশিতে চাই না বড় সনে। ছোট তারা ছোট চাঁদ, দেখিতে সদাই সাধ, ছোট ধর ছোট বাড়ী চাই। ছোট গাছ ছোট ফল, ছোট তড়াগের জল, ছোট ফুলে পরাণ জুড়াই। ছোট মেঘ ছোট বায়ু, চাই অতি ছোট আয়ু, ম্রতে না হইব অমর। ছোট ঘড়ি ছোট তরি, সদাই আদর করি, ছোট কথা জুড়ায় অন্তর। ছোট ভূষা ছোট বেশ, ভালবাসি ছোট দেশ, ছোট জন-সমাজ আপন; ছোট ধ্বনি ছোট মণি, ভালবাসি ছোট ধনী, ছোটই ছোটর স্থ-ধন।

বড় চাঁদ রাহু গ্রাসে, ফণী কুত্ত বড় আশে, (১) 🔩 বড় বায়ু আয়ু নাশ করে, বড় গাছ ভেঙ্গে পড়ে, বড় ঘরে উই চরে, বড় ধনী ধন না বিতরে। ছোট ছোট গম ধান,থেমে সদা বাঁচে প্ৰাৰ, বড় ফল কে বা কত পায় ? ছোট পাথী পোষ মানে, যা বল তাছাই ওনে, বড় পাখী পোষা বড় দায়। বড় সাগরের জল, ওধু কুমীরের বল, অসমর্থ পিপাসাবারণে, সিম্লের বড় ফ্লে, ভ্রমর কি কভু ব্লে, ছোট युँ हे कार्श मना मन्ति। বড়র সে দয়া মায়া, আকাশের মেমছায়া, मूह्र्छ मूह्र्छ चूद्र किद्र। ছোট বড় মধুময়, যা থাকে তা সদা বর, ছোট থেকে মরিব অচিরে। (১) মধু আশার কুশ চাটিয়া সর্পের **ছই জিহা**

বেথুন-বিদ্যালয় প্রতিষ্ঠা-কালে বেথুন সাহেবের বক্তৃতা।

ट्ट्रेग! हिल।

১৮৪৯ সালের ৭ই মে "হিন্দু কিমেল কুল" নামে বেগুন কুল প্রথম থোলা হয়। এই উপলক্ষে বিদ্যালয়ের প্রতিষ্ঠাতা মাননীয় , মহায়া জে ই ডি বেগুন রাজা (তংকালে বাবু) দক্ষিণারঞ্জন মুখোপাধ্যায়ের উদ্যান-ভবনে ক্লেম্বন্ধু ভাষায় যে স্কার বক্তৃতা করেন, তাহা চিরম্মরণীয়। আমরা বাঙ্গালার তাহার সারভাগ **প্রকাশ** করিতেছি, যাহাদের স্থবিধা হুম্ব **তাহারা,** ইংরাজী মূল বক্তা পাঠ ক্**মিয়া পূর্ণ** ভৃপ্তি লাভ করিবেন। "বন্ধুগণ! আলু আমরা বে তত অনুসীন

উপলক্ষে এথানে সন্মিলিত হইয়াছি,তৎসম্বন্ধে আমি কিছু বলিব বলিয়া সকলেই আশা করিতেছেন। আমাদের সকলেরই পক্ষে আজিকার দিন সামান্ত আনন্দ ও উল্লাসের দিন নয়। আপনারা পিতৃ। আপনাদের প্রিয়তমা কন্মাদিগের ভাবী উন্নতির আশা এই নব বিভাগয় উদ্দীপন করিতেছে. ইহাতে আপনাদের হৃদয়ে আনন্দাচ্ছাদ হওয়া স্বাভাবিক। আমার পক্ষেও আজিকার **मिन व**ण् **पानत्म**त्र मिन, क्निना এই **মহৎ কার্য্য সাধনে**র যন্ত্রস্করপ হইয়া আমি বর্ড উচ্চ অধিকার লাভ করিয়াছি। স্ত্রীমান ও সন্তানবান হইলে মানুষের যে সৌভাগ্য হয়,আমি তাহাতে বঞ্চিত; তথাপি আমার চতুৰ্দ্দিকস্থ বন্ধুগণের আনন্দবৰ্দ্ধনাৰ্থ কিছ করিতে পারিতেছি, ইহাতেই পিত্রদয়ের আনন্দ অমুভব করিতেছি এবং অচিরে আরও অনেক লোক আপনাদের দৃষ্টাস্তের অমুসরণ করিয়া এথানে বালিকাদিগকে প্রেরণ করিবেন, তাঁহাদেরও আনন্দের হেডু হঁইব ভাবিয়া আপনাকে মানিতেছি।

যে কার্যাপ্রণালীর বিকাশ এথানে আপনারা দেথিতেছেন, তাহা লঘুভাবে করিত বা ব্যস্ততা সহকারে গৃহীত হয় নাই। আনি যথন ইংলণ্ডে ছিলাম, এ দেশের শিক্ষা-বিবরণ, বিশেষতঃ গমর্ণমেণ্ট কুলের ছারুদিগের স্থশিক্ষা-বিবরণ আমার হস্তগর্ত হয়। স্কোড্রাগ্যক্রমে গ্রগমেন্ট কুলসমূহের প্রধান কর্ত্বভার এখন আমার হস্তে। এই সকল শিক্ষা-বিবরণ

পাঠে আমার মনে এই চিস্তার উদর হয় যে, যে দেশের যুবকেরা ত্রিশ বর্ষের শিক্ষার স্থফল প্রদর্শন কাল করিয়া আদিতেছে, সে দেশের অপ-রার্দ্ধ অর্থাৎ স্ত্রীলোকদিগের স্থানিকার জন্ম চেষ্টা করিবার সময় আসিয়াছে। স্থানিকার হিতকর প্রভাব যথন আপনারা অমুভব করিয়াছেন, তথন আপনাদের জীবনসঙ্গিনীদিগকে অন্ততঃ পরিমাণে স্থকটি ও স্থবৃদ্ধিসম্পন্ন করিতে আপনাদের আকাজ্ঞা হইবে, ইহা আমার স্থির বিশাস। স্থশিক্ষিত রমণীগণের শোভন-গুণাবলী, স্থকুমার-বিভাবতা এবং গৃহকার্য্যনৈপুণ্য দারা পারিবারিক জীবনের স্থথ যে কত অনস্ত গুণে বিদ্ধিত তাহা আপনারা ক্রে পারিবেন। আপনারা ভিন্ন ভিন্ন জাতির ইতিহাদ অনুশীলন করিলে এই দিদ্ধান্তে উপনীত হইবেন বে. বে জাতির মধ্যে দ্রীলোকের প্রতি যত সন্মাননা, স্ত্রী-লোকের জ্ঞান শিক্ষা যত অধিক, সমাজের রীতি চরিত্র রাচির উপরে স্ত্রীলোকের প্রভাববিস্তারের যত অধিক স্থবিধা, সভাতাংশে সেই জাতি তত উন্নত। আমি আরও সভ্য অমোঘ সভা। বিবেচনা করিলাম যে, আপনারা স্ত্রী-শিক্ষা विषय এक है हिन्छ। कतिलाहे व्यनांत्रारम বুঝিতে পারিবেন যে, সম্ভানের শিক্ষা বিষয়ে মাতার কর্ত্তব্য কত বহুল ও গুরুতর 🔭 🛊 মাতার হত্তে কুদ্র শিশু শ্বভাবত: ন্যন্ত, মাতার সাহায্যেই তাহার সমুদর শারীরিক

অভাব মোচন হয়। সেই শিশুর বৃদ্ধিবৃদ্ধির যথন প্রথম উন্মের হয়, যথন মৃহর্টের যথন প্রথম উন্মের হয়, যথন মৃহর্টের নৃতন দৃশু, নৃতন জ্ঞান, নৃতন ভাব
শ্রেণীবদ্ধ হইয়া তাহার স্কুমার মনের নিকট
উপস্থিত হয়, তথন সেই মাতার সাহায্য
তাহার পক্ষে কত প্রয়োজনীয় ! শিক্ষিত
মাতা সন্তানের বৃদ্ধি, রুচি ও কল্পনা স্থবিশ্বিত প্রতি আপনাদের স্ত্রীলোকদিগের অবরেশ্ব

বৃত্তির ষধন প্রথম উদ্মেষ হয়, য়য়ন মুহুর্তের নৃতন দৃশ্র, নৃতন জ্ঞান, নৃতন ভাব প্রেণীবদ্ধ হয়য় তাহার স্কুমার মনের নিকট উপস্থিত হয়, তথন সেই মাতার সাহাযা তাহার পক্ষে কত প্রয়োজনীয়! শিক্ষিত মাতা সন্তানের বৃদ্ধি, রুচি ও কয়ন। স্থানির গঠন করিতে কেমন সমর্থ! মুমুয়্যাকারে গঠন করিতে কেমন সমর্থ! অতএব নারী-চরিত্রের উপর যে জাতীয় চরিত্র নির্ভর করিবে, তাহাতে আশ্রুর্যা কি? কেবল শৈশবে নয়—জীবনের সকল অবস্থাতেই নারী-প্রভাব অপরিহার্যা। এই প্রভাব যাহাতে ভায়, ধর্ম এবং মুম্বাত্রের সহায় হয়ৢ, তৎপক্ষে চিরদিন প্রাণপণে চেষ্টা করিতে হইবে।

ভারতভূমিতে পদার্পণ করিবার পুর্বেণ এই সকল চিন্তা আমার মনকে অধিকার করিয়াছিল এবং এথানে আসিয়া অবধি আমি যতদ্র শিক্ষা ও আলোচনা করিতে সমর্থ হইয়াছি, তাহাত্তে এ সকল চিন্তা অমূলক নর বৃঞ্জিয়াছি। বঙ্গদেশে এই-রূপ মত স্বতঃ উংপন্ন হইতেছে। আমি শুনিয়াছি, ইতিমধ্যে বঙ্গীয় পুরুষগণ স্ত্রী, ভগ্নী ও কন্তাগণকে শিক্ষাদানে প্রস্তুত হইয়াছেন। এ সকল ব্যক্তিগত দৃষ্টান্ত বটে এবং কোন কোন স্থলে গোপনে ভূরি করিয়া কার্য্য সম্পন্ন করিতে হইতেছে, ভাহাও ধগার্ধ। বে কোন দেশে হউক সমগ্র আতির বন্ধমূল সংস্কারের বিক্লেজ কোনও কার্য্য করা সহজ্ব নহে। বিশেষতঃ

নীতির প্রতি আপনাদিগের আত্যবিক অমুরাগ। তথাণি এ দেশে ব্রীশিক্ষা বিষয়ে বে নুতন চিন্তা-ল্রোতের পরিচর পাওয়া गहिट्टाइ, हेरी छेरमार ও आनमन्द्रहक, সন্দেহ নাই। আর একটা আশার কথা এই, আপনাদের স্ত্রীলোকদিগের অবরোধ-প্রথা ও অজ্ঞান অবস্থা আপনাদিগের অতি প্রাচীন জাতীয় ব্যবস্থার অহুমোদিত নছে। আমার বিখাদ, জেতা মুদলমানদিগের অমুকরণে এই প্রথা প্রবর্ত্তিত হইমারে। আমি আপনাদিগের প্রাচীন পুরাণ কাঁবা প্রভৃতির ইংরাজী অমুবাদ যতদুর পাঠ করিয়া দেখিয়াছি, তাহাতে বৃ**মিয়াছি বে,** আপনাদের ঋষিকত্যাগণের ও রাক্তমহিবী-যথেষ্ট স্বাধীনতা ছিল এবং मिरशत তাঁহারা শাস্ত্রবিভা ও নানাবিধ কলা-বিখ্যায় বিভূষিতা ছিলেন, কিন্তু তাঁহাদের পরবর্ত্তিনী মহিলাগণ সে সকল গুণে এক-কালে বঞ্চিত। লীলাবতীর গল কভদুর বিশ্বাস-যোগ্য আমি স্লানি না। এরূপ ব্য**ক্তি** व्यामी ছिल्मन कि ना, अथवा (व मक्न छेक গণিতশান্তের সহিত তাঁহার নাম সংশিষ্ট. সে গুলি বস্তুতঃ তাঁহার রচিত কিয়া তাঁহার ব্যবহারার্থ সৃষ্ণিত কি না, তাহাও আমি জানি না। কিন্তু আমার নিশ্চর বিশ্বাস যে, এ গল্পের কোন মূল না থাকিলে এবং উচ্চ গণিতশিকা স্ত্রীক্ষেকের পর্কে অসকত বা অসম্ভব হইলে প্তৰ-সম্ভব এরপ গল উদ্বাবনে কখনই সাহসী হইতেন না। অতএব আমি আশা করিছে পারি বে, স্ত্রীলোকদিগকে বর্ত্তমান হুর্গতি হইতে প্রাচীন উন্নত অবস্থায় লইয়া যাইবার জ্বন্ত আমি যে প্রস্তাব করিতেছি, আপনারা আনন্দের সহিত তাহা গ্রহণ করিবেন।

আমার অভিপ্রায় যে সিদ্ধ হইবে. তৎ-পক্ষে আশা করিবার যথেষ্ট কারণ থাকিলেও এরপ গুরুতর বিষয়ে পঘুভাবে হস্তক্ষেপ করা উচিত নহে. ইহা আমি প্রথম হইতে অমুভব করিয়াছিলাম। আমার বড ভন্ন যে. প্রকাশুভাবে কার্য্যারম্ভ করিয়া मिंग जाहात नापाज हम, जाहा हंहेला त्य পরিমাণে কার্যাসিদ্ধির আশা করিতেছি সেই পরিমাণে নিরাশাগ্রস্ত হইতে হইবে। ভারতবর্ষে স্ত্রীশিক্ষার উন্নতিসাধন আর সমগ্র লোকমগুলীর উন্নতিসাধন কথা। এরপ কার্যা করিতে গিয়া একটা ভ্রম হইলে অথবা অবিবেচনা ও বাস্ততা পুর্বক একটা কার্য্য করিলে তন্ধারা অভিপ্রায়দিদ্ধির অনেক ব্যাঘাত ও প্রতি-বন্ধক ঘটিবে। অতএব প্রকৃত প্রস্তাবে কার্য্যারম্ভ করিবার পূর্ব্বে সমস্ত বিষয় ভাল করিয়া বিবেচনা করিবার জন্ম অন্ততঃ এক বৎসর অপেকা করা কর্ত্তবা বলিয়া স্থির করিয়াছিলাম। ১৮৪৮ সালের এপ্রিল মাসে কলিকাতায় প্রথম পদার্পণ করি। ১৮৪৯ সালের এপ্রিল মাসে, এখন যে সকল বন্ধু আমাকে খেরিয়া বসিয়াছেন. **डीशांपत व्या**क्षा करत्रक ब्रान्त्र নিকট আমার অভিপ্রায় 🕫 नিয়া বলি। ইহা বা বাহল্য যে, যে মহিলা বালিকাদিগের শিক্ষাভার গ্রহণ করিতে বাইতেছেন.

ইতিপুর্বেই আমি তাঁহার সাহায্যের অঙ্গীকার পাইয়াছি।

এই বিভালয়টি সাক্ষাৎ বা পরোক্ষ ভাবে গবর্ণমেন্টের সহিত সংস্পষ্ট করিবার চেষ্টা করা হয় নাই, ইহাও অনেকে ভাবিয়া চিন্তিয়া। ইহাতে কিছু ক্ষতি হইল বটে, কিন্তু তদপেকা লাভের আশা আছে। আমার বিবেচনায় কার্যাসিদ্ধির পকে সত্বতা নিতাম আবশুক। বিশম্ব বা বাধার কোনও কারণ হইলে যাঁহারা আমার সহিত একপ্রাণ হইয়া এ কার্য্যে প্রবৃত্ত হইয়াছেন. তাঁহাদের উৎসাহভঙ্গের সম্ভাবনা। বিত্যালয়কে গ্বর্থেণ্ট বিত্যালয়রূপে প্রতিষ্ঠিত করিতে হইলে অনেক লেখা-লেখি ও তর্ক বিতর্কের হাত এড়াইতে পারা ষাইত না—হয়ত ইংল্ডীয় কর্জ-পক্ষদিগের মত গ্রহণ করিতে হইত। ইহাতে আমার স্বাধীন ভাবে কাৰ্য্য করিবার ইচ্ছা কতকটা থর্ক করিতে হইত, বিশেষতঃ সর্ব্বাপেক্ষা ভয়ের কারণ যে কালবিলম্ব, তাহা ঘটিত। স্ত্ৰীশিক্ষালয় একটা নৃতন ব্যাপার, গ্বর্ণমেন্টের অমু-মোদিত করিতে হইলে ইহার সফলতার পক্ষে নিশ্চিত প্রমাণ দেখাইতে হইত। গ্রবর্ণমেন্টের সহিত সংস্রবে যে পরিমাণে লাভ হইবে, ভদপেক্ষা অস্থবিধা ও ক্ষতি অধিক, এই ভয় করিয়াই আমি তাহার চেষ্টা করি নাই। পক্ষাস্তরে আমি একজন 💌 পদস্থ লোক এবং গবর্ণমেণ্ট স্থলসমূহের কর্ত্তা, ইহাতে আমার সংস্থাপিত বিভালয়

বে সম্রাস্ত বলিয়া পণ্য ও স্থায়ী হইবে, আমার স্থপক্ষগণ অর্বশুই তাহা বিশ্বাস করিতে পারেন। ष्यात्र এकी विषय ष्यामाटक উত্তমরূপে ও অতি সতর্কভাবে বিবেচনা করিতে र्हेब्राছिन। विश्वानस्यत्र विनिष्ठे ७ द्वाबी উর্তির জন্ত আমার দক্ল ছাত্রী সম্রাস্ত-পরিবারস্থ হওয়া আবশুক। কিন্তু আমার मत्न এই अन्न उठिन, याहाता हिन्सू नमास्कत त्नजा विनया भवनीय, आमि अधरमामारमरे তাঁহাদের সহায়তা গ্রহণ করিব কি না ? রাজা রাধাকান্ত দেব, রাজা কালীরুষ্ণ. আন্ততোষ দেব এবং হিন্দুকলেজে আমার সহযোগী প্রসন্নকুমার ঠাকুর ও রসময় অনেকেই স্ত্রী-শিক্ষার ইইাদের मखं. বিরোধী হুইবেন না; তথাপি অনেক বিবেচনার পর স্থির করিলাম যে, যাহাদের স্হিত জাশিকা বিব্যে আমার কথোপকথন হয়, তাহাদিগেরই আত্মীয় পরিবার হইতে আমার প্রথম ছাত্রীদল সংগ্রহ করা যুক্তিসঙ্গত।

হিল্সমাজের নেতারা আশা করিতে পারেন, তাঁহারা যে বিভালরের প্রতিপারেন, তাঁহারা যে বিভালরের প্রতিপারক হইবেন, তাহাতে গবর্ণমেণ্টের রীতিমত অন্থমোদন থাকা আবশুক। যে কালবিলম্ব এড়াইতে আমার এত প্রয়াস, ইহাতে তাহাই ঘটিবার সম্ভাবনা। আরও ভাবিলাম, ফাহারা নিজ গৃহ-পরিবারে স্তীশিক্ষার ভারবহনে সমর্থ, তাঁহারা গৃহশিক্ষারই পক্ষণাতা ইইবেন। দেশের প্রাচীন অপেক্ষা বর্তমান কালের অবস্থা অনেক ভিন্ন, ইহাতে তাঁহাদের প্রতিকৃদ্য

বুক্তির অনেক গুলিতে হয়ত আমাকে সায় দিতে হইত। উপযুক্ত শিক্ষয়িত্রীর অভাবে বঙ্গদেশে গৃহলিকা বিষ্ঠতভাবে প্রচলিত হওয়া অনেক দুরের কথা, এই জন্ত অপেক্ষাকৃত হীনাবন্থ লোকদিগের উপকারার্থ দেশহিতৈষী ধনীদিগের কিছু ত্যাগন্থীকার করা আবশুক। আমার আর একটা আলহা হইয়াছিল যে. এই সকল সম্ভ্রান্ত ব্যক্তি আপনাদের পদের দায়িত অফুভব করিয়া আপনাদিগের দিগের ও সমাজন্ত লোকদিগের সহিত আমার প্রস্তাব লইয়া আলোচনা করিবে**ন**। সে স্থলে আমার **যাইবার বা ঘাই**য়া কোন কথা বলিবার স্থবিধা হইবে না। যাহা হউক আমার স্থির সঙ্কল বে, আমার নির্দিষ্ট কার্যাপ্রণালী আপ্রাদের অমুমোদিত হইলে এবং নিয়ম শুঙালা কতক পরিমাণে বিধিবদ্ধ হইলেই তথন আমরা কি করিতেছি ভাহা দেখাইবার অন্ত এই সকল সন্মান্ত লোকদিগকে আহ্বান করিব এবং আমাদের কার্যো অধিকতর উৎসাহদানে তাঁহাদের অনুমোদন ও সহায়তা প্রার্থনা কবিব। আমি বিশ্বাস করি, এরূপ বাজি-দিগের সহিত প্রস্তাবিত বিষয়ে আপনাদের কথোপকথন হইয়াছে। আবশুক হইলে छाहानिशतक वृक्षादेश नित्वन त्य, छाहारमञ् প্রতি সম্মাননার অভাব তাঁহাদিগকে অহবান না করিবার কারণ ন<u>হে ৷ আমার</u> অনেক ইউরোপীয় বন্ধ আমার অহুর্কের विवासत्र कथा अनिवाहिन। देशत थाछि তাঁহাদের গভীর সহাক্সতি। অদ্য প্রাক্তে

তাঁহারা এখানে আসিতে পারেন কি না জিজ্ঞাসা করিয়াছিলেন। আমি একটু ইঙ্গিত করিলে কলিকাতার ইউরোপীয় নেত্রীস্থানীয়া রমণীগণ দ্বারা আজি এই প্রহ পূর্ব হইত। কিন্তু যে কারণে দেশীয় বডলোকদিগকে ডাকি নাই, সেই কারণে ইউরোপীয়দিগকেও ডাকি নাই। অপ্রকাশ্য-ভাবে যে বিদ্যালয় প্রতিষ্ঠা করিতেছি, তাহাতে কোন আড়ম্বর প্রদর্শন আমার আদৌ অভিপ্ৰেত নহে। এমন সময় আসিতে পারে এবং তাহা বহুদুরবর্ত্তী বোধ হয় না, যখন এরূপ কোনও সঙ্গোচ আব-শাক হইবে না এবং এই কলিকাতা ফিমেল স্থল অতা যে কোন গৌরবস্থচক নামে অভিহিত হউক, এদেশের সম্মাননীয় ও উপকারী অমুষ্ঠান সকলের মধ্যে ইহা উচ্চ স্থান অধিকার করিবে।

এখানে যেরপ শিক্ষাদান হইবে, তদ্বিষয়ে
কিছু বলা আবশ্যক। গবর্গনেণ্ট কুলে
যেমন ছাত্রদিগের ধর্ম্মে কোন হস্তক্ষেপ
করা হয় না, এখানেও সেইরপ হইবে না।
আমি জানি এমন কতকগুলি লোক
আছেন, থাহারা 'শিক্ষিত স্ত্রীলোক' নাম
শুনিলেই বিজ্ঞপ করেন। তাঁহাদের মতে
আমরা বেরপ শিক্ষা দিতে ঘাইতেছি, তাহা
শুনিলে আমিও পরিহাস না করিয়া
থাকিতে পারি না। বালকদিগের শিক্ষা
সম্বদ্ধে থাহারা আমাকে বলিতে শুনিয়াছেন,

তাঁহারা জানেন আমি মাতৃভাষা শিক্ষার একান্ত পক্ষপাতী—ইংরাজীতে অনেক জ্ঞানগর্ভ পুস্তক আছে বলিয়া তাহা শিথাইতে হয়; কিন্তু আমাদের আশা আমাদের ছাত্রেরা আজি হউক কালি হউক মাতৃভাষায় সর্বপ্রকার জ্ঞানশিক্ষার,উপায় করিতে পারিবেন। স্ত্রীলোকদিগের সম্বন্ধে মাতৃভাষা শিক্ষার আবশ্যকতা দশ গুণ অধিক জোরে বলা যাইতে পারে। সাহিত্যশিক্ষায় বাঙ্গালাকেই আমরা ভিত্তিভূমি করিব, এবং আমুবঙ্গিক জ্ঞানলাভার্থ ইংরাজীর আশ্রয় লইব, ইহা বোধ হয় ছাত্রীদিগের পিতা মাতার অনভিন্যত ছইবে না।

এতত্তির হাজার হাজার প্রকার স্ত্রীশোভন স্টিকার্য্য, শিল্পনৈপুণ্য, টিত্র ও
অন্তান্ত গুণপনা আছে, আমি তাহার
অর্দ্ধেকও বর্ণনা করিতে পারি না। বিবি
রিভ্দ্ভেল সে সকলের শিক্ষা দিবেন।
আপনাদের সন্তানগণ এই সকল জ্ঞানলাভ
করিয়া গৃহকে স্থাজ্জিত এবং নির্দোষ
আমোদে আপনাদিগকে ব্যাপৃত করিতে
পারিবেন। ''আলম্ভ পাপের প্রস্থৃতি''
ইহা পুরাতন কথা। কিন্তু লোকে নির্দোষ
ও উপকারী বিষয়ে নিযুক্ত থাকিতে পারে
না বলিয়া মন্দ কার্য্য করে। ভাল কাজে
ব্যাপৃত থাকিলে আর আলম্ভের প্রথ

(ক্রমশঃ)।

বটেশ্বরে গৌরবিজয়।

ষে স্থানে কোন প্রাচীন দেবদেবীর অবস্থান হয়, কালক্রমে স্থানটী সেই দেব-দেবীর নামেই পরিচিত ও পরিবর্তিত হইয়া থাকে ; যেমন তারকেশ্বর, কাশী-ঘাট, শিবনিবাস ইত্যাদি। তদ্রপ ভারতের দক্ষিণ প্রান্তে ত্রিমন্দের অদূরবর্ত্তী কোন স্থানে বটেশ্বর নামে এক মহাদেব ছিলেন। কালক্রমে সেই স্থানটীর নামও বটেশ্বর হইয়াছিল। গৌরচক্র দক্ষিণ দেশে ভ্রমণ কালে ত্রিমন্দের বৌদ্ধ পণ্ডিতগণের সহিত ধর্মবিচার করিতে বাধ্য হইয়াছিলেন। তাঁহারা ভুক্তিপথ মানিতেন না; কিন্তু বিবিধ দর্শন ও তর্কশাল্পে মহাপণ্ডিত ছিলেন, তাঁহাদিগকে বিচারে পরাভূত করা এক প্রকার অসম্ভব বলিয়াই সকলের বিশ্বাস ছিল। তাঁহাদিগের সহিত যথন জ্রীগোরাঙ্গের বিচার উপস্থিত হইল, তথন विभएनत त्रांका त्राष्ट्र विधातमनार्थ यथान्त्र হইরাছিলেন। বছক্ষণ বিচারের পর বৌদ্ধ-গ্ৰ প্রাজিত হইলেন। রাজাকে মধ্যস্তায় ममर्थ क्रितांत्र क्य ७९मत्त्र रा मकन मर्नक পণ্ডিত ছিলেন, বৌদ্ধগণকে পরাজিত হইতে দেখিয়া তাঁহারা হাস্ত করিতে লাগিলেন এবং मकत्न একবাকো कश्लिन.--

"—এ সন্ন্যাসী মাসুব ত নর।

বে বিচার কৈল ভাহা কহনে না যায় ॥"
—গোবিন্দের করচা।

রামগিরি রায় নামক কোন অবিতীয়

পণ্ডিত পরাজিত বৌদ্ধগণের দলপতি
ছিলেন। তিনি পৌরালচরণে দশুবৎ
করিয়া কহিলেন,—"আমাকে শাস্ত্রবিচারে
পরাস্ত করা মন্থ্যার সাধ্য নহে বলিরা
আমার বিশ্বাস আছে, কিন্তু আপনি
আমাকে পরাভূত করিলেন, অত্তরব
আপনি কথনই মহয়া নহেন। আমি
ভয়ানক পায়ও, তাই ভক্তিপথ মানিতাম
না। এক্ষণে কুপা করিয়া আমাকে ভক্তিপথ
দেখাইয়া দিন, আমি কথনই আপনার
সঙ্গ ছাড়িব না।" রামগিরির এই
দৈন্ডোক্তিশ্রবণে,

"হাসিয়া চৈত্ত প্রভু কুপা করি কয়। মাণার ঠাকুর ভূমি রামগিরি রায়॥ হরি বলি পুলকিত হয় যেই জন। মাণার ঠাকুর সেই এইত সাধন॥"

রামগিরি রায় প্রভুর এই কথা শুনিয়া
আছাড় পাইয়া ভূপতিত হইলেন, এবং
চৈত্তের চরণ ধরিয়া আনেক মিনতি
করিলেন। তার্কিকের অগ্রগণ্য রামগিরির
শুষ সদয়ে ভগবদ্ধজির উৎস ক্রিত হইল
দেখিয়া চৈত্তাচক্রের আনন্দের সীমা
রহিল না। ক্রমশং ভংগ্রদেশীর সমত
পণ্ডিত-শিরোমণি বৌদ্ধ রামগিরির প্রা
অবলম্বন করিলেন। এই বাাপার শ্রবণ
করিয়া ভূমভানিবাসী চূপিকাম তীর্ধ
নামক একজন দিগ্রজ পণ্ডিত চৈত্তদেবের সহিত বিচারার্থা হইয়া আগ্রমন
করিলেন। তিনি আসিনেন বর্তে,

সেই নবীন সন্ন্যাসীর কিন্ত অলৌকিক তেজ দেখিয়া তাঁহার হৎকম্প উপস্থিত হইল ভগবদ্ধক্তিব সহিত বিশুদ্ধ জ্ঞানে বোগ হইলে বে তেজের উৎপত্তি হয়, তাহা 'ছাদশাদিত্যের তেজ অপেকাও খরতর। তাহা কর্মী. ভকজানী তার্কিকের চক্ষতে সহ হয় না। এই জন্ম, বিচারার্থী হইয়াও প্রীচৈতন্তের সমুধীন হইতে ঢ্নিরামের ভয় হইয়া-যাহা হউক, পরিশেষে তিনি চৈতন্তমদেবের সহিত বিচারে প্রবৃত্ত হইয়া-ছিলেন; কিন্তু তাঁহাকে অধিকক্ষণ বিচার করিতে হয় নাই। যেমন অত্যুক্ত পর্ব্বত হইতে জলপ্রপাতের মুথে কিছুই তিষ্ঠিতে পারে না, তেমনি খ্রীচৈতন্তের ভক্তি-মার্জিত জ্ঞানের প্রবল প্রবাহে সকলই ভাসিয়া যাইত। ঢুণ্ডিরামের শুক্ষ তর্ক-আলও শুষ তৃণবৎ ভাসিয়া গেল। তথন তিনি অশ্র-প্লাবিত-নেত্রে গৌরাঙ্গের নিকট দৈক্ত প্রকাশ করিতে লাগিলেন। ঢুণ্টি-রাম তুক্তদ্রায় যে পদে অভিধিক্ত ছিলেন, তৎপদাভিষিক্ত পূর্ব্ব পূর্বব ব্যক্তিগণও ঢ়ণিরাম তীর্থ বলিয়া থ্যাতি লাভ করিয়া-ছিলেন। কিন্তু তৎসর্কাপেকা এই ঢ তি মহাদান্তিক ও মহাপণ্ডিত তাঁহার পাণ্ডিত্যাভিমানের সীমা ছিল না। চৈত্তমের নিকট সমস্ত অভিমান-সমস্ত অহ্বার চূর্ন ইইয়া গেল। উন্নত শির অব-নত হইল। তদর্শনে দরাল গৌরালের

বড়ই হু:খ হইল। পুনরায় যেন চুণ্টিরামকে পূর্ব্ব পদে প্রতিষ্ঠিত করিতে ইচ্ছা হইল। কহিলেন,—

"—ভন ভন ঢুণ্ডিরাম স্বামী।
তোমার সহিত তর্কে হারিলাম আমি॥
জয়পত্র লিথে আমি দেই সংগোপনে।
হারিল চৈতন্ত এবে তোমার সদনে॥
বাণীর রুপায় তুমি পণ্ডিত গোঁসাই।
কার সাধ্য তর্কশাস্ত্রে জিনে তব ঠাঁই॥
ন্তায়, সাংখ্য, পাতঞ্জল, বেদাস্ত দর্শন।
সর্বাশাস্ত্রে অধিকারী তুমি গো স্ক্রন॥
মূর্থ স্থ্যাসী মুই কিছু নাহি জানি।
বার বার তোমার নিকটে হারি মানি॥
আগেকার ঢুণ্ডি হতে তুমি স্থপণ্ডিত।
তোমার পাণ্ডিত্য হয় ভ্বনে বিদিত॥"

চৈতভাদেব এই সকল উক্তি করিয়া চুণ্ডিরামকে বিদায় করিলেন; কিন্তু তিনি বিদায় না লইয়া অতি পবিত্রমনে, সরল-প্রাণে ও কাতরভাবে প্রভুর চরণে নিপতিত হইলেন। তথন গৌরাঙ্গদেব অগত্যা চুণ্ডিরামকে হরিনাম প্রদান করিয়া পত্তভাতিমুখে যাত্রা করিলেন। চুণ্ডিরাম তীর্থ অতঃপর হরিদাস নামে প্যাত হইলেন। অভ্যাভ্য পাষও পণ্ডিতগণ, চুণ্ডিরামকে একটা বালক সন্ধ্যাসীর হত্তে এইরূপ ছর্দ্দশাগ্রস্ত দেখিয়া পরস্পর কানাকানি করিতে লাগিলেন। চৈতভ্যদেব তদ্দশ্রে হাস্য করিতে করিতে বটেশ্বরে প্রবেশ করিলেন।

রজ।

(৩৬৮ সংখ্যা ১৪৪ পৃষ্ঠার পর)

ভাবপ্রকাশ গ্রন্থে এইরূপ লিখিত আছে,—

"শধ্যোগজন্চ ক্রোড়ন্চ করী মংক্তন্স দর্মর:। "বেণুরেতে সমাধ্যাতা তজ্জৈমৌ ক্রিক্যোনর:।" ১। শঙ্খ—শাথ। ২। গজ—হস্তী।

৩। ক্রোড়—কিছুক। ৪। ফণী—সর্প। ৫।মৎজ্য—মছি। ৬।দর্বু-ভেক। ৭।বেণু—বীশ।

মল্লিনাথ অন্ত একটা বচনের উল্লেখ করিয়াছেন; যথা—

"দ্বিপেশ্রজীমূভবরাহশখ্মংস্তাহিশুকুন্তববেণু
• জানি।

মুক্তাফলানি প্রথিতানি লোকে তেযায় গুক্তা ভ্রমের ভূরি।"

১। বিপেক্স—জাতাহস্তী। ২। জীমৃত—মেঘ। ৩। বরাহ—শুকর। ৪। শছ্য-শাধ।

ে। মংস্ত—মাছ। ৬। অহি—দর্প।

৭। ভক্তি—ঝিসুক। ৮। বেণু—বাশ। এই সকল স্থান ইইতে মুক্তা জন্মে,

এইরূপ প্রসিদ্ধি আছে। পরস্ক শুক্তিজ মুক্তা বহুল পরিমাণে উৎপন্ন হয়।

সার্রাজা রাধাকান্ত দেব অন্ত. আর একটা বচনের উল্লেপ করিয়াছেন। যথা— "পজাহিকোলমৎস্থানাং শীর্ণে মুক্তাফলোদ্ভবং। তৃত্বসারতক্রিমধানাং গর্ভে মুক্তাফলোদ্ভবং।"

মুকামণি হন্তী, দর্শ, শৃকর ও মংস্তের মন্তক্ষে জন্মে, এবং বাশ, বিমুক ও শাপের উদরে জন্মে। এই দকল বচনের মধ্যে মজিনাথের শৃত বচনটাতেই আমাদের

শ্রদ্ধা হয়। কেননা ঐ বচনের একাংশে প্রকাশ করা হইয়াছে বে, "ভজিজাত মুক্তাই আমরা অধিক পাই, অস্তাস্থ আকরের মুক্তা কেবল লোকপ্রবাদে প্রসিদ্ধ।"

গজমুক্তা।

"মৌক্তিকং ন গজে গজে" (চাণকা)
সকল গজে মৃক্তামণি পাওয়া বায় নী
অর্থাং সকল হত্তীর মন্তকাভ্যন্তরে পাধরী
জন্মে না। কিরূপ হত্তীর মন্তকে জন্মে,
তাহা বলিতেছি।

"মাতলজা যে জু বিশুজবংখা:"
তে মৌজিকানাং প্রভবাঃ প্রদিষ্টা:।
উৎপদ্যতে মৌজিক্মেৰু বৃত্তং
আপীতবর্ণং প্রভয়া বিহীনম্।"

যে সকল মাতল বিশুদ্ধবংশোৎপন্না, তাহাদেরই মন্তকে মুকা প্রন্তর উৎপন্ন হইয়া থাকে। এই সকল জাতাহতীর মধ্যে কোন কোন হতীতে যে মুকা জন্মে, তাহা স্থগোল, ঈষৎ পীতবর্ণ এবং ছায়া-বিহীন। মুকার ছায়া কি, তাহা পরে বলা যাইবে।

"বন্দ্যে গৰপরীকারাং গললাতিকত্বিধ।
নৌজিকং তের লাতং হি চত্বিধনুদীর্গতে।"
হক্তী জাতির মধ্যে বিবিধ শ্রেণীর হক্তী
আছে। তন্মধ্যে লাত্য হক্তী চারি প্রকার।
চারি শ্রেণীর লাত্য গলেই মৃকা ক্রিয়া
থাকে; স্তরাং তহুংপর মৃকাও চারি
লাতি বা চারি শ্রেণী। সেই চারি শ্রেণীর

মুক্তার চারি প্রকার আখ্যা দেওরা হইরা থাকে। যথা,—

"বাদ্ধণং পীতশুরুষ ক্ষত্রিয়ং পীতরক্তক্ম।
পীতভামন্ত,বৈশ্যং ভাগে শুদ্রং ভাগে পীতনীলক্ম্॥"
বাদ্ধণক্ষাতীয় মুক্তা পীত-শুক্রবর্গ, ক্ষত্রিয়
মুক্তার বর্গ পীত-রক্ত, বৈশুজাতীয় মুক্তার
বর্গ পীত-খাম, এবং শুদ্রজাতীয় গ্রুমুক্তার
বর্গ পীত-নীল। কাষোজদেশীয় মাতক
মুক্তায় কিছু বিশেষত্ব আছে। যথা—

"কাষোজর্ভসভ্তং ধাত্রীফলনিভং শুরু। অতিপিঞ্জরস্ক্রায়ং মৌক্তিকং মন্দদীধিতি।" কাষোজদেশীয় হস্তিকুস্তে যে মুক্তা জন্মে, তাহার আকার ঠিক্ গোল নহে। তাহার গঠন ঠিক্ আমলকী ফলসদৃশ, ওজনে ভারী, পিঞ্জরবর্ণ, ছায়া বা কাস্তিহীন নহেং অর্থাৎ কিঞ্চিৎ পরিমাণে ছায়া আছে এবং অল্প কিরণও আছে।

(ক্রমশঃ)।

মেয়ের মধ্যস্থতা।

কোন সময়ে ছুই জন দিগুগজ পণ্ডিতে বিচার বাধিয়াছিল। বিচারের বিষয়,---পিতা মাতার মধ্যে কে বড় ৪ একজন বলিতেছেন, পিতা বড়;—অত্যে বলিতে-ছেন, মাতা বড়। উভয়েরই বিছা, বৃদ্ধি, বহুদর্শন, তর্কশক্তি প্রভৃতি প্রচুর পরিমাণে ছিল। স্থতরাং বাদ বিতপ্তার ধুম পড়িয়া গেল। বিছা বুদ্ধাদির সংঘর্ষণে মধ্যে মধ্যে ক্রোধাণ্ডির ফ্লিঙ্গও উলাত হইতে শাগিল। শাস্ত্রীয় বচন, পৌরাণিক ইতি-বুন্ধাদিরও ছড়াছড়ি হইতে লাগিল। মাতৃপক্ষপাতী পণ্ডিত ব্যক্তি,—"গর্ভধারণ-পোবাড্যাং তেন মাতা গরীয়দী" এই শাল্লীর বচন আবৃত্তি করিয়া মহা আন্ফালন করিতে লাগিলেন। পিতৃপক্ষপাতী পণ্ডিত ান শাস্ত্রীয় বচন সমুথে না পাইয়া পুরাণ আরম্ভ করিলেন। তিনি কহিলেন, ভগবদবতার রামচক্র গর্ভধারিণী

মাতা কৌশল্যা দেবীর নিবারণ, সত্ত্বেও করেন. পিতৃ-আজ্ঞায় বনগমন ভগবানের অন্তাবতার পরভ্রাম ঠাকুর পিতৃ-আদেশে জননীর শিরশ্ছেদ করিয়া-ছিলেন। এই সকল পৌরাণিক ঘটনা পিতৃপ্রাধান্তের জলন্ত সাক্ষী। তথন মাতৃ-পক্ষপাতী বাক্তি আপন প্রতিপক্ষকে কহিলেন, তোমার চরিত্রে পৌরুষপ্রকৃতির আধিক্য, এজন্ত পুরুষোচিত গুণগ্রামের পক্ষপাতী হইয়া পিতৃভক্তির প্রাধান্ত স্থাপন করিতেছ। তচ্ছবণে পিতৃপক্ষ ব্যক্তি কহিলেন,—আমি পৌক্ষপ্রস্কৃতিক इरेल ७ माज्-कारम्य व्यक्तिभाजी निर्। তবে আমি 'ভিচ্ছু-খল ব্যবহারের বিদ্বেষ্টা वर्षे ।"

'মাতৃভক্তির প্রাধান্ত স্থীকার করিলে, কিরূপে উচ্ছ্ খলতার পোষকতা করা হয়, আমি তাহা বুঝিতে পারিলাম না", মাতৃ-পক্ষপাতী এইরপ কহিলে, পিতৃভক্ত নিম্নলিথিত উক্তি দারা তাঁহাকে স্বীয় মত বুঝাইয়া দিলেন।

"দেখন, এখনকার- অনেক লোকে যাহা ইচ্ছা তাহা করিতে চায়। সামাজিক নিয়ম অতিক্রম করাতেই যেন একটা ভারী বাহাত্রী আছে, এরপ মনে করে। যাহারা এরূপ করে, তাহারাই পিতৃভক্তি অপেকা মাতৃভক্তির অধিক গৌরবও করে, এবং যে প্রকার কৌশলে পারে, আপনারা যে খুব মাতৃভক্ত, তাহাই লোককে জানায়। মাতৃভক্তির খোদ নাম বাহির করা সহজ ব্যাপার। কাহার মাতৃভক্তি বাস্তবিক কিরূপ, তাহা অন্তের পরীক্ষা করা প্রায় অসাধ্য ৷ তথ্যতিরেকে মাতৃভক্তি প্রকাশ করিতে আপনাকেও বড একটা কষ্টভোগ করিতে হয় না, কোন প্রকার ত্যাগ-স্বীকারও করিতে হয় না। পিতা পুত্রকে আপন আদেশের বাধ্য করিতে চান: মাতা উপযুক্ত পুত্রের কথামত কাজ করা কর্ত্তব্য বোধ করেন। স্থৃতরাং স্বেচ্ছাচারী পুত্রের পক্ষে পিতৃভক্তি রক্ষা করা যেমন কঠিন,—মাতৃভক্তি রক্ষা করা তেমনি সহজ। "তুমি বোঝ না" মাকে এরপ কথা বলা চলে; কিন্তু বাপকে তাহা বলিবার যো নাই। স্বতরাং পিতৃভক্তি অপেকা মাতৃভক্তির প্রাধান্ত উচ্ছ খল ব্যবহারের পোষক।"

মাতৃভক্ত পণ্ডিত এ কথার কোন উত্তর দিতে পারিলেন না বটে; কিন্তু বিদ্যীবা ত্যাপ করিভেও পারিলেন না। কহিলেন.—

"आमार्गत्रे आत वानाश्वारमत अरबाबन নাই; চলুন, আপনার পিতাঠাকুরকে মধ্যস্থ মানি:--তিনি এ বিষয়ে বাহা বলিবেন.আমরা উভয়েই তাহা শিরোধার্য্য করিব।" পিঞ্চভক্র পণ্ডিভের ইছাতে কোনও আপত্তি রহিল না, কারণ তাঁহার পিতাকে আপনাপেকা বিশেষ বিচৰুণ বলিয়া ধারণা ছিল। পিতার কাছে মোক-দ্মা দায়ের, হইল,--পিতাও দিলেন.—কিন্তু পিতভক্ত পুত্রের বিক্লছে। পিতৃভক্ত পরাজিত হইলেন বটে: কিছ মন খুঁতমুত করিতে লাগিল। আপন গৃহিণীর নিকট ছানি অর্থাৎ পুনর্বিচারের व्यार्थी हरेतन। गृहिनी কহিলেন.---"পুত্রগণের ভোমার প্রতি যে ভক্তি, তাহাই **ज्**कि किहूरे नरह। ঠিক, আমাকে তোমাকে স্থাথ রাখিলেই আমি স্থাথ থাকিব। তোমাকে কোনও ভাল সামগ্রী দিলে আমি তাহাতে বঞ্চিত হইব না। গাছের গোড়ায় জল ঢালিলে ভাছাতে আগাও ভিজিবে। তাহারা আমাকে যাহা বুঝাইবে, আমি তাহাই বৃঝিব, তোমাকে যাহা তাহা বুঝাইতে পারিবে বুঝাইবে, ভাহাই না,—তোমাকে যাহা সত্য। তাহারা তোমাকে ছাড়িয়া আমাকে ভক্তি করিতে পারে না। তোমাকে ভক্তি করিলেই আনাকে ভক্তি করা হয়। শুনিরাছি, শিব্দুর্গার পূজা করিতে হইলে আগে শিবের পূজা করিতে হয়। উগবভীয় शृका शृथक कत्रित्त हहेता मिननतीत्त्र সে পূজা হইরা থাকে ;--কিন্ত ভগবতীর

শরীরে শিবপৃঞ্জার বিধি নাই। আরও তোমার আমার স্বভাবই সত্যের পরিচয় দিতেছে। ছেলেরা যদি তোমাকে ছাড়িয়া আমাকে ভক্তি করে, তাহাতে তুমি রাগ করিতেপার,—আমাকে ছাঁড়িয়া তোমাকে ভক্তি করিলে আমি রাগ করিতে পারি না।''

পিতৃবিচারে পরাজিত পুত্র পত্নীবিচারে জন্মী হইলেন। পাঠক পাঠিকা কি বিচার করেন ?

কৃষিবিষয়ক নানা কথা।

(৩৬৯ সংখ্যা ১৬৯ পৃষ্ঠার পর)।

• নেওচ করার প্রণালীও প্রায় ব্নানি পাতের স্থায়, ইহার ক্ষেত্রে অধিক পরিমাণে কাদা করা আবশ্যক, এবং ঐ কাদা- জলেই বীজ বপন করিতে হয়। বপনের পর জল স্থির হইলে ক্ষেত্রের ঢালু দিকের আইল কাটিয়া জল বাহির করিয়া দিতে হয়। সপ্তাহকাল ক্ষেত্র জলশ্যু থাকিলে চারা বাহির হয়। তথন উহার উপর কিছু সার ছড়াইয়া দিতে হয়। ব্নানি বা নেওচ্ উভয়বিধ বীজ-ক্ষেত্রেই সর্কাদা জল বাঁধা থাকা আবশ্যক। বীজ-ক্ষেত্র ভক্ত হইলে সে বীজে কোনও ফল হয়না।

রোপিত বোরোর চাষ আবাদ এবং
বীজ প্রস্তুতকরণ অতিশয় জটিল; এজন্ত
প্রায়ই ক্লমকগণ বোরোর আবাদ করে
না। আমরাও সেই কারণে ঐ ছইটা
বিষয়ে হস্তুক্তেপ করিলাম না, সময়ান্তরে
প্রসন্ধর্কনি উহা লিখিবার বাসনা রহিল।
ভাশ্ত ও আমন শ্রুভের চাষ আবাদ,

ৈডৈয়ারি প্রভৃতি এ দেশে যেরপ

প্রচলিত আছে, তাহারই যৎকিঞ্চিৎ সংক্ষেপে বলা গেল। এক্ষণে ক্বমি-পরা-শরে ঐ বিষয়ে কিরূপ উপদেশ আছে, সংক্ষেপে তাহারই কিঞ্চিৎ আলোচনা করিয়া ধান্ত-প্রবন্ধ আপাততঃ শেষ করিব।

আশু ও আমন ধান্তের চাষ আবাদসম্বন্ধে কৃষি-পরাশরে যেরূপ উপদেশ
আছে, আমরা যথাস্থানে তাহার উল্লেথ
করিয়াছি। এক্ষণে আমনের ব্যবস্থা এই,—

"রোপণার্থন্ত বীজানাং শুচৌ বপনমূত্রমং।
ত্রাবণে চাধমং প্রোক্তং ভাদ্রে চৈবাধমাধমং॥"
আবাঢ়ের রোপণই প্রশন্ত, শ্রাবণের
রোপণ মধ্যম এবং ভাদ্রের রোপণ এককালে নিক্তল। ক্রবি-পরাশরের সাধারণ
ভ সংক্রিপ্র উপদেশ এই। ধান্তক্ষেত্রে
মদিকা না দিলে সমভাবে শন্ত জন্মে না।
ক্রবিপরাশরের বিদ্ধক-মদিকা এখনকার
বিদেবাশী। আবাঢ় ও শ্রাবণ মাদে
ধান্ত কট্টন করিবে, অর্থাৎ ভূমিতে বিদে
দিবে। অর্প্ট হুইলে ভাদ্র মাদেও বিদা
দেওয়া বাইতে পারে। বিদা টানিয়া

ক্ষেত্রের মাটা শল না করিলে আভ্ধান্ত जालो करन ना। উত্তমরূপে কর্বিত ও পরিষ্কৃত ভূমিতে ধান্ত বপন বা রোপণ করিলেও যথাকালে ভাহাকে করিতে হয়, নতুবা শস্ত ভাল হয় না। শ্রাবণ ও ভাদ্র মাসের মধ্যে একবার,

এবং আখিন মাসের মধ্যে ছইবার ক্ষেত্র নিড়াইতে হয়। এইরূপ ক্ষেত্র কামধেনুর ভার ফল প্রস্ব করিয়া थादक ।

বাহুলাভয়ে বাহুপ্রবন্ধ এই স্থলেই শেষ করা গেল।

वातित्रका।

পাছপাদপ বা পথিক-বৃক্ষ মরুপ্রদেশের তঞ্চাৰ্দ্ত পথিকদিগকে জল যোগাইয়া थात्क, हेरा পाठिकांनिरगंत्र विनिख ; किन्छ সম্প্রতি ' আফ্রিকার কঙ্গো প্রদেশে (Musenga) মুদেঙ্গাজাতীয় এক প্রকার तुक आविष्ठ रहेशाट्स, তाहात अंडि চিরিয়া বক্ষের নিমে পাত্র রাখিলে ১২।১৩ ঘণ্টার মধ্যে অতি বিশুদ্ধ জল দশ কোয়ার্ট পরিমাণ সংগৃহীত হয়। পণ্ডিতবর ডুষার্ট ফরাদী বিজ্ঞান-সভায় এই বক্ষের বিবরণ জ্ঞাপন করিয়াছেন। দেশীয় গরীলাগণ এই গুপ্ত প্রস্রবণের জলে তৃষ্ণা নিবারণ করিয়া থাকে। তাহারা ভিন্ন ভিন্ন আকারের শাথা সকল ভাঙ্গিয়া আবশুক-মত জল সংগ্রহ করে। বছদিন গত হইল ডাক্তার ওয়ালিচ আফ্রিকার মার্টাবান্ প্রদেশে এই জাতীয় বৃক্ষ দেখিতে পান। ইহার কোমল ও সঞ্চিদ্র কার্চে আবাত করিলে বছল পরিমাণে পরিষ্কার নিঃস্বাদ জল পাওয়া যায়। তাহা পুষ্টকর এবং দেশবাদীরা পানীয়রূপে ব্যবহার করিয়া থাকে। ডাক্তার ওয়ালিচ্ জলদ্রাকা নামে ইহাকে অভিহিত করিয়াছেন। ফাইটোরিন বা উদ্ভিদ-নিঝ র-জাতীয়। দক্ষিণ আমেরিকার গোপাদপ বৃক্ষ এই জাতীয়। তদ্দেশবার্দীরা ইহার রূদে গো-তুষ্কের অভাব পূর্ণ করিয়া থাকে। জলদাক্ষার বিশেষ গুণ এই, ইহার রসে ত্রাের গন্ধমাত্র নাই। ইহা ফটিক জলের স্থায় ভৃষ্ণানিবারণের উপযোগী।

সৃষ্টিতত্ত্ব।

এবং প্রকৃতিভেদেন ভেদান্ত প্রকৃতের্দশ ॥ | ছিল্পতা নৃসিংহ: স্যাৎ বামনো ভ্রনেশ্রী।

"প্রকৃতির্কিঞ্রপা ভাৎ পুংরপশ্চ মহেশবঃ। | কৃষ্ণমূর্ত্তি কালিকা দ্যাৎ রামমূর্ত্তিত্ব ভারি^{শী}।

জামদখ্য: স্থল্পরী স্যাৎ মীনোধ্মাবতী ভবেৎ।
বগলা কৃশ্মৃতি: স্যাৎ বলভদ্ৰস্ত ভৈরবী ॥
মহালন্মীর্ডবেদুদ্ধো হুর্গা স্যাৎ কবিরুপিণী।
স্বায়ং ভগবতী কালী রুফস্ত ভগবান্ স্বাং ॥

তন্ত্রামুসারে যিনি বিশ্ব, বিরাট বা জাগ্রদবস্থাভিমানী পুরুষ; যিনি তৈজস হিরণ্যগর্ভ বা স্বপ্লাবস্থাভিমানী পুরুষ; বিনি অব্যাক্বত, প্রাজ্ঞ বা স্বযুপ্তাভিমানী পুরুষ; তাদৃশ অবস্থাপর পুরুষত্রিতয়ের **অতীত ব্ৰহ্মকে তুরীয় ব্রহ্ম বলা যায়।** তুরীয় ব্রন্ধের সহিত মূল প্রকৃতির সাক্ষাৎ সম্মা প্রপত্রের (স্বস্থ রজ: ও তম:) সাম্যাবস্থা, গুণত্রয়ের নিদ্রাস্থান অথবা নিও ণ অবস্থাই মূল প্রকৃতি। পরে গুণ-ক্ষোভ হইলে প্রকৃতির তামসিক অংশ হইতে মহেশ্বর ও মহাকালী, রাজদিক অংশ হইতে ব্রহ্মা ও মহাসরস্বতী এবং সাবিক অংশ হইতে মহাবিষ্ণু ও মহালন্দী **उ**९भन्न **र**रत्रन । ইহাঁদের সহিত পর-ব্রন্ধের সাক্ষাৎ সম্বন্ধ নহে, প্রাকৃতিক গুণ ছারা পরম্পরা-সম্বন্ধ মাতা। প্রাকৃতিক প্রালয়সময়ে গুণ সমুদায় মূল প্রকৃতিতে শম প্রাপ্ত হয়, স্কুতরাং তৎকালে মূল প্রকৃতি ভিন্ন অন্ত বস্তু না থাকাতে কেবল মূল প্রকৃতির সহিতই এক্ষের নিতা সম্বন্ধ প্রক্ষতির थादक। গুণকোভসময়ে যেরপ গুণ नमूनाय भूथक् পৃথক্ প্রকাশমান হয়, সেইরূপ প্রকৃতিও হুই 🚉 শে বিভক্ত হয়েনী বিশুদ্ধ আংশের াম পরা প্রকৃতি, বিদ্যা বা মায়া। মলিন

অংশের নাম অপরা প্রকৃতি, অবিদ্যা বা অজ্ঞান। পরা প্রকৃতিতে উপস্থিত চৈতন্মের নাম সর্বজ্ঞ, সর্বাশক্তিমান্ দ্বখর ও শিব এবং অপরা প্রকৃতিতে উপস্থিত চৈতন্ত অজ্ঞান-জীব-শন্ধবাচ্য।

সৰভদ্মাবিভদ্দিভ্যাং প্রকৃতির্দ্ধিবিধা মতা। মায়াবিম্বা বশীক্ষত্য তাং স্থাৎ সর্ব্বজ্ঞ ঈশ্বরঃ॥

প্রকৃতি হইতে মহন্তব, মহন্তব হইতে অহকার, অহকার হইতে একাদশ ইব্রিম্ন ও পঞ্চতমাত্র হইতে পঞ্চতমাত্র হইতে পঞ্চত্ত । সাংখ্যমতে এই চতুর্বিংশতি তব। পরমাণু হইতে যে সকল যৌগিকী সৃষ্টি হইয়াছে, তদ্বারা তবাস্তর উৎপদ্ধ হয় নাই যেমন স্ক্রবর্ণ ও অলকার, মৃত্তিকা ও ঘট, একই পদার্থ।

মূল প্রকৃতি হইতে আবিভৃতি শক্তি।
শক্তি হইতে সমুংপল্ল ত্রিবিধ নাদ, অর্থাৎ
ত্রিবিধ মহন্তব। ত্রিবিধ নাদ হইতে সমুংপল্ল ত্রিবিধ বিন্দু, অর্থাৎ সাব্বিক অহক্ষার,
রাজসিক অহক্ষার ও তামসিক অহক্ষার।
সাব্বিক অহক্ষার হইতে সমুৎপল্ল অপঞ্চীক্বত
শক্তান, স্পর্শজ্ঞান, রপজ্ঞান, রসজ্ঞান ও
গন্ধজ্ঞান। রাজসিক অহংকার হইতে
উৎপল্ল অপঞ্চীক্কত শক্ষশক্তি, স্পর্শক্তি,
রপশক্তি, রসশক্তি ও গন্ধশক্তি। তামস
অহংকার হইতে উৎপল্ল অপঞ্চীক্কত
আকাশ, বায়ু, তেজা, জল ও ক্ষিতি।

প্রালয়সময়ে তমোগুণ বিস্তৃত হইয়া
সমুদায় জগং সংহার করে। তৎকালে
সম্বাপ্তণ রজোগুণে, এবং রজোগুণ তমোগুণে
্বিলয় প্রাপ্ত হয়। তথন একমাত্র

তমোগুণ ভিন্ন, অপর কিছুই থাকে না।
পরে ঐ তমোগুণ ও মুল্প্রকৃতিতে লগ্ন
প্রাপ্ত হয়। অনন্তর স্টির পূর্ব্বে প্রকৃতির
গুণক্ষোভ হইলে প্রথমতঃ তমোগুণ
গুণের আবির্ভাব হয়। এই তমোগুণ
হইতে রজোগুণ, এবং রজোগুণ হইতে
সক্ষণ্ডণ আবির্ভ ত হইয়া থাকে। সারদাতিলকে এই তমঃ শক্তিশব্দে নিদিষ্ট
হইয়াছে।

নিপ্তর্ণঃ সপ্তাণশ্চেতি শিবোজেরঃ সনাতনঃ। নিপ্তর্ণঃ প্রক্তেরন্যঃ সপ্তণঃ সকলঃ স্মৃতঃ॥ —সারদাতিলক।

পরব্রহ্মের ক্রিয়া নাই, কর্ত্ত্ত নাই; পরস্ত চুম্বকদান্নিধ্যে প্রচলিত লোহের হায় প্রকৃতি, পরব্রহ্মের সত্তা মাত্রেই সৃষ্টি, ছিতি, প্রলম্ন করিতেছেন। বৃক্ষ সম্পারের
পূপা পরবাদি বিকাশ বিষয়ে বেরূপ
বসন্তকালের, সায়িধা নিমিত্ত, মাত্র, সেইরূপ
সৃষ্টি স্থিতি প্রলম্ন বিষয়ে পরব্রদ্ধ কেবল
নিমিত্ত মাত্র। গুণত্রমই উপাদান কারণ।
ফলতঃ তন্ত্র অনুসারে স্থিপ্রকর্ম অতীব
অন্ত্ত। এমন কি তাহা পরিজ্ঞাত হইলে
দিব্য জ্ঞান জন্মে। তাহা সংক্রেপে হাদম্বদ্দ
করিয়া দেওয়া হুর্ঘট। স্থায়, সাংখ্য প্রভৃতি
কোন দর্শনকারই তাদৃশ স্ক্র পথ দেখিতে
পান নাই। আশ্চর্যোর, বিষয়, দর্শনকারদিগের পরস্পারবিরোরভাব দৃষ্ট হন্ন, কিন্তু
তান্ত্রিক স্থাপ্রিপ্রকরণের সহিত্ত কাহারপ
বিরোধ নাই।

(ক্রমশ:)

পাঁচন ও মুফিযোগ।

মুখরোগ ও গাত্রের তুর্গন্ধনিবারণ।

১। হরীতকী, লোধ, নিম্বপত্র, ছাতিমের ছাল ও দাড়িম্বের ব্রুল, এই সকল জ্ব্য সম্ভাগে লইয়া একত্র পেষ্ণ করিয়া অঙ্গে লেপন ক্রিলে গাত্রের ছুর্গন্ধ নিবারিত হয়।

২। হরীতকী, চদ্দন, মুথা, নাগকেশর, বেপার মূল, লোধ, কুড় ও হরিদ্রা, এই সকল দ্রুবা সমভাগে লইয়া পেষণ করিয়া শরীরে লেপন:করিলে গাত্রের ছর্গন্ধ শীস্ত্র ত। ঘল্যসে পুলোর রস, মধুও তৈল একতা মিশ্রিত করিয়া তাহাতে কর্ণ পুরণ করিয়া রাখিলে শিশুদিগের দক্তকমি নষ্ট হয় ও যাতনা নিবৃত্ত হয়।

৪। দাক্তিনি, এলাইচ ও জাতিফল, এই সকল দ্ৰব্য পেষণ করিয়া কৃদ্ৰ বটিকা করিয়া দিবা ও রাত্রিতে তাবুলের সহিত ভক্ষণ করিলে মুখে স্থগন্ধ হয়।

। মরিচ ও গোরচনা একজ পেরণ
 করিয়া মুথে প্রলেশ দিলে বেবিন-

কালের মুধকাত সর্কাপ্রকার ত্রণ বিনষ্ট হয়।

৬। ধনিরা, বচ, শৈশজ ও লোধ, এই

সকল বস্তু সমভাগে পেষণ করিয়া মুথে
লেপন করিলে মুথজাত ব্রণ বিনাশ পায়।

१। আঁবের পাতা কটুতৈলে বাটিয়া

মুখে মাথাইলে ওঠবেদনা ভাল হয়।

কেশ।

১। ত্রিফলা, লৌহচ্র্ণ, ইক্ষুরস, ভঙ্গরাজের রুঁস ও ক্বঞ্চ মৃত্তিকা, এই সকল দ্রব্য একত্র মিশ্রিত করিয়া, কোন পাত্র মধ্যে স্থাপন করতঃ এক মাস রাখিবে, পরে এই ঔষধ কেশে লেপন করিলে, চারি মাস পর্যাপ্ত কেশ ক্লঞ্চবর্ণ থাকিবে। ২। বিড়ঙ্গ, গন্ধক ও গোস্ত্র এই সকল দ্বোর সহিত তৈল পাক করিবে। এই তৈল দারা কেশে অভাঙ্গ করিলে যুক্ত ও লিথ্যাদি বিনষ্ট হয়।

০। শুঞ্জফল মধুর সহিত পেষণ করিয়া মস্তকের যে স্থানে টাকদোষে কেশ উঠিয়া যায়, সেই স্থানে লেপন করিবে, ইহাতে ক্লফবর্ণ, বক্র ও অতি স্থানী কেশ উৎপন্ন হয়।

৪। পাটবীজ কাঁজিতে পেষণ করিয়া
মস্তকে প্রলেপ দিলে, কিম্বা শয়নের
পূর্কো পদতলে পানের রস উত্তমরূপে
মর্দন করিলে ৪।৫ দিনে মাথার উকুপ
মরিয়া যায়।

(• ক্রম**শঃ**)

वीताक्रना।

আফ্রিকাতে ফরাসী সৈত্যেরা ডাহমী বন্ধ করিতে গিরা একদল স্ত্রী-বোদার হাতে ব্যতিব্যস্ত হইরাছিল। এই রমণীরা প্রাণ ভূচ্ছ করিয়া দানবীর ক্যার যুদ্ধ করিতেছিল। কাপ্রেন ডড্ইহাদিগের বীরত্ব দেখিরা বলিরাছেন,প্রাচীন আমেজনদিগের বিষয়ে বদি কাহারও সন্দেহ থাকে, কিন্তু বর্ত্তমান আমেজনেরা চাক্ষ প্রত্যক্ষ, তাহারা,প্রীচীন মরিচা-ধরা বন্দ্ক লইরা বীরভাবে বারুদ ঠাসিতে, গুলি করিতে বং পোড়া বারুদ ফু দিরা উড়াইরা দিরা আবার চক্র নিমেবে এখন গুলি বর্ষণ

করিতে লাগিল যে, ফরাসীরা দেখিয়া আবাক্। যেমন ইহাদিগের শিক্ষা, তেমনি ইহাদিগের শৃঙ্খলা। লগুনের "Life-guards" লাইফ গার্ড কিছা ইংলণ্ডেম্বরীর গৃহরক্ষিবর্গের মধ্যে "Red gloves" রেড মবস্ নামে বাহারা আখ্যাত, তাহাদিগের সহিত ইহাদের তুলনা করা বায়। আফ্রিকার প্রম্ব যোদ্ধারা ফরাসিদিগের সাংঘাতিক অগ্নিবাণের দ্বিতীয় বর্ষণে পলায়নপর হইল, কিন্তু রমণীরা দলে দলে ছিম্নতির্নদেহ ও হত হইতে লাগিল, তথালি তাহাদিসের স্থান হইতে এক পদও বিচলিত হইল না।

শক্রসংহারেও ইহারা বিলক্ষণ দেখাইয়াছে। ইহাদিগের শুণিতেই করাসীরা রাজ্ঞীর সহিত যুদ্ধ করেন, তিনি **মহাবীর** অধিকতর ক্ষতিগ্রস্ত হইয়াছে। ভায়ডো- জাতির জননী হইবার বাসনা ক্রিলা-**সিকিউলাস** রাস

পটুতা | আলেকজাওর টমিরিস্নারী বে আমেল্লন-वतन, निधिकशी / इतिन, छारात्र वामना निक रहेताद ।

বিবাহের অঙ্গুরীয়।

বর্ত্তমান সময়ে খ্রীষ্টান বর কলারা পরস্পরে অঙ্গুরী বিনিমন্ত করিরা থাকেন। অনেকে মনে করেন, এ প্রথা বিহুদিদিগের নিকট হইতে গৃহীত, বস্তুত তাহা নহে— রোমানেরা ইহার শিক্ষাগুরু। স্পবিখ্যাত ইতিহাসবেক্তা প্লিনী: বলেন, কোনও যুবতীর সহিত বিবাহ-সম্বন্ধ হইলে রোমীয় যুবক তাহাকে একটা লৌহাসুরী প্রদান করিতেন, তাহাতে কোন প্রকার প্রস্তর বসান থাকিত না। কেবল বিবাহ-সম্বন্ধ নহে, সকল প্রকার চুক্তিস্থলে রোমানেরা এইরূপ লৌহাঙ্গুরী প্রদান

বিবাহকালে রোমীয়কস্তাকে চাবির ছবি-অভিত অঙ্গুরীয় প্রদান করা হইত। ইহার অর্থ তদবধি তিনি স্বামি-গুহের চাবিরক্ষয়িত্রী অর্থাৎ ভাগোরাধাঁকা হইলেন। এরূপ যৌতুক-প্রথা বড় স্থলার; বর্তুমানকালে এ প্রথার পুন:প্রবর্ত্তন হইলে ভাল হয়। প্রাচীন কালে বিবাহ-সম্ম-সময়ে নানাবিধ অঙ্গুরীয় প্রদানের প্রথা ছিল এবং অনেক অঙ্গুরীয়ে প্রণয়ি-যুগলের নাম বা ছবি অথবা প্রণয়-স্চক কথা অঙ্কিত থাকিত।

মক্বাতীর্থ।

কিছু দিন হইল মৌলবী আবহুল জব্বর স্পরিবারে মক্কাতীর্থদর্শনে গমন করিয়া লিখিয়াছেন, মকার চারি দিকে পাহাড় এবং ইহার অধিকাংশ গৃহই চারিতালা। এখন এখানে প্রায় পাঁচ লক্ষ তীর্থ-যাত্রী অমিরাছে। মিসর ও সিরিরাবাসী আসিলে বাত্রি-সংখ্যা আরও অনেক

ঈখরের গৃহের নাম বৈটুর। প্রত্যেক মুহুর্তে পৃথিবীর নানাদিগেদশহ হালার হাজার মুসলমান প্রার্থনা করিতে করিজে मिन्द्र अम्बिन कतिश थाट्क । मिन्द्रिक অনতিদুরে জেমজেম্-নামক এক কুল আছে। কাবা মন্দিরের ভিতরে ও বহিঃ-প্রান্তবে প্রতি রম্বনীতে আলোক্যানে

১৪০০ টাকা ধরচ হয়। বাতি এবং স্থাইট আবেল ছাড়া আর কিছু জালান হয় না। কাবা মন্দিরে ৬০০ চাকর আছে এবং ইহার বড় বড কর্মাচারীরা সকলেই নপুংসক। এই স্থান যাহারা পরিচ্ছদে সজ্জিত। রন্ধনসামগ্রী সকল প্রতিদিন গ্রীবদিগকে দান করা হয়। তাহার ব্যয় তুরুদ্ধের

স্থলতান এবং মিসরের থেদিব দিয়া থাকেন। কেহই এথানে উপবাস,করিয়া থাকে না। মন্দিরের চূড়া হইতে ঠিক্ এক সময়ে ৫টা লোক দিন ৫ বার উচৈচঃ হুরে লোকদিগকে ভজনার জন্ম আহ্বান করে। সে আহ্বানধ্বনি শুনিতে বড় মধুর, তাহা শুনিয়া লোকে সংসার-চিন্তা ভূলিয়া দ্বীররের জন্ম ব্যাকুল হয়।

ইউরোপ ও আমেরিকার রমণীগণ কি করিতেছেন ১

বোষ্টন নগরে স্ত্রীলোকেরা লোকসংখ্যাগণনা-কার্য্যের অধ্যক্ষরূপে নিযুক্ত হইরাছেন।
অষ্ট্রিয়া-সম্রাক্ত্রী বয়সে প্রবীণা হইলেও
পাঠে অধিকাংশ সময় ক্ষেপণ করেন।
এখন গ্রীক সাহিত্য অধ্যয়ন করিতেছেন।
ফ্রান্সে স্ত্রীলোকেরা; সম্দায় শিক্ষা-বোর্ডে

ফালে স্ত্রীলোকেরা; সম্দায় শিক্ষা-বোর্ডে স্ত্রী-শিক্ষক মনোনীত করেন। স্থাড়েনের রমণীরা প্রতিনিধি সভা ছাড়া শ্রার সকল কর্মনীরা প্রতিনিধি সভা ছাড়া শ্রার সকল কর্মনারী মনোনয়ন করেন। আয়র্লতে নারীগণ বন্দর ও দরিদ্র আইনের অভিভাবক মনোনয়ন করেন; বেল্ফান্ট নগরের মিউনিসিপ্যাল মনোনয়নে তাঁহাদের অধিকার আছে। রুগীয়াতে গৃহস্বামিনীরা কর্মনারীনিরোগে এবং স্থানীয় বিষয় সকলে মত দিবার ক্রমধিকারিনী।

অট্র-হর্দেরী বোসিয়াও ডালমিসিয়াতে তাকেরা বরং হানী ইবনোনয়নক্ষেত্রে তাকে ইইয়া মত প্রদান করেন। ইটালীতে পার্লেমেণ্টের সভ্য মনোনম্বনে

ক্রীলোকদিগের অধিকার আছে।, 'কেপ
কলোনী ও নিউজিলওে মিউনিসিপ্যাল
মনোনম্বনে স্ত্রীলোক দ্র অধিকারিণী।
আইস্লও, মান দ্বীপ ও পিটবোর্ণ দ্বীপে
স্ত্রীলোকদিগের মত দিবার: সম্পূর্ণ অধিকার
আছে।

চিকাগো ্রস্ত্রী-সভায় কাফ্রি স্ত্রীলোক-দিগকে সভ্যরূপে গ্রহণের ব্যবস্থা হইরাছে। চিকাগোর বিবী এলিজেবেথ ষ্টিক্নী সেণ্ট জেম্স চার্চের জন্ম একথানি বাড়ী দিয়াছেন, আবার ৪০ হাজার টাকা ব্যয়ে এক ধর্মাননির নির্মাণ করিতেছেন।

ল্ডো টেনিসন স্বামি-প্রণীত "Sweet and Low" মধুর ও মৃত্ নামে যে কবিতা তাঁহাকে গাইয়া ভনাইয়া প্রীত ক্তিতেন, তাহা স্বর্যাপি-বন্ধ করিয়াছেন। বিবী মেরী রবিনসন রাইট মেক্সিকো

বিষয়ে এক সচিত্র প্রবন্ধ নিধিয়া মেক্সিকো গ্রণমেণ্ট হইতে ২০ হাজার স্বর্ণভলার পাইয়াছেন। একটা প্রবন্ধের মূল্য এত ক্র কোথাও শুনা যায় না।

নিউইয়র্ক সহরে পুলিদবিভাগের সেকে-

টারী ও ষ্টিনোগ্রাফার ছই জন পুরুষ ছিলেন। সেনী গারটুড কেলী একাকিনী ১৭০০ ডলার বেতনে ছই পুরুষের কাজ করিতেছেন। ইহাতে গ্রণমেন্টেরও ১২০০ টাকা বাচিরাছে।

নূতন সংবাদ।

১। প্রিক্স নদীরুলা ইংলও হইতে নির্ব্বিল্লে ভারতবর্ষে পৌছিয়া স্বদেশ্যাত্রা করিয়াছেন।

২। কলিকাতার মৃক-বধির বিদ্যালয়ের
শিক্ষক বাবু যামিনী নাথ বন্দ্যোপাধ্যার
গত ২৮.শে সেপ্টেম্বর আমেরিকার
ওয়াসিংটন মহানগরে পৌছিয়াছেন।
গালাভেট কলেজের প্রেসিডেণ্ট তাঁহাকে
বিশেষ যত্নপূর্বক আহ্বান করিয়া লইয়া
গিয়াছেন এবং তাঁহার সম্দম বায়ভার
তত্রতা লোকে বহন করিবেন।

৩। স্থরাপান-নিরারণী সভার লেডী হেনরী সমারসেট ও কুমারী ফ্রান্সিদ্ উইলার্ড, এল্, এল, ডি, আগামী ডিসেম্বর মাসে ভারতদর্শনে আসিবেন।

৪। গত ২৬ শে অক্টোবর পিঞ্লরা-পোলে গাভীপুজার বার্ষিক উৎসব হইরা গিরাছে। কলিকাতা হইতে বছ-সংখ্যক লোক তত্পলক্ষে তথায় গমন করিয়াছিলেন।

। বিস্থবিৱস্ পর্বতের অগ্যুৎপাত
 পুনরার আরম্ভ হইরাছে। এবার দ্রবীভূত

ধাতুনি:শ্ৰব এক নৃতন দিকে প্ৰবাহিত হইতেছে।

৬। জাপানীরা ফর্মোসা দ্বীপে টেকায়ে।
নগর জয় করিয়া টোকানফু আক্রমণ
করিয়াছে।

৭। গন্মা সহরে ফল্পনদী হইতে উৎক্ষষ্ট জল যোগাইবার কৌশল অবলিখিত হইতেছে। এ কার্য্যে ৬০০০০০ লক্ষ টাকা ব্যয় হইবে।

৮। সিকিমের রাজা ৩ বংসরের **জ্ঞা**সিংহাসনচ্যত হইয়াছিলেন। এক্লেরীটিসরাজের নিয়মাধীন হওয়াতে এই মাসেই
সিংহাসন পুনঃপ্রাপ্ত হইবেন।

৯। অধ্যাপক ভাস সাহেবের স্ত্রী
কুইন্ সার্লট্ সাউণ্ডের নিকট জলমগ্র
স্থামীর মৃতদেহ উদ্ধারার্থ করেক জন লোক
লইরা অমুসন্ধান ক্রিতেছেন।

১০। সংস্থারবিরোধী দল কোরিবার রাজীকে হত্যা করিয়াছেন। জাণানীরা ইহাতে সংস্ঠ আছে সন্দেহ করিরা জাপান গ্রণ্মেন্ট জাপানীদিগকে কোরিরাগ্মনে নিবেধ করিরাছেন। ১১। বোধপুরের মহারাজ যশোবস্ত সিংহের মৃত্যু হইয়াছে। তিনি একজন প্রাচীনতন্ত্রের প্রজারঞ্জক রাজা ছিলেন।

১। ফরাসীরা হোবা রাজধানী আণ্টা-

নানারিবো অধিকার করিয়াছে। সেনাপত্তি ডচিনের বীরত্বে করাসী গবর্ণমেণ্ট খুব সম্ভোষ প্রকাশ করিয়াছেন। মাদাগাস্কারের রাজ্ঞীকে বৃত্তি দেওয়া হইবে।

পুন্তক প্রাপ্তি ও সমালোচনা।

১। অহল্যা বাই—শ্রীষোগীক্সনাথ
বন্ধ, বি, এ সন্ধলিত, মৃল্য । ৮০ আনা।
পূণ্যপ্লোক অহল্যা বাই একজন আদর্শ
ভারতরমণী। তাঁহার চরিত্রে ভগবদ্ভক্তি, দয়াদাক্ষিণ্য এবং স্ত্রীশোভন সমৃদায়
গুণ যেমন জাজল্যমান, রাজনীতিজ্ঞতা,
সাহস, শোর্য্য, বীর্য্যও সেইরূপ। চরিতাখ্যায়ক যোগীক্র বাবু মাইকেল মধুস্দন
দত্তের জাঁবনী প্রভৃতি গ্রন্থপ্রণতা একজন স্থাসিদ্ধ লেথক। তিনি সহ্বদয়তার
সহিত অতি স্থলানিত ভাষায় গ্রন্থথানি
লিথিয়াছেন। ইহা প্রত্যেক রমণীর
পাঠ ও বিশেষ অমুশীলনের যোগ্য।

২। বিরাটনন্দিনী নাটক—ছ: ধমালারচমিত্রী প্রণীত, মূল্য ॥ / আনা।
বিরাটকভা উত্তরার সহিত অভিমন্তার
বিবাহ ও তৎপরে কুরুক্কেত্রবৃদ্ধে সপ্তরথি
কর্ত্বক অভিমন্তার বধ ইহাতে চিত্রিত
হইরাছে। গ্রন্থকর্ত্রী স্বর্গীর প্রসরক্ষার
স্কাধিকারী মহাশ্রের কলা ও একজন
স্কাশিকার্ভ্র রমণী। তিনি তাঁহার সরস
বর্ণনা শারা হাল
ইত শোক উত্তর ভাব
উদীপনে সমর্থ হইরাছেন।

৩। উপনিষদঃ ২য় খণ্ড—বাবু সীতানাধ
দন্ত সঙ্কলিত। ইহাতে তৈত্তিরীয় প্রভৃতি
আর কয়েকথানি উপনিষদ সভান্ত বকামবাদ সহিত প্রকাশিত হইয়াছে। পুত্তকশুলি যেরূপ উপাদের হইতেছে, তাহাতে
ধর্মোৎসাহী ব্যক্তিমাত্রেরই গ্রাহক হইয়া
গ্রন্থসক্ষকককে উৎসাহ দান ক্রা কর্ত্ব্য।

৪। অবলা-চরিত—শ্রীনারায়ণ চন্দ্র বিভারত্ব-প্রণীত, মূলা। আনা। ইহাতে ১২টা বিদেশীয়া গুণবতী রমণীর চরিত্র বর্ণিত হইয়াছে। ইহা বালিকা বিদ্যালয়ের পাঠ্যমধ্যে নিবিষ্ট হইবার যোগ্য। বঙ্গ-সাহিত্যের জন্মদাতা বিদ্যাসাগর মহাশয়ের পুত্র সাহিত্যক্ষেত্রে খাটিতে আরম্ভ করিয়া-ছেন, ইহা সর্ব্বসাধারণেরই আনক্ষের বিষয়, সন্দেহ নাই।

ধ। হরিনাম সার কথা— এ আননদ চক্র সরকার প্রণীত, মৃদ্য ৮০ আনা। গ্রহকার একজন ভদ্রবংশীয় নিরুপায় আছা। ভিক্লাব্দীবী না হইয়া তিনি এইরূপ পুত্তক প্রচার ছারা জীবিকা আর্দ্ধনের চেষ্টা করিতেছেন, ইহা অতি প্রশংসার বিষয়। তিনি উপনিষদ ও নাম সাধনের তত্ত্ব ব্যাখ্যা করিয়াছেন। ভাব ও সার ধর্মোপদেশ আছে।

বৈঞ্চবশাল্লের মত সন্মিলিত করিয়া হরি- । এই কুজ প্তকের মধ্যে অনেক উন্নত

বামারচনা।

বিদায়-সঙ্গীত।

যা'কিছু আমারে দেহ **ठा** अपनि किटन निष्, হাসিমুখে বহুধে ! মা,

দাসেরে যাইতে দিও।

छानी. खनी मानी यात्रा

তাদেরি, ও-কোলে রাখ, অক্তী অধম আমি,

আমারে মা, কেন ডা'ক ?

ক্ষুদ্র আগুনের কণা

তা' চু লেও হয় ছাই, বিষাক্ত জীবাণু আমি,

আমারে ছু ইতে নাই!

সরসে সরোজ হাসে

वाशास्त्र हास्मिन विन ;

আমি চিতানল, মাগো!

ভীষণ শাশানে থেলি!

ভকার যমুনা গলা

আমারি বাতাদে হার,

काशाद्व विशंद (म' मा, गरि जामि निवानाय !

वाहा किছ पित्राहित्न,

ठांख यमि गर किर्ज,

অভাগারে যেতে দেহ,

একা বৈতরণীতীরে।-

ফিরে লহ রবি মম

ফিরে লহ চক্র তারা,

বদস্ত বাতাস লহ

वत्रवात्र वात्रिशात्राः ;

সুল্লিত গীত লহ

শ্যামা পাপিয়ার -মুখে,

সাধের কুন্থম লহ

কোটে যা' তব্দর বুকে !

ফিরে লহ আশা তৃষা,

ফিরে লহ মেহ প্রীতি.

অভাগারে দিও তথু

সেই ক'দিনের শ্বতি !---

আর মা, নিও না কেড়ে

নরনের অঞ্কণা,

তা'হলে অধম আমি

কিছু আর চাহিবুনা!-

যতক্ৰণ ববে প্ৰাণ

সেই মন্ত্র—ইষ্ট মন্ত্র
মরমে করিব ধ্যান !
১৩
দিব না শুনিতে পরে
দে পুবিত্র দেব-ভাষা;
চাব না এ ভাঙ্গা বুকে
সংসারের ভাঙ্গবাসা—

১৩ শত কালানল-জালা, প্রাণে জলিছে যার,

পে কি চাহে কুন্ত ছায়া কুন্ত বন শতিকার.!

अपूर्व वन गाउपाप्तः ऽ

যাহারা যেমন আছে, তাহারা তেমনি থাক্,

তাহারা তেমান খাণ্ আমারি জীবন একা

नीत्रत्व क्त्रांत्य याक्।

যাহা কিছু দিয়েছ মা,

ফিরাইয়ে লহ তাই,

নিওনা ুএ: আঁথিজল এই নিয়ে মরে যাই!

ञीमा।

সধী মনে কি পড়ে সেই দিন ?
সধী মনে কি পড়ে সেই দিন ?
শরতের পর হেমস্তপ্রভাতে,
করে কর ধরি তোমাতে আমাতে,
গিরাছিয় যবে নিকুল্প মাথেতে
কমলের দলে শিশির হেরিতে।
সেধা বীরি বীরি সমীর বহিছে,
লতা সনে পাতা মিশিরা থেলিছে,
ফলে ফুলে কত ভ্রমরা উড়িছে,

তথায় দোয়েল-পাপিয়া ডাকিছে । मशै मिर এक मिन--বকুলের তলে সরসীর তীরে, বসিয়ে ছব্দনে মৃত্ মধু স্বরে, কত প্রাণকথা বলিলে ভনিলে, হৃদয়ে হৃদয়ে তথনি বাঁধিলে। বকুল কুন্তম আছিল আঁচলে, স্থচিকণ হার গাঁথিয়া লইলে, ছবোনে অঞ্জলি ফুলে ফুলে পুরি গিগ্নাছিত্ব তবে পূজিতে শ্রীহরি। মন্দির হুয়ারে দাঁড়ায়ে হুজ্বনে, গাহিলাম প্রীত গভীর স্বননে, "ব্রহ্মাণ্ডাধিপতি প্রণমি চরণে প্রেমভক্তিভরে মাগি শরণে।" প্রবেশি ভিতরে পুজিমু দেৰেরে নিরমণ কত ভকতি আদরে, বিদায়ের কালে করিত্ব কামনা, हित्रिमिन (यन्धारक व माधना, এপারে ওপারে যথা তথা থাকি এই অমুরাগ প্রাণে পুরে রাখি। কত নিশি দিবা হয়েছে অতীত গ্রহচক্রে ধরা ভ্রমিছে নিয়ত, চলিয়াছি কতদুরে বুরে ফিরি, সেই ভভ লগে হৃদয়েতে পুরি, মাঝে মাঝে জাগি অতাতের স্তি প্রাণে আনি দেয় নব নব প্রীতি। স্থী। সেই স্থলগন আর না ফিরিবে! শ্বতির মাঝারে রেখাটি টানিয়ে স্থাথের নিমেষ গিয়াছে চলিয়ে। वीनिखात्रिमे तन्त्री।

বামাবোধিনী পত্রিকা।

BAMABODHINI PATRIKA.

"कन्याप्येवं पालनीया शिच्चणीयातियस्नत:।"

কন্তাকে পালন করিবেক ও যত্নের সহিত শিক্ষা দিবেক।

७१১

সংখ্যা।

অগ্রহায়ণ ১৩০২—ডিসেম্বর ১৮৯৫।

ধ্য ক**র**। ৪থ ভাগ।

সাময়িক প্রসঙ্গ।

কলিকাতা অনাথাশ্রম-হায়ার টেুণিং সভীগৃহে গত ৭ই নবেম্বর অনাপা শ্রমের এক সাধারণ সভা হয়। গৃহটী লোকে পূর্ণ হইয়াছিল। অনরেবল আনন্দ মোহন বস্ত্র মহাশয় সভাপতির কার্য্য করেন এবং অনরেবল স্থরেন্দ্রনাথ বন্দ্যো, বাব কালীচরণ বন্দ্যো প্রভৃতি বক্তৃতা করেন। আশ্রমের সম্পাদক সর্জন লেফ্টনেণ্ট ক্রেল আর এল দত্ত এবং সহকারী সম্পান কে ভাই প্রাণক্ষণ দত্ত কার্য্যবিবরণ জ্ঞাপন করেন। প্রাণক্ষণ বাবু ও তাঁহার পত্নী নিরাশ্রর বালকবালিকানিগের পিতা মাতা শুরূপে প্রায় ৪ বংসর কাল ভগবং-প্রণোদিত হইয়া এই আশ্রমের সেবায় নিযুক্ত আছেন। ইহাতে এক ভন্নক-পালিতা বালিকা ছিল। এখন ইহাতে ১২টা অনাথ বালক ও ৬টী বাঙ্গালীদিগের অস্ত বালিকা আছে।

ইহা একটা নৃত্ন অবতি প্রয়ে**জনীয় ও** হিতকর অনুষ্ঠান। অর্থবন্তাদি**রু দারা** ইহার সহায়তা করা সহস্বয় বাজিজ-মাত্রেরই কর্ত্বা।

যুবরাজের নববর্ধ—ভারতের ভাবী
সমাট্ যুবরাজ আগবাট গত ৯ই নবেম্বর

৫৪ বংসর পূর্ণ করিয়া ৫৫ বর্ষে পদার্শণ
করিয়াচেন। ঈশ্বর উাহাকে দীর্ঘামুককন্।

ভূপালের বেগমের সৌজ্ঞ —
রাজপ্রতিনিধি লর্ড এল্গিন লেডী এলগিনের সহিত ইহার আতিথ্য সীকার
করেন। ভোজের পর বেগম পরদার
ভিতর হইতে দেশীর ভাষার সুক্তর
স্পেট বক্তা দ্বারা ইহাদের প্রভি ভঙ্কি
ও ক্রতজ্ঞতা প্রকাশ করেন।

কন্ত্ৰেল সভাপতি আমরা তুনিরা সভূঠ হইলাম, বোবাইবানীয়া অন্যেবল স্থান্তনাধ বন্ধোপ্রতিক্ষ পুনা কনগ্রেসের সভাপতি মনোনীত করিয়াছেন।

দীর্ঘতম সেতু—এ দেশের শোণ-সেতু ও যমনা-সেতু দেথিয়া আমরা আশ্রুয়া হই, কিন্তু চিনের পীতদাগরের উপর সাঙ্গাইয়ের সেতু দীর্ঘে ৫ মাইলের অধিক, ০০০ বৃহৎ প্রস্তার-স্তম্ভের উপর ইহা স্থানোভিত। পৃথিবীতে এত বড় সেতু আর নাই।

, উত্তর পশ্চিমের ছোট লাট— শার আপ্টনী মাক্ডোনাল্ড— যিনি ছোট লাট ইলিয়টের ছুটীর সময় প্রতিনিধিত্ব করিয়া সর্বাধারণের প্রজাভাজন হন, তিনি উত্তর পশ্চিম ও আউডের ছোট লাট ইইয়াছেন।

ইংলণ্ডীয় প্রধান সেনাপতি— লর্ড উল্পলী এই পদে অভিষিক্ত হইয়া-ছেন। তিনি ইংলণ্ডের উচ্চ গৌরব রক্ষার জন্ম প্রতিজ্ঞারত।

মহারাণীর সহদয়তা—১৮১৯ সালে

কেন্সিংটন হুর্গের অস্তবর্ত্তী যে গৃহে মহারাণী জন্মগ্রহণ করিয়াছিলেন, সেই পৃহ পুনরায় সেই অবস্থায় রাথিবার নিমিত্ত আদেশ করিয়াছেন।

জল বিনা জীবনধারণ—আরব
দেশের অন্তর্গত নিফাড্ মরুভূমির
বিভোয়িন জাতি তাহাদিগের মেষ ও
ছাগদিগকে জল বিনা জীবন ধারণ
করিতে শিথাইয়াছে। ব্যারণ প্লতি সাক্ষাৎকারে দেধিয়াছেন, ইহারা এরূপ অভ্যন্ত
হইয়াছে যে, ইহাদিগকে জল দিলেও
ইহারা স্পর্শ করে না।

প্রধান রাজাদিগের দৈনিক আয়—
কশীয় সমাটের ৬০০০, তুরস্ক স্থলতানের
৪০০০, জর্মণ সমাটের ২০০০, ইতালীর
রাজার ১৬০০, সামাজী ভিক্টোরিয়ার
১৬০০, বেলজিয়মের রাজার ৪০০, ফ্রান্সের
প্রেদিভেন্টের ১২০ ও যুক্তরাজ্যের
প্রেদিভেন্টের ৩৫ পাউও। এক পাউওও
এখন প্রায় ১৯২০ টাকা।

উদাদীনের চিস্তা।

চঞ্চলা সন্নাসী ঠাকুরের সমীপে অগ্র নিম উপস্থিত হইরা তাপশান্তির উপায় অবগত হইবেন স্থির করিলেন। কিন্তু মাসুষের সংকল্প বালির বাঁধ। কত সংক্রম কালপ্রবাহে ভাসিনা দ্বাইতেছে! ভবিষা-বর্ণনাক্ষম মান্থ আশার ছলনে মুগ্ধ হইরা ক্ত কল্পার গুহুই নিশ্বাণ করিতেছে, কিন্তু

বে মামুৰ পর মুহুর্তে বাহা বটিবে তাহা ।

জানে না, দে মামুবের ভবিষাতের সম্বন্ধে
কণা বলিবার কি অধিকার আছে ?
চঞ্চলার মনোভীট সিদ্ধ হইল না। সে
সংকটাপন্ন রোগে আক্রান্ত হইল। তাহার গদ্মাসী ঠাকুরের আশ্রমে বাওরা ঘটিল না।
সন্মাসী ঠাকুর বখন চঞ্চলার রোগের সংবাদ

শুনিতে পাইলেন, তখন তাঁহাকে দেখিবার জ্ঞ সশিষ্য তাঁহার বাড়ীতে উপনীত হইলেন। চঞ্চলার তথন অনেক পরিমাণে রোগোপশম হইয়াছে। সন্ন্যাসী ঠাকুর **भर्गाभ**(ग्रिनी **万物**可 উপনীত **उ**टे ल থাকিয়াই তাঁহার চরণধূলি গ্রহণ করিলেন আশীর্কাদ এবং রোগশান্তির করিতে অমুরোধ করিলেন। ঠাকুর শ্যার এক পার্মে উপবেশন করিয়া উদ্ধানতে কিয়ৎকাল ভগবচ্চিস্তায় নিমগ্র থাকিলেন। তৎপরে চঞ্চলার প্রতি স্থির-নেত্রে চাহিয়া রহিলেন। সন্মাদী ঠাকুরের সে ভার প্রতাক করিয়া চঞ্চলার নয়নদ্য হইতে অঞ্বারি বিগলিত হইয়া পড়িতে লাগিল। • অনন্তর সন্ন্যাসী ঠাকুরকে জিজাসা করিলেন, বাবা আর কাল ভোগ আছে ? যশ্বণার একশেষ হইয়াছে, জানি না কোন্অপরাধ করিয়াছি —্যার জন্ম এই শাস্তি গ

স। মা! বোগ জরা মৃত্যু পাপের
শান্তি নয়, উহা দেহীদিগের বর্মা; দেহ ব
ধারণ কল্লেই রোগ জরা মৃত্যুর অধীন
হইতে হইবে। পশুপ্রভৃতি ইতর প্রাণী
দের স্বাধীনতা নাই, তাহাদিগকে প্রকৃতির
ক্রীজনক বল্লেও বলা যায়। যাদের
স্বাধীনতা নাই, তারা পাপ কর্কে পারে, এ
কথা স্বীকার করা যায় না। আমি এ তর্ব
জামার পূর্কেই বলিয়াছি। তবে পশু
পক্ষীদের রোগ জরা মৃত্যু ঘটে কেন ?
এ কথার উত্তর আর কিছুই নাই,
কেবল ভাহারা দেহী বলেই দেহ

ধর্মবশতঃ রোগ জরা মৃত্যু এই **আপিদ্** সকলের অধীন হয়েছে।

চ। রোগ যদি পাপের শান্তি না হ ব,
তা হলে লোকে সচরাচর এ কথা বলে
কেন
প অনেকে বলে থাকেন বে, বাহ্যবিধি ভঙ্গ কলে তারই শান্তিবরণ
রোগ জন্মে থাকে। এ কথা কি ঠিক্
নর
প

স। হাঁ এ কথা ঠিক্। কিছ অপূর্ণ
মাহুষের পক্ষে সমস্ত স্বাস্থ্য-বিধি জানা
সন্তবপর নহে, জানা সন্তবপর হলেও
সমস্ত বিনি পালন করা অসাধা। স্কৃতরাং
রোগের হস্ত হতে অব্যাহতি পাওয়া
অসম্থব। যে ষম্বণা অবশুস্তাবী, তাহা
পাপের শান্তি, এ কথা বলা যেতে পারে
না। যেমন মৃথ্য অবশুস্তাবী ঘটনা, মাহুৰ
শত সাবধান হইলেও মৃথুরে হাত এড়াতে
পারে না; স্কৃতরাং উহা পাপের শান্তি বলা
যেতে পারে না। রোগ সদক্ষেও তদ্ধেপ।

চ। আপনার কথা এখন বেশ
বৃঞ্লাম—বোগ যে পাপের শান্তি, তাহা
লোকের একটা ভ্রমায়ক সংস্কার মাত্র।
তবে উহা যে স্বাস্থাবিনি-ভঙ্গের ফল, সে
কথাও ঠিক্। কিন্তু সে বিধিছ্যের
মূলে মানবের স্বাধীনতা নাই। অজ্ঞানতা
এবং শক্তির অভাবই উহার কারণ।
বাবা একথাত হল। এখন ও-দিনকার
কথাটা আমার বলুন—বাসনার নাশ কিনে
হর।

স। বাসনার নিবৃত্তি সমকে চ্ইটা প্রচলিত মত আছে। একটা—ভৃতি নারা নিবৃত্তি; অপরটী প্রতিজ্ঞার -বলে বাসনারণ তৃষ্টি, না করিয়া নিবৃত্তি। ইহাদের প্রচলিত নাম প্রবৃত্তিমার্গ, এবং নিবৃত্তি-মার্গ_। কিন্তু আমি এই ছইয়ের একটিকেও প্রকৃষ্ট উপায় মনে করি না। প্রবৃত্তিমার্গ সম্বন্ধে মন্ত্র বলিয়াছেন;—

"ন জাতু কামঃ কামানামুপভোগেন শাম্যতি। ছবিৰা কৃষ্ণবন্ধে ব ভূগ এবাভিবৰ্দ্ধতে॥"

কামনার বশীভূত ব্যক্তির উপ-ভোগ খারা কামনার নিবৃত্তি হয় না, প্রকাত অগ্নিতে ঘুতাছতি দিলে যেমন উহা বৃদ্ধি প্রাপ্ত হয়, তদ্রপ বৃদ্ধি প্রাপ্ত মহাভারতের যজাতি-হইয়া থাকে। উপাথ্যান তাহার সাক্ষ্য প্রদান করে। মহারাজ যজাতি সহস্র বৎসর যৌবন-ভোগের পর পুত্র পুরুকে যৌবন ফিরাইয়া দিবার সময় ঠিক এরূপ কথা বলিয়াছিলেন। এতদ্বিদ্ন প্রত্যেক বাক্তির অভিজ্ঞতাও এ কথা বলিবে যে, কামনার চরিতার্থতায় কথনও কামনার শেষ হয় না। বাঁহারা প্রতিজ্ঞার বলে বাসনা দমন কর্ত্তে চান. তাঁহারা সংগ্রাম কর্ত্তে কর্ত্তে পরিশ্রাস্ত হয়ে, শেষে নিরাশ হয়ে পড়েন। তাতে প্রবৃত্তির আলের হয় কৈ।

চ। তবে কি জীবের বাসনার হাত থেকে মুক্ত হবার উপায় নাই।

স। আছে বই কি ? এক্ষসক লাভ করাই এক্ষাত্র উপায়। অমানিশার অক্ষত্রই কৈহ ব্লপুর্বক তাড়াইতে সারে না। আলোর আবিভাবে যেমন অক্ষতার আপনিই তাড়িত হয়, তক্রপ ব্রন্ধ-জ্যোতির আবির্ভাবে বাসনার অন্ধ-কার আপনিই সরিয়া যায়। আর তৃপ্তি কিংবা সংগ্রামের প্রয়োজন থাকে না।

বেশ বুঝলেম যে, এখারিক আলো প্রাণে আসলে বাসনা আপনা আপনি নিভে যাবে। এখন জিজ্ঞাস্য এই. ঐশবিক আলো লাভের উপায় কি ? কেহ কেহ বলে থাকেন যে, চিত্ত নিৰ্মাণ না হলে ঐশ্বরিক আলো আত্মায় প্রতি-ফলিত হতে পারে না। মলিন দর্পণে যেমন প্রতিবিশ্ব পড়ে না, মলিন ক্লয়েও তেমনি ঐশব্রিক আলোর প্রতিবিম্ব পড়তে পারে না। বাসনাই -হাদরের মলা, স্থতরাং হৃদয়ে বাসনা থাকতে এখরিক জ্যোতি তথায় প্রতিফ'লিত হতে পার্কেনা; অথচ আপনি উল্টা কথা বল্ছেন, আগে ঐশ্বরিক আলো আদতে माञ, তৎপরে^মবাসনা যাবে। সাধারণের কথা এই, আগে বাসনা যাক্, তৎপরে ঐশবিক আলো আসবে।

স। আমি সাধারণের কথা মানি
না, পুরুষকার দ্বারা বাসনার নির্ত্তি
হলে স্থারদর্শন হবে—এ কথা অর্কাচীনের
উক্তি। ব্রহ্মকুপাবলে তাঁহার সঙ্গলাভের
পথ প্রাপ্ত হলে সে পথ অ্বলন্থনে
প্রথমে ব্রহ্মদর্শন ড্রতৎপরে সেই জ্যোতি
হারা বাসনার নির্ত্তি।

চ। আপনি যাহা বল্ছেন, তাহাতে দেখা যায় যে, মূলতঃ ব্ৰদ্ধকপা। বৃদ্ধ-কপা না হলে সাধনপথ পাওয়া যাবে না। পথ না পেলে ব্ৰদ্ধৰ্শন অসম্ভব। বৃদ্ধ- দর্শন না হলে বাসনার নিবৃত্তি হওয়া অসাধ্য।

म। हैं। जूमि किंक् तूरवे हा

চ। ভবে কোনও পাপী পাপে নিগু থাকিবার কালে ব্রহ্মকুপা লাভ কর্ত্তে পারে কি ?

স। পারে বই কি? তাই ত সম্ভব। ব্রহ্মকুপা নিরপেক্ষ ভাবে আসিয়া থাকে, মাহুব জোর করে তাহা আনিয়ন কর্ত্তে পারে না।

চ। ব্রহ্ম ত থেয়ালে চলেন না, কাকে কথন কপা কর্মেন তার ত একটা নির্দিষ্ট ,সময় আছে?

স। হাঁ তা আছে বই কি ? ঠিক্ সময়ের 'ছই দিন আগে কিংবা পরে কুপার অবতরণ হবে না।

চ। তবে আমার জীবনে কথন ভাঁহার রূপা-দৃষ্টি পড়্বে?

স। তজ্জ চিস্তিত হইও না। উদ্বেগ অবিখাসের লক্ষণ। তিনি তোমার মুক্তির পক্ষে উদাসীন নহেন, তাঁহার উপর নির্ভর করে থাক, তিনি ঠিক্ সময়ে তোমার আকর্ষণ কর্মেন। ধৈর্য্যের সহিত প্রতীকা করা বিখাসীর লক্ষণ।

চ। বাবা ! তাঁহার ইচ্ছাই পূর্ণ হউক, আমি আপনার কথায় আজ বেশ শান্তি পেলেম। আর বাসনার নিবৃত্তির জন্ত উদ্বিশ্ব হব না। যথন তাঁহার ইচ্ছা হবে, তখন সাধনপথ দিবেন।

স। মা! এই গ্রহণ কর, তিনি জোষাকে সাধনপথ স্থানাইয়া দিবার

জন্ত আমাকে প্রেরণ করেছেন। ভূমি महानिकींगण्डाक "उँ मिक्राएकः उच নাম'' প্রত্যন্থ অন্ততঃ সহস্র বার অপ कंत्रित्व এवः क्लान्त मान मान तारे সর্বারাধা অমত্ত মুদ্রি ধ্যান করিবে। এতদ্বিদ্ধ জীবহিংসা হইতে সর্বতোভাবে নিবৃত্ত থাকিবে। বাসনার পরিভৃত্তি কিংবা ক্ষণভঙ্গুর শরীরপোষণের অভ कान बीविश्मा कत्रिय ना। (मवन धर्म-खीवन-রূপ মাদক দ্রব্য বিকাশের সম্পূর্ণ অন্তরার। অবসর মত সাধুসঙ্গ ও সদ্গ্রন্থপাঠ করিলে ধর্ম कोवरन विशक्त महायुका आश स्ट्रेर । আমি এখন বিদায় হই। আর ছই বংসর আমার সঙ্গে দেখা হবেনা। আমি হিমালয়ে গমন কর্বো এবং তথায় এই সময় অতিবাহিত করিবার মানস করেছি।

চ। বাবা, ছবংসর কাল আমি কি করে তোমাকে না দেখে থাক্ব? সাধু-সঙ্গ ভিন্ন যে এ পাপিনীর জীবন মান হয়ে পড়বে।

স। তোমার ভয় নাই। যে উপদেশ
দেওয়া হ'ল, তদমুরূপ চলিতে থাক, সকল
অভীষ্ট সিদ্ধ হবে। এই বলিয়া সন্নাসী
ঠাকুর গাত্রোখান করিলেন। চঞ্চলা
আশীর্মাদ ভিক্ষা করিয়া চরণধূলি গ্রহণ
করিলেন। সন্নাসী ঠাকুর বুধাসমন্ত্রে
আশ্রম পরিত্যাগপূর্মক হিমালয় অভিমুখে বাত্রা করিলেন।

25: 1

কর্ত্তা ব্যোমযানে,—গৃহিণী মাটিতে।

পুৰুষ প্ৰকৃতি লইয়া গাৰ্হ্য ধৰ্ম।
গাৰ্হস্থের মধ্যে যে সকল প্ৰশ্ন ও মহৎ
ভাব নিহিত আছে, তাহা পুৰুষ প্ৰকৃতির
মিলন ও একাত্মতা হইতে উভ্ত হয়।
গৃহে ছই একটা পুৰুষ ও তুই একটা
জী বিদ্যমান থাকিলেই সে কাৰ্য্য সিদ্ধ
হয় না।

• সকল গৃহেই কর্ত্তা আছেন, এবং नकन गृह्हे गृहिनी आह्म, किन्न প্রকৃত কর্তা গৃহিণী কয়টী গৃহে আছেন, তাহা নিরূপণ করা কঠিন। গৃহিণীর ছইটী ভাব। এক ভাবে তিনি কর্ত্তার অধীনা, অগু ভাবে श्वाधीना : স্বাধীনার অর্থ স্বতম্ব। নহে। কেহ বা কর্ত্তার অহ্মতি অনুসারে গৃহকার্য্য নির্বাহ করেন, কেহ কর্তার মন ব্ঝিয়া গৃহ-কার্য্য নির্ম্বাহ করেন: এমন বুঝিয়া कार्या निकार करतन तथ, तकान कार्याहे কর্তার অভিপ্রায়ের অনমুরূপ হয় না। এইরপ গৃহিণীর নাম স্বাধীনা এবং এইরপ গৃহিণীপনাই সর্বজন-প্রশংসিত। এইরূপ গৃহিণীপনার সৃষ্টি কেবল গৃহিণীর শুণে হয় না, তাহাতে কর্তারও ক্রতিত্ব খাছে। আমরা ক্রমশ: তাহা দেখাইব।

কোন ধ্ৰের কর্তা মাসে মাসে অনেক অর্থ উপার্জন করিতেন; কিন্ত কথন ক্ষেক্ত আৰ্থন হত্তে রাখিতেন না, সমস্তই গৃহিণীর হত্তে অর্পণ করিরা

বলিয়া দিতেন,—"আমাদিগকে উত্তমক্রপে ধাওয়াইবে.—ভাল পরাইবে,—অভিধি-কুটমকে অন্ন দিবে,—বাড়ীর কাহারও পীড়া হইলে ভাল ডাক্তার বৈদ্য ডাকিবে। এই দকল করিয়া যাহা থাকিবে, তদারা তোমার গহনা গড়াইবে। পারত কিছু সঞ্চয়ও করিবে।" তিনি এই সকল কথা বলিয়া মাসিক আয়ের টাকাগুলি গৃহিণীর হত্তে অর্পণ করিয়া সম্পূর্ণ নিশ্চিস্ত হইতেন। কেহ কথন তাঁহার কটিতে সংসারকার্য্যে তাঁহার অসম্ভব দিকিন্ততা ও ওদাসীভা দর্শনে আত্মীয়গণ ডাঁহার নিন্দা করিতেন। কিন্তু তিনি সেই নিন্দা শ্রবণে আপনাকে গৃহের কর্ত্ত বিষয়ে অধিকতর ক্লতকার্যা মনে করিতেন।

গৃহিণী কানে কানে কন্তাকে বলিতেন,—"তুমি গৃহকার্য্যের কন্তর্যুতা বিষয়ে সকলই আমাকে জিজ্ঞাসা কর, এবং আমি বে বিষয়ে যাহা করিতে বলি তাহাই কর। ইহাতে আমার মনে হয় যে, আমার স্থপ হইবে বলিয়া আমার মনের মত কাজ করিয়া হয়ত তুমি ক্ষতি-গ্রস্ত হও। এমন হলে আমি না থাকিলেই ভাল হয়।" কন্তা এ কথার কোন উত্তর না দিয়া একথানি সাদা কাগজের থাতা বাধিলেন এবং সাংসারিক প্রত্যেক কার্য্যে আপনার অভিনতি

লিপিবন করিতে শাগিলেন। পবে সেই সকল বিষয়ে গৃহিণীর মত লইয়া তাঁহাকে নেখাইয়া দিতেন যে, তাঁহার ও গৃহিণার মত ঠিক মিলিয়া গিয়াছে। বে কর্ত্তা গৃহকার্য্যের প্রত্যেক বিষয় গৃহিণীর সহিত পরামশপুর্বাক স্থির করিয়া शांकन, तम ग्रहत गृश्गित कमनः এই-রূপ একটা শক্তি জনিয়া যায়, যদারা তিনি স্বামার মন ব্রিয়া প্রামশ দিতে ও কাজ করিতে পারেন। কর্তা মাদে মাসে যে কথাগুলি বলিয়া গৃহিণীর উপার্জনের টাকাগুলি অর্পণ श्ख করিতেন, সে সংসারে সেই কথা-গুলি ক্রমশ: কার্য্যে পরিণত হইয়া-हिन। .

কর্ত্ত। প্রত্যেক বিষয়ে গৃহিণীর সহিত
পরামর্শ করিতেন বলিয়া বে সাংসারিক
শ্রাটনাটি লইয়াই দিন যাপন করিতেন,
তাহা নহে। তিনি গৃহিণীকে কর্ত্তবা
দেখাইয়া দিতেন, প্রত্যেক বিষয়ের উদ্দেশ্য
স্থির করিয়া দিতেন, এই মাত্র। "উলার্য্য
রক্ষা করিতে গিয়া গৃহকার্য্যের মতর্কতা
ত্যাগ করিতেন না এবং সতর্ক হইতে
গিয়া নীচ হইয়া পড়িতেন না।"

কর্ত্তা মনে করিতেন, গৃহকার্য্য গৃহিণী দ্বারা যেরপ স্থচারু প্রণাণীতে সম্পন্ন হইতে পারে, কর্ত্তা দ্বারা সেরপ হয় না। একস্ত গৃহিণীর হত্তে বতদ্র কার্ব্যভার অর্পণ করা বাইতে পারে, তিনি তাহাই করিতেন। তদ্বারা গৃহিণীর কর্মবিষ্ট্রিণী বৃদ্ধি বতদ্বর প্রিতে হয়,

খুলিরাছিল এবং আত্ম ও পরচিত্তজ্ঞতা সম্পূর্ণরূপেই জন্মিরাছিল।

আমরা যে গৃহের গার্হস্তা-প্রণাদীর কথা কহিতেছি, সেই গৃহের কর্ত্তা গৃহিণীর হত্তে সমস্ত গৃহকার্য্যের ভার করিয়াছিলেন এবং মধ্যে মধ্যে গৃহিণীর কার্য্যকলাপ দশন করিতেন বলিয়াই সেই গৃহটা একটা অপূর্বে যন্ত্রস্বরূপ হইয়াছিল। সেই যত্তে নিরস্তর পরম স্থাবহ গাইস্থা ধর্মের সঙ্গীত বাশিত,— সেই যন্ত্ৰ হইতে স্থপ ও শান্তির উৎস উৎ-সারিত হইত। কিন্তু কর্ত্তা যদি ব্রুগতের হিত্তিভাস্ক হইয়া স্মাজসংস্থার বা রাজ-নৈতিক সংস্থার রূপ প্রকাণ্ড ব্যোম্যানে আরোহণপুর্বক নিরস্তর গগনমগুলে বিচরণ করিতেন, ভ্রমেও একবার মাটীতে পা ना मिटलन, मः माद्रित कथा आदमी ना শুনিতেন ;---আর গৃহিণী কেবল সংসারের কাজ লইয়া মাটীর উপর আসন পাতিত করিতেন, তাহা হইলে কমিন কালে উভারের সাক্ষাৎ হই ড না,—কর্তাগৃহিণীর ভুভ সন্মিলনে মাফুষের সংসারে বর্গ আসিত না। এই জন্ত উপতি-উক্ত গৃহের কর্তা বলিতেন,---"মাফুষের চকু মাকুষের মতই হওয়া উচিত; – তাহা দুরবীকণ इहेटन 3 हिनदि नी, - अनुदीकन इहेटन 3 চলিবে না।" रफ रफ़ काम नहेंबा সংসার ভূলিয়া থাকা দোব এলং সংসারের কুদ্র কুদ্র কাজে আসক্ত হুইয়া উন্নত চিতা ও উচ্চ কার্যা সকল পতিত্যাগ করাও কতা আইও বলিতেন,—"বে CHIA!

নিরমের বশে চক্র, স্থ্য, পৃথিবী গোলাকার হইরাছে, সেই নিরমের বশেই শিশির-বিন্দু-মুখোৎকীর্ণ জলবিন্দু গোলাকার হইরা থাকে। ক্ষুদ্র গার্হস্কোর মধ্যেই বড় বড় ভাব, বড় বড় তন্ত্ব নিহিত আছে। অতএব গৃহিণীকে মাটাতে রাধিয়া আপনি ব্যোম-যানে উজ্ঞান হওয়া উচিত নহে। গৃহীর পক্ষেগৃহিণীর সহায়তা করা সর্বতঃ কর্ত্ববা।

ছঃখিনী কামিনী।*

রাজার ঘরের মেয়ে, রাজঘরে হলো বিয়ে. विमित्वत्र आत् हात्रा कित्नात्री वानिकी; পদ্মানকতের প্রায়, মধুরিমা মাথা গায়, (क्ंग्रं९न्नात्र गाँथा . (यन मन्तात-मानिका। বাদক্তী ভ্ৰমরা প্রায় প্রত্যুষে প্রভাতী গায়, भनवात मूळ्यी यात्र त्राक्ष वर्-वाला। चारक शतिमन नव, व्यवद्वार्ष्ठ भूष्णामव, আঁচলে ঢাকিয়া রাখে কুস্থমের ভালা। আদরে ফুটিয়া ওঠে, হাদির তরঙ্গ ছোটে, শাব্দার আবাসভূমি সোণার নলান, কভুবা ভূতলে লোটে,কভুবা পুলিনে ছোটে, पुतिया कित्रिया থেলে সোণার হরিণ। শতামগুপের ছার, শুত্র জ্যোৎসা-থণ্ড প্রায়, त्यानारम निक रान (शाधृनि वानिका, क्ष् भान्थान् त्वत्न, नित्मत्व हू छेश्रा आत्म. विशासन दिशा शास्त्र महिला गृथिका। नक्राभरम क्नद्रल क्न-वश्वित मरन, নদ্ধার স্থবর্ণ চুমা বেন খেতোৎপলে, छेवात व्यवास छारत, এकान्छ श्रुलिटन गारत, क्म विश्वासा त्राम, अह्मारियता हूल।

এলানো অঞ্চল্থানি আধেক বোমটা টানি. বাদাম গাছের তলে গাঁথে ফুলমালা, তুচ্ছ রম্যহর্ম্যবাস, দ্বিতল ত্রিতল আশ. পূর্ণতোয়া তরঙ্গিণীকৃলে কৃলে থেলা। দিন দিন মাস মাস, কিশোরে যৌবনাভাস, আপনা বিশ্বতা স্থথে ষোড়শী বালিকা। কোটী তারা নিভাননা, গৃহোদ্যানে অতুলনা, মলয় মারুত ফুল্ল বাসন্তী মল্লিকা। অধরে হাস্য উন্মেষে, স্বরগের শোভা ভাসে, ত্ত্ৰ জ্যোৎস্নায় যেন বিহ্যৎপ্ৰপাত ! যৌবন প্রারম্ভে হায়, সেই শুভ্র কলিকায়, প্রবেশিল কালকীট—হলো বজ্ঞপাত। প্রথম বসংস্তান্মেষে মুকুল মঞ্জুল খনে, শীত কুষাটিকা ঢাকা স্থবৰ্ণ ব্ৰত্তী, নিদাঘে বিদয় প্রাণ, ঝটিকার মিরমাণ, वर्गञ्छ। स्त्रतन्त्रो त्नकानि मानजी। खेरांत्र अफूल कांब्रा, नकांत्र वियानहांबा, উষার আলোকে আসি হলো নিপতিত, क्षप्रव वृक्तिश्विम निश्नि পि भूमि, त्य क्ल नीवन्यां ना जान्द्र विक्छ ;

কুৰেনাৰ একটি বিধবা রমণীর প্রতি লক্ষ্য করিয়া লিখিত।

खेयात्र श्रकृत कात्र, मन्तात्र विवान-ছात्र, নিশার আঁখারে আদি হলো নিপতিত। क्षमस्त्रत वृक्तिश्विल, मिथिल পড़िल थूलि ; (य (कन नीवनमाना जामदत तकि ठ, মলয়মাকত সনে, থেলিত কুস্থমবনে, বে কেশ বিহাৎ-দাম ইচ্ছিত দতত,

হায় কর্মনাশা-ভীরে, সে কেশ পড়িল ঝরে, এই কি সে রাজবধু—না-না—এ যোগিনী। কলে ভাকে আর আর, ভ্রমর পলায়ে যায়, ঢাকিল আঁচলে মুধ ছ:থিনী কামিনী॥ **बी अबकायन्त्रती माम**।

বটেশ্বরে গৌরবিজয়।

চৈতভাদেব বটেশ্বর মহাদেবকে প্রবামে করিয়া প্রভাব শ্রণাপন্ন হইল। ও প্রদক্ষিণ করিয়া বহুকাণ নৃত্য ও কার্ডন कतित्वन, व्यवः अनाशातः । अ अनिहात সমস্ত নিশা যাপন করিলেন। অনসুর : প্রভাতে হ্লান করিয়া সঙ্গা ভূতা গোবিন্দ ক্র্ক আস্ত ভিকার তওুল পাক করিয়া নিজ ইপ্তদেবকে ভোগ দিলেন। যংকিঞ্জিং প্রদাদ পাইরা বিশ্রাম করিতেছেন, এমন সময়ে ব্ছখুলা বল্লা-ল্কারে ভূবিতা প্রমূরপ্রতা গৃইটী যুবতা তাঁহার নিকটে উপস্থিত হইল এবং বিবিধ হাব ভাব ও অঙ্গবিলাদ প্রদর্শক **চৈত্ত দেবকে মুগ্ধ ক**রিবার জ্লা বছ যত্ন করিছে লাগিল। তিনি তাহাদিগের ছুরভিস্কি বুঝিতে পারিয়া অধিকতর বাপিকা সতাবালাকে মাতৃ-সম্বোধন করিলেন। মহাপ্রভার ভার-দৰ্শনে সভাবালার প্রাণে শকা উপস্থিত হিইল,—দে বাতাহত কললীর ভাগে রহিল, তাহার জানমান রহিল না। কম্পিতা হইতে লাগিল। সত্যের দশা- কথন বা মৃগী রোগে 🌉জান্ত বাজিন দর্শনে শক্ষীও স্বীয় জ্লেটো পরিত্যাগ ভাগ অচেতন হট্ডা পড়িতে লাগিলেন,

তইটা বেগ্যাবভি-প্রায়ণা, নাম লক্ষী-বালা ও সতা বালা। তাহাদিগের উপাধি নাই। এজন্ত ভাহারা সচরাচর লক্ষ্মী-বাই ও সভাবাই বনিয়াই ক্থিত হইত। मृठा यथन প্রভূবে নির্বিকার দেখিয়া উাহার চরণে পতিত হইল, তথন প্রভু,

"কেন অপ্রাবী কর আমারে জননি।" এইমাত্র বলিয়াই ভূপতিত **হইলেন,** ক্রবরীবন্ধ জটাভার ঋণিত ও পুর্ট-স্থানর অঞ্প্রি-ধ্যুরিত হুটল। সাথিক ভাবাবেশে শ্রীর ঘনকম্পিত হইতে লাগিল, অঙ্গের বসন থাপিত ও ঝোলা भाजा दिखन ब्हेश शिन। পুলকিত, নয়নে দর্দ্রিত অঞ্বারা। উল্প্লের ২ইয়া খন খন ২রিধ্বনি করতঃ উন্নত্ত্বং নুভা করিতে नाशिद्यम् । তথন লক্ষীবাই ও সভাবাই কোথায়

মুখে লালা ভাঙ্গিতে লাগিল; কথন বা উদ্ধান্ত নৃত্য করিতে করিতে পার্শ্বস্থ वाकिश्वनरक जानिक्रनशृक्षक "श्रति वन -হরিব্রিল" এই মাত্র ধ্বনি করিতে লাগি-এই ভাব দেখিয়া সকলেই এক-লেন। কালে বিশ্বিত হুইয়া গেল। এই সময়ে ভাঁহার দেহ হইতে এক অপূর্ব তেজ নিৰ্গত হইতেছিল। তদৰ্শনে দুৱ হইতে একটা পুরুষ আসিয়া তাঁহার চরণে নিপতিত হইল এবং আপনাকে তাঁহার নিকট ঘোর অপরাধী স্বীকার করিয়া ক্ষমা প্রার্থনা করিতে লাগিল। কি স্ক চৈতত্ত্বের তথন চৈত্ত্যমাত্র নাই, তিনি চরণে পতিত ব্যক্তিকে বিদলিত করিয়া কেবলই নতা করিতে লাগিলেন।

এই তীর্থবাম, ব্যক্তির নাম সে অতিশয় ধনবান। ধনের একটা মাদকতা শব্ধি আছে। জন্ত প্রাচীন কবিগণ বলিয়াছেন.— "আহো! কনকমাহাত্ম্যং বর্ণিতৃং কেন শক্যতে। नाममात्विभि मानुकार शृख्दताश्मि मनवानः।" কনকের (ধনের) মাহাত্ম্য বর্ণন করা কাহারও সাধ্য নহে: কারণ নামমাত্রে শাদৃত্য প্রযুক্ত ধুতুরাও মদপ্রদ হইয়াছে। ধুতুরার আর একটা নাম কনক। যে বস্তর নামের সহিত সাদৃত্য থাকায় ধৃত্রা লোককে পাগল করিয়া দেয়, তীর্থরামের সেই বস্ত প্রচুক্ত পরিমাণে থাকাতে সেও উন্মন্তবং হইরাছিল। আপুনার দেশে একটা বালক আমিবীছে এবং তৎকর্ত্ দেশের বড বড পণ্ডিড ও ধার্দ্মিকের

পরাভব হইতেছে, ইহা ভীর্থরামের প্রাণে সহিল না। তেজোহাস করিয়া সন্ন্যাশীর দর্প চূর্ণ করিতে তাহার ইচ্ছা হইল। এই জন্ম দে লক্ষীবাই ও সতাবাইকে বিশেষরূপ **जिशाम** क्रिया <u>চৈজন্মের</u> নিকট পাঠাইয়াছিল। তাহারাও চেষ্টার কিছমাত্র ক্রটি করে নাই। কিন্তু নবীন স্ম্যাসীর নব ধর্ম হিমাচলের ভারে অটল.-কোন রূপেই টলিল না দেখিয়া তীর্থরাম আপনার বিগহিত চেষ্টার জন্ম অফুতপ্ত হইল এবং প্রভুর চরণে শরণ লইল।

যে তীর্থরাম বেখা পাঠাইয়া প্রভুকে ভ্রষ্ট করিবার চেষ্টা করিয়াছিল, তিনি তাহাকে কহিলেন,—"তুমি:পরম সাধু ও প্ৰধান ভক্ত, এজন্ত তোমাকে করিয়া আমি পবিত্র হইলাম।'' বাহ্য বিজ্ঞপ দৃষ্টিতে দেখিলে এই ঘাকাটী বোধ হয়, কিন্তু অন্তৰ্গষ্টতে দেখিলে একটু স্ক্রতা দেখা যায়। সেই স্ক্রতাই মহাপ্রভুর উদ্দেশ্ত.—কেননা বিজ্ঞপ করিবার লোক ছিলেন না। মঙ্গল ও অমঙ্গল, এই উভয়ের সীমা এক স্থলে মিগিত হইয়াছে, যেখানে অমঙ্গলের সেই স্থান হইতেই শেষ হইয়াছে. মঙ্গলের रुरेशाट्ड। আবার সেইখানে যেথানে মঙ্গলের শেষ. অমঙ্গলের আরম্ভ। তীর্থরামের অসৎ চেষ্টার कल्बरे डाहात मनन हरेन। এই জন্মই তাদুশ হুল্চেষ্ট তীর্থরামকে "পরম সাধু" ইত্যাদি বলিলেন,—ইহা चन्नभ डेकि.—विकाश नरह।

তীর্থরাম, প্রভুর ঐ উক্তি প্রবণে ব্যাকুল হইয়া তাঁহার চরণে ধরিলেন এবং অজল অঞ্চবর্ষণপূর্মক ব্যোদন ভক্তি-উদ্রেকের করিতে লাগিলেন। পূর্বে চকু হইতে যত হল পড়ে, তাহাকে "কামজন" কহে। এই কামজন নিরস্তর পড়িতে পড়িতে হানয় কোমল. ও 😘 হয়। তীর্থরামের সেই অবস্থা হইবামাত্র মহাপ্রভু তাহাকে আলিঙ্গন कतिर्मन अवंश विषय-द्यारशत मरशेषि স্বরূপ হরিনাম-স্থধা কর্ণে ঢালিয়া দিলেন। এই অপ্রাক্ত স্থা কর্ণধারাই পান করিতে হয়। খ্রীচৈততা দেব যথন मिथिएन, डीर्थत्रात्मत्र इमग्रत्कव डेर्सत् হইয়াছে, তাহাতে সহপদেশরূপ বীজ বপন कतिल जाशांत कल १३ए७ পात्त, जसन "প্রভু কহে তুণ সম গণহ বিভবে। ভক্তিধন অমূল্য রতন পাবে ভবে॥ দূরেতে নিক্ষেপ কর বসন ভূষণ। ছাড়িয়া অনিতাধনে ভজ নিতাধন। এই যে সাধের দেহ ঢাকা চর্মা দিয়া। किছू मिन পরে ইহা যাইবে প্রিয়া॥ দেহ হতে প্রাণ পাখা উড়ে যাবে মবে। र्म की है, नम् ज्या, नम् विधा रत्य ॥ त्शोत्रदेवत्र धन किছू नाहि विज्वात । **(क्वन (গोऽव আছে श्रेश्वरञ्जल ॥** বিলাস বৈভব সব অনিতা জানিয়া। একে একে ফেলে দাও দূরেতে টারিয়া॥ • ঈশরে বিশ্বাস ঈশর আনিয়া মিলায়। আর কিছু প্রমাণত কহনে না বার॥

অর্থের গৌরব যে বা করে বারে বার। দিন দিন তার ছ:খ:হর অনিবার ॥ এ আমার আমি তার সবে এই**ংকর**। मुनिटन नयन इंडि ट्रिक्ट कांत्र नद्र ॥ মিছামিছি আত্মীয়তা করে দব লোক। ভাঙ্গা পুতুলের প্রায় মৃত দেহে শোক 🏴 🎅 ইহার পর পিতামাতার সহিত পুরাষিত্র সম্বন্ধের অনিতাতা, ঈশরের নিকটম্ব, इंजापि विषय উপদেশ पिरमन । जीर्थ-রাম প্রভূমুধে তাদৃশ তব সকল প্রবৰ করিয়া সর্বান্থ ত্যাগ করিল এবং সম্পূর্ণ নিকিঞ্ন হইয়া ভগবদ্ভজন করিছে লাগিল। এই ব্যাপার ভনিরা কমল-কুমারী-নামী তাহার প্রম স্থল্পী রম্পী আসিয়া অনেক ক্রন্দন ও আর্ত্তনাদ করিতে লাগিল। শ্রীমান মহাপ্রস্থুর ম্পর্লে ও উপদেশে তীর্থরামের **ভবঘোর** ভাঙ্গিয়াছে, দে আর কমলকুমারীর ক্রথায় কর্ণপাত্ত করিল না। "কমলে বলিল ভার্থ কর ধরি করে। বিষয় সম্পত্তি সব দিলাম তোমারে ॥১ নরক হইতে ত্রাণ পাইয়াছি আমি। বিষয় বিভব সৰ ভোগ কর তুমি ॥" তার্থরাম কেবল যে জীকে বিষয় দিলেন, তাহা নহে, হরিনাম লইতেও উপদেশ দিলেন। কমলকুমারী অনারাসে গৃহে এই সকল हार्गात किविवा (शरणन। সম্পাদন করিয়া চৈতন্তদেব সিত্ধ বটেশক পরিত্যাগপুর্মক স্থানান্তরে

कत्रिरणन ।

মোজেদ্ রথচাইল্ড।

একদা ফরাসী সৈনা প্রানিয়া আক্রমণ করিলে হেসি-ক্যাদেলের পরাভূত রাজা স্বরাজ্য হইতে পলায়ন করিতে বাধ্য হইলেন। তিনি ফ্রান্সফেটে নগরের মধ্য দিয়া প্রস্থানকালে মোজেদ র্থচাইল্ড নামক জনৈক য়িত্র বিণকের নিকট উপস্থিত হইয়া বলিলেন "আমার দঙ্গেবত অর্থ এবং মহাম্ল্য রত্ত্বাদি আছে। আপনার নিকট এই সকল ধন গভিত্ত রাথিয়া যাইতেতি"।

রাজ্যে শক্রদেনা আগমন করিয়াছে. এ সময়ে অর্থাদি রক্ষাকরা বড়ই গুরু-তর বিষয়; স্ত্রাং রণচাইল্ড্ প্রথমে অর্থ সংরক্ষণে অনিচ্ছা প্রকাশ কবি-উপায়হীন রাজা যথন লেন: কিন্ত অত্যস্ত ব্যাকুলভাবে অমুরোধ করিতে লাগিলেন, তথন তিনি বলিলেন "আমি রাথিতেছি; কিন্তু সম্পত্তি এই সম্পত্তি রক্ষা করিয়া আপনাকে পুন: প্রত্যর্পণ করিব এই মর্ম্মে অঙ্গী-কারপত্র লিথিয়া দিতে পারি না।" রাজা অগত্যা তাহাতেই সন্মত হইয়া বহু লক্ষ টাকার .সম্পত্তি গোপনে রথচাইল্ডের निकटि त्राथिया (शरलन।

বিফেতী করাসী সৈন্য ফ্রাক্ষ-কোর্ট নগুরে প্রবেশ করিলে রথচাইল্ড আফ্রার সম্দান ধন এক উদ্যানের মধ্যে প্রতিরা রাখিলেন। ক্রয়েন্সত্ত শক্রগণ লুঠনে প্রবৃত্ত ইইয়া রথচাইল্ডের গৃহে
উপস্থিত ইইল। রথচাইল্ড সেনাগণের
নিকটবর্ত্তী ইইয়া অপনার সমুদয় ধন
তাহাদিগকে প্রদান করিলেন। য়িত্রদি
বণিক্ পৈতৃক ও স্বোপার্জ্জিত বল
দিনের সঞ্চিত প্রোয় ষ্ঠি সহস্র মুদ্রা
প্রদান করিয়া অত্যাচার ইইতে নিষ্কৃতি
লাভ করিলেন।

দৈশুগণ নগর পরিত্যাগ করিলে
রথচাইল্ড উদ্যানে প্রোথিত অর্থ হইতে
কিঞ্চিৎ অর্থ বাহির করিয়া ,ব্যবসায়
আরম্ভ করিলেন। এইরূপ ব্যবসায়ের
দারা অত্যন্ন দিনের মধোই তাঁহার শৃশ্র
ভাণ্ডার পূর্ণ হইল। তিনি পূর্ব্বৎ
সঙ্গতিসম্পন্ন হইয়া উঠিলেন।

কয়েক বংদর পরে উভয় রাজ্যে দিয়ি হাপিত হইল। জর্মণরাজ স্বরাজ্যে শভাগমন করিয়া পূর্ববিং রাজ্য শাসন করিতে লাগিলেন। কিন্তু গচ্ছিত অর্থের বিষয় রথচাইল্ডের নিকট উলাপন করিতে রাজার ইচ্ছা হইল না। তিনি ভাবিলেন যে, সেই অর্থাদি ফরাসী সেনার হস্তগত না হইয়া থাকিলেও রথচাইল্ড বলিতে পারেন যে, তাহা লুঞ্জিত হইয়া গিয়াছে, স্থতরাং তিনি অর্থপ্রাপ্তির আশা একেবরে পরিত্যাগ করিলেন।

কিছু কাল পরে রথচাইল্ড রা**জা**র নিকটে উপস্থিত হ**ই**য়া বলিলেন,—

2)99

"ক্লব্যক্তপায় আপনার সমৃদয় ধনই ব্যক্তা করিয়াছি। তাহা আমার নিকট গছিত আছে। এখন সেই অর্থের শতকরা পাঁচ টাকা হিসাবে স্থদ গ্রহণ করুন্। আমার বাট হাজার টাকা ছিল, তাহা শত্রুগণ লইয়া গিয়াছে, স্বতরাং আপনার অর্থ হইতে কিছু লইয়া আমি ব্যবসায় করিয়াছিলাম। আপনার অর্থ ব্যবসা করিয়াছিলাম। স্বাধ্বার স্থদ প্রদান করিতে সমর্থ হইতেছি।

র্থচাইল্ডের ধর্মপরায়ণতা এবং
কর্ত্তব্যনিষ্ঠা দশনে রাজা বিমৃদ্ধ হইলেন।
রাজা শ্রীয় সম্পত্তি গ্রহণ না করিয়া
অতি অল্ল ফুদে তাঁহারই নিকটে গাঁচ্ছিত
রাখিলেন। প্রভৃত অর্থ গাঁচ্ছিত স্বরূপ
প্রাপ্ত হইমা রথচাইল্ড বিস্তৃত ব্যবসার
অবলম্বন করিলেন। ইনি এইলপে
শ্রীয় সাধুতাগুলে বহু সম্পত্তি সঞ্চয়
করিয়া পরলোকে গমন করেন।
ইহারই এক পুত্র ইংলণ্ডের বর্ত্তমান ধনকুবের রগচাইল্ড পরিবারের আদিপুরুকা

একা এক সহস্র।

ষ্থন ভুবনবিজয়ী নেপোলিয়নের বজনির্ঘোষে ইয়োরোপভূমি কম্পিত হইতেছিল, যথন বিজয়প্রমত্ত ফরাসীসেনা
পৃথিবীজয়ের আশায় স্থবিশাল অভিযানের
আয়োজন করিতেছিল, যথন লোহিত
নর-ক্ষিরে প্রান্তবর্তী স্থানসমূহ অয়্বরঞ্জিত হইতেছিল, তথন অন্যান্য
রাজ্যের ন্যায় অষ্ট্রায়া রাজ্যের সহিত্ত
নেপোলিয়নের মহাসমর হয়।

এই .অষ্ট্রীয় সমরের প্রাক্ষালে একজন
ফরাসী পদাতি সৈন্য ফরাসী রাজ্যের
কোনও পার্বতা প্রদেশে বন্ধু গৃহে গমন
করিতেছিলেন, জাঁহার নাম লাটুর ডো
ভারণ; বয়স ৪০ বংসর। তিনি সমতল
ক্ষেত্র অতিক্রম করিয়া পর্বতিপার্বস্থ সম্ভীর্ণ
পথে গমন করিতে লাগিলেন। ভূজকগমনের ন্যায় খন বক্র পথ অতিবাহিত

করিতে করিতে যথন তিনি পর্বতের উচ্চ হানে উপস্থিত হইলেন, তথন নিম্নদেশে দৃষ্টি নিক্ষেপ করিয়া বহু দৃরে ক্রে-রেথাবং গমনশীল সৈনাশ্রেণী দেখিতে পাইলেন।

তিনি বন্ধুর সহিত সাক্ষাং করিবার
জন্য যে স্থানে গমন করিতেছিলেন,
তাহার উর্দ্ধদেশে ত্রতিক্রমা স্থানে
করাসীদিগের একটা ক্ষুদ্র ছর্গ ছিল।
পার্স্ব এ স্থানি পথ আয়ন্তাধীন রাধিবার
জন্য ঐ ভ্রারোহ ছর্গে ত্রিশ জন স্থাশিক্তিত
সৈন্য থাকিত। ছর্গ পার হইয়া গেলে
একটা সন্ধীর্ণ পথ পাওয়া যায়, ইহাকে
গিরি-সংকট কহে।

ঐ
পুথ দিয়া

* ভান্নতবৰ্ষ হইতে কাব্ল রাজ্যে প্রবেশ করিতে এইকপ বে সকীৰ্ণ পথ আছে, তাহা "ধাইবার গ্লান" "বোলান পাদ" নামে অভিহিত।

করাসী সৈন্য অব্ভীয়া আক্রমণ করিতে बाहरव । অ্বীয়ার প্রধান সেনাপতি এই সংবাদ প্রাপ্ত হইয়া সেই পথ অবরুদ্ধ कतिवात खना এक मन रेमना त्थात्र ক্রিয়াছেন। তাহারা ঐ স্কীর্ণ গিরি-বম্বে কামান স্থাপন করিতে পারিলে क्त्रांनी रेनरनात्र व्यष्टीया-गमन-११ कृष হইবে। অদ্ভীয়ার সৈন্যগণ এই উদ্দেশ্তে পাহাডের উপরে আসিতেছিল। বিচক্ষণ-বুদ্ধি লাটুর ডো ভারণ সমুখগামী সৈন্য-দিশকে বিপক্ষদেনা বলিয়া **সহজে**ই অফুভব করিলেন এবং বন্ধুর গৃহে গমন করিয়া নিকটবর্ত্তী ফরাসীহর্গে উপস্থিত হইলেন। তিনি হুর্গদার খোলা দেখিয়া অতীব বিশ্বিত হইলেন। অভান্তরে প্ৰবেশ কবিয়া আরও আশ্র্যান্তিত হইবেন। তুর্গ জনশূন্য। তিনি বুঝিলেন, শক্তর আগমন-সংবাদ জানিতে পারিয়া জীক সৈনিক मन প্রাণভয়ে প্রায়ন করিয়াছে। সৈনিকদিগের এইরূপ অপদার্থতা দেখিয়া তিনি এতদূর বিরক্ত रहेरनन (य, जिनि मर्छ म्छ घर्यन করিতে লাগিলেন এবং তাঁহার সর্ব্বশরীর কম্পিত হইতে লাগিল।

-বিপক্ষদৈন্য সন্নিকট। সমুচিতরূপে
বাধা প্রালান করিতে না পারিলে শক্রগণ
গিরিবদ্ম অধিকার করিয়া বসিবে।
লাটুর ডো ভুরেণ এ সকল বিষয় চিন্তা
করিয়া নিরাশন্ত্রদরে বিষয়বদনে তুর্গের
করে কক্ষে ভ্রমণ করিছে লাগিলেন।
নি এক স্থানে দেখিতে পাইলেন,

বে, প্রচুর যুদ্ধোপকরণ সঞ্চিত রহিরাছে। তদ্দর্শনে তাঁহার বিষণ্ণতা দ্রীভূত হইল।

তিনি অবিলম্বে হুর্গদ্বার দৃচ্রূপে
বন্ধ করিলেন এবং বিপক্ষণণ সহজে ভগ্ন
করিতে না পারে, সেই উদ্দেশ্তে বহু
প্রস্তর থণ্ড দ্বারে চাপাইরা রাথিলেন।
তৎপরে হুর্গস্থিত ত্রিশটী বন্দুকে গুলি
বারুদ প্রিয়া যে দিক্ দিয়া শক্র আগমনের সম্ভাবনা, সেই দিকের হুর্গপ্রাচীরের
মুথে স্থাপন করিয়া রাথিলেন।

হুর্গপ্রবেশের পথ অতি সন্ধীণ।
সেই কুদ্র পথের ছই দিকে গৃহরর;
এক সারিতে ছই জনের অধিক লোক
হর্গে প্রবেশ করিতে পারে না এবং হুর্গ
হইতে অল্প গোলা গুলি ছুড়িলেও বহু
সংখ্যক বিপক্ষকে পরাস্ত করিতে পারা
যায়। এই জন্মই উক্ত হুর্গে অতি
অল্পংখ্যক সৈত্য থাকিত।

যথন লাটুর ডো ভারণ হর্গে প্রবেশ করেন, তথন রাত্রিকাল। যুদ্ধের সমুদার আরোজন করিয়া শক্রর আগমন প্রতীকা করিতে লাগিলেন। রজনীর অর্দ্ভাগ অতিবাহিত হইল। কৃষ্ণবর্ণ ভীষণকায় পর্বতশ্রেণী ভাষসী রজনীর অভ্যন্তরে লুকান্নিত রহিন্নাছে! অন্ধকার ভিন্ন চতুৰ্দিকে কোনও পদার্থেরই অন্তিত্ব অমুভুত হইতেছে না। অবীয়ার প্রবল সৈক্সমূলকে প্রদান করিবার জন্ম বীরবর শাটুর ডো ভারণ গহবরন্থিত অভগরের ভার

কারমর ছর্গাভান্তরে শ্রুষায়িত রহিলেন। অকন্মাৎ সৈশু পীদ-শব্ধ তাঁহার শ্রুতি-গোচর হইল। তিনি উদ্বিমনেত্রে ছর্গ-দ্ভার্মান হইয়া প্রাচীরে অমুভব कतित्वन (य. विशक्तरेमच इर्ने अर्वास्त्र সারি বাধিয়া আগমন সঙ্কীৰ্ণ পথে করিতেছে। তিনি তৎকণাৎ ছিদ্রস্থিত इटें विमूक आधन मिलन। विमूक्त्र श्विम मरदर्श दिशक्रोरम् मरधा अविष्ठे শক্ৰগণ হঠাৎ আক্ৰান্ত হইয়া পরদিন প্ৰভাত ठडेन। পশ্চাৎপদ কাল পর্যাস্ত বিপক্ষগণ হুর্গ আক্রমণের कानरे व्याद्याजन कत्रिन ना। অষ্ট্রীয়ার দৈন্তাধ্যক ভাবিলেন যে, ছুৰ্গবাদিগণ ষ্থন ° তাঁহাদের আগমন-সংবাদ জানিতে পারিয়াছে, তথন রাত্রিকালে আক্রমণ না করিয়া দিবাভাগে আক্রমণই শ্রেয়:। পরদিন প্রত্যুবে সেনাপতি প্রথমতঃ যুদ্ধে প্রবৃত্ত না হইয়া শান্তি-পতাকাধারী জনৈক मृতকে इर्गपादा প্রেরণ করিলেন। শাটুর ডো ভারণ দ্তের আগমন জানিতে পারিয়া হর্গের উচ্চ স্থানে দপ্তায়মান অব্রীয়ার দুত বলিলেন, इटेटनन । ''আমাদের সেনাপতি আপনাদিগকে আত্মসমর্পণ করিতে বলিতেছেন, আমাদের বৃহ সৈম্ভের সন্মুখে আপনারা কৃতক্ষণ বুদ্ধ করিবেন ? অভএব আস্থবিনাশ না করিয়া আস্থাসমর্শণ করাই আপনাদের পক্ষে মঙ্গলকর''।

লাটুর ভো ভারণের দৃঢ়ভাব্যঞ্জ সুধ-মণ্ডল আরক্তিম হইল। তিনি গন্ধীরভাবে

কহিলেন,—"তোমাদের সেনাপতিকে বলিবে, যে পথ অধিকার করিবার করু তিনি আসিরাছেন, ফরাসীসেনা ধ্বংস না হইলে তিনি সে স্থান অধিকার করিতে পারিবেন না। ফরাসীসৈত যুদ্ধার্থ প্রস্তত্ত্ব

দৃত স্বদলে প্রত্যাবর্ত্তন করিল। **অর্ক্ত**দশু পরে সেনাপতি পুনরার ছর্গ আক্রমণের অফুমতি করিলেন। এক দল
পদাতি সেনা ছর্গ-বারপথে উপস্থিত হইল।
তৎক্ষণাৎ ছর্গাভ্যন্তর হইতে ক্রত-নিক্ষিত্র
বহুসংথাক গুলি আসিয়া সৈক্সগণের উপরে
পতিত হইতে লাখিল। পাচ ছর জন হত
ও করেক জন আহত হওয়ার সেনাপতি
সৈক্যদিগকে পশ্চাৎপদ হইতে অফুমতি
করিলেন।

কুত্র যুদ্ধের প্রারম্ভেই পাঁচ ছর জন
সৈল্ল বিনষ্ট হইল, দেনাপতি ইহা দেখিরা
শুন্তিত ও লক্ষিত হইলেন। যাহা হউক,
তিনি অধিকক্ষণ বিলম্ব না করিয়া প্রারম্বরার
হর্গ আক্রমণের অন্তমতি করিলেন। যথম
অব্রীয় সেনা হর্গপ্রবেশের পথে প্রারম্বরার
সবেগে অগ্রসর হইতে লাগিল, তথন হুর্গ
হইতে ঝাঁকে ঝাঁকে গুলি আসিয়া তাহাদিগকে অতি ব্যস্ত করিয়া তুলিল। অলকণের মধ্যেই পনর জন লোক ভূপভিত্ত
হইল।

এইরপে স্ব্যান্ত প্রয়ন্ত আই বার সেনা পাঁচবার ত্র্প আক্রমণ করে, প্রতি বারেই বিফল-মনোরথ হর। তাহাদের দশ অন দৈক্ত তে এবং পরিত্রিশ অন আহত হইল। বার বার পরান্ত হইয়া দেনাপতি
পুনরায় দৃত পাঠাইলেন। এবার দৃত
অপেকাকৃত কোমল স্বরে বলিলেন,—
"হুর্গাধিপতি! হুর্গবাসী সৈন্তদিগকে অস্ত্রশস্ত্র সহ বহির্গমনের অধিকার দেওয়া
হইবে, এই বন্দোবস্তে আপনি হুর্গ পরিত্যাগ করিয়া ঘাইতে সন্মত আছেন
কিনা ?''

লাটুর ডো ভারণ ভাবিলেন, অপ্ট্রিয়ার দৈঞ্চিনিকে তিনি যতক্ষণ যুদ্ধকার্যো ক্রীপৃত রাথিয়াছেন, ততক্ষণ ফরাসী দৈগু সংকীর্ণ গিরিপথ অতিক্রম করিয়াছে। অতএব এইক্ষণে অপ্ট্রিয়ার দৈগু হুর্গ জয় করিলেও কোন ক্ষতি হইবে না। অতএব তিনি কহিলেন,—"আমি আপনাদের প্রস্তাবে দক্ষত হইলাম। আগামা কল্য অস্ত্র শস্ত্র সহ হুর্গ ত্যাগ করিব।"

রজনী প্রভাত হইলে অষ্ট্রিয়ার সৈত্যগণ হুর্গ-ম্বারে শ্রেণীবদ্ধ হুইয়া দণ্ডায়মান হুইল। তথন হুর্গ-ম্বার উন্মুক্ত করিয়া লাটুর ডো ভারণ ত্রিশটি বন্দুকসহ ধারে ধারে নিজ্ঞান্ত হুইলেন। তাঁহাকে একাকী বন্দুকের বোঝা সহ বহির্গত হুইতে দেখিয়া আষ্ট্রিয়ার সেনাধ্যক্ষ জিজ্ঞাসা করিলেন,— "হুর্গের সৈত্যগণ কোথান্ত গাটুর ডো ভারণ স্থামিক উত্তর করিলেন,—"সৈত্যদল ? আমিক সৈক্ষদল।"

সেনাপতি। "তুমিই সৈজদল!! তুমি ক একাকী বৃদ্ধ করিসাছ ?'' াটুর। "হাঁ মহাশর।'' সেনাপতি। "তুমি একাকী কিরুপে এই ভয়ানক যুদ্ধ করিলৈ ?"

লাটুর। ''আমার স্বদেশীর জাতীর গৌরব আমাকে এই যুদ্ধে প্রোৎসাহিত করিয়াছিল।''

সেনাপতি ঘোটক হইতে অবতরণ করিয়া অনিমেষ-নয়নে লাটুরের প্রতি দৃষ্টিপাত করিলেন এবং স্বীয় শিরোভূষণ উন্মোচন করিয়া কহিলেন,—"বীরশ্রেষ্ঠ! আমি তোমাকে নমস্বার করি; তুমিই জগতে সাহদী বীরদিগের মধ্যে সর্ব্বপ্রধান, বল দেখি, তুমি কিরূপে একাকী মুহুর্ত্তে গুলি ছুড়িয়াছ ?"

তিনি কহিলেন,—বারুদ গুলি পুরিয়া

ত্রিশটী বন্দুক প্রাচীর-ছিদ্রে রাথিয়া

দিতাম। যেই আপনাদিগকে আসিতে

দেখিতাম, অমনি তড়িদ্গতিতে সকল

গুলি বন্দুকে আগুন দিতাম, আপনারা

পশ্চাৎপদ হইলে পুনরায় বন্দুক পুরিয়া
রাথিতাম। বোধ হয় আমার নিক্ষিপ্ত

একটী গুলিও বার্থ হয় নাই। গুলি বার্থ

হইলে নিশ্চয় আপনারা হুর্গাধিকার

করিতে সমর্থ হইতেন।"

অষ্ট্রিয়ার সেনাপতি লাটুর ডো ভারণের আলোকিক বীরত্বে এরপ মৃথ্য ইইলেন যে, তিনি নিজের লোক বারা অস্ত্র শস্ত্র-সহ তাঁহাকে ফরাসী-শিবিরে প্রেরণ করিলেন এবং তাঁহার অতুলনীয় বীরত্ব-কাহিনী ফরাসী সেনাপতিকে লিখিয়া জ্বানাইলেন। যে দেশের একজন সামান্ত পদাতি দৈক্ত একপ স্বদেশ-হিতেষণা,

वीत्रक अवर रमनाथिल-जन-विद्यम वृद्धि । यदा कन्निण हरेबाहिन, छारा जान ক্ষমতা প্রদর্শন করিতে সমর্থ, সে দেশের পদভরে যে একদিন স্সাগরা বীরদিগের

विषय नरह।

কাশীচন্ত বোৰ

নান্দীমুখোপলক্ষে কন্সার প্রতি উপদেশ।

বংসে শা-- ! গৃহস্থাশ্রমে যাহা অতি कर्छात्रमाधा, नर्कानभी मन्ननमत्र अत्रामधत, ধর্ম্মবন্ধু, এবং পরলো কগত পূজনীয় পূর্ব্ব-भूक्यगंगटक माक्की कतिया, अमा पूर्वि সেই গার্হস্য ধর্মপালনে প্রথম পদবিক্ষেপ করিবে। সেই গন্তীর দায়িত্বপূর্ণ শুভাষ্ঠান শ্বরণ করিয়া, আমি ছই একটা কথা বলিতেছি, অনন্যমনা হইয়া শ্রবণ ও অমুধ্যান কর।

নীরস শিক্ষা বছক্ষণ মনে স্থান পায় না। তাই পূর্ব্ব আচার্য্যগণ এক একটা চিত্র তাহার সঙ্গে সংযোগ করিয়া দিতেন। আমি যথন প্রথম বিস্থাভ্যাস করিয়াছিলাম, তথন কঠোর ক-থ-শিক্ষা সহজ্ঞ করিবার জন্ত গুরুমহাশয় বলিয়াছিলেন,"কয়ে কাক, থয়ে থরগোস''। এই কাক-থরগোস-চিন্তার সঙ্গে সঙ্গে, বার বার অভ্যাস হেতু, ক-থ-শিক্ষা অল্লায়াসে সম্পন্ন হইয়াছিল। এখন বয়োবৃদ্ধিনিবন্ধন,সে স্থথের বাল্য-কাহিনীর কতই বিশ্বৃত হইয়াছি। কিন্তু ক-ধ-সংযুক্ত কাক ও ধরুগোস্ট্র মনোমধ্যে চির-অঙ্কিত • রহিরাছে। তাই সেই শুরুদত্ত সংহত অসুসরণ করিয়া, গৃহ-ধর্মপালনের এই সরল চিত্র ভোষার সমক্ষে ধরিতেছি।

মানচিত্রে দেখিয়াছ, ভাগীরধী-ধারা গোমুখী হইতে বহিৰ্গত হইরা, স্তম স্ত্তবং এकांकिनी वहमूत्र अमन कतिशाहि। আবার অনতিদুর হইতে অপর এক স্রোত **বতই অগ্র**সর হইয়াছে, ভা**হাদের** মধ্যগত ব্যবধান ততই হ্রাস পাইরা আসি-য়াছে। অবশেষ,মঙ্গলময়ের বিচিত্রবিধানে, যমুনার নীল জলরাশি গঙ্গার খেত কারে আপনাকে ঢালিয়া দিয়াছে। উভয়ের যথন সন্মিলন হইল, তথন আর স্তম অভিছ কাহারও রহিল না; অথবা কেহই কাহাকে পশ্চাতে টানিল না-- यन व्यानीकिक কোন মন্তবলে, পরস্পারের প্রাণ পরস্পারের প্রাণমধ্যে অচিহ হইয়া, অনত কালেয় মত একীভূত হইয়া গেল! তখন নেই কীণ প্তহয়ের সংযোগ, মহাপরাক্রম বহ-কারে, অবিরামগতিতে, অনস্ত উদ্দেশে ছুটিতে লাগিল। দেখ, পথে ভাহাদের কত্ই বাধা,কত্ই:লাছনা ! কথন লিলান্ত कर्छात् मृखिका, कथन्छ वा इर्नक कर्षक-রাশি, কখনও বা ভীৰণ-ছিংল-কছপূর্ব বিজন অরণ্যানী তেগ করিরা করে চলিতে हरेग। **अपन कि, जुनीयन साडिशांध्य** वित्रविन वार्यास्क वीवादेश जाविन, क्री

মাস্থই আবার কত সম্প্রে তাহার মন্তব্দ অপ্রভা, পৃতিগদ্ধপূর্ণ ট্রু দ্রব্যরাশি বর্ষণ করিল। কিছুতেই কিন্ত সে অপ্রতিহত সন্মুখগতি রোধ,"সে অকাম হিতব্রতপালন ভল হইল না এ" সে নাচিতে নাচিতে অন্তে জীবনদাত্ পবিত্র জলধি-ক্রোড়ে ঝাঁপ দিয়া চিরবিশ্রাম লাভ করিল। তাহাদের সে প্রথম স্মিলন, ও শেষ-বিশ্রাম-বিন্দু ভারতে পুণ্যতীর্থ বলিয়া পরিগণিত হইল। দেখ। এই বিশাল—ললিতচ্ছন্দ—অভ্রান্ত প্রকৃতিবেদ দেই আদি কবিরই স্বহন্তের রচনা ! এ গলা-বমুনা-সমিলন-স্নোকের
কি আর ব্যাখ্যান্তর সম্ভবে ? তাই তোমার
গার্হস্য-জীবনের স্পপ্রভাতে, সেই প্রজাপতি-অন্ধিত এই পবিত্র চিত্র তোমার নরনসম্মুথে খুলিয়া ধরিলাম । সংসারের অপরিহার্য্য হঃথম্প্রথমধ্যে, যদি বিশ্বাসচক্ষে এই
বিচিত্র পটের—এই গঙ্গা-যমুনা-সম্মিলনের
প্রতি দৃষ্টি স্থির রাখিতে পার, জীবনযজ্ঞের সমুদ্র নিগৃঢ় মন্ত্র আপনা হইতেই
হৃদরে ফুটিয়া উঠিবে !

(ক্রমশঃ)

ত্ৰগোৎসব।

এস মা! আমার বাড়ী জগতজননি!
ধরা সাজে রাণী-সাজে,
উল্লাস-বাজনা বাজে,
কলিত "সানাই" গা'য় শুভ আগমনী!
সারা বর্ষ পথ চেয়ে,
আজি মা'রে ঘরে পেয়ে,
আজি মা'রে ঘরে পেয়ে,
আজি মা' দাসের বাসে,
শুভাদৃষ্ঠ যথা আসে,
বংসের আহ্বানে যথা গাভী পয়স্বিনী;
এস মা! ডেমনি ছুটি জগতজননি!

এস মা। আধার বেশ আনন্দে উজলি, সেহের আনলে তোর, বুহিৰ শুরুন লোর, জুড়াব সকল জালা "ওমা হর্গে"* বলি;
ও কোলে রাথিলে মাথা
ঘূচিবে অসহ্য ব্যথা,
মনসাধে শ্রীচরণে দিব পুস্পাঞ্জলি;
ভূলিব মা! শোক রোগ—
যত অধর্মের ভোগ,
আনন্দ-প্রবাহে হিয়া উঠিবে উথলি!
তোমারে হেরিলে তারা!
হিংসা ধেব হুহরে হারা,
কোটি কোটি ভাই বোন মিশিব সকলি!
এস মা! আঁধার দেশ আনন্দে উজ্লি।
ও
এস মা আনন্দমন্ধি! অধ্যমের ঘরে,
দেখিব ও অপ্রশে,
বিশারাধ্য বিশ্বরণ—

"ছুৰ্মং নাশরতি বা নিড্যং সা ছুৰ্মা পরিকীর্ভিতা"

সেই মৃতি, স্বৰ্গ মন্ত্য সদা পূজা করে !—
সে তো নহে হাতে গড়া,
মাটি প'রে রঙ্ করা,
সে কভু ডোবে না জলে তিন দিন পরে !
সে যে ছটা অপরূপ !
সর্ব্বার্থ-সাধিকা-রূপ !
পূজিলে পরম গতি প্রাপ্ত হয় নরে !
এস মা করুণাময়ি ! অধ্যের ঘরে ।

8

এস মা সর্ব্বমঙ্গলে ! এস ত্রিনয়নে ! বিশ্বময় স্থপ্রশস্ত मन मिक-मन रुख, বিনাশিছ পাপাস্থরে দশ প্রহরণে! • জীবের শিবের লাগি ত্রিকাল রয়েছে জাগি — ভূত, বৰ্ত্তমান, ভাবী, ও তিন লোচনে ! পশুরাজ-শিরোপরি. প্রীপদ রাখিয়া মরি। ত্ৰজ্জন্ব পাশব-শক্তি দলিছ চরণে! মানুবের পূজ্য-কাম্য-विकार, धन, भक्ति, शामा, তাই বাণী, লক্ষী, স্বন্দ, গণপতি সনে। বিচিত্ৰ পৰিত্ৰ লীলা. ষত দেব করেছিলা, জাগ্রত সে স্থৃতি আজি মানবের মনে। মহাবোগী মহেশর আত্মজরী স্বরহর, সে দেৰ পূজিত আজি ভক্ত-ভবনে! আমরি ! এ মহাপুলা, কে না চাহে দশকুলা ?

পূজে না ও মহাশক্তি কে বা মনে মনে ক এস মা ! দাসের বাসে ক্লপা বিভরণে ৷

কহ মা! কেমনে দাস পৃজিবে চরণ ?

দেহেঁ দাও পূর্ণ শক্তি,
প্রাণে দাও পূত ভক্তি,
দাও যোড়শোপচার—যাহা প্রয়োজন!

যাহাকিছু তব যোগ্য—

দেবতার উপভোগ্য,

দিমে যদি থাক মোরে, কর ভা' গ্রহণ;
ভকতি-জাহুবী-জলে,
ধোয়ায়ে ও পদতলে—

দিব প্রেম-শতদল মাথিয়া চন্দন!
মা! তোমার আলীর্কাদে
দিব আজি মনসাধে
বলিদান, রাঙা পায়ে, রিপুছ্য জন!
জালায়ে উজল প্রীতি,

দেখ মা! অনাথ দেশ ত্রিভাপ-হারিণি!

চেরে দেখ! এই সব—
কোট কোট শিশু তব

মুমুর্, কাতর কঠে হাহাকার-ধ্বনি!

ঘরে নাহি বক্স অন্ত,

মনোহুথে মতিছ্র,

রোগে শোকে পাপে দগ্ধ দিক্স র্জনী!

মা! ভোর অমৃত বার

লাগিরা এ মৃত পার,

বহক অমর রক্ত এ হিন্ন ধ্বনী!

আরতি করিব নিতি.

দাও মা। দে উপচার-- বাহা প্রয়োজন।

হতি দিব হোমানলে—আয়সমর্পণ।

্ৰ তোমারি করুণা-বলে मृहि नम्रानत करन, হাস্ত্ৰক আনন্দ-হাসি, ভাই ও ভগিনী, তোমা পেয়ে অন্নপূর্ণা। অন্ন বন্ধে হো'ক পূৰ্ণা. শীনা কাঙালিনী এই ভারত-ছথিনী। আয় মা! অনাথ দেশে ত্রিতাপ-নাশিনি! "মা" এসেছে ধরাতলে কে দেখিবি আয়। কে আছিদ মাতৃহীন ? কে আছিদ ছথী দীন ? মা'র কাছে আয় তোরা ভুলি সমুদায়! আজি নাহি গৰ্ব্ব, হু:খ. "धनी, छानी, मीन, मूर्य" **শ্বাই "মায়ের বাছা" মা'র কোলে আয়।** ভাই ভাই বোনে বোনে, ালাগলি প্রীতমনে. **পানন্দ-উচ্ছ দেস** যেন বিশ্ব ভেসে যায়। দেবীর সন্তান যারা. হ'দিনের হথে তারা, কেন হবে আত্ম-হারা অনাথের প্রায় ? আয় ! তবে ত্বরা করি, নৃতন বসন পরি, দেখিবি-ত্রন্ধাও গাঁথা একই স্তায়! আয় ভাই। আয় বোন। মা'র কোলে আয়।

নমোমা ৷ আনন্দ্যরি জগতজননি ৷ নমো নমো মহাশক্তি ৷ সাধকে শুঝাও ভক্তি,

দাও মা। অভয় পদ সংসার-তর্ণ। নমো নমো জগদ্ধাত্তি। জগত-পালন-কর্ত্তি। বিশ্বমাতঃ ! বিশ্ব, তুমি, স্থতে গাঁথা মণি। ইচ্ছায় ব্রহ্মাণ্ড যাঁর, সে অনম্ভ শক্তিভার. কেমনে অবোধ নর বুঝিবে আপনি গ তাই ভেবে দিবানিশি. महाळानी आर्या-सिंह. প্রচারিলা হুর্গা-মূর্ত্তি ব্রহ্মাণ্ড-পালনী-শিশু তাহা নাহি বুঝে, হাতে গড়ি মা'রে পুজে, হেরিয়া প্রবীণ হাসে, "ছেলেখেলা" গণি। সাকারা বা নিরাকারা, নরে যা' বলুক, তারান আমি চিনি মা আমারি, আমারি পাবনী। রাজ-রাজেশ্বরী-রূপে, দাঁড়া' মা এ অন্ধকুপে, एएल एन' भागानभार्य स्था मजीवनी; পেয়ে অই পদ্ধুলি, আমরা নীচতা ভূলি. প্রীতি করুণার স্রোতে ভাসা'ব ধরণী !-তোমারি সন্তান হ'য়ে, রুথা রক্ত মাংস বয়ে, যেন নাই যাই ফিরে--দোহাই জননি। শুভ হুর্গোৎসবে তব মাতাও অবনী। 'দৰ্কমঙ্গলমঙ্গল্যে শিবে দৰ্কাৰ্থসাধিকে! শরণ্যে ত্রাম্বকে গৌরি নারায়ণি ! নমোহস্ত তে॥ একাব্যকুস্থমাঞ্চলি-রচরিত্রী।

বেথুন বিত্যালয় স্থাপনকালে বেথুন সাহেবের বক্তৃতা।

(গত প্রকাশিতের শেষ) ়

"একটা ঘটনা আমার হৃদয়ে অধিক-উৎসাহ আনিয়া দিয়াছে, তাহা আপনাদিগের মধ্যে ছই একজন জানিতে পারেন, কিন্তু সকলে জানেন না। তাহার উল্লেখ ना कत्रिल এकটা বড় ভূল হইবে। ইতিমধ্যে গ্রণমেণ্টের নিক্ট সমর্পণ জন্ম শিক্ষা-কৌন্দীলে একথানি দর্থান্ত আসিয়াছে। বাবু জয়ক্ক মুখোপাধ্যায় উত্তরপাঁড়ার দেশীয় স্ত্রীলোকদের জন্ম একটী বিদ্যালয় স্থাপন করিতে চান, তাহার সূলধন স্বরূপ টাকা তিনি দিবেন, গবর্ণমেণ্টন্ত দেন এই প্রার্থনা। এ প্রার্থনার কল কি হইবে, এখন বলিতে পারি না। আমার নিজের প্রস্তাব সম্বন্ধে যাহা বলিয়াছি, এ সম্বন্ধেও সেই সকল বিষয় বিবেচা। অতিরিক্ত কথা এই, গ্রর্ণমেন্ট ষদি এরূপ প্রস্তাবের অমুকৃল হন, কলি-কাতা ভিন্ন কোনও নিকটবর্ত্তী পল্লীতে তাহার পরীক্ষা করিতে, কথনই ইচ্ছা कतिर्दिन नो। योश इंडेक देश अन्नक्रक বাবুর গৌরবস্টক এবং এ দেশে যে ন্তন ভাব জাগ্ৰৎ হইয়াছে, তাহারও অক্তর প্রমাণ। মাস্ত্রাজ হইতে সম্প্রতি বে সংবাদ আদিয়াছে, তাহাতে অবগত হইলাম যে, তত্ততা প্ৰৰ্মেণ্ট কুলের মুইটা দেশীর ছাত্র তথার একটা জী-

বিদ্যালয় প্রতিষ্ঠিত করিয়াছেন। মাজ্রাজের আডভোকেট জেনারল ইহার উল্লেখ করেন। এ বিষয়ের সবিশেষ বিবরণ পাই-বার জন্ম মাজ্রাজে পত্র লিখিয়াছি এবং এই ছই যুবকের নাম জানিতে চাহিয়াছি। আমি তাহাদিগের ঠিকানা পাইলে তাহাদিগের প্রতি আমার সহাহত্তি জানাইতে এবং আমার সাধ্যমত কোনও সাহায্য তাহাদিগকে প্রদান করিতে কণমাত্রও বিশ্ব করিব না।

আর একটা মাত্র বিষয় করিলেই হয়। সে দিন রাত্রিতে আমার গৃহে-স্থির হয় যে, ছইটা কমিটা স্থাপন করা আবশ্রক। একটা সুলগৃহের জন্ত স্থান অহুসন্ধান করিবেন ; অপর্টী স্কুলে ভরতি-প্রার্থীদিগের প্রার্থনাপত্র বিবেচনা করি-বেন। প্রথম কমিটাই নিষ্ক হইরাছেন, কিন্ত বাবু দকিণারঞ্জন মুখোপাধ্যার অসামান্ত বদাত্ততা সহকারে এই বাটা আমাদের হত্তে অর্পণ করাতে তাঁহা-দিগের আর কিছু করিবার নাই। पछ ক্মিটার অত্যন্ত প্রয়োজন। আপনাদিগের অমুমোণিত হইলে আমার প্রভাব এই আগামী ছব মাদের জন্ত গৃহ-ক্ষিতীয় উপর ছাত্রীনির্মাচনের ভারার্পণ করা হয়। ন্তন প্রার্থনাপত ক্ষাগত

বাইতেছে। সে সকল কাহার বিবেচনাধীন ছুইবে, জানা নিতান্ত আবশুক। বিষয়ী এখন আর সন্দেহান্তক নয়। আমরা কি কুতকার্য্য হইব ? এ কথা এখন জিজ্ঞান্ত নয়। আমরা কৃতকার্য্য হইঙ্গাছি। আজি ত্রীশিক্ষার যে জন্মপতাকা আমরা নিখাত করিতেছি, ঈশরের আশীর্কাদে তাহা পশ্চান্ত্র্য হইবে না, এ দেশের সর্ক্ত্র ইহার প্রোধান্ত অমুভূত ও কৃতজ্ঞতা-সহকারে বীকৃত হইবে।

•উপসংহারকালে আপনাদিগকে স্মরণ করাইয়া দিতে চাই যে, আমার বাটীতে আপনাদিগকে মধ্যে মধ্যে একঁত্র হইতেঁ

অহুরোধ করিব। আপনাদিগের সহিত

সাক্ষাৎ কথোপকথদে জানিতে পারিব,

বিদ্যালয়ের কার্য্য আপনাদিগের সস্তোধজনক হইতেছে কি না ? কোনও বিষয়

আপনারা পরিবর্তন করিতে চাহেন কি

না ? সংক্ষেপে বলিতে গেলে আমি সর্কাদা

জানিতে চাই, এই বিদ্যালয়ের কার্য্য

সর্বতোভাবে আপনাদের সস্তোধকর এবং

আপনাদের সন্তানগরের পক্ষে কল্যাণকর

হইতেছে কি না ?"

কোচবিহারের সংক্ষিপ্ত ইতিরত।

কোচবিহারের রাজবংশের উৎপত্তিসম্বন্ধে ছুইটা জনশ্রুতি আছে। একটা
জনশ্রুতি অনুসারে কোনও আসামী বংশের
"হাজো" নামক এক ব্যক্তি ইহার
সংস্থাপক। অন্ত জনশ্রুতিতে "হরিয়া"
নামক এক "মেচ্" ইহার আদিপুরুষ বলিয়া
বর্ণিত। এই বংশের এক মহাপুরুষের
ছুই জৌছিল, তাহাদিগের নাম হীরাও
জীরা। হীরার অনুপম রূপলাবণ্যে মহাদেব
আরুষ্ট হন। শিবের ঔরসে হীরার গর্ভে
বিশ্বসিংহ জন্ম গ্রহণ করেন। ইনি কোচবিশ্বসিংহ জন্ম গ্রহণ করেন। ইনি কোচবিশ্বসিংহ জন্ম গ্রহণ করেন। ইনি কোচবিশ্বসিংহ জন্ম গ্রহণ করেন। কনি কোচবিশ্বসিংহ কনি নামের সহিত্ব
লাক্ষিক কনি সংক্রমার্কেই নামের সহিত্ব
লাক্ষিক কনি সংক্রমার্কেই নামের সহিত্ব
লাক্ষিক কনি সংক্রমার্কেই নামের সহিত্ব

নিংহের পুত্র নরনারায়ণ মহাতেজন্বী ছিলেন। তিনি বোড়শ শতাকীর মধ্যভাগে ভূটানের দেবরাজকে করদানে বাধ্য করেন, এবং বর্ত্তমান পূর্ণিয়া ও রক্ষপুর জেলার অধিকাংশ স্বীয় রাজ্যভূক্ত করিয়া লন। নারায়ণী মূজা তাঁহার রাজত্বলাল প্রচলিত হয়। নরনারায়ণ আসামস্থ রাজ্যভাগ তাঁহার সহোদয়দিগের মধ্যে বিভক্ত করিয়াদেন। তাঁহাদের বংশধরেয়া অদ্যাপি বড় বড় জমিদার বলিয়া বিধ্যাত। নরনারায়ণের পুত্র লন্ধীনায়য়ণ মোগল সৈষ্ঠ কর্তৃক পরাভূত ও বন্দিরপে দিল্লী নগরে নীত হন। মোগলরাজ কোচবিহারেয় দক্ষিণভাগ কাড়িয়া লন, কিন্তু বক্দদেশের সৃহিত ইহা ভক্ত কবিয়া লন নাই।

ভিষ্প্যে ভূটিয়ারা উত্তর দিক্ হইতে আসিরা কোচবিহার রাজ্য বার বার পূঠন করে, এবং ভাঁহাদের ইচ্ছামুসারে রাজ্য মনোনীত করিবার চেষ্টা পার। এই সময়ে রাজ্বংশের তিনটা পরিবার সিংহাসন-লাভের জন্ম উদ্যোগী ইয়। রাজ্যে মহা-গোলবোগ হইলে তাহার শাস্তির জন্ম ইষ্ট্-ইতিয়া কোম্পানীর সাহায্য প্রার্থনা করা হয়।

কোচবিহারের প্রকৃত রাজা নাবালক ছिल्न। ভূটিয়ারা তাঁহাকে বন্দী করিয়া স্বদেশে লইয়া যায়। রাজা মন্ত্রীবারা ইষ্ট্ ইণ্ডিয়া কোম্পানীর নিকট প্রস্তাব করেন যে, জাঁহারা ভূটীয়াদিগকে তাড়াইয়া দিয়া তাঁহাকে সেংহাসনে পুনঃপ্রতিষ্ঠিত করিলে রাজ্যের অর্দ্ধেক রাজস্ব কোম্পানীকে मिट्दन। ১११० थृष्टोटम রাজা धुत्री ख নায়ায়ণের নামে এক সন্ধিপত্র লিখিত স্বীকার কোম্পানী श्यू. তাহাতে করেন, রাজার সাহায্যার্থ ৪ দল সিপাহী ও একটা কামান পাঠাইবেন: অঙ্গীকার করেন, দৈত্যদিগের ব্যয়নির্কাহার্থ তৎক্ষণাৎ ৫০ হাজার টাকা দিবেন এবং ভম্ভিন্ন কোম্পানীর বে কিছু আর্থিক ক্ষতি হইবে ভাহার পূরণ করিবেন। সন্ধিপত্রে তৃতীর নিরম থাকে যে, রাজ্য শত্রুহন্ত হইতে মুক্ত হইলে উহা ইংরাজ ইষ্ট্ ইভিয়া কোম্পানীর অধীন বলিয়া শীকুত रहेरन, এवः वाकामा श्राप्तानंत्र महिल नःकृष्क इटेरव । वर्ष निवमासूनारत त्राया ইট ইতিয়া কোন্সানীকে ব্যজ্যের অর্ছেক

রাজত্ব দিতে ত্রীক্কত হন। ১৯ নির্ম্ব হর বে, রাজা ও তাঁহার বংশধরের। ইট ইণ্ডিয়া কোম্পানীর অধীনতার অটলভাবে বন্ধ থাকিলে অপরার্দ্ধ রাজত্ব ভোগ করি-বেন। ৮ম নিয়ম হর বে, রাজার প্রবোজন হইলে ইট ইণ্ডিয়া কোম্পানী রাজা-রক্ষার্থ সৈক্ত দিয়া সাহায্য করিবেন, কিন্তু তাহার ব্যয়ভার রাজাকে বহন করিতে হইবে।

উপরি-উক্ত সন্ধি পত্র বারা কোচ-বিহারের সহিত ইংরাজ গ্রণ্মেন্টের চির-मश्रक रक रहा। मिक्क-रक्कान्त **भद्र जड़ा**-সিপাহি সৈতা ভটিয়াদিগকে সংখ্যক পরাভত করিয়া রাজা ধুরীক্স নারামণকে উদ্ধার করেন এবং তিনি সিংহাসনে পুন: প্রতিষ্ঠিত হন। অর্দ্ধেক রাজস্ব ৬৭০০০ টাকা ন্তির হয় এবং তদবধি অন্ত পর্যান্ত বর্ষে বর্ষে তাহা ইংরাজ গ্রণ্মেণ্টকে হইয়া আসিতেছে। এই বংসর ধুরীজ নারায়ণের মৃত্যু হইলে ধুজীজ নারামণ রাজা হন। ১৭৮৩ সালে এই রাজার মৃত্যু হইলে রাজ্যে যোর অরাজকতা হয়। কোম্পানী এই সংবাদ डेब्रे डेखिया অহুসন্ধানার্থ পাইয়া वास्त्रात २ जन मिविनियान कि विरम्य किमिन নিবুক্ত করেন। তাঁহারা কোচবিহারের জক্ত একজন রেসিডেণ্ট বা ক্ষিমনত্ত निर्द्यारगत्र शत्रामर्न सन। তদসুসামে এक्छन कर्चात्री निवृक्त स्म, नर्ज शवर्गत त्वमात्रालय उचत्रभूम नीमार्ड

একৈট বিনিয়া তাঁহাকে আধ্যাত করা হয়। কিন্তু তাঁহার কার্য্যসংখ্যা এত অধিক হইয়া পড়িল বে, গতিনি কোচ-বিহারের বিষয়ে বিশেষ মনোযোগ দিতে অক্ষম হইলেন।

ধুজীন্ত নারায়ণের পুত্র হরীন্ত নারা-যুণের স্বাজত্বকালে কোচ বিহারে বিটিষ স্থাপিত একজন বেসিডেণ্ট इन. द्रांखाद भागनश्रेगानीत मः कादार्थ সময় সময় বিশেষ কমিদনরও নিযুক্ত হইয়াছেন। ১৮২৪ সাল হইতে এথানে নির্দিষ্ট ব্রিটিয রাজ-প্রতিনিধি কেই 'নাই। ১৮৬৩ সালে বর্তমান রাজা त्नर्भेरन के कर्वन मात्र नुरशक्त नात्रायन ভূপ বাহাছর, জি দি এদ আই, দিংহা-স্নাধিকারী হন, তাঁহার বয়স ১০ মাস মাতা। তাঁহার অপ্রাপ্ত বয়স-কালে রাজ্যশাসনের জন্ম একজন ব্রিটিষ কমিসনর নিযুক্ত হন। কমিসনর

পুলিদ, শিক্ষা, পুর্ত্তকার্য্য, রাজস্ব বন্দো-বস্ত প্রভৃতি সকল বিভাগের উন্নতি সাধন করেন। রাজার শিক্ষা, বিবাহ, বিলাতগমন ও ইংরাজ রাজপুরুষদিগের সহিত স্থাতা অনেকেই জ্ঞানেন। রাজা এখন স্বয়ং কোচবিহারের রাজত্ব স্বহস্তে গ্রহণ করিয়াছেন। রাজকার্যা সম্পা-দনার্থ একটা কোন্সিল বা রাজস্ভা আছে. মহারাজ তাহার সভাপতি। তাঁহার দেওয়ান রাজস্ববিভাগের তত্তা-वधान करत्रन। विठात्र, भिका, श्रू निम. সামরিক বিভাগ, জেল প্রভৃতির তক্বা-বধানের ভার স্থপারিণ্টেণ্ডেণ্টের উপর। স্থপারিণ্টেণ্ডেণ্টের ক্ষমতা অত্যস্ত অধিক। রাজসভা চরম আপীল শ্রবণ করেন. কাহারও প্রাণদত্ত করিতে **रहे** हि সকৌন্সিল মহারাজকে তাহার অমু-মোদন করিতে হয়। (সিবিল ও মিলি-টারী গেজেট হইতে সঙ্কলিত)।

জাতীয় উন্নতি।

আৰু কাল অনেকেই স্ব স্থ জাতির
বা সমান্দের উরতির অন্ত ব্যস্ত। এই অন্ত
কত স্থানে কত সভা সমিতি বসিতেছে,
কত রসনা-বিজ্ঞিত অচির-অন্তগত
বক্তৃতাক্ষেত্রত প্রবাহিত হইতেছে।
কোপাও ভারতীয় রমণীগণের বিদ্যাশিক্ষার
আন্দোলন—কোপাই স্থী-সাধীনতার
বাবোলন—কোপাও আধ্মরা হিন্দু-

ধর্মকে নিরাময় ও বলবান্ করিবার
আন্দোলন—কোথাও দেশীয় মৃত শিলের
জ্ঞ হাহাকার ও তাহার প্নরভাদয়ের
আন্দোলন—কোথাও দেশীয় ক্রবকগণের
ক্ষরির উন্নতির আলোচনা—কোথাও
যৌথ কারবার খ্লিবার আন্দোলন—
কোথাও ধর্মতক্ষর আন্দোলন ইত্যানি
আনেক দিন ধরিয়া চলিতেছে, ক্ষ

তাহাতে আত্মত ত আশামুরণ ফল **मिरिट পাও**য়া यात्र ना : कांत्र छेक व्यावश्रक विवेशमम्ह ना इस प्राप्त কতকগুলি বিধান্ বৃদ্ধিমান্ ও চিন্তাশীল ৰোকে হানয়ঙ্গম করিয়া হই একটা দার-গর্ভ বক্তৃতা করিলেন, কিন্তু তাহাতে দেশের অভাব-পূরণ হওয়া অসম্ভব; কারণ এই জাতীয় উন্নতি হুই চারি জন শিক্ষিত ও চিস্তাশীল ব্যক্তি দারা হইতে পারে কি গ कथनहै नटर । माधात्रांवत्र माहाया वाडी ड জাতীর উন্নতি হওয়া নিতান্ত অসম্ভব; वित्नवजः त्य काजित आञ्चावनधन नारे, **সে জাতি কম্মিন্ কালেও উন্নতি লাভ** করিতে পারিবে না। বড় হইবার ইচ্ছা সকলেরই মোছে। প্রথমতঃ যে পরিবারে বাদ করা যায়, তাহাদের মধ্যে দকলের অপেকা বড় হইবার ইচ্ছা জন্মে; উহা পূর্ণ হইলে প্রতিবেশিগণের অপেক্ষা, পরে গ্রামস্ত লোক অপেকা, ও শেষে দেশস্থ লোকদিগের অপেকা বড় হইবার ইচ্ছা বলবতী হইতে থাকে। এইরূপে আত্মীয়তা দম্বন্ধে নৈকটা লইয়া ক্রমে অপর যাবতীয় উন্নতি সমাধানে ইচ্চা হয়। প্রথমত: নিজ পরিবারগণকে অনা পরিবার অপেক্ষা, নিজ গ্রামকে অস্ত প্রাম অপেকা, নিজ দেশকে অন্য দেশ অপেকা.নিজ জাতিকে অন্ত জাতি অপেকা উন্নত করিবার কামনা হয়। এইরূপে জনশঃ আশা বৃদ্ধি হওয়া মনুব্যের স্বভাব-निक। जेयत मञ्ख्यत धहेन्नन धार्वि निवा বে আত্মাৰলম্বনে উন্নতির পথা পরিষ্কার

করিয়া দিয়াছেন, এটি মহম্মমাত্রেরই
চিন্তা করা আবশ্রক ও উচিত। যদিও
সংসারে শোক, ছ:থ, নৈরাশ্র, অলসতা
ও রোগানি মহম্মতে উৎসাহ-হীন করিবার
চেন্তা করিতে থাকে, কিন্তু মহৎ মহম্মগণ
এ সকল বাধা বিদ্ন আগ্রহ করিয়া কর্তব্যপথে আপনাকে চালিত করিতে বিরত
হয়েন না।

इरे ठाति जन नहेग्रा अकी जांछि वा সমাজ হইতে পারে না; অনেকগুলি লোক লইয়া একটা জাতি বা সমাঞ গঠিত হয়। এই লোক গুলির চরিত্রই **জাতীর** জীবন স্বরূপ। हैशाएनत हित्रक त्यमन **इ**हेर्दि, जान इंडेक वा मन्न इंडेक नमान তদমুদারে ভাল কিম্বা মন্দ হ**ইবে। এ স্থলে** বলা আবশ্যক যে, আত্মাবলম্বন উন্নতি-লাভের অদিতীয় উপায়। স্বতরাং **জাতীয়** উন্নতির আশা করিতে হইলে বাক্তি-স্বাধীনতা আৰগ্ৰহ আমরা রাজার উপর বা অন্ত লোকের উপর স্বাধীনতা ব্যবহার করিবার কথা এ স্তলে বলিতেছি না; যে ব্যক্তিগত স্বাধী-নতা সম্বতঃ লোকের থাকিবার কথা. ठाशहे.विटिडिश मत्न कक्रन, धक्छे চাকরের বাক্তিগত স্বাধীনতাটুকু আছে। সে তাহার জীবিকার জন্য এক বা**জি**র চাকরী করিতেছে, স্কুরাং সে ত নিজেই উহা তেহার স্থবিধা ব্রক্তিয়া প্রহণ করিরাছে। যখন বস্ত পশু পক্ষিপ্রের বাধীন ভাবে চলিবার কিরিবার ক্ষমতা चारक, उथन जेयत अवती व्यथान व्यक्ति

মহুষ্যকে স্বাধীনতা-স্থথে বঞ্চিত রাখিবেন, ইহা অসম্ভব । কোনও বাড়ীর চাকরাণী কাৰ্যাগঞ্জী ক্তৰ্ফবা সমাধা তাহার করিরা পরে দে অতা ইত সময় পায়, ভাহার ইচ্ছামত সংকার্য্যাদি করিলে কাহারও আপত্তি করিবার তাহাতে অধিকার নাই। তবে ঈশ্বর যে মনুষাকে করিবার পরস্পর-সমাজবন্ধ সাপেক করিয়াছেন, সে সাপেক্ষতাকে প্রকৃত পরাধীনতা বলা যায় না। কোন ৰাক্তি স্বকীয় শ্ৰমদারা সমাজের কার দাধন করিয়া তাহার নিকট যে প্রত্যুপকৃত হয়, তাহাতে বিশুদ্ধ স্বাধীনতার हानि हम ना। যথেচ্ছ বি-আত্মার নিয়োজন, বৃদ্ধির যথেচ্ছ পরিচালন যথেচ্ছ বিষয় পরিচিস্তনে মন্ন্র্যা-মাতেই সম্পূর্ণ স্বাধীন, স্নতরাং স্বাধীন-ভাবে আক্রনির্ভর করিবার ক্ষমতা সকলেরই আছে। আত্মাবলম্বন উন্নতি-লাভের প্রধানতম উপায়। উহার ফল (यमन मर्काक्रयुक्तत ७ श्रुक्त इय, व्यना-ক্লত সাহায্যের ফল কথনই সেরূপ হয় না। আত্মনির্ভর মনুষ্যকে যেমন সাহগী ও উৎসাহী করিয়া তুলে, অক্তাবলম্বন সেই প্রকার নিরুৎসাহী ও ভীক করিয়া কেলে। অত্যের নিকট যিনি যে পরিমাণে সাহায্য প্রাপ্ত হয়েন, তাঁহার আত্মপৌরুব **लाहे भक्तिमा**र्ग होत्रमान हहेग्रा यात्र। ব্যক্তিগত উন্নতি বাতীত কথনই সমাজের मकरमात्रकि रहेरक भारत ना। सोताका

यि अनम, विनामी, अभिजाहात्री, निकर-সাহ ও পানাসক হয়, তাহা মৌরাজ্য কি প্রকারে সেই **সকল** লোককে শ্রমশীল, উৎসাহী, মিতাচারী ও প্রকৃতিস্থ করিবে 🤊 পরিবার বল, গ্রাম বল, দেশ বল, আর জাতিই বল, সমষ্টিগত উন্নতি সাধন কবিতে হইলে বাষ্টিগত উন্নতি বিধানের চেঠা না করিলে কৃতকার্য্য হওয়া অসম্ভব। একটা পুম্পোদ্যানের পারিপাট্য করিতে হইলে, প্রত্যেক বৃক্ষ লতিকার পাটী না করিলে উদ্যান্টী কিরূপে স্থানর হইতে কর্বের উপর সমষ্টিগত উৎকর্ষ অপকর্ষ নির্ভর করে। কোন একটা জাতিকে স্বাধীন ও সমুশ্রত করিতে হইলে সেই জাতির প্রত্যেক ব্যক্তিকে স্বাধীনতা-প্রিয়, পরি-শ্রমী, কষ্টসহিষ্ণ, উৎসাহশীল ও সতা-প্রতিজ্ঞ করিবার চেষ্টা করা কর্ত্ব্য। মনে করুন, যদি হিন্দু সমাজের কোন দোষ থাকে, তবে দে দোব হিন্দুগণেরই। অত-এব হিন্দুগণ যদি প্রত্যেকে স্ব স্থ দোষ সংশোধন করেন, তাহা হইলে দেই ক্ষণেই সমাজ হইতে সকল দোষ বিদূরিত হইয়া যায়। এই যে দে দিন সন্মতি-আইন পাস হইয়া কত হিন্দু-সম্ভানকে তাপিত कतिल। हिन्दूगंग (कन निस्नताहे कि মেয়ের বিবাহ উঠাইয়া দিলেন না ? তাহা হইলে ত আজ ইংরেম্বরাজকে সত্যে পতিত ও হিন্দুগণকে মনস্তাপিত হইতে इहेज ना। मिज याहा इंहेवाब इहेबा कि क्तिरव ? नमास्त्र त्नाकममूर नित्राह, धथन । स्व परे नमास्त्र विवाद-

বিজ্ঞাট চলিতেছে। হিন্দু সমাজ যদি এই দোষ নিজে সংশোধন না করেন, তাহা হইলে ক্যাভারগ্রস্ত পিতা যে এক দিন দগুনীতির আশ্রয় গ্রহণ করিবেন না, তাহা কে বলিতে পারে? আর এই দগুনীতির আশ্রয় গ্রহণ করিলেও যে সমাজ নিরাণদ ও ভ্রমশৃত্য হইবে, তাহাও আশা করা যায় না। যদি ব্যষ্টিগত উন্নতি

লাভ না হর, তাহা হইলে ঐ সকল দোৰ মৃত্যুস্তর পরিগ্রহ করিয়া নবীনভাবে অব-তীর্ণ হইয়া পুনর্কার দেশের ও সমাজের সর্কা-নাশ করিতে আরম্ভ করিবে। যদি একৈক বাক্তিকে আর্মনির্ভর-সহ পরিশ্রমী ও সচ্চরিত্র করা যায়, তাহা হইলে প্রক্রভ স্বদেশামুরাগিতার কার্য্য করা হয়।

(ক্রমশঃ)

নূতন সংবাদ।

১। গত ১৪ই নবেম্বর বেওয়ার যুবক রাজা রাজ্যাভিধিক হইয়াছেন।

২। ভারতীর ভূতপূর্ক সম্পাদিকা

শ্রীমতী স্বর্ণকুমারী দেবীর কতা শ্রীমতী
সরলা দেবী মহাস্থর মহারাণীর কথেজে
অধ্যাপিকা ছিলেন। তিনি সম্প্রতি ৪৫৩
টাকা বেতনে বরদার মহারাণীর প্রাইভেট
সেক্রেটারী হইয়াছেন।

৩। আমরা শুনিয়া সন্তই ছইলাম, কলিকাতা অনাগাখনের গৃহনি মাণার্থ কুমার মন্মগনাথ মিত্র ১০ হাজার এবং ডাক্তার আর এল দত্ত হ হাজার টাকা দিতে স্বীকৃত হইয়াছেন।

৪। এ বংসর সিবিল সার্কিসের শেব
পরীক্ষার জ্যোৎক্ষা নাপ ঘোষাল ৫ম ও
এলবিয়ন রাজকুমার ষষ্ঠ ছানীয় হইয়া
ভিত্তীর্ণ হইয়াছেন। এক জন মুসলমান
য়ুবক প্রথম হইয়াছেন।

पुक्रक चार्त्यनीय शृहोनिम्दिशंत्र

হত্যা লইয়া গোলঘোগ চলিতেছিল। **আবার** ইমেন নামক স্থানে ৪৫ হাজার **আরব** বিদ্যোহী হইয়া স্থলতানের সৈত্তগাকে পরাস্ত করিয়াছে। এ দিকে লেবাণ্ট সাগরে রুদীয় ও মার্কিণ রণ হরী উপস্থিত। স্থলতানের ঘোর বিস্লাট।

৬। আগ্রাতে এক পঞ্চাবী আসিয়াছে, দে নৈৰ্যোচ ফিট। এখনও যুবক।

৭। ইংলতে স্বরার প্রাইবেট সেক্টোরী সার হেন্রী পন্দশনবী পর্লোক গমন করিয়াছেন। ইনি সনেক দিন বিশ্বস্তার সহিত কাল্য করিয়া মহারাণীর প্রিয়-পাত্র হইয়াছিলেন।

৮। আগানী ১৭ই ডিসেম্বর বর্ত্তমান ছোট লাট ইলিয়ট সাহেব পদত্যাপ, করিবেন এবং সার আলেক্সাওার নাকেন্সী বঙ্গদেশের শাসনকর্ত্পদ প্রহণ করিবেন।

»। मुक्लिकोष्ट्रम श्रवर्षक क्यांत्र

বুধ আগামী ৩০এ ডিসেম্বর সন্ত্রীক কলিকাতা আদিবেন। দিংহল, মান্ত্রাজ প্রভৃতি অত্যে পরিদর্শন করিবেন।

> । কবিচ্ডামণি টেনিসনের পদে আলফ্রেড আষ্টিন মনোনীত হইয়াছেন।
লার এডউইন আর্ণল্ডের নিয়োগসংবাদ মিথাা।

১১। গোয়াতে ঘোরতার বিদ্রোহ হওয়াতে পোর্ত্ত্বগাল হইতে দৈল সহ জাহাজ আদিয়াছে 1

১২। ব্রিষ্টলে ইলেকট্রিক ট্রামণ্ডয়ে
প্রস্তুত হইয়াছে। ৫ মাইল পথ নির্মাণ
করিতে ১০ লক্ষ টাকা ব্যয় হইয়াছে।
মাস্ত্রাক্তেও ঐরপ ট্রামণ্ডয়ে হইতেছে।

১৩। কাষেল হাঁসপাতালের ছাত্রীদিগের জন্ম উহারই সমিকটে একটী
ন্তন হোটেল তৈরারী হইতেছে। এই
বাড়ীটি দ্বিতল হইবে এবং যাহাতে ১০০
ছাত্রী ইহাতে অবস্থান করিতে পারে,
তাহার বন্দোবস্ত হইতেছে। বায় জমির
মূল্য সমেত প্রায় ৯৫০০০ হাজার টাকা
হইবে। এই হোটেলের নাম লেডি
ইলিয়ট হোটেল হইবে।

১৪। বেলফাষ্টে একথানি নৃতন জাহাজ তৈয়ার হইতেছে। ইহাতে ২০০০ টন পর্যাস্ত মাল বোঝাই হইতে পারিবে। এরূপ বড় জাহাজ পৃথিবীতে আর নাই।

পুস্তকাদি সমালোচনা।

>। পুণ্যকাহিনী— শ্রীকাশীচন্দ্র ঘোষাল প্রণীত, মৃল্য । ৮০ আনা। ইহাতে সত্যা-মুরাগ, ধর্মনিষ্ঠা, স্বদেশপ্রেম, ভ্রাত্তাব, বন্ধু, পতীত্ব, স্বাবলম্বন প্রভৃতি বিবিধ শুণের দৃষ্টাস্তম্বরূপ প্রায় ৪০টা আথ্যা-বিকা বর্ণিত আছে। উপদেশ অপেক্ষা দৃষ্টাস্ত অধিক ফলপ্রদ। বালক বালিকা-দিগের নীতিশিক্ষার পক্ষে এই পুস্তক-শানি বিশেষ সহায় হইবে, বলা বাহল্য। ইহা বিক্লোক্ষের পাঠ্যগ্রন্থ মধ্যে নিবিষ্ট হওয়া স্বাবিশ্বক

্রি। ভূলোক-র্রহ্নস্থ - শ্রীমনোমোহন ট্রন্তুর্বা কর্ত্বক সংগৃহীত, মূল্যনি আনা।

গ্রন্থকার অনেক যত্ন ও পরিশ্রমপূর্ব্যক পৃথিবীর লোকসংখা, জন্ম, মৃত্যু, বিবাহ-প্রণালী, বৈজ্ঞানিক আবিদ্ধার, জাতীয় রীতিনীতি প্রভৃতি অনেক জ্ঞাতব্য বিবরণ সংগ্রহ করিয়াছেন। পুস্তকথানি অনেকের অনেক প্রয়োজনে লাগিবে।

০। পুণ্যদা প্রসাদ—শ্রীকাশীচক্র ঘোষাল প্রণীত, মৃল্য প আনা। ইহাতে একটা সাধুরান্ধের জীবন সংক্ষেপে লিপিবদ্ধ হইরাছে। দারিদ্রা, রোগ, নির্যাতন ও নানাবিধ বিপদের মধ্যে এই ব্রহ্মোপাসক ষেরূপে ধর্ম-বিশাস রক্ষা করিরাছেন এবং খদেশীর লোক- मिर्गत दर्शन मातिका धानमन धवः छान,। ধর্মা, স্বাস্থ্য, ও স্থথের উন্নতি সাধন জন্ম যেরপে আত্মবিসর্জন করিয়াছেন, তাহা আদর্শস্থানীয়।

৪। উচ্ছাস—গীতিকবিতা। কবিবর নবীনচক্র দেন প্রশংসার সহিত যে কাব্যের ভূমিকা লিখিয়াছেন এবং বাবু স্থরেশচন্দ্র সমাজপতি যাহা প্রকাশ করিয়াছেন, তাহা যে সাধারণের নিকট আদরণীয় হইবে. উচ্ছাদে কবিত্ব আছে। বলা বহিল্য। লেথক তাহার বিকাশ সাধনে সচেই হউন, কৃতকার্য্য হইবেন।

শ্রীমতী সৌদামিনী দেবী 8-51 বির্চিত অভূত রামায়ণ, সীতার জীবন-চরিত ও মাতঙ্গিনী উপহার পাইয়া আমরা কুতজ্ঞ হইলাম। লেখিকা হাবড়া শিব-পুর-নিবাসিনী একটী বিধবা এবং ক্ষেক্টী বালিকার পালনের ভার-গ্রন্থা। দাসীবৃত্তি অবলম্বন না করিয়া গ্রন্থরচনা

দারা জীবিকোপায় করিতে কুতসংকর नवा छः कत्रद्रश আমরা হইয়াছেন। हेहाँ जाधु मःकद्म निष्कित आर्थना कति। किन এ इडीशा (मटन खरात मर्गामात्र কি আর •দিন আছে ? গুণগ্রাহিগণ গ্রন্থকর্ত্রীকে বিশেষ উৎসাহদান করিলে পুত্তক ছাপাইয়া তিনি দারের উপর আরও দায়গ্রস্ত হইবেন।

অদুত রামায়ণ, মূলা ১ টকা--নানা ছন্দে সরল পত্তে রচিত। ইহাতে রামায়ণের অনেক অ**ভুত** র**ংস্থ আছে।**

সাতার জাবনচরিত, মূল্য। 🗸 • আনা— ইহাতেও অভূত কথা ও সতীধ**ৰ্ম বণিত** আচে ৷

মাতিশিনী, মূলা। আনা। বীভংগ ও লোমহর্ষণ ঘটনা অপ্রাব্য। লেখিকা পাপের চিত্র অঞ্চিত করিয়া স্বয়ং অনুত্রা হইয়াছেন, ইহা বস্ততঃ নারী-লেখনীর অযোগ্যা

বামারচনা।

हिन्द्रम् तम् ।

(৩৬৯ সংখ্যা —১৮৮ পৃষ্ঠার পর)

ভারতের ইতিহাস পাঠক পাঠিকার নিক্ট দিলীখন পৃথীরাজের নাম অপরিচিত নহে। তিনি কান্তকুজাধিপতি জরচজের কল্পা সংযুক্তাদেবীর পাণিগ্রহণ করেন। সেই অপরণ বিবাহ-কাহিনী অবন্ধন করিয়া প্রিয়ত্যা পদ্মী সংযুক্তাদেবীর সহিষ্ট এব

অনেক উপস্থাসাদি রচিত হইয়াছে, অনেক গাথা .গাঁত হইয়া থাকে 5 ঐ বিৰাহের কিছুকাল পরেই ববনেরা ভারত আক্রমণ করে। এক দিন রজনীতে গৃথীয়াজ

শ্যার নিদ্রিত আছেন, রাত্রিশেষে হঃস্বপ্ন দেখিয়া জাগরিত হইলেন। প্রিয়তমা সংযুক্তাদেবীকে জাগাইয়া কহিলেন "প্রিয়ে, আমি নিদ্রিতাবস্থায় দেখিলাম স্থর্গ-বিদ্যাধরী রম্ভার আয় অলোকসামান্ত রূপবতী এক কামিনী সজোরে আমার এক বাহু আকর্ষণ করিল। পরে সেই আক্রমণ করিল। মায়াবিনী ভোমাকে যথন তুমি অত্যস্ত কাতরা হইয়া পড়িলে, এক ভয়ানক হস্তী আসিয়া প্রেত্তবৎ धतिन । তৌমাকে চাপিয়া নিদ্রাভঙ্গ 'हरेल (निथ, तुछा कि मानव किरहे नारे। আমার হৃদয় ভয়ানক কম্পিত হইতেছে, বিধাতাই জানেন, ভাগ্যে কি আছে ॥''

প্রেমমন্ত্রী সংযুক্তা উত্তর করিলেন,
"প্রাণেষর! পৃথিবীতে কোন্ ব্যক্তি তোমার
ভার যশ: ঐশ্বর্যা বা স্থ্য সন্ত্যোগ করিয়াছে ?
মৃত্যু কেবল মানবেরই অবশুভাবী অদৃষ্ট
নহে, দেবতারাও মৃত্যুর অধীন। সকলেই
প্রাতন বাসত্যাগে অভিলাধী, কিন্তু
মরিতে জানিলে মৃত্যুতেই মানবকে অমর
করে। প্রাণনাথ! আত্মচিন্তা, পাপ স্বার্থচিন্তা পরিত্যাগ করিয়া অমরত্বলাভের চিন্তা
কর। শাণিত কুপাণ হন্তে শক্রদলে প্রবেশপূর্বক অরাতি-মন্তক দিখন্তিত কর। আমি
কোমার চিরসঙ্গিনী থাকিব।" সংযুক্তা
দেবীর উক্তি শ্রবণ করিলে মনে পড়ে:—
"বাসানীস জীর্ণানি যথা বিহার

ৰবানি গৃহাতি নরোহুপরাণি, তথা শরীরাণি বিহার জীণা নান্যানি সংঘাতি নবানি দেহী।" এবং

্ "স্থে হুঃথে সমে কৃত্বা লাভালাভৌ জরাজরো। ততো যুদ্ধার যুজ্যক্ষনৈবং পাপমবাপ্রসূসি ॥"

কোনও বর্ত্তমান সভ্য দেশের রমণী এতাদৃশ ধর্মামুগত সারগর্ভ তেজস্বী বাকা উচ্চারণ করিতে কি সমর্থা হইয়াছেন? যাহা হউক, নিশাবসানে রাজা নিজ স্বপ্রবাস্ত গুরু পুরোহিতের নিকট জ্ঞাপন করিলেন। তাঁহারা অঞ্জনাশ-মানসে নানাবিধ শান্তি-স্বন্তায়নের উদ্যোগ করিতে লাগিলেন। গুরুদের রক্ষা-করচ লিখিয়া মহারাজকে অর্পণ করিলেন. তিনি তাহা নিজ উষ্ণিষে ধারণ করিলেন। বলি, হোম, পূজা প্রভৃতি নানাবিধ দৈব-ক্রিয়া হইতে লাগিল। কিন্তু শান্তি-স্বস্তায়নে কি দৈবের গতি প্রতিরোধ করা যায়? যদি মনুষা কোন প্রকার অদৃষ্টের ভোগ থণ্ডাইতে পারিত, তাহা হইলে এত ভোগ ভূগিতে হইবে কেন? যৎকালে দিলীর রাজপুত বীরবর্গ একত্রে সামরিক সভা আহ্বান^{্ত} করিয়া স্থলতানের গতি প্রতিরোধ করিবার উপায় অবধারণ করিতেছিলেন, সেই সময়ে পৃথী-রাজ ঐ সভা হইতে গোপনে নিজান্ত হইয়া প্রিয়তমা সংযুক্তাদেবীর সহিত পরামর্শ গ্রহণ করিতে অন্তঃপুরে প্রস্থান করিলেন। রাজা পরামর্শ চাহিলে সংযুক্তা দেবী উত্তর দিতেছেন ;-- "উপদেশ দিবার জ্ঞ্ম কে কোথার নারীকে আহ্বান করে ? জগতে তাহারা অবলা বলিয়া কথিতা, তাহাদের বৃদ্ধিবৃত্তি নিজেজ বলিয়াই প্রসিদ্ধ আছে।

ভাহারা সত্য বলিলেও কে ভাহাতে কর্ণ-া দিকে চাহিয়া আছেন—বেন **জনমের** পাত করে ? তথাপি জগতে রুমণী না अমত দেখিয়া লইতেছেন। অক্সাৎ তুর্বা-থাকিলে কি হইত ? দেখ শিবের সহিত শক্তি সর্বাদা সন্মিলিতা। আমরা যুগপৎ অশক্তি ও শক্তি বিপরীত জ্যোতিষী পণ্ডিত শাস্ত্র আবার । উদ্বাটন করিয়া আকাশস্থ গ্রহনক্ষতাদির গতি অবধারণ করিতে পারেন, কিন্তু নারীতত্তে তিনি নিতান্ত অনভিজ্ঞ। এ कथा बाज नुउन दनिएउছि ना, वह প্রাচীন কথাই কহিতেছি। নারীতত্ত্বে তাঁহাদের অধিকার নাই, স্থতরাং নিজ নিজ অনভিজ্ঞতা লুকাইতে গিয়া তাঁহারা करहन रेंग, 'त्रमंगी व्यवना।' उथापि त्रमंगी তোমাদের স্থথে স্থিনী, হৃথে ছঃথিনী। এমন কি তোমরা যথন নশ্বর ধরাধাম ত্যাগ কর, তথনও আমরা তোমাদের সঙ্গিনী। * *" যখন রণবাদ্য গভীর বাজিয়া অলম্ভ বারদর্পে **রাজপু**তগণ উঠিল. মুদলমানদিলের সহিত যুদ্ধবাতা হেতু স্জিভত, প্রেমময়ী সংযুক্তা নিজ হতে প্রিয় পতিকে রণসজ্জার সজ্জিত করিয়া দিতেছেন। তিনি বহু চেষ্টাতেও বর্ম অঙ্গে স্থবিশ্রস্ত করিতে পারিতেছেন না, ভাহার বন্ধনী খুঁজিয়া মিলিতেছে না! পারিবেন কি ? তাঁহার চকু কোণায় ? তাঁহার চকুদ্বর পতির বদনমগুলের প্রতি অনি-মিষে চাহিয়া আছে। স্থদরিদ্র ব্যক্তি প্ৰিমধ্যে এক খণ্ড কাঞ্চন দেখিলে বেমন স্তৃষ্ণনয়নে চাহিয়া থাকে, সংযুক্তাদেবী নেইরূপ সভ্কনরনে পৃথীরাজের মুবের

নিনাদ হইল, সংযুক্তার মন্তকে যেন খন্ত নিপতিত হইল। পতিকে যুদ্ধে বিদায় দিয়া কহিলেন "এবার স্বর্গে গিয়া পুনরায় ঐ মুখ দেখিব। পৃথিবীতে ও মুখ দেখা আর ভাগ্যে নাই।" তাঁহার ভবিশ্বশাণী मफल इट्टेल। मठ यवनहत्त्व प्रशास বন্দী ও নিহত হইলেন। সার ঐশা-শক্তি-শালিনী সভী-শিরোমণি দেবী সংযুক্তা হাসিতে হাসিতে চিতারোধণ করিলেন। আর এক তেজ্বিনা রুমণার চরিত্র কার্তন করিয়া অভাবদায় শইব। গানোর রাজ্যের অধার্থরা যবনদিগের বিক্রছে ক্রমার্থ্যে পাঁচটা এগ রক্ষা করিবার চেটা করিয়া অবশেষে নর্মনানদা-ভারস্থ ভাঁছার এক ছগে গিয়া আত্রয় গ্রহণ করিলেন। কিন্তু তভাগাবশতঃ তিনি তথায় আসিয়া পৌছিতে না পৌছিতেই ু যবনবৈষ্ তাহার অহুণরণপূর্বক তথায় উপস্থিত হইল। এ দিকে পৌনঃপুনিক যুদ্ধে তাহার সৈতাদল অল্পংথাক ও হানোৎসাহ হইশ্ন পড়িয়াছিল। রাণীর সাহন থাকিলে। কি হইবে ৪ তুর্গ অত্যল্ল কালের মধ্যেই শক্র কর-তল-গভ হইল। ঐ পশ্চাদ্ধাবন-नोग यवन वीत वर्तमान जुलाग ताजवःनीज-मिर्गत जामिश्रक्ष। বীরবর রাজ্ঞীর অসামাত্ত রূপলাবগ্রো এতাদৃশ মোহিত হইয়াছিলেন বে, ছর্গক্ষের পর-ক্ষণেই তিনি রাণীর নিকট প্রভাব कत्रिरान, यनि बागी छाशास्य विद्वार

করেন, তাহা হইলে রাণীর নিজ রাজ্যত টুছিলৈন, রাজ্ঞী তাহা অপেকাও শতভানী অপণ করিবেন। খাঁ সাহেব এই প্রস্তাব ক্রিয়া প্রাসাদের নিম্তবেশীয়াণীর উত্তর করিতে লাগিলৈন। বাণী প্রতীকা **८**मिश्रामन, এ প্রস্তাবে অসমত হইলে (कान ७ कन नार्ट, यत्रक यम श्रीकारनत সম্ভাবনা। স্কুতরাং তিনি সন্মতি জানাইয়া উত্তর দিলেন যে, "থাঁ সাহেবের অদুত বীরত্বে তিনিও মোহিকা ও পরম প্রীতা হইয়াছেন: এবং তাঁহার প্রস্তাবে তিনি বিশেষ আপ্যায়িতা হইয়াছেন। শুভ বিবাহ **এই প্রাসাদেই সম্পন্ন হই**য়া যাউক! তবে এই প্রার্থনা যে, উভয় পক্ষই যেরূপ সম্ভ্রাস্ত, তাহাতে সম্মানামুষায়ী পরি-চ্চুদাদি প্রস্তুত করিবার জন্ম এক প্রহর সময় ভিকা দিতে হইবে।" বলা বাছলা. খাঁ সাহেব এই প্রস্তাব অতি প্রীতমনে অন্তুমোদন করিলেন। মহাসমারোহে বিবাহের আয়োজন চলিতে লাগিল। কর্কশ রণবাছের পরিবর্ত্তে মধুর বৈবাহিক বাদ্য বাজিতে লাগিল। রাণী খাঁ मारहरवत निक्ठे विवारहाभरगांशी महाई উপঢৌকন ব্রুলকার পরিচ্চদ 8 निर्फिष्ठे সময়া-পাঠাইয়া मिट्नन । বসানে খাঁ সাহেব অন্ত:পুরে আহুত হইলেন। তিনি সানন্দে রাজ্ঞী-প্রেরিত বছমূল্য এন্ত্ৰালয়ারে স্থসজ্জিত হইয়া वत्रत्वा असःशृत्त श्रादन कत्रितन। ক্ষেতিন, লোকটুই যাহা ওনিয়া-

পাকিবেই, অধিকস্ক তাঁহারও সর্বস্থ 🛊 অধিক স্বন্দরী। রাণী অতি সমাদরে তাঁহাকে পর্যাকে ৰুসাইলেন। নানাবিধ প্রেমালাপে সময় মুহূর্ত্তবং অতিবাহিত ২ইতে লাগিল। খাঁ সাহেব রাণীর রূপ-লাবণ্যে মুগ্ধ হইয়া নির্নিমেষনেত্রে তাঁহার মুখের দিকে চাহিয়া আছেন, হঠাৎ তাঁহার গা কেমন করিতে লাগিল: অত্যন্ত গ্রম বোধ হইতে লাগিল। পাখা চলিল, भीতल সলিল সেক করা হইল. (कान ७ ফলোদয় इटेन ना। থাঁ সাহেব অধীর হইয়া নিজ অঙ্গ হইতে পরিচ্ছদ ছিঁ ড়িয়া ফেলিতে লাগিলেন। রাণী এই সময় তাঁহাকে সমোধনপ্রকাক বলিলেন, "শুন খাঁ, তোমার শেষের সে দিন উপস্থিত. আমাদের বিবাহ ও মৃত্যু একত্রে সম্পাদিত তুমি যে পরিচ্ছদ পরিধান श्रुटें । করিয়াছ, সে সমস্তই বিষাক্ত! কি করি বল, সতীত্ব রক্ষা করিবার, অপবিত্রতার হস্ত হইতে মুক্তি পাইবার অন্ত উপায় রাখ नारे।" त्रागीत এই উक्ति अवरण मकरम চমকিত হইয়া উঠিলেন, রাণীও তৎক্ষণাৎ গবাক্ষ দিয়া নিমে নর্ম্মদা-সলিলে আত্ম-विमर्कन कविद्यान। ७ पिटक विदयत ब्बानाय बर्ब्बविङ रहेम्रा था नार्ट्य मृज्य इहेग।

সতীত্বের মহিমা হিন্দুরমণীর স্তার অস্ত कान प्राप्त त्रभी वृशिशाष्ट्र कि ?

(ক্রমশঃ)

শ্ৰীমতী নগেক্সবালা মুন্তফী।

বামাবোধিনী পত্রিকা।

BAMABODHINI PATRIKA. ''क्रन्याप्येवं पालनीया शिचणीयातियस्नतः।''

ক্সাকে পালন করিবেক ও যত্নের সহিত শিক্ষা দিবেক।

৩৭২ সংগ্ৰা ।

পৌষ ১৩০২—জামুয়ারী , ১৮৯৬।

৫ম 🚧 🛱 । ৪র্থ ভাগ। 🌁

সাময়িক প্রসঙ্গ।

বাঙ্গালীর বৈজ্ঞানিক আবিক্রিয়া—
প্রেসিডেন্সী কলেজের অধ্যাপক বার্
জগদীশ চক্র বস্থ তাঁহার নবাবিস্তত
আলোকের আশ্চর্যা ক্রিয়া সম্বন্ধে এক
প্রবন্ধ লিখিয়া ইংলওের "রয়াল সোদাইটী"
নামক সভায় পাঠান, তাহা তথায় আদরের
বিষ্যানিক অনুসন্ধানের কাহায্যার্থ উক্ত
সভার ফণ্ড হইতে সাহান্য প্রদন্ত হইবে।
বাঙ্গালীর পক্ষে ইহা সামান্ত গৌরবের
বিষয় নয়।

বিবি বেজাণ্টের বক্তৃতা—ডিসেম্বরের
২৭এ হইতে ৩০এ পর্যান্ত চারি দিন বিবি
বৈজাণ্ট থিওজফিক্যাল সভার আদিয়ার
শাখার কর্ম, ধ্যান, সিদ্ধি এবং মানবজাতির ভবিশ্বৎ উন্নতি প্রভৃতি বিষরে

ইটা বক্তৃতা করিবেন।

যুবরাজের সৌজ্যু—কোনও ভজ-লোক গ্রহাজের সহিত কথা কহিছে কহিছে প্রত্যেক বার "Your Royal Highness"—"আপনার রাজকীয় মহিমা" বলিয়া সমোধন করিতেছিলেন; তাহাতে গ্রহাজ বলিলেন "অত কথা না বলিয়া "Sir" (মহাশ্য) বলুন, অনেক কম সময় নই হইবে এবং মামি এইরূপ স্থোধন ভালবাসি।

বস্ত্র রোগের কারণ—এক কব বৈজ্ঞানিক অনেক অন্ত্রস্থানের পর হির করিরাছেন, বস্ত্র পরিধান হেতু মানবের এত রোগ হয়, বিবস্ত্র থাকিতে পারিলে নীরোগ হওয়া বায়। অস্তান্ত করের শহিত মানবের পার্থকা কেবল বস্ত্র পরিধানে বর্ম রহান, বিভাশিকা, ধর্মধাজনে; এ ভালিও কি রোগের কারণ ? তবে বস্ত্র-তোগও আছে।

ছারপোকার গাঁতি—আমেরিকার কানসাস প্রদেশের উইচিটা নগরে গত ২৭এ সেপ্টেম্বর মধ্যরাত্রে পঙ্গপালের স্থায় ছারপোকা-পাল সমুদায় নগর ছাইয়া ফেলে, রান্তা ছারপোকায় আধ ইঞ্চি পুরু হয়। ইহাদের আবরণে তাডিতালোক মান ट्टेब्राइल, मूलायद्वत कार्या वक्त ट्य, नकल স্থানই ছারপোকাময়।।

ছাত্রীনিবাস-প্রতিষ্ঠা-প্রাতন ছোট লাট গত ১২ই ডিসেম্বর্র কাম্বেল মেডিকাল ক্ষুলের ছাত্রীদিগের জন্ম নির্মিত ছাত্রী-নিবাদের প্রতিষ্ঠা করিয়াছেন। ইহার নাম ইলিয়ট ছাত্রীনিবাস হইল।

পারিসের চোর—বর্ত্তমান বর্ষের জুন মাস পর্যান্ত ৪০০০ চোর ধৃত হইয়াছে, তম্মধ্যে একটা রাজকন্তা এবং করেকটা বড বড জমীলার-ঘরের মেয়ে। 'যার যে রীত, না ছাড়ে কদাচিৎ।'

অন্ধদিগের জন্ম ঘড়ী—এক স্বই-ডেনবাসী এক প্রকার ঘড়ী প্রস্তুত করিয়া-ছেন, তাহার দাগের মাঝে ছোট ছোট খোঁটা বদান। অন্ধ ব্যক্তি হাত বুলাইয়া সময় বুঝিয়া লয়।

সারদা-সদনে থ্রীফ বিভীষিকা-মারহাট্রা পত্র লিথিয়াছেন, পণ্ডিতা রমা বাইয়ের সারদা-সদনে এককালে ১২টী হিন্দু রমণী খৃষ্ঠীয় ধর্মে দীক্ষিতা হইয়াছেন। ইহাতে হিন্দুরা ভীত হইতে পারেন।

মহারাণীর পতিভক্তি—উইওসর কাদেল রাজপ্রাসাদের নিভৃত কক্ষ পুনঃ সজ্জিত হইয়াছে। ইহার দারের উপর মহারাণীর নিজের স্থানর পরিষ্কার হত্তা-ক্ষরে লিখিত আছে "এই কক্ষের প্রত্যেক দ্রব্য আমার স্বর্গীয় স্বামী কর্তৃক আমার রাজত্বের চতুর্বিংশ বৎসরে আমার জন্ম মনোনীত।"

স্ত্রীলোকের নির্দ্ধোষ আমোদ।

অনেক জ্ঞানী পণ্ডিত স্থির করিয়া-ছেন, স্ত্রীজাতির আমোদ-উপভোগেচ্চা অতিশয় প্রবলা। এ কথার সত্যতা বিষয়ে আমাদিগেরও কোন সন্দেহ নাই। আমরা লোক বিলেধের বা শ্রেণীবিশেষের জীবন ও কার্যা, আলোচনা করিয়া যে এ কথা বলিতেছি, তাহা औহে। এ জগতের সভা, অসভ্য, অতীত, বর্ত্তমান, সকল জাতির ও

সকল সময়ের স্ত্রীলোকের প্রকৃতি আলো-চনা করিলে অহুভূত হয় যে, আমোদ-উপভোগেচ্ছা স্ত্রীচরিত্রে স্বতঃ প্রবলা।

কিন্তু এই স্বাভাবিক বৃত্তি অমুশীলন ও চরিতার্থ করা বিধাতার ইচ্ছা কি না, স্থায় ও পবিত্রতার অমুমোদিত কি না, তাহা না वृतित्व हेश नात्री-मच्चमात्त्र ध्ववर्छन कत्रा কর্ত্তব্য নহে। কারণ এ জগতে আমো

র্ষেত্রপ উপকারী, সেইরপ অমুপকারী বলিয়া প্রসিদ্ধ। তবে শ্রেণীবিশেষের লোক एकक्रमम् विविधारे रुखेक, ज्यात स्व कातरगरे इडेक, आस्मारमत वड़रे विषयी। आमता, আমোদের সেই স্বত:-বিরোধী ব্যক্তিগণের অবন্থা "দয়া-উত্তেজক" বলিলে, বোধ হয় অস্তায় কথা হয় না। কারণ (বিদেষ ভাব প্রযুক্ত) তাঁহারা আমোদের এত বিরোধী বে, "আমোদ" নাম ভনিলেই তাঁহাদের <u>তাঁহাদের</u> क क्किंड इरेग्रा याग्र। বিবেচনায় আমোদ বালকোচিত অসার ও মহুষ্যত্ব-নাশক কার্য্য। তাঁহারা নিজে তো গন্তীর, বিষণ্ণভাবে থাকিবেনই, তাহার উপরে পরের হাসি. পরের প্রফল্লহা, তাহাও সহিতে পারেন না। মারুষ কড়া-কড় নিয়মে থাকিবে, পরিমিত স্থথ চাহিবে, যতক্ষণ কাজ করিবার ততক্ষণ কাজ করিবে. বিশ্রামকালে একটা দারুণ নৈরাশ্রপূর্ণ দৃষ্টিতে কড়ি কাঠের দিকে চাহিয়া হাই ছাড়িতে পাকিবে-ফলতঃ স্কল সময়েই "বিষ্ণতা" নামক এক দেবীর পরিচালনায় 'চেখি ঢাকা বলদের' মত নির্দিষ্ট পথে চলিবে. এই হইল ভাঁহাদের বিবেচনায় "মহুষ্যত্ত্বের পরা-কাঠা।" যদি মানুষের প্রাণে আনন্দ-লালসা না থাকিত, যদি আনন্দে একটা অশাসিত উচ্ছাস না থাকিত, যদি "হাসি" বলিয়া বিশ্বসংসারে যে একটা জিনিস আছে, সেই জিনিস্টা না থাকিত, আর मस्याजीवन वित मुख्रतीथ व्याक्त्रत्वत প্ৰের মত অধবা ইউক্লিডের জামিতির

প্রতিজ্ঞার মত এক একটা নীরদ বাঁশা বাধির মধ্যে থাকিত, তাহা হইলেই বােশ হর এই শ্রেণীর লােকগুলি সম্পূর্ণ পরিতৃথি লাভ করিতে পারিতেন। কিছ বরং বিধাতার ইচ্ছা দেরূপ নহে, স্কুতরাং বেচারাদিগের বিরক্তি ও অসন্তৃষ্টি নিবারণের কোনও উপার দেখা যার না। স্ত্রীলােকের পক্ষে "আমাদ" অনিষ্টকর ভাবিয়া যে ইহারা এত অসন্তই তাহা নহে—"আমাদ" শন্দের উপরেই ইহাঁদিগের অপ্রবৃত্তি। এ রক্ষ "বাক্তিগ্তত্তি বিছেব" অবশ্রু ধর্তব্য নহে।

কিন্ত শুক্ষচরিত্র মানবের কথার না হউক, একদিকে আমোদ হইতেই মানবের মহা অধর্ম, মহা সর্কনাশ সাধিত হয়। মাসুষ यनि ছায়ের পথ ভুলিয়া আমৈদে আসক্ত হয়, তাহা হইলে তাহার ধর্মাধর্ম. হিতাহিত কিছুই মনে থাকে না। বলিতে কি, এ জগতে যত কুকাৰ্য্য হয়, আমোদে-চ্ছাই তাহার অনেকগুলির মূল **স্বরূপ**। আমোদের লোভে কত মাতৃয হদরহীন রাক্সের মত কাল করে, কত মারুৰ মোহান্ধ হইয়া ইহকাল, পরকাল ডুবার, তাহার ঠিকানা নাই। মাহৰ মদ ধার, তুলি খার, আমোদের লোভে; মানুৰ (অনেক সময়ে) চুরি করে, ডাকাতি করে, আমোদের লোভে; এ সব কাৰের অপেকা আরও ত্বণিত, আরুও ভরানক কাল করে আনোদের লো**টে। এখন** শিনিস স্ত্ৰীজাতির হাতে দিতে **কি মান্ত্**ৰেক প্রবৃত্তি হয় ? আর এমন জিনিস এই

করিতেই বা কোন্রমণীর প্রবৃত্তি হয় ?— । এ বিষয়ে কথা আছে।

'কেবল আমোদ বলিয় নহে: মানবের উপভোগ্য বহুতর জিনিসেরই এই রক্ম एमा हम । हेरात कात्रन अहे (य. जन्मी यत्र —করুণাময় জগদীশ্বর আমাদিগকে যে সকল কুদ্রতর ও মহত্তর মনোবুত্তি দিয়া-ছেন, দেই মকলগুলি চরিতার্থ করিবার জ্ঞ জগতে বছবিধ উপাদানও রাথিয়া-ছেন। মানব ভায় পথে থাকিয়া সেই সুকল প্রবৃত্তি চরিতার্থ করিবে, ইহাই ঈশ্বরের অভিপ্রায়। এইরূপে প্রবৃত্তি সকল চরিতার্থ করিতে পারিলেই মান্ব-জীবনের উন্নতি সাধিত হয়। ইহার অন্যথাই মানবের সকল অবনতির মূল অর্থাৎ অন্যায়ের পথে গিয়া মানব যদি প্রবৃত্তি চরিতার্থ করে. তাহা হইলেই তাহার জীবন পশুবং হইয়া থাকে।*

মানবের সকল মনোরত্তির মধ্যে আমোদেচ্ছাও এক বৃত্তি। এই প্রবৃত্তিকে ইংরাজিতে ''এস্থেটিক" (Aesthetic)

*এইজন্ত কোন্ প্রবৃত্তি কিরুপে পরিচালিত করিলে তাহা ধর্ম ও স্থারের অনুমোদিত হয়, সে বিষয়ে শিক্ষা লাভ করা মানব-দ্বীবনের এক প্রধান কর্ত্তব্য ৷ সে শিক্ষা না পাইলে মানব ধন, মান, বিদ্যা, বৃদ্ধি প্রভৃতিতে যতই উন্ধৃতি লাভ করুন না কেন্টু তাহার আপনার প্রতি কোনও অধিকার খাকে না৷ তাহার দারা জগতের সভান্ত কার্ব্য স্থাকি পরিচালিত করিতে পারেন না।

বলে। বাঙ্গালা ভাষায় স্থপ্রসিদ্ধ বঙ্কিম বাবু "চিত্তরঞ্জিনী" বৃত্তি বলিয়াছেন। আমরা সেই বঙ্গ-দাহিত্য-গুরুর পথামু-সরণে ইহাকে সেই নামে অভিহিত করিতেছি। এই চিত্তরঞ্জিনী বৃত্তির কার্য্য আনন্দোৎপাদন ও আনন্দ গ্রহণ। বত্তির চরিতার্থতা রূপ আনন্দকেই আমরা বলিয়া থাকি. "আমোদ"। অতএব জগ-দীশ্বর যথন এই মনোবুত্তি দিয়াছেন, এবং স্থায় পথে থাকিয়া ইহা চরিতার্থ করিবার বহুতর উপায় বিধান করিয়াছেন, তথুন ন্তায় পথে থাকিয়া বিশুদ্ধ আমোদ উপভোগ করা আমাদের এক পরম কর্ত্তব্য। আর এই ভাষ পথ ভূলিয়া আমরা যদি দৃষিত আমোদ উপভোগ করিতে চেষ্টা করি, তাহা হইলেই আমাদিগের সর্বনাশ হয়. আমাদের জীবন মহাকলঙ্গে কলঙ্কিত হয়, আমরা মানবজনো প্রকৃত পঞ্ছ প্রাপ্ত হই। এই জন্ম বিশেষ সত্রকতার সহিত উপভোগ করা আমাদিগের জামোদ উচিত।

এ সংসারে মানব যে দ্যিত আমোদ গ্রহণ করে, তাহার প্রধান কারণ তিনটী। প্রথমতঃ মানব শিক্ষা ও সাহচর্য্যের দোষে বিরুত রুচি প্রাপ্ত হইলে, তাহার সকল ইচ্ছা ও কার্য্যেরই বিরুতি ঘটে। ক্রমি কীট যেমন কুলের সৌরভ সহিতে পারে না, নরককুণ্ডেই আনন্দ লাভ করে, বিরুত-রুচি মানব সেইরূপ সাধুপবিত্র ভাব-পূর্ণ আমোদে আনন্দ প্রাপ্ত হয় না, ঘণিত পাশবাচরণে "পরম আমোদ" অমুভব করে ! যদি ভগবান কুপা করিয়া সাধ্যক বা সাধু ইচ্ছার উত্তেজনায় ইহা-দিগের রুচি পবিত্র করিয়া দেন, তাহ। इट्रेल्ट् ट्रापित बीवत्नत उन्नि इट्रेट দ্বিতীয়ত:, যে মানব ক্রমাগত আমোদ উপভোগ করে, তাহার এত আসক্তি জন্মে যে, ক্রমশঃ অধিকতর আমোদ উপভোগ করিতেই ইচ্ছা হয়। এইরূপ লাল্দা বশতঃ মান্ব পবিত্রই হউক, আর অপবিত্রই হউক, আমোদ-মাত্রই উপভোগ করিয়া আকাজ্ঞা পরি-তৃপ্ত করে। তৃতীয়তঃ, কুধার্ত্ত মানব উপ-যুক্ত আহাত্য না পাইলে কুপথা খাইয়া যেমন কুধারত্তি চরিতার্থ করে, আমোদ-প্রিয় মানব-চিত্ত নির্দ্ধের আমোদ উপ-ভোগ কঁরিতে না পাইলে দৃষিত আমোদ উপভোগে আত্মা কলুষিত করে। । এই তুর্ঘটনা নিবারণের জন্ম সমাজের প্রত্যেক ব্যক্তির মনোমোগী হওয়া আবশ্যক।

আমাদের সহজ বুকিতে অহুত্ত হয়
যে, শেষোক্ত চ্ইটী কারণে এরপ চ্র্যটনা
— অর্থাৎ অতিরিক্ত লাল্যা বশতঃ অপবা
নির্দোধ আমোদ উপভোগের অভাব
প্রযুক্ত যে দ্যিত আমোদ উপভোগেছা,
দয়াময় জগদীধর ভাহা নিবারণের উপায়

* এ দেশে নিজ্ঞাৰ আমোদ অমুপালন রীতি
সাধারণের যথ্য প্রচলিত না থাকার, বজীর
সনাজে অনেক দ্বিত আমোদ প্রচলিত। বাইনাচ,
খেষ্টা নাচ, অরীল গনে ও গ্রাম্য কবির
লড়াই এবং আরও কত রক্ষ এ দেশে
চলিতেছে। বড়ই লক্ষার কথা!

এত সহজ্ব করিয়াছেন যে একটু চেষ্টা করিলে সকলেই তাহা নিবারণ করিতে পারেন। ইহা নিবারণের উপান্ন সংঘত-চিত্তে নির্দোষ আমোদ . অফুলীলন। এ কথা সাহস্করিয়া বলা যান্ন যে, যে ব্যক্তি অমৃতের আস্বাদ পাইয়াছে, স্থরা-পানে তাহার যেমন প্রস্তুত্তি জন্মে না, যে সংঘত-চেতা ব্যক্তি নির্দোষ আমোদ উপভোগ করিতে পায়, য়ণিত আমোদ উপভোগ করিতে তাহারও সেইরূপ প্রবৃত্তি হয় না। নির্দোষ আমোদে মানবেরুর প্রবৃত্তি ভালার।

অত এব নির্দোষ আমোদ যে জীঞাতির উপযোগী, এ কথা বোধ হয় সকলেই বৃঝিতে পারিয়াছেন। ইহাতে জী-জাতির আভাবিকী বৃত্তি চরিতার্থ হয়, কলবের উন্নতি হয়, সামাজিক সূথ ও মকল বর্জিত হয়। রমণী বিশ্রাম-সমরে, সংঘত-চিত্তে বিশুদ্ধ আমোদ উপভোগ করিলে প্রভূত কল্যাণ লাভ করিতে পারেন।

প্রাচীন কালে ভারত মহিলাদিগকে
নৃত্য, গীত ও চিত্রশিক্ষা দেওয়া হইত,
সংস্কৃত অনেক গ্রন্থে তরিষয় লিখিত
আছে। সীতা, সাবিত্রী বা শকুস্থলা ও
অস্তান্ত রাজমহিবীরাও অনেক সময়ে
তপোবনে গিয়া প্রকৃতির দরল, শ্যামল
সৌকর্যাছটার মুঝ হইতেন। মুসলমান
মহিলাগণের মধ্যেও চিত্রবিদ্যা ও সলীতবিদ্যা প্রচলিত ছিল। এ সকল নির্দোধ
আমোদ-অনুশীলনের উপকরণ। বর্তমান
সমালে ইরোরোপ প্রাভৃতি স্থানে রম্মী-

গণকে বিবিধ আচারাম্ছানের সহিত নির্দোষ আমোদ শিকা দেওরা হয়। ভাহারই অম্করণে এনিশে বেথুন কলেজ প্রভৃতি হই একটা উচ্চতর স্ত্রীবিদ্যালরে শিল্প ও সঙ্গীতের চর্চা হুইতেছে বটে, কিন্তু ক্রমশঃ বঙ্গবাদিনীদিগের উপযোগী অধিকতর আমোদের পদ্যা উদ্ভাবিত ও

প্রচলিত হওয়া আবশ্যক। কলেজের ছটি
পাঁচটী মেরে নির্দোষ আমোদের শিক্ষা
পাইলেই ষথেষ্ট হইল না, সমগ্র বঙ্গবাসিনীগণ যাহাতে এই স্থশিক্ষা লাভ করিতে
পারেন, তিষধয়ে মনোযোগী হওয়া স্থদেশহিতৈষী ব্যক্তিগণের অবশ্য কর্ত্তব্য।

(ক্রমশঃ)

উদাসীনের চিন্তা।

ঈশরতত।

মোক্ষদা একজন ধ্যানপরায়ণা যোগিনী। তিনি ্বহুদিনের কঠোর া সাধনার সিদ্ধকামা হইয়াছেন। পুর এখন অনেক মহিলা তাঁহার অমৃতোপম ধর্ম-কথা শুনিতেইআসেন। তিনিও মহিলা-দিগের সহিত প্রায় সমস্ত দিন ধর্মপ্রসঙ্গে অতিবাহিত করিতে ভালবাদেন। তিনি আচীনা বলিয়া নবীনারা সকলেই তাঁহাকে 'দিদি মা' বলিয়া সম্বোধন করেন। এক-দিন সরোজনীনামী বিংশতিব্যায়া এক ষ্বতী বন্ধ-জিজ্ঞান্থ হইয়া তাঁহার নিকট উপস্থিত হইলেন। উভয়ের দাদর স্ঞা-যণের পর সরোজিনী পার্যন্ত এক আসনে **উপবেশন** कत्रित्तन। वरुपिन इटेर्डि তাঁহার মন্তে ঈখরের অন্তিত্ব সম্বন্ধে मत्नरहत्र डेट्सक हरेब्राहित। श्रवः कान ্ৰীমাং**শার উত্তীর্ণ ধুইতে না পারি**য়া নাৰ্কদার নিকট উপস্থিত হইয়াছেন।

তাই তাঁহাকে জিজ্ঞাসা করিলেন, ''দিদি মা! সকলের নিকট শুনিতে পাই, এই জগৎ-কার্য্যের একজন কর্ত্তা আছেন, তিনিই ইহা রক্ষা কচ্ছেন, আবার তিনিই কালে বিনাশ করেন। কই আমিত কাহাকেও দেখতে পাই নাই,তবে এ কথা বিশ্বাস কর্বো কেন ? যাহা প্রত্যক্ষ কর্ত্তে পাছিছ না, সে কথাত বিশ্বাস কর্ত্তে মন চায় না।

মো। তুমি যে তোমার জননীর গর্ভে জন্মেছ এ কথা বিখাস কর কি ?

त। ইা, তা বিখাস করি বই কি ?
 নো। সে কথা কি দেখে বিখাস কর,
 না ভনে বিখাস কর ?

স। হাঁ, শুনেই বিখাস করি, কিন্তু বদি আর কাহারও সন্তান হতে না দেখ তেম, তাহলে হয়ত এ বিখাস স্লান হয়ে পড়ত। আরও দশটী সন্তান জননীগর্ভে জনিতেছে দেখিরা আমিও যে মারের উদরে জনেছি, এ বিশাস বন্ধমূল হচ্ছে।

মো। বিশ্বাদের দৃঢ়তা সম্বন্ধে এখানে
কথা হচ্ছে না, অপ্রত্যক্ষ কোন বিষয়
লোকের মুখে শুনিয়া লোক বিশ্বাস করে
কি না, তাহাই বিচার্য্য বিষয়। তুমি
যথন এক বিষয়ে তাহা স্বীকার করে
তথন অন্ত বিষয়ে তাহা স্বীকার করা
অসন্তব, এ কথা বলতে পার না।

স। আপনার কথা মানিয়া লইলাম,
কিন্তু গাঁহারা আমার জন্মঘটনা প্রত্যক্ষ
করেছেন, আমি তাঁহাদের কথাতেই
বিশ্বাস করি, । যদি কেহ ঈশ্বরকে এইরূপ
প্রত্যক্ষ করিয়া থাকেন, তাহা হইলে
তাঁহার কথার উপর প্রত্যে করিয়া
ঈশ্বরের অভিত্যে বিশ্বাস কর্তে পারি।
কোথাও এরূপ লোকত দেখি না।

মো। এরপ লোক দেখনা ভাহার অর্থ কি? যাঁহারা ঈশ্বর আছেন বলেন, ভাঁহারা কি মিপ্যা কথা ববেন ?

স। আমিও ত এক সময়ে ঈশার আছেন বল্তেম, এখন আমার সন্দেহ জনোছে। আমি এখন দেখ্ছি আমার ওরূপ বলা মিগাা না হলেও সতা নহে, উহা সংস্থারমূলক মাত্র, জগতের সকল লোকেই এরূপ সংস্থারের অধীন হ'তে পারে।

মো। মানিরা গইলাম যে, জগতের অধিকাংশ লোকের ঈশরে প্রভার সংকার-মূলক, কিন্তু সকল লোকের পক্ষে ধদি

উহা মানিয়া লওয়া যায়, ভাহা হইবে সংস্কারের উৎপত্তি কোথা হ'তে হব ?

স। ভ্রম হইতে কি সংস্থারের উৎ-পত্তি হয় না ? সূর্যা পৃথিবীর চতুর্দিক্ প্রদক্ষিণ ক'রে থাকে, এ সংস্কার আঞ্চিও मानदेवत मत्न विश्वमान चार्ट्स, अक ममंद्र সকল লোকেই ইহা বিশ্বাস কর্ত্তো। স্থতরাং সকল সংস্থারই জ্ঞানমূলক, এ কথা স্বীকার করা যেতে পারে না। ঈশবের অভিত সহয়ে সংসারও এইরূপ ভ্রমাত্মক মনে করি না কেন? কালে লোকুর মনের এ ভ্রম ঘুচিতে পারে; এখন যেমন অনেক লোক সুর্ব্যের এবং পুণিবীর স্থিরতা ও গতি বিশাস করিয়া থাকে, গেইরূপ অনেক লোক মন থেকে ঈশর-বিশাস দুরীভূত করিয়া **জড়বাদীদের** মত জগৎকে জড়ীয় শক্তির কার্য্য ব'লে মনে কর্ত্তে পারে।

মো। কথা কাটলে চল্বে না; আছো,
তুমিই এই সংস্কারের মূল কোথার এক
বার নির্দারণ কর। ত্থা সম্বন্ধে দৃষ্টিশক্তির অপূর্ণভাই ভ্রমের মূল। নর্মন বাহা
ভূল করে, অন্যানা ইন্দ্রির ভাহা শোধন
করিয়া দেয়। কিন্তু ইন্থর-বিধান সম্বন্ধে
ভ্রমের আদি কারণ ঠিক কর্মেই হবে।

স। আনি বাহা বুঝেতি তাহা বলি।
কার্যামাত্রেরই কারণ আছে, আমরা
ইহা প্রত্যক্ষ কর্তে পারি। তাই জগৎকে
কার্যা মনে ক'রে তারও এক কারণ
আছে, ইহা অনুমান করে লই। কিব্

অন্তিত্ব স্বীকারের প্রয়োজন হয় না। বিতীয়তঃ কার্য্য মনে কল্লেও জড়বাদীদের মত জড়ীয় শক্তিকে কারণ বলিয়া মানলেই চলে।

মো। তুমি অনেকটা এগিয়ে এসেছ, তোমাকে কার্যা ও কারণ শব্দের লক্ষণা দিতে হবে। তার পর কার্য্যমাত্রেরই যে কারণ আছে, তাহা প্রত্যক্ষীভূত সত্য কিরূপে বল্লে ?

্স। আপনার সঙ্গে বিচারে প্রবৃত্ত হুওয়া ঠিক্ হয় নাই। যা হোক বিচার না কল্লে সন্দেহ যায় না। বিচার কর্ত্তে হবে। আক্তি কিংবা প্রকৃতির পরি-বর্ত্তনই কার্য্য শব্দের বাচ্য, শক্তি না হইলে কোনও পরিবর্ত্তন ঘটিতে পারে না। এই পরিবর্ত্তনোৎপাদন-সমর্থ শক্তিশালী বস্তু বা সন্তাই কারণ শব্দের বাচ্য। আমরা বাছ্ জগতে এইরূপ পরিবর্ত্তন অহনিশ প্রভাক্ষ ক'রে থাকি এবং তাহার মূলে শক্তিশালী কারণও দেখতে পাই।

মো। একটি দৃষ্টান্ত দিয়ে বুঝালে ভাল হয়।

স। আগুনে হাত দিলেম, হাত
পুড়ে গেল। হাতের যে বর্ণ যেরূপ ছিল,
অগ্নিদগ্ধ হওয়াতে তাহার পরিবর্ত্তন হ'ল।
মনে যে ভাব বিদ্যামান ছিল, অগ্নিদাহের
পর তাহা তিরোহিত হইয়া যন্ত্রণা
উপস্থিত হ'ল। বাহিরে শরীরে—অন্তরে
মনে পরিধর্ত্তন ঘটল। স্কুতরাং অগ্নির
দাহিকা শক্তিই ইফান্ত্র কারণ।

ম্মেন্ন শক্তি ভিন্ন পরিবর্ত্তন ঘটতে পারে

না, এ কথা কে বল্লে গ তার পর অগ্নির যে দাহিকা শক্তি আছে, তাহা কিরপে প্রত্যক্ষের বিষয় হ'ল ? শক্তি কি কোন ইন্দ্রিরগ্রাফ্ সন্তা ? যদি তাহা হয়, তা হ'লে কোন্ ইন্দ্রিয় দ্বারা শক্তি প্রত্যক্ষ করা যেতে পারে ?

স। কেন সকলেইত বলে ধে, শক্তিভিন্ন পরিবর্ত্তন ঘট্তে পারে না ?

মো। তুমি আমার ভ্রম দ্র কর্ত্তে থেয়ে আপনিই ভ্রমে পড়্ছ। সকলে বলে বলেই একটি কথা সত্য ব'লে কি মেনে নিতে হবে ?

স। তবে আমি জানি না, আপনি যদি এ বিখাদের মূল কোথায় জানেন, আমায় বলুন।

মো। শক্তির অস্তিত্ব এবং শক্তি ভিন্ন যে পরিবর্ত্তন ঘটিতে পারে না. ইহা আমরা অন্তর্দর্শন দারা লাভ করি। তুমি যে অগ্নির দাহিকা শক্তির বিষয় বিশ্বাস কর, উহা প্রত্যক্ষীভূত সত্য নহে, উহা ধ'রে লওয়া বিশ্বাস মাত্র। পশ্চিম দেশে এক শ্রেণীর দার্শনিক আছেন, তাঁহাদের নেতা অগস্ত কোমতে। তাঁহাদিগকে পজিটিভিষ্ট বলে। তাঁহারা যাহা ইক্রিয় দারা প্রত্যক্ষ না করেন, তাহার অন্তিম মানেন না ; এ জন্ম তাঁহারা অগ্নির দাহিকা শক্তি অস্বীকার করেন। তাঁহারা কোন শক্তির অন্তিত্বই স্বীকার করিতে প্রস্তুত নহেন। স্থতরাং তাঁহারা কার্য্যমাত্রেরই কারণ আছে, এ কথা বিশাস করেন না। याशहर्षेक छाहारमंत्र कथा ह्हाए मि

আমরা আমাদের অন্তরে ইচ্চাশক্তির অ**ত্তিত্ব অমুভব** করিতে পারি। আনরা ইচ্চামাত্র মনের ভাব পরিবর্ত্তন করিতে ! ममर्थ इरे। रेव्हा এখানে কেবল পূক্রবভী घটना नट्ट। इंज्या निज्-वटन मस्तत অবস্থান্তর জন্মাইতেছে, ইংটে প্রত্যকাতৃত জ্ঞান। স্নতরাং অন্তরেই প্রথমতঃ কারণের স্থিত সাক্ষাৎ দশন হয়। উহাই আমলা বাহিরে প্রতিফলিত করিয়া থাকি। অস্তরে এজ্ঞান না জিনালে বাহিরে কেই শক্তির অমূভ্ব ক্রিয়া লইতে পারিত না। মাই। আজ তুমি পরিপ্রাপ্ত হইয়াই, আর এক কথা এথানে বলিয়ারাবি। কোন বিষয়ের আত্মানিক সিছাত ক্রিতে ইইলে য্রিষ্য়ে অপুমান করিতে হইবে, ভাহার সহিত পূর্ম্ম বিষয়ের নিল

থাকা প্রয়েজনীয়। ইচ্ছাশক্তির কারণ্ড ভিতরে প্রভাক করি, স্নতরাং বাহিরের কারণও তদ্রপট হওয়া সম্ভবপর। ভাহাকে অচেতন জড়ীয় শক্তি বলা-যাইতে পারে না. কারণ উহা অভি-জ্ঞতা বিরোধী কথা। শক্তির আধার পড় ১ইতে পারে. কিন্তু যে শক্তি বহির্দ্গতে পরিবস্তন ঘটাইতেছে, তাহা জড়ীয় শক্তি ২ইতে পারে না; কারণ **জড়ীয় শক্তি** কিরূপ ভবিষয়ে আমাদের কোন জানই আর অনেক জটিগ বিষয়ের অব হারণা করা হইয়াছে, স্মতরাং এ বিধয়ে তোমার গভীর চিত্তা করা আবহাক। ভবিষ্যতে স্থার जिक् निन व लाभन्न कर्ता गाँदेव। बीठः।

কেন আছি?

अश्रीम !

কেন আছি ? আছি,নোর চুনি আছ ক'লে.

জগতে কোথাও নাই,

সারা ধরা ভৌদ্র-ভরা মাথা বায় অ'লে, আমি আছি দীনবংখা! তুমি মোর ব'বে! আমি জাছি, ভধু মোর তুমি আছ ব'লে,

কেন আছি? আছি,মোর তুনি আছব'লে, বাসস্ত মলম্-বা'ম, नार्त्र ना व्यामाति गा'य,

আমার বর্ষা নাহি আনন্দ উছগে! অবনা আমার ওধু শুনা মর্ক করে ধুপু,

নয় তো আমরে ১৯৩, ১ হাসে না চাদিমা ভারা নীপাকাশ-তলে ; আমি আছি, ভধু মোর সুমি আছে ব'লে!

> আমারি পাপিয়া পার্দ্ধী ডাকে না অমিয়া মাপি. ফোটে লা আমার ফুল কিশ্লয়দলে। मिथिया मिर्शिष्ट छाई,

সংসারে যাহাই পাই—
সে হৃদি হুন্সাপ্য, যাহা দীন দেখে গ'লে!
আমি আছি, শুধু মোর তুমি আছ ব'লে!

8

কেন আছি ? আছি, মোর ভূমি আছ ব'লে,
যতই ''আগ্রীয়'' বেশে,
সংসারে দাঁড়াই এসে,
গর্মিত সংসার তত, পা'য় যায় দ'লে!
সে ব্যথায় কি যাতনা,
সে তো তাহা বৃঞ্জিল না,
লে যে গো ফিরায় মুথ মুথোমুথি হ'লে!
আমি আছি, শুধু মোর ভূমি আছ ব'লে!

কেন আছি ? আছি,মোর তুমি আছ ব'লে,
কে বোঝে পরের ব্যথা,
নর্মভেদী নির্মনতা
শিথিল ভগন বুকে কি আগুন জলে ?
বিজ্ঞপের বক্ত ঘা'য়,
কেন প্রাণ ভেঙে যার ?
বিরক্তি-ব্রহ্মান্ত কেন বিধে মর্মন্থলে ?
আমি আছি, শুধুমোর তুমি আছে বলে !

কেন আছি ? আছি, মোর তুমি আছ ব'লে,
তা'না হ'লে এত দিন,
মুছি এ দেহের চিন্,
কবে সে ঋণান-ভস্ম ধুরে যেত জলে;
কৃত উগারিত গিলে,
শৃগাল শক্নি মিলে,
হইত আনন্দ-ভোক্ষ্শাংশাহারিদলে!
হর্মনি তা আজো—মোর তুমি আছ ব'লে!

কেন আছি ? আছি,মোর তুমি আছ ব'লে,
নয় তো কোথাও নাই
আমার শাস্তির ঠাই,
কেউ নাই কাছে ডাকে ''আপনার'' ব'লে !
তুমিই অনাথনাথ !
পুসারি স্নেহের হাত,
মা' বাপ সকলি হয়ে, টানিতেছ কোলে !
আমি তাই আছি, মোর তুমি আছ ব'লে !

ь

কেন আছি ? আছি , মোর তুমি আছ ব'লে,
দ্য়াময় ! প্রাণারাম !
অনস্ত স্নেহের ধাম !
স্বরণে স্বরগ-গঙ্গা মরমে উথলৈ !
দ্রে যায় শোক হুথ,
প্রেমানন্দে পূর্ণ বুক,
নবীন জীবন জাগে ভাঙা হিয়া-তলে !

নবীন জীবন জাগে ভাঙা হিয়া-তলে ! আমি আছি, ভধু মোর তুমি আছ ব'লে ! ১

আমি আছি, শুধু মোর তুমি আছু ব'লে !
তুমি এ ব্রন্ধাণ্ডপতি,
আমি অগু এক রতি,
তোমারি সকলি—যাহা দেখি ধরাতলে ;
কিন্তু মম তোমাবই,
"আমার" বলিতে কই ?
আমারি সর্বান্ত মুম্নাণ্ডমণ্ডলে !
আমি আছি, শুধু মোর তুমি আছে ব'লে !
১০

আমি আছি, সে কেবলি তুমি আছ ন'লে জগত দিল না ঠাই, সে ছথ এখন নাই,

খেলা ভেত্তে যায় শিশু জননীর কোলে!-- আর কেন কারাবাস, এস ঘাই চলে! না হয়, আমার থেলা ভেঙেছে দকাল বেলা. আছে তো মায়ের কোল,আমি শো'ব ব'লে গ গিয়াছে স্থাব আশ, মক্ত বাসনার পাশ,

এ দেশের ''অমুরাগে'' আর নাহি মন লাগে. তোমার আনন্দ-ধাম কোথা, দাও ব'লে. मित्न यांक अरे विन्तु, महानिष्क्रस्त । খ্রীকারাকুম্বনাঞ্জি-রচরিত্রী।

সার্ তেরুভারব মথুর স্বামী।

ভেন কাটা মহদংশসভূত মহায়া নারায়ণ শাস্ত্রীর স্বনাম-প্রসিদ্ধ পুর মহায়া মথুর স্বামী থুঃ ১৮৩২ অব্দে তানজোরের অন্তৰ্গত ভাচভাদী গ্ৰামে জন্ম গ্ৰহণ করেন 📍 মথুর স্বামীর বয়ংক্ম অঠম বর্ষ এবং তাঁহার পরলোকগভ ছাদশব্ধ, এমন সময়ে ভূভাগা বয়স বশতঃ তাঁহাদিগের পিতৃদেবের দৃষ্টশক্তি অস্থৃহিত হওয়াতে সংসারের সমুদ্র ভার ঠোহাদিগের ছইজনের উপর নিপ্তিত হয়। ভাঁহানিগের জননী তানজোরের অন্তর্গত একজন প্রবিদ্ধ ভ্যাবিকারার সম্ভতি ছিলেন। স্বীয় পতির ছরবছা নিবন্ধন সন্তানগণের বিদ্যাশিকা হইতেছে দেখিয়া, ভাঁহাদিগকে স্থাশিকত করিবার মানবে তিনি তিরুভারাবে স্বীয় পিতৃত্বনে গমন করেন।

মাতা বৃদ্ধিমতী ও উল্লভপ্রকৃতি হইলে সস্তান সস্ততি যে বৃদ্ধিমান্ও উন্নত প্রকৃতি थारक, छाहात्र वहन निमर्नन হইয়া আমাদিগের পাওয়া

গৌরব বিদ্যাদাগর মহাশয় ইহার এক অত্যুক্তন দুষ্টারুগুল। আর এ**ক দুষ্টান্ত** মহায়াস্থুর স্থানী। ইনি যে **স্ক্র** বিষয়ে উন্নতি লাভ করিয়া ভারতমাতার স্থ্যসন্থানগণের অভাত্ম হইয়াছেন, সেই সকলের বীজ তদীয় মাতৃদেবী -কর্তৃক ৈশ্বরেই তাঁহার জন্মে উপ্ত হইয়াছিল। মহাত্মা মথুর স্বামী মাতার ভরাবধানে ও যুদ্ধে অল দিনের মধ্যে তামিল ভাষায় স্ত্রশিক্ষিত হট্যা, তিরুভারাবে একজন ज्ञभीवमारतत निक्षे ज्ञभीवमाती कार्या শিকা করিতে নিযুক্ত হন।

চতুজন বৃষ্ ব্যঃক্রমস্ময়ে মহায়া মপুর স্বামী নাড়হীন হন। মাড়দেবীর তিরোভাব ও পিতৃদেবের দৃষ্টিধীনতা, এই ভুট কারণে তিনি অতিমাত্র বাথিত হইয়া পড়িলেন। ভাঁহার অগ্রজ ইতিপুর্বে গতাক হইয়াছিলেন, কৃতরাং তিনি ভিন্ন পিতৃদেবার আর দিতীয় বাজি ছিল না। এই সময়ে অর্থের নিতাস্ত অস্তাব বশতঃই ভাঁহাকে কিছু দিনের অস্ত সহকারী

তহশীলদারের কার্যা গ্রহণ করিতে ১৮৬৪ অব্দে সার হেনরী हरेग्राहिन। মন্টকোমারির বন্ধু মতু স্বামী নেক তেরু-ভারাবে তহশীলদার নিযুক্ত হন। তিনি মথুর স্বামীর বৃদ্ধিমতার ও বিদ্যাশিকার অদম্য উৎসাহের পরিচয় পাইরা তাঁহাকে কর্ম পরিত্যাগপূর্বক নাগপটান মিশ-नाति कृत्व विमानिका कतिवात পता-মর্শ প্রদান করেন। এই মহাত্মার উৎসাহে ও সাহায্যে মথুর স্বামী সর্বপ্রথম ইংরাজী শিক্ষা করিতে প্রবৃত্ত হন। তিনি এই ক্লে এক বৎসর কাল পাঠ করিয়া মাস্রাজ উচ্চ শ্রেণী ইংরাজী বিস্থালয়ে ভর্তি হন এবং তথায় ও প্রেসিডেন্সি কলেজে পাঠ শেষ করেন।

মহাত্মা মন্টকোমারি উঁহোর শিক্ষার জন্ম বিশেষ সাহায্য ও অনুগ্রহ করিয়া-ছিলেন। প্রেসিডেন্সি কলেজে অধ্যয়ন-কালে তানজোরের কালেক্টর মহাত্মা বিশপ, স্বয়হ্বর রাজা সার টি মাধ্ব রাও এবং মহাত্মা হরিরাও তাঁহার বিশেষ সাহায্য করিয়াছিলেন।

১৮৫৪ অবন্ধ মান্দ্রাজ উচ্চ শ্রেণী
ইংরাজী বিদ্যালয় মান্দ্রাজ বিশ্ববিদ্যালয়ে
পরিণত হয়। মহাত্মা মথুর স্বামী এই
বিশ্ববিদ্যালয় হইতে দর্বপ্রধান প্রশংসা
পত্র ও লর্ড এলফিনিস্টন-প্রদত্ত ইংরাজী
রচনার পারিভোষিক প্রাপ্ত হন। শিক্ষাসভার প্রীকার সর্ব্বোচ্চ স্থান অবিকার
কর্মতে ৫০০ পাঁচংগ্রুশত টোকা পারিভোষিক লাভ করেন এবং গ্বর্গনেন্টের "বে

কোন কার্য্যের উপযুক্ত' এই মন্তব্যে সেণ্ট জ্বৰ্জ গেজেটে তাঁহাৰ নাম প্ৰকাশিক এই তিনি হয়। সময়ে তোঁচার পরীক্ষক महाया इन अराम अवः উচ্চ বিদ্যালয় সভার সম্পাদক আলেক-জাঙ্গার এবারনটের করুণাকটাক্ষে প্রতিত হন। বিশ্ব বিদ্যালয়ের অধাক্ষ পাউয়েল সাহেব তাঁহাকে বিলাভ গিয়া সিভিল সার্কিস পরীক্ষা দিবার আদেশ প্রদান করেন। কিন্তু সমুদ্রবাতা ধর্ম ও সমাজ-বিরুদ্ধ বোধে তিনি তাঁহার আজ্ঞা পালন করিতে যত্রবান ইইলেন না।

সার মণ্টকোমারির আতুকুলো তিনি তানজোরের কলেক্টারের অধীনে হিসাব-রক্ষকের পদে নিযক্ত হন। ইহার পর ১৫০ টাকা বেতনে স্কুলসমূহের ডেপুটী ইনসপেক্টরের পদ প্রাপ্ত হইয়া এরূপ দক্ষতার স্থিত কার্য্য করিয়াছিলেন যে, স্কল্সমহের ইন্সপ্রেক্টর রিচার্ড শিক্ষাবিভাগের ডিরেক্টর সাহেবের নিকট উটোর স্থগাতি না করিয়া থাকিতে পারেন নাই। এই কার্য্যে নিযুক্ত থাকিতে থাকিতেই তিনি বি এল পরীক্ষায় উত্তীর্ণ হইয়া মাকুজে বিশ্ববিদ্যালয় **इ**हेर ड সন্মান প্রাপ্ত হন। ইহার পর ডিসটি ট মুনদেফ নিযুক্ত ইইয়া কয়েক বংসর বিলক্ষণ দক্তার সহিত কার্যা করেন। তদানীম্বন দিভিল সেশন জজ বিউচাম সাহেব তাঁহার বিচারালি দেখিয়া :সম্ভষ্ট হইয়া বলিয়া-ছিলেন, এ প্রদেশে আমার পরিচিত दिनशीय विठातकितिशत मरक्षा यनि दक्र

আমার সহিত একাসনে বসিয়া বিচার করিবার উপযুক্ত হন, তবে সে মধুর স্থামী।

মাজাজ প্রেসিডেন্সিতে ইনাম কমিশন হাপিত হইলে মহাত্ম মধুর স্বামী জ্ঞ टिनारतत अकजन महकाती नियुक्त इन। এই কার্য্যে ছাই বৎসর কাল নিযুক্ত থাকিয়া পরে ডেপটা কালেকারের পদ প্রাপ্ত হন এবং হুইটা তালুকের ভার তাঁহার হস্তে গ্রস্ত হয়। যংকালে তিনি তানজোরের ভেপুটী কালেক্টরের পদে নিযুক্ত ছিলেন, সেই সময়ে তাঁহার কার্যাদকতার বিষয় পর্যালোচনা করিলে তাঁহাকে ধ্রুবাদ ना निशा थाका याग्र ना। তিনি পরে আমিনের মাঙ্গাত্তোরের প্রধান স্পূর পদে নিযুক্ত হুইয়া তিন বংসর কাল এরপ चुन्तत्रक्राप कार्या करतन या. चिटित्रहे মাজিরে ট মাক্রাজের প্রধান পুলিশ পদ প্রাপ হন। এই পদ হইতে প্রেসি-ডেকি টাউনের ছোট আদালতের বিচার-পতি হন। এই সময়ে তিনি ডিস্ট্রিট জজের পদ পাইবার উপযুক্ত বিবেচিত দিল্লী দর্বারের সময় মালাজ হইতে যে জন্মংখাক বাক্তি নিম্প্রিত হইয়াছিলেন, ইনি তাঁহাদিগের মধ্যে দরবার **इहेर** उ প্রভারের একজন। इंडेब्रा टेनि माझाझ ছোট আদালতের এই কার্গ্যে বিচারপতি নিযুক্ত হন। এক বর্ষ কাল নিযুক্ত থাকিবার পর তিনি মাস্ত্রান্ত হাইকোর্টের বিচারপতি নির্মা-**ठिउ इन। ১৮৯२ अस्म (क नि आहे विচातक ছिल्लन"।**

উপাধিবারা ইনি সন্মানিত **হই**ন্ন-ছিলেন।

মথর স্বামী ভারতমাতার মহাআ একটা স্থাসভান ছিলেন। তাঁহার অধামান্ত বিদ্যাবৃদ্ধি, ভাগ ও যুক্তিসঙ্গত বিচার-শক্তি এবং প্রশংসাই স্বভাব চরিত্র তাঁহাকে সভা স্থাজের শ্রদ্ধার পাত্র করিয়ছে। তিনি হিন্দুর পূজা আদর্শ ব্রা**ন্ধণ** ছিলেন বলিয়াই পূজার্থ এমত নছে; তিনি হিন্দুর গৌরব ছিলেন। তিনি যে মাতৃভূমিকে ভাল বাগিতেন, হিন্দু ধর্মের গৌরব করিতেন এবং হিন্দু সভাতার -ছিলেন. পক্ষপাতী ভাহা ঘটনায় প্রকাশ পাইয়াছে। বিল এবং সম্মতি-আইন সম্বন্ধে তাঁছার মন্তব্য তাঁহার দুরদশিতা ও হিন্দুধর্মের পক্ষপাতিতার প্রিচারক।

বিগত ২৫ শে জালুয়ারি মহাতা हेश्या क পরিস্ত্যাগ মথ্র স্বামী ক্রিয়াছেন। তাঁহার মৃত্যুতে ভাগারের একটা উচ্ছল বছ অন্তর্হিত হট্যাছে। মালাজ হাইকোর্টের প্রধান-বিচারপতি তাঁহার মুক্তা-সংবাদ চ:পিত্রদয়ে विविद्याष्ट्रियन. পাইয়া 'বিলেষ্ট পরিশ্রম করিবার ক্ষমতা, পুখা-गुপु अक्रां कार्या अर्यादिकन, वावहाब-শাস্ত্রের স্থা ও অটিল তবজান, অবি-वृद्धि চলিত কর্ত্তবানিলা এবং তির যদি বিচারকের আবগ্রক পূপ তাহা হইলে মহাত্মা নধুর স্বামী একজন

পুরাণ।

বে শাস্ত্রে বহুলরপে প্রাচীন বৃত্তান্ত বর্ণিত থাকে, তাহাকে প্ররাণ বলে। সর্গ (স্থান্টি), প্রতিসর্গ (প্রাণ্য), বংশ (স্থান্ত চন্দ্র বংশ প্রভৃতি), মনন্তর (মন্থানিগের অধিকার), বংশান্থচরিত (নানাবংশীয় ব্যক্তিদিগের চরিত বর্ণন), এই পাঁচটা লক্ষণ পুরাণে থাকা নিতান্ত আবশ্রুক।

চারি সহস্র বৎসর অপেক্ষাও অধিক হইল, মহর্ষি ক্লফট্দ্রপায়ন পুরাণ প্রণয়ন ক্রিয়াছিলেন।

মহর্ষি পরাশর হইতে ভগবান্ বেদব্যাদের জন্ম হয়। তাঁহার প্রকৃত নাম ক্লফ। দ্বীপে তাঁহার জন্ম হওয়াতে তিনি দ্বৈশায়ন নামে বিখ্যাত হইয়া-ছেন। তিনি চতুর্বেদ বিভাগ করিয়া বেদব্যাস ও বাাস নাম প্রাপ্ত হন।

বেদব্যাস, বেদকে চারি মহামতি ভাগে বিভক্ত করিয়া মনে মনে বিবেচনা করিলেন যে, কলিযুগের ত্রাহ্মণদিগের যেমন ধারণা শক্তি, সেইরূপ প্রতিভাও ন্যন হইয়া আসিতেছে। তাঁহারা বেদ রূপ কঠিন কৌশল ভেদ করিয়া ধর্ম ও অর্থ রূপ মহারত্ব সংগ্রহ করিতে সমর্থ হইবেন না। অতএব সুললিত ভাষায় **উপা**धााना भित्र সহিত বেদের অর্থ করিয়া ১৯ দওয়া क्षमभ অভীব উবিদ। তিনি এইরূপ সংকল্প করিয়া

আধ্যান(১), উপাখ্যান(২), গাথা(৩),ও কল্প শুদ্দির (৪) সহিত একথানি পুরাণ-সংহিতা প্রণয়ন করিলেন। স্থতজাতীয় (৫)লোমহর্ষণ, বেদব্যাদের নিকট পুরাণ-সংহিতা অধ্যয়ন করেন। লোমহর্ষণের ছয় জন শিষ্য ছিলেন। তাঁহাদের নাম স্থমতি, অগ্নিবর্চা, মিত্রযু, শাংশপায়ন, অক্কতত্ত্রণ ও সাবর্ণ। অক্তব্রণ, সাবর্ণি ও শাংশপায়ন, ইহাঁরা লোমহর্ষণের নিকট প্রাপ্ত মহর্ষি বেদব্যাস-প্রণীত পুরাণ-সংহিতা অবলমনপূর্কক প্রত্যেকে এক এক থানি পুরাণ সংহিতা প্রণয়ন করেন। ঐ তিনথানি প্রাণ সংহিতার নাম অক্লত্রণ সংহিতা, সাবর্ণ সংহিতা ও শাংশপায়ন সংহিতা । এই চারি-থানি মূল পুরাণ এইকণে লুপ্ত হইয়াছে। এক্ষণে যে সমুদায় পুরাণ ও উপপুরাণ প্রাপ্ত হওয়া যাইতেছে, তাহা ঐ পুরাণ-

- (২) আখ্যান অর্থাৎ প্রধান বর্ণনীয় রাজাদির বৃত্তান্ত।
- (২) উপাপ্যান, অর্থাং প্রদক্ষক্রমে উপস্থিত ব্যক্তি-বিশেষের বিষয়ণ।
- (৩) গাধা অর্ধাং মমগীতা; পিতৃগীতা, পৃথীগীতা শুভতি।
- (৪)কলণ্ডন্ধি,অর্থাৎ বারাহকল প্রভৃতি কল বিনির্ণয়
- (৫) প্তজাতীয়—বেণপুত্র পৃথুরাজার যজে
 ইল্রের আহবনীর য়তের সহিত বৃহম্পতির
 য়ৃত মিলিত হইরা বর্ণসক্ষর প্তজাতির
 উৎপত্তি হয়। বায়ৢপুরাণ। ব্রাক্ষণীর পর্কে
 ক্রিয়ের উরসে প্ত জাতির উৎপত্তি।
 য়াজ্ঞবল্কা।

চতুইয়ের সংগ্রহ। বেদব্যাসের শিষ্য প্রশিষ্যগণ সময়ে সময়ে ঐ সংহিতাচতুইয় অবলম্বন করিয়া নানাবিধ পুরাণ প্রণয়ন করিয়াছেন। পরস্ক ঋষিগণের ঈদৃশ গুরুভক্তি বে,তাঁহারা নিজ নাম প্রকাশ না করিয়া, আদিগুরু বেদব্যাসের নামেই সম্লায় পুরাণ প্রচার করেন। এইক্ষণকার প্রচলিত অষ্টাদশ পুরাণেই বেদব্যাস-প্রণীত মহাপুরাণ সংহিতার পঞ্চ লক্ষণ প্রায় বিভ্যমান আছে।

পরস্তু পুরাণ সমুনায়ের পরস্পর বিশেষ
এই যে, কোন পুরাণে কোন উপাথ্যান
বিস্তারিতরূপে বণিত হইয়ছে, কোন
পুরাণে কোন উপাথ্যান সংক্ষিপ্ত আছে,
কোন পুরাণে কোন উপাথ্যান পরিত্যক্ত
বা নৃতন সন্নিবেশিত হইয়ছে,কোন কোন
অংশে সমুদার পুরাণেই আনি পুরাণ
সংহিতার লোক অবিকল আছে।কোন
পুরাণ কোন্ সময়ে সংকলিত হইয়ছে,
তাহা যনিও অসন্দিগ্ধরূপে নিরূপণ করা
ছংসাধ্য, তথাপি কোন্ পুরাণের পর কোন
পুরাণ হইয়ছে, তাহা বলা যাইতে
পারে।

প্রথম ব্রহ্মপুরাণ, বিতীয় পদ্মপুরাণ, তৃতীয় বিষ্ণুপুরাণ, চতুর্থ শিবপুরাণ, পঞ্চম ভাগবত পুরাণ, ষষ্ঠ নারদীয় পুরাণ, সপ্তম মার্কণ্ডের পুরাণ, অন্তম অগ্রিপুরাণ, নবম ভবিষ্য পুরাণ, দশম ব্রহ্মবৈবর্ত পুরাণ, একাদশ লিঙ্গপুরাণ, ঘাদশ ব্রাহপুরাণ, বিয়েদশ ক্রমপুরাণ, চতুর্দশ বামনপুরাণ, পঞ্চদশ কৃত্মপুরাণ, বোড়শ মৎস্তপুরাণ,

স্থাদশ গত্তপুরাণ, অটাদশ ব্রহাও পুরাণ।

নারদীয় পুরাণে কথিত আছে বে, পুর্ব্ধ-কালে শতকোটী শ্লোকাত্মক একমাত্র পুরাণ ছিল। তাহা ছইতে চতুর্বর্গ ফল প্রাপ্ত হ ওয়া যাইত। পরে এই **পুরাণ হইতেই** সমুদায় শাস্ত্রের উৎপত্তি হয়। অনস্তর বিষ্ণু যথন দেখিলেন যে কালামুদারে নানা শাস্ত্রের উৎপত্তি হওয়াতে কেহ আর পুরাণ অধায়ন করেন না, তখন তিনি বেদব্যাসরূপে অবতীর্ণ হইয়া চতুর্লক্ষ-শ্লোকে পুরাণ-সংহিতা প্রণয়ন করিলেন। এই বেদব্যাদ-প্রণীত মহাপুরাণ-সংহিতা অইাদশ অংশে বিভক্ত হইয়া মর্ত্তালোকে প্রতিষ্ঠিত আছে, পরস্তু দেবলোকে অদ্যাপি শতকোটী-প্রোকাত্মক মহাপুরাণ পিঠিত হইয়া থাকে। ভূলোকে প্রচারিত চত্ত-লক্ষ-শ্লোকাত্মক পুরাণ, দেববোঁকে প্রচা-রিত মহাপুরাণেরই সারাংশমাত্র। ভূলোকে প্রচারিত অষ্টাদশ পুরাণের নাম ও শ্লোক-সংখ্যা যথা---

| भूताः | ণ্র নাম। | | লোকসংখ্যা। |
|-------|------------------------|------------------|------------|
| >ম | রহ্মপুরাণ | ••• | >*** |
| ২য় | পরপুরাণ | * · · | ce |
| ওরু | বিকুপুরাণ | ••• | 20.00 |
| 8र्च | বাযুপুরাণ (শির ভুৱে | পুরাণ শ) *** | ₹8••• |
| e म् | ভাগৰত পুরাণ | ••• | >>+++ |
| ৬ঠ | নারদীয় পুরাণ | *** | ₹€••• |
| 924 | মাকভেয় পুরাণ | • | , |
| 1997 | অন্নিপুরাণ | ••• | > |
| ×¥ | ভবিষা পুরাণ | ••• | 38.00 |
| 3.7 | व अक्तरेयवर्ड श्रुवान | ••• | >>*** |

| र११२ | ্ বা | गटवाधिनी | পত্ৰিকা। | [৫ম ক-৪র্থ ভাগ | |
|-----------------|---------|----------|-----------------|----------------|------------|
| ১১শ লিকপুরাণ | | 55*** | ৭শ গরুড়পুরাণ | | >> |
| ১২য় বরাহপুরাণ | • | ₹8••• | ১৮শ বন্ধাওপুরাণ | ••• | >>••• |
| ১৩শ স্বন্দপুরাণ | ••• | p.7 | মোং ৩, ৯৯, ••• | | |
| ১৪শ বামনপুরাণ | ••• | > | সমুদার | পুরাণ অতিরি | ক্তি>, ••• |
| >৫শ',কুর্মপুরাণ | • • • | 39 | | মোট. | 8,••••> |
| ১৬শ ুমৎস্থপুরাণ | • • • • | >8 | J | | (ক্ৰমশঃ |

মুষ্টিযোগ।

চর্ম্মপীড়া।

১। কাঁচা হরিদ্রার সহিত কালমেবের পাতা বা নিমপাতা একত্রে বাটিলা গাত্রে মর্দ্দন করিলে স্বর্ধপ্রকার চর্মপীড়া আরোগ্য হয়।

৩। কচি বাসক পাতা ও হরিদ্রা গোমুত্রে বাটিয়া লেপ দিলে পাচড়া আম্রোগ্য হয়।

৪। নারিকেল তৈল অল পরিমাণে গাঁজা ও চালম্গরার ফলের থোদা দিয়া আগতনে খুব ফুটাইতে হইবে। অনন্তর গরম থাকিতে থাকিতে মাথিলে চুলকানি ও খোদ ভাল হয়।

থাড়া খায়ে নারিকেল তৈল দিবে

কারোগ্য হয়, কিন্ত কিন্তান প্রায় ধবলের

কার সাদা হইয়া যায়।

৬। কুঁচ ও চিতামূল একত্র পেষণ করিয়া ঘর্ষণপূর্বক কিছুদিন প্রলেপ প্রদান করিলে ধবল নিবৃত্ত হয়।

৭। কালকাসেন্দার শিকড় হুঁকার জলে বাটিয়া দাদে দিলে, দাদ আরোগ্য হয়।

৯। চালমুগরার তৈল গাতে মদ্দন করিলে গলিত কুষ্ঠরোগা আরোগ্য হয়। ১০। আকন্দের আঠা, মনসা শিজের আঠা, চিতার মৃল, হরিদ্রা, মরিচ, ঝুল, কচি তুর্বার সহিত বাটিয়া ক্ষতস্থানে দিলে

ু ১১। গাতে গোমূত মাধিলে চুলকানি ভাল হয়।

কুষ্ঠরোগ আরোগ্য হয়।

১২। ৰেত চন্দন বাটিয়া তাহাতে তেঁতুল

শুলিবে. এই তেঁতুল গোলা চুলকানি-নাশের পক্ষে বিশেষ উপকারী।

১৩। সাদা কুঁচ মধুর সহিত পিষিয়া মস্তকে লেপন করিলে টাক-দোষনিবারিত হয় ৷

১৪। वर्षेत्र व्याचा नागाहेल भा-कांचा আরোগা হয়।

১৫। শ্বেত চন্দন জলে ঘষিয়া তাহাতে কিঞ্চিং আফিং মিশাইয়া, নাটা-বাজের হান সকল উত্তমন্ত্রে পরিষ্কার করিয়া শাস ভেরাণ্ডা তৈলের সহিত বাটিয়া, কিন্ধা কৃষ্ণ জিরা বাটিয়া কোনে প্রণেপ । তিন দিবস লাগাইবে:। প্রথম দিনে বেদ্লা দিলে জলদোষের পীড়ার শান্তি হয়।

১৬। পানের বোটায় কলিচুণ লাভাইয়া ক্ষুদ্র কুদ্র আচিলে ঘর্ষণ করিলে উহা শাঘ লয় প্রাপ্ত হয়।

১৭। শোবিত গদ্ধক এক ভোলা, গেঁটে

ক্ডির ভ্যের সহিত উত্তমরূপে মর্ছন করিয়া, অন্ধ ছটাক গর্জন তৈলের সহিত মাডিয়া, সপ্তাহ কাল হুই বেলা উত্তমরূপে মালিষ করিলে যে কোন প্রকারের দাদ হউক না কেন•আরাম হয়। *

১৮। কাগজে মত ও শোধিত গ**ন্ধক** মাথাইয়া তাহা প্রদীপের শিথায় ধরিলে हम हम कविया त्य दम भट्ड, महोत्तव चंड-এই গ্রুম মুত প্রতাহ একবার করিয়া সারে, পরে পাচড়া ওক হয়। (ক্রমশ:)।

১ পা: ও মৃত সাংক্ষেকারের পিতটোকর ৺ দীননাগু দুতু মহাশ্য এই ঔষধ খারা বিভার লোকেয় দাদ আবাম করিয়াছেল। এই ঔষধ**ী ভাহারই** আবিছত।

ভীয়ণ ক্রীড়া।

বর্ত্তমান সভা জগতে সারকাস, থিরেটার, মন্নযুদ্ধ এবং ক্রিকেট, ফুটবল ইত্যাদি বিবিধ প্রকার আমোদ প্রমোদের উপকরণ আছে। প্রাচান কালে রোমীয় নর্নারীগণ এক ভীষণ আমোদ উপভোগ ক্রিতেন। সেই ভর্গর আনোনের বিবরণ পাঠ করিলেও শরীর কণ্টকিত इहेब्रा डिट्ट ।

রোমনগরে এক স্বিস্ত রঙ্গ-ক্ষেত্র ছিল। তাহার চতুর্দিক্ উন্নত প্রাচীরে বেষ্টিত, তন্মধ্যে চারি দিকে ক্রমনিয়

পদ্ধতি অনুসারে বদিবার আদন স্থাপিত। ভংপরে গৌহ রেলিং। মেই রেলিং **দের**। স্থানের মধাতল জীড়াকেত।

এই রগ্রেক্টের নানা প্রকার থেকা হুইড; কিন্তু সকল পেলাতেই পশু ও নুরশোণিতে রঙ্গভূমি প্লাবিত হইত. কুপুন কুপুন ভরবারী ও বড়শা লইয়া মাজনে মাজুৰে হুজ্যুদ্ধ হুইছু, ভাহাতে ক্থন উভয় যোগাহত, ক্থন বা এক জন হত, অপুরে আহত হইত। দি**তীয়** প্রকার খেলা পশুতে পশুতে—সিংহে

ব্যাদ্রে অথবা সিংহে নিংহে। ইহার ফলও ঐরপই হইত। তৃতীর প্রকার থেলা আরও ভরঙ্কর ব্যাপার। এই থেলা পশুতে ও মান্ত্র্বে হইত। অস্ত্রধারী বীর-প্রক্রম সিংহ কিম্বা ব্যাদ্রের সহিত যুদ্ধ করিতে আদিষ্ট হইত। তৃই একবার আক্রমণের পরেই আক্রমণকারী পশু কর্ত্বক বিনষ্ট হইত। এই সকল ঘোদ্ধা গ্রাভিয়েটার বলিয়া অভিহিত হইত।

এইরূপে জীবন দান ঘারা রোমীয়-গুলের হর্ষ উৎপাদনের জন্ম তিন শ্রেণীর হতভাগ্য লোক আদিষ্ট হইত। যাহারা त्त्रात्म की उनाम हिल, याशास्त्र की वरनत মুল্য করেকটা রজত মুদ্রা নাত্র, যাহাদের সংসারে বন্ধু বান্ধব কেহ নাই—-পিতা মাতা আত্মীয় স্বজন নাই,যাহাদিগকে রক্ষা করি-বার জন্ম একথানি হস্তও উত্তোলিত হইত না, প্রভুর কিঞ্চিন্মাত্র বিরাগ উৎপাদন করিলে যাহারা প্রাণে বিনষ্ট হইত, সেই ক্রীতদাসগণ চিব-হতভাগ্য রঙ্গক্ষেত্রে সিংহ বাভার মুখে, কথন বা পরস্পতের তরবারীর মুখে জীবন বিসর্জন করিয়া **দর্শকদিগের আনন্দ উৎপাদন করিত।**

অপর শ্রেণীর লোক এইরপে
সংগৃহীত হইত;—বলদৃপ্ত রোমীয়গণ
শক্রর সহিত যুদ্ধ করিয়া জয়লাভ করিলে
বিজিতনিগকে বন্দিভাবে রাজধানীতে
আনয়ন কুরিত। এই বন্দীদিগকে
কথন কথন রাজকেত্রে পশুর সহিত,
কথন বা অপর প্লাছিয়টারের সহিত যুদ্ধ
করিতে হইত।

ফৃতীর, থাঁহারা স্বদেশীর প্রাচীন ধর্ম পরিত্যাগ করিয়া এইধর্ম গ্রহণ করিতেন, তাঁহাদিগের মধ্যে থাঁহারা অগ্রণী ছিলেন, তাঁহাদিগকে কখন কখন রক্ষন্থলে আনিয়া ক্ষুধিত সিংহ ব্যাঘ্রের মুখে ছাড়িয়া দেওয়া হইতে, মুহুর্ত্তমধ্যেই সেই নিরীহ ধর্ম্মবিশ্বাদিগণ হিংস্র পশু কর্তৃক ছিন্ন ভিন্ন ও বিনষ্ট হইতেন।

রোমের স্থবিশাল ক্রীড়াভূমি যে কত নির্দোষ নরশোণিতে কলম্বিত হইরাছে, তাহা কে গণনা করিবেন ?

নোম-সমাট থিওদোসিয়দের পরলোক-গমনের পর তদীয় পত্র আর্কাদিয়দ ও হনোরিয়স ৩৯৫ গ্রীষ্টাব্দে সাম্রাজা গ্রহণ করেন। রোমদায়াজ্যকে গুই ভাগেণবি ভক্ত করিয়া প্রস্থানেশের রাজা হইলেন আর্কা-দিয়স এবং পশ্চিম বিভাগের রাজা হইলেন হনোরিয়স। শেষোক্ত সমাটের সহিত অধভা গণজাতীয় যুদ্ধ-বার আলারিকের ভয়ানক সমরহর। এই যুদ্ধ উত্তর ইটালীতে হইয়:ছিল। এই মহাসমরে রোমক বীরগণই জয় লাভ করিল। এই সংবাদ যথন রাজ্ধানীতে প্রছিল,তথন নাগরিক-গণের হৃদয় আনন্দে নৃত্য করিয়া উঠিল। রাজপ্রাসাদ হইতে নিরন্ন শ্রমজীবীর পর্ণকুটার পর্যান্ত আনন্দের তরঙ্গ উদ্বেশিত হইয়া উঠিল। যথন বিজয়-আনন্দে সকলেই উন্মন্ত, স্কলেই আত্মহারা, তথন তাহাদের প্রিয় রঙ্গভূমির প্রতি মন षाकृष्ठे इडेन। এই षानत्मत्र फित्न कि রোমীয় পুরুষ রমণীগণ রঙ্গভূমির আনন্দ

উপভোগ না করিয়া থাকিতে পারেন ? "রঙ্গভূমি, রঙ্গভূমি" বলিয়া সকলে অন্থির হইয়া উঠিল।

সমাট-পরিবারও প্রজাগণের সেই আকাজ্যার যোগদান করিলেন সমাট অবিলয়ে বিশেষভাবে বঙ্গকীডাৰ আয়ো-জন কবিতে আদেশ কবিলেন। প্রকাণ্ডকায় ভীষণদর্শন সাক্ষাত কুতান্তের ভার বাাঘ ও সিংহ আনীত এবং ীষ্টান-इहेल। শত দাস इडेल। দিগকে আনিয়া আবদ্ধ করা নিকপিত দিবসে রক্ষতল দর্শকে পর্ণ হইয়া গেল।

পাঠক, ঐ দেখ স্থস্কিত ডিম্বাকৃতি রক্সক্ষের চতুর্দিকে বিবিধ বেশভ্ষায় স্থােভিত বিলাসপ্রায়ণ বোমীয় নর-নাবীগণ খেলা দৰ্শনেৰ জ্বা সাগ্ৰহে প্রতীকা করিতেছে। ম্থে হাসির হিল্লোল উঠিয়াছে। ক ভক্ষণে থেলা আবন্ধ হইবে. সকলেই ত হল্প উৎক্ষিত। কিঞ্জিনাত বিলম্বও তাহা দের অসহা। অদা এই অসংগা দর্শক-ন্তন দৰ্শক দিগের মধ্যে একজন কেবল ভাঁহারই মথ বিষয় আসিয়াচেন। ও গল্পীর। ইছার নাম টেলিমেকাস, हेनि शिह्रथर्मावनश्री महाामी।

টেলিমেকাস জ্ঞলন্ত ধর্মমূর্ত্তি। তাঁহার
শরীর অতি জীর্ণ শীর্ণ। পরিধানে সামাল বস্ত্র। কিন্তু তাঁহার শরীর ও মুগ দিয়া বেন ধর্মের জ্যোতি ফুটিয়া বাহির হইতেচে। তাঁহাকে দর্শন করিলে ইহ

সংসারের লোক বলিয়া মনে হয় না। নেই বিলাসপরিশুভা দিবামর্তি সন্নাসীকে রোমবাসী দিগের ರ ಸಾ চিনিয়া লওয়া যায়। তিনি আসিয়া মহাদেশের কোনও সাধন ভল্লন ও প্রচারকার্যো প্রবৃত্ত ছিলেন। অনেক দিন হইতে তিনি শুনিতে পাইয়াছেন त्य. "आत्मान श्रीमातन क्रम तामीब-গণ রঙ্গভমিতে রক্তপিপাস্থ হিংস্ত করে মুখে জীতদাস, বিজিত এবং খ্রীষ্টান-দিগকে ছাডিয়া দেয় এবং মল্লপ্রণ পরী-স্পর কাটাকাটি কবিয়া জীবন নাশ করে। দর্শকগণ এই দুখ্য দেখিয়া হাস্ত করে, আনলগ্রনি করে।" টেলিমেকাস রোমক-জাতির এবন্ধিণ चारमारमञ ভয়কর কুণা ভাৰণ করিয়া মুর্মুপীড়িত **হইলেন** इहेर इ বোমকে ত্রই <u>তৃত্বার্থ্য</u> উদ্ধাৰ ক বিবার ব্যাকুল **इटे**ट्लन।

টেলিমেকাস রাজা নহেন—পার্থিবশক্তিসম্পন্ন লোক নহেন—দণ্ডামমান
হইবার একটু স্থানেরও তিনি অধিকারী
নহেন। তিনি কি উপায়ে প্রবল পরাক্রমশালী রোমান্দিগের এই ভরানক কুপ্রথা
নিবারণ করিবেন ? সত্য বটে, তিনি
এ সকল পার্থিব সম্পদের অধিকারী
নহেন; কিন্ধ তাঁহার এক মহাশক্তিশালী সহায় আছে, তিনি শেই, সহারবলে পাপ পৃথিবীকে জয় করিতে
পারেন। প্রার্থনাই তাঁহার প্রম সহার,
ঈর্ব-বিশ্বাসই তাঁহার সম্পদ্ এবং প্রেক্ট্

তাঁহার অস্ত্র। টেলিমেকাস এবমিধ আধ্যাত্মিক শক্তিতে শক্তিমান্।

তিনি রোমবাসীদিগের কল্যাণের জন্ম অবিশ্রান্ত প্রার্থনা করিতে লাগিলেন। তিনি এরপ ব্যাকুল হইলেন যে, আসিয়া অঞ্চলে থাকিতে পারিলেন না; অবিলম্বে একাকী পদরজে রোম নগরে যাত্রা করিলেন। কোনও প্রতিক্ষকই তাঁহাকে কর্ত্তব্যপথ হইতে বিচলিত করিতে পারিল না।

 পাঠক ঐ দেখ—রোমের রক্ষভ্মিতে ভীষণ ক্রীড়া আরম্ভ হইয়াছে। ঐ দেখ একজন হতভাগা জীতদাসকে তরবারী-হত্তে জুদ্ধ সিংহের সহিত যুদ্ধ করিবার জন্ম ক্রীডাস্থলে প্রেরণ করা হইল। দেখিতে দেখিতে গভীর গর্জন করিয়া সিংহ আসিয়া তাহার উপরে প্তিত হইল। নথরপ্রহারে ও দন্তাঘাতে তাহার দেহ শত থও করিয়া ফেলিল। ঐ শোন চাবিদিক হইতে নবনাবী আনন্দ-ধ্বনি করিয়া উঠিল। ঐ দেখ, একদল মল্ল পরস্পারকে আক্রমণ করিয়া শোণিতে দুর্বাক্ষেত্রকে সিক্ত করিল; কয়েক জন আহত, কয়েক জন হত হইল ; ঐ শোন করতালিধ্বনি। আবার ð খুইভক্তকে মুক্ত কয়েকজন সিংহের নিকট উপস্থিত করা रुदेल। মুহূর্ত্ত-মধ্যে তাঁহাদের দেহ সহস্র থণ্ডে বিভক্ত रहेशा 'र्गन-- मर्नकशन जानत्म ज्यवीत। কি আমোদ! কি ै বৈলা ৷ কি 🛊 ভীষণ দিশার ! যাহার 'হাদর আছে, প্রাণ**্** অচ্ছে, মনুষ্যত্ব আছে, তিনি কি এই দুখ্য দেখিতে পারেন ?

টেলিমেকাস স্থির থাকিতে পারি-লেন না. এক লম্ভে तक्षरत्वत् प्रधा-छाल উপনীত इहेग्रा সকলকে निरुष কবিতে লাগিলেন ৷ ''তোমাদিগকে মিনতি করিয়া বলিতেছি, এই ভর্কর আমোদ পরিত্যাগ কর। মুমুষ্য জীবনের মূল্য আছে, উদ্দেশ্য আছে, তোমা-দের থেলিবার জন্ম এ জীবন হয় নাই. তোমরা বিরত হও, বিরত হও।'' তিনি থেলিবার জন্ম আদিই লোক দিগকে সংখ্যে আলিজন করিতে লাগিলেন। তাহাদিগকে রঙ্গতল হইতে বাহিবে আনিবার চেষ্টাতে সেই ক্ষীণ চর্বল সন্ন্যাসী সবলে সকলকে আকর্ষণ করিতে লাগিলেন।

দর্শকগণের সহস্র সহস্র চক্ষ তাঁহার উপর পতিত হইল। সকলে দেখিতে পাইল, একজন অতি কুশাঞ্চ লোক রঙ্গস্তলে আসিয়া থেলার বিদ্র উৎপাদন করিতেছে। অমনি সহস্র কণ্ঠ কপিত ফণীর ভাগে গর্জন করিয়া ''উহাকে মারিয়া ফেল। ও কে—থেলিতে বাধা দিতেছে ৪ শীঘ্র উহাকে মারিয়া চীংকারধ্বনির সহিত শিলা-বৃষ্টির ভাষ প্রস্তর ও মৃত্তিকা খণ্ড টেলি-মেকাসের গাত্রে পতিত হইতে লাগিল। তিনি উচ্চৈ:স্বরে বলিতে লাগিলেন-''হে রোমীয়গণ, ভোমরা আমার প্রাণ নষ্ট কর, তাহাতে ক্ষতি নাই; কিন্তু এমন

থেলা থেলিও না, ভোমাদের পারে ধরিন" চতুর্দ্দিকস্থ চীৎকারধ্বনির মধ্যে তাঁহার कथा विनीन इहेशाः (शन।

দশকগণ এমন উন্মন্ত হইয়া,উঠিল যে. হাতের কাছে যে যাহা পাইল, তাহাই ছড়িয়া মারিতে লাগিল। সহস্র আঘাতে সাধুর দেহ ক্ষত বিক্ষত হইল। তাঁহার প্রাণবায়ু বহিগত হেইল। প্রাণীদিগের উদ্ধারের পথ প্রশন্ত করিবার জন্ম মহাস্থা যীভ্ঞীষ্ট ক্রশকাষ্ঠে প্রাণত্যাগ করিয়া-ছিলেন, তাঁহার শিষ্য টেলিমেকাস অন্ন তাঁহারই অনুসরণ করিলেন। শক্র কল্যাণের জন্ম শক্রর হস্তে আত্ম-বলিদান কবিলেন।

টেলিমেকাদের জীবন শেষ হইলে উন্মত্ত मर्नकिनिरात हिंछ इठार भाष्ठ ও उछि उ হইল। তাহারা যথন টেলিমেকাদের দাধ সংক্রের বিষয় অবগ্ত হট্ল, তথ্ন রঞ্চ-মঞ্হইতে অনেকে সেই স্থানে আদিয়া অনিমেষ্নয়নে সাধুর মৃতদেহ দশ্ন করিতে লাগিল। সর্বাপেকা স্তম্ভিত এবং অপ্রতিভ হইলেন সম্রাট হনোরিয়স। তিনি স্বীয় কুকর্মের ফল বিশেষকপে অমুভব করিলেন। তাঁহার মর্মাণ্ডিক যাতনা উপস্থিত হইল। তিনি দেই রঙ্গ-

স্থলেই মনে মনে প্রতিজ্ঞা করিলেল, এই ভীষণ ধেলা একেবারে রহিত করিয়া দিবেন। উপস্থিত দশকদিগের মনেও এই ভাব জাগ্রত হইল। অচিবে টেলিমেকাদের আত্মতাাগের ফল ফ্লিল রোমরাভা হইতে মাডিয়েটার থেলা একেবারে উঠিয়া গেল।

রক্তল নর ও প্রশোণিতে প্লাবিত হইয়া ঘাইত, অতঃপর ফুশ্যাম নব দুর্লাদণ সে স্থানের শোভা বৃদ্ধি করিতে লাগিল। ধন্ত টেলিনেকাল। জিনি স্বীয় জীবনদান করিয়া লক্ষ লক্ষ লোকের জীবন রক্ষা করিলেন। একজন লোকের আত্ম-ত্যাগের ফলে একটা জাতি ঘোর পাপ कलक इटेर्ड मुक्ति नां क्रिति। আত্ম-ত্যাগ ভিন্ন কোনও বিষয়েই সংকার হয় না। আপনাকে যিনি ছাভিতে পারেন. তিনিই পথিবী জয় করিতে পারেন। কত বাজা মহারাজ এই প্রিবীতে রাজ্য কবিষা মাইতেছেন, ভাঁহাদের নাম কেছ ই স্থাবণ করে না: কিন্তু এক গরীৰ সন্ন্যাসী কল্পালাবশিষ্ট দেহথানি যে মানব প্রেমে উংসর্গ করিয়াছিলেন, সে কথা জ্ঞান্ত-ভাবে ইতিহাদের পুঠে স্বর্ণাক্ষরে অফিড রহিয়াছে।

বিষামৃত।

ত্রিবিধ সমাস কল্পনা করিয়াছেন, সেইরূপ । যাইতে পারে। তন্মধ্যে এই প্রবদ্ধে শামরা

देवबाकजर्भज्ञा द्यमन "जारमध्य" भारत "विश्वाम् छ" भारत व वह विथ समाम कड़ी

উহার কর্মধারর সমাসজনিত অর্থই গ্রহণ করিব।

কোন কোন ঔষধের শিশির গাত্রে 'poison' এই ইংরাজী শক্ষটী লিখিত থাকে। ঐ শক্ষের অর্থ বিষ। বিষেণ্ প্রাণ নাশ করে,—ঔষধে রোগ নাশ করিয়া নরদেহে স্বাস্থ্য-স্থথের উৎপাদন করে। তথাপি সেই ঔষধ বিষ। শিশির গাত্রে লেখা থাকে এই-জন্ম যে,লোকে অযথা কালে বা অযথা স্থানে ব্যবহার করিয়া বিষের অনিষ্ঠকর ফলভোগের অধীন হইয়া না পড়ে এবং 'poison' শক্ষে দৃষ্টি রাথিয়া দর্ম্বদা সতর্কতার সহিত ঐ ঔষধ ব্যবহার করিয়া শুভ ফল লাভ করে।

যে বজ্ঞাগি, বিশ্ব বন্ধাও দগ্ধ করিয়া ফেলে, সেই ব্ৰহ্মাগি মেঘ হইতে নিৰ্গত हरेगा ना र्लाल कनधत कन वर्षण कतिएक পারে না এবং দেই জলামুতের অভাবে স্ষ্টিরক্ষা হয় না। মেঘ হইতে উত্তত কুলিশানল বিশ্বদাহ করিলেও আমরা সত্ত নয়নে সর্বাদাই মেঘের আগমনপথ চাহিয়া থাকি। এইরপ ''বিষামত'' বা মেঘানলের স্থায় একটা দোমুখো বাস্ত সাপ আমাদের ঘরে ঘরে বাস করিতেছে এবং **শেই** সাপ লইয়া অমরা প্রায়ই খেলা कतियां थांकि। आक এই প্রবদ্ধে সেই ২।৪টা সাপ ও **সাপথেলানর** কথা विनव ।

শুলাতী-কলহ যে গৃহত্ত্বে গৃহে না বা থাকে, সে গৃহই^ছলহৈ। অনেকে নি কুছুহকে আমোদের বস্তু মনে করিয়া

থাকে এবং পাকে চক্রে স্ত্রীপুরুবের মধ্যে বিবাদ বাধাইরা দিয়া আমোদ দেখে। কিন্তু সাধারণে ঐ কলহকে যত সাধারণ বস্তু মনে করে, আমরা তত সামাভ্য মনে করি না;—আমরা উহাকেই"বিধামৃত; মেঘানল" বা-"দোমুথো সাপ' বলিতেছি।

অনেকেই অবগত আছেন, কাল সর্পের বিষদংশনে জীবের প্রাণনাশ হয়, আবার সেই বিষজাত ঔষধসেবনে প্রাণনাশক রোগ নিবারিত হয়। অহিফেণ নামক উত্তিজ্ঞ বস্তু পরিমিত পরিমাণে বাবজত হইয়া কত রোগনাশ করিতেছে; আবার সেই অহিফেণসেবনে কত ভীষণ হত্যা বা আত্মহত্যার সংবাদ দিন দিন পাওয়া যাইতেছে। পরিপক নিমফল থাইতে অতি মিষ্ট, অনেক পশুপক্ষী তাহা আনন্দে ভোজন করিয়া জীবন ধারণ করে। আবার সেই ফল হইতে এমন এক প্রকার তীব্র-তম বিষের সৃষ্টি হইয়া থাকে. যে. তাহার কুশাগ্রস্থ বিন্দু দ্বারা হস্তী গণ্ডার প্রভৃতি বৃহৎকায় জন্তগণেরও শোণিত বিষ্তুষ্ট হইয়া তাহাদের প্রাণনাশ ঘটিয়া থাকে। অন্তৰ্গত আমেরিকার ব্ৰেজিল অরণ্যে এমন এক সুখাদ্য ও পুষ্টিকর মূল জিমায়া থাকে, যাহা আহার করিয়া তৎপ্রদেশীয় ব্যক্তি-গণ পরম উপকার লাভ করিয়া থাকে; কিন্তু সেই মূলের একাংশ ভয়ানক বিষ, তাহা ধাইবামাত্র প্রাণনাশ হয়। প্রদেশীয় ব্যক্তিগণ তদংশ:বুঁত্যাগ করিয়া অনায়াসে ঐ মূল ভক্ষণ করে।

বস্তু কৈত আছে, আমরা তাহার কতই উল্লেখ করিব গ[‡]

প্রকৃতির এই অন্তত বিচিত্র ব্যাপার पर्नात देशहे त्वाथ इव त्य. त्यथात अ**म्**ड. সেইখানেই বিষ। অথবা যেই অমৃত,— (महे विष। हिन्दु (भो अ। विष्कृत । अ। विषक्त । विषक्त এই ভাব নিহিত রহিয়াছে। স্বর্গরাজ্যের শ্রীসম্পাদন, ও দেবগণের বলাধান জন্ম যে ক্ষীরদমুদ্রমন্থনে অমৃত উঠিল, অস্থর-ताकामान, ७ अञ्चत्रशगटक ध्वःम.कतिवात জন্ম সেই সমুদ্র হইতেই বিষ উখিত আবার সেই বিষের জালায় रहेन। সৃষ্টি রুসাতলে যায় দেখিয়া বিশ্বপ্রেমিক বিখনাপ তাহা পান করিয়া নীলকণ্ঠ इहेरलम् । সমুদ্रমञ्चन इहेर्ड रामन व्यरनक रहेग्राहिल. সাবিত প্রকৃতর কার্য্য দম্পতীর প্রণয়-ক্ষীর-সমূদ্র-মন্থনোম্বত কলহ হইতেও তেমান সাংসারিক অনেক মঙ্গল সম্পাদিত হয়৷ আমরা তাই বলিতে-ছिलाम-मम्भाजी-कलह मामाना वस नरह। আকাশ ব্যাপিয়া কাল নেঘের हहेन.-- मिचा अत्व क्या अ इहें ड অন্ত প্রান্ত পর্যান্ত তড়িন্মালা খেলিতে नाशिन, मूहर्म् ह जीम श्रद्धान जिल्दन মুখরিত হইতে লাগিল, মধ্যে মধ্যে বছা-ঘাত হইয়া কভ প্রাণা, কত তক্লতা, কত গৃহ অট্টালিকা ধ্বংস ও চুর্ণ বিচুর্ণ করিতে লাগিল,—তৎসঙ্গে মধ্যে মধ্যে প্ৰন দেবও ত্ত্ৰার ছাড়িতে লাগি-লেন,—প্রক্ষতির ভাব দর্শনে বোধ হইতে

লাগিল, পৃথিবীর প্রলম্কাল উপস্থিত।

কিছ দেখিতে দেখিতে বৃষ্টি আরম্ভ হটল. সকল উৎপাত মিটিয়া গেল, জগতীতল स्भीउन इहेन। এ কি ব্যাপার ? ব্যাপার এই ভন। পরস্পর নিকটবর্তী তুইখানি মেঘের অন্তর্গত বিচাতের পরি-মাণ যতকণ সমান না হইবে, ততকণ ঐ ব্যাপার চলিবে, যেই ভাড়িত-সাম্য সংঘটিত হটবে, সেই বৃষ্টিপাত, সেই পুণিবী শীতন। এই কথা কয়টী নিধিতে যতটুকু সময় লাগিল, বা ইহা পড়িতে যভটুকু সময় লাগিবে, ঐ সকল ঘটনা ঘটিতে সচরাচর তত্ত্ব সময় লাগে না:—তাহাই বকা। দেইরূপ দ**ম্পতীর** "একান্মতা" সম্পাদন জ্বল দ**ম্পতী-কল্ছ** উপ্তিত হয়। যতক্ষণ বা যতদিন এই একালতা সম্পাদিত না হয়, উভক্ষণ বা তভনিন কলহ চলে:--ঐ কার্যা ত্তীয়া গোলে আর কলহ থাকে না। নিরস্থর তথ্য সংস্থি-সম্ভের উপর মলয়ানিল বহিত্তে সুগ্রি সুশাত্র থাকে। তথন গাইন্তা-গগনে সুধাব্দী বাকা শশীর উদয় হয়; তথন দলাতীয় জীবনত্র জিণীতে আনন্দলহ্রী থেলিতে থাকে। তাই বলিতেছিলাম, দশ্সতী-কলহ বছ সামাত্ত বস্ত্ৰ নহে।

দম্পতী-প্রণয় সে স্থলে যত অধিক;
কলহও সে স্থলে ততই অধিক হইরা
পাকে। কেন না প্রস্পার প্রপদ্দীল
দম্পতীই উভয়ে একাল্লক হইরা সংসারযাত্রা নির্কাহ করিতে ইচ্ছা করেন। যতক্ষা একাল্লভার অভাব থাকিবে, অসম-

তাড়িত মেঘের স্থায়, দম্পতীর মধ্যে ততক্ষণ ঘোর ঘটায় কলহ চলিবে। অনাহার, অনিদ্রা, গৃহকার্য্যে .ও শিশু-পाननानि चााशारत छेना गीछ, উভয়ে कथा काठाकाछि, हेजाित कुंडे इहेरव। ইহা অপরের পক্ষে আমোদ ও কৌতুককর বটে, কিন্তু দম্পতার পক্ষে সাংঘাতিক। প্রণরশীল দম্পতীর পরস্পর কলহের ম্বায় কপ্তকর ঘটনা, বোধ হয় তাঁহাদের পক্ষে আর কিছুই নহে। যতক্ষণ কলুহ চলে, ততক্ষণ স্বাস্থানি প্র্যাস্থ ভারবহ ও অকিঞ্চংকর বোব হয়। তবে রকা এই যে, দম্পতাকলহ অধিকক্ষণ স্বায়ী হয় না, অজাযুদ্ধ বা ঋষিপ্রাদ্ধের ন্তার মহাভ্রবের সংক্ষিপ্ত উপসংহার শাঘ্র হইরা যায়। কিন্তু ঐ অল্লকণেই স্ষ্ট-সংসার রসাতলে যাইবার উপক্রম হয়।

প্রত্যেক বস্তুর আকার, প্রকার, স্বভাবাদি বিভিন্ন হওয়াই, এ জগতের অন্থপম বৈচিত্র এবং স্বৃষ্টির অন্যতম মুশতব। "বহুশ্চামঃ" এই শ্রুতিবাক্য তাহার প্রমাণ। এজন্ম দম্পতার মধ্যে সম্যক্রপে একাত্মতা সম্পাদন প্রায় ঘটে না,—ঘটতেও অনেক সময় লাগে। যত দিন ঐ সম্পাদনা ক্রিয়ার শেষ না হয়, তত দিন উভয়ের মনে এক একটী উল্লেগ ও অভিমানের উদর হইয়া কলহ উৎপাদন করে। "এ বিষয়ে আমার এই শত্রে,—কিন্তু জাহার^{য় শ্রু}ত্ররূপ। যদি এ বিষয়ে মত্রেদ হইল, তবে দে বিষয়ে ত

মতভেদ হইবেই। তাহা যদি হয়, তবে অমুক বিষয়েই বা মতভেদ না হইবে কেন তবেই দেখিতেছি, আমার মনের গতি এক দিকে, তাঁহার অন্ত দিকে। যদি ছই জনে এক পথে যাইতে না পারিলাম, তবে ভালবাসা কোথায়? যদি উভয়ের প্রতি উভয়ের ভালবাসাই না থাকিল, তবে জীবনই বিফল।" দম্পতীর মধ্যে এই প্রকার বিচারবাদ, অন্তঃসলিলা নদীর প্রবাহবং অবস্থান করে। দম্পতী-কলহ অধিক পরিমাণে বাড়িয়া গেলে এবং শীঘ্র না মিটিলে, অহাতরের গৃহত্যাগ, আত্মনাশ, প্রভৃতি গুরুতর ব্যাপার সকলও সংঘটিত হইয়া থাকে। এইজন্মই দম্পতী-কশহকে "দোমুখো" দাপ বলিয়াছি, যাহার এক মুখে অমৃত,--এক মুখে বিষ !

ঐ অমৃত পান করিতে হইবে, কিন্তু বিষ থাইয়া মরা হইবে না। এই জন্ত দম্পতী-কলহ হওয়া ভাল, কিন্তু থাকা ভাল নহে। অতএব কিন্তুপে দম্পতা-কলহ করিতে হইবে, এক্ষণে সেই শিক্ষাটী দিতে পারিলেই, এই প্রবন্ধের উপসংহার হয়। এতাদৃশ গুরুতর বিষরের দায়িত্ব বামাবোবিনী সম্পাদক নিজের হন্ধে রাখিতে ইচ্ছা করেন না। তজ্জ্ভা ক্পেদিছা চিন্তাশীল লেখক স্থামীয় ভূদেব মুখোপাধ্যায় প্রণীত "পারিবারিক প্রবন্ধ" হইতে করেক পংক্তি উদ্ভূত করিয়া দিলাম;—

্বিবাদটী মিটিয়া গোলে, অভিন-

श्रमग्रठा माधिक इटेटन, कान देवभाशीत মেঘ, ঝড়, জল, ছাড়িলে, তাড়িতের সামঞ্জন্ম বিধান হইয়া গেলে, কেমন স্থবিমল শোভা,—কেমন অনির্বাচনীয় প্রসন্নতা জন্মে। দম্পতী-কলহের এই চরম ফলটী বড়ই মধুর। এই ফল জন্ম "সুবোধ, দান্তস্বভাব পাইবার পুরুষের" প্রতি বক্তব্য,—

- (১) আপনাদিগের মতভেদ, অপর কাহাকেও স্বতঃপ্রবৃত্ত হইয়া জানাইও না।
- (২) আপনাদিগের বিবাদভঞ্জনের নিমিত্ত অপর কাহাকেও মধ্যস্থ মানিও না ৷
- ক্রিতে আইসে, তাহাকে ক্দাণি ঘানন দিও না।
- (৪) (কলহকারিণী পত্নার নিকট হারি মানিতে কিছুমাত্র লক্ষাবোধ করিও। না। দম্পতী-কলহে যে হারি মানে, সেই জিতে।

(c) যতক্ষণ বিবাদ না মিটে, অন**র্ছ**-কর্মা হইয়া থাকিও। সংদার উৎসন্ধ হউক, সৃষ্টি বহিয়া যাউক, যতক্ষণ বিবাদ-ভঞ্জন না হইবে, ততক্ষণ কোনও কাজ করা হইতে পারে না; অপর কাহারও সহিত কথা কহা হইতে পারে না, খাওয়া দাওয়া হইতে পারে না,ঘুমান হইতে পারে না,বিশেষতঃ ঘুমানটা কোন ক্রমেই হইজে পাবে না।

উল্লিখিত পাচটি নিয়মই অতি গুরু তর: বিশেষত: পঞ্ম নিয়মটা এবং তাহার শেষভাগের কথাটি সকল নিয়মের সার নিয়ম। এই গুলি পালন করিয়া চলিতে পারিলে দম্পতার মধ্যে কলহ অয় (৩) মুদি কোন অর্প্রাচীন মধ্যস্তা হয়; যথন হয়, তথন স্বল্প মাত্র থাকে এবং নিস্তৃত্তিতে অন্তঃকরণ সরস ও স্থুথে আপ্রত হয়। দম্পতী-কলহের পরি-সম্প্রিতে যে অক্রারি বিগালত হয়, ভাষা সরসভার লক্ষণ-ভুই চারি বার বিচ্যংপ্রকাশের পরে বৃষ্টি—জগভীভেল শাভগা"

রত।

(৩৭০ সংখ্যা ২১২গ্রহার পর)

সর্পমণি বা ফণিমুক্তা।

. হয় না।

"ভুজক্ষাতে বিদ্বোদ্ধাঃ শ্রীবাস্থ্যকর্বশেষ্টবাঃ পৃথিব্যাস্।

क्ठिर कमाहिर शमु भूगारमध्य ভিষ্ঠতি তে প্ৰাতি ভান্ সমুৰা: ి

দুকল সংগ্রি মস্তকে মনি উৎপ্র 🗀 যে সকল সংগ্রি মস্তকে শাস্তুর হয়, তাহারা আপনার বিষয়েগে উত্তাসভাব ইহারা বাহ্যকি নাপের हत्र । উৎপদ্ধ। পৃথিবীর কোন কোন পুণ্য স্থানে

ক্ষ্মন কথন এইরূপ সর্প মন্থব্যেরা দেখিতে পায়।

नक्।

"কণিজং বর্জুলং রম্যং নীলচ্ছান্নং মহান্থাতি।
পুণাহীনা ন পশান্তি বাহুকে: কুলসন্তবম্ ॥"
কণিজাত মুক্তা দেখিতে অতি স্থান্দর,
বর্জুলাকার অর্থাৎ গোল,নীলাভ এবং অত্যন্ত দীপ্তিমান্। অপুণ্যবান্ ব্যক্তিরা বাহ্নকি-বংশীয়া,সর্পের মুক্তা দেখিতে পায় না,স্থতরাং কণিজাত মুক্তা তাহাদের নিকট ছল্লি । দিতীয় লক্ষণ, যথা— শুগালকোলামলকেলগুল্লাক্সন্পান্ত চতুর্বিধান্তে।
স্থাপ্ত ক্ষান্তব্যাশ্যাসপ্রে জাতাঃ

শৃগালকোল—শ্যাকুল। প্রমাণে শ্যাকুল

যত বড়, তত বড় হয়। আমলকীপ্রমাণও হয়। গুঞ্জা অর্থাৎ কুঁচ-পরিমিতও

হয়। কুলফলের মতও হয়। এই চারি
প্রকার মুক্তা চারি জাতি সর্পে জন্মে।

ইহারা সকলই প্রশস্ত।

প্রবরান্ত সর্বের।

ফলশ্ৰুতি।

"প্রাপ্যাপি রত্নানি ধনং প্রয়ং বা। রাজপ্রিয়ং বা মহতীং ছুরাপাম্॥ তেজোহবিতাঃ পুণাকৃতো ভবস্তি। মুক্তাফলস্তাস্ত বিধারণেন॥"

ধন, রত্ন, রাজ শ্রী প্রাপ্ত হইয়া এই ফণিমুক্তাফল ধারণ করিলে ধারণকর্তার
পূণ্য-কর্মে প্রস্তুত্তি হয় এবং তেজ
রুদ্ধি হয়।

মীনজাঁমুক্তা। মংক্ষবিশেষের মুখপ্রদেশে এক প্রকার পাণর জন্মে, তাহাকেই মীনমুক্তা কহে।

> পাঠীনপৃঠস্ত সমানবর্ণম্। মীনাং স্বর্ত্তং লঘু নাতিস্ক্রম্॥ উৎপদ্যতে বারিচরাননেধ্ নীনাশ্চ যে মধ্যচরাঃ প্রোধেঃ॥

পাঠীন মংস্য—রোহিত মংস্য, বাটা-মংস্য। মান হইতে যে মুক্তা পাওয়া বার, তাহা পাঠীন মংস্তের পৃষ্টের বর্ণের সদৃশ, স্থগোল, লঘু অর্থাৎ ওজনে হালকা ও নিতান্ত ক্ষম নহে। মীনমুক্তা সকল বারিচর অর্থাৎ মংস্তাদিগের মুথে জন্মিয়া থাকে, এবং এই সকল মংস্ত সমুদ্রের মধ্য প্রদেশে বাস করে।

লক্ষণ।

গুঞাকলদমন্থোলং মৌজিকং তিমিজং লযু । পাটলা পুস্পদক্ষাশং অলকান্তিহ্বর্লম্॥

ি যিমংখজাত মুক্তা সকল স্থলতায় গুঞ্জা অর্থাৎ কুঁচের নায়; লঘু অর্থাৎ হালকা; পাটলা পুম্পের ভায়ইহার কান্তি, কিন্তু ছাতিচ্ছায়া অল্ল। ইহার বর্তুলতা অতি স্কার।

মীনমুক্তার সামান্ত লক্ষণ এই বটে, কিন্তু মংস্তাদিগের প্রকৃতিভেদ থাকাতে তত্ৎ-পদ্ম মুক্তারও কিঞ্ছিৎ কিঞ্ছিৎ প্রভেদ ধ্রমা থাকে।

'বাতপিত্তকষ্ণস্মরিপাতপ্রভেদতঃ।
সপ্তপ্রকৃতয়ে মীনাঃ সপ্তধা তেন মৌক্তিকম্।"
বায়ু, পিন্ত, কফ এই তিনের হুই হুই.
ও তিন তিন ক্রেমে মৎস্ত সকল সাত
প্রকার প্রকৃতিসম্পন্ন হুইয়া থাকে।

স্ত্রাং তহংপদ্ধ ম্কাফলও সাত প্রকারের হয়।

লঘিষ্টমঙ্গণং বাতাং আপীতং মৃত্ব পিত্ৰত:।
তক্ষণ শুক্ষণ ক্ষেণ্ডলেকাং বাতপিত্তান্ম্মূল্বব্ ॥
বাতলেক্ষণ্ডলং পূলং পিত্ৰগ্ৰেম্বন্ধক্ষ ।
সকলিক প্ৰয়োগেণ সান্নিপাতিকম্লাত ।
একজাং শুল্পা প্ৰাক্তা তথা বৈ সান্নিপাতিকা ।
বাতাধিক্য বশতঃ লঘু ও মকণাত । পিত্ত সান্নিপাতিকজ্প বলা যথালে মৃত্ব ও স্বৰং পীতাত । কফের মধ্যে সান্নিপাতিকজ্প বাতল্যে গুলু ও থেতাত । বাতপিত্ব প্ৰশন্ত ও শুভ্লায়ক ।

সাত উভরের প্রাবল্যে মৃত্ অধাৎ কোম ভারাক্রান্ত এবং লঘু। বাতমেয় উভরের প্রাবলাে স্থলত গুণষুক্ত। পিত্তমেয় আত গুলু কুলার আধিক্য। এক একটা ও ছই ছইটা পুরুতিতে যে সকল লক্ষণ নির্দেশ করা হইল, যদি সকল চিক্ত কিছু প্রকাশ পায়, তাহা ছইলে তাহাকে পিত সালিপাতিকজ বলা যায়। এই সকলের মধ্যে সালিপাতিকজ ও একজ মুকাই পিত প্রশাস্ত ও শুভলায়ক। (ক্রমশঃ)।

ধ্বনি বা শব্দবিজ্ঞান।

(৩৬৬ সংখ্যা - ৭৯ পৃষ্ঠার পর)

যদি একটা গোলাকে দকিণাভিম্থে চালিত করা যায়, তাহা হইলে উহা থানিক দূর গিয়া তির হইবে। যেরূপ বলে উহাকে দক্ষিণাভিমুথে চালিত করা হইয়াছিল, যদি সেই বলের স্থিত উহাকে আবার উত্তরাভিমুখে চালিত করা যায়, এবং পথে উহা কেনি বাধা না পায়, তবে উহা নিঃসন্দেহই পূর্মস্থানে উপস্থিত হইবে। যদি সমকালে ছটী, সমান বিপ-রীত বল কোন বস্তুতে প্রয়োগ করা যায়, তাহা इहेरन डेहा कान मिरकड़े ठानिड इटेर ना। किन्छ के छटेंगे विभन्नी उ বলের মধ্যে যদি একটা অন্যটা অপেকা ন্ন হয়, তাহা হইলে ঐ বস্ত ন্ন বলের मिरक शांविज रहेरव। यत्न कत्र, कांन বস্তু এক্নপ উত্তরাতিমুখ বলে চালিত

হইল যে, বাধা না পাইলে উহা টেডর দিকে ৫০ হাত যাইবে. কিন্তু ঐ সময়েই যদি উহাতে ১০ হাত পরিমিত (অর্থাৎ বেগে চালিত তইলে ১০ হাত যাইতে পারে,এরপ) একটা দক্ষিণাভিম্প বল প্রয়োগ করা যার. ভালা হইলে ঐ বস্ত ৪০ হাত মাত্র যাইয়াই छित इहेर्त। यमि २० हांड वन आसान कता यात्र. छाहा इंडेरन মাত্র যাইয়াই তির হইবে। স্তরাং অনা-য়াদে বুঝা যাইতেছে যে, কোন বস্ততে একটা বল প্রয়োগ করিয়া যে পরিমাণে উহাতে বিপরীত বল প্রয়োগ করা নার, দেই পরিমাণে প্রথম বলের ছান হয়। এখন জলের তরঙ্গ কেন ক্রমণীঃ ছাক হয় দেখা যাউক। লোইবেগে **জলের** তরঙ্গ উপিত হয়। ঐ বেণ চতুর্দিকে শত

অবাসর হয়, জলের স্থিতিস্থাপকতা গুণ থাকাতে ততই প্রতিঘাত অর্থাৎ বিপরীত বল প্রাপ্ত হইতে থাকে, স্কুতরাং ক্রমেই ঐ বেগের হ্রাস হইয়া তরঙ্গ মৃত হইয়া ধ্বনিপ্রবাহেরও ঠিক এই অবস্থা। উহা যত প্রসারিত হয়, ততই উহার বেগের হ্রাস হয়। স্কুতরাং ধ্বনিরও সুলতার ব্রাস হয়। কত পরিমাণে স্থাতার হ্রাস হয়, তাহাও নির্ণীত হইতে পারে। এক হাত ব্যাদের বুত্তে যত বায় ঞ্জে, ছই হাত ব্যাদের বৃত্তে তাহার চতু-গুণি বায়ু থাকে, তিন হাত ব্যাদের বুত্তে তাহার নয়গুণ থাকে। এইরূপ ৪ হাত ব্যাদের রুত্তে ১৬ গুণ এবং ৫ হাত ব্যাদের বুত্তে ২৫ গুণ ইত্যাদি। রুত্ত ক্ষেত্রের कां ित नियम (पथिटल हे हेहा जनायात्म गहित् । বুঝা স্থতবাং একহাত দুর-গামী ধ্বনি যে পরিমিত বায়ুতে প্রস্ত হয়, ২ হাত দূরগামী ধ্বনি তাহার চতুও ণ

বায়তে প্রস্ত হয়। ৩ হাত দূরগামী ধ্বনি তাহার:১ গুণ বায়ুতে প্রস্ত হয়। `এইরপ ৪ হাত দুরগামী ধ্বনি তাহার ১৬ গুণ এবং ৫ হাত দূরগামী ধ্বনি তাহার ২৫ গুণ ইত্যাদি। এক দরগামী ধ্বনি অপেক্ষা হাত দুরগামী ধ্বনি ৪ গুণ লঘু হইবে, ৩ হাত দুরগামী ৯ গুণ লগু,৪ হাত দুরগামী ১৬ গুণ লঘু, এবং ৫ হাত দূর্গামী ২৫ গুণ লঘু ইত্যাদি। ইহা হইতে এই নিয়ম নির্দ্দিষ্ট হইতেছে যে, দুরত্বের বর্গের সমামুপাতে ধ্বনির হ্রাস হয়। যদি এক হাত প্রসারিত কোন ধ্বনিকে ৪ বলিয়া ধরা যায়, তাহাহইলে তাহা ছই হাত প্রসারিত হইলে ১ হইয়া প্রতিবে। যদি কোন এক হাত প্রসারিত ধ্বনিকে ১ বলিয়াধরা যায়, উহা ৩ হাত প্রসারিত इटेल > इटेगा अफ़िता।

(ক্রমশঃ)

জাতীয় উন্নতি।

(গতপ্রকাশিতের শেষ)

এখন দেখাইতে চেষ্টা করিব, রাজ্যতম্ব সর্ব্যতোভাবে প্রকৃতিপুঞ্জেরই অমুসারী হইয়ৄ থাকে। প্রজাগণ নিকৃষ্ট
হইলে উৎকৃষ্ট রাজ্যতম্বও ক্রমে নিকৃষ্টক্রাবাপন্ন হয়; প্রজার্মণ উৎকৃষ্ট হইয়া
নিকৃষ্ট রাজ্যতম্বও কালক্রমে উৎকৃষ্ট হইয়া

উঠে। রাজা যতই কেন যথেচ্ছাচারী

হউন মা, প্রকৃতিবর্গ সাধু ও সদাশয়

হইলে এক দিন না এক দিন রাজাকে

সাধু ও সদাশয় হইতে: হইবে—এক দিন

না এক দিন অবশ্রুই তাঁহাকে প্রজার

বাধীনতা বজায় রাধিয়া চলিতে হইবে;

কিন্তু যাহাদের অন্তরে স্বাধীন ভাবের স্রোত প্রবাহিত নহে, যাহারা আত্মাব-मद्यत डेमामीन ও সর্বতোভাবে পরম্থাপেকী, রাজ্যতন্ত্রে ভাহাদের স্বাধীনতা থাকা না থাকা একই কথা। স্বেচ্চাচারী রাজার দাস্ত কষ্টকর ও অনর্থের হেতু হুইলেও মন্তর্নিহিত কু প্রবৃত্তি- 🕒 সমূহের দাসত্ব করা অপেকা উহাসম-বিক ভয়ন্ধর নহে। যাঁহাদের স্বাধীনতা কেবলমাত রসনা-প্রণয়িনী হইয়া অস্ত-গত হয়, যাঁহাদের স্বাবলম্বনের লেশমাত্র নাই, ঘূণিত পার্তস্তা-বুদ্দি থাঁহানের অন্তরাত্মাকে নীচ ও তেজঃশৃত্য করিয়া 🤚 রাথিয়াঁছে, তাঁহাদিগের জাতি কিরূপে স্বাধীন ও সমূলত হুট্রা উচিবে ৪ হয় ত তাঁহারা জ্ঞানালোকে নিজের কর্ত্তবা গুলি विश्वालन, किया विष्ठादिल मिट्टे दिवस्य বিলক্ষণ বক্তা বলিয়া খ্যাতিলাভ করি-লেন, কিন্তু কার্যাকালে প্রমুণ চাওয়তা इडेट्ड নহিলে কোনক্রমে ত্র গ্রস্ত পারেন না। স্বার্থপরতাদি-নীচ-প্রবৃত্তি প্রতন্ত্রতা যেন তাঁহাদের মন্তকে পদাঘাত করিতে থাকে।

বর্তমান ইংরাজ জাতির জাতীয় উল্লতি কেবল কয়েকজন বীরপুরুষের দারাহয় সাধারণের নাই. অবগ্ৰই **डेशट** ७ সহায়তা আছে। সৈত্যগণ নিরুৎসাহ ও স্বাতন্ত্র রক্ষা বিষয়ে সাধারণেরই প্রাণপণ । লইয়া লিন্কনের প্রাছ-গৃহ নিশ্বাণ

রহিয়াছে। আমরা ইংরাজগণকে আৰ যে সভাতার উচ্চ শ্রেণীতে দেখিতে পাইতেছি, তাহা সাধারণের প্রধান প্রধান গুণে বৃদ্ধিত হইয়াছে। ইহাদের মধ্যে অনেক নীচবংশোদ্রব বাক্তিগণ স্বাব-ল্খনে অব্স্থন হান ২ইছে মহোচ প্রবাতে অবিবোহণ করিয়া অঞ্চতির উন্নতি স্থেন করিয়াছেন। সাহিতা. বিজ্ঞান, শিল্প ও ধ্যাশাস্থানি বিদ্যাস প্রত্যেক শাখাতেই তাঁখাদের कोश्विक त्रशिक्षा (कर क्रियक्क्य হ্*হ*তে, কেহ প্রতপার্থ হ্**ইতে, কেহ** পণ্যালয় হইতে, কেহ ভূগও হইতে, কেহ কশ্মকারের ভ্রাস্থান হইতে, কেহ চর্ম্মকারের কুটার ২ইতে কেবল আন্ধাব-লম্বন, প্রিভাম ও অধাবসাধানি - আংশ বিদ্যা বৃদ্ধির উৎকর্ম সাধন করিয়াছেন। ইটাদের মধ্যে নিমে কতক্ষালির লাম প্ৰেম্ভ ইল।

থ্যাত্রামা সেক্পিয়রের জন্ম কেই ठिक विलिए अशितमामा, किन्न होने स দ্বিদ্স্থান তিলেন ভাষ্ট্রে স্কেচ নাই। বর্ত্তমান সভাকলের স্বাষ্টকর্ত্তা সার বিচার আক্রাইট ও লর্ড টেলটর-खन क्लोतकार-शृष्ट असाश्रम करतन: দৈনন্দিন প্রমোপজীবীর গৃহে, ইঞ্জিনিয়ার ব্রিণ্ডিলি, প্রধান পোত-নাবিক কুক্ ও ভীকুস্বভাব হইলে কি সেনানী দারা কবি বরন্সের জন্ম হয়। বেন অন্সন্ এতদ্র সন্তবে ? স্বাধীনতাপ্রিয় ইংরাজ রাজ্মিস্তির সন্তান ভিলেন, ইনি অজ-জাতি সাধারণ্যে উৎকট থাকাতেই জাতীয় বিক্লাতে একথানি পুত্তক ও হত্তে কৰিক

করিতেন। বিখ্যাত ইঞ্জিনিয়ার এডওয়ার্ড। টেলফোর্ড, ভৃতত্তবেতা হফ মিলর ও বিখ্যাত ভাস্কর আলান ক্যানিংহাম ও ঐ বংশোদ্ভৰ গণিতবিদ্যাবিশারদ সাম-শন, ভাস্কর বেকন, আডাম্ ওয়াকর, জন क्षेत्र, शकि-विमाविभावम উইলসন. দেশভ্রমণকারী বিখ্যাত মিশনরি ডাক্তার লিভিং**ষ্টোন ও স্থ**কবি টানাহিল প্রভৃতি মহাযশাগণ তস্তবায়গৃহে জন্মগ্রহণ করেন। সামুদ্রিক সৈত্যাধ্যক প্রধান ক্লাউড্সলি সভল, বৈছাৎ-বিদ্যাবিশারদ ইরজিয়ন, প্রধান রচনাকর্তা স্থামুএল ব্রিউ. ত্রৈ-মাসিক সমাচারপত্র-লেথক গিফোর্ড, কবি ব্লমফিল্ড, মিসনরি উইলিয়ম কেরি ও মরিসন প্রভৃতি থ্যাতনামা মহাত্মাগণ চর্ম্মকারগৃহে জন্মগ্রহণ করেন। টমাস এডওয়ার্ড নামক এক ব্যক্তি জুতার দোকানে থাকিয়া পদার্থবিদ্যায় অভি-জ্ঞতা লাভ করেন। বিখ্যাত চিত্রকর জাক্সন এক স্চিজীবীর দোকানে কর্ম করিতেন। মহাসাহসী সামুদ্রিক নাবিক আড্মিরাল হবসন্ও ঐ শ্রেণী-ভুক্ত। কার্ডিস্থাল উল্সি, গ্রন্থকার ডি কো এবং কবি আফিলাইড ও কর্ক হোয়াইট মাংস-বিক্রেতার সন্তান। গ্রন্থ-কার বেনিয়ান: কাঁসারির সস্তান ছিলেন এবং প্রসিদ্ধ শিক্ষক জোজেফ ল্যাকাষ্ট্র ঝুড়ি বোনা ব্যবসায় করিতেন। यट्यत चार्विकात-वााशाटत यांशाटनत नाम 🦥 ত আছে, তাঁহাৰ্দে মধ্যে মহাত্মা নিউকোমন কর্মকার ছিলেন। ওয়াট

গণিত-সংক্রান্ত যন্ত্র নির্মাণ করিতেন এবং ষ্টিফেনসন কলের অগ্নি প্রজালনে নিযুক্ত থাকিতেন। ধর্মোপদেষ্টা হণ্টিংডন প্রথম অবস্থার ক্যুলার কাঁডি দিতেন। কাচের ছাঁচের জন্মদাতা রিউইক কয়লার থনিতে কার্য্য কবিজেন। প্রেসিজ গ্রন্থকর্ত্তা ডড্সলি পদাতিক এবং হল-ক্রফট ঘোড়ার সইস ছিলেন। বিজ্ঞান-শাস্ত্র-অধ্যাপক মাইকেল ফারিকৈ সামাত্য কর্মকারের ছিলেন। স্কটলণ্ডের উত্তর প্রান্তে থরুদো নামক স্থানে রবার্ট ডিক নামে এক ব্যক্তি পূপকারের দোকানে থাকিয়া অসামান্ত ভূতত্ববেত্তা হইয়া উঠিয়াছিলেন। এত-দ্বিয় ইংলণ্ডের প্রাক্ত সভার সভা-দিশের মধ্যে অনেকেই নীচবংশীয় দরিদ্রের সন্তান। এই সভার সভা মৃত ত্রদর্টন প্রথম অবস্থায় তুলা-কলের কর্মচারী ছিলেন এবং একজন তস্তবায়-ঐ সভার সভা क्रिल्म । প্রসিদ্ধ পোতাধিকারী মান্তার ডবলিউ এম লিওম চতুর্দ্দশ বংসর বয়সে অনাথ ও নিরাশ্র হইয়া সংসারপথের পথিক হয়েন। পরে স্বাবলম্বন, পরিশ্রম, উৎসাহ ও অধাবসায়ঞ্জণে এ সভার সভা হইয়া সন্মান লাভ করেন। এই সকল বিষয় আলোচনা করিলে স্পষ্টই;বুঝা যায় বে, বাক্তিগত উন্নতি না :হইলে স্বন্ধাতির উন্নতি লাভের উপায় নাই; আর এই বাক্তিগত উন্নতির জীবন সচ্চরিত্রতা, উৎসাহ, অধ্যবসার, স্থাবলম্বন, পরিশ্রম,

শাধীন চিস্তা। এই উপকরণগুলি নহিলে
ব্যক্তিগত উন্নতির জন্ম হয় না এবং
ব্যক্তিগত উন্নতি নহিলে সমষ্টিগত
উন্নতির আশা কোথায় ? স্থতরাং ব্যক্তিগত উন্নতির উপরেই জাতীয় উন্নতির

আশা ভরসা নির্ভর করে, ভাহাতে আর সন্দেহ নাই। অতএব স্বদেশাছরাগী-মাত্রেরই প্রধান কর্ত্তবা, যাহাতে ব্যক্তি-গত উন্নতিলাভ হর, তাহার চেষ্টা ও উপার উদ্ভাবন করা। শীকু, রা।

নূতন সংবাদ।

১। কুমারটুলির হত্যাকাণ্ডের নামক
অল্পলাপ্রসাদ ঘোষের মোকদমা শেষ
হইল্লাছে। ৫ জন ইংরাজ ও ৪ জন দেশীয়
বিশেষ জ্বিলইয়া বিচার হয়। জ্বিরা একবাকো আসামীকে হত্যাদি অপরাধে দোবী
সাব্যস্ত করাতে তাহার ফাঁসী হইয়াছে।
২। কলিকাতার প্রসিদ্ধ কবিরাপ
শ্রীমৃক্ত গঙ্গাপ্রসাদ সেন সম্প্রতি নিউমোনিয়া রোগে স্বর্গারোহণ করিয়াছেন।
মৃত্যুর পূর্বের উইল করিয়া দেব ও অতিথি
সেবাদির জন্ত বন্দোবস্ত করিয়া গিয়াছেন।
৫। চানদেশে নাকি কন্তাবিক্রমের
প্রধা অত্যন্ত বল্বতী। অতি সামান্ত
মৃল্যে বালিকাগুলি বিক্রীত হইয়া থাকে।

এক একটা বালিকার মূল্য ৩।৪ শিলিং মাত্র।

8। সম্প্রতি ডেনমার্করাজের বিভীর পুত্র প্রিক্স চার্লসের সহিত আমাদের সুবরাজ প্রিক্স-অব ওয়েল্সের ক্ফা প্রিন্-সেস মডের বিবাহের সম্বন্ধ হির হইরা গিয়াছে।

৫। পঞ্জাবের একটা প্রাসদ্ধ সম্ভান্ত
ক্ষত্রিয়-গৃহে একটা বিধবা-বিবাহ হইয়া
গিয়াছে।

৬। বোষের প্রবেশিকাপরীক্ষায় এবার ৮২ জন ছালী উপস্থিত হইয়াছে। তক্ষধা ৪৮ জন খুটান, ৩০ পার্দী, ৩ হিন্দু এবং একজন ইট্লী।

পুস্তকাদিসমালোচনা।

১। নারীরত্বমালা (সচিত্র)

শীবৈকণ্ঠনাথ দাস প্রণীত, মূলা ॥ আনা।
এই পৃস্তকে ছবির সহিত বিদেশীর ১১টা এবং
দেশীর ৩টা আদর্শ মহিলার জীবনী বর্ণিত
হইরাছে। ভগিনী ডোরা,ক্লোরেন্স নাইটিংগুলু ও ভারতেশ্রী ভিজৌরীবার চরিত

পাঠে কে না আনন্দিত ও উপক্ষত
হটনেন ? অস্তান্ত বিদেশীয়া রমণীরাও
বিশেষ বিশেষ গুণের খানা, প্রাণিত।
দেশীয় মহিলাদিগের নধ্যে বিদ্যাসাপরজননী হিন্দু গৃহহর লন্ধী, তর্মদত্ত প্রতিভার
ভীবত সূর্তি এবং রমাবাই নারীহিতরতে

আত্মোৎসর্গকারিণী। পুস্তকথানি অতি-সরল ও বিশুদ্ধ ভাষায় লিখিত হইয়াছে। ইহা একথানি স্থন্দর স্ত্রীপাঠ্য গ্রন্থ এবং গ্রন্থকার উৎসাহলাভের যোগ্য।

২। আমাদের লুর্দের কর্ত্রী—
পিতা এচ,এম,বোতেরো প্রণীত,মূল্য ॥৵৽
আনা। এই পুস্তকে কুমারী বার্ণাদেতানামী এক ফরাসী বালিকার অলৌকিক
দর্শনেরইতিহাদ বিবৃত হইরাছে। ইহা পাঠ
করিতে করিতে শ্রীমন্তের' কমলে কামিনী"
দর্শনের কথা মনেহয়। হিন্দুদিগের ভাষ
রোমান ক্যাথলিক্ গ্রীষ্টানেরা দেবলীলায়
বিশাদ করেন। পুস্তকথানির ভাষা প্রা
খৃষ্টানী নহে এবং তজ্জন্য ইহা পাঠ করিয়া
বঙ্গনারীগণ আনন্দিত হইতে পারিবেন।

ত। শকুন্তলা—শী অবনী ক্রনাথ ঠাকুর প্রণীত, মৃল্য । প্রানা। কবিবর কালি-দাসের অভিজ্ঞান শকুন্তলা যতদ্র সংক্ষিপ্ত সরল ভাষায় লিথিত হইতে পারে, তাহা হইয়াছে এবং পুন্তকথানি অনেকগুলি লিথোগ্রাফি ছবিদ্যারা স্লংশাভিত। পাঠিকা-দিগকে পুন্তকথানি এক এক বার পাঠ করিয়া দেথিতে অন্তরোধ করি। ৪। দেহতত্ত্ব — শ্রীকেদারনাথ কুলন্তি প্রণীত।ইহাতে দেহ সম্বন্ধীয় অনেকগুলি অবশ্য জ্ঞাতব্য বিষয় আছে। ইহার বিশেষ প্রশংসার বিষয় এই যে,বিজ্ঞানসমন্বিত ধর্ম্ম-ভিত্তির উপরে ইহার মীমাংসা সকল প্রতিশ্রুতি। বিশেষতঃ প্রাচ্য ও পাশ্চাত্য উভয়-বিধ শাস্ত্রের সারতত্ত্ব ইহাতে আছে। প্রকথানি কুদ্র হইলেও বর্ত্তমান সময়ের বিশেষ উপযোগী এবং ইহাতে যোগমার্গ-সম্মত্রে সকল নিগৃচ্তত্বের উল্লেখ হইয়াছে, তাহা বিশেষ চিন্তা ও আলোচনার বিষয়।

৫। কবিতা মুকুল, প্রথম ভাগ—
প্রীরামানন্দ চটোপাধ্যার এম, এ কর্তৃক
সম্পাদিত, মূল্য ৵৽আনা। ইহাতে ২১টী
কবিতা এবং অনেকগুলি স্থান্দর ছবি
আছে। কবিতাগুলি অতি সরল ও স্থান্দর
ইইরাছে। কবিতামুক্ল প্রথম পাঠ্য
কবিতা-পৃস্তকরূপে বিদ্যালয় সকলে গৃহীত
ইইবার যোগ্য।

৬। বালকপাঠ—শ্রীনবক্তম্ব ভট্টাচার্য্য প্রণীত,মূল্য ১০ আনা। ইহাতে গদ্য ও পদ্ম দরল প্রবন্ধ সকল আছে। পুস্তকধানি তৃতীয় ভাগ শিশুশিক্ষার স্থলে পাঠা হইতে পারে।

বামারচন।

কোথা আছি ?

উপরে অনস্ত শৃস্ত অগণা তারকা,

তৃতলে অগাঁধ সিন্ধু অনন্ত বাল্কা।
পার্শে ঘন বন-রাজি, উচ্চ গিরিখেণী,

শিপ্না.অনস্ত দিক্ আধার-মামিনী।
সন্মুথে শুলান-শ্যা। ভীষণ-আকৃতি,

উপরে বজাগ্নি-রেথা বিকট-মূরতি।

এ প্রাণ বাসনা-স্রোতে সদা নিম্নগামী,

মনেতে আশকা সদা,কোথা আছি আমি ?

শ্রীঅধুস্থাস্থল্যী দাস।

বামাবোধিনী পত্রিকা।

BAMABODHINI PATRIKA.

"कन्याप्येवं पालनीया शिचणीयातियत्नतः।"

ক্সাকে পালন করিবেক ও যত্নের সহিত শিক্ষা দিবেক।

৩৭৩

মাঘ, ১৩০২—ফেব্রুয়ারী, ১৮৯৬।

৫म कड़ा।

৪র্থ ভাগ।

J

সংখ্যা।

मामशिक अमन।

মাথোৎসব—৬৬ বার্ষিক মাঘোৎসব অক্সাক্ত বর্ষের ভাষ সমারোহে সম্পন্ন হইয়াছে। এই উপলক্ষে ব্রাহ্ম-বালিকা-বিভালয়ের পারিতোষিক বিতরণ হয়, তাহাতে ছোট লাট সন্ত্রীক সভাপতিষ করিয়া যথেষ্ট উৎসাহ দান করিয়াহেন।

নববর্ষের রাজপ্রসাদ—ইংরাজী নব-বর্ষ উপলক্ষে রঙ্গপুরের রাজা বাহাছর গোবিন্দলাল মহারাজা, তাহিরপুরের রাজা শশিশেথরেশ্বর রায় রাজা বাহাছর, বারু রামাক্ষর চট্টোপাধ্যার, শরচ্চন্দ্র দাস (সি, আই, ই) ও যছনাথ রায় রায় বাহাছর, বার নবক্ষধ্রায় রায় সাহেব, এবং ডাক্তার রাসবিহারী ঘোষ সি, আই, ই উপাধি পাইয়াছেন।

মোহনমেলা—কলিকাতার মাণিক-তলাত্ব মরিকৃষ্ লল্পনামক উদ্যানে একটা বৃহৎ মেলা হর, তাহাতে দেশীয় বিবিধ

পশিরের প্রদর্শন ও তৎসকে **অনেক**আমোদপ্রমোদেরও আরোজন **হইরা**ছিল।

বোদ্ধাই বিশ্ববিদ্যালয় — ইহার প্রবেশিকা পরীক্ষায় ৮২ জন ছাত্রী উপবিদ্ধ হইরাছেন, তন্মধ্যে ৪৮ পুটান, ৩০ পার্শী, ৩ জন হিন্দু এবং ১ অন ইহনী রম্গা।

দান—(১) মহিবাদলের রাজা জ্যোতিঃপ্রসাদ গর্গ বাহাহর লেঁওপালিতে একটা
দাতব্য চিকিৎসালয় প্রতিষ্ঠার জ্বস্ত ৪০০০
টাকা দান করিয়াছেন এবং বর্ষে বর্ষে
১০০০ টাকা করিয়া দিবার অস্পীকার
করিয়াছেন। (২) বিজ্ञসনগর্মের মহারাজা লেডী ডকারিণ কথে, এ বংসর
২৮০০০ টাকা দান করিয়াছেন। প্রভ

महीम्दात तायकननी-हिन वक्षत

বিদ্বী রমণী ও অলেষ গুণে গুণবতী। ইনি ইংরাজী, সংস্কৃত, ক্যানারীস্, হিন্দু-স্থানী ও গুজ্রাটী ভাষায় স্থপণ্ডিতা।

কলিকাতা বিশ্ববিদ্যালয়—সার আল্দ্রেড্ ক্রন্থট আর এক বংসরের জন্ম বাইস্
চানসেলার হইয়াছেন। রায় যতীক্র নাথ
চৌধুরী, বাবু লালবিহারী মিত্র এবং
ডাব্রুলার স্পরেশ চক্র সর্বাধিকারী নৃত্রন
ফেলো মনোনীত হইয়াছেন।

নূতন মহাদেশ আবিকার—নরওয়ের
নাবিক বর্ক গ্রেভিন্ পৃথিবীর দক্ষিণ মেরদেশে এক নূতন মহাদ্বীপ আবিকার
করিয়াছেন। ইনি দক্ষিণ অক্ষরেথার ৭৪
অংশের মধ্যে আডেয়ার নামক এক
অন্তরীপে অবতীর্ণ হন। তথায় উত্তর মেরদেশ অপেকা শীত অনেক কম। তিনি
খনি আবিকার করিতে করিতে অগ্রসর
হুইতেছেন।

বাঙ্গালীর গৌরব—ফরাসী চন্দননগর-নিবাসী বাবু ছেগাঁচরণ রক্ষিত
মহাশয়কে ফরাসী সাধারণতন্ত্রের সভাপতি
শাইট সিভেলিয়ার ডিলা লিজন ডি

ষ্পনর" (knight chevalier de la legion D' Honour) নামক উপাধিতে ভূষিত করিয়াছেন।

ইংরাজদের উল্ফীপ্রিয়তা—বিলাতে
নাকি বিবিরা উল্পীভক্ত হইয়াছেন, নানা
বর্ণের উল্পী পরিতেছেন। পুরুষেরাও
কম নহেন। পার্লেমেণ্টের জ্বনৈক সভ্য
তাঁহার স্ত্রী ও ৫টা পুল্র ক্সার শরীরে
তাহাদের নাম ধামের উল্পী চিত্রিত করিয়া
লইয়াছেন।

আশ্চর্য্য গামোছা—এক প্রকার তোয়ালে প্রস্তুত হইয়াছে, উহা অপরিকার হইলে গন্গণে অগ্নিতে ফেলিলে কিয়ংক্ষণ পরে ধোপার বাড়ীর ইস্ত্রী-করা কাপড় অপেক্ষাও পরিকার হইয়া আদে।

দম্পতী-তর্ক—স্থইজরলণ্ডে এক আইন আছে, তদমুসারে প্রত্যেক বিবাহিত নব-দম্পতীকে বিবাহাস্তে স্বহস্তে বৃক্ষ রোপণ করিতে হয়। বিবাহের দিন পাইন্ ও উইলো বৃক্ষের চারা রোপণ করিতে হয়। ইহা একটী স্থলর প্রথা।

রুষ রমণীর উন্নতি ও অধিকার।

অভিদ্রদেশ ক্ষিরাতে ক্ষ ভগিনীগণ দিন দিন নানা প্রকার সামাজিক ও
রাজনৈতিক বাধা অভিক্রম করিয়া,
কেমন উন্নতি লাভ কুরিতেছেন, তাহার
বিবরণ লগুনের কোন এক সাময়িক পত্রে
এক্দিন পাঠ করিয়া নিরতিশর আনন্দ

লাভ করিয়ছিলাম। বামাবোধিনীর পাঠিকা ভগিনীগণও তাহা অবগত হইয়া আনন্দ লাভ করিতে পারিবেন, এই মনে করিয়া, তাহা সম্বলনপূর্বক তাঁহাদিগের সম্মুধে ধরিতেছি। নরনারীর অন্তরাম্মা যধন সেই পূর্ণ জ্ঞানের দিকে ধাবিত হয়, ভবন তাহা আর কোন বাধাবিদ্ধ মানে না এবং কোন বাধাবিদ্ধও তাহার গতি কিছুতেই রোধ করিতে সমর্থ হয় না; বরং তন্মধ্য হইতে এমন সকল অমুকূল অবস্থা প্রস্তুত হয়, য়দ্বারা সকল বাধা, সকল বিদ্ধ, সকল অন্তরায় ক্রমে ক্রমে অপসারিত হইতে দেখা যায়। ছজ্জয় রাজশক্তি, ইছ্যা সন্দেও, অবলাগণের জ্ঞানার্জ্ঞনী স্পৃহাকে ধর্ম করিতে পারিতেছে না, এ দৃশ্ব অতীব মনোহর। ক্রমরমণীর জ্ঞানোপার্জ্জন প্রবৃত্তি এতাদৃশী বলবতী না হইলে ক্ষের বর্ত্তমান উন্নতি-ল্রোত বহুশতান্ধী পশ্চাতে পড়িয়া থাকিত।

অদ্ধশতান্দী কাল পূর্বের রুষ মহিলা-গণের অবস্থা অতীব শোচনীয় ছিল। অনেক মহাত্মা, সময়ে সময়ে, দেশীয় মহিলারন্দের অবস্থা উন্নত कतिवात अन्य वक्तशतिकत्र इहेग्राहित्नन, কিন্তু কৃষ গ্ৰণ্মেণ্ট বিক্লাচরণ করাতে তাঁহারা সফল-মনোর্থ হইতে পারেন নাই। তবে ইহাঁদিগের উদ্যোগে সম্বাস্থ महिनाशरंगत्र मर्शा संरक्षिश প্রবর্ত্তিত হইয়াছিল মাত্র; তাহাও নিহাস্ত অকিঞ্ছিংকর। মাতৃভাষার সঙ্গে সঙ্গে কিছু ফরাসী ভাষা, দঙ্গীত ও দেলাইএর কার্যা শিক্ষাতেই ক্লয় ভদ্রমহিলার উচ্চ-শিক্ষার পরিসমাঝি হইত। মহিলা-বৃদ্দের উচ্চশিক্ষাবিধানার্থ এতাবংকাল কোনও কলেছ ছিল না। স্থলের সংখ্যা এত কম ছিল বে, তাহা আদৌ উল্লেখযোগ্য नहर । ১৮৬२ वृः जत्म, मर्सक्षयस्य, तम्के-

পিটার্সবর্গ নগরের মেডিক্যাল কলেকে क्रय व्रम्पीशन প্রবেশাধিকার লাভ করেন। এই জন্ত ক্ষম অবলা-বান্ধবগণকে বথেষ্ট সংগ্রাম করিতে হইয়াছিল। পালনীয়া শিক্ষীয়াতি যত্ত:" এই সমুন্ত হিন্দুনীতি ও অনুশাসন কব গ্ৰণ্মেণ্টের क्रमग्रक्य क्यांहरण हेहामिश्र विभिष्ठेक्र আয়াস স্বীকার করিতে হইয়াছিল। অব-শেষে গ্রণমেণ্টের মত পরিবর্ত্তিত হইল। व्यवना-श्टिखि-शर्गत्रहे अत्र हरेन । ১৮৬8 খু: অব্দে সর্ব্ধপ্রথম রুষ মহিলাগণের **প্রভ** ক্ষয়ির অনেক সহরে কলেজ সংখাশিত হর ৷ ক্বরমণীগণের সমুন্নতি **অভ যে সকল** মহাত্মা বন্ধপরিকর হইয়াছিলেন, ভন্মধ্যে মাইকেল মিকেলবের (Michael Mikailov) নাম বিশেষ উল্লেখযোগ্য। ইইার হৃদয়োমাদক কবিতা সকল ক্লম জাতির সুসুপু স্নয়কে স্ত্রীশিক্ষার অসুকূলে জার্মত করিতে সমর্থ হইয়াছিল। ছঃখের বিষয় ইনি অকালে সাইবেরিয়ার মান্**বলীলা** সংবরণ করেন।

মিকেলব-প্রম্থ স্ত্রীলিক্ষার উদ্যোগিগণ
রাজা প্রজার মনে যে উৎসাহায়ি প্রজানত
করিয়া দিয়াছিলেন, তাহা তালপত্রের
অগ্রির ভার বহুক্ষণ স্থায়ী হইল না।
অতার কালের মধ্যে সমপ্র রুষ সাম্রাজ্যে
স্ত্রীলিক্ষার যে প্রবলাজ্বাস দৃই হইরাছিল,
১৮৬৬ খৃঃ অবেদ জাবার তাহার প্রতিক্রিরা
দেখা গেল। মহিলাগণের অক্ত প্রতিক্রিরা
সমস্ত কলেজ একবারে বন্ধ হইরা গেল।
ব্রীশিক্ষার লোত একবারে অবক্রম হুইল।

এই সমরে ছইজন ক্ষ মহিলা স্বদেশীয় মেডিক্যাল কলেজে উচ্চল্রেণীতে চিকিৎসা-অধ্যয়ন করিতেছিলেন। দিগের পাঠ সমাপ্তির আর অতি অল্লকাল বাকী ছিল মাত্র। কেলেজ বন্ধ হওয়ায় অগতা ইহারা স্বদেশ পরিত্যাগ করিয়া কোন বিদেশীয় কলেজে প্রবেশলাভ করিয়া পাঠ সমাপ্ত করিলেন। অনেক সংগ্রামের পর রুষ মহিলাম্বয়কে, মেডিক্যাল আকাডেমীতে অখ্যয়ন করিয়া, শেষ পরীকা অমুমতি প্রদান করিয়াছিলেন, তথাপি ইহারা গবর্ণমেন্টের একপ্রকার অকিঞ্চিৎ-কর অমুগ্রহের জন্ম অগণ্য দিয়া বিদেশেই পাঠ সমাপ্ত করিতে সকল-বতী হইলেন। যুবতীদ্বয় কিছুতেই সকল হইতে বিচ্যুত হইলেন না। এই ঘটনাতে সমগ্র রুষ-সাম্রাজ্যে এক মহা আন্দোলন সমুখিত হইল। এই অন্দোলনের ফলে মহিলাগণের জন্ম রুষ দেশে কয়েকটি প্রাইভেট কলেজ প্রতিষ্ঠিত: হয়। এই সকল 'কলেজ হইতে সমৃতীৰ্ ছাত্ৰী-গণ কোন প্রকার ডিগ্লোমা বা উপাধি লাভ অথবা রাজসরকারে কোন প্রকার উচ্চপদ লাভ করেন নাই, তথাপি চতুদ্দিক হইতে দলে দলে ছাত্রীগণ আগ্রহের সহিত षामित्रा এই मकन कलाइन ক্ষরিতে লাগিলেন। তথাতীত বহুসংথাক क्य तमनी जाननामिरगत याजाविक छान-পাসা চরিতার্থ করিবার অস্ত দলে দলে হদেশ পরিত্যাগ করিয়া বিদেশীয় কলেজে

প্রবেশলাভ করিলেন। অত্যর কালের মধ্যে অর্থাৎ ১৮৭০ খৃঃ অব্দে প্রায় একশত ক্ষম রমণী জ্বিচ্ বিশ্ববিদ্যালয়ে চিকিৎসা-শাস্ত্র অধ্যয়নে প্রবিষ্ঠ হইলেন।

কৃষ গ্ৰহণমেণ্ট দেখিলেন. প্রতিবংসর উচ্চশিক্ষার্থিনী রুষ মহিলারা দলে দলে স্থদেশ পরিত্যাগ করিতেছেন: বিশেষতঃ বিদ্রোহিদলের কেন্দ্রস্থল জুরিচ বিশ্ববিদ্যালয়ে প্রবেশলাভ করিতেছেন. ইহা রুষ সাম্রাজ্যের পক্ষে মঙ্গলজন ক नरह। कि जानि करव वा এই সকল মহাশক্তি কোন বিপদ ঘটাইয়া বসে, এই আশন্ধা করিয়া রুষ গবর্ণমেণ্ট রুষ মহিলা-গণকে স্বদেশে রাথিয়া উচ্চশিক্ষাদানার্থ আবার ক্রতসকল হইলেন। সেণ্টপিটাস -মেডিক্যাল আকাডেমী অবৈতনিক মেডিক্যাল কলেজে পরিণত আবার রুষ মহিলাগণ কলেজে অবাধে অধায়ন করিয়া পাঠ সমাপ্ত করিতে माशियन । দেশমধ্যে ডাক্তারের সংখ্যা দিন দিন বৃদ্ধি হইতে লাগিল। ক্ষ-তৃকী যুদ্ধের সময় বছসংখ্যক রুষ মহিলা-ডাব্রুবার আপনাদিগের উপ-যোগিতার পরিচয় দিয়াছেন। এই জন্ত ইহারা রুষ গ্বর্ণমেণ্ট কর্ত্তক বিশিষ্টরূপে পুরস্কৃতা ও সম্মানিতা হইয়াছিলেন।

১৮৮০ খৃ: অব্দের প্রারম্ভকালে কব-সমাট সাম্রাজ্যমধ্যে স্ত্রী ও শিশু চিকিৎসার জন্ত মহিলা ডাক্তার নিয়োজিত করিবার বিধি প্রচার করেন। ঠিক্ এই সময় জনৈক ক্ষম মহিলা সেণ্টপিটার্স্বর্গ মেডিক্যাল কলেকে অধ্যাপিকার পদে। নিযুক্ত হন।

১৮৭৮ খঃ অব্বে সেণ্টপিটার্সবর্গ ও কিব (St. Petersburg and Kiev) নগরে আরও কয়েকটা মহিলা-কলেজ সংস্থাপিত হয়। এখানে ভাষা, গণিত, প্রকৃতিবিজ্ঞান, ইতিহাস, মনোবিজ্ঞান, অর্থনীতি ইত্যাদির শিক্ষা প্রদত্ত হইতে লাগিল। এই সকল কলেজে প্রতিবৎসর চিকিৎসাবিভাগে প্রায় ৫০০ পাঁচ শত ও অন্তান্ত বিভাগে প্রায় ৮০০ আট শত অধ্যয়ন করিতে লাগিলেন। ছাত্ৰী মেডিক্যাল বিভাগের ছাত্রীসংখ্যার মধ্যে প্রায় অর্দ্ধেক বিবাহিতা। বলা বাহণ্য, সেণ্টপিটার্স বর্গ বিশ্ববিদ্যালয়ের ছাত্রগণের সহিত ইহাদিগের পরিণয়ক্রিয়া সম্পন্ন হওয়াতে মণিকাঞ্চন যোগ সংঘটিত হইয়া-ছিল। কিন্তু ছাত্রাবস্থায় বিবাহ হইলে ছাত্রজীবনের উন্নতির বিদ্ন উপস্থিত হয়, এই বলিয়া কৃষ সমাট "ছাত্রাবস্থাতে क्टिहे विवाह कतिए शातिरव ना" धहे श्राक्रविधि श्रीय त्राकामस्या श्राचेत्र करत्रन । মেডিক্যাল কলেজ প্রতিষ্ঠার ১৫ বংসরের মধ্যে ৬০০ মহিলা-ডাব্রুার ক্ষদেশে व्याञ्च ७ इहेरनन । हेई। मिर्गत मर्पा একভৃতীয়াংশ অধাৎ ২০০ চুইশত মহিলা পল্লীগ্রামস্থ ক্লয়কদিগের মধ্যে, কতকগুলি জেলাতে জেলাতে, কতকগুলি স্থল কলেজে ও গবর্ণমেন্টের আফিসে কার্য্য করিতেছেন এবং কতকপ্তলি স্বাধীনভাবে চিকিৎসা ব্যবসার করিবা জীবিকার্জন করিতেছেন। নানা প্রকার প্রত্যক্ষ বা গরোক অস্তরার , সংস্কৃত ক্রমহিলাগণ ক্রমশঃ উন্নতিশিধরে আরোহণ করিডে-ছেন। একণে প্রার ৩০০ তিন শত ক্রম মহিলা প্যারী; ভ্রিচ্, বারণ, ও জেনিডা বিশ্ববিদ্যালয়ে চিকিৎসাশাল্প অধ্যরনে নিযুক্ত আছেন।

চিকিৎসা শিকাদানার্থ ছইটা কলেজ चाहि, धथान वहमःशक महिना निका লাভ করিতেছেন। অনেক ক্লব মহিলা একণে খুল কলেজে শিক্ষাজার কার্য্য বাতীত টেলিগ্রাফ-বিভাগেও করিতেছেন। তিন বংসর পূর্বে অনৈক ক্ষ মহিলা সাহাব্রিয়ার টোমক নগরের এক আদালতে ওকালতি ব্যবসামে প্রব্রস্ক ८४८म महिनाश्यक रहेशाइन । क्रव রাজনৈতিক यगापि दकान প্রকার অধিকার থাকা সম্ভবপর হয়, তবে ভাহাও মিউনিসিপাল নির্বাচনালিতে क्रवमहिनाशन, देव्हा क्रितन, रक्षां निरष्ठ शास्त्रम । निम्नात्र्यात्र महिनाशास्त्र मध्या अत्मकतक जाकशियत्मत्र अ कोकिमाद्यव কার্য্য করিতে গুনা বার। অধিকাংশ ब्बल्य करवती नाकि क्री-करमाहेवन কৰ্ত্তক এক স্থান হইতে স্থানান্তৱে নীত इम् । অতি অझ कान इंटेन, स्टेनक स्व महिला সরসটোব গ্রথমেন্ট্র अधीनक कान **क नशरहत्र अधान मालिए हेट ऐस** भाग नित्राभिका इहेबाह्न ।

अभारता नाथ रान्त्राम ।

দ্রীলোকের নির্দোষ আমোদ।

(গত প্রকাশিতের শেষ)

সাধারণ বঙ্গবাসিনীদিগ্রের অবস্থা ও উপযোগিতা আলোচনা করিয়া, আমাদের সহজ বৃদ্ধিতে যে সকল বিষয় তাঁহাদের নির্দ্ধোষ আমোদের উপযোগী বলিয়া বোধ হয়, আমরা পাঠিকা ভগিনীদিগের অব-গতির জক্ত সংক্ষেপে তাহা লিখিতে প্রবৃত্ত হট্টলাম।

এ অগতে আমে৷দের জিনিব হুই थकात्र। थ्रथम टेनमर्गिक, विजीय मानव-স্ষ্ট। আমরা আগে বলিয়াছি, চিত্ত-রঞ্জিনী রন্তির চরিতার্থতায় যে আনন্দ, তাহাকেই আমরা ''আমোদ'' বলি। প্রাকৃতিক **শগতে চিত্তরঞ্জিনী** বুত্তি চরিতার্থ-কর যে অস্থ্য জিনিস রহিয়াছে, ইহা কে না জানেন ? ভাই বলিভেছি, নবোদিত রবির লোহিত কান্তি, টাদের মধুর জ্যোৎলা, কুলের মনোহর ছটা, বিহঙ্গের স্থললিত গীঙি, মৃত্ব ৰাতাসের অংথ-মাধা হিলোল, নদীর উচ্ছাসময় স্রোত, পর্বতের অটল গন্তীরাক্তি, সমুদ্রের ভীমা বিস্তৃত নীলিমা, ছর পাতুর বিচিত্র দবীনতা---এ স্বই मानरवत्र विखत्रिक्षनी वृखित कृष्टिकतः, नवह मानर्वत्र कार्मारम्य किनिय। এই क्रम्स সৌন্দর্য্যের রাজ্যে আসিরা গান্তীর্য্যের ष्मप्रतारम, ७ कजात ष्मस्रतारम (व वाकि এই **অনুৰ নৌন্দ**ৰ্য্য **উপে≱া** করে ভাহার ভ হুর্ভাগ্য কে আছে, আমরা ভানি না। আবার এই অনস্ত সৌন্দর্য্যের স্রোতে আপনাকে ছাড়িয়া দিয়া যাহার মনে অনস্ত স্থলর বিশ্বস্থার নাম ক্ষরণ হয় না, তাহার মত হুর্ভাগা লোকে কল্পনার আঁকিতে পারে কি না তাহা আমরা জানি না।

প্রাকৃতিক সৌন্দর্য্যে মান্তবের মন আপনা হইতেই মুগ্ধ হয়। এরূপ মুগ্ধতায় वांधा ना मितन व्यर्थां वनश्रुक्षक मनत्क বিষয়ান্তরে নিয়োজিত না করিলে, প্রাক্ত-তিক সৌন্দর্য্যকে ক্রমশ: আমোদ উপ-ভোগের প্রধান জিনিস্বলিয়া বোধ হয়। সহদর বন্ধর সহিত অথবা লেহাম্পদ বালক বালিকার সহিত মিলিয়া ইহার উপভোগ যে কত স্থথের, আমার পাঠিকা ভগিনী যদি ভুক্তভোগিনী হন, তাহা হইলেই বুঝিতেছেন। আমার পাঠিকা ভগিনীদের মধ্যে যাঁহাদের স্থবিধা আছে. তাঁহারা সহৃদয় বন্ধু অথবা ম্বেহাম্পদ বালক বালিকার সহিত বাড়ীর উঠানে (বা দেই রকম স্থানে) একটা ছোট খাট ফুল বাগান করিতে পারেন। সে অযোদ ধেমন নির্দোব, সেইরূপ অফুরস্ত। ভগিনি। বৰ্ষন ভোমার স্বহন্ত-প্রস্তুত কুলের গাছে কচি কচি পাতা উঠিবে, বখন কলিকা क्रमणः क छत्नाचुरी इहरत, वसन खतरक खराक कुन कृषिया राशान आरना कत्रिया হাসিবে, বখন প্রজাপতি তাহার স্থন্দর

"পোষাক"-পরা দেহটী কাঁপাইয়া ফুলে ফুলে বেড়াইবে, যথন তোমার গোলাপ তব্দর ডালে বসিয়া দোয়েল পাখী মধুর ঝক্কার করিবে, যখন জ্যোৎসা-রাত্রে চাঁদের আবো মাথিয়া তোমার সাধের ফ্লগুলি স্থপন্ধ ছড়াইতে থাকিবে, যথন তোমার আত্মীয় বন্ধুদিগকে তোমার ফুল "উপহার" স্বরূপ ভক্তি, প্রীতি বা সেহের হল্তে দান করিবে, সকলের উপরে দেই স্থলর শোভা-ময় ফুলের বাগানখানি যথন বিখেখরের চরণে মনে মনে উৎসর্গ করিবে, তথন পাঠিকা ভগিনি! তুমি অনস্ত, অফুরস্ত, আমোদে আমৌদিতা হইবে।এ প্রাক্তিক আমোদ অবহেলা করিও না। তাহা হইলে (প্রাক্কতিক) নির্দোষ আমোদ উপভোগ করিতে পারিবে।

ছিতীর প্রকারের আমোদ মানব-স্ট। ইহাও বছবিধ; আমরা সংক্রেপে ইহার কয়টী প্রধান বিষয় লিখিতে প্রবৃত্ত হইতেছি।

১ম কবিতা—সুক্ষচিপূর্ণ কবিতা যে
মানবের বিশুদ্ধ আমোদের এক প্রধান
উপকরণ, এ কথা বোধ হয় অনেকেই
জানেন। ইহা পড়িতে যেমন আনন্দ,
লিখিতেও তদধিক। ইহা রমণীর উপযোগী। আমার বোধ হয় স্ত্রীজাতির মধ্যে
জনেকেরই কবিতা-রচনার-অহরাগ আছে।
সেকালে বল্ধ-মহিলাগণ নিরক্ষরা ছিলেন,
তথনও তাঁহারা অনেক কবিতা ও প্রবচন
মুখে মুখে রচনা করিতেন। তাঁহাদের
রচিত কবিতা এ দেশে "হড়া" বলিরা

বিখ্যাত। এখনকার জনেক রমণী লেখা
পড়া শিখিয়াছেন, তাঁহাদিগের মধ্যেও
কবিতা রচনা করিতে জনেকে অস্বরকা।
বামাবোধিনা, নবাভারত, ভারতী, সাহিত্য,
অস্পদ্ধান প্রভৃতি বহুতর সাময়িক পত্রে
বঙ্গমহিলাগণ কবিতা লিখিয়া থাকেন।
এইরূপ কবিতাচর্চায় রমণীগণের নির্দোষ
আমোদ অস্পীলিত হয়, হৃদয়ের উন্নভি
সাধিত হয়। বাঁহারা নিজে লিখিতে না
পারেন, তাঁহারা কোনও স্কবির রচিত
বিভদ্ধ কবিতা স্থাগণের নিক্টে আরুদ্ধি
করিলেও জনেক তৃপ্তি লাভ করিতে
পারিবেন। যিনি পারেন, তিনি স্থামিই
বিভদ্ধ কবিতা লিখিবেন।

২য় সঙ্গাভবিভা—সঙ্গীত কৰিতারই
অফ্রপ। বরং ইহা হ্ররতান লয়ে গীত
হয় বলিয়া কবিতা অপেক্ষা অধিকত্তর
মোহিনী-শক্তি-বিশিষ্ট। বহুদেশে (বিশেষতঃ
পলিথামে) জ্রী-কণ্ঠ-নিংম্বত গীতি
সাধারণের কর্ণে প্রবেশ করা বড়ই
লজ্জার কথা। আজি কালি ধনিগৃহের
বালিকাদিগের মধ্যে কেই কেই সঙ্গীতবিজ্ঞাশিক্ষা করিতে পারিতেছে, ইহা বড়ই
হুথের বিষয়। সঙ্গাতেও জ্রীজ্ঞাতির
বিশেষ অস্থরাগ দেখা বায়—আজি বে

^{*} পরিগ্রাম-বাসিনীর। শিক্ষার অভাবে উপর্ক্ত সলীত শিথিতে পান না। কিন্তু সলীত শিথিবার প্রবৃত্তি নারী-শুদরে প্রবল কি নাগ তাই অনেকে কুলচিপূর্ণ সলীভও শিক্ষা করিয়া বাকেন। অপ-রাধ কাহাকে দিব !—সেটা ''সজ্জার কর্মা' নহে কেন !

वानिका विलागित निका शहिशाह विनश সঙ্গীতে বঙ্গমহিলা অমুরক্তা, এমন কথা **क्ट रामिश्र ना** ; ठीकूत्र मा वृजीत कर्छ-নি:স্ত ঘুমপাড়ানি গান, খ্রামাবিবয়ক গান বতদিন আমার মনে-থাকিবে, ততদিন चामि जुनिव ना एए, मिकारने दमनी-**पिरिशंत मर्था मनी** जिल्ला हिन । যাহা হউক, বিশুদ্ধ-ভাব-পূর্ণ সঙ্গীত ও হার্-মোনিয়ম, পিয়ানো বাদন বঙ্গমহিলা-দিগের মধ্যে প্রচলিত হইলে স্ত্রীজাতির নিৰ্দোষ আমোদ অমুশীলনের এক প্রধান উপার হয়। হার্মোনিয়ম বা পিয়ানো যদি ব্যর্গাধ্য হয়, পাঠিকা ভগিনী অল টাকায় একটা 'একোডিয়ম' কিনিতে পারেন। ইহাতেও গীত, গৎ বাজাইতে পারা যায়; স্মরও স্মমিষ্ট। এইরূপে প্রতি-দিন বিশ্রামদময়ে (এ আমোদ প্রভাতে ও সন্ধাকালে অধিকতর হৃদয়গ্রাহী). উপাসনা বা সন্ধ্যাবন্ধনা সময়ে গীত বাছা-स्क्रीरन कामग्र विरमयः आरमानिक इहेरक পারে; ভগবডক্তিও অমুশীলিত হয়: এবং একাজে বন্ধু বান্ধবেরা বিশেষ প্রীত হইতে भारतन ।

্ন্তা সঙ্গীতের অঙ্গবিশেষ। কিন্ত এ দেশে বে রকম নৃত্য প্রচলিত, তাহা আমরা রমণীকুলের উপযোগী বলিতে পারি না।

তর শিব্ধ শিব্ধ রমণীর উপযোগী
নির্দোষ আনোদের একটা স্থলর জিনিব।
ক্রিবাহি, কোনও ইং ইরোপীয় মহিলা
ক্রিবাহ উলের ফুল প্রস্তুত ক্রিয়া-

ছিলেন যে, তাঁহার বন্ধুগণ প্রকৃত ফুল ভাবিয়া অপ্রতিভ হইয়াছিলেন। महिनागन निर्ठानित छन, खरन छून, पुमूत-जिकां करन हिनित्र शाना, जामरनत्र नीरह ইষ্টক খণ্ড প্ৰভৃতি কাজে নতন জামাতার वृक्ति भदीका ना कविया यनि हरबारवाशीय মহিলার মত শিল্পের সৌন্দর্যো জামাতা-দিগকে অপ্রতিভ করিতে পারেন, তাহা হইলে কত আমোদের বিষয় হয়। কবি-বর মাইকেল মধুস্থদন দত্তের পিতা রাজ-নারায়ণ দত্ত মহাশয়কে, আহারকালে তাঁহার এক আত্মীয়া এক থণ্ড কার্চ দ্বারা ক্রত্রিম কই মাছের মুড়া করিয়া দিয়াছিলেন ; উহা এত স্থন্দর হইয়াছিল যে, দত্ত মহাশয় "দত্য" মনে করিয়া তুলিবার উদ্যোগ করিয়াছিলেন, অবশেষে জানিতে পারিয়া রচয়িত্রীকে বিশেষ প্রশংসার সহিত ২৫ টাকা পুরস্কার দেন। সেকালের এমনতর অনেক গল্প শুনা যায়। নবীনাগণের মধ্যে এই রকম শিল্পনৈপুণ্য প্রচলিত হওয়া আবিশ্রক।

৪র্থ চিত্র—চিত্রবিভাও রমণীর উপ-বোগী স্থানরও নির্দোষ আমোদের জিনিষ। স্থানর ছবি আঁকিয়া ঘরে রাখিতে, বন্ধ-দিগকে দেখাইয়া সম্ভষ্ট করিতে কভই আমোদ হয়! কিন্ত ছংখের বিষর,এ দেশে স্ত্রীকাতির মধ্যে এ কিন্তা প্রচলিত হয় নাই। চিত্রবিভা ও ফটোপ্রাক করিতে শেখা শ্রীকাতির মধ্যে প্রচলিত হইলে বড়ই স্থাধ্য হয়।

৫ম হাস্ত-রস-উদ্দীপক গল-বিভদ্ধ-

ভাব-পূর্ণ হাস্ত-রদ-উদ্দীপক গল্প হইতে
নির্দোষ আমোদ যেমন অনুশীলিত হয়,
বন্ধুগণও সেইরূপ প্রীত হন। যাঁহাদিগের ক্ষমতা আছে, তাঁহারা গল্প রচনা
করিয়া বন্ধুদিগের সন্তুষ্টি সাধন করিতে
পারেন। অন্তথা হাস্ত-রসোদ্দীপক গল্প
শিথিয়া বন্ধুদিগের নিকট বলিতে পারেন।
কিন্তু এই কাজে একটা বিশেষ সতর্কতা
আবশ্রুক এই যে, কেহ যেন গল্প শুনিয়া
মনে না করে যে, "আমার উপরে শ্লেষ
করা হইতেছে", কোনও গল্লের ভাব, যেন
সেরকম না হয়।

৬ষ্ঠ। দেশভ্রমণ—"দেশভ্রমণ" বঙ্গমহিলাদিগের পক্ষে অসঙ্গত নহে। তীর্থদর্শন উপরক্ষে হিন্দু রমণীগণ গল্পা, কাশী,
প্রয়াগ, অযোধ্যা, প্রীক্ষেত্র, সাগরসঙ্গম
প্রভৃতি কত স্থানেই ভ্রমণ করিয়া থাকেন।
উপযুক্ত অভিভাবকের সহিত এই সকল
স্থানে ভ্রমণ করিলে নির্দোষ আমোদের
সহিত ভক্তি, জাতীয় ভাব, অভিজ্ঞতা,
সবই লাভ হইতে পারে।

৭ম। বৈজ্ঞানিক উপায়—বৈজ্ঞানিক উপায়ে নির্দোষ আমোদ উপভোগ করা যার; তাহা অধিকতর কৌতৃকপ্রদ। ম্যাজিক লঠন, কৃত্রিম ফোয়ারা, অণ্-বীক্ষণ বোগে কুত্রতম বস্তু দর্শন ইত্যাদি বছবিধ আমোদের জিনিস আছে। তাহা সাধারণ মহিলাগণের পক্ষে ছঃ-সাধ্য বিবেচনার বিস্তৃতভাবে লিখিতে

কাস্ত হইলাম। প্রধানতঃ এই সকল উপারে নির্দোধ আমোদ অমুশীলিত হইতে পারে।

পরিশ্রান্ত শরীরের পক্ষে নিজা যেমন উপকারিণী, পরিশ্রান্ত মনের পক্ষে আমোদ সেইরপ উপকারক। মারুরের শরীর যতই শ্রমকাতর হউক না কেন, একবার ঘুমাইয়া উঠিতে পারিলে আলভ ওদাভ দ্র হয়, আবার ন্তন ফুর্তিও উভ্তম জাগে। মারুরের মনও যতই অবসয়, যতই বিরক্ত হউক না কেন, একবার আমোদ উপভোগ করিতে পারিলে আবার ফুর্তিপ্রাপ্ত, আবার প্রকৃতিস্থ হয়। দয়ময় জগদীশর এমন জিনিস যথন আমাদিগকে দিয়াছেন, তথন আমরা ইহা তাঁহার আশ্রেরে দাড়াইয়া উপভোগ করিতে পারিলে আমাদেরই জীবন সার্থক হইতে পারে।

উপসংহারকালে তোমাকে বলি,
পাঠিকা ভগিনি! এ সংসারে পবিত্র
আমোদের মূল সরলতা ও প্রফুল্লতা।
তাই সর্প্রমঙ্গলময় ভগবানের চরণে
প্রার্থনা করি, বঙ্গবাসিনীগণের মন সরল
হউক, জ্লয় প্রফুল হউক, তাঁহারা
নির্দোষ আমোদ উপভোগ করিয়া হলয়,
গৃহ ও সমাজে বিভন্ধ আনন্দ প্রবাহিত
কর্মন্। ভগবান্ তাঁহাদের সহায়
হউন।

শ্রিমা

আলোক-বিশ্লেষণ যন্ত্ৰ।

একটা ঝাডের কলম রেটেরে ধরিলে কত রঙ্ ফলে। নির্মাণ কাচে ভল সুর্য্যক্রিরণ পড়িয়া যখন এত রঙ্ ফলে, তথন বুঝিতে হইবে সুর্য্যের রশিতেই অত রঙ ছিল। অতা দিক্ দিয়াও কথাটা বুঝা ঘাইতে পারে। ঝাড়ের কলম त्त्रोद्ध धतिरण रय १ छ तक करण, रमह ণ্ট রঙ যদি একতে মিশান যায়, তবে শাদা রঙ হয়। সুর্য্যের রশ্বিও শুভ্র, তাই বৃঝিতে পারা যায় যে, শুভ্র সুর্য্যরশি ৭টা রঙ্গের সমষ্টি। আর একটা কথা এই যে, কোণাওয়ালা কাচ দিয়া, সুর্য্য-বুশ্মি অথবা সকল প্রকার আলোকই ভাগ করিয়া ফেলিতে পারা যায়। প্রকার ভাস্বর বা প্রদীপ্ত পদার্থ হইতে নি:স্ত আলোকের বিভাগ বা বিশ্লেষণ করিবার জন্ম একটা যন্ত্রের স্থাষ্ট হইয়াছে. ভাহার নাম আলোক-বিশ্লেষণ যন্ত। সে যন্ত্রে ভাস্বর পদার্থের আলোক পড়িলে একটা আলোক-বীথিকার স্ষ্টি হয়, অর্থাৎ দেখিতে পাওয়া যায় যে, আলোকটি সারি বাঁধিয়া নানা রঙ্গে বিভক্ত হইয়া স্থানে একটা কথা পড়িয়াছে। g বলিয়া রাখি। কোন একটা সকোণ कनटकन्न मधा भिन्ना आलाक हानाहेना আনিলে "একটা পরদার উপর যেমন ক্রাক-বীথিকার স্থানী করা यांग्र. আলোক-বিল্লেষণ বন্ধে তেমনটা হয় না।

এই যন্ত্রের মধ্য দিয়া দেখিলে আলোকশ্রেণী বা বীথিকা দর্শকের চক্ষু-দর্পণে প্রতিফলিত হয় মাত্র। আবার এই বিভক্ত আলোক দেখিয়া মূল আলোকটি কোন পদার্থ হইতে নি:স্থত, তাহা বৃঝিতে পারা যায়। লোহা উত্তপ্ত করিয়া যদি তাহার আলোক এই যন্ত্রে প্রতিফলিত করান যার, তাহা হইলে যে প্রকার আলোক-বীথিকার স্ষ্টি হইবে, তাহার সহিত অন্ত ভাস্বর-পদার্থ-নিঃসত আলোক-বীথিকার পার্থকা দেখিতে পাওয়া যায়। কাজেই আলোক-বিশ্লেষণ যন্ত্ৰে প্ৰতিফলিত আলোক-ৰীথিকা দেখিয়া বুঝিতে পারা যায় যে, অমুক আলোক অমুক প্রদীপ্ত ধাড় হইতে বিনি:স্ভ। স্থ্য, চন্দ্র, তারকা প্রভৃতি হইতে যে আলোক পাওয়া যায়, তাহাও যথন পার্থিব ভাস্বর পদার্থের আলোকের গুণযুক্ত, তথন এই নম্বের সাহায্যে বুঝিতে পারা যায় যে সূর্য্য চন্দ্রাদি কিরূপ উপাদানে গঠিত। স্থপু তাহাই নয়, এই আলোক দৃষ্টে গ্রহনক্ষত্রাদির আভাস্তরিক এবং পারিপার্শ্বিক অবস্থাও জ্ঞাত হওয়া যায়। এ সম্বন্ধে কথঞ্চিৎ বর্ণনা করা যাউক। একটা বাতির আলো, অলস্ত ক্য়লার আলো, কিমা একথানা লোহা খুব পোড়াইলে যথন সে খানা খুব শাদা আগুনের মত ধক্ ধক্ করিয়া জলে, সেই আলো যদি এই বন্ধে পরীকা

দেখা যার, তাহা হইলে দেখিতে পাওরা যার যে, আলোক-বীথিকার যতগুলি রঙ্ পড়ে, দব গুলিই স্ফুপ্ট, এবং একটীর পর আর একটী ঠিক্ ঠিক্ দাজান; অর্থাৎ একটা রঙের পর ফাঁক পড়িয়া তাহার পর যে অস্ত রঙ ফলিয়াছে তাহা নহে।

কিন্তু যদি ঐ যন্ত্রে সূর্য্যের আলোক, চস্ত্রের আলোক অথবা সূর্য্যের আলোকে আলোকিও অন্ত কোন গ্রহের আলোক পরীক্ষা করা যায়, তাহা হইলে দেখিতে পাওয়া যাইবে বে, আলোক-বীণিকায় যত রঙ ফলিয়াছে, সেগুলি ধারাবাহিক নহে; মাঝে মাঝে অন্ধকার-রেখা পড়িয়া রহিয়াছে। দেখিলেই বুঝিতে পারা যায় যে, কতকগুলি রঙ্ ফলিয়া উঠিতে পারে নাই। রাছ গ্রহনক্ষত্রাদির চির-শক্র ; একবার সন্ধান লইতে হইবে যে, কোন রাহু বাছিয়া বাছিয়া গোটা-কতক আলোক গ্রাস করিয়া ফেলে वित्रा, आलारकत्र পরিবর্ত্তে, বীথিকায় কেবল মাত্র তাহার ছায়া প্রতিফলিত হয়। কোন একটা ভাস্বর পদার্থের আলোক সম্বন্ধে যদি পরীকা করিয়া জানা যায় যে, তাহার বীথিকা এইরূপ হইবে; এবং ধ্বন একটা আলোক-বীথিকা প্রায় তদ্ধপই দেখিতে পাই, কেবল মধ্যে মধ্যে এক একটি আলোকের স্থলে অন্ধ-কার-রেথা দেখা যায়, তখন হয় যে, হয়ত কোন প্রতিবন্ধকের জ্ঞ রভু করেকটি ফলিয়া উঠিতে পারে নাই।

তাহার পর আবার যদি পরীকার হির জানিতে পারা যায় যে, কোন একটা উত্তপ্ত পদার্থের আলোক কোন এক গ্যাসের মধ্য দিয়া আসিলে তাহার কোন একটা রেথাবিশেষ বা রঙ্বিশেষ, প্রতিফলিত হয় না, তখন বুঝিতে বাকী থাকে না त्य. क्षे भग्रमहे व्यात्माक-८त्रथाण्टिक जनत-সাৎ করিয়াছে। এই প্রকার পরীক্ষা বারা স্থির করা হইয়াছে যে, অমুক অমুক গ্যাস, অমুক অমুক আলোক-রেথা পাইলেই উদরসাৎ করিয়া থাকে। গ্যাস-রাছর এই দস্মাবৃত্তি এত পরিষার করিয়া **ধরিতে** পারা গিয়াছে যে, আলোক-রেথার অভাব হইলেই বুঝিতে পারা যায় যে কোন গ্যাস কোন আলোক আত্মসাৎ করিয়াছে। সহস্র-দীধিতির সহস্র আলোক দল বাঁথিয়া আকাশপণে চলিয়া আসে; কিন্তু পথে গ্যাস-রাহগণ বাছিয়া বাছিয়া ষে যে আলোকটি ভালবাসে, সে সেটি খাইরা ফেলে; এবং অবশিষ্ট আলোকগণ, মৃত আলোকরেখাগণের অমুবর্ত্তিনী বিষাদিতা বিধবা ছায়াগুলিকে* সঙ্গে লইয়া ধরা-তলে আসিয়া উপস্থিত হয়। এ ছায়া দৃষ্টে কোন্ গ্ৰহ উপগ্ৰহ বা নক্ষত্ৰ কি প্ৰকার গ্যাদে বেষ্টিভ, তাহাও জানিতে পারা যায়। এই সকল সঙ্কেত হারা এবং এই প্রকার পরীক্ষায় দূরস্থ গ্রহ, উপগ্রহ এবং নক্ষত্রাদি কে কি উপাদানে গঠিত এবং কাহার উপরিভাগ এবং পারিপার্শিক.

* ছারা, স্থ্যপ্রিরা বলিরা প্রাচীন শালে উল্লিখিত। শবস্থা কি প্রকার, তাহা নির্ণীত হইতে পারে। একটা পরীক্ষার কথা উল্লেখ করিছেছি। ছেলে মেয়ের ছেধ্ গরম করিছেলা আশীর্কাদে সহরের অনেক মেয়ে স্পিরিট্-ল্যাম্পের মহিত পরিচিতা হইয়াছেন। একটা স্পিরিট্-ল্যাম্পের আলোকে মদি লবণ দেওয়া যায়, তাহা হইলে আলোক-বিশ্লেষণ যত্ত্বে ছইটি উজ্জ্বল পীত রেখা দেখিতে পাওয়া যাইবে; এই ছইটি

দাগ, হর্যের আলোক-প্রতিফলিত বীথিকার ছুইটি ক্লফ্ড-দাগের সম্পূর্ণ অম্থ-রূপ। এই প্রকার পরীক্ষা দারা স্থিরীক্বত হইয়াছে যে, সোডিয়াম্ নামক লবণের উপাদানবিশেষই সর্য্যের এই দাগ ছুইটির কারণ। এই প্রকার উপারে আলোক-বিশ্লেষণ যন্ত্রে অতি দ্রস্থ জ্যোতিক্ষদিগের প্রকৃতি পর্যালোচিত এবং নির্দ্ধারিত হুইতেছে।

অতিথি।

(কোনও সদ্যোজাত শিশুর মৃত্যু উপলক্ষে।)

()

তুমি আদিবে তা' করিয়া শ্রবণ,
দেখায়েছে আশা স্থথের স্থপন,
হৈরিব একটা অম্ল্য রতন,
থেলিতে পাইব একটা দাথী;
তোমারে আনিতে আগু বাড়াইব,
আদরের ধন আদরে আনিব,
স্থমকল শাঁথ স্থথে বাজাইব,
ঘরে আলাইব মকল-বাতি।

জড়ায়ে ধরিয়া জননী উষায়,
শিশু রবি রাঙা কিরণ ছড়ায়,
তাদের ডাকিয়া এনেছি হেথায়,
দেশা'তে তোমারে সোহাগ-ভরে;
তুমিই জাসিবে, তুমিই হাসিবে,
এ অংনন্দ-ধামে আনন্দ বাড়িবে,
রাঙা পা ত্'থানি দেখানে রাথিবে,
কুমুম মুটিবে কুমুম প'রে!

2)

(0)

কিন্তু, হা ! কল্লিত সে স্থা-কামনা
মনেই বহিল —কাজে তা হ'ল না,
ভেঙে দিল ঘুম—নিঠুর চেতনা !
দেখিলাম, তুমি যেতেছ দ্রে;
সেই রবি পুন: পশ্চিমে হেলিল,
উষার সে আলো আঁধারে মিলিল,
বীণা: বাঁশি সব বেস্করা বাজিল,
হার! তুমি গেলে অজ্ঞানা পুরে!

(8)

একদিন—মরি, তাও দাঁড়ালে না, কেন এসেছিলে বলিয়া গেলে না, ফুটতে আদিয়া ফুটতে পেলে না, গোলাপ-মুকুল পড়িলে ঝরি! দিতীয়ার সেই শিশু শশি-লম, এক বিন্দুথানি—তবু নিরুপম! নিদয় নিঠুর কাল নিরুমম, দেখিতে দিল না নরন ভরি! (e)

মা'র বুকে ভরা অমৃতের সিদ্ধ, পেলে না'ক স্থাদ তার একবিন্দ্, দেখিতে পেলে না রবি, তারা, ইন্দ্, আশীয় আদর সকলি ফেলে, আতপ-তাপিত ক্ল-কনি হেন,
ক্টিতে ক্টিতে শুকাইলে বেন,
তোমা লাগি চোধে জন আসে কেন ।
তুমি ভো" অতিথি" চলিয়া গেলে !!
ত্ৰীকৃত্যকুন্থমাঞ্জনি-বচন্তিনী।

গো-পরিচর্য্যা।

গোরু স্থনাম-বিখ্যাত চতুম্পদ পশু-বিশেষ। গোগণ রোমস্বক স্থাতির অন্তর্গত। সাধারণতঃ এই স্থাতীয়েরা অতিশয় নিরীহ, সহক্ষেই পোষ মানে।

গাভী মহুবাের স্থায় ন্ানাধিক ছই শত
আশি. দিন গর্ভ ধারণ করিয়। এককালে
একটীমীত্র সস্তান প্রসব করে। কথন
কথন গাভীকে যমজ-সন্তান প্রসব করিতে
দেখা যায়। অনেকে অনুমান করেন যে,
এসিয়ার ককেসস্ পর্বতের নিকটয় বনে
যে বাইশন নামক বস্তু গােরু দেখা যায়,
তাহা হইতে এই বর্ত্তমান গৃহপালিত
গােরু উৎপন্ন হইয়াছে।

ইহাদের অপতামেহ অতিশয় প্রবল।
ন্তন্তপায়ী বাছুর মরিয়া গেলে গাভী তিনচারি দিন কিছু থায় না, এবং সময়ে সময়ে
শোকের কাতরতা-ব্যঞ্জ চীৎকার করিয়া
থাকে। ইহারা ছেয়দোহনকালে স্তনের
মাংসপেশী আকুঞ্জিত করিয়া বাছুরের
ক্য ছগ্ম লুকাইয়া রাধে।

এদেশে গোরু বিশ,বাইশ বৎসর বাঁচিরা থাকে।

হিন্দান্তমতে প্রত্যেক গৃহত্বের পক্ষে গো প্রতিপালন করা উচিত। পূর্মকানে রাজারা স্বয়ং গোরু পাশন করিতেন। মহাভারতে বিধিত আছে যে, বিরাট রাজার ষষ্টিসহস্র গাভী ছিল। আক্বরি পাঠে জানা যায়, আক্বর বাদ-সাহের বহুশত গাভী ও বলদ ছিল। গুহস্থমাত্রেই গোরুর ধারা উপকৃত। গোক প্রতিপালন করিতে গৃহস্থকে বিশেষ কোন আয়াস পাইতে হয় না, অথচ ইহারা চুগ্ধ ৰারা:গৃহস্থের মহৎ উপকার করিয়া থাকে। গোরুর মূত্র ও বিষ্ঠা আছেভি সকলই গৃহন্তের প্রয়োজনীয় ও উপকায়ী। বাল্যকালে জননী ও গাভী এই উভয়ের ত্ত্বপান করিয়া জীবন ধারণ করিতে হয় উভয়কেই সমানভাবে ভক্তি বলিয়া করিতে হয়।

গোরুর শরীরের সকল দ্রবাই আমাদের কাজে লাগে। ছথে আমাদের প্রাণ ধারণ হয়। চর্দ্ধে জ্বা ও মূবক প্রাভৃতি প্রস্তুত হইরা থাকে। অহিতে ছাতা ও ছড়ির বাট এবং বোতান নির্শিত হয়, এবং উহা

পোড়াইরা চিনি পরিষ্ণুত হয়। লোম জমাট করিয়া এক প্রকার বস্ত্র তৈয়ার इत्रं। मुक्त ७ थूत शलाहेत्रा नितिय हत्र, এবং নাড়ীতে বাদাযন্ত্রের তাঁত নির্মিত হইয়া থাকে। ইহার মূত্রে মুক্তকেরা বস্ত্র ধৌত করে ও বৈদ্যেরা ধাতু জারণ করে। ইহাদের বিষ্ঠা উত্তম সার হয়, আর শুক করিয়া লোকে কাঠের স্থায় জালাইয়া থাকে। অহিন্দুরা ইহার মাংস থায় এবং ইহার শোণিতে স্থরা পরিষ্ঠার করে। ক্লুকেরা বাঁডের ক্লে হল যোজনা করিয়া ভূমি কৰ্ষণ করে। পণ্য-ব্যবসায়ীরা ইহাদের পূঠে ধান্ত, ছোলা প্রভৃতি বোঝাই করিয়া লইয়া যায়। ইহারা পুঠে পাঁচ মণ পর্ব্যস্ত ভার বহন করে, এবং কুড়ি মণ পর্য্যন্ত বোঝাই সমেত গাড়ী টানিয়া লইরা যার। খাঁড়ের পুংচিক কাটিয়া ফেলিলে গোশরীরে উহাকে দামডা কহে। গোরক্ষনাথ (গোরোচনা) নামে যে এক भनार्थ खामा, जांदा जातक खेषा नारा। গো-পুচেছ চামর হয়।

গাভীর শুভাশুভ লক্ষণ। গাভীরাচক্
ছইটী রুক্ষ ও মৃষিক সদৃশ হইলে এবং
চক্ষ্র কোণে সর্ব্বদাই মল দেখা যাইলে,
ভাহা অশুভস্চক লক্ষণ। যে সকল
গাভীর নাসিকা বিস্তৃত, শৃঙ্গ প্রচলনলীল,
বর্ণ ধরসদৃশ এবং দেহ কর্নটাত্লা এবং
যাহার দন্তসংখ্যা ১০, ৭, বা ৪, মৃত্ত ও
মুখ লম্বমনি, পৃষ্ঠ বিনত, গ্রীবা ব্রম্ব ও
গভি মধ্যম এবং বিদারিত, সেই
বিদারিত, সেই

সকল গাভীর জিহবার বর্ণ ক্লফ ও পীত মিশ্রিত, গুল্ফ অতিশয় হল্ম ও স্থূল, ককুদ (ঝুঁটি) অপেক্ষাক্লত বৃহৎ, দেহ ক্লশ, এবং কোন একটা অঙ্গহীন (যথা উনপাজরে) বা অধিকাল, সেই সকল গাভী গৃহত্তের মঙ্গলকর নহে।

বে সকল গোর ওঠ তামবর্ণ, মৃত্ ও সংহত, জিহ্বা ও তালু তামবর্ণ, কর্ণ ছোট, হস্ত ও উচ্চ, এবং পেটটী দেখিতে স্থান্দর অর্থাৎ ঝুড়িপেটা, যাহাদের খুর ঈবং তামবর্ণ, বক্ষংস্থল বিস্তৃত, গাত্রত্বক্ সিন্ধা, রোম মনোহর ও বড় বড়, যাহাদের লাঙ্গুল ক্ষুদ্র লোম-বিশিষ্ট ও ভূতলম্পর্শী, চক্ষু রক্তাক্ত ও বাট ধারযুক্ত, সেই সকল গাভী শুভফলপ্রাদ।

গাভীর যে সকল শুভাশুভ লক্ষণ বর্ণিত হইল, রুষেও সেই সেই লক্ষণ থাটে।

বে ব্বের মুক ছুল ও অতিশয় লঘা,
ক্রোড়দেশ শিরাজালে পরিব্যাপ্ত, গওদেশে
ছুল শিরাসমূহ দেখিতে পাওয়া যায়, ওঠ
তালু ও জিহুবা ক্রফবর্গ এবং সর্বনাই
নিদারণ খাস বহে, শৃঙ্গ ছূল, উদর খেতবর্ণ,
কিন্তু অপর শরীরের রং ক্রফসার মৃগের
ন্যায়, সেই সকল বৃষ অশুভ জানিবে।
যে সকল ব্যের চক্ষ্ বৈত্র্য্য ও আবরণ
ছুল, যাহার নাসিকার নিকট বলি আছে,
গতি ঘোড়ার স্থায়, উদর মেঘের স্থায়
নীলবর্ণ, শরীরের রং শাদা, চক্ষ্ পিকলবর্ণ,
শৃঙ্গ তাম্রবর্ণ, তাহারা শুভক্ষণপ্রদ। যে
ব্যের করুদ লাল এবং শরীরের রং খেত

ও কৃষ্ণ মিশ্রিত, বাহার একটি নানা রঙের, তাহা **অত্যন্ত ওভদন**-চরণ মেতবর্ণ, অপর চরণ ও শরীর প্রাদ। (ক্রমশ:)

রত্ন।

(७१२ मःथा।—२४० शृष्टीत भत्र)

শুক্তিগৰ্ভজাত মুক্তা।

কস্তুরানামক এক প্রকার ঝিফুক সমুদ্রের মধ্যে থাকে। তাহার ভিতরে এই মহামুল্য বস্তু প্রাপ্ত হওরা যায়। ঝিফুক সকল সচরাচর জলপানের জন্য আপনার আবরণ ছ্থানি বিস্তৃত করে, দেই অবদরে সমুদ্রের অধোভাগস্থ বালুকণা তাহাতে ভিতরে কিছু প্রবেশ প্রবিষ্ট হয়। করিলে ঝিয়ুকের মধাস্থ প্রাণী অত্যন্ত অস্থুপ বোধ করে,;বারবার সেই বালুকণাকে আবরণে ঘসিতে থাকে। তাহাতে ঐ প্রাণী হইতে একপ্রকার ক্লেদ নির্গত হয়। তাহার সঙ্গে মিশিয়া যাওয়াতে বালুকণা আর বাহির হইতে পারে না। ক্রমে কস্করার রস পাইয়া উহা বর্দ্ধিত হইতে পাকে। স্বতরাং মুক্তা যত প্রাচীন হয়, ততই উজ্জ্বলতর ও বৃহৎ হয়। কেহ কেহ বলেন স্বাতি নক্ষত্রের বারি শুক্তির মধ্যে প্রবেশ করাতে মুক্তা ক্লে।

মালাবার এবং সিংহল দ্বীপের পশ্চিম উপকৃলে বেলাভূমি হইতে পাঁচ ক্রোল দূরে অগভীর সমুদ্রে ঐ কল্পরা ধাকে।

ঐ স্থান ০০ বা ৩২ হাত গভীর। আতি প্রভাবে ধীবরেরা বড় বড় নৌকা লইয়া কস্তরা ধরিতে যায়। প্রতি নৌকাতে ১०। ১२ जन जुर्ति ७ ১०। ५२ जन जना লোক থাকে। প্রথমে মোটা ও শক্ত দড়িতে একধানি ভারি প্রস্তর বাঁধে; ডুব্রিরাসেই দড়ি ধরিয়া পাথরের উপর দাঁড়ায় এবং সেই পাথরের সঙ্গে সঙ্গে জলে ভূবে। ডুবিয়া **ছুই হাতে যত পারে কন্তরা সংগ্রহ** করিয়া একটা ঝুড়িতে চাপায়, এবং সঙ্কেত করিবামাত্র নৌকার লোকেরা দড়ি ধরিয়া টানিলেই ঝুড়িটা নৌকাতে আইদে। ভুবুরি অগ্রে উঠে, পরে ঝুড়ি উঠিয়া কিছুকাল তোলা হয়। সে বিশ্রাম করে, অপর ব্যক্তি আবার পুর্বের স্থার জলম্ম হর। কল্পরা স্কল তুলিয়া আনিয়া তীরে এক স্থানে জড় করিয়া বাথা হয়।

আবার কেহ কেহ বলেন, আমা-দিগের অহি কি দত বেরপ উৎপন্ন হর, মুক্তাও তত্ত্বপ। তড়াগ, নদী কিবা সমুদ্রের গর্ভন্থ শুক্তির উদরে ইহার জন্ম, এবং আদিয়া, ইউরোপ ও আমেরিকার অনেক স্থল এই বস্তর উৎপাদন প্রযুক্ত প্রসিদ্ধ আছে।

ইহার প্রকৃত উপাদান চুর্ণ; তাহার সহিত শুক্তির অন্তর্গত শারীরিক পদার্থের সংযোগে মুক্তার উৎপত্তি হয়। এই পদার্থ জন্মকালাবধি স্বভাবতঃ ঔজ্জন্য ধারণ করে।

মুক্তা ক্রমশ: বর্দ্ধিত হইতে থাকে।
চীনদেশীয় চতুর লোকেরা ইহা জ্ঞাত
থাকায়, গোপনে শুক্তিমধ্যে বৃদ্ধদেবের
ক্ষতিস্ক তামের মূর্ত্তি প্রবিষ্ট করিয়া দিয়া,
তাহা সমুদ্রে নিক্ষিপ্ত করে ও কিয়ৎকাল
পরে ঐ শুক্তি ত্লিলে তন্মধ্যে তামের
বৃদ্ধমূর্তি মুক্তা পদার্থে আর্ত হইয়া মুক্তার
কান্তিরা ঐ মূর্ত্তি সাধারণ লোককে
দেখাইয়া বৃদ্ধদেব শ্বয়ং উৎপন্ন হইয়াছেন
বিশ্বী প্রতারণা করে।

শপরিণত মুক্তা পরিণত মুক্তাপেক। দীপ্তিবিহীন। যে সকল মুক্তার অবিক ক্যোতিঃ দেখিতে পাওয়া যায়, তাহা প্রায়ই দীর্ঘকালে উৎপন্ন হইয়া থাকে।

শেত, পীত, আরক্ত, ক্লঞ্চ প্রভৃতি সর্বা বর্ণের মুক্তা দেখা যার। ইহার গঠনও নানা প্রকার। বহদাকার মুক্তা অতিপর ছন্ত্রাপ্য। আসিয়া খণ্ডের মুক্তা ভন্ত, হরিল্লা ও গৌর বর্ণ ভিন্ন অস্ত্র কোন দেখা যার না'। ভাহার আরুভিত্ত গৌল কিলা অভের ভার হইরা থাকে। কিন্তু আমেরিকা থণ্ডের পানামা উপসাগরের মুক্তার বর্ণ ক্বন্ধ অথবা ধূসর হয়,
ও তাহার, আকার প্রায় দীর্ঘ ও চেপ্টা।
যে সকল শুক্তিকে সচরাচরঃ মুক্তা-জননীশব্দে নির্দেশ করা যায়, তাহাদিগের
দীর্ঘতা প্রায় প্রাদেশ বা বিঘত প্রমাণ।
উপরিভাগ অত্যন্ত দৃঢ় এবং ক্বন্ধ ও হরিদ্রোবর্ণ বিমিশ্র। মধ্যভাগ রৌপ্যের ন্থায় শুল্র
ও নানাবিধ বর্ণের জ্যোতিঃবিশিষ্ট।

নিংহল দ্বীপের সমুদ্রতীর, পারস্থ উপ-সাগর, স্বল্দ্বীপের নিকটস্থ সাগর, লোহিত সাগর, পাপুরা দ্বীপের নিকটস্থ সাগর, কালিফর্ণিরা ও নিউজারসী উপকৃলে মুক্তন ধত হইয়া থাকে।

প্রতি বংসর প্রায় বৃষ্টি লক্ষ শুক্তির মৃক্তার জন্ত গৃত হইরা থাকে। এই বাইট লক্ষ শুক্তির মধ্যে প্রায় দশাংশের একাংশ শুক্তিতে মৃক্তা প্রাপ্ত হওয়া যায়, অপরেতে কোন মুক্তা থাকে না।

ইউরোপীয়দিগের নিকট শুভ বর্ণের মুকা বিশেষ আদরণীয়। এতদেশের লোকেরা পদ্মাভ ও চম্পকবর্ণ-বিশিষ্ট মুক্তাকেই উৎক্বষ্ট বলিয়া থাকেন। যে মুক্তা সাত বৎসরে পরিণত্যু হয়, তাহাই উৎক্বষ্ট।

মুক্তাকে বহুমূল্য রত্নাদির মধ্যে গণনা করা গিরা থাকে। ইহা আনেক ঔবধে ব্যবহৃত হয়। ইহা ধারণে পুণ্য হয়। সধ্বা স্ত্রীলোকেরা মূল্যবান্ প্রস্তর ও প্রবর্ণের সহিত মুক্তার নত প্রস্তুত করি রানাদিকার ধারণ করেন, তত্বাসা খাস ত্যাগ-

কালে দেহের ছষ্ট বায়ু সংশোধিত হইরা বায়, এবং পতির ছষ্ট-বায়ু-জনিত কোন অমলল হইতে পারে না। আজ কাল নত পরার প্রথা ক্রমশঃ উঠিয়া যাইতেছে। সকল সভ্য জাতিই মুক্তার গৌরব করিয়া থাকেন।

মুক্তা উত্তোলিত হইলে তীরে স্তুপা-কারে রাধা হয় এবং ঐ শুক্তির মাংস পৃতীভূত হইলে মুক্তা পৃথক্ করা হয়। অতঃপর বণিকেরা ঐ পৃথক্কৃত মুক্তা ক্রয় করিয়া উত্তমরূপে ধৌত করিয়া দেশ বিদেশে প্রেরণ করে।

মুক্তা বিদ্ধ করিবার বিধি।

মুক্তাকে একপ্রকার প্রস্তর বলিলেও
বলা যায়। মুক্তা অতি কঠিন পদার্থ;
স্থাতরাং তাহার বেধকার্য্য সহজ নহে।

ইচ্ছা করিলেই ইচ্ছামন্ত ছিত্র করা বারা
না। শুক্তিগর্ভ হইতে মুক্তাকল চয়ন
করিয়া তাহাকে প্রক্রিয়াবিশেষ ঘারা
সংস্কৃত করিতে পারিলে, তবে তাহা স্থধবেধ্য হয়। মুক্তাব্যবসায়ীরা যে প্রক্রিয়া
নারা মুক্তা স্থধবেধ্য করিতে সমর্থ হইয়া
থাকেন, সে প্রক্রিয়া রত্ত্বশাস্ত্রে অতি উত্তমরূপে উপদিষ্ট আছে। যথা—

"কৃত্যা পচেৎ ক্পিছিতে শুভদারভাঙে,
মুক্তাফলং নিহিতন্তনশুক্তিকাওন্।
ক্ষোটন্তথা প্রণিদ্ধীত তত্ত ভাঙাং,
সংস্থাপ্য ধান্তনিচয়ে চ ত্নেক্মাসম্।
আদায় তৎ সকলমেব ত্তোরভাওন্
ভথীরজাতরস্যোজনয় বিশক্ষ্।
ঘৃষ্টং ততো মৃত্তনুক্তপিওম্লৈঃ
কুর্যাৎ যথেচছমিহ মৌক্তিক্মাণ্ড বিক্ষ্।

(ক্রেম্পাং)

महर्षि क्रेगा ও मारमतीय तमगी।

ব্রীষ্টধর্ম্মের প্রবর্ত্তক মহর্ষি ঈশা বথন ঈশ্বর-প্রেমে উন্মন্ত হইয়া দিশ বিদেশে ধর্ম্মপ্রচার করিতেছিলেন, তথন একদিন তিনি শ্বদেশ জ্ডিয়া হইতে গালিলি প্রদেশ অভিমুখে যাত্রা করিলেন। অনেক পথ পদত্রজে গমন করিতে করিতে মধ্যাহ্ম-কাল উপস্থিত হইল; তিনি অতিশয় ক্লান্ত হইয়া সামেরিয়া দেশের সিচারনামক নগরের এক কূপের তটে বসিয়া পড়িলেন। সামেরিয়ার লোকেরা বীহদিদিগের নিকট অতি হীন আতি বলিয়া স্থাণিত ছিল।

সেই মধ্যাক্ষকালে সামেরিয়াবাসিনী এক রমণী জল আনয়নার্থ কুপতটে উপস্থিত। ঈশা তাঁহার নিকট পানার্থ কিঞ্চিৎ জল ভিক্ষা করাতে নারী ইতন্তত: করিতে লাগিল। ঈশা তাঁহাকে বলিলেন, "আমার নিকট এমন বারি আছে, বাহা জীবন্ত এবং বাহা পান করিলে আর কবনও ভ্রুতি হয় না। বে ইহা পাল করে, সে অনস্ত জীবনের অধিকারী হয়।" গ্রীলোক আকর্য্য হইয়া তাঁহার নিকট সেই অপুর্বা

সামাশ্য শীহদিজ্ঞানে বলিতে একজন नांशिन, "आभारतत পूर्वाभूक्रस्यता এই সন্মুখস্থ পর্বাতে ঠাকুরের পূজা করিয়াছে, কিন্তু তোমরা বল জেক্লজেলাম্ পবিত্র স্থান, দেখানে ঈশ্বরের পূজা করা উচিত।" ঈশা বলিলেন, "ললনে! আমার কথায় বিশাস কর, এমন সময় আসিতেছে যথন তোমার পিতা প্রমেশ্বরকে এই পর্বতে কিষা জেরুজেলামে পূজা করিবে না। তোমরা কাকে পূভা কর, জান না, কিন্তু স্থীমরা বাঁহাকে পূজা করি তাঁহাকে জানি!" তিনি আরও বলিলেন "যে, সময় আসিতেছে এবং এখনই আসিয়াছে, যথন প্রকৃত উপাসকেরা সেই প্রম পিতাকে প্রাণরূপে ও সত্যভাবে পূজা করিবে; কারণ সেই পিতা এইরূপ পূজাই চান। ঈশ্বর প্রাণস্থরূপ, যাঁহারা ভাঁহার পূজা করেন, তাঁহারা প্রাণরূপে ও সত্য-ভাবে তাঁহার পূজা করিবেন।" স্ত্রীলোকটীর প্রাণে কি ভাব উদিত হইল, সে জলপাত্র জুলাশয়ের ভটে ফেলিয়া রাথিয়া নগর-বাসীদিগের নিকট এই আশ্চর্যা লোকের আশ্চর্য্য কথা প্রচার করিতে. গেল।

এই আখ্যায়িকায় সত্যস্বরূপ ঈশ্বরের
সত্যপুজা অতি স্থলররূপে বর্ণিত
হইরাছে। সামেরিয়াবাসী জড়োপাসকপণ এবং জ্ড়িয়াবাসী একেশ্বর-বিশ্বাসী
য়ীছদিগ্ণ উভরেই নিক্টভাবে ঈশ্বের
পূজা করিত; সামেরীয়গণ দেবমূর্তি
ঠিন করিয়া একটা বিলেষ পর্বতে তাঁহার
শ্বান বনিয়া দেখানে তাঁহার পূজা করিত,

আর স্বীহুদিগণ জেকজেলাম্ নগরের
মন্দিরে দেবদূত-রক্ষিত সিংহাসনে ঈশবের
স্থান বলিয়া সেথানে তাঁহার অর্চনা
করিত। উভয়েই অপরিমিত অনস্ত দেবকে পরিমিত দেবতা বলিয়া কল্পনা
করিত এবং গন্ধ পূষ্প, ধৃপ, দীপ, নৈবেল্প প্রভৃতি বাহোপচারে তাঁহার পূজা অর্চনা
সম্পন্ন করিত। উভয় জাতিই ঈশবের
স্বরূপ ও তাঁহার পূজার প্রণালী বিষয়ে
অনভিজ্ঞ, ইহা বলাই ঈশার অভিপ্রেত।
আমাদের প্রাচীন উপনিষদে আছে:—

যদ্বাচা নাভ্যুদিতং ুবেন বাগভ্যুদ্যতে তদেব ব্ৰহ্ম হং বিদ্ধি নেদং যদিদমুপাসতে ॥ যন্মনসা ন মন্তুতে যেনাহৰ্দ্মনোমতম্। তদেব ব্ৰহ্ম হং বিদ্ধি নেদং যদিদমুপাসতে॥

যিনি বাক্যের বচনীয় নহেন, বাক্য বাঁহার দারা প্রেরিত হয়, তাঁহাকেই তুমি ব্রহ্ম বলিয়া জান; লোকে বে কিছু পরিমিত পদার্থের উপাদনা করে, তাহা কথনও ব্রহ্ম নহে। লোকে মনের দারা বাঁহাকে মনন করিতে পারে না, যিনি মনের প্রত্যেক মননকে জানেন, তাঁহাকেই ব্রহ্ম বলিয়া জান; লোকে যে কিছু পরিমিত পদার্থের উপাদনা করে, তাহা কথনও ব্রহ্ম নহে।

ঈশা অনস্ত দেবের উপাদক
ছিলেন এবং জানিতেন পৃথিবীর সকল
স্থান তাঁহার, অধিষ্ঠানে পূর্ণ। যদিও তংকালীন সাধারণ লোকে এই তত্ত্ব অবগত
ছিলেন না, কিন্তু তিনি বিশ্বাস করিতেন,
ভবিশ্বতে সকল মহুশ্বই ঈশবের এই
প্রাকৃত তত্ত্ব অবগত হইবেন এবং তাঁহাকে

श्रानवित्भव वक्ष ना कतिया मर्खवालि-ক্সপে সর্ব্ধত্র তাঁহার আরাধনা করিবেন। সেই গুভ সময় আসিতেছে বলিয়া তিনি ক্ষান্ত হইলেন না. কিন্তু সে সময় আসিয়াছে বলিলেন, কারণ তিনি নিজে সভ্যভাবে ঈশ্বরের পূজা করিয়া শিশ্বদিগকে সেই মঙ্গে দীক্ষিত করিতেছিলেন। ঈশ্বরকে সত্যভাবে জানা কি ৭.না. তিনি প্রাণময়, চৈত্রসম্বর্জপ। তাঁহাকে সত্যভাবে পূজা করা কি ? না, প্রাণের ভক্তি, শ্রদ্ধা, কুতজ্ঞতা, অনুরাগ প্রভৃতি আধাায়িক ভাব দারা প্রাণযোগে তাঁহার পূজা করা। স্ত্যস্থরূপ অনস্তদেব মানবের নিক্ট কেবল সামান্ত পুষ্পাচন্দন ও বাহিরের উপকরণ পাইয়া সম্ভুষ্ট হন না। তিনি নিজে যেমন প্রাণ, তেমনি মানবের প্রাণ তাঁহার সর্বাপেকা প্রিয় পুজোপহার এবং তাহাই পাইতে চান। প্রাচীন হিন্দুশাস্ত্রে আছে:--"আত্মানমেৰ প্ৰিয়মুপাদীত।" উপাসনা প্রিয়রূপে প্রমাত্মাকেই

করিবেক।

প্রাণোহোষ যঃ দর্শভূতৈবিভাতি विकानन् विश्वान् ভवट्ठ नाठिवानी। আন্তর্গীড আন্তর্রতিঃ ক্রিরাবানের अक्रविमाः वित्रष्टे: ।"

ইনি প্রাণ-স্বরূপ, যিনি এই সর্বভূতে পাইতেছেন : জানী ব্যক্তি ইহাকে অতিক্রম করিয়া কোনও ৰূপা কহেন না। ইনি প্রমান্তাতে জীতা करत्न, हिन প्रभाषाटि त्रभ करत्न; এবং সংকর্মশীল হয়েন। ইনিই ব্রাক্ষো-পাদকদিগের মধ্যে সর্বশ্রেষ্ঠ।

যীত্রদি যোগী ঈশার ও আমাদিগের প্রাচীন আর্ঘ্য ঋষিদিগের বাক্যের মধ্যে কেমন আশ্চর্য্য ঐক্য দেখিতে পাওয়া যায়। এই বাক্যের মধ্যে যে মহাসভ্য রহিয়াছে, তাহা সকলেরই গ্রহণ করা কর্ত্তব্য। ঈশ্বরকে নানারপে নানালোকে পূজা করিতেছেন, তিনি কাহারও প্রতি বিরূপ নহেন। কিছু তাঁহাকে সতারূপে জানিয়া সত্যভাবে যাঁহারা তাঁহার পুজা তাঁহাদিগের পূজাই **তাঁহার** করেন. নিকট অধিকতর আদরণীয়। জগতে এই সত্যপূজা প্রতিষ্ঠিত হইতেছে এবং ক্রমে সুপ্রতিষ্ঠিত হইয়া তাঁহার মহান উদ্দেশ্য পূর্ণ করিবে।

প্রাণ-দঙ্গীত।

এসেছি আন্ত প্রাণের দেশে, প্রাণভরে ডাকি প্রাণেশে: প্রাণের মন্দিরে প্রাণ-সিংহাসনে. প্রাণের রতনে বসায়ে যতনে,

গোপনে আপনে সঁপি তীচরণে.. প্রাণে প্রাণে এক হইব মিশে। প্ৰাণদীপ আলি প্ৰাণ পুসডালি প্রাণের অনুরাগে দিব ঢালি ঢালি, প্রাণধ্প-গন্ধ বহিবে স্থমন্দ ;
বিভার হইব প্রেম-আবেশে।
প্রাণের উদ্ধাম করি মহাবান্ত,
উৎসর্গ করিব প্রাণের নৈবেন্ত,

প্রাণ-বলিদানে প্রজিয়ে আরাধ্য, জয় ব্রহ্ম জয় (প্রাণেশের জয়) গাব হরিষে।

একটী আদর্শ হিন্দু সতী।

নগেক্তনাথ চৌধুরীর নিবাস কলিকাতা সহরে। বয়স প্রায় পঞ্চাশ বৎসর।
তাঁহার বৈষয়িক বৃদ্ধি অসাধারণ। তাঁহার
জীবনের তিনটা উদ্দেশ্য ছিল—(১) লক্ষ
মুদ্রা সঞ্চয়; (২) রায়বাহাত্র উপাধিপ্রাপ্ত;
(৩) একটা পুত্ররত্নের মুখচক্র দর্শন।

ভাগ্যবলে, অর্থকার্পণ্য দ্বারা এবং অসাধারণ অধ্যবসায়যোগে, চৌধুরী মহাশয় প্রথম ছইটা অভীষ্ট সাধনে ক্লতকার্য্য হইলেন। কিন্তু তৃতীয় কামনাটা পূর্ণ হইতে বিলম্ব দেখিয়া, তিনি একরূপ হতাশ হইয়া পড়িলেন। অনেক দেব দেবীর আরাধনার পর, বস্থমতীকে ক্যত-কুতার্থ করিবার জন্ম যেন রায় বাহাহরের পরিবারে বংশধর আবিভূ ত এক হইলেন। নগেন্দ্র বাবুর আর আনন্দের সীমা রহিল না। তাঁহার একমাত্র কুল-প্রদীপ স্থরেক্ত দিন দিন শুক্লপক্ষের শশি-কলার স্থায় বর্দিত হইতে লাগিল। পুত্রকে লেখাপড়া শ্লিখাইবার জন্ম নগেক্স বাবু প্রথমে ভাঁহাকে পাঠশালে, তৎপরে একটা জি বিদ্যালয়ে ভাঙি করিরা দেন। এউডিম অরেণের জ্ঞানলাভের সহায়তা

করিবার জন্ম বাড়ীতে একজন অতিরিক্ত শিক্ষকও নিযুক্ত করিলেন। একমাত্র পুত্র স্থরেণ লক্ষেশ্বর হইয়া বিষ্ঠাবৃদ্ধিবলে সকলের প্রশংসাভাজন হইবে, ধনীর ক্সার সহিত তাঁহার বিবাহ দিবেন, ইত্যাদি ইত্যাদি কত নব নব আশা পিতার মনে উদিত হইতে লাগিল i কিন্ত পিতার অত্যধিক আদর্ই স্থরেক্সের অন্তরায় হইল। বিভাশিক্ষার প্রধান যোলবংসর বয়সে বারাশতনিবাসী এক-জন মাত্রগণ্য জমীদারের একাদশব্দীরা প্রমা স্থন্দরী ক্সার সহিত স্থরেন্দ্রের বিবাহ হয়। স্থরেপের খণ্ডর এরূপ ধনী এবং সম্ভ্রাস্ত বংশে কন্তাদান করিয়া বিশেষ আহলাদিত হইলেন। বিংশতি বৎসর পূর্ণ না হইতেই স্থরেক্স স্কুল ছাড়িল এবং নানা কুসঙ্গে মিশিতে লাগিল। তাহার পিতা সে বিষয়ে দৃক্পাতও করিলেন না। নগেক্র বাবুর পৌজ্রমুথ দেখিবার জন্ম বড় বাসনা হইল। স্থরেণের লেখাপড়া হইল না, সেজ্ঞ ভাবনা কি ? ডিনি পুত্রের क्रज नक्मधिक भूजा त्राधिया गरिएउएक्न। কিন্ত পৌত্তমুখ দেখা বাস বাহাছয়

মহাশরের অদৃত্তে ঘটিল না, কারণ মৃত্যু আসিয়া অনভিবিল্যেই জাঁহার আশা বিফল করিল। তথন লক্ষ মূদ্রা, বড় সাধের "রার বাহাছর" উপাধি এবং পুত্র-রত্ন ইহ জগতে কীর্ত্তিস্বরূপ রাখিরা মৃত্যুর শরণাপর হইলেন।

পিতার মৃত্যুর পর, স্থরেক্স সম্পূর্ণ স্বাধীন হইল। নগেক্স বাবুর জীবদ্দশাতেই স্থরেক্স কু-সঙ্গে মিশিতেছিল। এইক্ষণে কর্ত্তার মৃত্যু হইয়াছে, স্পতরাং দলে দলে তোষামোদকারীরা আসিয়া নির্ভয়ে স্থরেলর সঙ্গে মিশিতে লাগিল। ক্রমে স্থরেক্স মদ্যপান ইত্যাদি আরম্ভ করিল এবং বাহির-মুথ হইয়া প্রারই বাটীতে থাকিত না। এই সময়ে তাঁহার স্ত্রী কমলা ঘৌবনসীমায় পদার্পণ করিয়াছেন। এই পতিপরায়ণা সাধনী স্ত্রীর সহিত বাস করা স্থরেণের অত্যম্ভ বিরক্তিজনক হইয়া উঠিল। সমস্ভ দিবারাত্রির মধ্যে সে কমলার সহিত দেখা করিবার অবসরই পাইত না!

এক দিন মাখমাদে রাত্রি আন্দান্ধ ।।
প্রহরের সময়, কমলা হঠাৎ একটা
ভয়ানক স্বপ্ন দেখিয়া জাগিলেন। তথন
পৃথিবীর জীব সমস্ত দিনের পরিশ্রমের পর
গাঢ়নিদ্রায় অভিভূত। একটা জন
মানবেরও সাড়াশন্ধ নাই। কমলাও সমস্ত
দিনের পরিশ্রমের পর, অতিক্তেই একট্
ভক্রালাভ করিয়াছেন, কিন্তু নিষ্ঠুর স্বপ্ন
আসিয়া ভাঁহার সামাক্ত আয়ামেও বাধা
ক্র্মাইল। তিনি জাগিয়া দেখিলেন
ভাঁহার স্বের অক্ত কেহই নাই। মানব্র্বাভি

অভ্যাদের দান। প্রতি রাত্রেই কমকার একা একখনে থাকিতে থাকিতে একস্থপ অভ্যাস হইয়া গিয়াছিল-একা থাকিতে আর ভয় হইড না। তিনি সমস্ত রাজি নয়নজলে ছইকাও ভাসাইতেন,আর স্বামি-আগমন প্রতীকা করিতেন। CECAR হঠাৎ নিজা रहेरड ব্দাগিয়া জানালার কাছে গিয়া বসিলেন। তাঁছার মনে হইতে লাগিল জগতে তাহা অপেকা হতভাগিনী বুঝি আর নাই, কারণ অভাত সাধ্বী বুমণীর ভায় তিনি স্বামীকে একমাত্র জীবনের অবলঘন ও গতি বলিয়া দৃঢ় বিখাস করিতেন। তিনি লগতে সবই পরিত্যাগ করিতে পারিতেন, জলে ঝাঁপ দিতে পারিতেন, এবং আবশ্রক হইলে অগ্নিতেও প্রবেশ করিতে পারিতেন, ক্লিস্ক স্বামিদেবকে—তাঁহার জাবনের উপাত-দেবতাকে একমুহুর্ত্তের অক্সও ছাড়িতে একমাত্ৰ কৰ্মফলদোৱে পারেন না। তাঁহাকে এত হ:খ কষ্ট সহা করিতে হইতেছে वित्रां कमनात्र अव विश्राम हिन। জানি পূর্বকালে কত মহাপাপ করিয়াছি, সেই জন্ম এ জীবনে এত মৰ্মান্তিক বাতনা হইতেছে বলিয়া দুঢ় বিশাস করিতেন। শৈশবের স্থপ্রাচ্চন্দ্রের কথা মনে পড়িয়া তাঁহার বর্তমান অবস্থাকে আরও শোচনীয় করিয়া ভূলিল।

দিবানিশি অবিরতধারে চক্ষের জল পড়িত; তিনি শরনবরে গিরা অঞ্চবারিতে প্রতিদিন শব্যা সিক্ত করিতেন। তাঁহার সমরে সমরে মনে হইত বেন শেক্ষের ভরে দম ফাটিয়াই মারা शাইবেন।

জানালার নিকট বসিয়া নক্ষত্রালাোকপূর্ণ
রাত্রির শোভা দেখিতে লাগিলেন। মৃত্মন্দ্র বার্ বহিয়া তাঁহার উষ্ণ মন্তিক স্থশীতল করিতে লাগিল। তিনি যেন
অব্ধ করিলেন। তাঁহার কুদ্র বিখাসবলে
বোধ হইল যেন আকাশ চিরস্থাী লোকদিগের আবাসস্থান এবং নক্ষত্রমগুলী
তাঁহাদেরই উজ্জ্ল চক্ষু।

প্রম পিতা প্রমেখ্র এবং ঐ সকল মুক্ত পবিত্র আত্মার নিকট প্রার্থনা করিলেন, জাঁহারা তাঁহাকে ঐ স্থানে লইয়া যাউন। এই ভাবে প্রার্থনা করিতে করিতে তিনি ক্রমে সংজ্ঞাশৃত্য মুর্চিত হইয়া পড়িলেন। কোথা হইতে আকাশবাণীর ভার পরিষার ভাবে নিয়-লিখিত মধুর কথাগুলি তাঁহার কর্ণকুহরে প্রবিষ্ট হইল:-- 'কমলে, মঙ্গলময় বিধাতা তোমার প্রতি প্রসন্ন হইয়াছেন, আমিও তোমার অলৌকিক পাতিত্রত্য ্র দেখিয়া একান্ত মোহিত হইয়াছি। মা কমলে, তুমি তো উপযুক্ত শিক্ষালাভ করিয়াছ, কর্মফল বিশাদ কর কি ? পূর্বজন্মে যে সমস্ত ছম্বতি করিয়াছ; এ জীবনে তাহারই বিষ্ময় ফলভোগ করিতেছ: তোমাকে রক্ষা করিবার কোনও উপায় नाहै। किन्नु मां! कृमि आत काँ पिछ ना : राथारन दिवस्थ ठिव-भाखि विवासमान. क्टियर्गश्रत भीष्ठ **वाश्रि**त। কিছ-সাবধানে থাকিও, কারণ সংসার অতীব ভয়ানক স্থান, এখানে প্রতি পদ্দ ক্ষেপে অনেক বাধা, অনেক বিদ্ব !**

व्यन्त विवादमत्र मधा क्रमना वह অথকার দেখিতেছেন, এমন সময়ে দরজার ত্যানক ঘা পড়িল, তাঁহার স্থথের স্বপ্ন তাঙ্গিয়া গেল। তিনি জানালা হইতে উঠিয়া ক্রতপদে দরজার নিকট গেলেন। এ সময়ে তাঁহার স্বামী ভিন্ন সেখানে আর কে আসিতে পারে, মনে মনে ভাবিতে ভাবিতে দরজা খুলিলেন। দরজা খুলিতে যে সামান্ত বিলম্বটুকু হইয়াছিল, তাহাও সেই স্থরোমত নরপিশাচের সহা হইল ুস্বরেক্ত রাগে অন্ধ হইয়া সরলা বালিকার আলুলায়িত কেশপাশ হস্তে ব্যুড়াইয়া ধরিয়া তাঁহাকে যথেষ্ট প্রহার করিল। কিন্তু নিরপরাধিনী কমলার মুখে বাক্য নাই, বরং যতই পাষ্ড জীহাকে প্রহার করিতে লাগিল, ততই তিনি কাতর-স্বরে তাঁহার বিনীত প্রার্থনা গুনিবার জন্ত অমুযোগ করিতে লাগিলেন। স্বামীর আস্থরিক প্রহারে কমলা অচেতন बहेग्रा পिएटनन । অবশেষে কমলাকে মৃতা জ্ঞান করিয়া পরিত্যাগ-পুর্বক মহোল্লাসে বাটীর বাহির হইল।

নরপিশাচের অসান্থবিক প্রহারে কমলার সমস্ত শরীর কতবিক্ষত হইয়াছিল এবং প্রায় মাসাবধি ভূগিয়া তিনি পুনরার স্থতা লাভ করিলেন। স্থামীর এইরূপ নিষ্ঠুর ব্যবহারের পুর্বের, তাঁহার একাস্থ দ্বাগার পাত্রী হইরাও, সরলা বালিকা স্থানেক সময়ে একরপ প্রাক্রচিতে কাল

কাটাইতেন। কিন্ত এই ঘটনার পর হইতে তাঁহার আর দে ভাব ছিল না। যৌবনস্থলভ যে মৃত্ হাসি তাঁহার বিশ্বাধরে मर्जनारे विताब कत्रिक, এथन रहेरक তাহার স্থানে এক ঘন-বিষাদের ছায়া (मधा निन। मात्र श्रीकांत कता मृद्र थाक, হাসিমুখে একটা মিষ্ট কথা বলিলেই ক্মলার স্ব জালা জুড়াইত, কিন্তু নরাধ্ম হ্রবেণের হাদয় দহ্যার হাদয় **इ**टेर७७ কঠিন। উপায়হীনা কমলা নির্জনে বসিয়া ভাবিতে লাগিলেন 'কেন আছি? আর তো সহা করিতে পারি না। কত লোক প্রতিদিনই মরিতেছে, ভুধু কি আমিই অমর হইয়া জ্মিয়াছি ?" কে যেন मर्बांगोरे डांशांत्र कार्त कार्त विनव "তোমার জীবন হঃথক্টপূর্ণ করিয়া স্প্ত হইয়াছে, স্থতরাং তোমার মৃত্যুই শ্রেষ:।"

এই দৈষবাণী প্রবণ করিয়া কমলার খুব সাহস হইল এবং সেই সঙ্গে সহিষ্কৃতাও বাড়িল। তাঁহার জীবনে আত্যস্তরিক বোর সংগ্রাম চলিতেছে, ইতিমধ্যে তিনি এক উৎকট পীড়ার আক্রাস্তা হইলেন। মূণাল-সদৃশ কোমল অঙ্গ এবং সোণার স্থায় উজ্জল বর্ণ দিন দিনই ক্ষীণ ও মলিন হইতে লাগিল। কমলার শাশুড়ি পুদ্রবধূর এইরূপ আক্ষিক পরিবর্ত্তন দেখিয়া, তাঁহাকে পিত্রালয়ে পাঠাইয়া দিতে ইচ্ছা করিলেন। বলা বাছলা, কমলার শুণে পরিবারম্ম সকলেই—এমন কি পাড়াপ্রতিবেশীরাও তাঁহাকে আত্তরিক

ভাল বাসিতেন। স্বতরাং কমলা সকলকেই বিষাদসাগরে নিমগ্ন করিয়া পিত্রালয়ে গমন করিলেন। ক্রমে কমলার রোগ নির্ণয় ছইলে জানা গেল, তাঁহার যক্ষা হইয়াছে। পিতা মাতার যথেষ্ট দেবা ভূজাৰা এবং নানাবিধ ঔষধ সেবন সত্তেও, কমলার পীডার উপশম হইল না। व्विल, कमलारक काल द्रारंग ध्रियारह। তাঁহার মাতা কত দেব দেবীর আরাধনা করিতে লাগিলেন, কন্সার মঙ্গলার্থে কত দেবতার নিকট ভোগ মানিলেন, কিছ কিছতেই কিছু হইল না। কমলা রোগ শাং-ঘাতিক জানিয়াও মাতাকে নানা উৎসাহ এবং সাহসের কথা বলিয়া সাম্বনা করিতে চেষ্টা করিতেন। কিন্তু দিন দিন চক্ষর खेळ्दातात हाम. मतीरतत **क्रम**ा ध्वरः কাশির কাঠিতা দেখিয়া বিচক্ষণ ব্যক্তি-মাত্রেই প্রকৃত অবস্থা ব্ঝিতে পারিতেন। আখিন মাসের বেলা ক্রমেই ছোট হইতে এবং রাত্রি ক্রমেই বাডিতে शास्त्र। এहे ममाम् अक मिन দেব কমলার পৈতৃক ভবনের निक निया आय अछाठनभाषी दहेबाटहन, ভাঁহার সন্ধাকালান অব্যবে আর পূর্বের স্থায় প্রচণ্ড তেজ নাই। তথন সে দিকে দৃষ্টি করিলে যেন বুঝা বায়,তিনি জগজনকে **७**हे विषय डिशाम पिटिस्न প্রাণিগণ, তোমরা জীবন্ধের তুচ্ছ স্থ विनात मछ इहेग्रा गर्स केंब्रिड পরিণাম চিন্তা করিয়া মুত্রভাব সমস্ত দিবাভাগের পর দেখ আমাকেও

बिक्रभ, मनिन এवर निर्छक रहेश पूर्विए ছইতেছে"। সমস্ত দিন ব্যাপিয়া স্থাের প্রথম কিরণে জগতের প্রাণী সকল জালাতন . হইতেছিল, কিন্তু অন্তগমনের পূর্বে স্থ-শীতল কিরণ পাইয়া প্রকৃতি দেবী যেন হাসিতেছেন। বৃক্ষাদির অগ্রভাগ সোণার উজ্জলবর্ণে স্থােভিত হইয়াছে এবং নানা দিগুদেশ হইতে বছদংখ্যক পক্ষী আসিয়া বিবিধ স্বরে নিজ্জীব বৃক্ষ-श्वनित्क मबीव कतिशा जुनिशाहि। সমন্তি দেখিয়া কমলার গৃহমধ্যে বন্ধ থাকিতে ভাল লাগিল না। স্থতরাং তাঁহারি ইচ্ছামুসারে বারান্দায় একথানি পালক্ষের উপর তাঁহাকে শোয়ান হইল। তিনি যেন স্বস্থতা অমুভব করিলেন এবং বালিকা বয়সের নানা স্থাপের স্থৃতি তাঁহার মনে জাগিতে লাগিল। মাতা ক্সাকে একট্ট প্রফুল্লমনা দেখিয়া ইপ্রদেবতাকে শত শত ধ্যুবাদ দিতে লাগিলেন।

মা'র প্রাণ! কন্সার সমাত একটু সচ্ছন্দ দেখিয়াই মনে করিয়াছেন, বুঝি এ যাত্রা কমলা রক্ষা পাইবে। তাঁহার বুকের ধন বুকেই থাকিবে।

মাতা জিজাসা করিবেন:—কমন, একদত্তে তাকাইয়াকি দেখত ?

কমলা। মা, আমি অন্তগামী স্থ্য-দেবকে দেখ্চি। দেখ দেখি, যদিও গাঢ় লোহিতবৰ্গ ক্ষুয়াছেন, তথাপি স্থ্যকে কেমন স্থলন দেখাইতেছে। মা, বল দেখি, মানের চেরে অন্তকালৈ স্থ্যদেবকে এত স্থলন দেখার কেন ? মাতা। যাহমণি আমার, এ দব খবর নিয়া তোমার কাজ কি ?

প্রত্তি করেকটি কথা বলিয়া সেহমর্মী জননি সন্তানের স্বর্গীয় মুখচন্দ্রমার দিকে একদৃষ্টে নিরীক্ষণ করিতে লাগিলেন। কমলা যেন মা'কে কিছু বলিতে চেন্তা করিলেন, কিন্তু তাঁহার মনোভাব বলিয়া উঠিতে পারিলেন না, তাঁহার ছইটা চক্ষ্ জলে ভরিয়া আসিতে লাগিল।

শাতা। কমল, তুমি আমায় কি বৰ্ছিলে?

কমলা। মা, আমি বিশ্বজননীর কাছে যাছি, তিনি আমার ডেকেছেন। জননি! আমি তোমার বড় হতভাগিনী মেরে; এ সংসারে কিছু দিন প্রাকিয়া তোমার অসীম দয়া এবং ক্লেহের কণিকামাত্রও প্রতিশোধ করিতে পারিলাম না।

কমলার হৃদয় ভালিয়া যাইতে লাগিল;
তিনি আর কিছুই বলিতে পারিলেন না;
কেবল মাতার স্বেহময় বক্ষে মুথ রাথিয়া
অজ্ঞ্রধারে অঞ্চ বিস্ক্রেন করিতে
লাগিলেন।

মাতা। অবোধ মেরে ! এরপ নিদারণ কথা ব'লে তোর অভাগিনী মারের বক্ষে কেন আর শেল বিদ্ধ করিস। বালাই ! এই বে তোমাকে আজ অনেকটা ভাল দেখ্চি। আমার মাধার বত চুল আছে, তোমার পরমায়ু তত বংসর হউক।

কমনা। না মা! তবে আমি দীর্থ-জীবিনী হইব; আছো, মা! তুমি আমার সীতাচরিত শুনাও। কমলার মা অত্যস্ত আহলাদিতা হইয়া সীতাদেবীর গল আরম্ভ করিলেন। সীতা-চরিত প্রত্যেক রমণীর শুনিতে বড় ভাল লাগে, স্থতরাং কমলা নিবিষ্টচিত্তে মায়ের মুথে সীতাদেবীর গল শুনিতে লাগিলেন।

স্থ্যদেব অনেকক্ষণ অন্তে ডুবিয়াছেন;
সমস্ত আকাশে অগণ্য নক্ষত্ররাজি শোভা
পাইতেছে এবং শুক্রপক্ষের চক্রের বিমল
কিরণে জগৎ যেন হাসিতেছে। বারান্দার
সম্মুথের প্রাঙ্গণে অনেকগুলি সেফালিকা
গাছ অসংখ্য স্থান্ধি পুপভারে এক
মনোহর শোভা ধারণ করিয়াছে। কমলার
একটু তন্তার মত আসিয়াছিল, তাঁহার
মাতা পার্শ্ব বিসিয়া হরিনামের মালা জপ
করিতেছিলেন।

হঠাৎ কমলা চক্ষু মেলিলেন এবং প্রীতিপ্রকুলচিত্তে বলিলেন "মা, মা, তিনি এসেছেন; ঐ দেখ, তিনি এই দিকেই স্থাস্ছেন?"

মাতা। "ধাট, ধাট, মা আমার! কৈ এখানে কে আস্ছে?"

কমলা। "তোমার জামাই আস্ছেন।"
কমলার মাতা তাঁহার জামাতা
স্থরেক্তকে অত্যন্ত ম্বণার চক্ষে দেখিতেন,
কারণ এই পাষণ্ড জামাতার দোবেই
তাঁহার স্নেহের কন্সারত্বের সাংঘাতিক
ব্যাধি জন্মিয়াছে। তিনি অতীব বিরক্তি
সহকারে বলিলেন "সে নরপিশাচের
বিষয় আর ভাবিও না—সে নরাধম,
পাষণ্ড, ঘোর স্বরাপায়ী পশু। সে

পাপাত্মা পশু অপেক্ষাও অধম। তুগ-বানের চরণে প্রার্থনা করি, যেন আর সে পাষণ্ডের মুখ না দেখিতে হয়।"

কমলা। "মা, তুমি কেন র্থা। তাঁহাকে ভংগনা করিতেছ ? তুমি কি জান না, সাধবী স্ত্রীর পতি ভিন্ন আর গতি নাই ? আমি নিয়ত ঈশবের নিকট প্রথনা করি, যেন কেহ তাঁহার শরীরের ছায়ারও অনিষ্ট না করিতে পারে। মা, আমি যে স্থামিদেবের চরণ সেবা করিতে পারিলাম না, সে আমারই অদৃষ্টের দোর। আমি ঘোর পাপিনী, তাই এই সমস্ত নিগ্রহ ভোগ করিতেছি!

কিছুক্ষণ পরেই কমলার পিতা আদির।
তাঁহার নাড়া ধরিয়া বিষণ্ণভাবে শরীরের
অবস্থা জিজ্ঞাসা করিলেন এবং ফিরিয়া
যাইবার সময় স্থরেক্তের আগমনের বিষয়
তাঁহাদিগকে জানাইলেন। কমলা অত্যক্ত
লজ্জাশীলা; পিতামাতার সম্মুধে স্থামীর
সহিত আলাপ করিবেন না ভাবিরা
তাঁহারা উভয়েই সে স্থান হইতে চলিরা
গেলেন।

সুরেক্স। "আমি এখানে কেন আসিয়াছি
তাহা নিজেও ঠিক্ বলিতে, পারি না;
ফ্রাপানে সংজ্ঞাশৃত্য হইয়া, প্রকৃতিস্থ
হইবার জত্য কিছুক্ষণ ঘুমাইতে চেষ্টা
করি। কিন্তু এক ভ্যানক বল্ল দেখিয়া
আমার মন নিতান্ত অস্থির ^{*}হইরাছে;
আমি নিদ্রিত হইয়া দেখিলাম কতকগুলি
ভীষণ মৃঠি আসিয়া আমাকে খেরিয়া
দাড়াইল এবং সকলেই আমাকে লক্ষ্য

করিয়া সমস্বরে বলিল, 'নৃশংস, প্রীযাতক ! তোকে ধিক্!' জামি জাগিয়া উঠিলাম। সর্কাশরীর হইতে হর্মা বাহির হইতে লাগিল এবং আপাদমত্তক ভয়ে থর থর করিয়া কাঁপিতে লাগিল। 'যে সমতত হুছতি করিয়াছি সবই মনে পড়িল, অমু-তাপানলে দগ্ধ হইয়া অনেকক্ষণ পর্যান্ত অক্রমল বিসর্জন করিলাম, অবশেষে ভোমার চরণতলে পড়িয়া ক্রমা ভিক্ষা করিব বলিয়া এথানে আসিয়াছি। তুমি হয়তা এ সমস্ত কিছুই বিশ্বাস করিবে না, কিছ প্রিয়তমে! এ সকল সত্য কথা, আমার জীবনে এক আশ্চর্যাজনক পরিবর্তন ঘটাইয়াছে; তুমি আমাকে ক্রমা কর।"

কমলার আর আনন্দের সীমা রহিল না; তাঁহার সমন্ত নাক চোক মুথ দিয়া त्यन जानत्मत्र महत्र इंटिट्ड नाशिन এवः की नचारत स्रात्रस्तर विशासना, **অ**তি **"প্রাণেশ্বর। তোমার কথা কেন** বিশাস করিব না ? হরি আমার প্রার্থনা শুনিয়াছেন। আমি মার মুথেও শুনিয়াছি, তাঁহার রূপাবলে খঞ্জও গিরি করিতে পারে, মন্ত হন্তীও সামান্ত কর্দমে षायक रहेगा थाक। महर्षि वानीकि দস্মার্ডি পরিত্যাগ করিয়াও শেষে ভারত-फ्रिनित (अर्क कवि विनिन्ना गंग) इटेन्नारहन। এ সকল্টে হরির কুপা ভিন্ন আর কিছুই ज्यामि विश्वादक्ष कति, द्वेशदत्रत শাস অসম্ভব সম্ভব হয়।"

ছরের। "ডোমার ভার গুণবতী

ভার্ব্যা পাইরা, আমি-একটি দিনের জক্তও তোমাকে আদর করিলাম না। আমা সম হতভাগ্য জগতে আর কে আছে! কিন্তু প্রাণপ্রিরে! তুমি আমাকে বাঁচাও, আমার আর নিস্তার নাই! তুমিই যদি ক্ষমা কর, তাহাহইলে রক্ষা,নতুবা উপায়ান্তর নাই।" এই করেকটী কথা বলিতে বলিতে স্থরেক্র বালকের স্থায় রোদন করিতে লাগিল।

কমলা। সে কি কথা। আমি
তোমাকে কুমা, করিবার কে । আমি যে
তোমার জীচরণের দাসী! তুমি আমার
পার্থিব ঈশ্বর! প্রাণেশ্বর! আর আমার
সন্মুথে চক্ষের জল কেলিও না। আজ্
আমার: ভার ভাগাবতী কে । আছে ।
জগন্মাতা আমার প্রার্থনা ভানিয়া তোমার
মতি গতি পরিবর্তন করিয়াছেন। অভিম
কালে তোমাকে নিকটে পাইয়া আত্মাকে
কুতার্থ মনে হইতেছে। এ সমরে তোমার
চরণ ছথানি আমার মাথার উপর রাথ।
প্রিয়তম! বুথা চক্ষের জল কেলিয়া
আমার স্থবের ব্যাঘাত করিও না।

স্থরেণ কমলার মন্তক নিজের ক্রোড়ে লইল, এবং যে হই এক গাছি চুল মুথের উপর পড়িয়াছিল, তাহাই ছদিকে সরাইতে লাগিল। বলা বাহল্য, স্থরেক্রের এতই অন্থতাপ হইতে লাগিল বে, অবিরত হই গণ্ড বহিয়া কেবল অশ্রবারি পড়িতে লাগিল। কমলা স্থরেণের কোলে মাধা রাথিরা মনে করিলেন বেন কুমুম অপেকাও কোমল শ্রাম শারিতা আছেন।

স্থরেক্তের মুখের দিকে অনিমেষলোচনে চাহিয়া বলিলেন, "প্রাণেশ! এ দাসীর মৃত্যুর পর তাহাকে মনে করিবে কি ?"

স্থরেক্স। ওরূপ নিদারুণ কথা কেন মুখে আনিতেছ ? তুমি নিশ্চরই আরোগ্য লাভ করিবে।

কমলা। আমারও একান্ত বাদনা
কিছুদিন বাঁচিয়া থাকিয়া তোমার চরণ
দেবা করি। কিন্তু আমার সে আশা ব্রি
পূরিল না। নাথ! যদি আর কিছু পূর্ব্বে
এ দাসীর মর্ম্মান্তিক যাতনার কারণ
ব্রিতে, তাহা হইলে বোধ হয় আমার
এ সাংঘাতিক পীড়া জন্মিত না; এখন সব
চেষ্টা বিফল। এজন্ম আমি তোমার
কেরন্ত দোষ দিব না—এ সকলই আমার
ত্বন্ত্বিক্রমে ঘটিয়াছে।

এই কথাগুলি বলিয়া নীরব হইলেন, এবং চকুর্ব মুদ্রিত করিলেন। কিছুক্ষণ এই ভাবে থাকিয়া হঠাৎ চকু মেলিলেন, তাঁহার চক্ষের তারা ঘুরিতে লাগিল। "জ্বন্ধ জগদীশ হরে" বলিয়া পতির কোলে মাথা রাধিয়াই সমস্ত সাংসারিক যন্ত্রণার হাত হইতে চিরদিনের জ্বন্থ দিয়তি পাইলেন। তাঁহার প্রাণবায় "আনন্দধামে" উড়িয়া গেল। স্থবেণ হতবৃদ্ধি ও অবাক্ হইরা বিসিয়া রহিল। তাঁহার মনে হইডে লাগিল যেন কমলার পার্ষে এক উজ্জল মৃর্ত্তি আসিয়া দাঁড়াইরাছেন; তাঁহার শরীরের আভা আসিয়া কমলার মৃথের উপর পড়িরীছে।

যাও কমল, তুমি ভোমার বাছিত নেই শান্তিধামে গিয়া বাস কর। এ ছ:খ-কট-প্রতারণাপূর্ণ পৃথিবী তোমার স্তার দেবীর বাসযোগ্য স্থান নয়। আৰু ভূমি পতি-ভক্তির যেরূপ পরাকাষ্ঠা দেখাইলে, তাহাতে তোমাকে দেবী বলিয়া পূজা ক্রিলেও আমাদের প্রাণের পিপাসা মিটে না। তোমার ভার সাধ্বী রমণী ওরূপ শোচনীর অবস্থায় না পড়িলে, তোমাতে বে সম্ভ স্বৰ্গীয় গুণ আছে, তাহা কে দেখিত 🕈 ভগবান কোন উদ্দেশ্যে কোন্ থেলা খেলিতেছেন, আমরা কুদ্রবৃদ্ধি মানব তাহা কি করিয়া ব্ঝিব! তুমি এ সংসার হইতে চলিয়া গিন্নাছ, কিন্তু পাতিত্ৰত্যের বে জ্বস্ত দৃষ্টান্তটা রাখিয়া গেলে, ভাহাতে তোমার স্মৃতি চির্নিনই व्यामादमञ श्वनग्रकनाक अर्थाकत्व (थानिक थाकित्व। (কোনও ইংরাজী পত্তে প্রকাশিত উপা-খ্যান অবলম্বনে লিখিত)।

হেঁয়ালি।

ূতিন বর্ণে নাম, বড়ই স্থঠাম, সদাই মোদের সদন বসতি। श्रामि श्र'विरुटन, थाकि এक गरन, क्जू डाटक ''मीमी" मीमी त्न , ब्रुडी। यिन अस नज्ञ, उत्त अन रङ्ग, अतार अनम मागदाउ नज्ञ; দিবায় বিকাশে, নিশিতে না হাসে, পতিপ্রাণা সতী বন্ধ কে সে হয় পু

নীতিকথা।

"হংধ চিনি ভাল বটে, সোহাগা সোনায়, সত্য সহ মিষ্ট কথা আর (ও) শোভা পায়"। "ৰদ্ধতা কি হর কভু দৈত্য দেব লোকে, কুট্ৰিতা কোথা থাকে আধার আলোকে ?" "পণ্ডিতের মুর্থপাশে সদা পরাজয়, অকার ধুইতে জল মলিনতাময়।" "স্কাঙ্গস্থলর ভবে সম্ভবে কথন ? জগন্নাথ অঙ্গহীন দেব গজানন।" "লাগে নাকি থড় কুটা হর্ম্ম বানাইতে ? সক্মল দুর্ঝাদল দেবতা পুজিতে ?" "পুছরের পথে হয় তক্ষরের ভয়। "ভালাপদ গর্জে পড়ে মিছা কথা নয়।"
"ভালবাসা নীচ জনে স্থান নাহি পায়,
দিধি মধু কচুপাতে রাথা বড় দায়।"
"ঈশ্বরে ভক্তের প্রেম হয় না মলিন,
সক্ষর চুম্বক লোহে ভাঙ্গে কোন্ দিন ?''
"অতি জলে সাগরের সলিল মলিন,
অতি পুত্রে সগর হইল বংশহীন।"
"নামাবলি ব্যবহারে ভক্ত কভু নয়,
ভক্ত কি সে মকরাক্ষ রাম-নাম-ময়!"

(ক্রমশঃ)

আফ্রিকা ও তত্রত্য অসভ্য জাতি।

আফ্রিকা আরুতিতে দ্বিতীয় মহাদেশ, কৈন্ত ইহা সভ্যজগতে অতি অলই পরিচিত। ইহার আরুতি আমের ভায়। আফ্রিকা ইউরোপ ও আসিয়ার দক্ষিণে, এবং ইহার চতুর্দ্দিকই প্রায় সমুদ্র দ্বারা বেষ্টিত, কেবল ৭৩ মাইল প্রশস্ত একটা বালুকাময় ভূমি ইহাকে এসিয়ার সহিত সংবৃক্ত করিয়াছে। এই ভূমিওও স্কুরেজ বোজক, তাহা জাহাজ গমনাগমনোপযোগী একটা থাল
বাং ক্রিকা ইইয়াছে। আইইকা অতিশয়

ইহার অতি অল্প অংশকেই সিক্তা করিয়াছে। বিস্তীর্ণ বালুকাময় মরুভূমি এই মহাদেশকে ছাইয়া আছে, ইহার অতি অল্প ভূমিই উর্বর। এ স্থানে কয়েকটা পর্বতশ্রেণী আছে এবং কয়েকটা পর্বতের শিথরদেশ সর্বাদাই বরফাবৃত থাকে। সর্বাপেক্ষা দীর্ঘ নাইল নদ উত্তরাভিমুখে প্রবাহিত। প্রতি বংসর গঙ্গানদী যে সময়ে বঙ্গদেশের কিয়দংশ প্লাবিত করে, নাইলও সেই সময়ে ইহার ভীরম্বর প্লাবিত করিয়া থাকে। নদীটা প্রতাধিক উপকারী বলিয়া মিসরবাসিগণ ইহাকে দেবতা-স্বরূপে পূজা করিয়া থাকে। কঙ্গো নদী পশ্চিম দিকে প্রবাহিত এবং ইহা দৈর্ঘ্যে দিতীয় ও প্রচুর জলরাশি দারা দেশ প্লাবিত করিয়া থাকে। আফ্রিকায় কয়েকটি বিস্তৃত হ্রদ আছে। গম, যব প্রভৃতি আফ্রিকার উত্তরাংশের প্রধান শস্ত। মধ্য ও পশ্চিমাংশে তণ্ডুল, চিনি, একপ্রকার আলু, গম ও তাল জনিয়া থাকে। দক্ষিণ-পূর্বদেশবাদীদিগের জীবিকা গৃহপালিত পশুদিগের উপর নির্ভর করে। উষ্ট্র, বলদ, মেষ, ও অশ্ব ইহাদিগের গৃহপালিত। আফ্রিকার জঙ্গলে ও মরুভূমিতে গরিলা নামক একপ্রকার হিংস্র বানরজাতি এবং দিংহ, 'হন্তী, গণ্ডার, দিন্ধ্ঘোটক, জ্বিরেফা প্রভৃতি নানা প্রকার জন্ত দৃষ্ঠ হয়। বহ-অবস্থিতি ननीयरधा সংখ্যক কুন্ডীর করে।

আফ্রিকার উত্তরাংশবাসীরা আরব বংশীয়। মধ্য ও দক্ষিণাংশে নিগ্রোজাতীয়েরা বাস করে এবং ইহারা কণঞ্জিং সভ্য। অনেক দিন হইতে দাসব্যবসায় আফ্রিকার সর্ব্ধনাশ করিতেছে। দেশীয় শাসনকর্ত্তাাদিগের প্রায় সকলেই যথেচ্ছাচারী এবং দাসলাভাশায় সভত পরস্পরের সহিত যুদ্ধে রত। আফ্রিকার প্রায় সর্বস্থানে বহুবিবাহ প্রথা দৃষ্ট হয়। খৃষ্টধর্ম এক প্রকার বিকৃত আকারে আবীসিনিয়াতে, এবং মুসলমান ধর্ম উত্তরাংশে প্রচলিত। যদিও খৃষ্টধর্ম আফ্রিকার নানা স্থানে প্রচলিত আক্রিক, তথাপি অধিকাংশ নিগ্রোই

পৌন্তলিক; পালক, ডিম্ব, প্রভৃতি দেবতারূপে পূজা করিয়া থাকে। ভিন্ন ভিন্ন
ইউরোপীয় জাতি আফ্রিকার অধিকাংশ
হলে আধিপত্য স্থাপন করিয়াছেন।
অফ্রিকার বি-সকল স্ত্রীলোক খৃইধর্মাবলম্বিনী নহে, তাহারা ক্রীতদাসী ও ভারবহ
পণ্ডর স্থায় বাবহৃত হয়।

বঙ্গোজাতি।

বঙ্গোজাতি নাইল নদের দক্ষিণে বাস नदीरत्रत বঙ্গো দিগের ইহাদিগের দেশের মৃত্তিকার স্থায় লোহিত हेशामत दक्ष ও ধূসরবর্ণ মিশ্রিত। ক্লফাবর্ণ ও প্রায় অর্দ্ধ বুরুলের অধিক দীর্ঘ হয় না; ইহাদিগের গোপ দাড়ী বঙ্গোজাতিয় প্রায় দেখা বায় ना । পুরুষেরা একথণ্ড বস্ত্র বা চর্ম্ম করিয়া থাকে। বেইন লোকেরাও প্রায় তদ্রপ করে। ইহারা বড ভূষণপ্রিয়, প্রায় পল্লবযুক্ত শাধা অথবা তৃণগুচ্ছ ধারা মন্তক স্থশোভিত করে। অনেক স্ত্রীলোক মন্তক সম্পূর্ণরূপে মুগুন করে এবং অলফারের দারা বস্ত্রের অভাব পূর্ণ করে। এই অলম্বার কতকগুলি দড়িতে পলাকাটি গাথিয়া ১০৷২০ বা ৫০ क्ट्र मित्रा कर्छ थात्र करत् । शूक्रम्राम् কণ্ঠহার আরো চমৎকার! ভাহারা ঈগল পক্ষীর নধর, ও কুরুর, কুন্তীর ওু শৃগাল প্রভৃতির দস্ত মালা করিরা পরে। ভাহা-দের কর্ণে ভাত্র অঙ্গুরী। উপরের ঠোঁট কু'ড়িয়া তাহাতে ভামার গৰাল বা আংটি

পরিধান করে। কথন কথনও বক্ষের উপরিস্থ চর্দ্ম ফুঁড়িরা তন্মধ্যে একথগু কার্চ িপ্রবিষ্ট করাইয়া দেয়। হস্তে নানা আকারের আনেক থালি লোহার বালা ধারণ করে। ত্তীলোকেরা পাদদেশেও এইরপ আভরণ পরিধান করিয়া থাকে। বিবাহের পর লীলোকেরা অধরদেশে ছিদ্র করিয়া তন্মধ্যে কাষ্টের শলা প্রবিষ্ট করে। এই শ্লা বদলাইরা ক্রমে লম্বা করিয়া দেওয়া হয়, ক্রমে তাহা উপরের ঠোট ছাড়াইয়া ষধ্য। উপরের ঠোঁট ছিদ্র করিয়া একটী তাত্রের অঙ্গুরী অথবা থড়িকা দেওয়া হয়। নাকের হুই পাশ ফুঁড়িয়া অনেকগুলি ধড়িকা পুরিয়া দেওয়া হয় এবং মধ্যস্থল কুঁড়িয়া একটা তাম্রের অনুরী ধারণে নাসিকার শোভা বৃদ্ধি হয়। কানে অনেক শ্বলি গ্ৰুনা চাই, এজন্ম ছিত্ৰও বহুসংখ্যক। স্ত্রীলোকদিগের শরীরের শত শত স্থান ফু'ড়িয়া দেওয়া হয়। স্ত্রীলোক দিগের শরীরের উপরিভাগে সরল বা বক্র নানা প্রকার রেখা বা বিন্দু ধারা উল্কি অঙ্কিত হয়। বিবাহার্থ স্ত্রীলোক ক্রেয় করা হয়। একটা পুরুষ তিনটার অধিক জী গ্রহণ করিতে পারে না। একটা যুবতীর মূল্য এক দের ওজনের ১০ থানি লোহার থাল এবং ২০টা কাষ্টনির্মিত অস্ত্র। সন্তান হইলে সে,প্রায় কথনও মায়ের কাছ-ছাড়া হয় না। মাতার পুঠে ছাগচর্মের থলিয়া ধাকে, কোণাওঁ বাইতে হইলে তাহাতে সন্তান ময়া মাতা বহন কৰিছি থাকে এবং কাজ ক্ষিবাৰ সময় সন্তান পূঠে শইয়া কাজ করে।

বলোদিগের কুটারদকল আমাদের দেশের ধানের কর্মারের মত; উপরে গোলাকার একটা স্থান থাকে,তাহাতে বদিরা প্রামের চতুর্দ্ধিক্ দেখিতে পাওরা যায়। ইহার দার এত কুল যে, হামাগুড়ি দিরা গৃহমধ্যে প্রবেশ করিতে হয়। দারদেশের ছই দিকে ছইটা খুঁটি পুঁতিয়া আগড় দারা বন্ধ করা হয়। মেঙ্গে মাটানির্ম্মিত এবং তাহা অতি যত্নপূর্বাক পিটিয়া সমান করা হয়। মেজের উপর চামড়া বিছাইয়া সকলে শয়ন করে। স্ত্রীলোকেরা খোদকারীকরা চৌকিতে উপবেশন করে। পুক্ষেরা উচ্চ আসনে বসিতে ভালবাদে না।

বঙ্গোজাতি জাওয়ারী নামক শস্তের চাষ করিয়া থাকে, তত্তির হাঁদ, মুরগী, কুরুর পোষে। শিকার করিয়া ও মাছ ধরিয়াও থাতা সংগ্রহ করে। দেশে লবণ পাওয়া যায় না। এক প্রকার গাছ পোড়াইয়া ছাই করিয়া দেই ক্ষার ব্যবহার করে। ইহারা প্রচুর পরিমাণে তামাক চাষ করে এবং তামাক থাইয়া ইহারা কুরুরের মাংস ভিন্ন शहक । मर्स्त अकात मारम थात्र। देशत, मान, विष्टा किहरे यान यात्र ना । माश्म यक भाग स्त्र, বঙ্গোদিগের অনেক ততই উপাদেয়। তাহাদের গান প্রকার বাদ্যযন্ত্র আছে। অতি আশ্র্যা। সঙ্গীতে কুকুরের ভেউ ভেউ, বিড়ালের মিউ মিউ এবং গাভীর গাঁ গাঁ শ্বর একেবারে শ্রুত হয়, মধ্যে মধ্যে কতকগুলি কথা গ্রথিত থাকে। গাল

প্রথমে শ্বারে আরম্ভ হর, পরে
ব্কলে চীৎকার, কিচিমিচি ও গাঁ গাঁ শব্দ
সাধ্যমত বলের সহিত করিতে থাকে।
ক্রেমে শ্বর কোমল হইয়া শোকসঙ্গীতের
ভায় কাঁছনে শ্বর বাহির হয়, পরে হঠাৎ
সকলে একেবারে উৎসাহপূর্ণ হইয়া
কোলাব্যাঙের মত কণ্ঠশ্বর বাহির

করে। বলেদিগের ধর্মজ্ঞান অভি
অক্ট। তাহারা ভূতের ভর করে এবং
বর্মজ্ঞানেই তাহার যাতারাত আছে
বিদায় বিধান করে। বুদা স্থালোকেরা
ডাইনি ক্রিয়া বিবেচিত হয় ও প্রনেক
নিগ্রহ ভোগ করিয়া থাকে।

মুতন সংবাদ।

১। রাজপ্রতিনিধি লর্ড এলগিন সমুদ্র-বায়ু সেবনে স্বস্থ হইয়া কলিকাতায় ফিরিয়া আসিয়াছেন এবং নৃতন ব্যবস্থা-পনাদি কার্য্যে প্রবৃত্ত হইয়াছেন।

) इश्लाख्य नार्कनीमात्रत्र ताक कीय

কলেজ স্ত্রীলোকদিগকে ডাক্তারির সনন্দ দিবার নিয়ম করিয়াছেন।

৪। লেডি ডফুরিন ফণ্ডের বন্ধীয় কমিটীর হল্তে লক্ষ টাকা মাত্র মন্ত্র আছে। ভোট লাট ইহার আগ্রৃদ্ধির জন্ত সচেষ্ট হইয়াছেন দেখিয়া আমরা:সম্ভই হইলাম।

৫। জাতুরারির শেষভাগে কলিকাতার তিনজন বিদেশীয়ের বজ্বতার ধুম হইরা গিয়াছে—বিবি বেজান্ট, সুক্তিফোজের জেনারল বুথ, এবং রেবরেণ্ড জে, টি, স্পার্ল্যাপ্ত। শেবোক্ত মহাত্মা একেশর-বাদী গুটানদের প্রতিনিধি।

পুত্কাদি স্মালোচনা।

>। The Life of Pundit Iswar Chandra Vidyasagar— শ্রীবৃক্ত বাবু শ্রীচরণ চক্রবর্তী প্রণীত, মূল্য ১৪০ টাকা। ইংরাজী ভাষার বিভাসাগর মহাশরের লীবনীর অত্যক্ত অভাব ছিল, শ্রীচরণ বাবু তাহা প্রকাশ করিরা সাধারণের

বিশেষ কৃতজ্ঞতাভাজন হইয়াছেন। বিদ্যাসাগর কেবল বজের গৌরব নন, সমুদার
ভারতের গৌরব এবং তাঁহার, পুণাচরিজ্ঞ
বেমন ভারতবাসীদের, তেমনি পৃথিবীর
সমস্ত লাতীর লোকের পাঠা ও উপাদের
হইবে, স্ব্লেহ নাই। এই প্রক্

সরল স্থলর ইংরাজিতে লিপিত হইয়াছে

এবং ইহাতে বিদ্যাসাগর মহালবের জীবন

সম্বন্ধে জ্ঞাতবা বিষয় সকল যে প্রকার

সহাদয়তার সহিত বর্ণিত হইয়াছে, তাহাতে
পাঠকদিগের হৃদয়ে তাঁহার ছিবি পৃত্রপে

অঙ্কিত হইবে, সন্দেহ নাই। গ্রন্থকর্তা

সম্পূর্ণরূপে উৎসাইলাভের যোগ্য।

২। মনের কথা তীভেরবচক্র চৌধুরী প্রণীত ও রামচন্দ্র অনস্ত কর্তৃক প্রকাশিত, মূল্য ॥ । গ্রন্থখানি পদ্যমন্ন এবং নানা সম্ভাবোদ্দীপক কবিতা ইহাতে সন্নিবেশিত হইয়াছে। গ্রন্থকারের কবিছ-শক্তি আছে, চালনা করিলে ক্রমে তাহা বিকশিত হইয়া বঙ্গসাহিত্যের শোভা বৃদ্ধি করিবে।

বামারচনা।

বসন্ত পঞ্চমী।

বসস্ত পঞ্মী আজ তিথি শুভক্ষণ, সারাটি বর্ষ পরে. আসিবেন ভক্তথ্যে-বীণাপাণি, জুড়াইতে ভকত-জীবন। কোকিল ভ্রমর গায় শুভ আগমন। মলয় মৃত্ল হাসে, বলিছে ভকত-পাশে, "পুরিতে মায়ের পদ কর আয়োজন"। যাহার ক্ষমতা যত, আয়োজন করে তত, মনসাধে পুঞ্জিতে সে কমল চরণ। পুজিতে দে পা ছখানি, আপনি প্রকৃতি রাণী, সাজাইছে থবে থবে কুস্থম-ভূষণ; পুঞ্জিতে মায়েরে সবে করে আয়োজন। আমিই অধ্য দীন. আমিই শক্তিহীন, আমারি নাহিক কিছু পৃত্তিতে চরণ। ুতা ন'লে কি মোৰ বাড়ী

ত্রিদিব-আলয় ছাড়ি,

শাসিৰে না মা আমারে দিছে দরশন ?

ধনীর আলয়ে যাবে মনোমত পূজা পাবে, তাব'লে কি তুথিনীরে হ'বে বিশ্বরণ প মায়ের মমতা ক্লেই নহে গো এমন। যে বড গরীব দীন. যে বড় শকতিহীন, শুনেছি তারেই মা'র অধিক যতন। তবে কেন পাব না মা তব দরশন ? ছুখিনীরে দয়া ক'রে, এদ মা আমার ঘরে. আমিও মনের সাধে পৃজিব চর্ণ। প্রীতির কুম্বম তুলে, ভকতি চন্দন গুলে, প্রেম-বিল্ব-পত্র দলে করিব পূজন। করিব অঞ্জলী দান, আমার এ মন প্রাণ, সংসার-উচ্চিষ্ট ব'লে কর না হেলন। তা ছাড়া আমার আর নাহি অন্ত ধন। আমার যা আছে তাই করিব অর্পণ।

<u> এমতী নগেন্ত বালা মৃত্যোফী</u>

* नागाताधिनौ পত्रिका।

BAMABODHINI PATRIKA. 'कन्याप्येवं पालनीया शिच्चणीयातियत्नतः।''

ক্সাকে পালন করিবেক ও যত্নের সহিত শিক্ষা দিবেক।

৩৭৪ সংখ্যা ।

काञ्चन, ১७०२—मार्क, ১৮৯७।

৫ম কল্প। ৪র্থ ভাগ।

ं সাময়িক প্রসঙ্গ।

রাজপরিবারে শোক—ভারত-সামাজীর ছোট জামাতার অকাল মৃত্যুতে তাঁহার পামাজ্যের সর্বস্থান হইতে গৃভীর সহাত্ত্তিস্চক পত্র পাইয়া মহারাণী আপনার ও তাঁহার কনিষ্ঠা কলা বিএ-ট্রিসের হৃদরের ক্বতজ্ঞতা প্রকাশক্ষণে জানাইয়াছেন।

কুমারী সরলা দেবী—ইনি বরদার
মহারাণীর প্রাইবেট সেক্রেটারী-পদ ত্যাগ
করিয়া পুনরায় মহীশ্রের কর্মে ফিনিয়া
আসিয়াছেন।

বরদায় দ্রীশিক্ষা—মহীশ্র রাজ পরিবারের সাধু দৃষ্টান্তে গুইকুমার ও তাঁহার মহিনী বরদারাজ্যে জীশিক্ষার উন্নতিসাধনে বিশেষ বত্বশীল হইরাছেন। সম্প্রতি মহারাণী চিম্বা বাই বালিকা ও অন্তঃপুরস্থ মহিলাদিগকে শহতে প্রস্কার বিতরণ করিয়াছেন। প্রায় ১২০০ বালিকা

ও ৭৫টা ভদ্রবংশীয়া যুবতী পুরস্কারলাভার্থ উপস্থিত হন। অনেক হিন্দু, মুস্লমান ও পারসী মহিলা এই অমুঠানদর্শনার্থে স্মিলিত হইয়াছিলেন।

বায়ুবাসী জীব—একজন বৈজ্ঞানিক বলেন, আনরা বে বায়ু সেবন করিয়া জীবিত আছি, তাহাতে ৬০০ বিভিন্ন প্রকার জীব আছে।

মাদাগাস্কারের পরাধীনতা—মাদা-গান্ধারের রাজী ফরাসীদিগের অধীনতা বীকার করিয়া অরাজ্য-শাসনের ভার পাইয়াছেন।

মান্দ্রাজের নৃতন প্রথর—সার আর্থার হাবেলক মাক্রাজের নৃতন শাসন-কর্তা মনোনীত হইয়াছেন।

কোরিয়ার নৃতন বাবস্থা—বে কোরিয়া লীইয়া চিন জাপানে মহার্ছ হয়, ক্সিরা রক্ষকরপে তাহা হস্তগত ক্রিডে ষাইতেছেন। গলকচ্চপের বুদ্ধে গরুড়েরই পোহাবার।

পাতিয়ালার ইংরাজ রাণী—মহারাণী ক্লোরেন্স অবালে দেহত্যাগ করিয়াছেন। শিশধর্মপ্রণালীমতে তাঁহার কংকার-কার্য্য মহা-সমারোহে সম্পন্ন হইয়াছে।

দান—(১) গয়া মুকস্থদপুরের রাজা রামেশ্বর প্রসাদ নারায়ণ লেডী ডফারিণ ফণ্ডে ২৫০০০ টাকা দান করিয়াছেন।
(২) কাকীনিয়ার রাজা মহিমারঞ্জন রায় চৌধুরী কলিকাতা মুক-বধির-বিদ্যালয়ে ১৫০ টাকা দান করিয়াছেন।
(০) বৈচির জমীদার বাবু রাম লাল মুঝোপাধ্যায় সমুদায় বঙ্গালা প্রদেশের বস্তা অথবা ছর্ভিক্ষ-পীড়িত লোকদিগের সাহাযার্থ শতকরা আ০ স্থদের ৫০ হাজার টাকার এক থানি কাগজ বাঙ্গালা গবর্ণ-মেণ্টের হস্তে দিবার জন্ত আবেদন করিয়াছেন।

জাপানের শ্বৃতিচিক্ত—চীন দ্বিরার উপর
জাপানীরা যে সকল জয়লাভ করিয়াছেন,
তাহার শ্বৃতিচিক্ত্বরূপ ৮০ হাত উচ্চ
এক বৌদ্ধমূর্ত্তি নির্মাণ করিয়া প্রতিষ্ঠা
করিবার জন্ম জাপানী বৌদ্ধেরা ক্ততসকল, ইহাতে ১০ লক্ষ জাপানী মুদ্রা ব্যয়
হইবে।

বিদ্বাধী রাজমাতা—সম্প্রতি ভবনগরের মহারাজের মৃত্যু হইয়াছে। এই ঘটনার এক সপ্তাহপরে শোকার্ত্তা রাজমাতা কুবের বাই পরলোকগত হইয়াছেন। ইহাঁর বয়স ৬২ বৎসর হইয়াছিল। ইহাঁর বাল্যকালে দেশে স্ত্রীশিক্ষার কোনও উপায় না থাকিলেও ইনি নিজ যত্নে পার্বসী ও গুজরাটী ভাষা রীতিমত শিক্ষা করেন। উক্ত ভাষার কাব্যগ্রন্থ পার্ফে ইহার অকমাত্র সন্তর্মা ছিল। ইনি ইহার একমাত্র সন্তান মহারাজের প্রাণে শৈশব হইতে সেই কাব্যামুরাগ সঞ্চারিত করিয়াছিলেন।

পদ্ম ও পানা।

পন্ম ও পানা উভয়ই জলজ উন্তিদ্;
কিন্ত ইহাদের আকৃতি ও প্রকৃতিগত
পার্থক্য অনেক। পানার মূল মৃত্তিকার
সংবদ্ধ না থাকার উহা জলোপরি ভাসিরা
বেড়ার এবং বায়ুকর্ত্ব ইতন্ততঃ চালিত
হইরা কণ্ডই না লান্থিত হয়। এক স্থানে
ক্রিকাল শান্তিতে অনীস্থান যেন পানা
বেচারির ভাগ্যে বিধাতা লিখেন নাই।

ইহাদের সত্তর বংশবিস্তার এক অতি
বিশ্বয়কর ব্যাপার। যদি একটা পানা
কোন প্রকারে কোন পুকুরে আদিয়া
পড়ে, তাহা হইলে অচিরকাল মধ্যে
পুকুরের জল এমনই বিক্লত করিয়া তুলে
যে, তন্মধ্যস্থ মৎস্যাদি জলজন্ত সকল অতি
অর সময়ের মধ্যে জীবলীলা সংবরণ করে।
অতঃপর গৃহস্থ তাঁহার পুকুরের এমন

হুর্গতি ভানিতে পারিয়া পানা-বংশকে এককালে নির্বাংশ করিতে বদ্ধপরিকর হন।

পানার স্বভাব যেমন জলকে বিক্রত ও দৃষিত করা, পদ্মের স্বভাব তেমনি জলকে শোভিত ও শোধিত করা। নিদাবের প্রথর তপনতাপে আকুল হইয়া মীনকুল স্থাতিল ছায়া অৱেষণ করে, তখন পদ্ম-পত্র সকল আতপত্ররূপে আপনাদের তল-দেশে উহাদিগকে রক্ষা করে। পানা যেনিতান্ত অতিথি বিমুখ এমন নহে। কিন্তু এতগুভয়ের অতিথি-সৎকারের পার্থক্য অনেক। পদ্ম অতিথিগণকে আশ্রয় निया तका करत, किन्छ भाना তाशनिगरक আশ্রয় দেয় মারিয়া ফেলিবার জন্ম। वर्षात्छ भंदर (पथा नितन, पण निक যুখন প্রদন্ধভাব ধারণ করে, তথন পদাগুলি প্রস্কৃটিত হইয়া প্রকৃতি স্থলরীকে কেমন হাস্তময়ী করিয়া তুলে, সরোজ সকল প্রক্রাইত হইলে সরোবর অপুর্ব্ধ শ্রী ধারণ করে, চারি দিক্ হইতে মধুকর সকল গুণ গুণ স্বরে সমবেত হ্ইয়া পদ্মের মধুপান कत्रियां मानद्वत्र शानीय मधु मः शह करत। পদ্মপুষ্পে মা নাকি বড়ই প্রসন্না হন। এইজন্ম মাতৃভক্ত সাধক দল "সুজলা সুফলা মলয়জ্পীতলা শহুখামলা" মাতার চরণপদ্ম পদ্মপুষ্পে সাজাইয়া দেন। প্র (ए (क्वल (पवी धनना, अमन नरह; কবিও প্রদন্ধ। সরোবরে পদ্ম প্রস্কৃটিত मिबिल कवित्र मन छावमागरत पुरिया পদ্মের বিষয় অনুধ্যান क त्रिवा

কবি একবারে মাভোয়ারা! কভ কবি
কবল পদ্মকে লক্ষ্য করিয়া যে কভ কথা
বলিয়াছেন, কে ভাহার ইয়ভা করিবে?
স্তরাং পদ্মের গুণে কবিও মুধ। পদ্মের
মৃণাল মৃত্তিক-সম্বদ্ধ থাকায় বায়ু উহাকে
ইচ্ছামত স্থানভাষ্ট করিতে পারে না।

হে পথিক! ঐ বে দেখিতেছ, পানা
পুরুরিণীটকে সমাচ্ছর করিয়া উহার জল
দ্বিত করিতেছে এবং পদ্মিনীদলকে
আক্রমণ করিয়া সমস্ত পুরুরিণী স্বাধিকারভূক্ত করিবার জন্ম অগ্রসর হইতেছে;
অপেকা কর, বল্লা আন্ত্রক, ডাঙ্গা ডোবা সব
একাকার হইয়া যাউক, দেখিতে পাইবে,
পানা সকল কোথায় অন্তর্হিত হইয়াছে।
পদ্মিনীদল জলময় হইয়া কোথায় অদৃশ্রু
হইয়াছিল, জল কমিয়া যাউক দেখিতে
পাইবে, উহা সেই একই স্থানে স্বন্ধ
রহিয়াছে।

পানা ও পদোর সহিত পাপী ও পুণ্যাত্মার কতক সাদৃশ্য দেখিতে পাওয়া যার। পাপী সংসারকে পাপ বারা দৃষিত করে, সকল সদুগুণকে নষ্ট করে। পুণ্যাম্মা অন্তপকে সংসারের मय छ পাপতাপ মলিনতা দুর করিয়া সংসারকে দোষশৃত্ত করিয়া তুলেন এবং ইহার বারা সদ্গুণ সকল পরিবৃদ্ধিত হয়। পাপী আশ্রিত-शत्नत स्वःत्मत्र कात्रण हहेशा छेठि, शूनााचा আশ্রিতগণকে শাস্তির সুশীতল ছারার নিরাপদে রক্ষা করেন। পুণ্যার্থীগণ খীর ধর্মজ সৌরভ ঘারা অনসাধারণকে আছুট করিতে সমর্থ, কিন্তু পাপীর এমন কিছুই

ক্ষেত্র মন্থারা অন্যে আরুষ্ট ও উপক্ষত
ক্ষেত্রত পারেন। পুণ্যাত্মা সকলকে ধর্মায়তে
পরিত্পু করিতে পারেন, কিন্তু পাপী
ভাহা পারে না। পুণ্যাত্মার যশোগাথা
সকলেই গান করিয়া থাকে, কিন্তু পাপীর
কথা মুখে লইতে সকলে ছুলা করেন।
পুণ্যাত্মা অভয়দাতা পরমেশ্বরে সর্বানা
স্থিতি করেন, স্থতরাং নির্ভন্ন; সংসারের
ঝ্রাবাত—হরস্ত প্রবৃত্তিক্লের তরক্তৃফান
ইহাঁকে বিপথে চালিত করিয়া স্থানভ্রই ও
সক্ষাচ্যুত করিতে পারে না। পাপী সেই
অভয় ধামের প্রতি দৃষ্টিপাত না করিয়া,
তাহার যাহা কিছু এই অসার সংসারেই
সম্বন্ধ রাখে, স্থতরাং সে কলাপি নির্ভয়

হইতে পারে না। পরমেশরে ক্রংছিতির অভাব নিবন্ধন সে পদে পদে বিচলিত হয়, সংসারের সামান্ত কুৎকার তাহাকে স্থানভ্রষ্ট করে, প্রাবৃত্তির তাড়নায় সে ঘোর অন্ধ-তমসাবৃত অনন্দানামক অন্ধকুপে নীত হয় এবং নানা প্রকারে ক্রিষ্ট হইতে থাকে।

এই বিকার, পরিবর্ত্তন ও মৃত্যুতরঙ্গময়
সংসারে পরমেশ্বর আমাদিগকে এমন শক্তি
প্রদান করুন্, যাহাতে আমরা পদ্মের স্থায়
বদ্দ্রশ্ হইয়া তাঁহাতে স্থিতি করিতে
পারি, পানার স্থায় যেন ভাসিয়া ভাসিয়া
না বেড়াই ও অবশেষে পচিয়া হুর্গদ্ধময়
হইয়া তাঁহার জগতের পাপজ্ঞালরাশি
বিদ্ধি না করি।

সুয়েজ প্রণালী ও ফার্ডিনেও ডি লেসেপ্স।

১৮৬৯ দালের পূর্বে যাঁহারা বিভালরে ভূগোল বিবরণ পাঠ করিয়াছেন, তাঁহাদের নিকট স্থয়েজ যোজক নামটি স্থপরিচিত। কিন্তু ঐ দালের পরবর্তী কালের ভূগোল-বৃত্তান্ত-পাঠকগণ স্থয়েজ প্রণালী নামে অভ্যন্ত। যাঁহার অসাধারণ বৃদ্ধিবলে ও কার্যান্তিগত হইমা পৃথিবীর বাণিজ্য দম্বন্ধে যুগান্তর উপস্থিত করিয়াছে, তাঁহার নাম কাউন্ট ফার্ডিনেশু ডি লেদেশ। স্থয়েজ প্রণালীর সহিত ইহার নাম পৃথিবীতে

्रक**्ता**त्रण मरहामग्र हेर >৮∙८ नारन

ফ্রান্সের অন্তঃপাতী বার্মেলি নগরে জন্ম গ্রহণ করেন। নবধৌবনাবহাতেই তিনি স্বীম বিভাবতা ও বুদ্ধিমতার শুণে ফ্রান্সের তৎকালীন রাজপুরুষগণের এত প্রিয়পাত্র হন যে, তাঁহারা তাঁহাকে ফ্রান্স রাজ্যের কন্সল্ বা প্রতিনিধিরূপে মিসর নগরে প্রেরণ করেন। যথন তিনি এই পদে নিযুক্ত ছিলেন, তথন মিসরের শাসন কর্তা মেহমেৎ আলির সহিত ত্রম্বের তৎকালীন স্থলতানের মতান্তর ও মনোবাদ ঘটে। লেসেন্স মত্রুল বিচক্ষণতার সহিত ইইাদের মধ্যে বিবাদ নিস্তি করিরা দেনঃ এই উপকারের অন্ত

বেহবেৎ জালি তাঁহার নিকট সবিশেষ এবং ভাঁহার প্রতি অক্তত্রিম বন্ধভাবের নানা পরিচয় প্রদান করেন। এই সমরে মেহমেৎ আলির ব্যেষ্ঠ পুরুর সহিতপ্ত লেসেন্সের আত্মীরতা হয়। এই আত্মীরতা পরে লেসেপের পক্ষে বিশেষ হইরাছিল। চারি বংসর কাল মিসরে কনসলের কার্য্য পারগতার সহিত ও कतानी वाजश्रक्यितराव मरश्रायक्षनक-রূপে সম্পন্ন করিয়া তিনি দেশে প্রত্যারত তৎপরে তিনি রটারডেম নগরন্থ ফরাসিস কনসলের পদে নিযুক্ত ঐ নগরে বাসকালে তিনি WIF D ভথাকার প্রণালী অসংখ্য পরিদর্শন করিয়া বেডাইতেন এবং তাহ। প্রস্তুত করিবার প্রণালী শিক্ষা করিয়া-ছিলেন। ইহার পর তিনি স্পেনের রাজ-ধানী মেড়িড নগরে ফ্রান্সের রাজদুত-পদে नियुक्त इन। त्रिथान इहेट छिनि ১৮৪৮ সালে কোন ছঃসাধ্য রাজকার্য্য সম্পাদনার্থ রোম নগরে প্রেরিড হন। ইহার পর তিনি বৃত্তি (পেনসন্) লইয়া বেরি নামক নগরে গমন করিয়া বাস করেন। এই সময়ে লেসেপের ৪৩ বৎসর মাত্র বয়:ক্রম হইয়াছিল।

বিষয় কার্য্য হইতে অবসর সইরা বখন লেসেপ্স বেরি নগরে বাস করিতে-ছিলেন, তৎসমরেই তিনি হরেজ বোজককে প্রদালীতে পরিণক করিবার ক্সংকৃত্যুক্তর ক্না। বখন তিনি মিসর त्रात्मा वान कतिरङहिरनन, उपनदे खेलान মনে গোহিত সমুদ্রের সহিত ভূমধাৰ সাগরকে সন্মিলিত করিবার করনা প্রথম छेनिक इत्र । दिश्व मशरतंत्र निक्रमका অধিক কাল তাঁহার মনকে আরুষ্ট করিয়া রাধিতে পারিল না। তিনি স্বীর চৌবন-कामीन डेक कहना कार्या शविश्व क्रिवात अञ्च वाक्न रहेश शकित्मा ১৮৫৪ সালের নবেম্বর মাঙ্গে তিনি মিসরের वाक्थानी (करता नगरव यांका कतिरमन তৎকালে মহমান সৈয়দ মিসত্তের ভাসন-কর্তার পদে অধিষ্ঠিত ছিলেন। ইনি লেদেপের পূর্বপরিচিত মেহমেৎ আলির ইহার সহিত পূর্বে লেসেন্সের প্রগাঢ় বন্ধ জনিয়াছিল। লেসেশ ইহাঁকে স্বীয় কলনার কথা সমস্ত জ্ঞাপন করিলেন। সুয়েজ যোজক থালে পরিণত কথা কতদুর সম্ভব, এই সম্বন্ধে তিনি মহক্ষা **দৈয়দের সহিত দিবারাত্র** আলোচনা করিতে লাগিলেন। পরে **স্থির হইল**্ল এই প্রস্তাব সম্বন্ধে তুরক্ষের স্থলভান, ইংরাজ গ্রণমেণ্ট, ও ফরালীর রাজ-পুরুষ-দিগের সমতি গ্রহণ করা হয়। দেসেক थान नन कतिया धहे कार्या निव् হইলেন। তৎপরে বহু আলোচনা ও ৰাগ্ৰিডখার পর, এবং ভুরুষ ও ইংলখ এই হুই রাজ্যের ঘোর আপত্তি অঞাৰ করিয়া, স্থান খাল কোম্পানি সামে वकी विक दशमानि शैनिक रहेन। वाहामिश्रं नहेवा अहे स्वान्नावि পঠিত হইল, তাহারা এই কার্যের

লাভজনকতা সমস্ত ইরোরোপবাসীদিগকে বুঝাইরা দেওয়াতে மத் অনেকে কোম্পানির অংশ ক্রের করিলেন। অর কালের মধ্যে কার্য্য-আরম্ভোপযোগী অর্থ ग्रश्ही उ इहेन এवः ১৮৫२ मोलिय मधा-छारा कार्या आत्रख इहेन । ছয় বৎসর कान व्यविद्रास्य कार्या हिनवादा शद ১৮৬৫ সালের আগষ্ট মানে যোজকের যে অংশ-টুকু কর্ত্তিত হইল, তাহার মধ্য দিয়া ছোট ছোট বাষ্পীয় নৌকা যাতায়াত কুরিতে লাপিল। কার্য্যটী শীল্প সম্পন্ন করিবার জন্ত অভিনৰ বুহদাকার যন্ত্রাদি নির্মাণ করিতে হইয়াছিল। এই সকল যস্ত্রের সাহায্যে সালের শেষভাগে বোজকের যে অংশ কর্ত্তন করা হইল. তাহার মধ্য দিয়া ক্ষুদ্র আকারের অর্থব-পোত যাতায়াত করিতে লাগিল। পরে ১৮৬৯ সালের আগষ্ট মাসে সমস্ত যোজকটা কর্ত্তিত হইল, ভূমধ্যস্থ সাগরের জলরাশি লোহিত সাগরের বারির সহিত সন্মিলিত হইল, এবং স্থয়েজ যোজকের স্থানে স্থাম প্রণালী বিরাজ করিতে লাগিল। সেই সালের ১৭ই নবেম্বর

তারিথে মহাসমারোহে স্থ্রেজ থাল উন্মৃক্ত হর। তত্পলকে থালের প্রবেশ-ঘারস্থ পেকসেড নামক নগরে মহোৎসব হয়—সেই উৎসবে ফ্রান্সের সাম্রাক্ত্যেশ্বরী, অদ্রীয়ার সম্রাট, প্রানিয়ার যুবরাজ, প্রিম্স উইলিয়ম অব্ অরেঞ্জ, ইংলও ও ক্ষিয়ার রাজদৃত, এবং বছসংখ্যক প্রশ্বর্যা-শালী বণিক্ ও পৃথিবীর নানাদেশের প্রধান প্রধান সংবাদপত্রের সংবাদ-দাতা উপস্থিত ছিলেন।

স্থানেজ থালের গভীরতা ২৬ ফিট এবং প্রস্থা ৭২ ফিট। ইহা প্রায় ৪৫ কোশ লয়া। স্থানেজ থাল উন্মুক্ত হইবার পুর্বের্ম লগুন নগর হইতে বোঘাই নগরে জলপথে আসিতে গেলে আফ্রিকা বেষ্টন করিয়া আসিতে হইত। ঐ পথ আট হাজার ছয় শত দশ কোশ; কিন্তু স্থানেজ থাল হওয়াতে লগুন হইতে বোঘাই পর্যান্ত জলপথের দ্রত্ম অনেক হ্রাস পাইয়াছে। এক্ষণে উহা তিন হাজার এক শত পঞ্চাশ কোশে পরিণত হইয়াছে। ইহার জন্ম আসিয়ার সহিত ইউরোপের বাণিজ্যের আশাতীত স্থবিধা হইয়াছে।

বিবিধ তত্ত্বসংগ্ৰহ।

১। বেলজিয়মের অন্তঃপাতী লেবেক্নামক প্রদেশে বৃষ্টিপাতের করেক ঘণ্টা
প্রার্গত ঘণ্টাধ্বনির ট্রায় একপ্রকার
প্রাক্ষানে শ্রুত হয়। বহুকাল হইতে ঐ

প্রদেশে এই প্রাক্কতিক ঘটনা পরিলক্ষিত হইতেছে। বৈজ্ঞানিকেরা অসুমান করেন, বাযুমগুলে অলকণার বিশেষ প্রকার সন্মিলন হইরা, উহা বার্প্রবাহের সহিত সংঘর্ষণে এই শব্দ উৎপাদন করে। যে কারণেই হউক লেবেক্ প্রদেশের অধিবাসিগণ বৃষ্টিপাতের এই পূর্বলক্ষণ জানিতে পারিয়া বৃষ্টিপাতের অস্ত্রিধা হইতে রক্ষা পাইয়া থাকেন।

হ। লণ্ডন নগরন্থ ব্রিটিস মিউজিয়ম
নামক লোক-কোতৃহলোদ্দীপক বিবিধ
দ্রব্যাগারে কত কত প্রাচীন ও আশ্চর্যাকর
দ্রব্য সকল রক্ষিত আছে, তাহার বিবরণ
লিখিতে গেলে একটী বৃহদাকার পুত্তক
রচিত হইতে পারে। উক্ত দ্রব্যাগারে ৩
হাজার ৫ শত বংসর পূর্ব্বে প্রস্তুত একটী
কাষ্ঠাসন রক্ষিত হইয়াছে। উহা প্রিটের
জন্মগ্রহণের ধোল শত বংসর পূর্ব্বে নীল
নদীর তীরবর্ত্তী প্রদেশসমূহের অধীম্বরী
হাতালুর সিংহাসন ছিল, এই জনপ্রবাদ। এই কাঞ্চাসনের কোন কোন
স্কাশ ম্বর্ণ ও রোপা মণ্ডিত।

০। গড়পড়তায় মানবের পরমায়ুগত
পঞ্চাশৎ বৎসরের মধ্যে ২৫ বৎসর বৃদ্ধি

হইরাছে। জুলিয়স সিজারের রাজজসময়ে রোমে মাল্ডম গড়ে ১৮ বৎসর মাত্র
বাচিত; এখন তথায় গড়ে মালুবের
পরমায়ু চল্লিশ বৎসর। পঞ্চাশৎ বৎসর
পূর্বের ক্রান্সে গড়পড়তায় মালুবের পরমায়ু
২৮ বৎসর ছিল; এক্ষণে ৪৫ বৎসর।
রাজ্ঞী এলিজাবেথেয় সময় লগুনবাসীদিগের পরমায়ু গড়ে ২০ বৎসর ছিল,
এক্ষণে ৪৭ বৎসর।

8 । मात्र जन नवक् भिनीनिका छविदि ।
 वहकान इहेएछ छिनि वहमःश्रकः

পিপীনিকা প্রতিপাদন করিয়া তাহাদের প্রকৃতি ও প্রবৃত্তি বিষয়ে নানা আদোচনা করিতেছেন। তিনি দেখিয়াছেন, স্থত্তে পালিত হইলে পিপীলিকা প্রবৃত্তি প্রবৃত্তি বিষয়ে থাকে।

৫। তারতবর্ষে প্রায় একশত প্রকার
বিভিন্নজাতীয় মশক দেখা যায়। ইংরাজেরা
বলেন, মশকের উৎপাত ভারতবর্ষে
তাহাদের বাস করার সম্বন্ধে একটা
অস্তরায়। কিন্তু ইংলণ্ডেও দশ প্রকার
বিভিন্নজাতীয় মশক আছে। ইহারা কিন্তু
ভারতবর্ষীয় মশকদিগের স্তার রক্তপিশাস্থ
নহে এবং অত্যন্ত গ্রীছের সমন্ন ব্যতীত
অন্ত কোন,সময়ে মাহুবের রক্তপানোমুধ
হয়না।

৬। ইংলণ্ডের মধ্যে কোন নগরেই বংসরের মধ্যে এক হাজার ঘণ্টার অধিক স্গ্য প্রকাশিত হয়ুনা। এক হাজার ঘণ্টার প্রায় ৪২ দিন হয়।

৭। শরীরতব্বিদেরা বলেন যে, প্রতি ছই মাসে মানুষের মন্তিক্ষের রাসায়নিক উপাদান সম্পূর্ণক্রপে পরিবর্তিত হইয়া যার।

৮। ইংলণ্ডের অন্তর্বর্তী বহুসংখ্যক পরী-প্রামের অধিবাদিগণের বিশ্বাস বে, দক্ষিণ চক্ষ্ কণ্ডুয়নে শুভ ও বামচক্ষ্ কণ্ডুয়নে অশুভ ঘটনা ঘটিরা থাকে।

৯। জ্বর দেশে অধমাংস ও মিসরে উট্টমাংস, দক্ষিণ আমেরিকার সর্পাধ ও বৃদ্ধিক,
ওরেট ইতিজ্ বীপনিচরে প্রজাপতি
উপাদের আহাধ্যরূপে ব্যবস্থত হর্।

১০। সমন্ত শৃথিবীতে এক্ষণে ৪০৬,৪১৬
মাইল রেলপথ থোলা হইরাছে। তল্মধ্যে
ইউরোপে ১,৪৪,৩৮০ মাইল, আমেরিকায় ২,১৮,৯১০ মাইল, এসিয়ায় ২৩,
২২৯ মাইল, আফ্রিকায় ৭,<u>২১২</u> মাইল
এবং অফ্রেলিয়ায় ১২,৬৮৫ মাইল।

১)। ইহা অনেকে অবগত নৈহেন যে, বাজ ও সিংহ অর্ধ মাইল পথ বোটকের স্থার ক্রতগতিতে দৌড়িতে বা লক্ষ প্রদান পূর্বক ঘাইতে পারে, কিন্তু জদপেকা অধিক দ্র ঘাইতে হইলে তাহা-দিগের গতি মন্দ হইয়া আইসে। অর্ধ মাইল ক্রতগতিতে দৌড়িবার পর মাহুব ভাহাকে দৌড়িরা পরান্ত করিতে পারে। বাজসিংহাদির মাংসপেশীর বল যত অধিক, ফুলকুসের বল তেমন নহে; স্ক্তরাং, ভাহারা কিরংকাল অসীম বল প্রকাশ করিয়া ক্লান্ত হইয়া পড়ে।

১২। চীনদেশে এক প্রকারধান্ত আছে, উহা পঞ্চাশ কুট উচ্চ; উহার মূলদেশ তিন হইতে পাঁচ ইঞ্চি মোটা। এই ধান্যের চাউল অতি উৎকৃষ্ট এবং ইহার ত্বক্ হইতে একপ্রকার স্থলর স্থল কাগজ প্রস্তুত হয়।

১৩। ইউনাইটেড প্টেটসে ডাকের টিকিট প্রতিবংসরে বে সংখ্যার বিক্রয় হয়, তাহাতে প্রতিপন্ন হয় বে, তথাকার প্রতি-অধিবাসী গড়ে ৪০ খানা ডাকের টিকিট ব্যবহার করিয় থাকেন। কিন্তু ভারত-বাতি অধিবাসী শ্রুড় একখানা টিকিক্রাও কয় ব্যবহার করিয়াথাকেন।

১৪। কনওয়েলামক একজন ইংরাজ সম্রতি হিমানম-পর্বতের বছসংখ্যক উচ্চ শিখরে ভ্রমণ করিয়া স্থানেশে প্রত্যাগমন করিয়াছেন। হিমালয় ভ্রমণ সম্বন্ধে যে বুহৎ গ্রন্থ প্রকাশ করিয়াছেন, তাহা অতীব কৌতুহণজনক। তিনি বলেন, হিমালয় পর্বতের পাদদেশে যে সকল লোক বাস করে, তাহাদের স্থায় শাস্ত ও ধীর প্রকৃতির মানব তিনি কুত্রাপি দেখেন নাই। ইহারা গমের চাষ করে এবং মরদা প্রস্তুত করিয়া তাহাই জল দিয়া মাথিয়া ভক্ষণ করে। ইহাই ইহাদিগের একমাত্র আহার। শীত নিবারণ জন্ম ইহারা হিমালয় প্রদেশস্থ ছাগল ও মেষের চর্ম গাত্রবন্ত স্বরূপ ব্যবহার করে। জীবনের মধ্যে একবার কিম্বা চুইবারের অধিক ইহারা ভেড়ার মাংস ভক্ষণ করে না। কনওয়ে সাহেব ইহাদিগের কয়েকজনকে পর্বতের উপরে অধিরোহণ করিতে বলাতে ইহারা অস্বীকার করিয়াছিল: বলিয়াছিল তথায় ভূত প্রেতের বাস আছে, তাহারা তাহাদিগের প্রাণবিনাশ করিবে। শ্রমিক স্বরূপ কম্বল ও ময়দা দেওয়াতে উহারা পরিশেষে কনওয়ে সাহেবের সহিত কিয়দ্র গমন করিয়াছিল, কিন্তু যতক্ষণ পর্বতের উপরে ছিল, ততক্ষণ অতান্ত ভূতের ভয় প্রকাশ করিয়াছিল। ১৫। গণনা করিয়া দেখা গিয়াছে যে, উনবিংশ শতাৰীতে ইউরোপে বে সকল

যুদ্ধ ঘটিয়াছে, তাহাতে প্রায় আশি লক্ষ

श्रिशाटि ।

নিহত

লোক

अहो प्रम

শতাশীর মুখসমূহে নিহত: শোকের সংখ্যা প্রান্ধ এক কোটা কুজি লক্ষ হইবে। উত্তর অষ্টাদশ ও উনবিংশ শতাব্দীর বৃদ্ধে হত লোকের সংখ্যা প্রান্ধ ছই কোটা। গড়ের উপর সমগ্র পৃথিবীতে প্রতি এক শত বংসরের মধ্যে ৪ কোটা লোক মৃদ্ধে নিহত হয়। অনুমিত হর যে, টুয় নগরের মৃদ্ধের পর হইতে অন্যাববি প্রায় এক শত কুজি কোটা লোক মৃদ্ধে প্রাণত্যাগ করিরাছে! এ অনুমানের কথা মাত্র।

১৬। এতদিন জাপানে আইন ছিল যে, জান বিধা প্রত্যক স্ত্রীলোককে বিবাহ করিতে জাতীয় হইবে! যদি কোন মহিলা উপযুক্ত জন বিধ পাত্রাভাবে বিবাহে অসমর্থ হইতেন, তাহা গণের হইলে সুদ্রাট্ তাঁহার পাত্র অবেষণের ভার বিধবা।

গ্রহণ করিতেন। এই জ্বাপান বাজের মহিলাগণের মধ্যে কেহ অবিধারিক। থাকিতে ইচ্ছা করিলেও তিনি সে ইক্ছা পূর্ণ করিতে পারিতেন না। সভ্যতি জ্বাপানের সমাট এই জ্বাদেশ প্রচার করিয়াছেন ধে, জ্বীলোকগণের মধ্যে গাহার ইচ্ছা তিনি চির-কুমারী ব্রভ পালন করিতে পারিবেন।

১৭। বোষাই-প্রদেশ-নিবাসিনী রাজ্ববংশীয় জীলোকদিগের মধ্যে শতকরা ১৫
জন বিধবা। মাজ্রাক প্রদেশের রাজ্বজাতীয় মহিলাগণের মধ্যে শতকরা ৩০
জন বিধবা। সমগ্র ভারতবাসী মহিলাগণের মধ্যে শতকরা ২০ জন
বিধবা।

দ্বন্দ্বভাবের ইন্দ্রজাল।

চণ্ডীর মহামান্না—গীতা ভাগবতের বিষ্ণুমান্না—জড়বিজ্ঞানের আকর্ষণ-বিবােজন,
এই তিনই এক পদার্থ। ইহা অনুস্ত
কোটা বিশ্বজ্ঞান্তে ওতপ্রোত,বা বত্তের
টানাপড়িয়ানের মত অবস্থিত। তদ্বারাই
সংসার-চক্র আবর্তিত হইতেছে, এমন কি
প্রতি জড়াণু ও চিদণুর সঞ্চালনেও ঐ
মহাশক্তির আবির্ভাব বর্তমান রহিয়াছে;
কিন্ধু-আশ্বর্তির বিষর এই, উহা
দেখিবার চক্র প্রান্থ কারারই নাই।
ভাগবানু কপা করিয়া বাহাকে দেখান,

নরনারায়ণ স্বাসাচীরও উহা দেখিবার চক্ষু ছিল না ;—এই জস্ত ভগৰান্ কুপুরু করিয়া তাহাকে দিবা চক্ষু প্রদান করিলে, তবে তিনি দেখিবার বন্ধ দেখিকে; পাইলেন।

তক্ষ-পত্রের উভর পৃঠার ভার, হইটী
কুক্ষনের একটা বৃত্তের ভার, পরশার
বিক্ল-ধর্মাজান্ত হইটা বস্তর একডার,
ভার-মন্দ, হ্রিধা-জহুবিরা, পর্যার্থিক
ভার-মন্দ, কাঠিল-ভারলা, ছবি-নিনা
ভাকভি-স্কার্কি, ইক্যারি-স্কার্থ

नेवार्व । क्ष्म्कार्य मध्नाव मित्रभून, ক্রভাবের মোহ অতিক্রম করা মাহুবের অস্থ্যপ্রার। এই মোহ অন্তই আমরা স্থান্থ ভোগ করিয়া থাকি। সংসার ৰক্ষার বলিয়া এখানে নির্বচ্ছির স্থ नाहै, निवरिष्ट्रित प्रःथ नाहै। स्ररथत श्रमाट ছঃৰ আছে, ছঃধের পশ্চাতে মুখ আছে। একমাত্র স্থতঃথ ধরিরাই আমরা হল-ভাবের নিরূপণ করিতেছি, কিন্তু বুঝিতে हरेंद त्व, धारताक वक्त मश्कारे धरे প্রদালী অনুস্যত রহিয়াছে। অতএব এ त्रशाद्य किंद्र नारे वनित्न, उत्रशत्क मार इंद ना। ऋरथेत्र रच यनि किছू थाटक, ভাহা বন্ধাতীত ;—হুথের গোক যদি কোৰাও থাকে, তাহাও হলাতীত। এই **মতুই অর্জ্**নকে গীতায়,"নিব'ন্দ, নিত্যসবস্থ এবং নির্বোগকেম আত্মবান" হইতে উপ-रम्भ माम कत्रा इटेबाएड, এवः ज्ञानाउटत ভগবান বলিয়াছেন,---

"দৈবী ছেবা গুণমন্ত্রী মম মারা হ্রতারা,
মানেব বে প্রাপদান্তে মারামেতাং তরন্তি তে।"
আমার ত্রিগুণমন্ত্রী দৈবী মারা হ্রতিক্রমনীরা;—অর্থাৎ অতিক্রম করা জীবের
অসাধ্যপ্রার। তবে বাহারা একমাত্র
আমাতে প্রপন্ন হাইতে পারেন, তাঁহারাই
আমার মারা অতিক্রম করিতে সমর্থ
হন; আমি ক্রপা করিয়া মারার বন্ধন
ধ্রেন না করিয়া দিলে, তাহার উচ্ছেদনামনের কেইই, সক্রম হন না। সৌকিক
হিন্তি ইহার অসংখ্যা শ্রমাণ স্বচক্রে

করিতে পারি না ! তগনানে নির্ভর করিতে পারি না বলিরাই সতত হংখতাপে আলিয়া মরি,—কত লাজনা তোগ করি:— কত বিভ্রনার অভিভূত হইয়া পড়ি।

স্মরণ থাকিতে পারে. অনেকের জুবিলির বংসরে,—অর্থাৎ ভারত সাদ্রাজ্ঞীর বর্ষ রাজত্বকাল পূর্ণ হওয়ার পঞ্চাশৎ বংসরে, তাঁহার সামাজ্যের মধ্যে কত উৎসব হইয়াছিল। সেই উৎসবের একটী অঙ্গস্তরপে বছকালের জন্ত নির্বাসন-দশুপ্রাপ্ত ২৬০০ ছাবিবশ শত অপরাধীকে নিম্বতি দান করা হইয়াছিল। তাহাদিগের মধ্যে প্রায় সকলেরই বহু বংসর কারাদও-ভোগ অবশিষ্ট ছিল। তথাপি তাহারা নিম্বতি পাইল, কেননা সাম্রাজ্ঞী দয়া করিয়া তাহাদিগকে নিম্বৃতি দিলেন। <u> শামাজীর</u> দয়া ব্যতিরেকে,দণ্ডভোগের নির্দিষ্ট কালের পূর্ব্বে, তাহাদিগের নিষ্কৃতির অন্ত কোন উপায় ছিল না। সেইরূপ ভগবানের দয়। হইলে, আমরা সংসার-কারায় অবরুদ্ধ থাকিয়াও নিষ্ণৃতি পাইতে পারি। দেই ভাঁহার দয়ালাভের একমাত্র হেতু, শরণাগতি। আমাদিগের তাদৃশী শরণাগতি কোথায় গ তাহা থাকিলে, আমরা দিব্য চকু পাইতাম। দেই চকু ধারা সংসারের সকল বন্ধ দেখিতে পাইতাম.—বন্দভাবের ইস্ত-ক্রাল ভেদ করিতে পারিতাম। আদ্রাতকের অষ্টিকে (আমড়ার আটি) আন্ত্রীক মনে করিতাম না। বে প্রক্রিরা বারা এক व्हार वह वह, अव वर्षनार वह वहेन। महत् दर, जावान नाम देखवान ह

वह हेळ्यांन विमादिक हेजत लादिक **एक्क्वीवांकि विनिन्न शास्त्र। जार्ना**क ইম্রখান প্রভাবে কতই আশ্চর্যা বন্ধ ও আশ্চর্যা ব্যাপার দর্শন করিয়াছেম। আমড়ার অ'াটিতে আমের চারা,—সেই চারাম্ম কাঁচা পাকা আম, মানুবের কাটা-মুণ্ডের কথা, বিনা অগ্নিতে অর পাক, মুধ হইতে ছুরি-কাঁচি-গোলা-গুলি প্রভৃতি রাশীক্ত অন্ত্রশন্তাদির বিনির্গম, উদরের श्री जिन्न हिल हरेए विविध वर्णन नानी-কুত স্ত্র-নির্গম, চুর্ণীকৃত ঘড়ির অবশেষ হইতে পুনর্মার সেই ঘড়ির উৎপাদন, এক স্থানে থাকিয়া অসময়ে স্প্রবর্ত্তী ভিন্নদেশ-জাত শাধাপল্লব সহ পরিপক কল প্রাপ্তি ইত্যাদি প্রকার অসংখ্য বস্তু ও বর্গপার দর্শন করিয়াছেন। ইহার <u>উক্ত</u>জালিক ব্যক্তিগণ नाम हेस्स्कान। সময়ে সময়ে কোন কোন ব্যক্তিকে ঐ বিস্থার মুথ করিয়া থাকে; কিন্তু इम्हजाद्वत हेल्स्झान, मशूरा भाजाद নিরস্তর মুগ্ধ রাখিয়া তাহাদিগকে ছঃখ ও চুৰ্গতি এবং সুধস্বন্তি ভোগ করাই-टिंड । এই ইस्टबार्टिंग প্রভাবে मूध হইয়া আমরা এককালে কোন বস্তুর চুই দিক্ দেখিতে পাই না; এবং তাহা দেখিতে পাই না বলিরাই আমাদের এত ছঃখ। আলোকে অন্ধকার দেখিতে পাই না,— অন্ধকারে আলোক দেখিতে পাই না। क्रावत नगरत ्छाच **चात ना,—**छः व्यत मत्या अप प्राचित्व शाहे मा । উপहात्रत्य **উৎকোচ** मत्न कतिरु शांत्रि ना

উথানের পথে পতন দৈখিতে পাই কা।
ভাই আমানের এত ত্থ, এত হঃব, এত
লাহনা,—এত কামনা। অবম হেইছ দেখিতে পাই না,—সেই টুকুই অনৃষ্ট ;
সেই অনৃষ্টবনেই, সকল ঘটনা হইরা
থাকে।

বে স্ইটা ঘটনা বলিবার বন্ধ আনর।
আজ এই প্রবন্ধের অবভারণা করিলাব,
একণে তাহাই বলিতেছি। নপ্রতি
হাওড়া জিলার অন্তর্গত সুইটা হানে
স্ইটা অপূর্ক ঘটনা হইয়াছে। ঘটনা মুইটা
অনেক সাংগ্রাহিক ইংরাজি বালালা
পত্রিকার প্রকাশিত হইরাছে; স্প্তরাং
অনেকেই তাহা পাঠ করিরাছেন। এই
জন্ম এ স্থলে স্থান ও ব্যক্তির নামোরেশ
করিবাম না এবং মাসিক পত্রিকার ভাষা
করিবার তাদৃশ প্রয়োজনও নাই।
কেবল ঘটনা সুইটার উল্লেখ হারা প্রবন্ধের
সমর্থন করাই আমাদের উদ্দেশ্ত।

কোন একটা নিরীহ ভত্তলোক দীর্ককাল নিরপরাধে প্রবর্গমেন্টের চাকুরী
করিরা পেন্সন্ প্রাপ্তির আবেদন করেন।
পেন্সন্ মঞ্র হইবার অক্ত উপরিতন
কর্ত্তপক্ষ হারা আবেদনপত্র ব্যাহ্মনে
প্রেরিত হইল। ইতিমধ্যে, বে সকল
ব্যক্তি উল্লার অধীনে কার্য্য করিছেন,
উল্লারা বেজ্জিনে নুসভ্তিতিতে আপ্রাদিগের মধ্য হইতে চালা হারা কিছু কর্বসংগ্রহ করিরা, সাধ্চনিত্রের প্রকার
বর্ষপে উক্ত ভত্ত পোক্টাকে উপ্রার্থ
প্রান করিলেন। কিছু শেষ্ত্র উপ্রার্থ

উৎকোচরপে প্রিণত হইল। জিলার
মালিট্রেট্ ভাঁহার পেন্দন বন করিতে
প্রথমেণ্টকে অছরোধ করিলেন। বদি

থ ভার লোকটা পূর্ব হইতে ঘটনার
এইরূপ পরিণাম দ্বেবিতে পাইতেন,
তাহাহইলে কথনই ঐ উপহার গ্রহণে
সন্মত হইতেন না এবং তাঁহার পক্ষে এইরগ লোচনীর ঘটনাও ঘটত না।

শার একটা ব্যাপার এই,—কোন হানের লোকাল বোর্ডের অবৈত্নিক মেহররপে নির্বাচিত হইবার জন্ম ছই ব্যক্তি প্রার্থী হন। তন্মধ্যে একজন পত্রিকা-সম্পাদক, একজন মুনসেফ্ কোটের উকিল। উকিল মহাশয় নির্বাচনী সভার সভাপতিকে জানাইলেন, সম্পাদক বাব্ মেহর হইবার যোগ্য নহেন, যে হেতু তাঁহারে কর্মে হাজার টাকা আয় হয় না। মেহরি পাদের গৌরব-লোল্প সম্পাদক বাব্ কহিলেন, অবশাই তাঁহার হাজার

छाका बाद रहेना शाका उकिन মহাশন, তাহাতে এই প্রতিবাদ করিলেন, বাবুর যদি হাজার টাকা আয় হইড, ভারা **रहेरन** जिनि व्यवश्रहे अवर्गस्मर्गे होसात টাকার আয়-কর (Income Tax) প্রদান করিতেন। মাজিটেট বাহাছক উকীল বাবুর যুক্তিযুক্ত প্রতিবাদ শ্রবণে তৎক্ষণাৎ পত্রিকা-সম্পাদক মহাশহকে অগ্রে হাজার **ोकात हेन्क्य छा। क्म अमारनत आरम** করিলেন এবং অনুগ্রন্থ প্রকাশে ইহাও বলিয়া দিলেন যে, ট্যাক্স প্রদানের পর উকিশবাব নির্মাচিত হইবার যোগ্য रेखकाल-विश्व मन्नामकवाव হইবেন। व्यास्नारम गमगम इरेग्रा उ९क्क्शां हासात्र ठीकांत्र छा।कृष् अनाम कत्रितनम, किन्ह মেম্বরের পদে নির্বাচিত হইতে পারিলেন না। ঘটনার এরূপ পরিণাম পূর্ব্বে দেখিতে পাইলে কি আর এমন বিভূমনা ভোগ করিতেন ? কথনই না।

নিরুপমা।

(रक्रांक ১৩२, २১শে अগ্রহায়ণ, শুক্রবার, পর্যান্ত সময়ে)।

আৰু শুমা নিৰুপমা ! খবে ফিনে আৰ !
কাৰাৰি বিজেৱ ছবি, অন্তাচল চলে ববি,
তৃমি মা, জাহার সনে বেডেছ কোথার ?
এখনি যে বুক্জরা, মইনে আখার-ভন্না,
লৈ জাখানে মুমুন্ত ফিনে পুনুন পায়—
এই
কিক্সমা, আন্তোধনে আর ৷

আর ওমা নিরূপনা! মরে বাই চল,
আর না আমার বুকে, দিব সে 'বেদানা" মুখে,
দিব ও দারূপ তুমা মিটাইরা কল;
মোর কোলে মাখা পুরে, কোমল প্যাক্তরে,
নিরাপদে কুটিবি মা, জীতি-শক্তমল!
চল ওমা নিরূপমা, মরে কিরে চল।

উঠ[্] ওয়া নিক্সপম। চির-সোহাগিনী। कड बार्ग वक करन, अरमिहरन कुमधरन. "দাদা ঠাকু'মা"র ভাই মন্তনের মণি"। তোমারে পাইয়া তাঁরা, আনন্দে আপনা-হারা ष्ट्रिय द मा, u बाशादव "क्या-मञ्जीवमी"। विधित्र विधान তবে, "बाबा" আकि वर्गभरत, "ঠাকু'মা" যে তোমা বিনা হবে পাগলিনী। ষরে আয় ু নিরুপমা, চির-সোহাগিনী।

व्यात्र अमा निक्रममा, चरत्र फिरत्र व्यात्र । কে স্বভগা তোর চেয়ে,বাপের আহরে মেয়ে, পতির বিশ্বস্তা দখী, প্রাণাধিকা তায়; खनक जननी डाहे, जांत्र त्य तकहरे नाहे. তুমি তার গৃহলক্ষী, রাজলক্ষী-প্রায় ! 'স্তুর*সর্বস্থ ওমা।তার"মা" যে "নিফুকমা" (थना एंगि ছোটে সে বে দেখিবারে মা'य। তোমার স্লেহের ধন,ছোট ছোট ভাই বোন, তারা যে "দিদি"রে পেলে কিছু নাহি চায়! বেশী কি বলিব আর, হতভাগী "পিসীমার" পুল্রী শিষ্যা স্থী তুমি একাধারে হায়!--এত স্নেহ প্রীতি ছাড়ি, স্বাধারিয়া বর বাড়ী, নিরমমা নিরূপমা কার কাছে যার? यामत्न' मा निक्रभमा फिद्र चद्र आग्र ।

আর ওমা নিরুপমা। সহে না বে আর. षामि (य ८७८विह यतन, युविया नमन-मरन, ভোষারে দইব কাছি, হাত থেকে ভার। किश निक कार्य मित्रा, दङात व्याप वाहारेया,

ক্ষৰে বাৰ শাঁভারিয়া কুছ্যু-পাঞ্চাৰার !---্ৰত-নিৰ্দান্তি ভিন বছরের ছেলে.

महामा कार्य ।

किस आमि कुल्लम, हीमदेश महायम, গেল না আমার ডাক পারে বিধাভার। হা ধিক মানব-অন্ম, ভোলে অনিত্যতা দৰ্শ্ব ! অথচ নিবারে কালে, সাধ্য নাহি তার ! निक्श्या। তোরে हात्र यहाकारण निवा वात्र, রাধিতে শক্তি নাই আমা স্বাকার !--কি বলিব প্রাণাধিকে, পারি না বে আরু।

कि वेनिय, निक्रभमा ! युक् स्काउँ गाव-ध माक्न मुना स्वा, कशारम कि ছिन रमधा, নিঠুর রাছর গ্রাসে নব চাদিমায় ! উছরে বিদরে মূন, বিবর্ণ ও চজানন। প্রভাত-তপন ঢাকা মেঘ-কালিমার। পারে কি সহিতে কেহ, অমন সোণার দেহ অযতনে অনাদরে লুঠিছে ধূলায়! কি দেখিছ-হরি ! হরি ! বুক কেটে বার !

উঠ ওमा निक्रथमा, कांमा'ও ना आह, ভোমা বিনা সমুদায়, শৃক্ত-মহাশৃক্ত প্রায়, मम मिक छत्र। व्यक्ति त्यांक-राहाकात्र ! এস মা সাবিত্রি ! সীতে ! পতি-অঞ্চ মুহাইতে ব্ৰহ্মাণ্ড তোমার, "কুদ্র" তুলনার বার! "মা মা" বলি সতু ডাকে, এস মা ভূষিতে তা'কে সে শিশু তোমার যে গা কভ তপভার<u>।</u> শত শত মাতৃ-দ্বেহ, ভরা বাঁর হৃদি-গেই, এস মা, করুণ ভাকে সেই "ঠাকু'মার"-এদ ওমা নিক্লপমা, কালা'ওমা আর !

कि लिथि,कि छनि,अ त्व वना बाहि वांत्र-আকালে সাবের কাক, ভাকিছে জীবৰুভাক,

चाकुन (नहक-त्रद रकून-नाश्रत ! नकनि उप्रान एक, जीशाद्य प्रविन विष । অ'ধারিরা ধরাতন রবি অভ যায়। এ জাধারে নিরুপমা,কোপা হারাইছ তোমা, ध्यमा मानिक तत्र स्मिनिक कार्यात ! वूक दव दब दभन हिदत, आंत्र वीहा, चदत्र किदत, আর মা বাসন্তী লন্ধী, অনন্ত শোভার! नीन हेमीवत्र नम. जांचि यूग मरनातम, সলাজ-চাহনি-মাখা সেহ মমভায়! আ গুলুফ লখিত চুল, প্রভাতের পদাস্ল ! ञ्चमत्र निश्वत-त्रांश डेक्टन नीथात्र ! শারদ শশান্ধ-তুল্য, স্থপবিত্র স্থপ্রকুর, সরলা সুশীলা বালা ভরা মিগ্রতার---ट्डार्ड कि करमात्र त्नाथ मिनाम विमात्र ??

(वो मिमि।

. (महे त्व हिनदा (शतन, मांज वहत्त्रत्र क्रांतन, ভোমার সে নিরুপমা—বর্ণ প্রতিমায়; সবে করি কোলে কাঁথে, "মামূব" করেছি তা'কে.

রাশিরাছি চোখে চোথে ক্ষেহ-প্রীতি-ছার;

धितरण भारतत्र हुन, कांत्रियां स्टेक धून, ভোমারি লাগিরা "নিক"—সাধি পুনরার আনিরাছি রবি ধরি,কত কি আদর করি ! তবু সে ভোলেনি তার সেহমরী মা'র! বত কিছু হেথাকার, ভাল লাগিল না তার, "মা"বিনা ভোষার মেয়ে থাকিতে না চার !-ভাই সাজাইয়া চিতে,এসেছি ভোমারে দিতে, এই ধর কোলে কর প্রির তনরার !---বুঝি না অবোধ আমি,ফেলি শিশু,ফেলি সামী, তোমরা কিলের:লোভে গেলে অমরার !!

আজি কণোতাক্ষী-কূলে,হরীতকী-তক্ষমূলে, মারের পৰিত্র দেহে ছহিতা লুকার; সংসারের ধূলি-কণা,ভার গারে লাগিবে না, লাগিবে,না ভার গারে, মরণের বা'র! লোকে ডাকে "হরি ! হরি !" ধর্গ পথ আলো করি

মাত্হীনা নিক্পমা মা'র কোলে যায় !--আমরা १--কাঁদিতে শুধু রহিত্ব ধরার। অভাগিনী "পিদি মা".

সাগরদাড়ি।

গো-পরিচর্য্য।

(০৭৩ সংখ্যা —৩০৩ প্রচার পর)

বল্লালে খোলাভির অবসভির কারণ এবং কিলে ভাহাদের উন্নতি হউতে পারে, ভাহার क्षेत्राच निकारन ।

बाबारवत चरुभव উপकात

কর্বণ করি, এবং মাড়বর্মণা গাভীর হয় भामात्मत्र धानशाम्यत्म व्यवान छेगात्र । किंद्र अथन टाई श्लाकुन कराई इसन, ७ गांछी नक्न क्रायर इस्रोना स्टेरक्ट । बनाइन बाजा भागना कृषि । देशेत कांत्र कि? अञ्चनकान कतिना त

करतकी कातन द्यंशन, छाहारमबहे खेरतन कत्र। गहेरकहा

বলবান্ বংশ জন্মাইবার জন্ত শক্তিশালী বলদ রক্ষা না করা, গোজাভিকে প্রচ্র পরিমাণে পৃষ্টিকর আহার্যা না দেওয়া, তৃণাবৃত ক্ষেত্তলি ক্ষমে ক্রমে শস্তক্ষেত্রে পরিপত করা,এবং গোজাভির পরিচ্ছলতা, আভিশাভারে প্রতি দৃষ্টি না রাধা, গো চিকিৎসকের অভাব প্রভৃতি করেকটা কারণ প্রধান।

পूर्वकारन वाणैत कर्या ଓ गृहिगीरे পোনাতির পরিচর্য্যা করিতেন। তাহাতে তাহারা বিশেষ, গৌরব এবং প্ণালাভ हरेन यत्ने कत्रिएउन। **उ**थन अस्ति व्यवस्थि, त्कर शांत्रानचरत व्यर्वन করিতে পাইত না। অত্যে গো-গ্রাস না নিয়া কেছ ভোজন করিভেন না। (शाक्त आर भा गानित हिन्द्रा गफ গাভীগুলিকে 'মা' বলিয়া করিতেন: এখন ভাহার করিতেন। স্থোবন সম্পূর্ণ বিপরীত! এখন গো-দেবার ভার কেবল বেতনভোগী চাকরের উপ্র। কর্ত্তা গৃহিণীয়া কেহই গোক্ষর নিকট বান না। গোকগুলি কি ত্ৰুম অবস্থান আছে, ভাছারা পেট ভরিয়া ধাইতে गाइएकाइ कि ना, त्र मित्क काहांत्रध थक (भग बरतन कथा। पृष्टि नारे। বালালী কবক্দিপের মরে গোলর স্বহা আরও হঃবলন্ত। ভাহারাত সমত बित दशक्षितित्व वाग्रेहिता नकाकित ৰাছী আনিয়া কতকগুলি ৩ছ বিচালি

जन्या नाजा किनिया त्मन, जाहाई क्जक्र চিবাইরা গোকওলি স্থাশান্তি করে ৷ আর বে ছই চারি দ্ন গোক্ত প্রীর क्लान कांच ना शास्क, ताई करमक निन হয়ত রান্তার ধারে, অথবা যে শ্রমি হইতে অৱ দিন পূৰ্বে ফদল তুলিয়া লওয়া इरेब्राट्ड, छाहाटक ८व इरे এकी बान গ্জাইরাছে, দেই স্থানে একটু সাধীন-ভাবে চরিতে দেওয়া হয়। সূর্ব চাবারা कारन ना रा, এই क्रां ममख निम था गिर्देश नहेरन अथह छान कतिया थाहेरछ ना लिखन, গোকগুলি সম্বর ত্র্কল এবং অকর্মণ্য इहेबा गाइटिंग। टेमार्ड मान (চाटबंब আরম্ভ) হইতে অগ্রহারণ মাস (চাবের (भव) भवात शाक्किनित वफ्टे एकिना ; তবে পৌৰ, মাৰ, ফাস্কন মানে মাঠের অধিকাংশ শভ উঠিয়া ঘাইয়া থালি নাঠ পড়িয়া থাকে, তাই দেই দৰ ক্ষেত্ৰের আনে পাশে হুই চারিটা, বাসও গঞ্জার। সেই বাসগুলি একটু স্বাধীনভাবে ধাইয়া এই কর মাসে গোকগুলি একটু সারিয়া क्रिक्तं ।

পূর্ককার মত এখন আর বলবান্ বাঁড় রক্ষা করা হর না। যদিও বা কোন বড় লোক পিতামাতার প্রাছোপনকে হব একটা বৃব উৎসর্গ করিরা ছাড়িয়া লেন, সে বৃবটা বত দিন পর্যান্ত বড় না হর, ডড দিন কেহ কিছু বলে না। > বেই একটু বড় হইরা উঠিল, লোকের একটু আবটু কতি করিতে লাগিল অমনি তাহাকে হরত কোন পাবত করাইবের কিছুটু

একেবারেই বিক্রম করিল; না হয়, কোন খোঁরাড়ে আবদ করিয়া রাখা হুইল। খোঁয়াড় কোন মিউনিসিপালিটীয় चरीन रहेरन, के वनकी अवनात्र गाड़ी টানিতে প্রবত হইল। হ্মার থোঁয়াড় मिछेनिशिशानिजीत अधीन ना इटेल, (बीबाफ-त्रक्क श्रकाश नीनारम थे गैफ বিক্রের করিল। উৎস্গীরুত কাঁড়ের পাছার চিহ্ন করা হর, স্থতরাং মুসলমান কি খুষ্টিয়ান ব্যতীত আর কেহই ভাহাকে কৈনে না। উহারা কিনিয়াও তাহাকে অতি সম্বর জবাই করিয়া বাজারে উপস্থিত আগেকার লোকে পাছার कद्र । ত্রিশূল-আঁকা বাঁড় দেখিলে ভাহার নিকটেও ঘাইতে ভর করিত, কি জানি পাছে কোন রূপ ধর্মের অবনানা করা হয়। হতরাং পূর্বকার মত প্রকাঞ্ডকায় ৰল্ৰান "ধৰ্মের যাঁড়" কোন স্থানে **अक्रीं पृष्टि**रगाठत इत्र मा । अ निरक কেবল খাঁড় দেখাইবার জন্তও কলিকাতা ভিন্ন প্ৰায় অন্ত স্থানে কেহ বতু করিয়া বলদ পুষে না। এ অবস্থায় ক্লয়কদিগের বে হই একটা হৰ্মণ অন্বিচৰ্মসার এঁড়ে बारक, छाहारमञ्ज छेत्रस्य इस्त्रमा शासीत গতে ৰে সকল বংস জন্মে, তাহারা চর্বল किंव किंक्सिंश नवन स्टेंदि ?

পূর্বে জনীদার ও প্রজারা সকলেই এক একটা জনী কেবল গোল চরাইবার জন্ত প্রতিত রাখিতেন। তাহাতে বে বাস বিশ্বী হৈছে। থাইনাই গোল বলি বেশ বালাই হৈছে। এখন সাজের আশার

লকলের আলে সেই বাসের অধীটা আবাদ করা হয়। গ্রামে গ্রামে ভ্রিয়া বেড়াইলে এখন একটি গোচারণের মাঠ পাওয়া যার কি না, সংক্ষেত্র

এই সকল কারণে গাভীওলি ক্রেই অরহথবতী হইতেছে। গাঁডী প্রসৰ হইলে যে টুকু হগ্ধ হয়, তাহাও মামুৰে সৰ-টুকু ছইয়া লয়। কাব্দেই ৰাৰ্ছুরগুলি ছধ না পাইয়া ক্রনে পাকাটীয়া হইয়া যায়। পূর্ব্বে যে পরিমাণ ছগ্ধে যত মাথম পাওয়া ষাইত, এখন সেই পরিমাণ ছধে তাহার অর্দ্ধেক পাওয়াও কঠিন। কার্দ্ধেই এখন-কার অসার হগ্ন থাইয়া মার্থেও হগ্ন थाहेबात मग्राक উপकात প্রাপ্ত इंग्र ना। একণে আমরা আহারকাণে ফুঁকো তথ ছউক, কি একসের হথ্যে তিন পোরা জল দেওয়া হুধ হউক, অথবা থড়ি কি আটা গোলা জলই হউক, একটু সাদা জল পাইলে তাহা পান করিয়া পরিতৃপ্ত रहे।

অনেকে কল ফেলিরা ছথ পরীক্ষা করিরা ক্রয় করেন, কিন্তু তাঁহারা জাদেন না যে, বাতাসা ভিজান জল কিঞিৎ গরম করিরা ছথে দিলে, জল দেওরা তথ কলে ধরা পড়ে না। আবার অনেকে বাটাতে গোলা আনাইয়া সম্ভূত্যে হথ দোহাইয়া ক্রয় করে। কিন্তু পোরালা ক্র গোলকে অধিকক্ষণ রোদে রাবে, ভাহাতে গৌল বেলী জল ধার ও ছথ পাতালা ইইয়া অধিক পরিমানে নির্মত

937

स्त्राज्ञानात्रा हाठे हहेटड इधवडी भाडी. ক্রম করিয়া আনিয়া প্রায় সকলেই ফুঁকো দের। ফুঁকো হই প্রকার। এক প্রকার গাভীকে প্রথমে হাঁদিয়া পরে তাহার जनन्ति अप्रति मुद्र स्वादि क्रकात দেওয়া; আর এক প্রকার, জননেজিয়ে বাঁশের চোকা প্রবেশ করিয়া সজোরে मुथ मित्रा नवग-रंगाना कन जेमरत्रत्र मरशा প্রবেশ করিয়া দেওয়া। এই হুই প্রকার উপায়ে গোরুর হগ্ধ বেশী পরিমাণে निर्शेष्ठ इष्र এवः शाक्ति मिन मिन क्रम হইয়া যায়। ুষ্থন গোরুর হুধ খুব কমিয়া আইদে, তথন গোয়ালারা গমের ভূষি থাওয়াইয়া গোরুকে স্থূল করিয়া কদাইয়ের নিকট বেশী মূল্যে বিক্রম্ব করে। দ্বিতীয় প্রকারে ফুঁকো দেওয়া গোরু প্রায় আর গর্ভবতী হয় না। গোয়ালারা প্রার কেছই গোরু প্রতিপালন করে না। ফুঁকো **मिश्रा दिनी পরিমাণে ছগ্ধ বাহির করি**য়া লওয়াই তাহাদের উদ্দেশ্য, স্বতরাং তাহারা এক কেনে ও আর এক বেচে। তাহারা গোরু কিনিয়া অগ্রে বৎসকে (থাইতে শিশুক আর নাই শিখুক) কদাইকে বিক্রেয় করে। এইরূপে গোলাতির প্রতি আমাদের ক্রমিক অবস্থ, উহাদের সারবান থাম্বের অভাব, আভিকাত্যের প্রতি দৃষ্টি না রাখা, স্থানে স্থানে গোচারণের তৃণার্ভ ক্ষেত্র না থাকা, উহাদের কোন সামাস্ত পীড়া হইলে চিকিৎসার উপায় না থাকা, গো-शाहरकत्र मःशा मिन मिम त्रकि इस्ता व्यक्ति मित्रा धरे बनिए रह दर्

বালালালেলে গোলাভির বৃত্তি লোল হয়।

অস্তান্ত দেশের গোজাতির সহিত তুলনা করিলে আমাদের দেশে গোক নাই বলিয়া বোধ হয়। বাস্তবিক একটা গাভীতে এক মণ ছয় দেয়, কি একটা বলদের ম্ল্য হাজার টাকা, ইহা আমাদের দেশে কয়জনে বিখাস করিবে? বিখাস করা দ্রে থাকুক, ও কথা কেই বলিলে নিশ্চরই তাহাকে নির্ম্বোধ অন্তিজ্ঞ প্রভৃতি বলিয়া উপহাস করা হইবে।

ভারতবর্ষমধ্যে কলিকাতা, মাল্রাক, বাৰে ও উত্তর পশ্চিমে প্রভার সহস্র সহস্র গো-হত্যা হইতেছে। আবার এইক্ষে উপযুক্ত চিকিৎসকের অভাবেও বে কন্ত গোরু অকালে কাল-কবলে নিপত্তিত হইতেছে, তাহার ইয়ন্তা নাই। পূর্বে গ্রাম-মাত্ৰেই গো-চিকিৎসক দেখা যাইত . কিব একণে তাহাদের সংখ্যা অতি মাডওরারী মহোদরেরা ক্লাইরের হল্ত ब्हेट्ड मर्सनाहे 'त्रा द्रका তাঁহারা শোদপুর थादकन । **८हेमदनद** নিকট পীৰুৱাপোল নামক উন্থানে বিশ্বর গোৰুৰ চিকিৎসা ও প্ৰতিপালন করিয়া মহাপুণ্য দঞ্চর করিতেছেন।

উপসংহারে ভারত গভর্নেন্ট, হানীর বিউনিসিপালিটা, জমিদার, মহাজন, পশুর প্রতি নিষ্ঠুরতা-নিবাহিট্র সভা অবস্থা দেশের অস্ত কোন সামাজিক সভার প্রতি সাহনর প্রার্থনা বে, ভাহারা বেন মহুটের্ছ বীবনধারণের সহায়ভাষ বি গোড়াজিয়

উब्रजि मश्यक धाकरिक टाइं। करतन। नहित्न आत्र छेशासुस्त नारे। शवर्गमण्डे কিয়া স্থানীয় মিউনিসিপালিটা একটু চেট্রা করিলে এ বিষয়ে ক্রতকার্যা হইতে পারেন।

বঙ্গদেশের স্থানে স্থানে গোচারণের मार्ठ कतिया (म अया, ज्या तम इटेट ষাঁড় দেখাইবার জন্ত বলবান যাঁড় আনিয়া প্রতিপালন করা, ধর্মের যাঁড়কে ধরিতে না দেওয়া, চরিয়া থাইতে শিখে নাই এ-ন্ধপুরৎস বিক্রয় করিতে না দেওয়া, ফুঁকো দেওয়া বন্ধ করা, যে গাভীর গর্ভ হইবার সন্তাবনা আছে, তাহাকে কদাইকে বিক্রয় করিতে না দেওয়া. বিলাত হইতে কতকগুলি গো-চিকিৎসক আনাইয়া স্থানে স্থানে রাখা, ইত্যাদি উপায় দ্বারা এ দেশীয় গো-জাতির উন্নতিসাধনের সহায়তা অনায়দে করা যাইতে পারে।

শাস্ত্রবিশাসী ভক্ত হিন্দুর চক্ষে গাভী

ভগবতীর অবতার। তাঁহারা গাভীকে দেবতা বলিয়া পূজা করেন। यांशात्रा युक्तिवानी, नकन विषय् युक्तित বিশদ দৃষ্টিতে দেখিতে চাহেন, তাঁহারাও গো-জাতির উপকারিতা সমালোচনা করিয়া নিশ্চয়ই বলিবেন যে. গো-সেবা. গো-পালন, গো-রক্ষা ভারতবাদিমাত্রেরই অতি কর্ত্তবা। নানা কারণে ভারতে গো-জাতির বিশেষ হাস হইয়াছে ও হইতেছে, এমন সময়ে যে সকল মহাত্মা হইয়াছেন. গো-রক্ষা-ব্রতে ক্র ভদকর তাঁহারা হিন্দুমাত্রেরই বিশেষ ধন্যবাদের পাতা। যাহাতে তাঁহাদের চেষ্টা ফলবতী হয়, সে বিষয়ে যথাসাধ্য সাহায্য করা হিলুমাত্রেরই অবশ্র কর্ত্তব্য, যে হেতু সে চেষ্টা ফলবতী হইলে, ঐহিক পারত্রিক উভয়বিধ মঞ্চল সংসাধিত হইবে।

(ক্রমশঃ)

ধ্বনি বা শব্দবিজ্ঞান।

(৩৭২ সংখ্যা—২৮৪ প্রচার পর)

ম্বিভিম্বাপক পদার্থের কম্পনে শব্দ উৎপন্ন হয়; কারণ তদ্ধারা অতি শীঘ চতুম্পার্যার বায়ু কম্পিত হইয়া উঠে। **हका, बीगा, दुन् अ**ञ्चि वानित रहेरठ स्त्रित अकात स्मध्त नक निर्शेष्ठ इत। देशा कारण यात किंदूरे हक, दक्त

প্রমাণুগুলি প্রস্পর সম্বন্ধ থাকে, তৎ-সমুদায় ভিন্ন প্রকারে কম্পিত হয়, এই মাত্র। কর্ণের ধমনীতে আঘাতের সংখ্যা ও প্রকার ভেদে বিভিন্ন স্বরের উৎপত্তি হইন্না পাকে। আঘাতের সংখ্যার আধিক্য বা স্বন্নতার শব্দের উচ্চতা ও নেই 📆 ৰঞ্জে ছিভিস্থাপক ভাবে বে | হইয়া থাকে, কিন্তু তদগত অন্তান্ত বৈশব্দণ্য

আঘাতের প্রকারভেদ ও কম্পনের। অজ্ঞাত গুণবিশেষ বারা ুক্তবিরা ুথাকে।

একটা নির্দিষ্ট সময়ের মধ্যে সমভাবের একরাপ কম্পন সঙ্গীত-ধ্বনির উৎপাদক। মনে কর, কোন একটা পদার্থ হইতে এক সেকেন্ডে ১০০ কম্পন উথিত হইতেছে। যদি এক সেকন্ডে ১০০ টা কম্পন, অর্দ্ধ দেকণ্ডে ৫০ টা, সিকি সেকণ্ডে ২৫ টা ইত্যাদি সমভাগে উৎপন্ন হয়, তাহাহইলে ঐ ধ্বনি সঙ্গীত-ধ্বনি, নতুবা নয়। যদি প্রথমার্দ্ধ সেকত্তে ৭০টা ও পরার্দ্ধে ৩০ টা ইত্যাদি অসংলয়ভাবে কম্পন হয়, তাহাহইলে মধুর সঙ্গীতধ্বনি না হইয়া শ্রুতিকঠোর শক্ষ উৎপাদিত হয়।

একটা নির্দিষ্ট স্বর হইতে আরম্ভ করিয়া, তাহাহইতে ক্রমে উচ্চ অথবা ক্রমে নীচ গমন সকল দেশেই হইগা থাকে। ঐ স্থরকে ইংরাজীতে (keynote) ভিত্তি-স্বর কহে। অস্মদেশে ঐ ভিত্তি-স্বর একবারে নির্দিষ্ট নাই। ঘণ্টাধ্বনি প্রভৃতি যে কোন ধ্বনি হইতে আরম্ভ করিয়া সেই পরিমাণে উঠা ও নামা যায়। কিন্তু একবার যে ধ্বনিকে ভিত্তি-ধ্বনি করিয়া লইব, ভাহা হইতে বিচলিত হইতে পারিব না।

সকল প্রকার স্বর্থই কম্পন হইতে উৎপন্ন হইয়া থাকে। যদি কম্পন আন্তে আন্তে হর, তাহাহইলে আওয়াজের বিস্তৃতি অধিক হর, যাহাকে বাজখাই বলা বায়। অতি শীঅ শীঅ স্বর কম্পিত হইলে,

আওয়াজ অতি উচ্চ হয় এবং দ্রগাঁৰী হয়, কিন্তু বিভৃতি কমিয়া আইনে, বেমন ত্রী-কণ্ঠ।

मत्न कत्र, এकी वड अथवा कर्छ হইতে এক্টা ১০০ কম্পনের ধ্বনি নির্গত হইতেছে। যদি আর একটা বজে অথবা কণ্ঠে ঐ প্রকার ঠিক্ ১০০ কম্পনের একটী ধ্বনি নিগতি হয়, ভাহাইটো স্পষ্টই দেখা যাইতেছে যে, ঐ হইটা শক এक हहेरव। यनि এक है > ००, आद একটা ৭০ হয়, তাহাহইলে কভক বভক মিলিবে। কিন্তু যদি ৫০ হয়, তাহা হ**ইলেও** প্রায় সম্পূর্ণ মিলিবে। ইহার কারণ এই ट्रम, अकिंग नःथा। ट्रमन इहे, उहाटक इहे গুণ করুন, ৪ হইল। এই চারিটী কি 🤊 দেই ত্ই কেবল একবার না হটুরা ত্ইবার; ঐ প্রকার তিন গুণ কর্মন, ৬ হইল। এই ছয়টা কি ? সেই ছই কেবল এক বার না হইয়া ভিন বার হইন। সেই প্রকার যেমন একটা ছই আর একটা হুইয়ে কোন প্রভেদ নাই, কিছ চারি প্রভৃতির সঙ্গে কেবল গুণে প্রভেদ। সেই প্রকার ১০০ কম্পনোথিত শব্দ এবং ৫০ কম্পনোথিত শব্দের সঙ্গে কেবল গুণের প্রভেদ। আমরা একটার ১০০ ও আর একটার ৫০ কম্পন ধারা প্রস্ত শব্দ এক বলিরা চিনিরা লই-(कवन উচ্চ ও नींह প্রভেদ•থাকে। े **वरें** वश रडहे हज़ारे ना (कन, अकनराज ভিন্ন আর শ্বর পাওয়া বার না। কেবল নিয় হইতে উচ্চ এবং তাহা হুইতে আমার উচ্চ, এবং তাহা হইতে আরও উচ্চ এই প্রকার দাত স্থরই পাইব।

স্থারর এইরপ ধর্ম থাকাতে যৎকালে স্ক্রদর্শী স্থরসংগ্রাহক মহোদরেরা, শক্তব অন্তব্ধনান করিয়া শক্তবিন হইতে স্থররত্ব উদ্ধার করিতে প্রবৃত্ত হইয়াছিলেন, সেইকালে সাতটীর অধিক স্থার পান নাই। সাতটীর অধিক করিতে গেলে পুনরার সেই নীচের স্থরের সহিত ক্রমে মিলিরা যার।

ধ্বনি ছই প্রকার, অক্কতি ও স্কৃতি।
কোন বস্ততে অস্থা বস্তর অভিঘাতে যে
অপরিকটু ও নার্থধনি উৎপন্ন হইরা
শ্রবণগোচর হয়, তাহার নাম অক্কতি।
অপর, যে ধ্বনি হারা কোন বস্ত নির্দেশিত
কিছা কোন মানসিক ভাবাদি বাক্ত হয়,
তাহাকে স্কৃতি কহে। শাস্ত্রে ঐ অকৃতি
ধ্বনি ধ্বস্থাত্মক, ও স্কৃতি ধ্বনি বর্ণাত্মক
বা ভাষা বলিয়া অভিহিত হয়। যথা—
ধ্বন্যাত্মকো বর্ণাত্মক: সনাদ: হিবিধন্তথা।
নারদসংগীত-সংহিতারাং।

আকৃতি ধ্বনি ছই প্রকার, কর্কণ ও স্থাব্য। যে ধ্বনি এরপ কম্পনসমূহ হারা উৎপাদিত হয়, যাহারা অসমান আনিরমিত কালে পরস্পরের অস্থামী হইরা থাকে, সেই ধ্বনি প্রবণের অস্থ জ্যার বিদ্যা ভাষাকে কর্কণ কহা যার। বে ধ্বনি সমুকাল্যারী কম্পন হারা উৎপর হয়, তাহা প্রবণের ছপ্তি জ্যার বিদ্যানাক স্থাব্য ক্রেরা থাকে, ও ঐ

ধ্বনি স্থর ও কাবের বিশেষ নিরমে
ধ্বনিত হইলে, গীত বাছাদিরপে পরিণত্ত

হইরা সংগীত উৎপদ্ধ করে। এই জ্বন্ত
সংগীতশাল্রে ঐ ধ্বনিকে সার্থ করা বার।
তার প্রভৃতির সম্বর্ধণ অল হইলে
কম্পন-সংখ্যা অল হয়, স্বতরাং স্থর মৃত্

হয়, এবং সম্বর্ধণ অধিক হইলে কম্পন
অধিক হইরা স্থর উচ্চ হয়। সেতারাদি

যল্রে দৃষ্ট হইরা থাকে যে, একটা পূর্ণ তারে

যে স্থর নির্গত হয়, তাহার এক এক

অংশে তদপেকা উচ্চতর ধ্বনি নির্গত

হইয়া থাকে।

তারের সম্বর্ধণ দৃঢ় করিলে তাহার প্রমাণু সকল প্রদারিত হইয়। তারের স্থিতিস্থাপকতা বৃদ্ধি করে, স্কতরাং তাহার কম্পন বৃদ্ধি হইয়া ধ্বনিও উচ্চতর হইয়া উঠে। কিন্তু তাহার সংকর্ষণ শিথিল করিয়া দিলে, তাহার পরমাণু সকল সন্ধৃতিত হইয়া যাওয়াতে, তাহার স্থিতিস্থাপকতার হ্রাস হয়, স্কতরাং তাহার ধ্বনিও গভারতর হইয়া উঠে।

মনে কর, ছইটী কলিকে একটা তার আবদ্ধ আছে। উহা কম্পিত হইলে যে স্থর নির্গত হইকে, তাহা উচ্চ এবং মুদ্র করিবার ছইটী উপায় আছে। এক কীলক্ষয় না সরাইয়া ভারের সংকর্ষণ দৃঢ় বা শিখিল করা; অপর ভারের সংকর্ষণ সমান রাখিয়া কীলক্ষমের মধ্যগত ব্যবধানের রৃদ্ধি বা ছাল করা।

বদি ভারের এক দিক্ কীলকে আবছ ও অপর দিক্ কীলকের উপর দিয়া युनान प्रांटक, ७ डाहात्र धारत वकी वञ्ज সংশग्न थात्क, তाहा हहेत्न के मश्मन বস্তুটার গুরুত্ব ও লঘুত্ব অমুসারে তার-নির্গত স্থরের উচ্চতা ও মৃছতা হইবে। যদি ঐ বস্তুর ভার বৃদ্ধি করা বায়, তাহা হইলে তার চড়িয়া ধাইয়া ধ্বনি উচ্চতর इहेबा छेटा यनि छात्र कमान याब, ভাহাহইলে ভার নরম হইয়া গভীরতর ধ্বনি নিৰ্গত হয়। আবার বদি ভার অপরিবর্ত্তিত রাধিয়া একটা কীলক অপর कौनात्कत निरक किश्विर नत्नान यात्र अर्थार তারের আয়ত পরিমাণ যদি কমান যার, তाहा हरेल श्वबि हज़ा हहेर्त,; कौनक-হয়ের মধাগত পরিসর বিস্তৃত করিলে অর্থাৎ তারের আরত পরিমাণ বৃদ্ধি कतिर्लं श्वनि मृष्ट् रहेरव।

মনে কর কীলকবরের বাববালা অথাৎ তারের দৈর্ঘ্য পরিমাণ ৪৫ ইঞি। এইক্ষণে কীলকবর যদি সরাইয়া মধাপত বাবধান ২২॥০ অর্থাৎ তারের দৈর্ঘ্য ২২॥০ করা যার, তাহাহইলে যে ধ্বনি নির্গত হইবে তাহা পূর্ব ধ্বনির ঠিক্ অন্তম। এতদ্বারা প্রতীয়মান হইতেছে যে, সম-সংক্ষিত তারের ভিন্ন ভিন্ন অংশের দীর্ঘতা তাহাদের কল্পনসংখ্যার ঠিক্ বিলোম, অর্থাৎ পূর্ণ তারটিতে এক সেকতে যত কল্পন উৎপন্ন হর, তাহার অর্ক তারে ঐ সমরে বিশ্বণ কল্পন উৎপন্ন হর্মা থাকে। স্বতরাং অর্ক তারে পূর্ণ তারোৎপন্ন ক্ষরের অব্যবহিত উচ্চ আইম্ব নির্পত হয়।

(ক্রমশঃ)

मामा ७ गमा।

সোলাত ও শবণাগতি শিক্ষা করিতে
হইলে আমাদিগকে রামাহল লক্ষণ ও
মধাম পাওব ভীমসেনের চরিত্র অফুশীশন
করিতে হয়। মহর্ষি বান্মাকি ও ব্যাসদেবের রামায়ণ ও মহাভারতের কুপায়
ত হইটা মহাপুক্ষের চরিত্র না জানেন,
এমন ব্যক্তি নাই। কিছ ছঃধের বিষয়
এই য়ে, আধুনিক পণ্ডিতক্ষল কৌতুকপ্রিয় প্রাপ-কথক-গণের কুবাধার এবং
যাত্রাওরালাদিপের কুৎসিত অভিনরে
অনেকেরই ভীষসেনকে একটা উদ্বে

প্রকৃতির লাঠিয়াল বলিরা ধাংণা হইয়া
গিয়াছে। সেই জন্ম আজ আমরা ভীমসেনের প্রকৃত চরিতাখাদনে চেষ্টা করিব।
ধর্মরাজ যুণিন্তির ভীমসেনের জ্যেষ্ঠ।
ভীমসেন প্রাণপণে সেই জ্যেষ্ঠের আজ্ঞা
বহন করিতেন। জ্যেষ্ঠের আজ্ঞা পালনে
ভাঁহার বিচার, বা বাদ বিতপ্তা ছিল না।
কোন বিবরে কেহ ভাঁহার মতাম্বল
জ্ঞানা করিলে, তিনি কলিতেন,
গ্লামি আর কিছুই আনি না, আনি

জ্যেঠের প্রতি তাঁহার কত ভক্তি ছিল,—জাঠকে তিনি কত সন্মান করি-তেন,—তাঁহার কতই অহুগত ছিলেন; তাঁহার প্রতি তাঁহার কতই নির্ভর ও বিশাস ছিল, তাহা এক "দাদা ও গদার" প্রকাশ পাইতেছে।

ভীমদেনের এরপ জোষ্ঠামুগত্য না থাকিলে অর্দ্ধেক মহাভারতের ग्रहि इहेल ना । পाखवगरगत्र बान्स वर्ष वनवान, একবংসর অজ্ঞাতবাস, অজ্ঞাতবাদের অপরিসীম ক্লেশ,---পাচকবেশে বিরাট-ভবনৈ অবস্থান,—কুরুক্তের অন্তাদশ অক্ষেক্টিণী দিবসব্যাপী **अ**ष्टोन न সেনা-নাশক ভীষণ যুদ্ধ ইত্যাদি অসংখ্য গুরুতর ঘটনার পুর্বেই ছর্য্যোধনের উক্-**छन, इः**माजत्नत्र व्यक्ताविनात्र, त्जीवनीत्र বেণীসংহার হইয়া যাইত। কিন্তু হইতে পারিশ না, কেন না ভীমদেন 'দাদা ও शना' ভिन्न प्यात कि इहे कारनन ना। नाना বলিলেন,—আমরা পাশাক্রীড়ায় পরাজিত হইয়া প্রতিজ্ঞাবদ্ধ হইয়াছি, নাদশ বৎসর বনবাস ও এক বংসর অজ্ঞাতবাস করিতে হুইবে। অন্তথা অধর্ম হুইবে।" ভীমদেনের ভাহাতেই 'তথাস্কা।' मामा विनदनन. ব্ঝিলেন, অধৰ্ম হইবে,—ভীমসেন भवश्रहे व्यथम् इहेद्व। দেই অধর্মের **छत्म महिल इ**हें। न। श्रारात्र व्यक्ति প্রিয়তমা রজখনা একবস্তা দ্রোপদীর কৌরবগণের প্রতি **খিশাচপ্রকৃতিক** অমাশু অভ্যাচার দর্শনে গ্রুকোধানলে ৰ মন:কটে ডিন্নমাণ হইনাও নীরৰ

রহিলেন। কেননা দাদার আজ্ঞা নাই,—
দাদার আজ্ঞা পাইলে তথনই গদাঘাতে
স-সভ্য-কৌরব-রাজ-সভা ধূলিসাৎ করিতেন;
বিষয় ও বিনত্র বদনে গদা স্কর্কে দাদার
পশ্চাৎ পশ্চাৎ গমন করিলেন।

কোন সময়ে সন্তীক কোরবগণ চিত্রবথ-নামা গন্ধর্বরাজের অহুচরগণ কর্তৃক অব-मानिত ও व्यवकृष इहेग्राहित्नन । त्कोत्रव-গণের লাঞ্চনা ও ত্র্দশার পরিসীমা ছিল না। তথন ধর্মপুত্র যুধিষ্ঠির ভ্রাতৃগণ ও দ্রোপদীর সহিত বনে বাস করিতেছিলেন। কোনরূপে ভাঁহার শ্রুতিগোচর হইল যে. যে হুর্যোধনাদি জ্ঞাতি নিষণ্টকে রাজ্যস্থ ভোগ করিবেন বলিয়া দ্রোপদীর সহিত পঞ্চ পাগুৰকে পাশাক্রীডাচ্চলে রাজ্যভোগে বঞ্চিত করিয়া বনবাসী করিয়াছেন এবং সতত তাহাদের অনিষ্ট চিস্তা করেন.•গন্ধর্ম-রাজ কর্ত্তক তাহাদেরই ঈদুশী চুদ্দা উপস্থিত হইয়াছে। তথন আর স্থির থাকিতে পারিলেন না। যধিষ্ঠির ভীম-मেनक कहिलन,--"व्रकानव, ऋषाधन পুররমণীগণের সহিত বিপন্ন হইয়াছেন। কুরুপাণ্ডবের মধ্যে তোমাদের ভার বীর সকল বর্ত্তমান থাকিতে চক্রবংশীয় কুলস্ত্রী-গণের এতাদুশী অবমাননা কোনক্রমেই উপেক্ষার বিষয় নহে। এখনই তাহা-দিগকে রক্ষা করিতে অগ্রসর হও।" ভীমসেনের তাহাতে বিক্সক্রিমাত্র নাই,-কেননা তিনি 'দাদা ও গদা' ভিন্ন আর किहूरे कार्तन मा। क्षप्रदा देवनियांजना-नन "धक् धक्" · कतिया विशिष्टाः

সেই অন্ধিতেকে ভীমদেনের অন্ধান্ত ভশ্মীভূত হইরাছে,—তথাপি দাদার আজ্ঞা,—গদার আবাতে গন্ধর্ককুল নির্মূল করিরা পরম বৈরি ছর্ষোধনকে রক্ষা করিবেন।

পঞ্চ পাণ্ডবের এই বনবাদের পর এক বংসর অজ্ঞাত-বাস। অজ্ঞাত-বাসের নিয়ম **छौर**ग **रहे** एउ छौरन। পঞ্চ পাণ্ডব দ্রোপদীর সহিত ছন্মবেশে বিরাট ভবনে অবস্থান করিছেন। লাঞ্চনার পরি-সীমা নাই। যে ইক্সপ্রকের যশ:দোরভে এককালে ভারতের দিগন্ত ব্যাপ্ত হইয়া-ছিল, সেই ইক্সপ্রস্থের একছেত্রী রাজা ধর্মপুত্র বুধিষ্ঠির। বাহার রাজস্ম মজ্জে শ্বরং ঐক্তিঞ্চ ত্রাহ্মণগণের পাদপ্রকালনের ভার লইয়াছিলেন, .সেই ভারত-সমাট্ যবিষ্টির আৰু বিরাটের প্রসাদপ্রার্থী অল্পাস, —পালক্রাড়ার পারিষর। যে ভীমের ভীম গদা ত্রিলোকের ত্রাস-উৎপাদক.—তিনি বিবাট-পরিবারের পাচক। মে অর্জনের জগবিখ্যাত গাণ্ডীব সুরাস্থর-विक्रा,---(मरे कर्जून आज নপুংসক বুহন্নলা,---বিরাট-ছহিতার সঙ্গীত-শিক্ষক, --- ব্মণীমগুলীমধাগত,--- অন্তঃপূর্বাদী । সাক্ষাৎ অখিনীকুমার যুগল নকুল সহদেব कु भव ब्रांक भू बी বিরাটেয় অশ্বক্ক। शक-भाखत-महियो जिल्लान-साहिनो क्रभनी क्लोभनी आ**म** विवाध-अन्तः शूरव रेमविकी। ইহাই বিভ্ৰনার চরম দীমা কেবল कूर्वाधरनत्र व्यनिषि नरह ! করিয়া কৌরবরাকা পরিভ্রমণ করিতেছে.

—পাওবগণের সদ্ধান পাইবামাত্র তাঁহাদিগকে বন্দী করিবে। তাঁহারা পুনরার ঘাদশ বর্ষ বনে বাস করিতে বাধ্য হইবেন। ইহাই অজ্ঞাত-বাসের নিয়ম।

একদা বিরাট রাজা পাশক্রীড়া করিতে করিতে কৃদ্ধ হইয়া কল্পের্ট নাশিকায় পার্ফি প্রহার করায় নাসিকা হইতে অঞ্চল্ল শোণিতস্রার ঝরিতে লাগিল। পূৰ্ব্বক সেই শোণিত মুক্তিকায় পতিত হইতে দিলেন না.--কারণ ভীমের প্রতিজ্ঞা हिन ८४. ८४ मिन क्लारहेत <u>ৰোণিত</u> मुखिकांत्र পতिত দেখিবেন, সেই দিন শোণিতপাতের প্ৰয়োজ ক কর্তাকে সবংশে ধ্বংস করিবেন। বিরাটকে তাদশ विश्वन इटेंटि त्रका कविवाद अछ कड নামধারী যুধিষ্ঠির মৃত্তিকায় শোণিতপাত निवात्रं कत्रिंदनन । কিন্ত যুধিষ্ঠিরের **मां**माञ्चभात्र **म**मुल বিরাট বুধিষ্ঠিরকে প্রধার করিবেন,--ভীম তাহা স্বচক্ষে দর্শন করিয়াও নীরব ও নিজিয় রহিলেন, —কেননা তিনি "দাদা ও গদা" ভিন্ন षात्र किहरे बात्नन:ना। नाना रेनिएड व्याहेरणन,--- ७ थन आमारपत्र সংব্যের সময়,---ক্রিয়ার সময় प्रापांच न(१। इक्रिए.-- जीमरान नीवव विश्वान।

আমরা কেবল তীম সেনের গৌপ্রাত্ত ও লরণাগতি দেখাইবার চেটা করিতেছি। জেটের প্রতি অপরিনীম স্কৃত্তি, বিশাস, ও নির্ভর না থাকিলে, আর্মরা কথনই মহাভারতে তাদৃশ প্রীম সেন দেখিতে পাইভাম না। উত্তরক্ষণে মহাভারত অধ্যয়ন করিলে, দেখিতে পাওরা বার, বৃধিন্তিরের প্রতি যাহাতে ভক্তির ন্যনতা না :হইরা ক্রমশঃ বৃদ্ধি হর, ভীম সেন তাহাই করিয়াছেন। আপনি সম্পূর্ণ সক্ষম ও উপার্বিৎ হইরাও দাদা আমার রক্ষাকর্তা, দাদাই আমার পালনকর্তা, ভীমদেনের পূর্বাপর এই ভাষ। দাদার হত্তে সম্পূর্ণ আত্ম-নিংক্লেপ, যেমন ভীম সেনের দেখা যায়, এমন আর কোথাও নাই। সেই আত্ম-নিবেদনে বিক্ষুমাত্র উগ্রতা নাই, বরং সম্পূর্ণ দীনতা। ইহারই নাম শরণাগতি।
দানার প্রতি জীমের বে ভাব, গদার
প্রতিও সেই ভাব। সৃষ্টি, স্থিতি ও
লয়, এই তিন শক্তিই তাঁহার গদার ছিল,
তীমের এই বিশ্বাস। এই জ্লন্ত তিনি
সর্ব্বদাই বলিতেন,—''আমি দাদা জানি,
আর গদা জানি।'' এই ভাবের আনন্দে
তিনি সর্ব্বদাই বিভোর থাকিতেন।
কোনও স্বাধীন চিন্তার তিনি ক্থন
আলোড়িত হন নাই—চিন্তার মধ্যে—
'দাদা ও গদা"।

व्यक्ता वार्टे मद्यस्य गाया।

কলিযুগে ধন্তা সতী অহল্যা-রাণী।

(ও) ধার কীর্ত্তিতে ভরেছে ভ্বন, নারীর মাঝে রক্ত-থনি ॥

বারে দেখ্লে নয়নে—পাপ্ না থাকে মনে,
রোগের জালা পালায় দ্রে এমনি 'প্পা-পরাণী" ॥

মিলে সাধুজন বত তাঁর গুণ গান কত,
তিনি দৈববলে হ'লেন্ এসে হোল্কারের কুলের রাণী ॥

কত কঠোর ব্রত,, পণ্ তিনি কর্লেন উদ্বোপন্
হলেন্ ধর্মবলে, প্ণাফলে, আপন কুল-উদ্বারিণী ॥

(ও) সেই মছেশ্বর ধাম ফেথা করিতেন অধিষ্ঠানকালাল গরীব গোলে সেথায় লভিত বিশ্রাম—
তিনি মাতা হয়ে দিতেন অর, দীন হীনের জননী ॥

কীত "দশ রম্ব" খন, দিলে কর্তেন্ বিতরণ,
হরিমানৌ সদাই প্রীতি, প্রাণ পাঠে মন।
ও বার বজ্ঞসভা বিপ্রগণে হত শোভাশালিনী।

নিত্য আদেশেতে যাঁর

क्छ बिक मशाहात,

হোমকুণ্ডে হবিধারা দিতেন অনিবার, তিনি সহস্র আহতি দিতেন, এম্নি ব্রতধারিণী॥ বিনি ব্রাহ্মণের করে অতি ভকতি ভরে গড়াইলেন্ কোটী শিব পৃঞ্জিবার তরে,

গড়াংশেন্ কোটা শিব পুজিবার তরে,
তিনি ছংখা জনে বিভা (বিবাহ) দানে
হলেন কীর্ত্তি-শালিনী।

বিনি পর্কাহ ক্ষণে ধেমু দিতেন ব্রাহ্মণে,
শিশুগণে ছগ্ম দানে বাঁচাতেন প্রাণে,
(ও) তাঁর করে সদা জপমালা, থাক্তো দিবা যামিনী।

যত আছে তীর্থ ধাম্

"জ্যোতিরিঙ্গ" আছেন যেণা নিত্য বিরাজমান্,
ও তাঁর অল্পত্র আছে দেখাল্ল, অল্পূর্ণাক্রপিণী।

তিনি অল্প আতুরে সদা করণাভরে

ঔষধি আর বস্ত্র দিতেন আপনার করে,

দিল্লে ব্রাহ্মণেরে অগ্নিহোত্র (হলেন) ধর্মারক্ষাকারিণী।

বিনা ব্রাহ্মণ পারণ যার না হ'ত ভোজান,

ভিজ্পাদোদক নিত্য করিতেন দেবন্,
ভ যাঁর রামনাম গানে দদা পোহাইত যামিনী।

যিনি তীর্থগ-গণে সদা আনন্দ মনে,
পাহকা, প্রাবরণ, অব দিতেন যতনে,
দিয়ে গুণী জনে স্বর্ণভূষা (ছিলেন): গুণের আদরকারিণী,
প্রজার করিতে রক্ষণ দেখুলে ছন্টমতি জন,
চরণে শৃথল দিরে করিতেন বন্ধন;
(ও যার) দেবতা-মন্দির শত ঘোষে কীর্ত্তি-কাহিনী॥
দরার নাহি ছিল শেষ,
ফলাশর দানে দেখা খুচাইতেন ক্লেশ;
তিনি বিশ্বধারা ঢালি শিরে পৃঞ্জিতেন শূলপাণি॥

a

করতেন তুলা ব্রত দান যিনি পেলে গ্রহণ-মান স্থৰ্ণ, রজত, ঘৃড, মধু, তিল্, তণ্ডুল, ধান্, তিনি ছায়া দানে পাস্থ জনের ছিলেন আতপবারিণী 🖟 ক্ষমে লয়ে বারিভার, সদা কুপাগুণে থাঁর রামেশ্বরে যেতেন কত সাধু সদাচার, ও'বার-সঙ্গে বেত তীর্থবাসে কত অনাথ-ছ:থিনী। তিনি ছিলেন উদাসী. হয়ে সংসারবাসী (তাই) ভক্তিগুণে মুক্তি নিজে হলেন তাঁর দাসী; হায়। ধরাতলে নাহি মিলে এমন ধন্তা রমণী।। কবি গন্থ হৈবতী বলে করি মিনতি. গণনা তাঁর গুণের করি:কিবা শক্তি ? (মিলে) প্রভাকর, মহাদেব গুণী-গায় তাঁর গুণের কাহিনী॥ *

আধ্যাত্মিক মহাপূজা।+

নিষ্ঠাবান্ হিন্দুদিগের মধ্যে দেবতার
সামান্ত পূজা ও মহাপূজা আছে।
সামান্ত পূজা নিত্যপূজা, তাহার উপকরণ
সামান্ত ধূপ, দীপ, গৃন্ধ, পূপ, ও নৈবেল।
কিন্তু মহাপূজার মহা আয়োজন হইয়া
থাকে। তাহাতে উৎসবের বহুপূর্বেল
দেবপ্রতিমা স্থন্দররূপে গঠিত ও স্থাজিত
হয়। পরে পিতৃপুক্ষগণের সহিত একত্র
ইইয়া মহান্যার উৎসব হয়। পরে

দেবতার বোধন বসে ও দেবীমাহাত্ম্য কীর্ত্তনস্টক চণ্ডীপাঠ হয়।
পঞ্চোপচারের পরিবর্ত্তে যোড়শোপচারে
দেবপূজা হয়। কত বাগ্যভাণ্ড, কত পূম্পাঞ্জলি, কত আরতি, কত হোম যাগ ভোগ ও বলিদান হইয়া থাকে! অব-শেষে মহাপূজার দিন সন্ধিক্ষণে স্বচক্ষে
দেবদর্শন লাভ হয়। পরে আবার
মহাপূজা ইইয়া দেবপূজা সমাধা করা হয়

^{*} শ্রীমুক্ত বাবু যোগীক্র নাথ বহু, বি এ, স্কলিত "অহল্য। বাই" হইতে উদ্ভঃ গাথাটি মহারাট্র ভাষা হইতে বাজালার অনুবাদিত। পাঠক পাঠিকাগণ ইহার কুসংস্কার ভাগে দৃষ্টি না আনার্থ গ্রহণ করিবেন । বা, স । বানোংস্ক উপলক্ষে প্রদত্ত উপল্পের সার মর্ম।

এবং আবালর্দ্ধবনিতা সকলে শান্তির জল লইরা সংবৎসরের জন্ম অংথশান্তিতে জীবন যাপন ক্রিবার আশা করেন।

আমাদের ত্রন্ধপূজা নিত্যপূজা--প্রতি-দিন আমরা আরাধনা, ধ্যান, ধারণা, প্রার্থনা ও দেবা দারা ইপ্রদেবতার উপাসনা করিয়া থাকি। কিন্তু আমাদের মহা-ইহার জন্ম পূজার বিশেষ্থ কি? আমাদের কিরূপ মহা আয়োজন করিতে इष्ठ ? आमारमंत्र रमयजात मृद्धिं गर्ठन করিতে হয় না, তিনি কাহারও হাতগড়া বা মনগড়া হইলে উাহার দেবত্ব থাকে না। তিনি স্বয়ম্ভু, সচ্চিদানন্দ ও স্বপ্রকাশ। তিনি বিরাটক্সপে অনস্তব্রহ্মাণ্ডে বিরাজ প্রাণের প্রাণ আবার করিতেছেন, হইয়া ঘটে ঘটে বিরাজমান। তাঁহার মৃত্তি দর্শনের জন্ম প্রকৃতির আবরণের মধ্যে তাঁহাকে অমুধ্যান করিতে হয়; আবার আস্মার অন্তরস্থ হিরণায় শ্রেষ্ঠ কোষে তাঁহাকে অৱেষণ করিতে হয়। নদী পর্বত সমুদ্র, চন্দ্র স্থ্য তারকা-মণ্ডিত অসীম আকাশ, বন উপ্বন পুশকানন তাঁহার ছবি দেখাইয়া দেয় এবং সদাক শে প্রেমশশী হইয়া তিনি উদিত হইয়া পাকেন। আবার প্রেমিক ভক্তবৃন্দের সমাগমের মধ্যে দেই প্রেমমন্ত উজ্জলব্ধপে প্রকাশিত তাঁহার এই প্রকাশ हरेब्रा थाटकन। দর্শনের জন্ত আমাদের সকল আয়োজন। मरहा९नवरकरख आननमञ्जी विवसननीत আবিষ্ঠাব হইলে আমাদের দংৰৎসরের সকল আয়োজন সার্থক হর।

व्यामात्त्र महानम्। बाह्य। সারা বংসর সন্ধীর্ণ গৃহে আপনার আত্মীর-পরিজন, যশ মান, ধন ঐশ্ব্যা ও ভোগ লইয়া বাস করি, কিন্তু উৎসবের আগমনে আমাদের জুক্ত অতিপ্রশস্ত গৃহের বার উদ্ঘাটিত হয়—যে বিশাল গৃহে পরলোক-वांनी यस, राख्यद्वा, अनक, लेना, मूना, মহম্মদ, বৃদ্ধ, হৈতত্ত্য, রামমোহন, প্রভৃতি কত দেবৰ্ষি, মহৰ্ষি, রাজ্ধি, ব্ৰহ্মৰি বাস পিতৃপুরুষগণ আমাদের করিতেছেন. রহিয়াছেন এবং দ্রদেশস্থ নিকটস্থ হ্রকণ ঈশ্রভক্ত সমবেত—আমরা তাঁহাদিগের সহিত একপরিবার হইয়া আমাদের প্রেম-ময়ী বিশ্বজননীর ক্রোড়স্থ এই মহাগৃহে সকলে এক হইয়া মহোৎসবে প্রবৃ**ত্ত হই।** আমাদের চণ্ডীপাঠ আমাদের মহা-আমাদের মাহাত্ম্যকীর্ন। দেবীর নিরাকার নিবিকার সর্বব্যাপী দেবভারই এই স্বতি:-

"যা দেবী সর্বভৃতেরু শক্তিরপেণ সংস্থিতা, যা দেবী দর্বভৃতেরু প্রাণরপেণ সংস্থিতা, যা দেবী দর্বভৃতেরু জ্ঞানরপেণ সংস্থিতা, নমস্তল্যৈ নমস্তল্যে নমোনমঃ। দেবাস্থরের মহাযুদ্ধে স্থামাদের মহা-শক্তিই দানবদলনী ও দেবপ্রভাবের ক্রয়বিধায়িনী।

আমরা নিত্য বেমন সামান্তভাবে তাঁহার পূজা করি, মুহোৎসবে কি সেরূপ পূজা শোভা পার ? বেডিশোপচারে কি, সহস্রোপচারে তাঁহার পূজা করিলেও ভজের প্রাণ তৃপ্ত হয় না। জবিশ্রাভ

প্রার্থনা, প্রদাভক্তি, প্রেম, ক্বতজ্ঞতার সহিত ইহাঁর চরণপুজা, আর জগতের দীন হংধী রুখ ভখহদয় পাপী তাপী সকলকে লইয়া মায়ের চরণ বেরিয়া নৃত্য গীত ও মহোৎসব করিতে হয়। মহা-পুজায় অনেক হাদয়ের তার মিলিত করিয়া বাস্ত করিতে হয়, অনেক প্রাণের প্রফাটিতপুষ্প অঞ্জলি অঞ্জলি দেবতার চরণে দিতে হয়, অনেক আত্মার নৈবেছ মহাদেবীর চরণে সজ্জিত করিতে হয়. আ্ব্র অনেক আত্মবলিদান দ্বারা এ পূজা সমাধা করিতে হয়। কাম, ক্রোধ লোভ, অহন্ধার, স্বার্থপরতা পশুদিগকে বলি দিতে হয়। আমরা কতদিনে এ মহাপুজার জন্ম প্রস্তুত হইতে পারিব প শত শত ভক্ত-প্রাণ একযোগে মহাপুজা করিতে পারিলে নিশ্মই শুভ সন্ধিক্ষণ উপস্থিত হইবে-পরমাত্মার দহিত আত্মার ভভ দল্মিলন--

উপাশু দেবতার চক্ষের সহিত উপাসকের কেবল চক্ষের মিলন নয়, প্রাণে প্রাণে মিলন হইয়া মহাজীবন সঞ্চারিত হইবে।

আমাদের মহোৎসবের ফল উপাস্য দেবতার সহিত উপাসকের প্রাণের মিলন হইলে তাঁহার সকল সম্ভানের সহিত প্রেমের মহামিলন হইবে। পবিত্র শাস্তির জল শাস্তিমর দেবতা সকলের মস্তকে—স্বালে ঢালিয়া দিবেন, তমু মন জীবন শীতল হইবে—সংবৎসরের সম্বল পাইয়া সকলে ধস্ত হইব।

আমাদের মহোৎসবের জননীকে উৎসবাত্তে আমরা বিসর্জন দিব না, কিন্তু আমাদের প্রহে এবং আমাদের সমাজে তাঁহাকে প্রতিষ্ঠিত করিয়া রাখিব। উৎসবের দেবতা আমাদের মনের আশা ও প্রাণের সাধ পূর্ণ করুন্।

মূক-বধির বিত্যালয়ের পারিতোধিক।

গত ২৯ শে ফেব্রুয়ারি কলেজকোয়ারে হায়ার ট্রেণিং সোসাইটার স্থসজ্জিত রহৎ গৃহে কলিকাতা মুক-বধির বিভালয়ের ভূতীয় বার্ষিক পারিতোষিক-বিভরণ-কার্য্য সমারোহে সম্পন্ন হয়। অনরেবল উভবরণ সন্ত্রীক সভাপতির কার্য্য করেন। দেশী বিদেশী অন্টেকগুলি ভদ্রলোক ও মহিলা সভাছল বিভূষিত করেন। প্রথমে বালালায় ক্রুক্রকণা বিষয়ে এক্ট্রী সঙ্গীত হয়, করেন। তাহাতে দেখা যায়, বিস্থালয়ে ২১ টী ছাত্র ও ২ টী ছাত্রী শিক্ষা লাভ করিতেছে; ওষ্ঠ সঞ্চালন দর্শনে কথা পাঠ করা ও তাহার উচ্চারণ করা, পুত্তকপাঠ, লেখা, অস্ক, ডুইং, কলে সেলাই, এন্গ্রেবিং (ছবি খোদা) ও স্বর্ণকারের কার্য্য ছাত্রেরা এই সকল শিখিতেছে। বিস্থালয়ের এক জন শিক্ষক বাবু যামিনী নাথ বন্দ্যোপাধ্যায় বিলাভে বোবা-কালাদিগের স্বধ্যাপনার উপযোগী শিক্ষা এক বৎসরকাল সমাধা

385

উহা সম্পূর্ণ করিবার কবিয়া আমেরিকায় গিরাছেন, আগামী আখিন ফিরিয়া আসিবেন। মধ্যে মাসের विरमभीय कारनक हिटेखरी मरहामय ७ মহিলা বিবিধ উপায়ে তাঁহাকে সাহায্য দান করিতেছেন। খিদিরপুরের এক विथवा नात्री ७००० ठाका निया এই বিস্থালয়ের একটা স্থায়ী ফণ্ড করিয়া দিয়াছেন। গতবর্ষে বিস্থালয়ের জন্ম ০ হাজারেরও অধিক ব্যয় হইয়া ব্যাক্ষে প্রায় ৩ হাজার টাকা জমা আছে। কলিকাতা মিউনিসিপালিটী মাসিক ১০০, শোভাবাজার দাতব্য সভা মাসিক ১০, ভবানীপুর ওয়ার্ড এটেট বার্ষিক ৫০ টাকা

দিয়া থাকেন। আরও অনেক দ্যালীল মহাআর নিকট মাসিক বা বাবিক দাতবা প্রাপ্ত হওয়া যায়। বিভালয়ের একটা গৃহের অতা জ অভাব, তাহার অভ সকলের সাহায় প্রার্থনা করা হইয়াছে। অতঃপর বোবা কালারা কিরুপ কথা কহিতে ও ব্রিতে পারে, সর্বাসমক্ষে তাহার পরীক্ষা প্রদশন হয়। তাহায়া আপনাদের নাম, পিতার নাম, নানা বস্তুর নাম করিল, পরম্পর কথোপকথন করিল, অফ কসিয়া দেখাইল। তাহাদের অঙ্কিত অক্ষর চিত্র সকল প্রদশিত হইল। পরে একটা ছাজ্র নিয়লিখিত কবিতাটা উটচেঃ স্বরে পাঠ করিল:—

আমরা ৷*

আজি কি স্থথের দিন,

"বোবা ছেলে" কথা কর,

দরাময়ী মা'র বরে

সকলি সন্তব হয়!
কে জানিত, পোহাইবে

আমাদের কাল রাতি,
কে জানিত উজলিবে

এমন সৌভাগ্য-ভাতি!

আমরা কহিব কথা,

শিথিব মানব-ভাষা,
স্থপনে কথনো মনে

আদেনি এমন আশা!
ভোমারি আশীবে সত্য

জগত-জননি! আজি,

কহিতে, শিখিতে কথা
আমরা এসেছি সাজি !!
চারি দিকে কোটা প্রাণ
উঠিয়াছে উথলিয়া,
মেহের নিঝর বহে
কত ঢেউ ছুটাইয়া !
"দেবতা" কাহারে বলে
দেবতা মানবগণ,
না হলে অভাগা-তরে
কেন এত আরোজন ?
পেয়ে এ মমতারাশি
গিয়াছি অবাক্ হরে,
কুতার্থ হয়েছি মাগো !*
তব নাম মুথে লয়ে !

মারে ডাকি—বাপে ডাকি—
ডাকি স্থথে ভাই বোনে,
সফল জীবন আজি
ভাবিতেছি মনে মনে !
লেথিকা ক্রীমা—

প্রদর্শনের পর বিবী উডবরন সহত্তে পারিতোষিক বোবা কালাদিগকে বিতরণ করিলেন এবং তাহারা নমস্কার-পূর্ব্বকএকে একে নম্রভাবে পারিতোষিক গ্রহণ করিতে লাগিল। পরে নিম্নলিখিত মর্ম্ছে ৩ টী প্রস্তাব যথাক্রমে প্রস্তাবিত ও সমর্থিত হইয়া সর্ব্বদম্বতিতে গৃহীত হইল। (>) त्य नकन हिटेज्यी महाचा त्य त्कान প্রকারে বিভালয়ে সাহায্য দান করিয়া-ছেন, তাঁহাদিগকে ধন্মবাদ হয় এবং ভবিষ্যতেও তাঁহারা সাহায্য করেন. এজগ্ৰ অন্বরোধ বিচারপতি ডাক্তার গুরুদাস रुग्र ।

পণ্ডিত প্ৰস্তাবক. वटनगांशांश তারাকুমার কবিরত্ব পোষক। বিত্যালয়ের স্থায়িত ও উন্নতির জন্ম গবর্ণমেন্টের নিকট সাহায্য প্রার্থনা হয়। রেবরেও হোয়াইটহেড. প্রস্তাবক. এম এ. বায় যতীন নাথ চৌধুরী, এম এ. পোষক। (৩) বিভালয়ের একটা গৃহনিশ্মাণার্থ সাধারণের সহায্য প্রার্থনা করা হয়। রে: ডাক্তার কে, এস ম্যাক্ডোনাল্ড প্রস্তাবক, বাব বিপিন চক্র পাল পোষক। অবশেষে মাননীয় সভাপতি বিভালয়ের প্রতি তাঁহার আন্তরিক সহামূভূতি প্রকাশ-পূর্বাক সংক্ষিপ্ত বক্তা করিয়া নগদ ১০০ টাকা সম্পাদকের হস্তে প্রদান করেন। সভাপতি ও বিবী উডবরণ সমাগত সভাজনদিগকে ধন্তবাদ দিয়া সভা ভঙ্গ হয়।

হূতন সংবাদ।

১। বিগত শুক্রবার রাজা বিনয়ক্বফ সন্ত্রীক ছোট লাট, বাহাছরকে নিজভবনে আমন্ত্রিত করিয়া আনিয়া তাঁহাদের যথেষ্ঠ সম্বর্জনা করেন। সন্ত্রীক ছোট লাট বাহাছর এবং নিমন্ত্রিত দেশীয় ও অভ্যাভ্য ইউরোপীমগণের প্রীতিসাধনার্থ রাজা বাহাছর কোনক্রপ আরোজুন অমুষ্ঠানের ক্রেন নাই।

২। লাহোরের ভাই শাস্তদাম সংস্কৃত বিদ্যালয়ের জন্ত ১ লক্ষ টাকা দান ক্রিয়াছেন।

৩। মাক্রাঞ্চ দেশীর মহিলাদিগের জন্য একটি সভা (ক্লব) এবং একটি উদ্যান স্থাপনের কথা হইতেছে। ঐ হুই স্থানে পুরুষের প্রবেশাধিকার থাকিবে দা। স্ত্রী-লোকেরাই ব্যায়াম ও বায়ু সেবন করিবেন।

৪। প্রিন্স বিসমার্কের পুত্র কাউণ্ট বিদমার্ক ভ্রমণে বাহির হইয়াছেন : সম্প্রতি সিংহলে পঁহুছিয়াছেন, তথা হইতে ভারতে আসিবেন।

e। মহারাজ গোবিক্লাল রার বাহা-ছুর রঙ্গপুরে একটি দাভবা চিকিৎসালয়ের বাটা নির্মাণার্থ এককালে ৫ হাজার টাকা मान कत्रिग्राट्यन।

সমালোচনা।

কর্ত্তক প্রকাশিত, মূল্য 🗸 আনা। কিরণবালা নামী একটী ৭ বৎসরের বালিকার স্থন্দর চরিত বর্ণিত হইয়াছে।

১। অমর্বালা— শ্রীঈশানচন্দ্র সেন। মুকুল অবস্থায় যাহা হইতে এত দৌরত বিস্তারিত হইয়াছিল, না জানি ফুটিলে তাহা কত মনোহর হইত! অমরবালা স্বর্গের উত্তানেরই উপযুক্ত।

বামারচনা।

ভারত মাতার আতরে ছেলে।

ওরে মোর যাত্মণি, বাহিরে যেও না ধন! এ ছিন্ন আঁচলথানি, তোমারিত আবরণ, রাথিব ইহাতে ঢেকে বেচেঁ গাকি যতকণ, ওরে মোর যাত্মণি, বাহিরে যেও না ধন। কালি 🕏 কলম আছে, কাগজ স্থলত ভারি, ঘরে বদি কর বাপ ! গর্বভরে ভুরি জারি, "বাণিজ্যে বসতে লক্ষ্মী" রাথহ মুখস্থ করি, গত ভাতাদের বীর্যা রাধহ স্মরণে ধরি। এ ভকানো বুকে মোর বদো বদো যাত্মণি, ननीत পूजून मम अस्त विनास्मत्र थिन ! সোহাগ আদরে নাম রাখিয়াছি 'চাক্ব' 'ননী' "বৃধিষ্টির" "বীরসিংহ" ও অসভ্য নাম গণি। পূর্ণ অবয়বে লক্ষী বাণিজ্যে কক্ষন বাস,

अथवा अक्रीजी र'द्य महास्त्र मिथ्न होय,

এবে বাছা ! তার মম কিছু মাত্র নাহি আশ, আমি চাহি টেরী, দাড়ী, চোধ ঢাকা মৃত্হানু। পাশ্চাতা ভগিনী মোর রাজরাজেশরী তিনি, যদিও অভাগ্যবতী মাতা তোর কাঙ্গালিনী, তবু এ কাঙ্গাল-কোলে আয় বিলাসের খনি, হাট, কোট প্যাণ্টুলানে সাজাইব যাহমণি ! ভাগ্যবতী রাজরাণী ভগিনীর পুত্র প্রায় সাহেব সাজাব ভোৱে আয় যাত কোলে সুগন্ধি এদেন্স দিয়া সৌরভিত করি কান্ধ, বুট, ইকিং পরাইয়া দিব ও কোমল পায়।

বিজ্ঞান, বীরত্ব, ধর্ম, যাগ যোগ রাজনীতি বই পাতে লেখ, পড় সমাজ সমন্তার বিধি, নিথ দেখি এ কাগজে ছপিঠে প্রণয়-গীতি— লেখ, পড় ধরনাকো ছবন্ত ছেলের স্মীতি।

নাহেব ভাতারা তোর বড়ই ছর্জ ছেলে, বিচুণ করিছে কত উত্তুল পর্বত ঠেলে, শোনে না মায়ের কথা না থাকে মার্টের কোলে,

ছ্রস্ত:সাগর ভেদি যথা ইচ্ছা য়ায় চ'লে। ৯

তবে কি তাদের মা'র পরাণে মমতা নাই, নিজ্বের স্থথের তরে সস্তানে নিয়োজে তাই ? তোরা আদরের ছেলে, যদি ও থেতে না পাই' তবুও আমার কোলে আছেত বিস্তর ঠাই

রাক্ষী টুক্টুকে বৌ এনে দিব ওরে ধন, বিস্তর চাকরগিরি জুটাইব অফুক্ষণ, ইনকম্ ট্যাক্স দিয়া বেঁচে যাবে যেই ধন, তাহার আধেক পাবে সেকরা থলুপেগণ।

বিনামা-বিজেতা, শুঁড়ি, স্থগন্ধি-বিজেতা সবে.

একেবারে ফাঁকি দিলে ধর্ম্মে ভর নাহি সবে

রহুরে ও দাস দাসী তব মুখ চেয়ে র'বে,
চাকরীর কড়ি তব না পেলে যে কত ক'বে।
১২
বিলাতী কুকুরগুলি পুষো যাহ স্যতনে,
আচর বিলাতী পাপ বিসিম্ম হাদাসনে।
আফিস ও অন্তঃপুরে সেবা ক'র একমনে,
তাস, দাবা থেলো যাহ ল'য়ে যত সঙ্গিগণে।
১৩

গুড়ুকে কি কান্ধ ম্যাচে বার্ডসাই থেলে হ'বে মুরগী মটন ম্বতে বাজে লোকে কিছু ল'বে, বারাণসী সাটিন কি না কিনিলে মান র'বে १ সি, এস্, আই উপাধিটী তাও ত লইতে হবে।

38

দেশী শিল্পীদের মাথা চিবাইয়া থাও ধন!
আমার শোণিত শুষে লউক বিদেশীগণ;
তোমরা এ শুক বুকে কর বসি আফালন,
ওরে মোর যাহমণি বাহিরে বেও না ধন!
শ্রীকু, রা।

সন্ধ্যা-তারা।

থী যে উঠিল তারা ঐ কি আমার দেই?
বদম-উভানে মম যদি বা ফুটল ফুল,
রবি-কর না পশিতে অমনি শুকারে গেল,
না বহিতে মিয় বায়ু স্থরভি বিলীন হল,
বাদার শাশান হল, আকুল হইল প্রাণ,
ব্থা এ সংসারে করে কুহক স্থথের ভান,
সংসার ছ:থেতে জরা, কে স্থা কোথায় আছে?
কৈ স্থ কোথা আছে,অথবা ফুরায়ে গেছে,
কেনবা পাইফু ভায়, পাইয়া হারায় হায় !
কোমল কুসুম রেণু অকালে ঝরিল ভুঁয়ে,
আমুক্রিপ্রের ধরা অমনি নিশিল ভায়,

ব্দম-পল্লব মম অমনি পড়িল হুরে।
আকুল ব্যাকুল হয়ে কাঁদিতেছি যার তরে,
কই সে দিল না দেখা—ভূলিয়াছে একেবারে
মারের হৃদয়তন্ত্র আমাদের স্থহার,
যত দিন রব বৈচে তারে কি পাব না আর?
কাকলী ঝকার জিনি তাহার মুখের বাণী,
ডাকিত মধুর স্বরে করিত স্থার ধার,
নবীন অঙ্গণ-আতা বরণ আছিল তার।
ঐ যে.সন্ধ্যার তারা ঐ কি আমার সেই,
ভাবিতে পারি না আমি "শৈল" যে আমার
নেই।

ত্রীঅপুর্বাস্থলরী।

বামাবোধিনী পত্রিকা।

BAMABODHINI PATRIKA.

"कन्यायेवं पालनीया शिच्चणीयातियस्रत:।"

ক্সাকে পালন করিবেক ও যত্নের সহিত শিক্ষা দিবেক।

৩৭৫ সংখ্যা।

रिज, ১७०२—এপ্রেল, ১৮৯৬।

एम कहा।

৪র্থ জ্ঞাগ।

সাময়িক প্রসঙ্গ।

শোভাবাজার দাতব্য সভা—ইংার দ্বাদ্দ্বাধিক সভায় অনেক গণ্য মান্ত লোক উপস্থিত হন এবং ছোট লাটের প্রধান সেক্রেটারী কটন সাহেব সভাপতির কার্য্য করেন। গত বংসর এই সভার আয় ৩৮৬২ ৮৫/১৫ এবং ব্যয় ৩৮৪৪৮/৯ হয়। সভার হস্তে ৪ সহস্র টাকা মজুত ष्ट्राह्म । এই मना इटेटि विश्वा, ष्ट्रनाथ, দরিজ ছাত্র প্রভৃতি সর্ব্ধপ্রকার দরার পাত্রকে সাহায্য করা হয় এবং দান विषय कनिकाला । मकः यत अल्जन ७ जकार्या নাই। এরপ -উদার দেশহিতৈবীমাত্রেরই সহায়তা আবিশ্রক।

কুমারী কব—ব্রহ্মবাদিনী মিদ্ ফ্রান্সিদ পাউন্নার কব ৭৩ বর্ষ পূর্ণ করিরা ৭৪ বর্ষে পদার্পৰ করিয়াছেন। তিনি ধর্ম, নীতি ও দর্শন সহয়ে অনেকগুলি উৎকৃষ্ট গ্রন্থ লিথিরাছেন। আমরা ভানিরা আফ্লাদিত হইলাম,ল ওনের দৈনিক পরের সম্পাদকীয় কার্যো স্ত্রালোকদের মধ্যে তিনিই প্রথমে বৃত্ত হন। জগদীশ ইহাকে দীর্ঘজীবিনী কর্মন।

দান—(১) বাই দিনবাই পেটিট বোশাই
নগরে এক "সাধারণ গৃহ" নির্মাণার্থ ভত্রভা
মিউনিসিপালিটার হত্তে ৫ লক্ষ্ণ টাকা
দিরাছেন। (২) বাঁটুরা দরিজালয়ের
সাহায্যার্থ ভত্রভা ছইটা হিন্দু বিধবা ৭০০০
টাকা মূল্যের একথানি বাটা দান
করিয়াছেন এবং মাসিক ৪৫১ টাকা
করিয়া চাঁদা দিরা থাকেন। এক্সপ্
ধর্মনীলা রমণীগণ বর্থার্থ প্রশ্ননীর্হা (৩)
রক্ষপুরের মহারাজ গোবিন্দলালের দান
প্রসিদ্ধ। তিনি সম্প্রতি রক্ষ্যুরের
প্রসিদ্ধ। তিনি

ভাক্তারখানার জন্ত ৫ হাজার টাকা দান্, করিয়াছেন ৷

রাজপ্রতিনিধির সিমলা যাত্রা গ্রাভ ২৭এ মার্চ লর্ড এলগিন সন্ত্রীক কলিকাতা ছইতে বিদায় লইয়াছেন। ইহাঁগা এলাহাবাদ, বেরিলা, হরিদ্বার, সাহারণ-পুর প্রভৃতি দর্শন করিয়া সিমলায় উপনীত হইবেন।

কৃষ সমাটের অভিষেক—আগামী মে
মাসে মঞ্চৌ সহরে কৃষ সমাটের অভি-ষেকের মহা আয়োজন হইতেছে।
এতত্পলকে অন্ন ৪ লক্ষ লোকের
সমাগমের সস্তাবনা।

শিশুমুখ-চুম্বন—ইহা অতি স্থাকর কার্য্য হইলেও ইহাতে শিশুদিগের শরীবের অনেক . অনিষ্ঠ হয়। ফিলাডেলফিয়ার এক দল মার্কিণ রশ্বীণী এ প্রথা রহিত করিবার জন্ত এক সভা দ্বাপন করিয়াচেন।

কুন্তীরপালন—কুন্তীরের চর্ম ও দম্ব বিক্রমে বছল লাভ হয়, এই জন্ত আমেরিকার ফ্রোরিডার অবিবাসিগণ কুন্তীর পালন করিয়া থাকে। ১৮৮০ হইতে ১৮৯৪ সাল প্র্যান্ত তাহারা প্রায় ২০ লক্ষ্ কুরীর মারিয়াছে। কুন্তীরবংশের লোপ না হয়, এই জন্ত তাহাদের বড়ই প্রয়াস! বিজ্ঞানে মহিলা—কুমারী সোরাবজী বোম্বাই বিশ্ববিভালয়ের বি, এস সি (B. S. C.) পরীক্ষায় সম্প্রতি উন্তীর্ণ হইয়াছেন। ইনি ভারত মহিলাদের মধ্যে সর্ব্বপ্রথম এই উপাধি পাইলেন। স্ত্রীলোকেরা কোন্ বিন্যাশিকায় অক্ষম ?

বসন্তলক্ষী।

বাঁহারা সংক্বত বা বাঙ্গালা কাব্য সাহিত্য পাঠ করিয়াছেন, "বসন্তলন্ত্রী" এই অমৃতায়মান শক্ষী যে কতবারই তাঁহাদিগের নয়নপথে নিপতিত হইয়াছে, ভাহার ইয়ন্তা করা অসাধ্য। কিন্তু তন্মধ্যে কত জন মূর্ত্তিমতী বসন্তলন্ত্রী প্রত্যক্ষ দর্শন করিয়াছেন, তাহাও বলা যার না! আবার দর্শকগুণের মধ্যে কোন্ ব্যক্তি কি ভাবে দর্শন করিয়াছেন, তাহাও নির্ক্তিক বা বার না। তবেং ভিন্ন ভার ব্যক্তিক বিভাব বার না। তবেং ভিন্ন ভার

দর্শন দিয়াছেন, তাহা নিশ্চিত। কেননা "ভিয়ক্চিহি লোকঃ।"

সম্প্রতি বসন্তকাল উপস্থিত। ক্বত্রিম
পদার্থে পরিপূর্ণ নগর রাজধানীর বহির্ভাগে
আজ কাল বসন্তলন্ধী বিরাজমানা।
বাঁহারা এক্ষণে নগরাদির বাহিরে ভ্রমণ
করিতেছেন, তাঁহারাই বসন্তলন্ধীর জগন্মোহিনা মূর্ত্তি দর্শনে বিমুগ্ধ হইতেছেন।
আমরা আজ কাল ঐ স্থরস্থলারীর
বেরূপ মাদকমরী মোহিনা মূর্ত্তি দর্শন
করিতেছি, ইচ্ছা করে, সেই রূপের

আলোক-চিত্র নগরবাদিগণের নয়নোপরি ধারণ করি। কিন্ত ছংখের বিষয় এই, লেখনীতে সে চিত্র নির্মাণের শক্তিনাই। তথাপি বে চেপ্তা করিতেছি, ভাহা মদোমতের উচ্চ্ছাল চেপ্তাবং। কেননা নয়নলারে বসন্তলক্ষীর রূপাসব পানে আমরাও উন্মত্ত হইয়াছি। বাতৃল প্রভাপ জন্ত পাঠক পাঠিকার নিকট ক্ষমা

বসন্তলন্ধী, তরুগণের তরুণ পল্লব, নবদুর্বা, তিসি ছোলাদির হরিদ্গুল্ম-রূপ বসন পরিয়াছেন। ঐ বসনে কনক চাঁপা, কাঞ্চন, শিরীষ, শমী, শ্রামা, জবা, মাধবী, পলাশ ও ঝাটির বৃটিকাটা। মধ্যে মুলয়ানিলে তরুজায়িত। ত্রনে স্থানে প্রাতন ইট্ ও খোয়ার পাঁজা, নানাবিধ কুসুমিত তরুলভায় আছেয়। দেখিলে বোধ হয়, নয়নাভিরাম কারুকার্যা নানা ভাব বিলাদে বসন্তলন্ধার বিশাল বক্ষে শোভা পাইতেছে।

স্থানে স্থানে নাতিক্দ নাতিরহং গ্রু স্কল কনকাভ আলোক শ্রার তাক্রের; এমন নিবিভ্রূপে আছের যে, একর একটা পত্রও নয়নগোচর হয় না। কোন গাছ, পীতাভ বাল-পল্লবে স্মাছের। ঐ স্কল দেখিয়া বোধ হয়, বসস্ত-লল্লী, বস্ত্ত-বিলাসিনী হিন্দুস্থানি কামিনীদিগের ভার বস্তু রক্তের ওভ্না ধারণ করিরাছেন।

স্থানে স্থানে শ্রেণীযক্ষ কুস্মিত অসংখা মুন্দার তক্ষ গোহিতাভার দিক্ রঞ্জিত

করিরা অতুল শোড়া বিতার করিভেছে। তদর্শনে বোধ হইল, বস্তুলন্দ্রী বীর কণ্ঠে পারিজাতের মালা ধারণ করিয়া-ছেন।

বে দিকে দৃষ্টিপাত করা বার, দেই

দিকেই অপরিমিত মুকুলে আছের সহকার
তরু; — মুকুলের এমন ধন সিরিবেশ ধে,
আমের পত্রগণ প্রায় অদৃশু। তদ্ধে বোধ
হইল, বসন্তলন্ধী সহকার-পত্ররূপ মরকতশ্রাম কেশজালে কবরী বন্ধনপূর্বক
তাহাতে চাতমুকুলের চূড়া ও ত্রীমন্তে

সিম্লফুলের সিন্দুর পরিমাছেন। শান্দানী
বৃক্ষে একটা মাত্রও পত্র নাই, কেবল
আপাদমন্তক লোহিতোজ্ঞল বর্ণের
কুকুম শোভা পাইতেছে, তাহাকে বসন্তলক্ষার সামন্ত-শোভী সিন্দুর ভিন্ন আর কি
বলিব পূ

স্থানে স্থানে মাধবী, মাণতী প্রাকৃতি
লতাজ্ঞালে সহকারাদি স্থন্দররূপে জড়িত
হইয়াছে। তাহা দেখিয়া বোধ হইল,
বসন্তগন্মী দড়াগোট বা মেধনা পরিরাচেন ।

চতুর্দিকে শিরীষ বৃক্ষে অজ্ঞ ফল পাকিয়াছে। শিরীবের ফল শিরীজাতীর, দীর্ঘাকার ও অর্থবর্গ। দেখিলে, বসস্ত-শক্ষাণ বাহন্শাহ অর্ণতাবিজ বলিয়া বোধ হয়।

চারি দিকে অসাণ্য ভিক্তিনী, বাবল ও বিবর্কে অপরিনের ফল শোভ পাইছেছে। ডিফিটী ও বাবলা, উত্তরে ফলই শিবাজাতীয় ও গ্রহিন,—দৈখিত বোধ হয়, বসন্তলন্ধী, চরণ যুগলে মনোহর মঞ্জীর ধারণ করিয়াছেন। বিষফল এক এক রুম্ভে তিন চারিটী দোহল্যমান,— বেন বসন্তলন্ধীর অনন্ত, তাঁবিজ, যশোম্ প্রভৃতি করাভরণের থোপ্ ঝুলিতেছে।

ে যে দিকে দৃষ্টিপাত করি,—অসংখ্য কুল-বৃক্ক, পীতাভ পকফলে অবনত, বসন্তলক্ষীর বসন-কোটক (১) রূপে প্রতীয়মান।

এখন, পীড়াদি কারণ ব্যতিরেকে কেহই করে বা কঠে মাছলি ধারণ করেনু না; কিন্তু কিছুকাল পূর্ব্বে বালক, বালিকা, যুবতী, গৃহিণী সকলের অঙ্গেই মাছলি একটা স্থলর আভরণরূপে দৃষ্ট হইত। বসন্তলক্ষা চিরজীবনা ও স্থির-যৌবনা হইলেও সেকেলে মেয়ে,—এজন্ত দেখিলাম, করে, কঠে, কটিতে বিলাতিক্ল, হরীতকী প্রভৃতির অনেক মাছলী ধারণ করিয়াছেন।

কর্ণে জবাফুলের ইয়ার রিং, ঝুম্কোলতার ঝুম্কো; রঙ্গন বিশেষের মাক্ডি; করাঙ্গুলিতে আঙ্গটিফুলের অঙ্গুরীয়ক এবং চরণাঙ্গুলিতে পাগুলী কুলের পাগুলী প্রিয়া অপূর্ব্ব শোভা ধারণ করিয়াছেন।

বসন্তলক্ষী কথন বাতবিভিন্ন কদলীপত্ররূপ অলকার্ত, শিম্ল্রপ-সিন্দ্রপ্র্ঞোজ্ঞল,বাসন্তী পূর্ণিমার পরিণত শশধর
বদনের শোভাঞ্জন, বাকস-কুন্দকোরকরূপ
দশন বিকাশপূর্বক হাস্য করিতেছেন,
—সে হাসির বিশদ শুচি শোভায় দশ দিক্
উদ্ভাসিত হইয়াছে। সে মধুব্যী হাসির
মধুগন্ধে মধুপ পতক্রুল আকুল হইয়া
গগনাঙ্গনে বিলুটিত হইতেছে।

কথন বা মন্তকে থৰ্জুর-শাথার চূড়া বাঁধিয়া নলিকাক্রপ বংশী বাদন করিতে-ছেন.—সে বংশীর অপর প্রান্তে "ট্র্স ট্রস" করিয়া অধ্রামৃত ক্ষরিতেছে, কত বিহঙ্গ, —কত ভুজন,—কত শুগাল উল্লামুখী,— কত নকুল সে অধ্যামৃত পানে আকুল হইয়া আনন্দ-কোলাহল করিতেছে। সে বংশীতে কোকিল, পাপিয়া, ভ্রমর, মধু-মক্ষিকা প্রভৃতি বসস্ত বিহঙ্গ ও পতক্ষের কলধ্বনি বাজিতেছে। নিঃখাস-প্ৰনে বাসন্তী কুন্থমের গন্ধ ছুটিতেছে। সে গন্ধে জীবকুল উদ্ভ্রান্ত হইতেছে। বিহঙ্গকৃষ্ণনে বসস্তরাগের ছায়া পড়িয়াছে,—দে রাগে বিষয়ীর বিষয়-বিরাগ জন্মিতেছে। সৌন্দর্য্য,—এত মাধুর্য্য—এত মধু—এত অমত-কোথা হইতে-কাহার আসিতেছে,—সেই বিষয়-বিরত পবিত্র চিত্তের উপর দিয়া এই ভাবের স্রোভ বহিয়া যাইতেছে !!

⁽১) অনেকে দেখিয়া থাকিবেন, মণুর বৃন্দাবন অঞ্লের রমণীগণ ওড়না ব্যবহার করেন। অনেকের ওড়নার প্রাস্তে স্বর্ণের বা রৌপোর বর্জুলাকার কাঁটি গ্রথিত থাকে, ভাহার নাম কোঁটক।

८वम ।

বেদ চারিভাগে বিভক্ত:—যথা ঋক্,
যক্ত্, সাম ও অথর্ক। বেদশাক্স ধর্ম ও
ব্রহ্ম এতহভ্য-প্রতিপাদক। এই বেদশাক্ত প্রথমতঃ হই তাগে বিভক্ত, মথা—
মন্ত্র ও ব্রহ্মণ। ঋক্, যজু ও সাম এই
তিনকে মন্ত্রভাগ বলে। বে সকল মন্ত্র
প্রোকবং, পাদবদ্ধ এবং ছন্দোবিশিষ্ট,
তাহাদিগকে ঋক্; যে ভাগ স্বরাদিসংযোগে গীত-বিশিষ্ট, তাহাকে সাম; এবং
বে ভাগ উক্ত হই প্রকার হইতে পৃথক্,
ভাহাকে যজুং বলে; বেহেতু তাহা ছন্দোবিশিষ্ট, পাদবদ্ধ অথবা স্বরসংযুক্ত গীতসমন্বিত নহে।

বেদশাস্ত্রের দিতীয় ভাগ যে ত্রাহ্মণ, তাহা তিন অংশে বিভক্ত। প্রথম বিধি-ক্লপ, দিতীয় অর্থবাদ, এবং তৃতীয় উভয় হইতে স্বতন্ত্র, অর্থাৎ না বিধি, না অর্থবাদ।

বিধি চারি প্রকার; মথা—উৎপত্তি-বিধি, অধিকার-বিধি, বিনিয়োগ-বিধি এবং প্রয়োগ-বিধি।

বেদোক্ত যাগ প্রভৃতি কর্ম্মের ম্বরূপ-বোধক বাক্যের নাম উৎপত্তিবিধি; যাগাণির ফল-সম্বন্ধ-বোধক বাক্য অধিকার বিধি; কর্ম্মের অঙ্গ-সম্বন্ধবেধক বাক্য বিনিয়োগবিধি এবং উক্ত ত্রিবিধ বিধির ক্রৈয়ের নাম প্রয়োগবিধি।

অর্থবাছও এক প্রকার বিধিপ্ররূপ।

ঐ অর্থাদ তিন প্রকারে বিভক্ত, ষ্থা—
শুণবাদ, , অহ্বাদ, এবং ভূতার্থাদ।
যাহাতে অপর প্রমাণের বিক্লম অর্থ
বুঝা বার, তাহা শুণবাদ; যাহা প্রমাণাম্ভর
দারা প্রাপ্ত অর্থকে বুঝার, তাহার নাম
অহ্বাদ; এবং প্রমাণাম্ভরের সহিত বিক্লম
কিন্তা তৎপ্রাপ্তিবজ্জিত অর্থ ভূতার্থবাদ।

উপরি-উক্ত ব্রাহ্মণভাগে অপর একটী
বিভন্ন ভাগ আছে, তাহাকে বেদান্ত ববে।
তাহা উপনিষদ শক্তে কথিত হয়।
সেই ভাগ কেবল পরব্রহের প্রতিপাদক।
যদিও ভাহা বিধি ও অর্থবাদ, এই উভর
হইতে স্বভন্ন, তথাপি বেদবিদ্গণ ভাষার
ভাগবিশেষকে বিধি বলিয়াছেন এবং
কোন কোন হলে অর্থবাদের মধ্যেও
ভাহার গণনা আছে।

মন্ত্র এবং ত্রাহ্মণ এই দ্বিধি শ্বরূপ
সম্পায় বেদ, কর্ম্মণাও ও ত্রহ্মকাও বা
জ্ঞানকাও এই ছই ভাগে বিভক্ত ইইয়া
ধর্ম, অর্থ, কাম ও মোক্ষ এই চতুর্বার্গের
সাবক ইইয়াছে। কর্মকাও ইইতে ধর্ম
ও কাম দিল ইইয়া থাকে, এবং ত্রহ্মকাও
ইইতে পর্ম পুরুষার্থ মোক্ষ লাভ হয়।

অথর্ববেদ কর্মবিষয়ে এউপযোগী নছে, উহাতে শান্তিক, পৌষ্টিক, আভিচারিক এবং আদি কার্য্যই প্রতিপন্ন হয়।

जवर्कावारत जन व जावूर्वण छारा

আইজানে বিভক্ত, বধা,—শল্যতন্ত্র, শাকল্য-তন্ত্র, কারচিকিৎসা-তন্ত্র, ভূত বিস্থাতন্ত্র, কৌমার ভৃত্যতন্ত্র, অগদতন্ত্র, রসায়নতন্ত্র, এবং বাল্লীকরণ তন্ত্র।

পূর্বে বেদ (একলক্ষণ্ণোকাত্মক অর্থাৎ ঘাহাতে ঘাত্রিংশ লক্ষ অক্ষর আছে) একথানি গ্রন্থ ছিল। ভগবান্ বেদ-ব্যাস পর্য্যালোচনা করিয়া দেখিলেন যে, কলির প্রাহর্ভাবে ব্রাহ্মণগণ অরবীর্য্য হইয়া আসিতেছেন। তাঁহাদের ধারণাশক্তিকেমশুই হীন হইয়া আসিতেছে। পূর্ব্ব-কার ব্রাহ্মণেরা যেরপ সমস্ত বেদ কণ্ঠস্থ করিয়া রাখিতে পারিতেন, এক্ষণে আর সেরপ পারেন না। অতএব তিনি হির করিলেন যে, এক এক শিষ্য বেদের এক এক অংশ কণ্ঠস্থ করিয়া রাখিলে

मम्मात्र तम त्रका भाहेत्छ भातित्य।

यानस्य जिनि मण्णूर्ग तम हात्रि छात्म

विख्ळ क्रिलान; এवः हात्रिस्न मिश्र

श्रद्धण क्रित्रा, श्रथम मिश्र तेमात्क सक्
तम, तेमाण्मात्रनत्क यङ्ग्र्द्भम, त्रिमिनित्क

गामत्वम, এवः स्मास्तिक स्थर्यत्म अश्रद्धन

क्राहिलान। छग्वान् तम्यात्मत्र भक्षम
मिर्यात्र नाम त्माम्हर्यन। जिनि तम
वात्मत्र निकत्वे हेजिहाम छ भूतान अश्रुमन

करतन।

বেদব্যাসের প্রথম শিষ্য পৈল বেদরূপ বৃক্ষের ঋগ্বেদরূপ শাথা গুইভাগে বিভক্ত করিয়া ইন্দ্রপ্রমিতি ও বান্ধল নামক শিষ্যকে এক এক সংহিতা অধ্যয়ন করাইলেন।

(ক্রমশ:)

পাঁচন ও মুষ্টিযোগ।

১। হাপরমালির রস নালীঘায়ের একটী উৎকৃষ্ট ঔষধ। পানসিউলির কাঁচা পাতা নালাঘার উপর বসাইয়া ভকাইলে বদলাইয়া দিবে। এইরূপে তিন চারি দিন দিলে ঘা আরাম হয়।

২। প্রাতন ঘরের জরা থড় অঙ্গুলি দিরা ধ্লীবং করিয়া অনেক দিনের প্রাতুন নালী ধার লাগাইরা দিলে উহা সারিয়া বার।

শ্না, বিশুদ্ধ গদ্ধক, সোহাগা, মিছিলি, এই সকল জব্য সমভাগ করিয়া লইবে, পরে চুর্ণ করিয়া জলের সহিত একত্রিত করিয়া উত্তম প্রকারে মর্দান করিবে। তিন চারি দিবসের মধ্যে ক্রচি দক্ত আরাম হয়।

৪। শিশুদিগের জাড়ি খাতে জাতিফুলের পাতা ঘতে ভাজিরা, সেই ঘত ক্ষতহানে ৫।৭ বার দিবে। কিম্বা ভেড়ার
হুগ্ন ২।৪ কোঁটা ২।৪ বার ঘার লাগাইলে,
কিম্বা সোহাগা আগুনে ধই করিরা,
তাহার অরভাগ মধুর সহিত সিপ্রিত
করিরা বার দিলে, অধবা রসমাণিক মধুর

সহিত যবিরা, মুখের জিহবার বা ওঠের খারে দিলে শীঘ্র খা আরাম হর।

হ। পুরাতন স্বত এক পোরা

লইয়া পরে মনসা গাছের ডালের শাঁস

এই স্বতে ভাজিতে হইবে। বধন দেখিবে

এই শাঁস লাল রং ধরিয়াছে, তখন
নামাইয়া একটা নিম্বকাষ্টের বোঁটনা

ছারা এই স্বত সাত দিন ঘূটিতে হইবে।

ধখন দেখিবে বে, উহা আটা আটা

হইয়াছে, তখন উহা ২৷৩ দিন নালা ঘাছে

লাগাইলে ছা আরাম হইবে।

৬। অশ্বর্থ গাছের শুক্না ছাল,
শুক্না খোলার ভাজিয়া শুঁড়া করিয়া,
পরিকার নেকড়ার ছাঁকিয়া ফাঁকি করিবে।
সেই ফুঁকি ২।৩: দিন নালী ধারে দিলে
শা আরোগা হইবে।

৭। কড়া রকম হিঙ্গলী দোকা তামাক রোজে শুকাইরা ফাঁকি করিয়া নেকড়ায় ছাঁকিবে। এই ফাঁকি নালী খারে দিলে ঘা ভাল হইবে ও পোকা মরিয়া যাইবে।

৮। ঘুঁটে দিয়া চুলকাইয়া দাদে মহিষের ক্লজ দিলে, মহিষে দাদ ভাল হয়।

৯। ঘুরঘুরে বায়ে পে:কা হইলে, পাতে মন্দন করিয়া রোজে শুকাইরা
পচা মানের ভাটা ও মাধন একতে বাটিরা। প্রলেপ দিলে, পাদন্দোট নিবারিত হয়।

ষারে প্রলেপ দিরা রৌদ্রে বসিলে, সমস্ত পোকা বাহির হইরা বা শুক্ত হইরা যার।

> । কাচমাচি, চাকুন্দেবীক্ষ, কুড় ও পিপুল ছাগমূত্রে পেষণ করিরা প্রলেপ দিলে ধবল রোগ নষ্ট হয়।

১১। চাকুনেবীজ, কুড, সৈদ্ধবলবদ, খেত সর্বপ ও বিড়ঙ্গ এই সমুদর কাঁজিতে বাটিয়া প্রলেপ দিলে দক্ত ও ছুলি আরোগ্য হয়।

১২। সোঁদাল পাতা কাঁজিতে বাটিয়া প্রলেপ দিলে দক্ত, ছুলি ও কিটিক নামক কুঠ নষ্ট হয়।

১০। বিড়ঙ্গ, সৈন্ধব, হরীতকী, হাকুতবীজ, খেত সর্বপ, ডাকরঞ্জবীজ, হরিদ্রা ও আকল্পপত্র এই সমুদর সমভাগে লইয়া গোম্ত্রে পেবণ করিয়া প্রলেপ দিলে কুঠ নাশ হয়।

১৪। দ্র্বা, হরীতকী, সৈদ্ধব লবণ,
চাকুলাবীজ ও তুলসীপত্র এই সমুদর জব্য
কাজি ও খোলের সহিত পেষণ করিরা
প্রালেপ দিলে কঞু ও দক্রের শান্তি হয়।

১৫। সোমরাজ বীজ ৪ পল ও হরিতাল ১ পল, এই উভর জবা লোহ-পাত্রে মর্দন করিয়া রোজে শুকাইরা প্রবেপ দিলে, পাদক্ষোট নিবারিত হয়।

আয়ুর্বেদমতে ধাত্রীবিতা।

গর্ভাবস্থায় গর্ভিণীর কর্তব্য।

গর্ভসঞ্চার হইতে প্রসব পর্যান্ত সময়কে কর্ত্তব্য বিষয়ে মনোবোগ দেওয়া সর্বাচ্চান গর্ভকাল কহে। গর্ভাবস্থায় নারীগণের ভাবে আবশ্যক। স্কলনেশীয়

চিকিৎসকগণই গভাবস্থায় বিশেষরূপ সাব-धान शाकियात काला विखत जिलाम । निया গিয়াছেন। আমাদের দেশের চিকিৎসা-শান্ত্রক্ত ঋষিগণ গর্ভাবস্থায় মারীগণের প্রতি অনেকগুলি উপদেশ প্রদান কুরিয়াছেন। ভাৰপ্ৰকাশে লিখিত আছে--গর্ভা-বস্থায় রম্ণীগণ সতত উক্তম বস্ত্র পরিধান এবং অশ্বারাদি ব্যবহার ক্রিয়া সভত প্রফল্লচিতা ও ওদ্ধচারিণী থাকিবেন। স্মষ্টি, স্নিগ্ধ, হান্য, দ্রব, লঘু, সংস্কৃত ও পুষ্টিকর দ্রব্যাদি ভোজন कतिदवन। বায়াম কিম্বা অপকৃষ্ট বিষয়ে মন দিবেন না। অতিরিক্ত আমোদ, রাত্রিজাগরণ, শোক, আরোহণ, বেগ ধারণ এবং উৎকট আসন পরিত্যাগ করিবেন। ৰিক্তাকার, মলিন, কিয়া হীনাঙ্গী স্ত্রী-লোককে স্পর্শ করিবে না। হর্গন্ধ আঘাণ বা অপ্রীতিকর দ্রব্যাদি দর্শন করিবে না। ভন্ধ, প্রাধিত কিম্বা অপক অন্নাদি আহার করিবে না। উচ্চৈ: স্বরে কথা কিম্বা ধে সকল কার্যা করিলে গর্ভনাশের সম্ভাবনা ভাহা পরিত্যাপ করিবে। গর্ভবতী নারী मधरक (य मकल निवय लिथिक - इटेन. ভাহা প্রতিশালন করা অতীব কর্ত্ব্য।

সৃতিকাগৃহ — কিরূপ হানে ও কিরূপ নিরমে স্থতিকাগৃহ নির্মাণ করিতে হর, তাহা অনেকেই অবগত নহেন। এই স্তিকা-গৃহ-নির্মাণ-দোবে অনেক হানেই বিত্তর শিশু নানা প্রকার রোগাক্রান্ত হইরা, আনুষ্ঠ অনক জননীকে শোক্সাগ্রে ভাসাইরা, সাধের সংস্থি অঞ্কার করিয়া, মাতার স্বেহপূর্ণ ক্রোড় শৃক্ত করিয়া মৃত্যু-মুথে পতিত হয়।

স্তিকা-গৃহ সম্বন্ধে প্রত্যেক গৃহস্থই
নিম্নলিখিত করেকটা বিষয় মনে রাখিলে
অনেক প্রকার অনিষ্টের হস্ত হইতে পরিত্রাণ লাভ করিতে সমর্থ হইবেন।

বাড়ীর মধ্যে যে স্থান উচ্চ এবং

থথায় সর্বাদা উত্তমরূপ রোক্ত হয়, এরূপ

থাকে, ও বায়ু সঞ্চারিত হয়, এরূপ

থলে স্তিকা-গৃহ নির্মাণ করা আবশুক।

গৃহের মধ্যে ঠিক্ ছারের সশ্মুথে শিশুর

শরনের ব্যবস্থা করা উচিত নহে। কারণ

গৃহের মধ্যে যেরূপ গ্রম রাথা হইয়া থাকে,
ভাহাতে রাত্রিকালে হঠাৎ ঘার খুলিলে

বাহিরের শীতল বাভাস শিশুর শরীরে

লাগিয়া রোগ জন্মাইয়া থাকে।

বর্ষা ও শীত কালের অস্বাস্থ্যকর বায়ু হইতে শিশুর দেহে রক্ষা করা আবিশুক।

যে সকল গৃহত্বের অবস্থা ভাল এবং
গাঁহারা অট্টালিকাদিতে বাস করিরা
থাকেন, তাঁহাদিগের পক্ষে স্তিকা-গৃহের
জন্ম বাড়ার মধ্যে একথানি ভালরকম
ঘর রাখা উচিত। উঠানে সামান্তরূপ
গৃহ প্রস্তুত করা অপেক্ষা একখানি পৃথক্
গৃহহু প্রস্তুত করা অপেক্ষা একখানি পৃথক্
গৃহহু প্রস্তুত্বের স্থান নিরূপণ করা যুক্তিসঙ্গত।

আমাদের দেশের প্রাচীন চিকিৎসকগণ স্তিকা-গৃহ নির্মাণ সম্বন্ধে অতি প্রশস্ত মত প্রকাশ করিয়া গিরাছেন। প্রাচীন শুক্রত গ্রন্থে স্তিকা-গৃহ নির্মাণ সম্বন্ধে প্রতীর্মণ মত প্রকাশিত আহে— নবম মাস অবধিই গর্জন্ব সন্তানের ভূমিষ্ঠ হওয়ার উপযুক্ত কাল, অতএব নবম মাসের পূর্কেই স্থতিকা-গৃহ প্রস্তুত করিয়া রাধা কর্ত্তব্য ।

আট হাত দীর্য ও চারি হাত বিশ্বত এবং পূর্ব্ব কিম্বা দক্ষিণ ধারবিশিষ্ট, নিম-লিখিত সর্ব্বপ্রকার উপকরণসম্পন্ন উপ-লিপ্ত ভিত্তিবিশিষ্ট ও মান্সল্য-দ্রব্য-সংযুক্ত স্থতিকা-পুহ নিশ্বাণ করা বিধেয়।

উপকরণ—বস্ত্র, আলেপন দ্রব্য, অগ্নি, জল, মলমৃত্র ত্যাগ করিবার হান, ঘৃত, তৈল, সৈদ্ধব, অগ্নি-সন্কুক্ষণ কাষ্ঠ প্রভৃতি দ্রবাদনি স্তিকা-গৃহে সংগৃহীত রাখা আবশ্রক।

গৰ্ভস্ৰাব সম্বন্ধে সাবধানতা---যে সকল কারণে গর্ভস্রাব বা গর্ভপাত হইয়া থাকে, সেই সকল কারণ জানিয়া রাখা অতীব আবশ্রক। গর্ভাবস্থায় হরস্ত ছেলে গভিণীর নিকটে রাথা উচিত নহে। কোন উচ্চ স্থান হইতে পতিত হওয়া, কোন ভারি বস্তু বলপূর্মক উত্তোলন করা, সিঁড়ি ভাঙ্গিয়া বার বার উপর নীচে করা, গুরুতর পরিশ্রম করা, দূরদেশে ভ্ৰমণ কিয়া যে সকল স্থানে সমস্ত শরীর অত্যস্ত আন্দোলিত হয় তাহাতে আরোহণ করা, অধিক রাত্রি জাগরণ, নৃত্য, বিরেচন किया উগ্ৰ ঔষধানি সেবন, কোষ্ঠ পরিষার সমধ্যে অত্যস্ত বেগ দেওয়া, অত্যস্ত মানসিক চিম্ভা, এককালে পরিশ্রম বর্জন, অধিক পরিমাণে মেদৌজনক ত্রব্য ভক্ষণ, नगाय: কেমিল विवानिका. अंडाउ

শরন প্রভৃতি অনেক প্রকার কারণে গর্ভস্রাব বা গর্ভপাত হইয়া থাকে।

আয়ুর্বেদশান্তে চক্রদন্ত জীরৌগ সম্বন্ধে যে সকল বিষয় লিথিয়াছেন, তথাধোঁ প্রথম মাস .হইতে দশম মাস পর্যান্ত যে যে মানে গর্ভপ্রাব বা গর্ভপাত হইবার আশকা উপস্থিত হয়, সেই সেই মার্সে এই ত্র্ঘটনাকালে যে সকল ঔষধ সেবনের ব্যবস্থা লিথিত আছে, তাহা "পাঁচন ও মুটি-যোগ" প্রবন্ধে উল্লিথিত হইবে।

যে সকল স্ত্রীপোকের পুন: পুন: পর্জ-আৰু হইয়া থাকে, গৰ্জস্ৰাবের সময় উপস্থিত হইলে বিশেষরূপ সাবধানতা করা তাঁহাদিগের পক্ষে নিতান্ত কর্তব্য অর্থাৎ প্রথম বাবে যে সময়ে গভনাৰ হইয়াছিল ঠিক সেইরূপ নিয়মিত সমর উপন্তিত হইলে গর্ভবতীকে কোন প্রকার শ্রমজনক কার্যা আদৌ করিতে দেওয়া তাহাকে সর্বদা শ্যার উচিত নহে। শয়ন করিয়া থাকিতে হইবে। বিশেষতঃ এই সময়ে সংঘতে জিয়া হইরা থাকা সর্বতোভাবে কর্ত্তব্য। সর্বাদা শারীরিক ও মানদিক চিম্বা হইতে বিরত থাকা আবশ্রক। শীতল জলে অবগাহন ও ভদারা সামাক্তরপে গাত্রমার্কনা করিলে উপকার হইতে পারে। ঘন ঘন গর্ভপাত হইলে স্ত্রীপুরুষে দীর্ঘকাল স্বভন্ন থাকা উচিত। প্রদরাক্রাস্থা গভিনীর গর্ভনার হইবার অভ্যন্ত সম্ভাবনা। একবার গর্ভস্রাব হুইলে আবার শীত্র গর্ভসঞ্জার ন**িহ**র. उदिवास महार्क शांका कर्खेंगा। क्

গ্রহাঞ্চার হইতে প্রস্বকাল পর্যান্ত একটু সভৰ্ক থাকিলে,গৰ্ভস্ৰাৰ হইবার আশকা থাকে না। যে সকল নিয়ম লিখিত হুইল, প্রত্যেক গর্ভিণীকে দেই দকলের **প্রতি লক্**য রাথিতে হয়। যেরপ আল বয়সে রমণীগণের গর্ভসঞ্চার হইয়া থাকে, তাহাতে লজ্জাবশতঃ অনেক গর্জিণী কোন প্রকার নিয়ম প্রতিপালন করিতে সমর্থ হন না। আবার থাহারা প্রতিপাননে প্রস্তুত, তাঁহারা হয়ত ঐ नक्न निग्रमानि जात्नो ज्वरंग्ड नर्टन। গর্ভাবস্থা বে অত্যক্ত কঠিন সময়, তাহা প্রত্যেক গৃহত্তেরই মনে রাথা আবশুক। এই সময়ে সামান্ত ক্রটিবশতঃ প্রভূত অপ-कात परिवात मञ्चावना । शूर्व्स এ म्हिन्त প্রায় প্রত্যেক গৃহস্থরে এক একটা বছদর্শিনী গৃহিণী অবস্থিতি করিতেন, চিকিৎসক অপেকা তাঁহারা অনেক প্রকার নিয়ম অবগত ছিলেন, কিছ হ:খের বিষয় এই যে, এখন আর সেরপ গৃহিণী প্রায় দেখিতে পাওয়া যায় না। স্বতরাং প্রত্যেক বিষয়ে পুস্তকাদি পাঠ করিয়া শিক্ষা লাভ করিতে হয়।

স্বাভাবিক প্রসবের লক্ষণ—
গর্জাশয়মধ্যে জণ ঈবৎ বক্রভাবে নিমাভিমুপে মন্তক রাধিয়া শয়ান থাকে;
এবং স্বভাবতঃ প্রসবকালে অত্যে মন্তক
নির্গত হইয়া খ্লাকে। ইহাকেই স্বাভাবিক
প্রসব বলা বার।

চরক-সংহিতাকার ^{ট্}বলেন বে, প্রসব-কার্টোর পূর্বে গর্ভন্থ শিশু জননীর পৃষ্ঠাতি- মুথে মুথ রাথিয়া উর্জমন্তকে অঙ্গসমূহ
সন্কৃতিত করিয়া অবস্থিত থাকে। প্রদরের
কিঞ্চিৎ পূর্বে বায়ু দারা পরিবর্ত্তিত
হইয়া নিম-মন্তক হয়; এবং তদনস্তর
প্রসবদারে সমাগত হইয়া থাকে।

প্রসব ক্রিয়াকে প্রধানতঃ তিন ভাগে বিভক্ত করা যাইতে পারে। যথা—

১। প্রদবের পূর্ববর্তী লক্ষণ (ক্লেদ-আব ও বেদনা প্রভৃতি) প্রকাশিত হওয়া।

- ২। সন্তান ভূমিষ্ঠ হওয়া।
- ৩। অমরাপতন বা ফুলপড়া।

লক্ষণ-যথন প্রসবের দেখা যাইবে যে, প্রস্থতির পেট ছোট হইয়া আসিয়াছে, তিনি ঘন ঘন হাত পা ধুইতে যাইতেছেন, এবং তাঁহার পেটের কামড়ানি ও শুলানি হইতেছে, ও পেটের ভিতর অল্ল অল্ল মোচড়াইতেছে এবং প্রস্রাবের দার দিয়া একপ্রকার তরল পদার্থ নির্গত হইতেছে, তথন বৃঝিতে হইবে যে প্রস্ব-কাল নিকটবন্ত্রী। এই সকল লক্ষণের সহিত কোমর হইতে বেদনা আসিয়। পেটে ও উক্তে সঞ্চারিত হয়। বেদনার প্রথম অবস্থায় বোধ হয় পেটের ভিতর যেন মোচড়াইয়া উঠে ও কাটিয়া যাইতেছে। পরে এমন একটা বেদনা হয়, ভদারা বোধ হয় যেন পেট হইতে কোন পদার্থ বাহির হইবে। কোমর, পেট ও উक्रामान जाम जाम वामना वृद्धि **হ্ইতে থাকে। প্রস্তি দম বন্ধ করিয়া** क्षांक पित्रा कात्राम त्याथ करत्न । अरे

সকল লক্ষণ উপস্থিত হইলেই আর কাল বিলম্ব না করিয়া তৎক্ষণাৎ ধাত্রী আনম্মন করিবে।

চরকে আসন্ন প্রসবের এইরপ লক্ষণ লিখিত আছে। আসন্নপ্রসবা গর্ভিণীর অত্যন্ত মানি ও আয়াসবােদ, কৃক্ষি ও চক্ষ্র শ্লথতা, অধােভাগের গুরুত্ব, অরুচি, মুথে জল উঠা,প্রস্রাবের বাহলা; উরুদেশ, উদর, কটা, পৃষ্ঠ, হৃদয়, ও বতিস্থানে বেদনা; প্রসবহারের ঈরৎ কম্পন, বিবিধ প্রকার বেদনা, এবং ক্লেদ্স্রাব হয়। তৎপরে প্রসববেদনা উপস্থিত হইয়া গর্ভোদক নির্গত হইতে থাকে।

প্রস্বকালে ধাত্রীর সাহাষা সম্পূর্ণ আবশুক হইয়া উঠে, এজন্ত যে গৃংত্রের গৃহে আসমপ্রস্বা বর্ত্তমান, সেই গৃহত্বের প্রস্বের কিছুদিন পূর্ব্ব হইতেই ধাত্রীকে সংবাদ দিয়া রাথা উচিত। ধাত্রীকে নিজ গৃহে রাথিতে পারিলেই ভাল হয়। অভাব পক্ষে ধাত্রী যেখানে বাস করে, বাড়ীর কাহাকেও কিম্বা কোন প্রতিরাশী আত্মীয়কে তাহার এই দেখাইয়া বাথা উচিত, অর্থাৎ প্রয়োজন উপস্থিত হইলেই যেন তৎক্ষণাৎ তাহাকে, ডাকিয়া আানতে পারা যায়।

ধাত্রী নির্ম্বাচন সম্বন্ধে গৃহত্বের একটু
মনোষোগ দেওয়া কর্ত্তবি। প্রস্বকার্যের
যাহাদিগের পারদর্শিতা থাকে, সেইরূপ
ধাত্রী দারা প্রস্ব করান বে কর্ত্তব্য, ভাহা
বোধ হয় সকলেই বুঝিতে পারেন।
কারণ অনেক সমন্ধ ধাত্রীর লোবেও

বিস্তর অনিষ্ঠ ঘটিয়া থাকে। প্রস্থকালে ধাত্রীর উপরেই যে প্রস্তির শুভাশুভ নির্ভর করে, তাহা সকলেরই মনে
রাথা আবশুক। এই জক্সই আর্ব্যশাস্তবেতা ঋষিগণ ধাত্রী নির্মাচন সমমে
এইরূপ উপদেশ দিয়া গিয়াছেন। বে
রমণী সঘংশজাতা, মধ্যমবয়য়া, সাধ্শীলা, শুদ্ধছারা, বহুক্রীয়া, সবৎসা ও
নির্লোভনীয়া এবং ঘাহার অস্তঃকরণে
বাৎসলা ভাবের আধিকা আছে, যে রমণী
প্রবঞ্চক নহে, এবং যে বালককেনিজ্প
প্রের ভায় মেহ করিয়া থাকে, সেইরূপ
ধাত্রীই সম্পূর্ণ প্রশস্ত।

কথন কথন কৃত্রিম প্রস্ববেদনা উপস্থিত হইয়া থাকে। প্রকৃত কি**খা** কৃত্রিম প্রস্ববেদনা কাহাকে বলুে, ভার্ছা গানিয়া বাথা আবশুক।

কৃত্রিম বেদনার বাস্তবিক গর্ভিণীকে
সভাস্ত যন্ত্রণা দিয়া থাকে। এই যন্ত্রণা
নিবারণ ভাল স্কৃতিকিৎসকের পরামর্শ
গ্রহণ করা সর্বতোভাবে কর্ত্রবা। কৃত্রিম
বেদনা উপস্থিত হইলে গর্ভিণীকে স্থির
ভাবে শয়ন করিতে দেওয়া উচিত এব
সেই সময় মুফ্র বিরেচক কোন প্রকা
ভোলাপ দিলে বেদনা নিবারিত হইদে
পারে। কথন কথন গর্ভে সন্তান নড়
চড়াতেও কৃত্রিম প্রাস্ববেদনা উপস্থি
হইয়া থাকে। প্রক্রত বেদুনার গর্ভিগী
সন্তান-নির্গমন-পথ বিস্তারিত হইদে
দেখা নায় এবং প্রস্কর্মার দিরা এ
প্রকার ক্লেদ্ নির্গত হইয়া থাকে।

मछ (क्रव थूनी के नकन यष्टित উপর সারি माति वनान थारक। सञ्चरपात ठर्षि नकन স্থানে বিক্রীত হয়। ইহাদিগের মধ্যে কেহ কেহ নরমাংস খায় না। রাজা বা সেনা-পতিদিগেরই দৈতা সকলকে অস্ত্র শস্ত্রে সজ্জিত করিবার ক্ষমতা আছে। যে সকল লোকের প্রাণদণ্ড ट्य. দেনাপতিরা निक इट्ड जाहानिशटक मात्रिया थाटक। ষ্থন কোন হন্তী মারা হয়, তথন রাজারা তাহার দস্ত এবং অর্দ্ধেক মাংস ভাগ পান, কিন্তু চাষ হইতেই তাঁহাদিগের প্রধান আয়। চাষ-কাৰ্য্য স্ত্ৰী কিংবা **मामि**निरशंत काता मन्भन्न इत्र । ताकाता যথেচ্ছাচারী, ভয় দেখাইবার জভা তাহারা কথন কথন মিছামিছি রাগ করিয়া থাকে এবং ভিড়ের মধ্য হইতে একজন লোককে ৰাছিয়া লইয়া তাহার গলায় দডী **জড়াইয়া দেয় ও নিজ হস্তে** তরবারির 山西 কোপে তাহাকে ক টেয়া নিয়াম নিয়ামেরা প্রেতাত্মায় विभाग करत्र । তाशानिरशत्र विभाग त्य,

প্রেণান্থারা বনে বাস করে। ভাহারা অন্থমান করে ধে, যথন পাতার মর্ মর্ শব্দ হয়, তথন ভূতেরা কথা কয়। ইহারা মূর্জিপুজা করে না। যাহাদিগকে ভাহারা ডাইনি কিম্বা অপরাধী বিলয়া সন্দেহ করে, তাহাদিগের জক্ত অনেক রকম পরীক্ষা করিয়াথাকে। তাহাদিগের ভবিষ্যৎ জ্ঞানের নানা রকম চিহ্ন থাকে। একটী মুরগিকে যে পর্যান্ত না সে অজ্ঞান হইয়া পড়ে, ততক্ষণ জলে ডুবাইয়া রাথা হয়। অজ্ঞান হইবার পর, যদি সে বাচিয়া উঠে, তাহা হইলে ভূভলক্ষণ এবং যদি মরিয়া যায়, তাহা হইলে ভূভলক্ষণ হির করা হয়।

যদি একজন নিয়াম-নিয়ামের কোন আত্মীয় মরিয়া যায়, তাহা হইলে সে মাথা কামাইয়া থাকে। শবদেহকে কোন উৎসব সমায়োহের স্থায় সাজে সাজান হয়। সচরাচর ইহা রক্তবর্ণ কার্চের ঘারা রঞ্জিত হইয়া থাকে। দেহ গোরে সমাহিত হইলে মৃত্তিকা ছারা তাহা ঢাকে এবং তাহার উপর একটী কুটীর বাঁবিয়া থাকে।

ধৰ্মঃ সৰ্বেষাং ভূতানাং মধু।

" ধর্মাং চর ধর্মাৎ পরো নান্তি ধর্ম: সর্কেবাং ভূতানাং মধু।"

ধর্মাচরণ করু ধর্মের পর আর নাই, বর্মানকরা জীয়ের পকেই মধু সরপ। হলের সকল শাস্ত্র পাধুগণ এই জনা দিয়াছেন "ধর্মাচরণ কর"।

মানবের পক্ষে ইহা অপেক্ষা উৎক্ষ ও শ্রেষ্ঠ উপদেশ আর কি হইতে পারে ? ইতর্ক জীব জাতি হইতে মানবের শ্রেষ্ঠতা যদি কিছুতে থাকে, তবে সে বর্ষে। পশু পক্ষী কীট পতঙ্গ ইত্যাদি সকল জীব আহার বিহার করে; মনের প্রবৃত্তির অধীন

হইয়া, আত্মহথ সাধনের চেষ্টা করে-যাহাতে শরীরের ক্লেশ কি মনের ছ:খ হয়, তাহা দর্ব-প্রকারে পরিহার করিয়া थारक। এরপ কার্যা মানবজীবনের লক্ষ্য হইলে পভজীবন হইতে প্রভেদ কি? মানবজীবন বুক্ষলতাদির ন্তায় আহার করিয়া ও নিখাদ প্রখাদ ফেলিয়া কিছু দিনের জন্ম প্রাণ ধারণ করিবার নিমিত্ত নয়। মানবজাবন পশু-পক্ষীর ত্যায় কিছু দিনের জন্য স্থ হ:খ ভোগ করিয়া মরিবার নিমিত্ত নয়। এই জীবন ধর্মসাধন করিয়া অমৃত জীবন ও অনস্ত উন্নতি লাভের জন্য-এহিক ও পারত্রিক চিরকল্যাণ, চিরশান্তি ও চিরস্থ ভোগের জন্য।

মহুষ্টা নানা উদ্দেশ্যে ধর্ম-নাধন করিয়া থাকে। কেহ বা ঐহিক ধন, মান, স্থুথ, সম্পদ লাভের জন্য ধর্মসাধন করে,কেহ বা রোগ শোক বিপদ ও মৃত্যু এই সকল ভব-যন্ত্রণা হইতে রক্ষা পাইবার জন্ম ভয়ে ভয়ে ধর্ম্মাধন করে। কেহবা ঐহিক স্থপ ছঃপ ও পাভ ক্ষতির প্রতি দৃষ্টিপাত না করিয়া প্রলোকে স্বর্গভোগ বা নরক-যন্ত্রণা হইতে মুক্তিলাভের জন্ম ধর্ম্মাধন করে। ইহা প্রকৃত ধর্মদাধন নহে—বণিকৃবৃত্তি মাত্র। বেমন পাঁচ হাজার টাকা বণিকেরা পাইবার আশাষ পাঁচ শত টাকা ব্যয় करत, धर्म-विश्वता मिहेक्स वर्गलारक অনেক অর্থ ও ভোগ পাইবার আশার দান ধ্যান ও নানা প্রকার ক্লছ্ সাধন করিরা ধাকে। এক ব্যক্তি প্রণম্বের অন্তরোধে

স্ত্রীর পাণিগ্রহণ না করিয়া যদি অনেক আর্থ্র পাইবার আকাজ্জার বিবাহ করে, তাহার বিবাহ ধেমন নিক্ট, ঐহিক বা পার্রিক স্থপ ও ঐশ্বর্য ভোগের লালদার ধর্মাচরণ করাও তক্রপ। যথার্থ প্রণারী স্ত্রীকে ভাল-বাদে বলিয়া তাহার সহিত বিবাহস্ত্রে বছ হয়,ধনলাভ বা অন্ত কোন নিক্ট বাদনার নহে। যথার্থ ধর্মান্ত্রাগী ব্যক্তি ধর্মের অন্তই—ধর্মান্ত্রার সহিত মিলিবার জন্তই—ধর্মান্ত্রার স্থাবন করেন। অন্ত উদ্দেশ্তে ধর্মানার করা ভাহার নিক্ট অত্যন্ত ম্বাকর।

ধর্ম সামাত্ত বস্ত নহে। যাহা সভা তাহাই ধর্ম, ধর্ম স্বয়ং ঈশ্বর। ইহা হইলে ধর্মের অপেকা শ্রেষ্ঠতর বস্তা আর কি হইতে পারে গ ধর্ম মানবের পরম গজি. আশ্রয ধর্মকে বাঁহার। ধর্মের সাধনা করেন, তাঁহারাই প্রকৃত ধার্ম্মিক। ধর্ম প্রিয় হইলে ভাহা যত কেন কঠোর-সাধ্য হউক না, তাহা মধুর বলিয়া বোধ হয়। বস্তুতঃ ধর্ম প্রেম—ঈশ্বরের প্রক্তি প্রেম এবং তাঁহার সকল জীবের প্রতি প্রেম। এই প্রেমভূষণ পরিলে ষেমন স্থলার, **अमन जात किছु एउटे नरह। अम हरक** রাখিলে চকু অমৃত বর্ষণ করে,কর্ণে রাখিলে কর্ণ মধুর বাণী ওনিয়া তৃপ্ত হয়, রসনাতে রাখিলে তাহা অনুতের আখাদন করিয়া नकरनत कर्ष - अभू छ भागिया राष, इत्य রাখিলে হত্ত প্রেমময় হটুয়া একলের হিত সাধন করে ও সমুদ্য বিশ্বসংসারকে লিক্সনে বন্ধ করিতে চার। বে

म्हल्लार्स रव जारम. रम्ब मधुमय इटेश यात्र। विर्माण अ मानव रमवर्ज इस्

করে, সে নিজে মধুমর হয় এবং তাহার। ধর্মই কথার্থ পরদান। ইছার পরশে পৃথিবী

আচার।

'আচারারভতে চায়ুরাচারারভতে প্রির্ম"। লোক সদাচারে থাকিলে আয়ু ও লন্দ্রী লাভ করে। একদা क्रिकां (पर्वी नमी (क बिकाम कतिरमन,—"मिति। आशनि किन्नभ नव नावीत मर्पा वाम करतन, তাহা আমাকে কুপা করিয়া বলুন।

.नन्ती विनादन :---

भाख, विनौज, धीत्र, महिकू, एक, কর্ত্তব্যপরায়ণ, দেবভক্ত, ক্বতজ্ঞ ও উন্নত-স্বভাব পুরুষে আমি নিত্য বাস করি। িবে ব্যক্তি কুকর্মাসক্ত, নান্তিক, কুতন্ন, खंडेठित्रिक, निष्टेत, ८ठोत, গুরুজনের ও সাধুজনের প্রতি অহয়াপরবশ, তাহার নিকট আমি গমন করি না। যাহার ভেজ, বল ও সত্ত স্বল্পরিমিত সামান্ত কারণে যাহার ক্লেশ উপস্থিত হয়, এবং 🗗 ব্যক্তি যেখানে সেথানে ক্রোধ প্রকাশ কলে, এবং যাহার মনে সরলভা নাই শামি তাদুশ পুরুষে বাস করি না। **८व**ेशकर धर्माक ७ श्रामील, पांच छ **जिन्नजारी** এবং সর্বাদা জ্ঞানী ও সাধুগণের **डिभागना** करत, य शूक्रव कमानीन, সভানিষ্ঠ, দরালু ও ফায়বান, আমি তাহাতে নিতা বাস করি L.*

नार्ती क्रमानीना, जिट्डिक्सा, ে বাংলা ও সরলবভারি, দেবতা ও ব্ৰেক্ক প্ৰতি ভক্তিমতী, আমি সেই

নারীতে বাস করি। যে নারী পতিকে সাক্ষাৎ নারায়ণ জানিয়া কায়মনোবাকো পতিদেবা করে, আমি সে নারীকে কণ-মাত্রও পরিত্যাগ করি না। যাহার গৃহ-সামগ্রী সকল বিপর্যাপ্ত (১), যে নারী विटवंडना कतिया कांक करत्र ना, मर्खना প্রতিকুলাচরণ করে, স্বামীর ছাড়িয়া পরগৃহে যাইতে ভালবাদে, যাহার শজা, ভয় ও বিনয় নাই, আমি সেরপ নারীকে পরিত্যাগ করি। যাহারা পতি-ব্ৰতা ও পতিপ্ৰাণা, কল্যাণশীলা, ভদু বেশ-ভূষায় বিভূষিতা, প্রিয়বাদিনী, পবিত্রচিন্তা এবং যাহাদের গৃহকার্য্য সকলই স্থপরি-ष्ट्रज्ञ, এবং যে সকল নারী গুরুজন, পরিজন এবং অভ্যাগতদিগের পরিচর্য্যার স্থানিপুণা, আমি সেই সকল নারীতেই বাস করি। মাতৃদেবতা, পিতৃদেবতা, আচার্য্য-

দেবতা, অতিথিদেবতা ও পরমেশ্বর, এই পাঁচটীকে যে পুরুষ অচলা ভক্তি সহকারে নিত্য পূজা করে, আমি তাহাকে শ্বরং ক্রোড়ে শইরা থাকি (২)।

⁽ ১) মূল মহাভারতে "একীৰ্ণভাতাম্" আছে, वर्षार याहात गृहज्ञानीत जनामि (शाना, प्रा), नात, বন্ধ্ৰ, খাদ্য প্ৰভৃতি) এলো মেলো অবস্থায় পড়িয়া शांदक ।

⁽২) এই পাঁচনির পূজাকে "পঞ্চারতন পূজা" बल्म ; अवर देशांके भूभरवक्ष भक्ष भूक्षार्थ ।

মাতা পিতা আচার্য্য প্রভৃতি গুরুজনেরা যাহার প্রতি অপ্রীত, অতিথি ও পিত-লোককে যে পরিতৃপ্ত করে না, আমি তাহার গৃহে গমন করি বা। আমি मिथावानी, भठ ७ क्लीत गृह्ह याहे ना। কেহ কিছু প্রার্থনা করিলে, যাহার মুথে "नाई नाई" क्विन এई नम, आिय তাহার গৃহে যাই না। যে ব্যক্তি গঞ্জি ধন আত্মদাৎ করে, মিথ্যা সাক্ষ্য দেয়, ক্বতত্বতা ও বিশ্বাস্থাতকতা করে, আমি তাহার গৃহে যাহ না। যে ব্যক্তি কুপণ ও কুদ্রাশয়, ঋণ করিয়া পরিশোব করে না, যে ব্যক্তি চিন্তায়, ভয়ে বা শোকে আত্মহারা হয়, আমি তাহার গৃহে যাই ना। द वास्कि इहा जी वा इहे भूक्रदवत সংসর্গে থাকে, আমি তাহার গৃহে যাই (य शृंदर निजा प्रया, १५४ । কলহ, আমি সে গৃহের ছায়াও স্পশ কার না।

যে গৃহে হরিপুজায়, হরিগুণকীন্তনে

এবং হরিনামে আগ্রহ নাহ, আমি দ্র

হইতে সে গৃহ পরিত্যাগ করি। যে

যাক্তি কন্তা বিক্রেয় করে, অন্ন বিক্রয়

করে, বিন্তা বিক্রেয় করে, জাবহিংসা করে,

আমি তাহার গৃহ নরকক্তের ন্যায়
পরিত্যাগ করি। যে ব্যক্তি দ্তাপহারী,

পরস্বাপহারী—দেবধন व्यवनाभकाती, व्यत्मात त्रिल-त्नाशकाती, তাহার গৃহও আমি নরককুঞের নারে পরিত্যাগ করি। যাহার ধ্রশ্বকর্মে দান नार, नात, अका नार, त्मरे मुह्युक পাতকীর ভবনে আমি গমন করি না। যে ব্যক্তি মাতা, পিতা, ভার্যা, গুরু, গুরু-পরী, অনাথা ভগিনী, কন্যা, এবং অনন্য-প্রতিপালন জ্ঞাতিবদুদিগকে কারতে রূপণতা করিয়া ধন সঞ্চয় করে, আমি তাহার নরকতুল্য ভবনে ক্রদাচ গমন করি না (৩)। যে বাক্তি মন্ত্র দান করিয়া জীবিকা নিকাহ করে, অর্থলোভে বিখ্যাদান, চিকিৎসা বা দেবপুৰা করে, তাহার গৃছে আমি পদার্পণ করি না। যে ব্যক্তি রোধ বা বিষেধের -বশবজী হইয়া আৰু, যজ্ঞ, বিবাহ, ব্ৰত, প্রভৃতি পুণাকার্য্যের ব্যাঘাত করে, দে পাপিছের গৃহ আমি পরিভ্যাস कति।

(ক্ৰমশঃ)

(২) মাতরং পিতরং ভাষ্যাং শুরুপদ্ধীং শুরুক ত্রুর্থ অনাথাঃ ভাগনীং ক্যামনস্থান্দ্রবাক্ষান্ত্র কাপণ্যাদ্ যো ন প্রাতি স্কর্মং কুমতে স্কা। ভদ্গৃহং নরকাকারং নৈৰ বামি ক্লাচন । (ব্লেবেবর্জ)

.vv is .v

বৌদ্ধ উপাসনা।

किइमिन एरेन तोध-गमा-व्यक्रांगक একজন সিংক্লবাসী বৌদ্ধ পুরোহিত কর্মক আহত হইয়া আমরা 'এক বুদ্ধো-পাসনার যোগ দান করি। রাত্রি অয়-মান সাত ঘটিকার সময় উপাসনা আরম্ভ হয়। একাদনে তিনজন পুরোহিত উপবিষ্ট, সকলের হত্তে এক এক থানি ভালপাতার পাণা। আমরা সচরাচর **এইর্ন্স অন্থমান করি**রা থাকি যে, বৌদ্ধ ভিক্ষুগণ কেবল পরিচ্ছদের অসম্বরূপ এক এক খানি পাথা হাতে করিয়া বেড়ায়। বাস্তবিক তাহা নহে। পাথা উহাদিগের উপাসনার অঙ্গীভূত। কিরুপে অলীভূত, ভাহা বলিভেছি। বুদ্ধদেবের মৃর্ত্তির সমুখীন হইয়া পুরোহিতগণ এক হত্তে (প্রায় বাম হত্তে) পাথাথানি সম্মুধে ধরিয়া মুখ ঢাকিয়া মুবেপর **अभागता** कदत्रन। (कन १ পাছে কোনও রূপ দৃষ্টিতে ধ্যান ব্যতীত মনকে 👣 দিকে শইয়া যার। উপাদনার আর আৰু আছে, এক খণ্ড বুহৎ আসন— মুগ বা ছাগচর্মের। ইহার প্রয়োজন কি ? যদি কোনও স্থানে আসনের অভাব থাকে, ভিক্ষু ঐ চর্ম্মণণ্ড বিছাইয়া উপাসনা করিতে, উপবেশন করেন। "নমো ভগবুৰ্জে" অহতে" ইত্যাদি গাণা প্<u>তিজ হয়। স্থীতির সন্মুখে ধুণ ধুনাদি</u>

জালান হয়। সকলে আমাদিগের মত প্রণাম করিয়া থাকেন। কিন্তু বসিবার উপাসনাকালে কিছ প্ৰতন্ত্ৰ। ইহাঁরা আমাদিগের মত উৰ্দ্ধগ্রীৰ, যোগাসন হইয়াও বদেন; কিন্তু বেশির ভাগ, মুসল-মানেরা বেরূপ নমাজ করিবার সময় জাতু পাতিয়া বদিয়া থাকেন, ইহাঁরা দেইরূপ वरमन। दावजा देनदवछ ७ भूज्यानि निश्रा অর্চিত হন, কিন্ত প্রাণ-প্রতিষ্ঠিত হন না, নেত্র-প্রতিষ্ঠিত হন। চন্দনাদি স্থগন্ধ ज्यामि वावकं इटेंटि दाया योग्र मा। দয়া ও ওদার্য্যে এই ধর্ম অনুপ্রাণিত। একটি প্রধান রোগীর ভূজ্যা ইহার কর্ত্তব্য। ইন্সিয়নিগ্রহ সকলের পক্ষে. বিশেষতঃ সম্যাদধর্মাবেশখী ভিক্ষগণের পক্ষে বড়ই আবশ্রক। এইজন্ম ইহারা বোধ হয় একাহারী. অল্পভোজী। ভিক্ষাও এক গৃহস্থের দ্বারে কমগুলু লইরা। একঘারে বিমুখ হইলে অন্ত ঘারে গমন कतिरवन मा, रम मिन जात जाहात इहरव না। ভিক্র পকে গৃহে ভকা দ্রব্য প্রস্তৃত করিয়া ভোজন করা একবারে নিষিদ্ধ। ধুমপানাদি পর্যান্ত ইহারা করেন না। পরিধেয় বস্ত্র প্রস্তুত করিৰার প্রণালীতে অমুমিত হয় যে, ইহাতেও কোনও প্রকার বিলাসের নাম ও গদ্ধও থাকিবে না। বৌদ-ধর্ম হইতে সংবদের মহাশিক। লাভ হয়।

খোকার মায়ের পত্য।

স্থুরলোক হতে মোর খোকাটী এসেছে যাই, স্বর্গের স্বভাবটুকু, এথনো তের্মাগে নাই। তেমনি মুখের কাস্তি, অধরে তেমনি হাসি ; তেমনি উছলে গায়, স্বরগের রূপ-রাশি। व्याकात्म त्य हाम डिटर्ड, त्थाका-हात्मत्रं त्कांना; ইক্সের যে শচীরাণী, থোকা সে অঙ্গের त्रांगा ।

व्यथ्वा हत्व ना ठाँम, ठाँरम त्य कलाइ त्रमः; দোণাও হবে না বুঝি, সোণা কি কোমল रुष १

जयन त्राक्षि ठरत, स्मात्र चौहरनत निधि, যে ভাবে যে উপাদানে, যতনে গঠিলা বিধি। সুধা দেবতার পেয়, এক ফোঁটা দে সুধার; পারিজাত নামে ফুল, একটী পাণড়ি তার; তুটীরে মিশারে বিবি, বিরলে গড়িলা যেই, স্বর্গীর স্বরভিরাশি, খ্রী-অঙ্গে মাধান তেঁই। চোকে মুখে সরলতা, সরলতা দেহময়; নিঃখাস-প্রখাস-আেতে, সদা সর্বতা বর। ৰোকা যেন কেহ নহে,ছঃপময় এ সংসারে; অমল অথল থোকা, কিছুর না ধার সারে। शित्रियां ठाँदित शित्रि, यथनि वित्रियां टलादन,

স্বর্গের সঙ্গীত ঢালে, আধ আধ "লামা" **ट्वांटन** :

অমনি মনেতে হয়, আমি আর আমি নাই; मःमारतत्र ऋथ इःथ, मक्ति **ज्निता वार्ष**। मनात-क्यम-मध् পृত ख्यूष्नी-सन ; মুধার মুধারা কিবা, কিবা কলভক্ত-কল; আকাশ পাতাৰ ধরা,যেথানে যা ভাৰ আছে, (क तम्थ्वि तम्थ् आमि, आमात्र (थाकात्र 世代第 1

অচঞ্চল বিজলি সে, সুকোমল কাঁচা লোণা; শীতল অনল-শিধা, নিরত্ব চাঁদের কোঁশা। প্রাণের ধোকাকে মোর, বে নামে ডাব্দি (व कार्ज :

খোকার মাধুরী গুণে, সে নামেই মধু ঢালে। মধ্র যে মধুনাম, ভনি এত মধুমীর; মধুর প্রভাব সে বে, নামের প্রভাব নর। ভনিরা জুড়াই, বলু পাঠিকা-ভগিনী যত, टकारन कोरन त्मारन त्थांका, त्लारमञ्जू

এই ভিক্ষা তবে, সবে একবোগে আর্ ভাই; त्य यात्र त्थाकात्क नित्त्व, हाममूर्य

मामांगाकारतत वीताक्रना।

সমরানল প্রজ্ঞানত হইরাছিল। একদিকে কৃষ্ট অন্ত্র-শত্ত্র-সহ জমতপরাক্ত্রম রণকেত্রে

বর্ত্তমান বর্বে মাদাগান্ধার বীপে ভরত্বর সমর-কুশল সুশিক্ষিত ব্রাসী সেনা উৎ-

সম্পাদকেরও এই অসুরোধ, বাসাবোধিনীর সহদরা, সপুত্রকা পাটিকাগণ, এই সুত্র ক্রিকারী ৰ অকলোভী পুত্রবছের মুবচুবৰ করিরা, গোকার নারের ননোবাস্থা পূর্ব করিরা,

অগ্রসর, অপর দিকে অশিক্ষিত যুদ্ধবিদ্যায় উৎকৃষ্ট-অন্ত্রশস্ত্র-বিহীন সম্পূৰ্ণ , অনভিজ অৰ্দ্ধসভ্য-দেশবাসী হোবাগণ জন্মভূমিকে গ্রাস **इडें** इंड শত্রুর করাল বক্ষা জञ्च आञ्चावनि-मान उम्रथ। **ক**রিবার একদিকে ব্রীস্থাসভা ফেরাসী-মন্ত্রি-সমাজের भक्षणा, युक्तविभातन रिमनिकशूक्यिनिश्त अलाम्बर्ग ममत-(कोमन अकाम, जन-ব্রোতের ভায় দৈভের আগমন: অপর **फिट्ट** এकजन त्रम्शी* मिन-अञ्ज्ञधाती অশিকিত সৈতা সহ সমরাঙ্গনে অবতীর্ণ। কিন্ত তথাচ তাহারা পলায়ন করে নাই। পুঠ প্রদর্শন অপেকা, শত শত যুদ্ধ-নায়ক-পুণ রণস্থলে জীবন বিসর্জ্ঞন করাকেই পৌরবের বিষয় মনে করিয়াছেন। তাহা-দের ধমনীতে শেষ রক্তনিন্দু প্রবহমাণ থাকা পর্য্যস্ত তাহারা বীরদর্পে করিয়াছে: কিন্তু পরিশেষে সদেশহিতৈষী হোবাগণের রুবির্জোতের মধ্যে ফরাসী-দিগের বিজয়-বৈজয়ন্তীই নিথাত হইয়াছে। হোকাগণ কয়েক মাস অবিরত যুদ্ধ করিয়া **শেষে পরাভূত হইয়াছে।** রাজধানী ফরাসী লেনা কর্ত্তক অধিকৃত হইয়াছে। রাণী এখন ফরাসী মন্তিসমাজের পুত্তলিকাবৎ মাদাগাস্কারের রাজসিংহাসনে অধিষ্ঠিত আছেন।

মাদাগাম্বার দ্বীপ ভারত মহাসাগরে ইহা আফ্রিকার দক্ষিণ-পূর্ব অবস্থিত।

मामाभाकात बोर्ण अवनः । ककन तानी ताकक এখনও তিনি শ্বাঞ্চপদে অধিষ্ঠিত আছেন 🍎 গুণ 🗗 দ্বীপে আগমন করেন।

मित्कं। এই द्वीश मिर्स्म 8৫0 ज्वान, প্রক্ষে ১৪০ ক্রোশ অর্থাৎ ২,৫২,০০০ বর্গ মাইল বিস্তৃত। ইহা বিবিধ বৃক্ষ, উচ্চ ও সমতলভূমি এবং পর্বাত ইত্যাদি দারা বৈচিত্র্যময়। ইহার প্রাক্তিক দশ্য অতি সুখামল শ্যাক্ষেত্ৰ, অনুনত মনোহর। প্ৰবৃত্মালা এবং নানাজাতীয় বিটপী-শ্রেণীতে এই দীপ একটা রুমা কাননে পরিণত হইয়াছে। কিন্তু এ স্থান দেখিতে যেমন স্থন্দর, ইহার জলবায় তেমনি অস্বাস্থ্যকর। বিদেশীয় লোক এথানে স্কন্ত-শরীরে বাস করিতে পারেন দেশবাসিগণও নানা প্রকার বাাধিতে অনেক সময় আক্রান্ত হইয়া থাকে। বিগত যুদ্ধে ফরাসী পক্ষের সহস্র সহস্র সৈত্য মাদাগাস্কারে রোগ-শ্যায় শ্রান ছিল।

এই দীপবাসী অধিকাংশ লোকেই और्रधर्मावनश्री। বাজপবিবাব থীই।ন। গ্রীষ্টধর্ম্ম যথন এখানে হইয়াছিল, তথন ধর্মাবলম্বী যে লাঞ্ছিত, অবমানিত এবং নিহত হইয়াছে, তাহার গণনা হয় না। **এীষ্টধর্মাবলম্বীদিগের** প্রতি বে কঠোর উৎপীড়ন হইয়াছে, তাহা পাঠ করিলে শরীর রোমাঞ্চিত হয়। এই স্থলে একজন অত্যাচার-পীড়িত খ্রীষ্টান त्रमगीत गःकिश कीयन-काहिनी উল्लেখ করা ধাইতেছে।

১৮১७ औष्ट्रीरम नर्वाञ्चथरम देःबाक-

মান্তাবেশ খ্রীষ্টান প্রচারকগণ নিয়মিতক্রপে ধর্মপ্রচারে প্রবৃত্ত হন। মিশনরীগণ
ক্রল স্থাপন করিয়া দেশীয়দিগকে বিজ্ঞা
নিকা দিতে লাগিলেন। দেশীয় ভাষায়
রাইবেল অস্থাদিত হইল। ক্রমে একটা
ত্ইটা করিয়া বছলোক গ্রীপ্রধর্ম গ্রহণ
করিল। ইহা দেখিয়া রাজা ও দেশীয়
ক্রমতাশালী ব্যক্তিগণ এই নবধর্মাবলখীদিগের প্রতি উৎপীড়ন আরম্ভ করিলেন।
১৮৩৫ খ্রিষ্টাকে সর্ব্বপ্রথম গ্রীষ্টান নির্যাতন
ক্ষারম্ভ হয়।

नाना প্রকার পাখব উপারে এপ্রান-निर्याउन कावछ इहेन। (नाय चीकाव করাইবার জন্ত প্রথমতঃ খ্রীষ্টান নরনারী-দিগকে কারাগ্যহে বন্দী করিয়া রাখা इडेड[ै]। याहात्रा (लाय श्रीकात कतिया স্বদেশীয় প্রাচীন ধর্মে আন্তা স্থাপন করিত ना जाहानिशक चाखरन (পाড़ाইया, জলে ডুবাইয়া, তরবারীর আঘাতে এবং পর্বতপুষ্ঠ ইতে সজোরে ভূতলে নিকেপ ক্রিয়া বিনষ্ট ক্রা হইত। কাহাকেও বা দর্পপূর্ণ থলির ,ভিতরে পূরিষা বিনাশ করা হইত। কিন্তু গ্রীষ্টান প্রচারক-গণের অদম্য উৎসাহ, অক্লান্ত পরিশ্রম, অবিচলিত অধ্যবসায় গুণে এবং সর্কোপরি ঈশ্ববিশ্বাদের বলে এই ভয়ানক প্রতি-কুল ঘটনার মধ্যেও প্রতিদিন গ্রীষ্ঠান-সংখ্যা বৰ্দ্ধিত হইতে লাগিল।

এই ভয়ঙ্কর নির্বান্তনের সময় কাফারা-ভাবি-নামী একজন সম্ভ্রান্ত মহিলা এই-ধর্মা গ্রহণ করিলেন। তিনি ব্বতী।

সংসারের স্থ স্থবিধা, আমো বিলাসভয়ক পরিত্যাগ করি कल्डेकमशांत्र भवन সাবনের পিতা মাতা ভ্রাতা এবং-আর্থ বান্ধবের প্রতিকৃশে—রাজার প্রতি দেশের প্রতিকৃলে দণ্ডায়মান তিনি জানেন, তিনি কি ভন্ন অবলম্ব করিশেন। তিনি কা তাঁহার সম্বাধ পুলাধ্যা স্থিত কিন্তু অগ্নিকুণ্ড অলিভেছে। প্রতিদিন কুকুরের আয় গ্রীষ্টানগণ রাজক প্রা পদৰ্শিত হইতেছে, ভাহাতে ন্তাৰ নাই, আশ্ৰয় দান 📆 নাই। এ সকল দেখিয়াও অনলকণ্ডে ঝাপ দিলেন কেন পতকাতি তাহার প্রাণে -কেন इडेल १

এই সময়ে মাদাগান্ধারের শাসনা একজন রমণীর হতে ছিল। বিরুদ্ধির ইয়াও গ্রীষ্টান-নির্যাতনে রাম্মির কার্যা আনকার্যভব করিতেন কার্যা প্রকাশিগকে উৎসাহ আবা কার্যালাগিরে পিতা আরা রাজসংসারের উচ্চ কার্যো নির্দ্ধির তার্যার কার্যালার আরিক্রেন তার্যার কার্যালার বার্যার কার্যালার বার্যার কার্যালার বার্যার কার্যালার বার্যার কার্যার বার্যার কার্যার বার্যার কার্যার বার্যার কার্যার বার্যার কার্যার কার্যার বার্যার বার্যার কার্যার বার্যার কার্যার বার্যার কার্যার বার্যার বার্যার কার্যার বার্যার কার্যার বার্যার বার্যার বার্যার বার্যার বার্যার বার্যার কার্যার বার্যার ব

অবিলয়ে একজন ব্রাজ্যাক্তর কাকার্যা ভাবির নিকট উপস্থিত হইবা বিশি জ্যাপনার দলে আম কে কে ক্রাফ্ বিদের নাম প্রকাশ করুন্ এবং আপনি বিদের সঙ্গে চলুন। আপনাকে বিষ্টেহে বাস করিতে হইবে।"

ক্রিরাভাবি সমবিশাসী ভাই ভগিনী-ন্ধ নাম প্রকাশ করিলেন না। তিনি বলিলেন "আমি নিয়মিত কালে রের উপাসনা করিয়া থাকি এবং কিকলে এই উপাসনা করিয়া তৃপ্তি করিতে পারে, তজ্জ্ঞ স্থানে স্থানে ্দ্র করিয়া থাকি।" বলা বাছল্য, क्रिकात्राशास्त्र वन्ती इटेरलन। তাঁহার নানা প্রকার নির্বাতন আরম্ভ া, কিন্তু কিছুতেই তিনি সমবিশাসী ভগিনীদিমের নাম প্রকাশ রলেন না।

কাফারাভাবি যথাসময়ে কারাগৃহ হাঁত বিচারকের নিকট আনীত হইলেন। দিবার কালে পথে একজন সমবিখাসী তিকে দেখিতে পাইয়া বলিলেন. শাই, তুমি আমার সঙ্গে সঙ্গে থাকিবে। न विद्राधिशंश यक्क्या निश्च आमात्र আণ নষ্ট করিবে, তথন তুমি থাকিয়া প্রত্যক্ষ করিবে যে, আমি কিরূপে তুমি প্রাণ ত্যাগ করি। দিখিকে পাইবে, আমি প্রকৃত গ্রীষ্টানের शास्त्र रेनोगा ७ भाखजादन, व्यनसम्ब প্রভূর / আলোক হৃদ্যে অহ্ভব করিয়া हेर कीवन-नीना द्वार कविव। उ९भव मि अहे मत्यान मखनीत वकाछ कर्तन विभाजी मिर्ध्य निक्द्रं विनय । । छाहा ইলে ক্লাইটিউ আনী ভার প্রভূর ধর্ম- রক্ষার্থে অকাডরে প্রাণ দান করিতে প্রস্তুত হইবে।"

কাফারাভাবি যথাসমরে বিচারকের
নিকট উপাঁহিত হইলে বিচারক তাঁহাকে
প্রীপ্তথর পরিত্যাগ করিতে আদেশ
করিলেন। তিনি অসমত হইলেন।
তথন বিচারক ক্রোধে কম্পিতস্বরে
কহিলেন, "তবে বিনষ্ট হও; তোমার প্রাণ
দণ্ড হউক।"

কাফারাভাবির শরীর কম্পিত হইল
না, তাঁহার মুখও মলিন হইল না,
তিনি স্থির গঞ্জীর ভাবে দণ্ডারমান
রহিলেন। অন্দুটস্বরে কেবল প্রার্থনা
করিতে লাগিলেন। পৃথিবীর লীক্লা শেষ
হইতেছে জানিয়া তাঁহার চক্ষু যেন স্বর্গের
দিকে উন্মুধ হইল।

এই সময় হঠাৎ নগরে আগন্তন লাগিল।
আমি নির্মাণ করিবার জন্ত সকলে ব্যতিব্যস্ত হইয়া উঠিল। স্থতরাং কাজারাভাবির প্রাণদণ্ড আপাততঃ হইল না।
তিনি কারাগারে নীত হইলেন। কারাগারের ভীষণ যন্ত্রণার মধ্যে তিনি করেক
মাস অবস্থিতি করিলেন। তৎপরে
তাঁহাকে বাহির করিয়া প্রাণদণ্ডের
পরিবর্ত্তে ক্রীতদাসী রূপে বিক্রয় করা
হইল। সৌভাগ্যের বিষয় বে, কাজারাভাবির একজন আত্মীয় তাঁহাকে ক্রয়
করিয়া লইয়া গেলেন।

্ কাফারাভাবি পুনরার প্রচারকার্য্যে প্রবৃত্ত হইলেন। তাঁহার অদম্য উৎসাহ এবং বিশ্বাসের অগ্নি কিছুতেই নির্মাপিত

वामारवारिमी शिक्का।

ছইবার নছে। ভিনি যখন বে অবস্থায়

প্রকন, পরমেখরের মহিমা প্রচার

রেন। ঈররের নাম মহিমায়িত
করাই তাঁহার জীবনের একমুক্স উদ্দেশ্ত।
এইরূপে প্রচার করিতে করিতে তিনি
আরও করেত বার বিচারকদিগের হত্তে
পতিত হইয়া লাজনা তোগ করেন;
ক্স্ক ঈশ্বর-কুপার তাঁহার দেহ-নাশ হর
নাই

কিছু কাল পরে তিনি চিরদিনের জন্ত জন্ম পরিত্যাগ করিতে বাধ্য হইলেন। তিনি জনৈক ইংরাজ প্রচারকের সাহায্যে প্রথমত: মরিসস্ বীশে, তৎপরে ইংশা গমন করেন। ইংলওে কিছু কাল করিরা লেখা পড়া দিকা করে তৎপরে প্নরার মরিসসে আগমন করে মনাথ বালকবালিকাগণের দিকা সেবাকার্যো তিনি জীবনের স্কর্মা নিয়োজিত করেন। একটা মর্ ধর্মবিশাসবলে স্থদ্দ থাকি জ্ঞান ও প্লোর পথে স্থাসক হয় পারেন, কাফারাভাবির জীবনে আন

সেক্সপিয়ারের গণ্প।

টাইমন।

<u> গেভাগাসমূহে</u> লোকের বন্ধ বান্ধবের অভাব থাকে না ৷ যধন বন্ধবান্ধ বদিগকে স্বাহ থাত পানীয়ে পরিতৃষ্ট করিবার সামর্থ্য থাত ুর্ধ্বন অলানবদনে শত সহস্ৰ মুদ্ৰা প্রমোদে ব্যয় করিছে পারা হায়, তথন ধ্-লোৰুপ ভ্ৰমরের স্থার চতুর্দিক হইতে ্ৰ বাস্কুৰ আপনা আপনি আসিয়া জুটিয়া থাকে; কিন্ত ৰখন ধনবান ব্যক্তি व्यर्थहोन हन, यर्थहे बात्र वागतन व्यष्ट्रत-প্রথকে পরিতুষ্ট করিতে পারেন মা, তথন আবার বহুদিন-প্রতিপালিত পরমান্ত্রীয়-📤 কোথার অন্তহিত হয়, ভাহার কিছুই

এথেন্স নগরে টাইমন নামে এই ভূমাধিকারী বাস করিবে ধনাঢ্য মন্ত্রান্ত গুণাপেকা দাতৃত্ব গুণেই ডিটি সকলের নিকট[®] বিশেষ পরিচিত हिलान। एक पत्रिक वाकि नहरू नमुद्धिन শালী ব্যক্তিরাও তাঁহার বদানাতার পুরুষ্ আপ্যায়িত হইতেন। াদেশীয় বিদেশী আত্মায় অনাত্মীয়, সকলেই সমভাৰে তাঁহার স্থাবৈশ্বর্যা ভোগ করিতেন, তাঁহার আমন্ত্রণে চ্ছুৰিষ্ধ "" ₹7म পূর্ণ ক্রিয়া তাঁহাকে ইপ্রুম পুলকিত कत्रिराज्ये दुक्द कविक क्रिकी छोहेमनरक উপহার দি ব্রহ্ম অর্থ সংগ্রহ করিছে

वामादवाधिनी भविका।

19

19

24

দিয়া, কোন শিলা জাবিকের শিলভাত দিয়া **আশাতীত অর্থ লাভ** করিতে লাগিল। उँ। हात्र कारक धनायी धन भारेण, विवाहायी বিবাহিত হইল, পরিচ্ছদার্থী পরিচ্ছদ পাইল। এইরূপে যে যাহা প্রার্থনা করিতে নাগিল, জিনি তাহাকে তাহাই দিয়া সম্ভষ্ট ্ত্রিত লাগিলেন। কিন্তু তাহার উন্মুক্ত র উপযুক্ত অর্থ ধনাগার যোগাইতে 🌉 देश ন। আচরেই তাহার ধনাগার "অন্ত-ক্রমের সহিত সমুথ সমরে পরাজিত रहेन-छिनि कारम शन रहेर हीनजत ম্পস্থায় প্রতিত হইলেন। একে একে পত্তি বিক্রাত হইতে লাগিল,কিস্ত ক্রি বন্ধু বান্ধব আ কর্মচারিগণ কেহ হাকে সে বিষয় জ্ঞাত করিয়া সৎপরামশ কাম প্রশান করিল না। কেবল বিশ্বস্ত কর্মচারা ব্যায়সূ গোপনে অক্রমোচন করিতে ৰালিল। ক্ৰমে যখন বাড়া হক্ত তৈজস প্রাদি বিক্রাত হহবার উপক্রম হহল, ই, অশ্বন ক্লবিয়স্ তাহার চরণ বারয়া মত-समा रहेट अस्ट्राव नित्न। টাইমন তাহার কথায় কর্ণপাত করিলেন না। ক্লবিয়স্ তৈজ্ঞ প্রাাদ বিক্রম করিয়া থিতা প্রভুদ্ধ অথ সংকুলান কারতে লাগিল। আগায় বন্ধু বাধাবগণ তথনও আনন্দে নৃত্য ক্রিতেছে, কিন্ত ক্লবিয়নের চক্ষে বল

> **गेइमान्त्र हार्थ किছू विषय मण्लिख** देखन भवारि अभूतन निः त्निक विकास अविकास विकास अविकास সংগ্রহ করিবাস্থ

আর উপায় নাই দেখিয়া ক্লবিয়দ সঞ্জল-নয়নে স্বীয় প্রভুর নিকট উপস্থিত হইয়া সমুক্ষ বিষয় জ্ঞাপন কবিল। তাহাকে ক্লেদন করিতে দেখিয়া সহাস্ত উত্তর করিলেন, "ক্লবিয়স ! ভূমি ব্লোদন করিতেছ কেন প নাই, তাহাতে ক্তি কি ? আমার প্রমা-খ্রামুগণ আছেন। তাঁহারা অবশুই আমার জন্ম অকাতরে অথব্যয় করিবেন।"

টাইমন প্রছারা আপ্নার ত্রবস্থার বিষয় জ্ঞাপন করিয়া পূর্বাপরিচিত পরম निक्र বন্ধদিগের স্থায় বিশ্বস্ত ভত্য ক্রবিয়সকে প্রেরণ করিলেন। তাঁহার দৃঢ় বিশ্বাস ছিল বে, বে কোন বৰু তাঁহার ত্রকস্থার বিষয় সুণাক্ষরে জানিতে পারিবেন, তিনি ব্যগ্র হইয়া তাঁহাকে যথেষ্ট অর্থ श्राम कतिरवन। পাঁচ ছয় জন বন্ধকে বিশেষ দায় জানাইয়া পত্ৰ লেখা হইল, কিন্তু ক্লবিয়ন বহু প্রয়টনের পর শ্রুহন্তে প্রত্যাব্যন্ত হইল।

এত দিন পরে টাইমনের চৈত্র হইল। তিনি বাঝলেন-এ জগৎ স্বার্থের স্বাজ্য; यउक्त सार्थ आर्छ, আত্মায়ত: বলিবার লোক আছে; তত্ত্বালা স্বই ুআছে ৷ স্বার্থের অভাবে জগতে সকলেমই ষে বন্ধগণ ক্ষণকাল ভাহার अमर्गान क्रगर अक्रकांत्रमम (मश्रिक, अक्रा जाशासक बात कर जाकरण जाशास (एक्टिफ कार्टरम मा। स्वाता अंदाक वट्याशान कतिया व्याशनामिश्रासः क्रिके

ংবোৰ করিত, একণে তাহারা তাহার নির্কোধতার নিন্দাপ্রচারে শতমুখ। ইহাতে তিনি যুগপৎ বিশ্বিত ও মশ্বাহত হইলেন। একদা টাইমন আবার সম্পায় রক্গণকে আমন্ত্রণ করিলেন। আবার নৃত্যগীতে তাঁহার আবাস-বাটা প্রমোদ-কাননে পরিণত হ**ইল।** চতুর্দিক্ হইতে বর্জগণ সমবেত হইতে লাগিল। যথা কালে ভোজনাগারে সকলে আহুত হইল, কিন্তু ভোজন-পাত্রাবরণী উন্মোচন সকলেই চমকিত হইল, দেখিল খাত নাই —কেবল কিঞ্জিৎ **উঞ্চ জল** রহিয়াছে মাত্র। সুকলকেই স্তস্তিত দেখিয়া টাইমন রাঁঢ় বাঁক্যে ভৎ সনা করিতে লাগিলেন। সকলেই ঠাঁহাকে উন্মাদগ্রস্ত বোধ করিয়া প্রস্থান করিল।

টাইমার্গ প্রভারণাবর নংগার ব্যক্তিটা করিয়া বনবাসী হইলেন। প্রকার্টা মৃত্তিকা খনন করিছে করিছে ভিনি প্রক চাপ বর্ণ লাভ করিলেন, কিন্তু এ ব এ বর্ণের অক্সরূপ ব্যবহার করিছে এথেন্স আক্রমণকারী সৈক্সবৃদ্দকে উভো করিয়া দিলেন এবং বলিলেন যদি ভাষ এথেন্সবাসাদিগকে সমূলে নির্দ্দ করিতে পারে, তাহা হইলে এ ভাহাদিগকে বিভাগ করিয়া মেওবাই

এথেন্স-বাসীরা জীত হইল । বা সৈন্দের জন্ম তাহারা হংথ প্রকাশ করি । প্রভ্যাণত হইতে আহ্বাম তিনি আর ফিরিলেন না। হইল।

নৃতন সংবাদ।

১। ঢাকার নবাব আশামূলা থাঁ বাহাত্র বুড়ি গঙ্গা ও অন্যান্ত মজা নদীর উদ্ধারার্থ ১৫০০০ টাকা দান ক্রিয়াছেন। বাঙ্গালা গ্রন্থেন্ট ইহার জন্ত ভাহাকে ধন্তবাদ দিয়াছেন।

. ই। থিদিরপুর অগ্নিকাণ্ডে প্রায় ৬০০০
লোক বিপদ্গ্রস্ত। ইহাদিগের সাহায্যার্থ

ভারভাঙ্গার মহারাজা ৫০০০, কাশীর এক
বিধবা রমণী ৫০০০ এবং শোভাবাজার
বেনেভোলেন্ট সোসাইটা ২০০ টাকা

সাহায্য দান ক্রিরাছেন।

ত। বিখ্যাত ইংয়াজী-উপন্যাস-

খা বিচয়িনীর শুতি-সন্মানার্থ ননইটনে (বেথানের বিব্যাহার জন্ম হয়) একটা প্রকালর আতি-, ন। প্রায় কথা হইতেছে।

৪। ত্রীসরাজ এথেনস্ সহরে লও
বায়রনের প্রস্তর-মৃত্তির আবরণ উল্মোচন
করেন।

ব। ব্রীটিষ মিউজিরমের প্রতীচা
বিভাগে একটা মৃত্তিকাফলক পাওৱা
গিয়াছে। ইহা লখে ও ইঞ্জি,প্রাখে ৪ ইঞ্জি।
ইহাতে ৮৩ লাইন uniform অকরে
লেখা। মৃত্তিকাফলক নাইল নাইন
মৃত্তিকার প্রস্তা ক্রিয়া ইহাতে নিলবের

विकासि स्व गरमात्र शासा, कींत्र नाटन हूटि शव छै। त श्रीटम याँ श मिय টরকাল আমি বার চরণে পড়া। এই অতি কৃত্ত প্রাণ ়। এইর ে 🍟 তাঁরেই করিব দান व. किनिके विकास तर ना आह की तरन मता। ত লাক্সিকন বা রহিব আর ঘরের কোণে ৪ ধর্ম অসি হাতে করি. সাহস সাঁফোয়া পরি, ভাকিব প্রাণের বলি জগত জনে। সেবিতে হেলের তরে, দেহতরে য়া মরে, स्त्रांचा व जातम् व काटह। क्रिशिव किया (थ क्रिट्र भाभ निरंग, দিপের কুহেলি প্রাণে ছাইয়া গেছে— में न ताकिन इत्य याहेव ८४८य, रेहे नाम करन यदि আদর বতন করি, গলিত জবন্ত আত্মা লইব ধুরে। যেখানে রোগীরা সর করে হাহাকার রব চাহে না ভূলিয়া কেহ তাদের পানে, योश्य मचन निद्य त्मशास मिनिव शिर्य বীচাৰ সহস্ৰ প্ৰাণ ঔষধ দানে। বেখানে/, কাতর নর बार्ज त्यारक बन ধ ৰ নামাৰে ওশ্ৰৰা কৰে, कार विश्व हैनी गान

आफुद्र बहेद दकारन, করিব শুশ্রমা সেবা পরাণ ভরে। ছেলে মেয়ে কোলে করে त রয়েছি প্রাসাদ পরে व्यामात इत्राद्ध शिष्ट मृतिस काँएन, আমি কি সাজিব বদি মোহন ছাঁদে ? অষ্টাঙ্গ ভূষিত করি, দে^গণার গছনা পরি, গোলাপ গু^{*}জিয়া দেই চুলের গোছে, তবু গহনা গহনা, সামীরে কত তাড়না। এ কলক আমাদের যাবে কি মুছে ? বাদ বিসন্থাদ ভূলে এসলো সকলে মিলে कल एक ज मार्ग मूहि वाश्ति इत, विवान वानना ভावा, मित्रा आंधन खाल. সাধিলেও এ কলক আর না ছোঁব। আমার আমার করি. **ठित्रिक्ति चूरत मित्र**, তবু মিটিল না আত্ম-স্থের বাসনা। এই কি কৰো কাজ ? ছি ছি মঞ্জিপাই লাজ, পরহিত ব্রত কবে কব্বিব সাধনা ? ত্যকি অমূলক লাজ किहा करत तिथि जास সাধিতে পরের কাম পারি না পারি । ি কোন অসম্ভব কাৰ माहि এ सगढ माव मक्द्र क्रिटन यादा माथिए नाति।